३५

होमियोपैथिक
भेषज-लक्षण-संग्रह

एम. भट्टाचार्य एण्ड को.

३५

होमियोपैथिक

भेषज-लक्षण-संग्रह

या

मेटीरिया-मेडिका

[रोग-चिकित्सा-निर्घण्टके साथ]

द्वितीय खण्ड

द्वितीय संस्करण

एम० भट्टाचार्य एण्ड को०
इकनमिक फार्मेसी
७३ नं० नेताजी सुभाष रोड,
कलकत्ता
१९४९

Shri Haribamsta Prasad Upadhyay Baskota,
श्री हरिवंश प्रसाद उपाध्याय बास्कोटा,
Ishw[illegible]ke),
ईश्वरी निवास, नेपालगंज, (बाँके
P.O. RUPAIDIHA, Dist. Bahraich, (U. P.)

मूल्य १२)

प्रकाशक—
डा० समरेन्द्रचन्द्र भट्टाचार्य बि, एस सि
इकनमिक फार्मेसी
न० ७३, नेताजी सुभाष रोड,
कलकत्ता

सर्व-स्वत्व संरक्षित

मुद्रक—
श्रीब्रजेन्द्रचन्द्र भट्टाचार्य
इकनमिक प्रेस
न० २५, रायबगान स्ट्रीट, कलकत्ता

इ० पि० ११००—१२-११-४९

भूमिका

परमात्माकी दयासे होमियोपैथिक भेषज-लक्षण-संग्रह अर्थात् उस वृहत् मेटीरिया-मेडिकाका द्वितीय खण्ड आज प्रकाशित हो सका, जो वास्तवमें होमियोपैथिक चिकित्सा-जगतके लिये एक आदरणीय ग्रन्थ होना चाहिये। वास्तवमें यह कार्य अत्यन्त महान, अति व्यवसाध्य तथा असाधारण परिश्रम-सापेक्ष था। इसको लिखने, इसका मसाला तैयार करने तथा इसे इच्छानुरूप सजानेके लिये, जिस तरह गम्भीर गवेषणा, असाधारण होमियो-चिकित्सा-ज्ञान और कठोर अध्ययनशीलताकी आवश्यकता थी, उसी तरह इसकी जानकारीकी भी परम प्रयोजनीयता थी, कि किस स्थानपर, किस मनीषी लेखक द्वारा, किस तरह, कौन-सी ऐसी उपयोगी बात लिखी गई है, जो चिकित्साके लिये अनुपमेय लाभप्रद और शीर्ष-स्थानीय है। इसीलिये, इसमें देश-विदेशके महान मनीषी ग्रन्थकारोंके रचे हुए ग्रन्थ-महासागरका मन्थनकर उन चिकित्सोपयोगी अति लाभप्रद, त्वरित रोग-प्रशमनकारक और अत्युत्कृष्ट रोगी-प्रति-मूर्त्ति हृदय-पटलपर चित्रित करनेवाले उपदेशोंका संग्रह कर लिया गया है। यह सब महामायाकी महान लीला हैं, नहीं तो हमारी क्या सामर्थ्य थी, जो इस विराट कार्यको इस सरलता-पूर्वक सम्पन्न कर सकते।

इतना ही नहीं, इसमें उन लाभप्रद दवाओंकी भी मेटीरिया-मेडिका दे दी गयी है, **जो देशी अर्थात् इस भारतकी ही दवाओंसे ही बनी** हैं। देशमें ऐसी अमूल्य सामग्रियाँ हैं, जिनका होमियोपैथिक प्रयोग असाधारण लाभ दिखाता है।

नोजोड्स अर्थात् रोगज औषधियोंकी सूची, विस्तृत-विवरणपूर्ण मेटीरिया-मेडिकाके साथ अलग ही दी गई है। पाठक अब देखें और विचारें कि कितनी और कैसी सामग्री इस विराट-ग्रन्थमें भरी गयी है।

और रोग देखकर, उसके अनुसार दवा चुननेमें सहायता पहुँचानेके लिये अन्तमें वर्णानुक्रमिक रूपसे **चिकित्सा-निर्घण्ट** दिया गया है। इस तरह इस ग्रन्थको सर्वाङ्ग-पूर्ण, चिकित्सोपयोगी सर्व-सम्पत्ति-संवलित और सहज,

सरल तथा सुबोध भाषा द्वारा सर्व-हितकर बनानेकी चेष्टा की गयी है। अब फलाफल उस जगन्माताके ही हाथोंमें है।

क्या हम आशा करें, कि इसको अपनाकर जन-साधारण लोक-समाजका कल्याण करते हुए, हमारा उद्देश्य सफल करेंगे।

इकनमिक फार्मेसी,
कलकत्ता

भवदीय—
एम० भट्टाचार्य एण्ड को०

दूसरे संस्करणकी भूमिका

परमात्माकी कृपासे आज इस महान मिटेरिया-मेडिकाके दूसरे भागको द्वितीय संस्करण अपने सुहृद् पाठकोंके सामने रखते हुए बहुत ही आनन्द हो रहा है। इस परमोपयोगी ग्रन्थका हिन्दी-जगतमें जिस तरह क़दर और इससे जनसाधारणका जो कल्याण हो रहा है, यह सब जगदम्बाकी ही महान् कृपा है, जो इस कार्यमें हम सफलता प्राप्त करते आ रहे हैं।

वर्त्तमान परिस्थितिमें कागज वगैरहकी कठिनताकी वजहसे प्रकाशनको खर्च बहुत ही बढ़ गया है, जिससे इस ग्रन्थका कीमत बहुत ही ज्यादे होना चाहिये था, फिर भी अपने ग्राहकोंको सुविधा और इस ग्रन्थका आसानीसे जन-साधारणके पास पहुँच हो, इसी उद्देश्यसे इसके कीमतमें थोड़ी-सी वृद्धि की गई है।

आशा है, हमारे सुहृद् ग्राहक तथा पाठक-पाठिकाएँ इस परमोपयोगी ग्रन्थको अन्य ग्रन्थोंकी भाँति ही इसे भी अपनाकर और इससे फायदा उठा हमारा परिश्रम सार्थक और हमें उत्साहित करेंगे।

भवदीय—
एम० भट्टाचार्य एण्ड को०

द्वितीय खण्डको

औषध-सूची

औषध ... पृष्ठ
अल्मस फ्लूवा ... २४८६
असनिया बार्बेटा ... २४९६
अस्टिलेगो मेडिस ... २४९६
आक्सिजेनियम ... १७५५
आक्साइड्रोपिस लेम्बर्टाई १७५५
आक्सिडेण्ड्रन ... १७५४
आर्चिंटिनम ... १७३७
आर्टिका युरेन्स .. २४९३
आर्निथोगेलम अम्बेलेटम १७४१
आस्ट्रिया वर्जिनिका ... १७४८
इनेन्थि क्रोकेटा ... १६८३
इनोथेरा वायोनिस ... १६८७
इयुवा उर्सी ... २५००
इलेक्ट्रिसिटस ... २६८२
एक्स-रे ... २६८०
ऐन्थ्राक्सिनम ... २६११
ओपण्टिया ... १७३५
ओपियम ... १७२१
ओफोरिनम ... १७२१
ओलियम सेण्टेलम ... १७१०
ओलियम जेकोरिस ऐसेलाई १७०४
ओजोनम ... १७६०
ओनस्मोडियम ... १७१३
ओनिस्कस ऐसेलस ... १७१३
ओनोनिस ... १७१२

औषध ... पृष्ठ
ओरिगेनम ... १७३८
ओरियोडैफनी ... १७३७
ओवाइ गेलिनो पेलिकुग्ला १७५०
ओसिमम कैनम ... १६८२
ओस्मियम ... १७४२
ओलियम ऐनिमेल ... १६९५
ओलियैण्डर निरीयम ... १६९८
कमला ... १२०९
किनो ... १२१०
किसिनजेन ... १२११
कुएर्कस ... १८६५
कूसो ... १२११
कायोलिन .. १२०९
केरेका ... १२१०
केरोसेलिनम ... १२१०
क्रियोजोटम ... १२११
क्वैसिया ... १८६५
ज़िङ्कमं ... २५८४
ज़िङ्कम आयोडेटम ... २५८४
ज़िङ्कम आक्सिडेटम ... २६००
ज़िङ्कम ऐसेटिकम ... २५८२
ज़िङ्कम पिकरिकम ... २६०२
ज़िङ्कम फास्फोरिकम ... २६०१
ज़िङ्कमं वेलेरियानिकम २६०३
ज़िङ्कम ब्रोमेटम ... २५८३

औषध पृष्ठ
ज़िङ्कम म्युरियेटिकम … २६००
ज़िङ्कम सल्फ्युरिकम … २६०२
ज़िङ्कम सायेनेटम … २५८३
ज़िज़िया औरिया … २६०७
ज़िञ्जिबार अफिसिनेलिस २६०४
ज़ो … २५८२
ज़ैन्थकजाइलम … २५७१
टर्नैरा ऐफोडिसियाका २४८४
टिटानियम … २४७१
टियुक्रियम मेरम-वेरम २४३८
टियुक्रियम स्कोरोडानिया २४४१
टियुबर्कुलिनम … २४८३
टिलिया ट्राइफोलियेटा १९३१
टिलिया युरोपिया … २४६९
टुसिलेगो पेटोसाइटिस. २४८५
टुसिलेगो-फार्फोरा … २४८४
टुसिलेगो फ्रैग्रेन्स … २४८४
टेट्राडाइमाइट … २४३७
टेपलिज … २४३१
टेरिबिन्थिना … २४३२
टेलूरियम … २४२७
टैक्सस बैकेटा … २४२६
टैङ्गिनिया … २४११
टैनासिटम … २४१०
टैनिन . . २४११
टैबाकम … २४०१
टैमस … २४१०
टैराक्सेकम … २४१२
टैरेण्टियुला क्यूबेन्सिस … २४१६

औषध पृष्ठ
टैरेण्टियुला हिस्पैनिया २४१७
टोंगो … २४७१
टौक्सिकोफिस … २४७२
ट्राइफोलियम रिपेन्स … २४७५
ट्राइफोलियम प्रेट्रेन्सि २४७३
ट्राइमिथाइलेमिनम … २४७५
ट्राप्रियोलम … २४८३
ट्रायस्टियम … २४७९
ट्रेचिनस … २४७२
ट्रेडिस्कोण्टिया … २४८०
ट्राम्बिडियम … २४८१
ट्रिटिकम रिपेन्स … २४८०
ट्रिलियम पेण्डुलम … २४७६
डिफ्थीरिनम … २६२५
थाइरायोडियम … २४६८
थाइरायडिनम … २६७०
थिरिडियन … २४४६
थिवेटिया … २४५१
थियोसिनामिनम … २४४५
थीया चिनेन्सिस … २४४२
थूजा आक्सिडेण्टेलिस … २४५३
थैलियम … २४४२
थ्लैस्पि वर्सा पैस्टोरिस … २४५१
नक्स-मस्कोटा … १६४०
नक्स-वोमिका … १६५५
नर्कोटिनम … १५४९
नर्सिसस … १५४८
नाइट्रिक-स्पिरिटस डलसिस १६३३
नाइट्रोजेनम आक्सिजेनेटम १६३६

औषध पृष्ठ

निकटैन्थिस ... १६८१
निकोटिनस ... १६३०
निकोलम ... १६२२
निकोलम सल्फ्युरिकम १६३०
निम्फिया आडोरेटा ... १६८१
नूफर लूटियम ... १६३६
नेक्ड्रियानिनम ... १६२२
नेट्रम आयोडिटम ... १५७४
नेट्रम आर्सेनिकम ... १५४९
नेट्रम कार्बोनिकम ... १५५६
नेट्रम कैकोडाइलिकम ... १५५६
नेट्रम हाइपोक्लोरोसम या क्लोरेटम ... १५६९
नेट्रम नाइट्रोसम ... १५९७
नेट्रम नाइट्रिकम ... १५९५
नेट्रम म्यूरियैटिकम ... १५७५
नेट्रम फास्फोरिकम ... १५९८
नेट्रम लैक्टिकम ... १५७४
नेट्रम सल्फ्युरिकम ... १६०८
नेट्रम सल्फ्युरोसम ... १६२१
नेट्रम सिलिकोफ्लोरिकम १६०८
नेट्रम सेलिनिकम ... १६०५
नेट्रम सैलिसाइलिकम ... १६०६
नेजा ट्राइपूडियेन्स ... १५३७
नैफ्थेलिनम ... १५४६
नेबेलिस ... १५३६
नौषधावली ... २६००
पल्मोवल्पिस ... १९३८
पल्सेटिला नटेलियाना १९७३

औषध पृष्ठ

पल्सेटिला नाइग्रिकैन्स ... १९३८
पाइनस सिल्वेस्ट्रिस ... १८७१
पाइपर मेथिस्टिकम ... १८७३
पाइलोकार्पस . १८७१
पाइरस अमेरिकाना .. १९६४
पाइरिथ्रम पार्थिनियम ... १९६४
पाइरोजिनियम ... २६५८
पापुलस कैण्डिकैन्स .. १९१९
पापुलस ट्रेमुलायडस .. १९२०
पार्थिनियम ... १७९३
पालिनिया पिनेटा ... १७९४
पिक्रोटाक्सिनम ... १८७०
पिचि ... १८७०
पियोनिया आफिसिनैलिस ... १७६१
पेक्टन ... १७९६
पेटिवेरिया ... १७९९
पेट्रोलियम ... १७९९
पेट्रोसेलिनम ... १८११
पेडिकुलस ... १७९६
पेन्थोरम सिडायडिस ... १७९७
पेप्सिनम ... १७९८
पेसिटेरिया ... १७९२
पेलर्गोनियम रेनिफार्मी . १७९७
पेस्टिनम ... १७९८
पैस्टिनाका ... १७९४
पैनक्रियाटिनम ... १७७४
पैराफिनम ... १७७४
पैरिस क्वाड्रिफोलिया ... १७८५

औषध	पृष्ठ
पैरीरा ब्रावा …	१७८३
पैलेडियम …	१७६६
पैसिफ्लोरा इन्कार्नेटा	१७९५
पोडोफाइलम पेल्टेटम …	१९०२
पोलिपोरस पाइनिकोला	१९१९
पोलिगोनम पङ्क्टेटम …	१९१४
प्यूलेक्स …	१९३७
प्राइनस वर्टिसिलेटस …	१९२२
प्राइम्यूला आवकाङ्का …	१९२०
प्राइम्यूला वल्गेरिस …	१९२१
प्राइम्यूला वेरिस …	१९२१
प्रूनस पेडस …	१९२२
प्रूनस वर्जिनियेना …	१९३०
प्रूनस स्पाइनोसा …	१९२३
प्लम्बम मेटालिकम …	१८९२
प्लम्बेगो …	१८९२
प्लेक्ट्रान्थस …	१८९१
प्लैटिनम …	१८८१
प्लैटिनम म्यूरैटिकम …	१८९०
प्लैटिनह म्यूरैटिकम नेट्रोनेटम …	१८९०
प्लैटेनस …	१८९१
प्लैण्टेगो मेजोर …	१८७६
फाइटोलैक्का …	१८५९
फाइसस्टिग्मा …	१८५०
फाइसैलिया …	१८५०
फास्फोरस …	१८२५
फास्फोरस हाइड्रोजिनेटस	१८४९
फास्फोरस म्यूरियेटिकस	१८४९
फिनासिटिनम …	१८२३
फेलस इम्प्युडिकस …	१८२३
फेलैण्ड्रियम …	१८१६
फेसियोलस नेनस …	१८१४
फ्लोरिजिनम …	१८२४
वेसिलिनम …	२६१५
भारतीय औषधियाँ …	२६८४
मर्क्युरियस …	१४४८
मर्क्युरियस-बिन आइयोडेटस-कम केलि-आयोडेटम	१४४७
मर्क्युरियस ऐसेटिकम …	१४४७
मर्क्युरियस कोरोसाइवस	१४६९
मर्क्युरियस डलसिस …	१४७९
मर्क्युरियस नाइट्रिकस	१४८२
मर्क्युरियस पेरेनिस …	१४४२
मर्क्युरियस प्रिसिपिटेटस-ऐल्बस …	१४८४
मर्क्युरियस प्रिसिपिटेटस रूब्रर	१४८३
मर्क्युरियस प्रोटो-आयोडेटस	१४८४
मर्क्युरियस-बिन आयोडेटस	१४६७
मर्क्युरियस सल्फ्युरिकम	१४९०
मर्क्युरियस सल्फोसायेनेटस	१४९३
मर्क्युरियस सायानेटस	१४७७
मस्कस …	१५२०
माइगेल लेसिडोरा …	१५२७
माइमोसा …	१५११
माइयोसोटिस …	१५२९
माइरिका सेरिफेरा …	१५२९
माइरिस्टिका सेबिफेरा …	१५३४

औषध		पृष्ठ
मार्टस कम्युनिस	...	१५३४
मार्फिनम	...	१५१३
मिचेला रिपेन्स	...	१५११
मिथिलिन ब्लू	...	१४९३
मिनियेन्थिस ट्राइफोलियेटा		१४३४
मिफाइटिस प्युटोरियस		१४३८
मिलासटोमा	..	१४२५
मिलिफोलियम	...	१५०४
मेडुसा	...	१४२३
मेडोरिनम	...	२६७०
मेजेरियम	...	१४९४
मेनिस पर्सस	...	१४३०
मेन्था पुलिजियम	...	१४३३
मेन्था पाइपरिटा	...	१४३१
मेलेण्ड्रनम	...	२६३६
मेलिलोटस	...	१४२५
मैग्नेटिस-पोलस-आर्कटिकम		१४०३
मैग्नेटिस पोलि-ऐम्बो	...	१४०३
मैग्नेटिस पोलस आस्ट्रेलिस		१४०४
मैग्नेटिस पोलस आस्ट्रेलिस		२६८३
मैग्नेटिस पोलाइ एम्बो		२६८२
मैग्नेलिया ग्रेण्डिफलोरा		१४०५
मैग्नोलिया ग्लोको	...	१४०४
मैग्नेशिया कार्बोनिका		१३७२
मैग्नेशिया फास्फोरिका		१३९०
मैग्नेशिया म्यूरियेटिका		१३८१
मैग्नेशिया सल्फ्युरिका		१३९८
मैङ्गेनम सल्फ्युरिकम	...	१४२३
मैङ्गेनम आक्सिडेटम नेटिवम		१४२३

औषध		पृष्ठ
मैङ्गेनम म्यूरियेटिकम	...	१४२२
मैंगेनम ऐसेटिकम	...	१४१६
मैटहियोला-ग्रीसा	...	१४२४
मैण्ड्रागोरा	...	१४१५
मैन्सिनेला	...	१४१०
मैलिटैग्रिनम	...	१४२९
मैलेरिया आफिसिनेलिस		१४०८
मोमोर्डिका	...	१५१२
म्यूकुना यूरेन्स	...	१५१८
म्यूरेक्स पर्पुरिया	...	१५२४
म्यूसा	...	१५१९
युक्का फिलेमेण्टोसा	...	२५७९
युपस टियुटे	...	२४८६
युरिनम	...	२४९३
युरिकम एसिडम	...	२४९३
युरिया	...	२४९२
युरेनियम नाइट्रिकम	...	२४९०
योहिम्बिनम	...	२५७८
रसुला	..	२०७१
रस ऐरोमैटिका	...	२०१५
रस-टाक्सिकोड्रेण्ड्रन	...	२०२९
रस ग्लेब्रा	...	२०१६
रस डाइवर्सिलोबा	...	२०१६
रस रेडिकेन्स	...	२०१८
रस विनिनेटा	...	२०५०
रियुम	...	१९९९
रियुमेक्स ऐसिटोसा	...	२०६३
रियुमेक्स क्रिसपस	...	२०६४
रिसिनस कम्युनिस	...	२०५६

औषध	पृष्ठ
रूटा ग्रैवियोलेन्स …	२०७२
रूबिया टिंटोरियम …	२०६३
रैटान्हिया …	१९९१
रैनानकुलस एक्रिस …	१९६६
रैनानकुलस ग्लैसियालिस	१९७४
रैनानकुलस फिकारिया	१९७३
रैनानकुलस फ्लैमुला …	१९७३
रैनानकुलस बलबोसस	१९६६
रैनानकुलस रिपेन्स …	१९७४
रैनानकुलस स्क्लिरिटस	१९७४
रैफिनस सैटाइवस …	१९७९
रैमनस कैथर्टिकस …	१९९८
रैमनस फ्रैंगुला …	१९९९
रोग-चिकित्सा निर्घंण्ट …	२७१६
रोज सेरिनस …	२०६३
रोजा केनिना …	२०६२
रोज्ञा डेमिस्किना …	२०६२
रोडियम आक्सिडेटम नाइट्रिकम …	२००६
रोडोडेण्ड्रन …	२००७
रोबिनिया …	२०५८
लाइकोपर्सिकम …	१३४२
लाइकोपोडियम क्लैवेटम	१३४६
लाइकोपस वर्जिनिकस	१३६६
लाइसिडिनम …	१३७२
लिडम पैलस्टर …	१२८८
लिथियम कार्बोनिकम …	१३१४
लिथियम बेञ्जोयिकम …	१३१३
लिथियम ब्रोमिटम …	१३१३

औषध	पृष्ठ
लिथियम म्यूरियैटिकम	१३२०
लिथियम लैक्टिकम …	१३१९
लिनम इयुसिटेटिसिमम	१३१२
लिनम कैथर्टिकम …	१३११
लिनारिया ..	१३११
लिप-स्प्रिञ्ज …	१३१३
लिप्पिया मेक्सिकाना …	१३१२
लिमुलस …	१३१०
लियेट्रिस स्पाइकेटा …	१३०२
लियोनरस कार्टियाका …	१२९७
लिलियम टाइग्रिनम ..	१३०२
लूना …	१३३९
लेपिडियम बोनारियेन्स	१२९८
लेप्टेण्ड्रा या वेरोनिका-वर्जिनिका …	१२९८
लेबुर्नम …	१२२३
लेमियम ऐल्बम …	१२७५
लेम्ना माइनर …	१२९६
लेविको …	१३०१
लैक-कैनाइनम …	१२२४
लैक-फेलिनम …	१२३४
लैंक वैक्सिनम कोगुलेटम	१२३४
लैक-वैक्सिनम डिफ्लोरेटम	१२३५
लैकेसिस …	१२४२
लैक्टिस-वैक्सिनाई-फ्लास	१२६५
लैक्टूका वाइरोसा …	१२६६
लैचनेंथिस टिङ्कटोरिया	१२६०
लैट्रोडेक्टस कैटिपो …	१२८१
लैट्रोडेक्टस मैक्टेन्स …	१२८२

औषध ... पृष्ठ
लथाइरस सैटाइवस ... १२७९
लेपसाना कम्यूनिस ... १२७९
लेपिस ऐल्बस ... १२७७
लेपिथम ... ११७७
लैसरटा ... १२४२
लोनिसेरा जाइलोस्टियम १३३९
लोनिसेरा पैरिक्लाइमिनम १३३८
लोबेलिया इन्फ्लेटा ... १३२१
लोबेलिया एरिनस ... १३२१
लोबेलिया कार्डिनेलिस १३२०
लोबेलिया डार्टमेन्ना ... १३२१
लोबेलिया पपुर्रेसेन्स ... १३३०
लोबेलिया सिफिलिटिका
या सिरियुलिया ... १३३१
लोरोसिरेसस ... १२८२
लोलियम टिम्यूलेण्टम ... १३३६
लूप्यूलस ... १३४०
वर्बिना हेस्टेटा ... २५४१
वाइथिया ... २५६९
वाइपेरा ... २५६३
वाइल्ड बेड ... २५६८
वाइबर्नम ओप्युलस ... २५४३
वाइबर्नम टिनस ... २५५०
वाइबर्नम प्रुनिफोलियम २५४९
वार्बेस्कम थैप्सस ... २५३७
वायोला ओडोरेटा ... २५५४
वायोला ट्राइकोलर ... २५५७
विङ्का माइनर ... २५५१
विचि ... २५५०

औषध ... पृष्ठ
विरेङ्गिनम ... २५०९
विस्कम ऐल्बम ... २५६५
विस्लो ... २५५१
वीसबेडेन ... २५६८
वेरेट्रम ऐल्बम ... २५१०
वेरेट्रम नाइग्रम ... २५२८
वेरेट्रम विरिडि ... २५२८
वेनाडियम ... २५०९
वेस्पा ... २५४२
वैक्सिनिनम ... २६७८
वैक्सिनियम मार्टिलस ... २५३६
वैरियोलिनम ... २६७५
वैलेरियाना ... २५०१
वैसिकेरिया ... २५४१
सकसिनम ... २३६९
सम्बल ... २३९६
सक्स ... २२३८
सल्फर ... २३७१
सल्फर आयोडेटम ... २३९४
सल्फर हाइड्रोजेनिसेटम २३९४
सल्फर टेरिबिन्थना २३९५
सल्फोनैल ... २३६९
सल्फुररोमस एसिडम २३९५
साइलिसिया .. २२३८
सार्सापैरिला ... २१६१
सिकेलि कार्न्यूटम ... २१७९
सिजिजियम जैम्बोलिनम २४०१
सिनिग्रियो आरियस ... २१९९
सिनिग्रियो जैकोबिया २२०५

औषध	पृष्ठ
सिनापिस ऐल्बा	२२६१
सिनेपिस नाइग्रा	२२६१
सिपिया	२२१५
सिफिलिनम	२६६४
सिमारुबा	२३४२
सिम्फाइटम	२४००
सिम्फोरिकार्पस	२३८८
सियम	२२६५
सिलफियम	२२६०
सिलिका मेरिना	२२५८
सिलिका या साइलिसिया	२२३८
सेना	२२१४
सेनेगा	२२०५
सेप्टिसिमिनम	२२३८
सेप्सिनम	२२३७
सेम्परवाइवम-टेक्टोरम	२१९८
सेलिनियम	२१९१
सेलोल	२१११
सेलूरफर	२११२
सैक्काराम आफिसिनेलि	२१०९
सैक्काराम लैक्टिस	२१०८
सैंगुइनेरिया कैनाडेन्सिस	२११९
सैबाइना	२१००
सैबाडिला	२०८०
सैबाल सेरुलेटा	२०९३
सैम्बुकस	२११३
सैलाइवा स्कोलेरेटा	२११३
सैलिक्स नाइग्रा	२११०
सैलिक्स मालिसिमा	२११०
सैलिक्स पर्पुरिया	२१११
सैलाइवा	२११२
सैलाइवा स्कोलेरेटा	२११३
सैलिसिनम	२१०९
सैनिक्युला	२१३८
सैंगुइसुगा	२१३८
सैंग्विनेरिनम टार्टरिकम	२१३७
सैंग्विनेरिनम नाइट्रिकम	२१३२
सैंटोनाइनम	२१५७
सैण्टेलम	२१५७
सैपोनिनम	२१५८
सैरासिनिया पर्पुरिया	२१५९
सोरिनम	२६५०
सोल	२२६६
सोलिडेगो	२२७८
सोलेनम एरिबेण्टा	२२६७
सोलेनम ओलिरेसियम	२२७५
सोलेनम कैरोलिनेन्स	२२६८
सोलेनम टियुबरोसम	२२७६
सोलेनम टियुबरोसम इग्रोटैन्स	२२७६
सोलेनम नाइग्रम	२२६९
सोलेनम सियोडो कैप्सिकम	२२७६
सोलेनम मैमोसम	२२६८
सोलेनिनम	२२६७
स्काइनस	२१७४
स्कार्पियो	२१७६
स्कार्लेटिनम	२३८६
स्क्राफुलारिया	२१७६
स्किरिनम	२१७५

औषध पृष्ठ
स्किला मैरिटाइमा … २१६८
स्कूकम चक … २२६५
स्कुटेलेरिया लेटेरिफोलिया २१७७
स्कैमोनियम … २१६८
स्क्लोपेण्ड्रा … २१७५
स्टिक्टा पल्मोनेरिया … २३३३
स्टिगमेटा मेइडिस … २३३७
स्टिलिञ्जिया सिलवैटिका २३३८
स्टेलारिया मिडिया २३३१
स्टैकिस वेटोनिका … २३०५
स्टैनम … २३०५
स्टैनम आयोडेटम … २३१६
स्टैफिसेग्रिया … २३१७
स्ट्राण्टियम ब्रोमेटम … २३५९
स्ट्रान्शियाना कार्बोनिका २३५४
स्ट्रान्शियम नाइट्रिकम २३६०
स्ट्रिकनिनम … २३६२
स्ट्रैमोनियम … २३४२
स्ट्रोफैन्थस हिस्पिडस … २३६०
स्पर्मिनम … २२७७
स्पञ्जिया टोस्टा … २२९४
स्पाइजिलिया ऐन्थेलमिया २२७८
स्पाइजिलिया मेरिलैण्डिका २२८९
स्पाइरिया अल्मेरिया २२८९
स्पाइरैन्थिस … २२९०
स्फिंगुरस … २२७७
स्लैग … २२६६
हाइड्रोफोबिनम या लिसिन २६३०
हिपोज़िनियम … २६२७
औषध पृष्ठ

नौषधावली

ऐन्थ्राक्सिनम … २६११
डिफथीरिनम … २६२५
थाइरायडिनम … २६७०
पाइरोजिनियम … २६५८
वैसिलिनम टियुवर्क्युलिनम २६१५
मेडोरिनम … २६३९
मेलेण्ड्रिनम … २६३६
वैक्सिनिनम … २६७८
वैरियोलिनम … २६७५
सिफिलिनम … २६६४
सोरिनम … २६५०
हिपोजिनिनम … २६२७
हाइड्रोफोबिनम या लिसिन २६३०

भारतीय औषधियाँ

अर्जुन … २६८८
अर्हर पत्र … २६९०
अश्वगन्धा … २६९०
आमलकी … २६८८
इगल फोलिया … २६८६
इगल मार्मेलस … २६८८
इयुपेटोरियम आयापाना २७०१
एकिरान्थेस एस्पेरा २६८६
एकाफिला इण्डिका … ९
एनहाइड्रो … २७०१
ऐज़ाडिरेक्टा इण्डिका २६९२
ऐटिस्टा इण्डिका … २६९१

औषध	पृष्ठ
ऐटिस्टा रैडिक्स …	२६८२
ऐब्रोमा आगस्टा-फोलिया	२६८४
ऐब्रोमा आगस्टा रैडिक्स	२६८५
ऐम्बेलिया राइबस …	२७००
ओल्डेनलैण्डिया …	२७१०
ओसिमम रैडिक्स …	२७१०
ओसिमम ग्रैटिसिमम …	२७०९
ओसिमम सैंक्टम …	२७०९
कालमेघ …	२७०५
कूर्चि …	२७०६
कैलोट्रोपिस जाइगैण्टिया	४४५; २६९७
कैसिया सैफोरा …	२६९७
कैलेण्डुला आफिसिनैलिस	४४२
क्लोरोडेण्ड्रन …	२६९८
चिराता …	२६९८
जनोशिया अशोका …	२७०३
जस्टिशिया अधाटोडा …	२७०४
जस्टिशिया रूब्रम …	२७०५
टाइनोस्पोरा कार्डिफोलिया	२७१२
टाइफोफेब्रिनम …	२७१४
टिरोकार्पस सैण्टेलिनम …	२७११
ट्राइकोसैन्थ डायोइका …	२७१३
ट्रिब्युलस टैरिस्ट्रिस …	२७१३
डेस्मोडियम गैंजेरिकम …	२७००
द्रोण …	२७०६
निक्टैन्थिस …	२७०८
नैट्रम-म्यूरर-विट …	२७०८
पिक्रोरिजा …	२७१०
फिकस इण्डिका …	२७०२
माइका …	२७०७
मूथा …	२७०८
बहेरा …	२६९३
ब्राइयोफाइलम कैलिसिनम	२६९५
ब्लूमिया ओडोरेटा …	२६९४
ब्लैटा ओरियेण्टेलिस · ·	३४९
वर्नोनिया ऐन्थालमिण्टिका	२७१४
वाइटेक्स निगण्डो …	२७१५
बेरोविया रिपेन्स …	२६९५
बेरोविया डिफियुजा …	२६९४
साइनोडन या दूर्वा …	२६९९
साइपेरस …	२७००
सिफालैण्ड्रा इण्डिका	२६९७
सिमूल …	२७११
सिसलपिनिया वाण्डुसेला	२६९६
सोलेनम जैन्थाकार्पास	२७१२
लूफा ऐमेरा …	२७०७
हरीतकी …	२७०२
हाइग्रोफिला स्पाइनोसा	२७०३

कमला

(KAMALA)

दूसरा नाम।—क्रोटोन-काक्सिनियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और अरिष्ट।

उपयोगिता और आभास।—आधासे २ ड्राम मात्रामें प्रयोग करनेपर फीता क्रिमिमें बहुत लाभ करता है। त्वचामें असह्य जलन और खुजलीके लक्षणमें इसका विचूर्ण गीले कपड़ेमें डालकर बाहरी प्रयोग करनेपर बहुत लाभ होता है।

शक्ति।—मूल अरिष्ट और विचूर्ण।

कायोलिन

(KAOLIN)

दूसरा नाम।—चायना-क्ले, ऐल्युमिना, सिलिकेटा, पार्सिलियन-क्लैक।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—श्वास-यंत्रकी बीमारीमें ही इसका अधिक व्यवहार प्रसिद्ध है। बच्चोंकी कष्टकर खाँसीमें भी श्वासकष्ट, डिफ्थीरिया वायुनलीभुज-प्रदाह, पीली आभा लिये बलगम निकलना वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

सीसेके विषके दोषसे पैदा हुए उपसर्ग सब दबानेमें भी इसका व्यवहार होता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—एलम, एकोन, आयोड, हिपर, कैलि-बाई, साइलि, स्पञ्जि।

शक्ति।—निम्न-शक्तिका विचूर्ण।

केरेका

(KARAKA)

दूसरा नाम।—काटिनो-कार्पस—लिविसिरस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे फलसे विचूर्ण या अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—पक्षाघात रोगमें, उत्तेजनाकी अनुभूतिका अभाव, आक्षेप, हाथ-पैरोंका फड़कना वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

केरोसेलिनम

(KEROSOLENUM)

दूसरा नाम।—केरोसिन तैल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सुरासारमें गलाकर तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—बोध-शक्ति या चैतन्य लोप, आक्षेप, बहुत आतङ्क और अट्टहासकर हँसनेके लक्षणमें लाभदायक है। इसके रोग लक्षण खुली हवामें बढ़ जाते हैं।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—पेट्रोलियम, पैराफिन, बेञ्जिनम।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

किनो

(KINO)

एङ्गोफोरा और किनो एक ही श्रेणीके उद्भिदसे तैयार होते हैं और इनके लक्षणमें भी कोई विशेष प्रभेद नहीं है।

किसिनजेन

(KISSINGEN)

परिचय ।—वेरोवियाके अन्तर्गत किसिञ्जेन-प्रपातका पानी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—तरल आकारमें क्रम तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—अण्डलाल मिला पेशाब, कब्जियत, उदरामय, अर्श और वात रोगमें दोपहरके पहले, रातमें जागनेपर, भोजनके समय और ऋतु-स्रावके समय रोग-लक्षणोंका बढ़ना प्रभृति लक्षणोंमें यह लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—नेट्रम-म्यूर, ऐण्टिम-क्रूड, आर्टिका-द्यु, फेरम-पिक्रि ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

कूसो

(KOUSSO)

दूसरा नाम ।—ब्रेइरा एन्थिलमिण्टिका ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फूलसे अरिष्ट या क्वाथके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—क्रिमि रोगमें इसका क्वाथ बहुत लाभदायक है । इसकी निम्न-शक्तिके सेवनसे गर्भ-स्राव होना रुकता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—कुकुर-विटा, ग्रैनेटा, फिलिक्स-मास ।

क्रियोजोटम

(KREOSOTUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—रेक्टिफायड स्पिरिटमें द्रव या साल्यूशन तैयार हुआ करता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—वयोव्रण (मुँहासा); रजःस्राव; कैन्सर; दूषित फोड़ा; शिशु-विसूचिका;

जन्मगत उपदंश-दोष ; कब्जियत ; क्षय-कास ; दाँत निकलना ; अतिसार ; कानकी बीमारियाँ ; अनजानमें पेशाब होना ; डकार ; नाना प्रकारके उद्भेद ; भूख मन्द पड़ जाना ; जीभका प्रदाह ; रक्तस्राव ; बवासीर ; रक्तस्रावी धातु ; दाद ; हिस्टीरियासे उत्पन्न वमन ; श्वेत-प्रदर ; ओष्ठाधरका कैन्सर ; कुष्ठ-व्याधि ; आर्त्तवका विकार ; स्नायुशूल ; डिम्बाधारकी बीमारियाँ ; प्रोस्टेटिक-ग्रन्थिकी उत्तेजना ; गर्भावस्थामें वमन ; आमवात ; समुद्र या जहाज़में चढ़नेपर वमन ; उपदंश ; उपदंशसे उत्पन्न बहरापन ; दाँतोंमें कीड़े लगना ; दन्तशूल ; जखम ; पेशाबका वेग धारण करनेकी क्षमताका न रहना ; जरायुकी बीमारियाँ ; वमन ; हूप खाँसी ; जम्हाई इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—खूनका स्राव और सड़ना पैदा होनेके साथ जनन और मूत्रेन्द्रिय आदिके रोगोंमें यह बहुत उपयोगी है । रोगी हमेशा बहुत बेचैनी प्रकट किया करता है और कहता है, कि उसे इतनी जलन मालूम होती है, माना आग छू गयी है । मुखमण्डल और नाकमें बहुत जलन पैदा करनेवाला एक तरहका कुष्ठ-रोग ; शक्तिका न रहना और पाकाशयकी बीमारी मिली विसूचिकाकी तरह अवस्था या बच्चोंकी विसूचिकामें और जरायु-प्रदाह, जरायु-ग्रीवाकी त्वचाका क्षय हो जाना, जरायुके बहुत तरहके दुर्लक्षण-भरे रोग आदिमें फलगोभीकी तरह उपमांससे उत्पन्न प्रदाह और जलन, सड़ना और त्वचा क्षय-प्रवणताके साथ योनिमें खुजली वगैरह स्त्री-जननेन्द्रियकी बीमारीमें इसकी विशेष उपयोगिता दिखाई दिया करती है । काले केश और काली आँखवाले मनुष्य, दुबले, जिनके अवयव समान नहीं हैं, शीर्ण, बहुत वृद्धिशील और उम्रकी अपेक्षा अधिक लम्बी-चौड़ी रमणियोंपर इसकी क्रिया बहुत उत्तम होती है । देखनेमें बुड्ढेकी तरह, सिकुड़ी हुई त्वचा ; गाँठें फूली या कच्छु-विषाक्त धातुवाले बच्चे, जल्दी-जल्दी दुबले होते जानेवाले और स्त्रियोंकी वयःसन्धि कालकी बीमारी वगैरहमें यह बहुत फायदा करता है । इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—(१) खाँसते-खाँसते ऐसा मालूम होता है, मानो वक्षोस्थि भीतरकी ओर टेढ़ी होकर टूट जायगी । (२) जल्दी-जल्दी ध्वंस होनेवाले दाँत, दाँत सब काले, उनसे चिप्पड़ उजड़ा करता है और मसूढ़ेसे सहजमें ही खून निकला करता है । (३) पेशाब रोकनेकी शक्तिका न रहना ; केवल सोकर पेशाब कर सकता है ; पेशाब बहुत ज्यादा और फीके रङ्गका ; बहुत वेग—तेजीसे न जानेपर बिछावनमें ही पेशाब हो जाता है ;

पहली नींदमें ही पेशाब हो जाता है; पर बच्चेकी वह नींद सहजमें ही नहीं खुलती। (४) बहुत ही असमयमें ऋतु हो जाता है और दर्द बहुत दिनोंतक स्थायी रहता है; रजःस्रावके समय दर्द, पर रजःस्रावके बाद दर्द और भी बढ़ जाता है। सोनेपर स्राव हुआ करता है; परन्तु उठ बैठने या चलनेपर रुक जाता है; ठण्डे पतले पदार्थ पीनेपर ऋतु-स्राव घट जाता है; स्राव होता-होता रुक जाता है और इसके बाद फिर आरम्भ होता है। ऋतुके बाद त्वचाको क्षय करनेवाला प्रदरका स्राव आरम्भ हो जाता है, पहले गाढ़ा भूरे रङ्गका और गाढ़ा, इसके बाद पीले रङ्गका स्राव होता है; तलपेटसे योनिके भीतरतक सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है—चलनेपर घटना और सोनेपर बढ़ना। रमणके बाद खूनका स्राव। (५) प्रदर,—स्राव कषाय, त्वचाको क्षय करनेवाला, आर्त्तव-स्रावके बाद और पहले होता है; वस्त्र आदिमें लगनेपर पीला दाग पड़ता है और सूखनेपर कड़कड़ करता है, पीले शस्य आदिकी तरह गन्ध मिला। (६) योनिके भीतरी और बाहरी प्रदेशमें त्वचाको क्षय करनेवाली भयानक खुजली पैदा हो जाती है। (७) आर्त्तव-स्रावके पहले और समय सरमें प्रचण्ड दर्द पैदा हो जाता है। (८) पेशाबके समय और बाद बहुत जलन मालूम होती है। (९) आर्त्तव-स्रावके पहले और समय बहरापनके साथ कानमें गरज और घड़घड़ाहट सुन पड़ा करती है। (१०) श्लैष्मिक-झिल्ली आदिसे सड़ी गन्ध-भरा, त्वचाको क्षय करनेवाला रस आदिकी तरह श्लेष्माका स्राव होता है, उसके साथ ही जीवनी शक्तिमें बहुत सुस्ती पैदा हो जाती है। (११) सन्ध्याके समय शरीरमें खुजली बहुत अधिक बढ़ जाती है और इसी वजहसे रोगी उन्मत्तकी तरह हो पड़ता है। (१२) गर्भावस्थामें वमन—मीठे स्वादका पानीकी तरह पदार्थ के होता है और लार बहा करती है; विसूचिकाकी तरह वमन, दाँत बड़ी तकलीफ़से निकलना; भयानक बदबूदार मल निकलनेके साथ लगातार वमन, पाकस्थलीमें दुर्लक्षण मिले रोगोंके कारण वमन। (१३) उदरामय,—मल अजीर्ण, सड़ी गन्ध-भरा, गाढ़ा भूरे रङ्गका—मिचली, वमन, बेचैनी, इसके साथ ही उठनेकी शक्तिका न रहना। (१४) खुजलाहटकी वजहसे चर्मोद्भेद आदि—खुजलानेपर भयानक कुटकुटी और जलन होती है। (१५) खून बहनेवाला धातु, सामान्य जखम आदिसे भी लगातार खून निकला करता है; नाकसे खूनका स्राव, रक्तकास और बहुमूत्र; आन्त्रिक ज्वराधिकारमें खूनका स्राव

और गहरी सुस्ती ; दाँत उखड़वानेपर दाँतकी जड़से गहरे लाल रङ्गका खूनका स्राव।

लक्षणावली

मन।—मस्तिष्ककी जड़ता और शून्य दृष्टि। बार-बार यह भूल जाता है कि क्या सोच रहा था। रोगिनी मनमें समझती है, कि उसे कोई भी बीमारी नहीं है (ओपि), सड़नके लक्षणके साथ प्रसवके बादके जरायु प्रदाहमें रोगिनीका चित्त विकार। सङ्गीत आदि सुननेपर रुलाई आ जाना (ग्रेफा, थूजा)। चित्त दुःखके भारसे भरा और रोदन परायणताका लक्षण, मौतकी कामना करती है ; आराम होनेके सम्बन्धमें निराश। बार-बार अन्यमनस्क हो जाती है।

माथा।—सरमें चक्कर आना, सवेरे और निर्मल वायु लगनेपर मतवालेकी तरह ढलमलाया करता है—बिना किसी चीज़को पकड़े स्थिर होकर खड़ा नहीं हो सकता—घरमें प्रवेश करनेपर अपसारित हो जाता है (कैलि-कार्ब)। सरमें हू-हू (ऐमोन-म्यूर, कार्बो-वेज, फेरम, मानो एक प्रचण्ड बवण्डर बह रहा है—कार्बो-ऐन)। शराब पीनेपर सरमें दर्द (नक्स, स्पञ्जि, ऐगार)। सरमें दर्द—ललाटदेशमें भीतरसे दबानेकी तरह दर्द, मानो मस्तिष्क ललाटको छेदकर बाहर निकलना चाहता है। माथेके बाएँ पार्श्वसे ललाटदेशतक टपक और आघात करनेवाला दर्द। सरके पिछले भागका दर्द, बहुत दर्द और उस स्थानका स्पर्श न किया जाना। ललाटकी पुरानी सामयिक शिरो-वेदना, बेधनेकी तरह दर्द, मूर्द्धा देश जगह-जगह फूल उठता है (कैलि आयोडेट)। माथेमें गड़बड़ी मालूम होना मानो एक टुकड़ा काठ अड़ा हुआ है (आर्जेण्ट-नाई, रास, अरम-मेट)। औंघाईके साथ सर-दर्द (पर नींद नहीं आती—बेल) ; सरके पिछले भागमें भारके साथ सर-दर्द, माथा पीछेकी ओर झूल पड़ता है—ऐसा ही मालूम होना (बेल, लैके, ओपि)। कभी-कभी सवेरे नींद खुलनेपर सरमें दर्द पैदा हो जाता है (ब्राई, लैके, नेट्र-म्यूर, नक्स फास, प्लेट ; नींद खुलते ही सरमें दर्द मालूम होता है, पर शय्यासे उठनेपर आराम हो जाता है—म्यूरेक्स, ऐसिड-नाई)। मूर्द्धाकी त्वचामें स्पर्श सहन न होना—केश झाड़नेके समय या चोटी करनेके समय दर्द होता है (बेल, ब्राई, सिना, रास, साइलि, सल्फ)। केश उड़ जाते हैं। बहुत ज्यादा

परिमाणमें रूसी इकट्ठी होकर सब जगह ऊँची उठ जाती हैं और वह सहजमें ही निकल जाती है। शराबियोंकी भाँति ललाटमें बहुत बड़ा व्रण पैदा हो जाना (ऐण्टि-क्रूड)।

आँख।—अस्पष्ट दृष्टि, मानो कोई महीन छेदवाले वस्तुके भीतरसे देख रहा है (कैल्के, कास्टि, ड्रोसे, डालका, नैट्र-मूर, सिपि, सल्फ); मानो आँखके सामने कुछ उड़ रहा है, ऐसा मालूम होना और बार-बार बाध्य होकर आँख मलना (मलनेपर घटना—क्रोकस, पल्स)। ज्योतिहीन, निर्बोधकी तरह टकटकी लगी, आँख लाल और भरी, मानो न जाने कितना रोया है—क्रोकस)। दोनों आँखें प्रायः पानीसे भरी रहती हैं (क्रोकस, टियुक्रि); आँख और पलकोंमें हमेशा करकराहट मालूम होती है; खुजली मालूम होती और आँख रगड़नेपर बढ़ जाती है (रगड़नेपर खुजलाहट और काँटा गड़नेकी तरह मालूम होना—कैल्मिया, आँख रगड़े बिना रह नहीं सकता—जिम्नोक्ल, मेजर)। दाहिनी आँखकी योजक त्वचाके ऊपर काला दाग पड़ना। आँखमें त्वचा क्षयके साथ गर्मी मालूम होना। जलन करनेवाली गर्मी (आर्जेण्ट-नाई, कैमो) और आँसू भर आना; चमकीली रोशनीमें बढ़ना; गर्म और त्वचा क्षय करनेवाला आँसुओंका स्राव (युफ्रे, मर्क-कोर, नैट्र-मूर, पल्स); चमकीली रोशनीमें रगड़नेपर और सवेरे बढ़ जाता है। आँख गड़हेमें धँसी और नीले घेरेसे घिरी। रातमें पलकें सट जाती हैं (इयुफ्रे, ग्रैफा, हिप, नैट्र-मूर, पल्स)। आँखका काँपना, किसी तरह भी बन्द नहीं होता (कोडोया)।

कान।—कानमें लगातार भों-भों शब्द। ऋतु-स्रावके पहले और समय कानमें आवाज़ और श्रवण-शक्तिका घट जाना। कौलिक उपदंश विषकी वजहसे बहरापन और उसके साथ ही सरमें चक्कर आना (नैट्र, सैलिसाई)। कानमें सूक्ष्म-शलाका बेधनेकी तरह दर्द (कैमो, सिङ्की, पल्स, सल्फ)। बाएँ कर्ण-विवरमें व्रण निकलना और इसी कारणसे समूचे कानके बाहरी अंशमें उत्ताप, जलन, सूजन और लाली आ जाती है और यही कारण है कि गर्दनके बायें पार्श्वमें, बाएँ कन्धेमें और बाईं बाँहमें अकड़न और दर्द मालूम होता है। कानमें तर फुन्सियाँ निकलना, गलेकी गांठें फूल उठना और चेहरा नीला और धुमैला मालूम होना।

नाक।—अरुचिके साथ नाकके सामने हमेशा मानो एक बदबू-सी आ रही है, ऐसा अनुभव होना; सवेरे नींद खुलनेके समय नाकमें ऐसा मालूम

होना मानो एक दुर्गन्ध-सी प्रवेश कर रही है। ललाटमें भार और टपकके साथ नाकसे खून जाना (बेल और मिलिलोट); दोनों रन्ध्रोंसे पतला चमकीला लाल रङ्गका या गाढ़ा काला खून निकलता है। सर्दी या प्रतिश्याय, सूखे या श्लेष्माका स्राव, इसके साथ ही सवेरे बार-बार छींक आना; वृद्धोंकी पुरानी सर्दी। दाहिने नासा-पुटके ऊपर उपझिल्ली या कर्कट रोग। बाईं नाकका कुष्ठकी तरह रोग।

मुखमण्डल।—रोग और तकलीफ़ प्रकट करनेवाला। बच्चा बुड्ढेकी तरह दिखाई देता है। मूर्त्ति पीले रङ्गको उजली, पीली आभा लिये, ग्रीवाग्रन्थिका फूलना; उजले और फूले हुए गाल; ताँबेकी आभा लिये ठण्डा चेहरा, फीका, नीली आभा मिला, विशेषकर कनपटी या शंखदेश और नाक तथा ओंठके चारों ओर ऐसा ही मालूम होता है। रह-रहकर चेहरेमें गर्मी पैदा हो जाती है और गालोंपर सीमावद्ध लाली पैदा हो जाती है (ऐसिड-बेन सेङ्गि-विन)। मुखमण्डल गर्म, दोनों गाल लाल और पैर बरफकी तरह ठण्डे; मुखमण्डलपर व्रण पैदा हो जाता है। जलन, बोलने या किसी तरहका परिश्रम करनेपर बढ़ना और रोगवाला पार्श्व दबाकर सोनेपर घटना; रोगी बहुत कातर और उत्तेजना प्रवण हो पड़ता है। ऊपरी ओंठकी त्वचा फटी और उसकी खाल उधड़ जाती है। प्यास न रहनेपर भी दोनों ओंठ तर रखनेकी इच्छा करता है। निम्नोष्ठपर एक मटर बराबर अर्बुद निकलता है और त्वचाको क्षय करनेवाला पानीकी तरह रस निकलता है और अर्बुदके चारों ओर जखम हो जाता है।

मुख-विवर।—दाँतमें दर्द, दर्द खींचनेवाला और कनपटी या शंखदेश और कानतक फैल जाता है, कीड़े लगे दाँतसे बदबू निकलती है। बहुत तकलीफ़ देनेवाला दांत निकलना, दाँत निकलते-न-निकलते ही क्षय होने लगते हैं; क्षय बतानेवाले काले दाँग पड़ जाते हैं; मसूढ़ा नीली आभा लिये, लाल, कोमल, छेद-भरे, खून निकलनेवाले और प्रदाह-शील; शीताद रोग-युक्त और जखमसे भरे। पूरे-पूरे न निकले हुए दाँतके ऊपर मसूढ़े फूल उठते हैं और इसी कारणसे धनुष्टङ्कार आदि हो जाता है। मसूढ़े और नाकसे गहरा खून निकलता है और तुरन्त ही जम जाता है, जो कुछ खाता है वही तीता मालूम होता है। जीभ सूखी और श्लेष्मासे लिपटी हुई। मुँहसे बहुत बदबू

निकलती है। उखाड़े हुए दाँतकी जड़से लगातार काली आभा लिये खून निकला करता है (हैमा)।

गलेके भीतर।—निगलनेके समय दाहिने पार्श्वमें दबाव मालूम होना। गलेमें सूखापनका भाव और कर्कशता मालूम होना। गलेके भीतरकी झिल्लीके ऊपर नीली आभा लिये लाल रङ्गके चकत्ते सब निकलते हैं।

पाकस्थली।—बहुत प्यास, बड़े आग्रहसे पानी पीता है; परन्तु प्रायः उसी समय कै हो जाती है (आर्स, बिस्मथ)। पानी गलेके नीचे जानेपर तीता मालूम होता है। ठण्ढी चीजें खानेसे बीमार हो जाता है; परन्तु गर्म चीजें खानेपर अच्छा रहता है। उपवास करनेका साहस नहीं होता, क्योंकि उससे बीमार हो जाता है। खट्टी चीजें खानेपर पेटमें दर्द होता है (ऐलो, एपिस)। सीधे बैठनेपर या गोदमें लेकर घूमनेपर बार-बार डकार और हिचकी आया करती है, डकार खट्टी या शून्य आती है; दोपहरके भोजनके बाद डकार आती है और फेनभरी लार निकला करती है और गलेमें त्वचाका रगड़ खाना और रुखड़ापन जैसा मालूम होता है। गर्भावस्थामें मिचली, बार-बार ओकाई आना और वमन। टेढ़ी दृष्टिके साथ भोजनके दो-तीन घण्टे बाद खाये हुए पदार्थ अजीर्ण अवस्थामें कै हो जाते हैं; दिनमें खाई हुई सब चीजें सन्ध्यामें कै हो जाती हैं (भोजनके एक घण्टा बाद—आइरिस; एक घण्टा बाद कै होते ही भूख—पोडो; भोजनके कई घण्टे बाद—मिफाइट; भोजनके तीन घण्टे बाद—कैलि-बाई; पाँच घण्टे बाद—ऐड्रोप, सल्फ; प्रत्येक बार भोजनके कुछ ही बाद—सिपि)। पाकस्थलीमें कोमलता रोगाधिकारमें एकाएक और बार-बार वमन। पाकस्थली और उदरके ऊपरी प्रदेशमें कड़ापन और दबाव मालूम होना; कसकर कपड़ा पहननेपर तकलीफ़ होती है। पाकस्थलीके पास या पार्श्वके कुछ अंशमें बहुत दर्द होता है और वह कड़ा हो जाता है। वमन—गर्भावस्थामें लार बहनेके साथ जो कै होती है, उसका स्वाद मीठा रहता है; दर्द-भरे दाँत निकलनेके समय हैजाकी तरह कै होती है; बहुत ही बदबूदार मल निकलनेके साथ लगातार वमन; पाकस्थलीके दुर्लक्षणोंसे भरे रोगमें वमन।

अन्त्राशय।—यकृत-प्रदेशमें महीन सलाई गड़नेकी तरह दर्द (बार्बा, ब्राइ, कार्ड-मेरी, चेलिडो, कैलि-कार्ब, मर्क, नेट्रम-मूर, पोडो)। दाहिनी

कोखमें पूर्णता और दबाव मालूम होनेके साथ यकृत-प्रदेशमें दर्द मालूम होना; रोगी अपनी कमरका वस्त्र वाध्य होकर ढीला कर देता है (कार्बो-वेज)। प्लीहा-प्रदेशमें दर्द मालूम होना, दबाव सहन नहीं होता। "मानो न जाने कितना खा लिया है"—पेट ऐसा ही भरा मालूम होता है (आर्जेण्ट-नाई)। साँस लेने और छोड़नेके समय और देह हिलानेपर उदरमें ऐसा दर्द होता है, मानो जखम हो गया है; दर्दकी वजहसे कभी-कभी रातमें नींद नहीं आती, पेट फूलकर ढोलकी तरह मालूम होता है। तलपेटमें जलन मालूम होती है। कभी-कभी पेट बहुत फूलनेकी वजहसे श्वास-कृच्छ्रता पैदा हो जाती है, जैसा कि पेट भरकर खा लेनेपर हो जाया करता है। प्रसवके दर्दकी तरह दर्द, उदरके ऊपरी अंशसे कमरतक खींचन मालूम होना और पीठके नीचेवाली कशेरुकाकी ओर पीसनेकी तरह मालूम होना, चेहरेमें उत्तापका आविर्भाव, कलेजा धड़कना, नाड़ी तेज़ और वृथा ही पेशाबका वेग; अन्तमें बहुत थोड़ा-सा गर्म पेशाब निकलता है। इस दर्दके प्रकोपके बाद जाड़ा मालूम होता है और दूधकी तरह प्रदरका स्राव आरम्भ हो जाता है। लम्बी साँस लेनेके समय पेटमें बहुत दर्द मालूम होता है या उदरमें गड़बड़ी मालूम होती है तथा उदरके ऊपरी प्रदेशमें बरफकी तरह ठण्डक मालूम होती है, ऐसा अजीर्ण या अग्निमान्द्य रोगमें होता है। नाभि-प्रदेशमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक कड़ा और जमा हुआ गोलेकी तरह पदार्थ अड़ा है और रातके अन्तिम भागमें पेट मानो चिपक जाता है।

मलान्त्र और मल।—पाखाना होनेके समय मलद्वारमें ऐंठनकी तरह दर्द मालूम होता है। उदरामय—मल पानीकी तरह या धसधसा, गाढ़ा भूरे रङ्गका और बहुत सड़ी गन्ध-भरा, अजीर्ण खाये हुए पदार्थ मिला या भूरा और सफेद रङ्गका, टुकड़ा-टुकड़ा और बहुत बदबूदार, कभी-कभी मल बार-बार पीला आभा लिये पानीकी तरह और बहुत बदबूदार होता है। कब्जियत—मल बहुत कड़ा और बहुत जोर लगानेपर निकलता है; बच्चोंको पाखाना होनेके समय भयानक वेग देना पड़ता है और इतना चिल्लाता है कि ऐसा मालूम होता है, मानो उसे धनुष्टङ्कार हो जायगा। मिचली, वमन, बेचैनी और बहुत सुस्तीके साथ उदरामय।

पेशाब।—पेशाब रोकनेकी शक्तिका न रहना, केवल सोया-सोया पेशाब कर सकता है; पेशाब बहुत ज्यादा और फीका; बहुत वेग,—शय्यासे

उठते-न-उठते पेशाब हो जाता है (ऐपिस, पेट्रोसेल) ; बच्चेको पहले ही नींदके समय पेशाब हो जाता है (सिपि), परन्तु सहजमें ही उसकी नींद नहीं खुलती ; बच्चा सपना देखता है मानो वह शय्यासे उठकर पेशाब कर रहा है। पेशाब करनेके समय और बाद भयानक जलन और करकराहट होती है (सल्फ), बार-बार पेशाबके वेगके साथ थोड़ा पेशाब और बहुत प्यास। खाँसनेपर पेशाब छिटककर निकलता है (कास्टि, वेरेट)। पेशाबके पहले प्रदरका स्राव।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—वयःसन्धि-कालके बाद प्रौढ़ाओंकी बीमारी (लेके)। आर्त्तव-स्रावके पहले और समय बहरापनके साथ कानमें गरज़ और गूंजनेकी आवाज़ ; प्रचण्ड सर-दर्द (सिपि)। आर्त्तव-स्राव—असमयमें ही पैदा हो जाता है, बहुत ज्यादा और बहुत दिनोंतक स्थायी ; स्रावके समय तकलीफ़ तो होती ही है, पर यह तकलीफ़ स्रावके बाद और भी बढ़ जाती है ; लेटते ही स्राव होना आरम्भ हो जाता है (मैग-कार्ब); उठ बैठने या चलनेके समय बन्द हो जाता है (केवल चलनेके समय स्थिर हो जानेपर ही स्राव बन्द हो जाता है—लिलियम-टाई ; सोते ही स्राव बन्द हो जाता है—कैक्ट, कास्टि, लिलियम)। शीतल पानीय पीनेपर आर्त्तव-स्रावके समयकी तकलीफें घट जाती हैं ; स्राव बीच-बीचमें एक-एक बार रुक जाता है और कुछ देर बाद फिर आरम्भ हो जाता है (पल्स, फेर, लेक-कैन, लेके, म्यूरेक्स, नक्स, सिकेलि)। स्राव काले रङ्गका और कषाय (बोवि, केलि-कार्ब, लेके, मैग-कार्ब, पेट्रोल, काले रङ्गका स्राव—ऐमोन-म्यूर, काक्यु, साइक्ल, केलि-नाई, इग्ने, प्लैट, पल्स, सैङ्गिविन, सिकेलि)। आर्त्तव-स्रावके बाद प्रदरका स्राव ; स्राव—कषाय, त्वचाको क्षय करनेवाला और बदबूदार ; दोनों ऋतुओंके बीचके समयमें स्राव बढ़ जाता है (बोवि, बोर)। हरे शस्यकी तरह गन्धवाला स्राव वस्त्र आदिमें लगनेपर पीला दाग पड़ता है और सूखनेपर कड़ा और कड़कड़ करता है। तलपेटसे योनिके भीतरतक पतली सलाई गड़नेकी तरह दर्द, चलनेके समय घटना और सोनेपर बढ़ना। रमणके बाद खूनका स्राव (सिपि); प्रदर-स्रावके समय खींचनकी तरह कमरमें दर्द, मानो कमर टूटी जाती है और इसके साथ ही योनिको ओर दबाव मालूम होता है ; शरीर हिलानेपर घटना और विश्रामसे या स्थिर होकर सोनेपर बढ़ना। रमण और आलिङ्गनके समय योनिमें जलन हुआ करती है और इसके दूसरे दिन काले रङ्गका खून मिला

आर्त्तव-स्राव आरम्भ हो जाता है। गर्भके तीसरे महीने लगातार काले रङ्गके खूनका स्राव हुआ करता है। जरायुसे खूनका स्राव, सोनेपर बढ़ना और उठकर घूमनेपर घटना। योनिकी खुजलीकी वजहसे सन्ध्याके समय रगड़नेकी बहुत इच्छा होती है और इसके बाद जलन हुआ करती है, फल उठती है और गर्मी मालूम होती है तथा पेशाबके समय जलन हुआ करती है (कोना सल्फ़)। प्रसवके बादका क्लेद-स्राव—गहरा भूरा रङ्ग (कार्बो-वेज), जमा हुआ (आस्टिलेगो); बहुत बदबूदार (ऐसिड, क्रामिक, कार्बो-ऐन) और कषाय तथा त्वचाको क्षय करनेवाला (Acrid or Corrosive—कार्बो-ऐन, लिलियम, साइलि ; बीच-बीचमें एक-एक बार रुक जाता है, इसके बाद फिर आरम्भ होता है—कोना, सल्फ़)—दीर्घकाल स्थायी (कार्बो-ऐन, सिकेलि, सिपि)।

श्वास-यंत्र।—स्वरनालीके मुँहपर रुखड़ापन और त्वचामें रगड़ लगनेकी तरह मालूम होना तथा स्वरभङ्ग ; सवेरे एक बार छींक आनेपर आराम हो जाता है। स्वरनालीकी उपास्थि-वेष्टका प्रदाह, पीव पैदा होनेकी वजहसे बीमारियाँ ; स्वर और अन्ननालीकी श्लैष्मिक-झिल्लीका कोमल हो जाना और सड़ना या अपकर्ष मालूम होना। श्वासाल्पता ; वक्षमें भार मालूम होना और बार-बार दीर्घ श्वास ग्रहण करनेकी इच्छा ; वक्षस्थलमें इस ढङ्गका दर्द मालूम होता है, मानो चोट लग गयी है ; मानो ऐसा दर्द कि वक्षोस्थि भीतरको और टेढ़ी होकर चूर-चूर हो जायगी। श्वासकृच्छ्रता और मानसिक उद्वेग। खाँसी, साँय-साँय शब्द करनेवाली, सूखी खाँसी, सन्ध्याके समय, सोनेपर, स्वरनालीके नीचे कीड़ा रेंगनेकी तरह खुजली ; सवेरे खाँसी—सूखी और आक्षेपिक तथा हिचकी पैदा कर देनेवाली, खाँसीके समय पेशाब छिटककर निकल जाता है ; कफ़ सफ़ेद श्लेष्मामय और बहुत सहजमें निकल जाता है या गलेमें त्वचाकी रगड़की तरह तकलीफ़के साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा पीले रङ्गका या सफ़ेद श्लेष्मामय कफ़ निकल जाता है या प्रत्येक बार खाँसीके प्रकोपके बाद बहुत ज्यादा परिमाणमें पीवकी तरह श्लेष्मा निकला करता है। कभी-कभी हरा पीला पीवकी तरह श्लेष्माके साथ खून निकला करता है। खून काला और जमा हुआ। वक्षमें तेज़ दर्द, तीसरे पहर बोखार और सवेरे पसीनेके साथ प्रायः ही खून मिला बलगम निकला करता है। वृद्ध व्यक्तियोंकी सुस्त करनेवाली खाँसी और बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा पीला या सफ़ेद रङ्गके श्लेष्माका स्राव।

फेफड़ा और हृत्पिण्ड।—सवेरेसे मध्याह्नतक हृत्पिण्डके कुछ ऊपरी अंशमें और वक्षके बाएँ पार्श्वसे दाहिने पार्श्वतक सुई या सूक्ष्म शलाका बेधनेकी तरह दर्द, कभी पहले बाएँ और इसके बाद दाहिने वक्षमें और कभी पहले दाहिने और बादमें बाएँ वक्षमें, श्वास-प्रश्वासमें बाधा पैदा करनेवाला दर्द मालूम होता है ; कभी-कभी पृष्ठफलकके नीचे इसी तरहका दर्द अनुभूत होता है। रगड़ने या दबानेसे वक्षका दर्द घटता है। हृत्पिण्ड-प्रदेश झ-झ करता है। विश्रामके समय सारे शरीरमें धमनी आदिकी धमक मालूम होती है (ऐमिल, कैलि-कार्ब, टेल्यू, इस्कू हिप, कैस्टोर)। वक्षके भीतर मानो जलता हुआ आगका अंगारा छू गया है, ऐसी जलन होती है।

गर्दन और पीठ।—गर्दनकी गांठें सब फूली (कोना)। रातमें पीठमें दर्द मालूम होना ; सोनेवाली अवस्थामें बढ़ना। कमरमें इतना दर्द, कि मालूम होता है मानो कमर टूट जायगी—स्थिर रहनेपर बढ़ना और शरीर हिलानेपर घटना (रास)। बाएँ पृष्ठफलकके नीचे दर्द, गर्मी और दबावके प्रयोगसे घटना और गाड़ीपर चढ़ने आदि शरीरके किसी तरहके संचालनसे बढ़ना। प्रबल मल और मूत्र वेग या प्रदर-स्रावके साथ कमरमें प्रसवके दर्दकी तरह दर्द। कमरमें लगातार जलन मालूम होना।

प्रत्यङ्ग आदि।—कन्धेकी सन्धि और पेशीमें बेधनेकी तरह दर्द, मानो कन्धा रातभर खुला रह गया और उसमें इस ढंगका दर्द मानो सर्दी लग गयी है। केहुनी या बाँहके अगले आधे भागमें ऐंठन जैसा दर्द। त्वचा फटनेके साथ बाँहमें अकड़न। कण्डार या पेशीके अगले भागमें संकोचनकी वजहसे कोहनीकी सन्धिमें दर्द। हाथपर दाने निकलते हैं और उनमें बहुत खुजली होती है—विशेषकर सन्ध्याके बाद सोनेपर। केहुनी, हाथ और अंगुलीमें खुजली होना ; हाथ और अंगुली सब सफेद आभा लिये और सुन्न हो जाती हैं, विशेषकर सवेरे सोकर उठनेपर। बाईं वंक्षण-सन्धि या पुट्ठेमें ऐसा दर्द मानो सन्धि अपने स्थानसे खिसक गयी है और उठ खड़े होनेपर बायाँ पैर लम्बा मालूम होता है। निम्नाङ्गमें चुनचुनी होती है, उसमें ऐसा मालूम होता है, मानो झुनझुनी हो रही है। ऐसा मालूम होना मानो जानु-सन्धि एकाएक अवश हो पड़ेगी या टूट जायगी। दोनों पैरोंमें ही सफेद सूजन हो जाया करती है। दाहिनी गुल्फ-सन्धि और बाएँ गुल्फके निचले भागमें (एँड़ीमें)

शलाका बेधनेकी तरह दर्द। हाथ-पैरोंमें ऐसा दर्द मानो चोट लग गयी है या बहुत दूरतक घूमकर आया है। विश्रामके समय ऐसा मालूम होता है, मानो सारा शरीर हिल गया है। स्थिर रहनेपर दर्द आदिकी वृद्धि हो जाती है। रोगिनी सवेरे सोकर उठनेपर बहुत देरतक स्थिर भावसे रहनेसे डरती है (आयोडमसे ऐसे स्थलपर तुलना करनी चाहिये)। रोज़ जिस समय सोकर उठती है, उससे पहले शय्या त्याग करनेपर सुस्ती और आलस्य मालूम होता है।

त्वचा।—बच्चा देखनेमें बुड्ढेकी तरह (ऐब्रोट, सार्सा, टियुबर्कि) और त्वचा सिकुड़ी हुई, जखम दुबला कर देनेवाला (आयोड)। खूनका स्राव होनेवाला धातु, साधारण जखम आदिसे भी बहुत ज्यादा खूनका स्राव होता है (क्रोटेल, लैके, फास)। नवद्वार स्थित श्लैष्मिक झिल्लीसे त्वचाको क्षय करनेवाला, बदबूदार रसकी तरह स्राव निकलता है। उसके साथ ही तेजीसे जीवनी-शक्तिमें भी अवसाद पैदा होता जाता है। बहुब खुजलाहट, इतनी अधिक कि रोगी घबड़ा उठता है, विशेषकर संध्याके समय खुजलानेपर जगह-जगह छोटी-छोटी सूजन पैदा हो जाया करती है (आर्टिका—दाने या सूजनके बिना ही खुजलाना—डलिकस, पाई)। हाथ या पैरकी पीठपर, तलहत्थीमें, कानमें, जानुके पीछे और अंगुलियोंकी सन्धिके ऊपर बहुत खुजलानेवाले सूखे या रसस्राव करनेवाले दाने निकलते हैं। बहुत दिनोंके पुराने जखम सब दर्द-भरे और सड़नेवाले हो जाते (पुराने जखमके चिन्ह, फिर जखममें परिणत हो जाते हैं—ग्रैफ ऐसिड-फ्लू, हिप)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—विश्रामके समय जाड़ा बढ़ जाता है। कम्पजनक शीतके साथ मुखमण्डलमें रह-रहकर उत्ताप पैदा हो जाता है; चेहरा लाल और दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे; शीतके बाद प्यास। रह-रहकर उत्ताप पैदा हो जाता है और दोनों गालोंमें सीमाबद्ध लाली दिखाई देती है (ऐसिड-बेन, सैङ्गिविन, आर्जेण्ट-नाई, एण्टि-टार्ट)। पसीना बहुत थोड़ा और केवल सवेरेके वक्त निकलता है।

वृद्धि।—बाहरी हवा लगनेपर, ठण्डी हवामें; शरीर ठण्डा होनेपर; ठण्डे पानीसे नहाने या शरीर धोनेपर; विश्रामके समय विशेषकर शायित अवस्थामें, आर्त्तव-स्रावके बाद, प्रदर-स्रावके समय; रमण और आलिङ्गनके बाद।

घटना ।—(प्रदर) बैठनेके समय, (आर्त्तव-स्राव बैठने और चलनेके समय), गर्मी लगनेपर (स्वरभङ्ग), छींकके बाद ।

सम्बन्ध ।—दोषघ्न ।—प्रतिविष ।—(शैरिक उत्तेजनाके सम्बन्धमें) ऐकोनाइटम, (सारे शरीरके टपक निवारणके सम्बन्धमें) नक्स-वोमिका । टेस्टोका कथन है, कि फेरम इसकी अधिक क्रियाका प्रतिविधायक है । "कार्बो-वेज" और "सिङ्कोन" के बाद इसका व्यवहार निषिद्ध है ।

तुलनीय ।—सिपिया (रह-रहकर होनेवाला आर्त्तव-स्राव ; गर्भावस्थामें वमन) ; म्यूरेक्स (बहुत ज्यादा पेशाब) ; लिलिया (नीचेकी ओर वेग) ; हैमा (रक्त-स्राव) ; बेलेडो (अनजानमें पेशाब) ; नक्स (पाकाशयका विकार) ; आर्स (स्नायु-शूल) ; ऐब्रोट (सूजन) ; रक्त-स्राव । फास्फोरस (वमन और रक्त-स्राव) ।

सदृश ।—इयुपियोन, सिपि, कैलि-कार्ब, कोना, कार्बो-ऐन, लिलियम-टाइ, आर्स, लैके, ऐसिड-नाइ, ऐब्रोट, आयोड, म्यूरेक्स, पेट्रोसेल, ओपि, साइक्ले, हैमा ।

क्रियाका स्थायित्व ।—१५ दिनसे २० दिन ।

लेबुर्नम

(LABURNUM)

दूसरा नाम ।—सिस्टाइसस-लेबुर्नम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी छाल और गुठलियोंसे अरिष्ट या गुठलीसे विचूर्ण तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—इस गुल्मका सभी अंश विषमय है । इसके सेवनसे पाकाशय और आँतोंमें प्रदाह पैदा हो जाता है और उसीके कारण उदरामय, सर-दर्द, मुखमण्डलकी मलिनता और त्वचाकी शीतलता उत्पन्न होती है । इसीलिये होमियोपैथीके मतसे ऊपर लिखे लक्षणोंमें इसका व्यवहार हुआ करता है ।

इन ऊपर लिखे लक्षणोंके साथ अकड़न, जी मिचलाना, चक्षुतारकाका असमान भावसे फैलना, बहुत ज्यादा प्यास, मस्तिष्कमें जल-सञ्चय, स्पर्श-शक्तिका लोप प्रभृति लक्षण यदि दिखाई दें तो इसके प्रयोगसे विशेष उपकारको आशा की जाती है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—नक्स, जेलस, सिस्टाइस, काफि।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

लैक कैनाइनम

(LAC CANINUM)

दूसरा नाम।—कुतियाका दूध।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले सूखा विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—बाँहकी शिराओंका फूलना; स्तनमें दर्द; उपदंश; घुड़ो खाँसी; उपझिल्ली-प्रदाह; बाधक; आँखकी बीमारी; प्रमेह; सर-दर्द; प्रदर; स्नायुशूल; डिम्बाधार-प्रदाह; वात; गृध्रसी; पाकाशयका विकार; गलेका जखम; जखम; जरायुकी बीमारी; मसे; गो-बीजका टीका लगवानेका दुष्परिणाम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—डा० ऐलेन कहते हैं:—स्नायु-प्रधान, बेचैन, चैतन्याधिक्य या स्पर्श-कातर मनुष्योंकी बीमारीमें यह उपयोगी है। इसकी प्रधान ख्याति और प्रतिपत्ति उपझिल्ली-प्रदाह रोगमें लाभके लिये है, विशेषकर जब प्रदाह और नकली झिल्ली लगातार पार्श्व परिवर्त्तन किया करती है और बहुत ही चमकीली दिखाई देती है। यह पार्श्व परिवर्त्तन-प्रवणता (इस बगलसे उस बगल जानेका लक्षण) चाहे किसी भी बीमारीमें मौजद हो, उसमें ही इससे फायदा होनेकी सम्भावना है। जैसे—वात, पामा, कच्छु, पीनस वगैरह। अपने चारों ओर साँप देखना इसका एक और भी अव्यर्थ निर्णायक लक्षण है। आर्त्तव-स्रावके साथ इसकी खाँसी और गलेका जखम पैदा होता है और गायब हो जाता है। नाकका एक छेद रुका और

दूसरे छेदसे स्लेष्मा निकला करता है। बहुत भूख, कितना ही क्यों न खा ले, भोजनके पहले और बाद भूख एक समान बनी रहती है। उदरके ऊपरी भागमें खालीपन और सुस्ती मालूम होना। बहुत ज्यादा रक्त-स्राव, झोंकसे चमकीला, लाल रङ्गका गाढ़ा गोंदकी तरह खून निकला करता है। आर्त्तव-स्रावके पहले और समय दोनों स्तन फूले और दर्द-भरे हो जाते हैं; शरीर जरा भी हिलानेपर दोनों स्तनोंमें दर्द ज्यादा मालूम होने लगता है और सीढ़ी चढ़ने तथा उतरनेके समय रोगिनीको वाध्य होकर उसे अपने हाथसे पकड़ रखना पड़ता है। योनिसे बदबूदार वायु निकलना; स्तन पिलानेवाली, बच्चोंवाली स्त्रियोंके दूधका हठात नाश होना। सोते ही ऐसा मालूम होता है, मानो साँस रुक जायगी, रोगी शय्यासे उठकर घरमें वाध्य होकर टहलने लगता है। बाईं करवट सोनेपर कलेजेकी धड़कन बढ़ जाती है और दाहिनी करवट सोते ही घट जाती है। जननेन्द्रिय आदिको स्पर्श करनेपर या बैठनेके समय अथवा उसे दबाने या चलनेके समय रगड़ लगते ही कामोद्वेग हो जाता है। चलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो शून्यमें रोगी घूम रहा है, सोनेपर मानो शून्यमें पड़ा है—शय्याका स्पर्श नहीं होता। प्रचण्ड कमरका दर्द—दर्द त्रिकास्थिके ऊपरी अंशसे दाहिने नितम्ब और दाहिने उरुके पीछेवाले स्नायुतक चला जाता है, स्थिर रहनेपर या पहले-पहल शरीर हिलानेके समय दर्द बढ़ जाता है। समूचे मेरुदण्डमें तेज़ दर्द मालूम होता है, छूने या रगड़नेपर बहुत कातरता प्रकट करता है। ये कई इसके प्रधान और सिद्धिप्रद लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—बहुत ही भुलक्कड़ (लैक, नेट्रम-म्यूर, स्टैफ); अन्यमनस्क (ऐनाक, कास्टि, कोना, लैके, नेट्र-म्यूर); चीजें आदि खरीदकर दूकानमें ही डाल जाता है (ऐग्नस, ऐनाक, कास्टि, आयोड, नेट्र-म्यूर)। लिखनेके समय ठीक-ठीक बातें याद नहीं कर सकता या प्रत्येक अन्तिम वाक्यका अक्षर छोड़ देता है; पढ़ने या अध्ययनमें मन नहीं लगा सकता (इथ्यु, ऐलेट-फेर, ऐवेना-सेट, बोवि, आइरिस-वार्सि, लाइकोपस-वार, मिलिलोट, ऐसिड-आक्ज़ेल, ऐसिड-फास, रास, सार्सा, स्कूटेल, सिनिसियो, वाइवर्न-ओपि, जेरोफिला); सामान्य कारण रहनेपर भी बहुत कातर हो पड़ता है (बोवि, ग्रैफ, लैके, नेट्रम-कार्ब, सिपि); आशा-भरोसा-हीन और विषन्न चित्त, ऐसा विश्वास कि

मेरा रोग अब अच्छा न होगा (आर्स, कैक्ट, इग्ने, लिलियम-टाई, मिडोरिन, सोरिन), मानो उसके कोई भी जीवित नहीं हैं ; मानो जगतमें उसका ऐसा कोई नहीं है, जिसके लिये वह जीवित रहे ; हमेशा रोना (ऐक्टि, अरम, कैल्के, लैक) ; स्वभाव बहुत चिड़चिड़ा और क्रोधी ; हर समय बच्चा रोया करता है, विशेषकर रातमें (जैलापा, नक्स, सोरिन ; दिनभर रोता है और रातभर सोता है—लाई) ; अकेला रहनेसे डरता है (आर्स, बिस्मथ, कोना, हायो, कैलि-कार्ब, लिलियम-टाई, लाई, सिपि, स्ट्रैमोन) ; मृत्युका भय (आर्स, अरम, ऐक्टि, फास, प्लैटि) ; हमेशा डरा करता है, कि बुद्धिमें विकार न पैदा हो जाये (ऐक्टि, लिलियम-टाई, आयोड, कैलि-ब्रोम, मिडोरिन, नक्स, सिफिलिन) ; ऊपरसे नीचे गिर जानेका भय (बोर, जेलिस) ; एकाएक क्रोधान्ध हो पड़ता है और सामान्य कारणसे ही लोगोंको कुवाक्य कहा करता है (लिलियम-टाई, ऐसिड-नाई) ; बहुत ही घृणित और कुत्सित व्यवहार करता है। इसी भयसे रोया करता है, कि उसे क्षय रोग हुआ चाहता है (कैल्के, गुयारिया, सिपि) ; ऐसा विश्वास कि मैं एक बड़ा आदमी हूँ (प्लैट) ; चलनेके समय ऐसा मालम होता है मानो शून्यमें घूम रहा है, इसके बाद जब सोता है, उस समय उसे ऐसा नहीं मालूम होता कि शय्याको स्पर्श किये हुए हैं (ऐसेर, कैनाब-इन, हाइपिर, जुग्लैन्स-रि, स्टिक्टा, वैलि) ; रातमें नींद खुलनेपर रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह एक बहुत बड़े साँपपर सोयी हुई है ; रजःस्रावके बाद साँपके सम्बन्धमें नाना प्रकारका विकृत ज्ञान पैदा हो जाता है, जिधर देखती है, उधर ही केवल साँप-ही-साँप दिखाई देते हैं (आर्जेण्ट-नाई, हायो, स्ट्रैमोन)। शरीरका एक अंश दूसरे अंशसे न छू जाये, एक अंगुली दूसरी अंगुलीमें न लग जाये, इसलिये अंगुली और प्रत्यङ्ग आदि फैला रखती है (सिकेलि ; एक पैर दूसरे पैरको न छू ले—लैक-कैन)। रोगिनीको विश्वास रहता है, कि वह जो कुछ कह रही है, सभी भूल है और उसके रोग-लक्षण विकृत और कपोल-कल्पित हैं। रोगिनीको ऐसा मालूम होता है मानो उसकी नाक अपनी नहीं है, वह दूसरेकी नाक लगाये हुए है (उपझिल्ली-प्रदाह रोगमें), ऐसे स्वप्न देखती है, कि कहीं दूर देशमें भ्रमणके लिये जा रही है (लैक-डिफ्लो, लैके, सेङ्गिविन, साइलि)।

मस्तक।—माथेमें लगातार भों-भों आवाज़ होनेके कारण रोगी बेचैन हो पड़ता है, विशेषकर रातमें और आर्त्तव-स्रावके समय आँखोंपर दर्द होता

है, सिलाई करनेके समय बढ़ना ; माथेके सामने और पीछे सर-दर्द। ऊपरकी ओर देखनेपर दाहिनी कनपटी या शंखदेशमें रातके ७ बजे छुरी मारनेकी तरह दर्द होता है। माथेके बायें पार्श्वका स्नायुशूल और आँखके ऊपर ऐसा मालूम होता है, मानो एक छिपकिली गिर पड़ी, बार-बार आँख मलनेपर भी वह आवरण नहीं जाता, वायु सेवनके लिये घरसे बाहर जानेपर, ऐसी तकलीफ़ होती है, मानो मालूम होता है, कि माथा फट जायगा, गर्म घरमें प्रवेश करनेपर घट जाता है। दोनों आँखोंके ऊपरी अंशमें दर्द मालूम होता है, मानो एक चौड़े फीतेसे ललाट चारों ओरसे बँधा हुआ है (ऐसिड-नाई, जेल्सि, काक्यु, साइक्ले)। सरमें दर्द, आवाज़ या बात करनेपर बढ़ जाता है (आवाज़से वृद्धि—बेल, लैक-डिफ्लो, लैके, काकूल ; विशेषकर संगीतकी आवाज़से—काफिया, नैट्र-मूर, काक्यु, डायाडेमा, सिलि ; बोलनेपर अच्छा रहता है—लैक, डिफ्लो) ; स्थिर रहनेपर अच्छा रहता है। सरमें प्रचण्ड दर्द, ठण्डा पानी छूनेपर एकदम आराम हो जाता है। दिनमें सरमें दर्द, पहले एक पार्श्वमें, इसके बाद दूसरे पार्श्वमें ; तकलीफ़ बिलकुल ही सहन नहीं होती ; निर्मल वायु लगनेपर पहले घट जाती है ; परन्तु कुछ देर बाद और भी प्रबल रूप धारण कर फिरसे पैदा हो जाया करती है।

आँख।—विभिन्न पदार्थकी ओर देखनेपर आँखमें दर्द होता है (कार्बो-वेज, सैबाडि)। आँखकी दोनों ही ऊपरी पलकें या आँखके ऊपरकी पलक बहुत भारी मालूम होती है तथा आँख खोलकर देखते रहनेमें तकलीफ़ मालूम होती है (सिपि, ग्रैफा, कोलोफिल, कास्टि, जेल्स); बहुत औंघाई आती हैं। पढ़नेके समय आँखमें दर्द होता है और ऐसा मालूम होता है कि दोनों आँखे सूक्ष्म झिल्लीसे ढँक गयी हैं ; आँखें मलकर यह आवरण हटाये बिना फिर देख नहीं सकता (कास्टि, डैफनो, पल्स, रैटान ; रगड़नेपर दूर हो जाता है—क्रोकस, प्लम, पल्स)। देखी हुई चीज़का चित्र या अङ्क बहुत देरतक चित्रपत्रके ऊपर अङ्कित रहता है (निकोटिन, टियुबर्क, कानके भीतर-वाली शब्द-ग्राही झिल्लीपर सुना हुआ शब्द बहुत देरतक अङ्कित रहता है—लाई)। सामने उपस्थित देखी हुई चीज़पर कोई पहलेकी देखी चीज़का चित्र आकर दृष्टि-भ्रम पैदा कर देता है। दृष्टिके सामने एक टेढ़ा-मेढ़ा चेहरा दिखाई देता है, अन्धकारमें अधिक ; यह मुँह रोगिनी इसी भावसे हमेशा देखा और डरा करती है। उसे ऐसा मालूम होता है, कि उसने यह मुँह पहले

कभी कहीं देखा है। बैगनी, नीला, हरा वगैरह मौलिक या आदिम रंगके वृत्तसब दृष्टिके सामने उड़ते हुए दिखाई देते हैं। पढ़नेके समय पुस्तकके पृष्ठ अस्पष्ट मालम होते हैं और हरे पीले तथा अन्यान्य रङ्गके दिखाई देते हैं। किसी चीजको ओर देखनेपर उसके ऊपर लाल बिन्दु सब दिखाई देते हैं (डियुवोई, हायो)। कोई चीज देखनेके समय रोगिनीको ऐसा मालम होता है मानो उसके पीछे या पार्श्वसे एक चूहा या पक्षी या कीड़ा चला गया (ऐक्टिया-रेस, इथ्य)। आँखमें वातके कारण बाएँ पार्श्वमें दर्द और पलक भारी मालम होती है। बाईं आँखमें जलन और बाईं आँखको पलक सट जाती है। आँखके चारों ओर ऐसा अन्धेरा मालम होता है, कि अमावस्याकी रातमें भी उतना अंधेरा नहीं रहता (लाई, सल्फ)। रोशनी हुए बिना रह नहीं सकता, पर सूर्यकी रोशनी भी सहन नहीं होती (ऐकोन, बेल, कैल्के, जेल्सि, रियुटा, स्ट्रैमोन)।

कान ।—दाहिने कानमें तेज़ दर्द। घरके बाहर टहलनेके समय वायु प्रवेश करनेपर कानमें तेज़ दर्द होता है, हाथसे कानका छेद ढँक लेनेपर आराम मालम होता है। दिनमें कोई दर्द नहीं रहता, परन्तु रातमें जिस कानको दबाकर सोता है, उसमें और बाहरी भागमें दर्द पैदा हो जाया करता है और बार-बार नींद खुल जाती है; कानका दबाव दूर होते ही दर्द अच्छा हो जाता है, मानो वह शून्य गृहमें बात कर रहा है, कानमें शब्दोंकी इसी तरहकी प्रतिध्वनि हुआ करती है (कास्टि, लैके, मर्क, ऐसिड-फास)। वंशगत उपदंश विषकी वजहसे बहरापनमें यह सब दवाओंकी अपेक्षा ज्यादा फायदा करता है।

नाक ।—नया नासा-परिस्राव या नाकसे सर्दीका स्राव होना; गाढ़े सफेद रङ्गके श्लेष्माका स्राव (सैबाड, स्पाई)। सर्दी रोगमें नाकका एक छेद बन्द और दूसरे छेदसे लगातार श्लेष्मा निकला करता है, ऐसा ही पर्यायक्रमसे हुआ करता है; निकला हुआ श्लेष्मा कषाय और त्वचाको क्षय करनेवाला होता है, नाकके छेदका मुँह और ओंठ जखम भरे हो जाते हैं (एरम, सिपा)। नासारन्ध्रकी त्वचा क्षय हुई और वहाँ पपड़ी जमती है (कैलि-बाई, थजा)। उपझिल्ली प्रदाह रोगमें पानी आदि पीनेपर वह नाकके छेदसे बाहर निकल जाता है (कैलि-पर्माङ्गनम, ऐसिड-सल्फ, गलेके जखमके रोगमें—मर्क-कोर, लैके; उपदंश रोगाधिकारमें—कैलि-बाई; अन्यान्य कारणोंसे—एरम-ड्राई, लैके

मर्क, फाइटो)। रातमें निद्रावस्थामें नाकसे प्रमेहके स्रावकी तरह स्लेष्मा निकलकर माथेकी तकियाको हरे रङ्गमें रङ्ग देता है। नासा-रन्ध्रमें बदबू (ऐसिड-फ्लू, अरम, कैलि-बाई)। पूतिनस्य या पीनस,—हड्डीके ध्वंस हो जानेकी आशंका; दिनमें बहुत बार खून मिला पीब निकलता है—सब नासास्थियाँ बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु रहती हैं।

मुख-विवर।—दाहिने गालमें मानो एक आगका अंगारा छू गया है, ऐसी जलन होती है और ठण्डी हवा सेवन करते-करते घरमें प्रवेश होनेपर गाल लाल हो उठते हैं। बाईं युगास्थिके भीतरसे मूर्द्धदेशतक ऐसा दर्द होता है, मानो छुरी गड़ रही है। दोनों ओठ सूखे और उनसे पपड़ी उजड़ती है (नैट्र-म्यूर)। अजीर्ण रोगाधिकारमें चबानेके समय दोनों हनुमें कट-कट आवाज़ होती है। जीभ भूरा लेप चढ़ी रहती है, मुँहका स्वाद सड़ा हुआ। बाईं ओरकी जिह्वाके नीचेवाली ग्रन्थि फूली हुई, जीभके नीचेका अर्बुद (ऐन्थ्रा; थूजा, हाइड्रोफोब)। मुँह और कण्ठके भीतर, पीले, सफ़ेद जखम भरे रहते हैं, सामान्य कारणसे ही खून निकलने लगता है (ऐसिड-म्यूर, ऐसिड-सल्फ़, बोर)। बहुत ज्यादा लार बहना, लार कुछ गाढ़े गोंदकी तरह; नींदके समय निकल जाती है (मर्क-कोर)। मुख-विवर हमेशा स्लेष्मासे भरा रहता है और रोगी बार-बार उसे निगलता है—निगलनेके समय दर्द होनेवाला। मुँहसे बहुत बदबू निकलती है (कैलि-पर्माङ्गनम)। बोलनेमें बहुत तकलीफ़ होती है और नकियाकर बोलता है (कैलि-बाई, सिपा, जेल्स, मैग्निनेला, आयोड)।

गलेके भीतर।—उपझिल्ली-प्रदाह (डिफ्थिरिन, मर्क-सायो, जेल्स) और गल-ग्रन्थिके प्रदाहके लक्षण आदि बार-बार पार्श्व परिवर्त्तन किया करते हैं। दाहिने पार्श्वसे बाएँ और बाएँसे फिर दाहिने पार्श्वपर आक्रमण करता है। आर्त्तव स्रावके साथ खाँसी और गलेका जखम पैदा हो जाता है और आर्त्तव-स्राव बन्द होनेके साथ-ही-साथ अच्छा हो जाता है। कंठका भीतरी भाग पीले या सफ़ेद रङ्गकी झिल्लीसे ढँका हुआ दिखाई देता है और दर्द कण्ठसे कानतक बहुत तेजीसे दौड़ जाता है। कण्ठनालीके ऊपर स्पर्श सहन नहीं होता (लैके), खाली घूंट लेनेपर बढ़ना (इग्ने), बहुत यन्त्रणाजनक या असम्भव होनेपर भी (मर्क), बार-बार निगलनेकी प्रवृत्ति—दर्द कानके छेदतक चला जाता है (हिप, कैलि-बाई); बाईं ओर आरम्भ होता है (लैक) और

इसके बाद बाईं ओर छोड़कर दाहिनी ओर आक्रमण करता है और फिर बाएँ पार्श्वमें पैदा हो जाता है। गलेमें निकली हुई नकली झिल्ली (और इसके अन्तर्गत उपदंशसे पैदा हुआ जखम और अन्यान्य जखम) चिकनी और चमकीली मालूम होती हैं। ऐसा मालूम होता है, मानो गलेमें एक छोटा-सा गोला अड़ा है; निगलनेके समय वह नीचे उतर जाता है, पर फिर पूर्वके स्थानमें आ जाता है (लैके, म्यूरेक्स, निगलनेपर घटना—कैलि-बाई): गल-ग्रन्थि और जिह्वामूलके बगलवाले गह्वरमें छेद, गोल या किसी दूसरे ही आकारवाला धुमैला सफेद जखम उत्पन्न हो जाता है (मर्क-प्रोटो-आयोड)।

पाकस्थली।—बहुत भूख लगना, कितना भी क्यों न खाये, उसको उससे तृप्ति नहीं होती—भोजनके पहले और बाद ठीक एक समान भावसे भूख बनी रहती है (कैल्के, सिना, लाई, स्ट्राम)। उदरके ऊपरी-प्रदेशमें खालीपन और अवसान भाव, मानो बहुत दिनोंसे कुछ खाया नहीं है (इग्ने, कैलि-कार्ब, लेप्टैन, माइरि, नैट्र-म्यूर, नक्स, फास, स्टैन, सल्फ़, टैबाक), विशेषकर सवेरे नींद खुलनेपर।

अन्त्र आदि।—बाये पुट्ठेमें ऐसा दर्द मानो चिपक गया है, इसी वजहसे रोगी खड़ा होना या चलना नहीं चाहता—इससे दर्द बढ़ जाता है; पैर मोड़कर पेटपर रखनेसे आराम और उपकार मालूम होता है। बहुत ज्यादा आर्त्तव-स्रावके समय उदरके ऊपर वस्त्र आदिका भार बिलकुल ही सहन नहीं होता। कमरका कपड़ा ढीला कर देनेपर आराम मिलता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—मेढ्रत्वकके भीतरी प्रदेशमें और उसके पासवाले बाएँ पार्श्वमें उपदंशका जखम, यह फूलगोबीकी आकृतिका होता है, लाल, चिकना और चमकीला। मेढ्रत्वक बहुत फूल उठती है। मूत्रनालीके द्वारपर और चारों ओर जखम, बहुत बदबूदार और उसमें असह्य दर्द रहता है, जखम लाल और चमकीला होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु निर्दिष्ट समयके बहुत पहले आरम्भ हो जाता है; स्राव बहुत ज्यादा, उसका रङ्ग चमकीला, लाल और गोंदकी तरह गाढ़ा। रक्त झोंकसे निकलता है (काली आभा लिये और जमे गोंदकी तरह—क्रोकस); आर्त्तव-स्रावके पहले और आर्त्तव-स्रावके समय दोनों स्तन फूल जाते हैं (बेल, ब्राई, कैल्के), दर्द होता है और उनमें स्पर्श सहन नहीं होता

(कैल्के, मूरेक्स, कोना)। दोनों स्तन प्रदाह-भरे, दर्द-भरे और गाँठोंसे भरे मालूम होते हैं; सन्ध्याके समय और शरीरको थोड़ा भी हिलानेपर बहुत दर्द मालूम होता है, सीढ़ी चढ़ने या उतरनेके समय बहुत तकलीफ़ मालूम होती है (बेल, ब्राई, कैल्के, कार्बो-ऐन, लाई, ऐसिड-नाई, फास)। स्तनमें बहुत अधिक दूधका सञ्चय होता है (ऐसाफिट); स्तन पिलानेवाली रमणीमें स्तनका दूध एकाएक गायब हो जाना (ऐसा, लैक-डिफ्लो)। बहुत ही थोड़ा आर्त्तव-स्राव, स्रावके समय बायें डिम्बाधारसे ऊरुतक तेज़ दर्द, पीछेकी ओर झुक जानेपर घटना। सामनेकी ओर झुककर सीने या कोई दूसरा काम करनेपर कमरमें दाहिनी ओर दर्द होने लगता है और पीछेकी ओर झुकनेपर दर्द एकदम आराम हो जाता है। झिल्लीमय वाधक; बाएँ वंक्षण या पुट्ठेकी जगहपर दर्द; आँखें आदिका नीचेकी ओर खिंचना और बहुत अधिक कातरता; प्रदर—दिनभर स्राव हुआ करता है, रातमें बिलकुल ही नहीं होता, यहाँतक कि बहुत दूरतक चलनेपर भी रातमें स्राव नहीं होता (रातमें केवल प्रदर-स्राव—कास्टि) या दिनमें बहुत थोड़ा प्रदर-स्राव, खड़े होनेपर या चलनेके समय बढ़ना। तीसरे पहर दाहिने डिम्बाधार-प्रदेशमें क्षणभरमें लोप हो जानेवाला तेज़ दर्द (एपिस, लाई, पैलेड); बाएँ डिम्बाधारमें तेज़ दर्द पैदा हो जाता है और बिजलीकी शलाकाकी तरह होता है; दाहिने डिम्बाधारके सामने या शरीरके बायें बाँहमें चला जाता है; पर साधारणतः यह बाएँ पैरमें हो जाता है और यह पैर सुन्न हो जाता है। योनिसे आवाज़के साथ वायु निकलना (ऐसिड-फास, ब्रोम, लाई, नक्स-मस, नक्स-वोम, सैङ्गिविन)। योनिद्वारसे गुह्यद्वारतक, क्षय हुई त्वचाकी तरह या पानी लगने अथवा खाल उधड़नेकी तरह मालूम होना, न खड़ा हुआ जाता है और न बैठा ही जाता है, चित्त लेट जाने और दोनों ऊरुको अलग रखनेपर आराम मालूम होता है। योनिके बाहरी भागसे ऊरुतक और जहाँका मांस सिकुड़ा रहता है, उन सब अंशोंमें बदबूदार और लाल जखम पैदा हो जाता है। चलनेसे तकलीफ़ बढ़ती है और रोगिनी जब स्थिर रहती है, तब दर्द घटता मालूम होता है—यह सब जखम एक तरहकी घृणाजनक सफेद पपड़ीसे ढँके रहते हैं। जननेन्द्रिय आदिमें बहुत उत्तेजना होती है—छूनेपर या स्तनमें हाथ लगते ही अथवा बैठनेकी वजहसे योनिमें दबाव पड़ने या चलनेमें थोड़ी रगड़ लगते ही बहुत अधिक कामोद्रेक हो जाता है (सिनिवार, काफि, मूरेक्स, प्लैट)।

श्वास-यंत्र।—स्वरनालीके ऊपरी अंशमें खुजलीकी वजहसे खाँसी; सोनेपर या बोलनेपर बढ़ जाती है। सोनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो साँस रुक जायगी (एमोन-कार्ब, क्लोरम, जेल्स, ग्रिण्ड, लैके, ओपि); रोगी शय्यासे उठकर कमरेमें टहला करता है; दाहिने फेफड़ेमें और स्तनकी घुंड़ीके कुछ नीचे छुरी बेधनेकी तरह दर्द,—इस अनुभूतिके आगे मालम होता है, मानो उदरके ऊपरी प्रदेशमें एक पत्थर या अजीर्ण द्रव्य रुका हुआ है (कैलि-बाई), कलेजा धड़कना; बाईं करवट सोनेपर बढ़ना; पलटकर दाहिनी करवट सोनेपर घटना (कैक्ट, डैफनी, नेट्र-मूर, पल्स, फास; बाईं करवटसे दाहिनी करवट लेनेके समय—टैबाक)।

गर्दन और पीठ।—बाएँ पृष्ठफलकके नीचे छेदनेकी तरह दर्द और सुन्न हो जाना; शय्यापर करवट बदलनेके समय बढ़ना; कभी-कभी यह दर्द फेफड़ेको छेदकर वक्षके पंजरेकी ओर दौड़ जाता है। दोनों पृष्ठफलकोंके बीचमें दिनभर दर्द मालूम होता रहता है; शरीर गर्म होनेपर बढ़ना और पीछेकी ओर झुक पड़नेपर कुछ घट जाता है। कमरमें दर्द—बहुत तेज़ और असह्य, त्रिकास्थिके ऊपरी अंशमें दोनों ओर और दाहिने नितम्ब तथा दाहिने उरुके पीछेवाले स्नायुमें चला जाता है; विश्रामके समय और पहली बार शरीर हिलानेपर बढ़ना (रास); समूचा मेरुदण्ड मस्तिष्कके नीचेसे निम्नतम अंशतक लगातार दर्द बना रहता है, छूनेपर या दबानेपर बहुत कातरता प्रकाश करता है (चिनिन-सल्फ, फास, जिङ्कम)।

प्रत्यङ्ग आदि।—लगातार घूमनेवाला दर्द—हमेशा एक अंश छोड़कर दूसरे अंशपर आक्रमण करता है (कैलि-बाई, कैलि-सल्फ, पल्स), प्रति दो-चार घण्टा या दिनका अन्तर देकर एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक चला जाता है। वातका दर्द आरम्भ होकर एक सन्धिसे दूसरी सन्धि और एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वपर आक्रमण करता है; रोज़ सन्ध्याके समय, शरीर हिलाने और छूनेपर बढ़ जाता है। दाहिनी कलाई अवश और दर्द-भरी हो जाती है। बाईं बाँहका काँपना, मानो कँपकँपीके साथ पक्षाघात हो गया है; बगलमें बदबूदार पसीना—पसीना निकलकर वस्त्र आदिमें भूरा दाग पड़ता है या गन्धरहित पसीना,—कपड़ेमें लगकर कमला नीबूका रङ्ग हो जाता है। दाहिने उरुके बाहरकी शिराका फूलना—उरु-शिखरसे जानुतक फैल जाता है। बाएँ पैरमें भयानक सुस्ती और जलन मालूम होती है; परन्तु रोगवाले अंशकी छूनेपर

ठण्डक मालूम होती है। त्रिकास्थिके ऊपरी स्थानपर प्रचण्ड और असह्य दर्द—दाहिने नितम्ब और दाहिने कटि-स्नायुकी राहसे नीचेकी ओर दौड़ जाता है, कटि-स्नायुशूल (कुरारी, ग्रैफ, नैफ़ेल, कैलि-बाई, आइरिस-ब्रासिं, लैके, फाइटो, टेल्यू), गर्भस्रावके बाद दाहिने पैरमें प्राय: पक्षाघात—पैर सुन्न और अकड़े ; परन्तु स्थिर नहीं रख सकता ; जानुको मोड़कर ऊपर रख लेनेपर घटना।

निद्रा और स्वप्न।—सोया-सोया चिल्ला उठता है और बोलता है। सोनेके समय बदन छूते ही महान असन्तोष प्रकट करता है, हाथकी अंगुली-तक फैलाकर सोता है—सिकेलि ; दोनों हाथोंको किसी तरह भी रखनेपर सन्तोष नहीं होता, अन्तमें वह चित्त हो पड़ता है और सोता है। सपनेमें देखता है, कि उसकी शय्यापर एक बड़ा भारी साँप है, मानो एक बड़े साँपपर वह सोया हुआ है। डिम्बाधारमें दर्दके अधिकारमें जानुको मोड़कर उसे पेटपर रखकर सोता है। बार-बार सपनेमें देखता है, कि वह पेशाब कर रहा है और जागनेपर देखता है, कि बहुत जोरका पेशाब लगा है। उपझिल्ली-प्रदाह रोगाधिकारमें अधिकांश लक्षण नींदके बाद बढ़ जाते हैं (लैके, स्पञ्जिया, अन्यान्य लक्षणोंका नींदके बाद बढ़ना—ऐकोन, व्यूफो, आर्नि, कैमो, काक्यु, डायस्को, ऐसिड-मूर, दिनमें सोनेपर—क्रोटेलस-होर)। नींदके बाद बहुत और सुस्त करनेवाला पसीना निकलना, रातमें नींद खुलनेपर देखता है, कि ठण्डे पसीनेसे शरीर नहा गया है और उसके मनमें बहुत शंका उदय हो जाती है। नये वात रोगाधिकारमें रातभर बहुत ज्यादा पसीना निकलता है, कड़वी गन्धका पसीना।

वृद्धि।—एक दिन सवेरे और दूसरे दिन तीसरे पहर ; रातमें ; नींदके बाद ; ठण्डी तेज़ हवा लगनेपर ; चलनेपर और छूनेपर।

घटना।—विश्राम और सोनेपर ; ठण्डे पानी आदिका प्रयोग करनेपर ; पैर मोड़कर उदरपर रखनेपर।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—लैके, सिपि; नैट्र-मूर, कोना, स्ट्रैमोन, इग्ने, स्टैफाई, डिफ्थिरिन, मर्क-प्रोटो-आयोड, ऐसेर, स्टिक्टा, टियुबर्क, ब्रोम, सैङ्गिविन, कैलि-ब्रोम, प्लैट, पैलेड, एपिस, मूरेक्स, कैलि-बाई, पल्स, सल्फ, कैलि-पर्माङ्ग निकम।

तुलनीय ।—(गलेके भीतरका और डिम्बाधारका लक्षण) लैकेसिस। भूलना—ऐनाकार्ड, कास्टि, डालका, सीपिया। (नाकके भीतर पपड़ी और जखम—केलि-बाई, थूजा)। स्तनमें दर्द—केल्के। गलेमें जखम और गलकोषका जखम—मर्क। उपझिल्ली-प्रदाह—एपिस। गृध्रसी—कुरेरि, लैके। अंगुली फैलाना—सिकेलि। आँखके सामने लाल-बिन्दु—हैमामेलिस। योनिसे वायु निकलना—लाइको।

शक्ति ।—डाक्टर निकलस कहते हैं—इसकी एक मात्राके प्रयोगसे ही विशेष फल प्राप्त होता है। यदि फिर देनेकी जरूरत हो तो बराबर समयका अन्तर देकर देना चाहिये। ३० शततमिकसे १००० शततमिक क्रम।

लैक फेलिनम

(LAC FELINUM)

दूसरा नाम ।—बिल्लीका दूध।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—आँखका स्नायुशूल; वाधक; सरदर्द; मसा; गलेमें सर्दी।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति।

लैक वैक्सिनम कोगुलेटम

(LAC VACCINUM COAGULATUM)

दूसरा नाम ।—दही।

उपयोगिता ।—गर्भावस्थामें वमनका उपसर्ग और उसके साथ ही दूध पीनेपर भूख प्यासका बन्द हो जाना (चेलिडो) लक्षणमें यह विशेष लाभदायक है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति।

लैक वैक्सिनम डिफ्लोरेटम

(LAC VACCINUM DEFLORATUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—गायके दूधसे तैयार किये हुए मठासे बनता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— खूनकी कमी ; उपाङ्ग-प्रदाह या ऐपिण्डिसाइटिस ; दमा ; मसानेकी बीमारियाँ ; कब्जियत ; बहुमूत्र ; शोथ ; मूर्च्छा ; सर-दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; स्तनका विकार या स्तनका छोटापन ; श्वेत-प्रदर ; ऋतु रुकना ; मेदाधिक्य (शरीरमें चर्बी बढ़ जाना) ; गृध्रसी या झुनझुनीवाला वात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—बहुत ज्यादा परिमाणमें मठा पीनेपर बहुमूत्र रोगमें फायदा होता देखकर भिषक-प्रवर सोयान साहबने इसको "शक्तिकृत" कर स्वस्थ शरीरपर परीक्षा की थी। उसी परीक्षामें प्रमाणित हुआ कि कब्जियत, सर-दर्द, रजोलोप, बहुमूत्र वगैरह नाना प्रकारके रोगोंमें इसकी असीम उपकारिता और आश्चर्यजनक फल दिखाई देता है। इसके कई प्रधान और अव्यर्थ निर्णायक लक्षण ये हैं:—बार-बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी पीनेकी इच्छा ; विषाद और रोदन-परायणताके साथ कलेजा धड़कना ; रमणियोंकी सामयिक या आर्त्तव-विकारकी वजहसे सर-दर्द, मिचली और कड़ापनके साथ ललाटमें सर-दर्द, मिचली, वमन और दुरारोग्य कब्जियतके साथ शोणित भाववाली स्त्रियों तथा दुबली-पतली रमणियोंके ललाटमें टपकनी तरह दर्द ; बहुमूत्र रोगमें बहुत जलन-भरी प्यास और दुबलापन, आर्त्तव-स्राव अनियमित और थोड़ा, खूनका रङ्ग कभी घोर लाल और कभी पानीकी तरह ; ठण्डे पानीमें हाथ डूबाये रखनेके कारण रजोरोध ; जरायु-प्रदेशमें तेज़ दर्द ; दर्द चारों ओर घूमता-फिरता है ; हृत्पिण्डमें ऐसा दर्द मानो छुरीसे आघात कर रहा है, मानो माथा फट जायगा ; मानो आँख पत्थरके टुकड़ोंसे भरी हुई है ; मानो मूर्द्धदेश ऊपर उठा जाता है ; मानो ललाटके बीचमें दर्द गोल आकारके रूपमें हो रहा है ; मानो हड्डी-से-हड्डी अलग होती जा रही है ; मानो एक गोला वक्षोस्थिके निचले भागसे उठकर अन्ननालीका दरवाजा रोक रहा है ; मानो पेटमें एक पत्थरका टुकड़ा रखा हुआ है ; मानो बिछावनकी चादर तर है ; मानो रोगिनीकी देहके ऊपर ठण्डी हवा प्रवाहित हो रही है इत्यादि।

सामयिकता या निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर रोग-लक्षण प्रकट होते हैं, यह इसकी एक और प्रवृत्ति है, प्रत्येक आठ दिनोंका अन्तर देकर लक्षण पैदा हो जाते हैं ; सूर्यास्तके समय सर-दर्द आराम हो जाता है ; अधिकांश लक्षण सवेरे और तीसरे पहर पैदा होते हैं।

लक्षणावली

मन ।—स्मृति-लोप (याद न रहना) ; सभी विषयोंमें अमनोयोगिता और शारीरिक तथा मानसिक परिश्रम करनेकी इच्छा न होना। दुःखित चित्त, जीनेकी इच्छा नहीं रहती ; सबसे पूछता है कि किस उपायसे सहजमें ही और बिना तकलीफ़के जल्दी मृत्यु हो सकती है। बोल-चालके समय सर-दर्द और विषन्नता। रोने और कलेजा धड़कनेके साथ विषन्नताका भाव ; मूर्च्छा। रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, कि उसके सभी रिश्तेदार और बन्धु मर जायँगे और उसे वानप्रस्थ अवलम्बन करना पड़ेगा। किसीसे बोलना या बात करना नहीं चाहती। जो पढ़ा है उसे खूब चेष्टा किये बिना याद नहीं कर सकता। अव्यवस्थित चित्त, सभी विषयोंमें आनाकानी करता है। अपने रोगके लिये बहुत ही दुःखित और उसे दृढ़ विश्वास रहता है, कि चौबीस घण्टोंमें ही उसकी मृत्यु हो जायगी और वह निश्चय-पूर्वक जानता है, कि उसकी मृत्यु होगी ; पर वह मरनेसे डरता नहीं।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, तकियेसे सर हटाते समय (कास्टि, फास, स्टैन ; वृद्धि सोनेपर—कास्टि, लैके, पल्स, रास) और शायितावस्थामें करवट बदलनेके समय, आँख खोलनेपर ; वृद्धि—उठनेके समय ; ऐसा मालूम होता है, कि सब चीजें तेजीसे बाईं ओरसे दाहिनी ओर दौड़ रही हैं, कभी ऐसा मालूम होता है, कि नीचेसे चीजें सब नोंचकर चारों ओर फेंक रहा है। मिचलीके साथ सर-दर्द—सवेरे शय्यासे उठनेपर ; ललाटदेशमें आरम्भ होकर सरके पिछले भागतक फैल जाता है ; दर्द बहुत टपक जैसा ; मिचली (ऐण्टि-क्रूड, काक्यु, कैलि-कार्ब, ऐसिड-सैली, सैङ्गिविन), वमन, दृष्टि-हीनता (बेल, जेल्स, आइरिस, नेट्र-मूर), कब्जियतके साथ दुरारोग्य रोग (ब्राई, कैल्के, फास, हाइड्रैस्ट, नक्स, वेरैट) ; शब्दसे (बेल, काक्यु, काफि, इग्ने, लैके, लैक-कैन, साइलि, स्पाई), आलोकसे (बेल, कोलोफिल, काण्ड़, जेल्स, मिडोरिन, नेट्र-मूर, फास, पल्स, सिलि, स्पाई), शरीर सञ्चालनसे (ब्राई, काक्यु, ग्लोन, आइरिस,

क्रियो) और आर्त्तव-स्रावके समय (काक्यु, क्रियो, मैग-कार्ब, नैट्र-मूर सिपि) वृद्धि ; रोगी बहुत सुन्न हो पड़ता है (ऐण्टि-क्रूड, सिङ्को, ऐसिड-प्राई) ; दबानेसे (Pressure—आर्जेण्ट-नाई, ऐसिड-कार्बल, लैके, पल्स, सैङ्गिविन, स्पाई), वस्त्र द्वारा मस्तक कसकर बाँधनेपर (आर्जेण्ट-नाई, कैल्के, मैग-मूर ; दृढ़ रूपसे (कसकर) बाँधनेपर दर्द बढ़ना—जेल्स) और बहुत ज्यादा परिमाणमें फीका पेशाब निकलनेपर (जेलस, इग्ने आइरिस, कैल्मि) घटना। अस्पष्ट दृष्टि, मानो आँखके सामने मेघका एक टुकड़ा है ; बहुत ज्यादा पेशाब, माथा भारी मालूम होना। उदरके ऊपरी भागमें कुछ मिचली, मुँह मलिन ; पैर ठण्डे और पीठमें ठण्डक मालूम होना। सरमें प्रचण्ड दर्द, ऐसा मालूम होता है, कि मूर्द्धास्थि ऊँचे उठी जाती है (बैप्टि, कैमो, डायस्को, कोबाल्ट, फेरम, नैट्र-क्लोर, इयुका) और मानो समूचा माथा बाहर निकल पड़ता है ; माथा गर्म मालूम होता है और शरीर हिलानेपर दर्द बढ़ जाता है ; मुखमण्डलका माँस ऐसा मालूम होता है मानो हड्डीसे निकला चला जाता है और हड्डियाँ सब एक-से-एक अलग हो जानेके कारण उनका मुँह बाहर निकल पड़ता है। दर्द पहले ललाटमें पैदा होता है फिर सरके पिछले भागमें चला जाता है और रोगिनी यन्त्रणासे उन्मत्त हो पड़ती है। सवेरे मिचली और ललाटके पिछले भागमें मानो एक दर्द-भरा गोला पड़ा है—ऐसा मालूम होना। माथा बहुत बड़ा मालूम होता है, मानो चारों ओर फैलता जाता है (आर्जेण्ट-नाई, आर्नि, बोवि, नक्स-मस)। खाँसनेपर माथेमें तेज दर्द हो जाता है। माथा बहुत भारी मालम होता है और दाहिने पार्श्वमें ढुलका पड़ता है (बाईं ओर ढुलका पड़ना—नक्स-मस)।

आँख।—अस्पष्ट दृष्टि, मानो आँखके सामने मेघका एक टुकड़ा फैला हुआ है (साइक्ले, प्लम)—रोशनी देखता है, परन्तु कोई दूसरी चीज़ नहीं देख पाता, सर-दर्द पैदा होनेके पहले ऐसी ही अवस्था होती है (कैलि-बाई, सोरिन)। रोशनीका सहन न होना, दीयेकी रोशनीतक सहन नहीं होती। अन्धेरेसे पहले-पहल रोशनीमें जानेपर थोड़ी देरके लिये आँखमें बहुत दर्द होता है ; रोशनी न दिखाई देनेके वास्ते आँख बन्द करनेपर आँखके गोलेके ऊपर ऐसा दर्द होता है मानो पलक आँखके गोलेको दबा रही है। आँख बन्द करनेपर ऐसा मालूम होता है मानो एक फीतेसे दोनों आँखें दब रही हैं। दोनों आँखोंकी ऊपरी पलकोंमें बहुत भार मालम होता है (कास्टि, कोलोफिल,

जेल्सि ग्रैफ; स्पिपि), दिनभर बहुत औंघाई मालूम होती है। सरमें दर्द, बाईं भौं और शंखदेश या कनपटीमें बहुत अधिक, यह दर्द आँखके भीतर चला जाता है और बहुत अधिक आँसू बहते हैं। सरमें दर्द पैदा होनेके पहले आँखसे दिखाई न देना, कच्छु-विषसे दूषित धातुका परिचायक है और इस ढङ्गका सर-दर्द बहुत ही दुरारोग्य होता है (कैलि-बाई, सोरिनम, लैक-डिफलो प्रभृति ३-४ के अलावा इसको और कोई दवा नहीं है।

मुखमण्डल मुख-विवर, और गलेके भीतर।—मृत व्यक्तिकी तरह रक्तहीन उजला चेहरा। चेहरा, गला, बाँह और देह चमकीली और लाल गुलाबके फूलकी तरहकी रङ्गवाली। ललाट और मुखमण्डलपर दाने निकलते हैं (अनियमित रजके साथ)। मुख-विवर बहुत सूखा; मुखसे निकली हुई हवा बहुत ही बदबूदार होती है। मुख-विवर लसदार और फेन-भरा, विशेषकर बातचीत करनेके समय। वायु-गोला—ऐसा मालूम होता है, मानो एक बड़ा गोला पाकस्थलीसे उठकर गलेमें रुका हुआ है और श्वासरोध होनेका उपक्रम हो जाता है (ऐसाफिट, कोना, इग्ने, लाई, मैग-मूर, मस्कस, नक्स-मस, प्लैट, प्लम, पल्स, सिपि, वैलो)। गलेमें जखम, निगलनेके समय दर्द बढ़ता हुआ मालूम होना (आर्जेण्ट, अरम, कैल्के; निगलनेके समय घटना—कैलि-बाई)।

पाकस्थली।—सम्पूर्ण अरुचि। बार-बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी पीनेकी आकांक्षा। मांस खानेवालोंको दूध पीते ही मिचलीके साथ सर-दर्द पैदा हो जाना। खट्टी डकार। मिचली,—सवेरे। दिनके समय या सन्ध्याके समय अधलेटी अवस्थामें इधर-उधर घूमते रहनेपर या सवेरे सोकर उठनेपर। प्राणान्तक मिचली, इसपर भी वमन न कर सकनेके कारण रोगी गों-गों किया करता है, चिल्लाता है, बहुत यन्त्रणा और बेचैनी प्रकट करता है और उसे जाड़ा मालूम हुआ करता है; उसके शरीरकी त्वचा बहुत गर्म, पर नाड़ी स्वाभाविक अवस्थामें रहती है। उसे प्राणान्तक औंघाई आती है, शरीर हिलाने या शय्यापर उठ-बैठनेसे बढ़ जाती है (कोचलियार, जिङ्क)। वमन (पहले अन्न मिली अजीर्ण खाई हुई चीजें, इसके बाद कड़वा पानी और अन्तमें भूरे रङ्गका जमा हुआ पदार्थ, जो पानीमें गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं और काफी घोले पानीकी तरह दिखाई देता है; वमित पदार्थ, गन्धहीन, तिक्त स्वादिष्ट

पाकाशयमें वायु-सञ्चय और खट्टापन पैदा होनेका लक्षण। उदरके ऊपरी प्रदेशमें बहुत वायु इकट्ठा होनेकी वजहसे श्वास-कृच्छ्रता, बहुत कष्टसे श्वास-प्रश्वास हुआ करता है।

अंत्रादि।—बहुत दर्द और स्पर्श-असहिष्णुता। नाभि-प्रदेशमें भयानक दर्द, इसके साथ ही सरमें दर्द, उदरमें एक भारी पत्थर दबाया हुआ है—ऐसा भार मालूम होता है और इसी वजहसे चलनेके समय बहुत थकावट मालूम होती है।

मलान्त्र और मल।—स्वभावतः ही रोगीका मल बहुत कड़ा रहता है और यह कब्जियत बहुत देरतक स्थायी रहनेपर रोगीको बहुत जाड़ा मालूम हुआ करता है, किसी तरह भी जाड़ा दूर नहीं होता। बहुत दिनोंके पुराने वमनके साथ सर-दर्द और कब्जियत; महा तेजस्कर विरेचकके प्रयोगसे भी कोई लाभ नहीं होता; वृथाका वेग अर्थात् पाखाना लगता है, पर होता नहीं है (ऐनाक, नक्स); मल सूखा और कड़ा (ब्राई, सल्फ); बहुत वेग दिये बिना बाहर नहीं निकलता, मलद्वार फट जाता है, रोगी चिल्लाता या रोता है और बहुत ज्यादा परिमाणमें (फटे हुए मलद्वारसे) खून निकलता है। बहुत तेज और वमनके साथ सर-दर्द, इसके साथ ही लगातार दुर्दमनीय मलका कड़ापन; बार-बार विरेचक औषधि या वस्ति-क्रिया (पिचकारी लेना) के बिना पाखाना नहीं होता, शरीर हिलाने या उठकर सीधे होकर बैठनेपर बढ़ना (ब्राईके साथ तुलनीय), रोगी हमेशा मानो शीतार्त्त रहता है, शरीर सञ्चालन या उठकर सीधे होकर बैठनेपर (ब्राईके साथ तुलनीय) रोगीको हमेशा जाड़ा लगा करता है, बाहरी उत्तापसे शीतकी शान्ति नहीं होती।

पेशाब।—बार-बार बहुत ज्यादा परिमाणमें फीका पेशाब निकलता है। मूत्रग्रन्थि-प्रदेशमें लगातार दर्द, दर्द दोनों मसानोंसे (किड्नी) कटि होकर राह बनाकर मूत्रस्थलीके दोनों पार्श्वमें और त्रिकास्थि-प्रदेशसे दोनों नितम्बकी राहसे उरुके पीछे चला जाता है; दर्द जलन पैदा करनेवाला; सोये या बैठे—किसी अवस्थामें भी नहीं घटता; बल्कि सोनेसे बढ़ जाता है। बहुमूत्र रोगमें बार-बार बहुत ज्यादा परिमाणमें फीका पेशाब होता है, ज्वालामयी प्यास और दिनोंदिन बहुत शीर्ण होता जाता है (सिजि-यैम्बोल)। पेशाब बूंद-बूंद

निकलता है या निकलनेके समय ऐसा मालूम होता है कि मूत्रनालीके भीतरसे गर्म पानी निकल रहा है। शय्यामें अनजानमें पेशाब होना (सिपि)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—डिम्बाधार-प्रदेशमें दबाव मालूम होना और नीचेकी ओर आकर्षण; तलपेटपर हाथका दबाव असह्य मालूम होता है; आर्त्तव-स्रावके समय तलपेटमें बहुत दर्द; सोने, बैठने वगैरह किसी भी अवस्थामें आराम नहीं मालूम होता; अन्धान्त्र-प्रदेशमें विषम प्रदाह, भयानक यन्त्रणा, सूजन, स्पर्श सहन नहीं होना, मलका कड़ापन, कब्जियत और प्रचण्ड वमन—अन्धान्त्रपुच्छके प्रदाह रोगमें (लैके, प्लम)। आर्त्तव-स्राव एक सप्ताह विलम्ब होनेकी वजहसे सरमें अधिक रक्त-सञ्चय होना, दोनों हाथ ठण्डे, मिचली और सरमें चक्कर आना या स्राव आरम्भ होनेपर कमरमें दर्द, थोड़ा रजःस्राव और बाएँ डिम्बाधारके स्थानपर भार और खींचन मालूम होना; ठण्डे पानीमें हाथ डुबानेकी वजहसे एकाएक रजोलोप (कोना) और सारे शरीरमें दर्द, विशेषकर माथेमें (दोनों पैरमें ठण्डा पानी लगनेसे पैदा हुआ रजोलोप—ऐकोन-फेरम, पल्स; ठण्डे पानीमें खड़े होनेके कारण—कैल्के)। अनियमित आर्त्तव-स्राव—स्राव बहुत सामान्य और पीले रङ्गका। गर्भावस्थामें सवेरेके वक्त वमन (ऐसिड-लैक, सोरिन), नींद खुलनेपर पाकस्थलीमें बहुत अस्वाच्छन्द्य मालूम होता है। शय्यासे उठनेपर मुँहमें पानी भर आना। मुँहमें पानी भर आया करता है; कब्जियत। दोनों स्तन क्रमसे छोटे होते जाते हैं (कोना, आयोड, नक्स-मस)। एक गिलास दूध पीनेपर तुरन्त ही रजःस्राव होना रुक जाता है और जबतक फिर ऋतुका समय नहीं आ जाता, उतने दिनतक बन्द रहता है। स्तनका दूध गायब हो जाना (चौबीस घण्टेमें रुका हुआ स्तनका दूध फिरसे पैदा कर देता है)।

श्वास-यन्त्र।—उदरके ऊपरी प्रदेशमें आध्मान वायुकी वजहसे बहुत अधिक श्वासकृच्छ्रता पैदा हो जाती है, मानो श्वासरोध हो जाना चाहता हो। वक्षस्थलमें दबाव मालूम होना, इसके साथ ही स्पर्श सहन नहीं होता; दोनों ही फेफड़ोंके शिखरदेशमें क्षय रोगवाली श्लेष्मा-गुटी पैदा और सञ्चित हो जाती है। श्वास-कृच्छ्रताके साथ हृद्-प्रदेशमें दबाव मालूम होना और रोगी मनमें स्थिर विश्वास पैदा करता है, कि चौबीस घण्टेमें ही उसकी मृत्यु अनिवार्य है (ऐकोन, एपिस, लैकेसिस)। हृत्पिण्डके शिखर-देशमें तेज़ दर्द,

मानो एक प्रान्तसे दूसरे प्रान्ततक हृत्पिण्ड छुरीसे काटा जा रहा है। मुखमण्डल और गर्दनके बाएँ पार्श्वमें उत्ताप पैदा हो जानेके साथ कलेजा धड़कना।

सार्वाङ्गिक।—अनिद्राकी वजहसे बहुत बेचैनी और बहुत दिनोंतक रोग भोगा करता है (एसिड-नाई, काक्यु)। रोगिनी किसी तरह परिश्रम करे या न करे, हमेशा बहुत थकावट और बहुत सुस्ती मालूम होती है; चलनेपर बहुत थकन मालूम होती है; बहुत जाड़ा मालूम होना, शरीर ढँका रहनेपर भी रोगिनीको हमेशा ऐसा मालूम होता है, मानो उसके शरीरमें ठण्डी हवा लग रही है, मानो उसकी शय्याके वस्त्र सब तर हो रहे हैं। हृत्पिण्डके यान्त्रिक रोगके कारण शोथ, पुरानी यकृत-विकृतिके कारण पैदा हुए रोगादिका शोथ लालामूत्रमें परिणत हो जाता है या बहुत दिनोंतक सविराम ज्वर भोगनेके बाद शोथ और अन्यान्य रोगके कारण पैदा हुए सब तरहके शोथ रोगकी यह सबसे बढ़िया दवा है। शरीरका मोटापन; यकृत, हृत्पिण्ड वगैरहमें चर्बी बढ़ जाना। दोनों बाँह ऊपर उठानेपर बेहोश हो जानेका उपक्रम।

वृद्धि।—सवेरे; आठ दिनका अन्तर देकर (आविर्भाव होना); सूर्योदयके समय और मध्याह्नमें; ठण्डे पानीमें हाथ डुबानेपर; बाहरी उत्ताप लगनेपर; सोनेपर।

घटना।—दबाने, शरीर हिलानेपर, चलने और बैठनेके समय, कसकर बाँधनेपर और स्थिर होकर रहनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐसिड-लैक, लैक-कैनाइन, आयोड, कैक्ट, काक्यु, कोना, डिजि, नक्स-मस, नेट्र-मूर, सेकारम-लैक।

तुलनीय।—नेट्रम (बहुमूत्र, सर-दर्द, कब्जियत, हृत्पिण्ड); काक्युलस (आर्त्तवसे पैदा हुए वमनके साथ सर-दर्द); कैक्टस (हृत्पिण्ड); नक्स-मस (माथा भारी) इत्यादि।

शक्ति।—६ठे दशमिकसे १००० शततमिक क्रम।

लैसरटा

(LACERTA)

दूसरा नाम ।—लैसर्टा-ऐपिलिस । हरा साँप ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इस सम्पूर्ण जीवसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—चर्मोद्भेद ; जीभके नीचे छालेकी तरह उद्भेद, निगलनेमें तकलीफ़, मुँहमें छालोंकी तरह उद्भेद, निगलनेमें कष्ट, मुँहमें बहुत अधिक लार सञ्चय होना, मिचली, उदरमें भार मालूम होना, मानसिक शक्तिकी तीक्ष्णता प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय ।**—ऐस्फियोस्विना, हेलोडर्मा ।

दोषघ्न ।—विनिगर ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

लैकेसिस

(LACHESIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—दक्षिण अमेरिकाके सुरकुकू नामक एक प्रकारके सर्प विशेषसे विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है । १८२८ ईस्वीकी २८वीं जुलाईको डा० हेरिङ्गने इसकी परीक्षा की और तैयार किया ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः— अण्डलाल मिला पेशाब ; मदात्यय ; क्षीण दृष्टि ; धमनीका अर्बुद ; संन्यास ; उपाङ्ग-प्रदाह (ऐपेण्डिसाइटिस) ; दमा ; शय्याका जखम ; व्रण ; बाघी ; अन्धान्त्रका प्रदाह ; दूषित फोड़ा (कार्बङ्कल) ; निस्पन्द-वायु (कैटेलेप्सि), उपदंश ; वयःसन्धिकालकी बीमारी ; जाड़ेके दिनोंके फोड़े ; खाँसी ; नीलिमा रोग ; उपझिल्ली-प्रदाह (डिफ्थीरिया) ; शोथ ; अजीर्ण ; कानका बहुपाद रोग ; कानमें आवाज़ होना या कर्णनाद ; सान्निपातिक ज्वर ; मृगी ; विसर्प ; आँखकी

बीमारियाँ ; आँखसे रक्त-स्राव ; मूर्च्छा ; आँखमें नासूर ; पेट फूलना ; पित्त-पथरी ; सड़नेवाला जखम ; मसूढ़ेसे रक्त-स्राव ; रक्तस्राव ; अर्श ; सर-दर्द ; बीमारी ; छातीमें जलन ; अर्द्धाङ्ग पक्षाघात ; आँत उतरना हृत्पिण्डकी (Hernia) ; मुँहका दादकी तरह उद्भेद ; स्वर-भङ्ग ; जलातङ्क रोग ; मूर्च्छा वायु ; चोट ; सविराम ज्वर ; कामला ; प्रसवका दर्द ; स्वरनालीका प्रदाह और आक्षेप ; कुष्ठ ; यकृतकी बीमारी ; खसड़ा ; पारेका विकार ; मानसिक विकार ; मुँहका जखम ; कर्णमूल ; कामोन्माद ; कर्ण-स्राव (कानसे पीब निकलना) ; डिम्बाधारका प्रदाह ; पक्षाघात ; उलटी चमड़ी ; लाल आभा लिये पसीना ; गर्भावस्थामें सफेद रङ्गकी सूजन ; प्लेग या महामारी ; फेफड़ेका प्रदाह ; सूतिका ज्वर और सूतिकाक्षेप ; रक्तका विषैला हो जाना ; आरक्त-ज्वर ; धूम्र-रोग ; गृध्रसी ; शीताद ; चेचक ; काँटा गड़ना ; मूत्रकृच्छ्रता ; उपदंश ; कण्ठनालीकी बीमारियाँ ; चोटकी वजहसे बोखार ; अर्बुद ; जखम ; शिराका फूलना ; सरमें चक्कर आना ; अनुकल्प रजः ; मसा ; अंगुलहाड़ा ; ताजे जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—डा० ऐलेन कहते हैं—विषन्न प्रकृतिवाले, उद्यम-हीन, आलसी दुर्बल शरीरवाले व्यक्तियोंकी बीमारीमें यह अधिक उपयोगी है। रक्तके साथ सड़े हुए पदार्थोंके मिलनेकी वजहसे बीमारियाँ, सुस्त करनेवाला बोखार आदि, उपझिल्ली प्रदाह रोग, धूम्र-रोग, दुर्लक्षणवाला आरक्त ज्वर वगैरह जिन सब रोगोंमें रोगीकी उठनेकी शक्ति बहुत जल्दी-जल्दी घटती जाती है और वह सुस्त हो जाता है तथा शरीरका खून घटता या बिगड़ता जाता है, उन सभी रोगोंमें लैकेसिस परम उपकारक शक्ति दिखाया करता है। जिन स्त्रियोंकी वयःसन्धिके समय रजोरोध हो गया है और जिन्हें कोई स्वाभाविक स्राव आदि रुक जानेकी वजहसे नाना प्रकारकी बीमारियाँ भोगनी पड़ती हैं, उनके लिये भी यह बहुत लाभदायक है। पुराने गलेके जखम रोगमें, गाढ़े गोंदकी तरह श्लेष्मा गलेमें रुका रहता है, इस अवस्थामें लैकेसिसके प्रयोगसे बहुत लाभ होता है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—(१) नींद खुलनेपर लक्षणोंका बढ़ना। (२) जीभ बाहर निकालनेपर काँपा करती है और दाँत या ओंठके पीछे अड़ जाती है। (३) वयःसन्धि अवस्थामें पहुँची हुई स्त्रियोंको रह-रहकर उत्ताप पैदा हो जाता है। (४) शरीरके नवद्वारोंमेंसे किसी भी द्वारसे काला, बिगड़ा हुआ खूनका स्राव। (५) विकार,—रोगी बुदबुदाकर बका करता है ; नींदसे जागनेके समय प्रलाप बढ़

जाता है ; बहुत ही सन्दिग्ध चित्त—अपने आत्मीय बन्धुका भी सन्देह करता है। (६) कण्ठनाली और उदरके ऊपर किसी तरहका दबाव सहन नहीं होता ; कण्ठनाली छूते ही रोगी बेचैन हो पड़ता है। (७) प्रतिवर्ष बसन्त या हेमन्त ऋतुमें रोग आदिका दुबारा पैदा हो जाना। (८) शरीरके बायें पार्श्व में लक्षण आदिकी अधिकता या बाएँ पार्श्व से दाहिने पार्श्व में चले जानेका लक्षण। (९) जलीय पदार्थ निगलनेपर वह नाकके छेदसे बाहर निकल पड़ता है। (१०) बाईं ओरका सर-दर्द, दर्द माथेके भीतरी प्रदेशतक मालूम होता है। (११) ऐसा मालूम होना, कि गलेमें एक गोला अड़ा हुआ है, निकलनेके समय वह हट जाता है, कुछ देर बाद फिर अपने स्थानपर आ जाता है। (१२) बार-बार घूंट लेने या कुछ निगलनेकी इच्छा—निगलनेके समय कानमें तेज़ दर्द मालूम होना। (१३) कण्ठके भीतर सूजन, घोर लाली, जगह-जगह गले हुए जखमसे भरा ; गर्म पानीय पीनेपर दर्द अधिक मालूम होना। कण्ठके भीतरकी अवस्था देखकर रोग जितना कड़ा मालूम होता है, रोगीकी शारीरिक सुस्ती उससे कहीं अधिक हुआ करती है। (१४) कब्जियत,—मल भेंड़के मलकी तरह, छोटी-छोटी गांठ-भरा ; मलद्वारावरोधिनी पेशीके संकोचनकी वजहसे बहुत तकलीफ़से पाखाना होता है। उदरामय,—मल बहुत बदबूदार और देखनेपर घासकी राखके गोलेकी तरह मालूम होता है। (१५) मलद्वारमें हमेशा संकोचन मालूम होता है और धक-धक किया करता है। (१६) प्रदरका स्राव बहुत ज्यादा, तेज़ और खुजलाहट पैदा करनेवाला ; कपड़े आदिमें लगनेपर हरे रङ्गका दाग पड़ता है और सूखनेपर कड़-कड़ करता है। (१७) ग्रन्थिका बढ़ना ; तेज़ और अस्त्रके आघातकी तरह दर्द-भरा अर्बुद, छूनेपर जलन हुआ करती है। (१८) स्तन-प्रदाह रोगमें त्वचा काली आभा लिये और उसपर गोल-गोल दाग पड़ता है। (१९) चर्मोद्भेद धीरे-धीरे निकलता है और क्रमसे नीला या काले रङ्गका हो जाता है। (२०) पुराने जखमके चिन्ह सब लाल, दर्द-भरे रहते हैं और फट जानेके कारण उनसे खून निकला करता है। इन बीस लक्षणोंमें—(१) नींदके बाद बढ़ना ; (२) शरीरकी त्वचामें बहुत अधिक स्पर्श-कातरता ; संकोचन और स्पर्श असह्य मालम होता है ; (३) लक्षण आदिका बाईं ओर पैदा होना या बाईं ओरसे दाहिनी ओर चले जाना ; (४) नियमित या प्रत्याशित स्राव आदिके आरम्भमें लक्षण आदिका घटना (जैसे,—नाकसे श्लेष्मा आरम्भ होते ही सर्दीका सर-दर्द आराम

होना ; आर्त्तव-स्राव आरम्भ होते ही डिम्बाधार या जरायु-प्रदेशका दर्द शान्त हो जाना इत्यादि । ये चार इसके सर्व-श्रेष्ठ प्रकृतिगत लक्षण हैं ; जिस किसी भी अवस्थामें ये चार या इनसे अधिक लक्षण मौजूद रहें, वहाँ लैकेसिससे विशेष लाभ होनेकी सम्भावना बनी रहती है ।

लक्षणावली

मन ।—बहुत दिनोंतक स्थायी शोक, दुःख, भय, विरक्ति, सतीत्व या सत्यतामें सन्देह और अप्रतिदत्त प्रणय आदिसे पैदा हुई बीमारियाँ (ऐसिड-अरम, इग्ने); उत्तेज़ना-प्रवण चित्त, बड़ी प्रसन्नता, अप्रकृत विषयोंका प्रकृतकी तरह मालूम होना ; बकवादी (ऐगार, कोकेइन, क्रोटे, हायो, ओपि, पेरिस, ऐक्टिया, पाइरोज, स्ट्रैमोन, थिरिड) ; लगातार बकता है, एक बात कहता-कहता दूसरी बात कहने लगता है, एक कहानी ख़तम होते-न-होते दूसरी आरम्भ कर देता है (स्ट्रैमोन) । सवेरे बहुत दुःखित भाव ; संसारके साथ किसी तरहका सम्पर्क रखनेसे नाराज़ रहता है । बेचैन और अस्वाच्छन्द्ययुक्त ; किसी काम-काजमें मन नहीं लगा सकता ; हमेशा जगह बदलते रहना पसन्द करता है । रातमें अकातर भावसे जितनी इच्छा करता है, उतना मानसिक परिश्रम करता है, थकता नहीं है । धर्मोन्माद । रोगीको ऐसा विश्वास होता है कि किसी अमानुषिक या दैव-शक्ति सम्पन्न मनुष्य द्वारा (ऐनाक) वह परिचालित हो रहा है । तीक्ष्णबुद्धि, बहुत अधिक अध्ययनकी वजहसे एकाग्र उन्माद । बहुत अधिक रात्रि जागरण ; किसी तरह स्राव या रक्तक्षय और बहुत अध्ययन करनेके कारण प्रलाप । रोगी मनमें सोचता है, कि उसकी मृत्यु हो गयी है और उसके रिश्तेदार सब उसकी अन्त्येष्टि करनेकी तैयारी कर रहे हैं । स्मरण-शक्तिकी कमजोरी, लिखनेके समय बहुत तरहका भ्रम होता है ; काल भ्रम (कैनाब-इण्डि, इलैप्स) ; रातके समय प्रलाप—बुदबुदाकर बका करता है, हमेशा निद्रालु ; आरक्तिम मुखमण्डल, धीरे-धीरे बड़े कष्टसे बोली निकलती है ; निचला हनु झूल पड़ता है । बहुत विषाद-युक्त चित्त, मनमें किसी बातका सुख अनुभव नहीं करता ; सवेरे नींद खुलनेपर बढ़ना ; निर्मल वायु सेवनसे विषन्न भाव दूर करनेकी आशामें घरसे बाहर निकल जाता है । हमेशा ऐसी आशंका करता है कि उसकी मृत्यु बहुत पास है । अपने रोगके सम्बन्धमें बहुत अधिक चिन्ता, चिन्ताका निरानन्द भाव

(ऐसिड-नाई, पल्स, सिपि), सब विषयोंमें मन्द भाव ही ग्रहण करता है ; उसे विश्वास रहता है कि उसके अपने आदमी भी उससे घृणा करते हैं, सब विषयोंमें उससे शत्रुता करते हैं। सोनेसे डर मालूम होता है ; विष दिये जानेकी आशङ्का (हायो, रास)। आलस्य—शारीरिक या मानसिक, किसी तरहका परिश्रम ही नहीं करना चाहता (ऐसिड-नाई, कोना, फास, इयुपस, ऐसिड-कार्बोल, ऐलो)।

मस्तक ।—सूर्योत्तापसे रोगी बहुत शिथिलाङ्ग, सुस्त और क्षीण हो पड़ता है। धूप लगनेसे केवल सर-दर्द ही नहीं पैदा हो जाता, बल्कि समूची देह शिथिल और अवसन्न हो पड़ती है (ऐण्टि-क्रूड, जेल्सि, ग्लोन, नेट्र-कार्ब, नेट्र-मूर, बेल, कैम्फो, थिरिड) ; सरमें चक्कर आना—खासकर सवेरे नींद खुलनेपर (ऐसिड-कार्बोल, कैस्टोर-युक, हिप, कैलि-कार्ब, ग्रेफ, फास) ; टकटकी लगाकर एक ओर देखते रहनेपर (कास्टि), सन्ध्याके समय सोनेपर (ग्रेफा, कैलि-कार्ब, फास, ऐसिड-नाई), वायु सेवनार्थ घरसे बाहर जानेपर (कैलि-कार्ब, क्रियो) और हाथ उठानेपर (बैराई, सरमें चक्कर आना)। मूर्च्छा आ जानेका उपक्रम, मलिन मुखमण्डल, मिचली, वमन, सरमें रक्त-सञ्चय होना, नाकसे खूनका स्राव और अंग-प्रत्यङ्गोंकी शिथिलता। शराबियोंमें अधिक रक्तसञ्चय होनेके कारण सर-दर्द, इसके साथ ही विसर्प हो जाना और संन्यास रोग होनेका लक्षण। संन्यास रोगके आवेश या प्रकोपमें चेहरा म्लान हो जाता है, हाथ-पैर खींचा और पटका करता है और मस्तिष्कके भीतर रक्त बहता है। माथेकी ओर खूनका दौड़ जाना, शराब पीने बाद, मानसिक आवेगकी अधिकतासे और अनियमित या रुके हुए रजःस्रावके कारण जिन सब स्त्रियोंको रजोरोध हो जाता है, उनकी बीमारी ; बाएँ पार्श्वपर संन्यासका आक्रमण। ब्रह्मतालुमें भार और दबानेकी तरह मालूम होना (ऐलो, कैल्के, ग्लोन, फेलैन) और सरके पिछले भागमें मानो सीसा भरा हुआ है, ऐसा भार मालूम होता है (ओपि), विशेषकर नींद खुलनेपर, सरमें चक्कर आनेकी वजहसे सवेरे तकियेसे माथा नहीं उठा सकता (प्रत्येक क़दमपर ऐसा मालूम होता है मानो माथेके पिछले भागमें एक भारी चीज़ दबाई हुई है—बेल)। मस्तिष्कावरणी-प्रदाह, माथेमें तेज़ दर्दकी वजहसे रोगी चिल्ला उठता है, जीभ काँटोंसे भरी मालूम होती है, माथा हिलाया करता है और तकियेमें बार-बार गड़ाया करता है (ऐपिस, हेलिबो, पोडो) ; इस रोगकी प्रथमावस्थामें रोगी निद्रालु हो पड़ता

है, पर उसे नींद नहीं आती ; उसकी देह और हृत्पिण्डमें स्पन्दन हुआ करता है, इसके थोड़ी ही देर बाद मोह पैदा हो जाता है ; रोगी बेहोश या आच्छन्न हो पड़ता है और उसे सहजमें ही जगाया नहीं जा सकता (किसी तरहका चर्मोद्भेद, आरक्त ज्वरकी खुजली या विसर्पके दाने भरपूर न निकलनेपर या एकाएक गायब हो जाने या बैठ जानेपर लैकेसिससे विशेष लाभ होता है)। पीले रङ्गका चेहरा और तमतमाये हुए गालोंके साथ माथेमें प्रचण्ड दर्द, सर्दीकी वजहसे सर दर्द या सर्दी आरम्भ होनेके पहले सरमें दर्द, नाकसे सर्दीका स्राव आरम्भ हो जानेपर घटना। सरमें दर्द, शंखदेश या कनपटीमें दबाने या फाड़नेकी तरह दर्द ; शरीर हिलाने, दबाने अथवा सर झुकानेपर, सोनेके बाद या नींदके बाद बढ़ना ; नींद खुल जानेपर यन्त्रणा वृद्धिके भयसे रोगिनी सो नहीं सकती। छेदनेकी तरह सर-दर्द, मानो माथेके दाहिने पार्श्वका कुछ अंश काट डालता है ; उठनेपर या सीढ़ी चढ़नेपर बढ़ना ; गर्मी लगने और डकार आनेपर घटना। गर्भावस्थामें केश झड़ जाते हैं (प्रसवके बाद—कैल्के), धूपमें जाना नहीं चाहता।

आँख।—आँखका सफेद अंश पीला हो जाना। फेफड़ा या हृत्पिण्डके रोगके साथ क्षीण दृष्टि। सन्यास रोगकी वजहसे आँखके चित्रपत्र (Retina) का प्रदाह (चेलिडो, फास)। कण्ठनाली दबानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों आँखोंके गोले बाहर निकल पड़ेंगे। आँखके भीतर ऊपरी अंशमें तेज़ दर्द। आँखके भीतर खूनका स्राव। आँख सूखी ; ऐसा मालूम होता है मानो धूलसे भरी हुई है ; आँखसे ठण्डे आँसूओंका स्राव। आलोकातङ्क और रोशनीमें आँखकी बीमारी पैदा हो जाती है। आँखमें दर्द मानो ऐसा मालूम होता है, कि चक्षुगोलक गह्वरसे बाहर निकल पड़ेगा ; आँख हिलानेसे वृद्धि। ऐसा मालूम होता है मानो चक्षुगह्वरकी अपेक्षा चक्षुगोलक बहुत बड़ा है या चक्षुगह्वर बहुत छोटा हो गया है। क्षीण-दृष्टि और पासकी चीज़ देखनेकी शक्तिका गायब हो जाना ; तिमिर-दृष्टि, मानो घूंघटके भीतरसे देख रहा है (कास्टि, क्रोक, आयोड, लोरो, लिथि, नेट्र-मूर, पेट्रोल, फास, रास, स्ट्रैम, सल्फ)। आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ दिखाई देना (बेल, कैल्के-फ्लू, ग्लोन, साइलि, स्पाई, साइक्ले) या चारों ओर आगकी लपेट दिखाई देती है (कार्बो-वेज, क्रोटेल) ; दीयेकी रोशनीके चारों ओर नीला घेरा दिखाई देता है। कभी-कभी ऐसा मालूम होता है, मानो सरके पिछले भागसे आँखतक एक सूता कसकर अड़ा हुआ है (पेरिस)।

कान।—शब्द सहन नहीं कर सकता, कानमें तेज़ जल-प्रवाहकी तरह सों-सों आवाज़ होती है (जेल्स, हायो, लाई) या मेघकी गरज जैसी आवाज़ आती है (कैल्के, ग्रैफ)। श्रवण-शक्तिका घटना ; कानके भीतर सूखापन ; कान और दोनों गालोंमें (बाईं ओरके) स्पर्श-ज्ञान नहीं रहता, कानमें बहुत कड़ा मैल पैदा हो जाता है, उजला और बहुत थोड़ा रहता है। गलेमें जख्मके साथ कानमें दर्द। युगास्थिसे कानके भीतरतक छेदनेकी तरह दर्द। कानके पीछेकी त्वचा क्षय हो जाती है और फटे घाव रहते हैं।

नाक।—नाकसे खूनका स्राव—खूनका रंग काला (क्रोक, क्रियो, ऐसिड-नाई) ; रजोरोध (ब्राई) या मोह-ज्वराधिकारमें सवेरे नाकसे छींक आने बाद उससे खून जाना (सवेरे—ऐमोन-कार्ब, ब्राई, क्रियो, ऐसिड-नाई)। सर्दीकी वजहसे सर-दर्द, सर्दी होनेके पहले सरमें दर्द हुआ करता है, श्लेष्मा स्राव आरम्भ होनेपर घट जाता है ; स्राव पानीकी तरह, नाकके रन्ध्रका मुँह लाल और ऊपरी ओंठपर फुन्सियाँ हो जाती हैं। रन्ध्रके भीतरवाली श्लैष्मिक-झिल्ली फूल जाती है और बार-बार छींक आया करती है। नाकके चारों ओर छोटे-छोटे रस-भरे दाने निकलते हैं। नाकका बाहरी भाग लाल ; दोनों छेद पपड़ियोंसे भरे और उनसे रस-मिला पीव निकला करता है ; पारा और उपदंशसे पैदा हुआ दोष और शराबियोंकी बीमारी।

मुखमण्डल।—शराबियोंके चेहरेपर रह-रहकर उत्ताप पैदा हो जाता है। मोहके साथ तकलीफ़ बतानेवाला मुखमण्डल। सविराम ज्वर या पेटकी बीमारीमें चेहरा नीली आभा लिये धुमैला या भूरा। विकृत मुख-भङ्गी। मूर्च्छा रोगमें चेहरा मलिन या रक्त-शून्य। देखनेमें पीला दिखाई देता है और दोनों गाल सिन्दूर लगनेकी तरह लाल या हलकी लाल रंगकी शिरायें सब त्वचाके नीचे दिखाई देती हैं। मुँहकी उपदंशज विकृति (उपदंशके कारण चेहरा बिगड़ जाना)। चेहरा ऐसा लाल मानो रोगीको संन्यास रोग हो गया हो ; सरमें दर्द और हाथ-पैर आदि तथा पाकाशय वगैरहमें दर्दके कारण चेहरा फूला हुआ और लाल दिखाई देता है। चेहरेका विसर्प, मानो माथेमें कोई हथौड़ीसे आघात कर रहा है—इस तरहका सर-दर्द ; सब उद्भेदोंमें बहुत जलन होती है और बहुत खुजलाती हैं, दिनमें सोने बाद ये बढ़ जाती हैं। आँखका स्नायु-शूल, बाईं ओरका (बेल, डालका), प्रकोपके पहले मुखमण्डलमें

गर्मी पैदा हो जाना और प्रकोपके बाद उदरमें अवसाद मालूम होना। तन्द्रा या मोह रोगमें निचला हनु झूल पड़ता है (आर्नि, आर्स, हेलिबो, ब्राई, ओपि, स्ट्रैमो जिङ्क); संन्यास रोगमें (नक्स-वोम, ओपि ; मस्तिष्क-प्रदाहमें—हेलिबो ; आन्त्रिक ज्वराधिकारमें—आर्स, बैप्टी, कार्बो-वे, हायो, लाई, ऐसिड-मूर, ओपि, वेरेट-विर, जिङ्कम)। निचले ओठमें मानो चोट लगकर या मधुमक्खीके काटनेकी वजहसे सूजन पैदा हो गई है, ऐसा मालूम होना। दोनों ओठ सूखे, फटी हुई त्वचा और उससे खून बहना।

मुख-विवर।—कोई चीज़ काटनेपर, सोनेपर और पारेके अपव्यवहारकी वजहसे कीड़े लगे दाँतमें दर्द। क्षय-प्राप्त या वासनाक्रान्त दाँतसे चिथड़ उखड़कर वह ध्वंस हो जाता है (कैल्के-आस्टि, कैल्के-फलु, कैल्के-फास, युफोर्ब, ऐसिड-फ्ल, प्लम, स्टैफ, थूजा)। दोनों मसूढ़े नीली आभा लिये (क्रियो, प्लम), फूले (सिङ्को, मर्क, नेट्र-मूर, प्लम्ब) और खून निकालनेवाले (कार्बो-वेज, मर्क, ऐसिड-नाई, नेट्र-मूर); गर्म पानी आदि पीनेपर बढ़ना। गाल फूले, कड़े और गर्म—चरचराते हैं, ऐसा मालूम होता है, मानो फट जायँगे। मुँहका स्वाद खट्टा—जो खाता है, वही खट्टा हो जाता है (कैल्के-आस्ट्रि)। बहुत तकलीफ़से बोली निकलती है—जीभ मानो सीसासे भरी है और भारी है (ऐसिड-मूर), मुँह नहीं फाड़ सकता (मुँह फाड़े रहता है और जीभ बहुत ठण्डी—कैम्फो, नैजा)। उपझिल्लीका गलेका जखम वगैरह गलरोगसे रोगी बहुत कष्टसे काँपती हुई जीभ निकाल सकता है (ऐबसिन्थ, ऐकोन, आर्स, जेल्सि, हेलिबो, मर्क, इनैन्थि, ओपि, प्लम्ब, स्ट्रैम)। जीभ बाहर निकालनेपर काँपा करती है या दाँत या ओठके पीछे अड़ जाती है। जीभ फूली (दूनी हो जाती है—हेलिबो, लोरो, मेन्सि पार्म, मर्क, रास) और अगला अंश फटा ; कभी-कभी अगला भाग लाल और मांस भूरा रहता है ; जगह-जगहकी त्वचा फट जाती है, सूख जाती है और काली हो जाती है (आर्स, फास, रास) और अकड़ी (क्रोटेल, हेलिबो, ऐसिड-हाइड्रो, लोरो, सिकेलि)। रस-भरे दाने—जीभके अगले भागमें ही ज्यादा पैदा हो जाते हैं (नेट्र-फास, नेट्र-सल्फ, ऐमोन-मूर, कैलि-नाई, ब्राई); जीभ फूली और उसके दोनों पार्श्वमें रस-भरे दाने निकलते हैं ; मुँहसे बदबू निकलती है ; लार बहुत ज्यादा और गाढ़े गोंदकी तरह। क्षयरोगकी अन्तिम अवस्था बतानेवाले जखम। मुँहके भीतरके ऊपरी अंशकी मानो श्लैष्मिक-झिल्ली निकली जाती है, ऐसा अनुभव होना।

गलेके भीतर ।—अलिजिह्वा लम्बी ; तालुमूलके बगलवाले दोनों गह्वर कुछ बैंगनी रङ्गके (नैजा) और फूले हुए या क्षय हुई त्वचा या वहाँ पानी लगनेकी तरह मालूम होना। गलेके भीतर मानो एक गोला अड़ा है और इसीलिये मानो ऐसा मालूम होता है, कि साँस रुक जायगी ; निगलनेके समय गलेमें अड़ा हुआ गोला नीचे उतर जाता है, पर तुरन्त ही अपनी पूर्वकी जगहपर आ जाता है (लैक-कैन, रियुमिक्स)। तरल पदार्थ गलेसे नीचे जानेपर नाकके छेदसे बाहर निकल आता है (अरम-ट्राई, बैराई, कैन्थ, कैलि-बाई, कैलि-पर्माङ्ग, लैक-कैन, मर्क-कोर, मर्क-साया, फाइटो, ऐसिड-सल्फ) ; लार निकलनेके समय बढ़ना, जलीय पदार्थ निगलनेके समय उससे कम दर्द और कड़े पदार्थ बड़े आरामसे निगले जा सकते हैं (बेल, ब्राई, इग्ने)। तालुमूलके बगलवाले दोनों गह्वर कफ़से भरे रहते हैं, खाँसकर निकालनेकी चेष्टा करनेके समय दर्द होता है। गलग्रन्थि और उपझिल्ली-प्रदाह रोगाधिकारमें—बाएँ पार्श्वमें दर्द मालूम होता है और स्पर्श-कातरता आरम्भ हो जाती है। गलेमें संकोचन मालूम होता है, मानो कसकर बधा हुआ है, बाहर छूनेसे ही दर्द बढ़ जाता है ; श्वास रुकनेका उपक्रम ; निद्रितावस्थामें या नींद खुलनेपर बढ़ना। गलग्रन्थिका फूलना—बायें पार्श्वमें अधिक ; प्रदाह बायीं ओरसे दाहिने पार्श्वमें चला जाता है ; श्वासरोध होनेका उपक्रम होनेकी वजहसे निगलनेकी शक्तिका न रहना या निगलनेके समय गलेके भीतरसे बाए कानतक तेज़ दर्द मालूम होता है ; कण्ठनालीपर किसी तरहका स्पर्श सहन नहीं कर पाता (बहुत खराब मालूम होता है—एपिस या बेलेडोनाकी तरह दर्दकी वजहसे नहीं)। डिफ्थीरिया रोगाधिकारमें गलेके भीतर बाएँ पार्श्वसे दाहिने पार्श्वमें फैलनेवाली नकली झिल्ली पैदा हो जाती है (लैक-कैन, सैबाड) ; श्वाससे निकली हुई हवामें बहुत बदबू रहती है ; नींदके बाद दर्द बढ़ जाता है ; कण्ठके भीतर बैंगनी रङ्ग दिखाई देता है (नैजा) ; रोगीमें उठनेकी शक्ति नहीं रहती, नाड़ी बहुत क्षीण, गोंदकी तरह लसदार पसीना निकलता है, सरमें दर्द और सुस्ती। गलग्रन्थि-प्रदाहमें और उपझिल्ली-प्रदाह रोगाधिकारमें बढ़ना ; गर्म पानी पीनेपर, कड़े पदार्थकी अपेक्षा जलीय पदार्थके निगलनेमें दर्द अधिक होता है और कण्ठनलीके ऊपर छूने या दबानेपर बहुत तकलीफ़ मालूम होती है। गलेमें जखम निकलना ; जलीय वायुमें, पारेका व्यवहार करनेपर और शरीरमें उपदंश विष रहनेपर बढ़ना, जखम सब ऊपरकी ओर फैलकर

नाककी पिछली नलीमें घुस जाती हैं ; कण्ठ इतना सूख जाता है, कि रोगी सोता-सोता गला रुक जानेके कारण जाग उठता है। कोमल तालुपर असंख्य फटे घाव दिखाई पड़ते हैं और उनके बीच-बीचमें हरी आभा लिये पीले रङ्गके जखम पैदा होते दिखाई देते हैं, दर्द तेज़ रहता है और तेजीसे फैल जाता है, साँससे निकली हुई हवा बहुत बदबूदार होती है।

पाकस्थली ।—सम्पूर्ण अरुचि, ज्वालामयी तृष्णा, पर पीनेके पदार्थोंसे घृणा। भोजनके बाद सरमें चक्कर आना, शरीरमें आलस्य मालूम होना; बार-बार विषम (अंकुस) लग जाता है और श्वासकृच्छ्रता पैदा हो जाती है। पाकाशयमें आध्मान वायुकी अधिकताकी वजहसे वह फूल जाता है, डकार आया करती है और रह-रहकर उत्ताप पैदा हो जाता है। खट्टी चीजें खानेसे बीमारी बढ़ जाती है। शराब आदि पीनेपर बीमार हो जाता है। डकार आनेपर आराम मिलता है। जो कुछ खाता है वही अम्लमें परिणत हो जाता है और स्वाद भी खट्टा मालूम होता है (कैल्के-आस्ट्रिके साथ तुलनीय); पानी आदि पीनेपर मिचली, मिचली पैदा हो जानेपर कमजोरी, श्वासकृच्छ्रता, कलेजेमें धड़कन और ठण्डा पसीना हुआ करता है। खाये हुए पदार्थ, पित्त और श्लेष्मा मिले वमनके साथ बहुत ज्यादा लारका स्राव होना। उदरके ऊपरी प्रदेशमें स्पर्श सहन नहीं होता। भोजनके कुछ ही बाद अजीर्ण लक्षण आदि प्रकट हो जाया करते हैं, विशेषकर पारेके व्यवहारके बाद। पाकस्थलीमें चबानेकी तरह दर्द या पेटमें ऐंठन और दबाव मालूम होना, भोजनके बाद घटा हुआ मालूम होता है; परन्तु पाकाशय फिर खाली होते ही दर्द फिरसे पैदा हो जाता है, पाकाशयका कर्कट रोग।

अन्त्राशय ।—यकृतमें तेज़ दर्द, दर्द पाकाशयकी ओर जाता है। यकृतमें विकारकी वजहसे बीमारियाँ, औरतोंकी वयःसन्धिकालमें और कम्प ज्वरके बाद; मानो दाहिनी कोखमें कुछ अड़ा हुआ है, ऐसा मालूम होना (ऐबिस-नाइग्रा) और डङ्क मारनेकी तरह दर्द। कुक्षिदेश (कोख) में किसी तरह, यहाँतक कि वस्त्रका दबाव भी सहन नहीं होता। यकृत-प्रदेशमें ऐसा मालूम होता है मानो जकड़ गया है। यकृतके चारों तरफ जखमकी तरह मालूम होना; यकृत-प्रदाह और यकृतमें फोड़े निकलना; पेट वायुसे भर जाता है, किसी तरहका दबाव सहन नहीं होता। तलपेट और कमरके भीतर

ऐसी जलन मानो आग जल रही है। उदरके दाहिने पार्श्वमें छेदनेकी तरह दर्दके कारण मूर्च्छा हो जानेका उपक्रम। अन्धान्त्र-प्रदाह या अन्धान्त्र-पुच्छ-प्रदाह,—अन्धान्त्र-प्रदेश फूल जाता है; रोगी चित्त होकर और दोनों पैरोंको मोड़कर सोनेके लिये बाध्य होता है। अन्त्रावरण-प्रदाह—पेट गर्म और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता, कमरसे उरुतक मानो जकड़ जाता है और फिर रोगवाली जगहपर पीव सञ्चित हुआ करता है। पित्त-अश्मरी या पथरी (कैल्के-कैड, हाइड्रैस्ट)।

मलांत्र और मल।—कब्जियत—मलद्वारकी निष्क्रियताकी वजहसे (ऐल्यू, ओपि) मलान्त्रमें मल जमा रहता है, परन्तु वेग नहीं रहता; मलद्वारावरोधिनी पेशीमें सङ्कोचन मालूम होना (ऐसिड-नाई, कास्टि)। मलका पतलापन—पानीकी तरह फीका, पीली आभा लिये मल और भूरा तथा सड़ी गन्ध-भरा; थोड़े जले हुए तृणकी तरह गन्धवाला; विकार-प्राप्त, शोणितमय, कभी-कभी खून और रस मिला; रात्रिके समय खट्टी चीजें खानेके कारण और गर्मीके दिनोंमें बढ़ना। तकलीफ़-भरी कूथनके बाद रूसीकी तरह झिल्लीके टुकड़े सब निकलते हैं। मलका पतलापन और मलका कड़ापन पर्यायक्रमसे होता है (ऐब्रोट, ऐण्टि-क्रूड, आयोड, नक्स-वोम, रास, रियुटा, ऐण्टि टार्ट)। मलद्वार बहुत धकधक करता है, मानो हथौड़ीसे ठोंका जाता है (ऋतुके समय—लिसिन; दिनभर दर्दभरी टपक—सल्फ; पाखाना होनेके समय—नेट्र-म्यूर; पाखाना होनेपर—मैन्सिनेल; बहुत कड़ा मल निकलनेपर—ऐल्यू)। कब्जियत, वृथा वेग; मलद्वारमें ऐसा मालूम होता है मानो रुक गया है। मल एकदम पतला होनेपर भी बहुत बदबूदार। पाखाना जानेकी इच्छा होती है, परन्तु तकलीफ़की अधिकताकी वजहसे जाना नहीं चाहता है। काँच निकलना और गोलेके आकारमें धक्का देता है। अर्श—मसा निकला हुआ या कड़ा अथवा न सिकुड़नेवाला; प्रत्येक बार खाँसनेपर या छींकनेपर मसेसे ऊपरकी ओर तेज़ शलाका बेधनेकी तरह दर्द फैलता है (ऐसिड-नाई)। थोड़े रजःस्रावके समय, वयःसन्धिके समय या शराब पीनेपर बढ़ना। मलद्वारमें खुजली—नींदके बाद बढ़ना।

पेशाब।—मसाना या मूत्रग्रन्थिसे मूत्रशिराके भीतर होकर तेज़ दर्द फैल जाता है। पेशाब प्रायः काले रङ्गका (आर्स, ऐसिड-कार्बोल, डिजिटे

इरिजि, नैट्र-म्यूर, पैरिरा); बार-बार निकलनेवाला ; बार-बार वृथाका वेग, यदि पेशाब होता भी है, तो मूत्रनलीमें जलन होती है। करवट बदलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो मूत्रस्थली या तलपेटमें एक गोला लुढ़कता फिरता है—जरायुभ्रंश और मूत्राशय प्रदाह रोगमें। पेशाबके समय मूत्रद्वारसे बदबूदार श्लेष्मा निकलना ; मूत्राशयकी सर्दी (गाढ़े सफेद रङ्गका श्लेष्मा—कैलि-म्यूर ; फीके रङ्गका श्लेष्मामय पेशाब—मिडोरिन)।

पुं-जननेन्द्रिय।—कामेन्द्रियकी उत्तेजना। अस्वाभाविक इन्द्रिय सेवा, इसके साथ ही मृगी (व्यूफो,, कैल्के, प्लैट स्ट्रैमोन, जवानी आनेके पहले ही—प्लैट)। बाघी, कड़ी या नासूर मिली और विलेपी ज्वरके साथ (नैजा); पाराके व्यवहारके बाद (ऐसिड-नाई,, हिप, कैलि-आयोड, सिलि); लिङ्गके अगले भागका चमड़ा फूला और न झुकनेवाला ; उपदंशका जखम निकलनेपर पेशाबके समय या पेशाबके बाद मूत्राधार-मुखशायी-ग्रन्थिसे रस-स्राव (हिपोमेनिस, कैलि-कार्ब, लिसिन, सल्फ, डैफनी, हिप)। लिङ्गमुण्डके ग्रीवादेशमें बहुत ज्यादा परिमाणमें पुष्पिका या मैलका संचय होना (कास्टि, नक्स, सिपि)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तव-स्राव नियमित, पर बहुत थोड़ी देरतक स्थायी, थोड़े परिमाणमें और क्षीण स्रोतमें स्राव होता है ; स्राव हो जाने बाद सभी यंत्रणाएँ शान्त हो जाती हैं ; आर्त्तव-स्रावके समय रोगिनीको विशेष आराम मालूम होता है (सिरियम-आक्सैल, जिङ्क) ; कामकी प्रबलता (प्लैट, ओरिगिन, हायो)। बायें डिम्बाधारकी सूजन और कड़ापन, स्नायुशूल और उनमें पीब संचय होना। जरायु-प्रदेशमें सूजन मालूम होना ; उसपर किसी तरहका, यहाँतक कि पहना हुआ कपड़ा भी सहन नहीं होता ; नीचेकी ओर खींचनकी तरह दर्द। जरायु डिम्बाधारमें दर्द, रक्तका स्राव आरम्भ होनेपर घट जाता है (सिरियम-आक्सैल)। जरायु-प्रदेशमें अस्त्रके आघातकी तरह दर्द। ऐसा मालूम होता है, मानो जरायु-द्वार खुल गया है। ऋतु-स्राव बहुत ही थोड़ा होता है, क्षीण स्रोतमें, पर नियमित समयपर प्रकाशित होता है, निकला हुआ खून जमा हुआ काला या कषाय और त्वचाको क्षय करनेवाला (क्रियो)। रोगिनी आर्त्तव-स्रावके पहले घरके बाहरकी निर्मल हवा सेवन करनेके लिये लालायित रहती है ; सरमें चक्कर आना और नाकसे खूनका स्राव (ब्राई, हाइड्रैस, नेट्र-सल्फ) ; प्रसवके दर्दकी तरह दर्द—बायें डिम्बाधारमें अधिक, ऊरु-शिखरमें चोटकी तरह दर्द मालूम होना ; आर्त्तव-स्राव

आरम्भ होते ही सब तकलीफें घट जाती हैं। प्रदर,—स्राव बहुत ज्यादा, उग्रता पैदा करनेवाला, वस्त्र आदिमें लगनेपर पीला दाग पड़ता है (बोवि, थूजा) और सूखनेपर कड़-कड़ करता है (ऐल्यू, कैलि-बाई, क्रियो)। श्लेष्माका स्राव होता है और योनिके बाहरी भागका रङ्ग लाल हो जाता है और फूल उठता है। वय:सन्धि अवस्थावाली स्त्रियोंकी बीमारियाँ, जैसे—अर्श, खूनका स्राव, रह-रहकर गर्मी पैदा हो जाना और गर्म पसीना निकलना; जलन करनेवाला मूर्द्धादेशका सर-दर्द, विशेषकर रजोरोधके समय या बाद (सैङ्गिविन, सल्फ) अथवा बहुत थोड़ा स्राव होनेपर। ऋतुरोधके बाद से एक-न-एक बीमारी लगी ही रहती हैं—एक दिनके लिये भी एकदम अच्छी नहीं रहती। प्रसवके बादका स्राव बहुत बदबूदार; सूतिका ज्वर आदि रोगमें पेशाब रुक जाना; चेहरेका रङ्ग बैंगनी; होशमें न रहना और पेट बहुत फूला, स्तनका दूध बहुत ही पतला, नीली आभा लिये; नींद खुलनेपर मन बहुत दु:खित और निराशासे पूर्ण। स्तनके भीतर अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द, दर्द बाँहकी राहसे नीचेकी ओर फैलता है; स्तनका रङ्ग नीला और काली रेखासे अङ्कित। खून बहनेवाला अर्बुद या उपमांस, उसमेंसे प्राय: खून निकला करता है। डिम्बाधारसे जरायुतक तेज़ दर्द और पेशाब होनेके समय पीवका स्राव।

श्वास-यंत्र।—आवाज़ उखड़ी हुई, स्वरनली, सूखी और त्वचा क्षय हुई-सी मालूम होती हैं; स्वरनलीमें स्पर्श सहन नहीं होता; क्षयरोगाधिकारमें स्वरलोप; लार गाढ़े गोंदकी तरह और हरे रङ्गकी। उपझिल्ली प्रदाह रोगमें काली खाँसीका उपक्रम, श्वास-रोध होनेकी वजहसे नींद खुल जाती है और रोगी कण्ठमें हाथ रख लेता है और ऐसी आशंका प्रकट करता है मानो उसकी मृत्यु हुआ ही चाहती है। कण्ठनालीपर स्पर्शतक सहन नहीं होता, कारण स्पर्श करते ही रोगीका श्वासरोध होना चाहता है; ऐसा अनुभव होता है; मानो कण्ठमें एक गुल्म या गोले जैसा पदार्थ अड़ा हुआ है। काली खाँसी, सोनेपर बढ़ना या सोयी हुई अवस्थामें ही इसका प्रकोप हो जाता है। स्वरतन्तुका आक्षेप, एकाएक गलेके भीतरसे स्वरनलीके बीचमें ऐसा मालूम होता है, कि कुछ घुसकर साँस रोकना चाहता है और रातमें रोगीकी नींद खुल जाती है। श्वासरोग, मुँह या नाकके पास कोई चीज़ पहुँचते ही स्वरमें व्याघात पैदा कर देता है; रोगी हवा करनेको कहता है, पर धीरे-धीरे और दूरसे (जोरसे हवा करनेको कहता हैं—कार्बो-वेज, हवा करनेको कहता है, पर जोरसे हवा

करनेपर श्वास रुक जाना चाहता है—सिङ्को ; त्वचा ठण्डी, पर हवा करनेको कहता है—मिडोरिन ; एक कमरेमें अगर कई आदमी रहते हैं तो उसकी साँस रुकने लगती है—आर्जेण्ट नाई) ; वृद्धि—स्वरनली स्पर्श करनेपर, हाथ हिलानेपर (दोनों बाँह शरीरके जितने ही पास आते हैं, उतना ही श्वास-कष्ट बढ़ जाता है—सोरिन), नींद खुलनेपर (फेफड़ेका प्रदाह रोगाधिकारमें—ऐण्टि-टार्ट, आर्नि आधी रातके बाद या तीसरे पहर नींद खुलनेपर—कार्बो-वेज)। भोजनके बाद (ऐसाफि, कैलि-फास, सार्सा) या बोलनेपर (ऐसिड-फास, कास्टि, ड्रोसेरा, स्पञ्जि) ; घटना—सामनेकी ओर झुककर बैठनेपर (जानुके ऊपर माथा रखकर वाध्य होकर बैठना पड़ता है—कैलि-कार्ब ; सामनेकी ओर झुककर बैठनेपर बढ़ना—क्लोरैलम)। वक्षस्थलमें कसावटका भाव (कैक्ट)। सवेरे जल्दी-जल्दी उठ बैठनेपर श्वासकृच्छ्रता पैदा हो जाती है और वक्षमें साँय-साँय शब्द हुआ करता है। खुजलीकी शान्ति होनेपर दमा पैदा हो जाना। नींद आते ही श्वास रुक जाना चाहती है (ऐमोन-कार्ब, जेल्सि, ग्रिण्ड, लैक-कैन, ओपि) खाँसी, गला रोध करनेवाली, लगातार गलेके भीतर, वक्षोस्थिके नीचे या पाकस्थलीमें उत्तेजनाकी वजहसे ; वृद्धि—सोते ही या दिनमें (आर्स, इयुफ्रे, स्टैफ), जाड़ा-गर्मीके परिवर्त्तनसे, शराब आदि पीनेपर। बहुत देरतक तेज़ खाँसी आनेके बाद थोड़ा-सा श्लेष्मा निकलता है (आर्स, ऐसिड-बेन, ब्रोम, ब्राई, कास्टि, सिङ्को, कैलि-कार्ब)। बलगम, बहुत सामान्य परिमाणमें कष्टसे निकलता है ; पानीकी तरह नमकीन और निकलकर फिर गलेमें चला जाता है या उसके साथ ही ओकाई आया करती है और वमन हो जाता है। डिफ्थीरिया रोगाधिकारमें बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा निकलता है। साँय-साँय शब्द करनेवाली बहुत देरतक खाँसी आने बाद एकाएक बहुत ज्यादा फेनभरा और गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा निकलता है। वक्षमें बहुत दबाव मालूम होता है, मानो वक्षमें वायु भरा हुआ है, डकार आनेपर घटना। श्वास-कृच्छ्रता और बायें वक्षमें सूक्ष्म शलाका बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना। फेफड़ेके प्रदाह रोगमें बाएँ फेफड़ेकी यकृद्भाव प्राप्ति ; नींद खुलनेपर श्वासमें बहुत कष्ट मालूम होता है। हृदस्पन्दन—कण्ठके ऊपर या वक्षके ऊपर किसी तरहका दबाव सहन नहीं होता ; रोगीको या तो सीधे होकर बैठ जाना पड़ता है, या दाहिनी करवट वाध्य होकर सो जाना पड़ता है बायाँ बाँह सुन्न, मूर्च्छा आ जानेका उपक्रम या आशंका।

हृत्पिण्डके वात रोगाधिकारमें रोगी तकलीफ़से बेचैन हो पड़ता है और उसकी देह काँपा करती है। यह सोचकर बहुत ही चिन्तित रहता है कि न जाने हृत्पिण्डकी कौन-सी बीमारी हो गयी। तेजीसे बोलता है ; सोनेपर साँस रुक जाना चाहती है ; वक्षमें दबाव मालूम होता है और कसावटका भाव। नये तुरन्त पैदा हुए बच्चेकी नीलिमा रोग या नील-पाण्डु रोग। हृत्पिण्ड प्रदेशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द ; श्वासकी अल्पता, मूर्च्छा आ जानेका उपक्रम और ठण्डा पसीना निकलना।

गर्दन और पीठ।—ग्रीवास्तम्भ या गर्दनका अकड़ना, बड़े कष्टसे जबड़े हिला सकता है ; गर्दनके पीछेसे छेदनेकी तरह दर्द बायें या दाहिने पार्श्वके भीतरसे होता हुआ मूर्द्धा देशतक चला जाता है। कब्जियत और कमरमें दर्द। मेरुपुच्छ या पीठकी रीढ़के सबसे निचले अंशमें तेज़ दर्द, बैठनेके समय रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह कोई नोकीली चीज़पर बैठा हुआ है। जानु और कमरकी कमजोरीकी वजहसे चलनेके समय झुककर चलता है (सलफर)।

प्रत्यङ्ग आदि।—बायाँ कन्धा और बाँह क्षीण तथा अवश, बायाँ बाँह दबाकर सोनेपर और भी अधिक सुन्न हो जाता है। बगलकी गाँठें सब फूली हुई। बगलने लहसनकी गन्ध जैसा पसीना आ जाता है (बोवि, लाई) गराबियोंका हाथ काँपना (नक्स-वोम)। कलाई और तर्जनीमें वातकी वजहसे सूजन, नींदके बाद बढ़ना। अंगुलहाड़ा (हिप, मर्क, साइलि), पीले रङ्गकी सूजन ; नासूर या हड्डीका जखम, रोगवाले अंशमें डङ्क मारने या काटा चुभनेकी तरह दर्द। (सवेरे) अंगुलीका अगला भाग सुन्न मालूम होना, ऐसा दर्द मानो कलाईमें मोच आ गयी है (आर्नि, जेल)। बाएं पार्श्वकी कमर और ऊरुके पिछले भागमें स्नायुशूल, मानो ऊरुमें एक गर्म लोहेकी सलाई घुसाई जा रही है ; नींदके बाद बढ़ना (बायें पार्श्वका कटि-स्नायुशूल—आर्स, सल्फ-रुब, कोली, रास) ; दाहिने पार्श्वका एकाएक पैदा होता है और धीरे-धीरे गायब हो जाता है। जानुके पिछले भागमें फोड़ा निकलने बाद कण्डार या पेशीके अगले भागमें संकोचन मालम होना ; जानुका फूलना और उसमें डंक मारने या छेदनेकी तरह दर्द, जाँघके सामनेवाली हड्डीमें जखम और सड़ना ; सोते ही दोनों पैरोंमें किसी अस्त्रसे काटने या चिलक मारनेकी तरह दर्द आरम्भ हो जाता है। गर्भवती स्त्रियोंके परकी

फूलना, वृद्धि—चलनेपर। निचले पर और पैरकी अंगुलीमें सड़न पैदा हो जाना या गलनेवाले घाव होना। हाथ और पैरमें इधर-उधर हटनेवाला विसर्प; रोगवाले अंगका ऊपरी भाग नीली आभा लिये, चमकीला, फूला हुआ और गलनेवाला। किसी सन्धिमें मोच आ जानेपर वह फूली और नीली हो जाती है। तलहत्थी और तलवेमें रातमें जलन। पाराका प्रयोग करनेपर हाथ-पर अकड़ जाते हैं या टेढ़े पड़ जाते हैं।

सार्वाङ्गिक।—बहुत शारीरिक और मानसिक अवसाद, समूची देह काँपा करती है, बहुत ही सुस्तीकी वजहसे रोगिनी बार-बार बैठती है और फिर सो जाती है; सवेरे वृद्धि (सल्फ, टियुबर्क)। अपस्मार या मृगी, निद्रित अवस्थामें प्रकोप पैदा हो जाता है (बूफो, कूप्रम); खून आदि शरीरका रस क्षय और हस्तमैथुनकी वजहसे बीमारियाँ; स्त्री या स्वामीके सतीत्व या सत्यताके विषयमें सन्देह होनेपर पैदा होनेवाली बीमारियाँ। खूनका स्राव होनेवाला धातु (फास, कार्बो-वेज, क्रोकस); जरा-सा भी कट जानेपर जखमवाली जगहसे बहुत अधिक खून या रस निकलता है (क्रोटेल, क्रियो, फास); खून काली आभा लिये और जमता नहीं है (क्रोटेल, सिकेलि)। रातमें दर्द बढ़ जानेके कारण रोगी शय्यामें अधिक देरतक नहीं रह सकता; यन्त्रणा बहुत असह्य मालूम होती है। मृगीके आक्रमणमें रोगी चिल्ला उठता है और बेहोश होकर जमीनमें गिर जाता है। आँखें घूमा करती हैं, मुँहसे फेन निकलता है और दोनों हाथोंकी मुट्ठी बँध जाती है; आक्रमणके पहले चेहरा सफेद पड़ जाता है और दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे हो जाते हैं, बार-बार डकार आया करती है, सरमें चक्कर आता है, भार मालूम होता है और दर्द हुआ करता है, साथ ही कलेजा धड़कता है और पेट फलता है; आक्रमणके बाद नींद आती है (हायो, इनेन्थि, नक्स, ओपि)। मूर्च्छा, सरमें चक्कर, श्वासकृच्छ्रता, मिचली, ठण्डा पसीना निकलना, सरमें चक्कर आना, चेहरा रक्तहीन, वमन, रोगीको चारों ओर अन्धेरा दिखाई देता है, हृत्प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है, अङ्ग-प्रत्यङ्ग अकड़े रहते हैं और नाकसे खूनका स्राव हुआ करता है। संन्यास या मस्तिष्कके अवसादसे पैदा हुआ बाएँ अंगका पक्षाघात।

त्वचा।—जखमके पुराने चिन्ह सब लाल हो उठते हैं, उनमें दर्द होता है, फट जाते हैं और उनसे खूनका स्राव हुआ करता है (ऐसिड-फ्लू, कैल्के-फ्ल,

ग्रैफ)। जखम सबमें स्पर्श सहन नहीं होता और उससे बदबूदार रस निकला करता है और उसके चारों ओर छोटे-छोटे दाने घिरे रहते हैं और बैंगनी आभा दिखाई देती है ; गर्म प्रयोगसे घटना। शोथ—यकृत और प्लीहाके विकारकी वजहसे या आरक्त ज्वरके बाद, पेशाबका रङ्ग काला, दोनों पैर शोथ-युक्त, पहले बायें, फिर दाहिने पैरपर रोगका आक्रमण हुआ करता है। कोषमय तन्तुका प्रदाह—रोगवाली जगह नीली और जलन-भरी हो जाती है। बहुत अधिक स्पर्श असहिष्णुता, यहाँ-तक कि शय्याके वस्त्र आदि भी रोगीके शरीरसे छू जानेपर रोगी बहुत कातर हो पड़ता। समूची देहमें जलन और खुजली है, जगह-जगह पीली आभा लिये या हरी पीली रस-भरी गोटियाँ निकलती हैं ; अकौता या खसड़ाके दाने या गोटियाँ सब धीरे-धीरे निकलती हैं या नीली अथवा काली हो जाती है ; आच्छन्न भाव। रस-भरे दाने सब खूनकी तरह रससे भर जानेके कारण काले मालूम होते हैं। फोड़ा, जखम, विस्फोटक या खराब लक्षणवाले व्रण, बहुत ही दर्द-भरे यन्त्रणाजनक शय्याक्षत (टैरेण्ट), रोगी घोर नीला, नीला या हरे-पीले रङ्गका दिखाई देता है। दाहिका या दुष्ट-व्रण, बैंगनी रङ्गकी आभा लिये और छोटे-छोटे फोड़ोंसे घिरे, रातमें ज्वरकी बेचैनीके कारण शय्यासे उठकर ठण्डा पानी ढालना पड़ता है। (ऐन्थ्रैक्सिन, आर्स, युफोर्ब देखिये) या जब व्रणमें पीव-सञ्चय होनेमें बहुत देर होती है और रोगीमें बहुत अधिक शारीरिक सुस्ती मालूम होती है। शय्याक्षतके अगल-बगल काला रङ्ग दिखाई देता है। त्वचाके नीचे रक्त-स्राव होकर शरीरका विभिन्न अंश लाल या नीले रङ्गका हो जाता है (आर्नि, हैमा, क्रोटेल, फास)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—सविराम ज्वर, प्रत्येक बसन्त ऋतु आनेपर (कार्बो-वेज, सल्फ, ऐलो) पैदा हो जाता है या गत हेमन्त ऋतुमें क्विनाइनकी सहायतासे रोकनेपर और उसके बादवाले बसन्त ऋतुमें फिरसे पैदा हो जाता है, तीसरे पहर दो बजनेके समय प्रकोप बढ़ जाता है ; चेहरा लाल हो जाता है, सरमें दर्द हुआ करता है और दोनों पैर बरफ जैसे ठण्डे हो जाते हैं। उत्तापावस्थामें रोगी बका करता है। **शीतावस्था**—पीठकी राहसे शीत माथेमें चढ़ता है, प्रायः एक दिनका अन्तर देकर भी आता है, गर्म कमरेमें शीत कम मालूम होता है, शीतके समय दाँत कटकटाते रहते हैं और खट-खट शब्द हुआ करता है, रोगी लगातार गर्मी खोजा करता है, शीतके समय जो पास रहता है उससे ही रोगी दाब रखनेको कहता है (जेल्स)। स्तन पीनेवाले

बच्चे प्रति बार ज्वरकी प्रकोपावस्थामें हाथ-पैर आदि पटका करते हैं, इसके सभी रोगोंमें बहुत ज्यादा पसीना निकला करता है। खट्टी चीजें खानेसे फिर बोखार आ जाता है। आन्त्रिक ज्वराधिकारमें मोह या बुदबुदाकर प्रलाप, आँख, गाल आदि गड़हेमें धँसे हुए, निचला जबड़ा झूल पड़ता है; जीभ सूखी और काली दिखाई देती है और बाहर निकालनेपर काँपा करती है अथवा दाँतकी जड़ ओठके पीछे अड़ जाती है; आँख पीली या कमला नेबूके रङ्ग-जैसी हो जाती है; ठण्डा पसीना और वस्त्र आदिमें लगनेपर पीले रङ्गका दाग पड़ता है और खून मिला पसीना (लाई)।

वृद्धि।—नींद आनेपर, छूनेपर, जाड़ा-गर्मीकी अधिकतासे, खट्टे आहारसे, शराब पीनेसे, सिनकोना या पाराके सेवनसे, दबानेपर, संकोचनके कारण, धूपमें, बसन्त ऋतुमें, रात्रिमें खड़े होनेपर या झुकनेपर और रुद्ध हुई देह हिलानेपर।

घटना।—बाहरी उत्तापके प्रयोगसे, निर्मल वायु लगनेपर, पंखा झलनेपर, सोने बाद सामनेकी ओर झुककर बैठनेपर और रुके हुए या नियमित स्रावके बाद।

सम्बन्ध।—अनुपूरक।—ऐसिड-नाई, हिप, लाइकोपोडियम। सविराम ज्वर जब लैकेसिसका प्रयोग करनेपर दूसरा आकार धारण करता है, उस समय इसके बाद नेट्रम म्यूरियेटिकमका व्यवहार प्रसिद्ध है। **असम्बन्ध**—ऐसिड-ऐसेटिक और ऐसिड-कार्बोलिक।

तुलनीय।—सलफर (फेफड़ेका प्रदाह), मस्कस (सरमें चक्कर आना), अर्श, लोरोसि, डिजि (हृत्पिण्डकी दुर्बलताके कारण मूर्च्छा)। थिरीडियन (सूर्यीस्तापी); ब्रायो, जेल्स (सर्दीकी वजहसे सर-दर्द); क्रोटोन, इलैप्स (कानसे स्राव); कैलि-कार्ब (मुँहकी सूजन); साइक्यूटा (श्वासकृच्छ्रता; आक्षेपकी वजहसे); ग्रिण्डेलिया (सोते ही दम बन्द हो जाना); एपिस, रस-टक्स (विसर्प); नक्स, लाइको (अजीर्ण); एपिस, लाइको, पैलेडि, ग्रैफाइ (डिम्बाधार); कैल्के (पित्ताश्मरी); लैकटिक-एसिड (गलेमें संकोचन); ऐण्टि-टार्ट (फेफड़ेका पक्षाघात); चायना (सविराम ज्वर); एपिस (ईर्षा); ऐनाक (भूतग्रस्त); बैप्टी (बदबूदार स्राव); सल्फ (यकृत); पल्स (आर्त्तवके समय खाँसी); टैरेबि, कैलि-बाई (जिह्वा); आइरिस (उपाङ्ग-प्रदाह); हाइड्रोफो (कण्ठनाली) इत्यादि।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष या दोषघ्न ।—आर्स, बेल, उत्ताप, लवण और शराब ।

सदृश ।—(सर्प-विष कुछ—बोथ्राप्स-लैन्सी, क्रोटेलस-होरिड, नेजा, इलैप्स)। थिरिड, आर्स, ओपि, हायो कैल्के, साइकूप, फास, हेलोडर्मा, लैक-कैन, ऐसिड-लैक, लाइकोपोड, ऐसिड-नाई, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, टैरेण्ट, हेलिबो इत्यादि ।

शक्ति ।—१२ शततमिकसे १००० शततमिकतक । ३० शततमिकके नीचे प्रायः व्यवहार नहीं होता ; परन्तु डा० ह्यूजेजने १२वें शततमिक क्रमके प्रयोगका उल्लेख किया है ।

क्रियाका स्थायित्व ।—३० से ४० दिन ।

लैचनैण्टिस टिङ्कटोरिया

(LACHNANTES TINCTORIA)

दूसरा नाम ।—रेड-रूट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे पौधेसे मूल अरिष्ट तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—उपझिल्ली-प्रदाह ; सर-दर्द ; वक्ष या हृत्पिण्डमें दर्द ; क्षयकास ; फेफड़ेका प्रदाह ; गलेका जखम ; गर्दनकी बीमारियाँ इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—सविराम ज्वर, आन्त्रिक ज्वर, फेफड़ेका प्रदाह, सर-दर्द, गलेकी झिल्लीका प्रदाह, गलेका जखम, क्षय-कास वगैरह रोगोंमें इसका व्यवहार हुआ करता है । इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—(१) दाहिने पार्श्वमें तेज़ सर-दर्द, मानो एक काँटा घुसकर माथेको फाड़ रहा है, पर शरीर बरफकी तरह ठण्डा ; रोगी यन्त्रणासे चिल्ला उठता है, वमन हो जानेपर बढ़ना । (२) विकारके रोगाधिकारमें बहुत प्रलाप बकता है ; आँखें चमकीली ज्योतिसे भरी, गालपर सीमाबद्ध लाली, रातके १ बजेसे २ बजेतक प्रकोप अधिक रहता है । (३) गर्दन अकड़ना,

गर्दन अकड़ी हुई, माथा एक पार्श्वमें (अधिकांश स्थानोंमें दाहिनी ओर) टेढ़ा हो जाता है, गर्दनके पीछे ऐसा मालूम होता है और इस ढङ्गका दर्द होता है, मानो सन्धि अपनी जगहसे हट गई है, विशेषकर सर घुमाने या पीछेकी ओर झुकानेकी चेष्टा करनेपर। (४) दोनों पृष्ठफलकके बीचमें ऐसा मालूम होता है, मानो बरफका एक टुकड़ा रखा हुआ है ; त्रिकास्थि-प्रदेशमें कमरसे आठ अंगुल ऊपर मेरुदण्डमें तथा तलहत्थी और पैरके तलवेमें तेज़ जलन मालूम होती है।

लक्षणावली

मन।—दिनमें अर्द्धनिद्रित अवस्थामें कल्पना-चक्षुसे नाना प्रकारकी मूर्त्तियाँ देखता है (ओपि, कैनाब), प्रलापमें बहुत बोलना (हायो, लैक, स्ट्रैमो), आँख ज्योति-भरी और दोनों गालोंपर सीमाबद्ध लाली। सामान्य कारणसे भी बहुत उत्तेजित हो उठता है। पसीना निकलनेके समय बहुत बेचैनी प्रकट करता है।

मस्तक।—ललाट-देशमें बाएँ पार्श्वसे दाहिने पार्श्वमें फैलनेवाला छेदनेकी तरह दर्द। माथा बहुत बड़ा और मानो माथेमें मोटी कील ठोंककर फाड़ा जा रहा है—ऐसा अनुभव होना। शरीर बरफकी तरह ठण्डा, शरीरकी त्वचापर थोड़ा पसीना और इसी वजहसे वह लसदार मालूम होता है ; मुख-मण्डल पीला ; बहुत जाड़ा मालम होना ; लिहाफ ओढ़ लेनेपर भी जाड़ा नहीं जाता ; यन्त्रणाजनक अस्पष्ट शब्द किया करता है। ऐसी जलन मालम होना, मानो माथा आगसे जलाया जा रहा है और बहुत अधिक प्यास। ऐसा मालूम होना कि मूर्द्धा-देश बहुत लम्बा हुआ जाता है (हाइपेरिक ; गिरजेकी तरह लम्बा मालूम होता है—नक्स)। सरमें दर्द—तीसरे पहर बढ़ना और सन्ध्याके समय माथेमें ऐसा दर्द, मानो रोगिनीका शरीर ढलमलाया करता है। सन्ध्याके समय माथेमें ऐसा दर्द, मानो काँटा बिध रहा है। ललाटकी त्वचा ऊपरकी ओर खिंच जाती है, विशेषकर बायें पार्श्वकी। ऐसा अनुभव होना, कि माथेके केश सब खड़े हुए जाते हैं, सरके पिछले भागमें अधिक। माथेकी त्वचामें बहुत दर्द, यहाँतक कि छूनेपर भी दर्द होता है। ललाटमें लाल रङ्गका व्रण पैदा होकर क्रमसे बढ़ता जाता है और उसमें पीब सञ्चित होता है।

आँख।—तिमिर दृष्टि ; सन्ध्याके समय नहीं देख पाता, चलनेपर घटना और बैठनेपर बढ़ना, मानो सब चीजें मेघसे ढँकी हुई हैं (साइक्लामेन,

लेक-डिफ्लो, प्लम)। किसी चीज़की ओर बहुत देरतक देखते रहनेपर उसके चारों ओर धुमैले वृत्त सब दिखाई देते हैं। किसी बिन्दुपर टकटकी लगाकर कुछ देरतक देखते रहनेपर वह बिन्दु या पढ़नेके समय, पढ़ा हुआ अंश अन्धकारमय हो जाता है (कैलि-कार्ब); माथा तेजीसे घुमानेपर आँखके सामने अंधेरा छा जाता है। चलनेके समय दृष्टिकी अस्पष्टताके सब लक्षण दूर हो जाते हैं, परन्तु बैठनेके साथ ही फिर पैदा हो जाते हैं, आँखमें सूखापन मालूम होना, इसके साथ ही बहुत आँसू बहना और जलन, विशेषकर सवेरे। ऐसा अनुभव होना, कि आँखमें धलके कण हैं और सफिद रङ्गकी पपड़ी जमना। दाहिनी पलकका स्पन्दन। भौं और पलक ऊपरकी ओर खिंची रहनेके कारण ऐसा मालूम होता है, मानो रोगी किसी ओर टकटकी लगाकर देख रहा है। आँख बन्द करनेपर आँखका उपतारा फड़कता हुआ दिखाई देता है।

कान।—ज्वर आदि रोगकी नयी अवस्थामें एकदम बहरापन। वायु सेवनके लिये चलते समय दाहिने कानमें गूंजनेकी आवाज़। कानमें छेदनेकी तरह दर्द और बीच-बीचमें कड़ाक-सी आवाज़ होती है। भोजनके समय दाहिने कानके छेदमें चींटी चलनेकी तरह मालूम होना। बाएँ कानमें सुरसुरी, अंगुली घुसाकर हिलानेपर आराम मालम होता है, परन्तु फिर तुरन्त सुरसुरी पैदा हो जाती है; ऐसा मालूम होता है, मानो एक कर्ण-विवर रुक गया है।

नाक।—नासा-मूलके दाहिने पार्श्वमें जलन मालूम होना। नाकसे बहुत ज्यादा फीके खूनका स्राव। नासादण्ड ऐसा मालूम होता है, मानो चिपक गया है।

मुखमण्डल आदि।—चेहरा पीला। फेफड़ेके प्रदाह रोगमें दोनों गालोंपर सीमाबद्ध लाली (सैङ्गिविन); रातमें १ बजेसे ८ बजेतक प्रबल विकार और प्रलाप तथा आँखें चमकीली मालूम होती हैं। चेहरा फूला और आँखके नीचे लाली या नीलापन पैदा हो जाता है। मूर्त्ति रक्त-शून्य मालूम होती है, और उसे देखनेसे ही मालूम होता है, कि बीमार है। मुँह और दोनों ओठोंका रङ्ग नीला; दृष्टि जड़ता बतानेवाली और आँख ठण्डी मालूम होती है। गाढ़े गोंदकी तरह श्लेषामय जलन; दोनों ओंठ फूले और अकड़े मालूम होते हैं। चेहरेपर ऐसी सुरसुरी मालूम होती है, मानो चींटी रेंग रही है।

गलेके भीतर।—कण्ठमें बहुत सूखापन, रातमें बहुत खाँसी आती है, विशेषकर नींद खुलनेपर। खुसखुसी खाँसीके साथ गलेमें जखम। निगलनेके समय गलनालीके छोटे अंशमें खुजलाहट मलूम होती है। उपझिल्ली रोगाधिकारमें तालुमूलके नीचे सूजन मालूम होना, गर्दन अकड़ी और माथा एक ओर झूल पड़ता है।

पाकाशय आदि।—उदरके ऊपरी प्रदेशमें टपक या स्पन्दन, मानो एक जखम-भरे अंशके ऊपर हथौड़ीसे कोई मार रहा है। उदरके ऊपरी अंशमें बाएँ पार्श्वसे दाहिने पार्श्वतक जानेवाला छेदनेकी तरह दर्द। उदरमें वायु (भुटभाट शब्द होना) और पेट गड़गड़ाना। उदरमें उत्ताप मालम होना। ऐसा मालूम होना मानो पाखाना होगा; पाखाना हो जानेपर सर-दर्दका आराम हो जाना। बार-बार मल वेग, पर पाखाना नहीं होता, योंही लौट आता है। बहुत वायु निकलनेके साथ पाखाना होना; फेफड़ेके प्रदाह रोगमें उदरमें बहुत ज्यादा वायु जमा होना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रजः—असमयमें हो हो जाता है, स्राव बहुत ज्यादा और खून चमकीला लाल रङ्गका या श्लेषा और लसदार गोंदकी तरह खून-मिला; आर्त्तव-स्रावके समय ऐसा मालूम होता है मानो पेट फूल रहा है और उसमें पानी खौल रहा है।

श्वास-यंत्र।—फेफड़ेके प्रदाह रोगमें सूखी खाँसी, ऐसा मालूम होता है, मानो स्वरनलीसे खाँसी आ रही है; खून-मिला कफ़। खाँसी सोनेके समय और नींद लग जानेपर अधिक हो जाती है (लेके, नक्स; खाँसीके कारण सवेरे छः बजे नींद खुल जाती है—कक्कस-कैक्ट)। स्थिर होकर बैठनेपर, तीसरे पहर चलने अथवा शरीर हिलानेके समय दाहिने वक्षमें। स्तनके नीचे (चेलिडो, कैलि-कार्ब, सिपि) लगातार नुकीली सलाई बेधनेकी तरह दर्द (दाहिने फेफड़ेके शिखर-देशमें—आर्स, कैल्क; बाएँ—आर्स)। फेफड़ेके प्रदाहाधिकारमें विकार पैदा हो जानेपर, खाँसनेपर वक्षमें तेज़ दर्द होता है, प्रलाप बकना, सीमाबद्ध लाली-भरे दोनों गाल और बोखार आया करता है; रातमें १ बजेसे २ बजेतक प्रकोपका अधिक होना। चित्तकी चञ्चलताके साथ हृत्पिण्डमें सुई बेधनेकी तरह दर्द। वक्ष और हृद्-प्रदेशमें मानो पानी खौल रहा है या पानीके बुलबुले उठ रहे हैं, ऐसा खौलना मालम होना, माथेमें

चढ़नेपर—शरीर डगमगाया करता है और सारे शरीरमें पसीना निकल आया करता है।

गर्दन और पीठ।—गलेके पिछले भागका अकड़ जाना (ऐक्टि, (ऐक्टि-टार्ट) और दर्द, यह दर्द माथेके ऊपरी भागसे नाकतक फैल जाता है और ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों नासापुट चिपक गये हैं। गर्दन घुमानेके समय या माथा पीछेकी ओर झुकानेपर गर्दनके पिछले भागमें ऐसा मालूम होता है, मानो सन्धि अपनी जगहसे खिसक गई है। उपझिल्ली-प्रदाह रोगमें या आरक्त ज्वराधिकारमें ग्रीवास्तम्भ (गला अकड़ना); गर्दनका पिछला भाग एक ओर (दाहिनी ओर) टेढ़ा हो जाता है। दोनों पृष्ठफलकोंके बीचमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक टुकड़ा बरफ रखा हुआ है, इसके बाद ही सारे शरीरमें जाड़ा मालूम होता है और शरीर कण्टकित हुआ करता है (मानो ठण्डा पानी ढाल रहा है—पल्स; दोनों पृष्ठफलकोंमें शीतलता मालूम होना—नेट्रम-कार्ब; मानो दोनों पृष्ठफलकोंके बीचमें किसीका बरफ-जैसा ठण्डा हाथ छू गया—सिपि; गुल्मवायु रोगके), मानो (सविराम ज्वर रोगमें) इस स्थानपर बरफका एक टुकड़ा है; गर्मी से घटना—पल्स; मानो पृष्ठफलकमें बरफ पीसा जा रहा है—ऐगार; दोनों पृष्ठफलकोंके बीचमें ठण्डी हवा आकर लग रही है (कास्टि)। बाएँ मसानेके (मूत्र-ग्रन्थि) अन्तरतम प्रदेशमें जलन मालूम होना, जलन दाहिनी ओर फैल जाती है। कमरके आठ अंगुल ऊपर और मेरुदण्डमें जलन। तीसरे पहर ४ बजनेके समय त्रिकास्थि-प्रदेशमें (मेरुदण्डके निचले प्रदेशमें) दर्द।

शीत, उत्ताप और पसीना।—ज्वरका आक्रमण सन्ध्याके समय अर्थात् सन्ध्या ६ बजेसे रात्रिके ६ बजेतक; चेहरा लाल, विशेषकर ऊपरी अंश। ज्वालामय उत्ताप, चेहरा लाल, विशेषकर दाहिनी ओर; इसके बाद दोनों गालोंमें सीमाबद्ध लाली, दाहिने गालमें अधिक। ज्वरके साथ प्रलाप, लाल गाल, दोनों आँखें चमकीली; रातके १ बजेसे २ बजेतक बढ़ना। माथा शून्य मालूम होता है; १२ बजनेके समय बेचैनी मिली नींदके बाद पसीना निकलना, पसीना होनेके पहले रोगी बहुत छटपटाया करता है; शरीरकी त्वचा ठण्डी, तर और लसदार; सवेरे पसीना।

वृद्धि।—लैकेसिसकी तरह अधिकांश लक्षण नींद खुलनेपर बढ़ते हैं।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐक्टि, इथ्यू, ऐनाक, पल्स, सिपि, बेलेडो, कैनाब-इन, साइक्यूत, क्रोटेल, जैल्सि, ग्लोन, जिम्नो, हायो, लैके, ओपि, प्लैट, फास, सैङ्गिविन, स्ट्रैमोन।

तुलनीय।—दाहिनी ओरके फेफड़ेके नीचेके दर्दमें—चेलिडो, कैलि-कार्ब : शीर्ष-देशमें—कैल्के ; बाएँ भागमें, शीर्ष-देशमें—आर्स ; नीचे— सल्फर ; बहुत बकना—लैकेसि ; चमकीली आँखें, प्रलाप (बेलेड) इत्यादि।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठा शततमिक क्रम।

लैक्टिस वैक्सिनाई-फ्लास

(LACTIS VACCINI-FLOS)

दूसरा नाम।—क्रीम, मलाई।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सोयान्स-पेटेण्टाइपर साहाय्यसे क्रम।

उपयोगिता और आभास।—गलनलीका सूखापन, निगलनेमें कष्ट, लक्षणवाले डिफ्थीरिया और गलेके जखमकी बीमारीकी तथा आक्षेपके साथ बहुत अधिक ऋतु-स्राव और श्वेत-प्रदर लक्षणमें यह बहुत अधिक फायदा करती है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—लैक-कैनाइनम, लैक-फेलियम, लैक-वैक्सिनम।

शक्ति।—३०—२००।

लैक्टूका वाइरोसा

(LACTUCA VIROSA)

दूसरा नाम।—प्वायजनस लेट्सि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—लैक्टि-वाइरोसा और सैटाइवाके सम्मिश्रणसे इसके लक्षण संग्रह किये गये हैं। खिले हुए पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—हृत्शूल ; उदरी ; दमा ; अर्श ; कब्जियत ; खाँसी ; अतिसार ; गुल्मवायु ; प्रमेह ; छातीमें जलन ; स्तनके विकार ; यकृतकी बीमारियाँ ; कानमें आवाज़ ; तन्द्रा ; कशेरुकाके अन्तमें दर्द ; प्लीहा ; हूप खाँसी ; जम्हाई इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—स्वस्थ शरीरपर इस दवाकी परीक्षा करते समय जो-जो लक्षण प्रकट हुए थे, उसकी पर्यालोचना करनेपर इसका उत्कृष्ट आभास मिल जाता है। पाकस्थलीमें बेचैनी और उत्ताप मालूम होना, यह अनुभूति गलेतक मालूम होती है ; क्रमसे पाकस्थली और कण्ठके भीतर उत्तापके बदले बरफ जैसी ठण्डक, उदरके ऊपरी प्रदेशमें सङ्कोचन, विशेषकर सामनेकी ओर झुककर बैठनेपर भी वक्षके ऊपर भार मालूम होता है, मानो एक टुकड़ा भारी लोहा दबाया हुआ है ; बायाँ स्तन मानो कोई मरोड़ रहा है। लम्बी साँस लेने और छोड़नेकी आकांक्षा, निर्मल वायु सेवन करनेका आग्रह और बार-बार जम्हाई आना। क्रमसे माथेमें जड़ता पैदा हो जाती है और शरीर ढलमलाया करता है ; परन्तु बुद्धि-वृत्तिमें किसी तरहकी विकलता नहीं मालूम होती ; माथा डोलता रहता है, इस वजहसे खड़े होने, बैठने या सोने—किसी भी अवस्थामें आराम नहीं मिलता और कानमें झिनझिन आवाज़ हुआ करती है। डकार और उदरमें कलकल शब्द ; वायु निकलनेपर आराम मालूम होना। वक्षमें गर्मी, तेज़ और कभी-कभी बरफकी तरह ठण्डक मालूम हुआ करती है। तालुमूलकी निष्क्रियताकी वजहसे निगलनेमें तकलीफ़, बार-बार श्वास त्याग करता है। सामनेकी ओर झुककर बैठनेपर पाकाशय आदि और सीधे होकर बैठनेपर वक्षके भीतरका दर्द घटा हुआ मालूम होता है। वक्षपर किसी तरहका दबाव सहन नहीं होता। मस्तिष्ककी जड़ता और ऐसा

मालूम होता है, कि घूंघटके भीतरसे देख रहा है, ऐसी अस्पष्ट दृष्टि ; गलेमें श्लेष्मा-सञ्चय। तालुमूलमें बहुत अधिक उत्तेजनाके कारण शरीरको हिला देनेवाली खाँसी, खाँसनेपर माथा और वक्षमें भयानक झटका मालूम होता है, सर-दर्द बहुत बढ़ जाता है, और ऐसा मालूम होता है, कि वक्षस्थल टुकड़े-टुकड़े हुआ जाता है। सरमें दर्दके साथ उदरमें पूर्णता एवं भार मालूम होना ; उद्वेग और विरक्ति। अधिकतर देह और मस्तक बहुत छोटा मालूम होता है ; शय्यामें शायितावस्थासे ऐसा मालूम होता है, मानो पानीमें बहा जाता है ; स्वप्नमें ऐसा मालूम होता है मानो भूमिसे ऊँचे चल रहा है, मानो शून्यमें उड़ रहा है (ऐसिरम, लैक-कैन, वैलि, स्टिक्टा) ; बैठनेवाली अवस्थामें बराबर ऐसा मालूम होता है, मानो मूत्रनलीके भीतर होकर एक बून्द पेशाब निकलता है, वायलेट फूलकी तरह गन्ध मिला पेशाब। यकृतमें जकड़ जानेकी तरह मालूम होना और बढ़ा हुआ यकृत। इसके द्वारा दाहिने बाँहपर बहुत अधिक रोगका हमला होता है। दोनों पैरोंकी रक्त-सञ्चालन क्रिया, ऐसा मालूम होता है, मानो रुक गयी है।

लक्षणावली

मन।—बहुत विमर्ष चित्त, मानो दूसरेके चित्तपर भी अपना विषाद फैला देता है, सामान्य घटनासे भी रोगी बहुत डर जाता है ; शोक प्रकाशके बाद सन्ध्याके समय बेहोश करनेवाला ललाटमें दर्द पैदा हो जाता है। गलेमें बहुत सङ्कोचन मालूम होता है और रोगी रोने लगता है। मानसिक यन्त्रणा और चित्तकी चञ्चलता। बहुत ही चिड़चिड़ा स्वभाव, सामान्य प्रतिवादसे भी क्रोधसे अन्धा हो जाता है ; बहुत आलसी ; बहुत देरतक शय्यामें नहीं रह सकता ; किसी विषयको सोचते ही बड़ी विपत्तिमें मानो जा पड़ता है और सोचनेके समय सर-दर्द पैदा हो जाता है। बुद्धि-वृत्तिकी चालना नहीं करना चाहता ; उसके भाव सब आपसमें मिल जाते हैं। कोई चीज़ एक जगह रखकर, फिर इधर-उधर ढूँढ़ा करता है।

मस्तक।—माथा खाली मालूम होता है, इसके साथ ही माथेमें ऐसी जड़ता मालूम होती है, मानो न जाने कितने दिनोंसे नींद नहीं आयी। सरमें चक्कर आना, गिर जानेका उपक्रम (बेल, साइकूट, फेलैन, रास, सब्जि, पीछेकी ओर—लिडम, रास ; सामने—फेरम, पोडो, रैनान, रास ; बगलकी ओर—फेरम-

ऐसिट, कैनाब, कोना, इयुफोर्ब, रियुम, स्क्वियुला)। माथेमें नशाके कारण मत्तता मालूम होना। सरमें चक्कर, घूमनेके समय दोनों पैरों और माथेमें विशेषकर माथेके पिछले भागमें भार मालूम होना और इसके साथ ही दृष्टिके सामने अन्धकार पैदा हो जाना (ऐकि-स्पाई, डालका, कैलि-कार्ब, ओपि)। गर्म घरमें प्रवेश करनेपर माथा भारी और शय्यापर सोयी हुई अवस्थामें ऐसा मालूम होता है मानो पानीमें बह रहा है, माथा मानो बहुत बड़ा है या एकाएक शरीरका ऊपरी अंश तेजीसे सञ्चालन करनेकी वजहसे मानो माथेका आकार बढ़ा जाता है, ऐसा मालूम होना (आर्नि, नक्स-मस, माथेमें अधिक रक्त-सञ्चयकी वजहसे—वेरेट, मानो बहुत बड़ा—पेरिस ; मिचलीके साथ—मिफाइटिस ; गर्भावस्थामें—आर्जेण्ट-नाई)। सर-दर्द, मूर्द्धा-देशके शुद्ध अंशमें तेज़ दर्द, स्पर्श करनेपर बहुत दर्द मालूम होता है ; दर्द जगह बदला करता है (सर-दर्द—कैलि-कार्ब, काफि, इग्ने, नक्स, पल्स)। तीसरे पहर होनेवाला सर-दर्द (इथ्यू, ऐसेर, बेल, कालो, ग्रैफ, लैके, लाई, कैलि-बाई, सेलिन, सिलि, स्ट्रैन)। बाएँ शंखदेश या कनपटीमें धीमा दर्द, माथा हिलाने या धोनेके समय मालूम होता है, जितनी ही बार सर हिलाता है, उतनी ही बार दर्द बढ़ जाता है। दबानेकी तरह सर-दर्द, कभी-कभी ऐसा मालूम होता है, मानो माथेके भीतर मस्तिष्क हिल रहा है ; घरके भीतरकी गर्मी लगनेपर दर्द पैदा हो जाता है। खाँसनेपर माथेमें बहुत ही यन्त्रणाजनक संघात या धक्का मालूम होता है और माथा काँप उठता है (खाँसनेपर सर-दर्द होता है—नैट्र-म्यूर, सरके पिछले भागमें दर्द मालम होना—सल्फ ; बेहोश कर देनेवाला सर-दर्द—इथ्यू, उन्मत्त करनेवाला, मानो माथा दो हो जायगा—नक्स-वोम) और बहुत देरतक मस्तिष्कका हिलना और सरका काँपना मालूम होता है। विश्राम अवस्थामें एकाएक काँप उठता है और माथेमें टपक पैदा होने लगती है ; माथेमें पूर्णता मालूम होना, इसके साथ ही कानमें और सामने झिन-झिन शब्द हुआ करता है। मस्तिष्कके हिलनेकी वजहसे सोने, बैठने, किसी भी अवस्थामें रोगीको आराम नहीं मिलता।

आँख।—आँखमें कुटकुटाहट होती है। आँखमें दर्द (बोवि, कूप्रम, पेरिस, फास) और चक्षुगोलकका बढ़ते जाना मालूम होना। दोनों आँखोंका बाहरी भाग कुटकुट करता है (कैलि-ब्राई, फाइटो, सल्फ); मलनेपर बढ़

जाता है। पलकोंमें जलन,--दिनमें पढ़नेके समय, दाहिनी आँखमें तिमिर-दृष्टिके साथ जलन (अरम-मूर, ऐसिड-फास, ओलियैन, सल्फ़)। तिमिर-दृष्टि (अंधेरा देखना), ऐसा मालूम होता है, कि सभी चीजें मेघसे ढकी हैं (ऐसेर, कैमो, इयोन, जेल्सि, ग्रैनेट, लोरो, नैट्र-मूर, कैलि-नाइट, ऐसिड-नाई, ओलि-ऐन, ओपि); क्षीण-दृष्टि, इसके साथ ही कभी-कभी उत्ताप मालूम होना। ऐसी अस्पष्ट दृष्टि मानो मेघ या घूंघटके भीतरसे देख रहा है (बार्बा, कास्टि, क्रोकस, क्रियो, लैके, पेट्रोल, फास, सल्फ़, टैब, मानो पानीके भीतरसे देख रहा है—स्टैफ, पर ध्यानसे देखनेपर अस्पष्टता दूर हो जाती है)। भोजनके बाद माथा बहुत झुकानेपर दृष्टिके सामने ऐसा मालूम होता है, मानो कीड़े उड़ रहे हैं (ऐगार, कैस्टोर, काकुर, कोना, इयोन, कैलि-कार्ब, लाई, मर्क, पेट्रोल, फास, रियुटा, सिकेलि, सिपि, सिलि, टैबाक)।

गलेके भीतर।—गलेके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो तेज़ गर्मी लग गयी है। निगलनेमें तकलीफ़ या निगलनेमें कष्ट; उपजिह्वामें ऐसा मालूम होना मानो त्वचा क्षय हो गयी है और इसके साथ ही जलन या कण्ठके भीतरवाली पेशीकी निष्क्रियता। सवेरे गलेमें लसदार श्लेष्मा संचित हुआ करता है।

पाकस्थली।—बार-बार डकार आनेपर वक्षके ऊपरका दबाव घट जाता है; अन्ननालीमें बहुत शीत मालम होना। उदरके ऊपरी प्रदेशमें संकोचन और पाकाशयमें दर्द, दबानेपर दर्द बढ़ जाता है, मानो बहुत देरतक शरीरको टेढ़ा किये हुए बैठा था। उदरके ऊपरी भाग और वक्षोस्थिमें ऐसा ही दर्द, हृदयके अगले भागमें दर्द और उदरके ऊपरी भागमें बहुत गड़बड़ी मालम होना। पाकाशयमें दबाव, पूर्णता और खौलनेकी तरह दर्द और इसके बाद दाहिने स्तनके नीचे "चुनचुनी" हुआ करती है और ऐसा मालूम होता है, मानो इस स्थानमें छाला पड़ गया; पाकस्थलीमें स्थित खाये हुए द्रव्य आदि जलकर निकलना चाहते हैं और पेट फूला करता है और आँतोंमें हुड़-हुड़ गुड़गुड़ शब्द होता है, वायु निकल जानेपर घट जाता है, पाकाशयमें बहुत सर्दी मालूम होना; पाकाशय और उदरके ऊपरी प्रदेशमें कन्‌कन् झन्-झन् हुआ करता है और बार-बार डकार आया करती है, ऐसा मालूम होता है, मानो पाकाशय और अन्ननाली बरफसे भरी हुई है। सामनेकी ओर झुककर बैठनेपर और बदबूदार हवा छूटनेपर पाकाशयका दर्द घट जाता है।

अन्त्राशय ।—दाहिनी कुक्षि या कोखमें ज़ोरका धक्का या अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द मालूम होता है ; यकृत प्रदेशमें प्रात:काल बहुत दर्द, कभी-कभी भोजनके बाद अस्त्रके आघातकी तरह दर्द और भार मालूम होता है या कभी-कभी दर्द पीठकी ओर चला जाता है ; यकृतका बढ़ना और उसमें दबाव या खींचन मालूम होना। प्लीहाके स्थानपर विश्रामके समय या स्थिर होकर बैठनेपर तेज़ अस्त्राघातकी तरह और मरोड़ जैसा दर्द, पेट मानो फूल पड़ता है, ऐसा मालूम होना (इग्ने, इपिक, स्टैफ)। नाभि-प्रदेशमें मानो चिपककर पकड़ लेता है, ऐसा दर्द, उरु-पर-उरु रखनेपप दर्द बढ़ा हुआ मालूम होता है। उदरके ऊपरी अंशमें छेदनेकी तरह दर्द, भोजनके समय और उसके बाद बढ़ना ; तकलीफ़से मानो देह घूमा करती है। समूचे उदरमें जगह-जगह, नखकी चोटकी तरह दर्द, आँतोंमें गड़गड़ाहट और पानीकी तरह आँव भरा मल निकलना। उदरमें अस्वाच्छन्द्य पैदा करनेवाला उत्ताप और भाफ़की तरह मालूम होना और इस खौलनेके कारण पैदा हुई भाफ़ धीरे-धीरे वक्षमें चढ़ आती है। नाभि और उदरके ऊपरी प्रदेशमें मानो एक महान भार दबाया हुआ है, ऐसा ही अनुभव होना, सीधे बैठनेपर बढ़ना। कब्जियतके साथ सविराम ज्वरके बाद उदरी, उदर, पैर और चेहरा बहुत फूल उठता है या यकृत बहुत फूल जाता है और कड़ा हो जाता है, इसके साथ ही बहुत श्वास-कृच्छ्रता मालूम होती हैं। उदरमें पूर्णता और भार मालूम होना तथा पेट गड़गड़ाना और श्वास-कृच्छ्रता ; डकार और वायु निकलनेपर घटना ; यकृत प्रदेशमें कसावटका भाव ; बहुत ज्यादा वायु निकलना, कभी-कभी बहुत बदबूदार वायु भी निकला करता है।

मलान्त्र और मल ।—पाखाना होनेके पहले बहुत कूथन (बोलेट, मर्क-कोर); मल बहुत कड़ा, प्रबल वेगसे निकलता है और मलद्वारमें लगातार चोट लगनेकी तरह दर्द। प्रायः पतला पाखाना हुआ करता है और माँड़की तरह मल निकला करता है। पाखाना होनेके समय आलस्य और सुस्ती मालूम होती है और कभी-कभी पाखाना फिरनेके समय नींद आ जाती है (नक्स-मस), जम्हाई आती है और मुँहमें पानी भर आता है। कोमल पाखाना होनेपर मलद्वारमें दबाव मालूम होना। मलद्वारके चारों ओरकी शिरा फूलनेकी वजहसे छोटे-छोटे अर्बुद सब निकलते हैं, मलान्त्र चिपक जाता और प्रत्येक बार कड़ा पाखाना होनेपर पतला मल निकलता है।

पेशाब ।—पेशाबका वेग होनेपर लिङ्गमुण्डमें ऐसा दर्द होता है मानो चिपक गया है और यह दर्द सारे शरीरमें फैल जाता है। मूत्रका अधिक संचय होना; बार-बार उठकर पेशाब करना पड़ता है। रातके अन्तिम भागमें बहुत अधिक परिमाणमें मूत्र सञ्चयकी वजहसे मूत्रस्थलीमें दबाव मालूम होता रहता है। पेशाब पानीकी तरह निर्मल, बहुत ज्यादा संचय और स्राव कभी-कभी निर्मल, पीले रंगका और वायोलेट-फूलकी गन्ध (टेरिब, इन्यूला, कोपेवा) का होता है। बैठनेवाली अवस्थामें लगातार ऐसा मालूम होता है कि मूत्र-नालीके भीतरसे एक बून्द पेशाब निकलता है (लेमियम-ऐल्ब); मानो पेशाबका बहुत अधिक वेग हुआ है—ऐसा ही मूत्राशयमें मालूम होता है।

पुं-जननेन्द्रिय ।—सवेरे बार-बार लिङ्गमें कड़ापन होनेपर शिश्नके ऊपर शिराका फूलना। शिश्नमूलमें, दाहिनी रेतोरज्जुमें और उरुके भीतरी प्रदेशमें ऐसा दर्द मानो जकड़ गया है (काम-प्रवृत्तिको अत्यधिक उत्तेजनाको दमन करनेवाला), रातके अन्तिम भागमें, नींदके समय कामोत्तेजक स्वप्नके साथ स्वप्नदोष और कभी-कभी गहरी नींदके समय लगातार दो बार वीर्यस्खलन।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—स्तनका दूध और रजःस्वल्पता। यन्त्रणादायक प्रमेह (स्पाइरेन्थिस)।

श्वास-यन्त्र ।—कण्ठ-स्वर चढ़नेकी क्षमताका न रहना। ऊँचे स्वरसे पढ़नेपर गलेके भीतर कर्कशता मालूम होना और सन्ध्याके समय या सवेरे स्वर-भंग। गलेमें पूर्णता मालम होना; पीछेकी ओर माथा झुकानेपर घटना। गलेके भीतर खुजली पैदा करनेवाली खाँसी; कभी-कभी वक्षके भीतर दबाव मालूम होनेके साथ-ही-साथ खाँसी; गलेमें जलन पैदा करनेवाला सूखापन; सूखी खाँसी, कभी-कभी वक्षस्थल, उदर और सरके पिछले भागको हिलाकर ऊपर-के-ऊपर खाँसी आया करती है। प्रचण्ड आक्षेपिक खाँसी; ऐसा मालूम होता है, मानो वक्षस्थल दो हो जायगा। जरा-सा खखारनेसे भी बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा निकलता है। खाँसने या गला साफ़ करते समय वक्षमें दर्द बढ़ जाता है। स्नायविक उत्तेजना-प्रवण व्यक्तियोंकी सूखी श्वास-रोधक खाँसी, इसके साथ ही बहुत दिनोंकी अनिद्रा और पाकस्थलीमें तेज़ शीत मालूम होना (कोल्चि, फास)।

वक्ष ।—बायें फेफड़ेमें अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द या पाकाशयके नीचे दबावकी तरह मालूम होना और बाधाप्राप्त श्वास-प्रश्वास; वक्षके भीतर पूर्णता मालूम होना और हिलनेकी वजहसे तेज़ श्वास-प्रश्वास; सामनेकी ओर कुछ टेढ़े होकर बैठनेपर दीर्घ श्वासका चलना आरम्भ हो जाता है; चलनेके समय या सीधे होकर बैठनेपर या खड़े होनेपर श्वास-प्रश्वासकी क्रिया तृप्तिजनक नहीं होती, कारण नाभि और हृदयके अगले प्रदेशके संकोचनकी वजहसे वह प्रत्येक बॉर दीर्घ श्वास ग्रहण करनेके लिये लालायित हो उठता है (ब्राई, कैल्के, कास्टि, प्रूनस)। सीधे होकर बैठनेपर श्वास-कृच्छ्रता और सामनेकी ओर झुककर अथवा पीछेकी ओर माथा झुका रखनेपर घटना—लैके, सीधे होकर खड़े होनेपर बाधा प्राप्त श्वास-प्रश्वास—फेलैन, सिपि; चलनेके समय बाधा प्राप्त श्वास-प्रश्वास (ऐगार, कार्बो-वेज, कोना, ग्रैनेट, लाई, नक्स, रास, सिपि, स्टैन) श्वास रोग, श्वास-प्रश्वासमें बाधा और वक्षका पूरी तरह न फैलना, मानो वक्षका निचला भाग बहुत संकीर्ण हो गया है, वक्षमें बहुत धक्का लगता है, इसलिये, रोगी अपनी तृप्ति करनेवाली पूर्ण-श्वास ग्रहण करनेमें डरता है; रातमें बहुत श्वास-कष्ट पैदा हो जाता है, यहाँतक कि रोगीकी नींद खुल जाती है और उसे बाध्य होकर जल्दीसे उठकर बैठ जाना पड़ता है (ड्युफ्रे, ग्रैफ, कैलि-बाई, कैलि-आयोड, लैके), जम्हाई आनेपर और अंगड़ाई लेनेपर कुछ देरके लिये आराम हो जाता है। बहुत देरतक झुकने या टेढ़े होकर बैठनेपर, उठनेपर या पीछेकी ओर सर झुकानेपर (लैके, बेल, कैमो) श्वासकृच्छ्रता घट जाती है। श्वास-कृच्छ्रता और वक्षपर दबाव मालूम होना, मानो एक टुकड़ा भारी लोहा वक्षके ऊपर रखा हुआ है (स्टैन), शरीरपर वस्त्र नहीं रख सकता। सीधे होकर बैठनेपर वक्षके भीतरका दर्द घट जाता है (बढ़ता है—लैके); गर्दनमें किसी तरहके कसनेवाले वस्त्र सहन नहीं होते, मानो इससे उसकी साँस रुक जाना चाहती है। हृत्पिण्डके यान्त्रिक रोगाधिकारमें (नैजा) आक्षेपिक श्वासरोग; वक्षोदक रोगमें श्वासरोध हो जानेका उपक्रम। वक्षोदक या फुस्फुसावरक झिल्लीके भीतर जलसञ्चयकी वजहसे शोथ, सार्वाङ्गिक शोथ, चित्तमें चंचलता, लेटी हुई अवस्थामें श्वास-प्रश्वासकी क्रिया करनेकी शक्तिके न रहने (ऐसिट-टार्ट, आर्स, फेरम, कैलि-कार्ब कैलि-नाई, लैके, नैजा, फास, प्लम्ब, स्क्वि : चित्त होकर सोनेपर—हाइपिरिक, लाई, ऐसिड-ऐसेट;

शोथ रोगाधिकारमें जरा भी नहीं सो सकता—ऐपोसिन ; वक्षोदक रोगाधिकारमें—कैलि-कार्ब) की वजहसे वाध्य होकर उठकर सीधे बैठ जाना पड़ता है (मर्क-सल्फ); सूखी खुसखुसी खाँसी, बहुत तकलीफ़ और सुस्ती, तीसरे पहर दुर्दमनीय औंघाई और पेशाबका परिमाण घट जाना। बायें वक्षसे पृष्ठ-फलकतक शलाका बेधनेकी तरह दर्द। ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो बायाँ स्तन मरोड़ खा रहा है (बोरेक्स)।

प्रत्यङ्ग आदि। – खाँसनेपर गर्दनके पीछे दर्द होता है। दाहिने कक्षदेशमें और बगलमें अस्त्रके आघातकी तरह दर्द, बाँह उठाने और अंगुलीसे दबानेपर बढ़ जाता है। कमरसे पुट्ठेतक अकड़न पैदा करनेवाला दर्द। मेरुदण्डके ऊपरसे निचले अंशतक और त्रिकास्थि-प्रदेशतक दर्द मालूम होता है। हाथ-पैर आदिमें कमजोरी मालूम होना ; कभी-कभी कन्धेके सन्धिस्थानमें और कभी-कभी कलाईमें बहुत दर्द मालूम होता है। दाहिना हाथ बहुत ही कमजोर। दोनों पैर बहुत क्षीण मालूम होते हैं, चलनेके समय बढ़ना और उसके भीतर खींचन मालूम होना। बैठनेपर दोनों पैरोंमें बार-बार झुनझुनी आ जाती है। उपविष्टावस्थामें बाएँ पैरमें और स्थिर होकर बैठनेपर दाहिने पैरमें ऐसा मालूम होता है, मानो रक्त-संचालन क्रिया रुक गयी है। चलति समय ढुलक पड़ता है ; सवेरे शय्यासे उठनेपर औंघाई आती है और शारीरिक परिश्रम करनेकी इच्छा नहीं रहती। सामान्य परिश्रम करनेसे ही बहुत ज्यादा थकावट और तकलीफ़ मालूम होती है। उपविष्टावस्थामें रोगीको अपनी देह वाध्य होकर सरल रखना पड़ता है, श्वास-रोगाधिकारमें समूची देह फूल जाया करती है, मस्तिष्कमें जड़ता मालम होती है और रोगी किसी तरह भी चित्त होकर सो नहीं सकता (हाइपिरिक, लाई, ऐसिड-ऐसेट)। निर्मल वायु सेवनसे श्वासकृच्छ्रता और खुली हुई जगहमें टहलने आदि व्यायामसे, लक्षण आदि घट जाते हैं। शरीर बहुत छोटा मालूम होता है। शय्यामें शायित अवस्थामें ऐसा मालूम होता है, मानो पानीमें तैर रहा है।

निद्रा।—बार-बार जम्हाई आना और अङ्गड़ाई लेना (इग्ने, साइमेक्स, ऐमिल-नाइ)। दिनमें बहुत औंघाई, क्लान्ति और आलस्य मालूम होना ; सन्ध्याके पहले ही बार-बार जम्हाई और जल्दीसे सो जानेकी आवश्यकता आ पड़ती है। दुर्दमनीय निद्रालुता, काम करता-करता सो जाता है। श्वासकष्ट और उदरके ऊपरी प्रदेशमें खींचन मालूम होनेकी वजहसे रोगी चित्त

होकर सो नहीं सकता ; माथा ऊँचाकर दाहिने पार्श्वमें सोनेपर अच्छा रहता है (इयुपेट-पर्फोल)। रातमें कई बार नींद खुल जाती है। प्रगाढ़ निद्रावस्थामें अनजानमें वीर्यपात हो जाना। स्वप्नमें रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह जमीनसे ऊपर चल रहा है या शून्यमें उड़ रहा है (ऐसेर, स्टिका, लैक-कैन, ऐसिड-फास, थूजा, नैट्र-मूर, वेलि)।

घटना।—सीधे होकर बैठनेपर (छातीमें दर्द और श्वासकृच्छ्रता)। सामनेकी ओर टेढ़े होकर बैठनेपर (पाकाशयिक लक्षण आदि); उरुके ऊपर उरु रखनेपर (नाभि-प्रदेशमें जकड़ जाना); निर्मल वायु सेवन करनेपर; माथा ऊँचाकर दाहिनी करवट सोनेपर, बार-बार जम्हाई और अंगड़ाई लेनेपर, वायु निकलनेपर और बहुत देरतक बैठने बाद उठनेके समय या नीचेकी ओर माथा झुकानेपर।

वृद्धि।—छींकनेपर, खाँसनेपर, गर्म घरमें, छूनेपर, चित्त होकर सोनेपर, मलनेपर, सीधे होकर बैठनेपर (पाकाशयका दर्द), भोजनके समय या भोजनके बाद, दबानेपर, बाँह उठाने और चलनेके समय।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐसिड-लैक्टिक, लैक कैन, लैके, ऐसिर, ओपि, नक्स-मस, टेरिब, बोरैक्स, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, हेलोडर्मा।

दोषघ्न।—काफिया।

तुलनीय।—औंघाई और कब्जियत (ओपियम, नक्स-मस); गलेमें कसावट सहन नहीं होती (लैकेसिस); प्रमेह (थूजा), हृत्पिण्ड (कैलि-कार्ब); खाँसी (एनिन)।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३रा और ६ठाँ दशमिक क्रम।

लेमियम ऐल्बम

(LAMIUM ALBUM)

दूसरा नाम ।—डेड लेटेल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फूल और फल लगे समूचे ताजे गाछसे मदर-टिञ्चर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अर्श : सर-दर्द ; आँत उतरना ; आर्त्तव-विकार ।

उपयोगिता और आभास ।—माथेके आगे और पीछेवाले भागमें गतिशील सर-दर्द, थोड़ा स्राव होनेवाला और असमयमें आर्त्तव-स्रावके साथ प्रदर ; अर्श ; बाहर निकला हुआ मसा, इसके साथ ही खून-मिला कड़ा मल ; शरीर और मनका अस्वाच्छन्द्य और हाथ-पैर आदिका काँपना वग़ैरह कई इसके प्रधान क्रियास्थल हैं ।

लक्षणावली

मन ।—रोना स्वभाव अर्थात् रोनी आवाज़में बराबर अपना असन्तोष प्रकट किया करता है ; रोना—मनमें समझता है कि कोई उसे देख नहीं सकता । आँखें हमेशा आँसू-भरी रहती हैं और विमर्ष । चित्तमें महान अशान्ति ।

मस्तक ।—मस्तिष्कके गभीरतम अंशमें या केन्द्रस्थलमें लगातार दर्द मालूम होना (बैसिलिन), झुके रहने बाद माथा उठानेके समय बढ़ जाता है । सरमें दर्द—आसनसे उठनेके समय बढ़ना (कोबाल्ट) और उपविष्ठावस्थामें (बैठनेवाली अवस्थामें) घटना (गुयायेक, रास)। सर-दर्द, मानो चारों ओरसे मस्तिष्क दबाया जा रहा है (मानो एक लोहेकी बन्धनीसे मस्तक दबाया जा रहा है—ऐनाक, बेसिलिन, सल्फ़), इसके साथ ही मस्तिष्कके केन्द्रस्थलमें प्रचण्ड दर्द । माथेकी हड्डीमें कसावटका भाव । सरमें दर्द रोगमें माथेका आगे-पीछे (आर्नि, कैमो, लाई) हिलना और देखने और सुननेकी शक्तिका घट जाना । निर्मल वायु लगनेपर, सवेरे नींद खुलनेपर और रातके अन्तिम भागमें शायित अवस्थामें दर्दका बढ़ जाना ।

पाकस्थली।—शून्य या खट्टी डकार। बहुत उत्ताप, अस्पष्ट दृष्टि और सुस्ती मालूम होनेके साथ मिचली और सर्दी; एक घण्टा पहलेका खाया हुआ पदार्थ कै होता है। उदरमें मानो बहुत अधिक परिमाणमें वायु इकट्ठा होकर रुका रहता है, ऐसा अनुभव होनेके साथ-ही-साथ वायु निकल जानेपर भी नहीं घटता। तलपेटका हिलना, ऐसा मालूम होता है, मानो प्रबल रजः-स्राव आरम्भ होगा। अर्श—बलि (मसा) बहुत कड़ा और रक्तमय। बाएँ पुट्ठे के स्थानपर बहुत दबाव मालूम होनेकी वजहसे ऐसा मालूम होता है, मानो आँत उतरना चाहती है।

पेशाब।—वेग प्रबल, पर पेशाब बहुत थोड़ा होता है। हमेशा ऐसा मालूम होता है, मानो मूत्रनालीसे लारकी तरह पदार्थका स्राव होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—असमयमें आर्त्तव-स्राव—स्राव बहुत थोड़ा, पूर्णिमाके दिन पैदा होना। प्रदर—स्राव बहुत ज्यादा, यन्त्रणा-रहित और सफेद आभा लिये श्लेष्मामय; कभी-कभी योनिमें कुटकुटाहट होती है।

सार्वाङ्गिक।—बहुत अस्वाच्छन्द्य और मानसिक अशान्तिकी वजहसे रोगी कहीं भी स्थिर नहीं रह सकता और उसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग काँपा करते हैं। बोलनेपर श्वासाल्पता, इसके साथ ही फेफड़े आदिमें कमजोरी अनुभव करना (स्टैनम), वक्षमें जलन; वृद्धि—पानी आदि पीनेपर।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—ऐनाक, बेसिलिन (सर-दर्द); कैमो, लाइ, लैकिटयुका-वाइ, टियुबर्क, सल्फ। माथा सामने और पीछेकी ओर हिलाता है—आर्निका, कैमो, लाइकोपोडियम।

शक्ति।—मूल अर्क और ३रा और १२वाँ दशमिक क्रम।

लैपेथम

(LAPATHUM)

दूसरा नाम ।—कामन-डक ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़से अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—प्रबल सर-दर्द, नाकसे बहुत अधिक रक्तस्राव, सर-दर्दके बाद नाकसे रक्त-स्राव, श्वेत-प्रदर । मूत्रग्रन्थि (मसाना) और पाकाशयमें दबाव मालूम होना और दर्दके लक्षणमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—रियुमेक्स, रियुम, सिपिया, लिलि-टिग ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

लैपिस ऐल्बस

(LAPIS ALBUS)

दूसरा नाम ।—ह्वाइट स्टोन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—स्विटजरलैण्ड देशके एक प्रकारके धातव उत्सके नीचेवाले सफेद पत्थरको चूरकर यह तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—कर्कटका जखम हो जानेवाला अर्बुद ; वाधक ; ग्रन्थियोंका बढ़ना ; गलगण्ड ; श्वेत-प्रदर ; अपत्य-पथकी खुजली ; कर्कटिया जखम-विशेष ; गुटिका-युक्त धातु इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—डा० ग्रवोगलने इस दवाकी कितने ही स्थानोंमें परीक्षा की है । उनके मतसे नया और पुराना—ग्रन्थिका बढ़ना और जखम हो जानेकी पूर्वावस्थावाली कर्कटिया अर्बुदकी चिकित्साकी यह एक उत्कृष्ट दवा समझी जाती है । स्थिति-स्थापकता विशिष्ट बढ़ी हुई ग्रन्थि अर्थात् कड़ी नहीं होती, कड़ी होनेपर समझना चाहिये, कि दूसरी दवा देनी होगी । जरायुके कर्कट रोगमें भी यह विशेष लाभदायक है । इसका एक

और भी प्रधान निर्णायक लक्षण यह है—"पाकस्थलीके दोनों ही द्वार और जरायु और स्तनमें जलन और डङ्क मारनेकी दर्द मालूम होता है। रोगीकी भूख बहुत बढ़ जाती है।" दुर्लक्षण-भरे अर्बुद वगैरह मांसके बढ़नेमें ही इस औषधिसे विशेष लाभ हुआ करता है। चैतन्यापहारक (बेहोश करनेवाला) दर्दवाला वाधक या रजःकृच्छ्रमें भी इससे बहुत लाभ होता देखा गया है। स्राव आरम्भ होनेपर वाधककी तकलीफ़ घट जाती है।

लक्षणावली

मस्तक आदि।—वमनके साथ सर-दर्द।

मुखमण्डल आदि।—कर्कटके जखमकी वजहसे गालमें अठन्नी बराबरका छेद हो जाना। जीभकी उपझिल्लीके कर्कटका अर्बुद—उसके ऊपरकी पपड़ी उखाड़ देनेपर लाल रङ्गका जखम निकल आता है। निचले ओंठके अर्बुदमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह अधिक यन्त्रणाकी वजहसे रोगी उछल पड़ता है।

पाकस्थली।—पाकस्थलीके आगम और निगम दोनों ही द्वारोंमें तेज़ जलन और डङ्क मारनेकी तरह यन्त्रणा मालूम हुआ करती है। राक्षसी भूख।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—स्तन और जरायुमें तेज़ जलन और सलाई या डङ्क मारनेकी तरह यन्त्रणा; जरायुका कर्कट (कोना, कार्बोन्डयु, बेसिलिन)। वाधक, एकाएक तेज़ दर्दकी वजहसे रोगिनी मूर्च्छित हो पड़ती है, स्राव आरम्भ होनेपर तकलीफ़ घट जाती है (सिरियम-आक्सैल, लैके, लैक-कैन)। योनिमें दुर्दमनीय खुजली।

सार्वाङ्गिक।—गलगण्ड (थाइरायड, कोना, आयोडम, ब्रोमियम); जड़बुद्धित्व (थाइरायड, बेसिल); गलगण्ड या ग्रन्थियोंके बढ़नेके लक्षणमें और बढ़ी हुई गांठमें स्थिति-स्थापकता, कोमल और नरम; गले और कण्ठकी ग्रन्थिका बढ़ना और दर्द। कर्कटिया अर्बुद जखममें परिणत होनेके पहलेवाली अवस्था।

सम्बन्ध।—सदृश।—आर्स-आयोड, बेसिलिन, थाइराइडिन, कोना, ब्रोमियम, आयोडम, कैलि-आयोड, कार्बोन्डयुरेञ्जो।

शक्ति।—१म दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

लैपसाना कम्यूनिस

(LAPSANA COMMUNIS)

दूसरा नाम।—निप्‌ल वार्ट।

उपयोगिता और आभास।—स्तनकी घुण्डीमें जखम और अर्श रोगकी यह एक उत्कृष्ट दवा है।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

लैथाइरस सैटाइवस

(LATHYRUS SATIVUS)

दूसरा नाम।—खेसाड़ीकी दाल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पके बीज (खेसाड़ी)से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— बेरी-बेरी ; ध्वजभङ्ग ; पक्षाघात ; कटिवात ; अर्द्धाङ्ग-पक्षाघात ; वात ; पेशाबका वेग रोकनेकी शक्तिका न रहना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—मेरुमज्जाके क्षयकी वजहसे पक्षाघात और चलनेकी शक्तिका न रहना रोगमें इसका बहुत फायदा दिखाई दिया करता है। रोगी आँख बन्दकर स्थिर भावसे नहीं रह सकता। दोनों पैर भारी और ठण्डे तथा उनमें चींटी रेंगनेकी तरह झुनझुनी मालूम होती है, चलनेके समय ढलमलाया करता है और थप-थप करता हुआ या कभी-कभी पैर खींचकर चलता है। कटि-वात (कमरका वात रोग), पेशाबको रोकनेकी शक्तिका न रहना, ध्वजभङ्ग, ऊपरी अङ्गका काँपना वगैरह इसके क्रियाफल हैं। इसका आक्रमण एकाएक और अप्रत्याशित भावसे होता है ; रोगी रातमें जब सोने जाता है, उस समय उसे कोई बीमारी न रहनेपर भी सवेरे नींद खुलनेपर देखता है, कि उसके दोनों पैर अकड़ गये हैं। कमरमें कोई बल नहीं है और चलनेके समय डगमगाया करता है। क्रमसे समूचा निचला अङ्ग अवश हो जाता है, रोगी बड़े कष्टसे पैर आगे बढ़ाता है। पैरकी अंगुलियाँ सब

तलवेकी ओर टेढ़ी पड़ जाती हैं और चलनेके समय पैरके नख सब रगड़ खाते हैं। शीत और तर हवामें इससे पैदा हुए रोग सब बढ़ जाते हैं। रोगवाले अङ्ग-प्रत्यंग दुबले हो जाते हैं। इसके द्वारा स्त्रियोंकी अपेक्षा पुरुषोंपर ही रोगका आक्रमण अधिक होता है।

लक्षणावली

मन।—विषाद और उत्कण्ठा भरा मन।

पाकस्थली।—अजीर्णता, वमन, छातीमें जलन और शूल।

पेशाब।—पेशाब रोकनेकी शक्तिका न रहना। मूत्रस्थलीमें असह्य वेग, वेग आते ही यदि पेशाब न किया जाये, तो आप-से-आप प्रबल वेगसे पेशाब निकलता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—ध्वजभङ्ग इत्यादि।

प्रत्यङ्ग आदि।—कटिवात, बहुत दर्दकी वजहसे रोगी हिल नहीं सकता; छूनेपर दर्द बढ़ जाता है। कोई चीज़ उठाने या रखनेके समय उर्द्धाङ्ग विशेषकर दोनों बाँह एकाएक काँप उठते हैं। एकाएक अर्द्धाङ्गका पक्षाघात पैदा हो जाता है (युवती और प्रौढ़ाओंकी अपेक्षा युवक और प्रौढ़ व्यक्तियोंपर इसका आक्रमण अधिक हुआ करता है)। नितम्बदेशकी और निम्नाङ्गकी पेशियाँ सब बहुत पतली हो जाती हैं। सोई हुई अवस्थामें रोगी आप-से-आप हाथ-पैर चलाया करता है, विशेषकर घुमा-फैला सकता है; पर टेढ़ा करना या उठाना बहुत कठिन मालूम होता है। बायें पैरकी अपेक्षा दाहिने पैरमें अधिक बल मालूम होता है। चलनेके समय रोगी सामनेकी ओर छाती और पीछेकी ओर नितम्ब झुकाकर चलता है और दोनों पैर उठाने और गिरानेके साथ दोनों नितम्ब भी पर्यायक्रमसे उठते और झुकते रहते हैं (इसको हंस-गति कहते हैं—अरम, लैके, मैग-फास, साइलि); चलनेके समय पैर-में-पैर सट जाता है या दोनों पैर बहुत पास हो जानेसे आपसमें टकराया करते हैं, खड़े होनेवाली अवस्थामें आँख बन्द करनेपर शरीर डगमगाया करता है, मानो रोगीके दोनों तरफ गहरी खाई है और वह बीचकी संकीर्ण भूमिपर खड़ा है (ऐल्युमिना और आर्जेण्टम नाइट्रिकम)। बहुत देरतक कुर्सीपर पैर लटकाकर बैठनेपर दोनों पैर नीले हो जाते हैं और फूल जाते हैं। चलनेके समय

पैरकी अंगुलियाँ सब नीचेकी ओर मुड़ जाती हैं और जमीनमें रगड़ खाया करती हैं। मेरुमज्जाका पुराना प्रदाह। स्थिर होकर खड़े होनेकी चेष्टा करनेपर शरीर लगातार काँपा करता है और बार-बार गिर जानेकी सम्भावना होती है। दिनमें दोनों पैर बहुत ठण्डे रहते हैं, पर रातमें उनमें बहुत उत्ताप और जलन हो जाया करती है और रोगी बार-बार ओढ़ना उतारनेकी इच्छा प्रकट करता है (सल्फ, सैनिक)। चलनेके समय भूमि ऊँची-नीची मालूम होती है और रोगी यदि मनोयोग पूर्वक रास्तेकी ओर न देखे तो पद-पदपर उसका पैर फिसलता है। बेरी-बेरी या आसाम देशीय विशेष शोथ रोगमें (आर्स, रास, फास, जेलसि); जलीय वायु या शीत लगनेपर बहुत बढ़ जाना (डालका, रास)।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐग्रस्ट्रोमा-गिथैगो (सीधा होकर खड़ा नहीं रह सकता—जेलस, नक्स, सिकेलि, ऐल्य, आर्जेण्ट-नाई, कुरारी, फास, ऐसिड-पिक, रास, डालका)।

तुलनीय।—सिकेलि (पक्षाघात), जेलस, नक्स, पिक-ऐसिड (पक्षाघात, लिङ्गमें कड़ापन); डालका (आर्द्रता), रास (पक्षाघात वगैरह)।

शक्ति।—३रे दशमिकसे ६ठा दशमिक क्रम।

लैट्रोडेक्टस कैटिपो

(LATRODECTUS KATIPO)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जीवित मकड़ेसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह एक तरहके विषैले मकड़ेसे तैयार होता है। ताण्डव, शरीरमें शोथ-मिली सूजन, चर्मोद्भेद, आक्षेप, हृद्-क्रियाका धीमा पड़ जाना प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—टैरेण्टुला, माइगेल, एरानिया, एपिस, वेस्पा।

शक्ति।—६x—३०।

लेट्रोडैक्टस मैक्टैन्स

(LATRODECTUS MACTANS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जीवित मकड़ेसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—हृद्‌शूल, बहुत देरतक स्थायी धनुष्टंकारको तरह आक्षेप, पानीको तरह खूनका स्राव। खून जमता नहीं प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—लेट्रोडेक्टस—हैसेलटि, ऐरेनिया, माइगेल, थेरिडियन ।

शक्ति ।—६, ३० ।

लोरोसिरेसस

(LAUROCERASUS)

नामान्तर ।—चेरि लारेल ; कामना लारेल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—कोमल पत्तोंसे मूल अर्क बनता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—संन्यास होनेका उपक्रम ; दमा ; श्वासरोध ; विसूचिका ; शिशु-विसूचिका ; ताण्डव ; आक्षेप ; खाँसी ; अकड़न ; नीलिमा ; अतिसार ; वाधक ; मृगी ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; यकृतकी बीमारी ; जरायुसे रक्त-स्राव ; हृत्कम्पन ; फेफड़ेका प्रदाह ; धनुष्टकार ; अर्बुद ; हूप-खाँखी ।

उपयोगिता और आभास ।—अपस्मार या मृगी, संन्यास और धनुष्टङ्कारादि आक्षेपिक रोग, श्वास रोग खाँसी, हूप-खाँसी, वगैरह रोगमें और जिस किसी रोगमें जीवनी शक्तिका अवसाद प्रकट होता हो और जहाँ हृद्‌रोगमें अभ्रान्त भावसे चुनी हुई दवाका प्रयोग करनेपर भी रोगीके शरीरमें प्रतिक्रिया शक्तिके अभावकी वजहसे कोई फल नहीं होता हो, उन सभी अवस्थाओंमें लोरोसिरेसस बहुत लाभदायक हुआ करता है। यहाँ इसके कई

प्रधान निर्णायक लक्षण लिखे जाते हैं :—(१) ऐसी सर्दी मालूम होना मानो ललाटमें ठण्डी हवा आकर लग रही है। (२) जलीय द्रव्य आदि पीनेपर बड़ी आवाज़के साथ अन्ननलीकी राहसे आँतमें प्रवेश करते हैं। (३) अधिकांश स्थानोंमें यन्त्रणा न रहना (स्ट्रैमो)। (४) तेजीसे जीवनी शक्ति सुस्त हो जानेवाली बीमारी (कैम्फो, वेरेट)। (५) प्रतिक्रियाका अभाव, जीवनी-शक्तिकी प्रबलता न रहना, विशेषकर हृत्पिण्डकी या श्वासयन्त्रकी बीमारी; यत्नपूर्वक चुनी हुई दवासे भी लाभ न होना; दवा मानो पानीमें बह जाती है। (६) बहुत दिनोंका मूर्च्छाका प्रकोप। (७) मध्याह्न भोजनके बाद या सन्ध्याके समय दुर्दमनीय औंघाई। (८) श्वास-प्रश्वासके समय रोगी मानो हाँफता है। (९) मुँहकी पेशियोंका नाचना अर्थात् सिकुड़ना और फैलना। (१०) रातके अन्तिम भागमें एकाएक पेट फूलना और अजीर्णके लक्षण आदि और उदरमें दर्द पैदा हो जाता है और उठते ही घट जाता है। (११) उठ बैठते ही श्वास रुकनेका उपक्रम होनेकी वजहसे रोगीको वाध्य होकर फिर सो जाना पड़ता है। (१२) थोड़ा भी दौड़नेपर या सीढ़ी चढ़नेपर रोगी अपनी छातीपर हाथ रख लेता है, मानो उसकी छातीमें बहुत दर्द हो रहा है। (१३) हृत्-प्रदेशमें श्वास रुकनेके उपक्रमके साथ हरे रङ्गका आँव-भरा उदरामय। (१४) यक्ष्मा-रोगाधिकारमें सूखी और यन्त्रणादायक खाँसी। (१५) क्रुप-खाँसीकी अन्तिम अवस्थामें आक्षेपिक या शरीरको हिला देनेवाली खाँसी—जिस समय रोगी बहुत सुस्त और स्नायविक उत्तेजनासे उत्पन्न आक्षेपिक लक्षणाक्रान्त हो पड़ता है। हृत्पिण्डकी द्वारावरोधक पेशीकी बीमारीके साथ लगातार "खुस-खुसी" विरक्तिकर खाँसी, खाँसनेपर रोगी हाँफ उठता है और कलेजा धड़कता है। यक्ष्मा रोगादिमें शीत, उत्ताप और पसीना पर्यायक्रमसे पैदा हो जाता है।

लक्षणावली

मन।—बहुत उद्वेग, आशङ्का और चित्तकी चञ्चलताकी वजहसे रोगीको क्षणभरके लिये भी शान्ति नहीं मिलती; या रातमें सो नहीं सकता; निर्मल वायु लगनेपर घटना। बुद्धिवृत्तिकी परिचालना करनेकी इच्छा बिलकुल ही नहीं होती, बोलने और शरीर हिलानेकी शक्तिके न रहनेके साथ-ही-साथ बेहोशी। चैतन्य या अनुभव शक्तिका लोप और आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा अपना काम पूरा-पूरा नहीं करते। क्षीण बुद्धि और याद न रहना

काल्पनिक विपत्तिकी आशङ्का (आयोड, मर्क, काल्पनिक विपत्तिसे छुटकारा पानेकी आशासे भाग जानेकी चेष्टा करता है—बेल)।

मस्तक।—मोह-भावके साथ सरमें चक्कर आना, गिर जाना और बेहोश हो जाना (टैरेण्टिउ, सरमें चक्करकी वजहसे ऐसा मालूम होता है, मानो गिर जायगा—केल्के, टैबाक)। सरमें चक्कर आनेके साथ औंघाई आने लगना (ऐसिड-साइलि); निर्मल वायु लगनेपर बढ़ना (ग्लोन—घरमें प्रवेश करनेपर हट जाता है—केलि-कार्ब, क्रियो)। सरमें चक्कर आना; माथा झुकाये रहनेके बाद उठनेपर (बेल, कार्बो-ऐन, सैङ्गिविन); अपनी जगहसे उठनेपर (कैल्के-फास, कैमो, डिजि, लाई, पल्स, सैङ्गिविन); अस्पष्ट दृष्टिके साथ मानो घूंघटके भीतरसे देख रहा है या ऐसा मालूम होता है मानो सभी चीजें घूम रही हैं (ब्राई, लाई, नैट्र-म्यूर)। समूचे माथेमें बेहोश कर देनेवाला दर्द। ऐसा मालूम होता है, कि माथेसे मस्तिष्क अलग भावसे रखा है—सामनेकी ओर माथा झुकानेपर मस्तिष्क ऐसा मालूम होता है, मानो सामनेकी ओर लुढ़ककर ललाटके पीछे आकर लग जाता है। ललाटमें सर्दी मालूम होना, मानो इस अंशमें ठंडी हवा आकर लग रही है। मूर्द्धादेशमें ऐसा मालूम होता है मानो बरफ रखा हुआ है (वेरेट); मानो मूर्द्धादेशमें ठण्डी हवा आकर लग रही है और यह हवा गर्दनकी राहसे पीठको स्पर्श कर रही है; घरमें बढ़ना और निर्मल वायु लगनेपर घटना।

आँख।—सभी चीजें बड़ी दिखाई देती हैं (निकोल, नक्स-मस, फाइजस) मानो दोनों आँखें पर्देसे ढकी हैं। आँख टकटकी लगी हुई और खुली या अध-मुंदी, बिगड़ा हुआ भाव।

मुखमण्डल आदि।—मुँहकी पेशियाँ सब सिकुड़ा करती हैं। मुँहके चारों ओर सुरसुरी, मानो कीड़े रेंग रहे हैं। मुँहके चारों ओर दाने निकलना। मृगी रोगमें मुँहसे फेन निकलता है (इनैन्थि)। निगलनेमें गड़बड़ी। रह-रहकर कण्ठ और अन्ननलीमें संकोचन मालम होना। कोई पतली जलीय पदार्थ पीनेपर गड़गड़ शब्द करता हुआ पाकस्थलीमें प्रवेश करता है। मानो जीभ, मुख-विवर और कण्ठका भीतरी भाग जल गया है। जीभमें अकड़नकी वजहसे रोगी बोल नहीं सकता।

पाकस्थली ।—एकदम अरुचि, पर जीभ साफ़-सुथरी (मिचली अथवा जीभ साफ़-सुथरी—इपिक ; पाकाशयके विकारके साथ साफ़-सुथरी जीभ—सिना, डिजि)। गर्भावस्थामें भोजनसे अरुचि (ऐण्टि-टार्ट, भोजनकी बात याद आनेपर उसका जी मिचलाने लगता है—सिपि)। मुँह सूखा और तेज़ प्यास। हिचकी (ऐमोन-मूर, साइक्ल, इग्ने, आयोड, लाई, मैग, फास, मर्क-सोल, निकोल, नक्स-मस, नक्स-वोम)। गर्भावस्थामें तीते बादामके स्वादवाली डकार। खाँसते-खाँसते खायी हुई चीज़की कै हो जाती है। बोलनेकी शक्ति न रहनेके साथ पाकाशयमें भयानक दर्द। पाकाशय और अन्त्राशयमें जलन और ठण्डक मालूम होना। पाकस्थली-प्रदेशमें संकोचन और उदरमें काटनेकी तरह दर्द।

अन्त्राशय ।—यकृतमें सूक्ष्म शलाका बेधनेकी तरह दर्द और दबाव मालूम होना। यकृत-प्रदेश फूल उठता है और ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो त्वचाके नीचे फोड़ा हो गया है या वहाँपर एक फोड़ा फटना चाहता है। यकृत फूला और कड़ा (आर्स, सिङ्को, डिजि, ग्रैफ, मैग-मूर, रैटान), क्षय होनेवाला यकृत (लैके, लाई, नक्स-मस, फास)। नाभिप्रदेशमें मानो कसकर पकड़ लेता है ऐसा दर्द। तीसरे पहर उदरके भीतर अन्त्रशूलकी तरह और रातमें मूर्द्धादेशमें फाड़नेकी तरह दर्द। बोलने या ज्यादा परिश्रम करनेपर उदरमें ऐसा मालूम होता है, मानो नाभि-प्रदेशसे कमरमें पीठकी ओर एक भारी गुल्म आकार गिरता है। रातके अन्तिम भागमें एकाएक अजीर्णके लक्षण और तलपेटमें दर्द पैदा हो जाता है, पर शय्यासे उठनेपर फिर नहीं रहता।

मलान्त्र और मल ।—मलका पतलापन, मल हरे रंगका, पतला और आँव-भरा, बहुत कूथन मिला, हृद्प्रदेशमें श्वासरोध होनेके उपक्रमकी वजहसे रोगिनीको वाध्य होकर सो जाना पड़ता है ; अनजानमें मल निकलना। कब्जियत, मल कड़ा और दृढ़ और बड़े कष्टसे और बहुत वेग देनेपर निकलता है। पाखाना लगता है, पर पाखाना होता नहीं है, केवल वायु निकलता है। विसूचिका रोगमें पेशाब रुकना।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—आर्त्तव-स्राव, बहुत असमयमें ही हो जाता है और स्राव बहुत ज्यादा और बहुत पतला खून-मिला होता है, इसके साथ ही रातमें मूर्द्धा-देशमें फाड़नेकी तरह दर्द। स्तनमें और स्तनके नीचे जलन और

डंक मारनेकी तरह दर्द। गर्भावस्थामें कलेजेमें धड़कनके साथ श्वास रुक जाना चाहता है और मानो रोगिनी हाँफा करती है; कभी-कभी आराम मिलनेकी आशामें बाध्य होकर सो जाना पड़ता है (सोरिन)।

श्वास-यंत्र।—स्वरनालीमें खाल उधड़ जानेकी तरह दर्द मालूम होना और बहुत ज्यादा श्लेष्मा संचय; स्वरनालीका आक्षेपिक सङ्कोचन, बहुत ज्यादा गोंद या मांड़की तरह श्लेष्मामय और खून मिला कफ़ निकलता है। श्वास-प्रश्वास धीमा, क्षीण और घड़घड़ शब्द करनेवाला; दमाकी तरह। श्वास-कृच्छ्रताके साथ ऐसा मालूम होता है, मानो फेफड़ा सम्पूर्ण रूपसे नहीं फैल रहा है या मानो फेफड़ा मेरुदण्डपर अड़ रहा है। रह-रहकर वक्षमें दबाव मालूम होता है। श्वासकी कमीकी वजहसे रोगी सामान्य कारणसे भी हाँफा करता है और बार-बार अपने वक्षपर हाथ रखता है; मानो उसमें किसी तरहका दर्द मालूम होता है; कई क़दम दौड़ते हो या चलने अथवा सीढ़ी चढ़नेपर ऐसी ही हँफनी पैदा हो जाती है। खाँसी खुसखुसी, कण्ठमें खुजली और श्वास-कृच्छ्रता। हृद्रोगके कारण पैदा हुई खाँसी; रोगी सो नहीं सकता (कैम्फ, कास्टि, कोना, क्रोटोन, ड्रोसे, हायो, पल्स)। स्वरनालीकी श्लैष्मिक-झिल्ली आदिमें बहुत सूखापन या निरसता मालूम होनेके समय साँय-साँय शब्द करनेवाला श्वास-प्रश्वास (ऐण्टि-टार्ट, हिप, इपिक, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, सैम्बियु, स्पञ्जि); सन्ध्याके समय (फास, स्पञ्जि, सल्फ़, रास), शरीर हिलानेपर (बेल, ब्राई, कार्बो-वेज क्रियो, तेजीसे हिलानेपर—नैट्र-म्यूर), माथा झुकानेपर (कास्टि, लाई)। खाने-पीने बाद (ऐका, हायो) या उत्ताप लगनेपर (ऐसिड-नाई, ब्राई, लाई, पल्स) बढ़ना; बहुत ज्यादा मांडकी तरह श्लेष्मा मिला और उसपर खूनकी बून्द (ऐकोन, आर्स, इरिज, फेर, फेर-फास, इपिक, फास, पल्स)। बलगम। हूप खाँसी; सूखी, साँय-साँय शब्द करनेवाली, बलगम नहीं निकलता। फ़ेफड़ेमें पक्षाघातका आक्रमण होनेकी सम्भावना (ऐण्टि-टार्ट)। हूप खाँसीकी अन्तिम अवस्थामें खाँसी, जब रोगी बहुत क्षीण हो जाता है और उसमें उठनेकी शक्ति नहीं रह जाती तथा स्नायविक उत्तेजना होनेके कारण आक्षेपिक लक्षण सब प्रकट हो जाते हैं। नवजात शिशुमें नीलापन (बैरै, कैक्ट, कार्बो-वेज, लैके), साधारण परिश्रमसे जवान आदमियोंका नीलिमा रोग बढ़ जाना।

प्रत्यङ्ग आदि ।—गर्दनके बाएँ पार्श्वमें, गर्दनकी पीठपर और कमरमें अकड़न। ग्रीवापृष्ठपर भार मालूम होता है, विशेषकर निर्मल वायु सेवनके समय, रोगी सामनेकी ओर जब माथा झुकाये रहता है, तब अच्छा रहता है। त्रिकास्थि प्रदेशसे विटप स्थानतक दर्द। दाहिने कन्धेमें अवशता और सुई गड़नेकी तरह दर्द। दाहिनी कलाई या मणिबन्धमें मानो मोच आ गई है, ऐसा दर्द मालूम होता है (ऐल्यू, कास्टि, जेल्स, लाई)। हाथकी शिरायें सब फूल जाती हैं और ऊँची उठ जाती हैं (सिङ्को, ऐसिड-फ्लु, हैमा, लिड, ओपि, पोलिगोन, पल्स)। बाएँ ऊरु-शिखर प्रदेशमें दर्द, मानो मोच आ गई है (वायु सेवनके लिये चलनेके समय—हिप)। पैर-पर-पैर रखनेपर या बैठनेपर दोनों पैर सुन्न हो जाते हैं या उनमें झुनझुनी आ जाती है। गुल्फके नीचे जखमकी तरह मालम होना। अपनी जगहसे उठनेपर निचला पैर अकड़ जाता है; जानुतक, दोनों पैर लसदार पसीनेसे तर मालूम होते हैं—ताण्डव रोग।

सार्वाङ्गिक ।—जीवनी-शक्तिकी निष्क्रियता और प्रतिक्रियाका अभाव, विशेषकर फेफड़ा और हृत्पिण्ड आदि श्वासयन्त्रके रोगमें उसका विकास (शिथिल तन्तुवाले मनुष्योंकी देहमें प्रतिक्रियाका अभाव—कैप्स; रोगीमें निद्रालुता और मोहका भाव पैदा हो जानेपर— ओपि ; स्नायविक रोगादिमें—वैलारि और ऐम्ब्रा); रोगीकी देह बरफकी तरह ठण्डी, श्वास-प्रश्वास शीतल और नाड़ी तेज़। उदर रोगाधिकारमें (कार्बो-वेज), कच्छु-विषसे दूषित रोगी और ऐसे रोगी जिन्होंने अपने प्राणकी आशा त्याग दी है, प्रतिक्रियाका अभाव (सोरिन)। जीवनी-शक्तिका बहुत तेज़ीसे अवसाद (कैम्फो, ऐसिड-हाइड्रो); बहुत देरतक ठहरनेवाली मूर्च्छा (ऐसिड-हाइड्रो, कैम्फो)। अपस्मार या मृगी—जबड़े अकड़ जाते हैं और मुँहसे फेन निकलता है। ताण्डव रोगमें लगातार अङ्ग-प्रत्यंग आदि घूमा करते हैं। रोगी मुहूर्त्तभरके लिये भी स्थिर नहीं रह सकता; अस्पष्ट बातें बोलता है, पर जब कोई समझता नहीं है तो उसे भयानक क्रोध आ जाता है; प्रकोपके पहले, समय और बाद रोगी हाँफा करता है, उसका शरीर दुबला हो जाता है; शरीरकी त्वचा नीली हो जाती है; डर जानेके कारण अपस्मार (ऐगार, बूफो, कैल्के, कास्टि, कूप्रम, इग्ने, स्ट्रैमोन)। हाथ-पैरोंका पक्षाघातके साथ संन्यास।

निद्रा ।—मध्याह्न भोजनके बाद और सन्ध्याके समय दुर्दमनीय

निद्रावेश। जोरसे नाक बोलनेके साथ नींद आना (बेल, साइक्ले, ओपि, रास, स्ट्रैमोन)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—यक्ष्मा-रोगाधिकारमें शीत, ज्वर और पसीना बार-बार होने लगता है। तीसरे पहर और सन्ध्याके समय जाड़ा मालूम होना, शीत और कम्पन, बाहरी उत्ताप लगनेपर भी नहीं घटता। सन्ध्यासे आधी राततक उत्तापके बाद सवेरेतक पसीना निकला करता है। भोजनके बाद पसीना निकलना, शारीरिक उत्तापकी कमी।

वृद्धि।—माथा झुकानेपर, बैठनेपर (दमा), सन्ध्याके समय और रातमें।

घटना।—सीधे बैठनेपर, सामनेकी ओर माथा झुकानेपर, नींदके बाद।

प्रतिविष या दोषघ्न।—कैम्फो, काफि, इपिक, ओपि।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—कैम्फो, ऐसिड-हाइड्रोसियान, ओपि, कार्बो-वेज, हायो, लैके, ऐण्टि-टार्ट, डिजि, बूफो, बैराई-कार्ब।

तुलनीय।—कैम्फर (हिमाङ्गावस्था); ओपियम, सोरिनम, वैलारि, कैप्सि (प्रतिक्रियाका अभाव); लैके, चायना, डिजि, ऐण्टि-टार्ट (श्वास प्राय: रुकी हुई); कार्बो-वेज (हिमाङ्गावस्था); कैलि-कार्ब (सुई बेधनेकी तरह यन्त्रणा); नक्स-वोमिका (तन्द्रा)।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठा या ३० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—४ से ७ दिन।

लिडम पैलस्टर

(LEDUM PALUSTRE)

दूसरा नाम।—मासटि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे ताजे गाछ और सूखे पत्ते आदिसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—उदरी ; दमा ; दंशन ; चोटका व्रण या काले दाग पड़ना ; बहरापन ; कानका

प्रदाह ; अकौता ; मुँहासा ; पैरमें दर्द ; वात या सन्धिवात ; खून निकलना या खून मिली खाँसी ; हाथमें दर्द ; सन्धियोंमें दर्द ; तेज़ धार या शलाका बेधनेकी तरह जखम ; चर्म-रोग ; धनुष्टङ्कार ; गुटिका-दोष या क्षयकास ; पनसाहा माता ; अंगुलहाड़ा ; नाना प्रकारके जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—डा० ऐलेन कहते हैं :—पुराना वात, सन्धिवातयुक्त धातुवाले व्यक्तियोंके लिये और शराब आदि पीनेके दुष्परिणाममें यह उपयोगी है । पुरानी वात व्याधि और चोट आदिके कारण रोगाधिकारमें जिन रोगियोंका शरीर हमेशा ठण्डा रहता है, रोगीको हमेशा सर्दी या जाड़ा लगा करता है और जहाँ शारीरिक उत्तापकी बहुत कमी दिखाई देती है (लोरो, सिपि, साइलि) और रोगवाला या चोट खाया हुआ अंश छूनेपर बहुत सर्द मालूम होता है, ऐसे स्थानोंपर लिडम बहुत अधिक उपयोगी है । चोटके कारण रोग आदिमें (चोटके प्रकार भेदसे, चार दवाएँ साधारणत: व्यवहृत हुआ करती हैं अर्थात् आर्निका, कैलेण्डुला, लिडम और हाइपेरिकम ; आर्निका—कुचलने ; कैलेण्डुला—कटने ; हाइपेरिकम—त्वचा फटनेकी वजहसे जखम आदि और लिडम—आलपीन, काँटी, काँचके टुकड़े वगैरह गड़ जानेपर या कीड़े आदिके काटनेपर) लाभ किया करता है । रोगवाली जगह यदि रोगी या कोई दूसरा छूता है, तो बहुत ठण्डी मालूम होती है, परन्तु रोगीको यह छुए बिना मालूम नहीं होता । इसका एक दूसरा अनन्य साधारण लक्षण यह भी है, कि रोगवाला अंश इतना ठण्डा रहता है और रोगीके शरीरमें उत्तापकी इतनी कमी रहनेपर भी उसे गर्मी बिलकुल ही सहन नहीं होती । वात रोगवाले धातुके मनुष्योंमें और बहुत ज्यादा शराब आदि पीनेकी वजहसे जिनका स्वास्थ्य खराब हो गया हो, उन मनुष्योंके लिये भी यह बहुत लाभदायक है । चोटकी वजहसे काला दाग पड़ जाये तो यह बहुत ही लाभप्रद है । आँख और पलकोंमें चोटकी वजहसे दाग, खासकर यदि सफेद आवरकके पीछे ज्यादा परिमाणमें खून निकला करता हो और योजकत्वक और पलकोंमें काले दाग पड़ जायें, तो यह उसकी एक प्रधान दवा है । वातरोग निचले अङ्गमें आरम्भ होकर ऊपरी अङ्गमें फैलता है ; रोगवाला अंश दुबला पड़ जाता है ; दर्द सुई गड़नेकी तरह, फाड़नेकी तरह या टपक जैसा ; शरीर हिलानेपर, रातमें—शय्याके उत्तापसे बढ़ना और रोगवाली जगह, बरफकी तरह ठण्डे पानीमें डुबा रखनेपर घटना । पैरसे जानुतकके अंशमें और 'गुल्फ सन्धिमें सूजन तथा ऐसा

मालूम होता है मानो मोच आ गई है, चलनेके समय ऐसा ही असह्य दर्द होता है। पैरके अंगूठेकी जड़की गांठ फूली और दर्द-भरी हो जाती है, एँड़ीके नीचे ऐसा दर्द होता है; मानो चोट लग गई है; तलवा और गुल्फ सन्धिके नीचे बहुत खुजली; खुजलानेपर और शय्याके उत्तापसे खुजलीका बढ़ना; चरण और गुल्फ-सन्धिमें जभी-तभी मोच आ जाया करती है। तेज़ सलाई आदि गड़नेके कारण या चूहा, कीड़ा, मच्छड़ आदि काटनेके कारण जखम; शराबियोंकी तरह ललाटमें और गालमें बड़ा-सा चकत्तेका दाग या भूरे रङ्गका व्रण निकलना, छूनेपर शूल बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। बहुत दिन पहले चोटकी वजहसे शरीरके किसी खास अंशमें वर्ण-विकार अर्थात् बदरङ्ग हो जाना और काले दागका हरा हो जाना वगैरह कई अवस्था या लक्षण लिडमके अव्यर्थ निर्णायक लक्षण माने जाते हैं।

लक्षणावली

मन।—अकेलेमें रहना पसन्द करता है (आर्नि, जेल्स, रास)। बहुत अधिक क्रोधी स्वभाव; सभी विषयोंमें असन्तुष्ट; अपनी जातिका विद्वेषी (लाई)। किसीके साथ अच्छी तरह बात नहीं करता (कैमो) और बहुत चिड़चिड़ा स्वभाव।

मस्तक।—बेहोश बना देनेवाले सरमें चक्करकी वजहसे सामने या पीछेकी ओर गिर जानेका उपक्रम (कास्टि); माथा झुकानेपर या निर्मल वायु लगनेपर बढ़ना। नशेके जैसा सरमें चक्कर आना, विशेषकर निर्मल वायु सेवनके लिये चलते समय सरमें चक्कर—भोजनके बाद जड़ताका अनुभव होना; माथा पीछेकी ओर झूल जानेका उपक्रम हो जाता है (स्ट्रैमोन); बेहोश कर देनेवाले सर-दर्दकी वजहसे मस्तिष्कमें जड़ता मालूम होना। टपककी तरह सर-दर्द, माथा ढँक लेनेपर बहुत बुरा मालूम होता है और ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो चारों ओरसे माथा दबाया जा रहा है। शंखदेश या कनपटीमें, सरके पिछले भागमें और कानमें ऐसा दर्द मानो चबाया जा रहा है (ललाटमें ऐसा ही दर्द—पल्स)। एकाएक पानीमें भींज जानेके कारण सर-दर्द (सर्दी लग जानेपर—ब्राई, ग्लोन, नेट्र-सल्फ, रास, डायो)। चलनेके समय एकाएक पैर फिसल जानेपर माथा झनझना उठता है, मानो माथेमें किसीने जोरसे लाठी मार दिया (बेल, कोना, ग्लोन, ऐसिड-नाई, स्पाई; प्रत्येक क़दमपर—बेल,

इग्ने, सल्फ)। माथा कपड़ेसे ढँका रहना सहन नहीं होता (जेल्स)। नाकसे बहुत देरतक खूनका स्राव।

आँख ।—उपतारामें नश्तर लगवाने बाद आँखके सामनेवाले प्रकोष्ठमें खूनका स्राव। आँख और पलकोंमें दबाने या रगड़ खा जानेकी वजहसे चोट, विशेषकर आँखके भीतरकी शिरा फट जानेकी वजहसे ज्यादा परिमाणमें खूनका स्राव। पलक और योजकत्वचामें काला दाग पड़ना (आर्नि, इरिजि, हैमा, कैलि-म्यूर, नक्स ; आँखके गोलेमें बहुत दर्द रहनेपर—सिम्फिट ; आँख या पलकोंमें चोट—आर्स, सिम्फिट)। रोशनीका सहन न होना, आँख खोलनेकी चेष्टा करनेपर बहुत तकलीफ़ होती है। फैली हुई पुतली। आँखके गोलेके पीछे धीमा-धीमा दर्द या दबाव मालूम होना, मानो आँखमें भीतरसे धक्का देकर बाहर निकाल देनेकी चेष्टा करता है (ब्राई, कैमोक्लेड, इग्ने, नक्स, फाइटो, स्पाई)। आँखोंके प्रदाह या दर्द रोगमें सवेरे आँख चिपक जाती है, पलकोंके अगले भागमें जलन होती है और ऐसा मालूम होता है, मानो उसमें बालूके कण घुस गये हैं (आर्स, कार्बो-वेज, कोरैल, इयुफ्रे, ऐसिड-फ्लू, हिप, मिडोरिन, साइलि, सल्फ)। आँसू गिरना, स्राव त्वचाको क्षय करनेवाला (आर्स, इयुफ्रे, हैमा, क्रियो, लाई, इग्ने, मर्क), आँखकी निचली पलक और गाल आँसू लगनेके कारण जखम भरे हो जाते हैं (कोल्चि, इयुफ्रे, मर्क, नैट्र-म्यूर, नक्स-वोम)। आँख पक जाती है और उससे बदबू निकला करती है (आर्जेण्ट-नाई, ग्रैफा, कैलि-आयोड, लैके, पेट्रोल)।

कान ।—कानमें सों-सों शब्द, मानो उसमें हवा बह रही है, श्रवण-शक्तिकी हीनता, विशेषकर दाहिने कानकी, मानो इस कानके छेदको किसीने रूईसे बन्द कर दिया है (ऐनाक, ब्राई, ऐसेर), केश छँटवानेपर (पल्स, केश कटवानेपर कर्णरोग—बेल, ग्लोन, फास) और माथेमें सर्दी लगनेपर (पल्स)।

मुखमण्डल आदि ।—शराबियोंकी तरह ललाटदेश और गण्डस्थलमें दाने और लाल व्रण निकलना (ऐण्टि-क्रूड, छूनेपर उसमें डंक मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है, चेहरा फूला और पर्यायक्रमसे म्लान और लाल हो उठता है (ऐकोन, ऐमिल, कैम्फो, सिङ्को, क्रोकस, इग्ने, मैग-कार्ब, इनैन्थि, पल्स, रास, वेरेट)। मुखमण्डलके चारों ओर पपड़ी जमी सूखी दादकी तरह फुन्सियाँ। हवा लगनेपर उनमें जलन होती है। चिबुकके नीचेकी ग्रन्थिका

बढ़ना। जीभके अगले भागमें डंक मारनेकी तरह दर्द। मुँहका स्वाद तीता और मुँहसे बदबू निकलती है।

गलेके भीतर।—गलेके भीतर जखम—तेज़ डंक मारनेकी तरह दर्द; निगलनेके समयके सिवा अन्य समय दर्दका बढ़ना। मानो गलेमें एक गोला अड़ा हुआ है ऐसा मालम होना, निगलनेके समय डंक मारनेकी तरह दर्द। अशुभ या सांघातिक गलेका घाव (लैके, लैक-कैन, सैबाड)। निर्मल वायु सेवनके लिये घरके बाहर टहलनेपर गलेमें बहुत उत्ताप मालूम होता है।

पाकाशय आदि।—जल्दी-जल्दी खानेके बाद वक्षोस्थिमें एकाएक अकड़नकी तरह दर्द; थोड़ा खानेके बाद पाकस्थलीमें भार और जड़ता मालूम होना। एकाएक मुँहमें पानी भर आना या मुख-प्रसेक। थूकनेके समय मिचली। उदरके ऊपरी अंशमें भार और पूर्णता मालूम होना। रोज़ सन्ध्याके समय आँतोंमें शूलका दर्द पैदा हो जाना। उदरमें इस ढंगका दर्द मालम होता है, कि मानो आँतोंमें चोट आदि लग गयी है। नाभिसे मलद्वारतक दर्द, मानो पतला पाखाना हुआ करता है; अग्निमान्द्य और दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे। बहुत ज्यादा देरतक बैठे रहनेपर श्रोणिदेशमें या कमरमें दर्द। उदरी।

पेशाब।—पेशाबके बाद मूत्रनलीमें जलन। पेशाबके समय पेशाबकी धार बार-बार बन्द हो जाती है। मलनालीमें खुजली, लाली और उससे पीब बहना। मूत्रनालीकी सूजन।

पुं-जननेन्द्रिय।—प्रबल और बहुत देरतक स्थायी रहनेवाला लिङ्गका कड़ापन। खून मिला या रसकी तरह वीर्यस्खलन; प्रदाहसे पैदा हुए शिश्नकी सूजन। ऐसा मालूम होता है, कि मूत्रनाली रुक गयी है। कामेन्द्रियमें उत्तेजनाकी अधिकता।

श्वास-यंत्र।—स्वरनलीमें खुजली और रक्तकास। खाँसी आनेके पहले श्वास रुक जाती है और कभी-कभी धनुष्टङ्कारकी तरह आक्षेप पैदा हो जाता है। हूप खाँसीकी तरह सुस्त करनेवाली आक्षेपिक या शरीरको हिला देनेवाली खाँसी। सवेरे तङ्ग करनेवाली खाँसी (और वक्षमें उत्तेजनाके साथ पीले रङ्गका कफ़ निकलना। श्वास-प्रश्वासके समय लगातार दो बार दीर्घश्वास लेना पड़ता है, बच्चोंके रोनेके बाद जैसा होता है, वैसा ही। रातके बारह बजनेके बाद या रातके अन्तिम भागमें बदबूदार, पीबकी तरह या फेन-भरा चमकीला

लाल रङ्गका खून (ऐकोन) मिला कफ़ निकला करता है। वक्षमें जलन और दर्द; वक्षोस्थिके नीचे तेज़ दर्द और स्पर्श सहन न होना। वक्षमें तेज़ शलाका बेधनेकी तरह दर्द। फेफड़ेमें पीवका खराब हो जाना। रक्तकास और वातका दर्द पर्यायक्रमसे पैदा हो जाता है। सीढ़ी चढ़नेके समय श्वासरोध। कभी-कभी कलेजा जकड़ जाता है; शरीर हिलाने और चढ़नेपर बढ़ना। श्वास-प्रश्वासमें वक्षमें दर्द और ऐसा मालूम होता है, मानो उसमें कोई सजीव पदार्थ हिल रहा है। वक्षके ऊपर और बाँहके ऊपरी अंशमें पनसाहाकी तरह दाने निकलना, कुछ दिन बाद पपड़ी जमकर अच्छा होता है।

प्रत्यङ्ग आदि—वृहत् और क्षुद्र सन्धियोंका वातका दर्द, निचले अङ्गसे आरम्भ होकर क्रमशः ऊपरकी ओर चला जाता है (ऊपरी अङ्गसे नीचेकी ओर उतरनेवाला—कैल्मिया), विशेषकर जहाँ कोलचिकमके बहुत ज्यादा या अपव्यवहारकी वजहसे रोगवाला अंश बहुत क्षीण हो जाता है; रोगवाली सन्धिमें वातकी गुटिका या वाताश्मरी (आर्टिका-इयु) पैदा हो जाती है और इस सन्धिमें बहुत दर्द हो जाया करता है; नया या पुराना सन्धिवात—बाईं स्कन्ध सन्धि और दाहिनी वंक्षण-सन्धिमें रोग हो जाता है (बायें ऊर्द्धाङ्ग और दाहिने निम्नाङ्गमें रोग—ऐगार, ऐण्टि-टार्ट, स्ट्रैमोन; दाहिना ऊर्द्धाङ्ग और बायाँ निम्नाङ्ग आक्रान्त होनेपर—ऐम्ब्रा, ब्रोम, मिडोरिन, फास, ऐसिड-सल्फ; दाहिना कन्धा और बाईं उरु सन्धिपर रोग होनेपर—लोरो); रोगवाला अंश पतला पड़ जाता है (ग्रैफा, प्लम, लैथाई-सैट)। दर्द सूक्ष्म शलाका बेधनेकी तरह, फाड़नेकी तरह और टपक पैदा करनेवाला; शरीर हिलानेपर, रात्रिके समय, शय्या और शय्यावरणोंके उत्तापमें (मर्क) दर्दका बढ़ना; बरफके पानीमें पैर डुबा रखनेपर (सिकेलि) घटना। रोगीकी देह उत्तापहीन (लोरो, सिपि, साइलि, परन्तु साइलिसियाका रोगी हमेशा गर्म कपड़ेसे शरीरको ढँके रहता है, लीडमकी तरह शय्याके उत्तापसे उसकी यन्त्रणा नहीं बढ़ती)। रोगीको हमेशा शीत मालूम होता है और शीतार्त्तता प्रकट किया करता है; पर शय्याका उत्ताप सहन नहीं कर सकता, क्योंकि उसके हाथ-पैरोंमें जलन होने लगती है। रोगवाली जगह ठण्ढी रहती है, पर रोगी उसे समझ नहीं पाता। पैरसे जानु और गुल्फ-सन्धि फूली हुई; चलनेके समय असह्य दर्द मालूम होता है, मानो गुल्फ-सन्धिमें चोट या मोच आ गयी है; दाहिने अंगूठेका मूलपिण्ड फूला और दर्द-भरा; गुल्फके नीचे ऐसा दर्द मानो भयानक

चोट लग गयी है। पैर और पिछले निम्नदेशमें और गुल्फके स्थानपर भयङ्कर खुजली; खुजली भी शय्याके उत्तापसे बहुत बढ़ जाती है (पल्स, रास)। बायें पैरके बड़े कण्डारमें नख लगने या खींचनेकी तरह दर्द ; रातमें बढ़ना ; रातके समय पसीना और इसके साथ ही बार-बार पेशाब ; बायें पैरकी पोटलीसे जानुके पिछले भागतकके अंशमें तेज़ खींचनकी तरह दर्द, रोगी बाईं करवट सो नहीं सकता। तलहत्थी और तलवामें शामके समय जलन हुआ करती है। हाथ-पैरमें बहुत देरतक गर्म पसीना हुआ करता है। हाथ-पैर सुन्न हो जाते हैं और उनमें झुनझुनी होती है। अंगुलीके बीचमें, सूक्ष्म काष्ठ-फलक प्रविष्ट होनेके कारण अंगुलहाड़ा। जरा भी पैर फिसलनेपर मस्तिष्कमें झुनझुनी पैदा हो जाती है। ऐसा मालूम होता है, कि किसीने जोरसे आघात किया है (बेल)।

त्वचा।—शरीरमें जगह-जगह बैंगनी या नीली आभा लिये चिपटे दाने। चोटकी वजहसे काला दाग (ऐसिड-सल्फ, आर्स, फास)। बहुत दिन पहलेकी चोटकी वजहसे शरीरके किसी विशेष अंशका रङ्ग बिगड़ जाना ; काले दाग सब हरे हो जाते हैं। सूखे और बहुत खुजलानेवाला विसर्प, हवा लगनेपर जलन हुआ करती है। रक्त-व्रण, मतवालोंके ललाटमें और गालमें जैसा हो जाता है, डंक मारनेकी तरह दर्द हुआ करता है। शरीरकी त्वचा सूखी ; पसीनेसे रहित। तेज़ अस्त्र या काँटी गड़नेपर (हाइपि) जखमका सड़ना। चूहा, मच्छड़, बर्रे वगैरहका काटना (एपिस, वेस्पा)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—शीतावस्था, प्यास, शरीरके किसी खास अंशपर मानो ठण्डा पानी ढाल दिया है—ऐसा शीत और जाड़ा मालूम होना, (समूची देहमें मानो ठण्डा पानी ढाल देता है—ऐसा शीत—रास) ; शरीरमें तापका बिलकुल अभाव। समूची देह थर-थर काँपा करती है (इयुपेट, जेल्स)। दोनों गाल और ललाट देश गर्म और दोनों हाथ बरफकी तरह ठण्डे ; प्रत्येक दिवस संध्याके समय अन्त्रशूलके साथ शीत पैदा होना। अङ्ग ठण्डे, परन्तु रोगी उसे समझ नहीं पाता। "प्रचण्ड शीत, रोएँ खड़े हो जाते हैं और हाथ-पैर ठण्डे" (हैनिमैन)। उत्तापावस्थामें प्यास न रहना, सोनेपर शरीर पसीनेसे भर जाता है और सारे शरीरमें खुजली पैदा हो जाती है। शय्या और वातावरणका उत्ताप अधिक सहन नहीं होता,

कारण इस उत्तापसे हाथ-पैर जला करते हैं (सल्फ)। सन्ध्याके समय हाथ-पैर गर्म और शिराएँ सब फूल उठती हैं। स्वेदावस्था—बहुत ज्यादा पसीना निकलना और ओढ़ना असह्य मालूम होता है; ललाटदेशमें खट्टा पसीना होता है। स्थूल या सूक्ष्म सन्धिके वातकी वजहसे ज्वर।

वृद्धि।—देह हिलानेपर, सन्ध्या और रातके समय; शराब पीने, शरीर वस्त्रसे ढँक लेनेके कारण, गर्म होनेपर और माथेके केश कटवानेपर (बेल, पल्स, सिपि, ग्लोन, फास)।

घटना।—शीत लगनेपर, बरफकी तरह ठण्डे पानीमें पैर डुबाये रखनेपर, माथा आदि खोलनेपर, विश्रामसे या स्थिर होकर रहनेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—(हेरिङ्गका मत)—एपिस, कैम्फो और (टेस्टके मतसे) रस-टक्स।

अनुकूल सम्बन्ध।—बेल, ब्राई, केल्के, लाई, मर्क, पल्स, रस-टक्स, सिपि, सल्फ।

असम्बन्ध।—अर्थात् इसके साथ व्यवहार नहीं होता। सिनकोना, चायना।

तुलनीय।—आर्निका (चोट आदि); क्रोटोन (चर्म-रोग); रूटा, हैमा (आघात); एपिस (रातमें पैरमें खुजली); नेट्रम-कार्ब (एँड़ीमें छालेकी तरह भाव); साइलि (पुराना वात); रस-टक्स (वात); सल्फर (कच्छू)।

सदृश।—आर्निका, क्रोटोन-टिग, हैमामिल, रिशुटा, बेलिस, केल्मिया, साइलि, लाइकोपोड। बहुत दिन पहले ही चोटका फल—कोना।

शक्ति।—३रा दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—प्रायः ३० दिन।

लेम्ना माइनर

(LEMNA MINOR)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—दमा ; नकसीर ; नाककी बीमारी ; नाकके भीतर अर्बुद इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—नाक-सम्बन्धी बहुतसे रोगमें यह विशेष लाभदायक है :—नासा, नाक रुकना और नाकसे सर्दीका स्राव । सवेरे नाकसे बदबू आना, मुँहका स्वाद कड़वा, नासाकी वजहसे श्वास रोग, जलीय वायुमें और बहुत अधिक पानी बरसनेके समय बढ़ना वगैरह लक्षण इसके विषयीभूत हैं ।

लक्षणावली

नाक ।—नासा-रोग या नासार्बुद (कैल्के, थूजा, टियुक्रि) ; नाककी जंघास्थिका फूलना । नाकके भीतरसे बदबू निकलती है (ऐनाक) ; घ्राण-शक्तिका न रहना । नाकमें सर्दी मालूम होना ; नाक रुकना ; नाकका अर्बुद फूलकर नाक रोक देना चाहता है ; जलीय तर हवामें अर्बुद बढ़ जाता है । बहुत दिनोंका पीनस या पूतिनस्य रोग (अरम, कैलि-बाई, सिफिल) ; सामान्य ठण्डी हवा लगनेपर या रातकी हवा लगनेपर रोगीको सर्दी हो जाती है । नासा-रन्ध्रके ऊपरी अंशमें जखम पैदा करनेवाली कण्ठनालीके ऊपरी अंशमें सूखापन मालूम होना और पेट फूलना । दाहिने नाकके छेदसे सूखा नासा-मल (कैलि-बाई) निकलता है । दाहिने नासा-रन्ध्रसे दाहिनी कानके छेदतक दर्द, मानो दोनों रन्ध्र एक सूतेसे बँधे हुए हैं । नासाके दोषकी वजहसे श्वास-कृच्छ्रता ; जलीय-वायुमें वृद्धि । प्रबल सर्दी, बार-बार छींक (एलियम-सिपा, इयुफ्रे, आर्स, मर्क, साइक्ले) और बहुत ज्यादा पीले रङ्गका श्लेष्माका स्राव । क्षय करनेवाला नाकका प्रदाह—नासा-रंध्रसे बहुत ज्यादा परिमाणमें सूखा या पीबकी तरह बदबूदार श्लेष्मा या पपड़ी निकला करती है । नाकके पिछले छेदसे बहुत बदबूदार श्लेष्मा निकलता है ।

मुख-विवर ।—सवेरे शय्यासे उठनेपर मुँहका स्वाद बहुत कड़वा हो जाता है (पल्स)। स्वरनालीका मुँह या तालुमूल बहुत सूखा मालूम होता है।

अन्त्राशय आदि ।—ऐसे दर्दके साथ मानो आँतें मरोड़ खा रही हैं ; पतले दस्त आना ; उदरमें हुड़हुड़ शब्द हुआ करता है। मलका पतलापन और तलपेटमें एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक दर्द (लैके, लाई), भोजनके बाद वृद्धि। पाखाना होनेके समय मलद्वारमें बहुत उत्ताप मालूम होता है।

वृद्धि ।—जलीय वायुमें, बर्सातके दिनोंमें, शीत लगते ही और भोजनके बाद।

सम्बन्ध ।—सदृश—तुलनीय ।—अरम, ऐलियम-सिपा, टियुक्रि, थूजा (नाकके भीतर अर्बुदके सदृश मांस), कैड्मो-सल्फ, कैलि-बाई, सिफिलिन, साइक्ले, मर्क, सोरिनम।

शक्ति ।—३० दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

लियोनरस कार्डियाका

(LEONURUS CARDIACA)

दूसरा नाम ।—मदर वार्ट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार किया जाता है।

उपयोगिता और आभास ।—ऋतुस्राव और प्रसवके बादवाला स्राव रुककर बहुतसे उपसर्ग, आमाशय, प्रबल प्यास, उदरमें तेज़ दर्द प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—दोषघ्न ।—आर्स।

तुलनीय ।—मैन्या पुलिसियम, हेडियोमा।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति।

लेपिडियम बोनारियेन्स

(LEPIDIUM BONARIENSE)

दूसरा नाम ।—लेपिडियम मैंस्ट्रोका, क्रेस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्तोंसे विचूर्ण या अरिष्ट दोनों ही आकारमें तैयार हो सकता है ।

उपयोगिता और आभास ।—हृद्पिण्ड और स्तन ही इसके प्रधान क्रिया-स्थल हैं और साधारणतः बाएँ अङ्गको बीमारियोंमें ही इसका भरपूर फायदा दिखाई देता है ।

हृत्पिण्डकी बीमारीमें बायें बाँहका सुन्न हो जाना और दर्द और पाकाशयका शून्य मालूम होना इसका निर्देशक लक्षण है ।

मस्तक, मुखमण्डल, वक्षस्थल, कमर और जानुमें अस्त्र गड़नेकी तरह दर्द, विशेषकर यह दर्द यदि केवल बाएँ अङ्गमें ही मालूम होता हो तो इससे विशेष उपकारकी आशा की जा सकती है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—लैके, आर्निका, लाइकोपस, रैफेनस थ्लेस्पिवार्सा ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

लेप्टेण्ड्रा या वेरोनिका वर्जिनिका

(LEPTANDRA OR VERONICA VIRGINICA)

दूसरा नाम ।—ब्लैक-रूट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजो जड़का मूल अर्क और सूखी जड़का विचूर्ण तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—उदरी ; पैत्तिकता ; पैत्तिक ज्वर ; कब्जियत ; अतिसार ; आमाशय ; अजीर्ण ; सर-दर्द ; कामला ; यकृतकी बीमारियाँ ; स्वल्प-विराम ज्वर ; पीतज्वर इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—पित्तकी वजहसे या पित्त-विकारसे उत्पन्न हुई बीमारियोंमें अलकतरेकी तरह काला मल मौजूद रहनेपर लेप्टेण्ड्राका व्यवहार प्रसिद्ध है। इसके आगे लिखे कई सर्वश्रेष्ठ निर्णायक लक्षण हैं :—(१) जीभपर पीले रङ्गका लेप ; (२) यकृतमें लगातार दर्द और पाकस्थलीमें सुस्ती और खालीपन मालूम होना और यकृत-प्रदेशमें भार मालूम होनेके साथ पित्तकी तरह बहुत बदबूदार काले पोचकी तरह पाखाना होना। "बहुत अधिक सुस्ती, आच्छन्न भाव, त्वचापर उत्ताप और सूखापन तथा पसीना न होना, मुर्देकी तरह हाथ-पैर ठण्डे ; घोर वर्ण, बदबूदार, अलकतरेकी तरह काला या पानीकी तरह, खून-मिला, स्लेष्मामय मल निकलना और कामला या पीले रङ्गकी देह लेप्टेण्ड्राका एक अव्यर्थ सिद्धिप्रद लक्षण है।"

लक्षणावली

मन ।—दिनभर दुःखित भाव और उत्तेजना।

मस्तक ।—ललाटमें प्रचण्ड सर-दर्द ; चलनेपर दर्दका बढ़ना, यहाँतक कि वह असह्य हो उठता है, मानो कोई माथेके केश खींच रहा है, ऐसा मालूम होना (ऐल्यू, इथ्यू)। ललाटदेशका सर-दर्द, मस्तिष्कके गभीरतम प्रदेशमें दर्द मालूम होता है (वैसिलिनम, लेमियम-ऐल)। ललाटमें लगातार धीमा-धीमा दर्द, शंखदेश या कनपटीमें ज्यादा दर्द मालूम होना, इसके साथ ही नाभि-प्रदेशमें दर्द। पित्तकी अधिकताके कारण सर-दर्द, कब्जियतमें मुँहका कड़वा खाद और अजीर्णके साथ, निद्रालुता और निराशा।

आँख ।—आँखमें दर्द और करकराहट होती है ; लगातार आँसू बहना ; पलक सट जाती है (इयुफ्रे)।

पाकस्थली ।—जीभ पीले लेपसे ढँकी या जीभकी जड़से अगले भागतकके अंशके बीचमें कालापन। मिचली और उठनेके समय बहुत सुस्ती मालूम होती है, पित्त-वमन, जीभ पीली और यकृत-प्रदेशमें शूलके आघातकी तरह दर्द और काले रङ्गका मल निकलना। उदरके ऊपरी प्रदेशमें शून्यभाव। पाकस्थली और सूक्ष्मान्त्रके भीतर भयानक यन्त्रणा और दुर्दमनीय मलवेग ; पाकाशय और यकृतमें जलन और दर्द ; पानी पीनेपर (डिजि) बढ़ना। राक्षसी भूख या क्षण-क्षणभरपर भूख लगना। रातके अन्तिम भागमें नींद खुलनेपर बहुत भूख मालूम होना और उदरके ऊपरी भागमें बहुत दर्द ;

कुछ खाते ही दर्द घट जाता है, पाकस्थली और यकृतकी क्रियामें विकारकी वजहसे अजीर्ण रोग।

अन्त्राशय।—यकृतमें धीमा दर्द—पित्तकोषके पासवाले प्रदेशमें बहुत तेज़ दर्द मालूम होता है। यकृतके पीछे मेरुदण्डतक जलन और यन्त्रणा होती है। कामला या पाण्डु रोग, इसके साथ ही काला कीचकी तरह पाखाना होना; समूचे उदरमें विशेषकर तलपेटमें, आँतोंमें गड़गड़ाहट और काला पाखाना होना। नाभि-प्रदेशमें हमेशा धीमा-धीमा दर्द मालूम होता है। नाभि और उदरोर्द्ध प्रदेशके मध्यस्थलमें तेज़ दर्द, प्रत्येक दो या तीन महीनेका अन्तर देकर यकृत-विकारसे पैदा हुई बीमारी। काला अलकतरेकी तरह पाखाना होना; विषम यकृत्रोग (फास, क्रोटेल-होर)।

मलान्त्र और मल।—मल अलकतरेकी तरह काला, पित्त-मिला और सड़ा हुआ; पाखाना होनेपर यकृतमें बहुत दर्द पैदा हो जाता है। उदरमें शून्य भावके साथ मांड़की तरह मल, कभी-कभी कुछ हरे रङ्गका, कीचकी तरह मल वेगसे सोतेकी तरह निकलता है; सवेरे देह सञ्चालन करते ही दर्द अधिक मालूम होता है या मांस अथवा फल-मूल आदि खानेसे बढ़ जाता है। मल पहले कड़ा, काला जमा हुआ, इसके बाद कोमल और मांड़की तरह या बहुत ज्यादा परिमाणमें आम मिला पानीकी तरह। ठण्डी जलीय वायु लगनेपर बढ़ जाता है। पाखाना होनेके पहले आँतोंमें गड़गड़ाहट और इसके बाद नाभिप्रदेशमें काँखनेकी तरह तेज़ दर्द। दुर्दमनीय वेग। साधारणतः पाखाना होनेके बाद ही रोगी सो जाता है और उसे सुस्ती मालूम होती है। रोगीको हमेशा ऐसा मालूम होता है मानो मलद्वारकी राहसे न जाने क्या निकल रहा है।

पेशाब।—लाल या कमला नेबूका रङ्ग, इसके साथ ही कोखके पीछे दर्द।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तव रुकना या देरसे होना; पित्त बिगड़ना, बदनपर घमौरीकी तरह दाने। प्रदर—जरायु-द्वारपर क्षय हुई त्वचा या खाल उधड़ जाना; कभी-कभी स्राव बहुत बदबूदार और श्लैष्मिक-झिल्ली मिला, मूत्रस्थली और मलान्त्रके भीतर उत्तेजना मालूम होना, तलपेटमें अकसर दर्द हुआ करता है; रोगीको आलस्य मालूम होता है और उसके शरीरकी त्वचा सूख जाती है, पसीना नहीं होता और गर्म रहती है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—कन्धा और पीठमें शीत मालूम होना ; कमरमें तेज़ दर्द और सुन्नकी तरह मालूम होना, कोखके पीछे रह-रहकर तेज़ दर्द पैदा हो जाता है। दाहिने कन्धे और बाँहमें दर्द (चेलिडो, ब्राई)। सवेरेसे दिनके १२ बजेतक दोनों कलाइयोंमें सुन्नपन और तेज़ दर्द मालूम हुआ करता है (ऐक्टिया-रेसि, स्पाइकेटा)।

तुलनीय ।—डिजि (यकृतकी बीमारी); मर्क (रक्तामाशय); नाइट्रि-ऐसिड (रक्त-स्राव); बैप्टो (पित्तकोषमें दर्द); जेल्स (स्वल्पविराम ज्वर); ब्रायो (सञ्चालनसे बढ़ना); आर्स (अतिसार इत्यादि)।

वृद्धि ।—सवेरे और जलीय वायुमें ; शरीरको हिलानेपर ; ठण्डा पानी पीनेपर।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—चेलिडो, मर्क, डिजि, इयुफ्रे, वेरोनिका-आफिसिनेलिस, अरम-मूर-नेट्र (एक बार डा० नैशके पाण्डु-रोगमें पर्यायक्रमसे सफेद और काला आँवमय पाखाना होता था, इसीलिये वे डाक्टर बेरुचके पास गये और डा० बेरुचने उन्हें अरम-मूररियेटिकम-नेट्रोनेटम और उसके बाद वेरोनिका-आफिसिनेलिस देकर आरोग्य किया)।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ६ठे दशमिक क्रमतक।

लेविको

(LEVICO)

दूसरा नाम ।—लेविको प्रपातका पानी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—तरल क्रम।

उपयोगिता और आभास ।—पुराना चर्म-रोग और स्नायु रोगकी यह एक उत्कृष्ट दवा है। डा० बार्नेटके मतसे क्षय-रोग या क्षय-रोग-प्रवण धातुमें जब किसी दूसरी दवासे लाभ नहीं होता और रोगी दिनोंदिन कमजोर होता जाता है, ऐसी अवस्थामें कुछ दिनोंतक लेविको पाँचसे दस बून्दकी मात्रामें थोड़े पानीके साथ दिनमें तीन बार सेवन करनेपर विशेष लाभ होता है।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

लियेट्रिस स्पाइकेटा

(LIATRIS SPICATA)

दूसरा नाम।—कालि रूट, डेविल्स-विट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़के विचूर्णसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—उदरामय रोगमें कमरके निचले भागमें तेज़ दर्द और बार-बार पाखाना लगनेके लक्षणमें यह सुन्दर कार्य करता है।

दूषित **घाव या जखममें** इसके बाहरी प्रयोगसे बहुत जल्द नये तन्तु पैदा होने लगते हैं और जखम आराम हो जाता है।

हृत्पिण्ड, यकृत, प्लीहा या मूत्रग्रन्थि—इनमेंसे चाहे किसी एकमें विकारके कारण शोथ रोग हो, १ से ४ ड्रामकी मात्रामें लियेट्रिसका मूल अर्क या क्वाथ सेवन करनेपर खूब ज्यादा पेशाब होकर शोथ आरोग्य हो जाता है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय**।—ऐपीसाइनम।

शक्ति।—मूल अर्क और १ से ४ ड्रामतक।

लिलियम टाइग्रिनम

(LILIUM TIGRINUM)

दूसरा नाम।—टाइगर लिलि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पत्ते, फूल वगैरहसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—हृत्शूल ; क्षीण-दृष्टि ; मानसिक विकार ; अतिसार ; रक्तामाशय ; आँखकी बीमारी ; हृत्कम्पन वगैरह बहुत-सी बीमारियाँ ; मूर्च्छा-वायु ; डिम्बाधारकी बीमारी ; योनिमें खुजली ; मेरुमज्जाकी उत्तेजना ; प्रचुर और बार-बार पेशाब होना ; जरायुका अपनी जगहसे हटना और नाना प्रकारकी बीमारियाँ।

उपयोगिता और आभास।—स्त्रियोंके (विशेषकर अनूढ़ा युवतियोंके) जरायु, डिम्बाधार वगैरह यंत्रोंका अपने स्थानसे हट जाना आदि रोगमें और उसके प्रतिक्षेपकी वजहसे बीमारियोंमें यह विशेष उपयोगी है। वस्ति-देशके यन्त्रोंके रोगके साथ-ही-साथ स्त्रियोंके हृद्रोगमें भी यह विशेष लाभदायक है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण यहाँ लिखे जाते हैं :—(१) बहुत अधिक विषाद और मानसिक अस्थिरताकी वजहसे रोगिनी हमेशा उद्देश्यहीन, कातर और व्यस्त भावसे इधर-उधर घूमा करती है। (२) माथेके भीतर और मूर्द्धादेवमें उन्मत्तता और चित्त-विकारकी वजहसे गड़बड़ी मालूम होना। (३) हृत्पिण्डमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक बड़े चिमटेसे कोई कसकर पकड़े हुए है या दो कड़ी चीजोंके बीचमें वह दबाया जा रहा है, हृत्पिण्डमें तरंगकी तरह दर्द, कभी बहुत बढ़ जाता है और कभी कुछ घट जाता है, ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्ड फटकर दो हो जायगा ; हृत्प्रदेशमें श्वास-रोध होनेका उपक्रम हो जाता है ; हृत्पिण्डकी गति बहुत ही तेज़। (४) वस्तिगह्वरमें सुस्ती मालूम होना, मानो जरायु और डिम्बाधार आदि सभी चीजें नीचेकी ओर खिंच रही हैं, मानो जरायु आदि सभी चीजें योनिपथसे बाहर निकल पड़ेंगी। योनिद्वार हाथसे दबा रखने या लंगोटी आदि द्वारा योनिद्वार बाँध रखनेपर आराम मालूम होता है। (५) असमयमें रजःस्राव,—स्राव काली आभा लिये बदबूदार और थोड़ा ; केवल शरीर हिलानेके समय ही स्राव हुआ करता है। (६) रमणेच्छाकी प्रबलता, रोगिनी दूसरे कामोंमें लगी रहकर हमेशा अपनी उत्तेजित रमणेच्छाको दमन करनेकी चेष्टा करती रहती हैं। (७) प्रदर-स्राव बहुत पतला और त्वचाको क्षय करनेवाला। वंक्षण या कुचकी प्रदेशको भेदकर तेज़ दर्द उरुकी राहसे दोनों पैरोंतक चला जाता है। (८) मलान्त्रमें हमेशा दबाव मालूम होना, मानो तुरन्त पाखानाके लिये जाना होगा। (९) जरायु या डिम्बाधारके रोगमें ; यही सोच-सोचकर रोगिनी बेचैन रहती है, कि परलोकमें मेरी आत्माकी न जाने क्या गति होगी, इस विषयमें यदि कोई सान्त्वना देता है या समवेदना प्रकाश करता है तो रोगिनीको बहुत विषाद होता है।

लक्षणावली

मन।—प्रगाढ़ विषाद ; हमेशा ही रोनी-सी बनी रहती है, रोये बिना रह नहीं सकती (पल्स, सिपि, नेट्र-मूर) ; बहुत भीरु स्वभाव, भय-चकित

चित्त और रोदन-परायण ; अपनी परिचर्या कैसी होती है, इस सम्बन्धमें सम्पूर्ण उदासीनता प्रकट करती है। डिम्बाधार या जरायु-रोगवाली स्त्रियाँ अपनी आत्माकी पारलौकिक गतिके सम्बन्धमें बहुत ही चिन्तित हो पड़ती हैं (लाई, कैल्के, स्ट्रैमो); किसीके सान्त्वना देनेपर तकलीफ़ बढ़ जाती है (कैक्ट, नैट्र-म्यूर)। मूर्द्धादेशमें चित्तमें विकलता पैदा करनेवाला अस्वाच्छन्द्य मालूम होता है। अपने रोगके सम्बन्धमें बहुत ही चिन्तित ; लक्षण देखकर रोगिनी या रोगीको भय होता है कि सम्भव है कि हृत्पिण्डपर किसी रोगका भयानक आक्रमण हुआ है। लोगोंको लगातार गाली देता है और मारता है तथा हमेशा अश्लील घृणित विषयोंकी चिन्ता करता है (एनाक्, लैक-कैन, सेलिन); जरायु-प्रदेशमें यन्त्रणा और ऊपर लिखी मानसिक अवस्था पर्यायक्रमसे प्रकट होती है। सभी विषयोंमें उदासी पर स्थिर होकर बैठ नहीं सकती ; स्थिर रह नहीं सकती, पर थोड़ा-सा भी घूमनेकी इच्छा नहीं करती ; अपने शत्रु या कामेन्द्रियकी उत्तेजना दमन करनेके लिये हमेशा किसी-न-किसी काममें वाध्य होकर लगी रहती है अर्थात् ऐसी चेष्टा किया करती है कि हमेशा अन्यमनस्क बनी रहे (चित्तकी चञ्चलता दमन करनेके लिये किसी-न-किसी काममें लगी रहती है—आयोड, हैलोन)। कुछ किये बिना रह नहीं सकती ; हमेशा व्यस्त अथवा उद्देश्यहीन भावसे घूमती रहती है ; गति बहुत तेज़ (आर्जेण्ट-नाई, सल्फ)। अकेली रहनेसे डरती है (ऐण्टि-टार्ट, आर्स, बिस्मथ, क्लिमेट, कोना, हायो, कैलि-कार्ब, लैक-कैन, लाई, सिपि, स्ट्रैमो, वेरेट)। समझती है कि मैं पागल हो जाऊँगी कोई हृद्रोग हो जायगा ; हमेशा ऐसी ही आशङ्का प्रकट किया करती है (समझती है कि मैं पागल हो गयी ; सिपा, ऐल्यू, ऐम्ब्रा, ऐण्टि-पाई, कैल्के, कैनाब-इन, चेलिडो, ऐक्टि, इयुपेट ; रातमें ;—हाइड्रोफोब, आयोड, कैलि-ब्रोम, लैक-कैन, मैन्सि, मर्क, सिफिलिन); सोचती है कि उसका रोग आरोग्य न होगा (आर्स, कैक्ट, इग्ने, लैक-कैन, मिडोरिन, नैट्र-म्यूर, सोरिन); हमेशा काल्पनिक विपत्ति या रोग तैयार है—ऐसी आशंका (ऐमोन-कार्ब, ऐमिल, चिनन-सल्फ, ऐक्टि, क्लिमैट, क्युप्रम, ऐसिड-हाइड्रो, मैग-कार्ब, स्कूटेल-लैट, सिपि, वेलि, वेरेट, विचि)। अपनी अवस्थासे असन्तुष्ट और दूसरेकी अवस्थासे ईर्षा।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, विशेषकर चलनेके समय (बेल, नैट्र-म्यूर, नक्स-वोम), ऐसा अनुभव होना मानो मतवाला हो गया है (काक्यु,

पल्स); सामनेकी ओर ढुलक पड़ता है (नक्स, साइलि); जरायुकी स्थान-च्युति रोगमें गर्म और बन्द कमरेमें और खड़े होनेपर सुस्ती, इसके साथ ही कमरमें और तलवेमें ठण्डा पसीना (जनतामें—नक्स ; घरमें प्रवेश करनेपर—आइबिरिस)। जरायु-भ्रंशकी वजहसे सरमें दर्द (ऐक्टि-रेस)। ऊँची-नीची जमीनपर चल नहीं सकती (नैट्र-कार्ब, लैथाई-सैट)। ललाट-देशमें सर-दर्द, बाईं भौंपर दर्द अधिक होना या दर्द कभी बायें और कभी दाहिने पार्श्वमें तीव्रतर मालूम होता है। मूर्द्धादेशमें बुद्धि भ्रंश करनेवाला अस्वाच्छन्द्य मालूम होना; इसके साथ-ही दाहिने कोखमें दर्द। नींद खुलनेपर सर-दर्द, निर्मल वायु लगनेपर बढ़ना और सूर्यास्तके समय घट जाना, माथेमें ऐसा भार मालूम होता है मानो खून भर गया है; नाक छिड़कनेपर खून निकलता है, हाथके ऊपर माथा रखनेपर अच्छा रहता है। ऐसा मालूम होता है, कि मानो एक कनपटीसे दूसरी कनपटीतक एक रबरका बन्धन कसकर बँधा हुआ है; मानो एक लोहेकी बनी टोपी माथेको दबा रही है (स्ट्रिकनिन)।

आँख।—उन्मादकी तरह दृष्टि। देखी हुई चीज़ोंकी सब आलोक रेखाएँ आँखका चित्रपत्र पाकर उसके पीछे केन्द्रीभूत हो जाती हैं, इसलिये, पासकी चीज़ स्पष्ट दिखाई नहीं देती। दृष्टि,—जरायुकी स्थान-च्युति या रेतस्खलनकी वजहसे अन्धापन या घोर दृष्टि; उड़ते हुए काले बिन्दु दृष्टिके सामने दिखाई देते हैं, इसके साथ ही तेज़ दर्द, दर्द माथेके भीतरतक चला जाता है। लिखने-पढ़नेके बाद आँखमें जलन हुआ करती है मानो आँख, कान फाड़कर माथा बाहर निकलनेका उपक्रम कर रहा है।

पाकस्थली।—लगातार मिचली; पाकस्थली या वक्षस्थलके बिचले भागमें ऐसा मालूम होना मानो एक गोला अड़ा हुआ है; प्रत्येक बार निगलनेके समय यह गोला घूमता-फिरता है; सवेरे पतला पाखाना होनेके साथ जी मिचलाना; योनिमें और त्रिकास्थिके शिखर देशमें दबावके साथ मिचली। भोजन आदिके बाद ऐसा मालूम होना कि खानेकी चीजें छातीकी ओर चढ़ रही हैं। अर्द्ध-जीर्ण (आधे पचे हुए) पदार्थ और पतला पीले रंगका वमन। ऊपरी पेटमें सुस्ती मालूम होना और बिना स्वादवाली डकार आना, पाकाशय फूल जाता है और नीचेकी ओरसे आध्मान वायु निकलता है। बहुत भूख, भोजन करनेपर भी भूख नहीं घटती (चायना, लाइ, सिना, फास, स्टैफाई)।

अन्नाशय।—अन्नाशय और वक्षके भीतरवाले यंत्र आदि नीचेकी ओर बड़े वेगसे खींचते हैं, यहाँतक कि पेटको बाँधनेकी जरूरत पड़ जाती है। भोजनके बाद पेट फूल उठता है और पतला पाखाना होनेपर भी वैसा ही रहता है। दाहिनी कोख या कोखके स्थानपर आँतके गड़गड़ानेकी आवाज़ सुन पड़ती है। ऐसा मालूम होता है मानो पतला पाखाना होगा, पेशाब होनेपर यह भाव दूर हो जाता है। ऐसा मालूम होना कि ऋतु होगा (सिना, क्रोक, लेमियम, मैग-कार्ब, मस्कस, ऐसिड म्यूर)। तलपेटसे उरुके भीतरतक स्पन्दन मालूम होता है। तलपेटके एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक ऐसा दर्द मानो मोच खा गया है। गर्म हाथसे मलनेपर आराम मालूम होता है।

मलांत्र और मल।—जरायु-भ्रंशकी वजहसे मलान्त्र और मूत्राशयपर लगातार दबाव (टिलिया-इयु) की वजहसे हमेशा पाखाना और पेशाब करनेकी इच्छा बनी रहती है। जिन स्त्रियोंका जरायु स्थान-भ्रष्ट हो गया है, ऐसी स्त्रियोंका सवेरेका पाखाना पतला, पित्तमय, घोर-वर्ण और बदबूदार होता है तथा बहुत वेग होता है, देर बिलकुल ही सहन नहीं होती। पाखाना होनेके पहले पेटमें मरोड़ हुआ करता है या बहुत वेग होता है और मलान्त्रमें दबाव मालूम होता है तथा पाखाना होने बाद मलद्वारमें जलन होती है। मलद्वारके ऊपरी अंशमें दबाव मालूम होना। अर्श,—प्रसवके बाद (गर्भावस्थामें—ऐसिड-म्यूर), मसा—बहुत स्पर्श-कातर और खुजलानेवाला, पाखाना होनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो समूची आँतें बाहर निकल पड़ेंगी।

पेशाब।—सर-दर्द रोगमें दिनके समय बार-बार पेशाब (बोवि, ग्लोन)। दर्द कपालको बगलसे कपालके पिछले भागमें चला जाता है और वहाँसे अन्तमें कनपटीमें आकर ठहर जाता है। मूत्रस्थलीमें लगातार दबाव मालूम होता है और बार-बार पेशाबका वेग होता है, पर पेशाब बहुत थोड़ा होता है; मूत्रनालीके भीतर उपदाह या उत्तेजना मालूम होती है और कूथन। वेग आते ही पेशाब न करे तो छातीमें ऐसा मालूम होता है, कि खून अधिक जमा हो गया। परिमाणमें बहुत थोड़ा, दूधकी तरह सफेद रंगका पेशाब या बहुत ज्यादा और घोर लाल; कभी खौलते हुए तेलकी तरह गर्म पेशाब।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—उदर और वस्ति-गह्वरमें, नीचेकी ओर तेज़ आकर्षण मालूम होना, मानो अन्त्रमण्डली, जरायु वगैरह यन्त्र अपत्य-पथकी

राहसे बाहर निकल आना चाहते हैं (बेल, लैक-कैन, फ्रैक्स-ऐमे, वाइब-ओप्यु गासिप, मूरेक्स, सिपि) ; योनिमुख हाथसे दबानेपर (उरु-पर-उरु स्थापन करने—सिपि) आराम मालूम होता है, इसके साथ ही कलेजेका काँपना। ऋतुस्राव—असमयमें ही हो जाता है, स्राव बहुत थोड़ा, काला, घोर दुर्गन्धमय केवल शरीर हिलानेके समय स्राव हुआ करता है और चलना बन्द करनेपर स्राव रुक जाता है (कास्टि, कैक्ट ; केवल सोनेवाली अवस्थामें स्राव—मैग-कार्ब, क्रियो, बोवि)। प्रबल रमणेच्छा ; मनमें दूसरी चिन्ता स्थान नहीं पाती (ऐनाक, लैक-कैन)। डिम्बाधारमें, विशेषकर बायें डिम्बाधारमें जलन, काँटा गड़ने, काटने या दबानेकी तरह दर्द ; खड़े होनेवाली अवस्थामें नीचेकी ओर बहुत जबर्दस्त आकर्षण रहता है (दाहिने डिम्बाधारमें नीचेकी ओर आकर्षण और डंक मारनेकी तरह दर्द—ऐपिस), दबानेपर दर्द मालूम होता है ; यही डिम्बार फूला। तुरन्तके जनमे हुए बच्चेके माथेके आकारका हो जाता है। जरायुके निम्नाकर्षण रोगमें बायें डिम्बाधार और बायें स्तनमें दर्द (ऐक्टि, ऐस्टि)। रजःनिवृत्तिके बाद प्रदर पैदा हो जाता है, स्राव चमकीला पीला—स्राव इतना कषाय होता है, कि विटपलकमें लगनेपर वहाँ जख्म पैदा हो जाता है (बोवि, क्रियो, लाइ, मर्क, नेट्र-मूर, सिपि, पल्स)। जरायुमें स्नायुशूल, शय्याके वस्त्र आदि या और कोई चीज़ छू जाना या एकाएक हिलना असह्य मालूम होता है ; जरायुका सामनेकी ओर घूमना (कोना, अरम-मूर-नेट, हैमा, ऐलोन, सिपि)। प्रसवके बाद जरायुकी स्वाभाविक अवस्था (कोलो, कैलि-बाइ, सिपि, आस्टिले) या प्रसूतिका स्वास्थ्य फिर प्राप्त होनेमें विलम्ब ; प्रसवके बादका क्लेदका स्राव बहुत देरतक होता रहता है (ऐसिड-बेन, कार्बो-ऐनिम, सिकेलि) और कमर तथा उरु-शिखरमें दर्द पैदा करनेवाला और बहुत ज्यादा (सिकेलि, आस्टिल, जैन्थक्स और त्वचाको क्षय करनेवाला—कार्बो-ऐन,, क्रियो) ; प्रसवके बाद मूत्रमार्गमें उत्तेजना ; रोगिनीको विश्वास रहता है कि उसे कोई भीतरी दुरारोग्य रोग हो गया है। बाएँ स्तनसे पृष्ठ-फलकतक छेदनेकी तरह दर्द (दाहिने कक्ष या बगलतक—लैके) श्वास-प्रश्वास दीर्घ निश्वासकी तरह अथवा तेज़। योनिमें कामोद्दीपक खुजली और बाएँ डिम्बाधार प्रदेशमें डंक मारनेकी तरह दर्द।

श्वास-यंत्र और हृत्पिण्ड।—श्वास-प्रश्वास बाधा-प्राप्त और दीर्घ निश्वासकी तरह गम्भीर, बार-बार लम्बी साँस लेनेकी इच्छा (ब्राइ, कैल्के,

ग्लोन, मिडोरिन, मर्क, फास)। छातीमें ऐसा मालूम होता है, मानो दबा रखा है या छातीपर एक भारी चीज़ रखी हुई है। वक्षमें खूनका संचय अधिक मालूम होना, गहरे श्वास-प्रश्वासपर कुछ घटता है; असह्य उत्ताप मालम होना, निर्मल वायु सेवनके लिये लालायित; बन्द कमरेमें बहुत तकलीफ़ मालूम होती है। मुँहमें खूनकी तरह नमकीन स्वाद (इपिक, नैट्र-कार्ब) और शरीर दुर्बल मालूम होना (डिजि, इपिक, सल्फ, वेरेट)। हृत्पिण्डकी गति क्षीण और तिमिर दृष्टि और गिर जानेका भय, अर्थात् एकाएक रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि उसके हृत्पिण्डकी गति रुक जायगी, उसे चारों ओर अंधेरा दिखाई देता है, और प्रत्येक क्षण उसे ऐसा मालूम होता है, कि वह अभी मूर्च्छित होकर गिर पड़ेगा। बायें स्तनके कुछ नीचे ऐसा दर्द मानो जकड़ गया है—यह दर्द दाहिने पार्श्व तक फैल जाता है और तेज़, दर्द पैदा करनेवाली शलाका जैसा दर्द गलेके भीतर, कण्ठास्थि, बायें कक्ष या बगलमें और पृष्ठफलककी ओर फैल जाता है; करवट बदलने या सोने, बैठने वगैरह अवस्थाओंका परिवर्त्तन करनेपर आराम मालूम होता है। हृत्पिण्डमें ऐसा मालूम होता है मानो एक बड़े चिमटेसे दबाया जा रहा है (मानो एक लोहेके हाथसे जोरसे दबाया जा रहा है—कैक्ट; मानो कोई हृत्पिण्डको दबाता है—आयोड; नींद खुलनेपर बहुत अधिक संकोचन मालूम होना—लैके; चलनेके समय डगमगाना, संकोचन या दबाव मालूम होना—आर्स) या शरीरका सब खून हृत्कोषके भीतर इकट्ठा हो गया है अथवा कभी-कभी ऐसा मालूम होता है कि मानो हृत्पिण्ड दो हो जायगा; रोगी सीधा होकर चल नहीं सकता। हृत्पिण्डमें ऐसा मालूम होता है मानो किसीने कसकर पकड़ लिया है और कुछ देर बाद एकाएक छूट गया—इस तरह पर्यायक्रमसे हुआ करता है। समूची देहमें नाड़ीकी गतिकी तरह टपक मालूम होती है (सैबाई, सेलिन, ग्लोन), ऐसा मालूम होता है, मानो सारी धमनियाँ आदि खून आदिसे भरकर फूल उठी हैं (ऐमिल, बेल, पल्स) और मानो ये शिरायें और धमनी आदि फटकर खून निकलनेका उपक्रम हो रहा है (इसकुर)। कलेजा धड़कना, वक्षमें पक्षीके पर फड़फड़ानेकी तरह अनुभव होनेके साथ-ही-साथ कलेजा धड़कना; हृद्पिण्डके शिखरदेशमें उद्वेग पैदा करनेवाला अस्वाच्छन्द्य, सुस्ती और चञ्चलताका अनुभव होना; बायें वक्षमें तेज़ दर्द; दर्दकी वजहसे रातमें नींद खुल जाती है; नाड़ीकी गति अनियमित; हाथ-पैर ठण्डे और

पसीनेसे तर हो जाते हैं ; भोजनके बाद बढ़ना (कैल्के, कैम्फो, इग्ने, लाई, नेट्र-सूर), बायें और दाहिने पार्श्वमें सोनेपर (क्रियाकी गड़बड़ीके रोगमें), दाहिनी करवट सोनेपर (बेडो, प्लैट ; बाईं करवट सोनेपर—डैफनी, नेट्र-सूर, फास)। कलेजा धड़कता है, दबानेपर या रगड़नेपर आराम मालूम होता है ; हृत्पिण्डमें दर्द, परिश्रम करनेपर, माथा झुकानेपर, रातमें सोनेपर वृद्धि ; सवेरे घटना। हृत्पिण्डके शिखरदेशमें तेज़ दर्द ; विश्राम करने या स्थिर होकर बैठनेपर घटना।

प्रत्यङ्ग आदि।—शरीरके कितने ही स्थानोंमें घूमनेवाला या चलनेवाला दर्द (इग्ने, कैलि-बाई, लैक-कैन)। रातमें दाहिना बाँह और हाथ अकड़ जाता है और उनमें दर्द मालूम होता है ; सवेरे ८ बजेके समय अच्छा हो जाता है। हाथकी अंगुलियाँ सब अकड़ जाती हैं—पेन्सिलसे लिख नहीं सकता। चलनेके समय ढलमलाया करता है, सीधे चलना बहुत कठिन हो जाता है (स्ट्रैम); असमतल या ऊँची-नीची जमीनपर चल नहीं सकता (नेट्र-कार्ब, लैथाई, सैट)। ऐसा दर्द मानो जांघ अकड़ गई है ; जानुमें भार मालूम होता है और दर्द हुआ करता है। दोनों पैरोंमें दर्द और हमेशा हिला करते हैं—अङ्ग-प्रत्यङ्गोंको अपने वशमें न रखनेपर बेचैनी और भी बढ़ जाती है, जैसे—निद्राके समय। शरीरकी सभी पेशियाँ तेजीसे सिकुड़ती, फैलती या स्पन्दित हुआ करती हैं ; यदि रोगिनी अपनी देहपर विशेष दबाव न रखे तो पेशियाँ इतनी अधिक फड़का करती हैं, कि उसे ऐसा मालूम होता है, कि उन्माद हो जायगा। तलहत्थी और तलवेमें जलन आरम्भ होकर क्रमसे वह सारे शरीरमें फैल जाती है ; शय्यामें सोनेकी अवस्थामें बढ़ना, लगातार शय्यामें ठण्डी जगह खोजा करता है (सैङ्गिविन, सैनिक, सल्फ)। सारे शरीरमें ऐसा दर्द मानो दब गया है या मार खायी है, यहाँतक कि वस्त्रतकका स्पर्श सहन नहीं होता ; हाथ-पैर आदि मानो मुदगरसे कुचले जा रहे हैं—ऐसा मालूम होना। चलनेके समय तलवा जखम-भरा या स्पर्श सहन न होनेकी तरह मालूम होता है, चलनेके समय तकलीफ़ बढ़ जाती है, पर चलना बन्द करते ही दर्द इतना बढ़ जाता है, कि रोगीको वाध्य होकर चलना पड़ता है।

वृद्धि।—स्थिर रहनेपर, करवट बदलकर सोनेपर, माथा झुकानेपर, खड़े होनेपर, रातमें, सवेरे गर्म घरमें, छूनेसे और एकाएक शरीर हिलानेपर।

घटना ।—किसी काममें लगी रहने या अन्यमनस्क होनेपर, निर्मल वायु लगनेपर, मर्दन करनेपर और जल्दी-जल्दी चलनेपर।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष या दोषघ्न ।—हेलोन (जरायु); नक्स-वोम (शूल); प्लैट, पल्स।

सदृश ।–ऐकि-रेसि, हेलोन, पल्स, सिपि, टिल्यू, बेलेड, फ्रैंक्सि, मूरेक्स, नेट्र-फास, नक्स, प्लैट, पोडो, गासिपी, स्पाई, टैरेण्ट, कैक्ट, आयोड।

तुलनीय ।—पल्स (समस्त विषयोंमें); पल्स (गर्म घरमें); जिङ्कम और नेट्रम (हृत्पिण्डमें); हेलो (विषाद); पोडो, सलफर (सवेरे उदरामय); कैल्के, आस्टिलेगो (डिम्बाधार); अरम (जरायुका अपने स्थानसे हटना); रस-टक्स (बायें बाँहका सुन्न हो जाना) इत्यादि।

शक्ति ।—६ठे शततमिकसे २०० शततमिक क्रम। डाक्टर क्लार्क कहते हैं:–ऊँचे क्रमका प्रयोग करनेपर क्रिया बहुत अधिक होती है, इसलिये ३० शततमिक क्रम व्यवहार करता हूँ और उससे खूब फायदा होता है। "इसका लाभ देरसे दिखाई देता है"—डाक्टर हेल।

लिमुलस

(LIMULUS)

दूसरा नाम ।—हार्स-फुट; किं-क्रेव।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विशुद्ध रक्तसे विचूर्ण तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।–मानसिक और शारीरिक अवसाद, समुद्र या खारे पानीमें नहानेपर औंघाई, रह-रहकर चेहरेपर खूनकी झलक, दाहिने अङ्गमें, विशेषकर निम्नाङ्गमें भारीपन मालूम होना लक्षणमें और हैजा, अर्श वगैरह उपसर्गमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ऐस्टे-रूबेन्स, फेरम, इरिडियम, आर्स।

शक्ति ।—६—३०।

लिनारिया

(LINARIA)

दूसरा नाम।—टोड फ्लाक्स।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—**एकाएक बेहोश हो जाना, बहुत तन्द्रालुता,** शय्यापर पेशाब कर देना, डकार, मिचली, लार बहना, कामला या नैबा, यकृत या प्लोहाका बढ़ना, उदरामय, अर्श, आँख उठना, जीभ रुखड़ी प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है। खुली हवामें घूमनेपर इसके रोग लक्षण बढ़ जाया करते हैं।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—डिजिटेलिस, कास्टि, इयुपेटो-पर्प्यु, इक्विसि।

दोषघ्न।—दूध मिली चाय।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

लिनम कैथर्टिकम

(LINUM CATHARTICUM)

दूसरा नाम।—पार्किङ्ग-फ्लाक्स।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—उदरामय, तरल और चमकीला हरी आभा लिये मल, **उदरशूल,** अर्श, ब्रांकाइटिस, गलनाली-प्रदाह, खाँसी वगैरह लक्षणोंमें बहुत फायदा करता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—लिनम-इयुसि।

दोषघ्न।—सलफर।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

लिनम इयुसिटेटिसिमम

(LINUM USITATISSIMUM)

दूसरा नाम।—फ्लाक्स। तीसी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—तीसी, तीसीका तेल या तीसीकी पोल्टीससे विचूर्ण और अरिष्ट दोनों ही आकारमें तैयार हुआ करता है।

उपयोगिता और आभास।—चर्म्म और श्वासनली इसके प्रधान क्रिया-स्थल हैं। सारे शरीरमें विसर्पकी तरह दाने, श्वासनली रुककर ऐसा मालूम होता है कि साँस रुक जायगी, आँखोंमें प्रदाहके कारण आँखोंका सट जाना, दमा, मूत्राशय-प्रदाह, बार-बार पेशाब होना लक्षणमें इससे विशेष लाभकी आशा की जा सकती है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय।**—लिनम-कैथर्टिका, आर्स, क्लोरेल, एपिस।

दोषघ्न।—इपिकाक और ऐसाफिटिडा।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

लिप्पिया मेक्सिकाना

(LIPPIA MEXICANA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—प्रत्येक बार शीत ऋतुमें वक्षमें घड़घड़ शब्दके साथ खाँसी, पर श्लेष्मा कुछ भी न निकलना, विशेषकर यदि यह स्त्रियोंको हो तो प्रत्येक दो या ४ घण्टे बाद १० से ३० बून्द मात्रामें लिप्पियाका प्रयोग करनेपर खूब फायदा दिखाई देता है।

असम्बन्ध।—**तुलनीय।**—ब्लेटा।

शक्ति।—मूल अर्क १० से ३० बून्दको मात्रामें।

लिप स्प्रिञ्ज

(LIPP SPRINGE)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—लिप-स्प्रिङ्ग, प्रपातके पानीसे इसका क्रम तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—उदरामय, मूत्र-पथरी, अर्श, क्रिमि, कामला, श्वेत-प्रदर, शीत-पित्त और रक्तोच्छ्वास रोगमें इसकी निम्न-शक्ति खूब फायदा करती है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—कैल्के-सल्फ, नेट्रम-सल्फ, मैंग्ने-मूर, रास, कास्टि, लिथि-कार्ब।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

लिथियम बेञ्जोयिकम

(LITHIUM BENZOICUM)

दूसरा नाम।—बेञ्जोयेट आव लिथियम।

उपयोगिता और आभास।—पेशाबमें युरिक-ऐसिडकी अधिकता; कमरमें तेज़ दर्द; मूत्राशयके प्रदाहके कारण बेचैनी; मूत्र-पथरी; बार-बार पेशाबका वेग प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है।

शक्ति।—६ शततमिकसे ३० शततमिक क्रम।

लिथियम ब्रोमेटम

(LITHIUM BROMATUM)

दूसरा नाम।—ब्रोमाइड आव लिथियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और अरिष्ट।

उपयोगिता और आभास।—मस्तिष्कमें रक्त-संचय, संन्यास रोग होनेकी आशंका, निद्राहीनता, मृगी, सरमें चक्कर आना वगैरह इसके निर्देशक लक्षण हैं।

शक्ति।—६ शततमिकसे ३० शततमिकतक।

लिथियम कार्बोनिकम

(LITHIUM CARBONICUM)

दूसरा नाम।—कार्बोनेट आफ लिथिया।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण ; इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अण्डनालीका पेशाब ; धमनीका अर्बुद ; हृत्शूल ; बाघी ; अजीर्ण ; आँखकी बीमारियाँ ; पित्त-पथरी ; पाकाशयका विकार ; गर्दन फूलना ; सन्धिवात ; सर-दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; आँत उतरना ; आर्त्तवका विकार ; स्थूलता ; मूत्राधार-मुखशायी-ग्रन्थिका प्रदाह ; उपदंश ; मूत्रयंत्रकी बीमारी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—इसका प्रधान आक्रमण—स्थूल हृत्पिण्ड, पाकाशय, मूत्रग्रन्थि, मूत्राशय और स्थूल तथा सूक्ष्म सन्धियाँ सब हैं। आँख या हृत्पिण्डकी बीमारी-मिला स्थूल और सूक्ष्म सन्धिवात रोगमें ही यह विशेष लाभदायक है ; श्लैष्मिक झिल्लीपर भी इसकी शक्तिका परिचय मिला करता है। रोगवाली झिल्ली (आँख और नाककी या कण्ठनालीके बीचवाली झिल्ली) पहले बहुत सूख जाती है और इसके बाद उससे गाढ़ा श्लेष्मा निकला करता है। शरीरकी त्वचा भी इससे आक्रान्त हुआ करती है, विशेषकर सन्धि-प्रदेशकी त्वचाके ऊपर एक तरहकी विरक्तिकर खुजलानेवाली अरुणिका पैदा हो जाती है, सारे शरीरकी त्वचा बहुत रुखड़ी हो जाती है और मुखमण्डलके चारों ओर हजामतकी खुजलीकी तरह दाने निकलते हैं। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं :—(१) मूर्द्धा या मस्तकके शीर्षदेशमें और कनपटी या शंख देशकी ओर दर्द। आँखमें बहुत दर्द रहता है और आँख खोली नहीं जाती और सोनेपर सर-दर्द बढ़ जाता है। (२) सभी चीजोंका केवल बायाँ पार्श्व

दिखाई देता है ; आँखके प्रदाहकी वजहसे तिमिर दृष्टि ; आँख बहुत सूखी और पढ़नेके समय उसमें दर्द होता है। (२) नाकमें घुसी हवा बहुत ठण्डी मालूम होती है और नाकके पिछले छेदसे जमा हुआ थक्का-थक्का श्लेष्मा निकलता है, विशेषकर हवा लगनेपर ; घरके भीतर नाकका छेद सूखा रहता है। पेशाब गदला ; मूत्रनलीकी राहसे रेतोरज्जु या अण्डकोषमें तेज़ दर्द चला जाता है और श्लेष्मा मिला लाल पेशाब होता है। एकाएक आर्त्तव-स्राव रुककर सरमें दर्द पैदा हो जाता है। ऋतु अनियमित होनेकी वजहसे बायें पार्श्वके लक्षण पैदा हो जाते हैं। (६) हृत्पिण्डका वात—हृत्प्रदेशमें वातका बहुत अधिक दर्द, शरीर सामनेकी ओर झुकानेपर दर्द बढ़ जाता है और पेशाब होनेके बाद घट जाता है। (७) सन्धिवात—रोगवाली सन्धिमें स्पर्श सहन नहीं होता, फूली हुई और कभी-कभी लाल मालूम होती है। (८) बाघीमें मानो जलती हुई सुई गड़ रही है ऐसा दर्द। (९) सारे शरीरमें सुस्ती। (१०) चोट या गिर जानेकी वजहसे दर्द-भरा अंश।

लक्षणावली

मन।—वस्तु, व्यक्ति या स्थानका नाम याद नहीं रख सकता (ऐनाक, क्लोरम, मिडोरिन, सल्फ, सिफिलिन)। अपना एकान्तवास स्मरणकर रोया करता है। सारी रात मानसिक उद्वेग और निराशा प्रकट किया करता है (रातमें तकलीफ़की सीमा न रहेगी, यही सोचकर रोगी आकुल रहता है—सिफिल)।

मस्तक।—एकाएक आर्त्तवका स्राव रुकनेकी वजहसे सवेरे नींद खुलनेपर माथेके शीर्ष भागमें और कनपटीमें सर-दर्द पैदा हो जाता है। पलकके ऊपरी अंशमें दर्द और भार मालूम होता है—सन्ध्याके समय बढ़ना। भोजनके समय दर्द घट जाता है, परन्तु फिर पैदा हो जाता है और फिर भोजनके समयतक स्थायी रहता है ; रातमें सो जानेपर कहीं अच्छा होता है। मस्तिष्कको जड़ता। सब चीजोंका पार्श्वार्द्ध (बगलका आधा हिस्सा) ही दिखाई देता है और इसके साथ कनपटीमें गहरा कसावटका भाव मालूम होना। सरमें दर्द, बढ़ना—सोनेपर—सब जगह दर्द मालूम होता है ; घटना—उठ बैठनेपर (साइक्यूर, काक्यु) और घरसे बाहर निकलनेपर (आर्जेण्ट-मेट, ग्लोन, हेलिबो, लाइ, ऐसिड-पाइ, पल्स, टैबाक)। किसी चीज़की ओर देखनेपर सरका दर्द

बढ़ जाता है ; आँख खोल नहीं सकता (ऐसिड-कार्बोल) ; सवेरेसे दोपहरतक आँखमें बहुत दर्द मालम होता है। माथेमें स्पन्दन और टपक ; हृत्पिण्डका दर्द माथेमें चला जाता है।

आँख।—आँखके सामने उड़ते हुए सूक्ष्म धूलके कणकी तरह पदार्थ दिखाई देते हैं (सिङ्को, साइक्लेमेन, नेट्रम-मूर, फाइजस, सिपि)। दीयेकी रोशनीमें पढ़नेके बाद आँखमें दर्दका बढ़ जाना। अस्थिर दृष्टि ; चीजोंका दाहिना आधा भाग बिलकुल ही दिखाई नहीं देता, विशेषकर ऋतुके दूसरे दिन (बगलका आधा भाग ही दिखाई देता है—साइक्ले, लाई ; बायाँ आधा दिखाई नहीं देता—लाई ; निचला या ऊपरी भाग नहीं दिखाई पड़ता—ऐसिड-मूर ; ऊपरी आधा नहीं दिखाई देता—अरम ; आँखके गोलेके ऊपरी भागमें दर्द मालम होता है। सूर्यकी रोशनीमें दिखाई नहीं देता अर्थात् दिवान्धता या दिनौंधी—हेलिबो, फास)। आँख करकराती है, मानो उसमें धूलके कण गिर गये हैं (ऐसिड-फ्लु, आर्स, इयुफ्रे, हिप, लिडम, साइलि) ; पढ़नेके बाद आँख बहुत सूख जाती है और उसमें दर्द मालूम होता है (कास्टि, लैचनेन्थिस, मेन्सि, पियोन, जिङ्क)। दाहिनी आँखके भीतरी प्रदेशमें और चारों ओर ऐसा मालूम होना मानो खींचता है या टपक होती है (हायो, थिरिड)। दाहिनी आँखमें ऐसा दर्द मानो सूक्ष्म शलाका वेधी जा रही है (बेल, चेलिडो, हाइपेरि, जिङ्क)। आँखोंका प्रदाह—सफेद अंश लाल, पीवभरे श्लेष्माका स्राव (आर्जेण्ट-नाई, पल्स) ; आँखमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, रोशनीका सहन न होना और ऐसा मालूम होना, मानो पर्देके भीतरसे देख रहा है, ऐसी धुँधली दृष्टि (कास्टि, आयोड, लोरो, नेट्र-मूर, फास, रास, स्ट्रैम, सल्फ) ; योजक-त्वकके प्रदाहके कारण तिमिर दृष्टि (ऐल्यू)।

नाक।—नासा-रन्ध्रमें सूजन और लाली, दाहिने रंध्रमें अधिक परिमाणमें ; भीतरी अंशमें जखमकी तरह मालूम होना और सूखापन, रंध्रमें चिकनी शुष्क फुन्सियाँ पैदा हो जाती हैं ; घरमें रहनेके समय नासारंध्र सूखे रहते हैं और घरके बाहरी स्थानपर, निर्मल वायु लगनेपर, तरल श्लेष्माका स्राव हुआ करता है ; पिछले रंध्रसे ऐसा मालूम होता है, मानो सूतकी तरह श्लेष्मा झूल रहा है (कैलि-बाई, सिपि, टियुक्रि)। नाकमें ठण्डी हवा घुसनेपर बहुत ठण्डी मालूम होती है (कैलि-बाई, कोरैल) ; नासारंध्रका ऊपरी अंश रुका रहता है, विशेषकर सवेरे और दोपहरके पहले।

पाकाशय और अंत्राशय।—पाकस्थलीमें चबानेकी तरह दर्द, इसके साथ ही बाएँ कपालमें और चक्षु-गह्वरमें दर्द ; दर्द भोजनके पहले बहुत बढ़ जाता है और भोजनके समय घट जाता है। कोको पीनेपर उदरामय पैदा हो जाता है। यकृत-प्रदेशमें भयङ्कर दर्द। प्लीहा-प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। पेटमें ऐसा मालूम होता है, मानो वायुसे भरकर फूल गया है। बाएँ पुट्ठे या वंक्षणके छिद्रमें मानो कुछ ऊपरसे नीचेकी ओर धक्का दे रहा है, इस तरहका दर्द। बाघीमें मानो असह्य जलती हुई सुइयाँ गड़ रही हैं, ऐसी तकलीफ़।

पेशाब।—पेशाबके पहले मूत्रस्थलीमें, विशेषकर उसके दाहिनी ओर रह-रहकर तेज़ दर्द पैदा हो जाता है, पेशाबके बाद दर्द रेतो-रज्जुमें फैल जाता है। पेशाबके समय मूत्रस्थलीमें प्रबल संकोचन, विशेषकर सन्ध्यामें टहलनेके समय। पेशाब,—तेज़ गन्धवाला, परिमाणमें थोड़ा, गदले रङ्गका और कषाय, मूत्रकृच्छ्र, पेशाब होनेके समय दर्द, तली घोर लाल, कभी-कभी पेशाब गदला, तली श्लेष्मामय ; कभी पेशाब बहुत ज्यादा होता है, तली मूत्राम्ल मिली, नींदमें गड़बड़ी पैदा होनेवाला बार-बार बहुत ज्यादा पेशाब होना। मूत्रस्थलीमें स्पर्श सहन नहीं होता और मूत्राशय, ग्रीवाके दाहिने पार्श्वमें तेज़ सुई गड़नेकी तरह तेज़ दर्द और स्पर्शका सहन न होना ; दाहिने मसानेमें दर्द मालूम होना। अभ्यासके अनुसार पानी पीनेपर भी पेशाब बहुत थोड़ा होता है, सवेरे पेशाबके लिये उठते समय हृत्प्रदेशमें बहुत दबाव मालम होता है और जबतक पेशाब नहीं हो जाता तबतक दर्द दूर नहीं होता।

श्वासयंत्र और हृत्पिण्ड।—नाकमें घुसनेवाली हवा नासारन्ध्र और फेफड़ेके भीतरतक ठण्डी मालम होती है (कैलि-बाई, क्लोरैल)। सवेरे भोजनके बाद निर्मल वायु सेवनके लिये बाहर टहलनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो छाती जकड़ गयी है, बलगम बहुत अधिक निकलता है और यह श्लेष्मा ऐसा मालूम होता है, मानो वक्षोस्थिके भीतरसे आ रहा है। सन्ध्याके बाद सोनेपर ऊपर-के-ऊपर लगातार खाँसी आया करती है ; रोगीको बाध्य होकर उठ बैठना पड़ता है (हायो), पर श्लेष्मा बिलकुल ही नहीं निकलता। ऐसा मालम होता है, कि स्वरनलीके पीछेवाले नीचेकी ओरके एक छोटे अंशसे खाँसी उठती है। हृत्प्रदेशमें वाताश्रितकी तरह स्पर्श-कातरता मालूम होती है (ऐसिड-

बेन, कैक्ट, रास, स्पाई, कैल्मि)। सवेरे उठनेपर जब रोगिनी शय्याके ऊपर झुकती है तो हृत्प्रदेशमें तेज़ दर्द मालूम होता है (सेनेगा)। पेशाब करनेके समय और पहले हृत्प्रदेशमें दर्द। हृद्पिण्डमें द्वारावरोधक विकार (आर्स-आयोड, कैक्ट, डिजि, कैल्मि, नैजा, स्पाई, स्पञ्जि); किसी तरहके (विरक्तिजनक) मानसिक उद्वेग मात्रसे ही कलेजेमें धड़कन होने लगती है और हृद्कम्प आरम्भ हो जाता है (ऐकोन, अरम, बैडि, कैक्ट, सिंको, काकुग्र, क्रोटेल, फास, प्लैट, सिपि)। हृत्प्रदेशमें एकाएक धक्का मालूम होना (अरम, कोना, जिङ्क)। पेशाब और आर्त्तव स्रावके पहले और समय हृत्पिण्डमें तेज़ दर्द मालूम होना; पेशाब कर आने बाद हृद्पिण्डका दर्द आराम होता है (डा० फैरिङ्गटन)।

प्रत्यङ्ग आदि। मेरुदण्डके दाहिने पार्श्वके एक छोटेसे अंशमें स्पर्श सहन न होना; वृद्धि—दबाने और टीपनेसे अथवा उठनेपर। रातमें त्रिकास्थिके भीतर शक्तिका न रहना या सुस्ती मालूम होना; सुई गड़नेकी तरह दर्द। हाथकी अंगुलियोंकी अन्तवाली सन्धियाँ सब फूली हुई और उसमें स्पर्श सहन नहीं होती (ऐ-बेन, ऐमोन-फास, लाई, कैल्के) और कभी-कभी लाल हो उठती हैं; पेशियोंमें अधिक सूजन या भार मालूम होनेकी वजहसे चलनेके समय जड़ता मालूम होना; कोई विशेष कारण न रहनेपर भी पैर और हाथके बगलकी जगह खुजलाया करती है; गर्म पानीके प्रयोगसे घटना। सन्धियोंमें दर्द, जानु, गुल्फ और अंगुलीकी सन्धिमें अधिक मालूम होता है। समूची देहमें ऐसी अकड़न हो जाती है, मानो बहुत मार पड़ी है और स्पर्श सहन नहीं होता, "समूची देह मानो विष-फोड़ा।" दर्द हाथ-पैर आदि नीचेकी ओर फैल जाता है (लिडम)। समूची देहमें भार मालम होता है और सूजन मालम होती है। दोनों जानु क्षीण मालम होते हैं, सीढ़ी चढ़नेके समय अधिक। सभी अंगुलियोंमें खुजली और स्पन्दन मालम होता है—ऐसा ही मालम होता है, कि सभी हड्डियोंके भीतर और बाहर ऐसा ही हो रहा है, विश्रामके समय दाँत होकर अंगुलीके अगले भागतक दर्द फैल जाता है; घटना—दबाने, मुट्ठी बाँधनेके समय और अंगुली आदिके हिलानेपर। सभी नखोंके किनारोंमें स्पर्श सहन नहीं होता, दर्द और लाली पैदा हो जाती है। बाएँ हाथके अंगूठेकी जड़ या करभ प्रदेशमें जलन करनेवाला सुई बेधनेकी तरह दर्द। रातमें नींद खुलनेपर दाहिने चरणमें वातका दर्द—उठनेपर घटना। सभी गट्ठोंमें बहुत दर्द होता है, आर्त्तव-स्रावके पहले बाएँ अङ्गमें और इसके बाद दाहिने अङ्गमें

बहुत दर्द मालम होता है। सभी लक्षण दाहिने अङ्गमें अधिक दिखाई देते हैं।

वृद्धि।—सवेरे, निर्मल हवा लगनेपर, सोनेपर और शरीर हिलानेपर।

घटना।—उठ बैठनेपर, प्रसवके बाद,—घरके बाहरी भागमें और विश्रामके समय।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐल्य, इयुजियम, कैलि-बाई, कोरैल-रूब्रम, सिपि, टियुक्रि, कैल्मी, लिडम, अरम, ऐसिड-बेन, कोना, जिङ्कम, ऐमोन-फास, कैस्के, सेनेगा, सेलिन, ऐपिस।

तुलनीय।—ऐल्यमि (क्षीण दृष्टि); बिस्मथ (पाकाशयका शूल); टियुक्रियम (नाकको सर्दी); कैल्मिया (हृद्‌पिण्ड); अरम (एकाएक झटका या चोट लगना); कैल्के, कैल्मि (वात); ऐपिस (मूत्राधार वगैरह)।

शक्ति।—३रा दशमिक विचर्णसे ३० शततमिक क्रम।

लिथियम लैक्टिकम

(LITHIUM LACTICUM)

दूसरा नाम।—लैक्टेट आव लिथिया।

उपयोगिता और आभास।—दोनों बाँह और छोटी सन्धियोंका वात, विश्रामसे बढ़ना और हिलानेपर घटना (रस-टक्स) इसका निर्देशक लक्षण है।

शक्ति।—६, ३०।

लिथियम म्यूरियेटिकम
(LITHIUM MURIATICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—तरल आकारमें क्रम तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—छातीमें जलन, हृद्शूल, जीभका आंशिक सुन्न हो जाना लक्षणमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—लिथि-कार्ब ।

शक्ति ।—६, ३० ।

लोबेलिया कार्डिनेलिस
(LOBELIA CARDINALIS)

दूसरा नाम ।—कार्डिनेल फ्लावर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—सुस्ती, तलपेटकी कमजोरी, श्वास-प्रश्वासमें कष्ट, प्लुरिसि ; लम्बी साँस लेनेपर छातीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; बायें वक्षमें दर्द, गलेका जखम, सर-दर्द, अग्निमान्द्य वगैरह लक्षणमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—लोबे-इन्फ्लेटा, लोबे-सिफि, कैल्मि ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

लोबेलिया डाटमेन्ना

(LOBELIA DARTMANNA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—अग्निमान्द्य, सर-दर्द और कानमें नाना प्रकारकी आवाज़ इसका निर्देशक लक्षण है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

लोबेलिया एरिनस

(LOBELIA ERINUSS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—उदरमें प्रेक गड़नेकी तरह मरोड़का दर्द (कोलोसिन्थ); जल्द बढ़नेवाला और मारात्मक कर्कटका जखम, त्वचा, नाक और मुँहका सूखापन; मुँहमें शराबका स्वाद प्रभृति लक्षणोंमें यह एक विशेष लाभदायक दवा है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

लोबेलिया इन्फ्लेटा

(LOBELIA INFLATA)

दूसरा नाम ।—टुबाको ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—खिले हुए ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है । सूखे पत्तेसे विचूर्ण ।

लक्षणकी अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— शराब पीनेका दुष्परिणाम; खल्वाट हो जाना; आर्त्तव रुकना; हृत्शूल; दमा; पाकाशयका शूल; खाँसी; घुण्डी; बधिरता; कमजोरी; अतिसार;

बाधक ; अजीर्ण ; मूर्च्छाभाव ; पित्त-शिला ; सरमें दर्द ; सवेरेके समय मिचली ; अफीमका बुरा अभ्यास ; कलेजा धड़कना ; वक्षका पार्श्व-शूल ; हृत्पिण्डकी आवरक-झिल्लीका प्रदाह ; जरायु-मुखका कड़ापन ; कन्धेका दर्द ; मूत्रनालीका रुकना ; रक्ताम्बु या मलाईकी तरह स्राव ; गर्भावस्थामें वमन ; हूप खांसी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—यह फुसफुस और पाकाशयिक स्नायुपर आक्रमण कर बहुत सुस्ती ; सारे शरीरकी शिथिलता ; वक्षमें दबाव मालूम होना ; निगलनेके समय और श्वास-प्रश्वासकी क्रियामें व्याघात ; उदरके ऊपरी प्रदेशमें दबाव मालूम होना और मिचली तथा वमन उत्पन्न करता है तथा धीरे-धीरे फुसफुस और पाकाशयिक स्नायुमें अवसाद पैदाकर हृत्पिण्डकी गति और श्वास-प्रश्वास क्रियाको रोकने लगता है और अन्तमें जीवनी-क्रियामें अवसाद पैदा होकर मृत्यु हो जाती है (काउपरथायेट)। इसके कई विशेष लक्षण ये हैं :—(१) सरमें दर्द—पाचन क्रियामें विकारकी वजहसे, उसके साथ ही वमन और सुस्ती, शराब आदि पीनेकी वजहसे, रोगी एकाएक सफेद पड़ जाता है और उसके सारे शरीरमें बहुत ज्यादा पसीना निकला करता है ; सन्ध्याके आरम्भसे लेकर आधी राततक तम्बाकू सेवन करने या उसका धुआँ लगनेसे बढ़ना। (२) पाचनमें गड़बड़ीके कारण बहुत अधिक मिचली और वमन ; गर्भवती स्त्रियोंकी सवेरेके वक्तकी मिचली ; आक्षेपिक श्वास-रोग और श्वास-रोधका उपक्रम पैदा करनेवाली हँफनी या दमा मिली हूप खांसी। (३) बहुत अधिक चाय या तम्बाकू खानेके कारण उदरके ऊपरी भागमें शून्य मालूम होना, क्षीण होना और उसमें एक तरहका अनिर्वचनीय (न बतायी जा सकनेवाली) गड़बड़ी मालूम होना। (४) पेशाब गहरा, लाल या कमला नेबूके रङ्गका ; तली बहुत ज्यादा और लाल जमती है। (५) श्वासकृच्छ्रता—वक्षके बीचवाले अंशमें संकोचन मालूम होना या बहुत अधिक कसावटका भाव रहता है ; प्रसवके दर्दके समय बढ़ जाता है और प्रत्येक वेगके साथ आरम्भ होकर वेगकी प्रबलताको नष्ट कर देता है ; शीत लगने या सीढ़ी चढ़ने अथवा उतरनेकी तरह थोड़ा भी परिश्रम करनेपर बढ़ जाना। (६) वक्षके ऊपर दबाव या भार मालूम होना और ऐसा मालूम होना, मानो सारे शरीरका खून वक्षमें जाकर इकट्ठा हो रहा है और फेफड़ा आदिकी भर रहा है ; तेजीसे चलनेपर घटना। (७) मानो हृत्पिण्ड स्थिर हो गया ऐसा मालूम होना। (८)

त्रिकास्थिप्रदेशमें तेज़ दर्दका अनुभव होना, बहुत कोमल तकियेका स्पर्श भी असह्य मालूम होता है, बैठनेके समय सामनेकी ओर झुककर बैठता है, कि कहीं रोगवाला अंश छू न जाये। (८) प्रत्येक बार वमन होनेके बाद रोगी पसीनेसे भर जाता है और समूचा शरीर कुट्-कुट् करने लगता है,—मानो उसमें हजारों सुइयाँ गड़ायी जा रही हैं। डा० ऐलेन कहते हैं, गोरा रङ्ग, सुनहरे केशवाले तथा नीली आँखें और कुछ मोटे व्यक्तियोंके लिये यह विशेष उपयोगी है।

लक्षणावली

मन।—अशान्ति मालूम होना, बहुत खिन्नता; बालकोंकी तरह रोता है। श्वास-कृच्छ्रता रोगमें उसे ऐसा अनुभव होता है, मानो उसकी तुरन्त मृत्यु हो जायगी (कैनाब-इन, ग्लोन, प्लैट), वक्षमें यन्त्रणा मालूम होनेके साथ-ही-साथ उसे ऐसा विश्वास होता है, कि मृत्यु उसके निकट आ गयी है, पर उससे डरता नहीं है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—प्राणान्तक मिचली मिला (कैल्के-सल्फ), ऐसा मालूम होता है, मानो बाईं आँखसे आरम्भ हो रहा है। सर-दर्द, शरीरमें कुछ चक्कर आनेके साथ धीमा दर्द और भार मालूम होना—दोनों भौंहोंके ऊपरी अंश द्वारा दर्द एक कनपटीसे दूसरी कनपटीमें जाया-आया करता है; दोनों ही कनपटियोंमें ऐसा मालम होता है, मानो भीतरसे बाहरकी ओर धक्का दे रहा है (ऐलि-सैट, हेलिबो, लाइकोपस-वार्जि, नक्स-मस, टिलि; पाचनमें विकारकी वजहसे सर-दर्द—मिचली; वमन और बहुत सुस्ती भी इसमें मिली रहती है; शराब आदि पीनेके बाद सर-दर्द, सन्ध्याके आरम्भसे लेकर आधी राततक यन्त्रणामें अधिकता मालूम होती है; एकाएक चेहरा आदि रक्तहीन और उजला हो जाता है और उससे लगातार पसीना निकला करता है (ऐकोन, कर्णास टैबाक); तम्बाकू खाने या तम्बाकूका धुआँ नाकमें जानेपर बढ़ना (ऐण्टि-क्रूड, कैलेड, जेलिस, इग्ने, पैरिस,—तम्बाकू सेवनसे घटना—डायाडेमा)। माथेमें रह-रहकर एकाएक धक्काकी तरह मालूम होता है (साइकूर, कैलि-आयोड, प्रचण्ड संघात मालूम होना—सिपि)। सर-दर्द—खाँसनेपर बढ़ जाता है (ब्राई, कैप्स, लैके, लैक-डिफ्लो, नैट्र-मूर, रियुमेक्स, सैङ्गियु, स्पाई, स्क्विला; सरमें बेहोश करनेवाला प्रचण्ड दर्द पैदा हो जाता है—हूय्यू, मानो खोपड़ी फटकर दो हो जायगी—नक्स-वोम), खाँसनेपर मस्तिष्क

हिल उठता है और उसमें असह्य दर्द मालूम होता है (नक्स, इथ्यु); सर-दर्द, विशेषकर देह सञ्चालन और सीढ़ी चढ़नेके समय, मूर्द्धादेशमें दर्द अधिक मालूम होता है। कपालके बाएँ पार्श्वमें दबानेकी तरह दर्द, रातमें और माथा हिलानेपर बढ़ना।

मुखमण्डल आदि।—ऋतु देरसे होता है; ऋतुके समय चेहरेके बाएँ भागका स्नायुशूल, रह-रहकर स्नायुशूल। मुखमण्डलमें उत्ताप पैदा हो जाना (चिनोपोड-ग्लोक, इस्क्य, सिस्टस-कैन, ग्लोन, ग्रैफ, लैके, लाई, टैरेण्ट)। मिचली और वमन रोगमें चेहरेपर बहुत ज्यादा पसीना निकलना (कैडमी-सल्फ, कैम्फो, टैबाक, वेरेट), फेफड़ेकी वायुके कारण सूजन रोगमें चेहरा नीला पड़ जाना (ऐण्टि-टार्ट, लैके, लोरो, ओपि, ब्राई)। मिचली पैदा हो जानेसे मुँहमें गोंदकी तरह लार पैदा हो जाती है। जीभका दाहिना किनारा गाढ़े सफेद लेपसे ढँका रहता है।

गलेके भीतर।—गलेके भीतर जलन, क्रमसे त्वचा छिल जानेकी तरह मालूम होना; कण्ठमें बहुत ज्यादा परिमाणमें गोंदकी तरह लार सञ्चय हुआ करती है और निकल जाया करती है, त्वचा छिल जानेकी तरह दर्द, मिचली और डकार। तालुदेशसे लेकर स्वरनलीके भीतरतक जलन करनेवाली त्वचा छिल जाने या खाल उधड़नेकी तरह दर्द। गलेमें जलन, तालुमूल पार्श्ववाली दोनों गह्वर सूखे मालूम होते हैं और बार-बार थूका करता है। तालुमूल पार्श्वके दोनों गह्वर जमे हुए श्लेष्मासे भरे रहते हैं और रोगी उसे बार-बार निगलनेकी चेष्टा करता है। गलेमें सूखापन और आलपीन गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है; पानी पी लेनेपर भी यह दर्द दूर नहीं होता। गलेमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक ढेला अड़ा हुआ है और निगलनेमें गड़बड़ी पैदा कर रहा है (कैल्के, कास्टि, सिपि, इग्ने, कैलि-कार्ब, लिडम, सिपि, मर्क-बिन-आयोड, मर्क-प्रोटो)। अन्ननालीमें ऐसा मालूम होता है, मानो नीचेकी ओरसे ऊपरकी ओर संकुचित हो गयी है, मानो नीचेसे एक गोला उठकर अन्नके प्रवेश करनेकी राह रोक रहा है।

पाकस्थली।—मुँहका स्वाद कसैला और जलनके साथ अरुचि। मध्याह्न भोजनके समय रुचि नहीं रहती। सवेरेके भोजनके बाद दोनों कनपटियोंमें (शङ्खदेशमें) भीतरसे बाहरकी ओर दबाव मालूम होना और बाएँ अङ्गमें खुजली पैदा हो जाना। ऊर्द्धोदर प्रदेशमें सुस्ती मालूम होना, क्षीण भाव

और एक तरहकी ऐसी गड़बड़ी मालूम होना, जो कही नहीं जा सकती, बहुत ज्यादा परिमाणमें चाय या धूम्रपानकी वजहसे पैदा हुई (ऐ-मूर)। मिचली वमन—वमन होनेके समय चेहरा आदि ठण्डे पसीनेसे भर जाता है (वेरेट, कैम्फो) और शरीरकी त्वचाके भीतरसे ऐसा अनुभव होता है, मानो अनगिनती सुइयाँ गड़ रही हैं ; गर्भवतियोंका सवेरेके समयका वमन—मुँहसे बहुत ज्यादा लार निकलना (लैक-कैन), बीच-बीचमें पैदा होनेवाले वमन रोगमें ; भूख और रुचि स्वाभाविक रहती है, इसके साथ ही मिचली, बहुत ज्यादा पसीना निकलना और सुस्ती (ऐ-क्रूड, कैल्के, लाइ, सैङ्गिविन, वेरेट ; राक्षसी भूखके साथ—कोलचि)। हिचकी और बहुत ज्यादा लारका स्राव, इसके साथ ही सन्ध्याके समय औंघाई। बार-बार खाली डकार आती है और मुँहमें पानी भर आया करता है। कभी-कभी गलेमें जलन पैदा करनेवाला खट्टा पानी आता है (कार्बो-वेज, सिङ्को, इग्ने, लाई, मैग-कार्ब, नेट्र-फास, नक्स-वोम, रोबिन ; बिना स्वादवाली डकार—कैरिका-पेपिया, लाई)। उदरके ऊपरी प्रदेशमें सङ्कोचन मालूम होनेके साथ पाकाशयमें अम्ल पैदा होनेका लक्षण (कैप्स, ग्रैफ, लैक-डिफ्लोर, लिथि-कार्ब, नेट्र-सल्फ, ऐसिड-फास, पोलिगोन, सिपि) ; छातीमें जलन और मुँहसे बहुत ज़्यादा लारका स्राव (मुख-प्रसेकके साथ—नक्स-वोम)। मिचली—बढ़ना, रातमें और नींदके समय ; घटना—जलपान करने या कुछ भोजन करनेपर (आर्जेण्ट-नाई, ब्रोम, कैलि-बाई, सैङ्गिविन, स्पाई ; भोजनके बाद घटती है, परन्तु कुछ देर बाद ही फिर पैदा हो जाती है—बाइ-वर्नम)। पाकस्थलीमें भार मालूम होना, मानो उसमें एक गुल्म या अजीर्ण पदार्थ रखा हुआ है। उदरके ऊपरी भागमें दबावकी तरह मालूम होना, मानो पाकस्थली भरी हुई है ; दबानेपर बढ़ता है, तम्बाकूकी गन्ध या स्वाद सहन नहीं होता। गोरे रङ्ग और भूरे केशवाले व्यक्तियोंकी बहुत ज्यादा शराब पीनेकी वजहसे बीमारियाँ (काले केश और काले ही रङ्गवाले—नक्स)।

अन्त्राशय।—भोजनके बाद कुक्षिदेश या कोखमें भरापन और दबावकी तरह मालूम होना। कभी-कभी थोड़ा-सा भोजन करनेपर भी पाकाशयमें लगातार दर्द मालूम होता है ; भोजनके बाद अन्त्राशयमें पूर्णता और आँतोंमें गड़गड़ाहट मालूम होती है और ऐसा ही भाव वक्षमें चढ़कर छातीमें बहुत दबाव पैदा कर देता है, मिचली पैदा हो जाती है, हिचकी आती है और मुँहमें लगातार लार सञ्चय हुआ करती है। यकृतके पार्श्व-देशमें ऐसा

दर्द मानो जकड़कर पकड़ रखा है। अन्त्राशयमें दर्द—भोजनके बाद बढ़ना (सोरिन, सल्फ, चिनिन-सल्फ, कैलि-बाई, आर्स ; भोजनके ३ या ४ घण्टे बाद हाइड्रैस्ट)। अन्त्र-कूजन या पेटमें गड़गड़ाहट होती है और नीचेकी ओरसे वायु निकला करता है। उदरके बायें पार्श्वमें एकाएक तेज़ दर्द पैदा हो जाता है (कैस्टोर, सिपा, आर्जेण्ट-नाई, इपिक, ड्राम्बिड)। पेट फूलना और श्वास-कृच्छ्रता (आर्नि, ऐसिड-ऐसेट, ब्रोम, कार्बो-वेज, कैमो, हायो, कैलि-बाई, कैलि-फास, क्रियो, लैके, लाई, मर्क, मेजेर, ओलियेन, ओपि, पोलिगोन, टैबाक, टेरिब)।

मलान्त्र और मल।—मल कोमल अथवा बड़े कष्टसे निकलता है (हिप, नेट्र-कार्ब, निकोल, सिपि, टैराक्स ; अंगुलीका सहारा लिये बिना नहीं निकलता—कैल्के, प्लैट, सेलिन, सिलि) ; हरा और कोमल ; दिनमें पतला पाखाना होना और माथेमें गड़बड़ी मालूम होना। पाखाना हो जानेके बाद काले रङ्गका खून निकलता है। शोणित-स्रावी अर्श—बहुत ज्यादा खून निकला करता है (फेर, हैमा, हायो, इपिका, कैलि-कार्ब ; थोड़ा-सा खून निकल जानेपर शरीर और मनमें शान्ति पड़ती है—इयुजिनियम—ऐम)।

पेशाब।—दाहिने मसाने या मूत्रग्रन्थि प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होना (लाई ; बाएँ मसानेमें—बार्बे, टैबाक)। पेशाब गाढ़ा लाल या कमला नीबूके रङ्गकी तरह (सिना) रङ्गवाला, बहुत ज्यादा और लाल रङ्गकी तली जमती है।

श्वास-यन्त्र।—आक्षेपिक श्वास-रोगाधिकारमें स्वरनालीके दरवाजेके नीचे दबाव मालूम होना। वायुनलीमें पूर्णता मालूम होना और ऐसा भी मालूम होता है कि यह पूर्णताका भाव वक्षमें पैदा होता है ; खुसखुसी खाँसी आया करती है ; वायुनली बहुत संकीर्ण हो जाती है और ललाटमें उत्ताप मालूम होता है। श्वासकृच्छ्रता—वक्षस्थलमें संकोचन या कसावटके भावसे पैदा हुई ; प्रसवके दर्दके समय प्रतिवेगके साथ श्वास-कष्ट पैदा हो जाता है और वेगकी प्रबलताको नष्ट कर देता है या वेगको क्षीण बना देता है, बढ़ना—सर्दी लगनेपर (कैलि-आयोड, सिपि) और सीढ़ी चढ़ने और उतरने आदि शारीरिक परिश्रममात्रसे हो (ऐकि, आर्स, ऐसिड-नाई, इपि, नेट्र-मूर, फास, साइलि, स्ट्रैफ, सल्फ ; सीढ़ी चढ़नेपर—ऐसिड-ऐसेट) ऐसिड-नाई, आर्स, ऐरण्डो,

आइबिर, नैट्र-म्यूर, रास ; सीढ़ी चढ़ने या उतरनेके समय—थिरिड)। वक्षमें खूनका अधिक संचय होना, दबाव या भार मालूम होना (ऐकोन, कैक्ट), मानो शरीरके चारों ओरसे खून आकर फेफड़े आदि यन्त्रको भर रहा है ; तेजीसे चलनेपर घटना। श्वासाभाव, श्वास-प्रश्वासमें व्याघात और श्वासकृच्छ्रता—बार-बार दीर्घ निश्वास ग्रहण करनेकी इच्छा (ब्राई, कैल्के, ग्लोन, लिलि-टाइग्रि, मिडोरिन, मर्क, फास)। वक्षमें प्रबल दर्द :—लम्बी सांस लेने-छोड़ने और हवा खाकर लौटनेके समय और भोजन करनेपर बढ़ना। कण्ठनालीमें वक्षोस्थिके शिखर-देशमें मानो एक गुल्म अड़ा हुआ है, ऐसा मालम होनेके साथ श्वास-कृच्छ्रता और श्वास-रोग। वक्षमें ऊपरकी ओर फैलनेवाली जलन मालूम होना। पाकाशयकी खाँसी, यंत्रणा-जनक सूखी खाँसी और गलेमें असह्य खुजली ; रोगीको बेचैन बना देती है ; श्वास रोगीकी खाँसी। दमाका प्रकोप आरम्भ होनेके पहले सारे शरीरमें कुटकुटी हुआ करती है और ऊर्द्धोदरप्रदेश शून्य मालूम होता है। हूप-खाँसी—खाँसी प्रचण्ड, शरीरको हिला देनेवाली और वक्षको फाड़ डालनेवाली ; ऐसा मालूम होता है मानो वक्ष गह्वरके गभीरतम प्रदेशसे खाँसी आ रही है। खाँसीका प्रकोप या वेग बहुत दिनोंतक रहनेवाला होता है। खाँसीके बाद गाढ़ा जमा हुआ गोंदकी तरह कफ़ निकलता है और तालुमें वायु लगा करती है। नाली-भुज प्रदाहाधिकार रोगमें खाँसी, छींक, जम्हाई और उसके साथ ही पेट फलनेकी वजहसे डकार आना। दीर्घ निश्वास ग्रहण करनेपर उदरके ऊपरी प्रदेशमें सुस्ती और शून्य-भाव कम हो जाता है। छातीके ऊपरी प्रदेशमें दबाव मालूम होना, विशेषकर बाएँ वक्षमें और स्तन-वृन्तके ऊपरी अंशमें। वक्ष और उदर व्यवच्छेदक पेशी (डायेफ्राम) का आक्षेपिक सङ्कोचन और प्रसारण ; बैठकर श्वास-प्रश्वासके समय वक्षमें दर्द (कैमो, इधर-उधर घूमनेपर आराम मालूम होता है ; आशङ्काकी वजहसे रोगी एक जगहसे दूसरी जगह दौड़ता फिरता है (टैबाक) ; वक्षके निचले अंशमें दर्द, मानो उतनी दूर हवा नहीं घुस रही है। बाएँ वक्षमें स्तनसे कक्षदेशतक मानो पेशियाँ सब जकड़ गयी हैं, ऐसा अनुभव होना (ऐस्टेकस)। शरीरको प्रत्येक बार तेजीसे हिलानेपर सरमें चक्कर आना और बेहोश होनेका उपक्रम और मस्तिष्कमें एक तरहकी अनिर्वचनीय जड़ता मालूम होती है। हृत्पिण्डके मूल-देशमें (शिखर-देशमें—लिलि-टाई) गहरा दर्द और ऐसा मालूम होता है मानो हृत्पिण्डकी गति स्थिर हो जानेका उपक्रम हो रहा है (मानो यदि न हिलेगा

तो हृत्पिण्ड स्थिर हो जायगा—जेलिस, मानो शरीर हिलाते ही हृत्पिण्ड स्थिर हो जायगा—डिजिट)। लगातार श्वास-कृच्छ्रता—शरीरको थोड़ा भी हिलानेसे या परिश्रम करनेपर बढ़ जाती है और शीत लगते ही दमा या श्वास-रोग हो जाती है। ऊपरी पेटमें मालूम हुई सुस्ती और अस्वाच्छन्द्य भाव हृत्पिण्डमें फैल जाता है। लगातार छातीमें जलन मालूम होती है और स्वरनालीमें ऐसा मालूम होता है मानो गुल्म या जमा हुआ बलगम अड़ा हुआ है।

गर्दन और पीठ।—गर्दनके बाएँ पार्श्वकी सूजन और सर-दर्द। दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचमें वातका दर्द, दाहिने पृष्ठ-फलकके नीचे दर्द—सामनेकी झुकनेपर बढ़ जाता है। त्रिकास्थि-प्रदेशमें बहुत अधिक स्पर्श असहनीयता, थोड़ा भी यहाँतककि मुलायम तकियेका स्पर्श भी सहन नहीं होता, वस्त्र आदि छू जानेके भयसे रोगी सामनेकी ओर झुककर बैठता है; इस अंशपर हाथ रखनेकी चेष्टा करनेपर रोगी चिल्ला उठता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—दाहिनी स्कन्ध-सन्धिमें वातका दर्द और यह दर्द बायें बाँहके ऊपरी अंशमें चला जाता है और स्कन्ध-सन्धिपर भी आक्रमण करता है। दाहिनी त्रिकोणपेशीके मध्यमें मानो बहुत सावधानीसे सुई बेधी जा रही है—ऐसा अनुभव होता है। रजोरोधकी वजहसे स्कन्ध-सन्धिमें दर्द, कर-पृष्ठ सूखा, ठण्डा और तलहत्थीसे पसीना निकला करता है। दाहिनी जानु-सन्धिका वाताश्रय जनित-प्रदाह, रोगवाली सन्धि बहुत फूली हुई और दर्द भरी रहा करती है। जाँघमें ऐसी अकड़न मालूम होती है, कि न जाने कितना घूम आया है। समूची देह, यहाँतक कि अंगुलीके अगले भागतकमें अस्त्राघातकी तरह दर्द मालूम होता है। हाथ-पैर तथा समूची देह स्पन्दित हुआ करती है। शारीरिक अवसाद और बहुत अधिक शिथिलता और आलस्य मालूम होना; दीर्घकाल व्यापी दुर्बलता। शरीरका प्रचण्ड आक्षेप। किसी तरहका स्वाभाविक स्राव रुक जानेकी वजहसे बीमारियाँ (ऐब्रोट, ऐपिस, कैम्फा, कोना, ग्रैफा, हेलिबो, लाई, सल्फ, स्ट्रैमो)। बहुत कमजोरी मालूम होना, हाथ-पैर फैलानेके साथ किसी चीज़को ग्रहण करनेकी भी सामर्थ्य नहीं है, ऐसा मालूम होना।

त्वचा।—दमाका प्रकोप या वेग आरम्भ होनेके पहले सारे शरीरमें कुटकुटी पैदा हो जाती है। अंगुली, करपृष्ठमें और बाँहके अगले भागमें

रस-भरे छालोंकी तरह और खुजली पैदा करनेवाले दाने। पपड़ी जमनेवाला विचर्चिका रोग। रुके हुए आमवातके साथ मिचली और वमन।

शीत, उत्ताप और पसीना।—शीतावस्था, बहुत प्यास, प्रबल कम्प; पानी पीनेपर कम्पनका बढ़ जाना (कैप्स); उत्तापावस्था,—तेज़ उद्वेग मिला और कष्ट-साध्य श्वास-प्रश्वास, गला साँय-साँय किया करता है और वक्षस्थलमें कसावट मालूम होती है, कण्ठनालीके पिछले गह्वरमें खुजलीकी वजहसे शरीरको हिला देनेवाली खाँसी पैदा हो जाती है और एक कनपटीसे दूसरी कनपटीतक दर्द मालूम होता है। बहुत कमजोरी। पसीनेवाली अवस्था, उत्तापके साथ या कुछ देरतक बोखार भोग करने बाद, नींदके साथ पसीना निकलना (इयुपेट, एपिस, ओपि, उत्तापकी चरम अवस्थामें निद्रा—पोडोफ़िल; निद्रितावस्थामें पसीना—चायना, कोनायम; ज्वर आनेके बहुत देर बाद पसीना निकलना—आर्स); पसीना, रातमें बहुत ज्यादा; शीतल (हिप, सिपि)। जीभ,—दाहिना पार्श्व सफ़ेद लेपसे ढका और बायाँ पार्श्व निर्मल, अरुचि। मिचली,—पानी पीनेपर घटना।

वृद्धि।—बहुत सामान्य दैहिक परिश्रम या संचालनसे, शीत लगनेपर, छूते ही, सामनेकी ओर झुक जानेपर, गर्म चीजें खानेपर; सन्ध्या और रातके समय तथा धूम्रपान करनेपर और धुएँकी गन्धसे।

घटना।—तेजीसे चलनेपर, उत्ताप लगनेपर और तीसरे पहर।

सम्बन्ध।—सदृश।—प्रतिविष या दोषघ्न।—इपिक, ऐण्टि-टार्ट, आर्स, डिजि, ब्लाटा-ओरियेण्ट, इपिक, टैबाक, वेरेट, नक्स (भूरे केश और गोरे व्यक्तियोंका शराब आदि पीनेके कारण स्वास्थ्यभङ्ग,—नक्स, हेरि०) ब्राई, लिलि-टाई।

तुलनीय।—डिजिट, टैबाक (हृत्पिण्ड); आर्स (दमा और पाकाशयका विकार); इपिक (दमा); नक्स-वाम (सवेरे वमनेच्छा); सल्फ (सर-दर्द); लिलियम (हृत्पिण्डकी बीमारी)।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३० शततमिक क्रम (डा० कूपर वगैरह चिकित्सकोंके मतसे ऐसेटम लोबेलिई कितने ही स्थानोंपर विशेष लाभ किया करता है।

लोबेलिया पर्प्युरैसेन्स

(LOBELIA PURPURASCENS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—हृत्पिण्डका पक्षाघात; बहुव्यापक सर्दी; सरमें दर्द; फेफड़ेका पक्षाघात; साँप काटना; जीभका पक्षाघात; सान्निपातिक ज्वर; सरमें चक्कर आना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—इसके द्वारा समूची जीवनी-शक्ति और स्नायु-विधानका पूरा-पूरा अवसाद पैदा हो जाता है और श्वास-यन्त्रमें पक्षाघात उत्पन्न हो जाया करता है। बहुव्यापक सर्दी रोगकी तरह मिचलीके साथ मोहसे पैदा हुआ सरमें चक्कर और सरमें दर्द, कम्परहित प्रगाढ़ शीतार्त्तता द्वारा समूची देहका भर जाना, फेफड़े आदिकी निष्क्रियता आदिकी वजहसे श्वासयन्त्र आदि और खूनमें अङ्गाराम्लकी अधिकताकी वजहसे विषाक्तता, वमन और तन्द्राभाव वगैरह इस दवाके प्रधान क्रिया-फल हैं।

लक्षणावली

मन और मस्तक।—जल्दबाज स्वभाव (ऐकोन, ब्राई, कैम्फो, हिप, मर्क-साई, नैट्र-मूर, स्ट्रैमो), दुःखित और शङ्कित भाव। बहुत ज्यादा पसीना निकलना और दाँतमें जखम पैदा होनेवाला धातु। मिचली और मोह मिला सरमें चक्कर आना (कूप्रम-ऐसेट, कैलि-कार्ब, लैके, मैंन्सि, सिकेलि)। तन्द्राभिभूत भाव, माथेमें शून्यभाव मिला और मिचली पैदा करनेवाला सर-दर्द, विशेषकर दोनों भौंहोंके बीचके स्थानपर। माथेमें बहुत दर्द और सरके पिछले भागके नीचे और ललाटमें पूर्णता और भार मालूम होता है; वृद्धि—माथा हिलानेसे हो। किसी तरह भी दोनों आँखें खोलकर नहीं रख सकता, आप-से-आप वे बन्द हो जाती हैं (कास्टि, जेल्स, कोलोफिल)। तन्द्राच्छन्न भाव; घमौरीकी तरह समूची देह चिरचिर किया करती है और खुजली पैदा हो जाया करती है (लोबेलिया-इन्फ्लेटा)।

श्वास-यंत्र।—वक्षस्थलमें कसावटका भाव, बहुत दबावके कारण श्वास-प्रश्वासमें व्याघात पैदा हो जाता है। फेफड़ा और हृत्पिण्ड ऐसा मालूम

होना, मानो पक्षाघात हो गया है; अप्रगाढ़ श्वास-प्रश्वास; बहुत धीर-गतिसे साँस चला करती है, प्रायः रुक जाती है; हृत्पिण्डकी गति प्रायः स्पर्श-ज्ञानसे प्रतीत रहती है, सर्दी लगनेपर बढ़ना।

सम्बन्ध।—सदृश।—बैप्टि (सान्निपातिक ज्वर) सर्दी, लैके, सिकेलि, कैलि-कार्ब, मैन्सि।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठा दशमिक क्रम।

लोबेलिया सिफिलिटिका या सिरियुलिया

(LOBELIA SYPHILITICA OR CAERULIA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—फुस्फुस-रोग; दमा; सर्दी; खाँसी; अजीर्ण; पेटमें वायु होना; मसानेका दर्द; कमरमें दर्द; गृध्रसी; प्लीहामें दर्द; गलेका जखम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—बहुत छींक आनेवाली सर्दी रोगमें ही यह विशेष फलप्रद हुआ करती है। प्लीहाके पीछेवाले प्रदेशमें दर्द, बायें पृष्ठ-फलकके भीतर या दाहिने पार्श्वके नीचेवाले स्थानोंमें दर्द, रोनेपर बढ़ना; ललाटके बीचवाले भागमें अर्थात् नासा-मूलके स्थानपर लगातार धीमा धीमा दर्द; नाकके छेदमें हवा बहुत ठण्डी मालूम होना; दाहिने फेफड़ेके बीचवाले भागमें दर्दके साथ दाहिनी हनु-सन्धिमें दर्द; छाती और स्वरनालीमें दर्द; बायें कन्धे और बाँहमें दर्दके साथ बायाँ कक्ष या बगलके पासवाले वक्षमें दर्द; पढ़ने आदिके कारण ललाटमें दर्दका बढ़ जाना; ठण्डा पानी पीनेपर पाकाशयके लक्षणोंका आराम हो जाना और गाढ़े बलगमका स्राव होनेपर कण्ठनालीका दर्द घटना आदि कई इसके अव्यर्थ निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—बहुत ही दुःखित चित्त, आँखें सदा आँसूसे भरी रहती हैं, बहुत ही असुखी और दुःखित भाव। शोककी वजहसे बीमारियाँ (अरम, ऐसिड-फास, काकुल, इग्ने)। माथेमें चञ्चलता और धीमे दर्दके साथ शब्द

मिलाने और लिखनेके समय बार-बार भ्रम पैदा हो जाता है (कोटेल, मिडोरिन, कैनाब-स्टैट, लाई, सिपा, हाइपेरि)। खोहाके पिछले हिस्से में दर्दके साथ विमर्ष-भाव (सिग्रानाथस)। माथेमें सुस्ती; किसी तरहका मानसिक परिश्रम सहन नहीं होता (ऐसिड-फ्लू, ऐसिड-नाई, ऐसिड-फास, फास, कैलि-फास), रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उन्माद हो जायगा (मिडोरिन, लिसिन, ओपि)।

मस्तक।—शरीरमें चक्कर आना या माथेमें खालीपनका भाव, इधर-उधर टहलनेपर बढ़ना (कैल्के-सल्फ, फेर-आयोड, कैलि-कार्ब)। सरमें दर्द—सवेरा होनेतक मालूम होता है (मर्क, फाइटो, सिफिलिन); मध्याह्न भोजनके बाद (ऐमोन-कार्ब; आर्स-आयोड, स्ट्रैमोन; मध्याह्न भोजनके बाद घटना—एरम-ट्राई, फेलेन, जिञ्जिब); कपालमें दोनों भौंहोंके पास, खासकर नाकको जड़में बहुत दर्द (जैन्थक्स); लिखने पढ़नेपर बढ़ना (ऐक्टो, लिसिन, एपिस, फाइजस, कैल्के, डायो, ग्लोन, इग्ने, नैट्र-म्यूर, आराम मालूम होनेपर फिर लिखना आरम्भ करते ही दर्दका दुबारा पैदा हो जाना—फेरम)। सरके पिछले भागमें दोनों ही चुचुकास्थि-वर्द्धित अर्थात् कानके पिछले भागमें दर्द मालूम होता है, पहले दाहिने चुचुकास्थि-वर्द्धनमें दर्द होता है और बहुत तेज़ दर्द होता है (बैप्टो)। बाईं ओरकी कनपटीमें महीन सलाई गड़नेकी तरह दर्द (स्पाई)।

आँख।—दोनों आँखोंके ऊपरी अंशमें बिना दर्दका भार मालूम होना (जेल्स, कैलि-बाई, कास्टि), इसके साथ ही औंघाई आना। बाईं आँखके दोनों अपाङ्गोंमें खुजली मालूम होना। दाहिनी आँखके गड्ढेमें छेदनेकी तरह दर्द (बाएँ—स्पाइजि)। दाहिनी आँखकी ऊपरी पलकके नीचे ऐसा मालूम होता है, कि कुछ गिर गया है और जलन तथा करकराहट मालूम होती है (ऐसिड-फ्लू, एपिस, हिप, इयुफ्रे, कोरैल,)। दूसरी चीजोंकी ओर देखनेके समय आँखके गोलेमें दर्द मालूम होना (ब्राई, जेल्स, नैट्र-म्यूर, फास, बैप्टो)।

नाक।—बार-बार छींक आनेकी वजहसे खरनाली और वक्षमें तेज़ दर्द पैदा करनेवाली चोट जैसा मालूम होता है (कैल्के-आर्स, कास्टि, बहुव्यापक सर्दी (इनफ्लुएञ्जा)—मिफाइटिस, मर्क, यकृतके प्रदाहमें—बोरा, मर्क-सोल, चेलिडो); खरनाली इतनी फैल जाती है, कि ऐसा मालूम होता,

है, मानो वह फट जायगो और सूर्यास्तके समय दोनों नाकके छेदसे गाढ़ो सर्दी या श्लेष्माका स्राव होता है। उपास्थिमय भेदकके दोनों पार्श्वमें तकलीफ़ देनेवाली उत्तेजना मालूम होती है, विशेषकर छेदके दरवाजेके पिछले भागमें अधिक। नासा-रंध्रमें चेतना अधिक होना, ठण्डो हवा बहुत हो ठण्डो मालूम होती है (कोरैल-रूब, हिप, कैलि-बाई, लिथ-कार्ब, ओस्मो)। बायें रंध्रके भीतर ऐसो चुनचुनाहट मालूम होती है, मानो छींक आयेगो (हाइड्रैस्ट, सिफिचिन, चेलिडो, कैम्फो, कोबाल्ट, जिङ्क, हिप, कैल्के)। पश्चानासा (नाकका पिछला छेद) को सर्दी, नाकके पिछले छेदसे गलेमें पपड़ो या बलगमका स्राव होता है (आर्जेण्ट-नाई, अरम, कास्टि, फेर-फास, हिप, कैलि-बाई, कैलि-आयोड, मर्क-प्रोटो, मेड्र-मूर, सोरिन, सिपि, थिरिड)।

मुखमण्डल।—चेहरा लाल और गर्म, विशेषकर सोनेके समय (बाईं करवट सोनेके समय—कैल्के; माथा झुकानेपर या झुकनेपर—बेल, कैन्थ)। दोपहरमें भोजनके बाद (ऐमो-कार्ब, कोरैल, रैनान)। औंघाई और आलस्य मालूम होनेके साथ तमतमाया हुआ चेहरा और सरमें दर्द (मिलि-लोट); औंघाई आनेपर भो नोंद नहीं आती; निर्मल वायु सेवन करनेपर घटना (वृद्धि—वैलि); तोसरे पहर दाहिनो हनु-सन्धि और दाहिने फेफड़ेके बिचले भागमें दर्द मालूम होना।

मुख-विवर।—दाहिनो ओरके दाँतमें प्रायः हो फाड़ डालने या चिलक मारनेको तरह दर्द मालूम होता है। मुँहमें सड़ा हुआ स्वाद और मसूढ़ेसे खूनका स्राव होता है। तालुके निचले अंशमें बार-बार गाढ़ा श्लेष्मा सञ्चय होता है और निकल जानेपर कण्ठनालोका दर्द बहुत कुछ घट जाता है। तालुका बायाँ पार्श्व सूखा हुआ (लोबेलिया-इन्फ्लेटा— जीभका दाहिना किनाराभर मैलसे ढँका रहता है)।

गलेके भीतर।—बहुत श्लेष्मा सञ्चय होना। गलेमें बार-बार गाढ़ा श्लेष्मा इकट्ठा होनेको वजहसे उसमें त्वचा क्षय करनेवाला (Rawness) संकोचन, सूखापन और तेज़ दर्द घट जाया करता है। कण्ठमें सूखापन और अन्ननलोके दरवाजेपर ऐसा मालूम होता है, मानो हमेशा मुँह फाड़े हुए है; बाईं गलग्रन्थिमें दर्द मालूम होता है (लैके)। अन्ननलोके दरवाजेपर ऐसा अनुभव होता है, मानो एक गुल्मको तरह पदार्थ अड़ा हुआ है (इरिजि,—

मानो हड्डीका एक टुकड़ा अड़ा है—लाई; मानो कुछ कड़ा पदार्थ अड़ा है, इसीलिये दर्द मालूम होना—जेल्स)।

पाकाशय आदि।—सवेरे खट्टी डकार आना। ठण्डा पानी पीनेपर सभी समय सम-भावसे पेट फूलना और कब्जियत वगैरह अजीर्णके लक्षण घट जाया करते हैं (गर्म—पीनेकी चीजें पाचन-क्रियामें गड़बड़ी पैदा कर दिया करती हैं—सिङ्को)। पाकस्थलीके शेष भागमें अस्पष्ट दर्द (फाइटो)। सवेरे ६ बजनेके समय नींद खुलनेपर पाकाशय और तलपेटमें भयानक दर्द और पेट गड़गड़ाना, इसके साथ ही मलद्वारमें स्पर्श सहन न होना और कूथनके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह पाखाना होना। गाड़ीपर चढ़नेके समय थोड़ा भी हिलानेपर, पाकस्थली और दोनों कोखोंमें दर्द पैदा हो जाता है (शरीर थोड़ा भी हिलानेपर—कास्टि; शरीर हिलानेपर—ब्राई)। ऊपरी पेटके नीचेवाले स्थानमें हड़हड़ शब्द (चायना, फास); दोपहरमें भोजनके बाद बढ़ना। रातमें तीन बजनेके समय नींद खुलनेपर देखता है, कि पेटमें आध्मान वायु खूब भरा हुआ है और वायु नहीं निकलता। नाभिके नीचे बहुत दर्दके साथ सन्ध्याके पहले और बाद पतले दस्त आते हैं (ऐलो, ऐमोन-म्यूर)। प्लीहाके पिछले गात्रमें तेज़ दर्द (सियानोथस)।

श्वास-यंत्र।—स्वरनली बहुत फैली हुई मालूम होती है, मानो फट जाना चाहती है। सन्ध्याके समय स्वरनलीके शिखर-देशमें बहुत खुजलाहटकी वजहसे तेज़ खाँसी पैदा हो जाती है; पाचन-क्रियामें विकारसे पैदा हुआ सवेरेका स्वरभङ्ग (एइलैन्थस, ब्रोम, कास्टि, इयुपेट-पर्फो)। अजीर्ण रोगके कारण पाकाशयिक खाँसी (नक्स-वोम, ऐलियम-सैट, कैलि-ब्रोम, हाइड्रेस्ट, कार्डियुस-मेरी; प्लीहासे उत्पन्न या प्लीहाके भीतर दर्दके साथ-साथ खाँसी—स्कियुला), सन्ध्याके समय सामान्य कफ़ निकलता है (आर्नि, काफि, कास्टि, साइना, ग्रैफ)। दाहिने पार्श्वकी छठी पर्शुकाकी उपास्थिके साथ ही संयोग-स्थान (जोड़वाली जगह) में दर्द और दिन-रात प्रचण्ड सूखी खाँसी; कण्ठ-नालीके पिछले भागमें सूखापन और शुष्कता (निरसता) मालूम होना। एक ही साथ दाहिनी हनुसन्धि और दाहिने फेफड़ेके मध्य भागमें दर्द। दोनों कन्धे और गर्दनके मध्य भागमें दर्द। दाहिनी कण्ठास्थिमें वातका दर्द (कोलचि)। बाएँ पृष्ठफलकके दाहिने या भीतरी पार्श्वके नीचेवाले स्थानमें दर्द—बढ़ना रोनेके

बाद (दोनों पृष्ठफलकोंके बोचवाले स्थानमें दर्द—एस्पार, लोबेल-इन, लाइको-पस-वर्जि)। बायाँ कन्धा और बाँहमें लगातार दर्द मालूम होना (थिरिड), इसके साथ कक्ष या बगलके पास छातोके स्थानपर दर्द (रैनान, बाएँ वक्षमें दर्द—ऐलि-सेट, एपिस, कुरारो, टियुबर्क, जैम्यक्स)। निचले वक्षमें दबाव मालूम होना, मानो निकली हुई हवा उसके ऊपर नहीं पहुँचती (फास,—प्र नष, मानो दोनों फेफड़ोंके भरपूर फैलनेके लिये जगह नहीं है—नेट्रम-मूर) और हृत्पिण्ड तथा धमकन जैसा श्वास-प्रश्वास। बायें स्तनके निचले अंशमें दर्द (ऐक्टि-रेसि, ऐस्टि, पल्स, रैनान-बल्बो)। सूर्यास्तके समय हृत्पिण्ड-प्रदेशमें तेज़ दद।

गर्दन और पीठ।—बहुत देरतक ऊपरकी ओर देखनेके कारण गर्दनका पिछला भाग अकड़ जाता है (बैराई-कार्ब, ऐसिड-कार्बोल, कार्बो-वेज, लैके, लाई, मेजेर, फास, प्लेट), विशेषकर बायें पार्श्वमें। क्षुद्र पर्शुकाके नोचे पोठमें भारको तरह तेज़ दर्द होना ; वृद्धि—रातमें सोनेपर, लम्बो साँस लेनेपर छेदनेकी तरह मालूम होता है ; वृद्धि—करवट बदलनेके समय ; दिनमें दर्द अधिक नहीं रहता। दाहिने पृष्ठफलकके भोतर या बाएँ पार्श्वमें दर्द। बायें पृष्ठफलकके दाहिने पार्श्वके नोचेवाले स्थानमें दर्द ; बढ़ना रोनेपर (फैरिङ्गटन)। प्लोहाके पोछेवाले गात्रमें दर्द होता है। बायें मसाने या मूत्रग्रन्थि-प्रदेशमें दर्द ; दाहिने मसानेके बोचमें महोन सलाई गड़नेकी तरह दर्द (लाई, बायें—बार्बा, टैरेक)। मेरुदण्डमें उससे भो अधिक अकड़न, थोड़ा भो हिलानेपर बहुत दर्द मालम होता है (बेल, सिपि), दर्द पोठकी दाहिनो ओरसे बाईं ओर फैलता है और दोनों पैर बहुत जोरसे हिलते हैं।

प्रत्यङ्ग आदि।—लिखनेके समय कन्धा और अंगुलोमें तेज़ दर्द मालूम होता है। कभी-कभी दोनों कमरमें दर्द मालम होता है। दिनभर दोनों जानुमें वायु लगने-जैसो ठण्ड और दर्द मालम होता है (हाइड्रैस्ट, इयुजियेन)। बायें पैरको अग्र-जंघास्थि (आगेवाली जांघकी हड्डीमें) में सलाई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। दोनों तलवोंमें डङ्क मारनेकी तरह झुनझुनी (बार्बे, इग्ने) मालूम होता है, मानो सुन्न हो गई है, उसके ऊपर सर्दी मालूम होना, मानो उसपर सुरासार (स्पिरिट) गिर गया है।

वृद्धि।—शरीर हिलानेसे, छूनेसे, लम्बी साँस लेनेपर, रोनेपर, लिखने-पढ़नेपर, दोपहरके भोजनके बाद, रातमें बाईं करवट सोनेपर और करवट बदलनेपर।

घटना।—गलेसे गाढ़ा श्लेष्मा निकलनेपर, निर्मल वायु लगनेपर और ठण्ढा पानी पीनेपर।

सम्बन्ध।—**सदृश।**—सियैनोथस, लोबेलिया-इन्फ्लेटा, पलसेटिला, चेलिडोनियम, रैनानकुलस-बल्बोसस, ऐक्टिया-रेसिमोसा, कारेलियम-रूब्रम, बैप्टोशिया, जेलसिमियम, बार्बरिस और कास्टिकम।

तुलनीय।—पल्स (मानसिक अवसाद); रैनान (वक्षमें दर्द); हाइड्रैस्ट (नाककी सर्दीकी अवस्था); सियानो (प्लीहाका दर्द इत्यादि)।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठा शततमिक क्रम।

लोलियम टिम्यूलेण्टम

(LOLIUM TEMULENTUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मूल बीजसे विचूर्ण और टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं :—मदात्यय रोग; पक्षाघात; कम्पन; लिखनेवालोंका हाथ हिलना या हाथमें ऐंठन इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—पक्षाघात, स्पन्दन (फड़कना), धनुष्टंकार इत्यादि आक्षेप वगैरह इसके खास क्रियाफल हैं। इसके द्वारा मस्तिष्कमें जड़ता, प्रलाप और बहुत सुस्ती पैदा हो जाया करती है। पैरकी पीटलीकी पेशीका कड़ापन और आलस्य भाव और ऐसा मालूम होनेके साथ भयानक तकलीफ़ कि डोरीसे कसकर बाँधा हुआ है; हाथका काँपना इत्यादि कई इसके प्रधान लक्षण और विषय हैं। सर-दर्द, उसके पीछेवाले स्नायुका मूलका दर्द, बहुत शारीरिक अवसन्नता और बेचैनीमें भी इससे विशेष लाभ हुआ करता है।

लक्षणावली

मन और मस्तक ।—चित्तकी चञ्चलता और मानसिक अस्थिरता ; उन्माद और हलका प्रलाप । विषन्न भाव, बुद्धिकी जड़ता ; कोई भी विषय सहजमें ही हृदयङ्गम नहीं कर सकता ; बुद्धिमें गड़बड़ी और होश न रहना । सरमें चक्कर आना ; आँख बन्द करनेपर घटता है (वेरेट-विर, बढ़ता है—ऐल्यू, ऐसिड-फास, आर्नि, हिप, लैके, साइलि, थिरिड ; आँख बन्द करनेपर घटना—एपिस, थूजा) ; माथेमें स्पन्दन मालूम होना । माथेमें खालीपन मालूम होना ; मिचली और बोलनेकी शक्तिका न रहना । सलाई बेधनेकी तरह भयानक यन्त्रणा, विशेषकर ललाटमें और शंखदेश या कनपटीमें । आँखकी पुतली बहुत फैली हुई । अस्पष्ट दृष्टि—ऐसा मालूम होना मानो आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ उड़ रही हैं (सिङ्को, ओपि, सल्फ, हृत्पिण्डके अवसादका पूर्व लक्षण—नक्स-वोम) । कानमें बाजा या कानमें गरजनेकी आवाज़, मानो थोड़ी ही दूरपर ढोल बज रहा है (सिङ्को, लाई, हेलिबो, कूप्रम-ऐसेट, ड्रोसेरा, लैके) । औंघाई आना ।

पाकस्थली ।—मिचली और श्लेष्मा-भरी कै ; रातमें बार-बार वमन । ज्वरके साथ अन्ननाली, पाकाशय और अन्त्राशयमें प्रदाह । उदरके ऊपरी प्रदेशमें बहुत गड़बड़ी मालूम होना । पेट बहुत फूल जाता है ; आँतोंमें तेज़ शूलकी तरह दर्द । बहुत ज्यादा दस्त, तेज़ अन्त्रशूलके साथ पतले दस्त आना । बहुत अधिक पेशाब ।

प्रत्यङ्ग आदि ।—चलता-चलता ढुलक पड़ता है (ऐसिड-हाइड्रो, सिकेलि, नेट्र-कार्ब, फास, माइगेल, लाइथिर, कैलि-ब्रोम, प्लम्ब, जेल्स) ; सभी अङ्ग काँपा करते हैं (गिलास नहीं पकड़ सकता, पानी न गिरे, इस तरहके भावके साथ ग्लास मुँहमें नहीं लगाता—मर्क ; पानी पीनेमें जितनी देर लगती है, उतनी देरतक भी ग्लासकी पकड़े नहीं रह सकता—स्टैफ) । लिखनेके समय हाथ सुन्न हो जाते हैं (जिङ्कम) । कुर्सी या अपनी जगहसे उठनेकी चेष्टा करनेपर ढुलक पड़ता है (लिसिन, चलनेके समय—जेल्स ; किसी चीज़का सहारा लिये बिना खड़ा नहीं हो सकता, सरमें चक्कर आनेकी वजहसे—क्रियो) ; घरमें चलनेके समय कहीं लुढ़क न पड़े, इसलिये सावधान रहना पड़ता है । दोनों पैर, विशेषकर पैरकी पीटलीवाली हड्डीकी पेशीमें और जानुसन्धिमें भयानक

अकड़नका भाव (ऐनाक, पल्स) ; रोगवाले अंशकी लाली, सूजन और त्वचाका खुजलाना। दोनों पैर बेतरह अकड़े और दर्द एवं उनमें सूजन, प्रदाह और खुजली मालूम होती है। इसके बाद भीतरी अंशमें गाढ़ा रस इकट्ठा होकर उसका सड़ना और गलना आरम्भ हो जाता है। जंघाकी पोटलीकी पेशी मानो डोरी द्वारा कसी हुई है—ऐसी अकड़न और यन्त्रणा। दर्द आदि बर्षात और तर हवामें बढ़ जाता है, कभी-कभी बहुत जाड़ा मालूम होता है और कँपकँपी पैदा हो जाती है। हाथ-पैरके अगले भाग बरफ-जैसे ठण्डे।

सम्बन्ध।—सदृश।—वेरेट-वि, सिकेलि, कैलि-ब्रोम, जेल्स, लिथिन, ऐनाक, लेथि (पक्षाघात) ; ओपियम (तन्द्रा)।

शक्ति।—मूल अर्क और १ला दशमिक क्रम।

लोनिसेरा पैरिक्लाइमेनम

(LONECERA PERICLYMENUM)

दूसरा नाम।—उड-वाइन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—एकाएक मिजाज़ खराब हो जाना और इसके साथ ही जोरसे चिल्लाना, बकना इत्यादि लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—क्रोकस, बाइवर्नम, स्ट्रैफिसेग्रिया, हाइयोसायमस।

शक्ति।—२—६।

लोनिसेरा जाइलोस्टियम

(LONICERA JEYLOSTEUM)

दूसरा नाम ।—पलाई उड्-वाइन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फलसे विचूर्ण या अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—आक्षेप, मूत्रमें मूत्राम्लकी अधिकताके कारण आक्षेप । मूत्रमें अण्डलाल, उपदंश, एक आँख संकुचित, दूसरी आँख फैली, ठण्डा पसीना वगैरह लक्षणोंमें इसका व्यवहार लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—लोनिसेरा-पेरि, डिजिटे, कैड्मि-सल्फ ।

शक्ति ।—६—३० ।

लूना

(LUNA or MOON'S RAYS)

दूसरा नाम ।—चन्द्रमाकी किरण या रश्मि ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—दूधकी चीनी काँचके बर्त्तनमें तीन-चार घण्टे तक चन्द्रमाकी चांदनीमें रखकर इसके बाद विचूर्ण बनाना पड़ता है (जिङ्ग) या विशुद्ध पानी तीन-चार घण्टे तक रखने बाद उससे क्रम तैयार करना पड़ता है (हिगिन्स) ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अम्लरोग ; मृगी ; सर-दर्द ; आर्त्तव-स्राव (बीचके ही समयमें), शोथ, सपनेमें चलना ; कृमि इत्यादि ।

शक्ति ।—उच्चतर क्रम ।

ल्यूप्यूलस
(LUPULUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—बीजसे विचूर्ण और मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— अजीर्ण ; मूत्रकृच्छ्रता ; प्रमेह।

उपयोगिता और आभास।—डा० बोरिकके मतसे रातभर शराब आदि पीने और अत्याचार करनेके बाद दूसरे दिन जब स्नायु सब शिथिल हो पड़ते हैं ; बार-बार मिचली आती है, सरमें चक्कर आया करता है और दर्द मालूम होता है, उस समय इससे स्वास्थ्यका संचार होता है और रोगीमें नयी ताकत पैदा हो जाती है। नये पैदा हुए बच्चेके पाण्डु रोगमें यह अधिक लाभदायक हुआ है। इसके कई प्रधान लक्षण ये हैं :—(१) गहरे विकारकी अवस्थामें रोगी सोया-सोया चौंक उठता है और बड़ी तकलीफ़से उससे रोगीको जगाने बाद थोड़ा-सा होश आ जाता है और तुरन्तही फिर बेहोश या मोह-प्राप्त अवस्थामें जा पड़ता है। (२) मस्तिष्कको जड़ता। (३) अस्थिकी गति। (४) लाल खुजलीके दाने या अरुणिका पैदा हो जाना। (५) पेशाबके समय मूत्रमार्गमें जलन। (६) पाकस्थलीमें हिलनेकी तरह मालूम होना। (७) अन्त्राशयमें गैस पैदा होना। (८) कण्ठार या पेशी वगैरहमें सङ्कोचन और फैलना इत्यादि।

लक्षणावली

मन और मस्तक।—चकित भाव। बहुत ही उत्तेजना होनेका लक्षण। गहरे विकारकी अवस्थामें सोया-सोया चौंक उठता है (जेल्स, स्ट्रैमो बेल, हायो); बड़े कष्टसे जागनेपर चकितकी तरह चेतना पैदा हो जाती है ; पर फिर तुरन्त ही मोह प्राप्त हो जाता है (जगानेपर बातका जवाब देकर तुरन्त बेहोश हो जाता है—ऐसिड-फास, आर्निं, ओपि)। बुद्धि मोटी और मानसिक आलस्य। माथे और आँखोंमें खूनका अधिक सञ्चय होना या उसमें खूनका अधिक दौरान होना (ऐमिल, बेल)। चेहरा और माथेमें गर्मी (उत्ताप) पैदा हो जाना (जेल्स, ग्लोनॉयिन, कोलि-आयोड, सिलि) ; धीमा सर-दर्द और

माथेमें गड़बड़ी। असह्य माथेका दर्द—खींचने और दबानेकी तरह। कनपटी या गर्दनकी बगलवाली दोनों नीली धमनियोंमें टपक (ऐमिल, बेल, जेल्सि, हाइपेरि, कैलि-ब्रोम, स्ट्रैमो)। पुतलियाँ फैलीं, दिनमें औंघाई। आच्छन्नावस्था (बेहोशी—नाइक्नि-स्पि-डाल)।

पेशाब और जननेन्द्रिय।—तकलीफ़ देनेवाला लिङ्गका कड़ापन (कैंनाब-सैट, कैन्थ, इरिज्जि, कैलि-मूर, माइगेल, पेट्रोसेल, पल्स ; ठण्डे पानीमें कुछ घट जाता है—कैम्फ), शुक्रमेह (ल्युप्युलिन, साइप्रिपिड-फास, फास, सेलिन, सिपि) ; बहुत अधिक हस्तमैथुनके कारण शुक्रमेह (बूफो, कैल्के, प्लैट, स्ट्रैमो)। पेशाबके समय मूत्रनालीमें जलन मालूम होती है (आर्मेरेसिया, कैनाब-रूट, मर्क, कैन्थ, कैम्फ)।

सार्वाङ्गिक।—दिनमें औंघाई। श्वास-प्रश्वास दीर्घ और नाकसे आवाज़ होती रहती है (ओपि)। कण्डारका स्पन्दन। हाथ-पैरोंमें पक्षाघातकी तरह कमजोरी मालूम होती है। गति अस्थिर और जोर लगाना पड़ता है। एकाएक क्षणभरके लिये दोनों कन्धे, बाँह और दोनों हाथोंकी पेशियां सब मानो जकड़ जाती हैं। वातका दर्द—एक जगहसे दूसरी जगह चला जाता है (एपिस, आर्नि, बेल, कैल्के-फास, कार्बो-वेज, कैमो, कैलि-बाई, कैलि-सल्फ, लैक-कैन, लैके, मैङ्ग, नक्स-मस, पल्स, सेबाई, सल्फ)। लाल फुन्सियाँ निकलना (टेरिब, रास, आर्टिका, नीली आभा लिये—क्लोरैलम)।

सम्बन्ध।—सदृश।—बेल, ऐमिल, हायो, स्ट्रैमोन, कैनाब-इण्डि, कैनाब-सैट, माइगेल, कैलि-ब्रोम, ओपि, पेट्रोसेल, डिजिटेलिन, ल्यूप्यूलिन, ऐसिड-फास, पल्स, कैलि-बाई, टेरिब, रास, आर्टिका-युरेन्स।

दोषघ्न या प्रतिविष।—काफी, सिर्काकी खटाई या विनिगर।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठा दशमिक क्रम। शुक्र-स्रावमें ल्यूप्युलिन १x विचर्ण और कर्कट रोगमें बाहरी प्रयोगसे अच्छा रहता है (बोरिक)।

लाइकोपर्सिकम

(LYCOPERSICUM ESCULENTUM)

दूसरा नाम ।—सोलेनम लाइकोपर्सिकम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—लाल रङ्गके विलायती बैगनसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—
पीठमें दर्द; सर्दी; बाँहकी पेशीमें दर्द; बहुमूत्र; अतिसार; सन्धिवात; सर-दर्द; प्रदर; स्थूलता (मोटापन); गलेका जखम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—वात, सन्धिवात, माथेमें खून अधिक सञ्चय होना, सर्दी वगैरह इसके प्रधान क्रियाफल हैं। इसके द्वारा दबाने या दबनेकी तरह दर्द, स्मरण-शक्तिका लोप हो जाना और चिढ़ जानेवाला भाव, माथेमें दबाने या छेदनेकी तरह दर्द और रुकी हुई नाककी सर्दी बार-बार हो जाया करती है। कभी-कभी इसके द्वारा स्त्रियोंके कमरमें दर्द, जरायुका स्राव और प्रदरके कारण स्राव भी हुआ करता है। इसके सर-दर्दकी विशेषता यह है, कि दर्द आराम हो जानेपर माथेमें तकलीफ़ होती है और स्पर्श सहन नहीं होता। घरसे बाहर निकलनेपर सर्दी बढ़ जाती है। धूम्रपान या सूंघनेसे सर-दर्दका एकदम घट जाना। दाहिने अङ्गमें प्रकोपकी अधिकता या दर्द आदिका दाहिनेसे बायें अङ्गमें जाना और बहुत प्यास होनेके साथ पेशाबका ज्यादा होना, इसका एक सिद्धिप्रद लक्षण है, नाकमें कणमात्र धूल जानेपर भी सर्दी और लक्षण सब बहुत बढ़ जाते हैं।

लक्षणावली

मन ।—मनमें उठे हुए भावोंका लोप हो जाना, विशेषकर तलहत्थी या किसी दूसरे आधारपर माथा रखनेपर, यहाँतक कि जो कुछ भी याद करनेकी चेष्टा करता है, वह भी भूल जाता है (बोलता-बोलता—मेजेर, नक्स-मस्क)। किसी काममें मन नहीं लगा सकता (बहुत समयतक एक विषयमें मन नहीं लगा सकता—ड्रासेरा, लेकेसिस, सेनिक)। बहुत ही उत्तेजित हो

जानेवाला, सामान्य आवाज़से भी चिढ़ उठता है (ऐसेर, फेरम, नक्स-वोम, मिडोरिन, थिरिड, साइलि)।

मस्तक।—चलनेकी चेष्टा करते ही सरमें चक्कर आ जाता है और बेहोश होनेकी तैयारी हो ताती है। ऐसा अनुभव होता है, मानो माथा दोनों पार्श्वसे दबाया जा रहा है (सिङ्को, मिनियैन)। बहुत तेज़ स्नायविक सर-दर्द, यह दर्द क्रमसे दोनों आँखोंके पीछे और शङ्खदेश या कनपटीमें बहुत तेज़ आकार धारण करता है और आँखकी पुतली सिकुड़ (ओपि) जाती है, घटना—तम्बाकूका धुआँ सूंघने या पीनेपर (डायाडेमा, चाय पीने बाद धूम्रपान करनेसे घटना—ऐसिड-कार्बोल)। प्रचण्ड सर-दर्द, टपक और फाड़नेकी तरह, कपालके पिछले भागसे आरम्भ होकर समूचे माथेमें फैल जाता है, पर सरके पिछले भागमें और कनपटीमें यह दर्द तेज़ आकार धारण करता है। ललाट-फलकके नीचेवाले स्थानपर तेज दबाव मालूम होता है, मानो माथा दबकर बाहर निकल आना चाहता है; सन्ध्याके समय और सोनेके कुछ बादतक ऐसा ही दर्द मालम हुआ करता है; घटना—तलहथी या अन्य किसी दूसरे आधारपर माथा रख देनेपर (बेल, ब्रोम, डायाडेमा, कैलि-कार्ब, मिनियैन, मर्क)। खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो मूर्द्धदेश फट जायगा (कैल्के, आर्स, कक्स-कैक, नक्स-वोम, फास, स्टिक्टा)। सरका दर्द घट जानेपर भी माथेमें स्पर्श एकदम सहन नहीं होता।

आँख।—आँख, थकन और भार मालम होता है; दर्द और जलन हुआ करती है, स्पर्श सहन नहीं होना; मानो आँखका गोला सिकुड़ता जा रहा है, ऐसा अनुभव होनेके साथ उसमें असह्य दर्द होता है। पलकें भारी और फूली मालूम होती हैं (ऐब्सिन्थि), आँखकी पुतली बहुत संकुचित हो जाती है (डैफ, ओपि); रोशनी लगनेपर आँखमें दर्द पैदा हो जाता है (नैट्र-मूर, स्टैफि, आर्जेण्ट-नाई)। महीन सुईका काम आदि करनेके समय आँखमें पानी भर आता है (चेलिडो, इपिक, सेनेगा, सल्फि), दृष्टिकी अस्पष्टता दूर करनेके लिये बार-बार आँखें मला करता है (क्रोकस, पल्स)।

नाक।—नाककी सर्दीका स्राव रुक जाना। बहुत ज्यादा कसैले पानीकी तरह नाकसे स्राव होता है—नाकके छेदकी खाल उधड़ जाती है (सिपा, अरम, मार्क, नक्स-वोम); पिछले छेदसे लगातार गलेमें बूंद-बूंद पतला बलगम या सर्दी निकला करती है (कोरैल, फेर); उसका स्वाद

लाइकोपर्सिकम

(LYCOPERSICUM ESCULENTUM)

दूसरा नाम ।—सोलेनम लाइकोपर्सिकम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—लाल रङ्गके विलायती बैगनसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—पीठमें दर्द ; सर्दी ; बाँहकी पेशीमें दर्द ; बहुमूत्र ; अतिसार ; सन्धिवात ; सर-दर्द ; प्रदर ; स्थूलता (मोटापन) ; गलेका जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—वात, सन्धिवात, माथेमें खून अधिक सञ्चय होना, सर्दी वगैरह इसके प्रधान क्रियाफल हैं । इसके द्वारा दबाने या दबनेकी तरह दर्द, स्मरण-शक्तिका लोप हो जाना और चिढ़ जानेवाला भाव, माथेमें दबाने या छेदनेकी तरह दर्द और रुकी हुई नाककी सर्दी बार-बार हो जाया करती है । कभी-कभी इसके द्वारा स्त्रियोंके कमरमें दर्द, जरायुका स्राव और प्रदरके कारण स्राव भी हुआ करता है । इसके सर-दर्दकी विशेषता यह है, कि दर्द आराम हो जानेपर माथेमें तकलीफ होती है और स्पर्श सहन नहीं होता । घरसे बाहर निकलनेपर सर्दी बढ़ जाती है । धूम्रपान या सूंघनेसे सर-दर्दका एकदम घट जाना । दाहिने अङ्गमें प्रकोपकी अधिकता या दर्द आदिका दाहिनेसे बायें अङ्गमें जाना और बहुत प्यास होनेके साथ पेशाबका ज्यादा होना, इसका एक सिद्धिप्रद लक्षण है, नाकमें कणमात्र धूल जानेपर भी सर्दी और लक्षण सब बहुत बढ़ जाते हैं ।

लक्षणावली

मन ।—मनमें उठे हुए भावोंका लोप हो जाना, विशेषकर तलहत्थी या किसी दूसरे आधारपर माथा रखनेपर, यहाँतक कि जो कुछ भी याद करनेकी चेष्टा करता है, वह भी भूल जाता है (बोलता-बोलता—मेजेर, नक्स-मस्क)। किसी काममें मन नहीं लगा सकता (बहुत समयतक एक विषयमें मन नहीं लगा सकता—ड्रासेरा, लेकेसिस, सेनिक)। बहुत ही उत्तेजित हो

जानेवाला, सामान्य आवाज़से भी चिढ़ उठता है (ऐसेर, फेरम, नक्स-वोम, मिडोरिन, थिरिड, साइलि)।

मस्तक।—चलनेकी चेष्टा करते ही सरमें चक्कर आ जाता है और बेहोश होनेकी तैयारी हो जाती है। ऐसा अनुभव होता है, मानो माथा दोनों पार्श्वसे दबाया जा रहा है (सिङ्को, मिनियैन)। बहुत तेज़ स्नायविक सर-दर्द, यह दर्द क्रमसे दोनों आँखोंके पीछे और शङ्खदेश या कनपटीमें बहुत तेज़ आकार धारण करता है और आँखकी पुतली सिकुड़ (ओपि) जाती है, घटना—तम्बाकूका धुआँ सूंघने या पीनेपर (डायाडेमा, चाय पीने बाद धूम्रपान करनेसे घटना—ऐसिड-कार्बोल)। प्रचण्ड सर-दर्द, टपक और फाड़नेकी तरह, कपालके पिछले भागसे आरम्भ होकर समूचे माथेमें फैल जाता है, पर सरके पिछले भागमें और कनपटीमें यह दर्द तेज़ आकार धारण करता है। ललाट-फलकके नीचेवाले स्थानपर तेज दबाव मालूम होता है, मानो माथा दबकर बाहर निकल आना चाहता है; सन्ध्याके समय और सोनेके कुछ बादतक ऐसा ही दर्द मालम हुआ करता है; घटना—तलहत्थी या अन्य किसी दूसरे आधारपर माथा रख देनेपर (बेल, ब्रोम, डायाडेमा, कैलि-कार्ब, मिनियैन, मर्क)। खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो मूर्द्धा-देश फट जायगा (कैल्के, आर्स, कक्‌स-कैक, नक्स-वोम, फास, स्टिक्टा)। सरका दर्द घट जानेपर भी माथेमें स्पर्श एकदम सहन नहीं होता।

आँख।—आँख, थकन और भार मालम होता है; दर्द और जलन हुआ करती है, स्पर्श सहन नहीं होना; मानो आँखका गोला सिकुड़ता जा रहा है, ऐसा अनुभव होनेके साथ उसमें असह्य दर्द होता है। पलकें भारी और फूली मालूम होती हैं (ऐब्सिन्थि), आँखकी पुतली बहुत संकुचित हो जाती है (डैफ, ओपि); रोशनी लगनेपर आँखमें दर्द पैदा हो जाता है (नैट्र-म्यूर, स्टैफि, आर्जेण्ट-नाई)। महीन सुईका काम आदि करनेके समय आँखमें पानी भर आता है (चेलिडो, इपिक, सेनेगा, स्पिजि), दृष्टिकी अस्पष्टता दूर करनेके लिये बार-बार आँखें मला करता है (क्रोकस, पल्स)।

नाक।—नाककी सर्दीका स्राव रुक जाना। बहुत ज्यादा कसैले पानीकी तरह नाकसे स्राव होता है—नाकके छेदकी खाल उधड़ जाती है (सिपा, आरम, मार्क, नक्स-वोम); पिछले छेदसे लगातार गलेमें बून्द-बून्द पतला बलगम या सर्दी निकला करती है (कोरैल, फेर); उसका स्वाद

नमकीन रहता है। घरसे बाहर जानेपर बढ़ जाता है (ग्रैफ, आयोड, सल्फ, थूजा), घरके बाहरको निर्मल हवा लगनेपर बढ़ जाता है (ग्रैफ, आयोड, सल्फ, थूजा, घरके बाहरको निर्मल हवा लगनेपर घटना—ऐको, सिपा, नक्स-वोम, पल्स; नासारंध्रमें थोड़ो भो धूल जानेपर सर्दी बहुत बढ़ जाया करती है—कैल्के, हिप, साइलि)।

पेशाब।—रातमें ज्यादा पेशाब होना (ऐसिड-फास)। तेज़ प्यास और बार-बार पेशाबका वेग (ऐसिड-ऐसेट, कैन्थ, कास्टि, हेलोन, लैक-डिफ्लो युरेन-नाई, लाई, ऐसिड-फास, स्क्वियुला)। बहुत ज्यादा प्रदरका स्राव, बहुत हो सुस्त करनेवाला कमरका दर्द (ऐसिड-मूर, इस्कयु, हिप, पल्स, हेलोन, कास्टि, कोना, नैट्र-मूर)। घरके बाहरको हवा लगनेपर लगातार बून्द-बून्द पेशाब होना (चलनेके समय—पल्स, सेलिन)।

श्वास-यंत्र।—आवाज़ बिगड़ो और कर्कश, गलेमें लगातार खुजलो और बार-बार गला साफ़ करनेको इच्छा (ऐल्यु, आर्जेण्ट-नाई, हाइड्रैस्ट, फास, लैके)। खाँसो—गाढ़ो और कर्कश; वक्षके निम्नांशमें उत्तेजनाको वजहसे खाँसो, सूखो और वक्षको फाड़ डालनेवालो, रातमें आरम्भ होकर रोगोको सोने नहीं देतो (कैप्स, डैफनो, कैलि-बाई, कैलिसाया, ऐरेलिया, नक्स-वोम, रास, सल्फ सिफिल)। कफ़का रंग सफेद, जमा हुआ और श्लेष्मा-मिला (बोर, सिपि, इनान, फास, स्टैन, स्टिक्टा)। वक्षमें दर्द, माथेतक फैल जाता है। वक्षोस्थिके बाएँ पार्श्वमें सलाई बेधनेको तरह दर्द। कर्कट रोगवाले स्तनमें बहुत दर्द। हृत्पिण्डको जड़में महोन सलाई बेधनेको तरह दर्द मालम होना (लोबेल-इन—शिखरदेशमें—ब्यूफो, साइक्लै, लिलि-टाई)।

प्रत्यङ्ग आदि।—समूचो पोठमें लगातार दर्द मालूम होना, विशेषकर नितम्ब देशमें (चतड़के स्थानपर)। सर-दर्द अच्छा हो जानेपर पोठ और प्रत्यंगोंमें तेज़ दर्द मालूम होता है। कमर और उसके ऊपरी भागमें दर्दको वजहसे रोगिनो बहुत हो म्रियमान और दुखित हो पड़तो है। सोकर, बैठकर या किसो तरह भो उसे आराम नहीं मिलता (ऐकोन, आर्स, एरम-ट्राई, बेल, ऐसिड-मूर, कूप्र, इयुपेट, पार्पि, लैके, मर्क, लैचनैन, रास, स्ट्रैमोन, थूजा) सभो अङ्ग-प्रत्यंगोंको पेशियोंमें वातको वजहसे दर्द (ऐक्टि, ब्राई, रास, रोडोड, कैलि-आयोड, कैल्मो, लाई, फाइटो) और सभो अङ्ग अवश और थके

हुए-से मालूम होते हैं (ऐमिल, मर्क सोल, पल्स, सिपि)। दाहिने कन्धेकी त्रिकोण-पेशी और वक्षकी बगलवाली पेशीमें वातका तेज़ दर्द मालूम होता है (ऐगरिक, सैङ्गिविन, फेरम-फास, कैल्मि, स्टिक्टा); बढ़ना—बाँह फैलाने या उठानेपर (सिफिल, जिङ्क, पीछेकी और बाँह घुमा लेनेपर—ऐगार ; कपड़ा पहननेके समय—फेरम-फास)। दाहिने बाँहकी कोहनी या सन्धिमें (कोलचि, हाइड्रैस्ट, कैलि-बाई); कलाईमें (ऐक्टि-स्पाई, कोलचि, कैलि-बाई, वैक्सिन, लैके, कोलोफिल) और दोनों हाथमें (क्लिमेट, कोमोक्ले, फाइटो, रास, ऐस्टि, वैक्सिन, वायोला) वातकी वजहसे दर्द। दाहिने ऊरुके सामनेवाले स्नायुमें सलाई गड़नेकी तरह तेज़ दर्द (काफि, स्टैफि)। शरीर सुन्न मालूम होनेकी वजहसे रोगी रातभर चित सोया रहता है (लाइ, साइकूप)।

वृद्धि।—घरके बाहरी भागमें, आवाज़से, शरीर या रोगवाली जगह हिलानेपर, हाथ उठानेपर, तलहत्थी या किसी दूसरी चीज़पर माथा रख देनेपर (विकृति) और दाहिने अङ्गमें।

घटना।—धुआँ पीने या तम्बाकूका धुआँ सूंघनेपर, किसी आधारपर माथा रख देनेपर (सर-दर्द), घरके भीतर और बाहरी उत्तापके प्रयोगसे।

सम्बन्ध।—सदृश।—बेल, हायो, ऐसिड-फास, ओपि, युरेन-नाइ, कैल्के-आर्स, नक्स-वोम, स्टिक्टा, डायाडेमा, नेट्र-मूर, सिपिया, सिपि, सैङ्गिविन, कैम्फि, लेके, लाइ।

प्रतिविष।—धूम्रपान या तम्बाकूका धुआँ सूँघनेपर।

तुलनीय।—ऐण्टि-टार्ट (पेशियोंकी कमजोरी); सिपा (सर्दी); ओपियम (पुतली सिकुड़ी हुई); बेलेडोना (सर-दर्द)।

शक्ति।—३रे दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

लाइकोपोडियम क्लैवेटम

(LYCOPODIUM CLAVATUM)

दूसरा नाम।—उलफस “क्ल” (Claw)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसका विचूर्ण या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—तलपेटका आध्मान; गर्भ-स्राव; अण्डलाल मिला पेशाब; हृत्शूल; दमा; बगलमें बदबूदार पसीना; पेट गड़गड़ाना; कैन्सर; मोतियाबिन्द; कब्जियत; क्षय-कास; गट्ठे; खाँसी; ऐंठन; मूत्राधारका प्रदाह; उपझिल्ली-प्रदाह; शोथ; रक्तामाशय; बाधक; अजीर्ण; अकौता; नाकसे रक्त-स्राव; आँखकी बहुत-सी बीमारियाँ; पित्त-शिला; पित्त-शूल; ग्रन्थियोंका फूलना; गलगण्ड; वात; अश्मरी (पथरी); खून-मिला पेशाब; बवासीर; केश झड़ना; छातीमें जलन; हृत्पिण्डकी बीमारियाँ; आँत उतरना; हृदावरक झिल्ली-प्रदाह; व्याधि-शङ्का; मूर्च्छावायु; ध्वजभङ्ग; बहुव्यापक सर्दी; सविराम ज्वर; विकृत प्रसवका दर्द; आर्त्तव (ऋतुस्राव) में विकार; बहुत ज्यादा रजःस्राव; कामोन्माद; कानसे स्राव; अंगुलहाड़ा; पक्षाघात; अन्त्रावर्त्तन-प्रदाह; गर्भिणीके पैरमें सफेद रङ्गकी सूजन; जरायुसे वायु निकलना; फेफड़ेका प्रदाह; आँख या कानमें अर्बुद; मलान्त्रमें शूलका दर्द; मूत्राधार-मुखशायी-ग्रन्थिका प्रदाह; पाकस्थलीके प्रवेश-द्वारमें दर्द; कर्णमूल; पेशाबमें पथरी निकलनेका दर्द; वात; गृध्रसी वात; नींदमें गड़बड़ी; बोलीमें जड़ता; तोतलाना; सूर्याघात या सर्दी-गर्मी; सान्निपातिक ज्वर; पेशाबका विकार; स्वादमें गड़बड़ी; गलेका जखम; जीभपर मैल; शिराओंका फूलना; मसे; मुँहमें पानी भर आना; हूप खाँसी; कृमि; जम्हाई आना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—जिनका शरीर दुबला-पतला और क्षीण है, पर बुद्धि बहुत तेज़ है, जिनके ऊपरी अङ्ग दुबले, पर निचले अङ्ग मोटे-ताजे हैं या शोथ रोग हो गया ऐसे मालूम हों, जिन बच्चोंका माथा देखनेमें तो पूरा-पूरा हो, पर शरीर रोगी और दुबला हो और जिनमें प्रायः उदरमें आध्मान वायु और अजीर्णका लक्षण मौजूद रहता है, उन्हीं सब मनुष्योंकी धातुगत और

यन्त्रगत पुरानी बीमारियोंमें ; शरीरके किसी भीतरी यन्त्रकी सर्दी या बीमारीमें स्पर्शका सहन न होना और सुई बेधनेकी तरह दर्द पैदा करनेवाले यकृत विकारमें यह फायदा किया करता है और इसी वजहसे यदि शरीरका रंग सफेद पड़ जाये और पीला हो जाये अथवा उदरके ऊपर जगह-जगहपर पीली आभा लिये चिन्ह या दाग पैदा हो जायें, यकृत रोगके कारण शोथ हो, मूत्राम्ल (पेशाबमें ऐसिड) पैदा होकर धातुदोष हो जाये, गलेकी ग्रन्थिका प्रदाह, उपझिल्ली प्रदाह रोगमें तथा फेफड़ेके प्रदाहमें, विशेषकर वृद्धोंके, बच्चोंके आध्मान और अन्त्रशूल मिले अजीर्ण रोगमें यह बहुत लाभ किया करता है। यहाँ इसके कुछ प्रधान-प्रधान लक्षण लिखे जाते हैं :—(१) दोनों नासा-पुटोंका पंखेकी तरह सिकुड़ना और फैलना। (२) दो-एक ग्रास खानेपर ही पेट भर जाता है, फिर खा नहीं सकता। (३) जीभके नीचेकी जगहपर जखम। (४) गलेके भीतर, वक्ष, उदर, डिम्बाधार जहाँ कहीं हो, इसका दर्द दाहिने पार्श्वसे आरम्भ होकर बाएं पार्श्वमें फैल जाता है ; दाहिने अङ्गके साथ इसकी विशेष घनिष्टता है। (५) जीभ बाहर निकालनेपर घड़ीके लंगरकी तरह हिला करती है। (६) शरीरके भीतरके किसी विशेष अंशमें सर्दी मालम होना। (७) ललाट सिकुड़ा रहनेकी वजहसे रोगी वृद्धकी तरह मालम होता है। (८) गलेका जखम,—निगलनेके समय सूक्ष्म शलाका बेधनेकी तरह दर्द मालम होता है ; दाहिनी गल-ग्रन्थिका जखम। (९) खाँसी,—गहरी और घड़-घड़ गलेमें कफ़ घड़घड़ाया करता है, बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा या धुमेले रङ्गका, नमकीन स्वादवाला पीवकी तरह बलगम निकला करता है। (१०) सभी खानेके पदार्थ खट्टे मालम होते हैं ; छातीमें जलन ; मुँहमें पानी भर आना और खट्टी कै। (११) रोटीसे अरुचि। (१२) क्षण-क्षणभरपर भूख लग आना या कुत्तेकी तरह भूख, कितना भी क्यों न खाये, भूख जाती ही नहीं ; मानो कुछ भी नहीं खाया है ऐसा ही मालम होनेकी वजहसे सर-दर्द। (१३) रातमें भूख लगनेके कारण नींद खुल जाती है। (१४) पाकस्थली और उदरके भीतर, विशेषकर दाहिनी कोखमें, बहुत ज्यादा भाफ़का जमा होना और पेट गड़गड़ाना—वायु निकलनेपर भी नहीं घटता (सिङ्को)। (१५) पेट बहुत फलनेके साथ-ही-साथ पाखाना पतला होना, रङ्ग पीला। (१६) कब्जियत,—पाखाना होनेपर ऐसा मालम होता है मानो बहुत थोड़ा पाखाना हुआ है, मल कड़ा और टुकड़ा-टुकड़ा निकलता है। आँतोंमें रुका हुआ

आध्मान वायु या पाकाशयका आध्मान (कार्बो-वेज)। पाखाना होनेके समय एकाएक मलद्वारके संकोचनकी वजहसे पाखाना होनेमें बहुत गड़बड़ी पैदा हो जाती है। (१७) पेशाबके पहले कमरमें तेज़ दर्द, पेशाब होनेके बाद घटना ; पेशाबके साथ मूत्राम्ल, रेणु या लाल बालुके कण मिले रहते हैं। (१८) पेशाबके पहले रोगी तकलीफ़से रोने लगता है, उसके बिछावनकी चादर पीली या लाल रङ्गकी हो जाती है ; पेशाबमें पथरीकी वजहसे मसानेका दर्द, दाहिने पार्श्वका। (१९) क्लैब्य या ध्वजभंग—अस्वाभाविक उपायोंसे काम परितृप्त या बहुत विषय-भोगके कारण। (२०) प्रदर—रह-रहकर रक्तकी तरह स्राव और तलपेटके दाहिने पार्श्वसे बाएँ पार्श्वतक फैलनेवाला छेदनेकी तरह दर्द ; जरायुमें वायु संचय और जोर जोरसे निकलता ; रमणके समय और अन्तमें योनिमें जलन ; योनि सूखी। (२१) प्रत्येक बार पाखाना फिरनेके समय जननेन्द्रियसे खनका स्राव। (२२) बच्चोंकी दाहिने पार्श्वकी आँत उतरना। (२३) सभी लक्षणोंका दिनके ४ बजेसे रातके ८ बजेतक बढ़ना ; ठण्डा पानी पीने और खानेपर, वायु निकलनेपर और पहना हुआ कपड़ा ढीला कर देनेपर सभी लक्षण घट जाया करते हैं।

लक्षणावली

मन।—डर, क्रोध, मर्म पीड़ा या हृदयमें छिपे हुए असन्तोषके साथ विरक्ति वगैरहकी वजहसे मानसिक बीमारियाँ (स्टैफ)। क्रोधी स्वभाव, चलनेके समय चिड़चिड़ापन और क्रोध प्रकट करता है ; असभ्य—लात फटकारता है और चिल्लाता है, जरा-सी बातमें चिल्ला उठता है ; थोड़ा कारण होनेपर ही चिढ़ जाता है ; प्रतिवाद या बाधा सहन नहीं कर सकता (अरम, ब्राई, काकुय, हेलोन, नक्स-वोम, ओपि, स्ट्रैमोन) ; मानो झगड़ा खोजता फिरता है, (अरम-मूर-नैट, कोना, निकोल-कार्ब, रैनान, सेनेगा, स्ट्रैन) ; क्रोधसे पागल या ज्ञानहीन हो जाता है (नक्स- पल्स, वेरेट), दिनभर रोता है (फेर, भूयरेक्स, स्ट्रैमोन, थजा), अपनेको किसी तरह शान्त नहीं रख सकता ; दिनके ४ बजेसे रातके ८ बजेतक बढ़ना ; बहुत अभिमानिनी, प्रशंसा करनेपर भी रोती है (कैलि-फास)। बच्चा दिनभर रोता है, पर रातभर सोया रहता है (रातभर रोता है, दिनमें सोता है या शान्त रहता है—जैलापा, सोराइन, कैमो ; रातभर रोता है, किसी तरह शान्त नहीं

होता—लैक-कैन ; सन्ध्याके समय—सिना, सिनेमोन ; समझाने या सान्त्वना देनेपर बढ़ता है—बेल)। अर्थ-गृध्न, लोभी, कृपण (आर्स, सिपि, नेट्र कार्ब), दूसरोंसे द्वेष करनेवाला (ऐनाक, आर्स, नक्स-वोम) और नीच-मना। आदमियोंकी भीड़में जानेसे भय, अधिक आदमियोंका रहना पसन्द नहीं करता, (अरम-मेट, बैराई-म्यूर) ; निर्जनता (अकेले रहना) भी पसन्द नहीं करता, इसके साथ ही क्रोधी प्रकृति और दुःखित भाव (बिस्म, कैलि-कार्ब, लिलि-टाइ) या अकेला रहना पसन्द करता है (आर्नि, ऐक्टि, साइक्ले, इग्ने, मैग-म्यूर, आक्साई-ट्रोप, रास, थूजा)। अपनी पारलौकिक मुक्तिके सम्बन्धमें निराशा (कैम्फो, लिलि-टाई, मेजेर, प्लम्ब, स्ट्रैमोन, ऋतु रोधके साथ—वेरेट)। पर्यायक्रमसे हँसना और रोना (ऐकोन, अरम, काफि, फास, साम्बुल)। अपना मनोभाव सम्बद्ध रूपसे प्रकट नहीं कर सकता ; वाक्य या वाक्यका अंश असम्बद्ध (बेमेल) बोलता है (कोना, डियुब्रोइसिन)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना—पानी आदि पीनेके समय (सिपि,—ज्यादा देरतक धूपमें रहनेके बाद या ज्यादा परिश्रम करनेकी वजहसे शरीर गर्म हो जानेपर, ठण्डा पानी पीनेके समय—कैलि-कार्ब ; चाय पीनेके समय—नेट्र-म्यूर, नक्स, सिपि ; शराब पीनेके समय—नेट्र-कार्ब)। बेहोश कर देनेवाला सर-दर्द, इसके साथ ही कनपटी और दोनों कानोंमें बहुत उत्ताप मालूम होना ; बढ़ना—दिनके ४ बजेसे रातके ८ बजेतक, उठनेके समय (ऐसिड-म्यूर, कैल्के-सल्फ) या सोनेपर (कोलो, ग्लोन, रास)। मस्तिष्कका पक्षाघात हो जानेकी सम्भावना, आच्छन्न-भाव, आँख टकटकी लगी और निचला हनु अलग (नक्स-वोम, ओपि), मस्तिष्क मेरुमज्जावरण-प्रदाह ; कनपटीमें, विशेषकर दाहिनी कनपटीमें भीतरसे बाहरकी ओर सूक्ष्म शलाका बेधनेकी तरह दर्द (कास्टि, लिसिन, वैक्सिन)। दोनों कनपटियाँ मानो स्क्रू द्वारा (इथ्य, मर्क) जोरसे दबायी जा रही हैं—इस ढङ्गका दर्द ; वृद्धि—आर्त्तव-स्रावके समय मूर्द्धदेशमें दबानेकी तरह सर-दर्द ; वृद्धि—दिनके ४ बजेसे रातके ८ बजेतक और माथा झुकानेपर (लिसिन), रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है। ललाटदेश और माथेके दाहिने पार्श्वमें ऐसा दर्द, मानो टुकड़े-टुकड़े हो जायगा ; दर्द गर्दनतक फैल जाता है और चेहरा, आँख और दाँतमें, उखाड़नेकी तरह दर्द मालूम हुआ करता है ; उठनेके समय घटना ; सोनेपर बढ़ना। सरमें दर्द, शय्याके उत्तापसे, चलनेके समय, देह गर्म होनेपर और मानसिक परिश्रमसे

बढ़ना ; घरके बाहरकी ठण्डी हवा लगनेपर और माथा खोलनेपर बढ़ना (ऐसिड-बेञ्जो) ; घटना—सन्ध्याके समय माथेके एक पार्श्वका सर-दर्द—मानसिक परिश्रम करनेपर असह्य हो जाता है (चिनिन-सल्फ)। सरके पिछले भागमें दाने पैदा हो जाते हैं और उनसे निकला हुआ रस सूखकर मोटी पपड़ी जम जाती है ; इस जखमसे सामान्य कारणसे ही खून जाता है और इससे सड़ी गन्ध-भरा रस निकला करता है ; खुजलानेपर और गर्मी लगनेपर बढ़ना। माथेमें जगह-जगहपर रूसी इकट्ठी होती है (कैलि-ब्रोम, मेजेर, न्यफोर)। केश झड़ना—अन्त्राशयकी बीमारी और प्रसवके बाद ; माथेकी त्वचामें बहुत जलन और खुजली, विशेषकर दिनमें व्यायाम करने या शारीरिक परिश्रम करनेके कारण देह गर्म होनेपर। केशोंका असमयमें ही पक जाना (कैल्को, ग्रैफ, ऐसिड-फास, ऐसिड-सल्फ)।

आँख।—अन्धेरेमें टहलनेके समय आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ दिखाई देती हैं (बेराई-कार्ब, फास)। रोशनीका सहन न होना (बेराई-कार्ब, बेल, सिङ्को, नक्स-वोम, ओपि, सल्फ)। रतौंधी या रात्रान्धता ; आँखके सामने काले बिन्दु सब उड़ते दिखाई देते हैं ; सन्ध्याके ४ बजते ही काम-काज सब बन्द कर देना पड़ता है। आँख गर्म, दृष्टि अस्पष्ट और आँखें टकटकी लगी, उनमें रोशनीका ज्ञान नहीं रहता (हायो)। तिमिर दृष्टि—मानो आँखके सामने पलक है। आँखमें श्लेष्मा इकट्ठा होनेपर यह श्लेष्मा कच्चे मांसकी तरह दिखाई देता है और आँखसे बहुत ज्यादा पीब निकला करता है (आर्जेण्ट-नाई, पल्स, फेर-आयोड, रास, इयुफ्रे) ; पलकोंके नीचे पीब-सञ्चय होनेकी वजहसे वह फूली मालूम होती है (सिफिलिन, फेरम-आयोड)। सन्ध्याके समय रोशनीकी ओर देखनेपर आँखमें दर्द और यह दर्द सुई गड़नेकी तरह मालूम होता है। आँख उठना—निचली पलकमें खुजली मालूम होना ; चारों ओर फूलन और लाली मालूम होती है। पलकोंके सूख जानेपर तकलीफ बढ़ जाती है। मांसांकुरमय पलकें सूखी मालूम होती हैं और करकर करती हैं (आर्स, बोर, ग्रैफ, कैलि-बाई, मर्क-कोर, सैङ्गिविन)। पलकोंपर पीब-भरे दाने और गुहौरी निकलती है, विशेषकर आँखके भीतरी अपाङ्गमें उसकी अधिकता रहती है। आँखोंसे बहुत ज्यादा पीब निकलता है और आँख हमेशा करकराया करती हैं। सब चीजोंका बायाँ भाग दिखाई देना (सब चीजोंका केवल बायाँ आधा भाग दिखाई देता है—माइक्रो,

लिथि-कार्ब)। रातमें आँखें सट जाती हैं और दिनमें तथा ठण्डी हवा लगनेपर आँसुओंका स्राव बढ़ जाता है (ऐल्य, सार्सा ; ठण्डी हवामें बढ़ना—डिजि, ड्युफ्रे)।

कान।—श्रवण-शक्ति बहुत तेज़ ; थोड़ी-सी आवाज़से भी दर्द पैदा होता है (ऐकोन, बेल, लैके, मिडोरिन, ऐसिड-म्यूर, नक्स-वोम, ओपि, स्टैन, जिङ्क)। कानमें गरज और सीं-सींकी आवाज़ मालम होना (सिङ्को, साइक्रो, इलैप्स, नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम) ; सुन न पड़ना (सिङ्को, कास्टि, फार्मि, ग्रैफ, हायो, लोरो)। कर्ण-स्राव—स्राव पीबकी तरह, रसकी तरह या जलकी तरह (कार्बो-ऐनिम, ऐसिड-नाई, सोरिन), खसड़ा या आरक्त ज्वरके अन्तमें ; खसड़ाके बाद होनेपर—कोलचि, ऐसिड-नाई, मिनियैन, सल्फ, पल्स ; आरक्त ज्वरके बाद होनेपर—बैराई-म्यूर, बेल, क्रोटेल, हिप, कैलि-बाई, मर्क, ऐसिड-नाई, सोरिन, पल्स), इसके साथ ही सुननेकी शक्तिमें गड़बड़ी। ऐसा मालम होना, मानो गर्म खून कानमें वेगसे घुस रहा है। कानमें झिल्लीमय अर्बुद (कैल्के, थूजा, लैके, फास, मर्क, टियुक्रि ; सौत्रिक या झिल्ली-भरा होनेपर डा० ह्यूज और हाउटनके मतसे कैलि-बाइक्रोमके मूल अरिष्टका बाहरी प्रयोग करना चाहिये। कानके ऊपर और पीछे पीब पैदा करनेवाले रस-भरे छाले निकलते हैं। अकौता—मोटा, उसकी पीठ फटी हुई, पपड़ी जमा (ग्रैफ, सोरिन, सिपि, कैल्के)। रोगिनीको ऐसा मालम होता है, कि दिनमें जो गाना सुना था, उसकी आवाज़ रातमें फिर सुन रही है (पहले जो देखा था, वही फिर देख रही है—लैक-कैन, निकोटिन, टियुबर)। कानमें ऐसा सीं-सीं शब्द होता है, मानो पानी खौल रहा है।

नाक।—घ्राण-शक्तिका न रहना। नाकके छेदका रुका हुआ भाव (आरम-ट्राई, आरम, कैप्स, नक्स, सैम्बु), विशेषकर जड़में (इलैप्स) ; नाकसे स्रावके साथ रातमें (नेट्र-कार्ब) पिछला छेद सूखा मालम होता है ; रोगी मुँह फाड़कर और जीभ बाहर निकालकर साँस लेता और छोड़ता है (कैलि-कार्ब, ऐसि-पिक्र, नक्स-मस, फाइटो, नेट्र-आर्स, ऐसिड-कार्बोल ; नासारंध्र रुके रहनेकी वजहसे बच्चा बहुत तकलीफ़से स्तनका दूध पीता है—कैलि-बाई, नक्स-वोम, सैम्बियु) ; डिफ्थीरिया रोगमें, नाकके पिछले छेदमें नकली झिल्ली पैदा होना आरम्भ होकर पहले दाहिनी और इसके बाद बायीं गलग्रन्थिमें चली जाती है (बायेंसे दाहिने—लैके) ; वृद्धि—सोनेपर और ठण्डा पानी आदि पीनेपर।

बच्चोंका नाक सटना (नक्स-वोम, सेम्बियु), बच्चा नींदसे एकाएक जागकर नाक मला करता है। नाक और ललाट मध्यको नाक सबको सर्दी ; स्राव गाढ़ा और पीला, इसके साथ ही ललाटमें दर्द और पीला चेहरा। नाकसे बहुत अधिक स्राव और सर्दी—नाक फल उठती है,—स्राव कषाय, त्वचाको क्षय करनेवाला (अरम, सिपा, हाइड्रैस्ट, मैग-म्यूर, मर्क, नक्स-वोम, फाइटो, साइलि) और नाकका पिछला भाग सूखा—आरक्त ज्वर रोगमें। नाकके छेदसे सूखी पपड़ी या मरी छाल और जमा हुआ श्लेष्मा सब निकलता है (फेर, हिप, लैके, मेजेर, नेट्र-म्यूर, ऐसिड-नाई, साइलि, स्टिक्टा)। दोनों नासा-पुटोंका पंखेकी तरह सिकुड़ना और फैलना (ब्रोम, चेलिडो, फास, स्पञ्जि) ; डिफ्थीरिया या उपझिल्ली प्रदाह रोगमें (मर्क-प्रोटो-आयोड) और फेफड़ेके प्रदाह रोगमें (ऐण्टि-टार्ट, क्रियो, फास, सल्फ, चेलिडो)।

मुखमण्डल।—कपालमें ताँबेके रङ्गका व्रण (कार्बो-ऐन, हाइड्रोकोट, सोरिन)। मुखमण्डल—म्लान और दोनों गालोंके एक सीमित स्थानपर लाली रहती है (आर्जेण्ट-नाई, स्ट्राम, सल्फ) या भूरे रङ्गकी पीली आभा लिये गहरी लकीर-सी बन जाती है (आर्स, हेलिबो, सार्सा), दोनों आँखें नीले घेरेसे घिरी और दोनों ओठ भी नीले ; रह-रहकर मुखमण्डलमें गर्मी पैदा हो जाती है। मुँहकी पेशियाँ सब संकुचित रहा करती हैं, चेहरा फूला और शोथभरा (एपिस, आर्स, मर्क, कामोल्क, ओपि, प्लैट, नेट्र-म्यूर)। चेहरेपर रस-भरे और पीब पैदा होनेवाले दाने पैदा हो जाते हैं। पीले रङ्गका चिन्ह या दाग (कैल्के, कैलि-कार्ब, सल्फ)। सविराम ज्वराधिकारमें दोनों गालोंपर सीमाबद्ध लाली ; निचला जबड़ा झूल पड़ता है (आर्नि, आर्स, कार्बो-वेज, हेलिबो, कैलि-आयोड, लैके, ओपि, स्ट्रैमो, वेरियोल, जिङ्क), विशेषकर सोनेवाली अवस्थामें (नक्स-वोम, वेरियोल) या सुस्ती और अवसाद पैदा करनेवाले बोखारमें बेहोशी या तन्द्राका भाव (ओपि, सल्फ), दोनों ओठोंके चारों ओर दाने (कैल्के, डल्का, लोरो) ; दोनों ओठोंके संयोग स्थलपर जखम (काण्डियु, हेलिबो, सोरिन, नाइट्रि-स्पि-डाल, काक्यु, अरम, ड्राई, मर्क-सोल)। निचले ओठ (ऐसाफ, कास्टि, कैलि-बाई) और निचले हनुके नीचेवाली गांठ सब फूल जाती हैं (इग्नेशिया, बेराइ-म्यूर, कार्बो-ऐन, सिङ्को, कोना, कैलि-आयोड, कैल्के-आयोड, फाइटो, लैक-कैन, लैके)। निचले ओठके भीतरी भागमें बहुत बड़ा जखम पैदा हो जाता है।

मुख-विवर।—दाँत सब छुए नहीं जाते, छूनेसे ही तकलीफ़ होती है; सामनेके दाँतोंकी जड़ ढीली हो जाती है या ऐसा मालूम होता है कि दाँत लम्बे हो गये हैं। दाँत सब पीले हो जाते हैं। दाँतका दर्द,—रोगकी ओरका गाल फूल जाता है; शय्याकी गरमीसे और बाहरी उत्तापके प्रयोगसे घटना (सोरिन, रोडो, ऐसिड-सल्फ); शय्याकी गर्मीसे बढ़ना (कैमो, क्लिमेट, मैंग-कार्ब, मर्क)। छूते ही मसूढ़ेसे बहुत ज्यादा खून निकलता है। मसूढ़ेका फोड़ा (कार्बो-वेज, कैलि-आयोड, लैक-कैन, मर्क, नैट्र-म्यूर, नक्स-वोम, पेट्रोल, फास. साइलि)। दाँतकी जड़का नासूर (अरम-म्यूर, बैराइ, कैल्के, कास्टि, ऐसिड-फ्लू, साइलि, नेट्र-म्यू, स्टैफ)। गलेका जखम और गल-ग्रन्थि-प्रदाह रोगमें जीभ वेगसे बाहर निकलकर डोलती रहती है। गलेका जखम और डिफ्थीरिया रोगमें जीभ बाहर निकली रहनेकी वजहसे रोगी जड़ बुद्धिकी तरह दिखाई देता है। जीभ,—बहुत भारी और काँपती हुई; जीभ अकड़ी रहनेकी वजहसे मुँहसे बात साफ़ बाहर नहीं निकलती और सवेरे सूखा भाव या लाल और सूखी—धीरे-धीरे यह काली और फटी-फटी हो जाती है (आर्स, लैके, वेरेट), जगह-जगह दर्द और सूजन मालूम होती है। जीभके अगले भागमें रसभरे दाने निकलनेके कारण वह दग्ध और क्षय हुई त्वचाकी तरह मालूम होती है; जीभके ऊपर और नीचे जखम पैदा हो जाता है। जीभ और मुख-विवर सूख जानेके कारण प्यास नहीं लगती (ऐसिड-म्यूर, नक्स-मस): सवेरे मुँह सूखा और उसका स्वाद तीता रहता है। सवेरे नींद खुलनेपर मुँहसे सड़ी गन्ध निकलती है। मुँहमें लार सूखकर लेई जैसी हो जाती है: लारका स्वाद नमकीन रहता है।

गलेके भीतर।—गलेका जखम या उपझिल्ली-प्रदाह रोगमें कण्ठके दाहिने पार्श्वमें दर्द और स्पर्श-द्वेष आरम्भ हो जाता है। जीभकी जड़के बगलवाले दोनों गह्वर हलके लाल रङ्गके दिखाई देते हैं; नयी निकली हुई नकली झिल्ली दाहिनी गलग्रन्थिसे बाईं गलग्रन्थिमें या नाकके पिछले छेदसे दाहिनी गल-ग्रन्थिमें उतर आती है और फिर बाईं गल-ग्रन्थिमें फैल जाती है; बढ़ना—नींदके बाद (लैके) और ठण्डा पानी आदि पीनेपर और गर्म पानी आदि पीनेपर—लैके,—नकली झिल्ली एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वपर आक्रमण करती है (लैके-कैन), बाएँ पार्श्वसे दाहिने पार्श्वमें सञ्चारित होती है (लैके), गल-ग्रन्थिकी सूजन और उसमें पीब पैदा होना (बैराइ, हिप, लैक-कैन, लैके,

मर्क-प्रोटो, मर्क-बिन, साइलि, वेराई-मूर)। खाँसनेपर खून-मिला कफ़ या हरा-पीला श्लेष्मा निकलता है ; अन्ननालीके भीतर मानो एक कड़ी चीज़ रुकी हुई-सी अनुभव होना (ऐनाक, कार्बोन-सल्फ, हूरिजि, जेल्स, विङ्का)। तालुमूल संकुचित मालूम होता है ; पानी आदि कोई भी चीज़ निगल नहीं सकता (कार्बो-वेज, स्ट्रैमोन, सल्फ)। गलग्रन्थिका जखम—दाहिने पार्श्वसे आरम्भ होता है (बेल, पोडो)।

पाकस्थली ।—सभी चीजोंका स्वाद खट्टा मालूम होता है (नक्स-वो, पल्स); खट्टी डकार (ऐसिड-नाई, ऐसिड-सल्फ, फास); छातीमें जलन (कैल्के, कार्बो-वेज, कार्बोन-सल्फ, साइक्लू, कोना, क्रोकस, मैग-कार्ब, नक्स-वोम); मुँहमें पानी भर आना (बेराई, ब्राई, नेट्र-फास, नक्स-वोम, सैबाड, साइलि, स्टैफ) और ज्वरकी शीत और उत्तापकी बीचवाली अवस्था (युपेट) में खट्टा वमन (कैल्के, सिङ्को, मैग-कार्ब, नेट्रम-फास, नक्स-वोम, फास, पल्स, सल्फ)। राक्षसी भूख (ऐब्रोट, आयोड, नक्स-वोम, सैबाड, आर्स, कैल्के, ग्रैफ, सिङ्को); कितना भी क्यों न खाये, रोगी उतना ही और भी खाना चाहता है (सिना, आयोड, फास); रातमें भूखकी वजहसे नींद खुल जाती है (सिना, सोरिन)। सरमें दर्द—मानो कुछ भी नहीं खाया है, इसी वजहसे दर्द होता है (सल्फ)। रोटीसे अरुचि (सिङ्को, साइक्ले, नेट्र-मूर, सिपि)। मीठी चीज़पर बहुत रुचि रहती है (ब्राई, कार्बो-वेज, इपिक, केलि-कार्ब, मैग-मूर, रास, सल्फ)। भूख खूब रहती है, पर दो-चार ग्रास खाते ही पेट भर जाता है, मानो कण्ठतक भरा है (साइक्लू, क्लिमेट, इग्ने, साइक्ले, प्रूनस, नक्स-मस, रैफेनि, सिपि) और ऐसा मालूम होता है, कि पेट फूल उठा है। धुएँकी गन्ध या धूम्रपानकी इच्छा न होना (कैम्फो, इग्ने, नक्स-वोम, लोबेल-इन)। बहुत प्यास, पर पीनेकी चीजोंसे अरुचि ; बार-बार थोड़े परिमाणमें पानी पीता है (आर्स, सिङ्को, दोनों पार्श्वमें—केन्थ)। मूत्रस्थलीके प्रदाह रोगमें—पेशाब दूधकी तरह, गदला, तली बदबूदार और पीवकी तरह। मूत्रस्थली-प्रदेशमें और तलपेटमें धीमा-धीमा दबाव मालूम होना और पथरी पैदा हो जानेका लक्षण (सन्निवात रोगमें—ऐसिड-बेन)। वेग रहनेपर भी बहुत देरतक राह देखनेपर तब कहीं पेशाब होता है (सिपि) या नीचेकी ओर तेज़ खींचन मालूम होनेके साथ पेशाब करनेकी शक्तिका न रहना। पेशाब—बहुत थोड़ा, घोर लाल, अण्डलाल मिला (एपिस, आर्स, कैल्के-आर्स, ग्लोन,

हेलिबो, लैक-डिफ्लो, मर्क-कोर, नेट्र-कार्ब) और बड़े कष्टसे निकलता है; तली—लाल बालूकी या बालू-भरी (कैक्ट, फास, सिपि, सिलि); रातमें बार-बार अधिक परिमाणमें पेशाब हुआ करता है—अजीर्ण रोगमें; पेशाबके समय भयानक जलन और कमरमें दर्द मालूम हुआ करता है; दिनमें (थिरिड)। खून-मिला पेशाब—पथरी निकलनेकी वजहसे या मूत्रस्थलीकी पुरानी सर्दी रोगमें खूनका पेशाब। मूत्रस्थलीके गलेमें और मलद्वारमें, दोनोंमें ही सलाई गड़नेकी तरह दर्द। पेशाब गले हुए सीसेकी तरह ज्वालामय और जलन करनेवाला।

पुं-जननेन्द्रिय।—क्लीवता या ध्वजभङ्ग—युवकोंका—अस्वाभाविक इन्द्रिय परितृप्ति या बहुत अधिक शृङ्गार आदिके कारणसे उत्पन्न; लिङ्गेन्द्रिय छोटी, गर्मी से रहित और शिथिल; वृद्धोंका ध्वजभङ्ग रोग, कामना प्रबल, पर लिङ्गमें पूरा-पूरा कड़ापन न आना; रमणके समय सो जाता है; समय पूरा होनेके पहले ही वीर्यपात हो जाता है (कैल्के, जेल्स, एसिड-नाइ, सेलिन, कार्बो-वेज, बूफो)। बहुत अधिक और सुस्ती लानेवाला स्वप्नदोष (एसिड, नाइ, एसिड-फास, स्टैफिसे)। मुष्क और ऊरुदेशके बीचकी त्वचाका क्षय हो जाना (मर्क, नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-म्यूर)। लिङ्गमें कड़ापन न आनेपर भी मूत्रस्थलीकी मुखशायिका ग्रन्थिसे रस-स्राव हो जाता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—कामोन्माद (हायो, कैलि-ब्रोम, लैके, म्यूरेक्स, ओरिगेन, स्ट्रैमोन, वेरेट, प्लैट), इसके साथ ही योनिमें बहुत अधिक खुजली, तलपेटके दाहिने पार्श्वसे बाएँ पार्श्वतक छेदनेकी तरह दर्द; डिम्बाधार-विकार—पहले दाहिना, इसके बाद बाएँ पार्श्वपर रोगका आक्रमण होता है; डिम्बाधारका अर्बुद; डिम्बाधारमें शोथ या पेट फूलना (एपिस, आर्स, कैल्के, आयोड, लैके, लिलि-टाइ, प्लम)। शरीरके सामनेकी ओर योनिमें दबाव मालूम होना। जरायुका आध्मान (ब्रोम, कैलि-ब्रोम, लैक-कैन), योनिके भीतरसे जोरसे आवाज़के साथ वायु निकलता है; जरायुका शोथ या जरायुमें पानी इकट्ठा होना (एपिस, सिङ्को, हेलिबो, मर्क)। आर्त्तव—बहुत ज्यादा और बहुत दिनोंतक स्थायी (कैल्के, कार्बो-ऐन, फेर, मिलिफो, नेट्र-म्यूर, पल्स, रास, सैबाइ); स्राव कुछ काला, जमा हुआ या थक्का-थक्का और उसका कुछ अंश चमकीला, लाल या रक्ताम्बु या रसकी तरह, प्रसवके दर्दकी तरह दर्द मालूम होता है (ऐक्टि, ऐसेर, कैमो, कोना, जेल्स, इग्ने, लैके, पल्स, सैबाइ,

सिकेलि, सिपि) और उसके बाद मूर्च्छा, विशेषकर खड़े होनेपर (कैमो, काक्यु, लैके, इग्ने, पल्स)। ऋतु-स्राव आरम्भ होनेके पहले रोगिनीका दुःखित भाव कास्टि, साइलि, नेट्र-म्यूर, पल्स, स्ट्रैन) और जाड़ा लगता है ऐसा प्रकट करता है (कैलि-कार्ब, क्रियो, मैग-कार्ब, सिलि, वेरियोल) और उसका पेट फल (क्रियो) उठता है। डरकी वजहसे रजोरोध—एक वर्षतक बन्द रहता है; पहला ऋतु देरसे होता है (पल्स, नेट्र-म्यूर), रह-रहकर सोतेकी तरह स्राव हुआ करता है (कैल्के, ग्रैफ, सिपि, साइलि), बहुत देरतक बैठने बाद और उठनेके समय थक्का-थक्का स्राव जमीनमें गिरता है; स्राव दूधकी तरह (कैल्के, काफि, कोब्रा, फेर, क्रियो, लैके, फास, सैबाइ, सिपि, साइलि, सल्फ) या खूनकी तरह लाल रङ्गका (आर्स, बैराइ, फाइजस, काक्यु, कोना, हैमा, आयोड, क्रियो, मर्क-कोर, ऐसिड-नाइ, सिपि, साइलि, ट्रेलि-पेण्ड्), पूर्णिमाके समय बहुत बढ़ जाता है या त्वचाकी क्षय करनेवाला (ऐल्य, ऐमोन-कार्ब, आर्स, बोवि, कैल्के, कार्बो-ऐन और कार्बो-वेज, कोलोसिन्थ, क्रियो, मर्क, नेट्रम-म्यूर, फास, सिपि, साइलि)। प्रत्येक बार कड़े या तरल आकारमें पाखाना होनेके समय योनिसे बहुत अधिक खून निकलता है। योनि बहुत सूखी, सङ्गमके समय और सङ्गमके बाद योनिमें बहुत जलन मालूम हुआ करती है। जननेन्द्रिय प्रदेशकी शिराका फूल जाना (कैल्के, कार्बो-वेज, हैमा) और इसी वजहसे पेशाबमें तकलीफ़ पैदा हो जाती है (कार्बो-वेज)। ऊपरी शिखरका अर्बुद; योनि-द्वारमें झिल्ली-भरा अर्बुद। नीरस—वृन्तके साथ (खोलदार और बिना दर्दवाली श्लेष्मा-गुटी—थुजा; जलन-भरी—सैबाड); योनिके बाहरी भागका प्रदाह (आर्स, मर्क, रास)। योनिके बाहरी भागकी और दोनों ऊरुके मध्य भागकी त्वचाका क्षय हो जाना। ऋतु-स्रावके समय—प्रलाप, आँसू बहना, सर-दर्द, मुँहका खट्टा स्वाद, कमरमें दर्द, दोनों पैरोंका फलना, मूर्च्छा, खट्टा पदार्थ कै करना, अम्ल-शूल, छेदनेकी तरह दर्द और पीठमें दर्द मालूम होता है। ऐसा अनुभव होता है, कि गर्भका भ्रूण कलाबाजी खाता रहता है या घूम रहा है (पल्स, क्रोक; भयानक चक्कर खाना—आर्स, ओपि, सोरिन, साइलि)। गर्भस्राव-प्रवणता (ऐक्टि, कालोफाइल, सैबाइ, सिकेलि, नक्स-मस, सिपि)। विकृत भ्रूण या भ्रूण-पिण्ड उत्पन्न होता है (कैल्के, साइलि, फेरम, नेट्र-कार्ब, पल्स, सैबाइ); प्रसव-वेदनाके समय प्रसूताको बाध्य होकर लगातार चलना पड़ता है और वह

रोया करती है ; दर्द ऊपर चढ़नेवाला होता है (कैन्थ, कैमो)। स्तनकी घुंड़ीकी त्वचाका क्षय हो जाना (आर्नि, बैप्टि, ऐसिड-फ्लु, ग्रैफ, हैमा, फाइटो, फेलेन, इनैन्थि, कैलेण्डयु), फटी हुई त्वचा, पानी लगनेकी तरह होना या फटा-फटा (कैस्टर-इयुक, ग्रैफ, फाइटो, हाइड्रैस्ट, मिलिफो, रैटान) या पपड़ी जमा ; सामान्य कारणसे ही खून निकल आता है और स्तनके भीतरसे खून और पानी निकला करता है और उसमें जलन और महीन सलाई गड़नेकी तरह दर्द होता है। स्तनमें जलन पैदा करनेवाली कड़ी बतौड़ी निकलती है और उसमें सलाई गड़नेकी तरह दर्द पैदा होता है। ऊपरी पेटमें हुड़हुड़ गड़गड़ होने लगता है और वह तलपेटमें उतरने बाद खूनका स्राव हुआ करता है। जिनका ऋतुस्राव होना रुक गया है—बहुत ज्यादा रजःस्राव—घोर लाल रंगका जमा हुआ खून बड़े वेगसे निकलता रहता है (लैके, पल्स, सिकेलि, सिपि, इलैप्सि, ऐस्टि)। प्रसव और गर्भस्राव होनेका उपक्रम बतानेवाले दर्दके समय दर्द उदरके दाहिनी ओरसे बाईं ओर चला जाता है (एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक—ऐकि ; बाएँसे दाहिने पार्श्वमें—इपिक, लैके)।

श्वासयन्त्र।—स्वरभंग, क्षीण और भग्न स्वर ; वायुनालीमें सूखापन और रूखड़ापन मालूम होता है। काली (घुँड़ी) खाँसीके बादका स्वरभंग;, दिनमें पतला श्लेष्मा मिली खाँसी और रातमें बीच-बीचमें श्वास रुकनेका उपक्रम हो जाता है (स्पञ्जि, लिसिन, सल्फ)। खाँसी—दिनरात सूखी खाँसी—वायुनलीके भीतर उत्तेजनाकी वजहसे उत्पन्न खाँसी, मानो गलेमें गन्धकका धुआँ घुस गया है (ऐमिल-ब्रोम, कार्बो-वेज, पल्स) या मानो गलेमें गाढ़ा गोंदकी तरह कफ़ अड़ा हुआ है (पैरिस)। बलगम गाढ़ा, पीला और पीबकी तरह ; धुमैली आभा लिये पीले रंगका मलिन, बदबूदार, पीबकी तरह या खून मिला श्लेष्मा ; सबेरे हरे रङ्गका, फिर लाल रङ्गका। खाँसीका बढ़ना—दिनके ४ बजेसे रातके ८ बजेतक एक दिनका अन्तर देकर, शारीरिक परिश्रमके बाद (ब्राई, स्क्वियुला, स्टैन); बाँह फैलानेपर (उठानेपर—ओलियेकोड), माथा झुकानेपर (आर्जेण्ट-नाई, कास्टि); सोनेपर (कैप्सि, कोना, ड्रोसेरा, हायो, पल्स), बाईं करवट सोनेके समय (पैरिस, फास, रास, सेनेगा); ठण्डा पानी पीनेपर और भोजनके बाद (कार्बो-वेज, आर्स, बेडो, कूप्रम-मेट, डिजि, स्क्वियुला)। हवा लगनेपर (कैप्स, हिप) या गर्म घरमें (ब्राई, कूप्रम, डालका,

नैट्र-कार्ब, पल्स); घटना—चित्त होकर सोनेपर (ऐको) या सीधे होकर बैठनेपर (ऐण्टि-टार्ट, नैट), खाँसनेपर माथेमें धक्का मालूम होता है, (इपिका), श्वासकी कमी ; वक्षमें जखमकी तरह भाव और धक्का या पाकाशय प्रदेशमें दर्द (इपिका) मालूम हुआ करता है। शरीरके प्रति श्वासाल्पता (आर्स, नैट्र-म्यूर, स्क्विला); बच्चोंकी सोनेवाली अवस्थामें भी श्वासाल्पता मालूम हुआ करती है, विशेषकर फेफड़ेकी बीमारीमें (ऐकोन, कैल्के)। बाधाप्राप्त श्वास-प्रश्वास—घरके बाहर टहलनेके समय बढ़ना ; बहुत कमजोरी मालम होती है। चित सोनेपर श्वासकी तकलीफ़ बढ़ जाती है (ऐसिड-ऐसेट, हाइपिर)। दिनमें साँय-साँय शब्दके साथ श्वास-प्रश्वास और वायुनलीमें श्लेष्माकी अधिकता मालूम होना ; जोरकी घड़-घड़ आवाज़ करनेवाला श्वास प्रश्वास (ऐण्टि-टार्ट, इपि, हिप)। वक्षपर लगातार दबाव मालूम होते रहना और भीतर क्षय हुई त्वचाकी तरह अनुभव होना ; कण्ठास्थिके नीचे फाड़ने या खींचनेकी तरह दर्द। वायुनलीभुज प्रदाह या वक्षमें श्लेष्मामय, वक्षमें घड़-घड़ शब्द और ऐसा मालूम होना, मानो श्लेष्मा भरा हुआ है (ऐण्टि-टार्ट, ब्राई, कैमो, फेरम-फास, हिप, इपिका, मर्क, फास, पल्स, कैलि-बाई)। फेफड़ेका प्रदाह—रह-रहकर मुँहभरमें श्लेष्मा निकला करता है—कफ़ लोहेके जंगकी तरह रङ्गका (ऐण्टि-टार्ट, हिपो-जिन, आयोड, सैम्बो, फास), गाढ़ा गोंदकी तरह (सिस्टस, हाइड्रैस्ट, कैलि-कार्ब) और सहजमें वायुनलीसे अलग हो जाता है (जहाँ पहलेसे ठीक-ठीक चिकित्सा न हुई हो या रोगीने रोगपर ध्यान न दिया हो—जहाँ रोगवाला अंश विशेषकर यकृद्भाव प्राप्त हो गया हो और बलगम पीबकी तरह हो गया हो, वहाँ इसके द्वारा फेफड़ेके आवरणके भीतरसे निकला हुआ रस बहुत जल्दी सोख लिया जाता है और तेजीसे तथा बहुत ज्यादा परिमाणमें कफ़ निकल जानेके कारण रोगी जल्दी अच्छा हो जाता है। विकार-युक्त फुसफुस प्रदाह (ऐण्टि-टार्ट, ऐसिड-बेन, क्लोरैल, लैक कैन, लैचनैन, लोरो, फास, सैङ्ग्वि, सल्फ-टेरिब), दाहिने फेफड़ेके मूलदेशपर रोगका आक्रमण होता है ; विलेपी ज्वर और रातमें लसदार पसीना निकला करता है ; रोगके अन्तमें तलहत्थोंमें जलन पैदा करनेवाला उत्ताप मालम हुआ करता है। साँस लेनेपर और दूसरे-दूसरे समय बाएँ वक्षमें सूक्ष्म शलाका बेधनेकी तरह दर्द मालम होता है (सिपा, एमोनियेक. आर्स. कैल्के, चेलिडो)। दोनों फेफड़ोंकी क्रिया रुकने या पक्षाघात (ऐण्टि-टार्ट, लैके, लोरोसि)। बूढ़ोंके वायुनली भुज-प्रदाह रोगमें

(बैराई-कार्ब)। वक्षोदक (ऐपिस, हेलिबो, स्पाइजि, स्क्वियुला) वक्षके ऊपर पित्तकलङ्क या दाग, पित्तके चिन्ह सब निकल आते हैं।

हृत्पिण्ड।—भोजनके बाद पाचन क्रियाके समय या सन्ध्याके बाद शायितावस्थामें (नेड्र म्यूर, ऐसिड-नाइ, फास, सिपि, सल्फ), कलेजा धड़कना, कभी-कभी चित्तकी चञ्चलता और कम्पन। नाड़ी तेज़ और मुखमण्डल तथा पैर ठण्डे। हृत्स्पन्दन (कलेजा धड़कना) रोगमें दोनों नासापुटोंका सिकुड़ना और फैलना; हृत्पिण्डका बढ़ना; हृत्पिण्डमें तेज़ दर्द मालूम होना और रातमें कभी-कभी ऐसा मालूम होता है कि शरीरके खूनका प्रवाह रुक गया है। बार-बार डर मालूम होता है और इसके बाद पसीना निकला करता है। हृत्शूल रोगमें नाड़ी तेज़ और चञ्चल हो जाती है। श्वासकृच्छ्रता, नीला अङ्ग और जल्दी-जल्दी खाना-पीना; हृद्रोगाधिकारमें—(दूसरे कारणसे होनेपर—काफि, प्लैट; मसानेकी बीमारीके बाद—बार्बा; तेजीसे खानेके बाद वमन—क्रियो, पल्स)।

गर्दन और पीठ।—गर्दनका पार्श्व विशेष अकड़ा हुआ (कैलि-कार्ब) और फूला करता है। गलेकी गांठें सब फूल उठती हैं (कास्टि, मर्क, साइलि)। गलेके पीछे पित्तके दाग सब निकलते हैं। दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचमें ऐसी जलन होती है मानो अङ्गारा रखा हुआ है (ग्लोन, फास; दोनों कन्धोंके बीचमें मानो बरफका एक टुकड़ा रखा हुआ है, इस ढङ्गकी जलन—लैचनैन; दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचमें ठण्डक मालूम होना—ऐमोन-म्यूर)। गर्दनके चारों ओर जगह-जगहपर अनगिनती लाल और खुजलानेवाले दाने निकलते हैं। रातमें कमरमें बहुत दर्द और अकड़न मालूम होती है। कमरमें बहुत दर्द, ऐसा मालूम होना मानो टूट जायगी, इसके साथ ही मलमें कड़ापन और ऐसा अन्त्रशूल मानो पेट फट जायगा। झुके रहने बाद, उठने या चलनेके समय कमरमें ऐसा दर्द मानो सूक्ष्म शलाका वेधी जा रही है; अपने आसनसे उठनेके समय त्रिकास्थि-प्रदेशमें दर्द। यकृतमें अधिक रक्त-सञ्चय होनेकी वजहसे पीठ और दाहिने पार्श्व में दर्द (चेलिडो)। पाखानेके स्थानपर सलाई गड़नेकी तरह दर्द, विशेषकर दाहिने मसानेमें (बाएँ—बार्बा, टैबाक; मलांत्र-तक फैल जाता है; दबानेपर—बढ़ना)।

प्रत्यङ्ग आदि।—बगलकी गांठ फूल उठती है; बगलमें बदबूदार पसीना होता है (हिप, ऐसिड-नाइ, साइलि; लहसुनकी गन्धका पसीना—

ओस्मि, लैके, ऐल्यु; प्याजका—बोवि)। दाहिने कन्धेकी सन्धिमें वातकी वजहसे अकड़न (कैलि-आयोड)। स्थिर रहनेपर कन्धा और केहुनीकी सन्धि, गर्दनसे केहुनी और समूचे बाँहमें अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द; हिलानेपर घटना; सोयी हुई अवस्थामें केवल हाथमें दर्द मालूम होता है। रातमें दोनों बाहुओंकी हड्डीमें दर्द। कोई काम करनेके समय दोनों बाँह भारी मालूम होती हैं, पर काममें विशेष बाधा नहीं पड़ती। दाहिनी कलाईमें ऐसा दर्द मानो मोच आ गई है (ऐल्यु, कास्टि, जेल्स, लीरो)। कुनख या अंगुलहाड़ा (ऐमोन-कार्ब, ऐन्थ्रासिन, ऐसिड-फ्लु, हिप, ऐसिड-नाई, साइलि), इसके साथ ही पाकाशयकी बीमारी। हड्डीके अगले भागमें प्रदाह (काल्मियालिन, हेक्ला, डाइगायड)। बाँह और कन्धेकी पेशिक संकोचन और प्रसारण (बाँहका—ऐण्टि-टार्ट, ओपि, कास्टि, कैलि-कार्ब, चेलिडो; कन्धेका—आर्टिम-बल)। तलहथीकी त्वचा बहुत सूखी। अंगुलीकी सन्धियाँ खूब लाल, फूली और प्रदाह-भरी हो जाती हैं। ऊरु-शिखरमें ऐसा दर्द होता है, मानो मोच आ गई है (आर्नि, इग्ने, रास; बाएँ—बाहर घूमनेपर—हिप; लङ्ङड़ाकर चलता है—ऐसिड-नाई; शरीर हिलानेके समय—इयुफोर्ब; मानो सन्धि-भ्रंश हो गया है—कास्टि, ब्राई, दाहिनी ओर चलनेके समय—मेजेर)। मेरुपुच्छके अन्तिम अंशमें दर्द, दोनों पैर रह-रहकर प्रक्षिप्त होते रहते हैं। दोनों जानु फूल जाते हैं और अकड़ जाते हैं और उनसे पसीना निकलता है—श्लेष्माकी वजहसे (आर्स, कैल्के, फेरम-आयोड, साइलि, सल्फ); वातकी वजहसे होनेपर उसमें स्पर्श सहन नहीं होता; सफेद रङ्गकी सूजन (ऐण्टि-क्रूड, कैल्के, आयोड, कैलि-आयोड, ओलि-येकोर, फास, रास)। चलनेके समय या रातमें पैरकी पीटलीकी पेशीमें खींचन होती है—पैरकी अंगुलीमें ऐंठन (कैल्के, कार्बोन-सल्फ, कास्टि, क्रोटेलस, कूप्रम-आर्स, फेरम, हिप)। उदरी रोगमें दोनों शोथ-भरे पैरोंके जखमवाली जगहसे पानीकी तरह रस निकला करता है; फूला हुआ अंश दबानेपर गड्हा पड़ जाता है। एक पैर ठण्डा और दूसरा पैर गर्म मालूम होता है (सिङ्को, डिजि, इपिका, एक हाथ गर्म और दूसरा हाथ ठण्डा—इपिका, पल्स, चायना)। पैरका पुराना जखम,—रातमें कुटकुटी और झुनझुनी होती है, जलन होती है और उसमें खुजली पैदा हो जाती है। जलनके साथ तलवेमें बहुत बदबूदार पसीना होता है (ऐसिड-सैलि, ग्रैफ, कैलि-कार्ब, साइलि)। रातमें और हरेक एक दिनका अन्तर देकर हाथ-पैरोंमें अकड़न और छेदनेकी

तरह दर्द होता है; विश्रामावस्थामें बढ़ना; पेशी और सन्धियाँ सब अकड़ी, दर्द-भरी और सुन्नकी तरह, अंगुलीकी सन्धियाँ सब प्रदाह-भरी और उनके भीतर वातके दाने पैदा हो जाते हैं; पैरकी पीठ फूली; वात—जलीय वायुमें बढ़ता है और गर्मी लगनेपर घट जाया करता है। दाहिनी वंक्षण सन्धि या पुट्ठेसे पैरतक दर्द बना रहता है—रोगीको चलनेके समय लंगड़ाना पड़ता है। एँड़ीका तला फटा हुआ और इन फटी जगहोंसे रस निकला करता है। सन्ध्याके बाद शायितावस्थामें ऊरुके पीछेवाले स्नायुमें और पैरतक खींचन या आकर्षण मालूम होता है।

सार्वाङ्गिक।—स्थिर होकर बैठे रहनेपर बहुत सुस्ती मालूम होती है, परन्तु रोगी घूमना-फिरना या इधर-उधर करना नहीं चाहता। चलना आरम्भ करनेके समय तकलीफ़ मालूम होती है, कुछ देरतक लगातार इधर-उधर करते रहनेसे अच्छा रहता है; गोदमें लेकर घूमानेपर बच्चा बहुत प्रसन्न रहता है (ऐण्टि-टार्ट, कैमो, सिना, ऐसिड-ऐसेट, ऐसिड-बेन, आर्स, सल्फ, वैक्सिन)। मृगीकी अकड़न,—चिल्लाना, मुँहसे फेन निकलना, बेहोश हो जाना, बाँह पटकना और हृत्प्रदेशमें भयानक गड़बड़ी मालूम होती है; रोगी समझता है, कि उसकी मृत्यु अनिवार्य है (एपिस)। शरीरके रस-क्षयकी वजहसे कमजोरी, दुबलापन और सुस्ती; उदरी रोगाधिकारमें ऊपरी अङ्ग सब दुबले और निम्नाङ्ग मोटे और शोथ-भरे, हड्डीके अगले भागमें प्रदाह, रातमें तकलीफ़का बढ़ना; ऐसा मालूम होता है, मानो हड्डियाँ सब मज्जाशून्य हो गयी हैं। हड्डीकी कोमलता (कैल्के, बैसिल; गुयायेक, सल्फ, ओलि-येकर); हड्डीका जखम (अरम-मूर, नैट, कैल्के, कैल्के-फास, ऐसिड-फ्लु, ऐङ्गस्टि, फास, बैसिल, हेक्ला)।

त्वचा।—दिनमें देह गर्म होनेपर या सन्ध्याके बाद सोनेके पहले शरीर कुटकुटाया करता है और खुजलाहट पैदा हो जाती है, मानो मच्छड़ आदि कीड़े काटनेकी वजहसे हुई है (निकोल)। पीब पैदा होनेवाली विचर्चिका (कैलि-बाई)। शरीरकी त्वचा फटी हुई और मोटी पपड़ी या मरी रूसी मिला नासूरका जखम, बाहरी पार्श्व (ऐण्टि-क्रुड, कैल्के, साइलि) जखम, खुजली-भरा कुटकुटाता है। छूनेपर जलन हुआ करती है। पाराका दूषित जखम (ऐसिड-नाई)। बच्चोंकी सूखी सरकी दाद (वायोला-ट्राई, विङ्काई, सिपि, हिप)। पुराना या बहुत दिनोंतक बार-बार पैदा होनेवाला आमवात

(आर्स, कैल्के, क्लोरैल, हिप, नैट्र-म्यूर, रास, सल्फ)। मध्यद्रोही त्वक्‌क्षय (शरीरके गासोंकी त्वचाका क्षय हो जाना—कास्टि, कैमो, ग्रैफ, हाइड्रैस्ट, कैलि-म्यूर, मर्क, पेट्रोल, सल्फ) की वजहसे छूते ही खून निकलने लगता है।

निद्रा।—दिनमें औंघाई, परन्तु रातमें नींद न आना (ऐसिड-फास, सल्फ); रातमें नींद आने बाद मनमें नाना प्रकारकी चिन्ता पैदा हो जाती है (काफि)। बार-बार जम्हाई। अवसाद (सुस्ती) लानेवाले ज्वर आदिमें मोहाच्छन्न (बेहोशकी तरह) भाव (ऐसिड-फास, बैप्टो) और उपझिल्ली-प्रदाह रोगमें घोर तन्द्रा-भाव (कैलि-पार्मा, मर्क-साया)। बच्चा अधमुँदी आँखेंसे (बेल, पोडो) सोया रहता है और कराहता रहता है और एक ओरसे दूसरी ओर माथा पलटा करता है (पोडो, हेलिबो, फेरम-फास)। आह्निक ज्वर और चेचक आदि गोटियोंवाले रोगमें मोहाच्छन्न भाव (ऐसिड-म्यूर, नाइट-स्पि-डाल, कूप्रम), मस्तिष्कके पक्षाघातका उपक्रम। सोये हुए रोगीको किसी भी अवस्थामें आराम नहीं मिलता (ऐकोन, आर्स, रास), सोता-सोता रो उठता है (कैमो, हायो), चौंक उठता है (आर्स, बेल, कैमो, सिना, इपिका, नैट्र-म्यूर, पल्स), रोगी बुरे-बुरे सपने देखता है और अपने हाथ-पैर पटका करता है। सोनेपर भी आराम नहीं मिलता। बार-बार नींद खुल जाती है; रातके ४ बजनेके समय अच्छी तरह जाग जाता है, फिर नींद नहीं आती (रात तीन या चार बजनेके समय नींद खुल जाती है, कुछ देरतक बहुत तरहकी चिन्ताएँ पैदा होती हैं। फिर सो जाता है और बहुत दिन चढ़े तक सोये रहनेके बाद तबीयत गड़बड़ मालूम होती है—नक्स-वोम)। नींद खुलनेपर बहुत क्रोध या चिड़चिड़ापनका भाव प्रकट करता है और पैर पटका करता है अथवा भीत-चकित भावसे जाग उठता है। मानो कितने ही डरावने सपने देखे हैं; नींदके बाद तबीयत अच्छी न मालूम होना (सल्फ); रातमें नींद खुलनेपर बहुत भूख लगना (नींद खुलनेपर भूख—सिङ्को; अरुचिके साथ—ऐण्टि-क्रूड; राक्षसी भूख—ऐसिड-फास; मध्याह्निक क्षय रोगमें—पेट्रोल)। बच्चा दिनभर सोता है और रातभर रोता है (जैलापा; दिन-रात रोता है; किसी तरह शान्त नहीं होता—लैक-कैन, सोरिन)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—शीतावस्थामें प्यास नहीं रहती; सबेरे नींद खुलनेपर जाड़ा मालूम होता है और उसके बाद बहुत उत्ताप पैदा

हो जाता है। दिनके ८ बजनेके समय बहुत शीत मालूम होता है, आगके पास बैठनेपर भी जाड़ा मालूम होता है—जाड़ा नहीं घटता। दिनके चार बजनेके समय शीत पैदा हो जाना; समूची देह सिहर उठती है, बार-बार जम्हाई, मिचली और ओकाई आती रहती है; जाड़ा पीठसे आरम्भ होकर क्रमशः समूची देहमें फैल जाता है (कैप्स, जेल्स); सन्ध्याके ७ बजनेके समय कपकपी और जाड़ा मालम होना; पहले पीठमें मालूम होता है, हाथ-पैर सुन्न और बरफकी तरह ठण्डे हो जाते हैं (सिड्रन, सिपि); दो-तीन घण्टे-तक शय्यामें सोये रहनेपर भी जाड़ा कुछ भी कम नहीं होता; पीठमें बहुत शीत मालूम होता है, मानो बरफके ढेरपर सोया हुआ है; नींद खुलनेपर सारे शरीरमें पसीना निकला करता है और बहुत प्यास मालूम होती है। शरीरके बाईं ओर अधिक जाड़ा मालूम होता है (कास्टि, कार्बो-वेज, दाहिने पार्श्वमें—ब्राई); शीत और उत्तापावस्थाके बीचके समयमें खट्टा वमन (तीता पित्तमय वमन—इपिक, युपेट); चेहरा और दोनों हाथ शोथ-भरे मालूम होते हैं। पानी पीनेपर (आर्स, कैप्स, इयुपेट) और भोजनके समय कम्पन, उत्तापवाली अवस्थामें प्यासका अधिक रहना; रह-रहकर उत्ताप पैदा हो जाता है और बीच-बीचमें थोड़ा-थोड़ा पानी पीता है (आर्स, सिङ्को); खानेके बाद माथेमें उत्ताप मालूम होता है और बाएँ गालमें लाली पैदा हो जाती है। बहुत उत्तापके कारण दोनों गाल लाल हो जाते हैं और न दबनेवाली औंघाई आया करती है (एपिस); ठण्डा पानी आदि पीनेपर मिचली, गर्म पीनेकी चीजोंसे बहुत आराम मिलता है (कैल्के, सीड्रन)। मलमें कड़ापन और पेशाबका बढ़ना, प्रसवके बाद कमरका दर्द घट जाता है। खट्टा वमन। शरीरपर ओढ़ना सहन नहीं होता (लैके, इसके विपरीत—नक्स)। स्वेदावस्थामें पैरके निचले स्थानके अलावा समूची देहमें बहुत ज्यादा खट्टी गन्ध मिला पसीना होता है, सवेरेका पसीना, ठण्डा, खट्टी गन्ध लिये, बदबूदार, लाल रङ्गका (आर्नि, लैके, नक्स-मस, नक्स-वोम, कैल्के) या प्याजकी गन्धवाला (बोवि, लैके; पेशाबकी तरह गन्ध—एसिड-नाई, कैन्थ), शीतावस्थाके कुछ ही बाद पसीना निकल आना—उत्ताप बिलकुल ही पैदा नहीं होता (कास्टि); स्वेदावस्थाके बाद प्यास। विज्वरावस्था—पेटमें भार मालूम होना; दुर्दमनीय कब्जियत; लाल बालू मिला पेशाब (नैट्र-मूर); रोगी अकेला नहीं रह सकता (अकेला रहना नहीं चाहता—सिंको, नक्स)। शीतावस्थामें रोगीको

ऐसा मालूम होता है, कि उसको देहके शिरा-जालके भीतर खूनका दौरान रुक गया है, सविराम ज्वरमें दिनके ४ बजनेके समय बोखार आता है और ८ बजे बाद फिर नहीं रहता।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—प्रतिविष, ऐकोन, कैम्फो, काष्ठि, कैमो, सिङ्को, काफि, ग्रैफा, पल्स।

अनुकूल।—सम्बन्ध।—बेल, ब्राई, कैल्के, कार्बो-वेज, ग्रैफा, हायो, लैके, लिडम, मर्क, नक्स, फास, सिपि, साइलि, स्ट्रैमो, सल्फ, वेरेट।

अनुपूरक।—आयोडम। कैल्केरिया, लैकेसिस, कार्बो-वेज और सलफरके बाद इसके व्यवहारसे विशेष लाभ हुआ करती है।

सदृश।—आर्स, कैल्के-सल्फ, कार्बो-ऐन, इयुफ्रे, हिप, मर्क, नेट्र-म्यूर, ऐसिड-नाई, नक्स-वोम, रास, सैबाड। लाइकोपोडियमके बाद प्रायः ग्रैफा, लिडम, फास, साइलिसियाकी जरूरत पड़ा करती है।

तुलनीय।—विशुद्ध वायु सेवन और खुले रहनेकी इच्छा—सल्फ, पल्स। ऋतु-कालमें विषाद—नेट्रम, सिपिया। शिराका विकार—पल्स, सिपिया। प्यास—आर्स, ऐण्टि-टार्ट। तीसरे पहर उत्तापका आवेश—सलफर। मुँह और कपालमें पित्त चिन्ह—थूजा। राक्षसी भूख—चायना। नासापुटका फैलना—क्लोरोफा, क्रियोजो। बुद्धिनाशकी आशंका—कैल्के, नक्स, सलफर। अकेले रहनेमें भय—केलि-कार्ब, आर्जेण्ट नाई। अन्धकारमें डर—कैल्के, स्ट्रैमो। स्नायविक—आर्स, आर्जेण्ट-नाई। सर हिलाना—ऐण्टि-टार्ट, आर्स, सल्फ, सिपिया इत्यादि। माथा एक ओर ढुलका या खिंचा हुआ—कैम्फो, लैक-कैन। खूनकी तरह पसीना—कैल्के, लैके, नक्स, आर्निका। स्वरभंग—हेलिबोरस। गम्भीर और गुरुतर विषयोंको भी हँसकर उड़ा देना—इरुकूय, ऐनाका, नेट्रम, प्लैटी। पर्यायक्रमसे हँसना और रोना—अरम, पल्स, स्ट्रैमो, फास, सिपिया, सल्फ। मूर्च्छा वायु—इग्ने, पल्स। बेचैनी—रासटक्स। दुबलापन—नैट्रम। पैर ठण्डे—कैल्केरिया। गलेका जखम—लैकेसिस। आँत उतरना (हर्निया)—नक्स-वोम। बवासीर—इस्कूलस, नक्स, ऐलोज, सलफर। पेशाब करनेके पहले बच्चा चिल्ला उठता है—सार्सा। जिन्हें स्त्रियाँ नहीं हैं उनको काम-तृप्ति न होनेके कारण रोग—कोनायम, ऐसिड-पिक्रिक, कैल्केरिया। सङ्गमके समय अपत्य-पथमें जलन—क्रियोज, सलफर। सूखापन—फेरम, नेट्रम, सिपिया। स्तनमें डंक

मारनेकी तरह दर्द और जलन—एपिस, फास्फोरस; स्तनमें असमयमें दूध पैदा होना—पल्स, फास्फोरस। अम्ल और अजीर्ण—मैग-कार्ब, रोबिन। फेफड़ेके प्रदाहकी कुचिकित्सा—सल्फर। फेफड़ेमें श्लेष्मा सञ्चय होनेके कारण घड़घड़ाहटका शब्द—ऐण्टि-टार्ट। अधमुँदी आँखोंके साथ नींद आना—सल्फर। प्रसव-वेदना—सिमिसिफ्यूगा। धमनीका अर्बुद—बैराइटा-कार्ब, कैलि-आयोड, थूजा इत्यादि। पेट फूलना—कार्बो-वेज। फेफड़ा आदिमें—चेलिडो। नियमके साथ तुलनीय—आध्मान वायु—ग्रैफाइटिस। सविराम ज्वर इत्यादि—लैकेसिस। अजीर्णके साथ गाढ़ा पेशाब—सिपिया। बोलनेके समय खाँसी—साइलिसिया। ध्वजभङ्ग—टैबेकम। भयकी वजहसे बीमारियोंमें—स्टैफि। नाक रुकी—ऐमोन, नक्स, सैम्बुक। मीठी चीज़ खानेकी इच्छा—आर्जेण्ट, सल्फर। भोजनके बाद पेटमें भार—चायना। ज्वरका दुष्परिणाम—सोराइनम।

वृद्धि।—छूने, दबाने या यन्त्र आदिके दबनेसे; सवेरे नींद खुलनेपर; तीसरे पहर; दिनके ४ बजेसे रातके ८ बजेतक; आधी रातके पहले थोड़ा-सा भी खानेपर; वस्त्रसे माथा बाँधने या टोपी पहन लेनेपर; गर्म घरमें; शारीरिक परिश्रम आदिके कारण शरीर गर्म होनेपर; ठण्डा पानी पीने या भोजनके बाद; जलीय वायुमें; अन्धड़-पानीके दिनोंमें या प्रबल वायु लगकर रोगवाली जगह ठण्डी करनेपर; विश्रामसे या स्थिर रहनेपर; यकृतकी बीमारीमें, दाहिनी करवट सोनेपर; बायें पार्श्वमें सोनेपर; पैरका झुनझुनीवाला वात या स्नायुशूल रोगमें दर्दवाली करवट सोनेपर; आसनसे उठनेके समय; दीयेकी रोशनीमें; टकटकी लगाकर एक चीज़की ओर देखते रहनेपर; शाक-सब्जीसे; फूलगोबी, दाल वगैरह खानेपर; रोटी खानेपर; दूध पीनेपर; ऋतु-स्रावके पहले और आर्त्तव-स्राव रुक जानेकी वजहसे उपसर्गका बढ़ना।

घटना।—शय्याके उत्तापसे (दाँतका दर्द); परन्तु सरका दर्द और खुजली बढ़ जाती है; घरके बाहरकी निर्मल हवा लगनेपर; पंखा झलनेपर; गर्म चीजें खाने और पीनेपर; शरीर हिलानेसे; सोने बाद; चित होकर सोनेपर (खाँसी); अपनी जगहसे उठनेके कुछ देर बाद; मस्तक और देह खोलनेपर; कमरका कपड़ा ढीला कर देनेपर।

द्रष्टव्य।—"यह प्याज, रोटी, शराब आदि नशीले पदार्थ, धूम्रपान और तम्बाकूका दोष नष्ट करनेवाला है" (एच० सी० ऐलेन)।

शक्ति।—(डा० क्लार्क कहते हैं, कि लाइकोपोडियमकी मात्रा सोच-समझकर चुनना उचित है; क्योंकि अधिक उच्च क्रमका प्रयोग करनेपर प्रायः उपस्थित लक्षण बढ़ जाते हैं)। ६ठा शततमिकसे १००० शततमिक क्रम।

"किसी पुरानी बीमारीका इलाज करते समय लाइकोपोडियमके लक्षण सब यदि अभ्रान्त भावसे मौजूद न रहे तो पहले एक कच्छु-विष-नाशक दवाका प्रयोग करना चाहिये।"

लाइकोपोडियम रोगकी जड़तक पहुँचता है और इसकी क्रिया बहुत दिनोंतक रहती है। अतएव इसके प्रयोगसे लाभ मालूम होते ही बहुत दिनोंका अन्तर देकर प्रयोग करना चाहिये।

क्रियाका स्थायित्व।—४० दिनसे ५० दिन।

लाइकोपस वर्जिनिकस

(LYCOPUS VIRGINICUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—खिले हुए वृक्षसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः—धमनीका अर्बुद; मूत्रग्रन्थिकी बीमारी; खाँसी; बहुमूत्र; रक्तोत्कास (खून-मिली खाँसी); सर-दर्द; हृत्पिण्डकी बहुत-सी बीमारियाँ; क्षयकास; सर्प या मकड़ेका काटना; सान्निपातिक या सविराम ज्वर।

उपयोगिता और आभास।—डिजिटेलिसकी तरह यह भी हृदयके रोगोंकी एक उत्कृष्ट दवा है। किसी-किसीका कथन है, कि यह डिजिटेलिससे भी अच्छी है, कारण बहुत दिनोंतक और थोड़ी मात्रामें डिजिटेलिसका प्रयोग करनेपर भी एक-न-एक दिन उन सब मात्राओंकी क्रिया प्रकट होकर हृत्पिण्डको बेहोश कर देती है और रोगीको मृत्यु-मुखमें पहुँचा देती है; परन्तु लाइकोपसके प्रयोगसे वैसा नहीं होता। खासकर यदि दर्दके साथ हृत्पिण्डकी क्रिया अधिक होती हो तो यह बहुत ही लाभदायक

है। आँखका गोला बाहर निकल आनेके साथ-ही-साथ हृत्पिण्डकी क्रियामें गड़बड़ी और दर्द, श्वासकी कमी, परिश्रमका सहन न होना इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। स्वाभाविक स्राव-रोधसे पैदा हुआ हृत्पिण्डके क्रियाके विकारकी भी यह एक प्रधान दवा है। इसके लक्षण एक स्थानसे दूसरी जगहपर हट जाया करते हैं; जैसे—मलान्त्रसे हृत्पिण्डपर, हृत्पिण्डसे आँखमें, मस्तकसे हृत्पिण्डमें, हृत्पिण्डसे बाईं कलाईमें और पैरकी पोटलीकी पेशीमें और वहाँसे फिर कलाई और हृत्पिण्डमें दौड़ पड़ते हैं (डा० क्लार्क)। हृत्पिण्डमें धड़कन होनेके कारण या उत्तेजनाशीलता और क्षीण शक्ति, तकलीफ़ और क्षीण नाड़ी और अन्यान्य लक्षणोंकी जड़में यदि नियमित स्रावका रुक जानेका लक्षण भी मौजूद रहे तो उस अवस्थामें सबसे पहले लाइकोपसका प्रयोग करना चाहिये। डाक्टर क्लार्कने निश्चित किया है, कि इसके लक्षण अकेले कभी पैदा नहीं होते, कोई-न-कोई उपसर्ग या आनुसङ्गिक लक्षण उसके साथ मौजूद रहता ही है; जैसे—फेफड़ेकी बीमारीके साथ पतले दस्त आना; खून मिली खाँसीके साथ हृत्पिण्डकी क्रियाका क्षीण होना, हृद्वेष्ट-प्रदाहके साथ वायुनलीभुज-प्रदाह इत्यादि। क्षयकास रोगकी खाँसी और हृत्पिण्डकी तीव्र क्रियाके साथ फेफड़ेसे खूनका स्राव वगैरहमें इसके द्वारा विशेष लाभ होता है।

लक्षणावली

मन।—सन्ध्याके समय मानसिक और शारीरिक वृत्तियोंकी क्रियाका अधिक होना; बुद्धिका कुछ-न-कुछ मोटापन (वैसिलिन, थाइरायडिन), इसके साथ ही ललाटके ऊपरी अंशमें तेज़ दर्द; मनःसंयोग-शक्तिका घटना (बेप्टी, कैनाब-इन, डाल्का, लैक-कैन, नेट्र-कार्ब, ओपि)। मन एक विषयसे दूसरेपर दौड़ा करता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, रोगी दाहिनी करवट ढुलक पड़ता है (ऐकोन, सर-दर्द—पहले ललाटमें, इसके बाद माथेके पिछले भागमें पैदा होता है; दर्द टपककी तरह, दबानेकी तरह और अधिक रक्त-सञ्चयकी वजहसे बीमारियाँ; इसके अन्तमें प्रायः हृत्पिण्डकी गति वाधा-प्राप्त रहती है और सुस्ती पैदा हो जाती है और इसके साथ ही बुद्धिमें भी स्थूलता प्राप्त होती है।

बवासीरका स्राव रुकनेकी वजहसे कानमें शब्द और सरमें नींदमें बाधा डालनेवाली टपक होती है।

आँख।—दृष्टि क्षीण मालूम होती है, मानो बहुत ही सुस्त और क्लान्त हो पड़ा है ; दोनों आँखें भरी और भार मालूम होता है, ललाटके पीछे दबावकी तरह मानो दोनों आँखके गोलोंको भीतरसे बाहरकी ओर ठेलता है, ऐसा मालूम होना (फास, मिडोर, सैङ्गिवि)। बाईं ओर आँखके ऊपर धीमा-धीमा दर्द। दाहिनी आँखके ऊपरी प्रदेशमें और बाएँ अण्डकोषमें एक साथ ही स्नायुशूल (दाहिनी आँखके ऊपर—ऐसिड-कार्बोल, चेलिडो, मेजेर, साइलि)। बाहर निकले हुए आँखके जालेके साथ हृत्पिण्डकी क्रियाका अधिक होना (थाइरायड)।

पाकस्थली।—तालुमूल पार्श्वके दोनों गह्वरके पीछे मिचली पैदा होना ; चाय और दवाकी गन्ध मिली डकार आनेपर घटना। इसके बाद बैठनेके समय लगातार शरीरमें चक्कर आना और चलनेके समय डगमगाना।

मलान्त्र और मल।—आँतोंमें तेज़ दर्द होकर पतला पाखाना होना, मल चिकना, घोर भूरा (डालका) और बदबूदार ; बवासीरमें पहले पतला (इस्कु) मल निकलनेके साथ ही कूथन, मिचली, आँतकी क्रिया अधिक होना, पतला पाखाना होनेकी वजहसे उपसर्ग ; हमेशा ही मलका वेग बना रहता है, पाखाने जाना ही पड़ता है, केवल मलद्वार-वेष्ट पेशीपर निर्भर रहनेसे आप-ही-आप पाखाना निकल नहीं सकता। कामला रोगाधिकारमें मलका पतलापन—हृत्पिण्डकी क्रिया क्षीण होनेके कारण। मलका कड़ापन छः-सात दिन बाद सूखे कीचड़की तरह पाखाना होता है। रुका हुआ अर्शका स्राव।

पेशाब।—बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी पीता है और रोज़ चार-पाँच सेर पेशाब हुआ करता है। भयङ्कर प्यास—बहुत ठण्डा पानी पिये बिना तृप्ति नहीं होती ; बहुमूत्र रोगमें रोगी बहुत ही क्रोध प्रकट करता है ; अपने बाल-बच्चोंसे भी बातें नहीं करना चाहता (बाल-बच्चोंसे भी प्रेमका न रहना—ऐसिड-फ्लु, ऐसिड-फास, फास)। मधुमेह या चीनी मिला बहुमूत्र ; भयानक प्यास और दुबलापन। मूत्रनली खाली रहनेपर भी ऐसा मालूम होता है, मानो भरी और फूली हुई है। पेशाबकी तलीमें श्लेष्मा, उपझिल्लीके कोषाणु और पुं-बीजाणु मौजूद रहते हैं।

पुं-जननेन्द्रिय।—दोनों आँखोंके ऊपरी प्रदेशमें और अण्डकोषमें दर्द। बैठनेके समय या दिनके १ बजनेके समय अण्डकोषमें तेज़ दर्द या बीच-बीचमें शूलकी तरह दर्द, दर्द दाहिने अण्डकोषसे बाएँ अण्डकोषमें चला जता है; उठनेपर बढ़ना। दाहिने अण्डकोषसे बाएँ अण्डकोषमें चला जाता है, फिर दाहिने अण्डकोषमें और इसके बाद दोनों कोषोंमें तेज़ दर्द, दर्द, इसी तरह बार-बार पैदा होकर समूची सन्ध्याके समय मौजद रहता है, पुट्ठेमें लगातार दर्द बना रहता है। बाएँ अण्डकोषके बीचमें तेज़ शूलके आघातकी तरह दर्द।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तवका स्राव आध घण्टासे लेकर छः घण्टेतक स्थायी रहा करता है; जरायुसे खूनका स्राव। योनि-पथ बहुत गर्म और जरायु-ग्रीवा खूनसे भरी और फूली। विटप-देश और योनिका बाहरी भाग फूला और योनि-द्वार फैल जाया करता है।

श्वास-यन्त्र।—सन्ध्याके ७ बजनेके समय स्वरनालीका सङ्कोचन (ब्रोम, इग्ने, मैंगे, लोबेल); अण्डलाल मिले पेशाबकी बीमारीमें। सन्ध्या ७ बजनेके समय श्वास प्रश्वासमें बाधा पड़ती है (इलेप्स, स्टैन) और लम्बी साँसकी तरह (डिजि, ग्लानो, लिसिन); दमा और वायुनली-भुजमें श्लेष्मा रहनेकी तरह साँसमें तकलीफ़ मालूम होना; वृद्धि—शारीरिक परिश्रमसे, विशेषकर सीढ़ी चढ़नेके समय (आर्स, नैट्र-म्यूर, ऐसिड-नाइ, रास, आइबिर, स्टैन, ऐमोन-कार्ब); खाँसी, खून मिला कफ़ निकलता है (सिङ्को, डिजि, इपिक, फेरम, मिलि-फोल) और हृत्पिण्डकी क्षीण क्रिया, संध्याके बाद और रातमें प्रचण्ड खाँसी आया करती है, पर नींद नहीं खुलती और हवा ठण्डी होनेपर या ठण्डी हवा लगनेपर फिरसे खाँसी आने लगता है। कफ़ मैला, उसका स्वाद कुछ मीठा और कड़वा; कभी-कभी बड़े कष्टसे निकलता है। वक्षगह्वरके निचले अन्तिम भागमें कसावटका भाव और श्वास-प्रश्वासमें गड़बड़ी और उसमें धीमा दर्द मालूम होता है। दाहिने पार्श्वमें सोनेके समय बढ़ना। पतले दस्त आनेके साथ फेफड़ेकी बीमारी। क्षय-कास हो जानेकी सूचना—बाएँ फेफड़ेके शिखर-देशमें (लिलि-टाइग्र) रोगका आक्रमण होता है, बीच-बीचमें खून मिला कफ़ निकलता है, नाड़ी तेज़ और क्षीण और धीमा बुखार भी हुआ करता है।

हृत्पिण्ड ।—हृत्पिण्ड प्रदेशमें बहुत ही कसावटका भाव और स्पर्शका सहन न होना ; नाड़ी तेज़ और उसका वेग समान न रहना । हृदयका अगला भाग और उसके शिखर देशमें वातकी वजहसे दर्द (कल्मिया) और दाँतमें, बाईं कलाईमें या मणिबन्धमें, दाहिने पैरकी पोटलीकी पेशीमें, बाएँ पार्श्वमें और कण्ठास्थिके नीचेवाले स्थानपर और फिर बाईं कलाईमें और हृत्पिण्डके शिखरदेशमें ऐसा दर्द मालूम हुआ करता है । हृत्पिण्डकी गति बाधा-प्राप्त और उसके भीतर दबाव मालूम होता है । कलेजा धड़कना और दर्द, बढ़ना—सवेरे और सन्ध्याके समय और इसी विषयकी सोचनेपर (रोगके विषयमें सोचनेपर रोगका बढ़ना या फिरसे पैदा हो जाना—बेराइ, कैल्के-फास, ऐसिड-आक्साल, कास्टि, जेल्स, हेलोन, मिडोर, पेट्रोल, आक्साइ.-ड्रोप, पाइपर-मिथ) । हृत्पिण्डकी क्रियामें गड़बड़ी और उसकी वेग भरी गति । इसके साथ ही आँखका गोला बाहर निकला हुआ (ऐमिल, डिजि, आयोड, कैलि-कार्ब, कैल्मि, स्पाइ, वेरेट-विर) । सीढ़ी चढ़ने या तेजीसे चलनेके कारण हृत्पिण्डकी गति तेज़ हो जाना । हृत्शूल रोगमें हृत्पिण्डकी तेज़ गतिकी वजहसे नींद न आना (अरम-म्यूर, कैम्फो, क्लोरोफार्म, जेल्स, हेलिबो, कैलि-ब्रोम, वेस्पा) । सोनेपर हृत्पिण्डका अवसाद और धीमी, रुकी या बाधा प्राप्त गति । अन्त्राशयमें बहुत ज्यादा भाफ़ पैदा होनेके कारण कलेजिकी धड़कन बढ़ जाती है । दो-चार क़दम चलते ही खड़े होकर साँस लेना पड़ता है (आर्स, कार्बो-वेज, प्रूनस, सिपि) ; बायाँ बाँह, माथा, पैर और चरण शोथ-युक्त दिखाई देते हैं । (केवल बायाँ बाँह—कैक्ट, हृद्रोगमें शोथ— कैक्ट, कोलिन, डिजि, कैलि-म्यूर, लैक-डिफ्लो, लैके, नैट्र-म्यूर, प्रूनस ; वृद्धोंकी उदरी—कैलि-कार्ब) और बीच बीचमें वक्षोस्थिसे बाएँ पृष्ठ-फलकतक तेज़ बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है । सरमें दर्दके बाद हृत्पिण्डकी क्रियाका क्षीण हो जाना और बाधा प्राप्त गति । आर्त्तव-स्रावके समय बुद्धिकी जड़ता या स्थूलता प्रकट हो जाती है, विटप-देश फूला और अपत्य-पथ गर्म रहता है और उसपर बरफका प्रयोग करनेपर आराम मालूम होता है, मल-काठिन्य (कब्जियत), मल सूखा और कीचकी तरह, आँखके गोलेका बाहर निकला जैसा भावके साथ हृत्पिण्डकी आँधीकी तरह गति और इसके साथ ही विटप, जननेन्द्रिय और गुह्यद्वारके बीचवाले स्थानमें सूजनका बढ़ना ; हृत्पिण्डके शान्त-भाव धारण करनेपर विटपकी सूजन भी घट जाया करती है ; पेशाब बहुत थोड़ा, गाढ़ा और कीच मिले पानीकी

तरह (रात्र), आर्त्तव-स्रावके बाद सभी लक्षण घट जाया करते हैं (सिरियम—आक्साल और लैके)। बीचवाली पसलीके दाहिने पार्श्वमें हृत्पिण्डकी गति स्पष्ट मालूम हुआ करती है; वक्षके ऊपरी अंश और कण्ठास्थि-प्रदेशमें, विशेषकर दोनों पृष्ठफलकोंके बीचमें हृत्पिण्डकी प्रथम ध्वनिका अर्थात् त्रिधार अवरोधनी या कपालके एक साथ सङ्कोचनकी वजहसे पैदा हुई ध्वनिके बदले, त्रिधार-मुखमें घुसते हुए खूनका फिरसे निकलना या फिर बाहर निकल आनेकी वजहसे आवाज़ या फेफड़ेकी आवाज़ सुन पड़ा करती है; दूसरी आवाज़ (अर्थात् दाहिने हृदकोषसे जो बृहत् धमनी फेफड़ेमें घुसी है, उसके संगोग-स्थानपर रहनेवाली अर्द्धचन्द्रकी आकृतिवाली अवरोधनीके संकोचनकी वजहसे आवाज़) तेज़ और क्षणभर रहनेवाली-सी मालूम होती है (आइबेरिस, कैलि-कार्ब)।

प्रत्यङ्ग आदि।—पेशियोंके वातकी वजहसे दर्द; सन्धि या पेशीका अगला भाग या कण्डार आदिपर रोगका आक्रमण होता है; शरीर हिलाने और ठण्डी हवामें बढ़ना। गर्म घरमें घटना। हृत्पिण्ड-प्रदेशमें दर्द—सूर्यास्तके समय बढ़ना।

वृद्धि।—शरीर हिलानेपर; शारीरिक परिश्रमसे; चलने या सीढ़ीपर चढ़नेपर, सोनेपर, दाहिनी करवट सोनेपर, सूर्यास्त और सन्ध्याके समय, सवेरे और ठण्डी हवामें।

घटना।—गर्म घरमें।

सम्बन्ध।—सदृश।—कैक्ट, क्रैटिगस, डिजिटेलि, ऐसिड-हाइड्रो, आइबिर, लौरो, प्रूनस-स्पाई, सैङ्गिविन, स्पाइजि। डिजिटेलिसकी नाड़ी सबल अथवा धीर-गति या क्षीण और सामान्य परिश्रमसे तेज़ हुआ करती है और उदरके ऊपरी प्रदेशमें अवसन्नता और मिचली मालूम होती है। स्पाइजिलिया—नाड़ी मध्यलोपी और सविराम। कैल्मिया—नाड़ीकी धीर-गति; वातकी वजहसे दर्द। हैमामेलिस—अण्डकोषमें दर्द (हेरिङ्ग)।

दोषघ्न।—सिमिसिफ्यूगा।

शक्ति।—१म दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

लाइसिडिनम

(LYSIDINUM)

दूसरा नाम।—इथिलिन—इथिनिल—डायामिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल दोनों आकारमें तैयार की जाती है।

उपयोगिता और आभास।—वात-रोग और पेशाबमें लिथिक-ऐसिड, आक्सैलिक ऐसिड और युरिक-ऐसिड इत्यादि ज्यादा हो जानेपर लाइसिडिनमकी निम्न-शक्ति बढ़िया काम करती है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय।**—नाइट्रो-मूर-ऐसिड, आकजे-ऐसिड, सार्सा, इयुरोट्रोप।

शक्ति।—θ, १x—१२वीं शततमिक।

मैग्नेशिया कार्बोनिका

(MAGNESIA CARBONICA)

दूसरा नाम।—कार्बोनेट आफ मैग्नेशियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले विचूर्ण इसके बाद टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोग में लाभदायक हैः—हनुके निचले स्थानमें दर्द; क्रमि; सर्दी; कब्जियत; खाँसी; बहरापन; कमजोरी; अतिसार; अजीर्ण; आँखकी बहुत-सी बीमारियाँ; आँतका बढ़ना; आर्त्तव-स्राव या विलम्बसे ऋतुस्राव होना; जरायुसे खूनका स्राव; स्नायुशूल; गर्भावस्थामें दाँतमें दर्द; वमनेच्छा; प्लीहामें दर्द; दाँतमें दर्द।

उपयोगिता और आभास।—क्षीण मनुष्योंकी पाकस्थली और आँतोंकी बीमारीमें और बच्चोंके उदरामयमें तथा रमणियोंके कष्टरजः रोगमें यह बहुत लाभ किया करता है। पर्यायक्रमसे रोग पैदा होना भी इसकी

प्रधान प्रकृति है—इससे पैदा हुए लक्षण आदि प्रति तीसरे सप्ताहमें या तो फिरसे पैदा हो जाते हैं या बढ़ जाते हैं। डा० ऐलेन कहते हैं—थोड़ेमें ही कातर और क्रोधी स्वभाव, ढीले तन्तु और जिनके शरीरसे खट्टी गन्ध आती हो, ऐसे व्यक्ति, विशेषकर बच्चोंके लिये यह विशेष उपयोगी है। संक्षेपमें इसके कई विशेष लक्षण ये हैं:—सम्पूर्ण शरीरमें विशेषकर दोनों पैरोंमें थकावटका भाव और दर्द मालूम होता है; लगातार दर्दका आक्रमण और चञ्चल। पाकाशय और अन्त्रमण्डलीमें कभी-कभी तेज़ दर्द पैदा हो जाता है; श्लैष्मिक-झिल्लीसे लगातार श्लेष्माका स्राव हुआ करता है। मूर्द्धादेशमें दर्द, मानो कोई उसके केश खींच रहा है (कैलि-नाई, इग्ने जा, फास)। नींद तृप्ति देनेवाली नहीं होती। सोनेकी अपेक्षा नींद खुलनेपर रोगीको बहुत अधिक गड़बड़ी और थकावट मालूम होती है (ब्राई, कोना, हिप, नक्स, ओपि, सल्फ)। यक्ष्मा धातुवाले पिता-माताकी सन्तानोंका बहुत अधिक मांस खानेका आग्रह, बलगममें मटरकी तरह जमा आकृतिवाला श्लेष्माका टुकड़ा निकलता है, बहुत बदबूदार बलगम। छातीमें जलन, खट्टी अधोवायुकी गन्ध और खट्टी डकार, खट्टा स्वाद और वमन; अधिकांश डकार आध्मान वायुसे भरी रहती है। गर्भवती औरतोंकी छातीमें जलन। बच्चोंका उदरामय; पाखाना होनेके पहले काटनेकी तरह दर्द-भरा अन्त्रशूल; बच्चा तकलीफ़से दोहरा-सा जाता है; पर्यायक्रमसे प्रत्येक तीन सप्ताहका अन्तर देकर यह अन्त्रशूल पैदा हो जाता है; मल हरे रङ्गका और कोमल, सड़ी तलैयामें तैरती हुई काईकी तरह; और उसके ऊपर सफेद रङ्गके मेदके कणकी तरह पदार्थ सब तैरा करते हैं। स्तन पीनेवाले बच्चोंका पिया हुआ दूध अजीर्ण अवस्थामें निकल जाता है। आर्त्तव-स्रावके समय तलदेशमें छेदनेकी तरह यन्त्रणा; केवल लेटनेवाली अवस्थामें स्राव हुआ करता है; चलनेके समय बन्द हो जाता है। इसका दर्द स्नायुशूलकी तरह या बिजलीकी गतिकी तरह एकाएक पैदा हो जाता है और गायब हो जाता है; बाएँ पार्श्वमें दर्द अधिक होता है; स्थिर रहनेपर यन्त्रणा असह्य हो उठती है; रोगीको बाध्य होकर उठकर टहलना पड़ता है। अन्त्रशूल—गर्भावस्थामें, रातमें वृद्धि। मुँहके बाएँ पार्श्वका स्नायुशूल, बिजलीकी गतिकी तरह; छूनेपर, जलीय वायु लगनेपर और शीत-उत्तापके परिवर्त्तनसे बढ़ जाता है। दाहिनी गण्डास्थिकी सूजनके साथ दाँतके पोछेवाले ऊपरी हनुके अस्थिमय छिद्रमें टपककी तरह दर्द। डा० कूपर कहते हैं:—जो स्त्रियाँ गृहस्थीकी नाना प्रकारकी चिन्ताओं

और शोक-सन्तापसे क्षीण और सुन्न हो पड़ती हैं, उनके लिये मैग्नेशिया-कार्ब एक बन्धुकी तरह काम करता है। डा० क्लार्क।

लक्षणावली

मन।—चित्तकी गड़बड़ी, इसके साथ ही हाथ काँपना और अनमना भाव, दुःखित और बातचीत करनेकी इच्छा न रहना (लगातार बोलते रहनेकी इच्छा—स्ट्रैमोन ; बातचीत करनेसे अनिच्छा—आर्जेण्ट-मेट, कार्बो-ऐन, कैमो, डिजि, जेल्स, ग्लोन, इपिका, लैके, मैग-म्यूर, नेट्र-कार्ब, फास, प्लम्ब, सल्फ ; पित्ताधिकारमें—लैके ; अजीर्ण रोगमें—चेलिडो ; ज्वराधिकारमें—जेल्स ; सरमें दर्द रोगमें—ऐनाक, काफि ; बच्चोंके क्षय रोगमें—हाइड्रैस्ट ; विषादोन्माद रोगमें—आर्जेण्ट-नाई, पल्स ; मर्म-पीड़ा प्राप्त होनेपर—इग्ने) ; दिनभर कम्पन और उद्वेग तथा भय बना रहता है, मानो कोई दुर्घटना घटेगी (ऐमोन-कार्ब, ऐमिल, ऐक्टिया, चिनिन-सल्फ, ऐसिड-हाइड्रो, कूप्रम, आयोड, लोरोसिरेसस, स्कुटेलारी, सिपि, वेलि, वेरेट-विर) ; सोने बाद यह भाव दूर हो जाता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना ; पैर लटकाकर बैठनेपर (सिपि) या खड़े (काक्यु) होनेपर ; ऐसा मालूम होना, मानो सारी चीजें घूम रही हैं, विशेषकर सन्ध्याके समय (ग्रैफ, कैलि-कार्ब, लैके)। बाएँ बाँहका सुन्न हो जाना और लगातार सरमें चक्कर आना, खड़ा नहीं हो सकता (लैके)। सरमें चक्कर आना—इस वजहसे घरसे बाहर सड़कपर निकलनेसे डरता है और लगातार डगमगाया करता है, कि किसीसे टक्कर न लग जाये (कैम्फो, कलि-कार्ब और फास)। दिनभर सरमें बहुत दर्द, सवेरे शय्यासे उठनेपर चक्कर आया करता है और चारों ओर अन्धेरा मालम होता है (साइक्लामेन, सिपि, जिङ्क)। मूर्द्धादेशमें दर्द, मानो कोई रोगीके केश खींच रहा है (इथ्य, केलि-नाई, फास)। मानसिक परिश्रम और भीड़-भाड़में रहनेपर दबावकी तरह सर-दर्द पैदा हो जाता है। किसी तरहका असन्तोषका कारण होनेपर सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है। सवेरे सोकर उठनेपर अस्त्राघातकी तरह सर-दर्द। ललाटदेशमें टपक ; चेहरेपर पर्यायक्रमसे लाली और म्लानता पैदा हो जाती है और माथा तथा दोनों हाथोंमें उत्ताप मालूम होता है। मूर्द्धादेशमें चोटकी तरह दर्द मालूम होता है। रातमें सोनेवाली अवस्थामें सर-दर्द,

उठ बैठनेपर घटना। माथेकी त्वचामें रूसी—जलीय वायु लगनेपर और बर्सातके समय खुजली पैदा हो जाती है। केश झड़ना।

आँख।—आँखके सामने काले-काले बिन्दु उड़ते दिखाई देते हैं (सिङ्को, नेट्र-मूर, फाइजस, सिपि)। मसूरके आकारका मोतियाबिन्द आँखके सफेद अंशमें मैलापन और अस्वच्छता। चक्षुगोलककी सूजन (गुयायेक, इग्ने, रास)। आँख सूखी या बहुत ज्यादा आँसू बहनेवाली (घरमें सूखी और बाहरी हवा लगनेपर आँसू बहने लगता है—सल्फ)। चक्षु-प्रदाह—आँख लाल, जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द और दृष्टिकी अस्पष्टता या तिमिर दृष्टि। सवेरे आँख सट जाती है (कैल्के, कैमो, क्लिमेट, ग्रैफ, कैलि-कार्ब, मैङ्ग) और उसमें दबावकी तरह दर्द।

कान।—ठीक-ठीक सुन न पड़नेके साथ ही दाहिने कानमें भों-भों, झिन-झिन (जिङ्क), सों-सों इत्यादि नाना प्रकारकी आवाजें आना। श्रवण-शक्तिमें गड़बड़ी। कर्ण-प्रदाह—बहुत दर्द होता है और बाहरी भाग लाल हो उठता है। कानमें फड़फड़ शब्द (जैकारैण्डा, बार्बा, ऐण्टि-टार्ट)। कानमें ढं-ढं आवाज़ और कभी-कभी बायें कानमें तेज़ पानी बहने जैसी तेज़ आवाज़का आना (काक्यु, लिसिन, पल्स), स्नायविक बहरापन (पेट्रोल, प्लैट, साइलि, सिफिल, ऐसिड-फास), श्रवण-शक्तिकी सुस्ती (कड़ी बीमारी आदिके बाद)। बहरापन—सर्दी होनेपर बढ़ जाता है (लिड, पल्स)। गाड़ीमें घूमनेके समय या बहुत आदमियोंसे बात करनेपर एकदम अच्छी तरह नहीं सुन सकता। सवारी आदिपर घूमनेके समय बहरा आदमी अच्छी तरह सुन सकता है (ऐसिड-नाई, ग्रैफ)।

नाक।—सवेरे नाकसे खूनका स्राव (ऐमोन-कार्ब, ऐसिड-नाई, ब्राई, नक्स)। सूखी सर्दी रोगमें नाकका छेद रुक जाना ; मुँह फाड़कर साँस छोड़ता है (ऐकोन, कार्ब्हि, सिङ्को, नक्स, फास, सैम्बु, स्टिक्टा)।

मुखमण्डल।—बदरङ्ग, मलिन और पीले रङ्गका। पर्यायक्रमसे चेहरा लाल और बदरङ्ग रहता है (बेल, काक्यु, इग्ने, पल्स), मुखमण्डल चटपटाया करता है, मानो उसपर गोंद गिरकर सूख गया है (ऐल्यु, बेराई ; मानो मकड़ीका जाल लगा हुआ है—बोर, ब्रोम, कैलेड, ग्रैफ, रैनान, सिलिरैट, बेराई)। चेहरेके बाईं ओरका स्नायुशूल (कोलो, कैलि-ब्राई, प्लैण्टेगो,

वैलि, स्पाइजि, मैग-फास) बिजलीकी सलाई गड़नेकी तरह (चिलक मारनेकी तरह) तेज़ दर्द ; छूनेपर, ठण्डी हवाका झोंका लगनेपर और जाड़ा-गर्मीके परिवर्त्तनसे ; रोगी किसी तरह भी शय्यापर स्थिर नहीं रह सकता, उठकर घरमें टहलना पड़ता है। रातमें गण्डास्थिमें बहुत अधिक दर्दकी वजहसे नींदमें व्याघात होता है। गण्डास्थि फूल जाती है। रातके समय गण्डास्थिमें दर्द, छेदने, बेधने, सलाई गड़नेकी तरह। स्थिर बैठे रहनेपर तकलीफ़ असह्य हो जाती है, इसीलिये रोगी बराबर इधर-उधर किया करता है। दाहिनी गण्डास्थिकी सूजन और दाँतके पीछेवाले ऊपरी हनुके बड़े छेदके भीतर टपक।

मुख-विवर ।—दाँतका दर्द,—जहाज़पर चढ़कर घूमनेके समय और सर्दी लगनेपर बढ़ना ; रातमें रोगी स्थिर होकर सो नहीं सकता ; गर्भावस्थामें दाँतमें दर्द (कैमो, हायो, लिसिन, पल्स, स्टैफ, सिपि, टैबाक) ; जलन, छेदने, खींचने या चिलक मारनेकी तरह दर्द, मानो इस स्थानपर जखम उत्पन्न हो गया है ; दर्द कनपटीतक चला जाता है और रोगवाले पार्श्वका गाल फूल उठता है ; गर्दन और गर्दनकी पीठपर अकड़न मालूम होती है और हाथकी अंगुली तथा पैर ऐसे मालूम होते हैं, मानो मरोड़ खा रहे हैं। भोजनके बाद दाँतोंमें टपककी तरह और सलाई गड़नेकी तरह दर्द। बुद्धि-दन्त निकलनेकी वजहसे बीमारियाँ (चिइरैन्थस, बुद्धि-दन्त निकलनेकी वजहसे बहरापन, कानसे स्राव, नाक रुकना—कैल्के, साइलि ; बहुत बड़ी उमरमें बुद्धि-दन्त निकलना—ऐसिड-फ्ल)। दाँत सब बड़े मालूम होते हैं (कैमो, कास्टि, मेजेर)। मसूढ़ा, गालका भीतरी भाग, जीभ और तालुदेशमें जलन करनेवाली फुन्सियाँ निकलना ; इन सब दानोंसे सामान्य कारणसे ही खून निकलने लगता है। रातमें और सवेरे मुख-विवर सूखा और उसमें लार नहीं रहती। खून-मिली लार (बूफो, कार्बो-वेज, क्रोटेल, ड्रोसेरा, हायो, मर्क-कोर, नेट्रम-मूर, ऐसिड-नाइ)। मुख-विवरके ऊपरी अंश, गाल, आँख और नाकमें प्रचण्ड दर्द ; गर्म प्रयोगसे घटना। मुँहमें तीता या खट्टा स्वाद।

गलेके भीतर ।—गलेमें जखम ; बोलने और निगलनेके समय गलेमें तेज़ काँटा गड़ने या सलाई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है। कण्ठ और तालुमें सूखापन और रुखड़ापन मालूम होना और जलन ; ऐसा अनुभव होता है, कि शस्य आदिकी भूसी इन सब अंशोंमें रगड़ खा रही है (आर्स, हिप,

नक्स, फास) या अड़ी हुई है। तालुमूल पार्श्वके गह्वर सूखे और रूखड़े मालूम होते हैं और उनसे बार-बार श्लेष्मा निकलता है; सवेरे कोमल और बहुत बदबूदार मटरकी आकृतिवाले श्लेष्माकी गोलियाँ या जमा हुआ श्लेष्मामय बलगम निकलता है, स्वरनालीमें खाल उधड़ जानेकी तरह मालूम होना और छोटी-छोटी श्लेष्माकी गोलियोंका निकलना (कक्कस; छोटी-छोटी कड़वी हरे रंगकी गालियाँ—मिडोराइन; छोटी-छोटी गोलियाँ बड़े कष्टसे निकलती हैं—स्क्विला; गोलाकार मटरकी आकृतिवाला श्लेष्मा—कक्कस; मटरकी तरह या सिझाये हुए चावलके टुकड़ेकी तरह—लाई)।

पाकस्थली।—छातीमें जलन, वायु छूटना, डकार, मुँहका स्वाद और वमन सभी खट्टे (कैल्के, कार्बो-वेज, साइकूर, कोना, क्रोकस, हिप, लाई, नक्स-वोम)। यक्ष्मा दोषवाले माता-पिताकी सन्तानें मांस खाना पसन्द करती हैं (क्रियो, सल्फ, माँससे अरुचि—सिङ्को, कैल्के, एसिड-मूर, नक्स-वोम, पेट्रोल, साइलि, सल्फ)। बहुत अधिक पानीकी प्यास, विशेषकर सन्ध्या और रातके समय। फल और खट्टे पानीय (पतली चीजें) पीनेकी इच्छा (एसिड-फास, वेरेट) भोजन करते-करते मिचली पैदा हो जाना और सरमें चक्कर आने लगना, इसके बाद ओकाई आया करती है और नमकीन पानीका वमन होता है। खट्टी डकार, दबाने और संकोचनकी तरह पेटमें दर्द। पाकस्थलीमें त्वचा क्षय हो जानेकी तरह मालूम होना और दबानेपर तकलीफ होना (स्टैनम)।

अन्त्राशय।—यकृत प्रदेशमें कड़ापन और सूक्ष्म शलाका गड़नेकी तरह या सुई गड़नेकी तरह दर्द। रह-रहकर उदरमें दबने, सिकुड़ने और शूलके दर्दकी तरह दर्द, हरे रंगका पाखाना होनेपर घटना। पेटका बहुत फूलना, कड़ापन और भार मालूम होना। अन्त्रशूल और पेट जकड़ जानेके बाद प्रदरका स्राव (नैट्र-मूर—ऐसा दर्द मानो नाभि मरोड़ खा रही है, इसके साथ ही प्रदरका स्राव—नैट्र-कार्ब)। नाभि-प्रदेशमें छेदनेकी तरह दर्द; आध्मानवायु निकलनेपर घटना।

मलान्त्र और मल।—स्नायविक अवसाद रोगमें मलका कड़ापन या बाएँ डिम्बाधारमें दर्द और छातीमें जलन मालूम होना (क्लार्क और कूपर)। मलका पतलापन और उदरामय, विशेषकर बच्चोंका, पाखाना होनेके पहले छेदनेकी तरह शूलका दर्द, पेट जकड़ जानेके कारण रोगी दोहरा जाता है

(कोलोसिन्थ, क्युप्रम) ; प्रत्येक तीन सप्ताहका अन्तर देकर पतला पाखाना होना आरम्भ हो जाता है ; मल—फेन भरा (कोलो, इलैट, ग्रैटि, कैलि-बाई, सल्फ), हरे रंगका (ऐकोन, आर्जेण्ट-नाई, कैल्के-फास, डालका, इलैट, हिप, मर्क-वाई, पोलिन, इपिक ; कुछ देर रहनेपर नीला हो जाता है—फास, पहले पीला, किन्तु कुछ देर रहनेपर हरा हो जाता है—आर्जेण्ट-नाई, रियुम)। सड़ी तलैयामें तैरती हुई काईकी तरह और उसपर सफेद रंगके मैदके कणकी तरह पदार्थ तैरा करते हैं (कण न मिले—फास) ; स्तन पीनेवाला बच्चा जो दूध पीता है, वह अजीर्ण अवस्थामें मलद्वारसे निकल जाता है (गैम्बोज, ऐब्रोट, सिङ्को, फेर, ओलि-येन) ; कृमि (सूतकी और केचुएकी तरह—सिना, ऐसाफि, फेर, ऐसेरम, मार्क, साइलि, स्पाई, स्टैन, सैबाड, रैटान, मिडोरिन)।

पेशाब।—पेशाब बहुत होना और पेशाबका संचय भी अधिक होना, पेशाब फीका पानीकी तरह या हरी आभा लिये ; उसमें सफेद तली जमती है। बैठे-बैठे उठने या चलनेके समय अनजानमें पेशाबका स्राव (चलनेके समय—कास्टि, फेर, नेट्र-मूर, रियुटा, जिङ्क)।

पुं-जननेन्द्रिय।—वायु छूटनेके समय मूत्राधारकी मुखशायिका ग्रन्थिसे लारका स्राव (पाखाना होनेके समय वेग देनेपर—कैल्के, कोना, इग्ने, कैलि-बाई, नैट्र-म्यू, नक्स, फास, सेलिन, सिपि, साइलि)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तव—देरसे और थोड़ा स्राव होता है ; तीसरे पहर स्राव बन्द हो जाता है ; स्राव क्षय करनेवाला (बोवि, कार्बो-वेज, कास्टि, कैलि-कार्ब, लैके, नेट्र-सल्फ, पेट्रोल, रास, सार्सा साइलि) काला अलकतरेकी तरह (कैक्ट, ऐसिड-कार्बो, कैमो, क्रोक, साइक्ले क्रियो, लैके, प्लैट, पल्स, सिकेलि, आस्टि) ; स्राव होनेके पहले नाकसे परिस्राव (ग्रैफ) और नाक रुकना, प्रसव वेदनाकी तरह दर्द (बेल, बोवि, कैमो, साइना, हायो, मूरेक्स, सिपि), छेदनेकी तरह आँतोंका शूल (कोलो, कैमो, क्रोक, कैलि-कार्ब, मैग-फास, पल्स, सिपि), गलेका जखम, मैलापन, शीत मालूम होना और कमरमें दर्द (कैल्के, कास्टि, लाई, स्पञ्जि, वाईवर्न, आस्टि, कोलोफिल) ; असमयमें ही ऋतु होता है, स्राव बहुत ज्यादा और केवल रातमें (ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-मूर, बोवि, नेट्र-मूर, जिङ्क) या सोयी हुई अवस्थामें (क्रियो), स्राव हुआ करता है ; चलनेके समय बन्द हो जाता है (ऐमोन-मूर, क्रियो ; स्राव

होता है—कास्टि, लिलि-टाई; केवल दिनमें स्राव होता है, सोते ही रुक जाता है—कैक्ट, लिलियम); मानो आँतें और जरायु आदि सभी नीचेकी ओर खिंच रहे हैं, ऐसे ही दर्दके साथ रजःस्राव; पेट दबाने और झुकनेपर घटना। प्रदर—स्राव कषाय, सफेद रङ्गका और आँव-मिला—अन्त्रशूलके बाद स्राव होता है। प्रत्येक बार आर्त्तव-स्रावके समय हाथ-पैरमें दर्द और सुन्न होना; बायें डिम्बाधारमें दर्द और मूर्च्छा तथा रोगिनी जमीनमें लोट जाया करती है।

श्वास-यंत्र।—खाँसी; रातमें अकड़न-भरी खाँसी; श्वासनलीमें खुजलीकी वजहसे खाँसी; सवेरे और दिनमें पीले रङ्गका, पतला या गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मामय या घोर रक्तमय बलगम निकलता है; स्वाद नमकीन (लाई, पल्स, स्टैन)। खाँसी—सन्ध्यासे आधी राततक बढ़ना। कोमल और बहुत बदबूदार श्लेष्माकी गोलियाँ कफ़के साथ निकलती हैं। छातीपर दबाव मालूम होना और चलनेके समय श्वासकी कमी (ऐराण्डो, आर्स, कार्बो-वेज, प्रूनस, सिपि, सल्फ, सोरिन; तेजीसे चलनेके समय—नेट्र-मूर, पल्स); बायें वक्षमें और हृत्प्रदेशमें शूल बेधनेकी तरह तेज़ दर्द और जखम हो जानेकी तरह भाव। रातमें गला रुक जानेके साथ-ही-साथ कलेजा धड़कना और समूचे बाएँ वक्षमें दर्द मालूम होना। वक्षमें कसावटका भाव (ऐकोन, आर्स, नक्स, फास, पल्स)। सूत्र-क्रिमिवाले रोगियोंकी रातमें आक्षेपिक खाँसी, विशेषकर सोनेके बाद।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दन अकड़ी (बेलेड, ब्राई, ऐसिड-नाई, रास, सल्फ)। ऐसा दर्द मानो कमर टूट गयी है, विशेषकर रातमें (सविराम ज्वरमें—इयुपेट; बाधक रोगमें—जैन्थक्स)। दाहिना कन्धा मानो मोच खा गया है—बाँह हिलानेके समय ऐसा ही मालूम होता है (ऐल्यु, सल्फ: बायें कन्धेमें—वेस्पा)। स्कन्ध-वात—दर्दकी वजहसे हाथ नहीं उठा सकता। अंगुलीपर फैलनेवाला छाला या रस-भरे दाने निकलना। निचले अङ्ग सब, विशेषकर जानु-सन्धिमें बहुत दर्द होता है। जानुके गासेमें सूजन। चलनेके समय जानु और लेटी हुई अवस्थामें पैरमें दर्द होता है। रातमें पैरकी पोटलीकी पेशीमें ऐंठन (फेर, मैग-मूर, मिडोरिन, नक्स, सल्फ, लिसिन); मृगी—चैतन्य अवस्थामें एकाएक गिर जाता है।

त्वचा।—रस-भरी फुन्सियाँ और घमौरियाँ कभी-कभी बहुत खुजलाती हैं (रास)। छोटे-छाटे दानोंसे भरी लाल विसर्पिकासे छाल निकलती हैं।

आमवात—हाथ-पैर इतने फूल जाते हैं, कि अंगुलीकी सन्धियाँ सब दिखाई नहीं पड़तीं और कानमें सों-सों, भों-भों आवाज़ सुन पड़ती है।

निद्रा ।—तलपेटमें दबाव मालम होनेकी वजहसे रातमें नींद न आना। अतृप्त निद्रा—सोनेके समयकी अपेक्षा सोकर उठनेके समय रोगी अधिक सुस्ती और गड़बड़ी अनुभव करता है (ब्राई, कोना, हिप, ओपि, सल्फ)। रातमें दो या तीन बजनेके समय नींद खुल जाती है, फिर नींद नहीं आती। चोर, डाकू, आग, बाढ़, बन, दुर्घटना वगैरहके सपने देखता है और चौंक उठता है तथा रोने लगता है।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—शीतावस्था—जाड़ा मालूम होना, मानो किसीने शरीरपर पानी डाल दिया (ऐण्टि-टार्ट, लिड, सेबाई)। रातमें ९ बजनेके समय कम्पन और शीत; शय्याकी गर्मीसे भी शीत नहीं घटता। रातके १० बजनेके समय एकाएक कम्पन और शीत पैदा हो जाता है, परन्तु उत्ताप, पसीना और प्यास कुछ भी नहीं रहती (उत्ताप या पसीनाके अलावा—बोवि, सल्फ)। दोनों पैर बहुत ठण्डे, मानो पानीसे आ रहा है (मानो पानीमें खड़ा था—सिपि); शीत पीठके ऊपरकी ओरसे नीचेकी ओर दौड़ता है; घरके बाहर, व्यायाम करनेके बाद घटना। उत्तापावस्था—सारे शरीरमें तेज़ उत्ताप (मानो धमनीमें गर्म पानी बह रहा है—आर्स, ब्राई, रास)। रातमें बहुत अधिक भीतरी उत्ताप, रोगी शय्यामें नहीं रह सकता, पर सर्दी लगनेके भयसे बाहर भी नहीं जा सकता (वैराई, नक्स)। शरीरका वस्त्र नहीं उतार सकता (बेल; शरीरका कपड़ा उतारते ही जाड़ा मालम होता है—नक्स)। माथा, चेहरा और तलहत्थीमें गर्मी मालूम होना। पसीनेवाली अवस्था—बहुत ज्यादा पसीना होता है, रातके १२ बजेसे सवेरेतक; पसीना—खट्टी गन्ध मिला, तेलकी तरह, सहजमें धुलता नहीं है; कपड़े आदिमें लगनेपर पीला दाग पड़ता है। उत्ताप और पसीना एक पार्श्वका, विशेषकर दाहिने पार्श्वमें।

वृद्धि ।—प्रति तीन सप्ताहके अन्तरसे, शीत-उत्तापके परिवर्त्तनसे, स्थिर होकर सोनेपर, दूध पीनेपर, आर्त्तव-स्रावके समय, सोनेवाली अवस्थामें, रातमें दाहिना बाँह उठानेपर, शीत लगनेपर, शरीरका वस्त्र उतारनेपर, पैर लटकाकर बैठनेपर, गर्म चीजें खानेपर, शय्याके उत्तापसे और जलीय वायुका झोंका लगनेपर।

घटना।—चलनेके समय, उत्तापका प्रयोग करनेपर (सेंकनेपर), ठण्डे पानीसे (दाँतका दर्द) और पेट दबानेपर।

सम्बन्ध।—अनुपूरक।—कैमोमिला।

प्रतिविष या दोषघ्न।—आर्स, कैमो (स्नायुशूल आदिके सम्बन्धमें) और मर्क, नक्स, पल्स, रियुम (अन्त्राशयकी बीमारीमें)।

सदृश।—ऐलो, ऐण्टि-क्रूड, कैल्के, कोलो, ग्रैफ, इपिक, लाई, ऐसिड-नाई, नक्स-मस, साइलि, रैटान, लैक-डिफ, लैक-कैन।

तुलनीय।—मैग्नेशिया, ऐण्टिम-क्रूड (सर-दर्द); कैल्के, रियुम (मलमें खट्टी गन्ध); नक्स (खट्टी श्वास-प्रश्वास); इपिक (वमन और मल); कोलोसि (पेटमें दर्द); कैमो (स्नायुशूल); सैंगुइ (वात); ऐमोन-म्यूर (आर्त्तव) इत्यादि।

शक्ति।—३रे दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—४० से ५० दिन।

मैग्नेशिया म्यूरियेटिका

(MAGNESIA MURIATICA)

दूसरा नाम।—मैग्नेशिया क्लोराइड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण दवासे क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—पैत्तिक लक्षण; मूलाधारका पक्षाघात; पाकाशयका शूल; कब्जियत; बहरापन; अतिसार; बाधक; पैरमें पसीना; अजीर्ण; सर-दर्द; अर्श; हृत्पिण्डकी बीमारी; छातीमें जलन; मूर्च्छावायु; श्वेत-प्रदर; यकृतकी बीमारी; कष्ट-रजः; रातमें वीर्यपात हो जाना; नकसीर; हृत्स्पन्दन; गर्भावस्थामें वमन; मिचली; घ्राण-शक्तिमें गड़बड़ी; प्लीहाका बढ़ना; पाकस्थलीकी बीमारी;

स्वादमें विकार ; कष्टसे पेशाब ; जरायुमें दर्द ; जरायुका कड़ापन रोग ; मुँहमें पानी आना ; हूप खाँसी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—स्त्रियोंकी बहुत-सी बीमारियोंपर इसकी असाधारण क्षमता प्रकट हुआ करती है । आजकल बहुतसे चिकित्सक प्रायः मेग्नेशिया-कार्ब और मैग्नेशिया-म्यूर व्यवहार नहीं करते ; इसीलिये डाक्टर केण्ट कहते हैं, कि इन दोनों दवाओंके सुव्यवहारसे प्रायः बहुत-सी बीमारियाँ आराम हो जाती हैं ; परन्तु इसका व्यवहार न होनेके कारण वे सब लक्षण दूर नहीं होते । डाक्टर ऐलेन कहते हैं :—जरायु-विकार मिली आक्षेपिक और गुल्मवायुसे पैदा हुई बीमारियोंमें और जो स्त्रियाँ बहुत दिनोंतक पित्तकी अधिकता और अजीर्ण आदि रोग भोगती हैं, उनके लिये यह विशेष उपयोगी है । यकृतका बढ़ना और यकृतमें रक्तका अधिक सञ्चय होना, क्षीण दुबले-पतले बच्चोंमें दाँत निकलनेके समय दूध पचानेकी शक्तिका न होना और अवस्था-प्राप्त पुरुषोंके यकृतका विकार और जननेन्द्रियकी बीमारी वगैरह अवस्थामें इसके द्वारा विशेष लाभ हुआ करता है । इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं :—शब्दका सहन न होना ; सरमें दर्द, मानो माथा दो हुआ जाता है । प्रति छः सप्ताहके बाद पैदा होना ; माथेमें बहुत पसीना निकलते रहना ; मुँहसे लगातार सफेद फेनका स्राव ; सड़ा अण्डा या प्याजकी गन्ध-भरी डकार ; दाँतमें दर्द, खानेकी कोई चीज़ दाँतमें छू जानेपर बेहद दर्द होने लगना ; यकृत बड़ा और कड़ा ; चलने और छूनेपर यकृतमें दबावकी तरह दर्द, दाहिने पार्श्वमें सोनेपर दर्दका बढ़ना ; मलका कड़ापन—कड़ा गांठ-भरा मल, मलद्वारतक आकर टुकड़े-टुकड़े होकर निकलता है । दाँत निकलते हुए बच्चोंकी कब्जियत ; पेशाब हलके पीले रङ्गका, मूत्रस्थलीके ऊपरी पेटपर दबाव डालनेपर कहीं पेशाब निकलता है ; ऋतुस्रावके समय बहुत उत्तेजित भाव रहता है । जमा थक्का-थक्का खूनका स्राव, चलनेके समय कमरमें दर्द और बैठनेपर उरुतक दर्द फैल जाता है ; जरायुसे खूनका स्राव—रातमें शय्यापर सोनेके समय अधिक मूर्च्छावायुका आक्षेपतक हो जाता है ; प्रत्येक बार पाखाना होनेके समय प्रदरका स्राव या जरायुका आक्षेप ; बैठनेके समय कलेजा धड़कना और हृत्पिण्ड-प्रदेशमें दर्द ; इधर-उधर टहलते ही घटना ; रोगीको हमेशा मानसिक उद्वेग बना रहता है और बेचैन रहता है ; थोड़ा-सा भी मानसिक परिश्रम करनेपर

तबीयत खराब मालूम होने लगती है; भोजनके समय या भोजनके बाद मिचली पैदा हो जाती है। डकार आया करती है, कँपकँपी और सुस्ती मालूम होती है। डकार आनेपर घटना।

लक्षणावली

मन।—बातचीतसे चिढ़ (कैमो, बेल, आर्जेण्ट-नाई, इग्ने, लैक-डिफ, कैलि-फास, मैंङ्गेन-ऐसेट, अक्साइ-ड्रोप, स्टैन); एकान्तप्रिय (ऐनाक, बेल, कैमो, साइक्यूट, जेल, इग्ने, लैक-डिफ, नक्स-वोम, टिलि-इयु); आँखोंमें हमेशा आँसू भरे रहते हैं और रोना (एपिस, काष्टि, चेल, साइक्यूट, साइक्लो, ग्रैफ, लेक्टियु, लिलि-टाई, नेट्र-म्यूर, पल्स); गलेमें रहनेके समय मानसिक उद्वेग; निर्मल वायु सेवनसे दूर हो जाता है (ब्राई)। मानसिक परिश्रमसे बीमारी पैदा हो जाती है (सिङ्को, लैके)। पुस्तक आदि पढ़नेके समय रोगिनीको ऐसा मालम होता है, मानो कोई दूसरा भी उसके साथ वह पुस्तक पढ़ रहा है और इसीलिये रोगिनी तेजीसे पढ़ा करती है।

माथा।—माथा भारी और ढुलक पड़ता है, ऐसा ही मालूम होनेकी वजहसे उसे ऐसा अनुभव होता है, कि वह गिर जायगी। सरमें चक्कर आना,—सवेरे उठनेके समय (मैन्सिन, रियुटा, सिपि,—उठनेके बाद—लाई) और मध्याह्न भोजनके समय (कैल्के, फास, हिप; मध्याह्न भोजनके बाद—नैट्र-सल्फ, जिङ्क)। निर्मल हवा सेवन करनेपर दूर हो जाता है (कैम्फो, कास्टि, ग्रैटि, टैबाक; घरके भीतर घटना—कैलि-कार्ब, क्रियो)। ललाट-देशमें सुन्नकी तरह मालूम होना (ऐसिड-फ्ल, ऐसिड-म्यूर); माथेमें जड़ता मालूम होना; सवेरे जागनेके समय और लेटी हुई अवस्थामें वृद्धि; निर्मल हवामें घूमना आदि व्यायामसे और गर्म कपड़ेसे माथा ढक लेनेपेर घट जाना मालूम होता है (आर्स, सोरिन)। सरमें अधिक रक्त-सञ्चय, माथेका जो पार्श्व तकियेपर रखा रहता है, उसी ओर ऐसा मालूम होता है, कि गर्म पानी खौल रहा है और सिन-सिन आवाज़ होती है। सरमें दर्द,—प्रत्येक छः सप्ताहके अन्तरसे; ललाट-देशमें और दोनों आँखोंके चारों ओर ऐसा दर्द मानो माथा फट जायगा; शरीर या माथा हिलानेपर बढ़ना (बेल, ब्राई, ग्लोन, लाई) और घरके बाहरकी हवा लगनेपर (आर्जेण्ट-नाई, बेल, मर्क, नक्स-वोम), सोनेपर घटना (कैल्के, सिङ्को, इग्ने, लाई, मिनियैन, नेट्र-म्यूर, ऐसिड-नाई), जोरसे

स्वादमें विकार ; कष्टसे पेशाब ; जरायुमें दर्द ; जरायुका कड़ापन रोग ; मुँहमें पानी आना ; क्रुप खाँसी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—स्त्रियोंकी बहुत-सी बीमारियोंपर इसकी असाधारण क्षमता प्रकट हुआ करती है । आजकल बहुतसे चिकित्सक प्रायः मेग्नेशियो-कार्ब और मैग्नेशिया-म्यूर व्यवहार नहीं करते ; इसीलिये डाक्टर केण्ट कहते हैं, कि इन दोनों दवाओंके सुव्यवहारसे प्रायः बहुत-सी बीमारियाँ आराम हो जाती हैं ; परन्तु इसका व्यवहार न होनेके कारण वे सब लक्षण दूर नहीं होते। डाक्टर ऐलेन कहते हैं :—जरायु-विकार मिली आक्षेपिक और गुल्मवायुसे पैदा हुई बीमारियोंमें और जो स्त्रियाँ बहुत दिनोंतक पित्तकी अधिकता और अजीर्ण आदि रोग भोगती हैं, उनके लिये यह विशेष उपयोगी है। यकृतका बढ़ना और यकृतमें रक्तका अधिक सञ्चय होना, क्षीण दुबले-पतले बच्चोंमें दाँत निकलनेके समय दूध पचानेकी शक्तिका न होना और अवस्था-प्राप्त पुरुषोंके यकृतका विकार और जननेन्द्रियकी बीमारी वगैरह अवस्थामें इसके द्वारा विशेष लाभ हुआ करता है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं :—शब्दका सहन न होना; सरमें दर्द, मानो माथा दो हुआ जाता है। प्रति छः सप्ताहके बाद पैदा होना ; माथेमें बहुत पसीना निकलते रहना ; मुँहसे लगातार सफेद फेनका स्राव ; सड़ा अण्डा या प्याजकी गन्ध-भरी डकार ; दाँतमें दर्द, खानेकी कोई चीज़ दाँतमें छू जानेपर बेहद दर्द होने लगना ; यकृत बड़ा और कड़ा ; चलने और छूनेपर यकृतमें दबावकी तरह दर्द, दाहिने पार्श्वमें सोनेपर दर्दका बढ़ना ; मलका कड़ापन—कड़ा गांठ-भरा मल, मलद्वारतक आकर टुकड़े-टुकड़े होकर निकलता है। दाँत निकलते हुए बच्चोंकी कब्जियत ; पेशाब हलके पीले रङ्गका, मूत्रस्थलीके ऊपरी पेटपर दबाव डालनेपर कहीं पेशाब निकलता है ; ऋतुस्रावके समय बहुत उत्तेजित भाव रहता है। जमा थक्का-थक्का खूनका स्राव, चलनेके समय कमरमें दर्द और बैठनेपर उरुतक दर्द फैल जाता है ; जरायुसे खूनका स्राव—रातमें शय्यापर सोनेके समय अधिक मूर्च्छावायुका आक्षेपतक हो जाता है ; प्रत्येक बार पाखाना होनेके समय प्रदरका स्राव या जरायुका आक्षेप ; बैठनेके समय कलेजा धड़कना और हृत्पिण्ड-प्रदेशमें दर्द ; इधर-उधर टहलते ही घटना ; रोगीको हमेशा मानसिक उद्वेग बना रहता है और बेचैन रहता है ; थोड़ा-सा भी मानसिक परिश्रम करनेपर

तबीयत खराब मालूम होने लगती है; भोजनके समय या भोजनके बाद मिचली पैदा हो जाती है। डकार आया करती है, कँपकँपी और सुस्ती मालूम होती है। डकार आनेपर घटना।

लक्षणावली

मन।—बातचीतसे चिढ़ (कैमो, बेल, आर्जेण्ट-नाई, इग्ने, लैक-डिफ, कैलि-फास, मैंङ्गेन-ऐसेट, अक्साइ-ट्रोप, स्टैन); एकान्तप्रिय (ऐनाक, बेल, कैमो, साइकूर, जेल, इग्ने, लैक-डिफ, नक्स-वोम, टिलि-इयु); आँखोंमें हमेशा आँसू भरे रहते हैं और रोना (एपिस, कास्टि, चेल, साइकूर, साइक्लो, ग्रैफ, लेकिटयु, लिलि-टाई, नैट्र-मूर, पल्स); गलेमें रहनेके समय मानसिक उद्वेग; निर्मल वायु सेवनसे दूर हो जाता है (ब्राई)। मानसिक परिश्रमसे बीमारी पैदा हो जाती है (सिङ्को, लैके)। पुस्तक आदि पढ़नेके समय रोगिनीको ऐसा मालम होता है, मानो कोई दूसरा भी उसके साथ वह पुस्तक पढ़ रहा है और इसीलिये रोगिनी तेजीसे पढ़ा करती है।

माथा।—माथा भारी और ढुलक पड़ता है, ऐसा ही मालूम होनेकी वजहसे उसे ऐसा अनुभव होता है, कि वह गिर जायगी। सरमें चक्कर आना,—सवेरे उठनेके समय (मैन्सिन, रियुटा, सिपि,—उठनेके बाद—लाई) और मध्याह्न भोजनके समय (कैल्के, फास, हिप; मध्याह्न भोजनके बाद—नैट्र-सल्फ, जिङ्क)। निर्मल हवा सेवन करनेपर दूर हो जाता है (कैम्फो, कास्टि, ग्रेटि, टैबाक; घरके भीतर घटना—कैलि-कार्ब, क्रियो)। ललाट-देशमें सुन्नकी तरह मालूम होना (ऐसिड-फ्ल, ऐसिड-मूर); माथेमें जड़ता मालूम होना; सवेरे जागनेके समय और लेटी हुई अवस्थामें वृद्धि; निर्मल हवामें घूमना आदि व्यायामसे और गर्म कपड़ेसे माथा ढक लेनेपेर घट जाना मालूम होता है (आर्स, सोरिन)। सरमें अधिक रक्त-सञ्चय, माथेका जो पार्श्व तकियेपर रखा रहता है, उसी ओर ऐसा मालूम होता है, कि गर्म पानी खौल रहा है और सिन-सिन आवाज़ होती है। सरमें दर्द,—प्रत्येक छः सप्ताहके अन्तरसे; ललाट-देशमें और दोनों आँखोंके चारों ओर ऐसा दर्द मानो माथा फट जायगा; शरीर या माथा हिलानेपर बढ़ना (बेल, ब्राई, ग्लोन, लाई) और घरके बाहरकी हवा लगनेपर (आर्जेण्ट-नाई, बेल, मर्क, नक्स-वोम), सोनेपर घटना (कैल्के, सिङ्को, इग्ने, लाई, मिनियेन, नेट्र-मूर, ऐसिड-नाई), जोरसे

दबानेपर (गुयायेक, कैलि-बाई, लैके, पल्स) और गर्म कपड़ेसे अच्छी तरह माथा ढँक लेनेपर (ब्राई, फास, ऐसिड-पिक, साइलि, स्ट्रान; अच्छी तरह बाँध लेनेपर घटना—आर्जेण्ट-नाई, कैल्के) ; मूर्द्धादेशमें चेतनाकी अधिकता या स्पर्श सहन नहीं होता और कनपटीमें महीन सलाई गड़नेकी तरह दर्द ; मूर्द्धादेशमें ऐसा मालम होता है, मानो कोई केश खींच रहा है (इथ्यु, कैलि-नाई, फास, मैग-कार्ब)। सरमें उत्ताप मालम होना और ऐसा मालूम होता है, मानो माथेके दोनों पार्श्व दबाये जा रहे हैं (ऐसिड-फ्लु, ऐक्टी, फार्मिका, प्लैट ; बार-बार होनेवाला डिम्बाधारका प्रदाह और प्रदरके साथ (बोवि, काक्यु) और माथा दबानेपर ललाटमें टपक मालम होना। माथेमें बहुत पसीना निकलता है (कैल्के, कैमो, मर्क, पल्स, सैनिक, ;साइलि ; दाहिने पार्श्वमें अधिक—मैग-कार्ब)।

आँख।—रोशनीकी ओर देखनेपर आँखमें पानी भर आता है और जलन मालूम होती है। आँखका सफेद अंश पीला हो जाता है (बेल, युपेट-पर्फोल, ऐलिडो, हिप, लैके, माइरि, अरम-मूर)। दोनों आँखें प्रदाह-भरी, उनमें तेज़ जलन और लाली। सन्ध्याके बाद दीयेकी लौके चारों ओर हरे रङ्गकी शोभा या गोला दिखाई देता है (फास, सिपि, सल्फ) ; पलकोंके ऊपर दाद और स्त्रियोंके रजस्वला होनेके पहले चेहरेपर छोटे-छोटे व्रण सब निकलते और गायब हो जाते हैं।

कान।—बहुत अधिक शब्द-कातरता (आवाज़का सहन न होना) (ऐकोन, बेल, लैके, नक्स-वोम, सिपि, थिरिड) ; स्थूल-श्रुति या अच्छी तरह सुन न पड़ना ; मानो कोई पदार्थ सुननेकी राह रोके हुए हैं (दाहिने कानमें—साइक्लै ; मानो पत्तेका एक टुकड़ा अड़ा हुआ है—ऐसिड-सल्फ ; कर्ण-पटहके सामने कुछ ऐसी चीज़ है, जो राह रोक रही है (कैल्के)। कानके छेदमें टपक (कैल्के, कास्टि, मूरर, नेट्रम-मूर ; ऐसा टपकका दर्द मानो फोड़ा निकल रहा है—ऐनाग्थि)।

नाक।—सर्दी रोगमें—सरमें गड़बड़ी मालूम होना और सूंघने तथा स्वाद लेनेकी शक्ति गायब हो जाती है (कैल्के, हिपर, साइक्लै, नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-मूर, सोरिन, पल्स, सिपि, साइलि, ऐसिड-सल्फ) ; नाकसे बदबूदार पीले रङ्गका तरल श्लेष्मा निकलना (कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, टियुक्रि, नेट्रम-कार्ब),

नाकसे स्राव, खाल उधेड़ने तथा क्षय करनेवाला पानीकी तरह (एरम-ट्राई, सिपा, कैलि-आयाड, लाई, मर्क, नक्स ; रातमें नाक रुक जाना—कैल्के, लाई, नेट्र-कार्ब, नक्स, सैम्बुर)। नासा-रन्ध्रमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता और उससे रूसी या छाल निकलती है ; नासा-रंध्रकी त्वचा क्षय हुई या जखम मिली। नासिका या दोनों नासा-पुट फूले और लाल। रंध्रमें जखम भरा दर्द और जलन। नाकके निचले अंशमें उत्ताप मालूम होना ; सवेरे बढ़ना।

मुखमण्डल।—मलिन, पीला या भूरा मालूम होता है। मुँहकी हड्डीमें ऐंठनकी तरह दर्द (मैग-फास, मेजेर, प्लैट); मुखमण्डल और ललाटमें व्रण आदिका निकलना ; रातमें, गर्म घरमें और रजस्वला होनेके पहले बढ़ना। निचले ओंठके लाल अंशकी बगलमें एक बड़ा रस-भरा दाना (कोमो-क्लो, नेट्र-सल्फ) निकलना, पहले यह खुजलाता है, इसके बाद जलन हुआ करती है।

मुख-विवर।—दाँतका दर्द—रोगी दाँतमें खानेके पदार्थ आदि घुसनेपर दर्द असह्य हो उठता है। ऊपरका क्रोटक या सामनेवाले दोनों दाँत लम्बे मालूम होते हैं। मसूढ़ोंमें दर्द रहता है और वे फूल जाते हैं तथा उनसे सहजमें ही खून निकला करता है। धीरे-धीरे दाँत निकलना, इसके साथ ही पेट फूलना और कब्जियत। मुँह और तालु सूखे, पर प्यासका न रहना (नक्स-मस)। जीभकी त्वचा क्षय हुई और उसमें अधिक जलन। सवेरे जीभपर सफेद लेप चढ़ा रहता है या जीभका अगला भाग और दोनों किनारे ढँके हुए, बड़े, शिथिल और पीले रङ्गके दिखाई देते हैं—इसके साथ यकृतमें कड़ापन या लचीलापन न रहना ; मुख-विवर ऐसा मालूम होता है, मानो कोई गर्म पदार्थ लगकर जल गया है। मुँहसे हमेशा सफेद रङ्गकी फेनकी तरह लार निकलती है।

गलेके भीतर।—गलेमें क्षय हुई त्वचाकी तरह या खाल उधड़ जानेकी तरह मालूम होना, वृद्धि ; सन्ध्याके समय और रातमें। स्वरभंग रोगमें गलेमें सूखापन और रुखड़ापन मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है मानो पाकस्थलीसे एक गोला उठकर गलेमें अड़ जाता है (ऐसाफि, इग्ने, लैक-डिपलो, लाई, मस्क, नक्स-मस, प्लैट, सिपि), डकार आनेपर घटना। बड़े कष्टसे गाढ़ा गोंदकी तरह या खून मिला बलगम निकलता है।

पाकस्थली ।—रोगीको भूख मालूम होती है, पर क्या खाना चाहता है यह बता नहीं सकता (थिरिड)। इसके बाद मिचली पैदा हो जाती है। मीठी चीज़ खानेकी इच्छा। रातके ३ बजनेके समय तेज़ प्यास (रातके ३ बजेसे ६ बजेतक बहुत अधिक—फास), डकार, सड़े अण्डेकी तरह या प्याजकी तरह स्वाद-मिली (सड़े अण्डेका स्वाद—ऐगार, डायस्का, मैग-सल्फ, सोरिन, टिलि-इयु, सिपि, सल्फ ; गर्भावस्थामें—मैग-कार्ब ; सड़े अण्डेकी तरह गन्ध—कैमो, पोडा)। चलनेके समय खाये हुए पदार्थ आदि गलेमें फिर आ जाते हैं (ग्रैफ)। दोपहरके भोजनके समय और पहले प्रबल हिचकी, पेटमें दर्द होता है। मध्याह्न भोजनके समय बहुत सुस्ती मालूम होना ; मिचली और कम्पन, डकार आनेपर घटना। सवेरे बिछावनसे उठनेपर मिचली (ऐ-लैक्ट, लैक-डिफ्लो)। उदरके ऊपरी प्रदेशमें टपक (सिना, सिङ्को, हाइड्रैस्ट, आयोड, पल्स, रास)। बच्चा दाँत निकलनेके समयकी कितनी ही बीमारियोंके कारण दूध पचा नहीं सकता। दुबला-पतला, मीठी चीजसे अधिक रुचि रखनेवाला। शिशु, दूध पीते ही उसके पेटमें दर्द पैदा हो जाता है और अजीर्ण अवस्थामें दूध कै हो जाता है (इथ्युजा, फेर, क्रियो)। मिचलीके साथ पेटमें दर्द ; बार-बार मिचलीके साथ मुँहमें पानी भर आता है।

अन्त्राशय ।—उदरके ऊपरी भागमें हिलना आरम्भ होकर वह तलपेटमें उतरता है ; घटना—वायु निकलनेपर, दोपहरके पहले। उदरके ऊपरी भागसे लेकर गलेतक जलन। उदरमें ऐसा दर्द मानो कुछ टूट रहा है। नितम्बके स्थानपर छेदने और सलाई गड़नेकी तरह दर्द। अन्त्राशयकी पेशीमें झुनझुनी होती है और महीन सलाई गड़नेकी तरह दर्द होता है। सन्ध्याके बाद अन्त्रशूल—दर्द उरुतक फैल जाता है (बेल, डालका, लाई, मैंगे); शूलके बाद प्रदर-स्राव (नैट्र-म्यूर, नैट्र-कार्ब)। रातमें २ बजनेके समय अन्त्रशूलका पैदा हो जाना, रोगीको घुटने मोड़कर बाध्य होकर सोना पड़ता है ; शरीरपर किसी तरहका ओढ़ना नहीं रख सकता। पेट कड़ा और उसमें ऐसा दर्द मानो जख्म हो गया है, छूनेपर बहुत तकलीफ़ मालम होती है (कैमो लैके, मेजिर, ओपि, स्टैन)। यकृतमें दबानेकी तरह दर्द—चलनेके समय और छूनेपर ; यकृत कड़ा और बढ़ा हुआ ; दाहिनी करवट सोनेपर दर्द अधिक होता है (बेल, कैलि-कार्ब, मर्क), बाईं करवट सो नहीं सकता, क्योंकि ऐसा करनेपर उसे मालूम होता है कि कोई एक पदार्थ उदरमें खिंच रहा

है। रोगी केवल चित सो सकता है। लगातार कब्जियत और आध्मानकी वजहसे पेट हमेशा फूला रहता है।

मलान्त्र और मल।—मलका कड़ापन, मल कडा, थोड़ा, बड़ा, भेंड़के मलकी तरह और गांठ-गांठ; बड़े कष्टसे निकलता है। मलद्वारके मुँहतक आकर टुकड़े-टुकड़े होकर निकलता है (ऐमोन-म्यूर, नेट्रम-म्यूर, गुयायेक, ओपि); बच्चोंको दाँत निकलनेके समय कब्जियत (नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम, सिपि, साइलि)। बिलकुल ही पाखाना नहीं लगता (हाइड्रैस्ट, लाई, नेट्र-म्यूर, ओपि; बहुत-सा मल जबतक इकट्ठा नहीं हो जाता, जबतक नहीं निकलता—ऐल्यू)। मलान्त्रकी निष्क्रियता (ऐल्यु, हिप, कैलि-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, सोरिन, साइलि)। अर्श—मल स्वाभाविक, पर मलद्वारमें दर्द होता है। मलका पतलापन—प्राय: उदरामय पैदा हो जाता है। प्रबल उदरामय—केवल आँव और खून मिला मल (मर्क, नेट्र-कार्ब, नक्स-मस, ऐसिड-आक्सैल, पोडो, सोरिन, पल्स, सल्फ)।

पेशाब।—पेशाब—हलका पीले रङ्गका, अन्त्राशयकी पेशीपर दबाव दिये बिना (रियुम देखिये) पेशाब नहीं होता (गेंडुरी मारकर बैठे बिना या घुटना टेककर जमीनसे माथा स्पर्श किये बिना पेशाब नहीं होता—पैरिइरा-ब्रेवा); मूत्रस्थलीकी निष्क्रियता (सिपि, हिप, हायो, ऐसिड-म्यूर, ऐसिड-फास)। पेशाबके बाद जलन मालूम होती है; मूत्रपथका सुन्न हो जाना। बून्द-बून्द पेशाब होता है—प्रत्येक बार कई बून्द पेशाब मूत्रस्थलीमें रह जाता है, ऐसा ही मालूम होता है (कूबेब, हिप)।

पुं-जननेन्द्रिय।—सवेरे बार-बार लिङ्गमें कड़ापन, इसके साथ ही लिङ्गमें जलन, रमणके बाद पीठमें जलन। जननेन्द्रिय, मुष्कत्वक वगैरह स्थानोंमें दुर्दमनीय खुजली। मलद्वारतक फैल जाती है; मुष्क शिथिल हो पड़ता है और प्राय: पसीनेसे तर रहता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तव-स्रावके समय स्नायु-विधान और चित्त बहुत ही उत्तेजना प्रवण हो जाया करता है; स्राव काला (साइक्ला, लैके, पल्स, कैलि-फास, कैलि-नाई) और थक्का-थक्का (क्रोक, सिकेलि, कैलि-नाई, प्लैट); आक्षेप और दर्द—चलनेके समय कमरमें अधिक दर्द मालूम होता है, बैठनेके समय दर्द उरुतक फैल जाता है। ऋतु-स्रावके समयका दर्द कमर

दबानेपर घटता है। जरायुसे खूनका स्राव, रातमें सोनेवाली अवस्थामें बढ़ना ; मूर्च्छावायुकी अकड़न पैदा कर देता है (ऐकि, कोलोफि)। प्रदर—शारीरिक परिश्रम करनेके बाद और प्रत्येक बार पाखाना होनेके समय (कैल्के-फास, ग्रैफ) स्राव हुआ करता है, इसके साथ ही जरायुका सिकुड़ना और फैलना ; प्रदर-स्रावके बाद खूनका स्राव आरम्भ हो जाता है। आर्त्तव स्रावके दो सप्ताह बाद प्रदरका स्राव आरम्भ होता है और तीन-चार दिन रहता है (बोवि, कोना, सिनैमोन और लिसिन)। जरायु-रोगके कारण मूर्च्छावायु रोग। रुद्ध रजः (रजःस्राव न होना—पल्स, नेट्र-मूर, कैलि-कार्ब)। कैन्सर या कर्कट पैदा होनेके आसार बतानेवाली जरायुकी सूजन और लचीलापन न रहना (हाइड्रैस्ट, आयोड, ऐसिड-कार्बोल, कोना, कार्बो-ऐन, क्रियो)।

श्वास-यंत्र।—कण्ठके भीतरी भागमें सूखापन और रुखड़ापनके साथ स्वरभङ्ग (नेट्र-कार्ब, नक्स)। सवेरे शय्यासे उठनेपर स्वरभङ्ग (एरम-ड्रेकन, हैमा, इण्डियम)। समुद्रमें स्नान करनेकी वजहसे रक्त मिला कफ निकलता है। वक्षमें जलन और त्वचा क्षय होनेकी तरह मालूम होनेवाली सूखी खाँसी, सन्ध्याके समय और रातमें (नेट्र-कार्ब, सल्फ ; क्रुप खाँसी रोगमें—ब्राई, कास्टि, स्टैन), स्वरनालीमें चुनचुनी होती है (कार्बो-वेज ; असहनीय—आयोड)। गलेके भीतर या खुजलीकी वजहसे रातमें आक्षेपिक या क्रुप खाँसी (ओलियेन, जिङ्कम, नेट्र-मूर)। मध्याह्न भोजनके समय एकाएक वक्षपर दबाव मालूम होना और श्वास-प्रश्वासमें व्याघात। वक्षमें खूब कसावटका भाव (आर्स, बेल, चेलिडो, लैके, मैग-फास, ओपि)। हृत्पिण्डमें श्वास-प्रश्वासमें व्याघात पैदा करनेवाला सूक्ष्म बेधनेकी तरह दर्द (नैजा, स्टैफिसे)। कलेजा काँपना, बढ़ना—बैठे रहनेपर (कार्बो-वेज, लैके, रास), उठकर इधर-उधर टहलते रहनेपर घटना (शरीर यदि न हिलाया जायगा तो हृत्पिण्ड स्थिर हो जायगा, ऐसा मालूम होना—जेल्स ; ऐसा मालूम होना कि शरीर हिलाते ही हृत्पिण्ड स्थिर हो जायगा—डिजि)।

प्रत्यङ्ग आदि।—आर्त्तव-स्रावके समय और अन्यान्य नितम्ब देशमें और कमरमें तथा दोनों ऊरुमें इस तरहका दर्द और स्पर्श सहन न होना, मानो जोरकी चोट लग गई है। गलेकी गांठका फूलना (अरम-ट्राई, कैल्के, आयोड, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, मर्क-इल, सिलि)। कमरके स्थानपर छेदने और

शूल बेधनेकी तरह दर्द और जलन। रमणके बाद कमरमें जलन मालूम होना। कन्धेकी सन्धिमें वातकी वजहसे दर्द, यह दर्द बाँहको राहसे हाथतक फैल जाता है; वृद्धि—बाँह हिलानेपर (कैल्मिया, सिफिलिन)। सवेरे नींद खुलनेपर दोनों हाथ सुन्न हो जाते हैं (कैल्के, रोडोडे)। दोनों पैर बहुत ही सुस्त मालूम होते हैं, यहाँतक कि बैठनेवाली अवस्थामें भी। अधिकांश लक्षण बैठो हुई अवस्थामें ही पैदा होते हैं और शरीर हिलानेपर और शारीरिक परिश्रम करनेपर दब जाते हैं। जिस करवट रोगी सोता है, उसी करवट मानो सन-सन कर पानी खौलता है, ऐसा मालूम होता है। पैरकी पोटलीमें ऐंठन होती है (एम्ब्रा, फेर-म्यूर, मैग-कार्ब, मिडोरिन, नक्स, सल्फ, इग्नुला, लिसिन)। अँगड़ाई लेनेके समय पेटमें दर्द मालूम होता है। संध्याके समय दोनों पैरोंमें जलन हुआ करती है; पैरमें पसीना (कैल्के, साइलि)।

निद्रा।—बार-बार जम्हाई और आलस्य मालूम होना और दिनमें औंघाई। आँख बन्द करते ही शारीरिक अस्थिरता पैदा हो जाती है, विशेषकर संध्याके समय सोनेके वक्त। रातमें जागनेके समय शरीरमें झटका मालूम होता है (आर्जेण्ट)। तृप्त न करनेवाली नींद (कोना, क्रूप्रम, डैफ, गुयायेक, लाई, पल्स), सवेरे शरीर बहुत थका मालूम होता है (स्ट्रैमोन, सिपि, मैग-कार्ब, नक्स वोम, आर्स)।

वृद्धि।—छूने या दबानेपर, गर्म घरमें; समुद्रमें नहानेपर; स्थिर होकर बैठनेपर, सोनेपर, दाहिनी करवट सोनेपर, जिस करवट सोता है उसी करवट, रमणके बाद और मानसिक परिश्रमसे।

उपशम।—जोरसे दबानेपर, कमर दबानेपर, गर्म कपड़ेसे कसकर बाँध लेनेपर, निर्मल वायु लगने, डकार आनेपर और शरीर हिलानेके समय या चलनेपर।

सम्बन्ध।—समगुण—बेल, कैल्के, लाई, मर्क, नेट्र-म्यूर, फास, पल्स, सिपि, साइलि, सल्फ।

प्रतिविष।—कैमो, आर्स, कैम्फो, नक्स।

सदृश।—ऐसाफिट, कैस्टोर, मस्कस, वैलि, कास्टि, सिकेलि, मर्क, पोडो, साइलि, कैल्के-आर्स, नक्स, थिरिड, बैराई, बोवि, कोना, मैग-कार्ब, लाई, ऐसिड-नाई, फास, सल्फ, नेट्र-म्यूर, कैलि-कार्ब।

तुलनीय।—फास्फोरस, वेलेरि, ऐसाफि (मूर्च्छावायु); इग्नेसि (जरायुका आक्षेप); कास्टिकम (लगातार अकड़न); नेट्रम और पिकरिक-ऐसिड (लिङ्गोद्रेक, जलन); मर्क (यकृत); साइलि (पैर और माथेमें पसीना); जिङ्कम (स्नायविक अस्थिरता); नक्स, इग्ने (शब्दसे चैतन्याधिक्य), वैराइटा, मैग कार्ब (आर्त्तवमें विकार)।

शक्ति।—३रे दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—४० से ५० दिन।

मैग्नेशिया फास्फोरिका

(MAGNESIA PHOSPHORICA)

दूसरा नाम।—फास्फेट आफ मैग्नेशिया।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले विचूर्ण इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणकी अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हुआ है:—मूत्रनालीमें कैथिटर या शलाका प्रवेश करानेका दुष्परिणाम; ताण्डव; शूल; आक्षेप; खाँसी; ऐंठन; बाधक; दाँत निकलना; सर-दर्द; स्नायुशूल; मस्तिष्कावरक-झिल्ली-प्रदाह, दर्द-भरा ऋतु-स्राव; काँच निकलना या गुह्य-द्वारका भ्रंश; अपथ्यपथको अकड़न; गृध्रसी; पाकस्थलीका कैन्सर; स्नायुशूल; क्रुप-खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—डा० सुसलर कहते हैं:—मानव-शरीरमें लोहेका कण घटनेपर, जिस तरह अङ्ग-प्रत्यङ्ग शिथिल हो जाते हैं, उसी तरह मैग-फास कणका घटना या विकार होनेपर संकोचन, कसावटका भाव, अंगड़ाई या ऐंठनकी तरह दर्द आदि हो जाता है। इसीलिये, रोग-वाले अंशमें कसावटका भाव मिलो अकड़न इसका प्रधान लक्षण है। इसका

दर्द—तेज़ धारवाले अस्त्रसे काटने या बेधनेकी तरह अथवा शूलकी चोट या सलाई बेधनेकी तरह होता है; यह बिजलीकी लहरकी तरह तेजीसे पैदा होता है और इसी तरह गायब भी हो जाता है। क्षण भरमें गायब हो जानेवाला और चरम-सीमापर बढ़ जानेपर दर्द असह्य हो जाता है और रोगी पागलकी तरह उन्मत्त हो उठता है; तेजीसे स्थान बदलनेवाला, कसावटका भाव पैदा करनेवाला; पाकाशय और अन्त्राशय तथा वस्ति-गह्वरमें ग्रह या ऐंठनकी तरह दर्द पैदा करनेवाला होता है। क्या माथा, क्या कान, मुख-मण्डल, छाती, डिम्बाधार या उरुके पीछेवाले भागके स्नायु और शरीरके अंशोंके दाहिने पार्श्व पर इसका प्रधान आक्रमण होता है या शरीरके दाहिने ओर ही इसके लक्षण अधिक दिखाई देते हैं। डा० ऐलेन कहते हैं:—दुबला शरीर, शीर्ण देह और थोड़ेमें ही कातर हो जानेवाले या काले केश और काली आँखवाले मनुष्यके लिये यह विशेष उपयोगी है। जिन मनुष्योंको ठण्डी हवा बहुत ही अप्रिय लगती है, वे शरीर खोलनेसे बहुत डरते हैं; रोगवाली जगह छू जानेपर कातर हो पड़ते हैं; ठण्डे पानीसे नहाना या शरीर धोना एक महान विपत्ति मालूम होती है और उन्हें अपनी क्षीण देह हिलाते ही ऐसा मालूम होता है मानो माथेपर वज्राघात हो गया। वे हमेशा थके, क्लान्त और आलस्य भरे रहते हैं और उन्हें सीधे होकर या तनकर बैठनेमें बहुत तकलीफ़ मालूम होती है। ज्यादा देरतक ठण्डे पानीमें रहने या कीचड़में चलनेपर वे बीमार हो जाते हैं। दाँत निकलनेके समय बच्चोंको नाना प्रकारकी बीमारियाँ और धनुष्टंकार आदि अकड़न पैदा हो जाती है। विद्यालयकी छात्रियोंका सर-दर्द—दर्द माथेके पिछले भागसे आरम्भ होकर सामनेकी ओर फैल जाता है और चेहरा लाल हो जाता है। स्नायुशूल—दाहिनी ओरके आँखके गोलेके ऊपर या निचले स्थानका स्नायु-शूल। दाँतका दर्द—ठण्डी चीजें पीने या भोजनके बाद बढ़ जाता है। आँतोंका दर्द और आध्मानवाले रोगी दर्दसे सामनेकी ओर दोहरा जाते हैं। आर्त्तव—असमयमें ही आर्त्तव-स्राव, स्रावका रङ्ग काला और गाढ़ा गोंदकी तरह। स्नायविक उत्तेजनाकी वजहसे अनजानमें बिछावनमें पेशाब हो जाना। गर्भवती स्त्रियाँ और लेखक तथा बाँसुरी आदि बाजे बजानेवालोंके हाथ-पैर आदिमें ऐंठन वगैरह कई इस दवाके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। इसका दर्द आदि सभी सेंकने, दबाने या रगड़ने तथा सामनेकी ओर दोहरा जानेपर घट जाता है।

लक्षणावली

मन ।—चिड़चिड़ा ; हमेशा बीमारी प्रकट किया करता है ; अपनी तकलीफ़ोंके कारण हमेशा दुःखित चित्त रहता है, हिचकीके साथ ग्रह या ऐंठन। पढ़नेकी चेष्टा करते ही नींद आने लगती है। बहुत ही भुलक्कड़। पढ़ना आदि मानसिक परिश्रमसे विराग या अनासक्ति (ऐला, कैप्स, ऐसिड-कार्बोल, काना, कर्न्स-सार, लाई, ऐसिड-पिक, नक्स, सल्फ़, फास)। लगातार विमर्ष भाव (डा० क्लार्क कहते हैं कि दो-एक मात्रा मैग-फास सेवन करते ही सोचने और धारणा-शक्तिकी जड़ता दूर हो जाती है)।

मस्तक ।—सर-दर्द ; सरके पिछले भागसे आरम्भ होकर माथेमें चारों ओर फैल जाता है (सिङ्का, सैङ्गिविन) ; चेहरा लाल हो जाता है और तमतमा उठता है। मानसिक उद्वेग या उत्तेजना (काफि, जेल्स, लैके, ओपि, नक्स) ; मानसिक परिश्रम (ऐसिड-पिक, अरम, ग्लान, नेट्रम-कार्ब, फास) या बहुत पढ़ने (जिङ्कम) की वजहसे पैदा हुआ ; बढ़ना—दिनके १० से ११ बजेतक या ४ से ५ बजेतक ; मलने या गर्म प्रयोगसे घटना। विद्यालयके बालक और बालिकाओंका सर-दर्द (जोरसे पढ़नेवालोंका सर-दर्द—ऐक्टिया, कैल्के-फास, कैलि-फास, नक्स-वोम, पल्स, सिलि, सल्फ)। सरके पिछले भागमें दर्द—एकाएक पैदा होनेवाला—क्रमसे समूचे माथेमें फैल जाता है। रह-रहकर बिजलीकी लहरकी तरह चिलक मारने जैसा दर्द सरमें उठता है, जोरसे रगड़ने, विश्राम और अन्धेरेमें रहनेसे घटना। कनपटी या मूर्द्धादेशमें और सरके पिछले भागमें भार मालूम होता है, दर्द खानेपर बढ़ता है। रूसी अधिक होना—बड़ी, सफ़ेद रङ्गकी चिकनी रूसियाँ सब दिनमें बहुत बार और केश झाड़नेपर बहुत-बहुत-सी निकलती हैं।

आँख ।—पढ़नेकी चेष्टा करनेपर आँखके सामने काले-काले बिन्दु उड़ते दिखाई देते हैं (पढ़ने बाद—काक्यु ; पढ़नेके बाद बढ़ना—कुरारि)। स्नायुशूल—चक्षु-गोलकके ऊपर या आँखके गालेमें क्षणभरके लिये होनेवाला, शूल बेधने या बिजलीकी लहरकी तरह तेज़ दर्द ; दाहिने पार्श्वमें दर्द अधिक होना, रोगवाली जगहपर स्पर्श-कातरता मालूम होना ; घटना—गर्मी लगनेपर, अधिक आँसू बहनेके साथ (दाहिने पार्श्वका—ऐसिड-कार्ब, कोलो, कैल्मिया ;

बाएँ पार्श्वका—स्पाइजि, लैके, म्यूर)। पलकका फड़कना (ऐगार, फाइजस, साइक्यूट, लिखने पढ़नेकी चेष्टा करते ही—कॉडिइन)। पलकोंका फड़कना (ऐगार, फाइजस); टेढ़ा पुतली या डेरा देखना (बेल, साइक्यूट, सिना, जेल्स, हायो, स्पाइजि, जिङ्क)। पलकोंका असम्पूर्ण पक्षाघात—दाहिने पार्श्वका (फास, मर्क-प्रोटो)। दर्शन-स्नायुके अवसादकी वजहसे अस्पष्ट दृष्टि।

मुखमण्डल।—चेहरेका स्नायुशूल—आँखके गोलेके ऊपर और नीचेवाले प्रदेशमें दाहिनी ओरका स्नायुशूल; यह दर्द क्षण भर रहकर अच्छा हो जाता है और शूल बेधने या छेदनेकी तरह और बिजलीकी लहरकी तरह क्षणभरके लिये होनेवाला तथा तीखा होता है; छूने या दबानेसे बढ़ना; बाहरी उत्तापके प्रयोगसे घटना। दाहिने कानके पीछे तेज और क्षणभरमें गायब हो जानेवाला दर्द, ठण्डी हवा लगने या ठण्डे पानीसे मुँह धोनेपर बहुत बढ़ जाता है। ऊपरी हनु और मसूढ़ेके दाहिने पार्श्वका स्नायुशूल, दिनके ४ बजेसे बहुत ही प्रचण्ड भाव धारण कर लेता है और जबतक बिछावनकी गर्मीसे देह गर्म नहीं हो जाती तबतक बराबर हुआ करता है; दर्द तेज, बिजलीकी लहरकी तरह क्षणभरके लिये होनेवाला और फिर अच्छा हो जानेवाला, शीत लगनेपर दर्द बढ़ना और उत्तापसे घट जाया करता है; चेहरा फूल जाता है, मानो मधुमक्खीने काट लिया है (ऐपिस, वेस्पा)। ठण्डे पानीसे नहाने या खड़े होनेकी वजहसे स्नायुशूल।

मुख-विवर।—दाँतमें दर्द; रातमें सोनेपर, तेजीसे जगह बदलनेवाला; ठण्डी चीजें खाने-पीनेपर बढ़ना (ठण्डी चीज पीनेपर—ऐण्टि-क्रूड, स्टैफाई, ठण्डी चीज छू जानेपर घटना—ब्राई, काफि, फास); घटना—सेंकनेसे छूनेसे (लाई, रास)। दाँत निकलते हुए बच्चोंकी कितनी ही बीमारियाँ; ज्वरके बिना ही अकड़न (कूप्रम, कैलि-ब्रोम, प्रत्येक दाँत निकलनेके समय—स्टैन, ज्वर और माथेमें अधिक रक्त-संचय वर्त्तमान रहनेपर—बेल, मिलिलोट; बच्चा अपनी मुट्ठीको दाँतसे काटता है, बेचैनी प्रकट करता है और रोया करता है—ऐकोन), जीभ साधारणतः निर्मल, पर पाकस्थलीमें दर्द होता है; जीभ धमकीले लाल रंगकी और मुँहकी त्वचा क्षय हुई-सी मालूम होना; मलके पतलापन रोगमें जीभपर सफेद लेप चढ़ा मालूम होता है, या उसके बाएँ पार्श्वमें स्पर्श सहन नहीं होता, जख्मकी तरह मालूम होता है, कोई चीज

खानेके समय बहुत दर्द मालूम होता है और जलन हुआ करती है ; ऐसा मालूम होता है, मानो झुलस गया है। मुँहका स्वाद बहुत कड़वा, ऐसा मालम होता है कि मुख-विवरकी त्वचा मानो क्षय हो गयी है। सामान्य नरम चीज भी मुँहमें लेनेपर बहुत गर्म मालूम होती और जलन हुआ करती है। मुख-विवर जखमसे भरा (क्लोरम, हाइड्रैस्ट, मार्क-कोर, नैट्र-मूर, फास) खानेमें बहुत तकलीफ़ होती है (ऐसिड-क्रोम, ऐल्यू, लिसिन); गालका भीतरी भाग, मसूढ़ा (बायाँ), ओंठ और जीभके ऊपरके जखम सब लाल मालूम होते हैं, उसे छूनेपर या उसमें खानेके पदार्थके कण लगनेपर जलन और उत्तेजना अनुभूत होती है (सिनैपिस)। अन्नशूल रोगमें कोई भी चीज अच्छी नहीं मालम होती ; काफीका कोई स्वाद नहीं मिलता, पेट भारी मालूम होता है और वायु निकला करता है। रातमें नींद खुलनेपर मुँहका स्वाद खट्टा हो जाता है (सिपि)। ऐसा मालूम होता है, मानो मुँह झुलस गया है या मानो कड़ा गर्म चुरुट पी रहा था (एपिस, बेल, आइरिस, मैग-मूर)। दोनों ओठोंका संयोगस्थान फट जाता है (ग्रैफ, नैट्र-मूर, काण्डियुरैंगो)।

पाकस्थली।—काफीसे अरुचि, भूख अधिक रहती है, पर मुँहमें कुछ भी अच्छा नहीं लगता (हेलिबो, पल्स)। प्रचण्ड हिचकी (इग्ने, मस्कस, नक्स-मस, निकोल), मिनिटमें ३० बार, जीवनसे संशय पैदा हो जाता है। सन्ध्याके बाद भोजनके २ घण्टे बाद जलन पैदा करनेवाली स्वाद-हीन डकार—शारीरिक परिश्रम करनेपर बढ़ना ; कुछ खानेपर, गर्म पानी पीनेपर घटना। अजीर्ण पदार्थोंका स्वाद-मिली डकारके साथ वह कै हो जाता है। जीभ निर्मल पर पाकस्थलीमें आक्षेपिक संकोचन मालम होता है और ऐसा मालूम होता है, मानो चारों ओरसे खूब कसा हुआ है। पाकाशयका शूलका दर्द, बहुत ज्यादा आध्मान वायु इकट्ठा होनेकी वजहसे पाकस्थली बहुत फूल जाती है और खब कसावटका भाव पैदा करनेवाला दर्द होता है ; सेंकने और सामनेकी ओर झुकनेपर घटना। जरा भी ठण्डा पानी पीनेसे ही पाकस्थलीमें शूलका दर्द पैदा हो जाता है और वह उदरकी ओर फैल जाता है और बहुत तेज दर्द पैदा कर देता है ; सामनेकी ओर टेढ़े होनेपर इधर-उधर चलनेपर, विश्रामसे और वायु निकलनेपर घटता है।

अन्त्राशय।—पेटमें दर्दकी वजहसे रोगी बेचैन हो पड़ता है, तेजीसे इधर-उधर चला करता है और ऐसे उपाय खोजता है, जिससे जल्दी अच्छा हो जाये; पेट दबाकर सोनेपर क्षणभरके लिये घट जाता है, पर फिर दर्द ज्यादा हो जानेकी वजहसे रोगी इधर-उधर टहलने लगता है। आध्मानकी अधिकताकी वजहसे आँतका शूल; रोगीको वाध्य होकर सामनेकी ओर टेढ़ा हो जाना पड़ता है। सेंकने और जोरसे रगड़नेपर घटना (कोलो, प्लम, कोलोसिन्थके प्रयोगसे घटना)। शूलका दर्द,—साधारणतः नाभि-प्रदेशमें चारों ओर फैल जाता है। सामनेकी ओर झुकनेपर या हाथसे दबानेपर आराम मालूम है, इसके साथ ही प्रायः पानीकी तरह पाखाना हुआ करता है। कोष्ठाश्रित-वायु। उदरमें मरोड़का दर्द (कार्बोन-सल्फ, क्यप्र-ऐसेट, डायस्को, मैग-म्यूर, स्पञ्जि); दर्द नाभीके चारों ओर ऊपर पाकाशयकी ओर चला जाता है, इसके बाद दोनों पार्श्वकी ओर फैलता हुआ पीठमें चला जाता है; कभी-कभी भयानक अस्त्राघातकी तरह दर्दकी वजहसे रोगी चिल्ला उठता है, और कभी शूल बेधने या सङ्कोचनकी तरह दर्दके कारण रोगी बेचैन हो पड़ता है, चित होकर और हाथ-पैर फैलाकर सो नहीं सकता; इसीलिये टेढ़ा होकर सोया करता है। दाहिने पुट्ठेके स्थानपरके छिद्रमें छेदनेकी तरह दर्द, मानो आँत उतर पड़ेगी (गुयायेक, गुयारी, लाई, नक्स)। ऐसा मालूम होना मानो पेट फूलकर सांस रुक रही है; बैठनेपर बढ़ना, चलनेपर घटना। उदरमें वायु की अधिकता; चलनेके समय बहुत वायु निकला करता है, संध्याके बाद भोजन करनेपर बढ़ना।

मलान्त्र और मल।—आम-रक्त—ऐंठनकी तरह दर्द; दबाने या सामनेकी ओर झुकनेपर घटता है, इसके साथ ही आक्षेपिक मूत्र-रोध; अर्शमें काटने, शूल-बेधने या बिजलीकी लहरकी तरह तेज़ दर्द। दर्दकी अधिकतासे बेहोशीतक आ जाती है। बच्चोंकी कब्जियत (ब्राई, ओपि, जिङ्क; दाँत निकलनेके समय—मैग-म्यूर), प्रत्येक बार पाखाना होनेके समय आक्षेपिक दर्दकी वजहसे बच्चे तीव्र स्वरसे विकट चिल्कार कर उठते हैं, पेट बहुत गड़गड़ाता है या बोला करता है और आध्मानकी वजहसे अन्त्रशूल पैदा हो जाता है। वात रोगियोंकी पुरानी कब्जियत।

पेशाब।—मूत्रस्थली या मूत्रस्थली-ग्रीवाका सिकुड़ना, फैलना आदि आक्षेप (कैन्थ, आर्नि, कैलि-ब्रोम); आक्षेपिक मूत्ररोध (चिनिन-आर्स, नक्स,

टेरिब) और आमाशय (प्रमेह रोगमें—टेरिब ; रुके हुए प्रमेह स्रावमें—नक्स), अनजानमें शय्यामें पेशाब, रातमें स्नायविक उत्तेजनासे रहित या मूत्रनालीमें शलाका डालनेपर शय्यामें पेशाब कर देना। शलाका डालनेपर मूत्रस्थलीका स्नायु-शूल ऐसा मालूम होता है मानो शलाका निकालने बाद फिर मूत्रस्थली संकुचित न हुई। शलाका प्रवेश करानेकी वजहसे मूत्रनाली या रेतोरज्जु में—और चोट लगनेकी वजहसे (क्लिमेट)। मूत्र-पथरी निकलना (ऐ-बेंञ्जो, चिमैफि-अम्ब, कोचलि, लिथि-कार्ब, लाइ ; रक्तमूत्रके साथ—लाइ ; बच्चोंका—सार्सा ; कमरमें दर्दके साथ—इपोम)। पेशाबके पहले मूत्रस्थलीमें छेदनेकी तरह दर्द (कैल्के-फास ; जलन—आफू, रियूम)। पेशाबमें वेगकी वजहसे नींदमें व्याघात (चिमैफि-अम्ब)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तव, असमयमें ही हो जाता है ; स्राव काली आभा लिये (कैमो, कैलि-बाई, मैग-कार्ब, ओलि-ऐन, प्लैट, पल्स, सिकेलि) ; जमा हुआ गोंदकी तरह (क्रोक, लैक-कैन, जैन्थक्स)। शूल-वेदना, स्राव आरम्भ होनेके पहले बढ़ता है और स्राव आरम्भ होनेपर घटता है (सिरियम-आक्स, लैके, जिङ्क)। दर्द शूल बेधनेकी तरह या बेधनेवाला, बिजलीकी सलाईकी तरह, दाहिनी ओर दर्द अधिक होता है और गर्म प्रयोगसे या छूनेपर और सामनेकी ओर देह टेढ़ी करनेपर घट जाया करता है (कोलोसिन्थ)। योनि-मार्गका संकोचन, इसीलिये संगम प्रायः नहीं हो सकता (ऐको, कैक्ट, फेरम-फास, इग्ने, लाइ)।

श्वासयंत्र।— खाँसी सूखी, आक्षेपिक और प्रचण्ड लगातार बोलनेका समय ही नहीं मिलता (कास्टि, लोबेल-इन, रियुमेक्स) ; चेहरा जवाके फूलकी तरह लाल हो उठता है ; दुर्दमनीय खाँसी—रोगिनीको ऐसा मालूम होता है कि उसकी सांस रुक जायगी, खाँसीके साथ ओकाई आया करती है ; वृद्धि—गर्म घरमें (ब्राई, कूप्रम, डालका, लाइ, मिडोरिन, नैट्र-कार्ब पल्स, स्पञ्जि ; धूपमें बढ़ना—ऐण्टि-क्रूड) ; घटना—निर्मल वायु सेवन करनेपर या छू जानेपर (ऐसिड-सल्फ, डालका)। गर्म घरमें प्रवेश करते ही लम्बी सांस लेनेकी आकांक्षा ; घरमें कुछ देरतक रहनेके बाद फिर यह भाव नहीं रहता। आक्षेपिक या क्रुप-खाँसी, रोगीको सोनेमें बहुत तकलीफ होती है (ऐकोन)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—दाहिने अङ्गमें दर्द अधिक रहता है (बेल, ब्राई, ऐगार, कास्टि, चेलिडो, कैलि-कार्ब कैलि-नाई, लाई, पोडो, स्ट्रान)। ठण्डी हवा लगनेसे और देह खुली रहनेसे बहुत भय ; कोई रोगवाली जगहपर हाथ न रख दे या ठण्डे पानीसे नहाने आदिसे या शरीर हिलानेसे भी खूब डरता है। हमेशा आलस्य, सुस्ती और थकन मालूम होती है, सीधा होकर बैठ नहीं सकता, ठण्डा पानी या कीचड़ आदि व्यवहार करनेकी वजहसे बीमारियाँ। गर्भवती स्त्रियोंके हाथ-पैरमें ऐंठन होती है (बाइवर्न ; जाड़ा मालूम होनेके साथ—वेरेट) ; लेखकों (ब्राकिग्लाट-रेप, स्टैन) और बेहला तथा हार्मोनियम आदि बजानेवालोंके हाथकी ऐंठन (ऐक्टि-रेस, ऐगार, रैनान-बल्बो)। बाएँ हाथकी कोहनीसे हाथतक, विशेषकर कलाईसे अंगुलीकी सन्धितक वातका दर्द। दाहिनी स्कन्ध-सन्धिसे बाँहतक वातका दर्द ; उत्तापके प्रयोगसे घटना और हिलानेपर बढ़ना ; सोनेपर दर्द पैदा होकर नींदमें गड़बड़ी पैदा कर देता है ; रातभर दर्द भोगनेके बाद सवेरे जरा इधर-उधर घूमनेपर आराम हो जाता है। दाहिने उरुके पीछेवाले भागका स्नायुशूल—बिजलीकी लहरकी तरह पैदा होनेवाला और तेज़ दर्द ; सेंकनेसे घटना (कोलोसिन्थ, लाई)। बाएँ गुल्फके नीचेवाले स्थानमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द। सोनेपर दोनों पैरोंमें आरम्भ हो जाता है ; गट्ठेमें जलन, डङ्क मारनेकी तरह दर्द, उत्तेजना या करकराना और अस्त्रकी चोटकी तरह यन्त्रणा (नेट्र-मूर, पेट्रोल, रैनान, टिली)। ज्वर-रहित धनुष्टङ्कारकी तरह आक्षेप। अनजानमें हाथ काँपना। पेशियोंका फड़कना। कम्पके साथ पक्षाघात (बूरफो, जेलिस, कैलि-ब्रोम, टैबाक)।

निद्रा ।—निद्राका आवेश होते ही चौंक उठता है, मानो बिजली छू जानेकी वजहसे, इसके बाद फिर सोता है। पढ़ना आरम्भ करते ही औंघाई आने लगती है (कार्बो-वे, कोलचि), प्रचण्ड आक्षेपिक जम्हाई आना, दोनों हनुकी हड्डी अलग हो जानेका उपक्रम (इग्ने, प्लैट)। नाना प्रकारके सपने देखनेकी वजहसे नींदमें व्याघात होता है ; सोनेके बाद उसे विश्वास रहता है, कि कोई घरमें है।

वृद्धि ।—शीतल वायुका प्रबल प्रवाह लगनेपर, ठण्डे पानीमें खड़े रहनेपर, स्नान करने या शरीर धोनेपर, शरीर हिलाने और रोगवाली जगह

छूनेपर, रातमें चित होकर हाथ-पैर आदि फैलाकर सोनेपर और खानेके समय दाहिने अङ्ग या पार्श्वमें।

घटना।—गर्मी लगनेपर, शय्याके उत्तापसे, दबाने या जोरसे रगड़नेपर, सामनेकी ओर देह टेढ़ी करनेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—बेल, जेल्सि, लैके।

तुलनीय।—कैमोमिला (सेंकनेसे बढ़ना); पल्स (घूमनेवाला दर्द); आर्स (रातमें स्नायु-शूल); पल्स, कोलोफा, सिमिसि, कोलोसि (बाधकमें); लाइकोप (पेट गड़गड़ाना); नेट्रम-साइलि (सर-दर्द); जेल्स (दो देखना); कैल्के (पानीमें खड़े होनेपर स्नायु-शूल); बेलेडोना (दाँत निकलनेके समय आक्षेप)।

सदृश।—बेल, कोलोफि, कोलो, लाइ, लैक-कैन, पल्स, कैमो, जिङ्क, सिरियम-आक्सैल। वाधक रोगमें—ऐकि, कोलो, कैक्ट, कोलो-फिल्ल, लिलि-टाइग्रि वगैरह इसके सदृश हैं। गर्भावस्थामें हाथ-पैरोंमें ऐंठन (वाइवर्नम)।

शक्ति।—१म दशमिकसे ३० शततमिक क्रम। २०० और १००० शततमिक भी कितनी ही बार उत्तम कार्य करते हैं। डा० ऐलेन वगैरह कोई-कोई कहते हैं कि कहीं-कहीं गर्म पानीमें मैग्नेशिया-फासके प्रयोगसे बहुत लाभ होता है। आक्षेपिक या हूप खाँसीमें विशेष लाभदायक है।

मैग्नेशिया सल्फ्यूरिका

(MAGNESIA SULPHURICA)

दूसरा नाम।—एपसम् साल्ट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—खाँसी; बहुमूत्र; अतिसार; रक्तामाशय; वाधक; अनजानमें पेशाब; आँखमें दर्द; आँत उतरना; दो आर्त्तवोंके बीचके समयमें रक्त-स्राव; श्वेत-प्रदर;

कटिवात ; रजसाधिक्य (बहुत अधिक ऋतु-स्राव होना) ; स्नायुशूल ; दाँतका दर्द ; मस्से ।

उपयोगिता और आभास ।—इसका व्यवहार प्रदर और बहुमूत्र रोगमें प्रसिद्ध है । पेशाब ज्यादा होनेके साथ-ही-साथ बार-बार प्यास होना और ज्यादा मात्रामें पानी पीना—यह लक्षण मौजूद रहनेपर बहुमूत्र रोगमें यह बहुत लाभदायक है । इसका प्रधान निर्णायक लक्षण है—“बहुत प्यास रहना ।” बहुमूत्रमें प्यास अधिक रहना, उदरामय रोगमें बहुत प्यास और बहुत बोखार और ज्वर रोगमें शीतावस्थाके समय और बाद बहुत प्यास रहना । शरीरमें बहुत सुस्ती भी इसका एक प्रधान उपसर्ग है । इसके अलावा रोना स्वभाव, बहुत अस्वाच्छन्द्य मालम होना, चेहरेमें अस्थिगत दर्द, छूनेका काम और ठण्डी हवा सेवन करनेके बाद घरमें घुसनेपर या भोजनके साथ स्पर्श हो जानेपर दाँतका दर्द बढ़ जाता है ; सोनेके बाद रगड़ने और चलनेपर लक्षण आदिका घटना प्रभृति इसका प्रकृतिगत लक्षण है । चर्म-रोग विशेषमें भी इससे फायदा दिखाई दिया करता है ; समूची देह छोटे-छोटे और बहुत खुजलानेवाले दानोंसे भर जाती है ; मस्से और उद्भेदमें भी यह खास-खास स्थानपर लाभदायक है । खायी हुई चीज़ वमनके साथ गर्मीके दिनोंके अतिसारपर भी इसकी क्रिया होती है ; मल बहुत ज्यादा, पीली आभा लिये, कीचकी तरह और बदबूदार इसका निर्देशक लक्षण है ।

लक्षणावली

मन ।—प्रसन्न चित्त (ऐङ्गस, काफि, ओपि) : वर्त्तमान अवस्थासे सन्तुष्ट (कैप्स, साइक्लूम) : विषन्न और रोदन-परायण ; सशंक भाव, मानो महान विपत्ति आया ही चाहती है (नेट्र-मूर) ; विकृत कल्पना, अनुपस्थित व्यक्तिको देखता है (ब्राई, हायो) ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना ; सवेरे ऐसा मालूम होता है, मानो सामनेकी ओर गिर जायगा या सामनेकी ओर गिर जानेकी सम्भावना होती है (ग्रैफ, नेट्र-मूर, पोडो, सिलि) और मध्याह्न भोजनके बाद (सेलिन) ; माथेमें भार मालम होता है और आँख आप-से-आप बन्द हो जाती है । माथेमें जड़ता मालूम होती है, मानो एक बड़े चिमटेसे माथा दबाया जा रहा है (इग्न्, पल्स, कैल्क) । सरमें दबाव और उत्ताप मालम होना और चेहरा

लाल हो उठता है ; नाकसे खूनका स्राव होनेपर घटना (बूफो, फेरम-फास, मिलिलोट ; नाकसे स्राव होनेपर सरका दर्द घटना—हैमा, मिलिलोट, पेट्रोल) ; माथा झुकानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ सरके भीतरसे सामनेकी ओर कुछ गिर जाना चाहता है। प्रत्येक बार शरीर हिलानेपर सरमें कुछ देरतक तरङ्ग उठनेकी तरह मालूम होता है और माथेमें कम्पन मालूम हुआ करता है।

मुँह और गलेके भीतर।—भूरे रङ्गका चेहरा। दाहिने पार्श्व-वाली या बाईं गण्डास्थिमें छेदनेकी तरह दर्द। दाँतमें दर्द—प्रायः सन्ध्याके समय टहलकर आनेपर और ठण्डी या गर्म भोजनकी चीज़ लगनेपर (कोलचि) आरम्भ हो जाता है और सोनेपर घटता है। गलेका जखम—रातमें शूल बेधनेकी तरह दर्द, निगलनेके समय बढ़ जाता है।

पाकस्थली।—अरुचि और सभी पदार्थोंसे घृणा, यहाँतक कि भोजनके पदार्थोंकी याद आते ही मनमें घृणा पैदा हो जाता है (ऐन, सिङ्को, जिङ्क)। बार-बार सड़ी गन्ध-भरी खाली डकार ; सड़े अण्डेकी तरह स्वाद (ऐगार, डायस्को, मैग-मूर, सोरिन, सिपि, सल्फ)। मुँहमें बार-बार कड़वा स्वाद-भरा पानी भर आता है।

अन्त्राशय आदि।—बाईं कोख या कुक्षि-प्रदेशमें अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द, विशेषकर बैठनेके समय या सन्ध्याके समय और भोजनके पहले और बाद थोड़ा-सा भी कुछ खानेपर पेट फूल जाता है और कड़ा मालूम होता है (कैलि-कार्ब)। पुट्ठेवाले स्थानपर भीतरसे बहुत दबाव मालूम होता है, मानो यह अंश फट जायगा, खासकर शरीर फैलानेपर बढ़ जाता है। वायु निकलनेके साथ पेटमें गड़गड़ाहट। बच्चोंके अम्ल रोगके साथ पतला पाखाना हुआ करता है, पाखाना होनेके पहले पेट गड़गड़ाना। बहुत तेज़ प्यासके साथ पतला पाखाना होना (ऐ-ऐसिट, ब्राई, नेट्र-मूर)। वमनके साथ ग्रीष्मातिसार—बहुत ज्यादा लसदार और बहुत बदबूदार पाखाना होना।

पेशाब।—पेशाब करनेके बाद मूत्रनलीमें जलन और सूक्ष्म शलाका बेधनेकी तरह दर्द (बार्बा, आर्नि, कैलि-बाई); पेशाब होता-होता रुक जाता है और बूंद-बूंद गिरा करता है (ऐगार, कोना, कास्टि, ऐसि-फास, मिडार)। जो पेशाब सबेरे होता है, वह परिमाणमें अधिक रहता है और उसका रङ्ग

पीला चमकीला रहता है (सोनेकी तरह—ऐसिड-कार्बोल, काउंगस-मेरियेनस, सिफिलिन), जल्दी मैला और गदला हो जाता है और नीचे बहुत-सी लाल तली जमती है (ऐमोन-कार्ब, ग्लोन, कैलि-कार्ब, नेट्र-सल्फ, सेलिन, सिपि)। पेशाब करनेके समय पेशाब हरा और स्वच्छ तथा बहुत ज्यादा परिमाणमें होता है। बहुत प्यासके साथ बहुमूत्र (ऐसिड-फास, ऐसिड-लैक, कुरारी, लैक-डिफ्लो, आर्स-ब्रोम)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तव ; चौदह दिनके बाद ही फिर ऋतु-स्राव होने लगता है (नक्स-वोम ; प्रत्येक दससे चौदह दिनका अन्तर देकर—दुग्वे); गाढ़ा स्राव (कैक्ट, काक्यु, लिलियम, प्लैट, पल्स); काले रङ्गका (साइक्ला, कैलि-नाई, लैके, मैग-मूर, प्लैट, पल्स, सिकेलि) और बहुत ज्यादा (ऐपासिन, आर्स, ब्राई, कैल्के, कास्टि, फेर, मिलिफो, मूरेक्स, नेट्रम-मूर, नक्स-मस, पल्स, रास, सैबु, सिफि, सिनोसियो)। असमयमें आर्त्तव-स्राव और बीच-बीचमें बन्द रहकर फिर पैदा हो जाता है (कैमो, पल्स, क्रियो, वाइबर्न)। प्रदर,—स्राव गाढ़ा और परिमाणमें रजःस्रावकी तरह ; शरीर हिलानेपर कमर और दोनों ऊरुमें सुस्ती और दर्द मालूम होता है। दो ऋतुओंके बीचके समयमें योनिसे थोड़े परिमाणमें खूनका स्राव (फास)।

श्वास-यंत्र।—कण्ठस्वर बहुत जकड़ा हुआ और भारी (स्वर भंग) मानो छाती श्लेष्मासे भरपूर भरी हुई है, घड़घड़ खाँसी और स्वरनालीसे पाकस्थलीतक जलन (ऐसिड-टार्ट)। संध्याके बाद शायित अवस्थामें खाँसता-खाँसता रंगा सा जाता है। सवेरे नींद खुलनेपर सूखी और शरीरको हिला देनेवाली खाँसी ; रोगीको बाध्य होकर उठ बैठना पड़ता है (ब्राई—रोगी अपने अनजानमें उठ बैठता है); खाँस के समय वक्षमें तेज़ जलन और ऐसा मालूम होता है मानो फेफड़ा फटकर टुकड़े-टुकड़े निकल पड़ेगा (वक्षमें जलन—ब्यूफो, आयोड, स्पञ्जि)। चलनेके समय वक्षमें जलन और दबाव मालूम होना।

प्रत्यङ्ग आदि।—दोनों पृष्ठ-फलकोंके मध्यके स्थानमें दर्द और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह मालूम होना (ऐसिड-सल्फ) और इस स्थानपर एक मुट्ठी भरका मांस-पिण्ड लगा हुआ रहनेकी तरह मालूम होना और इसी वजहसे रोगिनी चित होकर या करवट बदलकर सो नहीं सकती (ग्लान,

मैग-मूर ; केवल चित्त या एक करवट ही सोया जा सकता है, यकृत रोगमें); रगड़नेपर घटना। नितम्ब-देशमें प्रचण्ड दर्द—मानो जोरकी चोट लग गयी है या मानो ऋतु होनेका पूर्व लक्षण है (वाइवर्न)। सवेरे नींद खुलनेपर पीठमें प्रबल रगड़की तरह दर्द। सवेरे नींद खुलनेपर या लेटी हुई अवस्थामें बायीं बाँह और पैर सुन्न मालूम होते हैं। अंगुलियोंमें चुनचुनी हुआ करती है ; रगड़नेपर घटना। समूची देहमें बहुत आलस्य, मैलापन और दर्द, कम्पन तथा दोनों पैरोंका दुबलापन।

त्वचा।—समूची देह छोटी-छोटी फुन्सियोंसे भरी रहती है—ये सब फुन्सियाँ बहुत खुजली पैदा कर देती हैं। अकौता वगैरह रोगोंका दब जाना (ऐम्ब्रा, डालका, सोरिन, सल्फ)। बाएँ हाथकी अंगुलीके अगले भागमें सुरसुरी मालूम होना (रास, फास); रगड़नेपर (कल्के, कैन्थ, प्लम, साइक्ले, गुयायेक)।

निद्रा।—माथेमें, उदरमें और कमरमें प्रचण्ड दर्दकी वजहसे रातमें नींद न आना। इसी दर्दकी वजहसे रोगी चित सो नहीं सकता।

शीत, उत्ताप और पसीना।—सवेरे ८ बजेसे १० बजेके भीतर शीतका आविर्भाव (इयुपेट, रास), पीठमें सिहरावन, शरीरके एक अंशमें उत्ताप और दूसरे अंशमें शीत मालूम होना, इसके साथ ही प्यास। सन्ध्याके ८ बजनेके समय कम्पके साथ शीत पैदा हो जाना ; शय्याके उत्तापसे जाड़ा चला जाता है और प्यास मालम होने लगती है, माथा गर्म और शरीरका बाकी अंश ठण्डा (हेलिबो)। शय्यामें उठ बैठनेपर उत्ताप, सरमें चक्कर आता है, माथेमें पसीना होता है और चेहरा लाल हो जाता है (बैठनेकी अवस्थामें उत्तापका बढ़ना—कैलि-बाई)।

वृद्धि।—ठण्डी जगहसे गर्म घरमें प्रवेश करनेपर, निगलने और दाँतमें खानेका पदार्थ लगनेपर।

उपशम।—रगड़ने, शय्यामें सोने और टहलनेपर।

सम्बन्ध।—**सदृश।**—ऐकिया-रे, हिप, इग्ने, नेट्र-सल्फ, लैक-डिफ्लो, पल्स।

तुलनीय ।—सब तरहका मैग्नेशिया। बहुमूत्रमें—नैट्रम-सल्फ। विषादमें—पल्स। निगलनेमें तकलीफ़—इग्नेशिया। डकारमें—हिपर। उत्कण्ठामें—लाइकोप।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे ६ठा दशमिक क्रम।

मैग्नेटिस पोलि-एम्बो

(MAGNETIS POLI-AMBO)

दूसरा नाम ।—चुम्बक।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—दूधकी चीनी या चुआये हुए पानीमें चुम्बक-शक्ति प्रवाहितकर विचूर्ण या तरल आकारमें क्रम तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—सारे शरीरमें जलन और अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द, ऐसा तेज़ दर्द मानो सन्धियाँ सब टूट गयी हैं। गोली लगनेकी तरह या झटका लगनेकी तरह दर्द और माथेमें नख गड़नेकी तरह दर्द लक्षणमें, **वात-रोगमें** और पुराने जख्मसे रक्तस्राव होनेकी सम्भावनाके लक्षणमें विशेष लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—मैग्ने-आर्कटि, मैग्ने-आष्टि, फेरम, मैग्ने, मैङ्गेनिस-आक्सि।

दोषघ्न ।—इग्ने, इलेक्ट्रो, जिङ्क।

शक्ति ।—६ दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

मैग्नेटिस-पोलस-आर्कटिकम

(MAGNETIS POLUS ARCTICUM)

दूसरा नाम ।—चुम्बकका नार्थ-पोल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—दूधकी चीनी और चुआये हुए पानीमें चुम्बक-शक्ति प्रवाहितकर विचूर्ण या तरल आकारमें मूल औषध तैयार किया जाता है।

उपयोगिता और आभास ।—अच्छी तरह नींद न आना, सपनेमें घूमना, ग्रीवा-देशीय मेरुदण्डको अस्थि-समूहोंमें कड़कड़ शब्द और जाड़ा मालूम होना और दांतमें दर्द वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—इपिकाक, बेराइटा-कार्ब, कैमो, क्रूप्रम, फेरम।

दोषघ्न ।—मैग्ने-पोलस, आस्ट्रै ; इग्ने, जिङ्क।

शक्ति ।—६ शततमिकसे ३० शततमिक।

मैग्नेटिस-पोलस-आस्ट्रेलिस

(MAGNETIS POLUS-AUSTRALIS)

दूसरा नाम ।—चुम्बकका साउथ-पोल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—साउथ-पोलकी द्वारा प्रवाहितकर विचूर्ण या तरल आकारमें मूल औषध तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—पलकोंका सूखापन, सहजमें घुटनेकी हड्डोका खिसक जाना, पैरका नालून बढ़कर मांसके भीतर घुस जाना, पेटेला अस्थिका दर्द और पैरके तलवेमें दर्द वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—कैल्सि, ग्रैफाइटिस, साइलि, नाइट्रि-ऐसि, मैग्नोर्टिस।

दोषघ्न ।—मैग्ने-पोलस-आर्कटि, इग्ने, जिङ्क।

शक्ति ।—६ दशमिकसे १२ शततमिक।

मैग्नोलिया ग्लोका

(MAGNOLIA GLAUCA)

दूसरा नाम ।—स्वोट मैग्नोलिया ; स्वोट बे।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फूलसे अरिष्ट आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—वक्षदेशमें संकोचन मालूम होना और श्वास-प्रश्वासमें कष्ट लक्षणमें दमा रोगमें इसका व्यवहार होता है।

दुर्दमनीय मूर्च्छाभाव लक्षणमें भी इसका व्यवहार होता है।

शक्ति।—मूल अरिष्ट और निम्न-शक्ति।

मैग्नोलिया ग्रैण्डिफ्लोरा

(MAGNOLIA GRANDIFLORA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसके फूलसे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—धमनीका अर्बुद; हृत्पिण्डकी बीमारी; वात; सरमें चक्कर आना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—नाना प्रकारका सन्धिवात और हृत्पिण्डकी बीमारीमें यह विशेष लाभदायक है। इसका दर्द तेजीसे जगह बदला करता है या शरीरके दो निर्दिष्ट अंशों या यन्त्रोंपर पर्यायक्रमसे प्रकट हुआ करता है, यहाँतक कि प्लीहा और हृत्पिण्डमें भी, किन्तु वक्ष एवं हृत्पिण्डके ऊपर ही इसकी अधिकांश शक्तिका परिचय मिलता है। वक्षास्थि या कण्ठास्थिमें वातकी वजहसे दर्द, हृत्पिण्डमें पर्यायक्रमसे ऐंठनकी तरह और किसी अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द मालूम होता है, कण्ठनालीमें श्वास-रोध करनेवाला कसावटका भाव और हृत्पिण्डमें दर्द, धमनीकी जड़की सूजन या धमनी-मूलका अर्बुद। हृत्शूल और बाएँ बाँहकी वात-व्याधि वगैरह कई इस दवाके प्रधान क्रियाफल हैं।

लक्षणावली

मन।—सशंकित भाव; रोगी डरता है, कि उसकी मृत्यु हो जायगी (कैनाब-इन, लोबेल-इन और बुद्धिमें गड़बड़ी हो जायगी—प्लैट)। सामान्य कारणसे ही डरने लगता है। आँखमें तेज़ दर्द और नाना प्रकारकी भ्रम-भरी चीजें देखना। सभी कामोंमें अनासक्ति। मस्तिष्कमें सुस्ती और जड़ता।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, इसके साथ ही पाकस्थलीका खाली मालूम होना (मानो पाकस्थलीसे आरम्भ हो रहा है—कैलि-कार्ब), सन्ध्याके समय (ग्रैफ, कैलि-कार्ब, लैके); घटना—शय्यापर सोनेपर (आर्नि, कार्बो-ऐन); चारों ओर अन्धकारका दिखाई देना (ऐनाक, कैम्फो, साइक्लो, जेल्स, कैलि-बाई, फाइटो)। माथेमें छुरी लगनेकी तरह दर्द (कैडमो-सल्फ, कूप्रम-ऐसेट); बाएँ पार्श्वमें अधिक (रोबिन)।

पाकाशय और अंत्राशय।—सवेरे सोकर उठनेपर मिचली (कोना पेट्रोल, नक्स; एक दिनका अन्तर देकर सवेरे नींद खुलनेपर--इयुपेट)। घटना—सवेरे जलपान या कुछ खा लेने बाद (ऐसिड-लैक)। पर्यायक्रमसे प्लीहा और हृत्पिण्डमें दर्द मालूम होता है। प्लीहा और यकृतमें अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बाएँ डिम्बाधारमें अधिक रक्त-सञ्चय होना (सिपि, सिफिलिन) और दर्द; यह दर्द उरुतक फैल जाता है (ऐस्टिले)। प्रदर—गाढ़ा सफेद (बोर, सिपि) या पीले रङ्गका (हाइड्रैस्ट, माइरिका, सिपि), इसके साथ ही मलका कड़ापन; पेशाबके समय बहुत काँखना पड़ता है। आर्त्तव—दो ऋतुओंके बीचके समयमें योनिसे खून निकलना (बेल, बोवि, कैमो, इलैप्स, हैमा)। ऋतु—बहुत देरसे होता है; स्रावका रङ्ग फीका, बहुत थोड़ा; पहले दो दिन गाढ़ा खून (अन्तके कई दिन—नेट्रम-सल्फ); इसके बाद स्राव स्वाभाविक हुआ करता है। रजःप्रकाश होनेके पहले—कमरमें (ऐसेर, कालोफि, ऐसिड-नाई, सिपि), तलपेटमें (क्रोटन, बेल, कैमो, हायो, लाई, पल्स) और दोनों उरुमें (कैमो, कालो, वाइवर्न) दर्द, सरमें दर्द (बोर, बोवि, हाइड्रैस्ट, नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यूर), चेहरेपर रह-रहकर उत्ताप पैदा हो जाना (आयोड), मिचली (हायो, इपिक, नेट्र-म्यूर, पल्स) और जाड़ा मालूम (कैल्के, पल्स) हुआ करता है।

श्वास-यंत्र आदि।—सूखी खाँसी, दिनमें घटना—रातमें सोनेपर (मैङ्गेन)। श्वास रुकनेका उपक्रम—तेज़ चलनेके समय (लोबेल-इन, चलनेके समय—ऐरण्डो, इग्ने, पल्स)। बाईं करवट सोनेपर (हाइड्रैस्ट, एपिस); भोजन करने बाद हाथ-पैर फैलानेकी इच्छा (सिफिलिन, फास) और पहले वक्षके दाहिने पार्श्वमें, फिर हृत्पिण्डमें दर्द पैदा हो जानेके कारण रोगीके मनमें

मृत्यु-भय पैदा हो जाता है और उसका सारा शरीर ठण्डा हो जाता है। दोनों बगलके कुछ नीचे वक्षके चारों ओर कसावटका भाव (ऐमिल, कैक); वक्षके दोनों पार्श्वोंकी जकड़न (बैप्टी, टैरिब), मानो शरीरको गर्म अवस्थामें ठण्डी तर हवा लग गयी है।

हृत्पिण्ड।—हृत्प्रदेशमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द होनेकी वजहसे बार-बार नींद खुल जाती है। हृत्पिण्डमें ऐंठनकी तरह दर्द (कैलि-कार्ब, टिली, थूजा)। धमनी-मूलका अर्बुद (कैल्के, रैनान-स्क्ले)। हृत्पिण्डमें दर्द—सवेरे सोकर उठनेपर (कैल्के-फास) या गहरे श्वास-प्रश्वाससे (क्रोटेल) और बाईं करवट सोनेपर (लैके, टैल्यू); पर्यायक्रमसे बाएँ कन्धे और हृत्पिण्डमें दर्द पैदा हुआ करता है। बाएँ कन्धे और हृत्पिण्डमें वातका दर्द (लाइकाप-वर्जि)। हृत्पिण्डके अन्तर्वेष्ट और बहिर्वेष्टका प्रदाह (ऐकान, ब्राई, कैलि-कार्ब, कैलि-आयाड, कैल्मी, स्पाइजि); ऐसा अनुभव होना, मानो हृत्पिण्डकी गति स्थिर हो गई है (आरम-मेट, चिनिन-आस, साइकूत्र, जेलस, लिलि-टाइग्र, सिपि) दर्द घटनेपर भी तकलीफ रह जाती है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दन अकड़ी हुई और ऐसा दर्द मानो रगड़ खा गई है। पीठके दाहिने पार्श्वमें सूक्ष्म शलाका बेधनेकी तरह दर्द (कैलि-कार्ब, बाएँ पार्श्वमें—सिङ्को । तेजीसे स्थान बदलनेवाला दर्द (कैलि-बाई, लैक-कैन, पल्स)। दोनों बाहुओंमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द (ऐपिस, चिमेफि)। कलाईका वात (ऐक्टि-स्पाई, ब्रैका-ग्लाट, कोलचि, गुयायेक)। बाएँ बाँहकी पेशीका वात—बाँह सुन्न मालूम होता है (ऐन्ट्रेक, फेरम, गुयायेक), सवेरे सोकर उठनेपर और सूखी हवा लगनेपर वातका दर्द घट जाता है। तेज़ दर्द, शारीरिक व्यायामसे घटना।

वृद्धि।—जलीय तर हवा लगने और करवट बदलकर सोनेपर।

घटना।—सवेरे सोकर उठनेपर; शरीर हिलानेपर; शारीरिक व्यायामसे; सूखी हवा लगनेपर और रातमें सोनेपर (खाँसी)।

सम्बन्ध।—सदृश।—कैल्मिया, कैलि-कार्ब, लिलियम-टाई, बेल, इलैप्स, कैमो, बोवि, हैमा, कैलि-ब्राई, गुयेयेक; फेरम, लाइकोपस-वर्जि, लाइकोपोडियम, कोलचिकम, बाइबर्नम।

तुलनीय।—वात-रोगमें—कैलि-बाई, कैल्मिया। रजःस्रावमें—ईस्मा, बोविस्टा।

शक्ति।—२x दशमिकसे ६ठा शततमिक क्रम।

मैलेरिया आफिसिनेलिस

(MALARIA OFFICINALIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—थोड़े बहुत पानीमें गिरकर सड़े हुए वृक्षके पत्तोंसे तैयार होता है। डा० बोयनने इस दवाका आविष्कार किया था।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—सविराम ज्वर; पैत्तिक ज्वर; कब्जियत; क्षयकास; अतिसार; ज्वर; वात; यकृतकी बीमारी; मैलेरिया; स्नायुशूल; प्लीहाकी बीमारी।

उपयोगिता और आभास।—सड़ी भाफसे पैदा हुए सब तरहके रोगोंपर ही इसका ठीक-ठीक अधिकार है; कम्पज्वर, वातव्याधि, वातरक्त, प्लीहा और यकृतका बढ़ना, मलेरिया ज्वरके बादकी कमजोरी और धातु-दोष, सभी इससे पूरी तरह आराम हो जाते हैं। जो सड़ी भाफकी वजहसे पैदा हुई बीमारियां भोगा करते हैं, उनके शरीरमें यक्ष्मा-विषको स्थान नहीं मिलता, यदि यह सत्य हो तो इससे यह प्रमाणित होता है कि यक्ष्मा रोगियोंके शरीरमें यदि मलेरियाका विष प्रवेश करा दिया जाये तो यक्ष्मा-विष दूर हो जा सकता है और प्रकृतपक्षमें वैसा ही होता भी है। यक्ष्मा-रोगियोंको ऊपर लिखी दवाका निम्नक्रम सेवन करानेपर उनके शरीरमें नकली मलेरिया ज्वर पैदा होता है और यह मलेरिया आरोग्य होनेपर यक्ष्मा भी आराम हो जाता है और रोगी नया जीवन और नया स्वास्थ्य प्राप्त किया करता है। रोगीमें नीचे लिखे लक्षण सब वर्त्तमान रहनेपर इसके व्यवहारसे वे सब लक्षण दूर हो जाते हैं:—(१) सरमें दर्द, मिचली, पाकस्थलीमें गड़बड़ी मालूम होना और सफेद लेप-चढ़ी जीभ। (२) प्रचण्ड दर्द, मिचली, अरुचि, प्लीहा (सियानो) और इसके बाद यकृतमें (चेलिडो, कोलेस्टेरिन) दर्द और फिर कम्पज्वर। (३) बहुत आलस्य और गड़बड़ी मालूम होना, इसके बाद अविराम ज्वर और शरीरके कितने ही स्थानोंमें व्यथा और दर्द आदिकी वजहसे चलनेकी शक्तिका न रहना। (४)

पित्तशूल, मिचली, अङ्गग्रह या ऐंठन, उदरामय और सर-दर्द। (५) यकृत, प्लीहा, मसाना और पाकस्थलीकी बीमारी। (६) मोहाच्छन्नकी तरह अवस्था, हाथ-पैर आदि अवश और रोगी शय्यागत। (७) सड़ी भाफकी वजहसे वात-व्याधि और कमरका वात, इसके साथ ही अवशता। (८) हाथ, कलाई या मणिबन्ध, कोहनीकी सन्धि, पैर, एँड़ी और जानुमें दर्द। (९) सारे शरीरमें क्लान्ति मालूम होना। (१०) बार-बार जम्हाई आना, शरीर-भङ्ग होना (अङ्गड़ाई लेना) या हाथ पैर फैलाना। (११) मुखमण्डल और माथा बहुत उत्तापसे भरा, क्रमसे यह गर्मी सारे शरीरमें फैल जाती है। (१२) रोगी निर्मल वायु सेवनके लिये लालायित रहता है। (१३) यकृतमें दर्दकी वजहसे वह साँस ले और छोड़ नहीं सकता, जोरसे रगड़नेपर घटना। (१४) दिनमें अच्छा रहता है, रातमें पागलकी तरह कभी गाता है, कभी उन्मत्त हो उठता है और कभी-कभी रातभर बका करता है। (१५) एक दिनका नागा देकर दो पहरके समय कम्प ज्वर पैदा हो जाता है। (१६) बोखार आनेके पहले औंघाई (आर्स, कर्णस, पल्स)। (१७) बिना उत्तापके ही शीत पैदा होना। (१८) घरके बाहरकी हवामें बैठनेके समय रोगी शीतसे काँपा करता है और क्रमसे उसके हाथ-पैरोंमें ऐंठन आरम्भ हो जाता है। (१९) दाहिने पृष्ठ-फलकके नीचे वेदना (चेलिडो)। (२०) जीभकी जड़ सूखी। (२१) आधा मिनटका अन्तर देकर खुसखुसी खाँसी (कोरैल, कक्कस), बोलनेके समय और शय्यामें पार्श्व परिवर्त्तनके समय। (२२) यकृत-प्रदेशमें लगातार धीमा-धीमा दर्द; पेशाब करनेके बाद घटना (लिथिया, जैम्बा)। (२३) भोजनके बाद लक्षण आदिका घटना। (२४) सर्दी लग जाने या शरीर पानीसे भींजनेकी वजहसे रोग आदि (डालका, लेम्ना, रास, ऐरेनिया)। (२५) सड़ी भाफके कारण सविराम ज्वर (सिड्रन, इपिक, नैट्र-म्यूर)।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न—आर्स, ब्राई, नक्स, रास-टक्स।

तुलनीय।—प्लीहा (सियानोथस); यकृत (ब्राई, लाइको, चेलिडान); तरीकी वजहसे रोगमें (डालका), खाँसी (कोरालि, कक्स); सविराम ज्वर (इग्ने, सिड्रन, नेट्रम, मिनियेन्थ)।

सदृश।—ऐरेनि-डाया, ब्राई, सिया, सिड्रन, चेलिडो, कोलेस्टेरिन, कक्कस-कैक्ट, कोरैल-रब, लेम्ना-माई, डालका, मिनियैन, इयुजिन-येम, लिथिया-

कार्ब, नेट्र-म्यूर, सोरिन, बैसिलि, ट्युबर-कूरलिन, पोडोफिल, कर्णास, जेल्स, नक्स-वोम, ऐलेस्टोन, आर्नि, ड्युवेल।

शक्ति।—१म दशमिकसे १००० शततमिक क्रम।

मैन्सिनेला

(MANCINELLA)

नामान्तर।—मैन्चिनिल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फल, पत्ते और छालसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—दमा ; अन्धापन ; पेट गड़गड़ाना ; बच्चोंकी विसूचिका ; शूल ; उपझिल्ली प्रदाह ; आँखोंका प्रदाह ; केशोंका रूखापन ; सर-दर्द ; स्नायविक बीमारियाँ ; अन्न-नालीका संकोचन ; गलेका जखम ; पाकाशयका प्रदाह ; जीभका जखम ; सान्निपातिक ज्वर।

उपयोगिता और आभास।—रोगिनीको दृढ़ विश्वास रहता है, कि वह पागल हो जायगी ; किसी चीज़की ओर एक दृष्टिसे देखनेपर सरमें चक्कर आ जाता है ; पाकस्थलीसे मानो आगकी आँच उठ रही है ; पाकस्थली मानो एकाएक गालेकी तरह हो जाती है और फिर शिथिल हो जाती है। वमनके बाद सर-दर्दका घटना ; पाकस्थलीमें मानो एक जीव हिल रहा है ; बार-बार हरे रंगका वमन ; वमनके बाद अन्त्रशूल और उदरामय ; पानी पीने बाद खाँसीका बढ़ जाना ; माथा खाली मालूम होना ; मानो किसी कड़ी चीज़पर माथा रखा हुआ है ; दोनों गलग्रन्थियोंका बहुत फूलना और उनमें पीब संचय होनेकी वजहसे श्वास-रोध हो जानेका उपक्रम ; शय्याकी गरमी लगनेपर आराम मालूम होना ; पर आगकी गर्मीसे सरका दर्द बढ़ जाता है, शरीरकी त्वचापर रस-भरे दाने निकलना ; त्वचाका क्षय हो जाना, जलन, जले हुए घाव, बड़ी-बड़ी पपड़ी उधड़ना और अन्यान्य नाना प्रकारके चर्म्मरोग वगैरह कितने ही लक्षण इसके निर्णायक हैं।

लक्षणावली

मन ।—बात-बातमें भूल करता है, अभी जो कुछ सोच रहा था, क्षण-भर बाद ही वह फिर याद नहीं रहता। सभी काम दुःखद मालूम होते हैं। कोई बात पूछनेपर एकदम अनिच्छासे उसका उत्तर देता है (पेपाया, रास, ऐसिड-सल्फ); ऋतुस्रावके पहले उद्वेग (नेट्र-मूर, सल्फ)। [डा० हेरिङ्ग कहते हैं, कि यौवनका आरम्भ और वयःसन्धिकालमें रमणियोंको बहुत अधिक इन्द्रियकी उत्तेजना-मिले चित्त-विषादमें यह दवा स्मरण करनी चाहिये]। रोगिनीको दृढ़ विश्वास रहता है, कि उसे उन्माद रोग हो जायगा (ऐक्टि, लैक-कैन, कैनाब-इन, लीलि-टाइग्र, मिडोरिन, कैलि-ब्रोम, सिफिलिन)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, बढ़ना—घरके बाहर जानेपर (ग्लोन, लोरो), शय्यासे बाहर निकलने बाद (चेलिडो, सिङ्को, ग्लोन) और किसी चीजकी ओर बहुत देरतक टकटकी लगाकर देखते रहनेपर (ऐलि-नेट, काष्टि, लैके)। चलनेके समय माथा बहुत छोटा और शून्य मालूम होना (शून्य—कार्बो-वेज, कोरैल; छोटा मालूम होना—जेल, मिडारिन, पल्स); सान्निपातिक या आन्त्रिक ज्वर आदि, स्नायविक रोगके बाद माथा शून्य मालूम होना; सवेरे सोकर उठनेपर माथा बहुत छोटा मालूम होना; दीयेकी रोशनीकी वजहसे सर-दर्द, आगके पास उत्तापसे बढ़ना; वमन हो जाने बाद घटना (ग्लोन; श्लेष्मा और पित्त वमनके बाद घटना—कैल्के)। मूर्द्धादेश ऐसा मालूम होता है, मानो उसमें लोहेकी एक कांटी घुस रही है (हेलिबो, नक्स)। माथेकी त्वचा बहुत खुजलाती है (ग्रैफ, मेजेर, नेट्र-मूर, सल्फ)। कड़ी बीमारी आदिके बाद सरके केश झड़ जाते हैं (प्रसवके बाद—कैल्के; गर्भावस्थामें—लैके) नासा-मूलमें दबाव मालूम होना। आर्त्तव-स्राव आरम्भ होनेके पहले सरमें रक्तका ज्यादा संचय हो जाना (मर्क)।

आँख ।—दीयेकी रोशनीमें आँखमें जलन (ओलि-ऐन, दिनमें—मेफ़ि); केवल आँख बन्द करनेपर आँखमें जलन होती है (स्टिक्टा)। आँख नीले घेरेसे घिरी (ऐब्रोट, हेलिबो, आइरिस, लाई, ऐसिड-फास, स्टैफि)। तेज़ प्रदाहकी वजहसे कई दिनोंतक अन्धा बना रहता है (ऐपिस, सल्फ)। पलकें बहुत फूली रहती हैं (आर्जेण्ट-नाई, मर्क, नेट्र-कार्ब, रास)। ऐसा

मालूम होता है, कि जिस चीजकी ओर देखता है; वह काँप रही है (कैम्फो, ऐसिड-सल्फ, लिसिन)।

मुखमण्डल।—मुखमण्डलमें उत्ताप पैदा हो जानेके कुछ बाद ही उसमें दर्द पैदा कर देनेवाली एवं दिनभर बनी रहनेवाली खुजली; सुई बेधनेकी तरह दर्द और जलन मालूम होती है; दूसरे दिन सवेरे मुँह फूल उठता है और दोपहरके समय पीले रंगके रस-भरे दाने सब निकल आते हैं और इसके दूसरे दिन उसपरसे छाल निकल आती है। चिबुकपर असंख्य दाने सब निकलते हैं, इसके बाद उसकी छाल उधड़ जाती है।

मुख-विवर।—मुँहका स्वाद बहुत कड़वा (ऐको, ब्रायो, मर्क, नेट, नक्स, पल्स)। जीभ, सफेद लेपसे ढकी, बीच-बीचमें लाल बिन्दुमय—मानो उपक्षत हो गया है। मुँहमें असह्य जलन और काँटा बिंधनेकी तरह मालूम होना (नेट्र-फास)। मानो मिर्चका चूर्ण लिप्त है (कैप्स; मेजेर, नेट्रम-सल्फ), ठण्डे पानीसे भी घटता नहीं है (गर्मीका घटना—कैप्स; ठण्डा पानी पीनेपर घटना—बूफो, कैन्थ)। समग्र मुख-विवर और जीभपर रस-भरे दाने निकला करते हैं (कैन्थ, कैप्स, सफेद रङ्गके—कैन्थ)। बहुत ज्यादा लारका स्राव—लार, बदबूदार (ऐ-नाई) और पीले रङ्गकी (मर्क-कोर, फाइटो)। मुँहसे बदबू निकलना; रोगिनी उसका स्वयं अनुभव करती है, (पोडो, रोगी अपनी अपेक्षा दूरके मनुष्य ज्यादा अनुभव करता है—मर्क)। तालुपर एक बहुत बड़ा-सा छाला निकल आया करता है (कैल्के, सल्फ)।

गलेके भीतर।—अलिजिह्वाका बहुत अधिक बढ़ना (क्रोटन, हायो, कैलि-आयोड, लैके)। बोलते-बोलते मानो गला रुक जाना चाहता है। कण्ठमें बहुत सूखापन मालूम होना (मर्क, नक्स-मस, फास, सैबाड, स्टिक्टा)। तालुमूलसे अन्ननलीतक उत्तापयुक्त मालूम होता है, पर प्यास नहीं रहती (पाकस्थलीतक—सिपा)। गला रुकनेके लक्षणकी वजहसे प्यास रहनेपर भी पानी नहीं पी सकता। गल-ग्रन्थिके ऊपर पीली आभा लिये सफेद रङ्गका जख्म निकलना और उसमें भयानक जलन (कैलि-पार्मा)। गल-ग्रन्थि बहुत फूली और उसमें पीव पैदा हो जाना (बैराइ, कैल्के-सल्फ, हिप, लैक-कैन, लैके, लाई, मर्क-प्रोटो, मर्क, मर्क-बिन) और श्वास रुकनेका उपक्रम; साँय-साँय शब्द करनेवाला श्वास-प्रश्वास।

पाकस्थली।—मुँहमें जखमकी वजहसे सिर्फ तरल पदार्थ ही खा सकता है। पानी पीनेपर पाकस्थली बहुत फूल उठती है और दर्द बढ़ जाया करता है। वृथा ही डकार लेनेकी चेष्टा; बहुत मिचली होनेके कारण गला रुक जाना चाहता है। पाकस्थलीसे बार-बार गला राध करनेवाला लक्षण पैदा होता है मानो बहुत आध्मानकी वजहसे ऐसा हो रहा है, इसके साथ ही सुस्ती और फड़कन मालूम होती है। पाकस्थलीसे मानो आगकी आंच उठ रही है ऐसा अनुभव होना (इयुफोर्ब), इसीलिये शरीर इतना गर्म हो उठता है, कि रोगी शरीरपर कपड़ा नहीं रख सकता। बार-बार हरे रङ्गका पदार्थ वमन (कैन्थ, मर्क, ओपि)। वमनके बाद सर-दर्दका घटना (ऐसिर, ग्लोन)। उदरके ऊपरी प्रदेश और कण्ठ तथा पाकस्थलीमें मिचली और जलन। अम्लाक्त मेदमय (आयोड, मेजेर, नक्स) वमन और पानीसे घृणा; कै हुए पदार्थके ऊपरी भागमें जमे हुए मेदकी तरह सफेद रङ्गकी कोई चीज़ उतराया करती है। खायी हुई चीज़की कै होनेके बाद आँतोंका शूल और बहुत ज्यादा पतला पाखाना होना; कभी-कभी ऐसा मालूम होता है मानो पाकस्थली फूल गई है और तुरन्त ही फिर पचक जाती है।

अन्त्राशय।—दाहिने पार्श्वमें शरीर टेढ़ा करनेपर या बाएँ पार्श्वमें पेटमें गड़गड़ाहटकी आवाज़ सुन पड़ती है। बाईं कोखमें एक रुपये बराबर स्थानमें इतना दर्द मालूम होता है कि रोगिनी अपने हाथसे इस अंशको दबा रखती है। दाहिनी करवट सोये रहनेपर उदरके बाएँ पार्श्वमें पेट गड़गड़ाना या कल-कल गड़-गड़ शब्द हुआ करता है; पर बायीं करवट सोनेपर कुछ भी सुन नहीं पड़ता। प्रत्येक बार शरीर हिलाने और साँस लेने तथा छोड़नेमें पेटमें ऊँची गड़गड़ाहटकी आवाज़ सुन पड़ती है। अंगोठी या चूल्हेकी गर्मीसे बढ़ना। तेज़ सर-दर्द; पानी पीनेपर आँतोंमें शूल पैदा हो जाता है, इसके साथ ही बेहोश हो जानेका उपक्रम और पर्यायक्रमसे कड़ा और पतला पाखाना हुआ करता है।

मलान्त्र और मल।—पाकस्थली खाली और मलान्त्र भरी मालूम होती है (सल्फ)। आँतोंका शूल और सरमें चक्कर आनेके साथ बहुत अधिक पतला पाखाना होना (कोना, फेरम, सल्फ, हेलिबो, केल्मिया)। अन्त्रशूल—औंघाई और सर-दर्दके साथ बार-बार खून मिला पाखाना होना। रक्त-शून्य

हरी आभा लिये मल (ऐसाफिट, कैमो, नेट्र-मूर, नेट्र-फास, प्लम्ब, पोडो, सल्फ़, वेरेट)। पतला पाखाना रोगमें उदर और मलद्वारमें जलन। पर्यायक्रमसे पतले दस्त और कब्जियत (ऐब्रोट, ऐण्टि-क्रूड, हाइड्रैस्ट, चेलिडो, नेट्र-सल्फ़, नक्स वोम, प्लम्ब, पोडो, पल्स)। उदरामय—बार-बार पतला पानीकी तरह पाखाना, इसके साथ ही वमन और आमातिसार ; मल दर्द-भरा, काले रङ्गका (ब्रोम, लेप्टेन, मर्क, ओपि, प्लम्ब, स्क्युला), बदबूदार रक्त-मिला मल, इसके साथ ही कूथन ; पाखाना हो जाने बाद मलद्वार धकधक किया करता है (ऐल्यू, बार्बा) और बवासीरसे खून निकलता है।

श्वास-यन्त्र।—नकियाकर बोलता है (सिपा, जेल्स, आयोड, कैलि-बाई, रियुमेक्स, स्टैफ)। गला रुकनेकी वजहसे बोलनेमें व्याघात होता है। श्वास-प्रश्वासमें साँय-साँय शब्द होता है। पुराना श्वास रोग। थोड़ा-सा परिश्रम करनेपर भी तेज़ खाँसी और स्वरनलीके भीतर यन्त्रणाजनक सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। खाँसी रातमें और पानी पीनेपर (ऐकोन, हायो, स्पञ्जि) बढ़ जाती है। थोड़ा सा कफ़ निकल जानेपर छातीका दबाव मालूम होना घट जाता है।

सार्वाङ्गिक।—अंगुलीकी सन्धियाँ सब अकड़ जाती हैं और उनमें दर्द होता है; बहुत तकलीफ़से टेढ़ा कर सकता है। दोनों हाथोंकी जड़ता (फास, टिलो ; हाथसे चीज़ गिर जाती है—एपिस, बोवि, नेट्र-मूर)। दोनों हाथ बरफकी तरह ठण्डे (ऐकोन, आर्ज-नाई, कैक्ट, कैम्फो, कार्बो-वेज, इयुपेट, वेरेट)। रह-रहकर दोनों पैर फड़कते और हिल उठते हैं। एँड़ीके नीचे या एँड़ीमें ऐसा अनुभव होता है, मानो सुई गड़ रही है। तलवेमें जलन और सूखापन मालूम होना। बोखार छूटनेपर तलवेसे शल्क या छाल निकला करती है। बहुत कमजोरी और हाथ-पैरमें न कह सकने योग्य अस्वाच्छन्द्य मालूम होना; बार-बार हाथ-पैर फैलाता है। शरीरका अद्भुत छोटापन मालूम होना। रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो वह शून्यमें उड़ रहा है (ऐसेर, कैनाब-इन, हाइपिर, युग-रिजि, लैक-कैन, स्टिक्टा, वैलि), विशेषकर सान्निक ज्वरके बाद।

त्वचा।—छोटी-छोटी रस-भरी फुन्सियाँ निकलती हैं और वे सूख जाती हैं और इसी जगहसे फिर शल्क या छाल निकला करती है। मोटी पपड़ी

और अल्कसे ढँका जखम। जले घाव (लेके, रास)। बहुत अधिक अरुणिका या लाल रङ्गके उद्भेद। बड़े छाले सब निकलते हैं, मानो आग छू गयो है। फैलनेवाला विसर्प।

सम्बन्ध।—सदृश।—आर्स, कैन्थ, कैप्स, क्रोटोन-टिग, इयुफोर्ब, इयुकेलिप।

तुलनीय।—कैन्थरिस—चर्म-रोगमें। आर्स और कैप्सिकम—जलन और पानीसे बढ़ना।

शक्ति।—६ठे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

मैण्ड्रागोरा

(MANDRAGORA)

दूसरा नाम।—मैण्ड्रेक।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जड़को छोड़कर समूचे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—कब्जियत और सफेद रङ्गका कड़ा मल इसका एक निर्देशक लक्षण है। बेलेडोना और मैण्ड्रागोरा एक जातीय उद्भिद हैं, इसलिये इनके कोई-कोई लक्षण मिलते हैं। बेलेडोनाकी तरह इसमें भी अधिक उत्तेजना होती है और ऐंचनोंके लक्षणमें संन्यास और जलातङ्क रोगमें इसका प्रयोग होता है, पर बेलेडोनामें इसकी तरह शारीरिक अवसाद और निद्रालुता नहीं है।

चायना और ऐरानियाकी तरह इसमें भी सविराम ज्वर रोकनेकी शक्ति है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—बेल, चायना, एरानिया।

शक्ति।—मूल अरिष्ट और निम्न-शक्ति।

मैंगेनम ऐसेटिकम

(MANGANUM ACETICUM)

दूसरा नाम ।—ऐसिटेड आफ मेङ्गानिज ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

मन्तव्य ।—महात्मा हैनिमैनने मैङ्गनम ऐसेटिकम और कार्बोनिकम नामक दोनों ही तरहकी दवाओंकी परीक्षा की थी; परन्तु उनके लक्षण अलग-अलग नहीं लिखा ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— खूनकी कमी ; क्षीण दृष्टि ; दमा ; हड्डीमें दर्द ; मस्तिष्कमें संघात ; खाँसी ; सर्दी ; बहरापन ; बाधक ; कानकी बहुत-सी बीमारियाँ ; पित्त-पथरी ; वात ; सर-दर्द ; एँड़ीमें वातका दर्द ; स्वरभङ्ग ; खुजली ; कामला ; स्वरनलीका क्षयकास ; स्वरनली-प्रदाह ; निकट या अदूर दृष्टि ; आलटाकरामें जखम या अर्बुद ; निम्नाङ्गका पक्षाघात ; कर्णमूल-प्रदाह ; अस्थिवेष्टका प्रदाह ; विचर्चिका ; आमवात ; जीभकी बहुत-सी बीमारियाँ ; जम्हाई इत्यादि रोगोंमें इससे लाभ होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—शरीरकी हड्डियोंमें बहुत दर्द और स्पर्शका सहन न होना, अस्थि-रोगकी वजहसे शरीरमें स्थान-स्थानपर थोड़े ऊँचे लाल दाग ; गुल्फ-सन्धिकी क्षीणता, बच्चोंको यह बीमारी रहनेपर वे चल नहीं सकते । सान्निपातिक या मोह-ज्वरमें कर्णमूलकी ग्रन्थिका फूलना और शरीरके अस्थिपञ्जरमें स्पर्शका सहन न होना, कानके भीतरकी बीमारी, और वक्षके ऊपरी अंशके रोग ; टूटी या रूखड़ी आवाज़ और पेशियोंमें खींचन मालूम होना—ये कई मैङ्गनमके प्रकृतिगत विशेष लक्षण हैं । इनके अलावा भी नीचे लिखे कई विशेष सिद्धिप्रद लक्षण हैं:—तालुके ऊपर जगह-जगह दाने निकलते हैं । शरीरकी त्वचापर जगह-जगह नीले रङ्गके दाने, ज़रा-सी चोट लग जानेपर भी नीले घेरेसे घिरा दुरारोग्य जखम निकल आना ; शरीरकी त्वचा किसी तरह भी आराम नहीं होता । सामान्य खरोंच लग जानेपर भी उसमें जखम हो जाता है । अस्थि और सन्धियोंके प्रदाह रोगमें छेदनेकी तरह

असह्य दर्द पैदा हो जाता है और रोगवाली सन्धिके चारों ओरकी त्वचाके नीचे पीव पैदा हो जाता है; ऋतु जल्दी-जल्दी पैदा होता है और स्राव थोड़ा होता है, इसके साथ ही रक्तहीनता, स्वरनालीका क्षयकास; इसका वातका रोगी कोई भारी चीज़ लेकर एँड़ीपर भार देकर खड़ा नहीं हो सकता। वात-रोगमें शरीरमें जगह-जगह काले या नीले चिन्ह सब दिखाई देते हैं; पक्षाघातका रोगी चलनेके समय सामनेकी ओर अकड़ जाता है; ऊर्द्धगामी पक्षाघात—निम्नाङ्गसे क्रमशः ऊर्द्धाङ्गमें फैल जाता है। अर्द्धाङ्गका पक्षाघात; मेरुदण्डके भीतरके मज्जा-स्तम्भके सामनेवाले अंशके अपकर्षकी वजहसे पक्षाघात। सरमें दर्द—छेदने या दबानेकी तरह दर्द; प्रत्येक क़दम चलनेपर सरमें झटका मालूम होता है; सर्दीकी वजहसे बहरापन, मानो दोनों कान रुक गये हों; नाक छिड़कनेपर कानमें खटखट आवाज़ होती है; जलीय वायुमें बहरापन बढ़ना; कर्ण-शूलके साथ कानसे स्राव। आगे लिखे कई भ्रान्त-ज्ञान भी इसके निर्णायक हैं, मानो माथेका आकार बहुत बड़ा हो गया है, मानो उदरोर्द्ध-प्रदेश बहुत बड़ा हो गया है; दोनों कान मानो रुक गये हैं, कण्ठनलीकी त्वचा मानो क्षय हो गई है, वायुनली मानो एक सूक्ष्म झिल्लीसे रुक गई है, मानो सब आँतें गेंडुरी खा गयी हैं, मानो हाथ-पैरोंके कण्डार या पेशीके दोनों शेषांश सब बहुत छोटे और संकुचित हो गये हैं इत्यादि।

लक्षणावली

मन।—चिड़चिड़ा और बकनेवाला स्वभाव, स्वार्थ ही सर्वस्व है। दुःखित और चिन्तासे भरा। किसीपर चिढ़ जानेपर बहुत देरतक अपने हृदयमें असन्तोषको पोषण किये रहता है। सामान्य कारणसे भी क्रोधित हो जाता है। सभी इन्द्रियाँ जड़-भावापन्न रहती हैं।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना—बैठने या खड़े होनेकी अवस्थामें; सामनेकी ओर मानो गिर जायगा (ग्रैफ, नेट्रम-मूरर, पीडो, साइलि)। सर हिलाने और चलनेके समय सरमें दर्द पैदा करनेवाला संघात मालूम होना। शरीर हिलानेपर गर्दनके पीछेसे सरके भीतर खून दौड़ जाता है, चित्त-विभ्रम और रूप, रस, गन्ध और स्पर्श आदिकी ज्ञान-शक्तिकी विकलता और माथा बहुत भारी मालूम होनेके साथ ही बड़ा भी मालूम होता है (एपिस, आर्जे-

नाई, आर्नि, बोवि, जेल्स, ग्लोन, नेट्र-कार्ब, नेट्र-मूर, नक्स-मस, प्लेट)। सरमें अधिक रक्त-सञ्चय मालूम होना और टपक ; निर्मल वायु लगनेपर घटना ; ऐसा मालूम होता है, मानो माथेमें पीव पैदा होनेका उपक्रम हो रहा है। सर-दर्द—दबाने और छेदनेकी तरह दर्द, दर्द शंखदेश या कनपटीसे दोनों आँखों और ललाटकी ओर चला जाता है ; घटना--सामनेकी ओर माथा झुकानेपर (सिना, कोना), परन्तु सीधे होकर बैठनेपर या पीछेकी ओर माथा झुकानेपर फिर पैदा हो जाता है (क्लिमेट, ग्लोन)। ललाटके बायें पार्श्वमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। घरमें सर-दर्द आरम्भ होनेपर घरके बाहरकी हवा लगनेपर और घरके बाहर रहनेके समय आरम्भ होनेपर घरके भीतर आ जानेपर घट जाता है। मूर्द्धादेशके एक छोटेसे अंशमें शीत मालूम होना (सल्फ, वेरेट) अर्थात् माथेकी किसी एक जगहपर ठण्डक मालूम होना।

आँख।—दूरकी चीज़ न दिखाई देना (फाइजस)। दिनमें अस्पष्ट दृष्टि और आँखमें जलन। दीयेकी रोशनीमें पढ़नेके समय आँखमें दबाव मालूम होता है। आँख सूखी और जलन-भरा उत्ताप मालूम होता है। पलक फूली और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता।

कान।—चलनेके समय कानमें सर-सर आवाज़। श्रवण-शक्तिकी स्थूलता, नाकसे छींक आनेपर घटती है। ठण्डी तर हवामें बढ़ना ; दोनों कानोंका रुद्ध भाव और सुननेकी शक्तिका घटना ; छींकने या निगलनेके समय कानमें कड़ाकसे आवाज़ हो उठती है। बहरे कानमें एकाएक सुई गड़नेकी तरह दर्द। बाईं चुचुकास्थिके विवर्द्धनके पासवाली पेशीमें खींचन या संकोचनकी वजहसे रोगीको वाध्य होकर दाहिनी ओर माथा झुका देना पड़ता है। सान्निपातिक ज्वरमें बाईं कर्णमूल ग्रन्थि कुछ लाल रङ्गकी होकर फूल उठती है। नाक झाड़ने या निगलनेके समय कानमें फुट-फाट ध्वनि और जम्हाई लेनेपर "कड़ाक"-सी आवाज़ हो उठती है (बेराई, कैल्के, साइकूर, प्लेट, हूप खाँसी रोगमें दूरसे तोपकी गरजकी तरह ध्वनि—बैडि)। कानमें "हू-हू" "साँय-साँय" शब्द और कर्णपश्चान्नलीमें विकारकी वजहसे बहरापन (पेट्रोल—दूसरा कारण होनेपर—कास्टि, कूप्रम-ऐसेट, हिप, कैलि-कार्ब, लिडम, लाई, ऐसिड-मूर, सल्फ)।

नाक।—प्रतिश्याय या सर्दी में—दोनों नाकके छेद रुक जाते हैं और नासामूलमें ऐंठनकी तरह दर्द हुआ करता है, ठण्डी जलीय वायुमें बढ़ना।

मुखमण्डल।—चेहरा मलिन, अस्थिमय और दुबला। नासामूल और दोनों भौंहोंके बीचमें कटकट, झुनझुन आवाज़, हँसनेके समय निचले हनुसे दोनों कनपटीतकको पेशी थोड़ी फड़क उठती है। दोनों ओठ बहुत सूखें, उनकी त्वचा सिकुड़ी हुई अथवा प्यासका न रहना, मुँहके कोनेमें दाने निकलकर जखम हो जाता है (ग्रैफ, काण्डियु और नेट्रम-म्यूर)। भोजनके बाद हनुमें दर्द होता है (ऐङ्गस)। बाईं चुचुकास्थिके विवर्द्धनके पासवाली पेशियोंमें प्रबल संकोचनकी वजहसे रोगीको बाध्य होकर दाहिनी ओर माथा झुकाये रखना पड़ता है।

मुख-विवर।—दाँतके भीतरसे तेज़ दर्द पैदा होकर तेजीसे बगलवाले अंशमें फैल जाता है। दाँतका दर्द—दाँतमें ऐसा दर्द मानो जखम पैदा हो गया है; कोई ठण्डी चीज़ लगनेपर दर्द असह्य हो उठता है। प्रचण्ड दन्तशूल (बहुत तेज़ दाँतका दर्द)—एकाएक एक जगहसे हटकर कानतक सञ्चारित होता है (ऐमोनियेक, कोलोसिन्थ, क्रियो, लैके, रोडो, प्लैण्ट, सिपि; बाएँ पार्श्वके दाँतसे बाएँ कानमें—कोलोसिन्थ)। पीछेवाले क्षय हुए खोखले दाँतमें तेज़ शूलका दर्द, दर्द समूचे मुँहमें फैल जाता है और रोगीमें उठनेकी शक्ति नहीं रहती, सामनेके किसी अवलम्बनपर ललाट रख देनेपर कुछ घट जाता है; सीधे बैठनेपर बहुत बढ़ जाता है। मुँहमें तेलाक्त (तेलहा) स्वाद; सवेरे नींद खुलनेपर मुँहके पीछेवाले भागमें नमकीन स्वाद; कुछ खा लेनेपर दूर हो जाना। ऊपरी तालुके ऊपर चिपटा अर्बुद (खूनका स्राव—हाइड्रैस्ट), जीभके बाएँ पार्श्वमें जलन करनेवाले रस-भरे दाने निकलना (बीचमें—बैराई-कार्ब)। मुँहमें जलन, जीभमें, विशेषकर रातमें घरमें रहनेके समय बढ़ना; निर्मल वायु लगनेपर घटना (आयोड)।

गलेके भीतर।—निगलनेके समयके अलावा किसी दूसरे समय गलेके भीतर छेदनेकी तरह दर्द और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह मालूम होना; तालु और दोनों ओंठ सूखे, घरके बाहरकी हवामें बढ़ना; निगलनेके समय दोनों कानोंमें सूक्ष्म शलाका बेधनेकी तरह तेज़ दर्द मालूम होना, खाँसनेपर दर्द बढ़ जानेके साथ ही टूटी और सूखी आवाज़; एँड़ी और पैरका

तलवा फल उठता है। गलेमें नीरसता और खाल उठ जानेकी तरह मालूम होना और ऐसा मालूम होता है, कि एक पत्तेसे स्वरनाली रुकी हुई है।

पाकाशय और अन्त्राशय।—पाकस्थलीसे वायु उठकर छातीमें जलन पैदा कर देती है, पाकाशयमें जलन आरम्भ होकर वक्षमें फैल जाती है (मैन्सि देखिये)। भोजनके बाद जबड़ेमें दर्द ; मध्याह्न भोजनके बाद मसानेमें दर्द मालूम होना। दीर्घ-निश्वास ग्रहण करनेके समय नाभिके स्थानपर छेदनेकी तरह दर्द। चलनेके समय अन्त्रमण्डली ऐसा मालूम होता है, मानो हिलती-डोलती है।

श्वास-यंत्र।—प्रतिश्याय या सर्दी रोगमें स्वरभंग और गलेमें खुजलीकी वजहसे खाँसी। बहुत सवेरे और सन्ध्याकी निर्मल हवा लगनेपर स्वरभङ्ग और आवाज़में कर्कशता पैदा हो जाया करती है ; धूम्रपान करनेपर उपशम ; श्वास-प्रश्वास गर्म, जलन-भरा और वक्षमें गड़बड़ी पैदा करनेवाला उत्ताप मालूम होना। बोलनेपर बाएँ वक्षकी दूसरी पसलीमें दर्द मालूम होता है। सरमें, कानके भीतर, बाँहमें और पाकस्थलीमें दर्द, श्वास-प्रश्वासके समय और बोलने तथा हँसनेके समय बढ़ना ; खाँसनेपर माथेके कपालके पार्श्वमें शूलके आघातकी तरह दर्द मालूम होता है। खाँसी—सूखी ; लगातार वक्षोस्थिके बीचमें उत्तेजनाकी वजहसे (वक्षोस्थिके पीछेवाले स्थानपर उत्तेजनासे पैदा हुई—रास, रियुमेक्स ; वक्षोस्थिके पीछे और दोनों वायुनलीभुजके संयोगस्थानपर—लैके ; वक्षोस्थिके शिखर देशके पीछे—मिडोरिन, रियुमेक्स) ; सोनेपर घटना (ऐकोन, ऐमोन-मूर, इयुफ्रे, लाई, मैन्सिन, सिपि, यूजा, जिङ्कम), विशेषकर मुँह उठाकर सोनेपर (ऐकोन, लाई, ; सोनेपर लम्बी साँस लेनेपर—कोना)। ऊँचे स्वरसे पढ़नेपर खाँसी आया करती है और स्वरनलीमें दर्द, सूखापन या कर्कशता और दर्द-मिली शुष्कता और कर्कशता तथा संकोचन मालूम हुआ करता है (ऊँचे स्वरसे पढ़नेपर खाँसी—नक्स-वोम, फास)। बलगम—कुछ हरा या पीले रङ्गका थक्का-थक्का श्लेष्मा, सवेरे अनायास ही निकलता है या बहुत ही गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा बड़े कष्टसे निकलता है। वक्ष और वक्षोस्थिके भीतर महीन सलाई बेधनेकी तरह दर्द कभी ऊपरकी ओर और कभी-कभी नीचेकी ओर फैल जाता है। उदरके बीचवाले स्थानसे छाती-तक गर्मी रहती है और ऐसा मालूम होता है मानो जकड़ गया है, इसके साथ ही माथा झुकानेपर वक्षके ऊपरी अंशमें दर्द मालूम होता है—गुयायेक)।

हृत्पिण्ड और वक्षके पार्श्व-देशमें रह-रहकर नीचेकी ओर जानेवाला झटका मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनके बाएँ पार्श्वमें एक लाल और फूली हुई रेखा दिखाई देती है। गर्दनके पीछेवाले भागकी अकड़न (बेराई, कार्बो-वेज, लैके, लाई, मेजिर, फास, प्लैट)। क्या विश्राम और क्या चलना—सभी समय, समूची पीठकी रीढ़में छेदनेकी तरह दर्द मालूम होता है। पीछेकी ओर शरीर झुकानेपर नितम्बदेशमें दर्द मालूम होता है। स्कन्ध-सन्धिमें ऐसा दर्द मानो मोच आ गयी है (इग्ने, नेट्र-म्यूर)। वातकी वजहसे दर्द, कन्धे से हाथकी अंगुलीतक फैल जाता है। बाँहकी हड्डीमें मानो खोद रहा है—इस ढंगका दर्द, ऐसा मालूम होता है मानो हड्डीकी मज्जापर रोगका हमला हो गया है। कोहनीमें खींचन मालूम होती है, मानो कण्डारमें छोटापन पैदा हो गया है (क्रियो)। बाँह और कलाईकी सन्धिके बीचमें तकलीफ़ और खींचन मालूम होती है (बाएँ बाँहकी—ऐमिल, बार्बे)। अंगुलीके गांसके भीतर फट जाता है; हाथकी मुट्ठी बाँधनेपर या फैलानेपर सूजन मालूम होती है। हाथकी कनिष्ठाङ्गुलि बहुत दिनोंतक फूली रहती है और उसमें पीव हो जाया करता है। साधारण छिल जाना भी विषैले जखममें बदल जाता है। थोड़ी भी चेष्टाके बाद पेशियाँ सब फड़का करती हैं। एँड़ीमें प्रदाह रहता है और फूल जाती है तथा उसमें सलाई वेधनेकी तरह दर्द पैदा होकर पैरके नीचे फैल जाती हैं। जानुसन्धि कमजोरीके कारण काँपा करती है। तलवेमें जलन, पैरकी अंगुलीकी बीचवाली त्वचाका क्षय हो जाना, शरीरकी सब हड्डियोंमें बहुत दर्द मालूम होता है। अस्थि-रोगकी वजहसे शरीरमें जगह-जगह चिपटी लाली दिखाई देती है। गुल्फ-सन्धि बहुत ही कमजोर; बच्चा चल नहीं सकता। हाथ-पैर आदि फैलानेके समय खींचन मालूम होती है, मानो कण्डारमें छोटापन पैदा हो गया है (कास्टि, कैलि-आयोड)। सर्दी और अस्थिवेष्टके भीतर वातकी वजहसे दर्द, यह दर्द चिलक मारनेकी तरह होता है या वेधनेकी तरह, सन्ध्याके समय बढ़ना; दर्द एक पार्श्वका या कोना-कोनी भावसे प्रकट होता है। वातके कारण सन्धि फूली और चिकनी मालूम होती है। प्रायः शीत लग जानेकी वजहसे दर्द। अस्थि-प्रदाह—रातमें दर्द असह्य हो उठता है; पक्षाघात—निचले अङ्गसे आरम्भ होता है (कोना)। चलनेके समय सामनेकी ओर ठोकर खा जाता है या सामनेकी ओर दौड़ जाता है।

त्वचा।—सन्ध्याके समय और शय्यासे उठनेके समय समूची देहमें जलन हुआ करती है। खुजलानेवाले दाने निकलते हैं। शरीरमें बहुतसे जखम निकल आते हैं, जरा-सी खरोंच लगने या छिल जानेपर भी वे ज़खममें परिणत हो जाते हैं (ग्रैफ, हिप)। सन्धियोंके गासेकी त्वचाका क्षय हो जाना (ग्रैफ, लाई) और फटना। सन्धियोंके चारों ओरकी त्वचामें पीब सञ्चय होना। जानुके पीछेवाले गह्वरमें बहुत खुजलाहट।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—काफिया, मर्क-सोल।

अनुकूल सम्बन्ध।—कैल्के, लाई, मर्क, फास, पल्स, रास, सिपि, सलफर।

तुलनीय।—ऐमोन-म्यूर (एँड़ीका वात); मर्क (पक्षाघात); सिना, नक्स, मिफाई (खाँसी); क्यूप्रम (विचर्चिका); कैलि-आयोड (त्वचा पर गोटियाँ); ऐसाफि (मुँहके भीतरका अर्बुद); कोनायम (पक्षाघात); आर्जेण्ट-नाई (खाँसी)।

सदृश।—ऐमोन-म्यूर, कोना, आर्जेण्ट-नाई, कैलि-आयोड, ऐसाफिट, डालका, मिफाइट, सिना, प्लैट।

शक्ति।—६ठे शततमिकसे २०० शततमिकतक।

क्रियाका स्थायित्व।—४० दिन।

मैंगेनम म्यूरियैटिकम

(MANGANUM MURIATICUM)

दूसरा नाम।—क्लोराइड आफ मैंगेनिज।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पानीमें गलाकर मूल अर्क तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—पैरकी एँड़ीमें और दूसरी-दूसरी अस्थियोंमें दर्द, उदरशूल, दबानेसे बढ़ना (घटना—कोलोसिन्थ) लक्षणमें यह विशेष लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

मैंगेनम आक्सिडेटम नेटिवम

(MANGANUM OXYDATUM NATIVUM)

दूसरा नाम ।—नेटिव ब्लैक-आक्साइड आव मैंगेनिक।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—सहजमें ही थक जाना और गर्म हो जाना इसका विशेष लक्षण है। पतले दस्त, पेटमें दर्द, माथेमें दबाव और गर्मी, पैरकी हड्डियोंमें दर्द, पैरकी पेशीमें शिथिलता, झटका और अकड़न, एकाएक बिना कारण जोरसे हँसने लगना वगैरह लक्षणोंमें विशेषकर मैंगेनिज खानमें काम करनेवालोंकी बीमारीमें मैंगेनम आक्सिडेटमको यदि अमृतकी तरह कहा जाये तो भी अत्युक्ति नहीं होगी।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—दूसरी-दूसरी मैंगेनिज घटित दवाएँ।

शक्ति ।—३x—१२x ।

मैंगेनम सल्फ्युरिकम

(MANGANUM SULPHURICUM)

दूसरा नाम ।—सलफेट आव मैंगेनिज ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पानीमें गलाकर मूल अर्क तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—एकसे दो ड्रामकी मात्रामें मैंङ्गो-सल्फ आध पाइण्ट (प्रायः तीन छटाँक) पानीमें सेवन करनेसे विरेचन और पित्तनिःसारक दोनों ही काम हो जाते हैं। इसीलिये पित्तकी अधिकता, यकृतका प्रदाह और दूसरे-दूसरे उपसर्गोंमें यह बहुत लाभदायक है।

कोई-कोई इसे आँतोंके बलकारक रूपमें व्यवहार करते हैं। दन्तशूल और वमन और आक्षेप रोगमें भी इसका व्यवहार होता है।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

मैटहियोला ग्रीसा

(MATTHIOLA GROECA)

दूसरा नाम।—स्टाक गिलि-फ्लावर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी उद्भिद‌से अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—इससे मार्फियाके दुष्परिणामको वजहसे पैदा हुआ स्नायुशूल आरोग्य होता है। पाकाशय और यन्त्र आदिका फोड़ा और कैन्सर तथा ग्रीवा-देशीय ग्रन्थिके नासूरमें यह व्यवहृत होता है। पित्त गाढ़ा होकर, पित्तवहानलीके अवरोध लक्षणमें मैटहियोला अपने सम-जातीय उद्भिद थूस्पि-वार्साके साथ सम-लक्षण-सम्पन्न है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय।**—टैरिरि-चेरि, थूस्पि-वार्सा।

शक्ति।—मूल अरिष्ट और निम्न-शक्ति।

मेडुसा

(MEDUSA)

दूसरा नाम।—जेलि-फिश, सी-नेटेल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—गर्मीके दिनोंमें संग्रह की हुई जोवित मछलीसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—मुखमण्डल, ओठ, नाक, आँख, कान वगैरहको सूजन और शोथके लक्षणमें यह लाभदायक है। उल्लिखित शोथ लक्षणके साथ त्वचापर छालेकी तरह उद्भेद और आमवात लक्षणमें यह बढ़िया काम करता है। सन्तान होनेके तीन वर्ष बाद भी मेडुसा सेवनसे स्तनमें दूध होता देखा जाता है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय।**—एपिस, ऐस्टि-पल्वि, बोम्बिक्स, ह्योमैरस, मूरेक्स, सिपिया, आर्कटिया।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

मिलास्टोमा

(MELASTOMA)

दूसरा नाम।—मिलास्टोमा—ऐफार्मनि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—उदरामय, मूलाधारमें (जननेन्द्रिय और मलद्वारके बीचके स्थानमें) दर्द, दोनों डिम्बोंमें दर्द। मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि-प्रदाह प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है।

ज्वर-रोगमें प्रचण्ड शीत, कम्पन, कम्पनके बाद बहुत उत्ताप और **प्यास न रहना** इसका निर्देशक लक्षण है।

तुलनीय।—पल्स (प्यास न रहना)।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

मेलिलोटस

(MELILOTUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—**मन्तव्य।**—मेलिलोटस ऐल्बा (श्वेत-वर्ण) और आफिसिनेलिसके (पीला रङ्ग) पेड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—चेहरेकी लाली; खूनकी अधिकता; खाँसी; बाधक; मृगी; नाकसे रक्तस्राव; भय; खून मिली खाँसी; सर-दर्द; उन्माद; श्वेत-प्रदर; विषाद; डिम्बाधारका स्नायुशूल; फेफड़ेका प्रदाह; आक्षेप।

उपयोगिता और आभास।—शरीरके यंत्रों और सभी शोणिता-धारोंमें रक्तका अधिक संचय करना, इसकी प्रधान क्रिया है और रक्तस्राव हो जाने बाद उस अवस्थाका घटना इसका प्रधान निर्णायक लक्षण है। सरका प्रचण्ड स्नायविक दर्द या रक्त-संचय होनेकी वजहसे सरमें दर्द, नाकसे रक्तस्राव होनेपर घटना; स्नायु-प्रधान बच्चोंको दाँत निकलनेके समय धनुष्टङ्कार आदि आक्षेप, तड़का, अपस्मार; लाल चेहरा रहनेके साथ-ही-साथ पारमार्थिक, विषाद; उन्माद रोगकी पहली अवस्थामें मस्तिष्क आदिमें ख़ूनका अधिक इकट्ठा होना तथा भारीपन और उत्तेजना मालूम होना; बहुत लाली और तमतमाया हुआ चेहरा और गलेकी धमनीके फड़कनेके साथ नाकसे ख़ूनका स्राव और उसके बाद सारे शरीरमें आराम मालूम होना। चाहे किसी भी यंत्रसे रक्तस्राव हो, उसके पहले चेहरा लाल हो जाता है और तमतमा उठता है। तकलीफ़ देनेवाली कब्जियतके साथ मलान्त्रका सङ्कोचन और उसमें टपककी तरह आवाज़ और भरापन मालूम होना। मलान्त्रमें जबतक बहुत-सा मल सञ्चित नहीं होता, तबतक पाखाना नहीं लगता इत्यादि इसके कई मौलिक और अव्यर्थ निर्णायक लक्षण हैं। मस्तिष्कमें रक्तसंचयकी अधिकताके कारण यह मनोराज्यमें भी बहुत गड़बड़ी पैदा कर देता है, इसलिये उन्माद रोगकी कितनी ही अवस्थाओंमें भी यह फायदा करता है। जिस तरह रक्तस्रावके बाद इसके अधिकांश लक्षण घट जाया करते हैं, उसी तरह बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाबपर-पेशाब होनेपर भी रोगीके उपस्थित लक्षण घट जाया करते हैं।

लक्षणावली

मन।—हमेशा विपत्तिकी आशंका (काक्यु); पकड़ जानेका भय (जिङ्क, ऐसा भय कि कोई पकड़ा देगा या शत्रुके पास खबर दे देगा—हायो)। भाग जानेकी चेष्टा करता है (काकुल, डिजि, ग्लोन, हायो, नक्स-वोम, ओपि)। आत्महत्या करनेकी इच्छा (दूकानमें उपस्थित खरीददारका गला काट डालनेकी वासना—आर्स)। दौड़कर छिप जानेकी चेष्टा करती है, क्योंकि रोगिनीको विश्वास रहता है कि सभी उसको देख रहे हैं (कोकेइन)। क्रोधी, अधीर और दूसरोंका दोष देखनेवाला—परछिद्रान्वेषी (साइक्ली, हेलोन, नक्स-वोम, प्लैट, सल्फ़)। भयानक उन्माद, घरमें किवाड़ी लगाकर ताला बन्द कर रखना

पड़ता है (ऐनाक, फास)। आलसी और किसी विषयमें मन नहीं लगा सकता (इस्का, बोवि, ऐग्नस, लिसिन, सिलि ; आलसा—सिङ्को, कोका, चेलिडो, कक्कस, हिप, इग्ने, टियुक्रि, नेट्र-म्यूर, लैक-कैन, पल्स, स्पञ्जि, सल्फ); पढ़नेकी शक्ति न होना (कैल्के, चिनिन-सल्फ, सैम्बुल) अध्ययनकी इच्छा न होना (फेर, जेल्स, हैमा, फास ; अध्ययन प्रियता—कैरिका-पेपिया)। नाकसे लगातार खूनके स्रावके साथ होश न रहना, लज्जाशीलता और गालोंका लाल हो जाना (बेराई, कोका, कोना, कैलि-फास, मैन्सिन)। अपने घर जानेकी वासना (ब्राई, कैल्के)। ऐसा मालूम होना मानो विदेशमें अपरिचित आदमियोंके पास है (ऐस्टि-रियुब)। चेहरेकी बहुत अधिक लालीके साथ पारमार्थिक विषाद (कैलि-फास, लाई, प्लैट)। बुद्धि-वृत्तिकी प्रखरता।

मस्तक।—शरीर हिलानेके समय सरमें चक्कर आ जाना (कैल्के-फास, कैल्सो, सैम्बुल)। सरमें चक्कर आना और मिचलीके साथ मस्तिष्कमें अड़कन मालूम होना और तरंगे उठनेकी तरह भाव (ऐक्टि-रेस, ग्लोन)। सरमें दर्द—स्नायविक या अधिक रक्त-सञ्चयके कारण (ब्राई, ग्लोन, लैके), चेहरा और आँख लाल हो उठती हैं, गलेकी धमनी फड़कने लगती है (बेल, ग्लोन, गुयायेक, मैग-सल्फ) और यन्त्रणाकी अवस्थामें नाकसे रक्तका स्राव होनेके बाद अच्छा हो जाया करता है (ब्रूफो, फेरम, फास, मैग-सल्फ)। प्रचण्ड सर-दर्द,—सरमें चक्कर आना, सुस्ती या बेहोश हो जानेके उपक्रम (कैल्के, कार्बो-वेज)के साथ मस्तिष्कमें टपक अनुभव होती है और समूची रक्त-प्रणाली इस तरह खूनसे भर जाती है, कि ऐसा मालूम होता है मानो वह फट जायगी और माथेमें किसी तरहका जखम पैदा कर देगी ; बार-बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब हुआ करता है (बेल, क्रूप्रम, वेरैट) और उससे तकलीफ बहुत घट जाया करती है।

नाक।—दोनों नाकें बहुत सूखी और रुकी मालूम होती हैं। सूखी और कड़ी पपड़ियोंके टुकड़े सब निकलते हैं (केलि-बाई, फाइटो, सिपि)। चेहरा बहुत लाल हो जाता है और तमतमा उठता है। गलेकी धमनियोंमें टपक होनेके बाद नाकसे खूनका स्राव हुआ करता है और उससे सारे शरीरकी तकलीफें घट जाया करती हैं। खून चमकीला और लाल रहा करता है। किसी भी यन्त्रसे रक्त-स्राव होनेके पहले चेहरा लाल हो जाया करता है।

मलान्त्र और मल।—कब्जियत, जबतक मलान्त्रमें बहुत ज्यादा परिमाणमें मल इकट्ठा नहीं हो जाता, तबतक पाखाना निकल ही नहीं सकता (ऐल्य ओपि,); बीच बीचमें ३ या ४ दिनोंतक एकदम पाखाना नहीं होता, इसके बाद कई दिनोंतक नित्य पाखाना होकर फिर कई दिनोंतक पाखाना बिलकुल ही नहीं होता; मलद्वारके सङ्कोचनकी वजहसे बड़े कष्टसे पाखाना होता है; मलनालीमें पटक और पूर्णता मालूम हुआ करती है। सूत्रमय और दूधकी तरह सफेद रंगकी आँव निकला करती है (ऐसेरम, बेल, कैन्थ, काकुल, डालका, आयोड)। भीतरी बवासीरके मसेकी वजहसे मलद्वार धकधक किया करता है और उसमें पूर्णता मालूम होती है (सल्फ)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रदर, इसके साथ ही कमर और वस्तिके स्थानपर दर्द और तकलीफ; चलनेके समय स्राव आरम्भ हो जाता है (इस्क्यु, बोवि, कार्बो-ऐन, मैग-मूर, नेट्र-मूर, सार्सा, स्ट्रैन—चलनेपर स्रावका बढ़ना)। आर्त्तव,—नियमित समयपर पैदा हो जाता है, परन्तु स्राव बहुत थोड़ा, रह-रहकर (कैमो, क्रियो, लैक-कैन, लैके, मैग-सल्फ, सल्फ, नक्स, सिकेलि, वाइवर्न) या बहुत पतला पानीकी तरह (डालका, फेर, नेट्र-मूर, पल्स, स्ट्रैमोन), फीका, (फेर, नेट्र-मूर, सिकेलि, वाइवर्न) और बदबूदार (नक्स, प्लैट)। रजःस्रावके समय सरमें दर्द, सरमें चक्कर आना, पीठ और हाथ-पैरोंमें अकड़न और वस्तिगह्वरमें धीमा दर्द और नीचेकी ओर तेज़ खींचन मालूम होती है (सिपि)। जरायुमें छेदनेकी तरह तेज़ दर्द। डिम्बाधारके स्नायुका दर्द (कोको, लिलि-टाइग्रि, लाई, सिपि)।

श्वास-यंत्र।—खाँसी,—आक्षेपिक, रुखड़ी और सूखी; भयानक यंत्रणा और उद्वेग पैदा कर देनेवाली; रातमें थोड़ा-सा श्लेष्मा निकलता है। खाँसी क्रमसे इतनी बढ़ जाती है, कि रोगी किसी करवट भी सो नहीं सकता। वक्षमें श्लेष्माकी अधिकताकी वजहसे खाँसी—नाकसे खून गिरनेपर घटना। खून मिली खाँसी—खून चमकीला लाल रङ्गका। ऐसा मालूम हो मानो गला रुक जाता है अथवा ऐसा मालूम होना कि तृप्ति लाने-भर हवा खींच नहीं सकता। वक्षपर दबाव मालूम होनेकी वजहसे श्वास लेने और छोड़नेमें तकलीफ; माथा और वक्षमें भार मालूम होना; फेफड़ेमें अधिक रक्त-सञ्चय होना।

सार्वाङ्गिक ।—शरीरके कितने ही अंशों और यंत्रमें खूनका अधिक सञ्चय होना, रक्तस्राव होने बाद स्नायु-प्रधान बच्चोंके दाँत निकलनेके समयकी अकड़न और धनुष्टंकार आदि आक्षेप तथा अपस्मार।

वृद्धि ।—चलनेपर, बरफ या ठण्डी हवा लगनेपर, गीले पैर रहनेपर, अंधड़-पानीके आरम्भमें और जलीय परिवर्त्तनशील वायुमें।

उपशम ।—खूनका स्राव हो जाने बाद (विशेषकर नाकसे), बहुत पेशाब होनेपर, सोनेपर, सिर्केकी खटाई (विनिगर) के प्रयोगसे और बैठनेपर (बेलेडोनामें, सोनेपर और विनिगरके प्रयोगसे बढ़ना)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐमिल, ऐसिट-क्र्ड, बेल, सेङ्गिविन, स्ट्रैम, ऐमिल, ऐसिट-क्रड, इन कई दवाओंमें सरमें दर्दके बाद नाकसे खून गिरा करता है, पर उससे सर-दर्द दूर नहीं होता। चेहरा लाल, गर्म माथा और टपकनेवाली गलेकी धमनी-मिले रक्त-संचयकी वजहसे सर-दर्दमें (बेल, ग्लोन, लेके, व्यूफो, मेग-सल्फ, फेरम-फास)।

तुलनीय ।—रक्तकी अधिकतासे—बेलाडो, ग्लोनोयन, ऐल्यम। सर-दर्दके बाद नाकसे खून गिरना—ऐसिट-क्र्ड। मस्तिष्कका हिलना—सिमिसि। वात—रास। खूनकी तरह कफ—इपिकाक। नाकसे रक्त—इरिजि।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३रा दशमिक क्रम तक।

क्रियाका स्थायित्व ।—डा० ऐलेनके मतसे ३० दिन।

मैलिटेग्रिनम

(MELITAGRINUM)

उपयोगिता और आभास ।—यह एक जान्तव दवा है। माथेके एकजिमासे संग्रह किये हुए पीव रक्तसे स्किनर पोटेण्टाइज़रकी सहायतासे शततमिक रीतिके अनुसार क्रम तैयार होता है।

यह दुधिया पपड़ी और माथेके एकजिमा रोगमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय।** वैसिलिनम, ग्रैफाइटिस, मेलिलोटस, टेल्युरियम।

शक्ति।—२०० और उच्च शक्ति।

मेनिस पर्मम

(MENIS PERMUM CANADENSE)

दूसरा नाम।—मून-सोड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसकी जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— पीठमें दर्द; सर-दर्द; खुजली; मेरुदण्डमें दर्द; जीभका फूलना।

उपयोगिता और आभास।—बार-बार जम्हाई और अङ्गड़ाई आना, बेचैनी और उद्वेगके साथ एक तरहके बहुत ही यन्त्रणा देनेवाले सर-दर्द रोगमें इसका लाभ प्रसिद्ध है। मुख-विवर, गलेका भीतरी भाग और शरीरकी त्वचाका सूखापन इसका एक प्रधान लक्षण है; शरीरकी त्वचाकी बहुत अधिक खुजली भी इसकी क्रियाका अन्यतम लक्षण है।

लक्षणावली

मस्तक।—सरमें दर्द, भीतरसे बाहरकी ओर दबाव मालम हुआ करता है (ऐलियम-सैट, कूप्रम, हेलिबो, लाइकोप-वर्जि, नक्स-मस, टिलिड्रिकोल)। सरमें प्रचण्ड दर्द– समूची पीठमें दर्द मालम हुआ करता है (कैलि-कार्ब) और ऐसा मालम होता है, मानो माथा फट जायगा (ब्राई, सिङ्को, ग्लोन, नेट्र-सूर); निर्मल वायुमें जलनेपर घटना (ऐकि, कोमोक्लेड, ग्लोन, हेलिबो, लाई, निकोल, पल्स, सेनेगा, टैबाक)। रातके समय प्रचण्ड सर-दर्द पैदा हो जाता है (हिप, कैलि-ब्रोम, कैलि-आयोड, ऐ-लैक, मर्क, मर्क-कोर, ऐ-नाइ, सल्फ, सिफिलिन), बार-बार अङ्गड़ाई और जम्हाई (सिपि, ग्लोन, ऐमिल) और सरमें पूर्णता मालम होना (आर्जेण्ट-नाइ, इयुपेट-

पर्फोल)। पाकाशयका सर-दर्द, दर्द ललाट और कनपटीमें पैदा होता है और सरके पिछले भागमें चला जाता है, जीभ फूल जाती है (एपिस, मर्क) और मुख-विवर या तो सूखा रहता है अथवा उसमें बहुत अधिक लार सञ्चय हुआ करती है। जीभ विशेषकर उसका पिछला भाग गहरे लेपसे ढँका रहता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—समूची देह, विशेषकर दोनों नितम्ब खुजलीसे भरे रहते हैं; शय्याके उत्तापसे बढ़ना (बोवि, डलिकस, लाई, मर्क, सोरिन)। दर्द—पीठ, कमर, केहुनी और कन्धेमें रहता है; दोनोंमें पैरोंमें ऐसा दर्द रहता है, मानो चोट लगी हो और हड्डीमें दर्द।

वृद्धि।—रातमें और शय्यादिका उत्ताप लगनेपर।

घटना।—घरके बाहरी भागमें चलनेपर।

सम्बन्ध।--**प्रतिविष या दोषघ्न**।—ब्राई, सिङ्कोना (डा० क्लार्क)।

सदृश।—ब्राई, सिङ्को, ग्लोन, हेलिबो, काक्यु, ऐमिल।

शक्ति।—मूल अर्क और १ला और २रा दशमिक क्रम।

मेन्था पाइपरिटा

(MENTHA PIPERITA)

दूसरा नाम।—पिपामिण्टा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे गाछसे मदर टिञ्चर या अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—सूखी खाँसी; सर-दर्द; ध्वजभङ्ग; सर्दी; गलेका जखम; योनि-देशमें खुजली; ज्वरके बादवाली क्षीणता।

उपयोगिता और आभास। – श्वास-यंत्र ही इसकी प्रधान क्रिया-भूमि है और कितने ही अंशोंमें यह रियुमेक्स क्रस्पाकी तरह है। इसका प्रधान क्रिया-फल खाँसी है—स्वरनालीमें किसी तरहसे भी ठण्डी हवा या तम्बाकूका धुआँ प्रवेश करते ही प्रचण्ड खाँसी आरम्भ हो जाया करती है। फ्रेञ्च डाक्टर डिमूरका कहना कि "चोटके लिये आर्निका और प्रदाह आदिमें

ऐकोनाइटम जैसा काम करता है, सूखी खाँसीमें "मैन्था" भी वैसा ही लाभ किया करता है। क्षयरोगीकी खाँसीतक इससे दब जाया करती है।" डा० हैल्सके मतसे बहुत अधिक आध्मान-वायु सञ्चय होनेकी वजहसे पित्त-शूल होनेपर भी इससे बहुत फायदा हुआ करता है। एक हिन्दू स्त्रीकी लड़का होनेके तीसरे महीने बड़े जोरका पित्त-शूल हुआ और कैल्केरिया-कार्ब, बार्बेरिस कोलोसिन्थ और कार्डुअस-मेरियेनसके प्रयोगसे कोई लाभ न हुआ, तब डाक्टर हेल्सकी इसी उक्तिपर निर्भरकर "मेन्था-पाई" ६ दशमिक क्रमका प्रयोग किया गया और रोगिनीकी वह यन्त्रणा ५ मिनटमें एकदम गायब हो गयी। इससे केश झड़ना भी बन्द हो जाता है।

लक्षणावली

श्वास-यंत्र।—नाकके अगले भागमें बहुत दर्द और स्पर्श सहन न होना (कैल्के, कोना)। समूची वायुनलीमें स्पर्श बिलकुल ही सहन न होता। निगलनेके समय गलेमें सूखापन और दर्द मालम होता है, मानो तालुमूलमें एक आलपीन आड़ी होकर रुकी हुई है (मानो मछलीका बिंधा हुआ कांटा है—ऐल्य, आर्जेण्ट-नाई, डलिकस, हिप, एपिस, लैके, नेट्र-म्यूर)। ऊँचे स्वरसे पढ़नेके कारण स्वर-भङ्ग (कैल्के-फ्लु, सेनेगा, बार्बेस्कम)। गायकोंके गानेके कुछ पहले इसका सेवन करनेपर वे बहुत देरतक ऊँचे स्वरमें गा सकते हैं। सूखी खाँसी—बोलते ही आरम्भ हो जाती है, रोज़ सवेरे फोड़ेके भीतरवाले गाढ़े पीबकी तरह श्लेष्मा निकलता है। ऊँचे स्वरसे पढ़ने, गलेमें ठण्डी हवा प्रवेश करने, शीत लगने या किसी तरहका झटका लगनेपर सूखी खाँसी पैदा हो जाती है। गलेमें तम्बाकूका (इग्ने), कोयलेका या लकड़ीका धुआँ (इयुपियम) प्रवेश करते ही प्रचण्ड खाँसीका प्रकोप आरम्भ हो जाता है (रियुमेक्स), कुहरेमें खाँसी बहुत बढ़ जाया करती है (हाइपिर, सिपि)। क्षय रोगियोंकी लगातार ऊपर-के-ऊपर खाँसी, धुआँ लगते ही खाँसी (रियुमेक्स)।

त्वचा।—शरीरकी त्वचापर बहुत जखम निकलते हैं, सामान्य छिल जानेपर भी वह घावकी तरह हो जाता है (ग्रैफ, हिप, मैङ्ग-ऐसेट, मर्क, पेट्रोल, साइलि)। लिखनेके समय बाँह और हाथमें खुजली, योनिमें खुजली (कैलेड, ऐसिड-नाई, लाई, हेलोन), रह-रहकर कर्णमूल-ग्रन्थिमें असह्य

बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है; सवेरेके भोजन और दोपहरके भोजनके समय घटना।

वृद्धि।—शय्यासे उठनेके समय, ठण्डी हवामें, गलेमें किसी तरहका धुआँ या ठण्डी हवा (किसी तरह भी क्यों न हो) प्रवेश करनेपर, ऊँचे स्वरसे पढ़ने, माथा झुकाने या माथा घुमानेपर (सरमें अस्त्रके आघातकी तरह दर्द), लिखनेके समय और कुहरेके समय।

घटना।—भोजनके समय और शय्यामें सोनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—रियुमेक्स, इग्ने, इयुपियोन, हाइपिर, सिपि।

तुलनीय।—लैबियोट (धुएँसे बढ़ना); हाइपि (कुहरेमें); ब्रायो (ठण्डी हवामें बढ़ना—रियुमेक्स)।

शक्ति।—३रा दशमिक, विशेषकर ३० शततमिक क्रम।

मेन्था पुलिजियम

(MENTHA PULEGIUM)

दूसरा नाम।—युरोपमें पैदा हुआ पेनिरायल वृक्ष।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—आर्गट या सिकेलिकी तरह यह भी एक जरायु-संकोचक दवा है। युरोपमें गाँवकी रहनेवाली स्त्रियाँ प्रसव और गर्भ-स्रावके कार्यमें इसका व्यवहार किया करती हैं।

माथेके अस्थि-समूहोंमें दर्द और नींदके समय क्षारका स्राव (मर्क-सोल) लक्षणकी यह एक लाभदायक दवा है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—मेन्था-पाइपर, पाइपर-मिथि, आक्स लऐसिड, सिकेलि।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

मिनियैन्थिस ट्राइफोलियेटा

(MENYANTHES TRIFOLIATA)

दूसरा नाम।—बकबिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इस वृक्षके समूचे अंशसे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—अन्धापन; वक्षकी बहुत-सी बीमारियाँ; ऐंठन; दबाव देनेवाला सर-दर्द; हृत्पिण्डका दर्द; सविराम ज्वर; अङ्ग-प्रत्यंगका फड़क उठना; पक्षाघात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—इसके कई विशेष लक्षणोंपर ध्यान देनेसे ही इसकी क्रियाका आभास मिलता है। (१) ज्वर-रोगमें शीतावस्थाकी प्रधानता; उदर और दोनों पैरोंमें बहुत शीत मालूम होना। (२) सर-दर्द—खोपड़ीके ऊपरसे दबावकी तरह दर्द, हाथसे जोरसे दबानेपर घटता है; प्रत्येक क़दम चलनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो एक भारी पदार्थ माथेपर रखा हुआ है और हाथ तथा पैर बरफकी तरह ठण्डे मालूम होते हैं। (३) नाना प्रकारकी बीमारियोंके पहले हृत्पिण्डके सम्बन्धमें आशङ्का पैदा हो जाती है, मानो जल्द ही कोई अनर्थ हो जायगा। (४) नासामूल, बाँह, हाथ और हाथकी अंगुलियोंमें खींचन मालूम होना; शरीरकी त्वचा भी बहुत सिकुड़ी मालूम होती है, मानो रोगीका शरीर उस अप्रसर (संकरी) त्वचामें जबर्दस्ती घुसा दिया गया है। (५) विश्रामके समय, हाथ-पैरका आक्षेपिक संकोचन और प्रसारण (सिकुड़ना और फैलना) तथा फड़कना अर्थात् लेटने या बैठनेकी अवस्थामें ही इसकी वृद्धि हुआ करती है। (६) दर्द आदि सुई गड़नेकी तरह, सुन्नता और अकड़न पैदा करनेवाला, विशेषकर खींचन या ऐंठन अथवा पक्षाघात।

लक्षणावली

मन।—नाना प्रकारकी बीमारियोंके आरम्भमें हृत्पिण्डके सम्बन्धमें एक बहुत बड़ी आशङ्का पैदा हो जाती है, मानो विपत्ति आना चाहती है (रास)। सभी विषयोंमें उदासीनता प्रकट करता है (नक्स-वोम, ओपि, ऐसिड-फास): बहुत अधिक आमोद-प्रिय और हँसानेवाला काम करता है।

मस्तक ।—सर-दर्द, माथेकी हड्डीके ऊपर, मानो ऊपरसे दबाव पड़ रहा है (कैल्के, सिफिलिन, पैरिस, मैग-मूर, वेरेट, निकोल) ; दोनों हाथोंसे जोरसे मलने या दबानेपर घटना (ऐकि, आर्जेण्ट-नाई, बेल, कैल्के, ग्लोन, गुयायेक, केलि-बाई, लैके, लाई, नक्स, पल्स, सैङ्गिविन, साइलि, स्पाई, वेरेट) ; मानो एक भारी चीज़ माथेपर रखी हुई है (नेट्र-मूर, सल्फ)। प्रत्येक कदम चलनेपर ऐसा ही मालूम होता है (बेल, कैक्ट, ग्लोन, लैके) ; वृद्धि—सीढ़ी चढ़नेके समय (कैल्के, ग्लोन, सल्फ), हाथ और दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे मालूम होना (कैल्के, लैक-डिफ्लो, सिपि)। सीढ़ी चढ़नेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों बगलसे मूर्द्धादेश दबाया जा रहा है। ग्रीवा-पृष्ठके (गर्दनके) पिछले भागसे लेकर समूचे मस्तिष्कमें दर्द हुआ करता है ; माथा झुकाने या बैठे रहनेपर घटता है और सीढ़ी चढ़नेपर बढ़ जाया करता है और दृष्टिके सामने सब अन्धेरा मालूम होता है (ड्रोसेरा)। आँखके सामने मानो सफेदी छा जाती है (बेल, कास्टि, जेल्स)। रह-रहकर पलकें अकड़ जाती हैं (एपिस, कैल्मी, स्पाई, वेरेट)।

मुखमण्डल आदि ।—नींदके समय चेहरा लाल और गर्म हो जाता है (अरम-मूर, ओपि)। दोनों पैर बहुत ठण्डे और चेहरा गर्म मालूम होता है (कैल्के, फास, चेहरा गर्म, पर बाकी देह ठण्डी—कैमो, सिङ्को, स्ट्रैमोन)। मुँहकी पेशियाँ और पलकोंका यन्त्रणा-रहित (बिना तकलीफ़का) सिकुड़ना और फैलना दिखाई देता है, विशेषकर चेहरेके दाहिने पार्श्वमें (लिखने या पढ़नेकी चेष्टा करते ही पलकें फड़क उठती हैं—कोडिइन)। चबानेके समय हनु-सन्धि फड़फड़ किया करती है (ऐ-नाई, ब्रोम, लैक-कैन ; मुँह फाड़नेके समय—लैके, सैबाड)। जम्हाई और खाँसनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो तालुके बाएँ पार्श्वमें पक्षाघात हो गया है। कण्ठ बहुत सूखा, परन्तु प्यास नहीं रहती (ऐसाफि, सैम्बु ; मुख-विवर बहुत सूखा, परन्तु प्यास नदारद—नक्स-मस)। कण्ठ और तालु आदिकी बहुत अधिक नीरसताकी वजहसे निगलनेके समय डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है।

अन्त्राशय आदि ।—पेट फूलना और उदरमें भार मालूम होना ; दिनभर ऐसा मालूम होता है, मानो पेट भरा हुआ है, पर भूख बिलकुल ही नहीं घटती ; ऐसा मालूम होता है, मानो पेटमें भाफ़ अड़ी हुई है, पर बार-बार

वायु त्यागनेकी चेष्टाका भी कोई परिणाम नहीं होता ; सन्ध्याके समय धूम्रपान करनेपर यह पूर्णता बढ़ जाती है। पाकस्थलीसे अन्ननलीतक शीतलता (टेबैक) मालूम होना और बहुत मिचली। पेटमें ठण्डक मालूम होना, विशेषकर हाथसे दबानेपर या सवेरे सोकर उठनेके समय। किसी समय भी प्यास नहीं रहती।

प्रत्यङ्ग आदि।—रह-रहकर बाँह अकड़ जाति हैं और हाथकी अंगुलियाँ टेढ़ी पड़ जाती हैं, दोनों उरुमें ऐसा दर्द होता है, मानो रगड़ खा गये हैं। सोते ही रोगीके दोनों पैर काँपा करते हैं और इसी वजहसे रोगी बेचैन हो पड़ता है। दोनों पैर फैलाकर बैठनेके समय उरु और पैर चमक उठते हैं और पैर सिकोड़ लेनेपर या खड़े होनेपर आराम मालूम होता है। स्थिर होकर बैठनेपर चेहरा, उरु वगैरहकी पेशियाँ सिकुड़ा और फैला करती हैं। नासामूलमें (कैड्मी-सल्फ) और बाँह-स्तम्भ तथा हाथके अंगुलियोंकी त्वचामें खोंचन मालूम होती है, शरीरकी त्वचा भी बहुत संकरी मालूम होती है और रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उस संकरी त्वचामें उसका शरीर जबर्दस्ती घुसा दिया गया है। चलनेके समय बहुत गड़बड़ी और कितनी ही बार कम्पन अनुभव होता है। विश्रामके समय तकलीफें बढ़ जाती हैं और शरीर हिलाने या रोगवाली जगहको हाथसे दबानेपर आराम मालूम होता है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—चातुर्थक या दो दिनका अन्तर देकर आनेवाला बोखार। शीतावस्थामें प्यास नहीं रहती। हाथ और पैरकी अंगुलियोंमें बहुत शीत मालूम होता है। समूची देह, विशेषकर पीठमें शीत मालूम होता है ; अंगीठी या चूल्हेकी गर्मीसे थोड़ी देरके लिये आराम मालूम होता है ; पेटमें बहुत शीत मालूम होता है (कैल्के), विशेषकर हाथसे दबानेपर। मेरुदण्डमें बहुत शीत मालूम होना और कम्पन, पैरसे जानुतक बहुत ठण्डा मालूम होना, मानो ठण्डे पानीमें डुबोया हुआ था (गुल्फतक ठण्डा—कार्बो-वेज, डा० फेरिङ्गटन)। हाथ और दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे और शरीरके अन्यान्य अंश गर्म। बाँहके अगले भागकी शिराएँ सब फूल उठती हैं और दोनों पैर ठण्डे मालूम होते हैं (पल्स)। शीतावस्थाकी प्रबलता। उत्तापावस्था—प्यास न रहना, चेहरेपर गर्मीकी अधिकता और जाड़ा मालूम होना। समूची देह बहुत गर्म, पर पसीना या प्यास नहीं रहती। रह-रहकर उत्ताप पैदा हो जाता है, इसके साथ ही कान और गालोंमें गर्मी। प्रचण्ड

उत्ताप और प्रलाप। पसीनेवाली अवस्था—सोनेके कुछ ही बादसे रातभर पसीना हुआ करता है। मुँहका स्वाद कड़वा, मीठा। राक्षसी भूख और मांस खानेकी अधिक इच्छा होना। चायना या क्विनाइनके अधिक अपव्यवहारसे पैदा हुआ बोखार।

वृद्धि।—विश्रामके समय, सोनेपर, चबानेपर और सीढ़ी चढ़नेके समय।

घटना।—रोगवाली जगह हाथसे मलने या दबानेपर, माथा झुकाने और शरीर हिलानेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—कैम्फोरा। अनुकूल सम्बन्ध—केप्स, लैके, लाई, पल्स, रास, वेरेट।

सदृश और तुलनीय।—कैक्ट (माथा भारी), कैल्के (उठनेपर बढ़ना), जेल्स (दबावकी तरह सर-दर्द), मैग-म्यूर, पैरिस, सिपि, ग्लोन, कार्बो-वेज, विरेट्रम (सर-दर्द)। लैकेसिस (सविराम ज्वर)—पैर ठण्डे मालूम होना।

शक्ति।—३रे दशमिकसे ३० शततमिक।

मिफाइटिस प्युटोरियस

(MEPHITIS PUTORIUS)

दूसरा नाम।— स्काङ्क (Skunk)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अमेरिकामें जगह-जगह स्काङ्क नामक एक तरहका हिंसक जन्तु मिलता है। यदि कोई दूसरा जानवर उसका पीछा करता है तो एक तरहका जलीय पदार्थ उसके मलद्वारसे बहुत दूरतक निकला करता है और यह बदबूदार रस आँखमें लगनेपर पीछे दौड़नेवाला जीव अन्धा हो जाता है। यही रस सुरासारमें मिलाकर यह दवा तैयार की जाती है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः—दमा; अन्धापन; सहजमें हो दम बन्द हो जाना; जाड़ेका सहन न होना; आँखकी बीमारी; हूप खाँसी; स्वरनालीका आक्षेप।

उपयोगिता और आभास।—डा० फेरिङ्गटनने इसका इस तरह आभास दिया है:—स्नायु-विधानपर ही इसकी क्रिया प्रकट हुआ करती है। जब शरीर क्लान्त और सुस्त हो पड़ता है, उस समय इसका निम्न क्रम सेवन करनेपर सुस्ती दूर होकर नयी ताक़त पैदा हो जाती है। इसका प्रधान लाभ क्रुप-खाँसीमें दिखाई देता है। इसके द्वारा स्पष्ट लक्षणवाली और प्रबल तथा स्पष्ट स्वरयंत्रका आक्षेप मिली और अन्तमें "क्रुप" शब्द होनेवाली खाँसी पैदा हो जाया करती है। मैंने इसे व्यवहार कर देखा है कि वाह्यत: तो इससे रोग बढ़ा हुआ मालूम होता है, परन्तु वास्तवमें यह रोगके भोग कालको तकलीफोंको घटा देता है। सर्दीके लक्षण आदि बहुत थोड़े रहते हैं, पर खाँसीके अन्तमें स्पष्ट आक्षेपिक क्रुप शब्द सुन पड़ता है—ऐसे स्थानपर ही इस दवाको चुनना चाहिये। रातमें और सोनेपर यह खाँसी बढ़ जाया करती है। बच्चोंको ऐसा मालूम होता है कि श्वास रुक जायगी। साँस नहीं छोड़ सकता और कभी-कभी धनुष्टंकार भी पैदा हो जाता है। खायी हुई चीज कै कर देता है, कभी-कभी भोजनके ३-४ घण्टे बाद भी वमन होता है। पानी आदि पीनेपर वह उसकी स्वरनलीमें प्रवेश कर जाता है। शराबी और यक्ष्मा रोगियोंके श्वास-रोगमें यदि ड्रोसेरासे लाभ न हो तो बहुतोंके मतसे मिफाइटिस विशेष फायदा करता है। मिफाइटिसका रोगी शीत बहुत सहन कर सकता है और दूसरोंकी अपेक्षा उसे कम जाड़ा मालूम होता है। बरफकी तरह ठण्डे पानीसे भी शरीर धोनेपर उसे बहुत आराम मालूम होता है। अन्यान्य लक्षणोंमें आगे लिखे कई प्रधान लक्षण हैं:—पेशाबके वेगके साथ हटनेवाला दर्द; सूक्ष्म स्नायुओंकी अस्थि-स्पर्श करनेवाली कपकपी और मानसिक उद्वेग; दोनों पैरोंमें अधिक रक्त-संचय होनेकी वजहसे रातमें नींद खुल जाती है (अरम); दोनों पैरोंमें अस्वाच्छन्द्य मालूम होता है, मानो ये सुन्न हो जायेंगे; कल्पनाकी प्रधानताकी वजहसे बुद्धि वृत्तिका परिचालन नहीं कर सकता; ऐसा बका करता है, मानो नशा खा लिया है; सरमें पूर्णता मालूम होना और भीतरसे बाहरकी ओर दबावकी तरह मालूम होना तथा भयानक यंत्रणा; माथेमें गड़बड़ी और सुन्नता मालूम होना; माथा बहुत बड़ा मालूम होता है। माथेके पिछले भागमें भार और दबाव मालूम होना, मानो कोई इस जगहको अंगुलीसे दबा रहा है; आँखोंका प्रदाह या आँखोंमें लाली; अन्धेरा दिखाई देना; पढ़नेपर ऐसा मालूम होता है मानो अक्षर सब आपसमें मिल जाते हैं।

लक्षणावली

मन ।—कल्पनाकी अधिकताकी वजहसे रोगी अपनी बुद्धि-वृत्तिका परिचालन नहीं कर सकता (काफि)। बहुत बकता है—मानो मतवाला हो गया है। सरमें उत्ताप मालूम होना और उत्तेजना। सामान्य या काल्पनिक विषयोंमें महा क्रोध (थोड़ीसी बातमें क्रोध—काकुर, हिप, मेजेर, नेड्र-मूर)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, एकाएक माथा झुकानेपर (ऐकोन, कैमो, कास्टि, इनियुना, कैलि-कार्ब, लेके, नक्स-वोम, पल्स, बैठनेके समय—कैमो, पल्स)। माथा हिलानेपर (कास्टि, लैक-डिफ्लो, फास)। शय्यामें करवट बदलनेके समय (कास्टि, कोना, सल्फ) और सन्ध्याके समय (ग्रैफ, कैलि-कार्ब, लैक, रास-वेन)। सरमें चक्कर आना। मस्तिष्ककी दुर्बलता और माथेका आकार मानो बड़ा हो गया है (कोरैल-रूब, लैक-डिफ्लो) ऐसा मालूम होता है तथा चित्तकी अप्रफुल्लता और सरके पिछले भागमें दबाव मालूम होना, सरके पिछले हिस्सेमें दबानेकी तरह दर्द, मानो एक अंगुलीके अगले भागसे दबा रहा है। सवारीपर घूमनेके समय सर-दर्द (काकुर, कार्बो, नक्स-मस, सिपि)। मानो माथा परिपूर्ण होकर, माथेकी खोपड़ी ऊपरकी ओर उठ रही है ऐसा अनुभव होना (ऐक्टिया)।

आँख ।—छोटे अक्षरोंमें छपी पुस्तक पढ़ नहीं सकता (कैड्मी-सल्फ, नेट्र-कार्ब)। ऐसा मालूम होता है कि अक्षर सब आपसमें मिल जाते हैं (आर्टिमि-वाल, कैम्फो, कोना, फेर, ग्रैफ, लाई मर्क्युरियस—पेर, नेट्र-मूर, लक-कैन)। सरमें दर्द और आँखमें दर्दके साथ देखनेकी शक्तिकी कमजोरी (ग्लोन, फास, फाइटो, जिङ्क)। आँखमें दर्द—किसी ओर नज़र फेरनेके समय इस ढंगका आँखोंमें दर्द होता है, मानो आँखमें कुछ अड़ा है या दृष्टि-शक्तिमें बहुत जोर पड़ रहा है। आँखमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (बेप्टि, नेट्र-कार्ब, स्पाई, सल्फ)। सवेरे और सन्ध्याके बाद आँखमें डंक मारनेकी तरह दर्द (एपिस, कास्टि, सिपा) और खुजलाहट (नेट्र-मूर ; रगनेपर घटना—कास्टि)। आँखमें मानो आग गिर गयी है, इस ढंगका प्रदाह और उत्ताप मालूम होता है (आर्जेण्ट-नाई, ऐसिड-बेन, कैमो, जिम्नो, मैगे, सल्फ)। आँखका भीतरी अंश लाल हो उठता है, चोटकी वजहसे काला दाग पड़नेकी तरह। पलक खोलनेपर ऐसा मालम होता है कि काँच टट गया (क्रोटेलसके

प्रयोगसे यह लक्षण दूर हो गया था)। आँखके सफ़ेद अंशकी शिरायें सब खूनसे भर जाती हैं। रतौंधी (बेल)। पलकपर टपककी तरह दर्द, मानो गुहौरी या अंजनी हो जायगी।

मुख-विवर।—क्षय हुए दाँतमें दर्द। दाँतकी जड़में रह-रहकर धक्का या चिलक मारनेकी तरह दर्द होता है, दाँतमें टपक हुआ करती है। उपवासके समय ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फूल गया है या बढ़ गया है। मुँहमें ताँबेके जंगका स्वाद। बहुत थकावट मालूम होना और खानेपर सो जानेकी इच्छा (लाई)। सवेरे भूख न लगना और तम्बाकूके धुएँसे घृणा (कैम्फो, कैन्थ, कार्बो-ऐन, इग्ने, नक्स-वोम)। बार-बार पेशाबका वेग, विशेषकर रातमें, पेशाब बहुत साफ़, पर सवेरे गदला हो जाता है। दोनों गाल फूले मालूम होते हैं (खाँसीके साथ)। नमकीन पदार्थ खानेकी इच्छा।

श्वास-यंत्र।—पानी आदि पीनेपर वह स्वरनालीमें घुस जाता है और विषम लगता है, इसके साथ ही प्रचण्ड खाँसी पैदा हो जाती है। खाँसी—पानी पीनेपर (विषम लगनेकी वजहसे—ऐकोन, हायो, मैनसिन, नक्स-मस, सोरिन, स्क्वियुला), बोलनेपर (हायो, मैङ्ग, रियुमेक्स, स्ट्रैम) या ऊँचे स्वरसे पढ़नेपर (मेन्था-पाई, नक्स-वोम, फास)। आक्षेपिक खाँसी—शून्यगर्भ या गभीर: खाँसनेपर वक्षमें दर्द और खाल उधड़ जाने जैसा मालूम होना तथा स्वरभङ्ग मालम होना। साँस लेनेके समय श्वास रुक जानेका उपक्रम और साँस छोड़नेकी शक्तिका न रहना; खाँसते-खाँसते खायी हुई चीज कै हो जाती है—भोजनके ३-४ घण्टे बाद भी ऐसा ही हुआ करता है। कभी-कभी धनुष्टङ्कार आदि अकड़नतक पैदा हो जाती है; रातमें और सोनेपर बढ़ना; सवेरे बलगम कुछ ढीला रहता है और थोड़ी मात्रामें कफ़ निकलता है। शराबी और क्षय रोगियोंका श्वासरोग—मानो वायुनलीमें गन्धकका धुआँ प्रवेश करनेकी वजहसे ऐसा हुआ है (कैमो, लाई, पल्स—यक्ष्मा रोगीके श्वासरोगमें ड्रोसेराके प्रयोगसे कोई लाभ न होनेपर) और नींदके समय (सल्फ—दिनमें सोनेके समय—कार्बो-वेज; नींद खुलनेपर—लैके; यक्ष्मा रोगीके श्वास रोगमें—रियुमेक्स और स्टिक्टा विशेष लाभदायक हैं; रातमें २ बजेसे बढ़ जानेपर—रियुमेक्स और फाड़नेकी तरह खर-दर्द रहनेपर स्टिक्टाका प्रयोग करना चाहिये—फ़ैरिङ्गटन)। वक्षस्थल छूने या दबानेपर दर्द मालम होता है, विशेषकर छींक और खाँसीके समय।

प्रत्यङ्ग आदि ।—गर्दनके पीछेकी पेशीपर खींचन पड़ना या अकड़न। गलेके दाहिने पार्श्व में दर्द, दोनों बाहुओंमें वातकी वजहसे दर्द और पक्षाघातकी तरह खींचन मालूम होना, हिलानेपर घटना। बाँहके ऊपर भाग देनेपर वह काँपा करता है (ऐस्टेक)। रातमें दोनों पैरोंमें खून अधिक सञ्चय होनेकी वजहसे नींद खुल जाती है (अरम)। ऊरुशिखरसे पैरतक वात रोग हो जाना और एँड़ीके नीचे भी सन्धिवातका दर्द मालूम होता है। दोनों पैर मानो सुन्न हुए जाते हैं, उनमें ऐसी ही बेचैनी मालूम होना (मिनि, जिङ्क, बेलि, स्टिक्टा, कास्टि), दोनों जानुओंमें बहुत दर्द। बायें हाथमें बहुत ही बेचैन कर देनेवाली सिकुड़न और बाएँ पैरमें आक्षेपिक दर्द। पैरके तलवेंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, पैरके अंगूठेमें ऐसा मालूम होता है मानो चिमटेसे मांस निकाल रहा है। कदर या गट्ठेमें दर्द और जलन। बार-बार पेशाबके वेगके साथ घूमनेवाला दर्द। कभी-कभी ऐसा मालूम होता है मानो बिजलीकी आगकी चिनगारियाँ आकर शरीरमें लग रही है, चित्तकी बहुत अधिक अप्रफुल्लता और आलस्य मालूम होनेके साथ ही छूने या हिलानेपर पेशियोंमें बहुत दर्द मालूम होता है और बार-बार अंगड़ाई लेना और हाथ-पैर आदिका फैलाना। सूक्ष्म-अस्थि-स्पर्शी स्नायविक कपकपी और मानसिक उद्वेग।

निद्रा ।—बार-बार जम्हाई और आँखसे आँसुओंका स्राव। दिनमें प्रबल औंघाई, यहाँतक कि बन्धु-बान्धवोंके साथ बात करते-करते ही सो जाता है। रातभर नींद नहीं आती। थोड़ी देरतक सोने बाद या बहुत सबेरे नींद खुलनेपर भी शरीर और मन प्रफुल्ल मालूम होता है (मैन्या-पाई)। दोनों पैरोंमें अधिक रक्त-सञ्चय होनेकी वजहसे रातमें नींद खुल जाती है, जीवन्त सपने सब याद रहते हैं। निद्रित अवस्थामें श्वास-रोगका प्रकोप, जागनेपर कुछ देरतक स्थायी रहता है (सल्फ)। सपनेमें घूमना—निद्रित अवस्थामें घूमनेके समय रोगीकी आँख खुली रहती है और चेहरेपर क्रोध दिखाई देता है।

वृद्धि ।—रातमें और सोनेपर, विश्रामके समय, सबेरे और छूनेपर।

घटना ।—बरफ़की तरह ठण्डे पानीसे शरीर धोनेपर; सीधे होकर बैठनेपर और शरीर हिलानेपर।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष या दोषघ्न ।—कैम्फो, क्रोटेलस-हौर।

सदृश ।—कोरैल-रूब्र, ड्रोसेरा, रियुमेक्स, स्टिक्टा, अरम, इग्ने, मिनियेन, काष्टि, ऐक्टि, ऐगार, लैके, कैस्टोर, मस्कस, मैन्था-पाई, प्लैट।

तुलनीय ।—ड्रोसेरा (क्षय-कासकी खाँसी); कोरैलि (हूप खाँसी); रियुमेक्स (रातमें खाँसी); स्टिक्टा (सर-दर्द); बेलेडो (रातमें अन्धापन); इग्नेशिया (तम्बाकूका धुआँ); लैकेसिस (सहजमें दम रुकनेका भाव); मस्कस (स्नायविक लक्षण)।

शक्ति ।—१लीसे ३ शततमिक या उससे अधिक क्रम।

मर्क्युरियैलिस पेरेनिस

(MERCURIALIS PERENNIS)

दूसरा नाम ।—डाग मर्करी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—खिले हुए मनसा जातीय वृक्षसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अन्धापन; स्तनमें दर्द और सूजन; आँखोंका प्रदाह; वाधक; आँखसे आँसू बहना; आध्मान; पलकोंका पक्षाघात; देरसे रजःस्राव; आमवात; प्लीहा; जीभका पक्षाघात; सरमें चक्कर आना।

उपयोगिता और आभास ।—चोटकी तरह इसमें भी जलन वगैरह लक्षणोंकी प्रधानता रहती है। आँख और नाकमें उत्तेजना, पाखाना हो जाने बाद कूथन इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। इसके द्वारा शरीरके श्लैष्मिक-झिल्ली-भरे द्वारोंमें अत्यधिक सूखापन पैदा हो जाता है, मुख-विवर और गलेकी भीतरवाली श्लैष्मिक-झिल्ली पूरी तरह निरस हो जाती है, यहाँतक कि मुँहमें चीनी डाल देनेपर भी वह नहीं गलती; भोजनके बाद यह सूखापन छूट जाया करता है। मुँहसे निकली हुई हवा इतनी गर्म रहती है, कि उसके छू जानेपर दोनों ओठ सूख जाते हैं और निरस हो जाते हैं। खूब कसावटका भाव, मानो ललाट एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक एक बन्धनसे कसकर बाँधा हुआ है; नीचेकी ओर खींचनेवाला दर्द; मलान्त्रमें दर्दके साथ मानो कमर टूटी जाती है; वंक्षण

स्थानमें और उरु-शिखरमें नीचेकी ओर खींचन, मानो आँत उतरेगी। सीढ़ी चढ़नेके समय सरमें चक्कर आना ; माथा भारी मालूम होना, मानो एक भारी चीज़ माथेके तकियेके ऊपर दबाये हुए हैं ; नाकका अस्तित्व मालूम होना अर्थात् ऐसा अच्छी तरह अनुभव होना कि नाक है। हरेक शिरामें टपक, कम्पन और उत्तापका सञ्चार मालूम होना ; रजःस्राव देरसे और थोड़ा और रजोरोध तथा उत्तेजना ; यन्त्रणा और स्तनमें सूजनके साथ बाधककी बीमारी ; ज्वराधिकारमें दाहिने बाँह और छातीकी दाहिनी ओरसे शीत आरम्भ होकर क्रमसे समूची देहमें फैल जाता है ; ठण्डे दाहिने बाँहके रोएँ खड़े हो जाना और इसके बाद क्रमसे सारे शरीरमें इस भावका (लोमहर्षण) फैल जाना ; शरीरके दोनों पार्श्वमें बदबूदार पसीना निकलना, विशेषकर दोनों बाँहोंमें और हाथकी शिराका फूलना इत्यादि कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—उत्तेजनशील प्रकृति ; विषाद-प्रिय ; दुःखित और तन्द्रालु।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, सीढ़ी चढ़नेके समय (ऐ-क्रोमिक, कोरैल, कोना, फाइजस)। माथा मानो हवासे फूल उठता है—ऐसा अनुभव होना और माथेमें जड़ता। मस्तिष्कमें कसावटका भाव और सुन्नकी तरह मालम होना (ग्रैफ), माथा बड़ी तकलीफ़से हिलाया जा सकता है (बार्बा)। ललाट और चक्षु-गोलकके ऊपरी भागमें बहुत खींचन मालूम होना और माथा झुकानेपर मानो भीतर खींचनकी वजहसे ऐसा अनुभव होना कि कुछ बाहर निकलनेका उपक्रम हो रहा है। मूर्द्धादेशमें जलन मालूम होना (ब्राई, कैल्के, हाइपिर, नैट्र-म्यूर, सल्फ)। ललाटके बाएँ अंशमें और बाईं कनपटीमें चिलक मारनेकी तरह दर्द ; घरमें प्रवेश करनेपर बढ़ना, ललाटमें दर्द, ठण्डे प्रयोगसे और रगड़नेपर बढ़ना। माथेमें चोटके बाद सर-दर्द। ललाटके एक प्रान्तसे दूसरी ओरतक ऐसा मालूम होना मानो एक बन्धन द्वारा कसकर बाँधा हुआ है (इण्डिगो)।

आँख।—पलकोंमें बहुत भार मालूम होना और सूखापन मालम होना, आँखें सहजमें खोली या बन्द नहीं की जा सकतीं। आँखोंमें जलन और दर्द ; दोनों चक्षु-गोलक मानो भीतरसे दबावके कारण बाहर निकल आना चाहते हैं। पलकोंका काँपना और फड़क उठना, विशेषकर बाईं आँख मिट-

मिटाया करती है (क्रोकस)। क्षीण दृष्टि, सामने एक पर्दा या मकड़ेका जाल लगा हुआ है (कास्टि, क्रोक, आयोड, लौरो, लिथि, नेट्र-म्यूर, फास, सल्फ)।

नाक ।—नाकसे निकली हुई हवा बहुत ठण्डी रहती है (पहले गर्म, इसके बाद ठण्डी)। नाकमें सुरसुरी और जलन होती है (आर्ज-मेट, कैमो, मेरम-वेर)। ऐसा मालूम होता है, मानो पाकस्थलीसे नाकमें उत्ताप चढ़ता है। अपनी नाक है—ऐसा अनुभव होना। नाकके छेदके मुँहमें जखम हो गया-सा मालूम होना (केयोलिन, रास)। "रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी दो नाकें हैं।"

मुख-विवर आदि ।—मुखमण्डल और माथेकी त्वचामें बहुत खींचन मालूम होती है (ऐसा-फिट, रास)। चेहरा ठण्डा अनुभव होता है (ऐब्रोट, आर्स, कैल्के, वेरेट)। मुँहसे निकली हुई गर्म हवा लगनेपर दोनों ओंठ निरस हो जाते हैं और सूख जाते हैं (नेट्र-कार्ब) और प्यास बढ़ जाती है (हैमा)। मुख-विवरके बहुत भूखापनकी वजहसे जीभमें बहुत जलन होती है (आर्स, कैन्थ, कैप्स, जिम्नो, मैग्ने)। जीभके ऊपर और ओंठ तथा गलेके भीतरी प्रदेशमें जलन पैदा करनेवाली रस-भरी गोटियाँ या छोटे-छाले सब निकलते हैं और आपसमें मिलकर फैलनेवाले जखम पैदा कर देते हैं। मुख-विवर इतना सूखा और निरस रहता है कि मुँहमें चीनी रख देनेपर भी वह नहीं गलती, कण्ठमें जलन और सूखापन मालूम होता है। तालु, गलेकी गांठ और तालुमूलके पिछले भागमें जखम पैदा हो जाता है (अरम, कैलि-बाइ, फाइटो, सल्फ, विङ्को)।

पाकाशय और अन्त्राशय आदि ।—पाकस्थलीमें बहुत शीत और जलन मालूम होती है ; हवा छूटनेपर घटना। भोजन करते ही (आर्स, ब्राइ, फेर, इपिक, ओलियैन, फास, साइलि, सल्फ)। पाकास्थलीके पिछले गह्वरमें मुर्गेके अण्डेकी आकृतिवाले अर्बुद पैदा हो जाते हैं (कोमल—हाइड्रैस्ट ; नारंगीकी तरह—मेजिर), उसे दबानेपर दर्द बढ़ जाता है और इस जगहपर वस्त्र आदिका भार सहन नहीं होता (मेजिर)। पेटमें धक-धक किया करता है (कर्नस, इग्ने, आयोड, कैलि-कार्ब, लैक-कैन, लाइ)। यकृत-प्रदेशसे प्लीहातक ऐसा दर्द मानो दबाया जा रहा है। प्लीहामें बहुत गर्मी मालूम होना (ऐसाफिट) और दबाव मालूम होना ; सोनेपर बढ़ना (कार्बो-वेज,

क्रियो, नेट्र-मूर)। यकृतमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (कैलि-कार्ब)। उदरमें हुड़हुड़-गुड़गुड़ शब्द और बहुत अधिक वायु निकला करता है (लाई)। मलद्वारमें जलन और उत्तेजना और मलान्त्रमें ऐसा मालूम होता है, मानो उसे नीचेकी ओर ढकेला जा रहा है तथा कमरमें खींचन और दबाव मालूम होता है। मलद्वारमें खुजली (ऐ-एलू, कार्बो-वेज, सिना, ग्रैफ, ऐ-नाई, नक्स, पोलिगोन-पैण्टेट)। लगातार आँतोंमें दर्द—इसके साथ ही पतले दस्त आना (कैमो, कोलो, डायस्को, गैम्बोज, वेरेट)। थोड़े परिमाणमें वेग देनेके बाद बहुत ज्यादा परिमाणमें पतला पाखाना होता है (बार्बेस्क)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रजःस्राव बहुत थोड़ा होता है और बहुत देरसे होता है। आर्त्तवका न निकलना या रजोबन्ध। बाधक—स्राव बहुत ज्यादा और उस समय ऐसा अनुभव होना, कि हरेक शिरामें गर्म खून प्रवाहित हो रहा है, बहुत ज्यादा मानसिक उद्वेगकी वजहसे रोगी बेहोश हो जाता है; श्वास-कष्ट, समूची देहमें, विशेषकर माथे और चेहरेमें गर्मी पैदा हो जाना और उठनेकी वजहसे पसीना निकलना। हाथ-पैरोंमें भार और कपकपी मालूम होती है; दूसरे दिन दोनों स्तन बहुत फूल जाते हैं और उनमें दर्द होने लगता है; तीसरे दिन सरमें दर्द और बहुत सुस्ती पैदा हो जाती है और रोगिनीको बाध्य होकर खाटमें पड़ जाना पड़ता है; तीसरे दिन रजःस्राव आरम्भ होकर तीन दिन या पूर्वकी अपेक्षा कुछ कम दिन ही हुआ करता है।

हृत्पिण्ड।—हृत्पिण्ड-प्रदेशमें खूनका बहना। हृत्पिण्डका कसावटका भाव (कैक्ट)। हृत्पिण्ड और पाकस्थलीके भीतर उदरके ऊपरी अंशमें मानो हू-हू, सों-सों और टपक जैसा हुआ करता है और इसके बाद गड़गड़, दप-दप और कम्पन अनुभव हुआ करता है और ऐसा मालम होता है, मानो सभी शिरायें खूनसे भर गई हैं और फूल उठी हैं; उपविष्ट अर्थात् बैठनेकी अवस्थामें अन्नाशयकी मूल-धमनी धक-धक किया करती है, वह ऊपरसे स्पष्ट मालूम होती है, माथेमें जड़ता और स्तम्भित भाव, मानो शरीरका सारा खून बड़े वेगसे जाकर माथेको भर रहा है। श्वासकृच्छ्रताके साथ कलेजा काँपना और माथा झुकानेपर छातीमें कसावटका भाव।

प्रत्यङ्ग आदि।—ऐसा मालूम होना, मानो कमर टूटी जाती है और चरचराती है। हाथ-पैरोंमें बहुत कमजोरीकी वजहसे रोगी बाईं ओर गिर

जाना चाहता है। ऊर्द्ध प्रत्यङ्गोंमें चिलक मारनेकी तरह खींचन, छेदने और सुई गड़नेकी तरह मालूम होना। हाथकी शिराएँ सब फूल उठती हैं। बायें ऊरुके शिखर-देशमें नीचेकी ओर खींचनेवाला दर्द, मानो आँत उतरना चाहती है। समूची देह शून्यमय और सुन्न जैसी मालूम होती है। शरीर हिलानेपर पेशीमण्डलीमें (सब पेशियोंमें) दर्द होता है, बार-बार जम्हाई आती है और आलस्य मालूम होता है। नींद सपने-भरी और उससे तृप्ति नहीं होती।

शीत, उत्ताप और पसीना।—दाहिने बाँह और वक्षके दाहिने पार्श्वसे शीत पैदा होकर क्रमसे समूचे शरीरमें फैल जाता है (बायें बाँह और हाथसे आरम्भ—कार्बो-वेज ; शरीरका समूचा बायाँ पार्श्व आक्रान्त हो जाता है—कास्टि); सिहरावन, सुस्तीकी अधिकता, कमजोरी, हाथ-पैरोंमें दर्द और लगातार औंघाई। ठण्डी दाहिनी बाँहसे रोयें खड़े हो जाना आरम्भ होकर सारे शरीरमें फैल जाता है ; आधी रातके बाद शरीरके दोनों ही पार्श्वोंमें, विशेषकर दोनों बाहुओंमें बदबूदार पसीना निकलता है। देह ठण्डी और जाड़ा मालम होता है तथा दोनों गाल लाल हो जाति हैं, रातके ८ बजनेके समय पाकस्थलीके भीतरसे जाड़ा आरम्भ होकर दाहिनी बाँह, वक्ष और उदरके दाहिने पार्श्व और दाहिने ऊरु-शिखरतक फैल जाता है। रातके ४ बजनेके समय उत्ताप और प्यास और दाहिने अङ्गमें पसीना होने लगता है तथा चेहरेकी शिराएँ सब फल जाती हैं (कैम्फो, सिङ्को, हायो, लेडम, पल्स)। माथा, चेहरा, हाथ और पैरोंमें प्रचण्ड उत्ताप और तेज़ प्यास, रातके २ बजेसे सवेरेतक या नींदके बाद पसीना निकलना आरम्भ हो जाता है और प्यास मालूम होती है।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—ऐकोन, बेलेडोना।

तुलनीय।—ऊपर सीढ़ी चढ़नेपर बढ़ना—बोरैक्स। पाखाना हो जाने बाद काँखना—मर्क-सोल। नीचेकी ओर खींचनकी तरह दर्द—लिलियम। माथा सुन्न—ग्रैफाइटिस इत्यादि।

सदृश।—ऐण्टि-क्रूड, ऐसाफिट, बोर, कैप्स, ऐकालिफा, कास्टि, ग्रैफ, केलि-बाई, क्रियो, लैके, क्रोटोन, लेडम, लिलि-टाई, मेग-मूर, मर्क-सोल, नेट्र-मूर, ऐ-नाई, नक्स, नक्स-मस, प्लेटे, रोडो, स्ट्रैम, सल्फ, ऐ-सल्फ, थुजा।

शक्ति।—१म दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

मर्क्युरियस ऐसिटिकस

(MERCURIUS ACETICUS)

दूसरा नाम।—सब ऐसिटेट आव मर्करी, मर्क्युरियस ऐसिटेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—मर्क-सोल और मर्क-ऐसिटिकसके लक्षणमें कोई विशेष प्रभेद नहीं है। निगलनेके समय मर्क-सोलका और खाँसनेके समय मर्क-ऐसेटिकसके गलेमें दर्द होता है। पुं-जननेन्द्रियका दर्द, ठण्डे पानीसे स्पष्ट बढ़ जाता है और थोड़े गर्म पानीसे नहानेपर घटता है। इस लक्षणवाले उपदंश रोगमें यह विशेष लाभदायक है। प्रत्येक अमावस्याके समय ऋतु-स्राव या प्रति बार २-४ दिन आगे बढ़कर ऋतु-स्राव लक्षणवाले स्त्री-रोगको यह शीघ्र आरोग्य करता है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय।**—लूना, मर्क-सोल।

शक्ति।—२x—३०।

मर्क्युरियस-बिन आइयोडेटस-कम-कैलि-आयोडेटम

(MERCURIUS-BIN IODATUS CUM-KALI-IODATUM)

दूसरा नाम।—डबल आयोडाइड-आव-मर्करी एण्ड पोटैसियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—तरल आकारमें मूल अर्क तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—सहजमें ही सर्दी लगना, बार-बार छींक, खाँसी, चक्षु और नासिकासे पानीकी तरह स्राव, सर्दी-ज्वर, सर-दर्द, मुँहसे लारकी तरह श्लेष्माका स्राव (कैलि-बाई) प्रभृति लक्षणोंमें (इयुपेट, डाल्का, नेट्रम-स, रस-टक्स, इयुफ्रे, सेपा), विशेषकर इन्फ्लुएञ्जा रोगमें विशेष लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—हिपर, सोरि, सेपा, इयुपेटो, रास, डाल्का, नेट्रम-स, इयुफ्रे ।

शक्ति ।—६—२०० ।

मर्क्युरियस

(MERCURIUS VIVUS AND SOLUBILIS)

दूसरा नाम ।—पारा, ब्लैक आक्साइड आफ मर्करी और क्विक सिलवर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—(१) मर्क्युरियस सोल्यूबिलिस हनेमानी । पारा शोधकर नाइट्रिक-ऐसिड गलाने बाद जो तरल पदार्थ पैदा होता है, उसका विचूर्ण बना लिया जाता है । (२) मर्क (वाइवस) । क्विक सिलवर ; मेटालिक मर्करी ; हाइड्रार्जिरम । पहले विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— विशेष बात [दोनों प्रकारको दवाओंका आरोग्य लक्षण यहाँ एक साथ ही लिखा जाता है ; कहाँपर मर्क सोल्यबिलिस दिया जाता है, कहाँ मर्क-वाइवस दिया गया है—डा० क्लार्कने किसोको भो प्रधानता देनेके लिये नहीं कहा है, पर "स" और "व" लक्षणमें उसका प्रभेद बताया है ; वही इस स्थानपर लिखा जाता है] । फोड़ा (स) ; रक्ताल्पता ; उपक्षत ; उपाङ्ग-प्रदाह ; प्रमेह (स) ; हड्डीकोबीमारी (स) ; मुँहका सड़नेवाला जखम ; सर्दी (स) ; उपदंश, छोटी माता (स) ; खाँसी ; दाँत निकलनेका विकार (स) ; अतिसार (स) ; रक्तामाशय और अजीर्ण (स) ; खसड़ा ; दुबलापन ; क्षय हुई त्वचा या पानी लगना (स) ; आँखकी बीमारी (स) ; वात ; मूर्च्छा ; ज्वर ; ग्रन्थिका फूलना (स) ; वात-रक्त (स) ; मसूढ़ेमें फोड़ा (स) ; मसूढ़ेका अस्वस्थभाव (स) ; हृत्पिण्डकी बीमारी (स) ; दादकी तरह उद्भेद (स) ; जलातङ्क ; कामला (स) ; सन्धि-समूहोंकी बीमारी (स) ; प्रदर ; यकृतकी बीमारी (स) ; कटिवात (स) ; उन्माद ; खसड़ा (स) ; विषाद वायु (स) ; मस्तिष्कावरण झिल्ली-प्रदाह ;

कर्णमूल ; माथेमें शब्द ; शरीरमें बदबू (स) ; डिम्बाधारकी बीमारी ; क्लोम-प्रदाह (पैनक्रियेटाइटिस) ; कर्णमूल ग्रन्थिका प्रदाह ; अन्त्रावर्त्तन प्रदाह ; विकृत पसीना ; गुदारोग (स) ; गर्भावस्थाकी बीमारी (स) ; मूत्राधार सुखशायी ग्रन्थिका प्रदाह (स) ; धूम्र (पाण्डुरा) (स+व) रक्तकी विषाक्तता (स) ; जीभका अर्बुद (स) ; आमवात (स+व) ; अस्थिका विकार ; लार बहना (स) ; शीताद (स) ; चेचक (स) ; पाकाशयका प्रदाह ; पीब संचय या पैदा होना (स) ; नश्तर लगवानेके बादका बोखार और उपदंश (स) ; स्वाद बिगड़ा (स) ; दाँतके रोग (व) ; गलेमें विकारकी वजहसे बहरापन (स) ; गलेका जखम (व) ; जीभकी बीमारी (स और व) ; दन्तशूल (स) ; कम्पन (स), मोहज्वर (व) ; क्षत (स) ; गो-बीजका टीका (स) ; वमन (स) इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—पहले जिनके शरीरमें पारा घुस गया है, उन सब रोगियोंके रोग क्या शीत और क्या गर्मी सभी अवस्थाओंमें बढ़ जाया करते हैं, दूसरी-दूसरी दवाओंके रोग या तो शीतसे बढ़ते हैं और उत्तापसे घटते हैं या उत्तापसे बढ़ने और शीतसे घटते हैं—इन दोमें एक-न-एक हुआ ही करता है, पर जिनके शरीरमें पाराका विष है, वे मानो तापमान यन्त्र बन जाते हैं, क्या शीत और क्या उत्ताप सभी अवस्थाओंमें वे पीड़ित और कातर हो उठते हैं। दूसरे बीमारीका रातमें बढ़ना—यह भी इसका एक प्रधान लक्षण है और उपदंश रोगके साथ इन लक्षणोंका सादृश्य रहनेकी वजहसे यह गर्मी रोगकी एक महौषधि कहलाकर बहुत ही प्राचीन कालसे प्रसिद्ध है। तीसरे सभी रोगोंमें बहुत ज्यादा पसीना निकलता है, पर उससे बीमारी घटनेके बदले बढ़ ही जाया करती है। चौथे—पारेकी दुर्गन्ध—पारासे दूषित रोगियोंके श्वास, पसीना और देहसे घृणाजनक बहुत बदबू आया करती है। पाँचवें—माथेका काँपना, हाथ या जीभका काँपना, सुस्ती और पक्षाघात सूचक कम्पन ; कम्पन और पक्षाघात रोगकी यह एक प्रधान दवा है। इसके अन्यान्य उपयोगी लक्षण ये हैं:—जिनके केश थोड़े तथा जो मोटे-ताजे हैं, उनकी बीमारियाँ,—(१) अस्थि-रोगमें दर्द आदिका रातमें बढ़ना। लसिका-ग्रन्थिका फूलना, उससे पीब निकले या न निकलेपर बहुत ज्यादा पीब संचय हो इसका विशेष निर्णायक लक्षण है। धीरे-धीरे पीब संचय होनेवाली सूजन, फोड़ेमें बहुत धीरे-धीरे पीब पैदा होना। (२) बहुत कमजोरी और सामान्य शारीरिक परिश्रमसे कम्पनका अनुभव होना। (३) तेजीसे बोलना, पर पूछनेपर बहुत धीरे-धीरे

उत्तर देना। (४) बहुत जल्दबाज़; समय बहुत लम्बा मालूम होता है, समय मानो बीतता नहीं है। (५) सर्दी, नाकसे सर्दी निकलना या बार-बार छींक, स्राव लगातार होना, कषाय या त्वचाको क्षय करनेवाला; रन्ध्रमुखको खाल उधड़ जाना और उसका जखम भरा रहना। श्लेष्मा पीला, हरा, बदबूदार और पीबकी तरह, खाँसनेपर और निद्रावस्थामें नाकसे रक्तस्राव; नाकसे रबरकी तरह खून झूला करता है। (६) दन्तशूल—छेदने, उखाड़ने या बेधनेकी दर्द, मुखमण्डल और कानतक फैल जाता है। रोगवाले पार्श्वके गालको रगड़नेपर घटना; दाँतका दर्द घटनेपर शीत मालूम होना। (७) दाँतके अगले भाग सब क्षय हो जाते हैं, पर दाँतकी जड़में जखम नहीं हुआ करता (मेजेरियम इसके विपरीत)। (८) बहुत ज्यादा लार बहना,—लार गाढ़ी लसदार या साबुनके फेनकी तरह, बदबूदार और उसका स्वाद ताँबेके जंगकी तरह रहता है। (९) जीभ—बड़ी फूली और उसपर दाँतके दाग सब रहते हैं। (१०) तेज़ प्यास, पर मुँहमें और जीभमें यथेष्ट रस लगा रहता है। (११) कानकी जड़में हमेशा उपझिल्ली प्रदाह बना रहता है या गल-ग्रन्थि-प्रदाह वगैरह रोगोंमें बहुत ज्यादा लार बहना, सूजन, फूलन और दाँतके दाग भरी जीभ और किसी जगह गाढ़ा लेप या मैल चढ़ी रहती है और किसी-किसी जगह बिलकुल मैल नहीं अथवा बहुत ही थोड़ा लेप या दाग रहता है। (१२) आमरक्त या आमातिसार,—मल लसदार खून-भरा, आँतोंमें शूलका दर्द, और इसके साथ ही मूर्च्छा आ जानेका उपक्रम भी बना रहता है। पाखाना होनेके समय और पाखाना होनेके कुछ देर बादतक कूथन, मानो पाखाना होना बन्द न होगा। (१३) यकृतमें अधिक रक्त-संचय होना; यकृत बढ़ा और प्रदाह तथा उसमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, स्पर्श सहन नहीं होता और इसके साथ ही दाहिनी करवट सो नहीं सकता। (१४) बार-बार पेशाब, जितना पानी पीता है उसकी अपेक्षा अधिक परिमाणमें पेशाब होता है। (१५) रक्त-मिला वीर्य निकलना। कानसे खून-मिले पीबका स्राव। (१६) कानके बाहरी छेदमें फोड़े आदि नाना प्रकारके उद्भेद निकलते हैं (कैल्के-पाइक्रिका)। (१७) प्रमेह,—मुदा या उपदंशका जखम मिला स्राव हरा, रातमें बढ़ना। (१८) उपदंश—मुख्य जखमके नीचे, मेदकी तरह, उसके किनारे घूमे या उलटे और लाल या उलटी चमड़ी, मेढ्रकी त्वचा और उसके पासकी क्षय या छेद भरा बना डालता है। जखमसे खून निकला करता है, बहुत दर्द रहता है और उससे पीले रंगका

बदबूदार रस-स्राव हुआ करता है। (१९) प्रदर—स्राव त्वचाको क्षय करनेवाला और जलन, खुजली पैदा करनेवाला तथा खाल उधेड़ देनेवाला। (२०) गर्भवती स्त्रियोंका सवेरेके समयका वमन, बहुत ज्यादा लारका स्राव होता है। नींदवाली अवस्थामें लार बहनेके कारण तकिया भींज जाती है। (२१) प्रत्येक बार आर्त्तव स्रावके समय दोनों स्तन दर्द भरे हो जाते हैं, मानो उनमें जखम होना चाहता है। रजःस्वला होनेके पहले रोगिनीके स्तनमें दूध पैदा हो जाता है। (२२) खाँसी,—सूखी, सुस्त करनेवाली और कलेजा फाड़ डालनेवाली, प्रत्येक बार दो प्रकोप होते हैं (३ बार—स्टैन), रोगी दाहिनी करवट सो नहीं सकता। (२३) दाहिने फेफड़ेके निचले अंशसे पीठतक फैलनेवाला सुई गड़नेकी तरह दर्द। फेफड़ेके प्रदाह रोगमें खूनका स्राव होनेके बाद फेफड़ेमें पीब पैदा हो जाना। (२४) मसूढ़े, जीभ, कण्ठ और गालका भीतरी भाग वगैरह स्थानोंमें जखम पैदा होना।

लक्षणावली

मन।—स्मरण-शक्तिका घटना; स्थूल बुद्धि, दोनों प्रकारकी दवाओंका मिला हुआ लक्षण; औंघाई, उद्वेग और बेचैनी; एक जगहपर अधिक देरतक रह नहीं सकता; सशंकित-भाव, काल्पनिक भय, उन्माद होनेका भय (ऐम्ब्रा, कैल्के, कैनाब-इन, चेलिडो, सिमिसिफ्यगा, हाइड्रोफोब, आयोड, कैलि-ब्रोम, लैक-कैन, लीलि-टाई, मैन्सि, मिडोर, सिफिलिन)। सन्ध्या और रातमें बढ़ना, रोगी विदेश नहीं जाना चाहता (अरम, बेल, कैल्के-फास), घरसे भाग जानेकी चेष्टा करता है (हायो, नक्स, ओपि)। बहुत व्यस्त, सभी विषयोंमें जल्दबाजीका भाव; बहुत तेजीसे बातें करता है (बेल, हायो, लैके, वेरेट); समय बहुत लम्बा मालूम होता है (ऐल्यु, आर्जेण्ट-नाई, कैनाब-इन, कैनाब-सैट, कैमो, मिडोर, नक्स, ऐनहैलोन)। घर लौट जानेकी बहुत इच्छा (अरम, ब्राई, कैम्फ, कैल्के-फास)। कोई सवाल पूछनेपर धीरे-धीरे उत्तर देता है (हेलिबो, कैलि-ब्रोम, फास, बहुत देरतक सोचता है—काकुर)। शराबियोंका प्रलाप आदि मानसिक विकार। प्रसवके बादका उन्माद; अपनी सन्तानको आगमें फेंक देना चाहती है। हमेशा कराहा करती है (बेल, कैनाब-इन, ऐसिड-कार्बोल, कैम्फो, कैमो, साइकूर, काकुर,

युपेट-पर, इग्ने, ऐसिड-म्यूर)। क्रोधी और कलह-प्रिय (अरम, चेलिडो, कैमो, कोना, निकोल-कार्ब, नेट्र-म्यूर, थूजा)। सन्दिग्ध-चित्त, किसीपर भी विश्वास नहीं करता। जड़-बुद्धि (ऐनाक, हायो); कभी-कभी ऐसे काम कर बैठता है, जिससे घृणा होती है (बेल, सिकेल)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, ऐसा अनुभव होना मानो हिंडोलेमें झूल रहा है (सल्फ), माथा झुकानेपर (नक्स-वोम, पल्स), चित्त होकर सोनेपर (नक्स-वोम, सल्फ), सरमें चक्कर आना, सरमें दर्द और मिचली (काफि, क्रोटेल, नक्स-मस) और दृष्टिके सामने चारों ओर अन्धकारमय मालूम होता है (काफि, आर्जेण्ट, कैमो, हायो, फेर, लोरो, ओपि)। सरमें जलन, विशेषकर बाईं कनपटीमें, रातमें सोनेके समय बढ़ना; उठ बैठनेपर घटना (बाईं कनपटीमें, जलन—कोलो, इन्यला, वार्बेस्क)। माथा ऐसा मालम होता है, मानो एक चिमटेसे कसकर बाँधा हुआ है (मैग-सल्फ, नेट्र-म्यूर, प्लैट, पल्स, रैनान, बाल्बो, सैबाड, सार्सा, स्टैन, बेराई, रैटान), इसके साथ ही मिचलीका बढ़ना—निर्मल हवा लगने और नींदमें; खाने और पीने बाद; घटना—घरमें। ललाट-देशमें अकड़न, मानो माथेके चारों ओर एक बन्धन है; रातमें सोनेके समय बढ़ना। सोकर उठने और ललाटपर हाथ रखनेपर घटना। ऐसा मालूम होना मानो माथेके चारों ओर एक बन्धनसे घिरा है और मस्तकका प्रदाह, ललाटमें जलन और टपक, माथेमें अधिक खूनका संचय होना और उत्ताप मालूम होना; माथेमें पूर्णताकी वजहसे ऐसा मालम होता है, कि माथा फट जायगा। ऐसा मालम हो, कि माथा बहुत बड़ा होता चला जा रहा है (बैप्ट, बार्ब)। ललाट, मूर्द्धा और सरके पिछले भागमें तेज़ दर्द; माथेमें सुई बेधनेकी तरह दर्द अनुभव होता है। छेदनेकी तरह दर्द; माथेमें उत्ताप और रातमें पसीना और शय्याके उत्तापसे बढ़ना, रातके अन्तिम भागमें और स्थिर होकर सोये रहनेपर उपशम। मस्तिष्कोदक, सारा शरीर पसीनेसे तर हो जाता है। माथेकी सन्धियाँ सब अलग हो जाती हैं (ऐपोसाइन); अकाल परिपक्व बुद्धि, चेहरा मलिन, रातमें खट्टा पसीना निकलना, केशसे ढके माथेके अंश-विशेषका बढ़ना (आर्ज-मेट, अरम, कैल्के-फ्लू, हेक्ला, कैलि-आयोड, फास), छूनेपर ऐसा मालूम होता है, कि त्वचाके नीचे जखम हो गया है; रातमें सोनेकी अवस्थामें बढ़ना। खोपड़ी

या माथेकी त्वचामें खींचन मालूम होती है—छूनेसे दर्द होता है; खुजलानेपर दर्द बढ़ जाता है और खून निकला करता है, मूर्द्धादेशमें रस-भरे दानेकी तरह बदबूदार दाने निकलते हैं, पीले तथा मरी छालसे-भरे जखममें परिणत हो जाते हैं और विसर्पकी तरह मालूम होते हैं; ललाटमें बहुत अधिक हुआ करते हैं; केश झड़ जाया करते हैं, विशेषकर माथेके दोनों बगलकी जगहके (पपड़ीसे ढके बदबूदार जखम या अकौता—विङ्का-माई, वायोला-ट्राई, रास-वेन, सोरिन, मेजिर, ग्रैफ, क्रोटोन)। करोटी या माथेकी हड्डीके नीचे चमड़ा उधड़ जाने, छेदने या बेधनेकी तरह दर्द, माथेपर खट्टी गन्धवाला और तेलकी तरह पसीना होता है, ललाटमें बरफकी तरह ठण्ढक मालम होती हैं, चर्म्मके नीचेका भाग जला करता है; वृद्धि—रातमें सोनेवाली अवस्थामें; और घटना—सोकर उठनेपर।

आँख।—आँखके सामने काले बिन्दु सब उड़ते दिखाई देते हैं (ऐनान्थि, कास्टि, नक्स, सल्फ), कुछ देरके लिये दिखाई न देना (क्रोटेल, गर्मी और चमकीली रोशनीमें बढ़ जाते हैं)। आँसू बहना। बहुत ज्यादा तथा जलन पैदा करनेवाले (ऐलि-सैट, कैडमी-सल्फ, युफ्रे, ऐ-नाई, फाइटो, सल्फ) और त्वचाको क्षय करनेवाले (आर्स, युफ्रे, हैमा, मर्क-कोर, पल्स, स्पाई, सिफिलिन); पीवकी तरह श्लेष्माका स्राव, तरल और कषाय (मार्क-क्रोर); आँख और योजक आदिमें जलन, छेदने और सुई गड़नेकी तरह दर्द; वृद्धि—रातमें; गालमें छोटे-छोटे दाने निकलते हैं। आँखके सफेद अंशमें जखम, वह शिरामय और धुमैले सफेद आवरणसे घिरा (आर्ज-नाई, ऐट्रोप, अरम, कैल्के-फास, कैनाब-सैट, चिनिन-आर्स, ड्युफ्रे, फार्मि, कैलि-बाई, लैके, मर्क-प्रोटो, ऐ-नाई; उसके नीचे पीव सञ्चय होता है)। उपदंश दोषसे उत्पन्न उपतारका-प्रदाह (आर्ज-नाई, आर्स, ऐसाफिट, कैलि-आयोड, मर्क-प्रोटो, ऐ-नाई, थूजा); आँखके चारों ओर, ललाट और कनपटीमें दर्द; दर्द और यन्त्रणाका बढ़ जाना—रातमें, छूनेपर; आँखमें टपक और बेधनेकी तरह दर्द। आँखके सामनेवाले भागमें पीव-सञ्चय (एपिस, हिप, साइलि, थूजा), पलकें दोनों एकाएक बन्द हो जाती हैं और मोटी, लाल, फूली और विसर्पसे भरी दिखाई देती हैं; शीत, उत्ताप और स्पर्शका सहन न होना; आँखकी त्वचा क्षय हुई या जखम-भरी मालूम होती है; जलन-भरी, मानो आगके कण छू जानेकी वजहसे आँखके पार्श्वमें जखम हो गया है और पपड़ी जमा दिखाई देना।

पलकोंका प्रदाह—आगमें या भट्ठीके सामने काम करनेके कारण (उपदंशकी वजहसे बीमारी होनेपर—जिङ्कम) उस बीमारीमें, रातमें आँखें सट जाया करती हैं (इयुफ्रे, ग्रैफ, क्लिमेट, हिप)।

कान ।—श्रवण-शक्तिका घटना ; कानमें शब्द काँपा करता है ; कान रुकना—निगलने या नाक छिड़कनेके समय थोड़ी देरके लिये आराम मालूम होता है ; बाहरी रंध्रका प्रदाह—डङ्क मारने या छेदनेकी तरह दर्द, हरे रङ्गका, बदबूदार या तरल रसकी तरह पीवका स्राव ; ग्रन्थियोंका बढ़ना ; बाहरी रंध्रमें फोड़ा निकलना ; शैवालकी तरह उद्भेद भी निकलते हैं। कानमें लगातार सर्दी मालूम होना (मिनियैन, प्लैट), मानो कानमें बरफ है ; मानो कानसे बरफकी तरह ठण्डा पानी निकल रहा है ; कानसे खूनका स्राव (साइक्लूय, सिङ्को, क्रोटेल, हैमा, लैके, ओपि, फास)। कानमें शब्द, सन्ध्याके समय बढ़ना। दाहिनी कर्णमूल-ग्रन्थिकी प्रदाहिक सूजन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द।

नाक ।—खाँसनेपर (नक्स, पल्स) या निद्रितावस्थामें (ब्राई, ऐ-नाई) नाकसे खून बहता है। नाकसे रबरकी डोरीकी तरह जमा हुआ खून झूला करता है (क्रोकस, लिसिन, फेरु-म्यूर, ऐ-नाई, पल्स)। नाकका स्राव या बलगम पतला होना, कषाय या त्वचाको क्षय करनेवाला होता है और बराबर छींक आया करती है ; रंध्रमुख खूनसे भरा और जखमसे युक्त रहता है ; नाक लाल, फूली और चमकीली, जलीय हवामें और रातमें भी ठण्डी या गर्म हवा लगनेपर बढ़ जाता है ; पसीना निकलनेपर भी नहीं घटता। नाकसे कुछ हरा बदबूदार पीव निकलता है ; नाककी हड्डियाँ फूल जाती हैं और स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता। बच्चोंकी नाकसे लगातार पपड़ी निकला करती है (कैलि-कार्ब)।

मुखमण्डल आदि ।—चेहरा म्लान, पीली आभा लिये, भूरा, दोनों गाल गर्म और लाल या मलिन और गड़हेमें धँसे अथवा मैले फूले-फूले और सुगठित। चेहरेसे बदबूदार रस बहता है, पीला, मैली रूसीसे ढका, रूसी जमा स्थान खुजलाता है ; खुजलानेपर उससे खून निकलता है। छेदने या त्वचा उधड़ जानेकी तरह दर्द और लार बहना, सर्दी लग जाने या दाँतकी हड्डी क्षय हो जानेकी वजहसे। चेहरेके विशेष पार्श्वमें (खासकर दाहिने) सूजन और उत्ताप और दाँतमें दर्द। नीली आभा लिये नीले घेरेसे घिरा, बिना खुजला-

हटवाली फुन्सियाँ निकलना, दोनों ओठ सूखे, फटे और जखम-भरे ; रङ्ग काला, जलन पैदा करनेवाली फुन्सियाँ निकलकर क्रमसे पीली पपड़ी जमे जखममें परिणत हो जाती हैं। दाहिने पार्श्वका कर्णमूल-प्रदाह, बिना लालीकी सूजन। गांठ बढ़नेके कारण पैदा हुई या कर्णमूल-प्रदाहकी वजहसे हनुग्रह या जबड़े अटकना। हनुदेशकी हड्डीमें जखम (सिस्टस-कैन, कोना, फास, साइलि ; औपदंशिक—अरम, ऐसिड-फ्लु, ऐ-नाई, कैलि-आयोड, मर्क)।

मुख-विवर आदि।—दाँतोंकी जड़ ढीली पड़ जाती है (कोना, हायो, मर्क-सोल, नक्स-मस, नक्स-वोम, रास, स्पाई, स्ट्रैन) और गिर जाती है (ऐमोन-कार्ब, बूफो, मर्क-कोर ; ऐसा मालूम होता है, मानो गिर जायगा—ऐ-नाई, लाइकोपो ; ऐसा मालूम होता है, मानो चबाते ही दाँत गिर जायँगे—हायो)। दाँतकी हड्डियोंका क्षय होना और इसी वजहसे दाँतमें दर्द या दाँतके अस्थिमय आवरकके प्रदाहके कारण दाँतमें दर्द ; तर या सन्ध्याकी हवा लगनेपर दर्द फिरसे पैदा हो जाता है ; छेदने, उखाड़ने या बेधनेकी तरह दर्द। चेहरा और कानतक फैल जाता है ; वृद्धि—शय्याके उत्तापसे या ठण्डी अथवा गर्म चीज़ छूनेपर ; घटना—रोगवाले पार्श्वका गाल रगड़नेपर। मसूढ़ेमें स्पर्श सहन नहीं होता, मसूढ़े फूले रहते हैं और दाँतकी जड़से हट जाते हैं ; बगलका भाग सफेद आभा लिये, उससे खून निकला करता है ; मुँहसे बदबू निकलती है। गहरे लाल रङ्गका जखम। दाँतका अगला भाग क्षय हो जाता है, पर जड़में कुछ भी नहीं होता (थूजा, जड़का क्षय होकर अगला भाग रहता है—मेजेर)। रातमें बढ़नेवाला टपक-जैसा दाँतका दर्द ; मसूढ़ेमें फोड़ा (ऐग्नस, हेक्ला, कैलि-आयोड, लैक-कैन, लाई, नेट्र-म्यूर, नक्स, पेट्रोल, फास, सिलि)। मुँहका स्वाद तीता, मीठापन मिला या नमकीन, सड़ी गन्ध-भरा या लसदार। स्वाद-शक्तिका लोप हो जाना। बात तेजीसे बोलता है, पर अटक जाती है। बोलनेकी शक्तिका लोप होना (बेल, कोना, लोरो)। जीभ सूखी, न झुकनेवाली और काले लेपसे ढकी ; लाल रङ्गकी और निरस, लाल रङ्गकी, काले दाग—बिन्दुसे भरी और जलन-भरी ; जीभ तर, पर बहुत प्यास बनी रहती है। जीभ रससे भरी और श्लेष्मासे ढँकी ; कभी गाढ़ा लेप चढ़ी, मैला पीला रङ्ग और बदबूदार ; कभी-कभी फूली, लाल और उसपर दाँतका दाग (चेलिडो, पोडो, रास)। जीभ प्रदाह-भरी और उसमें पीव सञ्चय होना तथा उसमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। जीभके नीचे अर्बुद (ऐम्ब्रा, थूजा), इसके साथ ही लार बहना और मसूढ़ेमें

जखम। मुख-विवर प्रदाह-भरा और छोटे-छोटे जखम (बोर, ऐ-सल्फ, ऐ-म्यूर, ऐ-नाई); बहुत ज्यादा बदबूदार और लसदार लार बहना; मुँहमें बड़े-बड़े छाले पैदा हो जाना। मुँहमें बहुत ज्यादा परिमाणमें गोंदकी तरह लार इकट्ठी होना। लारका स्राव—लार बदबूदार और उसमें तांबेके जङ्गकी तरह स्वाद रहता है (रैनान-बल्ब)। लाला-ग्रन्थि जखम-भरी (ऐसिड-म्यूर, मर्क-सोल); जीभ सूखी रहनेपर बहुत सोच-विचारकर मर्क-सोलका प्रयोग करना चाहिये—गार्नसी। तालुकी हड्डीमें जखम, खून-भरी लार (आर्स, हायो, नक्स-वोम, रास)।

गलेके भीतर।—अलिजिह्वा फूली और बढ़ी हुई (काफि, क्रोटन, आयोड, कैलि-आयोड, लैक-कैन), कण्ठके भीतर विसर्पकी तरह प्रदाह (ऐपिस, बेल, रास)। मुँह लारसे भरा अथवा कण्ठ सूखा मालूम होता है; कण्ठकी त्वचा क्षय हुई, रुखड़ी और जलन-भरी मालूम होती है। दोनों ग्रन्थियोंका रङ्ग घोर लाल या हरी आभा लिये। लाल रङ्गके जखमसे भरी; जिह्वामूल पार्श्वके दोनों गह्वरमें डङ्क मारनेकी तरह तकलीफ़। तरल पदार्थ निगलनेके समय वह नाकके छेदसे बाहर निकल आता है (बेल, लैके)। कण्ठमें जलन, मानो अन्ननलीसे गर्म भाफ़ निकल रही है, इसी कारणसे ऐसा मालूम होना (मानो कोई ठण्डा पदार्थ चढ़ रहा है—कास्टि; मानो एक गुल्म चढ़ रहा है—ऐसाफि, कैल्को, लैके, मस्कस)। गलेमें सूजन और पीव सञ्चय होनेके बाद कण्ठमें दर्द, कण्ठमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द (एपिस); खाली घूँट लेनेके समय, रातमें और ठण्डी हवा लगनेसे बढ़ना। तालु और मुँहमें उपदंशके जखम पैदा होना। गलेकी गांठें सब फल उठती हैं। कण्ठमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक अर्बुद पैदा हो गया है या कोई चीज़ अड़ी हुई है।

पाकस्थली।—राक्षसी भूख, यहाँतक कि भोजनके बाद ही भूख पैदा हो जाती है (साइक्लम, फास, स्टैफ; भोजनके बाद पाकाशय खाली मालूम होता है—सैङ्गियु, सार्सा; भोजनके बाद पेटमें बहुत भार मालूम होता है—सिङ्को, लाई, नक्स-वोम)। भूख खूब रहती है, परन्तु मुँहमें कुछ भी अच्छा नहीं लगता। वायु या कषाय सड़ी गन्ध-भरी डकार आया करती है। सम्पूर्ण अरुचि (चायना, रास)। बहुत अग्निमान्द्य और हमेशा भूख। पाकस्थलीमें मानो एक टुकड़ा पत्थर पड़ा हुआ है, खाने बाद, खाये हुए पदार्थ ऐसे ही भारी

मालूम होते हैं (आर्स, ब्राई, नक्स-वोम)। पाकाशय प्रदेशमें स्पर्शका सहन न होना (ब्राई, नक्स-वोम)। दूधपर खासी रुचि रहती है; मीठी चीज़ खाना अच्छा मालूम होता है, पर सहन नहीं होती; तरल पदार्थ अच्छे मालूम होते हैं। मांस और मद्य आदिसे अरुचि। पाकस्थलीमें दबाव मालूम होना; थोड़ा-सा और सहजमें पच जानेवाला पदार्थ खा लेनेपर भी पेट भारी होकर झूल पड़ता है (मानो झूल रहा है—कार्बो-वेज, इयुफोर्ब, इग्ने, इपिका, स्टैफ; मानो फूल जायगा—लाई)।

अन्त्राशय आदि।—यकृत-प्रदाह; यकृतमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द (ऐकोन, नक्स) और यकृतके स्थानपर छूनेसे जखम हो जानेकी तरह दर्द मालूम होता है (चियोनैन, इयुपिट, टैराक्स); यकृत-प्रदेशमें स्पर्श सहन नहीं होना; रोगी दाहिनी करवट सो नहीं सकता (केवल रोगवाली करवट सो सकता है—मैग-म्यूर); यकृतमें न दबनेवाली सूजनकी वजहसे दाहिनी कोख फूली और कड़ी मालूम होती है (आर्स, चेलिडो, सिङ्को, डिजिट, ग्रैफ, मैग-म्यूर, फास, रैटान, साइलि, सल्फ); उसमें डङ्क मारने और सुई गड़ने या दबानेकी तरह दर्द। पित्त-पाण्डु रोग या नैजा—खून प्रबल वेगसे माथेकी ओर दौड़ जाता है; मुँहका स्वाद कटु, जीभ तर कोमल लेपसे ढकी और पीली आभा लिये; यकृत-प्रदेशमें (पोडो), पित्ताश्मरी (पित्त-पथरी) रहनेकी वजहसे पाकस्थली और अन्त्रमण्डलीके बीचकी द्वादशांगुलि परिमित आँतोंकी सर्दी, नये पैदा हुए बच्चेका कामला (कैमो); कपड़ोंमें पसीनेका पीला दाग पड़ता है (कार्बो-ऐन, ग्रैफ, लैके, मैग-कार्ब, वेरेट)। अन्त्र-प्रदाह—रोगवाले अंशमें छुरी मारनेकी तरह यन्त्रणा; खून-मिला लसदार पतला पाखाना; लगातार पसीना निकलता है, पर उससे भी रोग घटता नहीं है। अन्धान्त्र-प्रदाह—जहाँ बड़ी और छोटी आँतें मिली हैं, उस जगह कड़ापन, दर्द-भरी सूजन पैदा हो जाती है। अन्त्रावरणी-प्रदाह रोगमें, अन्धान्त्रका प्रदाह मौजूद रहता है और इसी वजहसे रोगवाले अंशसे पीवकी तरह रसका स्राव होता है, चलनेके समय पेट हिला करता है, मानो झूल पड़ा है। पुट्ठेकी गांठका फूलना या उसमें पीव पैदा होनेका उपक्रम। उपदंश और ग्रन्थिकी सूजन मिली बाघी (ऐ-नाइ, थूजा)। उदरमें जलन और असह्य यन्त्रणा, केवल सोनेपर घटती है (ऐमोन-कार्ब, कैन्थ, नक्स-वोम; पट होकर सोनेपर—

ब्राई, कोलो, रस ; चित्त होकर सोनेपर—कूप्रम, आर्स ; चौकीपर पेट दबाकर सोनेपर—बेल, स्ट्रैमो)। पेट फूलनेकी वजहसे बहुत गड़बड़ी मालूम होना, विशेषकर रातमें पेट फूल उठता है। पेटमें गड़गड़ाहट और आवाज़ मालूम हुआ करती है। पेट बाहरसे ठण्डा मालूम होता है।

मलान्त्र और मल।—मलका पतलापन,—मल घोर हरे रङ्गका (इथ्यू, कैमो, हिप, मैग-मूर, नेट्र-मूर), फेन-भरा (ऐबेन, आर्नि, कैम्फ, कोलो, ग्रैटि, लैके, मैग-कार्ब, नेट्र-मूर, प्लैट, पोडो, रैफेन, रियुम, रास, साइलि, सल्फ) या गन्धककी तरह पीला और पाखाना होनेके पहले जाड़ा मालूम होता है (डिजि देखिये)। पाखाना होनेके समय और बाद (कूथन—इथ्यू, ऐण्टिम-टार्ट, बेल, कैप्स, कैलि-बाई, लैके, लिसिन, मैग-कार्ब, मर्क-कोर, नेट्र मूर, पोडो, सल्फ, ट्राम्बिड ; पाखाना होने बाद फिर नहीं रहता—कोलो, गैम्बो, नक्स-वोम, रास); आमरक्त या आमातिसार, मल रक्त-मिला आमसय (कैप्स, कैन्थ, कोलो, नक्स-वोम); कभी गहरा हरे रङ्गका और कभी सफेद आभा लिये धुमैली आँव निकलती है (सफेद रङ्गके गोंदकी तरह—कैमो, कोलचि, सल्फ); पाखाना होनेके समय जाड़ा मालूम होना, मिचली, छेदनेकी तरह अन्त्रशूल और पाखाना होनेके समय और बाद बहुत कूथन मालूम होती है। कभी-कभी काला अलकतरेकी तरह पाखाना होता है (आर्स, चायना, लेप्टेन, वेरेट ; सफेद रङ्गका मल—कैल्के, कैस्टोर, डिजिट, डाल्का, फार्मिका, कैलि-मूर, नक्स-मस, पैलेड, पल्स ; मल यदि लसदार न हो, तो ऐसे स्थलपर मर्क्युरियसका प्रयोग कभी न करना चाहिये—एच० एल० गार्नसी)। मलान्त्रका अपने स्थानसे हटना (काँच निकलना); बाहर निकला हुआ अंश काला और लाल मालूम होना। पाखाना पतला हो या न हो, पाखानेके समय और कभी-कभी दूसरे समय भी मलद्वारसे रक्त-स्राव हुआ करता है।

पेशाब।—पेशाब गाढ़ा लाल रङ्ग, पर तुरन्त ही गदला हो जाता है और बदबूदार हो जाता है। पेशाब इतना लाल होता है, मानो खून-मिला हुआ हो (काफीकी तरह काला—नेट्रम-मूरर, टेरिब)। पेशाबमें खट्टी गन्ध (घोड़ेके पेशाबकी तरह तेज़ गन्धवाली—ऐ-बेन, ऐ-नाई ; बिल्लीके पेशाबकी तरह—बायोला-ट्राई)। मूत्रनलीमें जलन (पेशाबके समय—कैप्स, कास्टि) पेशाबके बाद—ऐ-नाई, कैन्थ); प्रमेह, सुदा या उपदंश रोगके जखमसे निकला

हुआ रस हरे रङ्गका होता है (कैनाब-सैट, मर्क-कोर, ऐ-नाई, थूजा)। रातमें बढ़ना ; बार-बार पेशाबका वेग, अन्तमें कई बून्द निकलनेके समय मूत्रनलीके अगले भागमें असहनीय जलन (कैन्थ ; पेशाबके समय जलन—चेलिडो, कोलचि, मर्क-कोर, नक्स-वोम ; लिङ्गोद्गम अवस्थामें ऐसी जलन, मानो आग छू गयी है—काइङ्का ; रोगी जलनकी अधिकताकी वजहसे काँपता और चिल्लाया करता है—पोलिगोनम ; मानो मूत्रनलीके भीतर एक गर्म लोहेकी सलाई घुस रही है—कैन्थ ; प्रमेह रोगमें मूत्रनलीके दरवाजेपर जलन—क्लिमेट)। मेढ़्त्वक गर्म, फूली और उसमें स्पर्शका सहन न होना ; बाघी निकलनेकी आशङ्का या उसमें पीव सञ्चय होनेका उपक्रम ; बहुमूत्रकी तरह बार-बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होना और दुबलापन (लैक-डिफ्लो, आर्जेण्ट-मेट, आर्स, कुरारि, इयुरेन-नाई), पेशाबके समय और बाद, पेशाबकी राहसे सूतकी तरह पदार्थ निकलना (साइलिसिया)।

पुं०-जननेन्द्रिय।—बहुत कामोत्तेजना ; लम्पटता, बार-बार लिङ्गमें कड़ापन आना और वीर्यस्खलन। बच्चा बार-बार अपने लिङ्गपर हाथ रखता है और दुबला होता जाता है (यहाँतक कि उसकी मृत्यु तक हो जा सकती है—एच० एन० गार्नसी)। काम-शक्तिका बिलकुल लोप हो जाना ; रातमें तकलीफ़ देनेवाला लिङ्गका कड़ापन और कभी-कभी खून-मिला वीर्यस्खलन हुआ करता है (लेड, सार्सा)। शिश्न छोटा, ठण्डा और शिथिल। लिङ्गमुण्ड उत्ताप-रहित और सिकुड़ा हुआ। मेढ़्त्वचाके प्रदाहके कारण सूजन, त्वचा फट जाती है। रमणके समय मूत्रनलीमें जलन। मेढ़्त्वचा और लिङ्गमणिमें पीव पैदा हो जाना, कभी-कभी लिङ्गका अगला भाग फैल जाता है, गर्म हो जाता है और उसमें लाली पैदा हो जाती है। शिश्नके ऊपरकी लसिका शिराएँ सब फूल उठती हैं। उपदंश मुख्य या प्राथमिक—विषाक्त घाव—उसकी तल-भूमि चर्बी-भरी ; भीतरी अंश पनीरकी तरह और किनारे सब भीतरकी ओर घूमी ; चमड़ी या उलटी चमड़ी (मर्क-कोर), जखम, चमड़ी गहरी, गोल छेद कर देनेवाली, बलगा और मेढ़की त्वचाको क्षय कर देनेवाली, खून बहनेवाली ; बहुत दर्द-भरी और स्राव पीली आभा लिये बदबूदार (जीभ तर न रहनेपर भी मर्क्युरियसका प्रयोग उचित नहीं होता—एच० सी० ऐलेन)। अण्डकोषमें ठण्डक मालूम होना। दोनों अण्डकोष या एक कड़ा, फूला, मुष्कत्वक लाल और चिकनी दिखाई देती है तथा अण्डकोष एवं दोनों रेतोरज्जु, जोरसे नीचेको

ओर खिंचते हुए मालूम होते हैं। मुष्क और उरुके बीचके स्थानकी त्वचा क्षय हो जाती है और मुष्क आदिमें बहुत ज्यादा पसीना होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रजोरोध, बहुत ज्यादा रजःस्राव, इसके साथ ही बन्ध्यात्व या जल्दी-जल्दी गर्भ-सञ्चार, मानसिक चञ्चलता और शूलका दर्द। रज न होना; रक्तका अधिक सञ्चय होना और तापकी अधिकता, वस्ति-गह्वरके गभीरतम प्रदेशमें जखम हो जानेकी तरह दर्द; कमरमें ऐसा दर्द, मानो टट जायगी; उदर शिथिल, मानो पकड़ न रखनेसे झूल पड़ेगा। जरायु और योनि-भ्रंश; रमणके बाद आराम मालम होना। योनि-भ्रंश; जरायु-ग्रीवामें ऐसा मालूम होता है, कि जखम हो गया है (ओसिमम-कैन, सिपि, स्टैन)। जरायु-द्वारके ऊपर रक्त निकलनेवाला उपमांस (कैल्के) और किनारे टूटे-फूटे होनेवाला जखम (जरायु-ग्रीवाके ऊपर उपमांस निकलना—क्रियो, ऐ-नाई, टैरेण्ट, थजा)। योनि आदिमें खुजली—पेशाब लगनेपर खुजलाहट बढ़ जाती है (धो डालना चाहिये)। प्रदर रोगमें योनि-देशमें खुजलानेके बाद जलन। प्रदर-स्राव, उत्तेजना, त्वचाका क्षय होना और खुजली पैदा करनेवाला तथा पीवकी तरह, जमे हुए पीव-मिला; स्रावकी अधिकता—शरीरमें (ऐम्ब्रा, कास्टि; केवल रातके समय स्राव होता है—कार्बो-वे, कास्टि, नेट्रम-म्यूर)। आर्त्तव-स्रावके बदले स्तनमें दूध पैदा हो जाना (गर्भ नहीं है, पर स्तनमें दूध आ जाना—लाई)। प्रत्येक बार ऋतुके समय स्तनमें ऐसा दर्द हुआ करता है, मानो जखम (कोना, लैक-कैन) हो जायगा (ऋतु-स्रावके समय स्तनमें दर्द—कोना, फाइटो)। स्तनका दूध बहुत थोड़ा और बिगड़ा हुआ, बच्चा पीना नहीं चाहता (स्तनका दूध पानीकी तरह, बच्चा पीना नहीं चाहता—कैल्के); स्तन-प्रदाह रोगमें स्तन फूला, कड़ा और छूनेपर दर्द होता है; स्तनकी घुण्डी जखमसे भरी; स्तनमें पीव सञ्चय होना। बहुत अधिक रजःस्रावके साथ बन्ध्यात्व। प्रातर्वमन या गर्भावस्थाकी मिचली (एसिड-लैक)।

श्वास-यन्त्र।—कण्ठ-स्वर टटा और रुखड़ा; स्वरनलीमें जलन (बेल, कैन्थ, कैमो, ऐ-हाइड्रो, कलि-आयोड, सब्जि) और ऐसा अनुभव होना, कि त्वचा क्षय हो गई है (ऐलि-सैट, कैमो, लैके, मैङ्ग, स्टैन)। पानीकी तरह नाकका स्राव और गलेमें जखम। सर्दीके साथ शीत मालूम होना और नाकसे पानीकी तरह स्राव होना, स्वरभङ्ग, गलेमें जखम, खाँसी और घरके बाहरकी

हवाका सहन न होना। सीढ़ी चढ़ने या चलनेके समय श्वासकी कमी (एपिस, आर्स, केल्के, बेराई)। आर्सेनिक (संखियाका विष) का धुआँ प्रवेश करनेकी वजहसे श्वास-रोग या दमा, तम्बाकूका धुआँ या ठण्डी हवा लगनेपर आराम मालूम होना। खाँसी—प्रचण्ड, छाती फाड़ डालनेवाली, रातमें बढ़ना; खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो माथा और छाती फट जायगी और खाँसते-खाँसते कभी-कभी ओकाई आने लगती है; युग्म-प्रकोप-जनक खाँसी, स्वरनलीके भीतर और वक्षके ऊपरी अंशमें उत्तेजना पैदा हो जाती है; केवल दिनमें या केवल रातमें खाँसी आती है; कषाय, पीली आभा लिये श्लेष्मामय, कभी-कभी जमा हुआ खूनका टुकड़ा मिला बदबूदार या नमकके स्वादवाले कफ़के साथ खाँसी; श्वासकी अल्पता और लार निकलना; रोगी एक भी बात साफ़ उच्चारण नहीं कर सकता, रातमें हवा लगनेपर और करवट बदलकर सोनेपर बढ़ना (फास)। क्षय-कास रोगमें खून-मिला बलगम। वक्षके भीतरसे कण्ठनलीतक जलन हुआ करती है (कक्कस)। दाहिने फेफड़ेके निचले अंशपर रोगका आक्रमण होता है और फेफड़ेके भीतरसे पीठतक सलाई गड़नेकी तरह दर्द हुआ करता है (चेलिडो, कैलि-कार्ब, मैंगे; बाएँ फेफड़ेके ऊपरी अंशसे पृष्ठफलकतक दर्द—मार्टास-कम, पिक्स-लिक, थिरिड, सल्फ़; दाहिने फेफड़ेके ऊपरी अंशमें बेधनेकी तरह दर्द—आर्स, केल्के; बाएँ फेफड़ेके निचले अंशमें बेधनेकी तरह दर्द—नेट्र-सल्फ़; दाहिने पृष्ठफलकके मेरुदण्डके पासवाले कोनेसे वक्षतक फैलनेवाला दर्द—चिनोपोड-ऐन; बाएँ अंशफलकके भीतरी कोनेसे वक्षतक फैलनेवाला दर्द—चिनोपोड-ग्लाक)। वक्षमें सूखापन मालूम होना, श्वासकी कमी और वक्षमें दबाव और सिकुड़न मालम होना और थोड़ा भी शरीर हिलानेपर या बोलनेकी चेष्टा करनेपर ऐसा मालूम होता है, कि प्राण निकल जायगा (मानो देह हिलाते ही हृत्पिण्ड स्थिर हो जायगा—डिजिट, कोकेइन)। फेफड़ेसे खूनका स्राव होनेके बाद उसमें पीब पैदा हो जाना (कैलि-कार्ब)। मानसिक उद्वेग पैदा करनेवाला छातीका दबाव, श्वासमें तकलीफ़ मालम होना या भोजनके बाद रातमें श्वास-रोध होनेका उपक्रम या सन्ध्याके बाद सोनेवाली अवस्थामें (बाईं करवट) बार-बार दीर्घ-निश्वास लेनेकी आकांक्षा (ब्राई, केल्के, केल्के-फास, बोर, डिजि, इरिडियम, इग्ने, सेनेगा, सिडोरिन, नेट्र-सल्फ़)। श्वास-प्रश्वास, छींक या खाँसनेके समय वक्ष और वक्षकी बगलमें (पीठतक) ऐसा मालम होता है, मानो छुरी बेध जा रही है।

हृत्पिण्ड ।—कलेजा धड़कना ; थोड़ा भी परिश्रम करनेपर (आर्स, कैक्ट, डिजि, आयोड, पोडो, पल्स, वेस्रा ; सीढ़ी चढ़नेकी तरह परिश्रम करनेपर--कैक्ट, क्रोकस, आइविर, नेट्र-म्यूर, नेट्र-कार्ब, ऐ-नाई, सल्फ, थूजा, वेरेट)। मूर्च्छा आ जानेका उपक्रम, हृत्पिण्डकी स्तम्भित गति, हृत्पिण्डकी क्षीणता, ऐसा मालम होना, मानो धीरे-धीरे जीवन-प्रदीप बुझता जा रहा है। सोया-कोया कलेजा धड़क उठनेके कारण जाग उठता है और इस तरह चित्तकी चञ्चलता प्रकट करता है, मानो बहुत डर गया है (ऐ-म्यूर, कैनाब-इन, ऐसिड-आक्साल, कैलि-बाई), डरके साथ रातमें नींदकी अधिकता।

प्रत्यङ्ग आदि ।—गर्दनका पिछला भाग और गला अकड़ना और वातके कारण सूजन। गलेकी सब गांठें कड़ी हो जाती हैं और फूल उठती हैं तथा उनमें तेज़ बेधनेकी तरह और दबानेकी तरह दर्द पैदा हो जाता है। त्रिकास्थिके पिछले भागमें और अंशफलकमें दर्द होता है। कमरमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और क्षीणता मालम होना। मेरुमज्जावरणके प्रदाहमें मेरुदण्डमें तेज़ दर्द, शरीरको हिलानेपर बढ़ना। त्रिकास्थिमें दर्द, मानो कड़ी शय्यापर सोया हुआ था। मेरुचंचु अर्थात् कमरके पिछले भागके अन्तिम अंशमें छेदनेकी तरह दर्द, तलपेटको हाथसे दबा रखनेपर आराम मालम होता है। कोहनीसे हाथकी कलाईतक लाली, गर्म और वातकी वजहसे सूजन। हाथकी पीठ (करभ) की त्वचा क्षय हो जाती है, सन्धियोंकी पीठकी त्वचा फट जाती है और उसमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालम होता है। हाथमें तर खसड़ेकी तरह दाने और रातके समय उसमें खुजली होती है ; नखसे खूनका स्राव होता है और नख फटे हुए रहते हैं और निकलकर गिर जाते हैं (ऐण्टि-क्रड, आर्स, हेलिबो, सिपि, स्कियुला, थूजा, आस्टिलेगो) और उससे पपड़ी उतरा करती है (ऐल्यु, ग्रैफ, सैबाई, सिलि)। वंक्षण-सन्धि या पुट्ठे और दोनों जानुओंमें अस्त्रके आघातकी तरह तेज़ दर्द, रातमें बढ़ना या पीव पैदा होना आरम्भ होनेपर टपक हुआ करती है, ऊरुकी हड्डीमें जलन। ऊरु और दोनों पैर भारी, क्षीण और क्लान्त मालम होते हैं। दोनों जानु बहुत ही दुर्बल—रोगी खड़ा नहीं हो सकता। बच्चोंके दोनों पैर लसलसे और ठण्डे, रातमें अधिक। पैरके ऊपर खून निकलनेवाले जखम होना—ये जखम सब जल्दी-जल्दी सड़ने लगते हैं और छेद-भरे तथा नीले हो जाते हैं। दोनों पैरोंमें ठण्डा पसीना होता है। बाँह और दोनों ऊरुमें बहुत दर्द होता है और स्पर्श

सहन नहीं होना। रोगीको हाथ-पैर हिलानेमें बहुत तकलीफ़ होती है। हाथ-पैरोंका सिकुड़ना और फैलना। प्रत्यङ्गोंमें छेदने या डङ्क मारनेकी तरह वातका दर्द, रातमें गर्म शय्यामें सोनेपर बढ़ना; बहुत ज्यादा पसीना होता है, परन्तु उससे दर्द किसी तरह भी नहीं घटता; रोगवाले अंश सब शोथ-भरे, विशेषकर पैर और गुल्फ-सन्धि; सन्धियाँ सब शोथयुक्त, फूली, रक्त-शून्य या कुछ लाल रहती हैं। रोगवाले अंशको बराबर हिलाया करता है, उसमें खींचने या छेदनेकी तरह दर्द, बेचैनी मालूम होना, धनुष्टंकारकी तरह अकड़न। रोगी चिल्ला उठता है, उसके प्रत्यङ्ग आदि अकड़ जाते हैं, पेट फूल जाता है, नाकमें खुजली पैदा होती है और प्यास लगती है; वृद्धि—रातमें। सन्धि-संकोचन। बहुत कमजोर और थोड़े भी परिश्रमके बाद उत्तापकी अधिकता और कँपकँपी। मेरुमज्जावरणी-प्रदाहमें दोनों पैरोंमें पक्षाघात। हाथ-पैर आदि अकड़े, परन्तु दूसरा मनुष्य उन्हें हिला सकता है; पक्षाघात (बैराई, बूफो, जेल, हायो, कैलि-ब्रोम, मैग-फास, प्लम्ब, रास, टैरेण्ट, जिङ्कम); शिरामें टपक और डङ्क मारनेकी तरह दर्द। विसर्पकी तरह प्रदाह, विशेषकर सन्धि-प्रदेशमें। बहुत दुबलापन (ऐ-ऐसेट, आर्स, सिना, फेरम, आयोड, लाई, नेट्र-मूर, फास, सार्सा, सिपि, साइलि, स्टैन)। स्राव-मात्र कषाय या त्वचाको क्षय करनेवाला। खूनकी कमीके साथ चेहरे और हाथ-पैरपर सूजन। ग्रन्थिका बढ़ना, उनमें पीव पैदा हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है, विशेषकर यदि बहुत ज्यादा पीव पैदा होता हो (हिप, साइलि)। अस्थि-रोगाधिकारमें रातमें यन्त्रणा बढ़ जाती है। बालास्थि-विकृति—हड्डियाँ सब इतनी कोमल हो जाती हैं, कि थोड़ा-सा भी जोर लगानेपर वे टेढ़ी की जा सकती हैं। रोगी सवेरे, विश्रामके समय, विशेषकर बैठनेकी अपेक्षा लेटनेकी अवस्थामें अधिक आराम पाता है। दाहिनी करवट सो न सकना।

त्वचा।—शरीरकी त्वचा जगह-जगहपर रगड़ खा जाती है और क्षय हो जाया करती है। अरुणिका या लाल आभा लिये उद्भेद, विशेषकर पहले उरुके ऊपर निकलते हैं; कभी-कभी रस-भरे दाने निकलते हैं और उसमें पीव पैदा होकर तेजीसे फैलने लगते हैं। पीतपाण्डु या कामला रोगमें शरीरकी त्वचा पीली, रुखड़ी और सूखी हो जाती है। समूचे शरीरमें खुजली पैदा हो जाती है, विशेषकर रातमें और शय्याकी गर्मी लगनेपर। दाने सब रस-भरे या पीव-भरे दानोंमें परिणत हो जाते हैं। बड़ी-बड़ी पपड़ियोंसे ढकी विचर्चिका।

विचर्चिकायुक्त अंश पीव-भरे दानोंके साथ सम्मिलित होकर वहीं पपड़ी जमा जखम पैदा करता है और उससे कषाय त्वचाका क्षय करनेवाला रस बहा करता है। मसूढ़े, जीभ, कण्ठ और गालके भीतर जखम निकलनेके कारण बहुत ज्यादा लार बहा करती है। जखमोंके किनारे टेढ़े-मेढ़े रहते हैं, गन्दे और बिगड़े आकारके दिखाई देते हैं, उसकी तली चर्बीकी तरह सफेद और कालिमासे घिरी; मिल जानेवाले पीव-भरे फोड़े। मुख्य और गौण उपदंश—गोलाकार, तांबेके रङ्गके लाल दाग सब त्वचाके भीतर दिखाई देते हैं। दद्रु-मेखला—एक तरहका उद्भेद कमरबन्दकी तरह कमर और उदरको चारों ओरसे घेर लेता है; वे बहुत खुजलाते हैं और पीव पैदा होता है। चेचक—पीव पैदा होनेवाली अवस्था, इसके साथ ही आमातिसारका लक्षण। हाथ-पैरोंका काँपना (लोलियम-टिम्युलेण्टम)।

निद्रा।—दिन-रात औंघाई, नींद गहरी और बहुत देरतक सोया रहता है। दिनमें बहुत अधिक औंघाई। स्नायविक उत्तेजनाकी वजहसे नींद न आना। रातमें बेचैनी, उद्वेगकी अधिकता, मानसिक चञ्चलता प्रकट करता है और छटपटाता है; बेचैनी, यन्त्रणा, उत्ताप और पसीना होना, खनका ऊपर चढ़ना, मानो रक्तके झरने बह रहे हैं। चिल्लाना, आँसू बहाना, कलेजा धड़कना, सरमें चक्कर आना इत्यादि नाना प्रकारकी तकलीफोंका बढ़ना। सोनेपर तकलीफ़ बढ़ जाती है, रोगी चौंक उठता है और उसकी आँखके सामने विकट मूर्त्तियाँ सब पैदा हो जाती हैं। निद्रितावस्थामें बोलता है, गोंगियाता है, लम्बी साँसें छोड़ता है और साँस तेजीसे चला करती है, मुँह फाड़ा करता है और दोनों हाथ बरफकी तरह ठण्डे मालम होते हैं; नींद खुलनेपर पसीना होना आरम्भ हो जाता है, चिल्लाता और रोता रहता है तथा असम्बद्ध बातें बकता है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—सवेरे शय्यासे उठनेपर शीत पैदा हो जाना; साधारणतः सन्ध्याके बाद सोते समय, मानो किसीने शरीरपर ठण्डा पानी ढाल दिया है (मैग-कार्ब, रास); आगसे सेंकनेपर भी नहीं घटता, घरके बाहरकी हवा लगनेपर जाड़ेका बढ़ जाना (रास ; घटना—पल्स), उदरमें शीत मालम होता है (उदरमें ठण्ड मालम होना—मिनियेन); रातमें बार-बार पेशाब; कभी-कभी एक-एक अङ्गमें गर्मी मालम होती है, भीतरी उत्ताप और मुँहमें उत्ताप मालम होना तथा शय्यासे उठते ही शीत मालम होने

लगना ; शरीरसे कपड़ा नहीं उतारना चाहता (मैग-कार्ब, नक्स-वोम) ; आधी रातके बाद उत्ताप पैदा हो जाना और तेज़ प्यास। घर्मावस्था—शरीर हिलाते ही बहुत ज्यादा पसीना होना (ब्राई, सैम्बियु)। रातमें लगातार पसीना ; सवेरे भी ऐसा ही हुआ करता है ; पसीनेकी गन्ध खट्टी, बदबू और पसीना होनेपर अंगुलीका अगला भाग सिकुड़ जाता है (ऐसिड-फ्लूड, सिङ्को)। रातमें बहुत ज्यादा मेद या तेलकी तरह पसीना होना (थूजा, सैबाड)। वस्त्रमें पीला दाग पड़ता है और कपड़ा कड़कड़ाया करता है। बहुत ज्यादा बदबूदार पसीना, ओढ़ना और शय्याको भेदकर निकलता है ; वस्त्र आदिमें केशरकी तरह दाग लगता है, धोनेपर भी नहीं छूटता (कार्बो-ऐन, सिङ्को, ब्राई) ; पसीना होने बाद शरीरकी त्वचामें जलन होती है (रास)। रातके अन्तिम भागमें कलेजा धड़कना और मिचलीके साथ पसीना होना। आन्त्रिक या सान्निपातिक ज्वरमें कामला और शीताद स्पष्ट यदि न मालूम हो तो मर्क्युरियसका प्रयोग न करना चाहिये।

वृद्धि।—रातमें, जलीय वायुमें, पानीमें भींजनेपर, शीत लगनेपर, ठण्डी हवामें, खासकर सन्ध्याकी हवामें, हेमन्त ऋतुमें जब दिनमें गर्मी और रातमें शीत रहता है, शरीरका वस्त्र उतारनेपर खुले अंशमें ठण्डी हवा लगनेपर (बैराई, हिप)। दाहिनी करवट सोनेपर, पसीना होनेपर, शय्याके उत्तापसे, नाक छिड़कनेपर, सर्दी होनेपर, दीये या आगकी रोशनीमें, पाखाना होनेके पहले, पेशाब करनेके समय और बाद, शरीर हिलानेपर, चलनेपर, थोड़ा भी शारीरिक परिश्रम करनेपर, सन्ध्याके समय, शरीर आगेकी ओर झुकानेपर (पाचन-क्रिया बिगड़ जाती है) और भोजनके बाद।

घटना।—विश्रामके बाद, सङ्गमके बाद और काममें लगे रहनेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—अरम, हिप (आत्महत्याकी इच्छा प्रभृति मानसिक लक्षण रहनेपर इसका प्रयोग किया जाता है), ऐसिड-नाई (अस्थि-वेष्ट-प्रदाह, गलेका जखम इत्यादि), सिङ्को, डालका (लारका स्राव) ; कैलि-आयोड (ग्रन्थि और उपदंश) ; कैलि-मूरर (नाड़ीकी सूजन), ऐसाफिट (अस्थि और आँखमें दर्दकी अधिकता) ; आयोड, गुयायेक, स्टिलि, सल्फ, थूजा, बेल, फेरम, लैके, मेजेर (स्नायुमण्डल और ग्रन्थि) ; कार्बो-वेज और सब लक्षण मिल जानेपर मर्क्युरियसकी उच्चतम शक्ति ही उसका दोषघ्न है।

अनुकूल ।—सम्बन्ध ।—ऐकोन, बेल, हिप, लैके, सल्फ इत्यादिके बाद मर्क्युरियसका प्रयोग होता है और मर्क्युरियसके बाद आर्स, ऐसाफि, बेल, कैल्के, चायना, लाई, ऐ-नाई, फास, पल्स, रास, सिपि, सल्फ, डालका, हिप। प्रतिकूल सम्बन्ध—साइलिसियाके पहले और बाद इसका प्रयोग न करना चाहिये।

तुलनीय ।—बेलेडो (फोड़ा, निगलनेमें कष्ट, एकाएक दर्द); हिपर (शीतार्त्तता); पल्स (पीली आभा लिये गाढ़े श्लेष्माका स्राव); नक्स (सर्दी, तालुमूलमें यन्त्रणा, रक्तामाशय); ऐकोन (रक्तामाशय); नेट्रम (पैत्तिक लक्षण); आर्स (गर्मी); सलफर (खुजली, दाने); स्पञ्जिया (अण्डकोषमें प्रदाह); फास्फोरस (पसीना); ऐण्टि-क्रूड (जीभपर लेप); आर्जेण्ट-नाइट (आँख); बोरैक्स (मुँहका जखम); कोलोसिन्थ (रक्तामाशय); चेलिडो (पैत्तिक दोषयुक्त फेफड़ेका प्रदाह); कैमो (दाँत निकलना); मैग-म्यूर (यकृतमें दर्द); सिफिलिन (उपदंश); लाइकोपो (यकृत-प्रदाह); नाइट्रि-एसिड (अतिसार); ब्रायो (जिह्वा); एपिस (डङ्क मारनेकी तरह दर्द); डलिकस (त्वचामें खुजली); आर्निका (बदबूदार निश्वास); मेजे (दाँत); कोनायम (स्तनमें दर्द); कैलि-कार्ब (पीव-सञ्चय); टियुक्रियम (पालिपस); ग्रैफाई (ऋतुस्रावके समय सर्दी) इत्यादि।

शक्ति ।—१म दशमिकसे ३रे दशमिकका प्रायः उपदंश आदिमें व्यवहार होता है। साधारणतः ६, ३०, २०० शततमिक शक्तितक प्रयोग होता है; पर पारेके अपव्यवहारमें इसकी १००० और उससे भी ऊँची शक्तिका प्रयोग किया जाता है।

मर्क्युरियस बिन-आयोडेटस

(MERCURIUS BIN-IODATUS)

दूसरा नाम।—मर्क्युरियस आयोडिटस रूबर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—एक भाग रेड आयोडाइड आव मर्करी और दो भाग आयोडाइड आफ पोटास मिलाकर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— सर्दी ; सर्दी से उत्पन्न ज्वर ; मुँहका पक्षाघात ; बहुव्यापक सर्दी ; दमा ; नाकमें अर्बुद इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—मर्क्युरियस वाइवसकी अपेक्षा इसकी क्रिया नाककी ग्रन्थि और कौषिक यन्त्रके ऊपर अधिक तीव्र हुआ करती है और शरीरके बाएँ अङ्गके साथ इसकी घनिष्टता दिखाई देती है। गलनलीके रोगमें घूंट लेने या लार निगलनेके समय तकलीफ़ बहुत बढ़ जाती है। इसके कई प्रकृतिगत लक्षण ये हैं:—(१) घरके बाहरकी निर्मल हवा लगनेपर सर-दर्दका बढ़ जाना। (२) चमकीली रोशनीमें तकलीफ़का बढ़ना ; कच्छ्-विषाक्त आँखका रोग। (३) नाकके दाहिने पार्श्वका प्रदाह। (४) यकृत, प्लीहा, क्लोम, मूत्रग्रन्थि और पुं०-जननेन्द्रियमें विकार या रोग।

लक्षणावली

मन।—सर्दी रोगमें मस्तककी जड़ता, घरके बाहर घूमनेपर घटना। माथेमें जड़ताका भाव वर्त्तमान रहनेपर भी मनमें स्फूर्त्ति। सवेरे नींद खुलते ही मन खराब हो जाया करता है और मुँहका स्वाद कड़वा रहता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना ; सर्दी-ज्वर रोगमें रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसके चारों ओरकी सब चीजें चक्कर खा रही हैं। ललाटमें ऐसा मालूम होता है मानो एक डोरीसे कसकर बँधा हुआ है (क्लोरैल, चेलिडो)। माथेकी जड़ता और बाएँ पार्श्वमें कुछ दबाव मालूम होना, मानो सर्दीकी वजहसे ऐसा होता है। घरके बाहरकी हवा लगनेपर घटना। सरके पिछले भागकी हड्डीमें दर्द। माथेके ऊपर छोटी-छोटी पीव-भरी फुन्सियाँ निकलना।

आँख।—प्रदाह, जलन और आँसुओंका भाव, चमकीली रोशनीमें बढ़ना। सोरा-विषकी वजहसे आँखोंका प्रदाह, पीव पैदा होनेवाला आँखोंका प्रदाह। पलकोंपर मासांकुर।

कान।—श्रवण-शक्तिकी क्षीणता ; सन्ध्याके समय घटना ; रह-रहकर कान बन्द हो जाते हैं। कानमें मैलका अधिक पैदा होना। कर्णमूल और उसके पासवाली ग्रन्थिका फूलना।

नाक।—सर्दी या नाकसे स्राव और सुननेकी शक्तिकी क्षीणता ; चलते-चलते शरीर गर्म हो जानेपर घटना ; नाकके दाहिने पार्श्वमें उत्ताप मालूम होना और फूलना, बार-बार छींक और पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव ; कण्ठस्वर भग्न। नाकसे सफ़ेद आभा लिये पीले रङ्गके श्लेष्माका स्राव ; पश्चान्नासा (नाकका पिछला भाग) का रोग,—त्वचा क्षय हो जानेकी तरह मालूम होना ; नासास्थितक रोगका आक्रमण हो जाता है और शङ्खाकार अस्थि फूल उठती है। पश्चान्नासासे मुँहके द्वारा श्लेष्मा निकलता है। नासा-पुटके फटे घाव।

गलेके भीतर।—उपझिल्ली-प्रदाह, कण्ठके बाएँ प्रान्तमें झिल्ली उत्पन्न हो जाती है, बाईं गलग्रन्थिमें प्रदाह रहता है और उसपर पीली तथा धुमैली झिल्ली पैदा हो जाती है ; गलेकी गांठें सब फूल उठती हैं ; कानके भीतरकी कौषिक झिल्ली प्रदाहित हो जाती है ; मुँहमें बदबूदार श्लेष्मा सञ्चित होता है ; खाली निगलनेके समय दर्दका बढ़ना ; घूँट लेनेकी कोशिश मात्र करनेके समय अन्न निगलनेकी अपेक्षा भी अधिक तकलीफ़ होती है। तालुमूल पार्श्ववाले दोनों गह्वरोंसे काली लाल आभा लिये झिल्ली बहुत सहजमें अलग की जा सकती है। हरी आभा लिये और रबरकी तरह श्लेष्माके टुकड़े सब पश्चान्नासासे मुँहके द्वारा निकलते हैं। गुटिका दोषयुक्त तालुमूल-प्रदाह या गलेका जखम। सन्ध्याके समयकी वृष्टिमें भींजनेके कारण कण्ठस्वर टूटा और रुखड़ा हो जाया करता है।

पेशाब और जननेन्द्रिय आदि।—दुरारोग्य बवासीर। बार-बार पेशाबका वेग। रोगिनी क्षणभरके लिये भी पेशाबका वेग रोक नहीं सकती। मूत्रस्थलीमें जखम होना, दाहिने अण्डकोष और रेतोरज्जुमें स्पर्श सहन नहीं होता। मेढ्र-त्वचाके सामनेवाला अंश कड़ा औरफूल जाता है और बीचमें

बिना तकलीफ़का औपदंशिक जखम। उपदंश रोगमें बाएँ अण्डकोषका बढ़ना ; बाघी बहुत दिनोंतक पीव-स्राव होनेवाली। कोमल उपदंश। बिना दर्दकी बाघी (मर्क-प्रोटो)।

प्रत्यङ्ग आदि।—उरु-शिखरसे गुल्फतक दर्द हुआ करता है, मानो रोगीने बहुत दूरतक भ्रमण किया है,—हड्डियोंमें ही दर्द अधिक रहता है। सन्ध्याके समय दोनों पैरोंमें असह्य दर्द,—शरीर हिलानेपर घटना। स्थान बदलनेवाला पेशीगत वातका दर्द (कैलि-बाई)। कभी-कभी हाथमें और फिर कभी-कभी पैरमें दर्द पैदा हो जाता है ; कर्णशूलकी तरह कानमें दर्द (गुयायेक)।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—हिपर।

अनुकूल।—सदृश।—बेल, लैके।

सदृश।—बेडियेगा, कार्बो-ऐनिमैलिस, प्रोटो-आयोड, ऐसिड-नाइट्रिक।

शक्ति।—साधारण २रा और ३रा दशमिक विचूर्ण। ३० शततमिकतक व्यवहारसे भी उत्तम फल पाया जाता है।

मर्क्युरियस कोरोसाइवस

(MERCURIUS CORROSIVUS)

दूसरा नाम।—कोरोसिव सब्‌लिमेट ; रस-कपूर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसका विचूर्ण और तरल क्रम तैयार हुआ करता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—हनुके नीचेकी हड्डीके भीतर बीमारी ; उपक्षत ; उपाङ्ग-प्रदाह ; अस्थियोंकी बीमारी ; मूत्रग्रन्थिकी बीमारी ; सड़नेवाला मुँहका जखम ; उपदंश ; अतिसार ; रक्तामाशय ; अकौता ; सान्निपातिक ज्वर ; आँखकी बीमारी ; मसूढ़ेमें सूजन और जखम ; आँतमें जखम ; आँखकी पुतलीका प्रदाह ; कामला ; मूत्रयंत्रकी

बीमारी ; बहुमूत्र ; प्रसवका दर्द ; सूतिका ज्वर ; खसड़ा ; गर्भ-स्राव ; मुँहमें जखम ; कर्णमूल ; अन्ननालीका संकोचन या रुकना ; पक्षाघात ; उल्टी चमड़ी ; छालेकी तरह उद्भेद ; पोड़ा नारंगा ; अन्त्रावर्त्तन प्रदाह ; जरायुके बाहरी आवरणका प्रदाह ; चेहरेका स्नायुशूल ; आँखकी ऊपरी पलकमें दर्द ; उपदंश ; आँतका क्षय रोग ; स्वाद बिगड़ा ; कूथन ; गलेके भीतर प्रदाह ; जीभकी बीमारी ; अलिजिह्वाका बढ़ना या बड़ा होना।

उपयोगिता और आभास।—इसकी क्रिया अनेक अंशोंमें मर्क्युरियस वाइवसकी तरह होती है, पर उससे तेज़ और जल्दी होती है। फ्रेंच-चिकित्सक टेस्टे के मतसे जिस स्थलपर स्त्रियोंको मर्क-सोल दिया जायगा, ठीक वही लक्षण मौजूद रहनेपर पुरुषोंमें मर्क-कोरको प्रयोग हुआ करता है,—यह मर्क-कोरोसाइवसका एक विशेषत्व है। अब आगि इसके कई सिद्धिप्रद लक्षण लिखे जाति हैं -(१) इसका प्रधान क्षेत्र पुरुष है (उपदंश) खाल उधड़नेवाले तथा पीव बहनेवाले जखम आदि, लालामूत्र। (२) मईके महीनेसे नवम्बरतक जो सब आमरक्त और ग्रीष्मातिसार आदि अन्त्राशयके रोग पैदा होते हैं, उनमें यह विशेष लाभ करता है। (३) कूथन—या वृथा वेग (पाखाना हो जानि बाद उपशम—नक्स-वोम, ऐलो, कोलो)। (४) कूथन—या वृथा वेग,—मूत्रस्थलीके प्रबल सङ्कोचनकी वजहसे कूथन और मूत्रनालीमें तेज़ जलन। (५) प्रमेह—द्वितीय अवस्था—स्राव हरी आभा लिये या खून मिला, पानीकी तरह पतला, भयानक जलन, प्रबल वेग और यन्त्रणाजनक लिङ्गका कड़ापन, घोर बैंगनी रङ्गकी सूजन, लिङ्गमुण्ड घोर लाल या ऐसा मालूम होता है कि उसमें खूनका दौरान नहीं होता है या चमड़ी रोग मिला। (६) उपदंश—बहुत तेजीसे फैलता है और कई दिनोंके भीतर ही शिश्नका आधा अंश क्षय कर डालता है। (७) गलेका जखम,—तेजीसे फैलनेवाला और उसमें बहुत अधिक जलन होती है। (८) उपजिह्वा बड़ी रहनेकी वजहसे बार-बार खाँसी आती है (भीतरी प्रयोगके साथ २य या ३य दशमिक विचूर्णका लेप करनेसे बहुत लाभ होता है—डा० क्लार्क)। (९) उपदंश दोषकी वजहसे या गण्डमाला बढ़नेके लक्षणकी वजहसे आँखोंका प्रदाह—प्रचण्ड प्रदाह, भयङ्कर, असहनीय दर्द और जलन, बहुत अधिक आलोकातङ्क (रोशनीका सहन न होना) और चारों ओरकी हड्डीमें उखाड़नेकी तरह दर्द। (१०) नाकका स्राव—निकला हुआ श्लेष्मा गाढ़ा गोदकी तरह, कषाय, त्वचाको क्षय करनेवाला।

(११) अन्ननालीका संकोचन—तरल या कड़े पदार्थ निगलनेके समय कण्ठनालीमें आक्षेप पैदा हो जाता है और उसी समय खाने या पीनेकी चीज़ कै हो जाती है। कण्ठमें ऐसी यंत्रणा मानो कोई अस्त्रसे काट रहा है। (१२) नाना प्रकारके चर्म्म-रोग, उपदंश दोषकी वजहसे भूरे भूरे चकत्ते, चेचक, श्लेष्मा-भरे दाने प्रभृति। (१३) अन्यान्य अस्थियोंमें, उरुकी दोनों हड्डियोंपर प्रबल रूपसे रोगका आक्रमण होता है और इस अस्थिमें बहुत दर्द मालूम होता है। (१४) वातव्याधि और वातकी वजहसे बोखार।

लक्षणावली

मन।—मानसिक उद्वेगकी वजहसे नींदमें व्याघात (कास्टि, कैमो, लैके, मर्क-वाई)। बुद्धिकी जड़ता, कोई यदि रोगीके साथ बात करता है तो रोगी उसकी ओर निर्बोधकी तरह देखता रहता है। वह क्या कहता है यह समझ नहीं सकता (नाइट्रि-स्पिरिटस-डालसिस)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, माथेमें ठण्डक मालूम होना और ठण्डा पसीना हुआ करता है और माथा झुकानेपर बहरापन पैदा हो जाता है। कनपटी और कानके पीछेका सर-दर्द। ललाटमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। मस्तिष्कके भीतर औपदंशिक अर्बुद। ललाटपर बहुत ज्यादा पसीना निकलना (ऐ-फास, सल्फ; छोटा मालूम होता है—स्ट्रैम)।

कान।—प्रदाह और उसमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (बेल, मर्क)। बदबूदार पीवका स्राव (रस-टक्स)। कानमें टपक।

आँख।—सभी चीजें बहुत छोटी मालूम होती हैं (मूरर, प्लैट—क्षुद्रतर और दूर मालूम होती हैं-प्लम; छोटी और धुंधली—मर्क)। दो देखना। तारका संकुचित और उसमें रोशनीका ज्ञान न रहना (कैम्फो, हायो, आर्स, कैलि-ब्रोम, साइक्यू, डिजिट, लोरो, ओपि, स्ट्रैम, सिफिलिन)। उपदंश दोषसे उत्पन्न ग्रन्थियोंके बढ़नेके कारण चक्षु-प्रदाह—स्वच्छ आवरकके ऊपर गहरा जखम निकलता है और निकला हुआ श्लेष्मा कषाय रहता है तथा चारों ओरकी खाल उधेड़ डालता है। बहुत अधिक प्रदाह, भयंकर और असह्य दर्द और जलन, बहुत अधिक रोशनीका भय और आँखके चारों ओरकी हड्डीमें उखाड़नेकी तरह दर्द। पलकें सब फूलीं, लाल और क्षय हुई त्वचाकी तरह दिखाई देती हैं और उसपर मोटी मरी हुई छाल जमी रहती है, साथ ही पीव-

भरी फुन्सियोंसे भरी रहती है। उपदंश दोषके कारण तारका प्रदाह,—भयानक यंत्रणा, विशेषकर रातमें लालामूत्रसे उत्पन्न (और लाला-मूत्र रोग बतानेवाला) चक्षुमुकुरका प्रदाह, भवोंके स्थानपर उखाड़नेकी तरह दर्द और चारों ओरकी हड्डीमें स्पर्शका सहन न होना। आँखका सफेद अंश लाल। आँखके गोलेके पिछले भागमें दर्दकी वजहसे ऐसा मालूम होता है, कि वह बाहर निकल आना चाहता है। गुटिका-दोषयुक्त चक्षु-प्रदाह,—स्वच्छावरकके ऊपर गहरे घाव पैदा होते जाते हैं, निकला हुआ रस कषाय और चारों ओरकी त्वचाको क्षय कर डालता है, आँखके चारों ओर फोड़ेकी तरह छोटी-छोटी फुन्सियाँ निकलती हैं, नये पैदा हुए बच्चेकी आँखोंका प्रदाह (एपिस, आर्जेण्ट-नाई, ऐ-नाई, कैल्के, सिफिलिन) - स्राव कषाय, अपनी माताका उपदंश या प्रदर-स्राव लगनेकी वजहसे बीमारी।

नाक।—नाक फूली और लाल। पानीकी तरह नाकसे स्राव, घ्राण-शक्तिका लोप हो जाना। पीनस या पूतिनस्य, नासारन्ध्रसे गोंदकी तरह श्लेष्माका स्राव होकर पिछले छेदमें आकर सूख जाता है, नासिकाके मध्यकी भेद-कास्थिमें छेद हो जाता है (ऐसाफिट, अरम, ऐ-फ्लू, कैलि-आयोड, लैके, मर्क-प्रोटो, मेजिर, फाइटो, स्टिलिङ्ग सिफिलिन)। नाक रुकी मालूम होती है, पर लगातार श्लेष्माका स्राव हुआ करता है (आर्स, कूप्रम, सिकेलि, पर्याय-क्रमसे रुकी और श्लेष्मा बहनेवाली—ऐण्टि-टार्ट, आर्स, सैङ्गिविन), रंध्रके भीतर त्वचा क्षय हो जानेकी तरह और उसमें उत्तेजना मालूम होती है।

मुखमण्डल।—चेहरा और दोनों गाल फूले, लाल और शोथकी तरह मालूम होते हैं। बाईं गण्डास्थिमें उखाड़नेकी तरह दर्द। मुखका तीव्र स्नायुशूल, हनुमें मानो शूलाघात हो रहा है, दिनमें घटना, बढ़ना रातमें या ४ बजेसे रातके १० बजेतक बढ़ना। लालामूत्र रोगमें—चेहरा शोथकी तरह फूला और म्लान, ऊपरी ओंठ फूला और ऊपरकी ओर उलटा, घोर लाल और फूला ओंठ। चेहरेका रंग पीला (आर्ज-नाई, कैल्के, चेलिडो, लाई, मर्क)।

मुख-विवर।—ऐसा अनुभव होना कि मुँह झुलस गया है (जैट्रो, मैग-मूर, सिपि;—मानो जीभ झुलस गयी है—कोलो, हाइड्रैस्ट, सैङ्गियु, वेरेट)। मुँहका भीतरी भाग नीरस और जलन-भरी प्यास। मुँहके भीतर रस-क्षरण होनेकी वजहसे श्लैष्मिक-झिल्लीके ऊपर नकली झिल्ली पैदा हो जाती

है और यह नकली झिल्ली गल-ग्रन्थितक फैल जाती है। दाँतकी जड़ ढीली पड़ जाती है और उसमें दर्द हो जाता है। मसूढ़े फूल उठते हैं और नकली झिल्लीसे ढँके मालूम होते हैं। मसूढ़ेमें गलित फोड़ा पैदा हो जाता है और उससे लगातार खून बहा करता है। ओठ और जीभ सफेद आभा लिये तथा सिकुड़ी। जीभपर गहरा सफेद श्लेष्मा चढ़ा रहता है या नीरस और लाल रहती है, कटहलकी तरह उसपर काँटे उठे रहते हैं, जीभ सफेद रङ्गकी और इतनी फूली रहती है, कि रोगी जीभ बाहर नहीं निकाल सकता (एपिस, कार्बो-वेज, लैके, सैबाड, स्ट्रैमोन)। फैलनेवाला जखम—मुँहके भीतर, तालुमूल या मसूढ़ेके ऊपर, उसकी वजहसे मुँहमें बदबू या सड़ी गन्ध पैदा हो जाती है। लार बहना, मुँहका स्वाद नमकीन, लार खून-भरी, पीली आभा लिये, गाढ़ी गोंदकी तरह और कषाय। उपझिल्ली-प्रदाह रोगाधिकारमें। खून-मिली लार बहना, मुँहसे पाकस्थलीतक यन्त्रणाजनक जलन। मुँहसे अण्ड-लालकी तरह लार बहना, गालके भीतर और दोनों ओठोंपर उपक्षत (छाले), ओठके ऊपरवाले जखम सब जलन करनेवाले और रस-भरे दानोंसे घिरे।

गलेके भीतर।—अलिजिह्वा फूली, लम्बी और गहरे लाल रङ्गकी (लम्बी—क्रोटोन, हायो, आयोड, कैलि-आयोड, लैके, मैन्सि, सल्फ ; अलिजिह्वा बढ़नेकी वजहसे लगातार खाँसी आया करती है—क्रोटोन, हायो, मर्क, कोरोसाइवस, द्वितीय या तृतीय दशमिक विचूर्ण ; रूईसे लगा देनेपर लाभ हुआ करता है—डा० क्लार्क)। तालुमूलका तेज़ प्रदाह होकर निगलनेमें तकलीफ़ होती है और श्वास रुक जाना चाहता है। गलेकी दोनों गांठें फूली और जखम-भरी मालूम होती हैं (अरम-मेट, कैल्के, कैलि-बाई, मर्क, मर्क्युरियस-पेरेन, फाइटो, नेट्रम-सल्फ ; बायीं गलग्रन्थि—लैक-कैन, लैके, मर्क-बिन)। कण्ठमें ऐसी तकलीफ़ मालूम होती है, मानो सुई गड़ गयी है (सिपा, साइलिसिया)। कोई पदार्थ निगलनेकी चेष्टा करनेपर भयानक ओकाई आती है और वह पदार्थ वेगसे बाहर निकल आता है। कण्ठनालीके बाहरका स्थान और ग्रन्थियाँ सब फूल उठती हैं।

पाकस्थली।—उदरके ऊपरी भागसे मुँहके भीतरतक जलन रहती है ठण्डी पतली चीजें पीनेके लिये लालायित। ठण्डे खाद्य पदार्थ खानेकी इच्छा और गर्म चीजें खानेकी इच्छा न होना। वमन—अण्डलालकी तरह पदार्थ ; जमे हुए गोंदकी तरह श्लेष्मा ; काफीके रङ्गवाला (आर्स, कोना, फास, वेरेट)

और जमा हुआ खून मिला पदार्थ; पीवका वमन। उदरका ऊपरी प्रदेश आध्मान वायुसे भरा और फूला रहता है और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता। ठण्डे पानीय पीनेके लिये ज्वालामयी प्यास। पिये हुए पदार्थ नाकके छेदसे बाहर निकल आते हैं (एरम-ट्राई, बैराई-कार्ब, कैन्थ, कैलि-पार्माङ्ग, लैक-कैन, लैके, मर्क, मर्क-साया, फाइटो, ऐ-सल्फ)। उदर—आध्मान वायुसे फूला रहता है और बहुत दर्दके कारण उसमें स्पर्श सहन नहीं होता। नाभिके नीचे छेदनेकी तरह दर्द।

मलान्त्र और मल।—आमातिसार और रक्तामाशय। मल पीले रङ्गका और हरा, पित्तमय, अन्तमें लसदार पदार्थ और खून और श्लैष्मिक-झिल्लीके टुकड़ेकी तरह सूतमय आम निकलती है, कूथन और असहनीय छेदनेकी तरह या शूल बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है; पाखाना हो जानेके बाद जलन और मलान्त्र तथा मूत्रस्थलीका प्रबल संकोचन; वृद्धि—गरमीके मौसमके आरम्भ कालतक बढ़ना; आधी रातके बाद वमनके साथ तकलीफ़ पैदा कर देनेवाला खून मिला मल निकलना।

पेशाब।—पेशाब बहुत थोड़ा होता है, भूरे रङ्गका और उसमें ईंटके चूरकी तरह तली जमती है (चायना, फास, पल्स)। मूत्रस्थलीकी कूथन या प्रबल संकोचन (कैन्थ, प्लम्ब, टेरिब) और मूत्रनलीमें तेज़ जलन; पेशाब गर्म, परिमाणमें बहुत थोड़ा या रुका हुआ; भयानक यन्त्रणाके साथ बून्द-बून्द निकला करता है; रक्त-मिला भूरे रङ्गका और ईंटके चूर्णकी तरह तली मिला, लालामय (एपिस, आर्स, कैल्के-आर्स, ग्लोन, हेलिबो, लैक-डिफ्लो, नेट्र-कार्ब, प्लम्ब)। पेशाबके साथ कपासके सूत या झिल्ली खंडके समान पदार्थ निकलता है (एपिस, कैन्थ, कैल्मी)। प्रमेह—दूसरी अवस्था, हरे रङ्गका स्राव, रातमें बढ़ना, अत्यधिक जलन और मूत्रस्थलीके प्रबल संकोचनके कारण पैदा हुई कूथन-मिला, रक्त-मिला अथवा पानीकी तरह, भयङ्कर जलन पैदा कर देता है, लिङ्गमें यन्त्रणाजनक कड़ापन और वेग मौजूद रहना; गाढ़ी नीले रङ्गकी सूजन; लिङ्गमुण्ड घोर लाल या रुके हुए खूनके दौरानकी तरह मालूम होता है; चमड़ी या उल्टी चमड़ी; गर्भवती स्त्रियोंका लालमूत्र।

पुं०-जननेन्द्रिय।—निद्रितावस्थामें प्रबल लिङ्गोद्गम। बाएँ अण्डकोषमें सूक्ष्म कांटा गड़नेकी तरह दर्द मालूम होना। शिश्न और दोनों अण्डकोष

फूल जाते हैं और उनका आकार बड़ा हो जाता है। उपदंशका जखम फैलनेवाला और उससे पतले पीबकी तरह रस बहा करता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—असमयमें और बहुत ज्यादा ऋतुस्राव। प्रदर—कुछ पीला और एक तरहका वमन पैदा करनेवाला गन्ध मिला स्राव। योनिपार्श्वमें तेज़ प्रदाह। स्तनवृन्तके चारों ओर ग्रन्थिमय सूजन। स्तनवृन्तकी त्वचा फटी हुई और उससे खून निकला करता है; बच्चेको स्तन पिलानेमें बहुत दर्द होता है।

श्वास-यन्त्र।—भग्न-स्वर या स्वरलोप (आर्जेण्ट-मेट, कास्टि); स्वरनालीमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द; छातीमें कसावटका भाव। कोई चीज़ निगलनेके समय स्वरनली और उपजिह्वामें दर्द मालूम होता है; जीभ दबानेपर बहुत दर्द होता है, कण्ठमें ऐसा दर्द मानो अस्त्राघात हो रहा है। अलिजिह्वा बढ़ी रहनेकी वजहसे आवाज़ टूटी हुई और शून्यगर्भ खाँसी (ऐल्यू, क्रोटोन-टिग, हायो, मर्क-बिन)। खाँसीके साथ खून मिला बलगम निकलता है (बेल, कैलि-नाई, मर्क)। रक्त-कासके बाद फेफड़ेमें यक्ष्माका आविर्भाव, इसके साथ ही विलिपी ज्वर। दाहिने वक्षके निचले अंशमें महीन सलाई गड़नेकी तरह दर्द, यह दर्द समूची छाती भेदकर फैलता है (चेलिडो, मर्क-बाई, कैलि-कार्ब)। फेफड़ेके ऊपर क्षय-कासकी गोटियाँ निकलना; निद्रितावस्थामें नाड़ी सविराम (रुक-रुककर), क्षुद्र और उसकी गति असमान रहती है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गलेकी गांठें सब फूली और कड़ी। रोगी घुटने मोड़कर चित्त सोया करता है—कमर और पीठके मेरुदण्डका टेढ़ापन रोगमें। कन्धे तक बाँह बहुत फूला रहता है, लाल रहता है और रस-भरे दानोंसे भरा रहता है। बायाँ कन्धा और अंसफलकमें वातकी वजहसे दर्द (ग्रैफ)। दाहिने पुट्ठेके स्थानपर सुई बेधनेकी तरह दर्द, हिलानेसे घटना। मानो दोनों पैर सुन्न हो गये हैं। आमरक्त रोगाधिकारमें जंघाकी पोटलीकी पेशीमें ऐंठन, दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे। मुखमण्डल, बाँह और दोनों पैरकी पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना एवं हाथ-पैरोंमें अकड़न। सोते ही रोगी इतना चौंक उठता है कि उसकी समूची देह हिल उठती है (हृद्‌रोग—लाइकोपस-वर्जि)। पुट्ठे और अन्यान्य ग्रन्थियोंका फूलना; निचले हनुकी अस्थिका सड़ना।

अस्थि-वेस्टमें बहुत अधिक खींचन, मानो फटा जाता है, ऐसा ही दर्द (सविराम ज्वराधिकारके आरम्भमें मालूम होता है)।

त्वचा ।—शरीरकी त्वचामें जलन और लाली और उसपर रस-भरे दाने निकलते हैं। नख सब धुमैले हो जाते हैं। शरीरके पसीना निकलनेवाले अंशमें भयानक अकौता पैदा हो जाता है। गौण उपदंशकी वजहसे अरुणिका और जखम। चेचक; श्लेष्माकेदाने। थोड़ा भी शरीर हिलाने या वायु लगनेपर शीत मालूम होने लगना, झुकनेपर उत्ताप मालूम होना और सीधे होनेपर घटना।

निद्रा ।—निद्रितावस्थामें प्रबल हिचकी, औंघाई, जम्हाई; निद्रितावस्थामें चौंक उठना; सपने देखना।

ज्वर ।—बाहरी हवामें और थोड़ा भी हिलने-डोलनेपर शीत, इसके साथ प्रायः पेटमें दर्द मौजूद रहता है। सन्ध्याके समय शीत मालूम होना, झुकनेपर प्रबल ताप; बहुत पसीना; कपालमें ठण्डा पसीना। रातके समय पसीना। शरीरमें दाह; तापके साथ त्वचाका पीले रङ्गका भाव हो जाना।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—कास्टिकम (गलेके भीतर); अरम (चक्षु-ताराका प्रदाह); लैकेसिस (सान्निपातिक ज्वर, अन्त्रावर्त्तन प्रदाह); हायोसा (अलिजिह्वा); वैसि (जीभ); आर्स, फास (ठण्डे पानीकी प्यास); नक्स-वोमिका (रक्तामाशय); थूजा (आँत-में-आँत घुस जाना); आर्स, कैप्सिकम (गलेमें जखम) इत्यादि।

प्रतिविष या दोषघ्न ।—साइलि, मर्क-सोल (उच्च क्रम), सिपिया, लोबेल-इन।

सदृश ।—अरम, कैन्थ, डिजि, कैलि-आयोड, लैके, हायो, कास्टि, वैसिलिनम, मैग-कार्ब, कैलि-कार्ब, थूजा, आर्स, कैप्स।

शक्ति ।—३री दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

मर्क्युरियस सायानेटस

(MERCURIUS CYANATUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण आकारमें तैयार हुआ करता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—गलनलीका उपझिल्ली-प्रदाह ; रक्तामाशय ; सान्निपातिक ज्वर ; रक्तस्राव ; शिराका प्रदाह ; गलेका जखम ; उपदंश रोग ; आँखकी पुतलीका प्रदाह इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—यह उपझिल्ली-प्रदाह रोगमें लाभके लिये प्रसिद्ध है ; संक्षेपमें इसका क्रियाफल यह है:—(१) कण्ठका भीतरी भाग तीव्र प्रदाहयुक्त ; चमकीला लाल रङ्ग, त्वचा क्षय हुई और जखमकी तरह मालूम होती है तथा निगलनेके समय बहुत तकलीफ़ मालूम होती है। (२) कंठ और गालका भीतरी प्रदेश दृढ़ और धुमैली झिल्लीसे ढँका रहता है और उसके निचले भागके तन्तु सबमें जखम हो जाता है। कोमल अंशका सड़ने लगना, विशेषकर कोमल तालु और तालुमूलकी बगलवाले दोनों गह्वर। (३) बहुत कमजोरी, उठनेकी शक्ति न रहना, रोगी इतना क्षीण हो जाता है, कि उसमें खड़े होनेकी शक्ति नहीं रहती, हृत्पिण्डका अवसादतक हो सकता है। (४) वक्ताओंके गलेके जखम रोगमें, यदि बोलनेके समय गलेमें तकलीफ़ होती हो तो इससे बहुत लाभ होता है (डा० नैश)।

लक्षणावली

मन।—उत्तेजनापूर्ण, क्रोधी।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना।

आँख।—चक्षुताराका प्रदाह, आँख लाल इत्यादि।

नाक।—कई दिनोंतक रोज़ बार-बार नाकसे खून गिरना (कैम्फो, कार्बो-वेज)।

मुख-विवर।—दाँत सब दर्द-भरे, मसूढ़ा फूला और सफेद गोंदकी तरह पदार्थसे ढँका हुआ और इस स्तरके नीचे एक नीली पीली रेखा दिखाई

देती है। जीभ रक्तशून्य और उसकी जड़पर पीले रङ्गकी रेखा, सूजी हुई और दोनों पार्श्व लाल, बाएँ पार्श्वमें छाला निकलता है और क्रमसे दोनों ओंठ, जीभ और गालका भीतरी अंश धुमैले सफ़ेद जखमसे भरा मालूम पड़ता है। समूचे गालके भीतरी प्रदेशमें प्रदाह हो जाया करता है, लार बहा करती है। मुँहकी गन्ध बहुत ही सड़न मिली, निगलनेके समय तेज़ दर्द मालूम होता है। मुँहका स्वाद तीता, घृणाजनक और धातुके जङ्गकी तरह रहता है।

गलेके भीतर।—सांघातिक उपझिल्ली-प्रदाह रोग,—नकली झिल्ली पहले सफ़ेद मालूम होती है और कोमल तालु तथा दोनों ग्रन्थियाँ उससे ढँकी रहती हैं, पर थोड़ी देर बाद ही ग्रन्थियाँ सब फूल उठती हैं और उस समय यह नकली झिल्ली काली हो जाती है और क्रमसे सड़नेकी सम्भावना पैदा हो जाती है; साँसकी छोड़ी हुई हवा बहुत ही बदबूदार रहती है (नकली झिल्ली बहुत बदबूदार—कैलि-पार्म), रोगी बहुत क्षीण हो जाता है और क्रमशः उसमें उठनेकी शक्ति नहीं रह जाती, भूख बिलकुल ही नहीं रहती, जीभपर भूरा लेप चढ़ा रहता है और बीमारी कड़ी होनेपर काली दिखाई देती है। इस समय नाकसे खूनका स्राव होता है (यह बहुत दुर्लक्षण है), श्वासमें कष्टके साथ कर्कश, घङ्घङ् और स्वर-तन्तुकी अकड़नसे पैदा हुई खाँसी आने लगती है और निकला हुआ बलगम गाढ़ा, सूत्रमय या रबरके आकारका हुआ करता है। तालुमूल पार्श्वके दोनों गह्वर भयानक लाल हो जाते हैं और कोई पदार्थ (कड़ा या तरल) निगलनेके समय बहुत तकलीफ़ होती है (डा० केण्ट कहते हैं, कि जब नकली झिल्ली कुछ हरी और नाकके भीतर भी बहुत दूरतक फैल जाती है, उस समय इस दवाकी जरूरत होती है। दुर्लक्षणाक्रान्त उपझिल्ली प्रदाह रोगमें जब रोग बहुत तेजीसे बढ़ता है और जखम भी तेजीसे फैलता है, उस समय मर्क-सायानिटससे विशेष लाभ हुआ करता है); कोषोद्गामक गल-ग्रन्थि-प्रदाह—दाहिने पार्श्वमें प्रदाहकी अधिकता। वक्ताओंके गलेका जखम—कण्ठके भीतर जगह-जगहकी त्वचा फटी हुई रहती है और बोलनेके समय रोगीको बहुत तकलीफ़ होती है।

पाकस्थली आदि।—अरुचि। तेज़ प्यास, परन्तु पानी पीते ही कै हो जाती है (आर्स-विस)। लगातार हिचकी (मस्कस)। आँतोंका तेज़ शूल; प्रत्येक बार पाखाना होनेपर बढ़ना। मलद्वारमें छोटे-छोटे बवासीरके

मसे दिखाई देते हैं (पोलिगोन) ; बैठनेकी अवस्थामें मलद्वार और मलान्त्रमें भयानक दर्द, स्पर्श सहन न होनेके साथ ही लाल रङ्गकी सूजन ; मलद्वारमें नकली झिल्लीकी तली दिखाई देती है। मलद्वारसे बार-बार खूनका स्राव, कूथनके साथ पाखाना होना। मलद्वारसे सड़ी गन्ध-भरा पानीकी तरह पदार्थ निकलता है। काला पाखाना होना।

सार्वाङ्गिक।—बहुत क्षीणता मालूम होना, उठनेकी शक्ति न रहना ; बार-बार मूर्च्छा, उदरामय रोगमें बहुत कमजोरी, यहाँतक कि रोगिनी कभी-कभी मूर्च्छित होकर जमीनमें गिर जाती है। शरीर बरफकी तरह ठण्डा, विशेषकर सन्ध्याके समय शरीरकी त्वचा कुछ पसीना लिये और ठण्डी।

वृद्धि।—भोजनके बाद (प्रायः सभी लक्षण बढ़ जाया करते हैं)।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐ-मूर, अरम-ट्राई, कास्टि, हिप, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, कैलि-पार्मा, लैके, मर्क-बिन-आयोड, मर्क-प्रोटो-आयोड, फाइटो।

शक्ति।—६ठेसे १००० शततमिक क्रम (डा० बोरिक कहते हैं, कि ६ठे शततमिकके निम्न-क्रमके व्यवहारसे लक्षण आदि बढ़ जाया करते हैं)।

मर्क्युरियस डलसिस

(MERCURIUS DULCIS)

दूसरा नाम।—कैलोमिल, सब-क्लोराइड आव मर्करी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण, इसके बाद ६ठा और इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— सर्दी ; आँखोंका प्रदाह ; बहरापन ; अतिसार ; कर्णनलीकी बीमारी ; पाकाशयका विकार ; मस्तिष्कावरण प्रदाह ; अन्त्रावरण प्रदाह ; मूत्राधार-मुखशायी-ग्रन्थिका प्रदाह ; गलेका जखम।

उपयोगिता और आभास ।—कैलोमेलका लेटिन नाम मर्कुरियस डलसिस है। श्लैष्मिक-झिल्ली, विशेषकर आँख और कानके भीतरवाली श्लैष्मिक झिल्लीके सर्दी रोगमें यह विशेष लाभदायक हुआ करती है। इसके कई प्रधान लक्षण ये हैं:—(१) बिचले कानका सर्दीसे उत्पन्न प्रदाह। (२) कर्णपश्चान्नलीका रुकना। (३) सर्दीकी वजहसे बहरापन और कर्ण-स्राव। (४) वार्द्धक्य सुलभ बहरापन। (५) मूत्रनलीका संकोचन या कुचिकित्सासे पैदा हुआ मुखशायिका ग्रन्थिका नया प्रदाह आदि रोग। (६) बच्चोंको पतला पाखाना होना—मल घासकी तरह हरा या टूटे हुए अण्डेकी तरह, बहुत ज्यादा और मलद्वारकी त्वचाको क्षय करनेवाला। लसिका ग्रन्थियाँ फूलनेवाले बच्चोंकी पित्तकी वजहसे पैदा होनेवाली बीमारियोंमें या म्लान, खूनरहित और गला तथा अन्यान्य ग्रन्थियाँ जिनकी फूली हों, वैसे बच्चोंके लिये यह विशेष उपयोगी है। “चेहरा मुर्देकी तरह म्लान और शोथ रोगीकी तरह मूर्त्ति”—डा० क्लार्कके मतसे मर्कुरियस डलसिसका प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन ।—उत्तेजित और आशङ्कायुक्त।

मस्तक ।—भारी, केश झड़ जाना।

आँख ।—पलकोंके अगले भागपर गोंदकी तरह श्लेष्मा लगा रहता है। क्रमसे जलन और दृष्टिमें अस्पष्टता पैदा हो जाती है। दोनों आँखें लाल, सूखी रहती है और उनमें रोशनी सहन नहीं होती। किसी तरहका व्यायाम करने या व्यायामकी वजहसे शरीर गर्म हो जानेपर यन्त्रणा आदिके लक्षण बढ़ जाया करते हैं। श्लेष्माके कारण आँखोंका प्रदाह (ऐकोन, कोना, कैल्के, आर्स, हिप, रस-टक्स, मर्क-कोर)। पलकोंका प्रदाह (युफ्रे, ग्रैफ, हिप, कैल्के, मेजिर, आर्स, मर्क-कोर)।

कान ।—कानके बिचले भागमें सर्दीकी वजहसे प्रदाह (कैलि-मूरर, प्लैण्टेगो, मर्क, पल्स, कैम्फ)। कर्णपश्चान्नलीमें सूजन पैदा हो जानेकी वजहसे यह नली रुक जाती है और बहरापन पैदा हो जाता है। सर्दीकी वजहसे बहरापन और कण्ठ दोषसे दूषित बच्चोंके कानसे पीवका स्राव (हाइड्रैस्ट, मेजिर, इलैप्स, मैङ्ग)। वार्द्धक्यके कारण बहरापन (साइकूर, पेट्रोल, कैलि-सूर)।

रंध्रके बाहरी स्थानकी खुजली। बाएँ कानमें एकाएक पर फड़फड़ानेकी तरह अनुभव होना।

मुखमण्डल आदि।—चेहरा लाल ; चेहरा मुर्देकी तरह उजला या रक्तशून्य। दोनों गाल फूले। निचले हनुकी अस्थिका चूर गिरना (मृत्यु-निकट); मुँह फाड़नेमें बहुत दर्द और कष्ट मालूम होता है। मुँहमें जखम और रातभर उससे खून निकला करता है। जीभपर छाले, मुँहसे बहुत अधिक बदबू और काले रङ्गकी लार निकलती है, वह लगकर ओंठ और दोनों गालोंकी त्वचा क्षय हो जाती है ; जीभ और समूचा चेहरा काला दिखाई देता है (एसिड-कार्बोल, मर्क-सल्फ्युरिकस)। कण्ठके भीतर बहुत अधिक जखम, निगलनेमें कष्ट।

अन्त्राशय आदि।—उदरमें भयानक यन्त्रणा, मानो जकड़ गया है (एपिस, ब्राई, कोलो, हाइड्रैस्ट, आइरिस-वा, सिपि, फाइटो, रियुम), छूनेपर दर्द होता है। पाकस्थलीकी कोमलता (आर्स, बिस्मथ, कैम्फ, कैल्के, फेरम, क्रियो)। उदर गर्म, दर्द-भरा और शोथसे फूले हुएकी तरह मालूम होता है (कैल्क—उदर फूला, सम्पूर्ण अरुचि, मल प्रायः हरे रङ्गका होता है। वमनके साथ पतला पाखाना होना। बच्चोंको पतले दस्त आना—मल घासकी तरह हरे रङ्गका (कैमो, मर्क, नक्स-मस) बहुत ज्यादा और मलद्वारकी त्वचाको क्षय करनेवाला (आर्स, बैप्टी, लैके, मर्क, ऐ-मूर, नेट्र-मूर, ऐ-नाई, सिफिलिन, वेरेट)। आमातिसारमें मल मूत्रमय या गाढ़े गोंदकी तरह (ऐ-सल्फ), आममय खून मिला ;—काले रङ्गका (ब्रोम, लेपटेन, मर्क-कोर, मर्क-प्रोटो-आयोड, ओपि, प्लम्ब, रियुमेक्स, वेरेट), उदरके ऊपरी प्रदेशमें बहुत दबाव मालूम होना और अवसाद अनुभव होना। दुर्दमनीय कब्जियत (ओपि, प्लैट, प्लम्ब)। मलद्वारमें जलन और कूथन। मलद्वारके चारों ओर श्लेष्मा-गुटिकाएँ (अरम, ऐ-नाई, इयुफ्रे, स्टैफि, थूजा, सिपिया) पैदा हो जाया करती हैं।

पुं० और स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रमेह रोगके रुक जानेकी वजहसे या मूत्रनालीके सङ्कोचनकी कुचिकित्सासे पैदा हुआ नया मूत्राधार-मुखशायिका ग्रन्थिका प्रदाह (ऐ-नाई, थूजा)। मूत्रनालीमें जलन और दबानेकी तरह दर्द ; तीव्र मूत्रकृच्छ्रता (आर्जेण्ट-नाई, कैनाब-सैट, कैन्थ, नाई, पल्स, सार्सा, पोलिगोन, टेरिब) ; पेशाब परिमाणमें बहुत थोड़ा। लिङ्गके गलेके पीछे खुजलाहट और कांटा गड़नेकी तरह अनुभव होना। योनिके बाहरी

भाग, विटप त्वचाके ऊपर और मलद्वारके चारों ओर श्लेष्मा-गुटिका निकलना, उसमें बहुत बदबू निकलती है।

त्वचा।—झूलती हुई और अपरिपुष्ट। फैलनेवाला जखम। तांबेके रङ्गका उद्भेद।

सम्बन्ध।—**प्रतिविष या दोषघ्न**।—हिपर-सल्फ।

सदृश।—कैलि-म्यूर (कानकी सर्दीसे उत्पन्न बीमारी, बहरापन), कैल्के-आस्ट, आर्जेण्ट-नाई, ऐसिड-नाई, ओपियम, ऐसिड-सल्फ (दहीकी तरह मल), कैमो, इपिक, मर्क-कोर।

शक्ति।—३रेसे ६ठा दशमिकसे विचूर्ण और ३रे शततमिकसे ३० शततमिक क्रम (कोई-कोई होमियोपैथिक चिकित्सक विरेचक रूपमें प्रथम दशमिक विचूर्ण दो या तीन ग्रेन मात्रामें प्रयोग किया करते हैं और वे कहते हैं, कि ऐसा करनेसे सदृश-विधानके विषयमें कोई गड़बड़ी नहीं होती)।

मर्क्युरियस नाइट्रिकस

दूसरा नाम।—नाइट्रेट आव मर्करी; मर्क्युरिक-नाइट्रेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—ऐलोपैथीके मतसे चक्षु-प्रदाहके लक्षणमें पलकोंमें दर्द-रहित जखमें, विसर्प, दाद, कुष्ठ, सोरादोष, उपदंश वगैरह बीमारीमें इसके बाहरी प्रयोगसे बहुत जल्द जखम आरोग्य हो जाता है।

उपदंश जब स्नायु और अस्थि-समूहोंपर आक्रमण करता है, उस समय मर्क-नाइट्रि होमियोपैथीका सर्वश्रेष्ठ सहाय है।

नोकीला शस्त्र बेधनेकी तरह दर्द और खुजली इसका निर्देशक लक्षण है। सूजाक और उपदंशका एकत्र समावेश खासकर ऊपर लिखे लक्षण मौजूद रहनेपर इससे विशेष लाभकी आशा की जाती है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय**।—मर्क-डलसिस।

शक्ति।—६—२००।

मर्क्युरियस प्रिसिपिटेटस-ऐल्बस

MERCURIUS PRÆCIPITATUS ALBUS)

दूसरा नाम ।—ह्वाइट—प्रिसिपिटेट आव मर्करी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—हरी जीभ, पित्तमिला मल, मलद्वारकी खाल उधड़ जाना, बुड्ढेकी तरह चेहरेकी आकृति इसका निर्देशक लक्षण है ।

माथा और चेहरेपर अकौता, अकौतेसे पीव और बदबूदार स्राव लक्षणमें मर्क-प्रिसि-ऐल्ब ३री शक्ति तीन दिनका अन्तर देकर एक ग्रेन मात्रामें सेवन करनेपर तुरन्त आरोग्य होते देखा गया है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—बैराइटा-कार्ब, सिफिलिनम, मैनि ।

शक्ति ।—२—६ ।

मर्क्युरियस प्रिसिपिटेटस रूबर

(MERCURIUS PRÆCIPITATUS RUBER)

दूसरा नाम ।—रेड प्रसिपिटेट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मलद्वारमें जलन ; उपदंशका जखम ; प्रमेह ; बच्चोंका अकौता रोग, छाले, चकत्ते ।

उपयोगिता और आभास ।—प्रमेह, उपदंश, प्रमेह विषसे उत्पन्न और उपदंश दोषवाले रोगमें यह विशेष लाभदायक है । प्रमेह रोगमें इसका एक प्रधान निर्णायक लक्षण यह है, कि मूत्रनाली डोरीकी तरह दृढ़ और कड़ी मालूम होती है । फैलनेवाले जखम आदि और बाघी कड़ी, लाल जखम आदिका

फैलना, उपदंश विषसे दूषित आँखोंकी पुतलीका प्रदाह रोगाधिकारमें दर्द दूर होनेपर ; नये पैदा हुए बच्चेको छाले, चकत्ते ; प्रत्यङ्गोंके गासेमें उपदंशका जखम, त्वचाका क्षय होना ; मुष्कके ऊपर और मलद्वार प्रदेशमें चिपटे श्लैष्मिक उद्भेद ; त्वचा फटी या न फटी हो ; बहुत ज्यादा पीव या रस-स्राव करनेवाला नया या समय-समयपर पैदा होनेवाला या पुराना अकौता और माथा, शरीर तथा चिबुक दाद वगैरह चर्म-रोगकी यह एक उत्कृष्ट दवा है। डा० क्लार्क कहते हैं, कि "मलद्वारमें मानो एक लोहेकी सलाई घुस और निकल रही है"—ऐसा अनुभव सम्भवतः इसका एक प्रधान सिद्धप्रद लक्षण है।

शक्ति ।—१ दशमिकसे ६ठा दशमिक विचूर्ण ।

मर्क्युरियस प्रोटो-आयोडेटस

(MERCURIUS PROTO-IODATUS)

दूसरा नाम ।—ग्रीन आयोडाइड आव मर्करी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—चक्षु-पल्लव या पुटका प्रदाह ; स्तनका अर्बुद ; सर्दी ; उपदंश ; दुधिया पपड़ी ; गलनलीका उपझिल्ली-प्रदाह ; उपदंश-दोषकी वजहसे आँखकी बीमारियाँ ; गलगण्ड ; श्वेत-प्रदर (बच्चोंको) ; नकसीर ; गर्भिणियोंका वमन ; कच्छु ; उपदंश ; गलेका जखम ; गलग्रन्थि-प्रदाह ; दाँतका दर्द ; मसीजीवी या क़लमसे काम करनेवाले किरानियोंकी अंगुलियोंमें ऐंठन ।

उपयोगिता और आभास ।—ग्रन्थियोंका बढ़ना लक्षण मिला गलेका जखम, उपझिल्ली प्रदाह रोग और प्रकृत विषाक्त उपदंश वगैरहमें इसका व्यवहार प्रसिद्ध है। तालुमूलके दाहिने पार्श्वके साथ इसकी घनिष्टता प्रकट हुआ करती है, क्योंकि इससे पैदा हुई नकली झिल्ली तालुमूलके दाहिने पार्श्वसे आरम्भ होकर दाहिने पार्श्वमें ही रुकी रहती है। जीभ मोटी, लेप-चढ़ी और अगला भाग तथा दोनों पार्श्व लाल और उनकी जड़ पीली दिखाई देती है। जीभ थुलथुली और उसपर दाँतके दाग रहते हैं। गलेके भीतरके पिछले भागमें छोटे-छोटे जखम पैदा होते हैं और जगह-जगहपर श्लैष्मिक-झिल्लीसे ढँके

दिखाई देते हैं। ग्रीवा-देशीय और कर्णमूलीय ग्रन्थियाँ सब फूली हुईं। गलेमें गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा इकट्ठा हुआ करता है। चक्षु-रोग—स्वच्छावरकका जखम, ऐसे आकारवाला मानो नखसे काट लिया गया है। दाँत सब बहुत बड़े मालूम होते हैं, दाँत-पर-दाँत लगनेसे यह अनुभव बढ़ जाता है। दाँत-से-दाँत दबा देनेका दुर्दमनीय आवेग और नींदवाली अवस्थामें दाँत-पर-दाँत लग जानेकी वजहसे हनुकी सब पेशियाँ अकड़ जाती हैं और श्रान्त मालूम होती हैं। खानेके पदार्थ देखते ही मिचली आने लगती हैं; तलपेट शून्य और अवसाद-जनक मालूम होता है। मल काला। ये कई लक्षण इसके प्रधान क्रियाफल और निर्णायक हैं। हँसनेपर खाँसी बढ़ जाती है—यह इसका एक सिद्धप्रद लक्षण है। ग्रन्थियाँ सब फूलनेवाली और उपदंश-विषसे दूषित व्यक्ति, शल्क या रूसी-मिली श्लैष्मिक-झिल्ली और पसीनेके समय बर्सातो पानीमें भींजना या जलीय वायुके छू जानेसे उत्पन्न रोग आदि इसके विषयके अन्तर्गत हैं।

लक्षणावली

मन।—शय्यापर सोये रहनेवाली अवस्थामें रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो घरमें कोई आदमी है और वह उसके तालुमूलमें छेद कर डालना चाहता है। फुर्तीला, प्रसन्न और लगातार बकता है। पासकी चीजें नष्ट कर डालनेकी इच्छा। चुप होकर न जाने क्या सोचता है; बहुत विषन्नता।

मस्तक।—पढ़नेके समय (ऐङ्गस) या आसनसे उठनेके समय सरमें चक्कर आ जाता है (आर्नि, गुयायेक, पल्स)। शंखदेश या कनपटीमें तेज़ सलाई गड़नेकी तरह दर्द (ऐगार, जेल्स, सिलिन)। भौंओंपर धीमा-धीमा सर-दर्द, नासा-मूलमें दर्द मालूम होता है। ललाट या कनपटीमें टपकका दर्द (ललाट-देशमें—ग्लोन, नेट्रम-म्यूर, पल्स; कनपटीमें—चेलिडो, जेल, ग्लोन, लैक-डिफ्लो)। मस्तिष्कके मूलदेशमें धीमा और भार मालूम होनेवाला दर्द। नींद खुलनेपर ललाटदेशका सर-दर्द—मुँहकी सभी हड्डियोंमें दर्द और थोड़ी स्पर्श असहनीयता रहती है। समूचे माथेमें दर्द हुआ करता है और ऐसा मालूम होता है, कि उसमें खूनकी तरंगें उठ रही हैं। माथेमें जड़ता और दबावकी तरह मालूम होता है, मानो एक भारी पदार्थ तकियेके ऊपर माथेको दबाये हुए है। ऐसा अनुभव होना, मानो करोटी या माथेकी हड्डी फट रही है। माथेके दाहिने पार्श्वमें भयानक दर्द; दाहिनी कनपटीके ऊपरी अंशसे ग्रीवा-

पृष्ठतक फैल जाता है ; माथेकी त्वचा और उसके बाएँ पार्श्वमें लगातार खुजली। अन्य मनस्क रहनेपर सर-दर्द अच्छा रहता है।

आँख।—सवेरे नींद खुलनेपर दाहिने चक्षु-गह्वरमें तेज़ दर्द और उसमें स्पर्श सहन नहीं होना (साइलि); बाएँ चक्षु-गह्वरमें दर्द, माथा झुकानेपर दर्द बढ़ा हुआ मालूम होता है, आँखके सामने नाना प्रकारके बिन्दु उड़ते हुए दिखाई देना (सिङ्कोना, ग्लोन, नेट्रम-म्यूर, फाइजस, सिपि) अर्थात् रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो काले बिन्दु सब आँखके सामने उड़ रहे हैं—आँखके स्वच्छ रसके मैलापनकी वजहसे या मैले गदले भावकी वजहसे ऐसा हो जाता है (चक्षुगोलकके बीचवाले स्वच्छ-रसमें अस्वच्छ परमाणु सब घूमते-फिरते हैं, इसी वजहसे ऐसा मालूम होता है)। रोज़ रातके समय आँखमें भी टपक या दर्द पैदा करनेवाली तकलीफ़। स्वच्छावरकका जखम, मानो नखसे काट डाला है—स्वच्छावरकका प्रदाह।

नाक।—नासामूलमें शूल बेधनेकी तरह दर्द, नाकमें बहुत ज्यादा परिमाणमें पपड़ी या शिकनी जमती है और बार-बार नाकको साफ़ करना पड़ता है। पश्चान्नलीसे गलेमें बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्माका स्राव होता है। भेदकास्थिके दाहिना पार्श्व और दाहिने रंध्रमें बहुत स्पर्श-असहनीयता और सूजन, बार-बार निगलनेकी इच्छा।

मुखमण्डल।—दाहिनी गण्डास्थिमें धीमा चोट लगनेकी तरह दर्द और यह दर्द ललाट और माथेके दाहिने पार्श्वतक फैल जाता है ; एक छोटेसे अंशमें टपक होती है और ऐसी जलन होती है मानो आग छू गई है, छूनेपर जलन बढ़ जाती है। माथा और मुखमण्डलमें तेज़ सुई बिंधनेकी तरह दर्द मालूम होता है, विशेषकर अस्थिमय अंशमें। बाएँ गालमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द। दाहिने गालमें तेज़ टपक।

मुख-विवर।—दाँत सब बड़े मालूम होते हैं और रोगी भोजन नहीं कर सकता। पेषन दन्तोंमें दर्द और दाँत-पर-दाँत लग जानेपर दर्दका बढ़ना और दाँत बहुत लम्बे मालूम होते हैं। बार-बार जोरसे दाँत-पर-दाँत दबा रखनेकी इच्छा। नींदमें इतने जोरसे दाँत-पर-दाँत दबाता है, कि नींद खुलनेपर हनुकी पेशी सब श्रान्त हो जाती हैं और अकड़ी-सी मालूम होती है। जीभ, उसकी जड़ घोर पीले लेपसे ढकी (कैलि-बाई ; जड़में सुनहला लेप

चढ़ा हुआ—नेट्र-फास ; मैल-भरा या हरी आभा लिये धुमैले रंगकी लेप-चढ़ी जड़—नेट्र-सल्फ) ; अगला भाग और दोनों पार्श्व लाल ।

गलेके भीतर ।—गर्दन और कानकी जड़की ग्रन्थियोंकी बहुत अधिक सूजन मिला उपझिल्ली प्रदाह और दूसरे-दूसरे कण्ठरोग ; नकली झिल्ली दाहिने पार्श्वमें पैदा होती है और दाहिने पार्श्वसे बाएँ पार्श्वमें फैलती है, पर दाहिने पार्श्वमें ही रोग और यंत्रणा बढ़ी हुई मालूम होती है ; वृद्धि—गर्म पानीय पीने या खाली घूंट लेनेके समय (लैके)। लार निकलनेके समय गलेमें जलन मालूम होना ; तालुमूल, गलेकी ग्रन्थियाँ और अलिजिह्वा लाल तथा प्रदाह-भरी रहती है ; तालुमूलकी ओर स्थित दोनों गह्वर लाल और प्रदाह-भरे ; गलेकी गांठें फूलीं ; निगलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो गलेमें एक गुल्म है। गलेमें बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़े गोंदकी तरह श्लेष्मा संचित हुआ करता है और बड़े कष्टसे निकाला जा सकता है ; कण्ठ साफ करनेके समय गला रुकनेका उपक्रम हो जाता है। गलग्रन्थि और तालुमूलमें लगे हुए श्लेष्मा-खण्ड सब सहजमें ही निकल आते हैं ।

पाकस्थली ।—बहुत अधिक प्यास, विशेषकर खट्टे पानीयके लिये (कैमो, हिप, मैग-कार्ब, स्ट्रैमोन ; लेमोनेडके लिये—बेल, जेल्सी, ऐ-नाई, पल्स)। गलग्रन्थि-प्रदाहाधिकारमें रुचि बदला करती है (सिपि, कुरारि, लैके, ऐ-नाई, पोडो) ; खानेकी चीज देखते ही घृणा पैदा हो जाना (एइलैन, आर्नि, आर्स, मस्कस ; खानेके पदार्थकी गन्ध आते ही घृणा पैदा हो जाती है—काकुल, कोल्चि, इपिक ; भोजनकी बातें याद आते ही घृणा पैदा हो जाती है—आर्स, सिङ्को)। मिचली, पाकस्थलीमें जलन और ऐसा दर्द मानो ठुनका मार दिया है। एकाएक पाकस्थलीमें तेज़ दर्द पैदा हो जाता है, मानो किसीने छुरी मार दी है।

अन्त्राशय ।—यकृत-प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द,—हाथसे रगड़ देनेपर घटना ; यकृत प्रदेशमें और वक्ष तथा पीठके दाहिने भागमें दर्द, दाहिने अंसफलकके नीचे स्पर्श सहन न होना, शरीर हिलानेपर और रातमें बढ़ना। पेट कड़ा मानो आध्मानकी वजहसे ऐसा हो गया है (ऐनाक, ग्रैफ, मर्क, नेट्र-कार्ब, ओपि, रैफेन, फेर)। नाभिप्रदेशमें उत्ताप और जलन मालूम होना मानो जलता हुआ अङ्गारा छू गया है (कैलि-आयोड) ; साँस लेनेके समय बढ़ना। यकृत प्रदेशमें दर्द, दर्द दाहिने पार्श्वसे बाएँ पार्श्वमें फैल जाता है

(लाई)। पाखाना होनेके पहले तलपेटमें खालीपन मालूम होना। बिना दर्द और प्रदाहवाली बाघी (मर्क-बिन)।

मलान्त्र और मल।—मिचली और सुस्ती मालूम होनेके साथ मलान्त्रके बहुत ऊपरी अंशमें दबाव मालूम होना। मल, गाँठ-गाँठ कीच या पूडिङ्गकी तरह, बहुत वेग दिये बिना मल नहीं निकलता (ऐ-कार्बोल, आर्जेण्ट-नाई, मिडोरिन, प्लैट, फास, कास्टि, कैलि-कार्ब, मैग-मूर, मर्क-कोर)। उदरामय, मल पतला, पीली आभा लिये भूरे रङ्गका फेन मिला, बार बार काला मल निकलना (लेप्टैन, ब्रोम, प्लम, ओपि, मर्क-कोर, वेरेट)। कभी खून मिला और कभी रक्त-शून्य। पेशाब बहुत ज्यादा, गाढ़ा, लाल रङ्गका।

पुं०-जननेन्द्रिय।—लिङ्गकी गर्दनसे सलाई बेधनेकी तरह तेज़ दर्द लिङ्गकी सुपारीको भेदकर फैलता है। कामोद्दीपक सपनेके बाद बहुत ज्यादा वीर्यपात होना (साइक्लू, डिजिटेलिनम, डायस्को, कैलि-कार्ब, कैलि-मू, कोबाल्ट, फास),—पर मानो पेशाब जरूर करना पड़ेगा इस तरहके सपनेके बाद स्वप्नदोष हो जाना (समस्त रात स्त्री-संगके सपनेके बाद—डायस्को); सवेरा न होनेपर रोगी यह जान नहीं पाता, कि उसे रातमें वीर्य-पात हो गया था।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तव—आरम्भमें स्राव बहुत थोड़ा, इसके साथ ही दर्द। महीना भर लगातार योनिसे बहुत ज्यादा श्लेष्मा और पीव मिला स्राव। पीले रंगका प्रदर-स्राव, विशेषकर थोड़ी उम्रवाली और शिशु बालिकाओंका; गर्भवतियोंको सवेरेके समयकी मिलची, कै हुआ पदार्थ कुछ हरी आभा लिये पीला और तीता जलीय होता है; वमनके समय पाकस्थलीमें जलन और सुस्ती मालूम होती है।

श्वास-यन्त्र।—स्वरलोप और स्वरभङ्ग। श्लेष्मा तरल और घड़घड़ शब्द करनेवाली खाँसी;—दोनों वायुनली-भुज श्लेष्मासे भरे रहते हैं; कफ़ बहुत ज्यादा और पीले रंगका (डैफ, ड्रोसे, कैल्के, हिप, कैलि-सल्फ, लाई, मर्क, ऐ-नाई, नक्स, इग्नैन, ओलियेकोर ; पल्स, सिपि, स्टैन)। स्वरनालीमें खुजली पैदा करनेवाली खाँसी; खाँसीका बढ़ना—रातमें, हँसनेपर भी खाँसी बढ़ जाती है (आर्जेण्ट-नाई, सिङ्को, कूप्रम-मेट, फास, स्टैन)। श्वासकृच्छ्रता पैदा करनेवाला गलगण्ड, रातमें श्वास-रोध होनेका उपक्रम। वक्षके दाहिने

पार्श्वमें सुई या नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द। हृत्पिण्डमें तेज़ दर्द। हृत्पिण्ड मानो एकाएक उछल पड़ता है और धड़कने लगता है; रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका हृत्पिण्ड उछलकर अपनी जगहसे हट गया है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दन अकड़ी हुई और सरके पिछले भागमें स्पर्शका सहन न होना और दर्द, वृद्धि—सोने और माथा घुमानेके समय (ऐ-कार्बोल, फार्मि, सेलिन—माथा बगलकी ओर टेढ़ा हो जाता है—लैच-नैन)। दोनों अंस-फलकोंके बीचके अंशमें स्पर्श सहन नहीं होता और वह सुन्न हो जाता है। पीठमें भयानक यन्त्रणा-जनक तेज़ दर्द; ऐसा अनुभव होना कि सभी प्रत्यङ्ग मानो बहुत ही सुस्त हो पड़े हैं, वृद्धि—बाईं करवट सोनेपर (आर्नि, फास, स्पाई); घटना—दाहिनी करवट सोनेपर। दाहिनी बाँहमें असाड़ता और सुस्ती मालूम होना, दाहिने कंधेमें तेज़ दर्द होनेके कारण रोगीको लिखना बंद करनेके लिये वाध्य हो जाना पड़ता है; दोनों पैरोंमें सुस्ती और चुनचुनी मालूम होना; ऐसा दर्द मानो दोनों पैरोंमें छेद हो रहा है—रातमें बढ़ना। दोनों पैरोंकी पोटलीमें भार और सुन्नपन मालूम होता है और बाएँ जानुमें दर्द। बहुत सुस्तीकी वजहसे रोगी सोया रहना पसन्द करता है, सोनेसे अनुराग। ग्रन्थियाँ सब फूलीं और कड़ी रहती हैं। उपदंश-विष लगी बच्चोंके शरीरमें दुग्ध-चिपिटिका (वायोला-ट्राई)। साधारणतः व्यायामके बाद लक्षण आदि घट जाया करते हैं। निर्मल हवा लगनेपर शरीरकी अस्वाच्छन्दता दूर हो जाती है। ठण्डी, जलीय वायुमें और वसन्त ऋतुमें लक्षण आदिकी वृद्धि होती है।

त्वचा।—शरीरके कितने ही स्थानोंमें कड़ी फुन्सियाँ पैदा हो जाया करती हैं। समूचे देह कुटकुट किया करती है—रातमें अधिक। वक्ष और उदरके ऊपर चमकीले लाल रंगके छोटे-छोटे उद्भेद निकलते हैं।

वृद्धि।—छूने या मलनेपर; रातके समय, नींद खुलनेपर, विश्रामसे, बाईं करवट सोनेपर, लिखनेपर, गर्म घरमें, शय्याके उत्तापसे, गर्म पानी पीनेपर, खाली घूंट लेनेपर, ठण्डी हवा लगनेपर और वसन्त ऋतुमें।

घटना।—शरीर और मन किसी काममें अच्छी तरह व्याप्त रहनेपर, दाहिनी करवट सोनेपर और निर्मल सूखी हवा लगनेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—ह्निप, लाइकोपोड (हृत्कम्पन)।

अनुकूल।—सम्बन्ध।—इसके बाद व्यवहार होता है—लैकेसिस।

सदृश।—लाई, आर्जेण्ट-नाई, फास, स्ट्रैनम, लैके, सिनेबार, केलि-बाई, स्पाई।

तुलनीय।—दाहिनेसे बाएँ—लाइकोप; वमनेच्छा—पल्स। काला मल—लैप्टेण्ड्रा। खाँसी—आर्जेण्ट-नाई। आँखके गोलेमें दर्द—सिनाबे। गर्म पतले पदार्थ पीनेपर बढ़ना—लैकेसिस। पीली लेप चढ़ी जीभ—केलि-बाई।

शक्ति।—१म, द्वितीय और ६ठा दशमिक विचूर्ण।

मर्क्युरियस सल्फ्युरिकस

(MERCURIUS SULPHURICUS)

दूसरा नाम।—सलफेट आव मर्करी; इयोला-प्रिसिपिटेट या ह्वाइट प्रिसिपिटेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—शोथ, पेशाबमें तकलीफ़, वक्षोदक रोग।

उपयोगिता और आभास।—वक्षोदक रोगमें यह आर्सेनिकम ऐल्बमके समान है, विशेषकर यकृत या हृत्पिण्डकी बीमारी यदि इसका मूल कारण हो। इस रोगमें इसके निर्णायक लक्षण ये हैं: - बहुत अधिक श्वासकृच्छ्रता, रोगी केवल बैठा रहता है, सो नहीं सकता। उसके हाथ-पैर फूल उठति हैं; वक्षमें जलन, दाहिनि वक्षसे अंसफलकतक दर्द और दिनके ४ बजेसे ५ बजेतक प्रत्येक क्षण रोगीको श्वास-रोध होनेका उपक्रम होता है; उदरामय, मल पतला, पानीकी तरह,—मलद्वारमें भयानक जलन, जखम करनेवाली; जीभका अगला भाग जखम भरा और उसमें स्पर्श सहन नहीं होना; बहुत थोड़े परि-

माणमें निर्मल, पर जलन करनेवाला पेशाब। इस दवाके प्रयोगसे यदि लाभ हो तो डाक्टर लिपिके मतसे इसके द्वारा रोगीको बहुत पतला पाखाना होता है और बहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह पाखाना होनेके बाद रोगीको अधिक आराम मालूम होता है।

लक्षणावली

मन।—निस्तेज भावके साथ जम्हाई और शीत मालूम होना।

मस्तक।—खड़े होनेपर सरमें चक्कर आता है।

आँख, कान आदि।—आँखोंमें तकलीफ़; कानमें जलन; सर्दी, छींक।

मुख-विवर।—मसूढ़े और ऊपरी तालु गाढ़ा नीला या कालापन लिये और उसका पार्श्व-देश जखम-भरा। मुँह लसदार और सवेरे श्लेष्मासे भरा रहता है। जीभके अगले भागमें जलन, उत्तेजना और डंक मारनेकी तरह यन्त्रणा। जीभके मध्य भागतक हरी आभा लिये पीला रंग; गाढ़ा, सफेद लेप चढ़ा; उसकी जड़ कुछ पीला रंग लिये; जीभके काँटे सब उठे हुए और लाल विन्दुकी तरह दिखाई देते हैं और रोगीको किसी तरहका स्वाद नहीं मिलता। दोनों ओंठ, मसूढ़ा और तालुमूलके पार्श्ववाले दोनों गह्वर, मुख-विवर और जीभ, सभी फूल उठते हैं और सूखे तथा काले रंगके दिखाई देते हैं। लार बहना, मुँह और गलेमें जलन।

पाकाशय आदि।—बहुत पीले रंगका वमन, कुछ खानेपर वह क्षणभरके लिये भी पाकस्थलीमें नहीं रहता। उसी समय वमन हो जाता है (आर्स; पानी पीते ही कै हो जाती है—बिस्मथ; पानी पेटमें गर्म होते ही कै हो जाती है—फास)। वमन और उदरामय। पुट्ठेकी ग्रन्थिमें स्पर्श सहन नहीं होता। रातके १ बजनेके समय द्वादश अंगुलि नामक आँतसे नाभीस्थलतक दर्द होनेकी वजहसे नींद खुल जाती है।

मलान्त्र, मल और मूत्र।—चलनेके समय एकाएक भयानक मल-वेगकी वजहसे रोगीको वाध्य होकर खड़े हो जाना पड़ता है और बहुत उद्वेगकी वजहसे उसे पसीना हुआ करता है। इसके कुछ देर बाद ही गर्म, पीले रंगका पानीकी तरह मल वेगसे निकलता है और उसके अन्तमें बहुत कमजोरी, हिचकी और वायु निकला करता है। भयानक दस्त, भातके माँड़ या फेनकी

तरह स्राव, कुछ अंश पीला। पेशाब बहुत थोड़ा, निर्मल और दग्ध करनेवाला। बार-बार पेशाब नहीं करता, परन्तु मूत्रस्थली हमेशा भरी रहती है।

पुं०-जननेन्द्रिय।—प्रमेह और उपदंश दोषसे पैदा हुई बीमारियाँ, इसके साथ ही शिश्न आदिमें रक्तका अधिक सञ्चय होना। अण्डकोष फूला। कामोद्दीपक सपने और अनजानमें वीर्य-स्खलन।

श्वास-यन्त्र।—स्वरनालीमें उत्ताप बहुत मालूम होना। स्वर और वायुनालीसे बहुत ज्यादा परिमाणमें कफ़ निकलना। वक्षमें जलन (ऐमोन-कार्ब)। वक्षमें दर्दकी वजहसे रोगी श्वास-प्रश्वासकी क्रिया नहीं कर सकता। सोनेपर भयानक यंत्रणा और श्वास रुकनेका उपक्रम हो जाता है (ऐ-फ्लू), इसलिये रोगीको वाध्य होकर बैठे रहना पड़ता है। दाहिने वक्षके पृष्ठ-फलक-तक तेज़ दर्द मालूम होता है और इसी दर्दकी वजहसे रोगी श्वास-प्रश्वासकी क्रिया सम्पादन नहीं कर सकता, बढ़ना—दिनके ४ बजेसे ५ बजेतक। बच्चोंकी श्वास-कृच्छ्रता, वक्षोदक,—यकृत (क्रोटेल) या हृदरोगसे पैदा हुआ (ऐपो-साइन, ऐसारेग)।

प्रत्यङ्ग आदि।—हाथ, पैर आदि फूले (कोलचि)। नख सब नीले रंगके और हाथ बरफकी तरह ठण्डे। दोनों बाँह अकड़े मालूम होति हैं। जानुमें दर्द और जानु सुन्न मालूम होता है। पैरमें पसीनाके साथ नाकका अगला भाग सब जखमसे भरा, गुल्फ-देशमें जखम निकलना।

वृद्धि।—तीसरे पहर, सोने बाद।

उपशम।—बैठनेपर और बहुत ज्यादा पतला पाखाना होनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—आर्स (वक्षोदककी बीमारी); सिनेबार, डिजिटेलिन, (शोथ) सल्फ, एपिस, ऐस्सा, कोचलिया, ऐ-फ्लू, लाई, सोरिन, स्पाई, स्क्वियुला, इयुरेन-नाई।

शक्ति।—प्रथम, द्वितीय और तृतीय तथा ६ठा दशमिक विचूर्ण।

मर्क्युरियस सल्फोसायेनेटस

(MERCURIUS SULPHOCYANATUS)

दूसरा नाम।—सल्फोसायेनाइड आव मर्करी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मुँहसे लगातार लारका स्राव, धातुका स्वाद, गलेकी लाली, तालुमूलग्रन्थिमें सफेद झिल्ली, गलेमें जलन, निगलनेमें कष्ट प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

मिथिलिन ब्लू

(METHYLENE BLUE)

परिचय।—यह एक तरहका विशेष रङ्ग है। लेबोरेटरीमें रक्त आदिकी परीक्षाके काममें आता है। यह विचूर्ण और तरल दोनों ही आकारमें तैयार होता है।

स्नायुशूल, स्नायविक दुर्बलता, मैलेरिया, पीव-ज्वर प्रभृति और सान्निपातिक या आन्त्रिक ज्वरमें पैर फूलना, प्रलाप, तापको घटा देनेकी इसकी विशेष शक्ति है।

नीले रङ्गका पेशाब, पेशाबमें पीव, मूत्रग्रन्थि-प्रदाह और सूजाककी वजहसे वात और मूत्राशय-प्रदाह लक्षणमें विशेष लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—ऐनिलिनम, पाइरोजेन।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

मेजेरियम

(MEZEREUM)

दूसरा नाम।—चामिलिया जर्मनिका। डैफनी मेजेरियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फूल होनेके पहले, इस पौधेकी छालसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— अस्थियोंकी-बीमारी, काकचंचु प्रदेशमें या मेरुदण्डके सबसे नीचेवाले प्रदेशमें स्नायुशूल, कब्जियत, पेशियोंके अगले भागका संकोचन; दुग्ध-चिपिटिका; कानकी बीमारी; अरुणिका या एक तरहका लाल रङ्गका उद्भेद; अस्थियोंका बढ़ना; दादकी तरह उद्भेद; उत्तेजना; प्रदर; पारेका विकार; स्नायुशूल; अस्थि-वेस्ट-प्रदाह; गुह्यद्वारका निकलना या मलान्त्रका अपने स्थानसे हटना; वृद्धाओंकी योनिकी खुजली; वात; गण्डमाला; उपदंश; दाँतकी बीमारी; केश उड़ जाना या खल्वाट हो जाना; जीभकी बीमारी; जीभका फूलना; नाना प्रकारके जखम; पीली आभा लिये पपड़ी जमे जखम; गो-बीजके टीकाका दुष्परिणाम।

उपयोगिता और आभास।—नाना प्रकारके चर्म और अस्थि-रोगोंमें तथा स्नायुशूल रोगमें यह बहुत लाभदायक है। डा० ऐलेन कहते हैं— कफ़-प्रधान धातु, गोरा रङ्ग और अव्यवस्थित चित्तवाले मनुष्योंके लिये यह विशेष उपयोगी है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं—ठण्डी हवाका सहन न होना, दाँतका अगला भाग तो ठीक रहता है, पर दाँतकी जड़ क्षय हो जाती हैं; सन्ध्याके समय चेहरेके बाएँ पार्श्वके दाँतमें स्नायुशूल आराम हो जाता है—अंगीठी या चूल्हेका गर्म उत्ताप लगनेपर घट जाया करता है, गर्दन, पीठ, वंक्षण-प्रदेश या उरु-शिखर, दोनों जानु और दीर्घास्थिके भीतर तेज़ दर्द; वृद्धि—रातमें, शरीर या रोगी अङ्ग हिलाने और जलीय वायु लगनेपर, शिशुका माथा मोटी तथा दृढ़ पपड़ीसे ढँका हुआ और उस पपड़ीके नीचे बहुत ज्यादा परिमाणमें पीव-सञ्चय हुआ करता है; माथेके केशोंकी जटा बँध जाती है, उससे बदबू निकलती है और बहुत चेष्टा करनेपर भी उसका साफ़ करना कठिन हो जाता है। शरीरकी त्वचा जगह-जगह बहुत असह्य खुजलानेवाली,

रस-भरे अकौतेसे ढकी रहती है। शय्यामें सोनेके समय खुजली बढ़ जाती है। गो-बीजका टीका दिलवाने बाद अकौता आदि खुजलानेवाले चर्म-रोग पैदा हो जाते हैं, दद्रु-मेखलाकी जलन और स्नायुशूल; पीली आभा लिये छालोंसे ढके या दाग पड़नेवाले जखम आदि, बन्धन खोलनेके समय जखम हो जाया करता है, अण्डकोषका बढ़ना और प्रबल कामोद्दीपन, सरमें दर्द—जरा असन्तोष होनेपर ही प्रचण्ड और दाहिने पार्श्वमें सर-दर्द पैदा हो जाता है, छूते ही दर्द मालूम होता है। "मेजेरियमको उद्भिद मर्करी या पारा कहा जा सकता है;" क्योंकि दोनों ही मूलमें, त्वचा, चंचु, श्लैष्मिक-झिल्ली और अस्थिपर समभावसे आक्रमण किया करते हैं और दोनों होमें समभावसे शीत और उत्तापसे तथा रातमें लक्षण बढ़ते हैं; परन्तु डा० नैश कहते हैं, कि मेजेरियमकी तकलीफ़ आगकी आभासे घटती है, पर पारासे वैसा नहीं होता।

लक्षणावली

मन।—रोगी बहुत अवसादवायु-ग्रस्त या व्याधिशङ्कायुक्त और विषाद-युक्त, सभी विषयोंमें और सबके ही सम्बन्धमें उदासीनता प्रकट करता है (एलेन, नक्स, ओपि, ऐ-फास, नेट्र-मूर, सिपि), सामान्य कारणसे और जिसमें असंतोषका कोई कारण नहीं है, ऐसे विषयमें भी रञ्ज हो जाता है (काकुर, हिप, नेट्रम-मूरर); परन्तु तुरन्त ही उसके लिये दुःख प्रकाश करता है (सान्त्वना देनेपर या सहानुभूति प्रकट करनेपर भी क्रोध प्रकट करता है—हेलिबो)। शङ्कित-चित्त, मानो कोई दुःसम्बाद आनेकी सम्भावना है (ऐस्टिर, रियुब, लिसिन)। अव्यवस्थित चित्त—किसी विषयमें भी संकल्पकी दृढ़ता नहीं रहती (कैमो, डिजि, इग्ने, नक्स-मस, पेट्रोल, पल्स), अकेला रहनेपर बेचैनी या चञ्चलता प्रकट करता है, पांच आदमियोंके साथ रहना चाहता है (बिस, कैडमियम-सल्फ, कोम्फो, कैलि-कार्ब, लाई, पैलेड, फास, सिपि)।

मस्तक।—माथेमें जड़ता मालूम होना, मानो शराब पीनेसे पैदा हुई है, घटना—भोजनके बाद। सरमें चक्कर आना—आँखके सामने चकचौंधी पैदा होकर रोगीकी बगलमें गिर जानेकी सम्भावना रहती है। सरमें दर्द—थोड़ा-सा भी असन्तोष पैदा होनेपर (कैमो, काफि; क्रोध पैदा हो जानेकी वजहसे—फास; विरक्तिकी वजहसे—स्टाई); माथा छूते ही बहुत दर्द मालूम होता है।

मानो माथेकी खोल दो हो जायगी या उड़ गयी है, मानो माथेमें चोट लगी है, मानो माथेमें असंख्य चूटियाँ काट रही हैं इत्यादि नाना प्रकारके अनुभव। शङ्खदेशमें या कानके पीछे या कनपटीमें दर्द—किसी तरहका परिश्रम करने या बहुत देरतक बोलनेके बाद (काकुग्र, डायाडि, लैक-कैन, नेट्र-मूग्र, साइलि, सल्फ); माथेमें जड़ताके साथ सर-दर्द, निर्मल हवा लगनेपर बढ़ जाता है। माथा झुकानेपर सर-दर्द घटता है (कोना), ऐसा मालूम होता है, मानो माथेका ऊपरी अंश तरल हो गया है। दुग्ध चिपिटिका, समूचा माथा मोटे चमड़ेकी तरह पपड़ी या रूसीसे ढँका रहता है और उसके नीचे गाढ़ा सफेद रङ्गका पीब सञ्चित होता है (मर्क-प्रोटो, सोरिन)। माथेके समूचे केशमें जटा बँध जाती है; कुछ देरके बाद यह पीब-रसका आकार धारण करता है; माथेकी हड्डीके ऊपर जलन करनेवाली खुजली—मूर्द्धदेशमें बहुत अधिक; खुजलानेपर दूसरी जगह खुजली पैदा हो जाती है और खुजलाहट और भी बढ़ जाती है; इसके बाद वहाँ दर्द-भरे फोड़े पैदा हो जाते हैं। माथेके सभी अस्थिफलकोंमें दर्द होता है, वे फूले रहते हैं और शीत सहन नहीं होता तथा स्पर्श भी सहन नहीं होता। वृद्धि—मस्तक हिलानेपर और सन्ध्याके समय; अस्थिका जखम, माथेकी त्वचामें जलन और खुजली, सुन्न हो जाना और खींचनकी तरह दर्द-भरा, विशेषकर पार्श्वकी ओर। वृद्धि—ठण्ड लग जानेपर और सन्ध्याके समय। रूसीसे भरा रहता है, खुजलानेपर मछलीके चोयटेकी तरह निकला करती है और बहुतसे केश झड़ जाते हैं। माथेके चमड़ेके ऊपर और चेहरेमें भयानक खुजलाहट—बच्चा हमेशा खुजलाता और खून निकाला करता है; रातमें और गर्मी लगनेपर खुजली बढ़ जाती है। सफेद रङ्गकी रूसी, माथेकी पपड़ी सफेद खड़ियाकी तरहके रङ्गकी होती हैं और भौं तथा गलेके पीछेवाले भागतक फैल जाती है।

आँख।—एक ओर टकटकी लगाकर लगातार देखा करता है (बोवि, इग्ने); शून्य-दृष्टि (बोवि, चिनिन-सल्फ, कूप्रम-ऐसिट), बार-बार दृष्टि संकुचित करता है (मर्क्युरियस, एपिस, युफ्रे) या आँख बन्द किया करता है। आँख सूखी और उसमें दबाव मालूम होता है; दोनों आँखें बहुत बड़ी मालूम होती हैं (ऐको, कैमो, पैरिस, फास, स्पाई)। बाईं आँखकी ऊपरी पलकपर तकलीफ़ देनेवाला सिकुड़ना और फैलना; आँखमें उत्तेजनाके साथ लगातार आँसू बहना (इयुफ्रे, गैम्बो, फाइटो, सिनैपिस और सिङ्को)। नश्तर लगवानेके बाद पलकोंका स्नायुशूल, मानो चक्षुगोलक माथेके भीतर खिंच रहा है (क्रोटोन,

ग्रैफ, हिप, लैके, पैरिस, पल्स), आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ दिखाई देती हैं (बेल, कास्टि, ग्लोन, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब)।

कान।—मानो कानका छेद खुला हुआ है और उसमें वेगसे हवा घुसती है (स्टैफ) या मानो कर्णपटहमें ठण्डी हवा लग रही है, ऐसा अनुभव होना और बार-बार कानमें अंगुली डालकर रगड़नेकी इच्छा। कभी-कभी पैदा होनेवाला और बहुत समयतक रुकनेवाला कानका दर्द तथा कानके पीछे खुजली, खुजलानेपर जगह-जगह फूल उठता है और इन सूजनवाले सब अंशोंके छिन्न हो जानेपर जखम बढ़ जाता है। कानके पीछेके रस-स्रावी उद्भेद। बहरापन—भोजनके समय बढ़ना, थोड़ा-थोड़ा पीव भी बहा करता है।

नाक।—नाकमें सुरसुरीकी वजहसे छींक आना चाहती है, परन्तु आती नहीं है। सर्दीके साथवाली बीमारीमें बार-बार छींक और बचमें स्पर्श सहन न होनेवाला दर्द। नासा-रंध्र सूखा और घ्राण-शक्तिका घट जाना। नाककी जड़की पेशियोंका स्पन्दन दिखाई देता है। पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव, नासारंध्रमें जखम हो जाता है और पपड़ी जमती है, ऊपरी ओठकी त्वचा क्षय हो जाती है और जलन हुआ करती है।

मुखमण्डल।—धुमैले और भूरे रङ्गका। चेहरा फूला, जलन और उसपर रस-भरे दाने निकलकर आपसमें मिल जाया करते हैं; दोनों नाकके छेद रुक जाते हैं; रस-भरी गोटियाँ मिला त्वचाका प्रदाह; बच्चा हमेशा मुँह खुजलाकर खून निकाल डालता है; मुखमण्डल और ललाट गर्म और लाल हो उठता है; रातमें खुजलाहट बहुत बढ़ जाती है; बच्चा खुजलाकर पपड़ियाँ उखाड़ डालता है और उसकी जगहपर बड़े-बड़े पीव-भरे दाने निकलते हैं; खुजलानेपर निकला हुआ रस दूसरी जगह लगनेपर वहाँ भी जखम हो जाता है। मुँहका स्नायु-शूल (बाएँ पार्श्वका—चेलिडो, डालका, ग्लोन, कोलो, प्लैट, गुयायेक, मैंगे, स्पाई), आँखके ऊपरी भागमें दर्द, चक्षुगोलक, गाल, दाँत, गला और कन्धेतक फैल जाता है अर्थात् भौंवाली जगहसे नीचेकी ओर चलता है; आँखसे आँसू निकला करते हैं; आँखकी योजकत्वचा रक्तमय हो उठती है और रोगवाले अंश-सबमें स्पर्श सहन नहीं होता। स्नायुशूल आदिका दर्द एकाएक पैदा हो जाता है; दर्दके बाद रोगवाले अंश सुन्न हो जाते हैं; उत्ताप लगनेपर दर्द बढ़ जाता है। नाकके नीचेवाले अस्थिमय छिद्रके मुँहपर

पैदा हुए फोड़ेमें रातके समय असह्य दर्द पैदा हो जाता है। मुँहकी पेशियाँ सबमें बहुत खींचन मालूम होती है। दाहिने गालकी पेशियाँ सब लगातार संकुचित हुआ करती हैं और रोगीको तङ्ग कर डालती हैं। हनुके नीचेवाली ग्रन्थिमें शूल बेधनेकी तरह दर्द।

मुख-विवर।—दाँतमें दर्द ; बिगड़े हुए या कीड़े खाये दाँतमें (क्रियो, स्टैफि) ; रोगवाला दाँत लम्बा मालूम होता है और इस दाँतसे कोई चीज़ काटनेपर और जीभसे यह दाँत छूनेपर धीमा-धीमा दर्द मालूम होता है ; वृद्धि—रातमें, घटना—मुँह फाड़कर वायु खींच लेनेपर। दाँतकी जड़ क्षय हो जाती है, पर अगला भाग ज्यों-का-त्यों रहता है (थूजा, मर्क, इसके विपरीत)। जीभ—गाढ़े सफेद रङ्गके लेपसे ढँकी और काँटे सब बड़े लाल और ऊँचे दिखाई देते हैं ; जीभके बीचका अंश बिदारित या फटा। तालुमूल पार्श्वके दोनों गह्वरोंका रङ्ग गाढ़ा लाल ; स्वरनालीतक सूखी और जलन-भरी ; प्रत्येक शीत ऋतुमें बढ़ जाता है ; उपदंश-विषसे उत्पन्न। मुँह और गलेमें लगातार जलन। मुँहकी गन्ध सड़े पनीरकी तरह।

गलेके भीतर।—कण्ठ सूखा मालूम होता है ; निगलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठनालीको किसीने दबा रखा है। लगातार शीत मालूम होना, यहाँतक कि शय्यापर सोनेवाली अवस्थामें भी। तालुमूल और अन्ननालीमें जलन, तालुमूलका संकोचन ; भोजनके पदार्थ आदि निगलनेके समय निगले हुए पदार्थ इस सिकुड़े हुए अंशपर दबाव डालते हैं। कण्ठमें मिचली होती है (साइक्ल, ऐ-फास, स्टैन, बैलि)।

पाकाशय आदि।—दोपहरके बाद और सन्ध्याके समय राक्षसी भूख पैदा हो जाती है। मुख-विवर, कण्ठ और पाकस्थलीमें जलन ; भोजनके बाद घटना। ऐसा मालूम होता है, मानो तालुमूलका पिछला अंश कफ़से भरा है, कण्ठ साफ़ करनेपर भी वही एक भाव बना रहता है। हरी आभा लिये तीता श्लेष्मा वमन, इसके साथ-ही-साथ सरमें दर्द, प्लीहा-प्रदेशमें धीमा दर्द, प्लीहा कड़ी, फूली मालूम होती है और उसमें दबावकी तरह दर्द और गड़गड़ आवाज़ होती है, आध्मान-वायुकी अधिकताकी वजहसे शूलका दर्द, इसके साथ ही श्वासमें कष्ट और सिहरावन।

मलान्त्र और मल।—बार-बार बदबूदार वायु निकलना, विशेषकर पाखाना होनेके पहले (प्लैण्टे)। मल—कोमल, भूरा, खट्टा वायुसे भरा

(आर्स, जेल, इपिक, प्लैरट, रियुम, सैबाड) ; चिकना पदार्थ मिला, अजीर्ण, सन्ध्याके समय बढ़ना ; उद्भेद रुकनेकी वजहसे उदरामय ; पाखाना होनेके समय काँच निकलना (ब्राई, कैन्थ, क्रोटोन, पोडो, सल्फ)। मलान्त्र निकलने बाद मलद्वार संकुचित हो जाता है, इसलिये वह सहजमें ही अपने स्थानपर नहीं बैठायी जा सकता (बहुत देरतक बैठे रहनेपर बाहर निकला हुआ मलान्त्र फूल जाता है और फिर बैठाया नहीं जा सकता—रियुटा)। पाखाना होनेके पहले और समय मलद्वारमें सुरसुरी होती है—मानो कृमिके लक्षण पैदा कर देती है ; मलका कड़ापन—मल गाढ़ा, भूरे रंगका, कड़ा गांठ-गांठ, बहुत अधिक, पर यंत्रणा-रहित, कूथन-मिला। मलद्वार फटा हुआ (ऐग्नस, कास्टि, सिपा, काण्डियुरैङ्ग, ए-नाई, पियोनी, रैटान, सिपि)। गर्भावस्थामें उदरामयके साथ मलान्त्रका अपने स्थानसे हटना।

पेशाब।—मसाना या मूत्र-ग्रन्थिमें सुई गड़नेकी तरह दर्द—बायें और ऐसी तकलीफ मानो फटा जाता है (रास,—दाहिने मसानेमें—बायें)। सवेरे और तीसरे पहर बहुत ज्यादा परिमाणमें फीका पेशाब हुआ करता है। मूत्रसंचय क्रियाका घटना। पेशाब मैला और उसमें लाल तली जमती है (नेट्र-सल्फ, सोरिन, सेलिन, सिपि)। मूत्रस्थलीके ऐंठनकी तरह दर्दके साथ रक्तमिला पेशाब (एपिस, कैन्थ, कैंक, कैल्को, हैमा, मर्क-कोर, पल्स, टेरिब) ; प्रमेह रोगमें पेशाब कर लेने बाद कई बूंद खून टपक पड़ता है (चिमाफि-ऐम्बेल, मर्क—पेशाबकी अन्तवाली कई बूंदे खून मिली—हिप)। पेशाबके अन्तमें मूत्रनालीके मुँहपर चीटी काटनेकी तरह यंत्रणा या जलन मालूम होती है।

पुं०-जननेन्द्रिय।—लिङ्गमें बहुत कड़ापन (ऐसिड-नाई, ऐनाक, क्लिमेट, कैनाब-इन, ग्रैफ, प्लम्ब) और बहुत अधिक कामोद्दीपना (कैन्थ, लाई, लिसिन, सैबाई)। शिश्नमें फाड़ने, चिलक मारने या अस्त्राघातकी तरह यंत्रणा। लिङ्गमणिके अगले भागमें फाड़नेकी तरह जलन (थूजा, फार्मि) और अस्त्राघातकी तरह दर्द, शिश्न गर्म (जैकोरैण्डा, स्पञ्जि) और फूला (कैनाब-सैट, सिनेवार, कैलि-आयोड, मर्क-कोर, साइलि)। अण्डकोषका फूलना, कुचिकित्सित प्रमेह रोगके बाद (क्लिमैंट, मिडोरिन)। मुष्ककी व्यथा-रहित सूजन, एकाएक रुके हुए उपदंशके बाद मुष्कमें दर्द-भरी सूजन हो जाती है (सिफिलिन)। लिङ्गमणिकी जड़में बहुत ज्यादा परिमाणमें सफेद रंगका लिङ्गमल

सञ्चित होता है (कास्टि, नक्स, सिपि)। शिश्न और लिङ्गमण्डिके ऊपरी अंशमें ऐसा अनुभव होना कि सुई गड़ रही है। प्रमेहका स्राव पानीकी तरह या श्लेष्माकी तरह (नैट्र-म्यूर, थूजा)। समूचे शिश्न और विटप-त्वचाके भीतर डंक मारनेकी तरह दर्द और सुरसुरी अनुभव होती है ; मूत्रनालीमें स्पर्शतक सहन नहीं होना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तव—बहुत जल्दी-जल्दी प्रकट होता है, स्राव बहुत ज्यादा और बहुत दिनोंतक स्थायी ; प्रदर और मुँहके स्नायुशूलके साथ थोड़ा स्राव। जरायुमें जखम (ऐल्यू, आर्नि, कैल्के), उसमें उत्तेजना, जलन और सुई गड़नेकी तरह अनुभव होना ; अण्डलालकी तरह, कभी-कभी खून-मिला ; कभी-कभी पैदा होनेवाला प्रदर - अण्डेके सफेद अंशकी तरह (बोवि, लिलि-टाइग्र—सिर्फ दिनके समय ऐसा स्राव हुआ करता है—प्लैटि ; दिन-रात हर समय इस प्रकारका स्राव - कैल्के, फास, चलनेके समय ऐसा ही स्राव—बोवि) और त्वचाको क्षय करनेवाला (ऐल्यू, बोवि, कोलोफिल, कैलि-आयोड, क्रियो, ऐ-नाई, फास, सिपि, साइलि, वाइबर्न)। गर्भावस्थामें पतला पाखाना होना (एपिस—बहुत आवश्यक न हो तो गर्भावस्थामें इसका प्रयोग न करना चाहिये ; हायो, लाई, ऐ-फास, पल्स) और मलान्त्र-भ्रंश।

श्वासयन्त्र।—स्वरभंगके साथ वायुनलीमें जलन और सूखापन अनुभव होना। श्वास-कृच्छ्रता—मानो यह फेफड़ेके संकोचनकी वजहसे दोनों पार्श्वकी आवरणोंके मिल जानेके कारण पैदा हुआ है ; माथा झुकानेपर ऐसा मालूम होता है मानो वक्षस्थल मजबूतीसे बाँधा हुआ है ; गहरी साँस लेनेके लिये लालायित (ब्राई, कैल्के, ग्लोन, मर्क, फास)। सोनेपर बहुत तेज़ खाँसी पैदा हो जाती है (कैम्फ, कास्टि, हायो, पल्स—सोनेपर खाँसीका घटना - मैङ्ग, ब्राई)। क्रुप खाँसी या आक्षेपिक खाँसी,—स्वरनलीसे वक्षके भीतरतक उत्तेजनासे पैदा हुई ; बलगम सवेरे पीला, गाढ़ा गोंदकी तरह, उसका स्वाद नमकीन (लाई, पल्स, स्टैन) या बहुत पुरानी सर्दीसे पैदा हुआ श्लेष्माकी तरह बदबूदार। खाँसीका बढ़ना—संध्यासे रातके १२ बजेतक या वक्ष-गह्वरके ऊपरी अंशमें कसावटके भावके साथ दिन-रात सम-भावसे रहनेवाली ; कोई गर्म चीज खाने या पीनेपर जबतक वह कै नहीं हो जाती, तबतक ऊपरके ऊपर खाँसी आया करती है (गर्म पानी आदि पीनेपर खाँसी - कैम्फ, इग्ने, स्टैन ; गर्म चीजें आदि खानेपर खाँसी—सैराई, कैलि-कार्ब, लोरो, पल्स ;—खाँसनेके

बाद खाये हुए पदार्थका वमन—आर्स-ऐ, कक्स-कैक्ट, फेर, हिप, हायो, इपिक, लैके)। वक्षके दाहिने पार्श्वमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द ; वृद्धि—ठण्डी साँस लेनेपर (लम्बी साँस लेनेपर वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द—ब्राई, कैलि-कार्ब, फास)। पीठ और वक्षस्थलमें ऐंठनकी तरह कसावटका भाव।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनकी पीठ और गलेकी पेशियोंमें अकड़न और दर्द। गलदेश और कण्ठनलीके दाहिने पार्श्वमें अकड़नका भाव, गर्दन हिलानेपर बढ़ना मालूम होना। अंशफलकके ऊपरवाली पेशीमें वातकी वजहसे दर्द ; इन पेशियोंमें खींचन और सूजन मालूम होती है और हाथ हिलानेसे व्याघात पैदा कर देता है। स्कन्ध-सन्धिमें ऐसा दर्द होता है, मानो टूट जायगी (ब्राई)। दाहिने कक्ष या बगलमें त्वचाका क्षय हो जाना मालूम होना। दाहिना हाथ ठण्डा और बायाँ हाथ गर्म या दोनों हाथ ठण्डे (एक हाथ ठण्डा दूसरा गर्म—सिङ्को, डिजि, इपिक, पल्स ; पहले दाहिना हाथ ठण्डा होता है, फिर बायाँ हाथ—मिडोरिन ; दाहिना पैर बरफकी तरह ठण्डा और बायाँ पैर स्वाभाविक गर्म—चेलिडो)। मेरु-चंचु अस्थिमें गिरनेकी वजहसे दर्द, दाहिना हाथ काँपा करता है (ऐनाक ; बायाँ हाथ—कैक, कैन, लिसिन)। हाथकी अंगुलियोंका अगला भाग सब अवश, कोई चीज़ पकड़ नहीं सकता (द्रव्य आदि अंगुलीसे उठा सकता है, पर कसकर पकड़ नहीं सकता—फास)। दोनों हाथ अवश हो जाते हैं (काकुय, लाई)। ऊरु-शिखर और पुट्ठेकी जगहसे लेकर जानुतक कुछ चिलक मारनेकी तरह थोड़ा दर्द अनुभव होता है। चलनेके समय दाहिनी वंक्षण-सन्धिमें ऐसा दर्द होता है, मानो मोच खा गई है। ऊरु-शिखरमें दर्द—रोगीके पैर छोटे हो जाते हैं। सवेरे शय्यासे उठनेके समय जानु-सन्धि कड़कड़ाया करती है (पैर फैलानेके समय जानुमें फूटन—कैमो, काकुय, पोडो)। खींचनकी तरह दर्द और बाहरसे ठण्डा मालूम होनेपर भी ऊरु वगैरह प्रत्यङ्गोंमें गर्मी मालूम होती है ; निर्मल हवा लगनेपर आराम मालूम होता है। पैर और दोनों चरण अवश और सुन्न हो जाते हैं (कैल्के-फास, कैलि-कार्ब, लैक-कैन, लाई, मर्क-कोर, नेट्र-म्यूर, नक्स, ओपि, रस-टक्स, जिङ्कम)। दाहिने पैरकी अंगुलीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (रैनान-स्कि), दीर्घास्थिके आवरक पर्देमें (ऐङ्गस), विशेषकर जंघाके सम्मुखास्थिवेष्टमें दर्द (मर्क-फाइटो); रातमें शय्यामें सोनेवाली अवस्थामें दर्द अधिक बढ़ जाता है, असह्य व्यथा और जरा भी सहन न होना। जलीय वायुमें दर्द बहुत बढ़ जाता है (उपदंशज

वात-रोगाधिकारमें—आरम और कैलि-आयोडिटम); दोनों पैरोंकी पोटलीमें कड़ी सूजन पैदा हो जाती है।

सार्वाङ्गिक।—दाँत या चेहरेमें तेज़ स्नायु-शूल, विशेषकर यदि दर्द बाएँ पार्श्वकी हड्डीमें पैदा होकर कानतक फैल जाता है; दाँतमें रातके समय स्नायु-शूल। मुँहमें लगातार लारका सञ्चय होना, पेशाबके ऊपर मलाईकी तरह एक पदार्थ तैरता है। वात-श्लेष्मा ज्वर-सुलभ पेशियोंका स्पन्दन (ऐगार, बेल, कैम्फो, जेल, हायो, लोरो, मस्कस, ओपि, रस, स्ट्रैमो, वेरेट-विर, जिङ्क), पेशीके भीतर आगकी सलाई दौड़ रही है, ऐसा अनुभव होना, लम्बी अस्थिका प्रदाह और सूजन। पाराके अपव्यवहारके बाद अस्थि-क्षय; शरीर भारी और शिथिल या बहुत छोटा मालूम होना। बच्चोंका गर्दन तथा हाथ-पैर कमजोर हो जाते हैं और पेट बड़ा हो जाया करता है। ठण्डी हवा सहन नहीं होती। सवेरे ठण्डा पानी छुआ नहीं जाता। सन्धियोंमें शिथिलता मालूम होना, मानो सन्धियोंमें बल नहीं है। रातके समय दर्द आदि ऊपरी अङ्गसे नीचेकी ओर और दाहिने पार्श्वसे बायें पार्श्वमें चला जाता है।

त्वचा।—शरीरकी त्वचा रुखड़ी और रूखा भाव एवं रूसी जमना या छाल उधड़ना (आर्स, लिथिया-कार्ब, फास, सोरिन, सल्फ, ऐ-नाई)। तलहत्थीका चमड़ा निकला करता है। शरीरमें बहुत अधिक खुजली, छूने या शय्यामें सोनेपर बढ़ना। खुजलानेपर जलन और दूसरी जगह खुजली पैदा हो जाना। अकौता (आर्स, कैल्के, ऐ-कार्बोल, क्रोटोन, डालका, ग्रैफ, हिप, पेट्रोल, लाई, सोरिन, विङ्कामाइ, रास-वेन, वायोला-ट्राई, थूजा); असह्य खुजली पैदा करनेवाला और बहुत ज्यादा रस बहनेवाला। हाथकी अंगुलियोंकी सन्धिमें जखम पैदा करनेवाले उद्भेद, उसमें रातमें बहुत खुजली पैदा हो जाती है। वक्ष, बाँह और उरुके ऊपर भूरे रङ्गके खसड़ेकी तरह उद्भेद (कैमो, कर्णस, कैलि-मूरर, नेट्र-मूर) निकलते हैं। रस-भरे दाने फटकर भूरी आभा लिये पपड़ीमें परिणत हो जाते हैं। वार्द्धक्यकी वजहसे शरीरमें खुजली—असहनीय (आर्स, बैराइ, सल्फ)। जखम आदिके चारों ओरके लाल अंशमें बहुत दर्द होता है और थोड़ा-सा ही खुजला देनेपर उससे खून निकलने लगता है; रातमें बहुत दर्द मालूम होता है; पपड़ी या छालेके नीचे पीव-सञ्चय हुआ करता है; जखमके चारों ओर जलन पैदा करनेवाले छोटे-छोटे रस-भरे दाने निकलते हैं। दद्रुमेखला; रोगके बाद स्नायुशूल और जलन। पीठ, वक्ष, उरु

और कानकी त्वचाके ऊपर मछलीके चोयटेकी तरह शल्क पैदा हो जाती है। जखम आदिके चारों ओर रस पैदा होकर ऐसी जलन हुआ करती है, मानो आग छू गयी है (हिप)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—इसके बोखार प्रायः स्वल्पविराम या वात-श्लेष्मा ज्वरमें परिणत हो जाते हैं और जाड़ेके दिनोंमें जो बोखार बहु-व्यापक रूपमें फैलते हैं, उनमें विशेष लाभ होनेकी सम्भावना रहती हैं। शीतावस्थामें—मुख-विवरके पिछले अंशमें सूखापन और सामनेवाले अंशमें अधिक लारका सञ्चय होनेके साथ ही प्यास। शय्या छोड़नेके समय जाड़ा मालूम होता है और शय्यामें सोनेके समय उत्तापकी अधिकता रहती है। वक्षमें कसावटका भाव रहनेकी वजहसे रोगी हाँफा करता है (मानो रोगीकी साँस रुकना चाहती—एपिस)। एक-एक अङ्गमें एक-एक समय जाड़ा मालूम होता है, मानो उस अङ्गपर पानी ढाल दिया गया है, खासकर बाँह, उदर, नितम्ब और दोनों पैरोंमें और बार-बार जम्हाई, समूची देहमें शीत ज्यादा मालूम होना; हाथ-पैर आदि बरफकी तरह ठण्डे और नख सब नीले मालूम होते हैं; ३६ घण्टे तक बराबर जाड़ा लगा करता है, तेज़ प्यास रहती है, परन्तु रोगी गर्मी नहीं चाहता या हवा लगनेसे नहीं डरता और शीतके बाद उत्ताप भी नहीं पैदा होता (शीत २४ घण्टे तक—ऐरेनिया-डाया; १२ घण्टे—कैन्थ, डा० एच, सी, ऐलेन)। शीतका घटना—गर्मीमें प्रयोगसे (आर्स, इग्ने, कैलि-कार्ब, लैके, सैबाड; पानी पीनेपर शीतका घटना—कास्टि, ग्रैफ, इपि; शय्यांके उत्तापसे शीतका घटना—कैलि-आयोड)। उत्तापावस्था—शरीरकी त्वचा शीतल, पर शरीरके भीतर जलन (कैल्के, इग्ने, भीतरी जलन, पर बाहरी लाली नहीं दिखाई देती—हायो)। वाम पार्श्वगत उत्ताप (रास; दाहिने पार्श्वमें उत्ताप—ऐलूम, मिनियैन, पल्स; उर्द्धाङ्गगत उत्ताप—ऐनाक, पल्स)। शीतके बाद प्रचण्ड उत्ताप और औंघाई, निद्रितावस्थामें ही पसीना होता है—ठण्डे पसीनेसे रोगीका शरीर तर हो जाता है (उत्तापकी चरम अवस्थामें रोगीको नींद लग जाती है और बहुत ज्यादा पसीना निकला करता है—पोडो; निद्रितावस्थामें पसीना—ओपि, पोडो, पल्स, रस, सल्फ)।

निद्रा।—कमजोरीकी वजहसे बहुत औंघाई। मुँहमें तेज़ दर्दकी वजहसे नींदमें व्याघात हो जाता है। आधी रातमें रोगी जीवन्त सपने देखकर

या छाती दबने अथवा गला रुकनेकी वजहसे जाग उठता है ; नींद खुलनेपर तकलीफ़ बढ़ जाती है (लैके)।

वृद्धि ।—शीत, तरी ; ठण्डी हवा, एकाएक ऋतु-परिवर्त्तन, उत्ताप, और गर्म खाद्य आदिको छूने या मलनेपर ; शरीर हिलानेपर ; सोने बाद ।

घटना ।—मुँहमें ठण्डी हवा खींच लेनेपर, माथा झुकानेपर, कसकर बाँधनेसे और अंगीठीकी तेज़ गर्मीसे ।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष या दोषघ्न ।—ऐकोन, ब्राई, कैल्के (सर-दर्द), कैम्फो, कैलि-आयोड, मर्क, नक्स, ऐ-नाई, फास्फोरस, विनिगर (सिर्केकी खटाई)।

अनुकूल ।—सम्बन्ध ।—ब्राई, लैके, इग्ने, लाई, मर्क, नक्स, पल्स, रस, सिपि, साइलि, सल्फ ।

सदृश ।—ऐनाक, गुयायेक, फाइटो, रस, स्पाई, थूजा, ऐङ्गस, मर्क ।

तुलनीय ।—आँखका स्नायु-शूल—स्पाइजि । मलान्त्रका सङ्कोचन—लैकेसिस । अकौता—रस-टक्स, ऐनाक । अंगुलीमें जखम—बोरैक्स । गलेमें मिचली—साइक्ला, ऐसिड-फास । हड्डीमें दर्द—ऐङ्गस । दाँतमें कीड़ा—क्रियोजोट । वात—रस-टक्स, ऐनाका इत्यादि ।

शक्ति ।—निम्न-क्रमसे २०० शततमिक क्रम । साधारणतः छठाँ शततमिक क्रमतक व्यवहृत होता है ।

क्रियाका स्थायित्व ।—३० से ६० दिन ।

मिलिफोलियम

(MILLEFOLIUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—"आरो" नामक ताजे पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—दमा ; कर्कटीया जखम ; मृत्पाण्ड ; क्षयकास या यक्ष्मा ; दाँत निकलनेके

समयकी बीमारियाँ; अतिसार; वाधक; अनजानमें शय्यामें पेशाब हो जाना; मृगी; आँसुओंका स्राव होनेपर नासूर; रक्त वमन; खूनका पेशाब; खून-मिली खाँसी; रक्त-स्राव; व्याधि-शङ्का; मूर्च्छा-वायु; बचपनका श्वेत-प्रदर; प्रसवके बाद स्रावकी अधिकता; प्रसवके बाद स्राव रुकना; स्तनमें दूधका न पैदा होना; स्तन-वृन्तमें जखम; नाकसे रक्तस्राव; सूतिकाक्षेप; बन्ध्यत्व; माषक्र दोष; धनुष्टङ्कार; शिराका फूलना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—चोट या गिर पड़नेके कारण जो खून निकलता है, उसे रोकनेकी शक्तिके लिये यह युरोपमें बहुत प्राचीन कालसे खूब प्रसिद्ध है। स्वस्थ शरीरपर परीक्षा करनेपर इसकी और भी कितनी ही शक्तियोंका पता लगा है, उनमें आगे लिखी कई प्रधान हैं—(१) सरमें चक्कर आना,—धीरे-धीरे चलनेके समय; पर ज्यादा परिश्रमके काममें लगे रहनेपर मालूम नहीं होता। (२) फेफड़ा, वायुनली, स्वरनली, मुख-विवर, नाक, पाकस्थली, मूत्रस्थली, मलान्त्र और जरायु आदिसे खूनका स्राव—खून चमकीला, लाल और पतला—चोट, गिरने या नये जखम आदिकी वजहसे और बिना तकलीफ़का। (३) अस्त्राघात या गिर जानेकी वजहसे जखम आदिसे बहुत ज्यादा खूनका स्राव। (४) रक्त-कास,—चोट आदिकी वजहसे यक्ष्मा-कासकी सूचनावस्थामें या अर्श-रोगियोंका अथवा धमनी आदिके फटनेके कारण। (५) प्रसव या गर्भ-स्रावके बाद बहुत अधिक शारीरिक परिश्रमके बाद नाक, फेफड़ा, जरायु वगैरहसे बिना किसी तकलीफ़के खूनका स्राव। प्रसवके बादका खूनका स्राव। (६) आर्त्तव—बहुत जल्दी-जल्दी ऋतु-स्राव होता है। स्राव बहुत ज्यादा, बहुत दिनोंतक स्थायी, आर्त्तव रुकनेकी वजहसे अन्त्रशूल। (७) बालिकाओंका प्रदर,—पेशियोंकी शिथिलतासे उत्पन्न। (८) खाँसी, इसके साथ ही चमकीला खून निकलना; रुके हुए रज या अर्शकी वजहसे बीमारी, इसके साथ ही वक्षमें दबाव मालूम होना और कलेजा धड़कना; किसी ऊँची जगहसे गिरने या भयानक परिश्रमकी वजहसे दिनके ४ बजनेके समय खून निकला करता है।

लक्षणावली

मन।—प्रचण्ड क्रोध (साइकूटा, हायो, नक्स)। सन्ध्याके समय माथेमें जड़ता मालूम होना और इसी वजहसे रोगी स्थिर नहीं कर पाता कि वह क्या

करे या उसे याद नहीं रहता कि वह क्या करना चाहता था (कैनाब-सैट, ऐ-कार्बोलि, कार्डियस-मे, चेलिडो, मैंन्सि); उसके मनमें हमेशा यही याद रहता है कि वह कुछ भूल गया है (आयोड—प्रसवके बाद रक्त-स्राव रोगमें भूल जाता है कि वह क्या कहना चाहता था—कैनाब-सैट); उदरके ऊपरी प्रदेशमें दर्दके कारण उत्तेजित भाव। हृत्पिण्डमें दर्दके कारण उद्वेग (स्पांजि, नैजा, स्पाई)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, दाहिनी बगल और पीछेकी ओर गिर जाता है (दाहिनी बगल—कैम्फो, युपिट-पर्पि, साइलि—पीछेकी ओर—कार्बो-ऐन ; पीछेकी ओर गिरनेका उपक्रम—कैल्के, कास्टि, साइलि, स्पञ्जि), धीरे-धीरे शरीर हिलाने या चलनेके समय (बेल, कार्बो-वेज, कोना, कैलि-कार्ब, ऐ-मूर, नेट्र-मूर, नक्स-मस, नक्स-वोम, पेट्रोल, वायोला-ट्राई)—ज्यादा परिश्रमके काममें लगे रहनेपर कुछ भी अनुभव नहीं होता। झुकनेपर सरमें चक्कर आता है और (सोनेके समय नहीं) मिचली पैदा हो जाती है। सरमें अधिक रक्त-संचय होना, संध्याके समय माथा झुकानेपर ; रातमें ऐसा मालूम होता है मानो छातीके भीतरसे प्रबल वायु प्रवाहकी तरह रक्तका प्रवाह माथेकी ओर चढ़ रहा है, इसके साथ ही नाकसे खूनका स्राव। माथा और चेहरेकी धमनीमें कुछ टपक (मिलिलोटस)। दोपहरकी नींदके बाद माथा भारी मालूम होता है। ब्रह्मतालुमें स्थूल और धीमा दर्द ; ऐसा मालूम होता है, मानो शरीरका सारा खून माथेकी ओर दौड़ रहा है (ऐमिल, कैल्के, फेरम-सल्फ, ग्लोन)। माथेके दाहिने पार्श्वमें ऐसा मालूम होता है मानो पेंचसे कसा हुआ है (समूचा माथा मानो स्क्रूसे कसा हुआ है—काकुल, कोनो, ग्लोन, रास)। अधकपारी या अर्द्धावभेदक सर-दर्द, प्रचण्ड सर-दर्द, बहुत अधिक तकलीफ़की वजहसे रोगी पलंगके पावेपर या दीवालपर सर पटका करता है ; पलक और ललाटकी पेशियाँ सब फड़का करती हैं। सरमें दर्द ; वृद्धि - माथा झुकानेपर (बेल, कैल्के, ग्लोन, हेलिबो, इग्ने, पल्स, सिपि, साइलि, स्पाई) और नींद खुलनेपर (ऐसिड-बेन, नक्स-वोम, सल्फ)।

आँख।—आँखके सामने कुहरेकी तरह पैदा होना (ऐगार, ऐमोनियेक, आर्जेण्ट-नाई, काइक्का, कास्टि, जेल, ग्लोन, ग्रैफ, पेट्रोल, रैनान); आँखके एकदम पास नहीं, कुछ दूर (रियुटा)। दोनों आँखें चमकीली ज्योतिसे भरी (इथ्य, ऐमिग, बेल, जेल, स्ट्रैमो ; ज्वराधिकारमें—जेल ; फेफड़ेका—लाई)।

आँखसे नाककी जड़ और कनपटीतकके स्थानपर मानो भीतरकी ओर दब रहा है या कुछ बिंध रहा है—ऐसा अनुभव होना। आँखमें मानो बहुत ज्यादा परिमाणमें खून है (एपिस, अरम-म्यू, ब्रोम, कैल्के, ऐ-फ्लू, लाई, ऐ-नाई, नेट्र-मूर, पेट्रोल, पल्स, साइलि, सल्फ)।

कान।—बाएँ कानके पास आवाज़ करनेपर रोगी भयसे चौंक उठता है, इसके बाद हँसनेपर ऐसा मालूम होता है मानो कानसे ठण्डी हवा निकल रही है। मध्याह्न भोजनके बाद ऐसा मालूम होता है मानो दोनों कान रुक गये हैं।

नाक।—नाकसे खूनका स्राव। माथे और वक्षमें खूनका अधिक सञ्चय होना और नाकसे खूनका स्राव। आँखसे नासा-मूलतक ऐसी यंत्रणा मानो कुछ गड़ रहा है।

मुखमण्डल।—चेहरेपर गर्मी मालूम होना, मानो माथेमें खून चढ़ रहा है। भीतरी गर्मीका न रहना, पर चेहरेपर लाली आ जाना। चेहरेसे कनपटी या शंखदेशतक उखाड़नेकी तरह दर्द, निचले हनुके दाहिनेसे कानके बगल और वहाँसे दाँततक उखाड़नेकी तरह दर्द मालूम होना; मुँहकी नाना प्रकारकी भाव-भंगी।

मुख-विवर।—मसूढ़ेमें जखम। सड़ा हुआ मुँहका ज़खम और जखमसे भरा मसूढ़ा। वातकी वजहसे दाँतमें दर्द, इसके साथ ही रोगी मसूढ़ा, मुँह सूखा और प्यास। अलिजिह्वा शिथिल हो पड़ती है। सुस्त करनेवाली सर्दी, कण्ठमें रूखा भाव। कण्ठनालीकी त्वचाका क्षय हो जाना; निगलनेके समय कण्ठनाली द्वारके बाएँ पार्श्वमें दर्द मालूम होना (इग्ने, लैके, साइलि, स्ट्रैन)।

पाकस्थली।—पाकस्थलीमें यन्त्रणा-जनक चबानेकी तरह या सलाई बिंधनेकी तरह दर्द, मानो बहुत अधिक भूख लगी है (सिना; खा लेनेपर कुछ देरके लिये आराम मालूम होना, पर थोड़ी ही देर बाद इस तकलीफ़का फिरसे पैदा हो जाना), पाकशयके कर्कट रोगाधिकारमें। सवेरे नींद खुलनेपर पाकस्थली खाली मालूम होती है (इस्का-हिप, ओपि)। पाकाशयमें ऐंठनकी तरह दर्द और ऐसा मालूम होता है मानो कोई जलीय पदार्थ पाकस्थलीसे आँतोंमें प्रवेश कर मलद्वारकी ओर जा रहा है। चेचककी गोटियोंके भरपूर

न निकलने या रुक जानेकी वजहसे या संयुक्त मसूरिका रोगके बाद पाकस्थलीमें भयानक यंत्रणा। पाकाशयसे वक्ष-गह्वरतक जलन (ओलि-ऐनम, फास) खाँसते-खाँसते वमन हो जाता है।

अन्त्राशय आदि।—बारहवीं पर्शुका-ग्रन्थिकी उपास्थिके पासवाले यकृत-प्रदेशमें दर्द। ऋतुस्रावके समय आँतोंमें शूल। तेज़ शूलका दर्द और खून-मिला पतला पाखाना होना—गर्भावस्थामें। उदर आध्मान-वायुसे भरा रहता है; खूनी बवासीर; आँतों आदिसे बहुत ज्यादा खूनका स्राव। उदरामय—पाखाना होनेके पहले पेटमें ऐसा शब्द होना मानो जलीय पदार्थ हिल रहा है और ऐसा शब्द होकर बहुत ज्यादा परिमाणमें घोर लाल रङ्गका पाखाना होता है। इसके बाद क्रमशः काला और बदबूदार तथा खून मिला मल निकला करता है। बहुव्यापक रक्तामाशय रोगके समय कूथनके साथ खून-मिला आममय मल और बदबूदार वायु निकलना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत ज्यादा परिश्रम करनेकी वजहसे जरायुसे खूनका स्राव; आर्त्तव—बहुत जल्दी प्रकट होता है; स्राव बहुत ज्यादा, बहुत दिनोंतक स्थायी; ऋतुस्रावका रुकना और अन्त्रशूल; पेशियोंकी शिथिलताकी वजहसे बालिकाओंका प्रदर (कैल्के)। ऋतुरोधकी वजहसे मृगी रोग। बहुत ज्यादा रजःस्रावकी वजहसे बन्ध्यत्व। गर्भ-स्राव प्रवणता। गर्भ-स्रावके बाद जरायुसे या प्रसवके बाद रक्तस्राव; प्रसवके बादका क्लेद-स्राव रुक जानेकी वजहसे प्रबल ज्वर, स्तनमें दूधका न रहना या धनुष्टंकार आदि अकड़नकी बीमारियाँ—हाथ-पैर अकड़े और भयानक तकलीफ़ हुआ करती है (ऐको, कोलो, ऐ-कार्बोल, हायो, ओपि)। जखम-भरे स्तन-वृन्त (आर्नि, बैप्टि, कास्टि, ऐ-फ्लू, ग्रैफा, हैमा, सिपि)।

श्वास-यन्त्र।—खाँसी,—खाँसनेपर चमकीला लाल-रंगका खून निकलता है (ऐको, इपिक); रजोरोध (फेरम, पल्स, सिनिसियो, सैङ्गिविन, वेरेट, कक्कस) या बवासीर रोगमें (बवासीरका स्राव रुकनकी वजहसे—नक्स-वोम); वक्षमें दबाव मालूम होना और उसके साथ हृत्कम्प (इपिक, डिजि); किसी ऊँची जगहसे गिरना; बहुत अधिक परिश्रम या किसी तरहके यंत्रकी चोट (आर्नि, कोलचि, इपिक) या किसी दूसरे कारणसे धमनी आदिके फटनके कारण पैदा हुआ; रोज़ दिनके ४ बजनेके समय खून निकला करता है (लाइकोपोड)। बिना तकलीफ़के खून जाना —प्रसवका दर्द या गर्भ-

स्रावके बाद अथवा गर्भ-स्रावकी आशंका हो, इस प्रकारकी अवस्थामें (यदि खून लाल चमकीला हो और हाथ-पैरकी सन्धियोंमें दर्द मौजूद न रहे)। खून-मिली खाँसी—चोट या गिरने आदिके बाद फेफड़ेसे खूनका स्राव (आर्नि, कोल्चि, इपिक); यक्ष्माकासके आरम्भकी अवस्थामें। पेशियोंकी शिथिलताकी वजहसे फेफड़ेसे बहुत ज्यादा श्लेष्माका स्राव। खाँसीके साथ बार-बार खून निकलना और छातीमें दबाव मालूम होना ; फेफड़ेमें बेधने या डंक मारनेकी तरह तकलीफ़ और दर्द मालूम होता है, अंसफलकके नीचे दर्द अधिक रहता है—फेफड़ेके यक्ष्मा-रोगमें ; फेफड़ेमें बुलबुले उठकर ऐसा अनुभव होना मानो गर्म खून चढ़ रहा है और एक तरहका बिना खाँसे ही खून निकला करता है (खून निकलनेके कुछ ही देर पहले चमकीले लाल रंगके खूनके बुलबुले निकला करते हैं—इपिक)। बहुत अधिक कलेजा धड़कना और खून-मिला कफ़। खाँसीके साथ खून निकलनेकी वजहसे शरीरका समूचा खून गर्म हो जाता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—खड़े होनेवाली अवस्थामें, श्वास-प्रश्वासके समय बाएँ अंसफलकमें ऐसा अनुभव होना, कि सुई या आल्पीन गड़ रही है। कभी-कभी बायाँ बाँह अवश हो जाता है। दोनों हाथोंमें बहुत गरमी मालूम होती है। दाहिने पैरकी गुल्फके पीछेवाली सुदृढ़ कण्डारमें मानो किसीने मारा है या रगड़ लग गयी है—इस ढंगका दर्द, दोनों पैर सुन्न हो जाते हैं। पहले बायाँ पैर, फिर दाहिना। सन्धि और प्रत्यङ्गोंमें वातकी वजहसे दर्द। हाथ-पैर आदिमें छेदने, खींचने या उखाड़नेकी तरह दर्द। हाथ-पैरोंका पक्षाघात और सङ्कोचन (गुयायेक, कैलि-आयोड)। दाँत निकलनेके समय या प्रसवके बाद धनुष्टङ्कार आदि आक्षेप (प्लैट,—प्रसव वेदनाके समय—साइकूट, हायो, कैलि-ब्रोम, प्लैट ; ऋतुस्राव रुकनेकी वजहसे मृगीका आक्षेप—पल्स)। चोट आदि लग जानेके कारण पैदा हुए जखम आदिसे बहुत ज्यादा परिमाणमें खून निकला करता है (आर्नि, हैमा)। बहुत भारी चीज़ आदि उठाने या बहुत अधिक शारीरिक परिश्रम आदिकी वजहसे पैदा हुई बीमारियाँ। निद्रितावस्थामें छातीसे माथेतकका भाग खूनसे भर जाता है, मानो वक्षसे एक सोता निकल रहा है—ऐसा मालूम होता है। बहुत रात बीतनेपर नींद आती है और सवेरे सोकर उठते समय बेचैनी या जड़ता मालूम होती है।

त्वचा।—बायाँ मसाना या मूत्रग्रन्थिमें दर्द रोगमें जाड़ा मालूम होना ; बायें मसानेमें दर्द होनेके बाद पाँचसे आठ दिनोंतक खूनका पेशाब

होता है। अकौता या कच्छु रोग दब जानेकी वजहसे बोखार पैदा हो जाना (बच्चोंका रातके समयका बोखार—बेल)। गर्भवती स्त्रियोंकी दर्द पैदा करनेवाली शिराओंकी सूजन (आर्नि, कार्बो-वेन, कास्टि, फेर, ऐ-पलू, ग्रैफ, हैमा, नक्स-वोम, पल्स)। कर्कटका जखम; छोटी माता दब जानेकी वजहसे पाकाशयका दर्द, सारे शरीरमें मटरकी तरह अनगिनती रस-भरी गोटियाँ निकलती हैं (बावें, मर्क); गोटियाँ सब भूरी आभा लिये गुलाबी रङ्गकी रहती हैं, सात घण्टेके बाद घोर बेंगनी रङ्ग धारण करती हैं और उनसे असह्य बदबूदार रस निकलता है; चार दिनोंमें सूख जाती हैं, परन्तु दाग रहता है। मूत्रस्थलीमें अश्मरी या पथरीका इकट्ठा होना; अस्त्रके सहारे यह पथरी निकलवानेकी वजहसे जखम।

वृद्धि।—माथा झुकानेपर, सन्ध्या और रातके समय, बहुत अधिक शारीरिक परिश्रमसे; ऊँची जगहसे गिरनेपर, काफी पीने और सोनेपर (रक्त-कास)।

उपशम।—दिनमें, बहुत अधिक शारीरिक परिश्रमसे (सरमें चक्कर आना); शराब पीनेपर, सोनेपर (मिचली)।

विपरीत सम्बन्ध।—काफिया।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—इरिक्टाइटिस (नाक, मुँह, अन्त्राशय, मसाना, जरायु और फेफड़ेसे खूनका स्राव और दोनों पैरोंकी सूजन); सिनिसियो (रक्तमूत्र); हैमा, इपिका, प्लैट, इरिजि (रक्त-स्राव); आस्टि, हैमा, पल्स, आर्नि, ऐकोन, सैङ्गिविन, वेरेट, कक्कस, वेलिस, कैलेण्डु। यह आर्निका और ऐकोनाइटके बाद रक्त-स्राव रोगमें विशेष उपयोगी है। त्रायो, आस्टिलेगो (रक्त-वमन)।

शक्ति।—मूल अर्कसे १२वाँ दशमिक क्रम।

माइमोसा

(MIMOSA)

दूसरा नाम ।—माइमोसा—हिपुग्रमिलिस ; लज्जावती लता ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पत्तेसे मूल अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—कमर, पीठ और अङ्ग-प्रत्यङ्गमें अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द, पैरकी एँड़ीमें सूजन और अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द, खींचनका भाव प्रभृति लक्षणोंमें वात रोगकी एक उत्कृष्ट दवा है ।

वातकी वजहसे चक्षु-प्रदाहमें भी बढ़िया काम करता है ।

शक्ति ।—१म दशमिकसे ६ शततमिक ।

मिचेला रिपेन्स

(MITCHELLA REPENS)

दूसरा नाम ।—पक्षी आदिके खानेका एक तरहका मटर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजि गाछसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मूत्राधारकी उत्तेजना ; वाधक ; मूत्रकृच्छ्रता ; मूत्रग्रन्थिमें दर्द ; जरायु-प्रदाह ।

उपयोगिता और आभास ।—पेशाबके यन्त्र और स्त्री-जननेन्द्रियपर ही इसकी विशेष शक्ति दिखाई देती है ; क्योंकि इन्हीं स्थानोंपर इसके विशेष लक्षण सब प्रकट हुआ करते हैं । जैसे—

ऋतु-स्राव न होना ; देरसे ऋतु होना, वाधक, बहुत ज्यादा रजःस्राव, नकली प्रसव वेदना और जरायुमें दोषकी वजहसे मूत्रकृच्छ्रता इत्यादि ।

लक्षणावली

पेशाब ।—मसानेमें उत्तापकी अधिकता (आर्स, आयोड, नक्स) और धीमा-धीमा दर्द (ऐ-बेन, युपेट-पर्पु) । मूत्रस्थलीकी ग्रीवाके स्थानपर उत्तेजनाकी

वजहसे बार-बार पेशाबका वेग (औरतोंका—इयुपेट-पर्पु, हाइड्रोकोट)। रमणियोंकी मूत्रनली और मूत्राशय-ग्रीवा फूली हुई और उत्तेजनाशील (इयुपेट-पर्पु)। पेशाब बहुत लाल और उसमें सफेद तली जमती है (कैन्थ, सिङ्को, हिप, क्रियो, मैग-कार्ब, सार्सा, सिपि)। मूत्राशयकी सर्दी या मूत्रस्थलीकी सर्दी, विशेषकर औरतोंकी जरायु-रोग मिली मूत्रकृच्छ्रता (एपिस)। कमरमें दर्द, ऐसा मालूम होता है, मानो मसानेसे यह दर्द पैदा होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायुमें उत्तेजना और तेज़ दर्द मालूम होना; जरायु-ग्रीवामें अधिक खून-सञ्चय होना, उसका घोर लाल हो जाना और फूलना; मूत्राशय-ग्रीवामें उत्तेजना और बार-बार पेशाबके वेगके साथ (मूत्राशय-ग्रीवाकी उग्रताके साथ जरायु-ग्रीवाका लाल होना और योनिमें उत्ताप तथा खुजली—हाइड्रोकोट); जरायु-ग्रीवामें अधिक रक्त-सञ्चय होना, स्पर्श सहन न होना और जलन (सिपि, अरम-मूर, नेट)। जरायुमें अधिक रक्त-सञ्चय होना और उससे चमकीला लाल रङ्गके खूनका स्राव और मूत्रकृच्छ्रता। बहुत दिनोंकी क्षीण प्रसव-वेदना (काफि, इयुपेट-पर्पि, कैलि-कार्ब, ओपि, सिपि)। प्रसव होनेके तीन महीने पहलेसे कभी-कभी नकली प्रसवका दर्द पैदा हो जाता है (ऐक्टिया-रेस, सिनेबार, डायस्को, जेल, नक्स-मस, ओपि, पलस, वाइवर्न)।

तुलनीय।—जरायु-मुखपर खूनकी अधिकताके साथ मूत्राधारके मुखकी उत्तेजनामें—सिपिया। योनिमें गर्मी और खुजलाहटमें—हाइड्रोकोटाइल। जरायुमें जखम—एपिस, वेस्पा।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—एपिस, ऐक्टिया-रेस, कोलोफाइल, हेलोन, इयुपेट-पर्प, हाइड्रोकोट, इयुवा-उर्साई, सिपि, वेस्पा।

शक्ति।—मूल अर्क और प्रथम दशमिक क्रम।

मोमोर्डिका

(MOMORDIKA)

दूसरा नाम।—मोमोर्डिका बैलसामिना; बैलसम-पेरु।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पके ताजे फलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—पेटमें ऐंठनकी तरह दर्द, शूलका दर्द, बहुत ऋतुस्रावके साथ तलपेट और कमरमें असह्य दर्द, लक्षणमें कोलोसिन्थ और इलाटेरियमके साथ इसका सादृश्य है।

उदरमें गड़गड़ शब्द (लाइको) और उदरामय इसका एक निर्देशक लक्षण है।

आगमें जले या कुचले हुए अङ्गमें इसका लिनिमिण्ट या पोल्टीसका बाहरी प्रयोग (कैन्थर, आर्टिका, कैलि-मूर) से विशेष लाभ होता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—मोमोर्डिका-पार्निटा, लाइको, कैन्थर, कोलोसिन्थ, इलाटे, आर्टिका।

शक्ति ।—मूल अरिष्ट और बाहरी प्रयोग।

मार्फिनम

(MORPHINUM, MORPHIA)

दूसरा नाम ।—मार्फिया, अफ़ीमका उपक्षार।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मार्फिया, ऐसिटेट आव मार्फिया, मार्फिया मूरियेटिकम—विचूर्ण और इसके बाद तरल क्रम। सबके अलग-अलग परीक्षित लक्षण नहीं हैं, इसलिये सबके ही लक्षण आदि एक साथ लिखे जाते हैं।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— ताण्डव; कब्जियत; आक्षेप; आँखकी बीमारी; सर-दर्द; जबड़े अटकना; वज्राघात या चोट; स्नायुशूल; हृत्कम्प; नींदका विकार; आँखका डेरा भाव या तिर्यक दृष्टि; हनुस्तम्भ; उदराध्मान (पेट फूलना); सरमें चक्कर आना।

उपयोगिता और आभास ।—इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—(१) थोड़ा भी माथा हिलानेपर माथेमें चक्कर आ जाना। (२) सर-दर्द मानो माथा जोरसे कसा हुआ है। (३) मस्तक बहुत भारी और गर्म मालूम होना। (४) तिमिर दृष्टि—चारों ओर अंधेरेसे ढंका या अन्धेरा दिखाई देना। (५) नाकके भीतर और नाकके अगले भागमें बहुत खुजली। (६) जीभ बहुत मोटी मालूम होना। (७) बहुत रुलाई—रोने और आँसू बहानेकी

वजहसे चिकित्सकके आगे अपने रोगका वर्णन नहीं कर सकता। (८) एकाएक बेहोश हो जानेका उपक्रम और रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी मृत्यु पास है। (९) आँख बन्द करनेपर नाना प्रकारकी भ्रम-भरी चीजें दिखाई देना। (१०) बार-बार हरे रङ्गका पदार्थ वमन। (११) प्रत्यङ्गोंकी बहुत अधिक चञ्चलता और चेतनाकी अधिकता, दोनों पैर इतने चञ्चल मालूम होते हैं, कि रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि उसका रोगी पैर यदि कोई पकड़ रखे तो अच्छा हो। पैरोंमें ऐसा अनुभव होना, मानो अनगिनती कीड़े रेंग रहे हैं। (१२) हाथ-पैरका काँपना, एकाएक हिलना अथवा अकड़ना, यहाँतक कि धनुष्टङ्कारतक हो सकता है। (१३) स्नायुशूल—तकलीफ़की अधिकताकी वजहसे धनुष्टङ्कारिक आक्षेप। (१४) बहुत औंघाई, आधी नींद; आधी जाग्रत अवस्था; सोया-सोया चौंक उठता है। (१५) वज्राघातकी वजहसे स्नायविक आक्षेप आदि।

लक्षणावली

मन।—बहुत रोनी प्रकृति; बहुत अधिक रोने और आँसू बहानेकी वजहसे अपने रोगके लक्षण आदि नहीं कह सकता (पल्स, कैलि-कार्ब)। बहुत उद्वेग—रोगिनी समझती है, कि उसकी मृत्युमें अब विलम्ब नहीं है (ऐकोन, कास्टि, क्रोकस)। आँख बन्द करते ही नाना प्रकारकी भ्रम-भरी चीजें देखना; रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी शय्याके पयताने एक पुरुष खड़ा है, मानो उसका घर कितने ही रङ्गके बच्चोंसे भरा हुआ है। रोगी समझता है कि वह बैठकर भींज रहा है, मनुष्योंकी नाना प्रकारकी कण्ठ-ध्वनि सुन पड़ती है, नाना प्रकारकी गन्ध मिलती है और उसे ऐसा भी मालूम होता है, कि वह अपने शरीरकी अत्येष्टि क्रिया देख रहा है, मानो उसके चारों ओरके मनुष्योंका आकार बढ़ा जा रहा है (छोटा हो रहा है—प्लैट)। बहुत अधिक परच्छिद्रान्वेषी (हेलोन, नक्स, प्लैट, सल्फ)। स्वप्नमय अवस्था, मानो सभी स्वप्न है, कुछ भी सत्य नहीं है (ऐनाक, लैके, नक्स-मस, वेरेट)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, थोड़ा भी हिलानेपर (बेल, मिडोरिन, मस्क)। सरमें दर्द, मानो मस्तिष्क खूब कसा हुआ है, मानो चारों ओर घूम रहा है। सर-दर्द—ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फट जायगा। माथेमें उत्ताप और भार मालूम होना। माथेके भीतर कसावटका भाव, मानो करोटी

या माथेकी हड्डी या खोपड़ीकी अपेक्षा मस्तिष्क बड़ा है। माथेमें जलन मालूम होना। माथा पीछेकी ओर खिंचा हुआ या झूल पड़ता है।

आँख।—टकटकी लगी दृष्टि (ऐ-हाइड्रो, हायो, ओपि), ज्योति-हीन (इथ्यू, जेल, बेल, स्ट्रैम, मिलिफो)। चमकीली, लाल या गड्ढेमें धसी और ज्योतिहीन आँखें, आँखोंमें खुजली। आँख बन्द करनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो रोगिनीके शय्याके पायताने कोई एक पुरुष खड़ा है या रोगिनीका कमरा कितने ही रङ्गोंके छोटे-छोटे बच्चोंसे भरा है। दोनों कनीनिकाओंका असीम संकोचन, आपसमें दूरसे आई हुई तारकाके साथ तिर्यक-दृष्टि (ऐल्यू, कैम्फो, फास; पासकी तारकाके साथ तिर्यक दृष्टि—कैल्के, साइक्ल)। तिमिर-दृष्टि—सभी चीजें मानो अंधेरेमें ढँकी मालूम होती हैं (ऐल्यू, कैम्फो, कैलि-आयोड, मर्क, पल्स, स्ट्रैमोन, सल्फ)।

नाक।—जब छींक आती है, तब ऊपर-के-ऊपर आया करती है (टैबाक, थिरिड)। नासारन्ध्र, अन्ननली और स्वरनलीमें ऐसी खुजलाहट पैदा हो जाती है, मानो छींक आयेगी। नाकके अगले भागमें बहुत अधिक खुजलाहट मालूम होती है (कास्टि, चेलिडो, पेट्रोल, सिपि); चुनचुनाता है (जेल्स, टियुक्रि) और स्पर्श-ज्ञान गायब हो जाता है (वायोला-ट्राई); रोगी बार-बार अपनी नाकका अगला भाग हाथसे मला करता है (आर्जेण्ट-नाई, नेट्रम-सल्फ, सिना)।

मुखमण्डल आदि।—काली आभा लिये लाल रङ्ग या उजला नीलापन लिये चेहरा, दोनों ओठ, जीभ, मुख-विवर और कण्ठके भीतर बहुत सूखापन। जीभ बहुत सूखी, अगला भाग भूरा, दोनों किनारे और तालु लाल और जीभका बीचका भाग बैंगनी रङ्गका; कभी-कभी जीभ बाहर निकालनेपर काँपा करती है (लैके, मर्क)। मुँहसे पानीकी तरह लार बहा करती है। जीभ बहुत मोटी मालूम होती है; बोली अस्पष्ट निकलती है। कण्ठ सूखा और सिकुड़ा, बहुत जलन-भरी प्यास। भयानक डकार-खट्टा श्लेष्मा निकला करता है। निगलनेके यन्त्रकी या निगलनेकी शक्तिके पक्षाघातकी वजहसे कोई भी पदार्थ निगलना प्रायः असम्भव हो जाता है (कैलि-मूर)। कण्ठनलीके दोनों पार्श्वकी दोनों शिरायें फूल जाती हैं और गलेकी दोनों धमनियोंमें टपक हुआ करती है।

पाकाशय आदि ।—अरुचि, विशेषकर मांससे (ऐ-मूर, नक्स-वोम, पेट्रोल, साइलि, सल्फ)। मिचली, सुस्ती (लैके, वेस्पा); बार-बार ओकाई आया करती है और पर्यायक्रमसे गर्मी और जाड़ा मालूम हुआ करता है। मिचलीके साथ औंघाई (नक्स-मस, प्लैण्ट)। वमन खट्टा, तीता हरे रङ्गका पानीकी तरह पदार्थ या तीता हरे रङ्गका पानी (ऐ-टार्ट, ऐपोमार्फि, ओपि, पेट्रोल, प्लम्ब, पल्स)। पाकस्थलीमें दर्द, भोजनके बाद बढ़ना (ऐबीज-नाइ, आर्जेण्ट-नाई, पल्स ; खा लेनेपर घटना—ब्रोम, चेलिडो, हिप)। उठ खड़े होनेपर मिचली और वमन (उठ बैठनेपर—ब्राई)। आँतोंका शूल—सवेरे चित होकर सोनेपर बढ़ना (पोडो)।

मलान्त्र और मल ।—मलका पतलापन, पानीकी तरह, भूरे या काले रङ्गका मल ; भयङ्कर कूथन, वेग और मलान्त्रमें जलन, रोगी तकलीफ़से उन्मत्त हो उठता है। बहुत दिनोंकी कब्जियत (ऐल्यू, प्लैट, प्लम्ब, ओपि, नक्स, कास्टि); मल—बड़ा, गांठ-गांठ, सूखा, मलद्वारमें दर्द मालूम होता है और वह फट जाता है।

पेशाब ।—मूत्रस्थलीका असम्पूर्ण पक्षाघात (जिङ्कम)। पाखाना-पेशाब रुकना (साइकूर, लोरो, लाई, रास)। मूत्रकृच्छ्र—मूत्रनलीके संकोचनसे उत्पन्न (कैन्थ, नक्स-वोम, पैरिरा ; बहुत अधिक धूम्रपानकी वजहसे—ओपि)। लाला-मूत्र (एपिस, आर्स, कैल्के, ग्लोन, हेलिबो, हेलोन, लेक-डिफ्लो, मिडोरिन, मर्क-कोर, नेट्र-कार्ब, पोलिगोन)। मूत्राधार मुखशायिका ग्रन्थिके बढ़नेकी वजहसे पेशाब रुकना।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—ध्वजभङ्ग—दाहिने रेतोरज्जुमें दर्द (ऐक्टिया, हैमा, ऐसिड-आक्साल)। लिङ्गमें भरपूर कड़ापन न आना या लिङ्गमें कड़ापन बिलकुल ही नहीं आना।

श्वासयन्त्र ।—बहुत श्वास-कृच्छ्रता ; रोगी मानो हाँफा करता है। हिचकी (मस्कस)। श्वासकृच्छ्रता—पहली नींद आनेके साथ ही (लैकि, क्लोरम, ग्रिण्ड, ऐमोन-कार्ब)। असम श्वास-प्रश्वास (ऐकोन, फेर, ऐस्पि-पाई, ग्रिण्ड, कैलि-साया)। वक्षमें कसावटका भाव और श्वासकृच्छ्रता मालूम होना ; सेवा-सुश्रूषा करनेवालेको उठा देनेके लिये कहता है। वक्षोस्थिके बीचमें दर्द (डायस्को, मैन्सि, रियुमेक्स, टेल्यू)। सूखी, प्रबल, विरक्तिकर खाँसी, रातमें

बढ़ना ; गला रोकनेवाली खाँसी ; कफ़, श्लेष्मासे भरा। कलेजा धड़कना। हृत्पिण्ड या गलेकी दोनों धमनियोंमें प्रचण्ड टपक (ऐमिल, ऐट्रोप-सल्फ़, बेल, ग्लोन, मिलिलोट)। शिरामें खूनका अधिक सञ्चय होना और कलेजा धड़कना। यदि रोगीके पास कोई जाता है, तो वह चौंक उठता है और उसकी देह छूनेपर पेशियोंमें फड़कन और खींचन या ऐंठन आरम्भ हो जाती है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दन अकड़ना। कमर क्षीण। समूचे मेरुदण्डमें दर्द। नितम्ब-देशमें लगातार दर्द मालूम होना, रोगी सीधा होकर चल नहीं सकता (सल्फ़)। हाथ-पैरोंमें अकड़न मालूम होती है। सोने बाद दोनों बाँहोंमें दर्द और अकड़न मालूम होना। हाथ-पैरोंकी सन्धियोंमें भयानक दर्द (ऐक्टि-रेस, ऐक्टि-स्पाई); चलनेके समय ढलमलाया करता है (इग्ने, कैलि-ब्रोम, नक्स-वोम, नक्स-मस)। पैर और दोनों चरणोंमें इधर-उधर हटनेवाला तेज़ दर्द ; दोनों चरण सुन्न हो जानेकी वजहसे खड़े होनेपर गिर जाता है। रोगिनीके दोनों पैरोंमें इतना स्पन्दन हुआ करता है कि वह सुश्रूषा करनेवालीको दोनों पैर पकड़कर स्थिर रखनेके लिये कहती है। ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों पैरोंमें कीड़े सब रेंग रहे हैं। बायें पैरका तलवा बरफ़की तरह ठण्डा, ऐसा मालूम होता है, मानो आयल-क्लाथ या केलेके पत्तेपर खड़ा है।

सार्वाङ्गिक।—बहुत अधिक बेचैनी और स्पर्शानुभव शक्ति प्रकट होती हैं (ऐसिर, कैमो, सिङ्को, काफि, प्लम्ब, सिपि, वेरेट-विर); काँपना और फड़कना, रह-रहकर एकाएक हाथ या पैर हिल उठते हैं, यहाँतक कि धनुष्टङ्कारकी तरह आक्षेपतक पैदा हो जाता है। थोड़ा-सा दर्द भी रोगीको असह्य मालूम होता है (ऐको, कैमो, काफि, हिप, इग्ने, लाई)। दर्दकी वजहसे प्रत्यङ्ग आदि फड़का करते हैं। स्नायुशूल आदिका दर्द एकाएक पैदा हो जाता है और उसी वजहसे रोगी मूर्च्छित हो पड़ता है या सुस्त हो जाता है। असह्य स्नायुशूल—बायीं ऊपरी आँखके ऊपर और दाहिने पञ्जरेके भीतरका स्नायुशूल—उत्तापसे बढ़ना ; सारे शरीरमें दर्द मालूम होना, शय्या बहुत कड़ी मालूम होती है (आर्नि, बैप्टी)। सोने बाद लक्षण या यन्त्रणाएँ बढ़ जाया करती हैं (लैके)। दद्रुमिखलाके असमयमें लोप हो जानेपर स्नायुशूल पैदा हो जाता है (मेजेर)।

त्वचा।—शरीरकी त्वचा मुर्देकी तरह सफेद। नीले रङ्गके चिपटे उद्भेद। शरीरकी त्वचामें कोमलता और चिकनाहट नहीं रहती। जिन स्त्रियोंका ऋतु-स्राव होना बन्द हो गया हो, उनके शरीरमें आमवात।

निद्रा ।—बार-बार जम्हाई और औंघाई आनेपर भी नींद नहीं आती (बेल, कैमो)।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष या दोषघ्न ।—ऐवेना-सैट, ऐट्रोपिन, बेल, काफि, ऐकोन, इपिकाक (गौण दुष्परिणाम)। कभी-कभी सलफर।

सदृश ।—ऐपोमार्फि, कोडाया, ओपि, ऐकोन, कैमो, काफि और मस्कस।

तुलनीय ।—स्पर्शानुभव शक्तिकी अधिकता (ऐको, कैमो); लक्षण वर्णनके समय रोना (पल्स); सर हिलानेपर माथेमें चक्कर आ जाना (मस्कस)।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे ६ठा दशमिक विचूर्ण या उच्च क्रम।

म्यूकुना यूरेन्स

(MUCUNA URENS)

दूसरा नाम ।—हार्स-आई।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बुकनी किये हुए फलोंसे सुरासारके साथ अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और साभास ।—यह बवासीरकी एक बढ़िया दवा है। **मलद्वारमें जलन,** बवासीरमें इसका निर्देशक लक्षण है। म्यूकूना युरेन्समें, अर्शमें रक्त-स्राव रहे या न रहे, जलन अवश्य ही रहेगी। यकृत, जरायु, मूत्राशय, अन्त्राशय प्रभृति अङ्गोंकी बीमारीके साथ अर्श रोग रहनेपर, विशेषकर इसके साथ मलद्वारमें जलन रहनेपर म्यूकुना युरेन्स मूल अरिष्ट एक बूंद मात्रामें सेवन करनेपर तुरन्त रोग आरोग्य हो जाता है। अर्श रोगके लक्षणमें इसकी हैमा, इस्कुल और सलफरके साथ तुलना की जाती है।

शक्ति ।—मूल अरिष्ट और निम्न-शक्ति।

म्यूसा

(MUSA)

दूसरा नाम।—बेनाना।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फूलसे मूल अरिष्ट।

उपयोगिता और आभास।—रक्त-स्रावी अर्श और कब्जियतकी बीमारीमें इसका मूल अर्क और निम्न-क्रमके प्रयोगसे बहुत लाभ होता है।

मूत्राशयमें दर्द और पेशाबके साथ श्लेष्मा निकलना लक्षणमें, मूत्राशय-प्रदाह रोगमें इसका व्यवहार प्रचलित है।

स्वरनलीका प्रदाह और श्वासकष्ट लक्षणमें इसका सिरप और मानसिक परिश्रमके कारण सुस्ती और उत्तप्त वेदनामें विशेष लाभदायक है।

शक्ति।—मूल अरिष्ट।

मस्कस

(MOSCHUS ; MUSK)

दूसरा नाम।—मृग-नाभि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण; इसके बाद तरल क्रम तैयार किया जाता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— हृत्शूल ; निस्पन्द वायु (कैटेलेप्सी) ; काली खाँसी ; बहुमूत्र ; श्वास-कष्ट ; मृगी ; मूर्च्छा ; दादकी तरह उद्भेद ; व्याधि-शङ्का ; मूर्च्छावायु ; ध्वजभङ्ग ; श्वासनलीका आक्षेप ; फेफड़ेका पक्षाघात · गर्भावस्थाकी बीमारियाँ ; क्रोधावेश ; डङ्क मारनेकी तरह सान्निपातिक अवस्था ; सरमें चक्कर आना ; हूप-खाँसी।

उपयोगिता और आभास।—मूर्च्छा, कलेजा धड़कना, हिस्टीरिया या मूर्च्छावायु वगैरह स्नायु-विधानके क्रिया-विधानमें यह विशेष उपयोगी है,

खासकर जब इन रोगोंके साथ पेट फूलना, कम्पन, मूर्च्छा और बहुत जाड़ा लगना मिला रहता है। आगे लिखे कई लक्षण इसके निर्णायक और प्रकृति-गत लक्षण हैं :—(१) सरमें चक्कर आना—शरीर या माथेको हिलाते ही, यहाँतक कि आँखकी पलक गिरनेसे भी सरमें चक्कर आ जाता है ; रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो किसी ऊँची जगहसे गिर रहा है। (२) शरीरमें बाहर शीत मालूम होना, भीतर उत्ताप। (३) स्नायविक हिचकी। (४) बहुत ज्यादा पेशाब। (५) भोजनकी रुचि बिगड़ जाना ; सोनेकी इच्छा बहुत नहीं रहती ; शराब आदि उत्तेजक पदार्थ पीनेका बहुत आग्रह। (६) बहुत ज्यादा वायु पैदा होनेके कारण पेट फूलना। (७) स्नायविक उत्तेजनाकी वजहसे उत्पन्न कलेजा धड़कना, इसके साथ ही हृत्पिण्डका काँपना और क्षीण नाड़ी। (८) एकाएक स्नायविक उत्तेजना और वक्षमें दबाव मालूम होना ; श्वास-रोग। (९) फेफड़ेकी क्रियाका न होना या पक्षाघात। (१०) जननेन्द्रियका विकृत भाव ; उसमें बहुत अधिक कामोद्दीपक सुरसुरी और अत्यन्त रमणाकांक्षा। (११) असमयमें ही आर्त्तव-स्राव—बहुत ज्यादा स्राव, मासिक ऋतुस्राव होनेके पहले पेटमें बहुत अधिक दबाव मालूम होना, मानो शीघ्र ही रजःस्राव आरम्भ होगा।

लक्षणावली

मन।—रोगी अन्यमनस्क भावसे आप-ही-आप कुछ बड़बड़ाया करता है और हाथ तथा मुँह हिलाता है, मानो पागल हो गया है। कभी रोता है और कभी जोरसे ठहाका मारकर सारा घर गुँजा देता है। कमजोरीके साथ जल्दबाजीका भाव रहनेकी वजहसे रोता और दुःख प्रकट करता है ; परन्तु यह नहीं बता सकता कि कहाँ क्या तकलीफ़ है। मरनेका भय और आशङ्का हमेशा बनी रहती है, कि अब उसकी मृत्युमें अधिक विलम्ब नहीं है। अवसाद वायुसे पैदा हुई या व्याधिकी आशङ्काके कारण चित्तकी चञ्चलता, कभी-कभी कलेजेमें धड़कन हुआ करती है। प्रचण्ड क्रोध, तिरस्कार या गालियाँ बका करता है ; मुँह सूखा, दोनों ओठ नीले और आँखोंमें टकटकी लगी रहती है, चेहरा मुर्देकी तरह रक्तहीन हो जाता है और रोगिनी मूर्च्छित हो जाया करती है। स्मरण-शक्तिका लोप हो जाना (ऐनाक, इथ्यू, कैलि ब्रोम, लैके, नक्स-मस)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना और काँपती हुई दृष्टि, माथा और पलक हिलाते ही (माथा हिलाते ही—मार्फिन); माथा झुकानेपर बढ़ना ; बैठे-बैठे उठनेपर घटना ; सरमें चक्कर आना रोगमें चेतनाका गायब हो जाना या बेहोशीतक आ जाया करती है (बेहोश हो जाना—कैलि-कार्ब, मैग्नि, नक्स-वोम ; मूर्च्छा—कार्बो-वेज, कैमो, सिङ्को, लैके, इग्नैन, फास, वेरेट्रम-ऐल्ब)। सरमें चक्कर आ जानेकी वजहसे ऐसा अनुभव होना, मानो गिर जायगा (गिर जानेका भय—कैलि-सल्फ, लाई, मिडोरिन)। सरमें चक्कर आना रोगमें मिचली और वमन, सो जाना चाहता है। सरमें दर्द, उसके साथ ही मिचली और वमन (ऐसिट-क्रूड, कैस्टोर, इकुग्र, काकुग्र, कैलि-कार्ब, ऐ-लैक्ट, सैङ्गिविन), रोगीको बाध्य होकर शय्याका आश्रय लेना पड़ता है (ऐ-फास, रस-टक्स)। नाककी जड़में होनेवाला सर-दर्द, दर्द बेहोश करनेवाला और दबावकी तरह। सरमें अधिक रक्त-सञ्चय होना और माथेमें भार मालूम होना। सरके पिछले भागमें सलाई गड़नेकी तरह दर्द और तकलीफ़, मानो इस स्थानसे मस्तिष्कतक एक लोहेकी खील गड़ गई है, घरमें बैठनेके समय बढ़ जाना और निर्मल वायु सेवन करनेपर घटना (हिपर)। सरमें चक्कर आनेकी वजहसे रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह एक बहुत ऊँचे स्थानसे गिर रहा है और इसी कारणसे चौंक उठता है।

आँख ।—टकटकी लगी दृष्टि ; बहुत ज्योतिभरी, अन्यमनस्क भावसे टकटकी लगाकर देखा करता है, एकाएक दृष्टि रुक जाती है और चारों ओर अन्धेरा दिखाई देने लगता है (सिपि, इयुफ्रे, नक्स)। धनुष्टङ्कारकी तरह आक्षेपके समय शिवनेत्र या ऊपर खिंची दृष्टि या पुतली (ऐको, कैमो, साइकूर, हायो, लोरो, कैम्फ, प्लैट, वेरेट, कूप्रम, हेलिबो, आर्टिमिसिया-वाल, ग्लोनो, लैके, ऐ-हाइड्रो); दृष्टि स्थिर और ज्योति-पूर्ण।

कान ।—कानमें रुखड़ापन और कड़ाककी आवाज़। कई बूंद रक्त-स्राव होनेके पहले कानमें धमधम शब्द। कानमें सों-सों शब्द (कैक्ट, कैम्फ, ऐ-फ्लू, कोना, हायो, कास्टि, सिङ्को)।

पाकस्थली ।—खानेकी चीजें छूते ही मिचली हो उठती है (मर्क-प्रोटो, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब)। खानेकी चीजें सड़ी गन्ध स्वादवाली। खाते-खाते बेहोश हो जाता है (मैग-म्यूर)। बहुत डकार (लैक-डिफ्लो)। कुछ भी खाये, पाकस्थलीमें बहुत भार और उसमें गड़बड़ी मालूम होना। आक्षेपिक

हिचकी (ऐ-हाइड्रो, ऐ-सल्फ, इग्ने, कैजुपुटम)। बहुत पेट फूलना, कोष्ठके भीतरका वायु आँतोंमें रुका रहता है या आध्मान (लाई) पैदा हो जाता है।

पेशाब ।—स्वच्छ पानीकी तरह बहुत ज्यादा पेशाब और तेज़ प्यास ; बहुमूत्र—लगातार पेशाब लगता है, भयानक प्यास, दुबलापन, रमणेच्छा बिलकुल नहीं रहती और पेशाबमें चीनी मिली रहती है (डा० एम० ए० यंग)।

पुं०-जननेन्द्रिय आदि ।—प्रबल कामोद्दीपन और जननेन्द्रिय आदिमें असह्य सुरसुरी। सर्दी लग जानेके कारण उत्पन्न बहुमूत्र मिला रोग, ध्वजभङ्ग। अनजानमें यन्त्रणादायक शुक्रक्षय, लिङ्गमें कड़ापन नहीं होता। लिङ्गमें कड़ापन और शिश्नमें जलन। रमणके बाद जलन। मिचली और वमन (रमणके समय—साइलि)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—प्रबल कामोद्दीपन। आर्त्तव—असमयमें ही होता है, स्राव बहुत ज्यादा और तलपेटमें खींचनकी तरह दर्द मालूम होता है ; काम-प्रवृत्तिकी बहुत अधिक उत्तेजना ; ऋतु-स्रावके समय जरायु आदि जननेन्द्रियका नीचेकी ओर आकर्षण। बाधक रोगमें मूर्च्छा। तलपेटमें दबाव मालूम होना, मानो रजःस्रावका होना चाहता है। गर्भावस्थामें लगातार बेचैनी प्रकट करती है, पर विशेष किसी रोगकी बात नहीं कहती।

श्वासयन्त्र आदि ।—साँस छोड़ने बाद ऐसा मालूम होता है, मानो स्वरनली रुक जाती है और मानो उसमें गन्धकका धुआँ प्रवेश करनेकी वजहसे ऐसा हो रहा है। प्रचण्ड खाँसी, सवेरे बढ़ना ; खाँसनेपर बाएँ स्तनके नीचे दर्द मालूम होता है (ऐकि-रेस, नेट्र-सल्फ)। क्रूप खाँसी—अन्तिम अवस्था, सरमें चक्कर आना और स्वरनली तथा वक्षमें कसावटका भाव और संकोचन मालूम होना। वक्षमें बेधनेकी तरह दर्दके साथ श्वासकृच्छ्रता और श्वास-अल्पता। शीत लग जानेपर वक्षमें ऐंठनकी तरह दर्द और वक्षमें श्वास-रोध करनेवाला न फैलनेका भाव या सङ्कोचन। फेफड़ेका पक्षाघात (ऐण्टि-टार्ट, लैके, लाई, फास), वक्षमें श्लेष्माका घड़घड़ शब्द सुन पड़ता है (ऐण्टि-टार्ट, इपिक, ब्राई) ; रोगी बहुत बेचैनी प्रकट करता है और हृत्पिण्डकी क्रिया रुक जानेकी सम्भावना होती है, विशेषकर वात-श्लेष्मा ज्वरके बाद (ऐण्टि-टार्ट) ; श्वास-रोगमें—हृत्शूल रोगमें वक्षमें खींचन पड़नेका भाव, जोर लगाकर श्वास-प्रश्वासकी क्रिया सम्पादन करनी पड़ती है।

हृत्पिण्ड ।—स्नायविक हृत्कम्प, हृत्पिण्डमें कम्पन अनुभव होना, नाड़ी क्षीण ; श्वास-कृच्छ्रताके साथ सुस्ती और स्नायविक उत्तेजना, रोगी बहुत डरता है और उसे ऐसा मालूम होता है कि उसकी मृत्यु अनिवार्य है (रोया करता है—इग्ने) ; इसके साथ बहुत ज्यादा पानीकी तरह पेशाब।

प्रत्यङ्ग आदि ।—ऐसा मालूम होता है, मानो ग्रीवा-पृष्ठ जकड़ गया है, माथा घुमा नहीं सकता। मेरुदण्डसे नितम्बतक ऐसा मालूम होता है, मानो कसकर जकड़ गया है और नितम्ब-देशमें इतना तेज़ दर्द मालूम होता है, कि रोगी चिल्ला उठता है। पीठ और कमरमें कसावटका भाव ; ऋतु-स्रावके आरम्भमें जैसा हुआ करता है। हाथ फूले और उनमें वेधनेकी तरह दर्द। हाथ और हाथकी अंगुलियाँ सब आप-से-आप फड़का करती हैं। दोनों पैरोंमें पक्षाघात-सूचक दुर्बलता और चञ्चलता, इसीलिये बाध्य होकर दोनों पैर हिलाना पड़ता है, बैठनेके समय दोनों पैरोंका काँपना, मानो बहुत क्लान्त हो पड़ा है। जानुके पीछेवाले गह्वरमें खींचन मालूम होना, मानो दोनों पार्श्वके दोनों कण्डार (पेशीका अन्तिम सिरा) संकुचित हो गये हैं। चलते-चलते बैठ जानेपर दोनों पैर बहुत क्षीण मालूम होते हैं। सारे शरीरमें कँपकँपी मालूम होती है। इधर-उधर चलनेके समयकी अपेक्षा विश्रामके समय शरीरमें अधिक कमजोरी मालूम हुआ करती है। इतनी कमजोरी मालूम होती है कि रोगीके एकाएक मूर्च्छित हो जानेकी सम्भावना हो जाती है और रातमें सारा शरीर ठण्डा मालूम होता है। जननेन्द्रियके रोगसे पैदा हुए अवसादके कारण नाना प्रकारके रोग। रोगी जिस करवट सोता है, उसी ओर बहुत दर्द मालूम होता है (बैप्टी, पाइरोजिन)। शरीर ठण्डा होनेपर तकलीफें बढ़ जाया करती हैं। घरके बाहरकी हवा बिलकुल ही सहन नहीं होती (पल्स, इसके विपरीत है)। एक हाथ गर्म और दूसरा ठण्डा मालूम होना (सिङ्को, डिजि, पल्स, इपिक)।

निद्रा ।—दिनमें बहुत औंघाई और बार-बार प्रबल जम्हाई आना। रातमें एक भावसे सो नहीं सकता। जिस करवट सोता है, उसी ओर सन्धि खिसक जानेकी तरह या चोट लग जानेकी तरह मालूम हुआ करता है (बैप्टी, पाइरोज)। स्नायु-विधानकी बहुत अधिक उत्तेजनाकी वजहसे रातमें नींद न आना ; रातभर नींद नहीं आती। मूर्च्छावायुग्रस्त व्यक्तियोंको नींद न आना।

वृद्धि ।—सर्दी लगते ही ; दबानेसे, शरीर हिलानेपर, माथा झुकानेपर घरमें बैठनेके साथ, रमणके बाद (वमन), भोजनके बाद और भोजनके समय खानेकी चीज़ देखते ही ।

उपशम ।—शरीर उत्तप्त या गर्म होनेपर, घरके बाहरकी हवा लगनेपर और रगड़नेपर ।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष या दोषघ्न ।—कैम्फोरा (अचैतन्य हिमाङ्ग-अवस्था), काफिया ।

सदृश ।—ऐमोन, कास्टि, इग्ने, मैंग-मूर, वैलि, मर्क-प्रोटो, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, सैबाड, स्पाइजि, लैके, सिरियम-आक्सैल, प्लैट, पैलेट, थिरिड, मार्फिन, ऐम्ब्रा, काफिया, साइप्रिपिड, टैरैण्ट, कैस्टोर ।

तुलनीय ।—स्नायविक वेदना और शीतकी वजहसे क्रिया-विकार—ऐमोन-मूर, इग्ने, मैग्ने-मूर । एक हाथ ठण्डा और दूसरा हाथ गर्म—चायना, पल्स, इपिक । खानेकी चीज़ देखते ही मिचली—कोलचि, लाइको, ऐसिड-फास । खाद्य-द्रव्यकी गन्धसे मिचली—कोलचि, इयुपे-पर्फो । मूर्च्छावायु—प्लैटिनम, इग्ने । भोजनके समय मूर्च्छा—मैग्ने ।

शक्ति ।—साधारणतः ३रे दशमिक क्रमतक ; परन्तु उच्च-से-उच्चतर क्रमके व्यवहारसे भी स्नायविक रोगोंमें विशेष लाभ होता है । आक्षेपिक रोगोंमें और गुल्मवायु रोगमें निम्नक्रमका व्यवहार करना चाहिये । मूर्च्छा-वायु रोगमें ३० शततमिक क्रमका व्यवहारकर बहुत अधिक लाभ हुआ है ।

म्यूरेक्स पर्प्युरिया

(MUREX PERPURIA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पार्पल फिश नामकी एक तरहकी मछलीसे तैयार होता है । विचूर्ण और तरल क्रम ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—गर्भ-स्राव ; स्तनमें दर्द ; जरायु-ग्रीवाकी बीमारी ; वयःसन्धिकालकी बीमारी ; बहुमूत्र ; बाधक ; प्रदर ; जरायुसे बहुत ज्यादा खूनका स्राव ; कामोन्माद ; गर्भावस्थाकी बीमारी ; जरायु-भ्रंश या जरायुका अपनी जगहसे हट जाना ।

उपयोगिता और आभास।—सिपियाकी तरह इसका भी प्रधान क्रिया-स्थल स्त्री-जननेन्द्रिय है और स्त्री-जननेन्द्रियपर इसकी अधिकांश शक्ति प्रकट हुआ करती है। आगे लिखे कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं:— (१) बहुत अधिक दुःखित भाव। (२) पाकस्थली खाली मालूम होना, मानो बहुत दिनोंसे कुछ खाया नहीं है। (३) कामेन्द्रियकी बहुत अधिक उत्तेजना, रमण-आलिङ्गनका बहुत अधिक आग्रह। (४) जननेन्द्रियके साथ वस्त्र आदिकी किसी तरह रगड़ लगते ही काम-प्रवृत्तिका प्रबल उद्दीपन। (५) जरायुमें बहुत अधिक दर्द मालूम होना; अपना जरायु स्पष्ट अनुभव होना। (६) जरायु आदिकी नीचेकी ओर तेज़ खींचन, मानो सभी चीज़ बाहर निकल पड़ेगी और उसे रोकनेके लिये रोगिनी उरु-पर-उरु रखकर बैठ जाती है और उसे प्रबल कामोद्दीपन अनुभव होता है। (७) आर्त्तव—बहुत ज्यादा रजःस्राव, अनियमित और असमयमें ही रजःस्राव, स्राव बहुत ज्यादा, बहुत देरतक स्थायी और बड़े-बड़े खूनके टुकड़े मिला। (८) प्रदर—चित्तकी मलिनताको बढ़ा देता है; बल्कि प्रदरका स्राव बढ़ जानेपर रोगिनीका मन अच्छा रहता है। (९) रातमें पेशाब अधिक सञ्चय होता है। बार-बार पेशाबका वेग। (१०) गर्भावस्थामें प्रत्यङ्ग आदिकी सन्धियाँ सब बहुत ही क्षीण हो पड़ती हैं; रोगिनी कष्टसे इधर-उधर घूमती है।

लक्षणावली

मन।—सशङ्कित भाव, डरपोक स्वभाव। सन्ध्याके समय चित्तमें बहुत मलिनता पैदा हो जाती है और रोगिनी किसीके साथ भी बातचीत नहीं करना चाहती। प्रदरकी वृद्धि होनेपर रोगिनीका मन बहुत कुछ शान्त होता है। स्मरण-शक्तिकी कमजोरी।

मस्तक।—माथेमें जड़ताके कारण रोगी अकर्मण्य हो जाता है। सवेरे नींद खुलनेपर सर-दर्द पैदा हो जाता है, पर उठ जानेपर अच्छा हो जाता है। ललाट या दाहिनी कनपटीमें लगातार दर्द मालूम होता है और सरके पिछले भागमें ऐसी तकलीफ़ मालूम होती है, मानो दबाया जा रहा है; रोगीको बाध्य होकर रोगवाली जगहपर हाथ रखना पड़ता है या माथा पीछेकी ओर लटका रखना पड़ता है; क्योंकि इससे उसकी तकलीफ़ घटती है।

कान।—कानमें शब्द; कानके पीछे ऐंठनकी तरह दर्द।

मुखमण्डल आदि।—दिनभर नाक ठंडी रहती है। एक ओरके गालमें जलनकी तरह मालूम होता है।

पाकस्थली।—खा लेने बाद भूख; कब्जियत इत्यादि।

पेशाब।—दिनमें बार-बार पेशाबका वेग; रातमें मूत्राशयमें बहुत ज्यादा पेशाब सञ्चय होता है और रोगिनीको पेशाब करनेके लिये बार-बार बिछावनसे उठना पड़ता है। पेशाब बदबूदार; उसमें सफ़ेद रंगकी तली जमती है; पेशाब कर लेने बाद मूत्रमार्गसे थोड़ा-सा श्लेष्मा निकला करता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—कामेन्द्रियकी बहुत अधिक उत्तेजना और काम-प्रवृत्तिको पागल कर देनेवाली तेज़ उत्तेजना (कामेन्द्रियकी बहुत अधिक उत्तेजनाकी वजहसे रोगिनी अस्वाभाविक उपायोंसे उसे परितृप्त करना चाहती है—ओरिगेन, प्लैट, जिङ्क)। योनिमें वस्त्र आदि छूते ही काम-प्रवृत्ति बहुत उत्तेजित हो जाती है। दाहिने डिम्बाधार प्रदेशमें अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द और वहाँसे उदरके भीतर होकर बायें स्तनतक यह दर्द फैल जाता है (कोनाकोनी दर्द—ऐण्टि-टार्ट, ऐगार स्ट्रैम)। सन्ध्याके समय बाएँ पार्श्वमें तेज़ अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द। जरायुमें ऐसा दर्द मानो जखम हो गया है और स्पर्शका सहन न होना; अपने जरायुकी स्थिति स्पष्ट मालूम होना (हेलोन, लिसिन)। जरायु-मुखपर तेज़ अस्त्रके आघातकी तरह दर्द, मानो काटा जा रहा है। जरायुके बाएँ पार्श्वमें ऊपरकी ओर जानेवाला सुई गड़नेकी तरह अंशमें दबाया जा रहा है और मानो यह दर्द उदरको भेदकर वक्षगह्वरतक फैल रहा है। जरायु आदि यंत्रका नीचेकी ओर प्रबल आकर्षण, मानो सभी चीजें बाहर निकल पड़ेंगी, उरु-पर-उरु रखकर योनि-मुखको दबा रखनेपर आराम मालूम होता है, इसके साथ ही प्रबल कामोद्दीपन (कामोद्दीपन न रहनेपर—सिपि; हाँथसे योनि-मुख दबा रखनेपर उपशम—लिलियम-टाई)। कामेन्द्रियकी प्रबल उत्तेजना और रमण-आलिङ्गनका दुर्दमनीय आग्रह (लिलियम, प्लैट)। आर्त्तव,—अनियमित, असमयमें स्राव होता है (कार्बो-ऐन, काक्कस, प्लैट, लोरो, आस्टिले, थ्लैस्पी)। प्रदर,—पेशाब रसकी तरह हरी आभा लिये, गाढ़ा, क्रमसे खूनका आकार धारण कर लेता है, पाखाना होनेके समय खूनकी तरह प्रदरका स्राव फिरसे पैदा हो जाता है। भयानक यन्त्रणा,

तीक्ष्ण अस्त्राघातकी तरह गर्भावस्थामें प्रदरका स्राव (काकुर, क्रियो, पल्स, सिपि) ; प्रदर-स्रावके समय रोगिनीका विमर्ष भाव बढ़ जाता है ; प्रदरका स्राव जितना ही बढ़ता है, रोगिनीका चित्त उतना ही प्रसन्न होता जाता है। प्रदर रोगमें जरायु अपनी जगहसे हट जानेपर रोगिनीको पहलेकी अपेक्षा बहुत प्रसन्नता मालूम होती है।'

तुलनीय ।—जरायुमें रक्तकी अधिकता, जरायु-ग्रीवाकी बीमारी—सिपिया। जरायुके अपने स्थानसे हटनेके कारण दर्द, विषाद—अरम। जरायुका बहुत पेशाब—क्रियोजो। कामेन्द्रियकी उत्तेजना—प्लैटिन, ओरिगे। जरायुका नीचेकी ओर खिंचना—बेलेडो। जरायुका अस्तित्व अनुभव हेलोनि।

सम्बन्ध ।—क्रियो, लिलियम-टाइग्रि, प्लैट, सिपि, हेलोन, लिसिन, सेनेगा।

शक्ति ।—३रा दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

माइगेल लैसिडोरा

(MYGALE LASIDORA)

दूसरा नाम ।—कूबा देशका एक तरहका काला मकड़ा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसी तरहके जीवित मकड़ेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभादायक है :—लिङ्गोच्छ्वास ; ताण्डव ; प्रमेह इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—प्रलाप, यन्त्रणाजनक लिङ्गोच्छ्वास, बहुत दिनोंका प्रमेह और ताण्डव रोगमें इससे विशेष लाभ दिखाई देता है। मुखमण्डलकी पेशियाँ सब, हाथ-पैर आदि और शरीरके दाहिने पार्श्वकी पेशियाँ सब काँपती और फड़कती रहती हैं ; निम्नाङ्ग इतना स्पन्दित हुआ करता है कि रोगी चल-फिर नहीं सकता। प्रबल हृद्कम्पनके साथ दृष्टिकी दुर्बलता, मिचली ; मुँह सूख जाता है, बहुत प्यास पैदा हो जाती है। देह काँपा करती है, श्वास-कष्ट पैदा हो जाता है और रोगी दुःखित हो जाता है

तथा उसमें मृत्यु-भय पैदा हो जाता है। बहुत दिनोंतक प्रमेह रोग भोगनेकी वजहसे शिश्न टेढ़ा पड़ जाता है और उसमें कड़ापन आनेपर बहुत दर्द होता है और पेशाबके समय मूत्रनलीसे आगकी तरह उत्तप्त पेशाब निकलकर मूत्रनलीकी झिल्लीको जलाया करता है—ये सब उक्त विषके प्रधान क्रियाफल हैं।

लक्षणावली

मन।—प्रलाप, लगातार काम-काजकी बातें करता है (ब्राई), रातभर छटपटाया करता है; मृत्यु-भय; विषन्नता और उद्वेगयुक्त मुखभङ्गी।

मस्तक।—ललाटमें धीमा-धीमा सर-दर्द। चेहरेकी पेशियाँ सब लगातार फड़का और उछला करती हैं। रह-रहकर माथा एक ओर झूल पड़ता है—साधारणतः दाहिने पार्श्वमें। रोगीके माथेपर हाथ रखनेकी चेष्टा करनेपर एकाएक हाथ पीछेकी ओर जकड़ जाता है। बात करनेकी चेष्टा करनेपर बात जकड़कर मुँहसे निकलती हैं। मुँह और दोनों आँखें जल्दी-जल्दी बन्द और खुला करती हैं।

पाकस्थली।—खानेके पदार्थसे अनिच्छा; वमनकी इच्छा।

मूत्रयन्त्र।—बहुत पेशाब; जलन।

पुं०-जननेन्द्रिय।—भयानक यन्त्रणादायक लिङ्गोच्छ्वास (आर्जेण्ट-नाई, कैम्फो, कैनाब-सैट, कैन्थ, कैलि-म्यूर, थूजा, पल्स); शिश्नमें कड़ापन आनेपर टेढ़ा हो जाया करता है और इसीलिये उसमें तकलीफ़ होती है (डा० फेरिङ्गटन)। दीर्घकाल-स्थायी प्रमेह।

सार्वाङ्गिक।—प्रबल हृत्स्पन्दनके साथ मिचली पैदा हो जाती है; दृष्टि अन्धकारमय और कमजोर तथा सारे शरीरमें कमजोरी मालूम हुआ करती है। चलनेके समय ढलमलाया करता है; बैठनेके समय दोनों पैर लगातार नाचा या फड़का करते हैं और रोगी चलनेके समय पैर खींचकर चलता है। समूची देह हमेशा चञ्चल रहती है; सन्ध्याके समय ऐसा मालूम होता है कि शरीर स्पन्दित हो रहा है। ज्वराधिकारमें—आधे घण्टे तक शीत मालूम होता है, इसके बाद कम्प और उत्ताप पैदा हो जाता है; सवेरे माथेमें दर्द मालूम होता है; दोनों आँखोंमें और कनपटीमें अधिक दर्द मालूम हुआ करता है।

वृद्धि ।—सवेरे ; सन्ध्याके समय ; बैठनेके समय ।

घटना ।—निद्रित अवस्थामें ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—(ताण्डव) ऐगरिकस, ऐक्टिया-रेस, इग्ने, स्ट्रैमोन, जिजिया, टैरेण्टुला और ऐसिट-क्रूड ।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे १००० शततमिक क्रम ।

माइयोसोटिस

(MYOSOTIS)

दूसरा नाम ।—ब्लैक रूट ; माइयोसोटिस सिम्फाइटिफोलिया ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—श्वासयन्त्र, विशेषकर बायें श्वास-यन्त्रपर इसकी विशेष क्रिया होती है । खाँसनेमें बहुत श्लेष्मा निकलना, दुबलापन, रातमें पसीना, गलेमें खसखसाहट, भोजनके बाद ही खाँसी पैदा हो जाना लक्षणोंमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—सिम्फाइटिस, स्टैनम ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

माइरिका सेरिफेरा

(MYRICA SERIFERA)

दूसरा नाम ।—बेबेरि । कैण्डेल बेरि ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़की ताजी छालसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—सर्दी ; आँखोंमें प्रदाह ; हृत्पिण्डकी बीमारियाँ ; कामला ; श्वेतप्रदर ; यकृतकी बीमारी ; स्वरनलीके रोग ; गलेका जखम ; आमवात इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास ।—श्लैष्मिक-झिल्ली, यकृत और हृत्पिण्ड इसके प्रधान क्रियास्थल हैं। गलेके भीतरवाली श्लैष्मिक-झिल्लीसे जमे हुए गोंदकी तरह श्लेष्मा निकलता है ; वायु-मार्गसे वह सहजमें ही अलग नहीं हो पाता। प्रदर और वायुनली, आँतें, तालुमूल वगैरहकी पुरानी सर्दीकी बीमारीमें यदि निकला हुआ श्लेष्मा बहुत गाढ़ा हो, बड़े कष्टसे निकलता हो या दुश्छेद्य हो तो माइरिकाके प्रयोगसे बहुत लाभ होनेकी सम्भावना है। यकृतमें लगातार दर्द और भार मालूम होना, औंघाई, दुःखित भाव, धीमा-धीमा माथेमें भारकी तरह दर्द (खासकर सवेरे) ; आँखका सफेद अंश मैला या पीले रङ्गका ; पलकें बहुत लाल, बहुत कमजोरी मालूम होना, मल पीले रङ्गका, नाड़ी क्षीण, बाएँ अंसफलकके नीचे तेज़ दर्द, पीली और मैली जीभ, सारे शरीर और हाथ-पैरोंमें दर्द और कुछ-न-कुछ सभी पांडु रोगोंमें यह प्रसिद्ध है, कि यह बहुत लाभ करता है। हृत्पिण्डपर भी इसकी क्रिया रहनेके कारण नीचे लिखे कई लक्षण प्रकट हुआ करते हैं, हृत्पिण्डमें तेज़ दर्द और उसकी बहुत ही तेज़ गति, इसी वजहसे टपटप शब्द रोगी और दूसरे मनुष्यको भी सुन पड़ता है ; परन्तु नाड़ीकी गति बहुत ही धीमी रहती है। बाएँ वक्ष और दोनों अंस-फलकोंके नीचे, विशेषकर बाएँ अंस-फलकके नीचे और दाहिने फेफड़ेके गासेमें तेज़ दर्द। बाईं करवट सोनेपर हृत्पिण्डका दर्द बढ़ जाया करता है।

लक्षणावली

मन ।—दुःखित, विषादयुक्त और क्रोधी स्वभाव। पहले मन बहुत प्रफुल्ल भाव धारण करता है, पर इसके बाद माथेमें भार मालूम होता है और विषन्नता पैदा हो जाती है। मनःसंयोग शक्तिका घट जाना। जड़ता और तन्द्रावस्था।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना ; इसके साथ ही माथेमें जड़ता और तन्द्रा भाव ; माथा झुकानेपर ऐसा मालूम होता है, कि माथेकी ओर खून दौड़ गया ; ललाट, दोनों कनपटियों और नितम्बदेशमें बहुत जोरका दर्द

रहनेकी वजहसे नींद खुल जाया करती है; निर्मल वायु लगनेपर आराम मालूम होना। भौं और आँखोंमें जड़ता एवं भार मालूम होना और पाण्डु-रोगमें औंघाई। माथेके चारों ओरकी धमनीमें टपकका दर्द; नींद खुलनेपर माथेकी ऊपरवाली शिरामें धमक मालूम होना।

आँख।—आँखमें अधिक रक्त-सञ्चय होना और आँखका सफेद अंश मैला पीले रङ्गका। दोनों आँखोंमें जड़ता और भार मालूम होना, खासकर नींद खुल जानेपर। पढ़नेके समय आँखोंमें जलन होती है और बहुत जल्द थक जाती हैं। पलकोंमें भार मालूम होता है, पलकें अस्वाभाविक लाल रहती हैं। आँखें करकराती हैं, मानो उनमें धूलके कण गिर गये हैं; आँख बन्द नहीं कर पाता।

मुखमण्डल।—चेहरा और गला पीला या भूरा, ऐसा पीला, मानो पाण्डु-रोग हो गया हो, ऐसा ही दिखाई देता है। कुछ देरतक घरके बाहरकी हवा सेवन करनेके लिये टहलनेपर चेहरेपर गर्मी, भारीपन और टपक अनुभव होती है।

मुख-विवर।—जीभ मोटी, पीली आभा लिये, सूखी, पपड़ीकी तरह, लेपसे ढँकी और इसी वजहसे सहजमें ही जीभ हिला नहीं सकता। मुँहका स्वाद बहुत ही कड़वा और इसीलिये रोगी मुँहमें कुछ डाल नहीं सकता; बहुत ही तीता और मिचली पैदा करनेवाला स्वाद। गालके भीतरकी झिल्लीके ऊपर गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा चिपका रहता है। मुख-विवरके ऊपरी अंशमें सूखापन तथा शल्ककी तरह श्लेष्मा लगा रहता है, पानी लगनेपर भी यह सूखा श्लेष्मामय लेप तर नहीं होता, मुँह सूखा, बहुत प्यास, पानी पीनेपर कुछ देरके लिये घटनेकी तरह मालूम होता है।

गलेके भीतर।—नाक और गलेके भीतर गाढ़ा गोंदकी तरह बदबूदार श्लेष्मा लगा रहता है। बहुत चेष्टा किये बिना यह श्लेष्मा अलग नहीं होता। तालुमूल बहुत सूखा और उसमें स्पर्श सहन न होना, ऐसा मालूम होना, मानो फट जायगा, इस सूखेपन और दर्दकी वजहसे पहले निगलनेमें कुछ बाधा पहुँचती है और फिर तो क्रमसे कोई चीज़ निगलना एकदम असम्भव हो जाता है। गलनलीके उपझिल्ली-प्रदाह रोगमें कुल्ला करने या बाहरी प्रयोगके लिये "गुयायेकम" की अपेक्षा "माइरिका" अनेक अंशोंमें अधिक लाभदायक है।

तालुमूलमें फेन-भरा गोंदकी तरह श्लेष्मा लगा रहता है, कुल्ला करनेपर भी वह अलग नहीं होता, इसलिये मुँहका स्वाद बहुत ही बिगड़ा हुआ मालूम होता है और कुछ भी खानेकी इच्छा नहीं होती।

पाकस्थली।—भूख रहनेपर भी खानेकी इच्छा नहीं होती, पेटमें भार मालूम होता है, मानो अभी जल्दी-जल्दी खा लिया है। रोगीको भूख रहनेपर भी ऐसा मालूम होता है, कि वह भोजन न कर सकेगा और यदि खा लेगा तो तालुमूलतक खानेकी चीज़ जाते ही वहाँ जमे हुए श्लेष्माकी वजहसे वह बाहर निकल पड़ेगी। छातीमें जलन और बहुत लार बहना, बार-बार थूकना पड़ता है।

अन्त्राशय।—पाण्डु-रोग—यकृतमें लगातार दर्द, यकृत-प्रदेशमें भार मालूम होना, औंघाई, दुःख, माथेमें जड़ता और भार पैदा करनेवाला दर्द; सवेरे बढ़ना, आँखका सफेद अंश गहरा, मैला, पीले रङ्गका, पलकोंपर अस्वाभाविक लाली, बहुत कमजोरी, पीले रङ्गका मल, नाड़ीकी गति बहुत ही धीमी; दोनों अंस-फलकोंके नीचे दर्द, विशेषकर बाएँ अंस-फलकके नीचे; जीभपर मैला पीला रङ्ग। पेशियोंमें दर्द और हाथ-पैरोंमें दर्द, पेट मानो जकड़ जाता है, गड़गड़ाया करता है और पाखाना लग आता है, पर पाखानेके बदले केवल वायु निकलता है। उदरमें अवसाद मालूम होना, मानो उदरामय होनेका पूर्व लक्षण हो। यकृतके कर्कट आदि कठिन रोगोंमें (कोलेस्ट्रीन)।

मल।—बहुत बदबूदार वायु निकला करता है। कामला या पाण्डु-रोगाधिकारमें मल पीला या रुखड़ा, कीचकी तरह या भूरे रङ्गका। मल ढीला धसधसा, पतला और पाखाना होनेके समय नाभि-प्रदेशमें खींचन या ऐंठनकी तरह दर्द पैदा कर देता है।

पेशाब।—बियर नामक शराबकी तरह पेशाब और पीली आभा लिये फेन-भरा; उसकी तली कुछ लाल; पेशाब परिमाणमें बहुत थोड़ा।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रदर—स्राव त्वचाको क्षय करनेवाला, बदबूदार, गाढ़ा और पीली आभा लिये (हाइड्रैस्ट)।

वक्ष और हृत्पिण्ड।—बाएँ वक्षमें दर्द, दाहिने फेफड़ेके गासेमें तेज़ दर्द, रातमें बाईं करवट सोनेके समय वक्षमें कसावटका भाव और हृत्पिण्डकी

गति सुन पड़ती है। हृत्पिण्ड-प्रदेशमें तेज दर्द। हृत्पिण्डका वेग तेज, पर नाड़ीकी गति धीमी।

प्रत्यङ्ग आदि।—माथे और पीठमें स्थूल दर्द; बहुत आलस्य मालूम होना। दोनों अंसफलकोंके तल-देशमें तेज़ दर्द, विशेषकर बाएँ अंसफलकके नीचे (बाएँ वक्षसे बाएँ अंसफलकतक दर्द—इलिसियम, मार्टस-कम, पिक्स-लिक, थिरिडि, सल्फ)। बायें मसाने या मूत्र-ग्रन्थिमें इस तरहका दर्द मानो छुरी बिंध रही है। सारे शरीरमें दर्द (बैप्ट)। सवेरे नींद खुलनेपर बहुत आलस्य मालूम होता है और कमरमें दर्द होता है; उरुकी पेशियाँ सब बहुत ही दर्द-भरी हो जाती हैं, ऐसा मालूम होता है, मानो सर्दी लग गयी है। वृद्धि—रातमें शय्याके उत्तापसे, इसीलिये नींदमें गड़बड़ी पैदा हो जाती है; सवेरे भोजन कर लेने बाद और निर्मल वायु लगनेपर घटना।

त्वचा।—रोगी पीला मालूम होता है, मानो उसे पाण्डु-रोग हो गया है; शरीरमें इस तरहकी खुजली होती है, मानो मच्छड़ने काट लिया है। आमवात (आर्टिका, ऐस्टेकस फ्लूव)।

वृद्धि।—बाईं करवट सोनेपर, शय्याके उत्तापसे, नींदके बाद, सवेरे और शरीरको हिलानेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—हाइड्रैस्ट, कैलि-बाई, डिजि, ऐसेट, ए-वेन, बार्बा, ब्रोम, चेलिडो, चिमैफिल, कर्णौस, इरिज्नि, इयुपेट, हिप, लैके, मर्क-प्रोटो, पोडो, स्पञ्जि, कोलेस्टोरिन।

तुलनीय।—दुश्छेद्य (कड़ा) स्राव—कैलि-बाई, हाइड्रैस्ट। कामलाके लक्षणमें—डिजि। यकृतमें—चेलिडो, बार्बारिस, हिपर, मर्क, कोलेस्ट। सवेरे अकड़न—बैप्ट। श्वेतप्रदर—हाइड्रैस्ट।

घटना।—सवेरे भोजनके बाद और निर्मल वायु लगनेपर।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठा दशमिक क्रम।

माइरिस्टिका सैबिफेरा

(MYRISTICA SABIFERA)

दूसरा नाम ।—इयुकुबा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ब्रेजिल देशके इयुकुबा वृक्षकी जड़से संग्रह किये हुए गोंदसे विचूर्णके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह एक उत्कृष्ट सड़ना रोकने वाली दवा है। पीव संचयमें इसकी साइलिसिया और हिपर सलफरके साथ तुलना की जा सकती है। फोड़ा, नासूर, प्रदाह, चोटकी वजहसे बीमारीमें जल्दी-जल्दी सूजन घटा देता है और रोगके भोगकालको कम कर देता है और कितनी ही बार हिपर और साइलिसियासे भी जल्दी काम कर रोगीको नश्तर लगवानेकी तकलीफ़से बचा देता है। कोई-कोई हिपर, साइलि, आइरिस्टिका—इन तीन दवाओंको होमियोपैथिक लैन्सेट (फोड़ा काटनेका यंत्र) समझते हैं।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—नक्स-म, सिलिका, कैल्के-सल्फ, सल्फ, पाइरोजेन, हिपर-सल्फर ।

शक्ति ।—३, ३० ।

मार्टस कम्युनिस

(MYRTUS COMMUNIS)

दूसरा नाम ।—मार्टस। अनारकी तरहका गाछ ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्ते और फुनगियोंसे अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— सर्दी या ज्वरमें वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; सर्दी ; खाँसी ; गुटिका या क्षय रोग ।

उपयोगिता और आभास।—बाएँ फेफड़ेका ऊपरी अंश इसका प्रधान क्रियास्थल है और इसी स्थानपर इसकी प्रबल शक्ति दिखाई दिया करती है। राजयक्ष्मा या क्षयकास, रक्तकास, फेफड़ेकी यकृद्भाव-प्राप्ति वगैरह फेफड़ेके किसी भी रोगमें दाहिने फेफड़ेके ऊपरी अंशसे वक्षको भेदकर बाएँ पृष्ठ-फलकतक फैलनेवाला तेज़ दर्द—यह लक्षण मौजूद रहनेपर "मार्टस-कम्युनिस" के प्रयोगसे सम्पूर्ण आरोग्य हो जानेकी सम्भावना रहती है। यह दर्द साधारणतः सुई गड़नेकी तरह होता है, पर किसी-किसी स्थानपर टपक, जलन भी मालूम हुआ करती है; श्वास प्रश्वास, जम्हाई और खाँसनेपर दर्द बढ़ जाया करता है। इसकी खाँसी सूखी और खोखली हुआ करती है, फेफड़ेके ऊपरी अंशमें खुजलीसे पैदा हुई और इस ढंगके खाँसी रोगमें तीसरे पहर बहुत आलस्य मालूम हुआ करता है। प्रत्येक बार शीत उत्ताप (जाड़ा-गर्मी) का परिवर्त्तन—नाकसे स्राव या सर्दी, खाँसी और सर्दीका ज्वर पैदा हो जाता है।

लक्षणावली

नाक।—सर्दी-मिली खाँसी, प्रत्येक बार जाड़ा गर्मीकी कमीबेशी पैदा हो जाया करती है। कण्ठके भीतर सूखापन मालूम होना, कण्ठनाली और वक्षमें दर्द और खून-मिला कफ़ निकलना।

श्वास-यन्त्र।—फेफड़ेके ऊपरी भागके सामनेवाले प्रदेशमें खुजलीसे पैदा हुई शून्यगर्भ खाँसी। वायुपरिवर्तनसे सर्दी, खाँसी और सर्दी-बोखार हो जाता है।

वक्ष।—वक्षमें दबावकी तरह तेज़ दर्द; वक्षमें कसावटका भाव या
वक्षके अच्छी तरह न फैलने और खींचन पड़नेके साथ खाँसी। बाएँ वक्षके
ऊपरी अंशसे वक्षको भेदकर बाएँ अंसफलक या कन्धेतक तेज दर्द (ऐना-
इसम-स्टेल ; पिक्स-लिक ; माइरिका-से, सल्फ, थिरिड ; बाएँ पृष्ठ-फलकके
कोनेसे वक्षतक तेज दर्द—चिनापोड-ग्लोकाई ; बाएँ वक्षके निचले अंशमें
भेदनेकी तरह दर्द—नेट्र-सल्फ)। गहरी साँस लेने या वक्षको जोरसे सञ्चा-
लन करनेपर दर्द बढ़ जाया करता है। बाएँ फेफड़ेके शिखर देशसे अंश-
फलकतक तेज शलाका बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना ; वृद्धि—श्वास-
प्रश्वाससे, जम्हाई लेने या खाँसनेपर। बाएँ वक्षमें जलन, दर्द या टपक और

सुरसुरीका भाव। फेफड़ेके प्रदाह रोगमें बाएँ फेफड़ेके यक्ष्मभावकी प्राप्ति (लाई, कैम्फो, लैके, दाहिने फेफड़ेकी—कैलि-बाई, कैलि-आयोड ; दाहिने आधेकी—चेलिडो)। उपदंशकी कुचिकित्साके कारण यक्ष्मा। रक्तोत्कास, खाँसीके साथ-ही-साथ फेफड़ेसे रक्तस्राव रोगमें कण्ठनाली और वक्षमें दर्द।

ज्वर।—सर्दी ज्वर ; कोहनी और जानुसन्धिमें दर्द और फेफड़ेके ऊपरी अंशमें खुजलीकी वजहसे सूखी और खोखली खाँसी, विशेषकर सवेरे ; सन्ध्याके समय घटना ; तीसरे पहर बहुत आलस्य और शिथिलता मालूम हुआ करती है।

वृद्धि।—सवेरे, श्वास-प्रश्वाससे, जम्हाईसे, खाँसनेपर और जलवायुके परिवर्त्तनसे।

उपशम।—संध्याके समय (पर इस समय बहुत आलस्य मालूम हुआ करता है)।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐनाइसम, स्ट्रेलेटम, माइरिका सेरिफेरा, पिक्सलिक्विका, सलफर, थिरिडियन, ब्रायोनिया, फास्फोरस और चिनापोडियम-ग्लोकाई।

तुलनीय।—बाएँ वक्षसे स्कन्धफलकतक दर्द,—थिरिड, सल्फ इत्यादि।

शक्ति।—तृतीय दशमिकसे ६ठा दशमिक क्रम।

नैबेलस

(NABALUS)

दूसरा नाम।—नैबेलस-सर्पेण्टेरिस ; रेटेल-स्नेक-रूट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—अमेरिकाके देहातके रहनेवाले उदरामय और आमाशयके रोगमें इसका बहुत व्यवहार किया करते हैं, लैक्टुका और नैबेलस एक ही जातिकी दवाएँ हैं, इसलिये बहुतसे लक्षणोंमें लैक्टुकाके साथ इसका सादृश्य है।

पुराना उदरामय, भोजनके बाद, रातमें और सवेरे वृद्धि, उदर और मलान्त्रमें दर्द, दुबलापन, अजीर्ण रोग, सड़ी डकार आना, खट्टी चीज खानेकी इच्छा, तन्द्रालुता, कब्जियत, श्वेतप्रदर, जरायुमें टपकका दर्द प्रभृति लक्षणोंमें लाभ होता दिखाई देता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—लैक्‌का ।

शक्ति ।—३—१२ ।

नैजा ट्राइप्यूडियैन्स

(NAJA TRIPUDIANS)

दूसरा नाम ।—कोब्रा डि कैपेला ; गोहमन साँपका विष ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे दूधकी चीनीके साथ मिलाकर विचूर्ण और ग्लिसरिनके साथ मिलाकर तरल क्रम तैयार करना पड़ता है। इसके बाद उच्च क्रम सुरासारमें तैयार हो सकता है। ६ठेसे नीचा क्रम सुरासारमें खराब हो जाता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— हृत्शूल ; दमा ; बाधक या कष्टरज: ; सर-दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; अन्ननलीका आक्षेपिक संकोचन ; डिम्बाधारकी बीमारी ; महामारी या प्लेग ; विसूचिकाकी हिमाङ्गावस्था ; गलेका जखम ; मेरुमज्जाकी उत्तेजना इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—डा० कैण्टका कथन है कि जहाँ शरीरके अन्य सभी रोग अन्तमें हृत्पिण्डमें जाकर आश्रय ग्रहण करते हैं, वहाँ नैजाकी शक्ति अतुलनीय होती है। यदि बार बार हृदस्पन्दन और हृद्रोगकी वजहसे हृत्पिण्ड जीर्ण हो पड़ा हो और उसके सम्मुखावरणमें विकार पैदा हो गया हो या हृत्पिण्डका विवर्द्धन हो गया हो, तो ऐसे स्थानपर नैजा एक अव्यर्थ सिद्धिप्रद औषध है (अवश्य ही जन्मके हृद्रोगका आरोग्य होना असम्भव है) इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं—हृत्पिण्डके सम्बन्धमें हमेशा ही

दुश्चिन्ता, दुःखित भाव और अप्रफुल्लता। स्नायवीय श्वास-रोधक हृत्पिण्ड रोगमें बोलनेकी शक्तिका न रहना। हृत्पिण्ड प्रदेशका दर्द, गर्दनके पिछले भागमें, बाएँ कन्धेमें और बाहतक मालूम होता है और रोगीमें बहुत अधिक उद्वेग और मृत्यु-भय रहता है। स्त्रियोंको रहनेपर ऐसा मालूम होता है कि मानो उनका डिम्बाधार और हृत्पिण्ड एक स्क्रू से कसा हुआ है। हृत्पिण्ड, बाईं कनपटी और डिम्बाधार प्रदेशमें लगातार तेज दर्द अनुभूति होता है। नाड़ीकी गति धीमी और अनियमित रहती है। रातमें, चलनेपर और बाईं करवट सोनेपर सभी रोग-लक्षण बढ़ जाते हैं। स्नायविक हृदुस्पन्दन और अवसन्नता,—बार-बार ऐसा मालूम होता है कि गलेमें कुछ फूल उठता है या गलनाली रुक जाती है और इसीलिये रोगी बार-बार कण्ठपर हाथ रखता है। इसके दर्द आदिका फैलना या चलना कुछ अंशोंमें लैकेसिसकी तरह होता है, डिम्बाधार प्रदेशमें दर्द, उपझिल्ली और सन्धिमें दर्द वगैरह बाईं ओरसे दाहिनी ओर फैला करता है और लैकेसिसकी तरह तर जलीय हवामें इसकी भी वृद्धि हो जाया करती है (डा० केण्ट)। रोहिनी या उपझिल्ली प्रदाह रोगाधिकारमें हृत्पिण्डका पक्षाघात होनेकी सम्भावनाकी तरह हो जाना इसका एक अव्यर्थ निर्णायक लक्षण है। रातमें बढ़ना,—रोगी एकदम नीला हो जाता है और हाँफता हुआ जाग उठता है ; सरमें दर्द—स्नायविक, इसके पहले या बाद मिचली और वमन ; बाएँ चक्षुगह्वरमें प्रचण्ड टपककी तरह दर्द, यह दर्द क्रमसे सरके पिछले भागमें जाकर आश्रय ग्रहण करता है। बहुत खा लेने या मानसिक और शारीरिक परिश्रम करनेकी वजहसे उन स्त्रियोंके सरमें दर्द पैदा हो जाता है, जिनका ऋतुस्राव होना बन्द हो गया है ; नींद खुलनेपर समूचे कपालमें भार पैदा करनेवाला कसावटका भाव, रह-रहकर सरके पिछले भागमें ऊपरकी ओर जानेवाला सलाई गड़नेकी तरह दर्द। इनके अलावा आगे लिखे कई और भी इसके निर्णायक लक्षण हैं—हृत्पिण्डसे लेकर बाएँ पृष्ठफलकतक तेज़ दर्द ; बाएँ डिम्बाधारमें खींचन या ऐंठनकी तरह दर्द ; स्वरनलीमें ऐसा मालूम होना, मानो एक बाल अड़ा हुआ है ; गलग्रन्थिमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; बाएँ पार्श्वमें लक्षणोंकी अधिकता ; श्वासरोग, इसके साथ ही श्वासकृच्छ्रता ; सोनेपर बढ़ना और उठ बैठनेपर घटना ; एकाएक नाकसे जलस्राव और बार-बार छींक। छींक आ जानेपर नाक साफ़ हो जाती है और श्वास-प्रश्वासकी क्रिया सरल भावसे हुआ करती है।

लक्षणावली

मन ।—उन्माद अवस्थामें लगातार आत्महत्या करनेकी चेष्टा (ऐल्यू, आर्स, आरम)। अव्यवस्थित चित्त। विमर्ष, गम्भीर स्वभाव ; किसी विषयमें भी संकल्पकी दृढ़ता नहीं रहती ; हमेशा काल्पनिक दुर्दशा सोच-सोचकर अपनी प्रफुल्लता नष्ट कर देता है (इग्ने)। बहुत भूल जानेवाला (ऐग्नस, ऐनाका, कोलचि, मर्क, लैक-कैन) ; अन्यमनस्क (ऐग्नस, कोलचि, नक्स-मस)। ज्ञान न रहना (हेलिबो, नक्स-मस, ओपि)। एकाएक उन्माद अवस्थामें कोई सांघातिक अस्त्र लेकर अपनी हत्या करनेकी चेष्टा करता है। मन एकदम विषाद-भरा ; सन्ध्याके समय घटना। जननेन्द्रिय आदिके नाना प्रकारके रोगकी वजहसे दुश्चिन्ता ; सरमें दर्द और परिश्रमका सहन न होना। शराब आदि पीनेके साथ ही बीमारी पैदा हो जाती है (जिङ्क)। औंघाई—बोलनेकी इच्छा नहीं होती।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना—क्षणस्थायी ; परन्तु उसके अन्तमें माथेके दाहिने पार्श्वमें बेहोश कर देनेवाला दर्द पैदा हो जाता है। समूचा माथा खाली मालूम होता है। बहुत जोरका सर-दर्द और अत्यन्त विमर्ष-भाव। ललाटदेशमें कसावटका भाव (कार्बोन-सल्फ, साइक्ले, कैमो, ग्रैट, आइरिस) और मस्तिष्कमें जड़ता और भार मालूम होना। ललाटमें भयानक टपककी तरह दर्द (ऐमिल, जेल, ग्लोन, ग्रैट, लैक-डिपलो)। माथेमें उत्ताप और अधिक रक्त-सञ्चय होना। वयःसन्धिके समयका सर-दर्द (क्रोकस, साइक्ले, सेङ्गिविन)। सवेरे नींद खुलनेपर सर-दर्द (मिनियैन, पैलेड)। रातमें सर-दर्द – गहरे विषादके साथ सर-दर्द, यह दर्द साधारणतः कनपटीमें आरम्भ होता है, विशेषकर दाहिनी कनपटीमें ; दर्द तेज रहता है, दोनों आँखोंतक इसका प्रसार रहा करता है, कभी-कभी दर्द तेज शूल बेधनेका आकार धारण करता है और ललाट तथा मूर्द्धदेशमें धीमे दर्दकी तरह मालूम होता है ; वृद्धि—देह या माथा हिलानेपर ; घटना—थोड़ी निर्मल हवा लगनेपर और तम्बाकू (डायाडेमा) और शराब पीनेपर (आर्जेण्ट-नाई, इग्ने, क्रियो, जिङ्कम)। दिनके ३ बजनेके समय माथेमें टपकका दर्द हुआ करता है। तेज सर-दर्द, ऐसी जलन होती है, मानो जल गया है ; बाईं आँखके ऊपरी अंशमें अधिक, सवेरेके भोजनके बाद ; सवेरे ८॥ बजनेके समय दबावकी तरह दर्द मालूम होना। स्नायविक सर-दर्द और यह दर्द क्रमसे चक्षुगह्वरसे सिरके पीछे भागतक फैल जाता है ; सवेरे

नींद खुलनेपर ललाटमें दर्द और आँखोंमें भार मालूम होना। दोपहरके समय दाहिनी कनपटीके ऊपरी अंशमें दर्दकी अधिकता, यह दर्द क्रमसे ललाटदेशतक फैल जाता है; तीसरे पहरमें घटना अर्थात् सूर्योदयके साथ-साथ दर्द आरम्भ होता है, दोपहरमें बढ़ता है और सूर्यास्तमें घट जाता है (स्पाई, जेल्स, ग्लोनो, सैङ्गिविन)। मूर्द्धदेशमें दर्द और दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे। एकाएक ऐसा मालूम होता है मानो कोई पीछेसे आकर जोरसे उसके माथे और गर्दनके पीछे आघात कर रहा है। माथेकी हड्डीके ऊपरके केश उड़ जाते हैं। कानमें जाँता चलने जैसी आवाजकी तरह शब्द होनेके कारण सवेरे नींद खुल जाती है।

आँख।—आँखें स्थिर और टकटकी लगी हुई; एकदम खुली हुई और रोशनीका ज्ञान नहीं रहता। पलकोंमें भार मालूम होना। दृष्टि-शक्तिका गायब हो जाना। पलकों द्वारा आँख बार-बार साफ़ कर लेनी पड़ती है; छोटी लिखावट पढ़नेमें धुँधला दिखाई देता है, इसीलिये बार-बार आँख मलना पड़ता है और लिखावट आँखके पास ले जाकर देखनी पड़ती है। चक्षुगोलकके भीतर दर्दकी वजहसे बार-बार आँख मलनी पड़ती है; किसी किताबकी ओर देखनेपर आँखमें थकावट मालूम होती है। चक्षुगोलकके पीछे उत्ताप मालूम होता है। आँखके उपतारकाका पक्षाघात या निष्क्रियता। पलक सवेरे फूल जाती है।

नाक।—भयानक सर्दी या नाकसे स्राव; बहुत पतला, कड़वा श्लेष्मा-स्राव हुआ करता है (आर्स, आर्स-आयोड, सिपा, नेट्र-मूर); नाक जखमसे भरी, गर्म और फूली हुई। नाकका बन्द हो जाना—सवेरे आरम्भ होता है और धीरे-धीरे बढ़ता है, घरके बाहरकी हवा लगनेपर बढ़ना (युफ्रे)। घटना—पानीकी तरह पतले श्लेष्माका स्राव होनेपर और बार-बार छींक आनेपर।

मुखमण्डल।—म्लान, शीर्ण और अस्थिमय, हरी आभा लिये, पीला या नीला। मुँहके स्नायुकी खाल उधड़ जाना। दोनों हनु परस्पर दृढ़-भावसे जकड़ जाते हैं (दाँती लगना)। उठनेके समय चेहरा लाल हो जाता है; धोनेपर आराम होता है।

मुँह और गलेके भीतर।—रोगी मुँह फाड़ा करता है और उसकी जीभ बरफकी तरह ठण्डी मालूम होती है। जीभपर गाढ़ा पीला लेप चढ़ा रहता है, कभी सफेद और कभी सूखी रहती है, पर प्यास नहीं रहती। जीभके नीचेका अंश जखम-भरा (कैलि-कार्ब)। मुख-विवर बहुत सूखा। मुँहसे फेन

निकला करता है। बोलीका रुकना, गलेमें श्लेष्माकी अधिकता। गला रुकनेका भाव हो जानेके कारण रोगी हाथसे बराबर अपनी कण्ठनालीको पकड़ रखता है। कण्ठके बाएँ पार्श्व में काँटा गड़नेकी तरह मालूम होना। अन्न-नलीका संकोचन, किसी चीजको निगलनेमें बहुत तकलीफ़ होती है या असम्भव मालूम होता है। जिह्वामूलके बगलवाले दोनों गह्वर गाढ़े नीले।

पाकस्थली।—शराब आदि तीव्र पदार्थ पीने या खानेकी इच्छा; पर उससे तुरन्त ही बीमारी पैदा हो जाती है और लक्षण आदि बढ़ने लगते हैं। बार-बार डकार आना और छातीमें जलन (कैल्के, कार्बो-वेज, साइक्लू, कोना, क्रोकस, लैके, लाई, मैग-कार्ब, नक्स-वोम, आर्जेण्ट-नाई)। मिचली मालूम होना और वमन। पाकस्थलीमें एक अवर्णनीय बेचैनी मालूम होना, जैसी कि अजीर्ण रोगकी वजहसे होती है। भोजनके बाद भार मालूम होना, मानो पाकस्थलीमें पत्थरके टुकड़े भरे हुए हैं (रस, लाई, ब्राई, इग्ने, नक्स, पल्स, लैके, कैमो, लैक-कैन)। पानीसे बनी बार्लीकी तरह स्वाद रहता है या गर्म बदबूदार भापमय डकार आती है। पाकस्थलीमें अम्ल पैदा हो जानेकी सम्भावना,—जो खाता है, वही अम्लमें परिणत हो जाता है (कैल्के, रोबिनिया)।

अन्त्राशय।—बहुत पेट फूलना; पेटमें गड़गड़ाहट और इसके साथ ही आँतोंमें शूलकी तरह दर्द। पेट फूलना, फैल न सकना और उसमें भापकी अधिकता मालूम होना तथा न फैलनेका भाव या खींचन क्रमशः हृत्पिण्डकी ओर फैलता जाता है। तीसरे पहरके समय पेटमें गड़गड़ाहट और छेदनेकी तरह दर्द; सन्ध्याके बाद, भोजन कर लेनेपर पेट गड़गड़ाना और उदरामयके पूर्व लक्षणकी भाँति पेटमें दर्द होता है; कितनी ही बार स्थिर भावसे बैठे रहनेकी अवस्थामें भी उदरमें इस जोरकी टपक हुआ करती है कि मालूम होता है, मानो अन्त्रमण्डली ऊपरकी ओर चढ़ रही है। सन्ध्याका भोजन कर लेने बाद बाईं कोख और बाएँ नितम्ब देशमें दर्द, इसके साथ ही आध्मान-वायुका सञ्चय होना। नाभि-प्रदेशमें इस तरहका दर्द बार-बार पैदा होता है, मानो मरोड़ खा रही है।

मलान्त्र और मल।—एकाएक मल-वेग। पित्तमय पतला पाखाना। कब्जियत। मलान्त्रमें ऐसा मालूम होता है, मानो बहुत-सा मल अड़ा हुआ है, पर बाहर निकलनेपर मालूम होता है कि एक छोटी-सी गांठ

है। पाखाना पतला हो या कड़ा, परन्तु एकाएक ही पैदा हो जाता है। एकाएक वेगके बाद थोड़ा-सा पित्तमय पाखाना निकलना। मलद्वारमें उत्ताप, खुजली और उत्तेजना मालूम होना। पाखाना—पतला—पेटमें दर्द मालूम होता है; मल बहुत ज्यादा, एकाएक निकलता है; आँव-मिला सफेद या हरे रङ्गका पित्त-मिला पतला पाखाना—एकाएक वेग पैदा हो जाता है, पेटमें मानो जकड़ रहा है, इस ढङ्गका दर्द; इसके बाद ऐसा भी होता है कि दो-तीन दिनोंतक पाखाना बिलकुल ही नहीं होता और इसके बाद जो पाखाना होता है, उसका कुछ अंश कड़ा और कुछ पतला रहता है।

पेशाब।—मूत्रस्थलीमें गड़बड़ी और दबाव मालूम होना। पेशाबमें लाल रङ्गकी तली जमती है—श्लेष्मा-मिश्रित। पेशाब गहरा—सूखे तिनकेके रङ्गका। पेशाबके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें लिथेट्स या नमकीन पदार्थ और श्लेष्मा मिला रहता है।

पुं०-जननेन्द्रिय।—रमणकी इच्छाका बढ़ जाना। रातमें वीर्यपात होना। शिश्नके दाहिने पार्श्वमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और जलन; रातमें शय्यामें सोनेके समय और सवेरे शय्यासे उठनेपर। रमण-शक्तिके घट जानेके साथ कामनाकी अधिकता या प्रबल रमणेच्छा।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बायें डिम्बाधारमें ऐंठनकी तरह मालूम होना। ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्ड और डिम्बाधार एक साथ बँधे हुए हैं। बाएँ डिम्बाधारमें दर्द, रजःस्वला होनेके एक सप्ताह पहले दर्द पैदा हो जाता है और धीरे-धीरे बढ़कर जब आर्त्तव-स्राव आरम्भ होता है, तब रुक जाता है (सिरियस-आक्सेल, लैके, मस्कस, जिङ्कम) और फिर रजःस्वला होनेके पहले-तक अच्छी रहती है। प्रदर—तीसरे पहरके समय नाभि-प्रदेशमें और कमरमें बार-बार छेदनेकी तरह दर्दके बाद एकाएक बहुत ज्यादा परिमाणमें प्रदरका स्राव होता है; स्राव पतला, सफेद आभा लिये, स्तनका दूध एकाएक घट जाता है, दूसरे दिन फिर पैदा हो जाता है, फिर कुछ दिनोंके लिये घट जाता है।

श्वासयन्त्र।—वातकी वजहसे हृद्‌प्रदाह रोगमें या हृत्पिण्डके पुराने यान्त्रिक रोगमें उत्तेजना पैदा करनेवाली सूखी सहानुभूतिक खाँसी अर्थात् उस रोगके प्रतिक्षेपके कारण पैदा हुई खाँसी (लैके, स्पञ्जि)। स्वर और वायुनलीमें खुजली और उत्तेजना। स्वर-विकार। क्षणस्थायी, भग्न-स्वर मिली खाँसी।

सूखी यन्त्रणाजनक खाँसी ; खून-मिला कफ़। सवेरे नींद खुलनेके बाद सफेद आभा लिये गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा निकलना। खून मिला थूक निकलना, निकला हुआ खून जमता नहीं है। श्वास-प्रश्वासकी क्रिया सहजमें नहीं हो पाती ; वह कष्टसाध्य और धीमी होती है ; रोगी सोया-सोया इस तरह एकाएक जाग उठता है, मानो उसकी साँस रुक जाना चाहती है (लैके, ऐकोन)। वक्षमें न जाने कैसी एक तरहकी गड़बड़ी या बेचैनी मालूम होती है। अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द, जोरसे साँस लेनेपर दर्द बढ़ जाता है ; श्वास-रोगके कारण वक्षका भरपूर फैल न सकना ; दोनों फेफड़े भरपूर नहीं फैलते, इसके बाद श्लेष्मा मिला कफ़ निकलता है। दोपहरके पहले बाएँ वक्ष-पार्श्वकी पेशीमें दर्द हुआ करता है। दोनों स्तनोंके सिरेपर कभी-कभी दर्द मालूम होता है। वक्षमें भयानक तेज़ दर्द और दबाव मालूम होना, मानो उसमें एक जलती हुई लोहेकी सलाई घुसी है और उसपर एक भारी पत्थर दबाया हुआ है। कार्बोनेट आव ऐमोनियम और पानीका प्रयोग करनेपर तुरन्त आराम हो जाता है। दाहिने वक्षके निचले आधे भागमें भार मालूम होता है मानो छुरी मार रहा है, तकलीफ़के भयसे वह खाँस नहीं सकता। बाईं करवट सोनेपर दर्द बढ़ जाता है और रोगवाली करवट सोनेपर आराम मिला करता है।

हृत्पिण्ड।—हृद् प्रदेशमें प्रचण्ड दर्द, कलेजा धड़कना और हृद्स्पन्दन। हृत्पिण्डकी धमक सुन पड़ती है। नाड़ीका वेग अनियमित, पर धमक या पर्याय स्वाभाविक (एच. सी. ऐलेन) ; नाड़ीकी धीर गति एवं वेग और धमके अनियमित (जे. एच. क्लार्क), क्षीण, सूतकी तरह सूक्ष्म, प्रायः अनुभवमें नहीं आती। हृद्वृद्धि (ऐकोन, ब्रोम, कैक्टस, डिजि, आइबिर, कैलि-कार्ब, कैल्मी, रस-ट, स्पञ्जि)। हृत्शूल (कैक)। गलनलीकी उपझिल्ली-प्रदाह रोगके बाद हृद्पिण्डके पक्षाघातकी आशङ्का (मर्क-सायानिट, लैके)। श्वास और गला रोध करनेवाली स्नायविक और बहुत दिनोंकी या समय-समयपर पैदा होनेवाले हृद्स्पन्दनके साथ बोलनेकी शक्तिका न रहना, विशेषकर सभा-समितिमें वक्तृता देनेके बाद ; दर्दका बढ़ना—सवारीपर चढ़कर घूमने या करवट बदलकर सोनेपर, हृद्प्रदेशमें तेज़ नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द (ब्राई, कैलि-कार्ब, स्पाइजि)। हृत्शूल—एकाएक हृत्पिण्डसे तेज़ दर्द गर्दन, पीठ, बायें कन्धे और बाँहमें फैल जाता है ; रोगी बहुत उद्वेग और मृत्यु-भय

प्रकट करता है। वृद्धि—रातमें और बाईं करवट सोनेपर। अत्यन्त शोककी वजहसे हृदयके अगले भागमें खींचनकी तरह यन्त्रणा।

गर्दन और पीठ।—गर्दनके पिछले भागमें काटनेकी तरह दर्द। बाएँ अंसफलकके ऊपरी कोनेसे वक्षके सामनेवाले स्थानतक चिलक मारनेकी तरह या बेधनेकी तरह दर्द (चिनापोडियम ग्लोकाई)। दिनभर ऐसा मालूम होना, मानो पीठके बीचवाला मेरुदण्ड बहुत क्लान्त हो पड़ा है। गर्दन और कमरमें वातका दर्द। दोनों अंसफलकोंके बीचमें दर्द, बाँह हिलानेपर दर्दका बढ़ जाना। गर्दनके पिछले भागमें या मेरुकी जड़में एकाएक ऐसा मालूम होता है मानो किसीने मुक्का मार दिया, रोगीको चारों ओर अन्धेरा दिखाई देता है और वह ढलमलाया करता है। डिम्बदेशमें तेज़ दर्द, मानो चिबा रहा है।

प्रत्यङ्ग आदि।—हाथ-पैर आदि एकाएक अकर्मण्य या अवश हो जाते हैं। प्रत्यङ्ग आदिमें आमवातकी वजहसे दर्द। दाहिने हाथ और पैरमें बार-बार ऐसी यन्त्रणा होती है, मानो किसी अस्त्रसे काट रहा है, इस अङ्गको हिलाने-डुलानेपर दर्द बढ़ जाता है। गुल्फ, उरुके नीचे, कलाईमें और कन्धेकी सन्धिमें दर्द हुआ करता है। नींद खुलनेपर सारे शरीरमें दर्द मालूम होता है, मानो न जाने कितनी चोट लग गई है, इस तरहका दर्द। कलाईमें जलन। हाथ और हाथके अंगूठेकी सूजन; हाथ और बाँहकी सूजन और जगह-जगहपर छोटे-छोटे दाग पैदा हो जाते हैं। सुन्न हो जाना और इधर-उधर घूमनेवाला वातका दर्द (कैलि-बाई, लैक-कैन, पल्स); स्कन्ध-सन्धिमें दर्द ज्यादा मालूम होता है; दोनों बाँह ऐसे सुन्न हो जाते हैं, मानो उनमें झुनझुनी पैदा हो गई हो। सन्ध्याकाल टहलनेके समय एकाएक बहुत सुस्ती पैदा हो जाती है। चलनेके समय ढुलक पड़ता है। चलनेके समय रोगीको इतनी कमजोरी मालूम होती है कि पैर खींचकर चला करता है। गुल्फदेशके स्थूल कण्डारके भीतर या एँड़ीकी पेशीके निचले भागमें खींचनकी तरह दर्द; हिलानेसे ही यह दर्द बढ़ जाता है और क्रमसे अवश हो जाता है। घटना—सन्ध्याके समय। माथा बहुत गर्म, पर हाथ और पैरका अगला भाग बरफकी तरह ठण्डा रहता है और तलवेमें पसीना होता है।

सार्वाङ्गिक।—शारीरिक आलस्य और शिथिलता मालूम होना। ऐसा अनुभव होना मानो शरीरके भीतरके यन्त्र-विशेष दूसरे यन्त्रोंसे बँधे हुए हैं।

जैसे—हृत्पिण्ड और बायां डिम्बाधार ऐसा मालूम होता है, मानो एक साथ गूँथा हुआ है। शराब आदि तेज़ पदार्थ सेवन करते ही तकलीफ़ बढ़ जाती है, निर्मल वायु सेवनके लिये चलनेके समय घटना। ढलमलाती गति—मतवालेकी तरह मालूम होता है। रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि वह दिनोंदिन दुबला होता जाता है। सन्ध्याके आरम्भमें बेचैनी पैदा हो जाती है। सवेरे शय्या छोड़नेकी इच्छा नहीं होती। सीधा होकर अधिक देरतक बैठ नहीं सकता। कभी-कभी मूर्च्छित हो जानेका उपक्रम हो जाता है। स्पर्श आदि बोध-शक्तिका न रहना।

निद्रा।—बार-बार जम्हाई; बहुत औंघाई। नींद, बेचैनी और व्याघात-भरी। स्पष्ट सपने। मस्तिष्ककी उत्तेजनाकी वजहसे बिलकुल ही नींद नहीं आती। नींदसे एकाएक जाग उठता है और आँख खोलकर घरके चारों ओर देखता है, मानो कोई स्वप्न देख रहा है—जीवन्त स्वप्न, पर याद नहीं रहता।

शीत, उत्ताप और पसीना।—देह ठण्डी और मानो जीवनी-क्रिया न होती हो। हाथ-पैर बरफकी तरह ठण्डे। चेहरेपर जलन करनेवाला उत्ताप। रोगीको बहुत उत्ताप, ज्वर-भाव और बेचैनी मालूम होती है। लगातार पसीना निकलना, माथा गर्म और रक्तसे भरा मालूम होता है। दोनों कान मानो जला करते हैं। दिनमें कभी कभी चेहरेपर गर्मी पैदा हो जाती है। तलहत्थी गर्म और पसीनेसे तर। सारे शरीरमें पसीना; ठण्डा लसदार पसीना।

तुलनीय।—सुस्ती और आत्महत्या प्रभृति—आरम। सर-दर्द—ऐनाका, ब्रायो, नक्स-वोम। उपझिल्ली-प्रदाह—एरम-ट्राइफो। हृत्पिण्ड—आर्स, कैक्ट, लैके, डिजिट। हिमाङ्ग—कार्बो-वेज, कैम्फर, टैबे। वाक्रोध—जेल्स। मस्तिष्क—हायोसा, लोरो इत्यादि।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—ऐमोनिया सूँघना, शराब वगैरह उत्तेजक पानीय और टैबाकम।

सदृश।—ऐनाक, आर्स, ब्रायो, नक्स-वोम, एरम-ट्राई, मर्क-सायानिट, कैक्ट, कैलि-कार्ब, कैल्मिया, आइबिरिस, डिजिट, स्पाइजि, स्पञ्जि, कैम्फो, जेल्स, कास्टि, लोरो, हायो, बैप्टी, फाइटो, लैक-कैन, सैङ्गिविन, साइलि, एइलैन्थस, क्रोटेलस, इलैप्स, माइगेल, साम्बल।

वृद्धि ।—छूनेपर, सवारीमें चढ़कर घूमनेपर, बाईं करवट सोनेपर, करवट बदलनेपर, चाय या किसी तरहकी शराब पीनेपर, शरीर या रोगवाला अंश हिलानेपर, रातमें नींद खुलनेपर, भोजन कर लेनेपर, शारीरिक या मानसिक परिश्रमके बाद, शय्याके उत्तापसे, शरीरके बाम पार्श्वमें ।

उपशम ।—निर्मल वायु सेवनके लिये चलनेपर, तम्बाकू खानेपर, दाहिनी करवट सोनेपर, नाकसे पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव होने बाद, बार-बार छींक आने बाद, आर्त्तव आदिका स्राव आरम्भ होनेपर। रोगवाली करवट सोनेपर।

शक्ति ।—६ठे दशमिकसे १००० शततमिक क्रम।

नैफ्थैलिनम

(NAPHTHALINUM)

दूसरा नाम ।—अलकतरा चुआकर जो हाइड्रो कार्बोन निकलता है, यह वही है।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः—अण्डलाल मिला पेशाब; दृष्टिक्षीणता; दमा; मोतियाबिन्द; अतिसार; खसड़ा; आध्मान; प्रमेह; यक्ष्मा; सान्निपातिक ज्वर; हूप खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—आँख; नाक, मूत्रयन्त्र और श्वास-यन्त्रके रोग आदिमें ही इसका फायदा अधिक दिखाई देता है। इसमें क्रमिका नाश करनेकी भी शक्ति है—"रोगी बार-बार अपनी नाकका अगला भाग खुजलाता है"—यह इसका एक उत्कृष्ट लक्षण है। हेमन्त ऋतुकी नयी सर्दी, कषाय त्वचाको क्षय करनेवाला, पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव और बार बार छींक इससे आराम हो जाती है। इसका एक और भी प्रधान लाभ हूप खाँसीमें दिखाई देता है; ऊपर-के-ऊपर इतनी खाँसी आती है कि रोगी साँस लेने और छोड़नेका अवसर नहीं पाता। विख्यात् जर्मन भेषज्विद् वान ग्रवोगल इसके

प्रधान पृष्ठ-पोषक हैं। प्रमेह और लालामेह रोगमें भी कभी-कभी इससे लाभ होता है। मोतियाबिन्द वगैरह चक्षु-रोगमें भी इससे विशेष फल मिलता हैं। फेफड़ेके यक्ष्मा रोगीकी खाँसीमें भी इससे लाभ हुआ करता है। खाँसीके कारण रोगी सो नहीं सकता, जरा-सी तन्द्रा आते ही तुरन्त खाँसी आकर नींद खुल जाती है। "रातमें सुस्त कर देनेवाला पसीना निकलना और दिनमें पतला दुर्गन्धमय पाखाना होना" इसका एक और प्रधान लक्षण है।

लक्षणावली

मन।—उन्माद, प्रलाप, अचैतन्य।

मस्तक।—सर-दर्दके साथ बोखार, तन्द्रा।

आँख।—हेमन्त ऋतुकी सर्दीमें दोनों आँखोंमें प्रदाह, दर्द और लाली। मोतियाबिन्द; आँखके चित्र-पत्रका मैलापन या अस्वच्छता। अस्पष्ट दृष्टि या क्षीण दृष्टि।

नाक।—सर्दी या नाकसे स्राव—नासारन्ध्रमें उत्तेजना, पानीकी तरह त्वचाको क्षय करनेवाला श्लेष्माका स्राव और बार-बार छींक—हेमन्त ऋतुकी सर्दी; मुँहसे लार बहा करती है।

अन्त्राशय आदि।—संयोजक स्थूलान्त्र या योजकान्त्रमें रुके हुए आध्मान-वायुकी वजहसे हृत्प्रदेशमें महान यन्त्रणा मालूम होती है। मल-मूत्र आदि धारण करनेकी क्षमताका न रहना। यक्ष्मा रोगमें मलका पतला होना, मल बहुत पतला और बदबूदार, दिनमें बार-बार पतला पाखाना होता है।

पेशाब।—पेशाबका वेग एकाएक बहुत भयानक होता है; मूत्र-नलीका मुँह लाल हो जाता है और वह फूल जाती है; लिङ्गकी आवरक त्वचा फूली-सी मालूम होती है। प्रमेह, लालामेह—पेशाब घोर भूरे रङ्गका, कुछ देरतक रहनेके बाद काला हो जाता है; लालमय पेशाब; वृहन्मुदा और परिवर्त्तिका या मुदा।

श्वास-यन्त्र।—श्वास-क्रियामें कष्ट होता है और वह अनियमित होती है, श्वास-रोगकी तरह। खाँसी—ऊपर-के-ऊपर आनेकी वजहसे रोगीको श्वास लेनेका अवसर नहीं मिलता—हूप खाँसी। फेफड़ेके क्षय-कास रोगमें रातमें बार-बार खाँसी आनेके कारण रोगी सो नहीं सकता; थोड़ी-सी तन्द्रा आते ही

खाँसी आने लगती है और नींद खुल जाती है, इसके साथ ही बहुत सुस्त करनेवाला रातमें पसीना निकलता है और दिनमें बदबूदार पतला पाखाना हुआ करता है। खाँसते-खाँसते रोगीका चेहरा नीला हो जाता है (कोरैल-रूब्र, इपिक, नक्स-वोम)। अनायास ही कफ़ निकलता है और यह कफ़ गाढ़ा लेईकी तरह रहता है; खाँसीके प्रचण्ड प्रकोपकी वजहसे रोगीको यन्त्रणा घटानेके लिये अपना माथा वाध्य होकर हाथसे पकड़ रखना पड़ता है (बेडियेगा)।

सार्वाङ्गिक।—बहुत दिनोंके पुराने रोग आदि। एकाएक लक्षण आदि पैदा हो जाते हैं। सारे शरीरकी पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना; प्रत्यङ्ग आदिकी चञ्चलता और मतवालोंकी तरह हड्डियोंकी गति। निम्नाङ्गका पक्षाघात। एकाएक बोखार पैदा हो जाना, इसके साथ ही सरमें दर्द और अरुचि। वातश्लेष्मा ज्वरमें यह उत्तापको घटा देता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—खाँसीके सम्बन्धमें—आर्नि, वेल, सिना, कक्कस-कैक्ट, कोरैल-रूब्र, ड्रोसेरा, इपिक, मिफाइटिस। यक्ष्मा रोगमें—पेट्रोल, टियुबरक्युलिनम, आर्स-आयोड। हेमन्त ऋतुके सर्दी रोगमें—आर्स, सिपा, कैलि-आयोड, सोरिन, साइक्लामेन, युफ्रे, सैबाड। क्रमिनाशकताके सम्बन्धमें—सिना, टियुक्रि, स्पाई, स्टैन। प्रमेह आदि रोगमें—पेट्रोसेलि, मर्क-कोर, सैबाल, थूजा। हूप खाँसीमें नैफथैलिनमके बाद (यदि आवश्यक हो, तो) ड्रोसेराका प्रयोग करना चाहिये।

शक्ति।—१मसे लेकर ६ठा दशमिक क्रम।

नर्सिसस

(NARCISSUS)

दूसरा नाम।—डैफोडिल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—तना, पत्ते, फूल और कलीसे तैयार अरिष्ट या उपचारसे विचूर्णके रूपमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—मिचली, इसके बाद दस्त-कै इसका निर्देशक लक्षण है। स्वरनली-प्रदाह, लगातार खाँसी, सर्दी, सर-दर्द प्रभृति लक्षणमें भी इससे लाभ होता है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय**।—ऐलि-सिपा, कोलचि, लिलि-टिग।

शक्ति।—१—६ शक्ति।

नर्कोटिनम

(NARCOTINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मार्फिनमकी तरह यह भी अफ़ीमसे तैयार हुआ एक प्रकारका उपचार। यह विचूर्णके आकारमें तैयार होता है।

मुँह सूखा और लसदार है। अस्पष्ट स्वर और मूत्राशयका पक्षाघात इसका निर्देशक लक्षण है। नर्कोटिनममें मार्फीनिमकी तरह सामान्य हिलने-डोलनेसे ही सरमें चक्कर आना और अफ़ीम तथा इसके और-और उपचारकी तरह लक्षण दिखाई देते हैं।

शक्ति। —मूल विचूर्ण और निम्न-शक्ति।

नेट्रम आर्सेनिकम

(NATRUM ARSENICUM)

दूसरा नाम।—सोडियम आर्सेनेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल क्रम।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—सर्दी ; गलनलीकी उपझिल्लीका प्रदाह ; आँखका प्रदाह ; यक्ष्माकास ; दमा ; नाकमें दर्द ; अन्ननलीका संकोचन ; अण्डकोषका स्नायुशूल ; यक्ष्मा ; प्लीहा और यकृत मिला बोखार।

उपयोगिता और आभास।—इसके कुछ अनन्य साधारण लक्षण ये हैं:—माथा घुमानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो सामनेकी चीजें तरङ्ग-जैसी हो रही हैं या हिल रही हैं; आँखका गोला इतना बड़ा मालूम होता है, कि पलकसे उसे अच्छी तरह ढका नहीं जा सकता। आँख बन्द किये रहनेपर आँखकी पुतली हिलानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो पलककी सतहसे रगड़ खा रही है या करकराती है। नासामूलमें दर्द। कण्ठदेशकी द्विदल-ग्रन्थिमें दबाव मालूम होता है, मानो किसीने उसे अंगुलीसे दबा रखा है। अण्डकोषमें मानो एकाएक चोट लग गयी है। फेफड़ेमें मानो धुआँ घुस गया है। दुबलापन, अङ्ग-प्रत्यङ्ग आदिका शोथ। चञ्चलता, माथेमें उत्ताप मालूम होना और सरमें दर्दके साथ शीत मालूम होना। दोनों अंसफलकोंके बीचके स्थानमें दर्द—सामनेकी ओर शरीर झुका लेनेपर आराम मिलता है। गलनलीके उपझिल्ली-प्रदाह रोगमें फायदेके लिये ही यह बहुत प्रसिद्ध है। इसके सम्बन्धमें इसका निर्णायक लक्षण यह है, कि कण्ठके भीतरकी झिल्लीका रङ्ग घोर बैंगनी हो जाता है, वह बहुत फूल जाती है, रोगीमें उठनेकी शक्ति नहीं रहती, दर्द सामान्य रहता है। माथेका दाहिना पार्श्व, दाहिना अण्डकोष और बाएँ पैरपर इसका आक्रमण अधिक हुआ करता है। नासामूलमें दर्द और सूखापन और दर्द-भरी आँखोंके साथ ही नयी सर्दी में यह विशेष लाभदायक है।

लक्षणावली

मन।—स्नायविक चञ्चलता। किसी विषयमें मन नहीं लगा सकता (इथ्यू, एइलैन्थ, ऐवेना-सैट, आइरिस, लैक-कैन, लाइकोपस, ऐ-आक्सेल, ऐ-फास, स्कूटेल, सिनिसियो, बाइवर्न, जिवोफिल), जड़भावापन्न; अमनोयोगी; भूलनेवाला (ऐग्नस, ऐनाक, बैराई, कास्टि, गुयायेक, आयोड, लैक-कैन, नेट्रम-कार्ब, रोडोड, सेलिन)। विमर्ष, मानो कोई विपत्ति आना ही चाहती है (ऐमोन-कार्ब, ऐक्टि, चिनिन-सल्फ, क्लिमेट, कूप्रम, लोरो, लिलि-टिग, मैग-कार्ब, स्कूटेल, लैटा, सिपि, वैलि)।

मस्तक।—एक ओरसे दूसरी ओर तेजीसे माथा घुमानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो सामनेकी चीजें काँपती हैं या तरङ्गकी तरह हो रही हैं (तेजीसे माथा घुमानेपर सरमें चक्कर आ जाना—कैल्के, कैलि-कार्ब, स्टैफ)। मस्तिष्ककी

जड़ताके साथ माथेकी जड़ता। समूचे माथेमें उत्ताप और भार मालूम होना। सवेरे नींद खुलने बाद ललाटमें और नाककी जड़में धीमा-धीमा दर्द मालूम होना; दिनके समय बहुत अधिक, पढ़ने या बोलनेकी इच्छाका न होना। आँखके ऊपरी भागमें तेज़ दर्द, विशेषकर दाहिनी आँखके ऊपरी अंशमें। भौं और आँखमें दर्द मालूम होना। ललाटमें भार मालूम होना और मूर्द्धादेशमें टपक। प्रत्येक बार शरीर सञ्चालनसे माथेमें आघात लगता है (ऐङ्ग)। सरमें दर्द—उत्तापसे, दबानेसे और धूम्रपानसे बढ़ना।

आँख।—शारीरिक सुस्तीकी वजहसे क्षीण-दृष्टि; किसी चीज़की ओर कुछ देरतक देखते रहनेपर दृष्टिमें मैलापन आ जाता है; रोशनी बिलकुल ही सहन नहीं होती। पढ़ने या लिखनेके समय आँख बहुत जल्द थक जाती हैं। रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो आँख बन्द न करनेपर उसकी क्षीण आँखोंमें तुरन्त ही विकार पैदा हो जायगा। आँखें आप-से-आप बन्द हो जाती हैं; पहलेकी तरह भरपूर आँख नहीं खोल सकता। चक्षुगोलक और पलकोंकी शिराएँ आदि खूनसे भर जाती हैं और समूचा चक्षु-गह्वर फूल उठता है। चक्षु-गह्वरकी, विशेषकर चक्षुगोलकके ऊपरी-प्रदेशमें शोथ हो जानेकी तरह भाव। सर्दी या हवा लगते ही योजिका या आँखका भीतरी भाग लाल हो उठता है; योजिका सूखी और दर्द-भरी। आँख करकराती है, मानो उसमें जलती हुई लकड़ीका धूआँ लग गया है। घरके बाहरकी हवा लगनेपर आँखोंमें उत्तेजना पैदा हो जाती है (क्रोक, आस्टिलेगो) और आँखसे पानी गिरा करता है (कैल्के, कैन्थ, ग्रैफ, नेट्र-म्यूर, रस, सिनिसि, साइलि, सल्फ)। आँखकी निचली पलकका भीतरी अंश मांसांकुर (दानों) से भर जाता है; चक्षु-प्रदाह। कोषोद्गामक—योजकत्वगौषके सहयोगसे (नेट्र-म्यूर); पुराने योजकत्वगौष रोगमें हरे रङ्गका पीव-स्राव रहनेपर (नेट्र-सल्फ)। पलकें सट जाती हैं—सवेरे नींद खुलनेपर। सवेरे चक्षु-रोगका बढ़ना; सन्ध्याके आरम्भमें घटना।

नाक।—सूँघनेकी शक्तिका घट जाना या लोप हो जाना (आरम, काकुर, हिप, कैलि-बाई, कैलि-ब्रोम, प्लम्ब, साइलि)। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी नाक (और वक्ष-गह्वर) बन्द हो रहे हैं (आरम)। नाकका छेद बराबर रुका रहता है, वृद्धि—रातमें और सवेरे; रोगी रातमें मुँह फाड़कर श्वास-प्रश्वासकी क्रिया सम्पादन करता है (नाक रुकी रहनेकी वजहसे बच्चा स्तनसे दूध नहीं पी सकता—कैलि-बाई, नक्स, सैम्बियु; बच्चोंकी नाक

सटना—ऐसक्लिपियस-टियु, अरम-म्यूर, नक्स, सैम्बु, लाई)। नाकसे निकला हुआ श्लेष्मा पीला और गाढ़ी लेईकी तरह ; खाँसनेपर नाकके पिछले छेदसे कफ़ निकला करता है (कैलि-म्यूर, मर्क-बिन, नेट्र-म्यूर, फाइटो, कैन्थ)। नाकके पिछले छेदसे बून्द-बून्द बदबूदार बलगम कण्ठमें गिरता है। कभी-कभी नीली आभा लिये कड़ा बलगमका टुकड़ा, पपड़ीके साथ निकलता है ; उसके निकलने बाद रन्ध्रकी भीतरवाली झिल्लीमें ऐसा मालूम होता है, कि जखम हो गया है। रंध्रमें बलगम सूखकर पपड़ीका आकार धारण कर लेता है और पपड़ी अंगुलीसे खोदकर निकालनेपर खून निकला करता है (सिपि, ग्रैफ)। रंध्रकी भीतरवाली झिल्ली फूल उठती है ; श्वास लेनेमें कोई कष्ट नहीं होता, परन्तु साँस छोड़नेमें बहुत तकलीफ़ होती है। सर्दी रोगमें नासा-मूलमें और ललाटमें दबावकी तरह दर्द (इलैप्स, नेट्र-सल्फ़, जेल्स, ग्लोन)।

मुखमण्डल।—चेहरा तमतमाया और भारी, गर्म और भार मालूम होता है। गण्डास्थि बड़ी मालूम हुआ करती है, मानो फूल गई है। चेहरा फूला, शोथयुक्त, विशेषकर आँखके चारों ओर—सवेरे नींद खुलनेपर अधिक मालूम होता है, दोनों ओठोंके जोड़की जगह फटी हुई (ऐण्टि-क्रूड, कण्डयु-रैङ्गो, ग्रैफा, नेट्र-म्यूर, सिपि) और फूली हुई तथा अनमनीय रहा करती है (सिपा)। चबानेवाली पेशीकी अकड़नकी वजहसे हनुका सञ्चालन करनेपर बहुत दर्द मालूम होता है (आयडोफार्म, स्ट्रैन, वेरेट)।

गलेके भीतर।—किसी चीज़को निगलने और श्वास लेनेके समय तालुमूल पार्श्वके दोनों गह्वर सूखे और निरस मालूम होते हैं। वृद्धि—दोपहरके पहले और सर्दी लग जाने बाद। तालुमूल पार्श्वके दोनों गह्वर और तालुमूल लाल और चिकना मालूम होता है। उपझिल्ली-प्रदाह रोगाधिकारमें गलेकी दोनों ग्रन्थियाँ, तालुमूल पार्श्वके दोनों गह्वर और तालुमूल बैंगनी रङ्गका हो जाता है और फूला हुआ दिखाई देता है और उसमें जगह-जगह पीले रङ्गका श्लेष्मा लगा रहता है। अलिजिह्वा, दोनों गलग्रन्थियाँ और तालुमूलकी त्वचा या झिल्ली मोटी हो जाती है, ऊपरी भाग ऊँचा-नीचा, फूला हुआ और घोर लाल रङ्गका रहता है और पीली आभा लिये धुमैले श्लेष्मासे ढँका रहता है। खाँसनेपर यह श्लेष्मा कफ़की तरह निकल जाया करता है। कण्ठरोधका उपक्रम मालूम होना (लैके, लैक-कैन), मानो किसीने कण्ठ-देशकी छिद्रल

ग्रन्थिको अंगुलीसे दबा रखा है (ग्लोन)। ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठके भीतर एक आल्पीन गड़ रही है (एपिस, हिप, लैके) अथवा एक गोला अड़ा हुआ है (मानो नोकीली काठकी सलाई रुकी हुई है—ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, नेट्र-म्यूर, डलिकस-प्रू); सभी लक्षण सवेरे बढ़ते हैं।

पाकाशय आदि।—बार-बार पानी पीता है, पर बहुत थोड़े परिमाणमें (आर्स); प्यास बहुत कम, पर पानी पीते ही बीमारी बढ़ जाती है। बार-बार वायु निकलना और खट्टी डकार (कार्बो-वे, सिङ्को, इग्ने, लाई, मैग-कार्ब, नक्स, फास, रोबिन ; भोजनके बाद—ब्राई, मिडोरिन, फास, पोडो ; खानेके बाद मुँहभर खट्टा पानी भर आता है—डिजि, लैके, फास ; गर्भावस्थामें—ऐ-लैक्टिक)। मिचली—ठण्डा पानी पीनेपर बढ़ जाती है (ऐगार, ऐ-कार्बोल, ऐनाक), किसी प्रकारकी भी चीज़ पीते ही—काक्यु, कैलि-बाई, नेट्र-म्यूर, नक्स, पल्स ; लेमोनेटके सिवा सब तरहके पानीय पीनेपर—साइक्ला ; केवल पानी पीनेपर—मिडोरिन)। बहुत ज्यादा परिमाणमें खट्टा पानी कै करता है (नेट्र-सल्फ ; इतना खट्टा पदार्थ कै होता है, कि दाँत खट्टे हो जाते हैं—ऐट्रोप-सल्फ, रोबिन); वृद्धि—भोजनके बाद। ऐसा मालूम होना, कि पाकस्थलीमें जखम हो गया है ; गर्म चीजें आदि पीनेपर पाकस्थलीमें जलन हुआ करती है और यह स्पष्ट मालूम होता है, कि गर्म चीजें पाकस्थलीमें प्रवेश कर रही हैं। सन्ध्याके भोजनके समय परिमित आहार करनेपर भी पेटमें भार मालूम होता है। रक्त-पित्त या रक्त-वमन। उदरमें बड़ी तेजीसे भाफ़ पैदा होती है, वायु छूटने या डकार आनेपर आराम मालूम होता है ; आध्मान-वायुकी वजहसे अन्त्र-शूल और पाखाना होनेके पहले पेटमें दर्द। पुट्ठे में दर्द। तलपेटमें कभी-कभी एकाएक दर्द पैदा होकर एक ओरसे दूसरी ओर चला जाता है, मल या वायु निकलनेपर घटना।

मलान्त्र और मल।—पर्यायक्रमसे पतला और कड़ा पाखाना होता है (ऐब्रोट, चेलिडो, लैके, नेट्रम-सल्फ, नेट्र-कार्ब, नक्स-वोम, पोडो ; वृद्ध मनुष्योंका—ऐण्टि-क्रूड, फास ; एकाएक पतले दस्त बन्द होकर कब्जियत पैदा हो जाती है—नक्स-वोम)। मलका पतलापन, रोगी नींद खुलते ही पाखाना जानेके लिये दौड़ पड़ता है (लाई, नेट्र-सल्फ, पोडो)। मल पीली आभा लिये, पानी-जैसा पतला, बहुत ज्यादा और बिना दर्दका होता है (नेट्रम-

सल्फ)। पाखाना होनेके पहले पेटमें दर्द और बादमें उपशम। रोगी बहुत कमजोर हो जाता है और थोड़ेमें ही कातर हो पड़ता है और उसके दोनों हाथ काँपा करते हैं।

पेशाब।—मसाना या मूत्रग्रन्थिमें धीमा-धीमा दर्द, पर बहुत ज्यादा परिमाणमें स्वाभाविक पेशाब हुआ करता है। मूत्रस्थली-प्रदेशमें छूते ही दर्द मालूम होता है (लिथिया-कार्ब, शरीर हिलाते ही—कैन्थ)। पेशाब बहुत ज्यादा, बार-बार वेग पैदा करनेवाला, निर्मल, गर्म प्रयोग करनेपर उसमें सफेद तली जमती है; पेशाबके साथ श्लैष्मिक-झिल्लीका शल्क, मूत्रनलीका शल्क और मेदके दाने मिले रहते हैं, फास्फेट-मिली तली (ब्रेकि-ग्लाटा, फेरम, कैलि-ब्रोम, ऐ-फास, फास, टिलिया या मूत्रनलीका शल्क मिला हुआ—कैन्थ; श्लैष्मिक शल्क—एपिस, टिलि)।

पुं०-जननेन्द्रिय।—पुट्ठेमें धीमा-धीमा दर्द और इसके बाद बाएँ अण्डकोषमें बेचैनी या गड़बड़ी मालूम होना—टपक-सी हो जाती है, मानो किसीने चोट पहुँचा दी। जबतक टनक रहती है, तबतक अण्डकोषपर हाथ नहीं रखा जाता। निद्रितावस्थामें शुक्रक्षय।

श्वासयन्त्र।—वायुनलीके भीतरका श्लेष्मा स्लेटके पत्थरके रङ्गका हो जाता है और बड़ी तकलीफ़से निकलता है। स्वरनलीमें कर्कशता मालूम होती है और इसी कारणसे रोगी बार-बार खाँसकर उसे दूर करना चाहता है; सवेरे वृद्धि। दोनों फेफड़े सूखे मालूम होते हैं, मानो साँसके साथ उसमें धुआँ घुस गया है (फेफड़ेके प्रदाह रोगमें दोनों फेफड़े धुएँसे भरे मालूम होते हैं—बेराइ-कार्ब; सूखी खाँसी—छातीके भीतर और ऊपरी तृतीयांशमें कसावटका भाव और दबाव मालूम होना। वक्ष-गह्वर भरा और दर्दसे भरा मालूम होता है, विशेषकर पूर्ण श्वास ग्रहण करनेके साथ और किसी तरहका परिश्रम करनेके समय कण्ठास्थिके ऊपरी अंशमें दबाव डालनेपर बहुत दर्द मालूम होता है।

हृत्पिण्ड।—समूचे वक्ष-गह्वरमें हृत्पिण्डकी धमक मालूम होती है। उपझिल्ली-प्रदाह रोगाधिकारमें सामान्य परिश्रम करनेपर भी छातीमें दबाव मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दन अकड़ी और दर्द-भरी। दोनों अंसफलकोंके बीचमें तेज़ दर्द; माथा और गर्दन सामनेकी ओर झुकानेपर आराम मालूम

होता है; श्वास लेनेके समय दर्द बढ़ जाता है। कक्ष या बगलसे कनिष्ठाकी अंगुलीतक स्नायुशूल मालूम होता है। सन्धियाँ सब अकड़ी मालूम होती हैं; दर्द आदि भ्रमण करनेवाला, सन्धियोंमें और बाएँ अङ्गमें दर्दका बढ़ना। निचले अङ्ग सब भारी, थके और इस तरहके दर्दसे भरे मालूम होते हैं, मानो बहुत चोट खा गये हैं। जानु-सन्धिमें कटकट शब्द होता है। बहुत चञ्चलता, बहुत कुछ चेष्टाके बाद कहीं स्थिर होकर बैठ सकता है। समूची देहमें क्लान्ति मालूम होना, रोगी स्थिर होकर रहना चाहता है। सर्दी बिलकुल ही सहन न होना। सहजमें ही सर्दी लग जाती है (ऐकोन, बैराइटा-कार्ब, कैल्के, कास्टि, कैमो, डाल्का, ग्रैफ, कैलि-कार्ब, मर्क, नेट्र-कार्ब, नेट्रम-मूरर, ऐ-नाई, नक्स-मस, नक्स, फास, पल्स, सिपि, साइलि, सल्फ)। अत्यन्त शीतार्त्तता—रोगी हमेशा शरीरमें कपड़ा लपेटे रहता है या आगके पास बैठना चाहता है। चोंयटेकी तरह रूसी निकलती है और यह रूसी निकाल डालनेपर उसके नीचेवाली त्वचा लाल हो जाती है; परन्तु यदि यह रूसी न निकाली जाये तो बहुत खुजलाहट पैदा हो जाती है।

निद्रा।—हत्या और मार-काटके सपने देखता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—एपिस, आर्स, अरम-ट्राई, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, नेट्र-मूर, लाई।

तुलनीय।—आर्स, कैलि-कार्ब (आँखमें सूजन), एरम, एपिस (डिफ्थीरिया), कैलि-बाई (कड़ा श्लेष्माका स्राव), नेट्रम (गलेके भीतर), लाइकोपो (सर्दी मालूम होना)।

वृद्धि।—दबाने, शरीर हिलाने, हिल जाने, परिश्रम करते ही; दिनके समय, व्यायामके बाद, शरीर गर्म होनेपर, बाएँ पैरमें, माथेके दाहिने पार्श्वमें; बाएँ अङ्गमें और बाएँ अण्डकोषमें। गर्म पानी पीनेपर पेटमें जलन होती है और ठण्डा पानी पीनेपर मिचली पैदा हो जाती है।

घटना।—(आँखकी बीमारीमें) सन्ध्याके समय, (पीठमें दर्द) सामनेकी ओर माथा झुकानेपर, वायु या मल निकलनेपर।

शक्ति।—३रे दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

नेट्रम कैकोडाइलिकम

(NATRUM CACODYLICUM)

दूसरा नाम।—कैकोडाइलेट आव सोडा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और अरिष्ट दोनों आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—मुँह और श्वास-प्रश्वासमें बदबू, उदरके चमड़ेका सूखा प्रदाह और कैन्सर, टियुमर आदि मारात्मक रोग और क्षय रोगकी एक उत्कृष्ट दवा है।

यह बड़े आश्चर्य-रूपसे जल्दी-जल्दी रक्त-कण बढ़ा देता है।

शक्ति।—मूल अरिष्ट और विचूर्ण।

नेट्रम कार्बोनिकम

(NATRUM CARBONICUM)

दूसरा नाम।—सोडियम कार्बोनेट; बाजारमें साफ़ किया हुआ सोडा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल क्रम।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अण्डलाल मिला पेशाब; एँड़ीमें कमजोरी; दाह; आँखके सफेद अंशका जखम: गठ्ठे; सर्दी; बहरापन; वाधक या कष्टरजः; अजीर्ण; गलगण्ड; हाथकी खाल उधड़ना; सर-दर्द; एँड़ीमें छाले; दादकी तरह उद्भेद; व्याधि-शङ्का; मूर्च्छावायु; कच्छु; नाकका फूलना; नाक खुजलाना; पूतिनस्य; दूर दृष्टि-दोष; वात; विद्यालयके छात्रोंका सर-दर्द; गण्डमाला; बोतलाना; वन्ध्यत्व; सूर्याघात या सर्दी-गर्मीका दुष्परिणाम; गलेमें श्लेष्मा; दाँतका शूल; मसे इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—इसके विषयके भीतर आनेवाले श्लेष्मा और रस-प्रधान धातुग्रस्त रोगी घरके बाहरकी हवा सहन नहीं कर पाते,

मानसिक या शारीरिक परिश्रम करनेकी उनकी इच्छा नहीं होती और रोगी जड़-बुद्धिवाला रहा करता है। गर्मी के उत्तापसे वह बहुत सुस्त हो पड़ता है और थोड़ा-सा भी परिश्रम करनेपर सुस्ती आ जाती है। जरा भी चलनेपर बहुत अधिक क्लान्तिकी वजहसे वह मानो गिर जाना चाहता है; बहुत दिन पहले, संन्यास रोग हो जानेके कारण स्वास्थ्यमें विकार; गर्मी के दिन आनेपर बार-बार सर-दर्द हो जाया करता है; दुबला; दोनों आँखें नीले घेरेसे घिरी और गड़हेमें धँसी, पुतली फैली हुई, पेशाब गाढ़ा, रक्तहीन देह और बहुत क्षीण; सोचने या किसी तरहका मानसिक परिश्रम करनेकी शक्तिका न रहना, तुरन्त सर-दर्द पैदा हो जाना; सामान्य मानसिक परिश्रमकी चेष्टा करनेपर भी बुद्धि जड़ हो जाती है। कोई विषय सहजमें ही समझमें नहीं आता; हमेशा दुःखित और शङ्कान्वित चित्त; अन्धड़-पानी वगैरह तथा बिजली आदि चमकनेके समय उसका चित्त बहुत चञ्चल हो जाता है और उद्वेग पैदा हो जाता है। सङ्गीत-ध्वनि सुननेसे और भी बढ़ जाता है; सामान्य मानसिक परिश्रम करनेपर या गैसकी रोशनीमें या धूपमें काम करनेपर भयानक सर-दर्द पैदा हो जाता है; ऋतु-स्राव होनेके आरम्भकालमें गर्दनके पिछले भागमें या सरके पिछले भागमें अकड़न और सर-दर्द पैदा हो जाता है; माथा बहुत बड़ा मालूम होता है, मानो दो हो जाना चाहता है। चेहरा म्लान और दोनों आँखें नीले घेरेसे घिरीं, दोनों पलकें फूलीं; सर्दी के कारण कण्ठ और नाकके पिछले रन्ध्रमें श्लेष्मा सञ्चित हुआ करता है, रोगी बार-बार खाँसकर कण्ठ साफ़ करना चाहता है; नाकके पिछले छेदसे बून्द-बून्द श्लेष्मा कण्ठमें गिरता है; नाकसे दिनभर लगातार श्लेष्मा निकला करता है तथा रातमें नाक बन्द हो जाती है; गाढ़ा पीला या हरे रङ्गका बदबूदार जमा हुआ स्राव; खा लेनेके बाद प्रायः वह स्राव बन्द हो जाता है; दूधसे अरुचि, दूध पीनेपर पतले दस्त आने लगते हैं; स्त्रियोंका जरायु आदि सब नीचेकी ओर खींचा करते हैं और ऐसा मालूम होता है, मानो सब चीजें बाहर निकल पड़ेंगी; बैठनेसे बढ़ना और चलनेपर घटना; रमणके बाद योनिमें प्रवेश किया हुआ वीर्य बाहर निकल आता है और बन्ध्यत्व पैदा कर देता है। सामान्य कारणसे भी एँड़ीकी सन्धि खिसक जाया करती है; बहुत कमजोरीकी वजहसे गुल्फ-सन्धि घूम जाती है इत्यादि कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन ।—सोचने या किसी तरहकी मानसिक क्रिया न कर सकना (ऐ-नाई, बैप्टी, ह्निपोमिन्स, लाई, नेट्रम-सल्फ, सिपि, स्टैन ; किसी तरहका मानसिक परिश्रम करनेकी चेष्टा करते ही मस्तिष्क अवसन्न हो जाता है—पेट्रोल, बुद्धिकी जड़ता या कमीकी वजहसे किसी तरहका भी मानसिक परिश्रम असम्भव हो जाता है—साइक्लामिन)। पढ़ने या वक्तृता आदि सुननेके समय भाव या अर्थका सम्बन्ध हृदयङ्गम नहीं कर सकता (सिफिलिन)। प्रत्येक व्यक्ति और जन-समाजसे विराग (अपने परिवारवालोंपर विराग—सिपि ; अपनी सन्तानोंके प्रति विराग—प्लैट ; स्वामी और सन्तानके प्रति विराग—ग्लोन, वेरेट ; पुरुषके प्रति विराग—रैफेनस ; रमणियोंके प्रति विराग—पल्स)। विमर्ष-भाव ; मानसिक सुस्ती या आनन्दका न रहना, अवसाद-वायुसे ग्रस्त या व्याधि-शङ्का, क्रोधी स्वभाव। उत्तेजना पैदा हो जाना, बहुत लोभी, द्वेषपूर्ण हृदय, बिजली चमकनेवाले अन्धड़-वर्षाके दिनोंमें मानसिक उद्वेग और चञ्चलताका बढ़ जाना (फास ; गोधूलिके समय मानसिक उद्वेग—फास) ; सङ्गीत-ध्वनि सुननेसे बढ़ना (गाने-बजानेकी आवाज़से चिढ़ पैदा हो जाती है—ऐकोन, बूफो, कैमो, सैबाई ; सङ्गीत-ध्वनि सुननेपर कलेजेमें धड़कन आरम्भ हो जाती है—स्टैफ ; सङ्गीतकी आवाज़ सुननेसे रुलाई आने लगती है—ग्रैफ ; सङ्गीतकी आवाज़से विषाद पैदा हो जाता है—ऐकोन, सैबाई, थूजा)। यन्त्रणा पैदा हो जानेपर रोगी बहुत उद्वेग प्रकट करता है, उसका शरीर काँपा करता है और पसीना निकल आता है। सन्ध्याके समय किसी तरहका मानसिक कार्यमें न करते रहनेपर शारीरिक अस्थिरता पैदा हो जाती है। स्थूलबुद्धि—सहजमें ही कोई विषय हृदयङ्गम नहीं कर सकता (काक्युलस) ; बहुत पढ़नेका दुष्परिणाम (जो पढ़ता है, उसका भाव संग्रह नहीं कर सकता—कोलचिकम, कोना ; यदि समझनेकी विशेष चेष्टा करता है, तो सभी गड़बड़ा जाता है—ओलियेन)। बुद्धि कामोंके उपयुक्त नहीं रहता।

मस्तक ।—बहुत कमजोरी—गर्मीके दिनोंके उत्तापके कारण (ऐण्टि-क्रू), गर्मीके दिनोंकी धूप लगनेपर रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है ; शारीरिक या मानसिक किसी प्रकारका भी परिश्रम करते ही रोगी बहुत थक जाता है। बहुत दिन पहले लू लग जानेके कारण स्वास्थ्यमें विकार—गर्मी पड़नेसे ही कभी-कभी

उसे सर-दर्द पैदा हो जाता है। मानसिक परिश्रम करने या सोचनेसे ही सरमें दर्द पैदा हो जाता है (अरम, ग्लोन, फास)। थोड़ा भी मानसिक परिश्रम या धूप अथवा गैसकी रोशनीकी वजहसे सरमें दर्द (ग्लोन, लैके), इसके साथ ही आर्त्तव (ऋतु-स्राव) पैदा होनेके आरम्भमें गर्दनके पिछले भागमें या सरके पिछले भागमें अकड़न (माइरिका-सेरिफ, साइलि); माथा मानो दो हो जायगा—इतना फैला हुआ मालूम होता है (आर्जेण्ट-नाई, एपिस, आर्निका, बोवि, नेट्र-म्यूर, नक्स-मस); सरमें चक्कर आना—शराब पीने (कोलो, नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम) या मानसिक परिश्रमके बाद (ऐ-पिक्रिक, नक्स-वोम)। माथेमें कसावटका भाव, मानो ललाट फटकर दो हो जायगा। ललाटदेशका सर-दर्द, तेजीसे माथा घुमानेके समय दर्द मालूम होता है। बाएँ शृङ्गदेशसे बाएँ सरके पिछले भागके निचले अंशतक तेज़ बेधनेकी तरह दर्द। रोज़ सवेरे मूर्द्धादेशमें टपक पैदा करनेवाला सर-दर्द। दिनमें बँधे समयपर ललाटमें फाड़ डालनेकी तरह दर्द। सन्ध्याके समय मस्तिष्कमें सुस्ती पैदा करनेवाला और दबावकी तरह ललाटदेशमें दर्द होता है, इसके साथ ही मिचली, डकार और दृष्टि-शक्तिका धुँधलापन। घरमें बैठनेके समय बढ़ना (ऐसाफिट, निकोल, टैबाक ; वायु सेवनके बाद घरमें प्रवेश करनेपर—निकोल)। बहुत-सा केश उड़ जाता है। सरके पिछले भागमें फोड़े निकलना।

आँख।—आँखमें जलन (कैन्थ, कैप्स, कार्बो-वे, सिपा, चेलिडो, कोना, साइक्ल, कैलि-बाई, लैके, नेट्र-फास, निकोल ; सर्दी रोगमें—नेट्रम-आर्स), विशेषकर पढ़नेपर (क्रोकस, माइरिका-सेरिफेरा, सल्फ) या लिखनेके समय लिलि-टाइग्रिन)। लिखनेके समय आँखके सामने काले-काले बिन्दु सब उड़ते फिरते हैं। नींद खुलनेपर आँखके सामने चमकीली चकचौंधी पैदा करनेवाली चीजें सब दिखाई देती हैं (सन्ध्याके समय अन्धकारमें—फास)। दृष्टिका मैलापन दूर करनेके लिये बार-बार आँख रगड़ता है (क्रोकस, आर्नि, सलफर)। छोटे अक्षर पढ़ नहीं सकता (कैडमी-सल्फ, मिफाइट)। आँखमें महीन सलाई गड़नेकी तरह बाहरकी ओर आनेवाला दर्द। खानेके बाद आँखमें इस ढङ्गका दर्द होता है, मानो सुई गड़ रही है ; आँखके सफेद अंशके ऊपर जखम पैदा हो जाता है (ऐट्रोप, कैल्के, कैल्के-फास, चिनिन-आर्स, युफ्रे, फार्मिका, कैलि-बाई, लैके, मर्क, मर्क-प्रोटो, सोराइन ; रोशनी सहन न होनेके साथ-ही-साथ आँखोंका प्रदाह, दाहिने आँखकी ऊपरी पलक फूल उठती हैं। पलकोंका फूलना, अश्रुग्रन्थिमें फोड़ा।

आँख बार-बार बन्द हो जाती है और सहजमें ही खोली नहीं जाती। आँखके सामने ऐसा मालूम होना, मानो परोंके टुकड़े उड़ रहे हैं (ऐल्यू, मर्क)।

कान।—कानमें बेधनेकी तरह तेज़ दर्द। कर्णशूल—कानमें तेज़ नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द। बहुत मैल पैदा हो जानेकी तकलीफ़। बहरापन—मानो कान बन्द हो रहे हैं। श्रवण-शक्तिकी स्थूलता। कानमें नाना प्रकारकी आवाजें सुन पड़ती हैं, कानमें फुट-फुट शब्द ; वातश्लेष्मा ज्वरके बाद कानसे स्राव और बहरापन।

नाक।—सर्दी रोगमें स्वाद और घ्राण-शक्तिका लोप हो जाना (ऐनाक, ब्राई, साइक्लो, ग्रैफ, नेट्र-मूर, पल्स, सैङ्गिविन, सैरासिन, साइलि, ऐ-सल्फ)। नयी सर्दी—बार-बार प्रबल छींक ; वृद्धि—रातमें जब नाक रुक जाती है या कुछ जोरकी हवा लगनेपर या किसी तरहका भारी परिवर्त्तन होनेपर और एक दिनका अन्तर देकर ; घटना—पसीना निकलनेपर। नाकसे पपड़ी या गाढ़ा पीला या हरे रङ्गका श्लेष्मा-स्राव (कैलि-कार्ब, लैक-कैन, फास, पल्स, सिपि, साइलि, थूजा)। रातमें नाक बन्द हो जाती है (नक्स, सैम्बियु)। एक छेदसे कड़ी जमी हुई कीट निकलता है ; नाकके भीतरी प्रदेशमें जखम (अरम, कैडमि, सल्फ, कैलि-कार्ब, मर्क, पेट्रोल, सिपि), नाकके ऊपर, मुँहके चारों ओर और ओंठके ऊपर तर दादकी तरह उद्भेद या जखम पैदा हो जाते हैं (कैलि-बाई, सिपि, कास्टि, पल्स)। नासादण्डके ऊपरी भागमें और नाकके अगले भागसे पपड़ी निकला करती हैं और यह जगह छूनेपर दर्द मालूम होता है। नाक लाल और उसपर छोटे-छोटे सफेद दाने निकलते हैं। खा लेनेके बाद नाकसे श्लेष्माका स्राव बन्द हो जाता है।

मुखमण्डल।—चेहरा म्लान, रक्तहीन, आँखके चारों ओर नीलापन मालूम होता है और पलकें सब फूल जाती हैं (आर्जेण्ट-नाई, मर्क, ऐ-मूर, नेट्र-मूर, रस), मुखमण्डलमें जलन पैदा करनेवाला उत्ताप मालूम होता है और लाली आ जाती है (बेल, कैमो, लिलि-टि, स्पाइजि और दोनों गाल फूल उठते हैं—एपिस, आर्नि, अरम, जेल्स, कैमो, गुयायेक, मर्क, नेट्र-मूर, नक्स-वोम)। चेहरा शोथ-भरा मालूम होता है (लाइ)। ललाट-देशमें और ओंठके ऊपर पीले रङ्गके धब्बे पैदा हो जाते हैं (ऐनान्थि, कैडमि-सल्फ, लोरो, लाइ, ऐसि-नाई, सिपा)। हनुतलस्थ ग्रन्थियाँ सब रक्त-भरी हो जाती हैं और फूल उठती हैं। चेहरेमें सब जगह फोड़ेका दाग।

मुख-विवर ।—दाँतमें दर्द ; ऐसा दर्द मानो खींचा मार रहा है, विशेषकर मिष्टान्न या फल खा लेने बाद। रातमें दाँतमें दर्द, दबानेकी तरह दर्द, इसके साथ ही निचले ओंठ और मसूढ़ेमें सूजन, मुख-विवर और दोनों ओंठ हमेशा सूखे और निरस मालूम होते हैं। मुँहके भीतर बहुत ही जलन पैदा करनेवाले रसभरे दाने और जखम निकलना (कैलि-म्यूर, कैलि-फास)। जीभमें जलन मालूम होना, मानो फट गयी है, धूम्रपान कर लेनेपर दाँतका दर्द घटना (डायाडिमा, मर्क, नेट्र-सल्फ ; धूम्रपानसे बढ़ना—ब्रायो, कास्टि, क्लिमेट, इग्ने); जीभ सूखी और बोलनेसे चिढ़। जीभ बहुत भारी मालूम होनेके कारण तोतलाना। मुँहमें धातुके जंगका स्वाद। मुख-विवर और कण्ठ-सूखा, बार-बार पानी पीनेकी आकांक्षा। मुख-विवर और तालुमूलके दोनों गह्वरोंकी झिल्ली लाल हो जाती है और इन सब अंशोंकी त्वचा मानो क्षय हो जाती है या रगड़ खा जानेकी तरह मालूम होती है। बार-बार खाँसकर श्लेष्मा निकाल डालनेकी इच्छा (ऐल्यू, कैस्टोर, कास्टि, मर्क-प्रोटो-आयोड, मर्क-बिन, नेट्र-म्यूर, ऐ-नाई); रातमें गलेमें श्लेष्मा इकट्ठा हो जाता है और सबेरे खाँसनेपर निकल जाता है। कण्ठ और कण्ठनाली रुखड़ी, खाल उधड़ी हुई और सूखी मालूम होती है। कण्ठ और नाकके पिछले छेदमें श्लेष्मा जमा रहता है और लगातार बूंद-बूंदकर गलेमें टपका करता है। रोगी बार-बार खाँसकर कण्ठ साफ़ करनेकी चेष्टा करता है। निगलने और जम्हाई लेनेके समय कण्ठमें दर्द मालूम होता है। स्तन पीनेवाले बच्चेकी माताके मुँहका जखम ; बच्चोंकी जीभमें जखम ; दूध सहन न होनेवाले बच्चोंके मुँहका जखम।

पाकस्थली ।—लगातार प्यास ; सन्ध्याके भोजनके कई घण्टे बाद ठण्डा पानी पीनेकी दुर्दमनीय प्यास। दोपहरके पहले राक्षसी भूख लगती है (दिनके १० या ११ बजनेके समय—सल्फ ; ११ बजनेके समय—आयोड, लैके), पाकस्थली खाली मालूम होनेकी वजहसे (सल्फ) दूध अच्छा न मालूम होना ; दूध पीनेसे ही पतला पाखाना होने लगता है (दूधसे अरुचि—इथ्यू, ऐण्टि-टार्ट, आर्नि, ब्रायो, कैल्के, कार्बो-वे, सिना, गुयायेक, इग्ने, पल्स, रियुम, सिपि, साइलि, सल्फ, स्टैन ; दूध पीनेपर उदरामय—इथ्यू, कैल्के, निकोल, सल्फ, नक्स-मस, सिपि) ; आगसे गरम किया दूध पीनेपर पतले दस्त आना—नक्स-मस, सिपि ; ताजा दूध पीनेपर पतले दस्त आना—पोडो)।

शरीरकी अत्यन्त उत्तापावस्थामें ठण्डा पानी आदि पीनेकी वजहसे बीमारियाँ (ऐकोन)। भोजनके बाद रोगीको अवसाद-वायु हो जाती है या वह व्याधि-शंका प्रकट करता है, उसे अग्निमान्द्य हो जाता है, पेटमें भार मालूम होता है, खाली डकार आया करती है और पाकस्थलीमें अनिर्वचनीय गड़बड़ी और दर्द मालूम होता है तथा कलेजेमें धड़कन हुआ करती है। पाकाशयमें लगातार घोंटाई और मिचली। तीता पित्त वमन (आर्स, कैमो, कोना, कैलि-बाई, मर्क, मर्क-कोर, नेट्र-सल्फ, पेट्रोल, पल्स)। पाकस्थलीमें चबानेकी तरह दर्द और भार मालूम होना, विशेषकर दिनमें १० या ११ बजनेके समय ; भोजन करनेपर घटना। उदरके ऊपरी प्रदेशमें या ऊपरी पेटमें छूनेपर (बेल, सिङ्को, कैलि-कार्ब, लैके, लाई) और बोलनेपर दर्द मालूम होता है। घीकी पकी चीजें आदि खानेपर छातीमें जलन।

अन्त्राशय।—शूल-वेदना रोगमें पाकस्थलीमें कसावट या सङ्कोचन मालूम होना या ऐसा मालूम होना कि नाभि-प्रदेश जकड़ गया है और पेटमें कड़ापन। पेट फूला और कड़ा। आध्मान-वायुका सञ्चय होना और आँतोंमें आवाज़ और इस तरहसे फूल उठना मानो आँतोंमें जगह-जगह वाष्प अड़ा हुआ है। आध्मान वायु एक जगहसे दूसरी जगह हट जाता है और इसीलिये दर्द मालूम होता है। बाएँ कुक्षि-देश या कोखमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (ऐगार, आर्स, सियैनो, कैमो, चिनिन-सल्फ, ग्लोन, सिपि, ऐ-आक्साल) ; ठण्डा पानी पीनेपर बढ़ जाता है। बहुत दिनोंका या समय-समयपर पैदा होनेवाला यकृत-प्रदाह रोगमें प्लीहा और यकृत-प्रदेशमें नोकिली सलाई गड़नेकी तरह दर्द। पुट्ठे और बगलके बीचकी ग्रन्थि फूली हुई, अधिकांश स्थानोंमें दर्द मौजूद रहता है।

मलान्त्र और मल।—बहुत ज्यादा परिमाणमें खट्टा या सड़ी गन्ध-भरा बदबूदार वायु निकलता है ; कभी-कभी वायु निकलनेके समय मल निकल पड़ता है ; उदरामय—मल पतला या पानीकी तरह, एकाएक दुर्दमनीय वेग और कूथन या पीले रंगका पानीकी तरह और बड़े वेगसे निकलता है। दूध पीने या कुछ खा लेनेपर और सर्दी लगनेपर बढ़ना। कभी-कभी वृथा ही मल-वेग पैदा हो जाता है अर्थात् वेग होता है, पर पाखाना नहीं होता और कभी पतला पाखाना होता है ; पाचन-शक्तिकी गड़बड़ीकी वजहसे उदरामय।

पाखाना होनेके समय और पाखाना होनेके बाद मलद्वारमें जलन और छेदनेकी तरह यंत्रणा हुआ करती है (ऐलो, आर्स, कैन्थ, आइरिस, नेट्र-सल्फ, ए-पाई, ड्राम्बिड) ; कामोद्रेक तथा उसके साथ ही मलका कड़ापन ; मलद्वारमें खुजलाहट और क्रमि चलनेकी तरह मालूम होना ; मलके साथ ही पट्ट क्रमि निकलती है (पेट्रोल, फास, प्लैट, सैबाड, साइलि, स्टैन, सल्फ, टेरिब)।

पेशाब ।—दिन-रात जभी-तभी प्रवल वेगसे पेशाब होता है और प्रति बार थोड़ा या अधिक पेशाब होता है। रातमें अनजानमें पेशाब ; शय्यामें पेशाब कर देना (एपिस, आर्जेण्ट-नाई, आर्स, ऐपोसिन, वेल, ए-बेन, कास्टि, कोरैल, सिना, इक्विसेट, इयुपेट-पार्पि, फेर, क्रियो, नेट्र-मूर, ओपि, पल्स, सिपि, स्क्विला, साइलि, सल्फ)। पेशाब घोर पीले रंगका, बदबूदार, खट्टी गन्ध या घोड़ेके पेशाबकी तरह तेज़ गन्धवाला (ए-बेन, ए-नाई) ; श्लेष्मामय तली जमती है। पेशाब करनेके समय और बाद मूत्रनलीमें जलन होती है।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—बहुत अधिक कामोद्रेक, यहाँतक कि अस्वाभाविक उपायसे काम-परितृप्तिकी भी इच्छा होती है। लिङ्गमुण्डके मेढ्रत्वकका प्रदाह और सूजन (आर्स, कोरैल) और सहजमें ही इन सब अंशोंकी खाल उधड़ जाती है। दोनों अण्डकोष भारी और उनमें खींचनकी तरह दर्द, अण्डकोषमें इस तरहका दर्द होता है मानो चोट लग गयी है। पेशाब कर लेने और कड़ा पाखाना होनेपर मूत्राधार मुखशायिका ग्रन्थिसे स्राव होता है (ऐनाक, हिपोमेक्स, कैलि-कार्ब, लिसिन, सल्फ, पेशाब कर लेने और धूम्रपानसे बढ़ना—डैफनी ; कड़ा पाखाना होनेपर—ऐग्नस, ऐल्यू, ऐनाक, कैल्के, कोना, इग्ने, नेट्र-मूर, नक्स, फास, सेलिन, सिपि, साइलि ; पाखाना होनेके समय जोर देते ही मूत्राधार मुखशायिका ग्रन्थिसे स्राव—कार्बो-वेज, साइलि) ; उरु और मध्य अंशकी त्वचाका क्षय हो जाना (लाई, मर्क, नेट्र-मूर—इसे मध्यद्रोही कहते हैं)। लिङ्गमुण्डके ग्रीवा-देशमें अधिक श्लेष्मा संचय हो जाना या बहुत अधिक परिमाणमें पुष्पिका या सफेद रंगका मैल संचित हो जाता है [कास्टि, नेट्र-मूरर ; (पीवकी तरह) नक्स-वोम, सिपि, मर्क-कोर]।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—मानो जरायु आदि सभी बाहर निकल पड़ेंगे, तलपेटमें इसी ढंगका दबाव मालूम होता है (ऐगार, वेल, लिलि-टाई, मूरेक्स, सिपि)। आर्त्तव—असमयमें ही पैदा हो जाता है और बहुत दिनोंतक स्थायी ;

रजःस्वला होनेके पहले गर्दनके पिछले भागमें अकड़न (नक्स) और सरमें दर्द (बोवि, लाई, नेट्र-मूर), रजस्राव आरम्भ होनेके साथ प्रचण्ड फाड़ डालनेकी तरह यन्त्रणाजनक सर-दर्द और सवेरे पेट फूल जाया करता है। पतला पाखाना होनेपर घट जाता है; अन्धड़-पानीके समय बढ़ता है। प्रदर—स्राव गाढ़ा पीला (आर्स, कैमो, हाइड्रैस्ट, माइरिका-सेरिफ, सिपि) और सड़ा बदबू-भरा (ऐ-कार्बोल, कैलि-आयोड, क्रियो, सोरिन, सिकेलि, सिपि); पेशाब करनेपर स्राव बन्द हो जाता है; बार-बार पेशाबका वेग और बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब हुआ करता है। भ्रूण-पिण्डका निकलना (आर्स, बेल, फेर, लाई, पल्स, सैबाइ, सिलि) और कृत्रिम गर्भ-निवारण (कोलो, पल्स; काल्पनिक—क्रोकस) करती है; जरायु-ग्रीवाकी गठनका विकार। योनि और दोनों उरुके बीचवाले स्थानकी त्वचा क्षय हो जाना। रमणके बाद योनिमें गया हुआ वीर्य निकल जानेके कारण रोगिनीमें बन्ध्यत्व पैदा हो जाता है; ऐसा अनुभव होता है मानो जरायुमें भ्रूण हिल रहा है (टैरेण्ट); प्रसवका दर्द क्षीण और बहुत ही यन्त्रणादायक। प्रसव-वेदनाके समय पसीना निकलना, रोगिनी उसके ऊपर मल देनेके लिये कहती है।

श्वासयन्त्र।—स्वर-भङ्ग और वक्षमें जखमकी तरह भाव, सर्दी, शीत-कातरता और कण्ठकी त्वचामें खरोंच या एक तरहकी तकलीफ़की वजहसे खाँसी। वक्षके न फैलनेकी वजहसे श्वासकृच्छ्रता और श्वासका छोटापन। प्रचण्ड सूखी खाँसी, गर्म घरमें प्रवेश करनेपर बढ़ना (ब्राई); खुसखुसी खाँसीके समय वक्षमें घड़घड़ शब्द होता है; कोष्ठमें वायु रहनेके कारण आँतोंमें गड़गड़ाहटकी आवाज होती है; कफ़ नमकीन, पीवकी तरह और हरी आभा लिये (कार्बो-वे, फेरम, लाई, पल्स, सिपि)। सर्दीकी वजहसे सूखी खाँसी (कक्कस, नेट्र-आर्स)। बहुत दिनोंतक स्थायी सर्दी, नाकसे सर्दीका स्राव और खाँसी; थोड़ी भी ठंडी हवा या शीत लगनेपर बढ़ जाया करती है, केवल पसीना होनेपर घट जाती है। साँस लेनेके समय वक्षमें खींचनका भाव। वक्षमें और वक्षके पार्श्व-भागमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (स्पाइजि, कैलि-कार्ब)। वक्षगह्वरके दाहिने पार्श्वमें जलन और जखम हो जानेका भाव; तरल श्लेष्मा-मिली खाँसी अथवा श्लेष्मा नहीं निकलता। दोनों अंसफलकोंके बीचमें ठण्डक मालूम होती है (मानो इस स्थानपर किसीने बरफकी तरह ठंडे हाथोंसे छू दिया है—सिपि; फेफड़ेके रोगमें—एमोन-मूर; मानो इस स्थानपर बरफ रखा हुआ है—ऐगार

सविराम ज्वरमें—पल्स ; मानो इस स्थानपर ठण्डी हवा लग रही है—कास्टि ; मानो अङ्गार छू गया है—लाई ; जलन मालूम होना—ग्लोन, फास)।

हृत्पिण्ड ।— हृद्प्रदेशमें आगकी आँच-जैसा शब्द (मानो चटक गया या फट गया) मालूम होना। हृद्स्पन्दन—भयानक और उद्वेग पैदा करनेवाला, सीढ़ी चढ़नेके समय और रातमें बाईं करवट सोनेपर (सीढ़ी चढ़नेके समय—आर्स, कैक्टस, क्रोक, आइरिस, नेट्र-म्यूर, ऐ-नाई, सल्फ, थूजा, अरम-म्यूर, कोका, कैलि-फास, लाइकोपस वर्जिन ; बाईं करवट सोनेपर—बैराई, कैक्ट, डैफनी, नेट्र-म्यूर, पल्स, टैबाक ; खाँसनेके समय बाईं करवट सोनेपर—पल्स ; रातमें बाईं करवट सोनेपर—फास) रोगीकी नींद खुल जाती है। हृद्स्पन्दनके साथ समूची पीठकी रीढ़में जलन और बेचैनी मालूम होना ; रोगी समझता है कि उसे हृद्-रोग हो गया है। वक्षगह्वरके बाएँ पार्श्वमें ठण्ड मालूम होना।

प्रत्यङ्ग आदि ।—गलेकी ग्रन्थियाँ सब फूल उठती हैं ; दबानेकी तरह दर्द पैदा करनेवाला गलगण्ड (अरम, कैल्के, कार्बो-ऐन, कार्बोन-सल्फ, फेरम-आयोड, ऐ-फ्लू, आयोड, लैके, लैपिस-ऐल, मर्क, प्रोटो, मर्क-बिन, नेट्र-सल्फ, साइलि, स्पञ्जि, टियुबर्क्यूलिन)। गलेकी अकड़न (बेल, लैक-नैन, लाई, लैके)। माथा हिलानेपर गलेकी कशेरुका फूटती है या कटकट करती है (चेलिडो, निकोल)। बैठनेवाली अवस्थामें नितम्बदेशमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द होता है। पीठ चुनचुनाती है या उसके ऊपर चींटी रेंगनेकी तरह सुरसुरी मालूम होती है (ऐ-फास)। दोनों बाँह बहुत क्षीण मालूम होते हैं और कन्धा, बाँह और कोहनीमें वातका दर्द होता है। हाथसे कोई चीज़ पकड़नेपर बाँह या अंगुलियाँ सब नाचती या काँपा करती हैं। हाथमें छेदनेकी तरह दर्द, सवेरे हाथ काँपना। अंगुलियोंका संकोचन। तीसरे पहर हाथ फूल उठता है। मसा छूनेपर दर्द होता है। हाथकी पीठपर खुजलानेवाले दाने ; तलहत्थी रूखड़ी और उससे छाल उधड़ जाती है। रमणियोंके वाधक रोगमें दाहिने नितम्बका फटना और चोट लग जानेकी तरह दर्द। चलने और बैठनेके समय पैर और दोनों चरण अकड़े और भारी मालूम होते हैं। जानुके गासेमें पेशिक संकोचनकी वजहसे ऐसा मालूम होता है, मानो ऐंठन पैदा हो गयी है, पैरकी पोटलीमें ऐंठन होती है (ऐको, ऐल्य , कैडमी-सल्फ, कैमो, कोना,

क्यूप्रम-मेट, नैफ़िल, ग्रैफ, नेट्र-मूर, नक्स-वोम, प्लम्ब, सिकेलि, साइलि, सल्फ, वेरेट-विर ; दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे रहें तो कैम्फर २०० क्रम—डाक्टर क्लार्क)। दोनों पैरोंका निचला अंश फूला, प्रदाहयुक्त, लाल और जखम-भरा हो जाया करता है। दोनों पैरोंमें छेदनेकी तरह दर्द और ऐंठन (बेल, कास्टि, जैट्रोफा, कोलो, क्यूप्रम, लैक-कैन, वेरेट-विर)। पैर और तलवा फूला और चलने या पैर जमीनपर लगनेके समय उसमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द (एरम-ट्राई, बार्बे, इग्ने)। गुल्फ (एँड़ी) सहजमें ही सन्धि-च्युत हो जाती है या मोच खा जाती है ; गुल्फ इतना क्षीण रहता है कि आप-से-आप घूम जाता है ; गुल्फपर भार देकर चलने या खड़े होनेपर पैर घूम जाते हैं (लैक-डिफ्लो, ऐग्नस, कार्बोन-ऐन, मिडोरिन, नेट्र-मूर, सिपि, लिसिन ; बच्चोंका चलना सीखनेके समय—कार्बो-ऐन, नेट्रम-मूर)। गुल्फकी तलीके ऊपरकी त्वचाका क्षय होने (सिपा) की वजहसे अथवा फैलनेवाले छालेयुक्त जखम। पैरकी अंगुलीमें खुजली और त्वचाका क्षय होना, पैरके अंगूठेका फूलना, फाड़नेकी तरह दर्द और त्वचाके क्षय हो जानेकी वजहसे नींदमें व्याघात। पैरकी अंगुलीके अगले भागमें छाला पड़ना—ऐसा मालूम होता है, मानो जल जानेके कारण छाला पड़ गया है। कमर या गट्टेके भीतर छेदने या डङ्क मारनेकी तरह दर्द। दोनों पैर बहुत ठण्डे।

सार्वाङ्गिक।—थोड़ा भी परिश्रम करनेपर बहुत थक जाता है। पेशी और हाथ-पैर आदि फड़का करते हैं (ऐगार)। हाथ, जानुका गासा, गला वगैरहके अंशोंमें पेशिक संकोचन अनुभव होना। अधिकांश लक्षण बैठनेके समय पैदा होते हैं और शरीर या अङ्ग आदि हिलाने, दबाने और मलनेपर गायब हो जाते हैं। चेहरा म्लान, फैली हुई आँखकी पुतली और घोर लाल रङ्गके पेशाबके साथ दुबलापन ; पेशाबके साथ श्लेष्माका स्राव। रातमें लिङ्गमें कड़ापन और शुक्रक्षय (कोना, डिजिटेलिन, सेलिन)। बदबूदार कफ़, पीब-भरे दाने निकलना। इन्द्रलुप्त या खल्वाट हो जाना, थोड़ा भी परिश्रम करनेपर पसीना निकलने लगना ; सन्ध्याके समय शारीरिक चञ्चलता और बेचैनी बहुत अधिक मालूम होना। सीधे होकर बैठकर कोई काम करना चाहनेपर बहुत तकलीफ़ मालूम होती हैं ; बाईं करवट सोनेपर दर्द मालूम होता है। दो क़दम चलते ही रोगी सुस्त हो पड़ता है। निर्मल वायु लगना अच्छा नहीं मालूम होता। सहजमें ही सर्दी हो जाती है।

त्वचा।—रोगवाले अंशका फूलना और प्रादाहिक लालीसे घिरा जखम। पीव पैदा होनेवाला दाद; त्वचाके नीचे चींटी रेंगनेकी तरह सुरसुरी मालूम होना; शरीरमें हर जगह ऐसा मालूम होना मानो कीड़े चल रहे हैं। खुजली, मसे जखममें परिणत हो जाते हैं। शरीरकी त्वचा सूखी, रुखड़ी और गासे-भरी या फटी-फटी। शरीरकी त्वचा सूखी, पर थोड़ा भी परिश्रम करनेपर शरीर पसीनेसे तर हो जाता है। जखमवाली जगहमें छेदने, जलने और डङ्क मारनेकी तरह दर्द।

शीत, उत्ताप और पसीना।—दिनभर रोगीको जाड़ा लगा करता है और उसका शरीर ठण्डा मालूम होता है, विशेषकर दोपहरके पहले। हाथ-पैर ठण्डे, परन्तु माथा गर्म या हाथ-पैर गर्म और दोनों गाल ठण्डे। सन्ध्याके समय थोड़ा जाड़ा मालूम होता है और माथेमें जड़ता मालूम होती है, इसके बाद ही उत्ताप और नींद। सारे शरीरमें पसीना, पर उत्ताप मालूम होता है। नाकके पाससे रह-रहकर उत्ताप पैदा होकर पीठके नीचेकी ओर चला जाता है; रोगी उत्तेजित होनेका भाव प्रकट करता है और शरीरका ओढ़ना नहीं उतारना चाहता (नक्स-वोम)। थोड़ा भी परिश्रम करनेपर पसीना निकला करता है और मानसिक उद्वेग पैदा हो जाता है। ललाटके जिस अंशपर टोपी लगी रहती है, वहाँ जलन पैदा करनेवाला गर्म पसीना निकलता है। रातमें कभी पसीना होता है और कभी-कभी शरीरकी त्वचा सूख जाती है। सवेरे पसीना होना। मानसिक उद्वेगकी वजहसे ठण्डा पसीना।

निद्रा।—दिनमें औंघाई; रातके पिछले पहरमें सो जाता है। सवेरा होते-न-होते नींद खुल जाती है; नींदमें चौंक उठता है और हाथ-पैर फड़का करते हैं (जिङ्कम); जीवन्त सपने, लिङ्गमें बहुत कड़ापन और कामोद्दीपन; निद्रित अवस्थामें बेचैनी और रह-रहकर शरीरके चारों ओर खून दौड़ा करता है और गर्मी मालूम होती है। निद्रितावस्थामें कलेजा धड़कना और कण्ठरोध।

वृद्धि।—धूपमें, उत्तापसे या गैसकी रोशनीमें काम करनेपर, शारीरिक या मानसिक परिश्रमसे, गाना सुननेपर, शरीरमें ठण्डी हवा लगनेपर, कपड़ा बदलनेपर, पानीमें भींजनेपर, ठण्डा पानी पीनेपर, तर हवा लगनेपर, जाड़ा-गर्मीके परिवर्त्तनसे, अन्धड़-पानीके दिनोंमें, विश्रामसे, बाईं करवट सोनेपर, बैठनेकी अवस्थामें दिनके १० बजेसे ११ बजनेके समय, एक दिनका अन्तर देकर,

पूर्णिमाके दिन, दूध पीनेपर, साग-सब्जी खानेपर और शरीरकी गर्म अवस्थामें ठण्डा पानी पी लेनेपर।

उपशम।—भोजनके बाद (पाकस्थलीका शून्य भाव), रगड़ने, दबाने या मलनेपर, खुजलानेपर और हाथसे नाक और कानमें अंगुली डालकर खुजलानेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—कैम्फोरा, नाइट्रि-स्पिरिटस-डलसिस। अनुपूरक—सिपिया।

अनुकूल।—सम्बन्ध।—कैल्के, नक्स, लाइकोपोड, फास, पल्स, सिपि, साइलि, सल्फ।

सदृश।—आर्स, कार्बो-वेज, लाई, नेट्र-म्यू, नेट्र-स (शराबके फेनकी तरह वमनमें अधिक फायदेमन्द है। जीभ रक्त-शून्य, मैलो और चिकनी—फास, साइलि। अवसादवायु-ग्रस्तताके सम्बन्धमें—नेट्र-मूर, नक्स-वोम। सङ्गीत सुननेपर बढ़ना—सैबाई, ऐकोन, थूजा। गर्मी के उत्तापमें तकलीफ़ मालूम होती है—ऐण्टि-क्रूड। धूप या गैसकी रोशनीमें सर-दर्द—ग्लोन, लैके।

तुलनीय।—नेट्र-सल्फ (वमनमें); नेट्र-मूर, नक्स (व्याधि-शङ्का); सिपिया (परिवारके मनुष्य और स्त्रीके प्रति अनास्था); पिकरिक-ऐसिड (जननेन्द्रिय); ब्रायो (खाँसी); कैल्केरिया (निचला पेट ठण्डा); साइलि (वायु-प्रवाह असह्य); ग्लोनोइन (सूर्यकी गर्मीमें सर-दर्द); ऐण्टिम-क्रूड (कमजोरी); सूर्यके उत्तापमें कमजोरी; दिनमें सर्दीका स्राव, रातमें बन्द—नक्स-वोम; (नीचे आकर्षण मालूम होना) लिलियम, मूरेक्स; नाकमें अंगुली घुसाना—सिना।

शक्ति।—तृतीय दशमिकसे १००० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—३० दिन।

नेट्रम-हाइपोक्लोरोसम या क्लोरेटम

(NATRUM HYPOCHLOROSUM OR CHLORATUM)

दूसरा नाम ।—लाइकर सोडि क्लोरेट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसका तरल द्रव तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— अण्डनालीका स्राव ; मृत्याण्ड ; मूर्च्छावायु या गुल्मवायु ; अश्मरी या पथरी ; रक्तमूत्र ; सर-दर्द ; स्तनके नीचे दर्द ; जरायुसे खूनका स्राव ; मूत्रग्रन्थिका प्रदाह ; डिम्बाधारकी बीमारियाँ ; शीताद ; विदाही या त्वचाकी क्षय करनेवाला उद्भेद ; विषादसे जरायुके भीतरवाले विकार ; जीभ फूलना और सिकुड़ना ; दाँतमें दर्द ; जरायुमें जल-संचय ; सरमें चक्कर आना ।

उपयोगिता और आभास ।—इस दवाके लिये हमलोग इङ्गलैण्डके स्वनामधन्य भेषज-विद् डा० आर० टी० कूपरके बहुत ऋणी हैं। उनके द्वारा ही इसकी स्वस्थ शरीरपर परीक्षा हुई है। जरायुके नाना प्रकारके रोगमें और विकृत अवस्थामें यह बहुत फायदा दिखाया करता है। जरायु इसका एक प्रधान लक्षण है अर्थात् जब उसमें बहुत अधिक परिमाणमें जलसंचय होनेकी वजहसे जरायु अपने स्थानसे हटकर निम्नगामी हो जाता हो और इसी वजहसे स्वास्थ्यमें नाना प्रकारका विकार पैदा हो जाता है, उस समय सिपिया, लिलियम-टाइग्रनम, ऐक्टिया-रेसिमोसा, नेट्रम-कार्बोनिकम, ऐलेट्रिस-फेरिनोमा और नेट्रम-म्यूरियैटिकमकी तरह यह भी एक उत्कृष्ट दवा है। क्षीण देह, शिथिल तन्तु और आलसी स्वाभावकी स्त्रियोंके लिये यह विशेष उपयोगी है। दुबलापन, स्नायविक अवसाद और कमजोरी वगैरह रजोविकारसे पैदा हुई बीमारियोंके लक्षण इसके विषयीभूत हैं। गिर जानेके उपक्रमके साथ सरमें चक्कर आना, ललाटमें दर्द, जरायुका नीचेकी ओर खिंचना, ऐसा अनुभव होना कि करोटी या माथेकी खोल उड़ जायगी ; जरायु-विकृतिके साथ ललाट-देशके एक प्रान्तसे दूसरे प्रान्ततक या दोनों आँखोंके बीचवाले स्थानमें या मूर्द्धदेशमें दर्द, मस्तिष्क और प्रत्यङ्ग आदि पक्षाघात रोगसे ग्रसित-जैसे मालूम होना।

हाथकी सब अंगुलियोंका सुन्न हो जाना, दाँतके दागसे भरी बड़ी जीभ, बहुत आध्मान, भोजनके बाद पाकाशयमें भार और सूजन मालूम होना, बहुत पेट फूलनेकी वजहसे श्वासरोग वगैरह रक्तकी अधिकताके लक्षण "नेट्रम-क्लोरेटम" के प्रधान निर्णायक लक्षण हैं (फैरिङ्गटन); बच्चोंकी जीभमें और मुँहके जखममें भी अवस्था विशेषमें यह ज्यादा फायदा किया करता है। रोगिनी सामान्य उत्ताप लग जानेपर भी सुस्त हो पड़ती है।

लक्षणावली

मन।—मानसिक अस्वाच्छन्द्य। निद्रित अवस्थामें कभी हँसती है, कभी रोती है और कभी-कभी बका करती है; अपने पति या बगलके मनुष्यको सोने नहीं देती। बहुत ही दुःखित भाव; कभी-कभी दिनभर रोया करती है (साइक्लूप्र, ग्रैफ, लिलि-टाई, नेट्र-मूर, पल्स, सिपि)।

मस्तक।—सरमें ऐसा चक्कर आता है, कि गिर जायगा (ग्लोन, जेल, बिलकुल खड़ा नहीं रहा जाना—सल्फ, जिङ्कम); ललाट देशमें दर्द और ऐसा अनुभव होना मानो माथा तैर रहा है, मानो खोपड़ी या माथेका शीर्षदेश उड़ जायगा (ऐक्टि-रेस, बैप्टी, कोबाल्ट, कैमो, इयुका-फिल; वृद्धि—ऊपरकी ओर देखनेपर); जरायुभ्रंश रोगमें ललाटके एक छोरसे दूसरे छोरतक आँखके भीतर या मूर्द्धादेशमें दर्द मालूम होता है। मस्तिष्क और हाथ-पैर आदिमें मानो पक्षाघात हो गया है और हाथकी अंगुलियाँ सुन्न मालूम होती हैं; कभी-कभी मूर्च्छा भी आ जाना चाहती है (मस्तिष्क रोगमें दोनों बाहुओंमें पक्षाघात हो गया है, ऐसा मालूम होना—जिङ्कम)। ऐसा अनुभव होना कि माथेके सब अस्थिफलक मानो एक-पर-एक आ पड़े हैं (प्रकृत होनेपर—ओपि)। रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, कि वह सामनेकी ओर गिर जायगी (इलैप्स, ग्रैफ, मैङ्गेन, नेट्र-मूर, फैलैन, पोडोफिल, साइलिसिया)। कानमें धमक-सी हुआ करता है; करवट बदलकर सोनेपर यह बढ़ जाती है; सोनेक आशामें माथेका पिछला अंश तकियेपर रख देता है। एकाएक शूल बेधनेकी तरह दर्द पैदा होकर ललाटके एक प्रान्तसे दूसरे प्रान्ततक दौड़ जाता है। मध्याह्न भोजनके कुछ ही बाद बाएँ ललाटमें टपककी तरह दर्द पैदा हो जाता है; तीसरे पहर चाय पीनेपर घटना।

कान और नाक।—निगलनेके समय दाहिने कानके नीचे दर्द मालूम होता है (निगलनेके समय कानतक दर्द—एइलैन्थस-ग्लोन), बहुत दर्द और माथेके इस पार्श्वमें सूजन हो जाया करती है ; कुछ देर बाद यह सूजन बदलकर एक फोड़ेमें परिणत हो जाती है और फट जाती है। उससे उग्र-वीर्य पीव निकला करता है। सर्दीके बोखारमें नाकसे बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकला करता है ; गालके भीतर जखम पैदा हो जाता है (ऐसिड-नाई, फाइटो ; जीभके अगले भागमें—लैके ; जीभकी सीयनके पास—लाइकोपोड), बाएँ पार्श्वसे आरम्भ होता है। नाकसे खूनका स्राव ; दिन-रात काले रंगका थक्का-थक्का खून निकला करता है (आर्जेण्ट-नाई, कैमो, फेरम, फेरम-म्यूर, लिसिन, नेट्रम-म्यूर, ऐ-नाई, पल्स, रस)।

मुखमण्डल।—क्षय हुए या कीड़ा लगे दाँतसे तेज़ दर्द, मुँहके बाएँ पार्श्वमें चला जाता है—सवेरे और रातमें ; ऊपरके मसूढ़ेमें फोड़े पैदा होते हैं। चेहरेके बाएँ पार्श्वका स्नायुशूल, निचले हनुसे दर्द ऊपरकी ओर जाता है और आँख तथा नाकके ऊपरसे होकर ललाटपर आक्रमण करता है।

मुख-विवर।—सब दाँतोंकी जड़ें शिथिल हो जाती हैं और दाँत हिला करते हैं, निचले हनुका दाहिना पार्श्व फूला हुआ और जखम-भरा और जीभ फूल उठती है ; चबा नहीं सकता ; रातमें यंत्रणा बढ़ जाती है, दाँत सब टूट जानेवाले। जीभपर दाँतके दाग रहते हैं (चेलिडो, मर्क, पोडो, रस-टक्स), दोनों पार्श्व सूखे और कुंचित ; मुँहमें फिटकिरीका स्वाद ; दिन-भर मुँहका स्वाद कड़वा रहता है। मुँहका जखम,—गालके भीतर (ऐ-नाई, फाइटो)। गलेका जखम और निगलनेमें कष्ट अर्थात् कोई पदार्थ निगलनेके समय बहुत तकलीफ़ होती है।

पाक और अन्त्राशय।—सोनेपर वमन पैदा हो जाता है। उदरके ऊपरी प्रदेशसे मानो एक भारी चीज़ उदरके भीतर गिर पड़ी—ऐसा मालूम होता है और साथ ही मूर्द्धा-देशमें दर्द। उदरका निचला अंश फूल उठता है और यह आध्मान वायु वक्षतक उठकर श्वास-कृच्छ्रता पैदा कर देता है भोजन कर लेने बाद पेटमें बहुत अधिक परिमाणमें आध्मान्वायु इकट्ठा होकर श्वासकी तकलीफको बढ़ा देता है ; खाने-पीने बाद पेटका ऊपरी भाग फूल जाता है और ऐसा मालूम होता है मानो खूब कसा हुआ है, कमरका कपड़ा ढीला

कर देनेपर भी आराम नहीं मिलता और रोगीको तकलीफ मालूम होती है। कमरके बाएँ पार्श्वमें दर्दकी वजहसे रोगी सीधा होकर बैठ नहीं सकता। दाहिने नितम्बमें दर्दकी वजहसे बायें उरुको टेढ़ा नहीं कर सकता। सन्ध्याके समय ऐसी तकलीफ होती है, मानो मलद्वारको छुरीसे काट रहा है—थोड़ी रात जानेपर फिर नहीं रहता। दो या तीन दिनोंतक कब्जियत रहनेके बाद एक दिन बड़ा, कड़ा और बदबूदार मल निकलता है। जबतक पाखाना नहीं हो जाता, तबतक रोगीको इतनी सुस्ती मालूम होती है, कि वह समझता है, कि मैं मर जाऊँगा। एकाएक वेगसे मल निकल जानेपर सब तकलीफें घट जाती हैं।

पेशाब।—फैलनेवाला मसानेका प्रदाह या पेशाब बहुत थोड़ा, धुमैला या गदला, इसके बाद काले रंगका पेशाबमें खून, लार और मूत्रनालीकी छाल मिली रहती है, वमन, पतला पाखाना और सरमें दर्द पैदा हो जाता है और अन्तमें मेह-रोग पैदा हो जाया करता है। पेशाबके समय भयानक जलन, मानो आग छू गयी हैं और योनिमें खुजली तथा उत्तेजना। पेशाबकी तली लाल बालू-मिली। सफेद रंगकी पथरी या अश्मरी निकलती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तव-स्राव; थक्का-थक्का और काले रंगका (ऐमोन-मूर, बेल, काक्यु, साइक्लो, इग्ने, लैके, मैग-मूर, नक्स-वोम, प्लैट, पल्स, सैङ्गिविन, सिकेलि, स्ट्रैमोन, आम्ब्रि); ऋतुके समय कमजोरी (कैलि-कार्ब, नक्स-मस, फास, युरेन-नाई) और दोनों आखें काले घेरेसे घिरीं। जरायुका नीचेकी ओर खिंचना; जरायुमें खूनका अधिक संचय होना, उसका आकार बढ़ा हुआ (अरम-म्यू, बेल, कैलि-आयोड, लैके, नेट्र-कार्ब, प्लैट, सैबाई, सिपि आस्टिलेगो) और उसमें स्पर्शका सहन न होना या बहुत अधिक दर्द रहना (हेलोन, लैप्पा, लिसिन, मूरेक्स); जरायुसे लगातार खूनका स्राव (सिङ्को, फेर, इपिक, प्लैट, फास, थ्लैस्पि-वार्सा, हैमा, सिनामिन, इरिजिरन, पल्स); वृद्धि—शारीरिक परिश्रम करते ही। ऐसा मालूम होता है कि जरायु कभी संकुचित होता है और कभी फैलता है (कोई मानो हाथसे कसकर पकड़ता है और फिर छोड़ देता है—सिपि)। उदरका निचला अंश मानो फूलकर ऊपर उठ जाता है और वक्षपर दबाव डालकर श्वास-कृच्छ्रता पैदा कर देता है वृद्धि—भोजन कर लेने बाद। मानो वक्ष-गह्वरके तलदेशसे एक भारी चीज़ उदरमें उतर आती है और मूर्द्धदेशमें दर्द हुआ करता ।है आर्त्तव-

स्रावके समय बायाँ डिम्बाधार प्रदेश फूल उठता है (ऐट्रोप, सल्फ़)। बैठनेपर रोगिनीको ऐसा मालूम होता है मानो जरायुके ऊपर धक्का दे रहा है (फ़ेरम-आयोडेटम)। योनिमें अकौता (कैन्थ, क्रियो, लाई, फ़ेरम-आयोड, ऐ-नाई, कोना)। वक्षमें सुस्ती मालूम होना। उत्ताप और ग्रीष्म-ऋतुमें बहुत सुस्त हो पड़ती है (ऐण्टि-क्रूड, नैट्र-कार्ब, नैट्र-मूर, सिपि)। प्रदर-स्रावके समय कमरमें दर्द।

श्वास-यन्त्र ।—दिनभर तंग करनेवाली खाँसी आती है, पर किसी तरहका श्लेष्मा नहीं निकलता। वक्षमें कसावटका भाव और श्वास-कृच्छ्रता। बायें वक्ष या बगलके नीचे और स्तनमें दर्द, सोनेपर दर्द बढ़ जाता है और शरीर मानो चक्कर खाने लगता है ; चलते-चलते वाध्य होकर बैठ जाना पड़ता है। स्तनके निचले अंशमें दर्द (ऐक्टि-रेस, कोलोफिल, रैनाना-बल्बो, रैफ़ि, रैटान, सैम्बाल, ड्रायेस्ट्र)। हृत्पिण्डके निचले अंशमें श्वास-रोध करनेवाला दर्द।

प्रत्यङ्ग आदि ।—सवेरे सोकर उठनेपर कमरमें दर्द। रोज़ सवेरे दोनों हाथ फूल जाया करते हैं। किसी दिवस सवेरे दाहिना हाथ, तो किसी दिन बायाँ हाथ फूला करता है। अंगुलहाड़ा।

वृद्धि ।—पाखाना होनेके पहले, भोजनके बाद, करवट सोनेपर, प्रत्येक बार आर्त्तव-स्रावके पहले, रातमें, किसी तरहका परिश्रम करनेपर, सवेरे नींद खुलनेपर और सोने बाद।

तुलनीय ।—जरायुका नीचेकी ओर खिंचना इत्यादि—सिपिया। जरायुमें रक्तकी अधिकता—अरम-मूरर-नैट्रोनेटम इत्यादि।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक ।—सिपिया।

प्रतिविष या दोषघ्न ।—गुयायेक, पल्स (आमवात-सम्बन्धी पेशीका दर्द)।

सदृश ।—नैट्रम-कार्ब, नै-मूर, कैलि-क्लोर, सिपि, थूस्पि, लिलि-टाई, फ़ेरम-आयोड, लाई, अरम-मूर-नैट, प्लैट, सिङ्को, सिनैमन।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

नेट्रम आयोडेटम

(NATRUM IODATUM)

दूसरा नाम।—आयोडाइड आव सोडियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—तरल आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—फ्रांसके चिकित्सकगण हृदयंत्रकी बीमारीमें इसका बहुत व्यवहार किया करते हैं।

होमियोपैथी मतसे यह वात-व्याधि, हृद्प्रदाह, हृद्शूल, श्वासकष्ट, पुराना श्वासनली प्रदाह, पुरानी सर्दी, वात, सरमें चक्कर आना और उपदंश रोगकी तृतीय अवस्थामें व्यवहृत होता है।

शक्ति।—५—१० ग्रेन मात्रामें नित्य तीन बार।

नेट्रम लैक्टिकम

(NATRUM LACTICUM)

दूसरा नाम।—सोडियम—लैकटेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—तरल आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—वात और ग्रन्थिवात, ग्रन्थियोंमें वातकी वजहसे खड़िया मिट्टी पैदा हो जानेकी तरह पदार्थ सञ्चय और बहुमूत्रके साथ वातके लक्षणमें व्यवहार होता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—लैक्टि-ऐसि, लाइको, कैलि-कार्ब।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

नेट्रम म्यूरियेटिकम

(NATRUM MURIATICUM)

दूसरा नाम ।—सोडियम क्लोराइड (नमक)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और द्रव या तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—रक्तकी कमी ; गुटिका या ग्रन्थिकी बीमारी ; मुँहका जखम ; दुबलापन ; मस्तिष्कको जड़ता ; सर्दी ; ताण्डव ; कब्जियत ; खाँसी ; त्वचाका फटना ; कमजोरी ; सुस्ती ; बहुमूत्र ; शोथ ; अजीर्ण ; मृगी ; विसर्प ; आँखकी बीमारी ; आँखकी थकन ; मुखावयवकी विकृति ; प्रमेह ; जीभ और स्वरनलीका पक्षाघात ; गलगण्ड ; वात ; सर-दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; आधा देखना ; आँत उतरना ; दादकी तरह उद्भेद ; हिचकी ; त्वचाका रङ्ग सफेद मोमकी तरह हो जाना ; सूजन या शोथ ; ज्वरके कारण ओठोंपर छाले ; व्याधि-शङ्का ; सविराम ज्वर ; श्वेत-प्रदर ; ओंठमें उद्भेद ; फेफड़ेकी सूजन ; आर्तवमें विकार ; चेहरेका प्रदाह ; आमवात ; जीभके नीचे अर्बुद ; नकली मैथुनका दुष्परिणाम ; सपनेमें घूमना ; बोलीकी जड़ता ; वीर्यपात ; मेरुदण्डकी उत्तेजना ; प्लीहाका बढ़ना ; बन्ध्यत्व ; लू लग जाना ; स्वादका बिगड़ना ; जीभमें छाले या सफेद लेप ; जखम ; शिराओंका फूलना ; योनिका आक्षेप ; सरमें चक्कर आना ; मसे ; क्रूप खाँसी ; कृमिके कारण जम्हाई इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—रक्तहीनता या कमी, हरित या मृत्पाण्डु रोग, मलेरियाके कारण बहुत दिनोंका स्वास्थ्य विकार और बीच-बीचमें उसकी वजहसे नाना प्रकारकी बीमारियाँ होना और उनमें दोनों आँखोंकी पेशीके रोगमें तथा पढ़नेवाले बालक-बालिकाओंके सर-दर्दकी बीमारीमें यह विशेष उपकार किया करता है। नीचे लिखे कई प्रधान निर्णायक लक्षणोंकी आलोचना करनेपर इसका लाभ विशेष रूपसे मालूम हो जायगा :—(१) विमर्ष, बिना कारण ही हमेशा रोते रहना ; सान्त्वना देनेपर यह दुःख और भी उबल पड़ता है। (२) श्लेष्मा-प्रधान धातु—सामान्य ठण्डी हवा लगनेपर रोगीको सर्दी आदि हो जाया करती है। (३) अच्छी तरह और रुचि-पूर्वक

और पेट भरकर खाता-पीता है, पर दिनोंदिन दुबला होता जाता है। (४) नमक और नमकीन पदार्थ आदि खानेका बहुत आग्रह प्रकट करता है, रोटीसे अरुचि बनी रहती है। (५) बच्चोंका, विशेषकर ग्रीष्मातिसारग्रस्त बच्चोंका, कण्ठ, ग्रीवा, शरीरके अन्यान्य अंशोंकी अपेक्षा अधिक पतले हो जाते हैं। (६) कुनख-रोग-प्रवणता—नाकके चारों ओरकी त्वचा सूखी और फटी। (७) जीभमें जलन और सुरसुरी मालूम होना और बीच-बीचमें लाल अंशके चारों ओर मोटे सफेद लेपसे ढकी दिखाई देती है; ऐसा अनुभव होता है, कि जीभपर एक टुकड़ा केश लगा हुआ है। (८) दोनों आँखोंमें जख्म और दर्द मालूम होता है; आँखसे बहुत ज्यादा जलन पैदा करनेवाला कषाय या त्वचाको क्षय करनेवाला पानी गिरता है; खाँसनेपर दोनों आँखोंमें पानी भर आता है। (९) सरमें दर्द, मानो माथा अनगिनती छोटी हथौड़ियोंसे ठोंका जा रहा है, विशेषकर सविराम ज्वरमें। (१०) सवेरेसे सन्ध्यातक सर-दर्द; सूर्योदयके समय यह सर-दर्द आरम्भ होता है और सूर्यास्तके समय घट जाया करता है; बाएँ पार्श्वका प्रचण्ड दर्द; ऐसा अनुभव होना, मानो माथा फट जायगा, इसके साथ ही मिचली और वमन। (११) मलमें कड़ापनके साथ मलद्वारमें संकोचन मालूम होना। फटा हुआ मलद्वार; कड़ा मल चूर-चूर होकर निकलता है। (१२) हँसनेपर, खाँसनेपर या चलनेके समय अनजानमें पेशाब निकल जाता है। (१३) शीतके बाद उत्ताप पैदा होता है या जाड़ा लगकर बोखार आता है और भयानक प्यास मालूम होती है। (१४) ओंठके ऊपर और चेहरेके चारों ओर मोतीकी तरह ज्वरके दाने निकलते हैं। (१५) कमरमें दर्द; ऐसा मालूम होता है, कि खूब दबा देनेपर आराम हो जायगा। (१६) आर्त्तव—स्राव अनियमित और बहुत ज्यादा, इसके साथ ही जरायु आदिका नीचेकी ओर खींचना, विशेषकर सवेरे। (१७) प्रदर—स्राव कषाय, पानीकी तरह और उत्तेजना पैदा करनेवाला। (१८) समूचे शरीरमें पित्ती या आमवात निकल आता है, विशेषकर बहुत अधिक व्यायाम आदि परिश्रम करनेके बाद; चमकीला लाल और जलन पैदा करनेवाला अकौता; माथेके केशसे ढँके अंशके सिरेपर, दोनों कानोंके पीछे और हाथ-पैरोंके गासोंमें उद्भेद पैदा हो जाना। (१९) कलेजा धड़कता है और बहुत सुस्ती मालूम होती है; सोनेपर बढ़ना। (२०) हृत्पिण्डकी प्रबल धड़कन समूची देहमें मालूम होती है या समूची देह काँपा करती है।

(२१) स्तन पीनेवाले बच्चोंके माथेको छूते ही केश उड़ जाते हैं ; चेहरा तेलहा और चमकता हुआ। (२२) बहुत क्रोध पैदा हो जाना, खट्टी चीज़ या रोटी खाना, क्विनाइन सेवन, बहुत अधिक नमकका व्यवहार करना, कास्टिक आदिके द्वारा जला, शोक, मर्म-पीड़ा, भीति, विरक्ति और हृदयमें छिपे हुए क्रोध आदिकी वजहसे बीमारियाँ।

लक्षणावली

मन ।—क्रोधी स्वभाव ; बच्चेको कोई बात कहते ही वह क्रोधित हो जाता है ; सामान्य कारणसे या बिना किसी कारणके ही रोया करता है, सामान्य विषयमें भी महान क्रोध प्रकट करता है, विशेषकर सान्त्वना देनेकी चेष्टा करनेपर। असावधान और व्यस्त ; स्नायविक दुर्बलताकी वजहसे हाथसे चीजें आदि गिर जाती हैं। बहुत ही रोना स्वभाव, बिना कारण ही रोया करता है ; सान्त्वना देनेपर शोक और भी उछल पड़ता है और यन्त्रणा बढ़ जाती है। सोचनेकी शक्ति नहीं रहती ; अन्यमनस्कता ; स्मरण-शक्ति क्षीण। किंकर्त्तव्यविमूढ़, क्या करे यह स्थिर नहीं कर सकता। अनमना और सम्हालकर बात नहीं बोल सकता। सान्त्वना देनेपर क्रोधकी सीमा नहीं रहती। बहुत जल्दबाज, मानसिक उद्वेग और छातीमें धड़कन तथा रोगी बीमार करनेवाले गत कार्योंके सम्बन्धमें बातचीत करना पसन्द करता है। अवसाद-वायुग्रस्तता या व्याधिशङ्का और जीवन भार मालूम होना (ऐण्टि-क्रूड, अरम, सिङ्को, लैक-डिफ्लो, फास)। सभी विषयोंमें ताच्छिल्य और घृणा प्रकट करता है ; बहुत अधिक प्रतिशोध-प्रिय (ऐसिड-नाई)। रोगिनीको यह सोचकर बहुत विषाद होता है, कि परलोकमें उसका क्या होगा (कैलि-फास, लाई, मिलिलोट, प्लैट ; अपनी मुक्तिके सम्बन्धमें निराशा—कैल्के, लिलियम-टाई)। गर्भावस्थामें अकेली रहना पसन्द करती है।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना ; सवेरे शय्यासे उठनेके समय (ब्राई, लैक-डिफ्लो) ; कभी-कभी पैदा होनेवाला मिचली, डकार, अम्लशूल और हाथ-पैर आदिका काँपना (कैम्फो, डिजि, ग्लोन) या मिचली और सर-दर्द मिला सरमें चक्कर आना ; कभी-कभी ऐसा मालूम होता है, मानो माथेके भीतरसे ठण्ढी हवा बह रही है, खासकर खिड़कीके पास खड़े होनेके समय (सार्स)। माथा खाली मालूम होना और उसमें यन्त्रणा। ऐसा अनुभव

होना कि मस्तिष्क बहुत सुस्त हो पड़ता है। सर-दर्द—ऐसी यन्त्रणा मानो माथा फट जायगा (ब्रायो, सिङ्को, ग्लोन); सुई गड़नेकी तरह यन्त्रणा, माथेके भीतरसे गर्दनमें या छातीतक फैल जाती हैं और रोगीका चेहरा लाल हो उठता है। सर-दर्द रोगमें मिचली और वमन; आर्त्तव-स्रावके समय और बाद। माथेमें टपक-जैसा दर्द, ज्वरके समय ऐसा मालूम होता है, मानो हजारों छोटी हथौड़ियोंसे माथा ठोंका जा रहा है (बेल, कैमो, ग्लोन), सन्ध्याके समय बढ़ना; नीचेकी ओर देखनेपर दाहिनी आँखके ऊपरी अंशमें तेज़ बेधनेवाला दर्द मालूम होता है। टपक पैदा करनेवाला सर-दर्द, विशेषकर ललाटमें; मिचली और वमन-मिला; सवेरे और शरीर हिलानेपर बढ़ना; घटना—माथा ऊँचाकर सोनेपर (ऐण्टि-टार्ट, युपेट-पर्फ) और पसीना निकलनेपर। टपक करनेवाला दर्द पैदा हो जानेपर नींद खुल जाती है। पढ़नेपर या बोलनेपर बढ़ना। प्रचण्ड और उन्मत्त करनेवाला सर-दर्द; रोगी पागलकी तरह हो जाता है और गालियाँ बका करता है। कमजोरी मालूम होती है, उसकी जीभ सूख जाती है, तेज़ प्यास पैदा हो जाती है और नाड़ीकी गति विषम हो जाती है; पानीमें भींजनेकी तरह सर-दर्द (लिडम, रस-टक्स)। सर-दर्द—रक्तशून्य पढ़नेवाले बालक-बालिकाओंका (कैल्के-फास); सूर्योदयसे सूर्यास्ततक अर्थात् सवेरे आरम्भ होकर दोपहरतक चरम-सीमापर पहुँच जाता है और धीरे-धीरे घटकर सूर्यास्तके समय आराम हो जाता है (साइलि, टैबाक); उसकी दाहिनी आँख लाल हो जाती है; वृद्धि—रोशनीमें (आर्स, एपिस, बेल, ब्रूफो, कोलोफिल, काकुल, काफि, जेल्स, मिडोरिन, नेट्र-सल्फ, प्लैट, सल्फ, सिपि, साइलि)। बाएँ पार्श्वका सर-दर्द, माथेके बाएँ पार्श्वमें ऐसा मालूम होता है मानो एक लोहेकी सलाई या कील घुस रही है (आर्नि, काफि, कैलि-कार्ब, इग्ने, सिपि), सरमें दर्द, दृष्टि-लोप (बेल, कास्टि, जेल्स, फेरम-फास, आइरिस-वार्स; आरम्भमें धुँधली दृष्टिका आरम्भ होकर सरमें दर्द आरम्भ होता है—आइरिस, कैलि-बाई, लैक-डिफलो, सोरिन, फास; अस्पष्ट दृष्टिके साथ सर-दर्द आरम्भ होता है—ऐ-फास, साइक्ले, पल्स, सल्फ, वेरेट-विर; सर-दर्दके बाद धुँधली दृष्टि—साइक्लिसिया; दर्द जितना बढ़ता है, दृष्टि भी उतनी ही साफ़ होती जाती है—आइरिस, कैलि-कार्ब, लैक-डिफ्लो); बिजलीकी लहरकी तरह टेढ़ी-मेढ़ी कितने ही ढङ्गकी आलोक रेखाएँ सब दृष्टिके सामने पैदा हो जाती हैं (लैके) और टपकका सर-दर्द पैदा कर देती हैं, आँखोंके बहुत

बहुत अधिक परिश्रम या बहुत अधिक व्यवहारके कारण (कैल्के, सिना, जेल्सि, हैमा, जैबोरैन, ऐ-फास, फाइजस, रस, रियुटा)। सरके पिछले भागमें भार मालूम होना, दोनों आँखोको मानो एक दूसरेकी ओर खींचता है। ऐसा मालूम होता है कि माथा मानो दोनों ओरसे दबाया जा रहा है, मानो माथेके दोनों पार्श्व एक बड़े चिमटेसे दबाये जा रहे हैं (ऐ-नाई, इथ्यू, पल्स, कैक्ट, मैंग-सल्फ, प्लैट, रैनान, सैबाड, सार्सा, स्ट्रैम, थिरिड)। नासा-मूलसे ललाटतक मानो फट रहा है या हड्डी उखाड़ी जा रही है ; इस ढंगका बातके कारण दर्द, इसके साथ ही मिचली वमन और दृष्टि-लोप'; रोगीको बाध्य होकर शय्याका आश्रय लेना पड़ता है। सर-दर्दका बढ़ना सवेरे नींद खुलनेपर (लैके, नक्स-वोम, प्लैट, फास), माथा या आँख हिलानेपर (ब्राई, काकुरा, ग्लोन), मानसिक परिश्रमके बाद (अरम, ऐनाक, ग्लोन, फास, ऐ-नाई) और गर्मी लग जानेपर (बेल, कार्बो-वेज, कोमोक्लेड, टिलिया-ट्रिफोल, कैल्मिया) ; घटना—स्थिर होकर बैठनेपर (लेसियम) या लेट जानेपर (कैल्के, सिङ्को, इरिञ्जि, जेल, इग्ने, लिथ, लाई, सिनियैन, ऐ-नाई) या माथा ऊँचाकर सोनेपर और पसीना होने बाद मूर्द्धा-देशमें ठण्डक मालूम होना (ब्राई, सिपि ; मानो बरफका एक टुकड़ा रखा हुआ है—वेरेट) ; खोपड़ीकी त्वचामें स्पर्शका सहन न होना ; पलकें सिकुड़ा और फैला करती हैं। माथा छूनेपर केश झड़ जाते हैं ; माथेके सामनेवाले अंशमें, दोनों शंखदेश या कनपटी और मूँछके केश भी झड़ जाते हैं ; चेहरा चमकीला मानो तेल लगा हुआ है। माथेमें श्लेष्मा या वाताश्रय प्रवणता,— थोड़ी-सी सर्दी लगनेपर भी सर्दी हो जाती है (बैराई, कार्बो-वे, ग्रैफ, हिप, मर्क, फास, साइलि)। खोपड़ीकी त्वचामें खींचन मालूम होती है। बढ़ना—बोलना या घरके बाहरकी निर्मल हवा लगनेपर ; घटना—बैठने या लेट जानेकी अवस्थामें। बहुत अधिक रूसी और सर्दी तथा सूंघनेकी शक्तिका न रहना पर्यायक्रमसे प्रकट होता है। माथा या बगलमें फटी छाल या खाल उधड़ जानेके कारण जखम ; माथेमें अकौता ; लाल चमकीले या खुले हुए जखमसे त्वचाको क्षय करनेवाला रस निकलकर केशको नष्ट कर देता है। चर्म्मदल—एक तरहका अकौता माथेके केशसे ढके अंशोंके किनारे और गर्दनके पिछले भागमें बहुत अधिक पैदा हो जाता है ; दाने सब लसदार और पपड़ियाँ सब पतली और लसदार, चारों ओरकी त्वचामें अत्यन्त दर्द होता है और वे लाल हो जाती हैं। नव-प्रसूताओंका माथा छूते ही केश झड़ने लगते हैं (सिपि)।

आँख।—सभी चीजोंके चारों ओर आगकी लहर और कितनी ही तरहकी टेढ़ी रेखाएँ सब दिखाई देती हैं। दो देखना (एक चीज़ दो दिखाई देती है); आधा देखना अर्थात् चीजोंका आधा अंश ही दिखाई देता है—ऊपरी आधा या निचला आधा दिखाई देता है (बोवि, ऐं-मूर, अरम,—ऊपरी आधा या बिलकुल ही दिखाई नहीं देता—अरम; दाहिनी ओरका आधा भाग दिखाई नहीं देता—लिथिया-कार्ब; बायाँ आधा दिखाई नहीं देता—लाई), आँखोंके चित्रपत्रमें प्रतिफलित मूर्त्तियाँ सब अधिक देरतक स्थायी होती हैं अर्थात् कोई चीज सामनेसे हटानेपर भी रोगी कुछ देरतक उसे देखता रहता है (ऐनाम्थिरम, टैबाक, जैबोरैन, लैक-कैन,—देखी हुई चीज़ हटा लेनेपर भी उसके बगलकी चीज पहलेकी देखी चीज-जैसी मालूम होती है—लैक-कैन), क्षीण-दृष्टि, विशेषकर पेशियोंकी सुस्ती, आँख हिलानेके समय पेशियोंमें खींचन और अकड़न मालूम होती है; पढ़नेके समय सब अक्षर और सिलाई करनेके समय सूतकी लड़ियाँ सब मिल जाती हैं; टकटकी लगाकर कोई चीज देखनेके समय आँखमें दर्द होता है (पेशियोंका अवसाद या मेरुमज्जाकी उत्तेजनाकी वजहसे), दृष्टि-शक्तिका व्यवहार करनेके समय पलकोंमें भार मालूम होता है। तिमिर-दृष्टि,—मृत्पाण्डु रोगवाली स्त्रियोंके अनियमित रजकी वजहसे; पुतली सिकुड़ी हुई। पलकोंका प्रदाह—आँखके सफेद अंशके ऊपर जखम पैदा होकर उसमें उत्तेजना और जलन पैदा हो जाती है; ऐसा मालूम होता है मानो आँखोंमें बालूके कण गिर गये हैं (आर्स, कोरैल, डिजि, इयुफ्रे, ऐ-फ्लू, हिप, लिडम); आँखसे त्वचाको क्षय करनेवाला आँसुओंका स्राव होता है (इयुफ्रे, मर्क); बहुत ज्यादा रोशनीका सहन होना और सवेरे, गोधूलिके समय और रातमें आँख आप-से-आप बंद हो जाती है। दाहिनी ऊपरी पलकका (आँखके गोलेके ऊपर) स्नायुशूल, सूर्योदयके समय आरम्भ होता है और सूर्यास्तके साथ ही गायब हो जाता है। नीचेकी ओर देखनेपर दाहिनी भौंमें तेज़ शूलकी तरह दर्द और टपक जैसा सर-दर्द पैदा हो जाता है; संध्याके बाद बढ़ना। बाहर निकला हुआ आँखका गोला अर्थात् आँखका गोला बाहर निकल आना—कलेजा, धड़कना; थोड़ा-सा भी परिश्रम करनेपर श्वासाल्पता पैदा हो जाती है (बैराई, फेरम, फेरम-आयोड, लाइकोपस-वार्जि, स्पञ्जि, थाइरायडिन)। अश्रुप्रणालीका संकोचन और रुकना तथा नासूर और अश्रुकोषसे अधिक स्राव होना। आँखकी बीमारीमें कास्टिकसे

जलानेकी वजहसे बीमारियाँ, आँखके बाहरी उपाङ्ग या बाहरके कोनेमें या कानके पासवाले कोनेमें पपड़ी। रातमें आँख सट जाती है (ग्रैफ, ड्युफ्रो, हिप)। पलक लगातार लाल और जखम भरी रहती है।

कान।—कर्ण-पटहका प्रदाह,—कानमें भों-भों, झुन-झुन, ढं-ढं वगैरह नाना प्रकारकी आवाजें सुन पड़ती हैं (सिङ्को, चिनिन-सल्फ)। क्षीण सुन पड़ना। चबानेके समय कानमें कड़ाककी आवाज़ हो पड़ती है (कैल्के, मिनियैन, ऐ-नाई)। कानमें टपक और सुई गड़नेकी तरह दर्द। स्राव पीव मिला (ऐण्टि-क्रूड, बैराइटा-म्यूर, कैस्टोर, कास्टि, ग्रैफ, हिप, हाइड्रैस्ट, लाई, मर्क, सोरिन, साइलि, टेल्यू), कानके पिछले भागमें खुजली (ऐ-नाई, ग्रैफ)।

नाक।—सर्दीकी वजहसे सूंघने या स्वाद लेनेकी शक्ति गायब हो जाती है (ऐस्पार, पल्स), नाकसे खूनका स्राव, माथा झुकानेपर (डायस्को, नक्स-वोम, रस) या रातमें खाँसनेके समय (बेल, ड्रोसेरा, मर्क, नक्स,—हूप-खाँसी रोगमें—आर्नि, कोरैल, कोचलिया, क्रोटेल, ड्रोसे, इपिक, ऐ-म्यूर, मर्क, नक्स, स्ट्रैमोन)। सर्दी-प्रवणता,—थोड़ीसी सर्दी लगनेपर भी सर्दी या नाकसे स्राव, पर्यायक्रमसे पतला श्लेष्मा और नासा-रोग प्रकट हो जाता है, कभी पतले श्लेष्माका स्राव होता है और कभी-कभी नाक रुक जाती है; नाकका पिछला छेद सूखा और सवेरे खाँसनेपर उससे श्लेष्मा निकलता है। रोज़ सवेरे लगातार छींक आया करती है या वृथा ही छींक आनेका उपक्रम होता है। सर्दी-रोगमें नाक जखमसे-भरी और नासा-पुटका भीतरी अंश फूल जाया करता है; नासा-रंध्रसे सूखा श्लेष्मा या पपड़ी निकला करती है। नाकके बाएँ पार्श्वका प्रदाह और सूजन—छूनेपर दर्द मालूम होता है (कैड्मि, सल्फ, प्लैट)। हेमन्त ऋतुका प्रतिश्याय या सर्दी,—नाकमें फड़फड़ आवाज होती है, मानो उसमें एक कीड़ा घुस गया है, बहुत धूपमें गर्मीके उत्तापकी वजहसे बीमारियाँ।

मुखमण्डल।—चेहरा पीली आभा लिये, रक्तहीन, मलिन या पीले रंगका (सिङ्को, लाई, ओपि, कैलि-म्यूर), नीली आभा लिये, चमकीला, मानो तेल लगा हुआ है (प्लम्ब, सेलिन, एपिस); और पतला। चेहरा फूला हुआ (आर्स, एपिस, लाई, मर्क, ओपि) चेहरेमें उत्ताप मालूम होता है (ऐमिल, ब्राई, कैमो, सिना, इलैप्स, नेट्र-आर्स, नेट्र-कार्ब, नक्स-वोम, पल्स)।

कभी-कभी विशेषकर कम्प-ज्वर एकाएक रुक जानेपर चेहरेका स्नायु-शूल; चेहरा मलिन और पीली आभा लिये; बहुत प्यास। चबानेके समय गण्डास्थिमें दर्द मालूम होता है। तीसरे पहर और रातमें (विशेषकर बायाँ) गाल लाल मालूम होता है। मुखमण्डलकी त्वचा चमकीली, मानो तेल लगा हुआ है (प्लम्ब, सोरिन, सेलिन)। चेहरेपर दुग्ध-चिपिटिका या दुधिया पपड़ीकी तरह खुजलानेवाले दाने निकल आते हैं। बायें गालपर जखम (बेल, आयोड)। चिबुकपर काली नोंकवाले कड़े व्रण निकलना (कैप्स, कार्बो-ऐन, कास्टि, ग्रैफ, सेलिन)। हजामतकी खुजली रोगमें झब्बे-के-झब्बे मूँछके केश झड़ जाते हैं (ऐनान्थि, अरम-मूर)। दोनों ओंठ सूखे, फटे और पपड़ीसे ढँके या उनसे खून बहा करता है, जखम-भरे (एरम-ट्राई, ब्राई, कैल्के, कार्बो-ऐन, कार्बो-वे, कैमो, क्रोकस, ग्रैफ, इग्ने, मर्क, मर्क-कोर, सल्फ); दोनों ओठोंके गासेमें तर जखम (ऐ-नाई)। ऊपरी ओठ फूला (ऐपिस, बेल, ब्राई, कैल्के, लाई, मर्क-प्रोटो, नेट्रम-कार्ब, सल्फ, जिङ्कम; विशेषकर बच्चोंके—कैल्के, सोरिन)। निचले ओठके बीचमें काई घाव या दर्द। ओठके ऊपर मोतीकी तरह रस-भरे दाने, विशेषकर सविराम ज्वर रोगमें (क्रोटन, ग्रैफ, लैक-कैन, रस-टक्स) दोनों ओठोंमें चुनचुनी होती है और उनमें सुन्नपन पैदा हो जाता है। हनुके नीचेवाली ग्रन्थियाँ सब फूली हुई (ऐनान्थ, बैराई-मूर, कार्बो-ऐन. सिङ्को, कोना, हिपोजिन, कैलि-आयोड, लाई, मर्क-डल, नेट्रम-कार्ब, फाइटो, सोरिन, सिपि)।

मुख-विवर।—दाँत सब हवा लगनेसे दर्द करते हैं या छूनेपर दर्द करने लगते हैं (बैरा, लाई, स्टैफ)। चबानेके समय पेषणदन्तमें दर्द होता है। भोजनके बाद और रातमें दाँतसे कान और गलेके भीतरतक खींचने और उखाड़नेकी तरह दर्द; गाल फूले और उठे हुए। क्षय हुए दाँतकी जड़ ढीली हो जाती है; उसमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह टपक करनेवाला दर्द पैदा हो जाता है; मसूढ़ेमें ठण्डी या गर्म चीज़ लगते ही तकलीफ़ मालूम होती है; मसूढ़ा फूला और उससे कभी-कभी खून निकलता है; मसूढ़ेसे बदबू निकलती है। मसूढ़ेमें अर्बुद (प्लम-ऐसेट, थूजा)। दाँतकी जड़में नासूरका जखम (ऐ-फ्लू, साइलि, अरम-मूर, कास्टि, नेट्रम-मूर); मुँहका स्वाद नमकीन, जीभ सूखी और भूख न लगना, स्वाद तीता, उपवासके समय मुँहका स्वाद खट्टा या बदबूदार; पानी बहुत कड़वा मालूम होता है। सर्दी रोगमें

स्वाद-शक्तिका गायब हो जाना (पल्स, साइलि, सोरिन)। उसमें रस रहनेपर भी जीभ बहुत सूखी मालूम होती है। जीभ भारी और बोलीमें जड़ता (लैके, लाइ, प्लम); बच्चा बहुत देरसे बोलना सीखता है (एगार)। जीभ बीच-बीचमें लाल और कभी-कभी सफेद मैलसे ढकी या नकशा खिंचे रहनेकी तरह रहती है (आर्स, मर्क, लैके, टैराक्स, ए-नाइट्रिक, रैनान-बल्बो, रैनान-स्क्लीरेट); जीभके दोनों पार्श्व दादसे भरे मालूम होते हैं। जीभके अगले भागमें जलन (साइक्ले, नेट्रम-कार्ब, आर्स, बेप्टी, कोलो, लैके, सैङ्गिविन)। जीभके ऊपर ऐसा मालूम होता है, मानो एक टुकड़ा केश गिरा हुआ है (कैलि-बाइ, सिलि, ऐलियम-सैट, नेट्र-फास)। जीभका कोई एक विशेष पार्श्व सुन्न और अकड़ा हुआ मालूम होता है। जीभके नीचे अर्बुद या जीभके नीचेकी ग्रन्थिका फूलना (ऐम्ब्रा, हिपोजिन, थूजा)। मुख-विवर, दोनों ओंठ और जीभ बहुत सूखी। तर रहनेपर भी सूखी मालूम होती है। ऊपरी ओंठके भीतरी भागमें लाल छाले निकलते हैं। मुँहके भीतर जगह-जगह जो जखम पैदा होते हैं, उनमें यहाँतक कि पानी छू जानेपर भी दर्द होता है। मुँहके भीतर और जीभके ऊपर रस-भरे दाने और जखम, जिनमें बहुत जलन और उत्तेजना होती है, विशेषकर खाद्य-पदार्थ आदि छू जानेपर वृद्धि होती है, खून-भरी लारका स्राव (ए-नाइ, क्रोटेल, मर्क-बाइ), बहुत लार बहना।

गलेके भीतर।—कण्ठ बहुत सूखा मालूम होता है; परन्तु रोगीके खाँसते ही साफ़ श्लेष्माभरा बलगम निकला करता है। तालुमूलकी श्लैष्मिक-झिल्ली चिकनी और चमकीली रहती है (एपिस, लैक-कैन, सिस्टस-कैन, पेट्रोल) अर्थात् मासांकुर भरी नहीं रहती; उपझिल्ली-प्रदाह रोगाधिकारमें। कण्ठके भीतर ऐसा मालूम होता है, कि काष्ठ-शलाका (लकड़ीकी सींक) गड़ रही है (डलिकस, आर्जेण्ट-नाइ, हिप)। हर बरस होनेवाले गलेका जखम रोगमें कण्ठनाली मानो कांटोंसे रुकी है (ऐलूर, ऐनान्थि, ऐ-लैक, प्लम, सिपि) और कण्ठके भीतर क्षय हुई त्वचा और जलन मालूम होती है; रोगी बहुत डरता है कि कहीं उसका गला न रुक जाये। उपजिह्वा बढ़ी हुई; गलेके भीतर-वाली पेशियाँ सब इतनी शिथिल हो पड़ती हैं, कि खानेकी चीजें निगलनेके समय वह अन्ननालीमें न जाकर दूसरी राहमें चली जाती हैं। उपझिल्ली-प्रदाह रोगके बादवाली गलेके भीतरकी पेशियोंके पक्षाघातमें भी ऐसा ही होता है,

केवल पतली चीजें निगल सकता है (आर्जेण्ट-नाई, ऐलूर), कठिन पदार्थ सब गलेमें कुछ दूरतक जाकर वेगसे कै हो जाते हैं या दुबारा ऊपर चढ़ आते हैं, निगला हुआ पदार्थ कण्ठनलीमें कुछ दूर जाकर ऐसा मालूम होता है, मानो किसी जखम-भरे अंशके ऊपरसे जा रहा है।

पाकस्थली ।—शारीरिक और मानसिक अवसाद एवं राक्षसी भूख, विशेषकर सन्ध्याके भोजनके पहले। नमकीन या कड़वी चीजें खानेकी इच्छा ; मछली, दूध आदि खाना चाहता है ; अरुचि। जो रोटी पहले रोगी पसन्द करता था, अब उससे अरुचि हो जाती है (सिङ्को)। दुर्दमनीय प्यास—सन्ध्याके समय बहुत बढ़ जाती है (क्रोकस, मैग-म्यूर, सिपि), मुँह लसदार। पेट खाली रहनेपर अच्छा रहता है ; सवेरे भोजन करने बाद रोगीको बेचैनी मालूम होती है और उसे ज्वर-भाव हो जाता है ; भोजन करते समय चेहरेपर पसीना हो जाता है (ए-बे, आर्जेण्ट, ओलि-ऐन)। भोजनके बाद खाली डकार, मिचली ; मुँहका स्वाद खट्टा, औंघाई (साइक्ल्यू, लाई, नक्स-मस), छातीमें जलन (इस्क्यु, हिप, कैल्के, कैल्के-फास, नक्स), हृद्स्पन्दन (कैम्फो, कार्बो-वे, कार्बो-ऐन, लाई) ; उदरके ऊपरी प्रदेशसे वक्षकी ओर दबाव और गर्मी चढ़ती है। सवेरे मिचली ; इच्छानुसार चीज़ खानेपर भी सुस्ती मालूम होती है। वमन, पहले खाई हुई चीजें और इसके बाद पित्त वमन (सैम्बु, लाई) और पाकस्थलीमें बहुत दबाव मालूम हुआ करता है। उदरका ऊपरी भाग फूला हुआ और छूने या अंगुलीसे दबानेपर उसमें दर्द होता है। उदरके ऊपरी भागमें मानो नाखून गड़ा रहा है, खींचन या ऐंठनकी तरह दर्द, कसकर धोती पहननेपर घट जाता है। उदरके ऊपरी भागमें जगह-जगह लाली पैदा हो जाती है ; वक्षोस्थिके पीछे और पाकस्थलीके आगम द्वारपर मानो कुछ रुका हुआ है—ऐसा अनुभव होता है। बच्चा खाता-पीता अच्छी तरह है, पर दिनोंदिन दुबला होता जाता है (ऐब्रोट, वैसिलिन, आयोड, सैनिक्यू, सार्सा), पेट फूल उठता है और कसकर वस्त्र पहननेपर आराम मालूम होता है (ऐ-फ्लू—इसके विपरीत—हिप, लैके), उदरके ऊपरी भागमें दबाव मालूम होना, मानो पाकस्थलीमें कोई कड़ी चीज़ रखी हुई है, नमक और नमकीन पदार्थोंकी बहुत रुचि (कैल्के, कास्टि)।

अन्त्राशय ।—भोजनके बाद यकृत-प्रदेशमें भार मालूम होता है, दर्द होता है और फूल जाता है ; खायी हुई चीजें जितनी ही पचती जाती हैं, दर्द

और फूलन भी उतनी ही घटती जाती है। यकृतमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (बार्बे, चेलिडो, ब्राई, कैलि-का, नेट्र-कार्ब और कसावटका भाव ; यकृत-प्रदाह-भरा और फूला तथा रोगीके शरीरकी त्वचा पीला या भूरी दिखाई देती है। बाईं और शरीर झुकानेपर यकृतमें अकड़न मालूम होती है। प्लीहा-प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह और पीसनेकी तरह दर्द (सियैनोथस), प्लीहाका बढ़ना और प्रदाह (सियैनो, चिनिन-सल्फ, सिङ्को, डायाडे, फेरम-आयोड, लैके, नक्स), पेट फूला, कोष्ठमें वायु रहनेके कारण पेट गड़गड़ाना (डायस्को, डाल्का, गैम्बो, लाई, नेट्र-सल्फ, पल्स, सल्फ), मिचली और आँतोंका शूल ; वायु और आध्मान-वायु निकलनेपर घटना (कार्बो-वे, कोलो, हाइड्रैस्ट, वेरेट)। आँतमें जलन (आर्स, कैन्थ, इरिजि, मैन्सि)। खाँसनेपर वंक्षणीय छिद्रमें और अण्डकोषमें बहुत दर्द होता है, ऐसा मालूम होता है मानो कोषरज्जु छिन्न-भिन्न हो गया।

मलान्त्र और मल।—वायु छूटनेके समय रोगी भयभीत हो जाता है कि कहीं पाखाना न हो जाये (ऐलो, आयोड, ऐ-म्यूर, पोडो, सल्फ)। पुराना उदरामय और पतला पाखाना होना ; मल पानीकी तरह, इसके साथ ही बोखार, मुँह सूखा और बहुत प्यास ; दो क़दम इधर-उधर चलनेपर ही बढ़ जाता है (बेल, ब्राई, कोलचि, ऐ-आर्सेल); बदबूदार आध्मानवायु निकलती है ; खराब नख निकलनेके साथ ही मलका पतलापन (प्रायः ही नाखूनमें दर्द होता है, अंगुलहाड़ा या नखका सड़ने लगना—नेट्र-सल्फ). मल हरे रङ्गका, खून-मिला, पानीकी तरह और भूरे रङ्गका ; साधारणतः दिनके समय ही अधिक पाखाना होता है ; गांठ या गोला बँधा मल निकलता है। पर्यायक्रमसे कड़ा और कोमल मल निकलता है। मलान्त्रकी निष्क्रियताकी वजहसे कब्जियत (ओपि, ऐलूम)। कब्जियत, मल बहुत कड़ा, कष्टसे या चूर-चूर होकर निकलता है (मैग-म्यूर, ऐमोन-म्यूर, नेट्र-कार्ब); मलद्वार संकुचित, फटा हुआ, उससे खून निकलता है और इसके बाद जलन हुआ करती है (ऐमोन-म्यूर, इग्ने, रैटान); मलान्त्रमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द होता है। मलके साथ खून निकलता है (ऐलूम, कार्बो-वेज, क्रोटेल, लाई, पल्स, कैल्के-फास); डङ्क मारनेकी तरह दर्द पैदा करनेवाला (ऐलूम, एपिस, कास्टि ; चलनेपर बढ़ना—कार्बो-ऐन); मलद्वारसे रस निकला करता है (कास्टि, ग्रैफ, सिपि, सल्फ); मलद्वारके चारों ओर छोटे-छोटे दाने—दादकी तरह (हिप, पेट्रो, सिपि) उद्भेद निकलना। मलान्त्र-भ्रंश या काँच निकलना (कैल्के, कास्टि, गैम्बो, पोडोफिल,

डालका, हाइड्रैस्ट, लैकि ; मलद्वारमें जलन हुआ करती है—बवासीर रोगमें (एराण्डो, पोडो, सिपि)। मलद्वारमें दर्द और बेधनेकी तरह दर्द पैदा करनेवाला, शिराओंकी सूजनसे पैदा हुआ अर्बुद (पोलिगोनम पाङ्क)।

पेशाब ।—मसाना या मूत्रग्रन्थि-प्रदेशमें अकड़न और गर्मी मालूम होना, बार-बार या एकाएक पेशाबका वेग (फास, रियुमिक्स, थूजा, ऐ-फास, पेट्रोसेलि); पेशाब रोक नहीं सकता (ऐलो, कैल्कि, मर्क-सोल, पल्स), बहुत ज्यादा पेशाब होता है। बहुमूत्र (ऐ-ऐसेट, आर्जेण्ट, चिमैफिल, सिङ्को, ऐ-लैक्ट, लैक-डिफ्लो, ऐ-फास, स्क्युला, युरेन-नाई, मर्क-कोर, मर्क-सोल, नेट्रम-सल्फ); बहुत प्यास, बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी पीनेकी इच्छा ; मुँहमें पानी भर आया करता है और दिनोंदिन क्षीण होता जाता है (आर्जेण्ट-मेट, आर्स, युरेन-नाई, लैक-डिफ्लो, मूरेक्स, हेलोन, मैग-सल्फ, मस्कस)। अनजानमें पेशाब निकलता है—चलनेके समय (कास्टि, फेरम, जिङ्कम), खाँसनेपर (एपिस, कास्टि, स्क्युला वेरेट) या हँसनेपर (हँसनेपर या छींकनेपर—नक्स-वोम)। बहुत देरतक बैठे रहनेपर पेशाब नहीं होता (आर्नि, कैम्फो, क्लिमेट, हिप, लोरो, ऐ-मूर, पेट्रोल, रस ; आधे घण्टे तक चेष्टा करने बाद कहीं मूत्रस्थली खाली होती है, पर रोगी सुस्त हो पड़ता है—मिडोरिनम), विशेषकर यदि कोई पास रहे तो (ऐ-मूर, हिप)। पेशाबमें ईंटके चूरकी तरह तली जमती है (आर्नि, चिनिन-सल्फ, सिपि, पैरिरा, लाई)। काफीके अर्ककी तरह पेशाब। पेशाबके समय मूत्राशयमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द (मैन्सि)। मूत्रनलीमें उत्तेजना और जलन (आर्जेण्ट-नाई, बार्बे, कैनाब-सैट, कैन्थ, लैकि, मर्क-कोर ; प्रमेह रोगमें—चेलिडो, कोचलिया, मर्क-कोर, नक्स-वोम) और स्त्री-योनिके बाहरी भागमें उत्तेजना और खाल उधड़ जानेकी तरह अनुभव होना (क्रियोजोट)। पेशाब कर लेने बाद मूत्रनलीमें जलन और छेदनेकी तरह दर्द (कैप्स, सार्सा, नेट्र-कार्ब)। खूनका पेशाब (एपिस, कैक्टस, कैल्कि, कैन्थ, हैमा, मर्क-कोर, पल्स, टेरिब)। पेशाबके बाद मूत्रनलीसे श्लेष्मा निकलना।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—शारीरिक दुर्बलता रहनेपर भी काम-प्रवृत्तिकी अधिक उत्तेजना। रमण-आलिङ्गनके कुछ ही बाद अनजानमें वीर्यपात हो जाना (कैलि-कार्ब, फास)। बहुत अधिक इन्द्रिय सेवनकी वजहसे उत्पन्न पक्षाघात (नक्स-वोम, फास)। सवेरे कामोत्तेजना न रहनेपर भी लिङ्गमें कड़ापन हो

जाता है। मूत्रनलीसे लालामेहकी तरह सफेद श्लेष्माकी तरह पदार्थका स्राव; मुष्क शिथिल (क्लिम, लाई, कैल्के) हो पड़ता है; बच्चोंका नितम्ब या चूतड़ पतला पड़ जाता है। मुष्क और उरुके बीचके अंशमें खुजली; खाल उधड़ जाना और पसीना निकलना (लाई, मर्क, नेट्र-कार्ब)। लिङ्गमुण्डके ऊपर पीवकी तरह पुष्पिका (फुन्सी) या सफेद रङ्गका पदार्थ जमा होता है (कास्टि, सिपि, नक्स-वोम)। लिङ्गमुण्डकी जड़में खुजलाहट और चींटी रेंगनेकी तरह अनुभव होना। जननेन्द्रिय-प्रदेशसे बहुत बदबू निकलना (सार्सा)। विटप-देशमें केश न रहना (ऐ-नाई); शिश्न आदिकी शिथिलता और रमणके समय विलम्बसे वीर्यपात; बहुत इन्द्रिय सेवनकी वजहसे मेरुदण्डमें उत्तेजना और क्लीवता या ध्वजभङ्ग।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रमण-आलिङ्गनकी इच्छा न होना; योनिमें सूखापनकी वजहसे सङ्गममें तकलीफ़ होना। सङ्गमके समय योनिमें जलन होती है, खासकर यदि रोगिनीकी त्वचा सूखी रहे और उसका मुँह सूखा हुआ हो एवं रक्तहीन रहे तो यह लक्षण अधिक पैदा हो जाता है। असमयमें ऋतु और बहुत ज्यादा ऋतु-स्राव होनेकी वजहसे बन्ध्यत्व (अरम-मूर, नेट्र, प्लैट); वंक्षण या पुट्ठेमें जलन और छेदनेकी तरह तकलीफ़ और जरायुमें खींचन या ऐंठन। रोज़ सवेरे जरायु आदि योनिकी ओर धक्का देता है या दबाता है; जरायुका बाहर निकल आना रोकनेके लिये रोगिनीको बैठ जाना पड़ता है। उरु-पर-उरु रखकर बाहरकी ओर निकलना रोकती है—सिपि; योनिको हाथसे दबाकर बाहरी अङ्ग रोक, अच्छा करती है—लिलि-टाइग्रि)। जरायु-भ्रंश रोगमें श्रोणिदेश या नितम्बमें दर्द (अरम, पल्स)। चित्त होकर सोनेपर अच्छी रहती है या पेशाब करनेके बाद मूत्रनालीमें छेदनेकी तरह तकलीफ़ मालूम होती है (पेशाब करनेके समय बढ़ना—कैल्के-फास; मूत्रकृच्छ्रताके साथ—चिमैफिल-अम्बेल)। आर्त्तव—बहुत देरसे होता है और स्राव बहुत थोड़ा होता है या बहुत जल्दी-जल्दी होता है और स्राव बहुत ज्यादा होता है। ऋतु-स्राव होनेके पहले, समय और बाद सरमें दर्द; ऋतु-स्रावके पहले दुःखित भाव और उत्तेजना; ऋतुस्राव आरम्भ होनेके समय विषाद; स्रावके समय उदरमें ऐंठन होती है। प्रत्येक मास आर्त्तव-स्रावके समय खून-मिला बलगम निकलता है (आयोड); खून-मिली लार निकलना। बाधक रोगमें अकड़न। पहले बहुत देरसे रजःस्राव होता है; रजःरोध। प्रदर-कषाय या

त्वचाको क्षय करनेवाला और कुछ हरे रङ्गका—सवेरे तलपेटमें आँतोंके शूलकी तरह दर्दके बाद स्वच्छ पानीकी तरह स्राव निकलता है, खुजलानेवाला स्राव ; रोगिनी पीली हो ज़ाती है (कोलोफ़िल, कास्टि, फेरम ; छोटे-छोटे पीले रङ्गके दाग हो जाते हैं—सिपि)। प्रदर-स्रावके समय सरमें दर्द (कैलि-बाई, सिपि, प्लैट) ; पतला पाख़ाना होना, पेटमें दर्द और आँतोंमें शूल (एमोन-म्यूर, कोलो, साइलि, जिङ्कम) और आम-मिला मल निकलना। चलनेके समय प्रदर-स्रावकी अधिकता (इस्क्यु, हिप, बोवि, कार्बो-एन, मैग-म्यूर, सार्स)। योनिके बाहरी भागमें खुजलाहट और केश उड़ जाना। कामाद्रि-प्रदेशमें छोटे-छोटे खुजलानेवाले दाने निकलना। अन्तःसत्वावस्था (गर्भावस्था) में मिचली, और वमनकी अधिकता पैदा हो जाना ; सवेरे वमन—फेनभरा पानीकी तरह श्लेष्माका वमन होता है ; मूत्रकृच्छ्रता, लालास्राव, नमक खानेका आग्रह प्रकट करता है ; वक्षमें अधिक रक्त-सञ्चय होता है ; कलेजा धड़कना, अर्श, खाँसी; और अनजानमें पेशाब होना। प्रसवका दर्द—वेग बहुत धीरे-धीरे होता है ; क्षीण वेग—बहुत उदासी और नाना प्रकारकी विपत्तिकी आशङ्का बनी रहती है। बच्चोंकी स्तन पीनेवाली अवस्थामें केशका क्षय हो जाना। बच्चा स्तन नहीं पीना चाहता। माताके मुँहमें जख्म। स्तनमें छुरी मारनेकी तरह दर्द ; स्तनवृन्तके नीचेवाली जगहमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। दोनों स्तनोंमें दर्द बहुत होता है और स्पर्श सहन नहीं होता।

श्वासयन्त्र। - स्वरभङ्ग, स्वरनलीमें सूखापन मालूम होता है और कण्ठके भीतर स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता ; सवेरे स्वरनलीमें बहुत ज्यादा कफ़ सञ्चय हुआ करता है। क्षीण-स्वर ; बोलनेपर थक जाता है (स्टैनम)। श्वास-प्रश्वासमें बाधा प्राप्त होती है और उससे बेचैनी पैदा हो जाती है ; जरा भी तेज चलनेपर हाँफ जाता है (पल्स, साइलि ; विश्राम करनेपर धीरे-धीरे हाँफना घटता है—नेट्र-सल्फ) ; निर्मल वायु सेवनके समय और दोनों बाँह हिलानेपर घटना। कभी-कभी श्वास रुकनेका उपक्रम हो जाता है (कैम्फो, सिड्रन, क्लोरम, कूप्रम-एसेट, कैलि-आयोड, लैके, लैक्टियु-वाई, लोरो, मिफाइ, नक्स-वोम, स्पञ्जि, टैबाक)। खाँसी—कण्ठमें या उदरके ऊपरी भागमें खुजलीसे पैदा हुई (कण्ठमें खुजलाहटकी वजहसे पैदा हुई खाँसी—ऐक्टि-रेस, इन्यूला, कैलि-बाई, लैक-कैन, लैक्टियु-वाई, फास, रस, स्पञ्जि) श्लेष्मा निकलना ; सवेरे माथेमें इस ढङ्गका दर्द पैदा होता है मानो माथा फटा जा रहा है और माथेमें

हथौड़ीसे कोई बार-बार चोट पहुँचाता है। इस ढंगकी तकलीफ़के साथ ही पीले रंगका या खून मिला या श्लेष्मामय कफ या बलगम निकलता है (पीले रंगका—डेफनी हाइड्रैस्ट, केलि-सल्फ, लाई, ऐ-नाई, ओलियेकोर, पल्स, स्टैन; खून मिला—ऐ-फास, एकोन, क्रोटोन, डायेडेसा); खाँसते-खाँसते अनजानमें पेशाब ऐ-फास कास्टि, सोरिन, पल्स, स्क्वियुला, वेरेट), यकृतमें सुई या नोकीली सलाई बेधनेकी तरह दर्दका अनुभव होना (इयुपेट-पर्फोल); आँखके पानीसे दोनों गाल भर जाते हैं (ऐगार, कैप्स, सिपा, इयुपेट, ग्रैफ, सैबाड, स्क्वियुला)। खाँसीका बढ़ना—तेजीसे चलने और शरीर हिलानेपर (ब्राई, फेर, क्रियो, साइलि), लम्बी साँस लेनेपर (ऐ-बेन, ब्रोम, कैल्के, कैम्फो, डिजिट, डालका, हिप, कैलि-बाई, सिनियैन, पल्स, रियुमेक्स) और शय्यामें चित होकर और मुँह ऊपर कर सोनेपर (ऐगार, ऐमोन-म्यूर, कैलि-बाई, फास), शय्यामें देह गर्म होनेपर (ऐण्टि-टार्ट, नक्स-मस, घट जाता है—कैमो, कैलि-बाई), खाली घूंट लेनेपर, पानी आदि पीनेके समय (ऐकोन, आर्स, हायो, लैके, मैंन्सि, मिफाइटिस, नक्स-मस, सिपि, सोरिन, ड्रोसेरा, स्क्वियुला) और खट्टी चीजें खानेपर खाँसी बढ़ जाती है (सिपि)। हूप खाँसी; वायुनलीका प्रतिश्याय या सर्दी; निर्मल साफ़ श्लेष्मा निकलता है। खाँसी; खून मिला श्लेष्मामय बलगम। सूखी खाँसी; खाँसनेपर वायुनलीमें घड़-घड़ शब्द होता है, उपजिह्वा बढ़ जानेके कारण खाँसी,—सोनेपर बढ़ना (क्रोटोन-टिग, हायो, ऐल्यू, मर्क-बिन-आयोड)।

वक्ष ।—वक्षके भीतर कसावटका भाव और दर्द। वक्षके भीतर और पार्श्वमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द और श्वासका छोटापन, विशेषकर लम्बी श्वास लेनेपर बाएं वक्षसे छातीको भेदकर बाएँ पृष्ठफलकतक छेदनेकी तरह दर्दके साथ खींचने या जकड़ जानेकी तरह अनुभव होना।

हृत्पिण्ड ।—छाती धड़कती है (अरम-मूर, कैक्ट, कैल्मी, सोरो, लिलि-टाई, लिथिया-कार्ब, लिसिन, नक्स-मस, ऐ-आर्क्सेल; बहुत सुस्ती मालूम होना—कैल्के-आस्ट्रि; सरमें दर्दके साथ—नैजा) और रोगी घबड़ाहट प्रकट करता है; सोनेपर (लैके); बाईं करवट सोनेपर बढ़ना (डिजिट; बाईं करवट सो नहीं सकता—डैफ), हृद्पिण्डके प्रबल स्पन्दनकी वजहसे समूची देह काँपा करती है (एपिस, अरम, ड्रेकेन, सेनेगा, साइजि); कभी-कभी ऐसा मालूम होता है कि उदरमें कोई एक शक्ति उठकर हृत्पिण्डको दबा रही है; सवेरे कलेजा धड़कना; आशंका-जनक और सर-दर्दके साथ (इथ्य, ऐमोन-कार्ब,

ब्यूफो) ; शरीर हिलाने या शारीरिक परिश्रमके समय (डिजिट, फेरम, स्टैफ), बाईं करवट सोने बाद (फास) ; सो जानेपर (कैल्के-सल्फ) और नींद खुल जानेपर कलेजेकी धड़कनका बढ़ जाना (ब्यूफो, कैल्के, लैके, फास—भयनाक सपने देखकर जाग पड़नेपर—रस, सल्फ)। हृत्पिण्ड और धमनीकी गति जभी-तभी रुक जाती है ; वृद्धि—बाईं करवट सोनेपर। भोजनके बाद श्वास-प्रश्वासमें व्याघात और कलेजा धड़कना (ऐस्पार, ब्यूफो, कैल्के, कैम्फो, कार्बो-वेज, इग्ने, लाई, ऐ-नाई, नक्स-वोम, पल्स ; भोजनके बाद रुका हुआ श्वास-प्रश्वास—मैग-म्यू, सार्सा)।

गर्दन और पीठ।—गर्दनके पिछले भागकी अकड़न और दर्द, गला और सरके पिछले भागमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। ग्रीष्मातिसार रोगमें बच्चोंकी गर्दन और कण्ठ पतला हो जाता है ; दुबला (ऐ-ऐसिट, आर्स, कैल्के, सिङ्को, फेरम-आयोड, सार्सा ; जवान आदमियोंके उदरामय रोगमें दुबलापन ; मिडोरिन)। खाँसनेपर फूली हुई ग्रीवा-ग्रन्थिमें दर्द होता है ; बगलमें पपड़ीसे ढका या सूखा जखम निकल आता है। कमरमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो चोट लग गयी है और सुन्न मालूम होना, विशेषकर सबेरे ; कमरमें सुई गड़नेकी तरह या छेदनेकी तरह टपकका दर्द। त्रिकास्थि-प्रदेशमें ऐसा दर्द मानो चोट लग गयी है। मेरुदण्डमें अधिक चेतना ; पीठमें अकड़न मालूम होना, किसी कड़ी चीजमें पीठ दबाकर सोनेपर आराम मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—कन्धेकी सन्धिमें अकड़न और इस तरहका दर्द मानो मोच आ गयी हैं। अंगुलीकी सन्धियाँ सब अकड़ी हुई, अंगुलियाँ ;—सब सहजमें ही सिकोड़ी और फैलाई नहीं जा सकतीं। लिखनेके समय हाथ काँपता है। हाथकी त्वचा, विशेषकर नखके चारो ओरकी त्वचा सूखी और फटी हुई। कुनख (कैल्के, मर्क, रस, साइलि) ; नखके चारों ओर प्रदाह (नेट्र-सल्फ)। तलहत्थीके ऊपर मसे (ऐनाक) ; अंगुलीके ऊपर मसे (कैल्के, कास्टि, डालका, ऐ-नाइ, थूजा)। कर-स्वेद या हाथमें पसीना (कैल्के, कास्टि, कैलि-बाई, ऐ-नाई, पेट्रोल)। उरु-शिखर मानो मोच खा गया है, इस तरहका और सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है। दाहिने उरुसे घुटनेतक खींचनकी तरह दर्द। हाथ-पैरोंके गांसेमें अकड़न, कण्डार सब सिकुड़े और दर्द-भरे मालूम होते हैं (ऐमोन-मूर, कास्टि, साइलिका)। उरुकी

पेशियाँ सब फड़का करती हैं। बैठनेके समय जानु-सन्धिमें अकड़न मालूम होती है। जंघाकी पोटलीकी पेशीमें ऐंठन; चलनेके समय (कार्बो-ऐन, रस)। दोनों पैर बहुत चंचल; रोगी दोनों पैर बराबर हिलाये बिना रह नहीं सकता (इग्ने, जिङ्कम, वैलि)। पैर और चरणमें बहुत भार मालूम होता है। जानुके गासेमें दादकी तरह उद्भेद। दोनों पैर, विशेषकर गुल्फ-सन्धि सुन्न मालूम होती है। बैठने या चलनेके समय गुल्फ-सन्धि अवश और अकर्मण्य मालूम होती है। निचले पैरकी शिराएँ सब फूली या फैली मालूम होती हैं (हैमा, ऐ-फ्लू, लाई, पल्स)। दोनों पैर दुबले। पैरका अंगूठा लाल हो उठता है और चलने या खड़े होनेके समय फाड़ने या डंक मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है। तलवेमें जलन या बहुत ठण्डक मालूम होती है। पैरका पसीना रुका रहता है। कदर या गट्ठेमें सुई गड़नेकी तरह तकलीफ़ होती है।

सार्वाङ्गिक।—दोनों बाँह क्षीण और भारी मालूम होति हैं। हाथ-पैरमें ऐसा मालूम होता है कि झुनझूनी आ गयी है। हाथ-पैरोंमें, विशेषकर हाथ और पैरकी अंगुलियोंके अगले भागमें चुनचुनी होती है; बाँह और हाथ एवं जंघाकी पोटली वगैरह प्रदेशमें ऐंठन होती है (कूप्रम, हायो, रोबिनिया, प्लम्ब)। दाहिना हाथ फूला। हाथ-पैर हिलानेके समय मटमट करता है (कैलि-बाई, कैलि-कार्ब)। ताण्डव रोग—पासकी चीजोंपर ध्यान न देकर जोरसे उछल पड़ता है; माथेका दाहिना पार्श्व फड़कता है या रह-रहकर हिल उठता है; मनमें किसी तरहका डर पैदा हो जानेके बाद; सवेरे शय्यासे उठनेके पहले बहुत कमजोरी मालूम होती है। रोगी शय्यागत हो पड़ता है और अपनी कमजोरी समझकर पड़ा रहता है। आजन्म पैशिक सङ्कोचनकी वजहसे विकृत आकार (बाहरी दवाओंकी मालिशकी जरूरत रहती है)। तकलीफसे आँखमें पानी भर आता है (तकलीफसे रोता है—काफि, ग्लोन, प्लैट)। शिराका फूलना या फैलना (ऐ-फ्लू, हैमा, लाई, पल्स,); अच्छी तरह खाने, नहानेपर भी रोगी दिनोंदिन दुबला ही होता जाता है (ऐब्रोट, आयोड, सैनिक, टियुबर्क)। क्रोध, दुःख, भय, मर्म-पीड़ा या बहुत दिनोंका अपकार याद आ जानेकी वजहसे बीमारियाँ (स्टैफ)।

त्वचा।—शरीरमें जगह-जगह चुनचुनी होती है। शरीरकी त्वचा लाल हो उठती है। किसी तरहकी खुजली या उद्भेद नहीं निकलते; जीभ

जल जानेकी तरह मालूम होती है, मानो बहुत दिनोंसे बहुत ज्यादा नमक व्यवहार करता आया है ; लाल, खुजली भरी बड़े-बड़े लाल दाग निकलकर तेज खुजली पैदा कर देते हैं। समूची देहमें डंक मारनेकी दर्द मालूम होनेके साथ ही लाल फुन्सियोंसे भर जाता है। बहुत अधिक परिश्रम करने बाद आमवात (कोना) ; पुराना या कभी-कभी पैदा होनेवाला आमवात या शीत-पित्त (आर्स, कैल्के, क्लोरैल, हिप, लाई, रास) ; शीत और ज्वराधिकारमें (आर्स, रस)। सन्धि-प्रदेश और जरायु रोगमें (एपिस, बेल, पल्स, सिपि) ; खुजलाने-पर लाल हो उठता है ; बहुत ज्यादा खुजलाता है। सन्धियोंके गासेमें खुजलीके दाने पैदा हो जाते हैं और उससे त्वचाको क्षय करनेवाला रस निकला करता है ; गहरा, फटा-फटा पपड़ी जमा जखम। हाथ-पैरके गासेकी ओर पपड़ी जमा जखम पैदा हुआ करता है। शरीरकी त्वचा मलिन, रूखी और सिकुड़ी हुई या हरित् पाण्डु-वर्ण। लाल फोड़े, कुनख या नख-शूल ; नखके चारों ओरकी त्वचा सूखी और फटी हुई (ग्रैफ, पेट्रोल)। मलद्वारके चारों ओर और गर्दनके पिछले भागमें केशोंके सिरेपर दादकी तरह घने दाने पैदा हो जाया करते है ; (जानुके गासेमें—हिप, ग्रैफ)। अकौता—त्वचा क्षय करनेवाला, लाल और प्रदाह मिला ; केशसे ढके अंशके किनारे-किनारे अधिक दिखाई देता है ; बहुत ज्यादा परिमाणमें नमक खाना या समुद्रके किनारे रहने या समुद्रमें घूमनेपर बढ़ना।

निद्रा।—निद्रित अवस्थामें बहुत तरहके सपने देखता है, मानो घरमें चोर घुस आया है और नींद खुल जानेपर समूचा मकान खोज लिये बिना उसे विश्वास नहीं होता कि सपना झूठा था (सोरिन)। बार-बार जम्हाई और अङ्गड़ाई लेना ; शरीर हिलाना बहुत ही बुरा मालूम होता है ; औंघाई आती रहनेपर भी नींद नहीं आती (बेल, कैमो, ओपि)। दिनमें औंघाई और रातमें नींद न आना। सपनेमें घूमना ता निद्रावस्थामें घूमना इत्यादि (इग्ने, कैलि-फास)। बहुत चिन्ता या तीव्र शोककी वजहसे नींद न आना। रातमें एक बार नींद खुलनेपर फिर सहजमें नींद नहीं आती। ज्वालामयी या अनिवार्य तृष्णाके सपने। सोया-सोया चौंक उठता है और बोलने लगता है (कैमो, इग्ने, कैलि-कार्ब, पल्स)। उद्वेगपूर्ण या अशान्ति-जनक निद्रा, स्पष्ट कामोद्दीपक सपने, बहुत देरतक स्थायी लिङ्गका कड़ापन और वीर्य-स्खलन। रातमें माथेमें खून दौड़ा करता है। उद्भेद-जनक उत्ताप पैदा हो जाता है। पसीना और

धमनी आदिमें टपक मालूम होती है और कलेजा धड़का करता है। रातमें निद्रितावस्थामें कण्ठरोध हो जाता है और मुँहमें दबाव मालूम होता है।

शीत, उत्ताप और पसीना। - ज्वरका सूचना अवस्था, कम्प होनेके भयसे रोगी कातर हो पड़ता है, आलस्य, सर-दर्द और प्यास पैदा होते ही रोगी समझ जाता है कि अब कम्प पैदा हो जायगा; शीतावस्था—दिनके १० बजेसे ११ बजेके बीचमें प्रचण्ड और दीर्घ-काल व्यापी शीत पैदा हो जाती है; पैर, हाथ या पैरकी अंगुली या नितम्ब देश (जेल्स) से शीतका आविर्भाव होता है और ओंठ तथा नखसब नीले हो जाते हैं (चिनिन-सल्फ़, युपेट-पर्फि, थूजा); प्रबल तृष्णा—बार-बार और अधिक परिमाणमें पानी पीता है (ब्राई); ऐसा सर-दर्द मानो माथा फट जायगा; मिचली और कभी-कभी रोगी एकदम बेहोश हो जाता है। दिनके १० बजनेके साथ भयानक प्यास और कम्प, हड्डियोंमें उखाड़नेकी तरह दर्द, नख नीले और दाँत कट-कटाया करते हैं। उत्तापावस्थामें अधिकतर प्यास, असह्य सर-दर्द, मानो अनगिनती हथौड़ीसे माथा ठोंका जा रहा है; आच्छन्न भाव या होश न रहना (कैक्ट, ओपी, लोरो, मैंन्सि) या दृष्टि-लोप (पल्स), इसके साथ ही सुस्ती और उत्ताप, बहुत दिनोंका रोगी इतना कमजोर हो पड़ता है, कि उसे बाध्य होकर लेटे रहना पड़ता है और मिचली तथा कै हुआ करती है (इपिक, इयुपेट)। ऊपरी और निचले ओंठपर मोतीकी तरह ज्वरके दाने निकलते हैं (नक्स; ऊपरी ओठके ऊपर—रस) और दोनों ओंठोंके संयोग स्थानपर जखम हो जाता है; पसीनेवाली अवस्थामें प्यास, पसीना बहुत ज्यादा, पसीना होनेपर धीरे-धीरे सभी तकलीफें घट जाती हैं; पर पसीना होनेपर भी सर-दर्द नहीं घटता (सैम्बियु; पसीना होनेपर सर-दर्दका बढ़ना; युपेट), थोड़ा भी शरीर हिलानेपर बहुत पसीना होता है; जाड़ा लगते रहनेपर भी (ब्राई, सोरिन); पसीनेसे खट्टी गन्ध।

वृद्धि।—दिनके १० बजनेके समय; समुद्रके किनारे वास करनेपर; धूपमें या आगके उत्तापसे; मानसिक परिश्रमके बाद; बोलनेपर; पढ़ने या लिखनेपर; चलने बाद; गर्म भोजनकी चीज़ छूने या मुँहमें हवा खींचनेपर (दाँतका दर्द); ठण्डे पानीय पीने या सोने बाद (खाँसी और कलेजेमें धड़कन); बाईं करवट सोनेपर; शरीर हिलाने या परिश्रम मात्रसे; सीधे होकर खड़े होनेपर (कमरमें दर्द सोने बाद, रमणके बाद और पूर्णिमाके समय,

भोजनके बाद ; रोटी, खट्टे पदार्थ, नमक या शराब पीने और भोजनके बाद, सवेरेका भोजन करने और छूने या दबानेपर ।

उपशम ।—निर्मल वायु सेवन करनेपर ; ठण्डे पानीसे नहानेपर ; उपवास करनेपर ; दोपहरके भोजनके बाद, दाहिनी करवट सोनेपर ; कड़ी शय्यापर पीठके बल सोनेपर ; कसकर वस्त्र पहननेपर, मलने या रगड़नेके बाद (सरमें चक्कर ; सर-दर्द) और हाथ हिलानेपर (श्वास-यंत्र) ।

सम्बन्ध ।—**अनुपूरक** ।—एपिस-मेलिफिका ; सिपिया ; कैप्सिकम—इसके बाद और पहले दोनों ही समय नैट्र-म्यूर लाभदायक है । नयी बीमारीमें जिन सब लक्षणोंके रहनेपर इग्नेशियाका प्रयोग हुआ करता है, पुरानी बीमारीमें उन्हीं सब लक्षणोंमें नेट्रम-म्यूरियेटिकमकी जरूरत पड़ती है। इसके बाद सिपिया और थूजाका प्रयोग होता है। ज्वरके प्रकोपके समय किसी तरह भी इसका प्रयोग न करना चाहिये। नेट्रम-म्यूरके प्रयोगके बाद सरमें चक्कर आना, सर-दर्द या कमजोरी यदि बहुत दिनोंतक स्थायी रहे तो नक्सका प्रयोग करनेपर ये सभी लक्षण आराम हो जाया करते हैं ।

तुलनीय ।—जली हुई या चित्र-विचित्र जीभमें—आर्स ; रस ; कैलि-बाई ; रैन (खट्टापन) ; व्याधिशंकाके साथ अजीर्ण—नेट्रम-सल्फ ; आँसू बहना—पल्स ; छात्रियोंका सर-दर्द—कैल्के-फास ; धूप लगनेके कारण सर-दर्द—स्पाइजि, जेल्स, ग्लोनोइन, सैंगु ; सर-दर्दके कारण आंशिक अन्धापन—कैलि-बाई, आइरिस ; सर-दर्दके साथ खाँसी—ब्रायो, सल्फ ; खाँसनेके समय पेशाब हो जाना—फेर, कास्टि, पल्स ; राक्षसी भूख, पर दुबला—आयोड ; ओंठपर बोखारके दाने—हिपर, रस, आर्स ; उद्वेग और पक्षाघातग्रस्त—जेल्स, स्टैफ ; मेरुमज्जाकी उत्तेजना, कमरमें दर्द—कैलि-बार्ब ; हृत्पिण्ड-प्रदेशमें सर्दी मालूम होना—पेट्रोलियम ; मुँहपर तेलहा पसीना—ब्रायो ; गुह्यद्वारमें मानो कुछ अटक गया है—सिपिया ; मलान्त्रका सङ्कोचन—लैके, बेलेडो, कास्टिक, ओपियम इत्यादि ; ऋतुस्रावके समय विषाद—लाइकोप, सिपिया ; हृत्पिण्डमें सुई गड़नेकी तरह दर्द—स्पाइजि, आर्स कैलि-कार्ब, कार्बो-वेज, लैके, सल्फ ; पैरमें पानी लगना—लाइकोपो, गंभीर या सोचनेके विषयोंपर हँसना या उपेक्षा करना—ऐना, फास्फो, लाइकोपो ; जीभमें केश मालूम होना—साइलिसि ; आँखसे बहुत काम लेनेकी वजहसे सर-दर्द—आर्स ।

अनुकूल।—सम्बन्ध।—बेल, ब्राई, कैल्के, लैके, लाई, फास, पल्स, रस-टक्स, सिपि, साइलि, सल्फ, कैलि-सल्फ, नेट्रम-सल्फ, कैल्के-फास, फेरम-फास।

सदृश।—आर्स, रस, कैलि-ब्राई, टैराक्स, रैनान-स्क्लिरेट, नेट्रम-सल्फ, पल्स, सिपि, इग्ने, कैल्के-फास, साइलि, जेल्स, ग्लोन, सैङ्गिविन, आइरिस, लिथि-कार्ब, लाई, कैप्सि, ब्राई, स्क्युला, कास्टि, पल्स, हिप, रस, नक्स, ऐब्रोट, आयोड, सैनिक, सार्सा, टियुबरक्युलिनम, कैलि-कार्ब, सिङ्को, ऐ-सल्फ, लैके, वेरेट।

दोषघ्न।—नाइट-स्पि-डल—सूँघना; फास्फोरस (या भोजनमें नमक ज्यादा खाना); आर्सेनिक (समुद्रके पानीमें नहाना)।

शक्ति।—६ठे शततमिकसे १००० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—४० से ५० दिन।

नेट्रम नाइट्रिकम

(NATRUM NITRICUM)

दूसरा नाम।—नाइट्रेट आफ सोडा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और द्रव तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—कब्जियत; खूनकी कमी; कमजोरी; उदराध्मान; कानका दर्द, कानका प्रदाह।

उपयोगिता और आभास।—पेट फूलना और पेटमें वायु होनेके कारण पैदा हुए अन्त्र-शूल आदि रोगोंमें इसका फायदा दिखाई देता है। उदरकी पेशीका पीछेकी ओर प्रबल खिंचाव; इसके अन्त्रशूलका प्रधान निर्णायक लक्षण है। दर्द-भरी कब्जियत, खूनका न रहना और शरीरमें बहुत सुस्ती मालूम होना—अवस्था-विशेषमें इससे आराम किया जा सकता है। होमियोपैथीके सदृश-विधानमें जैसे—"ऐकोनाइटम" तन्तुजायु या बायोकेमिकमें जैसे—"फेरम फास्फोरिकम है, भिषकप्रवर रेडिमेचर "नेट्रम नाइट्रिकमका" भी उसी तरह प्रादाहिक रोगोंकी पहली अवस्थामें व्यवहार करते थे।

लक्षणावली

मन।—बहुत अधिक मानसिक उत्तेजना (मानसिक अवसाद)।

मस्तक।—माथेमें जड़ता, ऐसा मालूम होना, मानो बहुत अधिक पढ़ा है।

कान।—कर्ण-पटहमें दर्द मालूम होना। कर्णशूल—सन्ध्याके समय कानमें दर्द पैदा हो जाता है; बायाँ कान गर्म और दाहिना कान ठण्डा (दाहिना कान गर्म और बायाँ कान ठण्डा—कैलि-कार्ब; एक कान ठण्डा और दूसरा कान गर्म—चेलिडो); बायें कानसे यह उत्ताप कानके पीछे या कनपटीको पारकर ललाटमें जा पहुँचता है।

पाकस्थली और अन्त्राशय।—मुँह और कण्ठमें बहुत ही बेचैन कर देनेवाली जलन और सूखापन मालूम होना। ओंठ और जीभमें तांबेके जङ्गकी तरह स्वाद। खट्टी डकार, आध्मान-वायु, पेटके ऊपरी भागमें और छातीमें दबाव मालूम होना (कैमो, फास); वृद्धि—शरीर हिलानेपर ; घटना—डकार या वायु निकलनेपर। अन्त्रशूल रोगमें उदरकी पेशियाँ बड़े वेगसे मेरुदण्डकी ओर खिंचती हैं (प्लम्ब, आर्स, काक्यु, जिङ्क, टैबाक)।

मल।—कब्जियत, गांठें सब बड़ी (प्लम्ब); बड़े कष्टसे (ऐल्यू, लैक-डिफ्लो) और धीरे-धीरे मल निकलता है और अन्तमें ऐसा मालूम होता है, कि मलान्त्रमें मलका कुछ अंश रह गया (कैलि-कार्ब, नक्स-वोम, लिलि-टाइग्रि, लाईं, मर्क, सिनैपिस, सल्फ)।

पेशाब। — मूत्रनलीमें श्लेष्मा अधिक पैदा हो जाना (हाइड्रैस्ट, टेरिब), बार-बार और बहुत बेचैन करनेवाला पेशाबका वेग, बहुत गर्मी और बहुत ज्यादा पसीना होनेपर भी बहुत ज्यादा पेशाब होता है; पेशाब सफेद और उसका आपेक्षिक गुरुत्व बहुत अधिक रहता है।

शीत, उत्ताप और पसीना। —शरीरके ऊपरी अंशसे लेकर बाँहकी राहसे सर्दी महीन सूतकी तरह चारों ओर फैल जाती है और १५ मिनटोंतक शय्यामें सोने बाद सारा शरीर गर्म हो जाता है। कभी-कभी कँपकँपी पैदा करनेवाली सर्दी मालूम होना। पैरसे लेकर पैरकी पोटलीतक बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है और रोगी उसे अनुभव करता है। बायें पैरका निचला आधा अंश

बरफकी तरह ठण्डा। समूचे बायें कानमें जलन करनेवाला उत्ताप मालूम होना और दाहिना कान ठण्डा मालूम होता है; थोड़ी ही देर बाद कानमें गर्मी पैदा होकर बाईं कनपटीमें फैल जाती है और ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो बायाँ ललाट भीतरकी ओर दब रहा है। बहुत सुस्ती; बढ़ना—प्रत्येक बार शरीर हिलानेपर, विशेषकर सीढ़ी चढ़नेके समय (सिपि; बैठे रहनेकी अवस्थामें अधिक मालूम होता है—कैलि-नाइ); खूनकी कमी (कैलि-कार्ब, फेरम-फास)।

वृद्धि।—परिश्रम करनेपर और सीढ़ी चढ़नेके समय।

घटना।—डकार आने या वायु निकलनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—प्लम्बम (सीसेका विष लगनेपर), कैमोमिला, फास्फोरस, कैलि-कार्ब, काकुयल्स, आर्सेनिकम, टैबाक (तलपेट), कैलि-नाइट और सिपिया।

शक्ति।—२रा या ६ठा दशमिक विचूर्ण।

नेट्रम नाइट्रोसम

(NATRUM NITROSUM)

दूसरा नाम।—नाइट्रेट आफ सोडियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल रूपमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—संन्यास, रातमें पतले दस्त, बेहोशी, हृद्शूल, सारा शरीर नीला होना, लक्षणमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—ऐमिल नाइट्रेट, ग्लोनोइन, ब्रायो।

दोषघ्न।—काफी।

शक्ति।—१x से ३x तक।

नेट्रम फास्फोरिकम

(NATRUM PHOSPHORICUM)

दूसरा नाम ।—फास्फेट आफ सोडा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अम्लत्व (विशेषकर बच्चोंको) ; आँखोंका प्रदाह ; बहुमूत्र ; अजीर्ण ; अंत्रशूल ; विसर्प ; पाकाशयका शूल ; गण्डमाला ; ग्रन्थियोंका फूलना ; गलगण्ड ; वात ; श्वेत-प्रदर ; यक्ष्मा ; बन्ध्यत्व ; सूतकी तरह कृमि ; आमवात ; वृहत् और लम्बी कृमि ।

उपयोगिता और आभास ।—यद्यपि नेट्रम फास्फोरिकम दवा बायोकेमिक शास्त्रके प्रवर्त्तक डा० सुसलरकी चलायी हुई है, तथापि डा० फेरिङ्गटनने सदृश-विधानके मतसे इसका प्रतिपादनकर नीचे लिखे कई निर्णायक लक्षण बताये हैं—(१) रातमें रोगीके मनमें एक तरहका ऐसा डर पैदा हो जाता है, जो कहा नहीं जा सकता, मानो कोई विपत्ति आना ही चाहती है। (२) अस्पष्ट दृष्टिके साथ सर-दर्द। (३) ऐसा अनुभव होना कि जीभपर एक टुकड़ा केश गिरा हुआ है। (४) खट्टी डकार और खट्टे पानीयकी तरह वमन। (५) अन्त्रशूल और अम्लत्वकी वजहसे उदरकी पेशियोंका सिकुड़ना-फैलना। (६) कृमि लक्षण—नाकके अगले भागमें और मलद्वारमें खुजलाहट। (७) उदरामय—मल हरा, पीला निकलता है और पाखानेके बरतनमें चारों ओर छिटक जाता है ; वृद्धि—सवेरे शय्यासे उठनेपर और थोड़ा इधर-उधर घूमनेपर हो। (८) मूत्रस्थली (मूत्राशय) में शिथिलता मालूम होना। (८) रातमें प्रायः अनजानमें वीर्यपात हो जाया करता है। (१०) हृत्पिण्डमें दर्द और बेचैनी मालूम होना। प्रत्यङ्ग आदि तथा पैरके अंगूठेमें और हृत्पिण्डमें दर्द, निम्नाङ्गका दर्द अच्छा हो जानेपर हृत्पिण्डमें दर्द पैदा हो जाता है। (११) पेशी और कण्डरा आदिका संकोचन। (१२) गुल्फप्रदेशमें अकौताकी तरह उद्भेद निकलना और खुजलाना। (१३) छोटी सन्धियोंका वात और नया सन्धिवात।

लक्षणावली

मन।—जिस रातमें वीर्यस्खलन हो जाता है उसके दूसरे दिन, दिनभर रोगी उदास रहता है (ऐ-फास, सिपि), नैराश्ययुक्त, पढ़ने-लिखनेमें मन नहीं लगा सकता। रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो उसे श्लेष्मा-ज्वर हो जायगा। दुःसम्बादकी आशंका (कैल्के-फास)। नींद खुलनेपर अकारण ही डर जाता है (नैट्र-मूर, सल्फ़ि, स्ट्रैमो—बालकोंको रातमें भूतका भय मालूम होता है—कैलि-फास)। सामान्य कारणसे ही चौंक उठता है (काकुर, ऐ-नाई, नेट्र-मूर, सोरिन)। स्मरण-शक्तिका लोप हो जाना (ऐनाक, कैलि-ब्रोम, लैके, नक्स-मस)। नींद खुलनेपर रोगीको ऐसा भ्रम हो जाता है कि घरकी हरेक चीज़ एक-एक मनुष्य है।

मस्तक।—माथा खाली मालूम होता है और रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि वह गिर जायगा (ग्रैफा, सोरिन), खड़े होने, उठने या शरीर हिलानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो चारों ओरकी सभी चीजें चक्कर खा रही हैं (मैंग-कार्ब, ब्राई, लाई, नेट्र-मूर)। सरके भीतर और नाककी जड़में जड़ता मालूम होना (आर्जेण्ट-नाई); अध्ययनके समय ललाटमें भार मालूम होना। माथेके दाहिने पार्श्वमें छेदनेकी तरह तेज़ दर्द।

आँख।—क्षीण दृष्टि (नैट्र-आर्स, फास)—गैसकी रोशनीमें रातके ८ बजनेके समय बढ़ना; सन्ध्याके बाद बत्तीकी रोशनीमें बढ़ना (आर्सनिकम मेटालिकम)। आँखोंमें कुछ-कुछ जलन और आँसुओंका स्राव; रोगीको वाध्य होकर आँखें मलना पड़ता है (जिम्नोक्लेड, मेजेर)। आँखोंमें मानो बालू गिर गयी है ऐसा अनुभव होना (आर्स, ऐसिक्लप-टियु, कार्बो-वेज, कोरैल, डिजि, ऐ-फ्लू, हिप, कैलि-मूर, लिडम, मिडोरिन, साइलि, सल्फ)। आर्त्तव-स्रावके समय दाहिनी आँखमें दबाव मालूम होना (क्रोकस), तलपेटमें बहुत वायु होनेकी वजहसे वक्षके भीतरतक दर्द मालूम होता है और बायें चक्षुगह्वरमें दर्द हुआ करता है। दाहिने चक्षुगह्वरमें स्नायुशूल (ऐ-कार्बोल, इस्कार्, हिप, चेलिडो, लाइकोपस, मेजेर, साइलि, रैनान-बल्बो)। दृष्टि अस्पष्ट; आँखके सामने झिलमिलाहट या चीजोंका काँपना (बेल, कास्टि, फार्मिका, सोरिन, साइक्ले, नक्स), गैसकी रोशनीकी शिखाके चारों ओर शोभा या गोलेकी तरह एक छटा दिखाई देना (ऐनाक, साइक्ले, फास, सार्सा), कृमिकी वजहसे तिर्यक

या डेरा देखना (सिना, साइक्लो, स्पाइजि)। आँखोंका प्रदाह, आँखसे दहीकी तरह गाढ़ी और सोनेकी तरह पीली कीच निकलती है।

कान।—बाएँ कानके बाहरी भागमें इतनी असह्य खुजलाहट और जलन पैदा हो जाती है, कि रोगी खुजलाते-खुजलाते खून निकाल डालता है (आर्जेण्ट-मेट ; नाक खुजलाकर खून निकालता है—एरम-ट्राई) ; पाचन-क्रियामें विकार और अम्लकी अधिकताकी वजहसे सुननेमें गड़बड़ी होती है, मानो किसी बहुत ऊँची जगहसे बूंद-बूंद टप-टप पानी किसी गोल पात्रमें गिर रहा है—कानमें इसी ढङ्गकी आवाज़ होती है, विशेषकर लेटे रहनेकी अवस्थामें। मध्यकर्णसे पर्णपश्चान्नलीतक पिट-पिट सड़-सड़ हुआ करता है। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो बगलवाले घरसे किसीके पैरकी आवाज़ सुन रहा है।

नाक।—नाककी जड़में भरापन और भार मालूम होना। ऐसा मालूम होता है, कि नाक श्लेष्मासे भरी है, पर सहजहीमें श्लेष्मा निकलता है, बायीं नाकमें जखम और दर्द ; रोगी लगातार उसे नोंचा करता है ; जखमपर पपड़ी या शल्क पैदा हो जाता है, बाईं नाकमें कुटकुटाहट होनेपर आँखमें पानी भर आता है। नाकसे बदबू निकलती है (ऐ-फ्लू, कैलि-बाई, फास, सल्फ, सिपि)।

मुखमण्डल।—जीभकी जड़में सुनहला पीले रंगका लेप चढ़ा रहता है। दाहिने गालके भीतर तेज़ दर्द। निचले हनुके दाहिने कोनेमें बहुत दर्द और स्पर्शका सहन न होना। नाक और चेहरेमें बहुत खुजलाहट। पेषक दन्तकी जड़में मसूढ़ेका फोड़ा। जीभ मैली, सफेद लेप-चढ़ी और उसके बीचका स्थान भूरे रंगका। मुख विवरके ऊपरी अंशके पीछे सोनेकी तरह पीला या मक्खनकी तरह लेप चढ़ा ; ऐसा अनुभव होना कि जीभके अगले भागमें केशका एक टुकड़ा गिरा हुआ है (साइलि—जीभके ऊपर—नेट्र-म्यू ; पिछले भागमें—कैलि बाई)। जीभके अगले भागमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द ; नींद खुलनेपर मुँहमें ताँबेके जंगकी तरह स्वाद पैदा हो जाता है ; बोलनेके समय ऐसा मालूम होता है कि कोई पदार्थ कण्ठ रोध कर रहा है, इसीलिये, मुँहसे बोली नहीं निकलती (नेट्र-म्य)।

गलेके भीतर।—कण्ठमें श्लेष्मा संचय होना। नाकके पिछले छेदमें गाढ़ा गोंदकी तरह निर्मल श्लेष्मा सञ्चित होता है। पश्चान्नासासे बूँद-बूँद गाढ़ा

पीला श्लेष्मा कण्ठमें गिरा करता है, विशेषकर रातमें ; कण्ठ साफ़ करने या यह बलगम निकाल फेंकनेके लिये रोगीको बाध्य होकर उठ बैठना पड़ता है। ऐसा अनुभव होता है, कि कण्ठमें एक गुल्म या ठेपी अड़ी हुई है (कास्टि, सिपा ; इग्ने, कैलि-कार्ब, सिपी, नेट्र-आर्स), कण्ठके दाहिने पार्श्वमें जखमकी तरह मालूम होना, (हैमा, लैक-कैन, मर्क, लाई, मर्क-प्रोटो)—ऐसा मालूम होता है, मानो, उसमें एक आल्पीन अड़ी हुई है (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, डलिकस हिप, नेट्र-म्यू)—जलीय पदार्थ निगलनेसे यह अनुभूति बढ़ती है और कड़ी चीज निगलनेके समय घट जाती है (इग्ने)।

पाकस्थली ।—घी या चर्बीमें पकी चीजें खानेकी वजहसे अजीर्ण रोग (कैलि-म्यू, पल्स, सिपी, स्पाइजी) और ग्रीष्मातिसार। पाकस्थली शून्य मालूम होती है और भूख अस्वाभाविक (नेट्र कार्ब—ऐब्रोट, सिना, आयोड, सैबाड)। बहुत ज्यादा दूध और मिठाई खानेवाले बच्चोंके अम्लकी वजहसे आँतोंमें शूलका दर्द, पेशाब रोकनेकी शक्तिका न रहना, कण्ठनाली प्रदाह, पाकस्थलीमें बहुत अधिक अम्ल पैदा होनेका लक्षण (ऐ-लैक) और पेशियोंका आक्षेप और ज्वर। तेज़ गन्धवाली चीजें, मछली, अण्डा और भूनी हुई मछली खाना पसन्द करता है। रोटी और मक्खनसे अरुचि। डकार (कैल्के, मैग-कार्ब, नेट्र-म्यू, नक्स, फास), उदरोर्द्ध प्रदेशमें भार और दबाव मालूम होना। पनीरकी तरह गाढ़ा खट्टा पदार्थ वमन करता है (कैल्के, सिङ्की, लाई, मैग-कार्ब, मैग-म्य, नक्स-वोम, पल्स) और पाकाशय तथा अन्त्राशयमें शूलका दर्द पैदा हो जाता है ; फेन-भरे पदार्थका वमन (वमनके बाद दाँत खट्टे हो जाते हैं—ऐड्रोप-सल्फ फेरम-फास), अम्ल रोगसे पैदा हुई पाकाशयकी सर्दी (कैल्के, कार्बो-वे, कैलि-कार्ब, नक्स, रोबिनिया, ऐ-कार्बोल)।

अन्त्राशय ।—कोखमें और बायीं कोखके पिछले भागमें छेदनेकी तरह तेज़ दर्द, पेटमें बहुत अधिक वायु होना—विशेषकर भोजनके बाद (आर्जेण्ट-नाई, डायस्को, लाई—खट्टी चीजें खानेसे बढ़ना—ऐ-फास) ; उदरमें कुलकुल आवाज होती है। पाखाना होनेके समय ऊपर जानेवाली बड़ी आँतके भीतरसे ऐसा मालूम होता है मानो एक गोली गिर पड़ी। अम्ल रोगमें अन्त्र-शूल और उदरमें दबाव मालूम होना। अंत्र-शूल—मानो पेटमें पैदा हुए आध्मानकी वजहसे मूत्राशयके ऊपर दबाव जैसा अनुभव होता है (प्रूनस-स्पाइनोसा-मूत्राशयके ऊपर आध्मानके कारण दबाने जैसा मालूम होना इसी वजहसे उदर ऐंठ

जाता है और दर्दसे व्याकुल होकर रोगी टेढ़ा होकर दोहरा जाता है) और इसके कारण बार-बार पेशाबका वेग उपस्थित हो जाता है। चलनेके समय शूल की तरह दर्द ; चलनेसे बढ़ना (ऐस्क्लिपियस, ऐस्टेकस-फ्लू, बेल, कोलो, नक्स-वोम—चलनेसे घटना—डायस्को, पल्स)। तलपेटमें बहुत अधिक दर्द और स्पर्श सहन न होना (एपिस)।

मलान्त्र और मल।—चलनेके समय मलद्वारमें ऐसा मालूम होता है, मानो छोटी-छोटी काठकी कीलें गड़ रही हैं (छूते ही ऐसा मालूम होता है—ऐ-नाई—पाखाना होनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो उसमें टूटे काँच गड़े हैं—रैटान)। मलद्वारकी त्वचा क्षय हो जानेकी तरह मालूम होना। बहुत जोर लगाये बिना आपही आप पाखाना नहीं होता। अंत्रशूल और उदरामय (कैमो, कोलो, डायस्को)—वायु त्याग करनेका साहस नहीं होता, कि कहीं पाखाना न हो जाय (ऐकोन, ऐलो, कास्टि, नेट्र-कार्ब, ओलियेन, ऐ-फास, पोड़ो, वेरेट)। रमणके बाद पुरुष रोगीको पाखाना पेशाबका वेग पैदा हो जाती है ; जो पाखाना होता है वह बहुत पतला और थोड़ा। उदरामय—मल पीली आभा लिये हरा (लेप्टैन, नैट्र-सल्फ, टैबाक) और छोटे-छोटे मलके टुकड़े मिला (ऐको, कैमो)—बच्चोंके गर्मीके दिनके अतिसारमें (फेरम-फ़ास)। भोजन करते-करते एकाएक पाखाना लग आता है (क्रोटोन, वेरेट—भोजन समाप्त होते ही लग आता है—ऐलो, कोलो, क्रोटोन-टिग, फार्मिका, लाई, पोडो, ट्राम्बिड)। दीर्घ और कोमल मल सहजमें ही और अनायास निकल जाता है, पर पाखाना हो जाने बाद भी ऐसा मालूम होता है कि बहुत-सा मल मलान्त्रमें रह गया है (जेल्स, ऐ-नाई—मानों थोड़ासा मल रह गया—नेट्र-नाइट, कैलि-कार्ब, नक्स-वोम, लिलि-टाई, लाई, मर्क, सल्फ, सिनैपिस) आँतोंमें महीन क्रिमि (ऐब्सिन्थ, सिना, फेरम, जैट्रो, कैलि-म्यूर, मर्क (सल-फर और मर्क पर्यायक्रमसे प्रयोग करना चाहिये) सैबाड, साइलि, स्पाइजि, स्टैफि, टैरिब, टियुक्रि) ; नाकमें खुजलाहट, बीच बीचमें तिर्यक दृष्टि, तलपेटमें दर्द और उद्वेगपूर्ण निद्रा।

पेशाब।—मूत्राशयपर आध्मान या उदरके भीतरके वायुके दबावकी वजहसे रोगीको वाध्य होकर वमन करना पड़ता है, परन्तु इसपर भीमूत्राशयके ऊपरका दबाव नहीं घटता। पेशाबके समय जलन। संगमके बाद मूत्रनालीके

मुंहपर खुजली और जलन करनेवाला उद्रेक होता है। सवेरे शय्यासे उठनेपर बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होता है। मूत्राशयकी सङ्कोचन शक्ति गायब हो जानेकी वजहसे पेशाबका सोता जल्दी रुक जाता है। प्रबल वेग दिये बिना फिर पेशाब नहीं होता।

पुं०-जननेन्द्रिय।—कामोद्दीपना और कामोद्दीपक सपने और रोज रातमें अनजानमें एक या दो बार रेतःस्खलन हो जाता है (नेट्र-सूर, आस्टिले, ऐमोन-कार्ब, फास—एक रातमें बहुत बार और सङ्गमके बाद भी—ऐ-फास)। वीर्य-स्खलन हो जाने बाद कमरमें कमजोरी (डायस्को, ग्रैफ,—कमरमें दर्द—कोबा ट, सार्सा) जानुमें कपकपी (जानुकी कमजोरी—डायस्को)—चलनेके समय ऐसा मालूम होता है मानो घुटने मुड़ जायँगे। हरेक रातमें लिङ्गोद्गमके पहले अण्डकोषमें (विशेषकर बाएँ अण्डकोषमें) थोड़ा दर्द मालूम होता है। अण्डकोष और रेतोरज्जुकी खींचन और अकड़न। रातमें जीवन्त सपने और रेतोस्खलन—संगमके बाद भी स्वप्नदोष हो जाता है (ऐ-फास, नेट्र-सूर, फास) वीर्य पतला पानीकी तरह और उसमें सड़े पेशाबकी तरह गन्ध।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तव-स्रावके समय—दिनमें दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे (कैल्के, ग्रैफ, नक्स-मस, फास, साइलि—तलवेमें जलन होती है—कार्बो-वे, पेट्रोल, सल्फ) और दाहिनी आँखमें दबाव मालूम होता है; स्राव—पहले उजला। आर्त्तव स्रावके बाद तकलीफ आदिका बढ़ना (क्रियो, नक्स-वोम); हृद्-प्रदेशमें कम्पन, सर-दर्द, दाहिनी कलाईका वशमें न रहना और दर्द एवं दोनों जानुओंके कण्डार सब मानो संकुचित हो गये हैं—ऐसी खींचन मालूम होती है। प्रदर—स्राव दहीकी तरह (पल्स, सिकेलि) या मधुकी तरहके रंगवाला, खट्टी गन्ध (वन्ध्यात्वके साथ); त्वचाको क्षय करनेवाला (ऐमोन-कार्ब, क्रियो; युपियोन, पल्स, साइलि) और पानीकी तरह (क्रियो, लैक-कैन, मूरेक्स, सिफिलिन); जरायु-भ्रंश रोगमें पाखाना होने बाद सुस्ती मालूम हुआ करती है। गर्भवतियोंके अम्लरोग और सवेरेके समय वमन।

श्वास-यन्त्र।—खाँसी, पानी पीने बाद (वेरेट; कण्ठमें खुजलीकी वजहसे; मर्क—बरफका पानी पीनेपर)। लगातार खाँसी और कफ निकला करता है—खाँसनेपर स्तनमें दर्द मालूम होता है। वक्षगह्वर खाली मालूम

होता है, भोजनके बाद बढ़ना। वक्ष-गह्वरके गभीरतम प्रदेशमें जलन-विशेषकर दाहिने पार्श्वमें। युवकोंके यक्ष्मा-कासकी चरमावस्था—हृद्-प्रदेशमें कम्प अनुभव होना —विशेषकर सीढ़ी चढ़नेके समय, (आर्स)। मानो हृत्पिण्डसे एक छोटा-सा खूनका गोला या खूनका बुलबुला उठकर, धमनीमें प्रवेश कर रहा। पैरके अंगूठे और प्रत्यङ्ग आदिका दर्द बन्द होंजानेपर, हृत्पिण्डके मूल-देशमें एक तरहकी अवक्तव्य यंत्रणा या बेचैनी मालूम होती है (ग्रैफ, टेल्यू)। नाड़ी तेज़ और उछलती हुई (ऐमिल, आइबिरिस)।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनके दोनों ओर धीमा-धीमा दर्द (फेरम-फास, रस-वेन—पीठमें धीमा दर्द—ऐगार, कैल्के, फेरम-फास—त्रिकास्थिसे ग्रीवाके पिछले भागतक—सिपि) और सुस्ती तथा थकन मालूम होना। लसिका-ग्रन्थियोंका फूलना—श्लेष्मा या वातकी वजहसे (मर्क, स्टिलिङ्ग, बैराई-मूर, कार्बो-ऐन, सिस्टस-कैन, डालका, स्पञ्जि, साइलि)। गलगण्ड (थाइरायडिन, आयोड, स्पञ्जि, लैपिस-ऐल्बम); दाहिनो कोखमें तेज दर्द। दाहिनो कलाई और बाईं गुल्फसन्धि क्षीण मालूम होती है—ऋतुके बाद। हाथ पैरके सन्धि-प्रदेशमें सिरम या तेलकी तरह पदार्थ संचय करनेवाले झिल्लीके सूखेपनकी वजहसे रगड़की आवाज अर्थात् कड़कड़ाहट—चलनेके समय या प्रत्यङ्गोंको मोड़नेके समय (कोलोफिल)। बायाँ बाँह बहुत क्लान्त मालूम होता है, दोनों बाहु इतने क्षीण मालूम होते हैं, कि रोगी उन्हे लटकाये रहता है (लैके, लिसिन, फाइटो) उठा नहीं सकता; दाहिना बाहु बहुत भारी मालूम होता है (ऐलो, ऐमोन-मूर)। लिखनेके समय प्रायःही बीच-बीचमें प्रसारक पेशी जकड़ जाती है (इपिक)। ऋतुके बाद दाहिनी कलाईमें दर्द—मानो पक्षाघात हो गया है; कभी-कभी वह जकड़ जाता है। दाहिने हाथकी अंगुलीमें विशेषकर अनामिकामें शूल बेधनेकी तरह तेज दर्द चलते-चलते दोनों पैर अवश हो जाते हैं, फिर आगे नहीं बढ़ते—मानो पक्षाघात हो गया है। दोनों पैरोंके कण्डार सब अकड़े मालूम होते हैं; मानो जानुके कण्डार सब संकुचित हो गये हैं। चलनेके समय पैरकी पोटली जकड़ जाती है। इस तरहका दर्द मालूम होता है, मानो सुई गड़ रही है। छोटी सन्धियोंका वात और नया सन्धि-वात।

त्वचा।—शरीरके कितने ही स्थानोंमें खुजली पैदा हो जाती है—विशेषकर गुल्फ-सन्धिके स्थानपर—शय्यामें सोनेपर बढ़ना। गुल्फ सन्धिके चारों ओर अकौताकी तरह उद्भेद निकल आते हैं। अम्लरोगमें अकौता निकलना

उससे शहदकी तरहके रङ्गका रस निकलता है। बालक और बच्चोंको दुधिया फोड़े निकलना, सुनहरे रङ्गके दाने। मधुमक्खीके छत्तेकी तरह दाद ; त्वचा चिकनी, लाल और चमकीली। विसर्पिका ; दोनों पैर दिनमें बरफकी तरह ठण्डे और रातमें जलन-भरे—ऋतुके समय। मुष्ककी त्वचा, शिश्न और मल-द्वारके चारों ओर खुजली।

वृद्धि।—चलनेपर, सीढ़ी चढ़नेपर, रमणके बाद और अन्धड़-पानीके दिनोंमें।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—सिपिया (सन्धि-स्थानोंमें उद्भेद और सूजन); एपिस (आमवात)।

सदृश।—ऐसिड-बेन, ऐब्रोट, कैल्क-आस्टि, कार्बो-वेज, ऐसिड-कार्बोल, कोल्चि, गुयायेक, कैलि-कार्ब, लाई, नक्स, रोबिनिया, रियुम, सल्फ, कैलि-बाई, साइलि, नेट्र-मूर, कास्टि, आर्टिका।

तुलनीय।—अम्लत्व और गण्डमाला—कैल्के, रियुम ; छोटी संधियोंका वात—लाइको, सल्फ, गुयेकम ; पाकाशयकी सर्दी—कैल्के-कार्ब, नक्स-वोम इत्यादि। बोली बन्द प्राय—नेट्रम-मूर ; जीभके ऊपर केश मालूम होना—नेट्रम, साइलि, कैलि-बाई। क्रमि—सिना, टियुक्रियम ; पानी पीनेपर खाँसी—साइलि इत्यादि।

शक्ति।—३रे दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

नेट्रम सेलिनिकम

(NATRUM SELENICUM)

दूसरा नाम।—सेलिनेट आव सोडियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—स्वरयन्त्रका क्षय रोग और पुराने स्वर-प्रदाह रोगमें सामान्य स्वरभङ्ग और खून-मिला बलगम निकलना लक्षणमें विशेष लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

नेट्रम सैलिसाइलिकम

(NATRUM SALICYLICUM)

दूसरा नाम ।—सैलिसिलेट आव सोडा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और तरल आकारमें तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः— सङ्कोचन ; कमज़ोरी ; सुस्ती ; कानमें आवाज़ ; ज्वर ; बहरापन ; शोथ ; अस्थि-वेष्ट-प्रदाह (अस्थिकी आवरक झिल्लीका प्रदाह) ; आमवात ; तोतलाना ; डेरा देखना या तिर्यक दृष्टि इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—बहरापन और कानमें जखम-मिला सरमें चक्कर आना रोगमें इसका फायदा प्रसिद्ध है । डेरा देखना या तोतलाना इससे आराम हो जाता है । इसके अलावा बगलका फोड़ा, अस्थिवेष्टका वात, सर्दीके बोखारके बाद सुस्ती और स्वास्थ्य-विकार वगैरहमें यह विशेष लाभदायक है ।

लक्षणावली

मन ।—पर्यायक्रमसे शान्त भाव और प्रचण्ड उन्मत्तता प्रकट होती है अर्थात् रोगी कभी-कभी बहुत शान्त रहता है और समझदारोंकी तरह बात करता है । नाना प्रकारकी भ्रम-भरी बातें सुनना, वमनके बाद बेहोशीका भाव (गलथिरिया-प्रोकम) ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, बहरापन और नाना प्रकारकी आवाज़ (चिनिन-सल्फ, सिङ्को, कैलि-आयोड, कार्बोन-सल्फ, माइरि-सेरि, फास) । सरमें चक्कर आना ; घटना—सोनेपर (कार्बो-ऐन, डायाडे, कैलि-कार्ब, फास) ; वृद्धि—सर उठानेपर (ब्राई, सिङ्को, स्टैन) या उठ बैठनेपर (कार्बो-वेज, पल्स ; वाध्य होकर बैठ जाना पड़ता है—लैक-कैन ; चारों ओरकी चीजें मानो दाहिनी ओर घूम रही हैं (ऐसा अनुभव होना कि मानो रोगीकी प्रदक्षिणा कर रही हैं—सोरिन, साइक्ल, मर्क-बिन ; दाहिनी ओरसे बाईं ओर जाता है—काक्यु), ललाटकी त्वचा जलन-भरी । माथेमें प्रचण्ड दर्द, मानो माथा दो हो जायगा (ब्राई, सिङ्को, ग्लोन, नेड्र-मूर) ।

आँख।—टेढ़ी चलनेवाली पुतलीके साथ तिर्यक दृष्टि अर्थात् कोई चीज देखनेके समय रोगीकी आँखकी एक पुतली चीजकी ओर, दूसरी, दूसरी ओर खिंचती है (ऐल्यूमेन, ऐल्यूमिना, कैम्फो, फास ; सम्मिलित तिर्यक दृष्टि अर्थात् दोनों ही पुतलियाँ नासामूलकी ओर खिंचकर देखनेका कार्य करती हैं—चेलिडो, साइक्यू, स्पाइजि)। दोनों आँखें अस्वाभाविक ज्योतिसे भरी रहती हैं। दूरकी चीज दिखाई नहीं देती (ऐ नाई, फाइजस) ; आँखकी पुतलीका अस्वाभाविक रूपसे फैलना (बेल्, डाल्का, हायो)।

श्वासयन्त्र।—गहरी श्वास-प्रश्वासकी क्रिया। मानो बहुत परिश्रम कर अब हाँफ रहा है—इसी तरह साँस चला करती है। शरीर बहुत गर्म मालूम होता है और श्वासकृच्छ्रता। श्वास-प्रश्वासकी आवाज राहसे सुनी जाती है (कैल्के, ओपि, फास, स्पञ्जि), अधलेटी अवस्थामें रहनेपर उपशम होता है, सामनेकी ओर झुके रहनेपर घटना (आर्स, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, स्पञ्जि) ; फेफड़ेमें हवा भरनेके लिये मानो रोगी हाँफा करता है और बार-बार मुँह बन्द किया और खोला करता है (ऐ-हाइड्रो, लोरो, हाइपिर, स्पञ्जि)।

सार्वाङ्गिक। — आशङ्काजनक मानसिक और शारीरिक अवसाद;रोगीकी सुस्ती देखकर भय होता हैं। पलक, हाथ, चेहरा और दोनों पैर फूले सारे शरीरमें चुनचुनी होती है (ऐकोन) ; रोगीकी अवस्था लगातार बदला करती है।

त्वचा।—शरीरकी त्वचामें अत्यन्त लोमहर्षणका भाव और खुजली, फैली हुई लाली और शोथ। प्रायः सारे शरीरमें आमवात पैदा हो जाता है (एपिस, नेट्र-म्यूर), विशेषकर दोनों पैरों एवं उदरके ऊपर और दोनों बाँह ऐसे मालूम होते हैं, मानो उनमें शोथ हो गया हो (एपिस)। प्रचण्ड उत्तेजना पैदा करनेवाली अरुणिका पैदा होती है। हाथ और देहके अन्यान्य अंशोंमें चकत्तेकी तरह उद्भेद निकलते हैं। ललाट, मुखमण्डल और दोनों पैरोंके ऊपरवाली त्वचा जगह-जगह लाल हो जाया करती है (लैक-डिप्लो), दबानेपर यह लाली गायब हो जाती है।

सम्बन्ध।—**सदृश और तुलनीय**। – चिनिन-सल्फ, सिङ्को, कैलि-आयोड, कार्बोन-सल्फ, ऐ-सैलिसाई, साइक्ले, नेट्रम-म्यूर।

शक्ति। – ३रे दशमिकसे ६ठा दशमिक।

नेट्रम सिलिकोफ्लोरिकम

(NATRUM SILICOFLUORICUM)

दूसरा नाम।—सैलियोफर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—तरल आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह कैन्सर रोगकी एक बढ़िया दवा है। अर्बुद, हड्डीका जखम, चेहरेका घाव और ऐथमायड—अस्थि (चुल्लिकास्थि) का प्रदाह लक्षणमें यह बढ़िया काम करती है।

इसकी क्रिया बहुत गहरी है, इसलिये खूब सोच-विचारकर प्रयोग करना चाहिये।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

नेट्रम सल्फ्युरिकम

(NATRUM SULPHURICUM)

दूसरा नाम।—ग्लोवर्स-साल्ट; सोडियम सलफेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इससे विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—दमा; पैत्तिकता; मस्तिष्कमें चोट; मसे; कमजोरी, विशेषकर शराबियोंकी; बहुमूत्र; शराबियोंका अजीर्ण रोग; अनजानमें शय्यामें पेशाब हो जाना; मृगी; नाकसे खून गिरना (रजोविकारके कारण); नासूर मिला फोड़ा; प्रमेह; सर-दर्द; शोथ; बहुव्यापक सर्दी; शरीरकी सफेद कणिकाओंका बढ़ जाना; यकृतका बढ़ना; मलेरियासे उत्पन्न बीमारियाँ; अधकपारीका सर-दर्द; मसानेकी बीमारियाँ; आँखोंका प्रदाह; अंगुलहाड़ा; गर्भिणियोंके पैरमें सफेद रङ्गकी सूजन; रोशनीका सहन न होना, क्षयकास, गृध्रसी या पैरमें झुनझुनीवाला वात; प्लीहाकी बीमारी; मायक दोषयुक्त धातु (साइकोसिस) इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—डायाडेमा और नेट्रम फास्फोरिकमकी तरह जो सब लक्षण मकानके निचले तलेमें, गीली जमीनमें, नदी और तालाबके किनारे रहनेपर हो जाते हैं या अधिक पानीका व्यवहार करने और अंधड़ पानीके दिनोंमें पैदा हो जाते या बढ़जाते हैं, नेट्रम सल्फयुरिकमसे वे आराम हो जाया करते हैं अर्थात् डा० ग्रवोगल द्वारा बताये हुए पानीकी अधिकता प्रधान धातुवाले रोगियोंके लिये यह एक महौषध है। जलजान प्रधान धातुमें प्रमेहका विष बहुत जल्द बढ़ जाता है और वैसे स्थलपर भी यह दवा और थूजा विशेष लाभदायक हुआ करता है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—(१) रोगीके शरीरमें पानीकी अधिकताकी वजहसे किसी बीमारीसे वह जल्दी अच्छा नहीं हो सकता। (२) चिन्ता-शक्तिका गायब हो जाना ; विमर्ष ; क्रोधी स्वभाव, विशेषकर सवेरे ; लोगोंके साथ बातें करना बुरा मालूम होता है। मुह्यमान (उदास) भाव, स्फूर्त्ति पैदा कर देनेवाले गाने-बजानेसे विषाद पैदा हो जाता है ; जीवनसे विरक्त ; बहुत मनोबल लगानेपर कहीं अपनी आत्म-हत्या करनेकी इच्छाको रोकता है। (३) माथेमें या मस्तिष्कमें आघातकी वजहसे मानसिक विकार। (४) मांसांकुर-भरी पलकोंपर छोटे-छोटे छालोंकी तरह फुन्सियाँ, उनसे हरे रङ्गका पीव निकलता है ; बहुत अधिक रोशनीका सहन न होना। (५) ऋतुके समय नाकसे खूनका स्राव। (६) दाँतमें दर्द, मुँहमें ठण्डा पानी पी लेने या ठण्डी हवा सेवनसे घटना। (७) जीभ—मैली और फीके हरे रङ्गके भूरे लेपसे ढकी। (८) उदरामय—एकाएक वेग पैदा हो जाता है और बड़े वेगसे पतला मल निकला करता है, शय्यासे उठकर खड़े होते ही वेग पैदा हो जाता है। (९) प्रमेह—हरी आभा लिये पीला और बिना दर्दका गाढ़ा स्राव होता है, पुराना या रुका हुआ स्राव। (१०) श्वासकृच्छ्रता, जलीय तर हवामें तथा मेघसे घिरे दिनोंमें बढ़ जाती है, रोगी बार-बार लम्बी साँस लिया करता है। पतला श्लेष्मा मिला श्वास रोग—जलीय हवा बहने या सर्दी पड़नेपर ही पैदा हो जाता है ; कफ़ हरी आभा लिये और बहुत ज्यादा निकलता है। (११) प्रमेह विषके कारण फेफड़ेका प्रदाह, बाएँ फेफड़ेके निचले भागमें बीमारी हुआ करती है, खाँसनेपर छातीमें बहुत दर्द होता है ; खाँसनेके समय रोगी शय्यापर उठ बैठता है और दोनों हाथोंसे अपना वक्ष दबा रखता है। मेरुमज्जावरणी-प्रदाह, मस्तिष्ककी जड़में भयानक दबाव या चबानेकी तरह दर्द, माथा पीछेकी ओर खींच जाया करता है, मानसिक

उत्तेजना और विकारके साथ अकड़न पैदा हो जाया करती है। (१२) प्रत्येक वसन्तऋतुमें चर्म-रोग पैदा हो जाता है (सोरिन; प्रत्येक शीतऋतुके आरम्भमें—ऐलो)। प्रमेह-विषसे दूषित धातुके कई प्रधान लक्षण इसमें मौजूद रहते हैं, जैसे—सवेरेके समय बढ़ना (सूर्योदयसे सूर्यास्ततक; उपदंश विषका बढ़ना—सूर्यास्तसे सूर्योदयतक)। निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर लक्षणोंका पैदा हो जाना, बहुत जाड़ा मालूम होना और शीत लगनेपर लक्षणोंका बढ़ना।

लक्षणावली

मन।—बहुत दुःखित चित्त, कलह-प्रिय (अरम-मूर-नेट्र, इग्ने, कोना, निकोल-कार्ब, रैनान-बल्बो, सेनेगा, स्ट्रान), विशेषकर सवेरे। पाखाना हो जाने बाद फुर्त्ती मालूम होना। चिन्ता-शक्ति (इथ्यू, बैप्टो, क्लिमेट, ओन्स्मोड, मैग-फास, आक्साई-ड्रोप, टियुबरक्युलिनम)। किसीके साथ बात करना बहुत बुरा मालूम होता है (आयोड, साइलि; बच्चोंको ऐसा होनेपर—ऐसिट-क्रूड, ऐसिट-टार्ट)। स्फूर्तिहीन; आनन्द पैदा करनेवाला गाना-बजाना सुननेपर भी रोगिनीके मनमें विषाद पैदा हो जाता है (ऐकोन, सैबाई, नेट्रम-कार्ब, थूजा; रुलाई आने लगती है—ग्रैफ, क्रियो); जीवनसे विराग (एसिट-क्रूड, अरम, सिङ्को, लैक-डिफ्लो, नेट्र-मूर, फास, थूजा); आत्महत्या करनेका अत्यन्त आवेग, केवल मनोबल लगाकर ही उससे निवृत्त होता है (आत्महत्याका भाव मनसे दूर न कर सकनेके कारण शय्यासे उठ आता है—ऐसिट-क्रूड)।

मस्तक।—ललाटमें दबाव मालूम होना, विशेषकर भोजनके बाद (ऐमोन-कार्ब, ऐगार); ऐसा मालूम होता है, मानो ललाट फट जायगा (ऐमोन-कार्ब; मानो ललाट फटकर मस्तिष्क बाहर निकल पड़ेगा—वेल, मिडोरिन)। सरमें चक्कर आना—सन्ध्याके समय भोजन करने बाद, इसके बाद शरीरके निचले अंशसे माथेतक उत्ताप चढ़ जाता है और यह गर्मी बढ़कर क्रमसे ललाटसे पसीना निकलने लगता है, पसीना निकलनेपर घटना। सन्ध्या ६ बजनेके समय सरमें चक्कर आना और खट्टा श्लेष्मा वमन (पित्त वमन—पेट्रोल; पानीकी तरह वमन—हेलिबो); सन्ध्याके समय भोजनके बाद सरमें चक्कर आनेके समय सरमें दर्द और भुनभुन शब्द हुआ करता है (चिनिन-सल्फ, नेट्र-सैलिसाई, थिरिड)। सूर्यास्तके समय ललाटमें और ललाटके पीछे दबावकी तरह मालूम होना और माथेके बगलके स्थानपर उत्ताप मालूम होना;

हाथसे दबा देनेपर, स्थिर रहनेपर और लेटी हुई अवस्थामें घटना, कोई विषय सोचनेपर सर-दर्द बढ़ जाता है (आर्जेण्ट-नाई, कैल्के-फास, पैरिस, साइलि, लिसिन)। माथेमें भार मालूम होता है। माथेके शीर्षदेशमें उत्ताप मालूम होना (इग्ने, हाइपेरिक, मिडोरिन, ऐ-मूर, नेट्र-फास, सल्फ)। माथेमें चोटकी वजहसे मस्तिष्ककी उत्तेजना और बुद्धिमें विकार; बहुत दिन पहले माथेमें चोट या गिर जानेके समय पैदा होनेवाला मस्तिष्क रोग (ऐको, आर्नि, हाइपेर, फार्मिका)। पढ़नेके समय सर-दर्द (ऐको, लिसिन, टिलिया, ड्रिफोल)। ऐसा मालूम होता है कि माथेके भीतर मस्तिष्क अलग पड़ा हुआ है, माथा झुकानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तिष्क अपने स्थानसे हटकर मस्तकके बायें पार्श्वमें स्थित हो गया है (ललाटके पीछे आकर पड़ा है, ऐसा मालूम होना—लोरो)। रह-रहकर माथा हिल उठता है और दाहिनी ओर झूल पड़ता है। माथेमें भार मालूम होनेके साथ ही नाकसे खूनका स्राव होना (काफिया)। मेरुमज्जावरण-प्रदाह रोगमें—मस्तिष्ककी जड़ या नीचे झुनझुनी और कुटकुटाहट हुआ करती है; ऐसा मालूम होता है कि मस्तिष्क चिमटेसे दबाया जा रहा है या अस्थिफलक सब चूर-चूर हो रहे हैं और माथा पीछेकी ओर ढुलक जाता है (बेल, कुरारि, मिडोरिन, हेलिबो, स्ट्रैमोन); मानसिक उत्तेजना और विकार तथा प्रत्यङ्गोंकी अकड़न—शिराओंमें भयानक खूनका अधिक सञ्चय हो जाना, प्रलाप और बाहरकी ओर आनेवाली अकड़न; शरीर पीछेकी ओर धनुषके समान टेढ़ा हो जाता है (साइकूटा-विर), अन्दरकी ओर जानेवाला आक्षेप—शरीर सामनेकी ओर टेढ़ा हो जाता है (इपिक, इग्ने, नक्स-वोम), आक्षेप; ऐसी तकलीफ़ मानो शिराओंमें एक स्क्रू घुस रहा है, माथेका बिलकुल ही छुआ न जाना—चोटी करने या केश झाड़नेके समय दर्द मालूम होता है (बेल, ब्रायो, सिना, इरिञ्जि, क्रियो, रस, साइलि)।

आँख।—अस्पष्ट दृष्टि; आँख क्षीण; पानीके भारसे दबी (सिपा, युफ्रे, मर्क ओपि, पल्स, सल्फ)। आँखोंमें रोशनीका सहन न होना और सरमें दर्द; मांसांकुर-भरी पलक (आर्स, ग्रैफ, कैलि-बाई, मर्क-प्रोट, मर्क-बिन, सैङ्गिविन; पलकोंका सटना—नेट्र-आर्स; कास्टिकसे जलनेपर—नेट्र-मूर), मांसांकुर सब छोटी-छोटी रस-भरी फुन्सियों या छालोंकी तरह दिखाई देते हैं; हरे रङ्गका पीव निकला करता है और आँखमें रोशनी सहन नहीं होती; अपने प्रमेह रोगकी वजहसे या दूसरोंसे प्राप्त प्रमेह विषकी वजहके (थूजा); आँखसे

जलन करनेवाले गर्म आँसू निकला करते हैं (ऐलिय-सैट, युफ्रे, ऐनाइ, सल्फ)। दाहिनी आँखमें जलन और उससे जलन पैदा करनेवाले आँसू निकलना तथा अस्पष्ट दृष्टि; वृद्धि—आगकी गर्मीसे, सवेरे और सन्ध्याके समय; पलकोंके किनारोंमें बहुत जलन होती है। पलक बहुत भारी, मानो सीसा-भरी है; सन्ध्याके समय अध्ययनके वक्त आँखमें दबाव मालूम होता है (लिखने-पढ़ने और सुईका काम करनेके समय—कोना; दीयेकी रोशनीमें पढ़नेके समय—मैङ्गे; पढ़ने और सुईका काम करनेपर बढ़ जाना—ड्रग्ने)। सवेरे पलकोंके प्रान्तमें खुजली पैदा हो जाती है (ब्राइ, कैल्के, चिमाफिल, जैङ्गोफा, मेजर)। सन्ध्याके समय दीयेकी रोशनीमें पढ़नेके समय आँखमें दर्द हुआ करता है (मैङ्गेन)। रातमें आँखसे मैलका स्राव होनेकी वजहसे पलकोंका जुड़ जाना (ऐलूम, ऐण्टि-क्रूड, कैस्टोर, गैम्बोज, ग्रैफ, ड्रग्ने, लिडम, सिपि, स्पञ्जि, सिफि, थूजा)। नाक छिड़कनेके समय आँखके सामने उड़ती हुई आगकी चिनगारी दिखाई देती है (खाँसनेपर—कैलि-कार्ब)। रोशनीका सहन न होना; वृद्धि—सवेरे नींद खुलनेपर (कैल्के)।

कान।—कर्ण-पटहका प्रदाह, मानो घण्टा बज रहा है (क्लिमेट, पेट्रोल)। कानमें दर्द, ऐसा अनुभव होता है मानो कर्ण-पटहको कोई भीतरसे बाहरकी ओर ठेल रहा है। दाहिने कानमें ऐसा दर्द, मानो बाहरसे भीतरकी ओर बेध रहा है; कभी-कभी कानमें तेज़ दर्द; वृद्धि—ठण्डी हवा सेवन करते-करते गर्म घरमें प्रवेश करनेपर, जलीय (तर) हवा लगनेपर, तर जमीनमें रहने या अधिक देरतक पानीमें रहने अथवा पानीसे उत्पन्न तरकारी आदि खानेपर बढ़ना। कानमें दर्द—ऐसा मालूम होता है कि कोई चीज़ कानसे बड़े वेगसे निकल रही है।

नाक।—आर्त्तव-स्रावके समय नाकसे रक्त-स्राव (रजःस्रावके बदले नाकसे खूनका स्राव—ब्राइ, ब्रोम; फेफड़ेसे—डिजि या मूत्रनालीसे—फास); बीच-बीचमें रुक जाता है और फिरसे आरम्भ हो जाता है (सिपि, सल्फ)। नाकसे स्राव या नयी सर्दी; नाकका छेद इस तरह रुक जाता है कि साँस लेने और छोड़नेमें बहुत तकलीफ़ होती है (आरम, कैल्के-सल्फ, कैप्स, सिपा, मैङ्गे, नक्स-वोम, सैम्बियु)। नयी सर्दीके साथ बार-बार छींक (सिपा, साइक्लेम, युपेट-पर्पुर, सिनैप, सिनिसियो); उपदंश, नकसीर (ऐसाफिट, आरम-म्यूर,

ऐ-फ्लू, कैलि-बाई, कैलि-आयोड, मर्क-प्रोट, फाइटो, स्टिलिञ्जिया, सिफिलिन); सबसे पहले जीभके बगलवाले दोनों गह्वरोंमें जख्म पैदा हो जाता है ; परन्तु उसमें बदबू नहीं रहती। कण्ठमाला दोषकी वजहसे नकसीर (आरम, कैल्के, हिप, हाइड्रैस्ट, नेट्र-म्यूर, सिपि, साइलि, थिरिड)। दोनों नासा-पुटोंमें खुजली पैदा हो जानेके कारण बार-बार उन्हें रगड़नेकी इच्छा होती है।

मुखमण्डल आदि।—चेहरा उतरा हुआ, सफेद और देखनेसे ही ऐसा मालूम होता है कि कोई तकलीफ़ है और खुजलाहट हुआ करती है। गण्डास्थिमें ऐसा दर्द होता है मानो फटा जाता है ; चिबुकके ऊपर छोटे-छोटे दाने निकलते हैं और छूनेपर उनमें जलन होती है। ऊपरी ओंठमें प्रदाह हो जाता है और जलन तथा रस-भरे दाने निकलते हैं। दोनों ओंठ बहुत सूखे, जलन-भरे और उनमें पपड़ी जमती है (खाल उधड़ा करती है) (ऐकोन, आयोड, कैलि-कार्ब, कैलि-म्यूर, लैक-कैन, प्लम्ब)। हनु-सन्धिमें अकड़नकी वजहसे मुँह नहीं फाड़ सकता (ऐगार, बेडी, डैफनी, ग्लोन, सैङ्गिविन, सार्सा)। दाँतका दर्द—थोड़ी भी गर्म चीज़ छू जानेपर दाँतमें बेहद दर्द मालूम होता है और गर्म चीजें छू जाना बिलकुल ही सहन नहीं होता, टपक-जैसा दर्द ; घटना—मुँहमें ठण्डा पानी लेने या ठण्डी हवा ग्रहण करनेपर (काफि, पल्स)। दाँतके मसूढ़ेमें ऐसी जलन हुआ करती है मानो आग छू गई है (नेट्र-म्यूर, टेरिब, कैप्स)। दाँतमें दर्द—घटना—धूम्रपान करनेपर (डायाडिमा, मर्क, नेट्र-कार्ब)। जीभ—जीभकी जड़ मैली या हरे रङ्गकी और बाकी अंश भूरे रङ्गके लेपसे ढँका। मुँहका स्वाद कड़वा और जीभमें लसदार श्लेष्मा लिपटा रहता है (बैराई-म्यूर, सिपा, हाइड्रैस्ट, क्रियो, फास, सिपा)। जीभके अगले भागमें जलन करनेवाले छाले निकलते हैं (कार्बो-ऐनिम, नेट्रम-म्यूर, नेट्र-फास)। जीभ लाल (बेल, हायो, लैके ; मुख-विवरके ऊपरी अंशमें बहुत दर्द और स्पर्शका सहन न होना) ; मुँहमें ऐसी जलन मानो पीसा हुआ मिर्चा लगा है (कोका, ड्रोसेरा; मेजेर, कैप्स)। खाने-पीनेके बाद मुँहमें बहुत लार पैदा होती है। मुख-विवर सूखा रहता है, बहुत प्यास लगती है और मसूढ़े सब लाल रहते हैं। ऋतुके समय तालुमें ऐसी जलन होती है, मानो वहाँकी खाल उधड़ गई हो। तालुदेशमें अत्यन्त स्पर्शासह, रस-भरी फुन्सियाँ और छाले निकलते हैं, रोगी भोजन नहीं कर सकता ; सर्दी या ठण्डी चीजें आदि छू जानेपर घटना।

गलेके भीतर।—कण्ठसे अन्ननलीतक सूखापन, पर प्यास नहीं रहती (ऐसाफि, सैब्बियु)। कण्ठमें जखम और स्पर्श सहन नहीं होता; ऐसा अनुभव होता है कि लार निगलनेके समय कण्ठनली संकुचित हो जाती है। बात करने (ऐलूम) या कड़े पदार्थ निगलनेके समय यह जखमका भाव और बढ़ जाता है (बेडि, ए-लैक)। गलग्रन्थि और अलिजिह्वा प्रदाहित और फूली (गलग्रन्थि-प्रदाह—ऐको, एपिस, बराई, बेल, लैक-कैन, लैके, लाइको, मर्क, फाइटो; उपजिह्वा फूली—एपिस, मर्क, मर्क-कोर, कैलि-आयोड); गलग्रन्थिके ऊपर जखम निकलना (अरम, कैल्के, कैलि-बाई, लाई, मर्क, मर्क-कोर, फाइटो)। रातमें कण्ठमें श्लेष्मा सञ्चय होता है और सवेरे खाँसनेपर नमकीन श्लेष्मा निकलता है।

पाकस्थली।—ज्वालामयी तृष्णा; ठण्डा पानी पीनेका बहुत अधिक आग्रह, विशेषकर संध्याके बाद; बहुत अधिक व्यायाम करनेके बाद बढ़ना। अरुचि। पहले रोगिनीको जो रोटी अच्छी लगती थी, उससे अरुचि हो जाता (सिङ्को, नेट्रम-म्यूर, पल्स, सिपि)। भोजनके समय तिमिर-दृष्टि (कैल्के, कैलि-कार्ब) और मस्तिष्कको जड़ता (काकुल, डायाडेमा, पेट्रोल)। भोजनके बाद चेहरेपर पसीना निकल आता है और वक्षमें दबाव मालूम होता है, मुँहमें पानी भर आया करता है। मिचली और पहले अम्लाक्त और इसके बाद कड़वा जलीय पदार्थ वमन। ऐसा दर्द होता है मानो पाकस्थली फाड़ी या छेदी जा रही है या सवेरे नींद खुलनेपर जलन और नख गड़नेकी तरह दर्द होता है, सवेरे भोजन कर लेनेपर घटना। संध्याके बाद सोनेपर पाकस्थली और वक्ष-गह्वर भरा और भारी मालूम होता है और साँस लेनेमें तकलीफ़ होती है। भोजनके पहले यह सोच पैदा हो जाता है कि ये चीजें खाऊँ या न खाऊँ; अच्छी लगेंगी या न लगेंगी। आँखमें छुरी मारनेकी तरह दर्द और मिचली (दाहिनी आँखमें दर्दके साथ—एसिड-लैक); संध्याके बाद मुँहमें लगातार पानी भर आया करता है (टेरिब)। थोड़ी मिचली और पाकाशयमें टपक पैदा कर देनेवाला दर्द। सरमें चक्कर आनेके बाद नमकीन या खट्टा पानी या खट्टे श्लेष्माकी कै होकर रोगी एकदम सुस्त हो पड़ता है और उसके माथेमें जलन मालूम हुआ करती है।

अन्त्राशय।—कमरमें कसकर कपड़ा नहीं पहना जाता (कास्टि, सिङ्को, क्रोटेल, ग्रैफ, लाई, नक्स-वोम, कैल्के)। यकृत-प्रदेशमें सलाई गड़नेकी

तरह दर्द और चलनेके समय या शरीरके एकाएक हिल जानेपर यकृत-प्रदेशमें दर्द होने लगता है (एपिस, बेल, कार्बो-वेज, चेलिडो, आयोड, मर्क, फास, साइलि)। किसी ओर भी शरीरको घुमानेपर दर्द मालूम होता है, इसीलिये रोगीको वाध्य होकर चित्त सोये रहना पड़ता है। बायीं कोखमें नुकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द, खासकर निर्मल वायुमें टहलनेके समय। रातमें नितम्ब-देशमें और उरुमें ऐसा दर्द होता है, मानो चोट लग गयी है ; इस असह्य दर्दके कारण रोगीकी नींद खुल जाती है, पर केवल करवट सोनेपर यह दर्द नहीं रहता। एक स्थूल भारकी तरह दर्द उदरके भीतरसे होता हुआ पीठतक फैल जाता है। उदरमें जलन (आर्स, कार्बो-वेज, कैलि-बाई, क्रियो, ऐसिड-आक्जैल, मेजिर, नक्स-वोम) ; तलपेटमें दर्द (कैडमि-सल्फ, ड्राम्बिड) ; ऐसा दर्द मानो मरोड़ खा रहा है—हाथसे पेट मलनेपर आराम मालूम होता है। रह-रहकर ललाट-देशमें दर्द और आँतोंमें नख गड़नेकी तरह यंत्रणा ;—अंत्र-कूजन ; घूमनेवाला दर्द और अन्तमें पतले दस्त आने लगना। अन्त्राशयका आध्मान (कार्बो-वेज, कोलचि, ब्रायो, साइलि, सल्फ) ; आँतोंमें बहुत अधिक गड़गड़ाहट और हड़हड़-गड़गड़ आवाज़ ; कोष्ठाश्रित वायु या आध्मान, विशेषकर दाहिने कोखमें बैठनेवाली अवस्थामें मालूम होता है मानो कोख फाड़कर आध्मान वायु बाहर निकल पड़ेगा। रातमें वायु इकट्ठा हो जाता है और बहुत दर्द होता है, दाहिने कोखमें प्रदाह पैदा हो जाता है, अन्धान्त्र-प्रदाह (बेल, कार्डु अस-मेरि, कोलचि, क्रोटेलस, लैके, मर्क, ओपि, प्लम्ब, रस, थूजा)। आध्मानकी वजहसे अन्त्रशूल—उसमें ऐसा दर्द होता है, मानो नख गड़ रहा है (मस्कस) ; सवेरेके भोजनके पहले बढ़ना और तीसरे पहर आध्मान निकल जानेपर आराम मालूम होना।

मलान्त्र और मल।—मल कड़ा और गाँठ-गाँठ (ऐल्यू, कास्टि, हाइड्रैस्ट, प्लम्ब) ; कितनी ही बार खून और आम मिला ; उदरमें दबाव मालूम होना। उदरामय—मल परिमाणमें थोड़ा, लसदार, कुछ लाल रंगका या खून मिला, एकाएक वेग पैदा हो जाता है, बड़े जोरसे बहुत ज्यादा वायुके साथ निकलता है। शय्यासे उठकर खड़े होते ही वेग पैदा हो जाता है (दो क़दम इधर-उधर करनेपर—ब्रायो, लेप्टैन ; शय्यासे उठते ही—लाई, सल्फ ; शय्या-त्यागके पहले ही—ऐलो, सोरिन, रियुमेक्स, सल्फ,—सवेरे शय्यासे उठनेपर—इथू, ऐगार, सोराइन) ; कई दिनोंतक बहुत गर्मी पड़नेके बाद ; मकानके

निचले तलेमें रहने या वास करनेकी वजहसे ; कभी-कभी वायु त्यागनेके समय या पेशाब करनेके समय अनजानमें मल निकल जाता है (ऐलो, ऐसि-म्यूर, ऐसिड-फास, ओलियैन, पोडो, स्क्वियुला, वेरेट) या निद्रितावस्थामें (आर्नि, हायो, ऐ-म्यूर, फास, रियुटा)। स्वल्प-रज: रोगमें कड़ा गांठ-गांठ और खून-मिला मल ; निकलनेके समय और निकल जानेपर मलद्वारमें दर्द पैदा हो जाता है। बहुत दिनोंका उदरामय या अन्त्राशयका क्षय या ग्रहणी रोगमें तलपेटमें हमेशा गड़बड़ी मालूम हुआ करती हैं और मलद्वारके ऊपर और दोनों उरुके बीचमें कड़े मसेकी तरह दाना निकलता है (इयुफ्रे, थूजा)।

पेशाब ।—बार-बार पेशाब—उसमें पीली और ईंटकी चूरकी तरह तली जमती है। दोनों पुट्ठे या वंक्षण-देशमें बेधनेकी तरह दर्द और पेशाबका वेग, तीसरे पहर घरके बाहर टहलनेके समय और बैठनेके समय नाभीके चारों ओर नख गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है और पेशाबका वेग होता है, यह दर्द पुट्ठेके स्थानतक चला जाता है। पेशाब परिमाणमें बहुत थोड़ा और पेशाब निकलनेके समय मूत्रमार्गमें जलन होती है। पेशाबका वेग रोकनेपर कमरमें दर्द अनुभव होता है। पेशाब परिमाणमें बहुत थोड़ा और गहरे रंगका होता है ; बार-बार पेशाव होता है और रातमें बहुत बार शय्यासे उठना पड़ता हैं (कैलि-कार्ब)।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—लिङ्गमुण्डमें (चेलिडो, कैलि-बाई, मेजेर, सल्फ) या शिश्नमें इतनी खुजली होती है (ऐगार, ह्विप) कि रोगी उसे वाध्य होकर रगड़ा करता है (ऐङ्गास्टुरा)। प्रमेह-स्राव गाढ़ा हरी आभा लिये पीला, बिना तकलीफका (थूजा, पल्स) बहुत दिनोंका और कभी-कभी पैदा होनेवाला या रुका हुआ स्राव (ऐ-नाई, ऐग्नस, कैन्थ, चेलिडो, क्लिमेट)। मुष्कत्वकमें खुजली ; खुजलानेपर जलन होती है। विटप (योनि और मलद्वारके बीचका अंश) और कामाद्रि (योनिका ऊपरी अंश या केशमय प्रदेशका सिरा) में खुजलाहट। कामोद्दीपना—सन्ध्याके समय ; सवेरे लिङ्गोच्छ्वास। संध्याके समय मुष्कपर पसीना निकलना। रमणेच्छाकी प्रबलता।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—आर्त्तव ; स्राव विलम्बसे होता है, परिमाणमें बहुत थोड़ा ; अन्त्रशूल और मल रुका या गांठ-गांठ मल निकलना। आर्त्तवका खून कषाय या त्वचाको क्षय करनेवाला, उसके लगनेपर दोनों उरुके बीचकी

त्वचा क्षय हो जाती है। थक्का-थक्का जमा हुआ खून निकलता है; चलनेके समय बराबर निकला करता है (केवल शरीर हिलानेके समय निकलता है—लिलियम-टाई, सिकेलि)। ऋतुस्रावके पहले नाकसे खूनका स्राव होता है (हाइड्रैस्ट, लैके, नेट्र-कार्ब)। प्रदर—स्राव कषाय और त्वचाको क्षय करनेवाला (बोर, बोवि, कोलोफिल, क्रियो, युपियोन, नेट्र-मूर, फास, सिपि, साइलि)। प्रसवके बाद योनिके बाहरी स्थानपर प्रदाह होता है (ऐकोन, आर्नि), वह स्थान फूला रहता है और उसपर मसूरकी तरह पीव-भरे छाले निकलते हैं (मसेकी तरह सफेद आभा लिये या कुछ लाल—ऐनान्थिरम)। प्रसव होनेके छः सप्ताह बाद तेज़ बोखार पैदा हो जाना।

श्वासयन्त्र।—सरल श्लेष्मा निकालनेवाला श्वास-रोग (आर्स, कूप्रम, डालका, कैलि-सल्फ, लोबेल, पल्स, सेनेगा, सिनैपिस, नाइग्रा) बच्चोंको [एण्टि-टार्ट, कैमो, इपिक, पल्स (डा० लैम्बसको इसमें ऐण्टिम-टार्टसे ज्यादा लाभ दिखाई दिया है), सैम्बियु] और जलीय तर हवा लगते ही प्रकोपका पैदा हो जाना (अरम, डालका, इपिक, लोबेल, हाइपिर; गर्म जलीय वायुमें—सिफिलिनम)। जभी हवा ठण्डी होती है, उसी समय प्रकोप पैदा हो जाता है (इपिक, लोबेल); वृद्धि—तर अंधड़-पानीके दिनोंमें; कफ़ हरे रंगका या कुछ हरे रंगका और बहुत ज्यादा श्लेष्मा मिला (कार्बो-वे, हायो, लाई, नेट्र-कार्ब, पल्स, सिपि, साइलि, स्टैन, सिफिलिन; बहुत ज्यादा फेन-भरा या पानीकी तरह—नेट्र-मूर; हरी आभा लिये धुमैला; कोपेवा, रस)। श्वासरोग; बढ़ना—बहुत सवेरे (कैल्के, वेरेट; नींद खुलनेपर—कोना); सवेरे पतले दस्त आनेके साथ (रातमें पतले दस्त और श्वास-रोगका पर्यायक्रमसे पैदा हो जाना—कैलि-कार्ब; पतला पाखाना होनेके साथ ही श्वासमें कष्ट—थूजा)। श्वासका छोटापन—चलनेके समय (एरण्डो-मेरि, आर्स, कार्बो-वे, प्रूणस, सिपि; तेजीसे चलनेके समय—नेट्रम-मूर, कूप्रम-मेट); विश्राम करनेपर क्रमशः घट जाता है (चलनेपर बढ़ना और सोनेपर घटना—सोरिन); तर हवा और बदली-भरे दिनोंमें श्वासकी तकलीफ़का बढ़ जाना और बार-बार लम्बी साँस लेनेकी चेष्टा करना। सूर्यास्तके बाद वक्षमें दबाव मालूम होना और ऐसा अनुभव होना कि वक्षमें एक गुल्म अड़ा हुआ है (दूसरे समय ऐसा अनुभव होनेपर—सिपा, लैके); गुल्मवायु रोग पैदा करनेवाला। खाँसी—बार-बार खाँसी और थोड़ासा श्लेष्मा निकलना और वक्षके बाएँ पार्श्वमें सुई गड़नेकी तरह दर्द; खड़े

होकर खाँसनेपर श्वासाल्पता पैदा हो जाती है (चलनेके समय खाँसनेपर श्वासाल्पता—फिलैन) ; सूखी खाँसी, वक्षमें अत्यन्त दर्द और स्पर्शका सहन न होना और कण्ठमें रुखड़ापन मालूम होना, विशेषकर रातमें ; खाँसनेके समय रोगी बैठकर दोनों हाथोंसे छातीको वाध्य होकर पकड़ रखता है (ब्राई, निकोल, ड्रोसेरा, इयुपिट, क्रियो, फास, रैनान-बल्बो, सिपि) ; कण्ठमें खुजली और पतला श्लेष्मा-मिली खाँसी ; सवेरेके समय खाँसी ; पीवकी तरह बलगम (ऐ-नाई, लाई, साइलि, कार्बो-वे, स्टैन) और बायें पार्श्वके निचले पंजरेमें दर्द। धातुगत प्रमेह विषकी वजहसे फेफड़ेका प्रदाह ; बायें फेफड़ेके निचले अंशमें (चेलिडो) रोग हो जाता है। वक्षमें भयानक दर्द मालूम हुआ करता है ; खाँसनेके समय रोगी उठकर बैठ जाता है और दोनों हाथोंसे अपने वक्षको दबा रखता है (निकोल ; दाहिना फेफड़ा—ब्राई), अनिर्वचनीय यंत्रणा, खून धीरे-धीरे जमा हो जाता है। सुई गड़नेकी तरह दर्द, उदरसे बायें वक्षतक फैल जाता है। बायें वक्षमें बेधनेकी तरह दर्द। वक्षोंस्थिके पासका पंजरा फूल जाता है। प्रत्येक वर्ष वसन्त ऋतुमें धातुगत प्रमेह-विषकी वजहसे चर्मरोग पैदा हो जाता है।

गर्दन और पीठ।—गला और कण्ठका भीतरी अंश फूलकर गांठ-गांठ हो जाता है और वायुनलीपर बहुत ही यंत्रणादायक दबाव मालूम होता है। गर्दनसे लेकर मेरुदण्डके नीचेतक तेज़ दर्द और स्पर्शकातरता मालूम होती है। संध्याके समय बैठनेके वक्त दोनों अंश-फलकोंके बीचमें ऐसा दर्द मालूम होता है मानो छुरी मारी जा रही है ; त्रिकास्थिके बीचके अंशमें भी ऐसा ही मालूम होता है। नितम्ब-देशमें ऐसा दर्द मानो चोट लग गयी है। रातमें नितम्ब-देशमें इस ढंगका भयानक दर्द होता है मानो फोड़ा निकल रहा है और इस तरहके भयानक दर्दकी वजहसे रोगिनी केवल दाहिनी करवट सो सकती है, सवेरे सोकर उठनेपर घटना। त्रिकास्थि-प्रदेशमें दर्दकी वजहसे रोगिनी किसी करवट भी सो नहीं सकती।

प्रत्यङ्ग आदि।—बगलकी गांठ फूल उठती हैं और उसमें पीव पैदा हो जाता है (कैडमी-सल्फ़, हिप, मर्क-बिन, युग्लैन्स-रिजि, रस, सिपि, साइलि)। बायीं बगलमें और नखमें बेधनेकी तरह दर्द। बाँह और हाथमें चुनचुनी होती है और वे अवश हो जाते हैं। दाहिने बाँहके अगले आधे

भागपर फोड़ा निकलना। कोई पदार्थ मुट्ठीमें लेनेके समय आकुञ्चक पेशीमें दर्द मालूम होता है। नींद खुलने और दिन चढ़नेपर लिखनेके समय हाथ काँपा करते हैं। कुनख—नखके चारों ओर प्रदाह और जखम हो जाता है (नैट्र-सूर, सैङ्गिविन); घरके बाहर दर्दका घटना; रोगीका चेहरा म्लान और ऐसा मालूम होती है मानो किसी रोगने बहुत सताया हो, माथेमें सुस्ती और जड़ता मालूम होती है, विशेषकर सवेरे। तर जमीनमें, घरमें या स्थानमें रहनेकी वजहसे। बाएँ उरुशिखर, तलपेट और कमरमें बेधनेकी तरह दर्द, केवल विश्रामके समय। दाहिनी उरु-सन्धिमें दर्द; बढ़ना—झुकनेपर; आसनसे उठनेके समय या शय्यामें करवट बदलना आदि शरीर हिलानेपर। चलनेके समय एकाएक बाएँ पुट्ठेमें सुई गड़नेकी तरह असह्य दर्द पैदा हो जाता है और रोगी चल नहीं सकता, मानो असुविधाके कारण रातमें नींद खुल जाती है; एक भावसे अधिक देरतक रहने बाद उठनेमें तकलीफ़ होने लगती है, दर्दकी अधिकताके कारण रातमें नींद खुल जाती है; एक भावसे अधिक देरतक सो नहीं सकता। गिरने बाद बाएँ पुट्ठेमें छुरी मारनेकी तरह तेज़ दर्द। गुल्फदेशके वृहत् कण्डारमें और जांघकी पोटलीमें खींचने और फाड़नेकी तरह तेज़ दर्द (जिङ्कम-वेलेरियाना और जिङ्कम-वेलरियानिकम); उरुके सामनेवाले अंशमें जखम निकलना। संध्याके समय और इसके बाद दूसरे दिन सवेरे दोनों पैर गर्म हो जाते हैं और जानुतक जलन होती है। तलवे और एँड़ीके नीचे बेधनेवाला दर्द, पैरकी अंगुलियोंमें खुजली—वस्त्र उतारनेपर दोनों पैरोंमें शोथ।

त्वचा।—तर अकौता और उससे बहुत ज्यादा रस निकलना, स्राव पानीकी तरह। कपड़ा बदलनेके समय शरीरमें खुजली। शरीरमें जगह-जगह रसभरे दाने निकलना। कामला, पाण्डु। सारे शरीरमें मसेकी तरह उठी लाल, खोलभरी फुन्सियाँ या मसे निकलते हैं। मुष्क और दाहिने उरुके भीतर छोटे-छोटे पपड़ी भरे जखम; खुजली-भरे और खुजलानेपर आराम होना; ललाट, खपड़ीकी त्वचा, गला और वक्षके ऊपर ऐसा हो हुआ करता है। चिबुकपर हज़ामत बनवानेकी खुजलीके दाने धातुगत प्रमेह-विषकी वजहसे नाना प्रकारके रोग (वैरियोलिनम, मैलान, थूजा)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—भीतरी शीत मालूम होना, इसके साथ ही जम्हाई और अङ्गड़ाई आना। शीतावस्थामें बरफ छू जानेकी

तरह सर्दी मालूम होना और रोएँ खड़े हो जाना (ऐङ्गस, हेलिबो, लाइको, मर्कुरियस-पेरेन, नेट्र-म्यूर, नक्स); दिनके ४ बजेसे ८ बजेके बीचमें ऋतुस्रावके समयके संध्याकालकी शुरुआतमें बिना प्यासका शीत, संध्याके बाद सोनेके समय शीतका प्रादुर्भाव होता है, जो समस्त रात स्थायी रहता है, पीठकी राहसे शीत ऊपरकी ओर बढ़ता है ; रोगी काँपा करता है और दाँत कड़कड़ाया करता है ; परन्तु शरीरपर शीत अनुभव नहीं होता। शय्यापर सोये रहनेकी अवस्थामें शीत मालूम होता है और शय्या त्यागनेपर कम्प हुआ करता है ; प्यास बढ़ जाती है और नाड़ीकी गति तेज़ हो जाती है। ब्रह्मतालुमें उत्ताप अनुभव हुआ करता है, संध्याके आरम्भमें रह-रहकर एकाएक उत्ताप पैदा होता है, शरीरका उत्ताप बढ़ता है और बेचैनी मालूम होती है। प्रसवके बाद प्रबल ज्वर (आर्स, बेल, ब्राई, ऐ-कार्बोल, ऐ-म्यूर, वेरेट-विर)। रातमें पसीना—प्यास न रहना, मुखमण्डल और मुँहपर पसीना होता है।

निद्रा।—दोपहरके पहले नींद आती है, विशेषकर लिखने-पढ़नेके समय। नींद आनेके कुछ बाद ही, इस तरह चौंक उठता है, मानो डर गया है (ऐलूम, बेल, काफिया, हायो, ऐ-नाई)। बेचैनी और नींद न आना, बार-बार नींद खुल जाती है—बीमार करनेवाले अद्भुत सपने देखकर। जल्दी या देरसे कभी भी क्यों न सोये ४ या ५ घण्टेके बाद नींद खुल जाती है और दमाका प्रकोप आरम्भ हो जाता है (कैलि-कार्ब, लैके)।

वृद्धि।—छूनेपर, ठण्डी चीजें आदि खानेपर, गर्म कमरेमें रहनेपर, कसकर कपड़ा पहननेपर, बाईं करवट सोनेपर, निगलनेके समय, बोलने, आसनसे उठने, सवेरे, तर मकान या जमीनमें रहने, अधिक पानी व्यवहार करने, अन्धड़-पानीके दिनोंमें, ठण्डी हवामें, प्रत्येक बसन्त ऋतुके आरम्भमें, निर्मल वायु लगनेपर, नींद खुलनेपर और परिश्रम करनेपर बढ़ना।

उपशम।—हाथसे दबानेपर, कमरका कपड़ा ढीला कर देनेपर, करवट होकर सोनेपर, शरीर हिलाने, व्यायामके बाद, चलनेपर, ठण्डी हवा और ठण्डा पानी लगनेपर (दन्तशूल), सूखी हवा लगनेपर और उठ बैठनेपर।

अनुकूल सम्बन्ध।—आर्स, बेल, फेरम-फास (बहुमूत्र), नेजा (चर्म-रोग), थजा (माषक धातु)।

सदृश ।—ऐरेनिया, डायाडेमा, थूजा, वैक्सिन, वैरियोलिन, मैलेन, ग्रैफ, लाई, नेट्र-म्यूर, पल्स, स्टिलिञ्ज, सल्फ, वैलेरियाना, कैमो जिङ्कम, ऐसिड-नाई (दोनों हाथोंसे कलेजा दबाकर दर्द घटानेकी चेष्टा करना), ब्राई, ड्रोसेरा, युपेट, क्रियो, निकोलम, फास, रैनान-बल्ब और सिपिया ।

तुलनीय ।—साधक धातु—थूजा, वैक्सि, मैलेण्ड्रि, नक्स इत्यादि । फोड़ा और मसे—मर्क, ऐरेनिया, डायाडेमा । चक्षु-रोग—ग्रैफाई, हिपर-सल्फर । खाँसी और अतिसार—ब्रायो । खाँसी और पेशाब—लाइको । वक्षमें दर्द—निकोल । दाँतमें दर्द—काफिया । क्रोधके कारण—कैमो ।

शक्ति ।—१म दशमिक विचूर्णसे १२वाँ विचूर्ण और ६ठाँ शततमिकसे २०० शततमिक या उच्च ।

क्रियाका स्थायित्व ।—३० से ४० दिनतक ।

नेट्रम सल्फ्युरोसम

(NATRUM SALPHUROSUM)

दूसरा नाम ।—सलफाइड आव सोडियम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और तरल आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—उदरामय और हैजा रोगमें फेन-भरा मल इसका निर्देशक लक्षण है ।

शक्ति ।—३x—६x ।

नेक्ट्रियानिनम

(NECTRIANINUM)

इसको नोसोड श्रेणीकी दवा कहा जा सकता है। वृक्ष आदिमें कैन्सर हुए तन्तुसे इस दवाका विचूर्ण या तरल आकारमें क्रम तैयार होता है।

यह कैन्सर रोगकी एक उत्कृष्ट दवा है। एकसे तीन क्यूबिक सेण्टिमेटर दवा सुईके सहारे २-३ दिनका अन्तर देकर प्रयोग करनेपर पहले रोग-लक्षण बढ़ते हैं, परन्तु दवा देना बन्द करते ही रक्त-स्राव रुकना या ह्रास और बदबूदार स्राव रुक जाता है और क्रमशः जखम सब सूखकर आराम हो जाते हैं।

सम्बन्ध।—**तुलनीय**।—कार्सिनोसिन, स्किर्हिनम, एनिहिल्यूमिन।

शक्ति। —मूल अर्क।

निकोलम मेटालिकम

(NICCOLUM METALLICUM)

दूसरा नाम।—निकेल नामक धातु-विशेष।

प्रकार। -- कार्बोनेट आफ निकेलसे भी विचूर्ण बनता है।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मेटालिक निकेलसे विचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः—दृष्टि-क्षीणता ; खाँसी ; वाधक ; सर-दर्द ; हिचकी ; सर्दी ; आँखोंका प्रदाह ; वाक्‌रोध (बोली रुकना) ; गलेका जखम ; जीभका कड़ापन ; दाँतका दर्द ; क्रूप खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—कभी-कभी पैदा होनेवाला प्रचण्ड सर-दर्द, बढ़ना—दिनके १० से ११ बजेके बीचमें, बायें पार्श्वमें पैदा होकर एकाएक दाहिने पार्श्वमें फैल जाता है और संध्याके समय अच्छा हो जाता है ; तकलीफ़से रोगी चिल्ला उठता है। वाधक ; स्वरभङ्ग ; खाँसी और माथा

हिलानेपर गलेकी कशेरुकामें फूटन इत्यादि निकोलमके विषयके अन्तर्गत है। इसकी खाँसीकी यह विशेषता है कि "खाँसनेके समय रोगी उठ बैठता है और दोनों हाथोंसे अपना माथा पकड़ लेता है।" बच्चा हो तो उसे खाँसी आनेके समय उठाकर बैठा देना पड़ता है, नहीं तो धनुष्टंकारकी तरह अकड़न पैदा हो जानेकी सम्भावना हो जाती है। कोई-कोई खाँसनेके समय अपने दोनों ऊरुपर दोनों हाथ रखकर, उसपर भार देकर खाँसते हैं, ऐसे स्थानपर निकोलमका प्रयोग करना चाहिये। नीचे लिखे कई इसके प्रकृतिगत लक्षण हैं :— माथा झुकानेपर ऐसा मालूम होता है मानो मस्तिष्क टुकड़े-टुकड़े कर काटा जा रहा है; मानो माथेमें एक लोहेकी कील गड़ी हुई है; मानो गर्दनमें मोच आ गयी है; नींद खुलनेपर; सरमें दर्दकी वजहसे ऐसा मालूम होता है, मानो अच्छी तरह नींद नहीं हुई; मानो बहुत पसीना होगा इत्यादि। अन्त्राशयिक दर्द आदि बाईं ओरसे दाहिनी ओर चला जाता है। हेरिङ्गने अपने "संक्षिप्त भैषज्य-संग्रह"में लिखा है—"साहित्यानुरागी तथा अन्यान्य व्यक्तियोंको कभी-कभी स्नायविक सर-दर्द पैदा हो जाता है; देह बहुत दुबली, क्षीण-दृष्टि और जिनकी पाचन-शक्ति क्षीण रहती है, जिन्हें प्रायः कब्जियत हो जाती है और सवेरे नींद खुलनेपर बीमारी बढ़ती है या जो कभी ऐसी गड़बड़ी अनुभव करते हैं, मानो उन्हें कोई कड़ी बीमारी होगी, उनके लिये निकोलम विशेष उपयोगी है।

लक्षणावली

मन।—कलह-प्रिय (अरम-मूर-नैट, कोना, लाई, स्ट्रान)। अत्यन्त चिड़चिड़ा स्वभाव (ऐब्रोट, कोना, नैट्र-मूर, इयुपस, टियुट, इयुक्का-फिन)। शरीर हिलानेपर (हायो, डिजि), मानो पसीना होगा—ऐसी बेचैनी मालूम होती है। ऐसा शंकान्वित भाव रहता है, मानो कोई अमंगल घटना होना ही चाहती है (चिनिन-सल्फ, नैट्र-मूर, ऐनाक, कैल्के, ग्रैफ; मानो जल्द ही कोई बुरा समाचार आयगा—ऐस्टिरियस-रियु, लिसिन)। किसी बातका प्रतिवाद करनेपर बहुत चिढ़ उठता है (अरम, नक्स, पेट्रोल)। बातचीतकी इच्छा न होना (कैमो, जेल्सि, ग्लोनो, ऐनाक), भीत और कम्पित भाव और एकान्तमें रहना अच्छा मालूम होना (बैराइ, ऐनाक, बेल, कैमो, साइक्लूर, इग्ने, नक्स, प्लैट)।

नेक्ट्रियानिनम

(NECTRIANINUM)

इसको नोसोड श्रेणीकी दवा कहा जा सकता है। वृक्ष आदिमें कैन्सर हुए तन्तुसे इस दवाका विचूर्ण या तरल आकारमें क्रम तैयार होता है।

यह कैन्सर रोगकी एक उत्कृष्ट दवा है। एकसे तीन क्यूबिक सेण्टिमेटर दवा सुईके सहारे २-३ दिनका अन्तर देकर प्रयोग करनेपर पहले रोग-लक्षण बढ़ते हैं, परन्तु दवा देना बन्द करते ही रक्त-स्राव रुकना या ह्रास और बदबूदार स्राव रुक जाता है और क्रमशः जखम सब सूखकर आराम हो जाते हैं।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—कार्सिनोसिन, स्किर्हिनम, एनिहिल्यूसिन।

शक्ति।—मूल अर्क।

निकोलम मेटालिकम

(NICCOLUM METALLICUM)

दूसरा नाम।—निकेल नामक धातु-विशेष।

प्रकार।-- कार्बोनेट आफ निकेलसे भी विचूर्ण बनता है।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मेटालिक निकेलसे विचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—दृष्टि-क्षीणता; खाँसी; वाधक; सर-दर्द; हिचकी; सर्दी; आँखोंका प्रदाह; वाक्‌रोध (बोली रुकना); गलेका जखम; जीभका कड़ापन; दाँतका दर्द; क्रूप खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—कभी-कभी पैदा होनेवाला प्रचण्ड सर-दर्द, बढ़ना—दिनके १० से ११ बजेके बीचमें, बायें पार्श्वमें पैदा होकर एकाएक दाहिने पार्श्वमें फैल जाता है और संध्याके समय अच्छा हो जाता है; तकलीफ़से रोगी चिल्ला उठता है। वाधक; स्वरभङ्ग; खाँसी और माथा

हिलानेपर गलेकी कशेरुकामें फूटन इत्यादि निकोलमके विषयके अन्तर्गत है। इसकी खाँसीकी यह विशेषता है कि "खाँसनेके समय रोगी उठ बैठता है और दोनों हाथोंसे अपना माथा पकड़ लेता है।" बच्चा हो तो उसे खाँसी आनेके समय उठाकर बैठा देना पड़ता है, नहीं तो धनुष्टंकारकी तरह अकड़न पैदा हो जानेकी सम्भावना हो जाती है। कोई-कोई खाँसनेके समय अपने दोनों उरूपर दोनों हाथ रखकर, उसपर भार देकर खाँसते हैं, ऐसे स्थानपर निकोलमका प्रयोग करना चाहिये। नीचे लिखे कई इसके प्रकृतिगत लक्षण हैं :— माथा झुकानेपर ऐसा मालूम होता है मानो मस्तिष्क टुकड़े-टुकड़े कर काटा जा रहा है; मानो माथेमें एक लोहेकी कील गड़ी हुई है; मानो गर्दनमें मोच आ गयी है; नींद खुलनेपर; सरमें दर्दकी वजहसे ऐसा मालूम होता है, मानो अच्छी तरह नींद नहीं हुई; मानो बहुत पसीना होगा इत्यादि। अन्त्राशयिक दर्द आदि बाईं ओरसे दाहिनी ओर चला जाता है। हेरिङ्गने अपने "संक्षिप्त भैषज्य-संग्रह"में लिखा है—"साहित्यानुरागी तथा अन्यान्य व्यक्तियोंको कभी-कभी स्नायविक सर-दर्द पैदा हो जाता है; देह बहुत दुबली, क्षीण-दृष्टि और जिनकी पाचन-शक्ति क्षीण रहती है, जिन्हें प्रायः कब्जियत हो जाती है और सवेरे नींद खुलनेपर बीमारी बढ़ती है या जो कभी ऐसी गड़बड़ी अनुभव करते हैं, मानो उन्हें कोई कड़ी बीमारी होगी, उनके लिये निकोलम विशेष उपयोगी है।

लक्षणावली

मन।—कलह-प्रिय (अरम-मूर-नैट, कोना, लाई, स्ट्रान)। अत्यन्त चिड़चिड़ा स्वभाव (ऐब्रोट, कोना, नैट्र-मूर, इयुपस, टियुट, इयुका-फिन)। शरीर हिलानेपर (हायो, डिजि), मानो पसीना होगा—ऐसी बेचैनी मालूम होती है। ऐसा शंकान्वित भाव रहता है, मानो कोई अमंगल घटना होना ही चाहती है (चिनिन-सल्फ, नैट्र-मूर, ऐनाक, कैल्के, ग्रैफ; मानो जल्द ही कोई बुरा समाचार आयगा—ऐस्टिरियस-रियु, लिसिन)। किसी बातका प्रतिवाद करनेपर बहुत चिढ़ उठता है (अरम, नक्स, पेट्रोल)। बातचीतकी इच्छा न होना (कैमो, जेल्सि, ग्लोनो, ऐनाक), भीत और कम्पित भाव और एकान्तमें रहना अच्छा मालूम होना (बेराई, ऐनाक, बेल, कैमो, साइक्ल, इग्ने, नक्स, प्लैट)।

मस्तक।—सवेरे सोकर उठनेके समय शारीरिक दुर्बलतासे उत्पन्न सरमें चक्कर आना, इसके साथ ही मिचली और ओकाई आना; संध्याके समय कुछ देरतक झुके रहनेपर, सीधे होनेपर (बेल)। सरमें चक्कर आना—सरमें चक्कर आ जाता है और शरीर ढलमलाया करता है, मानो रोगी बहुत क्षीण हो गया है; वृद्धि—सवेरे सोकर उठनेपर (मैग-मूर)। माथा भारी और भरा मालूम होता है; माथा झुकानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो माथा टुकड़े-टुकड़े होकर काटा जा रहा है। मस्तिष्ककी जड़ताकी वजहसे कौन क्या कर रहा है, इसको समझ नहीं सकता या अपना मनोभाव स्पष्ट प्रकट नहीं कर सकता। सरमें चक्कर आनेकी बीमारीमें माथा भारी और जड़भावापन्न मालूम होता है, विशेषकर ललाटका पिछला अंश; रोगी अपना ललाट मला करता है; सवेरे ऐसा मालूम होता है, मानो रातमें अच्छी तरह नींद नहीं आयी। कभी-कभी पैदा होनेवाला तेज़ दर्द—दिनके १० से १२ बजेतक बढ़ना। पहले बाईं ओर पैदा होता है, फिर एकाएक दाहिनी ओर चला जाता है और संध्याके समय अच्छा हो जाता है, कभी-कभी यह दर्द इतना तेज़ हो जाता है कि रोगी चिल्लाने लगता है (तकलीफ़से रोगी रोने लगता है—काफिया; रातके १० बजेसे ११ बजेके बीचमें बढ़ना और सूर्योदयके समय आराम हो जाना—सिफिलिनम; पहले बाएँ, फिर दाहिने पार्श्वपर आक्रमण करता है—सिङ्कोना)। दिन-भर सर-दर्द रहता है और मध्याह्नके कुछ पहले पित्त वमन हुआ करता है। माथेमें उत्ताप मालूम होनेकी वजहसे रोगी निर्मल वायु सेवन करनेके लिये लालायित रहता है; ऐसा मालूम होता है मानो मूर्द्धा-देशको कोई हाथसे दबा रहा है। ऐसा अनुभव होता है कि मानो मूर्द्धा-देशमें एक लोहेकी कील गड़ रही है (मानो लोहेकी कील घुस रही है—हेलिबो, नक्स, थूजा; भीतरसे बाहरकी ओर—थूजा)। माथे और बायीं आँखमें फाड़नेकी तरह दर्द। सर-दर्द—प्रत्येक १५ दिनका अन्तर देकर पैदा होता है और निर्मल वायु लगनेपर घट जाता है। माथा झुकानेपर सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है (निक्कोलम, सल्फ्युरिकम; निर्दिष्ट समयपर पैदा होनेवाला प्रचण्ड सर-दर्द और मलेरियासे उत्पन्न सामयिक सर-दर्द)।

आँख।—दृष्टि-क्षीण; दोनों आँखें लाल और उनमें रोशनी सहन नहीं होती। ज्यादा परिश्रम करनेपर, विशेषकर सन्ध्याके समय, दोनों आँखें सुस्त पड़ जाती है और उनमें जलन हुआ करती है। आँखमें जलन, वृद्धि—सवेरे

सोकर उठनेपर और सन्ध्याके समय ; घटना—धोनेपर (ठण्डे पानीसे धोनेपर दर्द आराम हो जाना—ऐसिरम)। सवेरे आँखें फूल जाया करती हैं और खोली नहीं जातीं। सवेरे पलकोंका सटना (कैल्के, युफ्रे, क्लिमेट, ग्रैफ, कैलि-कार्ब), ठण्डा पानी लगनेपर आँखें लाल हो उठती हैं और उनमें अकड़न मालूम होती है। आँसू गिरना और अस्पष्ट दृष्टि रोगमें आँखका बहुत अधिक स्पन्दन (ग्लोन, आयोड, वेस्पा)। दूरकी सब चीजें बहुत बड़ी मालूम होती हैं (इथ्यू, हायो, एपिस, युफोर्ब, फास, लोरो, नक्स-मस, फाइजस, बार्बेस्क), दीयेकी लौके चारों ओर इन्द्रधनुषके सभी रङ्ग दिखाई देते हैं (फास, जेलसिमियम)। सभी चीजें नीली दिखाई देती हैं (लाई, स्ट्रैमोन, जिङ्कम, सिना, क्रोटेल, ऐक्टि-स्पाई, अरम-मेट), विशेषकर दाहिनी आँखसे देखनेपर (नीली दिखाई देती है—कैन्थ, डिजि)। सवेरे चारों ओर मेघसे घिरा मालूम होता है (साइक्ले, लैक-डिफ्लो, कैम्फ्टेर, लैक्टियु, ओलि-ऐन, कैल्मी, सैबाई, प्लम्ब) ; आँखमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, मानो बिजलीकी चिनगारी लग गई है ; बढ़ना—आँख छूनेपर। दीयेकी एक लौ दो मालूम होती है।

नाक।—सर्दी नहीं, पर बार-बार छींक (साइक्ले)। नाक रुकी—नाक इस तरह रुक जाती है, कि साँस नहीं छोड़ी जाती ; बढ़ना—रातमें और दाहिनी नाकमें। नाकका अगला भाग लाल और फूला तथा नाकके छेदमें फाड़नेकी तरह दर्द और जलन। सर्दी—दिनमें सर्दीका स्राव हुआ करता है, पर रातमें सर्दी सूख जाती है (नक्स-वोम, सैम्बु)।

मुखमण्डल।—ऐसा अनुभव होना, मानो चेहरा फूल गया है (ऐ-सल्फ, डायाडेमा, फेरम, जिम्नोक्लेड) और भार मालूम होना। गलेका जखम रोगमें चेहरेका दाहिना पार्श्व फूल जाता है और लाल हो जाता है (मैग-फास, रस, वेरेट-विर, बार्बेस्क)। फूले हुए चेहरेमें इतना दर्द होता है, कि रातमें नींद खुल जाती है ; घटना—सर्दी लगनेपर। हनुसन्धिमें अकड़नकी वजहसे सहजमें ही मुँह नहीं खोल सकता (जेल्स, लैकेसिस, मिडोरिन, मर्क-प्रोटो, पेट्रोल, नेट्र-सल्फ) ; मुखमण्डलकी त्वचा फटी-फटी ; चेहरेपर खुजलानेवाली लाल फुन्सियाँ ; लाल रङ्गके उद्भेद। एक क्षय हुए पेषण-दाँतमें बहुत दर्द हुआ करता है और वह दाँत दबानेपर उससे बदबूदार पानी निकला करता है। दन्तशूल—कानमें छेदनेकी तरह या चिलक मारनेकी तरह दर्द

(मेझे), ऐसा मालूम होता है, कि सभी दाँतोंकी जड़ शिथिल हो जाती है और वह दाँत बड़ा मालूम होता है। मुँहके भीतर बहुत ज्यादा मीठा रस सञ्चित होता है। रोगीके मुँहसे बदबू निकलती है, पर यह बदबू रोगीके अनुभवमें नहीं आती। जीभकी अकड़नकी वजहसे सहजमें ही बात नहीं कर सकता (लाई, सिपि, लोरो)।

गलेके भीतर।—गलेके जखमकी बीमारीमें कण्ठमें दर्द; बढ़ना—बोलने या जम्हाई लेनेपर और संध्याके बाद। निगलनेके समय समूचे कण्ठके भीतर दर्द मालूम होता है; वृद्धि—सवेरे; गलेके दाहिने पार्श्वमें बहुत दर्द हुआ करता है और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता। कण्ठके भीतरके प्रदाह रोगमें दाहिनी गलग्रन्थि, मुखमण्डल और ग्रीवाकी सूजन और उसमें स्पर्श सहन न होना। एकाएक कण्ठनली संकुचित होकर गला रुकनेका उपक्रम हो जाता है। कण्ठके भीतर गाढ़ा श्लेष्मा इकट्ठा हो जाता है और डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है। गलेके भीतर सुई गड़नेकी तरह दर्द, ऐसा मालूम होता है, मानो यह दर्द अलिजिह्वामें हो रहा है।

पाकस्थली।—भूख खासी रहती है, परन्तु रुचि नहीं रहती; पर रोगके अधिकांश लक्षण भोजनके बाद घट जाते हैं (ऐनाक, नेट्रम-कार्ब, कैल्के, क्रोकस, आयोड, स्टैफाई, फेरम, इग्ने, फास)। संध्याके समय प्यास बढ़ जाती है। दिन-रात भयानक प्यास, भयानक हिचकी, विशेषकर संध्याके समय (कैलि-आयोड, लोबेल, नेट्र-सल्फ, जिङ्क)। मानो उपवास किया है, पाकाशय ऐसा ही शून्य मालूम होता है, पर भूख नहीं रहती (भोजनके बाद—लाई)। भोजनके बाद पाकाशय बहुत भारी मालूम होता है (सिङ्को, कोलचि, हाइड्रैस्ट, लाई, नक्स-वोम)। तीती या खट्टी डकार, पाकस्थलीमें दबाव मालूम होना; घटना—डकार आनेपर (रोडो, सल्फ)। उदरके ऊपरी प्रदेशमें और कोखके भीतर ऐसा दर्द होता है, मानो छुरी घुस रही है। पाकस्थलीसे पीठतक सुई गड़नेकी तरह दर्द; मिचली और डकारके साथ कण्ठमें खट्टा पानी चढ़ा करता है।

अन्त्राशय और मल।—पेट फूला। आध्मानकी अधिकता—आध्मान वायु बदबूदार या गंधहीन। संध्याके भोजनके आरम्भमें नाभिप्रदेशमें नख गड़नेकी तरह दर्द और पीठमें खींचन मालूम होना। उदरमें छेदनेकी तरह भयानक

दर्दके बाद पतला पाखाना होता है। पेटमें दर्दभरी आँतोंकी गड़गड़ाहट। ऋतुके समय पेट जकड़ जाता है और आध्मान वायु निकला करता है। कब्जियत—वेग होता है, पर पाखाना नहीं होता और बहुत चेष्टा किये बिना पाखाना नहीं होता (ओपि, प्लम्ब, प्लैट)। मल कोमल होनेपर भी बहुत वेग देनेपर निकलता है (ऐल्यू, हिप, ऐनाक, प्लैटि, साइलि, वेरेट)। मलका पतलापन, मल पीले रंगका आममय (एपिस, बोर, कैमो, ऐ-सल्फ, रस); बड़े वेगसे और आध्मानके साथ आवाज देता हुआ निकलता है (क्रोटोन-टिग, गैम्बो, ग्रैटि, जेट्रो, नेट्र-सल्फ, फास, रैफे, निकोल, सिपि)। दूध पीनेपर कूथन और पतले दस्त आना (कैल्के, कैलि-कार्ब, लाई, नेट्र-कार्ब, नक्स-मस, सिपि); पाखाना होनेके पहले मलद्वारमें छेदनेकी तरह तकलीफ़ और जलन मालूम हुआ करती है (बार्बा, नेट्र-सल्फ)। पाखाना होनेके समय मलान्त्रमें और मलद्वारमें जलन और नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द और पाखाना हो जानेपर मलद्वारमें खुजलाहट और जलन मालूम हुआ करती है।

पेशाब।—दिन-रात अधिक पेशाब हुआ करता है। पेशाब करनेके समय मूत्र-मार्गके द्वारपर जलन मालूम होती है (ऐफिस-चिनोपोड, कैल्के, डालका, नक्स-वोम, पल्स; रातमें पेशाब करनेके समय—ऐगार, स्याइजि); सन्ध्याके भोजनके बाद लिङ्गोच्छ्वास। मुष्कके एक खास छोटे अंशमें खुजलाहट, खुजलानेपर भी खुजली नहीं घटती।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तव; असमयमें ही हो जाता है और ऋतुके समय उदरमें और नितम्बदेशमें दर्द मालूम होता है। अधिकांश स्थानोंमें ऋतु देरसे होता है और स्राव भी थोड़ा होता है—अन्त्रशूल, कमरमें दर्द, आँखमें जलन और सुस्ती मालूम हुआ करती है। प्रदर—स्राव बहुत ज्यादा और पानीकी तरह पतला; वृद्धि—आर्त्तव-स्राव होने बाद या पेशाब होने बाद (ऋतुके बाद प्रदर-स्रावकी अधिकता—ऐल्यू, ग्रैफ, प्लैट, सिपी; पेशाब करने बाद सवेरे—मैग-मूर; पेशाब करने बाद प्रदरका स्राव बन्द हो जाता है—नेट्र-कार्ब)।

श्वासयन्त्र।—स्वरभङ्ग—प्रत्येक वर्ष फिरसे पैदा हो जाता है (आर्स, स्थल-विशेषमें मिचली और क्षीण दृष्टि और दूध सहन न होना—मिला); तेज़ हवा लग जानेके कारण स्वरभङ्ग। स्वरभङ्गमें कर्कशता (रुखड़ापन) मालूम होना; खाँसनेपर घटना। खाँसी रातमें बहुत बढ़ जाती है; खाँसनेके समय

रोगी उठकर दोनों हाथोंसे अपना माथा पकड़ लेता है या दोनों हाथ ऊपर रखकर खाँसा करता है। खाँसनेके समय यदि बच्चेको उठाकर बैठाया नहीं जाता तो उसे धनुष्टङ्कारकी तरह अकड़न पैदा हो जानेकी सम्भावना हो जाती है (आर्स, हायो, बेल, क्रोटोन-टिग, ड्रोसेरा, ओलियि-कोर, पल्स, सिपि)। कण्ठमें खुजलाहट हो जानेकी वजहसे खाँसी—संध्याके बाद सोते ही बढ़ जाती है (कैलि-कार्ब, क्रियो, पलस)।

प्रत्यङ्ग आदि।—माथा इधर-उधर घुमाते ही ग्रीवाकी कशेरुकाएँ सब कटकट करने लगती हैं (ऐगार, चेलिडो, पेट्रोल)। ऐसा दर्द मानो लेमें मोच आ गयी है (आर्स, रियुटा)। कोमल पाखाना होते समय नितम्बमें दर्द मालूम होना। तीसरे पहर नितम्ब-देशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। सोनेपर शरीरमें जगह-जगह सुई गड़नेकी तरह दर्द। हाथ और दोनों पैर बहुत भारी मालूम होते हैं, घटना—हिलानेपर। बायें कन्धेमें ऐसा मालूम होना, मानो मोच आ गयी है या सन्धिभ्रष्ट हो गयी है (ऐगार); मुद्गर आदि लेकर, व्यायामकी तरह जोरसे हिलाने-डोलानेपर घटना। केहुनीसे लेकर कलाईतक और अंगुलीमें वातका दर्द। दाहिने जानुफलकमें सुई गड़नेकी तरह मालूम होना। दोनों पैर भारी और क्षीण मालूम होते हैं और काँपा करते हैं। बाईं एँड़ीके नीचे सुई गड़नेकी तरह दर्द और खुजली।

सार्वाङ्गिक।—अधिकांश लक्षण ही सन्ध्याके समय बढ़ जाते हैं और निर्मल वायु लगनेपर घट जाया करते हैं। रातमें बेचैनी बहुत बढ़ जाया करती है ; चित्तकी चंचलताकी वजहसे रोगी लगातार करवट बदला करता है। समूची देह गर्म मालूम होती है और इसीलिये मानसिक उद्वेग पैदा हो जाता है और उठनेकी शक्ति नहीं रहती।

त्वचा।—समूची देह, विशेषकर गला खुजलाया करता है ; खुजलानेपर दाने निकल आते हैं (दाने नहीं निकलते—डलिकस-प्रू)। जगह-जगह सूक्ष्म भावसे जलन और डंक मारनेकी तरह दर्द और खुजलाहट होती है।

निद्रा।—आधी रातसे लेकर ४ बजेसे सवेरेतक नींद नहीं आती और वायुनलीके भीतर खुजलाहटकी वजहसे सूखी खाँसी आया करती है। सवेरे ललाटके पीछे भार मालूम होता है, ऐसा मालूम होता है मानो रातमें अच्छी तरह नींद नहीं आयी। रातमें २ बजनेके समय उत्ताप और बेचैनी अनुभव

हुआ करती है और सारे शरीरमें बहुत दर्द मालूम होनेके कारण आराम पानेकी आशासे रोगी शय्या त्यागकर टहला करता है। आधी रातके बाद पेटमें दर्दकी वजहसे नींद खुल जाती है। रातमें नींद न आनेपर भी सवेरे देह और मन प्रसन्न (ऐ-फ्लू, कोबाल्ट) रहता है।

वृद्धि ।—शरीर या अङ्ग हिलानेपर (अधिकांश लक्षणोंका); सवेरे नींद खुलनेपर ; बोलने या जम्हाई लेनेपर ; आधी रातके बाद और दबाने या सोनेपर (खाँसी) और दूध पीनेपर (पतले दस्त)।

उपशम ।—निर्मल हवा लगनेपर ; धोनेपर (आँखकी जलन); भोजनके बाद, सर्दी लगनेपर (मुँहका दर्द); उठ बैठनेपर ; बाँह और पैर हिलानेपर (भार मालूम होना), खाँसनेपर (कण्ठनालीका रुखड़ापन) और डकार आनेपर।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—आर्स, कार्बो-ऐन, फेरम, ऐ-फ्लू, जेलसि, हायो, इग्ने, कोबाल्ट, लाई, मैंङ्गेन, नेट्र-मूर, नक्स-वोम, पेट्रोल, फास, प्लैट, पल्स, सिपि, साइलि, स्ट्रैमोन, जिङ्कम।

तुलनीय ।— कोबाल्ट, प्लैटिनम। चीज बड़ी दिखाई देनेपर—हायो नेट्रम, फास्फोरस ; नीला दिखाई देनेपर—लाइकोपोड ; दो देखना, इन्द्र-धनुषके रंग इत्यादि—फास्फ, जेल्स ; सर्दी—नक्स, सल्फ ; नासामूल—फेरम ; दाँतका दर्द—मैंङ्गनम ; सर-दर्द—जेल्स, सल्फ ; पाकस्थली शून्य मालूम होना—सिपिया ; वात्सरिक स्वरभङ्ग—आर्स ; गलेका जखम—लाइकोप इत्यादि।

शक्ति ।—३रे दशमिक विचूर्णसे २०० शततमिक क्रम व्यवहार होता है।

निकोलम सल्फ्युरिकम

(NICOLUM SULPHURICUM)

दूसरा नाम।— सलफाइट आव निकेल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—ऋतुलोप होनेके समयके बहुतसे उपसर्गोंमें लैकेसिसकी तरह यह भी एक उत्कृष्ट दवा है।

बहुत देरतक पढ़नेवाले, कमजोर और अजीर्ण रोगग्रस्त व्यक्तियोंकी बीमारीमें नक्सकी तरह इसे भी याद करना चाहिये।

शक्ति।—२^{x} विचूर्ण।

निकोटिनम

(NICOTINUM)

दूसरा नाम।—तम्बाकूका उपक्षार।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पानी या सुरासारमें द्रव तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—मृगी होनेका लक्षण; मस्तिष्ककी क्लान्ति; हिमाङ्गावस्था; वमन; आक्षेप; धनुष्टंकार; तम्बाकूका नशा इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—टैबाकमकी तरह इसका भी प्रधान लक्षण क्षणिक और दीर्घस्थायी संकोचन पैदा करनेवाली अकड़न है:—गर्दन और पीठकी अकड़न और मस्तकका पीछेकी ओर टेढ़ा पड़ जाना; चर्वण पेशियोंका संकोचन और स्वरनली तथा वायुनलीभुजके सङ्कोचनकी वजहसे, सूत्कारकारी श्वास-प्रश्वास, पर्यायक्रमसे क्षणिक और दीर्घस्थायी आक्षेपके बाद सारे शरीरकी शिथिलता, कम्प या स्पन्दन, उदरकी पेशियोंका पीछेकी ओर खिंचना और अनिच्छासे भी पेशीमय (जैसा अन्त्रमण्डल, मूत्रवहाशिरा

इत्यादि) ; यंत्रोंका सङ्कोचन—इस तरहकी संकुचित या आक्षिप्त अवस्थामें बहुत दर्द, अत्यधिक मिचली, ठण्डा पसीना निकलना और श्वास-रोध तथा तेजीसे हिमाङ्गावस्थाका आ जाना (फैरिङ्गटन) इसलिये, विसूचिका इत्यादि रोगोंकी आक्षेपावस्थामें इसके द्वारा विशेष लाभ हुआ करता है ।

लक्षणावली

मन ।—विकार, प्रलाप और भयंकर मूर्त्तियाँ देखना । किसी विषयमें मन नहीं लगा सकता (इथ्यू, बोवि, ऐग्नस, सिनैप, साइलि) ।

मस्तक आदि ।—माथेकी जड़ता और स्तम्भित भाव ; गर्दन और पीठकी अकड़न । माथेका पीछेकी ओर टेढ़ा पड़ जाना । पलकोंमें बहुत भार मालूम होना (कोलोफिल, कास्टि, जेल्स, लैक-डिफ्लो, मर्क्यूरियस-पेरेन), पलकोंका सङ्कोचन (नाइट्रि-स्पि-डाल, टैबाक, वायोला-ट्राई) । चर्वण-पेशीकी अकड़न (टैबाक—दाहिनी ओरकी—सार्सा ; विसूचिका रोगमें बहुत देरतक दाँती लगी रहना—वेरेट) । दृष्टिकी अस्पष्टता और आँखोंमें रोशनीका सहन न होना (एपिस, फास) । अच्छी तरह सुन नहीं पड़ता, मानो श्रवण-पथ रूईसे रुका हुआ है । चेहरा मलिन, रक्त-शून्य और यन्त्रणाव्यंजक । ऊपरी हनुमें सुरसुरी मालूम होती है । जीभमें तेज जलन । खाँसी, हिचकी और बार-बार श्लेष्मा निकालनेकी चेष्टा ; कण्ठमें सूखापन और रुखड़ापन मालूम होना, मानो अन्ननलीसे पाकस्थलीतक एक कड़ी चीजकी रगड़ लग गयी । बहुत तकलीफ़ मालूम होना ।

पाक और अन्त्राशय ।—रुचिका न रहना । धूम्रपानसे अरुचि (प्लैण्टेगो, सिङ्को, कैलेडियम) । डकार—वमन मिली, वमनके बाद घटना । पाकस्थलीसे ऊपर और नीचे जानेवाली गड़बड़ी मालूम होना । पाकस्थली और अन्त्राशयमें शून्यभाव और सुस्ती (काकुलस, इग्नेशिया) मालूम होना ; पेट फूला । बहुत अधिक मलका वेग—आध्मान वायु निकलने और पेशाब करनेपर मलका वेग घट जाता है (ऐसा वेग मानो पतला पाखाना होगा ; पर पेशाब करने बाद यह वेग नहीं रहता—लिलि-टाई) । पेशाब बहुत ज्यादा और वेग प्रबल ।

श्वास-यन्त्र ।—तेज या कष्टकर श्वास-प्रश्वास । छातीमें दबावकी वजहसे गहरी श्वास-प्रश्वासकी जरूरत पड़ती है । वक्षोस्थिके पीछे ऐसा अनुभव

होता है कि उसमें कुछ है, मानो वक्षोस्थिमें एक मुट्ठीभरका पदार्थ अड़ा हुआ है (साइकूटा)। नाड़ी क्रमसे दुर्बल होती जाती है।

सार्वाङ्गिक।—अंगुलीके अगले भागसे कलाई और कलाईसे कोहनीतक फैलनेवाला ऐसा अनुभव होना मानो चींटी रेंग रही है। निचले अंग सब क्षीण मालूम होति हैं, विशेषकर सीढ़ी चढ़नेके समय (कार्नस-सैट, कैलि-बाई ; चढ़ने या उतरनेके समय रियुटा)। आक्षेप क्षणिक, दो दण्डतक क्रमसे बढ़नेवाला ; हाथ-पैर आदि काँपते-काँपते क्रमसे सारा शरीर काँपने लगता है, श्वास-कृच्छ्रता पैदा हो जाती है और साँस रुक-रुककर निकलती है। श्वास लेनेमें भी ऐसा ही भाव हुआ करता है। रोगी इतना कमजोर हो पड़ता है, कि वह अपना माथा सीधा नहीं कर पाता। देखने, सुनने वगैरहकी शक्ति लुप्त हो जाती है और अन्तमें मूर्च्छा पैदा होकर बेहोशी पैदा हो जाती है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—हाथ, पैर आदि बरफकी तरह ठण्डे (कैम्फो, कार्बो-वेज, टैबाक, वेरेट, डिजि)। हाथ-पैर आदिकी अंगुलियोंमें शीत पैदा होकर क्रमसे सारि शरीरमें फैल जाता है (ब्राई, मिडोरिन, सिनियेन, सिपि)। क्लान्ति-जनक शीत (एरेनिया, चिनिन-सल्फ)। पाकस्थलीके ऊपरसे चारों ओर उत्ताप फैल जाता है ; उत्तापके बाद पसीना नहीं होता है। पसीना बरफकी तरह ठण्डा (आर्स, कैम्फो, साइना, हिप, इपिक, लाई, लर्क, पल्स, टैबाक, वेरेट)।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—(मृगीके सम्बन्धमें) एब्सिन्थ, इनैन्थि-क्रो, टैबाक, लोबेलिया, डिजि, कैम्फो, वेरेट, साकूर, स्ट्रैमोन, कार्बोन-आक्स।

प्रतिविष या दोषघ्न।—आर्स, लाइकोडियम (टैबाकम देखिये)।

शक्ति।—६ठाँ दशमिक क्रमतक।

नाइट्रि-स्पिरिटस-डल्सिस

(NITRI SPIRITUS DULCIS)

दूसरा नाम ।—नाइट्रम ईथर ; स्वीट-स्पिरिट आव नाइटर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—एक सौ भाग ८० पर्सेण्ट सुरासारमें २५ भाग विशुद्ध नाइट्रिक ऐसिड मिलाकर तैयार करना पड़ता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अतिसार ; पथरी ; मुँहमें जखम ; मुँहका स्नायुशूल ; पैरकी लम्बी हड्डीमें दर्द ; सान्निपातिक अवस्था ; मसे इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—जब आन्त्रिक या वात श्लेष्मा-ज्वरमें ज्ञानमें अवसाद, प्रधान लक्षणके रूपमें वर्त्तमान रहता है, ऐसे ही स्थानोंपर महर्षि हेनिमैनने इस दवाके व्यवहार करनेकी सलाह दी है । रोगी आच्छन्न अवस्थामें पड़ा रहता है—बहुत चेष्टा करनेपर यदि थोड़ा-सा होश आता भी है, तो दो-एक प्रश्नोंका कुछ असम्बद्ध उत्तर देकर फिर आच्छन्न भावको प्राप्त हो जाता है (ऐसिड-फास्फोरिकमसे लाभ न होनेपर) ऐसे स्थानपर महात्मा हेनिमैन इस दवाके मूल अरिष्टकी कई बूंद आधा गिलास पानीमें मिलाकर रोगीको दो-तीन घण्टेका अन्तर देकर, जबतक लाभ न हो थोड़ा-थोड़ा पिलाते थे (फैरिङ्गटन—आर्निका, हेलिबोरस, ओपियम और ऐसिड फास्फोरिकम आपसमें तुलनीय) । इससे मालूम होता है कि आन्त्रिक आदि अवसाद लानेवाले बोखारोंमें यदि मस्तिष्कके पक्षाघातकी आशंका हो और ऐसिड-फाससे कोई लाभ न हो तो तुरन्त इस दवाका प्रयोग करना चाहिये । बहुत नमक खानेवालेके मुँहका जखम और उदरामय रोगमें यह बहुत फायदा करता है । अंधड़-पानीके दिनोंमें सर्दी लग जानेके कारण चेहरेका स्नायुशूल ; मुँहमें जखम ; शीताद, खून मिला मलका पतलापन और हाथमें जगह-जगह अनगिनती मसे निकलना वगैरह लक्षण इसके विषयके अन्तर्गत हैं ।

लक्षणावली

मन ।—पूरी उदासी—रोगी किसी वस्तुकी कमी या शिकायतकी बात नहीं करता, लकड़ीकी तरह पड़ा रहता है ; बहुत चेष्टा करनेपर यदि कुछ

परिमाणमें उसका मोह दूर भी होता है तो धीरे-धीरे दो-एक बातका असम्बद्ध उत्तर देकर फिर मोहमें जा पड़ता है (आर्नि, ऐसिड-फस ; बेहोशी, परन्तु कोई बात पूछनेपर उसका सम्बद्ध उत्तर देता है—कोलचि; कन्वेले, काकुर, आइरिस, प्लम्ब, टिलिया)। हेनिमैनने अपने "Lesser writings" नामक ग्रन्थमें इस प्रकार लिखा है—रोगी उदास भावसे पड़ा रहता है, न सोता है, न कुछ बोलता है, कोई बात कहलानेकी चेष्टा करनेपर प्रायः उत्तर नहीं देता, ऐसा मालूम होता है मानो कोई बात ही नहीं सुनता या समझ नहीं सकता, कि क्या बोल रहा है (हेलिबो, वेलि, कैनाब-सैट) या समझनेकी चेष्टा नहीं करता या दो-एक बात जो उसके मुँहसे निकलती है, वह अस्पष्ट रहती है, पर असम्बद्ध नहीं रहती, मानो वह सुख-दुःख कुछ भी अनुभव नहीं कर सकता, एकदम पक्षाघात-ग्रस्त नहीं होता, पर इस भावसे पड़ा रहता है, कि उसकी देहतक नहीं हिलती। × × × ऐसी अवस्थामें खूब पुराना नाइट्रि-स्पिरिटस डलसिस एक बूंद एक आउन्स पानीमें मिलाकर खूब हिलाकर एक चम्मच मात्रामें सबका सब चौबीस घण्टोंमें पिला देना चाहिये अर्थात् ३घण्टेका अन्तर देकर एक चम्मच देना चाहिये। रोगी प्रलाप बकता है और असम्बद्ध आचरण करता है ; इस तरह ढलमलाया करता है, मानो मतवाला है ; मोह भंग करनेपर बातका जवाब देता है, सरमें दर्दकी शिकायत करता है और कहता है, कि सीधी राहसे चलनेपर उसे तकलीफ़ होती है। बहुत क्रोधी स्वभाव। कलह-प्रिय, पर रोना ; परिश्रम करने ता बोलनेकी इच्छा नहीं होती (फास, ऐ-फास प्लम्ब, पल्स, सल्फ)।

आँख।—ऐसा अनुभव होता है कि काले बिन्दु और चक्कर सब आँखके सामने उड़ रहे हैं (सोरि)। आँखकी पुतली सिकुड़ जाती है (कैम्फो, हेलिबो, हायो, ओपि)। आँख और पलकोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (आँखमें—आर्नि, ग्लोन, कैलि-कार्ब, सोरिन ; पलकमें—साइक्ला, जिञ्जिबार) ; पलकोंके किनारोंमें जलन (एपिस, आर्स, कोलचि, डिजि, मर्क-कोर, नेट्र-सल्फ, सैङ्गिविन)।

मुखमण्डल आदि।—चेहरेके ऊपरी अंशमें ऐसा अनुभव होता है मानो वह बादलसे ढका है (माथा मानो मेघमें डूबा हुआ है—ऐकटी-रेसी, आर्जेण्ट नाई)। दुबली, अस्थिसार मूर्त्ति (कैलि-फास, लैके, नेट्र-म्यूर)। चेहरा म्लान, आँख गड़हेमें धँसी और नीले घेरेसे घिरी। ओंठके सन्धि-स्थानपर कभी-कभी जखम पैदा हो जाता है (नमक खानेवालेको,—अन्य कारणसे

होनेपर—आग्डियुरेंगो, हेलिबो, लाई, सोरिन ; सविराम ज्वरमें—काकुत्र), मुँहकी हड्डीमें कुटकुटानेवाला और दबावकी तरह दर्द। पनीर खानेकी वजहसे मुँहमें पानी भर आना। अन्धड़ पानीके दिनोंमें सर्दी लग जानेके कारण चेहरेका स्नायुशूल (ग्रैफ, रस) ; मुँहके दोनो पार्श्व पर ही रोगका आक्रमण होता है और शीत तथा बसन्त ऋतुमें बीमारी बढ़ जाया करती है।

पाकाशय आदि।—लगातार मिचली और अरुचि। भोजनके बाद खट्टे पदार्थ और श्लेष्माका वमन और उसके बाद सर-दर्द। दस्त और कै। मुँहमें लगातार पानी भर आना। भोजनके बाद तुरन्त ही पेटमें भार मालूम होने लगना, पेट जकड़ जाता है और उसमें दर्द मालूम हुआ करता है। पित्त-पथरीका दर्द। बहुव्यापक आमातिसार रोगमें शारीरिक अवसाद। नमकीन दवा सेवन करनेके कारण दस्त आने बाद खून मिला दस्त।

श्वासयन्त्र।—श्वास-प्रश्वासमें नाकमें आवाज होती है। श्वास-प्रश्वास धीमा और नियमित ; दो क़दम चलनेसे ही साँस तेज़ हो जाती है और उस समय भी यदि चलना बन्द नहीं करता तो श्वास-प्रश्वास तेज़ और कष्टकर हो उठता है और कलेजा जकड़ जाता है। हृत्पिण्डकी आंधीकी तरह उच्छृङ्खल गति ; वृद्धि—चलनेपर। सन्ध्याके बाद सोनेपर अकसर ऐसा ही होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—पीठमें उत्ताप मालूम होना (ग्लोन, वेरेट-विर), ऐसा मालूम होता है मानो पीठमें नीचेसे ऊपरकी ओर गर्म जल उठ रहा हैं। हाथ-पैर आदि बहुत क्षीण मालूम होते हैं। हाथ और पैरके नख सब नीले हो जाते हैं (चिनिन-सल्फ, साइक्यू, सिङ्को, मैन्सि, ऐसिड-नाई, नक्स, थूजा, वेरेट), बहुत सुस्ती मालूम होना—केवल अधलेटी अवस्थामें रहनेपर कुछ शान्ति और आराम मालूम होता है, बहुत दुबलापन (आयोड, आर्स, नेट्र-मूर, फास, सार्सा, ऐब्रोट, फेरम, सिपि, स्टैन, सल्फ)। शिराका फूलना (ऐ-फ्लू, हैमा, पल्स, पियोनिया)। सर्दी लगनेसे बहुत कातर हो पड़ता है।

वृद्धि।—चलने, शरीर हिलाने, सर्दी लगने, तीसरे पहर और पनीर खानेपर (कोलोसिन्थ, टिलिया ; पुराना पनीर सेवन करनेकी वजहसे परिपाकमें गड़बड़ी—ऐ-फास, आर्स, ब्राई, रस)।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—कैल्के, कैम्फो, कार्बो-वेज, कास्टि, कोना, कैलि-कार्ब, नेट्र-कार्ब, नेट्र-मूर, नाइट्रम या कैलि-नाई, ओपी, सिपि।

अनुकूल ।—सम्बन्ध ।—डिजिटेलिस, रैनान-बल्बो ।

सदृश ।—आर्नि, ऐसिड-फास, ओपी, हेलिबो ।

शक्ति ।—एक बूंद मूल अरिष्ट एक आउन्स पानीमें मिलाकर एक चम्मच या एक ड्राम प्रति तीन घण्टेका अन्तर देकर प्रयोग करना चाहिये या प्रथम दशमिक क्रम ।

नाइट्रोजेनम आक्सिजेनेटम

(NITROGENUM OXYGENATUM)

दूसरा नाम ।—नाइट्रस आक्साइड वाक । लाफिङ्ग-गैस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—तरल आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—अनजानमें पेशाब, संन्यास, हिस्टीरिया, न्यूमोनिया प्रभृति उपसर्गोंमें व्यवहृत होता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—नाइट्रि-ऐसि, विरे-वि ।

दोषघ्न ।—बेलेडोना ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

नूफर लूटियम

(NUPHER LUTEUM)

दूसरा नाम ।—स्माल यलो पाण्ड लिली ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हुआ है—विसूचिकाकी तरह पतले दस्त आना; अजीर्ण; सर-दर्द; ध्वजभङ्ग; विचर्चिका; रस-टक्सकी विषाक्तता; शुक्र जाना; सान्निपातिक ज्वर ।

उपयोगिता और आभास।—डा० ह्यूज कहते हैं, कि अकेले ही इसने दो पुरानी दवाओंका स्थान ग्रहण किया है। ऐग्नस-कैस्टसकी तरह यह कामेन्द्रियका अवसाद और रियुमेक्स-क्रसपसकी तरह सवेरे पतले दस्त लाता है। डा० फैरिङ्गटनके मतसे सवेरेके समय पीले रंगका मल-मिले उदरामयमें गैम्बोजिया या गामा-गुटी और चेलिडोनियम वगैरहसे फायदा न होनेपर "नूफर लूटियम" का प्रयोग करना चाहिये। इसके द्वारा स्नायविक अवसाद, कामेन्द्रियकी उत्तेजनाका घटना और उदरामय उत्पन्न हो जाया करता है। इसलिये, यह आन्त्रिक ज्वराश्रित उदरामयमें, कामेन्द्रियकी शिथिलताकी वजहसे शुक्रक्षय और सवेरे ४ से ६ बजेतकके बीचमें बढ़नेवाले पीलामल मिले उदरामयमें विशेष लाभदायक है। इसके अलावा यन्त्रणाजनक लिङ्गोद्रेक, आन्त्रिक ज्वरके बाद, आराम होनेके समय नींदमें वीर्य निकल जाना प्रभृति रोग भी इससे आराम हो जाया करते हैं।

लक्षणावली

मन।—प्रतिवाद बिलकुल ही सहन नहीं होता (ऐनाक, ऐस्टिरियूब, अरम-म्यूर-नैट, कैमो, सिना, काकुय, कोना, फेरम, इग्ने, लाई ; प्रतिवाद करना पसन्द करता है या सभी बातोंका प्रतिवाद करता है—ऐरिट-क्रूड, रियुटा)। जीव-जन्तुओंकी तकलीफ़ देख नहीं सकता, बहुत तकलीफ़ होती है (कास्टिकम, रोगी भाईकी तकलीफ़ देखकर स्वयं भी वही तकलीफ़ भोग करता है—लिसिन)।

मस्तक।—माथा भारी मालूम होता है। चलनेके समय माथेके सामनेवाले अंशके दाहिने पार्श्वमें स्थित मस्तिष्कमें दर्द पैदा करनेवाला स्पन्दन मालूम होता है (दर्द करनेवाला हिलना—कुरारी)। चक्षुगोलकके पीछे स्थित मस्तिष्कके निचले भागमें धीमा-धीमा दर्द। मस्तिष्कके सामनेवाले अंशके दोनों पार्श्वोंमें छुरी मारनेकी तरह दर्द (सैङ्गिविन)। जननेन्द्रियका अवसाद-मिला सर-दर्द (अत्यन्त कामतृप्तिके कारण—कैल्के, पल्स, फास ; इन्द्रियकी उत्तेजनाकी वजहसे—कोना, पल्स ; शुक्रक्षयके कारण—हैमा, कोबाल्ट)। माथेमें रूसी, बहुत खुजलाना (कैलि-ब्रोम, मेजेर, थूजा)।

आँख।—धूपमें खड़े होनेपर, तेज़ खाँसी आनेपर दृष्टिके सामने चमकीले आगके कण दिखाई देते हैं (कैलि-कार्ब)।

पाकस्थली।—मुँहका स्वाद मीठा। जीभ सफ़ेद; मुख लसदार। पाकस्थलीमें बेचैन करनेवाली सुस्ती मालूम होती है; पाचन-क्रिया बहुत धीरे-धीरे होती है। आध्मानकी अधिकताकी वजहसे शूलका दर्द (ऐनिसम); वृद्धि—सवेरे; खट्टी गन्ध लिये पतला पाखाना होना, कामेन्द्रियकी सुस्ती; रेतःस्खलन और रमणके दूसरे दिन आँतोंमें शूलका दर्द बढ़ जाया करता है। कमरके चारों ओर दर्द; बढ़ना—सवेरे ५ से ७ बजेके बीचमें।

मलान्त्र और मल। – प्रत्येक बार पाखाना होनेपर मलद्वारमें जलन और उत्तेजना (इग्ने, कैन्थ, गैम्बोज, ग्रैफ, नेट्र-मूर, पल्स, थूजा)। मलद्वारके ऊपर स्थित मलान्त्रमें ऐसा दर्द, मानो सुई गड़ रही है (फास, कैलि-कार्ब)। कई दिनोंतक पेटमें दर्दके बाद पतला पाखाना होना या बिना तकलीफ़का उदरामय (डाल्का, गैम्बोज, नेट्र-मूर, नेट्र-सल्फ़, ऐ-फास, पोडो)। उदरामय—मल पीला, पानीकी तरह, बदबूदार और यन्त्रणा-रहित या अन्त्रशूल-संयुक्त; वृद्धि—४ बजेसे ७ बजेके बीचमें। पाखाना हो जाने बाद पेटका दर्द आराम हो जाना और मलद्वारमें जलन तथा उत्तेजना; बहुत सुस्ती और हाथ-पैरोंमें कमजोरी मालूम होना; वृद्धि—संध्याके बाद सारे शरीरमें अवसाद, उदरके ऊपरी भागमें अवसाद।

पेशाब और जननेन्द्रिय।—पेशाबमें लाल बालूमय तली जमती है (लाई, पैरिइरा, नक्स, पास, साइलि); वह कड़ी और पेशाबके बर्त्तनकी तलीमें लगी रहती है (ऐस्पारेग, कूप्रम, लैक-कैन, पल्स, साइमिक्स, डैफनी)। दाहिने अण्डकोषमें दर्द मालूम होता है और दर्द-भरा तथा क्षीण लिङ्गोद्रेक होता है (हिपर, लाइको)। कामोद्दीपक बातें करनेपर भी लिङ्गोद्गम नहीं होता। लिङ्ग सिकुड़ा हुआ (युफ्रे, ऐ-पाई) और मुष्क कमजोर होकर झूलने लगता है (क्लिमेट, लाई, कैल्के, मैंग-मूर)। वातश्लेष्मा ज्वरके आराम होनेके निकट रहनेपर सुस्त करनेवाला कुछ शुक्र-क्षय। अनजानमें रेतःस्खलन, सोयी अवस्थामें (हैमा, नेट्रम-फास, डिजि); पाखाना फिरनेके समय (ऐ-फास, जेल्स, प्लम्ब) और पेशाब करनेके समय (इरिजि, वायोला-ट्राई), किन्तु लिङ्गोद्गम नहीं होता। रमण-शक्तिका अभाव (बैराई, लाई, स्टैफ, क्लिमेट)। दाहिने और बायें अण्डकोषमें छुरी मारनेकी तरह यन्त्रणा और शिश्नके अगले भागमें दर्द।

प्रत्यङ्ग आदि।—चलनेके समय कोखमें यन्त्रणाजनक सुई गड़नेकी तरह दर्द ; दबानेपर आराम मालूम होता है। मूत्रग्रन्थि-प्रदेशमें स्पर्शका सहन न होना। हाथ-पैर बहुत क्षीण मालूम होते हैं ; बढ़ना—संध्याके समय। बाएँ ऊरु-पृष्ठपर कांटा गड़नेकी तरह दर्द। दोनों पैर क्लान्त और लगातार चञ्चल बने रहते हैं। दाहिने पैरके अंगूठेके नीचे छुरी मारनेकी तरह दर्द।

त्वचा।—दुर्दमनीय खुजली, शरीरके कितने ही स्थानोंमें लाल चकत्ते-चकत्ते दाग और उनपर एकदम सफेद पपड़ी या छाल जम जाती है। वह बहुत खुजलाती है। वृद्धि—संध्याके समय ; ये दाग सब गायब हो जानेपर हलके लाल या पीले रङ्गके चिन्ह दिखाई देते हैं। चलनेके समय जानु-सन्धिके पीछे, गांसमें, दर्द पैदा करनेवाला संघात मालूम होता है।

वृद्धि।—सवेरे ४ से ७ बजेके बीचमें ; वातश्लेष्मा ज्वरके आराम होनेकी ओर बढ़नेके समय ; किसी तरहके अमिताचारके बाद ; संध्याके समय ; संगमके दूसरे दिन सुस्ती और वीर्यस्खलन (संगमके बाद बार-बार रेतःस्खलन—नेट्रम-म्यूर, फास ; भूख न रहना—ऐगार ; पीठमें जलन—मैग-म्यूर ; मूत्रस्थलीमें दर्द मालूम होना—सिपा ; चिड़चिड़ापन और क्रोध—कैल्के, सेलिन ; क्षीण-दृष्टि—कैलि-कार्ब ; पीठमें दर्द और दोनों ऊरुमें अवसाद—कोबाल्ट ; जानुका अवसाद, चलनेपर टेढ़ा हो जाता है—कैल्के ; आलस्य—ऐगार, जिजिया ; तृष्णा—जैम्बोल ; जननेन्द्रियका अवसाद—बार्बे ; रमणके बाद कई दिनोंतक आलस्य मालूम होना—कैल्के-फास)।

घटना।—मलने या दबानेपर।

सम्बन्ध।—सदृश या तुलनीय।—सवेरे पतले दस्तके सम्बन्धमें—बोवि, ब्राई, गैम्बोज, कैलि-बाई, लाई, नेट्र-सल्फ, फास, पोडो, रियुमेक्स, सल्फ, ट्राम्बिड। जननेन्द्रियकी सुस्तीके सम्बन्धमें—सिङ्को, कोना, डिजि, क्लिमैट, मैग-म्यूर, जेल्स, नेट्र-म्यूर, हैमा, नेट्र-फास।

शक्ति।—मूल अरिष्टसे ३० शततमिक क्रम। ३रा और ६ठा दशमिक क्रम अधिक व्यवहृत होता है।

नक्स मस्केटा

(NUX MOSCHATA)

दूसरा नाम ।—(पुन्नाग या जायफल), नट-मेग ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखे बीजसे मूल अर्क तैयार होता है। इसका विचूर्ण भी हो सकता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—गर्भपात ; संन्यास ; दमा ; मस्तिष्कका कोमल हो जाना ; निस्पन्द वायु ; नीहार कण्डु ; विसूचिकाकी तरह उदरामय ; आक्षेप ; खाँसी , दुर्बलता ; बाँहकी पेशीका वात ; वाधक या कष्टरजः ; अजीर्ण ; डकार ; क्षीण-दृष्टि ; मूर्च्छा ; आध्मान ; पाकाशयका शूल ; रक्त-स्राव ; सर-दर्द ; हिचकी ; स्वरभङ्ग ; मूर्च्छा-वायु ; सविराम ज्वर ; कटिवात ; शीर्णता (दुबलापन) ; रजःस्रावका रुकना ; जरायुसे खूनका स्राव ; मानसिक विकार ; वस्ति-गह्वरमें रक्तकी अधिकता ; खून-मिला पसीना ; गर्भावस्थामें उपसर्ग या बीमारी ; पलकोंका पक्षाघात ; प्रसवके बादका आक्षेप ; मूत्र-पथरीका शूल ; आमवात ; प्रगाढ़ तन्द्रा या निद्रा ; बोलीकी जड़ता ; तोतलाना ; कूथन ; दाँतका दर्द ; सान्निपातिक रोगमें रक्त-स्राव ; जरायुका अपने स्थानसे हटना ; कृमि-रोग इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—स्नायु-प्रधान मूर्च्छावायुग्रस्त रमणी या बच्चे और जिनके शरीरकी त्वचा सूखी रहती है, जिन्हें अकसर पसीना नहीं होता, उन व्यक्तियोंके लिये और गर्भावस्थामें स्त्रियोंकी नाना प्रकारकी बीमारियोंमें यह उपयोगी और लाभदायक है। बुढ़ापेकी वजहसे कमजोरी और वृद्ध मनुष्योंके अग्निमान्द्य रोगकी यह एक प्रधान दवा मानी जाती है। नीचे लिखे कई इसके सिद्धिप्रद लक्षण हैं:—(१) बहुत चैतन्य—रोगीकी आँखमें रोशनी, कानमें आवाज़, नाकमें गन्ध और त्वचापर स्पर्श असह्य मालूम होता है। (२) इसके विषयके अन्तर्गत आनेवाले सभी रोगोंके प्रधान आनुसङ्गिक लक्षण हैं—निद्रालुता और तन्द्राभाव या सामान्य यन्त्रणासे ही मूर्च्छा पैदा हो जाना ; कोई भी रोग होनेपर औंघाई आने लगती है ; आच्छन्नावस्था और बेहोशी या स्पर्शका अनुभव न होना ; दुर्दमनीय निद्रा। (३) हमेशा अन्यमनस्क ; सोच

नहीं सकता ; सभी विषयोंमें उदासीनता। स्मृति-क्षीण या एकाएक स्मरण-शक्तिका लोप हो जाना। (४) अध्ययन, बातचीत करने या लिखनेके समय हठात् भावोंका गायब हो जाना या विस्मृतिका पैदा हो जाना, असम्बद्ध बातें कहना ; जानी हुई राह भी पहचान नहीं सकता। (५) परिवर्त्तनशील चित्त—अभी हँसी-दिल्लगी कर रहा था, क्षणभर बाद ही रोने लगता है। (६) दोनों आँखें सूखी, निरस ; इतनी सूखी कि आँख मूँदते ही करकराने लगती हैं। (७) मुखविवर अत्यधिक सूखा हुआ, लार-रहित और जीभ इतनी सूखी कि जर्द तालुसे मिल जाती है, लार कपासकी तरह मालूम होती है। गलेका भीतरी भाग सूखा, अकड़ा, पर प्यास नहीं लगती। (८) रोगी देहका जो अंश दबाकर सोता है, उसीमें बहुत दर्द और स्पर्शका सहन न होना पैदा हो जाता है ; शय्याक्षत होनेका उपक्रम। (९) थोड़ा भी अधिक खा लेनेपर सर-दर्द पैदा हो जाता है। (१०) भोजन करते-करते या खाना समाप्त होते ही पाकस्थलीमें दर्द और गड़बड़ी मालूम होती है। (११) प्रति बार भोजनके बाद पेट भयानक रूपसे फूल उठता है। (१२) गर्मी के दिनोंमें ठण्डा पानी और आगपर गर्म किया हुआ दूध पीनेकी वजहसे, बच्चोंको दाँत निकलनेके समय और गर्भावस्थामें उदरामय एवं निद्रालुता और मूर्च्छित होनेका लक्षण पैदा हो जाता है। (१३) प्रत्येक बार ऋतुके समय रोगिनीके मुख-विवर, कण्ठके भीतर और जीभमें असह्य सूखापन पैदा हो जाता है, विशेषकर नींदके समय। (१४) आर्त्तव-स्रावके बदले प्रदर रोगमें जीभके बहुत अधिक सूखेपनकी वजहसे नींद खुल जाती है ; पेटका वायुकी वजहसे फूलना। (१५) गर्भावस्थामें या जरायुको उठानेवाला यन्त्र पहननेके कारण अन्त्राशयमें दर्द, मिचली और वमन। (१६) एकाएक स्वरभङ्ग ; बढ़ना—वायुके विपरीत ओर चलनेपर। (१७) खाँसी—शय्याकी गर्मी लगनेपर ; धूप या बहुत परिश्रम करनेकी वजहसे शरीर बहुत गर्म होनेपर ; गर्भावस्थामें ; नहानेपर ; पानीमें अधिक देरतक रहनेकी वजहसे ; तर और ठण्डी जमीनमें रहनेके कारण ; भोजनके बाद श्लेष्मा पतला हो जाता है और पीनेपर सूखकर सूखी खाँसी आया करती है। (१८) निद्रा—दुर्दमनीय तन्द्रावेश ; आच्छन्न निद्रा, मानो नशा खाया है। मोह—रोगी चुपचाप बिना हिले-डोले पड़ा रहता है ; क्षणभरके लिये भी आँख नहीं खोलता। (१९) वातकी वजहसे बीमारियाँ—दोनों पैर पानीसे धोने या शरीरके गर्म रहनेकी अवस्थामें ठण्डी जलीय वायुका

नक्स मस्केटा

(NUX MOSCHATA)

दूसरा नाम ।—(पुन्नाग या जायफल), नट-मेग ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखे बीजसे मूल अर्क तैयार होता है। इसका विचूर्ण भी हो सकता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— गर्भपात; संन्यास; दमा; मस्तिष्कका कोमल हो जाना; निस्पन्द वायु; नीहार कण्डु; विसूचिकाकी तरह उदरामय; आक्षेप; खाँसी, दुर्बलता; बाँहकी पेशीका वात; वाधक या कष्टरजः; अजीर्ण; डकार; क्षीण-दृष्टि; मूर्च्छा; आध्मान; पाकाशयका शूल; रक्त-स्राव; सर-दर्द; हिचकी; स्वरभङ्ग; मूर्च्छा-वायु; सविराम ज्वर; कटिवात; शीर्णता (दुबलापन); रजःस्रावका रुकना; जरायुसे खूनका स्राव; मानसिक विकार; वस्ति-गह्वरमें रक्तकी अधिकता; खून-मिला पसीना; गर्भावस्थामें उपसर्ग या बीमारी; पलकोंका पक्षाघात; प्रसवके बादका आक्षेप; मूत्र-पथरीका शूल; आमवात; प्रगाढ़ तन्द्रा या निद्रा; बोलीकी जड़ता; तोतलाना; कूथन; दाँतका दर्द; सान्निपातिक रोगमें रक्त-स्राव; जरायुका अपने स्थानसे हटना; क्रिमि-रोग इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—स्नायु-प्रधान मूर्च्छावायुग्रस्त रमणी या बच्चे और जिनके शरीरकी त्वचा सूखी रहती है, जिन्हें अकसर पसीना नहीं होता, उन व्यक्तियोंके लिये और गर्भावस्थामें स्त्रियोंकी नाना प्रकारकी बीमारियोंमें यह उपयोगी और लाभदायक है। बुढ़ापेकी वजहसे कमजोरी और वृद्ध मनुष्योंके अग्निमान्द्य रोगकी यह एक प्रधान दवा मानी जाती है। नीचे लिखे कई इसके सिद्धिप्रद लक्षण हैं:—(१) बहुत चैतन्य—रोगीकी आँखमें रोशनी, कानमें आवाज़, नाकमें गन्ध और त्वचापर स्पर्श असह्य मालूम होता है। (२) इसके विषयके अन्तर्गत आनेवाले सभी रोगोंके प्रधान आनुसङ्गिक लक्षण हैं— निद्रालुता और तन्द्राभाव या सामान्य यन्त्रणासे ही मूर्च्छा पैदा हो जाना; कोई भी रोग होनेपर औंघाई आने लगती है; आच्छन्नावस्था और बेहोशी या स्पर्शका अनुभव न होना; दुर्दमनीय निद्रा। (३) हमेशा अन्यमनस्क; सोच

नहीं सकता ; सभी विषयोंमें उदासीनता। स्मृति-क्षीण या एकाएक स्मरण-शक्तिका लोप हो जाना। (४) अध्ययन, बातचीत करने या लिखनेके समय हठात् भावोंका गायब हो जाना या विस्मृतिका पैदा हो जाना, असम्बद्ध बातें कहना ; जानी हुई राह भी पहचान नहीं सकता। (५) परिवर्त्तनशील चित्त—अभी हँसी-दिल्लगी कर रहा था, क्षणभर बाद ही रोने लगता है। (६) दोनों आँखें सूखी, निरस ; इतनी सूखी कि आँख मूँदते ही करकराने लगती हैं। (७) मुखविवर अत्यधिक सूखा हुआ, लार-रहित और जीभ इतनी सूखी कि ऊर्द्ध तालुसे मिल जाती है, लार कपासकी तरह मालूम होती है। गलेका भीतरी भाग सूखा, अकड़ा, पर प्यास नहीं लगती। (८) रोगी देहका जो अंश दबाकर सोता है, उसीमें बहुत दर्द और स्पर्शका सहन न होना पैदा हो जाता है ; शय्याक्षत होनेका उपक्रम। (९) थोड़ा भी अधिक खा लेनेपर सर-दर्द पैदा हो जाता है। (१०) भोजन करते-करते या खाना समाप्त होते ही पाकस्थलीमें दर्द और गड़बड़ी मालूम होती है। (११) प्रति बार भोजनके बाद पेट भयानक रूपसे फूल उठता है। (१२) गर्मीके दिनोंमें ठण्डा पानी और आगपर गर्म किया हुआ दूध पीनेकी वजहसे, बच्चोंको दाँत निकलनेके समय और गर्भावस्थामें उदरामय एवं निद्रालुता और मूर्च्छित होनेका लक्षण पैदा हो जाता है। (१३) प्रत्येक बार ऋतुके समय रोगिनीके मुख-विवर, कण्ठके भीतर और जीभमें असह्य सूखापन पैदा हो जाता है, विशेषकर नींदके समय। (१४) आर्त्तव-स्रावके बदले प्रदर रोगमें जीभके बहुत अधिक सूखेपनकी वजहसे नींद खुल जाती है ; पेटका वायुकी वजहसे फूलना। (१५) गर्भावस्थामें या जरायुको उठानेवाला यन्त्र पहननेके कारण अन्त्राशयमें दर्द, मिचली और वमन। (१६) एकाएक स्वरभङ्ग ; बढ़ना—वायुके विपरीत ओर चलनेपर। (१७) खाँसी—शय्याकी गर्मी लगनेपर ; धूप या बहुत परिश्रम करनेकी वजहसे शरीर बहुत गर्म होनेपर ; गर्भावस्थामें ; नहानेपर ; पानीमें अधिक देरतक रहनेकी वजहसे ; तर और ठण्डी जमीनमें रहनेके कारण ; भोजनके बाद श्लेष्मा पतला हो जाता है और पीनेपर सूखकर सूखी खाँसी आया करती है। (१८) निद्रा—दुर्दमनीय तन्द्रावेश ; आच्छन्न निद्रा, मानो नशा खाया है। मोह—रोगी चुपचाप बिना हिले-डोले पड़ा रहता है ; क्षणभरके लिये भी आँख नहीं खोलता। (१९) वातकी वजहसे बीमारियाँ—दोनों पैर पानीसे धोने या शरीरके गर्म रहनेकी अवस्थामें ठण्डी जलीय वायुका

झटका लगनेपर ; वृद्धि—शीतल जलीय वायुमें या गीले कपड़े पहननेपर। (२) सवारीपर चढ़कर घूमनेके समय कमरमें दर्द। बायें कन्धेका वात। सुस्ती—सामान्य परिश्रम करनेपर ही वाध्य होकर सोना पड़ता है।

लक्षणावली

मन।—अनमनापन, किसी विषयको सोच नहीं सकता (ऐनाक, बैप्टी, हायो, नेट्र-कार्ब, नेट्र-सल्फ, फास, स्टैफ, थूजा); सभी विषयोंमें उदासीनता प्रकट करता है (एपिस, कार्बो-वेज, सिङ्को, नेट्र-मूर, ओपि, एसिड-फास-)। क्षीण स्मृति या एकाएक स्मरण-शक्तिका लुप्त हो जाना (ऐनाक, कोलचि, लैक-कैन, लैके कैलि-ब्रोम, लाई, स्टैफ)। पढ़ने, बातचीत करने और लिखनेके समय एकाएक भूल जाता है (कैल्के, लाई); असम्बद्ध वाक्य व्यवहार करता है (डायस्को, लैक-कैन, लाई); अच्छी तरह जानी हुई राहें भी पहचान नहीं सकता (कैनाब-इन, ग्लोन, लैके)। परिवर्त्तनशील स्वभाव,—अभी हँसी दिल्लगी कर रहा था, क्षणभर बाद ही रोना आराम्भ हो जाता है, (क्रोकस, इग्ने); अभी स्थिर, गम्भीर भाव धारण किये हुए हैं, परन्तु क्षण भर बाद ही हँसी दिल्लगी करने लगता है (प्लैट)। मोहाच्छन्न और ज्ञानका न रहना ; दुर्दमनीय औंधाई। मानसिक उत्तेजनाके बाद होश न रहना ;—विशेषकर रजःस्रावके कुछ ही पहले। पढ़ते-पढ़ते एकाएक भावका दूर हो जाना और औंघाई आने लगना। कोई बात पूछनेपर असम्बद्ध उत्तर देता है (बेल, हायो, नक्स-वोम, ओपि, फास, स्ट्रैमो, वेलि)। रोगी जिधर देखता है, उधर ही उसे सब नया ही मालूम होता है ; अलीक, सपनेमें देखे हुए दृश्य सब दृष्टि-पथपर पैदा हो जाते हैं, एक मुहूर्त्त एक दिवस मालूम होता है (ऐल्यू, ऐनहैलो, कैनाब-इन, कैनाब-सैट, मिडोरिन)। प्रलाप,—सरमें तेज़ चक्कर आना,—हाथ-मुँहका अद्भुत ढंगसे चलाना, असम्बद्ध बातें करना और नींद न आना। मदात्यय स्थूल-बुद्धि—कोई भी विषय सहजमें हृदयंगम नहीं कर सकता, अलीक कल्पना ; नींद खुलनेपर यह स्थिर नहीं कर सकता कि वह कहाँ है ; कभी वह जोरसे हँस उठता है और मूर्खोंकी तरह भाव प्रकट करता है। रोगिनीको सभी चीजें हंसानेवाली मालूम होती हैं ; आप ही आप जोरसे बोला करता है, उत्तम तर्क करनेकी क्षमता। रोगीको ऐसा मालूम

होता है, कि उसके दो पृथक अस्तित्व हैं—सूक्ष्म ओर स्थूल और मानों उसकी सूक्ष्म देह स्थूल शरीरकी कार्यावली देख रही है। अतीत जीवनकी घटनाओं को एकदम भूल जाना। भ्रम—मानो उसके दो सर हैं।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना—मतवालोंकी तरह ढलमलाया करता है (कार्बो-एन; कैलि-नाई, नक्स-वोम, फाइटो, सिपि, स्ट्रैमो); घरके बाहरकी हवा सेवन करनेके लिये टहलनेके समय मानो शरीर ढुलका जाता है; ऐसा अनुभव होता है कि माथेमें कुछ डोल रहा है (कैनाब-सैट); कमजोरी तथा हाथ-पैर अवश और ऐसा मालूम होना कि शून्यमें उडा जा रहा है (ऐसिरम, कैनाब-इन, हाइपिर, युगलैन्स-रिजि, लैक-कैन, स्टिक्टा, वैलि,)। रोज सवेरे सर-दर्द होता है और सभी धमनियोंमें धमक होती है; एक छोटेसे सीमावद्ध अंशमें टपक और दबावकी तरह दर्द; वृद्धि—बाईं ओरके चक्षु-गह्वरके ऊपरी भागमें। माथा भरा और भारी मालूम होता है,—ऐसा मालूम होता है कि माथा फैला जाता है (आर्निका, लैक्टियुका-वाई)। सर-दर्द,—दर्द बाईं ओरसे दाहिने पार्श्वमें चला जाता है (सिङ्को, सल्फ)। ऐसा मालूम होता है मानो माथा ढलमल कर रहा है (हायो, लैक्टि-वाई),—शरीर हिलानेपर मस्तिष्क स्पन्दित होता है—मानो माथेके भीतर मस्तिष्क एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक लोट रहा है, इसी तरह अनुभव होना और औंधाई (ब्रूसिया, जिनसैङ्ग, जैल्स) वृद्धि—भोजनके बाद और सर्दी लग जानेपर, घटना—शय्याकी गर्मीके अलावा और सब तरहकी गर्मी लगनेसे। सरके पिछले भागसे गर्दनके पीछे तक फाड़नेकी तरह दर्द। सर-दर्दका बढ़ना—पानीसे माथा धोनेपर (ठण्डे पानीसे धोनेपर—फार्मिका; ललाटमें पसीना होनेके समय ठण्डे पानीसे धोनेपर—ब्राई); पानीसे माथा तर होनेपर, जलीय वायु लगनेपर (ग्लोन, नेट्र-सल्फ, रास); जाड़ा गर्मीके परिवर्त्तनसे (कैल्के-फास, सोरिन); सवारी पर चढ़कर घूमनेपर (ककुल, कैलि-कार्ब, मिफाइटिस, सिपि,—सिपि,-घटना-ऐसिड नाई); शराब पीने (एण्टि-क्रूड, नक्स-वोम, जिङ्कम); भोजनके बाद, विशेषकर सवेरेके भोजनके बाद (हाइपिर, आइरिस); निंद्रालुताके साथ, बहुत अधिक भोजन करनेपर (काफिया); उद्भेद, वैठ जानेपर (एण्टि-क्रूड, सोरिन, सल्फ); आर्त्तव-स्रावके कुछ ही पहले (ऐसिर, हाइड्रैस्ट, कैलि-ब्रोम, क्रियो, लाई, नेट्र-म्यूर, सल्फ) और गर्भावस्थामें (जैल्स, ग्लोन)। बैठनेवाली अवस्था में माथा सामनेकी ओर झूल पड़ता है। स्नायविक सर-दर्द—माथा इतना

स्पर्श-कातर हो पड़ता है, मानो जखम हो गया है, विशेषकर जोरसे बहती हुई हवा लगनेपर जरा भी स्पर्श असह्य मालूम होता है ; वृद्धि—सर्दी लगनेपर और सोनेपर ; घटना—जोरसे दबाने और बाहरसे गर्म प्रयोग करनेपर। दाहिनी ओरके चक्षुगह्वरके ऊपर प्रचण्ड कसावटका भाव, जलन और डंक मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है, चेहरा लाल हो उठता है और हनु तथा दोनों ओंठ आपसमें दबे रहते हैं ; प्रकोपकी चरमावस्थामें होशमें न रहना और बाएँ पैरमें चलनेकी शक्तिका न रहना ; चेहरा फूला और बोलनेकी शक्ति लुप्त हो जाती है, रोगी बार-बार दर्दवाले अंशकी ओर हाथ ले जाता है, माथा आक्षिप्त भावसे एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्व तक खिंचा करता है और रोगी नाना प्रकारकी भावभङ्गी बनाता है। माथा केवल बाईं ओर झूल पड़ता है या एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्व तक आक्षिप्त हुआ करता है (दाहिने पार्श्वमें लीन होता है—लैक-डिफ्लो)।

आँख।—आँख सूखी और उसमें सूखापन मालूम होना—आँख बन्द करनेमें तकलीफ हुआ करती है ; दोनों, आँखें हरी, नीली रेखासे घिरी। संध्याके बाद दीये आदिकी रोशनीमें पढ़ना बहुत कष्टकर हो जाता है। दृष्टि-हीनता और मूर्च्छा आ जानेका उपक्रम। आँखमें जलन और बहुत ज्यादा आँसुओंका स्राव ; सभी चीजें बड़ी मालूम होती हैं (इथ्यू, एपिस, इयुफोर्ब, हायो, लोरो, नेट्र-मूर, निकोलम, फास, वार्बेस्क) ; सभी चीजें दूर-वर्त्ती (ऐनाक कैनाब-इन, जेल) और लाल रङ्गकी (बेल, कोना, डिजिट, हिप, हायो, फास) मालूम होती है, या अदृश्य हो जाती हैं (आर्जेण्ट-नाई, लोरो, नेट्र-मूर सिपि)। आँखकेसामने काले काले बिन्दु उड़ते हुए दिखाई देते हैं (सिङ्को, नेट्र-मूर, फाइजस, सिपि, साइक्लम, पैरिस, फास, सोरिन)। रोशनीमें या आँखसे ज्यादा काम लेनेपर दर्द बढ़ जाता है ; अन्धकारमें आँखें अच्छी रहती हैं। टकटकी लगी दृष्टि। त्रिकोण झिल्लिका, अर्थात् आँखके मध्य त्रिकोणके अंशकी शिराएं सब फूल जाती है और लाल हो उठतीं हैं (टिरिजियन-फार्मिका लैके, रैटान, आर्जेण्ट-नाई)—स्वच्छावरकपर रोगका आक्रमण हो जाता है। द्विदर्शन अर्थात् एक चीज दो दिखाई देती है ;

कान।—श्रवण-शक्तिका बहुत प्रखर हो जाना—थोड़ी भी जोरकी आवाज़ सहन नहीं होती, ऐसा अनुभव होता है, कि दोनों कान मानो रुक गये हैं (कार्बो-वे, चेलिडो, सिङ्को, कोलचि, लैके, स्पाइजि, सल्फ)। कानमें उखाड़नेकी तरह या तोड़नेकी तरह दर्द बाएँ कानमें सलाई गड़नेकी तरह

दर्द (फार्मिका, पल्स); बढ़ना—हनु हिलाने या चबानेके समय। दूरकी आवाज़ अधिक सुन पड़ती। कानमें झिनझिन शब्द—मानो कान रुका हुआ है (आर्जेण्ट-नाई, चिनिन-सल्फ, नक्स-वोम)।

नाक।—सवेरे बार-बार छींक आना। घ्राण-शक्तिकी अत्यन्त प्रखरता। नाकसे खूनका स्राव,—खून, साधारणतः घोर लाल या काले रंगका (सिना, क्रोटेलस, हैमा, लैके, नक्स-वोम)। नासा-रन्ध्रका भीतरी अंश सूखा और रुका—मुँह फाड़कर सांस लेता और छोड़ता है (नक्स-वोम, सैम्बियु)। नाककी सर्दीका बढ़ना—ठण्डी जलीय हवा लगनेपर।

मुखमण्डल।—निर्बोध, जड़-बुद्धि या बालककी तरह मुंहका भावी चेहरा पतला, तकलीफ बतानेवाला। दोनों आँखें नीले घेरेसे घिरीं; मुर्देकी तरह रक्तसे रहित, उजली मूर्त्ति, विशेषकर जलीय वायु लगनेपर। दृष्टि भावशून्य ज्योतिहीन और रोग बतानेवाली। मुखमण्डल तिलकालकाकीर्ण (कैल्के कैलि-कार्ब, मिडोरिन, नेट्र-कार्ब, सल्फ)। दोनों गालोंमें हलकी लाली और छेहरेपर गर्मी मालूम होना। दोनों ओंठ फूले और आपसमें जुड़े; जलन-भरे। ऐसा मालूम होता है कि चेहरेका समूचा बायाँ अंश फूल गया है और उसमें जलन और पिन गड़नेकी तरह तकलीफ होती है,—मानों शिरामें बिजलीकी तरह जलीय पदार्थ दौड़ रहा है।

मुख-विवर।—दाँतमें दर्द—गर्भावस्थामें सामनेवाले दाँतमें;—दर्द छेदनेकी तरह और डंक मारनेकी तरह। बढ़ना—ठण्डी जलीय वायु लगनेपर या पानीका प्रयोग करनेपर, छूने या जीभसे सोखनेपर (बेल, कार्बो-वेज, नक्स-वोम, साइलि); घटना—गर्म प्रयोगसे (आर्स, कैमो, मर्क, नक्स-वोम, पल्स, रस); दर्द दाँतसे कान और कनपटी तक फैल जाता है। मसूढ़ेसे अक्सर ही खून गिरा करता हैं। शीताद। जीभ; सुन्न; बड़ी उम्रका बच्चा भी कोई बात बोल नहीं सकता; जीभ हिलानेमें बहुत परिश्रम करना पड़ता है; जीभ मानो सूखे चमड़ेसे ढकी और अपने वशमें नहीं रहती। रातमें और नींद खुलनेपर सूखी तथा नीरस मालूम होती है; सफेद या पीली आभा लिये, लेप-चढ़ी जीभ, और उसमें बीच बीचमें लाल लालबिन्दु सब दिखाई देते हैं। ओंठ और जीभसे लेकर गलेके भीतर तक समूचा मुख-विवर बहुत सूखा (एपिस, लैके); जीभ इतनी सूखी रहती है, कि सामनेका ऊपरी अंश या तो जुड़ जाता है,

अथवा जकड़ जाता है। मुँहकी लार रुईकी तरह मालूम होती है, कण्ठ सूखा और अकड़ा—पर प्यास नहीं मालूम होती (पल्स)। मुँहके भीतर बहुत ज्यादा गढ़ा श्लेष्मा और लार इकट्ठा होती है ; ऋतुके पहले मुँहमें पानी भर आया करता है (पल्स)। वास्तवमें मुख-विवर सूखा और प्यासकी अधिकता न रहनेपर भी ऐसा मालूम होता है, मानो मुँहमें रस नहीं है। उपक्षत—छाले, मुँहसे बदबू निकला करती है, जीभपर सफेद लेप चढ़ा रहता है।

गलेके भीतर।—निगलनेमें कष्ट—अर्थात् कोई चीज सहजमें निगली नहीं जा सकती—मानो निगलनेमें सहायता पहुँचानेवाली पेशीमें निष्क्रियता पैदा हो गयी है। गलेमें जखम और स्वरभङ्ग ; कण्ठके भीतर कर्कशका भाव और सूखापन। कर्णपश्चान्नलीमें दर्द—मानो उसमें एक रुखड़ा पदार्थ अड़ा हुआ है—खासकर एक बार वृष्टि हो जानेके बाद।

पाकस्थली।—मुँहका स्वाद ऐसा हो जाता है, कि न जाने कितना नमक खा लिया है। भूख अस्वाभाविक रहती है—विशेषकर मध्याह्नके समय। इतनी प्यास रहती है, कि पानी पीनेपर भी तृप्ति नहीं होती। भूखका घटना और दो चार ग्रास खाते न खाते पेट भर जाया करता है (लाई, नेट्र-मूर पाचन-शक्ति क्षीण हो जाती है और पाकाशयमें गड़बड़ी पैदा हो जाती है ; विशेषकर वृद्ध मनुष्योंको। थोड़ा-सा भी अधिक खा लेनेपर सरमें दर्द पैदा हो जाता है (काफि, नैजा) ; खाते-खाते या खानेके बाद ही, पाकस्थलीमें भार, दर्द और गड़बड़ी मालूम होती है (ऐबियेज ; आर्स, सिस्टस-कैन, इयुपेट, नक्स, कैलि-बाई, पलस, सिपि) ; खाते ही पेट फूल उठता है (कार्बो-वेज, सिङ्को, कोलचि, लैके, लाई)। भोजनके बाद कसैली डकार आया करती है (कार्बोन-सल्फ)। सवारीपर चढ़कर घूमने अथवा जरायुको उठानेवाले यंत्रकी पेशारीकी उत्तेजनाकी वजहसे मिचली। गर्भावस्थामें मिचली और वमन (ऐसिर, ऐ-लैक्टिक, क्रियो. लैक-कैन, सिम्फोरि-कार्पस, सिपि, टैबाक)। तकियेसे माथा उठाते ही तेज़ मिचली पैदा हो जाती है (ब्राई, कक्यु,—शरीर हिलाते ही—लैक डिफ्लो ; स्थिर होकर चुपचाप सो जाना पड़ता है—कैडमी-सल्फ—किसी तरहकी अवस्थामें भी नहीं घटता—वाइबर्न—केवल दाहिनी करवट सोनेपर घटता है—ऐण्टि-टार्ट—सीधे होकर बैठनेपर फास—उठनेके समय—इण्डियम, लेप्टैन)। औंघाईके साथ मिचली और वमन (इथ्य)। पाकस्थलीकी

पूर्णताकी वजहसे श्वासमें तकलीफ मालूम होती है (ककुत्र, ओपि)। पाकाशयमें उत्ताप और जलन मालूम होती है। मानो पाकाशयमें आध्मानवायु अड़ा हुआ है; ऐसा दबाव और भार मालूम होता है। मनोवृत्तियोंके बहुत अधिक परिचालनकी वजहसे पाकस्थलीमें बेचैनी या गड़बड़ी मालूम होना।

अन्त्राशय।—यकृतमें दबाव मालूम होना—मानो किसी नोकीले यंत्रसे यकृत दबाया जा रहा है। यकृतका बढ़ना—मल खून मिला; यकृत प्रदेशमें भार मालूम होना, ऐसा मालूम होता है मानो कोई नोकीली चीज या पत्थरसे वह दबाया जा रहा है; यकृत फूला मालूम होता है। श्वास ग्रहण करनेके समय विभेदिका पेशीमें (उदर-वक्ष-व्यवच्छेदक पेशी) धक्का या चोट लगती है। विभेदिका पेशीका प्रदाह (ऐकोन, एपिस, बेल, कैक्ट, कोलो, डिजि, डालका, हैमा, हिप, लाई, मार्फिन, सल्फ, स्ट्रैम); वक्षपर मानो एक भारी पत्थर दबाया हुआ है, उसमें ऐसा ही दबाव मालूम होता है और सूखी खाँसी तथा श्वासकी कमी मालूम होती है; पानीमें भीजननेके कारण (डालका। प्लीहा बढ़ना—इसके साथ ही पतला पाखाना होना (चायना, आयोडम)। प्लीहामें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द—रोगी तकलीफसे दोहराकर टेढ़ा हो जाता है। अन्त्र-कूजन—पेटमें हुड़हुड़ गुड़गुड़ आवाज़ होती है। फाड़नेकी तरह दर्द और अंत्रशूल। अन्त्राशूलमें अंत्रशूलकी तरह दर्द, भोजनके बाद ही (साइक्लामेटा, सिङ्को, नक्स, पलस, स्टैफ, वेरेट ; नकली दूधसे पले हुए बच्चेका नेट्र-फास,—सन्ध्याके भोजनके बाद—रियुम; वैलि; तकलीफसे दोहरा जाता है—सिकेलि,—खट्टी चीजें खानेपर—ड्रोसेरा; फल खानेपर—सिङ्को, पल्स, वेरेट—बहुत ज्यादा भोजन करनेपर—सिपा; चीनी या शक्कर खानेपर—दे-आक्सैल); बढ़ना—ठण्डा पानी पीनेपर (ब्राण्डी पीनेपर—नक्स-वोम,—दूध पीनेपर—व्यूफो; जल या दूध—रैफेनस ;—गरम दूध पीनेपर फटना—क्रोटोन-टिग—गर्म चीजें पीनेपर घटना—मैंग-फास, स्पञ्जि—पानी पीनेपर बढ़ना—मैंन्सि), केवल दिनके समय, इसके साथ मुख-विवरका सूखापन और प्यासका न रहना लक्षण भी मौजूद रहता है (थोड़ी देरतक रुक जानेके साथ दिन-रात—आर्स—प्रतिदिन एक समय—डाया, शिशुको प्रति दिन ३। ४ बजनेके समय—मैंग-फास); घटना—गर्म पानीका सेंक देनेपर। प्रत्येक बार भोजनके बाद पेट बहुत फूल उठता है (ऐग्नस, ऐगार, कैमो, ग्रैफ, इग्ने, कैलि-कार्ब, क्रियो, नेट्र-कार्ब, पलस, ऐसिड-

सैलिसाई, थूजा)। पेट फूलना, भोजनके बाद, मानो रोगी जो कुछ भी खाता है सभी भाफमें बदल जाता है (अम्लमें बदल जाता है—कैल्के)। नाभीमें स्पर्श सहन नहीं होता और जखम हो जाता है। नाभिगोलक (कैस्टोरियम लैके, नक्स-वोम, ओपि—बच्चेकी नाभीसे खून मिला रस निकलता है—ऐब्रोट, कैल्के-फास ; साफ़ पानीकी तरह निकलता है—स्टैनम ; नाभीकी राहसे मल निकलना—हायो)। उदरके चारों ओर सूजन और स्पर्श सहन नहीं होना—मलद्वारके चारों ओर लगातार दर्द और सुन्नता मालूम होना और मलद्वारके कुछ ऊपर जलन मालूम हुआ करती है। बढ़ना—रातमें, रस-स्राव करनेवाला बवासीर और मलान्त्र तथा जरायुका नीचेकी ओर प्रबल आकर्षण और योनिमें छेदने या उखाड़नेकी तरह दर्द ; उदरमें छेदनेकी तरह और इस ढंगका दर्द मानो आँतें आदि चक्कर खा रही है हैं ; मानो कृमिके कारण ऐसा हो रहा है और औंघाई आया करती है। आध्मानकी अधिकताके कारण रातमें तकलीफ़ और इसी वजहसे नींदमें व्याघात। जरायुकी नाना प्रकारकी बीमारियोंमें उदरमें गुल्मका पैदा हो जाना,—तलपेट या तलपेटके बाएँ पार्श्वमें, (नाभि-प्रदेशमें—रियुम) गोला जैसा पैदा होना।

मलान्त्र और मल।—मल कोमल पर बड़ी तकलीफ़से निकलता है (ऐल्यू, ऐनाक, कार्बो-वे, कैल्के-फास, हिपर, लोबेल-इन, नेट्र-सल्फ, प्लैट, रियुटा, साइलि, वेरेट)। मलान्त्रकी निष्क्रियतासे पैदा हुआ (ऐल्यू, ऐनाक, ब्रायो, ग्रैफ, इग्ने, कैलि-कार्ब, टिलिया-ट्रि, स्टैफ, बाईवर्न); कुचले हुए अण्डेकी तरह (कैमो, मर्क-डालसिस), गर्मीके दिनोंमें बच्चोंको अरुचि और औंघाई आती है ; अजीर्ण मल (सिङ्को, फेरम, ऐण्टि-क्रूड, मर्क, ओलियैन, ऐब्रोट, फास, पोडो) ; पित्त लसदार, सड़ी गन्ध भरा और खून मिला ; तरल पीले रंगका उदरामय, गर्मीके दिनोंमें ठण्ढा पानी आदि पीनेकी वजहसे (आर्स, पल्स,—कीचड़भरा या गदला पानी पीनेके कारण—जिञ्जिबार) हेमन्त ऋतुका बहु व्यापक उदरामय, मल सफ़ेद रङ्गका (कोलचि, वेरेट); आगपर खौलाया हुआ दूध पीनेके कारण (सिपि, बासी दूध—पोडो) ; दाँत निकलनेके समय (इथ्यू, कैल्के, कैमो, डालका, फेरम, इपिक, रियूम, पोडो)। गर्भावस्थामें (ऐसिड-लैक्ट, एपिस) ; बहुत जरूरत होनेपर उच्च क्रम ; हायो, फास, पल्स, सिपि), मूर्च्छा-प्रवणता ; मानसिक शिथिलता और निद्रालुता अनुभूत होती है ; वृद्धि—रातमें, ठण्डी हवा लगनेपर और ग्रीष्म ऋतुके उत्तापसे ; सुस्त

करनेवाली (आर्स, बैप्टी, कैम्फो, कार्बो-वे, सिङ्को, फास, सिकेलि, वेरेट)। भयानक उदरामय—समूचा उदर जकड़ जाता है और रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है। ग्रीष्मातिसार।

पेशाब।—मसानेका शूल—अश्मरी या पथरी निकलती है। मूत्राशयका प्रबल सङ्कोचन और वृथा वेग ; जरायुमें अश्मरी संचय होनेके कारण दर्द। पेशाब करनेके समय मूत्रमार्गमें जलन और छेदनेकी तरह दर्द (कैन्थ)। मूत्रकृच्छ्र—इसके साथ ही मलका वेग, सन्ध्या या रातके भोजनके बाद या बहुत शारीरिक परिश्रम करनेपर ; या जरायुकी बीमारी आदिमें। पेशाबमें किसी खास फूलकी गन्ध (टेरिब) ; परिमाणमें थोड़ा और गहरे लाल रंगका पेशाब।

पुं०-जननेन्द्रिय।—सङ्गमेच्छाकी प्रबलता—इसके साथ ही शिश्नकी शिथिलता ; कामोद्दीपक चिन्तामें मन लगी रहनेपर भी लिङ्गमें भी कड़ापन नहीं आता। संगमेच्छा रहनेपर भी लिङ्गोच्छ्रास स्थायी नहीं होता। मूत्राधार मुखशायिक ग्रन्थिसे रस-स्राव।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—अनियमित—आर्त्तव-स्राव,—कभी असमयमें और कभी बहुत देरसे प्रकट होता है। ऋतु-स्रावके पहले, त्रिकास्थि-प्रदेशमें दर्द और आलस्य भाव, पाकस्थलीमें दबाव मालूम होना, मुँहमें पानी भर आना और यकृतमें दर्द। ऋतु-स्रावके समय,—जरायु आदि यंत्रोंका नीचेकी ओर आकर्षणका भाव और दोनों पैरोंका अकड़ जाना ; कृत्रिम—आक्षेपिक प्रसव-वेदना। गर्भस्रावकी आशङ्का। जरायु-उत्तोलक यंत्रकी पेसारीके कारण पैदा हुई उत्तेजनाकी वजहसे दर्द। जरायुकी वायु-स्फीति (ब्रोमियम, लैक-कैन, लाई)। ऋतु-स्रावके बदले प्रदरका स्राव (ककुल) रोगमें रोगिनीकी जीभमें अत्यन्त सूखापन रहनेकी वजहसे नींद खुल जाती है। (लैके), प्रत्येक ऋतुके समय रोगिनीका मुख-विवर, कण्ठ और जीभ भयानक सूखी मालूम होती है—विशेषकर नींदवाली अवस्थामें जरायु-स्राव या रजःस्रावकी अधिकता, खून गाढ़ा और गदला। ऋतुके आरम्भमें नितम्बमें दर्द होता है—मानो काठका एक टुकड़ा भीतरसे बाहरकी ओर धक्का दे रहा है, ऋतु-स्राव रुकना। स्तन बहुत छोटे और दूधसे शून्य। स्तनकी घुंडी पीछेकी ओर खिंच जाती हैं (आर्स, आयोड, सार्सा) स्तनकी घुंडी पीछेकी ओर खिंच जानेकी वजहसे उसकी जगह

पर फोफीकी तरह गड़हा हो जाता है—एपिस, कोना, साइलि। जरायु-भ्रंश रोगमें मुँह, कण्ठ बहुत सूखा मालूम होता है, रोगी निद्रालु और सुस्त रहता है,—प्रतिबार भोजनके बाद उसका पेट बहुत फूल उठता है, पीठमें बाहर की ओर दबाव। जरायुका सामनेकी ओर घूम जाना,—तलपेटके बाएँ पार्श्व में ऐसा अनुभव होना कि एक गुल्म अड़ा हुआ है। जरायु या योनिके बाहर की ओर हट जानेके कारण बन्ध्यात्व ; प्रदर। प्रसवके बादका आक्षेप—माथा सामनेकी ओर ढुलक जाता है, विशेषकर मूर्च्छावायु-ग्रस्त स्त्रियोंका,—जो सामान्य कारणसे बेहोश हो जाती हैं और नितम्ब तथा जानुमें शिथिलता मालूम होती है ; आक्षेपके पहले और बाद तन्द्राभाव पैदा हो जाता है।

श्वासयन्त्र।—एकाएक स्वरभंग,—वायुकी गतिके विरुद्ध चलनेके कारण पैदा हुए रोगमें (इयुफ्रे, हिप)। खाँसी ; शय्याकी गर्मीसे, देह बहुत गर्म होनेपर,—गर्भावस्थामें (कोना), नहाने या पानीमें अधिक देरतक खड़े रहनेपर (वोरेक्स) और ठण्डी, तर जगहमें रहनेपर (नेट्र-सल्फ) ; खाँसी ; भोजनके बाद तरल श्लेष्मा-मिली और पीने बाद सूखी खाँसी आती है और स्वरनली या वक्षमें बहुत दर्द मालूम हुआ करता है ; मानो वक्षमें जखम पैदा हो गया है, रक्तकास। श्वास-प्रश्वासमें व्याघात। श्वास-रोग। कण्ठनालीके संकोचनकी वजहसे उत्पन्न श्वास-रोध। छातीपर मानो कोई भारी चीज रखी हुई है। वक्षमें कसावटका भाव और उसके भीतरसे खून मिला बलगम निकलना। बलगम खून मिला या गहरा लाल। लसदार और नमकीन स्वाद का। रोगीको वाध्य होकर मुँहमें आया हुआ श्लेष्मा फिर निगल जाना पड़ता है (कास्टि, नेट्र-म्यूर, आर्नि, कैलि-कार्ब, सिपि)।

हृत्पिण्ड।—कलेजा धड़कना,—कभी-कभी मूर्च्छा और उसके बाद नींद। हृत्कम्प या हृत्पिण्डका कम्पन। हृत्पिण्ड धड़फड़ करता है, मानो रोगी डर गया है या उसका चित्त अस्थिर हो पड़ा है। आधी रातके बाद कलेजेकी धड़कन बढ़ जाती है,—ऐसा मालूम होता है, कि बीच-बीचमें हृत्पिण्ड स्थिर हो जाता है और फिर बड़े वेगसे चलने लगता है, उस समय जोरकी आवाजके साथ वायु निकला करता है ; घटना—गर्म पीनेपर और वस्त्र आदिसे शरीर गरम रखनेपर ; रोगीको वाध्य होकर इधर-उधर टहलना पड़ता है। हृत्पिण्ड प्रदेशमें दबाव मालूम होना,—यह दबाव कण्ठ देशतक अनुभवमें आता है। ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्डकी ओर खून

दौड़ रहा है और वहांसे माथे और सारे शरीरमें ऐसी हो अनुभूति फैल जाता है रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका हृत्पिण्ड दबाया जा रहा है (लिलियम-टाई) और माथा फट जायगा या दो हो जायगा। ऐसा मालूम होता है, कि किसीने कसकर उसका हृत्पिण्ड पकड़ लिया। नाड़ी,—क्षीण, धीर या क्षुद्र।

प्रत्यङ्ग आदि।—जलीय वायु लगनेपर गलेका पिछला भाग अकड़ जाना। गला इतना क्षीण हो जाता है कि छातीपर माथा ढुलक पड़ता है। कभी पीठमें और कभी नितम्बमें दर्द मालूम होता है और दोनों जानु बहुत ही क्लान्त और अवसन्न मालूम होते हैं। विश्रामके समय बढ़ना। कटिवात। ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो नितम्ब रगड़ खा गया है। सवारीपर चढ़कर घूमनेके समय कमरमें दर्द। नितम्ब और दोनों जानु क्षीण मालूम होते है। हाथ पैरोंमें दर्द और अकड़न-विशेषकर स्थिर रहनेपर, मानो शीत लग गया हो। सारे अंग-प्रत्यङ्ग सुन्न मालूम होते हैं, मानो प्रत्यङ्ग आदि शून्यमें उड़ रहे हैं—ऐसा अनुभव होना, (ऐसेरम, स्टिक्टा, वैलि, कैनाब-इन, हाइपिर, युग्लैन्स-रिजि, लैक-कैन) इसके साथ ही सरमें चक्कर आना। इधर-उधर टहलनेवाला (आर्नि, ब्राई, नक्स-वोम, पल्स), बेधने या दबानेकी तरह दर्द—छोटेसे अंशमें सीमाबद्ध भावसे अनुभूत होता है, वह थोड़ी देरतक रहा करता है, पर बन्द होकर फिर तुरन्त ही पैदा हो जाता है। पेशियोंका वात; बहुत समयतक जलीय या तर हवा लगनेकी वजहसे; शरीरको गर्म अवस्थामें प्रबल जलीय वायु स्पर्श होनेकी वजहसे (एको, ब्राई); दर्द क्षण भरके लिये होनेवाला और खींचनेकी तरह; वृद्धि—स्थिर होकर रहनेपर (रस, कोमोक्लि, फेरम, वैलि); ठण्डी तर हवा लगनेपर या पानीमें खड़े होनेपर (कैल्के, कोल्चि, डालका, पल्सा, सार्सा, सिपि, सल्फ) और गीले कपड़े व्यवहार करनेसे (रस); उपशम—सेंकने या गर्मी लगनेसे (आर्स, कास्टि, लाई, मैंग-सल्फ, मर्क, रस, सल्फ)। बाहुके नीचेसे ऊपरकी ओर चीटी रेंगनेकी तरह अनुभव होना (पैलेडियम), रमणियोंके स्तनके गासेमें दुर्गन्ध। हाथकी अंगुलीसे लेकर कन्धेतक बराबर खींचन मालूम होना। ऐसा मालूम होता है, कि बाहुमें एक डोरी कसकर लिपटी हुई है (ऐल्यू, सिङ्को)। नितम्ब और दोनों जानु बहुत ही सुस्त या शिथिल मालूम होते हैं, मानों रोगी बहुत दूरतक घूम आया है और रोगीको इच्छा

होती है, कि वह आनन्दसे सोये। आराम पानेकी आशासे रोगी लगातार दोनों पैरोंको एक जगहसे दूसरी जगह रखता है। पैर हिलानेके समय ऐसा दर्द मालूम होता है, कि दाहिना जानु मानो मोच खा गया है या जोड़से खिसक गया है; खासकर सीढ़ी चढ़नेके समय (सार्सा)। दोनों पैरोंमें भयंकर दर्द—मानो हड्डियाँ सब चूर्ण-विचूर्ण हो गयी हैं। ऐसा तकलीफ अनुभव होना, कि पैरकी पोटलीमें मानो किसीने मुक्का मार दिया हैं (दाहिनी पोटलीमें; आर्निका)। सोनेके पहले पैरकी पोटलीमें ऐंठन (संध्याके बाद शय्यापर सोनेके समय—आर्स; रातमें—फेरम, फेरम-म्यूर, मैंग-कार्ब, मैंग-म्यूर, मिडोरिन, नक्स-वोम, सल्फ, रातमें निद्रावस्थामें; इन्यूला; संगमके समय-ग्रैफ; गर्भावस्थामें; सिकेलि; पाखाजा होने बाद; ऐसिड-आक्सैल)। दोनों पैर हमेशा तर (ऐकोन, साइलिसिया, सल्फ)। छोटी सन्धियोंका वात, सोनेपर पैरके अंगूठेमें छेदनेकी तरह दर्द (लिडम, साइलि)। चलनेके समय ढुलक पड़ता है (आर्जेण्ट-नाई, कैप्स, कोना, इग्ने, कैलि-ब्रोम, नक्स-वोम, स्टिक्टा) प्राय: गिर जाता है (नेट्र-कार्ब। अवसाद; सामान्य परिश्रम करनेपर ही रोगिनीको वाध्य होकर सो जाना पड़ता हैं (वैप्टी, कोना, नेट्र-कार्ब वेलिसपेरेन); औंघाई; शीतार्त्त; चेहरा मलिन मालूम होता है। मूर्च्छा-प्रवणता; बहुत थोड़ी तकलीफसे भी रोगी मूर्च्छित हो जाता है (हिपर); मूर्च्छावायु रोगाधिकारमें और रज:स्राव होनेके आरम्भमें (ऋतुस्रावके समय; लैके, नक्स-वोम)। रोगी बहुत चञ्चलता प्रकट करता है, अधिक देरतक एक जगहपर रह नहीं सकता (ऐकोन, टैबाक, चेलिडो; बार-बार एक शय्यासे दूसरीपर जाना चाहता है—किसी तरह भी एक शय्यापर नहीं रहना चाहता—आर्स, रस, सिपि)। बच्चोंके उदरामय रोगमें आक्षिप्त भाव; अंग प्रत्यगोंका प्रबल सिकुड़ना और फैलना (इथ्यू, बेल, कैल्के, कैमो, सिना, कूप्रम, जिङ्कम)। रोगी बेहोश रहता है, प्रबल आक्षेपकी वजहसे देह लकड़ीकी तरह कड़ी हो जाती है और धीरे-धीरे श्वास-प्रश्वासमें बाधा प्राप्त हुआ करती है,—इसके बाद ही देह पर्यायक्रमसे हिला डुला करती है; बाहरकी ओर होनेवाला आक्षेप (ऐब्सिन्थ, आर्स, साइक्यू, इग्ने, इपिक, कैलि-ब्रोम, वेरेट)। मृगी—ज्ञानमें रहनेपर (बैराई-म्यूर, नेट्र-म्यूर)। मूर्च्छावायु या गुल्म-वायु रोगाधिकारमें थोड़ा भी परिश्रम करनेपर सुस्त हो पड़ता है। बच्चोंके दुबलापन रोगमें (ऐब्रो, ऐसिड-ऐसेट, एपिस, आर्स, लाइ, नक्स-वोम, नेट्र-म्यूर,

ओलियम-जेकोर, पोडो, आयोड, टियुबकुर्लिन)। बाहरी अंगका शोथ; समूची देहमें स्पर्शका सहन न होना, कोमल शय्यापर सोनेपर भी, जो अंश दबाकर सोता है, उस अंशमें बहुत दर्द पैदा हो जाता है (बैप्टी, पाइरोजिनम, रास,—कोमल शय्या भी कड़ी मालूम होती है—आर्नि, पाइरोजिनम)। बायें कन्धेका वात (फेरम, मैग-कार्ब)। शरीरकी त्वचा शीतल और सूखी। प्राय: पसीना नहीं होता।

निद्रा।—इससे पैदा हुए सभी लक्षणोंके साथ बहुत औंघाई और दुर्दमनीय निद्रावेश मौजूद रहता है (ऐण्टिम-टार्ट, इथ्यू, ओपि); इसके अन्तर्गत सभी बीमारियोंमें निद्रालुता एक प्रधान उपसर्ग है। मोहाच्छन्न भाव और होशमें न रहना, दुर्दमनीय निद्रा, दुर्दमनीय तन्द्रावेश—मानो नशा खाकर सोया हो, इस तरहका स्पन्दन और चेतना रहित निद्रा; मोहाच्छन्न भाव, रोगी चुपचाप बिना हिले-डुले पड़ा रहता है; आँखें लगातार बन्द रहती हैं (नाकके छेद संयुक्त—ओपि)। सोता-सोता चौंक उठता है। स्वप्न—ऊँचो जगहसे गिर जानेके स्वप्न (डिजिट, क्रियो, काइङ्का, पल्स; गहरे गड़हेमें गिरनेका—कैमो) और मानो कोई पीछे-पीछे दौड़ रहा है (जंगली पशु पीछा कर रहे हैं—सल्फ; साँढ़—इण्डियम; कुत्ते-बिल्ली इत्यादि जन्तु—नक्स-वोम)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—घरके बाहर जाड़ा मालूम होना और मलिन मुखमण्डल; विशेषकर तर ठण्डी हवा लगनेपर और शरीरका ओढ़ना उतारनेपर; घटना—गर्म घरमें। सन्ध्याके समय बहुत जाड़ा मालूम होना और औंघाई,—शीत और तन्द्राभावकी प्रधानता दिखाई देती है। दोनों हाथोंमें उत्ताप और शीत मालूम होता है। दिनमें दोपहरके पहले मुखमण्डल और दोनों हाथोंमें उत्ताप मालूम होता है, अवसाद वायु-ग्रस्तता, मिथ्या-व्याधि-शङ्का और मुँह तथा कण्ठके भीतर बहुत सूखापन मालूम होना, पर प्यासका न रहना; निद्रावेश और मोहाच्छन्नता। शरीरकी त्वचा ठण्डी, और सूखी, पसीना नहीं निकलता (स्टैफ), पसीना लाल रंगका या खून-मिला (कुरारी; लैके)। तन्द्राभाव रोगमें शरीरके कपड़े नहीं उतारना चाहता (नक्स-वोम, ऐकोन, सैम्बु, स्क्विला, स्ट्रैमोन, स्ट्रान)। विषम ज्वर,—निद्रालुता, सफेद जीभ, घड़-घड़ शब्द करनेवाला श्वास-प्रश्वास, बीच-बीचमें खूनमिला कफ़ या बलगम निकलता है और प्राय: प्यास नहीं रहती; उत्तापवाली अवस्थामें भी प्यास नहीं रहती।

वृद्धि ।—छूनेपर और तकियेसे माथा उठानेपर ; सोनेपर ; सन्ध्या और रातमें ; ठण्डी तर और तेज़ हवाका झटका लगनेपर (रोडो) ; जल-वायु या शीतोत्तापके परिवर्त्तनसे ; ठण्डी चीजें पीने या खानेपर और ठण्डे पानीसे नहानेपर ; सवारीपर चढ़कर घूमनेपर (ककुल) और रोगवाला पार्श्व दबाकर सोनेपर (बिना रोगवाली करवट सोनेपर—पल्स)।

उपशम ।—सूखी, गर्म हवा लगनेपर ; गर्म घरमें ; गर्म वस्त्र आदिसे अच्छी तरह ढक लेनेपर, चलनेपर (कलेजा धड़कना)।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष या दोषघ्न ।—आर्स, कैम्फो, जेल्स, लोरो, नक्स-वोम, ओपि, रोडो, बैलि, जिङ्कम ।

अनुकूल सम्बन्ध ।—बेल, लाई, नक्स-वोम, फास, पल्स, रस, साइलि, सल्फ ।

सदृश ।—इग्ने, मैग-कार्ब, फेरम, इस्कु-हिप, सिपि, प्लैट, लिलियम, मूरेक्स, पोडो, पल्स, ऐण्टि-टार्ट, ओपि, इथ्यू, कैनाब-इन, लैके, कैम्फो-मोनो, ऐनाक, लैक-कैन, लाई, ऐगार, लैके, बैप्टी, पाइरोजिनन, कैलि-बाई, कोलचि, ब्रोम, युफ्रे, हिप, नेट्र-सल्फ, रोडोड, रस, आर्स, कैल्के, डालका, ककुल, नेट्र मूर, बेल, एपिस, स्पाइजि, वेरेट, क्रोटोन-टिग, ऐसिड-आक्सैल, पेट्रोल, सार्सा, बूशिया जिनसेङ्ग, जेल्स, सिना, हिमैंटक्स, नक्स-वोम, कुमारी, स्टैफ, ब्राई, मस्कस, कैक्टस ।

तुलनीय ।—मिरिस्टिका (फोड़ा और पीव), इग्नेसि (मूर्च्छावायु-धातु) ; फेरम (दाहिने बाहुका वात) ; सिपिया, प्लैटिनम (जरायु-भ्रंश) ; तन्द्रालु—ओपियम, ऐण्टि-टार्ट, ऐना-कार्ड, लाइकोपो—स्मृति-शक्तिकी हीनता,—शरीरमें अकड़न—वैप्टी, ऋतुस्रावमें खूनके बदले प्रदर—ककुलस ; एकाएक स्वरभङ्ग—इयुफ्रे ; गर्भावस्थामें खाँसी—कोनायम ; गाड़ीमें चढ़नेका दुष्परिणाम—ककुलस ; माथा बायीं ओर ढुलकपड़ता है—लैक-डि ; पाखाना होनेके समय मूर्च्छा ; एपिस ; पल्स, सल्फ ; तन्द्राके साथ सर-दर्द—जेल्स ; खून-मिला पसीना—नक्स, लाइकोपो, लैके, आर्निका ; स्तनवृन्त ; सार्सा ; सर उठानेपर मिचली—ब्रायो ; हृत्पिण्ड—कैक्टस ।

शक्ति ।—१म दशमिकसे १२ शततमिक हमेशा। इसके अलावा ३०, २०० या इससे ऊँचे क्रम भी व्यवहृत होते हैं।

क्रियाका स्थायित्व ।—३० दिन।

नक्स-वोमिका

(NUX-VOMICA)

दूसरा नाम ।—कोचलाका बीज ; पायजन नट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसके बीजसे विचूर्ण और जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मुँहासा, मदात्यय ; दृष्टिकी क्षीणता ; क्रोधका दुष्परिणाम ; संन्यास ; दमा ; पैत्तिकता ; मूत्राधारकी बीमारी ; अस्थिमें गुटिका ; मस्तिष्ककी बीमारी ; श्वासमें खट्टी गन्ध ; सवारीपर चढ़नेसे मिचलीकी इच्छा और वमन, सर्दी, शूल ; कब्जियत ; आक्षेप ; खाँसी ; ऐंठन ; प्रलाप ; अतिसार ; रक्तामाशय ; अजीर्ण ; शुक्रक्षरण, मृगी ; आँखकी बीमारियाँ ; वात या क्षुद्र-सन्धिवात ; पथरी ; पाकाशयका शूल ; अर्श ; सर-दर्द, हृत्पिण्डकी बीमारियाँ ; आँत उतरना ; कोरण्ड या पोता ; व्याधिशङ्का ; ध्वजभङ्ग ; सविराम ज्वर ; यकृतकी बीमारियाँ ; कटिवात ; कृत्रिम मैथुन ; आँखके सामने काले बिन्दु दिखाई पड़ना ; रातके समय नाककी बीमारी ; कामोन्माद ; पक्षाघात ; समुद्र यात्रा या नावपर चढ़नेके कारण मिचली ; नींदमें व्याघात ; बोलीमें जड़ता ; रेतःक्षरण ; तिर्यक-दृष्टि ; स्वादमें गड़बड़ी ; चाय पीनेका दुष्परिणाम ; कूथन, तम्बाकू सेवनका दुष्परिणाम ; जीभकी बीमारियाँ ; मूत्रनलीका आक्षेप ; बार-बार पेशाब करना ; जरायुका अपने स्थानसे हटना ; अपत्यपथका हटना या भ्रंश ; सरमें चक्कर आना ; मुँहमें पानी भर आना ; कृमि जम्हाई इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—यह दुबले-पतले, क्रोधी स्वभाव, सतर्क आग्रहशील, काले केशवाले, पित्त या रक्त-प्रधान धातुके मनुष्योंकी बीमारीमें विशेष उपयोगी है। कलह और बदला लेना अच्छा मालूम होना और दूसरोंकी बुराई

करनेवाले, स्नायु-प्रधान मनुष्य भी नक्स-वोमिकाके विशिष्ट क्षेत्र हैं; जो दुबले पतले, उत्तेजना-प्रधान या स्नायु-प्रधान मनुष्य, शराब आदि पानीमें आसक्त रहते हैं, जिन्हें प्राय: अजीर्ण और अर्श रोग हो जाया करता है, उनके लिये भी यह विशेष लाभदायक है। जो मनुष्य किसी तरहका शारीरिक परिश्रम न कर बैठे-बैठे दिन काटते हैं, और जो गृहस्थोंकी नाना प्रकारकी चिन्ताओंसे घिरे रहते हैं प्राय: उत्तेजक और मादक पदार्थ सेवन किया करते हैं, जिन्हें अकसर कब्जियत हो जाया करती है, और जो अकसर ताकत लानेवाली या दस्तावर दवाका सेवन किया करते हैं, नक्स-वोमिका, उनका परम बन्धु हैं। इसके कई प्रधान लक्षण यहाँ संक्षेपमें लिखे जाते हैं—(१) क्रोधी स्वभाव, दूसरोंका दोष देखनेवाले और हमेशा ऐसा भाव धारण किये रहते हैं, मानो न जाने कितना चिढ़े हुए हैं; आत्महत्या करनेकी तो पूरी-पूरी इच्छा रहती है, पर मृत्युसे भय मालूम होता हैं। अवसाद वायु-ग्रस्त, व्याधिशंकायुक्त, साहित्य सेवी, पढ़ने लिखनेमें निरत, घरमें बैठे-बैठे दिन बिताते हैं, शारीरिक व्यायाम बिलकुल ही नहीं करते, पाकस्थली और अन्त्राशयके नाना प्रकारके रोग भोगा करते है और अधिकांश समय ही कब्जियत बनी रहती है। (२) दर्शन, श्रवण प्रभृति इन्द्रियोंमें चेतनाकी अधिकता,—किसी तरहका शब्द, गन्ध, आलोक या संगीतकी ध्वनि रोगीको चिढ़ा देती है; सामान्य रोगसे भी रोगी बहुत कातर हो पड़ता है; यदि कोई कुछ कहता है तो बेतरह क्रोधित हो जाता है। (३) संध्याके बाद ही रातके पहले पहरमें नींद,—जागा नहीं रह सकता। रातके ३ बजनेके समय नींद खुल जाती है और एक या दो घण्टेतक मनमें नाना प्रकारकी चिन्ताका उदय होता है और इसके बाद रोगी सो जाता है; सवेरे नींद खुलनेपर शरीर बहुत सुस्त और बेचैनी मालूम होती है। (४) धीमा और भार मालूम होनेकी तरह सर-दर्द—दर्द ललाट, चक्षुगह्वरके ऊपरी प्रदेशमें और सरके पिछले भागमें मालूम होता है—माथा शून्य मालूम होना, खोपड़ीकी त्वचामें स्पर्श सहन नहीं होता और ऐसा अनुभव होना, कि किसी कड़ी चीज पर माथा रखनेसे आराम मालूम होगा। शराब पीना आदि अत्याचारके बाद माथ फैल जाता है और भीतरी दर्द मालूम होता है। (५) नयी सर्दी,—नाकका एक छेद रुका और दूसरा खुला और उसमेंसे पतला बलगम निकला करता है; दिनमें नाकसे लगातार श्लेष्माका स्राव हुआ करता है और रातमें बन्द हो जाता है, श्लेष्मा कषाय और त्वचाको क्षय करनेवाला। (६) वक्षमें

कसावटका भाव पैदा करनेवाली, सूखी और कलेजेको फाड़ डालनेवाली खाँसी, कभी-कभी खून-मिला बलगम निकलता है। (७) शीतार्त्तता और कम्पन,—नख सब नीले हो जाते हैं—शरीरका कपड़ा उतारनेपर जाड़ा मालूम होता है, फिर भी ओढ़ना नहीं ओढ़ता। (८) गात्रत्वक सूखा और उत्ताप-भरा। (९) नितम्ब देशमें दर्द और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता और अवश मालूम होता है, खासकर सोनेपर। (१०) कमरमें दर्द—वातकी वजहसे—अत्यन्त तीव्र। शय्यामें सोनेके समय, करवट बदलनेपर रोगीको उठ बैठना पड़ता है। (११) अजीर्ण और पाकाशय आदिका अम्ल रोग—पाकस्थलीमें दर्द और भार मालूम होना; खट्टी या तीती डकार। (१२) अग्निमान्द्य पैदा होनेके पहले राक्षसी भूख पैदा हो जाती है। (१३) पाकस्थलीसे बड़े कष्टसे आध्मान वायु निकलता है। (१४) रोगी समझता है कि वमन करनेसे ही उसकी सब यंत्रणाएँ दूर हो जायँगी, पर वमन करना बहुत कठिन या असम्भव हो जाता है। (१५) ऐसा श्वास-कष्ट मानो दोनों कोख जकड़ गये हैं। (१६) अंत्र-मण्डलीकी सिकुड़नेकी क्रियाका अभाव या आक्षिप्त भावकी वजहसे कब्जियत। (१७) बार-बार तृप्त न करनेवाला पाखाना होता है, वेग रहनेपर भी बहुत थोड़ा पाखाना होता है, एक बारमें सब नहीं निकल जाता। (१८) मलान्त्रमें हमेशा बेचैनी या गड़बड़ी मालूम होना। (१९) खुजलानेवाला अर्श, रक्त-स्राव नहीं होता, दर्द-भरा, इसके साथ ही बार-बार वृथाका मलवेग। (२०) पर्यायक्रमसे पतला और कड़ा पाखाना होता है। (२१) आर्त्तव,—अनियमित, घोर लाल और प्रसव-वेदनाकी तरह दर्दसे भरा, कभी-कभी ऐसा वेग होता है, कि रोगीको मालूम होता है कि पाखाना होगा। (२२) बहुत जाड़ा मालूम होना,—अंगुलीके नख सब नीले हो जाते हैं। क्या उत्ताप अवस्था, क्या पसीनेवाली अवस्था सभी समय, शरीर हिलाने या शरीरके कपड़े उतारते ही जाड़ा मालूम होने लगना। शरीरके एक पार्श्वमें खट्टा पसीना। (२३) काफी, धूम्रपान और शराब आदि उत्तेजक पदार्थ पीने, गर्म मसाला मिली चीजें या लवण जारित पदार्थ खाने, बहुत भोजन करने या बहुत देरतक बैठे-बैठे मानसिक परिश्रम करने या बैठे-बैठे दिन बिताने, अनिद्रा, सुगन्धि या पेटेण्ट दवा आदि सेवन करने और गर्मीके दिनोंमें ठण्डे पत्थर आदिपर बैठने वगैरह कारणोंसे पैदा हुई बीमारियाँ। (२४) सज्ञान अवस्थामें धनुष्टंकार आदि आक्षेप; वृद्धि—क्रोध पैदा हो जानेपर, मानसिक उद्वेगसे, छूने या शरीर हिलानेपर।

(२५) मूर्च्छा-प्रवणता,—कोई गन्ध सूंघनेपर सवेरे ; भोजनके बाद और प्रत्येक प्रसवके बाद। (२६) खानेके एक या दो घण्टे बाद पाकस्थलीमें इतना भार पैदा हो जाता है, मानो पत्थरका टुकड़ा रखा हुआ है (भोजनके बाद ही—कैलि-बाई, नक्स-मस्कोटा) ; मुँहमें पानी भर आना ; पाकाशयमें कसावटका भाव, रोगी अपनी कमरका कपड़ा ढीला कर देनेको वाध्य हो जाता है ; भोजनके बाद दो-तीन घण्टोंतक मानसिक परिश्रम नहीं कर सकता। सन्ध्याके बाद भोजन करते ही औंघाई आने लगती है। बहुत ऐलोपैथिक चिकित्साके बाद होमियोपैथिक चिकित्सा आरम्भ करनेपर पहले नक्स-वोमिकाका प्रयोग करना चाहिये।

लक्षणावली

मन।—क्षीण स्मृति, लजालु और असावधान। अपने भावोंकी ठीक-ठीक रक्षा करनेमें अक्षम, इसीलिये अध्ययन नहीं कर सकता। रोगिनी समझती है कि उसकी बुद्धिमें विकार आ गया है (ऐल्यू, ऐब्रो, सिपा, कैनाब-इन, ऐक्टिया-रेस, आयोड, कैलि-ब्रोम, लैन-कैन, लिलियम-टाई, मिडोरिन)। ऐसा मालूम होता है कि समय बहुत धीरे-धीरे बीत रहा है (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नई, कैनाब-इन, मिडोरिन, ऐन्हेलो)। मदात्यय, बहुत अधिक चैतन्य, स्नायविक उत्तेजना-प्रवणता और बदला लेनेका भाव। लगातार अपनी अवस्था या बीमारीके विषयमें कहना पसन्द करता है और उसके लिये दुःख प्रकट करता है (दूसरोंकी बात सहन नहीं कर सकता—हेलोन, हायो)। दूसरोंका दोष देखने (साइक्ले, ऐसिड-लैक, हेलोन, प्लैट, सल्फ) और गाली देनेमें विशेष तत्पर (कैमो, डाल्का, हायो पेट्रोल, पोसि—हमेशा अपने अपराधके सम्बन्धमें कहता है—वेरेट-विर)। अपनी बातके आगे दूसरोंकी बात ही नहीं सुनता ; जो स्त्री किसी समय अपने पतिको देवताके समान समझती थी, वही एकाएक अपने स्वामीकी हत्या करना चाहती है (सतीत्व या सत्यताके सन्देहकी वजहसे हत्या करनेका आग्रह—हायो ; जिन्हें अत्यन्त प्यार करती है, उन्हींकी हत्या करनेका आवेग—आर्स, हिप ; किसी एक रमणीकी हत्या करनेकी दुर्दमनीय आकांक्षा—आयोड)। सवेरे किसी तरहका परिश्रम करनेसे चिढ़ और बहुत आलस्य और सुस्ती मालूम होना। पढ़ना या बातचीत करना अच्छा नहीं लगता ; अत्यन्त रोगी और अकेला रहना पसन्द करता है (ऐक्टिया, कोका, साइक्ले, हेलिबो, इग्ने, हायो, आक्साइ-ड्रोप)

आत्म-हत्या करनेकी अत्यन्त इच्छा, पर मृत्यु-भय भी यथेष्ट रहता है (आर्स, सिङ्को)। कभी खूब आनन्दमें रहता है, पर क्षणभर बाद ही दुःखित भाव प्रकट करता है। जो किसी तरहका शारीरिक परिश्रम न कर, अपने घरमें बैठ, दिन काटते हैं, शराब पीकर रात बिताते हैं और आध्मान या कब्जियत आदि रोग भोग करते हैं, उन सब रोगियोंकी अवसादवायु-ग्रस्ततामें इसका प्रयोग करना चाहिये ; वृद्धि—खानेके बाद, रोगी बहुत थोड़ेमें कातर हो पड़ता है। अति सतर्क और आग्रह-शील, सहजमें ही उत्तेजित या क्रोधित हो जाता है या बदला लेना चाहता है। ईर्षापूर्ण और द्वेषी। कोई चिढ़ाता है, तो उससे झगड़ा करनेको तैयार हो जाता है। क्रोधसे आग बबूला हो उठता है। चैतन्य या अनुभव-शक्ति किसी तरहका शब्द, गन्ध, आलोक या सङ्गीत ध्वनि (नक्स-मस) या बहुत सामान्य बीमारियाँ भी असह्य मालूम होती हैं और वे रोगीको बहुत कातर कर देती हैं (ऐकोन, काफि, कैमो)। कोई भी बात क्यों न हो रोगीके प्रति उसका प्रयोग करते ही उसमें चिढ़ पैदा हो जाती है (इग्ने) ; सामान्य शब्दसे भी डर जाता है और उन्मत्त हो उठता है ; उपयोगी दवातक उसे सहन नहीं होती। बहुत दिनोंतक मानसिक परिश्रम करनेके कारण पैदा हुई बीमारियाँ (ऐनाक), क्रोध पैदा होनेके बाद पर्यायक्रमसे शीत और उत्ताप पैदा हो जाता है। पित्त वमन हुआ करता है और बहुत प्यास पैदा हो जाती है। बहुत आलस्य मालूम होना और किसी काममें भी मन लगानेकी इच्छाका न होना।

मस्तक और मस्तिष्क।—स्तम्भित या जड़ भाव और मस्तिष्ककी जड़ता, मानो न जाने रातमें कितनी शराब पी है या नशेमें पड़ा रहा है। सरमें चक्कर आना,—रोगीको होश नहीं रहता (कैलि-कार्ब, मैंन्सि, रैनान-स्सि) सामनेकी ओर गिर जानेका उपक्रम हो जाता है (ऐगार, कास्टि, कार्बो-वे, कैमो, ग्लोन, हैमा, आयोड, कैलि-कार्ब, लैके, मर्क, पेट्रोल, पल्स),—रोगीको शय्या चक्कर खाती है (कोना) ; ऊपरकी ओर देखनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो गिर जायगा और जो कुछ सामने रहता है, उसे ही वाध्य होकर पकड़ लेना पड़ता है। ऊपरकी ओर देखनेसे ही सरमें चक्कर आ जाना (कैल्के, कूप्रम-मेट, ग्रैफ, लैके, टैबाकम) सवेरे और संध्याके भोजनके बाद ढलमलाया करता है (लाइ), ललाटमें दर्द और चेहरेमें लाली और उत्ताप पैदा हो जाना। पहले दिन शराब पीने और नशा खानेका नशा मानो अभी

तक बना है—ऐसा ही अनुभव होना और सुनने तथा देखनेकी शक्तिका लोप हो जाना, विशेषकर धूप लगने और संध्याके भोजनके बाद। संन्यास, नाककी आवाज-मिला श्वास-प्रश्वास, निचला हनु झूल पड़ता है (ओपि), आक्रमणके पहले सरमें चक्कर आना (इपिक, सैङ्गिविन, कूप्रम-मेट), कानमें झुनझुन आवाज़, झिचली और ओकाई आती है। माथेमें अधिक रक्तसञ्चयकी वजहसे उसमें जलन मालूम होती है और फूले हुए चेहरेके उत्ताप और लाली पैदा हो जाती है। नींद खुलनेपर और भोजनके बाद ललाटके पीछे जलन (ललाटपर मानो एक जलता हुआ गोला लगा हुआ हैं—कास्टि)। माथा मानो रगड़ खा गया है, इस ढङ्गका दर्द (जेल्स, कूप्रम-मेट, आर्नि); साधारणतः एक पार्श्वमें (दाहिने पार्श्वमें दर्द मालूम हुआ करता है; उपशम-रोग न होनेवाली करवट सोनेपर। माथेमें दबाने या सलाई गड़नेकी तरह दर्द; आरम्भ—सवेरे; घटना—संध्याके मध्यमें; क्षीण या तिमिर दृष्टि (साइक्ले, ऐ-फास, विरि-विर—सर-दर्दके आरम्भके पहले अंधेरा देखना—आइरिस-वार्सि, कैलि-बाई, लैक-डिफ्लो, फास, सोरिन; सर-दर्द अच्छा हो जानेपर—साइलि; दो देखनेके साथ—नेट्र-म्यूर, फाइटो—आगकी चिनगारियाँ दिखाई देनेके साथ—बेल, साइक्ले), सर-दर्द रोगमें अम्ल वमन और कलेजा धड़कना (ब्यूफो, साइक्लेम)। वृद्धि—मानसिक परिश्रमसे (पल्स, आर्जेण्ट-नाई, ब्राई, कैल्के, सिडोरिन, नेट्र-म्यूर, फाइजसटिग्मा; साइलि, टिलिया), रोशनीमें (बेल, एपिस, काक्यु, जेल्स, सिडोरिन, नेट्र-म्यूर, नेट्र-सल्फ, फास, पल्स), शब्दसे (बेल, काकुल, काफि, इग्ने, लैके, लैक-कैन, लैक-डिफ्लो, साइलि, स्पाइजि) काफी पीनेपर (बेल, ब्राई, काकुल, इग्ने, पल्स) और खाने या बहुत ज्यादा खानेपर (कैल्के-फास, कार्बो-वेज, काफि, हायो, रस, जिङ्कम) कभी-कभी पैदा होनेवाला ललाट देशका दर्द, ललाटमें खाल उधड़ जानेकी तरह स्पर्शका सहन न होना, इसके साथ ही कब्जियत (ब्राई, कैल्के-फास, हाइड्रैस्ट, लैक-डिफ्लो, वेरेट); बहुत ज्यादा काफी पीनेकी वजहसे, एक पार्श्वका सर-दर्द या अधकपारीका दर्द, ब्रह्मतालुमें ऐसा दर्द मानो एक प्रेक घुसी जा रही है (फार्मिका, हेलिबो मानो प्रेक घुसी हुई है—निकोलस; मानो भीतरकी ओरसे बाहरकी ओर आ रही है—थूजा, मानो खोपड़ीको फाड़ रही है—कैलि-आयोड)। माथेमें ऐसा दबावका मालूम होना मानो कुछ घुस रहा है या कुछ बैठा जाता है। रातमें और सवेरे ललाटमें कसावटका भाव, मानो भीतरकी ओर कसा

या दबाया जा रहा है, वृद्धि—ठण्डी हवामें माथा खोल देनेपर। ऐसा दर्द मानो माथेके पिछले भागमें चोट लगी है। खुली जगहमें चलने या दौड़नेपर ऐसा अनुभव होना मानो माथा स्पन्दित हो रहा है (बेल); उपशम—माथेमें अच्छी तरह कपड़ा बाँध लेनेपर, गर्म घरमें और स्थिर होकर बैठनेपर। सर दर्द आदिका बढ़ना—मानसिक परिश्रमसे, निर्मल वायुमें टहलनेपर, व्यायामसे और भोजनके बाद; घटना—सवेरे शय्यासे उठनेपर, गर्म घरमें और सो जानेपर (लाई, कैल्के, सल्फ, सिनकोना या चायना, इग्निशि, जेल्स, ग्लोन, मिनियैन, नेट्र-मूर, ऐ-नाई, सिनैपिस) या स्थिर होकर बैठे रहनेपर (गुयायेक, क्रियो, रस, सिफिलियनम)। खोपड़ीकी त्वचामें स्पर्श (सिङ्को, मेजेर) या प्रबल वायुका झटका सहन नहीं होता; घटना—अच्छी तरह गर्म कपड़े आदिसे ढक लेनेपर। सूखी हवाका प्रवाह या तर हवाका झटका लगनेपर माथेमें सर्दी लग जाती है। माथे और मुखमण्डलके आधे अंशमें बदबूदार पसीना निकलना; मस्तक और मुखमण्डलके इसी अंशमें ठण्डक मालूम होती है, इसके साथ ही दुश्चिन्ता; माथा खोलनेसे भय; पसीना निकलनेपर यंत्रणा दूर हो जाती है। धनुष्टंकार आदि अकड़नके समय माथा पीछेकी ओर टेढ़ा पड़ जाता है (कूप्रम-मेट, साइक्यूटा)।

आँख।—दोनों आँखें नीले घेरेसे घिरीं और हमेशा आंसुओंके भारसे दबी; रातमें आँखमें फाड़नेकी तरह दर्द, या जलन और करकराहट, सूखापन, खुजली पैदा हो जाती है और सुरसुरी हुआ करती है—मानो उसमें नमक गिर गया है,—अपाङ्गमें अधिक; मलनेपर खुजलाहट कम हो जाती है (सिना; कैलि-बाई, स्किला)। आँखमें दर्द मालूम होता है। दोनों आँखें प्रदाहित और उनका सफेद अंश और योजिका लाल और फूली, घनत्वकके पीछे जगह जगहपर नीलापन दिखाई देता है। दोनों अपाङ्ग लाल और मैलसे भरे, रातमें सट जाते हैं। पलकोंका फड़कना (कैल्के-फास, मैंग-फास, नेट्र-मूर, फाइजस, साइक्यूर, रियूम, कोडाइन)। पलकें फूलीं और लाल (आर्जेण्ट-नाई मर्क, नेट्र-कार्ब, रस),—आँखकी योजक त्वचातक लाल रेखा खिंची हुई और उसमें दबावकी तरह दर्द और खींचन मालूम होती है। पेशियोंकी अकड़नकी वजहसे पलकें हिलानेमें बहुत तकलीफ मालूम होती है। आँखें स्थिर और ज्योति-पूर्ण; आँखें उद्वेष प्रकट करनेवाली और दृष्टि टकटकी लगी;

दिनकी रोशनीमें आँखकी बीमारी पैदा हो जाती है ; वृद्धि—सवेरे। आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ या काले अथवा धुमैले बिन्दु सब दिखाई देते हैं। दूर-दृष्टि,—पासकी चीज दिखाई नहीं देती (आर्जेण्ट-नाई, कैल्के, हायो, लिलि-टाई)। आँखके सामने बिजलीकी लहरकी तरह रोशनीकी रेखा सब दिखाई देती हैं। शराब आदि पीनेकी वजहसे क्षीण दृष्टि, आँखकी पेशीकी निष्क्रियता या पक्षाघात सदृश अवस्था, उत्तेजक पानीय या धूम्रपानसे वृद्धि।

कान।—कानमें शब्द आदिकी आवाज़ ऊँची आती है (बैराई, लैके, फास ; अपना कण्ठ-स्वर प्रतिध्वनित होता है—फास)। कानमें फाड़ने या सुई गड़नेकी तरह दर्द, यह दर्द ललाट कनपटीतक चला जाता है, वृद्धि—सवेरे, संध्याके बाद, शय्यामें शयन करनेके समय और गर्म घरमें प्रवेश करनेपर। कानका बाहरी छेद सूखा और दर्द सहन नहीं होता। कोई चीज निगलनेके समय कर्ण-पटहके बाहरकी ओर दबावका भाव। कर्णशूल—फाड़ने और डंक मारनेकी तरह मालूम होता है। चबाने या दाँत-पर-दाँत रगड़नेके समय ऐसा अनुभव होता है कि कानमें कुछ दब रहा है। कानके मध्य भागसे कर्ण पश्चान्नलीकी राहसे खुजलीकी वजहसे बार-बार घूंट लेनेकी इच्छा होती है और यह इच्छा रोगीको रातमें तंग कर डालती है, कर्णपश्चान्नलीमें सूखा मैल जमा हो जानेकी वजहसे बहरापन (कैलि-बाई, मर्क-डाल)। कानमें इतनी टनक होता है कि रोगी चिल्ला उठता है, विशेषकर सवेरे शय्यापर लेटे रहनेकी अवस्थामें। निगलनेके समय गलेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (डिफ्थीरिया रोगमें कानमें कभी ढिं-ढिं, कभी भों-भों, झिनझिन इत्यादि नाना प्रकारकी आवाजें सुन पड़ती हैं)। कर्णमूलीय ग्रन्थिका प्रदाह।

नासिका।—तेज़ गन्ध सहन नहीं होती, यहाँतक कि कभी-कभी तेज़ गन्धसे मूर्च्छा आ जाती है। नाकके अगले भागमें सड़ी पनीर या गन्धककी गन्ध अनुभव होती है। बच्चोंकी, विशेषकर नये जनमे बच्चोंकी नाक सटना (सैम्बियु)। नाकसे खूनका स्राव,—निद्रित अवस्थामें या नाकसे खूनका स्राव होनेके पहले सर-दर्द पैदा हो जाता है और दोनों गाल लाल हो उठते हैं (नाकसे खूनका स्राव होने बाद सर-दर्द घट जाता है—ब्यू.फो, मैंग-सल्फ, मिलिलोट, फेरम-फास) या सवेरे—एकाएक बवासीरका स्राव रुक जानेकी वजहसे ; रजःस्रावके बदले—ब्राई, फास)। नयी सर्दी,—दिनमें तो पतला श्लेष्मा निकलता है, पर रातमें दोनों नाकें सूख जाती हैं ; वृद्धि—गर्म घरमें ; उपशम—ठण्डी

हवा लगनेपर, बहुत सवेरे शय्यासे उठनेके पहले ही छींक आरम्भ हो जाती है, नासारन्ध्र और कण्ठनालीमें खाल उधड़नेकी तरह अनुभव होना। रुके हुए नाकके छेदसे कषाय श्लेष्माका स्राव हुआ करता है; रंध्रका भीतरी अंश प्रदाहित। असह्य खुजलाहट। नासारंध्रके भीतर और रंध्र-मुखपर ऐसा दर्द होता है, मानो जखम हो गया है। माथेसे श्लेष्माका स्राव रुकना; वृद्धि—सवेरे या रातमें। सूखी सर्दीकी वजहसे ललाट गर्म और भारी मालूम होता है और दोनों नासारंध्र रुक जाते हैं, विशेषकर बच्चोंके।

मुखमण्डल।—बीमार बतानेवाला, दोनों आँखें नीले घेरेसे घिरीं और नाक नोकीली। चेहरा मलिन, कुछ पिला, विशेषकर मुँह और नाकके पासवाले प्रदेशमें या पीले रंगका; पीले रङ्गकी जमीनपर लाल आभा मिली। त्रिशाख स्नायुके चक्षुगह्वरकी नीचेवाली शाखामें फाड़नेकी तरह दर्द, रोगवाले पार्श्वकी आँख (नेट्र-मूर) और नासारंध्रसे निर्मल जल निकला करता है और चेहरा सुन्न जैसा मालूम होता है; काफी, शराब या क्विनाइनके अपव्यवहारसे उत्पन्न। मुँहका सविराम स्नायुशूल,—त्रिशाखा स्नायुके निम्नाक्षिक स्नायुमें तेज़ दर्द मालूम होता है,—वृद्धि—प्राय: सवेरे; घटना; कभी-कभी सोनेपर (त्रिशाखाकी हनुके नीचेवाली शाखामें दर्द—प्लैण्टेगो; सर्दी लग जानेपर त्रिशाख स्नायुशूल—मर्क; त्रिशाख-स्नायुशूल—थूजा; बाएँ पार्श्वके त्रिशाख स्नायुशूल रोगमें चेहरा लाल और गर्म हो उठता है और रोगी बेचैनी तथा उद्वेग प्रकट करता है—ऐकोन; आँखोंका शाखागत त्रिशाखा स्नायुशूल दिनके दोपहरतक बढ़कर घट जाता है—नेट्र-मूर; त्रिशाखके अक्षिगह्वरके ऊपरका शाखागत शूल, लालामूत्र रोगमें—चेलिडो; त्रिशाख स्नायुशूलसे उत्पन्न दाँतका दर्द और अधकपारीका दर्द—लालामूत्र रोगमें—कोलोसिन्थ)। मुख-शूल और गण्डास्थिमें दर्दके साथ एक गालका फूलना। बहुत ज्यादा शराब आदि नशीले पदार्थ व्यवहार करनेकी वजहसे चेहरेपर व्रणकी तरह दाने निकलना (ऐण्टि-क्रूड)। सन्ध्याके बाद सोनेपर मुँहकी पेशियोंका फड़कना। ओंठका तकलीफ देनेवाला सूखापन, फटना और पपड़ी जमनेका भाव; दोनों ओंठोंके लाल अंशके ऊपर और संयोग स्थानपर कच्छु और त्वचाको क्षय करनेवाले जखम आदि निकलना। चिबुकपर दादकी तरह दाने निकलते हैं। निचले हनुके अगल-बगल अङ्ग हिलानेसे (मानो चबा रहा है—ब्राई; मास कोष या

मेनिञ्जाइटिस रोगमें चबानेकी तरह जबड़े हिलाना—ऐकोन ; निद्रित अवस्थामें चबानेकी तरह जबड़े हिलाना—इग्ने ; यक्रुत रोगमें चबानेकी तरह हिलाना—ऐकोन ; यक्रुत रोगमें निद्रिता अवस्थामें—कैल्के)। निचला हनु झूल पड़ता है (लैके, ओपि)। हनुके नीचेवाली ग्रन्थियाँ सब फूल उठती हैं और उनमें निगलनेके समय डंक मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है।

मुख-विवर ।— दन्तशूल,—दाँत और मसूढ़ेमें हड्डीको क्षय करनेकी तरह, जखम हो जानेकी तरह या खींचने, चिलक मारने या छेदनेकी तरह दर्द या केवल क्षय हुए दाँतमें इस तरहका दर्द मालूम होता है ; वृद्धि—रातमें या सवेरे नींद खुलनेपर, भोजनके बाद, निर्मल वायु-सेवनार्थ चलनेके समय, सर्दी लग जानेपर, सन्ध्याके बाद या किसी तरहकी प्रगाढ़ चिन्ता या मानसिक परिश्रमके समय ; दर्द अधिकांश समय, माथा, कान या युगास्थितक फैल जाता है या इसके साथ हनुतलस्थ ग्रन्थिमें अधिक रक्त सञ्चय हो जाता है ; मसूढ़े फूलना और उनमें स्पर्श सहन न होना, गाल और गर्दनके ऊपर लाल गर्म दाग, रोदनपरायण भाव और विषाद वर्त्तमान रहता है। दाँतमें उखाड़नेकी तरह दर्द,—दर्द मुँहकी हड्डी भेदकर माथेतक फैल जाता है, ठण्डा पानी पीनेसे फिर पैदा हो जाता है (ऐण्टि-क्रूड, स्टैफ, लैके, प्लैटि, पल्स)। उपशम—सेंकनेसे (आर्स, कैमो, मर्क, पल्स, रस)। क्षय हुए दाँतमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द। मसूढ़ेका फोड़ा,—ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो वह फट जायगा (हेक्ला, कैलि-आयोड, लैक-कैन, लाई, मर्क, नेट्र-मूर, पेट्रोल, फास, साइलि)। मसूढ़े सब सफेद, सड़ी गन्ध-भरे और उनसे खून बहा करता है। बच्चोंके मुँहमें जखम। मुँह और कण्ठमें छोटे-छोटे सड़ी गन्ध-भरे जखम ; रातमें मुँहसे खून मिली लार निकलती है (निद्रितावस्थामें—रस ; ऋतुस्रावमें विलम्बकी वजहसे—नेट्र-मूर)। मसूढ़ेमें शीत लगना (आर्स, ऐसिड-फ्लू, कार्बो-वे, कैलि-फास, क्रियो, मर्क, नेट्र-मूर, ऐ-नाई) ; थूक या बलगमके साथ थक्का-थक्का खून निकलता है। कण्ठस्वर बिगड़ा हुआ ; मानो मुँहमें कुछ रखकर बोल रहा है। भोजनके बाद या सवेरे कुछ खानेके पहले मुँहसे सड़ी गन्ध (सड़ा स्वाद—नेट्र-मूर,) निकलती है (ऐ-फास, इग्ने, क्रियो, ऐ-नाई), जो खाता है, वह पचता नहीं है, इसी वजहसे मुख-विवर, विशेषकर मुँह और जीभके सामनेवाले अंशमें, अत्यन्त सूखापन मालूम होता है, अधिकांश

स्थानोंमें आधी रातके बाद। मुँहका स्वाद कड़वा या खट्टा; सवेरे सड़न-भरा स्वाद, पानीसे बिना कुल्ला किये या अच्छी तरह मुँह साफ़ किये बिना रह नहीं सकता (थूजा)। जीभ,—सफ़ेद या पीले रंगका गहरा लेप चढ़ी या काला अथवा गाढ़ा लाल रंग; दोनों पार्श्व फटे; जीभमें भार मालूम होता है—बात मुँहसे साफ़ नहीं निकलती या बोलनेपर तकलीफ़ मालूम होती है (ऐ-मूर, लैके, नेट्र-कार्ब, कार्बो-वेज; जीभमें भार रहनेकी वजहसे तोतलाकर बोलना—आर्स, बेल, ऐनाक, स्ट्रैमोन)। जीभका सामनेवाला आधा अंश साफ़ रहता है, कभी-कभी लाल चमकीला (एपिस, आर्स, बैप्टी, कैलि-बाई, लैके, नेट्र-मूर, फास, ए-सल्फ़, टेरिब) और पिछला आधा गाढ़े कोमल लेपसे ढका रहता है। मुँह सूखा और नीरस, पर प्यास नहीं रहती (नक्स-मस्केटा)।

गलेके भीतर।—खट्टी डकार आनेपर जैसा हो जाता है, गलेके भीतर उसी तरह त्वचाका संकर्षण और ऐसा अनुभव होता है, कि त्वचा क्षय हो गयी है; वृद्धि—निगलनेके समय और निर्मल शीतल वायु सेवनके समय; निगलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो तालुमूल संकुचित हो गया है या मानो कण्ठके भीतर एक खोल घुस गयी है (ऐल्यू, ऐनाथ्रि, प्लम्ब, सिपि) और इसके साथ ऐसा अनुभव होता है, कि तालु फूल गया है। अलिजिह्वा फूली हुई और उसमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द; लार आदि निगलनेके समय कानमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्दका अनुभव होना (मैग-कार्ब, मैङ्गेन, पेट्रोल)। कण्ठमें छोटे-छोटे बदबूदार जखम निकलना। खानेके समय गलेके भीतर अधिक तकलीफ़ मालूम होना, कुछ देर बाद दर्द और भी अधिक बढ़ जाता है। कण्ठमें दवा आदिके बाहरी प्रयोगकी वजहसे उत्तेजना और खाल उधड़ जानेकी तरह मालूम होना। अलिजिह्वाकी शिथिलताकी वजहसे बार-बार खाँसी (मर्क-कोर)। कण्ठमें सुरसुरीकी वजहसे उसे खुजलानेकी इच्छा। कण्ठके भीतर जलन, यह जलन कभी-कभी समूचे मुख-विवर और अन्ननालीतक फैल जाती है, विशेषकर रातमें।

पाकस्थली।—राक्षसी भूख, पर रोटी, पानी, काफी या धूम्रपानसे अरुचि। अजीर्ण, दस्त, कै आदिके प्रकोपसे २४ घण्टे बाद बहुत भूख मालूम हुआ करती है। मुँहका स्वाद खट्टा, विशेषकर सवेरे या खाने-पीने बाद (कार्बो-वेज, ग्रैफ, नेट्र-मूर, सिपि) कभी-कभी तीसरे पहर सर्वग्रासी भूख पैदा

हो जाया करती है। दूध पीनेपर वह पाकस्थलीमें जाकर अम्लमें परिणत हो जाता है (कैल्के, रोबिन)। काफी, धूम्रपान, शराब आदि नशीली चीजोंका पीना इत्यादि गर्म मसाले पड़ी चीजोंका खाना, बहुत ज्यादा भोजन, बहुत देरतक बहुत अधिक मानसिक परिश्रम, बिना शारीरिक परिश्रमके ही बैठे-बैठे दिन बिताना, अनिद्रा या रातमें जागरण (काक्यु, कोलचि, ऐ-नाई), सुगन्धि या उत्तेजक पदार्थों का व्यवहार और गर्मीके दिनोंमें ठण्डी सिमेंटकी जमीनपर या पत्थरकी जमीनपर बैठना इत्यादि कारणोंसे पैदा हुई बीमारियाँ। डकार खट्टी और तीती ; प्रत्येक दिन सवेरे मनकी अप्रफुल्लता, मिचली और वमन, विशेषकर भोजनके बाद। लगातार मिचली—भोजनके बाद, सवेरे और धूम्रपान करनेपर ; रोगीको पाकाशयमें ऐसी गड़बड़ी मालूम होती है, कि वह कहता है, कि एक बार कै हो जाती तो अच्छा होता। भोजनके एक या दो घण्टे बाद पाकाशयमें बहुत भार मालूम होता है, मानो उसमें पत्थरका टुकड़ा रखा हुआ है (भोजनके बाद ही भार मालूम होनेपर—कैलि-बाई, नक्स-मस), मुँहमें पानी भर आया करता है, पाकाशय प्रदेशमें ऐसा मालूम होता है मानो जकड़ गया है और रोगी कमरका कपड़ा ढीला कर देता है ; भोजनके दो-तीन घण्टे बादतक किसी विषयमें मन नहीं लगा सकता। रातके भोजनके बाद ही औंघाई आ जाना। ठण्डा पानी आदि पीने या बहुत ज्यादा भोजन आदि करनेकी वजहसे हिचकी। शराब पीनेवालोंकी छातीमें जलन और मुँहमें पानी भर आना। वृद्धि—प्रथम भोजनके पहले ; सवेरे—मिचली और मूर्च्छाका उपक्रम। वमन—खायी हुई चीज या जो कुछ पीता है, पित्त, काला पदार्थ, लसदार या लारकी तरह पदार्थ, अम्ल, श्लेष्मा। बवासीरका स्राव रुक जानेकी वजहसे खूनका वमन, वमन रोगमें अधिकांश स्थानोंमें सर-दर्द मालूम होता है ; पैर और चरणमें ऐंठन होती है ; चित्तकी चंचलता और हाथ-पैरोंमें कम्पन पैदा हो जाता है। पाकाशय और पाकाशयके निर्गम द्वारमें जलन। पाकाशयका शूल, पाकस्थलीमें नख गड़ने या ऐंठनकी तरह दर्द, दोनों अंसफलकोंके बीचमें दबाव या खींचन मालूम होती है और दर्द वक्षतक फैल जाता है या पीठसे मलद्वारमें जा कर मलका वेग पैदा कर देता है ; वृद्धि—कुछ खा लेने बाद और सवेरे, पहली बारके भोजनके पहले ; घटना—गर्म चीजें आदि पीनेपर हृदयके अगले भागमें भयानक बेचैनी मालूम होती है,—ऐसा मालूम होता है, कि हृद्‌पिण्ड फट

जायगा। पाकाशयके प्रवेश द्वारपर ऐसा मालूम होता है, कि खायी हुई चीजें सब अड़ी हुई है और फिर अन्ननालीमें चढ़ रही हैं।

अन्नाशय।—यकृत प्रदेशमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द (बार्ब, ब्राई, चेलिडो, कैलि-कार्ब); वृद्धि—छूनेपर या शरीर हिलानेपर। यकृतमें टपककी तरह दर्द, मानो उसमें फोड़ा पैदा होरहा है (ब्यूफो, साइलि)। यकृत—बढ़ा हुआ, कड़ा, स्पर्श सहन नहीं होता और उसमें दबाने या डंक मारनेकी तरह दर्द; कसकर कपड़े नहीं पहन सकता, घीकी पकी चीजें खाने, उदरमें अधिक रक्त संचय होने या शराब आदि पीनेके कारण। पाण्डु-रोगमें भोजनसे अरुचि और कभी-कभी मूर्च्छित हो जाना; पित्त-पथरी (हाइड्रैस्ट, कार्डियु-मै, सिङ्को) रोगमें, लगातार कब्जियत बनी रहना। ऐसा अनुभव होनेकी वजहसे कि मानो पेटके भीतरकी आँतें आदि सब बाहर निकल पड़ेंगी, रोगी बड़ी सावधानीसे क़दम रखता है (मानो आँतें आदि बहुत शिथिल और चलनेके समय डोला करती हैं—नेट्रम-सूर; चलनेके समय अंत्रमण्डली मानो बाहर निकल पड़ना चाहती है—कैलि-ब्रोम; मानो आँतें आदि गिर पड़ेंगी—कैनाब-सैट; मानो एक भारी बोझा झूल रहा है—तीसरे पहर चलनेके समय—ऐल्यू; मानों आँतें आदि डोल रही हैं—ऐमोन-म्यू; मानो पकड़ रखना आवश्यक है—ट्रैम्बिड; चलनेके समय आँतें आदि शिथिल और डोलती हुई मालूम होती हैं—मैंङ्गनम। पाकस्थली शिथिल और झूलती हुई मालूम होनेपर—इग्ने, इपिक, स्टैफ, टैबाक)। छोटे-छोटे पञ्जरेके नीचे दबाव मालूम होना, मानो रुका हुआ आध्मान-वायु उत्पन्न हो गया है। वृद्धि—सवेरे और भोजनके बाद। अजीर्ण रोगकी वजहसे अंत्रशूल रोगमें—मुँहमें पानी भर जाता है। वृद्धि—शराब पीने या बहुत ज्यादा भोजन करनेपर। आध्मानकी वजहसे शूलका दर्द, ऊपरकी ओर दबावकी वजहसे श्वासमें तकलीफ़ और नीचेकी ओर दबावके कारण पाखाना और पेशाबमें वेग उत्पन्न कर देता है। कभी-कभी पैदा होनेवाला अंत्रशूल, पहली बार भोजनके पहले या बाद। आँतका स्राव रुक जानेकी वजहसे अंत्रशूल। आँतोका बढ़ जाना, स्पर्शका सहन न होना, तीता वमन और श्वासमें कष्ट या जोर लगाकर साँस लेना और छोड़ना पड़ता है; निर्मल वायु सेवनके समय उदरमें दर्द, मानो सर्दी लग गयी है। ऐसा मालूम होता है, कि जल्द ही पतले दस्त आयँगे। उदरमें ऐसा हिलना-डोलना मालूम होता है, मानो कोई सजीव पदार्थ हिल

रहा है (एराण्डो, कैल्के-फास, कैनाब-सैट, कानवैल, कुरारी, साइक्लै, क्रोकस, सैबाई, थूजा) और चलनेके समय अंत्रमण्डलोका हिलना स्पष्ट मालूम होता है। अंत्राशय और जरायुमें प्रसव-वेदनाकी तरह सिकुड़ना और फैलना। वह दोनों पैरतक चला जाता है। पुट्ठेके छिद्रके पासवाले छिद्रमें शिथिलता, मानो उसके भीतरसे आँत बाहर निकल पड़ेगी। आवद्ध अन्त्र वृद्धि, विशेषकर नाभिकी आँत बढ़नेके कारण।

मलान्त्र और मल।—कब्जियत—बार-बार निष्फल वेग (पल्स); प्रत्येक बार थोड़ा-थोड़ा मल निकलता है (ऊपरी पेटमें ऐसी ही अवस्था होनेपर—इग्नेशिया, वेरट्रम)। प्रत्येक बार ऐसा मालूम होता है, कि सब मल नहीं निकल गया, मलान्त्रमें और भी मल रह गया (लिलि-टाई, मर्क; बार-बार वेग, पर पाखाना फिरनेकी चेष्टा करनेपर फिर वेग नहीं रहता—ऐनाक; तृप्त न करनेवाला पाखाना होना—कार्डियुअस-मैं, नेट्र-म्यूर, ओपी; पाखानासे आते ही फिर वेग हो जाना—स्टैनम)। बार-बार पाखाना जानेकी इच्छा; उद्वेगजनक और निष्फल चेष्टा; पाखाना हो जाने बाद कुछ देरके लिये वेगका घटना; सवेरे सोकर उठनेपर; मानसिक परिश्रमके बाद; (मलान्त्र-निष्क्रिय—बिलकुल ही पाखाना नहीं लगता—बाई, ओपी, सल्फ)। पतला और कड़ा पाखाना पर्यायक्रमसे होता है (ऐण्टिम-क्रूड ?—ऐब्रोट, चेलिडो, ओपि, पोडो, सल्फ), खासकर जो रोगी जीवनभर विरेचक सेवन करते आये हैं। उदरामय या आमातिसार (मल—पतला, भूरा और आम मिला या पतला, खून-मिला आममय, बार-बार वेग, परन्तु बहुत थोड़ा पाखाना होता है; पाखाना होनेके पहले नाभि-प्रदेशमें छेदनेकी तरह दर्द, कमरमें दर्द—मानो कमर टूट जायगी और लागातार निष्फल वेग; पाखाना होनेके समय छेदनेकी तरह यंत्रणा, कमरमें दर्द और भयानक कून्थन और पाखाना हो जाने बाद कून्थन तथा अन्यान्य यंत्रणाओंसे निवृत्ति (कोलोसिन्थ, गैम्बोज, रस; पाखाना हो जानेपर भी कून्थन दूर न हो जाना—बेल, कैप्स, कोलचि, कैलि-बाई, मर्क, मर्क-कोर, रियुम, सल्फ ड्राम्बिड, कैन्थ, लिसिन, पोडो); मलद्वारमें जलन और ऐसा मालूम होता है, मानो और भी पाखाना होगा। कभी-कभी अलकतरेकी तरह काला और खून मिला मल निकला करता है, कभी कभी आध्मानवायु निकलनेके साथ, थोड़ा-सा कोमल और कुछ कड़ा मल निकला करता है (पहले कड़ा, पीछे दूधकी तरह सफेद पतला मल—इस्क्यु-हिप;

पहला अंश कड़ा, अन्तिम पानीकी तरह—बोवि ; पहला अंश कड़ा, इसके बाद पानीकी तरह—जिङ्कम ; पहला अंश कड़ा, फिर आँव और खून—ब्राई ; पहला अंश कड़ा, इसके बाद मैदाके निशास्तेकी तरह—सिजिजियम-जैम्बो ; पहला अंश कड़ा, इसके बाद मांड़की तरह और अन्तमें पानीकी तरह पतला—कैल्के ; पहला अंश कड़ा, अन्तिम अंश कोमल—ऐलूम, थूजा, विङ्का ; पहला अंश पत्थरकी तरह कड़ा, इसके बाद पतला कैल्के-फास ; पहले थोड़ा कोमल मल पीछे कड़ा—जिङ्कम)। मलद्वारमें संकोचन और एकाएक आक्षेपिक संकोचनके साथ मलके साथ-साथ चमकीले लाल रङ्गके खूनका स्राव (कार्बोनियम-सल्फ, क्लोरम, नेट्रम-सल्फ, जिङ्क ; बच्चेके आमातिसार रोगमें—एपिस ; आमातिसार रोगमें सिर्फ खूनका ही स्राव—ट्रिलियम, ऐकोन, आर्नि, हैमा, मर्क-कोर)। अर्श—बादी या खूनी ; बढ़ना—घीकी पकी चीजें खानेपर या बैठे-बैठे (किसी तरहका शारीरिक परिश्रम न कर) जीवन बितानेपर, मसोंमें जलन और सुई गड़नेकी तरह दर्द और पाखाना होनेके थोड़ी देर बाद मलद्वारमें जलन, उत्तेजना और ऐसी तकलीफ़ मालूम होना मानो कट गया है। बवासीर—ऐसा मानो त्वचा क्षय हो गई है और बेधनेवाला तथा जलन करनेवाला दर्द, मलान्त्र और मलद्वारमें दबाव मालूम होता है। वृद्धि—गहरी चिन्ता या मानसिक परिश्रमसे। पाखाना जानेके समयके अलावा अन्य समय भी चिलक मारनेकी तरह दर्द। मलद्वारमें क्रिमि चलनेकी तरह सुरसुरी और खुजली।

पेशाब।—मूत्र-पथरीका शूल, विशेषकर दाहिने पार्श्वके मसानेमें (लाई ; बाएँ—बार्बे, टैबाक, ऐगार ; अधिककर—ओसिमम-कैनम, डायस्को, पैरिइरा-ब्रेवा), दर्द जननेन्द्रिय और दाहिने पैरतक चला जाता है ; बढ़ना—दाहिने या रोगवाली करवट सोनेपर और उठकर टहलनेपर ; घटना—चित्त होकर सोनेपर ; प्रकोपके समय पसीना हुआ करता है ; लसदार पसीना—डायस्को ; ललाटमें ठण्डा पसीना—वेरेट-ऐल्ब)। यन्त्रणाजनक और निष्फल पेशाबका वेग ; पेशाब बूंद-बूंद निकलता है और मूत्रनलीमें जलन और फाड़नेकी तरह दर्द पैदा करता है ; आक्षेपिक मूत्रकृच्छ्र रोगमें (कैन्थ, कैनाब-सैट, कैम्फो)। पेशाब करनेके पहले मूत्राशयपर दबाव मालूम होता है (फाइटो, पल्स)। पेशाब पहले फीका, इसके बाद गाढ़ा सफेद आभा लिये

और पीव मिला या कुछ लाल रङ्गका और लाल बालू-भरी तली पड़नेवाला। खूनका पेशाब—अन्त्र-स्राव या आर्त्तव-स्राव रुकनेकी वजहसे बीमारी। मूत्र-नलीका रुकना (बेल, कैम्फो, जेल्स, ऐ-नाई, प्लम्ब)। बिना तकलीफ़के मूत्र-नलीसे गाढ़ा गोंदकी तरह लसदार श्लेष्मा निकलता है। रातमें पेशाबका वेग और कई बूंद घोर लाल रङ्गका जलन करनेवाला पेशाब निकलता है। मसाना या मूत्रग्रन्थि-प्रदेशमें मानो कोई पदार्थ अटक गया है, ऐसी तकलीफ़ और रोगवाली करवट सो न सकना, कई बूंद बालू-भरा पेशाब और मूत्रनलीसे खून निकलता है। पेशाब करनेके समय मूत्राशय-ग्रीवामें और मूत्रनलीके सामनेवाले द्वारमें जलन मालूम होना

पुं०-जननेन्द्रिय।—सहजमें ही कामोद्रेक होता है; लिङ्गोद्गम बहुत ही यन्त्रणादायक होता है, विशेषकर सवेरे; उत्तेजना अकसर हुआ करती है, पर शक्ति बहुत थोड़ी होती है। सङ्गमके समय लिङ्ग शिथिल हो पड़ता है। निद्रितावस्थामें रेतःस्खलन, विशेषकर हस्तमैथुन या उत्तेजक पदार्थ आदि खानेकी वजहसे। बहुत ज्यादा मैथुन आदिकी वजहसे उत्पन्न बीमारियाँ (ऐ-फास, सिङ्को, कैलि-फास)। एकशिरा रोगमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और आक्षेपिक संकोचन, रेतोरज्जु तक दर्द फैल जाता है। अण्डकोष कड़ा और ऊपरकी ओर खिंचा रहा करता है। प्रमेह—कोपिबा और कूबेबा या कबाबचीनीके अपव्यवहारके बाद; पानीकी तरह पतला स्राव, बार-बार मलका वेग और पेशाबके समय जलन, स्राव रुकनेपर अण्डकोषका बढ़ना (पल्स, सल्फ़, थूजा) और सरके पीछेवाले भागमें धीमा-धीमा दर्द। मेढ्रत्वक क्षय-प्राप्त और पीछेकी ओर खिंची हुई; अगला भाग जखम-भरा। लिङ्गमुण्डके नीचे बहुत ज्यादा लिङ्ग-मल सञ्चित होता है (कास्टि, सिपि)। आलिङ्गनकी कामना अधिक रहती है और बार-बार लिङ्गोच्छ्वास तथा शुक्रक्षय होता है। वृद्धि—रातके अन्तिम प्रहरमें। कोरण्ड (एपिस, एरम, रोडो, साइलि, लिसिन, नेट्रम-म्यूर, पल्स, स्पञ्जि)। सङ्गमके बाद देहमें बिना पसीनेका उत्ताप पैदा हो जाता है और मुख-विवर सूख जाता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—वस्ति-गह्वरमें ऐंठन और सूक्ष्म सलाई गड़नेकी तरह दर्द; विटपके एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक स्पर्शका सहन न होना।

जरायुमें अधिक रक्त-संचय होना (बेल, पल्स, टेरिब)। जरायुकी संकोचनकी तरह आक्षेप और शूल ; जरायुसे बड़े-बड़े जमे हुए खूनके टुकड़े सब निकलते हैं (प्रसव-वेदनाकी तरह दर्दके बाद—रस ; काला रंग—प्लैट, ; बड़े वेगसे—सैबाई)। योनिकी ओर जरायु आदिका दबाव—सवेरे ; भारी चीज उठाने या श्रोणिके बहुत अधिक परिश्रमकी वजहसे जरायु-भ्रंश या कन्दरोग ; त्रिकास्थिकी ओर वेगकी वजहसे निष्फल मलवेग या मूत्रस्थलीपर दबाव पड़नेकी वजहसे पेशाबका वेग। आर्त्तव—नियमित समयके बहुत पहले हो जाता है और बहुत ज्यादा स्राव होता है। यह स्राव अधिक दिनोंतक हुआ करता है या आर्त्तव आरम्भ होनेके पहले जो तकलीफें पैदा हो जाती हैं, बहुत दिन बाद स्राव होना बन्द होनेपर भी ; वे तकलीफ़ देनेवाले लक्षण सब बने रह जाते हैं ; कभी-कभी दो सप्ताह भी स्थायी रहा करते हैं ; ऋतु अनियमित ; कभी नियमित समयपर नहीं होता (आयोड, नक्स-मस, रियुटा, सिपि)। स्राव बन्द होने बाद फिर पैदा हो जाता है, ऐसा ही चला करता है (सल्फ) ; रजःस्रावके समय और बाद पुरानी तकलीफें बढ़ जाती हैं ; स्राव घोर लाल या काले रंगका (ऐ-फास, ब्राई, प्लैट, कैल्के-फास, सिकेलि, लिलि-टाई, ऐक्टी, कक्कस, साइक्लो) ; रोगिनी सामान्य कारणसे ही मूर्च्छित हो पड़ती है ; रातमें रजःस्राव बन्द रहा करता है (कास्टि)। जरायु-स्राव विशेषकर वयःसन्धि-कालमें (लैके, पल्स, सिपि, थ्लैस्पि) या घीकी पकी गरिष्ट चीजें खानेकी वजहसे। जरायु-द्वार फूला और कड़ा ; प्रदर—स्राव बहुत बदबूदार और वस्त्रमें लगनेपर पीला दाग पड़ जाता है (ऐसिड-कार्बोल)। योनि-द्वारपर एक तरहकी उत्तेजना और खुजलीकी वजहसे अस्वाभाविक उपायसे उसकी परितृप्ति करनेकी इच्छा। जरायुका फूलना और उसमें स्पर्शका सहन न होना ; मूत्रकृच्छ्र रोगमें जरायुका नीचेकी ओर खिंचना ; तकलीफ़ हुए बिना बैठ नहीं सकता, पूर्णिमाके दिन ऋतुका फिरसे आविर्भाव। रजःस्रावके समय आक्षेपिक शूल-वेदना। सवेरे मिचली और वमन, बहुत सुस्ती मालूम होना, सरमें दर्द, सिहरावनमें और हाथ-पैरोंमें वातका दर्द मालूम हुआ करता है। नकली प्रसव-वेदना ; बहुत तेज़ और देरतक रहनेवाला, प्रसव-वेदनाके समय बार-बार मूर्च्छा ; वेग प्रचण्ड और आक्षेपिक होता है ; पेशाब या पाखानेका वेग पैदा कर देता है ; कमरमें अधिक दर्द मालूम होता है ; प्रसूताको गर्म घरमें आराम मालूम होता है। गर्भ-स्रावका उपक्रम, रुका हुआ परिस्राव या फूल अटकनेकी अवस्था या प्रसव

अथवा गर्भ-स्रावके बाद और प्रसव वेदनाके समय रोगिनीको लगातार ऐसा मालूम होता है, मानो पाखानेका वेग हो रहा है। प्रसवके बादका क्लेद-स्राव बहुत थोड़ा, बदबूदार, स्तन-वृन्तकी त्वचा क्षय हुई और इस जखमके बीचमें एक सफेद ; बिन्दु ; बच्चेको स्तन-पान करानेके समय स्तनमें चरचराहट होती है योनिके भीतर सूजन और जलन, विशेषकर छूनेपर बहुत जलन होती है।

श्वासयन्त्र।—सर्दीको वजहसे स्वरभंग और स्वरनाली तथा वक्षमें दर्द पैदा करनेवाली कर्कशता मालूम होना। वृद्धि—सवेरे या शय्यापर सोये रहनेवाली अवस्थामें ; कण्ठके भीतर त्वचाका खिंचाव ; गाढ़ा गोंदकी तरह और बड़े कष्टसे निकलनेवाला श्लेष्मा संचय होना, सर-दर्द, चेहरा लाल और उत्ताप, सिहरावन तथा मलका कड़ापन वगैरह लक्षण मौजूद रहते हैं। अन्ननलीमें संकोचन अनुभव होना ; श्वास रुक जाना चाहता है। ऊँचे स्वरसे बोल नहीं सकता। सूखी और कभी-कभी ऊपरके ऊपर तंग करनेवाली आक्षेपिक खाँसी आती है ; अधिकांश समय गलेमें खुजली या खालका खिंचाव और रुखड़ापन् मालूम होनेके कारण, खाँसी पैदा होना या बढ़ना, खासकर सवेरे या सन्ध्याके बाद सोनेके समय या रातमें, विशेषकर आधी रातके बाद या संध्याके भोजनके बाद या सामयिक भावसे प्रति द्वितीय दिवस ; बढ़ना—परिश्रम करनेपर, ठण्डी हवा लगनेपर, खाने-पीनेके बाद, शरीर बहुत ठण्डा होनेपर, चित्त होकर सोनेपर, खटाई सेवन करनेपर। सूखी खाँसी ; खाँसनेपर ऐसा दर्द होता है, मानो माथा फट जायगा (नेट्र-म्यू) या उदरके ऊपरी अंशमें बहुत दर्द और स्पर्श सहन नहीं होता (पल्स ; उदरमें दर्द मालूम होना—स्क्वियुला, कैम्फो, कार्बो-एन, लैके, फास ; मानो आँतें उतरना चाहती है—बेल, काक्यु, नेट्र-म्यु, वेरेट)। सन्ध्याके बाद और रातमें सूखी खाँसी और दिनमें श्लेष्मा निकला करता हैं। क्रूप-खाँसी—प्रबल सूखी खाँसी ; बढ़ना—सवेरे ; कभी-कभी बच्चेको साँस रुक जाना चाहती है, चेहरा नीला हो जाता है और मुँह तथा नाकसे खून निकला करता है ; गलरोग, वमन और कब्जियत मौजूद रहती है ; प्रकोपके समय नाभीप्रदेशमें दर्द—मानो नाभी उखड़ जायगी ; नाना प्रकारकी खाँसी—एलोपैथिक दवाएँ सेवन करनेके बाद ; कफ़का रंग पीला या धुमैला, ठण्डा श्लेष्मा, खट्टा या मीठा स्वाद मिला ; अथवा चमकीले लाल रङ्गका खून मिला। सोचने, पढ़ने या चित्त होकर सोनेपर

खाँसी फिरसे पैदा हो जाती है या आने लगती है ; नया वायुनलीभुज-प्रदाह ; निर्मल वायुमें चलनेके समय सूखी खाँसी पतले श्लेष्मायुक्त हो जाती है और कफ़ निकलना आरम्भ हो जाता है। खाँसते-खाँसते जमा हुआ खून निकलता है। खाँसनेपर श्रोणिदेशमें कसावटका भाव मालूम होता है और वक्षमें चोट लगती है।

वक्ष।—कष्टकर श्वास-प्रश्वास ; वक्षमें दबाव और श्वास-रोगके कारण वक्षमें कसावट मालूम होना ; वृद्धि—रातमें या सवेरे अथवा सन्ध्याके बाद सोनेके समय या सीढ़ी चढ़नेके समय अथवा चलनेके समय। इसके साथ ही अकसर गला रुकना, उद्वेग और उदरके ऊपरी भागमें दबाव मालूम होना ; नाड़ीकी तेज़ गति और पसीना निकलनेका लक्षण मौजूद रहता है। वायुके विपरीत चलनेके समय रोगिनी हाँफ उठती है। श्वास-रोगके प्रकोपके समय रोगी कमरके वस्त्र आदि बाध्य होकर शिथिल कर देता है। बार-बार गहरी लम्बी साँस लेनेकी आकांक्षा (ब्राई, कैल्कि, मर्क)। वक्षपर मानो एक भारी चीज़ रखी हुई है, ऐसा दबाव मालूम होना (इथ्यू, कैलि-बाई, लिलि-टाई, स्ट्रैमोन, स्टैनम, वेरेट-विर)। वृद्धि—रातमें और निर्मल वायु सेवनके समय ; प्रायः श्वासकृच्छ्रता पैदा हो जाती है। श्वास-रोग—वक्षगह्वरके निचले अंशमें एकाएक पेशियोंके संकोचनकी वजहसे कभी-कभी ऐसा मालूम होता है, मानो वक्षके भीतर टूट गया। पञ्जरेके भीतरका स्नायुशूल—बिना रोगवाली करवट सोनेपर घटना। वक्षके भीतर अधिक रक्त-सञ्चय होनेकी वजहसे उत्ताप और जलन मालूम होना ; उद्वेग, चित्तकी चञ्चलता और नींद न आना। रक्त-कास—क्रोधका पैदा होना, बवासीरका स्राव रुकना और शराब पीना आदि अत्याचारसे उत्पन्न, विशेषकर जिनको शराब पीनेका अभ्यास है। वक्षस्थलमें विशेषकर वक्षोस्थि और वक्ष-पार्श्वमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो चोट लग गई है और प्रायः श्वासमें कमी मालूम होती है ; हृदप्रदेशमें नोकीली सलाई गड़ने या सुई गड़नेकी तरह दर्द। उद्वेगजनक हृद्स्पन्दन। वृद्धि—भोजनके बाद, चाय या काफी पीनेपर, बहुत दिनोंतक बहुत ज्यादा पढ़नेकी वजहसे और सोनेके समय (चित्त होकर सोनेके समय—आर्स, कैलि-नाई ; बाईं करवट सोनेपर—ऐंङ्गस, बैराई, कैक्ट, डैफनी, नेट्र-मूर, पल्स, टैबाक ; खाँसनेके समय बाईं करवट सोनेपर—पल्स ; रातमें बाईं करवट सोनेपर—फास ; बाईं करवटसे दाहिनी करवट पलटनेके समय—टैबाक ; दाहिनी

करवट सोनेपर—बैडि, ब्रोम, प्लैट, लिलि-टाइग्रि ; बाईं या दाहिनी करवट सोनेके समय—लिलि-टाई, नेट्र-कार्ब) या सवेरे (सैरासिन, सवेरे नींद खुलनेपर—नेट्रम-मूर ; वृद्धि—सवेरे और सन्ध्याके बाद और वही विषय स्मरण करनेपर—लाइकोप-वर्जि), कभी-कभी मिचली, ओकाई और वक्षमें भार मालूम होता है।

गर्दन और पीठ।—गर्दनके पिछले भागमें खींचनकी तरह दर्द (सिङ्को, पल्स)। ठण्ड लगनेकी वजहसे गर्दन अकड़ जाती है और भार मालूम होता है (ऐ-नाई, गुयायेक, डाल्का)। दोनों अंसफलकोंके बीचमें खींचन मालूम होना, जलन और दबाव मालूम होना, मानो इस जगहपर पत्थरका एक टुकड़ा रखा हुआ है। गर्दन और बाँहमें स्नायु-शूल,—गला अकड़ा, सवेरे या कुछ खा लेनेपर और छूनेपर बढ़ना। पीठमें जलन या तोड़ डालनेकी तरह दर्द। किसी ओर घूमनेके समय एकाएक नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द और बैठनेपर अस्पष्ट दर्द, करवट बदलनेके समय खाटपर उठकर बैठकर करवट बदलना पड़ता है ; कटिवात—कामेन्द्रियकी कमजोरी और हस्तमैथुनकी वजहसे पीठ और कमरमें ऐसा दर्द मानो चोट या रगड़ लग गई है तथा क्षीण मालूम होना, सन्तान प्रसवके बाद जैसा होता है या कष्टकर प्रसवके बाद जैसा हुआ करता है, उसी प्रकार अनुभव होना। पीठ और पीठके निचले भागमें बहुत दर्द रहनेकी वजहसे रोगी हिल नहीं सकता। पीठ एकाएक धनुषकी तरह टेढ़ी पड़ जाती है। मेरुदण्डकी राहसे, ऊपरकी ओर मानो बिजलीका प्रवाह चल रहा है—ऐसे ही चिलक मारनेकी तरह दर्दके कारण शरीर ऊँचा हो जाता है। श्वास-प्रश्वास बाधाप्राप्त ; पीठमें धनुष्टङ्कारकी तरह अकड़नकी वजहसे माथा पीछेकी ओर टेढ़ा हो जाया करता है। पीठको जरा भी छू देनेपर बढ़ना।

प्रत्यङ्ग आदि।—दोनों कन्धोंमें बहुत दर्द, मानो रगड़ खा रहे हैं। कन्धेसे लेकर हाथकी अंगुलीतक मानो जकड़ गया है—इस ढङ्गका दर्द। ऐसा भार मालूम होता है, मानो दोनों कन्धे सुन्न हो गये हैं और दोनों बाँह बहुत क्षीण मालूम होते हैं। दोनों बाहुओंका असम्पूर्ण पक्षाघात और उनमें बीच-बीचमें ऐसा झटका मालूम होता है, कि मानो शिरा विदीर्ण हो जायगी, रातमें या बहुत तड़के बढ़ना। दोनों बाहुओंमें मानो झुनझुनी पैदा हो गयी है,

ऐसा मालूम होना कि वे सुन्न और अकड़ गये हैं। हाथकी शिराएँ सब फूल उठती हैं। ठण्डी नाकके साथ दोनों हाथ ठण्डे और पसीनेसे तर। पैरकी अंगुलीसे उरुशिखर, जंघा अथवा उरुकी अस्थिके शिखरदेशसे जानु-सन्धिके पश्चात्-गह्वरतक शूल-वेदनाकी तरह तेज़ दर्द ; पाखाना होनेके समय, हिलने या भारी चीज़ उठानेपर और रातमें वृद्धि ; दोनों पैर सुन्न और चैतन्य-रहित हो जाते हैं। निम्न-प्रत्यङ्ग आदिका पक्षाघात—बहुत परिश्रम, पानीमें भींजना, बहुत ज्यादा इन्द्रिय-सेवनकी वजहसे अथवा संन्यास रोगका आक्रमण होनेके बाद ; शरीर ठण्डा या उत्ताप रहित, नीली आभा लिये और दुबला, उसमें चिलक मारनेकी तरह दर्द, पेशियोंका तनना या खिंचना मालूम होना और चींटी रेंगनेकी तरह अनुभव होना। निम्नाङ्गमें पक्षाघात मालूम होना और उरुके भीतरी प्रदेशमें ऐसा मालूम होना मानो एक दर्दकी सलाई लगी हुई है। जानुसन्धि सूखी मालूम होना और चलनेके समय कड़कड़ाना (ऐल्यू, ब्राई, कैलेड, कैल्के, कास्टि, ग्लोन, हियुरा, लिडम, मैग-सल्फ, नेट्र-मूर, ऐ-नाई, टैबाक), जानु-सन्धिकी वातकी वजहसे प्रदाह होता है और उसमें वात-गुटिका पैदा हो जाती है (ऐ-बेन, लिथिया-कार्ब)। दोनों पैर फूलकर चकत्तीले लाल हो जाते हैं और उसके बीच-बीचमें दर्द-भरा काला दाग दिखाई देता है। रातमें पोटलीमें (फेर, मैग-कार्ब, रूग-मूर, मिडोरिन, सल्फ) और तलवेमें ऐंठन होती है। रोगीको रोगवाला पैर बाध्य होकर फैला देना पड़ता है। चलनेके समय दोनों पैर काँपा करते हैं ; शरीर ढुलक पड़ता है। सामान्य कारणसे ही बच्चा चलता-चलता गिर पड़ता है (नेट्र-कार्ब, कास्टि ; बच्चा देरसे चलना सीखता है—कैल्के-कार्ब, पाइनस-सिलि, साइलि)। सन्धिका खिसक जाना, चलनेके समय पैर खींचकर चलता है, पैर उठाकर नहीं चल सकता। वात-वेदना—शरीरकी पेशी और वृहत् सन्धियोंपर बीमारीका हमला होता है। रोगवाला अंश सफेद या भूरा रहता है और उसमें कसावट मालूम होती है तथा वह फूला हुआ और सुन्न रहता है। पेशियाँ फड़का करती हैं। एकाएक हिलाने या सर्दी लग जानेपर तकलीफ़ और सूजन बढ़ जाती है।

सार्वाङ्गिक ।—समूची देहमें रह-रहकर एकाएक सलाई गड़नेकी तरह दर्द अनुभव होता है और सारे शरीरमें स्पर्श सहन नहीं होता, विशेषकर सवेरे एकाएक ताक़त न मालूम होना ; शराबियोंके सारे शरीरमें, विशेषकर

दोनों बाहुओंमें कम्पन हुआ करता है; हमेशा बैठे रहना या सोना पसन्द करता है। मूर्च्छा-प्रवणता—नाकमें किसी तरहकी तेज गन्ध जानेपर, सवेरे या भोजनके बाद। पक्षाघात, रोगवाला अंश उत्तापहीन, सुन्न और दुबला हो जाता है; संन्यास या मस्तिष्कका कोमल हो जाना, इसके साथ ही सरमें चक्कर आना और क्षीण स्मृति; बहुत अधिक इन्द्रिय-सेवन, शराबका अपव्यवहार, आक्षेप, संखियाका व्यवहार करनेके बाद या गलनलीके उपझिल्ली-प्रदाह रोगके बाद। तकलीफ़ इतनी असह्य मालूम होती है कि रोगी इस तकलीफको भोगनेकी अपेक्षा मर जाना अच्छा समझता है। हाथ-पैर आदि सभी सन्धियोंमें इस ढङ्गका दर्द मानो कुचल गई हैं, विशेषकर रातके अन्तिम भागमें शय्यापर सोये रहनेवाली अवस्थामें और हाथ-पैर आदि सञ्चालनके समय और बाद। धनुष्टङ्कार आदि आक्षेप—प्रकोपके समय रोगी प्रायः चिल्ला उठता है, माथा पीछेकी ओर झूल पड़ता है, हाथ-पैर आदि काँपा करते हैं, अनजानमें पाखाना-पेशाब निकल जाया करता है, वमन, बहुत अधिक पसीना निकलना, प्यास और घड़घड़ शब्द करनेवाला श्वास-प्रश्वास; आक्रमणके पहले उदरके ऊपरी प्रदेशसे सुरसुरी उठती है; चैतन्य अवस्थामें (स्ट्रान) बाहरकी ओर आनेवाली अकड़न, हाथ-पैर आदि अकड़ जाया करते हैं और रोगी नींदमें जा पड़ता है; चमकीली रोशनी देखनेपर (बेल, कैन्थ, स्ट्रैम)। एकाएक देह घुमानेपर, किसी तरहके शब्दसे या रोगीका अङ्ग छूते ही आक्षेप फिरसे पैदा हो जाता है (कार्बोन-हाइड्रो)। बच्चोंके दुबलापन रोगमें या तो बिलकुल ही भूख नहीं रहती या राक्षसी भूख पैदा हो जाती है (खूब खाता-पीता है, पर दुबला होता जाता है—ऐब्रोट, आयोड, सैनिक, नेट्र-म्यूर, सार्सा, बैसिलि), आहारकी इच्छा भरपूर रहती है, पर प्रायः वमन, कब्जियत रहती है; पीली मूर्त्ति और चेहरा फूला रहता है।

त्वचा।—शरीरकी त्वचा उजली या कुछ पीली। सारे शरीरमें जलन पैदा करनेवाली खुजली, विशेषकर सन्ध्याके बाद; पांडु-रोगाधिकारमें शरीरमें खुजली; पाचन-क्रियामें गड़बड़ीकी वजहसे आमवात। नीले रङ्गके काले दाग। छोटे-छोटे कितने ही फोड़े एक साथ मिल जाते हैं। व्रणशोथ—यह पीव पैदा होना रोकता है। खसड़ाकी तरह छोटे-छोटे दाने निकलना, उसमें जलन और खुजली होती है।

निद्रा ।—संध्याके बाद शय्यामें सोनेके बहुत पहले बैठनेकी अवस्थामें या पढ़ते-पढ़ते, किसी तरह भी सोये बिना नहीं रह सकता ; इसके बाद रातके ३-४ बजनेके समय नींद खुल जाती है, सवेरेके वक्त सपने-भरी नींद आती है। सहजमें ही जगाया नहीं जा सकता और नींद खुलनेपर रोगी अपनेको क्लान्त और क्षीण अनुभव करता है (इसके विपरीत—पल्सेटिला)। मनमें ऊपरके ऊपर नाना प्रकारकी चिन्ताएँ उदय होनेकी वजहसे, बहुत रात गये कहीं नींद आती है। कोई यदि जगा नहीं देता तो थोड़ी नींद आनेपर भी उसे बहुत आराम मालूम होता है। सोनेके बादसे ही कितनी ही चिन्ताएँ उदय हो जाती हैं और रातभर नींद नहीं आने देती। सवेरेके वक्त सो जाता है और नींद खुलनेपर सभी लक्षण बढ़ जाया करते हैं। दिनमें बार-बार जम्हाई और औंघाई आती है। अधिकांश स्थलोंपर "नक्स-वोमिका"का रोगी चित्त होकर सो जाया करता है (ऐकोन, ऐनाक, ब्राई, कैल्के, कैलि-कार्ब, लाई, नेट्र-म्यू, स्ट्रैन ; पट होकर सोता है—ऐब्रोट, सिना)। नींदके समय जोरसे नाककी आवाज़ होती है। नींदमें डरकर चौंक उठता है और गों-गों किया करता है, रोता है और बहुत बकता है ; प्रलाप ; शय्यासे भाग जानेका दुर्दमनीय आवेग, नाककी ध्वनि मिला या सांय-सांय शब्द करनेवाला श्वास-प्रश्वास ; रोगी चित्त होकर माथेपर दोनों हाथ रखकर सोया रहता है। स्वप्न—अद्भुत, हँसानेवाले, भयंकर कामोद्दीपक ; निष्ठुरतापूर्ण भयंकर कामोंके अथवा ध्यान और चिन्ताके विषयके स्वप्न देखता है ; नरकका कीड़ा, टुकड़े-टुकड़े की हुई लाश, दाँत उखाड़ना, दिनमें किये हुए लेन-देनके काम या तुरन्त करने योग्य गृहस्थीके कामोंके सम्बन्धमें सपने देखता है।

ज्वराधिकारमें ।—समय—रातमें या सवेरे, ६ बजेसे ७ बजेतक और दिनमें ११ बजे। यदि संध्याके समय बोखार आता है तो वह रातभर रहता है (लाई, पोलिपो, पल्स, रस)। सूचना या ज्वरकी पूर्वावस्थामें उरु और दोनों पैरोंमें खींचनकी तरह असह्य दर्द होनेकी वजहसे रोगी एक बार तो दोनों पैर सिकोड़ लेता है, पर फिर फैला देता है ; बहुत सुस्ती और हाथ-पैरोंका सुन्न हो जाना। शीतावस्था—प्यास न रहना और सवेरे शय्यासे उठनेपर जाड़ा लगना ; शीत प्रचण्ड, कम्प पैदा करनेवाला—प्रायः दो दण्ड या तीन चौथाई घण्टे तक स्थायी रहा करता है ; चेहरा और हाथ ठण्डे और नीले दिखाई

देते हैं, इसके बाद ही प्रचण्ड उत्ताप, त्वचा पसीनेसे तर। प्रतिबार पहली बारकी अपेक्षा पहले आविर्भाव या आनेवाला सवेरेके समयका बोखार,—सर्दी मालूम होनेके समय हाथ-पैरोंमें दर्द, बार-बार जम्हाई आना ; नख-सब नीले रंगके हो जाते हैं (सिड्रो, इयुपेट-पर्फोल, नेट्र-म्यू, थूजा); प्यास नहीं रहती, इसके बाद बहुत देरतक रहनेवाला बोखार आ जाता है और प्यास भी बढ़ जाती है (नेट्र-म्यू), कनपटीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द और पीठ तथा हाथ-पैरोंमें शीत मालूम हुआ करता है, इसके बाद ही सवेरे थोड़ा पसीना निकलता है और शरीरकी त्वचामें बहुत दर्द हुआ करता है, मानो शीतसे जम गया है और प्रत्यंगोंमें ऐसा सुन्नपन मालूम होता है, मानो झुनझुनी आ गयी हो। तीसरे पहर बोखार—जाड़ा मालूम होता है और नख सब नीले हो जाते हैं, अन्तमें सारे शरीरमें उत्ताप, हाथमें जलन और पानीकी प्यास पैदा हो जाती है ; पानी पीनेपर कपकपी बढ़ जाती है (कैप्स, युपेटो) ; पानी पीनेपर जल्द ही जाड़ा पैदा हो जाता है (आर्स-युपेट ; पानी पीनेपर शीतका घटना—कास्टि) ; समूची देह ठण्डी मालूम होती है, दोनों हाथ और देह नीली हो जाती है, अंगीठीकी गरमी या गर्म कपड़ेसे शरीर ढंक लेना—किसी तरह भी जाड़ा नहीं घटता। शीतावस्थामें नितम्बमें दर्द मालूम होता है (पीठके मध्यकी कशेरुकामें दर्द—चिनिन-सल्फ)। शीतके बाद रोगी सो जाता है। उत्तापावस्थामें—बहुत प्यास ; बहुत दिनोंतक ज्वर भोगा करता है ; शरीरपर ओढ़ना असह्य मालूम होता है, पर जरा भी हिलने-डोलने या कपड़ा खोलनेमें अनिच्छुक—बेल) ; देह बहुत उत्तापयुक्त और समस्त देहमें जलन हुआ करती है, फिर भी रोगी शरीरका ओढ़ना उतार नहीं सकता (ओढ़ना दूर फेंक देता है—सिकेलि)। पसीनेवाली अवस्था—प्यास नहीं रहती (प्रबल प्यास—आर्स, चायना) ; पसीना प्रायः बहुत थोड़ा हुआ करता है और इस अवस्थामें शरीर हिलाने या शरीरमें थोड़ी भी हवा लगनेपर जाड़ा मालूम होता है, पसीना निकल जानेपर हाथ-पैर आदिका दर्द घट जाता है (इयुपेट, लाई, नेट्र-म्यू ; पसीना निकलनेपर तकलीफका बढ़ना—मर्क) ; पसीना और जाड़ा पर्यायक्रमसे पैदा होता है (ऐण्टि-क्रूड ; हमेशा बहुत जाड़ा मालूम होता है या बहुत ज्यादा पसीना निकलता है—कास्टि ; पसीना एक पार्श्वमें खासकर दाहिने पार्श्वमें) या केवल शरीरके ऊपरी अंशमें पसीना निकलता है (एकोन, चायना, ऐ-नाई, पल्स)।

बच्चोंका सविराम ज्वर।—कम्प पैदा कर देनेवाला शीत और शरीरकी त्वचापर बून्द-बून्द जैसा दाग, विशेषकर ढका हुआ अंश। सवेरेका प्रकोप बहुत ही प्रबल होता है—शरीरकी त्वचापर बून्द-बून्दकी तरह नीले दाग रहते हैं। शीत और ज्वरके समय बहुत प्यास रहती है—बहुत आक्षेप पैदा हो जाता है, यहाँतक कि धनुष्टंकारतक पैदा हो जानेकी सम्भावना पैदा हो जाती है, ठीक उसी समय जब कि शीत दूर हो जाता है, पसीना निकलना आरम्भ होता है। कब्जियत और बार-बार वृथा मल-वेग, विशेषकर स्तन पीनेवाले बच्चोंका ; भूख न लगना, पेशाब लाल रंगका और बदबूदार साधारणतः खुसखुसी सूखी खाँसीके साथ।

वृद्धि।—रातके ४ बजने बाद नींद खुलनेपर, आधी रातके बाद, मानसिक परिश्रम करनेपर, क्रोध आ जाने बाद, निर्मल वायु लगनेपर, पहली बारके भोजनके पहले, सर्दी रुक जाने बाद, ठण्डी हवा लगनेपर, सूखी हवामें खाँसनेके समय, शराब आदि पीनेपर, बहुत ज्यादा खा लेनेपर या कुछ खाने बाद हो ; माथा घुमानेपर, माथा खोलनेपर, मतवाले होने और चित्त होकर सोने बाद, आर्त्तव-स्रावके अन्तमें, नींद लानेवाली दवा आदि सेवनसे, आवाजसे, काफी पीनेपर, ठण्डी चीजें खानेपर, ठण्डा पानी पीनेपर, वीर्य-स्खलनके बाद, पहने हुए कपड़े आदिके दबावसे, पाचन-क्रियामें विकार होनेपर, पाखाना हो जानेपर, पेशाबके पहले, निर्मल वायु सेवनार्थ टहलनेके समय, जम्हाई आनेके समय और रातमें नींद खुलनेपर, जाड़ा और ठण्ढा पानी लगनेपर और पानीमें भींजनेपर, धूपमें (सर-दर्द) शरीर छूते हो और गाना सुननेपर। सवेरे बढ़ना इसका एक प्रधान लक्षण है।

उपशम।—जलीय वायुमें (कास्टि) ; गर्म कपड़ेसे माथा ढक लेनेपर, निर्मल वायु लगनेपर (अश्मान और श्वासरोग), विश्रामसे, करवट बदलकर सोनेपर. दबानेपर, संध्याके समय मलनेपर, कमरका कपड़ा ढीला कर देनेपर, गर्म घरमें, उत्ताप लगने और गर्म चीज़ खानेपर। वायु निकलने और शय्यापर सोनेके समय।

सम्बन्ध।—अनुपूरक।—सलफर (कैलि-कार्ब)।

दोषघ्न। - शराब, काफी, ऐकोन, बेलाडो, कैम्फ, कैमो, काफि, ओपियम, प्लेटि, स्ट्रैमो, थूजा।

अनुकूल सम्बन्ध ।—आर्स, इपिक, फास, सिपि, सल्फ इत्यादिके बाद नक्स और नक्सके बाद ब्राई, कोबाल्टम, पल्स और सल्फका व्यवहार करनेसे विशेष लाभ दिखाई देता है। नक्सका व्यवहार करनेके बाद पल्सेटिलाकी अपेक्षा सिपिया बहुत फायदा दिखाया करता है।

सदृश ।—साइक्यूटा, ऐ-हाइड्रो, बेल, ऐकोन, कार्बोन-हाइड्रो, फाइजस, फाइटो, कुरारी, कैम्फो, इग्ने, नक्स-मस, मस्कस, आर्स, बिस्मथ, लाई, क्रियो, पल्स, कार्बो-वे, नेट्र-सल्फ, जिंञ्जिबार, सिपिया, बेलेडो, कैमो, कैलि-कार्ब, ब्राई, कार्डियस-मेरी, केस्टोर, कास्टि, काक्यु, कोलिन्सो, कोबाल्ट, लैके, लिडम, मर्क, ओपी, स्टैफ, सल्फ।

तुलनीय ।—दमा—कार्बो-वे, लाइकोपो, नेट्र-सल्फ; गुह्यावरक पेशीका पक्षाघात—सिपिया, बेलाडो, सलफर। आर्त्तवके समय रूखा मिजाज—कैमो। रात्रि-जागरण, चैतन्याधिक्य—काकुलस। हत्या करनेकी इच्छा—हिपर, आर्स। पाखानेके समय मूर्च्छा—नक्स-मस्कोटा, डिजि। अर्श—इस्कुलस। श्वेत-प्रदर—ऐग्नस, कार्बो-ऐनि। खून मिला पसीना—लाइको, कैल्के। मैथुनके अपव्यवहारके कारण ध्वजभंग—कैल्के, सल्फर। मूत्र-पथरीका शूल—ओपियम। गलेका—एपिस। नाक बन्द—कैमो।

धनुष्टंकार ।—विरेट्रिन, साइकि, बेलाडो, आयोड, कुरारी।

मस्तिष्क-मेरुमज्जाकी बीमारी ।—पिक-ऐसिड।

स्नायुप्रधान स्त्रियोंकी मूर्च्छा ।—इग्नेसि, नक्स-मस्कोटा।

पाकाशयका विकार ।—बिस्मथ, आर्स, लाइकोपो, सल्फ, कार्बो।

शक्ति ।—१म से १००० क्रम और उससे भी ऊँचा क्रम।

क्रियाका स्थायित्व ।—१५ से २१ दिन।

विशेष द्रष्टव्य ।—पुरानी या जो बहुत नयी हो, ऐसी बीमारियोंकी चिकित्सा करनेके समय नक्स-वोमिका सोनेके समय या सोनेके दो घण्टे पहले प्रयोग करना चाहिये—कारण जब देह और मन स्थिर रहता है, उस समय इसकी क्रिया उत्कृष्ट होती है।

निकटेन्थिस

(NYCTANTHES)

दूसरा नाम ।—शेफालिका ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मार्च और एप्रिल महीनेमें संग्रह किये हुए ताजे पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह सविराम ज्वर, पित्त-ज्वर, वात, कटि-स्नायुशूल (साइटिका) और बच्चोंकी कब्जियतमें व्यवहृत होता है ।

नये और पुराने बोखारमें सर्दी मालूम होनेके पहले या सर्दी आरम्भ होनेपर प्यास, ज्वर छूटनेके समय तीता वमन और थोड़ा पसीना इसका निर्देशक लक्षण है ।

शक्ति ।—θ—३० ।

निम्फिया ओडोरेटा

(NYMPHOEA ODORATA)

दूसरा नाम ।—स्वीट वाटर लिलि ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़से अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—सवेरेका उदरामय (सल्फ)। कटिशूल, जखम बना देनेवाला श्वेत-प्रदरका स्राव, बदबूदार जखम, बहुत बलगम निकलनेवाली खाँसी और गलेका जखम लक्षणकी एक बढ़िया दवा है ।

इसके सेवनसे काम प्रवृत्ति घटती है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ऐग्नस, कैलि-ब्रोम, लाइको, सेलिन, सल्फ, जेहिम्बि ।

शक्ति ।—मूल अर्क और ३० शक्ति ।

ओसिमम कैनम

(OCIMUM CANUM)

दूसरा नाम ।—एक तरहकी तुलसी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्तेसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अण्डलाल मिला पेशाब ; स्तनमें दर्द ; बाघी ; मूत्र-पथरी निकलना ; अतिसार ; मूत्रग्रन्थिकी बीमारियाँ ; मूत्रका विकार ; योनि निकलना या भ्रंश ।

उपयोगिता और आभास ।—मसानेका शूल या मूत्र-पथरी निकलनेकी वजहसे शूलके दर्दमें ही इसका उपकार प्रसिद्ध है । प्रत्येक १५ मिनटका अन्तर देकर प्रचण्ड वमन, रोगी तकलीफ़से दोनों हाथ परस्पर मिलाकर मलता है, चिल्लाता है और गों-गों किया करता है ; प्रकोपके बाद लाल बालू मिला लाल रङ्गका पेशाब होता है इत्यादि कई इससे उत्पन्न मसानेके दर्दके प्रकृतिगत लक्षण हैं । कभी-कभी पेशाब केशरके रङ्गका होता है और कभी-कभी बहुत गाढ़ा, पीव-भरा और कस्तूरीकी तरह तेज़ गन्धवाला होता है ; स्त्री-जननेन्द्रियके ऊपर भी इसकी कई बहुत प्रयोजनीय क्रियाएँ प्रकट होती हैं जैसे—योनि-भ्रंश, स्तनमें स्पर्श बिलकुल ही सहन न होना और बच्चोंको स्तन पिलानेके समय स्तनमें भयानक दर्द होता है ।

लक्षणावली

मूत्रयन्त्र और पेशाब ।—पेशाब गदला, तलीमें सफेद रङ्गका लार-भरा पदार्थ गिरता है ; पेशाबका रङ्ग केशरकी तरह । मसानेके शूलके प्रकोपके बाद पेशाब लाल रक्त-वर्णका, तली जमा हुआ और ईंटके चूर्णकी तरह मालूम होता है । पेशाबके समय जलन मालूम होती है । गाढ़ा, पीव-मिला पेशाब, कस्तूरीकी तरह तेज़ गन्ध । मसानेका शूल, साधारणतः दाहिनी ओर, प्रत्येक पन्द्रह मिनटका अन्तर देकर भयानक वमन, तकलीफसे रोगीकी देह रुक्रूकी तरह चक्कर खाया करती है, रोगी चिल्लाता और गों-गों किया करता है और दोनों हाथ एकत्रकर दबाया करता है, मूत्रवाहिनी या मूत्रनालिकामें भयानक

दर्द मालूम होता है, मानो उसके भीतरसे अश्मरी या पथरी निकलती है (बार्बे, लाई, टैबाक), पुट्ठे की सब गांठें फूल उठती हैं।

पुं०-जननेन्द्रिय।—बायाँ अण्डकोष फूला, बहुत गर्म और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—योनिके बाहरी द्वारमें अस्त्र बेधनेकी तरह कष्ट; योनिका समूचा बाहरी भाग फूला हुआ। योनि-भ्रंश (स्टैफ), यहाँतक कि योनि-द्वारके बाहर भी आ पड़ती है। दोनों स्तनोंमें खुजली, स्तनकी ग्रन्थियोंमें खूनका अधिक सञ्चय होना। स्तन-वृन्तके अगले भाग सब बहुत दर्द-भरे होते हैं, जरा भी छू देनेपर रोगिनी चिल्ला उठती है। स्तनमें दबावकी तरह दर्द। बच्चेको स्तन पिलानेके समय, स्तनमें भयानक दर्द होता है।

ज्वराधिकारमें।—बहुत पसीना निकलना और पित्तकी वजहसे बोखार, विशेषकर बच्चोंका बोखार।

सम्बन्ध।—इसके बाद डायस्कोरिया विशेष उपयोगी है।

सदृश और तुलनीय।—कैल्के, बार्बेरिस, डायस्को, लाई, कोलो, पैरिरा-ब्राबा (मसानेका शूल), सिपि, स्टैन (योनि-भ्रंश) और फैलेन, क्रोटन-टिग, कास्टि, बैप्टी (स्तनमें दर्द)।

शक्ति।—प्रथम दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

इनैन्थि क्रोकेटा

(OENANTHE CROCATA)

दूसरा नाम।—हेमलक ड्राप वार्ट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़से मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः— अण्डलाल मिला पेशाब; संन्यास; स्तनमें दर्द; आक्षेप; खाँसी; मृगी; अन्ननलीका प्रदाह और संकोचन; प्रसवके बादका आक्षेप; गृध्रसी; वाक्‌रोध; पाकाशयका प्रदाह; धनुष्टङ्कार; जीभका फूलना और जखम।

उपयोगिता और आभास।—अपस्मार या मृगी रोगमें फायदेके लिये यह प्रसिद्ध है। जिन सब अपस्मार रोगोंकी प्रकोपावस्थामें वमन, कब्जियतके साथ आध्मान या अर्द्ध-कामोच्छ्वास वर्त्तमान रहता है या जो सब अपस्मार कामेन्द्रियके रोगसे उत्पन्न होते हैं—इनैन्थि-क्रोकेटा उनमें बहुत फायदा किया करता है। प्रकोपके समय रोगी मुर्देकी तरह ठण्डा हो जाता है, मानो कण्ठ-रोध होना चाहता है, उसमें इसी तरहकी आवाज़ होती है; सारे शरीरमें जलन और ज्वालामय उत्ताप मालूम होता है; हाथ-पैर आदि अवश, दोनों पैर फैले रहा करते हैं; कोई चीज़ निगलनेके समय गलेमें दर्द होता है और इसके सभी लक्षण पानी छू जानेसे बढ़ जाते हैं। रजःस्रावके समय और गर्भावस्थामें मृगीकी तरह आक्षेप बढ़ जाता है; एकाएक प्रबल भावसे शरीर अकड़ा और खिंचा करता है। जबड़े अटकना या दाँती लग जाती है, रोगी अपनी जीभ काटा करता है। इसके बाद ज्ञानलोप और प्रकोपके बादकी घटना सम्बन्धमें सम्पूर्ण विस्मृतिका उदय होता है, यहाँतक कि क्या हुआ था, यह भी उसे याद नहीं रहा; हाथ-पैर कड़े हो जाते हैं, मुँहसे फेन निकला करता है; मुँहकी पेशियोंके सिकुड़ने और फैलनेकी वजहसे भीषण हास्यभाव धारण करता है; चेहरा फूला, मेघसे ढँके रहनेकी तरह और नीला दिखाई देता है।

लक्षणावली

मन।—भयङ्कर प्रलाप, मानो मतवाला हो गया है; उन्माद; भ्रम-देखना। एकाएक बिलकुल ही होश न रहना। बहुत शराब पीनेकी तरह प्रलापावस्था, लगातार एक जगहसे दूसरी जगह जाता है, लगातार और बराबर बका करता है, समझ नहीं सकता कि लोग क्या कह रहे हैं। छायामय पदार्थको असली चीज़ समझकर पकड़ने जाता है। मृगी और उन्माद—एकाएक प्रचण्ड प्रकोपका आविर्भाव होता है। रजोनिवृत्तिकी अवस्थामें ऋतु होनेके समय मृगीका प्रकोप बढ़ जाता है। कोई यदि कोई बात पूछता है तो चिढ़ जाता है। प्रकोपके बाद बेहोशकी तरह भाव धारण करता है।

मस्तक।—माथेमें चक्कर आना और इस समय गिर जानेका उपक्रम, मिचली और वमन; श्वासरोध और आक्षेप; एकाएक पीछेकी ओर गिर जाता

है। संन्यास रोग हो जानेकी तरह अवस्था, चुप, बेहोश, चेहरा फूला और नीला; पुतलियाँ फैली और टकटकी लगी दृष्टि; कष्टकर श्वास-प्रश्वास; हाथ-पैर संकुचित; समूची देह, विशेषकर माथेमें बहुत दर्द मालूम होता है। कभी-कभी क्षणभरके लिये ऐसा मालूम होता है, मानो माथेमें बहुत गरमी पैदा हो गयी है। मस्तिष्कमें खूनकी अधिकता—शिराको भेदकर मस्तिष्कमें रक्तका गिरना; मस्तिष्कमें रक्ताम्बुका स्राव। केश झड़ जाते हैं। नाकसे खूनका स्राव।

आँख।—शिवनेत्र (लैके, ऐ-हाइड्रो, एपिस, आर्टिमि-वाल, हेलिबो) और स्थिर-दृष्टि। दोनों आँखें लाल। नींद खुलनेपर कोई चीज देख नहीं पाता। चारों ओर मेघसे घिरा मालूम होता है। पुतलियाँ फैली हुईं।

मुखमण्डल।—मुँहकी पेशीका तेजीसे आक्षेपिक संकोचन और प्रसारण। चेहरा फूला, नीला और अन्धकारमें ढँका, रक्तशून्य और बरफकी तरह ठण्डा; मुर्देकी तरह भङ्गी; चेहरेपर प्रेतकी तरह हँसी प्रकट होती है; दोनों ओंठ नीले हो जाते हैं। मुँह और नाकसे खून-मिला फेनका स्राव। मृगी रोगमें (कैलि-बाई, लोरो, लाइ, सैम्बल; प्रसवके बादवाले आक्षेपके समय खून निकलना या दाँती लगना, दोनों हनु आपसमें कसकर जुड़ जाते हैं। जीभ दाँतसे काट-काटकर आधी काट डालता है (आर्टिमि-वाल, बूफो, बेलिरो; चबानेके समय—ऐ-नाई; मृगी रोगके आक्षेपमें—ऐब्सिन्थ, आर्टि-वाल, कास्टि, ओपि, टेरेण्ट्; प्रायः काटता है—थूजा); जीभ जखम-भरी, स्पर्श सहन नहीं होता और फूली; बाहर निकली—ऐब्सिन्थ, ऐ-हाइड्रो, क्रोटन-टिग, एपिस, लैके, लाइ, मर्क)। अगला भाग क्षय हुई त्वचाकी तरह मालूम होता है; दोनों पार्श्व जखमसे भरे—साइकूट-वि, मर्क, ऐ-नाइ, साइलि) या निर्मल, तर और कम्पित (ऐबसिन्थ, मर्क, कैम्फो, कूप्रम, आर्स, जेल, हायो, लैके, ओपि, सिकेलि, स्ट्रैमो, टैबाक, इयुका)। मुख-विवर सूखा और लार-हीन। बोली न निकलना, कण्ठनालीके ऊपर अंगुलीसे दबानेसे दर्द और कुछ निगलनेके समय ऐसा मालूम होता है, कि जखम हो गया है। निगलनेकी शक्तिका न रहना।

पाकाशय और अन्त्राशय।—प्यास, ठण्डा पानी आदि पीनेका बहुत आग्रह प्रकट करता है, विशेषकर सन्ध्याके समय। गर्म पीनेकी चीजें

बिलकुल ही अच्छी नहीं लगतीं। बार-बार डकार। कष्टजनक हिचकी (मस्कस)। पाकाशयका शूल। मिचली और वमन। मिचली; घटना—वमनके बाद। आक्षेपके समय वमन दुर्दमनीय वमन, ऊपर-के-ऊपर कई दिनोंतक वमन हुआ करता है, किसी तरह भी नहीं घटता। पाकस्थली और उदरके ऊपरी प्रदेशमें जलन पैदा करनेवाला उत्ताप मालूम होता है (ऐसक्लिपियस-टियुब—मानो उदरके भीतरसे आगका सोता बह चला), पेट फूलना—पेट फूला और उसमें शूलकी तरह दर्द। ऐसी तकलीफ़ मानो अन्त्रमण्डली मोच खा रही है। पाकाशय और अन्त्राशयका प्रदाह, भयङ्कर यन्त्रणा और वमन हुआ करता है। धनुष्टङ्कारकी तरह आक्षेप रोगमें पेट फूलना। उदरका कोई अंश छूनेपर भयानक दर्द होता है।

श्वासयन्त्र।—श्वास-प्रश्वासमें तकलीफ़ और तेजी, श्लेष्माकी घड़घड़ाहट और बीच-बीचमें बराबर दीर्घ निश्वास त्यागना पड़ता है और खाँसी आया करती है; श्वास-प्रश्वास इतना क्षीण रहता है कि दूसरे मनुष्य उसकी गर्मी अनुभव नहीं कर सकते। उदर और वक्ष-व्यवधायक पेशीका सिकुड़ना और फैलना। स्वरनलीका संकोचन और उसमें जलन। चार-पाँच दिनोंतक रहनेवाली खाँसी; बढ़ना—रातमें, कण्ठनलीका ऊपरी अंश खुजलानेकी वजहसे खाँसनेके समय निम्न वक्षमें धकधक शब्द हुआ करता है। गाढ़ा, भारी, सफेद और पीले रङ्गका बलगम पीकदानमें लगा रहता है। थोड़ा फेनभरा तथा परिमाणमें ज्यादा रहता है। वक्षगह्वरके बायें पार्श्वमें दर्द; गहरे श्वास-प्रश्वाससे वृद्धि; जोरसे कलेजा रगड़नेपर घटना।

सार्वाङ्गिक।—मृगीकी तरह आक्षेप; भयङ्कर रूपसे सारा शरीर अकड़ा करता है और अन्तमें बेहोशी या गहरी नींद पैदा हो जाती है (आर्टिम-बल, हायो, नक्स, ओपि)। धनुष्टङ्कार या मृगीकी तरह आक्षेपकी बीमारीमें सरमें चक्कर आना, उन्माद, मिचली, वमन, होशमें न रहना, चेहरेपर प्रेत-जैसी हँसी और आँख ऊपर चढ़ी। एकाएक आक्षेप पैदा होनेपर दाँती लगना या जबड़े अटकना, जीभ काटना और इसके बाद एकदम बेहोश हो जाना (होशमें रहनेके साथ—कार्बोन-हाइड्रोजेन, नक्स-वोम, स्ट्रिकनिया)। आक्षेपके समय चेहरा फूला, नीला दिखलाई देता है और मुख-विवर तथा नाकसे खून-मिला फेन निकलता है। सब लक्षण पानी लगनेपर बढ़ जाते हैं।

त्वचा।—कुष्ठ और मछलीकी तरह शल्क विशिष्ट चर्मरोग अर्थात् रोगवाले अंशसे मछलीके चोयटेकी तरह छाल निकलती है (थाइराइडिनिम, हाइड्रोकेट, मिडोरिनम, सिफिलिनम) ; मुखमण्डलमें दाग-दाग लाली।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐब्सिथियम-आर्टिमिसिया, बल्गैरिस, ब्यूफो, साइक्यूटा-बाइरोसा, कार्बोनियम-हाइड्रोजेनिसेटम, कोनायम, इथ्यूजा और फेलैण्ड्रियम।

तुलनीय।—मृगीमें ब्यूफो ; लिङ्गोच्छ्वासमें पिक-ऐसिड।

शक्ति।—द्वितीय दशमिकसे छठां शततमिक क्रम। मूल अर्कका भी कितने ही व्यवहार किया करते हैं।

इनोथेरा बायेनिस

(OENOTHERA BIENNIS)

दूसरा नाम।—प्रिम रोज़।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—बच्चोंकी विसूचिका ; अतिसार ; मस्तिष्कमें जलसञ्चय।

उपयोगिता और आभास।—अनायास ही निकलनेवाला पतला पाखाना, विशेषकर यदि बहुत दिनोंकी पुरानी बीमारी हो, इनोथेरा उसकी अव्यर्थ सिद्धिप्रद दवा है, यहाँतक कि बहुत दिनोंतक पतला पाखाना होनेके कारण जैसा कि बच्चोंके मस्तिष्कमें जलसञ्चय रोगके कारण आच्छन्नावस्था हो ज़ाती है, उसी तरह होनेका उपक्रम होनेपर भी इससे बहुत फायदा हुआ करता है। मानसिक और शारीरिक गड़बड़ी, जड़ता और निष्क्रियता, सुस्त करनेवाला, पानीकी तरह और अनायास ही निकलनेवाला पतला पाखाना, स्नायविक अवसन्नता, सारे शरीरकी सुस्ती और पेशाबका प्रबल वेग तथा सारे शरीरमें गर्म पसीना निकलना ; पाखाना और पेशाब होनेपर घटना इत्यादि कई इनोथेराके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। ग्रीष्मातिसार और सूतिकाजीर्ण रोगमें या अतिसारमें यह विशेष हितकारी है।

लक्षणावली

मस्तक।—आच्छन्न भाव; रोगी तकियेसे माथा नहीं उठा सकता या बोल नहीं सकता (बहुत दिनोंतक उदरामय या अतिसार भोगनेपर ऐसी अवस्था हो जाया करती है और उस अवस्थाको मस्तिष्कमें जल-संचयकी उपक्रमवाली अवस्था कहते हैं)। सरमें तेज़ दर्द—ऐसा अनुभव होता है मानो माथा बहा जा रहा है (कैनाब-सैट, नक्स-मस); माथा खाली मालूम होता है, हाथ-पैर आदि अत्यन्त क्षीण और हृत्पिण्ड मानो धड़धड़ कर रहा है—ऐसा अनुभव होना; घटना—पाखाना पेशाब हो जानेपर। आँख नहीं खोल सकता (कास्टि, वेरेट, आप-से-आप बन्द हो जाती हैं—लैक-कैन, नेट्र-कार्ब, सिपि)।

मलान्त्र और मल।—दोनों पैर और अन्त्राशयकी पेशी कभी-कभी जकड़ जाती है और नाभीके कुछ नीचे ऐसा दर्द हो जाता है, मानो मोच खा गयी है। दुर्दमनीय मलवेग होनेपर, बिना कोई चेष्टा किये ही बहुत ज्यादा परिमाणमें स्वाभाविक मल निकलता है, इसके तीन घण्टे बाद एक बार और प्रायः आधी रातके समय और एक बार पाखाना होता है। इन अन्तिम दोनों बारोंका पाखाना पानीकी तरह और कमजोरी लानेवाला होता है। बच्चोंका ग्रीष्मातिसार। जीर्ण-शीर्ण व्यक्तियोंका पुराना उदरामय। सूतिकातिसार या प्रसवके बादका उदरामय,—रोगिनी बहुत उदास और पीली पड़ जाती है, खूनसे रहित और दुबली हो जाती है।

पेशाब।—समूची देहमें गर्म पसीना होते-होते प्रबल वेगसे पेशाबका वेग होता है (पसीना हो जानेपर यन्त्रणाजनक पेशाब—पैरिइरा-ब्रावा) और इसके कुछ ही बाद बिना परिश्रमके बहुत ज्यादा परिमाणमें फीका तर कषायत्व-रहित पेशाब होता है; एकसे चार घण्टेका अन्तर देकर इसी तरह तीन-चार बार पेशाब।

सार्वाङ्गिक।—सरमें बहुत अधिक चक्कर आना और इसी वजहसे चलनेकी शक्ति नहीं रहती; समूची देह इतनी सुन्न हो जाती है और कुटकुट करती है कि रोगी उन्मत्त हो जाता है; भयानक शीत पैदा हो जाना और अङ्ग-प्रत्यङ्गमें ऐंठन हुआ करती है; रोगी अपनी देह अच्छी तरह गर्म कपड़ेसे ढँककर मला करता है और गर्म पानीय पीनेके लिये आग्रह प्रकट करता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—उदरामयके सम्बन्धमें—नेफैलियम; जिरेनियम-मेक्यू, पालिनिया—सर्विलिस; ओपारिएटया; नूफर-लूटियम, कैलि-ब्रोम, इपिकाकुआन्हा; बहुत ज्यादा पेशाबके सम्बन्धमें—ऐसिड-ऐसेट, ऐसिड-लैक्टिक, ऐसिड-फास, इग्ने, जेल्स। पाखाना होनेपर आराम मालूम होना—ब्राई, कोलचि, कैलि-बाई; मर्क; गेम्बोज, नक्स-वोम, आक्साई-ड्रोप; पक्षाघातमें—जेल्स।

शक्ति।—मूल अर्क और प्रथम दशमिक क्रम।

ओलियैण्डर निरीयम

(OLEANDER NERIUM)

दूसरा नाम।—रोज़ लरिल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—कनेर वृक्षके पत्ते से अरिष्ट तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मस्तिष्कको बीमारी; अकौता; सर-दर्द; अतिसार; स्मरण-शक्तिको कमजोरी; सुन्न हो जाना; स्तन पिलानेवालियोंकी बीमारी; हृत्कम्प; पक्षाघात; वात; माथेमें उद्भेद; आक्षेप; तिर्यकदृष्टि; जीभपर लेप; सरमें चक्कर आना।

उपयोगिता और आभास।—बच्चोंका अजीर्णातिसार; माथेका खसड़ा वगैरह रोगोंमें यह बहुत ही लाभदायक है। क्षीण स्मृति, भूल जाना, नीचेकी ओर देखनेपर सरके दर्दका घटना, अर्द्धाङ्गका पक्षाघात, सरके पिछले भागसे खसड़ा वगैरहका उद्भेद आरम्भ होकर क्रमसे समूचे माथेमें आक्रमण करता है और माथेसे रूसी निकला करती है। माथा बहुत खुजलाया करता है मानो माथेमें जूँ पड़ गई हो। खुजलानेपर ऐसी उत्तेजना पैदा हो जाती है, मानो खाल उधड़ गयी है, सारा माथा रूसीसे भरा रहता है, उसमें स्पर्श सहन नहीं होता और बहुत खुजलाता है; गलेकी सब गांठें फूल जाती हैं और दर्द हुआ करता है; त्वचा सूखी और सहजमें ही फट जाती है या खाल उधड़ जाती है। अनजानमें पाखाना पेशाब होता है—बच्चा जितनी बार वायु त्याग करता है, उतनी ही बार अनजानमें पाखाना हो जाता है; पहले दिनकी खायी हुई चीजें अजीर्ण अवस्थामें निकलती है; कभी-कभी दृष्टि

लोप हो जाती है। कानमें भों-भों झम-झम शब्द हुआ करता है। ऐसा अनुभव होता है मानो भीतरी यन्त्र सब फैले जाते हैं,—बच्चेको स्तनसे दूध पिलानेके बाद माताकी देह फड़का करती है इत्यादि कई ओलियैण्डरके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—क्षीण स्मृति। जड़-बुद्धि—किसीके कुछ कहने या पढ़नेपर उसे सहजमें ही नहीं समझ सकता। बहुत अन्यमनस्क और किसी भी विषयमें मन नहीं लगा सकता। आलसी प्रकृति, किसी प्रकारका परिश्रम नहीं करना चाहता। प्रतिवाद सहन नहीं कर सकता—बहुत क्रोधित हो जाता है। मानसिक परिश्रमके बाद रह-रहकर उत्ताप पैदा हो जाता है। कल्पनामें भविष्यके महान सुखका चित्र अङ्कित करता है या काव्यमय कल्पना किया करता है। एकाएक चार क़दम चलने बाद बेहोश हो जाता है। एकाएक क्रोध आ जाता है और कुछ ही बाद अनुताप पैदा हुआ करता है (-क्रोकस-सैट)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आता है,—खड़े होनेपर दोनों पैर ढलमलाया करते हैं; सोने बाद उठनेके समय (साइक्यूटा, सल्फ) या किसी चीजकी ओर टकटकी लगाकर देखनेपर (कास्टि, लैके) या खड़े होकर नीचेकी ओर देखनेपर (स्पाइजि—ऊपरकी ओर देखनेपर—कैल्के, क्यूप्रम, ग्रैफा, लैके, प्लम्ब, टैबाक, थूजा); सरमें चक्कर आनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो देह घूम रही है; दृष्टिके सामने अँधेरा (ओपि) और आगकी चिनगारियाँ दिखाई देती हैं (सफेद रंगके तारे देखना—ऐल्यू); सोनेकी अवस्थामें करवट बदलनेके समय सरमें चक्कर आना (कैक्टस; कोना, सिफाइटिस, सल्फ)। माथेमें बहुत भार मालूम होता है—घटना—सोनेपर। सुस्ती मालूम होना—मानो बहुत अधिक कमजोरीकी वजहसे; उपशम—पसीना होनेपर। सर-दर्दका घटना—नीचे देखने या टेढ़ा देखनेपर दबानेकी तरह सर-दर्द, मानो एक भारी पत्थर मस्तिष्कको सामनेकी ओर धक्का दे रहा है और मानो ललाटको भेदकर मस्तिष्क बाहर निकल पड़ेगा। सर-दर्द,—बढ़ना—पढ़ने या माथा उठानेपर; घटना—सोनेपर या फिर उठते ही सर-दर्द बढ़ जाता है और मिचली पैदा हो जाती है। ललाटदेशमें दर्द, मानो वह फट जायगा। दुधिया

फोड़ा या माथेका अकौता ; खोपड़ीकी त्वचापर मानो जूँ पैदा हो गयी है, इसी तरहकी कुटकुटी होती है और खुजली पैदा हो जाती है ; वृद्धि—माथे और दोनो कानोंके पीछे ; घटना—खुजलाते ही, परन्तु खुजलानेके कुछ ही बाद जलन पैदा हो जाती है और ऐसा मालूम होता है, मानो जखम हो गया है और वह भी क्रमसे कुटकुटी और खुजलीमें परिणत हो जाता है ; वृद्धि—सन्ध्याके बाद वस्त्र उतारनेके समय। तर, पपड़ी जमे, कुटकुटानेवाले और खुजलानेवाले उद्भेद, विशेषकर माथेके पिछले भागमें (वायोला-ट्राई, विङ्का-माई, रस-विन, मेजिर)।

आँख।—दोनों आँखें गड़हेमें धँसी, ऊपरकी ओर खिंची, पुतलियाँ ज्योतिहीन। पलकें दोनों आप-से-आप मिल जाती हैं, मानो औंघाई आ रही है (कास्टि, नेट्र-कार्ब, सिपि, कोलो-फिल)। ऐसा दर्द होता है, मानो पढ़नेके कारण आँखोंपर बहुत दबाव पड़ गया हो। पढ़नेके समय आँखोंमें जलन और खींचन मालूम होती है। नीचेकी ओर देखनेपर अँधेरा दिखाई देने लगता है। रह-रहकर एकाएक दिखाई नहीं देता ; आँखोंके चारों ओर नीलापन। एक चीज़ दो देखना।

नाक।—रंध्रमें कभी-कभी ऐसा मालूम होना है, मानो चिपक गया है। कर्ण-पटहका प्रदाह, कानमें सों-सों, भिन-भिन, भों-भों इत्यादि नाना प्रकारके शब्द सुन पड़ते है। कानके चारों ओर और पीछे तर जखम (ग्रैफ)।

मुखमण्डल।—चेहरा मलीन और पतला (सवेरे आँख और दोनों गाल गड़हेमें धँसे) और दोनों आँखें नीले घेरेसे घिरीं। पर्यायक्रमसे चेहरा मलीन और गहरा लाल हो जाता है। ऊपरके ओंठ सुन्न और फूले मालूम होते हैं। मुँहसे फेन निकला करता है। जम्हाई लेनेके समय निचला हनु कांपा करता है। चेहरे और ललाटपर क्षय-कासकी गोटियाँ निकलती हैं। दाँतका दर्द,—केवल चबानेके समय। पेषण दन्तमें रातमें सोनेके समय खींचनकी तरह दर्द और इसी वजहसे उद्वेग, मिचली और बार-बार पेशाब हुआ करता है ; घटना—उठ बैठनेपर सब दाँतोंकी जड़ें ढीली मालूम होती हैं और मसूढ़े नीलापन लिये सफेद मालूम होते हैं। मुखविवर सूखा और जीभ मोटी तथा सफेद, लेपचढ़ी ढँकी। जीभ—चिकनी और सफेद लेप चढ़ी एवं बीचमें उठे हुए काँटोंसे भरी रहती है।

गलेके भीतर।—गलेमें जलन। ऐसा अनुभव होना मानो कण्ठके भीतर बाईं ओर ठण्डी हवा जाकर लग रही है।

पाकस्थली।—सभी भोजन सामग्री स्वादहीन मालूम होती है। मुँहमें लसदार स्वाद, अरुचिके साथ अत्यन्त भूख, तेजीसे खाता है और हाथ काँपते हैं। आहारके समय प्रबल शून्य उद्गार। बहुत प्यास, विशेषकर ठण्डे पानीकी। भोजनके बाद पाकस्थली खाली मालूम होती है; घटना—ब्राण्डी पीनेपर। वमन,—खायी हुई चीजें और कड़वी पीले रंगकी पानीकी तरह चीजें। वमनके बाद राक्षसी भूख और तेज़ प्यास (कोलचि)। उदरके ऊपरी भागमें टपक, मानो हृत्पिण्डकी गति सम्पूर्ण वक्षगह्वरमें अनुभूत हो रही है। पाकस्थली खाली मालूम होती है,—खाने और बच्चेको स्तन पिलाने बाद।

अन्त्राशय और मल।—उदरमें ऐसा दर्द मानो खोंचा मार रहा है, मानो पतले दस्तकी वजहसे पैदा हुए दर्दकी तरह हो। नाभि-प्रदेशमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द। पेटमें हुड़-हुड़ गुड़-गुड़ आवाज़ हुआ करती है और इसके बाद बहुत ज्यादा परिमाणमें बदबूदार आध्मान वायु निकलती है। निष्फल मलवेग। पेटमें गड़गड़ाहट होने बाद अण्डेकी तरह गन्धमिली आध्मान-वायु निकलना। गर्भावस्थामें पहले पतला और उसके बाद कड़ा पाखाना बड़ी तकलीफ़से निकलता है। अजीर्णातिसार, पहले दिनकी खायी हुई चीज़ अजीर्ण अवस्थामें निकलती है, अजीर्ण मल प्रायः अनजानमें निकल जाता है—वायु त्यागनेके समय मल निकल जाता है (ऐकोन, ऐलो, कास्टि, नेट्र-कार्ब, ऐ-फास, वेरेट)। बच्चा जभी वायु छोड़ना चाहता है, तभी उसके वस्त्र खराब हो जाते हैं। पुराना अजीर्णातिसार, सवेरे बढ़ना।

पेशाब।—पेशाब ज्यादा होना। पेशाब भूरा, जलन करनेवाला; उसकी तली सफ़ेद आभा लिये। बार-बार पेशाब, विशेषकर काफी पीनेपर।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बच्चेको स्तन पिलाने बाद माताका शरीर फड़का करता है और रोगिनी इतनी कमजोर हो पड़ती है, कि उसमें एक कमरेसे दूसरेमें जानेकी शक्ति नहीं रहती (कार्बो-ऐनिम)।

श्वासयन्त्र ।—तालुमूलमें खुजलीकी वजहसे शरीरको हिला देनेवाली खुसखुसी खाँसी। वायुनलीमें गोंदकी तरह गाढ़ा श्लेष्मा सञ्चित रहता है। श्वास-प्रश्वासके समय बाएँ वक्षमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द। सोनेके समय श्वास प्रश्वासमें बाधा पड़ती है (वक्षगह्वर अत्यन्त संकीर्ण और न फैलनेवाला मालूम होता है और रोगी दीर्घ तथा प्रगाढ़ श्वास-प्रश्वासकी क्रिया करता है, वक्षगह्वर बहुत संकीर्ण मालूम होता है—ऐगार, ऐसिड-कार्बोल, ग्रैफा, सेनेगा)। घरघर शब्द करनेवाला श्वास-प्रश्वास (ओपि, स्पञ्जि, कैमो, ग्लोन, नक्स-मस)। वक्षमें शून्य और ठण्डा मालूम होना। उदर और वक्ष-गह्वरको अलग करनेवाली पेशीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; हृत्पिण्डके ऊपरी प्रदेशमें धीमा खींचनकी तरह दर्द ; झुकनेपर बढ़ना। हृत्स्पन्दन ; वक्षके भीतर खालीपन और क्षीणता तथा उदरके ऊपरी भागमें पूर्णता मालूम होना। उद्वेगजनक हृत्स्पन्दन, ऐसा मालूम होता है मानो वक्षगह्वर फैलता जा रहा है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—गलेके पार्श्वकी दोनों धमनियाँ स्पन्दित हुआ करती हैं। दोनों बाँह उठाते समय ऐसा दर्द होता है, मानो उखाड़े जा रहे हैं। लिखनेके समय हाथ काँपा करते हैं। अंगुलियाँ सब अकड़ी, फूली और जलनभरी रहती हैं। हाथकी सब शिराएँ फूल जाया करती हैं। कलाईके भीतरकी ओर और अंगुलीमें अकौता सब कड़े हो जाते हैं और अंगूठा तलहत्थीकी ओर मुड़ जाता है (इनैन्थि)। नितम्बके ऊपर ऐसा दर्द मानो कुचल गया है। दोनों जघनोंके बीचमें अकौता निकलना। दोनों पैर बहुत क्षीण मालूम होते हैं और चलनेके समय पैरका तलवा सुन्न मालूम होता है, मानो उसमें झुनझुनी पैदा हो गई है। खड़े होनेपर दोनों जानु काँपा करते हैं। दोनों पैर बराबर ठण्डे रहते हैं। पैर और दोनों चरणोंमें यन्त्रणा-रहित पक्षाघात। हाथ-पैर दोनों अकड़े और ठण्डे ; पेशियोंमें शक्ति नहीं रहती ; पेशियोंका प्रचण्ड संकोचन ; शरीरके ऊपरी अंशमें और बाएँ पार्श्वमें ही अधिक। एकाएक श्वास-क्रिया रुककर बेहोशी आ जाती है—पसीना निकलनेपर अच्छा हो जाता है, बहुत सुस्ती, मानो मृत्यु बहुत ही पास है।

त्वचा ।—बहुत ही खुजलानेवाले दाने निकलते हैं और खुजलानेपर खून और रस निकला करता है और जखममें परिणत हो जाते हैं। बाहरी अङ्गका शोथ। सामान्य कारणसे ही शरीरकी त्वचा फट जाती है (ग्रैफ);

पसीनेका अभाव (नक्स-मस, पेट्रोल)। वस्त्र आदि उतारनेके समय सारा शरीर पिटपिट किया करता है और खुजली पैदा हो जाया करती है; खुजलानेपर जलन और क्षय हुई त्वचाकी तरह खाल उधड़ जाने जैसा मालूम होना। जरा भी रगड़ लगनेपर त्वचा क्षय हो जाती है; गलेमें और मुष्क तथा उरुके बीचकी जगहमें अधिक।

निद्रा।—निचले हनुका काँपना और बार-बार जम्हाई आना, जाड़ा लगना और पेशियोंमें सिहरावनके साथ सोनेकी इच्छा। सवेरे बड़ी तकलीफ़से नींद खुलती है (एपिस, आर्ज-नाई)। कामोद्दीपक सपना और वीर्यस्खलन। रातमें नींद न आना और बेचैनी; चञ्चल निद्रा, बार-बार नींद टूट जाती है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—जाड़ा लगना; शारीरिक उत्तापका न रहना या भीतरी उत्ताप और बाहर शीत मालूम होना; प्यासका न रहना। कभी-कभी सारे शरीरमें शीत मालूम होता है; चेहरा गर्म और दोनों हाथ बरफकी तरह ठण्डे। कभी-कभी एकाएक उत्ताप पैदा हो जाता है, शारीरिक या मानसिक परिश्रमके बाद बढ़ना।

दोषघ्न।—प्रतिविष।—कैम्फोरा, सलफर (पुराना)।

अनुकूल सम्बन्ध।—बेल, ब्राई, कैल्के, कोना, लाइको, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वोम, पल्स, रस, सिपि, स्पाइजि, सल्फ।

सदृश।—ऐनाकार, सिङ्को, क्लिमेट, काक्यु, नक्स-वोम, स्टैफ। अजीर्णातिसारके सम्बन्धमें—ऐब्रोट, सिङ्को, फेरम, आयोड, आर्स, आर्जेण्ट-नाई, एपिस, ऐसिड-फास, फास (डा० फेरिङ्गटन कहते हैं कि इस स्थानपर ओलियेण्डरके साथ नीचे लिखी कई दवाओंकी पर्यालोचना करनी चाहिये:—फेरम—अजीर्ण पदार्थ-मिला पतला मल निकलना, बिना दर्दका और प्रायः भोजनके समय वेग पैदा हो जाता है, आर्सेनिकम—ठण्डी चीजें खानेकी वजहसे उदरामय; मल पीला और जलन पैदा करनेवाला; अन्य समयकी अपेक्षा आधी रातके बाद बढ़ जाता है, आर्जेण्टम-नाइट्रिकम—पानी पीते ही पाखानेका वेग होता है, सिङ्कोना—अजीर्ण खाये हुए पदार्थ मिला पानीकी तरह मल, सुस्ती लानेवाला और भोजनके बाद अनजानमें निकल जाया करता है, इसका उदरामय प्रायः फल खानेपर बढ़ता है, एपिस मेलिफिका—बाल-

विसूचिका रोगमें खुले हुए मलद्वारके साथ अनजानमें मल निकलना, फास्फोरस और ऐलोज़—मलद्वारावरोधक पेशीमें संकोचनकी शक्ति न रहनेकी वजहसे अनजानमें मल निकलना। फास्फोरसका लक्षण—मलान्त्रमें मल प्रवेश करते ही खुले हुए मलद्वारसे बाहर निकल जाता है। दुधिया फोड़ोंके सम्बन्धमें—वायोला-ट्राई, विङ्का-मर्क, रस-विन, मेजिर, सोरिन, वैसिलिनम)।

वृद्धि।—खुजलानेके कुछ देर बाद; रगड़ खानेपर; घरके बाहरकी हवा लगनेपर; चबानेके समय; उठनेके समय; झुकनेके समय; पढ़ने या किसी तरहका मानसिक या शारीरिक परिश्रम करनेपर; संध्याके बाद वस्त्र उतारनेपर; सवेरे और नीचेकी ओर देखनेपर।

घटना।—नीचेकी ओर देखनेपर, सोनेपर, खुजलाते ही, ब्राण्डी पीनेपर, पसीना निकलनेपर, टहलनेपर (दोनों उरुकी अकड़न) और शय्यासे बाहर निकलनेपर (दन्त-शूल)।

शक्ति।—३x दशमिकसे २०० शततमिक और उससे भी ऊँचा क्रम।

ओलियम ऐनिमेल

(OLEUM ANIMALE)

दूसरा नाम।—ओलियम कर्णुसार्वाइ। डिपेलस आयल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—हरिनकी सींग, हाथी-दाँत और दूसरी-दूसरी हड्डियोंको गलाने बाद चुआकर यह अरिष्ट तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—दमा; स्तनकी बीमारी; कैन्सर या कर्कटका जखम; कब्जियत; सर्दी; मुँहका पक्षाघात; प्रमेह; बहुत पेशाब; मूत्राधार-सुखशायी-ग्रन्थिकी बीमारी; रेतो-रज्जुका स्नायुशूल; अण्डकोषका स्नायुशूल और ऊपरकी ओर खिंचना।

उपयोगिता और आभास।—स्नायुविधानके ऊपर, विशेषकर फेफड़े और पाकाशयके स्नायुके ऊपर इसकी अधिकांश शक्तिका परिचय पाया जाता है। अधकपारीका दर्द और रेतोरज्जके स्नायुशूलमें यह विशेष लाभदायक हुआ

करता है। शरीरके सभी अंशोंमें जलन; वक्षमें मानो जलती हुई सुई गड़ रही है ऐसा दर्द; ऐसा अनुभव होता है, मानो दोनों जबड़ोंकी हड्डियाँ बड़े वेगसे ऊपरकी ओर खिंच रही हैं; ऐसा दर्द मानो दोनों अण्डकोष ऊपरकी ओर खिंच रहे हैं; स्वच्छ और निर्मल पेशाब अधिक होना, अधकपारी या शिरार्द्ध-शूल रोगमें पैरका पसीना रुकनेकी वजहसे श्वासरोग, ऊपरी पंक्तिके दाहिने पार्श्ववाले पेषण-दन्तोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, अंगुलीसे दबानेपर आराम होता है; ऐसा मालूम होता है कि पाकस्थली मानो पानीसे भरी है (फैलेन)। दोनों ओठोंका फड़कना और निचले हनुका दाहिनी ओर नीचेकी तरफ सूजना; मुँहमें चर्बीका स्वाद और रुईकी तरह सफेद रङ्गका श्लेष्मा सञ्चित होता है। गालके भीतरवाली झिल्ली शिथिल हो पड़ती है और रोगी भोजनके समय बार-बार उसे काटता है, मानो जल गई हो; इस प्रकारकी स्पर्श-असहिष्णुता। ओंठ चरमराति हैं, मानो उनपर गोंद या अण्डलाल सूख गया हो (ओंठ मानो गोंद-भरे—स्ट्रैमो, जिङ्क), गर्मीके दिनोंमें भी ऐसा मालूम होता है, मानो गलेमें ठण्डी हवा घुस रही है; अच्छी तरह सिझाया हुआ अण्डा खानेकी इच्छा और मांससे अरुचि; पेशाबकी गन्ध और जलन पैदा करनेवाली डकार; सर उठानेपर गलेकी कशेरुका कड़कड़ाती है, मानो माथेकी ओर खून दौड़ रहा है, मानो हाथके अंगूठे और पैरकी अंगुलीमें जखम उत्पन्न हो गया है, ऐसा मालूम होना; बहुत आलस्य और बैठे रहनेकी इच्छा; बोलना पसन्द नहीं करता; रूखा स्वभाव इत्यादि कई इसके प्रकृतिगत लक्षण हैं। बाएँ अङ्गके साथ इसकी अधिक घनिष्टता प्रकट होती है।

लक्षणावली

मन।—विषन्न भाव; अन्यमनस्क; हमेशा मन भारी रहा करता है, निरन्तर कामोद्दीपक चिन्ता और भाव।

मस्तक।—मस्तिष्ककी जड़ता, मानो गहरी चोटकी वजहसे ऐसा हो गया है। मूर्द्धादेशमें दबाव मालूम होना, यह दबाव क्रमसे माथेके पिछले भागमें हट जाता है। झुकनेपर माथा खाली मालूम होता है और माथेमें चक्कर आता है। सवेरे शय्यामें रहनेके समय बहुत बेचैनी पैदा करनेवाला शरीरमें चक्कर मालूम होता है और माथा खाली मालूम हुआ करता है। माथेके बाएँ

पार्श्वमें सुन्नता और पक्षाघातसे आक्रान्त होनेकी तरह अनुभव होना। ललाटके पिछले भागमें दर्द, थोड़ा भी मानसिक परिश्रम करनेपर। सन्ध्याके बाद भोजन करनेपर माथेके पिछले भागमें दर्द आरम्भ होकर सामनेकी ओर चला आता है (सामनेकी ओर आकर दाहिनी भौंपर ठहर जाता है—सैङ्गियु, साइलि; बाईं भौंपर ठहरता है—स्पाइजि)। अधकपारीका दर्द; मस्तिष्ककी जड़में टपक, रोगवाले पार्श्वकी आँखमें टपक मालूम होती है; वृद्धि—माथा हिलाने, परिश्रम करनेपर और खा लेनेपर। घटना—चलनेपर। सरके पिछले भागके बाएँ पार्श्वमें दर्दकी वजहसे रोगीको बाध्य होकर सामनेकी ओर माथा बढ़ाकर रखना पड़ता है। खोपड़ीकी त्वचामें बहुत खींचन मालूम होती है और ऐसा मालूम होता है, मानो नश्तर लगाने बाद जोड़ दिया है। गर्म कमरेमें प्रवेश करनेपर ऐसा मालूमा होता है, मानो माथेके पिछले भागमें खूनका दौरान हो रहा है। विषाद और उत्तेजना प्रवणताके साथ माथेमें फाड़नेकी तरह दर्द; वृद्धि—संध्याके भोजनके बाद; घटना—मलनेपर। कर्णपटहका प्रदाह—कानमें सों-सों ढं-ढं आदि नाना प्रकारकी आवाजें; वृद्धि—गड़बड़ीसे। सरके पिछले भागमें चबानेकी तरह दर्द (ग्लोन, नेट्र-सल्फ़)।

आँख।—आँखें इस तरह करकराती हैं; मानो उनमें बालूके कण गिर गये हों (सिङ्की, फेरम, हिप, ऐ-फ्लू, आर्स, कार्बो-वेज, चेलिडो)। आँखमें खुजली, उत्तेजना और बेधनेकी तरह दर्द—अंगुलीसे रगड़नेपर सब आराम हो जाता है (कैप्स, सिना, क्रोकस, प्लम्ब, पल्स)। आँखमें जलन, निर्मल वायु लगनेपर या नींद खुलनेपर या संध्याके बाद दीयेकी रोशनी लगनेपर। आँखसे पानी गिरता है और रातमें आँखें सट जाती हैं। भोजनके समय आँसू गिरना, भौं और पलकें रह-रहकर फड़कती हैं (ऐगार, कोडाया)। बायीं आँखके ऊपर बार-बार स्पन्दन (एरम-ट्राई, जैट्रोफा, मर्क-पेरेन, मेजेर, स्ट्रान; दाहिनी ऊपरी पलकका फड़कना—फार्मिका, बेल, सार्सा)। लिखनेके समय तीसरे पहर दृष्टिका गदलापन। आँखके सामने मानो काले बादल आ गये हों (साइक्ला, लैक-डिफ्लो, प्लम्ब)। ऐसा अनुभव होता है कि आँखपर एक झिल्ली पड़ गयी है (ऐमिस, एपिस, फाइजस)। कभी-कभी एकाएक सुनने और देखनेकी शक्तिका लोप हो जाना।

नाक।—नाकके अगले भागमें खुजली और जलन। नाकमें एक तरहका अव्यक्त भाव और खुजली। नाकमें भीतरकी त्वचा क्षय हुई (ग्रैफ,

मर्क ; नये सर्दी रोगमें—ब्रोम, एरम-ट्राई, साइलि ; लगातार पानीकी तरह तरह स्राव होनेकी वजहसे—लैक-कैन)। घरमें रहनेके समय नासामूलमें खींचन और दबावकी तरह दर्द और नाक तथा माथा रुका हुआ मालूम होना, घरके बाहर जानेपर नाकसे लगातार बून्द-बून्द पानीकी तरह श्लेष्मा निकला करता है और मस्तकका रुद्ध भाव घट जाता है (सिपा)। नयी सर्दी,—नाकमें गाढ़ा श्लेष्मा सञ्चय होनेकी वजहसे नाक सट जाने जैसा अनुभव होता है। भयानक सूखी सर्दी। रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो उसकी साँसमें निकली हुई हवा बहुत बदबूदार है।

मुखमण्डल।—चेहरा म्लान और पीला। दोनों गाल और युगास्थि प्रदेशमें जलन (दोनों गाल जलन-भरे—रस, हाइड्रैस्ट, ; मानो जलती हुई सुई गड़ रही है—आर्स)। शरीर ठण्डा रहनेपर भी दोनों गाल लाल। गालपर खुजलानेवाले दाने निकलना। मुखमण्डलमें ऐंठनकी तरह और सुन्न कर देनेवाला दर्द, विशेषकर बाएँ पार्श्वमें। चेहरेके दाहिने आधे पार्श्वमें ऐसा अनुभव होना, मानो सुन्न हो गया है। इस ढंगका दर्द मानो गण्डास्थि बड़े वेगसे ऊपरकी ओर खिंच रही है। दोनों ओंठ खुजलानेवाले। दोनों ओंठ चरचराते हैं, मानो उनपर गोंद या अण्डलाल सूख गया है (मानो चेहरेपर अण्डलाल सूख गया है—ऐल्यू, बैराई, मैग-कार्ब, ऐसिड-सल्फ)। रातके अन्तिम भागमें निद्रित अवस्थामें दोनों ओंठ फड़का करते हैं (आर्स)। जबड़ेमें ऐंठनकी वजहसे मुँह नहीं फाड़ सकता (ऐङ्गास्टियुरा, मैङ्गनम)। मुँह फाड़नेके समय बाईं हनुसन्धिमें कड़ाक-सी आवाज़ होती है (लैकेसिस)। निचले हनुके नीचे सूजन।

मुख-विवर—दाँतमें दर्द,—खींचने और उखाड़नेकी तरह दर्द, अधिकांश समय कानसे दर्द आरम्भ होता है। कीड़े लगे (क्षय हुए) दाँतकी जड़में उखाड़नेकी तरह चिलक मारने या धक-धक करनेवाला दर्द, इसके साथ ही, दाँतका अगला भाग ठण्डा मालूम होता है। रातमें खानेके बाद ऊपरी पंक्तिके दाहिने पार्श्ववाले पेषण दन्तमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द (निचली पंक्तिके बाएँ पार्श्ववाले पेषक दन्तमें—जिङ्कम), अंगुलीसे दबानेपर आराम मालूम होता है। मुख-विवर सूखा और उसका स्वाद तीता। सवेरे नींद खुलनेपर मुख और कण्ठ सूखा मालूम होता है। मुँह और तालुमें

ऐसा मालूम होना मानो चर्बी लिपटी हुई है। मुँहमें बहुत ज्यादा बरफकी तरह सफेद लार सञ्चय होती है (सफेद रंगकी—आर्स, बेल, कैनाब-इन ; रूईकी तरह—आर्स, नक्स-मस)। गालके भीतरवाली झिल्ली इतनी फूला करती है कि रोगी खानेके समय उसे काटे बिना नहीं रह सकता (ऐनाई, कास्टि, इग्ने)। जीभ क्षय हुई त्वचाकी तरह मालूम होना, मानो जल गयी है (साइमिक्स, कोलो, हैमा, हाइड्रैस्ट, आइरिस, लोरो, लाई, प्लैट, प्रूणस, फाइटो, वेरेट-वि)। जिह्वामूलमें जलन,—जैसा धूम्रपानके बाद मालूम होता है। जीभमें जलन और करकराहट।

गलेके भीतर।—गलेमें दर्द मालूम होता है, मानो उसमें एक कड़ा पदार्थ घुस गया था, विशेषकर निगलनेके समय। सवेरे और संध्याके बाद कण्ठनालीका सङ्कोचन और गला रुकना (सोनेके समय एकाएक गला रुकना—ओलियम-येक)। ओकाई, कण्ठमें संकोचन और कण्ठमें सूखापन एवं खाल उधड़नेकी तरह मालूम होना। सवेरे कण्ठ सूखा और मानो उसमें ठण्डी हवा घुस रही है, ऐसा अनुभव होना, और रोगिनीको वाध्य होकर उसे बार-बार निगलना पड़ता है। कण्ठमें गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा सञ्चित होता है (कैलि-बाई, बैराई, सिपा, लिसिन, मर्क-प्रोट, रस, रियुमेक्स, ऐसिरम, ऐस्पारागस)। भोजनके बाद खाँसनेपर गाढ़ा गोंदकी तरह कफ निकलता है (कैलि-कार्ब, नेट्र-कार्ब, आइरिस, हाइड्रैस्ट)। पानी और खानेकी सामग्री सरलतासे निगली जा सकती है, पर खाली निगलनेपर तकलीफ़ होती है (लैके, पानी निगलनेमें तकलीफ़ होती है परन्तु कड़े पदार्थ निगलनेके समय आराम मालूम होता है—इग्ने)। गलेमें जलन।

पाकस्थली।—मुँहमें मिदमय स्वाद और लसदार भाव। रोटीके अलावा सभी तरहके भोजन और मांससे अरुचि। सिझाया हुआ अच्छा खानेकी बहुत इच्छा। खाये हुए द्रव्य आदिकी या पेशाबकी तरह स्वादवाली डकार (खाये हुए पदार्थका स्वाद मिली—ब्राई, हैमा, रैनान-सिलिरेट, सार्सा, ड्राम्बिड, कार्बो-वेज ; पहले दिनके पेशाबकी तरह गन्धवाला—ऐम्नस-कैस्ट ; लहसुनके गन्धकी—ऐसाफिट ; कस्तूरीके गन्धकी—कास्टि ; सड़ी गन्ध या बदबूदार गन्ध भरी—कार्बो-वेज, ऐ-फ्लू, प्लम)। बार-बार खाली डकार—मिचली और प्रबल वमनोद्रेक कम करनेवाला। एकाएक ओकाई और ऐसा अनुभव

होना मानो पाकस्थली उलट गयी है, दो डकारें आनेपर सब अच्छा हो जाना। पाकस्थलीमें अंगुली या हाथका दबाव सहन नहीं होता। पाकस्थली पानीसे भरी मालूम होती है (कैलि-कार्ब, ग्रैटि)। ठण्डा पानी पीनेपर पाकस्थलीमें और हृदयके अगले भागमें दर्द हुआ करता है (आइरिस ; बरफका पानी पीनेपर पाकाशयमें शूल—आर्स, कार्बो-वे, बरफका पानी पीनेपर पाकाशयमें दर्द—रस ; जल पीनेसे पाकाशयमें शूल-मैंन्सी ; रैफ) ; पाकस्थलीमें डंक मारनेकी तरह दर्द (बार्बा, आर्स) ; पाकस्थली जकड़ जाती है (ऐल्यू , बेल, चिनिन-सल्फ, लाई, मिनियैन्थ, मेजेर, निकोलम, मानो एकाएक फूल जाती है और फिर थोड़ी देर बाद एकाएक चिपक जाती है—मैंन्सि ; यन्त्रणाजनक सङ्कोचन—ग्रैफ, नक्स-वोम, मैग-कार्ब, ओपि) मानो पाकस्थलीमें कुछ घूम रहा है (क्रोकस, काक्यू, मानो अन्त्राशयमें कुछ हिलता है—एरण्डो, कैल्के-फास, कैनाब-सैट, कानवैल, क्रोकस, कुरारी, साइक्ले, सैबाई, सल्फ, थूजा) या मानो पाकस्थली उलट गयी। कभी पाकाशयमें बरफकी तरह ठण्डापन (कैम्प, हिपोमेनिस, लैकि-वाई) और फिर कभी ज्वालाजनक उत्ताप अनुभव हुआ करता है (फेरम, इनैन्थि-क्रो)। पाकस्थलीसे वक्षतक जलन और उत्ताप मालूम होना।

अन्त्राशय।—प्रत्येक बार श्वास-प्रश्वासके समय यकृतप्रदेशमें (ब्राई, ऐकोन, क्रोटेलस) और प्लीहामें (साँस लेने—कार्बो-वे, रैनान, साइलि) सलाई गड़नेकी तरह दर्द। पेट भारी और फूला और प्रत्येक बार शरीर हिलानेपर उसमें दर्द और स्पर्श-असहिष्णुता मालूम होती है (साइक्लेमेन)। गर्म पानीय पीने या खाद्यसामग्री खानेपर उदरमें नख गड़नेकी तरह दर्द। उदरामय रोगमें ऐसा दर्द मानो नाभि-प्रदेशमें कोई छुरी मार रहा है। पुट्ठेके स्थानसे लेकर अण्डकोषतक खींचनेकी तरह दर्द (मर्क)। उदरमें आध्मान वायु-सञ्चय, गड़गड़ाहट और हिलना। आध्मान वायुका चलना और पेट गड़गड़ाना। बार-बार बदबूदार हवा छूटना।

मलान्त्र और मल।—मलका कड़ापन,—मल परिमाणमें बहुत थोड़ा, कड़ा और भरपूर वेग दिये बिना नहीं निकलता ; स्वाभाविक मल भी पूरा जोर दिये बिना नहीं निकलता। मलका पतलापन,—पाखाना होनेके पहले, समय और बाद छेदनेकी तरह दर्द ; मलान्त्र और मलद्वारमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द (इस्कु-हिप, नक्स)। पाखाना होनेपर मलद्वारमें दर्द और जलन मालूम होना।

पेशाब ।—बार-बार पेशाबका प्रबल वेग, कूथन और थोड़ा पेशाब। मूत्राशयपर दबाव मालूम होना (ऐकोन, लिलि-टाई, नक्स-वोम, ऐ-फास, पल्स); पेशाबकी धार पतली (इयुपेट-पर्पि, जिम्नोक्लेड)। पेशाब फीका और बहुत ज्यादा परिमाणमें और पेशाबके कुछ बाद ही धुएँकी तरह तली जमती है। पीली आभा लिये पेशाब (आर्स, कैम्फो, चेलिडो, कैलि-कार्ब, ऐ-नाई, वेरेट, फेलैन)। गदला पेशाब—तली कीचकी तरह (ऐमोन-म्यूर, बार्बे, चिनिन-सल्फ, सिपि; सफेद आभा लिये कीचकी तरह तली—इयुपेट-पर्फोलि)। पेशाबके समय जलन। मूत्रमार्गमें खुजली (सल्फ, लिडम, पेट्रोसेलि, थूजा, एपिस, बोवि, कोपिबा, इण्डिगो, कैलि-म्यूर)।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—शिश्नमें खींचने, बेधने या छूरी मारनेकी तरह दर्द। शिश्नसूलमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द (बार्बे; बैठने या चलनेके समय—मैग-सल्फ; पेशाब करनेपर—ब्रैकि-ग्लोट, रेप)—तीसरे पहर। अण्डकोष या शुक्ररज्जुमें खींचनकी तरह दर्द (चेलिडो, हैमा, हिपोम, नेट्रम-कार्ब; बाएँ अण्डकोषमें—ऐङ्गास्टि; दाहिने अण्डकोषमें—ऐनागेल)। अण्डकोषकी सूजन और पीछेकी ओर खिंचना (क्लिमेट, नक्स, कैन्थ, प्लम्ब, स्ट्रैमो) और उसमें बहुत दर्द (ऐ-नाई, रोडो, क्लिमेट)। मूत्राधार सुखशायी-ग्रन्थिके भीतर दबाव मालूम होना। रातमें लिङ्गमें कड़ापन और वीर्यस्खलन (अरम-मेट, कैलि-ब्रोम)। अण्डकोष मानो कोई पकड़कर बड़े जोरसे ऊपरकी ओर खींच रहा है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—असमयमें ऋतु होना; बहुत थोड़े परिमाणमें काले रङ्गका रक्त-स्राव होता है (इग्ने, कैलि-फास, लैके, मैग-कार्ब, नक्स-वोम, पल्स, सल्फ; काला जमा हुआ—काक्यु)। स्राव आरम्भ होनेके पहले और स्रावके समय तलपेट और कमरमें छेदनेकी तरह और माथेके बाएँ पार्श्वमें और मूर्द्धदेशमें असह्य वेधनेकी तरह दर्द और हाथ तथा पैरमें शिथिलता मालूम होना (आर्त्तव-स्रावके समय कमरमें भयङ्कर यन्त्रणा—जैन्थक्स)। प्रदर—स्राव रसकी तरह श्लेष्मामय (काकुल, टैबाक; श्लेष्मामय—सिपि, ऐलूम, आर्ज-नाई, कोलोफिल, कक्कस, कोना, ग्रैफ, हिपोजिम, हाइड्रैस्ट, पेट्रोल, पोडो, पल्स)।

श्वास-यन्त्र ।—स्वर-भङ्ग और कण्ठमें रुखड़ापन (ऐमोन-कार्ब) और इसी वजहसे सूखी और छातीको फाड़ डालनेवाली खाँसी आती है (नेट्र-सल्फ, रोडो); स्वरभङ्गकी वजहसे ऊँची आवाजसे बात नहीं कर सकता (फास,

ओपि)। चित्त होकर सोनेपर श्वास-प्रश्वासमें बाधा पड़ जाती है, मानो तालुमूल संकुचित हो गया है (हाइपिर, लाई); करवट बदलनेपर फिर नहीं रहता। सीढ़ी चढ़नेके समय छातीमें दबाव मालूम होता है—उदराध्मानकी वजहसे (आर्स, सेनेगा)। वक्षमें इस तरहका दर्द, मानो रगड़ खा गया है (एपिस, पल्स, नेट्र-मूर, आर्नि, स्ट्रैम, रैनान-सिलिरेट)। वक्षके ऊपरी अंशमें और वक्षोस्थिके पास मानो जलती हुई सुई गड़ रही है (सुई गड़नेकी तरह—स्पाइजि ; नोकीली सलाई गड़नेकी तरह—ब्राई, कैलि-कार्ब, नक्स-मस, रैनान-बल्बो)। दाहिने कक्ष या बगलके भीतरसे होकर वक्षके भीतर सलाई गड़नेकी तरह दर्द ; जंघास्थि-प्रदेशमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द ; बाएँ स्तनके नीचे सलाई गड़नेकी तरह दर्द (ऐक्टिया-रेसि, कैलि-कार्ब, लिसिन)। खड़े रहनेकी अवस्थामें स्तनमें तेज़ बेधनेकी तरह दर्द, दर्द सामनेकी ओर फैलनेवाला (कोना, फेलेन); पैरका पसीना रुकनेकी वजहसे श्वास-रोग (सल्फ, साइलि)।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दन और पीठमें दर्द और स्पर्शका सहन न होना, अकड़न और कसावटका भाव। माथा उठानेके समय गलेकी कशेरुका मानो फूटती रहती है (निकोलम ; माथा झुकानेपर—ऐगार ; गर्दन हिलानेपर—चेलिडो, पेट्रोल); गलेके दाहिनी ओरकी पेशीकी खींचन और अकड़न, गर्दन हिलानेपर बढ़ती नहीं है ; परन्तु छूनेपर दर्द अधिक मालूम होता है। बाएँ स्तनके पीछे पीठमें महीन सुई गड़नेकी तरह दर्द। त्रिकास्थिमें कभी-कभी असह्य टपक और दबानेकी तरह दर्द। झुकने और बैठनेके समय कमरमें ऐसा दर्द मानो मोच आ गई है। उरु और जानुके पिछले भागमें खींचन मालूम होना, मानो कण्डरा (पेशीका शेष भाग) सब संकुचित हो गया है (ऐमोन-म्यूर, कास्टि)। चलनेके समय दोनों पैर अकड़े (इयुपेट, मर्क)। पैरके नीचे सुई गड़नेकी तरह अनुभव होना। दोनों पैरकी अंगुलियोंमें ऐंठन होती है, पैरकी बड़ी अंगुलीमें ऐसा दर्द मानो जखम हो गया है, विशेषकर नखके पास, हाथकी अंगुलीमें टनक और सुन्नता मालूम होना।

निद्रा।—दिनमें सोनेकी प्रबल इच्छा, बार-बार जम्हाई और अङ्गड़ाईके साथ, विशेषकर सन्ध्याके भोजनके बाद। सवेरे गहरी नींद। रातके अन्तिम भागमें नींद खुल जाती है, फिर नींद नहीं आती।

शीत, उत्ताप और पसीना।—निर्मल वायु सेवनके लिये चलनेपर सर्दी मालूम होना। समूचा बायाँ निम्नाङ्ग बहुत ठण्डा मालूम होता है। सिहरावन—घरके भीतर रहनेके समय, चूल्हेके पास रहनेके समय और बाहरसे गर्म घरमें प्रवेश करनेपर। निर्मल वायु सेवनके लिये चलनेपर शरीरका स्वाभाविक उत्ताप बढ़ जाया करता है। माथा, वक्ष और हाथमें पसीना निकलना और कभी-कभी थोड़ी देरके लिये उत्ताप पैदा हो जाना। भोजनके समय पसीना (आर्जेण्ट-मेट, ऐ-बेञ्जो, नेट्र-मूर)।

उपशम।—रगड़ने या मलनेपर, हाथ-पैर फैलानेपर या अङ्गड़ाई लेनेपर, निर्मल वायु लगनेपर, ठंडे पानीसे धोनेपर, करवट बदलनेपर, दबानेपर, और पेय या भक्ष्य-द्रव्य निगलनेपर।

वृद्धि।—गर्म घरमें, सांध्य भोजनके बाद, शब्दसे, चित्त होकर सोनेपर, खाली घूंट लेनेपर, शरीर हिलानेपर, मानसिक परिश्रमसे, गर्म चीजें पीनेपर, तीसरे पहर और ऋतु-स्रावके पहले, समय और बाद।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—कैम्फोरा, नक्स-वोमिका, ओपियम।

सदृश।—एगार, आर्स, कार्बो-वे, जेल्स, इग्ने, फास, पल्स, निकोलम, कैलि-कार्ब, ऐ-बेञ्जो, सिलि, सल्फ, नैफ्थैलिन, सिपा, क्रोकस, काक्युलस।

तुलनीय।—सर-दर्दके साथ पेशाबकी अधिकता—इग्ने, जेल्स; पलकोंका संकोचन—ऐगारि; ठण्डा पानी पीनेपर पाकाशयका विकार—आर्स, फास, कार्बो-वेज; अण्डकोषमें दर्द—पल्स; सर्दी—सिपा; माथा सुन्न—ग्रैफाइ; विषाद—पल्स; पेशाबके समय जलन—कास्टिक, लैके; सुई गड़नेकी तरह दर्द—कैलि-कार्ब; तलपेटका हिलना—क्रोकस; पैरका पसीना रुकना—साइलि; सन्धिमें कड़कड़ आवाज़—बेन-ऐसिड।

शक्ति।—३रे दशमिकसे १०० शततमिक क्रम।

ओलियम जेकोरिस ऐसेलाई

(OLEUM JECORIS ASELLI)

दूसरा नाम।—काड-लिवर आयल (काड वगैरह मछलीके यकृतका तेल)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसका विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—ग्रन्थियोंकी बहुत-सी बीमारियाँ; केश झड़ना; रजःस्वल्पता; खूनकी कमी; दमा; हड्डियोंकी बीमारी; मूत्रग्रन्थिकी बीमारी; फोड़े; कब्जियत; सर्दी; खाँसी; बहुत अधिक स्राव; दुबलापन; ज्वर; नासूर; गलगण्ड; केश बढ़नेमें गड़बड़ी; सर-दर्द; हृत्कम्पन; सविराम ज्वर; सन्धियोंका कड़ापन और चारों ओर फोड़े; नासूर; यकृतकी बीमारी; कटिवात; यक्ष्मा या क्षय-कास; फेफड़ेका प्रदाह; आमवात; दाद; गृध्रसी; गण्डमाला-दोषयुक्त आँखोंका प्रदाह; अनिद्रा; दृष्टिका विकार इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—फेफड़ा और यकृतकी नाना प्रकारकी बीमारियोंमें इससे बहुत लाभ हुआ करता है। सूखी, छातीको फाड़नेवाली खाँसी; रातके समय खाँसी; सफेद या पीले रङ्गके गन्दे गोंदकी तरह श्लेष्मा मिली खाँसी; वक्षमें तेज़ दर्दकी वजहसे स्पर्शका सहन न होना, विशेषकर खाँसनेपर वक्षमें जगह-जगह तेज सलाई गड़नेकी तरह दर्द; वक्षके बीचसे पीठतक जलन और जगह-जगहपर जलन इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। इससे पैदा हुई खाँसी, शीत और जलीय वायु लगनेपर बढ़ जाया करती है। इसके अलावा, इसके द्वारा विलेपी या क्षय और सविराम दोनों तरहके बोखार आराम हो जाया करते हैं; सन्ध्याके समय ज्वर बढ़ता है और तलहत्थीमें जलन होती है; शीत पीठके ऊपरसे नीचेकी ओर उतरा करता है और दोनों पैर लगातार बरफ जैसे ठण्डे रहते हैं। रोगीको बहुत जाड़ा मालूम होता है और वह शीतसे कातर रहता है; प्लीहाके भी नाना प्रकारके विकार पैदा हो जाते हैं और बोखार पैदा होनेपर खाँसी घट जाती है; शीतावस्थाके पहले और समय प्यास रहती है। यकृतके भीतर, यकृत-प्रदेशमें स्पर्श-कातरता

पैदा करनेवाला दर्द ; ऐसी स्पर्श-असहिष्णुता इसका एक प्रकृतिगत लक्षण है और यह स्पर्शकातरता, कण्ठ, वक्ष, अन्त्राशय, डिम्बाधार, प्रत्यङ्गकी सन्धियाँ और पीठमें भी अनुभव हुआ करती हैं। मेरुदण्डके प्रदाहसे पैदा हुई मेरुदंडकी स्पर्श-असहनीयता इसकी क्रियाका अन्यतम परिणाममात्र है। स्राव आदिका पीला होना इसकी क्रियाका अन्यतम विशेषत्व है। जैसे—श्लेष्मा पीले रङ्गका, जीभका लेप पीले रङ्गका, गलक्षत रोगमें गलेके भीतरसे निकला हुआ श्लेष्मा और प्रदरका स्राव सभी पीले रङ्गका होता है। शोषण क्रियाकी कमी, खूनकी कमी, दुबलापन, शरीरमें स्वाभाविक उत्तापका न रहना, बच्चोंको दूधका सहन न होना ; ललाटमें और दाहिनी आँखके ऊपर सर-दर्द ; खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है मानो माथा फट जायगा ; चेहरा लाल ; राक्षसी भूख रहनेपर भी दुबलापन ; बदबूदार साँस ; सोनेपर बाधाप्राप्त श्वास-प्रश्वास ; पाखाना होनेके समय मूत्रनलीमें जलन और उससे श्लेष्मा निकलना वगैरह कई इसके अव्यर्थ-सिद्धिप्रद लक्षण हैं। इस तेलका प्रधान उपकरण "आयोडस" है, इसलिये इसके बहुतसे लक्षण आयोडमके लक्षणकी तरह हैं।

लक्षणावली

मन।—स्नायविक उत्तेजना और सारे शरीरमें गड़बड़ी मालूम होना। रोगिनीको ऐसा मालूम होता है कि उसमें पित्त-विकार पैदा हो गया है (ऐल्यू, ड्युपिट-पर्फौल, कैल्के, इग्ने, आयोड, कैलि-ब्रोम, लैक-कैन, ऐक्टिया)। अपने सम्बन्धमें अन्य पुरुषकी बातें करता है, जैसे—"मैं न खाऊँगा", "मैं न जाऊँगा" के बदले "वह न खायगा, वह न जायगा" कहता है। चिड़चिड़ा स्वभाव।

मस्तक।—भ्रम। ललाटमें धीमा-धीमा दर्द। बाएँ और दाहिने कन्धेसे कनपटीतक लगातार दर्द अनुभव होना। दाहिनी भौंके भीतरी प्रदेशमें बहुत दर्द, मानो अस्थिवेष्टमें दर्द अनुभूत होता है। खाँसनेपर माथेमें ऐसा धक्का मालूम होता है मानो माथा फट जायगा (ब्राई, कैप्स, नेट्र-मूर, स्क्युला)। सरके पिछले भागसे ललाटतक फैलनेवाला दर्द (सैङ्गिविन, साइलि, स्पाइ) और मिचली। कानसे बदबूदार पीवका स्राव।

आँख।—दोनों आँखें फूलीं (गुयायेक, रस, एपिस, आर्स, हिप, इग्ने, मैग-कार्ब, वेस्पा)। आँखोंसे काम लेनेके समय आँखमें दर्द हुआ करता है

(कार्बो-वेज, मर्क)। निर्मल वायु सेवनके लिये चलनेके समय आँखसे पानी गिरता है ; बाईं आँखमें इतना भार मालूम होता है, कि रोगी उसे खोलकर नहीं रख सकता (कास्टि, ग्रैफ, कार्डुअस-मेरी, सिपिया, कोलोफिल, जेल्स, लैक-डिपलो, माइरि, सेरिफ, मर्क-पेरेन)। ज्वर रोगमें जाड़ा मालूम होनेके समय दृष्टिहीनता। सभी चीजें लाल दिखाई देती हैं (कैप्स, सैरासिन, साइक्यूटा)।

नाक।—सूखी सर्दी, खाँसी और बार-बार छींक। नाकसे पतली सर्दीका स्राव, स्वरभङ्ग और वक्षमें खाल उधड़ जानेकी तरह मालूम होना ; पुरानी सर्दी और पीनस (ऐसाफिट, अरम-मूर-नेट्र, कैलि-कार्ब, सिपि, पल्स)। ऋतु-स्राव रुक जाना रोगमें निद्रित अवस्थामें नाकसे खूनका स्राव होता है (वेरेट ; रजःस्रावके बदले—ब्राई, लैके ; स्राव रुक जानेकी अवस्थामें—ब्राई, कोना जेल्स, पल्स)।

मुखमण्डल।—चेहरा लाल। क्षय हुए दाँतसे बदबू निकलती है। जीभ—पीला, गाढ़ा लेप चढ़ी। मुँहमें नीरसता और सूखापन मालूम होना ; कफ़ निकालनेके समय कण्ठमें ऐसा मालूम होना, मानो त्वचा क्षय हो गई है। पुराना गलेका जखम, बलगम पीले रङ्गका। कण्ठमें खुजली। द्विदल-ग्रन्थि फूली हुई (आयोडम, स्पञ्जिया, थाइराइडिनम)।

पाक और अन्त्राशय।—अस्थि-विकार रोगके बाद बच्चेको राक्षसी भूख (ऐब्रोट, आयोड, नेट्र-मूर, सैनिक, सार्सा, टियुबर्क्यूलिनम)। अरुचि, दूध पचा नहीं सकता (इथ्यू, कैल्के, मैग-कार्ब)। कम्प या जाड़ा मालूम होनेके पहले और समय प्रबल और तेज़ प्यास। मिचली और वमन—जाड़ा छूटनेके बाद तीते और खट्टे स्वाद-मिली, पित्त और श्लेष्माकी कै होती है (इयुपेट-पर्फोल)। शीतके समय वमन। पाकस्थलीमें जलन (आर्स, कैप्स, कार्बो-वेज); कभी-कभी भार मालूम होना (नक्स, सल्फ, नेट्रम-मूर, लोबेल-इन)। यकृत-प्रदेशमें स्पर्शका सहन न होना और भार मालूम होना, व्यायाम करनेपर बढ़ जाना ; अंगुलीसे दबानेपर वहाँ ऐसा दर्द होता है मानो फोड़ा हो गया है (एपिस, बेल, कार्बो-वेज, चेलिडो, सिङ्को, मर्क, नेट्रम-सल्फ, फास, साइलि)। उदरके दाहिने पार्श्वमें भार पैदा करनेवाला दर्द और उसके साथ ही ऐसा मालूम होना, मानो दाहिना बाँह अवश और सुन्न हो गया है

(चेलिडो, मैग-म्यू , सिपि)। प्लीहामें टपककी तरह दर्द, साँस लेने और छोड़नेके समय और खाँसनेपर प्लीहामें टपककी तरह दर्द हुआ करता है और अंसफलकके शिखरदेशमें दर्द मालूम होता है, विशेषकर सविराम ज्वरमें शीतावस्था छूटनेपर। प्लीहा-प्रदेशमें चिलक मारनेकी तरह दर्द। मध्यान्त्र क्षय रोग (कैल्के, बैराई, ओलियैन)। पाखाना पतला—रातमें और सवेरे, सविराम ज्वर रोगमें शीतावस्थामें पाखाना कड़ा होना, मल बड़ा और गाँठ-गाँठ; गाँठें सब आपसमें एक दूसरीसे जुड़ी रहती हैं (ग्रैफ, हाइड्रैस्ट)।

पेशाब।—यकृतमें दर्द होनेपर मूत्र-ग्रन्थिमें भी दर्द हो जाता है, रोज़ सवेरे पाखाना होते समय मूत्रनलीसे श्लेष्मा निकलता है और जलन हुआ करती है। पेशाब तेजीसे सञ्चय होना। ईंटके चूरकी तरह तली जमना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत दिनोंतक मासिक ऋतुस्राव न होना (नेट्र-मूर, कैलि-कार्ब); रजःस्रावकी अधिकता। दोनों डिम्बाधारमें दर्द। वाधक। प्रदर—स्राव पीला, कमर बहुत ही क्षीण।

श्वासयन्त्र।—खाँसी, सवेरे प्रकोपका बढ़ जाना, वक्षके ऊपरी अंशके बीचमें खुजली और कलेजा धड़कना; दिन-रात ओकाई आती है और प्रचण्ड खाँसी आती है; बाँह उठानेपर वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होना और खाँसी पैदा हो जाना। वृद्धि—जलीय तर हवा लगनेपर (कास्टि); रातमें सोने बाद; खाँसीकी वजहसे नींदमें व्याघात पैदा हो जाता है (हायो, आर्स, सल्फ); समस्त दिवस श्लेष्मा पतला और सरल रहता है; ठण्डी जलीय हवा लगनेपर खाँसी पैदा हो जाती है, रोगी दुबला-पतला हो पड़ता है (ऐसिड-ऐसेट, ऐ-नाई, ऐन्थ्रा); उपशम—बोखार आ जानेपर। कफ पीला, नमकीन, डोरीकी तरह कड़ा; कड़ा और सफेद रंगका; खून मिला श्लेष्मा। कलेजेमें धड़कनकी बीमारीमें श्वास-प्रश्वास क्षीण रहता है। उत्ताप रहनेपर वक्षमें दबाव मालूम होना। वक्ष और कटि क्षीण, विशेषकर इस अङ्गके बायें पार्श्वमें। समूचा वक्षस्थल या वक्षस्थलके केवल बीचके अंशमें बहुत दर्द मालूम होता है और स्पर्श सहन नहीं होता; इसके साथ ही कलेजा फाड़ डालनेवाली खाँसी और दोनों पृष्ठफलकोंके बीचके अंशमें दर्द; दाहिने पार्श्वमें अधिक; खाँसी रोगमें वक्ष और पाकस्थलीमें स्पर्श सहन नहीं होता। बाएँ वक्षमें वजन और उत्ताप मालूम होना; खाँसनेपर वक्ष भेदकर पीठतक

जलन और उत्ताप मालूम होता है। खाँसनेपर वक्षके ऊपरी अंशमें दर्द होता है (बाईं ओरके ऊपरी अंशमें; ए-क्रोमिक)। फेफड़ेका प्रदाह, दोनों फेफड़ोंके गाँसोंपर बीमारीका हमला होता है। निचला वक्ष भेदकर पृष्ठद्वयके ऊपर और नीचे तेज़ दर्दकी वजहसे श्वास-प्रश्वासमें व्याघात पैदा हो जाता है; बाएँ वक्षमें तेज़ शलाका वंधनेकी तरह दर्द और ऐसा मालूम होना, कि त्वचा क्षय हो जाती है। यक्ष्माकास।

हृत्पिण्ड।—खाँसीके साथ कलेजा धड़कना (कैल्के, नेट्र-म्यूर, सोरिन, पल्स, सल्फ, ऐगार, आइबेरिस, विशेषकर बाएँ पार्श्वमें सोनेके समय—पल्स)। सारे शरीरमें चींटी रेंगनेकी तरह अनुभव होनेके साथ हृत्पिण्डके भीतर चारों ओर खून दौड़ जाता है। एकाएक हृत्पिण्डमें सूक्ष्माग्र शलाका बेधनेकी तरह दर्दका अनुभव होना (ब्राई, कैलि-कार्ब, स्पाई)।

प्रत्यङ्ग आदि।—पीठसे गलेतक बहुत स्पर्श-कातरता। मेरुदण्डकी उत्तेजना रोगमें उसमें बहुत दर्द होता है और स्पर्श सहन नहीं हुआ करता। त्रिकास्थिसे लेकर माथेके पिछले भागतक स्पन्दन या अस्थिरता अनुभव होना। त्रिकास्थि क्षीण और उसमें थोड़ा-थोड़ा दर्द होता है, मलनेपर घटना, चलनेमें तकलीफ़ होती है और यह तकलीफ़ क्रमशः बढ़ जाया करती है। कोहनी और जानु-सन्धिमें लगातार दर्द और स्पर्शका सहन न होना; हाथ-पैरोंके सिकोड़ने और फैलानेमें असह्य दर्द होता है। कन्धेमें वातका दर्द। प्लीहामें दर्द, दोनों हाथ सूखे और नीरस हो जाया करते हैं। बाएँ नितम्बके भीतरकी ओर मलद्वारके पास लगातार फोड़ा निकलना और उससे पीवका स्राव होना। जङ्घा-सन्धिका प्रदाह। गृध्रसी या पैरकी झुनझुनीवाला वात या स्नायुशूल; रोगवाला पैर दुबला हो जाया करता है (प्लम्ब), रोगी जीर्ण-शीर्ण और रक्त-शून्य, उजला और शरीरमें स्वाभाविक उत्ताप नहीं रहता है। जानु-सन्धिकी सफेद सूजन (ऐसिट-क्रूड, कैल्के, आयोड, लाई, रस)। बायें पैरमें वातका दर्द। हाथ-पैरकी सन्धियोंके चारों ओर नासूरका घाव (सिलि)। दोनों पैरोंमें स्पर्शका एकदम सहन न होना। दोनों पैर लगातार बरफकी तरह ठण्डे।

त्वचा।—रातमें शय्यामें सोनेके समय उत्तेजना; सारा शरीर लाल हो जाता है, सवेरे—घटना। लाल खसड़ेकी तरह खुजली निकलनेपर सब

लक्षणोंका घट जाना। नाना प्रकारके उद्भेद निकलना। श्लेष्मा आदिकी वजहसे होनेवाले जखम आदिसे बहुत ज्यादा पीवका स्राव। गालपर छेद कर देनेवाला सड़ा घाव (बैराई, हाइड्रोकोट, आर्स, थूजा, ऐ-कार्बोल, ऐ-नाई, हाइड्रैस्ट)। मीन-शल्किका या मछलीके चोंयटेकी तरह पपड़ी जमनेवाला घाव (थाइरायडिन, मिडोरिन, हाइड्रोकोट, सिफिलिन, नेट्र-कार्ब, लैक-कैन)।

ज्वराधिकारमें ।—हमेशा शीत मालूम होना ; रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसे लगातार सर्दी लग रही है। सरके पिछले भागसे पीठ होकर शीत उदरकी ओर सञ्चारित होता है। रात्रिमें ३ बजनेके समय कम्प या शीत पैदा हो जाता है (थूजा) या संध्याके समय, छः घंटेतक सामान्य दस्त, कै और नाभि-प्रदेशमें आक्षेपिक वेदना। शय्यामें सोनेके समय जाड़ा मालूम होना और इसके बाद ही उत्ताप पैदा हो जाना—गर्म घरमें बढ़ना ; ज्वालाजनक उत्ताप। रह-रहकर उत्ताप पैदा हो जाना, रोज़ रातमें बोखार और चित्तकी चंचलताकी वजहसे नींद न आना। दो दिनका अन्तर देकर सविराम ज्वर। बोखार छूटनेपर बहुत पसीना निकलना, विशेषकर माथेमें, गलेमें और दोनों बाहुओंमें, पसीनेमें तेलकी गन्ध। दिनभर पसीना हुआ करता है।

वृद्धि ।—छूनेपर, शरीर हिलानेपर, सोने बाद खाँसनेपर, शीतल या जलीय वायु या सर्दी लग जानेपर।

उपशम ।—दबानेपर, बोखार आनेबाद (खाँसी) और सवेरे।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष या दोषघ्न ।—-आइरिस-वार्सि (डा० क्लार्क)

सदृश ।—आयोडम, फास, स्पञ्जिया, कोलस्टोरिनम, बैसिलिन, ऐब्रोट, सैनिक, सार्सा, नेट्रम-मूर, थजा, नक्स, नेट्रम-स, ऐरेनियोड, जेल्स, ओपि, कैप्स, इथ्यू, मैग-कार्ब, कैल्के।

तुलनीय ।—क्षय—फास, दाद और दुबलापनमें—फास्फो, बैसिलि। दुबलापन और भूखमें—आयोड। दूध सहन न होनेमें—इथूजा, कैल्के, लैके।

शक्ति ।—१म दशमिकसे ३रा दशमिक विचूर्ण।

ओलियम सैण्टैलम

(OLEUM SANTALUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—यह सफेद चन्दनके तेलसे तैयार होता है। विचूर्ण और तरल क्रम।

उपयोगिता और आभास ।—श्वासप्रश्वास यंत्रके मध्यस्थित श्लैष्मिक झिल्लीके सभी रोगोंमें इसका फायदा प्रसिद्ध है, विशेषकर प्रमेह रोगमें और मसानेके दर्दमें यह बहुत लाभदायक है।

लक्षणावली

श्वासयन्त्र ।—लगातार कलेजा फाड़ डालनेवाली खाँसी, परन्तु कफ़ नहीं निकलता। विलियम बोरिकका कथन है:—चीनीपर दो-एक बूंद दवा डालकर सेवन करनेसे खाँसी बन्द हो जाती है।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—यन्त्रणाजनक लिङ्गोच्छ्रास और लिङ्गमुण्डको ढँकनेवाली झिल्लीकी सूजन। विटपदेश (pubes) में गम्भीर दर्द।

पेशाब ।—मसानेमें तेज़ दर्द—रोगी यदि खड़ा हो तो उसे वाध्य होकर बैठ जाना पड़ता है; बैठनेपर कुछ घटना। मूत्रनलीके दरवाजेपर अकसर जलन, उत्तेजना, सूजन और लाली प्रकट हुआ करती है। पेशाबकी धार पतली और प्रवाह बहुत धीमा। मूत्रनलीके गात्रमें एक गोला दब रहा है, ऐसा मालूम होना, खड़े होनेवाली अवस्थामें बढ़ना। मूत्रनलीकी पुरानी सर्दी या प्रमेह—स्राव गाढ़ा, पीली आभा लिये, जमा और श्लेष्मामय। पुराना मेह-रोग—बहुत ज्यादा, यन्त्रणा-रहित, गाढ़ा और पीली आभा लिये या हरे रङ्गका स्राव।

शक्ति ।—दोसे १० बून्द तेल या मूल अर्क या प्रथमसे तृतीय दशमिक विचूर्ण।

ओनिस्कस ऐसेलस

(ONISCUS ASELLUS)

दूसरा नाम ।—काम-उड-लाउस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—एक तरहकी जीवित दीमकसे अरिष्ट तैयार हुआ करता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— शूल ; मृगी ; रक्तकास ; मूत्रकृच्छ्रता ; दाँतका दर्द इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—इसके पेशाब लानेवाले गुणकी वजहसे उदरी और शोथ रोगमें और वायुनलीकी सर्दीकी वजहसे उत्पन्न श्वास-रोगमें भी फायदा होता है । इसके साथ दूसरे तीन कीटोत्पन्न औषध अर्थात् कैन्थरिस, साइमेक्स और एपिसका विशेष सादृश्य दिखाई देता है और ओनिस्कसकी लक्षणावलीपर ध्यान देनेपर उस सादृश्यका पता लगता है । इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—(१) चेहरा ग्लान और उन्माद बतानेवाला तथा बार-बार वमन होता है । (२) कब्जियत और मलान्त्रके प्रबल सङ्कोचनके कारण वृथा ही वेग या कूथन । (३) मूत्रनलीमें छेदनेकी तरह तकलीफ़ और जलन । (४) माथेसे आँख और आँखसे नाकतक दर्द । (५) अन्ननली और पाकाशयमें संकोचन । (६) मलद्वारमें जलन । (७) परिश्रमसे उदासी, आलस्य और बार-बार लिङ्गमें कड़ापन । (८) खाँसनेपर खून-मिला कफ़ निकलता है । (९) बार-बार जम्हाई और अङ्गड़ाई या हाथ-पैरोंकी खींचन ।

लक्षणावली

मस्तक ।—माथेमें बेचैन करनेवाला भार मालूम होना (कैमो) । दाहिने कानके पीछेवाले चुचुकास्थि-प्रदेशमें इस ढङ्गका दर्द मानो गड़हा खोदा जा रहा है और धमनियोंमें टपक (कैम्फ, साइलि, पोथस, ग्लोनो) । आँखके ऊपरी प्रदेशमें और नाकके बगलमें यन्त्रणाजनक दबाव मालूम होना, पहले बाएँ पार्श्व में, फिर दाहिने पार्श्व में अनुभव होता है (दाहिनी आँखके ऊपरी प्रदेशमें नाककी जड़में दबाव मालूम होना—इग्ने) । नासा-मूलमें

यन्त्रणाजनक दबाव मालूम होना (ऐनान्थिरम, ऐ-बेन, बैप्टी, हायो, कैलि-वाई, मैंन्सि; टिलि-ड्रिफोल, पल्स, थिरिड)। चेहरा म्लान और उन्मत्तता बतानेवाला (ऐपिस, ऐक्टिया, आर्स, स्ट्रैमोन)। अन्ननलीका सङ्कोचन, मानो तुरन्त उसका छेद रुक जायगा। खाँसनेपर खून मिला बलगम निकलता है (कैन्थ, टैरेण्ट, आर्स-आयोड, जमा हुआ खून निकलता है—ऐ-फ्लू।

पाक और अन्त्राशय।—मिचली और पाकस्थलीके आगम-द्वारमें लगातार दबाव मालूम होना (फास)। लगातार वमन (कैन्थ, इपिकाक, लैक-डिफ्लो, इनैन्थि, प्लम्ब, वेरेट-वि); प्रचण्ड अन्त्रशूल रोगमें उदरका वायुकी वजहसे फूलना और कसावटका भाव। प्रबल मल-वेग और पाखाना जाते ही पानीकी तरह पतला पाखाना होना। मलद्वारमें जलन। मूत्राशय और मलान्त्रमें सङ्कोचन और कूथन और पाखाना पेशाब रुकना। बहुत अधिक शारीरिक चञ्चलताके साथ मूत्रनलीमें छेदने या काटनेकी तरह दर्द।

पुं०-जननेन्द्रिय।—परिश्रमसे अनास्था और बार-बार लिङ्गोच्छ्वास या लिंगोद्रेक।

श्वासयन्त्र।—खाँसनेपर खून मिला बलगम निकलना (आर्जेण्ट-नाइ, फेरम, इपिक, मिलि-फोल)। बार-बार अंगड़ाई लेना (ऐमिल, साइ-मेक्स)। बार-बार जम्हाई आना (आर्नि, इग्ने, सल्फ)।

सम्बन्ध।—सदृश।—एपिस, कैन्थरिस, साइमेक्स, फेरम, मिलिफो।

शक्ति।—तृतीय दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

ओनोनिस

(ONONIS)

दूसरा नाम।—रेस्ट-हैरो। ओनोनिस-स्पाइनोसा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह एक पेशाब लानेवाली और मूत्र-पथरी रोगको नाश करनेवाली दवा है। पुराने मूत्रग्रन्थि-प्रदाहमें जुनि-परके साथ इसके बहुतसे लक्षणोंका सादृश्य है।

धोते ही बढ़ना लक्षणवाले नाकसे रक्त-स्राव रोकनेकी यह अचूक दवा मानी जाती है।

शक्ति ।—मूल अरिष्ट और निम्न-क्रम ।

ओनस्मोडियम

(ONOSMODIUM VIRGINIANUM)

दूसरा नाम ।—फाल्स ग्रमवेल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़के साथ वृक्षसे मदर टिञ्चर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—दृष्टि-क्षीणता ; मूत्राशयमें उत्तेजना ; स्तनकी शीर्णता या सूखापन ; रङ्गका ठीक-ठीक न मालूम होना ; कमजोरी ; अतिसार ; दो देखना ; आँखकी बीमारी ; सर-दर्द ; पक्षाघातकी तरह बीमारी ; स्नायविक दुर्बलता ; गर्भिणी आदिका वमन ; दूर-दृष्टि-दोष ; रेतःक्षरण ; इन्द्रियकी शिथिलता ; सङ्गमेच्छाका घटना ; मेरुदण्डमें रक्तकी अधिकता ; गलेका जखम ; मूत्रनलीकी उग्रता ; जरायुमें ऐंठन ; जरायुका अपने स्थानसे हटना इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—अधकपारीके दर्दकी यह एक बहुत बढ़िया दवा है। इसकी एक प्रधान विशेषता यह है, कि रोगी किसी भी विषयमें अपनी इन्द्रिय-शक्ति केन्द्रीभूत नहीं कर सकता ; किसी विषयमें भी पूरा-पूरा मन लगाना या किसी चीज़की ओर दृष्टि गड़ाकर देखना या अपनी इच्छाके अनुसार प्रत्यंगोंकी पेशियोंका सञ्चालन नहीं कर सकता ; राहमें चलनेके समय यह स्थिर नहीं कर सकता कि कौन-सी जगह कितनी ऊँची है, सरमें चक्कर आना, अनुभव-शक्ति-हीनता और पेशियोंमें परस्पर विधानकी शक्तिका न रहना प्रभृति लक्षण प्रकट हुआ करते हैं। इसके द्वारा पैदा हुआ स्नायुगत दर्द आदि धीमा, भार मालूम होने जैसे दर्दकी तरह और गला या मेरुदण्डसे उत्पन्न स्नायु तथा वस्तिगह्वर स्थित यन्त्र आदिपर इसका आक्रमण हुआ करता है ; इसलिये दोनों आँखें, माथेका पिछला भाग, आँखसे सरके

पिछले भागतक और त्रिकास्थिपर इसका स्नायुशूल हुआ करता है। कण्ठ, आँतें, दोनों स्तन, हृत्पिण्ड और प्रत्यंग आदि भी इसके द्वारा आक्रान्त हुआ करते हैं, विशेषकर बायाँ अङ्ग और बाएँ हाथ-पैर आदि। मानो बहुत देरतक महीन लिखावट पढ़नेके कारण आँखें बहुत थक गई हैं; कोई चीज़ देखनेके लिये उसे दूरीपर रखकर देखनेकी इच्छा होती है; दोनों आँखोंके बहुत ज्यादा व्यवहार करनेकी वजहसे पैदा होनेकी तरह अवसाद मालूम होनेके साथ-ही-साथ सरका दर्द इसका निर्णायक लक्षण है। इसके द्वारा स्त्री-पुरुष दोनोंमें ही कामेच्छाकी कमी उत्पन्न हो जाया करती है; इसीलिये स्नायविक अवसाद, अनुभव-शक्तिकी कमी और स्नायविक सर-दर्दमें यह विशेष लाभदायक है। कानमें लगातार एक तरहकी आवाज़ हुआ करती है, मानो रोगीने न जाने कितना क्विनाइन खा लिया है; गलेमें बहुत दर्द और सूखापन; जरायुमें भयानक यन्त्रणादायक ऐंठन और डिम्बकोष तथा स्तनमें दर्द; नाना प्रकारके रजो-विकार; कामेन्द्रियके अपव्यवहारसे उत्पन्न बीमारियाँ; वस्त्र आदि उतारने और चित्त होकर सोनेपर जरायुका दर्द आराम होना; नासारंध्र, मुख-विवर और कण्ठके भीतर सूखापन, ठण्डा पानी पीनेकी प्यासकी अधिकता और ठण्डा पानी पीनेपर सूखापन घटना; दोनों स्तन सूखे और चिपके हुए; रोगवाली जगहपर स्पर्श सहन नहीं होता; खरनलीगत खाँसी और गोंदकी तरह बलगम; सर-दर्दका बढ़ना—अन्धेरेमें और सोनेपर इत्यादि कई ओनस्मोडियमके प्रधान सिद्धिप्रद लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—आच्छन्नभाव और बुद्धिकी जड़ता। स्थूल-बुद्धि, स्तम्भित भाव, लगातार बका करता है, परन्तु उस बकवादमें शृङ्खला नहीं रहती। क्रोधी स्वभाव। चित्तका एकदम उदास भाव और किसी बातपर ध्यान न देना, इसीलिये किसी भी विषयपर जी लगाकर सोच नहीं सकता। किसी विषयमें भी मन संयोग नहीं कर सकता (इथ्यू, ऐलैन्थस, ऐलेट, ऐवेना, बोवि, डाल्का, आइरिस, लेक-कैन, लाइकोप, मिलिलोट, ऐ-आकजेल, ऐ-फास, रस, सार्सा, स्कुटेल, सेनिसी, वाइवर्ण-ओप, जेरोफिल), अभी क्या कहा गया था, सो याद नहीं रहता (कार्बो-ऐन)। स्मृतिकी विशृङ्खला; किस विषयके सम्बन्धमें

बोल रहा था, यह भूल जाता है (क्या कहना चाहता था यह भूल जाता है—हाइप्रिर, लिलि-टाई, मेजेर, रोडो), एक बात कहता-कहता उसके समाप्त हुए बिना ही दूसरी बात आरम्भ कर देता है (ऐगार, लैके) ; रोगी समझता है, कि कोई भयङ्कर कार्य होगा और वह उसे रोक नहीं सकता (कैल्के, लिसिन)। ऊपरसे नीचेकी ओर देखनेमें भय मालूम होता है ; रोगी समझता है कि वह गिर जायगा ; आगके पाससे जानेके समय बहुत चेष्टा करनेपर भी आगपर गिर जानेका उपक्रम हो जाता है। चुपचाप बैठ कर सोचना पसन्द करता है और सोचता-सोचता यह भूल जाता है, कि वह कहाँ है और क्या सोच रहा है। पढ़ते-पढ़ते इतनी आत्म-विस्मृति पैदा हो जाती है, कि हाथसे किताब गिर जाती है (पढ़ते-पढ़ते तन्द्रा आ जाती है—ब्रोम)।

मस्तक ।—सरमें पूर्णता या भार मालूम होना ; खाने-पीने और नींदके बाद घटना। ललाटका दर्द, भौंहोंमें दर्द ; बाईं आँखके ऊपरी प्रदेशमें, नासा-दण्डके ऊपर, बाएँ शृंग-स्थानपर दर्दकी अधिकता ; दर्द कभी-कभी समूचे माथेको घेरकर गलेपर आक्रमण करता है और कभी-कभी यह दर्द शङ्ख और चुचुकास्थि या कानके पिछले भागपर भी (कैम्फ) मालूम हुआ करता है। बाईं आँखके ऊपर और बाईं कनपटीमें धीमा-धीमा दर्द, कभी-कभी यह दर्द इतना तेज़ हो जाता है कि रोगीके लिये उसे सहना कठिन हो जाता है, अंधेरेमें और सोनेपर बढ़ना (सोनेपर बढ़ना—कोलोसिन्थ, ग्लोन, रस) ; आवाज़ या रोशनीसे यह दर्द नहीं बढ़ता (बढ़ता है—जिजिया)। बायीं आँखके ऊपर और बाएँ पार्श्वका सर-दर्द ; सरके पिछले भाग और गर्दनके पीछेतक फैल जाता है, शरीर एकाएक हिलने या शरीर हिलानेपर बढ़ना ; रोगीको बाध्य होकर शय्याका आश्रय लेना पड़ता है और सोने बाद थोड़ी देरके लिये घट जाता है, पर नींद खुलते ही फिर पैदा हो जाया करता है (काक्यु)। सरके पिछले भागमें ऊपरकी ओर दर्द, इसके साथ ही माथा शून्य मालूम होना। ऐसे अनुभवके साथ दर्द, मानो आँखसे बहुत परिश्रम किया हो (जेल्स, लिलि-टाई, स्पाई, आर्जेण्ट-नाई, नेट्र-सूर, सेनेगा, रियुटा, बैप्टी, फास, फाइजस, कैल्के, सिना, रस)।

आँख ।—मानो बहुत दिनोंतक नींद नहीं हुई, आँखमें इसी तरहकी उत्तेजना और करकराहट मालूम होती हैं (इयुजिनियम, चेलिर, ऐक्टि, नक्स-

वोम, रस, वेरेट) ; मानो बहुत देरतक खूब महीन लिखावट पढ़नेके कारण दोनों आँखोंको बहुत परिश्रम करना पड़ा है, इसी तरहका अनुभव (आर्जेण्ट-नाई, नेट्र-म्यू, रियुटा, सेनेगा, ग्रैफ, स्ट्रैमोन, सेजिर, फास, क्रोकस)। दोनों आँखें मानो बिल्कुल खुली हैं और ऐसा मालूम होता है उन्हें बहुत दूरकी चीजें देखना पड़ेगा, दूरकी चीजें बड़ी दिखाई देती हैं (चीजें सब बहुत दूर हैं और दूनी बड़ी दिखाई देती हैं—जेल्स ; चीजें बड़ी मालूम होती हैं—लोरो, निकोलम, नक्स-मस, फाइजस)। पासकी चीज़ देखनेमें तकलीफ़ और आँखोंकी पेशियोंमें खीचन और थकन मालूम होना ; चक्षुमण्डलमें बहुत खून-भरा मालूम होता है ; आँखके (विशेषकर बायीं आँख) चित्रपटकी धमनी खून-भरी दिखाई पड़ती है। चक्षु-गोलकके ऊपरी अंशमें दर्द, बाएँ चक्षु-गह्वरके ऊपरी अंशमें दर्द और फैलाव मालूम होना। दृष्टिका मैलापन या अस्पष्ट दृष्टि।

नाक।—दोनों रंध्र सूखे मालूम होते हैं, मानो सर्दी लग गयी है ; इसी कारणसे नासास्थिमें दर्द ; सवेरे पहली बार नींद खुलनेपर बार-बार छींक और बाईं नाक और बाईं आँखपर ऐसा मालूम होना कि रोगका आक्रमण हो गया है।

मुखमण्डल।—चेहरा लाल हो उठता है, थोड़ा भी शरीर हिलानेपर या उत्तेजनासे बढ़ना, इसके साथ ही सर-दर्दका घट जाना। दाहिनी गण्डास्थिमें दर्द और सुन्न हो जाना। मुख-विवर और दोनों ओंठ बहुत सूखे, पर प्यास नहीं मालूम होती (लैके-कैन, लाई, पल्स, स्ट्रैमोन, डाल्का) ; ठण्डा पानी पीनेपर घटना ; लार बहुत थोड़ी। मुँहमें लसदार या गोंद जैसा भाव (क्रोटोन-टिग, गैम्बो, लैके ; नींद खुलनेपर—साइक्लो, पल्स ; बोलनेके समय—लैक-डिफ्लो ; बहुमूत्र रोगमें—इयुरेनियम-नाई)।

गलेके भीतर।—नाकके पिछले छेदसे कण्ठके भीतर सफेद आभा लिये गोंदकी तरह श्लेष्मा गिरता है और उसे बार-बार खाँसकर निकाल देनेकी जरूरत पड़ती है (कोरैल-रूब्र, सिनैपिस, फाइटो, सिपि, हाइड्रैस्ट, ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई)। कण्ठमें खाल उधड़ जाने और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होना। जखम जैसा भाव,—बाएँ पार्श्वमें बहुत देरतक ऐसा ही अनुभव होता है ; कुछ निगलने या बोलनेकी चेष्टा करनेपर दर्द (ऐल्य,

नेट्र-सल्फ) मालूम होता है,—पानी या दूध पीनेपर कुछ देरके लिये आराम मालूम होना, इसके साथ ही खाल उधड़ने जैसा मालूम होना। निगलनेके समय तालुमूलका सङ्कोचन, नाकके पिछले दोनों छेद मानो रूकेसे मालूम होते हैं (इलैप्स, स्टिक्टा)। नाकका पिछला छेद और तालुमूल सूखा मालूम होता है (कोचलिया, इलैप्स), तालुमूलमें क्षय हुई त्वचाकी तरह अकड़न और सूखापन। कण्ठके भीतरके सभी लक्षण ही खाने पीनेपर अच्छे हो जाते हैं या घट जाते हैं (ऐसिड-बेन, ऐसिड-पाई)।

पाक और अंत्राशय।—रुचि और भूखकी अधिकता। दोपहरको नींदके बाद भूख लगती है (दोपहरको नींदके बाद मुँहमें स्वादहीन पानी भरा करता है और पाकाशय खाली मालूम होता है—ऐंगस)। बार-बार ठण्ढा पानी पीनेके लिये लालायित (ऐकोन, ब्राई, सिना, फास)। पानीकी प्यास (एपिस, ब्राई, कैन्थ, हायो, लिसिन, नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम, पल्स, स्ट्रैमोन)। भोजनके बाद डकार—डकार मिचली पैदा करनेवाली। सवेरे मिचली,—गर्भावस्थामें जैसा हुआ करता है। पेट फूला मालूम होता है, वस्त्र आदि उतार देनेपर आराम मालूम होता है (ऐसिड-बेन, एपिस, काफि, क्रियो, लैके-कैन, लाई, पल्स, रैफिनस-सैट, स्पञ्जि ; बच्चा अपने पेटका कपड़ा हटाकर दूर फेंक देता है और मिचली और वमन घट जाता है—टैबाक ; भोजनके बाद ही उदरके ऊपर किसी तरहका बन्धन असह्य मालूम होता है—ग्रैफ), मानो आँतें सब मरोड़ खा रही हैं, इसी तरहका दर्द होता है और उदरमें फुट-फुट गुड़-गुड़ किया करता है (नेट्र-सल्फ, ओपि)। अन्त्रशूल, शरीर पीछेकी ओर टेढ़ा करनेपर घटना (डायस्कोरिया); नाभिके नीचे दर्द, उदरके निम्नांशमें शूलका दर्द,—कपड़ा उतारनेपर (लाई) या चित्त होकर सोनेपर घटना (क्यूप्रम-आर्स ; पेट दबाकर सोनेपर—कोलोसिन्थ, ब्राई ; चित होकर दोनों पैर ऊपर उठा रखनेपर—रस ; बच्चा चौकी या शय्यापर पेट दबाकर सोता है—बेल, स्टैन, सिना); तलपेटका अन्त्रशूल, मानो बरफका पानी पीनेके कारण उत्पन्न (मानो बहुत ठण्ढा पानी पीनेकी वजहसे पैदा हो गया है—नक्स-मस)। तलपेटमें गड़बड़ी मालूम होना, मानो पतला पाखाना होगा (ऐङ्गस, ऐण्टि-क्रूड, ब्राई, टेरिब ; प्रसवके बाद इस भावका घटना—लिलियम-टाई)। तलपेटमें स्पर्शका सहन न होना (ब्राई, नक्स-मस, एपिस, कैप्स, इपिक, लैके)।

मल।—मल चमकीला, खून मिला और गाढ़ा गोंदकी तरह या डोरीकी तरह; इसके साथ ही कूथन या पीली आभा लिये, रुखड़ा; सवेरे शय्यासे दौड़कर पाखाना जाना पड़ता है (ऐलो, हाइपिर, पोडो, सल्फ)।

पेशाब।—पुरुषकी मूत्रनालीमें जलन और खुजली। पेशाब करनेके पहले और बाद, मूत्राधार-मुखशायिका ग्रन्थिसे लगी हुई मूत्रनालीमें तकलीफ़ मालूम होना। प्रायः पेशाबका वेग नहीं अनुभूत होता। पेशाब,—बहुत थोड़ा, गदला, बहुत खट्टा, आपेक्षिक गुरुत्व बहुत अधिक और मूत्रसार या यूरियासे भरा रहता है।

पुं०-जननेन्द्रिय।—लिङ्गकी सुपारीमें ठण्डक मालूम होती है। सङ्गमेच्छाका घटना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—कामेच्छाका घटना या न रहना। योनि-मुख खुजलानेवाला, वृद्धि—खुजलाने और प्रदरका स्राव लगनेपर। लगातार ऐसा मालूम होता है मानो ऋतुस्राव पैदा हो जायगा (एपिस, बेल, म्यूरेक्स, फाइजस, सिपिया)। डिम्बाधारमें दर्द; वृद्धि—दबानेसे, दर्द छेदनेकी तरह और टपक जैसा। जरायुमें दर्द, ऐंठन या मरोड़की तरह, जैसा कि ऋतुके समय सर्दी लगनेके कारण जरायुमें दर्द; घटना—वस्त्र आदि उतारनेपर और चित्त होकर सोनेपर; जरायुका नीचेकी ओर खिंचना। जरायु-प्रदेशमें स्पर्शका सहन न होना। वृद्धि—वस्त्र आदिके भारसे और दबानेपर। प्रदर,—स्राव कुछ पीली आभा लिये, बदबूदार, त्वचाको क्षय करनेवाला और बहुत ज्यादा, पैरतक टपक पड़ता है (ऐल्यू, कैल्के ग्रैफ, साइलि, स्टैनम, सिफिलिन)। आर्त्तव—असमयमें प्रकट होनेवाला और बहुत दिनोंतक स्थायी।

श्वास-प्रश्वास।—स्वर रुखड़ा। छाती फाड़ डालनेवाली खाँसी; सफेद और गाढ़ा गोंदकी तरह कड़ा बलगम। स्वरनलीगत खाँसी, सफेद आभा लिये गाढ़ा श्लेष्मामय बलगम; घटना—शीतल पानी पीने बाद (कैम्फ, कास्टि)। वक्षमें दर्द और स्पर्शका सहन न होना। स्तनमें दर्द, विशेषकर बायें स्तनमें; बाएँ स्तनकी घुण्डीसे स्तनको भेदकर दर्द मालूम होता है; बाएँ स्तनके नीचे तेज़ दर्द (ऐक्टिया, कोलोफिल, नैट, हाइपोक्लोरो, रैनान-बल्बो, ड्रायस्कि, जिङ्कम)। बाएँ स्तनमें दर्द मालूम होना; दबानेसे दर्द

अधिक होता है। दोनों स्तन फूले और खूनसे भर जाते हैं या फूले रहते हैं और उनमें स्पर्श सहन नहीं होता।

हृत्पिण्ड और नाभि।—हृत्पिण्डमें दर्दको वजहसे मृत्यु-भय। हृत्पिण्डके शिखर-देशमें दर्द। हृत्पिण्ड-प्रदेशमें दबाव मालूम होना। हृत्पिण्डमें अवसाद अनुभव होना, ऐसा मालूम होता है, मानो इसकी गति स्थिर हो जायगी (लैके, अरम)। नाड़ीकी गति तेज़, असम, दुर्बल, नाड़ी पुष्ट और प्रत्येक तृतीय या चतुर्थ आघातके बाद सविराम भाव धारण करती है।

गर्दन और पीठ।—गर्दनमें दर्द, बाएँ अंसफलक-प्रदेशमें दर्द; सवेरे नींद खुलनेपर कमरमें दर्द, दिनमें दोपहरके कुछ पहले घट जाता है, चलनेके समय और भी निचले अंशमें दर्द होता है। कमरके एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक दर्द और अकड़न; कमर मानो टूट जायगी—ऐसा मालूम होना। कमर दर्द-भरी और सुन्न मालूम होती है।

प्रत्यङ्ग आदि।—पैर, जानु, बाँह, हाथ वगैरह सुस्त और क्लान्त मालूम होते हैं। बाँह और हाथका कम्पन। हाथकी द्विमूल-पेशी, कोहनी और मणिबन्धमें दर्द हुआ करता है; बाएँ बाँहका अगला आधा भाग सुन्न मालूम होता है। पेशियोंकी क्रियाकी सुश्रृङ्खला बनाये रखनेकी शक्तिका न रहना और इसी वजहसे रोगिनी लिखनेके समय या भोजनके समय हाथका व्यवहार नहीं कर सकती। चलनेके साथ ढुलक पड़ता है। शरीरको हिलानेकी शक्तिका न रहना और पैर ठिकानेसे नहीं पड़ते। राहका स्थान बहुत ऊँचा मालूम होनेके कारण रोगी पैर ऊँचा उठाकर रखता है और सारी देह हिलकर सर-दर्दको बढ़ा देती है, दर्द बाएँ उरु-शिखर प्रदेशमें, जानुमें और कण्डरा या पेशीके अगले भागमें; जानु और दोनों पैर अवसन्न और सुन्न मालूम होते हैं। दोनों पैरोंका कुछ कम्पान्वित भाव, पैरकी पोटली और तलवेमें चुनचुनी होती है, विशेषकर बाईं ओरकी। सन्ध्याके समय चलनेके वक्त दोनों पैर श्रान्त और अस्थिर मालूम होते हैं। गुल्फ-प्रदेशमें शोथकी तरह फूल उठता है। बाईं एँड़ीके पीछेवाले स्थानपर भार पैदा करनेवाला दर्द मालूम होना।

सार्वाङ्गिक।—सामान्य परिश्रमसे भीतरी कम्प अनुभव होता है (काक्यु, मर्क, साइलि, स्टैनम, जेल्स, ऐक्टिया-रेस, ऐगार, थाइरायडिन)। स्नायविक कम्प-भाव, बहुत ज्यादा भूख लगनेकी वजहसे जैसा हो जाता है,

वैसा ही। मानसिक और शारीरिक अकर्मण्यता। पेशियाँ सब अपनी इच्छानुसार नहीं हिलायी जा सकतीं। करवट बदलकर सोनेकी शक्तिका न रहना (फास, पल्स, ऐकोन, ऐमोन-कार्ब, बैराइ-कार्ब, नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, पैरिस, सिपि, सल्फ, थूजा)। सारे शरीरमें दर्द हुआ करता है, मानो कोई बीमारी होनेकी सूचना मिल रही है; रोज़ १२ या १ बजेके समय जाड़ा मालूम होने लगता है। सवेरे सुस्ती और अकड़न मालूम होना; सवेरे चलनेके समय सारे शरीरमें स्पर्शका सहन न होना और कमजोरी मालूम होना। सारे शरीरमें एकाएक उत्ताप पैदा हो जाना। बहुत गर्मीके समयमें भी पसीना नहीं निकलता (मस्कस, नक्स-मस)। पैरकी पोटलीमें चींटी रेंगनेकी तरह सुरसुरी मालूम होना।

वृद्धि।—वस्त्र आदिका दबाव या कसकर कपड़े आदि पहननेपर; शरीर हिलाने या एकाएक हिल उठनेपर और बायीं करवट सोनेपर; आँखमें रोशनी लगने या कानमें शब्दका प्रवेश होनेपर और अन्धकारमें।

घटना।—निर्मल वायु लगने, स्थिर होकर एकान्त स्थानमें बैठने, सोनेके बाद (क्षणिक)। वस्त्र आदि उतारने, ठण्डा पानी पीने और भोजनके बाद और उठने तथा सोनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश। ऐसिड-पाइ, बैप्टी, जेल्स, हेलोन, लिलियम-टाइ, नेट्रम-म्यूर, सिपिया, स्पाइजि, रियुटा, नेट्रम-सल्फ, फास, पलसेटिला, काक्यु, ऐक्टिया।

तुलनीय।—जरायुके अपने स्थानसे हटनेपर—हेलोनियस, लिलियम, नेट्रम, सिपिया। दृष्टिका विकार—लिलियम, पिक-ऐसि; आँखके कारण सर-दर्द—जेल्स, स्पाइजि, रोडो इत्यादि।

शक्ति।—मूल अर्कसे २०० शततमिक क्रम।

ओफोरिनम

(OOPHORINUM)

दूसरा नाम ।—आमारियम-एक्सट्रैक्ट, स्त्रीके डिम्बका रस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—भेंड़ या गायकी डिम्ब-ग्रन्थिके रससे विचूर्णके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—स्त्री-डिम्ब-ग्रन्थिको निकाल लेनेके बाद और रजोलोपके समयके उपसर्गोंमें, डिम्ब-ग्रन्थि निकालनेके कारण चर्बी बढ़ जाना और खुजलीका लक्षण तथा डिम्ब-ग्रन्थिके अर्बुद रोगकी एक बढ़िया दवा है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—आर्चिटिनक ।

शक्ति ।—निम्न-क्रम और विचूर्ण ।

ओपियम

(OPIUM)

दूसरा नाम ।—अफ़ीम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बिना पकी, ढेड़ीके रससे इसका विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—प्रसवका नकली दर्द ; संन्यास ; मूत्राधारका पक्षाघात ; मस्तिष्कको बीमारी ; कर्कटीया जखम ; नीहार कण्डु ; शूल ; कब्जियत ; बहुमूत्र ; सपने देखना ; भ्रूणका अधिक हिलना ; अन्त्र-वृद्धि बाधक ; मृगी ; डर जानेका दुष्परिणाम ; या आँत उतरना, अन्त्रावरोध ; प्रसवके दर्दमें गड़बड़ी ; सीसक-शूल ; दुबलापन ; खसड़ा ; विषादवायु; मस्तिष्कावरण-प्रदाह ; पक्षाघात ; सूतिकावस्थामें आक्षेप ; दीर्घ-श्वास ; नींदकी गड़बड़ी ; नाक बोलना ; निद्रावस्थामें चौंक उठना ;

सूर्य्याघात या लू लगना ; उदराध्मान या पेट फूलना ; कर्ण-पटह-प्रदाह ; मूत्र-क्षारके कारण विषाक्तता ; मूत्रस्तम्भ या मूत्ररोध ; जरायुकी कमजोरी ; शिराका फूलना ; क्रूप खाँसी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—जिन सब सख्त बीमारियोंमें मस्तिष्क आक्रान्त हो जाता है, रोगी बेहोश या मोह-प्राप्तकी तरह पड़ा रहता है, नाकसे जोरकी आवाज़ होनेके साथ श्वास-प्रश्वास हुआ करता है ; चेहरा घोर नीला और माथा तथा अन्यान्य अङ्गोंमें गर्म पसीना निकला करता है, उसमें अफ़ीमसे बहुत लाभ हुआ करता है । अतएव, जब रोगीकी आँख खुली या अधखुली रहे और वह मोह-प्राप्त हो जाये या जब रोगीकी अवस्था संन्यास रोगकी तरह हो जाये या जब शरीरका किसी तरहका उद्भ द एकाएक गायब होकर विकारके लक्षण प्रकट हों, उस समय इस दवासे बहुत फायदा दिखाई दिया करता है । सीसक-शूल (सीसाका व्यवहार करनेके कारण सर-दर्द) और मलान्त्रकी क्रिया न होनेकी वजहसे पैदा हुई कब्जियत और बहुत अधिक मलके कड़ापनमें भी इससे बहुत फायदा हुआ करता है । नीचे लिखे कई लक्षण इसके निर्वाचनमें बहुत सहायता करते हैं:—(१) औंघाई आती रहनेपर भी नींद नहीं आती ; श्रवण-शक्ति इतनी तेज़ रहती है, कि बगलवाले कमरेकी घड़ीका "टिक-टिक" शब्द या आकाशके पक्षीकी कलरव ध्वनि भी रोगीको सुन पड़ती है और इसी कारणसे उसे नींद नहीं आती । (२) प्रलाप अवस्थामें लगातार बका करता है और उसका चेहरा फूल जाता है, लाल हो जाता है और गर्म मालूम होता है । (३) प्रगाढ़ मोह—आँख खोले हुए सोया रहता है ; श्वास-प्रश्वासके समय लगातार नाकसे आवाज़ हुआ करती है । (४) श्वास-प्रश्वासमें घरघर शब्द ; तन्द्रा और मोहाच्छन्न भाव ; नीला और गर्म चेहरा, पुतली बहुत सिकुड़ी और असिम श्वास-प्रश्वास ; रोगी काठके टुकड़ेकी तरह स्थिर भावसे पड़ा रहता है, किसी तरहकी भी शिकायत नहीं करता । (५) आच्छन्न अवस्था, चेहरा मुर्देकी तरह रक्त-शून्य ; दोनों आँखें ज्योति-भरी और अधखुली । (६) निद्रितावस्थामें वस्त्र आदि नोंचा करता है । (७) उन्मत्तता प्रकट करनेवाला चेहरा । (८) जीभ सूखी, नीरस और काले रङ्गकी तथा सुन्न । (९) पेशाब नहीं होता, परन्तु मूत्रस्थली पेशाबसे भर जानेका उपक्रम होता है ; मूत्रस्थलीका पक्षाघात या संकोचन न होना । (१०) दुर्दमनीय तृष्णा । (११) पेशियाँ सब फड़का करती हैं और हाथ-पैर

रह-रहकर स्पन्दित हो उठते हैं ; धनुष्टङ्कारकी तरह आक्षेपके पहले या समय रोगी चिल्ला उठता है। (१२) पाखाना बिलकुल लगता ही नहीं, पाखाना फिरनेके समय मलका कुछ अंश बाहर निकलकर फिर भीतर घुस जाता है। दुरारोग्य कब्जियत—मल कड़ा, काले रङ्गका गांठ-गांठ। बच्चे और वृद्धोंके लिये और जिनके केश कुछ काले रहते हैं, पेशियाँ शिथिल रहतीं और शारीरिक उत्तेजना बिलकुल ही नहीं रहती ; यह विशेष उपयोगी है। प्रयोग की हुई दवाकी क्रिया ग्रहण करना या गुण उत्पन्न करनेवाली शक्तिका न रहना, इसका एक प्रधान निर्णायक लक्षण है अर्थात् जब उतनी भी जीवनी-शक्ति नहीं रहती, कि रोगीके शरीरमें दी हुई दवाका गुण प्रकट हो, उस समय कार्बो-वेजिटेबिलिस, सोरिनम, सलफर, वैलिरियाना और लोरोसिरेससकी तरह ओपियमकी दो-एक मात्राके प्रयोगसे दवाकी क्रिया दिखाई देने लगती है। बेहोशी और आंशिक या पूर्ण पक्षाघात मिली बीमारियाँ, डरसे उत्पन्न बीमारियाँ, अङ्गार या कोई भाफ़ सूंघनेकी वजहसे रोग और शराबियोंकी बीमारीमें यह विशेष लाभदायक हुआ करती है ; सोते ही श्वास रुकना और शय्याका इतना गर्म मालूम होना कि रोगी उसपर सो नहीं सकता। ठण्डी जगह पानेकी आशामें लगातार शय्याके एक अंशसे दूसरेमें हटता रहता है इत्यादि कइएक इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—होशमें न रहना ; ऐसा कोई भी भाव प्रकट नहीं करता, जिससे मालूम हो कि उसे किसी तरहकी तकलीफ़ या अभाव अनुभव हो रहा है। चुपचाप बिना हिले-डोले पड़ा रहता है। धनुष्टङ्कार आदि अकड़नवाली बीमारियाँ पैदा होनेके पहले (या समय) रोगी एक लोमहर्षक चिल्लार कर उठता है (एपिस, हेलिबो)। विकार अवस्थामें रोगी लगातार बका करता है और उसकी आँखें खुली, चेहरा लाल और फूला हुआ रहता है। रोगी बराबर यही समझता है कि विदेशमें है (कैम्फ, ब्राई, वेरेट)। मदात्यय रोगसे जीर्ण-शीर्ण, पुराने शराबियोंका चेहरा फूला, तन्द्रा-भरा भाव, चमकीली, गर्म और सूखी आँख और श्वास-प्रश्वासमें जोरदार नाककी आवाज़। कल्पना-शक्ति बहुत ही प्रबल, मन बहुत प्रसन्नतासे भरा। रोगी अपनी देहका कोई

अंश-विशेष बहुत बड़ा समझता है। शराब पीनेके कारण पैदा हुए रोगमें रोगीको मालूम होता है कि उसके कमरेके चारों कोनेसे नाना प्रकारके जन्तु निकलकर उसकी ओर आ रहे हैं (मानो कुत्ता, बिल्ली वगैरह जन्तु जमीनको फाड़कर उछल-उछलकर निकलते हैं—स्ट्रैमोन ; असंख्य केंकड़े बाहरसे भागकर घरमें घुस रहे हैं—हायो ; मानो असंख्य कुत्ते उसके चारों ओर आकर इकट्ठे हो गये हैं—कैल्के-कार्ब ; चूहे आदि अद्भुत जीव देखता है—ऐक्टिया, लैक-कैन ; चूहे सब घरके चारों ओर दौड़ते-फिरते हैं—इथ्यू, सिडोर ; मानो सब तन्तु उसके पास सोये हुए हैं और करवट बदलनेपर कहीं वे छू न जायें, यही डरता है—वेलि ; मानो उसकी शय्याके पास साँप है और उसकी तरफ आ रहा है—हायो ; मानो असंख्य साँप रेंगकर उसकी शय्याके चारों ओर चढ़ रहे हैं—लैक-कैन ; असंख्य साँप दिखाई देते हैं—लैके), चेहरा भय बतानेवाला। परिणामदर्शी नहीं। चित्तकी प्रसन्नताके साथ मनमें कितने ही सुखकर भावोंका उदय होना तथा विमूढ़ चित्त। बोधशक्ति बहुत तीव्र, दुर्बोध विषय भी बहुत आसानीसे समझ लेता है (काफि, लिसिन, वेलि ; बोध-शक्तिका न रहना—इथ्यू, जिन्नो-क्लेड, ऐ-नाई)। कल्पनाओंके खेल—उसकी आँखोंके सामने नाना प्रकारके भ्रान्त दृश्य उपस्थित होते हैं। विकारकी अवस्थामें चूहे, बिच्छू आदि देखता और रोगी उनके पाससे भागनेकी चेष्टा करता है। बहुत अधिक हर्ष, आतङ्क, क्रोध लज्जा या अपमानकी वजहसे पैदा हुई बीमारियाँ।

मस्तक और मस्तिष्क ।—चेतनाकी अधिकता ; शब्द, रोशनी और बहुत थोड़ी गन्ध भी रोगीको असह्य मालूम होती है। संन्यास, सरमें चक्कर आना, कानमें झिन-झिन शब्द, बेहोशी ; लाल, फूला और गर्म चेहरा और अङ्ग-प्रत्यंग उस तरह कड़े हो जाते हैं, जिस तरह धनुष्टङ्कारमें अकड़नके समय हो जाते हैं। मस्तिष्ककी जड़ता और आँखमें उत्ताप और आँख मूँद लेनेकी जरूरत मालूम होना। मस्तिष्क ऐसा विकल, मानो शराब पी हो। शय्यामें उठ बैठनेपर सरमें चक्कर आना (चेलिडो, काक्यु), इसलिये रोगीको बाध्य होकर फिर सो जाना पड़ता है। डर जाने बाद सरमें चक्कर आना (ऐकोन, क्रोटेल), सरके भीतर शून्य-गह्वरमें मानो अनगिनत मधुमक्खियाँ हैं। अध्ययनके समय ललाटके दाहिने शृङ्गदेशमें या ऊँची जगहमें दर्द हुआ करता है ; उत्ताप ; इसके बाद ही दाहिनी कनपटीमें नख गड़नेकी तरह दर्द होता है। ललाटपर ठण्डा पसीना होना। सर-दर्द, बढ़ना—आँख हिलानेपर

(ऐक्टि-रेस, ब्राई, कोलो, हिपर, ऐ-म्यूर, टिलिया, साइलि, सिलि ; आँख हिलाने या खोलनेपर बढ़ना—ब्राई, नक्स-वोम ; आँख या मुँहकी पेशी हिलानेपर बढ़ना—स्पाई)। सर-दर्द,—समूचे माथेमें कसावटका भाव मालूम होता है। ऐसा अनुभव होता है मानो मस्तिष्क छिन्न-विच्छिन्न हो रहा है (आर्स, हाइपिर)। पुराना मस्तिष्कोदक या मस्तिष्कमें जल सञ्चय रोग (आर्स, कैल्के, टेरिब)। माथेमें अधिक रक्तसञ्चय होना, टपक (बेल, कुरारी, मिलिलोट)।

आँख।—आँखकी पलक झूलती रहती है, मानो उसमें पक्षाघात हो गया है (ग्रैफ, स्पाई, जिङ्कम)। ऐसा अनुभव होता है कि दोनों चक्षुगोलक बहुत बड़े हैं (ऐकोन, पैरिस, स्पाइजि)। दोनों आँखें लाल और प्रदाहान्वित। आँख और पलकोंका फड़कना (ग्लोनो, हायो, एपिस)। शिवनेत्र अर्थात् आँखें अधखुली रहती हैं और पुतली ऊपरकी ओर चढ़ी रहती है ; (अधमुँन्दी—बेल, क्यूप्रम, हेलिबो, पोडो ; मस्तिष्कमें जल-संचय रोगाधिकारमें अधमुँन्दी आँख—लाई ; मस्तिष्क मेरुमज्जा प्रदाह रोगमें—ऐसिड-हाइड्रो। टकटकी लगी आँख। आँखकी दोनों निचली पलकोंका फूलना—एपिस, आर्स)। आँखकी स्थिर दृष्टि, अधमुँन्दी आँख, ज्योति-पूर्ण बीच-बीचमें अकड़न और आँखकी पुतली बाहर निकल पड़ती है। रोशनीमें चैतन्य नहीं रहता। पुतली बहुत सिकुड़ी, सुईकी नोककी तरह मालूम होती है। दृष्टिकी अस्पष्टता—चारों ओर बादलसे घिरा मालूम होता है (साइक्लेमे़न, लैक-डिफ्लो, प्लम्ब)। ऐसा अनुभव होना मानो आँखमें धूलके कण गिर गये हैं (लाई, काकुर, लैचनैन) ; आँखके सामने मानो आगकी चिनगारियाँ उड़ रही हैं (सिङ्को, सल्फ—अधिक शराब पीनेपर लगातार ऐसा ही मालूम होना—स्ट्रैमोन ; सरमें दर्दके पहले—प्लैट, विशेषकर रातमें हृत्पिण्डकी गति रुक जानेका उपक्रम या मूर्च्छाभाव होनेपर—नक्स-वोम)।

कान।—पटह-प्रदाह—कभी कानमें झिनझिन और कभी-कभी ढं-ढं शब्द सुन पड़ता है। कानमें समुद्रकी गरजकी तरह आवाज़ लगातार आती रहना या कभी-कभी पैदा होना और तन्द्रान्वित भाव। श्रवण-शक्ति अत्यन्त तीक्ष्ण, घड़ीका टिकटिक शब्द या बहुत दूरस्थित पक्षीका कलरव, जो किसी दूसरेके कानमें नहीं सुन पड़ सकता, वह रोगीको स्पष्ट सुन पड़ता है और

उसी आवाजसे उसकी नींदमें व्याघात पैदा हो जाता है। कानसे खूनका स्राव।

नाक।—नाकके अगले भागमें खुजली। दीर्घ श्वास लेनेके समय दाहिनी नाकमें सुई गड़नेकी तरह दर्द अनुभव होता है। घ्राणशक्तिका लोप। नाक सूखी और सर्दी।

मुखमण्डल।—चेहरा मलिन, पीले रंगका दुबला, आँख गड्ढेमें धँसी और दोनों गाल कुछ लाली लिये; चेहरेपर गहरी लाली; कभी-कभी भूरी आभा, गर्म और फूला। चेहरा नीला। स्तन पीनेवाले बच्चोंका चेहरा वृद्ध मनुष्योंकी तरह। चेहरा कभी मलिन, कभी लाल। चेहरे और माथेकी शिराएँ सब फूल उठती हैं। मुँहकी शिराएँ सब शिथिल हो जाती हैं। निचला ओठ और हनु फूल उठता है (निचला ओंठ झूल पड़ता है—मैन्सि, बेहोशीवाली अवस्थामें और मोह ज्वरमें हनु झूल पड़ता है—लैके, आर्नि, आर्स, कार्बो-वेज, हेलिबो, कैलि-आयोड, लाई, स्ट्रैमोन, वेरियोलिनम, जिङ्कम; संन्यास रोगमें—नक्स-वोम, ओपि, आंत्रिक ज्वराधिकारमें—जिङ्कम, ऐक्टिया-रेस, आर्स, बैप्टी, कार्बो-वे, हायो, लैके, लाई, ऐ-म्यूर, ओपि, वेरेट-विर, बहुव्यापक सर्दी ज्वरमें—चेलिडो; प्रसव वेदना रोगमें—लाई; मस्तिष्क-मेरुमज्जावरणी प्रदाहमें—लाई; निद्रितावस्थामें—लाई, नक्स-वोम; मोहके साथ—लाई; सल्फ)। मुँहकी पेशियाँ सब काँपती और अकड़ा करती हैं। ओंठ फूला; मुँहका कोना फड़का करता है। चेहरा टेढ़ा और कुत्सित भाव भंगी। दोनों हनु अकड़ जाते हैं। विकृत मूर्त्ति।

मुख-विवर।—सब दाँतोंकी जड़ शिथिल हो जाती है (मर्क, कार्बो-वेज, हायो, जिङ्कम)। मुँह सूखा और भयानक प्यास। बहुत ज्यादा लारका स्राव। रक्त मिला कफ़ निकलना (ऐ-नाई, ऐकोन, आर्नि, सिङ्को, स्टैन, फेरम, इपिक, फास, वैसिलिनम)। मुँहके भीतर और जीभपर जखम निकलना (ऐ-म्यूर, ऐ-सल्फ, आर्स, कैलि-आयोड, ऐ-नाई, क्लोरम)। जीभ हरे रङ्गकी या सफेद रङ्गकी। काली जीभ (आर्स, चायना, इलैप्स, लैके, मर्क, फास, सिकेलि, वेरेट-ऐल्बम)। जीभका पक्षाघात,—बड़ी तकलीफसे बोली निकलती है (कास्टि, डाल्का, जेल्स, हायो, नक्स-मस, नक्स-वोम)। स्वर बहुत क्षीण और धीमा; बहुत जोर लगाये बिना ऊँची आवाज़में बोल

नहीं सकता (स्वर प्राय: सुन नहीं पड़ता—आर्स, हिप ; फेफड़ेके प्रदाहके बाद रोगी दो-चार बातोंसे अधिक एक बारमें नहीं बोल सकता—लाई ; सूतिका ज्वराधिकारमें क्षीण स्वर—सिकेलि ; गायक और वक्ताओंका क्षीण स्वर—कोका)। मुँहसे फेन निकलना (कूप्रम-मेट, इनैन्थि, ओलियैन,—बात-चीत करनेके समय—लैक-डिपल्लो ; धनुष्टङ्कार आदि आक्षेपके समय—आर्टिमि-वाल, कूप्रम-ऐसेट, ल्लिसिन ; मृगीकी अकड़नके समय—कैलि-बाई, लोरो, लाई, इनैन्थि-क्रोक, सम्बाल ; मृगीकी तरह आक्षेपके समय—मिडोरिन ; मूर्च्छावायुके प्रकोपके समय—सिड्रन ; प्रसवके बादके आक्षेपमें खून मिला फेन निकलना—लैके)।

गलेके भीतर।—कण्ठ सूखा, नीरस। कण्ठके भीतर सूजन और चञ्चलता मालूम होना और कभी-कभी कोई चीज़ निगलनेके समय अटक जाती है और गला रुकनेका उपक्रम हो जाता है, ऐसा प्राय: नित्य ही हुआ करता है। जीभ आदिके पक्षाघातकी वजहसे निगलनेकी शक्तिका न रहना (लैके-कैन, ऐमिग, एपिस, जेल्स, ऐसिड-हाइड्रो, लैके, नक्स-वोम)।

पाकस्थली।—रुचिका न रहना। कण्ठमें तीता और खट्टा स्वाद। ज्वालामयी तृष्णा, अरुचि और सभी खाद्य पदार्थसे चिढ़। इसके अलावा कभी-कभी भस्मकाग्नि या राक्षसी भूख पैदा हो जाया करती है (बैराई, सिंको, ग्रैटि, हेलिबो, नक्स-वोम) ; पाचन-शक्ति क्षीण और खाये हुए पदार्थ आदि बहुत धीरे-धीरे पचते हैं (सिंको, कर्णास, नूफर-लूट, टैरेण्टियु—अम्ल या पेटमें बहुत वायु होनेके साथ—लाई)। मिचली ; वमनोद्रेक और ओकाईके साथ पाकस्थलीमें भयानक दर्द ; धनुष्टंकार आदि आक्षेपके साथ वमन ; खून मिला या हरी आभा लिये वमन। मलमय पदार्थ और मूत्र-वमन (काइंकी, बेल, प्लम्ब) ; पाकस्थलीके दर्दके साथ स्पर्शका सहन न होना और पाकाशय तथा ऊपरी पेटके स्थानपर आध्मान वायु भरनेकी वजहसे सूजन। पाकस्थलीमें संकोचन पैदा कर देनेवाला दबाव मालूम होना, इसके साथ ही चित्तकी बहुत अधिक चञ्चलता मौजूद रहती है। पाकस्थलीमें भार और दबाव मालूम होना। ऐसा अनुभव होना कि वक्ष और उदर-विभेदक झिल्ली या पर्दा मानो दब रहा है।

अन्त्राशय।—परिपाक यन्त्रकी निष्क्रियता, आँतें आदिके क्रम-संकोचन क्रियाकी गति विपरीत हो जाती है या बिलकुल ही नहीं होती और

मलान्त्र रुक जाता है। पेट कड़ा और फूला या लटका हुआ, पेटमें वायु; सीसक-शूल (ऐल्यू, कोलो, प्लैट, प्लम्ब)। आवद्ध अन्त्र-वृद्धि (नक्स, ऐकोन, बेल, सिपा, काफि, फेरम-फास, लोबेल, मिलिफो, प्लम्ब, सल्फ)। अन्त्रमण्डलीकी निष्क्रियता या जड़ताकी वजहसे तेज़ विरेचक दवाका प्रयोग करनेपर भी कोई लाभ नहीं होता। पेट फूल उठता है, पर उसमें रुका हुआ मल आदि निकाल देनेकी शक्ति नहीं रहती। उदरमें आध्मान-वायु सञ्चित, हुड़हुड़ गुड़गुड़ शब्द हुआ करता है। उदरमें ऐसा मालूम होता है, मानो कोई भारी चीज़ रखी हुई है। तलपेट जकड़ जाता है और छूनेपर दर्द होता है; ऐसा दर्द मानो आँतें आदि दब रही हैं और ऐसा मालूम होता है मानो किसी संकीर्ण राहसे कोई चीज़ आगे बढ़ रही है। अण्डकोष और मूत्राशयमें नोकीली सलाई बेधनेकी तरह दर्द; रोगी बेचैन और उद्वेगपूर्ण, शयन करने, सोकर, बैठकर, या खड़े होकर किसी तरह भी उसे आराम नहीं मिलता। चेहरा गर्म और नाड़ीकी गति धीर; मूत्रग्रन्थि या मसानेका शूल। शूल-रोग—अन्त्रमण्डली जकड़ जाती है और दाहिनी कोखमें ऐसी तकलीफ़ मानो कोई कड़ी चीज लुढ़क रही है; इसके साथ ही कब्जियत और मलमय वमन हुआ करता है। आबद्ध गर्भ या वंक्षणीय अन्त्र-वृद्धि—विष्ठामय वमन हुआ करता है।

मलान्त्र और मल।—बच्चोंकी कब्जियत; स्थूलकाया, शान्त स्वभाव रमणियोंकी कब्जियत या मलका कड़ापन (ग्रैफ); मलांत्रकी निष्क्रियता या पक्षाघातसे पैदा हुई कब्जियत या सीसेका विष पेटमें जानेकी वजहसे मल कड़ा और गांठ-गांठ (चेलिडो, प्लम्ब, थूजा), मलका कुछ अंश बाहर निकलकर फिर पीछे सरक जाता है (सेलिन, थजा)। उदरामय—मल पानीकी तरह, काला, बदबूदार; मलद्वारमें जलन और कूथन-मिली एवं दस्तमय; अनजानमें निकलनेवाला मल, विशेषकर डर जानेके बाद (जेल्स) या मलद्वारावरोधिनी पेशीकी शिथिलता या पक्षाघातसे उत्पन्न बाल-विसूचिका या ग्रीष्मातिसार; इसके साथ ही आच्छन्न भाव और आक्षेपके लक्षण मौजूद रहते हैं।

पेशाब।—पेशाबकी नली भरी अथवा पेशाब नहीं होता; प्रसवके बाद या बहुत अधिक धूम्रपानकी वजहसे मूत्ररोध; धायके बहुत अधिक क्रोधित हो जाने बाद दूध पीनेके कारण बच्चोंका पेशाब रुकना; ज्वराधिकारमें

या किसी दूसरी नयी बीमारीमें पेशाब रुकना ; मूत्राशय या मूत्रावरोधिनीका पक्षाघात (स्ट्रैमोनियममें मूत्रसञ्चय क्रियाके अभावकी वजहसे पेशाबका अभाव हो जाता है ; ओपियममें पेशाब अधिक सञ्चय होनेपर भी और मूत्रस्थली परिपूर्ण रहनेपर भी पेशाब नहीं होता)। पेशाब—परिमाणमें बहुत थोड़ा, घोर या एकदम भूरा, ईंटके चूरकी तरह तली। पेशाबके बाद खूनका स्राव। नये रुकनेवाले या मूत्रनलीके संकोचनकी वजहसे खून-भरा पेशाब।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—आर्त्तव—बहुत ज्यादा स्राव ; तलपेटमें भयानक दर्द अनुभूत होता है और तकलीफ़से रोगी सामनेकी ओर झुक पड़ता है (ऐको, ऐक्टी, कोलो), पाखानेका वेग उपस्थित हो जाता है (लैक-कैन)। आतङ्ककी वजहसे रजोरोध ; बहुत निद्रालुता ; आक्षेप या आतङ्कसे पैदा हुआ जरायु-भ्रंश। जरायु-प्रदाहके बाद उसके भीतरसे बदबूदार स्राव। गर्भमें भ्रूणका हिलना (आर्स, सोरिन, सिलि, क्रोकस। भ्रूणके हिलनेकी वजहसे नींदमें व्याघात—कोना, थूजा ; भ्रूण मानो कलाबाजी खा रहा है—लाई ; भ्रूण मानो करवट ले रहा है—पल्स) और इसी वजहसे जरायु-प्रदेशमें दर्द मालूम होना (आर्नि, सिपि)। डर जानेकी वजहसे गर्भ-स्राव होनेका उपक्रम, विशेषकर अन्तके कई महीनोंमें। प्रसव होनेके समय—प्रसवका वेग घट जाता है ; रोगिनी मोह-प्राप्त हो जाती है, मल और मूत्रका रुक जाना, किसी तरहके आतङ्कके बाद। प्रसवके समय और प्रसवके बाद आक्षेप, होशमें न रहना और मोह, रोगिनी मुँह फाड़ा करती है। आक्षेप—दो आक्रमणोंके बीचके समयमें रोगिनी आच्छन्न भावको प्राप्त होती है। डरके कारण प्रसवके बादका क्लेद-स्राव रुक जाता है और रोगिनी मोहाच्छन्न हो पड़ती है। तुरन्तका जनमा बच्चा मलिन ; रक्त-शून्य रहता है और उसकी साँस नहीं चलती—नाभि-रज्जु (नाल) धक-धक किया करती है। कई सप्ताहका बच्चा भी स्वाभाविक रूपसे नहीं बढ़ता ; उसका चेहरा बुढ़े आदमियोंकी तरह दिखाई देता है ; हाथ-पैर आदि शिथिल और त्वचा सिकुड़ी। भूमिष्ठ होनेके समय माथेके सब अस्थि-फलक खूब संकीर्ण, अपत्य-पथके दबावकी वजहसे एक-पर-एक आ पड़ते हैं। जननेन्द्रिय आदिकी प्रबल उत्तेजना ; काम-प्रवृत्तिका उद्दीपन और सारे शरीरमें कामाग्नि फैल जाना। जरायु कोमल हो जाता है और उससे बदबूदार स्राव निकला करता है। बदबूदार प्रदर-स्राव।

श्वास-प्रश्वास।—स्वरभङ्ग ; कण्ठ सूखा और मुख-विवर तथा जीभका रङ्ग सफेद। कण्ठ-स्वर बहुत क्षीण, बहुत जोर लगाये बिना ऊँची आवाज़में बोल नहीं सकता। स्वरनलीका आक्षेप या गलेका घर-घर करना—एकाएक श्वास-प्रश्वास रुककर रोगी नीला पड़ जाता है और कण्ठमें घरघर शब्द हुआ करता है (बेल, क्लोरम, कैलि-ब्रोम, लैके, ऐ-हाइड्रो, मिफाइटिस, मस्कस, सैम्बियु)। ह्रस्व श्वास, दीर्घ-प्रश्वास और श्वास-प्रश्वासके समय उदरोर्द्ध प्रदेश (वक्षोदर-मध्यस्थ पेशीका निचला अंश) भीतरकी ओर घुस जाता है (आर्जेण्ट-नाई); श्लेष्माकी घरघराहट थोड़ी ; लगातार खाँसी ; मोहान्वित भाव और चेहरा नीलिमाच्छन्न। चित्तकी बहुत अधिक चञ्चलता और श्वास-रोग होनेकी आशङ्का, ऐसा मालूम होता है, कि रोगीकी मृत्यु बहुत पास है ; शीतल वायु लगनेपर और सामनेकी ओर झुकनेपर कुछ आराम मालूम होता है (झुकनेपर घटना—आर्स, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, स्पञ्जिया ; पीछेकी ओर माथा झुकानेपर घटना—बेल, कैमो); धूम्रपानसे बढ़ना। आयास-साध्य और रुक-रुककर श्वास-प्रश्वास, मानो फेफड़ेमें पक्षाघातसे ऐसा होता है। घरघर शब्द करनेवाला श्वास-प्रश्वास (ऐण्टि-टार्ट, हिप, इपिक); मुँह फाड़कर, नाककी आवाज़के साथ श्वास-प्रश्वास (नक्स-वोम, क्लोरम, इग्नेन्थि, स्पञ्जिया)। उपझिल्ली-प्रदाह रोगाधिकारमें रातमें निद्रित अवस्थामें श्वास-रोध होनेका उपक्रम होकर सूखी और तकलीफ़ देनेवाली खाँसी पैदा हो जाती है ; ठण्डा पानी पीनेपर क्षणभरके लिये घट जाती है। खाँसी—सूखी, कण्ठमें खुजलीकी वजहसे कभी-कभी बहुत प्रचण्ड आकारमें पैदा होती है ; वृद्धि—रातमें (कैल्के, कैमो, ग्रैफ, हायो, कैलि-कार्ब, पल्स, सिपि, कोना, मिफाइट, रियुमेक्स ; सूर्यास्तसे सूर्योदयतक—अरम), खाँसी रोगमें बार-बार जम्हाई और औंघाई रहनेपर भी नींद न आना (बेल, कैमो) या फेफड़ेका आक्षेप (मस्कस, इपिक, ड्रोसे) और नीलिमा लिये चेहरा ; पानी पीनेके समय खाँसी, कष्टसे बलगम निकलता है और जम्हाई आती रहती है, बलगम फेन-भरा और रक्त तथा श्लेष्मामय ; श्वासमें कष्ट और नीले चेहरेके साथ खाँसी। खाँसते-खाँसते सारे शरीरमें बहुत ज्यादा पसीना हो जाता है। प्रचण्ड, सूखी और शून्य-गर्भ खाँसी ; विश्रामके बाद बढ़ना। आक्षेपिक श्वास-रोग (इपिका, लोबेल-इन, मैग-फास, वैलि)। वक्षमें कसावटका भाव और वक्षका सङ्कोचन ; वक्षमें उत्ताप अनुभव होना (ऐण्टि-टार्ट, आर्स, फेरम, साइकूप्र, स्पञ्जिया)। फेफड़ेसे

निकला हुआ खून गाढ़ा, फेन-भरा और श्लेष्मा मिला रहता है। वक्षमें बहुत अधिक दबाव मालूम होता है, हृत्पिण्ड-प्रदेशमें जलन (क्रोकस, लेक-नैन, रोडो) और हृद्स्पन्दन तथा स्वर क्षीण ; निद्रा चञ्चल और रोगी रह-रहकर चौंक उठता है ; वक्षमें उत्ताप और दोनों पैर ठण्डे ; धमनियोंमें टपक और गलेकी शिराएँ सब फूल उठती हैं ; उद्वेगजनक घटना, आतङ्क, शोक, दुःख प्रभृतिके कारण उत्पन्न हृद्स्पन्दन। हृद्प्रदेशमें दर्द रोगमें चित्तकी चञ्चलता, कम्पन, अनिद्रा और बहुत बकवाद मिला प्रलाप।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनकी शिराएँ सब फूल उठती हैं और धमनियोंमें टपक हुआ करती हैं। एकाएक पीठ पीछेकी ओर टेढ़ी पड़ जाती है। डर जानेके बाद हाथ-पैर आदि काँपा करते हैं। हाथ-पैर रह-रहकर चमक उठते हैं और वे सुन्न हो जाते हैं। हाथ-पैरोंका अगला भाग बरफकी तरह ठण्डा। दोनों बाहुओंका पक्षाघात। बाँह और हाथका काँपना। हाथके ऊपरकी शिराएँ सब फूली दिखाई देती हैं (पल्स, हैमा, कैस्टोर, सिंको, ऐ-फ्लूयो, लोरो, लिडम, पोलिगोनम ; फूलकर दूनी मोटी दिखाई देती हैं—ऐमिल-नाई)। अंगुलीमें जाड़ेके दिनोंके फोड़े या बिवाई (पेट्रोल, ऐगार, क्रोकस, कैलि-म्यूर, ऐ-नाई)। दोनों पैर पटकता है या चमकाता रहता है। दोनों पैर भारी और फूले।

सार्वाङ्गिक।—अङ्ग-प्रत्यङ्गोंका धनुष्टङ्कार आदिकी तरह अकड़ा हुआ भाव—मानसिक आवेग, आतङ्क, क्रोध वगैरहसे पैदा हुई बीमारी ; बच्चोंका आक्षेप ; अपरिचित मनुष्य देखनेपर, रोनेपर, हाथ-पैर आदि शरीरके समकोणमें फैलता है या हाथ-पैर आदि दृढ़ और कड़े पड़ जाते हैं और पीछेकी ओर धनुषकी तरह टेढ़े हो जाते हैं और बगलकी ओर लुढ़क पड़ते हैं। आक्षेपके प्रारम्भमें रोगी भयानक रूपसे चिल्ला उठता है (साइक्यूट, क्यूप्रम-मेट, जिङ्कम), इसके बाद ही मुँहसे फेन निकला करता है (क्यूप्रम, इनैन्थि, लैके, लोरोसि) ; हाथ-पैर आदिका काँपना ; श्वास रुकनेका उपक्रम ; आँखें दोनों अधमुँदी और ऊपरकी ओर खिंची ; पुतली फैल जाती है और रोशनीका ज्ञान नहीं रहता। प्रकोपके बाद गहरी नींद (इनैन्थि, नक्स-वोम, हायो, आर्टिमि-वाल), चेहरा घोर लाल और उत्तापयुक्त हो जाता है ; दो प्रकोपोंके बीचके समय आच्छन्न भाव। माथा, बाँह और हाथ फड़का करते हैं ; कभी-कभी प्रसारिणी-

पेशी फड़का करती है। शरीर बरफकी तरह ठण्डा ; आच्छन्न भाव ; घटना--शरीर हिलाने और माथा खोल देनेपर ; प्रत्येक १५ मिनटका अन्तर देकर रोगी मूर्च्छित हो जाता है, आँख बन्द कर लेता है और उसका माथा झूल पड़ता है ; बेहोश, हाथ-पैरोंका फड़कना ; बार-बार ठण्डी साँस लेना ; दी हुई दवाकी गुण पैदा करनेवाली शक्ति या देहकी प्रतिक्रिया-शक्तिका न रहना (फेफड़ा आदिकी बीमारीमें प्रतिक्रियाका अभाव होनेपर—लोरोसिरेसस ; शिथिल तन्तु व्यक्तियोंके शरीरमें प्रयुक्त दवाकी प्रतिक्रियाका अभाव—कैप्सिकम ; जड़-बुद्धि और आच्छन्न भावापन्न रोगीमें प्रतिक्रियाका अभाव—ओपियम, वैलेरियाना और ऐम्ब्राग्रीसिया ; स्नायविक बीमारी आदिमें प्रतिक्रियाका अभाव होनेपर—कार्बो-वेजिटेबिलिस ; अन्त्राश्रयिक रोगाधिकारमें हिमाङ्ग, ठण्डी श्वास, नाड़ी तेज़ रहनेके साथ ही प्रतिक्रियाका अभाव ; साधारणत:—सोरिनम, सल्फर)। बुद्धिका विकार और प्रत्येक रातमें अपस्मारका आक्रमण।

त्वचा।—विज्वरावस्थामें शरीरकी त्वचा पसीनेसे रहित, सूखी। सारे शरीरमें तकलीफ़ देनेवाली खुजली पैदा हो जाती है और पिटपिट करती है, पर किसी तरहका दर्द नहीं मालूम होता। देह नीली और जगह-जगह नीला दाग पैदा हो जाता है।

निद्रा।—गहरे, बेहोश कर देनेवाले निद्रा रोगमें—चेहरा लाल। औंघाई या आच्छन्न भाव ; नाककी आवाज़के साथ श्वास-प्रश्वास ; शरीरसे गर्म पसीना निकलना। औंघाई रहनेपर भी नींद नहीं आती (बेल, कैमो) ; चेहरा फूला, आँखें खोलकर सोता है या मोह-प्राप्तकी तरह पड़ा रहता है। बेहोश करनेवाली नींदके साथ अधमुँदी आँख और नाकसे आवाज़। निद्रित अवस्थामें शय्याको नोचा करता है (मानो शय्यामें कुछ खोज रहा है—स्ट्रैमोन ; मानो रेशमका कोशा उड़ रहा है, ऐसा ही समझकर उसे पकड़ना चाहता है--आर्स) ; गों-गों शब्द करता है ; कामोद्दीपक सपने देखना और आच्छन्न भाव। नींद न आना ; भयानक डरावने दृश्य सब दृष्टिके सामने पैदा हो जाते हैं ; आधी रातके पहले नींद न आना ; रोगमें तीक्ष्ण श्रवण-शक्ति ; बहुत दूरसे आयी हुई घड़ीकी आवाज़ या उड़ते हुए पक्षियोंकी कलरव ध्वनिकी वजहसे उसे नींद नहीं आती। सोनेपर श्वास-रोधका उपक्रम होता है (ग्रिण्डेलिया, लैके-

सिस, क्लोरम, लैक-कैन, जेल्स)। निद्रित अवस्थामें और निद्राके बाद लक्षण आदि बढ़ जाया करते हैं (लैके, एपिस)।

ज्वराधिकारमें।—शीतावस्थामें प्यासका न रहना। दिनके ११ बजनेके समय कम्पन पैदा होता है; शरीर बरफकी तरह ठण्डा, हाथ-पैर आदि, उदर, पीठ और पैर सभी ठण्डे मालूम होते हैं। मोहकी तरह नींद, नींदके समय बहुत ज्यादा पसीना होता है। शीतावस्थामें बाँह और दोनों पैर दर्द भरे मालूम होते हैं, माथा गर्म और गहरी नींद; शय्यामें सोनेपर जाड़ा मालूम होना; सोनेकी अवस्थामें माथेमें बहुत ज्यादा पसीना होता है। उत्तापावस्था—समूची देहमें उत्ताप पैदा हो जाता है, पसीनेसे तर देह, पर रोगीका शरीर इतना गर्म रहता है, कि हाथ रखते ही मानो हाथ जल जाता है; नाकसे आवाज़के साथ मुँह फाड़कर रोगी मोहाच्छन्नकी तरह नींदमें पड़ा रहता है और उसके हाथ-पैर फड़का करते हैं; मुँहकी पेशीके सिकुड़ने-फैलनेकी वजहसे चेहरेमें नाना प्रकारकी भाव-भङ्गी पैदा हो जाती है; चेहरेपर प्रेत-हास्य प्रकट होता है; रोगीको होश नहीं रहता और बार-बार शरीर खोल देनेकी इच्छा प्रकट करता है (एपिस, पल्स)। सर-दर्द, उठनेकी शक्ति न रहना और नींद खुलनेके समय मूर्च्छित हो जाता है। पसीनेवाली अवस्था, ज्वाला-जनक उत्तापयुक्त देहसे बहुत ज्यादा पसीना निकलता है; रोगी मुँह फाड़कर साँस लेता छोड़ता है, नाकसे आवाज होती है और गहरी नींदमें पड़ा रहता है। सवेरे उत्ताप, बहुत ज्यादा पसीना होना, रोगी रातमें कपड़ा नहीं रखना चाहता; कहता है कि उसके कपड़े या ओढ़ना बहुत गर्म है; शय्या इतनी गर्म मालूम होती है कि रोगी उसपर सो नहीं सकता। शरीरके ऊपरी अंशमें पसीना निकलनेके समय निचला अंश ज्वालामय, उत्ताप-शून्य, स्वेद-रहित और शुष्क। ललाटपर ठण्डा पसीना होता है; माथेसे बहुत ज्यादा पसीना निकलता है। पसीना निकलनेके समय लक्षण आदि बढ़ जाया करते हैं (इपिक, आर्स, ब्राई, मर्क, रस, सिपी, स्ट्रैमोन, सल्फ, वेरेट; पसीना निकलनेके समय लक्षण आदि घट जाया करते हैं—जेलस, नेट्र-मूर, सोरिन, बेल)। सान्निपातिक ज्वरमें आच्छन्न भाव, सहजमें जगाया नहीं जा सकता; कोई बात नहीं करता; आँख अधमुँन्दी, मृदुः-प्रलाप या उच्च स्वरसे बका करता है। महा उन्मत्त भाव प्रकट रहता है। कभी गाना

गाता है, कभी भागनेकी चेष्टा करता है (चेहरा जितना ही गहरा लाल होता जायगा ओपियमकी जरूरत पड़नेकी उतना ही सम्भावना है); बहुत अधिक रक्त-सञ्चयकी वजहसे मस्तिष्कके पक्षाघात होनेकी सम्भावना हो जाती है (हेलिबो)।

वृद्धि ।—नींदके समय और बाद ; पसीना होनेके समय ; शराब आदि मादक पदार्थ सेवन करनेपर ; चित्तकी चञ्चलता और डरकी वजहसे ; शरीर हिलानेपर ; गर्भावस्थामें और उत्तापसे ।

उपशम ।—ठण्डी हवा लगनेपर, पानी पीने, लगातार चलने और माथा तथा देह खोल रखनेपर ।

तुलनीय ।- शराबियोंके संन्यास रोगमें—बैराइटा। जीवनी-शक्तिकी प्रतिक्रियाका अभाव—सोराइनम, चायना, सल्फ, कार्बो-वेज इत्यादि । प्रसूताके डर जानेके कारण स्तन पीनेवाले शिशुको आक्षेप—हायोसा ; डर जाना ; ऐकोनाइट। डरकी वजहसे अतिसार—जेल्स, पल्स । एकाएक आनन्दमें—काफिया। औंघाई खूब, पर नीन्द न आना—बेलाडो, कैमो। शय्या गर्म मालूम होती है—आर्निका, ब्रायो। कब्जियत—ग्रैफाई। गोल बैंगनकी तरह मल—जिङ्कम, थूजा। उद्भेद दब जानेकी वजहसे मस्तिष्क आक्रान्त—जिङ्कम ; जरायुकी कमजोरी—सिकेलि ; बकवादीपन—हायो, लैके, स्ट्रैमो ; तन्द्रालुता, श्वासकास—ऐण्टिम-टार्ट ; कब्जियत—ऐलूमि, प्लम्बम, ब्रायो ; पेट फूलना—लाइको, कार्बो-वेज, रैफा ; एकाएक मानसिक वेग—इग्नेशिया ; मस्तिष्कमें रक्तकी अधिकता—हेलिबो ; मलान्त्रमें सङ्कोचन—लैके, प्लम्बम, नेट्रम इत्यादि ।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष ।—तेजस्कर काफीका पानी ; प्रति पाइण्ट, अर्थात् डेढ़ पाव पानीमें एकसे डेढ़ ग्रेन कैलि पार्मांङ्गानिकम घोलकर रोगीको प्रति पाँच मिनटका अन्तर देकर उसका आधा सेवन कराना चाहिये ; आक्सिजन सुंघाना चाहिये। कैम्फोरा, बेल, इपिक, नक्स-वोम,—स्नायविक उत्तेजना-कैमो ।

अनुकूल और प्रतिकूल सम्बन्ध ।—पहले और बादमें व्यवहार करना चाहिये—एको, ऐण्टि-टार्ट, बेल, ब्राई, हाइयो, नक्स-मस, नक्स-वोम ।

सदृश ।—एपिस, इपिक, मस्कस, ब्राई, प्लम्ब, लाई, कार्बो-वे, कोल्चि, रैफेनस, हायो, लैके, बेल, ग्रिण्टि, हेलिबो ।

शक्ति ।—तृतीयसे २०० या उससे भी ऊँचा शततमिक क्रम ।

क्रियाका स्थायित्व ।—७ दिन ।

ओपण्टिया

(OPUNTIA VULGARIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फूल और पल्लवसे मूल अर्क तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—इसका प्रधान लाभ उदरामय रोगमें, विशेषकर यदि यह उदरामय तलपेटमें विकारकी वजहसे हो। इसके प्रधान लक्षण हैं :—पाकस्थलीसे तलपेटतक मिचली पैदा करनेवाली उत्तेजना मालूम होना और आँतें आदि सब मानो तलपेटमें उतर गयी हैं । इसका मानसिक लक्षण बहुत कुछ स्ट्रैमोनियमकी तरह रहता है—"अभी नम्र-भावसे बिनती कर रहा है, पर फिर तुरन्त ही गाली देना आरम्भ कर देता है।" मल और मूत्रका वेग प्रबल ; खून-मिला पेशाब, गालके भीतरकी ओर काट लेना वगैरह कई इसके प्रधान लक्षण हैं ।

लक्षणावली

मन ।—बुद्धि विभ्रम, पर रोगी यह अच्छी तरह नहीं समझता । धर्म-द्वेषी ; कभी-कभी बहुत घबड़ाया रहता है और प्रार्थना किया करता है । अभी विनीत भावसे प्रार्थना कर रहा था, इसके बाद तुरन्त ही गाली-गलौज आरम्भ कर देता है (ऐनाकार्ड, स्ट्रैमोन्) । यदि कोई उसकी अभिसन्धि बिगाड़ डालता है तो बहुत नाराज़ होता है । चिड़चिड़ा और प्रतिशोध-प्रिय । लिखनेके समय या तो अक्षर छोड़ देता है या पहलेके अक्षरके बाद और बादके वर्ण पहले व्यवहार कर दिया करता है ।

पाकाशय आदि ।—चबानेके समय गालके भीतर (विशेषकर दाहिने) काट लेता है अर्थात् गालको काट डालता है (ऐ-नाई, कास्टि, इग्ने, ओलियैन) । कण्ठमें बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा आता है । कोई खानेकी

चीज़ निगलनेपर शरीरमें सिहरावन पैदा हो जाना। निगलनेके समय और बाद (मर्क-कोर)। रातमें कुछ खाना नहीं चाहता। मिचली,—पाकाशयसे तलपेटतक मिचली मालूम होती है; ऐसा मालूम होता है, मानो पतला पाखाना होगा (एङ्गस्टियु, ऐण्टि-क्रूड, ब्राई, ओनस्मोड, टेरिब,—पेशाब, होनेपर फिर वैसा नहीं मालूम होता—लिलि-टाई; नाभीसे मलद्वारतक दर्दके साथ—लिडम)। मिचलीके साथ पाकस्थलीमें भार मालूम होता है और ऐसा मालूम होना कि पाकाशय सट जायगा (कोलिनस)।

अन्त्राशय।—पेट आध्मान-युक्त। प्लीहा और हृत्पिण्डके भीतरसे दर्दका अनुभव होना। तलपेटकी आँतके बीचके पदार्थ कषाय रस-विशिष्ट मालूम होते हैं। उदरके निचले तृतीयांशमें मानो त्वचा क्षय हो रही है और समस्त अन्त्रमण्डली उतरकर तलपेटमें चली गयी है ऐसा अनुभव होना। प्रबल मल-वेग; मल प्रायः पतला। दिनके ४ बजनेके समय पतला पाखाना होना। सन्ध्याके समय मलका पहला अंश सरल, इसके बाद कड़ा। सवेरे मल-वेग; मल कोमल अथवा कष्टसे निकलता है (ऐल्यू, ऐनाक, कार्बो-वेज, कैल्के-फास, लोबेल-इन, नेट्र-सल्फ, नक्स-मस, रियुटा)। शिशुका उदरामय, जब तलपेट प्रधान आक्रमणस्थल हुआ करता है (फैरङ्गटन)। पेशाब लगनेपर फिर रोक नहीं सकता (क्रियो, ब्रैकि-ग्लोट, सिङ्को, फेरम-फास)। बार और परिमाणमें पेशाबका बढ़ जाना या परिमाणमें बढ़ना, बारमें कम; रक्तमय पेशाब।

पुं०-जननेन्द्रिय।—दाहिने अण्डकोषमें दर्द; अनजानमें लिङ्गोद्रेक और अत्यन्त कामोद्रेक; दाहिने अण्डकोषमें खींचनकी तरह दर्द (रोडो, स्पञ्जिया)। रेतःस्खलन; जननेन्द्रियका क्षय प्राप्त भाव (आयोड)।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐनाक, ऐल्यू, रोडो, स्पञ्जिया, स्ट्रैमोन, कोलिनसोनिया, एङ्गस्टियु, ओनस्मोड।

तुलनीय।—कैक्ट इत्यादि। इपिकाक—वमनमें; ऐनाकार्ड—धर्म—विद्वेष।

शक्ति।—निम्न-क्रम।

आर्चिटिनम

(ORCHITINUM)

दूसरा नाम ।—स्पार्मिन। पु० डिम्ब-रस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पु० डिम्बके रससे विचूर्णके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—यह स्नायविक सुस्ती। बुढ़ापेके समयका दुबलापन, डिम्ब-ग्रन्थि उखाड़नेकी वजहसे या रजोरोधके समयके उपसर्ग और कामेन्द्रियकी कमजोरी वगैरह उपसर्गों में ओफिरिनमके साथ तुलनोय है।

शक्ति ।—निम्न-क्रमका विचूर्ण।

ओरियोडैफनो

(ORIODAPHNE)

दूसरा नाम ।—माउण्टेन लोबेल। वाम आव हेडेन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पत्तेके रससे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— पीछे और सामनेकी ओरके सर-दर्द रोगमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास ।—स्नायविक सर-दर्द, मस्तिष्क मेरु-मज्जावरण प्रदाह ; अन्त्रमण्डलोकी निष्क्रियतासे उत्पन्न उदरामय और अन्त्र-शूल रोगमें इसका व्यवहार हुआ करता है। इसमें सर-दर्दके कई विशेष लक्षण पाये जाते हैं।

लक्षणावली

मस्तक ।—माथा खाली मालूम होना, दृष्टि झुकनेपर (बेल, ब्राई, सिनेबार) या माथा हिलानेपर दोनों आँखोंमें और नाकके पासवाले अपांगमें

दबाव मालूम होना और तेज़ सर-दर्द, विशेषकर बाईं आँखके दाहिने कोनेमें ; दर्द मस्तिष्क और खोपड़ीको भेदकर सरके पिछले भागके नीचेवाले स्थानतक फैल जाता है ; वृद्धि—रोशनीसे, शब्दसे और माथा हिलानेपर ; घटना—आँख बन्द करनेपर और एकदम एकान्तमें स्थिर बैठे रहनेपर (आँख बन्द करनेपर घटना—बेल, कैल्के, हेलिबो, हायो, सलफर ; शब्दसे बढ़ना—बेल, आर्स, काकुग्र, काकि, इग्ने, लैके, लैके-कैन, लैके-डिपलो, नक्स-वोम, साइलि, स्पाइजि ; रोशनीसे बढ़ना—बेल, एपिस, काक्यु, जेल्स, सिडोरिन, नेट्र-म्यू, फास, साइलि, स्पाइजि)। सरके पिछले भागमें और गलेके पीछेकी ओर लगातार धकधक करनेवाला दर्द, यह दर्द अंशफलकतक फैल जाता है। माथा बहुत भारी मालूम होता है और हमेशा माथा हिलाते रहनेकी इच्छा होती है ; परन्तु उससे आराम नहीं मालूम होता (माथा हिलानेपर घटना—सिना ; माथा हिलानेपर बढ़ना—ब्राई, ग्लोन, कैप्स, काकुग्र, जेल्स, आइरिस, लाई)। आँखें अधमुँदी रहा करती है (ओपि, कोल्चि, जेल्स, लैके, नेट्र-मूर)। पलकोंका पड़कना (कोडाया, ऐगार)।

पाकस्थली आदि।—डकार और शरीरमें सिहरावनके साथ मिचली, अन्त्र-मण्डलीकी निष्क्रियतासे उत्पन्न पतला पाखाना होना और आँतोंमें शूलका दर्द।

सम्बन्ध।—सदृश।—बेल, ब्राई, स्पाइजि, नेट्र-मूर, जेलसि, कैल्केरिया।

शक्ति।—निम्न-क्रम।

ओरिगेनम

(ORIGANUM VULGARE)

दूसरा नाम।—ओरिगेनम मेजोराना।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इस गाछके समूचे अंशसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— स्तनमें बहुत दर्द ; कामोन्माद ; मूर्च्छा-वायु ; श्वेत-प्रदर ; चिबुकमें उत्तेजना ; इन्द्रियोंकी उत्तेजना ।

उपयोगिता और आभास ।—मन और जननेन्द्रियपर ही इसका बहुत अधिक प्रभुत्व प्रकट हुआ करता है। रमणियोंकी शृङ्गारकी बहुत इच्छा ; कामोन्माद वगैरह इसके प्रधान लक्षण हैं। दुःखित भावके बाद महान उल्लास और विवाह-चिन्ता, कामोद्दीपक सपने, बहुत अधिक रमणकी आकांक्षा, स्तन-वृन्तमें खुजली और सूजन तथा स्तनमें दर्द, हमेशा बहुत व्यस्त न रहनेपर भी मनमें नाना प्रकारके खराब भावोंका उदय होना, चलनेके समय दौड़ जाता है, माथेमें गर्मी मालूम होती है, रातमें बार-बार पेशाबका वेग ; इसी वजहसे बार-बार नींद खुल जाना इत्यादि इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण हैं ।

लक्षणावली

मन ।—स्थिर और शान्त भावसे रहना असम्भव ; विमर्ष भाव, सशङ्कित चित्त, निराशा, जीवनसे विराग, उत्तेजना-प्रवण, चञ्चल, हमेशा काममें लगे रहने या घरके बाहर दौड़ने, घूमनेकी आवश्यकता मालूम होती है। दिनभर विमर्ष भावके बाद महान हर्ष और स्फूर्त्तिका उदय होना, विवाहकी बहुत इच्छा, चित्तकी विकलता, हमेशा काममें लगे रहनेकी वासना, रोगनी चलती-चलती दौड़े बिना नहीं रह सकती (व्यूफो, आयोड)। जननेन्द्रियमें उत्तेजना और कामोद्दीपक भावका उदय होना ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना,—सन्ध्याके बाद सोनेपर (कास्टि, लैके, पल्स, रस)। कनपटीका सर-दर्द (बेल, कैमो, जेल्स, मिलिलोट)। माथेमें उत्ताप मालूम होमा (कैल्के-फास, बूफो, ग्रैटि, एपिस, लैक-डिफ्लो, ऐकोन, फास, कैन्थ); उत्तापकी वृद्धिके साथ-ही-साथ माथा एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक हिला करता है। नाकसे खूनका स्राव (मिलिलोट, व्यूफो, आयोड)।

पाकाशय आदि ।—अरुचि, रातमें बहुत अधिक प्यास। उदरमें भयानक दर्दकी वजहसे रातमें नींद खुल जाती है (इग्ने, निकोलम, जिंकम)।

बार-बार पेशाबका वेग ; रातमें तीन-चार बार नींद खुल जाती है और उठकर पेशाब करना पड़ता है (कैलि-कार्ब, हायो, हिपर, सिजिजियम, गैम्बो, लैक-कैन मूरिक्स, हेलोन, ऐसिड-कार्बोल, सार्सा ; दिनमें उतना अधिक नहीं, पर रातमें चार-पाँच बार—थिरिडि)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—पुरुष-सङ्गकी बहुत इच्छा और शृङ्गार-कामना। कामोन्माद रोगमें आत्महत्या करनेकी वासना ; कामेन्द्रियमें प्रबल उत्तेजना, अत्यन्त विषाद ; रोगिनीको विश्वास रहता है, कि कोई उसकी बात नहीं मानता और उसके उद्धारकी अब आशा नहीं है। काम-रिपुकी बहुत अधिक प्रबलताकी वजहसे बाध्य होकर हस्तमैथुन करना पड़ता है (बूफो, टैरेण्टियु, हायो, आरिटलेगो, प्लैट)। एक दिन भी हस्तमैथुन किये बिना नहीं रह सकती ; जभी कोई सुन्दर पुरुष रोगिनीको दिखाई देता है, तभी वह अपनी इन्द्रिय-लालसाकी परितृप्तिके लिये अस्वाभाविक उपायोंका आश्रय ग्रहण करती है। बहुत अधिक हस्तमैथुनके कारण रोगिनीकी बुद्धि लोप हो जाती है। प्रदर रोगाधिकारमें कामेन्द्रियकी उत्तेजना। प्रदर, बन्ध्यात्व, जरायुमें आध्मान-वायु सञ्चय होना (ब्रोम, लाई, लैक-कैन)। स्तन-वृन्तमें खुजली और सूजन हुआ करती है और स्तनमें दर्द हुआ करता है।

वृद्धि ।—रातमें (प्यास और पेशाब), सन्ध्याके बाद सोनेपर (सरमें चक्कर आना)।

सम्बन्ध ।—**सदृश ।**—कैन्थ, कैनाब-इन, कोलिन्सो, हिडियोमा, हेलोन, प्लैट, वैलि, बूफो, हायो, आयोड, फेरियुला-ग्लोका।

तुलनीय ।—बालिकाओंके नकली मैथुनमें—ग्रैटियोला। अन्यान्य विषयमें—बूफो ; दौड़नेके भाव—आयोड।

शक्ति ।— तृतीय दशमिकसे ६ठा शततमिक क्रम।

आर्निथोगेलम अम्बेलेटम

(ORNITHOGALUM UMBELLATUM)

दूसरा नाम ।—लहसनकी तरह एक प्रकारकी खुजली विशेष ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे गाछसे अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— कैन्सर या कर्कट रोग ; उदराध्मान ; पाकाशयका जखम ; पाकस्थलीमें जखम इत्यादि ।

आभास ।—इसका प्रधान लाभ पाकाशयके कर्कटीया अर्बुद रोगमें है और इसका प्रधान निर्णायक लक्षण है—"उदरके ऊपरी प्रदेशमें मानो आध्मानकी वजहसे गोले सब लुढ़क रहे हैं ।"

लक्षणावली

पाकस्थली ।—पाक और अंत्राशय आध्मान-वायुसे भरा और फूल उठता है और रोगिनीको वाध्य होकर कमरका कपड़ा ढीला कर देना पड़ता है ; अपने प्रति घृणा और विषाद और मनमें आत्म-हत्या करनेकी वासना उदय होती है ; सम्पूर्ण अवसाद और उदरके ऊपरी प्रदेशमें बेचैन करनेवाला शून्य-भाव अनुभव होना ; बहुत बेचैनी मालूम होनेकी वजहसे रातमें अधिकांश समय ही नींद नहीं आती । दर्दसे रोगीको देह चक्कर खाती रहती है और कोई भी भोजनका पदार्थ अधिक देरतक पेटमें नहीं रहता ; गर्म चीजें खानेसे घटना और ठण्डा पानीय पीनेसे बढ़ जाया करता है। यन्त्रणा रातमें बढ़ जाती है—पाकाशयसे आरम्भ होकर वक्षके भीतर और कन्धेतक फैल जाती है और रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो लोहेका एक टुकड़ा पाकस्थलीसे वक्षमें फैल रहा है। वक्ष और और उदरको अलग करनेवाली पेशीका संयोग स्थान उदरके ऊपरी प्रदेशतक ऊँचा हो उठता है। भोजनके समय ऐसा मालूम होता है, मानो खाये हुए पदार्थने पाकस्थली रोक ली, मिचली और दिनमें दो-तीन बार वमन। छातीमें जलन और डकारके साथ खाये हुए पदार्थ

कण्ठमें चढ़ आते हैं। करवट बदलते समय ऐसा मालूम होता है, मानो पेटके भीतरकी एक पानी-भरी थैली भी उलट गयी; पेट फूला और कड़ा, मानो आध्मानके गोले सब उदरके एक प्रान्तसे अन्य प्रान्ततक लुढ़कते फिरते हैं। कब्जियत हो जाया करती है, पतला पाखाना होनेपर घटना।

सार्वाङ्गिक।—बैठनेपर दोनों पैरों और चरणोंमें झुनझुनी होती है। दोनों पैरोंका काँपना; सिहरावनकी वजहसे रातमें नींद नहीं आती। दोनों पैर फूल उठते हैं और उनपर लाल रेखाएँ सब पैदा हो जाती हैं। दोनों पैरोंमें सूजनकी वजहसे चलनेकी शक्तिका न रहना। दर्द पैदा होनेके पहले शरीर ठण्डा हो जाता है। ऐसा अनुभव होता है, कि प्रत्येक स्नायु भिन्न-भिन्न समयपर भिन्न-भिन्न स्थानमें दब रहा है। चलनेके सिवा पड़ नहीं सकता; पसीना होकर नींद खुल जाती है।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—ऐलियम-सैट, एबिज-नाई, कैमो, सिङ्को, कार्बो-वेज, हाइड्रैस्ट, लाई।

शक्ति।—मूल अर्क एक-एक मात्रा सप्ताह या एक पक्षका अन्तर देकर प्रयोग करना चाहिये।

ओस्मियम

(OSMIUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—धातु-विशेषसे विचूर्ण। ओस्मियम एसिड विशुद्ध पानीमें गला लेना चाहिये।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—दमा; श्वासनली-प्रदाह; सर्दी और खाँसी; अकौता; लिङ्गोद्रेक; आँखकी बीमारी; सर-दर्द; आँत उतरना; शिश्न या पुरुषाङ्गका जखम; रेतःक्षरण; नाकसे रक्त-स्राव; वक्षकी हड्डीमें दर्द; उपदंशके उद्भेद; अण्डकोषमें दर्द; जीभमें जखम।

उपयोगिता और आभास।—इसके द्वारा समूचे श्वास-पथका प्रदाह और उसमें गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा पैदा होनेका लक्षण उत्पन्न हो

जाया करता है। वायुनलीसे यह बलगम बड़ी तकलीफ़से निकलता है। दोनों मूत्रग्रन्थियोंपर भी इसके द्वारा रोगका आक्रमण हुआ करता है और उनमें प्रदाह उत्पन्न हो जाया करता है.। अस्वच्छ दृष्टि या अन्धापन भी इससे पैदा हो जाया करता है। दोनों नासारंध्र और स्वरनलीमें बहुत ठण्डी हवाका स्पर्श सहन नहीं होता ; खाँसनेपर स्वरनली, वायु-मार्ग और वक्षोस्थिमें और नीचे दर्द अनुभव होता है, यहाँतक कि बोलनेपर भी इन सब अंशोंमें दर्द मालूम हुआ करता है। खाँसी—आक्षेपिक, शरीर हिला देनेवाली और ढं-ढं आवाज़ होती है, मानो हाँड़ीके भीतर खाँस रहा है ; स्वरनली या उसकी अपेक्षा निचले अंशमें उत्तेजनाकी वजहसे खाँसी पैदा हो जाया करती है। इसका सर-दर्द बहुत तकलीफ़ देनेवाला होता है और अधिकांश स्थानोंमें मस्तिष्कके मूलदेशमें यह दर्द हुआ करता है। ललाटके बीचसे माथा भेदकर पीठतक दर्द अनुभव हुआ करता है ; ललाटपर प्रबल दबाव डालनेपर दर्द घटा हुआ मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो माथा एक बन्धनीसे बाँध रखा है। कण्ठमें ऐसा अनुभव होता है, मानो पत्थरके टुकड़े सब निगल गया है। ऐसा मालूम होता है, मानो कीड़े सब पीठ और कन्धेके ऊपर रेंग रहे हैं। शरीरकी त्वचा और जननेन्द्रियपर भी इसकी शक्तिका परिचय मिला करता है। अकौता और दादकी तरह उद्भेद—देहके ऊपरी अंशसे नीचेकी ओर फैल जाता है ; ऊपरी अंशके उद्भेद सब आरोग्य या गायब हो जाते हैं और निम्नाङ्गमें उद्भेदकी अधिकता मालूम होती है। पुट्ठेसे रेतोरज्जुतक दर्द अनुभव होना। बाईं रेतोरज्जुमें सुई बेधनेकी तरह दर्द ; रेतोरज्जुमें सुरसुरी मालूम होती है। प्रबल लिङ्गोच्छ्वास और कामोद्दीपक रमणके बाद बड़ी देरतक और अपर्याप्त वीर्यस्खलन इत्यादि इसके कुछ प्रकृतिगत क्रियाफल हैं।

लक्षणावली

मस्तक।—रातमें मस्तिष्कके नीचे और दोनों हनुमें दर्द या मस्तिष्ककी तलीसे हनुतक दर्द ; स्वरनलीमें दर्द और स्वर-भङ्ग ; कनपटीमें दर्दकी अधिकता ; दर्दकी वजहसे सहजमें ही नींद नहीं आती ; ऐसा मालूम होता है, मानो माथा कानके ऊपरकी ओरसे एक बंधनीसे बँधा हुआ है (जेल्स, आयोड, काक्यु, ऐ-नाई)। आँखोंके ऊपरी और निचले प्रदेशमें कानतक

फैलनेवाला प्रचण्ड सर-दर्द, भौंहोंके नीचे बहुत तेज़ दर्द होता है और आँखमें पानी भर आता है (चिनिन-आर्स, कैलि-आयोड, नेट्र-म्यू, स्ट्रैमोन, लैक-डिफ्लो लैक-कैन, स्पाइजि)। दाहिने ललाटमें दर्द,—आगे-पीछे हटनेवाला और भीतरी प्रदेशतक फाड़ने या उखाड़नेकी तरह दर्द (वैसिलिन); ललाटके बीचवाले अंशसे तेज़ और उन्मत्त करनेवाला दर्द माथा भेदकर पीठमें चला जाता है; घटना—इसके बाद दबाने या टोपनेपर। तीसरे पहर मूर्च्छा और सरके पिछले भागमें दर्द अनुभूत होता है; वृद्धि—मस्तक पीछेकी ओर झुकानेपर। केश झड़ना।

आँख।—चक्षु-गह्वरमें तेज़ दर्द,—दर्द मानो अस्थिगत हो रहा है: पलकें आप-से-आप बन्द हो जाती हैं (मर्क, नेट्र-म्यू, ऐल्यू, कैल्के)। आँखमें जलन और बहुत ज्यादा आँसू बहना (इयुफ्रे, कैलि-आयोड, क्रियो, फाइटो, फास, क्रोकस, कैम्फो)। क्षीण दृष्टि, विशेषकर दाहिनी आँखमें। अस्पष्ट दृष्टि,--अक्षर सब आपसमें जुड़ जाते हैं, मानो आँखके सामने अंधेरा पैदा होनेकी वजहसे (वर्ण सब आपसमें जुड़ जाते हैं—आर्जेण्ट-नाई, नेट्र-म्यूर. साइलि, स्टैफ, आर्टिमि-वाल, कैम्फो, कोना, फेर, ग्रैफ, लाई, मर्क्युरियस-पेरेन)। आँख करकराती है, निर्मल वायु लगनेपर घट जाता है, पर दृष्टि-क्षीण हो जाती है और पढ़नेमें बाधा पहुँचती है; सभी चीजें कितने ही रंगोंकी शोभासे घिरी दिखाई देती हैं (कैलेड, स्टैन) और दोनों आँखें फूलीं और लाल हो उठती हैं (अरम, नक्स)। दियेकी शिखा नीली, हरी या पीली या इन्द्रधनुषकी तरह नाना रंगोंकी शोभासे घिरा मालूम होता है (इन्द्रधनुषकी तरह (कैलेड, स्टैन, पीला रंग—ऐल्यू)। चक्षुगोलकके पश्चात गात्रकी शिराएँ सब टेढ़ी और फैली दिखाई देती है। अस्वच्छ दृष्टि (फास, ब्राई, सीड्रन, कोलचि, कोलो, लैक-कैन),—आलोक शिखाके चारों ओर इन्द्रधनुषकी तरह शोभा देखना और चक्षुगोलकके चारों ओर दर्दका अनुभव होना। चक्षुगोलकके ऊपरी और निचले प्रदेशमें स्नायुशूल, आँसू निकला करते हैं (हाइड्रो-कोट, आइरिस-वार्सिकोलर)।

कान।—दाहिने कानमें ढं-ढं शब्द (इस्क्यु-हिप, ब्रोम, स्पञ्जि)। संध्याके समय कानमें दर्द,—पहले दाहिने इसके बाद बाएँ, कानपर रोगका आक्रमण होता है। कानमें खुजली और नाकसे बहुत ज्यादा सर्दीका स्राव।

छेद और कर्ण-पटह लाल और उठा हुआ मालूम होता है। नाकसे पतला अथवा डोरीकी तरह बलगम निकला करता है। बधिरता—नाकसे छींक आनेके समय कानमें दर्द मालूम होता है (हिप, कैलि-म्यूर, डायस्को, कैस्के)।

नाक।—ऐसा अनुभव होना कि माथेसे मानो नाकके भीतर वेगसे खून दौड़ता है। रंध्रमें ज्वालाजनक उत्तेजना, मानो गर्म पानी लगनेकी वजहसे कण्ठ, अन्ननाली और वायुनलीके बीचमें ऐसी ही जलन अनुभव होती है। स्वरनलीमें खुजली और श्वासकृच्छ्रता ; बार-बार छींक और नाकसे स्राव। नाकके पिछले छेदसे पतले श्लेष्माका स्राव। नाकमें ठण्डी हवा प्रवेश करनेपर तकलीफ़ होती है (ग्रैफ, इलैप्स, कोरल-रूब्र, ब्रूफो, आयोड, कैम्फ)। घ्राण-शक्तिका घटना।

मुख-विवर।—ऊपरी पंक्तिका क्षय हुआ पेषण-दन्त दर्द किया करता है ; कितनी ही बार इतना दर्द होता है, कि रोगी बोल नहीं सकता ; जीभ द्वारा रोगी दाँत आशोषण करनेपर आराम मालूम होता है (कास्टि, सिपा ; वृद्धि—नक्स-वोम, बेल, कार्बो-वेज, साइलि)। हनु और चर्वण-पेशीमें दर्द। खाने-पीनेके समय जीभमें स्पर्श सहन नहीं होता। मुँह लसदार लार-भरा मालूम होता है ; मुँहमें खूनका स्वाद मालूम होता है। तम्बाकू बेस्वाद मालूम होता है और चुरूटका व्यवहार करनेपर खाँसी आती है।

पाकाशय आदि।—पाकस्थलीमें बहुत गड़बड़ी मालूम होना ; काफी और तम्बाकूसे अरुचि, उनकी गन्धसे भी चिढ़ लगती है। डकारमें मूलीकी गन्ध आती है। सवेरे मिचली और उदरके ऊपरी भागमें गड़बड़ी मालूम होना ; खाँसनेपर मिचली पैदा हो जाती है ; घोड़ेपर चढ़कर घूमनेके समय उदरके ऊपरी भागमें दर्द और भार मालूम होना और भोजनके बाद जी मिचलाने लगना ; घटना—खाली डकार आनेपर। रह-रहकर तेज़ पानीकी तरह वमन, इसके बाद पीला गाढ़ा गोंदकी तरह वमन होता है। पाकाशय और अन्त्राशय आध्मानसे भरा, खासकर सन्ध्याके समय ; बड़े कष्टसे वायु निकलता है। दोपहरके पहले मानो पेट चिपक जाता है। पाकस्थलीमें दबाव मालूम होना ; कभी-कभी प्रायः ही वमन होता है। पेट आध्मानयुक्त और उसमें स्पर्श सहन नहीं होना। आँतोंमें जोरकी गड़गड़ाहट ; पुट्ठेके स्थानपर दर्द मालूम होना और खाँसनेपर यह दर्द अण्डकोषतक फैल जाता

है (नेट्र-म्यूर)। वंक्षणीय छिद्रके मुँहपर दबाव मालूम होना (सिपा)। अर्श—खाँसनेपर बढ़ता है या बाहर निकल आता है।

पुं०-जननेन्द्रिय। – शिरा और मेढ्रत्वकके अगले भागमें बहुत तेज़ दर्द। लिङ्गमणि (लिङ्गकी सुपारी) का पार्श्व लाल और रमणके बाद बहुत देरतक वीर्यपात हुआ करता है। लिङ्गमणिके बाएँ पार्श्वमें टपक-जैसा और डङ्क मारनेकी तरह दर्द। सवेरे लिङ्गमें कड़ापन। अण्डकोषमें दर्दकी वजहसे नींद नहीं आती; रेतोरज्जुके भीतर दर्द, विशेषकर बाईं ओरके रेतोरज्जुमें। दाहिनी वंक्षणीय ग्रन्थिकी प्रादाहिक सूजन और रेतोरज्जुसे अण्डकोषतक फैलनेवाला दर्द। रमणकी इच्छा बिलकुल ही नहीं रहती; स्वास्थ्यकी रक्षाके लिये आवश्यक समझकर इच्छापूर्वक स्त्री-गमन करता है, परन्तु रेतःस्खलनके समय जो अकथनीय आनन्द अनुभव होता है, उसका उसे अनुभव नहीं होता।

श्वासयन्त्र। – स्वरनलीमें खुजली, जखम-भरा दर्द और जलन। सभी वायु-मार्गोंमें बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा सञ्चित हुआ करता है; कण्ठसे निकला हुआ कफ़ मुँहसे डोरीकी तरह झूला करता है (फेरम, कैलि-बाई, फास, कक्कस) और खाँसी तथा ओकाई पैदा कर देता है (कक्कस-कैक्टाई)। छींकनेपर वायुनलीमें अड़ा हुआ कफ़ आप-से-आप ही छूटकर बाहर निकल आता है। छींकनेपर वायुनलीभुजका कफ़ अपने-आप निकलने लगता है, खाँसनेपर कण्ठमें सूखापन मालूम होता है। खाँसी और सर्दी रोगमें स्वरभङ्ग। स्वरभंगका बढ़ना—गाना गानेपर, घोड़ेपर चढ़कर घूमनेपर, घरके बाहर टहलनेपर (टेल्यू) और बाहर रहकर घरमें प्रवेश करनेपर (वायुके विपरीत ओर चलनेपर बढ़ना—नक्स-मस)। घरघर खाँसी, मानो रोगी हाँड़ीके भीतरसे खाँस रहा है। खाँसते-खाँसते छींक आ जाती है (ऐण्टिम-टार्ट, बेल, हिप, आयोड, सिपि, स्कियुला, पोडो, सेनेगा)। खाँसी हल्की सूखी; खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो श्लैष्मिक-झिल्ली फट जायगी (मिडोरिन, सिपा) और वायुनलीका सङ्कोचन (सल्फि, बेल, कास्टि, चेलिडो, लैके, फास) पैदा हो जाता है। वक्षको फाड़ डालनेवाली खाँसी, लम्बी साँस खींचनेपर घटी मालूम होती है; घरके बाहर टहलनेपर बढ़ जाती है। श्वास-प्रश्वासके समय वक्ष और स्वरनलीमें पतला श्लेष्मा घरघराता है, श्वास-प्रश्वासके समय वायुनलीमें तरल श्लेष्माके बुलबुले

फूटनेकी आवाज़ सुन पड़ती है। जगह बदलनेवाला फेफड़ेका प्रदाह। बाएँ पार्श्वकी नीचेवाली पर्शुकाके नीचे सुई गड़नेकी तरह दर्द। खाँसनेपर वक्षके बीचकी हड्डीके नीचे दर्द होता है और यह दर्द दोनों ओरके वक्षके भीतरतक फैल जाता है; खाँसनेपर लम्बे पीले रङ्गके डोरीकी तरह कफ़के टुकड़े सब वायुनलीसे छूटकर बाहर निकल आते हैं। खाँसनेके समयके अलावा अन्य समय भी वक्षके बीचवाली वक्षमध्योस्थिमें बहुत दर्द होता है और स्पर्श सहन नहीं हुआ करता है। वक्षमें दबाव मालूम होना,—लम्बी साँस लेनेपर घटता हैं। आक्षेपिक खाँसीके समय हाथकी अंगुलियाँ सब नाचा करती हैं (दाहिने हाथका नाचना—सिना)।

त्वचा।—कर-पृष्ठपर लाल दाग या चिन्ह प्रकट हो जाते हैं। बाँहके अगले भागमें और हाथमें गुलाबी रङ्गकी फुन्सियाँ निकलती हैं और इसके बाद इन सब अंशोंसे रूसी जैसी खाल निकलती है। शरीरमें जगह-जगह कीड़े आदि चलनेकी तरह खुजली मालूम होती है। चेहरा और जर्द्धाङ्गमें खसड़ाकी तरह उद्भेद। घमौरी—ऊपरी अङ्गमें लोप होकर निचले अङ्गमें पैदा हो जाती है; पहले उरुके ऊपर, इसके बाद पैरोंमें और अन्तमें गुल्फदेशमें निकलती है और बढ़ती रहती है। पीठ और कन्धेमें ऐसी खुजली मालूम होती है, मानो कीड़े सब चल रहे हैं—संध्याके बाद सोनेपर यह पैदा होती है,—नींदमें व्याघात पैदा हो जाता है। बगलके पसीनेमें लहसुनकी गन्ध आती है। बढ़े हुए नखके अगले भागमें मांस लगा रहता है, विशेषकर दाहिने हाथकी मध्यमा अंगुलीके नखमें (ऐ-पलू)।

वृद्धि।—छूनेपर, खाँसनेपर, संध्याके समय, आधी राततक (खाँसी), घरके बाहरकी निर्मल हवा लगनेपर (सिपा—निर्मल वायुमें घटना) और घुड़सवारीमें घूमनेपर।

घटना।—जोरसे अंगुलीसे टीपने या दबानेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—बेल, हिप, मर्क (स्वरनलीकी सर्दी); एसिड-फास, साइलि (मसूढ़ा फूलना); (स्वरनलीका दर्द)।

सदृश।—आर्जेण्ट-मेट, आर्स, ब्रोम, मैङ्ग, सेलिन, सल्फ, टेल्यूरियम।

तुलनीय । आँख और फेफड़ा (क्लोरो, ब्रोम); नखका चमड़ा—ऐसिड-फ्लूयो ; खुजलीमें सल्फर ; सर्दीमें—सिपिया : उद्वेगमें—रस, आर्स ।

शक्ति ।—तृतीय दशमिकसे २०० शततमिक क्रम ।

आस्ट्रया वर्जिनिका

(OSTRYA VIRGINICA)

दूसरा नाम ।—आयरन-उड, लिवर उड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसके गाछसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—धीमा-धीमा सर-दर्द ; सविराम ज्वर ; यकृतमें विकार ; कटिवात ; मैलेरियासे उत्पन्न ज्वर और खूनकी कमी ।

उपयोगिता और आभास ।—मैलेरियासे पैदा हुए रोगोंके बाद खूनकी कमी दूर करनेके लिये या मैलेरियासे पैदा हुआ खूनका अभाव आरोग्य करनेकी यह एक बहुत ही लाभदायक दवा है । पित्त-सञ्चय क्रियाके विकारमें भी यह बहुत लाभदायक है । धीमा-धीमा सर-दर्द और पीठ तथा कन्धोंमें दर्द, इसके यकृतपर शक्तिका परिचायक है । उदरमें छेदनेकी तरह दर्द और बेचैनी पैदा करनेवाली सुस्ती ; जिह्वामूलमें पीला लेप, सवेरे और शामको भोजनसे अरुचि ; अस्पष्ट सरका दर्द रोगमें अधिकांश समय मिचली मालूम होती है—ये ही कई इसके प्रधान लक्षण हैं । आगे लिखे कई लक्षण ऊपर बताये कई लक्षणोंके विपरीत रहनेपर भी आस्ट्रियाके प्रकृतिगत लक्षण हैं । जैसे—बहुत भूख लगना, भूखके कारण रातके ४ बजेके (इग्ने, लाइ) समय रोगीकी नींद खुल जाती है (भूखकी वजहसे नींदमें व्याघात होता है—मेरम-वे, फास ; रातमें भूख लगती है—ऐब्रिज-नाई, सेलिन, टेल्यू) और उदरके ऊपरी प्रदेशमें सुस्ती और खालीपन मालूम होना (क्लोरेलम, क्रोटेल, ऐ-हाइड्रोसायान, इग्ने, कैलि-कार्ब, लैक-कैन, लेप्टा, माइरिका-सेरिफ, नेट्र-म्यूर,

नक्स, फास, स्ट्रेन, सल्फ, टैबाक, सिपि, इलैप्स); कभी-कभी काले रङ्गका पाखाना होना।

लक्षणावली

मस्तक ।—माथा छोटा या हलका मालूम होना, विशेषकर चलनेके समय। सर-दर्द रोगमें माथा, मुखमण्डल और हाथ "कुट-कुट" किया करता है, विशेषकर माथा। प्रचण्ड.टपककी तरह ललाट-देशका सर-दर्द ; वृद्धि—झुकनेपर। मिचली और अस्पष्ट सर-दर्द।

पाक और अंत्राशय ।—भूख बहुत बढ़ जाया करती है। रातमें चार बजनेके समय भूखकी वजहसे नींद खुल जाती है (भूखकी वजहसे नींद नहीं आती—इग्ने ; नींद आ जाती है—लाई)। पाकस्थलीका अम्लत्व (खट्टापन)। ऊपरी पेटमें जलन पैदा करनेवाली यन्त्रणा। ऐसा अनुभव होना कि पाकस्थलीमें अजीर्ण पदार्थ इकट्ठे हो रहे हैं; घटना—भोजनके बाद। ठण्डी हवामें घोड़ेपर सवार होकर घूमनेके बाद मिचली और यन्त्रणा। उदरके ऊपरी भागमें शून्य भाव और सुस्ती (सिपिया, माइरिका, नेट्र-म्यूर, फास, टैबाक, लैक-कैन, कैलि-कार्ब, लेप्टा, क्रोटेलस)। दाहिनी कोखमें अस्पष्ट दर्द; वृद्धि—चलनेपर, थोड़ेमें ही कातर हो पड़ना और अस्पष्ट सर-दर्द भी मालूम होता है। खट्टी डकार और दाहिने गासेमें धीमा दर्द। नाभीका पीछेकी ओर खिंचना (प्लम्ब)। नाभि-प्रदेशमें छेदनेकी तरह दर्द और यह दर्द उदरके ऊपरी भागतक चला जाता है—मलका वेग, आँतोंमें आवाज़ या पेट गड़गड़ाना और कूथन भी मालूम होती है। रातमें उदरमें आध्मान वायु सञ्चय और आँतोंमें आवाज़की वजहसे नींद खुल जाती है। मलान्त्र जखम भरा और पाखाना होने बाद ऐसा मालूम होता है मानो मलान्त्र बाहर निकल पड़ा है। पाखाना होनेके समय कूथन और इसके साथ ही पित्तमय पाखाना निकलना ; मल स्वाभाविक, पर काली आभा लिये। ६ बजनेके समय सूखे काले मलखण्ड सब निकलते हैं। पीठ और कमरमें इतना दर्द होता है कि रोगी करवट नहीं बदल सकता (ब्राई, साइक्यु, सैक्रोटिन, नक्स, सिपि) या उठकर बैठ नहीं सकता (ज़िङ्कम)।

तुलनीय ।—रातमें भूख लगकर जाग पड़ना—इग्ने, लाइकोपो ; काले रङ्गका मल—लेप्टा ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ब्राई, साइक्यु, लैक-कैन, लेप्टैन, माइरिका, नक्स, सैक्रोटिन, फास, इलैप्स, कैलि-कार्ब, इग्ने, लाई, सल्फ, सिपिया, स्टैनम ।

दोषघ्न ।—ब्रायो, नक्स-वोमिका ।

शक्ति ।—१म दशमिकसे ३रा शततमिक क्रम ।

ओवाई गैलिनो पेलीक्युला

(OVI GALLINÆ PELLICULA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मुर्गेके अण्डेके भीतरकी ताज़ी छालसे विचूर्ण तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—रजोबन्ध ; सर्दी ; खाँसी ; हृदयका विकार ; श्वेत-प्रदर ; आर्त्तवका विकार ; डिम्बाधारका दर्द ; योनिकी खुजली ; गलेका जखम ; जरायु-भ्रंश ; मेरुदण्डमें दर्द इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—स्त्री-जननेन्द्रियपर ही इसकी विशेष क्रिया होती है और स्त्री-जननेन्द्रियपर ही इसके अधिक लक्षण प्रकट होते हैं तथा रमणियोंके नाना प्रकारके रोगोंमें इसका फायदा दिखाई देता है। एकाएक दद आदिका पैदा होना, मानो जरायु आदि नीचेकी ओर दब रहे हैं ; बायें जघन-प्रदेशमें एवं कटिदेशमें दर्द, दुर्बलता और सुस्ती मालूम होना, हृत्पिण्ड और बायां डिम्बाधार दोनोंमें एक साथ ही दर्द, कलाई, बाँह, कमर वगैरह अंशोंमें किसी तरहका बन्धन सहन न होना ; त्रिकास्थि प्रदेशमें गर्मी और बाकी अंगोंमें ठण्डक मालूम होना, सोनेके समय और निद्रित अवस्थामें रह-रहकर हाथ-पैर आदिका फड़कना, जरायुमें लगातार ऐसा मालूम होना मानो कुछ बाहर निकालनेकी चेष्टा करता है और मानो उसमेंसे बड़े वेगसे खून निकलनेकी सम्भावना हो रही है। ऐसा भी अनुभव होना मानों वस्ति-

गह्वरमें कुछ उलट गया, आर्त्तव-स्रावके बाद दूधकी मलाईकी तरह प्रदर-स्राव इत्यादि कई इसके प्रधान लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन और मस्तक।—आर्त्तव-स्रावके पहले दुःखित भाव (कोना, नेट्र-मूर, पल्स)। निराशा-पूर्ण और रोदन-परायण भाव (एपिस, कास्टि, चेलिडो, साइक्यु, ग्रैफ, लिलि-टाई, नेट्र-मूर, पल्स, सिपि)। गहरा विषाद, क्यों ऐसा है यह नहीं बता सकता; बादलके टुकड़ेकी तरह विषाद हट जाता है (आर्जेण्ट-नाई, ऐक्टिया)। मानो माथेमें कुछ बड़े वेगसे चक्कर खा रहा है, ऐसा मालूम होना, नामो भों-भोंकर घूम रहा है (आर्जेण्ट-मेट, कास्टि, चिनि-सल्फ)। सीढ़ीसे उतरना (बोरैक्स) या जमीनसे ऊँची किसी सँकरी राहमें चलनेके समय रोगिनीका माथा खाली मालूम होता है, गिर जानेका भय होता है और वह साँस रोककर आगे बढ़ती है। माथेके पिछले भागमें दर्द। बाईं आँखको भेदकर पीछेतक शूल बेधनेकी तरह तेज़ दर्द अनुभव होता है (ब्रोम, ब्राई); दर्द इतना प्रचण्ड होता है कि रोगी अपने हाथसे इस आँखको दबा रखता है, जिससे वह बाहर न निकल पड़े। आँखके ऊपर मानो एक ढकना ढका हुआ है। गड़हेमें धँसी आँखें और ऊँचे उठी हड्डीसे भरा कङ्काल-सार चेहरा।

नाक।—सामान्य सर्दी लग जानेकी वजहसे एकाएक भयानक सर्दी और नाकसे स्रावका होना आरम्भ हो जाता है, नाकसे बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकलता है और दो-तीन दिन बाद एकाएक बन्द हो जाता है। ऐसा मालूम होना कि सहसा सर्दी लग गयी है, बार-बार छींक (सिपा, साइक्लेम)। लगातार सर्दीका स्राव और दोनों ओंठोंकी त्वचा फट जाया करती है।

मुखमण्डल।—दोनों आँखें गड़हेमें धँसी, कङ्कालसार मूर्त्ति और शकलका बदरंग हो जाना। आर्त्तव-स्रावके समय साँस द्वारा छोड़ी हुई हवा बहुत बदबूदार रहती है (कोलोफिल, सिपि)। मुँहमें ताजे अण्डेका स्वाद; लार बहुत खट्टी (ऐंगास्ट)। बाएँ पार्श्वका गलेका जखम—मानो यह अंश दग्ध हो गया है, दर्द केवल रातके समय होता है; खाँसनेपर जमा हुआ बलगम सब वेगसे गलेके भीतरसे वायुनलीमें घुसता है। कण्ठके बाएँ पार्श्वमें

मानो एक गोली अड़ी हुई है—ऐसा अनुभव पैदा करनेवाला गलेका जख्म, कण्ठके भीतरका स्थान प्रदाहित मालूम होता है; दोनों गल-ग्रन्थियोंका फूलना। गलेमें खाँसी पैदा करनेवाला सूखापन मालूम होना और एक ओरकी गल-ग्रन्थि प्रदाहित मालूम होती है।

पाक और अन्त्राशय।—बहुत अधिक दुर्भावना या मानसिक अवसादसे उत्पन्न स्नायविक विकार मिला अजीर्ण रोग (साइप्रीपिडियम, ए-हाइड्रोसायान, नक्स-वोम, सिफिलिन); रोगी-विषन्न चित्त, बहुत कमजोर रहता है और उसे प्रायः नींद नहीं आती। वक्षोस्थिके निचले भागमें और पीठके मध्यस्थलमें ऐसा अनुभव होना मानो एक आलू अड़ा हुआ है (ऐबियेज-नाइग्रा, ऐब्रोट, लाई, ऐनाक, विङ्का) और त्रिकास्थि-प्रदेशमें प्रचण्ड दर्द मालूम होना। उदरके ऊपरी प्रदेशमें या पाकस्थलीके तल-देशमें जलन और भार मालूम होना। पित्ताश्मरी रोगमें वमन। एकाएक उदरके ऊपरी प्रदेशके बिचले अंशमें या अग्रकड़ाके नीचे भयानक दर्द पैदा हो जाता है और यह दर्द बाएँ डिम्बाधार और बाएँ पैरमें फैल जाता है। रजः आरम्भ होनेके पहले पेट फूलना, पेट इतना फूल उठता है, कि ऐसा मालूम होता है, मानो पेट फट जायगा और जरायु मानो प्रबल वेगसे नीचेकी ओर खिंच रहा है। तलपेटमें नीचेकी ओर दबाव मालूम होना। रजोनिवृत्तिके समय बाएँ उदरमें स्पर्श बहुत ही असह्य मालूम होता है, उसके भीतरसे रह-रहकर तेज़ दर्द चारों ओर दौड़ पड़ता है और इस तरहका तेज़ नीचेकी ओर आकर्षण मालूम होता है, मानो जरायुके साथ कोई एक भारी पदार्थ बँधा हुआ है। तलपेटमें दर्द; वृद्धि—जिस करवट सोता है, उसी ओर; चित्त होकर सोनेपर त्रिकास्थिमें बहुत दर्द मालूम होता है।

मल और मूत्र।—कब्जियत—पाँचसे आठ दिनोंतक अनियमित भावसे पाखाना होना। मलके साथ बालूकी तरह पदार्थ मिला रहता है और वह पाखानेके पात्रमें गिरता है, यह मल बड़े कष्टसे निकलता है। छेदनेकी तरह शूल-वेदना मालूम होना और ठण्डा पतला पाखाना होना, रोगीकी हिमांग अवस्था। तरल मलके साथ सिकुड़ी हुई श्लेष्मा निकलता है। रातमें एकाएक पेटमें ऐंठन होकर पतला पाखाना होता है। गाड़ीपर चढ़कर भ्रमण करनेके समय मलान्त्रसे खूनका स्राव होता है और नितम्बमें

प्रचण्ड दर्द होता है। रजोनिवृत्तिके बाद रोगिनी जभी छींकती है, तभी आप-से-आप पेशाब निकल पड़ता है (ऐ-फास, नक्स-मस, एपिस, कास्टि, स्क्वियुला, सिपिया)। पेशाब इतना गर्म होता है, कि पेशाबके समय योनिद्वार, विशेषकर उसका दाहिना पार्श्व मानो दग्ध हो जाता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—एकाएक किसी तरहका शारीरिक परिश्रम करते-करते ऐसा मालूम होता है, मानो बाएँ पुट्ठे की जगहपर कुछ छिल गया और वहाँसे दर्द आरम्भ होकर वह उरुसे जानु और जानुसे पैरतक चला जाता है और रोगीको बाध्य होकर शय्यापर पड़ जाना पड़ता है; इसके बाद किसी तरहकी भी सामान्य परिश्रम या बाँह द्वारा कोई काम या कोई चीज़ उठाने या रखनेके समय यह दर्द दुबारा पैदा हो जाता है, विशेषकर रजःस्रावके समय डिम्बाधारका दर्द और जरायु आदिका नीचेकी ओर खिंचना बहुत बढ़ जाता है; स्थिर होकर बैठने या किसी तरहका परिश्रम न करनेपर घटा मालूम होता है। रजःस्रावके समय रोगिनीके मुँहसे इस तरहकी एक दुर्गन्ध निकलती है, जैसी पहले कभी भी मालूम नहीं हुई (कोकोफिल, सिपि)। रजःस्राव होनेके पूर्ववाले दिन एकाएक आधी रातके बाद रोगिनीकी नींद खुल जाती है और उसे ऐसा मालूम होता है, कि कोई चीज़ धक्का देकर तलपेटसे बाहर निकल जाना चाहती है और मानो जरायुका रक्त बड़े वेगसे निकलनेकी चेष्टा कर रहा है तथा ऐसा अनुभव होनेके समय पेट इतना फूल उठता है, कि ऐसा मालूम होता है कि वह फट जायगा। एकाएक माथेमें चक्कर आ जाता है और ऐसा बोध होता है, कि तलपेटसे कुछ बड़े वेगसे बाहर निकलना चाहता है; ऐसी अनुभूतिके बाद ही जरायुसे बहुत ज्यादा खूनका स्राव होता है। स्रावके समय अन्य सभी लक्षण एकदम आराम हो जाते हैं। रजःस्राव होना बन्द होनेपर प्रदरका स्राव आरम्भ होता है, स्राव दूधकी मलाईकी तरह; स्रावके पहले जरायुमें तेज़ दर्द मालूम होता है। जरायु और बाएँ डिम्बाधारमें दर्द हुआ करता है, मानो रजःस्राव आरम्भ होनेकी यह सूचना है, परन्तु उस समय रजःस्राव होनेमें अठारह दिन बाकी रहते हैं। रजःस्राव होनेके समय औंघाई। रजःस्राव होनेपर वस्त्र आदिका भार सहन न होना। हृत्पिण्ड और बाएँ जरायुमें एक साथ ही दर्द मालूम होता है (नैजा)।

पीठ और कमर।—पीठमें दर्द, मानो कमरकी कशेरुका सब बाहर निकल पड़ी है। नितम्ब-प्रदेशमें उत्तापकी वजहसे रातमें नींद खुल जाती है,

परन्तु शरीरके अन्यान्य अंश ठण्डे रहते हैं। बाएँ डिम्बाधारसे बाएँ और उरु-शिखरमें और वहाँसे कमर होकर उरु और उससे चरणमें यह दर्द चला जाता है; उपशम—रजःस्रावके समय और बढ़ना—रजःस्राव हो जानेपर।

वृद्धि।—रजःस्रावके समय, शरीर हिलानेपर, सीढ़ी चढ़नेके समय, दबाने या छूनेपर, पूर्णिमाके समय और वस्त्र आदिके भारसे।

उपशम।—ऋतु-स्राव आरम्भ होनेपर, पीछेकी ओर झुक जानेपर और छातीमें हाथसे आघात करनेपर या वक्षको हिलानेपर (श्वास-कष्ट)।

सम्बन्ध।—सदृश।—एक्टिया-रेस, नैजा, बेल, लाई, आर्जेण्ट-नाई, केल्केरिया, ओवा-टेस्टा, बोरैक्स, कोलोफिल, सिफिलिन, नेट्र-म्यूर, इस्कू, हिप, लैके, एपिस।

तुलनीय।—कैल्केरिया, ओवा-टेस्टा (श्वेत-प्रदर); हृत्पिण्ड और बाईं ओरके डिम्बाधारमें दर्द—नैजा; सर्दीमें—कैलि-बाई। स्पर्श अनुभवकी अधिकता—लैके; नाभि-कुण्डमें एकाएक दर्द—बेलेडोना।

शक्ति। – उच्च क्रम।

आक्सिडेण्ड्रन

(OXYDENDRON)

दूसरा नाम।—सोरेल ट्री, सावर-ईव।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पत्तसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह शोथ और उदरी रोगकी बहुत बढ़िया दवा है। मूत्राशयके मुखपर अकड़न, पेशाब थोड़ा, मूत्राशय-मुखशायी ग्रन्थिका बढ़ना, मूत्र-पथरी और सारे शरीरका शोथके कारण श्वास-प्रश्वासमें कष्टके लक्षणवाले शोथ-रोगमें यह विशेष लाभदायक हो सकता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—ऐपोसाइनम, सिरिफोलियम।

शक्ति।—मूल अर्क $\frac{१}{२}$ से १ ड्राम मात्रामें और निम्न-शक्ति।

आक्सिजेनियम

(OXYGENIUM)

दूसरा नाम ।—आक्सिजन (आजोनके साथ)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—चुआये हुए पानीमें आक्सिजन मिलाकर क्रम तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—ऐकिनेशिया, कैलेण्डुला और हाइड्रैस्टिसकी तरह आक्सिजेनियमके धावन और प्रलेपमें भी सड़ना रोकनेकी विशेष शक्ति है।

इसे पानीके साथ मिलाकर कुल्ला करनेपर मुँहका जखम या सर्दी आराम हो जाती है।

सूजाकमें भी इसका लोशन व्यवहृत हुआ करता है।

केन्सर रोगमें इसका भीतरी और बाहरी प्रयोग करनेपर कितनी ही बार आशासे अधिक लाभ होता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—क्रोमिक-एसिड, कैलि-बाई, कैलि-फ्लोर, कैलि-पर्मेङ्ग, ओस्मि, एसि, क्लोरम।

यह मार्फिया और स्ट्रिकनिनकी विषाक्तताका दोष नष्ट करता है।

कैम्फर इसका दोषघ्न है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति, गैस सूंघना या बाहरी प्रयोग।

आक्साइट्रोपिस लैम्बर्टाई

(OXYTROPIS LAMBERTI)

दूसरा नाम ।—बैटल-उड, लोको-उड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया । मूलके अलावा अन्यान्य अंशोंसे मदर-टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— दृष्टि-क्षीणता ; मूलाधारकी उत्तेजना ; खाँसी ; ज्वर ; ध्वजभङ्ग ; डिम्बाधारक

दर्द ; पक्षाघात ; वात ; रेतःरज्जुमें दर्द ; अण्डकोषमें दर्द ; सरमें चक्कर आना इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—यह मेरुमज्जाके पश्चात् स्तम्भमें घनत्व पैदा करता है और इसीलिये रोगीको स्थान परिवर्त्तनकी शक्तिका क्षय या लोप होनेके उपक्रम हो जाता है ; इसके आगे लिखे कई लक्षण चलनेकी शक्ति न रहनेका परिचायक हैः—विषन्नता और भ्रान्ति-प्रवणता, ऐसा मालूम होता है, मानो बेहोश हो जायगा ; माथेमें भार मालूम होता है और खड़े होने या बैठनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो गिर जायगा । किसी लक्षणकी बात याद आते ही वह बढ़ जाया करता है, पेशाबकी बात स्मरण होते ही जोरसे पेशाब लग आता है ; स्फूर्तिजनक मादकता अनुभव होती है ; आँखमें दर्द और दृष्टि विकार ; इच्छानुसार दोनों पैरोंको चला नहीं सकता ; दोनों पैर सुन्न हो जानेकी वजहसे इधर-उधर चल नहीं सकता और बाएँ हाथ तथा पैरमें सुरसुरी हुआ करती है । इसका दर्द तेजीसे पैदा होता है और तेजीसे ही अच्छा हो जाता है ; परन्तु दर्द दूर होनेके बाद रोगवाले अंशमें दर्द और स्पर्श-असहिष्णुता अनुभूत होती है । बाएँ कर्ण-गोलकमें दर्द, इसके बाद दोनों आँखोंके मध्यवर्त्ती प्रदेशमें दर्द अनुभव होता है । दिनके १० या १०॥ बजनेके समय बेचैनी और सुस्ती मालूम होती है । समूची देहके भिन्न-भिन्न अंशोंमें पतले सूतकी तरह दर्द मालूम हुआ करता है । तीसरे पहर ३ बजनेके बाद उपशम मालूम होता है ।

लक्षणावली

मन ।—किसीसे बोलने, पढ़ने या कोई काम करनेसे अनिच्छा या चिढ़ ; अकेला रहना पसन्द करता है (ऐक्टिया, कोका, जेल्स, इग्ने, लिडम, रस, थूजा) । विमर्ष भाव—दिनभर ; शय्या त्यागनेपर विमर्ष भाव और क्लान्ति मालूम होना । सुस्ती—स्वाभाविक बल और आग्रहके साथ पढ़ नहीं सकता ; मन बहुत अधिक भुलक्कड़ । बात या नाम याद नहीं रहता । किसी विषयमें भी एकान्त भावसे जी नहीं लगा सकता ; किसी विषयमें भी चित्तको केन्द्रीभूत नहीं कर सकता (इथ्यू, बोवि, लैक-कैन, लाइकोपस-वार्जिन, मिलिलोट, ऐ-आकजैल, ऐ-फास, स्कुटेल, सिनिसियो, वाइवर्नम-ओप्युलस, जेरोफिल) । रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि वह बेहोश हो जायगा

(लैक-कैन) और खड़े होनेपर गिर जायगा। किसी लक्षणकी बात याद आते ही वह लक्षण बढ़ जाता है (ऐसिड-आक्झाल, बैराई, कैल्के-फास, कास्टि, हेलोन, मिडोरिन, जेल्स, लाइकोपस, पेट्रोल, पाइपर-मिथ)।

मस्तक।—माथेमें दबाव मालूम होना ; घटना—नींदके बाद। सरमें भरापन और उत्ताप मालूम होना, पैरोंमें बेहद सर्दी मालूम होती है और खड़े होने या बैठनेपर देह ढलमलाया करती है। सरमें चक्कर आना, दाहिनी और बाईं आँखके ऊपरी भागमें दर्द। ललाटमें जड़ता मालूम होनेकी वजहसे वाध्य होकर उसे सो जाना पड़ता है। नींद खुलनेपर ललाटमें भार मालूम होना। दिनके दो बजेतक यह अनुभूति बढ़कर इसके बाद घटा करती है। दिनके दोपहरके कुछ पहले मूर्द्धा और सरके पिछले भागको जगहपर एवं आधी रातके समय आँखके ऊपरी प्रदेशमें दर्द अनुभव होना ; रोगी जिस करवट सोता है, माथेके उसी पार्श्वमें स्पर्श सहन नहीं होता। सरके पिछले भागके निचले अंशमें ऐसा दर्द होता है, मानो कोई भारी चीज़ झूल रही है। बाएँ कर्ण-गोलकमें दो-तीन मिनटतक स्थायी दर्द,—इसके बाद दोनों आँखोंके बीचके प्रदेशमें और वहाँसे समरेख भावसे माथेके ऊपरसे मस्तिष्कके नीचे जाकर दर्द रुकता है और मालूम होता है।

आँख।—आँख जड़ता-भरी ; वह भारी मालूम होती है ; दृष्टि अस्पष्ट। पढ़नेके समय ऐसा मालूम होता है मानो बाएँ पार्श्वमें स्थित चमकीले ताम्र-फलकसे रोशनी प्रतिफलित होकर वक्षमें आकर लग रही है और यह रोशनी मानो घरके अन्तिम भागमें लगी है। दाहिनी आँखके ऊपरी-प्रदेशमें दर्द ; आँखकी पुतली सिकुड़ी ; आँखकी शिरा और पेशी सबका पक्षाघात।

पाक और अन्नाशय।—क्रमसे बढ़नेवाली भूख। लक्षणोंका बढ़ना—भोजनके बाद ; घटना—भोजनके एक घण्टा बाद (भोजन करते ही घटना और पाचन क्रिया आरम्भ होनेपर बढ़ना—ऐनाक ; भोजन करते ही बढ़ना और पाचन क्रियाकी पूर्णता आरम्भ होनेपर घटना—नक्स-वोम)। उद्गार—सोडाका पानी पीनेपर जैसी डकार आती है, उसी तरहकी डकार। शून्य उद्गार। दोपहरके पहले सोनेपर मिचली, सोकर उठनेपर घटना और सोनेपर फिरसे पैदा हो जाती है। पाकस्थलीमें बहुत दर्द और स्पर्श सहन नहीं होता। सन्ध्याके समय छुरी मारनेकी तरह दर्द होता है। उदरके दाहिने

पार्श्वसे तेज़ दर्द पैदा होकर बाएँ पार्श्वमें चला जाता है (लाई) और बहुत जोरका पाखाना मालूम होता है ; पाखाना हो जाने बाद एकदम आराम हो जाना। कब्जियतके बाद आँतोंका दर्द और पतला पाखाना होने लगना। उदरके ऊपरी भागमें स्पर्श सहन नहीं होता। रातके ८ बजनेके समय नाभि-प्रदेशमें ऐंठन होकर वह नीचेकी ओर उतर जाती है ; इसके बाद रातके १० बजनेके साथ वायु छूटना। पेट भरा मालूम होना और सोने बाद श्वास-कष्टता या श्वासाल्पता अनुभव होना।

मलान्त्र और मल।—मलान्त्रमें ऐसा दर्द मालूम होना मानो जखम हो गया है। मलान्त्रमें ऐसी सुरसुरी मालूम होना मानो कृमि रेंग रही है (सिना, इग्ने, इण्डिगो, कैल्के, सैण्टोनिन)। मलवेग—वायु निकलनेपर घटना। मल चिकना माँड़की तरह और वह मलद्वारसे सरककर निकलता है ; कभी रुखड़ा और बदबूदार ; ऐसा अनुभव होता है, मानो मलद्वारावरोधिनी पेशी शिथिल हो पड़ी है (ऐसिड-म्यूर, ऐलो)। मल कड़ा ; पहला अंश कड़ा, इसके बाद पतला मल निकलता है। मल घोर भूरा। पाखाना हो जानेपर सभी यन्त्रणायें शान्त हो जाती हैं।

पेशाब।—पेशाबकी बात याद आते ही बड़े जोरका पेशाब लग आता है ; पेशाब बहुत ज्यादा, रङ्ग फीका, गन्ध उग्र, पेशाब बहुत ज्यादा, निर्मल पानीकी तरह, घोर। पेशाब बहुत थोड़े परिमाणमें और क्रिमि रोगसे पीड़ित बालकोंके पेशाबकी तरह मालूम होता है अर्थात् कुछ लाल और बर्तनके पेंदीमें कुछ लाल रङ्गका दाग पड़ता है। मसाना या मूत्र-ग्रन्थिमें भारकी तरह दर्दकी वजहसे नींद खुल जाती है। पेशाब करनेके समय पेशाब निर्मल होता है, पर कुछ देरतक रख छोड़नेपर मैला या गदला हो जाता है (कोका, मिफाइट)।

जननेन्द्रिय।—रह-रहकर लिङ्गकी सुपारीमें दर्द मालूम होता है। अण्डकोषमें ऐसा दर्द होता है, मानो कुचल गया है और यह दर्द रेतोरज्जुकी राहसे उरुतक फैल जाता है (ऐ-नाइट्रिक, पल्स)। बहुत कामुककी क्लीवता। कामेच्छा या शृङ्गार-शक्तिका अभाव। कुचल जानेकी तरह दर्द, दाहिने अण्डकोषमें पैदा होकर बायें अण्डकोषमें (लाइकोप-वार्जि) तक चला जाता है,—शय्यामें सोनेपर। रातमें १०॥ बजनेके समय बाएँ अण्डाधारमें मानो किसीने जोरसे हाथसे पकड़ लिया ऐसा दर्द, पर कुछ देर बाद वह दर्द नहीं रहता।

सार्वाङ्गिक ।—रातमें सोनेपर २०-३० मिनटतक कलेजेमें धड़कन हुआ करती है (नक्स-वोम ; बाईं करवट सोनेपर—डैफनी, नेट्रम-म्यूर, पल्स, टैबाक, कैक्ट; फास ; दाहिने पार्श्वमें—बैडी, लिलि-टाई, ब्रोम)। सोनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्डके ऊपरसे दर्दकी लहर बह रही है ; वृद्धि—सोनेपर। गर्दनके पिछले भागकी पेशियाँ सब दर्द-भरी और अकड़ी मालूम होती है (ऐ-नाई, ऐगार, बैराई, बेल, कास्टि, लैके ; शीतल वायु लगनेकी वजहसे होनेपर—ऐक्टिया-रेस)। मेरुदण्ड और उसके पासका स्थान सुन्न मालूम होता या कमजोर और काष्ठमय बोध होता है। दोनों पैरोंके भीतरी अंशके मांस या पेशीमें दर्द और स्पर्शका सहन न होना। शरीरके दाहिने पार्श्वकी सभी पेशियोंमें स्पर्श सहन नहीं होता। सभी दर्द तुरन्त पैदा होता है और जल्दीसे ही गायब, परन्तु तकलीफ़ घट जानेपर भी रोगवाले अंशमें दर्द हुआ करता है (आर्जेण्ट-नाई, एरम-ट्राई, बेल, पेट्रोल ; धीरे-धीरे बढ़ना और इसी प्रकार घटना—स्टैन); २ बजनेके समयतक समूची देहमें स्थान-स्थानपर पतले सूतके आकारकी वेदना अनुभूत होती है (चेहरेमें माथेपर, गलेमें और वक्षमें लम्बे सूतकी तरह दर्द मालूम होता है—सिपा ; ३ बजेके बाद फिर इस ढङ्गका कोई भी दर्द नहीं रहता)। रोगी अपनी देह या प्रत्यंगोंको इच्छानुरूप चला नहीं सकता (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, जेल्स, फाइजस, लैथाई-सैट); दाहिनी कलाईमें कुछ देरतक सुई गड़नेकी तरह दर्द और इसके बाद ही सन्धियोंका क्षीण हो जाना। शरीरके मांसमें इस तरहकी अकड़न मालूम होना, मानो सर्दी लग गयी है। बाएँ कन्धेकी सन्धिसे लेकर समूचे बाएँ बाँहमें तेज़ दर्द और सर्दी मालूम होना, विशेषकर स्कन्ध सन्धिमें ; उपशम—नींद आने बाद ; क्रमसे घट जाया करता है। बायाँ बाँह और हाथ कुट-कुटाया करता है (सिङ्को, लैके; पैरिस); शरीरको हिलानेवाली और ढलमलानेवाली गति। नशा मालूम होना और दृष्टि-शक्तिका लोप हो जाना। स्पर्श-ज्ञानका बहुत बिगड़ जाना या घट जाना। खड़े होनेपर रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह गिर जायगा (लैके, फाइटो)।

निद्रा ।—स्फूर्त्तिजनक या कामोद्दीपक सपने देखना। शय्यासे उठनेपर (सोकर उठनेपर) रोगी दुःखित और शान्त भाव धारण करता है। निद्रित अवस्थामें पेशियोंके फड़कनेकी वजहसे नींद खुल जाती है (कोडाया)।

ज्वराधिकारमें ।—रात ११॥ बजनेके समय शीतका पैदा हो जाना ; पीठ और दोनों कन्धोंके बीचके अंशसे आरम्भ होकर पीठको पारकर दोनों पैरोंमें चला जाता है। पाकस्थलीमें सर्दी मालूम होती है ; शीतावस्थामें सारे शरीरमें दर्द मालूम होता है (बोवि, कोलो, डाल्का, इयुपेट-पर्फोल)। उदरकी पेशीमें संकोचन या उसमें कीड़ा रेंगनेकी तरह सुरसुरी मालूम होना, विशेषकर नाभि-प्रदेशमें ; जाड़ा अच्छा होनेके समय कण्ठमें जलन और फेफड़ा एवं वायुनलीभुजमें ऐसा मालूम होता है, मानो वह रुक जायगा, इसीलिये श्वासमें तकलीफ़ पैदा हो जाती है। रात २ बजनेके समय जाड़ा आराम होने बाद सभी लक्षण भी आराम हो जाते हैं। शीत या ज्वरके समय प्यास नहीं रहती। कई सप्ताहतक मेरुदण्डमें लगातार शीत (जेल्स) मालूम होता है।

वृद्धि ।—किसी लक्षणकी बात सोचनेपर और भोजनके बाद तुरन्त ही।

उपशम ।—जिस करवट सोता है, उसी करवट ; पाखाना होनेपर ; नींद आनेपर, ठण्डी हवा लगनेपर, भोजनके एक घण्टा बाद और इधर-उधर टहलनेपर।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—लैथाइरस-सैट, फाइजस, ऐसिड-आक्ज़ैल, पाइपर-मिथ, पल्स, जेल्स, ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, लाई, रस।

तुलनीय ।—सभी लक्षण सोचनेसे ही बढ़ जाते हैं—ऐसिड-आक्ज़ेलिक। रेतोरज्जु और अण्डकोषमें दर्द—आक्जेलिक-ऐसिड। दर्द दाहिनी ओरसे बाईं ओर—लाइकोपोडियम।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ६ठा दशमिक क्रम।

ओजोनम

(OZONUM)

“आक्सिजेनियम” इस पुस्तककी १७५५ पृष्ठमें देखिये।

पियोनिया आफिसिनैलिस

(PEONIA OFFICINALIS)

दूसरा नाम ।—पियोनि ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—वसन्त ऋतुमें उखाड़ी हुई ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मलद्वारका फटना ; भगन्दर ; पक्षाघात ; स्तनमें जखम ; आँखमें स्नायुशूल ; बवासीर ; सर-दर्द ; माथेमें खून चढ़ आना ; रातमें सपने देखना और छाती दबनेके रोग ; विटप-प्रदेश और त्रिकास्थि-प्रदेशमें जखम ; सरमें चक्कर आना ; शिराओंका फूलना ।

उपयोगिता और आभास ।—इसकी अधिकांश शक्ति मलान्त्र, मलद्वार और जननेन्द्रियके बीचवाले विटप-देशमें खर्च हुआ करती है। मलद्वारमें फोड़े निकलना, मलद्वारका फटना, भगन्दर और बवासीर इससे उत्पन्न और आराम हुआ करते हैं। इसके कई प्रधान लक्षण ये हैं :—माथा, मुखमण्डल और वक्षकी ओर खूनका दौरान ; चेहरा और आँखमें जलन पैदा करनेवाला उत्ताप और लाली पैदा हो जाना। मलद्वारमें जलन, खुजली और सूजन ; कण्ठमें और शरीरकी त्वचामें उत्ताप मालूम होना, मलद्वारके कुछ ऊपर विटपके ऊपर जखम पैदा हो जाना और उससे लागातार घृणा-जनक रस-स्राव ; जखममें कई दिनोंतक बहुत दर्द हुआ करता है ; शय्या और खड़ाऊँकी रगड़ और दबावकी वजहसे जखम ; दाहिने पैरके अंगूठेको छूनेपर ऐसा मालूम होता है मानो उसमें काँटा गड़ रहा है ; बाएँ पैरकी कनिष्ठिकामें दबाव पैदा हो जानेकी तरह बहुत दर्द ; जखम आदिमें तीक्ष्ण और तीव्र दर्द अनुभव होना ; डरावने और गला रोकनेवाले सपने दिखाई देना ; उदरमें इस ढंगके दर्दमें मानो ऐंठन हो रही है ; चित्तका चञ्चल हो जाना और रोगीके हाथ-पैरोंका इस तरह काँपना मानो डर गया हो। यदि रोगीसे कोई बात करता है, तो उसके मनमें आशङ्का पैदा हो जाती है और कोई बुरा समाचार सुननेपर रोगी बहुत ही कातर हो पड़ता है। पतला पाखाना होनेके साथ मूर्च्छा ; पाखाना हो जानेपर बहुत अधिक शीत मालूम होना ; दाहिने

अङ्गमें लक्षणोंकी अधिकता इत्यादि। इसके मलद्वारके रोगमें निम्नलिखित प्रधान निर्णायक लक्षण हैं :—पाखाना होनेके समय और पाखाना हो जानेके बाद असह्य यन्त्रणा और जखमसे लगातार रसका स्राव होना। मलद्वारकी तकलीफ़की वजहसे रोगी रातभर घरमें टहला करता है या घरकी जमीनमें लोटा करता है।

लक्षणावली

मन।—प्रलाप। शङ्कान्वित भाव और संध्याके समय चित्तकी चञ्चलता; यदि रोगीके साथ कोई बात करना चाहता है, तो डर जाता है कि कहीं कोई अप्रिय बात न सुननी पड़े। बुरी खबर सुननेपर बहुत कातर हो पड़ता है (ऐल्यू, काफि, कैल्के-फास)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, प्रतिबार शरीर या माथा हिलानेपर (कैल्के-फास, कैल्मिया); गर्म घरमें चक्कर आना (लाई, सार्सा) और सरमें भार मालूम होना (लाई)। चलनेके समय दोनों पैर डगमगाया करते हैं; वृद्धि—घरमें घूमनेके समय (बेल, नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम); मिचली; सरमें चक्कर, पानी पीनेपर घटना। शरीरकी गर्म अवस्थामें पानी पीनेपर बढ़ना (कैलि-कार्ब)। सरमें चक्कर आना रोगमें माथेमें जड़ता, भार और गर्मी मालूम होना; एकाएक श्वासरोध और मूर्च्छा रोगमें ललाटमें ठण्डा पसीना होना; दिनके ५ बजेकेबाद माथेमें भरापन मालूम होना और उसी ओर खूनका दौरान होना तथा ललाटके नीचे दर्द; माथेमें जड़ता मालूम होना और कानमें गरजकी आवाज तथा दृष्टि काँपती हुई (फास)। भोजनके बाद सरमें दर्द और बाएँ पार्श्वमें दबावकी तरह दर्द (जिङ्कम)। दाहिनी कनपटीमें चिलक मारनेकी तरह या उखाड़नेकी तरह दर्द, दर्द माथेके भीतरतक चला जाता है। दाहिनी कनपटीमें ऐसा दर्द मानो भीतरसे बाहरकी ओर छेद कर रहा है। कपालके पिछले भागमें बहुत भार मालूम होता है (कार्बो-वेज, कैन्थ, चेलिडो, साइक्लूय, फेरम, इग्ने; मानो उसमें सीसा अड़ा हुआ है—ओपि, पेट्रोल; इतना भार मालूम होता है कि तकियेसे सर नहीं उठा सकता—लैके)। निचले हनुसे लेकर कानतक ऐसा दर्द होता है, मानो दब रहा है; घटना—मुँह फाड़े रहनेपर; बढ़ना—दोनों हनु एक साथ मिलानेपर।

आँख।—आँख लाल और पानीके भारसे भरी। बाईं आँखमें दर्द, प्रदाहकी वजहसे यह दर्द क्रमशः फाड़नेकी तरह दर्दमें परिणत हो जाता है। आँख लाल हो उठती है और आँसूका स्राव हुआ करता है। रोगी रोशनी सहन नहीं कर सकता, इसीलिये उसे आँख खोलनेमें तकलीफ होती है (ग्रैफ, हिप, फास)। दोनों आँखें सूखीं, उत्तेजना भरी एवं सहज ही में खोल नहीं सकता (रस, सैम्बियु, ग्रैफ, वेरेट)। आँख और पलकोंमें जलन, खुजली और सूखापन। दाहिनी आँखके चारों ओर फड़कनेकी तरह प्रचण्ड दर्द। पलक और चक्षुगोलककी योजिकाका प्रदाह, आँसू निकला करते हैं और पुतली सिकुड़ जाती है। बाएँ चक्षुगोलकका प्रदाह और आँखकी ऊपरी पलकके नीचे ऐसी करकराहट मालूम होती है, मानो बालूके कण गिर गये हों (फास, थूजा, सार्सा)।

पाकस्थली और अन्नाशय।—ऐसा मालूम होता है, मानो गलेमें एक तरहकी कषाय ज्वाला-जनक भाफ़ उठ रही है। मिचली होना और मूर्च्छा आ जानेका उपक्रम हो जाता है। वमन और दर्द-भरा पतला पाखाना; तलपेटमें उद्वेग और चञ्चलता पैदा करनेवाला दर्द या दबाव मालूम होना। रातमें पाकस्थलीके नीचे जखम मालूम होना। आँतमें गड़गड़ाहट। दोपहरके पहले ऐसा दर्द होता है मानो आँतें मरोड़ खा रही हैं और यह दर्द होनेके पहले (विशेषकर) और बाद ऐसी मानसिक चञ्चलता पैदा हो जाती है, मानो डर गया हो; बाँह और दोनों ओंठ काँपते हैं और अरुचिकर समाचारसे वह कातर हो पड़ता है। उदरकी पेशीमें नख गड़नेकी तरह दर्द। नाभि-प्रदेशमें छेदनेकी तरह दर्द। अन्त्र-शूल और पतला पाखाना होना। उदरमें बहुत अधिक स्पर्श-कातरता मालूम होती है; वृद्धि—दोनों कोखोंको मिलानेवाले संयोजक स्थूलान्त्र और उदरके ऊपरी प्रदेशमें—उदरका यह अंश बहुत कड़ा और पीछेकी ओर खिंचा मालूम होता है। उदरमें कीड़ा आदि चलनेकी तरह मालूम होता है।

मलान्त्र और मल।—तीसरे पहर मलद्वारमें कुटकुटाहट हुआ करती है. मलद्वारका मुख सूजा हुआ मालूम होता है। एकाएक लसदार मांड़की तरह पतला पाखाना होता है और पाखाना हो जानेपर उदरमें सुस्ती और मलद्वारमें जलन मालूम होती है; छः घण्टे बाद फिर इस पतले दस्तके बाद भीतरी जाड़ा मालूम होना, साधारणतः मलद्वारकी यन्त्रणा बहुत ज्यादा मात्रामें बढ़ जाने बाद

शीत पैदा हो जाया करता है। बवासीर रोगमें मलान्त्रमें जखम पैदा हो जाना, मलद्वार और उसके चारों ओरका रङ्ग नीला हो जाता है, श्लेष्मावृत्त रहता है। मलद्वारके भीतर असह्य दर्द करनेवाला जखम और सभी श्लैष्मिक-झिल्लीमें जखम और फटा भाव अनुभूत हुआ करता है (समूचा श्लैष्मिक अङ्ग सिकुड़कर ऊँचा-नीचा मालूम हुआ करता है—पोलिगोनम-पाङ्कटेटम, रैटान, इग्ने, ऐ-नाई)। फटा हुआ मलद्वार—पाखाना हो जाने बाद बहुत देरतक कुटकुटी और जलन हुआ करती है (इग्ने, रैटान, ऐ-नाई); रोगीको तकलीफ़के कारण बाध्य होकर घरमें इधर-उधर घूमना पड़ता है और इन जखमोंसे घृणा पैदा करनेवाला रस-स्राव हुआ करता है (रैटान)। मेरुदण्डके निचले अंशके कुछ ही नीचे क्रम सूक्ष्माग्रमें गड़हेकी तरह जखम हो जाता है। स्त्री-जननेन्द्रियका बाहरी अंश फूल जाता है और उसमें दर्द हुआ करता है।

पेशाब।—मूत्राशय-ग्रीवाके सङ्कोचनकी वजहसे बूंद-बूंद पेशाब होता है। रातमें बार-बार पेशाब लगता है, इसी वजहसे नींदमें व्याघात होता है और बहुत ज्यादा पेशाब हुआ करता है। पेशाब परिमाणमें बहुत थोड़ा और जलन पैदा करनेवाला होता है।

वक्ष।—प्रत्येक बार श्वास ग्रहण करनेके समय बाएँ वक्षमें नुकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द (कूप्रम-ऐसिट, मेजेर, कैलि-कार्ब, गुयायेक, रैनान-बल्ब, प्रूनस, टैबाक)। वक्षके बीचवाली हड्डीके दाहिने पार्श्वमें और स्तनके समरेख-प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, दिनके ४ बजनेके समय ; वृद्धि—चलनेपर। बाईं कण्ठास्थिके नीचेसे विभेदिका-पेशीतक समूचे बाएँ वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; वृद्धि—साँस छोड़नेके समय हृत्पिण्ड-प्रदेशमें और चलनेपर, झुककर बैठनेपर बाएँ वक्षमें छेदनेकी तरह दर्द। सवेरे यकृतके ऊपरवाले पञ्जरेमें तेज़ दर्द मालूम होता है। सवेरे मध्य-वक्षोस्थिके बीचमें और उसके शिखरके नीचे और भोजनके समय वक्ष-मध्योस्थिके निचले अंशके दोनों पार्श्वोंमें दर्दका घटना—मध्य-वक्षोस्थिके मध्यस्थलमें दर्दका घटना—रातमें ; इसके दूसरे दिन सवेरे और दोपहरके पहले बार-बार यह दर्द पैदा हो जाया करता है। हृत्पिण्डके नीचे दर्द, मानो यह दर्द चित्तकी चञ्चलताके कारण पैदा हो गया है। वक्षकी ओर खूनका दौरान। वक्षके सामनेसे हृत्पिण्डको भेदकर पीठतक शूल बेधनेकी तरह दर्द। बाएँ स्तनके नीचे बहुत दिनोंका फोड़ेका जखम।

प्रत्यङ्ग आदि ।—बगलमें तेज़ छुरी मारनेको तरह दर्द। दाहिने स्कन्ध-प्रदेशसे कोहनीतक दर्द किया करता है; हाथ हिलानेपर बढ़ना। बाँहके आधे अगले भागमें ऐसा मालूम होना मानो कीड़ा रेंग रहा है। बाँह टेढ़ा करनेपर कोहनीमें अकड़न अनुभव होता है। बैठनेके समय दाहिनी जानु ऐंठ जाती है, दाहिने पैरका फैलनेवाला पुराना जखम, उसमें बेधनेकी तरह तेज़ दर्द होनेकी वजहसे रोगी दिनमें चल नहीं सकता और रातमें विश्राम नहीं कर पाता। बाएँ पैरके अंगूठेमें जखम निकलना; कसा जूता पहननेके कारण रगड़ लगनेकी वजहसे पैरकी पीठपर जखम (सिपा)। बैठनेके समय एँड़ीके नीचेका स्थान बहुत क्षीण और दर्द-भरा मालूम होता है। गट्ठोंमें दर्द होता है। पैरकी अंगुलियाँ सब फूल उठती हैं और उनमें चिलक मारनेकी तरह दर्द होता हैं। ऐसा दर्द मानो पैरकी कनिष्ठिका अंगुली दब रही है; कमजोरी अनुभव होती है। क़दम रखनेके समय दोनों पैर बहुत क्षीण मालूम होते हैं, रोगीको चलते-चलते स्थिर होकर खड़े रह जाना पड़ता है। रातमें सोने बाद, दोपहरके समय और बर्सातके दिनोंमें तकलीफ़ बढ़ जाया करती है।

त्वचा ।—निम्नाङ्गमें ऐसे जखम पैदा होते हैं, जिनमें स्पर्श सहन नहीं होता। दाहिने अग्र-बाहुके किसी खास अंशमें बहुत अधिक सुरसुरी होती है, मानो त्वचापर कीड़े आदि रेंग रहे हैं और उसपरके रोएँ सब मानो खड़े हो उठते हैं। नाभिके नीचे खींचन मालूम होती है। घटना—खुजलानेपर। पैरकी पोटलीमें खुजलाहट पैदा हो जाना; घटना—रगड़नेपर; माथा, वक्ष और हाथ-पैर आदिमें मानो बिछुआ लग गया है। इसी तरहकी कुटकुटाहट हुआ करती है। खुली देहमें हवा लगनेपर शरीरकी त्वचामें पिटपिटाहट हुआ करती है।

निद्रा ।—समस्त तीसरे पहर नींद आया करती है। सोते हो, यहाँतक कि दिनमें भी रोगी चौंक उठता है (आर्स, बेल, पल्स, एपिस, सिना, डिजि, कैलि-बाई, कैलि-ब्रोम, कैलि-कार्ब, नेट्र-मूर)। उदरके ऊपरी-प्रदेशमें जलनकी वजहसे नींदमें बाधा पैदा हो जाती है; कामोद्दीपक सपने और रेतःस्खलन; जीवन्त-मृत्यु स्वप्न। सपने याद नहीं रहते; अपने रिश्तेदारोंकी मृत्युके सपने; मानो एक प्रेत उसकी छातीपर बैठकर श्वास-प्रश्वासमें बाधा

डाल रहा है। ऐसे सपने देखकर रोगी गों-गों किया करता है और उसकी नींद खुल जाती है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—कँपकँपी। दिनके ५ बजनेके समय एक कान गर्म और दूसरा कान ठण्डा मालूम होता है। मुखमण्डल, पीठ और वक्षस्थलमें जलन पैदा करनेवाली गर्मी पैदा हो जाना और हाथ-पैर आदिका ठण्डा मालूम होना।

वृद्धि।—शरीर हिलाने, चलने, गर्म घरमें प्रवेश करनेपर, छूने और दबानेपर और दाहिने अङ्गमें।

घटना।—पानी पीनेपर (मिचलीके साथ सरमें चक्कर आना) और मुँह फाड़े रहनेपर।

प्रतिविष।—ऐलो, रैटानहिया।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—हैमा, साइलि, सल्फ, ऐसिड-नाई, आर्जेण्ट-नाई, हिप, हेलिबो-नाई, जेल्स, पोलिगोनम-पङ्कटेटा, युफ्रे, सिपा।

तुलनीय।—अर्श—हैमामेलिस। मलान्त्रमें जखम इत्यादि—ऐसिड-नाइट्रिक; ऐसा अनुभव होना मानो खील अड़ी है—आर्जेण्ट-नाई, हिपर। नाना प्रकारके जखम—साइलिसिया; अतिसारमें—सल्फर; दुःसम्वादका दुष्परिणाम—जेल्स।

शक्ति।—२रे दशमिकसे ६ठा शततमिक क्रम।

पैलेडियम

(PALLADIUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इस धातुसे विचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—कब्जियत; अहङ्कार; पलकोंपर छालेकी तरह उद्भेद; सर-दर्द; मृगी; प्रदर; डिम्बाधारकी बीमारियाँ; पैरमें झुनझुनी पैदा करनेवाला वात; इन्द्रिय-शक्तिकी क्षीणता; जरायुका अपने स्थानसे हटना; मसे इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—यह कितने ही अंशोंमें प्लैटिनमके अनुरूप हैं और आपसमें ये दोनों दवाएँ, एक दूसरेकी अनुपूरक हैं। पैलेडियमका प्रधान क्रिया-क्षेत्र स्त्री-जननेन्द्रिय और मन हैं। अपनी प्रशंसा-प्रिय मालूम होना इसका एक प्रधान निर्णायक लक्षण है, खासकर जब उपरोक्त मानसिक लक्षण जरायु या डिम्बाधारकी बीमारीके साथ मौजूद हों। आगे लिखे हुए इसके कई प्रधान लक्षण हैं:—रोदन-परायणता अर्थात् सदा रोनेकी इच्छा बनी रहना, दस-पाँच आदमियोंके बीचमें रहनेपर मानसिक उत्तेजना, जिस दिन रोगिनीके पास उसके दस-पाँच बन्धु-बान्धव मौजूद रहते हैं, उसी दिन उसकी तबीयत बहुत अच्छी रहती है; किन्तु उसके दूसरे दिन, जब सब लोग चले जाते हैं, तब उसकी मानसिक यन्त्रणा बढ़ जाती है। रोगिनी जरामें ही या साधारण कारणसे ही गुस्सा हो जाती है और दुर्बचन कहने लगती है। रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो सब लोग उसकी उपेक्षा करते हैं, इसीलिये उसे कुछ सूझ नहीं पड़ता। सर-दर्द बीमारीमें उत्तेजना। मस्तकके ऊपरसे एक कानसे लेकर दूसरे कानतक सर-दर्द। चेहरा फीका और दोनों आँखोंके चारों ओर नीला दाग। मिचली, शामके वक्त उसका बढ़ना और अत्यन्त खट्टी डकार आना। मल कठिन और सफेद, जरायुका नीचेकी ओर खिंचना और उदरमें स्पर्श सहन न होना, दिनमें थोड़ा परिश्रम करते ही जरायु और मूत्राशयमें दर्द होने लगना; जरायुमें छुरी लगने-जैसा दर्द, पाखाना होनेके बाद घटना; कमर हमेशा पतली और दर्द-भरी मालूम होना, रोगिनीको इतनी थकावट और सुस्ती मालूम होती है, कि हिलने-डोलनेपर उसे चक्कर आ जाता है; निद्रालुता; समूचे शरीरमें दर्द; ऐसा मालूम होना, मानो दाहिना डिम्बाधार फूल गया है, साथ ही नाभिसे लेकर तलपेटतक जोरोंके साथ बेधने-जैसा दर्द, दर्दवाले स्थानको दबानेपर आराम मालूम होना। मांड़-जैसा प्रदर-स्राव।

लक्षणावली

मन।—शामके वक्त तबीयत बहुत सुस्त हो जाती है। साधारण कारणसे ही रोगिनीको क्रोध आ जाता है और वह लोगोंको दुर्बचन कहने लगती है। अपनी प्रशंसा बहुत प्रिय मालूम होती है। रोगिनी दूसरोंकी रायको बहुत महत्व देती है, इसीलिये उसके यहाँ दस-पाँच बान्धव आनेपर

उसका मन बहुत प्रसन्न रहता है, किन्तु उनके चले जानेपर या दूसरे दिन उसकी मानसिक यन्त्रणाका वार पार नहीं रहता। अत्यन्त आमोदप्रिय। जरासी बातमें ही उसे अपना अपमान मालूम होने लगता हैं। रोगिनीको सदा ऐसा मालूम होता है, मानो लोग उसकी अपेक्षा करते हैं। रोनेकी अत्यन्त इच्छा। बुरी खबर सुननेपर रोगिनीका मानसिक कष्ट बढ़ जाता है। मानसिक कष्टकी हालतमें रोगिनीके दाहिने डिम्बाधारका दर्द बढ़ जाता है। रोगिनीको ऐसा मालूम होता है मानो दिन नहीं कटता या समय बहुत धीरे-धीरे बीत रहा है (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, कैनाब-इन, कैमो, मेडोरिन, मर्क)।

मस्तक।—दोपहरके पहले मस्तक और उक-शिखरमें, एक बजे नींदसे उठनेपर आराम मालूम होना, रोगी इस नींदसे चौंककर उठ बैठता है, शामके पहले आधा घण्टा सो लेनेपर सर-दर्दका घटना। शामके वक्त बहुत सुस्ती मालूम होना। टहलनेके बाद घरमें प्रवेश करते समय रोगीके पैर लटपटाते हैं। “सर-दर्द” एक कानसे लेकर खोपड़ीमें होकर दूसरे कानतक मालूम होना, साथ ही ऐसा मालूम होना, मानो किसीने पीछेसे आगेकी ओर सरको हिला दिया है और सर काँप उठा है। सरमें दर्द, तीसरे पहर बढ़ना (कैलि-बाई, ऐसाफिट); रोगी शयन करनेके लिये वाध्य होता है (कैलि-बाई, रस, ऐ-फास, कुरारी ; शयन करनेसे घटना—लाई, कैल्के, सिङ्को; जेल्स, इग्ने, मिनियैन, नेट्रम-म्यूर, ऐ-नाई ; स्थिर होकर अन्धेरे कमरेमें शयन करना पड़ता है—बेल, पोडो, साइलि ; यन्त्रणाके कारण नींद नहीं आती—आर्जेण्ट-नाई, चेलिडो, क्लोरम, लैके, पल्स, सिफिलिन, ऐमोनियैक, ब्रैकि); समूचे शरीरमें टपकन मालूम होती है ; सोनेपर घटना (कभी-कभी सोनेपर बढ़ सकता है)। सर-दर्दके कारण रोगिनी चिड़चिड़ी और अधीर हो जाती है और तरह-तरहकी मुखभङ्गी बनाती है (सर-दर्दके कारण चिड़चिड़ा होना—चिनिन-आर्स, क्रियो, लैक-कैन, मैग-फास, नक्स)। ऐसा मालूम होना मानो मस्तकके मध्य भागमें कोई भारी पदार्थ रखा हुआ है (आर्निका) और वह प्रत्येक प्रश्वासमें मस्तकके पिछले भागसे कपालके अगले भागमें सरकता आ रहा है। सुबहके सर-दर्द रोगमें कमर क्षीण मालूम होना . कैल्के-फास, क्रोटन, कैस्टर-इक्वा, युपिट-पर्प्यु, फास, ऐ-फास, रस, सैबाड, साइलि, स्पाइजि, थूजा); ललाटके दाहिनी ओर धड़कन होने जैसा सर-दर्द ; घटना—छूनेपर या उसके सम्बन्धमें ध्यानसे विचार करनेपर।

आँख।—टहलनेके समय बायीं आँखमें दर्द मालूम होना ; दर्द दाहिनी भौं पार करके फैल जाता है। शामके वक्त, टहलनेके बाद बाईं आँखके मध्य और पिछले भागमें भार मालूम होने जैसा दर्द। आठ बजे टहलनेके बाद दाहिनी आँख, दाहिनी कनपटी और दाहिने कानके चारों ओर दर्द मालूम होना, अक्षिपुटके कोने सूखे मालूम होते हैं। शामके वक्त दोनों आँखें सूखी और उनमें खुजली मालूम होती है, मलनेसे कोई लाभ नहीं होता (मलनेपर बढ़ना—क्रियो)। आँखकी नीचेकी पलकके नीचे पानीके बुलबुले या मोती-जैसे रस-भरे दाने निकलना (ऐक्टिया, क्रोटन-टिग) ; दाहिनी आँखकी पलकके नीचे पीव-भरी फुन्सियाँ ; छूनेपर बढ़ना। तीसरे पहर पलकें भारी मालूम होती हैं।

नाक।—सर्दी रोगमें नाकमें जलन—शामके वक्त। हँसने या खाँसनेपर पेटमें दर्द मालूम होना (खाँसनेपर दर्द मालूम होना—ब्राई, नक्स, स्क्विला, कैम्फो, लैके, फास ; छींकनेपर नाभि-प्रदेशमें सुई गड़ने-जैसा दर्द—सल्फ, एरण्डो)। दाहिने गालपर नाकके छेदके पास खून-भरी फुन्सियोंका निकलना। नाकके अगले हिस्सेमें रेखायुक्त जखम, दबानेके कुछ देर बाद उससे खून निकलता है।

मुखमण्डल।—दाढ़ी और मूछें बहुत देरीसे निकलती हैं। दोनों ओंठोंके दाहिने संयोग स्थानमें जखम और दर्द मालूम होना। दाहिने या निचले जबड़ेमें दर्द, चेहरा और नाकके ऊपर, दोनों कानोंके पीछे और बाईं तथा दाहिनी युगास्थिके पिछले भागमें और दाढ़ीके बालोंमें दानोंका निकलना। जीभका मध्य भाग लालीयुक्त (कैमो, कास्टि ; मध्य भाग काला—फास) ; खासकर सुबहके वक्त। मुँहमें लसलसी मालूम होती है और मुँहका स्वाद भी लसदार मालूम होता है। गलेमें गोंद-जैसा गाढ़ा कफ़ इकट्ठा होता है ; गोंदकी तरह स्वाद—कुल्ला करनेपर भी वैसा ही बुरा स्वाद बना रहता है। खखार-खखारकर गला साफ़ करते समय मुँहमें बार-बार जमा हुआ थोड़ा-कफ़ आता है, किन्तु रोगी उसे निगल जाता है। गला और जीभ सूखी अथवा रोगीको प्यास नहीं मालूम होती (कैलेड, नक्स-मस, पल्स) ; ऐसा मालूम होना, मानो गलेमें खाई हुई चीज़का एक टुकड़ा अड़ा हुआ है (कक्स, लैके) ; निगलते समय अश्वक्षुरास्थि या जिह्वा-मूलास्थिके पास मानो खाये हुए पदार्थका एक टुकड़ा लटक रहा है, ऐसा मालूम होना।

अन्त्राशय।—यकृतमें दर्द और स्पर्श बर्दाश्त न होना। बाईं कोखमें दर्द, डकार आनेसे घटना। प्लीहा-प्रदेशमें दर्द, पेटमें कीड़ा रेंगनेकी तरह सुरसुराहट मालूम होना। कभी-कभी ऐसा मालूम होना मानो आँतोंसे जोरोंसे भाफ़का बुलबुला उठकर ऊपरकी ओर जा रहा है और कभी ऐसा मालूम होता है मानो एक जन्तु पेटसे छोटे-छोटे टुकड़े कतरकर अलग कर रहा है। प्रचण्ड अन्त्रशूल—दाहिनी ओर, बार-बार डकार आनेपर और भी बढ़ जाता है। केवल दाहिनी करवट सोनेपर तकलीफ़ सहन की जा सकती है; बढ़ना—छींकनेपर, खाँसनेपर, पेशाब करनेपर अथवा शामके वक्त; दूसरे दिन शामके वक्त तकलीफ़ फिर शुरू होती है, हाथ-पैर ठण्डे हो जाते हैं, लगातार जाड़ा मालूम होता है और खून-मिले पानीकी तरह पेशाब होता है। सोनेपर हाथ-पैर अकड़ जाते हैं, इसलिये रोगिनी हिल-डोल नहीं सकती। बाहरी गर्मी या गरम कपड़े पहननेसे घटना। पेटके दाहिनी ओर अनमनीय सूजन (दाहिने डिम्बाधारकी सूजनकी वजहसे ऐसा मालूम होता है)। तलपेटमें बिंधनेका-सा तेज़ दर्द; पाखाना होनेपर घटना। आध्मान-वायुकी अधिकताके कारण पेट फूल उठता है। चलते समय हर बार पैर उठानेपर बायें पुट्ठे या जांघमें आघात लगता है, उसे मोड़ लेनेपर आराम मिलता है। पुट्ठा मानो फट जायगा ऐसा मालूम होना।

मलान्त्र और मल।— प्रायः ढीला मल निकलता है। रात-दिन पतला मल निकलता है, दर्द प्रायः नहीं रहता। शामको, संध्या हो जानेके बाद दस्त होता है, सुबह नहीं होता। मल-त्यागके पहले मोटी सलाई गड़नेका-सा दर्द; मलान्त्रके बायें भागमें कुछ दर्द और चमक-सी मालूम होती है, खासकर सुबहके वक्त। दोपहरको मलान्त्रमें ऐसा अस्पष्ट दर्द मालूम होता है, मानो बहुत समयसे मल रुका हुआ है, लेकिन पाखानेका वेग नहीं होता। जरायुमें छुरी मारने-जैसा दर्द, पाखाना होनेपर घट जाता है। मल कड़ा और खड़िया मिट्टीकी तरह सफेदी लिये हुए (सफेद मल—मर्क, नक्स-मस, पल्स्, कैल्के, डिजिट, डाल्का, फार्मी, आयोड, ऐ-बेञ्जो, रियुम, कैलि-म्यूर, फास, रस, रोबिन, आर्टिका-यु; खड़ियाकी तरह—बेल; हैज़ाकी बीमारीमें सफेद मल—आर्जेण्ट-नाई; यकृतकी खराबीके कारण मटमैला सफेद मल—फास; तीन-चार दिनके अन्तरसे कड़ा सफेद मल—चेलिडो; बच्चोंके यकृत रोगमें सफेद मल—कैलि-बाई; सूतिका रोगमें दूध जैसा सफेद मल—कैमो; आँव-

भरा सफ़ेद मल—कैल्क, कोलचि, ग्रैफा, फास, इपिक ; पीत-पांडु रोगमें सफ़ेद मल—डिजिट, डलिकस, सिपिया ; पानी-जैसा सफ़ेद मल—ऐ-बेञ्जो, ऐ-फास, कैस्टोरि, चेलिडो, डाल्के, फास ; बच्चोंको पानी जैसा सफ़ेद मल—सिकेलि)।

पेशाब ।—मूत्राशयमें रह-रहकर एक तरहका सुई चुभोने जैसा दर्द, बार-बार पेशाब। मूत्राशय भरा मालूम होता है अथवा पेशाब बहुत कम होता है (ओपि)। पेशाब—गहरा लाल, ईंटके चूर-जैसी तली जमना या पात्रका लाल हो जाना। पेशाब गँदला खून-मिले पानीकी तरह, साथ ही अन्त्रशूल।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—रोज़ सुबहके समय लिङ्गोच्छ्वास (ऐगार, ऐलो, निक्रोल ; केवल सुबह—बैराइ)। शामके बाद या रातमें चेष्टा करनेपर भी यथोचित लिङ्गोच्छ्वास न होना। रह-रहकर मूत्र-मार्गमें सुई चुभोने-जैसा दर्द, लिङ्गमुण्डसे लेकर अण्डकोषतक दर्दका फैल जाना, दोनों अण्डकोषोंमें रगड़ लगने जैसा दर्द मालूम होना।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—रज,—तेजीसे टहलनेपर पुनः प्रकाशित होता है ; साधारणतः अमावस्याको जो रज प्रकट होना चाहिये था, उसके एक पक्षके बाद पूर्णिमाको प्रकट होना (अमावस्या या पूर्णिमाको रजःस्राव आरम्भ होना—क्रोकस), साथ ही सरमें दर्द। रजःस्राव पुनः आरम्भ होते समय पेट और प्लीहा-प्रदेशमें दर्द (एपिस)। ऋतु-स्रावके अन्तमें पेटमें कुछ-कुछ दर्द और स्पर्श सहन न होना, मानो कोई भयङ्कर बात होनेवाली है। बच्चेको स्तन पिलाते समय रजःस्राव, तीसरे पहर ऐसा मालूम होता है, मानो रजःस्राव आरम्भ होगा (स्तन पिलाते समय रजःस्राव—सिङ्को, रस ; बहुत ज्यादा स्राव—कैल्के)। प्रदर—स्राव स्वच्छ मांड़-जैसा (स्वच्छ—सिपि, पोडो, ऐल्यू, ऐग्नस), ऋतुके पहले और पीछे बढ़ जाता है। पीला प्रदर—स्राव गाढ़ा और सफ़ेद होकर बन्द हो जाता है। जरायु या मूत्राशयके स्थानमें दर्द। दाहिना डिम्बाधार फूला हुआ और अनमनीय हो जाता है (दाहिने डिम्बाधारमें सूजन—एपिस, लैके ; डिम्बाधार बच्चेके सिरकी तरह बढ़ जाता है—आर्जेण्ट-मेट ; दाहिने डिम्बाधारमें दर्द—पोडो, एपिस, आयोड, ब्रायो, लिसिन ; अनमनीय—प्लैट) ; नाभिसे लेकर स्तन-पर्यन्तका स्थान तेज़ दर्द-भरा और उसमें कांटा गड़ने जैसा दर्द, दोनों स्तनोंमें बहुत भार मालूम होना।

रज:स्रावके समय दाहिने डिम्बाधारमें स्नायुशूल ; इसके बाद उसी डिम्बाधारमें ऐसा दर्द, मानो वह नीचेकी ओर खिंच गया है ; बढ़ना—खड़े होनेपर, टहलनेपर या शरीर हिलानेपर। घटना—मलने और लेटनेपर। जरायुमें ऐसा दर्द मालूम होना, मानो वह नीचेकी ओर सरक रहा है, साथ ही सुस्ती ; शरीर हिलानेसे अधिक दर्द मालूम होता है ; रोगी आरामसे खड़ा नहीं हो सकता। तलपेटमें मानो कोई भारी पदार्थ रखा हुआ है, ऐसा मालूम होना। जरायु आदिमें नीचेकी ओर खींचन जैसा दर्द। दाहिने डिम्बाधारमें दर्द ; जरायुका अपने स्थानसे हट जाना। अलग-अलग समयमें शरीरके अलग-अलग स्थानोंमें दर्द। उस समय बहुत सुस्ती और हाथ-पैर ठण्डे मालूम होना (इस स्थानमें प्लैट और पोडोसे इसकी तुलना करनी चाहिये।

श्वासयन्त्र।—जरा-सा खाँसते ही जमे हुए कफ़का टुकड़ा गलेमें आ जाता है, किन्तु रोगी उसे निगल जाता है, बाहर नहीं निकाल सकता। गहरी साँस लेनेपर छातीमें सुई चुभोने जैसा दर्द। कफ़ थूकते समय ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तकमें कोई चीज़ घुस गयी है। खाँसने या छींकनेपर तलपेटमें दर्द मालूम होना। वक्षके दाहिने पार्श्वसे शरीरमें होकर पीठतक ऐसा मालूम होना, मानो नोकदार सलाई घुस रही है ; गहरी साँस लेनेसे बढ़ना और निर्मल वायु सेवनके लिये टहलते समय घटना। दाहिने स्तनकी घुण्डीके पास खूब गहराईमें नोकदार सलाई गड़ने जैसा दर्द ; गहरी साँस लेनेपर बढ़ना। हाथके लकवा रोगमें हृत्पिण्डमें दर्द (बायें हाथमें दर्द—ऐकोन, एमिल, अरम, रस, स्पाइजि, टैबाक)।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दन और कन्धेसे लेकर बाएँ हाथतक दर्द और अकड़न मालूम होना। कमर और चूतड़ोंमें दर्द तथा हाथ-पैर ठण्डे। कमर बहुत पतली मालूम होना। दाहिने कन्धेका जोड़ मानो मोच खा गया है (सैबाइना) ; ऐसा मालूम होना, खासकर हाथ फैलाने या छोटी चीजें इधर-उधर करते समय। कन्धेसे लेकर छातीके मध्य भागतक चिलक मारनेकी तरह तेज़ सुई चुभाने जैसा दर्द होनेके कारण रोगीको चिल्ला उठना पड़ता हो। बायाँ हाथ इस तरह सुन्न मालूम होना, मानो उसमें लकवा हो गया है। दाहिने चूतड़में वातके कारण दर्द होना, खासकर सुबह सात बजे टहलनेके समय। दाहिने ऊरुके पिछले भागमें स्नायु-शूल, गृध्रसी ; बढ़ना—सर्दी

लगनेपर और रोगवाले अंगोंको हिलाने-डोलानेपर। घटना—गरम प्रयोग करनेपर :(कोलोसिन्थ, मैग-फास) और विश्रामसे। पैरकी अंगुलियोंसे लेकर उरु-शिखरतक चिलक मारनेकी तरह जल्दीसे फैल जानेवाला दर्द। जाँघके जोड़का अकड़ जाना ; टहलनेके समय पैरकी पोटलीकी कण्डरायें अकड़ जाती है। बाँहके ऊपरी हिस्सेकी पेशियोंमें दर्द (कैक्ट); ऐसा मालूम होना मानो रोगी उस पेशीको दबाकर बहुत देरतक सोता रहा है। बढ़ना—मस्तककी बाईं ओर घुमानेपर। दाहिने हाथमें दर्द (लाई, जेन्थक्स), दोपहरमें टहलनेके समय और टहलनेके बाद। तीसरे पहर पीठमें दर्द होता है—ऐसा मालूम होना, मानो रोगी बहुत देरतक सीधे बैठकर काम करता रहा है (हेलोन)। बाईं ओरकी मूत्र-ग्रन्थिके ऊपरी भागमें पीछेकी ओर दर्द, बहुत देरतक पेशाब रोकनेके कारण होनेवाले दर्द जैसा दर्द, बढ़ना—बैठनेपर, :दबानेपर तुरन्त आराम मालूम होता है, किन्तु कुछ देरके बाद दर्द फिर बढ़ जाता है। रोगीको किसी तरहका व्यायाम अच्छा नहीं मालूम होता, वह केवल लेटे रहनेके लिये मजबूर होता है। सुई चुभोने जैसी वात-वेदना—दर्द अचानक पैदा हो जाता है या स्थान बदल देता है और बहुत थोड़ी देर मौजूद रहता है। दर्द वगैरह सोनेपर घट जाता है।

वृद्धि।—ठण्ड लगनेपर, शरीर या रोगवाले अंशको हिलानेपर, चलनेके लिये हर बार क़दम उठानेपर, परिश्रम करनेपर और दस-पाँच आदमियोंके साथ रहनेके बाद।

घटना।—छूनेपर, दबानेपर, मलने या रगड़नेपर, गरम प्रयोग करनेपर, गरम कपड़े पहननेपर, निर्मल वायु सेवन करनेपर, बाईं करवट सोनेपर, नींदके बाद विश्राम करनेपर, उरु मोड़ रखने और छींकने या खाँसनेपर, पेशाब करनेपर, शामके बाद और दस-पाँच आदमियोंके साथ रहनेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—सिङ्को (पतले दस्त आना); ग्लोनोइनम, बेलाडो (सर-दर्द)।

अनुपूरक।—प्लैटिनम।

सदृश।—आर्जेण्टम-मेट, हेलोन, लैके, लिलि-टाई, प्लैट, पोडो, एपिस। प्लीहामें दर्द, खासकर रजः-स्रावके समय—एपिस ; जरायु-स्राव—सियानोथस।

तुलनीय। —दाहिनी ओरका डिम्बाधार—एपिस, ग्रैफाइ, प्लैटिन। बायाँ डिम्बाधार—आर्जेण्ट-मेट; दबाने जैसा दर्द—लैकेसिस, लिलियम, सल्फर; कमरमें दर्द—हेलोनि; मूर्च्छा-वायु—टैरेण्टुला; प्लीहामें दर्द—सियानोथस।

शक्ति।—छठें दशमिकसे लेकर २०० शततमिक क्रम। हज़ारसे लेकर और ऊँचे क्रमसे भी खूब फायदा होता है, खासकर स्त्री-जननेन्द्रियकी पुरानी बीमारीमें।

पैनक्रियाटिनम

(PANCREATINUM)

परिचय।—भेंड़ या घोड़ेकी लाला-ग्रन्थि और क्लोम-ग्रन्थिका सत।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—बदहज़मी, भोजनके एक या दो घण्टे बाद पेटमें दर्द (नक्स-वोम); उदरामय, खाई हुई चीज़ अधपची अवस्थामें मलके साथ निकलना; कर्णमूल-प्रदाह, बहुमूत्र प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—आइरिस-वार्सि, नक्स, पल्स, मर्क, आयोड, जैबोरेण्डी, पाइलोकार्पिन।

शक्ति।—२—२००।

पैराफिनम

(PARAFFINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया और दूसरा नाम।—पेट्रोलियम या शिलातैलको साफ़ करनेपर पहले नैफ्थेलिन उत्पन्न होता है। उसीसे पहले विचूर्ण फिर तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें इससे लाभ होता है:—तलपेटका फूलना; स्तनकी बीमारी; बच्चोंकी कब्जियत; अजीर्णता; श्वेत-प्रदर; ज्यादा रजः-स्राव; मेरुदण्डमें दर्द; नेत्र-रोग; प्लीहा और नाभि-कुण्डमें दर्द; जरायुके रोग; मेरुदण्डके रोग; दृष्टि विकार।

उपयोगिता और आभास।—जरायु आदि स्त्री-जननेन्द्रियकी अनेक प्रकारकी कठिन बीमारियों और अजीर्ण तथा कब्जियतमें इससे विशेष लाभ होता है। इसका दर्द छुरी लगने, मोच खाने, उखाड़ने, कांटा गड़ने या चिलक मारने जैसा जल्दीसे बढ़नेवाला और तेज़ होता है। यह दर्द शरीरके एक भागसे दूसरे भागमें फैल जाया करता है और दो भागोंमें पारी-पारीसे प्रकट होता है, जैसे कि पाकस्थली और मेरुदण्ड या पाकस्थली और गला इन दोनों भागोंमें दर्द पारी-पारीसे प्रकट होता है। मस्तकमें स्पर्शकातरता मालूम होती है, आँखमें ऐसा मालूम होना मानो घी जैसी कोई चीज़ लगी हुई है। ऐसा मालूम होना मानो समूचा शरीर आगेसे पीछेकी ओरको हिल रहा है। ऐसा मालूम होना मानो पेटके चारों ओर एक रस्सी बन्धी हुई है। धूम्रपानसे अरुचि, धूम्रपान करनेपर पाकाशयमें दर्द उत्पन्न हो जाता है। पाकाशयमें दर्द होनेपर कलेजेमें धड़कन शुरू हो जाती है। पुट्ठेमें दर्द, कामाद्रि-प्रदेशमें छुरी लगने जैसा दर्द। कमरके एक अस्थि-शिखरसे दूसरे अस्थि-शिखरतक काटने जैसा दर्द। मुख-मण्डल और मस्तककी बाईं ओर कांटा गड़ने या मोच खाने जैसा दर्द; मस्तककी बाईं ओर मानो लोहेकी कांटी गड़ रही है ऐसा दर्द; आँखसे धुँधला दिखायी देना और ऐसा मालूम होना मानो आँखके सामने असंख्य काले बिन्दु उड़ रहे हैं। पलकें लाल, मुख लार-भरा और गोंदकी तरह लसदार; सभी समय भूख मालूम होना, तलपेटमें मलान्त्र और मेरुदण्डके सिरेतक दर्द होना—बैठनेपर आराम मालूम होना। बार-बार पाखानेकी इच्छा, बच्चोंकी कठिनाईसे आराम होनेवाली कब्जियत, बवासीर और निरन्तर मलवेगके साथ बहुत दिनोंकी कब्जियत, रजः-स्राव बहुत देरीसे आरम्भ होता है—स्राव काला और अधिक; दूध जैसा प्रदर-स्राव, स्तनकी घुण्डीको छूनेपर तेज़ दर्द मालूम होता है, मानो उसमें जखम हो गया है। सीढ़ी चढ़नेके समय रीढ़से लेकर पुट्ठे और दोनों कोखतक दर्द फैल जाता है; प्रायः सभी सन्धियोंमें चिलक मारने जैसा तेज़ दर्द मालूम होना इत्यादि इसके कई निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मस्तक।—सरके पिछले भागके बाएँ पार्श्वमें ऐसा दर्द होता है, मानो चोट लग गयी है। सरमें धूमनी आदिकी धमक मालूम होती है। माथेमें

भार मालूम होता है और झुकनेपर ऐसा मालूम होना है, मानो ललाटकी ओर कोई भारी जोज़ लटक आयी (माथा सीधा न रखनेपर ऐसा मालूम होता है, कि ललाटकी ओर कुछ धक्का दे रहा है—रस)। सवेरे ८ बजनेके समय मूर्द्धादेशके बाएँ पार्श्वमें ऐसी तकलीफ़ मालूम होती है, मानो एक लोहेकी खील घुस रही है (मुर्द्धादेशमें मानो लोहेकी खील घुस रही है—हेलिबो, नक्स-वोम ; मानो गड़ी हुई है—निकोलम ; मानो सिरमें लोहा घुस रहा है—काफि, इग्ने, सिपि ; बाएँ पार्श्वमें—नेट्र-म्यूर ; शंख-प्रदेश या कनपटीमें—आर्नि) और यह निचले हनुके बाएँ पार्श्वतक चला जाता है। माथेका बायाँ पार्श्व छूनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो माथेका यह अंश दबकर चूर-चूर हो गया और यह दर्दवाला अंश मानो तरल और स्पञ्जकी तरह है। ललाटके ऊपरी अंशमें मोच खाने और उखाड़नेकी तरह दर्दकी वजहसे रोगिनीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है। समूचा माथा और मुख-मण्डलके बाएँ पार्श्वमें ऐंठन और उखाड़नेकी तरह दर्द ; बाईं ओरकी चीजें सब मानो गिर जायँगी—इस ढङ्गका दर्द ; दाहिने ललाटकी हड्डीके नीचेवाले भागमें ऐसा दर्द मानो छुरी मारी जा रही है, दर्द दाहिनी आँखके भीतरतक चला जाता है और झुकनेपर बढ़ जाता है। माथे और चेहरेके बाएँ पार्श्वपर ही इस दर्दका आक्रमण हुआ करता है ; इस अंशमें काँटा गड़ने और ऐंठनकी तरह दर्द होता है और दोनों ही एक साथ पैदा होते और अच्छे हो जाते हैं। ललाटके मध्य-स्थानसे लेकर नाकके भीतरी भागतक सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है। माथेकी त्वचाको स्पर्श करनेपर ऐसा मालूम होता है कि उसके नीचे एक बड़ा फोड़ा हो गया है। इन्द्रलुप्त या केश झड़ना।

आँख।—दाहिनी भौंपर टपक और सुई गड़नेकी तरह दर्द ; दर्द निचले हनुमें आकर अच्छा हो जाता है। बाईं भौंसे कनपटीतक फैलनेवाला डङ्क मारनेकी तरह दर्द। आँखके ऊपर कुछ ऊँचा दाग दिखाई देता है। सवेरे ऐसी अस्पष्ट दृष्टि रहती है, मानो घूँघटके भीतरसे देख रहा है (नेट्र-म्यूर, पेट्रोल, स्ट्रैमो ; सन्ध्याके समय—इयुफ्रे, टैबाक ; दोपहरकी नींदके बाद—लाई)। सवेरे आँखें सट जाती हैं (कैल्के, क्लिमेट, नेट-म्यूर, ग्रैफ, मैंङ्गेन)। आँख या नाकके अपाङ्ग या कोनेमें सूखी पपड़ी जमती है (ऐसिट-क्रूड, डिजिट, हेलिबो, हिप)। भीतरी कोनेमें खुजली—रगड़नेपर उसी समय घट जाती है, पर तुरन्त ही फिर पैदा हो जाती हैं (ऐल्यू, एपिस, अरम,

ग्रैफ)। आँखकी ऊपरी पलकमें ऐसा दर्द मानो सुई गड़ रही है (पल्स, जिङ्कम); पलक लाल—मानो न जाने कितना रोया है (सिपि)। सवेरे बाईं आँखके बाहरी कोनेमें ऐसा दर्द मानो चोट लग गयी है। दाहिनी आँखकी ऊपरी पलकके नीचे ऐसा दबाव मालूम होना, मानो वहाँ कुछ अड़ा हुआ है (स्टैफ, कास्टि, एपिस)। रगड़नेपर थोड़ी देरके लिये आराम हो जाता है। ऐसा मालूम होना, कि आँखमें घी आदिकी तरह पदार्थ लगा हुआ है। दोनों आँखें हमेशा तर और आँसूसे भरी मालूम होती है (क्रोकस, इयुफ्रे, ओपि, पल्स, सल्फ)। कोई चीज़ आँख गड़ाकर देखनेसे ही आँखमें पानी भर आता है। घरके बाहरी भागमें चलनेके समय ऐसा मालूम होता है मानो दोनों आँखोंके सामने काला पर्दा पड़ा है। आँखके सामने ऐसा मालूम होता है, मानो अनगिनती काले कीड़े या बिन्दु सब उड़ रहे हैं (सल्फ, इनैन्थि, कास्टि, नक्स, सिङ्को, फाइजस, नेट्र-मूर, साइक्लेम, डैफनी, जेल्स, सिपि, फास, सोरिन); आँखके सफेद अंशमें खून भरा मालूम होता है, विशेषकर प्रदेशमें। नाकसे घोर लाल रङ्गके खूनका स्राव।

कान।—सवेरे दोनों कानोंमें ही नाना प्रकारकी आवाज़ सुन पड़ती है। सन्ध्याके आरम्भ कालमें कानमें गरजनेकी आवाज़, जाँतेकी चक्कीकी तरह घड़घड़ शब्दकी तरह। बाएँ कानमें ऐंठने और डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, कि मानो कान बन्द हो गया है; कोई पतली चीज़ कानमें घुसा देनेपर क्षणभरके लिये घटना।

मुख-विवर आदि।—दाहिने पार्श्वके दाँतसे कानतक फाड़नेकी तरह दर्द; दर्दवाला गाल हाथसे पकड़नेपर या बांधनेपर घटना। मुख-विवरमें लार भरी रहती है और रोगिनी बार-बार थूकती है। मुख-विवर लसदार मालूम होता है (कैलेड, नक्स-मस, नूफर-लूट, पल्स, वेरेट ; तेज़ प्यासके साथ—नेट्रम-मूर ; अजीर्ण रोगाधिकारमें सवेरे—क्रोटेलेस)। मुँहका स्वाद तीता। ज्वराधिकारमें शीतके बाद सूखा उत्ताप और तेज प्यास और उत्तापके कुछ ही बाद पसीना निकलना, पसीनेवाली अवस्था बहुत देरतक स्थायी रहती है। कण्ठ-स्वर शून्यगर्भ (खोखला) और रुखड़ा। कण्ठमें बहुत दिनोंसे घड़घड़ किया करता है और सूखी खाँसी पैदा हो जाया करती है।

पाकस्थली।—हमेशा ही पेटमें भार और भूखका अभाव मालूम होता है; रोगीको हमेशा ही भूख लगी रहती है; भूख खासी रहती है, पर

रोगीको किसी भी पदार्थमें स्वाद नहीं मिलता। भोजनके कई घण्टे बाद खट्टी डकार (भोजनके दो घण्टे बाद—कोमोक्लेड ; भोजनके आध घण्टा बाद—ऐ-फास ; भोजनके कुछ ही बाद—ऐट्रोपिन-सल्फ़, कोना, नेट्र-म्यूर, पोडो, साइलि)। भोजनके बाद बार-बार ओकाई आनेपर अनपची चीजें कै हो जाती हैं (क्रियो)। पाकस्थलीमें विकार और मुँहमें लार सञ्चय होना, मानो वमन होनेका लक्षण है। ललाटमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और सारा शरीर बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है; पर इसके बाद ही उत्ताप या प्यास पैदा हो जाती है। पाकस्थलीमें इस ढंगका दर्द होता है, मानो किसीने मुक्का मार दिया है, रोगी बहुत सावधानी रखे बिना साँस ले और छोड़ नहीं सकता। पाकस्थलीमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता ; यहाँतक कि रोगिनी अपनी कमीजको बटन नहीं लगा सकती। चलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो पाकस्थली झूल पड़ती है और ऐसा बोध होता है, कि उसमें जखम हो जानेके कारण ऐसा दर्द हो रहा है। धूम्रापान करनेपर तुरन्त ही पाकस्थलीमें दर्द पैदा हो ज़ाता है ; तम्बाकू बेस्वाद मालूम होती है। पाकस्थलीमें गोला जैसा हो जाता है और वह ऊपरकी ओर धक्का दिया करता है। उसे छूनेपर कड़ा और दर्द भरा मालूम होता है। पैरके दर्दके साथ दाँतका दर्द भी अच्छा हो जाता है, मानो दोनोंमें कार्य कारण-सम्बन्ध था ; भोजन कर लेनेपर पाकाशयपर ऐसा भार मालूम होता है, मानो एक भारी पत्थर दबाया हुआ है, खासकर भोजनके साथ या एक घण्टा बाद जब खायी हुई चीजें पचने लगती हैं (इग्ने, नक्स-वोम, ऐकोन, ब्राई, कैमो, लैक-कैन, डायस्को, स्क्वियुला, जिञ्जिवार, रस, पल्स ; भोजनके बाद ही—कैलि-बई)। हृद्स्पन्दन रोगमें पाकाशयमें दर्द, रोगी अकर्मण्य हो पड़ता है।

अन्त्राशय।—ऐसा अनुभव होना कि उदरसे अन्त्र-मण्डली निकाल ली गयी है ; रोगीको तेजीसे चलनेकी इच्छा (ब्यूफो, आयोड), परन्तु उससे उदरमें दर्द मालूम होता है। ऐसा अनुभव होता है कि उदर बहुत शिथिल हो गया है या झूल पड़ा है ; पकड़ रखने या बांध देनेपर घटना (मर्क, ड्राम्बिड ; चित्त होकर सोनेपर घटना—कैस्टेनिया-वेंका)। उदरमें छेदनेकी तरह दर्दकी वजहसे रातभर नींद नहीं आती (कोलोन्सो) ; सवेरे ८ बजनेके समय कई मिनटतक स्थायी अन्त्रशूलके बाद अपथ्य-पथसे थोड़ा-सा सफेद रङ्गका श्लेष्मा निकल जाता है और ऐसा ही प्रायः बार-बार हुआ करता है।

नाभिके कुछ नीचेसे जननेन्द्रिय प्रदेशतक छुरीसे काटनेकी तरह दर्द। ऐसा दर्द मानो नाभिसे मेरुदण्डतक मरोड़ खा रहा है। बैठनेके समय तलपेटमें दर्द पैदा होकर मलान्त्रमें, मेरुदण्डमें और उसके पासके स्थानमें और हड्डीमें चला जाता है; बहुत देरतक बैठे रहनेपर यह सब दर्द घट जाता है, पर चलनेपर यह दर्द फिर बढ़ जाता है; इसीलिये बाध्य होकर रोगीको अपना शरीर कुछ टेढ़ाकर रखना पड़ता है—रातके १० बजनेके समय बिना कुछ खाये ही पेट एकाएक बहुत अधिक फूल उठता है मानो बहुत ज्यादा खा लिया है; प्रकोपके पहले और समय मुँहमें कोई स्वाद नहीं मालूम होता और लस भरा रहता है; उसके दूसरे दिन पाखाना नहीं होता। पेट फूला, कड़ा और उसमें कसावटका भाव हो जाता है और आँतोंमें बिना दर्दकी गड़गड़ाहट हुआ करती है, पर वायु नहीं छूटता (रैफिनस); रातमें सोनेके समय यह लक्षण पैदा हो जाया करता है और सवेरे नहीं रहता। उदरमें दर्दकी वजहसे रोगी ठीक करनेवाली श्वास-प्रश्वासकी क्रिया सम्पादन नहीं कर सकता; हाथसे पाकस्थली दबानेपर दर्द घट जाता है और श्वास-प्रश्वासकी तकलीफ़ भी दूर हो जाया करती है। तीसरे पहर पेट फूल उठनेके बाद रातमें दस बजनेके समय रोगी सो जाता है, पर एक घण्टा बाद ही मिचली पैदा होकर नींद खुल जाती है और उसके बाद खट्टा पानी और पहले दिनकी खायी चीजें आदि कै हो जाया करती हैं (क्रियो)। उदरमें मरोड़की तरह दर्द पैदा होकर मलान्त्रमें चला जाता है और रोगिनीको इतनी कमजोरी मालूम होती है कि यदि कोई चीज़ न पकड़ ले, तो गिर जानेका उपक्रम हो जाता है और चेहरेपर आध घण्टे तक ठण्डा पसीना हुआ करता है। दोनों पैर ठण्डे हो जानेके कुछ ही बाद दाहिनी कोखमें डंक मारने और दबानेकी तरह दर्द पैदा हो जाता है। कामाद्रि-प्रदेशमें रह-रहकर छुरी मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है; खड़े होनेवाली अवस्थामें रोगिनीको पैर उठाये रखनेकी इच्छा होती हैं। बाएँ पुट्ठेके स्थानपर रह-रहकर ऐसा दर्द पैदा हो जाता है, मानो आँतोंमें आध्मान वायु अड़ गया है और यह दर्द प्लीहातक चला जाता है। कमरके एक अस्थि-शिखरसे दूसरे अस्थि-शिखरतक उदरमें इतना दर्द होता है मानो छुरी मारी जा रही है।

मलान्त्र और मल।—पंजरेके नीचे ऐसा दर्द मानो जकड़ गया है। यह दर्द समूची पाकस्थलीमें चला जाता है और तेज़ प्यास पैदा हो जाती हैं; इसके कुछ देर बाद प्रबल कूंथन और उदरके पीछेकी ओर आकर्षणके

साथ पहले कड़ा पाखना और इसके बाद लगातार कूंथनेके साथ बहुत अधिक पतला पाखाना निकलता है और उससे पेटका फूलना कुछ घट जाता है। दो दिनोंतक कब्जियत और अंत्राशयका कड़ापन रहता है। छोटा-छोटा गांठ-गांठ थोड़ा पाखाना होता है (प्लैट), तीन दिनोंतक पाखानेका नाम नहीं रहता, उदरमें इतना भार रहता है, मानो न जाने क्या खा लिया है और कुछ भी खानेकी इच्छा नहीं रहती (ब्राई, हाइड्रैस्ट, नक्स-वोम, ओपि ; तीन-चार दिनोंका अन्तर देकर पाखाना होना—फास, मैग-म्यूर, कैलि-कार्ब ; चार-पाँच दिनके बाद एक बार—ऐ-पाइक्रिक ; पाँच या छः दिनोंका अन्तर देकर—नेट्र-म्यूर ; पाँच-सात दिनोंका अन्तर देकर एनिमा देनेपर तब कहीं पाखाना होता है—सिमि ; प्रति ८-१० दिनोंका अन्तर देकर—प्लम्ब, मेजेर, एपिस ; सप्ताहमें एक बार—ओपि)। पाखाना होनेके समय मलान्त्रमें डंक मारने या छेदनेकी तरह दर्द और आँतोंका गड़गड़ाना एक घण्टे तक स्थायी रहता है (पाखाना होनेके समय मलान्त्रमें छेदनेकी तरह दर्द—ऐ-नाइट्रिक, पल्स, सार्सा, वाइवर्नम-ओप्यु, ओसिरम ; डंक मारनेकी तरह दर्द—लाई, साइलि, निकोल)। बच्चोंकी दुरारोग्य कब्जियत (ऐल्यू, कैल्के, नक्स-वोम, ओपि ; नये पैदा हुये बच्चेकी—ओपि, नक्स-वोम, सल्फ, जिङ्कम ; हाथकी सहायता लिये बिना बच्चेका मल नहीं निकलता—सिपिया ; दूध पीनेवाले बच्चोंकी कब्जियत—ऐल्यू, ओपि, वेरेट, ऐपिस, ब्राई, नक्स)। बच्चेको तीन-चार दिनोंका अन्तर देकर एक बार पाखाना होता है और उसी समय मलद्वारमें बहुत तकलीफ़ हुआ करती हैं (सोरिन ; बच्चोंकी कब्जियतमें नक्स या वेरेट्रमसे लाभ न होनेपर लाइको-पोडियमके प्रयोगसे विशेष लाभ दिखाई दिया करता है। बार-बार पाखाना जानेकी इच्छा, पर वृथा मलवेग। बहुत कड़ा, पर रोज़ नियमित भावसे पाखाना हुआ करता है। तीन दिनोंतक पाखाना न होने बाद, पाखानेमें बहुत देरतक बैठे रहनेपर कहीं पाखाना होता है और उसके बाद रोगी बहुत क्लान्त और अवसन्न हो पड़ता है (कास्टि, ओपि)। सुपारीकी तरह कड़ी गाँठें निकलनेके समय आँतोंमें आक्षेपिक वेदना। मल छोटे-छोटे अंशोंमें विभक्त होकर निकलता है। अर्श रोगमें बहुत दिनोंकी कब्जियत, बार-बार वृथा मल-वेग।

पेशाब।—रोगिनी कितना भी कम पानी क्यों न पीती हो, १८-२० मिनटका अन्तर देकर बहुत ज्यादा पाखाना होता है। पेट जकड़ रखने बाद बार-बार पेशाबका वेग होता है। पेशाब गर्म और फीका।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—आर्त्तव ; निर्दिष्ट समयके ५-७ दिन बाद या और भी देरसे ऋतु-स्राव होता है। निर्दिष्ट समयके छः दिन पहले ऋतु-स्राव होना ; खड़े होनेपर लगातार रजःस्राव हुआ करता है ; स्राव काले रङ्गका (लैके, पल्स, प्लैट, काक्यु, साइक्लामिन, कैलि-नाई, सैङ्गिविन, सिकेलि) और बहुत ज्यादा या कुछ लाल आभा लिये काले रङ्गका। ऋतुके समय रोगिनीको बाहरी शीत और भीतरी उत्ताप मालूम होता है और बहुत प्यासकी वजहसे बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी पीता है (बेल, सिङ्कन, वेरेट) ; दूसरे दिन सारे शरीरमें छेदनेकी तरह दर्द, योनिसे दूधकी तरह सफेद रङ्गका तरल पदार्थ बूंद-बूंद निकलता है (कैलि-आयोड, फाइजस, इयुफोर्ब, इग्ने, सिपि, कैल्के) ; स्राव कुछ मीठी गन्ध लिये। उदरमें खुजली और बहुत ज्यादा श्वेत-प्रदरका स्राव ; कपड़ेमें लगनेपर सफेद और धुमैला दाग पड़ता है।

श्वासयन्त्र । – समूचे वक्षमें कसावटका भाव, ऐसा मालूम होना मानो जकड़ गया है और श्वास-प्रश्वासके समय वक्षके एक ओरसे दूसरी ओरतक छुरी मारनेकी तरह दर्द ; वृद्धि—बाएँ पार्श्वमें। डङ्क मारनेकी तरह दर्दकी वजहसे लम्बी साँस नहीं ले सकता। ऐसा अनुभव होना कि मानो विभेदिकामें प्रदाह हो गया है। जम्हाई लेनेपर पंजरेके नीचेसे मेरुदण्डतक मानो जकड़ गया है, ऐसा दर्द मालूम होना ; यह दर्द जब-तब पैदा भी होता है और अच्छा भी हो जाता है और श्वास-प्रश्वासके समय बढ़ जाया करता है। बाएँ पार्श्वकी उप-पर्शुकाके नीचे डङ्क मारनेकी तरह दर्द (बोर, लिसिन, एपिस) ; वृद्धि—सोनेपर, दबानेपर और लम्बी साँस लेने-छोड़नेपर ; कभी-कभी गर्मी मालूम होती है, स्तनवृन्तको छूनेपर इस प्रकारका दर्द मालूम होता है, मानो जखम निकल आया है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—दोनों कन्धोंके बीचवाले अंशमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द (एपिस, कैमो) और उसी वजहसे श्वास-प्रश्वासमें व्याघात पैदा हो जाता है ; मेरुदण्डमें दर्द, दर्द दोनों कोखोंतक फैल जाता है। पीठका दर्द छूनेपर बढ़ जाता है। ऐसा दर्द मानो मेरुदण्डमें चोट लग गयी है। शरीर हिलाने या स्थिर रहने, दोनों अवस्थाओंमें ही यह दर्द मालूम होता है। सीढ़ी चढ़नेके समय ऐसा अनुभव होता है, मानो कमर क्लान्त और अवसन्न हो गई है (कमरमें दर्द मालूम होना, मानो बहुत देरतक सीधे बैठकर बहुत अधिक

परिश्रम किया है—पैलेडियम ; कमरमें थकन मालूम होना—फार्मिका, हेलोनियस, जिङ्कम)। बाईं बगलके बीचमें एकाएक चिलक मारनेकी तरह दर्द ; इससे सारा शरीर काँप उठता है और मनमें डर पैदा हो जाता है। ऐसा मालूम होता है, कि समूचा दाहिना बाँह प्रबल चोट लगकर और सन्धिसे हट गया है (बाएँ बाँहमें—ऐण्टि-टार्ट)। दाहिने बाँहमें बहुत भार मालूम होता है, रोगिनी सहजमें ही यह बाँह उठा नहीं सकती (ऐमोन-मूर, इग्ने, कुरारी, स्टैन, नक्स-वोम ; बायाँ बाँह—डिजि, कुरारी, एरण्डो); इस बाँहमें सुन्नपन मालूम होता है, मानो कसकर बँधा हुआ है, शिरामें अधिक रक्त-सञ्चय होनेकी वजहसे वह फूल उठती हैं। बाँहके अगले अर्द्ध भागकी पेशियाँ सब ऐसी मालूम होती है, मानो फूल और अकड़ गयी हैं। तलहत्थी बहुत गर्म रहती है (ऐको, फेर, ऐ-फ्लु, लाई, पेट्रोल, सिपि, एरम-ड्रोक ; बच्चोंकी—फेरम-फास)। दोनों उरु बहुत जकड़ गये-से मालूम होते हैं (पल्स, गुयेक), मानो बहुत दूरकी सफ़र कर आया है। पैरकी पोटलीसे पैरकी अंगुलीतक उखाड़नेकी तरह दर्द, इससे नींदमें व्याघात पैदा हो जाता है ; जानुसे पैरकी अंगुलीतक कँपकँपी होनेकी वजहसे चलने या पैर उठानेमें बहुत तकलीफ़ होती है। पैरका तलवा और तलहत्थी दोनों ही बहुत गर्म (फेरम, पेट्रोल, सिपि, सल्फ)। सभी सन्धियोंमें चिलक मारनेकी तरह दर्द। सारे शरीरमें मलिनता और सुस्ती। बैठनेकी अवस्थामें ऐसा मालूम होता है, मानो आगे-पीछे हिल रहा है।

निद्रा।—औंघाई और बार-बार जम्हाई। हनु-सन्धिमें दर्द रहनेपर भी बार-बार जम्हाई आना। दिन-रात सोया रहना चाहता है। जागता नहीं रह सकता ; कुर्सीपर बैठते ही सो पड़ता है। दोनों पैरोंमें झुनझुनी होती है। कामोद्दीपक सपने देखता है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—शीतके बाद सूखा उत्ताप और पसीना और उत्ताप पैदा होनेके कुछ ही बाद बहुत देरतक रहनेवाली पसीनेकी अवस्था पैदा हो जाती है। चेहरा और दोनों हाथ गर्म और लाल रहते हैं। शरीरके ऊपरी अंशमें, विशेषकर ललाटमें गर्म पसीना निकलता है (कैमो, ओपि)।

वृद्धि ।—झुकनेपर, सोनेपर (पञ्जरेके नीचेका दर्द) दीर्घ श्वास-प्रश्वाससे, खड़े होनेपर, दबानेपर बाएँ पार्श्वमें ।

उपशम ।—नींदके बाद विश्राम लेनेपर, रोगवाला अंश बाँधने या पकड़नेपर, सोनेपर (माथेमें दर्द), रगड़नेपर (क्षणिक) ।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—पेट्रोल, सिपि, म्यूरेक्स, नेट्र-म्यूर, सल्फ, लैके, नेट्रम-सल्फ, क्रियो, इयुपियोन, नैपथैलिन ।

तुलनीय ।—तेजीसे चलनेकी इच्छा—ब्यूफो, आयोड ; जरायुकी बीमारीमें--सिपिया, म्यूरेक्स, नेट्रम ; कसा कपड़ा असह्य—लैकेसिस ।

शक्ति ।—२रे दशमिक विचूर्णसे २०० शततमिक क्रम ।

पैरिरा ब्रावा

(PAREIRA BRAVA)

दूसरा नाम । — वार्जिन वाइन, वेलवेट लिप ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़से मदर-टिंचर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— मूत्राशयकी सर्दी ; मूत्राश्मरी (मूत्र-पथरी) ; मूत्रकृच्छ्र ; प्रमेह ; प्रदर ; मूत्राश्मरी शूल (दर्द-गुर्दा) ; मूत्राधार-मुखशायी-ग्रन्थिका बढ़ना ।

उपयोगिता और आभास ।—मसानेका दर्द, पथरीका दर्द, पेशाबमें कमी, मूत्राशय-मुखशायिकाका बढ़ना वगैरह मूत्रयन्त्रकी बीमारियोंमें लाभदायक है । नीचे लिखे कई इसके अनन्य साधारण लक्षण हैं:—(१) पेशाब करनेकी चेष्टा करनेपर मसानेसे लेकर उरु-देश और कभी-कभी पैरके तलवेतक तेज़ दर्द । (२) पेशाब करनेके समय वेग देनेपर लिङ्गमणि (सुपारी) में भयानक दर्द पैदा हो जाता है । (३) मूत्रकृच्छ्र रोगमें भयानक यन्त्रणा ; पेशाब करनेके समय रोगीको घुटने टेककर भूमिमें माथा लगा देना पड़ता है,

नहीं तो पेशाब बिलकुल ही नहीं उतरता। (४) मूत्रनली-प्रदाह रोगमें पेशाब करनेके समय असह्य यन्त्रणा और मूत्र-मार्गसे श्लेष्माका स्राव। (५) मूत्रकृच्छ्र और मूत्र-रोगके साथ मूत्राशय मुखशायिका-ग्रन्थिका बढ़ना।

लक्षणावली

पेशाब।—मूत्राशय-प्रदाह; बार-बार पेशाबका वेग, भयानक दर्द और कूथन; आधी रातसे लेकर सवेरेतक बढ़ना। मूत्रकृच्छ्र-मिला मूत्राशय-प्रदाह; घुटने टेककर जबतक जमीनसे माथा नहीं लगा देता है, तबतक पेशाब नहीं उतरता; पेशाबके समय ऐसा मालूम होता है, मानो समूचा मूत्र-मार्ग जल गया। मूत्राशय-प्रदाह रोगमें पेशाबमें बहुत ही तीखी गन्ध रहती है और उसके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा सफ़ेद रङ्गका श्लेष्मा मिला रहता है; वृद्धि—रातके अन्तिम भागमें और सन्ध्या होनेके कुछ पहले क्रमसे घटता है। मूत्राशय-प्रदेशसे उरुतक फैलनेवाली प्रचण्ड यन्त्रणा अनुभव होती है (उरु-शिखरतक फैलनेवाली—बार्बेरिस)। ऐसा अनुभव होना कि मूत्राशय मानो फूल गया है और दर्द; बढ़ना—पेशाब कर लेनेपर। बायें मसानेके स्थानपरसे मूत्रनली होकर पुट्ठे तक असह्य यन्त्रणा। मसाना या मूत्र-ग्रन्थि-प्रदेशमें दर्द मालूम होना। पेशाब करनेमें बहुत तकलीफ़ होती है; बहुत वेग देनेपर बूंद-बूंद पेशाब निकलता है और ऐसा मालूम होता है, मानो और भी पेशाब होगा। पेर और दोनों चरणोंमें सूजन हो जाती है; मूत्रनली-प्रदाहमें पेशाब करनेके समय भयानक तकलीफ़ होती है और पेशाबके समय जलन होती है। पेशाब हो जानेपर यन्त्रणा और मूत्रनलीके मुँहपर शूल गड़नेकी तरह दर्द। पेशाब हो जानेपर बून्द-बून्द पेशाब होना। मूत्राशयके भीतर और कभी-कभी कमरमें भयानक दर्द; बाएँ अण्डकोषमें ऊपरकी ओर खींचन होती है और बहुत ही तेज़ दर्द मालूम हुआ करता है। मूत्रकृच्छ्र रोगमें भयानक यन्त्रणासे रोगी चिल्लाया करता है; ऊपर लिखे घुटने टेककर बैठनेवाली अवस्थाके सिवा पेशाब नहीं उतरता, इसी अवस्थामें १० से २० मिनटतक रोगीके बैठनेपर पसीना हुआ करता है और बीच-बीचमें दो एक बून्द पेशाब होता है और फिर बीच-बीचमें रुक जाया करता है और लिङ्गमणि अर्थात् सुपारीमें फाड़ने और जलानेवाला दर्द होता है। ताँबेके रङ्गका खून-मिला फेनमय पेशाब; पेशाब अम्लमय, ईंटके चूरकी तरह तली, मूत्राशय उपास्थिकी

तरह कड़ा हो उठता है। पेशाब रुकना और मूत्राशयकी मुखशायिका-ग्रन्थिका बढ़ना ; दर्द उरूतक चला जाता है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—बार्बेरिस, चिमाफिला-ऐम्बेलेटा, हाइड्रेञ्जिया, इयुवा-उर्साई, सैबाल, ओसिमम कैनम।

तुलनीय ।—मूत्राशयमें आक्षेप और जलन—चिमाफिला, इयुवा-उर्सी। मूत्राशय-मुखशायिका-ग्रन्थिकी बीमारी—हाइड्रेस्ट, सैबाल-सेरुलेटा ; मूत्राश्मरी शूल—ओसिम, बार्बेरिस ; पेशाब करनेके बाद बून्द-बून्द पेशाब होना—सेलिन।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३रा दशमिक क्रम।

पैरिस क्वाड्रिफोलिया

(PARIS QUADRIFOLIA)

दूसरा नाम ।—ऐकोनाइटम पारडेलियनचेस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फल और पेंड़के समूचे अंशसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अम्ल-रोग ; नकलो प्रसव-दर्द ; आँखका स्नायुशूल ; पक्षाघात ; अजीर्ण ; प्रमेह ; सर-दर्द ; हिचकी ; दमा ; मूर्च्छावायु ; उन्माद ; स्नायुशूल ; अंगुलहाड़ा ; मेरुदण्डकी बीमारी ; स्पर्श-शक्तिमें विकार।

उपयोगिता और आभास ।—आकार विवृद्धि ज्ञान इसका एक प्रधान क्रिया-फल है। माथा बहुत बड़ा मालूम होता है, मानो वह फूल और फैल गया है। मानो माथेके अस्थिफलक सब बहुत पतले पड़ गये हैं ; चक्षु-गोलक बहुत बड़ा मालूम होता है, मानो चक्षुगह्वरमें वह अँटता नहीं है। मानो समूची आँख पलकसे नहीं ढँकती ; मानो दोनों चक्षुगोलक बाहर निकल आनेकी चेष्टा कर रहे हैं और वे मानो डोरीसे बँधकर भीतरकी ओर खिंच रहे हैं। जीभ बहुत बड़ी मालूम होती है। यह एक बाएँ अङ्गकी दवा है अर्थात् शरीरके बाएँ अङ्गपर ही इसकी क्रिया अधिक दिखाई देती है ; परन्तु

बायाँ अङ्ग ठण्डा और दाहिना अङ्ग स्वाभाविक या बहुत अधिक उत्ताप-भरा इसका अन्यतम लक्षण है। आगे लिखे कई लक्षण भी इसके निर्वाचनमें सहायता पहुँचाते है :—प्रसन्नता, वाचालता, रोगी लगातार बकते रहना पसन्द करता है ; ऊपरी अङ्गका सुन्न हो जाना और उसे हिलानेकी शक्ति न रहना ; बायाँ बाँह ऐसा मालूम होता है कि पक्षाघातग्रस्त हो गया है और अकड़ जाता है और हाथकी अंगुलियाँ सब टेढ़ी हो जाती हैं ; बाएँ बाँहको हिला न सकना और ऐसा अनुभव होना कि उसमें सुई गड़ रही हैं। हाथकी अंगुलियाँ सभी जभी-तभी सुन्न हो जाती हैं और कोई चीज़ छूनेपर उसका गात कड़ा मालूम होता है ; मेरुमज्जाके विकारकी वजहसे पैदा हुआ सब-दर्द, मानो दर्द गर्दनके पिछले भागसे ऊपरकी ओर चला जाता है, गर्दनके पिछले भागमें अस्पष्ट दर्द, गर्दन घुमानेपर अकड़ी और क्लान्त मालूम होती है, मानो उसपर कोई भारी चीज़ रखी हुई है ; वृद्धि—परिश्रमसे ; घटना—विश्रामसे और निर्मल वायु लगनेपर। शरीरके कितने ही अंशोंमें बरफकी तरह ठण्डक मालूम होती है ; ज्वराधिकारमें शीतावस्थामें ऐसा मालूम होता है, कि शरीरकी त्वचा सिकुड़ी जाती है। गर्दनके पिछले भागसे उत्ताप पैदा होकर चेहरेमें और नीचेकी ओर फैलता है और ऊर्द्धाङ्गमें पसीना हुआ करता है। हाथकी सब अंगुलियाँ पारी-पारीसे ठण्डी एवं गरम हो उठती हैं और मरे व्यक्तिकी तरह पीले रङ्गकी मालूम होती हैं, शरीरकी त्वचामें स्पर्श-ज्ञानकी अधिकता ; सभी श्लैष्मिक स्राव हरे रङ्गके और डोरीकी तरह रहते हैं ; उदरामयके मलमें सड़े मांसकी तरह गन्ध रहती है ; बहुत दुर्गन्ध-कातरता—यह दुर्गन्ध असली या काल्पनिक चाहे कैसी भी हो ; दूध और रोटीमें भी सड़े मांसकी तरह गन्ध आती है ; आँखसे सड़े जखमकी तरह गन्ध निकलती है ; भोजनके कुछ बाद ही तुरन्त भूख लग आती है। डा० गार्नसीने आगे लिखे कई लक्षण इसके प्रकृतिगत लक्षण बताये हैं :—"अत्यन्त दुर्गन्ध-असहिष्णुता ; ऐसा मालूम होता है, कि नाकमें न जाने कितनी बदबू घुस गयी है ; सवेरे बलगम निकलना और खाँसी, सन्ध्याके समय श्लेष्मा नहीं निकलता। आकार बढ़ा हुआ मालूम होना, रोगी समझता है कि उसका आकार बहुत बड़ा हो गया है। मुँहमें पानी भर आना। पेशाबके ऊपर तेलकी तरह मलाई तैरती है।" डा० खूज कहते हैं, कि महात्मा हनिमैनके मतसे इसके द्वारा पाकाशयकी ऐंठन दूर हो जाती हैं।

लक्षणावली

मन।—रोगी दूसरोंके प्रति घृणा और अवज्ञा प्रकट करता है (माइक्यू, प्लैट ; रिश्तेदारोंके प्रति—सिकेलि ; अपने प्रति—ऐग्नस ; सभी चीजों और व्यक्तियोंके प्रति—इपिक, प्लैट ; घृणा करता है—कैल्के, लैक-कैन, नेट्र-मूर ; स्वजातिवालोंके प्रति घृणा—लिडम ; रमणीके प्रति घृणा—पल्स)। निर्बोधकी तरह व्यवहार करता है (बेराई, फास ; सविराम ज्वरमें—सिङ्को)। लगातार असम्भव बातें बकता है, जरा भी नहीं रुकता (बेल, हायो, स्ट्रैन)। वाचालताके साथ उन्माद (एपिस, हायो, स्ट्रैन) ; बड़ी प्रसन्नता और उत्साहसे बका करता है ; मानसिक परिश्रमसे विराग (सिङ्को, नक्स-वोम, फास, ऐ-हाइड्रो, ऐ-फास, ऐ-पाइक्रि, लिलियम-टाई, पल्स, स्टैफ)।

मस्तक।—सर-दर्द, गहरी चिन्तासे बढ़ना (आर्जेण्ट-नाई, कैल्के, कैल्के-फास, इग्निशि, सिनैप, स्पाइजि ; सर-दर्दकी वजहसे चिन्ता-शक्तिका लोप हो जाना—साइलिक्स ; सर-दर्दका विषय सोचनेपर दर्द गायब हो जाता है—पैलेडियम)। सर-दर्दके साथ ललाटमें जड़ता मालूम होना। बीच-बीचमें ऐसा मालूम होता है मानो माथा बिध रहा है और रह-रहकर सुई गड़नेकी तरह दर्द। ऐसा अनुभव होना, कि ललाट और दोनों कनपटियाँ कसकर बँधी हुई हैं ; मस्तिष्क, आँख और खोपड़ीकी त्वचामें खींचन और ऐसा मालूम होता है, मानो हड्डियाँ सब खरोंच ली गयी हैं। वृद्धि—मस्तिष्कसे काम लेनेपर, मानसिक उत्तेजना द्वारा और आँखोंका प्रयोग करनेपर। खोपड़ीकी त्वचामें स्पर्श सहन नहीं होता और ललाटके छोटे-छोटे अंशोंमें ऐसा मालूम होता है, कि त्वचा क्षय हो गयी है। सरमें चक्कर,—ऊँचे स्वरसे पढ़नेपर, इसके साथ ही कष्ट-साध्य बातें बोलना और देखना। माथेमें दबावकी तरह दर्द, रोगवाला अंश हाथसे दबानेपर दर्द घट जाया करता है। ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फैलता जाता है और उसके भीतरके पदार्थ कनपटी और दोनों आँखोंको भेदकर बाहर निकलना चाहते हैं। माथा ऐसा बोध होता है, कि एक डलिये जितना बड़ा हो गया (जेल्स) और उसके अस्थि-फलक सब मानो बहुत पतले हो गये हैं। मस्तकके बाएँ पार्श्वमें सुन्न करनेवाला सुई गड़नेकी तरह दर्द। टपककी तरह सर-दर्द और सीढ़ी चढ़नेके समय ऐसा अनुभव होना, कि माथेमें न जाने क्या लहर ले रहा

है। खोपड़ीकी त्वचा छूनेपर ऐसा दर्द होता है मानो त्वचा क्षय हो गयी है और केश उड़ जाते हैं। चोट या बहुत अधिक मानसिक परिश्रम करनेपर माथेके पिछले भागमें प्रचण्ड दर्द। मेरुमज्जामें विकारकी वजहसे सर-दर्द,—दर्द गर्दनके पिछले भागसे पैदा होकर ऊपरकी ओर चढ़ता है (साइलिसिया)।

आँख।—दोनों चक्षुगोलक बहुत बड़े मालूम होते हैं (ऐको, स्पाइजि, कैमो, नेट्र-म्यूर, ओपि, फास) और मानो चक्षुह्वरमें उनके लिये स्थान नहीं हैं। ऐसा मालूम होता है मानो पलकोंसे आँखें अच्छी तरह नहीं ढँकतीं (ऐसा अनुभव होना—चेलिडो, फास ; चक्षुगह्वरमें उन्हें जगह नहीं मिलती,—आर्स), दोनों आँखें ऐसा मालूम होती हैं कि बाहर निकल पड़ना चाहती हैं और किसी सूत या डोरीसे माथेके भीतरकी ओर जोरसे खिंच (क्रोटन) रही है (साइलि—मानो पीछे खिंच रही हैं—हिप, आर्स)। दृष्टि-क्षीण, भीतरी पलकमें (भीतरी कोनेमें) खींचन अनुभव होना। सबेरे नींद खुलनेपर और कभी-कभी दूसरे समय भी आँखमें जलन होती है और उससे आँसू बहा करते हैं; दाहिनी आँखकी ऊपरी पलक फड़का करती हैं। दोनों आँखोंके गोले सीसेकी तरह भारी मालूम होते हैं (इस्क्य, हिप); आँख जरा भी हिलानेकी चेष्टा करनेपर दर्द मालूम होता है (एपिस, ब्राई)। आँखसे बदबूदार जखमकी तरह गन्ध निकलती है।

कान।—कानमें दर्द,—उखाड़नेकी तरह दर्द। कानमें एकाएक फाड़नेकी तरह दर्द, मानो उसमें कोई काठकी सलाई डालकर धक्का देता है। ऐसा मालूम होता हैं, मानो कानसे जलन पैदा करनेवाला गर्म भाफ़ निकलती है—कैन्थ ; मानो दाहिने कानके भीतरसे गर्म पानी बह रहा है—कैमो)। कोई चीज़ निगलनेके समय कानमें दर्द मालूम होता है (एलैन ; रोहिनी या उपझिल्ली प्रदाहमें—एपिस, लैके ; कड़ाकसे आवाज़ हो उठती है—कैल्के)। दाहिने कानमें—ढिं-ढिं शब्द सुन पड़ना।

नाक।—सबेरे नाक छिड़कनेपर उसमेंसे लाल और हरे रङ्गका बलगम या पपड़ी निकलती हैं। नासा-मूल बन्द और भरा मालूम होता है ; बार-बार खाँसकर गाढ़ा गोंदकी तरह सफेद रङ्गका और स्वादहीन बलगम

निकलता है। नासारंध्रका ऊपरी अंश रुका हुआ मालूम होता है और नाक छिड़कनेपर खून निकल आता है। रोटी और दूधमें सड़ी गन्ध आती है; नाकमें दुर्गन्ध पहुँचनेपर रोगी बहुत कातर हो पड़ता है, रोगीको हमेशा ऐसा मालूम होता है मानो नाकमें बदबू घुस रही हैं (ऐनाक), कभी-कभी नाक सूखी भी रहती है। नाक और आँखसे पानीकी तरह श्लेष्मा निकलता है और रोगी इस भावसे श्वास-प्रश्वासकी क्रिया किया करता है, मानो हाँफ रहा है और कभी-कभी उसमेंसे पतला श्लेष्मा भी निकल पड़ता है।

मुखमण्डल।—निचले जबड़ेके किनारेके भागमें तेज़ खुजली पैदा हो जाती है और उसमें कुटकुटी और जलन हुआ करती है और अधिकांश स्थानोंमें उसपर लाल, छोटे, सहजमें ही खून निकलनेवाले खसड़ेके दानेकी तरह खुजलीके दाने निकला करते हैं। बाईं गण्डास्थिमें गर्म शलाका बेधनेकी तरह दर्द; छूनेपर दर्द हुआ करता है। नाक और चिबुकपर पीव भरे दाने रहते हैं। मुँहके चारों ओर खुजलानेवाले दाने निकलते हैं। निचले ओंठके ऊपर रस-भरे दाने निकलते हैं (मोतीकी तरह—नेट्र-मूर)।

मुख-विवर।—नींद खुलनेपर जीभ बहुत सूखी मालूम होती है; जीभ बहुत बड़ी मालूम होती है (हाइड्रैस्ट, पल्स, क्रोटन, ग्लोन, कैलि-बाई, मर्क-कोर, नेट्र-आर्स, ऐ-आक्सेल, फास, प्लम्ब, सिपि)। जीभका ऊपरी भाग रुखड़ा और सफेद रङ्गका (ऐनाक); कीड़े लगे या क्षय हुए दाँतोंमें खींचन या टपककी तरह दर्द मालूम होना; वृद्धि—ठण्डी चीजें आदि लगनेपर। दाँतका मसूढ़ा सूख और सिकुड़ जाता हैं, मानो जल गया है। रोज़ सवेरे मसूढ़ेमें अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द। सवेरे नींद खुलनेपर मुख-विवर सूखा और लार-रहित हो जाया करता है। मुँहमें पानी भर आया करता है। मुँहमें रुखड़े गोंदकी तरह लार सञ्चित होती है। सवेरे मुँहके कोनेमें सफेद रङ्गका फेन इकट्ठा हुआ करता है। तालुके ऊपर अण्डेकी तरह सूजन पैदा हो जाती है, गलेमें ऐसा दबाव मालूम होता है, मानो एक गोला अड़ा हुआ है। खाने-पीनेके बाद गलेमें जलन।

पाकस्थली।—सर्वग्रासी भूख। भोजनके कुछ ही बाद फिर भूख पैदा हो जाती हैं (भोजनके बाद ही पाकस्थली खाली मालूम होती है—सैङ्गिविन; खानेपर भी भूख शान्त नहीं होती—सिना, फास, कैस्टोर, इकुई, लोरो,

नक्स-मस ; रोज़ दो-तीन घण्टेका अन्तर देकर खाता है—आयोड ; खानेके बाद ही फिर भूख लग आती है—सिना, फास, स्टैफ ; जितना खाता है उतना ही और भी खाना चाहता है—लाई)। डकारके साथ मुँहमें पानी भर आता है ; भोजनके बाद हिचकी (हायो, ग्रैफ, इग्ने, नक्स-वोम, कैलि-बाई)। डकार लेनेमें दर्द मालूम होता है। पाचन-शक्तिका घटना और खाये हुए पदार्थ बहुत धीरे-धीरे हज़म होते हैं। पाकस्थलीमें ऐसा भार मालूम होता है, मानो एक पत्थर रखा हुआ है (आर्स, रस); डकार आनेपर घटना। पाकस्थलीसे जलन आरम्भ होकर आँतोंमें फैल जाती है।

अंत्राशय आदि।—उदरमें हुड़-हुड़ गुड़-गुड़ शब्द हुआ करता है। कभी-कभी कतरने या मरोड़की तरह दर्द भी होता है। बार-बार पतला पाखाना होना, अतिसार—मल, सड़े माँसकी तरह गन्धवाला मल।

पेशाब।—बार-बार पेशाब और जलन। घोर लाल रङ्गका पेशाब, तली भी उसमें जमती है और पेशाबके ऊपर तेलकी तरह मलाई तैरा करती है। कषाय, त्वचाको क्षय करनेवाला पेशाब (हिप, मर्क, सल्फ, काक्कस, फास, रस, सार्सा, स्टैफ, इयुरे-नाई)। बैठनेवाली अवस्थामें मूत्रनालीमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह तकलीफ़।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रमणेच्छा बहुत प्रबल हो जाया करती है। ऋतु-स्राव असमयमें हो हो जाता है। प्रसवके बादका दर्द बहुत ही तेज़ हो जाया करता है ; परन्तु जरायुका सङ्कोचन बहुत ही थोड़ा होता है। प्रसवके बादका क्लेद-स्राव ठीक दो दिनोंतक बन्द रहता है और बार-बार वृथा ही पाखानेका वेग होता है। रोगिनी बहुत क्षीण हो पड़ती है, उसे ज्वर-भाव मालूम होता है और माथेमें असह्य दर्द हुआ करता है। दोनों चक्षुगोलकोंमें बहुत दर्द होता है और आँख हिलाते ही दर्द मालूम होता है।

श्वास-यन्त्र।—सामयिक यन्त्रणा-रहित स्वरभङ्ग। स्वरभङ्ग, स्वर बहुत क्षीण। बार-बार बैठकर कफ़ निकालना है और स्वरनालीमें जलन मालूम होती है। सवेरे नींद खुलनेपर वायुनली सूखी मालूम होती है वक्षमें दबाव मालूम होना और दीर्घ श्वास लेनेका आग्रह (प्रूणस) खाँसीके साथ सवेरे बलगम निकलता है, जो गोंदकी तरह लसदार होता है ; पर सवेरे और सन्ध्याके बाद कफ़ निकालना बहुत कष्टकर हो जाता है, मानो वायुनलीमें

गन्धकका धुआँ घुस गया है, इस वजहसे (पल्स, लाई, ऐमिल, ब्रोम, कार्बो-वेज) या तालुमूलमें गोंदकी तरह बलगम अड़ा रहनेके कारण खाँसी है—ऐसा मालूम होना (लाई), बाईं करवट सोनेपर रातमें खाँसी (बाईं करवट सोने बाद खाँसी—लाई, फास, रस ; रातमें सोने बाद—कैलि-फास, ड्रोसेरा)। खाँसनेपर जो बलगम निकलता है, वह गोंदकी तरह और हरे रङ्गका श्लेष्मामय और स्वरनलीसे निकलता है। स्वर और वायुनलीके प्रदाहमें स्वरनलीमें जलन। क्या विश्राम, क्या देह सञ्चालन सभी अवस्थाओंमें कलेजेमें धड़कन हुआ करती है। नाड़ी पुष्ट और धीर गति।

गर्दन और पीठ।—गलेका पिछला भाग क्षीण और क्लान्त मालूम होता है और ऐसा मालूम होता है, कि बोझा ढोनेकी वजहसे दर्द हो गया है। गर्दन घुमानेपर अकड़ी और फूली मालूम होती है। गर्दनके पिछले भागमें बहुत तेज़ दर्द, कभी-कभी दर्द बहुत तेज़ हो जाता है और उसके साथ ही अकड़न, उत्ताप और भार मालूम होता है। वृद्धि—परिश्रमसे ; घटना—विश्रामसे और निर्मल हवा लगनेपर। गर्दनके दोनों (विशेषकर बाएँ) पार्श्वमें भयानक दर्द और यह दर्द हाथकी अंगुलीतक चला आता है ; वृद्धि—मानसिक परिश्रमसे। गर्दन और कन्धेके बाएँ पार्श्वसे दर्द पैदा होकर उस बाँहको बेबश कर डालता है और ऐसा बना देता है कि रोगीमें मानसिक या शारीरिक परिश्रम करनेकी शक्ति नहीं रहती। पीठ, पृष्ठफलक और बैठनेके समय मेरुपुच्छ (मेरुदण्डका सबसे निचला भाग) में सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—दोनों पैरोंमें बेबश कर देनेवाला दर्द। रातमें सोनेके समय दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे, सभी अङ्गोंमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और हिलानेके समय सभी सन्धियोंमें दर्द मालूम होता है। हाथका काँपना। हाथकी अंगुलियाँ सब कभी-कभी बरफकी तरह या मुर्देकी तरह ठण्डी और उनमें स्पर्श ज्ञान नहीं रहता अथवा कभी-कभी गर्म हो जाती हैं। सारे शरीरमें विवृद्धि अनुभव होना। रोगी समझता है कि उसका आकार बहुत बड़ा हो गया है। अंगुलहाड़ा (ऐसिड-बोरेसिक)।

शीत, उत्ताप और पसीना।— शीतावस्थामें ऐसा मालूम होता है, मानो शरीरकी त्वचा संकुचित हो गयी है। रातभर दोनों पैर ठण्डे मालूम

होते हैं, दाहिने अङ्ग सब ठण्डे और बायाँ अङ्ग स्वाभाविक गर्म। वक्ष, उदर और दोनों पैर काँपते हैं और रोएँ खड़े हो जाते हैं; बार-बार जम्हाई आना। उत्तापके समय ऊपरी अङ्गमें पसीना हुआ करता है। खुजलाहट पैदा करनेवाला पसीना; पसीना होनेपर इतनी खुजली पैदा हो जाती है कि रोगी शरीरको खुजलाये बिना रह नहीं सकता।

वृद्धि।—छूनेपर, शरीर या रोगी अङ्ग हिलानेपर, सवेरे नींद खुलनेपर, मानसिक परिश्रमसे और भोजनके बाद। धूम्रपान करनेपर सर-दर्दका पैदा हो जाना।

घटना।—डकार आनेपर, विश्रामसे, हाथसे दबानेपर और निर्मल वायु लगनेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—काफिया, कैम्फोरा।

अनुकूल सम्बन्ध।—कैल्के, सिपि, सल्फ, लाई, नक्स, फास, पल्स, रस।

प्रतिकूल सम्बन्ध।—फेरम-फास।

सदृश।—आर्जेण्ट-नाई, क्रोटन-टिग, बेल, स्ट्रैमोन, ऐक्टिया-रेस, ऐगार, ऐनाका, लैके, कैलि-बाई, नेट्र-म्यूर, स्पाइजि, सिनैप।

तुलनीय।—मेरुदण्डीय सर-दर्द—साइलि; आँखोंमें उदासीका भाव—बेलेडो। आँखोंका गोला बड़ा मालूम होना—साइलि; वाचालता—लैके, स्ट्रैमो; स्वरनली—आर्जेण्ट; हृत्पिण्ड—कानवैले; अंगुलहाड़ा—बोरैसिक-एसिड।

शक्ति।—१म दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

पैरिटेरिया

(PARIETARIA)

दूसरा नाम।—पैरिटेरिया-आफिसिनेलिस। दीवारमें पैदा होनेवाला एक प्रकारका उद्भिद।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—मूत्र-पथरीके लक्षणमें आर्टिका-युरेन्सके साथ और नींदके समय दबाव मालूम होना और जीवित अवस्थामें गाड़ दिया है—इस तरहका स्वप्न देखनेके लक्षणमें कैलि-नाइट्रिकमके साथ तुलनीय है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

पार्थिनियम

(PARTHENIUM)

दूसरा नाम।—विटर-ब्रुस, इस्कुवा-एमार्गा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—क्यूबा-द्वीपके आदिम अधिवासीगण ज्वर, विशेषकर मैलेरिया ज्वरकी दवाके रूपमें इसका व्यवहार किया करते हैं। सविराम ज्वरमें क्विनाइनसे लाभ न होनेपर अथवा क्विनाइनके दुष्परिणामकी वजहसे बहुत तरहके उपसर्गोंमें इससे फायदा होता दिखाई देता है।

इसकी निम्न-शक्ति सेवन करनेपर स्तनमें दूध बढ़ता है; इसके अलावा, सुस्ती, ऋतु-रोध, रह-रहकर श्वास-रोधका भाव प्रभृति लक्षणोंमें यह व्यवहृत होता है।

सम्बन्ध।—चायना, सियानोथस, एइलैन्थस, मैलेरिया-आफिसिनेलिस, सिड्रन। यह क्विनाइनका विष-दोष नष्ट करता है।

ह्रास-वृद्धि।—सोनेके बाद और एकाएक हिलानेपर बढ़ना; सोकर उठने और चलते रहनेपर घटना।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

पैस्टिनाका

(PASTINACA)

दूसरा नाम।—पार्सिनिप।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—दो वर्ष पुराने उद्भिदकी जड़से अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह एक तेज़ विष है। बहुत बकना, कम्प, प्रलाप, दिखाई देनेमें गड़बड़ी और दूध पचानेकी शक्तिका न रहना इसका निर्देशक लक्षण है।

पैस्टिनाका सेवन करनेपर पाकाशयमें इस ढङ्गका परिवर्त्तन हो जाता है, कि जबतक शरीरमें उसकी क्रिया रहती है, तबतक कोई भी वमन करानेवाली दवाकी क्रिया नहीं होती।

सम्बन्ध।—**तुलनीय।**—इथूजा, जिजिया।

दोषघ्न।—काफिया।

इसके पहले और बाद फेरम-फास नहीं चलता।

शक्ति।—३—३०।

पालिनिया पिनेटा

(PAULLINIA PINNATA)

दूसरा नाम।—गुयाराना।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताज़ी जड़से अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—माथा, उदर और वक्षस्थलमें अस्त्र बेधनेकी तरह या दबानेकी तरह अथवा लोहेके बन्धनसे बँधे रहनेकी तरह दर्द, इसका निर्देशक लक्षण है।

पालिनिया-पिनेटका दर्द हिलाने और श्वास-प्रश्वास ग्रहण करनेके समय बढ़ता है और खुली हवामें और रगड़नेपर घटता है।

काफी पीनेकी अदम्य इच्छा इसका एक और भी उल्लेखनीय लक्षण हैं।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—गुयाराना, पालिनिया-सार्बिनिलिस, ब्रायो।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

पैसिफ्लोरा इनकारनेटा

(PASSIFLORA INCARNATA)

दूसरा नाम।—पैशन-फ्लावर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मई महीनेमें संगृहीत पत्तेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—जले हुए घाव ; बच्चोंकी विसूचिका ; आक्षेप ; दाँत निकलना ; मृगी ; मूर्च्छा ; विसर्प ; गृध्रसी ; अनिद्रा ; धनुष्टङ्कार ; तुरन्तके जनमे बच्चोंका जबड़ा अटकना ; धनुष्टङ्कार और क्रिमिके दोषकी वजहसे ज्वर ; उदरामय इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—नये पैदा हुए बच्चोंके धनुष्टङ्कार रोगमें इसका व्यवहार और लाभ प्रसिद्ध है। उपदंश, विसर्प, अर्श वगैरह रोगमें इसके जलीय सारांशके बाहरी व्यवहारके लिये डा० लिण्डसे (Lindsay) उपदेश देते हैं। मृगीकी अकड़नमें भी इसका प्रयोग हुआ करता है। मदात्यय, ज्वरमें बेचैनी और विसूचिकाके स्नायविक लक्षणमें लाभदायक है। "अनिद्रा" में इसका व्यवहार प्रसिद्ध है।

लक्षणावली

मस्तक।—प्रबल सर-दर्द, मानो खोपड़ी उड़ जायगी (ग्लोनोइन)।

आँख।—आँख मानो कोई धक्का देकर बाहर निकाल देना चाहता है।

मल और मलान्त्र।—बवासीरका तेज़ आक्रमण होता है।

निम्नाङ्ग ।—रोगिनीके पैरकी एँड़ी मानो शून्य हो रही है।

निद्रा ।—अनिद्रा और बेचैनी।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—मृगी और धनुष्टङ्कारमें—इग्नेशिया, नक्स-वोम; एँड़ीका ऊपर चढ़ना (फास्फोरिक एसिड)।

शक्ति ।—मूल अर्क और १म क्रम।

पेक्टन

(PECTON)

दूसरा नाम ।—स्वैलप।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—प्राणीसे विचूर्ण या अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास । जल्दी-जल्दी कष्टकर श्वास-प्रश्वास, बाईं करवट या चित्त होकर सो न सकना। वक्षदेशमें, खासकर दाहिने वक्षमें संकोचन पैदा करनेवाला दर्द, गला और वक्षमें ज्वाला मालूम होना लक्षणमें **दमा रोगकी** एक उत्कृष्ट दवा है।

दमाका आक्रमण होनेके दो-एक दिन पहलेसे छींक और नाकसे बहुत ज्यादा लसदार फेनकी तरह श्लेष्माका स्राव और रातके समय बढ़ना लक्षणकी यह एक लाभदायक दवा है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—आर्स-आयोड, नैफ्थेलिन, सिपा, सैबाडिला, सिनापिस, ऐरेलिया-रेस।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति।

पेडिकुलस

(PEDICULUS)

दूसरा नाम ।—पेडिकुलस केपिटिस, माथेकी जूँ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—कीड़ेसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—पेडिकुलस, साइमेक्स, ड्रेखिडियम ये सब एक जातिकी दवाएँ हैं।

खुजली, हाथ, पैर और गलेमें उद्भेद आदि सोरा दोषके लक्षणमें बच्चोंकी बीमारीकी यह एक उत्कृष्ट दवा है।

लिखना-पढ़ना और काम-काज करनेकी असाधारण इच्छा इसका एक और भी उल्लेख योग्य लक्षण है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय**।—सोरिनम, सल्फ, प्रडेस्खिडियम।

दोषघ्न।—चायना।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

पेलर्गोनियम रेनिफार्मी

(PELARGONIUM RENIFORME)

दूसरा नाम।—रैविनस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताज़ी संग्रह की हुई जड़से अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—दक्षिण अफ्रिकाके आदिम अधिवासी-(काफी) गण पेलर्गोनियमकी जड़के छोटे-छोटे टुकड़ेका या कुचलकर दूधमें उबालकर आमाशयकी दवाके रूपमें व्यवहार करते हैं। बोअर युद्धमें बहुतसे अंगरेज इससे आरोग्य हुए थे।

पेन्थोरम सिडायडिस

(PENTHORAM SEDOIDES)

दूसरा नाम।—वर्जिनिया स्टोन क्राप।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।— ताज़ी जड़से अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—नाक, श्वासनाली और गलकोषपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। नाक और गलेमें जखम मालूम होना; नाक लगातार भींजी रहनेकी तरह मालूम होना; लगातार लसदार श्लेष्माका

स्राव, नासानली और गलनलीकी पुरानी सर्दी और पुराने गल-कोष प्रदाह लक्षणमें यह सुन्दर काम करता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—हाइड्राञ्जिया, सिडम, सैंगुनेरिया, पल्स, कैना-इण्डिका, काकुलस, फास-ऐसिड, स्टिक्टा, सल्फ, थूजा, सोरिनम।

शक्ति।—निम्न-शक्तिका बार-बार प्रयोग करना चाहिये।

पेप्सिनम

(PEPSINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सूअरके बच्चेके ताजा संग्रह किये हुए पाकाशयकी स्राव-ग्रन्थिके स्तरसे विचूर्ण तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—डिस्पेप्शिया रोगमें पेप्सिनमके व्यवहारसे खाये हुए पदार्थमें सहायता करता है। इसके अलावा और-और ग्रन्थियोंकी तरह यह पाचक रस निकलनेमें सहायता करता है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

पेस्टिनम

(PESTINUM)

दूसरा नाम। - प्लेगुइनम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—प्लेगके जीवाणुसे विचूर्ण तैयार होता है।

उपयोगिता।—प्लेग रोग पैदा हो जानेके समय पेस्टिनम सेवन करनेपर रोगका आक्रमण होनेका भय नहीं रहता (इग्नेशिया-विन)।

यह टाइफस, प्लेग, बाघीमें भी फायदा करता है।

शक्ति।—३० से २०० शततमिक क्रम।

पेटिवेरिया

(PETIVERIA)

दूसरा नाम।—इयुवा-डि-पिपि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़से विचूर्ण तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—ब्रेजिल देशमें पक्षाघातग्रस्त अंगोंकी सञ्चालन शक्ति लानेके लिये पेटिवेरिया मिलाकर थोड़े गर्म पानीमें रोगीको डुबा रखनेकी चाल है।

पक्षाघात, अर्द्धाङ्ग-पक्षाघात और उसके साथ ही स्पर्श-शक्तिका न रहना; भीतरी सर्दी मालूम होना (सिस्टस); पलकोंमें भार मालूम होना और सुस्तीका भाव इसका निर्देशक लक्षण हैं।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—बोरानिका, फाइटोलैका, रस-टक्स, सिस्टस।

ह्रास-वृद्धि।—हिलानेपर, नींद खुलनेपर, सोकर उठनेके समय, सबेरेके भोजनके बाद और दोपहरके पहले और बाद; पीछेकी ओर टेढ़ा होनेपर बढ़ना।

शक्ति।—३, ६ शततमिक।

पेट्रोलियम

(PETROLEUM)

दूसरा नाम।—राक आयल, कोल आयल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विशोधित तेलका विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—डा० एलेन कहते हैं—जिनके केश और त्वचा पतली होती है; जो उत्तेजना-शील या विवाद-प्रिय हैं, जो सहजमें ही चिढ़ उठते हैं—उनकी बीमारीमें यह उपयोगी है। सवारीपर घूमने और

रेलसे यात्रा करने अथवा जहाजमें भ्रमण करनेके कारण जो बीमारियाँ पैदा होती हैं, उनमें इसका प्रयोग होता है। नाना प्रकारके चर्मरोग, सामुद्रिक मिचली, मिचली और सरमें चक्कर आना इसके साथ ही माथेके पिछले भागके सर-दर्दमें यह बहुत उपयोगी है। बहुत दिनोंकी क्षय करनेवाली बीमारियाँ, जखमके साथ या बिना जखमका दुरारोग्य पाकाशयिक और आन्त्रिक रोगमें और शरीरकी जिस अवस्थामें त्वचाके ऊपर जानेवाले उद्भेदको बाहर निकाल देनेकी शक्ति नहीं रहती या जिस अवस्थामें शरीरका कोई उद्भेद आराम हो जानेपर स्वास्थ्यकी उन्नति नहीं होती या कोई रोग, अपने उत्पत्ति स्थानसे प्रतिक्षेपकी वजहसे श्लैष्मिक झिल्लीपर आक्रमण कर उसमें स्राव उत्पन्न करता हो, उन सब रोगोंमें और उन सभी अवस्थाओंपर इसका फायदा अतुलनीय है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं :—(१) रोगी समझता है, कि उसके पास या शय्यापर कोई दूसरा मनुष्य सोया हुआ है। (२) माथेके पिछले भागका सर-दर्द, दर्द मूर्द्धा-देशतक फैल जाता है और गर्दन अकड़ी मालूम होती है,—इसके साथ ही मिचली और सरमें चक्कर आना मौजूद रहता है। तेजीसे माथा हिलानेपर घटना। (३) हाथकी अंगुलियाँ सबमें स्पर्श सहन नहीं होता और वे फट जाती हैं, जाड़ेके दिनोंमें और ठण्डा पानी या हवामें बढ़ना। (४) अकौता—चटकीला, उत्तेजना-जनक, वृद्धि—जाड़ेके दिनोंमें। हाथ या अन्य अंगमें उद्भेद निकलना, मोटी चिपिटिका या पपड़ीसे ढँकी और गहरा फटा हुआ घाव। (५) मुष्कके ऊपर विचर्चिका—उद्भेद लाल चमकीले, जलन होती है और उससे लसदार रस निकला करता है। इसके रोगीके मनमें नाना प्रकारकी अलीक कल्पनाएँ पैदा होती हैं। जिनमें आगे कई प्रधान-प्रधान लिखी जाती हैं—"माथा मानो अंधेरेमें ढँका है; माथेके भीतरके सभी पदार्थ मानो सजीव हैं। माथा मानो काठका बना है या दर्द भरा है; मानो माथेपर ठण्डी हवा बह रही है; मानो माथा फट जायगा; पर्देमें ढँकी जैसी दृष्टि; मानो आँखमें धूलके कण गिर गये हैं; नाककी ऊपरकी त्वचामें बहुत खींचन मालूम होती है; उदरके ऊपरी प्रदेशके भीतर मानो कुछ उखाड़ा जा रहा है; हृत्प्रदेशमें मानो एक टुकड़ा ठण्डा पत्थर रखा है; एँड़ीके नीचे मानो एक काठकी सलाई गड़ रही है; हाथ-पैर आदि सन्धि-हीन और अकड़े मालूम होते हैं; मानो जबड़े फैल गये हैं। इसके अलावा—राक्षसी भूख—पाखाना होकर आते ही रातमें फिर पाखाना लग आता है और नींद

खुल जाती है। थोड़ा भी खा लेनेपर भूख बन्द हो जाती है; पाकाशय शून्य रहते ही शूलका दर्द पैदा हो जाता है; मिठाई खानेका बहुत आग्रह; पाकाशय खाली मालूम होना प्रभृति कई इसके प्रकृतिगत लक्षण माने जाते हैं।

लक्षणावली

मन।—राह चलता-चलता यह स्थिर नहीं कर पाता कि कहाँ आ पहुँचा है (जानी-बूझी राह अजानी मालूम हो—कैनाब-इन, ग्लोन, लैके, नक्स-मस)। प्रलाप—रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसके पास एक आदमी और भी सोया हुआ है (स्ट्रैमोन, थूजा; रोगी समझता है, कि वह तीन आदमी है, जो एक ओढ़नेमें नहीं अँटते—बैप्टी) या उसका एक प्रत्यङ्ग दो हो गया है या दो बच्चे उसके पास सोये हुए हैं (वैलि)। विमर्ष और रोदनपरायण। उत्तेजित और क्रोधी स्वभाव; सामान्य विषयमें भी क्रोध प्रकट करता है और दुर्वचन बोलता है; उद्वेगपूर्ण चित्त और अस्थिर मति। चिन्ता-शक्तिका न रहना। बोध-शक्ति बहुत कमजोर; हत्या करनेकी प्रवृत्ति; भ्रम देखना।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना; माथा नीचाकर सोनेपर (आर्स, पल्स); झुकनेपर (पल्स, ग्लोन, नक्स-वोम, कैलि-कार्ब, लैके); शय्या या आसनसे उठनेपर (ब्राई, नेट्र-म्यूर; आसनसे उठनेपर—नक्स, फास, पल्स); माथेके पिछले भागमें सरका चक्कर अनुभव होना; सामुद्रिक मिचलीकी बीमारीकी तरह (काक्यु)। सर-दर्द—माथेके पिछले भागमें दर्द; माथेके पिछले भागमें ऐसा भार मालूम होना, मानो सीसा भर दिया गया है (ओपि, लैके); दबाव और टपककी तरह दर्द, मानो सरके भीतरके सभी पदार्थ सजीव हो रहे हैं (सिलिका); सुन्नकी तरह दर्द; माथा ऐसा मालूम होता है, मानो काठका बना हुआ है (ग्रैफ)। ऐसा अनुभव होना, मानो माथा अन्धेरेमें ढँका है। बार-बार सरमें चक्कर आना, विशेषकर ऊपरकी ओर देखनेपर (पल्स, ग्रैफ, टैबाक)। सरमें चक्कर—मिचली और पित्तमय वमनके साथ (चिनिन-सल्फ, फेरम, नक्स-वोम, साइलि, स्पाइजि); सर-दर्द—क्रोध आ जानेके बाद (फास; असन्तोषके बाद—प्लैट; विरक्तिके बाद—कैमो, काफि) या सवेरे उपवासके समय और सन्ध्याके बाद टहलनेपर। एक पार्श्वके सर-

दर्दकी वजहसे रोगीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है। मानसिक परिश्रमसे ही सर-दर्द बढ़ जाता है, यहाँतक कि बेहोशी भी हो जाया करता है। सरके पिछले भागमें स्पर्शका सहन न होना, मानो जखम और दर्दसे भरा है, इसके बाद ही माथा सुन्न हो जाता है और खुजलानेपर बहुत दर्द मालूम होता है; सवेरे और माथा गर्म होनेपर बढ़ना। माथेके पिछले भागमें दर्द; सारे शरीरमें अकड़न हो जाती है और रोगी चिल्लाया करता है, भूख नहीं रहती और कब्जियत हो जाती है। सरके पिछले भागसे दर्द आरम्भ होकर मूर्द्धादेशमें चला जाता है और वहाँसे ललाट और दोनों आँखोंपर आक्रमण करता है, इसके बाद क्षणिक दृष्टि-हीनता पैदा हो जाती है; रोगी अकड़ जाता है और कभी-कभी वह बेहोश-सा हो जाता है। माथेपर मानो ठण्डी हवा प्रवाहित हो रही है, ऐसा अनुभव होना। माथेकी त्वचासे तैलाक्त पदार्थ उत्पन्न होकर रूसी पैदा हो जाती है। सरमें रसदार अकौता (नया या पुराना); माथेके पिछले भागमें अधिक। इन्द्रलुप्त या खल्वाट हो जाना।

आँख।—सवेरे आँख खोल नहीं सकता; दृष्टि अन्धेरेसे ढँकी। आँखमें लगातार दर्द मालूम होना; सन्ध्याके समय और रोशनी लगनेपर बढ़ना। मांसांकुरमय चक्षु-प्रदाहके बाद या चेचककी बीमारीके बाद पलकोंका प्रदाह, इसके साथ ही भीतरी या नासामूलसे लगे हुए निचले भागमें सुई गड़नेकी तरह दर्द और उत्तेजना; श्लेष्मा-प्रधान धातुवाले मनुष्योंकी लाल शिरामय आँख; आँखसे सफेद रङ्गका श्लेष्मा निकलता है और दोनों गाल रुखड़े मालूम होते हैं। नासामूलमें दर्द मालूम होनेके साथ-ही-साथ पलकें फूल उठती हैं (आर्जेण्ट-नाई, मर्क, नेट्र-कार्ब) और नाक तथा आँखसे सफेद रङ्गका श्लेष्मा निकला करता है (मिडोरिन, स्कियुला, सिफिलिन, आर्जेण्ट-नाई)। उपदंश रोगमें चक्षुतारकाका प्रदाह; सरके पिछले भागमें धीमा टपकका दर्द। चक्षुनाली (कैल्के, ऐ-फ्लू, लिलि), इसके साथ ही दाहिने नासारंध्रका सूखापन; पलकोंमें खुजलीकी वजहसे रोगीको बाध्य होकर उसे रगड़ना पड़ता है (पैलेडियम, पल्स)। दृष्टिके सामने आगकी चिनगारियाँ उड़ा करती हैं (सिङ्को, ओपि—सर-दर्द) या मानो घूंघटके भीतरसे देख रहा है, ऐसा मालूम होना (कास्टि, हायो, लिथि-कार्ब, नेट्र-म्यूर, फास, रस, सलफर)। ऐसा दिखाई देता है, कि दृष्टिके सामने काले बिन्दु सब उड़ रहे हैं (ग्लोन, नेट्र-म्यूर, सिपि)।

कान ।—कानमें ढं-ढं आवाज़। वृद्धोंकी श्रवण-शक्तिका घट जाना। कानमें बेचैन कर देनेवाला सूखापन मालूम होना। कर्ण-पश्चान्नाली विकारकी वजहसे बहरापनके साथ कानमें सों-सों भों-भों इत्यादि नाना प्रकारकी आवाजें आती रहती हैं और कभी-कभी कड़ाकसे आवाज़ हो उठती है। कानमें बहुपाद अर्बुद; इसके साथ ही बहुत मैल पैदा हो जाना। कानके भीतरसे खून और पीवका स्राव। कानके पिछले भागमें जखम पैदा होकर उससे रस निकला करता है (ग्रैफ, सोराइन)। कर्ण-रंध्रका प्रदाह और दर्द भरी सूजन। कानमें दर्द, खींचन और चिलक मारनेकी तरह दर्द।

नाक ।—नाकसे थोड़ा-सा खून निकल जानेपर सर-दर्द घट जाता है (ब्यूफो, फेरम, फास, मैंग-सल्फ, मिलिलोट)। नाकमें सूखापन अनुभव होना और बार-बार छींक आना; छींक आनेपर रंध्रके पास लगी हुई पपड़ी सब छोटे-छोटे टुकड़ेके रूपमें निकलती है। नाकके पिछले छेदमें गाढ़ा बलगम लगा रहता है,—विशेषकर सवेरे। नाक फूल उठती है और नाककी जड़में दर्द मालूम होता है; रंध्रके भीतरसे पीवकी तरह श्लेष्माका स्राव (हिप, मर्क, हिपोजिनिन, ग्रैफ, युपियोन, कैलि-बाई, कैलि-आयोड)। स्वरभंगके साथ पानीकी तरह सर्दीका स्राव। नाक खुजलाना (कास्टि, चेलिडो, सिपि)।

मुखमण्डल ।—चेहरा पीला। मुखमण्डलकी त्वचामें थोड़ी खींचन मालूम होती है, मानों उसपर अण्डलाल सूख गया है (ऐ-सल्फ, मानो मकड़ेका जाल लगा हुआ है—बोर, ब्रोम, ग्रैफ, रैनान-स्क्लिरेट), मुख-दृष्टिका; मुखमण्डलमें व्रण। ओंठके ऊपर, ओंठकी दरारोंमें दाने और उनमें बेधनेकी तरह दर्द होता है। निचले हनुके बाएँ पार्श्वका बाहरी भाग फूल जाता है और उसे छूनेपर या माथा झुकानेपर तेज़ दर्द अनुभव होता है। निम्न-हनुके नीचेवाली ग्रन्थियाँ सब फूल जाती हैं (सिङ्को, लाई, साइलि, इनैन्थि, आर्जेण्ट, बैराई-म्यूर, कोना, आयोड, कैलि-आयोड, फाइटो)। मुँहके चारों ओर पपड़ी जमना।

मुख-विवर ।—दाँतका दर्द—निर्मल वायु लगनेपर और रातमें इसके साथ ही गाल फूलना। दाँत सब सुन्न हो जाते हैं और छूनेपर उनमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है। दन्तनाली (ऐसिड-फ्लू, सिलि, अरम-म्यू, बैराई-कार्ब, कैल्के, कास्टि, स्टैफ)। जीभ—बीचके अंशमें सफेद लेप चढ़ा रहता है और किनारोंपर लाल रेखा रहती है (दोनों किनारे लाल

या सफेद रेखासे भरे (वेल, जेल्स) मुखमें बहुत बदबू—कभी-कभी लहसुन जैसी गन्ध निकलती है। मुंह और कण्ठ बहुत सूखे मालूम होते हैं और रोगीको बहुत प्यास लगा करती है। गालके भीतर जखम पैदा हो जाता है (गैम्बोज) ; दाँतपर दाँत लगनेसे दर्द मालूम होता है। मुंह और कण्ठमें अधिक श्लेष्मा इकट्ठा होता है। कीड़ा लगे दाँतके ऊपरी अंशमें पीव भरे दाने या पीव भरे छोटे छाले पैदा हो जाते हैं (कार्बो-एन, ऐलो)।

गलेके भीतर।—भोजनकी सामग्री निगलनेके समय नाकके पिछले रंध्रमें प्रवेश कर जाती है (साइलि ; जलीय पदार्थ निगलनेके समय नाककी राहसे बाहर निकल पड़ता है—एरम, लैके, इग्नेन्थि, फाइटो,—उपजिह्वा प्रदाह रोगमें ऐसा होनेपर—कैलि-पर्मङ्ग, लैक-कैन, ए-सल्फ,—खानेके पदार्थ नाकके भीतरसे बाहर निकल आते हैं—लाई, फास—भोज्य पदार्थ निगलनेके समय दूसरी राहसे चले जाते हैं—नेट्र-म्यूर)। कण्ठका भीतरी भाग फूला (हिप, सोराइन, पलस) और क्षय हुई त्वचाकी तरह अनुभव होना (इस्क्यु, कार्बो-वे, लैक-कैन, फाइटो, स्टिक्टा, एपिस, सेनेगा)। निगलनेके समय कण्ठके भीतरसे कानतक डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है (कैलि-आयोड, एपिस, ऐल्यू, अरम, बैराई)। कण्ठ सूखा, नीरस और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता और निगलनेके समय गलेके पिछले भागमें दर्द मालूम होता है। सवेरे खाँसनेपर गलेके भीतरसे गाढ़ा गोंदकी तरह और स्वादवाला बलगम चढ़ता और निकलता है।

पाकस्थली।—पाखाना होनेके बाद ही भूख लग आती है ; सर्व-ग्रासी भूख ; पर थोड़ा-सा भी खा लेनेपर तृप्ति हो जाती है। रातमें भूखकी वजहसे बहुत बेचैनी मालूम होती है और नींद खुल जाती है (लाई, सेरम-वे, फास, राक्षसी भूख—ऐब्रोट, आयोड, सिना, नेट्र-म्यूर) ; जभीतभी थोड़ी सी अच्छी चीज़ खाना चाहता है (इपिक, रस—बच्चोंको—सिंको),—मध्यान्हके क्षय रोगमें माँस, मेद-मय पदार्थ और गर्म तथा रांधी हुई चीजोंसे अरुचि (गर्म चीजोंसे अरुचि—सिंको, फेरम, लाई, मैग-कार्ब, मर्क, मर्क-कोर, वेरेट: रांधी हुई चीजसे—क्रियो, ग्रैफ, साइलि)। लगातार पानी पीता है और बार-बार पेशाब करता है (कैलि-ब्रोम)। भोजनके बाद दृष्टि धुंधली हो जाती है और सरमें चक्कर आता है ; मिचली, पाकाशयमें भार और दबाव मालूम होना ; औंघाई ; या बार-बार डकार और शूलका दर्द और चेहरेमें उत्ताप मालूम

होना ; खट्टी या तीती डकार, मिचली और तीते हरे रंगके पदार्थका वमन। वृद्धि—सवारीपर चढ़कर भ्रमण करनेपर, गर्भावस्थामें और सवेरे नींद खुलनेपर (गाड़ीमें चढ़नेपर—आइरिस, कक्यु, सिपिया, लाई, मैग-कार्ब, नक्स-मस, थिरिड—गर्भावस्थामें—ऐसेरम, क्रियो, ऐ-लैक्ट, नक्स-वोम, सिपि, सिम्फोरि, कार्पस, ऐ-कार्बोल, टैबाक—सवेरे नींद खुलनेपर—कोना ; नींद खुलनेके एक घण्टा बाद—कार्बो-वेज)। उदरके ऊपरी भागमें दर्द, मानो कुछ उखाड़ा जा रहा है (ऐक्टो, स्याई, डेफनी, प्लम्ब)। उदरका ऊपरी भाग भरा या फूला और छूनेपर उसमें तेज़ दर्द अनुभव होता है और यह दर्द वक्षके भीतर तक चला जाता है। पाकाशयका शूल दबाने या खींचनेकी तरह दर्द—घटना ; भोजनके बाद (ऐनाका, चेलिडो, ग्रैफ, लैके)। पाकस्थली शून्य और उसमें सुस्ती अनुभव होती है (भोजनके बाद ही—आर्स, कैल्के, सिना, आयोड लाई, साइलि, स्टैफ, आर्टिका-ड्यु)। प्राय: हमेशा विशेषकर सवेरे, मिचली पैदा हो जाती है, मुँहमें पानी भर आया करता है ; श्वास-प्रश्वासमें गड़बड़ी पैदा हो जाती है, खट्टी डकार आती है ; जीभ सूखी, और सफेद रंगकी एवं यकृत प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, चेहरेमें उत्ताप, सरमें चक्कर आना इत्यादि लक्षण पैदा हो जाति हैं। संध्याके पहले छातीमें जलन। पाचन-शक्ति घट जाती है (ओलियन, ऐ-वेन, ऐनाका, हाइड्रैस्ट, ओपि, जिञ्जिबार)। उद्भेद आदिकी बिना पकी अवस्थामें विलोप हो जानेकी वजहसे उदरामय (सल्फ, ऐण्टि-टार्ट, ब्राई, हायो, आर्टिका-ड्यु, सोराइन)।

अन्त्राशय।—नख गड़नेकी तरह आँतोंके शूलकी वजहसे रातके अन्तिम भागमें नींद न आना—सामनेकी ओर झुकनेपर आराम मालूम होना। उदरमें शीत अनुभव होना (सीड्रन, ग्रैटी, कैलि-ब्रोम)। रातमें और रातके अन्तिम भागमें शूलके साथ दस्त। पेटमें आँतोंकी गड़गड़ाहटकी आवाज़।

मलान्त्र और मल।—उदरामय—प्रबल मलवेगकी वजहसे सवेरे नींद खुल जाती है (सल्फ)—जोरसे पानीकी तरह पाखाना होना। नाभिके कुछ नीचे तेज़ काटनेकी तरह शूलका दर्द मालूम होना और पेटमें गड़गड़ाहट सुन पड़ा करती है। मल, लसदार और पेटमें दर्दके बाद निकलता है। कभी-कभी पैदा होनेवाला उदरामय—बढ़ना—दिनमें ; रक्त-मिला आमाशय, अधिकांश स्थानोंमें परिमाणमें बहुत अधिक ; कभी-कभी पीले रंगका और पानीकी तरह ; तलपेट और मलांतमें कमजोरी मालूम होती है। दिनके

समय पतले दस्त आना (नेट्र-मूर) ; कोबी या सूखी कोबी खानेकी वजहसे या सवारीपर घूमनेकी वजहसे उदरामय (काक्यु, नक्स-मस)। कब्जियत ; मल तक़लीफ़से निकलता है, बहुत कड़ा गाँठ-गाँठ। अर्श और मलद्वार फटा-फटा और उसमें बहुत खुजली ; मलद्वारके चारों ओर रूसीकी तरह खाल निकलना। मलद्वारके ऊपर और मध्यमें मसे निकलते हैं और उनसे रस गिरता है। अर्श—उसमें बहुत खुजली पैदा हो जाती है : रातमें शय्याका उत्ताप लगने और रगड़नेपर या खुजलानेपर बढ़ना।

पेशाब।—पेशाब हो जाने बाद बूंद-बूंद पेशाब टपका करता है (कैनाब-इन, कोना, सेलिन, स्टैफ)। पेशाबके साथ श्लेष्माका स्राव (नेट्र-मूर, पल्स, सार्सा, सिपि, चिमाफिला-अम्ब, कैन्थ, मर्क, पैरीरा, नेट्र-सल्फ़)। बार-बार धीमे स्रोतमें पेशाब होना—पेशाब लाल या भूरा और बदबूदार, पेशाब खून मिला गदला—तली—लाल लसदार बालूकी—पेशाबके बरतनमें चिपक जाती है ; पेशाबके ऊपर एक चमकीली मलाईकी तरह तैरती है (कैल्के, पैरिस, फास, सोराइन—तेलकी तरह मलाई—हिप, लाई, मिडोराइन, पैरिन, सल्फ़)। अनजानमें पेशाब हो जाता है ; शय्यामें पेशाब। मूत्रनालीका सङ्कोचन (पल्स नेट्र-मूर, बार्बा, चिमाफिला, क्लिमे, इग्निग्गो, मर्क, कैलि-आयोड,) ; पेशाबके प्रबल वेगके बाद पेशाब करनेके समय स्त्रियोंकी मूत्रनालीके द्वारपर अत्यन्त खुजली होती है।

पुं०-जननेन्द्रिय।—कभी-कभी पुराने प्रमेहका प्रकोप हो जाता है, मूत्रनालीमें असह्य खुजली पैदा हो जाती है। मुष्कके ऊपर, मुष्क और उरुके बीचके स्थानमें और विटपदेशमें रससे तर गीली खुजलीकी तरह दाद जैसे उद्भेद निकलते हैं। रमणकी आकांक्षा घट जाना ; प्रायः रातमें स्वप्नदोष हो जाता है। मूलाधार मुखशायिका ग्रन्थिसे रस-स्राव ; मुखशायिका ग्रन्थिसे रस-स्राव ; मुखशायिका ग्रन्थिका प्रदाह (पल्स, साइलि, हिप, कैलि-बाई, स्टैफ, ऐ-नाई, थूजा, चिमैफिल-अम्ब)। रमणके बाद सुस्ती और स्नायविक उत्तेजना ; लिङ्गमणिके ऊपर लाल, खुजलानेवाले दाने (ब्राई, सिनाबार)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रमण आलिंगनकी शक्ति न रहना। आर्त्तव, स्राव अत्यन्त विलम्बसे आरम्भ होता है और परिमाणमें बहुत ज्यादा। रजः लगनेपर खुजलाहट पैदा हो जाया करती है ; आर्त्तव-स्राव आरम्भ होनेके

पहले माथेमें टपक अनुभव होती है (बेल, बोर, लैके ; मानो खोपड़ी उड़ जायगी—जैल्यक्स) ; आर्त्तव-स्रावके समय कानमें भों-भों, सों-सों वगैरह नाना प्रकारकी आवाजें सुन पड़ती हैं (इग्ने, सिङ्को, वेरेट) और शरीरमें शिथिलता या आलस्य मालूम हुआ करता है (ग्रैफ, हेलोन, कैलि-कार्ब, नक्स-मस)। बहुत दिनोंतक उदरामय भोगनेकी वजहसे जीर्ण-शीर्ण रोगिनियोंका जरायु-भ्रंश। प्रदर-स्राव लारकी तरह और सफेद रङ्गका (ऐलूम, ऐमोन-म्यूर, बोवि, हाइड्रैस्ट, प्लैट) या प्रत्येक रातमें कामोद्दीपक सपने ; जननेन्द्रिय-प्रदेश या क्षय हुई त्वचाकी तरह, हमेशा रससे तर और असह्य खुजली। योनिद्वार और दोनों उरुके बीचमें हमेशा रससे तर (कैल्के ; ऐसा भ्रम होता है, कि योनि-प्रदेश हमेशा रससे तर रहता है—इयुपेट-पर्पु)। गर्भावस्थामें दस्त और कै (फास, पल्स, सिपि, एपिस, चेलिडो, आर्स, आइरिस, लाई ; आर्त्तव-स्रावके समय विसूचिकाकी तरह दस्त-कैका आरम्भ होना—ऐमोन-कार्ब, बोवि, ऐमोन-म्यूर, सिनेबार)। दोनों स्तन खुजलानेवाले और उसमें रूसी-सी जम जाती है। स्तन-वृन्तके ऊपर चावलके चूरकी तरह लेप दिखाई देता है।

श्वासयन्त्र।—स्वरभङ्ग ; कण्ठ सूखा मालूम होनेके साथ तङ्ग करनेवाली खाँसी—खाँसते-खाँसते साँस रुक जाती है, एक साँसमें खाँसी समाप्त नहीं होती। रातमें श्वास रोध करनेवाली खाँसी। रातमें या सन्ध्याके बाद सोनेपर सूखी खाँसी पैदा हो जाती है। वक्षगह्वरके गभीरतम प्रदेशमेंसे खाँसी उठती है ; हँसनेपर कलेजा फाड़ डालनेवाली खोखली खाँसी आने लगती है ; नींदकी अवस्थामें खाँसी पैदा हो जाती है और आधी रातके समय नींद खुल जाती है। सूखी खाँसीकी वजहसे वक्ष-मध्योस्थिके नीचे बेधनेकी तरह दर्द अनुभव होता है ; शीतल वायु लगनेपर वक्षमें दबाव मालूम होता है ; रातमें छातीमें दबाव मालूम होता है ; हृत्पिण्ड-प्रदेशमें ठण्डक मालूम होती है, मानो उसपर एक टुकड़ा ठण्डा पत्थर लगा हुआ है (कार्बो-ऐन, कैलि बाई, ग्रैफ, नैट्रम-म्यूर) ; हृत्पिण्ड-प्रदेशमें उत्ताप और दबाव मालूम होना और हृद्स्पन्दनके साथ बेहोश हो जानेका उपक्रम।

गर्दन और पीठ।—गर्दन अकड़ी मालूम होती है और माथा घुमानेपर हड्डियोंमें भट-भट आवाज़ होती है। गर्दनके पिछले भागसे माथेके पिछले भागतक खींचनकी तरह दर्द। ग्रन्थिका बढ़ना और नाना प्रकारके

उद्भेद। त्रिकास्थि-प्रदेशमें दर्दकी वजहसे रोगी खड़ा नहीं हो सकता ; कमरमें दर्दकी वजहसे खड़ा नहीं हो सकता (ब्राई)। कमरमें दर्दकी वजहसे रोगिनी हिल नहीं सकती। बैठनेके समय मेरुपुच्छमें दर्द मालूम होता है (कैलि-बाई, लैके)। सन्ध्याके समय कमर और मेरुपुच्छमें अकड़न तथा गड़बड़ी मालूम होना ; बगलकी गांठमें पीब पैदा होना।

प्रत्यङ्ग आदि।—बगलमें बदबूदार पसीना (साइलि, ऐ-नाई, हिप, लाई)। बाँह और हाथके ऊपरका पुराना अकौता। रोगवाली जगह क्षय हुई त्वचाकी तरह लाल, जलन-भरी, रससे गीली या मोटी पपड़ीसे ढँकी रहती है। हाथपर लाल रङ्गकी गहरी फटी हुई रेखाएँ सब दिखाई देती हैं ; मोटी पपड़ीसे ढँकी ; बढ़ना--जाड़ेके दिनोंमें (ऐलूम)। बाँहके ऊपर भूरे या पीले रङ्गके दाग सब दिखाई देते हैं। कलाईमें ऐसा दर्द, मानो मोच आ गयी है (आर्नि, कार्बो-ऐन, साइलि, लैके, रोडो)। तलहत्थीमें जलन, हाथके नख सब छूनेपर दर्द करते हैं। अंगुलीका अगला भाग रुखड़ा, फटा और उसमें सुई गड़नेकी तरह दर्द या काटनेकी तरह दर्द। जानुसे गुल्फतक सूजन, नीले रङ्गका रस बहानेवाले या सहजमें खुजलानेवाले दाने रहते हैं और आगकी तरह जला करते हैं। पैरका फैलानेवाला और रस-भरा सूत्रमय सफेद पर्दा मिला जखम। जानु और गुल्फ-प्रदेशमें दादकी तरह उद्भेद। पैरकी अंगुलीमें छाला होकर जखममें परिणत हो जाता है। पैरका तलवा गर्म और फूला हुआ, उसमें बहुत जलन होती है। एँड़ीके नीचे बहुत दर्द होता है ; वह लाल और फूल जाती है ; बिवाई फटना या जाड़ेके दिनोंके फोड़े। चरण फूला और ठण्डा। तलवेमें स्पर्श सहन नहीं होता और बदबूदार पसीनेसे तर रहता है (ग्रैफ, सैनिक, साइलि)। दोनों पैरोंकी सन्धियोंमें कट-कट आवाज़ होती है और दिनमें उरु, पैरकी पोटली और चरणमें तथा रातमें तलवेमें ऐंठन होती है ; उरु और पैरकी पोटलीमें फोड़े पैदा होते हैं, तलहत्थी और तलवा बहुत गर्म और जलन-भरा रहता है (सैङ्गिविन, सल्फ)। जानुमें अस्त्र बेधनेकी तरह यन्त्रणा। एँड़ीके नीचे ऐसा अनुभव होना मानो कांटा या लकड़ीकी सींक गड़ गयी है और वे अकड़ जाते हैं। वातकी वजहसे सन्धियाँ अकड़ जाती हैं और रोगवाला अङ्ग हिलानेपर आवाज़ होती है ; उपदंश विषसे पैदा हुए वातकी वजहसे कन्धे और गुल्फ अकड़ जाया करते हैं।

त्वचा ।—सारे शरीरकी त्वचामें स्पर्श सहन नहीं होता ; कपड़े पहननेसे भी तकलीफ़ होती है ; मामूली नखकी खरोंच भी जखममें परिणत हो जाया करती हैं (हिप, ग्रैफ)। खुजलानेवाले दादकी तरह उद्भेद और जखम, पुराना अकौता—रोगवाली जगह क्षय हुई त्वचाकी तरह मालूम होती है। शरीरमें जगह-जगह खुजलाहट पैदा करनेवाला रससे तर जखम या फटी त्वचामें जगह-जगह भूरे या पीले दाग दिखाई देते हैं। जखममें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और चारों ओर बढ़े हुए मांससे घिरा रहता है। अधिकांश स्थानमें उठे हुए किनारेवाले जखम सब पैदा हो जाया करते हैं। ग्रन्थियाँ सब फूली और कड़ी हो जाती हैं। आमवात ; वृद्धोंके सारे शरीरमें खुजली, विशेषकर योनि-विटप और मलद्वारके स्थानपर असह्य खुजली पैदा हो जाया करती है, इसी वजहसे रोगी बेचैन हो जाता है और उसे नींद नहीं आने पाती। शरीरका कोई भी अंश छिन्न हो जानेपर फिर आरोग्य नहीं होता। सूखे और रस-स्रावी उद्भेदकी वजहसे रातमें खुजली पैदा हो जाती है। मसे।

निद्रा ।—निद्रित (या प्रलापयुक्त) अवस्थामें रोगिनी समझती है कि उसे तीन पैर हैं और तीसरा पैर रोगिनी किसी तरह भी स्थिर नहीं रख सकती, मानो उसके पार्श्वमें एक और भी मनुष्य सोया हुआ है (प्रसवान्तिक विकारमें) मानो उसकी शय्यापर दो शिशु सोये हुए हैं (वैलि)। दिन या सन्ध्याके समय स्थिर होकर बैठनेके समय, औंघाई और बार-बार जम्हाई आने लगती हैं। सवेरे नींद खुलनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो बहुत थोड़ी देरतक सोया है।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—सवेरे दस बजनेके समय ज्वरका आक्रमण होता है, परन्तु संध्याके समय प्रकोप ही इसका प्रधान लक्षण है। शीतावस्था—सवेरे दस बजनेके समय शीत आरम्भ होकर आध घण्टेतक रहता है ; हाथ और मुखमण्डल बरफकी तरह ठण्डा हो जाया करता है। रोज़ तीसरे पहर ३ से ४ बजनेके समय दो घण्टेतक जाड़ा मालूम होना ; दोनों हाथ बहुत ठण्डे और मुख-विवर बहुत सूखा मालूम होता है। संध्या सात बजनेके समय कम्पके साथ शीत पैदा हो जाता है और निम्नाङ्गके अलावा समूची देह पसीनेसे तर हो जाया करती हैं और शरीरके इस बिना पसीनेवाले निम्नांशमें बरफकी तरह ठण्डक मालूम होती है। रोज़ संध्याके समय कम्पके साथ वात पैदा हो जाता है। शीतार्त्तताके साथ कम्पन, चेहरा बरफकी तरह, दोनों

गाल और हाथकी अंगुलियाँ और नख सब नीले हो जाते हैं। घरके बाहरकी निर्मल हवा लगनेपर जाड़ा मालूम होने बाद सारे शरीरमें खुजली पैदा हो जाती है (सारे शरीरमें बहुत कुटकुटी पैदा होती है—ऐं-नाइ), उत्तापावस्थामें, रातके दस बजनेके समय शीत और उत्ताप दोनों ही एक साथ पैदा हो जाते हैं। रातमें उत्तापावस्थामें ओढ़ना असह्य मालूम होता है और रोगीको बाध्य होकर ओढ़ना उतार देना पड़ता है (बाहरी उत्ताप असह्य—पल्स)। रह-रहकर समूचे शरीरमें उत्ताप पैदा हो जाता है; माथा गर्म, चेहरा लाल, मुख-विवरमें जलन और समूची स्वरनली सूखी मालूम होती है। पसीनेवाली अवस्था,—भिन्न-भिन्न समय हाथ, तलहत्थी, माथा, पीठ, वक्ष, बगल, बाँह, पैर, चरण प्रभृति एक-एक अंशमें पसीना हो जाया करता है अर्थात् कभी-कभी तलहत्थी इत्यादि (थूजा) बाँह, अगला आधा भाग, निचला पैर और चरणोंमें, कभी-कभी तलवेमें भी बहुत पसीना हुआ करता है। बगल और पैरके तलवेमें बदबूदार पसीना।

सार्वाङ्गिक।—हाथ-पैरका फड़कना या रह-रहकर उछलना, दिनमें और निद्रित अवस्थामें; वात या रगड़नेके कारण ग्रन्थियोंका बढ़ना; मृगीकी तरह आक्षेप। मूर्च्छा-प्रकोप—धमनी आदिमें गर्म खूनका प्रवाह, उत्ताप पैदा हो जाना, कलेजा धड़कना और हृत्पिण्ड-प्रदेशमें दबाव मालूम होना (कभी-कभी) दृष्टिकी अस्पष्टता, शरीरका काँपना, कानमें भिन-भिन आवाज़ और मिचली पैदा हो जाती है। सवारीपर चढ़कर घूमने बाद सुस्ती, मिचली वगैरह नाना प्रकारकी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं। सवेरे शय्यापर सोनेकी अवस्थामें गड़बड़ी मालूम होना; बहुतसे लक्षण अन्धड़-पानीके दिनमें पैदा होते या बढ़ जाते हैं। खून चमकीला लाल; श्लैष्मिक-झिल्लीसे बहुत अधिक श्लेष्माका स्राव। उदरामयकी वजहसे बच्चा दिनोंदिन दुबला होता जाता है; रातमें पाखाना बिलकुल ही नहीं होता। अङ्ग-प्रत्यङ्गोंका प्रबल कम्पन; इतना कमजोर हो जाता है, कि बातकी-बातमें बेहोशी आ जाती है। कम्पन और विषन्नताके साथ सारे शरीरमें बेहद बेचैनी मालूम होना। शीतसे बहुत ही भय मालूम होना, जरा सी ठण्ड लग जानेपर भी सर्दी हो जाती है। कितने ही लक्षण सवेरेके वक्त पैदा होते हैं। लक्षण आदि तेजीसे पैदा होते और गायब होते हैं (बेल, सैंग-फास, लाइ)।

वृद्धि ।—छूनेपर, मानसिक या शारीरिक परिश्रम करनेपर, माथा हिलानेपर, आलोक या शब्दसे, पीने या खानेपर, शरीर हिलानेपर, सवारीमें चढ़नेपर और बैठनेकी अवस्थामें, सोनेपर (खाँसी), ठण्डी हवा लगनेपर, जाड़ेके दिनमें, आंधी-पानीके दिनोंमें, नहानेपर, शय्याकी गरमीसे, रातमें, दिनमें हँसनेपर और माथा नीचाकर सोनेपर ।

घटना ।—नाकसे खूनका स्राव होनेपर, सामनेकी ओर टेढ़े होकर दोहरा जानेपर और गर्मी या गर्म हवा लगनेपर ।

सम्बन्ध ।—**प्रतिविष या दोषघ्न** ।--काक्यु, नक्स-वोम, कैम्फोरा (क्लार्क); यह सीसेके विषका प्रतिविष है ।

अनुकूल सम्बन्ध ।—कैल्के, लाई, सिपि, सल्फ, वेल, ब्राई, नक्स-वोम, फास, पल्स, रस, साइलि ।

सदृश ।—ग्रैफ, पैराफिन, नैफथैलिन, क्रियो, इयुपियोन, सल्फ, कोलचि, टैबाक, ऐनाक, लैके, एपिस, आर्स, ग्लोन, बैलि, ऐ-नाइट्रिक, सैनिक, साइलि, ऐलूय, सैङ्गिविन, सल्फ, मैग-सल्फ, बूफो, मिलिलोट, आर्टिका, आयोड, कार्बो-ऐन, कैलि-म्यूर, नेट्र-म्यूर ।

तुलनीय ।—सामुद्रिक वमनमें—आर्नि, काक्यु, टैबैकम ; गर्भिणीकी वमनेच्छामें—काक्यु, सिपिया ; चित्त-विभ्रम—बैप्टी, स्ट्रैमो ; कानके पीछे खुजली—ग्रैफा ; हृत्पिण्डके पास ठण्डक मालूम होना—नेट्रम ; सवेरे अतिसार--सल्फर ; पथ-विभ्रम—ग्लोनोइन ; जननेन्द्रियमें तर दाने—थूजा ; भोजनके बाद कमजोरी—आर्स, लाइकोप इत्यादि । वाचालता—लैकेसिस । त्वचामें चैतन्याधिक्य—हिपर । पैरमें पसीना—साइलि ; पैरमें जलन—सल्फर इत्यादि ।

शक्ति ।—तृतीय दशमिकसे १००० शततमिक क्रम ।

क्रियाका स्थायित्व ।—४० से ४५ दिन ।

पेट्रोसेलिनम

(PETROSELINUM)

दूसरा नाम ।—ऐपियम पेट्रोसेलिनम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पेंड़के समूचे अंशसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मूत्रनलीमें सलाई या कैथिटर प्रवेश करानेकी वजहसे बोखार; मूत्राधार-प्रदाह; मूत्रकृच्छ्रता; नया प्रमेह; पुराना प्रमेह; मूत्र-पथरी; सविराम ज्वर; रतौंधी; लिङ्गोच्छ्रास।

उपयोगिता और आभास।—यह नये और पुराने प्रमेह रोगकी बहुत बढ़िया दवा है। आगे लिखे कई इसके निर्णायक लक्षण हैं:—एकाएक पेशाबका वेग बहुत प्रबल होना, लिङ्गमें खींचन, शरीरमें सिहरावन होना; सुरसुरी और खुजली अनुभव होना; बच्चोंको एकाएक पेशाबका वेग पैदा हो जाता है और यदि तुरन्त ही पेशाब नहीं कर सकता तो तकलीफ़से चिल्लाने लगता है और उछलने लगता है। प्राय: प्रति आधा घण्टाका अन्तर देकर बार-बार पेशाब होता है; लिङ्गमणिके भीतरवाले छेदमें खींचन, जलन और सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है। यह यन्त्रणा पेशाब करनेके बाद बदलकर काटने और दाँतसे काटनेकी तरह दर्दमें परिणत हो जाती है (कैन्थ, मिडोरिन, सार्सा)। स्राव पीले रङ्गका दूधकी तरह।

लक्षणावली

पाकाशय और अन्त्राशय आदि।—बहुत अधिक प्यास और भूख मालूम होनेपर खाना-पीना आरम्भ करते ही भूख-प्यास सब गायब हो जाती है। कीचड़की तरह और सफ़ेद रङ्गका मल (डिजिट); कभी-कभी पैदा होनेवाला पुराना उदरामय; मलद्वारमें जलन।

पेशाब।—एकाएक पेशाबका दुर्दमनीय वेग (कैनाब, कैन्थ, मर्क) पैदा हो जाया करता है; बच्चेको ऐसा होनेपर अर्थात् वेग आते ही पेशाब न कर सकनेपर, वह तकलीफ़से चिल्लाने और उछलने-कूदने लगता है (पेशाबके पहले चिल्लाता है—एकोन, बोरैक्स, कास्टिकम; मूत्र-पथरीके साथ होनेपर—ऐ-वैन, लाई, सार्सा)। पेशाबका वेग इतना प्रबल हो पड़ता है कि पेशाबकी जगहतक जानेका विलम्ब सहन नहीं होता (ऐ-फास)। प्रमेह रोगमें प्रदाह मूत्रनलीके मुँहसे पीछेकी ओर फैल जाता हैं। पेशाब करनेके समय इतनी तकलीफ़ होती हैं, कि रोगी काँपता हैं और घरभरमें दौड़ता-फिरता है। मूत्रनलीसे दूधकी तरह तरल पदार्थका स्राव होता है; प्रमेह रोगमें

रोगमें कभी-कभी पीले रङ्गका अण्डलालकी तरह पदार्थका स्राव होता है। मूत्रनली द्वारसे श्लेष्मा चिपका रहता है (कैनाब-सैट, थूजा, मेजिर, क्यूप्रम)। समूची मूत्रनलीमें एक तरहकी सुरसुरी और खुजलाहटकी वजहसे रोगीको ऐसी इच्छा होती है कि एक कर्कर गात्र-शलाका उसमें प्रवेशकर खुजलीको दूर करदे (चिमैफिला, कक्कस)। प्रत्येक आध घण्टे पर वृथा ही पेशाबका वेग। सवेरे शय्यामें सोनेके समय स्त्री-योनि पार्श्वस्थित दोनों ग्रन्थियोंमें सुरसुरी होती है और दबाव मालूम होता है ; खड़े होने या बैठनेकी अवस्थामें घटना। पेशाबके समय विटप देशसे समूची मूत्रनलीमें जलन अनुभव होती है ; लिङ्गमणिके भीतरवाले छेदमें पेशाब करनेके समय बहुत जलन मालूम हुआ करती हैं। छेदके पीछे सुड़सुड़ी होना और सुई गड़नेकी तरह अनुभव होनेकी वजहसे बार-बार पेशाबका वेग होता है। बार-बार लिङ्गोच्छ्रासपर लिङ्गमें टेढ़ापन नहीं आता। स्वप्नदोष, रातके अन्तिम भागमें बहुत वीर्य-स्खलन हुआ करता है।

ज्वर ।—प्रमेह या चोटकी वजहसे पुराना मूत्रनाली प्रदाह या सङ्कोचन मिला बोखार (क्लिमिट)। अधिकांश स्थानोंमें ऐसा बोखार नित्य या एक दिनका अन्तर देकर आया करता है ; बँधे समयपर आक्रमण इसका प्रधान लक्षण है और शीत, उत्ताप और पसीना नियमानुसार हुआ करता है। दूषित भापके सिवा किसी अन्य कारणसे पैदा हुआ और खायी हुई चीजोंको खून, मांस एवं मज्जामें परिणत करनेकी क्रियामें विकार और स्नायुमण्डलकी क्रियाके विकारकी वजहसे नये बोखारमें यह विशेष उपयोगी है। ज्वर छूटनेके समय उदरके ऊपरी प्रदेशकी पेशियोंका फड़कना और चिलक मारनेकी तरह दर्द, आध्मानकी वजहसे डकार आना, अम्ल-शूल, मिचली और वमन। मलका रङ्ग सफेद कीचड़की तरह (डिजि)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐकोन, बोरैक्स, कैनाब-सैट, कैन्थ, कास्टि, ऐसिड बेन, लाई, सार्सा, डिजिट, कोना, बार्बा, आर्टिका-यु, क्लिमिट, डोरि-फोरा, कैप्स, क्युबेक, कोपेवा, थूजा, पलस।

तुलनीय ।— प्रमेह रोगमें एकाएक पेशाबका वेग—कैन्थ, कैनाबिस, मर्क्। पेशाब होनेके पहले उत्तेजनाके कारण धनुष्टंकार—ऐकोन, कास्टि,

बोरैक्स, सादा पाखाना--डिजिट, मूत्राधार प्रदाह—कैन्थर, इयुरिक-एसिड, त्वचाका विकार—आर्टिका-युरेन्स।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठा दशमिक क्रम।

फेसियोलस नेनस

(PHASEOLUS NANUS)

दूसरा नाम।—मन्तव्य—फेसियोलस नेनस और फेसियोलस फानगारिन इन दोनोंकी परीक्षामें विशेष पार्थक्य नहीं दिखाई दिया है, इसीलिये इनकी लक्षणावली एक साथ लिखी गयी है।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—(मूंगका अरिष्ट या चूर्ण)।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है ;—अण्डनालीका पेशाब ; स्तनमें अर्बुद ; बहुमूत्र ; शोथ ; खूनमिला पेशाब ; सरदर्द ; हृत्पिण्डकी बहुतसी बीमारियाँ ; अन्त्र-वृद्धि ; वक्षमें जल-सञ्चय ; ध्वजभङ्ग ; हृद्वेष्ट और फेफड़ेका प्रदाह ; मूत्राधार-मुखशायिका-ग्रन्थिकी बीमारी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—हमारे देशके प्राचीन वैद्योंने इनका गुण इस तरह वर्णन किया है—मूँग, कषाय-मधुर रस, पाकमें कटु-शीतल, लघुपाक, रूखा, मलरोधक, रुचिकर, अल्प वायुकारक, कफ-पित्त नाशक और ज्वर तथा नेत्र-रोगमें फायदेमन्द है। शुक्रको बढ़ानेवाला, धातुओंकी वृद्धि करने वाला और रक्त-पित्त ज्वर, तापपित्त और मूत्रकृच्छ्रमें हितकर है। होमियोपैथीके मतसे नीचे लिखे कई इसके निर्णायक लक्षण हैं ;—आँखकी पुतली फैली और रोशनीमें चैतन्य-रहित रहती है ; दोनों आँखके गोलोंमें दर्द होता है और उनमें स्पर्श सहन नहीं होता ; श्वास-प्रश्वासकी गति धीर और दीर्घ ; नाड़ी तेज़ और उसको छूनेपर मालूम नहीं होती ; कलेजा धड़कना, रोगीमें मृत्यु-भय पैदा हो जाता है ; नाड़ी क्षीण रहनेके साथ ही हृत्पिण्ड प्रदेशमें गड़बड़ी मालूम होना ; हृत्पिण्डकी क्रिया अनियमित, क्षणभरमें लोप हो जानेवाली, क्षीण और उसमें एकाएक दर्द। इसके अलावा मूत्ररोग या हृद्रोगकी वजहसे शोथ या उदरी, हृत्पिण्डका वहिर्वेष्ट, फेफड़ेका वहिर्वेष्ट, या

अन्त्राशयकी आवरणीमें रस-क्षरणकी वजहसे शोथ रोग, मसानेसे लेकर मूत्रनलीतक मूत्रयन्त्रके किसी भी अंशमें रोग, जैसे—मसाना वस्तिका पीव-सञ्चय करनेवाला प्रदाह, मूत्राशयकी सर्दी, मूत्राश्मरी या पित्ताश्मरी ; पेशाबमें मूत्राम्ल (uric acid) अधिक रहना वगैरह इसकी आरोग्यदायिनी शक्तियाँ हैं। चक्षु-गोलक, दाहिना पंजरा, उदरीका ऊपरी प्रदेश और उर्द्ध-बाहुकी अस्थिमें स्पर्श सहन न होना---इसके अन्यतम क्रियाफल हैं। प्रचण्ड सर-दर्द, रोगी दोनों हाथोंसे कनपटी पकड़कर "सर गया, सर गया" कहकर चिल्लाया करता है। उसे ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों कनपटियोंको बड़े वेगसे दबा रहा है।

लक्षणावली

मन ।—हृद्स्पन्दन रोगमें रोगीको लगातार ऐसा मालूम होता है, मानो तुरन्त ही उसकी मृत्यु हो जायगी (ग्लोन, ऐकोन, प्लैट)। हृत्पिण्डमें अस्वाभाविक या विषम विकारकी वजहसे रोगी डर जाया करता है। खूब चिल्लाकर पुकारे बिना नींद नहीं खुलती (रोगीको हिलाये बिना उसकी नींद नहीं खुलती—एपिस)।

मस्तक ।—माथेमें भरापन मालूम होनेकी वजहसे सर-दर्द ; ललाट और चक्षुगोलकमें दर्द अधिक रहना ; वृद्धि—माथा हिलाते ही और दिनमें दोपहरमें सोनेके समय ; घटना—शय्यामें लेटे रहनेकी अवस्थामें ; दूसरे दिन दस बजनेके समय फिर बढ़ जाता है। लिखनेके समय ललाटके दाहिने पार्श्वमें दर्द मालूम होता है (लिखनेके समय सर-दर्दका बढ़ जाना—ऐक्टिया, बोरैक्स, कैल्के, ग्लोन, इग्ने, लिसिन, सिफाइटिस ; लिखना आरम्भ करते ही फिरसे सर-दर्द पैदा हो जाता है—फेरम)। दोनों कनपटियाँ हाथोंसे पकड़कर "सर गया, सर गया" कहता हुआ, रोगी चिल्ला उठता है ; रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो किसी चीज़से दोनों कनपटियाँ दबायी जा रही हैं।

आँख ।—दोनों चक्षु-गोलक, विशेषकर दाहिना चक्षु-गोलक छूनेपर दर्द मालूम होता है, मानो किसीने उसपर मुक्का मार दिया। ललाटका मांस सिकोड़नेपर दाहिने चक्षु-गह्वरमें दर्द मालूम होता है। कनीनिका बहुत फैली और आँखोंमें रोशनीका सहन न होना। मानसिक परिश्रम करनेपर दाहिनी भौंपर दर्द मालूम होता है।

पाक और अन्त्राशय ।—उदरोर्द्ध-प्रदेशमें, विशेषकर अन्त्रद्वारके ऊपर छूनेपर दर्द मालूम होता है (बेल, कैलि-कार्ब, लैके, लाई)। बच्चेका उदर दबानेपर वह पेटको पीछेकी ओर खींचता है और पैर सिकोड़ लेता है। रक्त-मिला पेशाब, मूत्राम्ल जमकर पथरी पैदा करता है।

श्वासयंत्र और हृत्पिण्ड ।—श्वास-प्रश्वास बहुत धीमा और दीर्घ श्वासकी तरह। कलाईकी नाड़ी बहुत तेज़ और छूनेपर मालूम नहीं होती। एकाएक हृत्पिण्डमें एक अव्यक्त भाव पैदा हो जाता है। रोगी अपनी नाड़ी अनुभवकर बहुत डर जाता है। क्षीण नाड़ीके साथ हृत्पिण्ड प्रदेशमें बेचैनी मालूम होना ; हृद्‌रोगकी अन्तिम अवस्था—नाड़ी नहीं मिलती। कभी-कभी लगातार ऊपर-के-ऊपर दो, तीन, चार प्रबल आघात मालूम होनेके बाद एक बार नाड़ीकी धमक गायब हो जाती है, विशेषकर रातमें। लाला-मूत्र रोगमें और प्रसवके बादके आक्षेप रोगमें हृत्पिण्डकी स्वाभाविक क्रिया फिर स्थापित हो जाती है। रोगी बेहोश रहता है और उसकी नाड़ी नहीं मिलती। हृद्-प्रदेशमें यन्त्रणा और नाड़ीकी गति अत्यन्त धीर। हृत्पिण्डके बाहरी आवरणमें जल-सञ्चय। बहुत जोरसे कलेजा धड़कनेकी वजहसे रोगी समझता है, कि उसकी मृत्यु बहुत पास है। सारे शरीरमें ठण्ढा पसीना।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—क्रैटिगस, डिजिट, लैके, नेट्रम-सल्फ, सिजिजियम, स्पाइजि, थाइरायडिन।

तुलनीय ।—हृत्पिण्डमें—डिजिटेलिस, क्रैटिगस, लैके ; अन्त्र-विधानमें—हाइप, लिडम ; बहुमूत्रमें—सिजि इत्यादि।

शक्ति ।— ३रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

फैलेण्ड्रियम

(PHELLANDRIUM AQUATICUM)

दूसरा नाम ।—फिलिक्युलस ऐक्वेटिकम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फलसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—
तलपेटमें शीत अनुभव होना ; दमा ; स्तनकी बीमारियाँ ; श्वासनलीका प्रदाह ;

सर्दी ; खाँसी ; बहुव्यापक सर्दीका बोखार ; सर-दर्द ; सविराम ज्वर ; यक्ष्मा ; अनिद्रा ; जीभका जखम ।

उपयोगिता और आभास ।—रमणियोंके स्तनके दर्दकी अवस्था-विशेषमें यह बहुत लाभदायक है। दोनों स्तनोंमें विशेषकर दाहिने स्तनमें तेज़ ऊपर चढ़नेवाला सुई गड़नेकी तरह दर्द ; बच्चेके स्तन पीनेके कुछ देर बाद स्तन पिलानेवाली धायकी दुग्धवाही शिरामें असह्य यन्त्रणा ; बच्चेके प्रत्येक बार स्तन पीनेके समय स्तनमें (विशेषकर दाहिने) दर्द इत्यादि कई स्तन-रोग इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। आगे लिखे कई लक्षण भी इसके प्रकृतिगत हैं:—सर-दर्द रोगमें यह दर्द आँखतक चला आता है ; आँखोंमें प्रदाह पैदा हो जाता है ; ऐसी अनुभूति पैदा करनेवाला सर-दर्द, मानो माथेपर एक भारी चीज़ रखी हुई हैं ; ऐसा मालूम होना मानो गर्दनके पीछे कोई भारी चीज़ लगी रहनेके कारण माथा पीछेकी ओर खिंच रहा है। पलकोंका स्नायु-शूल ; तिमिर दृष्टि ; माथा भरा और उसका आकार बड़ा मालूम होता है ; प्रसवके बाद अस्वाभाविक निद्रालुता ; बदबूदार डकार, उसमें खटमल-जैसी गन्ध आती है ; जीभके ऊपर, विशेषकर दाहिने पार्श्वमें ऐसी जलन हुआ करती है, मानो छाले उठ आये हैं ; मिचली और उदरके ऊपरी भागमें गड़बड़ी और खालीपन मालूम होना ; सभी चीजें मीठी मालूम होती हैं ; खट्टी चीज़ खानेकी इच्छा, तेज़ लगातार आनेवाली और साँस रोकनेवाली खाँसी, कफ़ पीवकी तरह और उसमें भयानक बदबू रहती है ; यक्ष्मा रोगकी वजहसे खाँसी ; सन्ध्याके पहले चेहरेका रङ्ग घोर लाल हो जाया करता है, मानो माथा डोल रहा है, मानो माथेमें चांदीके सिक्केकी तरह आवाज़ होती है ; गलेके बायें पार्श्वके पास एक टुकड़ा गर्म लोहा लाया गया है, मानो शरीरके भीतरकी धमनियाँ काँप रही हैं ; सर-दर्द रोगमें माथेमें शीत मालूम होना ; सर-दर्द रोगमें पसीना होनेपर उदरमें शीत मालूम होता है और ऐसा अनुभव होता है, मानो कुछ हिल रहा है, मानो शरीरके ऊपर किसीने ठण्डा पानी ढाल दिया, इसी ढङ्गका शीत मालूम होता है ; कम्पज्वरके बाद दिनमें रोगी पेशाब नहीं कर सकता।

लक्षणावली

मस्तक ।—सरमें दर्दके साथ गिर जानेका उपक्रम ; खड़े रहनेकी अवस्थामें रोगी जिस ओर घूमता है, उसी ओर गिर जानेका उपक्रम हो जाता

है ; सोनेपर घट जाना, निद्रित अवस्थामें ऐसा मालूम होता है मानो सरमें कोई रुपयेसे ठोंक रहा है और उसके शब्दसे रोगीकी नींद खुल जाती है, जग जानेपर यह ध्वनि अनुभूत होती नहीं। सर-दर्द, मानो मूर्द्धाके (मस्तकके शीर्षभागमें) ऊपर एक भारी चीज़ रखी हुई है, कनपटी और भौंहोंमें दर्द और जलन मालूम होती है। दोनों आँखें लाल हो उठती है और उनसे पानी गिरा करता है। किसी तरहकी आवाज़ या रोशनी सहन नहीं होती। मूर्द्धादेशमें दबाव पैदा करनेवाला सर-दर्द (लैके, ऐलो, कैल्के, ग्लोनो, ब्रैकि-ग्लोट, कैस्ट ; आँखतक दर्द होता है—ओनस्मोड, कैस्टस, ग्लोन ; अश्रु-स्रावके साथ—चिनिन-आर्स, कैलि-आयोड, स्ट्रैमोन ; आँखोंमें रोशनी सहन नहीं होती—कैस्टस, बेल, काक्यु, जेल, मिडोरिन, नेट्र-मूर, पल्स, स्पाई)। घरके बाहरकी निर्मल हवा लगनेपर (लाई, पल्स, ऐ-पाई, ऐक्टिया, ग्लोन, हेलिबो) और संध्याके भोजनके समय (ऐरम-ड्राई, जिञ्जिबार)। सर-दर्द घट जाता है। संध्याके भोजनके कई मिनट बाद मूर्द्धादेशमें पसीनेके साथ सर-दर्द पैदा हो जाता है और उसके कुछ ही देर बाद माथेमें ठण्डक मालूम होती है। ललाटके बाएँ पार्श्वमें दर्दके साथ माथा और हाथ गर्म हो उठता है, पर पसीना नहीं होता। माथेके दोनों पार्श्वमें ऐसा दर्द मानो दबाया जा रहा है (ग्लोनोइनम ; मानो माथा लोहेकी एक बेड़ीसे चारों ओरसे दबाया जा रहा है—टियुबर्क, सल्फ), मानो माथेकी शिराके भीतरसे चारों ओर विद्युत वेगसे खून दौड़ रहा है और टपक हुआ करती है (ग्लोन, गुयायेक, स्पाइजि)। नये सर्दी रोगमें नाकके छेद रुक जाते हैं ; रोगी मुँह फाड़कर श्वास-प्रश्वासकी क्रिया सम्पादन करता है (सैम्बियु)।

आँख।—बायीं आँखकी दोनों पलकें बार-बार फड़कती हैं (क्यूप्रम, बैडि, पल्स, ऐलो, क्रोकस, कोडेइन, ओलियेन)। दोनों आँखें सूखीं और उनमें बेधने तथा जलन पैदा करनेवाला दर्द अनुभव हुआ करता है। पलकें भारी मालूम होती हैं और औंघाई आनेकी वजहसे आँखें आप-से-आप बन्द होती जाती हैं (जेल्स, कोलोफाइलम, ग्रैफ, कास्टि, सिपि) और फड़का करती हैं। सवेरे और संध्याके समय दोनों आँखोंमें जलन हुआ करती है (कोना, ऐण्टिम-टार्ट, नेट्रम-मूरर, सोरिन, ऐकोन, कैमो, आरम)। घरके बाहरकी हवा लगनेपर आँखसे आँसू गिरा करते हैं (सल्फ, नेट्रम-मूरर, कैल्के, कैन्थ, ग्रैफ, रस, सिलि)। तिमिर दृष्टि—मानो सभी चीजें अन्धकारके

भीतरसे दिखाई दे रही हैं (साइक्लेम, लैक-डिफ्लो, प्लम्ब, लैचनैन), विशेषकर किसी चीज़की ओर देखने या टकटकी लगाकर देखनेपर। पलकोंका स्नायुशूल, पढ़ने या सिलाईका काम करनेपर बढ़ना। भयङ्कर आलोक असहनीयता, पलकें सब फूल जाती हैं और अधमुँदी रहती हैं।

मुखमण्डल आदि।—सन्ध्याके बाद चेहरेका रंग घोर लाल हो जाता है (क्षय-कास रोगमें—फेरम)। चेहरेपर उत्ताप पैदा हो जाना (ब्राई, कैमो, सिना, नक्स, पल्स)। दन्तशूल ; मसूढ़े लाल, फूले और दर्द भरे (मर्क, मर्क-कोर, रोडो, कैल्के, ग्लोन, कैलि-म्यू, मैग-कार्ब, मर्क-वाई)। रातमें मुँह और कण्ठ सूख जाता है (कैल्के, काफि, जैट्रोफा, सिनेवार, काकुर) ; मुँहमें बार-बार फेनभरी लार इकट्ठा होती है (एपिस, क्रोटेलस, हायोसायमस ; इसके साथ ही मुख-विवरमें सूखापन—काकुर) और बार-बार थूक निकालना पड़ता है (लिसिन, पल्स, कक्कस, लैक-कैन, ग्रैफ, कैडमियम-सल्फ)। जीभके दाहिने पार्श्वके ओंठके पासवाले अंशमें छाला निकल आता है और उसमें भयानक जलन हुआ करती है (जीभके ऊपर जलन-भरे छाले या रसभरे दाने—ऐम्ब्रा, एपिस, कैप्स, कार्बो-ऐन, मैंगेन, मेजर, नेट्र-म्यूर, नेट्र-सल्फ, ऐ-म्यूर, ऐ-सल्फ ; बाएँ पार्श्वमें—एपिस ; डङ्क मारनेकी तरह दर्द पैदा करनेवाला—एपिस, कैमो, हेलिबो, स्पञ्जि ; जल्दीसे जखममें परिणत हो जाता है—क्लिमेट, लैके)। पानी पीने बाद मुँहका स्वाद मीठा मालूम होता है। सब चीजें मीठी मालूम होती हैं (ऐ-म्यूर ; पानी मीठा मालूम होता है—वेरियोलिन)। गलेका जखम—निगलनेके समयके अलावा चौर किसी भी समय गलेमें दबाव और बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है; खाली घूंट लेनेके समय भी दर्द मालूम होता है; पर भोजन आदि निगलनेके समय नहीं होता (जब कोई चीज गलेके भीतर नहीं उतरती, तब दर्द—कैम्फो, लिडम ; खाली घूंट लेनेके समय दर्द—रियुमेक्स, टेल्यू ; खाद्य आदि निगलनेके समय घटना—इग्ने)।

पाकस्थली।—दूध पीनेका आग्रह प्रकट करता है; पानी पीनेकी इच्छा न होना और पानी पीनेसे डरता है। नीबूका रस-मिला या खट्टा शरबत आदि पीना पसन्द करता है (वेरेट, बोर, ब्राई, डिजिट, फेरम, पल्स ; लेमोनेड पीना पसन्द करता है—सैबाइना ; डकारमें खटमलकी गन्ध ; विष्ठाकी तरह गन्ध—ऐसाफिट, प्लम्ब ; कस्तूरीकी गन्ध—कास्टि : लहसुनकी गन्ध—

कोचलि ; या खायी हुई चीजकी गन्ध आती है—पल्स)। पाकस्थली मानो पानीसे भरी हुई है—कैलि-कार्ब, ओलि-ऐन ; करवट बदलनेके समय ऐसा मालूम होता है मानो, पाकस्थलीमें एक थैली पानी भरा हुआ है—आर्नि, थोगिलम) और यह पानी मानो ऊपरकी ओर चढ़ता है ; इसके बाद ही ऐसा मालूम होता है मानो पाकस्थलीमें एक बड़ा पदार्थ घूमकर उदरमें उतर गया। इस समय आँतोंमें आवाज़ सुन पड़ती है, पाकाशयमें जलन।

अंत्राशय आदि।—उदरमें ठण्डक मालूम होना और आँतोंमें ऐसा मालूम होना मानो कुछ हिल रहा है (एरेण्डो, कैल्के-फास, कैनाब-इन, क्रोकस, सैबाडि, थूजा, स्क्वि)। आँतके भीतर बरफकी तरह ठण्डक मालूम होती है ; वृद्धि—पाखाना होनेपर। उदरमें जलन आरम्भ होकर पाकस्थलीमें चली जाती है। पेटमें ऐंठन हुआ करती है, मानो पतला पाखाना होना चाहता है। कक्षदेशमें रुका हुआ वायु ; नख लगने और दबानेकी तरह दर्दके साथ बहुत कड़ा पाखाना निकलता है। कूथनके साथ पतला पाखाना होता है ; इसके बाद ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वारकी त्वचा क्षय हो गयी है ; पाखाना होनेके समय और अन्तमें वायु निकलता है (ऐलो, पोडो, आर्जे-नाई)। मलद्वारमें जलन। पेशाबका वेग होनेपर भी बहुत थोड़ा पेशाब होता है और संध्याके समय मूत्रनालीमें भयानक जलन हुआ करती है। मेढ्रत्वक या लिङ्गाग्र-चर्म बहुत खुजलानेवाला, खुजलानेपर (सिनेबार, ऐ-नाई, मर्क, सिपि) घटना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—असमयमें ही ऋतु-स्राव होना। ऋतु-स्रावके आरम्भमें आलस्य और दोनों उरुमें दर्द हो जाता है और बार-बार जम्हाई आया करती है ; उरुमें दर्दकी वजहसे रोगिनी खड़ी हो या सो नहीं सकती ; सभी अवस्थाओंमें उसे बेचैनी मालूम होती है। सिर्फ रातमें, सबेरे और संध्याके समय आर्त्तव-स्राव हुआ करता है। स्राव अन्यान्य बारकी अपेक्षा अधिक होता है, रज आरम्भ होकर बन्द हो जाता है। प्रत्येक बार बच्चेको स्तन पान करानेके समय स्तन-वृन्तमें दर्द होता है (क्रोटन, फाइटो, नक्स)। प्रत्येक बार स्तन पिलाने बाद दाहिने स्तनकी दुग्धवाही शिराके भीतर होकर चारों ओर फैल जाता है, शारीरिक और मानसिक बेचैनी और रोगिनी रह-रहकर रो उठती है। दोनों स्तन-वृन्तोंमें जखम (फाइटो) और उससे पीबकी तरह रस-स्राव हुआ करता है और जखम आराम हो जाने बाद भी दर्द हुआ करता है।

श्वास-यन्त्र ।—स्वर-भंग और कण्ठमें रुखापन अनुभव होनेके साथ नयी सर्दी और पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव (कार्बो-वेज, कास्टि, मैंगोन, ऐ-बेञ्जो, ब्राई, इयुपेट-पर्फ्यु, नेट्र-म्यूर); श्वासाल्पताके साथ श्वास-रोधक सूखी खाँसी, कंठमें श्लेष्मा सञ्चित हो जानेके कारण रातमें खाँसी (ऐल्यू, कास्टि); खाँसी न आनेपर भी सवेरे बार-बार बलगम निकला करता है। चलनेके समय श्वासाल्पता (आर्स, कार्बो-वेज, प्रूनस, सिपि)। इसके साथ ही सूखी खाँसी, बहुव्यापक सर्दी ज्वरमें सूखी खाँसीके साथ श्वासकी कमी। खड़े होनेवाली अवस्थामें और दीर्घ-निश्वास ग्रहण करनेके समय वक्षमें दबाव मालूम होना। सर्दी ज्वराधिकारमें वक्षमें दबाव मालूम होना (सैम्बु), वक्षमें सुई गड़ने जैसा दर्द (ब्राई, कैलि-कार्ब)। सवेरे शय्यामें सोनेके समय वक्ष-पार्श्वमें दबाव मालूम होना; रोगवाली करवट दबाकर सोनेपर फिर दर्द नहीं होता (ब्राई)। बाएँ स्तनके नीचे तेज़ सुई गड़नेकी तरह दर्द भीतरकी ओर चला जाता है। संध्याके समय सोनेके पहले दाहिने स्तन-वृन्तमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। क्षय-कास, दाहिने फेफड़ेपर रोगका आक्रमण (जिङ्कम) हुआ करता है और उसमें गह्वर पैदा हो जाता है। श्वास-प्रश्वासके समय वक्षमें जलन हुआ करती और लगातार खाँसी आया करती है; बहुत पसीना; उदरामय; खाये हुए पदार्थोंका वमन और बहुत ज्यादा परिमाणमें पीवकी तरह (साइलिसिया) और भयानक बदबूदार बलगम निकलता है। रोगी भी दिनोंदिन दुबला होता जाता है (वैसिलिनम, फास, ओलि-जेकोर)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—दोनों अंस-फलकोंके बीचवाले अंशमें, बाएँ अंस-फलकके नीचेवाले कोनेमें और त्रिकास्थि प्रदेशमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द। गलेके बाएँ पार्श्वके पास और हनुके कुछ नीचे मानो एक प्रज्वलित लौह-शलाका लायी गयी है, ऐसा अनुभव होना; बैठनेवाली अवस्थामें कमरमें दर्द मालूम होता है। पैरकी पोटलीमें स्पंदन अनुभव होना; हाथ-पैरोंमें उखाड़नेकी तरह दर्द। शरीरकी सभी शिराएँ और धमनियोंमें कँपकँपी अनुभव होती है; स्थिर होकर खड़े होने बैठने या सोये रहनेपर दर्द पैदा हो जाता है या बढ़ जाया करता है। घटना—शरीर हिलाने और निर्मल हवा लगनेपर।

निद्रा ।—दिनमें औंघाई और बार बार जम्हाई आना। रोगी इतना निद्रालु हो पड़ता है कि खड़े होकर काम करते-करते ही सो जाता है और

कभी-कभी एक घण्टे तक इसी तरह सोता है। वज्र गिरनेके सपने, डकैतीके सपने, मानो डाकुओंने उसे बहुत मारा है, ऐसे सपने देखता है।

ज्वराधिकारमें।—कम्पन; मानो किसीने उसके शरीरपर पानी ढाल दिया है (रस, सैबाड); सेंकने या आगके उत्तापसे भी उसका जाड़ा नहीं जाता; समूचे शरीरमें जाड़ा मालूम होता है और कँपकँपी होती हैं; बाँहके रोएँ खड़े हो जाते हैं और उदरके ऊपरी भागमें कतरनेकी तरह दर्द। प्रति तीसरे दिवस दिनके ४ बजनेके समय जाड़ा पैदा हो जाता है; एक घण्टे तक रहता है और दोनों बाँहोंमें बहुत दर्द हुआ करता है। माथे और चेहरेमें उत्ताप पैदा हो जाता है और चेहरेमें जलन होती है तथा वह लाल हो जाता है। उत्ताप और पसीनेवाली अवस्था कुछ देरतक रह-रहकर गायब हो जाती है और इसके बाद बहुत तेज़ सर-दर्द पैदा हो जाता है। भिचली और दोनों पैरोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द अनुभव होता है। पसीना बिलकुल ही नहीं होता। भूख नहीं लगती, दुबलापन, अनिद्रा, उदरामय और सर्दी और फेफड़ोंकी बीमारी आदि भी ज्वरके साथ मिली रह सकती है। बोखार आनेके दूसरे दिन रोगी बिलकुल ही पेशाब नहीं कर पाता या जलन और लगातार वेगके साथ बहुत थोड़ा-थोड़ा पेशाब होता है।

वृद्धि।—निर्मल वायु लगनेपर, संध्याके भोजनके बाद, भोजनके समय और बाद, आर्त्तव प्रकट होनेके बाद, अस्थिर भावसे खड़े होने, बैठने या सोये रहनेपर, पानी पीनेपर, निगलनेके समय और पाखाना होनेपर।

घटना।—निर्मल वायु लगनेपर (सरमें चक्कर आना और सर-दर्द आदि)। संध्याके भोजनके समय (सर-दर्द); कड़े पदार्थ निगलनेके समय, निर्मल वायुमें और शरीर हिलानेपर, बाएँ पार्श्वमें या रोगवाली करवट सोनेपर और रगड़नेपर। दमाका घटना—गर्म घरमें; टहलनेके समय और जाड़ेके दिनोंमें बढ़ना।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—रियुम (अतिसारमें)।

सदृश।—कोना, फाइटो, ब्रायो, ओलियेन (स्तन रोगमें); क्रोटन-टिग, कैलि-कार्ब, ओपि, नक्स-मस, ओनस्मोड, जिङ्कम।

तुलनीय।—स्तन-लक्षणमें—कोना, फाइटो, ब्रायो, ऐलियम। स्तन पिलानेके समय दर्द—क्रोटन। सर-दर्द रोगमें आँखें आक्रान्त होनेपर—ओनस;

दाहिने वक्षमें दर्द—जिङ्कम ; क्षयकासकी अन्तिम अवस्थामें कफ़ बड़ा ही बदबूदार ; तन्द्रालुता—ओपियम, नक्स-मस ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे २०० शक्ति ।

फैलस इम्प्युडिकस

(PHALLUS IMPUDICUS)

दूसरा नाम ।—स्टिङ्क हार्न, बेंगका छत्ता जातीय उद्भेद ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—सरमें चक्कर, वमन, लसदार पसीना, पाकाशयका शूल और अन्लशूल, भूख न लगना और तेज़ प्यास वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

फिनासिटिनम

(PHENACETINUM)

दूसरा नाम ।—पेरा-ऐसिड फिनाटिडिन ।

उपयोगिता और आभास ।—नील रोग, चेहरेमें उद्भेद, ज्वर, सरमें दर्द, ज्यादा पसीना, आन्त्रिक ज्वर, खूनमें युरियाकी अधिकता प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है ।

दोषघ्न ।—ऐलूरमिना ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

फ्लोरिजिनम

(PHLORIZINUM)

दूसरा नाम ।—फ्लोरिजिन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—आता वृक्षकी छालसे विचूर्ण या अरिष्ट किसी भी आकारमें तैयार किया जा सकता है ।

उपयोगिता और आभास ।—ऐलोपैथीके अनुसार यह सविराम ज्वरकी दवाके रूपमें व्यवहार किया जाता है । किसी रोगीका इस तरह ज्वर रोकनेके समय फ्लोरिजिनमके व्यवहारसे कभी कभी पेशाबमें चीनी बढ़ती हुई दिखाई पड़ती है ।

होमियोपैथिक मतसे बहुमूत्र, यकृत-तन्तुमें चर्बीकी अधिकता और सविराम ज्वरमें फ्लोरिजिनमका व्यवहार निम्न शक्तिमें होता है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

फास्फोरस

(PHOSPHORUS)

(एक प्रकारका विस्फोटक पदार्थ)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विशुद्ध सुरासारसे गलाया जाता है और इसका विचूर्ण तैयार किया जाता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—केश झड़ जाना या केश उड़ जाना ; अन्धापन ; क्षीण-दृष्टि ; नयी रक्ताल्पता ; मलान्त्रका फटना ; धमनीकी बीमारी ; दमा ; हड्डीकी बीमारी ; मस्तिष्कका कोमल हो जाना और बहुत तरहकी बीमारियाँ ; स्तनका प्रदाह ; स्तनमें नासूरका घाव ; श्वासनलीका प्रदाह ; कैन्सर या कर्कट रोग ; मोतियाबिन्द ; सर्दी ; बिवाई ; मृत्पाण्डु ; ताण्डव ; आँखका स्नायु-शूल ; कब्जियत ; क्षय-कास ; चर्बी बढ़ जाना ; घुंड़ी खाँसी ; अतिसार ; शोथ ; शरीरमें काली लकीर पड़नेकी

तरह दाग; आन्त्रिक या सान्निपातिक ज्वर; मृगी; कामोन्माद; हड्डीका बढ़ना; आँखकी बहुत-सी बीमारियाँ; मूर्च्छा; मेदापकर्ष; नासूरका जखम; उदराध्मान; पाकाशयका प्रदाह; प्रमेह; मसूढ़ेका जखम; रक्त-स्राव-प्रवण धातु; सर-दर्द; हृत्पिण्डमें मेदापजनन; कोरण्ड; मस्तिष्कमें जल-सञ्चय रोग; मूर्च्छावायु; ध्वजभङ्ग; आँतमें आँतका प्रवेश कर जाना; कामला; गर्भावस्थामें पिलाई रोग; जबड़ेकी बीमारी; सन्धियोंकी बीमारी; स्तन या माताके दूधमें विकार; स्वरनलीका प्रदाह; विद्युत या वज्राघातका दुष्परिणाम; पुराना अतिसार; यकृतकी बीमारी; यकृतका ह्रास या शीर्णता (नयी); चलनेकी शक्तिकी बहुत-सी बीमारियाँ; फेफड़ेसे रक्त-स्राव, फेफड़ेकी सूजन; फेफड़ेका पक्षाघात; दुबलापन; बहुत ज्यादा रज-स्राव; आर्त्तव विकार; आँखके सामने काले बिन्दु दिखाई देना; तिल; नखके चारों ओर जखम; स्नायुशूल; छाती दबने या निद्रावस्थामें श्वास प्रायः रुकी हुई; स्तनमें जखम; नाकसे खून गिरना; सुन्न हो जाना; शरीरकी गन्धका परिवर्त्तन; नकसीर; अन्ननलीमें दर्द; पक्षाघात; अस्थिआवरक पर्देका प्रदाह; पसीनेका विकार या अनियम; प्लेग या महामारी; फेफड़ेका प्रदाह; नाक प्रभृति स्थानोंमें पोलिपस या बतौड़ी; गर्भावस्थामें वमन; मलान्त्र-प्रदाह; क्रमसे बढ़नेवाला दुबलापन; विचर्चिका; सूतिकाक्षेप; चक्षुमुकुरका प्रदाह; वात; अस्थि-विकार; शीताद या मसूढ़ेके फोड़े; निद्रामें विकार; मेरुदण्डका टेढ़ापन; प्लीहाका बढ़ना; मोच खाना; तोतलाना; बन्ध्यत्व; उपदंश; गलेमें श्लेष्मा जमा होना; तम्बाकूका दुष्परिणाम; स्वरनलीमें सुड़सुड़ी; नाना प्रकारके अर्बुद; सान्निपातिक ज्वर; जखम; मूत्रनलीका सङ्कोचन; गो-बीजके टीकाका दुष्परिणाम; चेचक; स्वरलोप; अंगुलहाड़ा; जखम; पीत ज्वर इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—आन्त्रिक आदि ज्वर और जीवनी-शक्तिको सुस्त करनेवाली बीमारियाँ; यकृत और प्लीहाका बढ़ना; खूनका स्राव; हृत्पिण्ड, यकृत और क्लोम-ग्रन्थिमें मेदका बढ़ना; स्वरनली प्रदाह; वायुनली-भुज-प्रदाह; फेफड़ेका प्रदाह; क्षय-कास, पुरानी खाँसी वगैरह श्वासयंत्रकी बीमारियाँ; पाकाशयका जखम, रक्त-वमन या रक्त-पित्त, पाकाशयकी सर्दी या प्रदाह, बहुत जलनके साथ पाकाशयका शूल और पाकाशय मानो जकड़ गया है या ऐसा दर्द मानो अस्त्रसे काट रहा है; कठिन, कोमल वगैरह यकृतकी बहुत-सी बीमारियाँ, यकृतका छोटापन या शीर्णता; ताण्डवरोग,

पक्षाघात, मस्तिष्कका अवसाद, कोमलता और महामहिमान्वित भावके साथ उन्माद इत्यादि स्नायविक बीमारियाँ, बहुमूत्र, बायाँ निचला हनु, नाक, कशेरुका वगैरहके अस्थिक्षत रोगमें और बहुत अधिक इन्द्रिय-सेवनको वजहसे सुस्ती और बीमारीमें फास्फोरस बहुत उपयोगी है। डा० एलेन कहते हैं—न तो बहुत मोटा, न बहुत बदशकल, शोणित प्रधान धातु, गौरव-कान्ति, पतली भौं, सूक्ष्म गौर या लाल वर्ण-केशवाले तीक्ष्ण बुद्धिके मनुष्य तथा अभिमानी-गणपर फास्फोरसकी उत्कृष्ट क्रिया होती है या तेजीसे बढ़नेवाले, टेढ़ी पीठवाले (कुबड़े) युवकगणपर भी इसकी खासी क्रिया होती है अथवा हरित्पाण्डु, रोगग्रस्त या रक्त-हीन मनुष्य या ऐसे वृद्ध जिन्हें सवेरे उदरामय होता है, उनको यह खूब लाभ करता है। संक्षेपमें इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण लिखे जाते हैं—(१) सर-दर्द—रह-रह कर एक धक्का मालूम होता है, माथेमें उत्ताप और पूर्णता मालूम होना, और कानमें झिन-झिन आवाज़ हुआ करती है। (२) ललाटकी त्वचामें बहुत खींचन होती है। (३) चेहरेका स्नायुशूल, उखाड़ने या फाड़नेकी तरह दर्द, मानो हड्डीके ऊपरसे मांस उखाड़ा जा रहा है। (४) निचले हनुके सामनेवाले अंशकी सूजन और हड्डीका जखम। (५) कीड़े लगी दाँतमें सुई गड़ने या डङ्क मारनेकी तरह दर्द; दाँतकी जड़से मसूढ़े अलग हो जाते हैं और जभी-तभी मसूढ़ोंसे खून बहा करता है। (६) जीभके बीचवाले अंशमें एक लाल रेखा दिखाई देती हैं। (७) ठण्डा पानी पीनेके लिये ज्वालामयी प्यास और चबानेकी तरह दर्द अनुभव होता है और यह दर्द पीठको छेदकर मेरुदण्डतक फैल जाता हैं। (८) कब्जियत—मल लम्बा, सूखा, दृढ़ और कड़ा (कुत्तेके मलकी तरह—स्टैफ); बड़े कष्टसे और प्रबल वेग देनेपर कहीं निकलता है (कास्टि)। (१०) उदरामय—मलान्त्रमें कोई पदार्थ प्रवेश करते ही पतला पाखाना होने लगता है; मल बहुत ज्यादा, पानीकी तरह और ऐसे वेगसे निकलता है मानो पानीकी कलसे निकल रहा हो। मल पानीकी तरह और उसके साथ साबूदानेकी तरह पदार्थ मिला रहता है; ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वार हमेशा खुला हुआ ही रहता है (एपिस); विसूचिका रोग पैदा हो जानेके समय उदरामय (विसूचिकाके आक्रमणके पहले होनेवाला उदरामय—ऐसिड-फास) और वृद्ध मनुष्योंका सवेरेके वक्त होनेवाला उदरामय। (११) स्वरनली सूखी और उसमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता, रोगी बोल नहीं सकता। (१२) स्वरभंग

और स्वरलोप, बहुत देरतक जोरसे वक्तृता देनेके कारण। (१३) वक्षमें कसावटके भावके साथ सूखी, खुसखुसी, खोखली या आक्षेपिक खाँसी; गर्म घरसे ठण्डे वायुमय स्थानमें जानेपर और हँसने, बोलने, पढ़ने, जलपान करने, खाने या बाईं करवट सोनेपर (ड्रोसेरा, स्टैनम) खाँसी बढ़ जाया करती है। (१४) छातीमें भार मालूम होना, मानो उसपर पत्थरका एक टुकड़ा दबाया हुआ है। (१५) कफ़ सवेरे ही ज्यादा निकलता है। कफ फेन-भरा, खून-मिला, लौहमय या जंगकी तरह उसका रंग रहता है; पीवमय, सफेद रंगका और सूतकी तरह; ठण्डा श्लेष्मामय, कभी खट्टा स्वाद मिला, मीठा या नमकीन मालूम होता है। (१६) सभी इन्द्रियाँ अत्यन्त उत्तेजना-प्रवण; रोशनी, शब्द, गन्ध या स्पर्श जरा भी अधिक होनेपर असह्य मालूम होता है। (१७) अस्थिर, चंचल, क्षणभर भी एक भावसे स्थिर नहीं रह सकता, कभी बैठता है, कभी खड़ा होता है, ऐसा ही लगातार किया करता है। (१८) तेज़ जलन, यह जलन मेरुदण्डके दोनों पार्श्वोंमें जगह-जगहपर और दोनों अंस-फलकोंके बीचमें अनुभूत होती है, तलहथ्थी (लैके) में बहुत जलन होता है, वक्ष-गह्वर और फेफड़ेके बीचमें भी जलन मालूम होती है। स्नायविक रोगमें शरीरके प्रत्येक यन्त्रमें या तन्तुमें तेज जलन होती है (आर्स, सल्फ)। (१९) रक्त-स्रावप्रवणता,—सामान्य जखम या चोटवाली जगहसे बहुत ज्यादा रक्त-स्राव हुआ करता है (क्रियो, लैके); शरीरके किसी भी श्लैष्मिक-झिल्लीमय द्वारसे रक्त-स्राव हो सकता है। (२०) बहुत कमजोरी और उठनेकी शक्तिका न रहना, स्नायविक अवसाद और स्पंदन, समूची देहमें ही ऐसा ही हुआ करता है; जीवनी रस या जीवनी धातुके बहुत अधिक क्षय हो जानेकी वजहसे सुस्ती (ऐ-फास, सिङ्को)। (२१) दर्द—तेज़, यह दर्द वक्षमें ही अधिक अनुभव होता है, पञ्जरेके भीतरवाले प्रदेशमें थोड़ा भी दबाव डालनेपर या दबानेपर और बाईं करवट सोनेपर दर्द बढ़ जाता है; सामान्य सर्दी लगनेपर भी दर्द पैदा हो जाता है और घरके बाहरकी निर्मल वायु बिलकुल ही सहन नहीं होती। (२२) मस्तक, वक्ष, पाकस्थली या समूचा उदर शून्य और अवसादयुक्त मालूम होता है और ऐसा मालूम होता हैं, मानो न जाने कितने समयसे भोजन नहीं किया है। (२३) रोगी उदास भावसे पड़ा रहता है, कोई बात पूछनेपर उत्तर नहीं देना चाहता या बहुत धीरे-धीरे उत्तर देता है; बहुत आलसीकी तरह घूमता है (ऐ-फास)। (२४) उसे

जीवित रहनेकी इच्छा नहीं होती, हमेशा ही भविष्यकी अमङ्गल चिन्तामें लगा रहता है। (२५) बूसिका या रूसी भरा माथा, केश झाड़नेके समय बहुत ज्यादा परिमाणमें रूसी निकला करती है, झब्बे-के-झब्बे केश झड़ जाते हैं और कोई-कोई जगह केश-हीन हो पड़ती है। (२६) दोनों आँखें गड़हेमें धँस जाती हैं तथा नीले घेरेसे घिरी रहती हैं; पलकें फूलीं, मानो शोथ हो गया हो (ऊपरी पलक—कैलि-कार्ब; निचली पलक—एपिस)। (२७) ठण्डा पानीय पीना और ठण्डी चीजें खाना पसन्द करता है या आग्रह प्रकट करता है, कुल्फी बरफ खानेपर पाकाशयका दर्द घट जाता है। (२८) एक-एक बार डकार आनेके साथ मुँहपर अजीर्ण पदार्थ चढ़ आता है (ऐल्यू)। (२९) गर्म पानीमें हाथ डुबानेपर मिचली पैदा हो जाती है; पानीमें हाथ रखनेपर बार-बार छींक आने लगती है और नाकसे स्राव होने लगता है या नयी सर्दी पैदा हो जाती है (लैक-कैन)। (३०) रक्त-स्राव,—बार-बार, पर थोड़ा—लगातार बँधी धारमें निकलता-निकलता क्षणभरके लिये बन्द हो जाता है; जरायुके कर्कट रोगमें जरायुसे रक्तस्राव, रक्त-कास, विकल्प रज, ऋतुके अभावमें नाक, पाकाशय, मलद्वार या पेशाबकी राहसे खूनका स्राव हुआ करता है। (३१) गर्भावस्थामें स्त्रियाँ पानी नहीं पी सकतीं,—पानी देखते ही उन्हें मिचली आने लगती हैं; नहानेके समय रोगिनीको बाध्य होकर आँखें बंद कर लेनी पड़ती हैं (लिसिन)। (३२) पुरुषोंको ध्वजभङ्गके साथ बहुत अधिक रमणकी स्पृहा। (३३) शीत निम्न-गामी रहता है और उत्ताप उर्द्ध-गामी। (३४) पसीनेकी गन्ध लहसुन या गन्धककी तरह आती है।

लक्षणावली

मन।—आच्छन्नावस्था, प्रलाप, भ्रमदृष्टि, उड़ते हुए रूईके टुकड़ेको पकड़नेके लिये हाथ फैलाया करता है (हायो, लाई, ऐसिड-फास, स्ट्रैमोन, आन्त्रिक ज्वराधिकारमें—आयोड, लाई; लल्पनामें देखे हुए पदार्थ पकड़नेकी चेष्टा—इग्नेन्यि)। परिवर्तनशील स्वभाव,—अपने-आप ही कभी रोता है, कभी हँसता है या रोता-रोता हँस उठता है। बहुत उदासी,—प्रश्नका उत्तर नहीं देना चाहता (ऐगारिक, कैम्फो, हायो, स्ट्रैमोन, वेरेट; उन्माद रोगमें—वेरेट-विर; या धीरे-धीरे उत्तर देता है—हेलिबो, कैलि-ब्रोम, मर्क-बाई; बहुत देरतक सोचकर उत्तर देता है—काक्यु); कभी-कभी असम्बद्ध उत्तर

देता है--हृद्रोगमें (ओपि, वेरेट ; अन्यान्य रोगोंमें—बेल, हायो, नक्स)। जीवन धारणकी इच्छा न होना (ऐसिट-क्रूड, अरम, सिङ्को, नेट्र-मूर, आरम-मूरर, बेल, लैक-डिपलो, ऐनाक, पल्स, रास, सल्फ, टेरिब, थूजा)। विषन्न भाव—हमेशा अमङ्गल चिन्तामें लगा रहता है (नेट्र-मूर, सोरिनम, पल्स)। भयचकित भाव, मानो घरके सब कोनोंसे न जाने क्या-क्या निकल रहा है (स्ट्रैमोन)। मन अत्यन्त चञ्चल, गोधूलिके समय (रास); अकेलेमें रहनेके समय (विशेषकर सन्ध्याके समय—ड्रोसेरा); भविष्यके सम्बन्धमें चिन्ता (साइक्यू, ब्राई, डिजिट, डाल्का, जेल्स, ऐलूम, स्पाइजि)। बिजली चमकनेके साथ अंधड़-पानीके समय (नेट्र-कार्ब)। कलेजा धड़कनेके साथ (कैक्ट, डिजिट, कैल्मिया, लैके, नेट्र-मूर, सोरिन, स्ट्रैमो, वेरेट), सवेरे और संध्याके समय। विमर्ष चित्त—रोया करता है या अपनी इच्छाके विरुद्ध हँस उठता है (ऐकोन, अरम, काफि, लाई, सैम्बल), प्रणयपूर्ण हृदय। उदासी—अपनी सन्तानोंके प्रति भी अश्रद्धा प्रदर्शन करता है (रोगी किसी समय जिसे बहुत प्यार करता था, उसके भी प्रति हतादर प्रकट करता है—ऐ-फ्लू, सिपि ; अपने परिवारवालोंके प्रति अनादर प्रकट करता है—सिपि)। उत्तेजना-प्रवण स्वभाव—सहजमें ही क्रोधित हो उठता है और फिर उसी क्रोधके कारण बीमारी भुगतता है (काक्यु, ओपि, स्टैफ)। कामोन्माद (हायो, लैके, स्ट्रैमो, वेरेट, ओरिगिनम, प्लैट)। काम-काजकी बातोंमें हँसा करता है (कैनाब-इन, ऐनाका, लाई, नक्स-मस, प्लैट ; हँसनेकी बात नहीं रहती, पर फिर भी हँसता है—कैस्टोर-इक्विई)। प्रलाप अवस्थामें कुछ गड़बड़ाया करता है (एगार, बैप्टी, बेल, ऐ-फास, आर्नि, आर्स, एपिस, लैके, ऐ-मूर, रास, टैरेण्ट)। विकार अवस्थामें बहुत बकता है (लैके)। रोगी मनमें समझता है कि उसकी देह या हड्डियाँ सब कई खण्डोंमें विभक्त हो गयी हैं और उन खण्डोंको वह इकट्ठा नहीं कर पाता (बैप्टी, पेट्रोल)। आच्छन्न अवस्था—क्षणभरके लिये जगानेपर भी बुदबुदाकर बकते-बकते फिर मोहको प्राप्त हो जाता है तथा सब कुछ भूल जाता है (अचेतनावस्था, पर कोई बात पूछनेपर उसका उत्तर देकर फिर आच्छन्न अवस्थामें जा पड़ता है—ऐसिड-फास, आर्निका)। अपने रोगके सम्बन्धमें बहुत चिन्ता (ऐ-नाई, ऐ-फास, कैल्के, चिनिन-आर्स ; आरोग्यके सम्बन्धमें चिन्ता—ऐ-फास)। अन्तर्दृष्टि शक्तिवाली अवस्था ; अन्धकारसे भय (ऐमोन-मूरर, कैल्के, स्ट्रैमोन, स्ट्रैन, वैलि) और प्रेतका डर (पल्स, आरम, ब्रोम)।

मस्तक ।—स्नायवीय सरका चक्कर या नशीले पदार्थ या काफी पीनेके कारण माथेमें चक्कर आना । सरमें चक्कर—सवेरे शय्यासे उठनेके समय (साइक्यू, युपेट-पर्फोल, ओलियेन, सलफर) और अपनी जगहसे उठनेके समय (पल्स, कैल्के-फास, कैमो, डिजिट, लाई), रोगीको बेहोशी आ जाती है और वह घरकी जमीनपर गिर जाता है (मूर्च्छाका उपक्रम—लैके, कार्बो-वेज, कैमो, सिङ्को, वेरेट, ऐलेन्थिस-फेरि)। मस्तिष्कका अवसाद मानो रातभर जागता रहा है, जड़ता और भार मालूम होना, यह ललाटके ऊपरी अंश और मूर्द्धा-देशमें अधिक मालूम होता है ; सरमें चक्कर आनेके साथ सामनेकी ओर गिर जानेका लक्षण (नक्स-वोम, कास्टि, साइक्यू); घटना—माथा खोलनेपर और ठण्डी हवा लगनेपर । संन्यासका आक्रमण—रोगी दोनों हाथोंसे माथा पकड़ लेता है और मुँह बायीं ओर खिंच जाता है ; माथेके समूचे बाएँ पार्श्वमें ऐसा अनुभव होता है, मानो जकड़ गया है । मस्तिष्कके पिछले भागमें शीत मालूम होना (कैम्फो ; मानो आगकी शिखा जल रही है—सिडोरिन) और ऐसा अनुभव होना, मानो मस्तिष्क अकड़ गया है । बाईं कनपटीमें टपककी तरह दर्द (ब्रैकिग्लाट, सिपि ; ऋतु-स्राव होनेके पहले—लैके ; दबानेपर घटना—इथ्यू)। बाएँ चक्षुगोलकपर सर-दर्द (इपिका, कैल्के-आर्स ; रोज़ सवेरे ८ बजेसे १ बजेतक आँखके ऊपर सर-दर्द—ऐसिड-सूयर ; ८ बजे आरम्भ होता है—लिसिन ;- सवेरे नींद खुलनेपर—लैक-कैन)। द्वाहिक या एक दिनका अन्तर देकर सर-दर्दका पैदा हो जाना ; नींद खुलनेपर ललाटमें भार और टपककी तरह दर्द मालूम होना, इसके साथ ही नाक बन्द हुई मालूम होनेपर ; निर्मल वायु सेवन करनेपर घटना—ठण्डे पानीसे धोनेपर (कैल्के, फास, स्पाइजि ; ठण्डे पानीके प्रयोगसे घटना—ऐसा, साइक्ला ; मुँहमें ठण्डा पानी रखनेपर—सिङ्को); वृद्धि—झुकनेपर (पल्स, स्पाइजि, सिपि, बेल, ग्लोन, इग्ने)। कभी-कभी यह दर्द दिनभर स्थायी रहता है (निकोलम)। मस्तिष्कमें पक्षाघात हो जानेका उपक्रम (लाई, ऐमोन-कार्ब, जिङ्कम) और पतनावस्था ; मस्तिष्कमें इतनी गर्मी मालूम होना, मानो आग जल रही है (कैन्थ, वेरेट)। माथेमें अधिक रक्त सञ्चय होना ; माथेमें जलन ; डङ्क मारनेकी तरह दर्द और टपक ; यह दर्द सरके पिछले भागसे पैदा होता है ; चेहरा लाल हो उठता है और आँखका निचला भाग फूला मालूम होता है, वमनके साथ सर-दर्द ; टपक और जलन करनेवाला दर्द, ललाटमें अधिक

मालूम होता है ; सवेरेसे लेकर दोपहरतक मिचली पैदा हुआ करती हैं और वमन हुआ करता है (चेलिडो, मिलिलोट, सैङ्गिविन, लैक-डिफ्लो ; वृद्धि—सङ्गीत आदि सुननेपर—काफि, पोडो) ; चबानेके समय या दोनों हनु हिलानेपर और गर्म घरमें रहनेके समय सर-दर्द (टैबाक, ऐसाफिट, निकोलम), शोक प्राप्त होनेके बाद मूर्द्धदेश हमेशा बहुत गर्म मालूम होता है (कैल्के) या मस्तिष्कके भीतर खूनकी अधिकताके कारण ललाटदेशमें दर्द। मस्तिष्क कोमलीभूति—हमेशा माथा कपड़े रहता है, कोई बात पूछनेपर बहुत धीरे-धीरे उत्तर देता है ; कभी-कभी सरमें चक्कर भी अनुभव होता है, चलनेके समय पैर खींचकर चलता है। हाथ-पैरोंमें ऐसी सुरसुरी होती है, मानो चींटी रेंग रही है और दोनों पैर सुन्न मालूम होते हैं। जगह-जगहपर माथेके केश उड़ जाते हैं और रूसी निकल आती है (सर्दी लगने, गर्म घरमें रहने और केश काटनेपर माथेमें दर्द हो जाया करता है ; केश काटनेपर सर-दर्द—बेल, ग्लोन)। मुखमण्डल और ललाटकी त्वचामें बहुत खींचन मालूम होती है, अधिकांश स्थलोंपर माथेके एक पार्श्वमें ऐसा ही मालूम हुआ करता है ; वृद्धि—जाड़ा-गर्मीके परिवर्त्तनसे और भोजनके समय ; घटना—भोजनके बाद मानसिक बेचैनीके साथ। धोबियोंका सर-दर्द अर्थात् गर्म घरमें कपड़े आदिपर इस्तिरी करनेके कारण सर-दर्द (ब्राई)। रूसी—केश झाड़नेके समय धुएँकी तरह निकलती है ; केशकी जड़ सब ढीली होकर गुच्छे-के-गुच्छे केश निकल जाते हैं ; खुजलानेपर खुजली बढ़ जाया करती है।

आँख।—पढ़नेके समय अक्षर सब लाल दिखाई देते हैं। वर्णके चारों ओर इन्द्रधनुषकी तरह रङ्ग दिखाई देता है (साइक्यूटा)। पढ़ने बाद आँखमें धीमा-धीमा दर्द होता है ; आँखके सामने काले बिन्दु सब उड़ते दिखाई देते हैं (सीनेके कामके बाद—ऐमोन-कार्ब) ; वृद्धि—चमकीली चीज़पर नज़र डालनेसे और दीयेकी रोशनीमें, गोधूलिके समय घटा मालूम होना। पुतलियाँ सिकुड़ी, कभी-कभी एकाएक दृष्टि-लोप हो जाती है, मानो मूर्च्छाका लक्षण (हायो, नक्स-मस, ओलियेन ; अवसाद वायु रोगमें—आर्जेण्ट-नाइ ; आँखोंके प्रदाह रोगमें—साइक्यूटा ; एक सेकेण्डके लिये दृष्टिका लोप हो जाना—लैके ; सरमें चक्कर आनेके साथ—मर्क ; एकाएक शरीर हिलानेपर—वेरेट्र-विर)। तिमिर दृष्टि या अस्पष्ट दृष्टि ; शारीरिक शोणित आदिके सञ्चयसे उत्पन्न या लाला-मूत्र रोगाधिकारमें तेज़ीसे बढ़नेवाली निकट दृष्टि (Short sight) ;

कभी-कभी एकाएक दिनौंधी पैदा हो जाना या ऐसा मालूम होता है, मानो सारी चीजें धुमैले पर्देसे ढँकी हैं (सल्फ़, कास्टि, क्रोकस, आयोड, लिथिया-कार्ब. नेट्र म्यूर, पेट्रोल, रस, स्ट्रैमो); दीयेकी रोशनीके चारों ओर हरे रङ्गका मण्डल या शोभा दिखाई देती है (रियुटा, सिपिया, सलफर)। धीमा चक्षु-प्रदाह, आँखसे पानी गिरा करता है, पलकें फूल जाती हैं और उनमें पीव या कीचड़ पैदा करनेवाली ग्रन्थिमें पीव पैदा हो जाता है और आँखमें जलन तथा खुजलाहट पैदा हो जाती है। आँख, ललाट तथा चक्षु-गह्वरमें दर्द हुआ करता है ; पलकें काँपा और फड़का करती हैं और आँखोंमें पानी भर आया करता है ; दोनों आँखोंका सफ़ेद अंश पीला दिखाई देता है (मर्क, चेलिडो, कैन्य, सिङ्कोना, क्रोटेलस, माइरिका)। घरके बाहरकी हवा लगनेपर और वायुके विपरीत ओर जानेपर आँखमें पानी भर आता है (इयुफ्रे, नेट्रम-म्यूर)। सवेरे या गोधूलिके समय या हाथसे आँख ढँक लेनेपर अच्छी तरह देख सकता है। बार-बार अञ्जनी और उसमें पीव पैदा हो जाता है (पल्स, स्टैफ, ऐ-फास, एपिस, अरम, चेलिडो, ग्रैफ, साइलि, थूजा।

कान।—श्रवण-शक्तिका घटना, विशेषकर मानव कण्ठ स्वरके सम्बन्धमें (ऐसिड-फ्लु, साइलि); ज्वरके बादका बहरापन ; ठण्डे हाथ-पैर आदिके साथ। शब्द मात्र कानमें प्रतिध्वनित होते हैं, विशेषकर सङ्गीत-ध्वनि (शब्द-मात्र कानमें प्रतिध्वनित होते हैं—बैराई, लैके, कास्टि, कैलि-ब्रोम)। कानमें बेधनेकी तरह तेज़ दर्द, विशेषकर रातमें ; कानसे खून और पीव आदिका स्राव। कानमें रक्तका अधिक सञ्चय होना और टपक (रक्त अधिक सञ्चय होना—अरम, कैल्के, ओपि, कैम्फो)। कानमें आवाज़ ; कानमें भों-भों आवाज़ हुआ करती है—खूनके दौरानकी वजहसे। कानमें बहुपाद या अर्बुद (कैल्के, लैके, लाई, पेट्रोल), बहरापन और पीले रङ्गके पीवका स्राव पर्यायक्रमसे पैदा हो जाता है। माथेमें सर्दी हो जानेकी वजहसे बहरापन। लगातार सों-सों शब्द, मानो किसी भाफ़मय यन्त्रसे भाफ़ निकल रही है और इसी कारणसे पैदा हुए सरमें चक्करकी वजहसे रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो घरका तल्ला छिदकर गिर जायगा।

नाक।—नयी सर्दी—श्लेष्मा पानीकी तरह, माथेकी जड़ता और निद्रालुता, दिनमें और भोजनके बाद, नाक झाड़नेपर खून निकल आता है (क्रोटेलस, लैके, आर्निका); कभी पतले श्लेष्माका स्राव होता है और कभी

नाक सूख जाती है और बार-बार छींक आती है ; सूखी सर्दी ; नाकमें सूखी खरींट सब चिपककर लगी रहती है ; कभी-कभी फिर बहुत अधिक श्लेष्माका स्राव होने लगता है और यह श्लेष्मा पिछले छेदसे गलेमें गिरा करता है ; गला फूल उठता है और रक्त-सञ्चालन रुकनेकी वजहसे आँखमें टकटकी लग जाती हैं—आरक्त ज्वराधिकारमें। नाकसे बहुत ज्यादा हरा या पीला पतला श्लेष्माका स्राव होता है। नाकसे बार-बार खूनका स्राव होनेपर और नासा-रोगाधिकारमें भी ऐसा ही हुआ करता है। नाकमें झिल्लीमय अर्बुद जभी-तभी पैदा हो जाता है और उससे खून गिरा करता है (कैल्के, सैङ्गिविन, टियुक्रि, थूजा) ; उपझिल्ली-प्रदाह रोगमें नासा-रंध्रके भीतरसे नकली झिल्ली निकालने या अलग करनेके समय नाकसे भयानक रक्त-स्राव हुआ करता है। छींकनेपर कण्ठमें दर्द होता है। ऐसा अनुभव होता है, कि नाकका छेद भरा या रुका हुआ है, विशेषकर बायें रंध्रका ऊपरी अंश और उसके साथ ही श्लेष्माका स्राव। नाक फूली, लाल और चमकीली हो जाती हैं और उसके छेदमें सूखापन रहता है। अस्थिपूर्त्ति—अस्थिवेष्ट ऊँचा हो उठता है और एक नया अस्थिमय स्तर पैदा होता है (स्टिलिञ्जिया, हिपर ; हड्डीका जखम—आरम, आरम-म्यूर-नेट, हिपोजिन, मर्क-बिन-आयोड, कैडमियम-सल्फ)। दोनों नासापुटोंके सिकुड़ने और फैलनेकी वजहसे पंखे-जैसी गति (ब्रोम, चेलिडो, लाई, स्पञ्जिया ; फेफड़ेका प्रदाह—ऐण्टि-टार्ट, क्रियो)। नाकके ऊपर काला दाग। नाकके कोनेकी त्वचा क्षय हो जाती है। नासारंध्र जखम-भरा। नाकसे बदबू निकलती हैं। पाखाना जानेके समय या संध्याके समय नाकसे खूनका स्राव होता है।

मुखमण्डल।—चेहरा म्लान, पीला, तकलीफ़ बतानेवाला, पीले रङ्गका, नीली आभा लिये, फूला और दोनों ओंठ नीले ; नाक उठी हुई और आँख तथा दोनों गाल गड़्हेमें धँसे। गालपर सीमाबद्ध लाली ; आँखका निचला भाग रससे फूला ; दोनों आँखें गड़्हेमें धँसी और नीले घेरेसे घिरी। नाकके नीचेवाली हड्डीके पासके छेदके पास जलन। गण्डास्थिमें स्पन्दन, फाड़ने और छेद करनेकी तरह दर्द और कसावटका भाव और इन सब हड्डियोंमें जखम पैदा हो जानेकी आशङ्का या सूचना। ललाटसे दाहिनी आँखमें दर्द और मूर्द्धास्थि और कनपटीसे युगास्थिमें दर्द फैल जाता है। दाहिने चक्षु-गह्वरके निचले किनारेसे दर्द दाहिने कानमें चला जाता है और मुँहकी हड्डीतक

रोगका आक्रमण होता है और ऐसा मालूम होता है, मानो सब हड्डियाँ उखाड़ी जा रही हैं। दोनों ओंठ सूखें और उनपर फुन्सीकी तरह काला लेप चढ़ा रहता है (लैके, क्लोरम, हायो)। बायें निचले हनुकी हड्डीका जखम, हन्वस्थि फूल उठती है (सिस्टस, कोना, मर्क, साइलि); हन्वस्थिमें उखाड़नेकी तरह दर्द; वृद्धि—संध्याके बाद और सोनेपर; घटना—जबड़ा हिलानेपर। कर्णमूल-प्रदाह—पीव पैदा हो जानेवाली अवस्थामें। आच्छन्न अवस्थामें। आच्छन्न अवस्थामें गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा निकला करता है और ओठ तथा जीभसे झूला करता है। नाक, ओंठ नीले; कभी-कभी वे सूखे, नीरस, फूले और भूरी आभा लिये पपड़ीसे ढँके रहते हैं। दोनों ओंठोंका जोड़ जखमसे भरा, निचले हनुके नीचेकी ग्रन्थियोंका बढ़ना।

मुख-विवर।—दाँतमें दर्द,—ठण्डा या गर्म पानीसे हाथ धोनेकी वजहसे। कीड़े खाये दाँतोंमें सुई गड़ने या डङ्क मारनेकी तरह दर्द; मसूढ़े दाँतकी जड़से अलग हो जाया करते हैं और सामान्य कारणसे ही उनसे खून निकला करता है। मुँहका स्वाद तीता और गोंदकी तरह; दूध पीनेपर मुँहके भीतर अम्ल रस पैदा हो जाता है (-ऐम्ब्रा, कार्बो-वेज, सल्फ, कैलेडि)। जीभ—सूखी, न हिलने-डोलनेवाली, काली पपड़ीसे ढँकी, उसकी पीठ फटी, नीरस या चमकीली (एपिस, टेरिब, लैके, कैलि-बाई); कभी-कभी सूखी सफेद लेपसे ढँकी और अगले भागमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द (ऐङ्गस, ब्रोमि, फार्मिका, ऐ-फास, रैनान-वल्बो, सैबाडि, स्टैफ; समस्त मुख-विवरमें मानो असंख्य सुइयाँ गड़ रही हैं—ऐरम-ट्राई; कभी-कभी पीले लेपसे ढँका रहता है या केवल बीचका अंश लेपसे ढँका रहता है। जीभ हिलानेकी शक्ति न रहनेकी वजहसे साफ़-साफ़ आवाज़ नहीं निकलती। जीभ और ऊपरी तालुपर छाले निकल आते हैं। मुख-विवर जखमसे भरा रहता है और सामान्य कारणसे ही उससे रक्त-स्राव होता है। लालाधिक्य—नमकीन या मीठी लार बहुत बहा करती है। गालके भीतरी प्रदेशकी त्वचा बहुत क्षय हो जाती है और लाल दिखाई देती हैं। खून-मिला थूक निकलता है। कण्ठमें गाढ़ा गोंदकी तरह कफ़ सञ्चय हुआ करता है। रक्त-कास।

गलेके भीतर।—दाहिने गलेकी गांठ फूलना; कण्ठमें सञ्चित कफ़ बड़ी कठिनतासे निकला करता है; कफ़ कण्ठसे आनेपर बहुत ठण्डा मालूम

होता है ; बलगम सफेद रङ्गका प्रायः स्वच्छ और थक्का-का-थक्का निकलता है। गल-ग्रन्थिमें भी जलन हुआ करती है। तालुमूलमें क्षय हुई त्वचाकी तरह अनुभव होता है और उसमें रुखड़ापन मालूम होता है ; वृद्धि—संध्याके समय ; रोगी सवेरे बार-बार खाक-खाककर कण्ठ साफ करता रहता है ; कण्ठके भीतर स्पष्ट चमकीलापन दिखाई देता है (नेट्र-म्यूर ; श्वासनलीके उपझिल्ली रोगाधिकारमें—एपिस, लैक-कैन)। ऐसा अनुभव होता है कि कण्ठमें सुई अड़ी हुई है ; अन्ननलीमें जलन ; रह-रहकर एकाएक अन्ननली संकुचित हो जाती हैं।

पाकस्थली।—रोगी यदि बार-बार नहीं खाता है, तो सुस्त हो जाता है। खानेके कुछ ही बाद भूख लग आती है। रातमें भी भूख लगती है और रोगीको बाध्य होकर खाना पड़ता है। रोगीको खानेकी रुचि रहनेपर भी खाद्य-पदार्थ सामने आनेपर फिर खाना नहीं चाहता (खाद्य-पदार्थ सामने आते ही ऐसा मालूम होना कि पेट भर गया है—सल्फ ; कभी-कभी खानेको मांगता है, पर देखनेसे ही अनिच्छा प्रकट करता है—हेलिबोरस)। भूख—ज्वरकी शीतावस्थामें कुछ खाये बिना रोगी उठ नहीं सकता ; रातमें रोगीको सुस्ती मालूम होती है। ठण्डे, रस-भरे और स्निग्ध पदार्थ खानेकी रोगी इच्छा प्रकट करता है (ऐकोन, आर्स, ब्राई, सिना, वेरेट, ऐ-फास)। कुल्फी बरफ खानेपर रोगीका शूलका दर्द घट जाता है (कैल्के, युपेटोरियम-पर्फोल)। मिष्टान्न या मांससे अरुचि (मिष्टान्नसे अरुचि—आर्स, कास्टि, मर्क, सिनैप, सल्फ ; मांससे अरुचि—सिङ्को, ऐ-म्यूर, नक्स-वोम, पेट्रोल)। कभी भूख बिलकुल ही नहीं रहती और कभी बहुत प्रचण्ड भूख मालूम होती है ; पाकाशयमें जलन, छेदने और दबानेकी तरह दर्द तथा मिचली और वमन। बहुत ज्यादा नमक खानेकी वजहसे बीमारियाँ (नेट्रम-म्यूर)। गलनलीमें पूर्णता मालूम होना और इसी वजहसे क्षुधाभाव रहता है और बहुत प्यास मालूम होती है, भोजनके बाद औंघाई आती है और शारीरिक शिथिलता या आलस्य मालूम होता है। उत्ताप और बेचैनी पैदा हो जाना, दोनों हाथोंमें जलन हुआ करती है, अम्ल रोग बढ़ जाता है (चेलिडो, कोना), पाकस्थली, वक्ष और उदरमें भार मालूम होता है, श्वास-प्रश्वासमें बाधा पड़ती है, खाये हुए पदार्थ वमन हो जाते हैं, पेट फूल उठता है या सरमें दर्द मालूम होता है। डकारके साथ कण्ठमें खट्टे अजीर्ण पदार्थ आदि उठते हैं। हिचकी आया

करती हैं, गड़बड़ी, अन्त्रशूल और अन्यान्य बहुत-सी बीमारियाँ पैदा हो जाया करती हैं। मिचली रहनेपर भी डकारके साथ मुँहपर अजीर्ण पदार्थ आ जाते हैं। भोजनके बाद और कुछ जलपान करनेके बाद भी थोड़ा खट्टा और बदबूदार जलीय पदार्थ कै हो जाता है—यह कै हुआ पदार्थ पानी, स्याही या काफीकी तलीकी तरह रहता है। ठण्डा पानी पीनेपर आराम मालूम होता है, पर पाकस्थलीमें वह कुछ गर्म होते-न-होते कै हो जाता है (पाकस्थलीमें पानी प्रवेश करते ही वमन हो जाता है—बिस्मथ)। खाद्य-पदार्थ गलेके नीचे उतरते-न-उतरते कै हो जाते हैं (आर्स)। लगातार मिचली बनी रहती है। वमन—पित्त (आर्स, ब्राई, युपेट, इपिका, लेप्टेन, मर्क, नक्स-वोम, पल्स, सिपि) और शोणितमय (आर्नि, कैक्ट, कार्बो-वेज, सिङ्को, क्रोटेलस, फेरम, इपिका, सैबाई)। भोजनके बाद पाकस्थलीमें भयानक दबाव मालूम होता है और खाये हुए पदार्थोंकी कै हो जाती है। पाकस्थलीमें भयानक दबाव और जलन ; ज्वालामयी तृष्णा—खाने-पीनेपर यह बढ़ जाती है। पाकाशयका शूल और पाकस्थलीमें चबानेकी तरह दर्द ; शरीर हिलानेपर बढ़ना। पेटमें ऐंठन होती है और यह यकृततक फैल जाती है। पाकाशय भरा और दर्द-युक्त रहता है और कभी-कभी उसमें गड़गड़ाहट होने लगती है या सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है। रक्तपित्त या पाकस्थलीसे खूनका स्राव। घटना—ठण्डा पानी पीनेपर। पाकाशय-प्रदाह या पाकाशयकी सर्दी—छातीमें जलन हुआ करती है और अन्तमें कण्ठमें दुर्दमनीय त्वचाकी खींचनकी तरह दर्द अनुभव हुआ करता है। गर्भावस्थामें रोगिनी पानी नहीं पी सकती, पानी देखते ही उसे वमन पैदा हो जाता है ; स्नानके समय रोगिनीको बाध्य होकर आँखें बन्द किये रहना पड़ता है, कारण पानी देखते ही उसे ओकाई आने लगती है (लिसिन)। पेटमें किसी तरहकी चोट लगनेकी वजहसे बड़े जोरोंका वमन होता है। तम्बाकूके धुएँकी गन्धसे रोगीको मिचली आती है (धूम्रपानसे मिचली बन्द होना—इयुजिनिया)। पाकाशयमें भयानक दर्द ; घटना—ठण्डा पानी पीनेपर। पाकस्थलीमें या अग्र-कड़ाके नीचे या उसके ऊपरी प्रदेशमें सर्दी या उत्ताप और जलन मालूम होना।

अन्त्राशय।—कामला या पाण्डु रोग, फेफड़ेका प्रदाह या मस्तिष्ककी बीमारी रोगमें या किसी तरहकी स्नायविक उत्तेजनासे उत्पन्न बहुत अधिक क्रोध आ जानेकी वजहसे उत्पन्न (ब्रायो, कैमो, नेट्रम-सल्फ, नक्स-वोम)।

सांघातिक कामला या यकृतका नया पीतक्षय रोग—यकृतके सारांशगत विस्तृत प्रदाहकी वजहसे, इसके कोषाणु सब ध्वंस हो जाते हैं और यकृत संकुचित होकर छोटेसे छोटा हो जाता है ; प्लीहा बढ़ जाती है और रोगीकी त्वचा पीली पड़ जाती है ; खूनके साथ मूत्र-सार मिला रहता है और पेशाबके साथ पित्त-सार निकलता है। विस्तृत यकृत-प्रदाह—यकृत बहुत कड़ा और उसका आयतन बड़ा हो जाता है और कुछ देर बाद वह पतला और सिकुड़ जाता है। उदरमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होना ; छूनेपर उसमें तेज़ दर्द अनुभव होता है ; पेटमें प्रायः हुड़हुड़ गुड़गुड़ शब्दके साथ आँतोंकी आवाज़ हुआ करती है, विशेषकर पानी पीनेके समय और बाद। समूचे उदरमें अवसाद मालूम होता है, विशेषकर दो-चार क़दम चलनेपर तलपेटमें ; रोगीको बहुत अधिक सुस्ती मालूम होनेकी वजहसे बाध्य होकर सो जाना पड़ता है। उदरमें शून्यता मालूम होना (वेरेट, सीड्रन, ग्रैटि, कैलि-ब्रोम, पेट्रोल ; उदरके ऊपर हाथ रखनेपर ठण्डा मालूम होना—मिडोरिन, वेरेट)। बहुत दिनोंतक पतला पाखाना होनेकी वजहसे उदर शिथिल हो जाता है। उदर शून्य मालूम होता है (ऐ-म्यूर, कैमो, सिना, काक्यु, क्रोटन, डालका, गैम्बो, मर्क, सोराइन, पल्स, सिपि) ; अन्नवहानलीके संकोचनकी बीमारीमें, पाखाना होनेपर (पोडो, वेरेट), यकृतके मेदापजनन रोगमें। भोजनके बाद पेट फूल उठता है। प्लीहाका बढ़ना (सियेनोथस, आर्स, सिंको, डायाडेमा, फेर, इग्ने, लैके, नेट्र-म्यूर)। यकृत प्रदेशमें स्पर्श-कातरता ; वृद्धि—पार्श्वमें सोनेपर (मैग-म्यूर, मर्क)। दाहिने कोखमें दर्द पैदा होनेपर टपक।

मलान्त्र और मल।—-मलका पतलापन,—बहुत ज्यादा, पानीकी तरह और मानो कलसे पानी निकल रहा है—इसी तरहके वेगसे निकलता है (क्रोटन, ग्रैटि) ; उपशम--नींदके बाद बहुत ज्यादा परिमाणमें फीका, हरी आभा लिये खून मिला ; खून मिला और साबूदानेकी तरह दाना मिला या तलीयुक्त अथवा मेढ़कके अण्डेकी तरह आकृतिवाले दाना मिला (ऐलो, क्युबेब) बिना तकलीफ़का, खून मिला मानो मांसके धोये हुए पानीकी तरह (कैन्थ, रस)। बहुत दिनोंतक या पुराना यन्त्रणा-रहित अजीर्ण मलका पतलापन—मलके साथ अजीर्ण खाये हुए पदार्थ निकलते हैं—रातमें पानीकी प्यास बहुत बढ़ जाती है (ऐण्टि-क्रूड, कैल्के-कार्ब, रस ; दुर्दमनीय प्यास—ऐको, आर्स, जैट्रोफा, वेरेट) ; विसूचिका आरम्भ होनेके समय बार-बार दस्त (कैम्फो, क्युप्रम, पल्स)।

यन्त्रणा-रहित सुस्त करनेवाला उदरामय—वृद्धि सवेरे। कब्जियत—मल कड़ा, पतला, लम्बा, सूखा और डोरीकी तरह कड़ा, कुत्तेके मलकी तरह (साइलिक्स, स्टैफ); बड़े कष्टसे निकला करता है और काँखने या वेग देनेके समय हाथ-पैर कांपा करते हैं। मलद्वारमें बहुत तकलीफ़ होनेकी वजहसे ऐसा मालूम होता है मानो देह दो टुकड़े हो जायगी ; गर्म चीज़ोंका प्रयोग करनेपर उपशम मालूम होता है। बवासीर—मसा बाहर निकल पड़ता है और उससे जभी-तभी खून निकला करता है, बैठने और सोनेके समय मलद्वारमें ऐसा तकलीफ़ मालूम होती है, मानो त्वचा क्षय हो गयी है। मलान्त्रमें जखम पैदा हो जाता है और उससे पीव और खून निकला करता है। मलद्वारमें ऐसा मालूम होता है मानो वह हमेशा खुला रहता है। पाखाना फिरनेके समय मलद्वारसे सूत्रमय कृमि निकलती है। महात्मा हेनिमैन कहते हैं—"जिन रोगियोंको पुराना उदरामय हो, उनके लिये फास बहुत उपयोगी है।"

पेशाब ।—पेशाब बहुत ज्यादा, फीका और पानीकी तरह ; बहुत बार थोड़ा-थोड़ा पेशाब होता है ; पेशाब गदला, उसमें ईंटके चूरकी तरह तली जमती है और पेशाबपर कितने ही रंगोंकी मलाई-सी तैरती है (कैल्के, पैरिस, पेट्रोल, फास, सोराइन ; कितने ही रंगोंकी—आयोड) और तली लाल रंगकी (सेलिन, सिपि, नेट्र-सल्फ)। रक्तका पेशाब—बहुत इन्द्रिय सेवनकी वजहसे खून जम जाता है। क्षय-कास रोगमें चीनी मिला पेशाब (बोवि, कोडाया, हेलोन, लैक-डिफ्लो, लाई, ऐ-फास, प्लम्ब, टेरिब, यूरेनियम-नाई)। सफेद रंगका धुएँकी तरह पेशाब ; पेशाब करनेके समय शिश्नमें जलन और खुजली मालूम होती है। बार-बार पेशाबके वेगके साथ मूत्रनलीकी पेशीमें स्पन्दन और जलन।

पुं०-जननेन्द्रिय ।— कामोद्दीपना,—बार-बार लिंगमें कड़ापन और वीर्यस्खलन या संगमकी दुर्दमनीय आकांक्षा। कामातुरता—नंगा हो जाता है, कामोन्माद (ऐ-नाई ; शराबियोंका—नक्स-वोम)। अत्यधिक कामातुरता और अस्वाभाविक उपायोंसे इन्द्रिय-परितृप्तिकी वजहसे क्लीवता या ध्वजभंग (अत्यधिक इन्द्रिय सेवाकी वजहसे—सिंको, लाइ, कैलि-ब्रोम, स्टैफ ; हस्त-मैथुन आदि अस्वाभाविक उपायोंसे इन्द्रिय परितृप्तिसे उत्पन्न—जेल्स)। कोष-वृद्धि या कोरण्ड (रोडो, साइलि, स्पञ्जि, ऐ-फ्लुयोरिक, आयोड, नेट्र-मूर); प्रमेहका स्राव रुक जानेकी वजहसे बार-बार अनजानमें वीर्यस्खलन। संगमके

समय बहुत शीघ्र और क्षीण स्रोतमें वीर्यस्खलन (बहुत जल्दी-जल्दी वीर्य-स्खलन---बैराई, लाई, नेट्र-कार्ब, जिंकम)। कोषमें दर्द और रेतोरज्जुका फूलना (कैलि-कार्ब, सार्सा, स्पञ्जिया—कोषके फूलनेके साथ—अतृप्त कामोत्तेजनाके अन्तमें--सार्सा)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—रमणियोंका कामोन्माद (लैके, हायो, ओरिगैनम, स्ट्रैमोन, वेरेट, लिलियम, मूरेक्स); बंध्यात्व—बहुत अधिक कामातुरताकी वजहसे या विलम्बसे बहुत ज्यादा रजःस्रावसे उत्पन्न। बहुत-सी सन्तान प्रसव करनेके बाद जरायु-प्रदाह, पीव मिला खून और योनि आदि प्रदेशोंकी शिराओंका प्रदाह। जरायुके कर्कट रोगमें जरायुसे बार-बार बहुत ज्यादा खूनका स्राव हुआ करता है ; स्राव होता-होता रुक जाता है और फिर होने लगता है (पल्स)। बाएँ डिम्बाधार प्रदेशसे बाएँ उरुके भीतरी अंशतक दर्द मालूम हुआ करता है (एपिस, आर्स, ब्राई, कैक्ट, स्टैफ)। ऋतु असमयमें ही प्रकट हो जाता है और स्राव अपर्याप्त तथा बहुत दिनोंतक स्थायी रहता है या असमयमें ही ऋतु होना आरम्भ हो जाता है और स्राव बहुत थोड़ा और फीका रहता है ; स्राव आरम्भ होनेके पहले रोगिनी रोने लगती है (लाई, पल्स) ; ऋतुके समय कमरमें दर्द मालूम होता है (बार्बे, कास्टि, लैके, निकोलम, पल्स) और कलेजेमें धड़कन हुआ करती हैं (कैक्ट, क्रोकस, इग्ने, नेट्रमूर, ऐ-नाई, साइलि, सल्फ, टैबाक)। आर्त्तव-स्राव न होना:,—रक्तकास (सैङ्गियु), मलद्वारसे खूनका स्राव या रक्त पेशाबके साथ ; ऋतुरोध रोगमें स्तनमें दूधकी अधिकता ; योनिसे सुई गड़नेकी तरह दर्द पैदा होकर वस्तिगह्वरमें चला जाता है। निर्मल वायु सेवनके लिये चलनेके समय या टहलनेपर योनिद्वारमें फाड़नेकी तरह दर्द। प्रदर—हरित्पाण्डु रोगाधिकारमें (खूनकी कमी रोगमें कैल्के, फेरम, साइक्लेम, हेलोन, ऐ-फास); ऋतु-स्रावके बाद प्रदर-स्राव (सीड्रन, काक्यु, चिनोपोड-ऐन, ग्रैफ, जिङ्कम, नक्स-मस, सिपिया); स्राव जलवत (ब्यूफो, लैक-कैन, मूरेक्स, नेट्र-फास); लसदार गोंदकी तरह (हाइड्रैस्ट, कैलि-बाई, बोवि) या त्वचाको क्षय करनेवाला (ऐल्यू, बोर, कोलोफिन, क्रियो, इयुपियोन, नेट्र-मूर, ऐ-नाई, सिपि, साइलि) और जहाँ लगता है, वहीं छाले पड़ जाते हैं। प्रसव-वेदना—बहुत तकलीफ़ देनेवाला, पर निष्फल ; समूचे उदरमें छेदनेकी तरह दर्द। स्तनका जखम, स्तनके ऊपर लाल दाग और लकीर निकलती है। स्तनके ऊपर नासूर और उसमें जलन, कांटा

यन्त्रणा-रहित सुस्त करनेवाला उदरामय—वृद्धि सवेरे। कब्जियत—मल कड़ा, पतला, लम्बा, सूखा और डोरीकी तरह कड़ा, कुत्तेके मलकी तरह (साइलिक्स, स्टैफ); बड़े कष्टसे निकला करता है और काँखने या वेग देनेके समय हाथ-पैर कांपा करते हैं। मलद्वारमें बहुत तकलीफ़ होनेकी वजहसे ऐसा मालूम होता हैं मानो देह दो टुकड़े हो जायगी; गर्म चीज़ोंका प्रयोग करनेपर उपशम मालूम होता है। बवासीर—मसा बाहर निकल पड़ता है और उससे जभी-तभी खून निकला करता है, बैठने और सोनेके समय मलद्वारमें ऐसा तकलीफ़ मालूम होती है, मानो त्वचा क्षय हो गयी है। मलान्त्रमें जखम पैदा हो जाता है और उससे पीव और खून निकला करता है। मलद्वारमें ऐसा मालूम होता है मानो वह हमेशा खुला रहता है। पाखाना फिरनेके समय मलद्वारसे सूत्रमय कृमि निकलती है। महात्मा हेनिमैन कहते हैं—"जिन रोगियोंको पुराना उदरामय हो, उनके लिये फास बहुत उपयोगी है।"

पेशाब।—पेशाब बहुत ज्यादा, फीका और पानीकी तरह; बहुत बार थोड़ा-थोड़ा पेशाब होता है; पेशाब गदला, उसमें ईंटके चूरकी तरह तली जमती हैं और पेशाबपर कितने ही रंगोंकी मलाई-सी तैरती है (कैल्के, पैरिस, पेट्रोल, फास, सोराइन; कितने ही रंगोंकी—आयोड) और तली लाल रंगकी (सेलिन, सिपि, नेट्र-सल्फ)। रक्तका पेशाब—बहुत इन्द्रिय सेवनकी वजहसे खून जम जाता है। क्षय-कास रोगमें चीनी मिला पेशाब (बोवि, कोडाया, हेलोन, लैक-डिपलो, लाइ, ए-फास, प्लम्ब, टेरिब, इयुरेनियम-नाई)। सफेद रंगका धुएँकी तरह पेशाब; पेशाब करनेके समय शिश्नमें जलन और खुजली मालूम होती है। बार-बार पेशाबके वेगके साथ मूत्रनलीकी पेशीमें स्पन्दन और जलन।

पुं०-जननेन्द्रिय।— कामोद्दीपना,—बार-बार लिंगमें कड़ापन और वीर्यस्खलन या संगमकी दुर्दमनीय आकांक्षा। कामातुरता—नंगा हो जाता है, कामोन्माद (ए-नाई; शराबियोंका—नक्स-वोम)। अत्यधिक कामातुरता और अस्वाभाविक उपायोंसे इन्द्रिय-परितृप्तिकी वजहसे क्लीवता या ध्वजभंग (अत्यधिक इन्द्रिय सेवाकी वजहसे—सिंको, लाइ, कैलि-ब्रोम, स्टैफ; हस्त-मैथुन आदि अस्वाभाविक उपायोंसे इन्द्रिय परितृप्तिसे उत्पन्न—जेल्स)। कोष-वृद्धि या कोरण्ड (रोडो, साइलि, स्पञ्जि, ए-फ्लुयोरिक, आयोड, नेट्र-म्यूर); प्रमेहका स्राव रुक जानेकी वजहसे बार-बार अनजानमें वीर्यस्खलन। संगमके

समय बहुत शीघ्र और चीण स्रोतमें वीर्यस्खलन (बहुत जल्दी-जल्दी वीर्य-स्खलन---बैराई, लाई, नेट्र-कार्ब, जिंकम)। कोषमें दर्द और रेतोरज्जु का फूलना (कैलि-कार्ब, सार्सा, स्पञ्जिया—कोषके फूलनेके साथ—अटप्त कामोत्तेजनाके अन्तमें--सार्सा)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—रमणियोंका कामोन्माद (लैके, हायो, ओरिगेनम, स्ट्रैमोन, वेरेट, लिलियम, मूरेक्स); बंध्यात्व—बहुत अधिक कामातुरताकी वजहसे या बिलम्बसे बहुत ज्यादा रजःस्रावसे उत्पन्न। बहुत-सी सन्तान प्रसव करनेके बाद जरायु-प्रदाह, पीव मिला खून और योनि आदि प्रदेशोंकी शिराओंका प्रदाह। जरायुके कर्कट रोगमें जरायुसे बार-बार बहुत ज्यादा खूनका स्राव हुआ करता है ; स्राव होता-होता रुक जाता है और फिर होने लगता है (पल्स)। बाएँ डिम्बाधार प्रदेशसे बाएँ उरुके भीतरी अंशतक दर्द मालूम हुआ करता है (एपिस, आर्स, ब्राई, कैक्ट, स्टैफ)। ऋतु असमयमें ही प्रकट हो जाता है और स्राव अपर्याप्त तथा बहुत दिनोंतक स्थायी रहता है या असमयमें ही ऋतु होना आरम्भ हो जाता है और स्राव बहुत थोड़ा और फीका रहता है ; स्राव आरम्भ होनेके पहले रोगिनी रोने लगती है (लाई, पल्स); ऋतुके समय कमरमें दर्द मालूम होता है (बार्ब, कास्टि, लैके, निकोलम, पल्स) और कलेजेमें धड़कन हुआ करती हैं (कैक्ट, क्रोकस, इग्ने, नेट्रमूर, ऐ-नाई, साइलि, सल्फ, टैबाक)। आर्त्तव-स्राव न होना:,—रक्तकास (सैङ्गियु), मलद्वारसे खूनका स्राव या रक्त पेशाबके साथ ; ऋतुरोध रोगमें स्तनमें दूधकी अधिकता ; योनिसे सुई गड़नेकी तरह दर्द पैदा होकर वस्तिगह्वरमें चला जाता है। निर्मल वायु सेवनके लिये चलनेके समय या टहलनेपर योनिद्वारमें फाड़नेकी तरह दर्द। प्रदर—हरित्पाण्डु रोगाधिकारमें (खूनकी कमी रोगमें कैल्के, फेरम, साइक्लेमन, हेलोन, ऐ-फास); ऋतु-स्रावके बाद प्रदर-स्राव (सीड्रन, काक्य, चिनोपोड-ऐन, ग्रैफ, जिङ्कम, नक्स-मस, सिपिया); स्राव जलवत (ब्यूफो, लैक-कैन, मूरेक्स, नेट्र-फास); लसदार गोंदकी तरह (हाइड्रैस्ट, कैलि-बाई, बोवि) या त्वचाको चय करनेवाला (ऐल्यू, बोर, कोलोफिन, क्रियो, इयुपियोन, नेट्र-मूर, ऐ-नाई, सिपि, साइलि) और जहाँ लगता है, वहीं छाले पड़ जाते है। प्रसव-वेदना—बहुत तकलीफ़ देनेवाला, पर निष्फल ; समूचे उदरमें छेदनेकी तरह दर्द। स्तनका जखम, स्तनके ऊपर लाल दाग और लकीर निकलती है। स्तनके ऊपर नासूर और उसमें जलन, कांटा

गड़नेकी तरह दर्द और नालीसे पानीकी तरह बदबूदार पीव निकलना ; पीव सञ्चयका लक्षण दिखाई देते ही प्रयोग करना चाहिये। स्तनका कार्कट—स्तनमें तेज़ अस्त्राघातकी तरह दर्द या उससे जभी-तभी पीव निकलता है। सवेरे शय्यासे सोकर उठनेपर रोगिनीके माथेमें चक्कर आ जाया करता है और दोनों पैर क्षीण मालूम होते हैं, इसलिये शय्या त्यागनेके बाद कुछ देरतक रोगिनी खड़ी नहीं हो सकती। गर्भावस्थामें जरायुसे रक्त-स्राव।

श्वास-यन्त्र।—स्वरनली और वायुनलीभुजमें त्वचा क्षय हो जानेकी तरह मालूम होना और खाँसी (लैके, पल्स) और स्वरभङ्ग ; सन्ध्याके समय बढ़ना (कार्बो-ऐन, कार्बो-वेज, रियुमिक्स)। बहुत देरतक ऊँची आवाज़में बात करनेके कारण स्वरलोप, कण्ठनलीमें स्पर्श सहन न होना। कण्ठमें दर्दकी वजहसे बात नहीं कर सकता, कण्ठनालीका भीतरी अंश ऐसा मालूम होता है, मानो गाढ़े लेपसे ढँका हो। नकली झिल्ली पैदा करनेवाला स्वरनलीका प्रदाह—स्वरलोप, जीवनी-शक्तिका बहुत तेजीसे अवसाद, ठण्डा पसीना निकलना, निचला जबड़ा झूल पड़ना, दोनों गालोंका बैठ जाना और घड़घड़ आवाज़के साथ श्वास-प्रश्वास हुआ करता है ; उक्त रोगोंका बार-बार आविर्भाव होना। श्वास-रोग—श्वास-रोध होनेका उपक्रम हो जाता है (लोबिल-इन, स्पञ्जि)। वक्षमें दबाव मालूम होना और बेचैनी, विशेषकर सवेरे और संध्याके समय। सन्ध्याके बाद निद्रित अवस्थामें श्वास ग्रहण करनेके समय झिल्लीके काँपनेकी वजहसे फड़फड़ शब्द (नाककी आवाज़ या धड़धड़ शब्दके साथ—ओपि, पल्स); हरेक रातमें श्वास रुकनेकी सम्भावना हो जाती है (आर्स, सल्फ, स्पञ्जि), मानो दोनों फेफड़ोंमें पक्षाघात हो गया है। पेशियोंके आक्षेपकी वजहसे वक्षमें कसावटका भाव। आवाज़के समय श्वास-प्रश्वास। साँस लेनेके समय बहुत तकलीफ़ मालूम होती है—छाती भरी, भारी और उसमें कसावटका भाव मालूम होता है। श्वासाल्पता—प्रत्येक बार खाँसीके बाद (इपिक)। दो-चार क़दम चलते ही रोगी हाँफने लगता है (चलनेमें श्वासाल्पता—आर्स, कार्बो-वेज, प्रूनस, सिपिया); वृद्धि—भोजनके बाद (चलते-चलते स्थिर होकर खड़े हो जाना पड़ता है—ऐगरिकस ; भोजनके बाद सैङ्गिविन)। वक्षमें ऐसी अनुभूति मालूम होती है, मानो बहुत खा लिया है। स्वरलोपकी वजहसे इशारेसे बातें करता है। कण्ठनालीमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता और जलन रहती है ; खाँसी—(१) खुजलीसे उत्पन्न, समूचे वक्षमें कसावटकी

भावके साथ। (२) शून्यगर्भ या खों-खों; आक्षेपिक और वक्षमें खुजलीकी वजहसे। (३) समूचे शरीरको हिला देनेवाली। (४) उदरके ऊपरी भागमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द; रोगीको यह अंश बाध्य होकर हाथसे दबा रखना पड़ता है। (५) स्नायविक उत्तेजनासे उत्पन्न—किसीके घरमें घुसते ही खाँसी आने लगती है (यदि कोई मनुष्य रोगीके पास आता है या सामनेकी ओरसे जाता है—कार्बो-वेज; जबतक रोगीके पास या घरमें दूसरा आदमी मौजूद रहता है—ऐम्ब्रा; अपरिचित मनुष्यके कमरेमें मौजूद रहनेपर—बैराई)। (६) नाकमें कोई तेज़ गन्ध प्रवेश करनेपर (नये पैदा हुए अनाज आदिकी गन्धसे—एरम-ड्राई, इयुफ्रे, लैके, लोबेल, मस्कस, सैबाड, स्टिक्टा) और (७) अंधड़-पानी होनेकी सूचना होनेपर ठण्डी जलीय हवाके लगनेपर—ओलियेकोर; बरसाती हवामें—बैडियेगा, बैराइटा-कार्ब)। खाँसी रोगमें दाहिनी या बाईं भौंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द; सर फाड़ डालनेवाला सर-दर्द और कण्ठमें सूखापनके साथ जलन; स्वरलोप या स्वरभङ्ग; कण्ठनालीमें रुखड़ापन और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होना; वृद्धि—रातमें और सन्ध्याके समय। खाँसीका बढ़ना—गर्मसे, ठण्डी हवामें आनेपर, हँसनेपर (आर्जेण्ट-नाई, सिङ्को, स्टैन), ऊँची आवाज़में बोलनेपर (हायो, रियुमेक्स, स्टैनम), सर्दी-गर्मीके परिवर्त्तनसे (वेरेट), खाने या पीने बाद (पीनेपर—ऐकोन, हायो, मिफाइटिस, ओपि, स्पञ्जिया और खानेसे—हायो, स्क्रियुला) और बाईं करवट (लाई, ड्रोसे, स्टैनम, पैरिस, रास) या चित्त होकर सोनेपर (नेट्रम-म्यूर)। खाँसनेपर अनजानमें पाखाना हो जाया करता है (स्क्रियुला)। बलगम—सवेरे अधिक निकला करता है, फेन-भरा (आर्स, फेरम, ऐण्टिम-टार्ट, डैफनी, नेट्रम-म्यूर); रक्तमिश्रित (सिङ्को, फेरम, लाई, पल्स), लोहेकी जङ्गकी तरह रङ्ग (ऐण्टि-टार्ट, आयोड, लाइ, रस), पीवकी तरह (ए-नाई, लाई, साइलि, कार्बो-वेज, कैलि-कार्ब)। सफेद रङ्ग (क्लोरम, सिङ्को, इनैन, स्टिक्टा) और गाढ़ा गोंदकी तरह (कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, हाइड्रैस्ट), शीतल (ब्राई, कोरैल-रूब्र) और मिठाई अन्न या नमकीन स्वादका।

वक्षगह्वर।—बायें वक्षमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द, दाहिनी करवट सोनेपर घटा मालूम होता है (बाईं करवट सो नहीं सकता—ऐमोन-कार्ब)। फिफड़ेका प्रदाह, वायुमार्ग सब सूखे मालूम होते हैं, वक्षके भीतरका ऊपरी अंश ऐसा मालूम होता है, मानो त्वचा क्षय हो गई है; वक्षमें बहुत

दबाव मालूम होता है। वक्षके भीतरी भागमें दर्द रहता है और स्पर्श सहन नहीं होता, मानो उसमें जखम पैदा हो गया है। पूर्ण विकसित वायुनलीभुज-प्रदाह, दाहिने फेफड़ेका निचला आधा भाग यकृत भावापन्न हो जाता है। दोनों अंस-फलकोंके बीचमें उत्ताप और वक्षमें ऐसा अनुभव होना, मानो वह जकड़ा गया है। कैशिक वायुनली-प्रदाह—फेफड़ा बहुत फूल उठता है। फेफड़ेमें पक्षाघात होनेका उपक्रम, रोगीमें उठनेकी शक्ति नहीं रहती। गोंदकी तरह लसदार पसीना होता है, नाड़ी सूक्ष्म, मुखमण्डल और गाल आदि बैठ जाते हैं और गला घर-घर किया करता है। क्षयकास, दीर्घकाय, काले या तेजीसे बढ़नेवाले रोगियोंको बार-बार खून-मिला बलगम निकलना और बहुत कमजोरी मालूम होना; बार-बार वायुनलीभुज-प्रदाह। हृत्पिण्डके दाहिने अंशकी बीमारीकी वजहसे शिराओंके रक्तका प्रवाह रुक जाना। शरीर हिलाते ही कलेजा धड़कने लगना (डिजिट, फेरम, नेट्रम-म्यूर, स्टैफ, ऐक्टिया-रेस; शरीर हिलानेपर घटना—आर्जेण्ट-नाई, जेल्स); हृत्पिण्डमें वेगसे रक्त-प्रवाह होनेके साथ (कैलि-म्यूर), विशेषकर तेजीसे बढ़नेवाले युवकोंका। वक्ष-मध्योस्थिके बीचवाले अंशमें बहुत दबाव मालूम होना (साइक्लामेन, जिङ्कम); केवल सीधे रहनेपर श्वासकी तकलीफ घटी मालूम होती है (आर्स, इपिक, सल्फ; बच्चोंकी—इपिक, सैम्बियु, ऐण्टि-टार्ट; वृद्धोंकी—बैराइ, लैके, ओपि); श्वासकृच्छ्र—रोगी किसी तरहका भी परिश्रम नहीं कर सकता (आर्स, ऐ-नाई, नेट्र-म्यूर, सिलि, स्टैफ, सल्फ; सीढ़ी चढ़ते समय साँस लेनेके लिये खड़े हो जाना पड़ता है—कोका) और कलेजा धड़कना। हृत्पिण्डकी अन्तर्वेष्टनीके प्रदाहके बाद या हृत्पिण्डके मेदापजननसे उत्पन्न हृत्पिण्डका प्रसारण (कैक्टस, लोबे, लाई, नैजा, नक्स, टैबेकम)। नाड़ी—द्रुत-गति, पुष्ट और अनमनीय; कभी-कभी या ऊपर-के-ऊपर दो आघात अनुभव होते हैं, इसके अलावा कभी-कभी नाड़ी सूक्ष्म, क्षीण और द्रुत रहती है। हृत्पिण्डमें वेगसे खूनका प्रवेश और कलेजा धड़कना; भोजनके बाद बहुत बढ़ना।

गर्दन और पीठ।—कमरमें दर्द, मानो कमर टूट गयी है (इयुपेट-पर्फोल) और इसी वजहसे रोगी हिल नहीं सकता। झुकनेके बाद सीधे होनेके समय पीठके निचले अंशमें दर्द मालूम होता है। पीठके निचले अंश-विशेषमें जलन मालूम होती है; रगड़नेपर घटती है। मेरुमज्जाका तारल्य।

विचरण या शरीर सञ्चालग शक्तिका क्रमविकासशील लोप (नक्स-वोम, प्लम्बम, स्ट्रिकनी, फाइजस, जेल्स, कास्टि, ऐ-पाई, लैके) ; मेरुचंचुमें मानो जखम उत्पन्न हो गया है, इस ढङ्गके दर्दकी वजहसे एक जगहसे दूसरी जगह नहीं जा सकता और उसके बाद गर्दन अकड़ जाया करती है। प्रसवके बाद नितम्बदेशमें दर्द होता है। कान और गलेकी ग्रन्थिमें बहुत अधिक रक्त-सञ्चय हो जानेकी वजहसे वे फूल उठती हैं। वक्षमें बदबूदार पसीना होता है (साइलि, हिप, लाई, पेट्रोल)। दोनों अंसफलकोंके बीचवाले स्थानमें उत्ताप और जलन मालूम होना (ग्लोन)।

प्रत्यङ्ग आदि।—बायें कन्धेमें फाड़नेकी तरह दर्द; वृद्धि—रातमें (ग्रैफ, रोडो)। दोनों बाँह बहुत दुर्बल—रोगी जब हाथ हिलाना चाहता है, तो वह काँपा करता है। हाथ पतला पड़ जाता है (सेलिन); दोनों बाहुओंका काँपना (ऐण्टि-टार्ट, मर्क, प्लैट); अंगुलीके अगले भाग सब सुन्न हो जाते हैं और उनमें स्पर्श ज्ञान नहीं रहता। कभी-कभी अंगुलियाँ सब टेढ़ी पड़ जाती हैं—ऐंठनकी तरह (क्यूप्रम-ऐसेट)। हाथकी शिराएँ सब फूल उठती हैं (पल्स, ऐ-फ्लु, हैमा, ओपि)। तलहत्थीमें जलन; माथेके ऊपर और तलहत्थीमें लसदार पसीना हुआ करता है। हवा लगनेकी वजहसे दोनों घुटने अकड़ जाते हैं और घुटनेसे पैरतक दर्द हुआ करता है। आधे पैरकी सम्मुखास्थि फूल जाया करती है। पैरकी तलवेमें ऐसा दर्द होता है मानो चोट लग गई है। गर्भावस्थामें दोनों पैरोंमें फाड़नेकी तरह दर्द। संध्याके समय दोनों पैर फूल उठते हैं। दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे मालूम होते हैं। दोनों पैर रह-रहकर फड़क उठते हैं। हाथ और दोनों पैर सुन्न और जड़की तरह हो जाते हैं; गुल्फ-सन्धि फूली और उसके ऊपरवाली त्वचामें खींचन मालूम होना। किसी तरहका परिश्रम करना आरम्भ करते ही हाथ-पैर काँपने लगते हैं; कभी-कभी हाथ और दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे मालूम होते हैं। कमजोरीके कारण चलनेके समय बार-बार पैर फिसल जाते हैं। हाथ और दोनों पैर फूल उठते हैं और उनमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द अनुभव हुआ करता है।

सार्वाङ्गिक।—आलोक, गन्ध, स्पर्श प्रभृतिमें अधिकता होते ही रोगीको तकलीफ़ मालूम होने लगती है। फाड़ने और खींचनेकी तरह दर्द—जरा-सी सर्दी लगनेपर फिरसे पैदा हो जाता है; समूची देहमें ऐसा दर्द, मानो

आमवात पैदा हो गया है और हमेशा शरीरमें शीत मालूम होता रहता है, घरके बाहरकी निर्मल हवा सहन नहीं होती। बार-बार मूर्च्छा आनेका उपक्रम हो जाता है। रोगीकी मूर्त्ति म्लान और शरीर ठण्डा रहता है; एकाएक बेहोशी—रोगी मुर्देकी तरह पड़ा रहता है। मृगी रोगमें रोगीको ज्ञान रहता है (नेट्रम-मूर, कार्बोनि-आक्सिजन, इपिका, कैलि-कार्ब, स्ट्रिकनी)। पक्षाघातसे आक्रान्त अङ्गकी पेशीका सिकुड़ना-फैलना। पक्षाघात—रोगवाले अङ्गमें चींटी रेंगनेकी तरह सुरसुरी मालूम होती हैं (जेल्स, टैरेण्ट) और फाड़नेकी तरह दर्द, स्पर्श-ज्ञान शक्तिका लोप हो जाना (ऐनाक, कैम्फ, कैक्ट, कार्बोन-सल्फ, प्लम्ब, जिङ्क) और उत्तापकी अधिकता अनुभव होना (कोना)। स्लेष्माका अधिक सञ्चय होना। बगलकी ग्रन्थिकी बीमारी—ग्रन्थिमें सुई गड़नेकी तरह दर्द; रोगवाली ग्रन्थि गर्म हो जाती है और फूल उठती हैं। रक्त-स्राव-प्रवण धातु—सामान्य नखके व्रणसे भी अजस्रधारमें खून बहा करता है (क्रियो, लैके); सभी स्लैष्मिक-झिल्लीमय द्वारोंसे रक्त-स्राव हुआ करता है। हाथ-पैरोंमें और हाथ-पैरोंकी सन्धियोंमें वातका दर्द—दर्द फाड़ने या सुई गड़नेकी तरह; किसी-किसी जगह शीत लग जानेपर भी पैदा हो जाता है; वृद्धि—रातमें शय्यामें सोनेवाली अवस्थामें (कैलि-आयोड, रस)। हाथ-पैरोंमें जलन। अङ्ग-विशेषका एकाएक नीला हो जाना और सुन्न हो जाना तथा उस समय अङ्ग-सञ्चालनकी शक्ति भी न रहना; स्लैष्मिक-झिल्ली सब नीले रङ्गकी; रक्त-शून्य दिखाई देती है। सामान्य परिश्रमके बाद, विशेषकर प्रसव-वेदनाधिकारमें हाथ-पैर काँपा करते हैं। रोगी केवल दाहिने या निरोग करवटमें ही सो सकता है; बाईं या रोगवाली करवट सोनेपर तकलीफ़ बढ़ जाया करती है। माथेके खोलकी हड्डीका अर्बुद या हड्डी बढ़ना (अरम, कैल्के-फास, कैल्के-फ्लु, हेक्ला, मर्क, साइलि)। उरु-शिखरका प्रदाह; नासूरके जखमसे पानीकी तरह पीबका स्राव (कैलि-आयोड, ऐसिड-नाई, साइलिसिया) होता है। शीर्णता और क्षय-कास (ओलियेकर, वैसिलिन, आयोडम, लाई, सार्सा, साइलि, स्टैनम, सिफिलिन)। रोगी घरके बाहरकी शीतल हवा सहन नहीं कर सकता। सर्दी हो जानेवाली धातु। सर्दी लगते ही सरमें दर्द, दाँतमें दर्द, नयी सर्दी और ज्वर; कम्प इत्यादिका पैदा हो जाना। केश कटवाने और माथेमें सर्दी लगनेकी वजहसे बीमारियाँ (बेल, ग्लोनोइनम)। शीत उत्तापके बदले प्रत्यङ्ग आदिमें दर्दका पैदा हो जाना।

त्वचा।—शरीरमें दाह और जलन—मेरुदण्डके दोनों पार्श्वोंमें जगह-जगह और दोनों अंसफलकोंके बीचमें ; पीठके नीचेसे ऊपरकी ओर तेज़ उत्तापका पैदा हो जाना ; तलहत्थीमें जलन (लैके, सल्फ, कैन्थ, पेट्रोल, मिडोरिन) ; तीसरे पहर और सन्ध्याके बाद उत्तापकी वजहसे तलहत्थीमें जलन पैदा हो जाती है (सन्ध्या और रातमें—लैके ; हाथ खोल रखता है और हवा करनेको कहता है—मिडोरिन ; सन्ध्याके बाद तलहत्थीमें सूखी गर्मी पैदा हो जाती है और जलन मालूम होनेकी वजहसे रोगी ठण्डी जगह खोजा करता है (पल्स) ; वक्ष और फेफड़ेमें जलन (आर्स, कैन्थ, सैंगिविन) ; शरीरके भीतरके प्रत्येक तन्तु या यन्त्रमें जलन मालूम हुआ करती है (आर्स, सल्फ) ; साधारणतः स्नायु-विधानकी बीमारीमें ही ऐसा हुआ करता है। शरीरकी त्वचामें जलन और डङ्क मारनेकी तरह यन्त्रणा, रोगी बेचैन हो पड़ता है और एक जगहसे दूसरी जगहपर शान्तिकी खोजमें घूमा करता है। रक्त-स्फोटक। नाक, कान प्रभृतिकी भीतरवाली झिल्लीमें अर्बुद होकर उससे सामान्य कारणसे ही खून निकला करता है। कर्कटीय जखमसे जभी-तभी खून निकला करता है। सन्धि-प्रदेशमें रस-भरी फुन्सियाँ या छोटे-छोटे छाले सब निकलकर जगह-जगह भूरे दाग पैदा हो जाते हैं। जगह-जगह लाल बिन्दु या काले दाग दिखाई देते हैं (ब्राई, ह्रायो, लैके)। सूखी पपड़ी निकालनेवाले उद्भेद या पीव-भरे दाने निकला करते हैं ; जानु और कफोनी या कोहनीके सन्धि-प्रदेशमें विचर्च्चिका हो जाया करती हैं (आर्स, आर्स-आयोड, लाई, फाइटो, सिपि, आइरिस, मर्क, सैरासिन)। चेचकके दाने सब खूनसे भर जाते हैं (आर्स), रोगीका रक्त-स्रावी प्रकृतिवाला नासूरका घाव, सूजन ; स्राव—रसकी तरह पतला पीव, विलेपी ज्वर मिला। जो सब जखम अच्छे हो गये ऐसा मालूम होते हैं, वे सब फिरसे ताजे हो जाते हैं और उनमेंसे खून निकला करता है। कामला रोग (क्रोटेलस, लैकेसिस)। छोटे जखमोंसे घिरा बड़ा जखम (पीवसे घिरा हुआ बड़ा जखम—हिप)। आर्त्तव प्रकट होनेके बाद जखममें रक्त-स्राव हुआ करता है (जखम आदि बढ़ जाते हैं—ग्रैफ, पल्स)। खून बहनेवाला कोमल अर्बुद (लैके, थूजा, नेट्र-मूर, पल्स, साइलिसिया)। पैरकी अंगुलीके ऊपर दर्द-भरा कदर रोग या गट्ठा और अंगुलीमें बिवाई फटना (ऐगार, पेट्रोल ; गट्ठोंमें दर्द—पियोनिया) ; शीत पित्त या आमवात (आर्टिका)।

निद्रा।—औंघाई ; आँख खोलकर सोता है (कैमो, ओपि, काक्यु, मस्कस)। फेफड़ेके प्रदाहाधिकारमें,—आच्छन्नावस्था, माथेमें जलन पैदा करनेवाला उत्ताप मालूम होना और प्रलापकी वजहसे बुदबुदाया करता है ; मोहाच्छन्न भाव ; ओंठ सूखे, जीभ कालिमा चढ़ी और मुँह फाड़े रहता है (काले रङ्गकी जीभ—आर्स, ब्यूफो, इलैप्स, लैके, ओपि, सिकेलि, रस-टक्स)। दिनभर औंघाई आती रहती है और रातमें नींद न आनेकी वजहसे बेचैन हो पड़ता है, विशेषकर आधी रातके कुछ पहले रोगी बहुत ही बेचैन हो पड़ता है। उत्ताप मालूम होता है (बैराई) या शिरा आदिमें रक्तका वेग अधिक रहनेकी वजहसे या भूख लगनेकी वजहसे (इग्ने, लाई, सिंको, सोराइन, पल्स) प्रायः रातमें नींद टूट जाती है (लाई)। सवेरे ऐसा मालूम होता है कि अच्छी तरह नींद नहीं आयी या देह और अङ्ग-प्रत्यङ्ग आदि सुन्न और अवश हो पड़े हैं। सपनेमें घूमना (आर्टिमि-वाल, ब्राई, इग्ने, कैलि-फास, साइलि)। चित्त होकर या करवट होकर सो नहीं सकता (नक्स-वोम ; करवट होकर सोनेपर रोगका बढ़ना—कैल्के, कार्बो-ऐन, कैलि-कार्ब, लाई, स्टैनम)। निद्रित अवस्थामें रह-रहकर हाथ-पैर पटका करता है, रोगी रोता है, बकता है, नाना प्रकारकी यन्त्रणायें प्रकट करता है और बुदबुदाकर बका करता है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—आंत्रिक सान्निपातिक ज्वर। शीतावस्थामें—प्यास न रहना, सन्ध्याके आरम्भ कालमें शीत पैदा हो जाना ; सेंकने या आगकी गरमीसे भी नहीं घटता (मिनियैन, नक्स) ; ऐसा शीत मानो ठण्डे पानीमें देह डूबी हुई है ; गर्म कपड़ेसे ढँके रहनेपर भी जाड़ा घटा नहीं मालूम होता है (नक्स)। रोज़ सन्ध्याके समय कम्प—शरीरका कपड़ा नहीं उतारना चाहता। शीतके बाद उत्ताप और उत्तापके बाद फिर शीत ; इसी तरह पर्यायक्रमसे शीत और उत्ताप पैदा हो जाया करता है (आर्स) ; हाथकी सब शिराएँ फूल उठती हैं (चेलिडो, मिनियैन) ; बार-बार जम्हाई आती हैं और रोएँ खड़े हो जाया करते हैं ; शीत नीचेकी ओर उतरनेवाला होता है और उत्ताप निचले अंगसे ऊपरी अंगमें चढ़ता है (शीत निम्नगामी—वेरेट ; ऊर्द्धगामी—ऐको, हायो, आर्स, सैबाड ; हाथ और पैरकी अंगुलीसे वक्ष और माथेतक चढ़ जाया करता है—बेनजिनम ; उर्द्ध-गामी उत्ताप—सिना, नेट्र-म्यूर, सिपि)। रातमें सोनेवाली अवस्थामें दोनों जानु बहुत ठण्डे मालूम होते

हैं (एपिस, कार्बो-वेज, इग्ने, साइलि ; शीतावस्थामें जानुमें दर्द—साइमेक्स, पोडो ; शय्यामें सोनेके समय हाथ-पैर बरफकी तरह ठण्ढे मालूम होते हैं—सिनियैन)। उत्तापावस्थामें प्यास—रातमें उत्ताप और पसीनेके साथ राक्षसी भूख पैदा हो जाती है और किसी तरह नहीं मिटती (सिंकोना, उत्तापका वेग घटनेपर भूख—यूपेटोरियम ; कँपकँपीके पहले भूख लग आना—सिंकोना)। पसीनेवाली अवस्था—सारा शरीर पसीनेसे तर हो जाया करता है और थोड़ा भी परिश्रम करनेपर बहुत अधिक पसीना निकलता है। रातके अन्तिम भागमें, निद्रित अवस्थामें बहुत अधिक पसीना हुआ करता है (सिंको)। बहुत सुस्तो (वेञ्जिनम); गन्धककी तरह या लहसुनकी गन्धकी तरह गन्ध आनेवाला पसीना। पेशाब गदला और दूधकी तरह।

वृद्धि।—सन्ध्याके समय, आधी रातके पहले, बाईं करवट या रोगवाली करवट सोनेपर, अन्धड़-पानीके समय, शीत उत्तापके परिवर्त्तनसे, ठण्ढी हवा लगनेपर (वक्ष, कण्ठ और गलेकी बीमारियाँ); छूनेपर, विश्रामसे सोनेपर, चित सोनेपर (उदरामय और श्वास रोग); बैठनेपर, देह हिलानेपर, परिश्रमसे या चलनेपर, हँसनेपर, ऊँची आवाज़में बोलनेपर या पढ़नेपर, नींदके पहले, उत्तापसे, वस्त्र आदि धोनेपर, जलीय वायुमें, रोशनीसे, शब्दसे और संगीत ध्वनि सुननेपर।

उपशम। ठण्ढी हवा लगनेपर (माथा और मुँहकी बीमारियाँ), अन्धेरेमें, दाहिनी करवट सोनेपर, रगड़नेपर, चित्त होकर सोनेपर (फेफड़ेका प्रदाह और बाँहका दर्द); ठण्ढा पानी पीनेपर (जबतक यह पानी पाकाशयमें गर्म नहीं हो जाता), गर्म पानीमें हाथ डुबोनेपर (दन्तशूल) और ठण्ढे पानीमें रोगवाला अंग धोनेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष।—काफिया, नक्स-वोमिका, टेरिबिन्थ और कैलि-पार्मैंगानिकम, उत्तम पानीमें डाइल्यूटका बार-बार प्रयोग करना चाहिये।

अनुपूरक।—आर्सेनिकम और ऐलियम-सिपा, कार्बो-वेज, इपिकाक।

अनुकूल सम्बन्ध।—आर्स, बैप्टी बेल, ब्राई, कैल्के, कार्बो-वेज, सिंको, कैलि-कार्ब, लाई, नक्स-वोम, पल्स, रस, सिपि, सिलि, सल्फ।

प्रतिकूल सम्बन्ध ।—कास्टिकमके पहले या बादमें फास्फोरसका प्रयोग करनेपर नुकसान होता है।

सदृश ।—ऐ-नाई, ऐ-फास, ऐलूम, आर्स, कैल्के, सिङ्कोना, लाई, पल्स, साइलि, रस-टक्स, लैके, थूजा, एपिस, एकालिफा-इन, सल्फ, ऐनाका, नक्स-मस, प्लैट, आयोड, इपिका, हायो, इग्ने, लैक-डिफ्लो, कैन्थ, ऐण्टिम-टार्ट, स्टिक्टा, फेलैन।

तुलनीय । — खाँसीके बाद दमा—आर्स; अपनेको टुकड़े-टुकड़े अनुभव करना—बैप्टो। कमजोर करनेवाला रातका पसीना—चायना, लाइकोपोड; सवेरे पसीना—कैल्केरिया; जीभ चमकीली—लैकेसिस; अन्धकारमें भय—कैल्के, स्ट्रैमो; भूतका भय—पल्स; ऋतु-स्रावके समय अर्श—इग्ने, लैके, पल्स। सार्वाङ्गिक पक्षाघात—ऐगेरिकस; रातमें भूख—चायना, पल्स, इग्ने; बाईं ओरके डिम्बाधारमें दर्द—कोलोसिन्थ, लैके, ब्रायो। सपनेमें घूमना—कैनाबिस, सल्फर; मलद्वार खुला अनुभव—फास-एसिड, एपिस। खाये हुए पदार्थकी कै—सल्फ; रातमें लार बहना—नक्स, रस; पतले पदार्थ निगलनेमें कष्ट—लैके, लाइको; गम्भीर विषयमें हँसना—ऐनाका, लाइकोप, प्लैटिनम। मेदापकर्षके साथ कमरमें दर्द—पिक-ऐसिड; क्लान्तिकी वजहसे पक्षाघात अवस्था—स्टैनम। अस्थि-विकार--साइलि; युवकोंका यक्ष्मा—आयोड; स्वर-बद्ध स्वरनालीमें दर्द—कार्बो-वेज; क्षुद्र श्वासनली-प्रदाह—इपिकाक; अनुकल्प-रजः—ब्रायो, पल्स; सान्निपातिक अवस्था—रस-टक्स; मस्तिष्कको कोमलता—नक्स-वोम; पाखाना होने बाद कमजोरी—कोनायम, नक्स; सामान्य जखमसे भी बहुत रक्त-स्राव—लैकेसिस; खून-मिला मल, मांस धोये पानीकी तरह—कैन्थ; फेफड़ेकी यकृद्भाव-प्राप्ति—ऐण्टि-टार्ट, सल्फ, लाइकोप। सान्निपातिक ज्वरके बाद बहरापन—आर्स, पेट्रोलियम। कामोन्माद—कैल्के-फास, ओरिगेन; यक्ष्मा या गुटिका रोग—बैसिलिनम, टियुबरक्युलिनम; केश कटवानेका दुष्परिणाम—बेलेडोना।

शक्ति ।—तृतीय दशमिकसे १००० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व ।—४० दिन।

फास्फोरस हाइड्रोजिनेटस

(PHOSPHORUS HYDROGENITUS)

दूसरा नाम ।— फास्फिन, फास्फोरेटड हाइड्रोजिन, एक प्रकारकी गैस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पानीमें डालकर निम्नक्रम, सुरासारमें उच्च-क्रम तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—उदरामय, साफ़ न दिखाई पड़ना, अनुभूतिकी अधिकता, कशेरुका मज्जाके क्षयकी वजहसे चलनेकी शक्तिमें गड़बड़ी, तोतलाना, चबानेके समय दाँत सब टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़ते हैं (साइलि, क्रियो) ।

सम्बन्ध ।—दोषघ्न ।—इलेक्ट्रिसिटी (विद्युत-प्रवाह) ।

तुलनीय ।—आर्ज-नाइट्रि, ऐलियम, हेलोडर्मा, कार्बो-सल्फ ।

शक्ति ।—३०, २०० ।

फास्फोरस म्यूरियेटिकस

(PHOSPHORUS MURIATICUS)

दूसरा नाम ।—फास्फोरस, पेण्टाक्लोराइड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—चुआये हुए पानीसे निम्नक्रम और सुरासारमें उच्च-क्रम तैयार किया जाता है ।

उपयोगिता और आभास ।—आँखमें जखम मालूम होनेके लक्षणमें आँखोंका प्रदाह (आँख उठना) रोगमें और सर्दी, गला और छातीमें जखमका मालूम होना और श्वास-कष्टका लक्षण ; दमा रोगमें फायदेमन्द है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

फाइसैलिया

(PHYSALIA)

दूसरा नाम ।—फाइसेलिया-पेलाजिका ।

उपयोगिता और आभास ।—आर्टिकेरिया, शीत पित्त रोगमें यह मेडुसा और आर्टिका युरेन्सकी तरह एक लाभदायक दवा है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

फाइसास्टिग्मा

(PHYSOSTIGMA VENENOSUM)

दूसरा नाम ।—कैलेबार बिन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इस बीजका पहले विचूर्ण तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—स्नानका दुष्परिणाम ; पलकोंका आक्षेप और ताण्डव ; आँखकी पेशीका स्नायु-शूल ; कब्जियत ; वय:सन्धिकालकी बीमारियाँ ; दाँत निकलनेके समयकी बीमारी ; अतिसार ; आमरक्त ; अजीर्ण ; मृगी ; आँखकी बहुत-सी बीमारियाँ ; साधारण पक्षाघात ; अन्धापन ; बवासीर ; सर-दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; हिचकी ; मूर्च्छा-वायु ; आँखकी तारकाका अपने स्थानसे हट जाना ; प्रदर ; चलनेकी शक्तिमें गड़बड़ी ; नाभि-कुण्डका प्रदाह ; स्थानिक पक्षाघात ; मेरु-मज्जाका पक्षाघात ; क्रमश: बढ़नेवाली पेशियोंकी क्षीणता ; अवसाद ; अनिद्रा ; मेरुमज्जाकी उत्तेजना ; ग्रीवास्तम्भ ; धनुष्टङ्कार ; गलेका जखम ; गलेमें मानो मछलीका काँटा अड़ा हुआ है ; जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—असाधारण चिन्ता-शक्ति और भावकी अधिकता ; किसी तरहकी चिन्तासे छुटकारा नहीं पा सकता । तिमिर-दृष्टि—ऐसा मालूम होता है, मानो आँखके ऊपर किसी तरहका आवरण या पर्दा पड़ा हुआ है और सभी चीजें आपसमें जुड़ी हुई मालूम होती हैं । देखनेके कामके बाद आँखमें दर्द होता है ; आँखके सामने काले बिन्दु सब उड़ते देखते

हैं; रह-रहकर रोशनीकी शिखाएँ सब दिखाई देती हैं। पलक और आँखकी पेशियोंमें स्पन्दन मालूम होना; तेज़ीसे पलकोंका गिरना। पेशी-मण्डलीका सम्पूर्ण अवसाद, चलनेकी शक्तिका घट जाना। मानसिक या शारीरिक गड़बड़ीके कारण कम्पन मालूम होना। आप-ही-आप पैदा होनेवाला या चोटकी वजहसे धनुष्टङ्कार; रोगीके पाससे किसी मनुष्यके आने-जानेकी वजहसे वायु लगते ही आक्षेप पैदा हो जाता है या बढ़ जाता है। पक्षाघात—रोगी अपनी रोगिनी पेशियोंको किसी तरह भी अपनी इच्छानुसार नहीं चला सकता। बाएँ अङ्गका पक्षाघात, विशेषकर बाएँ बाँहका। चलनेके समय शरीर बहुत छोटा मालूम होता है, मानो शून्यमें उड़ रहा है। ठण्डे पानीका भय, ठण्डा पानी पीना या ठण्डे पानीमें नहाना नहीं चाहता। प्रदर—वृद्धि—दिनमें, व्यायाम या शारीरिक परिश्रमके बाद, विशेषकर दिनमें ४ बजनेके समय; बार-बार दीर्घ श्वास त्यागना। वृद्धि—प्रदर बढ़ जानेपर, इसके साथ ही ठण्डे पानीका भय मौजूद रहता है। अवसाद—ठण्डी स्निग्ध करनेवाली हवा लगनेपर और जलवायुके परिवर्त्तनसे; ये कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन ।—चिन्ता-शक्तिका बहुत बढ़ना, किसी तरह भी चिन्ताके हाथसे छुटकारा नहीं पा सकता (काफि)। निर्बोधकी तरह काम करता है और रोगी कहता है, कि उससे उसकी बुद्धिमें विकार हो जानेकी सम्भावना हुआ करती है। सवेरे चित्त बहुत ही प्रसन्न रहता है, पर दोपहरके बाद गम्भीर और विषादयुक्त हो जाता है। सभी विषयोंमें विशृङ्खलता ही दिखाई देती है; घरमें मानो बहुतसे द्रव्य भरे पड़े हैं और रोगी मानो उन्हें बार-बार गिना करता है और कहता है—"यह चीज़ यहाँ क्यों रखी हुई है?।" थोड़ेमें ही कातर हो पड़ता है—थोड़ी-सी तकलीफ़ भी असह्य मालूम होती है (ऐको, काफि, कैमो); काममें अनासक्ति प्रकट करता है (ऐनाक, ऐगार, आक्साइड्रोप, ऐ-नाई, सिपि, टैराक्स, जिङ्कम)। किसी विषयमें मन नहीं लगा सकता या एकाग्र चित्त नहीं हो सकता (ऐ-ऐक्साल, ऐ-फास, इथ्यू, ऐलेङ्गिस-फेरि, ऐवेना-सैट)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना; शरीर हिलानेके समय मूर्च्छाका उपक्रम; आँखके सामने उड़ते हुए काले बिन्दु सब दिखाई देते हैं; पढ़नेके

समय, संध्याके भोजनके बाद, आसनसे उठनेपर और चलनेके समय सरमें चक्कर आना ; सीढ़ीसे उतरनेके समय सरमें चक्कर आया करता है। शरीर टलमलाता है और आँखसे धुँधला दिखाई देता है ; चलनेके समय ऐसा अनुभव होता है, मानो मस्तिष्कमें तरंगें उठ रही हैं, दोनों चक्षुगोलकोंके ऊपरी प्रदेशमें या भौंहोंमें असह्य दर्द (लिथिया-कार्बो, लैक-डिपलो, सैंगिविन, जेल्स, सिफाइट, नेट्र-फास, टैबाक)। सरमें जगह-जगहपर बेधनेकी तरह दर्द—सैङ्गिविन ; हिलानेसे बढ़ना (बार्बे, हाइड्रैस्ट)। दिनभर माथेमें ऐसा दर्द होता है, मानो चोट लग गई हैं (कैप्स, जेलस, इग्ने, नक्स, जिंकम), विशेषकर जोरसे पैर रखनेपर ; बाईं कनपटीमें दर्द अधिक होना (चलने और माथा हिलानेपर बढ़ना—कैप्स, सिंको) और सारे शरीरमें सुस्ती और शीत-कातरता मालूम हुआ करती है। माथेमें कसावटका भाव, मानो माथेमें एक टोपी कसी हुई है या मानो किसी वस्त्रसे माथा कसकर बाँधा हुआ है (ऐ-कार्बोल, ऐ-नाइट्रिक, काक्यु, साइक्लेमेन, जेलस, हिप, आयोड, सल्फ, टेरिब)। संध्याके समय सङ्गीत ध्वनि सुननेपर सरमें दर्द पैदा हो जाया करता है, विशेषकर ललाटमें और कनपटीमें (काफिया, फास, पोडो)। अधकपारी या एक पार्श्वका सर-दर्द ; कहीं दर्द बढ़ न जाय, इस भयसे रोगी आँख खोलना नहीं चाहता (ब्राई, नक्स) ; बहुत देखनेपर सर-दर्द पैदा हो जाता है (कैल्के, सिना, जेलस, हैमा, जैबोरैन, नेट्रम-म्यूर, ऐ-फास, रस, रियुटा)। सर-दर्द रोगाधिकारमें रोगीको चिन्ता-शक्ति इतनी बढ़ जाया करती है कि किसी तरह भी उस चिन्तासे छुटकारा नहीं पा सकता (सर-दर्दकी वजहसे चिन्ता-शक्तिका लोप हो जाना—साइमेक्स ; सर-दर्दके विषयमें सोचनेपर अच्छा रहता है—साइक्लूटा ; अन्य-मनस्क रहनेपर अच्छा रहता है—मर्क-प्रोटो ; सोचनेपर दर्द बढ़ जाता है—आर्जेण्ट-नाई, कैल्के, कैल्के-फास, पैरिस, स्पाइजि)। गलेकी धमनी और ललाट या कनपटीकी दोनों धमनियोंमें टपक हुआ करती है (बेल, कैमो, ग्लोन, लैके, नेट्र-म्यूर ; सोनेपर हृत्पिण्डका आघात माथेमें अनुभूत होता हैं—बेल ; समूचे माथेको घेरकर दबाव मालूम होना और औंघाई—जिन्सेङ्ग)।

आँख ।—आँखोंमें प्रदाह ; पहले दाहिनी और फिर बाईं आँखमें प्रदाह होता है (तीसरे पहर पहले दाहिनी और फिर बाईं आँखपर आक्रमण—बैडी)। घनत्वक या आँखका बाहरी आवरण या सफेद अंश सूखा लाल और

फूला दिखाई देता है (लाल—अरम, आरम-मूर, मैग-मूर, मर्क, सल्फ), चक्षुगोलकमें दर्द और उत्तेजना ; पलकें ऐसी मालूम होती हैं, मानो त्वचा क्षय हो गयी है। समूचे तीसरे पहर दोनों काली आँखें गहरे लाल रङ्गकी दिखाई देती हैं और जलन होती है (बेल)। रोगीको पढ़नेके समय वाध्य होकर एक आँख बन्द कर लेनी पड़ती है। कुछ टेढ़े काँचवाले चश्मेका व्यवहार करनेपर वह शान्त हो जाया करता है। किसी चीजकी ओर देखनेपर चमकीले बिन्दु सब दिखाई देते हैं ; पढ़नेके समय दो-एक अक्षर मानो गाढ़े पीले रङ्गके बिन्दुसे ढँके मालूम होते हैं (पुस्तकके समूचे पृष्ठ लाल, पीले, हरे और अन्यान्य रङ्गोंके बिन्दुमय दिखाई देते हैं—लैक-कैन ; अक्षरके चारों ओर इन्द्रधनुषकी तरह कितने ही तरहके रङ्गोंके वृत्त दिखाई देते हैं—साइक्यूटा) ; ऐसा अनुभव होता है, मानो आँखें दब रही हैं और ऐसा दिखाई देता है, मानो आँखके सामने काले बिन्दु सब उड़ते दिखाई देते हैं और चमकीले सूक्ष्म केंचुए या साँप सब उड़ते हैं (ऐसा दिखाई देता है, मानो अनगिनती साँप उड़ रहे हैं—आर्जेण्ट-नाई ; मानो रोगिनीकी दाहिनी आँखके सामने काले साँप सब चारों ओर उछलते-कूदते दिखाई देते हैं—काण्डियुरैङ्गो ; मानो एक साँप देख रहा है—जेलस)। आँखमें तेज़ बेधनेकी तरह और इस ढङ्गका दर्द मानो चक्षुगोलक ऐंठ रही हैं। एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वमें आँख हिलानेपर बहुत दर्द होता है (ब्राई, जेलस, नेट्र-मूर)। दाहिने चक्षुगोलकमें तेज सुई गड़नेकी तरह दर्द (बेल, हाइपिर, चेलिडो, लिथिया, जिङ्कम) ; निर्मल वायुमें आँख हिलानेपर घटना। दृष्टिकी अस्वच्छता, मानो चारों ओर कुहरा या आँखके सामने कोई पतला पर्दा पड़ा हुआ है, ऐसा मालूम होता है (मैली दृष्टि—जेल्स, नेट्र-मूर, लिलि-टाई, टियुक्रि, सोरिन ; मानो चारों ओर अन्धकारमें ढँका है—बेल, जेलस, पेट्रोल, ग्लोन, काइङ्का, फार्मिका ; मानो आँखके ऊपर प्रलेप है—ऐमिल, लैक-कैन)। पलक, विशेषकर बायीं आँखकी ऊपरी पलकमें, बहुत भार मालूम होना और यदि कोई उसे उठाता है, तो रोगीको बहुत तकलीफ होती है (सीसेकी तरह भारी मालूम होना—नेट्र-सल्फ ; बाईं आँखकी ऊपरी पलक भारी मालूम होती है—लैक-कैन ; ऊपरी पलक बड़े कष्टसे उठायी जाती है—सल्फ, कार्डियुअस-मेरी, वेरेट, कास्टि, कोलो, सिपि) ; बायीं ऊपरी पलकका फड़कना (साइक्यूट, कोडेइन, जैबोरैण्डो, ओलियम-ऐनि, मर्क्युरियेलिस-पेरेन)। ऐसा अनुभव होना मानो पलकें बहुत संकुचित हो गई हैं और इसी वजहसे

आँख खोलनेमें बहुत तकलीफ होती है (मर्क, प्लम्ब, सल्फ) और पूरी तरह आँख खोलनेपर आँसू गिरा करते हैं (कैलि-बाई); बाईं आँख सहजमें नहीं खोल सकता। कनीनिकाका संकोचन—सवेरे; आलोकका सहन न होना और रह-रहकर पुतली सिकुड़ा करती है, इसके बाद ही पुतली फैल जाती है, विशेषकर सवेरे। अदूर-दृष्टि (फास)। आँखमें चोटकी वजहसे चक्षुमुकुरका स्थान भ्रष्ट हो जाना।

कान।—कानमें बेधनेकी तरह तेज़ दर्द। लिखनेके समय दाहिने कानमें दर्द। संध्याके समय दाहिने कानमें टपककी तरह दर्द और कानके बाहरी स्थानपर ऐसा मालूम होता है, मानो गर्म वायु लगी है; पटहमें दर्द पैदा करनेवाला दबाव मालूम होता है। दाहिने कानमें गड़बड़ी मालूम होनेकी वजहसे रोगी उसमें अंगुली डालकर खुजलानेके लिये बाध्य होता है; कानका मैल बाहर निकालने बाद कानमें दर्द; डकार आनेपर गलेके भीतरसे कर्ण-पश्चान्नली होकर मध्य-कर्णतक एकाएक दर्द पैदा हो जाता है। बायें कानमें सुरसुरी, मानो उसमें कोई कीड़ा रेंग रहा है। ऐसा अनुभव होना मानो कानमें ताला लगा हुआ है (ग्लोन, लैके, स्पाई); दाहिने कानका आंशिक बहरापन (लैके, मिडोरिन)। रातमें सोनेपर कानके भीतरसे ऐसी सों-सों आवाज़ निकलना, मानो भाफ़ निकल रही है।

नाक।—पतली सर्दीका स्राव, बार-बार छींक और दोनों नासा-पुटोंमें जलन, खुजली और उत्तेजना अनुभव हुआ करती है; नाक गर्म; ऐसा अनुभव होना मानो बन्द हो गई है; नाक फड़का और आप-ही-आप फैला करती हैं। दाहिने रंध्रमें छोटे-छोटे फोड़े निकलना; रातमें खाते-खाते नाकसे खूनका स्राव। नाकके अगले भागमें उत्तेजना, मानो गरमी लगकर जल गया है। नाक और ललाटकी त्वचामें बहुत खींचन मालूम होती है। नथुनोंके ऊपर ज्वरके बादका जखम निकलता है।

मुख-विवर आदि।—जिन बच्चोंके दाँत निकल रहे हों, वे ज्योंही स्तनका दूध पीना आरम्भ करते हैं, त्योंही उनकी पाकस्थलीमें दर्द पैदा हो जाता है, पर कुछ देरतक पीते रहनेपर फिर नहीं रहता। जीभका अगला भाग जखमसे भरा मालूम होता है। जीभके अगला भाग और जीभके बायें पार्श्वमें ऐसी उत्तेजना रहती है, मानो वे दग्ध हो गये हैं। गल-ग्रन्थि और कोमल तालु घोर लाल रहते हैं। गलेमें जलन और त्वचा क्षय हो जानेकी

तरह मालूम होना। गल-ग्रन्थि बढ़ी हुई और अलि-जिह्वा फूली और लम्बी। कण्ठमें ऐसा मालूम होता है मानो मछलीका एक कांटा अड़ा हुआ है (एपिस, हिपर, लैकेसिस); निगलनेमें बहुत तकलीफ मालूम होती है। गलेमें ऐसा मालूम होना मानो एक गुल्म उठ रहा है (ऐसाफिट, इग्ने, कैलि-फास, कैल्मिया वेरेट्रम)। हृत्पिण्डकी धमक कण्ठमें अनुभूत होती है।

पाकस्थली। भूख रहते भी कोई चीज अच्छी नहीं मालूम होती। सभी खाद्योंमें, धूम्रपान और ठण्डे पानीय पीनेसे अरुचि। भोजन समाप्त करते ही भयानक दर्द पैदा हो जाता है। गर्म डकार और पाकस्थलीमें जलन। पाकस्थलीमें भार मालूम होना, मानो उसमें अजीर्ण खायी हुई चीज रखी है। उदरके ऊपरी प्रदेशमें ऐसा मालूम होता है, मानो अन्नका एक बड़ा ग्रास निगल गया है।

अन्त्राशय।—कुक्षिदेशमें (कोखमें) अस्त्र वेधनेकी तरह यन्त्रणा। प्लीहा प्रदेश कड़ा और जखम भरा मालूम होता है यह दर्द पुट्ठे और समूचे तलपेटमें चला जाता है; शरीर हिलानेपर बढ़ना। नाभि-प्रदेशमें बहुत दर्द और स्पर्श असहनीयता मालूम होती है (नाभि-प्रदेशमें मानो फोड़ा निकल रहा है—प्लम्ब; नाभिमें स्पर्श सहन न होना और बराबर दर्द होता है—कैल्केरिया-फास)। उदरके बायें पार्श्वमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द। पेट फूल उठता है और उसमें कुलकुल गुड़गुड़की आवाज़ होती है और बहुत ज्यादा आध्मान वायु निकला करता है। दर्द बाईं कोखसे ऊरुतक फैल जाता है।

मलान्त्र और मल।—मलका पतलापन, बहुत, कोमल और पतला; पानीकी तरह पीली आभा लिये; पित्तमय, कुछ अंश स्वाभाविक और कुछ अंश अलकतराकी तरह काला (लेपटैन, मर्क, नक्स, पोडो, फास, ओपि, प्लम्ब) कभी-कभी जल मिला सारमल; बदबू। मलान्त्रकी निष्क्रियताकी वजहसे कब्जियत। मलद्वारावरोधक पेशी फूली और अप्रसारणीय—पाखाना होनेमें बहुत तकलीफ, मलान्त्र बाहर निकल पड़ता है, फूल जाता है और बहुत दर्द मालूम होता है। प्रसवके बाद यन्त्रणादायक अर्श (हैमा, इग्ने, कैलि-कार्ब, लिलि-टाई, नक्स-वोम, पोडो, सल्फ)। बहुत दिनोंके बाद अर्शका फिरसे पैदा हो जाना।

पेशाब।—मूत्र-ग्रन्थि-प्रदेशमें बहुत दर्द और स्पर्श-कातरता मालूम हुआ करती है (कैक्टस, मैन्सिनेला, पैरिरा-ब्रैवा)। मूत्राशय मानो बहुत देरसे फैला हो नहीं है इस प्रकार प्रसारित हुआ करता है (इक्विसेटम, एपिस, ओपियम)

बार-बार पेशाबका वेग होता है परन्तु प्रतिबार पेशाब नहीं होता (चिमैफिला-ऐम्बेल)। बार-बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब। पीला रङ्ग, घोर पीला रङ्ग, तेज़ गन्धवाला, निर्मल, गदला, फीका रङ्गका बहुत पेशाब।

पुं०-जननेन्द्रिय।—जननेन्द्रिय प्रदेशमें तेज़ गन्ध वाला पसीना (डायस्को, पेट्रोल, थूजा); मेढ्रत्वक दर्द भरा और फूला (सिनेबार, कोरैल-रूब, नेट्र-कार्ब, थूजा); लिङ्गमणिके ऊपर खुजली और जलन करनेवाले दाने। दोपहरके पहले लिङ्गमें कड़ापन, पर रमणकी इच्छा बहुत कम (प्रबल आकांक्षाके साथ क्षीण कड़ापन—फास; किसी तरहका स्वप्न या उत्तेजनाके बिना ही रेतःस्खलन या शुक्रक्षय—डिजिटेलिस, डायस्कोरिया)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायुमें दर्द—मानो रजस्वला होनेकी तैयारी है (तलपेटमें ऐसा दर्द मानो, ऋतु होगा—वाइबर्न-ओप, सिना, क्रोकस, लैमियम-ऐल, मैग-कार्ब, मस्कस, ऐ-म्यू)। ऋतु होने बाद कलेजा धड़कना (ऐ-नाई, कैक्टस, क्रोकस, इग्ने, नेट्र-म्यूर, फास, टैबाकम); आँखमें अधिक रक्त-सञ्चय और प्रबल स्पन्दन, दीर्घ निश्वासकी तरह श्वास-प्रश्वास। प्रदाह; दिनमें, विशेषकर दिनके ४ बजनेके समय, शारीरिक परिश्रमसे बढ़ जाता है, बार-बार दीर्घ निश्वास निकला करता है; प्रदरका स्राव जितना ही बढ़ता है, दीर्घ श्वास भी उतना ही अधिक हुआ करता है। जरायुसे रक्तका स्राव।

श्वास-यन्त्र।—कण्ठके भीतर उत्तेजनाकी वजहसे बार-बार खाँसी; वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। श्वास लेनेके समय बाएं फेफड़ेके शिखरदेशमें धीमा-धीमा दर्द होता है—घटना—दबा देनेपर (रियुमेक्स); सांस छोड़नेपर पृष्ठ-फलकके निचले कोनेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होना। बाएँ स्तनमें सुई गड़नेकी तरह दर्दकी वजहसे लम्बी सांस नहीं ले सकता। भयानक हृद्स्पन्दन—हृत्पिण्डका स्पन्दन समूचे शरीरमें अनुभव होता है (ग्लोन, नेट्र-म्यूर, स्पाइजि, एपिस)। निर्मल स्निग्धकर वायु लगनेपर मानो साँस रुक जाना चाहती है। बाईं करवट सोनेपर हृत्पिण्डकी क्रिया अनियमित हुआ करती है, चित्त होकर सोनेपर घटना (मस्तिष्क-मेरु मज्जाकी प्रदाहाधिकारमें)।

गर्दन और पीठ।—मस्तिष्ककी जड़में दर्दकी वजहसे ऐसा मालूम होता है मानो शरीर विच्छिन्न हुआ जाता है। गर्दनकी अकड़न। सवेरे

स्नान करते-करते एकाएक गलेका दाहिना पार्श्व जकड़ जाता है। माथा घुमानेपर गर्दनमें खींचन मालूम होती है। गलेके बायें पार्श्व और बाएँ कन्धेमें वातकी वजहसे पैदा हुआ दर्द। कमर बहुत क्षीण मालूम होती है—रोगी सीधा खड़ा नहीं रह सकता (अकेला खड़ा नहीं रह सकता—ऐ-सल्फ; बच्चा चलना नहीं सीखता—ऐलियम-सैट; चित्त होकर सो नहीं सकता—एपिस); चोट आदिकी वजहसे पैदा हुआ नया मेरुमज्जाका प्रदाह। मसानेके पीछेवाले पीठके भागमें लगातार दर्द रहनेकी वजहसे रोगी रातभर बेचैनी प्रकट करता और छटपटाया करता है (कैल्के-फास, चिमैफिला-इपोमिया, सिफिलिन); किसी भी अवस्थामें उसे आराम नहीं मालूम होता। बहुत ज्यादा वर्णहीन पेशाब हुआ करता है। नितम्ब और बायें उरुशिखर प्रदेशमें धीमा भार पैदा करनेवाला दर्द। त्रिकास्थिके बायें भागमें दर्द, मानो कोई भारी चीज़ उठानेके कारण मोच खा गया है—शरीर हिलानेपर बढ़ना।

प्रत्यङ्ग आदि।—हाथ-पैर आदि बहुत सुन्न मालूम होते हैं, मानो बहुत परिश्रमकी वजहसे थकावट आ गयी; ढलमलाती हुई गति। हाथ और पैरका अगला भाग ठण्डा। कलाई बहुत पतली और उसमें धीमा-धीमा दर्द होता है। बाएँ कन्धेमें तेज़ बेधनेकी तरह दर्द (बेल, कैल्के, रस-टक्स, आयोडोफार्म)। बाईं तलहत्थीमें खुजली। कभी-कभी तलहत्थीमें भयानक जलन हुआ करती है। दाहिने कन्धेकी त्रिकोण पेशीमें दर्द (कास्टि, बैराइ-कार्ब, आर्टिका-इयु, सिड्रन, कोडिइन, सैङ्गिविन, रोडो), केवल जोरसे हाथ हिलानेपर आराम मालूम होता है (कास्टि), लगातार हाथ हिलाते रहनेकी इच्छा। चलनेके समय, विशेषकर आँख बन्दकर चलनेपर जानु और उसका निचला अंश ढलमलाया करता है।

सार्वाङ्गिक।—सारा शरीर अवश मालूम होता है, मानो उसकी इच्छाके अधीन नहीं है। पेशी-मण्डलीका आक्षेपिक स्पन्दन। समूची देहको हिला देनेवाला प्रबल कम्पन। पेशीमण्डलीका सम्पूर्ण अवसाद, ठण्डे पानीसे भय मालूम होनेकी वजहसे नहाता नहीं है (पानी देखनेसे ही ओकाई आती है, इसीलिये आँख बन्दकर नहाता है—फास, लिसिन)। सारे शरीरमें जड़ता और दर्द, मानो सर्दी लग गयी है, इसी वजहसे चलनेके समय पैर उठानेपर मानो शून्यमें उड़ जायगा, क्षणभरके लिये ऐसा ही मालूम होता है (ऐ-फास, फास) और उस पैरसे जमीन छूते ही देह सिहर उठती है। पेशीमण्डलीका

पूर्ण अवसाद और चलनेकी शक्तिका न रहना (जेल्स)। मानसिक या शारीरिक विकारकी वजहसे कम्पन। स्वयम्भूत या चोट आदिके कारण धनुष्टंकार—सामनेसे किसी आदमीके जानेपर उसकी हवासे दुबारा अकड़न पैदा हो जाती है (हाइपि, लिसिन, स्ट्रिक)।

निद्रा।—दुर्दमनीय औंघाई, आच्छन्नावस्था। निद्रितावस्थामें चिन्ता-शक्तिकी प्रबलताकी वजहसे रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि वह सोरहा था।

शीत, उत्ताप और पसीना।—ज्वराधिकारमें जरा भी शीतावस्थामें हिलनेपर या साधारण-सी हवा लगनेपर शरीरमें सिहरावन हो उठती है और शरीर कण्टकित हो उठता है। हाथ और पैर बरफकी तरह ठण्डे। शरीरमें गोंदकी तरह पसीना हो जाता है, मुँह और माथेमें उत्ताप मालूम होता है। हाथमें जलन। थोड़ा भी परिश्रम करनेपर पसीना निकलता है। समूची देहमें बूंद-बूंद पसीना। जननेन्द्रिय-प्रदेशमें तेज़ गन्धवाला पसीना होता है और सारे शरीरमें बहुत अधिक पसीना होता है।

वृद्धि।—अंगुलीसे दबानेपर, गिरनेपर, चोट लगनेपर, शरीर या रोग-वाला अङ्ग हिलानेपर, सीढ़ीसे उतरनेके समय, चलनेके समय, पैर फिसलनेपर, बाईं करवट सोनेपर, तीसरे पहर ४ बजनेके समय, रातमें, ठण्डे पानीसे नहानेपर और जलवायुके परिवर्त्तनसे।

उपशम।—चित्त सोनेपर, दाहिनी करवट सोनेपर, निर्मल वायु लगनेपर, आँख बन्द करनेपर, नींदके बाद (हिचकी), दोनों पैरोंमें उत्ताप और सरसोंका प्रलेप लगानेपर।

सम्बन्ध।—**प्रतिविष या दोषघ्न**।—ऐट्रोप, क्लोरैल, काफिया, आर्निका।

अनुकूल सम्बन्ध।—ऐमिल-नाई, कोना, जेल्स।

तुलनीय। - पक्षाघातमें—लैथाई, कोनायम, जेल्स ; हृत्पिण्डकी बीमारीमें—फास्फोरस ; मेरुमज्जाकी उत्तेजनामें—ऐक्टिया-रेसि ; आक्षेप—नक्स, स्ट्रिकनाइन ; धनुष्टङ्कार—पैसिफ्लोरा।

सदृश।—ऐगार, मस्कैरिन, बेल, कास्टि, कैमो, कोना, कुरारी, जेल्स, नक्स, पैसिफ्लो, सोलेनम, लैथाइरस, आक्साइट्रोप, स्ट्रिकनाइन, सिनारेरिया, रियुटा, जैबोरैण्डी, बेल, जिनसेङ्ग, इग्ने, सैङ्गिविन।

शक्ति ।—तृतीय दशमिकसे ३० या २०० शततमिक क्रमतक ।

फाइटोलैक्का
(PHYTOLACCA DECANDRA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़, पके फल और ताजे पत्तोंसे मूल अर्क तैयार किया जाता है। इसके सारांशको—"फाइटोलिसिन" कहते हैं।

लक्षणावली ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—गर्भ-स्रावकी आशंका ; अण्डलाल मिला पेशाब ; हृतशूल ; दमा ; मलद्वारका फटना ; फोड़ा ; हड्डीकी बीमारी ; स्तनकी बीमारी ; कर्कट रोग ; विसूचिका ; कब्जियत ; मेदाधिक्य या स्थूलता ; खाँसी ; दाँत निकलना ; अतिसार ; उप-झिल्ली-प्रदाह ; दो देखना ; आमातिसार ; रक्तामाशय ; वाधक ; कानकी बहुत सी बीमारियाँ ; ग्रन्थियोंका बढ़ना ; प्रमेह ; जीभका प्रदाह ; पुराना मेह ; क्षुद्र-सन्धिवात ; आँखोंका प्रदाह ; अर्श ; सर-दर्द ; हृत्पिण्डकी बहुत-सी बीमारियाँ ; ध्वजभङ्ग ; बहुव्यापक सर्दी ; ज्वर ; खुजली ; खुजलाहट ; स्तनके दूधमें विकार ; श्वेत-प्रदर ; स्वरनलीका आक्षेप ; यकृतकी बीमारी ; मलद्वारका कटिवात ; पाराके अपव्यवहारकी वजहसे बीमारियाँ ; मुँहका जखम ; कर्ण-शूल ; स्तनमें जखम ; अण्डकोषका प्रदाह : पूतिनस्य ; उप-झिल्लीके बादवाला पक्षाघात ; मूत्राधार मुखशायिका ग्रन्थिकी बीमारी ; मलद्वारका कर्कटीया जखम ; वात ; दर्द ; नासा-स्राव ; गृध्रसी या पैरमें झुनझुनीवाला वात ; नालीकी बदबूदार भाफ घुसनेके कारण विष फैल जाना ; मेरुमज्जाकी उत्तेजना ; प्लीहामें दर्द ; गर्दन अकड़ना ; उपदंश या धनुष्टङ्कार ; गलेका जखम ; दाँतका दर्द ; अर्बुद ; नाना प्रकारके जखम ; जरायुकी बीमारी ; मसे इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—गलेका जखम, उपझिल्ली-प्रदाह वगैरह रोगोंमें नकली झिल्ली घुमैले रङ्गका और गाढ़ा गोंदकी तरह और डोरीकी भाँति कड़ा कफ निकलता है। जलवायुके प्रत्येक परिवर्त्तनमें पैदा होनेवाला उरु और उरु-शिखर-प्रदेशका वात। उपदंश विषके कारण उत्पन्न अस्थिगत वेदना, स्तन-प्रदाह इत्यादि रोग सब इसके अन्तर्गत हैं। इसके कई

प्रधान निर्णायक लक्षण आगे लिखे जाते हैं:—(१) चिलक मारनेकी तरह और तेजीसे इधर-उधर हटनेवाला तेज दर्द, यह दर्द बेधने और चोट पहुँचानेकी तरह होता है और तेजीसे एक जगहसे दूसरे स्थानपर आक्रमण करता है (लैक-कैन, पल्स, कैलि-बाई); वृद्धि—रोगवाला अंश हिलानेपर और रातमें। (२) जीवनसे बिल्कुल उदास रहना ; रोगीको स्थिर विश्वास रहता है कि अवश्य ही उसकी मृत्यु हो जायगी। (३) सरमें चक्कर आना ; शय्यासे उठनेके समय ऐसी सुस्ती आ जाती है, कि बेहोश हो जायगा। (४) माथे और कमरमें तेज दर्द ; सारे शरीरमें बहुत दर्द, स्पर्श सहन न होना और अवश मालूम होना ; देह और हाथ-पैर हिलाते रहनेकी लगातार इच्छा (कास्टि), परन्तु उससे उसकी तकलीफ बढ़ जाती है (लैक-कैन, मर्क)। (५) बच्चोंको दाँत निकलनेके समय, लगातार मसूढ़ेसे मसूढ़ा और दाँत-पर-दाँत रगड़नेकी इच्छा (पोडो)। (६) कण्ठका भीतरी भाग गहरा लाल या बैंगनी रङ्गका ; कोमल तालु या गल-ग्रन्थिका फूलना ; गलेमें ऐसा अनुभव होना मानो एक गोला अड़ा हुआ है। अलिजिह्वा बढ़ी हुई, शोथ-युक्त और चमकीली (कैलि-बाई, रस)। उपझिल्ली-प्रदाह—निगलनेके समय कण्ठसे कानतक दर्द और जिह्वामूलमें भयानक यन्त्रणा अनुभव होना ; गलेमें मानो एक प्रज्वलित लोहेका टुकड़ा या अङ्गारा रखा हुआ है, इसी तरहकी जलन मालूम होना ; सूखापन ; हाथका काँपना और निगलनेमें कष्ट, गल-ग्रन्थि, अलिजिह्वा और तालुमूल भूरे रङ्गकी नकली झिल्लीसे ढँका दिखाई देता है, गर्म पतली चीजें निगल नहीं सकता (लैके)। मुँह और कण्ठमें गाढ़ा गोंद की तरह और डोरीकी तरह दृढ़ और कड़ा या लसदार श्लेष्मा भरा रहता है ; कभी-कभी यह श्लेष्मा लम्बे सूतके आकारमें मुँहसे बाहर निकलकर झूलता रहता है और सहजमें ही हटाया नहीं जा सकता। डिफ्थीरिया और आरक्त ज्वरके बाद गलेकी बगलवाली और निचले हनुकी नीचेकी ग्रन्थियाँ सब फूल जाती हैं और कड़ी हो जाती हैं। रमणियोंका स्तन कड़ा और स्पर्श-असहिष्णु रहता है और गुटिकापूर्ण रहा करता है। असमयमें ही स्तन गाल फट जाता है ; फूले और गुटिका-पूर्ण स्तनमें पीब पैदा हो जानेकी आशङ्का ; बच्चा माताका स्तन पीता है तो स्तनसे तेज दर्द पैदा होकर सारे शरीरमें फैल जाता है (पीठमें फैलता है—क्रोटोन-टिग ; जरायुमें जाता है—पल्स, साइलिसिया)। व्रण और विस्फोटक—उनमें भयानक जलन ; वृद्धि—रातमें।

लक्षणावली

मन ।—अपने जीवनके प्रति एकदम उदासी प्रकट करता है (सिङ्को, मर्क, ऐ-फास), रोगीका स्थिर विश्वास कि उपस्थित रोगसे उसकी अवश्य मृत्यु हो जायगी (ऐको, कैन्थ, कूप्रम-ऐसेट, थूजा)। प्रलाप बकता है (ऐकोन, बेल, हायो, स्ट्रैमोन)। मानसिक परिश्रमसे कातर (सिङ्को, नक्स, फास)। लज्जाका लेश मात्र भी नहीं रहता और किसीके सामने भी अपना अङ्ग खोलनेमें जरा भी संकोच नहीं करता (कैन्थ, पैलेड, वेरेट, हायो)। थोड़ेमें ही कातर। किसी तरह भी पथ्य ग्रहण नहीं करना चाहता।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आनेके साथ ही दृष्टिकी अस्पष्टता ; गिर जानेकी सम्भावना हो जाती है (ग्लोन, जेल्स, स्पञ्जि, टेरिब ; डरता है कि कहीं गिर न जाये—कैलि-सल्फ, लाई, मिडोरिन) ; शय्यासे उठनेके समय सुन्न हो पड़ता है (नेट्र-म्यूर, ओपि, ब्राई), ढलमलाया करता है (नक्स-वोम, कार्बो-ऐन, सिपिया, स्ट्रैमोनियम)। सरके पिछले भागमें और गलेमें दर्द। एक पार्श्वका सर-दर्द या अधकपारीका दर्द (कैमो, सिलि, कैलि-बाई, लैक-डिफ्लो)। प्रबल सर-दर्द—ललाटमें ही दर्द अधिक रहता है, कमरमें दर्द और जरायु और आँतोंमें नीचेकी ओर खींचन भी मालूम होती है, एक सप्ताहके अन्तरसे सर-दर्द पैदा हो जाता है (प्रति तीसरे दिन—सैङ्गिविन ; प्रत्येक दो या तीन सप्ताहका अन्तर देकर—फेरम ; प्रत्येक सातवें दिन—सैङ्गिविन, साइलि, सलफर ; प्रति सप्ताह—फास ; प्रत्येक शनिवारको—सिपि ; एक पक्षका अन्तर देकर--इग्ने ; प्रति दो सप्ताहका अन्तर देकर—निकोलम ; शीतकालमें फिरसे पैदा हो जाना—बिस्मथ) ; सारा शरीर अवश और ऐसा दर्द होता है मानो मार पड़ी है ; लगातार शरीर हिलाते रहनेकी इच्छा, पर उससे उसकी तकलीफ बढ़ती ही जाती है (लैक-कैन, मर्क ; शरीर हिलानेपर घटना—रस)। दर्द ललाटसे माथेके पिछले भागमें चला जाता है। बेधनेकी तरह दर्द,—यह बायीं आँखसे मूर्द्धा-देशमें जाता है। दिनके १॥ बजनेके समय माथेमें भार मालूम होता है और बहुत दर्द हुआ करता है (सवेरेका भोजन करनेके बाद या उपवास भङ्ग करनेके बाद—कार्बोनियम-सल्फ)। मस्तिष्कके गभीरतम प्रदेशमें तेज दर्द अनुभव होता है (वैसिलिनम)। ललाट और दोनों भौंहोंमें यन्त्रणादायक दबाव और रगड़नेकी तरह मालूम होना

(आर्जेण्ट-नाई, कार्डुअस-मेरी) और उस समय कुछ मिचली, ठण्डा पसीना निकलना और सुस्ती मालूम होती है। मूर्द्धा-देशमें दर्द और ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तिष्कमें दर्द हो रहा है ; किसी ऊँची जगह या सीढ़ीसे उतरनेके समय। सरमें दर्द या सरमें अकौता (आर्स, कैल्के, क्लिमेट, क्रोटन-टिग, डाल्का, ग्रैफ, लाई, मर्क, मेजेर, सोरिन, सल्फ, वायोला, ब्राई, ऐ-कार्बोल) शरीर जब गर्म रहता है उस समय पानीसे धोनेपर बढ़ जाता है। माथेकी त्वचाके ऊपर रस-भरे भयानक खुजलानेवाले छोटे-छोटे दाने या रस-भरी फुन्सियाँ निकला करती हैं (टियुबर्क्युलिनम)।

आँख।—आँखसे बहुत पानी गिरता है और आँखमें जलन तथा करकराहट होती है (इयुफ्रे, कैलि-आयोड, क्रियो) ; दीयेकी रोशनीमें तकलीफ बढ़ जाती है (चमकीली रोशनीमें—क्रियो ; रोशनीकी ओर देखनेपर—सैंग-नूरर ; दीयेकी रोशनीमें पढ़नेके समय—कैल्के) ; निर्मल वायु लगनेपर घटना (पल्स), सर्दी या चक्षु-प्रदाहाधिकारमें—ऐकोन, बेल, सिपि, मर्क, पल्स)। ऐसा अनुभव होना कि आँखमें धूलके कण गिर गये हैं (ऐ-फ्लू, आर्स, इयुफ्रे, हिप, लीडम) और उसमें जलन और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह तकलीफ। लिखने या पढ़नेके समय ऐसा मालूम होता है कि चक्षु-गोलकको भेदकर मस्तिष्कमें तेज़ दर्द दौड़ जाता है। पलकें सब लाल आभा लिये नीली होकर फूल उठती है। बाईं पलकमें और सवेरे वृद्धि। एक आँख स्थिर रहनेपर भी दूसरी आँख फूल उठती है। औपदंशिक चक्षु-प्रदाह रोगमें आँखके चारों ओर दर्द।

कान।—कोई पदार्थ निगलनेके समय दोनों कानोंमें बेधनेवाला दर्द, विशेषकर दाहिने कानमें। कर्णपश्चान्नली, विशेषकर बायें कानमें—ऐसा मालूम होता है, मानो वह रुक गया है (कैलि-बाई, मर्क, लैके, मर्क-डाल, ऐ-नाई)।

नाक।—नाकसे पानीकी तरह पतले श्लेष्माका स्राव हुआ करता है और यह स्राव क्रमशः बढ़कर ऐसा मालूम होता है, कि दोनों रंध्र रुक गये हैं। एक नाकसे श्लेष्मा निकलता है और दूसरी ऐसा अनुभव होती है, कि बन्द हो गयी है। घुड़सवारी करनेके समय दोनों रंध्र ही रुक जाते हैं। नाक रुकनेकी वजहसे रातके ३ बजनेके समय नींद खुल जाती है, सवेरे दोनों

रंध्रोंसे सूखी खरोंट निकलती है (कैलि-बाई)। उपदंश दोषज पीनस—खून मिला रस निकलता है और हड्डीका जखम पैदा हो जाया करता है (सिफिलिनम, आरम, ऐ-नाई)।

मुखमण्डल।—चेहरा बहुत म्लान, नीलिमा चढ़ा और तकलीफ़ बतानेवाला पीले रङ्गका—उठी हुई और नोकीली नाक और आँख तथा दोनों गाल गड़हेमें धँसे (आर्स, कार्बो-वेज, वेरेट)। चिबुक झूलकर वक्षको स्पर्श करता है; धनुष्टङ्कार रोगमें पेशियोंमें खींचनकी वजहसे। दोनों ओंठ बाहर निकले और दृढ़। ग्रीवा पार्श्वकी ग्रन्थियाँ सब फूल उठती है और ललाटमें ठण्डा पसीना होता है (वेरेट)। बायें कान तथा मुँहके बायें पार्श्वमें विसर्प हो जाता है और वह फूल उठता है और यह सूजन क्रमसे माथेके ऊपर चली जाती है और उसमें बहुत दर्द होता है। रातमें मुँहकी हड्डीमें तेज़ दर्द होनेकी वजहसे कई रातमें नींद नहीं आती। काले-काले दागोंका बढ़ना—तीसरे पहर और भोजन तथा धोनेके बाद; ऊपरी ओंठकी त्वचा मानो क्षय हो जाती है। ओंठके ऊपर जखम। कर्ण-मूलके नीचेवाली ग्रन्थियाँ सब बढ़ी हुईं।

मुख-विवर।—बच्चोंको दाँत निकलनेके समय दाँत-पर-दाँत या मसूढ़े-पर-मसूढ़ा रगड़नेकी बहुत इच्छा (पोडो)। दाँत निकलनेके समय नाना प्रकारकी बीमारियाँ पैदा हो जाती है, बच्चा रातमें बराबर रोया करता है, अस्पष्ट शब्दसे यन्त्रणा प्रकट करता है और बेचैन हो पड़ता है; गर्मीके दिनोंमें उदरामय; कड़ी चीज़ काटनेपर दाँतकी उत्तेजना घट जाती है। मुँहका स्वाद तांबेके जङ्गकी तरह हो जाता है (आर्जेण्ट-नाई, मर्क, प्लम्ब)। जीभके निचले भागमें ऐसा मालूम होता है, मानो जल गयी है (जीभ मानो जल गयी हैं, ऐसा अनुभव--ऐ-सल्फ़, आइरिस, हैमा, रियुमेक्स, थिरिड)। जीभका अगला भाग लाल या पीला लेप चढ़ा और सूखा; पिछला अंश गहरे लेपसे ढका (कैलि-बाई, नक्स-वोम)। मुँहसे बहुत अधिक लार निकलती है, यह लार कभी पीली, अधिकांश स्थानोंमें गाढ़ी, डोरीकी तरह और गाढ़े गोंदकी तरह रहती है; पारेकी वजहसे लारका स्राव और मसूढ़े तथा दाँतोंका प्रदाह। दाहिने गालके भीतरी प्रदेशमें जखम निकलना, जखमोंमें बहुत दर्द होता है; रोगी मुँहके दाहिने पार्श्वमें रखकर कोई चीज़ चबा नहीं सकता। कोई चीज निगलनेके समय जीभकी जड़में बहुत दर्द होता है।

गलेके भीतर ।—गलेमें जखम; कण्ठका भीतरी भाग घोर लाल और बैंगनी रङ्गका, अलिजिह्वा बढ़ी हुई, रससे फूली और प्रायः साफ़ (कैलि-कार्ब, रस)। गलनलीका उपझिल्ली प्रदाह—कोई चीज़ निगलनेके समय बेधनेकी तरह दर्द, कण्ठसे कानतक फैल जाता है। निगलनेके समय जीभकी जड़में भी बहुत दर्द होता है। कण्ठमें सूखापन मालूम होना और इतनी जलन होती है, कि ऐसा मालूम होता है, मानो उसमें एक प्रज्वलित लोहेका टुकड़ा या अंगार रखा हुआ है ; कलेजा धड़कना और इसके साथ ही निगलनेमें कष्ट ; गलेमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक गोला अड़ा है और उसे बार-बार निगलनेकी इच्छा ; गलग्रन्थि, अलिजिह्वा और तालुमूल भूरे रङ्गकी झिल्लीसे ढका रहता है ; रोगी गर्म पानीय नहीं पी सकता (लैके) और कण्ठके बाहरी देशमें कपड़ेका स्पर्शतक असह्य मालूम होता है (लैके)। डिफ्थीरिया रोगाधिकारमें नकली झिल्ली कोमल मखमलकी तरह रहती है ; नाकके पिछले छेदसे बड़े कष्टसे श्लेष्मा निकलता हैं। वह कण्ठसे सूतकी तरह झूलता रहता है (कैलि-बाई), माथा, गर्दन और पीठमें भयानक दर्द ; रोगीमें उठनेकी शक्ति नहीं रहती, उठनेकी चेष्टा करनेपर सुस्त हो पड़ता है और बेहोश हो जाना चाहता है।

पाकस्थली ।—तेज़ प्यास। राक्षसी भूख (ऐब्रोट, सिना, सिङ्कोना, आयोड, सैबाड); भोजनके कुछ ही बाद फिर भूख लग आती है (सिना, फास, स्टैफ)। भूख न लगना, मिचली, डकारके साथ आध्मान-वायु और अम्लरस चढ़ आता है (नक्स-वोम)। प्रत्येक ४-५ मिनटके बाद प्रबल वमन (कौलचि, फास, टैबाक, वेरेट)। बार-बार ओकाई और विषम यन्त्रणा और प्रबल वेगसे थक्का-थक्का रक्त या गोंदकी तरह पदार्थका वमन होता है। रोगी तकलीफसे छुटकारा पानेके लिये मृत्युकी कामना करता है ; प्रबल दस्त और कै ; डिफ्थीरिया रोगमें प्रबल वमन ; उदरोर्द्ध प्रदेशमें बहुत दर्द और स्पर्शका सहन न होना (आर्निका, गुयारिया)। पाकस्थलीमें उत्ताप मालूम होना (नक्स-मस, ऐल्यू, लैक-कैन)। उदरके ऊपरी भागमें ऐसा दर्द, मानो जोरकी चोट लग गई है और उसके बाद उदरमें ऐंठन और वहाँ ठण्डक मालूम होना। पाकाशयके निर्गमन द्वारमें दर्द मालूम होना।

अन्त्राशय ।—भयानक दस्त और कै और उस समय उदरमें प्रबल अन्त्रावर्त्तन और ऐंठनकी तरह यन्त्रणा। दाहिने कुक्षि-प्रदेशका द्विमुद्रा-

परिमित अंश जखमकी तरह दर्द-भरा और उसमें बहुत स्पर्श-कातरता मालूम होती है। गर्भावस्थामें दाहिने कोखमें दर्द मालूम होना। दाहिनी करवट सोनेपर दाहिनी कोखमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो कुछ गड़ रहा है (कैलि-कार्ब, लाई, नेट्र-म्यूर, चेलिडो, ऐ-फ्लु)। बायीं कोख या प्लीहा-प्रदेशमें तेज़ दर्द (कैल्के, सियैनोथस, चिनिन-सल्फ, ऐगार, इपिका, नेट्र-सल्फ); रोगी बैठा नहीं रह सकता, रातभर बाईं करवट सोया रहता है और सवेरे उठकर देखता है, कि दर्द नहीं है (बाईं करवट सो नहीं सकता—सियैनो, आयोडम, काक्युलस, नेट्रम-म्यूर)। प्रदर-स्राव होनेपर कुक्षिके तेज दर्दकी शान्ति पड़ जाती है (प्रदरके साथ बायें कोखमें दर्द; रक्त-स्राव होनेपर तकलीफका घटना—सिरियम-आक्सैल, लैकेसिस)। पुराना और कभी-कभी होनेवाला यकृत-प्रदाह—यकृत बढ़ा और कड़ा (मैग-म्यूर)। नाभि-प्रदेशमें आँतोंकी गड़गड़ाहट और दर्द; खून और अम्ल-मिला पाखाना होता है; पाक-अन्त्राशयिक प्रदाह रोगमें आँतों आदिका नीचेकी ओर आकर्षण। बंध्या रमणियोंको आर्त्तव-स्रावके समय अन्त्राशयमें भयानक दर्द। वाताश्रय—अन्य अङ्गसे उदरकी पेशीमें वात-वेदनाका पैदा हो जाना।

मलान्त्र और मल।—आमातिसार; मल पतला और घोर भूरे रङ्गका (स्क्रियुला) या आँव या खून-मिला, मानो आँतके भीतरकी खरोंच मिला है; कूथन, कभी-कभी पित्तमय मल। बहुत सवेरे पतला पाखाना होना, विशेषकर लेमोनेड पीनेपर। वृद्धोंकी कब्जियत या उनकी कब्जियत, जिनका हृत्पिण्ड बहुत क्षीण हो। स्वाभाविक कब्जियत—रोगीको विश्वास रहता है, कि विरेचक दवा लिये बिना पाखाना नहीं होगा। पाखाना होनेके पहले उदर परिपूर्ण या भारी मालूम होता है और उसके बाद भी वैसा ही हुआ करता है, मानो आँतोंमें मल रह गया। बार-बार पाखानेका वेग होता है, परन्तु मलत्याग करनेकी चेष्टा करनेपर केवल बदबूदार वायु निकलता है। अर्श—चिरस्थायी और दुरारोग्य; खून और आम-मिला स्राव हुआ करता है; मलद्वारसे विटपदेशकी त्वचाके भीतर होकर शिश्नके मध्य भागतक तेज स्नायुशूल अनुभूत होता है। मलान्त्रमें उत्ताप मालूम होना और खून-मिला स्राव। मलद्वारका फट जाना (पियोनिया, ऐ-नाई, साइलि)।

पेशाब।—मूत्रग्रन्थि-प्रदेशमें धीमा दर्द और स्पर्शका सहन न होना (जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द—कैन्थ), विशेषकर दाहिने मसानेमें।

मूत्रनलीके भीतर होकर एक तरहकी बेचैनी पैदा करनेवाला अनुभव नीचेकी ओर फैलता है (खींचन और बेधनेकी तरह दर्द—कैनाब-सैट)। पेशाबमें चाय खड़ियाकी तरह तली पड़ती है। पेशाब लालामय (एपिस, बार्बेरिस, हेलोन, टेरिब)। पेशाब घोर लाल रङ्गका—मूत्राधारका गात्र सिंहोगनी रङ्गका हो जाता है। वस्त्रमें यदि पेशाब लग जाता है, तो पीले रङ्गका दाग पड़ता है।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—रेतोरज्जुकी राहसे तेज पीसनेकी तरह दर्द ऊपरकी ओर फैलता है। दर्दके बाद रोगवाले अंशमें व्यथा हुआ करती है। मूत्राधार-सुखशायिकामें कलकल शब्द होता है। रमणकी इच्छा नहीं रहती, लिङ्गोद्गम नहीं होता। पुरुषत्व-हीनता। प्रमेह और लाला-मेह (कैनाब-सैट, जेल्स, मर्क); एकशिरा—पीव पैदा होता है और जखम नासूरमें परिणत हो जाता है। उपदंश ; मुख्य उपदंशीय जखम ; उपदंश-विषकी वजहसे गलेमें जखम ; शिश्नके ऊपर जखम निकलना ; बाघी, उपदंशके कारण वात।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बहुत जल्दी-जल्दी होनेवाला और यन्त्रणाजनक ऋतु ; दोनों स्तनोंमें बहुत दर्द होता है। बंध्या स्त्रियोंका बाधक या रजःकृच्छ्र, भयानक यन्त्रणा ; वाताश्रय—आर्त्तव-स्रावके साथ झिल्ली-खण्ड निकलता है (कैन्थ, साइक्लेमन, लैक-कैन)। प्रदर—जरायुगत, स्राव गाढ़ा, डोरीकी तरह, कड़ा और उत्तेजनाजनक ; गर्भ-स्रावकी आशङ्का ; जरायु आदिका नीचेकी ओर खिंचना। सातवें महीनेमें गर्भवतियोंके जरायुसे रक्त-स्राव और कूथन। त्रिकास्थिसे जानु और गुल्फतक और फिर गुल्फसे जानु और जानुसे त्रिकास्थितक तेज दर्द फैल जाना ; प्रसवके बाद शरीरमें जगह-जगह चिलक मारनेकी तरह दर्द। स्तन प्रदाह-भरे और फूल उठते हैं और उनमें पीव पैदा हो जाता है। स्तन-वृन्तमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता। बच्चेके स्तन छोड़नेके बाद वे पत्थरकी तरह कड़े हो जाते हैं ; स्तन-वृन्तकी त्वचा क्षय हुई (ऐनाग्थि, कैलेण्डु) और दर्द-भरे तथा उनकी त्वचा फटी रहती है ; बच्चा जब स्तन पीता है, तो स्तनमें भयानक दर्द होता है ; दर्द स्तनसे पैदा होकर सारे शरीरमें फैल जाता है (क्रोटन-टिग, बोरेक्स, लैक-कैन, फिलेन)। स्तनसे बहुत अधिक दूध चुआ करता है और इसी वजहसे रोगिनी अत्यन्त क्षीण हो पड़ती है (कैल्के-आस्ट्रि, ऐसाफिट)। स्तन-प्रदाह—रोगवाला स्तन बड़ा, आगकी तरह रङ्ग, मुँह खुला, नासूर-भरा और इन सब नासूरोंसे पानीकी तरह बदबूदार पीव निकला करता है (साइलिसिया, कैल्केरिया-सल्फ, फास, कार्बो-ऐनिमेल),

ठुनका—पहलेसे ही स्तन बहुत कड़े और अनमनीय मालूम होते हैं, उनमें बहुत जलन हुआ करती है और पीव पैदा हो जाने बाद भी वह कड़ापन और जलन नहीं जाती या नहीं घटती है। स्तन-ग्रन्थि, कितनी ही कड़ी और दर्द-भरी गांठोंसे भर जाती है (ऐ-नाई, लाई, कोनायम)। दोनों स्तनोंके बीचका भाग फटा-फटा हो जाता है (ब्रायोनिया), कभी-कभी उत्तेजनाजनक अर्बुद भी हो जाता है, स्पर्श सहन नहीं होता और दर्द हुआ करता है; वृद्धि—आर्त्तव-स्रावके समय (ब्रूफो, एस्टिरियस-रियुब, कार्बो-ऐन, आर्जेण्ट-नाई, ब्रोमियम)।

श्वासयन्त्र ।—स्वरभङ्ग और स्वरलोप (फास)। स्वर और वायुनलीमें सूखापन, विशेषकर संध्याके आरम्भके समय। स्वरनलीमुखका सङ्कोचन और स्वर तथा वायुनलीमें जलन ; श्वास लेने और छोड़नेमें परिश्रम करना पड़ता है। दोनों आँखोंकी भङ्गी बिगड़ी हुई और आँख स्थिर रहनेपर भी दूसरी घूमा करती है। दोनों अंगूठे मुड़ जाते हैं और पैरकी अंगुलियाँ सब टेढ़ी हो जाती हैं (बेल, कैलि-ब्रोम, लैके, ब्रोमियम, क्लोरम, क्यूप्रम-मेट, गुयैरिया, एसिड-हाइड्रो, मिफाइट, ओपि, सैम्बियु, स्पञ्जिया)। कष्ट-साध्य श्वास-प्रश्वास और श्लेष्मा गड़गड़ानेकी जोरकी आवाज़ ; डिफ्थीरिया रोगाधिकारमें रोगी लगातार उँह-उँह किया करता है और हाँफा करता है। बार-बार लम्बी साँस छोड़ने और धीमा श्वास-प्रश्वास होनेकी वजहसे रोगी सुस्त हो पड़ता है। खाँसी—सूखी और कलेजा फाड़ डालनेवाली ; स्वरनलीकी उत्तेजना या स्नायुमूलमें सूखापन रहनेकी वजहसे—रातमें सोते ही बढ़ना (हायो, ऐ-नाई, कैम्फ, कास्टि, कोना, क्रोटन-टिग्लियम, ड्रोसेरा ; चित्त होकर सोनेपर—नेट्रम-म्यूर, फास ; बाईं करवट सोनेपर—लाई, पैरिस, फास, रस ; किसी भी करवट सोनेपर—ऐकोन, स्टैनम, सलफर ; दाहिनी करवट सोनेपर—कार्बो-ऐन)। बलगम गाढ़ा, डोरीकी तरह कड़ा या रबरकी तरह (कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, हाइड्रैस्ट, कक्कस-कैक्टाई, फास) ; गाढ़ा मांड़की तरह श्लेष्मामय (लैक-कैन) ; तालुमूल प्रदाहकी वजहसे बहुत ज्यादा और सुस्त करनेवाला बलगम निकला करता है ; वक्षके ऊपरी अंशमें तेज़ दर्दकी वजहसे लम्बी साँस नहीं ले सकता। दाहिने वक्षसे सुई गड़नेकी तरह दर्द पीठमें चला जाता है (चेलिडो, कैलि-कार्ब, मर्क-बाई)। सर्दी और जलीय भाफ़ लगनेकी वजहसे निचली पसलीके भीतरका

वात (रैनान-बल्ब)। फेफड़ा और कण्ठमें श्वास रुकनेकी तरह अनुभव होना। खाँसनेपर वक्ष और पार्श्वमें दर्द हुआ करता है।

हृत्पिण्ड।—हृत्पिण्ड-प्रदेशमें दर्दका धक्का मालूम होना; हृद्शूल; दर्द हृत्पिण्डसे दाहिने बाँहमें चला जाता है। कब्जियतकी वजहसे हृत्पिण्डकी क्रिया क्षीण हो जाती है। हृत्पिण्डके पासवाली जगह सुन्नकी तरह मालूम होती है और निष्क्रियता मालूम होनेकी वजहसे नींद खुल जाती हैं; वृद्धि—साँस छोड़नेके समय। रोगी फिर सो नहीं सकता। हृदयके अगले भागमें बहुत दर्द, चलनेपर बहुत बढ़ जाता है।

गर्दन और पीठ।—धनुष्टङ्कार रोगमें मुँह और गलेकी पेशियाँ सब अकड़ी। गर्दनके दाहिनी ओरकी ग्रन्थियाँ सब बहुत कड़ी हो जाती हैं। गर्दन अकड़ना या कड़ापन, विशेषकर दाहिने पार्श्वमें, आधी रातके बाद या नींद खुलनेपर। नितम्बदेशकी पेशीमें वातका दर्द। रोज सवेरे कमर अकड़ जाती है। पेशाब रुकनेकी वजहसे कमरमें दर्द मालूम होता है। त्रिकास्थिमें दर्द।

प्रत्यङ्ग आदि।—दोनों पृष्ठ-फलकोंमें लगातार दर्द हुआ करता है। दाहिनी स्कन्ध-सन्धिमें तेज बेधनेकी तरह दर्दकी वजहसे दाहिना बाँह अकड़ा मालूम होता है और रोगी उसे उठा नहीं सकता। दाहिने बाँहके शिखरदेशमें लगातार दर्द मालूम हुआ करता है। हाथकी अंगुलीकी गाँठें सब फूलीं, कड़ी और चिकनी मालूम होती हैं। बायाँ स्कन्धगत वात, विशेषकर उपदंश विषसे दूषित मनुष्योंका, दर्द बिजलीके प्रवाहकी तरह एक अङ्गसे दूसरे अङ्गमें दौड़ जाता है (लैक-कैन, कैलि-बाई, पल्स); वृद्धि—रातमें, शरीर हिलाने और जलीय वायु लगनेपर त्रिकास्थिसे बड़े वेगसे दर्द उरुके बहिर्देश होकर नीचे चला जाता है। उरु-शिखरमें तेज या खींचनकी तरह दर्द; पैर खींच रखता है और इसी कारणसे उससे जमीन छू नहीं सकता; पारा या उपदंश-विष दूषित धातुवाले बालकोंका उरु-शिखर-प्रदाह। वाम जानुगत वात—कण्डरा खिंची या छोटी मालूम होती है। उरुकी हड्डीकी वेष्टिनीमें रातमें दर्द। बाएँ उरु-शिखरका पुराना वात; पैर फूले और तलवेमें जलन; एँड़ीके नीचे और चरणमें भयानक दर्द। पैरके अंगूठेमें दर्दकी वजहसे रातमें नींद खुल जाती है। तलवेके भीतर जखम पैदा हो जाना। धनुष्टंकार रोगमें बहिरायाम

आक्षेप—हाथ-पैर कड़े, मुट्ठी बन्द, दोनों पैर फैले, पैरकी अंगुलियाँ सब मुड़ी रहती हैं, दोनों ओंठ उलट जाते हैं और चिबुक वक्षको स्पर्श करता है। माथेसे तलवेतक प्रत्येक पेशीमें बहुत दर्द होता है।

त्वचा।—शरीरकी त्वचा ठण्डी, सिकुड़ी, सूखी और सीसेके रङ्गकी दिखाई पड़ती है। हजामतकी खुजलीके फोड़े, दाद, जखमके पास फोड़ा। काली और खुजलानेवाली फुन्सियाँ निकलती हैं। जखम—देखनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो त्वचाका एक टुकड़ा काट लिया गया है (कैलि-बाई); जखमका तला मैद-लिप्तकी तरह दिखाई देता है; उपदंशके जखम आदि। कर्कटीया जखम—स्तनके ऊपर और शरीरके अन्यान्य स्थानोंमें। अरुणिका चक्र—उद्भेद सब ऊँचे, घोर लाल रङ्गके, उनसे धीरे-धीरे छाल निकला करती है और अन्तमें बैंगनी रङ्गका दाग रह जाता है। हाथ और पैरमें खुजली आरम्भ होकर क्रमसे सारे शरीरमें फैल जाती है और उसके कई घण्टे बाद सफेद दाग होता है; खुजलीकी वृद्धि—खुजलाने और शय्याका उत्ताप लगनेपर। शल्कमय उपदंशके उद्भेद।

वृद्धि।—रोगवाली या दाहिनी करवट सोनेपर, छूनेपर, दबानेपर, अधिक ऊँची जगहसे पैर फिसल जानेपर, गैसकी रोशनीमें, निगलनेके समय, आर्त्तव-स्रावके समय, खड़े रहनेकी अवस्थामें, शरीर हिलानेपर, चलनेपर, बाँह उठानेपर, रातमें, सवेरे, जलीय वायु लगनेपर और शय्याके उत्तापसे।

उपशम।—हाथसे दबानेपर (स्तनमें दर्द), मलनेपर, बाएँ पार्श्वमें और पट होकर पेट दबाकर सोनेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—दूध, नमक, बेल, काफि, इग्ने, मर्क, मेजिर, ओपि, सल्फ।

सदृश।—आर्स, एरम-ट्राई, कैम्फो, गुयायेक, इपिक, आइरिस, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, रस, लैक-कैन, पल्सेटिला।

तुलनीय।—डिफ्थीरियामें—लैकेसिस; हृत्पिण्डमें कड़ापन—रस; स्तनमें फोड़ा—ब्रायो; धनुष्टङ्कारकी तरह आक्षेप—नक्स-वोमिका; आर्त्तव-स्रावके समय स्तनमें दर्द—कैल्के, कोनायम; अतिसारके साथ झिल्ली निकलना—कास्टिक, आर्स; लज्जाहीनता—हायोसा; अकड़न और जखम मालूम होना—आर्निका इत्यादि।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३० शततमिक क्रम ।

पिचि

(PICHI)

दूसरा नाम । फेमियाना-हमब्रीकेटा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सत ।

उपयोगिता और आभास ।—यह एक शाक जातीय उद्भिदसे तैयार होता है। इस दवाकी स्वस्थ शरीरपर परीक्षा नहीं हुई। १० से २० बूंदकी मात्रामें पिचि सेवन करनेपर पुराना मूत्राशय प्रदाह, मूत्राशय-मुखशायी ग्रन्थिका बढ़ना, पित्त-पथरी, पेशाबमें युरिक एसिडकी अधिकता ; सड़नेवाला मूत्र-पथरी, प्रमेह वगैरह यकृत और मूत्राशय-सम्बन्धी उपसर्गोंमें फायदा करता है।

शक्ति ।—मूल औषध १० से २० बून्दकी मात्रामें ।

पिक्रोटाक्सिनम

(PICROTOXINUM)

दूसरा नाम ।—पिक्रोटाक्सिन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचर्ण, काक्युलस इण्डिकसके फलसे उपचार तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—संन्यास, विशेषत: सवेरे बिछावनसे उठनेपर रोगका आक्रमण होता है। कशेरुका मज्जाके क्षयकी वजहसे चलनेकी शक्तिमें गड़बड़ी, आँत उतरना, ऐसा मालूम होना कि बायें पुट्ठेकी जगहसे पेटके भीतरकी आँतें बाहर निकल पड़ेंगी ; क्षय रोगमें रातमें होनेवाला

पसीना, मिचली, ऐसा मालूम होना कि बेहोशी आ जायगी ; उदरमें शूलका दर्द, पतले दस्त आना, आम मिला हुआ मल, बहुत ज्यादा पेशाब वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—काक्युलस, नक्स, सिम्फोरिकार्पस, पेट्रोल, पलसेटिला ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

पाइलोकार्पस

(PILOCARPUS)

(जैबोरैण्डी देखिये) इसके सारांशको—"पाइलोकार्पिनम" कहते हैं। अण्डनालीय मूत्र रोगमें इसका व्यवहार होता है।

पाइनस सिल्वेस्ट्रिस

(PINUS SYLVESTRIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—नये कोपलोंसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मलान्त्रकी खुजली ; श्वासनलीका प्रदाह ; कब्जियत ; अतिसार ; मूत्ररोग ; निम्नांगकी शीर्णता और दुर्बलता ; ग्रन्थियोंका फूलना ; वात ; अर्श ; कलेजा काँपना ; यकृतकी बीमारी ; गण्डमाला ; कर्ण रोग ; मूत्र-विकार ; सरमें चक्कर ; कृमि इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—इसके कई सिद्धि-प्रद लक्षण ये हैं:—हाथ-पैरोंमें वातकी वजहसे दर्द ; छोटी सन्धियोंका वात ; पक्षाघात ; ग्रन्थियोंका फूलना या गण्डमाला ; प्रत्यङ्गोंकी अकड़न ; प्लीहा और यकृतका बढ़ना और उसमें दर्द ; जाड़ा मालूम होना ; स्पर्शका सहन न होना ; माथेकी त्वचामें स्पर्श सहन न होना ; वक्ष-प्राचीर बहुत पतली,—ऐसा अनुमान लगाना मानो छूते ही टूट जायगी ; पेशाबके समय जलन ; अधिक पेशाब होना ; पेशाबमें तेज गन्ध, नाक और मलद्वारकी खुजली और सूत्र-कृमि ; वायुनलीमें

श्लेष्माकी अधिकता ; निम्नांगका दुबलापन ; गुल्फ क्षीण ; बच्चा बहुत देरसे चलना सीखता है (कार्बो-ऐन, नेट्र-कार्ब, नेट्र-मूर, सिपि) इत्यादि ।

लक्षणावली

मन ।—एक ही बार बहुत तरहके कामोंमें हस्तक्षेप करता है, पर किसीको भी पूरा नहीं कर सकता । सर-दर्द,—आँख हिलानेपर बढ़ना (ब्राई, नक्स, स्पाइजि, सिपि वैप्टी, बैडियेगा) ।

प्रत्यङ्ग आदि ।—हाथ-पैरोंमें भार और अकड़न मालूम होना । रोगीको चलनेमें तकलीफ मालूम होती है । हाथ और पैरकी प्रत्येक क्षुद्र ग्रन्थिमें वातका दर्द, विशेषकर हाथकी अंगुलीकी सन्धिमें, प्रत्यङ्गोंमें सुन्न करनेवाला खींचनकी तरह दर्द मालूम होना । दोनों जानु अकड़ जाति हैं और उनमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और जलन मालूम होती है ; चलने या खड़े होनेके समय जानु अवश हो जाति हैं और टूट पड़ती हैं । चलनेके समय बाएँ निचले पैरकी सामनेवाली हड्डीमें (ऐसिड-कार्बोल, कैलि-बाई, फाइटो, एरम-ट्राई, मेजेर) तेज़ दर्द ; रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि यह पैर मोड़कर, वक्षपर रखनेसे अच्छा होगा, केवल सवेरे ; दूसरे दिन दाहिने निचले पैरके सामनेवाली हड्डीमें ऐसा ही दर्द । रातमें पैर फैला देनेपर पैरकी पोटलीमें ऐंठन (क्यूप्रम, कैम्फोरा) होती हैं । आमवात । समूची देहमें खुजली पैदा हो जाती है, विशेषकर सन्धि-प्रदेशमें और उदरके ऊपर । नाकका अगला भाग खुजलाना (सिना, सलफर) । ग्रन्थियाँ फूलनेवाली, अस्थि-वृद्धि रहित, क्षीण-गुल्फ, बच्चे बहुत देरसे चलना सीखते हैं और उनके निम्नांग बहुत क्षीण हो जाते हैं (ऐब्रोट, ऐगार, कैल्के-कार्ब, आयोड, सैनिक, टियुबर्क्युलिन) ।

वृद्धि ।—शारीरिक परिश्रमसे, चलनेपर, स्पर्श करनेपर, सवेरे और आँख हिलानेपर ।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—ऐब्रोट, ऐ-बेञ्जो, ऐगार, आयोड, कैल्के, सैनिकुग्ला, टियुबर्क्युलिनम ।

तुलनीय । – पेशाबमें तेज गन्ध—बेल, ऐसिड । पलकें काली—सल्फ ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ६ठा शततमिक क्रम ।

पाइपर मेथिस्टिकम

(PIPER METHYSTICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया और दूसरा नाम।—कैवा कैवा नामक वृक्षकी जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— अण्डनालीका पेशाब; गुह्यद्वारका अपने स्थानसे हटना; मस्तिष्क क्लान्ति; मूत्राधार प्रदाह; मूत्रकृच्छ्रता; प्रमेह; सर-दर्द; कुष्ठव्याधि; स्नायुशूल; अर्द्धाङ्गका पक्षाघात; वात; दाँतका दर्द; अण्डकोषका प्रदाह इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—हमारे देशके प्राचीन धर्मप्राण योगी और ऋषिगण जिस तरह किसी धर्मकार्यमें लगनेके पहले सोमरस पान किया करते थे, पोलिनेशिया या प्रशान्त महासागरके बहुतसे द्वीपोंके अधिवासी उसी तरह इस् पेंड़की जड़का रस व्यवहार किया करते हैं। इसके सेवनसे अत्यन्त आनन्दका उदय होता है और अक्लान्त भावसे बहुत देरतक अध्ययन आदि मानसिक परिश्रम करनेकी शक्ति पैदा हो जाती है, पर थोड़ी ही देर बाद इसकी प्रतिक्रियाके कारण मस्तिष्कका अवसाद पैदा हो जाता है और उस समय रोगी थोड़ी भी अधिक रोशनी, सामान्य शब्द या थोड़ी भी गन्ध सहन नहीं कर सकता। काफियाकी तरह इसका भी मूल अर्क सेवन करनेवालोंके मनमें एक तरहकी बहुत अधिक स्फूर्त्ति और उत्तेजना पैदा हो जाती है। रोगीको ऐसा मालूम होता है कि उसके माथेका आयतन इतना बढ़ गया है, कि थोड़ा भी और बढ़नेपर मानो माथेकी खोपड़ीके दो खण्ड हो जायँगे। सरमें चक्कर आया करता है। आँख बन्द करनेपर या दूसरे विषयमें मन लगानेपर घट जाता है। माथेके भीतरवाली धमनी आदि शोणित मार्ग सब भरे और फूले मालूम होते हैं। नींद खुलनेपर मस्तिष्कमें अवसाद मालूम होती है, मानो कितनी ही रातें नींद नहीं आयीं या मानो पिछली समस्त रात पढ़ता ही रहा है (प्रतिक्रियासे उत्पन्न लक्षण)। माथा भारी हो जाता है और उसमें दर्द होता है तथा पढ़ने या सोचनेपर अथवा किसी दूसरी ही तरहका मानसिक परिश्रम होनेपर बढ़ जाता है। भयानक

यन्त्रणाप्रद अन्त्रशूल—रोगिनी बेचैन हो पड़ती है, शरीरमें असह्य यन्त्रणा हुआ करती है और वह कभी सोती है, कभी बैठती है और कभी खड़ी हो जाती है; अभी बायीं करवट सोयी थी, तुरन्त ही दाहिनी करवट हो गयी। इसी तरह क्षण-क्षणमें अपनी अवस्था परिवर्त्तन किया करती है; पर किसी तरह भी उसे आराम नहीं मिलता। वक्षमें जलन,—अन्यमनस्क होनेपर घटती हैं प्रभृति कई इसके प्रधान सिद्धि-प्रद लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—सवेरे १० बजेसे रातके १० बजेतक बहुत ही प्रसन्न (काफिया) रहा करता है। वीर्यस्खलनके बाद स्फूर्तिका आविर्भाव। अक्लान्त भावसे बहुत देरतक मानसिक परिश्रम करनेकी शक्ति। नींद खुलनेपर मस्तिष्कमें अवसाद मालूम होना, मानो गत रात्रिमें नींद नहीं आयी है या पढ़ता रहा है (नेट्रम-म्यूर, कैलि-फास, ऐ-पाई, फास); दूसरे विषयमें मन लगानेपर तकलीफ आदिका घटना (बैराई-कार्ब, ऐ-आक्सैल, कैल्केरिया-फास, कास्टि, हेलोन, सिडोरिन, आक्साइट्रोप, पेट्रोल)। बार-बार सोने, बैठने वगैरह शरीरकी अवस्था परिवर्त्तन करनेकी बहुत इच्छा।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—सवेरे शायितावस्थामें; ललाटपर दबाव मालूम हुआ करता है। घटना—आँख बन्द करनेपर (वेरेट-विरिडि, आँख बन्द करनेपर बढ़ना—आर्निका, लैके, साइलि, थिरिड)। सवेरे नींद खुलनेपर मस्तिष्क सुस्त मालूम होता है। घटना—उठकर खड़े हो जानेपर (आराम)। ललाटकी दोनों कनपटियोंमें भार और दर्द मालूम होता है; वृद्धि—पढ़नेसे, सोचनेपर या किसी दूसरी तरहका मानसिक परिश्रम करनेपर। ललाटके पीछे स्थित मस्तिष्क तकलीफसे ठोसकी तरह मालूम होता है; दिनके समय यह दर्द माथेके पिछले भागमें, मस्तिष्ककी जड़में और मातृकामूलाधार या मेरुमूलमें फैल जाता है और वहीं मालूम होता है। घटना—थोड़ा भी माथा हिलानेपर; वृद्धि—प्रबल संकोचनसे, एक विषयसे दूसरेके बारेमें सोचनेपर थोड़ी देरके लिये घट जाता है।

आँख।—आँखकी योजक त्वचा लाल। तीसरे पहर ३ बजनेके समय पढ़नेके समय दाहिनी आँखके स्नायुमें दर्द मालूम होना। बाईं आँखके

गम्भीरतम प्रदेशमें दर्द, मानो भीतरसे आँखके गोलेमें धक्का दे रहा है। कपड़ा पहननेके समय एकाएक मानो माथा खाली मालूम होता है, आँखोंके सामने अंधेरा दिखाई देता है और माथेमें चक्कर आया करता है; घटना—आँख बन्द करनेपर।

मुख-विवर।—जीभ, रातमें मखमलकी तरह कोमल श्लेष्मासे लिप्त मालूम होती है। जीभ और मुँहमें जलन। तीसरे पहर सोने बाद मुख-विवर सूखा मालूम होता है और शरीरमें पसीना हुआ करता है (गर्मीके दिनोंमें)।

पाक और अन्त्राशय।—खट्टी डकार, बढ़ना—भोजनके दो दण्ड पहले और रातमें। गलेमें ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ अड़ा हुआ है और वह निगला नहीं जा सकता; डकार आनेके बाद कुछ क्षणके लिये घटना। ऐसा दर्द मानो पेट जकड़ गया है, टेबुलपर पेट दबा रखनेपर कुछ आराम मिलता है (कोलो, प्लम्ब)। रोज ८ बजनेके समय उदरमें दर्द, दोपहरके पहले प्रथम बार पाखाना होनेके बाद, उदरमें यन्त्रणा और पूर्णता मालूम होना; घटना—शरीर हिलानेपर। भयानक अन्त्रशूल,—रोगिनीका शरीर तकलीफ़से उलट-पलट हो जाता हैं और क्षणभर भी एक भावसे नहीं रह सकती, पर उससे उसकी बीमारी किसी तरह नहीं घटती है।

पेशाब और पुं-जननेन्द्रिय।—पेशाबका परिमाण बढ़ जाया करता है। पेशाबके समय जलन होती है। प्रमेह, लाला-प्रमेह। मूत्राशयकी सर्दी। यन्त्रणाजनक लिङ्गका कड़ापन; शिश्नमें बेधनेकी तरह दर्द; रातके अन्तिम भागमें रेतःस्खलन होनेपर लिङ्गोच्छ्वास; दाहिने अण्डकोषमें दर्द। रातके अन्तिम भागमें किसी तरहका स्वप्न देखे बिना ही वीर्य-स्खलन हो जाता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—दाहिने बाँहमें दर्द और यह दर्द चारों ओर फैल जाता हैं और रोगवाले अङ्ग सब भारी, बहुत दर्द भरे और क्लान्त मालूम होते हैं। सन्ध्याके बाद बायाँ हाथ बहुत भारी मालूम होता है। बाईं कोहनीसे हाथकी अंगुलीतक मानो बिजलीकी लहर चली गयी, इस तरहकी चुनचुनी हुआ करती है। दाहिनी कलाईमें दर्द, यह दर्द विशेषकर लिखनेके समय होता है। बाएँ हाथके अंगूठेमें दर्द मालूम होता है; दबानेपर यह दर्द बढ़ जाता है। चलनेके समय मतवालेकी तरह डगमगाया करता है, परन्तु

बुद्धिमें किसी तरहकी गड़बड़ी नहीं होती और रोगी अच्छी तरह समझ सकता है, कि उसके दोनों पैर उसके वशमें नहीं हैं। निम्नाङ्ग सुन्न हो जाता है। दोनों उरु इतने दुर्बल हो जाते हैं, कि रोगीमें खड़े होनेकी भी सामर्थ्य नहीं रहती। चलनेके समय दोनों पैरोंमें भार मालूम होता है। रोगी दुबला और रोगसे जीर्ण-शीर्ण-सा दिखाई देता है। दूसरे विषयमें मन लगानेपर तकलीफ आदि (विशेषकर माथा और अन्त्राशयकी यन्त्रणामें) घटी मालूम होती है। सवेरे गड़बड़ी मालूम होती है :—शय्यासे उठकर थोड़ा इधर-उधर घूमनेपर आराम हो जाती है। रातमें सभी कामोंमें निरुत्साह और आलस्य मालूम होता है।

त्वचा।—सारे शरीरमें कुष्ठकी तरह जगह-जगह खाल उधड़ जाती है और सफेद दाग रह जाता है, कभी-कभी उस स्थानपर जखमतक पैदा हो जाता है।

सम्बन्ध, सदृश-दोषघ्न।—पल्स, रस, काफिया, ऐसिड-फाई, सार्सा, ऐ-आक्सैल, आक्साइड्रोप, ऐनाक, कोलोसिन्थ, प्लम्ब।

तुलनीय।—दूसरी ओर मन लगानेपर घटना—आक्जैलिक-ऐसिड ; स्फूर्त्ति भाव—काफिया ; असह्य दर्द—काफिया।

शक्ति।—मूल अर्कसे २०० शततमिक क्रम।

प्लैण्टेगो मेजोर

(PLANTAGO MAJOR)

दूसरा नाम।—प्लैण्टेन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे वृक्ष या जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—सविराम ज्वर, स्तनका प्रदाह ; जल जाना ; बहुमूत्र ; अतिसार ; रक्तामाशय ; कर्णशूल या कर्ण-प्रदाह ; वीर्यस्खलन ; शय्यामें पेशाब होना ; विसर्प ; अर्श ; ध्वजभङ्ग ; स्नायुशूल ; साँप काटना ; प्लीहामें दर्द ; तम्बाकूका बुरा अभ्यास ; दाँतका दर्द ; क्रिमि ; जखम।

उपयोगिता और आभास।—दाँतमें दर्द। कानमें दर्दके साथ दाँतमें दर्द ; चेहरेका स्नायुशूल ; शय्यामें बहुमूत्र ; तम्बाकूका चूर्ण सेवन करनेकी वजहसे स्नायुशूल वगैरह नाना प्रकारके तेज़ यन्त्रणादायक शूलके दर्दकी और रोगोंकी यह असीम उपकारी दवा है। इसके कई प्रधान लक्षण ये हैं:—(१) बार-बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब और प्यास। (२) मूत्रद्वारावरोधक पेशीकी शिथिलताकी वजहसे शय्यामें पेशाब कर देना। (३) पाकाशय खाली और भारी मालूम होना ; मुँहमें बदबू। आध्मान-वायु अधिक सञ्चय होना, उदरामय, आमातिसार और बवासीर। (४) प्रदाह-भरा और दर्द-भरा बवासीर (बाहरी प्रयोग)। (५) चेहरेका स्नायुशूल—मुखके किसी विशेष पार्श्वमें, ऊपरी पलकके स्थानपर, कनपटी और ऊपरी हनुपर ही रोगका आक्रमण हो जाता है और उनमें असह्य दर्द मालूम होता रहता है। दर्द—फाड़ने, छेदने और शूल वेधनेकी तरह। (६) दर्द एकाएक पैदा होकर उसके चारों ओरके स्थानोंपर फैल जाता है ; दर्द असह्य मालूम होता है। (७) रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो कोई ऊँची आवाज़ उसका शरीर भेदकर घुस रही है। (८) नाकसे एकाएक पीला गदला पानी निकलता है। (९) बाएँ अङ्गपर अधिक प्रकोप होता है। (१०) तम्बाकू या जर्दा खानेकी वजहसे स्नायुशूल।

लक्षणावली

मस्तक।—माथेमें जगह-जगह चिलक मारनेकी तरह दर्द हो उठता है। बाईं भौंपर बिजलीकी प्रवाह लगनेकी तरह तेज़ वेधनेवाला दर्द ; यह दर्द एकाएक बन्द हो जाता है और फिर धीरे-धीरे समूचे माथेपर आक्रमण करता है और रोगकी चरम अवस्थामें उदरोर्द्ध प्रदेशमें मिचली पैदा हो जाया करती है। ठण्डे हाथोंसे यह अंश दबा रखनेपर घटा मालूम होता है और गर्मीसे बढ़ जाया करता है। ललाटके बायें पार्श्वसे एक प्रचण्ड दर्द मस्तिष्कके गभीरतम प्रदेशमें प्रवेश करता है और रह-रहकर तकलीफ़ पैदा हो जाती है। दन्तशूल रोगमें सर-दर्द।

आँख।—कीड़े लगे या क्षय हुए दाँतसे निकला हुआ दर्द आँखमें अनुभूत होता है।

कान ।—दाँत और मुखमण्डलमें दर्दके साथ दाहिने कानमें दर्द (पल्स) ; दर्द तेज और चिलक मारनेकी तरह दर्द। कानमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। स्नायविक सर-दर्द—माथा भेदकर एक कानसे दूसरे कानतक चला जाता है। श्रवण-शक्ति बहुत तेज—जरा भी जोरकी आवाजसे रोगी सिहर उठता है, मानो उसका शरीर भेदकर घुस रही है (थिरिड)। कानमें आवाज।

नाक ।—बार-बार छींकके साथ एकाएक नाकसे पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव हुआ करता था। एकाएक नाकसे हलदी या केशरके रङ्गका पानी गिरा करता है।

मुखमण्डल ।—चेहरेके बाएँ पार्श्वका स्नायुशूल ; दर्द वेधने और फाड़नेकी तरह, हनुसे कानतक प्रतिक्षिप्त हुआ करता है।

मुख-विवर ।—बायें पार्श्वके दाँत सब लम्बे और उनमें स्पर्श सहन नहीं होता ; दर्द बहुत असह्य मालूम होता है ; निरोग दाँतमें छेदनेकी तरह दर्द ; बढ़ना—छूनेपर और बहुत शीत लगनेपर तथा बहुत गर्मी लगनेपर। बायें पार्श्वकी उप-पंक्तिके पेषण दन्तमें भयानक दर्द और बहुत ज्यादा लार बहना ; ठण्डी हवामें घूमनेपर, छूनेपर और गर्मी लगनेपर बढ़ना ; कुछ ठण्डे घरमें टहलनेपर दर्द थोड़ा मालूम होता है। दोनों गाल फूल उठते हैं। भोजनके समय दाँतका दर्द घटा मालूम होता है। मुँह और डकारकी गन्ध सड़ी।

पाक और अंत्राशय ।—बार-बार गन्धक या कार्बोनिक एसिड गैस (अङ्गाराम्ल) की गन्ध-मिला डकार। औंघाई ; सुस्ती तथा कम्पभावके साथ मिचली। पाकस्थली खाली और सुस्त करनेवाली मालूम होना ; पाकस्थलीमें ऐसा भार मालूम होना, मानो एक पत्थर रखा हुआ है। बहुत थोड़ा खानेके बाद भी पेटमें ऐसा ही भार मालूम होता है। निर्मल वायु सेवनके लिये चलनेके समय पाकस्थलीके हृदग्र-प्रदेशमें उत्ताप और उदर भरा मालूम होता है। बायीं कोखमें प्रचण्ड दर्द। पेट फूलना और हवा छूटना।

मलान्त्र और मल ।—बार-बार पाखाना होनेकी आशामें पाखाने जाता है ; परन्तु पाखाना नहीं बैठ सकता, बवासीरमें इतना दर्द होता है, कि रोगी प्रायः खड़ा नहीं रह सकता (इस्क्यूलस-हिप, कास्टि)। मलका पतलापन, मल भूरा, कुछ सड़ा, फेन-भरा, बार-बार आध्मान-वायु निकलनेके साथ पतला

पाखाना होना ; सवेरे ८ से १० बजेतक। पाखाना होनेके पहले पेटमें दर्द और बार-बार वायु निकलना। पाखाना होनेके समय कूथन, काँच निकलना और सुस्ती मालूम होना।

पेशाब।—मूत्र-ग्रन्थि-प्रदेशमें दबानेपर दर्द मालूम होता है ; बार-बार बहुत ज्यादा परिमाणमें फीका पेशाव हुआ करता है, विशेषकर रातमें ; आँख फूली, रोगी तृप्ति-पूर्वक बहुत ज्यादा भोजन करता है। मूत्रावरोधक पेशीकी शिथिलताकी वजहसे रातमें बार-बार अनजानमें पेशाब हो जाया करता है (कास्टि, रस-ऐरोमेटिका)। बार-बार वेग और बार-बार पेशाब। बैठनेके समय रह-रहकर मूत्र-मार्गमें सुई गड़ने या डङ्क मारनेकी तरह तेज दर्द ऊपरकी ओर फैलता है। सवेरे मूत्रनलीमें एकाएक चुनचुनी होने लगती है और खुजली पैदा हो जाती है। तेज प्यास और बार-बार बहुत ज्यादा स्राव (लैक-डिफ्लो, स्क्वियुला, ऐ-फास, इयुरेनियम-नाई)।

सार्वाङ्गिक।—पुराना बोखार, नियमित प्रकोप, जहाँ क्विनिनके प्रयोगसे ज्वर बन्द नहीं होता या उसके आकारका परिवर्त्तन नहीं होता, क्रोधी स्वभाव और विषन्न चित्त, अधीर, अस्थिर मति मनुष्य, माथेमें कमजोरी मालूम होना। अत्यन्त मानसिक अवसाद, मानसिक परिश्रमसे और भी बढ़ जाता है। श्वास-प्रश्वास तेज और मानसिक चञ्चलता पैदा हो जाती है। बहुत अधिक तम्बाकू खानेकी वजहसे बीमारियाँ, खासकर चित्तकी चञ्चलता।

त्वचा।—शरीरमें भयानक खुजली, विशेषकर रातमें। सुई या डङ्क मारनेकी तरह दर्द (एपिस)। खुजलानेपर वह अंश जब मला जाता है, तो उसमें जलन होती है। हाथ और चेहरेमें लाली और सूजनका पैदा हो जाना और रस-भरी फुन्सियाँ या छोटे-छोटे छालेकी तरह उद्भेद निकल आता करते हैं। शरीरमें जगह-जगह घनी फुन्सियाँ या घमौरियाँ निकलती हैं और उनसे पीली आभा लिये रस निकलकर पपड़ी या फटे घावमें परिणत हो जाता है (ग्रैफ)। शरीरमें जलन।

शीत, उत्ताप और पसीना।—छातीमें गर्मी मालूम होना और जाड़ा लगना ; माथा, वक्ष और प्रत्यङ्ग आदिमें एक जगहसे दूसरी जगह हट जानेपर फैल जानेवाला दर्द ; रोगी लगातार अङ्गड़ाई लिया करता है ; गर्म घरमें रहनेके समय दोनों हाथ बरफकी तरह ठण्डे मालूम होते हैं। ज्वराधिकारकी

कान ।—दाँत और मुखमण्डलमें दर्दके साथ दाहिने कानमें दर्द (पल्स) ; दर्द तेज और चिलक मारनेकी तरह दर्द। कानमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। स्नायविक सर-दर्द—माथा भेदकर एक कानसे दूसरे कानतक चला जाता है। श्रवण-शक्ति बहुत तेज—जरा भी जोरकी आवाजसे रोगी सिहर उठता है, मानो उसका शरीर भेदकर घुस रही है (थिरिड)। कानमें आवाज।

नाक ।—बार-बार छींकके साथ एकाएक नाकसे पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव हुआ करता था। एकाएक नाकसे हलदी या केशरके रङ्गका पानी गिरा करता है।

मुखमण्डल ।—चेहरेके बाएँ पार्श्वका स्नायुशूल ; दर्द वेधने और फाड़नेकी तरह, हनुसे कानतक प्रतिक्षिप्त हुआ करता है।

मुख-विवर ।—बायें पार्श्वके दाँत सब लम्बे और उनमें स्पर्श सहन नहीं होता ; दर्द बहुत असह्य मालूम होता है ; निरोग दाँतमें छेदनेकी तरह दर्द ; बढ़ना—छूनेपर और बहुत शीत लगनेपर तथा बहुत गर्मी लगनेपर। बायें पार्श्वकी उप-पंक्तिके पेषण दन्तमें भयानक दर्द और बहुत ज्यादा लार बहना ; ठण्डी हवामें घूमनेपर, छूनेपर और गर्मी लगनेपर बढ़ना ; कुछ ठण्डे घरमें टहलनेपर दर्द थोड़ा मालूम होता है। दोनों गाल फूल उठते हैं। भोजनके समय दाँतका दर्द घटा मालूम होता है। मुँह और डकारकी गन्ध सड़ी।

पाक और अंत्राशय ।—बार-बार गन्धक या कार्बोनिक एसिड गैस (अङ्गाराम्ल) की गन्ध-मिला डकार। औंघाई ; सुस्ती तथा कम्पभावके साथ मिचली। पाकस्थली खाली और सुस्त करनेवाली मालूम होना ; पाकस्थलीमें ऐसा भार मालूम होना, मानो एक पत्थर रखा हुआ है। बहुत थोड़ा खानेके बाद भी पेटमें ऐसा ही भार मालूम होता है। निर्मल वायु सेवनके लिये चलनेके समय पाकस्थलीके हृदग्र-प्रदेशमें उत्ताप और उदर भरा मालूम होता है। बायीं कोखमें प्रचण्ड दर्द। पेट फूलना और हवा छूटना।

मलान्त्र और मल ।—बार-बार पाखाना होनेकी आशामें पाखाने जाता है : परन्तु पाखाना नहीं बैठ सकता, बवासीरमें इतना दर्द होता है, कि रोगी प्रायः खड़ा नहीं रह सकता (इस्क्यूलस-हिप, कास्टि)। मलका पतलापन, मल भूरा, कुछ सड़ा, फेन-भरा, बार-बार आध्मान-वायु निकलनेके साथ पतला

पाखाना होना ; सवेरे ८ से १० बजेतक। पाखाना होनेके पहले पेटमें दर्द और बार-बार वायु निकलना। पाखाना होनेके समय कूथन, काँच निकलना और सुस्ती मालूम होना।

पेशाब।—मूत्र-ग्रन्थि-प्रदेशमें दबानेपर दर्द मालूम होता है ; बार-बार बहुत ज्यादा परिमाणमें फीका पेशाब हुआ करता है, विशेषकर रातमें ; आँख फूली, रोगी तृप्ति-पूर्वक बहुत ज्यादा भोजन करता है। मूत्रावरोधक पेशीकी शिथिलताकी वजहसे रातमें बार-बार अनजानमें पेशाब हो जाया करता है (कास्टि, रस-ऐरोमेटिका)। बार-बार वेग और बार-बार पेशाब। बैठनेके समय रह-रहकर मूत्र-मार्गमें सुई गड़ने या डङ्क मारनेकी तरह तेज दर्द ऊपरकी ओर फैलता है। सवेरे मूत्रनलीमें एकाएक चुनचुनी होने लगती है और खुजली पैदा हो जाती है। तेज प्यास और बार-बार बहुत ज्यादा स्राव (लैक-डिफ्लो, स्क्विला, ऐ-फास, इयुरेनियम-नाई)।

सार्वाङ्गिक।—पुराना बोखार, नियमित प्रकोप, जहाँ क्विनिनके प्रयोगसे ज्वर बन्द नहीं होता या उसके आकारका परिवर्त्तन नहीं होता, क्रोधी स्वभाव और विषन्न चित्त, अधीर, अस्थिर मति मनुष्य, माथेमें कमजोरी मालूम होना। अत्यन्त मानसिक अवसाद, मानसिक परिश्रमसे और भी बढ़ जाता है। श्वास-प्रश्वास तेज और मानसिक चञ्चलता पैदा हो जाती है। बहुत अधिक तम्बाकू खानेकी वजहसे बीमारियाँ, खासकर चित्तकी चञ्चलता।

त्वचा।—शरीरमें भयानक खुजली, विशेषकर रातमें। सुई या डङ्क मारनेकी तरह दर्द (एपिस)। खुजलानेपर वह अंश जब मला जाता है, तो उसमें जलन होती है। हाथ और चेहरेमें लाली और सूजनका पैदा हो जाना और रस-भरी फुन्सियाँ या छोटे-छोटे छालेकी तरह उद्भेद निकल आता करते हैं। शरीरमें जगह-जगह घनी फुन्सियाँ या घमौरियाँ निकलती हैं और उनसे पीली आभा लिये रस निकलकर पपड़ी या फटे घावमें परिणत हो जाता है (ग्रैफ)। शरीरमें जलन।

शीत, उत्ताप और पसीना।—छातीमें गर्मी मालूम होना और जाड़ा लगना ; माथा, वक्ष और प्रत्यङ्ग आदिमें एक जगहसे दूसरी जगह हट जानेपर फैल जानेवाला दर्द ; रोगी लगातार अङ्गड़ाई लिया करता है ; गर्म घरमें रहनेके समय दोनों हाथ बरफकी तरह ठण्डे मालूम होते हैं। ज्वराधिकारकी

शीतावस्थामें प्यास नहीं रहती और रोएँ खड़े हो जाते हैं या शरीर कण्टकित हो जाता है; इधर-उधर घूमनेपर यह लक्षण और भी बढ़ जाता है। हाथ-पैर ठण्डे मालूम होते हैं, उत्तापावस्थामें प्यासकी अधिकता, चित्त चञ्चल रहता है, न कही जानेवाली मानसिक यन्त्रणा और बेचैनी पैदा हो जाती है; घर बहुत गरम, बन्द और ऐसा मालूम होता है मानो उसमें हवा आनेके लिये कोई प्रबन्ध नहीं है; रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो उसको दम बन्द हो गयी है छातीमें दबाव मालूम होना; श्वास-प्रश्वास तेज़ हो जाया करता है; श्वासकृच्छ्रता,—रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका घर वायु-शून्य हो रहा है; माथेमें, चेहरेपर, तलहत्थीमें और पैरोंमें बहुत गर्मी पैदा हो जाती है और जलन हुआ करती हैं; तलहत्थीमें थोड़ा-थोड़ा पसीना मालूम हुआ करता है। पसीनेवाली अवस्था,—पीठके नीचेवाले अंशमें और नितम्ब-देशमें ठण्डा पसीना होता है; घरकी गर्मी असह्य हो जाती है और उसी वजहसे पसीना हुआ करता है।

वृद्धि।—मानसिक परिश्रमसे, शरीर हिलानेपर, छूनेपर, गर्मी और शीतकी अधिकतासे, घरमें बैठनेके समय या सर्दी अथवा वायु लगनेपर और रातमें।

घटना।—भोजनके बाद और ऐसे कमरेमें रहनेपर जो न बहुत ठण्डा हो न गर्म (क्षणिक)।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐकोनाइटम, आर्निका, बेलेडोना, कैलेण्डियुला, कास्टिकम, कैमोमिला, कोलोसिन्थ, हिपर, हैमामेलिस, कैल्मिया, मर्क्युरियस, पलसेटिला और स्पाइजिलिया।

तुलनीय।—असह्य दर्द या स्नायुशूल,—ऐकोन, कैमो, हिपर। जखम कुछ गड़ जाना और चोट आदि—आर्निका, कैन्थ। बदबूदार श्वास, आध्मान-वायु—आर्निका। अर्श—हायो। पेशाब—कास्टिक, बेलेडो। दाँतके दर्दके साथ कानमें दर्द—पल्स।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३रे दशमिक क्रमतक।

प्लैटिनम

(PLATINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इस बहुमूल्य धातुसे पहले विचर्ण और इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—रजःस्वल्पता ; मृत्याशङ्का रोग ; अकड़न ; चित्त-विभ्रम ; दाँत निकलना ; निस्तेज भाव ; वाधक ; छोटी सन्धियोंका वात ; रक्त स्राव ; अर्श ; मूर्च्छावायु ; सीसाका विष फैल जाना ; कृत्रिम मैथुन ; विषाद ; रजकी अधिकता ; रजोबन्ध ; मानसिक गड़बड़ी ; स्नायु-शूल ; स्नायविक दुर्बलता ; सुन्न हो जाना ; कामोन्माद ; डिम्बाधारकी बीमारी ; योनि-प्रान्तकी खुजली ; पट्ट-क्रिमि ; जरायुका कड़ापन ; जम्हाई इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—जिन स्त्रियोंमें जरायु-विकार रहता है, उनके मनोराज्यपर ही इस दवाकी विशेष शक्ति प्रकट हुआ करती है। मूर्च्छा-वायु, विषादोन्माद, धर्मोन्माद और सूतिका या प्रसव होनेके बादके उन्माद वगैरहमें प्लैटिनम बहुत ही लाभदायक है। इन सभी रोगोंमें अपने महत्वका बहुत ही अधिक ज्ञान, मृत्यु-भय, कामेन्द्रियकी उत्तेजना इत्यादि लक्षण वर्तमान रहते हैं। डा० ह्यूजने लिखा है कि पुरुषोंके मन, जननेन्द्रिय और अण्डकोष वगैरह रोगोंमें आरम जैसा है ; स्त्रियोंके मन, जननेन्द्रिय और डिम्बाशयकी बीमारियोंमें प्लैटिनम भी वैसा ही लाभदायक है। रोगवाले अंशका सुन्न हो जाना (कैमो), मुखमण्डल, माथा, पाकस्थली, डिम्बाधार वगैरहका स्नायुशूल और स्त्रियोंकी ऋतुके समय बहुत अधिक घोर काले रङ्गका जमा हुआ रक्तस्राव हुआ करता है, अण्डलालकी तरह प्रदरका स्राव होता है या जो जरायु-विकारकी प्रतिच्छिप्त क्रियाकी वजहसे दूसरी-दूसरी बीमारियाँ भोगती है, उनके डिम्बाधार और जरायुके रोगमें और दुरारोग्य कब्जियत और सीसक-शूल रोगमें भी इसका विशेष लाभ दिखाई दिया करता है। आगे लिखे कई लक्षण इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं:—अपनी मर्यादाका बहुत अधिक ज्ञान, अपने मतकी प्रधानता, अहङ्कार ; सेगिनोकी विश्वास रहता है, कि उससे

सभी हीन और छोटे हैं और वह स्वयं सभी विषयोंमें श्रेष्ठ और बड़ी है। रोगिनीको अपने चारों ओरकी सभी चीजें और मनुष्य बहुत क्षुद्र दिखाई देते हैं और उसे ऐसा मालूम होता है, कि उसकी देह बहुत बड़ी हो गई है। माथा और नाककी जड़में खींचन, दबाव और चूर करनेकी तरह दर्द मालूम होता है। दर्द आदि धीरे-धीरे पैदा होता है और धीरे-धीरे ही गायब हो जाता है (स्ट्रैमनम)। शरीरके विभिन्न अंशोंका सुन्न पड़ जाना। कब्जियत—मल सटकर कीचकी तरह मलद्वारमें लगा रहता है, सहजमें ही नहीं निकलता। उदर तथा समस्त वस्तिगह्वरमें दबाने, छेदने और नीचेकी ओर खिंचनेकी तरह दर्द होता है और यह दर्द धीरे-धीरे नितम्बतक चला जाता है। रजकी अधिकता—स्राव गाढ़ा, काले रङ्गका जमा हुआ खून। प्रदर—स्राव अण्डलालकी तरह। कामोन्माद—रोगिनीकी सब जननेन्द्रियाँ अत्यन्त स्पर्श-असहिष्णु रहती हैं, यहाँतक कि वस्त्रके स्पर्शतकसे बहुत कातर हो पड़ती है; चिकित्सक जब परीक्षाके लिये योनिमें अंगुली डालता है तो रोगिनीमें आक्षेप पैदा हो जाता है और रमणके समय बहुत तकलीफ़ होती है (म्यूरेक्स, ओरिगेनम)।

लक्षणावली

मन।—रोगिनीको अपने घरकी सभी चीजें अपरिचित और बहुत डरावनी मालूम होती हैं। वह सभी मनुष्योंको दानव समझती है। दृष्टि-भ्रम—रोगिनीको चारों ओरकी सभी चीजें और मनुष्यका आकार उसकी अपेक्षा छोटा और विद्या तथा बुद्धिमें हीन मालूम होता है। विकारावस्थामें कभी अपना महत्व प्रकट करती है और कभी-कभी किसी मनुष्यके पास आनेपर डरने लगती है। बुद्धिकी गड़बड़ी, धर्मोन्माद, रोगी चुपचाप पड़ा रहता है, किसीसे कोई बात नहीं करता; अहङ्कारपूर्ण कामोन्माद और निष्ठुर; जिसे-तिसे आलिङ्गन करना चाहता है। उन्मत्तता और अहङ्कार प्रकट करता है; दूसरोंका दोष देखनेवाला परछिद्रान्वेषी; अश्लील बोलनेवाला; डर या क्रोध पैदा हो जानेपर रोगिनीका शरीर काँपा करता है और रह-रहकर अकड़न पैदा हो जाती है। परिवर्त्तनशील चित्त—अभी आनन्द-पूर्ण भाव था, लेकिन क्षणभर बाद ही दुःखित और रोना-सा हो जाता है, जहाँपर हँसनेका कोई कारण नहीं रहता, वहाँ भी ठहाका मारकर हँस उठता है (कैना-इन, क्रोकस)।

विमर्ष भाव, रोने चाहनेका उपसर्ग, विशेषकर सन्ध्याके समय, तकलीफसे रोगी रो पड़ता है। अपने शरीरमें राक्षसकी तरह बल अनुभव करता है। पिछली बातोंके लिये पश्चातापकर रोगी कातर हो पड़ता है (ऐ-नाइट्रिक)। रोगिनी समझती हैं, कि शीघ्र ही उसकी बुद्धि खराब हो जायगी और उसकी मृत्यु बहुत पास है। हृत्प्रदेशमें बेचैनी मालूम होनेकी वजहसे उसे चिन्ता पैदा हो जाती है, मृत्यु-भय होता है और वह यह समझती है, कि मृत्यु पास आ गयी। कलेजा धड़का करता है और श्वास-प्रश्वासमें व्याघात मालूम होता है। उसकी जीवन-धारणकी इच्छा नहीं रहती, कुछ बोलती नहीं है और सभी विषयोंमें उदासीन रहती है। सभी मनुष्योंके प्रति अनादरका भाव प्रकट करती है। मानसिक लक्षण आदि गायब हो जाने बाद शारीरिक और शारीरिक दब जानेपर मानसिक लक्षण पैदा हो जाया करते हैं। डर, भय, चिढ़, अतिशय इन्द्रिय-सेवन और अहङ्कारकी वजहसे बुद्धिमें गड़बड़ी। रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसके शरीरका आयतन बढ़ता जा रहा है। सामान्य कारणसे भी बहुत अधिक अभिमान पैदा हो जाता है (इग्ने, स्टैफ); बहुत अधिक अभिमानकी वजहसे रोगिनी बहुत देरतक घरमें छिपी रहती है, किसीसे मिलती-जुलती नहीं और छुरी देखते ही अपनी सन्तान या स्वामीकी हत्या करनेके लिये आवेग पैदा होता है। रोगिनी कल्पना दृष्टिसे भूत-प्रेत देखा करती है (हायो, कैलि-ब्रोम)।

मस्तक।—सन्ध्याके समय चकित हो जानेकी तरह सरमें चक्कर पैदा हो जाना और बेहोशी-सी आ जाती है। सरमें चक्कर—बैठनेके समय (कैमो, पल्स) और सीढ़ी चढ़नेके समय (काइङ्का, कैल्केरिया-आस्ट्रि)। मस्तिष्क और माथेकी त्वचामें संकोचन अनुभव होनेके बाद माथेका भीतरी भाग और मूर्द्धाकी त्वचा सुन्न या स्पर्श-ज्ञान रहित रहा करती है। वृद्धि—सन्ध्याके समय और बैठनेके समय। घटना—शरीर हिलाने और निर्मल वायु लगनेपर। थोड़ेमें ही कातर या मूर्च्छा-वायुग्रस्त रोगियोंका स्नायविक सर-दर्द; दर्द, ऐंठन और भीतरकी ओर दबावकी तरह तकलीफ मालूम होती है। चेहरा गर्म और लाल हो उठता है और सरमें भो-भों किया करता है। दर्द धीरे-धीरे बढ़ता और धीरे-धीरे ही घटता है। क्रोध या चिढ़ पैदा हो जानेकी वजहसे; जरायु-रोगके प्रतिक्षेपकी वजहसे (ऐक्टिया-रेसि) दर्द। माथेमें चैतन्य-शक्तिकी कमी मालूम होती है। ललाटके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो

पानी भरा है (मानो माथेमें पानी था--ऐनान्थिरम)। सर-दर्द—ललाट और कनपटीके भीतर ऐसा अनुभव होना, मानो दबा रहा है। वृद्धि—संध्याके समय माथा झुकानेपर, स्थिर होकर रहने और घरमें रहनेके समय ; शारीरिक परिश्रम करनेपर और निर्मल वायु लगनेपर। माथा मानो दृढ़ भावसे किसी फीतेसे बँधा हुआ है, ऐसा मालूम होनेवाला सर-दर्द (ऐ-नाई, कार्बो-वेज, काक्यू, साइक्लोम, जेल्स); मस्तिष्कमें सुन्न भाव, गर्मी पैदा हो जाना और अप्रसन्नता मालूम होती है, माथा झुकाने और शारीरिक परिश्रम करनेपर बढ़ना। दोनों कनपटियोंसे चींटी चलनेकी तरह अनुभूति निचले हनुमें चली जाती है और यह रोगवाली जगह ठण्डी मालूम होती है : वृद्धि—संध्याके समय और विश्रामके समय। घटना—हाथसे मलनेपर। ललाट और कनपटीमें, विशेषकर नासिका-मूलमें दबावकी तरह और ऐसा दर्द, मानो जकड़ गया है ; माथा हिलाने और झुकानेपर बहुत बढ़ जाया करता है और किसी-किसी स्थानपर माथेमें उत्ताप मालूम होता है, चेहरा लाल हो जाता है, बेचैनी मालूम होती है और रुलाई आया करती है।

आँख।—सर-दर्द रोगमें आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ दिखाई देती हैं। आँखमें ठण्डक मालूम होना। रोगिनीकी आँखमें अपने सिवा सभी चीजें और मनुष्य प्रकृतकी अपेक्षा छोटे मालूम होते हैं। पलकोंका फड़कना (ऐगार); चक्षुगह्वरके भीतर ऐसा दर्द, मानो जकड़ गया है।

कान।—(सर-दर्द रोगमें) कानमें नाना प्रकारकी गड़गड़ाहटकी आवाजें सुन पड़ती हैं। बहुत दूरसे तोपकी गरजकी आवाज आकर मानो दाहिने कानमें चिलक मारनेकी तरह दर्द पैदा कर देती है। कानमें ठण्डक मालूम होना ; कानसे सुन्नपन आरम्भ होकर गाल और ओंठमें फैल जाता है।

नाक।—नाककी जड़में तेज़ खींचन और दबावकी तरह दर्द, मानो किसीने चिमटेसे कसकर नाक पकड़ ली है ; चेहरेमें उत्ताप और लाली पैदा हो जाना।

मुखमण्डल।—चेहरा म्लान, रक्तशून्य, दुबला और अस्थिसार (हड्डी-ही-हड्डी मानो हो) ; चेहरा लाल और उसमें जलन पैदा करनेवाली गर्मी,—ज्वालामयी तृष्णा ; वृद्धि—सन्ध्याके आरम्भ कालमें। चेहरेके दाहिने पार्श्वमें सर्दी, कनकनी और सुन्नकी तरह अनुभव होना। चेहरेका स्नायुशूल,—

गण्डास्थिमें खोदनेकी तरह और मानो दोनों ओरसे स्क्रू से कसा जा रहा है; इस तरहका दर्द और सुन्नकी तरह अनुभव होना।

पाक और अन्त्राशय।—पाकस्थलीमें भाफ़ खौलना या भुटभाट शब्द हुआ करता है। लगातार मिचली और आशङ्का। मन प्रफुल्ल न रहनेके कारण भूख न लगना। राक्षसी भूख और जल्दी-जल्दी भोजन करना (वेल, काफि, कैलेडि); रोगी सभी चीजोंसे घृणा करता है। भूख न रहना (एपिस, या केवल ज्वरके समय प्यास। पाकाशय शून्य रहनेपर रोगीको बहुत बेचैनी मालूम होती है; पाकस्थली भरी रहनेपर अच्छा रहता है (ऐल्यू)। भोजनके बाद पेटमें भार मालूम होना है। उदरके ऊपरी भागमें जलन आरम्भ होकर उदरतक फैल जाती है। सीसकशूल (ऐल्यु, कोलोसिन्थ, ओपि, प्लम्ब), नाभि-प्रदेशसे पीठतक दर्द फैल जाता है, रोगी यन्त्रणासे चिल्लाया करता है और आराम मिलनेकी आशामें जितने प्रकारसे सम्भव हो सकता है, अपने शरीरका स्थापन करता है (पाइपरमिथ)। उदरसे वस्तिगह्वरके नीचेकी समस्त अन्त्रमण्डली और जरायुमें नीचेकी ओर खींचन मालूम होती है। पाक और अन्त्राशयकी पेशियोंका फड़कना। मानो समूचा उदर दृढ़ भावसे आवद्ध हो रहा है, ऐसा अनुभव होना। उदरकी त्वचामें खींचन मालूम होना। आँतोंमें रुके आध्मान वायुकी अधिकताकी वजहसे खींचन और दबावकी तरह दर्द।

मलान्त्र और मल।—कब्जियत,—सीसेके विषकी वजहसे (ऐल्य, ओपि)। विदेश-भ्रमणकी वजहसे (ऐल्यु, इग्ने, ओपि; समुद्रमें भ्रमणसे—ब्राई); अन्त्रमण्डलीकी निष्क्रियतासे उत्पन्न (ऐल्यू, कैमो, ग्रैफ, नेट्र-म्यूर, ओपि, प्लम्ब—नक्स-वोमिकाके बाद प्लैट और प्लैटिनाके बाद प्लम्बमका प्रयोग करना चाहिये या ऐल्यूमिना या ब्रायोनियाके बाद प्लैट और उसके बाद प्लम्बमका प्रयोग करना चाहिये); कब्जियत; बार-बार वृथा मलवेग और चेष्टा; मल चिपटा या लसदार कीचकी तरह मलद्वारमें लगा रहता है (ऐल्यु), सहजमें ही बाहर नहीं निकलता, परिव्राजक और गर्भवतियोंकी कब्जियत। पाखाना हो जानेपर उदरमें सुस्ती मालूम होती है या शीत मालूम होता है। पाखाना होनेके समय बवासीरका मसा बाहर निकल पड़ा करता है।

पुं०-जननेन्द्रिय।—जवानी आनेके पहले ही हस्त-मैथुन आदि अस्वाभाविक उपायोंसे इन्द्रिय परि-तृप्तिके कारण बीमारियाँ (स्टैफ), दुःखित और देखनेमें निरीहकी तरह बालक; रोगी इस तरह अकड़नमें पड़ा रहता

है, मानो उसे मृगी हो गयी हो ; दोनों आँखें गड़हेमें धँसी, पीली मूर्त्ति, आक्षेपके समय चेहरा सफेद और अस्थिसार ही दिखाई देता है ; सभी समय बेहोशी नहीं आती ; रोगीके दोनों पैर मुड़ जाते हैं और चबानेकी तरह दर्द अनुभव होना। अस्वाभाविक कामोद्दीपन, बार-बार लिङ्गोच्छ्वास, विशेषकर रातमें और कामोद्दीपक प्रेम-भरे सपने देखना। मूत्राधार-मुखशायिका-ग्रन्थिसे रस-स्राव। सङ्गम बहुत थोड़ी देरतक हुआ करता है और उसमें रोगीको विशेष सुख नहीं अनुभव होता।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—कामोन्मत्तता (मूरेक्स, ओरिगेनम, विशेषकर प्रसवके बाद जननेन्द्रिय प्रदेशमें सुरसुरी पैदा होकर उदरके भीतरतक चली जाती है। योनि प्रभृति जननेन्द्रिय प्रदेशमें अत्यन्त स्पर्शासह,—कपड़ातक सहन नहीं होता ; चिकित्सक यदि परीक्षाके लिये अंगुलीसे योनि स्पर्श करता है, तो रोगिनीको अकड़न पैदा हो जाती है। सङ्गमके समय योनि-द्वार अत्यन्त स्पर्श कातर हो पड़ता है, रमणके समय रोगिनी या तो मूर्च्छित हो पड़ती है या रमण सहन नहीं कर सकती (थूजा ; शुष्कताकी वजहसे होनेपर—बेल, सिपि ; योनिसे रक्त-स्राव मिला रहनेपर—क्रियो ; डिम्बाधारमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द रहनेपर—फेरम, नेट्र-मूर, एपिस)। जरायु-भ्रंश रोगमें कामाद्रि और जननेन्द्रिय प्रदेशमें स्पर्श सहन न होना और दबाव मालूम होना ; चेहरेके अलावा समूची देह बहुत ठण्डी मालूम होती है। जननेन्द्रियकी बहुत अधिक पूर्णता, विशेषकर अनूढ़ा युवतियोंको (कैलि-फास)। रजः स्राव—नियमित समयके बहुत पहले हो जाता है। स्राव बहुत अधिक और दीर्घ कालतक स्थायी हुआ करता है। स्राव काला, जमा और बदबूदार (कैमो, क्रोकस, सैबाई), जरायुमें नीचेकी ओर खींचनकी तरह दर्द, जरायुका घूम जाना और योनिके बाहरी स्थानपर अत्यन्त स्पर्श-असहिष्णुता। जरायु और योनिमें असह्य खुजलाहट पैदा हो जाता करती है। जरायुसे खूनका स्राव—रक्तका कुछ अंश तरल और काले रङ्गका तथा जमा हुआ गाढ़ा रहता है या अलकतरेकी तरह बड़े-बड़े जमे हुए टुकड़े सब निकलते हैं (क्रोकस)। प्रदर,—स्राव अण्डलालकी तरह (ऐल्यू, ऐमोन-मूर, बोवि, बोर, हाइड्रैस्ट, लिलियम-टाई, पेट्रोल), केवल दिनके समय (ऐल्यु, लैक-कैन, मूरेक्स) ; पेशाब होनेपर (निकोलम) या आसनसे उठनेके समय। दोनों डिम्बाधार प्रदाह-भरे, उनमें रह रहकर जलन हुआ करती है और ललाटमें सुई

गड़नेकी तरह दर्द मालूम हुआ करता है। कभी-कभी होनेवाला डिम्बाधार प्रदाह। जभी-तभी ऐसा मालूम होता है, कि आर्त्तव-स्राव आरम्भ हो जायगा (क्रोकस, लेमियल-ऐल, मैंग-कार्ब, मस्कस, ऐ-मूर)। प्रसवके दर्दके समय योनि और योनि-वहिर्देशमें स्पर्श सहन नहीं होनेकी वजहसे जरायुके सङ्कोचनमें व्याघात पैदा हो जाया करता है। प्रसवका दर्द—आक्षेपिक, दर्द पैदा करनेवाला और निष्फल।

श्वास-यन्त्र।—स्वर-लोप (सामान्य सर्दीकी वजहसे—कास्टि; अकारण स्वर-लोप—इग्ने; ऋतुके समय—जेल्स; उत्तापका स्पर्श होते ही स्वर लोप—ऐण्टि-क्रूड; स्वर-तन्तुकी निष्क्रियतासे उत्पन्न—ऐ-आर्स्नेल; सार्वाङ्गिक दुर्बलताके साथ—आयोड)। हृद्स्पन्दन और श्वास-कृच्छ्रताके साथ, खुसखुसी स्नायविक सूखी खाँसी। ऐसा अनुभव होता है कि वक्षस्थल खूब कसा हुआ है और श्वासाल्पता। हमेशा पूरी श्वास लेनेकी इच्छा रहनेके कारण व्याघात पैदा हो जाता है। उदरके ऊपरी प्रदेशसे एक आशङ्काजनक दबाव और उत्तापका अनुभव वक्षमें चढ़ता है। ऐसा अनुभव होता है कि वक्षपर कोई भारी चीज़ रखी हुई हैं और पूर्ण श्वास-ग्रहणकी इच्छा होती है (मिडोरिन, पैरिस, प्रूनस)। वक्षके पार्श्वमें कसावटका भाव, दबाव मालूम होना और शूल गड़नेकी तरह दर्दकी वजहसे रोगी किसी करवट भी सो नहीं सकता। वक्षमें मानो कोई भार दबाया हुआ है, ऐसी अनुभूतिकी वजहसे गहरा श्वास-प्रश्वास (कैलि-कार्ब)। बाएँ वक्षमें कभी-कभी ऐसा दर्द होता है मानो वह जकड़ गया है। धीमा दर्द क्रमसे बढ़ जाता है और फिर क्रमसे घटा करता है। श्वास-ग्रहण करनेके समय वक्षके बगलमें छुरी मारनेकी तरह दर्द। हृत्पिण्डकी बहिरावरणीय अन्तरावरणी-प्रदाहकी प्रथम अवस्था, बहुत अधिक प्राण-भय और कलेजेमें धड़कन हुआ करती है।

गर्दन और पीठ।—गर्दनका पिछला भाग क्षीण, माथा सामनेकी ओर झूल जाया करता है (काक्यु, स्टैनम, वेरेट्रम)। पीठ और पीठका निचला अंश मानो चोट खा गया है या टूट गया है, इस ढंगका दर्द (इयुपेट-पर्फौल, कैलि-कार्ब, नेट्र-मूर, फाइटो, वेरियोलिनम), वृद्धि—जोरसे मलनेपर या पीछेकी ओर झुक जानेपर (कभी पीछे और कभी सामनेकी ओर झुक पड़नेपर और जोरसे दबाने या मलनेपर घटना—प्लम्बम)। पीठके निचले

अंशसे दबानेकी तरह दर्द वस्तिगह्वरके यन्त्र आदिमें चला जाता है। त्रिकास्थि या नितम्ब और मेरु-चंचु सुन्न और अनुभव-शक्ति-हीन मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—दोनों बाँह क्षीण और शिथिल पेशीकी तरह मालूम होते हैं, मानो बहुत देरतक कोई भारी चीज़ पकड़े हुए थे; घटना—बाँह हिलानेपर। कोहनी-प्रदेशमें जलन, मानो खरोंच लग गयी है; हाथकी अंगुलीकी विकृति। उरु और दोनों जानु क्षीण हो जाते हैं, मानो चोट लग गयी है। बाएँ जानुमें ऐसा दर्द मानो चोट लग गयी है। बैठनेके समय दोनों पैर फड़कते हैं और सुन्न और अकर्मण्य मालूम होते हैं, विशेषकर सन्ध्याके समय। दोनों पैर सुन्न और श्रान्त मालूम होते हैं, केवल बैठनेके समय। प्रत्यंगोंमें ऐसा सङ्कोचन मालूम होता है, मानो वे कसकर बँधे हुए हैं। ऐंठनकी तरह दर्द, प्रत्यंग आदि और सन्धियाँ सब सुन्न मालूम होती हैं। सन्धियोंकी और प्रत्यङ्गोंमें रह-रहकर चिलक मारनेकी तरह हो उठता है और खींचनकी तरह दर्द मालूम हुआ करता है। हाथ और पैरकी अंगुलीमें जखम।

सार्वाङ्गिक।—मूर्च्छावायु-ग्रस्ता रमणी और बच्चोंका आक्षेपिक रोग, धनुष्टङ्कारकी तरह रोगीके प्रत्यङ्ग आदि आक्षिप्त और विक्षिप्त हुआ करते हैं,—रोगी बीच-बीचमें उन्मत्तकी तरह चिल्ला उठता है और कभी-कभी चुप या निस्पन्द हो जाता है; आक्षेप और श्वास रुक जानेका उपक्रम पर्यायक्रमसे पैदा हो जाया करता है, पेशियाँ सब एक-एककर फड़कती हैं और रोगीका शरीर काँपता और सिहर उठा करता है, रात और सवेरा होनेके समय बढ़ जाता है। जननेन्द्रियकी उत्तेजनासे पैदा हुआ आक्षेप (ब्यूफो, इग्नेशिया देखिये)। दृढ़ाक्षेप या विरामशून्य,—बेहोशी नहीं आ जाती; रोगीका चेहरा सफेद या रक्तशून्य और हड्डी-हड्डी ही दिखाई देता है। आक्षेपके प्रकोपके बाद (दाँत निकलनेवाले) बच्चा चित्त होकर पड़ा रहता है, कपड़े आदि लात् मारकर दूर फेंक देता है और घुटने मोड़, दोनों उरु चौड़ेकर पड़ा रहता है। पक्षाघातके बादकी सुस्ती; विश्रामसे या स्थिर होकर बैठनेपर बढ़ जाता है; प्रत्यङ्ग आदि सुन्न, अकड़े, ठण्डे, उत्ताप रहित अनुभूत होते हैं।

निद्रा।—बार-बार जम्हाई, विशेषकर सन्ध्याके आरम्भमें, मानो सारे शरीरको हिलाकर जम्हाई आती है। रातमें नींद खुलनेपर बड़े कष्टसे निद्राका घोर दूर होता है,—जाग्रत अवस्थामें भी सभी विषय अच्छी तरह उपलब्ध

नहीं कर पाता (नेट्र-म्यूर)। निद्रित अवस्थामें चित्त होकर माथेके ऊपर दोनों हाथ रखकर सोया करता है। दोनों घुटने ऊँचे और दोनों पैर खुले रखता है। दुर्दमनीय स्नायविक उत्तेजनाकी वजहसे अनिद्रा। युद्ध और खून-खराबीके सपने देखता है, केवल निद्रित अवस्थामें पसीना होता है (सिङ्कोना, कोनायम, पल्स ; केवल जागनेकी अवस्थामें पसीना होता है, सोनेके लिये आँख बन्द करते ही सूखा उत्ताप पैदा हो जाता है—संम्बुकस)।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—घरसे बाहर जाते ही कम्प पैदा करनेवाला शीत आरम्भ हो जाता है—बाहरकी हवा ठण्डी हो या न हो। उत्ताप क्रमसे बढ़ता है और क्रमसे धीरे-धीरे घटता है। सिर्फ निद्रित अवस्थामें पसीना हुआ करता है—जागते ही शरीर सूख जाता है (ठीक सैम्बुकसके विपरीत)।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष या दोषघ्न ।—प्लम्बम, पलसेटिला, स्पिरिट-नाइटर, कोलचिकम।

अनुकूल सम्बन्ध ।—लाइ, पल्स, रस, सिपि, बेल, कैल्के, इग्ने, मर्क, सल्फ, वेरेट।

अनुपूरक ।—पैलेडियम।

तुलनीय ।—गर्व या अहङ्कार—पैलेड। नकली मैथुनकी वजहसे आक्षेप—स्टैफ। कामोन्माद—जरायुकी बीमारी—आरम, सिपिया। गुल्मवायु—टैरेण्टुला ; निर्लज्जता—भूत-प्रेत देखना—हायोसा ; मृत्युभय—ऐकोन, आर्स ; रक्त-स्राव—कैमो। कब्जियत—लाइकोपो, ऐलूमिना। काले केशवाली स्त्री—सिपिया। गम्भीर विषयमें हँसना—ऐनाका, नेट्रम-फास।

सदृश ।—ऐसाफिट, आरम, बेल, क्रोकस, इग्ने, लाई, प्लम्ब, पल्स, रस, सेबाडि, सिपि, सल्फ, हायो, म्यूरेक्स, फास, ऐल्यू, ओपि, कैलि-फास, ऐनाक, नेट्र-म्यूर।

शक्ति ।—तृतीय दशमिक क्रमसे २०० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व ।—२५ से ४० दिन।

प्लैटिनम म्यूरियैटिकम

(PLATINUM MURIATICUM)

दूसरा नाम ।—क्लोराइडम आफ प्लैटिनम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़को विचूर्णकर पानीमें गलाकर द्रव्यके रूपमें तैयार किया जाता है ।

उपयोगिता और आभास ।—उपदंश रोगमें पोटास आयोडसे फायदा न होनेपर बहुत प्लैटिनम-म्यूरके प्रयोगसे फायदा होता देखा गया है । उपदंशकी वजहसे हड्डीमें जखम (विशेषकर नाक और अंगुलीको हड्डी), गलेका जखम—निगलनेमें कष्ट ; पैरकी हड्डीमें जखम ; माथेके पिछले भागमें तेज़ दर्दके लक्षणमें फायदेमन्द है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—प्लैटिना-म्यूर ।

शक्ति ।—६—२०० ।

प्लैटिनम म्यूरियैटिकम नेट्रोनेटम

(PLATINUM MURIATICUM NATRONATUM)

दूसरा नाम ।—क्लोरो प्लैटिनम आफ सोडियम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़से विचूर्ण । पानीमें गलाकर तरल द्रवके आकारमें क्रम तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—बहुमूत्र, पेशाबमें अण्डलाल, उदराध्मानके लक्षणमें यह विशेष लाभदायक दवा है ।

शक्ति ।—६—३० ।

प्लैटेनस

(PLATANUS)

दूसरा नाम ।—प्लैटेनम ऐकेरीफोलिया ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—नयी फुनगीसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—पलकोंका अर्बुद, आँखका मोतियाबिन्द लक्षणमें कुछ समयतक मूल अर्क सेवन करनेसे आँखका मोतियाबिन्द और अर्बुद अच्छा हो जाता है। आँखकी पुतलियाँ स्वाभाविक आकारमें आ जाती हैं । मछलीके चोयेंटेकी तरह कड़ी पपड़ीवाले चर्म लक्षणवाले एकज़िमा रोगकी यह एक लाभदायक दवा है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—सिनारेरिया-मेरीटिमा ।

शक्ति ।—मूल अर्क ५ बूंदकी मात्रामें ।

प्लेकट्रान्थस

(PLECTRANTHUS)

दूसरा नाम ।—प्लैकट्रान्थस फ्रोन्सोकोसास ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे इकट्ठा किये हुए उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—**मेरुमज्जाका पक्षाघात, आक्षेपिक पक्षाघात,** दन्त निकलनेके समय **दाँतका दर्द,** परिपाक यन्त्रोंमें जलन, समूचे शरीरमें जलन, सुस्ती, ग्रन्थि-शूल, नाभिमें दर्द वगैरह लक्षणोंमें फायदेमन्द है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ओसिमम, लेपटेण्ड्रा, कैलि-कार्ब, लाइको, बेल, हिपर, नाइट्रि-ऐसिड, आर्ज-नाई ।

शक्ति ।—६ठीं—३०वीं ।

प्लम्बैगो

(PLUMBAGO)

दूसरा नाम ।—प्लाम्बेगो, लिटोरलिस, ग्रैफाइटिसका दूसरा नाम प्लम्बैगो है, लेकिन यह धातु-विशेष है ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—ब्रेजिल देशका उद्भिद विशेष । खूनके रङ्गका पेशाब, ग्रन्थि-समूह और सर्वाङ्गमें दर्द, मुँहसे दूधके रङ्गकी लार बहना, मुँहमें जखम, भोजनके बाद सरमें चक्कर वगैरहमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—६—३० ।

प्लम्बम

(PLUMBUM)

दूसरा नाम ।—लेड, सीसा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण, फिर अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— अन्धापन ; रक्ताल्पता ; सुन्न हो जाना ; धमनीमें अर्बुद ; उपाङ्ग-प्रदाह ; दमा ; शीर्णता ; अस्थि-विवर्द्धन (हड्डीका बढ़ना) ; मस्तिष्ककी कोमलता और अर्बुद ; बहुमूत्र ; शूल ; कब्जियत ; मूत्राधारका प्रदाह ; द्वित्व-दर्शन (दो देखना) ; शोथ ; बाधक ; मूत्रकृच्छ्रता ; शीर्णता ; मृगी ; आँख उठना ; क्षुद्र-सन्धि-वात ; रक्तोत्कास (खून-मिली खाँसी) ; बवासीर ; सर-दर्द ; आँत बढ़ना ; त्वचाका चैतन्याधिक्य ; नाना प्रकारकी आँखोंकी बीमारियाँ ; चर्म-रोग ; सविराम ज्वर ; आँतका अवरोध ; आँतके गासेमें दूसरी आँतका प्रवेश कर जाना ; कामला ; जबड़ेका अर्बुद ; मसाना या मूत्रग्रन्थिकी बीमारी ; यकृतकी बीमारी ; दाँती लगना या जबड़ा अटकना ; चलनेकी शक्तिका विकार ; विषाद ; रजसाधिक्य ; मेरुदण्डका मज्जक-प्रदाह ; अन्ननलीका संकोचन ; पक्षाघात ; उपझिल्ली-प्रदाहकी

बादका पक्षाघात ; मलान्त्रका शूल ; क्रमशः बढ़नेवाला दुबलापन ; गुह्यद्वारका निकलना (काँच निकलना) ; रटन्रसी ; मेरुदण्डका अर्बुद और नाना प्रकारका अर्श और प्लीहा रोग ; आँतोंका क्षय-रोग ; जीभका पक्षाघात ; नाभिकुण्डका फोड़ा ; योनिकी अकड़न ; शिराओंका फूलना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—मेरुदंडके तन्तुके अपजननकी वजहसे पैदा हुआ पक्षाघात, मेरुदण्डके पीछेवाले स्तम्भका घनत्व और स्नायु-तन्तुका अपजनन तथा प्रत्यंग आदिकी संचालन शक्तिका न रहना प्रभृति रोगोंमें उपकारके लिये यह बहुत प्रसिद्ध है। विशेषकर स्नायु-शूल, प्रचण्ड अन्त्रशूल, मलका कड़ापन, न सिकुड़नेवाली बाहर निकली हुई आँत (काँच निकलकर जो भीतर जल्दी नहीं घुसती), अन्त्रग्रास (अर्थात् आँत-में-आँतका प्रवेश कर जाना), लालामूत्र, तेजोसे बढ़नेवाला दुबलापन और सार्वाङ्गिक या किसी अङ्ग-विशेषका पक्षाघात, खूनकी कमी और बहुत कमजोरी मिली बहुत अधिक शारीरिक शीर्णता ; मेरुदण्डके अपजननसे पैदा हुई पेशीकी निष्क्रियता वगैरह रोगोंमें भी इसका बहुत अधिक फायदा होता है। इसके कई अव्यर्थ निर्णायक लक्षण ये हैं:—आलस्य—मनुष्योंसे भरे घरमें जानेपर रोगीको बेहोशी आने लगती हैं। स्थूल-बुद्धि, मानसिक जड़ता और फिर क्रमसे पूर्ण उदासी पैदा हो जाती है। क्षीण या लुप्त स्मृति—भाव प्रकट करने योग्य वाक्य ही उसे नहीं मिलते, बहुत देरतक सोचनेपर कहीं मनमें आते हैं। अन्त्रशूल और प्रलाप पर्यायक्रमसे पैदा होता है। शय्यामें सोकर नाना प्रकारकी अद्भुत भाव-भङ्गी दिखाता है—मूर्त्तिमान, सफेद रङ्गका, पीला, मुर्देकी तरह, गड्ढेमें धँसा, गन्ध-विशिष्ट, बहुत आशङ्का और यन्त्रणा प्रकट करनेवाला मुखमण्डल, वह चमकीला और तेल लगानेकी तरह दिखाई देता है। दाँतके मसूढ़ेके किनारे स्पष्ट दिखाई देनेवाली नीली या सीसेकी रङ्गकी रेखा दिखाई दिया करती हैं तथा दोनों मसूढ़े फूले और मलिन रहते हैं। उदरमें भयानक दर्द पैदा होकर शरीरके चारों ओर फैल जाता है। रातमें उदरमें इस तरहकी अनिर्वचनीय तकलीफ़ मालूम होनेकी वजहसे रोगी बहुत देरतक हाथ-पैर फैलाया करता है या अङ्गड़ाई लिया करता है (ऐमिल, साइमिक्स)। प्रबल अन्त्रशूल—उदरमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक डोरीसे प्रबल वेग द्वारा मेरुदण्डकी ओर खिंच रहा है। अन्त्रग्रास या आँतोंके गासेमें आँतका घुस जाना, भयानक अन्त्रशूल और मलमय वमन हुआ करता है (पार्स, पोपि, वैरेट, लैके)।

बाहर निकली केई आँतका संकोचन न होना। कब्जियत—मल कठिन और मेषके मलकी तरह काले रङ्गका बड़ा गांठ-गांठ (ब्राई, चेलिडो, ओपि, प्लैट, "प्लैटिनम" का प्रयोग करनेपर यदि फायदा न हो तो "प्लम्बम" का प्रयोग करना चाहिये)। मलद्वारका आक्षेप और बहुत अधिक सिकुड़ने-फैलनेकी वजहसे प्रबल वेग और भयानक यन्त्रणा। लालामूत्र, इसके साथ हो आँतोंमें शूलका दर्द, उदर पीछेकी ओर खिंच जाता हैं। तेजीसे बढ़नेवाली शीर्णता, बहुत सुस्ती और मूत्र-ग्रन्थिका सङ्कोचन। गर्भवती रमणियोंको ऐसा मालूम होता है, मानो उसके जरायुमें भ्रूणको जगह नहीं मिलती; जरायुका फैल न सकना; आसन्न गर्भ-स्राव। आक्षेप—दर्द रह-रहकर और लगातार आक्षेप—मस्तिष्कके घनत्व या मस्तिष्कमें अर्बुद उपजननकी वजहसे, मृगी या मृगीकी तरह आक्षेप। शरीरकी त्वचा पीली या घोर भूरी "यकृत-कलङ्क" से भरी; कामला या पांडु-रोग—आँख, शरीरकी त्वचा और पेशाब, सभी पीले और हल्दीके रङ्गके। शरीरकी त्वचाकी दूर न होनेवाली शीतलता और उत्ताप राहित्य (ज्वर वर्त्तमान रहनेपर इसका प्रयोग न करना चाहिये)। सरमें दर्द; माथा बहुत भारी मालूम होता है और ऐसा मालूम होता है, मानो एक गोला गलेके भीतरसे मस्तिष्कमें बढ़ रहा है। अन्ननलीका संकोचन—जलीय-पदार्थ निगल सकता है, पर कड़े पदार्थ नहीं निगल सकता। पाकाशयका प्रचण्ड शून्य—तकलीफ़से रोगी पीछेकी ओर टेढ़ा पड़ जाता है (डायस्को); उदर काठके टुकड़ेकी तरह कड़ा और अनमनीय मालूम होता है। रगड़ने या मलनेपर कुछ आराम मालूम होता है। संकोचन या काँटा गड़नेकी तरह दर्द, मानो गला हुआ सीसा शिराओंकी राहसे बह रहा है या स्नायु सबमें बरफ छू रहा है या उनके भीतरसे बिजलीकी लहर प्रवाहित हो रही है।

लक्षणावली

मन।—उन्मत्त प्रलाप—मुखमण्डलकी विकृत भङ्गी। बहुत अधिक मानसिक यन्त्रणा और बेचैनी मालूम होना तथा बार-बार लम्बी साँस लेना। अपने रोगके सम्बन्धमें चिन्ता, बेचैनी और जम्हाई। बातचीत करने या मानसिक परिश्रमसे बहुत चिढ़। जीवन भार मालूम होता है। क्षीण या विलुप्त स्मृति, बहुत देर सोचे बिना मनोभाव प्रकट कर या सच्ची बात स्मरण नहीं कर सकता (ऐगार, ऐनाक, क्युप्रम, लैक-कैन, लार्ड, ऐ-फास)। स्थूल-बुद्धि—

सहजमें ही कोई विषय हृदयङ्गम नहीं कर सकता ; क्रमसे एकदम उदासी पैदा हो जाया करती है (ओपि)। रोगी डरता है कि कहीं कोई उसकी हत्या न कर डाले—जिसे देखता है, उसे ही हत्या करनेवाला समझता है। प्रलाप और अन्त्रशूल पर्यायक्रमसे पैदा हो जाता है।

मस्तक ।—मस्तक जड़तायुक्त—रोगी बेहोश होकर गिर जाता है। सरमें चक्कर आना, विशेषकर झुकनेपर (ऐनाक, कैमो, नक्स, पल्स) और ऊपर आकाशकी ओर देखनेपर (कैल्के, क्युप्रम, ग्रैफ, लेके, टैबाक, पल्स)। सर-दर्द—मानो एक गोला कण्ठसे मस्तिष्कमें चढ़ रहा है (मानो मस्तिष्कमें एक सीसेका गोला लुढ़क रहा है—लिसिन)। सरके पिछले भागसे ललाटतक समूचे माथेकी त्वचामें भयानक दर्द रहता है। माथेके केश सब अत्यन्त सूखे ; माथेकी त्वचाके केश, भौंहोंके रोएँ और मूछोंके केश झड़ जाते हैं। माथा बहुत भारी मालूम होता है, विशेषकर मस्तिष्कका पिछला भाग। माथेमें अधिक रक्त-सञ्चय होनेकी वजहसे उसमें उत्ताप पैदा हो जाता है और माथेमें टपक हुआ करती है।

आँख ।—आँखमें दबाव और तेज़ दर्द, मानो चक्षुगोलक बहुत बड़ा हो गया है। आँख हिलानेके समय दोनों चक्षुगोलक बहुत भारी मालूम होते हैं। दृष्टि-पथपर धुआँ पैदा हो जाता है। चक्षु-प्रदाह—आँसू बहना ; रोशनी सहन न होना और समूचा चक्षुगोलक लाल हो उठता है। आँखकी ऊपरी पलकमें संकोचन अनुभव होना (मेजिर, सल्फ)। उपतारा-प्रदाहके अन्तमें आँखके सामनेवाले पटलके भीतर पीव पैदा हो जाना ; रोज़ रातमें आँख और ललाटमें फाड़नेकी तरह दर्द। पलकें एकाएक संकुचित हो जाती हैं। आँखकी ऊपरी पलकका पक्षाघात। कामला रोगमें आँखका सफेद अंश पीला रङ्ग धारण करता है।

कान ।—कानमें फाड़ने और सुई गड़नेकी तरह दर्द। श्रवण-शक्तिका घट जाना ; कभी-कभी रोगी एकाएक बहरा हो जाता है। प्रबल प्रलापाधिकारमें रोगी सङ्गीतकी ध्वनि सुनता है—ऐसा ही मालूम होता है।

नाक ।—नाकका विसर्पकी तरह फूलना और प्रदाह। नासापुटके ऊपर फुन्सियाँ निकलना। नाकके अगले भागसे दुर्गन्ध आना, नाकमें बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ी गोंदकी तरह सर्दी या श्लेष्मा इकट्ठा होता है और वह

नाकके पिछले छेदके सिवा और किसी राहसे नहीं निकलता, नाक बरफकी तरह ठण्डी रहती है।

मुखमण्डल।—चेहरा मलिन, पीला और मुर्देकी तरह (मुर्देकी तरह—आर्स, कार्बो-वेज, वेरेट, कैम्फो, क्यूप्रम)। चेहरा फूला, मुखके एक पार्श्वकी सूजन, तेल लगी रहनेकी तरह और चमकीला (नेट्र-मूर, सोराइनम, सेलिन)। ओंठसे बिना कष्टके पपड़ी उखड़ती है (आयोड, कैलि-कार्ब, कैलि-मूर, क्रियो, लैक-कैन)। हन्वस्थिमें फाड़नेकी तरह दर्द—मलनेपर दर्द या तो दब जाता है अथवा दूसरी जगह चला जाता है (हनु हिलानेपर घटना—फास)। निम्नहनुके नीचेवाली ग्रन्थिका बढ़ना।

मुख-विवर।—दाँत-पर-दाँत रगड़ना (बेल, हायो, कैल्के, कास्टि, मर्क; निद्रित अवस्थामें—बेल, कैनाब, साइना, हायो, इग्ने, प्लैण्टे)। मसूढ़ेके किनारे स्पष्ट नीले रङ्गकी रेखा दिखाई देती है (क्रियो), मसूढ़े फूले, म्लान और उनपर सीसेकी रेखा रहती है। दाँत निकलनेके समय काले रङ्गके हो जाते हैं (ऐ-नाई, मर्क-वाई, स्टैफाई; मोह ज्वरमें ऐसा होनेपर—आर्जेण्ट-नाई, क्लोरम)। दाँतके ऊपर पीले रङ्गका मल इकट्ठा हुआ करता है (मोह ज्वराधिकारमें—एपिस)। दाँत खोखले—क्षयित गर्भ, कीड़े लगे, टूटनेवाले, खण्ड-खण्ड होकर टूट जाते हैं (ऐ-फ्लू, कैल्के-फ्लु, कैल्के-फास, इयुफोर्ब, थूजा)। मुँहका स्वाद मीठा। जीभ—नीरस, भूरी, उसकी पीठ फटी (एलेन, हायो, रस, स्पाई); हरे रङ्गके लेपसे ढकी; प्रदाहान्वित और फूली (एपिस, मर्क्यूरियस); जीभ मानो जड़ हो गयी है और हिलायी नहीं जाती, उसमें ऐसा दर्द होता है मानो दाँतकी चोट लग गयी है। लारका स्राव—लार गाढ़ी गोंदकी तरह (चेलिडो, मर्क-कोर, फाइटो); पारेके प्रयोगकी वजहसे लारका स्राव (आयोड, क्यूप्रम, हिपर, हाइड्रैस्ट, नेट्र-मूर); वृद्धि—निद्रित अवस्थामें (इपिक, लैक-कैन, मर्क; बच्चोंकी लार गिरती है—कैम्फोरा)। मुँहमें मीठे स्वादकी लार इकट्ठी हुआ करती है (कैमो, फास, पल्स)। मुँहमें फेन पैदा हो जाता है, विशेषकर बोलनेके समय और इसी कारण मुँहसे बात भी कुछ लड़खड़ाती निकलती है। उपक्षत या सूखा चेहरा; गन्दे जखम पैदा हो जाना, जीभके अगले भागमें और मुँहके भीतर बैंगनी रङ्गका एक तरहका जखम।

गलेके भीतर।—कोई पदार्थ निगलनेकी चेष्टा करनेपर, ऐसा अनुभव होता है, मानो कण्ठनली संकुचित हो गयी है, पर वह द्रव्य निगलनेकी

बार-बार इच्छा होती है। गलेमें ऐसा अनुभव होता है, मानो एक गोला चढ़ रहा हैं (वायु-गुल्म—ऐसाफ, इग्ने, मस्कस)। दोनों गल-ग्रन्थियाँ प्रदाहान्वित और छोटे-छोटे फोड़ोंसे ढँकी दिखाई देती हैं। गलनलीका उपझिल्ली-प्रदाह—क्षतांशस्थित कोमल झिल्लीके सड़नेका लक्षण पैदा हो जाना; जिह्वामूलके पार्श्ववाले दोनों गह्वर और पश्चान्नासारंध्र (नाकका पिछला छेद) में गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा सञ्चित होता है। तरल पदार्थ अनायास ही गलेमें उतर जाता है, पर कड़ी सामग्री निगलनेके समय फिर मुँहमें लौट आता है; भोजनके कई घण्टे बाद अन्ननली और पाकाशयमें जलन हुआ करती है। आक्षेपकी वजहसे कण्ठनालीका संकोचन (कोलचिकम)। गलक्षत—मानो गलेमें जखम पैदा हो गया है या कोई पदार्थ प्रवेश कर गया है। अन्ननलीके पक्षाघातकी वजहसे निगलनेकी शक्तिका न रहना। अन्ननलीमें मानो एक कीड़ा घूम रहा है (सैबाड. जिङ्कम ; कण्ठनलीमें मानो एक कीड़ा रेंगता है—पल्स, हाइपिर, स्पाइजिलिया)। मांसांकुरमय गलक्षत—बाएँ पार्श्वसे दाहिने पार्श्वमें चला जाता है।

पाकस्थली।—तेज़ भूख। अरुचि रोगाधिकारमें ज्वालामयी तृष्णा, विशेषकर ठण्डे पानीकी। भोजनके कुछ ही बाद तेज़ भूख पैदा हो जाया करती है (क्रिमिकी वजहसे होनेपर—मर्क ; भोजनके कुछ ही बाद—मिडोरिनम ; भोजनके बाद भी भूखकी निवृत्ति न होना—सिना, फास, कैस्टोर, इक्षी-हाई, लोरो, नक्स-मस)। डकारके साथ मुँहमें मीठा पानी भर आया करता है (लैचनैन्थिस, ऐ-कार्बोल)। वमन—प्रचण्ड शूल-वेदना रोगमें खाया हुआ और बिगड़ा पदार्थ वमन हो जाया करता है; सवेरे खाये हुए पदार्थका वमन और सुस्ती मालूम होना; हरित् या काले रङ्गका पदार्थ वमन, किन्तु पाकाशयके पुराने सर्दी रोगमें अण्डेकी लारकी तरह सफेद रङ्गका पदार्थ निकलता है। अम्लशूल और कब्जियत रोगमें पाखानेकी गन्ध और पुरीष (मल) मिला वमन (ओपियम, बेल, क्युप्रम, नक्स-वोम, काइक्का, रैफिनस, थूजा)। पाकस्थलीमें भयानक दबाव और कमरमें दर्द मालूम होना। उपशम—किसी समय सामनेकी ओर और किसी समय पीछेकी ओर झुकनेपर; जोरसे दबानेपर भी उपशम हुआ करता है (स्टैनम)। पित्त या शोणितमय वमन।

अन्त्राशय।—प्रचण्ड अन्त्रशूल—सामनेकी ओरसे पीछेकी ओर प्रबल आकर्षणकी तरह यन्त्रणा, मानो बड़े जोरसे उदर मेरुदण्डकी ओर खिंच रहा

है। उदरके बीचके स्थानमें गड़हा पड़ जाता है (काक्युलस, टैबेकम, जिङ्कम), मानो नाभि-प्रदेश एक डोरीसे मेरुदण्डकी ओर बड़े जोरसे खिंच रहा है; रोगी बहुत विमर्ष हो जाता है। छेदने और सङ्कोचनकी तरह यन्त्रणा, रोगी यन्त्रणासे छटपटाया करता है; रगड़ने या जोरसे दबानेपर आराम मालूम होता है। उदर पत्थरकी तरह कड़ा, नाभिके दोनों ओरके पेशी-गुच्छ संकुचित होकर जगह-जगह ग्रन्थिमय हो जाते हैं; रोगीके मनमें चिन्ता पैदा हो जाती है, शरीरमें ठण्डा पसीना हुआ करता है और वह बहुत सुस्त हो पड़ता है। अन्धान्त्र-प्रदाह (बेल, कोलचि, लैके, ओपियम, रस, थूजा); अन्धान्त्र-प्रदेशमें बड़ी कड़ी सूजन, बहुत दर्द-भरा और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता; छींकने, खाँसने या शरीर हिलानेपर भी दर्द मालूम होता है। अंत्रग्रास—आँतमें आँतका घुस जाना (आर्स, ओपि, वेरेट, ऐकोन), आँतोंमें शूल और मल-मिला वमन हुआ करता है। यकृतमें दर्द और अस्त्रकी चोटकी तरह यन्त्रणा। रोगी यकृत-प्रदेशको छूने नहीं देता। यकृत और मेरुदण्डमें जलन और उत्ताप मालूम होता है। पहले सामने और इसके बाद पीछेसे यकृतमें शूल वेधनेकी तरह दर्द। यकृतका संकोचन—पहले यकृत बढ़ता है और फिर संकुचित हो जाता है (अरम, आयोड, फास्फोरस)। कामला या पांडु-रोग—रोगीकी आँख, शरीरकी त्वचा और पेशाब सभी पीले हो जाते हैं। उदरमें भयानक दर्द पैदा हो जाता है और यह दर्द उदरसे शरीरके चारों ओर फैल जाता है। रातमें उदरमें ऐसी गड़बड़ी मालूम होती है, कि रोगी अपने अङ्ग-प्रत्यङ्ग आदि चारों ओर फैलाया करता है (ऐमिल-नाई)। न सिकुड़नेवाली बाहर निकली हुई आँत—नाभि-प्रदेशवाली वंक्षणकी आँत या उरु-शिखरवाली आँतका बढ़ना। अन्त्र-शूलके साथ तलपेटका पक्षाघात।

मलान्त्र और मल।—कब्जियत; मल कड़ा और बड़ा टुकड़े-टुकड़े या भेषके मलकी तरह छोटी-छोटी गांठमय (चेलिडो, ओपि)। मलद्वारका आक्षेप या सिकुड़ने-फैलनेकी वजहसे भयानक वेग और यन्त्रणा; कड़ा और वृहत मल, मल सूखा या मलद्वारकी पेशीमें शिथिलता या पक्षाघातकी वजहसे मलान्त्रमें मल अड़ा रहता है: गर्भावस्थामें कब्जियत: मलान्त्रमें अधिक परिमाणमें मल-सञ्चयकी वजहसे मलका कड़ापन। उदरामय—मल बदबूदार; पतला, सारमय और पीले रङ्गका या पानीकी तरह,—प्रबल वमन और अंत्रशूल भी मौजद रहता है या पानी तरह, काले रङ्गका और बदबूदार।

कामला रोगमें फीका मल। विदारित या फटा-फटा मलद्वार। ऐसा मालूम होता है, कि मलद्वार जोरसे ऊपरकी ओर खिंच रहा है। मल-द्वार-भ्रंश या काँच निकलना।

पेशाब।—लाला-मूत्राश्रित वृक्क प्रदाह—वृक्कके संकोचनके साथ शूलका दर्द, उदर पीछेकी ओर खिंचा, रोगी दिनोंदिन दुबला होता जाता है और बहुत क्षीण हो पड़ता है। मूत्र-विकारसे पैदा हुआ सड़न पैदा करनेवाला मूत्राशय-प्रदाह; पेशाब—बूंद-बूंद निकलता है; पेशाब निकलनेमें तकलीफ़, मूत्राशयकी शिथिलता या क्षीण संकोचनीयताकी वजहसे मूत्र-स्राव नहीं होता, घोर लाल रङ्गका और बदबूदार पेशाब बूंद-बूंद निकला करता है। मूत्र-नलीसे रक्त-स्राव।

पुं०-जननेन्द्रिय।—प्रबल कामोत्तेजना और लिङ्गोच्छ्वास। ध्वजभङ्ग, अण्डकोष ऊपरकी ओर खिंचता है, उसमें खींचन मालूम होती है। जननेन्द्रिय फूली और प्रदाहयुक्त। रमणके बाद भरपूर वीर्यपात नहीं होता।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—अन्त्रशूलका प्रकोप आरम्भ होनेपर रजःस्राव रुक जाता है और प्रकोपके बाद फिर स्राव आरम्भ हो जाता है अथवा दूसरे महीनेके पहले फिर स्राव नहीं आरम्भ होता। आर्त्तवकी अधिकता—स्रावके समय ऐसा मालूम होता है, मानो नाभि-प्रदेश बड़े जोरसे मेरुदण्डकी ओर खिंच रहा है। डिम्बाधारका शोथ (आर्स, एपिस, आयोड, लैके); डिम्बाधारके दर्द रोगमें रोगिनी सारे अङ्गोंको फैलाया करती है। गतार्त्तवा या वयःसन्धि-काल—पर्यायक्रमसे काले रङ्गका थक्का-थक्का और तरल या लारकी तरह खूनका स्राव हुआ करता है; वस्तिगह्वर भरा और जरायु आदिका नीचेकी ओर थोड़ा आकर्षण अनुभव होता है। वहिर्भ्रंष्ट योनिके फिरसे संकुचित न होनेके कारण भयानक यन्त्रणा। योनिसे श्लेष्माका स्राव। ऋतु-स्रावके अभावकी बीमारीमें रोगिनी दिनोंदिन रक्त-शून्य और हरित्पाण्डु रोगग्रस्त हो पड़ती है। आक्षेपिक बाधक। ऐसा मालूम होता है, मानो जरायुमें भ्रूणको पूरी-पूरी जगह नहीं मिलती। जरायुका न फैलना; गर्भ-स्राव हो जानेकी आशङ्का; वेग-रोधका अभाव या मूत्राशयके पक्षाघातकी वजहसे गर्भावस्थामें रोगिनी पेशाब नहीं कर पाती। प्रसवके बादका धनुष्टङ्कार; लाला-मूत्र। शूलका दर्द पैदा हो या न हो, कभी-कभी स्तन, जरायु और योनिमें खींचन, विदारण या

संकोचनकी तरह दर्द अनुभव होता है; क्षणभरके लिये दोनों स्तन बहुत कड़े हो उठते हैं या शूल-वेदनाके प्रकोपके समय छोटे हो जाते हैं। स्तनोंका कड़ा हो जाना और प्रदाह। जननेन्द्रियमें स्पर्श-ज्ञान बोधकी अधिकता। गर्भावस्थामें कब्जियत; स्तनका दूध बहुत थोड़ा और पानीकी तरह।

श्वासयन्त्र।—स्वरनलीका संकोचन। स्वर-तन्तुके पक्षाघातसे उत्पन्न स्वरलोप। श्वासाभाव, शरीर हिलाने या थोड़ा भी परिश्रम करनेपर श्वास-कृच्छ्रता; रोगी सीढ़ी चढ़नेके बाद हाँफने लगता है (सार्सा, सेनेगा, सर्क)। स्वरनलीसे बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा, गोंदकी तरह, स्वच्छ या पीली आभा लिये हरे रङ्गका और थक्का-थक्का कफ़ निकलता है। सूखी आक्षेपिक या शरीरको हिला देनेवाली खाँसी; खाँसनेपर पीव-भरा कफ़ निकला करता है। खाँसनेपर खून भी निकलता है; फेफड़ेसे खून आता है। हृत्पिण्ड-प्रदेशमें छींकनेके शब्दकी तरह सों-सों शब्द सुन पड़ता है। कलेजा धड़कना—सीढ़ी चढ़ने या दौड़नेके समय। हृत्पिण्डकी गति बहुत तेज़।

प्रत्यङ्ग आदि।—सर हिलानेपर गर्दनके पिछले भागसे दोनों कानोंतक ऐसा दर्द होता है, मानो जकड़ रखा है। कमरमें दर्द, घटना—कभी सामनेकी ओर और कभी-कभी पीछेकी ओर झुक जानेपर, पीठमें, कमरमें और दोनों अंसफलकोंके बीचमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द। मेरुदण्डका टेढ़ापन (ऐ-पाई, फास)। सोनेके समय उरु-शिखरमें खींचन मालूम होती है। जघन-सन्धि तथा हाथ और पैरकी सन्धियाँ सब सुन्न-सी मालूम होती हैं। वृद्धि—सीढ़ी चढ़नेके समय। बाँह और दोनों हाथोंमें दर्द और आक्षेपिक सञ्चालन या गति। हाथपर व्रणकी तरह उद्भेद निकला करते हैं। हाथकी पीठ (करभ), बाँह और पैरकी पोटलीके ऊपरकी शिराएँ सब फूल उठती हैं। दोनों पैरोंमें, उरुके पेशीमय अंशमें भयानक दर्द, विशेषकर संध्याके समय और रातमें। उरुके पिछले भागका स्नायुशूल या गृध्रसी; चलनेपर रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है और पेशियाँ सब एकके बाद दूसरी पतली होती जाती है (ओलियम-येकोर; प्रमेहके बादवाले गृध्रसी रोगमें बाएँ पैरकी शीर्णता—थूजा)। जंघाकी पोटलीमें ऐंठन होती है। चरण फूले। पैरका बदबूदार पसीना। रातमें पैरके अंगूठेमें बहुत दर्द हुआ करता है। हाथ-पैरोंमें दर्द, यह रातमें बढ़ जाता है और रगड़नेपर घट जाया करता है। प्रत्यङ्ग सब ऐसे क्षीण

मालूम होते हैं, मानो पक्षाघात हो गया हो, विशेषकर दाहिना अंग, हाथ और पैर बरफकी तरह ठण्डे ; पसीना बिलकुल ही नहीं होता।

सार्वाङ्गिक।—पक्षाघात—सूचनावस्थामें बुद्धिमें विकार, कम्पन, अकड़न वगैरह प्रकट होते हैं या स्थूल स्नायु-मार्गमें तेज़ शूल वेधनेकी तरह दर्द अनुभूत होता है ; रोगवाला अंश दुबला और शीर्ण हो जाया करता है ; मणिबन्ध या कलाईमें पक्षाघातकी वजहसे हाथ निस्तेज भावसे झूल पड़ता है। पुराना मृगी-रोग—आक्षेप पैदा होनेके पहले दोनों पैर भारी और सुन्न मालूम होते हैं, जीभ फूल उठती है और आक्षेपके बाद बहुत समयतक स्थायी मस्तिष्ककी जड़ता मालूम होती है। इससे पैदा हुए लक्षण सब धीरे-धीरे पूर्णता प्राप्त करते हैं ; कभी-कभी कुछ समयके लिये अन्तर्धान हो जाते हैं और कई दिन बाद फिर पैदा हो जाते हैं।

निद्रा।—दिनमें बहुत औंघाई—यहाँतक कि कभी-कभी रोगी बात करता-करता सो जाता है। मोहावस्था और शरीरकी शिथिलताके साथ सरमें चक्कर आना। उदरके सिकुड़ने और फैलनेकी वजहसे रातमें नींद न आना। सोता-सोता चौंक उठता है। रातमें शय्यामें सोकर नाना प्रकारकी भाव-भंगी दिखाता है। निद्रित अवस्थामें बकता है। कामोद्दीपक सपने और निद्रितावस्थामें लिङ्गोच्छास।

वृद्धि।—छूनेपर, शरीर या रोगवाली जगह हिलानेपर, मानसिक परिश्रमसे, दाहिने पार्श्वमें सोनेपर (खाँसी और पेट फूलना), बाईं करवट सोनेपर कलेजा धड़कना, रातमें कुहरेभरा या आंधी-पानीका जल-वायु लगनेपर और बहुत आदमीसे भरे घरमें रहनेके समय।

उपशम। जोरसे दबाने और रगड़नेपर, विश्रामके समय, सोनेपर, पीछेकी ओर देह टेढ़ी करनेपर, सामनेकी ओर देह दोहरा लेने या टेढ़ी करनेपर, हाथ-पैर फैलानेपर और निर्मल वायु लगनेपर।

सम्बन्ध।—**प्रतिविष या दोषघ्न**।—ऐसिड-सल्फ, ऐल्यु, ओपि, प्लैट, ऐल्यूमिन, आर्स, ऐरिष्ट-क्रूड, बेल, काक्यु, हिपर, क्रियोजोटम, लाई, नक्स, पेट्रोल, जिङ्क।

अनुकूल सम्बन्ध।—आर्स, बेल, लाई, फास, पल्स, सल्फ, कैल्के, मर्क, ओपि, सिपि, साइलि।

सदृश।—ऐल्यू, आर्स, बेल, लाई, नेट्र-नाइट्रि, नक्स, ओपि, ऐ-फास, प्लैट, पोडो, पल्स, ओलियैम-जेकोर, जिङ्कम।

तुलनीय।—कब्जियत, काला, बैंगनकी तरह मल—ओपियम; प्रलाप—बेलाडो। मस्तिष्कको कोमलता—जिङ्कम। अर्शकी उग्रता—लैकेसिस। मूर्च्छावायु—इग्ने, लैके। स्मृति-दौर्बल्य—ऐनाक। गन्ध या आघ्राणमें भ्रम होना—ऐनाका।

शक्ति।—तृतीय दशमिकसे ३० या २०० शततमिक क्रमतक।

क्रियाका स्थायित्व।—२० से ३० दिन।

पोडोफाइलम पेल्टेटम

(PODOPHYLLUM PELTATUM)

दूसरा नाम।—मे ऐपेल, मैंण्ड्रेक।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मूल, गाछ और पके फलसे अर्क तैयार होता है। इसके सारांशको पोडोफाइलिन कहते हैं।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अम्लरोग; ऋतु-बन्ध; गुह्यद्वारका अपने स्थानसे हटना; दमा; पैत्तिकता; श्वासनली-प्रदाह; मोतियाबिन्द; बच्चोंकी विसूचिका; आँखके सफेद अंशका जखम; दाँत निकलनेके समयकी बीमारी; अतिसार; रक्तामाशय; बाधक; अजीर्ण रोग; खाद्य आदिके अपव्यवहारके कारण अजीर्ण रोग; ज्वर; पेट फूलना; ओकाई आना या वमनेच्छा; पित्ताश्मरी; पाकाशयकी सर्दी; गलगंड; अर्श; सर-दर्द (पित्ताधिक्यकी वजहसे); हृत्पिण्डका दर्द; मस्तिष्कमें जल सञ्चय रोग; सविराम ज्वर; कामला; सफेद रंगका दाग; यकृतकी बीमारी; चक्षु-प्रदाह (आँख उठना); डिम्बाधारमें दर्द; अर्बुद और सुन्न हो जाना; हृत्कम्पन; फेफड़ेका प्रदाह; गुह्यद्वारका प्रदाह; मूत्राधार-मुखशायिका ग्रन्थिका प्रदाह; गृध्रसी; पाकाशयका प्रदाह; आँख मिटमिट करना; बार-बार सङ्कोचन; स्वादमें गड़बड़ी या विभ्रम; कूथन; जीभमें जलन; आमवात; जरायु-भ्रंश या जरायुका अपने स्थानसे हटना; हूप खाँसी (कुक्कुर खाँसी); कृमि इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—उदरामय, बाल-विसूचिका और असली विसूचिका प्रभृति और अंतानयके सर्दीसे उत्पन्न रोगमें इसकी उपकारिता प्रसिद्ध है। पित्त-प्रधान धातु-विशिष्ट रोगी जो अकसर, विशेषकर पारेके अपव्यवहारके कारण पाकाशय और अंताशयकी बीमारियाँ भोगा करते हैं, उनके लिये यह विशेष उपयोगी हैं। नीचे इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण लिखे जाते हैं:—(१) विमर्ष भाव, रोगी समझता है कि उसे कोई कठिन रोग होगा या उसकी मृत्यु पास है; जीवनसे वितृष्णा। (२) सर-दर्दके बाद पतले दस्त आना और पतला पाखाना हो जाने बाद सर-दर्द—इसी तरह पर्यायक्रमसे हुआ करता है या शीत ऋतुमें सर-दर्द और गर्मीमें पेटकी बीमारी। (३) दाँत निकलनेके समयकी नाना प्रकारकी बीमारियाँ—बच्चा रातमें अस्फुट शब्दोंमें अपनी तकलीफ़ प्रकट करता है और दाँत-पर-दाँत घसा करता है; मसूढ़े-पर-मसूढ़ा रगड़नेका अत्यन्त आवेग या आग्रह। बच्चेका माथा गर्म और वह एक ओरसे दूसरी ओर अपना माथा हिलाया करता है। (४) बहुत प्यास—प्रत्येक बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी पीनेका आग्रह प्रकट करता है। (५) चरणमें, पैरकी पोटलीमें और उरुमें बार बार यन्त्रणाजनक ऐंठन और बिना किसी तकलीफ़के पानीकी तरह पाखाना हुआ करता है। (६) यन्त्रणा-रहित विसूचिका या बाल-विसूचिका। (७) मलका पतलापन—दीर्घ काल-स्थायी,—बहुत सवेरे आरम्भ होकर दिनभर पाखाना होने बाद सन्ध्याके समय स्वाभाविक बँधा पाखाना हुआ करता है, बहुत सुस्ती या उदर और मलान्त्रमें अवसन्नता मालूम होना। (८) बच्चोंका उदरामय—दाँत निकलनेके समय या प्रत्येक बार भोजनके बाद; बच्चेका शरीर धोने या उसे स्नान करानेके समय; मल—कीच-भरे जलकी तरह, बच्चेका कपड़ा भेदकर बहने लगता है; ओकाई आया करती है। मल—हरे रङ्गका, पानीकी तरह बदबूदार और परिमाणमें बहुत ज्यादा; बड़े वेगसे निकलता है या सफ़ेद खड़ियाकी तरह सफ़ेद रङ्गका या मांडकी तरह; अजीर्ण, पीला और चावलके चूरकी तरह उसमें तली जमती है। पाखाना होनेके पहले या पाखाना होनेके समय मलांत्र या गुह्यद्वार स्थान भ्रष्ट हो जाता है। (८) वमन—दीर्घकालस्थायी, भयानक पाकाशयका दर्द और वमन होकर पाकाशय शून्य हो जाने बाद भी कुछ देरतक वमनका वेग मौजूद रहता है और इसी वजहसे द्वादश अंगुलि नामक अंत्रपर रोगका आक्रमण होकर पित्त

और रक्तका वमन हुआ करता है। (१०) जरायु-भ्रंश,—कोई भारी चीज़ उठाने या ऊँची जगहसे कोई चीज़ उतारनेकी वजहसे या मलके कड़ापनके कारण जरायुका अपनी जगहसे हट जाना अथवा प्रसवके बादका जरायु-भ्रंश, इसके साथ ही जरायुका पूरा-पूरा सङ्कोचन न होना। (११) गर्भावस्थाके प्रथम कई महीनोंतक रोगिनीको केवल पाकाशय दबाकर सोनेपर आराम मिलता है। (१२) रोगी हमेशा अपने यकृत प्रदेशको मला करता है और उसीपर हाथसे धीरे-धीरे आघात करता है। (१३) दाहिने डिम्बाधारमें दर्द और चैतन्य या बोधहीनता और यह दर्द दाहिने उरुकी राहसे नीचे चला आता है। (१४) अल्पवयस्का युवतियोंका ऋतुरोध। (१५) ज्वर,—दिनके ७ बजनेके समय प्रकोप पैदा होनेके आरम्भमें—शीत या उत्तापावस्थामें रोगी लगातार बका करता है; स्वेदावस्था (पसीना होनेवाली अवस्था) में रोगी सो जाता है। (१६) कण्ठके भीतर, दाहिनी ओर, डिम्बाधार, दाहिना कोख वगैरह शरीरके दाहिने पार्श्वपर ही इसका प्रकोप अधिक दिखाई देता है। (१७) बच्चोंका अन्त्रशूल—बहुत ही यन्त्रणादायक, उदर पीछे या भीतरकी ओर खिंचा रहता है।

लक्षणावली

मन।—ज्वरकी शीतावस्थामें रोगी एकदम होशमें रहता है, परन्तु बोल नहीं सकता (टैरेण्टियुला—जीभके स्पन्दनकी वजहसे),—यह भूल जाता है कि क्या बोल रहा था (आर्निका, हाइपेरिकम, कैलि-ब्रोमेटम, कैलि-नाइट्रिकम)। रोगी एकदम अभिभूत हो पड़ता है। उसे ऐसा मालूम होता है, मानो जल्द ही कोई कड़ी बीमारी होगी अथवा उसकी मृत्युमें अब अधिक बिलम्ब नहीं है (ऐको, एपिस, लैक-डिप्लो, कैनाब-इन, पेट्रोल, फाइटो, साइलि); जीवनसे वितृष्णा (ऐसिट-क्रूड, अरम, लैक-कैन, लैक-डिफ्लो, लैके, रस, साइलि, थूजा)। ज्वरके शीत और उत्तापावस्थामें लगातार प्रलाप बका करता है (ऐगार, कैनाब, कोकिइन, जेलसि, ग्लोन, हायो, लैके, लैचनैन, ओलि, पैरिस, पाइरोजेन, स्टिक्टा, स्ट्रैमोन, थिरिड); बोखार छूटनेपर पहलेकी बातें उसे बिलकुल ही याद नहीं रहतीं।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना—घरके बाहर स्थिर होकर खड़े रहनेपर (काकुलस), सामनेकी ओर गिर जाना चाहता है (नेट्र-मूर, ग्रैफ, साइलि)

और भौंहोंमें भार मालूम हुआ करता है तथा पाकाशयिक या पित्ताश्रित रोगमें सरमें चक्कर आना। बेहोश कर देनेवाला सर-दर्द, दोनों कनपटियाँ मानो बिध रही हैं—इस ढङ्गका दर्द; दबानेपर आराम मालूम होता है (लैकेसिस, पल्स, गुयायेक, सिनियैन, लाई)। दोपहरके पहले कनपटीमें दबाव मालूम होता है और ऐसा अनुभव होता है, मानो उसकी दृष्टि टेढ़ी पड़ जायगी। आँखोंमें ऐसा ही खिंचाव मालूम होता है। आँखोंमें चारों ओर अंधेरेसे ढँका मालूम होता है (कैलि-नाई, आइरिस) और इसके बाद माथेमें क्षणभरके लिये दर्द पैदा हो जाता है, सरके पिछले भागके ऊँचे अंशमें अधिक और वहाँसे गर्दनकी राहसे दोनों कंधोंमें फैल जाता है। उपशम—निर्जन अन्धकारमय स्थानमें (बेल, साइलि)। सोये रहनेपर और सो लेनेपर (जेल्स, ग्लोन)। दाँत निकलनेके समय माथा बहुत गर्म मालूम होता है और शिशु लगातार एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वकी ओर माथा हिलाया करता है (बेल, हेलिबो)। रह-रहकर ललाटमें इस ढङ्गका दर्द, मानो शूल गड़ रहा है (लैके)। इसी तरहसे दर्दकी वजहसे रोगीको बाध्य होकर आँखें बन्द कर लेनी पड़ती है। सवेरेके समयका सर-दर्द, चेहरा तमतमाया और लाल हो उठता है। सवेरे दोनों कनपटियोंमें टपक हुआ करती है, आँखमें दर्द मालूम होता है और उनसे गर्म आँसूओंका स्राव हुआ करता है। ललाटदेशका सर-दर्द—ज्वर-भाव मालूम होता है। ललाट और आँखोंमें बहुत सूखापन मालूम होता है। ठण्डे पानीसे धोनेपर थोड़ी देरके लिये घट जाता है। पाकाशय और अंत्राशयकी बीमारी प्रतिच्छिप्त, मस्तिष्ककी उत्तेजना, बच्चा रातमें बार-बार दाँत-से-दाँत और मसूढ़े-से-मसूढ़ा घसा करता है (फाइटो, कैल्के, सिना), निद्रित अवस्थामें लगातार ऊः आह किया करता है; दोनों आँखें आधी बन्दकर सोता है तथा उसका माथा पसीनेसे तर हो जाता है। दाँत निकलनेके समय निद्रितावस्थामें बच्चेका मस्तक पसीनेसे तर हो जाता है, पर उसका शरीर ठण्डा मालूम होता है। सर-दर्द और उदरामय पर्यायक्रमसे पैदा हुआ करता है (ऐलो); शीत-ऋतुमें सर-दर्द और ग्रीष्म ऋतुमें उदरामय पैदा हो जाया करता है।

आँख।—आँखोंकी प्रदाह; आँखोंमें भयानक यंत्रणा और भार मालूम होना और शिराएँ सब खूनसे भर जाती हैं। आँखका सफेद अंश जखमसे भरा और आँखोंमें बहुत अधिक रक्त-सञ्चय होता दिखाई देता है, आँखें

करकराती और दर्द किया करती हैं ; उसमें भार मालूम होता है। आँखका कोना रगड़नेके कारण, श्लेष्माकी वजहसे आँखोंका प्रदाह ; सवेरे बढ़ना।

मुखमण्डल।—नाक उठी और पतली मालूम होती है। चेहरा मुर्देकी तरह, रक्त-शून्य और उजला। निचला हनु झूल पड़ता है।

मुख और गलेके भीतर।—बड़ा ही कष्टकर दांत निकलना ; रातमें बच्चा निद्रित अवस्थामें अस्पष्ट यंत्रणा-सूचक शब्द किया करता है और दाँत-से-दाँत या मसूढ़े-से-मसूढ़ा घिसा करता है (साइक्यूटा, सिना, सिकेलि, स्ट्रैमोनियम) ; दाँत-से-दाँत या मसूढ़े-से-मसूढ़ा घसनेका अत्यन्त आग्रह (फाइटो) ; बच्चेका माथा बहुत गर्म रहता है और वह तकियेपर लगातार माथा हिलाया करता है (एपिस, बेल, हेलिबो ; रह-रहकर माथा तकियेसे उठ जाता है—स्ट्रैमो)। दाँत निकलनेके समय बच्चेको सर्दी और खाँसी हो जाती है ; वायु-मार्गमें श्लेष्मा या बलगम सञ्चित होता है, वह बाल-विसूचिका या मस्तिष्कमें जल-सञ्चय रोग द्वारा आक्रान्त हुआ करता है (एपिस, हेलिबो, सल्फ, ऐपोसाइनम-कैनाब)। सवेरे रोगीके दाँत सब सूखे श्लेष्मासे लिपटे रहते हैं। आस्वादन शक्तिका लोप हो जाना, खट्टी और मीठी चीज़का प्रभेद नहीं समझ सकता। सवेरे मुख-विवर और जीभ सूखी मालूम होती है (मैग-कार्ब, पल्स, स्पाइजि)। गलक्षत—दर्द कानके भीतरतक फैल जाया करता है (लैक-कैन, लिथिया-कार्ब)। दर्द तालुमूलके दाहिनी ओरसे आरम्भ होकर बाईं ओर फैल जाता है (एरम-ट्राई, लाई, सिनैपिस-नाइग्रा ; लगातार करवट बदलता है—लैकेसिस, सैबाडिला) ; वृद्धि—तरल पदार्थ निगलनेके समय (केवल लार निगलनेके समय दर्द अनुभूत होता है—सिनैप-नाई ; निगलनेके समय आराम मालूम होता है—कैलि-बाई) और सवेरे (कैल्के-फास, सिस्टस-कैनाड, सिनैब, फार्मिका)। जीभ—सफेद, कोमल, रोएँकी तरह, श्लेष्मासे लिप्त और कटु स्वाद पैदा करनेवाली (ऐण्टिम-क्रूड, नक्स, सिपिया) या सफेद, सरस, दाँतके चिन्हसे भरी (चेलिडो, मर्क, रस-टक्स) ; कभी-कभी सूखी और पीली ; रातमें रोगीके मुँहमें बदबू रहती है—रोगी स्वयं उसे अनुभव करता है। गलगण्ड (स्पञ्जिया, लैपिस-ऐल्बस, आयोड)। कण्ठमें श्लेष्मा घर-घर किया करता है (ग्रैफ, एरम-ट्रैफिलियम, कास्टि, ऐण्टिम-टार्ट, कैलि-बाई)। सवेरे मुँहमें बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा जमा रहता है। नींद

खुलनेपर मुँह और जीभ सूखी मालूम होती है। स्तन पीनेवाले बच्चेकी माताके मुँहका जखम।

पाकस्थली।—प्रबल प्यास, प्रत्येक बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी पीनेका आग्रह प्रकट करता है (ब्राई, सिफि ; एक चम्मच पानी पीता है—आर्स)। खाद्यसे उदासी ; रुचि नहीं रहती ; खाद्य-पदार्थकी गन्धसे घृणा पैदा हो जाती है (कोलचि, काक्य, इपिक ; खाद्यकी बात याद आते ही घृणा पैदा हो जाती है—सिङ्कोना, आर्स)। थोड़ा-सा खानेपर भी पेट भर जाता है, फिर अधिक खानेकी इच्छा नहीं होती (कार्बो-ऐन, लाई, टिलिया, सल्फ ; ऐसा मालूम होता है, कि न जाने कितना खा लिया है—ऐण्टिम-क्रूड, क्रियो, पल्स, रियुम, रास), भोजनके कुछ ही बाद मिचली पैदा हो जाती है और वमन हुआ करता है। परिवर्त्तनशील भूख—कभी बिलकुल ही नहीं रहती और कभी राक्षसी भूख पैदा हो जाती है (सिना, कुरारी, लैके, ऐ-ब्राई) ; ज्वरके समय परिमित प्यास रहती है। भोजनके बाद खाये हुए पदार्थकी कै,—पदार्थोंका स्वाद खट्टा मालूम होता है ; गर्म खट्टी डकार ; भोजनके एक घण्टा बाद खाये हुए समस्त पदार्थ वमन कर देता है और इसके बाद ही तेज़ भूख लगती है। डकार सड़ी गन्ध-भरी। बालकोंके अतिसार रोगमें बार-बार ओकाई आती है। बच्चा दूधकी कै कर देता है और वमनके समय उसका मलद्वार बाहर निकल पड़ता है ; मुँहका स्वाद कड़वा और बदबूदार और खाये हुए पदार्थ आदिका वमन, गाढ़ा पित्त और खूनकी कै ; गर्भावस्थामें वस्तिगह्वरके भीतरवाले यंत्रोंमें खून अधिक सञ्चय होता है। छातीमें जलन ; मुँहमें पानी भर आना (मुँहमें—आर्स, नक्स, फास) और पाकाशयमें उत्ताप मालूम होता है। ओकाई आनेपर, पाकस्थलीके प्रबल संकोचनकी वजहसे रोगी चिल्ला उठता है। मिचली और वमनकी वजहसे माथा बहुत भारी मालूम होता है। रोज़ तीसरे पहर अम्ल होता है और पाकस्थलीमें बहुत बेचैनी और तकलीफ़ मालूम हुआ करती है। पाकाशय और अन्त्राशयमें दर्द मालूम होता है, उसे छूने या हिलानेपर दर्द अधिक होता है। उदरोर्द्ध-प्रदेश शून्य और अवसादयुक्त मालूम होता है ; परन्तु भूख नहीं रहती। कैलोमेल या पारा सेवनकी वजहसे पैदा हुआ अजीर्ण रोग ; पीछे दर्द मालूम होता है और कीचकी तरह पाखाना हुआ करता है। तलपेटमें भयानक तकलीफ़की वजहसे रोगी सोया-सोया जाग उठता है। सवेरे और सन्ध्याके

बाद भोजन कर लेनेपर पाकस्थलीमें ऐसी जलन हुआ करती है, मानो भाफ़ घुस रही है (ऐस्क्लिपियस-टियु)। ठण्डे पानीसे पाकाशयिक लक्षण बढ़ जाते हैं और उनमें दबाव और बेचैनी मालूम हुआ करती है। गर्भवती रमणियोंको केवल पेट दबाकर सोनेपर आराम मिलता है (ऐसिड-ऐसेट)।

अन्लाशय।—उदराध्मान ; पेटमें दर्द और स्पर्शका सहन न होना तथा दाहिनी कोखमें पूर्णता अनुभव होना (ऐकोन, बार्बेरिस, इयुग्रेट-पर्फ ; पित्त-स्थली-प्रदेशमें लगातार अस्पष्ट वेदना—बैप्टी, लेपटेण्ड्रा, फाइटो ; यकृत-प्रदेशमें जलन—कैलि-कार्ब, मर्क)। यकृत-प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, विशेषकर भोजन करनेके समय। बहुत अधिक पित्त-सञ्चय होता है और यकृत बहुत रोग-प्रवण (रोगी हो जानेवाला) रहता हैं, उसमें जभी-तभी दर्द हुआ करता है। रोगी बराबर अपने हाथसे यकृत-प्रदेशको रगड़ा और हिलाया करता है। यकृतकी निष्क्रियताकी वजहसे कामला रोग (ऐ-बेन, हाइड्रैस्ट, लैके, लिडम)। दाहिनी कोखमें मरोड़की तरह दर्द और उत्ताप मालूम होना। पित्ताश्मरी पैदा होनेकी सम्भावना और कामला रोग ; पाकस्थलीतक फैल जानेवाला दर्द और बहुत मिचली। यकृतमें रक्त-सञ्चयकी अधिकता मिला कामला रोग ; यकृत भारी, स्पर्श सहन नहीं होता और दर्द-भरा मालूम होता है। पर्याय-क्रमसे पैदा होनेवाला मलका कड़ापन और उदरामय ; आध्मान-वायुकी अधिकताकी वजहसे उदर इतना फूल उठता है, मानो फट जायगा। रात बीतनेपर सूर्योदयके बाद उदरमें दर्द आरम्भ हो जाता है, सामनेकी ओर देह टेढ़ी करनेपर, सेंकनेपर और रोगवाला पार्श्व दबाकर सोनेपर घटना ; चित्त होकर सोनेपर बढ़ना। उदरमें मरोड़की तरह दर्द मालूम होना। इसके साथ ही उदरकी पेशियाँ सब भीतरकी ओर खिंचा करती है (प्लम्ब); पहले तो रातके १० बजनेके समय और इसके बाद सवेरे ५ बजेसे ८ बजेतक दर्द बना रहता है ; शीशक-शूल (ओपियम, प्लम्बम)। दिनमें रह-रहकर अन्लाशयमें दर्द पैदा हो जाया करता है ; घटना—हाथसे रोगवाला अंश दबानेपर। उर्द्धवाही स्थूलांतमें हड़हड़-गुड़गुड़ शब्द हुआ करता है। मध्य स्थूलांतमें आवाज या गड़गड़ाहट ; तीन बजनेके समय दर्द होनेपर पतला पाखाना हुआ करता है। दाहिने पुट्ठेमें तेज़ दर्दकी वजहसे रोगी हिल नहीं सकता, विशेषकर गर्भावस्थाके अन्तके कई महीनोंमें। उदरमें उत्ताप मालूम होना और पाखानेका वेग।

मलान्त्र और मल।—-पैरमें, पैरकी पीटलीमें और उरुमें बहुत तेज़ ऐंठन होती है, इसके साथ ही यन्त्रणा-रहित पानीकी तरह मल निकलता है ; यन्त्रणा-रहित मारात्मक विसूचिका और बालातिसार उदरामय,—बहुत पुराना,—सवेरे पैदा होनेवाला,—दिनभर दोपहरके पहले काला पतला पाखाना होने बाद सन्ध्याके समय स्वाभाविक सार-मल बँधा पाखाना हुआ करता है (ऐलो) ; पाखाना होनेपर रोगी सुस्त हो पड़ता है या उदर और मलान्त्र शून्य और क्षीण अनुभूत होती है। बच्चोंका पतला पाखाना,—दाँत निकलनेके समय, भोजनके बाद और बच्चेको धोने या नहलानेके समय पतला पाखाना होता है ; कीचड़ भरे पानीकी तरह मल बच्चेके वस्त्रको भेदकर निकल पड़ता है (ऐ-बेञ्जो) ; बार-बार खाली ओकाई आया करती है। उदरामय ; मल हरे रङ्गका ; सड़ी गन्ध भरा और बहुत ज्यादा (कैल्के-आस्ट्रि) ; बड़े वेगवान सोतेकी तरह बाहर निकलता है (गैम्बो, जैट्रोफा, फास, यूजा, क्रोटन) ; कभी मल खड़ियाकी तरह सफेद, मांडकी तरह (कोलचि, हेलिबो, ऐलो) ; अजीर्ण खाये हुए पदार्थ मिला (सिङ्कोना, फेरम) और पीले रङ्गका चावलके चूरकी तरह उसमें तली जमती है ; पाखाना होनेके पहले या पाखाना होनेके समय मलान्त्रका अपने स्थानसे हट जाना (इग्नेशिया, गैम्बो, ऐ-म्यू, सिपिया)। खाने-पीने बाद ही पतले दस्त आने लगते हैं (पीने बाद—आर्जेण्टम-नाई, आर्स, क्रोटन, सिकेलि, ड्राम्बिड ; भोजन करते-करते ही पाखानेका वेग—फेरम)। उदरामयका बढ़ना—गर्मीके दिनोंमें (ब्राई)। उदरामयमें कभी-कभी पाखाना बहुत बदबूदार हुआ करता है ; आसमय और खून मिला मल ; काले रङ्गका केवल सवेरे या कभी-कभी अलकतरेकी तरह (लैप्टेण्ड्रा, ब्रोम, सोरिन, स्क्वियुला, स्ट्रैमोन) या रङ्ग बदलनेवाला (पल्स)। पाखाना होनेके पहले—एकाएक वेग, जोरकी कलकल आवाज़, मानो पेटमें पानी हिल रहा है, पेटमें भयानक दर्द या दर्द बिलकुल ही न होना ; बहुत मिचली ; मलद्वार-भ्रंश। पाखाना होनेके समय,—मलद्वारका अपने स्थानसे हटना ; पेटमें दर्द या दर्द न होना ; नितम्बमें बहुत दर्द ; ऐसा मालूम होता है, मानो जननेन्द्रिय आदि बाहर निकल पड़ेगी ; बदबूदार वायु निकलना ; प्रबल कूथन। पाखाना हो जाने बाद,--मलद्वारका अपने स्थानसे हटना ; सुस्ती ; पीठकी राहसे ऊपरकी ओर उत्तापका फैलना ; अंत्रशूल या पेटका दर्द बन्द नहीं होता ; उदर और मलान्त्रमें क्षीण भाव ; मलद्वारमें स्पर्श सहन

न होना मानो जख्म हो गया है। भीतरी मसेका बढ़ना। प्रत्येक बार पाखाना फिरनेपर एक इञ्चके लगभग मलनाली बाहर निकल पड़ती है। छींकने या चित्तके उत्तेजित होनेपर भी इसी तरह मलनाली निकल पड़ती है। बवासीरका बाहरी मसा—खूनी बवासीर हो या न हो। बोतलसे दूध पीनेवाले बच्चेकी कब्जियत (कालिन्सो, एल्यू), मल सूखा और चूर होकर बाहर निकलता है (मैग-मूर)। पुराना उदरामय—सवेरे बढ़ना (कैलि-बाई, नेट्र-सल्फ, फास, सल्फ ; रातमें बढ़ना—आर्स, चायना, पल्स, वेरेट)। हरे रङ्गका पानीकी तरह मल (डालका, ग्रैटी, मैग-कार्ब, पल्स ; काले रंगका पानीकी तरह—आर्स, कैलि-बाई, वेरेट, । पीले रंगका पानीकी तरह—एपिस, चायना, क्रोटोन, डालका, हायो)। सवेरे बिना तकलीफ़के पतला पाखाना होना (रियुमेक्स-क्रिस्पस, सलफर)।

पेशाब।—पेशाब परिमाणमें बहुत घट जाता है (क्रियो)। मूत्र-रोध (हेलिबो, लोरो ; ज्वराधिकारमें मूत्र-रोध—कैक्टस)। गर्भावस्थामें रातमें बार-बार पेशाब होता है। रातमें निद्रितावस्थामें अनजानमें पेशाब हुआ करता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बाएँ डिम्बाधारमें सुन्न कर देनेवाला दर्द मालूम होना ; उरुकी राहसे निम्न-गामी उत्ताप मालूम होना, खासकर गर्भावस्थामें तीसरे महीने। डिम्बाधार-प्रदेशमें दर्द, विशेषकर दाहिने डिम्बाधारमें (एपिस, बेल, आयोड, पैलेडियम)। दाहिने डिम्बाधारसे दर्द उरुकी राहसे नीचे उतरता है ; दाहिना पैर फैला देनेपर बढ़ना। यह दर्द कभी-कभी उर्द्धगामी होकर कन्धेतक चला जाता है। डिम्बाधारके अर्बुदके भीतरसे दर्द कन्धेतक चला जाता है। पाखाना होनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो जरायु आदि जननेन्द्रियाँ बाहर निकल पड़ेंगी (जरायु आदि, जननेन्द्रियका नीचेकी ओर खिंचना—बेल, लिलियम-टाई, सिपि, क्रियो, लैक-कैन, नेट्र-कार्ब)। जरायुका अपने स्थानसे हटना या जरायु-भ्रंश,—भारी चीज़ उठाने या झुककर खड़े होकर बहुत ज्यादा परिश्रम करनेके कारण ; प्रसवके बाद नितम्ब-प्रदेशमें दर्द मालूम होता है और उर्द्ध-गामी स्थूलान्त्रमें आवाज़ सुन पड़ती है, मलद्वार-भ्रंश और मलका कड़ापन मौजूद रहता है। युवतियोंके रजोरोध रोगमें तलपेट और नितम्ब-प्रदेशमें नीचेकी ओर प्रबल खींचन अनुभव होती है, मानो

कमर अपने स्थानसे खिसक गयी है—शरीर हिलानेपर दर्द होता है और सोनेपर आराम मालूम हुआ करता है। प्रदरका स्राव गाढ़ा, स्वच्छ, श्लेष्मामय; जरायु आदि जननेन्द्रियका नीचेकी ओर प्रबल आकर्षण और कब्जियत मौजूद रहती हैं। गर्भावस्थामें योनिद्वार फूल उठता है। गर्भावस्थामें कई महीने केवल पेट दबाकर सोनेपर रोगिनीको आराम मालूम होता है और किसी तरह भी सो नहीं सकती। नकली प्रसवका दर्द (जरायुके दुबारा सङ्कोचनकी वजहसे), उदरमें उत्ताप और उदराध्मान, जरायु आदि जननेन्द्रियका नीचेकी ओर प्रबल आकर्षण अनुभव होना। उदर शिथिल और ढीलता हुआ।

श्वासयन्त्र।—श्वास-प्रश्वास अत्यन्त दीर्घ और गम्भीर। श्वासका छोटापन। रातमें सोनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो साँस रुक जायगी। खाँसी, अविराम ज्वर-रोगमें; खाँसी सूखी, पर तर श्लेष्माका शब्द मिली; कब्जियत और भूख न लगना। वायुनलीगत श्वास रोग (कैल्के, हिपोजिनन; कैलि-म्यूर, कैमो), सर्दी लग जानेपर बढ़ जाता है। दाँत निकलनेके समय फेफड़े आदिकी सर्दी। दीर्घश्वास ग्रहण करनेके समय दाहिने फेफड़ेमें ऐसा अनुभव होता है, मानो एक सूत्र छिन्न हो गया है। वक्षमें दर्द, विशेषकर श्वास-प्रश्वासके समय वक्षमें दबाव मालूम होनेकी वजहसे बार-बार दीर्घ श्वास ग्रहण करनेकी इच्छा, पर वक्षमें सङ्कोचनकी वजहसे उसमें गड़बड़ी पैदा हो जाती है। ऐसा अनुभव होना, मानो हृत्पिण्ड चढ़कर वक्षमें आ रहा है; हृद्स्पन्दन, मानो कुल-कुल शब्द चढ़कर कण्ठमें आ रहा है, ऐसा मालूम होना। बाधाप्राप्त श्वास-प्रश्वास; मानसिक उद्वेग या परिश्रमके कारण कलेजा धड़कना; उर्द्ध-गामी स्थूलांत्रमें शब्द सुन पड़ता है, प्रगाढ़ निद्रा, सवेरे नींद खुलनेपर सुस्ती मालूम होना और समूचे पूर्वाह्नकाल (दोपहरके पहलेका समय) औंघाई आती है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनका पिछला भाग अकड़ा और गला तथा कन्धेकी पेशियाँ सब स्पर्श-असहिष्णु मालूम होती हैं। सवेरे दोनों कन्धोंके बीचमें दर्द मालूम होता है। दाहिने पृष्ठ-फलकके नीचे दर्द मालूम होता है (चेलिडो)। पाखाना होनेके समय उत्ताप पीठकी राहसे ऊपरकी ओर चला जाता है। कमरके ऊपरी अंशमें दर्द और जाड़ा मालूम होना। रातमें और हिलानेपर बढ़ना। कमर और नितम्ब प्रदेशमें दर्द, पाखाना होनेके

समय बढ़ जाया करता है। कमरमें दर्द,—ऊँची-नीची भूमिमें चलनेपर या पैर फिसल जानेपर बहुत दर्द मालूम होता है। शरीर धोने बाद कमरमें दर्द, (जरायु-भ्रंश रोगमें)। बाएँ बाँहके अगले आधे भागमें वात; दर्द माथेसे गले और कन्धेमें चला जाता है। कलाई क्षीण और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता है। बायाँ उरु-शिखर प्रदेश दर्द-भरा और क्षीण मालूम होता है, मानो सर्दी लग जानेकी वजहसे ; वृद्धि—सीढ़ी चढ़नेके समय। बिना दर्दका पानीकी तरह मल निकलना और पैरकी पोटलीमें और चरणमें ऐंठन होने लगती है। चलनेके समय जानु-सन्धि फटती है या मट-मट करती है (कास्टि, कैल्के, ऐल्यू)। पैरकी सब सन्धियाँ, विशेषकर जानु-सन्धि बहुत क्षीण मालूम होती है (सिपिया)। दोनों पैर भारी और अकड़े मालूम होते हैं, मानो बहुत दूर भ्रमण करनेकी वजहसे ऐसा हुआ है। प्रत्यङ्गोंमें दर्द होता है, विशेषकर रातमें। रह-रहकर एकाएक चिलक मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है। शरीरका समूचा बायाँ पार्श्व मानो थोड़ा-सा पक्षाघाताक्रान्त हो गया है।

निद्रा।—गहरी नींद ; नींदके बाद शरीर थका मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है कि तन्द्रागत भाव है, अधमुँदी आँखोंसे सोता है और अव्यक्त स्वरमें यन्त्रणा प्रकट करता है, विशेषकर बच्चेको दोपहरके पहले औंघाई। निद्रित अवस्थामें रोगी छटपट किया करता है और कराहा करता है। सोता-सोता रोगी उठ बैठता है, पर उसकी नींद नहीं खुलती।

त्वचा।—कामला रोगाक्रान्त, शरीरकी त्वचा उजली और पीली ; शरीर बहुत गर्म और पसीनेसे भरा मालूम होता है। पीव-भरी फुन्सियाँ पैदा हो जाती हैं और सहजमें ही अच्छी नहीं होना चाहतीं। शरीरमें दुर्दमनीय खुजली पैदा हो जाती है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—दिनके ७ बजनेके समय ज्वर पैदा हो जाना इसका प्रधान निर्णायक लक्षण है। आरम्भावस्थामें पाकाशयके और पित्तके लक्षण आदि प्रकट हो जाते हैं। शीतावस्था,—प्यास न रहना ; दोनों कोख और जानु, गुल्फ, कोहनी और कलाईमें दर्द हुआ करता है ; रोगी अर्द्ध निद्रित भावसे रहता है और बहुत बकता है ; आगकी गर्मीसे भी जाड़ा नहीं घटता, परन्तु शय्यामें सोकर देह अच्छी तरह गर्म कपड़ेसे ढँक लेनेपर जाड़ा घट जाया करता है। होशमें जरा भी कमी नहीं आनेपर भी रोगी बोल

नहीं सकता या बोलता-बोलता भूल जाता है, कि क्या कहना चाहता था (टियुक्रि)। उत्तापावस्थामें प्यास मौजद रहती है। जाड़ा रहते ही उत्ताप आरम्भ होता है; सरमें तेज़ दर्द और बहुत प्यास; रोगी बहुत बकता है, लगातार बोला करता है (कार्बो-वेज, लैके) और उत्ताप चरमावस्थामें पहुँचने-तक ऐसा ही रहता है और प्रलाप प्रकट हो जाता है; उत्ताप जब बहुत बढ़ जाता है, तब रोगी सो जाता है। इसके बाद पहलेकी बात कुछ भी याद नहीं रहती और शरीरमें बहुत अधिक पसीना हुआ करता है। पसीनेवाली अवस्थामें इतना ज्यादा पसीना होता है, कि खड़े होनेपर यह पसीना हाथकी अंगुलीसे चूता रहता है; माथा और दोनों पैर गर्म मालूम होते हैं; पसीनेवाली अवस्थामें रोगी सो जाता है और सर-दर्द घट जाता है। रोगीकी देह ठण्डे पसीनेसे तर हो जाती है। रोगीको अपने मुँहकी दुर्गन्धसे घृणा मालूम होती है (अपने मुँहकी बदबू अनुभव नहीं करता—पल्स)।

वृद्धि ।—छूनेपर, रोगवाला अङ्ग हिलानेपर, चलनेपर, सीढ़ी चढ़नेपर, पैर आदि सीधा करनेपर, परिश्रम करनेपर, सवेरे प्रातःकालमें ७ बजनेके समय, रातमें, घरके बाहरकी हवा लगनेपर, शरीर धोनेके समय, पीने या भोजन करनेके बाद और खट्टे रसीले फल और दूध पीनेपर, निगलनेके समय, पाखाना होनेके पहले, समय और बाद।

उपशम ।—रोगवाली जगह मल देनेपर, रगड़नेपर, सोनेपर, पट होकर सोनेपर और शय्यापर सोयी हुई अवस्थामें हाथ-पैर आदि फैलानेपर और गर्म कपड़ेसे शरीर अच्छी तरह ढँकनेपर।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष या दोषघ्न ।—ऐ-लैक्टिक, कोलोसिन्थ, लेपटेण्ड्रा, मर्क, नक्स-वोम।

अनुकूल सम्बन्ध ।—कैल्के, इपिक, नक्स-वोम, सल्फ। प्रतिकूल—नमक।

सदृश ।—ऐ-नाई, इस्क्यू-हिप, ऐलो, एपिस, आर्निका, ब्राई, चेलिडो, कोलचि, कोलिन्सो, हेलिबो, आइरिस, लेपटेन, लिलि-टाई, मर्क, नक्स-वोम, पल्स, सल्फ, वेरेट; पीने या खाने बाद पतले दस्त आना—ऐलो, आर्स, चायना, डिजिट, लाइको, स्टैफ, ट्रैम्बिड।

तुलनीय।—सवेरेके समयका उदरामय—सल्फ, ब्राइ, नेट्रम-सल्फ। पीली आभा लिये हरा। बदबूदार मल—कैमो। शिशु विसूचिका—विरेट्रम, मलांत्र-भ्रंश (काँच निकलना)—ऐलो नक्स, सिपिया, वेल, रूटा। भोजनके बाद ही अतिसार—ऐलो, आर्स, चायना, लाइको। उत्तेजनाके कारण सर-दर्द—एपिफेगस। जीभ मानो जल गयी है—सैंगिविन। तलपेटमें मानो कोई सजीव पदार्थ है—क्रोकस। खाये हुए पदार्थकी कै—सलफर। अतिसार और डिम्बाशयमें दर्द—कोलो।

शक्ति।—निम्नक्रमसे उच्च और उच्चतम शततमिक क्रम। बालातिसार रोगमें पोडोफाइलमका प्रयोग होनेपर ३० से १००० क्रमसे उत्कृष्ट लाभ दिखाई देता है।

क्रियाका स्थायित्व।—३० दिनोंतक स्थायी रहती है।

पोलिगोनम पङ्कटेटम

(POLYGONUM PUNCTATUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः—पलकोंका प्रदाह; शूल; खाँसी; अतिसार; रक्तामाशय; बाधक; मूत्रकृच्छ्र; पामा; मृगी; प्रमेह; पथरी; अर्श; हृत्पिण्डकी बीमारी; स्वरनलीका प्रदाह; त्वक्क-प्रदाह; स्नायु-शूल; अण्डकोष-प्रदाह; मूत्राधार मुखशायी-ग्रन्थिका प्रदाह; गृध्रसी; प्लीहा; जखम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—यह दवा औरतोंकी ऋतु-स्राव न होना; रमण-आलिङ्गनकी इच्छा न होना; डिम्बाधारमें रक्त-सञ्चय वगैरह नाना प्रकारकी बीमारियोंमें उपयोगी है। इसका प्रधान लक्षण हैः—(१) उरु-शिखर-प्रदेशमें और नितम्बमें दर्द हुआ करता है और वस्ति-गह्वरमें भार और ऐसा मालूम होता है, मानो जकड़ गया है। (२) पुट्ठेमें, विशेषकर दाहिने पुट्ठेमें मानो फाड़नेकी तरह यन्त्रणा। (३) बायें पार्श्वमें या बायें अङ्गमें लक्षणोंकी अधिकता। (४) रोगी अङ्गमें पर्यायक्रमसे शीत और उत्ताप

अनुभव होना। (५) मुखमण्डलके बायें पार्श्वमें जब तकलीफ या दर्द बेतरह बढ़ा हुआ रहता है, उस समय दाहिना पार्श्व ठण्डा मालूम होता है। (६) उदरोर्द्ध-प्रदेशमें शीत और वक्षमें जलन, दोनों ही एक साथ अनुभव होता है। (७) दोनों पैरोंमें जलन होते-होते एकाएक वे ठण्डे हो जाते हैं। (८) सुस्ती, कम्प और शीतका स्पर्श सहन न होना। (९) वातकी वजहसे पामा-कच्छु, और उसमें बहुत तेज़ उत्तेजना मालूम होना। (१०) एकाएक ऐसा मालूम होता है, मानो माथेको खोल निकली जाती है। (११) आँतोंमें मानो केवल तरल पदार्थ है—ऐसा मालूम होना। (१२) दोनों उरु-शिखर मानो आपसमें कसकर जुड़े हुए हैं। (१३) दोनों पैरोंके भीतरसे मानो बिजली प्रवाहित हो रही हैं। (१४) वस्त्र आदिका भार शरीरमें बेचैनी पैदा देता है। (१५) सोनेपर सरके पिछले भागमें दबाव मालूम होता है; सरमें चक्कर आया करता है और दृष्टि अस्पष्ट हो जाती है। (१६) बिछावनसे उठनेपर एकाएक सरके पिछले भागमें दर्द मालूम होता हैं। (१७) झुकनेपर कानमें दर्द पैदा हो जाता है और पीछेकी ओर माथा झुकानेपर कानका दर्द घट जाया करता हैं। इसका दर्द अस्त्र बेधने, कतरने, टपककी तरह, बेधने-जैसा, स्थान बदलनेवाला और बिजलीकी तरह एकाएक पैदा हो जाया करता है।

लक्षणावली

मन।—बहुत विषन्नता और उत्तेजना-प्रवणता। संसारमें किसी तरहका भी सुख नहीं दिखाई देता; किसी तरहका भी परिवर्त्तन अच्छा नहीं मालूम होता और मृत्युसे भय मालूम होता है।

मस्तक।—बायीं कनपटी या शंख-देशमें टपककी तरह तेज़ दर्द। ऋतुके समय माथेमें दबाव और बहुत ज्यादा स्पर्श-कातरता अनुभव होती है। एकाएक उठनेपर सरके पिछले भागमें और आँखोंमें दर्द। सर-दर्द—जलवायुके स्पर्शसे बढ़ना और हलकी गर्म हवा लगनेपर आराम मालूम होना। एकाएक ऐसा मालूम होता है, मानो खोपड़ी उड़ी जाती है, उसमें बहुत उत्तेजना मालूम होती है और बहुत ज्यादा परिमाणमें रूसी निकला करती है।

आँख।—चक्षुगोलकमें दर्द; पलकोंका सूखापन मालूम होना। आँख खोलनेपर, सोनेपर पलकोंका प्रबल सिकुड़ना और फैलना, माथा शून्य और चारों ओर अन्धेरेमें ढँका मालूम होता है।

कान ।—कर्ण-पटहका प्रदाह। एकाएक कर्ण-पटहमें एक तरहकी आवाज़ होकर, क्षणभरके लिये श्रवण-शक्ति गायब हो जाती है। माथेको झुकानेपर कानमें तेज़ दर्द मालूम होता है और पीछेकी ओर माथा झुकानेपर दर्द घट जाता है। तर जलीय वायुमें कानमें नाना प्रकारकी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं।

मुखमण्डल आदि ।—चेहरेके बायें पार्श्वमें तेज़ दर्द; यह दर्द बाईं कनपटीतक चला जाता है और कभी-कभी माथेका समूचा बायाँ पार्श्व वेदनाक्रान्त हो जाया करता है। चेहरेके बाएँ पार्श्वमें बहुत तेज़ दर्द और उत्ताप मालूम होना; वृद्धि—शीतल या जलीय वायु लगनेपर। चेहरेके बाएँ पार्श्वमें दर्द बहुत बढ़ जानेपर दाहिनी ओर शीतलता मालूम होती हैं। मुँहमें शीत लगनेपर दाँतोंमें बहुत तेज़ दर्द पैदा हो जाता है। जीभपर पीला लेप चढ़ा रहता है और वह फूली मालूम होती है और जिह्वामूलसे उदरोर्द्ध-प्रदेश-तक जलन हुआ करती है। बहुत ज्यादा गर्म लारका स्राव, परन्तु उससे मुँहका सूखापन दूर नहीं होता। गलेमें सूखापन, उत्ताप और जलन—ऐसा मालूम होता है, मानो त्वचा क्षय हो रही है। कण्ठकी ग्रन्थियाँ सब फूली मालूम होती हैं; जलीय वायुमें बहुत बढ़ जाया करती है।

पाकस्थली ।—सर्व-ग्रासी भूख या कभी भूख बिलकुल ही नहीं रहती। खाये हुए पदार्थ आदि स्वादहीन मालूम होते हैं। ठण्डा पानी पीनेका बहुत आग्रह, पर पानी पीते ही मिचली पैदा हो जाती है (ऐपोसिन, आर्स)। ऐसा मालूम होता है, मानो मिचली सूक्ष्मान्त्रसे पैदा हो रही है और उदरमें सर्दी मालूम होती है। अम्ल-रोग। पाकाशयमें मानो एक बहुत भारी चीज़ है—ऐसी अनुभव होना। पाकस्थलीमें जलन। सर-दर्द और वक्षमें जलन रोगमें पाकस्थलीमें ठण्डक मालूम होना। पाकस्थलीपर वस्त्र आदिका भार अच्छा नहीं मालूम होता—बेचैन कर देता है।

अन्त्राशय ।—पाकाशय और अन्त्राशयमें जलन और उत्ताप मालूम होना। बहुत आध्मानकी वजहसे पेट बहुत फूल उठता है और शूलका दर्द आरम्भ हो जाता है। आँतोंमें छेदने, अस्त्राघात करने या मरोड़नेकी तरह यन्त्रणा और हुड़हुड़ कलकल शब्द, मानो अन्त्रमण्डली केवल तरल पदार्थोंसे भरी हुई है और वह तरल जलीय पदार्थ मानो बहकर ऊपरकी ओर चढ़

रहा है और इसीलिये मिचली और ओकाई आती है और कमरमें दर्द होकर बड़े वेगसे मल निकला करता है। तलपेट, मलान्त्रमें और मलद्वारमें दर्द मालूम होना। बायें पुट्ठेकी ग्रन्थिमें टपक मालूम होती है।

मलान्त्र और मल।—बहुत ज्यादा परिमाणमें मल निकलनेपर मलद्वारमें उत्तेजना पैदा हो जाती है। बहुत वेग देनेके बाद आम मिला, मांडकी तरह मल निकलता है (ऐलो, पोडो)। मल,—पीली आभा लिये हरे रङ्गका या मल कड़ा और थक्का-थक्का या काले रङ्गका और पाखाना हो जानेपर मलद्वारमें जलन पैदा हो जाती है। पाखानेका वेग और बदबूदार आध्मान या वायु निकलना (ऐलो, रोबिनिया, काइङ्का, माइरिका, ओस्मियम)। कभी कड़ा मल और पतला मल पर्यायक्रमसे हुआ करता है। मलद्वारके भीतर चारों ओर ऊँची-नीची और खुजलानेवाली सूजन हो जाती है अर्थात् शिराओंके फूलनेकी वजहसे ऐसा मालूम हुआ करता है। अर्श—खुजली और जलन। मलद्वारमें खुजली।

पेशाब।—सर्दी लग जानेके कारण मसानेका प्रदाह (बहुत देरतक गीले वस्त्र पहननेकी वजहसे पैदा हुआ—कैलि-कार्ब)। मूत्रवहानलीसे मूत्राशयतक छेदनेकी तरह दर्द (बार्बेरिस, शिश्नतक—कैन्थरिस)। प्रमेह रोगमें और पेशाबके समय भयानक यन्त्रणाकी वजहसे रोगी चिल्लाता और रोता है (कैन्थ, थूजा); रोगी प्रायः कुछ भी खाना नहीं चाहता, उसे अच्छी तरह नींद नहीं आती और ४-५ दिनोंमें ही रोगी दुबला हो जाता है। पेशाब करनेके समय मूत्राशय-ग्रीवा सिकुड़ी हुई-सी मालूम होती है। ऐसा भाव बहुत देरतक रहता है। मूत्रकृच्छ्र। पेशाब करनेके समय मूत्राधार-सुखशायिका ग्रन्थिमें धकधक किया करता है और बहुत जलन मालूम होती है। बार-बार बहुत ज्यादा परिमाणमें निर्मल, फीका या सूखे घासके रङ्गका पेशाब होता है।

पुं०-जननेन्द्रिय।—पेशाबके समय अण्डकोष, कोषरज्जु और मूत्राशय-द्वारमें दर्द। शिश्नके द्वारपर और लिङ्गमणि अर्थात् सुपारीके चारों ओर खुजली और पेशाबका वेग। मेढ्रत्वक या लिंगावरकमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और खुजली अनुभव होना। बायें अण्डकोषमें दर्द और स्पर्श सहन न होना, यह दर्द कोषरज्जुतक चला जाता है और कभी-कभी दाहिना कोष

और कोषरज्जु में भी फैल जाता है। रमण-शक्तिका ह्रास और वीर्य-क्षय, कभी-कभी रमणके अन्तमें लिंगमणिका प्रदाह पैदा हो जाता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रमण या आलिंगनकी इच्छा बिलकुल ही न होना (नेट्र-मूर, पेट्रोल, फास, सिपि)। यदि सङ्गमके लिये स्वामी पासमें जाता है तो रमणी डर जाती है और उत्तेजित भाव प्रदर्शन करती है। उरु-शिखर और कमरमें दर्द हुआ करता है और वस्तिगह्वरमें बहुत भार और ऐसा मालूम होता है मानो जकड़ गया है। ऋतु—प्रकट नहीं होता या नाना प्रकारकी बीमारी या यन्त्रणाके साथ विलम्बसे प्रकट हुआ करता है; स्राव बहुत ज्यादा। धीरे-धीरे स्राव होता है और बदबू। डिम्बाधारमें अधिक रक्त-सञ्चय होना; पुट्ठेके स्थानपर फाड़नेकी तरह दर्द, विशेषकर दाहिने पुट्ठेमें। योनिमें जलन। प्रदर,—स्राव कषाय और त्वचाको क्षय करनेवाला तथा जखम पैदा करनेवाला। स्तनमें बेधनेकी तरह दर्द और स्पर्श बिलकुल ही सहन न होना, सूजन और वे दर्द-भरे मालूम होते हैं। दोनों उरु-शिखर मानो आपसमें एक दूसरेकी ओर खिंच रहे हैं—ऐसा अनुभव होना।

श्वासयन्त्र।—कलेजा फाड़ डालनेवाली खाँसी,—यह जलवायुके परिवर्त्तनसे बढ़ जाया करती है। दाहिने पृष्ठफलकके नीचे तेज़ दर्द (चेलिडो, पोडो), यह दर्द वक्ष और उदरोर्द्ध-प्रदेश तक चला जाता है। वक्षगात्रमें हृत्पिण्ड जोर-जोरसे धक्का देता है और गलेकी दोनों धमनियोंमें टपक हुआ करती है। गट्ठोंके पास दबाव और टपक मालूम होती है। बाएँ वक्षमें छेदनेकी तरह दर्द। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें सर्दी मालूम होनेके साथ वक्षमें जलन और बेधनेकी तरह दर्द।

वृद्धि।—सर्दी लगनेपर, जरायुके परिवर्त्तनमें और सामनेकी ओर माथा झुकानेपर।

उपशम।—उत्ताप लगनेपर, और पीछेकी ओर माथा झुकानेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐसिरम, कोलोफिलम, सिनिसियो, जैनथक-साइलिम, पेट्रोल, प्लम्ब, नेट्र-मूर।

तुलनीय ।—खाँसी उदरामय—रिउमेक्स ; गलेमें जलन—कैप्सि ; नींद खुलनेपर सर-दर्द—लैकेसि । चलता-फिरता दर्द—पल्स ; सङ्गमसे अनिच्छा—नेट्रम, प्लैटिनम ।

शक्ति ।—मूल अर्क और प्रथम दशमिक क्रम ।

पोलिपोरस पाइनिकोला

(POLYPORUS PINICOLA)

दूसरा नाम ।—पाइन ऐगारिक । बेंगके छत्तोंका उद्भेद विशेष ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे इकट्ठे किये हुये उद्भिदसे अरिष्टके रूपमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—पोलिपोरस-आफिसिनेलिस, बोलेटस-लैरिसिसके साथ बहुतसे लक्षणोंमें इसका सादृश्य है । सरमें दर्द, पीले रङ्गकी जीभ, लगातार मिचली, उदरके ऊपरी प्रदेशमें खाली मालूम होना ; कब्जियतका लक्षणवाले सविराम ज्वरकी एक लाभदायक दवा है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—बोलेटस-लैरिसस, ऐगरिकस ।

शक्ति ।—मूल अरिष्ट और निम्न-क्रम ।

पापुलस कैण्डिकेन्स

(POPULUS CANDICANS)

दूसरा नाम ।—बाम आफ गिलिड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—रेजिन-भरी फुनगीसे मूल अरिष्ट प्रस्तुत होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—नयी सर्दी, कर्कश आवाज़, यहाँतक कि स्वर-लोप लक्षणकी, एक अच्छी दवा है । चमड़ेपर बड़े-बड़े चकत्ते, श्लैष्मिक-झिल्लीमें जलनके लक्षणमें इससे विशेषकर उपकार होनेकी आशा की जाती है ।

ह्रास-वृद्धि ।—खाने पीनेके बाद, ऋतु-स्राव होनेके पहले, नींदके बाद, हिलने-डोलनेसे बढ़ना, गरम प्रयोगसे घटना ।

सम्बन्ध ।—दोषघ्न ।—रस-टक्स ।

तुलनीय ।—सैलिक्स ।

शक्ति ।—मूल अरिष्ट ।

पापुलस ट्रेमुलायडस

(POPULUS TREMULOIDS)

दूसरा नाम ।—एसवेन पपुलस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—छालके भीतरकी झिल्लीसे अरिष्ट बनाया जाता है ।

उपयोगिता और आभास ।—पेट फूलना, खट्टी डकार, उल्टी, मिचली आदि लक्षण, अजीर्ण रोग, पेशाब करनेके समय बहुत ज्यादा कूथनका दर्द, श्लेष्मा, पीब भरा पेशाब वगैरह लक्षण, मूत्राशयके प्रदाह रोगमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—नक्स, चायना, कार्ण्स-फ्लोरिडस, कैनाबिस, कैन्थरिस, यह कैनाबिस और कैम्फरके बाद बहुत लाभ करता है ।

शक्ति ।—मूल अरिष्ट,—१६, ६ ।

प्राइम्यूला आबकाङ्का

(PRIMULA OBCANCA)

दूसरा नाम ।—प्रिम रोज़ ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता ।—त्वचाके ऊपर इसकी विशेष क्रिया दिखाई पड़ती है । इस दवासे बायें अङ्गकी अपेक्षा दाहिने अङ्गपर बहुत ज्यादा हमला होता है ।

खुजली, विसर्पकी तरह सूजन, रातमें बढ़ना, एकज़िमा या खसड़ा, चर्मोद्भेदसे पीव जाना, छालेकी तरह उद्भेद वगैरह चर्म रोगोंकी एक बढ़िया दवा है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—रस-टक्स, हिडमिया-ऐलिगेन्स, प्राइम्यूला-वेरिस, प्राइम्यूला-वल्गेरिस ।

दोषघ्न ।—फैगोपाइरम ।

शक्ति ।—६—२०० ।

प्राइम्यूला वेरिस

(PRIMULA VERIS)

दूसरा नाम ।—काउस्लिप ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—प्राइम्यूला वेरिन्स, फूल या फूलके रस सेवन करनेसे नशा पैदा करता है ; स्नायुशूल, माथेमें खूनकी अधिकता, अधकपारीका सर-दर्द, सरमें चक्कर, पेशाबमें तेज़ गन्ध (टेरिबिन्थ) लक्षणमें प्राइम्यूला-वेरिसके प्रयोगसे फायदा होता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—प्राइम्यूला आबकाङ्का, प्राइम्यूला वलगेरिस, साइक्लामेन, ऐनागेलिस, टेरिबिन्थिना, कार्बोलिक-ऐसिड ।

शक्ति ।—६—३० ।

प्राइम्यूला वलगेरिस

(PRIMULA VULGARIS)

दूसरा नाम ।—प्रिम रोज़ ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—स्थान परिवर्त्तनशील शोथ रोग, विशेषकर उसके साथ हृत्पिण्डमें दबाव लक्षणकी यह एक अच्छी दवा है।

शक्ति ।—मूल अरिष्ट और निम्न-शक्ति ।

प्राइनस वर्टिसिलेटस

(PRINUS VERTICILLATUS)

दूसरा नाम ।—ब्लैक एल्डर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फलकी ताजी छालसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—इस वृक्षकी छालका स्वाद कड़वा होता है। इसका प्रयोग ज्वर रोगमें होता है। इसका धावन सड़न या मारात्मक सड़न रोगमें व्यवहार होता है। इसका फल मिचली पैदा करनेवाला और शक्तिवर्द्धक है। यह उदरामय और वमन रोगमें फलप्रद है।

शक्ति ।—मूल अरिष्टसे छठी शक्ति ।

प्रूनस पेडस

(PRUNUS PADUS)

दूसरा नाम ।—बर्डि-चेरी, पेडस रेसिमोसा, सिरेसस-पेडास ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—खिले हुए फूलकी डालके पत्तेकी छालसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—इसका फल छोटा और काले रङ्गका तथा स्वादमें वमन लानेवाला है। गलेमें जखम होना, वक्षोस्थिमें पीछेकी ओर दबाव मालूम होना, श्वास-प्रश्वासमें कष्ट, मलान्त्रमें सुई बेधनेकी तरह दर्द लक्षणमें लाभ करता है।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—क्रोटेलस, प्रूनस-स्पाइनोसा, प्रूनस-वर्जि, लौरोसि ।

शक्ति ।—६—३० ।

प्रूनस स्पाइनोसा

(PRUNUS SPINOSA)

दूसरा नाम।—ब्लैक थार्न।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—खिलनेवाले फूलकी कलीसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—
भूख न लगना ; उदरी ; स्तनमें दर्द ; आँखोंमें स्नायुशूल ; मूत्राधारका प्रदाह ; शोथ ; मूत्रक्लेश ; कर्णशूल ; आँखकी बीमारी ; अन्धापन ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; अन्त्र-वृद्धि ; प्रदर ; रजसाधिक्य ; जरायुसे खूनका स्राव ; दाँतका दर्द ; मोच खाना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—उदरी और हृद्रोगमें इसका बहुत अधिक लाभ दिखाई देता है और इसका प्रधान लक्षण यह है, कि रोगी बार-बार दीर्घ-निश्वास ग्रहण करता है और उसे ऐसा मालूम होता है, कि उसकी साँस अँटती नहीं है, मानो साँस उदरके ऊपरी प्रदेशमें (वक्षोदर-मध्यस्थ-पेशीके नीचेतक) नहीं पहुँचती या वहाँतक जाकर फिर नीचेकी ओर नहीं जाती। नाना प्रकारकी आँखकी बीमारियोंमें भी यह विशेष लाभदायक है। इसका दर्द बाहरकी ओर दबाने या भीतरसे बाहरकी ओर बेधनेकी तरह होता है और इसी तरहका दर्द माथा, आँख, नासामूल और कानमें मालूम हुआ करता है। दाँतोंमें ऐसी तकलीफ़ होती है, मानो वे जड़ छोड़कर ऊपर उठ जाते हैं। वक्षमें मरोड़ या मोच खानेकी तरह दर्दकी वजहसे श्वास रुक जाना चाहता है ; ऐसा दर्द होता है, मानो बाईं गुल्फ-सन्धि मोच खा गयी है ; वक्षमें अकड़न और सुई गड़नेकी तरह दर्द ; उदरमें आध्मानकी अधिकताके कारण मूत्राशयके ऊपर दबाव मालूम होना और मूत्राशय इस तरह जकड़ जाता है, कि रोगी तकलीफ़से सामनेकी ओर टेढ़ा होकर दोहरा-सा हो जाता है। भयानक यन्त्रणादायक मूत्रकृच्छ्रता—एकाएक पेशाबके प्रबल वेगकी वजहसे रोगीको दौड़कर पेशाब करनेके लिये जाना पड़ता है ; पर लिङ्गमणितक पेशाब जाकर लौट आनेकी वजहसे मूत्रनलीमें भयानक दर्द पैदा हो जाता है ; वेग

आते ही यदि पेशाब न किया जाये, तो मूत्राशयमें बेधनेकी तरह तेज़ दर्द मालूम होता है ; नियमित समयके बहुत पहले ही रजःस्राव होता है ; स्राव बहुत अधिक हुआ करता है और ७-८ दिनोंतक स्थायी रहता हैं ; स्राव बहुत पतला और पानीकी तरह ; प्रदर—स्राव बहुत सुस्त करनेवाला और वस्त्र आदिमें पीला दाग पड़ता है ; इसके द्वारा शरीरके बायें अङ्गकी अपेक्षा दाहिने अङ्गपर रोगका आक्रमण अधिक हुआ करता है। इसके अलावा नीचे लिखे कई लक्षण भी इसके प्रकृतिगत लक्षण हैं:—सर-दर्द रोगमें ऐसा मालूम होता है, मानो मूर्द्धदेशमें किसी काष्ठफलकका कोना गड़ रहा है या मानो धूप लगनेके कारण पैदा हो गया है (ग्लोन ; माथेमें इस तरहकी गर्मी और सरमें चक्कर मालूम होता है, मानो धूपमें जल गया है)। ऐसा अनुभव होना, मानो भीतरसे कोई एक काँटे द्वारा माथेकी खोल उठानेकी चेष्टा कर रहा है। ललाटके दाहिने पार्श्वसे एक तेज दर्द पैदा होकर बिजलीकी तरह मस्तिष्कको भेदकर सरके पिछले भागमें जा पहुँचता है। दाहिने चक्षुगोलकमें दर्द, मानो इस आँखका भीतरी अंश उखाड़ लिया जायगा। ऐसी तकलीफ़, मानो चक्षु-गोलक दबाया जा रहा है और एक दूसरेसे अलग किया जा रहा है (सर-दर्दके समय ऐसा बोध होता है, मानो बाईं आँख मरोड़ खा रही है—पाप्युलस, कैण्डिकैन्स)। ऐसी जलन मालूम होती है, मानो जीभ जल गई है। पुट्ठेके स्थानपर भीतरसे नीचेकी ओर दबाव, मानो आँत उतर आयगी। रोगी हाँफा या लम्बी साँस छोड़ता है। जैसा कि अनगिनती सीढ़ियाँ चढ़कर किसी ऊँची जगहपर पहुँचनेपर होता है। पृष्ठतल अकड़ा मालूम होता है, मानो चोट लगनेकी वजहसे ऐसा हो गया है। दाहिने हाथका अंगूठा मानो मोच खा गया है—इसी तरहके दर्दके कारण क़लम नहीं पकड़ सकता। ऐसी तकलीफ़, मानो बायीं गुल्फमें मोच आ गयी है। दोनों पैरोंमें बेचैनी मालूम होती है और इसी वजहसे रोगी बहुत देरतक एक भावसे नहीं रह सकता। पैरके अंगूठेकी पहली सन्धिमें ऐसा दर्द मानो सन्धि खिसक गयी है। केवल निद्रित अवस्थामें चेहरेमें पसीना होता है। चक्षु-चिकित्सा-विशारद डा० ऐलेन तथा डा० नार्टनके मतसे पलकोंका स्नायुशूल वगैरह नाना प्रकारके रोगोंमें और दोनों आँखोंके विभिन्न अंशोंके प्रदाहकी यह एक प्रधान दवा है। उनके मतसे यह केवल दर्द ही नहीं दूर करता, बल्कि प्रदाहकी गति रोक देता है और दृष्टिकी अस्पष्टता दूर कर दिया करता है।

लक्षणावली

मन ।—बहुत अधिक चित्तकी चंचलताकी वजहसे रोगी किसी भी तरह एक स्थानपर और एक भावसे अधिक देरतक नहीं रह सकता (पाइपर-मिथ); लगातार इधर-उधर घूमा करता है, ख्वासमें तकलीफ मालूम होती है और थोड़े ही परिश्रमसे हाँफा करता है। हमेशा विमर्ष, उदास और चिड़चिड़ा भाव प्रकट करता है। किसी तरह भी मानो सन्तुष्ट न हो।

मस्तक ।—बहुत दबावके कारण मानो माथा दो टुकड़े हो जायगा, ऐसी तकलीफकी वजहसे रोगी पागलकी तरह हो जाता है। माथेकी हड्डीके नीचे बहुत दर्दकी वजहसे ऐसा मालूम होता है मानो कोई एक कीलसे भीतरसे ठेलकर माथेकी खोल उखाड़ फेंकनेकी चेष्टा कर रहा है (ऐसा दर्द मानो खोपड़ी उड़ जायगी—बैपटी, ऐक्टिया, कैमो, कोबाल्टम, इयुका)। ऐसी यंत्रणा मानो माथेमें बहुत धूप लग गयी है (धूप लगनेकी वजहसे सर-दर्द ग्लोन, लैके, नैट-कार्ब ; ऐसा दर्द मानो माथा धूपसे जल गया है और सरमें चक्कर—पल्स्, लस, कैल्डिकैन्स)। ललाटके दाहिने पार्श्वमें तेज दर्द पैदा होकर बिजलीकी लहरकी तरह मस्तिष्क भेदकर सरके पिछले भागमें जा पहुँचता है (कैनाब-इन); ललाटमें चिलक मारनेकी तरह दर्द मस्तिष्क भेदकर पीछेकी ओर दौड़ जाता है। रोगी चलनेके समय कभी पीछे और कभी सामनेकी ओर डगमगाया करता है (टिलिया-फ्रि, स्ट्रैमोन)। दाहिनी कनपटीके ऊपरी अंशके भीतरसे ऐसा दर्द पैदा हो जाता है, मानो बाहरकी ओर धक्का दे रहा है और वहाँसे वह ललाट-फलकमें चला जाता है, दबानेपर दर्द बढ़ता है। झुनीझुनीके जैसा दर्द,—दाहिनी कनपटीसे दाहिने कानमें जाकर कर्णशूल (कानका दर्द) पैदा कर देता है। मूर्द्धदेशके दाहिने पार्श्वमें मानो एक काठका टुकड़ा बिध रहा है—इस ढङ्गका बेधने जैसा दर्द। सरके पिछले भाग और कपालके पिछले भागके भीतरसे ऐसा दर्द मालूम होना मानो ठेल रहा है।

आँख ।—दाहिने चक्षुगोलकमें दर्द, मानो उसका भीतरी अंश उखाड़ लिया जायगा। अस्पष्ट दृष्टि (फास, ब्राई, कोलोसिन्थ, कोलचि, लैक-कैन)। पलकोंका स्नायुशूल (ऐक्टिया, कोमोक्लेडिया, टेरिब), दोनों चक्षुगोलक मानो जोरसे दबाये जा रहे हैं या आपसमें एक दूसरेसे अलग हो रहे हैं, इस

ढंगका दर्द; तेज़ बेधनेकी तरह दर्द आँख भेदकर मस्तिष्कमें फिर प्रवेश कर जाता है या आँखके चारों ओर फैल जाता है; कानके पीछे दर्द पैदा होकर आँखमें चला जाता है; वृद्धि—हिलानेपर और घटना—विश्रामसे। दाहिनी आँखमें ऐसा दर्द मानो आँख निकल पड़ेगी। निचली पलक और पलकके किनारे खुजली।

मुख-विवर।—दाँतमें बहुत तेज़ उखाड़नेकी तरह दर्द या इस ढंगका दर्द मानो कोई दाँतकी जड़से दाँतको ऊपर उठा या उखाड़ रहा है, विशेषकर मुँहमें कोई गर्म चीज़ लेनेपर (कैमो)। दाँतमें एक तरहकी कभी न जा सकनेवाली गड़बड़ी मालूम होना, दाँत-पर-दाँत रगड़नेकी इच्छा होती है और ऐसा करनेपर दर्द घट जाया करता है (सिङ्को, स्टैफ)। जीभमें सुई गड़नेकी तरह दर्द और जलन, मानो दग्ध हो गया है (आइरिस, वेरेट-विर, सोराइन), भोजनके समय क्षणभरके लिये दबा मालूम होता है (भोजनके समय दग्धकी तरह अनुभव होना—इग्ने) और भोजनके बाद, फिर वैसा ही मालूम हुआ करता है। जीभपर मोटा सफेद श्लेष्माका लेप चढ़ा दिखाई देता है (ऐसिड-क्रूड, हायो, स्पाइजि, वेरेट-विर)। निद्रित अवस्थामें केवल चेहरेमें पसीना निकलता है।

पाक और अंत्राशय।—कभी-कभी भोजनके लिये बैठनेपर भूख मालूम होती है (सिङ्कोना); पर दो-एक ग्रास खाते ही भूख बन्द होकर तृप्ति हो जाती है (लाइ)। सभी पदार्थोंसे अरुचि और लगातार मिचली और उदरामय। पाकाशयमें आध्मानकी अधिकताकी वजहसे पेट फूल उठता है और श्वासमें तकलीफ़ पैदा हो जाती है। उदरी,—पेशाब थोड़ा और कब्जियत, गाँठ-गाँठ मल बड़े कष्टसे निकलता है। यकृत-प्रदेशमें दर्द। प्रचण्ड आक्षेपिक अन्त्रशूल,—यन्त्रणाकी वजहसे रोगी चित्त होकर या करवट सो नहीं सकता और बहुत धीरे-धीरे चलनेके सिवा घूमघाम भी नहीं सकता। सामनेकी ओर छाती झुकाए रहनेपर आराम मालूम होता है। ऊपरी पेट या उदरके दाहिने पार्श्वमें दबावकी तरह शूलका दर्द, रातमें भी यह दर्द हुआ करता है। उदरमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्दकी वजहसे श्वास-प्रश्वासमें व्याघात पैदा हो जाता है। उदरका शोथकी तरह फूलना, रुचिका लोप हो जाना, पेशाब थोड़ा होना और कड़ा गांठ-गांठ मल कष्टसे निकलता है। इस तरह चलना पड़ता है, कि पेट न हिले, नहीं तो पेशाबकी तकलीफ़ बढ़

जाती है। आँतोंमें रुका आध्मान वायु मूत्रस्थलीके ऊपर दबाव डालता है या चांपता है, इसी वजहसे मूत्राशय चिपक जाता है और रोगीको बाध्य होकर झुककर चलना पड़ता है। आध्मान वायुके दबावकी वजहसे मूत्राशय जकड़ जाता है और रोगी तकलीफ़से सामनेकी ओर टेढ़ा होकर दोहरा जाता है। दाहिने पुट्ठेके स्थानपर बेधनेकी तरह दर्द और ऐसा दर्द मानो भीतरसे धक्का दे रहा है। मालूम होता है मानो आँत उतर पड़ेगी (गुयायेक, लाईं, नक्स), तलपेटके दाहिने पार्श्वमें गासेमें मानो एक पानी-भरी थैली है; इस तरहका कुल-कुल शब्द होता है। दाहिने पुट्ठेके प्रदेशमें बहुत तकलीफ देनेवाला सुई गड़नेकी तरह दर्द, हाथसे दबानेपर घट जाता है।

मलान्त्र और मल।—मलद्वारके एक इञ्च ऊपर मलान्त्रके दाहिने अंशमें मानो कोई कड़ी चीज़का कोना गड़ रहा है, इस ढंगका दर्द। उदरके दाहिने पार्श्वमें जल-संचय रोगमें एकाएक एक दिन रातमें मलद्वारसे बहुत ज्यादा बदबूदार पानी निकलकर फूलन और भार घट जाता है। मल बहुत कड़ा, गांठ-गांठ और बड़े कष्टसे निकलता है। उदरामय, पेटमें बहुत दर्दके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें पतला सार मल निकलता है या आममय मल निकला करता है। पाखाना हो जाने बाद ऐसा मालूम होता है मानो मलद्वार फट गया है और उसमें नमक लग गया है, इसी ढंगकी जलन हुआ करती है। कुत्तेके मलकी तरह कड़ा सँकरा मल रह-रहकर निकलता है और उस समय इतनी तकलीफ़ होती है, कि रोगी चिल्ला उठता है; बैठनेके समय उदर चिपक जाता है और बुलबुले फूटनेकी तरह आवाज़ हुआ करती है। कड़ा पाखाना होनेपर मलद्वारसे खून निकलने लगता है।

पेशाब।—मूत्राशयमें प्रबल सङ्कोचन या कूथन। प्रति १५ मिनटका अन्तर देकर अनुभूत होता है, इसीलिये रातमें नींदमें व्याघात हो जाता है। मूत्राशय-द्वारावरोधक पेशीमें जलन। पेशाबके वेगके साथ मूत्राशय और मूत्रमार्गमें जलन और कुटकुटाहटकी तरह दर्द, मूत्रमार्गमें मानो जखम हो गया है, इस तरहके दर्दकी वजहसे रोगी अपने शिश्नपर हाथ लगानेका साहस नहीं करता। पेशाबका वेग पैदा होते ही यदि पेशाब न किया जाये तो मूत्राशयमें बेधनेकी तरह तेज़ दर्द अनुभूत होता है। एकाएक पेशाबके प्रबल वेगकी वजहसे रोगीको दौड़कर पेशाब करने जाना पड़ता है, परन्तु

पेशाब लिङ्गमुण्डतक आकर लौट जाता है, उस समय मूत्रमार्गमें भयानक दर्द पैदा हो जाया करता है। मूत्रकृच्छ्रता ; पेशाब करनेके समय रोगीको बाध्य होकर बहुत वेग देना पड़ता है। पेशाबकी धार सूतकी तरह पतली और निकलनेके साथ मलका वेग मालूम होता है। पेशाब भी दो भागोंमें विभक्त होकर निकलता है, मानो पेशाबके द्वार दो हों। पेशाब चमकीला पीले रङ्गका, उसमें सफेद तली और कभी-कभी आकाशकी तरह नीले रङ्गका होता है। पेशाबका वेग प्रबल—पेशाब लिङ्गमुण्डतक आकर उसमें भयानक सिकुड़ना-फैलना और यन्त्रणा पैदा हो जाती है, उसके साथ ही मलांत्रमें प्रबल संकोचन। पेशाब मूत्राशयसे मूत्रनलीमें प्रवेश करनेपर क्षणभरके लिये आराम मालूम होता है। आक्षेपिक मूत्ररोध ; पेशाब करनेकी चेष्टा करनेपर मूत्रनलीमें भयानक जलन होती है। मूत्रनलीमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो त्वचा क्षय हो गयी है या खाल उधड़ गयी है, विशेषकर छूनेपर।

जननेन्द्रिय।—शिश्न शिथिल और छोटा हो जाता है और मेढ्रत्वक सिकुड़ा रहता है। मुष्कत्वकमें बहुत ही आराम देनेवाली खुजली, खुजलाते ही घटना। ऋतु—असमयमें प्रकट होता है और स्राव बहुत ज्यादा ; बहुत देरतक ठहरनेवाला और पानीकी तरह तरल, सुस्त कर देनेवाला प्रदर ; स्राव त्वचाको क्षय करनेवाला और वस्त्रमें पीला दाग पड़ता है (ऐग्नस, क्रियो, सिपि, थूजा)। आधेसे लेकर दस सप्ताहतक योनिसे नित्य खून निकला करता है—स्राव जितना ही अधिक दिन स्थायी होता, उतना ही पानीकी तरह हुआ करता है। डिम्बाधारमें सुरसुरी होती है और खुजली पैदा हो जाती है—खुजलाने, मलनेपर भी नहीं घटता है।

श्वास-यन्त्र।—कण्ठ-स्वर कर्कश और भग्न। श्वास ग्रहण करनेके समय वायुनलीमें खुजलानेकी वजहसे खाँसी पैदा हो जाती है। साँस रोकनेपर फिरसे खाँसी पैदा हो जाती है। खाँसनेपर वायुनलीमें साँय-साँय शब्द होता है ; वक्षगह्वरके निम्नांशमें दबाव या भार अनुभव होनेकी वजहसे श्वास-प्रश्वास रुकता है। रोगी इस तरह श्वास-प्रश्वास लेता है, मानो हाँफ रहा है और बार-बार दीर्घ श्वास ग्रहण करनेकी इच्छा होती है और रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी साँस अँटती नहीं है, मानो उदरोर्द्ध-प्रदेशतक जाकर अड़ जाता है और उससे उसकी तृप्ति नहीं होती। स्वर बहुत क्षीण

और बोलनेमें वक्षमें दर्द मालूम होता है। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें पूर्णता और उदराध्मानके साथ वक्षोस्थिके नीचे दर्द और श्वासकृच्छ्रता मालूम होती है। गहरी साँस लेनेके समय बायें वक्षके मांसल प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द और यह दर्द दोनों पार्श्वोंमें और बायें कन्धेतक फैल जाता है; चलने और बैठनेके समय। बायें वक्षके निचले अंशमें मानो एक काठके टुकड़ेका कोना गड़ रहा है; इस तरहका दर्द।

हृत्पिण्ड।—हृत्पिण्डका बढ़ना और पैरोंमें शोथ। हृत्शोथ; स्थिर होकर रहनेपर भी हृत्पिण्डमें बहुत तेज़ धड़कन मालूम होती है और जरा भी देह हिलानेपर श्वास-रोधका उपक्रम हो जाता है (ऐसा मालूम होता है, मानो शरीर हिलाते ही हृत्पिण्ड स्थिर हो जायगा—डिजिट, कोकेइन; स्थिर होकर रहनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्ड स्थिर हो जायगा—जेल्स)। गलेकी दोनों धमनियोंमें टपक दिखाई दिया करती है; दोनों गाल फूले और मलिन; दोनों ओठ नीले और आर्त्तव रुका हुआ। बाधा-प्राप्त श्वास-प्रश्वासके साथ हृत्पिण्डका प्रबल आघात। थोड़ा भी शरीर हिलानेपर हृत्पिण्डकी गति भयानक बढ़ जाया करती है।

गर्दन और पीठ। – झुकनेपर गला और सरके पिछले भागमें दर्द मालूम होता है। पीठ ऐसी अकड़ी मालूम होती है, मानो जोरकी चोट लग गयी है। गहरी साँस लेनेके समय दोनों पृष्ठफलकोंके बीचके अंशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द अनुभूत होता है और यह दर्द उसके पीछेवाले कशेरुकामें चला जाता है और श्वास-रोध करता है। कमरका ऊपरी अंश मानो अवश हो गया-सा मालूम होता है। झुकनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो बायें पृष्ठफलकके दो इञ्च नीचे और मेरुदण्डके पास एक तेज़ कील गड़ रही है अर्थात् खिच-खिच करता है। पीठ और कमर ऐसी अकड़ी मालूम होती है, मानो मोच खा गयी है। बैठनेके समय कमरके ऊपरकी अंशमें दर्द मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—बायें बगलकी ग्रन्थिमें ऐसा दर्द मानो पीब उत्पन्न हो रहा है। ऐसा अनुभव होना, कि बायें बगलकी ग्रन्थि मानो फूल गयी है। दाहिने कन्धेसे त्रिकोण पेशीतक दर्दकी वजहसे रोगी बाँह नहीं उठा सकता। बायीं केहुनीकी सन्धिसे कलाईतक सुस्त करनेवाला दर्द। दाहिनो

कलाईमें ऐसा दर्द मानो मोच खा रहा है। दाहिने हाथके अंगूठेमें दर्दकी वजहसे रोगी क़लम नहीं पकड़ सकता। अंगुलियाँ सब बहुत खुजलाती हैं, मानो उनमें बिवाई या जाड़ेके दिनोंके फोड़े हो गये हैं। आधी रातके पहले ऊरु-शिखरमें दर्द। बायें गुल्फमें ऐसा दर्द मानो मोच खा गयी है। दोनों पैरोंमें जलन मालूम होती है। दोनों पैरोंमें बेचैनीकी वजहसे रोगी एक भावसे और एक जगह अधिक देरतक रह नहीं सकता। पैरके अंगूठेकी पहली संधिमें ऐसा दर्द, मानो उखाड़ी जा रही है। पेशीमें बेधनेकी तरह दर्द। समूची देहमें काँपकँपी मालूम होती है। केवल निद्रित अवस्थामें चेहरेमें पसीना होता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—लोरोसिरेसस, क्रेटिगस, बेल, पोलिगोनम, फास, ऐग्नस, कैक्टस, कार्बो-ऐन, क्रियो, सिपि, थूजा।

तुलनीय।—हृत्पिण्डमें—क्रेटिगस, लैकेसिस; आँखमें—बेलेडोना; जीभमें—कैल्के; प्रदर—ऐगार, कार्बो-ऐन, नक्स, सिपि।

वृद्धि।—शरीर हिलानेपर, गर्म पदार्थ मुँहमें लेनेपर, रातमें और तेज़ीसे चलनेपर, छूनेपर और दबानेपर।

घटना।—दाँत-पर-दाँत रगड़नेपर, विश्रामसे और सामनेकी ओर शरीरको दोहराकर टेढ़ा करनेपर।

शक्ति।—३रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

प्रूनस वर्जिनियेना

(PRUNUS VERGINIANA)

दूसरा नाम।—चोक-चेरि, सिरेमोज-वर्जिनियाना।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—छालके भीतरी भागसे इसका अरिष्ट या क्वाढ़ा तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—बहुत प्राचीन कालसे पाश्चात्य देशके रहनेवाले हृत्पिण्डके दाहिने अंशका फैलना और दुर्बल, असम और रुक-रुककर

कलेजा धड़कनेके लक्षणमें इसका काढ़ा हृत्पिण्डकी क्रियाको बढ़ा देनेके लिये व्यवहार करते थे।

हृत्पिण्डकी बीमारीकी वजहसे खाँसी ; रातमें सोनेपर खाँसीका बढ़ना (एरालिया-रेसि, पल्स) और पुरानि श्वासनली-प्रदाहके लक्षणमें श्वासयन्त्रकी वजहसे पैदा हुई बीमारीमें और वृद्धोंकी परिपाक शक्तिके घटनेके लक्षणमें विशेष लाभदायक है।

शक्ति।—मूल अरिष्ट और निम्न-शक्ति या क्वाथ।

टिलिया ट्राइफोलियेटा

(PTELIA TRIFOLIATA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जड़की छालसे मदर-टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—दमा ; कब्जियत ; रक्तामाशय ; अजीर्ण ; विसर्प ; पथरी ; पाकाशयका शूल ; सर-दर्द ; सविराम ज्वर ; कामला ; यकृतमें रक्तकी अधिकता ; वात ; प्लीहा ; खाँसी।

उपयोगिता और आभास।—यकृत और यकृतके विकारसे पैदा हुए नाना प्रकारके रोगोंमें टिलिया विशेष लाभदायक हुआ करता है। यकृतका बढ़ना और उसमें दर्द, यकृत-विकारसे पैदा हुआ विसर्प और आमवातका उद्भेद, पित्तकी वजहसे सर-दर्द, अजीर्ण रोग, पाकाशयका शूल, यकृतमें रक्तका अधिक सञ्चय होना, कभी-कभी पैदा होनेवाला यकृतका प्रदाह, पुराना वातका दर्द, आमातिसार, कब्जियत वगैरह रोगोंमें इससे विशेष लाभ होता है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—(१) उदरोर्द्ध-प्रदेशमें अर्थात् वक्षोदर-मध्यस्थ-पेशीके नीचे ऐसा मालूम होना, मानो पत्थरका एक टुकड़ा रखा हुआ है। (२) यकृत बढ़ा हुआ और उसमें स्पर्श सहन न होना अथवा दाहिनी या रोगवाली करवट सोनेपर घटना और बाईं करवट सोनेपर हुआ करता है ; बायीं करवट लेटनेपर यकृतकी बन्धनीमें ऐसा मालूम होता है, मानो खींचन पड़ रही है और यकृत मानो बायीं ओर खिंच रहा है। (३) मस्तिष्ककी जड़ता और उसमें एक तरहकी अनिर्वचनीय बेचैनी मालूम होती है। (४)

पित्ताश्मरीकी वजहसे उत्पन्न शूल-वेदनाके बाद पाण्ड्-रोग पैदा हो जाना और बहुत दुबलापन। (५) यकृत और अङ्ग-प्रत्यङ्ग आदिमें बहुत दर्द, स्पर्श सहन न होना और बेचैनी मालूम होना। (६) अन्ननली और पाकाशयमें शूल मालूम होना और राक्षसी भूख पैदा हो जाना। (७) आलोक, शब्द और घरके बाहरकी हवा लगना असह्य मालूम होता है। (८) माथा बहुत बड़ा मालूम होता है। हाथकी अंगुलियाँ सब सुन्न, बड़ी और अकर्त्तव्य मालूम होती है। (९) भूखके साथ सर-दर्द, विशेषकर नींद खुलनेपर। (१०) भोजनके बाद हर्ष पैदा हो जाना। (११) परिवर्त्तनशील चित्त--क्षणभर पहले प्रसन्न था, पर क्षणभर बाद ही एकदम दुःखित भाव धारण करता है। (१२) पाकाशयके लक्षण आदि बन्द होनेपर श्वासकृच्छ्रता पैदा हो जाती है।

लक्षणावली

मन।—बहुत उत्तेजना-प्रवण—शब्द सुनते ही चौंक उठता है और सरमें दर्द पैदा हो जाता है। दुःखित क्रोधी स्वभाव, परन्तु अत्यन्त व्यस्त, पर मस्तिष्ककी गड़बड़ी और जड़ताके साथ किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो जाता है। आलस्यकी वजहसे मानसिक परिश्रम नहीं किया चाहता,—शक्ति न रहनेकी वजहसे नहीं। पित्तके प्रकोपकी वजहसे जड़तायुक्त और किंकर्त्तव्य-विमूढ़ भाव। स्मरण-शक्ति बहुत क्षीण और मानो मनोवृत्तिकी धीर क्रियाकी वजहसे भ्रम पैदा हो जाना, पर कुछ देरतक स्थिर भावसे चिन्ता करनेपर बहुत दिन पहले जो पढ़ा था, वह भी याद कर सकता है। भोजनके बाद फुर्त्ती पैदा हो जाती है, परन्तु कुछ देर बाद विषाद पैदा हो जाता है। बहुत तेजीसे परम्पराका उदय होनेकी वजहसे किसी विषयमें मनोयोग नहीं लगा सकता।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना; माथा हिलानेपर बढ़ना (कोना, कैल्के कैलि-कार्ब, फास, स्टैफ) या माथा हिलानेपर (कार्बो-वेज, लैक-डिफ्लोरेटम, फास); माथेकी जड़ता और शिथिलता मालूम होना; नाभि-प्रदेशमें आँतोंकी गड़गड़ाहट, मिचली और पाकाशयमें ऐसा दर्द मालूम होना, मानो मोच खा रहा है। वृद्धि—लिखनेके समय, उठनेके समय, गर्म घरमें, पाखाना होनेके समय वेग देनेपर (सर-दर्द बढ़ जाता है—इरिडियम) और चलनेके समय; घटना—धीरे-धीरे हिलानेपर। कभी-कभी सरमें चक्करका

प्रकोप पैदा हो जाना। उपशम—माथा झुकाने और आँख बन्द करनेपर। माथेका अस्थिगत सर-दर्द। हड्डीको फाड़नेवाला सर-दर्द, वृद्धि—मानसिक परिश्रमसे (पल्स, ब्राई, कैल्क, नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम, सिलि ; पढ़नेवाले लड़कोंका सर-दर्द—कैल्के-फास, ऐक्टिया, कैलि-फास, नक्स-वोम, पल्स, साइलि, सल्फ)। झुकनेपर (बेल, पल्स, ग्लोन, सिपि) और आँख हिलानेपर (ऐक्टिया, कोलो, हिप, साइलि) मिचली मिली (ऐण्टि-क्रूड, काक्यु, ऐ-लैक, सैङ्गिविन)। ललाटसे नासामूलतक दर्द। ऐसा मालूम होता है, मानो माथेमें एक लोहेकी सलाई घुस रही है (ऐसाफिट) ; वृद्धि—सवेरे उठनेपर। एक आँखके ऊपरी अंशमें टपक ; बाईं आधी आँखके ऊपरी प्रदेशसे मस्तिष्कके गभीरतम प्रदेशमें मानो शेल बिद्ध हो रहा है ; इस ढङ्गका दर्द। भूखके साथ सर-दर्द (सोराइन, फास), विशेषकर नींद खुलनेपर (न खानेपर सर-दर्द पैदा हो जाना—कास्टि, इलैप्स, लाइकोपोड, साइलि) ; उपशम—प्रथम भोजन या उपवास भङ्गके बाद (आइरिस, हाइपिर)। मस्तिष्ककी जड़में दबाव मालूम होना (इपिक)। मूर्द्धादेश और आँखमें रह-रहकर उत्ताप पैदा हो जाना और दर्द। सर-दर्द—सरके पिछले भागसे ललाटमें आँखके ऊपरी प्रदेशमें दर्द फैल जाता है। सर-दर्द मानसिक परिश्रमसे, आँख हिलाने, चलने, शब्दसे, गर्मी लगनेपर और सवेरे नींद खुलनेपर बढ़ जाता है।

आँख, कान, नाक।—भौंमें दर्द, भौं सिकोड़नेमें दर्द होता है। आँखोंमें रोशनी सहन नहीं होती ; दाहिने कानके नीचेवाली गांठ फूल उठती है और इसी कानके पीछे तेज़ दर्द मालूम होता है। ऊँची आवाजसे बोलना सहन नहीं होता। कानमें सों-सों शब्द और डङ्क मारनेकी तरह दर्द। नाक रुक जाती है और जखम भरी मालूम होती है ; साँससे मानो नाक जल जाती है और नासारंध्रमें उत्तेजना पैदा हो जाया करती है।

मुखमण्डल आदि।—मुखमण्डल विशेषकर दोनों आँखोंके चारों ओर मैलापन और बीमारी बतानेवाला भाव। पीले रङ्गकी मूर्त्ति और सूखी तथा कोमलता रहित। दोनों ओठ फटे और जखम भरे। ऊपरी ओठसे बाईं आँखतक फड़का करती है। कीड़े लगे दाँतमें स्पर्श सहन नहीं होता और मसूढ़ेमें जखम हो जाते हैं ; रोगवाले दाँत सब बड़े मालूम होते हैं। जीभ सफेद कोमल लेपसे ढकी और फूली या पीली, रुखड़ी और जीभके

काँटें सब लाल और उठे हुए। कोमल तालु और अलि-जिह्वा प्रदाह-युक्त और श्वास-प्रश्वास बहुत गर्म मालूम होता है। बहुत ज्यादा लारका स्राव, पट सोनेपर तकिया लारसे भर जाती है ; लार नमकीन। सवेरे नींद खुलनेपर सभी चीजोंका स्वाद खट्टा मालूम होता है। नींद खुलनेपर कुछ देरतक बात नहीं कर सकता। गलेमें बहुत दर्द और जखमकी तरह मालूम होन ; दाहिने पार्श्वमें और तीसरे पहर बढ़ना।

पाकस्थली।—राक्षसी भूख, खट्टी चीजोंकी इच्छा, सन्ध्यामें भोजनके समय ऊपरी पेटमें दर्द, नींद खुलनेपर माथेमें दर्द पैदा हो जाता है और भूख लग आती है। भोजन समाप्त करनेके पहले ही क्लान्त हो पड़ता है। पहले जो सब पदार्थ रोगीको पसन्द थे, अब उनपर अरुचि प्रकट करता है। मांस, मक्खन और घीकी पकी चीजोंसे अरुचि। प्यासकी अधिकता,—बहुत पानी पीता है। मुँहमें तीता स्वाद रहनेके साथ ही प्यासका न रहना। तेज़ और लगातार मिचली, सर-दर्दके साथ बोखार ; सोनेपर और बोलनेपर बढ़ना। वमन होने बाद भी मिचली शान्त नहीं होती। पाकाशयमें अम्ल पैदा हो जाता है और जलन हुआ करती है,—सर-दर्दके साथ (कैस्टोर-इक्विड, हाइड्रैस्ट, आइरिस, रोबिनिया)। पेट फूल उठता है और भारी मालूम होता है। थोड़ा भी खा लेने बाद उदरोर्ध्व-प्रदेशमें मानो एक टुकड़ा पत्थर रखा हुआ है, ऐसा भार मालूम होता है,—साधारण भोजनके बाद ऐसा अनुभव होना, कि पाकस्थलीमें बालू प्रवेश कर गयी है ; उदरोर्ध्व-प्रदेशमें मोच खाने या छेदनेकी तरह दर्द—दबानेपर मिचली पैदा हो जाती है। खट्टी डकार आनेपर पाकस्थलीमें सुस्ती मालूम होना। पाकाशयिक लक्षण आदि सवेरे बढ़ जाते हैं और इसी वजहसे नींद खुल जाती है।

अन्त्राशय।—यकृत फूला और उसमें दर्द मालूम होता है ; तलपेटमें ऐसा मालूम होता है मानो आँतें मरोड़ खा रही हैं ; पहने हुए वस्त्र आदि बहुत कसे मालूम होते हैं। यकृत-प्रदेशमें भार मालूम होना ; प्रायः हमेशा ही दर्द हुआ करता है और बेचैनी मालूम होती है। दाहिनी या रोगवाली करवट सोनेपर आराम मालूम होता है और बाईं करवट सोनेपर दर्द बढ़ जाता है और ऐसा मालूम होता है, मानो यकृतके बन्धनमें खींचन पड़ रही है तथा यकृत मानो बाईं ओर खिंच रहा है ; यकृतमें काटनेकी तरह तेज दर्द ; लम्बी साँस लेनेके समय बढ़ना। उदरमें स्पर्श बिलकुल ही सहन

नहीं होता, विशेषकर झुकनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो हाथसे पेट पकड़ रखनेपर अच्छा होता। उत्ताप अनुभव होना। तलपेटमें, पीठमें और दोनों पैरोंमें दर्द हुआ करता है। हृत्पिण्डकी गतिके तालमें नाभि-प्रदेशमें भी धड़कन हुआ करती है। यकृत-प्रदेशमें धमकन। प्लीहामें छेदनेकी तरह दर्द, स्पर्शका सहन न होना और बेचैनी मालूम होना, साथ ही ललाटमें दबाव मालूम होना। अन्त्रकूजन और अन्त्रशूल। अनजानमें वायु निकलना। उदर,—मानो भीतर घुस गया है या मेरुदण्डमें जाकर लग गया है, पर कड़ा नहीं होता (कड़ा हो जाता है—प्लम्बम)।

मलान्त्र और मल ।—लगातार मल-वेग और मलान्त्रमें दबाव मालूम होना, या तो पाखाना बिलकुल ही नहीं होता या बहुत थोड़ा हुआ करता है। मलान्त्रकी निष्क्रियताके कारण ऐसा होता है। उदरामय—मल पित्तमय, बहुत पतला सारमल मिला, काला, बदबूदार, यहाँतक कि कभी-कभी सड़ी गन्ध मिला पाखाना भी होता है। उसमें गन्धककी तरह गन्ध भी रहती है; कूथन भी साथ ही रहती है; पाखाना होनेके पहले पेट ऐंठा करता है और पेटमें गड़गड़ाहट सुन पड़ती है; पाखाना हो जानेपर मल-द्वारमें जलन मालूम होती है। कब्जियत, काला गाँठ-गाँठ मल निकलता है। पर्यायक्रमसे पतला और कड़ा पाखाना होता है। मलके साथ अनगिनती सूत्र-कृमि निकलती हैं (ऐस्क्लिपियस, कैल्के, सिना, सैण्टोनाइनम, इयुफोर्बिया-कोरो)।

पेशाब ।—पेशाबके समय और बाद मूत्रनलीमें जलन और उत्तेजना होती है। पेशाब बहुत जलन करनेवाला, परिमाणमें थोड़ा और पेशाब रोकनेकी शक्ति नहीं रहती। पेशाब निर्मल या घोर लाल पीले रङ्गका और परिमाणमें बहुत थोड़ा; तली—झिल्ली शल्क मिली, विकृत। प्रस्फुरक और मूत्राम्ल मिश्रित सफेद तली जमती है; पेशाब घोर लाल रङ्गका; पीली आभा लिये लाल।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—रातमें सोनेपर लिङ्गमुण्डमें और विटप-देशमें टपक हुआ करती है। पहले कामेच्छा प्रबल हो जाया करती है और अन्तमें वह लोप हो जाती है।

श्वासयन्त्र ।—स्वरभङ्गकी वजहसे ऊँचे स्वरसे बोल नहीं सकता (ऐमोन-कार्ब)। सवेरे शय्या छोड़नेके पहले ऐसा मालूम होता है, मानो

स्वरनलीमें कोई बाहरी चीज़ है (साइलिया; मानो एक टुकड़ा चमड़ा झूल रहा है—लैके, फास, थूजा)। खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो फट जायगा (ब्राई, नेट्र-मूर, ऐसिड-फास, सल्फ)। चित्त होकर सोनेपर फेफड़ेपर दबाव मालूम होता है और श्वासरोध हो जानेका उपक्रम हो जाता है, नींद खुलनेपर और रातके १ बजनेके समय। पाकाशय और यकृत आदिका दर्द कुछ घटनेपर, फेफड़ेमें बेचैनी और श्वासकृच्छ्रता पैदा हो जाती है। फेफड़ेमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द अनुभव होना।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनमें दर्द और ऐसा मालूम होता है मानो गर्दन फूल गयी है (गर्दन घुमानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो फूल गयी है—पैरिस)। गला अकड़ा (ऐगार, बेल, बैराई, कास्टि, लैके, ऐसिड-नाई); गर्दन हिलानेपर बहुत खींचन मालूम होती है (फाइजस, वैरियोलिनम, सर्दी लग जानेके कारण अकड़न (ऐक्टिया-रेसिमोसा)। नींद खुलनेपर ऐसा मालूम होता है मानो माथा जकड़ गया है (चेलिडो, इयुपेट, फार्मिका, कैलि-बाई, लैके, लाई नक्स-वोम, साइलि, नैजा, लैक-कैनाइनम)। पीठके नीचे या कमरके ऊपरी अंशमें अवशताका भाव मालूम होना (बार्बा, हाइपिर)। चलनेके समय नितम्ब-प्रदेशमें ऐसा मालूम होता है, मानो अकड़ गयी है। कन्धा और बाँहमें वातकी वजहसे दर्द। बहुत हाथ काँपना, निम्नाङ्ग क्षीण मालूम होता है। दाहिने ऊरुमें डंक मारनेकी तरह दर्द।

वृद्धि।—गर्म घरमें रहनेके समय; नींद खुलने बाद; भोजनके एक घण्टा बाद; मक्खन, पनीर या परमान्न (खीर) खानेपर; तीसरे पहर; सोनेपर और बाईं करवट सोनेपर; चलने, बोलने, गाने या खाँसनेपर (सर-दर्द), पाखानेके समय वेग देनेपर (सरमें चक्कर); मानसिक परिश्रमसे; भौं सिकोड़नेपर।

घटना।—दाहिनी करवट सोनेपर, ठण्डी हवा लगनेपर, पहला भोजन करते ही, सवेरे और संध्याके समय, माथा झुकाने, आँख बन्द करनेपर (सर-दर्द), पाखाना हो जाने (सर-दर्द) और सामनेकी ओर झुकनेपर (कोखमें भार और खींचन मालूम होना)।

सम्बन्ध।—सदृश।—आर्निका, बार्बेरिस, ब्रायोनिया, चेलिडोनियम, हाइड्रेस्टिस, मर्क्युरियस, नक्स-वोमिका, पोडोफाइलम। मस्तिष्कको

जड़में सर-दर्द—इपिकाक ; यकृत बढ़नेके सम्बन्धमें—मैग्नेशिया-म्यूर ; दग्ध-जिह्वा—पोडो, सैङ्गिविन। उदरका पीछेको ओर खिंचना—प्लम्बम।

तुलनीय।—मस्तिष्कके तलदेशमें सर-दर्द—इपिकाक ; मानसिक दुर्बलता या उग्रता—नक्स, ब्रायोनिया। सड़ी डकार—आर्निका। मार-पीटके सपने—नेट्रम-सल्फ। जीभ—सैंगुने। यकृत—बार्बेरिस और हाइड्रो।

शक्ति।—प्रथम दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

प्यूलेक्स

(PULEX IRRITANS)

उपयोगिता और आभास।—पेशाब और स्त्री-जननेन्द्रियके नाना प्रकारके रोगोंमें लाभदायक है।

लक्षणावली

मन और मस्तक।—रोगी अत्यन्त अधीर, चिड़चिड़ा और क्रोधी स्वभाव। ललाटदेशमें सर-दर्द, ऐसा मालूम होता है, कि दोनों आँखें बहुत बढ़ गयी हैं (पैरिस, नेट्र-म्यूर)। गाल और ललाट सिकुड़े रहते हैं और बुड्ढा-सा दिखाई देता है (इथ्यूजा, ऐब्रोट, सार्सा)।

पाकाशय आदि।—बार-बार वेग (आर्निका, बार्बेरिस, क्लिमेट), मूत्राशयके ऊपर दबाव मालूम होना (नक्स-वोम, पल्स, जिम्नोक्लेड) और मूत्रनलीमें जलन। पेशाब बहुत बदबूदार। पेशाब रोक नहीं सकता (लैके)। वेग होते ही पेशाब करना पड़ता है (इग्नेशिया, सल्फ ; वेग आते ही पेशाब न करनेपर मूत्राशयमें भयानक यन्त्रणा—प्रूनस-स्पाई)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत देरसे ऋतु हुआ करता है। ऋतुके समय मुँहमें बहुत ज्यादा लार सञ्चित हुआ करती है (आँसू, लार, पित्त और पेशाब अधिक परिमाणमें सञ्चय हुआ करता है—फाइटो)। योनिमें भयानक जलन मालूम होती है (ऐ-नाई, बार्बे, कैन्थ)। प्रदर—स्राव बहुत अधिक, बदबूदार,

वस्त्र आदिमें हरी आभा लिये पीला दाग लगता है ; आर्त्तव-स्राव और प्रदर-स्राव वस्त्रमें लगनेपर सहजमें छूटता नहीं है ; कमरमें दर्द (ऐ-आक्सेल)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐ-नाई, ऐ-आक्सेल, नेट्र-मूर, ऐब्रोट, सार्सा, सिपिया, पल्स, बार्बेरिस ।

शक्ति ।—३० शततमिकसे २०० शततमिक क्रम ।

पल्मो वलपिस

(PULMO VULPIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सियारके फेफड़ेसे विचूर्णके रूपमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह दमा, श्वासनली-प्रदाह, सर्दी, फेफड़ेमें पानी इकट्ठा होना प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—१x—६x विचूर्ण ।

पल्सेटिला नाइग्रिकैन्स

(PULSATILLA NIGRICANS)

दूसरा नाम ।— पास्क-फ्लावर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।— फूल लगी वृक्षसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— मुँहासे ; अन्धापन ; रजोरोध ; रक्ताल्पता ; भूख न लगना ; मूत्राधारकी सर्दी ; स्तनमें दर्द ; श्वासनलीका प्रदाह ; मोतियाबिन्द ; सर्दी ; आँखमें दर्द ; बिवाई ; खाँसी ; अतिसार ; क्षयकासका उदरामय ; उदराध्मान ; बाधक ; अजीर्ण ; कानका दर्द ; मृगी ; नाकसे खून गिरना ; आँखके किनारेका नासूर ; आँखोंका प्रदाह ; सन्धि-वात ; अर्श ; हृत्कम्पन ; छातीमें जलन ; कोरण्ड ; मूर्च्छावायु ; सविराम ज्वर ; सन्धिमें दर्द ; प्रसवका दर्द ; स्तनका दूध पिलानेवालीको बहुत-सी बीमारियाँ ; श्वेत-प्रदर ; खसड़ा ; आर्त्तवमें विकार ;

कर्णमूल ; स्नायुशूल ; कामोन्माद ; डिम्बाधारमें दर्द और प्रदाह ; गर्भावस्थामें पैर फूलना ; गर्भावस्थामें वमन ; अतिसार वगैरह बहुतसे उपसर्ग ; मूत्राधार-मुखशायी-ग्रन्थिका प्रदाह और सर्दी ; सूतिका ज्वर ; सूतिकावस्थाकी अकड़न ; सूतिकोन्माद ; फूल अटकना ; आमवात ; आघ्राण शक्तिमें गड़बड़ी ; कशेरुकाका टेढ़ापन ; मसा ; पट्ट क्रिमि ; दाँतका दर्द ; पेशाब रोकनेकी शक्तिका न रहना ; जरायुका प्रदाह ; जरायुका अपने स्थानसे हटना ; शिरा-प्रदाह ; शिराओंका फूलना ; अंगुलहाड़ा इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—औरत, बच्चे और कोमल स्वभाववाले व्यक्तियोंकी नाना प्रकारकी बीमारीमें यह बहुत फायदा किया करता है। इसका रोगी अस्थिर मति, धीर-क्रिया (धीरे-धीरे काम करनेवाला), श्लेष्मा-प्रधान व्यक्ति या भूरे केश, नीली आँखें, म्लान मूर्त्तिवाला होता है। जो सामान्य कारणसे ही रो अथवा हँस पड़ते हैं, जिनका हृदय स्नेह-पूर्ण और स्वभाव सरल रहता है, उनकी बीमारियोंमें यह विशेष उपयोगी है। इसलिये यह नेट्रम-म्यूरियेटिक और सिपिया वगैरहकी तरह औरतोंका परम-बन्धु है। प्रथम यौवनके समय विलम्बसे ऋतु होना, बहुत कम रजःस्राव, गर्भस्रावकी आशङ्का, अजीर्ण रोग, उदरामय, स्नायविक बीमारियाँ और आँख, नाक, कान, वायु-मार्ग और योनि वगैरहकी सर्दी, खसड़ा, वातकी वजहसे दर्द इत्यादि रोगोंमें यह बहुत लाभदायक है। नीचे इसके कई प्रधान लक्षण लिखे जाते हैं:—(१) मृदु, कोमल स्वभाव, अस्थिर मति, जरामें ही हँसने या रोने लगना ; अपने चिकित्सकसे रोगकी बात कहते समय रोगी बिना रोये रह नहीं सकता। (२) तकलीफ़ असह्य मालूम होती है। (३) प्यास नहीं लगती। (४) गर्म घरमें भी सर्दी मालूम होती है और प्यास नहीं रहती। (५) चेहरा मलिन, पर शरीर और माथेमें गर्मी मालूम होना। (६) खींचने और फाड़नेकी तरह दर्द, मानो रोगवाली जगहके भीतर जखम हो रहा है ; छूनेपर ही दर्दका बढ़ जाना। (७) दर्द धीरे-धीरे बढ़कर चरमावस्थामें जा पहुँचता है और एकाएक गायब हो जाता है (जैसे—दाँतका दर्द)। (८) दर्द आदिका सन्ध्या समयसे रातके ११ या १२ बजेतक बढ़ना, प्यास न रहना ; जाड़ा लगना ; उपशम—शरीर हिलाने और ठण्डी हवा लगनेपर। (९) वातका दर्द, एक जगहसे दूसरी जगह चला जाता है। (१०) स्राव आदि तेज़ नहीं होते, कषाय भी नहीं रहते और गाढ़े या पीली आभा लिये या हरे रङ्गके

होते हैं। (११) उदरमें ऐसा स्पन्दन होता है, जिसे दूसरा भी अनुभव कर सकता है। (१२) रजःस्राव निर्दिष्ट समयके बहुत बाद देरसे होता है और बहुत थोड़ा हुआ करता है; बहुत दिनोंतक ऋतु-स्राव न होना। (१३) जीभ सफेद लेप चढ़ी; मुँहका स्वाद तीता; खट्टा या सड़ा; कुछ देरतक भोजन करनेके बाद बहुत देरतक मुँहमें उसी चीज़का स्वाद आता रहता है। (१४) मेदमय या गर्म पदार्थोंसे अरुचि। (१५) सर्दी—इसके साथ स्वाद और घ्राण-शक्ति लोप हो जाती है, स्राव पीली आभा लिये हरा; गर्म कमरेमें श्वास-प्रश्वासकी तकलीफ़ होती है। (१६) कभी-कभी एकाएक स्वर-भङ्ग हो जाता है, फिर आप ही अच्छा हो जाता है; परन्तु यह नहीं बताया जा सकता कि ऐसा क्यों हुआ। (१७) खाँसी—सन्ध्यामें और रातमें सूखी और सवेरे पतला श्लेष्मा मिली, गाढ़ा और अनुग्र बलगम। (१८) खाँसनेपर वक्षगह्वरके बीचके स्थानमें ऐसा तेज़ दर्द मालूम होता है, मानो जखम हो गया है। (१९) मलका पतलापन—दो बार एक तरहका पाखाना नहीं होता। प्रत्येक बारका मल अन्यान्य बारके मलसे रङ्ग और पतलेपनमें भिन्न प्रकारका ही होता है। (२०) प्रदर—स्राव गाढ़ा, मठा या दूधकी तरह। इसके लक्षण हमेशा बदला करते हैं; दो बारका शीत, दो बारका मल और दो बारका प्रकोप एक तरहका नहीं होता; अभी अच्छा था, पर क्षणभर बाद ही फिर भयानक यन्त्रणा प्रकट करने लगता है; बाह्यतः रोगीके लक्षण आपसमें इसी तरह विपरीत रहते हैं या वैषम्य प्रदर्शन करते हैं। इसका दर्द खींचने या फाड़नेकी तरह और घूमनेवाला होता है, तेजीसे एक जगहसे दूसरी जगह चला जाता है और उसके साथ ही हमेशा शीतार्त्तता (सर्दी लगते रहना) मौजूद रहती है; तकलीफ़ जितनी ही अधिक होती है, ठीक उतना ही जाड़ा मालूम होना भी बढ़ता जाता है। दर्द एकाएक पैदा होता है और धीरे-धीरे घटता है या धीरे-धीरे बढ़कर जब एकदम प्रचण्ड अवस्थामें जा पहुँचता है, तब एकाएक बन्द हो जाता है; रोगवाली जगह पहले हिलाते ही दर्द पैदा होता है। कर्णमूल-प्रदाह—प्रदाह एकाएक रुक जानेपर कर्णमूलसे (स्त्रियोंके) स्तन या (पुरुषके) अण्डकोषमें चला जाता है। पाकस्थलीमें ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ नहीं है या एकदम शून्य हो रही है, खासकर चाय पीनेवालोंको। भोजन करते ही पतला पाखाना लग आता है। फल, ठण्डी चीजें या पानीय वगैरह खाने-पीनेकी वजहसे पैदा हुआ उदरामय। यौवन आनेके

समयकी बीमारियाँ, जैसे—ऋतुके समय पानीसे पैर धोनेकी वजहसे रजोरोध; बहुत देरसे आर्त्तव-स्राव, इसके साथ ही सन्ध्याके समय जाड़ा लगा करता है। बाधक—भयानक और असह्य यन्त्रणा, रोगी छटपटाया करता है और बेचैन हो जाता है। अन्यान्य समयकी अपेक्षा दिनमें रजःस्राव अधिक होता है। निद्रा,—शय्यामें सोनेके बहुत देर बादतक जागते रहनेपर कहीं नींद आती है। सवेरे शय्यासे उठनेके समय रोगी गहरी नींदमें पड़ा रहता है और बहुत दिन चढ़ आनेपर जब नींद खुलती है, तब उसे बहुत बेचैनी और आलस्य मालूम होता है, उसे नींद आराम देनेवाली नहीं होती। आँखके ऊपरी पलकमें गुहौरी। दाँतमें दर्द,—मुँहमें ठण्डा पानी लेनेपर आराम मालूम होता है। गर्म पदार्थ छूने या गर्म घरमें रहनेके समय अधिक दर्द होना इत्यादि कई इसके प्रकृतिगत और अव्यर्थ सिद्धि-प्रद लक्षण माने जाते हैं।

लक्षणावली

मन।—भ्रमज्ञान,—रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी शय्यापर एक नङ्गा आदमी सोया हुआ है (मानो एक घोर मतवाला उसकी बगलमें सो गया—साइक्यूटा); केवल पुरुषके सपने देखती है। ऋतुरोध हो जानेके कारण उन्मत्तता (बहुत अधिक रजःस्रावसे उत्पन्न—सिपि; रजःस्रावके समय—बेल)। धर्म या परलोक-सम्बन्धी उन्माद भाव; रोगिनीको ऐसा अनुभव होता है, कि उसे यम या शैतान पकड़नेके लिये आ रहा है; रातमें ऐसा अनुभव होता है, मानो सारी पृथ्वी अग्निमय हो रही है; कभी डरती है, कभी क्रोधसे उन्मत हो उठती है और कभी-कभी रोया करती है। सामान्य कारणसे ही हँसती या रोती है (ऐल्य्, काक्यु, क्रोकस, इग्ने, प्लैट, सल्फ, वैलेरियाना)। एकदम चुप निस्तब्ध भाव या बहुत बोलनेवाली (सिङ्को, ऐ-फास, वेरेट, ऐक्टिया, अरम, कास्टि, इग्ने, नेट्रम-सल्फ); सभी विषयोंमें विरक्ति प्रकट करती है। सवेरे बहुत दुःखित, गृहस्थीके विषयोंके सम्बन्धमें बहुत चिन्ता; पुरुषसे भय (लाई, अपरिचित मनुष्य देखनेसे ही डर जाती है—बेराई; रोगिनीको दूसरी स्त्रियोंसे डर लगता है—रैफेनस)। कम्पनके साथ मानसिक उद्वेग, मानो मृत्यु निकट है (रैफेनस)। हृत्पिण्डके विषयमें बहुत उद्वेग, अपनी आत्महत्या करके भी तकलीफ़ दूर करनेकी इच्छुक

(अरम)। कोमल, अमायिक और नम्र स्वभाव (ऐ-फास, साइलि, वैसिलिनम); हमेशा आँखमें आँसू भरे रहती या रोया करती है (एपिस, कास्टि, चेलिडो, साइक्यूटा, ग्रैफ, लिलियम-टाई, नेट्र-म्यूर, सिपि, साइक्लेमेन, स्टैनम) और डरपोक स्वभाववाली (इग्ने, लाई, नेट्र-म्यूर)। बच्चा चिड़चिड़ा, अस्थिर मति, म्लान मूर्त्ति और हमेशा शीतसे आर्त्त। द्वेषसे भरा और दूसरोंके धनका लोभी। मानसिक परिश्रमसे थक जाता है—सर-दर्द पैदा हो जाता है। थोड़ेसे मानसिक कष्टसे भी श्वासमें तकलीफ होने लगती है। भय, मर्म, पीड़ा या बहुत आनन्दके कारण बीमारियोंका भय (भय, आशङ्का या मानसिक उत्तेजना पैदा करनेवाले समाचार सुननेके कारण बीमारियाँ—जेल्स, हाइड्रोफोब, हाइपेरिकम, ओपि, ऐ-फास, साइक्यूटा)। अपनी धन-सम्पत्ति-सम्बन्धी या स्वास्थ्यको चिन्ताको वजहसे उद्वेग भरा (सिपि, ब्राई ; बन्धु-बान्धवोंके स्वास्थ्यके सम्बन्धमें चिन्तित—कास्टिकम, काक्युलस)। चिकित्सकके आनेके साथ ही रोने लगती है, फिर रोगको बातें कौन कहे (नेट्र-म्यूर, सिपि, आयोड)। आशङ्का, मनुष्योंका भय (ऐनाक, बेल, कैमो, साइक्यु, जेल्स, इग्ने, नक्स-वोम); रातमें भूतका भय (ऐको, आर्स, अरम-ब्रोम, लाई, रैनान-वल्बो, सिपि, सल्फ, जिङ्कम); भागने या छिप जानेकी इच्छा (छिप जानेकी इच्छा—क्लोरम ; भागनेकी इच्छा—जिङ्कम); सबका ही अविश्वास करता है और सभी विषयोंमें सन्देह प्रकट किया करता है (कास्टि, हायो, कैलि-ब्रोम)। अन्धकारमें भय (ऐको, कैनाबिस, मिडोरिन, कैम्फो, कार्बो-एन, ऐमोन-म्यूर, बार्बा, कास्टि, लाई, फास, रस)। बोलने-चालनेके समय रोगिनी अच्छी तरह अपने मनोभाव नहीं फकट कर सकती।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना—जैसा नशा होनेपर होता है, ठीक वैसा ही (ब्राई, कैनाब-सैट, क्रोकस, जेल); सरमें इतना चक्कर आता है, कि रोगी ढलमलाया करता है या गिर जाना चाहता है ; वृद्धि—सन्ध्याके समय या सवेरे शय्यासे उठनेके समय ; सोनेके बाद उठनेपर (नेट्र-म्यूर, नक्स, सिपि)। बैठनेकी अवस्थामें (कैम्फो, कैमो, रस), झुकनेपर (कास्टि, कैमो, ग्लोन, कैलि-कार्ब, लैके, नक्स-वोम, पेट्रोल, स्टैफ), वायु सेवनके लिये भ्रमणके समय (साइक्लेम, कैल्के-फास, क्यूप्रम-ऐसेट, फेलैन स्टैनम) या भोजनके बाद टहलनेके समय और ऊपरकी ओर देखनेपर (क्यूप्रम, ग्रैफ, लैके, टैबाक); माथा भारी और गर्म मालूम होता है ; चेहरा मलिन, मिचली, निद्रालुता,

धूम-दृष्टि (साइक्लॅम, जेल्स)। इसके साथ ही कानमें आवाज़ (चिनि-सल्फ, ओपि); मस्तिष्ककी जड़ता ; सभी विषयोंमें उदासी मालूम होती है (काक्य, क्लोरैल-रूब, इग्ने, ऐ-आक्सैल ; माथा भरा मालूम होना—ऐकोन, बेल, ब्रायो, मर्क)। माथेमें ऐसा दर्द मानो धकधक कर रहा है ; वृद्धि—सन्ध्याके समय, झुकनेपर, मानसिक परिश्रमसे और गर्म घरमें रहनेके समय। बहुत ज्यादा भोजन या मेदमय मांस आदि खानेकी वजहसे सर-दर्द (ऐण्टि-क्रूड, इपिक, आइरिस, नक्स ; काफीके अपव्यवहारके कारण सर-दर्द—कैमो, इग्ने, नक्स ; शराब आदि पीनेकी वजहसे—कैल्के, नक्स, सल्फ ; मानसिक आवेग, शोक वगैरहके कारण—ऐ-फास, इग्ने, स्टैफ । सर-दर्द, विशेषकर सन्ध्याके समय (काकुर, नेट्र-म्यूर) और सोनेके बाद (कोलोसिन्थ, साइक्लॅम, ग्लोन, रस); उपशम—निर्मल-वायु लगनेपर (लाई, एक्टिया, आर्जेण्टम, ग्लोन, हेलिबो, एसिड-नाई) और दबाने या टीपनेपर (लैके, आर्जेण्ट-नाई, बेल, कैलि-बाई, लाई, गुयेक, मिनियैन, सैङ्गिविन)। सरमें चक्कर ; बढ़ना—बहुत सोचनेपर (ऐगार) और बातचीत करनेपर (कैमो)। कभी-कभी सरमें चक्कर आकर बेहोश हो जाता है, चेहरा नीला और फूला दिखाई देता है, चलनेकी शक्ति नहीं रहती, कलेजा बहुत धड़का करता है, नाड़ी छूनेपर मालूम नहीं होती और घड़घड़ आवाजके साथ साँस चला करती है। मस्तिष्कमें ऐसा दर्द मानो माथा कुचल गया है—यह नींद खुलनेके समय या उसके थोड़ी ही देर बाद होता है। सरमें दर्दकी वजहसे ऐसा मालूम होता है मानो ललाट फट जायगा (ओलियैन, वैक्सिनिन) या मस्तिष्क मानो जोरसे कसा हुआ है या दबाया जाता है अर्थात् मानो कोई टीपता है। सर-दर्द—आँख हिलानेपर चक्षुगोलकके अन्तरतम प्रदेशमें भयानक दर्द, ऐसा मालूम होता है मानो ललाट बाहर निकल पड़ेगा (थूजा, कैमो, मैंग-सल्फ)। अधकपारीका दर्द या शिरार्द्धशूल—तकलीफसे ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तिष्क फटकर आँखें दोनों माथेसे अलग होकर गिर पड़ेंगी (ग्लोन, सैङ्गिविन)। एक या दोनों कनपटीमें, स्पर्श सहन न होना, मानो वहाँ जखम हो गया है। वृद्धि—सन्ध्याके समय विश्राम करते वक्त और गर्म कमरेमें रहनेके समय ; घटना—निर्मल वायुमें चलनेके समय। जिस करवट सोता है, उसी ओरकी पैशिक आनर्त्तन या चिलक मारनेकी तरह दर्द पैदा हो जाता है ; करवट बदलनेपर दूसरी कनपटीमें यह दर्द हो जाता है। वृद्धि—सन्ध्याके समय और

ऊपरकी ओर देखनेपर, अधकपारीके दर्दके साथ, कभी-कभी मिचली और वमन (इपिक, कैलि-कार्ब, नेट्र-म्यूर)। माथेके पीछे एक पार्श्वमें तेज दर्द, मानो उसमें लोहेकी एक कांटी घुस रही है (सरके पिछले भागमें—हिपर, मस्कास ; कौलकी शूल—सर-दर्द रोगमें माथेके किसी विशेष अंशमें ऐसा मालूम होता है, मानो कोई लोहेकी काँटी या प्रेक गड़ रही है—आर्निका, काफिया, इग्नेशिया, आइरिस, नेट्रम-म्यूर, सिपिया)। हथौड़ीसे मारनेकी तरह या चिलक मारनेकी तरह दर्द ; माथा ऐसा मालूम होता है, मानो एक चिमटेसे दबाया जा रहा है (इथ्यू, कैक्टस) ; सरमें चक्कर आना और तकियेसे माथा उठानेके समय भार मालूम होना। सर-दर्द, वृद्धि—पारेके अपव्यवहारके बाद (ऐ-नाइट्रिक, हिपर, स्टिलिञ्जिया) ; नींद खुलनेपर (कैल्के, चेलिडो, इयुपेटोर, कैलि-कार्ब, लाई, नेट्र-म्यूर) या नींद खुलनेके कुछ ही देर बाद घटना—घरके बाहर धीरे-धीरे टहलनेपर (इयुपेटपर्प, वायु सेवनके लिये टहलते समय बढ़ना—बेल, चायना, सिना, आइरिस)। वातकी वजहसे सर-दर्द, वृद्धि—माथेके किसी एक पार्श्वमें और तीसरे पहर ५ बजेसे १० बजेतक दाँत और मुँहमें पागल बना देनेवाला दर्द (गुयेकम)। माथेकी त्वचाके ऊपर विशेषकर कनपटीमें और कानके पीछे कुटकुट करता है और बहुत खुजली पैदा हो जाती है और इसके बाद रोगवाला अंश फूल उठता है और उसपर दाना निकल आता है ; उसमें बहुत दर्द मालूम होता है। वृद्धि—संध्याके समय और वस्त्र आदि उतारनेपर और शय्याकी गर्मीसे देह गर्म होनेपर। माथेपर अर्बुद निकलना ; अर्बुदमें पीब पैदा हो जाता है और उसके द्वारा करोटीतक आक्रान्त हो जाती है (कैल्के-फ्लू, साइलि)। माथेमें बदबू और अधिकांश स्थानोंमें उससे ठण्डा पसीना निकलता है, प्रायः मस्तकके एक पार्श्वमें और मुख-मण्डलके एक पार्श्वमें ऐसा ही हुआ करता है। इससे अत्यन्त चिन्ता और मोह पैदा हो जाता है। वृद्धि—रातमें और रातके अन्तिम भागमें ; घटना—नींद खुलनेपर और शय्या त्यागकर उठनेपर। माथेमें शीत लग जाना, खासकर माथेमें पानी गिरनेपर, माथा पसीनेसे तर रहनेपर। शिरमें अधिक रक्त सञ्चय होना, इसके साथ ही डङ्क मारने या टपककी तरह दर्द, खासकर झुकनेपर।

आँख।—रोशनीका सहन न होना (बेराई, बेल, सिङ्को, कोना लाई, नक्स, ओपि, सल्फ)। आँखके सामने आगकी लपट दिखाई देती है,

मानो गालपर किसीने जोरसे एक थप्पड़ मार दिया है। ऐसी अस्पष्ट दृष्टि, मानो पर्देके भीतरसे देख रहा है (सल्फ, कास्टि, क्रोकस, लिथिया, नेट्रम-म्यूर, फास, पेट्रोल), आँख मलनेपर या पोंछ डालनेपर घट जाती है (क्रोकस)। अस्पष्ट दृष्टि—आर्त्तव आदि रक्तका स्राव एकाएक रुक जानेकी वजहसे (साइक्लामेन); वातका दर्द या क्षुद्र सन्धिवात एक स्थानसे दूसरे स्थानपर या दूसरे यंत्रपर चला जाता है, इसी वजहसे; पाकाशय या हृत्पिण्डके रोगकी वजहसे इन सब लक्षणोंके साथ श्रवण-शक्ति घट जाती है। अस्पष्ट दृष्टि, विशेषकर व्यायामके बाद देह गर्म होनेपर। आँख और पलक सूखी और ऐसा मालूम होता है कि आँख अधिक कीचड़से भर गयी है और बार-बार यह पीव या कीचड़ पोंछनेकी इच्छा होती है। दीयेकी रोशनी या सूर्यकी किरण लगनेपर आँखमें सुई गड़नेकी तरह दर्द अनुभव होता है (कैल्के, इयुफ्रे)। बच्चा बार-बार अपनी आँख रगड़ता है (स्क्यला, मर्दन करनेकी इच्छा—सिना, कास्टिकम; बच्चा बार-बार अपनी नाकका अगला भाग रगड़ता है—सिना, सैण्टोनिनम)। पीव-भरी फुन्सियोंके साथ आँखोंका प्रदाह (क्लिमेट, इयुफ्रे, ग्रैफ, इपिक, क्रोटन); घरके बाहरकी हवा लगनेपर ज्यादा परिमाणमें आँसू निकला करता है, रोगवाली आँखसे गाढ़ा पीले रङ्गका, अनुग्र और बहुत ज्यादा रसका स्राव हुआ करता है (युफ्रे, सिपा देखिये)। पलकोंके किनारेका प्रदाह और सूजन (पलकोंका किनारा जखम-भरा—युफ्रे, मर्क, सल्फ)। आँखमें ऐसा दबाव मालूम होना, मानो धूलके कण गिर गये हैं (कास्टि, चायना, युफ्रे; जलन और करकराहट होती है, मानो नमकका कण गिर गया है—नक्स)। ऋतु-स्राव न होनेके कारण आँखोंका प्रदाह, पलक फूली, खुजली और जलन, त्वचा क्षय नहीं होती; रगड़नेपर उपशम होता है (सल्फ)। बार-बार बिलनी होनेकी प्रकृति, खासकर आँखकी ऊपरी पलकपर (ऐ·फास, लाइको: निचली पलकपर—रस-टक्स)। वातकी वजहसे आँखोंका प्रदाह (ऐकोन, स्पाइजि, फाइटो; क्षुद्र-सन्धियोंके वातव्याधिग्रस्त व्यक्तियोंको एकाएक आँखोंका प्रदाह हो जाना—नक्स-वोम); आँखमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द; सन्ध्याके समय बढ़ना। प्रमेहकी वजहसे आँखोंका प्रदाह (मर्क-कोर; नयी अवस्थामें दबनेपर—हिप, ऐ-नाई, थूजा); एकाएक प्रमेहका स्राव रुक जाने बाद। नवजात शिशुकी आँखोंका प्रदाह (आर्जेण्टम-नाई, सिफिलिनम, थूजा); आँखसे बहुत ज्यादा पीले रङ्गका पीव-स्राव होनेके कारण पलक

सट जाती है। अंकुरमय पलक (कैल्के, ग्रैफ, कैलि-बाई, थूजा); पलक सूखी या उससे बहुत ज्यादा परिमाणमें अनुग्र रस-स्राव ; उपशम—घरके बाहरकी हल्की हवा लगनेपर, तेज़ हवामें नहीं ; अंकुर सब बहुत ही सूक्ष्म। अश्रुनाली (ऐसिड-फ्लु, कैल्के, पेट्रोल, साइलि); दबानेपर पीव निकलना (ऐ-फ्लू, साइलि)।

कान।—बहरापन—मानो सुननेकी राह—श्रवण-पथ रुक गया है; खसड़ा—अच्छी तरह निकलते-न-निकलते लोप हो जाना, इसके साथ ही कानसे स्राव या पीव बहने लगना (चेलिडो, सिङ्कोना, ग्लोन, फास); केश कँटवाने बाद सर्दी लगकर पैदा हुआ (लिडम) बहरापन ; कानमें सूखा काला मैल जमा करता है (कैल्के, हिपर, इलैप्स)। गाड़ीमें चढ़कर घूमनेके समय अन्य समयोंकी अपेक्षा अधिक सुन पड़ता है (ग्रैफा, ऐ-नाई)। कानमें भयानक यन्त्रणा ; रातभर रह-रहकर दर्द बढ़ता है, पर दिनमें कुछ अधिक नहीं मालूम होता ; कानसे अनुग्र और प्रायः गन्धहीन श्लेष्मा और पीव निकला करता है। कानमें गरजकी आवाज़—घरके बाहर अच्छा रहता है; कभी-कभी कानमें आवाज़ सुन पड़ती है और झुनझुनी होती है। कर्णशूल—कानमें ऐसा दर्द मानो तेज़ शूल बिध रहा है या कान फटा जाता है और रातमें उसमें टपक हुआ करती है। कानका बाहरी भाग और रंध्र लाल और फूला हुआ और उसके उपास्थिमय अंशके ऊपर पपड़ी जमा घाव पैदा हो जाता है। कर्णशूल—दर्द प्रचण्ड भाव धारणकर निचली पंक्तिके दाँतमें चला जाता है और शय्याके उत्तापसे देह गर्म होनेपर बढ़ जाता है।

नाक।—सर्दीकी वजहसे घ्राण-शक्तिका लोप हो जाना (साइक्लामेन, ऐनाक, कैमो, नेट्र-म्यूर, सैङ्गिविन)। नाकमें पुरानी सर्दीकी गन्ध मालूम होती है (मर्क); नाकसे बहुत बदबू निकलती है, रोगी उसे स्वयं समझ नहीं पाता (ऐ-फ्लू, कैलि-बाई, फास, सिपि)। नाकसे खूनका स्राव—ऋतु-रोध होनेपर (ब्राई, कोना, जेल्स)। रक्ताल्पता रोगमें सूखी सर्दी (सिङ्को, फेरम, कार्बो-वेज), खून जमा (आर्जेण्ट-नाई, कैमो, फेरम, फेरम-म्यूर, ऐ-नाई, मर्क, रस)। नाककी सर्दी—नाक सूखी या उससे श्लेष्माका स्राव ; स्वाद या घ्राण-शक्तिका लोप हो जाना (कैल्के, साइक्लेमेन, हिप, नेट्र-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, सिपिया, सिलि, ऐ-सल्फ)। नासापुट जखम-भरा और उसकी त्वचा क्षय हो जाती है;

अन्तमें पीली आभा लिये हरा स्राव ; घरमें रहनेके समय बढ़ना और घरके बाहरकी निर्मल हवा लगनेपर घट जाया करता है (नक्स-वोम, ऐकोन, सिपा ; घरके बाहरकी हवामें—काफिया, साइक्लाम) ; रोगीको बहुत जाड़ा मालूम होता है, उसका चेहरा मलिन हो जाता है और मस्तिष्कमें जड़ता आ जाती है। इसके साथ ही ललाटदेशका सर-दर्द। नाकसे बहुत ही बदबूदार, हरे रङ्गका श्लेष्मा निकलता है और आस्वाद तथा घ्राण-शक्ति लोप हो जाती है ; पुरानी सर्दी—नाकसे गाढ़ा, पीला और अनुग्र श्लेष्माका स्राव।

मुखमण्डल।—रोज़ संध्याके समय चेहरा लाल हो जाया करता है या पर्यायक्रमसे (बेल, क्रोक, इग्ने) म्लान और लाल हुआ करता है ; कभी-कभी म्लान और पीला (आर्स, कास्टि, मर्क) और दोनों आँखें गड्ढेमें धँसी दिखाई देती हैं ; चेहरा फूला, नीला या लाल ; दोनों गाल और नाक फूल उठती है। रह-रहकर चेहरेपर गर्मी पैदा हो जाती है और चेहरा तमतमा उठता है। मुखका स्नायु-शूल—अनियमित भावसे प्रकोप हुआ करता है ; वृद्धि—चबाने या बातचीत करनेके समय या मुँहमें ठण्डी या गर्म चीज़ लेनेपर। मुँहका विसर्प—डङ्क मारनेकी तरह या कुटकुटाहटका दर्द, खाल उधड़ जाती है। मुखमण्डलकी त्वचा छूनेपर बहुत दर्द मालूम होता है। निचला ओंठ फूला और उसके बीचका अंश फटा। मुखमण्डल और माथेकी त्वचा, विशेषकर एक (दाहिने) पार्श्वमें पसीना।

मुख-विवर।—दर्द-भरे दाँतकी जड़ ढीली मालूम होती है। दाँतका दर्द—ऐसा दर्द मानो एक स्नायु जोरसे खींचकर छोड़ दिया। बायें मुखमण्डलपर स्पर्श बिलकुल ही सहन न होना, कीड़े खाये दाँतमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द। कीड़े लगे खोखले दाँतमें टपककी तरह और ऐसा दर्द, मानो कुछ खोद रहा है और खींचनेकी तरह दर्द आँखतक फैल जाता है, इसके साथ ही कर्णशूल भी मौजूद रहता है। दन्तशूल ; वृद्धि—बसन्त ऋतुमें (लैके, ब्राई, डाल्का, नेट्र-मूर) ; रातमें (कैमो, सल्फ, रस, पोडो) ; शय्याके उत्तापसे (ऐण्टि-क्रूड, सल्फ, कैमो, क्लिमैंट, मैग-फास) ; भोजनके समय, पर चबानेके समय नहीं (कैमो, नेट्र-मूर, कास्टि, सेङ्गिविन, स्टैफ) ; बैठनेके समय (रस-टक्स) ; ठण्डा पानी छू जानेपर (ऐण्टि-क्रूड, स्टैफ, कैमो, हिप, लैके) या कोई गर्म चीज़ मुँहमें लेनेपर (कैल्के, कैमो, मिलिफोल, ब्राम्बिडियम) और

गर्भावस्थामें (हाइड्रोफोबिनम या लिसिन, ऐकोन, बेल, कैमो, हायो, मैग-कार्ब, स्टैफ, टैबाक); घटना—वायु सेवनके लिये टहलनेपर (ऐण्टि-क्रूड, कैलि-सल्फ, नेट्रम-सल्फ, नक्स-वोम)। सर्दीकी वजहसे स्वाद-शक्तिका लोप हो जाना ; कोई भी चीज़ मुँहमें अच्छी नहीं लगती। मुँहका स्वाद—सवेरे बहुत कड़वा ; मुँह लसदार हो जाता है, इसलिये बार-बार कुल्ला करनेकी इच्छा होती है (डायस्कोरिया); सवेरे मुँहमें सड़े मांसका स्वाद और ओकाई ; तीता स्वाद ; पानी या खानेके पदार्थ निगलनेके बाद ही बहुत तीते मालूम होते हैं, सन्ध्याके समय और सवेरे भी ऐसा हुआ करता है। जीभ—सफेद या पीली और गाढ़े गोंदकी तरह लेप-चढ़ी (बेल, ऐ-फास, मर्क, नक्स-मस); निरस, सूखी और प्यास नहीं रहती (ब्राई, नक्स-मस); जीभके बीचका स्थान तर रहनेपर भी ऐसा मालूम होता है, मानो जल गयी है ; सवेरे और रातमें जीभ बहुत चौड़ी और मोटी मालूम होती है (पैरिस, प्लम्बम); जीभके दोनों पार्श्व मानो जल गये हैं और जखम हो गया है। सवेरे मुख-विवर सूखा मालूम होता है, पर प्यास नहीं रहती (लैक-कैन, लाई, स्ट्रैमो); सवेरे मुँहसे सड़ी गन्ध निकलती है (लाई ; अन्यान्य अवस्थामें—ऐ-नाई, क्रियो)। मीठा स्वाद-मिली लार बहना (कैमो, कैन्थ, क्यूप्रम, डिजि, फास, प्लम्ब)। रोगी लगातार फेनभरा और रूईकी तरह थूक फेंका करता है।

गलेके भीतर।—गलेके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो त्वचा क्षय हो गयी है और घाव हो गया है ; कोई चीज़ निगलनेके समय डङ्क मारनेकी तरह दर्द और जलन मालूम होती है और अन्य समय सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है ; निगलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो गलेमें एक गुल्म या गोलाकार पदार्थ अड़ा हुआ है (जेल्स, ग्रैफा, नेट्रम-सल्फ)। कण्ठके भीतरकी शिराएँ सब फूल और फैल जाती हैं, कण्ठमें प्रदाह और नीली आभा लिये लाल रङ्ग दिखाई देता है। कण्ठका भीतरी भाग, गलग्रन्थि और उपजिह्वा लाल और फूली मालूम होती है ; निगलनेके समय गलेमें सूखापन रहता है ; रातमें और सवेरे अधिक। गलक्षत—संध्याके समय और तीसरे पहर बढ़ जाता है ; अन्ननलीसे मानो एक कीड़ा कण्ठकी ओर चढ़ रहा है—ऐसा अनुभव होता है (हाइपिर, स्पाइजि)।

पाकस्थली।—बहुत भूख, पर किस चीज़की भूख है, यह नहीं कह सकता है (ऐस्टिरियस-रियुब)। राक्षसकी तरह खा जाता है और फिर कै कर देता है। खानेकी चीजें बहुत नमकीन मालूम होती हैं (साइक्लामिन, कार्बो-वेज, सिपि, सल्फ, कैडमियम सल्फ)। रुचि—तेजस्कर पदार्थ, शराब आदि और खट्टी, स्निग्ध चीजोंकी रुचि रहती है। अरुचि—मेदमय खाद्य, माँस और रोटीसे अरुचि रहती है। प्यास प्रायः नहीं रहती ; प्यास रहनेपर बार-बार थोड़ा-थोड़ा पानी पीता है, पर उससे मिचली पैदा हो जाती है। तर या सूखी जीभके साथ प्यास न रहना। राक्षसी भूख, क्षुधाके समय ऐसा मालूम होता है, मानो आंतें आदि चबायी जा रही हैं। मुँहमें सड़ा स्वाद और ओकाई (आर्नि, ब्राई, मर्क, नक्स)। इसकी सभी बीमारियोंमें प्यास नहीं रहती (बेल, इपिक, सिपिया)। सभी पथ्य तीते मालूम होते है (ब्राई, चायना, कोलोसिन्थ ; सभी खानेके पदार्थ खट्टे मालूम होते हैं—लाई, नक्स ; सभी चीजें बहुत नमकीन मालूम होती है—आर्स, बेल, चायना, साइक्लेमन, सल्फ)। पाकाशयमें पड़ी अजीर्ण खायी हुई चीजोंकी डकार (ऐसिट-क्रूड, कैल्के, चायना, कोना ; सड़े हुए अण्डेके स्वादकी—ऐसिड-म्यूर, आर्निका, सिपि, सल्फ ; स्वाद या गन्ध-रहित—हिपर, स्टैफ)। डकारके साथ गलेमें कड़वा पानी चढ़ आया करता है (ब्राई, इग्ने, नक्स, फास ; कुछ खट्टा पानी—डिजि, हाइड्रैस्ट, लैके, नेट्र-सल्फ ; मीठा रसाक्त—नेट्र-कार्ब, प्लम्ब, स्टैनम) ; प्रत्येक बार भोजनके बाद वमन (आर्स, फेरम, आइरिस, नक्स) ; श्लेष्मामय वमन। सवेरे मिचली (कोना, साइक्लेमन, इपिक, फास)। मेदमय या घीकी पकी चीजें खानेकी वजहसे पाकस्थलीकी बीमारी (ऐसिट-क्रूड, इपिक, नक्स-वोम)। भोजनके बाद पाकस्थलीमें दर्द (आर्स, फेरम, नक्स, सल्फ)। वक्षोदर मध्यस्थ पेशीके नीचे या उदरके ऊपरी भागमें ऐसा स्पन्दन जिसे दूसरे भी देख सकते हैं (आयोड, रस, सिपिया, ऐसिट-टार्ट, सिना, सिङ्को, फेरम, हाइड्रैस्ट, कैलि-कार्ब, मैग-म्यूर)। हिचकी—बासी फल या पानी आदि पीनेपर (इग्ने, नक्स)। अन्त्रशूल और मिचली—वमन हो जानेपर घटना ; वायु छूटनेपर (नेट्र-म्यूर)। वमन—पाकस्थलीमें सर्दी लग जानेकी वजहसे रजोरोध हो जानेके कारण रक्त-वमन (ऐमोन-म्यूर, कैलि-कार्ब, थ्लैस्पि-बार्सा) ; पित्तमय पदार्थ (आर्स, कैमो, कोल्चि, क्रोटैलस, इयुपेट-पर्फो, इपिक, लेप्टैन, मर्क, नक्स, फास, सिपिया, वेरेट), खट्टा स्वाद मिला, हरे रङ्गका (आर्स, इपिक,

प्लम्ब, रस) ; फल, मेदमय या घीमें बनी चीजें, मिष्टान्न, बरफ वगैरह खानेकी वजहसे (घीकी बनी चीजें खानेकी वजहसे—साइक्लैमे, फेरम, टैराक्स ; कुल्फी बरफ खानेके कारण वमन—आर्स, कैल्के-फास), म्लान मुखमण्डल और सर्दी लगनेके साथ। श्वास लेनेके समय या दबानेपर उदरके ऊपरी भागमें दर्द मालूम होना (गहरी साँस लेनेपर दर्दका घटना—लोबेलिया-इनफ्लेटा)। बहुत सवेरे नींद खुलनेपर (नेट्र-म्यूर, कार्बो-ऐन) और भोजनके एक घण्टा बाद पाकस्थलीमें मानो एक टुकड़ा पत्थर रखा हुआ है—इस ढङ्गका भार मालूम होना (ब्राई, हाइड्रैस्ट, आयोड, कैलि-बाई, लाई, ऐ-नाइट्रिक, जिञ्जिबार, रस, टिलिया-ट्रिफो ; डकार आनेपर घटना—पैरिस), फिर कुछ खानेपर घटता है ; प्रत्येक बार भोजनके बाद उदरोर्द्ध प्रदेशमें दबाव मालूम होना (कैन्थ, लोबेल-इन, सैङ्गियु, स्ट्रान), खाये हुए पदार्थके वमनके साथ (वेरेट) ; नुकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द—चलनेके समय और पैर फिसलनेपर (ब्राई, बेल)। सवेरेके भोजनके पहले या भोजनके बाद पेटमें ऐसा दर्द मानो ऐंठन हो रही है। पाकाशय वायुसे फूला और कड़ा। पाकाशयिक सर्दी या प्रतिश्याय (ऐसिट-क्रूड, आर्स, ब्राई, चेलिडो, इपिक, मर्क, नक्स-वोम, वेरेट) ; कुल्फी बरफ (आर्स), फल और मिठाई खानेकी वजहसे ; ऐसी तकलीफ़ मानो पाकस्थलीको त्वचाके भीतर जखम हो गया है। पेटसे वक्षतक ऐसा मालूम होना मानो चिपक गया है।

अन्त्राशय।—यकृतमें ऐसा दर्द मानो तीर घुस रहा है। चलनेके समय यकृतमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। अधिक आध्मानकी वजहसे पैदा हुआ अन्त्रशूल ; रातके भोजनके बाद या रातमें उदरोर्द्ध-प्रदेश और कोखमें श्वास-प्रश्वासमें बाधा प्रदान करनेवाले आध्मानका सञ्चय होना ; आध्मान-वायु एक जगहसे दूसरी जगह घूमता-फिरता है। उदरामय ; बरफ, फल और मिठाई आदि खाने तथा दोनों पैर पानीमें भींजनेके कारण अन्त्रशूल। वक्षके निचले अंशमें और उदरमें दर्दकी वजहसे रोगिनी सामनेकी ओर टेढ़ी हो पड़ती है। प्रत्येक बार भोजनके बाद पेट फूल उठता है ; अन्त्र-प्रदाह और उदर-वेष्टमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता। जाड़ा मालूम होना और आँतोंमें आवाज़के साथ अन्त्रशूल, विशेषकर संध्याके आरम्भमें। पाकाशय और अन्त्राशय फूला रहनेकी वजहसे रोगिनी अपना कमर बन्द या कमरका कपड़ा ढीला कर देती है। उदरमें निम्न-पृष्ठ भागमें ऐसा भार मालूम होता है, मानो

एक पत्थर बँधा हुआ है। बैठनेके समय निम्नांगमें झुनझुनी हो जाती है ; निष्फल मल-वेग, तलपेटमें घूमकर श्रोणितक छेदने और खींचनेकी तरह दर्द, रोगिनीको उसी वजहसे बहुत सुस्ती मालूम होती है। दोनों पुट्ठे या वंक्षण-प्रदेशमें गुल्मकी तरह पदार्थ अनुभूत होता है। रजोरोधकी वजहसे सर्दी मालूम होनेके समय अन्त्रशूल। नाभीके चारों ओर गोलाकार सूजन मालूम होती है।

मलान्त्र और मल।—रोज़ रातमें उदरामय होता है, मल पानीकी तरह या पित्तकी तरह हरा और पाखाना होनेके पहले पेटमें दर्द और आँतोंमें गड़गड़ाहट हुआ करती है। बार-बार आममय पतला पाखाना निकलना (आर्स, वेल, कैमो)। फल खानेकी वजहसे पतले दस्त आना (आर्स, चायना, सिस्टस, कोलो ; अमरूद खानेकी वजहसे—वेरेट ; पियाज़ खानेके कारण—थूजा ; सर्दी लगनेकी वजहसे—ऐको, ब्राई, कैमो, डाल्का ; ठण्डा पानी आदि पीनेकी वजहसे—आर्स, ब्राई, नक्स-मस ; गदला और मैला पानी पीनेके कारण—कैम्फो, जिञ्जिबार ; दूध पीनेपर—कैल्के, नेट्रम-कार्व, सल्फ)। आमातिसार—मल केवल आम और खून-मिला। दुरारोग्य कब्जियत—सवेरे मुँहका स्वाद मिचली पैदा करनेवाला और कड़वा मालूम होता है, रोगीको बाध्य होकर कुल्लाकर मुँह धोना पड़ता है ; मल गांठ-गांठ, बड़ा और कड़ा—क्विनाइनसे रोके हुए सविराम ज्वरके बाद। पाखाना लगनेके समय थोड़ा-सा पाखाना निकलता है या मलके बदले केवल पीली और किसी-किसी समय खून-मिली आँव निकलती है। अर्श—बहुत दर्द, मसा बाहर निकला हुआ और उसके साथ ही उत्तेजना और ऐसा मालूम होना कि त्वचा क्षय हो गयी है। रजःस्राव रोगमें बवासीरका मसा भीतरी, पर उससे अकसर खून निकला करता है (नहीं तो पल्सेटिलाके अन्तर्गत नहीं आता)। निद्रितावस्थामें अनजानमें मल निकल जाना। पित्त-सञ्चयकी कमीके कारण अनजानमें निकल जानेवाला सफेद रङ्गका मल और यकृतके विकारकी वजहसे कीचकी तरह मल निकला करता है (ऐ-बेन, ऐसिट-क्रूड, कैल्के, मर्क, नक्स-मस, पोडो ; कीचकी तरह—कैल्के, बार्बेरिस, लाइकोपस-वर्जिन, चेलिडो, जेल्स, हिप, कैलि-बाई, लेपटैन, माइरिका-सेरि, ऐ-नाई, ऐ-एास, पोडो)। कमरमें दर्द-मिला रक्तामाशय। उदरामय—मल अत्यन्त परिवर्त्तनशील ; दो बारका पाखाना कभी एक तरहका नहीं होता ; प्रति बार भिन्न-भिन्न रङ्ग और प्रकारका मल निकलता है।

उदरामय साधारणतः या केवल रातमें होता है ; मल पानीकी तरह हरी आभा लिये पीला, बहुत परिवर्त्तनशील और भोजन पेटमें जाते ही पाखाना लग आता है। पाखाना होनेके पहले और बाद मलान्त्रमें और मलनालीके मुँहपर जलन, उत्तेजना और ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो त्वचा क्षय हो गयी है। पाखाना होनेके समयके अलावा अन्य समय भी मलनालीसे खून निकलता है।

पेशाब ।—पेशाब रोकनेकी शक्तिका न रहना (बेल, जेल्स, इयुपेट-पर्प्यु, क्रियो); उदरमें खींचनकी तरह दर्दके साथ बार-बार पेशाबका वेग। बिना रङ्गका पानीकी तरह पेशाब ; उसमें गोंदकी तरह टुकड़े-टुकड़े तली जमती है (ऐ-फास)। रुका हुआ पेशाब—मूत्राशय-प्रदेश लाल और गर्म हो जाता है, रोगी बहुत चिन्तित हो जाता है और उसके तलपेटमें यन्त्रणादायक दर्द हुआ करता है। शय्यामें पेशाब, खासकर शिशु-बालिकाओंको (गोरे रङ्गके बालकोंको—सिपिया ; रातमें पाँच-छः बार अनजानमें पेशाब होता है—फेरम ; अभ्यासके सिवा और कोई कारण न रहनेपर—इक्विसिटम)। मूत्राशय चिपक जाता है और उसके ग्रीवादेशमें ऐसा दर्द होता है, मानो काँटा गड़ रहा है। पेशाबका वेग रोक नहीं सकता, बैठने (कास्टि, सार्सा) या चलनेके समय (कास्टि, फेरम, नेट्र-म्यूर, जिङ्कम, स्ट्रैमोन ; चलनेके समय या दण्डायमान अवस्थामें—सिपि)। आप-से-आप ही बूंद-बूंद पेशाब निकलता है (अनजानमें निकलता है, खाँसनेपर—कास्टि, स्क्विला, एपिस), वायु निकलनेके समय और रातमें सो जानेपर (एपिस, आर्जेण्ट-नाई, ऐ-बेञ्जो, आर्निका, बेल, कास्टि, फेरम, सिपिया, सल्फ ; क्रिमिकी उत्तेजनाकी वजहसे—सिना, साइलिसिया, युरेनियम-नाई)। खूनका पेशाब (आर्स, कैनाब, कैन्थ, फास); मूत्रनली-द्वारपर जलन और नाभि-प्रदेशमें ऐसी यन्त्रणा, मानो जकड़ गया है, साथ ही मसानेमें भी दर्द मौजूद रहता है। तली पोवकी तरह ; पेशाबके साथ मूत्राशय-ग्रीवा-देशमें आक्षेपिक दर्द, यह दर्द उरुतक फैल जाता है। पेशाबके बाद अन्तमें कई बून्द खून गिरता है।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—प्रबल रमणाकांक्षा ; आप-से-आप लिङ्गोद्गम हो जाता है ; सवेरे बहुत देरतक स्थायी लिङ्गोच्छ्वास (साइमेक्स, मैग-म्यूर ; केवल सवेरे, सन्ध्या या रातमें बिलकुल नहीं होना—पैलेडियम ; शृङ्गारेच्छा न रहनेपर भी नेट्र-म्यूर); हस्तमैथुनके बाद वीर्यक्षय, अत्यन्त शृङ्गारके कारण

सर-दर्द (सरके पिछले भागमें—सिङ्कोना) ; कमरमें दर्द (स्टैफ) और दोनों पैरोंमें भार मालूम होना। अण्डकोष फूलते नहीं, परन्तु जलन होती है। एकशिरा, उसके साथ ही मुष्क फूलना ; सर्दी लगनेपर ; चोट या रुके हुए प्रमेहके स्रावके कारण (क्लिमेट)। इस या अण्ड-वृद्धि-निवारक यन्त्रकी रगड़ लगकर रेतोरज्जु-प्रदाह। उदरके भीतरसे रेतोरज्जु होकर खींचनकी तरह दर्द, अण्ड-कोषतक चला जाता है। अण्डकोषमें जल-सञ्चय। मूत्राधार-सुखशायिका-ग्रन्थिका बढ़ना, नल चिपटा और क्षुद्र, सुखशायिका-ग्रन्थिका नया प्रदाह। प्रमेह—स्राव गाढ़ा पीला या पीली आभा लिये हरा (नेट्रम-सल्फ, थूजा)। मेढ़्रत्वचाके भीतर और ऊपरी भागमें खुजली और जलन। शुक्रकी तरह प्रमेहका स्राव।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऐसा दर्द मानो जरायु जकड़ गया है या छेदा जा रहा है और छूनेपर या रमणके समय उसमें बहुत दर्द मालूम होता है (क्रियो, लैके)। आर्त्तव-स्रावके समय जरायुमें बहुत दर्द मालूम होता है। जरायु-भ्रंश, इसके साथ ही उदर और कमरमें इस तरहका भार मालूम होना, मानो पत्थर रखा हुआ है। दोनों पैरोंमें झुनझुनी और वृथा ही पाखाना लग आता है। जरायु-स्राव—स्राव बदलनेवाला, बीच-बीचमें रुक जाता है ; स्राव गाढ़ा खून-मिला ; वयःसन्धिकालका जरायु-स्राव (लैके, सिपिया, बेल, प्लैट, थ्लैस्पि, आस्टिलेगो)। हरित्पाण्डु रोगमें (थलैस्पि) और क्विनिन तथा लोहेके अपव्यवहारकी वजहसे। यौवनोद्गमके समय रजःस्राव देरसे होता है (अरम-मूर-नैट, ऐक्टिया, नेट्र-मूर, सिपि)। ऋतु—बहुत विलम्बसे होता है, स्राव बहुत कम दिन स्थायी ; स्राव बहुत गाढ़ा, काला और जमे हुए टुकड़े मिला (कैक्टस, काक्यु, ग्रैफ, कैलि-नाई, मैग-कार्ब, प्लैट, जैन्थक्जाइलम) या पानीकी तरह पतला (लोरो, नेट्र-मूर, सिकेलि, वाइवर्नम) ; रङ्ग बदलनेवाला ; दिनमें चलनेके समय स्राव अधिक हुआ करता है (केवल दिनमें—कास्टि ; केवल शरीर हिलानेके समय--लिलियम-टाई ; चलनेके समय लगातार स्राव होता है—नेट्र-सल्फ ; शरीर हिलाते ही स्राव बढ़ जाता है—ब्रायो ; विशेषकर गर्भ-स्रावके बाद—क्रोकस)। आर्त्तव रुका या कभी-कभी बन्द रहता है ; ठण्डे पानीमें दोनों पैर भींजनेकी वजहसे ऋतु-रोध (ऐकोन, नेट्रम-मूर ; हाथ डुबानेकी वजहसे—कोना, लैक-डिफ्लो) या रक्तकी कमीके कारण हरित्पाण्डु रोगमें (हेलोनियस) अथवा स्नायविक अवसादकी वजहसे (शारीरिक

अवसादकी वजहसे—नक्स-मस्केटा) ऋतु-रोध। टपककी तरह सर-दर्द (माथेमें अधिक रक्त-सञ्चयके कारण सर-दर्द—इथ्यु, वेरेट-विर)। पाकस्थलीमें दबाव मालूम होना, पाकस्थलीमें दर्द। मूत्रकृच्छ्र, आँखोंका प्रदाह, इसके साथ ही सवेरेके समय मिचली या मुँहका कड़वा स्वाद, क्षणभरमें लोप हो जानेवाले स्राववाला रजःस्राव ; सन्ध्याके समय बहुत जाड़ा मालूम होता है। प्रदरका स्राव गाढ़ा और दूधकी तरह, योनिका बाहरी भाग फूल उठता है या बहुत कसैला और त्वचाको क्षय करनेवाला, दाह करनेवाला, बिना दर्दका स्राव अथवा उदरमें काटनेकी तरह यन्त्रणा। गर्भ-स्रावकी आशङ्का—शोणित स्राव होता-होता रुक जाता है और आक्षेप, श्वास-रोध और मूर्च्छा ; रोगिनी निर्मल वायुके लिये लालायित रहती है। विक्षत व्रण निकलना ; जरायुमें तेज़ संकोचनकी कमीके कारण फूल अड़ जाना (कैन्थ, ऐग्नस, बेल, कोलोफिल, इपिक, सिकेलि)। जरायुमें फूल या रक्त-पिण्ड रुक जानेकी वजहसे प्रसवके बादका रक्त-स्राव (सिनैमोमम, थ्लैस्पि)। प्रसवके बादका दर्द बहुत देरतक स्थायी रहता है और बहुत प्रचण्ड होता है (सिकेलि, ऐकोन, कैमो, काफिया, जेल्स ; अस्त्रकी सहायतासे प्रसव होनेके बाद—आर्नि, हाइपिर, रास) ; संध्याके समय बहुत बढ़ जाता है। प्रसवके बादका क्लेद-स्राव बहुत थोड़ा (सिकेलि) और क्रमसे दूधके रङ्गका हो जाया करता है (दूधकी तरह सफेद—कैल्के) ; रोगिनीको ज्वर भाव रहता है, पर प्यास नहीं रहती। अनियमित और मृदु प्रसव-वेदनासे पैदा हुआ धनुष्टङ्कारकी तरह आक्षेप (रोगिनी बेहोश नहीं हो जाती—काक्युलस) ; चेहरेपर थोड़ा पसीना, म्लान और बरफकी तरह ठण्डा (चेहरा लाल—ग्लोन) ; घड़घड़ शब्द करनेवाला श्वास-प्रश्वास और पुष्ट नाड़ी। सूतिकारम्भ या गर्भावस्थामें पैरमें सफेद सूजन (ब्राई, लैके, नेट्र-सल्फ, रास)। बालिकाओंको यौवन आनेके पहले उत्पन्न होती है अथवा दूधकी तरह, जलवत् रस निकला करता है। दोनों स्तन फूल उठते हैं और बच्चेको प्रति बार स्तन पिलानेके समय दर्द बहुत जोरका होता है। दर्द वक्षकी पेशी और कन्धेमें, गर्दनमें, बगलमें तथा बाँहमें चला जाता है और एक जगहसे दूसरी जगह हटा करता है (क्रोटोन, फाइटो)। इसी कारणसे रोगिनी रोया करती है। बच्चेको स्तनका दूध छुड़ा देनेपर दोनों स्तन फूल उठते हैं, बहुत खींचन पड़ती है और बहुत दर्द हुआ करता है ; दूध इकट्ठा होना भी बन्द नहीं होता। बाधक—इतना दर्द होता है, कि रोगिनी छटपटाया करती है

और चिल्लाकर रो उठती है। खून गाढ़ा काले रङ्गका (कोलोफिल, कैमो, ऐक्टिया, नक्स-वोम)।

श्वासयन्त्र।—स्वरभङ्ग, रोगी जोरसे बोल नहीं सकता (बेल, कैलि-कार्ब, मर्क, फास ; कण्ठमें दुर्दमनीय खुजलीके साथ सवेरेके समय स्वरभङ्ग—आयोड, सिपिया)। कण्ठमें खाल उधड़ जाने या खरोंचकी तरह सूखापन मालूम होता है (ऐ-नाई, नक्स-वोम)। रातके समय सूखी खाँसी, सोते ही आरम्भ हो जाती है और उठ बैठनेपर बन्द हो जाती है (हायो, सैङ्गिविन ; बैठनेसे बढ़ना—कैलि-कार्ब, जिङ्कम ; चित सोनेपर बढ़ना—ऐमोन-मूर, नक्स, फास ; बाईं करवट सोनेपर—इपिका, मर्क, फास ; दाहिनी करवट सोनेपर—ऐमोन-मूर, स्टैनम)। खाँसी—अनायास पीले रङ्गका बलगम निकलता है, विशेषकर सवेरे (कैल्के, ऐ-फास, स्टैनम, सल्फ ; सूखी कलेजा फाड़नेवाली खाँसी—बेल, ऐ-नाई, रियुमिक्स, स्पञ्जिया)। खाँसनेपर काले रङ्गका जमा हुआ बलगम निकलना (ऐमोन-कार्ब, कालिन्सोनिया, ऐ-नाई)। वक्षकी बगलमें और वक्षमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द (ऐकोन, बेल, ब्रायो, कैलि-कार्ब)। वक्षमें कसावटका भाव और ऐसा अनुभव होना, मानो समूचा वक्ष जकड़ गया है (बेल, नक्स, स्टैनम); श्वासकृच्छ्र, विशेषकर चित होकर सोनेपर, उठनेके समय सरमें चक्कर आ जाता है। चलनेके समय श्वासकष्ट, शरीर कुछ गर्म होते ही खुसखुसी खाँसी पैदा हो जाती है। रातमें जितनी बार नींद खुलती है, उतनी ही बार खाँसी आती है। खाँसी और मिचलीके साथ प्रचण्ड सूखी खाँसी, विशेषकर सवेरे ; खाँसनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो पाकस्थली उलट गयी, मानो पाकस्थलीका भीतरी अंश बाहर निकल पड़ा। प्रचण्ड आक्षेपिक क्रुप खाँसी—प्रत्येक बार लगातार दो बार प्रकोप होता है (मर्क ; तीन प्रकोप—स्टैनम); स्वरनलीके मुँहपर खुजली ; त्वचा छिलना या गलेके भीतर कुटकुट करना और फेफड़े तथा स्वरनलीमें गन्धकका धूआँ प्रविश कर गया है, ऐसा सूखापन मालूम होनेके साथ। बलगम—पीवकी तरह—लाई, ऐ-नाई, साइलि, आर्स, आयोड, कार्बो-वेज, साइमिक्स, फेरम, हिप, आयोड, कैलि-कार्ब, फास, स्ट्रैनम) या तीता रस या हरे रङ्गका श्लेष्मामय (साइलि, नेट्रम-कार्ब, स्टैनम); (रजोरोध रोगमें) काले रङ्गका जमा खून-भरा बलगम निकला करता है। श्वासकृच्छ्र, मानो वक्षके निचले अंशमें या थोड़ेसे पञ्जरेके स्थानपर कसावटका भाव और संकोचनसे उत्पन्न (वक्षकी

अप्रसारणीयतासे उत्पन्न—लाइ, स्पाइजि, स्टैफि ; मानो वक्ष एक लोहेके बने बन्धनसे बँधा रहनेके कारण—कैक्टस ; वक्षका बीचका अंश मानो आबद्ध हो रहा है, इस वजहसे—लोबेलिया-इन)। कभी-कभी वक्षमें जलन मालूम होती है (आर्स, कैन्थ, साइक्यूटा, नक्स-वोम, फास, सैङ्गिविन)। व्यथा-प्राप्त श्वास-प्रश्वास, श्वासाल्पता, मानो कण्ठमें गन्धकका धूआँ घुस गया है। इसी तरहसे गला रुकनेका उपक्रम, रह-रहकर श्वास रुकनेका उपक्रम और दुर्भावना, वक्ष और स्वरनलीका आक्षेपिक संकोचन, प्रचण्ड हिचकी, खाँसी, सर-दर्द और सरमें चक्कर पैदा हो जाना, विशेषकर भोजनके बाद ही रातमें अर्द्धशायित अवस्थामें रहनेके समय। शरीर हिलाने, तेजीसे पैर चलाने और निर्मल वायु या सर्दी लगनेपर श्वासकष्ट बढ़ जाता है। द्रुत मारात्मक यक्ष्मा-कासकी पीव पैदा हो जानेवाली अवस्था, हरित्पाण्डु रोग-ग्रस्त तथा कम खूनवाले बालकोंको कण्ठास्थिके नीचे वक्षमें बहुत दर्द मालूम होना। वक्षमें ऐसा दर्द, मानो जखम पैदा हो गया है ; वक्षोस्थिके ठीक बीचोबीच ऐसा दर्द, मानो जखम हो गया है ; आधी रातके पहले, मानो ललाटदेशमें सर-दर्द, केवल सोनेवाली अवस्थामें वक्षके पार्श्वमें तेज़ शलाका बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है, खासकर रातमें। वक्षस्थलमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; लम्बी साँस लेने, छोड़ने या खाँसनेपर बढ़ जाता है। दुरारोग्य वायुनली-भुजगत प्रतिश्याय या सर्दी। रातमें चिन्ताजनक सपनेके साथ वक्ष और हृत्पिण्डमें रक्तका अधिक सञ्चय होना।

हृत्पिण्ड।—हृत्प्रदेशमें एकाएक मानो धीमा दर्द पैदा हो जाता है। हाथसे दबानेपर थोड़ी देरके लिये बन्द हो जाता है। हृदयके अगले भागमें सुई गड़नेकी तरह दर्द श्वास-प्रश्वासमें व्याघात पैदा करनेवाला दबाव और बेचैनी, चलनेके समय आराम मालूम होता है (चलनेके समय बढ़ना—स्पाइ, लिलिन)। हृत्प्रदेशमें जलन (आर्स, आर्जेण्ट-नाइ, कार्बो-वेज ; धीमा—वेरेट-विर ; हृद्शूलकी बीमारीमें—कैलि-कार्ब ; हृत्स्पन्दनके साथ—कास्टि)। हृद्स्पन्दन—कभी-कभी प्रबल प्रकोप पैदा हो ज़ाता है, मानसिक यन्त्रणा, धुँधला दिखाई देना और प्रत्यङ्गोंका काँपना ; विरक्ति, भय या आनन्दसे पैदा हुआ हृद्स्पन्दन। इसके साथ ही स्त्रियोंको रजःस्राव न होना या खूनकी कमी और कभी श्वास-प्रश्वासमें व्याघातके साथ हृत्स्पन्दन, विशेषकर बायीं करवट सोनेपर।

गर्दन और पीठ। ग्रीवाकी ग्रन्थियाँ सब फूल जाती हैं। दोनों अंशफलकोंके बीचवाले अंशमें तेज दर्द, श्वास-प्रश्वास लेनेपर बढ़ना। मेरुदण्डके ऊपरी अंशका टेढ़ापन। पीठके ऊपरसे नीचेकी ओर मानो ठण्डा पानी बह जाता है। पीठके निचले अंशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। पीठ और निम्न-पृष्ठमें दर्द मालूम होना, मानो रोगी बहुत देरतक बैठा था (ऐगार)।

प्रत्यङ्ग आदि।—दोनों कन्धोंमें तेज़ दर्द। दाहिने बगलके बीचका भाग कड़ा और बहुत दर्द-भरा, उसकी गाठें बढ़ जाती हैं और उनमें टपकका दर्द होता है (बेराइ-कार्ब)। कन्धेसे अंगुलीके अगले भागतक समूचे बाँहमें बहुत भार मालूम होता है। दोनों बाँह ऐसे मालूम होते हैं मानो सन्धि-भ्रष्ट हो गये हैं या टूट गये हैं, हिलानेसे और भी ज्यादा दर्द होता है। केहुनीमें चोट लगनेपर वह और भी फूल उठती है। नितम्ब, पैर और तलवेकी पेशीमें ऐसा दर्द होता हैं, मानो कुचल गया है; उरुशिखरसे जानुतकका अंश गर्म, फूला, जलन-भरा और उसमें ऐसा दर्द मानो चिपक गया है। जानु प्रदाहयुक्त, फूला और उसमें तेज़ वेधनेकी तरह दर्द। जानु कोमल, चिकना, सफेद सूजनसे भरा (रस, एण्टि-क्रूड कैल्के, कैलि-आयोड, लाई, ओलियेकोर, फास)। उरु और पैरमें खींचन मालूम होना, विशेषकर पोटलीमें, मानो कण्डरा या पेशीके अगले भाग सब छोटे हो गये हैं। बायें पैर और चरणमें चिलक मारनेकी तरह और त्वचा छेदनेकी तरह दर्द और इसी वजहसे ये सब अंग सुन्न शोथ-भरे रहते हैं और उनमें स्पर्श सहन नहीं होता। सोने बाद बैठने या बैठनेपर सोने इत्यादि शरीरकी अवस्था परिवर्त्तन करनेसे आराम मालूम होता है। जङ्घाकी पोटलीमें दर्द होता है और वह फूल उठती है। पैरकी शिराएँ सब डोरीकी तरह हो जाती हैं। चरण और तलवा लाल, प्रदाहभरा और फूल उठता है। चरणका ऊपरी भाग फूला। दोनों पैर लटका रखनेपर पैरकी सूजन, प्रदाह वगैरह बढ़ जाते हैं। दर्द,—फाड़ने, खींचने और इधर-उधर हटनेवाला—तेजीसे एक अंशसे दूसरे अंशमें चला जाता है (कैलि-बाई, लैक-कैन, मैंगेनम, पैलेड); इसके दर्दके साथ हमेशा जाड़ा लगनेका भाव मौजूद रहता है। (आर्स, बेल, सिपि, इग्ने ; दर्दके बाद शीत—कैलि-कार्ब); दर्द जितना ही बढ़ता है। जाड़ा भी उतना ही बढ़ जाया करता है; दर्द एकाएक पैदा होकर धीरे-धीरे घटता है या

क्रमसे धीरे-धीरे बढ़कर जब चरमावस्थापर पहुँच जाता है, तब एकाएक गायब हो जाता है; पहली बार देह हिलाते ही, दर्द पैदा हो जाता है (रस)। रोगवाली सन्धि लाल और फूल उठती है और उसमें डंक मारनेकी तरह दर्द अनुभव हुआ करता है (एपिस)। वात-वेदना,—शरीरके किसी अंश-विशेषमें, खासकर दोनों पैरमें पानी लगनेपर (रस, ऐको) और बहुत देरतक तर जलीय वायुका प्रवाह लगनेपर अर्थात् वर्षाके समय पैदा हो जाती है।

सार्वाङ्गिक।—गुल्म-वायु या मूर्च्छावायु रोग (इग्ने, ऐसाफिट, मस्कस), नित्य लक्षणोंका बदलना; अपस्मार या मृगीकी तरह आक्षेप (आर्जेण्ट-नाई, आर्टिमिसिया-वाल, ब्यूफो, कास्टि, साइक्यूटा, क्यूप्रम, इण्डिगो, कैलि-ब्रोम, नक्स-वोम); बड़े वेगसे हाथ-पैर आदि पटकने बाद वे शिथिल हो पड़ते हैं, मिचली होती है और डकार आया करती हैं, आर्त्तव रुकनेकी वजहसे। भ्रमी या मूर्च्छाके प्रकोपके समय चेहरा बहुत मलिन (प्रकोपके पहले—लोरो; बाद—स्ट्रैमो) और शरीर बहुत ठण्ढा तथा काँपा करता है। समूची देह बहुत काँपा करती है। रोगीका शरीर बहुत थका-और सुन्न मालूम होता है, मानो न जाने उसने कितना परिश्रम किया है; पर विश्राम करनेपर भी यह भाव नहीं घटता (ऐ-फास, ऐ-पाई, कैलि-फास, कैल्के-फास)। आर्त्तव-स्राव रुकनेपर स्नायविक दुर्बलता (जेल्स, इग्ने, कैलि-फास, लैके, नक्स वोम, साइलि)। शरीरके किसी एक द्वारसे रक्त-स्राव; रक्त काला और तुरन्त जम जाता है। शिरास्फीति या फूली हुई शिरा प्रदाहयुक्त (ऐ-फ्लू, कैल्के, हैमा, पियोनिया, कास्टि)। रोगवाला अंश नीली आभा लिये, जखमकी तरह, स्पर्श सहन नहीं होता और उसमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द अनुभव हुआ करता है। रोगीके शरीरका रक्त-प्रवाह बहुत क्षीण और धीमा रहता है; रोगी म्लान-मूर्त्ति और हमेशा सर्दी अनुभव किया करता है; शोणिताभाव। शरीरके भीतरी यंत्रोंका प्रदाह और रोगवाले अंश या यंत्रमें पीव पैदा हो जानेकी सम्भावना (लैकेसिस, पोलिगोनम; प्रदाह दमन करनेवाले प्रसिद्ध हैं), श्लैष्मिक झिल्ली मात्रकी ही सर्दी,—रोगवाली झिल्लीसे त्वचाको क्षय न करनेवाला पीली आभा लिये हरा और गाढ़ा स्राव निकला करता है (साइक्लेमेन; नेट्रम-सल्फ)। रोगवाला अंश दुबला हो जाता है (प्लम्बम)। हरित्पाण्डु-रोग (कैल्के-फास, साइक्लेमेन, नेट्रम-म्यूर,

सिपिया), विशेषकर एलोपैथिक मतसे अधिक परिमाणमें लोहा प्रयोग करनेपर। शरीरके भीतर या सन्धिमें खींचन मालूम होना। कभी-कभी शरीरकी त्वचाके नीचे मानो जखम उत्पन्न हुआ है—ऐसा अनुभव होना। शरीरका कोई अंश दबाकर सोनेपर उसमें चुनचुनी और कनकनी होती है। समूची देहमें टपक अनुभव होती है (हृत्पिण्डकी धमक समूची देहको कँपा देती है (नेट्र-म्यूर, स्पाइजि), रोगिनी निर्मल हवा सेवनके लिये लालायित रहती है, कारण उससे (यद्यपि जाड़ा लगता है) सर-दर्द, दाँतमें दर्द, कर्ण-शूल, सर्दी प्रभृति बीमारियाँ घट जाती हैं, बन्द घरमें उसके श्वास-प्रश्वासमें व्याघात पैदा हो जाता है। रोगीके शरीरका कोई अंश छूने बाद उसमें दर्द और जखमकी तरह मालूम होता है। शरीरमें स्पर्श सहन नहीं होता। बच्चेको गोदमें लेकर धीरे-धीरे टहलनेपर वह अच्छा रहता है। वस्त्र आदि कसकर पहननेपर आराम मालूम होता है।

त्वचा।—मलिन, फीकी, भिन्न-भिन्न स्थानोंमें जलन पैदा करनेवाली खुजली पैदा हो जाती है। आमवातके साथ उदरामय और गर्मीके दिनोंमें बढ़ना। रातमें खुजलीका बढ़ जाना ; आँटा आदि खाने, विलम्बसे ऋतु-स्राव होने और ठण्डे पानीसे नहानेकी वजहसे। युवतियोंके गात्र और चेहरेपर काले-काले दाग या तिल (वक्षके ऊपर—ऐ-नाई ; हाथपर—फेरम, मैंग ; चेहरेपर—कैलि-कार्ब ; गालपर—सिपि)। तेजीसे फैलनेवाला विसर्प, नीली आभा लिये, विशेषकर नितम्ब और उरुदेशमें ; रोगवाला अंश कड़ा, जलनकी तरह उत्ताप भरा और हिलने या छूनेपर उसमें तेज़ बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है या अंग-प्रत्यंगोंके गांठोंमें त्वचा क्षय (लाई, ग्रैफ)। त्वक-विदारण या शरीर फटना। खून बहनेवाला अर्बुद, कितने ही रंगोंका रक्त निकलता है। दिनके समय चलनेपर ही अधिक खून निकलता है। खसड़ेकी वजहसे विकार और सर्दीका लक्षण बहुत अधिक हो जाया करता है ; खसड़ेके दाने बहुत धीरे-धीरे निकलते हैं। कर्ण-शूल—आँखोंका प्रदाह और वक्षमें दर्द पैदा करनेवाली सूखी खुसखुसी खाँसी पैदा करता है या घड़-घड़ शब्द करनेवाला तरल श्लेष्मा मिली खाँसी ; खसड़ा आराम होनेके बादतक यह रह जाती है। जखम,—उससे सहजमें ही खून निकलता है, जखमके चारों ओर जलन, खुजली या डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है और लाली पैदा हो जाती है ; सर्दी लगनेपर घटना। चोटके कारण पैदा हुए जखममें

पीव पैदा हो जाता है और यह पीव त्वचाको क्षय न करनेवाला और अत्यन्त गाढ़ा तथा बहुत ज्यादा होता है।

निद्रा।—बार-बार जम्हाई आना; दिनमें निद्रालुता (मर्क, नक्स, फास); ज्वर मालूम होनेके साथ तन्द्रायुक्त अवस्था। भोजनके बाद या बहुत ज्यादा भोजनके बाद नींद न आना। रोगी रातके पहले भागको जागते हुए बिताता है और रातके अन्तिम भागमें गहरी नींदमें सो जाता है। निद्रित अवस्थामें रोगी चौंक उठता है (एको, आर्स, बेल, सिना, कैलि-कार्ब, नेट्र-कार्ब), रोता है (कार्बो-वेज, कैमो), चिल्ला उठता है (कैलि-कार्ब, रियुम) और बोलता है (ऐकोन, ऐइलेन्थ, कार्बो-वे, कैमो, कैलि-कार्ब)। डरावने सपने (ऐ-नाई, बेल, फास)। मनमें लगातार नाना प्रकारकी चिन्ताएँ उदय होनेके कारण नींद नहीं आती (इस्कूय-हिप, ब्राई, कैल्के, काफिया, सिपिया)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—समूची देह ठण्डी और शीतयुक्त; हमेशा सर्दी मालूम होती है, यहाँतक कि गर्म घरमें भी जाड़ा लगा करता है। दिनके ४ बजनेके समय जाड़ा मालूम होना, प्यास नहीं रहती, श्वास-कष्ट और शीत पैदा होनेके समय श्लेष्मामय वमन हुआ करता है। एक पार्श्वमें जाड़ा मालूम होना और सुन्न हो जाना (दाहिने पार्श्वमें—ब्राई, नेट्र-म्यू; बाएँ पार्श्वमें—कार्बो-वेज, कास्टि, लाई, थूजा)। तलपेट और पीठके नीचे शीत मालूम होना; औंघाई आनेपर भी नींद नहीं आती (बेल, कैमो, ओपि)। हाथ और चरण बरफकी तरह ठण्डे और मुर्देकी तरह बेजान मालूम होते हैं (लाई, सिपि)। उत्ताप,—चेहरा लाल या एक गाल लाल, दूसरा गाल मलिन (ऐकोन, कैमो)। संध्याके समय या रातमें भीतरी बिना पसीनेका उत्ताप, पर यह उत्ताप बाहर प्रकाशित नहीं होता। दाहिना पार्श्व या उर्द्धांगगत उत्ताप (बाएँ पार्श्वमें और बाएँ बाँहमें उत्ताप—रस); रोग-वाला अंश हिलाने या धोनेपर घटा मालूम होता है। मुखमण्डल या एक बाँहमें उत्ताप और दूसरा बाँह ठण्डा; देह गर्म और दोनों पैर ठंडे (बेल, कार्बो-वेज); रह-रहकर महान अस्थिरता पैदा करनेवाला उत्ताप पैदा हो जाता है, मानो किसीने शरीरपर गर्म पानी ढाल दिया है (रस)। रातमें शय्यामें सोनेके समय बहुत गर्मी और बेचैनी मालूम होती है। सन्ध्याके

समय बिना पसीनाका उत्ताप पैदा हो जाता है, शिराएँ सब फूल उठती है (बेल, सिङ्को) और हाथमें जलन हुआ करती है। रोगवाले अङ्गमें जलन होती है, रोगी जलन दूर करनेके लिये हाथ रखनेके वास्ते ठण्डी जगह खोजता है (ओपियम)। रोगीकी देह बहुत गर्म हो उठती है और वह शरीरका ओढ़ना उतार डालनेकी इच्छा प्रकट करता है; शरीरपर वस्त्र नहीं रखना चाहता (एपिस, कैम्फोर, सिकेलि)। लगातार उः, आह वगैरह यन्त्रणाव्यञ्जक शब्द किया करता है और कराहा करता है। जीभसे बार-बार ओठको तर करता है; परन्तु पानी नहीं पीता। पसीना—एक पार्श्वमें, केवल दाहिने पार्श्वमें या केवल बायें पार्श्वमें पसीना होता है (बैराइटा-कार्ब, ऐम्ब्रा, नक्स; जिस करवट सोता है, उसी पार्श्वमें पसीना होता है—ऐ-नाई, ऐकोन, चिनिन-सल्फ; जिस करवट सोता है, उसके विपरीत पार्श्वमें पसीना निकलना—बेञ्जिनम, थूजा, सैनिक्युला); चेहरेके दाहिने पार्श्वमें पसीना; रातमें या सवेरे पसीना अधिक होता है, नींद खुलते ही पसीना बन्द हो जाता है (सिङ्कोना, कोनायस; सोनेके लिये आँख बन्द करते ही पसीना सूखकर फिरसे उत्ताप पैदा हो जाता है—सैम्बुकस)। रातभर पसीना हुआ करता है और रोगी आच्छन्न भावसे पड़ा-पड़ा लगातार बका करता है (शीतावस्थामें बकता है—पोडो; उत्तापावस्थामें बकता है—लैके, पोडो), पसीना निकलनेपर भी तकलीफ़ नहीं घटती (इयुपेट, लैके, नेट्रम-म्यूर, नक्स; घर्मावस्थामें यन्त्रणाका बढ़ना—इपिकाक)। ज्वर न रहनेकी अवस्थामें सरमें दर्द, आममय दस्त, मिचली और अरुचि; प्लीहा बड़ी मालूम होती है।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—बेल, कैल्के-फास (वायु-मार्ग आक्रान्त होनेपर)। कैमो (अनुपूरक-रूपमें भी काम किया करता है), सिङ्कोना, काफिया, इग्ने, लाइको, नक्स, प्लैट, स्ट्रैमोन, सल्फ, ऐसिड-सल्फ।

घटना।—रोगवाले अंश सब दबाने या रगड़नेपर; शरीरका वस्त्र उतारनेपर; ठण्डी हवा आदि लगनेपर; ऊँची तकियेपर माथा रखकर सोनेपर; रोगवाला अंश धीरे-धीरे दबानेपर; निर्मल वायु सेवन करनेपर; रोगवाली करवट सोनेपर; ठण्डी चीज़ खाने-पीनेपर; ठण्डे प्रयोगसे; दाहिनी करवट सोनेपर; धोनेपर; रोगवाले अंशमें पानी प्रयोग करनेपर और आध्मान-वायु निकलनेपर।

वृद्धि ।—तीसरे पहर, मानसिक आवेगकी वजहसे नींद खुलनेपर; नाक झाड़नेपर (वक्ष, कान, माथा इत्यादिमें दर्द और कानमें कड़ाक हो उठना), निद्राभिभूत होनेके आरम्भमें साँस छोड़नेके समय, सर्दी लगनेपर, खाँसनेपर, सोना, बैठना वगैरह शारीरिक अवस्थाके परिवर्त्तनसे, शरीरका रस क्षय होनेपर, बरफसे जलनेपर, बाईं करवट सोनेपर, बिना रोगवाली करवट सोनेपर, माथा नीचाकर सोनेपर (फास)। खसड़ेके बाद फिर खसड़ा निकलनेपर; रजःस्रावके पहले और समय; शरीर हिलाना आरम्भ करनेपर; रोटी, मक्खन और मेदमय पदार्थ खानेपर; पाकस्थलीमें विकारकी वजहसे; पाखाना जानेके समय, विशेषकर यदि कमरमें बहुत दर्द मालूम हो; बच्चेको स्तनका दूध पिलानेके समय; धूपमें; गोधूलिके समयमें; पेशाबके पहले, समय और बाद; सूतिकागृहमें रहनेके समय; अस्त्र चिकित्साके बाद; तम्बाकू खाने और गर्भावस्थामें, उष्ण और बन्द घरमें; बाहरी उत्तापके प्रयोगसे और उत्तापसे (कैलि-म्यूर); छूनेपर; विश्रामसे या स्थिर होकर रहनेपर; पैर फिसलनेपर; जोरसे हिलनेपर; अन्धड़-पानीके समय; वायु परिवर्त्तनसे; पानीमें भींजनेपर और प्रबल वायु लगनेपर।

अनुपूरक ।—ऐसिड-सल्फ, कैलि-म्यूर, कैमोमिला, लाइकोपोडियम, साइलिसिया।

अनुकूल सम्बन्ध ।—पहले या पीछे देना चाहिये—बेल, कैलि-म्यूर, लाई, फास, सल्फ, आर्स, ब्राई, कैल्के-फास, मर्क, नक्स-वोम, रास, सिपिया, साइलिसिया, इग्नेशिया, कैलि-बाइक्रोम। किसी पुराने रोगका इलाज आरम्भ करनेके लिये यह एक बढ़िया दवा है।

तुलनीय ।—रोनी या आँसू बहानेवाली—सिपिया, नेट्रम, इग्नेसि। शिरा फूलना रोग—हैमामेलिस। आँखोंका प्रदाह—आर्जेण्ट-नाइ। सर्दीमें—साइक्ले, सिपा। मानो अन्ननलीमें खाद्य अड़ा हुआ है—चायना, ऐबिस। मेदमय खाद्यसे बढ़ना—इपिका, कार्बो-वेज; कुल्फी बरफ—आर्सेनिक, कार्बो-वेज, इपिका। लेमोनेडकी स्पृहा—बेल, सैबाइ; दाँती लगना—कैन्थरिस। प्रसवके बादका दर्द—कैमो, कूप्रम, जैन्थक। स्तनमें दूध न होना—ऐग्नस, आर्टिका। जरायुकी बीमारी—कोलोफाइ, हेलोनियस, ऐलोस्टोन, हाइड्रैस, लिलियम। खसड़ा—कैलि-बाइ; कर्णशूल—बोरैक्स। ऋतु रुकनेकी वजहसे

आँखोंमें धुन्धलापन दिखाई देना—सिपिया। भयके कारण अतिसार—जेल्स। ऋतुशूल—काक्यु। अनुकल्प रज:—ब्रायो, फास। नक्सीर—थूजा। मिचली—कैल्को, लाइको। रोगका भय—कैल्के, नक्स, लैकेसिस। अन्धकारमें भय—आर्स, कैल्के, कार्बो, कास्टिक, लाइको, फास, स्ट्रैम। भूतका भय—ऐकोन, आर्स, लाइको, सिपिया, सल्फ। पैर भींजनेके कारण रजोरोध—रस-टक्स, डाल्कामारा। तीता स्वाद इत्यादि—सलफर। एक हाथ ठण्डा, एक हाथ गर्म—चायना, इपिका, डिजि। कर्णमूल हटकर दूसरी जगह चला जाता है—चेलिडो, रस-टक्स। सर्दीकी वजहसे ज्वर—ऐको। दो ऋतुओंके बीचके समयमें रक्त-स्राव—वोविस्टा, हैमा। साइलिसियाको पुराना पलसेटिला कहते हैं। सल्फर भी बहुत कुछ वैसा ही है।

सदृश।—ऐक्टिया-रेसि, ऐण्टि-क्रूड, कालोफाइ, कोना, साइक्ला, हैमा, सेबाई, सिपिया, कैलि-म्यूर, हेलोन, फास, बोरैक्स, लैक-कैन, आयोड।

शक्ति।—तृतीय दशमिकसे १००० से भी ऊँचा क्रम।

क्रियाका स्थायित्व। – ४० दिन।

पल्सेटिला नटेलियाना

(PULSATILLA NUTTALIANA)

दूसरा नाम।—अमेरिकन पल्सेटिला।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह पल्सेटिलाके सम-गुणवाली दवा है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय**।—कास्टिकम, पल्स, जिङ्क।

दोषघ्न।—ऐण्टिम-क्रूड।

शक्ति। – ६—२००।

पाइरिथ्रम पार्थिनियम

(PYRETHRUM PARTHENIUM)

दूसरा नाम ।—फीवर-फ्यू ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—इसमें मुँहका तीता स्वाद और धीमा बोखार दूर करनेकी शक्ति है, इसी वजहसे फीवर-फ्यू नामसे पाश्चात्य-देशमें इसका व्यवहार हुआ करता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—कैमो, चायना, एब्सिन्थि, आर्टिमिसिया ।

शक्ति ।—मूल अरिष्ट और निम्न-शक्ति ।

पाइरस अमेरिकाना

(PYRUS AMERICANA)

दूसरा नाम ।—माउण्टेन-एस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताज़ी छालसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—ऐसा मालूम होना कि कमरमें एक कड़ा बन्धन बँधा हुआ है । जरायु, मूत्राशय और हृत्पिण्डमें आक्षेपिक दर्द, आँखमें दर्द, ऐसा अनुभव होना कि पाकाशयमें ठण्डा पानी है । गलनलीतक ठण्डकका फ़ैल जाना, स्नायुशूल और वात-वेदना इसका निर्देशक लक्षण है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—प्रूनस-स्पाइनोसा, कैम्फर, क्रोटेलस ।

दोषघ्न ।—कैम्फर ।

शक्ति ।—६—३० ।

क्वैसिया

(QUASSIA)

दूसरा नाम।—पाइक्रिना-एक्सेल्सा, क्वैसियाकी लकड़ी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—क्वैसियाकी लकड़ीका काढ़ा।

उपयोगिता और आभास।—एलोपैथ चिकित्सक क्वैसियाका पानी या काढ़ा बोखार और अजीर्ण रोगमें सेवन कराते हैं और छोटी कृमिकी बीमारीमें क्वैसियाके पानीसे मलान्त्रको धुलवा देते हैं।

यह पाचन यन्त्रोंकी क्रियाको बढ़ा देता है। यकृत प्रदेशके ऊपरी भागमें दाहिने पञ्जरेमें दर्द, यकृतपर दबाव मालूम होना, सुई गड़नेकी तरह दर्द और प्लीहामें इस दर्दका फैल जाना लक्षणमें भी यह बढ़िया काम करता है।

आँखके मोतियाबिन्द रोगमें और धुँधली दृष्टिके लक्षणमें भी इसका प्रयोग होता है।

तुलनीय। सीड्रन, सिना, टियुक्रियम।

शक्ति।—१ से ३री शक्ति मूल अर्क या क्वैसियाका काढ़ा।

कुएर्कस

(QUERCUS)

दूसरा नाम।—इङ्गलिश ओक।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—प्लीहा तथा यकृत सम्बन्धी बीमारियोंकी यह एक बढ़िया दवा है। पुरानी बढ़ी हुई प्लीहाकी बीमारीमें (खास कर यदि बहुत ज्यादा शराब पीनेकी वजहसे वह हो जाये) तथा शोथ रोगमें, कुएर्कसका सेवन करनेपर दस्त तथा बहुत ज्यादा पेशाब होकर रोग दब जाता है तथा दस्त आना आरम्भ होते ही रोगीको आराम मिलने लगता है।

थोड़ी देरके लिये माथेमें नशा-सा अनुभव लक्षणमें भी यह बढ़िया काम करता है।

वात और पुराने मैलेरिया ज्वरमें भी इसका प्रयोग होता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—काकुलस, जेल्स, चायना, नेट्रम-म्यूर, सियेनोथस, सीड्रन।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

रैनानक्युलस एक्रिस

(RANANCULUS ACRIS)

दूसरा नाम।—गोल्ड कप, वाटर कप।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—ज्वर, शीताद, पक्षाघात प्रभृतिमें लाभदायक है। अस्थि-सन्धि, खासकर पैरकी एँड़ी और कलाई तथा पेशीमें दर्द, शरीर टेढ़ा करनेपर कमरमें बेहद दर्द (नक्स), वंक्षणशूल, कटिशूल, स्नायुशूल और वातके दर्दमें भी इसका प्रयोग होता है।

दोषघ्न।—रैनानक्युलस-बल्बोसस।

शक्ति।—१x—३०।

रैनानक्युलस बलबोसस

(RANANCULUS BULBOSUS)

दूसरा नाम।—रैनानक्युलस टियुबरोसस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इस गाछके समूचे अंशसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मदात्यय; स्तनके नीचे दर्द; वक्षमें दर्द; जाड़ेके दिनोंकी खुजली; गठ्ठे; अतिसार; शोथ; श्वास-कष्ट; अकौता; मृगी; पैरमें दर्द; पाकाशयका शूल;

दमा ; हिचकी ; कोरंड ; कामला ; यकृतमें दर्द ; स्नायुशूल ; रतौंधी ; डिम्बाधारका स्नायुशूल (पेम्फिगस) या छाले-भरे उद्भेद ; फुसफुसवेष्ट प्रदाहके बादका परिणाम ; सन्धिवात ; पार्श्व-शूल ; मेरुदण्डकी उत्तेजना ; मसे ; लिखनेवालोंका हाथ काँपना इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—वातका दर्द और स्नायुशूल, विशेषकर वक्ष और उदर-प्राचीरका प्रदाह और शरीरके दोनों पार्श्वके पञ्जरेमें वातका दर्द और परिविष्टक विचर्चिका या दादकी तरह जलन पैदा करनेवाले उद्भेद निकलनेके पहले या समयके स्नायुशूल आदिमें इसका उपकार प्रसिद्ध है। बहुत ज्यादा शराब पीनेकी वजहसे बीमारियाँ। जैसे आक्षेपिक हिचकी, मृगीकी अकड़न, पानात्यय इत्यादिमें भी यह बहुत लाभदायक है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं, कि—दिन या रातमें दिखाई न देना, तिमिरदृष्टि और ऐसा अनुभव होना कि चक्षुगोलक मानो दब रहा है और करकर कर रहा है; आँखमें धूआँ-लग जानेकी तरह उत्तेजना। जो स्त्रियाँ केवल लिखने, पढ़ने, कसीदा काढ़ने, सीना-पिरोना करने या पियानो बजानेका काम करती हैं और बैठे-बैठे दिन बिताती हैं, उनके पृष्ठ-फलकके पार्श्वकी पेशीमें दर्द और पीठके छोटे-छोटे अंशमें जलन होती है। वक्षमें तेज़ सुई गड़नेकी तरह स्नायविक या वातका दर्द, दर्दके कारण श्वास-प्रश्वासमें व्याघात पैदा हो जाता है और रह-रहकर दर्दका प्रकोप पैदा हो जाता है। जलवायु परिवर्त्तनसे दर्द पैदा और गायब हो जाया करता है ; प्रादाहिक वेदना ; मेरुमज्जाकी उत्तेजनाकी वजहसे दर्द, फुसफुसावरण-प्रदाह या फुसफुस प्रदाह—शरीरकी गर्म अवस्थामें सर्दी लगने या शीतल अवस्थामें तेज़ उत्ताप लगनेकी वजहसे ऐसा होना। पसलियोंके अन्तर्गत वातका दर्द,—वक्षस्थल स्पर्श नहीं किया जाता और उसमें चोटकी तरह दर्द होता है। दर्दका बढ़ना—रोगवाला अंश छूनेपर, हिलानेपर या देह घुमानेपर और वृष्टि या आँधीके दिनोंमें। वक्षके बाएँ पार्श्वकी छोटी पसलियाँ (short ribs) प्रदेशमें जलन मालूम होना। अन्त्रमण्डली और समूचे उदरमें बेहद दर्द ; शरीरमें जगह-जगह ऐसा मालूम होता है, मानो भींजे कपड़ेसे आच्छादित है ; गट्ठे—उनमें स्पर्श सहन नहीं होता और जलन और उत्तेजना अनुभव होती है। दद्रुपेटिका—उद्भेद निकलनेके पहले या समय पर्शुकान्तर्गत प्रदेशमें स्नायशूल पैदा होता है ; उद्भेद कहीं-कहीं नीले दिखाई देते हैं।

लक्षणावली

मन ।—कोई विषय सोचनेपर भावका गायब हो जाना (ऐसिड-नाई); बुद्धिकी स्थूलता या जड़ता (ऐनाक, साइक्लेम, नक्स-मस ; तीक्ष्णता—नक्स-वोम, आर्नि, बेल, सिङ्को, काफिया)। क्रोधी-स्वभाव, कलहप्रिय (इग्ने, अरम, कैमो, डालका, हायो, मर्क, नेट्र-मूर, थूजा)। नीच मन और अशान्ति, विशेषकर सन्ध्याके आरम्भमें (लाई, जेल्स)। सन्ध्याके समय भूतका भय (ऐकोन, लाई, पल्स, हृदग्र-प्रदेशीय अस्थिरताके साथ—प्लैट); अकेला रहनेका साहस नहीं होता (हायो, कैलि-कार्ब, कैम्फ)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर—गिर जानेकी आशंका (जेल्स, ग्लोन, टेरिब), घरसे बाहर निकलनेके समय। ललाट और मूर्द्धा-देशमें दबावकी तरह सर-दर्द, मानो बहुत अधिक दबावकी वजहसे माथा दो टुकड़े हो जाना चाहता है और चक्षुगोलकमें दबाव मालूम होता है और औंघाई आती है (निद्रालुताके साथ सर-दर्द—इरिडियम, क्रियो); बढ़ना—संध्याके समय या ठण्डे वायुमय प्रदेशसे बन्द घरमें घुसने या बन्द घरसे निकलकर ठण्डी हवा भरे स्थानमें जानेके समय। माथेमें अधिक रक्त-संचय होना—ऐसा अनुभव होना मानो माथा भरा है या उसका आकार बड़ा होता जाता है (आर्जेण्ट-नाई, आर्निका, बोविस्टा, नक्स-मस, रैनान, क्लिमेट)। मिचली या वमनेच्छा (ऐण्टि-क्रूड, काक्युलस ; कैलि-कार्ब, सैङ्गिविन) और औंघाई आनेके साथ सर-दर्द (ओपियम, नक्स-मस)। सर्दी-गर्मीके परिवर्त्तनमें सर-दर्द पैदा होता और बढ़ता है। ऐसा अनुभव होता है, कि माथा बहुत बड़ा हो गया है। कानमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, विशेषकर संध्याके समय।

आँख ।—रतौंधी (सिङ्कोना, लाइकोपोड, हायो, सल्फ),—आँखमें उत्ताप और दबाव मालूम होना और कुटकुटाहट होती है (फास); पलक और योजकत्वचा कुछ लाल और अश्रु-स्राव हुआ करता है ; अपाङ्ग या आँखके कोनेमें पपड़ी संचित होती है। इन्हीं सब लक्षणोंवाली दिनौंधी भी इसके लक्षणोंमें आ जाती है। चक्षु-गोलकमें दबाव मालूम होना। आँखके अपाङ्गमें उत्तेजना और जखम हो जानेकी तरह अनुभव। आँखमें धुआँ लगनेकी उत्तेजना (क्रोकस, नेट्र-आर्स, वैलि)। तिमिर दृष्टि,—आँखके चारों ओर अन्धेरेसे ढका मालूम होता है (जेल्स, ग्लोन, पेट्रोल)।

नाक ।—नाक लाल और प्रदाहके कारण फूल उठती है और उसमें खींचन मालूम होती है। वृहत्-रंध्रमें फटे घाव (केयोलिन, लैके, लाई, नेट्र-म्यूर, सिलि)। रंध्रमें विरक्ति या बेचैनी पैदा कर देनेवाली सुरसुरी ; घरमें रहनेके समय नाक रुक जाती है (कैलि-कार्ब, पल्स, युफ्रे) और ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो खाल उधड़ गयी है (एरम-ट्राई, हाइड्रैस, साइलि)। नाकसे बहुत ज्यादा गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्माका स्राव होता है (कैलि-बाई, कैलि-आयोड, हाइड्रैस, कैमो, कैन्थ)। रंध्रके भीतरसे खूनका स्राव।

मुखमण्डल ।—चेहरा पसीनेसे रहित या उसपर सूखा उत्ताप अनुभव होता है और दोनों गाल लाल हो उठते हैं, विशेषकर संध्याके समय। चेहरा मानो जल गया है, इसी तरहके छोटे-छोटे रस-भरे छाले उसपर निकलते हैं और इस तरहकी जलन हुआ करती है, मानो आग छू गयी है। दाने सब गुच्छे-के-गुच्छे निकलते हैं। चेहरेमें, विशेषकर नाक और चिबुकपर चुनचुनी होती है। दोनों ओठ फड़का करते हैं।

मुख-विवर ।—सवेरे नींद खुलनेपर दाँतमें दर्द आरम्भ हो जाता है (लैके ; दाँतमें दर्दकी वजहसे सवेरे नींद खुल जाती है—कैलेडियम)। ऐसा दर्द मानो पेषण-दन्त उखाड़ा जा रहा है। मुँहमें सफेद लार सञ्चित होती है और इसका स्वाद ताँबेके जङ्गकी तरह होता है (मर्क), कण्ठमें बहुत ज्यादा गाढ़े गोंदकी तरह कफ़ सञ्चित होता है। कण्ठमें और तालुमें सन्तापकी वजहसे जलन (मानो कण्ठमें एक जलता हुआ लोहेका गोला अड़ा हुआ है—फाइटो ; मानो जल रहा है—कैन्थ ; मानो काठसे आगकी लहर निकल रही है—इयुफोर्ब)।

पाक और अंत्राशय ।—भोजनके समय या नीरस पदार्थ खानेपर मुँहमें जले हुए मांसका स्वाद आ जाता है (पल्स, सल्फ)। तीसरे पहर प्यास बढ़ जाती है। सवेरे भूख मालूम होती है (ऐगार, ऐग्नि-क्रूड, चायना, रस) और पेट गड़गड़ाया करता है। बार-बार डकार। आक्षेपिक हिचकी—बहुत ज्यादा शराब पीनेकी वजहसे (शराब पीने बाद—इग्ने, नक्स, पल्स)। तीसरे पहर और संध्याके बाद मिचली पैदा हो जाती है ; कभी-कभी सर-दर्दके साथ भी। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें त्वचा क्षय हो जानेकी तरह स्पर्श-द्वेष और

जलन मालूम होती है ; छूनेपर दर्द बढ़ जाता है (कार्बो-ऐन, कोना, नक्स-वोम, फाइटो, रैनान-स्कि)। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें दबाव मालूम होना (कोना, इग्ने, लाई, माइरिका-सेरिफ, नेट्र-मूर, फास)। कोखमें त्वचा क्षय हो जानेकी तरह स्पर्श-असहिष्णुता (ब्राई, इयुपेट, सल्फ), विशेषकर छूनेपर। यकृतमें शूल बेधनेकी तरह दर्द, यह वक्षतक फैल जाता है (वक्षमें फैलकर श्वास रोध कर देता है—ऐलो ; पीठतक—चेलिडो), बायीं कोखमें त्वचा क्षय हो जानेकी तरह दर्द अनुभव; विशेषकर शरीर हिलानेपर (बाईं कोखमें त्वचा क्षय हो जानेकी तरह दर्द, मानो कुचलकर त्वचा क्षय हो गयी है—एपिस)। यकृत-प्रदेशमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द, दर्दकी वजहसे श्वास रुक जाना चाहता है (बार्बेरिस) और दाहिने कन्धेके शिखरदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द और दबाव मालूम होता है, कुछ देरतक बैठने बाद चलनेके समय (चेलि-डोनियम)। उदरके बाएँ पार्श्वमें तेज़ सलाई गड़नेकी तरह दर्द ; दोपहरके पहले, चलनेके समय या रातमें भोजनके बाद। अन्त्रशूल और उदरमें काटनेकी तरह दर्द और दबानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो उदरमें जो कुछ है, सबमें दर्द हो रहा है और सब जखमसे भरा है (आर्निका, हैमा, मैग-मूर), उदरमें ऐसी जलन होती है, मानो त्वचा क्षय हो गयी है। उदरमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता। कड़ा मल भी धीरे-धीरे निकलता है। बिना तकलीफ़के बार-बार बहुत ज्यादा पाखाना होना ; तीसरे पहर स्वाभाविक पाखाना होता है (पोडो)। मूत्रस्थलीमें जखम पैदा हो जाता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रदर—स्राव पहले अनुग्र, इसके बाद बहुत कषाय और जखम पैदा कर देनेवाला (ऐलूम, ऐमोन-कार्ब, बोवि, कोलोफाइल, क्रियो, नेट्र-मूर, सिपिया)। डिम्बाधारका स्नायुशूल (लाई, कोलो, लिलियम-टाई, सिपिया), जलवायुके परिवर्त्तनसे ही पैदा हो जाता है।

श्वास-यन्त्र।—वक्षमें दर्द, श्वासाल्पता और रुका हुआ श्वास-प्रश्वास और बार-बार दीर्घ श्वास ग्रहण करनेका आग्रह। वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (कैलि-बाई, ब्राई)। वक्षमें वातकी वजहसे या श्लेषाके कारण दर्द या मानो वक्षकी त्वचाके नीचे जखम हो गया है। इसी तरहकी स्पर्श-असहनीयता (पल्स देखिये)। फेफड़ेका प्रदाह आरोग्य होनेके बाद वक्षके छोटे-छोटे अंशमें दर्द, मानो उन-उन स्थानोंकी त्वचाके भीतर जखम हो गया है।

फुसफुसावरणीका संयोजन (फुसफुसावरणीके प्रदाहके बाद)। वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, हिलने, झुकने या श्वास लेनेपर और छूनेपर बहुत दर्द मालूम होता है। वक्षके निचले अंशमें ऐसा मालूम होता है, मानो अकड़ गया है। वक्षमें और वक्षके दाहिने पार्श्वमें अस्त्र बेधनेकी तरह यन्त्रणा ; दर्द बहुत गहरा और यकृततक फैल जाता है। वक्षके निचले अंशमें और उदरोर्द्ध-प्रदेशके ऊपर छूनेपर बहुत दर्द मालूम होता है, मानो वक्षमें जगह-जगह तर कपड़ा ढँका हुआ है। घरमें प्रवेश करनेपर फिर ऐसा नहीं मालूम होता। वक्षस्थलमें बहुत दर्द और स्पर्श असह्य मालूम होता , विशेषकर छूने, हिलाने या शरीर घुमानेपर वक्षमें बहुत दर्द (सेनेगा)।

प्रत्यङ्ग आदि।—बाएँ पृष्ठफलकके भीतर पार्श्वमें दर्द। कितने ही समय यह दर्द इस पृष्ठफलकके निचले कोनेतक चला जाता है या वक्ष-गह्वरके बायें पार्श्वमें निचला आधा भाग भेदकर चला जाता है। दोनों बाँहमें आक्षेपिक वातका दर्द। बाँह और हाथमें शलाका बेधनेकी तरह दर्द। तलहत्थीमें छालेकी तरह उद्भेद निकलना (ऐन्थ्राक्सिन, कैलि-कार्ब, मर्क-सोल)। लिखनेके समय दाहिने हाथ और अंगूठेमें और तर्जनीके बीचमें फाड़नेकी तरह दर्द अनुभूत होता है। बहुत तड़के दोनों कन्धोंमें और कोहनीमें वातका दर्द। दाहिने हाथकी तर्जनीमें नखके नीचे शलाका बिध रही है, इस तरहका दर्द (ऐसिड-नाई)। उरुमें खींचनकी तरह दर्द, दर्द नीचेकी ओर फैल जाता है। जानु आदि सन्धियाँ स्फुटित होती हैं या कड़कड़ करती हैं (कैल्के, कास्टि)। गट्टा—छूनेपर बहुत दर्द मालूम होता है (ऐ-सैलिसाई) और उसमें जलन तथा उत्तेजना हुआ करती है। गुल्फके नीचे धकधक करनेवाला और अस्त्रके आघातकी तरह दर्द, विशेषकर बायें पैरमें—खड़े रहनेकी अवस्थामें। गुल्फके नीचे मानो खड़ाऊँकी काँटी गड़ रही है, इस ढङ्गका दर्द। बाएँ पैरकी चौथी अंगुलीमें सुई गड़नेकी तरह भयानक दर्द। पैरकी अंगुलियाँ सबके अगले भागमें त्वचा क्षय हो जानेकी तरह दर्द ; अंगुलीमें और अंगुलीकी पीठपर इसी तरहका दर्द मालूम होता है।

सार्वाङ्गिक।—पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना। मृगीकी तरह आक्षेप। एकाएक रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है और बेहोश हो जाना चाहता है। डर जाना या क्रोध आ जाने बाद हाथ-पैर काँपा करते हैं और श्वासमें

तकलीफ़ मालूम होती है ; वृद्धि—सन्ध्याके समय और किसी-किसी स्थानपर, भोजनके बाद और ज़लवायुका उत्ताप घटकर ठण्डा होनेपर। पाकस्थलीमें दर्दकी वजहसे मूर्च्छाका उपक्रम।

त्वचा।—कड़ी त्वचावाले गट्ठे ; छालेकी तरह उद्भेद, मानो दग्ध हो गया है। दद्रुपेटिका और इसीकी वजहसे पसलियोंके भीतर स्नायुशूल (मेजिर)। अनुच्च, जलन पैदा करनेवाला और डङ्क मारनेकी तरह दर्द-भरा जखम, जखम होनेपर रसकी तरह पदार्थ निकलता है। पोड़ा नारङ्गा (रास, रैनान-स्क्लिलि-रेटस)। शीतस्फोट या बिवाई (ऐगार)।

निद्रा।—अनिद्रा—श्वासकृच्छ्र (कैड्मि-सल्फ, ग्रिण्डेलिया, लैके)। उत्ताप और धमनी आदिमें खूनका दौरान ; किसी करवट भी सो नहीं सकता। बहुत सवेरे नींद खुल जाती है। रातमें बार-बार नींद खुल जाती है और इसके बाद बहुत देरतक नींद नहीं आती।

ज्वराधिकारमें।—चेहरेपर उत्ताप मालूम होना और जाड़ा लगना ; वृद्धि—तीसरे पहर और सन्ध्याके समय। चेहरेके दाहिने पार्श्वमें अधिक उत्ताप मालूम होता है, हाथ बहुत ठण्डा मालूम होता हैं और सारे शरीरमें गड़बड़ी मालूम होती है। बराबर भीतरी शीत और बाहरी उत्ताप मालूम होता है। पसीना बहुत थोड़ा निकलता है और केवल सवेरे नींद खुलनेपर पसीना हुआ करता है।

वृद्धि।—छूनेपर, दबानेपर, शरीर या रोगवाली जगह हिलानेपर, शरीर घुमानेपर, चलनेपर, सोनेपर, रोगवाली करवट सोनेपर, सीधे बैठनेपर, सन्ध्याके बाद और सवेरे। जलवायुके परिवर्त्तनसे, एकाएक शीत और उत्ताप लगनेपर, श्वास लेनेपर, जलवायुका उत्ताप घटनेपर, अन्धड़-पानीके दिनोंमें, भोजनके बाद और क्रोध आ जानेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—ब्राई, कैम्फो, पल्स, रास।

सदृश।—ऐकोन, आर्नि, ब्राई, कैक्टस, क्लिमेटिस, क्रोटन-टिग्लियम, इयुफोर्बियम, मेजिर, सैबाड, ग्रिण्डेलिया, कैडमियम-सल्फ, लैके, ऐगार, पलस, रस-टक्स, सिङ्कोना, लाई।

तुलनीय ।—आँखमें दर्द—फास्फो। मेरुमज्जाकी उत्तेजना—ऐगारि शीतोत्ताप सम्भोग—ऐकोन, आर्निका। अन्धड़ पानी—रस ; सर-दर्द, पसीना—पल्स। वक्षमें दर्द—चेलिडो, ऐण्टि-क्रूड। भूतका भय—आर्स, ऐरेन। श्वासाल्पताकी वजहसे नींद न आना—लैकेसिस।

शक्ति ।—३री दशमिकसे २०० शततमिक क्रमतक (पानात्यय रोगमें मूल अर्क प्रतिबार १० बूंदसे ३० बूंदतक प्रयोग करना चाहिये डा० बोरिक)।

रैनानक्युलस फिकारिया

(RANUNCULUS FICARIA)

दूसरा नाम ।—पाइलवार्ट, लेसर कोलण्डाइन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—इसका मूल अर्क और निम्न-शक्तिके भीतरी सेवनसे और एक भाग उद्भिदके साथ तीन भाग चर्बी मिलाकर बवासीरके मसेमें लगानेपर अर्श रोगको तकलीफ़ दब जाती है और धीरे-धीरे बीमारी आरोग्य हो जाती है।

शक्ति ।—मूल अरिष्ट।

रैनानक्युलस फ्लैमुला

(RANUNCULUS FLAMULA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया —समूचे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—बाँहमें जखम और गैंग्रिन (सड़ना और जखम) लक्षणमें प्रयोग होता है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति और मूल अरिष्ट।

रैनानक्युलस ग्लैसियालिस

(RANUNCULUS GLACIALIS)

दूसरा नाम ।—कैकलिन ; कार्लिना ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—इन्फ्लुएञ्जा या बहुव्यापक सर्दीके साथ ब्रांकोन्युमोनियाके लक्षण प्रकट होनेपर विशेषकर माथा भारी मालूम होना, सरमें चक्कर काफी सेवनपर घटना लक्षणकी यह एक उत्कृष्ट दवा है ।

सवेरे माथेके दाहिने पार्श्वमें सर-दर्द, सोकर उठनेपर घटना ; सोनेपर श्वासकष्टका घटना ये इसके दो उल्लेख योग्य लक्षण हैं ।

शक्ति ।— मूल अरिष्ट और निम्न-शक्ति ।

रैनानक्युलस रिपेन्स

(RANUNCULUS REPENS)

दूसरा नाम ।—कीपिङ्ग वाटरकप ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।— समूचे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—रातमें लेटनेपर माथे और कपालमें चींटी चलनेकी तरह सुरसुरी मालूम होना और बैठते ही इस लक्षणका घट जाना लक्षणकी यह एक परीक्षित दवा है ।

शक्ति ।—६—३० ।

रैनानक्युलस स्किलिरेटस

(RANUNCULUS SCELERATUS)

नामान्तर ।—मार्श-क्रो-फुट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इस गाछके समस्त अंशसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अर्बुद; गुह्यद्वारकी खुजली; वक्ष और वक्षोस्थिके पीछे दर्द; गट्ठा; सर्दी; गलनलीकी उपझिल्लीका प्रदाह; कर्णशूल; जीभका प्रदाह; छोटी सन्धियोंका वात; अर्श; यकृतमें दर्द; स्नायुशूल; नाकमें जखम; विम्बिका; कर्णमूल; पाकाशयका प्रदाह; एँड़ीमें दर्द; जीभपर दाग पड़ना; शिराका फूलना।

उपयोगिता और आभास—इसके कई प्रधान क्रिया-फलके सम्बन्धमें डा० फैरिङ्गटनने यह लिखा है—“रैनानक्युलस-बाल्बोससकी अपेक्षा रैनानक्युलस स्क्लिरेटसकी उत्तेजना शक्ति अधिक है। रैनानक्युलस बलबोससकी तरह शरीरकी त्वचाके ऊपर इसके द्वारा एक तरहका पानीकी तरह पीला और कषाय रसपूर्ण छालेकी तरह उद्भेद पैदा होता है; इन सब छालोंके फट जानेपर जो जखम पैदा होता है, उससे एक तरहका अत्यन्त कषाय रस निकला करता है और यह रस जहाँ लगता है; वहीं जखम पैदा हो जाता है। मुखक्षत रोगमें और कभी-कभी उपझिल्ली रोगमें और आन्त्रिक ज्वरमें, इसका प्रधान निर्णायक लक्षण यही है कि जीभमें जगह-जगहपरकी त्वचा क्षय हो जाती है और बाकी अंश लेपसे ढका रहता है और ऐसी जीभ नाना प्रकारके रङ्गोंसे रंगी नक्शेकी तरह मालूम होती है, इसीको मानचित्र जिह्वा कहते हैं। ऐसी शकलकी जीभ नेट्रम-म्यूरियैटिकम, आर्सेनिकम, रस-टाक्सिकोडेण्ड्रन, लैकेसिस और टैराक्सेकमका भी प्रकृतिगत लक्षण है; परन्तु इन किसी भी दवामें रैनानक्युलस स्क्लिरेटसकी तरह जलन और त्वचाक्षयका पैदा हो जाना नहीं है। रैनानक्युलस बल्बोससकी तरह रैनानक्युलस स्क्लिरेटस भी साधारण छींक मिली सर्दी, सन्धियोंमें दर्द और पेशाबके समय जलन प्रभृति अवस्थामें हितकर हुआ करता है। स्पर्श सहन न होना भी इसका एक प्रधान लक्षण है, विशेषकर वक्षमें और वक्ष-मध्योस्थिके ऊपर। वाह्य स्पर्श-असहनीयताके साथ व्याहत श्वास-प्रश्वास और यकृत, प्लीहा, वक्ष और हृत्पिण्डमें दर्द; वृद्धि—साँस लेनेके समय—ये कई इसके प्रकृतिगत लक्षण हैं। शरीरके दाहिने अङ्गके साथ इसकी अधिक घनिष्टता दिखाई देती है। दाहिने पैरके अंगूठेमें नाना प्रकारका तेज दर्द मालूम हुआ करता है। बाईं तलहत्थीमें लगातार कटकट करनेवाला दर्द इसका एक निर्णायक लक्षण है। इसका गट्ठा या कदर बहुत दर्द भरा हुआ करता है। इसके अलावा “माथा मानो बहुत भारी और बहुत बड़ा” “चेहरा मानो मकड़ेके जालसे ढका है।” “नाभि-

प्रदेशमें मानो एक खील घुस रही है। "मानो किसी नोकीले यन्त्रसे शरीरके विभिन्न अंश दब रहे हैं।" "मानो पतला पाखाना होना आरम्भ होगा।" "पैरके अंगूठेमें मानो सुई गड़ रही है" वगैरह कई तरहकी अनुभूतियाँ इसका अनन्य साधारण लक्षण है; रैनानक्युलस बल्बोससकी तरह इसमें भी "पाकस्थलीमें यन्त्रणाकी वजहसे मूर्च्छाका उपक्रम।" "हाथ-पैरका फड़कना" वगैरह लक्षण मौजूद रहते हैं।

लक्षणावली

मन।—सवेरे बहुत आलस्य मालूम होना और मानसिक परिश्रमसे विरक्ति। सन्ध्याके समय दुःखित चित्त और प्रसन्नता न रहना; मस्तिष्कमें मैलापन।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, इसके साथ-ही-साथ बेहोशी (नक्स-वोम, कैलि-कार्ब, मैन्सिनेला)। सरमें दर्द—मूर्द्धदेशके एक छोटेसे अंशमें (पल्स) या दोनों कनपटीमें कटकट झनझन किया करता है। माथा मानो बहुत बड़ा हो गया है और अतिरिक्त भार मालूम होता है। माथेकी त्वचा कुटकुट किया करती है और उसमें खुजली हुआ करती है। माथेकी त्वचामें बहुत खींचन मालूम होना।

आँख।—आँखमें और पलकोंमें उत्तेजना मालूम होना (ऐलूम, सिपा, रैनान-बल्बो)। चक्षुगोलकके ऊपर यन्त्रणाजनक दबाव मालूम होना। दृष्टि अत्यन्त क्षीण और आँखसे बहुत ज्यादा पानी गिरता है।

कान।—कर्णशूल—सर-दर्द, दबाने या कटकट करनेवाला और दाँतमें खींचनकी तरह दर्द।

नाक।—पानीकी तरह सर्दीका स्राव और आँखसे लगातार अश्रु-स्राव (नक्स, ऐनाक, सिपा, इयुफ्रे, फाइटो, सैङ्गिविन)। नाकके अगले भागमें कुटकुटी (बार्बेरिस, कर्णास, सार्सा)। बार-बार छींक (ऐ-नाई, आर्स, सिपा, साइक्लामेन)। दाहिने नासापुटके ऊपर जखम निकलना (ऐ-नाई, कैलि-बाई, इयुफ्रे)।

मुखमण्डल।—चेहरेपर ऐसा मालूम होता है, मानो मकड़ेका जाल लगा हुआ है (ऐलूमम, बैराइ, बोरैक्स, बोविस्टा, ब्रायो, मैग-कार्ब, ब्रोम)।

चेहरेपर सर्दी मालूम होना और खींचनकी तरह दर्द। चेहरा बरफकी तरह ठण्डा और नीला, मुँहकी पेशियोंका फड़कना, प्रेतहास्य (बेल, स्ट्रैमो, वेरेट)। इसके साथ-ही-साथ पैरकी पेशियोंका सिकुड़ना-फैलना।

मुख-विवर।—दाँतमें खींचन और शूल गड़नेकी तरह दर्द (एपिस), मसूढ़ेमें दर्द, सूजन और लाली और जभी-तभी मसूढ़ेसे खूनका स्राव हुआ करता है। जीभपर मोटा लेप, परन्तु बीच-बीचमें त्वचा क्षय हो जानेकी वजहसे टापू बनाये हुए समुद्रके नकशेकी तरह मालूम होती है (आर्स, लेके, नेट्र-म्यूर, रस-टक्स, टेराक्सेकम)। गलनालीके उपझिल्ली प्रदाह रोगमें जीभके दोनों पार्श्वकी खाल उधड़ जाती है और बाकी अंश मोटे लेपसे ढँका रहता है। जीभके प्रदाहमें उसमें जलन होती है और लाल हो उठती है। कण्ठमें जलन और खींचन मालूम होती है। दोनों गल-ग्रन्थियाँ फूल उठती है (बैप्टी, बैराई, कैमो, सल्फ, डालका, लैक-कैन, फाइटो, सिङ्गन, मर्क-कोर) और उसमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है (ए-नाई)। कण्ठनलीमें संकोचन और गला रुक जानेका उपक्रम, खासकर रोटी खानेके समय।

पाक और अन्त्राशय।—भोजनके बाद खायी हुई चीज़की डकार (ब्राई, हैमा)। मोटा लेप चढ़ी जीभ और सवेरे मुँहका स्वाद मीठा। बोखार आने बाद ज्वालामयी तृष्णा। पाकस्थलीमें दर्द और मूर्च्छा आ जानेका उपक्रम (नक्स-वोम, रैनानक्यु-बल्बो)। उदरोर्द्ध-प्रदेश भरा मालूम होना; बाहरसे दबानेपर बढ़ना, खासकर सवेरे। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होना और जलन (कार्बो-ऐन, कोना, डिजिट, नक्स-वोम, फाइटो; छूनेपर बढ़ना—रैनान-बल्ब)। सविराम ज्वरके बाद और क्विनिनके अपव्यवहारकी वजहसे फूली या बढ़ी हुई प्लीहा (आर्स, चिनिन-सल्फ, डायाडिमा, कैप्स, फेरम)। यकृतमें हलका दबाव मालूम होना, लम्बी श्वास-प्रश्वाससे और भी बढ़ जाना। प्लीहा, यकृत या वृक्ककमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द (बार्बे, ब्राई, कार्डियस-मेरी, कैलि-कार्ब)। उदरमें और सरमें चक्कर मालूम होना।

मलान्त्र और मल।—उदरामय—बार-बार पतला पानीकी तरह बदबूदार मल निकलना (कैलि-फास)। जभी-तभी ऐसा मालूम होता है, कि पतले दस्त आयेंगे (ऐङ्गस्टियुरा, ऐसिट-क्रूड, एपिस; सन्ध्याके समय—कैलेड;

उदरमें लगातार उत्तेजना और इसके साथ ही वायुनलीमें कफ़ सञ्चय—सेनेगा, इयुकेलिप्स)। मलद्वारमें सुरसुरी होती है और चुनचुनी पैदा हो जाती है। मलान्त्रमें सूक्ष्म सुई गड़नेकी तरह दर्द। मलनालीमें भीतरसे मानो ठेलनेकी तरह दर्द, मानो अर्शका मसा बाहर निकलनेकी सूचना है, चलनेपर बढ़ना। भोजनके बाद वेग प्रबल हो जाता है, पर केवल आध्मान वायु निकलता है (सैङ्गिविन)।

पेशाब और पुं-जननेन्द्रिय।—पेशाबमें कष्ट। पेशाब कर आनेके बाद ही मूत्रनलीके अगले भागमें जलन मालूम होती है। पेशाब होनेके बाद बूंद-बूंद पेशाब होकर कपड़ा भींग जाता है (कैनाब, कोना, लैके, पेट्रोल, सेलिन ; प्रमेह रोगाधिकारमें—पेट्रोसेलिनम ; गौण उपदंश रोगमें—रास)। लिङ्गमुण्डमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (मर्क-प्रोटो-आयोड)।

श्वासयन्त्र।—वक्षस्थलमें बहुत दर्द और उसमें बहुत सुस्ती मालूम होना। वक्षमें और पसलियोंके भीतरी प्रदेशमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द। वक्षके ऊपरी भागमें और वक्षोस्थिमें बहुत स्पर्श-कातरता। वक्षोदर मध्यस्थ पेशीके पीछे जलन और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होना। कलेजा जकड़ जाता है और श्वास-प्रश्वासमें व्याघात पैदा हो जाता है (कैक्टस)।

प्रत्यङ्ग आदि।—हाथ और पैरकी अंगुलियोंमें सन्धिगत वात। दोनों बाहुओंमें, विशेषकर हाथकी अंगुलीमें कटकट झनझन करनेवाला और सुई गड़नेकी तरह दर्द ; सन्ध्याके समय अंगुलीके पार्श्वमें खुजली पैदा हो जाती है। सबेरे अंगुलियाँ सब फूली दिखाई देती हैं। दोनों पैरोंमें कटकट झनझन करनेवाला सुई गड़नेकी तरह दर्द, विशेषकर पैरके अंगूठेमें दर्द बहुत तेज़ हो जाया करता है। दाहिनो वृद्धांगुलिमें एकाएक ऐसा मालूम होता है, मानो उसमें बड़े जोरसे एक सुई गड़ा दी गयी—रोगी तकलीफ़से चिल्ला उठता है। दर्दसे बेहोश हो जाना चाहता है। दर्द सन्ध्याके समय बढ़ता है ; आधी रातके समय दर्द घट जाता है ; पर नींद न आना, बेचैनी, बार-बार करवट बदलना और प्यास पैदा हो जाती हैं। सारे शरीरमें दर्द मालूम होता है और तुरन्त ही फिर दूसरी जगह पैदा हो जाता है।

त्वचा।—कषाय, तरल और पीले रससे भरे छालेकी तरह उद्भेद ; दाना फटकर जखम पैदा हो जाता है और उससे रस निकला करता है। यह

रस जहाँ लगता है, उसी जगह जखम पैदा कर देता है। पोड़ा नारङ्गा। किसी-किसी जगह एक-एक छाला एकाएक पैदा हो जाता है और फूट जानेपर जखम पैदा हो जाता है।

ज्वराधिकारमें।—दोनों शाम खानेके समय जाड़ा मालूम होता है। वायु सेवनके लिये बाहर टहलकर फिर घरमें प्रवेश करनेपर गर्मी मालूम हुआ करती है। रातमें, अधिककर आधी रातके बाद तेज़ प्यास पैदा हो जाती है और बिना पसीनेका उत्ताप भोग किया करता है। उत्तापावस्थाके बाद, रातके अन्तिम भागमें पसीना निकला करता है और ललाटमें ही ज्यादा पसीना दिखाई दिया करता है।

सम्बन्ध।—प्रतिविष।—कैम्फोरा, पलसेटिला, काफिया।

सदृश।—आर्स, बेल, लैके, पल्स, रस, साइलिसिया, सल्फर; पेम्फिगस रोगमें इसके बाद—आर्स; डिफ्थीरियामें—लैकेसिस।

तुलनीय।—सर-दर्दमें—पल्स; जीभमें नकशेकी तरह दाग—नेट्रम-आर्स, रास; मकड़ेकी जालकी तरह अनुभव—ऐल्यू, बैराइटा, ब्राई, पल्स, ग्रैफाई, मैग-फास।

शक्ति।—प्रथम दशमिक क्रमसे ६ठाँ दशमिक क्रम।

रैफेनस सैटाइवस

(RAPHANUS SATIVUS)

दूसरा नाम।—रैफिनस-नाइग्रम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मूलीसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः—मदात्यय; अन्धत्व; बगलकी ग्रन्थिका प्रदाह; दोनों स्तनोंके नीचे और मध्य-स्थानमें दर्द; निसन्द-वायु; खाँसी; अतिसार; बाधक; शीर्णता; नाकसे रक्त-स्राव; मूर्च्छाभाव; ज्वर; आध्मान; मुँह लाल हो उठना; सर पकड़ लेना; सर-दर्द; हृत्कम्प; एँड़ीमें दर्द; अन्त्र-वृद्धि; मूर्च्छावायु; अनिद्रा; यकृतकी

बीमारी ; यकृतमें फोड़ा ; रजसाधिक्य ; जरायुसे बहुत रक्तस्राव ; निकट दृष्टि-दोष ; सुन्न हो जाना ; कामोन्माद ; अन्ननलीकी बीमारी ; बिब्बिका ; गर्भके समय दाँतका दर्द ; कर्णसूल ; दाँतका दर्द ; जम्हाई इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—(१) निचली पलकका फूलना । (२) कानकी ओर आँख घुमानेपर उस कानमें, गालमें और सरके बगलमें दर्द अनुभव होता है । (३) दृष्टि-लोप और सरमें चक्कर आना । (४) दोनों आँखें खूनसे भरकर दृष्टि लोप हो जाती है । (५) वमन होनेके कुछ ही पहले दर्शन और श्रवण-शक्तिका लोप हो जाना । (६) ऐसा अनुभव होना, मानो कानमें ताला लग गया है । (७) दाँत सब पेस्ट बोर्ड या कड़े गत्तेके बने मालूम होते हैं । (८) रातके आठ बजनेके समय शयनावस्थामें खानेकी इच्छा होती है, पर भूख नहीं लगती । (९) लगातार प्रबल प्यास । (१०) जितना पानी पीता है, उससे बहुत कम पेशाब होता है । (११) रातके ३ या ४ बजेके भीतर सर-दर्दकी वजहसे नींद खुल जाती है और बहुत पानी पीता है । (१२) जलीय पदार्थ पीनेपर तकलीफ और भी बढ़ जाती है । (१३) ऐसा अनुभव होता है, कि दोनों ठण्डे पैर बहुत गर्म पानीमें डुबा रखे हैं । (१४) खाँसनेपर माथा और वक्षमें धक्का लगता है । (१५) खाँसी—मालूम होता है मानो उदरोर्द्ध-प्रदेशसे उठ रही है । हँसनेपर खाँसी आ जाती है । (१६) तालुदेशसे बहुत ज्यादा सफेद रङ्गका गाढ़ा गोंदकी तरह बलगम निकलता है और कण्ठनाली संकुचित मालूम होती है । (१७) श्वास-प्रश्वासके समय स्तनके पीछे और पीठमें दर्द मालूम होता है । (१८) दोनों स्तनोंमें वक्षके भीतरकी ओर मानो एक भारी गोला और सर्दी रुकी हुई है । ऐसा अनुभव होनेकी वजहसे नींदसे जाग पड़ता है । (१९) मानो लोहेकी पट्टीसे कमर बँधी हुई है । (२०) सारे शरीरमें ऐसा अनुभव होता है, मानो अकड़ गया है । (२१) मानो जरायु-प्रदेशसे एक गर्म गुल्मकी तरह पदार्थ चढ़कर गला रोकता है । (२२) उदरमें आध्मान-वायु संचय होनेकी वजहसे श्वास-रोध होनेका उपक्रम हो जाता है । (२३) ऊर्द्ध और निम्न—किसी ओरसे भी आध्मान-वायु नहीं निकलता । (२४) साँस और डकार दोनों ही गर्म । (२५) उदरसे मानो कुछ गोले कण्ठमें चढ़ रहे हैं । (२६) मानो मेरुदण्डके भीतरसे एक पदार्थ नीचेकी ओर जा रहा है और जगह-जगह उसकी गति रुकनेके

कारण तकलीफ पैदा हो जाती है। (२७) मेरु चंचुमें तेज़ दर्द, मानो एक फोड़ा निकल रहा है। (२७) यकृतमें ऐसा दर्द मानो फोड़ा उत्पन्न हो रहा है। (२८) तलपेटमें भयानक दबाव मालूम होता है, मानो आँतें उतरना चाहती हैं। (३०) शरीरमें जगह-जगह टपक हुआ करती है और छुरी मारनेकी तरह दर्दमें परिणत हो जाता है। (३१) पैर और दोनों बाहुओंके पिछले भागमें शीत मालूम होना, दोनों जानु बरफकी तरह ठण्डे ; ज्वर-भाव, मानो कम्प होनेकी सूचना। (३२) कोई चीज निगलनेके समय पीठमें दर्द होता है। (३३) अस्थि, बाँह, हाथ और आँख फूली और दोनों पैर छोटे मालूम होते हैं। इसके कई मानसिक लक्षण भी विशेष निर्णायक हैं—(३४) कामोन्माद ; रोगिनी अन्य रमणी और बालिकाओंके प्रति विद्वेष-भाव प्रकट करती है। खामखयाली, बुद्धि विलुप्त, विषादयुक्त और रोदन-परायण ; सवेरे नींद खुलनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो नशा हो गया है। सन्ध्याके भोजनके समय केवल पानी पीनेपर भी शराबकी तरह नशा हो जाता है। अपने रोगके सम्बन्धमें बहुत चिन्ता और आसन्न मृत्युका भय। (३५) पहली बार भोजन करनेके बाद हृत्पिण्डमें दर्द मालूम होना। (२६) खाना-पीना आरम्भ करनेपर निगला हुआ पदार्थ, ऐसा अनुभव होता है, कि वक्षमें अड़ा हुआ है। (३७) श्वास-प्रश्वासके लिये मुँह फाड़े रहना पड़ता है, मुँहसे जो हवा घुसती है, उससे वायुनलीमें जलन और दर्द पैदा हो जाता है। (३८) नाकसे रक्त-स्राव होनेपर सर-दर्द आराम हो जाता है।

लक्षणावली

मन।—रोगिनी पुरुषके प्रति बहुत अनुराग प्रकट करती हैं, परन्तु दूसरी स्त्री (पल्स) यहाँतक कि छोटी बालिकाके प्रतितक महान विद्वेष प्रदर्शन किया करती है, यही पुरुष-प्रियता धीरे-धीरे बढ़कर कामोन्मादमें परिणत हो जाती है। खामखयाली, उन्मादभाव,—कभी बुद्धिका गायब हो जाना और दुःख प्रकट करना और रोना और कभी अपनी बीमारी आराम होनेकी आशा करना और आनन्द प्रकट करना। बच्चोंके प्रति, विशेषकर शिशु बालिकाओंके प्रति विद्वेष भाव (अपने और परिवारवालोंके प्रति विद्वेष—ऐसिड-कार्बोल, ऐलो, कैम्स, कोबाल्ट, कोना, सिपिया, इयुपस-टिएटी ; अपने

शिशु-सन्तानके प्रति विद्वेष—प्लैट ; अपने स्वामी और सन्तानोंके प्रति विद्वेष—ग्लोन, वेरेट)। अत्यन्त विषाद,—अपने आँसू नहीं रोक सकती (कैलि-ब्रोम, लैक-कैन), दूसरोंका प्राण नाश करनेकी अभिसन्धियांतक मनमें उदय होती हैं, परन्तु विवेककी सहायतासे रोगिनी अपने चित्तको दमन किये रहती है। बहुत चिन्ता,—रोगिनीको ऐसा अनुभव होता है, मानो उसकी मृत्यु अनिवार्य है (ऐकोन, कास्टि, क्रोकस, फास)। मानसिक उत्तेजनाकी वजहसे अनिद्रा। रोगिनीको विश्वास रहता है, कि उसको एक रोग है और दूसरे उसे समझ नहीं सकते। बहुत रोदन-परायण, कोई यदि कुछ कहता है, तो आँखमें पानी भर आता है। शारीरिक और मानसिक अवसाद ; स्मरण-शक्ति लुप्त ; कितने ही भाव एकके बाद दूसरे उठनेकी चेष्टा करते हैं, पर मस्तिष्कमें सब मिट जाते हैं। रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, कि वह मर गयी है ; मानो अपने चेहरेपर बैठी हुई मक्खीको भगानेकी भी उसमें शक्ति नहीं है। किसी चीज़की ओर शून्य दृष्टिसे देखती रहती है। सवेरे नींद खुलनेपर और पहली बार भोजनके समय केवल पानी पीनेपर भी नशा मालूम होता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आनेके साथ अस्पष्ट या तिमिर दृष्टि (साइक्लेमेन, जेल्स, ऐनाक, कैम्फो, क्रूप्रम, कैलि-बाई, फाइटो ; दृष्टि-लोपके साथ—वक्स-वोम, बेल, सल्फ ; क्षीण दृष्टिके साथ—डायाडेमा, फास)। संध्याके समय ऐसा अनुभव होता है, कि माथा खूब कसा हुआ है (ऐसिड-कार्बोल, नेट्र-मूर, जैन्यकसाइलम, इण्डिगो)। रातमें तीन-चार बजनेके समय सर-दर्दकी वजहसे नींद खुल जाती है (नेट्र-मूर, नैजा)। सर-दर्द रोगमें ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों आँखें बाहरसे भीतरकी ओर खिंच रही हैं (फास) और यह दर्द कानके पीछेतक फैल जाता है। लिखनेके समय मस्तिष्कमें एकाएक धक्का मालूम होना। प्रबल सर-दर्द—कनपटी, नाककी जड़ और आँखमें दर्द मालूम होता है। चलनेके समय शरीरके थोड़ा भी हिलते ही मस्तिष्कमें दर्द और स्पर्श असहिष्णुता मालूम होती है (सिङ्कोना, ग्लोन, फाइटो), ललाटमें भयानक यन्त्रणा (लैक-डिफ्लोरेटम)। आँखके ऊपरी भागमें दबाव और दर्द मालूम हुआ करता है (कार्बो-वेज, सेनेगा) और दिखाई नहीं देता ; वमन होनेपर दर्द घट जाता है। सरके पिछले भागमें धीमा दर्द, पीछेकी ओर माथा झुकानेपर घटना (बढ़ता है—ऐनाक)।

आँख ।—कानकी ओर आँख घुमानेपर कनपटीमें, कानमें और कपालकी बगलमें दर्द मालूम होता है। दोनों आँखें नीले घेरेसे घिरीं ; गड्‌ढेमें धँसी ; लाल। आँखकी निचली पलक फूली (वेस्पा, जिङ्कम ; आँखके नीचे थैलीकी तरह सूजन,—ऊपर—कैलि-कार्ब)। आँख करकराती है और बन्द करनेपर उसमें उत्ताप (कौरैल-रूब, आस्टिलेगो) और खोलनेपर जाड़ा मालूम होता है। दोनों आँखें लाल होकर दृष्टि-शक्तिको नष्ट कर देती हैं (ग्लोन)। नींद खुलनेपर आँखमें रक्त-सञ्चय ज्यादा हो जाना और अस्पष्ट दृष्टि। दोनों आँखोंके ऊपरी अंशमें दबाव मालूम होना और दिखाई न देना ; वमनके बाद घटना। विरक्तिजनक पलकोंका स्पन्दन, वह देखनेमें व्याघात पैदा कर देता है और चक्षुगोलक घूमा करता है।

कान ।—वमनके कुछ ही पहले देखने और सुननेकी शक्ति घट जाती है और उसके कुछ ही बाद बहुत तकलीफ़के साथ वमन हुआ करता है। बाएँ कानमें फाड़ने या बेधनेकी तरह दर्द, मानो हड्डीमें दर्द पैदा होकर ऐसा हो रहा है। दाहिने कानमें ऐसा अनुभव होता है, मानो छुरी गड़ रही है।

नाक ।—नाकका अगला भाग सूक्ष्म। नाककी जड़से सरके पिछले भागतक दर्द मालूम होता है। जितनी ही बार नाक छिड़कता है, उतनी ही बार उसमेंसे आम मिला रक्त निकलता है (आर्नि, आरम-म्यूर, ग्रैफ, फास ; सवेरे—लैके, कास्टि, पल्स) ; नाकसे खूनका स्राव होनेके बाद सर-दर्द घट जाता है (ब्यूफो, फेरम-फास, मैंग-सल्फ, मिलिलोट)। नाकके पिछले भागमें बहुत भार मालूम होता है। बार-बार छींक आती है। नाकमें अश्वमूलकी गन्ध आती है।

चेहरा ।—उतरा हुआ सफेद और मलिन, आन्तरिक दुःख प्रकट करनेवाला और दोनों आँखें नीले घेरेसे घिरी, दोनों गाल-लाल, जलन करनेवाले और गर्म, समूचा माथा और चेहरा लाल, नसा, जीभ और स्थूल नासिका, पीले गाल या गड़हेमें धसी आँखें और नीले रङ्गकी मूर्त्ति, रोगी आइनेमें अपना चेहरा देखकर डर जाता है। पीले रङ्गकी मूर्त्ति, विशेषकर शय्यासे उठनेपर। निचले हनुकी ग्रन्थि सब फूल जाती हैं और कड़ी हो जाती हैं। दाहिनी गण्डास्थि और युगास्थिमें फाड़नेकी तरह दर्द।

मुख-विवर आदि।—स्नायुगत दन्तशूल,—संध्याके समय धक-धक किया करता है और ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो दाँत टूटा जाता है; वृद्धि—सोनेपर; घटना—चलनेपर। गर्भ धारणकी पहली अवस्थामें दाँत (मैग-कार्ब, रैटान) या काटनेवाले दाँतमें छुरी बेधनेकी तरह दर्द या छेदक-दन्तकी जड़ शिथिल हो जाती है और मसूढ़ेमें जखम हो जाता है। दाँत और मसूढ़ेमें झुनझुनी होती है और ऐसा मालूम होता है, कि दाँत सब मानो पेस्ट-बोर्ड या कड़े गत्तेके बने हुए हैं। मसूढ़े काले हो जाते हैं। जीभ, गहरे सफेद लेपसे ढकी। जीभकी जड़में उत्ताप मालूम होता है। जीभके अगले भागमें जभी-तभी जलन मालूम होती है (रैटान, सैङ्गिविन)। मुँह फाड़े बिना श्वास-प्रश्वासकी क्रिया नहीं कर सकता, घुसी हुई हवा बहुत तकलीफ पैदा कर देती है और ऐसा मालूम होता है कि वक्षमें सजीव पदार्थ है और जलन मालूम होती है। उपजिह्वा फूली और लाल; जीभ प्रायः सफेद और उसका प्रान्त भाग लाल, गलेके भीतर और कभी-कभी गलेकी ग्रन्थिमें, उत्ताप और जलन मालूम होती है और ऐसी तकलीफ होती है, मानो कोई अस्त्रसे आघात कर रहा है। कण्ठमें श्लेष्मा जमा हो जाता है और गहरी नींदके बाद सवेरे खाँसनेपर गाढ़ा गोंदकी तरह बलगम, अन्ननाली और कंठसे अलग होकर बलगमके रूपमें निकलता है और कण्ठमें ऐसा दर्द होता है, मानो कण्ठके भीतरकी त्वचा क्षय हो गयी है। एकाएक कण्ठनाली इस तरह संकुचित हो जाती है कि रोगी एक भी बात स्पष्ट उच्चारण नहीं कर सकता (रैंटान,—बोलनेमें व्याघात पैदा कर देता है—मैंन्सि, पल्स; बोलनेमें कष्ट होता है—पैरिर)। कोई पदार्थ निगलनेके समय पीठमें दर्द होता है (रस-टक्स, कैलि-कार्ब, कास्टि)।

पाकस्थली।—मुँहमें मूली और मिर्चाकी तरह अनुभव, राक्षसी भूख, पर कुछ खानेके बाद रोगी अपनेको छोटा और पहलेकी अपेक्षा शिथिल देह समझता है। रातके ४ बजनेके समय खानेकी इच्छा होती है, पर भूख नहीं रहती। बहुत तम्बाकू खानेसे अरुचि मालूम होना। लगातार तेज़ प्यास या आवश्यकतासे अधिक पानी पीता है। जो कुछ निगलता है, उसीसे पीठमें दर्द होता है। अन्ननली और वक्षमें जलन मालूम होती है। पाकस्थलीसे बार-बार सड़ी डकार आती है। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें जलन होकर दिनभर गर्म

डकार आती है और अन्तमें सर-दर्द पैदा हो जाता है। मानो मूर्च्छा आ जानेका उपक्रम, ऐसी ही मिचली पैदा हो जाती है और इतना अधिक प्रकोप होता है, कि रोगी बहुत क्षीण हो जानेपर सीधा होकर बैठा रहता है, सो नहीं सकता। बार-बार ओकाई आती है और इस समय देखने और सुननेकी शक्ति या तो लोप हो जाती है या दृष्टि अस्पष्ट और श्रवण-शक्ति घट जाया करती है। वमन—भयानक प्रबल (इथ्यू) खायी हुई चीजें कै हो जाती हैं या बहुत मिचली, वक्षमें दबाव और सर्दी मालूम होकर सफेद रङ्गका श्लेष्मा-मिला खाया हुआ पदार्थ वमन होता है; कभी-कभी केवल कफ़ और पित्त वमन होता है (इपिका)। प्रत्येक बार वमनके पहले पीठ और दोनों बाँह सिहर उठते हैं (दोनों पृष्ठफलकोंके बीचमें जलन मालूम होती है—रस); काले रङ्गका पदार्थ वमन (ओपि, प्लम्ब)। जितना पानी पीता है, उससे पेशाब कम होता है, परन्तु पेशाब बहुत थोड़ा नहीं होता। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द—गहरी साँस लेने और छोड़नेके समय।

अन्त्राशय।—यकृत-प्रदेशमें सुई गड़ने या अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द या इस ढङ्गका दर्द होना कि उसकी त्वचा क्षय हो गयी है। यकृत-प्रदेशमें ऐसा दर्द हुआ करता है, मानो फोड़ा निकलता है; यकृतके दाहिने अंशमें अस्त्र बिध रहा है या चिपक गया है ऐसा दर्द मालूम होना, नाभि-प्रदेशमें मरोड़ खानेकी तरह दर्द (चेलिडो, कोलो, क्रोटन, फाइटो, टिलिया-ट्रि)। नाभिके बाएँ अंशमें नख गड़नेकी तरह दर्द, मानो पतला पाखाना होनेका यह पूर्व लक्षण हैं। थोड़ा भी खाते ही पेट फूल उठता है, यह फूलन पाकस्थलीसे आरम्भ होकर उदरतक चली जाती है। उदर कड़ा, मानो उसमें आध्मान वायु भर रहा है, परन्तु दर्द नहीं मालूम होता; पाकस्थलीपर किसी तरहका दबाव सहन नहीं होना (आर्स, हिपर, इपिक, लाई, सैंग-मूर, फास; कपड़ा कसकर पहन नहीं सकता—लैके, लाई, नक्स), विशेषकर तलपेटमें (विशेषकर उदरके बाएँ पार्श्वमें—पल्स)। उदरको दबानेपर वह कड़ा और दर्द-भरा मालूम होता है। रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि उदर फूलनेकी वजहसे उसकी साँस रुक जायगी (आर्जेण्ट-नाई, लाई, हिप, हाइड्रैस्ट, ऐ-हाइड्रो, लैके, फास, पल्स, इयुरेनियम-नाई), इसके बाद ही पतला पाखाना होनेकी तरह पेटमें मरोड़ हुआ करती है। उदराध्मान—ऊपरी या निचले किसी भी द्वारसे—आध्मान-वायु नहीं निकलता। सवेरे नींद खुलनेपर देखता है कि तलपेट

जकड़ा और टटाया हुआ है, फूल रहा है और दबानेपर दर्द मालूम होता है, यहाँतक कि पहना हुआ कपड़ा भी सहन नहीं होता (लाई, एपिस, क्रियो, लैके, लैक-कैन, पल्स, स्पञ्जिया)। पाखाना होनेके पहले वृद्धि या पाखाना हो जाने बाद घटना—यह सब कुछ नहीं होता ; लगातार तकलीफ़ बनी रहती है, पर शरीर हिलानेपर कुछ बढ़ जाती है ; चलनेके समय थोड़ा भी हिलते ही अन्त्राशयमें दर्द मालूम होता है। बड़ी आँतमें आध्मान-वायु अड़ा रहता है ; उदरमें सब जगह वायुके गोले धक्का देते हैं। किसी पदार्थपर भार देकर बैठनेपर श्रोणिदेशमें आराम मालूम होता है, परन्तु फिर तलपेटमें दर्द पैदा हो जाता है और ऐसा मालूम होता है, कि एकाएक एक गोलेने चढ़कर कण्ठ-रोध कर लिया ; वह इतना बड़ा मालूम होता है कि ऐसा बोध होता है कि कण्ठमें रहनेके समय वह निगला नहीं जा सकेगा, मानो कण्ठसे यह गोला उतरकर पाकस्थलीमें चला जाता है और मालूम होता है, कि अब यह गोला न पचेगा। निचला उदर शून्य और उसमें अस्त्रकी चोटकी तरह यन्त्रणा होती है, मानो खून बड़े वेगसे आँखकी ओर दौड़ रहा है। आँखोंमें जलन होती है, सरमें चक्कर आता है और शिराओंमें चारों ओर खून दौड़ जाता है। दोनों पैर बहुत ठण्डे मालूम होते हैं और कुटकुटाया करते हैं, मानो ठण्डे पैर बहुत गर्म पानीमें डुबो दिये गये हैं। दाहिने पुट्ठेकी गांठ फूली और छूनेपर दर्द मालूम होता है। तलपेटमें नीचेकी ओर दबाव मालूम होता है, मानो आँत उतर पड़ेगी (कैल्के, कार्बोन-सल्फ़, काक्यु, गुयायेक, लाई, नक्स-मस, साइलि)। तलपेट और मसानेमें दर्द, मानो रजःस्राव होनेका यह पूर्व लक्षण है।

मल।—मल—बहुत ज्यादा नहीं और पतला या बड़े जोरसे पीली आभा लिये भूरा पाखाना होना ; इसके अलावा कभी भूरा और फ़ेन-भरा मल। पुराना उदरामय—हरे रङ्गका पतला मल और आम और खून-मिला मल। अजीर्ण पदार्थ मिला पतला मल। उदरी रोगमें पुराना उदरामय—प्रबल प्यास, उदरोर्द्ध-प्रदेशमें बहुत सुस्ती मालूम होना, श्वास-प्रश्वासके समय कण्ठरोध हो जाता है, बहुत पेशाब और वायु न निकलना।

पेशाब।—मूत्रनालीके सामनेवाले अंशमें जलन मालूम होना। मसानेके स्थानपर फाड़नेकी तरह दर्द, विशेषकर झुकनेपर। कामाद्रि-प्रदेशमें दर्द और पेशाबका वेग, मानो मूत्राशयका शिखर-देश दब रहा है। जितना

पानी पीता है, उसके अनुमानमें पेशाब कम होता है। पेशाबका वेग रहनेपर भी थोड़ा पेशाब होता है। बहुत देरतक बैठे बिना पेशाब नहीं होता ; फीका और मैला, पीले रङ्गका पेशाब, उसकी तली शराबके फेनकी तरह।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—मानो एक गोला जरायुके शिखर-देशसे उठकर कण्ठमें जाकर रुका। जरायु और पुट्ठेकी जगहपर छूनेसे बहुत दर्द होता है। अस्थिमें भी दर्द मालूम होता है और सन्धियाँ सब कड़कड़ करती हैं ; कशेरुका-स्तम्भ बहुत क्षीण। जरायु और पुट्ठेके स्थानपर बहुत दर्द और गर्मी मालूम होना ; बार-बार पेशाबका वेग होता है, परन्तु रोगिनी पेशाब नहीं कर सकती। जननेन्द्रिय और भगांकुरमें स्नायविक उत्तेजनाकी वजहसे रोगिनी अस्वाभाविक उपायोंसे काम परितृप्ति करना चाहती है (ओरिगिनम)। कामना न रहनेपर भी योनिसे श्लेष्माका स्राव। जरायु-प्रदेशमें जलन आरम्भ होकर उदरोर्द्ध-प्रदेशमें फैल जाती है और वहाँ यह जलन स्नायविक संकोचनमें परिणत हो जाती है और रोगिनीके मनमें ऐसी आशङ्काजनक अनुभूति उत्पन्न हो जाती है, कि उसे धनुष्टङ्कार हो जायगा। जननेन्द्रियमें बराबर सुरसुरी हुआ करती है और यह सुरसुरी बढ़कर रातके डेढ़ बजनेके समय बहुत ज्यादा मात्रामें श्लेष्मा-स्राव होकर तब कहीं बन्द होती है। रोज़ तीसरे पहर तीन या चार बजनेके समय योनिसे गुलाबी रङ्गका पानीकी तरह खूनका स्राव होता है। ऋतु-स्राव बहुत अधिक और बहुत दिनोंतक स्थायी रहा करता है ; थक्का-थक्का खून निकला करता है—गर्भस्रावकी तरह। ऋतुस्रावके समय जरायु-प्रदेशसे उत्ताप पैदा होकर माथेमें, माथेसे नितम्बदेशमें और वहाँसे क्रमशः सारे शरीरमें फैल जाता है, मानो अभी-अभी पसीना होगा—ऐसी अनुभूति पैदा कर देता है ; पैर और तलवेमें कुटकुटी हुआ करती है, विस्मृति पैदा हो जाती है। रोगिनी सुस्त हो पड़ती है और उसे बोलनेमें बहुत तकलीफ़ होती है (कार्बो-ऐनि, काक्यु)। कामोन्माद—सवेरेसे रातके ११ बजनेतक बराबर मौजूद रहता है।

श्वासयन्त्र।—श्वास-प्रश्वासमें मूलीकी गन्ध। स्वर-भङ्ग। खाँसीके रोगीमें स्वरभङ्ग, ऐसा अनुभव होना मानो बहुत देरसे चिमटेसे दबाया जा रहा है (ड्रय्यूजा ; मानो लोहेके बन्धनसे कसकर बाँधा हुआ है—कैक्टस) ; श्वास-प्रश्वासका काम करने या बोलनेमें बहुत परिश्रम मालूम होता है (कैक्टस)।

वायुनलीकी सर्दी या प्रतिश्याय रोगमें जैसा हुआ करता है, कण्ठमें उसी तरह कफ़ सञ्चय होकर खाँसी पैदा हो जाती है। मानो उदरोर्द्ध-प्रदेशसे कुछ कंठकी ओर चढ़कर खाँसी पैदा कर रहा है; हँसनेपर भी खाँसी आती है (आर्जेण्ट-नाई, ब्राई, सिङ्को, क्यूप्रम, फास, स्टैनम)। ऐसा मालूम होता है, मानो कंठके नीचे गाढ़ा गोंदकी तरह कफ़ सञ्चित हुआ है, पर खाँसनेपर नहीं निकलता, मानो खाँसीका वेग उतनी दूर पहुँचता ही नहीं (कास्टिकम)। सूखी खाँसी—खाँसनेपर माथा और वक्ष-पार्श्वमें धक्का मालूम होता है (ब्राई)। बलगम—छोटे-छोटे श्लेष्माकी गोलियाँ सब बहुत सरलतासे निकलती हैं। खाने-पीनेके समय गला रुकनेका उपक्रम हो जाता है (ऐनाक, मैग-फास, रास, सिपिया)। रातके ३ बजेतक मुँह फाड़े बिना साँस नहीं ले सकता ; वक्षमें घुसी हुई हवा यन्त्रणा और जलन उत्पन्न करती हैं, मानो उसमें जो कुछ है—वह सब सजीव है ; उपजिह्वा फूली और लाल, जीभ प्रायः सफ़ेद और उसका किनारा लाल। रोगिनीको बहुत बेचैनी मालूम होती है—बैठ, सो या खड़े होकर, किसी भी अवस्थामें उसे आराम नहीं मिलता। स्थिर नहीं रह सकती, वक्षमें दबाव मालूस होता है। कोई भी चीज़ निगलनेमें बहुत तकलीफ होती है, ऐसा मालूम होता है, मानो पानी पीनेपर नाकसे निकल जायगा (पानी पीनेपर नाकसे निकल जाता है—एरम-ट्राई, लैके, मर्क-कोर) ; अन्ननली और वक्षमें भयानक जलन ; सवेरे अधिक और मध्याह्नमें दब जाती है ; सन्ध्याके समय और भी बढ़ जाती है और निर्मल हवामें घूमनेपर घटती है ; कोई चीज निगलने, यहाँतक कि श्वास-प्रश्वासके समय भी पीठमें दर्द होता है (रस-टक्स)। साँस छोड़नेके समय दोनों कन्धोंके बीचमें और वक्ष-पार्श्वमें दर्द और श्वास लेनेके समय ऐसा मालूम होता है, कि वक्ष फैलता नहीं है।

वक्ष।—श्वास-प्रश्वासके समय रोगिनीको स्तनके नीचे और पीठमें भयानक दर्द मालूम होता है। यह दर्द क्रमसे वक्षस्थलसे मेरुदण्डतक चला जाता है। सुई गड़नेकी तरह दर्द—बाएँ वक्षमें, वक्षोस्थिके बीचमें, विशेषकर वक्षोस्थिमें ; वृद्धि—खाँसनेपर या श्वास-प्रश्वाससे, गहरी साँस लेने-छोड़नेपर ; दोनों कोखोंमें दर्द, मानो नितम्बदेश लोहेकी पट्टीसे बँधा हुआ है। उदरोर्द्ध-प्रदेशसे कण्ठतक और पीठमें दबाव तथा सुई गड़नेकी तरह दर्द ; वृद्धि—खाँसने और भोजन करनेपर ; पानी पीनेपर कुछ घटता है। दोनों

स्तनोंके बीचमें, वक्षमें सर्दी मालूम होती है और ऐसा अनुभव होता है, कि एक गुल्म अड़ा हुआ है ; इसीलिये रोगिनीको नींद नहीं आती। दाहिने वक्षमें जभी-तभी दर्द मालूम हुआ करता है। बाएँ वक्षमें सलाई गड़नेकी तरह प्रचण्ड दर्द। दाहिने स्तनमें बाहरी उत्ताप मालूम होना। तेज़ और द्रुत हृत्स्पन्द। सवेरे कुछ खा लेने बाद हृत्पिण्डमें दर्द और सवारीपर चढ़कर घूमनेके समय सरमें दर्द मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनके पीछेकी हड्डीमें मटमट शब्द (चेलिडो, पेट्रोल)। सारे अङ्गमें, विशेषकर माथेके पिछले भागमें, गर्दनमें और नितम्ब-देशमें दर्द और शिथिलता मालूम होना। कमर बहुत क्षीण और सीधा रखनेके लिये न झुकनेवाला वक्षःस्त्राण पहनना पड़ता है ; पीठके बीचका अंश मानो चूर हो गया है, देह सीधी नहीं रखी जा सकती (सीधे होकर खड़ा नहीं हो सकता—फाइजस ; बच्चा चल नहीं सकता—ऐलियम-सैट)। दाहिने पृष्ठ-फलकके शिखर-देशमें कसावटका भाव और उखाड़नेकी तरह दर्द। मेरु-पुच्छमें तेज़ दर्द ; मानो इस जगहपर एक फोड़ा निकल रहा है। ऐसा मालूम होता है, कि एक पदार्थ कशेरुकाके भीतरसे ऊपरसे नीचेकी ओर जा रहा है और जगह-जगहपर इसकी गतिमें बाधा पड़नेके कारण वक्षमें दर्द पैदा कर रहा है। दो-एक क़दम चलनेसे ही दोनों पैर क्षीण और दर्द-भरे मालूम होते हैं, मानो बहुत दूरतक भ्रमण किया है। बाएँ कन्धेके शिखर-देशमें फाड़नेकी तरह दर्द। बगलकी ग्रन्थि फूली और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता। हाथकी अंगुलीके नखके नीचे दर्द, मानो जल गया है या काँटा गड़ गया है। उरुके सामनेवाले भागका छोटा अंश जला करता है। अग्र-जङ्घास्थिका अगला भाग छूनेपर दर्द मालूम होता है, खासकर ऐसी जलन होती है मानो उसपर जलता अङ्गारा रखा हुआ है। तलवा और नितम्ब सुन्न मालूम होते हैं। दोनों पैर पहले ठण्डे रहते हैं। इसके बाद गर्म हो उठते हैं और तलवेमें ऐसी तकलीफ मालूम होती है मानो छुरी मारी जा रही है। चलनेके समय एँड़ीके नीचे भयानक दर्द मालूम होता है। स्थिर रहनेपर, विशेषकर जूता उतार देनेपर आराम मालूम होता है। पैरकी अंगुलियोंके ऊपरवाले गट्ठे सब दर्द किया करते हैं (ऐ-नाई, आयोड, रैनान-बल्बो, पियोनिया)। सोनेपर बाएँ पैरमें ऐसा अनुभव होता है, मानो पक्षाघात हो गया है। रातमें सोनेके समय पैरकी पोटलीमें ऐंठन होती है। मूर्च्छावायुका प्रकोप—फिर होशमें

आनेपर रोगिनी बात नहीं कर सकती। प्रकोप आरम्भ होनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो जरायुसे एक गर्म गोला चढ़कर वक्षमें रुक गया। मानो उदरसे एकके बाद दूसरा कितने ही गोले उठकर रोध कर रहे हैं (ऐसाफि, मस्कस)। आँख, बाँह, हाथ वगैरह अङ्ग ऐसे मालूम होते हैं मानो फूल गये हैं, परन्तु दोनों पैर बहुत छोटे मालूम होते हैं और दोनों कलाइयोंपर ऐसा मालूम होता है, मानो बेंत मारी गयी है।

त्वचा।—रोगीका शरीर साधारणतः पसीनेसे तर रहता है। शरीरके एक अंशमें जलन पैदा होकर दूसरे अंशमें चली जाती है। सारे शरीरमें मूलीकी गन्ध; शरीरकी त्वचा तेलकी तरह (नेङ्ग-मूत्र) मालूम होती है और दिखाई देती है। सारे शरीरमें खुजली और खुजलानेपर जलन पैदा हो जाती है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—जानु और चरण बहुत ठण्डे मालूम होते हैं और इसी वजहसे रातमें नींद नहीं आती। भीतरी शीत मालूम होनेपर भी शरीर गर्म और पसीनेसे तर रहता है। रोगीका शरीर छूनेपर ऐसी गर्मी मालूम होती है, मानो हाथ जल जायगा, पर रोगी बार-बार यही शिकायत करता है, कि सर्दी मालूम होती है। पसीना और साँसमें मूलीकी तरह गन्ध, सोनेवाली अवस्थामें, विशेषकर रातके अन्तिम भागमें बहुत ज्यादा पसीना हुआ करता है।

वृद्धि।—रातमें और सवेरे नींद खुलनेपर; रात ३ से ४ बजेके बीचमें (कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, मिडोरिन, थूजा); छूनेपर; वस्त्रके दबावसे; शरीर हिलानेपर; खाँसने और हँसनेपर; शरीर हिलानेपर; खाने-पीने बाद और सवारीमें भ्रमण करनेपर।

उपशम।—निर्मल वायुमें टहलनेपर; पीछेकी ओर माथा झुकानेपर (सेनेगा); पानी पीनेपर (छातीका दर्द); मुँहमें ठण्डा पानी लेनेपर; नाकसे खूनका स्राव होनेपर (सर-दर्द); वमनके बाद (दृष्टि और श्रवण शक्तिका लोप होना; एक करवट झुककर सोनेपर और मध्याह्नमें)।

सम्बन्ध।—दोषघ्न।—बहुत अधिक मात्रामें पानी पीनेपर।

तुलनीय।—आध्मानमें—कार्बो-वेज, लाइकोपोड। नाकके ऊपर दबाव पड़ना—कैलि-बाई; सर-दर्द—कैलि-बाई, मेलिलोटस, सोराइनम। लड़कियोंका

नकली मैथुन—ग्रैटियोला, ओरिगिनम। चैतन्याधिक्य—कैलि-आयोड ; जानुतक ठण्डा—कार्बो-वेज ; जीभमें जलन—सैंगु ; हँसनेपर खाँसी—आर्जेण्ट-नाइट। चर्मका चमकीलापन—ब्रायो, नेट्रम ; जरायुका विकार—सिपिया ; गर्भावस्थामें दन्तशूल—मैग-कार्ब ; इन्द्रिय-परिचालनके कारण अनिद्रा—कैलि-ब्रोम।

सदृश।—कार्बो-वेज, लाई, कैलि-बाई, मैग-सल्फ, ब्यू फो, मिलिलोट, ग्रैटियोला, ओरिगिनम, रास, मस्कस, ऐसाफिट, इग्ने, सेनेगा, ब्राई, बेल, कैलि-आयोड, सिपिया, थ्लैस्पि-वार्स, पैस्टोरिस, रैटानहिया, मैग-कार्ब, नेट्र-म्यूर, कैलि-ब्रोम।

शक्ति।—३री दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

रैटानहिया

(RATANHIA)

दूसरा नाम।—मायाटो।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसकी सूखी जड़से मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मलद्वारका फटना ; साँसमें बदबू ; कब्जियत ; बहुमूत्र ; आमाशय ; रक्तामाशय ; अजीर्ण ; नाकसे रक्तका स्राव ; आँखमें मांस-खण्डका बढ़ना (टैरिजियम) ; प्रमेह ; रक्त-स्राव ; अर्श ; हिचकी ; आँखोंमें जल-सञ्चय ; स्तनके नीचे दर्द ; खुजली ; जरायुमें खूनका स्राव ; गर्भ-स्राव ; स्तनका फट जाना ; फुसफुस-वेष्ट-प्रदाह ; शीताद ; नाक बोलना ; बोलते-बोलते अटक जाना ; उदराध्मान या पाकाशयका फूलना और जखम ; गलनलीका संकोचन ; कर्ण-पटहका प्रदाह ; क्रमि।

उपयोगिता और आभास।—फटे हुए मलद्वारके लिये यह एक अत्यन्त लाभदायक दवा है। बहुत ज्यादा कड़ा मल होनेपर जो कुछ लक्षण पैदा हो सकते हैं, वे सभी इससे आराम होते हैं। गर्भवतियोंकी दाँतके दर्दकी बीमारीमें भी यह लाभदायक है। इसके कई निर्णायक

लक्षणोंपर ध्यान देनेसे इसकी शक्तिका परिचय प्राप्त होता है:—(१) पाखाना जानेके समय वेग देनेके समय और बाद प्रबल सर-दर्द, मानो माथा फट जायगा। (२) ललाटके मध्य स्थानमें दर्द, मानो कपाल फटकर मस्तिष्क बाहर निकल पड़ेगा। (३) सर-दर्द, झुकनेपर बढ़ जाता हैं। (४) आँखोंका प्रदाह, मानो आँखके बीचतक एक झिल्ली फैल गयी है और वह जलन किया करती है; आँखोंमें जलन होती है, कड़कड़ाहट होती है और पलकें बहुत फड़कनेके कारण दृष्टिमें व्याघात होता है। तिमिर दृष्टि अर्थात् चारों ओर अन्धेरा दिखाई देना। (५) मसूढ़े से लगातार खून बहना। (६) नाकसे खूनका स्राव। (७) गर्भवतियोंके गर्भकी प्रथमावस्थामें प्रबल दन्त-शूल,—दाँत सब लम्बे मालूम होते हैं; सोनेपर तकलीफ़ बहुत बढ़ जाती है, इसीलिये रोगिनी शय्यासे उठकर घरमें बाध्य होकर टहलती रहती है। (८) कब्जियत—मल बहुत कड़ा और बहुत वेग देना पड़ता है; बवासीरका मसा बाहर निकल पड़ता है और बहुत देरतक मलद्वारमें जलन और दर्द हुआ करता है; मलान्त्रकी निष्क्रियता, पाखाना होनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वारमें छोटे-छोटे कांचके टुकड़े सब अड़े हुए हैं। (९) पाखाना होनेपर प्राणान्तिक यन्त्रणा। ढीला पाखाना होनेपर भी जलन होती है। (१०) मलद्वार फटा—मलान्त्रमें बहुत दर्द; स्तन पीनेवाले बच्चोंकी माताका फटा स्तनवृन्त।

लक्षणावली

मस्तिष्क।—मस्तिष्कमें जड़ता मालूम होना, मानो नशा हो गया है। सरमें दर्द, मानो करोटी या माथेकी खोल फट जायगी, विशेषकर सामनेकी ओर झुककर बैठनेपर ललाटके बीचमें दर्द, मानो मलत्यागके समय वेग देनेपर वह फटकर मस्तिष्क बाहर निकल पड़ेगा (मानो मस्तिष्कका सामनेवाला अंश ललाट भेदकर बाहर निकल पड़ेगा—सिडोरिनम)। बहुत देरतक ठहरनेवाला सर-दर्द, मानो चिमटेमें कसा हुआ है (पल्स, इग्यू; मानो स्क्रू से कसा हुआ है—काक्युलस)। माथेमें चिलक मार उठता है और उत्तेजना तथा शूल वेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। मूर्द्धदेशमें यन्त्रणाजनक फाड़नेकी तरह दर्द और जलन अनुभव होना, यहाँतक कि रातमें भी ऐसा हो दर्द हुआ करता है; घटना—घरके बाहरकी हवा लगनेपर और रजःस्रावके

समय। पाखाना हो जानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फट जायगा। ऐसा मालूम होता है, मानो नासामूलसे मूर्द्धदेशतक माथेमें तनाव हो रहा है (कैनाब, कार्बो-ऐन)। ऐसा अनुभव होना कि ललाट तना हुआ है, भौं सिकोड़नेपर खींचन या तनाव और भी अधिक मालूम होता है। मस्तिष्कके गभीरतम प्रदेशमें चिलक मारनेकी तरह दर्द। माथेकी खुजली—खुलजानेपर भी नहीं घटती।

आँख।—आँखके सफेद अंशमें प्रदाह ; मालूम होता है, कि एक झिल्ली आँखके केन्द्रतक फैली हुई है और जलन हुआ करती है ; त्रिकोण-झिल्ली उत्पादक-चक्षु-प्रदाह (ऐमोन-ब्रोम, आर्स-फार्मिका, लैके ; आभ्यन्तरिक अपाङ्गसे झिल्ली और प्रदाहका आरम्भ होना—इयुफ्रे ; बहिः अपाङ्गसे आरम्भ—कैल्के-कार्ब)। ऐसा मालूम होता है, कि चक्षुगोलक चिमटेसे पकड़े हुए हैं—रोगी आँख नहीं हिला सकता। आँखमें संकोचन और जलन मालूम होना, विशेषकर सन्ध्याके समय। ऐसा अनुभव होना, मानो आँखके सामने एक टुकड़ा झिल्ली या पर्दा झूल रहा है (ऐमिल, फाइजस)। सवेरे आँखसे पानी (नेट्र-म्यूर, सिपि) गिरा करता है और रातमें आँखें सट जाती हैं (ऐलूम, सिपिया, सिफिलिनम)। दाहिनी आँख और दाहिनी आँखकी ऊपरी पलक फड़का करती है (कैस्टोर-इक्युई, सिफिलिनम)। आँखके सामने दृष्टिमें व्याघात पैदा करनेवाले सफेद बिन्दु सब दिखाई देते हैं—सन्ध्याके समय और दीयेकी रोशनीमें—बार-बार आँख मलनेकी इच्छा और आँख मलनेपर आराम मालूम होना (सल्फ, कोका)। दूरकी चीजें अस्पष्ट दिखाई पड़ती हैं (फाइजस ; दूरकी चीज़ देख नहीं सकता—कैक्ट्स)।

नाक।—नाकमें खुजली (सिना, सल्फ)। नाकके अगले भागमें भयानक खुजली (आर्जेण्ट-नाई, कास्टि, चेलिडो, पेट्रोल, सिपिया)। रगड़नेपर घटता है (आर्जेण्ट-नाई)। नाकका छेद प्रदाहान्वित, फटा घाव भरा और उसमें जलन होती है। लगातार पाँच दिनोंतक रोज़ तीन बार नाकसे खूनका स्राव होता है (पाँच दिन लगातार दिन-रात गाढ़े लाल रक्तका स्राव—टेरिब)। नासारंध्र सूखा और बार-बार छींक। सूखी सर्दी और नाकका एकदम रुक जाना या नासानाह।

मुखमण्डल।—संध्याके समय बायीं गण्डास्थिमें फाड़नेकी तरह दर्द ; निचले हनुकी बायें अंशमें और उसी ओरके दाँतमें फाड़नेकी तरह दर्द।

दाहिने गालमें मानो मकड़ेका जाला लगा हुआ-सा अनुभव होना (बैराई, रैनान-स्किलिरेट, ग्रैफ)। ऊपरी ओठपर लाल जलन करनेवाला रस-भरा दाना (साइक्यूटा, सेनेगा)। भयङ्कर दन्तशूल—गर्भवतियोंको पहले कई महीने (मैग-कार्ब, रैफेनस); रोगीको दाँत सब बड़े मालूम होते हैं, विशेषकर सन्ध्याके समय ; वृद्धि—सोनेपर (कैमो, रास)। यंत्रणासे रोगी शय्या त्यागकर बाध्य होकर टहलने लगता है (चलनेपर घटना—साइजि); पेषण-दन्तमें बड़ी बेचैनी पैदा करनेवाली सर्दी मालूम होना और मानो इन सब दाँतोंसे शीत निकल रहा है। मसूढ़ोंको चूसनेपर उनसे खट्टे स्वादका खून निकलता है। जीभके अगले भागमें जलन होती है (रैफेनस, रैनान-स्किलि, सैङ्गिविन)। मुँहमें स्वादहीन पानी इकट्ठा हुआ करता है (बैराई, ब्राई, कार्बो-वेज, लाई, नक्स, पैरिस, पेट्रोल, रैनान-वल्बो, सैबाड, सैङ्गियु, साइलि, स्टैफ ; गर्भावस्थामें—ऐ-लैक्टि, नेट्र-म्यूर, नक्स-मस, टैबाक, लोबेल-इन), निश्वास-वायु दुर्गन्धयुक्त। खाली घूंट लेनेके समय कण्ठमें दर्द अनुभव होता है। कण्ठनलीके यन्त्रणाजनक आक्षेपिक संकोचनकी वजहसे रोगी एक बात भी जोरसे नहीं बोल सकता (रैफेनस, मैन्सि, ड्रोसेरा)।

पाकस्थली।—प्रबल हिचकी (साइक्लामेन, मस्कस); हिचकीकी वजहसे पेटमें दर्द पैदा हो जाता है। रातमें भोजनके बाद बहुत देरतक हिचकी आया करती है। मुँहमें कुछ भी अच्छा नहीं लगता ; किसी चीज़का स्वाद नहीं मिलता। रोगी सवेरे खानेका जो कोई पदार्थ देखता है, उससे ही घृणा मालूम होती है ; कोई खानेकी बात कहता है तो भी ओकाई आने लगती है। वमन पानीकी तरह, खून-मिला श्लेष्मा। पाकाशयमें ऐसा दर्द, मानो जखम हो गया है (कैलि-कार्ब, मेजिर), पाकाशय बहुत फूल उठता है ; पाकस्थली एकदम भरी मालूम होती है। पाकस्थलीमें और उदरोर्द्ध-प्रदेशके ऊपरी अंशमें ऐसा मालूम होता है, मानो उदर टुकड़े-टुकड़ेकर काटा जा रहा है ; गहरे श्वास-प्रश्वाससे बढ़ना। पाकस्थली और उदरोर्द्ध-प्रदेशमें उत्ताप और जलन मालूम होना। एकाएक ऐसा मालूम होता है मानो उदरोर्द्ध-प्रदेश फट गया। चलनेके समय पाकाशयमें गड़गड़ शब्द होता है और पाकाशय खाली मालूम होता है।

अन्त्राशय।—दाहिने और बाएँ कोखमें बार-बार तेज़ शलाका बेधने-जैसा दर्द। नाभि-प्रदेशमें ऐसा दर्द होता है मानो मरोड़ खा रहा है और

शीत मालूम होता है। तीसरे पहर उदर आध्मान-वायुसे भरकर फूल उठता है, बार-बार वायु निकला करता है और पाखाना लग आता है। उदरके पार्श्व-देशमें ऐसा अनुभव होता है, मानो एक सजीव पदार्थ हिल रहा है (क्रोकस, थूजा)। वंक्षण या कुचकी प्रदेशमें तीसरे पहर बैठनेके समय एक नोकीला सलाई गड़नेकी तरह दर्द ; सन्ध्याके समय दाहिने पुट्ठेमें ऐसा दर्द मानो जकड़ गया है ; सवेरे नींद खुलनेपर पुट्ठेमें नख गड़नेकी तरह दर्द ; आध्मान-वायु निकल जानेपर आराम मालूम होता है। दोनों ही पुट्ठोंमें रजःस्रावके पूर्व लक्षणकी तरह ऐसा दर्द होता है, मानो सब नीचेकी ओर खिंच रहा है और योनिसे श्लेष्माका स्राव होता है।

मलान्त्र और मल।—कब्जियत,—मल बहुत कड़ा और जोर लगानेपर निकलता है। बवासीरका मसा बाहर निकल पड़ता है और बहुत देरतक मलान्त्रमें दर्द और मलद्वारमें ऐसी जलन हुआ करती है, मानो आग छू गयी है (पियोनिया, सल्फ); पाखाना हो जानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो निकलनेकी राहमें काँचके चूर रुके हुए हैं (थूजा)। पाखाना होनेपर भयङ्कर जलन और यन्त्रणा ; ढीला पाखाना होनेपर भयानक जलन होती है (ऐसिड-नाई)। विदारित मलद्वार—भयानक संकोचन और ऐसी भयङ्कर जलन हुआ करती है मानो आग छू गयी हैं ; केवल ठण्डे पानीका प्रयोग करनेपर कुछ देरके लिये घटता है। वेग देनेके बाद बहुत कड़ा मल निकलता है और बवासीरका मसा निकल पड़ता है, इसके बाद मलद्वारमें जलन हुआ करती है (कैल्म, आइरिस, सल्फ)। मलद्वारसे लगातार रस बहा करता है ; पतला पाखाना होनेके पहले या बाद जलन ; मलद्वारमें सूखा उत्ताप और छेदनेकी तरह दर्द मालूम होना। स्वाभाविक मल निकलनेके पहले भयानक वेग। पाखाना होनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो मलान्त्र (काँच) बाहर निकल पड़ी और इसके बाद बड़े वेगसे एकाएक भीतर घुस जाती है ; गर्म पानीमें कमरतक डुबाकर बैठनेपर आराम मालूम होता है। मलद्वारसे खून निकलना। पाखाना होनेके समय और बाद ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फट गया।

जननेन्द्रिय।—पेशाब परिमाणमें बहुत थोड़ा और पेशाबके कुछ बाद ही गदली तली गिरती है और अन्तमें सभी कीच-भरे पानीकी तरह मैला या गदला हो जाता है (सिपिया, टेरिबिन्थ, ऐ-बेञ्जो, कैन्थ, कास्टि, सिङ्को,

क्रियो, मैन्सि, नेट्र-मूर, ओपि)। बार-बार पेशाबका वेग होता है और प्रत्येक बार केवल कई बूंद पेशाब होता है, पेशाबके समय लिङ्गमूलमें जलन मालूम होती है। मुष्कको खुजलानेपर खुजली घटती नहीं है (ज़िङ्कम ; खुजलानेपर खुजलीका बढ़ना—क्रोटन-टिग)। पुराना प्रमेह एकाएक बहुत बढ़ जाता है। पुट्ठेमें नीचेकी ओर प्रबल आकर्षण, मानो जरायु आदि सभी जननेन्द्रियको ओर खिंच रहे हैं और इसके बाद ही प्रदरका स्राव आरम्भ हो जाता है। मलान्त्रसे खुजली और खून-मिले श्लेष्माका स्राव। प्रदर (जिङ्कम सिपिया, टेरिब); रजोनिवृत्तिके चार दिन बाद (सिङ्कोना ; रजोनिवृत्तिके दो दिन बाद—लैक-कैन)। बहुत ही असमयमें ऋतु-स्राव होने लगता है, बहुत दिनोंतक हुआ करता है और स्राव भी बहुत ज्यादा होता है। रजःस्रावके समय उदर और नितम्बदेशमें बहुत दर्द मालूम होता है। ऋतु रुककर उदर और दोनों स्तन फूल उठते हैं ; देखनेपर ऐसा मालूम होता है मानो पाँच-छः महीनेका गर्भ हुआ है और इसके साथ ही प्रदरका स्राव और मसानेमें लगातार दर्द मालूम होता है। स्तन पीनेवाले बच्चोंका फटा स्तन। जरायुसे खूनका स्राव। गर्भ-स्राव।

श्वासयन्त्र।—गलेमें खुजलीके साथ सूखी खाँसी और वक्षमें ऐसा दर्द मालूम होना, मानो जखम हो गया है। थोड़ा भी परिश्रम करनेपर छातीमें दबाव मालूम होता है और श्वासाल्पता पैदा हो जाती है। वक्षके ऊपर ऐसा मालूम होता है मानो पत्थरका एक टुकड़ा दबाया हुआ है। वक्षमें उत्ताप, रक्तका अधिक सञ्चय होना और श्वासकृच्छ्रता। खाँसनेके समय और बाद ऐसा दर्द मालूम होता है मानो वक्षके भीतर जखम हो गया है (लैक, पल्स, सिपि, साइलि, सल्फ, रियुमेक्स, स्टैनम)। वक्षोस्थिके ऊपरी अंशमें ऐसा दर्द, मानो काटकर टुकड़े-टुकड़े किया जा रहा है। सीढ़ी चढ़नेके समय प्रत्येक श्वास-प्रश्वासमें वक्षोस्थिमें ऐसा दर्द मानो छुरी मारी जा रही है और इसी वजहसे श्वास-रोधका भाव पैदा हो जाता है। ठीक वक्षोदर-मध्यस्थ-पेशीके ऊपरी भागमें वक्षोस्थिके बीचमें ऐसा दर्द होता है, मानो एक नोकीली सलाई गड़ रही है। बाएँ वक्षके नीचे एक पसलीके ऊपर सुई गड़नेकी तरह दर्द ; यह दर्द इतना तेज़ होता है, कि रोगिनी चिल्ला उठती है (कैलि-कार्ब, रैनान-बल्बो ; वक्ष-पार्श्वके दर्दसे चिल्ला उठती है—क्यूबेबा ; बाएँ स्तनके नीचे—कास्टि, जिङ्कम)। पञ्जरेके ऊपर लगातार कई बार सूक्ष्म

शलाका वेधनेकी तरह दर्द, दर्द नीचेकी ओर उतर जाता है (ऐक्टी)। बाएँ स्तनके नीचे उदरोर्द्ध-प्रदेशके पास टपककी तरह छेदने जैसा दर्द और जलन मानो उसमें जखम पैदा हो गया है (कोमोक्लेडिया), ऐसा ही मालूम होता है—(लैपिस-ऐल्बस)। हिलानेपर बढ़ना और दबा देनेपर आराम मालूम हुआ करता है। वक्षके दोनों ही पार्श्वमें दर्द (बेल, मिनियैन, इग्ने, अरम, फास)। सीढ़ी चढ़नेके समय वक्षमें ऐसा दर्द मानो शूल बेधा जा रहा है। इसके साथ ही श्वास-प्रश्वासमें व्याघात।

प्रत्यङ्ग आदि।—बाँहको दोहरानेपर कोहनीके गांठमें दर्द मालूम होता है, हाथ फैलानेपर दर्द आराम हो जाता है। दाहिनी कलाईमें उखाड़नेकी तरह दर्द (कैलि-सूग्र, कार्बो-वेज, मैग-सूग्र, साइक्लामिन)। ग्रीवा-पृष्ठसे लेकर मेरुदण्डके अन्तिम भागतक मानो अकड़ा (गुयाइकम) हुआ-सा मालूम होना (चेलिडो, कोलो, फार्मिका, ऐकि); जोरसे माथा हिलानेपर घटना। पीठ और नितम्बमें ऐसा दर्द मानो किसीने प्रहार किया है (नेट्र-सूग्र, फाइटो); सवेरे शय्यासे उठनेके समय (थूजा)। दोनों उरु ऐसे मालूम होते हैं, मानो जकड़ गये हैं और उनमें जलन हुआ करती है। बहुत उद्वेग और सारे शरीरमें पसीना निकलनेके साथ कमजोरी और उठनेकी शक्तिका न रहना। बार-बार जम्हाई आनेके साथ बहुत आलस्य मालूम होना, लम्बी साँस लेनेके लिये बहुत जोर लगाना पड़ता है और वक्षस्थलमें बहुत कसावट (कैक्टस) की तरह मालूम होता है।

निद्रा।—निद्रालुता—विशेषकर संध्याके भोजनके बाद। बहुत जम्हाई। बार-बार नींद खुल जाती है और बहुत देरतक नींद नहीं आती। सोया-सोया चौंककर उठ बैठता है और इसके बाद काँपा करता है। चित्तकी चञ्चलता और भय प्रकट करता है। युद्ध, कलह और मुर्दा फूकने, बन्धुकी मृत्यु, भूमिकम्प आदिके सपने देखता है।

वृद्धि।—छूनेपर, सीढ़ी चढ़नेपर, सोनेपर, पाखानाके समय वेग देनेपर और भोजनके बाद तथा रातमें।

उपशम।—दबाने, जोरसे रोगवाली जगह हिलाने, रगड़ने, हवा लगने, हवा छूटनेपर, डकार आने बाद, ठण्डे पानी प्रयोगसे और गर्म पानीमें बैठनेपर।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—कैन्थरिस, आइरिस, सलफर, सेनेगा, पियोनिया, साइक्लामिन, मस्कस, पल्सेटिला, साइलिसिया, रैफेनस, रैनानक्युलस-बल्बोसस, रैनानक्युलस-सिलिरेटस, सैङ्गियुनेरिया, मैग्नेशिया-कार्बोनिका, क्रोकस, ऐरेण्डो और थूजा। इसके बाद सल्फ, सिपिया उत्तम कार्य करता है।

तुलनीय ।—फुसफुसवेष्ट-प्रदाह—सेनेगा, गुह्यद्वारका फटना—ऐसिड-नाइट। मलान्त्र—सल्फर, कैन्थ, आइरिस, ग्रैफाई, थूजा। माथेमें दर्द—पल्स, साइलि। हिचकी—साइक्लेमेन। दाँतका दर्द—मैग-कार्ब। जीवित-जीवका अनुभव—क्रोकस। मकड़ेका जाल—बैराइट-कार्ब।

शक्ति ।—मूल अर्कसे १२ शततमिक क्रम (बाहरी प्रयोगके लिये मलहम)।

रैमनस कैथर्टिकस

(RHAMNUS CATHARTICUS)

दूसरा नाम ।—वफथार्न।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पके फलसे तैयार किया हुआ अरिष्ट या फलका रस।

उपयोगिता और आभास ।—बहुत ज्यादा पानीकी तरह दस्त। जी मिचलाना और उदर-शूल इसका निर्देशक लक्षण है। कब्जियतमें इसका मूल अर्क कई बून्दकी मात्रामें सेवन करनेसे दस्त हो जाता है।

पुरानी बवासीरमें भी इसका व्यवहार होता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—कैस्क, सियेनो, आइरिस, टिनिक्स।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

रैमनस फ्रैङ्गुला

(RHAMNUS FRANGULA)

दूसरा नाम ।—एल्डट-वाकथार्न ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—छालसे विचूर्ण, जड़की छालसे या पके फलसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—गाढ़ा हरे रङ्गका बहुत ज्यादा पतला या गोंदकी तरह मल, पाखाना होनेके पहले पेटमें गड़गड़ाहट, पाखाना होने बाद कमजोरी इसका निर्देशक लक्षण है ।

रैमनस कैथर्टिका और रैमनस फ्रैङ्गुला ये दोनों ही दवाएँ, पाकाशयके लक्षणमें सदृश हैं, परन्तु रैमनस फ्रैंगुलामें कैथर्टिकासे अधिक वमनका लक्षण दिखाई देता है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—रैमनस कथर्टिका, सियेनो, कैम्फोरा ।

शक्ति । –१x-३० ।

रियुम

(RHEUM)

दूसरा नाम ।- रूबर्ब ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखी जड़से विचूर्ण और अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—पेशाबमें तेज़ गन्ध ; खाँसनेमें बदबू ; कब्जियत ; बहरापन ; कष्टकर दन्तोद्गम ; अतिसार ; रक्तामशय ; सर-दर्द ; कामला ; कर्ण-पटहकी स्थूलता ; मसानेकी बीमारी ; स्तनका विकार ; मुँहमें श्लेष्मा इकट्ठा होना ; स्तनमें दर्द ; नाकमें दर्द ; स्तन पीनेवाले बच्चोंकी बीमारी ; अन्ननलीका सङ्कोचन ; आमवात ; लाला-स्राव ; बच्चोंका चिल्लाना ; नाकसे आवाज या नाक बोलना ; पाकाशयका विकार ; मुँहका खट्टा स्वाद ; जीभका सुन्न हो जाना ; बच्चोंके पेशाबमें कष्ट ; लाला मूत्र ।

उपयोगिता और आभास।—यह दवा बच्चोंके लिये खासकर दाँत निकलनेके समय विशेष उपयोगी है। इसके उपयोगी बच्चेमें सब जगह ही खट्टी गन्ध, उसके सारे शरीरमें खट्टी गन्ध, किसी तरहसे बच्चेको क्यों न धोया जाय उसके शरीरकी खट्टी गन्ध किसी तरह भी दूर नहीं होती। यह इसका एक अव्यर्थ सिद्धि-प्रद लक्षण हैं। आगे लिखे हुए कई लक्षण इसके प्रधान निर्णायक हैं—(१) बच्चा लगातार चिल्लाता है। बार-बार मल वेग और इसके साथ ही मल निकलना। (२) बच्चा रातभर रोता और छटपटाता है। (३) बच्चा बहुत अधीर, नाना प्रकारकी चीज़ोंके लिये ज़िद करता है और रोया करता है, पर अपना अत्यन्त प्रिय खिलौना भी पसन्द नहीं करता; देनेपर दूर फेंक देता है। (४) बच्चेके माथेसे हमेशा बहुत पसीना निकला करता है; नींदमें या जागनेकी अवस्थामें, स्थिर या अस्थिर—अवस्थामें उसके माथेके केश सब हमेशा पसीनेसे तर रहते हैं। इस पसीनेमें खट्टी गन्ध भी हो सकती है। (५) दाँत निकलनेके समय बच्चेको नाना प्रकारकी बीमारियाँ हो जाती हैं; बच्चा अस्थिर, क्रोधी स्वभाव और चिड़चिड़ा हो जाता है; मूर्त्ति म्लान—और शरीरमें खट्टी गन्ध। (६) नाना प्रकारकी चीजें खाना चाहता है, पर खा नहीं सकता। भोजनके पदार्थ देखते ही उसमें अरुचि पैदा हो जाती है। (७) अन्त्रशूल या पेटमें दर्द, हाथ या पैर खोलते ही बढ़ना; खड़े होनेपर बहुत बढ़ जाता है; पाखाना हो जानेपर भी नहीं घटता। मलकी गन्ध बहुत खट्टी। पतले दस्त,—शरीरका कोई भी अंश खोलनेपर और पाखाना होनेके पहले पेटमें दर्द; मल—माँड़की तरह, खट्टी गन्ध भरा, चूर और हरा; कभी-कभी कुचले हुए अण्डेकी तरह दिखाई देता है; पाखाना हो जाने बाद शरीरमें सिहरावन हो जाना और इसके बाद ही अन्त्रमण्डलीके सङ्कोचनके साथ कूथन; पहले कोमल, इसके बाद कड़ा पाखाना निकलता है। इसके साथ ही उदरमें छेदनेकी तरह शूल-वेदना।

लक्षणावली

मन।—बच्चा अधीर भावसे नाना प्रकारकी चीजें माँगता है और चिल्लाया करता है; बहुत प्रिय खिलौना भी पसन्द नहीं करता (साइना, स्टैफाई); लगातार मल वेगकी वजहसे बच्चा चिल्लाया करता है और खट्टा पाखाना होता है (कैल्के, हिप, मर्क, सल्फ)। बच्चा रातभर चिल्लाता और

छटपटाता है (सोराइन)। ज्यादा बोलना नहीं चाहता (अरम, ग्लोन, ऐ-फास, फास, प्लैट, पल्स, सल्फ, वेरेट, जिङ्कम)। दाँत निकलनेके समय बच्चा बहुत चिड़चिड़ा हो जाता है (कैमो)। नींद खुलनेपर बहुत देरतक अपनी बुद्धि संयत नहीं कर सकता चारों ओर जो कुछ हो रहा है, उसे हृदयङ्गम करनेमें भी देर लगती है (सिङ्को—निद्रित अवस्थामें जो सपने देखता है, नींद खुलनेपर, बहुत देरतक यह नहीं समझ सकता है, कि वह स्वप्न और असम्भव था—नेट्र-म्यूर)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, इसके साथ ही माथेमें भी भार (पल्स, टैबाक) और माथेमें ऐसा अनुभव होना मानो धक-धक कर रहा है, खड़े होनेपर बढ़ना (कास्टि, काक्यु, फास, पल्स)। जड़ता और बेहोशी पैदा करनेवाला सर-दर्द, दोनों आँखें फूली दिखाई देती है, माथेमें भार मालूम होता है और शरीरसे माथेमें उत्ताप चढ़ता है। माथेमें टपक और ऐसा मालूम होता है, कि यह टपक उदरसे माथेमें चली जाती है। झुकनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तिष्क हट गया (दीवारपर झुककर खड़े होनेपर ऐसा मालूम होता है, कि माथा हिल रहा हैं—साइक्लामिन)। क्या सोने क्या जागने अथवा बेचैन सभी अवस्थाओंमें माथेमें पसीना होता है और केश सब भींजि रहते हैं; पसीनेमें खट्टी गन्ध हो सकती है और नहीं भी हो सकती है (कैल्के, सैनिक्युला)।

आँख।—दृष्टि-क्षीण और आँखोंकी दृष्टि निम्न और उसमें बराबर दर्द हुआ करता है खासकर किसी चीजकी ओर टकटकी लगाकर देखनेपर (नेट्र-म्यूर)। आँख इस तरह करकराती है, मानो धूलके कण गिर गये हैं (ऐम्ब्रो)। आँखमें दर्द पैदा करनेवाली टपक (बेल, आर्स, चेलिडो)। अश्रु-स्राव,—आँखें हमेशा पानीसे भरी दिखाई देती हैं; वृद्धि हवा लगनेपर (कैन्थ, ग्रैफ, नेट्र-म्यूर, रस, साइलि, सल्फ)।

कान।—कानमें ऐसा दबाव मालूम होता है, मानो अंगुली घुसा दी गयी हैं। लिखनेके समय रह-रहकर कानमें टपक; बढ़ना—झुकनेपर। एकाएक कानमें सनसनाहट हो उठती है—घूंट लेनेपर आराम हो जाता है, मानो कर्णपटह ढीला हो गया है, इसके साथ ही श्रवण-शक्तिका घटना; कान और कानके नीचेकी गलेकी पेशीमें भुट-भाट आवाज़ होती है।

नाक और मुखमण्डल।—नासामूलमें बुद्धि लोप करनेवाली खींचनकी तरह दर्द, यह दर्द नाकके अगले भागतक आकर वहाँ सुरसुरी पैदा कर देता है। बच्चेका चेहरा म्लान और उसका एक गाल लाल और दूसरा गाल रक्तशून्य या म्लान मालूम होता है (कैमो, इपिक ; एक गाल मलिन और गर्म तथा दूसरा गाल लाल और ठण्डा—मस्कस ; दाँत निकलनेके समय अन्त्रमण्डलके प्रदाहमें एक गाल लाल और दूसरा गाल मलिन—ऐ-ऐसिट ; ज्वरकी उत्तापावस्थामें—पल्स ; मस्तिष्कावरण-प्रदाह—सल्फ)। ललाटकी त्वचा सिकुड़ी और भौंहें चढ़ी हुईं, विशेषकर नाक और मुँहके छेदके चारों ओर ठण्डा पसीना हुआ करता है (नाकके चारों ओर पसीना निकलना—सिङ्कोना)।

मुख-विवर आदि।—कष्टजनक दाँत निकलना ; दाँत निकलनेके समय बच्चोंको नाना प्रकारकी बीमारियाँ हो जाती हैं ; वह बेचैन हो जाता है, चिड़चिड़ा हो जाता है, उसका चेहरा सफेद हो जाता है और शरीरमें खट्टी गन्ध पैदा हो जाती है। कीड़े लगे दाँतकी जड़ोंमें ऐसा दर्द होता है, मानो सलाई बिध रही है। दाँतके दर्दकी बीमारीमें दाँतमें ठण्डक मालूम होना। मुँहमें बहुत ज्यादा मिचली पैदा करनेवाली लार इकट्ठा हो जाती है ; खाये हुए पदार्थ, यहाँतक कि मीठी चीजतक तीती मालूम होती है। नींद खुलनेपर मुँहमें बदबू (ग्रैटियोला); जीभ सुन्न, स्वादके ज्ञानसे रहित। नींद खुलनेके बाद देखा जाता है, कि मुख-विवर बदबूदार श्लेष्मासे लिपटा हुआ है (नींदके समय—मिडोराइन)। जीभ फूली, बोली साफ नहीं निकलती ; अन्त्रशूल या पतले दस्त रोगमें लारका स्राव होना।

पाकस्थली।—कितनी ही चीजें मांगता है, पर खा नहीं सकता ; खानेके पदार्थ देखते ही या खाते-न-खाते उसे घृणा पैदा हो जाती है। भोजनके बाद पतला पाखाना होता है ; अन्त्रशूल खड़े होनेपर बढ़ जाता है (बेल)। मिचली, ऐसा अनुभव होना, मानो पाकाशय या उदरसे पैदा हो रही है। इसके साथ ही पेटमें दर्द, मानो न जाने कितना खा लिया है—इतना भार मालूम होता है। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें टपक (सिना, सिङ्कोना, फेरम, पल्सेटिला)।

अन्त्राशय।—उदरमें अध्मान वायु पैदा होकर वक्षमें चढ़ता है (कैमो, फास)। उदरमें भयानक यन्त्रणा और छेदनेकी तरह दर्द। रोगीको

बाध्य होकर टेढ़े होकर सोना पड़ता है (कोलो, स्टै फाई, कैमो) ; खड़े होनेपर या भोजनके बाद बहुत बढ़ जाता है। उदरमें आवाज और छेदनेकी तरह दर्द, मानो आध्मान वायुकी वजहसे ऐसा हो रहा है। उदर फूल जाता है और कड़ा हो जाता है। नाभि-प्रदेशमें ऐसा अनुभव होता है, मानो एक गोलेकी तरह पदार्थ है। अन्लशूल,—इसके साथ ही बहुत ही खट्टा पाखाना होना, हाथ या पैर खोलते ही या खड़े होनेपर बढ़ जाता है ; पाखाना होनेपर भी नहीं घटता।

मलान्त्र और मल।—पतले दस्त—मल भूरा और लसदार। पतले दहीकी तरह, जमा हुआ दूध मिला, खट्टी गन्ध, कुछ सड़ा हुआ, कुछ देर रहने और हवा लगनेपर हरा हो जाता है (आर्जेण्ट-नाई) ; मलद्वार लाल हो जाता है ; संध्याके समय और रातमें बढ़ना—सवेरे बोखारके साथ, शरीर हिलाते ही या खड़े होनेपर, भोजनके बाद, दाँत निकलनेके समय, सौरी घरमें रहनेके समय, जलवायुके परिवर्त्तनसे और गर्मीकी ऋतुमें पाखाना होनेके पहले वृथा ही पेशाबका वेग और छेदनेकी तरह यन्त्रणा-जनक अन्त्रशूल। पाखाना होनेके समय जाड़ा मालूम होना, उदरमें काटने और जकड़ जानेकी तरह दर्द ; चेहरा उतरा सफेद मालूम होता है, मुँहमें लार भर आया करती है, दाँत निकलता हुआ बच्चा चिल्लाता है और दोनों पैर मोड़ लेता है और शरीरको कड़ा कर लेता है। पाखाना हो जानेपर,—पेटमें दर्द और व्यर्थकी कूथन,—शरीर हिलाते ही बढ़ जाती है। प्रादाहिक वात रोग उदरामय। पुराना उदरामय,—मल फेन भरा और खट्टी गन्ध लिये ; जीभ खूनसे तर, प्यास और रुचिका न रहना। आमातिसार,—खून मिला पाखाना होनेके बाद कूथन, भूरा, ढीला, लसदार और खट्टा मल। (ऐलोपैथिक चिकित्साके समय यदि बहुत अधिक मात्रामें मैग्नेशियाका प्रयोग हुआ हो और यदि खट्टी गन्धवाला पाखाना हो तो उक्त मैग्नेशियाके साथ रूबर्ब रहे या न रहे होमियोपैथिक रियूमका प्रयोग करना चाहिये—ऐच, एन, गार्नसी)। प्रसव होनेके बाद, पहले कई दिनोंमें यदि पतला पाखाना होने लगे—अन्लशूल, कूथन, नाभि-प्रदेशमें दर्द, बहुत सुस्ती, बेचैनी और मृत्यु-भय रहे, मल पतला और बदबूदार हो तो इसका प्रयोग करना चाहिये।

पेशाब।—पेशाब लाल या कुछ हरी आभा लिये पीला। मूत्रनालीसे लगातार खूनका स्राव हुआ करता है। मूत्राशयकी सङ्कोचन-शक्ति घट जानेकी

वजहसे बिना वेग दिये पेशाब नहीं होता, मूत्रनालीमें जलन मालूम होती है (बार्बे, कैम्फि)। बहुत अधिक वीर्यस्खलन।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—खड़े होनेकी अवस्थामें जरायुका नीचेकी ओर खिंचना (चलनेके समय—सिङ्कोना, लिलियम-टाइग्रिनम)। बायें डिम्बाशय-प्रदेशमें खींचनकी तरह यन्त्रणा और जलन (लैक-कैन, लैके), काटनेकी तरह तेज़ दर्दके साथ उदरी रोगमें। गर्भ-स्रावके बाद पेशाबकी नाना प्रकारकी बीमारियाँ। स्तनका दूध पीला और तीता। प्रसवके बाद पतला पाखाना होना (सोराइनम, सिकेलि, स्टैनम, एकिनेशिया, हायो)। प्रसूताका स्तनका दूध पीली आभा लिये और कड़वा, बच्चा स्तन नहीं पीना चाहता।

श्वास-यन्त्र।—खाँसी—सन्ध्याके समय सूखी; श्लेष्मामय बलगम निकलता है। नींदके समय नाक बोलती है (इग्ने, ओपि, पल्स)। गहरे श्वास-प्रश्वासके समय मानो वक्षपर एक टुकड़ा पत्थर दबा हुआ है, ऐसी तकलीफ़ होती है। वक्षमें छुरी मारनेकी तरह दर्द (ऐकोन, आइबिरिस)। वक्षके दाहिने और बाएँ पार्श्वमें चूं-चूं शब्द सुन पड़ता है। वक्षकी पेशियोंका स्पन्दन।

प्रत्यङ्ग आदि।—नितम्ब और उरुशिखर या जघन-देशकी अकड़नकी वजहसे रोगी सीधा होकर चल नहीं सकता (बैठे-बैठे उठनेके समय बहुत तकलीफ़ मालूम होती है—कास्टिकम)। नीचे, पीठकी कशेरुकामें ऐसी तकलीफ़ होती है, मानो छुरीसे काटा जा रहा है (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, कैलि-कार्ब)। पाखाना होनेपर बहुत बढ़ जाता है। बाँहमें ऐसा दर्द होता है, मानो शूल बेधा जा रहा है (स्टिक्टा, पल्सो)। बाँह, हाथ और हाथकी अंगुलीका फड़कना (ऐसिड-टार्ट, कास्टि, चेलिडो, काफिया, मर्क)। कोहनीकी सन्धि चूँ-चूँ कर रही है ऐसा अनुभव होना। हाथकी शिराएँ सब फूल उठती है (सिङ्कोना, हैमा, लोरो, लिडम, ओपि, पल्स)। तलहत्थीमें पसीना निकलना (वातव्याधि रोगमें—कैमो ; गरम पसीना निकलना—इग्ने)। उरुकी पेशियोंका स्पन्दन (कैलि-कार्ब, नेट्र-मूर)। ऐसा अनुभव होना कि दोनों उरु बहुत ही क्लान्त हो पड़े हैं (गुयायेक)। जानुके गासेसे एँड़ीके नीचेतक चुनचुनी होती है। हाथ-पैरोंमें झुनझुनी आ जाती है, बाँह और पैर दबाकर सोनेपर या एक प्रत्यङ्गपर दूसरा प्रत्यङ्ग रखनेपर नीचेके अङ्गमें झुनझुनी भर

जाती है। आराम मिलनेकी आशासे नाना प्रकारकी अद्भुत भावभङ्गी बना कर सोता है (प्लम्ब) और रातमें छटपटाया करता है।

सार्वाङ्गिक।—बहुत सुस्ती और कमजोरी ; उदरामय होनेपर बच्चोंकी सुस्तीका बढ़ जाना। समूचा शरीर भारी और क्षीण मालूम होता है, मानो गहरी नींदमें सोकर उठकर आ रहा है। बच्चा रक्त-हीन, उजला, लगातार सबसे झगड़ा करता है और निद्रित अवस्थामें थुत्-थुत् किया करता है, उसके हाथकी अंगुलियाँ सब रह-रहकर फड़क उठती हैं। रातमें अन्त्रशूल या पेटके दर्दकी वजहसे बच्चा बराबर रोया करता है (जैलापा, स्टैफि, कैमो, सोरिनम); दिनभर बच्चा बड़े आनन्दसे खेलता है, पर रातमें बराबर छटपटाया करता है और रोया करता है—लाइकोपोड)। इसके लक्षण अधिकांश बाएँ पार्श्वमें पैदा होते हैं; रोगीका दर्द आदि नीचेकी ओर या दाहिनेसे बाईं ओर फैल जाता है। नयी वात-व्याधि एक सन्धिसे दूसरी सन्धिमें, दाहिने कन्धेसे उरु-शिखरमें और बाएँ उरु-शिखरसे दाहिने उरु-शिखरमें चली जाती है। मोच खाने या सन्धि खिसक जानेपर कलाई और जानु अवश हो जाते हैं। शरीरके ऊपरी अंशमें पसीना अधिक होता है।

निद्रा।—सोनेके समय और निद्रित अवस्थामें माथेके ऊपर हाथ रख लेता है। निद्रित अवस्थामें उत्ताप पैदा हो जाता है, चेहरा और पलकोंकी पेशियाँ सब फड़का करती हैं, शरीर मानो छिदता है और हाथ-पैर हिला करते हैं तथा माथा पीछेकी ओर झूल जाता है। बच्चा रातभर रोता और छटपटाता है (सोरिनम), प्रलाप बकता है और डरा हुआ भाव प्रकट करता है (फास, आर्टिमिसिया-वाल, ब्राई, इग्ने, साइलि)। नींद खुलनेपर सरमें दर्द (काफिया, ग्लोन, पैलेड) और मुँहसे बदबू निकलती है (नींदके समय—ओपियम)।

त्वचा।—बच्चेके शरीरमें बहुत अधिक खट्टी गन्ध, चाहे किसी तरह बच्चेको क्यों न धोया जाये, किसी तरह भी शरीरकी खट्टी गन्ध नहीं जाती (हिप, मैग-कार्ब ; कितना भी और किसी तरह भी क्यों न धोया जाये शरीरकी दुर्गन्ध किसी तरह दूर नहीं होती—सोरिनम)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—सारे शरीरमें उत्ताप, विशेषकर पैर और चरणोंमें, चेहरा ठण्डा, प्यास नहीं रहती। ज्वर-रहित रोगमें सामान्य पसीना निकलना। ललाट और मस्तकमें बहुत पसीना निकलना, बच्चा जागते

या सोते, स्थिर या अस्थिर, किसी भी अवस्थामें क्यों न रहे, उसके माथेके केश हमेशा तर ही रहते हैं। नाक और मुँहके छेदके चारों ओर पसीना निकलता है। कपड़े आदिमें पसीना लगनेपर पीला दाग पड़ता है (कार्बो-ऐन, ग्रैफ, मर्क, फेरम, इपिक, लैके, मैग-कार्ब)।

वृद्धि।—रातमें, सवेरे नींद खुलनेपर, शरीरका कोई अंश खोलनेपर, सर्दी लगनेपर, गर्मी के दिनोंमें गर्म हवा लगनेपर, शरीर हिलाने और चलनेपर, खड़े होनेपर, भोजनके बाद, पाखाना होनेके पहले, समय और बाद।

घटना।—शरीर ढकनेपर, शरीर सिकोड़कर सोनेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—कैम्फोरा, कैन्थ, कैमो, कोलोसिन्थ, मैग-कार्ब, मर्क, नक्स, पल्स।

तुलनीय।—मुँहमें बदबू—आर्निका; खट्टा मल—हिपर, मैग-कार्ब, कैल्केरिया; माथेमें पसीना—कैल्के, साइलि; दाँत निकलनेमें कष्ट—क्रियो, कैमो इत्यादि। अधैर्य—सिना; बच्चोंके लिये रोना और बेचैनी—सोरिनम।

अनुकूल सम्बन्ध।—इपिकाकुआन्हा।

बादमें प्रयोग करने योग्य।—बेल, सल्फ, मर्क, नक्स, पल्स, रस, मैग-कार्ब।

सदृश।—आर्स, बेल, कैमो, कोलो, डाल्का, नक्स, पोडो, पल्स, रस, सल्फ, हिपर, जैलापा, मैग-कार्ब, कैल्के।

शक्ति।—३री दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

रोडियम आक्सिडेटम नाइट्रिकम
(RHODIUM OXYDATUM NITRICUM)

दूसरा नाम।—नाइट्रट आव आक्साइड आव सोडियम।

उपयोगिता और आभास।—मलद्वारमें जलन और खुजली, बवासीर, कब्जियत, सर-दर्द, कर्ण-शूल और रति-शक्ति ह्रासके लक्षणमें लाभदायक है।

शक्ति।—२x—२००।

रोडोडेण्ड्रन

(RHODODENDRON)

दूसरा नाम।—रोडोडेण्ड्रन क्रिसन्थियम्।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फूल-पत्तोंके साथ सूखे पल्लवसे अर्क बनता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः— रजोबन्ध या ऋतुस्वल्पता; क्षीण दृष्टि; अस्थिमें दर्द; बाघी; ताण्डव; सर्दी; प्रलाप; अतिसार; गलनलीकी उपझिल्लीके बादका पक्षाघात; कर्ण-शूल; नाकसे खून गिरना; आँखकी बीमारी; ज्वर; आध्मान-वायुका रुकना; मसूढ़े की खुजली; कटिवात; स्मरण-शक्तिकी क्षीणता; स्नायुशूल; डिम्बाधारका अर्बुद; प्लीहामें दर्द; मोच खाना; ग्रीवा-स्तम्भ या अकड़न; अण्डकोषकी बीमारी; कोरण्ड; कर्णपटहका प्रदाह; दाँतका दर्द; अपत्यपथका अर्बुद; कलाईमें दर्द।

उपयोगिता और आभास।—अन्धड़-पानीके दिनोंमें तकलीफ़का बढ़ना रोडोडेण्ड्रनका सबसे प्रधान सिद्धिप्रद लक्षण है। जिन व्यक्तियोंको स्नायुमण्डली पानी बरसातमें उत्तेजित हो पड़ती है और जो बादलकी गरज या बिजली कड़कनेका शब्द सुनकर बहुत डरते और घबड़ा उठते हैं और अन्धड़-पानीका लक्षण होते ही तबियत खराब मालूम होती हैं, उन रोगियोंके लिये यह दवा विशेष उपयोगी है। इसके अलावा नीचे लिखे कई लक्षण भी इसके निर्णायक और प्रकृतिगत हैं:—(१) दाँतका दर्द—यह प्रत्येक बसन्त और हेमन्त ऋतुमें पैदा हो जाता है; वृद्धि—जलवायुके परिवर्त्तनसे, पानी-बिजलीके दिनोंमें और जोरकी हवा लगनेपर। (२) नयी प्रादाहिक सन्धि-स्फीति—यह सूजन और प्रदाह एक सन्धिसे दूसरीमें चला जाता है। रातमें तकलीफ़ प्रचण्ड आकार धारण करती है; वृद्धि—स्थिर होकर रहनेपर और अन्धड़-पानीके दिनोंमें। (३) सभी अङ्गोंमें वातकी वजहसे खींचने और उखाड़ने जैसा दर्द; वृद्धि—विश्रामके समय और जोरोंके अन्धड़-पानीके दिनमें। (४) पैरके ऊपर पैर रखे बिना सो नहीं सकता। (५) छोटी सन्धियोंका वात—पैरके अंगूठेमें सूत्रमय तन्तु पैदा हो जाता है और कितनी ही बार तो

उसे देखकर प्याजका भ्रम होता है। (६) प्रमेह-स्राव रुकनेपर या वातकी वजहसे अण्डकोष कड़ा हो जाता है और फूल उठता है। एकशिरा,—अण्डकोषमें दर्द अधिक रहनेकी वजहसे कभी-कभी श्वास रुकनेका उपक्रम हो जाता है। (७) ऊँची आवाज कानमें बहुत देरतक प्रतिध्वनित होती रहती है। (८) स्मृति-लोप,—लिखते-लिखते वाक्य छोड़ देता है; क्या सोच रहा था, वह एकाएक भूल जाता है; बात करता-करता, कुछ देरतक सोचे बिना याद नहीं कर सकता कि क्या सोच रहा था। (९) मस्तिष्ककी जड़ता,—ऐसा मालूम होता है, मानो अंधेरेसे ढँका है। (१०) सोनेके समय सरमें चक्कर आना, उठकर टहलनेपर घटता है। (११) कर्ण-पटह आदिका प्रवल प्रदाह। (१२) शुक्र या शनिवारको रोग आरम्भ होकर सोम या मङ्गलवारतक रहता है। (१३) असमयमें ऋतु हो जाता है और बहुत ज्यादा स्राव हुआ करता है; बंद होनेके कुछ दिन बाद ही फिर आरम्भ हो जाता है।

लक्षणावली

मन।—लिखता-लिखता दो-चार शब्द या समूचा वाक्य ही छूट जाता है (ऐसिड-बेन, कैमो, मिलिलोट)। सोचता-सोचता यह भूल जाता है, कि क्या सोच रहा था (कैल्के, लाइकोपोड, नक्स-मस, ऐ-नाई)। किसी विषयका आग्रह नहीं रहता; किसी तरहका शारीरिक परिश्रम नहीं किया चाहता; बोलता-बोलता भूल जाता है कि क्या कहता था (आर्जेण्ट-नाई, कैनाब-इन) और बहुत देरतक सोचे बिना उसे याद नहीं कर सकता (प्लम्बम)।

मस्तक।—ऐसा अनुभव होता है कि जोरसे सर चक्कर खा रहा है। मस्तिष्ककी जड़ता, ऐसा अनुभव होना मानो मस्तिष्क तिमिराच्छन्न हो रहा है (पेट्रोल; ऐसा मालूम होना मानो बादलमें ढँका है—ऐक्टिया, आर्जेण्टम-नाई)। सवेरे शय्यापर सोनेके समय ललाट और कनपटीमें दर्द; वृद्धि—शराब पीनेपर, और वर्षाके दिनोंमें; घटना—शय्या त्यागकर चलनेपर। सवेरे सोकर उठनेपर, भ्रम और औंघाई मालूम होती है; सरमें चक्कर आना—शय्यामें सोनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो माथा पीछेकी ओर घूम जायगा; घटना—चलनेपर। माथेकी त्वचा दर्द और जखम भरी मालूम

होती है; स्पर्श सहन नहीं होता। खोपड़ीकी (माथेकी खोल) हड्डियाँ सब ओर अस्थिवेष्टमें (रास) भयानक खिंचाव और फाड़नेकी तरह दर्द अनुभव होता है। वृद्धि—स्थिर होकर रहनेपर (रास); सवेरे (ऐगार, नक्स); बिजली चमकनेके साथ वृष्टि और अन्धड़के दिन (रास)। घटना—गर्म कपड़ेसे माथा ढँकनेपर (मैग-फास, चायना, इग्ने, रास, साइलिसिया); सूखे उत्तापके प्रयोगसे और व्यायामके बाद (रास, ऐमिड, नक्स-मस, स्पाइजि)। खोपड़ी कुटकुटाती है और खुजलाती है, विशेषकर सन्ध्याके समय।

आँख।—लिखने या पढ़नेके समय अस्पष्ट दृष्टि (ऐलो, बैराई, नेल्स, हिप, सल्फ)। आँखके भीतरसे बाहरकी ओर बेधनेकी तरह बेहद दर्द, अन्धड़-पानीके समय बढ़ना, कभी-कभी आँखमें सूखापन और जलन हुआ करती है; वृद्धि—चमकीली दिनकी रोशनीमें और मनोयोग-पूर्वक किसी चीज़की ओर देखते रहनेपर। पलकोंका आक्षेपिक सङ्कोचन। एक आँखकी पुतली फैली या दूसरी आँखकी संकुचित रहा करती है (कैडमियम-सल्फ, फाइजस)।

कान।—कर्णशूल; साधारणतः दाहिने कानमें बीमारी होती है। चिलक मारनेकी तरह प्रचण्ड दर्द। ऐसा अनुभव होना मानो कानमें एक कीड़ा रेंग रहा है (कैल्के, गुयारिया, मिडोरिन, ऐ-पाई, पल्स, रियुटा; कानमें झिन-झिन शब्द, मानो पानी प्रवाहित हो रहा है; घूंट लेनेपर बढ़ जाता है। ऊँची आवाज कानमें बहुत देरतक प्रतिध्वनित हुआ करती है (कास्टि, फास, ग्रैफ, लैक, ऐ-नाई, ऐ-फास, सार्सा)।

नाक।—घ्राण-शक्तिका घटना। बाईं नाकसे खूनका स्राव (हाइड्रैस्ट)। रंध्रके भीतर जखमकी तरह स्पर्श सहन नहीं होता और उसमें पीले रङ्गकी पपड़ी जमती है। सवेरे सोकर उठनेपर बहुत छींक आया करती हैं और चेहरा गर्म अनुभव होता है। प्रत्यङ्गों या छोटी सन्धियोंका वातका लक्षण और नाकसे बहुत ज्यादा पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव। एक-न-एक रंध्र प्रायः बन्द ही रहता है—वायु लगनेपर यह भाव बहुत घट जाता है। नया पानीकी तरह नाकसे स्राव या सर्दी, बायाँ या कभी-कभी दाहिना नाकका छेद रुकना और सूँघने या स्वाद लेनेकी शक्ति लोप हो जाती है (पल्स)।

मुखमण्डल।—चेहरेपर ठण्डक मालूम होना। चेहरेका स्नायु-शूल, भयानक फटने और चिलक मारनेकी तरह दर्द। तेज़ हवा लगनेपर और

सर्दी-गर्मीके हेर-फेरसे बढ़ना और भोजनके समय और गर्म प्रयोगसे घटा करता है; कनपटीसे चिबुकतक फैल जाया करता है। दोनों ओंठ सूखे और जलन-भरे। निचले ओंठके भीतर रस-भरे दाने (एलैन्थस, कैमो, नेट्र-सल्फ, पैरिस), भोजनके समय जखम-भरा मालूम होता है।

मुख-विवर।—दाँतमें दर्द,—प्रति वर्ष वसन्त या हेमन्त ऋतुमें पैदा होता है। सर्दकी अपेक्षा गर्म प्रयोगसे अधिक घटता है; भोजनके समय और भोजनके एक या दो घण्टेतक दर्द बिलकुल ही नहीं रहता; कर्णशूल मिला दन्तशूल; वृद्धि—जलवायुके परिवर्त्तनसे, बिजली, वर्षाके समय और जोरसे बहती हुई हवा लगनेपर। निचले और ऊपरी दाँतका स्नायुशूल,—दाँतोंकी जड़ ढीली पड़ जाती है; पपड़ी उजड़ती है, मसूढ़े फूले, दर्द सर्दी-गर्मीके परिवर्त्तनसे बढ़ता है और गर्म प्रयोगसे घटता है। कण्ठ सूखा और जीभके नीचे उत्तेजना पैदा करनेवाले रस-भरे दाने निकलना और मुँहमें बहुत ज्यादा लार सञ्चय होना। गलेमें श्लेष्मा लिपटा हुआ मालूम होता है। कण्ठनलीमें सङ्कोचन और जलन।

पाकाशय और अन्त्राशय। दो-चार ग्रास खानेपर ही भूख बन्द हो जाती है, पर जो कुछ भी खा लेता है, उससे पीछे बेचैनी मालूम होती है। प्यास प्रायः नहीं रहती; डकारके साथ तीता या कड़वा पानी गलेमें चढ़ आता है। मिचली मालूम होती है, मुँहमें पानी भर आता है और पाकस्थलीमें दबाव मालूम होता है। वायु निकलनेपर घटना। जलीय पदार्थ, विशेषकर ठण्डा पानी आदि पीनेपर कै हो जाती है; कै हुआ पदार्थ हरा और तीता रहता है। रातमें ठण्डा पानी आदि पीनेपर दबाव मालूम होता है। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें दबाव और मानो जकड़ गया है, ऐसा मालूम होना, इसके साथ ही श्वासमें कष्ट। छोटी पसलीके नीचे कभी-कभी ऐसा मालूम होता है और दबाव तथा खींचनकी तरह दर्द और श्वास-प्रश्वासमें व्याघात। उदरमें ऐसी गड़बड़ी मालूम होना, मानो आध्मान-वायु भर गया है, विशेषकर बायें कोखके भीतर। तेजीसे चलनेके समय प्लीहामें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है। उदरके ऊपरी अंशमें सूजनकी वजहसे सन्ध्याके समय और सवेरे श्वासकृच्छ्रता अनुभूत होती है। डकारमें हड़हड़ शब्द होता है, डकार आया करती है और बदबूदार आध्मान-वायु निकलता है। नाभि-प्रदेशमें शूलका दर्द और भोजनके बाद भार मालूम होना।

मलान्त्र और मल ।—मल रुखड़ा और देरसे तथा बहुत वेग देनेपर निकलता है (हिप, नेट्रम-कार्ब, सिपि)। पतले दस्त—बिना दर्दका, अजीर्ण मल, भोजनके बाद, फल खानेपर और ठण्डी जलीय वायु लगनेपर ; सवेरे बहुत ज्यादा परिमाणमें वायु निकलता हैं या दोनों पैरोंमें बहुत दर्द हुआ करता है। गर्मीके दिनोंका अतिसार—अन्धड़-पानीके दिनोंमें बढ़ जाता है या दुबारा पैदा हो जाता है। मलान्त्रसे जननेन्द्रियतक खींचन मालूम होती है। मलद्वार धकधक किया करता है। शय्यासे उठते ही पाखाना लग आता है (लाई, सल्फ)। मलद्वारमें ऐसी सुरसुरी मालूम होती है, मानो कीड़ा रेंग रहा है (टियुक्रि, नेट्र-सल्फ, सिपा, मर्क ; रातमें शय्याके उत्तापसे शरीर गर्म होनेपर—नेट्र-फास, फेरम, इग्ने, कैल्के)।

पेशाब ।—मूत्राशय-प्रदेशमें ऐसा दर्द मानो चिपक गया है और बार-बार पेशाबका वेग। मूत्रनलीमें दर्द, मानो उसके नीचेवाली झिल्लीमें जखम उत्पन्न हो गया है (प्रूनस)। बदबूदार पेशाबका अधिक सञ्चय होना। पेशाब हरी आभा लिये (कैम्फो, आर्स, चेलिडो, चिमैफि, कैलि-कार्ब, ऐ-नाई, रियुम, रियुटा, वेरेट्रम)।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—काम-प्रवृत्तिका घटना ; रमणकी इच्छा न होना। कामोद्दीपक सपने और वीर्यस्खलनके बाद बहुत देरतक स्थायी लिङ्गोच्छ्वास (वीर्यस्खलनकी वजहसे सुख मालूम होने बाद लिङ्गका कड़ापन—स्टैनम), अण्डकोषमें, विशेषकर कोषवृन्त छूनेपर बहुत दर्द मालूम होता है (अरम, फाइटो, पल्स); अण्डकोषसे तलपेटमें (आयोड) और उरुतक दर्द हुआ करता है ; अण्डकोष ऊपरकी ओर खिंचा (बेल) फूला और बहुत दर्द-भरा। अण्डकोष फूला और कड़ा—प्रमेह-स्राव रुकनेके बाद (कैलि-म्यूर, क्लिमेट ; दूसरे कारणसे—कोना, सिलि, स्पञ्जिया, बैराइ-म्यूर, कैल्के-फ्लू, वायोला-ट्राई) या वात संस्पर्शकी वजहसे। एकशिरा—कोष मानो दबकर दूर हो रहा है, ऐसा अनुभव होना (अरम, कैसो)। कुरण्ड या कोषमें जलसञ्चय (साइलि, ऐमोनियम, ग्रैफ, आयोड, पल्स)। जननेन्द्रिय और उरुके बीचके अंशमें अत्यंत या क्षय हुई त्वचाकी तरह अनुभूति। दाहिने अण्डकोष और कोष-रज्जुमें बहुत खींचन अनुभव होना ; हिलानेपर घटना। सर्दी लग जानेकी वजहसे बीच-बीचमें पैदा होनेवाला अण्डकोष-प्रदाह (स्पञ्जिया, अस्टिलेगो)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—आर्त्तव—असमय या अपरिपक्व समयमें पैदा हो जाता है। स्राव बहुत हुआ करता है; ऋतुके समय ज्वर और सर-दर्द; ऋतु-रोध, डिम्बाधारमें दर्द, जलवायुके परिवर्त्तनसे बढ़ जाता है। योनिमें मांसकोष पैदा हो जाता है (लाई, पल्स, साइलि)। प्रसवके बाद जरायु-प्रदेशमें जलन और कभी-कभी दोनों पैरोंमें दर्द अनुभव होता है और हाथकी अंगुलियाँ सब मुड़ जाती हैं।

श्वासयन्त्र ।—वक्षमें अप्रसारणीयता या कसावटके भावकी वजहसे श्वासकृच्छ्रता (लाई, स्पाइजि, स्टैफाई)। खाँसी—सूखी, सुस्त करनेवाली, सवेरे और सन्ध्याके समय पैदा हो जाती है; खाँसनेके समय छातीमें दबाव और गलेमें रुखड़ापन अनुभव होता है और खाँसते-खाँसते पेशाब हो जाता है (कास्टि, स्क्वियुला, वेरेट)। पीछेकी ओर या दाहिनी ओरसे देह झुकानेपर बाएँ वक्षको भेदकर पीठतक छुरी वेधनेकी तरह दर्द। हृत्पिण्ड-प्रदेशमें ऐसा दर्द मानो छेद किया जा रहा है। हृत्पिण्डमें तेज़ धड़कन होती है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—गर्दन अकड़ी और दाँत तथा मसूढ़े जख्म और दर्दसे भरे; दर्द चारों ओर अर्थात् शरीरके एक स्थानसे दूसरी जगह चला जाता है। पीठसे उदरोर्द्ध-प्रदेशतक फैलनेवाला वेधनेकी तरह दर्द। पीठके नीचे दर्द—बैठनेपर दर्द बढ़ जाया करता है; तर हवामें बहुत बढ़ जाता है। दोनों बाँह ऐसे मालूम होते हैं, मानो जकड़ गये हैं। वृद्धि—तर हवामें। ऐसा अनुभव होना मानो बाँहमें रक्त-सञ्चालन क्रिया रुक गयी है—हाथ गर्म मालूम होना। नितम्ब-प्रदेशमें दर्द—झुकनेपर दर्द असह्य हो जाता है। बैठनेके समय कमरमें दर्द होता है, मानो बहुत देरतक झुककर बैठे-बैठे काम कर रहा था या मानो बहुत देरतक पीठ दबाकर सोया था। जानुकी सफेद सूजन (रास, ऐसिट-क्रूड, कैल्के-आयोड, कैलि-आयोड, लाई, ओलियम-जैकोर, फास) और उसमें फाड़नेकी तरह दर्द; वृद्धि—स्थिर होकर रहनेपर और रातमें। दोनों पैरके निचले अंशमें सर्दी अनुभव होती है और त्वचा सिकुड़ जाती है। पैरका निचला अंश और चरणमें शोथ हो जानेकी तरह सूजन; पैरका निचला अंश और चरणमें ऐसा अनुभव होना, मानो झुनझुनी हो गयी है। कमर और पैरमें भार और कमजोरी मालूम होना और उसपर चींटी चलनेकी तरह सुरसुरी होना; वृद्धि—स्थिर होकर रहने तथा बदली-पानीके दिनोंमें, सन्धियोंमें इस तरहका दर्द और सूजन और लाली रहती है, मानो

मोच आ गयी है और रोगवाली सन्धिमें वातकी गुटियाँ पैदा हो जाती हैं। अस्थिवेष्टमें खींचने और फाड़नेकी तरह यंत्रणा; वृद्धि—रातमें, अंधड़ पानीके दिनोंमें और स्थिर होकर बैठनेपर; उपशम—शरीर हिलानेपर; दोनों बाहुओंका सामनेवाला अंश और दोनों पैरोंके निचले अंशमें बहुत दर्द होता है। हाथ-पैरमें भ्रमणशील और फाड़नेकी तरह दर्द। विश्रामके समय ऐसे अवश, सुन्न और चीण मालूम होते हैं, मानो पक्षाघात हो गया है। थोड़ा-सा भी परिश्रम करनेके बाद रोगी क्लांत और दुर्बल हो जाता है। अस्थि और त्वचाके छोटे-छोटे अंशोंमें दर्द मालूम होता है और यह दर्द एक जगहसे दूसरी जगह चला जाता है। जलवायुकी, बहुत ठण्डी अवस्थामें भी रोगीके हाथ बहुत गर्म मालूम होते हैं; गर्म घरमें रहनेपर भी दोनों पैर बहुत ठण्डे मालूम होते हैं; शय्याकी गरमीसे गर्म नहीं होते और इसीलिये नींदमें व्याघात होता है। दोनों पैर बहुत भारी मालूम होते हैं, मानो इसमें कोई भारी चीज़ अड़ी हुई है। शरीरकी किसी विशेष त्वचापर विसर्प हो जाता है और उसमें जलन और फाड़नेकी तरह दर्द अनुभव होता है। रोगी जिस कन्धेको दबाकर सोता है, उसी कन्धेमें वातकी वजहसे दर्द।

शीत, उत्ताप और पसीना।—सवेरे शय्यापर सोये रहनेकी अवस्थामें और दिनमें शीत मालूम होता है—यदि रोगीके शरीरमें ठण्डी हवा लगे। जाड़ा और शरीरमें उत्ताप पर्यायक्रमसे अनुभव होता है। सन्ध्याके समय किसी तरह भी पैरकी सर्दी दूर नहीं होती; शय्यापर सोनेके बहुत देर बादतक दोनों पैर ठण्डे रहते हैं। सन्ध्याके समय दोनों पैर ठण्डे रहनेके समय उत्तापका आविर्भाव; चेहरेपर जलन करनेवाला उत्ताप और ज्वर भाव मालूम होता है। दोनों हाथ छूनेपर ठण्डे मालूम होते हैं, पर रोगीको उनमें गर्मी अनुभव होती है। सुस्त कर देनेवाला बहुत अधिक पसीना होता है, विशेषकर निर्मल वायु सेवनके लिये घरसे बाहर निकलनेपर। वक्षमें दुर्गन्ध या मसालेकी गन्ध-भरा पसीना होता है। पसीना होनेके समय शरीरमें खुजली पैदा हो जाती है। सुगन्धित या मसालेकी गन्ध-भरा पसीना।

निद्रा।—आँखमें जलनके साथ दिनमें औंघाई, आधी रातके कुछ पहले गहरी नींद, संध्याके पहले भी खूब नींद आती है, पर आधी रातके बाद नींद नहीं आती और अंतिम रातमें दर्द और शारीरिक बेचैनी मालूम होनेकी

वजहसे नींदमें व्याघात होता है। निद्रित अवस्थामें छातीमें दबाव मालूम होता है और श्वासकष्ट पैदा हो जाता है।

उपशम।—गर्म कपड़ेसे माथा ढकने या बाँधनेपर; शुष्क उत्तापसे। शारीरिक व्यायामके बाद; आसन या शय्या छोड़कर उठनेपर (पतले दस्तोंका बढ़ना); भोजनके समय या कुछ देर बादतक; भोजनकर वायु निकलनेपर और सारे शरीरमें पसीना होनेपर।

वृद्धि।—छूनेपर, स्थिर होकर रहनेपर या विश्रामके समय, अंधड़ या वेगकी हवा लगनेपर; बिजली आँधी, पानीके दिनोंमें या वर्षाकी सूचनासे ही, बैठनेकी अवस्थामें; तर हवा लगनेपर; खड़े होनेकी अवस्थामें; लिखनेके समय; रातमें, सवेरे, सोनेके समय और पानीमें भींजनेपर। रोगीके शरीरमें लगे या न लगे, जोरकी हवा चलनेपर ही रोगीकी तबियत खराब मालूम होती है।

सम्बन्ध।—**प्रतिविष या दोषघ्न**।—ब्राई, कैम्फो, क्लीमेट, रस।

अनुकूल सम्बन्ध।—पल्स, रस, कैल्के, कोना, लाई, मर्क, नक्स, सिपिया, साइलिसिया, सलफर।

सदृश।—अरम, ब्राई, कैल्के, क्लिमेट, कोना, कैल्मिया, लिडम, लाई, मर्क, नक्स, फास, पल्स, रैनान-बल्बो, रस। बिजली मिले अंधड़-पानीमें रोग बढ़नेके सम्बन्धमें—ब्राई, जेल्स, लैके, नेट्र-कार्ब, सोरिनम, सिपिया, साइलिसिया। जलीय वायुमें वृद्धिके सम्बन्धमें—ऐमोन-कार्ब, कैल्के, डाल्का, नेट्र-सल्फ, नक्स-मस, रस-टक्स। अंधड़-पानीकी सूचना होते ही रोग वृद्धिके सम्बन्धमें—ऐगार, लैके, सोरिनम।

तुलनीय। वर्षा-ऋतुमें—रस-टक्स; अण्डकोषका प्रदाह—क्लिमे, पल्स; घूमनेवाला आमवात—कैल्मिया। अंधड़-पानीके दिनमें—डालका, नेट्रम-सल्फ; फल खाकर दस्त—रियुम; कुचलनेकी तरह दर्द—आर्निका, कोनायम; शब्द-प्रतिध्वनित—कास्टिकम, फास्फोरस, सार्सा।

शक्ति।—प्रथम दशमिक क्रमसे ३० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—२५ से ४० दिन।

रस ऐरोमैटिका

(RHUS AROMATICA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताज़ी जड़की छालसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—दुबलापन या क्षीण होते जाना ; मूत्राधारसे खूनका स्राव ; बहुमूत्र ; पुराना आमातिसार और रक्तामाशय ; अनजानमें पेशाब होना ; रक्तस्राव ; मूत्रपिण्डसे रक्त-स्राव ; जरायुसे रक्त-स्राव ।

उपयोगिता और आभास ।—मसाना या मूत्र-यन्त्रके अन्यान्य अंशकी बीमारियोंमें यह विशेष हितकर है। बहुमूत्र रोगकी यह एक उत्कृष्ट दवा है। मूत्राशयकी निष्क्रियता और शिथिलताकी वजहसे आप-ही-आप पेशाब होना ; बुढ़ापेकी वजहसे पेशाबका वेग रोकनेकी शक्तिका न रहना ; खून मिला पेशाब प्रभृति इसके विषयीभूत हैं। बहुमूत्र—बहुत ज्यादा और थोड़ा आपेक्षिक गुरुत्व मिला पेशाब ; अत्यंत कमजोरी मालूम होना ; कमरमें दर्द, तेज प्यास, परिवर्त्तनशील रुचि या भूख—आज राक्षसी भूख है तो उसके दूसरे दिन खानेकी बिलकुल ही इच्छा नहीं होती ; शरीरकी त्वचा उजली और झूलती हुई। शारीरिक उत्ताप तापमान यन्त्रमें १०१-५° ; थोड़ी खुसखुसी खाँसी और कभी-कभी रातमें पसीना होता है ; बहुत ज्यादा दुबलापन ; पेशाब चीनी मिला। पेशाबका वेग रोकनेकी शक्तिका न रहना, क्या दिन और क्या रात, हमेशा ही आप-से-आप पेशाब हुआ करता है। रक्त-स्राव, उसके साथ ही सारे शरीरमें अवसाद। मूत्राशयकी सर्दी, पेशाबके समय प्राणांतिक यन्त्रणा। मूत्राधार सुखशायिका ग्रन्थिका बढ़ना। बच्चोंका ग्रीष्मातिसार,—बच्चा क्षीण हो पड़ता है, उसकी जीभ उजली दिखाई देती है और सारे शरीरमें पसीना हुआ करता है। बच्चोंका मूत्राशय प्रदाह पेशाबके पहले या आरम्भके समय भयानक यन्त्रणासे रोगी छटपटाया करता है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—सिजिजियम जैम्बोलिनम, लैक-डिफ्लोरेटम, लाइकोपस, मस्कस, मूरेक्स, पैरिरा-ब्रेवा, लाइकोपोडियम, कैन्थरिस, सार्सा,

स्क्रियुला, हैमामेलिस, टेरिबिन्थिना, चिमाफिला, पाइपर मिथिस्टिकम और सैवाल-सिरुलेटा।

शक्ति।—मूल अर्क १० बूंदसे ६० बूंद या एक ड्रामतक।

रस डाइवर्सिलोबा

(RHUS DIVERSILOBA)

दूसरा नाम।—कैलिफोर्निया-पाइजेन-ओक।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे संग्रह किये पत्तोंसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—चर्मपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। मुखमण्डल, जननेन्द्रिय, हाथ-पैरकी सूजन, असह्य खुजली, स्पर्शकातरता, चर्मपर एकज़िमा या विसर्प, बहुत सुस्ती और तन्द्रालुताके कारण तन्द्रावेशमें यह बहुत लाभ करता है।

शक्ति।—३x—६x।

रस ग्लैब्रा

(RHUS GLABRA)

दूसरा नाम। रस कैरोलिनिन्सि, रस एलिगैनस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी छालसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।— नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः— दुर्बलता; अतिसार; विरक्तिजनक सपने देखना; रक्तामाशय; नाकसे रक्त-स्राव; सरमें दर्द; मुखमें जखम।

उपयोगिता और आभास।—सर-दर्द, मुँहमें जखम, आमरक्त वगैरह रोगोंमें यह बहुत लाभदायक है। डा० फैरिङ्गटनके मतसे "माथेके पिछले भागका सर-दर्द और बाईं नाकसे रक्त-स्राव इससे आरोग्य हो जाता है।" "कमजोरीकी वजहसे बहुत ज्यादा पसीना, विशेषकर निद्रित अवस्थामें।"

"छाले या मुँहमें जखम", "बदबूदार वायु निकलना", "शीताद और स्तनका दूध पिलानेवाली स्त्रियोंके मुँहका जखम" वगैरह कई इसके प्रकृतिगत लक्षण हैं। डा० बोरिकके मतसे इससे शरीरके भीतर जखम पैदा होनेकी सम्भावना मिली सड़नेकी क्रिया आरोग्य हो जाया करती है।

लक्षणावली

मन और मस्तक।—बन्धु-बान्धवोंका साथ या समागम पसन्द नहीं करता। रोगी सभी विषयोंमें उदासीनता प्रकट करता है। विमूढ़ात्मा भूल जानेवाला, सरके पिछले भागमें दर्द। नींद खुलनेपर माथेमें भार और दर्द मालूम होता है; थोड़ा भी शारीरिक व्यायाम या परिश्रम करनेपर घटता है। नींद खुलनेपर गलेके भीतरसे थक्का-थक्का जमा हुआ रक्त निकलता है। शीताद, स्तन पिलानेवाली रमणीके मुँहका जखम (हाइड्रैस्ट, लैके, लैक-कैन, वेरोनिका)। मुँहका जखम (बैप्टी, बोरैक्स, मर्क-कोर, ऐ-म्यूर, ऐ-सल्फ)।

पाकाशय आदि।—पहली बार भोजनके समय रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो न जाने कितने दिनोंतक कुछ नहीं खाया है, परन्तु दो-एक ग्राससे अधिक नहीं खा सकता (गैम्बोजिया); पाकस्थलीमें दर्द; कोई चीज़ खाने-पीनेपर दर्द बढ़ जाता है। नाभि-प्रदेश और उरुमें छेदनेकी तरह तेज़ दर्द। नाभि-प्रदेशको दबानेपर दर्द मालूम होता है। डा० बोरिकके मतसे रस-ग्लैब्रा अन्त्राशयकी पचनशीलता दूरकर आध्मान और मलकी दुर्गन्ध-रहित बना देता है; तीसरे पहर और सन्ध्याके समय बढ़ना, पर इसके बाद सूखा कड़ा पाखाना होता है या पहले सूखा और कड़ा और अन्तमें तर और कोमल पाखाना होता है, पेशाब परिमाणमें थोड़ा और घोर लाल रङ्गका।

प्रत्यङ्ग आदि।—कमरमें बेहद दर्द (कैलि-कार्ब, नक्स-मस)। निम्नाङ्गमें दर्द हुआ करता है और वे क्षीण मालूम होते हैं। रोगीको खड़े होनेमें बहुत तकलीफ़ होती है (ऐ-पिक्रिक, आयोड; बड़ी तकलीफ़से आसनसे उठ सकता है—काक्यु; उठनेकी चेष्टा करनेपर खड़ा नहीं हो सकता—ग्लोन)। बहुत दुबला हो जाता है और बहुत कमजोरी मालूम होती है। निद्रित अवस्थामें पसीना होता है (मर्क, कैम्फो, कार्बो-ऐन, सिङ्को, इयुपेट-पर्फोल, लैक-कैन, सैम्बिन, नक्स-वोम)।

निद्रा ।— स्वप्नमें रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो वह शून्यमें उड़ा जा रहा है (एपिस, जैन्थक्साइलम ; रोगीको अपनी देह बहुत छोटी मालूम होती है और उसे ऐसा मालूम होता है कि वह शून्यमें है—ऐसेरम, लैक-कैन, वैलेरियाना ; मानो उसके दोनों पैर उड़ रहे हैं—स्टिक्टा)। बार-बार विरक्तिकर स्वप्नकी वजहसे नींदमें व्याघात होता है।

वृद्धि ।—खाने-पीनेपर, छूनेपर या नींद खुलनेपर।

घटना ।—शारीरिक परिश्रम करने बाद या परिश्रमसे और शरीर हिलानेसे।

सम्बन्ध ।—रस, आयोड प्रभृति सदृश।

शक्ति ।—१म दशमिक क्रम। खून निकलनेवाले मसूढ़ेमें (मुँहमें छाले वगैरह रोगमें) मूल अर्कका बाहरी प्रयोग करना चाहिये।

रस रैडिकैन्स

(RHUS RADICANS)

दूसरा नाम ।—प्वायज़न वाइन, प्वायज़न आइवि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्तेसे मूल अर्क तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—इसका प्रधान क्रियास्थल मस्तिष्क, अस्थि, कण्डरा पेशी, त्वचा और श्लैष्मिक-झिल्ली है। इसका दर्द प्रायः शरीरके एक पार्श्वसे होता है और दर्द एक अंशसे एकाएक दूसरे अंशमें या दूरके अंशमें पैदा हो जाया करता है। पैशिक क्रियाके समय अस्थिके साथ कण्डराके संयोग-स्थलमें दर्द हुआ करता है। सन्धियाँ सब अकड़ी मालूम होती हैं। कभी-कभी इसके लक्षण सब कोनाकोनी भावसे या एक पार्श्वसे अन्य पार्श्वतक प्रकट हुआ करते हैं। सवेरे पहले-पहल अङ्ग-प्रत्यङ्गको हिलानेके समय ज्यादा दर्द पैदा हुआ करता है। रोग-रहित पार्श्वमें शयन करनेपर भी दर्द बढ़ जाया करता है (ब्रायोनिया विपरीत)। किसी-किसी समय शरीर हिलाने या चलने और कभी-कभी स्थिर रहने या विश्रामके समय दर्द घट जाया करता है। पेशीका दर्द—पहली बार अङ्ग हिलानेके समय। कुछ देरतक लगातार

वह अङ्ग हिलानेपर दर्द घट जाया करता है। कितनी ही बार वायु सेवनके लिये चलनेके समय या जब मन लगातार किसी विषयमें उलझा रहता है, उस समय इसका दर्द घट जाया करता है, पर पहली बार शरीर या रोगवाला अंश हिलाते समय या शरीरके किसी प्रकार हिलने या उत्तेजनासे और घरमें रहनेके समय बढ़ जाया करता है। ठण्डा पानी पीनेके बाद बहुत-सी तकलीफें पैदा हो जाया करती हैं। सवेरे ७ बजनेके समय शय्या छोड़नेकी चेष्टा करनेपर बहुत आलस्य और शिथिलता मालूम होती है। तीसरे पहर ४ बजेसे ७ बजेके बीचमें, विशेषकर सन्ध्याके छः बजे बहुत-सी तकलीफें पैदा हो जाती हैं। कितनों ही को सवेरे या सन्ध्याके समय पुरानी तकलीफें बढ़ती हैं या नयी तकलीफ़ पैदा हो जाती है; इसके अलावा कितने ही लक्षण सन्ध्या और रातमें बढ़ जाते हैं और कितने ही जलवायुके परिवर्त्तनसे बढ़ते हैं। औंघाई, दर्द और कितने ही दूसरे लक्षण अन्धड़-पानीके आरम्भमें बढ़ जाते हैं; परन्तु इनमें बहुतसे लक्षण अन्धड़-पानी अच्छी तरह आरम्भ होनेपर घट भी जाते हैं, खासकर यदि इस अन्धड़-पानीके साथ बिजली और वज्रपात भी सम्मिलित हो। इसका दर्द अकसर अधिकांश स्थानोंमें मज्जागत रहता है, मानो अस्थि या पेशीके अन्तरतम प्रदेशसे पैदा हो रहा है।

मन्तव्य ।—भिषक-श्रेष्ठ टिमाथि, एलेन, डा० क्लार्क प्रभृति चिकित्सा-विशारदोंने रस-टाक्सिकोडिण्ड्रन और रस रैडिकैन्समें विशेष और किसी-किसी स्थलपर बिलकुल ही प्रभेद नहीं किया है; परन्तु डाक्टर एच० सी० एलेन सम्पादित "मेडिकल ऐड्वान्स" नामक सदृश वैज्ञानिक मासिक पत्रिकामें १८८२ ईस्वीके मार्च या एप्रिल मासकी संख्यामें डा० हैनेस द्वारा "रस-रैडिकैन्स" का एक एकदम अलग और सम्पूर्ण विवरण प्रकाशित हुआ था। इस दवाका यह वर्णन उसीका सार सङ्कलन है—केवल स्थान-स्थानपर सामान्य परिवर्त्तन और परिवर्द्धन कर दिया गया है।

लक्षणावली

मन ।—विषादोन्माद, सभी विषयोंमें उदासी प्रकट करता है। बहुत अधिक क्रोधी स्वभाव, चिड़चिड़ा और दिल्लगी भी नहीं समझता। अकेला रहना चाहता है, ऐसी इच्छा नहीं करता, कि कोई उससे बोले। भग्न साहस, दुश्चिन्ता और सशङ्कित भाव। रोगीको विश्वास रहता है, कि उसका वर्त्तमान

रोग अच्छा न होगा (आर्स, कैल्के, हेलिबो, सोरिन, सिपिया ; सविराम या कम्पज्वर—टैरेण्ट ; क्रुप खाँसीमें—ब्राई ; फेफड़ेका प्रदाह—ऐण्टिम-टार्ट ; शुक्रमेह रोग—ऐसिड-फास)। भविष्यके सम्बन्धमें महा उद्विग्न (ब्राई, कास्टि, नेट्र-मूर)। कोई विषय सोचनेसे नाराज़ (चायना, नक्स, फास)।

मस्तक।—अत्यन्त अवसाद ; रोगी समझता है, कि यदि वह चेष्टा न करेगा तो हिल न सकेगा। मानसिक आच्छन्नता, कोई यदि कुछ पूछता है, तो उसका उत्तर देनेमें बहुत नाराज़ होता है (चिनिन-सल्फ, कोलोसिन्थ, मैन्सि, नक्स)। सरमें चक्कर आना—शरीर हिलानेके समय (कैल्के, कैल्मिया) या माथा उठानेपर (ब्राई, चायना, स्टेनम)। रोगीको उठाकर बैठानेकी चेष्टा करनेपर वह बेहोश हो जानेकी तरह हो जाता है (सिपिया ; शय्यासे उठनेकी चेष्टा करनेपर—ओपियम) ; रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि यदि कोई पकड़ न लेगा, तो वह गिर जायगा। सरमें चक्कर—चलनेके समय (बेल, नेट्रम-म्यूर, नक्स) ; झुकनेपर (ग्लोन, नक्स, पल्स) ; एकाएक माथा उठानेके समय मूर्च्छाका उपक्रम हो जाना। मस्तिष्कका धुँधलापन या जड़ता (फास, रस-टक्स, काक्यु, हायो)। शरीर हिलानेके समय थोड़ी देरके लिये होशमें न रहना (क्रोकस ; क्षणिक बेहोशी—चिमाफिला-मैकूर)। माथा बहुत बड़ा और भारी मालूम होता है, मानो वह माथा सीधा नहीं रख सकता (जेल्स)। माथा भरा और भारी मालूम होता है। कनपटी या शङ्खदेशमें एक तरफ दर्द, आँखके ऊपरी प्रदेशमें दर्द। सरके पिछले भागमें बराबर धीमा-धीमा दर्द मालूम होना। मानो समूचा माथा दब रहा है। सरमें थोड़ी देरके लिये पैदा होनेवाला दर्द ; ललाटमें धीमा और लगातार दर्द। ललाटके एक छोरसे दूसरे छोरतक और मूर्द्धदेशमें भयङ्कर और लगातार दर्द रहना। सरका दर्द आराम होनेपर पाकस्थली और अन्त्राशयमें ऐसा दर्द हो जाता है, मानो मरोड़ हो रहा है। अन्त्रशूल और शिरोवेदना (नेट्रम-सल्फ, रोबिन, कैल्के-फास, कोलोसिन्थ)। मिचलीके साथ सर-दर्द (ऐण्टिम-क्रूड, काकुल)। सवेरे नींद खुलनेपर धीमा सर-दर्द (ब्राई, लैकेसिस, नेट्रम-म्यूर, नक्स, फास) ; शय्यासे उठकर इधर-उधर घूमनेपर बन्द हो जाता है (शय्या छोड़नेपर उपशम—ऐसिड-नाई)। दिनमें पूर्वाह्नमें औंघाईके साथ सर-दर्द और सवेरे ललाटमें तेज़ दर्द। मानसिक परिश्रमकी वजहसे क्षणस्थायी या प्रचण्ड अधकपारी या शिरार्द्धशूल (चिनिन-आर्स, काफिया)। समूचे माथेमें बेधनेकी

तरह दर्द। सोनेपर तकलीफ बहुत बढ़ जाया करती हैं (कोलोसिन्थ, ग्लोन, रस-टक्स)। सरके पिछले भागसे गर्दनतक दर्द। मिचली, वमन, पाकस्थलीमें दर्दके साथ प्रबल सर-दर्द; शरीर हिलाने और झुकनेपर सर-दर्द बढ़ जाया करता है, माथेमें टपक। माथेमें उत्ताप अनुभव होना, माथेमें जलन और खुजली। माथेपर काले रंगके दाने निकलते हैं।

आँख।—आँख खोलनेके समय उसमें बहुत दर्द होता है (हाइड्रैस्ट)। भौंहोंमें भार और दर्द मालूम होना। पलकोंमें करकराहट और जलन होती है; पलकें खुजली भरी (क्रोटोन, हिप, कैलि-बाई, पेट्रोल, ऐ-फास, रस)। आँखमें जलन। पलकोंमें उत्ताप मालूम होना। पलकें लाल और फूली और उनमें खुजली और जलन मालूम होती है। सवेरे नींद खुलनेपर रोशनी सहन न होना। एकाएक सर उठानेपर दृष्टिके सामने अन्धकारका आविर्भाव हो जाता है।

कान।—कानमें दर्द, दोनों कान फूले और उनमें उत्ताप अनुभव होता है, हृत्पिण्ड और धमनी आदिका स्पन्दन कानमें सुन पड़ता है। आरक्त ज्वरके बादका कर्णमूल-प्रदाह; इसके साथ ही दोनों कानोंमें शोथकी तरह सूजन।

नाक।—नासारंध्रमें खुजली। नाकसे खूनका स्राव,—सवेरे नाकसे रक्त-स्राव। दोनों रंध्र बहुत सूखे। बार-बार छींक, पानीकी तरह नाकसे स्राव, या नाकसे पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव। नाकमें जलन और प्रचण्ड सर-दर्द मालूम हुआ करता है।

मुखमण्डल।—रोगीकी मूर्त्ति मलिन, सफेद या पीली। हनु संचालनके समय बायीं हनुसन्धिमें दर्द। चेहरेमें खुजली। चेहरेपर विस्फोटक, पीबभरे दाने, फुन्सियाँ या रस-भरे दाने वगैरह नाना प्रकारके उद्भेद निकलते हैं। चेहरा घोर लाल। उसमें खुजली और जलन। दोनों ओंठ ऐसे लाल मालूम होते हैं, मानो उनमें विसर्प हो गया हो। मुखमण्डल और ललाटपर व्रण आदि निकलते हैं। ओंठपर और नाकके नीचे, एक छोटेसे अंशकी त्वचा क्षय हो जाती है, और उसमें उत्तेजना और जलन मालूम होती है (ब्रोम, फाइटोलैक्का, लैक-कैन, आर्स, एरम-ट्राई)।

मुख-विवर आदि।—कीड़े लगे या कीड़े खाये दाँतमें तेज़ तीर बेधनेकी तरह दर्द (आइरिस)। कभी-कभी दाँतमें क्षणस्थायी टपक; ऊपरी

मसूढ़ेके क्षय हुए दाँतकी जड़में दर्द। दन्तशूल रोगमें लारका स्राव। सन्ध्याके समय दाँतमें दर्द। मसूढ़ेसे सामान्य कारणसे ही रक्त-स्राव होने लगता है। मसूढ़ेका प्रदाह। मसूढ़ेका फोड़ा। दर्द-भरे दाँतकी जड़ें फूल जाती हैं और उनमें स्पर्श सहन नहीं होता। मुँहमें बहुत बदबू। मुख-विवर सूखा। मुँहमें लारका अधिक संचय होना; लार गाढ़ी गोंदकी तरह और फेनभरी। लार अधिक संचय होनेके साथ ही तालुमें बहुत त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होता है। मुँहमें जखम पैदा हो जाता है, विशेषकर गालके भीतर नीचेकी ओर और ओंठके भीतरकी ओर। जीभ पीली आभा लिये लेप चढ़ी। जीभ पिट-पिट करती है और जीभका अगला भाग लाल और जखम भरा मालूम होता है। जीभके अगले भागकी त्वचा क्षय, दर्द और दाने-भरी।

गलेके भीतर।—कण्ठमें आल्पीन गड़नेकी तरह अनुभव होना। कण्ठनलीका संकोचन और उसमें उत्तेजना अनुभव होना। कण्ठके भीतर रुखड़ापन और जलन। अन्ननलीमें दर्द और जलन। कण्ठका भीतरी भाग फूला, भरा और ऐसा मालूम होता है, मानो त्वचा क्षय हो गयी है। जिह्वाकी जड़के बगलवाले दोनों गह्वर लाल दिखाई देते हैं। कण्ठनाली प्रदाह। जिह्वामूल क्षय हुई त्वचाकी तरह अनुभव होता है; दोनों गल-ग्रन्थियाँ विशेषकर दाहिना पार्श्व फूला (बैप्टी, बैराई, मर्क-बिन, फाइटो), लाल (ऐपिस, बेल, फेरम-फास, जिम्नोक्लैड, फाइटो) और उसका थोड़ा अंश दूधकी मलाईकी तरह उपझिल्लीसे ढँका। निगलनेमें कष्ट। कोई चीज़ निगलनेमें दर्द और कष्ट मालूम होता है। गलेमें ऐसा अनुभव होता है, कि कुछ अड़ा हुआ है (इग्ने, लेके, सेबाड, आर्जेण्ट-नाई); कण्ठ सूखा, मुँह कड़वा हो जाया करता है। मुँहका स्वाद तीता मालूम होता है (ऐकोन, ब्राई, नेट्र-सल्फ, नक्स-वोम, पल्स)। अरुचि—खाद्य-पदार्थ देखते ही घृणा और अरुचि उत्पन्न होती है (आर्स, आर्निका, मर्क-प्रोटो; गन्ध पाते ही—काक्यु, कोलचि, इपिक; याद आते ही—आर्स, सिङ्को, मस्कस)। रातमें प्यासकी अधिकता। शून्य उद्गार। पाकाशयमें जलन,—कभी-कभी गलेके बाद पाकाशयमें जलन आरम्भ हो जाती है।

पाकस्थली।—बहुत सुस्ती मालूम होनेके साथ मिचली और इसके बाद ही शीत मालूम होना और पसीना हुआ करता है। मिचलीके बाद ही

सर-दर्द पैदा हो जाता है। पेटमें ऐसी तकलीफ होती है, मानो अकड़ गया है। भोजनके बाद पेटमें दर्द (आर्स, नक्स, रस-टक्स)। लारका स्राव और पाकाशय शून्य मालूम होना। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें दबाव और पूर्णता मालूम होना ; सड़ी गन्ध भरी डकार आनेपर उपशम (नक्स-वोम, लाई)। कभी-कभी पाकस्थलीमें ऐंठन। पाकाशयसे भयानक दर्द पैदा होकर वक्षकी ओर चला जाता है। कभी-कभी पाकस्थलीमें इस तरहका दर्द पैदा हो जाता है, मानो कोई अस्त्रसे जखमी कर रहा है। पाकस्थलीमें बेधनेकी तरह तेज दर्द। पाकस्थली दबानेपर बहुत दर्द मालूम होता है।

अन्त्राशय।—कोख मानो जकड़ जाता है। यकृत-प्रदेशमें भयानक दर्द। बायें कोखमें दर्द। ऐसी तकलीफ मानो ऊपरसे कोई तलपेटको दबा रहा है। कब्जियत, इसके साथ ही ऐसी तकलीफ मानो जकड़ गया है। बीच-बीचमें ऊर्द्धोदर प्रदेशमें ऐसा प्रचण्ड दर्द मानो ऐंठकर पकड़ रखा है। कभी-कभी मरोड़ मालूम होता है। उदरामय, पेटमें तेज़ चिपक जानेकी तरह दर्द। तलपेटमें शूल बेधनेकी तरह दर्द। दर्दके बाद तरल मल निकला करता है। ठण्डा पानी पीनेपर उदरमें तीर बेधनेकी तरह दर्द (मैग्निन, रैफ, स्टैफाई)। नाभि-प्रदेशमें दर्द, झुकनेपर ऐसा मालूम होता है मानो नाभि प्रदेशमें जखम उत्पन्न हो गया है (नाभि-प्रदेशमें मानो जखम हो गया है—ऐ-आक्सैल, पैलेड)। अधिक आध्मानकी वजहसे पेटमें गड़गड़ाहट, पुट्ठेमें तेज़ बेधनेकी तरह दर्द।

मलान्त्र और मल।—मलके कड़ापनके साथ मल वेग। मल भूरा और लसदार। मल पतला, धसधसा, गोंदकी तरह और खट्टी गन्धवाला। पतले मलके साथ खून मिला रहता है। मल कुछ खून मिला। पाखाना होनेपर मलद्वारसे खून निकलता है। मलका पतलापन और आमातिसार रोगमें मलत्यागके पहले बहुत आलस्य और शारीरिक शिथिलता मालूम होती है। पतले दस्त फेन भरे, लसदार और पीले रङ्गके। मलद्वारमें जलन। पाखाना होनेके समय तकलीफ नहीं रहती और विलम्ब भी सहन नहीं होता। मलद्वारमें असह्य खुजली और जलन।

पेशाब।—बार-बार पेशाबका वेग, पर पेशाब बहुत थोड़ा होता है। मूत्राशयपर दबाव और मूत्रकृच्छ्रता। यन्त्रणाजनक और बार-बार पेशाबका वेग। पेशाब लाल रङ्गका और थोड़ा-थोड़ा निकलता है (हैमा, कैन्थ, हिप,

हायो, लाई, ओपि, रस)। पेशाब घोर लाल (आर्जेण्ट-नाई, लाई, पेरिरा-ब्रेवा, पोलिगोनम, सिपिया)। मूत्रस्थलीके ऊपर दबाव मालूम होना, पेशाब होनेपर भी घटता नहीं है (डिजिट, रिउटा)। पेशाबमें सड़ी गन्ध।

पुं०-जननेन्द्रिय।—शिश्नमें तेज दर्द। शिश्नोष्ठमें उद्भेद निकलता है और उसमें खुजली और डङ्क मारनेकी तरह दर्द अनुभव होता है; ऐसा मालूम होता है मानो शिश्न उत्तेजित हुआ है। मुष्क प्रदाहयुक्त, घोर लाल; चलनेपर रगड़की वजहसे मुष्कमें उत्तेजना पैदा हो जाती है (चलनेके समय उरुकी रगड़की वजहसे मुष्ककी त्वचाका क्षय हो जाना—लाई, मर्क, नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यूर, और रस गिरा करता है—कैल्के-फास, थूजा)। मुष्कके ऊपर रस-भरे दाने सब निकलते हैं और वे सब दाने फूट जाते हैं तथा लाल रङ्गके किनारेसे घिरे जखममें परिणत हो जाते हैं (एसिड-नाई, अरम-म्यूर)। काम-प्रवृत्तिका ह्रास हो जाया करता है। रातके समय रेतःक्षय (हैमा, नेट्र-फास, नक्स, डिजिटे-लिनम, ऐमारिकस, डायस्को; एक रातमें दो बार—पल्स; अंतिम रातमें—पेट्रोसिलिन; प्रायः प्रति रातमें—श्रोणिदेश या नितम्ब स्थानोंमें जलनके साथ—फास)। रेतोरज्जु फूला, बायें रेतोरज्जुमें जल-सञ्चयकी वजहसे वह फूला, कड़ा और बहुत दर्द करनेवाला हो जाता है (आर्निका, हैमा, ऐ-फ्लू, पल्स, कोलिन्सो, सिपिया, सल्फ, मर्क, पोडो)। खड़े होने या चलनेपर बढ़ना। मुष्कके बाएँ पार्श्वको दबानेपर ऐसा मालूम होना मानो उसमें एक गाँठ अड़ी हुई है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत ज्यादा रजःस्राव,—ऋतु बहुत असमयमें होता है और स्राव बहुत ज्यादा हुआ करता है। स्राव फीका (फेरम, नेट्र-म्यूर, बोवि, कोलोफिल, सैबाई, सिकेलि, बाइवर्न), कषाय और त्वचाको क्षय करनेवाला (लैके, बोवि, कैलि-कार्ब, पेट्रोल, रस-टक्स); स्राव लगनेपर योनिमें उत्तेजना, जलन और खुजली पैदा हो जाती है। बाहरी जननेन्द्रिय प्रदाहान्वित, जलन और खुजली-भरी और विसर्पके दानेकी तरह रस-भरे दानेसे भरे और फूले (रस-टक्स, क्रोटन-टिग, मर्क)।

श्वासयन्त्र।—क्षीण स्वर। बोलता-बोलता शीघ्र क्लांत हो पड़ता है (स्टैनम, ऐल्यू, सोरिन; बोलनेके समय मूर्च्छा आ जाती है—आर्स)। स्वरनलीमें त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होना (आयोड, लैके, नेट्र-म्यूर,

फास, सिपिया)। उत्तेजनाके साथ गलेके भीतर वायुनली-भुजगत सर्दी (ऐकोन, ऐण्टि-टार्ट, रस, हिप, मर्क, रियुमेक्स, सैङ्गिविन, स्टैनम, सल्फ)। जिह्वामूलके बगलमें दोनों गह्वरोंका प्रदाह बीचमें उतर जाता है और स्वरनलीमें उत्ताप, जखमकी तरह भाव और श्वास-रोध होनेका उपक्रम मालूम होता है। नये वायुनलीभुज-प्रदाहमें (ऐकोन, ऐण्टिम-टार्ट, एस्क्लिपियस, टियु, कैल्कि, जेल्स, हिप, हिपोजिनिन, स्टैनम); गलेके भीतरसे यह जखमका भाव वक्षके बीचसे होकर नीचेकी ओर चला जाता है। खाँसी आया करती है और फेन-भरा, नमकीन स्वादवाला, श्लेष्मा-भरा बलगम निकलता है (कैल्कि, नेट्रम-म्यूर, फास)। खुसखुसी सूखी खाँसी। सवेरे गलेमें जखमके साथ सूखी खाँसी। वक्षमें उत्तेजनासे पैदा हुई खाँसी, खाँसनेपर वक्षमें दर्द अनुभव होता है (ब्राई, कैल्कि, कास्टि, सिङ्को, ग्रैफ, नेट्र-म्यूर, रियुमेक्स, स्पञ्जिया)। वक्षमें खुजलीकी वजहसे वक्ष-विदारक खाँसी। वक्षमें दबावकी तरह दर्द या लगातार ऐसा मालूम होना कि दर्द कर रहा है। रातमें दर्द, वक्षमें दर्द—स्थिर रहनेपर उत्तेजित हो जाता है। वक्षस्थलमें कभी-कभी पैदा होनेवाला वातका दर्द (कोलचि, रैनान-बल्बो, रियुमेक्स, स्पाइजि)। वक्षोस्थिके पीछे मानोत्वचा क्षय हो गयी है (रियुमेक्स, युपेट-पर्फो)। ऐसा अनुभव होना, मानो कलेजा जकड़ गया है। पाकस्थलीसे दर्द पैदा होकर वक्षमें चला जाता है। चलने या देह हिलानेके समय वक्षमें दर्द (कैल्मिया, कार्डुयस-मेरी, रैनान-बल्बो, ब्राई)। गहरी साँस लेनेपर वक्षका दर्द बहुत बढ़ जाता है (ऐगार, आर्स, रैनान-बल्बो, ऐ-वेन); वक्ष और गलेमें जलन—ऐसा मालूम होता है, मानो अन्ननलीमें जलन हो रही है। हृत्पिण्डमें दर्द होता है और बीच-बीचमें उसमें वेधनेकी तरह तेज दर्द अनुभव होता है। सन्ध्याके समय और उसके बाद कलेजा धड़कना (सल्फ, कार्बो-ऐन, कास्टि, हिप ; सोनेपर—लाइ, ऐ-नाइ, नेट्र-म्यूर, फास, सिपि)। माथा भारी मालूम होनेके साथ-ही-साथ हृद्स्पन्दन। आधी रातके समय शायित अवस्थामें भयानक हृद्स्पन्दन, इसके साथ ही नाड़ी अनमनीय, सूक्ष्म और तीव्र गति, श्वासमें कष्ट और वक्षमें दर्द। स्थिर होकर बैठे रहनेपर हृद्स्पन्दन बढ़ जाता है (कार्बो-वेज, रस-टक्स, साइलि, लैके)। दबानेपर वक्षमें दर्द होता है।

गर्दन और पीठ।—क्षीण मेरुदण्ड, श्रोणिदेश या नितम्बमें दर्द, विशेषकर पहली बार हिलानेके समय। रातमें सोनेके समय नितम्बके स्थानपर

दर्द हुआ करता है। पीठ, पार्श्वमें वातके कारणसे उत्पन्न दर्द, जलन और दूसरी तरहका धीमा दर्द। पीठका निचला अंश अकड़ा और दर्द-भरा। मसानेके स्थानपर लगातार दर्द हुआ करता है और इस अङ्गकी अकड़नके साथ रोगीको बहुत सुस्ती और आलस्य मालूम होता है। पीठके बीचके मेरु-प्रदेशमें दर्द, विशेषकर शय्यामें सोनेके समय। कमरका दर्द, वृद्धि—सवेरे और सोनेके समय; झुकनेपर पीठके बीचका मेरुदण्ड जकड़ जाता है। दोनों कन्धोंके बीचके स्थानमें दर्द। पीठमें सर्दी मालूम होना। कमर शिथिल और अवश मालूम होना। पृष्ठफलकमें दर्द; ग्रीवाका पार्श्व-विशेष दबानेपर दर्द मालूम होता है। गर्दनकी अकड़न—रातमें बढ़ जाती है। गर्दन हिलानेपर गर्दनकी पेशीमें दर्द मालूम होता है और दबानेपर भी दर्द होता है।

प्रत्यङ्गादि।—सन्ध्याके समय दाहिने कन्धेमें तेज़ दर्द। कन्धा और बाँहमें वातकी वजहसे दर्द। त्रिकोण पेशीमें दर्द; बाँह, कलाई, हाथ और अंगुलीमें खींचन और वेधनेकी तरह तेज़ दर्द अनुभव होना। कन्धेमें दर्द पैदा होकर तुरन्त बाँहके ऊपरी अंशमें चला जाता है। रातमें बाँह और हाथ सुन्न मालूम होना और स्पर्शानुभव होता है। बाँहके सुन्न हो जानेके साथ अंगुलीमें सुई गड़नेकी तरह अनुभव होना; बाँहके ऊपरी अंशमें वातका दर्द, हिलानेपर बढ़ जाता है। कोहनीमें दर्द। कोहनीके सन्धि-प्रदेशमें एकाएक वातका प्रचण्ड दर्द पैदा हो जाता है। बायें बाँहके अगले भागमें दर्द। अग्र-बाहुमें अस्थिगत दर्दका अनुभव होना। कलाई, हाथ और अंगुलीके ऊपर रस-भरे दाने निकलते हैं। हाथ ठण्डा या फूला। हाथ फूला, अकड़ा और चमकीला, लाल, गर्म और उसमें टपक अनुभव होना। चोटके कारण हाथ प्रदाहयुक्त, अंगुलीका स्थान विशेष दग्ध हो जाना और उसी दग्धांशसे फैलता-फैलता समूचा हाथ प्रदाहान्वित हो जाता है। अंगुलीकी सन्धियाँ सब दर्द किया करती हैं; अंगुलीमें तेज़ दर्द मालूम होता है, चुनचुनी होती है और इस तरहकी टपक-जैसी हुआ करती है, मानो सुई गड़ गयी है। अंगुलीमें खुजलानेवाले और पीव सञ्चय होनेवाले उद्भेद पैदा हो जाया करते हैं। एक अंगुलीमें चोटकी वजहसे जखम हो जानेपर, उस जखममें प्रदाह आरम्भ होकर समूचे बाँहमें चला जाता है। अंगुलीमें चोटकी वजहसे जखम हो जानेके कारण दर्द। ऊरु-शिखरमें दर्द; ऊरु-शिखर और नितम्बसे वातका दर्द दोनों पैरोंमें चला जाता है, नितम्बके बीचके अंशकी त्वचा क्षय हो जाती है और प्रदाह हो जाता

है। चलनेके समय निम्नाङ्ग क्षीण, भारी और ऐसा मालूम होता है कि शरीरका भार सहन नहीं कर सकता। सन्ध्याके बाद निम्नाङ्ग क्षीण और अकड़ा मालूम होता है। दोनों पैरोंकी दीर्घ पेशीमें वेधनेकी तरह तेज़ दर्द, जानु और गुल्फ-सन्धिमें दर्द हुआ करता है। दोनों पैरोंमें ऐंठन होती है। दोनों पैरोंका निम्नांश वेष्टनकारी घोर लाल उद्भेद। गुल्फ-सन्धिमें कभी-कभी भयानक दर्द मालूम होता हैं। दाहिनी एँड़ी फूली और दर्द-भरी। चलनेपर पैर और गुल्फ अवश और क्षीण मालूम होते हैं और दर्द किया करते हैं। दोनों पैर बहुत ठण्डे ; पैर गर्म और जलन-भरे।

त्वचा।—सारे शरीरमें उत्ताप मालूम होना। शरीरके कितने ही स्थानोंमें खुजली पैदा हो जाती है, शरीरके कितने ही स्थानोंमें लाल रङ्गके दाने सब निकलते हैं, उनमें जलन होती है और कुटकुटी तथा खुजली पैदा हो जाती है, हाथ-पैर, चेहरा और पलकोंपर थक्के-पर-थक्का ये दाने निकलते हैं और उसके चारों ओर उठा हुआ-सा मालूम होता है। रसभरी फुन्सियाँ—बच्चोंके शरीरपर छोटी-छोटी जल-भरी फुन्सियाँ निकलती हैं और खुजली पैदा हो जाती है, खुजलानेपर खून निकलता है और इसके बाद सूखकर पपड़ी जमती है (रस-टक्स, ऐनाकार्ड, पेट्रोल)। गर्मीके दिनोंमें शरीरके कितने ही स्थानोंपर खुजली पैदा होती है, उसमें कुटकुटी होती है और जलन पैदा हो जाती है। विसर्प विशेषकर गर्मीके दिनोंका ; शरीरकी त्वचा गर्म और लाल। श्लैष्मिक या लसिका-ग्रन्थियाँ सब फूल जाती हैं (कैल्के, आयोड, बैराई, कोना, लाई, मर्क-कोर, ऐ-नाई, फास, रस-टक्स, स्पञ्जि, सल्फ)। लसिका-ग्रन्थिसे चारों ओर फैला हुआ शिराके भीतर प्रदाह अनुभव होता है। पैरका जखम—जखम सब नीले घेरेसे घिरे रहते हैं (लैके)। पैरके ऊपर गहरा जखम—चारों ओर घोर लाल रङ्ग या कालिमा लिये, जखम आराम होनेके बहुत दिन बादतक वह जगह काली दिखाई देती है। जखमके चारों ओर जलन, कुटकुटी और खुजली होती है। जखम सब आराम होनेमें बहुत दिन लगते हैं।

निद्रा।—बार-बार जम्हाई। दिनमें औंघाई ; रातमें नींद न आना। असम्पूर्ण निद्रा। रात १२ बजनेके पहले सो नहीं सकता। सपने-भरी नींद। सोनेपर आराम नहीं मिलता। बार-बार नींद खुल जाती है। सोनेके समय रोगी बेचैनी प्रकट करता है और तन्द्रा पैदा हो जानेके समय या उसके कुछ

ही पहले, जो सोचता था, नींदवाली अवस्थामें उसके सपने देखता है। कामोद्दीपक या प्रणय कथासे भरे सपने। नींदके समय वीर्यस्खलन या स्वप्नदोष। विपत्ति या विभ्राटके स्वप्न।

शीत, उत्ताप और पसीना।— जाड़ा मालूम होना—समूचे अङ्गोंमें या एक भागमें, विशेषकर पीठमें जाड़ा मालूम होना (जेल्स)। पीठमें जाड़ा मालूम होनेके साथ दोनों पैर बहुत क्षीण मालूम होते हैं, यहाँतक कि बिछावनपर सो जाना पड़ता है और अन्त्राशयमें तेज़ दर्द मालूम होता है और पैर ठण्डे हो जाते हैं; हाथ-पैरमें दर्द हुआ करता है। शीत और उत्ताप अवस्थामें थोड़ी प्यास रहती है। दोनों हाथ-पैरोंकी शीतलताके साथ चेहरा और माथा गर्म और फूला रहनेकी तरह मालूम होता है। सन्तापक ज्वर। सविराम ज्वर—रोज़ दिनके ८ बजेसे १० बजेके बीचमें कम्प या शीत पैदा हो जाता है और इसके बाद उत्ताप या ज्वर पैदा हो जाता है; नाड़ी तेज़। किसी-किसी स्थलपर रोज जो बोखार आता हैं, उसमें दिनके १ बजनेके समय शीत आरम्भ होता है और शरीर हिलाने या कुछ हिलने-डोलनेपर जाड़ा बढ़ जाता है (ब्राई, नक्स, सिपिया, साइलिसिया)। शीतावस्थामें हड्डीमें तेज दर्द मालूम हुआ करता है (ऐरेनिया, आर्नि, आर्स, युपेट-पर्प्यु, पोलिपो, रस-टक्स, सैबाड)। दो दिनका नागा देकर आनेवाले बोखारमें शीतावस्थाकी प्रधानता दिखाई देती है; ज्वरावस्थामें—दोनों पैर दर्द किया करते हैं। चातुर्थक सविराम ज्वर (आर्स, हायो, आयोड, मिनियैन, पल्स, सैबाड, वेरेट)। संध्याके समय उत्तापके साथ आरम्भ होता है और इसके कुछ देर बाद पसीना होता हैं; जीभ पीली लेप-चढ़ी (पोडो, ब्राई, नक्स, पल्स, मर्क)। स्वल्पविराम ज्वर। ज्वरमें रोगी बहुत कमजोरी अनुभव करता है।

आन्त्रिक ज्वर।—वातश्लेष्मा-विकार। नाड़ी तेज और प्रत्यङ्गोंमें दर्द हुआ करता है, उठनेके समय सरमें चक्कर आता है (रस-टक्स)। खड़ा नहीं हो सकता (सिकेलि)। शय्यासे उठनेपर फिर बाध्य होकर सो जाना पड़ता है (ब्राई, बैप्टी) और मिचली मालूम होती है—काक्युलस; जीभ गहरे लेपसे ढँकी (ब्राई, कार्बो-वेज) और अगला भाग लाल (सल्फ)—तिकोनिया लाल रङ्ग (रस-टक्स), मुँहकी लार सफेद रङ्गकी, गाढ़ी और गाढ़े

गोंदकी तरह फेन-भरी ; पेशाबकी तली लाल ; रोगीके दोनों हाथ काँपा करते हैं ; गर्दनमें वातका दर्द मालूम होता है।

मोह या सान्निपातिक ज्वरकी प्रथम अवस्था। कोई अङ्ग जल जानेकी वजहसे ज्वर,—नाड़ीकी तेज गति, शरीरकी त्वचा गर्म, सूखी और पसीनेसे रहित। सर-दर्द, हिलने या झुकनेपर बढ़ जाता है। मुँहका स्वाद बहुत कड़वा और सड़ी गन्ध-भरा।

सहजमें ही पसीना होता है ; लगातार पसीना होना ; पसीना लसदार। पसीना होनेके समय मुख-विवर बहुत सूख जाता है ; पर प्यास नहीं मालूम होती।

सम्बन्ध।—सदृश।—रस-टाक्सिकोडेण्ड्रन देखिये।

शक्ति।—निम्न-क्रम।

रस टाक्सिकोडेण्ड्रन

(RHUS TOXICODENDRON)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फूल होनेके पहले, संध्याके समय संग्रह किये हुए ताजे पत्तेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—गर्भ-स्राव ; वयोव्रण ; नकली प्रसव-वेदना ; आर्त्तव या ऋतु-स्वल्पता ; मल-द्वारका फटना ; उपाङ्ग-प्रदाह ; भूख न लगना ; बेरी-बेरी ; हड्डीमें दर्द ; बिवाई ; नीलिमा ; डेंगू ज्वर ; अतिसार ; उपझिल्ली प्रदाह ; रक्तामाशय ; बाधक ; अजीर्ण ; कानके पीछेका अकौता ; सान्निपातिक ज्वर ; विसर्प ; शीत-ऋतुके फोड़े ; आँखका प्रदाह ; आँखकी नाना प्रकारकी बीमारियाँ ; पैरमें दर्द ; पाकाशय और आँतोंका प्रदाह ; ग्रन्थिका प्रदाह ; सन्धि-वात ; क्षुद्र-सन्धिवात ; रक्त-स्राव ; बवासीर ; हाथमें दर्द ; आँत उतरना ; जानुसन्धिमें दर्द और सूजन ; कोरण्ड ; बहुव्यापक सर्दी ; अविराम ज्वर ; जबड़ेमें कड़ाक-सी आवाज ; यकृतका फोड़ा ; कटिवात ; खसड़ा ; रजसाधिक्य (बहुत ज्यादा रजःस्राव) ; जरायुसे रक्त-स्राव ; स्नायुशूल ; डिम्बाशयका दर्द ; अर्बुद ; पक्षाघात ; उल्टो

चमड़ी ; अस्थि-वेष्टका प्रदाह ; फुसफुस आवरक-झिल्ली-प्रदाह ; पार्श्व-शूल ; फुसफुस प्रदाह (न्यूमोनिया) ; पलकोंका पक्षाघात ; रक्तका विषैला हो जाना ; आमवात ; गृध्रसी ; निद्रामें व्याघात ; चेचक ; मेरुमज्जाकी बीमारी ; चोट लगना ; मूत्रद्वारका सङ्कोचन ; जीभकी बीमारी ; मसे ; जम्हाई इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—वात रोगवाले धातुके मनुष्योंके लिये रस-टाक्सिकोडेन्ड्रन विशेष लाभदायक है। बर्साती पानी या दूसरे पानीमें भींजनेकी वजहसे बीमारी ; तर जमीनमें सोना, शरीरके किसी अंशका मोच खा जाना या कोई भारी चीज उठानेकी वजहसे बीमारी और दर्द ; स्नायविक कमजोरी लानेवाला बोखार ; शरीरका कोई अंश विशेषकर चेहरेमें विसर्पकी सूजन, हृत्पिण्ड तथा अन्यान्य अङ्गोंकी पेशियोंका वात : स्नायुशूल और स्नायु-प्रदाह, बायें उरुके पीछे स्नायु-शूल और उसमें वातका और स्नायविक दर्द ; अन्त्राशय आवरणका प्रदाह ; अन्धान्त्र-प्रदाह और अन्त्र-प्रदाह ; सूजन और विकार पैदा करनेवाले नाना प्रकारके चर्मोद्भेद, चर्मके नीचे खून जमना वगैरह रोगोंमें लाभके लिये, यह बहुत ही प्रसिद्ध है। इससे शरीरके सभी तन्तुओंपर कुछ-न-कुछ हमला होता है, पर सूत्रमय तन्तु ही इसके प्रधान आक्रमण स्थल हैं (रोडो)। इसकी अनुपूरक ब्रायोनिया अवश्य है, परन्तु उसकी प्रक्रिया रक्ताम्बु-तन्तुपर ही विशेष हुआ करती है। शरीरके बायें अंशकी अपेक्षा दाहिने अङ्गसे इसकी विशेष घनिष्टता रहती है। इसके दर्दकी प्रकृति इस ढङ्गकी होती है, मानो रोगवाला अंग मोच खा गया है ; मानो कोई पेशी या पेशीका अगला भाग उसके संयोग स्थलसे जोरसे उखाड़ा जा रहा है या कोई हड्डी छुरीसे छीली जा रही है ; वृद्धि—आधी रातके बाद या जलीय वायु लगनेपर अथवा बर्सातके दिनोंमें ; रोगवाली जगह छूनेपर बहुत दर्द होता है। विश्रामके बाद पहली बार हिलनेपर या सवेरे शय्यासे पहली बार उठनेपर रोगवाला अंश अवश, अकड़ा और बहुत दर्द-भरा मालूम होता है ; कुछ देरतक लगातार और जबतक रोगी क्लान्त नहीं हो पड़ता, तबतक चलनेपर दर्द घट जाता है। इसके कई निर्णायक लक्षण ये हैं :—अत्यन्त अस्थिरता, उद्वेग या आशङ्का, किसी तरह भी शय्यापर एक भावसे या एक स्थानपर नहीं रह सकता ; तकलीफ़ घटनेकी आशामें एक जगहसे दूसरी जगह छटपटाया करता है और शय्यामें सोये रहनेपर छटपटाया करता है और इस करवटसे उस करवट किया करता है ; मस्तिष्क जड़ भावसे भरा या त्वचाकी

क्षय करनेवाला। बार-बार जम्हाई आती है और यह बहुत कष्टकर मालूम होती है। शरीरके हड्डीवाले सभी ऊँचे अंश दर्द-भरे रहते हैं। मेरुदण्डसे स्नायुओंकी जो सब शाखायें निकली हैं उनमें और एक-एक पेशीमें फाड़ने और चिलक मारनेकी तरह दर्द। कमरमें ऐसा दर्द, मानो चोट लग गयी है और चूतड़वाली जगह अवश, अकड़ी और स्पर्श सहन न करनेवाली मालूम होती है जीभके दोनों पार्श्व सूखे और लाल और उसपर दाँतके दाग, बाकी अंश सूखा, भूरा, फटा और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होता है तथा जीभके अगले भागमें तिकोनिया लाल रंगका दाग दिखाई देता है। हाथ-पैरोंकी कण्डरा, पेशियोंमें उखाड़ने या फाड़नेकी तरह दर्द ; पेशियों सबमें स्पर्श सहन नहीं होता और वे अवश मालूम होती हैं। खाँसी—ऐसा मालूम होना मानो वायुनलीके भीतरसे ठण्डी हवा प्रवाहित हो रही है। खाँसी क्षण-भरके लिये आती है और दर्द पैदा करनेवाली ; सवेरे छोटे-छोटे काले रंगके श्लेष्मा-खण्ड निकलते हैं। ज्वर-रोगमें शीतावस्थाके पहले और समय आधी रातसे सवेरेतक तंग कर देनेवाली सूखी खाँसी आती है। पुट्ठेमें दर्द,—दर्द गहरा और प्रसवके दर्दकी तरह जिसमें अन्त्रमण्डली नीचेकी ओर खिंचती है। बहुत ज्यादा ऋतुस्राव होता है, घोर और कषाय या त्वचाको क्षय कर देनेवाला। ज्वर रोगमें नाक या जरायुसे रक्त-स्राव होनेपर आराम मालूम होता है। पतले दस्त,—मल चिकना, फेन-भरा और बिना दर्दका होता है। कभी-कभी आप-से-आप निकल जाता है, गन्ध बहुत ही सड़ी। पेशाब गदला गहरा और उसकी तली सफेद। शरीरकी त्वचा फूली, प्रदाह-भरी,—त्वचाके निचले स्तरतक रोगका आक्रमण हो जाता है, बहुत खुजली होती है। सूजनमें पीव पैदा हो जानेकी सम्भावना रहती है। घरके बाहरकी हवा लगना अच्छा नहीं लगता, शय्यापर सोनेके समय ओढ़नेके भीतरसे हाथ बाहर निकालते ही खाँसी आने लगती है।

लक्षणावली

मन।—रोगी बहुत बेचैन रहता है, उद्वेग और आशङ्का प्रकट करता है (एकोन, आर्स)। शय्यापर स्थिर होकर नहीं रह सकता। आराम पानेकी आशामें लगातार करवट बदला करता है (एक करवट अधिक देरतक सोये

रहनेपर वह पार्श्व दर्द-भरा और जखमकी तरह मालूम होता है, इसीलिये रोगीको वाध्य होकर करवट बदलना पड़ता है—बैप्टी, पाइरोजिन ; शय्या कितनी भी कोमल क्यों न हो, रोगीको वह कड़ी मालूम होती है—आर्निका, पाइरो)। एक भावसे अधिक देरतक नहीं सोया रहना चाहता ; रातमें रोगीको बहुत डर लगता है ; वह डरता है, कि कोई उसे विष देगा और उसीसे उसकी मृत्यु हो जायगी (बेल, हायो, लैके, कैलि-बाई, ऐलियम-सैट ; प्रसवके बादके उन्माद रोगमें—वेरेट्र-विर ; रोगी ऐसा समझता है, कि उसे विष खिला दिया गया है—ग्लोन ; रोगी समझता है, कि उसे जो दवा दी गयी है, वह विष है—लैके)। शय्यापर रह नहीं सकता (आर्स, विस्मथ, लाइकोपोड ; एक शय्यासे दूसरीपर चला जाता है—आर्स, कैल्के, हायो, प्लम्ब)। अनमना और भूलनेवाला ; किसी विषयको समझनेमें बहुत देर होती है (बैप्टी, बैराई, कैल्के, जेल्स, कैलि-कार्ब, लैके, नेट्र-म्यूर, ओपि, प्लम्ब, सिपि, स्टैफाई ; बहुत पढ़नेकी वजहसे—काक्यु, कैलि-कार्ब, लैके, नेट्र-म्यूर, ओपि, प्लम्ब)। अनमना है—कोल्चि, कोना ; किसी विषयको समझनेकी चेष्टा करनेपर सब गड़बड़ा जाता है—ओलियैन) ; बहुत थोड़े दिनोंकी घटना भी याद नहीं कर सकता (ऐसिड-फास ; गत छः वर्षोंमें जो घटना घटी है, वह याद नहीं कर सकता—लैके)। असम्बद्ध-प्रलाप (ऐनाक, बैप्टी, कैम्फो, कैनाब-इन, जेल्स, नक्स-मस, स्ट्रैमो) ; कोई बात पूछनेपर जल्दी-जल्दी (लाई) या अनिच्छा-पूर्वक उत्तर देना (कोना, पेपाया, स्टैनम, ऐ-सल्फ, वाइवर्न) ; क्योंकि सोचकर उत्तर देता है उसके लिये कठिन काम हो जाता है (कैल्के, क्लिमैट, काक्य, डिजि, हायो, आयोड, नेट्र-म्यूर, सिपि) ; उत्तर तो ठीक-ठीक देता है, पर धीरे-धीरे (धीरे-धीरे उत्तर देता है—हेलिबो, फास) ; कोई बात सोचकर उत्तर देनेमें जितने समयकी जरूरत होती है, उतनी देरतक एक विषयमें मन नहीं लगा सकता, फिर उत्तर क्या दें। क्षीण और मृदु प्रलाप, रोगी समझता है, कि वह मानो न जाने कितने फूल भरे मैदानमें घूम रहा है या वह किसी बहुत कठिन काममें लगा हुआ है (वेरेट)। उठनेकी शक्तिका न रहना और बहुत ही दुःखित भाव ; रुलाई आना, विशेषकर सन्ध्याके समय (प्लैट, रैनान-बल्बो) और अकेला एकान्तमें रहना चाहता है (इग्ने, नेट्र-म्यूर)। जीवनसे वितृष्णा ; पर मृत्युका भय। आत्महत्या करनेकी इच्छा ; पानीमें डूबकर मर जाना चाहता है (बेल, ड्रोसे, हेलिबो, हायो, लैके, पल्स, सिकेलि, साइलि)। अपनी

सन्तान-सन्तति, विषय कार्य और भविष्यके सम्बन्धमें बहुत चिन्ता (ब्राई, केल्के, चिनिन-सल्फ, साइक्यूटा, फास)।

मस्तक।—शय्यासे उठनेके समय शरीर ढलमलाया करता है, मानो मतवाला हो गया है और जाड़ा या आँखके पीछे दबाव मालूम होता है। सरमें चक्कर—वृद्ध मनुष्योंका; सोनेपर उठनेके समय (चेलिडो, काक्यु, नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम, फास, फाइटो) और घूमने या झुकनेके समय। खड़े होने (ऐको, ब्राई, कास्टि, लैके, पल्स) या चलनेके समय (नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम, फास, पल्स ; सोनेपर बढ़ जाता है (कास्टि, लैके, पल्स—सोनेपर घटना—आर्नि, कार्बो-ऐन, सिना, चायना)। सरमें चक्कर आना—सोनेपर, मृत्यु-भयके साथ। बैठनेकी अवस्थामें रोगीको ऐसा मालूम होना है, मानो किसीने उसे शून्यमें उठा रखा है। सर-दर्द,—सर हिलाने या जोरसे पैर रखनेपर (सर हिलानेपर—नक्स-मस, ग्लोन, जैन्थक्साइलम ; जोरसे पैर रखनेपर—गुयायेकम, स्पाइजिलिया); मस्तिष्कमें ऐसा मालूम होना, मानो हिल रहा है (आर्स, बेल, हिप, स्पाइजि); सरमें बुद्धि लोप करनेवाली तकलीफ, मानो माथा फट रहा है (मर्क, सल्फ); किसी मानसिक अशान्तिका कारण होनेपर भी दर्द पैदा हो जाता है (ब्राई, कैमो, पेट्रोल); वृद्धि—ठण्डी जगहपर बैठने या सोनेपर (मैग-फास, सिङ्कोना, इग्ने, नक्स-मस) और शरीर हिलानेपर (ऐसिड-म्यूर, नक्स-मस, स्पाइजि)। चलनेके समय ललाटपर जलन मालूम होती है (भोजनके बाद और नींद खुलनेपर—नक्स-वोम)। ललाटके पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक मानो एक काठका टुकड़ा अड़ा हुआ है (कार्बो-ऐन, सल्फ)। सरमें अधिक रक्त-संचय होना, बीच-बीचमें माथेमें "हु-हु" शब्द अनुभव होता है (कैलि-कार्ब)। चूंटी चलनेकी तरह सुरसुरी अनुभव होना (ऐ-नाई, ऐसिट-क्रूड, फेरम) और टपक हुआ करती है (बेल, ग्लोन, फास, कैलि-कार्ब); चेहरा चमकीला और लाल (केल्के, बेल, क्रोकस, मिलिलोट), रोगी बेचैनी प्रकट करता है और अधिक देरतक एक जगह रह नहीं सकता। नुकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द, सरसे लेकर कानतक नाककी जड़में और दोनों गालोंमें चला जाता है, खासकर दाँतके दर्दकी बीमारीमें (दाँतके दर्दके साथ सर-दर्द—लैके, कैलि-कार्ब, ग्लोन)। सरके पिछले भागके दोनों उठानोंमें दर्द हुआ करता है और गलेमें मानो वातका दर्द हुआ है, इस तरह अकड़ा मालूम होता है (डालका, रस-रैडिकैन्स)। उद्भेद मिले ज्वराधिकारमें

मस्तिष्कावरणी-प्रदाह (ब्राई, क्यूप्रम-ऐसेट, स्ट्रैमोन) या पानीमें भींजनेके कारण अंग-प्रत्यंगोंमें चुनचुनी हुआ करती है; ज्वर अत्यन्त प्रबल आकार धारण करता है और रोगी छटपटाया करता है। सर-दर्द रोगमें रोगीको बाध्य होकर शय्याका आश्रय ग्रहण करना पड़ता है। माथेमें विसर्प हो जाया करता है और रोगवाले अंशपर रसभरे दाने निकलते हैं (रस-टेन); रोग बायीं ओरसे दाहिनी ओर फैलता है। सरमें खसड़ेके दाने सब पककर उनमेंसे रस निकला करता है और यह रस सूखकर पपड़ी जम जाती है (ग्रैफ, सोरिनम, रस-टेन, मेजेर, पेट्रोल)। उद्भेद सब बहुत खुजलाते हैं और उनमेंसे बदबूदार रस निकलता है, रातमें बहुत बढ़ जाता है; केश झड़ जाते हैं (बायोला-ट्राई); यह अकौता या दाने कन्धेतक फैल जाते हैं और शरीर जितना ही गर्म होता जाता है, खुजली भी उतनी ही बढ़ती जाती है। माथेकी त्वचामें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता; वृद्धि—जिस पार्श्वको दबाकर सोता है, उसके विपरीत पार्श्वमें; शय्यामें देह गर्म होनेपर; छूनेपर (साइलि, पैरिस, नेट्र-सल्फ) और विपरीत ओर केश झाड़नेपर (साइलि, क्रियो, सिना, बेल, ब्राई)। गर्दन अकड़नेके साथ मस्तिष्कावरण प्रदाह—कोई कड़ी चीज़पर सोनेपर घटता है या आराम मालूम होता है। रोगी तकलीफ़से बेचैन हो पड़ता है। वर्षाके दिन सर-दर्दका बढ़ना (रोडोडेण्ड्रन)।

आँख।—रोशनी बिलकुल ही सहन नहीं होती; सवेरे और निर्मल वायु लगनेपर लगातार कषाय या त्वचाको क्षय करनेवाला आँसूका स्राव हुआ करता है (कोलचि, लिडम, क्रियो, इयुफ्रे, लाई, मर्क-कोर); आँखके नीचे अनगिनती लाल दाने निकलते हैं और पलकें रह-रहकर वेगसे रुक जाती हैं (मर्क, नेट्र-म्यूर, ऐलू, कैल्के)। वाताधिकार-प्रवण व्यक्तियोंका उपतारा-प्रदाह (आर्स, ब्राई, कोलचि, कैलि-बाई, सिफिलिन, टेरिब, बेल, इयुफ्रे), जब पलककी परिचालक पेशी और मध्य स्तरपर रोगका आक्रमण होता है या उसमें पीब होता है, खासकर यदि चोटकी वजहसे हुआ हो। आँखके ऊपर गुहौरी और जखम पैदा हो जाता है और भयानक आलोक असहनीयता (रोशनीका सहन न होना) पैदा कर देता हैं; योजक-त्वचा लाल रंगकी हो जाती है और उसमेंसे पीले रंगका पीबकी तरह रस-स्राव होता है। सवेरे आँख लाल हो जाती है और सट जाती है। पलक बहुत फूली और

प्रदाहान्वित हो उठती है। पलक रस-भरी या विसर्प रोग हो गया जैसी मालूम होती है और उसका भीतरी अंश पानीसे भर जाया करता है। भीतरवाली मिवोमियन ग्रन्थि फूल जाती है और बरुनियाँ सब उड़ जाती हैं। वातकी वजहसे दोनों आँखोंके बीचके सफेद अंशमें प्रदाह। वृद्धि—तर जलीय हवामें या बरसातके दिनोंमें; दृष्टि अस्पष्ट। पलकें सब अकड़ जाती हैं और अवश मालूम होती है, मानो उनमें पक्षाघात हो गया है। गुहौरी—निचली पलकके ऊपर (कैल्के, इलैप्स, फास, सेनेगा, ग्रैफ; बाईं निचली पलकपर—हाइपिर, कोलचि; बाईं ऊपरी पलकपर—स्टैफाई, पल्स)। दृष्टि क्षीण, मानो घूंघटके भीतरसे देख रहा है (सल्फ, कास्टि, क्रोकस, हायो, आयोड, लोरी, लिथिया, नेट्र-म्यूर, पेट्रोल, फास) और सभी चीजें छायासे ढँकी मालूम होती है। आँख हिलानेपर सभी लक्षण घट जाते हैं (कोमोक्लेडिया)।

कान।—अच्छी तरह सुन नहीं पाता, विशेषकर मनुष्यका स्वर (ऐसिड-फ्लुयो, फास; पूर्णिमाके समय—साइलि)। कर्ण-शूल,—रातमें कानमें धक्काधक हुआ करता है (पल्स); कानके भीतर और बाहर विसर्प हो जानेकी तरह फूल उठता है और उसपर रसभरे छाले निकल आते हैं। कानके भीतरसे खून मिला पीव निकलता है, बायाँ कर्णमूल-प्रदाह (लैके; किसी भी तरफ—कार्बो-वेज, सिस्टस-कैन, क्रोटेलस, डोरिफेरा, फाइटो); ज्वरके साथ (ज्वर न रहनेपर—कैलि-म्यूर)। फूली हुई कर्णमूलीय ग्रन्थिमें पीव पैदा हो जाना (अरम, बैरा-म्यूर, कार्बो-ऐन, कैमो, काक्यु, कोना, क्रोटेलस-होर, डालका, कैलि-बाई, लैके, फाइटो, सैरासिनिया, साइलिसिया)।

नाक।—घ्राण-शक्तिका लोप हो जाना। नाकसे जमा हुआ खूनका स्राव होना (आर्जेण्ट-नाई, कैमो, फेरम-म्यूर, ऐ-नाई, मर्क, लिसिन, पल्स); वृद्धि—रातमें (बेल, ऐ-नाई); झुकनेपर (नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम)। पाखाना होनेके समय (काफि, फास; पाखाना होनेके समय वेग देनेके बाद—कार्बो-वेज) या शारीरिक परिश्रमके बाद (आर्निका)। मोह या सान्निपातिक ज्वरमें भी इसी तरह रक्त-स्राव हुआ करता है (लैकेसिस, क्रोटेलस), पर इससे आराम मालूम होता है। आन्त्रिक ज्वरके आरम्भमें नाकसे खूनका स्राव (ऐ-फास)। रह-रहकर जोरसे शरीरको हिला देनेवाली छींक (जेल्स, सैबाई, नेट्र-म्यूर)। पुरानी सर्दीमें नाकसे जो सर्दीका स्राव होता है, वह गाढ़ा

पीला, श्लेष्मा-भरा होता है या हरा बदबूदार पीब ; कभी-कभी गलेकी ग्रन्थिकी सूजनके साथ पीले रङ्गका रस-स्राव हुआ करता है। नाकके नीचे ज्वरके छाले या दाने (नेट्र-म्यूर) निकलते हैं और पपड़ी पैदा हो जाती है (सिस्टैन, सिपिया)। नाकका अगला भाग लाल और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता ; दोनों रंध्रोंकी त्वचा क्षय हो जाती है। नाक फूली मालूम होती है और छूनेपर वह गर्म हो जाती है। श्वास-प्रश्वासके समय, नाकमें घुसी हुई हवा इतनी गर्म मालूम होती है, मानो दोनों रंध्र दग्ध हुए जाते हैं (ऐकोन, कार्बोन-सल्फ)।

मुखमण्डल।—चेहरा लाल या मलिन और सफेद, नाकका अगला भाग नोकीला, गाल और आँखें गड़हेमें धँसी और दोनों आँखें नीले घेरेसे घिरी, चेहरेका विसर्प (एपिस, ग्रैफ, कैन्थ, कार्बो-ऐन, कैमो, इयुफोर्ब)। चेहरा घोर लाल और पीले रङ्गकी रस-भरी फुन्सियोंसे भरा ; दाने सब बायेंसे दाहिनी ओर फैल जाते हैं (दाहिनी ओर फैलते हैं—एपिस)। दानोंमें जलन होती है, खुजलाता हैं और चुनचुनी होती है और उसमें ऐसा दर्द होता है, मानो डङ्क मारा जा रहा है। चेहरेमें जलन, खींचन और फाड़नेकी तरह यन्त्रणासे अधीर हो पड़ता है। मुँह या ललाटपर पपड़ी या रूखी जमना (साइक्यूटा, क्रोटोन, डाल्का, ग्रैफ, हिप, वायोला-ट्राई, विङ्कामाई, रस-वेन)। भूरे व्रण (कार्बो-ऐन, कार्बो-वे, कास्टि, इयुजिनिया, लैके, सोरिन, हाइड्रोकोट)। चेहरेपर ठण्डा पसीना होना। मुँहको स्थिर रखनेके समय और हनु हिलानेके समय हनु-सन्धिमें अकड़न अनुभव होती है, जरा हिलनेसे ही कड़कड़ करती है (लैके, इग्ने, पेट्रोल)। घटना—जोरसे दबानेपर और गर्म चीज़ खानेपर। बार-बार जम्हाई—अन्तमें ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों हनुओंकी सन्धि खिसक जायेगी (क्लोरम, नाइट्रि-स्पिरि-डाल)। मुँहके कोनेमें जखम (ऐ-नाई, ऐमोन-म्यूर, हिप, मर्क, नेट्र-म्यूर, सोरिनम, ग्रैफ, स्टैफाई); मुखके रंध्रके चारों ओर ज्वरके दाने निकलते हैं (नेट्र-म्यू, हिप ; विज्वरावस्थामें—हिपर); चिबुकपर दाने निकलना।

मुख-विवर।—दन्त पंक्तियोंमें बहुत दर्द और नाककी जड़में डङ्क मारनेकी तरह दर्द, यह दर्द गण्डास्थिमें फैल जाता है। दाँत सब बहुत लम्बे और उनकी जड़ बहुत ढीली और सुन्न मालूम हुआ करती है। दन्त-

शूल—चिलक मारनेकी तरह दर्द या टनक हुआ करती है, मानो उखाड़ा जा रहा है या हलका सुई गड़नेकी तरह या फाड़नेकी तरह टपक होनेवाला दर्द, दोनों हनु और कनपटीतक यह दर्द फैल जाता है; चेहरा बहुत दर्द-भरा; वृद्धि—रातमें छूनेपर और मनमें किसी तरहका असन्तोषका भाव उदय होनेपर, गर्म प्रयोगसे घटना। क्षयप्राप्त दाँतोंसे बहुत बदबू निकलती है। मुख-विवर बहुत सूखा और तेज़ प्यास (ब्राई)। मुँहमें बहुत ज्यादा लार सञ्चित होती है। रातमें निद्रित अवस्थामें मुँहसे पीली और कभी-कभी खून मिली लार निकला करती है (मर्क, नेट्र-मूर, सल्फ)। तीसरे पहर निद्रित अवस्थामें बैठे रहनेपर मुँहसे लार टपक पड़ती है। सवेरे और भोजनके बाद मुँहका स्वाद बिगड़ जाता है और धातुके जङ्गकी तरह स्वाद हो जाता है। खानेके पदार्थ, विशेषकर रोटी तीती मालूम होती है। जीभ सूखी, लाल और उसकी पीठ फटी रहती है, अगला भाग तिकोनिया लाल होता है। जीभपर दाँतके दाग भरे रहते हैं (चेलिडो, आर्स, मर्क, पोडो, हाइड्रैस्ट)। मुँहमें बदबू। मुँह और कण्ठमें बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा गोंदकी तरह कफ़ इकट्ठा होता है और रोगी बार-बार कफ़ थूकता है (कैप्स, एरम-ट्राई, कार्बो-वेज, कैलि-बाई, लिसिन)।

गलेके भीतर।—स्वरयन्त्र या कण्ठ वक्तृता आदि देनेपर अकड़े और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह मालूम होती हैं (एरम-ट्राई, फेरम-फास, आर्जेण्ट-नाई, कैप्स, लैके)। दोनों जिह्वामूलीय ग्रन्थियाँ, विशेषकर दाहिनी ग्रन्थि पीली झिल्लीसे ढँकी मालूम होती है। जिह्वामूलीय ग्रन्थिमें सुई या डङ्क मारनेकी तरह दर्द अनुभव होता है, विशेषकर लार या कोई पदार्थ निगलना आरम्भ करनेके समय कण्ठमें दर्द और ऐसा मालूम होना मानो फूल गया है। विसर्पकी तरह प्रदाह; दोनों कर्णमूल ग्रन्थियाँ फूल उठती हैं; गलेके कोषमय तन्तुका प्रदाह; रोगीको बहुत औंघाई आती है। गलनलीमें कोई कड़ा पदार्थ निगलनेके समय ऐसा दर्द होता है, मानो गलनाली संकुचित हो गई है (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, वेल, नक्स); जलीय पदार्थ निगलनेमें कष्ट और कड़ी चीज़ निगलनेके समय आराम मालूम होता है (इग्ने)। त्वचाको क्षय करनेवाला क्षार पदार्थ निगलनेकी वजहसे अन्ननलीका प्रदाह; अन्यान्य कारणसे होनेपर (ऐसिड-नाई, आर्स, कार्बो-वेज, जेल्स, आयोड, सेबाड)। कण्ठ, पाकाशय और उदरके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो उसमें कुछ छिल गया है।

पाकस्थली ।—अरुचिके साथ भूख या भूख लगनेपर भी कोई चीज़ अच्छी नहीं लगती (नेट्र-म्यूर, ओलियेन, ओपि, रियुम); केवल मुख-रोचक पदार्थ या अचार खानेकी इच्छा (सिङ्कोना)। मीठी चीज़ अच्छी लगती है (ब्राई, इपिक, केलि-कार्ब, लाई, मैग-म्यूर, सल्फ)। मांस और तेज़ शराबसे अरुचि (मांससे अरुचि—ऐसिड-म्यूर, सिङ्कोना, नक्स-वोम, पेट्रोल, साइलिसिया; शराबसे अरुचि—सैबाड, इग्ने, मर्क-सोल)। दुर्दमनीय तृष्णा, केवल ठण्डे पानीय पीनेके लिये लालायित रहता है (ऐकोन, ब्राई, सिना, फास, वेरेट); वृद्धि—रातमें मुँह सूख जानेके कारण। डकार—मिचली या पाकाशयमें कुछ जलन अनुभव होनेके साथ घटना—सोनेपर; वृद्धि—शय्यासे उठनेके समय मिचली, बरफका पानी पीनेपर (ऐसिड-कार्बोल, नेट्र-आर्स) या भोजनके बाद (मकुर्र-पैरेन, सिकेलि); एकाएक वमनके साथ; वृद्धि—रातमें। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द (कैमो) या टपक (साइक्यूटा, सिनकोना, पल्स), भोजनके बाद मानो न जाने कितना खा लिया है या पाकाशयमें एक टुकड़ा पत्थर रखा हुआ है, इस तरहका भरापन या भार मालूम होता है (लाई, नक्स-वोम, पल्स, हाइड्रैस्ट, ब्राई, क्रियो, ऐण्टि-क्रूड, सिङ्कोना, रियुम)। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें दबाव मालूम होना, मानो पेट फूल गया है। भोजनके बाद सोनेकी बहुत अधिक इच्छा, पाक और अन्त्राशय परिपूर्ण और भारी मालूम होते हैं, ओकाई आनेके साथ मिचली, आलस्य मालूम होना, सरमें चक्कर आना और सिहरावन मालूम होना (भोजनके बाद बहुत औंघाई—लाई, नक्स-मस, साइक्यूटा, लैकेसिस)। ठण्डा पानी और ठण्डा दूध पीनेका आग्रह।

अन्त्राशय ।—कोखमें, विशेषकर उदरमें ऐसा दर्द और स्पर्श सहन न होना, मानो चोट लग गयी है; वृद्धि—जिस करवट सोता है, उसी करवट; करवट बदलनेके समय और पहली बार हिलनेके समय। पेट फूल जाता है और आध्मान वायुसे भर उठता है, विशेषकर भोजनके बाद (लाई, सल्फ, कार्बो-वे, लिलियम-टाई, सिपि) और दिनभर उसमें गड़गड़ गुड़गुड़ या वायु पैदा होना हुआ करता है (डायाडिमा, लाई, नेट्रम-म्यूर)। अन्त्र-प्रदाह और अन्त्राशयावरणी-प्रदाह, इसके साथ ही विकारके लक्षण प्रकट होते हैं (अन्त्र-प्रदाह—एपिस, बेल, ब्रायो, टेरिब, लैके; अन्त्राशयावरणी-प्रदाह—आर्स, बेल, कैमो, लाई, टेरिब)। अन्त्रशूल—रोगीको बाध्य होकर झुककर चलना पड़ता है; वृद्धि—रातमें और पानीमें भींजनेपर। अन्धान्त्र-प्रदाह (बेल, ओपि,

थूजा, लेके, प्लम्ब)। उदरमें ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ फट गया है (मानो सभी आँतें फट गयी हैं—ग्रैफ)। नाभीके कुछ ऊपर उदरका सिकुड़ना स्पष्ट दिखाई देता है, ऊर्द्धगामी स्थूलान्त्र-प्रदेशमें दर्द मालूम होना। उदर शिथिल, चलनेके समय उसके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ हिल रहा है।

मलान्त्र और मल।—उदरामय और आमातिसार; मल पानीकी तरह आँव-भरा और खून-मिला; इसके साथ ही मिचली, उरुके पिछले पार्श्वमें फाड़नेकी तरह दर्द और बहुत कूथन मौजूद रहती है; कभी-कभी मल फेन-भरा (कोलो, मर्क, पोडो, सल्फ); कभी-कभी सफेद (मर्क, नक्स, पल्स, रियुम); यन्त्रणा न रहना और अजीर्ण; ताजे मांसके धोवनकी तरह (फास), आन्त्रिक ज्वर रोगमें रातमें पीला, भूरा, रक्त-मिला, सड़ी गन्धभरा और अनजानमें होनेवाला अतिसार। रातके समयका अतिसार—उदरमें भयानक दर्द, घटना—पाखाना होनेपर या पट होकर सोनेपर (कोलो, ब्राई)। अर्श—जखम-भरा और बादी; पाखाना होनेपर मसा बाहर निकल पड़ता है और मलान्त्रमें दबाव मालूम होता है, मानो सभी चीजें बाहर निकल पड़ेंगी। आमरक्त—मल मांड़की तरह, गन्धहीन; आधी रातके बाद पाखाना अधिक बार होता है; पाखाना होनेके पहले और बाद बहुत दर्द और बेचैनी पैदा हो जाया करती है। आंत्रिक ज्वरके विकार लक्षणकी सूचनावस्थामें उदरामय—मल अनजानमें हुआ करता है और रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है; पाखाना होनेके समय उरुके पिछले भागमें फाड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है।

पेशाब।—पानीमें भींजनेके बाद जलीय वायु लगनेपर मसानेके प्रदेशमें शोथकी तरह सूजन और फाड़नेकी तरह दर्द। पेशाब गर्म, सफेद आभा लिये और गाढ़ा या सफेद पेशाब और उसमें सफेद रङ्गकी तली; कभी घोर लाल रङ्गका—क्रमसे गदला हो जाता है। मूत्राशयका प्रबल सङ्कोचन—कई बून्द खूनकी तरह लाल पेशाब निकलता है (कैन्थ, टेरिब)। मूत्र-रोध—बहुत तेज़ कमरका दर्द, इसी वजहसे रोगी बेचैन हो पड़ता है। पेशाबकी धार कई भागोंमें बँटकर निकलती है (कैना-सैट, कैन्थ, चिमाफिला, ऐम्ब, मर्क, थूजा)। दिन-रात बार-बार पेशाबका वेग और बहुत ज्यादा पेशाब। अधिक पानी पीनेपर भी पेशाबका परिमाण घट जाता है (रैफिनस)। जलमें भींजनेकी तरह मेरुदण्डपर रोगका आक्रमण होता है और पेशाब बहुत धीरे-धीरे निकलता है। रातमें स्थिर रहनेपर अनजानमें पेशाब हुआ करता है।

पुं०-जननेन्द्रिय।—रातमें लिङ्गमें कड़ापन ; पेशाबके वेगके साथ लिङ्गमें कड़ापन होना। लिङ्गमणि और लिङ्गको ढँकनेवाली त्वचाका फूलना, घोर लाल रङ्ग और विसर्पकी तरह दिखाई देती है। मुष्क कड़ा और मोटा हो जाता है और उसमें भयानक खुजली हुआ करती है। मुष्कका शोथ या सूजन। जननेन्द्रियके ऊपर और मुष्क या उरुके बीचमें रस-भरी फुन्सियाँ निकलना (क्रोटन-टिग, नेट्र-म्यूर, रस-वेन)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु-स्राव—असमयमें ही प्रकट होता है और स्राव बहुत ज्यादा और बहुत दिनोंतक स्थायी हुआ करता है ; रक्त सफेद और कषाय (कैलि-कार्ब, लैके, नेट्र-सल्फ, पेट्रोल) योनिके बाहरी भागमें यह स्राव लगनेपर कुटकुटाया करता है और खुजली पैदा हो जाती है। आर्त्तवका अभाव—जलमें भींजनेके कारण (दोनों पैर पानीमें भींजने या दोनों पैरमें ठण्डा पानी लगनेकी वजहसे—ऐको, पल्स), स्तनमें दूध भर आता है। जरायुसे खूनका स्राव—स्रावके समय प्रसवके दर्दकी तरह दर्द पैदा हो जाता है ; खून जम जाता है (आर्निका, कक्कस, सैबाइना)। जरायु आदि यन्त्रोंका नीचेकी ओर खिंचना—कमरमें बहुत दर्द किया करता है। ऐसा अनुभव होना, मानो सब कुछ बाहर निकल पड़ेगा (बेल, क्रियो, लिलियम-टाई, सिपिया, लैक-कैन, नेट्र-कार्ब, पोडो), विशेषकर खड़े होने (सिपिया, कोनायम, रियुम) या चलनेके समय (सिङ्कोना, लिलियम-टाई, प्लैट)। नीचेकी ओर खींचन या कमरका दर्द घटना—किसी कड़ी शय्यापर सोनेपर (चित होकर सोनेपर कमरके दर्दका घटना—नेट्रम-म्यूर ; दबा देनेपर घटना—कैलि-कार्ब) ; बहुत परिश्रमकी वजहसे जरायु-भ्रंश। योनिमें बहुत अधिक स्पर्श-कातरताकी वजहसे रमणालिङ्गनमें व्याघात होता है (इग्ने, कैलि-कार्ब, फेरम-म्यूर ; योनिका बाहरी भाग प्रदाहान्वित और विसर्प हो जानेकी तरह फूला मालूम होता है (कैल्के, क्रोटन, मर्क, ग्रैफ)। गर्भावस्थामें खूनका स्राव (काक्यु, ट्रिलियम ; यहाँतक कि रक्त-स्रावकी वजहसे गर्भ-स्राव हो जानेका उपक्रम हो जाता है—सिनेमोमम् ; तीसरे महीनेमें ऐसा होनेपर—क्रियो) हो जाता है और चलने-फिरनेके समय वस्ति-देशके चारों ओरकी सन्धियाँ सब मानो अकड़ी-सी मालूम होती हैं (अवश मालूम होना—कैल्के ; मानो वस्ति-देशकी अस्थियाँ सब अलग हुई जाती हैं—सूरिक्स ; नितम्ब-देशकी सन्धियाँ सब मानो झुक पड़ती हैं ; सोनेपर घटना—इस्क्यु-हिप)। बहुत परिश्रम या

कमरमें मोच खा जानेके कारण तुरन्त गर्भ-स्राव होनेका उपक्रम। प्रसवके बादका क्लेद स्राव बिगड़ जाता है, अधिक दिनोंतक स्थायी होता है या जभी-तभी फिरसे पैदा हो जाया करता है। सूतिकाके समय गर्भिणीके पैरमें सफेद रङ्गका शोथ (ब्राई, लैके, पल्स, कैल्के); प्रसवके बाद जरायु-प्रदाह (ब्राई, सिकेलि, ओपि)। इसके साथ ही विकार लक्षण। स्तनमें शीत लगनेकी वजहसे फूल उठता है और चारों ओर लाल रेखाएँ सब दिखाई देती हैं (बेल, फाइटो, ब्राई)। स्तनके स्रावकी अधिकता (बेल, कैल्के, कोना, फास, लैके); सारे शरीरमें उत्ताप पैदा होकर दूध गायब हो जाता है (अन्यान्य कारणसे होनेपर—कास्टि, पल्स; सर्दी लगनेकी वजहसे होनेपर—ब्राई; सूतिका ज्वर रोगमें—कैमो); स्तनका दूध फट जाना (बोरैक्स); स्तनसे जमा हुआ दूध और पीव निकलता है।

श्वास-यन्त्र।—स्वर-तन्तुके बहुत परिश्रमकी वजहसे स्वरभंग (आर्नि, कैप्सि, कास्टि, फेरम-फास, कैलि-फास, फास); गायक, वक्ता और अभिनेताओंका स्वरभंग (आर्जेण्ट-मेट, एरम-ट्राई, कास्टि, फेरम-फास, स्टिलिञ्ज)। स्वरभंग और स्वरनालीमें रुखड़ापन अनुभव होना और वक्षमें बहुत रुखड़ापन और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह दर्द मालूम होना। वायुनलीके भीतरसे ऐसा मालूम होता है, मानो गर्म हवा निकल रही है। श्वास-प्रश्वासके समय स्वरनलीमें सर्दी मालूम होती है (श्वास-प्रश्वासके समय स्वरनलीमें खींची हुई हवा ठण्डी मालूम होती है—सिस्टस; स्वरनलीमें सर्दी मालूम होना—ब्रोम)। श्वास-प्रश्वासके समय दबाव मालूम होना, मानो खींची हुई हवा उदरोर्द्ध-प्रदेशतक जाकर अटक जाती है (मानो खींची हुई हवा उदरोर्द्ध-प्रदेशतक नहीं जाती; मानो साँस अटती नहीं—प्रूनस-स्पाई); भोजनके बाद बहुत बढ़ जाता है; रोगीमें बहुत उद्वेग पैदा हो जाता है, मानो वह जी-भर साँस नहीं ले सकता। सर्दी-मिला ज्वर। बहुव्यापक सर्दीमें वायुमार्ग सब ऐसे मालूम होते हैं, मानो रुक गये हैं। प्रबल सूखी और खुजली पैदा करनेवाली खाँसी। रोज़ सन्ध्यासे रातके १२ बजेतक बढ़ना; कमर और प्रत्यंग आदि अकड़े मालूम होते हैं। खाँसी—सूखी या दुःख देनेवाली; वायुनलीभुजमें खुजलीकी वजहसे खाँसी; शरीरका कोई भी अंश यहाँतक कि एक बाँह भी खोलनेपर खाँसी पैदा हो जाती है (हिपर; हाथ या पैर खोलनेपर अन्त्रशूल बढ़ जाता है—रियुम); वक्षमें फाड़ने और शूल वेधनेकी तरह यन्त्रणा। बहुत ज्यादा

पसीना निकलना (ओपि, कैलि-कार्ब, पल्स, सैबाड) और पाकस्थलीमें दर्द मालूम हुआ करता है (कैम्फो, लैके); खाँसी सन्ध्याके समय और रात १२ बजनेके पहले बढ़ जाती है या सवेरे नींद खुलनेके बाद ही (ऐलूम, कार्बो-वेज, कैलि-कार्ब, साइलिसिया); बोलनेपर (हायो, रियुमेक्स, स्टैनम)। सोनेपर, विशेषकर बायीं करवट (लाई, पैरिस, फास ; रातमें सोनेपर—डलिकास, ड्रोसे) या स्थिर होकर बैठे रहनेपर (सीधे होकर बैठनेपर—नेट्रम-म्यूर, ऐकोन)। बलगम कषाय पीव-भरा या फीका हरे रङ्गका, ठण्डा श्लेष्मामय और सड़ी गन्ध-भरा या फीका जमा हुआ भूरे रङ्गका रक्त। ज्वराधिकारमें सर्दी लगनेके पहलेसे शीतके समयतक लगातार खाँसीकी (सिङ्कोना, सल्फ) वजहसे रोगी क्लान्त हो पड़ता है (सैम्बुकस ; शीतके समय—फास, सैबाड)। खाँसते-खाँसते खाया हुआ पदार्थ कै कर देता है (ब्राई, फेरम, नेट्रम-म्यूर)।

वक्ष।—वक्षमें सुई गड़नेकी तरह ; वृद्धि--विश्रामके समय या स्थिर रहनेपर (रस-रैड, सैम्बु)। छींकनेपर (बोर, ड्रोसे, मर्क) और श्वास-प्रश्वासके समय (बोर, ब्राई, कैलि-कार्ब, स्क्वियुला, स्टैनम) या टेढ़े होकर बैठनेपर। वक्षमें गर्मी मालूम होती है, खासकर स्थिर होकर रहनेपर। फेफड़ेके प्रदाहमें उत्पन्न हुआ पीव फिर आशोषणकी वजहसे (आर्स, कार्बो-वेज, क्रोटेलस, लैके, पाइरोजेन, कैलि-फास, फास) विकारका लक्षण प्रकट होता है (ऐण्टि-टार्ट, ब्राई, लाई, फास, सल्फ)। इसके साथ ही वक्ष फाड़ डालनेवाली खाँसी और बेचैनी ; स्थिर बैठे रहनेपर तकलीफ़ और श्वासकष्ट बढ़ जाता है (अरम, सेनेगा)। रक्तकास या खून-मिला बलगम (आर्निका, फेरम, इपिक, लिडम, फास, पल्स, सल्फ)। बाँसुरी बजाना वगैरह फेफड़ेके बहुत परिश्रम होनेकी वजहसे रक्तकास (इपिक, मिलिफोल)। खून चमकीला लाल (बेल, डाल्का, हायो, सैबाइ); वक्षके निचले अंशमें दर्द मालूम होना ; किसी मानसिक उद्वेगका कारण होनेपर वह फिरसे पैदा हो जाता है। फेफड़ेकी कमजोरीकी वजहसे रोगी यदि घरके बाहरी भागमें टहलता है, तो इतना हाँफ जाता है कि वह बोल नहीं सकता। वक्षके पार्श्व भागमें दर्द। दर्द वक्षसे कन्धेतक फैल जाता है। खाँसनेपर मुँहमें खूनका स्वाद अनुभूत होता है।

हृत्पिण्ड।—उत्कट शारीरिक व्यायाम या परिश्रमकी वजहसे हृद्पिण्डका बढ़ना (ऐको, आर्नि, ब्रोमि)। हृत्पिण्डका यन्त्रगत रोग। हृत्पिण्ड-

प्रदेशमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह तकलीफ़ मालूम होना, बायाँ बाँह सुन्न और अवश हो जाता है (ऐक्टिया, ऐकोन, कैल्मिया) और इस हाथकी अंगुलियोंमें हलकी जलन होती है (ऐकोनाइटम)। चलने बाद फेफड़ा और हृत्पिण्ड क्षीण हो पड़ता है और ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्ड काँप रहा है। स्थिर होकर बैठनेके समय जोर-जोरसे कलेजा धड़कना (कार्बो-वेज, लैके ; सवेरे नींद खुलनेपर स्थिर होकर बैठे रहनेपर—स्पाइजिलिया ; टहलनेपर अच्छा हो जाता है—मैग सूरर) ; हृद्स्पन्दनकी वजहसे ऐसा मालूम होता है, कि सारी देह स्पन्दित हो रही है (नेट्र-म्यू, स्पाइजि)।

गर्दन और पीठ।—गर्दन अकड़ी, माथा घुमानेपर गलेमें खींचन मालूम होती है। कन्धा और पीठमें दर्द और ऐसी अकड़न मालूम होती है, मानो मोच आ गयी है। मेरुदण्डका टेढ़ापन (कैल्कै, लाई, पल्स, सिलि, सल्फ), गलेकी रीढ़के भागका टेढ़ापन (कैल्के, सिफिलिन)। मेरुमज्जा-वरणी-प्रदाह—मेरुमज्जातक प्रदाहान्वित हो जाता है, पानीमें भींजनेके कारण (फास) या तर भूमिमें नींदसे सो जानेके कारण। नितम्बदेशमें दर्द मालूम होना—किसी कड़ी चीजपर कमर रखकर (चित होकर) सोनेपर घटना या दर्दका कम पड़ जाना (नेट्र-सूर)। कटिवात। कमरमें दर्द हुआ करता है। मानो बहुत देरतक बैठा या झुका हुआ था (रोडो, पैलेडियम, ओनोस्मोड, ओलियैन)। बगलकी ग्रन्थिमें सूजन और दर्द (ऐमोन-कार्ब, स्टैफाई)। दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचके स्थानमें फाड़नेकी तरह दर्द। शरीर हिलानेपर दर्द घटता या बढ़ता नहीं है ; वृद्धि—सर्दी लगनेपर और घटना—गर्म प्रयोगसे।

प्रत्यङ्ग आदि।—कन्धेमें फाड़नेकी तरह दर्द और जलन अनुभव होना (फाड़नेकी तरह दर्द—गैम्बो, मैग-मूरर, पल्स ; जलन—बायें कन्धेके नीचे—एलैन्थस ; दाहिने कन्धेमें—आइरिस, कार्बो-वेज) ; वृद्धि शीतल या जलीय वायु लगनेपर, शय्यापर सोनेके समय और स्थिर होकर रहनेपर। बगलकी गाँठमें पीव होना (हिप, मर्क, इलैप्स, मर्क-विन, कैलि, साइलि)। संध्याके समय हाथ गर्म और फूल जाया करते हैं (ब्राई)। करपृष्ठकी त्वचा फटी या हाथकी पीठ फटी—अधिक पानी व्यवहार करनेके कारण (कैल्के, हिप, सिपिया, सल्फ, सार्सा)। हाथके ऊपर मस्से (डालका, कैल्के, कास्टि, लैके,

सिपिया, थूजा)। हाथकी अंगुलियाँ सब फूल उठती हैं (ऐसिड-बेञ्जो, कैल्के, सल्फ)। नखकी जड़की खाल उधड़ जाना (नेट्र-म्यूर, सल्फ, कैल्के, मर्क, साइलि); बाँह उत्ताप रहित, सुन्न और अवश। वातकी वजहसे पक्षाघातके कारण दाहिना बाँह बहुत क्षीण। बाँहकी हड्डी बढ़ना, उसमें जखम पैदा हो जाता है और जलन होती है और इस जखमसे रसकी तरह पीव निकलता है। बाँहके ऊपरकी शिराएँ सब फूल जाती हैं। कलाईपर थक्के-के-थक्के दाने सब निकलते हैं, उरु-शिखरमें दर्द (आर्स, कोलोसिन्थ, कैलि-कार्ब, पल्स, साइलि), रोगी अनजानमें लंगड़ाकर चलता है। जानु-सन्धिमें अधिक दर्द मालूम होता है, ज्यादा परिश्रम करनेपर और रातमें दर्द बढ़ जाया करता है। पैर बढ़ाने या क़दम रखनेके समय दोनों पैर रह-रहकर स्पन्दित होने लगते हैं, दाहिने ऊरुके पीछेकी ओर स्नायुशूल या गृध्रसी वात (कार्बो-सल्फ, चिनिन-सल्फ, कोलोसिन्थ, लैके, प्लैण्टेगो, सिपिया, टेल्यू); लगातार दर्द मालूम हुआ करता है। वृद्धि—रातमें ठण्डी या जलीय हवामें; घटना—मलनेपर, सेंकनेपर और व्यायामके बाद शरीर गर्म होनेपर; रोगवाला अंग सुन्न मालूम होता है और सड़सड़ करता है; रोगी तकलीफ़से चिल्लाया करता है; विश्रामसे बढ़ना और शरीर हिलानेपर घटना। पानीमें भींजनेके कारण रह-रहकर दोनों पैरोंमें तेज दर्द अनुभूत होता है, विशेषकर शरीर गर्म और पसीना निकलनेकी तैयारी रहनेपर (पसीना निकलनेके समय "रसडाइवार्सिलोवा" और "रस-विनिनिटा" की शक्ति अधिक प्रकट हुआ करती है) पैरमें ऐंठन,—रोगीको बाध्य होकर शय्यासे उतरकर टहलना पड़ता है। आधी रातके बाद और टहलनेके बाद बैठनेपर पैरकी पोटलीमें ऐंठन होती है। जखम,—पैरके ऊपर जखमसे लगातार रस गिरता है (मर्क-सोल, लैके, कोमोक्लेड); शोथवाले पैरका जखम,—पतला गोंदकी तरह रस निकलता है। बहुत दिनोंतक दोनों पैर झुलाकर बैठनेके कारण या चलनेके कारण एँड़ी या उसके पासवाला प्रदेश फूल-उठता है; दोनों पैर सन्ध्याके समय फूल उठते हैं। रातमें दोनों पैरोंमें असह्य खुजली हो जाया करती है; बहुत दिनोंकी खुजली दिखाई देती है। मोच खाना, बहुत भारी चीज उठाना या ऊँची जगहसे कोई चीज़ उतारनेके कारण प्रत्यंग विशेषमें सूजन, अकड़न और हिला न सकना। प्रत्यंगोंमें फैलनेवाला विसर्प (एपिस, आर्निका, ग्रैफ, हिप, लैके, वेरेट-विर)। वातसे उत्पन्न दर्दकी तरह दर्द—रोगवाला अंग सुन्न हो जाता है और उसमें चुनचुनीकी

तरह दर्द होता है ; रोगवाली सन्धि अकड़ी और लाल ; चिकनी सूजनसे भरी, छूनेपर उसमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है ; विश्रामके बाद पहले-पहल देह हिलानेके समय या सवेरे सोकर उठनेके समय अधिक दर्द और अकड़न ; आधी रातके बाद और जलीय या तर हवा लगनेपर भी दर्द बढ़ जाया करता है ; कुछ देरतक रोगवाला अंग लगातार हिलाते रहनेपर दर्द घट जाया करता है। विश्रामके समय रातमें रोगवाले अंगमें फाड़नेकी तरह दर्द अनुभव हुआ करता है। जिस अंगको दबाकर सोता है, विशेषकर जो बाँह दबाकर सोता है, वह सुन्न हो जाता है और उसीमें झुनझुनी होती है। दिनभर हाथ और दोनों पैर बहुत ठण्डे मालूम होते हैं।

सार्वाङ्गिक।—पक्षाघात ; स्वाभाविक या अनभ्यस्त परिश्रमके बाद (आर्नि, आर्स) ; प्रसवके बाद ; पानीमें भींजने या तर भूमिमें सोने आदिके कारण वातकी वजहसे उत्पन्न (आर्नि, ब्राइ, कैल्के, फास, जेल्स, कैलि-म्यूर, लाइ) ; बहुत इन्द्रिय-परिचालनसे उत्पन्न (फास, कैल्के, नक्स, नेट्र-म्यूर, कैलि-ब्रोम ; हस्तमैथुनसे उत्पन्न—कैल्के, सिङ्को, स्टैनम) ; सविराम या आन्त्रिक ज्वरके बाद (आर्स, लेके, नेट्रम-म्यूर, नक्स, सल्फर) और अवसाद प्राप्त होनेके बाद (फास, नेट्र-फास, लेके) ; आक्रान्त अंग दर्द-रहित या दर्द पैदा करनेवाली अकड़न और फाड़नेकी तरह दर्द-भरा, सुन्न और उसमें चुनचुनी होती है। एक पार्श्वका पक्षाघात (कास्टि, कैलि-आयोड, इलैप्स), दाहिने (एपिस, आर्नि, बेल, ओपि ; बाएँ पार्श्वका—लेके, नक्स-वोम) ; रोगवाले अंगमें ऐसा मालूम होता है, मानो झुनझुनी आ गयी है। शोथ—पेशाब गदला होता है, ग्रन्थियाँ सब फूली, गर्म और दर्द-भरी रहती हैं ; ग्रन्थियोंका कड़ा हो जाना और उसमें पीब पैदा हो जाना। प्रत्यंगोंमें दर्द, मानो हड्डीके ऊपरसे मांस सब उखाड़ा जा रहा है (थूजा), मानो हड्डीके ऊपरसे मांस सब खाया जा रहा है (एसिड-फास)। हाथ-पैरकी बड़ी हड्डियाँ सब प्रदाह-भरी और फूल जाती हैं। इसके दर्द आदिकी वृद्धि—वृष्टिके पहले (रोडो) ; आधी रातके बाद ; सवेरे ; सोनेके पहले ; स्नान करनेपर (ऐण्टिम-क्रूड) ; ठण्डा पानी सहन नहीं होता। हेमन्त ऋतुमें रोग आदि पैदा हो जाया करता है ; खाँसनेपर ; लम्बी साँस लेनेपर ; सर्दी या सर्द जलीय वायु लगनेपर ; खानेकी चीजें चिबानेपर ; दोनों पैर सिकोड़ रखनेपर ; शारीरिक परिश्रमसे ; पानी पीनेपर (खाँसी—मर्क, सिलि) ; माथा खोलनेपर (सर्दी होती है—हिप,

सिलि); सोनेपर (कोना, ड्रोसेरा, लाई, पल्स, प्लैट, सैम्बु); विश्राम करने, बैठने या बोलनेपर; पसीना निकलनेके समय (इपिक, मर्क, स्पञ्जिया); कपड़े आदि उतारनेपर; कुहरे-भरे दिनोंमें; पानीमें भींजनेपर; रमणियोंके सूतिकागृह (सौरी घर) में रहनेपर।

त्वचा।— शरीरकी त्वचा बहुत खुजलाया करती है और सारे शरीरमें लाल छोटे-छोटे खसड़ेकी तरह फुन्सियाँ निकलती हैं। सारे शरीरमें खुजली पैदा हो जाया करती है। रोएँसे ढँके स्थानमें (कैलि-बाई); खुजलानेपर जलन आरम्भ हो जाती है (गैम्बो, गासिपो, लैके, लैक-कैन, सिपि)। शीतपित्त या आमवात—पानीमें भींजनेके कारण; वातव्याधि रोग (आर्टिका-इयु); ज्वराधिकारमें शीत और उत्तापावस्थामें (नेट्र-मूर, आर्स; शीतावस्थाके बाद—इलैट; उत्तापावस्थामें और पसीनेवाली अवस्थाके बाद—एपिस); ठण्डी हवा लगनेपर बढ़ना; उत्तापावस्थामें शरीर मलनेपर खुजली बढ़ जाया करती है, पसीनेवाली अवस्थामें भयानक खुजली पैदा होकर बन्द हो जाती है (उत्तापावस्थाके आरम्भ होनेके साथ ही सब आमवात अच्छा हो जाता है (हिप)। उद्भेद—दादकी तरह (ग्रैफ, नेट्र-मूर, सिपिया, टेलूर), उसमें लगातार खुजली पैदा हो जाया करती है, जलन होती है और चुनचुनी होती है; उद्भेद आराम हो जानेपर वक्षमें दर्द और आमाशय रोग पैदा हो जाया करता है और ये उद्भेद या दाने फिर पैदा होनेपर वक्षका दर्द और आमाशय अच्छा हो जाता है। अकौता—रोगवाले अंशका ऊपरी भाग दाग-दगीला और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह मालूम होता है; जखम सब पपड़ोसे ढँके और उनसे बदबूदार रस निकलता है। किसी एक क्षुद्र लाल अंशपर या फैलनेवाले लाल विसर्पकी तरह अवस्था-प्राप्त स्थानपर रस-भरे दाने सब निकलते हैं; रोगवाले अंशके भीतर बहुत खुजली पैदा हो जाती है और खुजलानेपर उसमें दर्द हो जाया करता है। पीब-भरे दानोंकी तरह उद्भेद। शीतकालके फोड़े—प्रत्येक फुन्सीकी जड़ लालीसे घिरी। दद्रुमेखला—शरीरकी त्वचा क्रमसे मोटी होकर कड़ी हो जाती है। सांघातिक विष-फोड़ा [नीली आभा लिये (लैके) और गलनेवाला—आर्स, लैके]। मसूरिका या चेचक—गोटियाँ या दाने निकलकर बैठ जाते हैं और नीले हो जाते हैं या उसमेंसे खून निकलनेकी वजहसे काले पड़ जाते हैं (ऐ-मूर, सिङ्कोना)। विकारावस्था (एसिड-फास, क्लोरम)। शीतस्फोटक (ऐगार, पेट्रोल) या बिवाई।

निद्रा ।—निद्रा नहीं आती, पर बार-बार जम्हाई आया करती है और मानो दोनों हनुकी सन्धियाँ अलग हो गयी हैं, इस तरहका तथा सुई गड़नेकी तरह दर्द अनुभव होना। गहरी नींद—ऐसा मालूम होता है, मानो रोगी बेहोश होकर पड़ा है; अनिद्रा—तकलीफ़की वजहसे; रातके १२ बजनेके पहले अधिक; रोगी आराम मिलनेकी आशामें लगातार करवट बदला करता है; आधी रातके बाद शरीरमें बहुत जलन होनेकी वजहसे रोगी छटपटाया करता है, पर प्यास नहीं रहती और बुरे सपने देखा करता है। किसी तरहका नशा खानेपर माथा पीछेकी ओर लटकाकर और मुँह फाड़कर सोया करता है। बार-बार जम्हाई आनेके साथ लगातार हाथ-पैर पसारकर अङ्गड़ाई लिया करता है; बहुत रात गये सोता है और निद्रित अवस्थामें चित होकर सोया रहता है। तन्द्राकी तरह मोह—नाककी आवाज़ सुन पड़ती है, रोगी लगातार यन्त्रणादायक शब्द किया करता है; अदृश्य चीजें पकड़नेके लिये हाथ फैलाया करता है या शय्या नोंचा (खींचा) करता है। दिनके किये हुए कामके सपने देखता हैं (ब्राई) और निद्रित अवस्थामें बोलता है; रोता है।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—शीतावस्था—लगातार जाड़ा मालूम होना, मानो रोगीके शरीरपर किसीने बरफका पानी ढाल दिया है (ऐण्टिम-टार्ट) या शिराओंके भीतरसे बहुत ठण्डा खून प्रवाहित हो रहा है, जरा हिलते ही रोगीको सर्दी मालूम होने लगती है; खाने-पीने बाद सर्दीका बढ़ जाना; रातके ७ बजनेके समय शीतका प्रकोप, शीतावस्थाके पहलेसे शीत आरम्भ होनेतक दुःख देनेवाली, सुस्त करनेवाली सूखी खाँसी आया करती है (चायना, सल्फ़, सैम्बु, फास, सैबाडि)। शीतावस्थामें और अन्यान्य सभी अवस्थाओंमें ही रोगी बहुत बेचैनी प्रकट करता है; शीतावस्थाके पहले बार-बार जम्हाई आती है, रोगी अङ्गड़ाई लिया करता है और हनु-सन्धिमें ऐसा मालूम होता है, मानो चोट लगी है या मोच आ गयी है। पीठपरसे सर्दी प्रवाहित होती है, विशेषकर सन्ध्याके समय; पानी पीनेपर सर्दी बढ़ जाती है (कैप्स, नक्स, वेरेट)। शीतावस्थामें हाथ-पैरमें दर्द हुआ करता है और रोगीका चेहरा मलिन या कभी उतरा और कभी लाल दिखाई देता है। बायें अङ्गमें सर्दी ज्यादा मालूम होती है। बाहरसे गर्म घरमें प्रवेश करनेपर इतनी सर्दी मालूम होती है कि रोगी काँपा करता है (आर्जेण्ट-नाई)। उत्तापावस्था—तेज़ प्यास। सवेरे १० बजनेके समय प्रबल उत्ताप पैदा हो जाता है, जम्हाई आया करती

है (चिनिन-सल्फ), नींद-सी आती है (ऐरेनिया, बिस्मथ), क्लान्ति और आलस्य मालूम होता है। शरीरपर मानो किसीने गर्म पानी ढाल दिया है या शिरा आदिसे मानो गर्म खून या गला हुआ सीसा बह रहा है, ऐसा उत्ताप मालूम होता है। इस समय प्यास अधिक नहीं रहती, पर माथेमें टपक हुआ करती है ; उदरोर्द्ध-प्रदेशमें दबाव या ऐसा मालूम होता है, मानो फूल गया है और उदरमें ऐसा दर्द होता है, मानो छेद रहा है और जखम पैदा हो जाता है। उत्तापावस्थामें खाँसी नहीं रहती, पर सारे शरीरमें शीत-पित्त निकल आता हैं और रगड़नेपर और भी बढ़ जाता है ; बार-बार प्यास लगती है, पर रोगी जरा-जरा-सा पानी पीता है। रोगी छटपटाया करता है, इधर-उधर करवट बदलता है, पर किसी तरह भी उसे आराम नहीं मिलता (आर्स, कैमो, पल्स, ऐको, बैप्टी, आर्नि)। जरा भी हिलनेपर या देह खोलनेपर सर्दीसे काँप उठता है। अतिसारके साथ सन्ध्याके समय ज्वर। पसीनेवाली अवस्था—तकलीफ़ और पसीना निकलना, कितनी ही बार पसीना निकलनेके समय रोगी काँपा करता है। उत्तापावस्थामें भी चेहरेके सिवा सारे अङ्गमें पसीना हुआ करता है ; पसीना बहुत ज्यादा, गन्ध-रहित और सुस्त करनेवाला (सैब्बु) ; कमजोर न करनेवाला सवेरेका पसीना ; शीत-पित्त आमवातके कारण भयानक खुजली पैदा हो जाया करती है और पसीना निकलनेपर आराम हो जाता है ; पसीनेवाली अवस्थामें नींद आती है (पोडो) ; पसीना निकलनेपर सब तकलीफें नहीं घट जातीं (नेट्रम-सूफर)।

अनुपूरक ।— सम्बन्ध ।—ब्रायोनिया ; प्रतिकूल—एपिसके पहले या बाद "रस-टक्स" का कभी व्यवहार न करना चाहिये।

प्रतिविष या दोषघ्न ।—ऐसिड-टार्ट, बेल, ब्राई, कैम्फो, काफिया, क्रोटन, मर्क, प्लम्ब, रैनान-बल्बो, रोडो, सल्फर।

अनुकूल सम्बन्ध ।—आर्निका, आर्सेनिकम, ब्रायोनिया, कैल्केरिया कार्बोनिका, कैल्केरिया-फास्फोरिका, कैमोमिला, कोनायम, लैकेसिस, नक्स-वोमिका, ऐसिड फास्फोरिका, पल्सेटिला, सिपिया, सल्फर।

तुलनीय ।—सदृश ।—हृत्पिण्ड आदिकी बीमारीमें—आर्निका, ब्रोमियम, ऐको, कैल्मी, पल्स, ऐक्टि, फाइटो। आन्त्रिक ज्वरमें या वात-श्लेष्मा रोगाधिकारमें—फास, आर्स, ऐ-सूर, कार्बो-वेज, बैप्टी, आर्नि, ऐ-फास, टेराक्स,

ब्राई। वातकी वजहसे दर्द आदि—आर्नि, सल्फ, पेट्रोल, रियुटा, स्टैफ, कैलि-कार्ब, लिडम, वैलि, ऐनाका, कोना, लाई, पल्स, फेरम, रस-रेड, काल्मिया, कोलचि, रोडोड। अकौता रोगमें—मेजेर, नक्स-युग; सर-दर्दमें—सिङ्को, ऐ-सल्फ, वेल, स्पाइजि, कार्बो-ऐन। चक्षु-रोगमें—कैल्के, सिपि, जेल्स, कैल्मिया, (फेरिङ्गटन)। आमवातका पक्षाघात—कास्टिकम। पानीमें काम करना—कैल्के। ठण्डे पानीयसे खाँसी—साइलि। नाकसे रक्त-स्राव—ऐसिड फास। आँखसे जल-स्राव—इयुफ्रेशिया। शोथ, पैरमें जखम—आर्स, लाइकोप। आरक्त ज्वर विसर्पके साथ तन्द्रा—एपिस। अन्नाशय आदिका प्रदाह—लैके-सिस। व्यवसाय-सम्बन्धी प्रलापके स्वप्न—ब्राइयोनिया। कानमें कड़ाकसे आवाज़ और दर्द—इग्ने, पेट्रो। शिशुगणोंके मेरुमज्जाका पक्षाघात—सलफर। खुले हो जानेकी इच्छा—आर्स, हिपर। स्नानसे अनिच्छा—ऐण्टि-क्रुड। चमड़ी—कैनाबिस, मर्क, सल्फ। निगलनेमें कष्ट—चेलिडो, कैल्के, लाइ-कोप। कर्णशूल—अरम, मर्क। प्रतिवर्ष प्रकोप—आर्स। ठण्डे पानीयकी इच्छा और पीनेपर वमन—आर्स। मरोड़—कैल्के, नक्स। पानीकी तरह मल-कोलचि, कैलि-बाई।

वृद्धि।—अन्धड़-पानीके कुछ देर पहले ही ठण्डी जलीय हवा लगनेपर या बर्सातके दिनोंमें, रातमें, विशेषकर आधी रातके बाद या कुछ पहलेसे ही; पसीना निकलनेके समय; पानीमें भींजनेपर; स्थिर रहने या विश्रामके समय; छूनेपर या घुड़-सवारी करनेपर; शरीरमें चोट या झटका लगनेपर; किसी अंशमें मोच आ जानेपर; विश्रामके बाद; पहले-पहल देह या रोगवाला अङ्ग हिलानेपर; जिस करवट या अङ्गको दबाकर सोता है, उसी पार्श्व या अंगमें; बाईं करवट सोनेपर; निगलनेके समय; (रैफिनस)। बहुत ज्यादा शारीरिक परिश्रमसे; संध्याके बाद; शय्याके उत्तापसे; ठण्डा पानी पीनेपर और भोजनके बाद और शरीर या कोई अंग खोलनेपर।

उपशम।—गर्म सूखी हवा लगनेपर; शरीर अच्छी तरह ढक लेनेपर; गर्म या उत्तप्त द्रव्य पान करनेपर या खानेपर; शरीर या रोगवाला अंग हिलानेपर, शरीरकी अवस्था या पार्श्व-परिवर्त्तन करनेपर; रगड़नेपर (शीत पित्तके दाने बढ़ हो जाते हैं); कुछ देरतक लगातार शरीर या रोगी अंग हिलानेपर; सोनेपर (अन्त्रशूल); कड़ी जगहपर रखकर (नेट्र-म्यूर) पीछेकी ओर माथा झुकानेपर; गर्म प्रयोगसे और व्यायामके बाद देह गर्म होनेपर।

शक्ति।—तृतीय दशमिक क्रमसे १००० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—२० से ३० दिन।

रस-विनिनेटा

(RHUS VENENATA)

दूसरा नाम।—रस वार्निक्स।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पत्ते और छालसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—फोड़ा; बिवाई; अतिसार; अजीर्ण; निगलनेमें कष्ट; अकौता; विसर्प; बवासीर; नाना प्रकारके रस भरे दाने; उत्तेजना; ओंठका फूलना; कटिवात; खसड़ा; आँखोंका प्रदाह; रजसाधिक्य; अर्द्धांग पक्षाघात; गर्दन अकड़ना; आमवात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—नाना प्रकारके चर्म्म रोगोंपर लाभके लिये यह बहुत प्रसिद्ध है। इसके द्वारा शरीरके कितने ही स्थानोंमें प्रबल खुजली और जलन पैदा हो जाया करती है। अकौताकी बीमारीमें इसके बाहरी और भीतरी दोनों ही प्रयोगोंसे लाभ होता है। जिन चर्म लक्षणोंमें रस-टक्सके प्रयोगसे लाभ नहीं होता, उन स्थानोंपर रस विनिनेटाके प्रयोगसे आश्चर्य-जनक लाभ दिखाई देता है और तुरन्त लाभ दिखाई देता है। शरीरके जिन सब अंशोंमें अस्थिके ऊपर चर्म्मके सिवा और कोई आवरण नहीं है, उन सब स्थानोंके उद्भेदोंमें इसकी पूर्ण शक्ति प्रकट हुआ करती है। इसका दर्द जगह बदला करता है और तेजीसे पैदा होता है और जल्द ही गायब भी हो जाता है। अन्त्रनलीके बीचकी राहपर दर्द मालूम होता है; रोगी बहुत दुःखित और जीवनसे वीतराग हो पड़ता है; ललाटमें बहुत भार मालूम होता है और दर्द हुआ करता है, विशेषकर झुकने या चलनेके समय। जीभकी जड़में ऐसा दर्द मालूम होता है मानो उखाड़ा जा रहा है तथा जीभका अगला भाग लाल, बीचके अंशकी त्वचा फटी और नीचेके भागमें रसभरे दाने पैदा हो जाते हैं। उदरामय,—रातके अंतिम भागमें ४ बजनेके समय बढ़ जाता है; बहुत ज्यादा पानीकी तरह पतला पाखाना होता

है और तलपेटमें दर्द हुआ करता है ; मल बड़े वेगसे निकलता है। दाहिने बाँहमें पक्षाघातके लक्षणकी तरह खींचनका दर्द, विशेषकर कलाईसे अंगुली-तक। शरीरमें खुजली,—गर्म पानीके प्रयोगसे घट जाती है ; शरीरमें जगह-जगहपर रस-भरे दाने निकलते हैं। विसर्प—रोगवाला अंश घोर लाल दिखाई देता है, गुटिमय अरुणिका। रातमें खुजली और दीर्घास्थिमें दर्द ; खुजलानेपर चकत्ता हो जाता है—ये कई इसके प्रधान लक्षण हैं। इसके अलावा "मुँह और गलेमें ऐसा मालूम होता है, मानो दग्ध हो गया है।" "मानो मुँह और गलेमें धूल भर रही है और ऐसा दर्द मानो बाँहकी अस्थि टूट जायगी"—ये कई इसके प्रकृतिगत लक्षण हैं। डा० क्लार्क कहते हैं कि—"अन्ननलीके बीचकी राहमें दर्दवाला लक्षण, निगलनेके समय दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचमें दर्द—इस रसटक्सके लक्षणका रूपान्तर मात्र है।

लक्षणावली

मन।—बहुत ही दुःखित भाव ; जीवन धारण करनेकी इच्छा न होना (ऐग्नि-क्रूड, अरम, चायना, नेट्र-म्यूर, फास, लैक-डिफ्लो, रस-टक्स, थूजा) ; किसी काममें हस्तक्षेप नहीं करना चाहता। रोगीको चारों ओर ही निरानन्दमय मालूम होता है। मनमें उठे हुए भाव परस्पर मिला नहीं सकता या किसी विषयमें मनः संयोग नहीं कर सकता।

मस्तक।—पहली बार शय्यासे उठते समय माथा खाली मालूम होता है (आर्नि, गुयायेक, पलस, ऐक्टिया-रेस, सिना, काक्यु)। माथा बहुत फूला रहा करता है (आर्निका)। बुद्धिलोप कर देनेवाला सर-दर्द। सरके बीचके स्नायु-सबमें रह-रह जगह-ब-जगह चिलक मारनेकी तरह दर्द हो जाता है। ललाट-देशमें धीमा-धीमा सर-दर्द ; वृद्धि—चलनेपर (कैप्सि, सिङ्को, टिलिया, केल्के, कार्नस) या झुकनेपर (बेल, पल्स, ग्लोन, हेलोन, इग्ने)। ऐसा दर्द मानो कोई हाथसे माथा निचोड़ रहा है (केल्के)। दाहिनी कनपटीमें फाड़नेकी तरह यन्त्रणा,—दर्द ललाटके ऊपरसे माथेके बाएँ आधे अंशपर आक्रमण करता है और इस अंशकी हड्डीमें दर्द मालूम हुआ करता है। धीरे-धीरे दर्द कपालके बायें अंशमें और वहाँसे ग्रीवा-पृष्ठमें चला जाता है। दुधिया पपड़ी,—खोपड़ीकी त्वचाके ऊपर छोटे-छोटे दाने निकलकर वह सूखकर

मोटा होकर, पपड़ी या फटे घावमें परिणत हो जाता है (बायोला, ड्राई, विङ्कामाई, सिपि, ग्रै फ, सोरिनम)।

आँख।—दोनों आँखें फूलकर प्रायः बन्द हो जाती हैं और लाल दिखाई देती हैं (एपिस, कैलि-कार्ब, रस-टक्स)। ऐसा मालूम होता है मानो कोई शक्ति माथेके भीतरसे दोनों आँखोंको ढकेलकर बाहर निकाल रही है (सैंगियु, नक्स, कोमोक्लाड, स्पाई)। आँखमें ऐसा दर्द हुआ करता है, मानो धूलके कण गिर गये हैं (ऐ-पलु, आर्स, कार्बो-वेज, कोरैलि-रूब, इयुफ्रे)। आँखमें जलन और उत्तेजना अनुभव होना और बहुत ज्यादा आँसू निकलना। अस्पष्ट दृष्टि, विशेषकर रातमें (सिङ्कोना, हायो, लाई), दीयेकी रोशनीमें पढ़ नहीं सकता (पल्स, लैक-कैन ; चमकीली रोशनीमें बढ़ना—ऐसैरम); किसी ओर भी देखते रहनेपर क्रमसे आँखके सामने अन्धेरा छा जाता है (नेट्र-मूर, आर्निका, क्लिमेट ; पार्श्वकी ओर कटाक्ष करनेपर अन्धेरा दिखाई देता है-ओलियैन ; चारों ओर स्याहीकी तरह अन्धेरा—लैक-कैन, लाई, पलस)। रह-रहकर आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ दिखाई देती हैं (बेल, फास, फाइजस, सोड्रन)।

कान।—दाहिने कानके बाहरी भागमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। दाहिने कानकी पीछेवाली अस्थिमें रह-रहकर चिलक मारनेकी तरह दर्द हो उठता है। रातमें कर्णशूल,—सन्ध्या होनेके कुछ बाद ही कर्ण-कुहरके गम्भीरतम प्रदेशमें मानो हथौड़ीसे चोट पड़ रही है या धक-धक कर रहा है, इस तरहकी तकलीफ, कानमें रस-भरी फुन्सियाँ पैदा होना और प्रदाह ; इस फुन्सीसे पीले रङ्गका पानीकी तरह रस निकलता है। कष्टदायक बहरापन।

नाक।—नाक लाल और चमकीली, दबानेपर लाली दूर नहीं हो जाती। दाहिनी नाकके छेदसे पतला रस निकलता है और बाय छेद रुक जाता है। दोनों छेदमें ही गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा भरा रहता है। ऋतु होनेके कई दिन पहलेसे ही नाकके छेदमें जखम हो जाता है और यह जखम कई दिन बादतक स्थायी होता है।

मुख-मण्डल।—नाक और चेहरेका दाहिना अंश बहुत फूल उठता है (एपिस, मैग-फास, वेरेट-विर, बार्बेस्कम, विशेषकर दाहिनी आँखके नीचेवाले स्थानपर—रस्टक्स); चेहरा लाल, फूला, चमकीला, रोगी लगातार अपना

चेहरा मला करता है; गर्म पानी लगनेपर रगड़ने या मलनेकी इच्छा दूर हो जाती है; पर खाल उतरना आरम्भ हो जाता है। ओंठपर ऐसा अनुभव होना मानो धूल गिर गयी है। ओंठ फूले,, छाले भरे और उनकी त्वचा फटी हुई।

मुख-विवर।—जीभ, सफेद लेप चढ़ी, उसकी जड़ और दोनों किनारे लाल; अगला भाग लाल या बीचका स्थान लाल और उसकी त्वचा फटी हुई। ऐसा मालूम होता है, मानो जीभ जड़से उखाड़ी जा रही है (कैलि-आयोड), ऐसा अनुभव होना, मानो जीभ दग्ध हो गयी है (बैप्टि, हाइड्रैस्ट, सैंगिविन)। ऐसा मालूम होता है मानो जीभ और दोनों ओंठ फट गये हैं। साँस गर्म और बदबूदार, मुँहमें ज्वरके छाले। मुख-विवर छूनेपर करकराता है, मानो उसमें बालू गिर गयी है। लार गाढ़े गोंदकी तरह और परिमाणमें अधिक। पाकस्थलीमें गड़बड़ी मालूम होती है और सोनेपर मुँहसे गर्म लार निकलती है, विशेषकर रातमें (कार्बो-वेज, कैलि-कार्ब) कण्ठके बायें पार्श्वमें जख्म और वह फूला हुआ मालूम होता है। तालुमूल और अन्ननली सिकुड़नेवाली और उसमें स्पर्श सहन नहीं होना। कोई पदार्थ निगलनेपर अन्ननलीकी आधी राहमें जाकर दर्द पैदा कर देता है; ऐसा अनुभव होता है, कि कण्ठमें मानो केश अड़ा है (सल्फ, कार्बोन-सल्फ)।

मलान्त्र और मल।—प्रत्येक बार पाखाना होनेके पहले तलपेटमें दर्द होता है; पाखाना जानेमें देर सहन नहीं होती। खूनी बवासीर, बहुत दूरतक चुनचुनी और जलन हुआ करती है (ऐल्यू, कैल्के, कैप्स, कैमो, ग्रैफ, हैमा, ए-स्यू, ए-नाई)। पाखाना होनेपर मल मार्गसे खूनका स्राव (नक्स, लोबेल, इग्ने, ए-फ्लु, नैट्र-स्यू, मैन्सि मर्क, फाइजस)। मलद्वारमें असह्य जलन और चुनचुनी मालूम होती है (पियोनिया, रैनान, नक्स-वोम, सल्फ, इग्ने—मानो पुष्ट हुआ है—आइरिस)। मलका पतलापन—रातमें चार बजनेके समय आरम्भ हो जाता है; बहुत ज्यादा पानीकी तरह मल बड़े वेगसे निकलता है (जैट्रोफा, पोडो, थूजा, क्रोटोन, रैफिन्स) और पेटमें बहुत दर्द हुआ करता है और भी दो घण्टे तक इसी तरह कई बार पाखाना होनेपर पेटका दर्द घट जाता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—मुष्क लाल (चेलिडो, क्रोटोन, रस-टक्स; विटप और ऊरुदेशतक—पेट्रोल)। फूला (रस-टक्स, चेलिडो, नैट्रम-म्यूर, आर्टिका-

इयु, वेस्पा); त्वचा बहुत सिकुड़ी हुई और रस-भरे दाने निकलते हैं और इन सब दानोंसे रस निकला करता है। रस निकलकर मुष्कको त्वचापर सूख जाता है और पपड़ी पैदा कर देता है (चेलिडो, क्रोटोन-टिग); लिङ्ग-मुण्डकी आवरक चमड़ी फूली हुई; लिङ्ग-मुण्ड फूला और बहुत त्वचा क्षय हो जानेकी तरह स्पर्श सहन नहीं होता (कोरैलियम-रूब ; शिश्न और मुष्कके ऊपर बड़े-बड़े शल्क निकला करते हैं)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रजःस्रावके समय थक्का-थक्का माँसके टुकड़ेकी तरह जमा हुआ खून निकलता है (ऐपेसिन; स्ट्रैमोन, लेके)। प्रतिमास बायें अण्डाधार प्रदेशमें धीमा-धीमा दर्द। ऋतु आरम्भ होनेके पहले केवल एक दिन प्रसवके दर्दकी तरह बेहद दर्द मालूम होता है (स्राव आरम्भ होनेपर अच्छा हो जाता है—ऐक्टिरियस-रियुब, सिरियम-आक्सैल, लैके)। ऋतु-स्रावके समय योनि जखम-भरी मालूम होती है। ऋतु आरम्भ होनेके तीन दिन पहलेसे ही, बायें स्तनमें भयङ्कर अस्त्र वेधनेकी तरह दर्द पैदा हो जाता है (ऋतुके समय स्तनमें दर्द—कोना, मर्क, फाइटो, लैक-कैन)। कभी-कभी ऐसा मालूम होता है, मानो बायें स्तनमें हजारों सुइयाँ बिध रही हैं (कोना, ऐस्टि-रियुब, फेलैन, कैलि-कार्ब)। स्तनके दर्दका बढ़ना—बायाँ बाँह सामनेकी ओर फैलाने (ब्राई) या वक्षके ऊपर लानेपर, दबानेपर, ऋतुके कुछ ही पहले और समय, रातमें और सोनेपर ; घटना—शरीर हिलाने और लगातार भावसे किसी काममें लगे रहनेपर। रोगिनीको बाध्य होकर अपना स्तन बाँधकर रखना पड़ता है। लटकता रहनेपर दर्द होता है (ऐसा मालूम होता है, मानो टूटकर गिर जायगा) और रोगिनी उसी स्तनका दूध हाथसे दबा रखती है (आयोड, कैस्टोर, इङ्गि-हाइ); सीढ़ीसे उतरनेके समय रोगिनी हाथसे स्तनको दबा रखती है (लैक-कैन) डा० क्लार्क।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दन अकड़ना या गलेमें स्नायविक दर्द (फेरम-फास ; ग्रीवाके दोनों पार्श्वमें स्नायविक दर्द—नेट्र-फास ; पीठमें स्नायविक दर्द—कैल्के-फास)। ग्रीवाकी ग्रन्थिमें जखम पैदा होना, इस जखमसे बहुत बदबूदार काले रंगका पीब निकलता है और जखम सब घोर लाल रंगके घेरेसे घिरे दिखाई देते हैं (साइलिसिया)। पीठ बहुत अकड़ी मालूम होती है, बाएँ पृष्ठ-फलकके नीचे तेज दर्द, यह दर्द शरीर भेदकर पंजरेतक चला जाता है (चिनोपोडियाई-ग्लोकाई, ब्राई, कैलमिया)। श्रोणिदेशमें हलका दर्द और

भार मालूम होना, विशेषकर झुकनेपर या चलनेपर (पोडो, साइलि—चलनेपर बहुत बढ़ जाता है, पर बहुत देरतक एक भावसे चलनेपर घट जाया करता है—जिङ्कम)। कटिस्तम्भ—मोच खाने या सर्दी लग जानेके कारण। कलाई, एँड़ी और चरणमें इतना दर्द होता है, कि रोगी सो नहीं सकता। दाहिने बाँहमें पक्षाघात पैदा करनेवाला खींचनकी तरह दर्द, विशेषकर कलाईमें, दर्द अंगुलीतक चला जाता है। बाईं कोहनी या स्कन्ध-सन्धिमें दर्द, हिलानेपर बढ़ना। बैठने या सोये रहनेपर बायाँ हाथ सुन्न हो जाता है। हाथकी अंगुलीके नख सब नीले हो जाते हैं। हाथ फूला और भारी मालूम होता है। दाहिना उरु शिखर मानो मोच खा गया है या सन्धि खिसक गयी है (आर्निका, इग्ने, लाई, रस-टक्स; लंगड़ाकर चलता है—ऐ-नाई)। दाहिने उरुके ऊपर, लगातार एकके बाद दूसरा फोड़ा निकलना (ऐसिड-नाई, लेके)। एँड़ी और चरणमें इतना दर्द हुआ करता है कि खड़े होने या चलनेमें रोगीको बहुत तकलीफ़ मालूम होती है; तीसरे पहर बढ़ना। समूची देह फूल उठती है और उसमें असहनीय उत्तेजना अनुभूत होती है। बायाँ बाँह, पैर और शरीरका बायाँ पार्श्व सुन्न और अवश हो जाता है। सभी अंगोंमें दर्द। बाईं करवट सोनेपर श्वासाल्पता पैदा हो जाती है (एपिस)। ऐसा अनुभव होना, मानों धमनी आदिके भीतर गर्म खून प्रवाहित हो रहा है (रस-टक्स, आर्स, बेल, कैमो, मिडोरिन)।

त्वचा।—गांठ-गांठ प्ररोहिका; बहुत खुजली पैदा हो जाती है और खुजलानेपर आमवातकी तरह थक्का-थक्का चकत्ते निकलते हैं। शरीरमें खुजली और चींटी रेंगनेकी तरह सुरसुरी अनुभव होती हैं; गर्मी या गर्म पानीका प्रयोग करनेपर घट जाती है। ललाट, ग्रीवा और दोनों बाँहपर लगातार फोड़े निकलना। रातमें मुखमण्डल और जननेन्द्रिय-प्रदेशमें बहुत खुजलाहट पैदा हो जाती है। दोनों बाहुओंका अगला आधा भाग, कलाई, कर-पृष्ठ, हाथकी अंगुलीके गासमें और अंगुलियोंके ऊपर छोटी छोटी रसभरी फुन्सियाँ पैदा हो जाती हैं। इन फुन्सियोंकी तली लाल और फूली रहती है; सन्ध्याके बाद सोनेके समय और गर्म-घरमें असह्य खुजली पैदा हो जाती हैं; खुजलानेपर प्रत्येक रसभरे दानेसे बहुत ज्यादा परिमाणमें रस निकलता है। गहरे क्षय करनेवाले और फैलनेवाले जखमोंसे सड़ी गन्धभरा पीब निकलता है, रह-रहकर शरीरमें उत्ताप पैदा हो जाता है, मानो शरीरके ऊपरसे गर्म हवा प्रवाहित हो रही है।

सम्बन्ध ।—सदृश—ऐनाक, क्लिमैट, कोमोक्लोडिया, रस-टक्सिको, लेक-कैन, कोना, लाई, कैलि-आयोड, पल्स, ऐसिड-नाई, रैनान-बल्बो ।

दोषघ्न ।—कैम्फ, ब्रायो, क्लिमि, रैनान, ऐसिड-नाइट्रि ।

तुलनीय ।—सुई गड़नेकी तरह दर्द—कैलि-कार्ब । संचरणशील दर्द—पल्स । दर्द एकाएक आता है, एकाएक जाता है—लाइकोप । जीभमें दर्द—कैलि-आयोड ।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम । (बाहरी प्रयोगके लिये) मूल अर्क ।

रिसिनस कम्युनिस

(RICINUS COMMUNIS)

दूसरा नाम और प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—रेड़ीके बीज या पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—अण्डलाल मिला पेशाब; मुँहमें जखम; विसूचिका; बच्चोंकी विसूचिका; अतिसार; रक्तामाशय; उद्भेद; सड़नेवाले जखम; पाकाशय और आँतोंका प्रदाह; कामला; अन्त्रावर्त्तन प्रदाह इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—जिस विसूचिकामें अकड़न होती है, उसमें जिस तरह कैम्फर उपयोगी है, डा॰ सालजर तथा अन्यान्य चिकित्सकोंके मतसे उदरामय प्रधान विसूचिकामें रिसिनस उसी तरह उपयोगी है । प्रातः-स्मरणीय भिषक-प्रवर श्रीयुत बिहारी लाल भादुड़ी महोदयने लिखा है कि बिना दर्दवाले विसूचिका रोगके पहले वेरेट्रमसे लाभ न होनेपर वे रिसिनसका प्रयोग करते थे । इसके दस्त अक्सर बिना दर्दके ही हुआ करते हैं । इसके कई प्रधान लक्षण ये हैं :—प्रबल ज्वलामयी तृष्णा; मुँहमें पानी भर आना, बहुत ज्यादा और प्रबल वमन, कै हुए पदार्थमें पित्त मिला रहता है और उसमें सूतकी तरह श्लेष्मा भी रहता है; अन्ननाली और पाकाशयमें तेज़ जलनके

साथ भयानक दस्त और वमन ; यन्त्रणा-रहित वमन ; पीली आभा लिये हरे रङ्गके पदार्थका वमन और पेटमें भयानक दर्द ; उदरोर्द्ध-प्रदेशको दबानेपर बहुत दर्द मालूम होता है और यह दर्द नाभी और कोखतक फैल जाया करता है। मांड़की तरह वमन। पाकस्थलीपर ऐसा मालूम होता है, मानो एक लोहेका दण्ड रखा हुआ है और इसी वजहसे बेचैनी मालूम होती है। पेटमें हड़हड़ गड़गड़ हुआ करता है और समूची अन्त्रमण्डलीमें ऐसा मालूम होता है, मानो सब एक जगह एकत्र होकर गोला बँध गया है। चावल-धोये पानीकी तरह लगातार दस्त हुआ करता है, जाड़ा मालूम होता है। खून-मिले पतले दस्त आया करते हैं। पेशाब एकदम बन्द हो जाता है या कहीं-कहीं थोड़ा घोर पीले रङ्गका गाढ़ा और बहुत लार भरा हुआ करता है। कण्ठस्वर बैठा-बैठा या बद्ध। हिमांग अवस्थामें भी दस्त और कै सम-भावसे हुआ करता है (डा० सालजरका कथन है कि हिमाङ्ग अवस्थामें भी दस्त-कै आते रहनेपर रिसिनसके प्रयोगसे लाभ होता है। यदि पहले इस दवाका प्रयोग न किया गया हो) नाड़ी बहुत क्षीण और सूक्ष्म, पर गतिकी संख्या स्वाभाविक, कलाईमें नाड़ी प्रायः नहीं मिलती। अङ्ग और प्रत्यङ्गकी पेशियों सबमें तेज़ खींचन हुआ करती है। आंखें ऊपर चढ़ी या पुतली ऊपर खिंची रहा करती हैं। शरीर बरफकी तरह ठण्डा और ललाट या कनपटीमें ठण्डा पसीना ; चेहरा रक्त-शून्य और त्वचा सिकुड़ी। विसूचिकाके बाद पाण्डु-रोगमें शरीर पीला पड़ जाता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत असमयमें ही ऋतु-स्राव होता है और स्राव बहुत ज्यादा हुआ करता है। बहुत अधिक प्रदर-स्राव। स्तन पीनेवाले बच्चोंकी माताके स्तनमें दूधका अभाव (ऐग्नस, ऐसाफिटिडा)। स्तन बहुत भर जाता है या फूल जाता है ; बगलकी ग्रन्थिमें दर्द रहता है और फूल जाती है और दर्द बाँहकी राहसे उतर आता है। स्तनसे पानीकी तरह पदार्थका स्राव (रिसिनसके प्रयोगसे यह पानीकी तरह पदार्थ दूधकी तरह हो जाता है)। इसके सेवनसे जिन स्त्रियोंके बच्चेने बहुत दिनोंतक भी स्तन पान न किया हो, उनके स्तनमें भी दूध आ जाता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—इयुफोर्बिया-कोरोलेटा, क्रोटोन-टिग्लियम, जेट्रोफा, ऐग्नस, ऐसाफिटिडा।

तुलनीय ।—फेनकी तरहका मल—कैम्फ, जेट्रोफा । स्तनसे दूधका स्राव—ऐग्नस, ऐसाफिट, सल्फ ।

शक्ति ।—३रे शततमिकसे १२ शततमिक क्रम ।

रोबिनिया

(ROBINIA)

दूसरा नाम ।—रोबिनिया-सिउड-ऐकासिया ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताज़ी जड़से अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—अम्ल-रोग ; सर्दी ; अजीर्ण ; आध्मान ; सर-दर्द ; पाकाशयके रोग ; व्याधिशङ्का ; सविराम ज्वर ; स्नायुशूल ; मुँहमें पानी भर आना ; आमवात इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—अम्ल रोगमें इसका फायदा बहुत प्रसिद्ध है और इसका प्रधान निर्णायक लक्षण है—रातमें बढ़ना । पाकस्थलीमें अम्ल पैदा होना और उसमें जो कै होती है, वह इतनी खट्टी होती है, कि उसके दाँतमें लगनेपर दाँत सब खट्टे हो जाते हैं । डकारके साथ कण्ठमें खट्टा पानी भर आता है । शिशु जो पाखाना फिरता है, उसमें खट्टी गन्ध होती है, उसके शरीरमें खट्टी गन्ध और वह खट्टा ही दूध वमन करता है । रातमें सोनेपर छातीमें जलन और अम्ल रोगके दूसरे-दूसरे लक्षण पैदा हो जाते हैं और रोगीको सोने नहीं देते । इसके अलावा बायीं कनपटीमें प्रचण्ड स्नायुशूल ; आधी रातके बादसे सूर्योदयतक इतनी तकलीफ़ होती है, कि रोगी सो नहीं सकता । पाकस्थलीमें भार मालूम होना और दर्द, ललाटदेशमें लगातार सर-दर्द ; मुखका स्नायुशूल, दर्द आँख और ललाटतक फैल जाता है और त्वचा तथा दोनों हनु चिपकसे जाते हैं । दोनों हनु ऐसे मालूम होते हैं, मानो सन्धि खिसक जायगी इत्यादि कई इसके क्रियाफल हैं । इसके द्वारा आगे लिखे कई भ्रम ज्ञान भी उत्पन्न हो जाया करते हैं । मस्तिष्क चक्रकी तरह घूमता है, मानो खोपड़ीमें पानी खौलता है, मानो माथा हिलाते ही मस्तिष्क करोटी-गात्रसे धक्का खाता है । मानो पाकस्थली दग्ध हो गयी है ; अनजानमें मल निकल जानेके समय ऐसा मालूम होता है कि समूचा शरीर मलके साथ चला जायगा ।

लक्षणावली

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना ; शरीर ढलमलाया करता है और मिचली मालूम होती है। माथा सीधा नहीं रखा जा सकता। ललाटमें बराबर धीमा-धीमा दर्द हुआ करता है। माथा बहुत भारी हो जाता है और हिलाने तथा पढ़नेपर यह भाव बहुत बढ़ जाता है (नेट्र-म्यूर, कैल्के, लिलिन, फाइजस)। नाकसे बहुत अधिक सर्दीका स्राव और बार-बार छींकके साथ धीमा-धीमा सर-दर्द (सिपा, इयुफ्रेशिया) और कनपटीमें तेज सलाई गड़नेकी तरह दर्द। लगातार सर-दर्द—ऐसा मालूम होता है, मानो करोटीमें पानी खौल रहा है (मानो माथा गर्म पानीमें डूबा हुआ है—सिपा)। माथा हिलानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तिष्क करोटीमें आकर धक्का खाता है (आर्स)। स्नायविक सर-दर्द, बाएँ शङ्खदेश या कनपटीमें ; आधी रातसे सबेरेतक रोगी सो नहीं सकता (दिन बारह बजेसे आधी राततक—पोलिपोरस ; रातके अन्तिम भागमें ४ बजे घट जाता है—कैलि-सायानेटम)। अम्लके साथ वमन और सर-दर्द।

मुखमण्डल ।—चेहरेका स्नायुशूल ; दर्द आँख, ललाट, कान और दाँततक फैल जाता है। ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों हनुओंकी सन्धि हट जायगी, चेहरेके बायों ओरका स्नायुशूल (रास)। मुँह बहुत खट्टा हो जाता है (आर्जेण्ट-नाई, इग्ने, नक्स, फास)। मुँहके भीतर, विशेषकर कोड़ा लगे दाँतमें जलन और अस्त्र बेधनेकी तरह यन्त्रणा ; दर्द कपाल, आँख और कनपटीतक चला जाता है ; वृद्धि—रातमें और खाद्य-पदार्थके स्पर्शसे, खासकर यदि यह खाद्य ठण्डा और मसाले मिला हो। हटा हुआ या छेदोंसे भरे और खून बहानेवाले मसूढ़ेके ऊपरवाले दाँतकी जड़ शिथिल हो जाती है। जीभ सफेद लेप चढ़ी रहती है और उसका अगला भाग लाल रहता है। डकारके साथ मुँहमें जो पानी चढ़ आता है, वह दाँतोंमें लगनेसे दाँत सब खट्टे हो जाते हैं (ऐसिड-सल्फ)।

पाकस्थली ।—डकारके साथ गलेमें अम्लरस चढ़ आना (कार्बो-वेज, खिङ्को, इग्ने, लाई, मैग-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वोम, फास, सल्फ, ऐ-सल्फ) ; मिचलीके साथ बहुत ज्यादा अम्लरस वमन होता है ; तीसरे पहर कुछ समयका

अन्तर देकर इसी तरहका वमन हुआ करता है; प्रचण्ड वमन होता है और दस्त आया करता है। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें दर्द; पाकाशयमें दिन-रात तेज़ दर्द; पाकाशय भारी और उसमें बेहद दर्द और गड़बड़ी मालूम हुआ करती है। पाकाशय और पित्तकोष-प्रदेशमें जलन अनुभव होना। अम्ल अजीर्ण रोगमें पाकस्थलीमें लगातार भार मालूम होता है और कण्ठमें डकारके साथ खट्टा पानी भर आता है और कभी-कभी वमन हुआ करता है। जो कुछ खाता है, वह पचता नहीं है और वक्षके रोगवाले पार्श्वसे पृष्ठफलकके शिखरदेशतक मानो अस्त्र या सींगी मछलीका काँटा गड़ रहा है, इस तरहका दर्द मालूम होता है। बहुत अम्ल-रसका वमन होता है (पाकाशयके कर्कट रोगमें यह लक्षण रहनेपर इस दवासे दब जाता है—काण्डियुरेङ्गो, हाइड्रेस्ट, फास)। पाकस्थली और दोनों पृष्ठफलकके बीचके अंशमें जलन हुआ करती है। अजीर्ण रोगमें भोजन कर लेनेपर पाकस्थलीमें ऐसा मालूम होता है मानो लगातार मरोड़ खा रहा है (चेलिडो) और इस दर्द तथा कटि-वेदना वगैरह तकलीफोंकी वजहसे रोगी एक बार अधिक भोजन नहीं कर सकता। पाकस्थलीमें जो कुछ जाता है, वही अम्लमें परिणत हो जाता है (कैल्के)। उठ बैठनेपर ही जी मिचलाता है और ओकाई आती है।

अन्त्राशय।—पाकाशय और अन्त्राशयमें छेदनेकी तरह दर्द और आँतोंमें गड़गड़ाहट। पेट बहुत अधिक आध्मान वायुसे भर जाता है; उदराध्मान; आध्मान वायु निकलनेपर आराम मालूम होता है। हिलने या दबानेपर उदरमें बहुत दर्द मालूम होता है।

मल।—मलका वेग होनेपर केवल वायु निकलता है और अन्तमें कड़ा पाखाना होता है। बच्चेको खट्टी गन्धवाला पाखाना होता है, उसके शरीरसे खट्टी गन्ध आती है और वह खट्टा दूध वमन करता है (मैग-कार्ब, रियुम, कैल्के, कोलोस्ट्रम, आइरिस-वार्सि, पल्स)। पतले दस्त—मल पीला या हरे रङ्गका, जलन करनेवाला और स्नायविक उत्तेजना, मैंला ठण्डा पसीना और श्वास-कष्टके साथ अथवा बहुत कूथनके साथ पतला काले रङ्गका बदबूदार मल निकलता है; कभी-कभी अधिकांश स्थानमें अनजानमें) लगातार कुछ सफेद पानी जैसा मल निकलता है। पाखाना होनेके समय रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी समूची देह मलके साथ निकल जायगी।

एकाएक दस्त और के आरम्भ हो जाता है। दैनिक मल लसदार और पित्त-मिला।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु बहुत देरसे होता है; स्राव काले रङ्गका (लैके, पल्स, साइक्लोम, इग्ने, कैलि-बाई, प्लैट, मैग-कार्ब, सेङ्गिविन)। ऋतु बन्द होनेके समय रक्त-स्राव, इसके साथ ही पीबकी तरह प्रदर-स्राव (सिपिया)। कामोन्माद (लैके, फास, ओरिगैनम)। प्रदर-स्राव सफ़ेद आभा लिये या कुछ हरे रङ्गका या पीली आभा लिये, गाढ़ा और त्वचाको क्षय करनेवाला, पीब जैसा। जरायु-ग्रीवा बहुत फूली, कड़ी और बहुत दर्द-भरी मालूम होती है और रोगिनी खाटसे लग जाती है। बहुत त्वचा क्षय करनेवाला, पीली आभा लिये, बहुत बदबूदार प्रदर-स्रावके साथ मानो योनिमें घाव हो गया है, ऐसा दर्द मालूम होना। जरायु बहुत फूला और कड़ा। योनिके बाहरी भागमें और योनिद्वारके ऊपर विचर्चिकाकी तरह उद्भेद निकला करता है (लैक-कैन)।

श्वासयन्त्र।—स्वर-लोप—फेफड़ेको दबाकर पकड़े बिना बात नहीं कर सकता और चिल्लानेकी चेष्टा करनेपर केवल दीर्घ निश्वासकी तरह एक अस्पष्ट आवाज़ निकल पड़ती है।

सार्वाङ्गिक।—मानो रोगी बहुत दिनोंसे उदरामय भोग रहा है, इसी तरहकी उसकी मूर्त्ति और अङ्ग-प्रत्यङ्ग आदि केवल अस्थि-चर्म-सार दिखाई देते हैं, पर वास्तवमें उसे अतिसार या उदरामय नहीं हुआ रहता है। सुस्ती, विशेषकर लेटनेकी अवस्थासे उठाकर बैठानेके समय बहुत सुस्ती मालूम होती है। बच्चेका हाथ पकड़नेपर वह रोने लगता है। एक बहुत ही बुरी तरह जिसका इलाज हुआ हो, इस ढङ्गका शीत-पित्त (जुलपित्ती) या आम-वातके द्वारा सरसे पैरतक पट जाता है (आर्टिका, रस, एपिस, नेट्रम-म्यूर)। रातभर लगातार छींक आनेकी वजहसे रोगी सो नहीं सकता; छटपटाया करता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—ब्राई, कार्बो वेज, सिङ्कोना, कोलोसिन्थ, लाई, नक्स-वोम, आइरिस-वार्सि, मैग-कार्ब, पल्स, रस-टक्स।

तुलनीय।—स्नायुशूलमें—आर्स, चायना। आध्मानमें—चायना, कार्बो-वेज, लाइकोप। वृथा मल वेग—नक्स-वोम। पाकाशयिक सर-दर्द—आइरिस। हृत्पिण्ड—केनो। कनीनिका—बेलेडोना।

वृद्धि ।—छूनेपर, विशेषकर भोजनकी सामग्री छूनेपर (दाँतका दर्द)। रोगवाला अंश हिलानेपर; पढ़नेपर; सोनेपर; लेटे हुए रोगीको उठाकर बैठानेपर, रातमें और मेदमय द्रव्य, कुल्फी बरफ, ताजी रोटी, कोबी प्रभृति खानेपर ।

घटना ।—आध्मान निकलनेपर ।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे ६ठा शततमिक क्रम ।

रोज़ा केनिना

(ROSA CANINA)

दूसरा नाम ।—डाग रोज़ ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पके फलसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—मूत्रकृच्छ्रता, मूत्रनलीका उत्ताप, बहुत ज्यादा मूत्र-स्राव वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

रोज़ा डेमस्किना

(ROSA DAMASCENA)

दूसरा नाम ।—डेमस्कस-रोज ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फूलसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—सर्दी ज्वरकी एक उत्कृष्ट दवा है ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

रोज़ मेरिनस

(ROS MARINUS)

दूसरा नाम ।— रोज मेरी ।

उपयोगिता और आभास ।—गर्भ-स्राव, शिर दर्द और समय आगे बढ़ाकर होनेवाले ऋतु-स्रावकी उत्कृष्ट दवा है। माथेका केश झड़ना, स्मरण-शक्तिका लोप होना लक्षणमें यह सुन्दर काम करता है।

सम्बन्धी ।—**तुलनीय** । हेवियो, मेन्या-पाल ।

शक्ति ।—मूल अरिष्ट और निम्न-शक्ति ।

रूबिया टिंटोरम

(RUBIA TINTORUM)

दूसरा नाम ।—मदार ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़से अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—खूनकी कमी, विशेषकर प्लीहामें यांत्रिक विकार होनेके कारण शरीरका खून घट जाना लक्षणकी एक उत्तम दवा है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—चायना, काफिया, गैलियम, फेरम ।

शक्ति ।—मूल अर्क १० बूंदकी मात्रामें और निम्न-शक्ति ।

रियुमेक्स ऐसिटोसा

(RUMEX ACETOSA)

दूसरा नाम ।—शोरेल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पत्तेसे अरिष्ट बनता है ।

उपयोगिता और आभास।—सूखे पत्ते चेहरेकी उपत्वचाके प्रदाहमें विशेष लाभदायक है। बहुत देरतक ठहरनेवाली सूखी खाँसी, उपजिह्वाका बढ़ना, अन्ननलीका प्रदाह, कर्कट, जखम, पाकाशयका प्रदाह प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—कैलि-फाक्स, लेपिथम।

शक्ति।—२x—३०।

रियुमेक्स क्रिस्पस

(RUMEX CRISPUS)

दूसरा नाम।—यलो डक।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़के रससे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—गर्भ-स्राव; स्वर-बद्ध; दमा; आँतोंमें गड़गड़ाहट; श्वासनली प्रदाह; सर्दी; खाँसी; गट्ठे; अतिसार; अजीर्ण; नाकसे खून गिरना; पैरमें दर्द; पाकाशयका शूल; हृत्पिण्डमें दर्द; अजीर्ण; उत्तेजना; मुँहमें जखम; गुदा-रोग; यक्ष्माकी खाँसी; आमवात; गलेका जखम; गलनलीकी बीमारी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—सूखी खाँसीकी यह एक बहुत बढ़िया दवा है। कण्ठके भीतर लगातार खुजलीकी वजहसे सूखी और तकलीफ देनेवाली खाँसी; सूखी, कमजोर करनेवाली लगातार खाँसी; वृद्धि—वायु और कमरा बदलनेपर; सन्ध्याके समय सोते ही कण्ठनलीके बाहरी भागके ऊपरी अंशको छूनेसे या दबाते ही; बायीं करवट सोनेपर या कण्ठमें ठण्डी हवा प्रवेश करते ही। रोगी देह गर्म रखनेके लिये चादर सरसे पैरतक ओढ़ लेता है। कफ बहुत कम या बिलकुल ही नहीं निकलता; श्वास-प्रश्वासमें जरा भी गड़बड़ी होते ही खाँसी आने लगती है। कण्ठमें ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ गुच्छेकी तरह बन्धा हुआ है; घूँट लेनेपर उतर जाता है, पर तुरन्त ही फिर वहीं आ पहुँचता है। खाँसनेके समय स्वरनली और वायुनलीके भीतर त्वचा क्षय हो जानेकी तरह मालूम होता है। वायुका स्पर्श सहन नहीं होता,

रोगीको घरके बाहरकी हवा बिलकुल ही सहन नहीं होती। उसका स्वर रुक जाता है, विशेषकर सन्ध्याके समय या सर्दी लगनेपर, इच्छानुसार स्वरको ऊँचा-नीचा नहीं कर सकता। खाँसनेपर अनजानमें पेशाब निकल जाता है। सवेरे उदरामय। सवेरे ५ बजेसे दिनके १० बजेतक बढ़ना। मल—यन्त्रणा-रहित, बहुत ज्यादा और बदबूदार; एकाएक प्रबल वेग पैदा हो जाता है और शय्या छोड़कर दौड़कर पाखाने जाना पड़ता है। शरीरका आवरण उतारते ही या ठण्डी हवा लगते ही सारे शरीरमें (विशेषकर निम्नाङ्गमें) बहुत खुजली पैदा हो जाती है; गर्म प्रयोगसे बढ़ना।

लक्षणावली

मन।—चित्त विषन्न। मूर्त्ति गम्भीर; आत्महत्या करनेका भाव, क्रोधी स्वभाव। किसी तरहका मानसिक परिश्रम करनेकी इच्छा न होना (नक्स, फास, स्टैफाई, कोना, स्कियुला, मिडोरिन)।

मस्तक।—भयङ्कर उद्वेग-भरे सपने देखनेके बाद नींद खुलनेपर सर-दर्द। माथेके दाहिने पार्श्वमें शूल-वेदनाकी तरह या बेधनेकी तरह दर्द (केलि-बाई); कानमें आवजा।

आँख।—दोनों आँखोंमें इस ढङ्गका दर्द, मानो सूख गयी हैं (लाई, सल्फ); पलक प्रदाह-भरी, विशेषकर सन्ध्याके समय। आँखमें त्वचा चय हो जानेकी तरह अनुभव होना (इयुपेट, हैमा, कार्ण्स, ग्लोन, लैके)। बायीं आँखमें और ऊपरी अंशमें बेधनेकी तरह तेज दर्द।

नाक।—नाकसे रक्त-स्राव, भयङ्कर छींक और रन्ध्रमें यन्त्रणाजनक उत्तेजना। नाकके छेद रुके मालूम होते हैं। नाकका छेद यहाँतक कि नाकका पिछला भागतक सूखा मालूम होता है (कोचलिया, लाई)। नाकका स्राव—रंध्रसे पानीकी तरह स्राव या श्लेष्मा निकलता है और बार-बार छींक आया करती है (केलि-आयोड, एलैन्य, ऐनाक, बेडो, ब्राई, सेङ्गियु, सिपि); वृद्धि—सन्ध्याके बाद और रातमें (सिपा, जिङ्कम, केलि-कार्ब, क्लोरम)। नाकके पिछले छेदसे गलेमें पीला श्लेष्मा निकलता है (नेट्रम-फास)। भयानक सर्दीके साथ सर्दिज ज्वर और उसके बाद वायुनलीभुज-प्रदाह (सेङ्गिविन, सेनेगा, लाई)।

मुखमण्डल आदि।—चेहरा गर्म और लाल, विशेषकर सन्ध्याके समय, इसके साथ ही धीमा-धीमा सर-दर्द; समूचो देहमें टपक-जैसी मालूम

होती है (केलि-कार्ब)। सवेरे मुँहका स्वाद बहुत कड़वा हो जाता है। जीभ और मुख-विवर बहुत सूखा ; ऐसा मालूम होता है, मानो जीभ जल गयी है (आइरिस, साइलिक्स, सेङ्गियु, वेरेट-विर, लोरो)। जीभ सफ़ेद, पीली, भूरा या लाल आभा लिये भूरी लेप-चढ़ी। रोज़ एक ही समय या भिन्न-भिन्न समय एकाएक स्वर परिवर्त्तन हो जाता है ; खाँसी रोगमें स्वर परिवर्त्तन।

गलेके भीतर।—कण्ठके भीतरके ऊपरी अंशमेंसे श्लेष्मा निकलना और कण्ठके भीतर खाल उधड़ जानेकी तरह मालूम होना। कण्ठके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो एक गुच्छा बँधा हुआ है (इग्ने, कास्टि, सिपा, केलि-कार्ब, लिडम, सिपिया); खाँसने या निगलनेके समय नहीं हट जाता है (ऐसिड-लेक ; हट जाता है—केलि-बाई)। घूंट लेनेपर उतर जाता है, पर फिर तुरन्त अपनी जगहपर आ जाता है (लेके, लेक-कैन)। जिह्वामूलके पार्श्ववाले दोनों गह्वरमें गाढ़ा जमा हुआ गोंदकी तरह श्लेष्मा इकट्ठा होकर तालुमूलमें दर्द पैदा कर देता है।

पाकस्थली।—भोजनके बाद पेट फूल जाता है ; पाकाशय या उदरोर्द्ध-प्रदेशमें भार मालूम होता है ; बायें स्तनमें दर्द हुआ करता है ; पाकस्थली आध्मान-वायुसे भरी रहती है और उसमें दबाव हुआ करता है। “पाकाशयका शूल—उदरोर्द्ध-प्रदेशमें शूल बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है ; उदरोर्द्ध-प्रदेश भरा और भारी मालूम होता है और यह अनुभूति कण्ठके दरवाजेतक फैल जाती है। प्रत्येक बार घूंट लेनेपर यह पूर्णता उतर जाती है, पर फिर तुरन्त अपनी जगहपर आ जाती है ; भोजनके बाद पाकाशयमें भार मालूम होता है और आध्मानकी अधिकताकी वजहसे पेट फूल उठता है। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें सलाई गड़ने या छेदनेकी तरह दर्द, जरा हिलनेपर ही दर्द बढ़ जाता है।” पतले दस्त ; उदरामय होनेके पहले रातमें मिचली मालूम होती है। उदरोर्द्ध-प्रदेशसे तेज़ दर्द वक्षमें चला जाता है, बायें वक्षमें दर्द बहुत तेज़ मालूम होता है, कुछ मिचली और ललाटमें धीमा दर्द अनुभूत होता है। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें कसावटका भाव, भार मालूम होना और श्वास-रोध पैदा करनेवाला दर्द—यह दर्द शरीर भेदकर पीठतक चला जाता है ; पहना हुआ कपड़ा बहुत कसा मालूम होता है ; उदरोर्द्ध-प्रदेशमें अवसाद अनुभव होना। बात कहनेपर बढ़ जाता है ; रोगी बार-बार गहरी सांस लेता है। (ऐगार, इग्ने, लेके, सल्फ)।

अन्त्राशय ।—नाभीके नीचे इस तरहका दर्द मानो मरोड़ हो रहा है, बदबूदार वायु निकलनेपर कुछ घट जाया करता है; कुछ भोजन करनेके कुछ ही बाद आध्मान उत्पन्न हो जाता है और पेटमें दर्द हुआ करता है। कोखमें (विशेषकर बायें) दर्द, खाँसनेपर (ड्रोसेरा, हायो, सल्फ), तेजीसे चलनेपर (केली-बाई या दीर्घ सांस ग्रहण करनेपर—लाई)। दीर्घ श्वास ग्रहण करनेपर उदरमें दर्द पैदा हो जाता है या बढ़ जाया करता है (कैल्के)। उदर कड़ा और भारी मालूम होता है और उसमें कभी-कभी कल-कल शब्द होता है। सवेरे पेटमें दर्द होकर पतला दस्त आता है अर्थात् सोकर उठनेपर पेटमें दर्द होकर पतला पाखाना होता है।

मलान्त्र और मल ।—मलका पतलापन या उदरामय—मल यंत्रणा रहित, बदबूदार और बहुत ज्यादा भूरा या काला और बहुत पतला पानीकी तरह, पाखाना होनेके पहले पेटमें दर्द हुआ करता है; पाखाना होनेके पहले एकाएक रातके ४ बजे वेग होकर नींद खुल जाती है और रोगीको दौड़कर पाखाना जाना पड़ता है (ऐलो, नेट्रम-सल्फ), इसके साथ, कण्ठमें खुजलीको वजहसे खाँसी मौजूद रहती है और यह खाँसी रातमें बढ़ जाया करती है। कभी-कभी पैदा होनेवाला बहुत दिनोंका उदरामय; वृद्धि—सवेरे ५ बजेसे दिनके १० बजेतक। कब्जियत, मल कठिन, गांठ-गांठ, भूरा, सहजमें हो नहीं निकलता। मलद्वारमें खुजली अनुभव होती है और बदबूदार आध्मान वायु निकला करता है। मलद्वारमें ऐसा मालूम होता है, मानो भीतरसे एक काठकी सलाई बेधी जा रही है। पतला पाखाना होनेके रोगमें—पेट गड़गड़ाया करता है, जी मिचलाया करता है और खानेकी इच्छा नहीं होती; पानीके सोतेकी तरह वेगसे मल निकलता-निकलता एकाएक रुक जाता है और फिर वेग नहीं रहता पर उठकर खड़े होनेपर फिर पाखाना लग आता है और फिर बैठनेपर उसी तरह सोतेकी धारकी तरह पतला पाखाना निकला करता है। अर्श—मलद्वारमें उत्ताप और उत्तेजनाके साथ मालूम होता है, कि उसमें कोई एक पदार्थ है, मसा बाहर निकल पड़ता है।

श्वासयन्त्र ।—कण्ठ या स्वरनलीके मुँहपर गाढ़ा गोंदकी तरह कफ इकट्ठा होता है और रोगी उसे बार-बार निकालनेकी चेष्टा करता है (हाइड्रैष्ट,

कास्टि, ग्रेफ, कैलि-बाई)। स्वरभङ्ग, विशेषकर सन्ध्याके समय (कार्बो-वेज, कार्बो-ऐन, फास, ग्रेफ, आर्जेण्ट, सिनेबार), कब कैसा स्वर निकलता है, इसकी स्थिरता नहीं रहती। खाँसनेपर स्वरनलीकी त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होता है (कास्टि, पल्स, फास)। श्वास-कष्ट, रोगीको बार-बार ऐसा मालूम होता है, मानो उसका यही श्वांस-प्रश्वास अन्तिम हैं और साँस न ले सकेगा (एपिस) श्वास-रोध होनेका उपक्रम ; उदरके ऊपरी प्रदेशतक ऐसा ही मालूम होता है। ऐसा समझकर कि गाढ़ा श्लेष्मा अड़ा हुआ है और यह श्लेष्मा खाँसीके साथ निकलनेका नहीं ; रोगी निराश हो पड़ता है, यहाँतक कि उसे इच्छा होती है, कि आत्महत्याकर तकलीफ़को घटा दे। प्रकोपके बाद रोगी सुस्त और शय्यागत हो पड़ता है और रोने लगता है। आवाज़ उखड़ी, घड़घड़ खाँसी ; प्रत्येक रातमें ११ बजनेके समय और बच्चोंको रातके २ या ३ बजनेके साथ खाँसीका प्रकोप होता है, वक्षोस्थिके बीचवाले अंशके पीछे दर्द मालूम होता है। लगातार क्लान्ति-जनक सूखी खाँसी, कण्ठमूलमें खुजलीसे पैदा हुई,—यह खुजली वक्षोस्थिके पिछले भागमें और पाकस्थलीतक चली जाती है ; खाँसनेपर स्वरनलीके भीतर और वक्षोस्थिके पीछे त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होता है ; पैरकी पोटलीमें ऐसा मालूम होता है, मानो जखम हो गया है ; पाकाशयमें दर्द और बाएँ फेफड़ेमें तेज़ शलाका वेधनेकी तरह दर्द। खाँसीकी वृद्धि—एक कमरेसे दूसरे कमरेमें जानेपर (फास, स्पंजिया)। श्वास-प्रश्वासमें कुछ भी गड़बड़ी होनेपर सन्ध्याके बाद सोनेपर (कैलि-कार्ब, पल्स); बाईं करवट सोनेपर (लाई, पैरिस, फास, रास); कण्ठका बाहरी भाग छूते या दबाते ही (स्ट्रैमोन) ; थोड़ी भी ठण्डी हवा कण्ठमें प्रवेश करनेपर खाँसी बढ़ जाया करती है और इसीलिये हवा गर्म करनेके अभिप्रायसे रोगी ओढ़नेसे, सरसे पैरतक अपना शरीर ढक लेता है (शरीरका कोई भी अंश खोलते ही खाँसी आती है—हिपर), खाँसकर कण्ठ साफ़ करना चाहनेपर स्वरनली जखम भरी मालूम होती है और जलन हुआ करती है ; इसके बाद बायें वायुनली-भुजमें ऐसी ही जलन और क्षय हुई त्वचाकी तरह अनुभूति पैदा हो जाती है, सर्दी लगनेपर स्वरलोप (कास्टि, फाइटो, सेनेगा, जैन्थक-साइलम)। सूखी, आक्षेपिक खाँसी हूप खाँसीकी पहली अवस्थाकी तरह, खाँसीके पहले कण्ठमूलमें खुजली पैदा हो जाती है या हलकी जलन हुआ करती है, खाँसीकी वृद्धि—सोनेके २-४

मिनट बाद। बलगम बहुत सामान्य निकलता है। क्षयकास रोगीकी रातकी आनेवाली खाँसी। श्वास रोगमें कभी-कभी भयानक श्वास-रोधक खाँसीका प्रकोप पैदा हो जाता है, विशेषकर रातके दो बजनेके समय (कोडिइनम, ड्रोसेरा)। जङ्घास्थिमें दर्द मालूम हो या न हो। श्वासराहित्य (श्वासका न रहना), अनुभव होना, मानो फेफड़ेमें वायु नहीं प्रवेश कर रही है। बहुत ऊँची जगहसे वेगसे गिरनेकी अवस्थामें जैसा श्वास रुकनेका उपक्रम अनुभव हुआ करता है। क्षय-कास रोगीकी श्वासकृच्छ्रता (ड्रोसेरा, स्टिक्टा, शराबियोंका दमा—सिफाइटिस)।

वक्ष।—दोनों ही फेफड़ोंके ऊपरी सामनेवाले अंशमें दर्द हुआ करती है। हृत्पिण्डके पास बाएँ वक्षमें जलन और सुई गड़ने या डङ्क मारनेकी तरह दर्द। स्तन-वृन्तके दो इञ्च ऊपर और बाएँ अंशमें ; वृद्धि—लम्बी साँस लेनेपर और चित्त होकर या बाईं करवट सोनेपर ; घटना—दाहिनी करवट सोनेपर। बाएँ वक्षमें एकाएक जलन मालूम होती है,—रातमें सोकर लम्बी साँस लेनेपर। बायें स्तन वृन्तके कुछ नीचे खुजलानेकी तरह अनुभव होना और इसके बाद ही स्तनके नीचे खुजली पैदा हो जाती है। पीठमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द पैदा हो जाता है। दाहिने वक्षमें जलन और वेधनेकी तरह दर्द। बायें बगलके पास तेज़ दर्द। श्वास-प्रश्वासके समय पाकाशयके पीछे क्षय हुई त्वचाकी तरह या जखम हो जानेकी तरह अनुभव होना। कण्ठसे कफ़ निकलनेके समय दोनों जंघास्थिके नीचे ऐसा दर्द मानो जखम हो गया है। मध्याह्नके समय बायें वक्षमें ऐसा दर्द मानो अस्त्रसे छेद रहा है—प्राय ; एक घण्टे तक इसी तरहका दर्द हुआ करता है। बाएँ वक्षकी पेशीका वात रोग। रातमें सोनेके समय—वृद्धि।

हृत्पिण्ड।—हृत्पिण्डकी गति ऐसा मालूम होता है, मानो एकाएक रुक गयी (साइक्लूटा, आरम, जेल्स, सिपिया, आर्जेण्ट-नाइ, चिनिन-आर्स, लिलियम-टाई, टैरेण्ट, डिजिट ; गर्भावस्थामें—आर्जेण्ट-मेट) और इसके बाद समूचे वक्षके भीतर तेज टपकन मालूम होती है। इसके बाद एक जोरका धक्का लगकर स्वाभाविक गति हो जाती है—आरम)। हृत्पिण्ड-प्रदेशमें जलन (आर्स, अर्जेण्ट-नाइ, कार्बो-वेज, पलस, ऐनाग्थि, आरम-म्यूर, लिसिन ; हृत्शूल रोगमें—केलि-कार्ब)। हृत्प्रदेशमें धीमा (तेज़ नहीं) दर्द ; सोकर दीर्घ श्वास लेनेपर बढ़ जाता है। हृत्पिण्डमें दर्द होता है और ग्रीवा-देशकी दोनों

धमनियाँ और समूची देहमें इतनी तेज धमकन होती है, कि शय्यातक काँपने लगती है; श्वासकृच्छ्र, वृद्धि—सोनेपर (ऐण्टि-टार्ट, कैलि-कार्ब, कैलि-बाई, लैके, नैजा, फास, प्लम्ब, स्पञ्जि); रोगीको बाध्य होकर उठकर बैठना पड़ता है (ऐण्टि-टार्ट, ब्रोम, ब्यूफो, मर्क, आर्स, आयोड, एपिस, फास, टैबाक ; बाध्य होकर सीधे होकर खड़े रहना पड़ता है—सीड्रन); चेहरा लाल, फूला, विशेषकर दोनों आँखें लाल और ज्योतिहीन। नाड़ी बहुत तेज, विशेषकर सीढ़ी चढ़नेके समय। हृत्प्रदेशमें डङ्क मारनेकी तरह तेज दर्द—यह दर्द छातीको भेदकर पृष्ठ-फलकके शिखर-देशमें जाकर पैदा हो जाता है और रोगीको फिर दीर्घ निश्वास ग्रहण करनेकी इच्छा होती है, परन्तु दीर्घ श्वास लेनेपर दर्द बढ़ा मालूम होता है।

पेशाब।—बार-बार पेशाबका वेग और ऐसा मालूम होता है, मानो अधिक देरतक वेग न रोका जा सकेगा। खांसनेपर आप-ही-आप पेशाब हो जाना (स्क्वियुला, वेरेट)।

गर्दन और पीठ।—ऐसा मालूम होता है, मानो कानके बीचसे होकर गलेके चारों ओर एक सूता कसकर बँधा हुआ है; इसके साथ ही कानमें आवाज़, दाहिने उरुशिखर और त्रिकास्थिकी सन्धिके स्थानपर जलन और जखमका भाव। ऐसा मालूम होना मानो दोनों अंसफलकमें दर्द हो रहा है। दाहिने उरुशिखरके पीछे सुई गड़नेकी तरह दर्द—रोगी लङ्गड़ाकर चलता है। खड़े होनेपर जाँघोंमें ऐसा दर्द होता है, मानो सुई गड़ रही है। दोनों पैर छोटे-छोटे लाल दानोंसे भरे रहते हैं; पैरकीके अँगुली गट्ठेमें ऐसा दर्द मानो डङ्क बिंध रहा है। ठण्डी या घरके बाहरकी हवा सहन नहीं होती।

त्वचा।—शरीरके कितने ही स्थानोंमें विशेषकर निम्नांगमें खुजली पैदा हो जाती है, वृद्धि—कपड़ा उतारनेके समय (ड्रोसेरा, ऐसिमिना-ड्राई, कैक्टस)। शरीर खुजलाता है; वृद्धि—सर्दी लगनेपर (मर्क, सल्फ, टेल्यूरियम)। रस-भरे दानोंकी तरह खुजलानेवाले उद्भेद; वृद्धि—कपड़ा उतारनेपर और ठण्डी हवा लगनेपर (हिपर, नेट्र-सल्फ, ओलियैण्डर)।

वृद्धि।—सर्दी या सर्द हवा लगनेपर; वस्त्र आदि उतारनेके समय एक कमरेसे दूसरेमें या घरके बाहर जानेपर; चित होकर या बाईं करवट

सोनेपर; बोलनेपर; दीर्घ निश्वास ग्रहण करनेपर, चलनेपर; सन्ध्याके बाद और रातमें; श्वास-प्रश्वासमें कोई गड़बड़ी होनेपर (फास) और भोजनके समय और बाद।

घटना।—उत्तापसे; स्थिर होकर सोये रहनेपर; दाहिनी करवट सोनेपर और बदबूदार आध्मान वायु निकलनेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—बेल, कैम्फो, कोना, ह्वायो, लैके, फास।

सदृश।—एपिस, बेल, कैल्के, कास्टि, सिस्टस-कैन, डालका, इरिञ्जियम, हिप, आयोड, आइरिस, युग्लैन्स, लैके, मर्क, न्यूफर-ल्यूट, फास, पोडो, रियुम, सेङ्गिविन, सञ्जिया, सलफर।

तुलनीय।—सूखी खाँसी—सिना। यक्ष्मा रोगीका दमा—मिफाईं, स्टिक्टा। सवेरे उदरामय—सल्फ। सोनेपर गलेमें सुरसुरी होकर खाँसी—ह्वायोसा, कोनायम। आमवात—एपिस। आँखमें सुई गड़नेकी तरह दर्द—कैलि-कार्ब, ब्रायो। आँखका लक्षण—हिपर। दिनमें खाँसी—फेरम-फास।

शक्ति।—३रा ग्रततमिक क्रमसे २०० ग्रततमिक क्रम।

रसुला

(RUSSULA)

दूसरा नाम।—रसुला फिटेलस। एक तरहका बेंगका छत्ता।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—दृष्टिलोप, ताण्डव, भ्रम-भरी चीजें देखकर डरना, पेशियोंका काँपना प्रभृति लक्षणमें इससे फायदा होनेकी आशा की जाती है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

रूटा ग्रैवियोलेन्स

(RUTA GRAVEOLENS)

दूसरा नाम।—रूटा लेटिफोलिया।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—क्षीण-दृष्टि; मलान्त्र (काँच) निकलना; हड्डीमें चोट लगनेकी तरह दर्द; काला दाग पड़ना; ज़ानु (घुटना) की सन्धि या कोहनीकी सन्धिका प्रदाह; उपास्थिमें चोट लगनेकी तरह दर्द; आँख और वक्षोस्थिमें दर्द; कब्जियत; अस्थिका अपने स्थानसे हटना; अजीर्ण; अनजानमें पेशाब; नाकसे रक्तस्राव; हड्डीका बढ़ना, मुँहकी पेशीका पक्षाघात; ज्वर; हड्डीतोड़ बोखार; रक्तस्राव; हाथमें दर्द; पक्षाघात; अन्त्रवेष्ट-प्रदाह; मलान्त्रकी बीमारी; बेचैनी; आमवात; गृध्रसी; प्लीहाकी बीमारी; मोचखाना; तोतलाना; जीभमें ऐंठन; सूजन। पेशाबमें कष्ट; फूलना; मस्से इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—इसका प्रधान क्रिया-स्थल अस्थिवेष्ट है, इसलिये, वातके कारण हड्डीका बढ़ना, आघात और गिरने आदिके कारण दर्द, किसी अंगमें मोच आ जानेके कारण अस्थि तथा अस्थिवेष्टमें दर्द, अस्थि-वेष्टका प्रदाह, फैलनेवाला विसर्प, हड्डी टूटना, सन्धि खिसकना प्रभृति अस्थि-वेष्टकी बीमारीमें रूटा विशेष लाभदायक है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण हैं :—(१) सारे शरीरमें विशेषकर हाथ-पैरमें और सन्धिमें बहुत दर्द और अवशता अनुभव होना,—मानो किसी ऊँची जगहसे गिर गया है या किसीने पीटा है। (२) शरीरके जिस किसी अंशको दबाकर सोता है, उसीमें बहुत दर्द हो जाता है, मानो उन सभी अंशोंमें चोट लग गयी है या कुचल गया है। (३) शायित अवस्थामें रोगी बहुत बेचैनी प्रकट करता है और इधर-उधर करवट बदला करता है। (४) कोई सन्धि विशेषकर कलाई और एँड़ीमें मोच आ जानेके कारण उसको हिला न सकना। (५) वक्षके ऊपर आघात और गिरने आदिके कारण क्षयकास। (६) आँखमें दर्द और मैली दृष्टि, मानो आँखोंसे बहुत काम लेनेकी वजहसे। (७) आँखमें दर्द

और अस्पष्ट दृष्टि—महीन ज़रदोज़ीका काम, घड़ीका काम या छपाईके काममें आँखके बहुत देरतक देखते रहनेके कारण। (८) आँखमें उत्ताप, जलन और दर्द; सन्ध्याके पहले और दीयेकी रोशनीमें पढ़नेके समय। (९) क्षीण या अस्पष्ट—दृष्टि-शक्तिका बहुत अधिक परिचालन या रोशनीकी अवक्षेप क्रियाकी वजहसे क्षीण रोशनीमें पढ़ने आदिका काम या महीन सुईका काम। रातमें दीयेकी रोशनीमें बहुत पढ़ने वगैरह कारणसे उत्पन्न; सभी चीजें धुँधली दिखाई देती है या अन्धेरेमें ढँकी मालूम होती हैं; दूरकी चीज बिलकुल अन्धेरेमें ढँकी मालूम होती है या दिखाई ही नहीं देती। (१०) मलान्त्रकी निष्क्रियता या चोट अथवा गिर जानेकी वजहसे मलान्त्रमें कड़ा मल रुक जाना और इसी वजहसे कब्जियत। (११) मलान्त्रका अपने स्थानसे हटना (काँच निकलना); पाखाना फिरनेकी चेष्टा करते ही या जरा झुकते ही काँच निकलना; प्रसवके बाद बार-बार मल-वेग। (१२) मूत्रस्थलीमें दबाव मालूम होना, मानो वह लगातार भरी हुई है; प्रबल वेगकी वजहसे प्रायः पेशाब नहीं रोक सकता, पर वेग आते ही पेशाब न करनेपर कुछ देर बाद पेशाब करना बहुत कठिन हो जाता है; पेशाब बहुत थोड़ा और हरी आभा लिये; कभी-कभी अनजानमें पेशाब हो जाता है। (१३) मांसकीन या मसे—उनमें ऐसा दर्द मानो त्वचा क्षय हो गयी है; चिपटा और चिकना गात्र; तलहत्थोमें पैदा होते हैं। (१४) पीठ या कमरमें दर्द—चित होकर अर्थात् कमर दबाकर सोनेपर आराम मालूम होना।

लक्षणावली

मन।—लोगोंकी बात काटना और सबके साथ कलह करना बहुत पसन्द करता है (प्रतिवाद करता है—ऐनाक, आरम, कैन्थ, कास्टि, लाई, ओलियेन; कलहप्रिय—आरम, इग्ने, नक्स-वोम, सल्फ; गाली-गुप्ता करता है—ऐनाक)। अपने प्रति जिस तरह असन्तुष्ट रहता है, दूसरोंके प्रति भी वैसा ही असन्तुष्ट रहता है (ऐ-नाई, ऐग्नस, सल्फ, कैमो, सिना, कोलचि, क्रोटन-टिग, हिपर, इण्डिगो, लिडम, लाई, प्लेट, थूजा)। विमर्ष भाव—विशेषकर सन्ध्याके समय (ऐ-नाई, रैनान, स्किलिरिटस)। प्रायः अन्यमनस्क (ऐग्नस, एपिस, नक्स-मस, रस, सिपिया)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना ; सवेरे शय्यासे उठनेके समय (सैंग-मूरर, सिपिया, सैनसिन ; यहाँतक कि रोगीको फिर बाध्य होकर सो जाना पड़ता है—पल्स), बैठे रहनेपर (पल्स, कैमो, रस) और निर्मल वायु सेवनके लिये चलनेके समय (साइक्लोम, कैल्के-फास, कूप्रम-ऐसेट, फेलैन)। सर-दर्द—करोटी (माथेकी खोलमें मानो एक लोहेकी कील घुस रही है, ऐसी यन्त्रणा—काफिया, इग्ने, सिपिया ; कनपटीमें—आर्निका ; बायें पार्श्वमें—नेट्र-म्यूर); मानो समूचे मस्तिष्कमें एक भारी चीजसे जोरसे दबाया जा रहा है और इसी वजहसे रोगीको बुद्धि-भ्रंश हो जाता है (इग्नेशिया); बहुत ज्यादा शराब आदि पीनेकी वजहसे (ऐसिट-क्रूड, नक्स, जिङ्कम, इग्ने, लोबेल, सेलिन)। ललाटके पीछे दबाव और टपकका दर्द। ललाटसे दोनों कनपटीतक ऐसा दर्द मानो चिपक गया है और सुई गड़नेकी तरह दर्द अनुभव होता है। सरमें उत्ताप पैदा हो जाता है और रोगी बेचैन हो जाता है (फास ; मानो माथा आगकी गर्म भाफसे घिरा हुआ है—ऐस्टिरियस-रियुब ; पढ़नेके समय माथेमें उत्ताप पैदा हो जाना—वैरियोलिन)। कानकी त्वचाके ऊपर दर्द-भरी एक बड़े अर्बुदके आकारकी सूजन, मानो माथेके अस्थि-वेष्टसे वह चढ़ी है—ऐसा ही दिखाई देता है ; उसे छूनेपर जखमकी तरह दर्द होता है और निकलनेके पहले उसमें फाड़नेकी तरह दर्द अनुभव होता है। दबानेपर माथेमें दर्द होता है, मानो कुचल गया है या मार पड़ी है। माथेका जखम आदिसे उत्पन्न विसर्प। माथेकी त्वचाके ऊपर पपड़ी जम जाती है और उससे लगातार रस बहा करता है। खोपड़ीकी त्वचामें त्वचा क्षय करनेवाली खुजली। रोगीके कानमें मानो कोई एक मोटी सलाई घुसा रहा है, इस तरहकी अनुभूति। माथेके बायें पार्श्वमें रोग।

आँख।—भीतरी पलक और निचली पलकमें बहुत खुजली पैदा हो जाती है। मलनेपर आँख करकराती है और दोनों आँखोंमें पानी भर आता है। आँख और भौंहोंपर ऐसा दर्द हुआ करता है, मानो आँखसे बहुत काम लिया गया है और रोगीको स्पष्ट दिखाई नहीं देता। ऐसा मालूम होता है, मानो दृष्टि-शक्तिका परिचालन बहुत अधिक हुआ है (मेजेर) और आँखोंमें जलन और दर्द हुआ करता है ; दोनों आँखोंमें ऐसी जलन होती है, मानो वे आगसे भरी हैं। निचली पलक फड़का करती है। अस्वच्छ या क्षीण-दृष्टि—दोनों आँखोंके बहुत अधिक परिचालनकी वजहसे (फाइजस) या चक्षु-मुकुरकी

आलोक रेखाके अवक्षेपकी वजहसे या धीमी रोशनीमें काम करनेके कारण (लिथिया-कार्ब) या रातमें सुईका काम या पढ़ने आदिकी वजहसे (नेट्रम-म्यूर, फाइजस, फास); दृष्टिकी अस्पष्टता—सभी चीजें अन्धेरेमें ढँकी मालूम होती हैं और दूरकी चीज तो एकदम अन्धकारमें ढँकी मालूम होती है (फास, फाइजस, आर्जेण्ट-नाई, कैल्के, सिना, जैसि, हैमा, जैबोरैन, नेट्रम-म्यूर, पैरिस, रस ; सरमें चक्कर आने लगता है—नेट्र-म्यूर, फास, ग्रैफ, मैग-फास, साइलि)। घड़ी मरम्मत करनेवाले, छापनेका काम करनेवाले वगैरहका सूक्ष्म शिल्प-कार्यमें दृष्टिका बहुत अधिक परिचालन (नेट्र-म्यूर, फाइजस) या किसी चीजकी ओर टकटकी लगाकर बहुत देरतक देखनेके कारण (सेनेगा, नेट्र-म्यूर, क्रोकस-सेट)। रातमें दीयेकी रोशनीमें पढ़नेके समय आँखमें जखम (कैल्के)। दीयेके चारों ओर हरे रङ्गका घेरा दिखाई देता है (बेल, ओस्मियम, फास, पल्स, सल्फ)। दृष्टिके सामने हमेशा ही ऐसा मालूम होता है, मानो एक छाया फैली हुई है। आँखके सफेद अंशके ऊपर काला धब्बा दिखाई देता है (कैल्के, कोना, एपिस, कैल्के-फ्लू, कैल्के-फास, कास्टि, युफ्रे, फार्मिका, ऐसिड-नाई, पल्स, सेनेगा, साइलि)। घरके बाहरी भागकी हवा लगनेपर आँखें पानीसे भर जाती हैं ; कमरेके भीतर ऐसा नहीं होता। बहुत पढ़नेके कारण दृष्टिका मैलापन—दृष्टिके सामने मानो बादल हैं या पर्देके भीतरसे देख रहा है—इस ढङ्गकी अस्पष्ट दृष्टि (कास्टि, क्रोकस, रस)। आँखोंका चित्रपट विश्लेषण (फाइजस)। निचली पलकका स्पन्दन और उसके बाद ही आँसूका स्राव।

पाकाशय आदि।—मुँहके अस्थिवेष्टमें दर्द ; चोटकी वजहसे होनेकी तरह, खाली घूंट निगलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठमें कुछ अड़ा हुआ है (ग्रैफ, जेल्स, पल्स ; निगलनेके समय उतर जाता है और तुरन्त अपनी जगहपर आ जाता है—लैके, लैक-कैन, रियुमेक्स)। तीसरे पहर बहुत ही ठण्डा पानी पीनेकी प्यास। अच्छी रुचि रहनेपर भी पहला ग्रास मुँहमें जाते ही फिर खानेकी इच्छा नहीं रहती, पेट भर जाता है और भूख घट जाती है। भोजन करते-करते एकाएक मिचली पैदा होकर जो कुछ खाया रहता है, सब कै हो जाता है (कै करनेके बाद फिर खाने बैठता है—फेरम)। रोटी और मक्खन खानेके बाद ही पेटमें ऐसा दर्द होता है मानो नखसे काटा जा रहा है ; धूम्रपानके समय हिचकी—पल्स, सेङ्गिविन)। पाकस्थलीमें जलन

और चबानेकी तरह यन्त्रणा। भारी चीजें उठानेकी वजहसे खायी हुई चीज़का अच्छी तरह हज़म न होना, डकार आया करती है और सरमें दर्द हुआ करता है। मांस नहीं खा सकता, मांस खाते ही खट्टी डकार और शरीरमें खुजली पैदा हो जाया करती है। यकृत-प्रदेशमें ऐसा अनुभव होना, मानो कोई चबा रहा है और दबा रहा है। प्लीहा फूली और दर्द-भरी, उदरमें गड़बड़ी मालूम होने बाद पतला पाखाना होना। बच्चोंका क्रिमि-शूल (मर्क, साइकूर, सिना, वैलि)। नाभीके चारों ओर ऐसी यन्त्रणा, मानो चबा रहा है (ओलियेन, कैलि-बाई, ग्रैटि)। उदरमें जलन और चबानेकी तरह दर्दके साथ अंत्र-शूल। बहुत लार बहना, जीभ फूली। बलिष्ठ और रक्त-प्रधान मनुष्योंकी सर्दी लग जानेपर चेहरेका पक्षाघात। जीभ एकाएक अकड़ जाती है और रोगी बोल नहीं सकता।

मलान्त्र और मल।—मलका कड़ापन, मलांत्रकी निष्क्रियताकी वजहसे (ऐलूम, ओपि, साइलि, प्लम्ब, हिपर, केलि-कार्ब, नेट्र-मूर, सोरिन) या चोट, गिरना आदिके कारण मलांत्रमें मल-रोध (आर्निका), मल कोमल, पर बड़े कष्टसे निकलता है (हिपर, ऐनाक, नेट्र-कार्ब, सिपिया, ऐलूम, नक्स-मस), मलांत्रकी सङ्कोचन-शक्ति लोप हो जानेकी वजहसे। पाखाना फिरनेकी चेष्टा करते ही या कुछ झुकते ही मलांत्र अपने स्थानसे हट जाता है (इग्ने, लाई, पोडो, रस-टक्स, ट्राम्बिडि ; जरा वेग देनेसे ही—इग्ने) और सन्तान प्रसव होनेके बाद (पोडो)। बार-बार वृथा मलवेग, मल रुखड़ा ; मल या बहुत ज्यादा वायु निकलनेके साथ खून-मिला मल निकलता है, ऐसा मालूम होता है, मानो केवल वायु ही निकल रहा है। खाली डकार और फूला उदर, कितनी ही बार झुकनेपर मल बाहर निकल पड़ता है। कब्जियत और आमातिसार पर्यायक्रमसे पैदा हो जाता है। बैठनेकी अवस्थामें मलांत्रमें फाड़ने या सुई गड़नेकी तरह दर्द अनुभव होता है (बैठ नहीं सकता—कैल्केरिया, आस्ट्रि)। ऐसा मालूम होता है, मानो मलांत्रसे मिचली उठ रही है ; रमणियोंके प्रदर-रोगमें निद्रित अवस्थामें अनजानमें मल निकल जाना (डा० कुषिङ्ग)।

पेशाब।—मूत्राशयमें ऐसा दबाव मालूम होता है, मानो हमेशा पेशाबसे भरा है (डिजिट); पेशाबके बाद और प्रत्येक क़दम रखनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो मूत्राशय भरा हुआ है और इधर-उधर हटता-फिरता

है। हमेशा पेशाबका वेग धारण नहीं कर सकता। यदि जबर्दस्ती वेग रोक लेता है तो फिर पेशाब नहीं कर सकता। साथ ही जोरोंका दर्द होता है। रात-दिन चलनेके समय अनजानमें पेशाब निकलना (रातमें—ऐ-बेन, कास्टि, फेरम, क्रियो, पल्स, सिपिया ; चलनेके समय—फेरम, नेट्र-म्यू, कास्टि, जिङ्कम)। बार-बार पेशाबके वेगके साथ बहुत थोड़ा पीले रङ्गका पेशाब होता है (ऐ-नाई, केलि-कार्ब, मैग-कार्ब ; नयी दूबका रङ्ग—ऐसिड-कार्बोलिक)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु एकदम अनियमित या रुद्ध। आर्त्तव-स्रावके बाद त्वचाको क्षय करनेवाला प्रदर-स्राव। दो-एक दिन स्थायी रजःस्रावके पूर्व और बादमें प्रदर-स्राव। गर्भस्रावके पूर्व लक्षण-स्वरूप जरायुसे रक्त-स्राव। जरायु आदिका नीचेकी ओर खिंचना। सन्तान प्रसवके बाद मलान्त्रका अपने स्थानसे हटना।

श्वासयन्त्र।—स्वरनलीमें दर्द मालूम होना। सन्ध्यामें सोनेके बाद खाँसी पैदा हो जाती है और गाढ़ा गोंदकी तरह बहुत ज्यादा बलगम निकला करता है और इस तरहकी ओकाई आती है, मानो वमन होगा। पीबकी तरह बलगम निकलनेके साथ खाँसी। खाँसी अधिक हो या न हो गाढ़ा पीले रङ्गका बलगम निकला करता है और वक्षमें सुस्ती मालूम होती है। आधी रातके समय कण्ठ-रोध करनेवाली खाँसीके कारण नींद खुल जाती है। वक्षमें कसावटका भाव और श्वासाल्पता। वक्षपर चोट या गिर जाने आदिके कारण क्षयकास (मिलिफोलियम—चोट आदिकी वजहसे फुसफुसवेष्ट अर्थात् प्लूरामें वायु-सञ्चय—आर्निका)।

गर्दन और पीठ।—कमरमें दर्द, कमर दबाकर या चित्त होकर सोनेपर घट जाता है (नेट्र-म्यू)। कमरमें चोट या गिर जानेकी वजहसे दर्द (आर्निका, रास, इयुपेट-पर्फोलि)। चलनेके समय या झुकनेपर या बैठी हुई अवस्थामें नितम्ब-देशमें बेधनेकी तरह तेज़ दर्द ; घटना—टीप देनेपर या लेटनेपर (झुकनेपर बेधनेकी तरह दर्द—बोरेक्स, पल्स, सेबाइना, चलनेके समय—रैनान-बल्बो, आर्नि, चेलिडो, कोलोसिन्थ, रैनन-स्क्लि ; बैठनेकी अवस्थामें—नैट्र-कार्ब, ऐङ्गस, केलि-आयोड ; घटना—टीप देनेपर—डालका, प्लम्ब, स्टैफाई ; चित्त होकर सोनेपर घटना—कोलोसिन्थ)। पिकचंचुसे लेकर नितम्बास्थितक दर्द, मानो रोगी किसी ऊँची जगहसे नीचे बैठ पड़ा

था। कमरमें दर्द, सवेरे सोकर उठनेके पहले बहुत अधिक मालूम होता है (पेट्रोल)।

प्रत्यङ्ग आदि।—सारे शरीरमें, विशेषकर हाथ-पैरोंमें और सन्धिमें, चोट या गिर पड़ने आदिकी तरह दर्द और अवशता (आर्निका)। शरीरका चाहे जो अंश दबाकर सोये, उसमें ऐसा दर्द होता है, मानो मारा या कुचल दिया गया है (आर्निका, बैप्टि, पाइरोज), शय्यापर सोनेपर रोगी बहुत बेचैनी प्रकट करता है और लगातार करवट बदला करता है (आर्स, क्यूप्रम, ऐकोन, रेनन-स्किलि, लैके)। मोच खा जाने बाद प्रत्यंगोंका अकर्मण्य हो जाना, विशेषकर कलाई और एँड़ीका (मोच खा जानेके कारण कलाईकी अवशता—रियुम; पुराना होनेपर—बोविस्टा; बहुत दिन पहले गुल्फमें मोच आ जानेके कारण अवश हो जाना—स्ट्रान्शियाना)—ठण्डी जलीय वायु लगनेपर बढ़ जाता है। स्कन्ध-सन्धिमें उखाड़नेकी तरह दर्द, विशेषकर हाथ लटका रखनेपर या बाँहपर भार होनेके कारण। कलाईपर कोषमय अर्बुद (कैल्के, साइलि)। तलहत्थीपर चिपटे चिकने मसे निकलते हैं (नेट्र-म्यूर, ऐनाक, करभपर—नेट्र-कार्ब, फेरम, थूजा, ऐ-नाई; अंगुलीपर—कास्टि, डाल्का, नेट्र-म्यूर, ऐसिड-नाई)। सरमें जखमकी तरह दर्द। कोई भारी चीज़ उठानेके समय कलाईमें दर्द होता है, मानो मोच खा गयी है। स्थिर रखने या हिलानेपर कलाईकी हड्डी और करभमें ऐसा दर्द होता है मानो चोट लग गयी है। हाथ सुन्न हो जाते हैं और व्यायाम करनेके बाद चुनचुनी होती है। अंगुलियाँ सब रह-रहकर संकुचित हो जाती हैं। उरु-शिखरकी हड्डीमें ऐसा दर्द मानो चोट लग गयी है और छूनेपर दर्द मालूम होता है। उरुके पिछले भागका स्नायुशूल, पहली बार हिलने या उठनेके समय कमरसे उरुके पिछले भागमें होकर बेधनेकी तरह तेज दर्द नीचेकी ओर चला जाता है; ऐसा अनुभव होता है, मानो रोगी पैरकी कण्डराएँ सब संकुचित हो गयी हैं। कलाई और एँड़ीमें वातकी वजहसे पैदा हुआ पक्षाघात। दो-चार क़दम चलनेपर ही बहुत कमजोर मालूम होती है; ऐसा दर्द मानो दोनों पैरोंपर मारा गया है या कुचल दिया गया है। नितम्बमें बहुत दर्द। खड़े होने, चलनेके समय रोगी डगमगाया करता है, मानो उरु दोनों बहुत क्षीण हो जानेके कारण ऐसा हुआ है। चलनेके समय दोनों पैरोंमें दर्द हुआ करता है। दोनों पैरोंमें बहुत तकलीफ़ और भार मालूम होता है और रोगी

स्थिर नहीं कर सकता कि कहाँ पैर रखा जाये, जिससे आराम मिले। कभी यहाँ, कभी वहाँ सोया फिरता है और करवट बदला करता है। मेरुदण्डमें ऐसा दर्द और अवशता मालूम होती है, मानो चोट लग गयी है। अस्थिकी मज्जामें मानो दर्द हो रहा है या मानो हड्डी टूट गयी है—इस तरहकी यंत्रणा। गुल्फके ऊपर ऐसा अनुभव होता है, मानो जखम पैदा हो गया है। रातमें सारे शरीरमें बहुत दर्द मालूम होता है। ऊरुके पिछले भागका स्नायु-शूल ; बढ़ना—ठण्डे प्रयोगसे और ठण्डी जलीय वायु लगनेपर (गर्म प्रयोगसे या छूनेपर घटना—कोलोसिन्थ, पैलेड, मैग-फास)। बीमारीके प्रकोपके समय रोगीको बाध्य होकर टहलना पड़ता है और बैठने या सोनेपर तकलीफ बढ़ जाती है। पैर आदिकी कण्डराएँ सब संकुचित और क्षीण मालूम होती है, सीढ़ी चढ़ने या उतरनेके समय पैर भर जाते हैं। मोच खा जाने या सन्धि-खिसक जानेपर गुल्फ-सन्धिमें दर्द हुआ करता है। दोनों पैरोंकी हड्डीमें दर्दकी वजहसे रोगी जोरसे पैर नहीं रख सकता। दाहिना कलाई और दोनों चरणोंके वात-रोगमें एँड़ी ऊपरको ओर भीतर-ही-भीतर फूली मालूम होती है और रोगवाली जगहपर खट्टा पसीना निकला करता है। दोनों पैरोंमें नासूर (कैल्के-फ्लू, साइलि, कैल्के-सल्फ)। चोट या गिर जानेकी वजहसे अस्थि और अस्थिवेष्टमें दर्द, अस्थि-विवर्द्धन, अस्थिवेष्ट-प्रदाह, अस्थिगत दर्द और जलन और इस तरहका दर्द मानो चबाया जा रहा है ; स्थिर रहनेपर और जलीय वायु लगनेपर दर्द बढ़ जाता है (रोडो, रस), दोनो पैरोंमें अस्थिगत दर्द, रोगवाली करवट सोनेपर बढ़ना।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—मर्क, कैम्फो।

अनुकूल सम्बन्ध।—कैल्के, कास्टि, लाइ, मर्क, ऐ-फास, पल्स, रस, सिपिया, साइलि, सलफर। सन्धियोंमें चोट लगनेपर "कैल्केरिया-फास" इसका अनुपूरक है। सन्धिगत चोटमें "आर्निकाके बाद और अस्थिमें चोट लगनेपर "सिम्फाइटम" के बाद रियुटाका प्रयोग करना चाहिये।

तुलनीय।—हड्डीकी बीमारीमें—ऐङ्गस्टुरा। अस्थिरतामें—रस। आँख अधिक हिलाने या आँखसे ज्यादा काम लेनेपर—नेट्रम, सिङ्कोना। काँच निकलना—चायना, ऐसिड-नाइट, पोडो। सारे शरीरमें अकड़न—आर्निका, बेप्टी। कब्जियत—आर्निका। हाथके पिछले भागमें मसे—नेट्रम-कार्ब।

सदृश ।—(अस्थि-रोगमें)—ऐसिड-फास, ऐसिड-सल्फ, कैल्के-फास, कैल्के-कार्ब, पल्स, सल्फ, काम्बियोलिनम, रस (आँखसे बहुत काम लेनेके कारण चक्षु-रोग), नेट्र-म्यूर, ओनस्मोड, फास, सेनेगा, सारलिसिया, लिथिया-कार्ब, पेरिस (जो अंश दबाकर सोता है, उसीमें दर्द मालूम होना); आर्निका, वेप्टी, पाइरोज, रस ; अधिककर—आर्जेण्ट-नाई, ब्राई, कोना, इयुफ्रे, लाई, मर्क, मेजेर, फाइटो, सिपिया ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे २०० शततमिक क्रमतक ।

क्रियाका स्थायित्व ।—३० दिन ।

सैबाडिला

(SABADILLA)

दूसरा नाम ।—विरेट्रम सैबाडिला ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बीजका अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—सर्दी ; कमजोरी ; उपझिल्ली-प्रदाह ; गर्भावस्थामें अजीर्ण रोग ; कर्ण-शूल ; नाकसे रक्त-स्राव ; सर-दर्द ; सविराम ज्वर ; मानसिक व्याधि ; विषाद ; स्नायु-शूल ; अन्ननलीका सङ्कोचन ; आमवात ; गलेका जखम ; दाँतका दर्द ; सरमें चक्कर ; क्रमि ।

उपयोगिता और आभास ।—इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं :—(१) भ्रान्त विश्वास, विशेषकर अपने स्वास्थ्यके सम्बन्धमें ; रोगी समझता है कि उसे रोग हो गया है ; आध्मानके कारण पेट फूल जाता है, पर रोगिनी समझती है कि उसे गर्भ रह गया है ; उसे विश्वास रहता है, कि उसे कोई कठिन कण्ठ रोग हुआ है, इसी रोगमें उसकी मृत्यु होगी । (२) सविराम ज्वरमें प्रलाप । (३) सर-दर्द,—बहुत चिन्ताकी वजहसे ; किसी काममें बहुत ध्यान लगानेके कारण ; क्रमिकी वजहसे । (४) लगातार आक्षेपिक या शरीरको हिला देनेवाली छींक ; छींकनेपर दोनों आँखोंमें पानी भर आता है ; नाकसे बहुत ज्यादा श्लेष्माकी तरह पानी गिरता है । चेहरा

गर्म और पलकें लाल हो जाती हैं और उसमें जलन हुआ करती है। (५) जिह्वामूलके दोनों पार्श्वके दोनों गह्वर और कण्ठमें बहुत सूखापन मालूम होना। (६) कण्ठमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक पपड़ी या छाल झूल रही है और रोगीको ऐसा मालूम होता है कि वह जो कुछ निगलता है, वह मानो उसी शल्क या छालपरसे जा रहा है। (७) उपझिल्ली-प्रदाह या गल-ग्रन्थि-प्रदाह, ठण्डा पानी आदि पीनेमें बहुत तकलीफ़ होती है; पर गर्म चीज़ बहुत सहजमें निगल सकता है; गलेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द; लक्षण आदि कण्ठके भीतरसे बाईं ओरसे दाहिने पार्श्वपर चले जाते हैं। (८) बच्चोंको कृमिकी वजहसे बीमारी। (९) पेशी और अङ्गोंका स्पन्दन, निस्पन्द वायु प्रभृति स्नायविक रोग आदि; कृमिकी वजहसे। (१०) शरीरकी त्वचा पार्चमेण्ट कागजकी तरह सूखी और कोमलता-रहित। गोरे केश और गोरी-कान्तिवाले मनुष्य, जिनके पेशिक विधान बहुत क्षीण और शिथिल हो पड़े हैं, उनपर ही इसका प्रयोग होता है। इन रोगियोंको ठण्डी हवा या शीत बिलकुल ही सहन नहीं होता है। सर्दी लगते ही वह नाक और गलेमें घर बना लेती है। गर्म पीनेकी चीजें रोगीको बहुत प्रिय मालूम होती हैं। माथेकी केशसे ढँकी त्वचाके ऊपर दुर्दमनीय खुजली इसका एक सिद्धप्रद लक्षण है। रोगी सर खुजलाता-खुजलाता खून निकाल डालता है; ऐसा मालूम होता है, मानो केशकी जड़में असंख्य कीड़े हैं और इसी वजहसे लगातार खुजलाया करता है (पहले यह कीट-नाशक रूपमें व्यवहृत होता था), "सवेरे उठनेपर सरमें चक्कर आना" यह भी सैबाडिलाका निर्णायक लक्षण है। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसके चारों ओरकी सभी चीजें घूम रही हैं या हरेक चीज दूसरी चीजके चारों ओर घूम रही है।

लक्षणावली

मन।—डरपोक स्वभाव; सहजमें ही डर जाता है। मानसिक बेचैनी और चञ्चलता। यदि कोई कुछ बोलता है, तो रोगी चौंक उठता है। भ्रान्त विश्वास, रोगीको ऐसा मालूम होता है कि उसके प्रत्यङ्ग आदि दुर्बल, अस्थिसार हो गये हैं; अपनी आँखसे देखनेपर भी विश्वास नहीं होता। रोगीको ऐसा विश्वास रहता है कि उसे कोई सांघातिक कण्ठ-रोग हो गया है और इसीसे मृत्यु होगी (मानो उसके दाहिने अङ्गसे बायाँ अङ्ग छोटा हो गया है—सिनेमोम;

मानो उसकी देह खर्व है—लैक-कैन; मानो उसकी देह काँचकी बनी और टूट जानेवाली है—थूजा; मानो बहुत क्षुद्र देह है—ग्रैटि; समूची देह छोटी हो गयी है—ऐगार; मानो उसमें सभी रोग हैं—अरम-मूर; मानो उसकी बीमारी अब अच्छी न होगी—ऐ-नाई, आर्जेण्ट-नाई, आर्स, लैक-कैन, लिलियम-टाई, मिडोरिन, सोरिन, सैबाड, सिफिलिन)। सोचनेपर सरमें दर्द पैदा हो जाता है और नींद आने लगती है (सर-दर्द पैदा हो जाता है—आर्जेण्ट-नाई, कैल्के, कैल्के-फास, काफिया, लिसिन, पेरिस, सिनेपिस-नाई, स्पाइजिलिया; नींद आती है—ऐसिड-फास, नक्स-मस); कोई बात पूछनेपर जवाब नहीं देता, बेहोशकी तरह पड़ा रहता है और एकाएक खाटसे उछल पड़ता है और पागलकी तरह घरमें दौड़ने लगता है। सविराम ज्वरमें प्रलाप पैदा हो जाता है (आर्स, पोडो)। उन्माद—रोगी उन्मत्त हो उठता है और तभी शान्त होता है, जब माथा ठण्डे पानीसे धोया जाता है। उदरके गभीरतम प्रदेशमें उत्तेजनासे पदा हुआ विषाद। रोगिनीके डरनेपर उसे मूर्च्छा-वायुका प्रकोप पैदा हो जाता है। रोगिनीका यदि पेट फूलता है, तो समझती है कि गर्भ रह गया है (ऋतुके पहले ऐसा मनमें आनेपर—इग्ने; मानो उसको शीघ्र ही एक नीली आँखवाली सन्तान होगी—वेरेट)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना; दृष्टिके सामने अंधेरा छा जाता है (फेरम, मर्क, ऐनाक, काफिया, लेक्टियुका-वाई, सैंग्वाइना) और रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो मूर्च्छित हो जायगा। मानो सभी चीजें घूम रही हैं (साइक्लेम, नेट्रम-म्यूर, ऐलूम, ब्राई, लाई), विशेषकर आसनसे उठनेके समय। खड़े रहनेकी अवस्थाकी अपेक्षा बैठी अवस्थामें सरमें चक्कर ज्यादा मालूम होना (पल्स, कार्बो-वेज, एसिड-कार्बोल); मिचलीके साथ सरमें चक्कर—किसी चीज़पर माथा रखनेपर घटा मालूम होता है। सवेरे सोकर उठनेके समय (नेट्र-मूर); मूर्च्छा न आये इसलिये रोगी दिनभर टेबिलपर माथा रखकर बैठा रहता है। बहुव्यापक सर्दी रोगमें मस्तिष्ककी जड़ता (कास्टि, फास)। सरमें चक्कर और सर-दर्द (बेल, कैल्के, नक्स-वोम, फास, साइलि); घटना—किसी चीज़की ओर टकटकी लगाकर देखते रहनेपर (टैरेण्टुला) और जब रोगी किसी एक विषयकी चिन्तामें निमग्न रहता है (सर-दर्दके विषयमें सोचनेपर—साइक्यूटा; सर-दर्दके विषयमें मन लगा रखनेपर एकदम घटना—पैलेड; अन्यमनस्क रहनेपर घटना—मर्क-प्रोटो। हेमन्त ऋतुकी सर्दी रोगमें

ऐसा अनुभव होना, मानो माथा कसा जा रहा है, विशेषकर ललाट और कनपटी। कनपटीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (कैमो, ग्लोन, गुयायेक, पल्स)। चलनेपर सर-दर्द पैदा हो जाना ; घरमें प्रवेश करनेपर माथेके दाहिने पार्श्वसे दोनों कनपटीमें मानो मरोड़ खा रहा है या स्क्रू घुस रहा है, इस तरहकी तकलीफ़। सोनेपर यह दर्द समूचे माथेमें अनुभव होता है ; रोज़ इसी ढङ्गका दर्द पैदा हो जाता है। पट्ट क्रिमिकी वजहसे अधकपारी या शिरार्द्ध-शूल। सर-दर्द--बहुत अधिक चिन्ता (काफिया, आर्जेण्ट) या किसी विषयकी जी लगाकर आलोचना करनेपर (इग्ने)। मानसिक परिश्रम करनेपर सर-दर्द बढ़ जाता है और नींद आने लगती है। नयी सर्दी रोगमें बुद्धि विलोप कर देनेवाला सर-दर्द ; माथेकी त्वचामें खुजली और जलन हुआ करती है और सारे शरीरमें उत्ताप पैदा हो जाता है ; दोपहरके पहले बढ़ना। नाक रुकनेके साथ सर-दर्द—ग्रैफ, चायना, नक्स ; विलुप्त श्लेष्मा-स्राव और उन्मत्त करनेवाला सर-दर्द—बेल ; बच्चोंका—सैङ्ग्वि ; नाक और आँखसे पानीकी तरह श्लेष्मा-स्राव—सिपि, इयुफ्रे ; नाकसे सर्दी निकलनेके पहले—स्टिक्टा)। माथेकी केशोंसे ढँकी त्वचा और ललाटमें हमेशा जलन और कुटकुटी तथा सुरसुरी हुआ करती है ; खुजलानेपर घटना—रोगी खुजला-खुजलाकर खून निकाल देता है ; ऐसी सुरसुरी मालूम होती है, मानो अनगिनती जूँ रेंग रही है। चलनेके समय माथेमें पसीना होनेपर बढ़ना।

आँख।—बहुत ज्यादा आँसूका स्राव ; वायु सेवनके लिये चलनेके समय (इयुफ्रे, नेट्र-म्यूर, साइलिसिया), रोशनीकी ओर देखनेपर (क्रियो, मैग-म्यूर), हँसनेपर (कैल्के-फास), खाँसनेपर (नेट्र-म्यूर, ऐगार, इयुपेट-पर्फोल, फाइटो, स्क्युला) या जम्हाई आनेपर (कैलि-कार्ब, कैल्के-फास, स्टैफाई, इग्ने) चक्षुगोलकपर दबाव मालूम होना, विशेषकर ऊपरकी ओर देखनेपर (किसी ओर एकाग्र दृष्टिसे देखनेपर—नेट्र-म्यूर)। सर्दी ज्वर रोगमें पलकोंके किनारे सब लाल (आर्स, आर्जेण्ट-नाई, कोना, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, लिलि-टाई)। दोनों आँखें पीले घेरेसे घिरे (सिना, चायना, फेरम, जेल्स, इग्ने, लाई, कैल्के)।

कान।—श्रवण-शक्तिका घट जाना। बाएँ कानमें सुई गड़नेकी तरह भयानक दर्द (ऐगार, कार्बोन-सल्फ, फार्मिका)। कानमें खुजली और चिलक

मारनेकी तरह दर्द। कृमिकी वजहसे कर्ण-शूल। ऐसा बहरापन मानो रंध्रका मुँह एक पर्देसे रुका है।

नाक।—हेमन्त ऋतुकी सर्दीमें या बहुव्यापक सर्दी ज्वरमें प्रबल आक्षेपिक छींक और नाकसे लगातार पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव हुआ करता है। कभी बायाँ और कभी दाहिना छेद रुक जाया करता है और बड़े कष्टसे श्वास-प्रश्वास कार्य करना पड़ता है; श्वास-प्रश्वासके समय नाकमें सों-सों शब्द होता है। दोनों रंध्रमें बहुत खुजली, दोनों नासापुटोंपर बहुत ही आराम देनेवाली खुजली पैदा हो जाया करती है (कास्टि, सिना, स्याङ्गजि, सल्फ, टियुबर्क्युलिनम), पेयाजकी गन्ध असह्य मालूम होती है (तेज़ गन्धसे सरमें चक्कर आना और मूर्च्छा आनेका उपक्रम हो जाता है—नक्स, फास; फूलकी गन्ध सहन नहीं कर सकता—ग्रेफ; तेज़ गन्धसे सर-दर्द—ऐनाक; किसी तरहकी दुर्गन्ध सहन नहीं होती—पेरिस; तम्बाकूकी गन्ध सहन नहीं होती—बेल, इग्ने, नक्स); छुछूंदरकी गन्ध असह्य मालूम होती है (मछलीकी गन्धसे मिचली पैदा हो जाया करती है और मूर्च्छा आ जाना चाहती है—कोलचि)। नाकके भीतरका ऊपरी अंश इतना सूखा मालूम होता है कि उसकी वजहसे रोगीको तकलीफ़ मालूम होती है। सर्दी न रहनेपर भी कभी-कभी छींक आनेपर नाकके भीतरसे सफ़ेद रङ्गका स्वच्छ श्लेष्मा निकलता है। पिछले छेदसे कण्ठमें बूंद-बूंद खून गिरता है और वह खून फिर बलगमके साथ निकलता है। नये सर्दी रोगमें रोगीका चेहरा गर्म (नक्स-वोम) और आँख तथा पलक लाल दिखाई देती है और जलन हुआ करती है (नेट्र-म्यूर)।

मुख-विवर।—पूरी तरहसे मुँह फाड़नेपर दोनों हनु-सन्धियाँ खूब कट-कट किया करती हैं या कड़ाकसे आवाज़ हो उठती है। दन्त क्षय रोग (क्रियो, कैल्के, फास, ऐ-फ्लू, स्टैफाई, सिपिया)। मसूढ़े पोले (क्रियो, प्लम्ब)। मुँहका भीतरी भाग और जीभ ऐसा मालूम होता है, मानो दग्ध हो गयी हैं और उसकी त्वचा क्षय हो गयी है (सैङ्गिविन, लोरोसिर)। मुँहमें कोई गर्म चीज़ नहीं ले सकता। जीभपर मानो असंख्य फोड़े निकलते हैं—ऐसी ही जखम-भरी मालूम होती है (रस, सिस्टस, ऐ-म्यूर, ऐ-आक्जैल, सिपि, साइलि, सिनैप, टेरिब, चिमैफिल-आम्बेल)। जीभका अगला भाग ऐसा अनुभूत होता है, मानो त्वचा क्षय हो गयी है और कुटकुटाहट हुआ करती है

(इस्क्यू-हिप, थूजा)। जीभका अगला भाग नीला (ऐण्टि-टार्ट, डिजिट, कार्बो-वेज, प्लैट)। परिपाक शक्तिका विकार बतानेवाली जीभ, विशेषकर जीभके बीचका अंश और पिछला भाग पीली आभा लिये और गाढ़े मैलसे ढका रहता है (नैजा)। मुख-विवर बहुत सूखा, पर प्यासका न रहना (सिपा, लैक-कैन, पल्स, स्ट्रैमोन, डालका, इयुफ्रे, गुयारिया, सेब्बियु)। मुँहमें कुछ मीठा स्वाद और बहुत ज्यादा मांड़की तरह लार सञ्चय होती है।

गला।—जीह्वामूलके बगलवाले दोनों गह्वर और कण्ठ बहुत सूखा मालूम होता है (ऐना-गैल, आर्स, सिपा, जेल्स, हायी, मेजेर, फाइटो, स्टिक्टा)। कण्ठमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक सूतेका टुकड़ा या डोरी झूल रही है (वेलिरियाना) या गलनली ऐसी संकुचित मालूम होती है, मानो एक सूतेसे बँधी है या ऐसा मालूम होता है, कि कोई पेशी सङ्कोचक दवा सेवन की गयी है। बहुव्यापक सर्दी रोगमें। घूंट लेनेपर ऐसा मालूम होता है मानो कण्ठमें एक खोल या ठेपी अड़ी हुई है (सिपिया) या मानो कण्ठके भीतरका कोई अंश फूल गया है (नक्स-वोम)। इसी तरहका व्याघात मालूम होता है। गलेमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक छाल या पपड़ी झूल रही है (पैलेड) और जो कुछ निगला जाता है, वह उसी छालके ऊपरसे जाता है, मानो उपजिह्वा लटक गयी है। गलेके जख्मकी बीमारीमें रोगी जीभ बाहर नहीं निकाल सकता ; गलक्षत रोगमें मुँहमें कोई ठण्डी चीज़ लेनेपर बहुत तकलीफ़ मालूम होती है। जीभसे लेकर गलेतक दर्द। कोई चीज़ निगलना बहुत ही कष्टकर। गलनलीका उपझिल्ली-प्रदाह या गलग्रन्थि-प्रदाह रोगमें रोगी गर्म चीज़ बड़े सहजमें निगल सकता है ; कण्ठमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है ; इसके सभी "कण्ठ-लक्षण बाएँ पार्श्वमें पैदा होते हैं (लैक-कैन, लैकेसिस, परन्तु लैकेसिसमें गर्म चीज छू जानेपर तकलीफ़ बढ़ जाती है ; "लैक-कैनाइनम" में भी ठण्डा पानी छू जानेपर कण्ठके लक्षण थोड़ी देरके लिये घट जाते हैं), कण्ठमें बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा गोंदकी तरह बलगम इकट्ठा होता है और रोगी उसे बार-बार निकालनेकी चेष्टा करता हैं (कास्टि, आर्जेण्ट-नाई, सिपा, केलि-बाई, फाइटो, लिसिन, नैट्र-कार्ब, आइरिस)। गलेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द—केवल निगलनेके समय (ब्राई, सलफर, ऐ-नाई, साइलि); दोनों गलग्रन्थियाँ फूली और प्रदाह-भरी हो जाती हैं और उनमें पीव पैदा होनेका उपक्रम हो जाता है ; पहले बाईं, फिर दाहिनी ग्रन्थि आक्रान्त होती है (लैके,

लैक-कैन, प्लम्ब)। नयी सर्दीके बाद गल-ग्रन्थिका प्रदाह ; रोगवाली ग्रन्थिमें पीब पैदा हो जाता है (जल्दी-जल्दी पकानेके लिये "हिपर" "सेङ्गिविन" का प्रयोग करना चाहिये) ; दाहिनी ग्रन्थि फूली और कड़ी रह जाती हैं। बार-बार घूंट लेनेकी इच्छा, परन्तु उससे कण्ठमें इतनी अधिक छेदनेकी तरह तकलीफ़ अनुभव होती हैं, कि रोगीका शरीर चक्कर खाया करता है ; यन्त्रणाकी वजहसे रोगी लार निगल नहीं सकता ; बार-बार थूकता है।

पाकस्थली।—रोगी सभी तरहके खाद्य विशेषकर खट्टी चीज़पर अनिच्छा प्रकट करता है। गर्भवती स्त्रियाँ सभी द्रव्योंपर अरुचि प्रकट करती है, परन्तु एक ग्रास खा लेनेपर फिर अरुचि नहीं रह जाती, खूब पेटभर खाती हैं। राक्षसकी तरह भूख, मीठा और श्वेतसारमय पदार्थपर विशेष आग्रह दिखाता है, पर कुछ देर बाद मद्य, मांस और खट्टी चीज़पर अरुचि प्रकट करता है। गलक्षत रोगमें रोगी गर्म पानीय पदार्थोंके प्रति बहुत अनुराग दिखाता है और उसे बहुत प्यास लगा करती है, खासकर तीसरे पहरके समय। मुँहमें बहुत पानी भर आया करता है। पाकाशयसे गलेमें गरमी चढ़ती है ; रोगीकी देह जितनी गर्म रहती है, उसके मुँहमें सञ्चित लार उतनी गर्म नहीं रहती। जाड़ा पैदा होनेके समय मिचली मालूम होती है, गलेमें खायी चीजें चढ़ आती हैं और सविराम ज्वरमें बार-बार ओकाई आया करती है ; डकारके साथ कड़वा स्वादका श्लेष्मा आता है और इसी कारणसे बहुत देरतक मुँहका स्वाद कड़वा रह जाता है। पित्त-वमन, क्रुप खाँसी रोगमें खाँसते-खाँसते पित्त वमन हो जाता है (इपिक, मिफाइटिस, ड्रोसेरा)। वमनके समय केचुआ भी निकलता है (सिपा, सेङ्गिविन, सिकेलि) ; गलेमें ऐसा अनुभव होता है, कि कुछ अड़ा है ; जभी-तभी मिचली होती है और ओकाई आया करती है। पाकस्थलीमें सर्दी मालूम होना (कैम्फो, कैप्सि, चायना, नेट्र-म्यूर, टैबाक)। पाकस्थली खाली मालूम होती है (ऐण्टि-क्रूड, सिपा, डिजिट, पोडो, इग्ने, मर्क, फास, सिपिया, सल्फ, टैबाक, जिंकम)। श्वासाल्पता और सूखी खाँसीके साथ पाकस्थलीकी पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना (काक्यु, कोना, कूप्रम, वेरेट-विर)। प्यास न रहना और केवल संध्याके समय ठण्डे पानीकी प्यास। पाकस्थली फूल उठती है और उसमें बहुत बेचैन कर देनेवाला दबाव मालूम होता है। पाकाशयके बाएँ पार्श्वमें पीठकी ओर धक-धक किया करता है। अन्ननली और पाकाशयमें जलन

मालूम होती है, ओकाई आती है, उदरमें छेदनेकी तरह दर्द होता है और पतले दस्त आया करते हैं; स्नायविक सुस्ती मालूम होती है और शरीरकी जगह-जगहकी पेशियाँ फड़का करती हैं। चलनेके समय पाकस्थलीमें ऐसा दर्द होता है, मानो त्वचा क्षय हो गयी है और जलन मालूम हुआ करती है। मिचलीके साथ ओकाई और शरीरमें सिहरावन मालूम होना। भोजनके बाद घटना (ब्रोमिया, कैलि-बाई, लोबेल, सेङ्गिविन, स्पाइजि, सिनेपिस; भोजनके बाद घटता है, पर तुरन्त फिर पैदा हो जाता है—बाइवर्नम-ओप्यु)। भ्रम कल्पना—रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसके पाकाशयका सब भीतरी अंश क्षय हो गया है।

अन्त्राशय।—कोखमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (चेलिडो, ग्रैफ, लाई, सिनिशियो)। यकृत-प्रदेशमें मानो खोंचा मारता है या जकड़ जाता है, ऐसा अनुभव होना (ऐनान्थि, कार्डुयस-मेरी) और दबानेपर त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होता है। अन्त्रशूलकी तरह यंत्रणा, मानो कृमिकी वजहसे है या कृमिके कारण उत्पन्न हो गयी है (सिना, साइक्यूटा, फिलिक्स, मर्क, वैलिरियाना)। उदरमें ऐसा मालूम होता है मानो एक गोला लुढ़क रहा है और चक्कर मार रहा है। उदरका बायां पार्श्व इस तरह जकड़ जाता है और वहाँ जलन होती है, कि रोगी तकलीफ़ घटनेकी आशामें बाईं ओर टेढ़ा हो जाता है (बार्बेरिस), उदरमें मानो एक खूनका गोला बड़े वेगसे घूम फिर रहा है—ऐसा अनुभव होना (लैकेसिस; उदरमें मानो एक जीव हिलता है—ऐरण्डो, कैल्के-फास, क्रोकस, सैबाइना, थूजा)—रोगी तकलीफ़से चिल्ला उठता है। जोरसे पाखाना लगता है और आँतोंमें गड़गड़ाहट होती है—कृमि रहनेकी वजहसे। उदरमें मानो छुरीसे काटा जा रहा है, पेट इस तरह गड़गड़ाता है मानो खाली है। पेटमें कों-कों शब्द होता है, मानो उदरमें मेंढ़क बोल रहा है (कोलोसिन्थ, ग्रैफा, लाई, थूजा)। नाभि-प्रदेशमें जलन होती है, मानो ठेलता है और घिरनीकी तरह चक्कर खाता है। ऐसा अनुभव मानो उदर भीतरकी ओर धसा या घुसा जाता है (ऐसिड-ऐसेट, मानो मेरुदण्डकी ओर खिंचता है—प्लैन, टैबाक, पोडो, ओपि; सांस लेनेके समय धस जाता है और साँस छोड़नेके समय फूल उठता है—आर्जेण्ट-नाई)।

मलान्त्र और मल।—उदरमें ऐसी आवाज़ होती है, मानो मेढ़क बोल रहा है, इसके साथ ही जोरका पाखाना लग आता है; पाखाने जाकर

बहुत देरतक बैठे रहनेके बाद बहुत ज्यादा परिमाणमें वायु निकला करता है और इसके बाद ही बहुत-सा पाखाना होता है, फिर उदरमें जलन हुआ करती है और खून-मिला मल निकलता है। उदरामय—मल भूरा और सड़नेकी क्रियासे उत्पन्न, पानीमें तैरा करता है या मल पानीकी तरह और खून तथा गोंदकी तरह पदार्थ मिला। पाखाना होनेपर मलान्त्रमें जलन मालूम होती है (ऐ-नाई, आर्स, हाइड्रैस्ट, इग्ने, रैटान)। ऐसा अनुभव होता है मानो मलद्वारमें कीड़े रेंग रहे हैं, कृमि लक्षण (सिना, साइलिसिया, स्पाइजिलिया, स्टैनम)। मलके साथ चिपटी और सूतकी तरह कृमि और छोटी कृमि निकलती है (ऐस्क्लिपियस-टियु, ऐसेरम, आर्टिमि-वाल, कैल्के, सिपा, चेलिडो, चिनापोड, साइकूटा, सिना, चायना, डलिकस, इयुफोर्बिया-कोरो, फिलिक्स-मास; मर्क, साइलि, स्पाइजि, स्टैनम, सल्फ़, टेरिब, वैलिरी)। बड़े कष्टसे मल निकलता है। उदरमें बहुत जलन मालूम होती है और ऐसा मालूम होता है, मानो उदरमें कोई सजीव पदार्थ है (एरण्डो, कैल्के-फास, कानवैलेरिया, क्रोकस, कुरारि, साइक्लेमेन; माथेमें मानो कोई सजीव पदार्थ हिलता है (पेट्रोल, साइलि, मानो पाकाशयमें कुछ हिलता है—थियोनैस्थस)।

पेशाब और जननेन्द्रिय।—भ्रान्त विश्वास; रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि उसका मुष्क बहुत फूल गया है। पेशाबका प्रबल वेग, विशेषकर सन्ध्याके समय (बेल, लाई, पल्स, सल्फ़), पेशाब गदला, कीचके पानीकी तरह (कैलो-कार्ब नेट्र-म्यूर, रस), पेशाबके समय मूत्रमार्गमें जलन होती है (नेट्र-कार्ब, टेरिब, क्लिमेट, क्युसेट, जेल्स, स्टैफाई, थूजा; मानो आग छू गयी है, इसी ढंगकी जलन मालूम होती हैं और लिङ्गोद्रेक हुआ करता है—काइङ्का)। अनजानमें रेतस्खलन या स्वप्न-दोष, शिश्न शिथिल और निचला पैर बहुत क्षीण मालूम होता है (डायस्को; कमर बहुत क्षीण मालूम होती है और दोनों पैर काँपा करते हैं—नेट्र-फास) शिश्न-शिथिल और कामोद्दीपक सपने तथा वीर्य-स्खलन; वीर्य-स्खलनके बाद लिङ्गोच्छ्वासके समय बहुत यंत्रणा और असम्भव आलस्य मालूम होता है। बालिका या रमणियोंकी कृमिकी खुजलीके कारण कामोन्माद (कैलेडि)। डिम्बाधार-प्रदाह। डिम्बाधारमें ऐसा दर्द मानो छुरी मारी जा रही है (एपिस, कोलोसिन्थ, आर्जेण्ट-नाई, आस्टिलेगो, थूजा)। ऋतु—बहुत देरसे होता है; आर्त्तव-

स्रावके कई दिन पहले जरायु आदिमें बहुत ही दर्द पैदा करनेवाली नीचेकी ओर खींचन मालूम होती है; रह-रहकर आर्त्तव हुआ करता है (पल्स, काक्यु, लैक-कैन, वाईबर्नम)। अनियमित स्राव—कभी प्रबल, कभी क्षीण भावसे हुआ करता है। गर्भावस्थामें मिचली, वमन आदि पाकाशयकी बीमारियाँ (टैबाक, कैड्मियम)।

श्वासयन्त्र।—श्वासनलीको दबानेपर उसके भीतर जखमकी तरह अनुभव होता है (आर्स, लैक-कैन, लैके)। कण्ठनलीका छेद बहुत सङ्कीर्ण अनुभव होता है (लोबेल-इन)। पाकाशय-शूल रोगमें श्वासकी कमी और सूखी खाँसी। ज्वरमें रोगी उद्विग्न हो पड़ता है और उसकी छातीमें दबाव मालूम होता है। नाकके पिछले छेदसे कण्ठमें खून गिरता है और खाँसनेपर वह बलगमके साथ निकलता है। खाँसी गलेमें रुखड़ापनकी वजहसे, विशेषकर बच्चोंको खाँसनेपर आँखमें पानी भर आता है (नेट्र-म्यूर, स्क्विला); कम्पके समय और विज्वर अवस्थामें सूखी खाँसी आया करती है (कम्पके समय—ब्राई, रस, सोरिन, सैम्बियु, साइमेक्स); विज्वरावस्थामें—सिना, ड्रोसेरा, इयुपेट-पर्फोलि)। सूखी खाँसी रोगमें पसीना निकलना और आँखसे आँसुओंका स्राव। खाँसते-खाँसते वमन हो जाता है। ब्रह्मतालुमें वेधनेकी तरह सङ्घात मालूम होता है और पेटमें दर्द हुआ करता है; सोते ही खाँसी पैदा हो जाया करती है (हायो, कास्टि, कोना, क्रोटोन, ड्रोसेरा, पलस; बाईं करवट सोनेपर—लाई, पैरिस, फास, हायो), भयङ्कर खाँसी और खून-मिला बलगम; सर्दी लगनेपर खाँसीका बढ़ना (डालका, नक्स-मस) या शरीर ठण्डा होनेपर (कास्टि, हिपर, कैलि कार्ब, रस-टक्स, साइलि, स्पञ्जिया), सोते ही; रोज़ एक ही समय या अमावस्या और पूर्णिमाके समय खाँसीका प्रचण्ड प्रकोप हो जाता है (पूर्णिमाके दिन वृद्धि—साइलिसिया)। बलगम गाढ़ा गोंदकी तरह और पीले रङ्गके श्लेष्मासे भरा और एक तरहकी घृणा पैदा करनेवाली मिठास लिये या चमकीले लाल रङ्गके खूनसे भरा (ऐकोन, फेरम-फास, नक्स-वोम), विशेषकर सोनेपर, बहुव्यापक सर्दी ज्वर रोगमें।

वक्ष।—विज्वरावस्थामें वक्षमें दर्द, विशेषकर साँस लेनेके समय (ऐकोन, बोरक्स, ब्राई, कैलि-कार्ब, लाई, फास, रैनान-बल्बो) और खाँसनेपर (बेल, बोरैक्स, ब्राई, ड्रोसेरा, आयोड, मर्क, स्क्विला; श्वास लेनेके समय और

खाँसनेपर—बोरैक्स, ब्राई, स्क्वियुला, कैलि-कार्ब ; इसलिये रोगी सो या करवट लेकर सो नहीं सकता)। फुस्फुसावरणी-प्रदाह। प्रत्यङ्ग आदिका हिला न सकना और सुस्ती मालूम होती है (इसके फुसफुसावरण-प्रदाहमें प्रदाहसे पैदा हुआ ज्वर या प्यास नहीं रहती ; रोगीको केवल सर्दी मालूम हुआ करती है और कभी-कभी शरीरपर जगह-जगह गर्म उत्ताप पैदा हो जाता है)। दाहिने कंधेसे वक्षके भीतरी भागतक फैल जानेवाला दर्द, मानो यह अंश एक बन्धनसे कसकर बँधा हुआ है और इसी वजहसे रक्त सञ्चालन क्रिया रुक गयी है ; पोशाक ढीली या उतार देनेपर भी आराम नहीं मिलता ; घरके बाहरकी हवा लगनेपर और भी बढ़ जाता है।

प्रत्यंग आदि।—मेरु-मज्जापर रोगका आक्रमण होता है ; अनजानमें रेतस्खलन होनेपर दोनों पैरोंमें बहुत कमजोरी अनुभव होती है। मेरुदण्ड और नितम्ब प्रदेशमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो चोट लग गई है। कक्ष (बगल) में पसीना होना (सीड्रन, सिपा, कैलि-कार्ब, नेट्रम-म्यूर. पेट्रोल), बाँह और हाथका स्पन्दन और दोनों पैरोंमें अकड़न हुआ करती है। दोनों बाहुओंकी पेशीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (कैल्य, कूप्रम, रैनान-बल्बो)। कृमिकी वजहसे स्नायविक लक्षण, जैसे—पेशियोंका फड़कना, आक्षेप और काँपना ; निस्पन्द वायु रोग इत्यादि (सिना, सोरिन)। बाँह और हाथके ऊपर लाल बिन्दु और रेखा पैदा हो जाती हैं। लिखनेके समय हाथका फड़कना, विशेषकर वृद्धोंका (ऐसिड-कार्बोलिक, सिङ्कोना, नेट्र-सल्फ, जिङ्कम ; सवेरे लिखनेके समय—कैलि-कार्ब ; किसीके सामने यदि लिखना पड़ता है, या यदि ऐसा मालूम होता है कि कोई देख रहा है—इग्ने ; तेज़ीसे लिखनेपर घटता है—फेरम)। हाथका नख मोटा (ग्रैफ) और फटा। (ऐण्टि-क्रूड, नेट्र-म्यूर, साइलिसिया)। सभी अङ्गोंमें भार और थकावट मालूम होती है—सन्ध्याके समय यह भाव इतना बढ़ जाता है, कि रोगीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है। निचला पैर फूल उठता है और तलवेमें इतना दर्द होता है कि चलनेके समय तेज़ कङ्कड़ गड़नेकी तरह अनुभव होता है। तलवेमें बहुत ज्यादा पसीना होना।

सार्वाङ्गिक।—सविराम ज्वर रोगमें बहुत कमजोरी अनुभव होती है। फुसफुसावरण-प्रदाहमें रोगी इतनी कमजोरी अनुभव करता है, कि हाथ-

पैर हिला नहीं सकता। रोगिनी यदि डर जाती है तो मूर्च्छा-वायु या हिस्टीरिया पैदा हो जाता है। कृमिसे पैदा हुई नाना प्रकारकी बीमारियाँ, जैसे—पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना, आक्षेपिक स्पन्दन, निस्पन्द वायु रोग प्रभृति पैदा हो जाना। प्रकोप आदि ठीक समयपर पैदा होते हैं। कितने ही लक्षण प्रति सप्ताह अथवा दो या चार सप्ताहका अन्तर देकर और अमावस्या तथा पूर्णिमाके समय पैदा होते और बढ़ जाया करते हैं। कृमि-ग्रस्त बच्चोंकी बीमारियाँ। शरीरमें जगह-जगह टपक अनुभव होती है; पूर्वाह्नमें नींद आती है; विश्रामके समय पूर्वाह्न या आधी रातके पहले तकलीफ़ बढ़ जाती है। देह या रोगी अङ्ग हिलनेपर, गर्म प्रयोगसे या शरीर गर्म होनेपर या सेंकनेपर और कोई चीज़ निगलनेके समय उपशम मालूम होता है। अस्थिगत वेदना, मानो हड्डीके भीतरी भागमें विशेषकर सन्धिमें कोई अस्त्रसे छेद रहा है या चबा रहा है (अस्थिके ऊपर ऐसा ही अनुभव होनेपर—ए-फास, रस-टक्स)—ऐसी यन्त्रणा; वृद्धि—छूनेपर; उपशम—रोगवाला अङ्ग हिलानेपर। रोगी खड़े होनेवाली अवस्थामें या चलनेके समयकी अपेक्षा सोये रहनेपर अच्छा रहता है; निर्मल वायु लगनेपर आराम मालूम होता है। ठण्डी हवा बिलकुल ही सहन नहीं होती, इससे बेचैनी और तकलीफ़ बढ़ जाती है। कितने ही लक्षण दाहिने पार्श्वसे बायें पार्श्वपर चले जाते हैं (लाई, पोडो); सर्दी, पैरसे माथेकी ओर चली जाती है।

त्वचा।—शरीरकी त्वचा पार्चमेण्ट कागजकी तरह सूखी (बहुव्यापक सर्दीमें बोखार होनेपर—आर्स, कैम्फो, क्रोटेलस; क्षय कास रोगमें—मर्क-कोर; हृदावरण प्रदाहमें—कोलचि; अन्त्रावरण प्रदाहमें—क्रोटेलस)। शरीरमें जगह-जगह लाल बिन्दु और रेखाएँ सब पैदा हो जाती हैं।

शीत, उत्ताप और पसीना।—शीतावस्थामें प्यास नहीं रहती। तीसरे पहर या सन्ध्याके समय और रोज़ एक ही समय जाड़ा मालूम होता है, कितने ही बार शीतके बाद ज्वर नहीं रहता। उत्तापकी अपेक्षा शीतकी प्रधानता दिखाई देती है, विशेषकर दोनों पैर और चेहरेमें। सन्ध्याके समयका ज्वर; हाथ-पैर ठण्डे, पर चेहरेपर जलन करनेवाला उत्ताप पैदा हो जाता है। पाँच बजनेके समय तेज़ जाड़ा मालूम होता है, मानो शरीरपर किसीने ठण्डा पानी ढाल दिया (एण्टि-टार्ट, रस्टक्स)। आगके पास या धूपमें बैठनेपर

घटता है (इग्नेशिया)। रह-रहकर ऊपरके ऊपर कम्पका प्रकोप पैदा हो जाता है और वह तुरन्त घट जाता है (नक्स-मस)। शीत निम्नाङ्गसे माथेकी ओर जाता है (ऊपरसे नीचे—वेरेट)। शीतावस्थामें सूखी आक्षेपिक खाँसी हुआ करती है। खाँसनेपर पञ्जरेमें दर्द मालूम होता है। अङ्ग प्रत्यङ्गकी हड्डियोंमें ऐसा दर्द होता है, मानो फट जायगी। जाड़ा घटते ही प्यास आरम्भ हो जाती है। उत्ताप पैदा होनेके कुछ पहले, गर्म पानीय पीनेके लिये आकांक्षा पैदा हो जाती है (कैल्केरिया, सीड्रन)। नये सर्दी रोगमें समूची देह गर्म मालूम होती है। चेहरा और माथेपर ज्यादा गर्मी मालूम होती है। रह-रहकर उत्ताप और सिहरावन पर्यायक्रमसे पैदा होती है। बार बार जम्हाई आती है; रोगी बार-बार हाथ-पैर फैलाता या अङ्गड़ाई लेता है (साइमेक्स, चिनिन-सल्फ, रास, सिना) और प्रलाप बकता है (पोडो)। पसीना—कितनी ही बार उत्तापावस्थामें ही पसीना हुआ करता है; उत्तापावस्थामें रोगी जल्दी-जल्दी साँस लेता है। जरासेमें चौंक उठता है और रोया करता है। पसीना होनेके समय नींद आती है; पसीनेवाली अवस्थाके सिवा और किसी भी अवस्थामें नींद नहीं आती। चेहरेपर गर्म पसीना होता है और शरीरका बाकी अंश ठण्डा रहता है। पैरके तलवेमें भी पसीना होता है। विज्वरावस्थामें खट्टी डकारें आया करती हैं (लाई)।

वृद्धि।—सोनेके बाद बैठनेपर, उठनेके समय, चलने, टहलने, पसीना होनेपर, सवेरे, सन्ध्याके समय, अमावस्या और पूर्णिमामें, शीतल या गर्म पानीय पीनेपर (पर गलच्चत रोगमें गर्म पानीयसे घटता है); सर्दी लगनेपर। देह बहुत गर्म होनेपर, मानसिक परिश्रमसे और सोचनेपर या किसी विषयको बहुत मनोयोगसे गौर करनेपर।

उपशम।—खुजलानेपर, स्थिर होकर सोनेपर, तीसरे पहर, घरके बाहरकी निर्मल हवा लगनेपर, अङ्गीठीके पास या धूपमें बैठनेपर और रोगी अङ्ग तेजीसे हिलाते रहनेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—कोनायम, पल्सेटिला, कैम्फर।

अनुकूल सम्बन्ध।—पल्स, रस, कैल्के, मर्क, नक्स-वोम, फास, सिपिया, साइलि, सल्फ, आर्स, बेल, ब्राई। फुसफुसावरण-प्रदाहमें इसके बाद ब्राई, रैनान-बल्बोके प्रयोगसे विशेष लाभ होता है और ऐकोन और ब्रायोनियासे

कोई लाभ न दिखाई देनेपर सैबाडिलाके प्रयोगसे रोग आराम हो जाया करता है।

सदृश ।—कोलचि, कोलोसिन्थ, लाई, पल्स, वेरेट, वेरेट-विर, एपिस, आर्जेण्ट-नाई, आस्टिलेगो, थ्‌जा, कोकस, एरण्डो, कानवैलेरिया, आर्स; सोइन, बोरैक्स, सिना, स्पाइजि, साइलिसिया, लैकेसिस, लैक-केन, पोडो।

तुलनीय ।—बाहरी हवामें घटना—पल्स। डिम्बाधार-प्रदाह—कोलोसि। तीसरे पहर ज्वर—लाइकोपोड। मानसिक व्याधि—थूजा। मानसिक परिश्रमका दुष्परिणाम—नक्स-वो, पिकरिक-ऐसिड। पिपासाहीनता मिला ज्वर—पल्स। सवेरे भूख—एण्टि-क्रूड, कैल्के, चायना, रस, जिङ्कम। खानेकी चीज़ देखते ही मिचली—कोलचि, लाइकोपो। आवाज़से सहजमें ही चौंक उठना—बोरैक्स। कृमिके कारण स्नायु रोग—सिना, सोराइन। कृमिकी वजहसे शिशु रोग—कोनायम। बाईं ओरसे दाहिनी ओर जाता है—लैकेसिस। शरीरके विषयमें भ्रम—बेप्टो।

शक्ति ।—३री दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

क्रियाकी स्थायित्व ।—एक दिन।

सैबाल सेरुलेटा

(SABAL SERULATA)

दूसरानाम ।—सा पैल्मेटो।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पके फल और बीजसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणकी अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—उपाङ्ग-प्रदाह ; दमा ; गलनली प्रदाह ; दुबलापन ; पीठमें दर्द ; स्तनकी शीर्णता और प्रदाह ; श्वासनली-प्रदाह ; सर्दी ; मूत्राधार-प्रदाह ; बाधक ; मूत्र-कष्ट ; अनजानमें पेशाब हो जाना ; ग्रन्थियोंकी बीमारी ; प्रमेह ; सर-दर्द ; स्वरभङ्ग ; आँखकी पुतलीका प्रदाह ; स्तनका विकार ; सर्दी या स्वरनली प्रदाह ; कमरका दर्द ; विलम्बसे रजः प्रकाश ; स्नायुशूल ; सुन्न हो जाना ; स्थूलता ; डिम्बाधार-

प्रदाह; अन्त्रावर्त्तन प्रदाह; यक्ष्मा; मलान्त्र-प्रदाह; मूत्राधार-मुखशायिका ग्रन्थिका बढ़ना और अन्यान्य बीमारियाँ; सूतिका ज्वर; विद्यालयके विद्यार्थियोंका सर-दर्द बन्ध्यात्व; अण्डकोषका पतला पड़ जाना; गलेका जखम; पेशाबका वेग न रोक सकना; जरायुका अपनी जगहसे हटना; जरायुकी बीमारी; जरायुका अर्बुद; क्रुप खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—रमणियोंके स्तन, जरायु और उससे लगी अन्यान्य यन्त्र और पुरुषोंकी मूत्राशय-मुखशायिका ग्रन्थि—इसकी क्रियाका केन्द्र हैं और माथा, वक्षगह्वर, पाकस्थली, अन्त्राशय, कटि और प्रत्यङ्गादि इसकी क्रियाके परिधि-स्वरूप हैं। रमणियोंके स्तनका क्षय आदि नाना प्रकारके स्तनके रोगमें इसका असाधारण गुण है और उपकार दिखाई देता है। पुरुषका शुक्र-रज्जु-सम्बन्धी प्रदाह, मुखशायिका ग्रन्थिके नाना प्रकारके विकार और नाना प्रकारके मूत्ररोग भी इसके विषयके अन्तर्गत हैं। इसके मानसिक लक्षण बहुत कुछ नेट्रम-म्यूरियेटिकम और पलसेटिलाकी तरह हैं; सभी रोने और सदा विषाद भावसे भरे रहते हैं; प्रभेद यही है कि पलसेटिलाकी रोगिनीको समझाने-बुझानेसे उसे तृप्ति होती है; नेट्रम-म्यूरकी रोगिनीको सान्त्वना देनेपर उसके रोग-लक्षण बढ़ जाते हैं, पर सैबाल सिरुलेटाकी रोगिनीको समझाने बुझानेपर उसके मानसिक लक्षण तो बढ़ते ही हैं, बल्कि वह भयानक क्रोधित भी हो जाती है। रमणाकांक्षा बहुत बढ़ जाती है। कहीं कोई दुर्घटना न हो, इस भयसे सो नहीं सकती, आँघाती-पौंघाती इसी भयसे चौंक उठती है। स्तनमें पीब सञ्चय। मानसिक उत्तेजना या स्नायविक अवसादमें या जरायुके विकारकी प्रतिक्षेप क्रियाकी वजहसे सर-दर्द, बाहरी जननेन्द्रियमें सर्दी मालूम होना; मूत्राधार मुखशायिका ग्रन्थिके रोग; आँखका उपतारा-प्रदाह, पेशाबका वेग धारण करनेकी शक्तिका न रहना, वस्तिगह्वरके कौषिक तन्तुका प्रदाह, अन्त्रावरणी-प्रदाह, सूतिका ज्वर, जरायु प्रदाह, बीजनाली प्रदाह, डिम्बाधार प्रदाह और अन्धान्त्र-पुच्छ प्रदाह और मलान्त्र प्रदाहतकमें इससे बहुत लाभ हुआ करता है। विशेषकर यदि अन्तवाले दोनों रोगोंके साथ, मूत्राधार मुखशायिकाका किसी तरहका विकार मिला रहे। पुराने वायुनली-प्रदाह रोगमें साँय-साँय शब्द करनेवाली प्रबल खाँसीमें, रातमें सोनेके समयसे सवेरे ६ बजेतक और जलीय शीतल वायु लगनेपर या बदलीके दोनोंमें वृद्धि दिखाई देनेपर सैबालसे विशेष लाभ होता है। डिम्बाधार इत्यादिमें डङ्क

मारनेकी तरह दर्द इसका एक प्रकृतिगत क्रिया फल है। इसका दर्द जगह बदला करता है और एक जगहसे कितनी ही जगह हट जाता है तथा ऐंठनकी तरह होता है। विद्यार्थियोंके सर-दर्दमें भी यह लाभदायक हुआ करता है।

लक्षणावली

मन।—रोगीके लिये कुछ सोचना बहुत ही कठिन हो जाता है (फास, स्टैफ); जो पढ़ता है, उसे समझ या याद नहीं कर सकता। उत्तेजित और दुःखित स्वभाव, कोई रोगिनीके साथ यदि सहानुभूति दिखाता है; तो उसके मानसिक लक्षण बढ़ जाते हैं (नेट्र-म्यूर) और क्रोध-पैदा हो जाया करता है (आर्निका)। दूसरोंके अभाव और शिकायतोंके प्रति ध्यान नहीं देता (सलफर)। रोगी अपनी चिन्ताओंमें ही लगा रहता है, दूसरोंके विषयमें सोचनेका उसे अवसर ही मिलता (दूसरोंके स्वास्थ्यके लिये उद्विग्न—कास्टि, काक्युलस), अकेला रहना चाहता है (आर्नि, ऐक्टिया-रेसि, साइक्लेमेन, जेलस, हायो, आक्साइट्रोप, थूजा)। हमेशा अपने रोग-लक्षणोंकी चिन्तामें लगा रहता है (ऐ-फास)। अपने रिश्तेदार तथा बन्धुओंसे दूर रहकर अकेला एकान्तमें मरना चाहता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आनेके साथ सर-दर्द (नक्स, फास, साइलि); प्रचण्ड सर-दर्द,—इसके साथ ही सरमें चक्कर आना और दृष्टिकी अवसन्नता (ऐसिड-फास, साइक्लामेन, पलस, सल्फ ; सर-दर्द पैदा होनेके आरम्भमें अस्पष्ट दृष्टि—आइरिस, केलि-बाई, लैक-डिफ्लो, फास, सोरिन)। बायीं कनपटीमें तेज़ दर्द। ललाटमें हलका सर-दर्द। दोनों कनपटी और ललाटके एक किनारेसे दूसरे किनारेतक वेधनेकी तरह तेज़ दर्द। ललाटमें हलका दर्द, दाहिनी कनपटीमें ज्यादा मालूम होता है। शय्या छोड़नेके थोड़ी ही देर बाद बाईं कनपटीमें तेज़ दर्द मालूम होता है। बाएँ डिम्बाधार और जरायुमें दर्दके साथ बाईं या दाहिनी कनपटीमें तेज़ दर्द ; ललाटके ऊपरसे एक ओरसे दूसरी ओर चला जाता है। मूर्द्धदेश और दाहिनी कनपटीमें धीमा दर्द। यह क्रमसे बढ़कर दिनके २ बजनेके समय असह्य आकार धारण करता है (दिनके २ बजनेके समयसे आरम्भ हो कर रातमें बढ़ जाता है—बेल; ४ बजेतक बढ़ना—लाई ; रोज़ दिनके ११ बजेसे रातके २ बजेतक बढ़ना—नेट्र-म्यू ;

दिनके ३ बजे बढ़ना—बेल, मैगोपाई, गुयायेक, लाइकोपस, नेट्र-आर्स, साइलि, थूजा)। नाकसे दर्द आरम्भ होकर ललाटमें ठहर जाता है (नाकसे ललाटमें बहुत तेज़ दर्द चला जाता है—इलैप्स ; नासामूलसे ललाटमें चला जाता है और ऐसा मालूम होता है, मानो सब फट जायगा—मेजिर ; मस्तकसे ललाट या नाकमें चला जाता है—लैकेसिस, ऐक्टिया-रेसि, ग्लोन, गुयायेक)। मस्तिष्कको जड़में और ग्रीवाके मेरुस्तम्भके ऊपरी अंशमें आरम्भ होता है—जेलस ; मस्तिष्क और मेरुदण्डमें अधिक रक्त-संचय होना—जेलस)। मस्तिष्कमें ऐसा अनुभव होना मानो एक बन्धन धीरे-धीरे कसता जा रहा है।

पाक और अंत्राशय।—पाकस्थली भेदकर तेज़ दर्द ऊपरकी ओर चढ़ जाता है ; पाकस्थलीके बाईं ओर भयानक दर्द मालूम होता है। भूख स्वाभाविक। बार-बार दूध पीनेकी इच्छा (आर्स, ब्राई, मर्क, नेट्र-म्यूर, साइलि, स्टैफाई, स्ट्रान,—मीठा यड़ा दूध पसन्द करता है—इलैप्स,—गलनलीके उपझिल्ली प्रदाह रोगमें दूध पीनेका आग्रह—लैक-कैन, मर्क-सोल) ; पाकस्थलीमें ऐसी भयंकर जलन मानो बहुत ही अम्ल पदार्थ प्रवेश कर गया है ; नये अम्ल-रोगमें रोटी और दूधके सिवा रोगी और कोई पदार्थ सहन नहीं कर सकता (रोबिनिया) ; उदरके बायें पार्श्वसे डंक मारनेकी तरह दर्द ऊपरकी ओर चढ़ता है ; रातमें सोनेके समयतक तकलीफ़ मालूम होती है ; उदरके दाहिने पार्श्वमें भी दर्द ऊपर नीचे किया करता है।

पेशाब।—डिम्बाधारकी बीमारी मिला मूत्रकृच्छ्र (एपिस, कोना, हेलोन)। मूत्राशयकी सर्दी रोगमें मूत्राशयमें प्रबल संकोचनके बाद कई बूंद खून ही पेशाबकी राहसे निकलता है (कैन्थ, किमैफिला)। मूत्राशय हमेशा भरा मालूम होता है, पेशाब आरम्भ करनेमें बहुत कष्ट होता है ; मानो मूत्रमार्ग बहुत संकीर्ण हो रहा है (स्ट्रैमोन ; पेशाब होनेके बाद ही फिर मूत्राशय भरा मालूम होता है—डिजिट), ऐसा मालूम होता है, मानो मूत्रमार्गका यह अंश बहुत संकीर्ण हो गया है, इसी कारणसे पेशाब निकलनेमें बहुत गड़बड़ी होती है (मानो प्रसव-द्वारके एक इंच ऊपर मूत्रनली बन्द हो गयी है—सिफिलिन)। पेशाबके समय ऐसी यंत्रणा होती है मानो मूत्रमार्ग दग्ध हो रहा है। पेशाबके बाद उसमें जलन और उत्तेजना अनुभव हुआ करती है ; पेशाबका छेद कुछ जुड़ जाया करता है और पेशाबकी धार

मानो घूमकर निकलती है (कोका); रातमें यदि रोगीको दो-तीन बार पेशाब करनेके लिये उठाया जाता है तो बेहोश हो जाता है।

पुं-जननेन्द्रिय ।—रमण-शक्तिका बढ़ना; मूत्राधार-सुखशायिका ग्रन्थिमें उत्तेजना अनुभव होना। उस सुखशायिका ग्रन्थिसे रस-स्राव (ऐग्नस, किमैफिला, ऐ-फास, पल्स, सिपिया, साइलिसिया, स्टैफाई)। प्रणयोद्दीपक चिन्ता, दृढ़ लिङ्गोच्छ्वास अथवा शासनाधीन। अण्डकोष बहुत गर्म मालूम होता है (नक्स, स्पञ्जिया), विटपमें अति गभीर प्रदेशमें कुछ खुजली पैदा हो जाती है; दबानेपर घट जाया करती है (न्यू फर-लुट)। दोनों अण्डकोष यन्त्रणाजनक भावसे ऊपरकी ओर खिंचा करते हैं (क्लिमेट, कैन्थ, प्लम्ब)। रमण-क्रियामें बहुत तृप्ति मालूम हुआ करती है। रेतः अत्यन्त गाढ़ा, बहुत धीरे-धीरे निकलता है और रेतोरज्जुमें उत्ताप उत्पन्न करता है। बहिर्जननेन्द्रियमें सर्दी मालूम होती है और बहिर्जननेन्द्रियसे तेज़ दर्द ऊपरकी ओर उदरमें चला जाता है; रोगी विमर्ष, उत्तेजना-प्रवण; यदि कोई उसके साथ सहानुभूति प्रकट करता है, तो उसे क्रोध आ जाता है; कब्जियत—मूत्राधारकी सुखशायिका ग्रन्थिके बढ़नेकी वजहसे कमरमें दर्द; रमणके बाद बहुत बढ़ जाता है (ऐ-नाई, कैलि-कार्ब)। रेतोरज्जुमें खींचनकी तरह दर्द; अण्डकोष सूखकर क्षय हो जाता है (इस दवाके सेवनसे अण्डकोषको पूर्णता प्राप्त होती है)। प्रबल लिङ्गोच्छ्वास और शिश्न मानो जड़से बढ़ गया है, ऐसा दिखाई देता है और कुछ टेढ़ा होकर घूम जाता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बाएँ डिम्बाधारमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द पैदा होकर उदरमें चला जाता है। इसी वजहसे रोगिनीकी नींद खुल जाती है (लिलियम-टाई)। दोपहर १२ बजनेके समय बाएँ डिम्बाधारमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द (लिलि-टाई)। दाहिने डिम्बाधारमें तेज़ दर्द, उरु होकर नीचेकी ओर चला जाता है (एपिस, लैक-कैन)। जरायु और दाहिने डिम्बाधारमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द। नींद खुलनेपर दाहिने डिम्बाधारमें हलका दर्द। जरायुके ऊपरी अंशमें भार और ऐसा अनुभव होना मानो जकड़ गया है। चार दिन देरकर ऋतु होता है (५ दिनकी देरसे सिपिया), बाएँ डिम्बाधारमें जख्मकी तरह स्पर्श-कातरता। सवेरे ५ बजनेके समय दाहिने डिम्बाधारमें डङ्क मारनेकी तरह प्रचण्ड दर्दकी वजहसे नींद खुल जाती है। सोने बाद बायें

डिम्बाधारमें दर्द। दिनके ३ बजेसे लेकर जबतक रोगी सो नहीं जाता, तबतक लगातार बायें डिम्बाधारमें धीमा-धीमा दर्द हुआ करता है। योनिके छोटे ओष्ठमें असह्य खुजलीकी वजहसे नींद खुल जाती है (हाइड्रोकोट, क्रियो, लिलि-टाई)। बायें डिम्ब और जरायु दोनोंमें ही प्रचण्ड दर्द मालूम होता है, दिनके २ बजेसे रातके सात बजेतक बीजकोष और जरायुमें रह-रहकर दर्द पैदा होता और गायब होता है। सोनेके समयतक जरायुमें त्वचा क्षय हो जानेकी तरह मालूम होता है। ऋतु कभी-कभी ९ दिन देरकर हुआ करता है (दश दिन—वाइवर्न)। काम-प्रवृत्तिकी उन्मादक उत्तेजना (ओरिगैनम, प्लैटिनम)। स्तन-ग्रन्थि दबानेपर दर्द मालूम होता है, ठण्डे पानीसे नहाने बाद उसमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द पैदा करनेवाला जखम हो जानेकी तरह मालूम होता है। स्तन ग्रन्थियाँ सब फूली मालूम होती हैं। बायें वक्षमें तेज़ दर्द—यह दर्द बायें स्तनके भीतरसे दौड़ जाता है। स्तन ग्रन्थियाँ खूब फूली और उनमें ऐसा मालूम होता है मानो जखम हो गया है। रोगिनीकी आवाज बदल जाती है और कर्कश हो जाती है। डिम्बाशयका अस्तित्व स्पष्ट मालूम होता है; अन्त्राशयके भीतरसे तेज़ दर्द ऊपरकी ओर पाकस्थलीकी तरफ चला जाता है और डिम्बाधारमें जा पहुँचता है और वहाँसे नीचेकी ओर दोनों पैरोंमें चला जाता है। इसके साथ ही दूसरे दिन पेशाबमें तकलीफ़ पैदा हो जाती है। दोनों स्तन सूखकर क्षय हो जाते हैं। स्तन पिलानेवाली शिशुमती रमणीकी प्रसवके बादसे चार महीनेतक दोनों स्तनोंमें विशेषकर दाहिने स्तनमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम हुआ करता है (हेलोन)।

पीठ।—पीठके निचले अंशमें और एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक दर्द हुआ करता है; ऋतु आरम्भ होनेके पहले और ऋतुके समय कई दिन कमरमें भयङ्कर दर्द (ऋतु होनेके पहले—कैल्के, कास्टि, लाई, मैग-कार्ब, फास, हेलोन, सिनोसियो, हाइड्रैस्ट, ऐमोन-कार्ब, बेले, बार्ब, ब्रोम, लैके, निकोलस, ऐ-नाई, पल्स, जैन्थकक्ससाइलम)। कमरमें दर्द—रमणके बाद बहुत बढ़ जाया करता है (ऐ-नाई)।

प्रत्यङ्ग आदि।—दाहिने ऊरुसे तेज़ दर्द पैदा होकर नीचेकी ओर चला जाता है; बाएँ ऊरुमें भी ऐसा ही दर्द मालूम हुआ करता है। दाहिने पैरकी पोटलीमें दर्द होता है। बायें पैरके जानु और पोटलीमें दर्द।

निद्रा ।—रोगी इस डरसे सो नहीं सकता कि कहीं कोई दुर्घटना न घटे ; ऊँघता-ऊँघता इसी भावसे चौंक उठता है। कभी बायें कभी दाहिने डिम्बाशयमें दर्दकी वजहसे नींद खुल जाती है। योनिके ओष्ठमें खुजलाहटकी वजहसे रातमें १ बजनेके समय नींद खुल जाती है।

सार्वाङ्गिक ।—रोगीके मनमें फुर्त्ती पैदा हो जाती है और शरीर हलका मालूम हुआ करता है। शरीरमें बल और जीवनी-शक्तिकी अधिकता अनुभूत होती है। ऐसा मालूम होता है, मानो कोई नशीला पदार्थ सेवन करते-करते उसे छोड़ दिया है। बहुत स्नायविक चञ्चलता अनुभव होना ; स्थिर नहीं रह सकता। अग्निमान्द्य रोगवाली स्त्री, समूचे शरीरमें बेचैनी मालूम होना।

वृद्धि ।—सवेरे या दोपहरके बादसे सोनेके समयतक ; शरीर हिलानेपर ; रमणके बाद ; ऋतुके समय और पहले ; सोने बाद—सवेरे ६ बजेतक ; ठण्डी जलीय वायु लगनेपर।

घटना ।—नींदके बाद ; जोरसे दबानेपर (विटपमें दर्द)।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष या दोषघ्न ।—पल्सेटिला, साइलिसिया।

सदृश ।—एपिस, लिलियम-टाई, कोना, कैल्के, मर्क, हैलोन, कैलि-कार्ब, साइलिसिया, पल्स, प्लैटिना, कोका, ओरिगेनम, अरम-म्यू-नेट, सोलि-डेगो-वार्गा।

तुलनीय ।—डिम्बाधारमें डङ्क मारनेकी तरह दर्दमें—एपिस, मर्क। स्तनमें दर्द—कोनायम, कैल्केरिया। सर-दर्द—नैट्रम। मुखशायिका ग्रन्थिकी बीमारी—फेरम-पिक, कैमो, आर्जेण्ट-नाइट। हटनेवाला दर्द—कैलि-बाई। अधिक परिश्रम करनेवाली स्त्रियाँ—मैग-कार्ब।

शक्ति ।—मूल अर्कसे प्रथम दशमिक क्रम।

सैबाइना

(SABINA)

नामान्तर ।—सेबिन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—कच्ची डालके अग्रभागसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—गर्भस्रावका भय ; प्रसवका नकली दर्द ; फोड़ा ; मूत्राधारका प्रदाह ; बाधक ; प्रमेह ; क्षुद्र-सन्धि वात ; श्वेत-प्रदर ; अतिरज ; नकली गर्भस्राव ; मूत्रग्रन्थि प्रदाह ; कामोन्माद ; डिम्बाधार-प्रदाह ; सुदा ; फूल अटकना ; पेशाबकी तकलीफ़ ; दन्तशूल ; मसे ; जरायुसे रक्त-स्राव ।

उपयोगिता और आभास ।—शरीरका प्रायः ऐसा कोई भी अंश नहीं है, जहाँ सैबाइनासे "उपदाह या उत्तेजना" न पैदा होती हो ; यह शरीरके रक्त-प्रवाहको उत्तेजित करता है ; मस्तिष्क और फेफड़ेमें रक्त-सञ्चय करता है, मसानेमें सन्ताप पैदा कर देता है और मसानेके भीतरसे ही शरीरसे निकलता है। इसीलिये, इससे पेशाब खून मिला और लालमय हुआ करता है, इसकी क्रिया वस्ति-गह्वरके यन्त्रोंपर भी होती है और यह पेशाबमें कष्ट, खून मिला मल, रक्तस्रावके साथ जरायु या उत्तरणी-प्रदाह और गर्भवती रमणियोंमें गर्भ-स्राव पैदा कर देता है। स्त्रियोंके नाना प्रकारके पुराने या बीच-बीचमें पैदा होनेवाले रोगमें मोटी या छोटी सन्धियोंकी-वात व्याधिमें और गर्भवतियोंकी गर्भ-स्रावकी आशङ्कामें विशेषकर जिन्हें तीसरे महीने गर्भ-स्राव हो जाया करता है, उनके लिये यह विशेष उपयोगी है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं :—(१) उत्तेजना पैदा होना ; अवसाद वायुमें ग्रस्त रहना और सङ्गीतका सहन न होना ; गाने बजानेका शब्द सुनते ही रोगिनीके स्नायु-विधान उत्तेजित हो जाते हैं और ऐसा मालूम होता है, कि ये शब्द उसकी अस्थि मज्जाको भेदकर शरीरके अन्तरतम प्रदेशमें प्रवेश कर रहे हैं। (२) श्लेष्मा गोटियाँ या मसे फैले और उनमें असह्य खुजली और जलन। (३) नितम्बास्थिसे विटपास्थि तक ऐसा दर्द मानो जकड़ गया है—सैबाइना-

वाले सभी जरायु रोगका यह लक्षण प्रधान और सिद्धि-प्रद है। (४) गर्भस्राव या प्रायः पूर्ण गर्भ अवस्थामें गर्भपातके बाद जरायु-स्राव या जरायुसे रक्त-स्राव, खूनका कुछ अंश लाल चमकीला और पतला और कुछ जमा हुआ, शरीर हिलाते ही बढ़ जाता है, पर कभी-कभी चलनेपर घट भी जाता है। (५) ऋतु-स्राव—एकदम असमयमें होता है। बहुत दिनोंतक रहता है और स्राव भी बहुत अधिक हुआ करता है, इस अवस्थामें भी खून कुछ पतला और कुछ जमा हुआ रहता है, विशेषकर यदि रोगिनी बहुत कम उम्रमें रजःस्वला हो गयी हो। स्राव रह-रहकर झोंकसे हुआ करता है और प्रबल स्राव होता-होता रुक जाता है; फिर वेगसे आरम्भ होता है; इसी तरहका स्राव सैबाइनामें होता है। ऋतुके समय भी प्रसवके दर्दकी तरह दर्द मालूम हुआ करता है। (६) रजोनिवृत्तिके समय प्रवृत्तिकी उत्तेजना और रक्त-स्राव हुआ करता है। (७) जरायुमें भरपूर सङ्कोचनी शक्तिकी कमी रहनेके कारण रुका हुआ परिस्राव, जोरका प्रसवके बादका दर्द। (८) अतिरजः, जिन्हें पहले गर्भस्राव हो गया है, उन सब स्त्रियोंको ऋतु-स्राव न होनेके समय, विशेषकर जिन स्त्रियोंको छोटी उम्रमें ही रजःस्राव आरम्भ हो गया है। (९) गर्भ-स्राव या पूर्ण गर्भावस्थामें गर्भपात होनेके बाद बीजकोष या जरायुका प्रदाह। (१०) विकृत भ्रूण या जरायु मध्यस्थित अन्यान्य पदार्थको निकालना। इसका दर्द एकाएक बढ़ता है और धीरे-धीरे घटता है।

लक्षणावली

मन।—गाने-बजानेका शब्द सहन नहीं होता (डिजिट); सङ्गीतकी आवाज़ सुननेपर रोगिनी कातर हो पड़ती है, ऐसा मालूम होता है, मानो यह ध्वनि अस्थि मज्जाको भेदकर शरीरके अन्तरतम प्रदेशमें प्रवेश कर रही है (सङ्गीत ध्वनि असह्य और शोकोद्दीपक—ऐकोन, बेल, ग्रैफ, क्रियो, नेट्र-कार्ब, नेट्र-सल्फ, नक्स, थूजा)। अवसाद-वायुग्रस्त, हमेशा अपने स्वास्थ्यके सम्बन्धमें चिन्ता किया करती है (अरम-म्य-नेट)। क्रोधी स्वभाव, मूर्च्छा-प्रवण। बहुत सुस्ती और आलस्य मालूम होता है; रोगी यही सोच-सोचकर सुस्तभाव और दुःखित रहता है, कि उसे कोई कठिन रोग हो गया है। किसीके साथ बोलना नहीं चाहता (आर्जेण्ट-नाई, कैमो, जेल्स, ग्लोन, लेक-डिपली, नेट्र-कार्ब, फास)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, विशेषकर सवेरे रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह गिर जायगा (कैलि-सल्फ, लाई, मिडोरिन)। आँखके सामने एकदम अँधेरा छा जाता है या काला रङ्ग दिखाई देता है (फेरम, मर्क, लैक्टियुका-वाई)। रजोरोध रोगमें सरमें रक्तका अधिक सञ्चय होना और उत्ताप अनुभव होना। सर-दर्द, विशेषकर ललाटके दोनों पार्श्वके ऊँचे अंशमें। दर्द एकाएक पैदा होता है और धीरे-धीरे घटता है (पल्स, एकाएक पैदा होता है—बेल, पल्स, सैबाई, टैबाक, वैलि; एकाएक गायब होता है—आर्जेण्ट-नाई, बेल, ऐ-नाई; धीरे-धीरे घटता है—पल्स, रैनान-स्किलि, सैबाई; धीरे-धीरे बढ़ता है—ऐकोन, ब्राई, कास्टि, कोना, लैक्टियुका, लोबेल, सार्सा; धीरे-धीरे घटता है—प्लैट, स्टैनम, कैल्मि, नेट्र-म्यूर, फास, स्पाइ)। ललाट देशका सर-दर्द—दोनों आँखोंके ऊपर ऐसा दबाव अनुभव होता है, कि दोनों आँखें मानो आँखके गड़हेसे बाहर निकल पड़ेंगी (काक्यु, जिम्नोक्लेड, लैकनैन, नैट्र-म्यूर, फास, सेनेगा, सिपिया, टैरेण्ट)। वृद्धि—सवेरे शय्यासे उठनेपर (ब्राई, निकोलम, आर्जेण्ट-नाई)। घटना—निर्मल वायु लगनेपर। कभी-कभी क्षणभरके लिये मानो ललाटकी त्वचा अस्थि-फलकके साथ लग गयी है, ऐसी खींचन मालूम होती है। नासारन्ध्रके चारों ओर लाली और छूनेपर दर्द होता है। सूखी सर्दी।

मुख-विवर आदि।—चेहरा म्लान और दोनों आँखें ज्योतिहीन और नीले घेरेसे घिरी, कपाल और नाकके चारों ओर छोटे-छोटे काले रङ्गके छेद जैसे दिखाई देते हैं। दाहिनी हनु-सन्धिकी पेशीमें अकड़न अनुभव होना, निम्न हनुसे गण्डास्थितक मानो छुरी विध रही है, इस तरहकी भयानक यन्त्रणा। कभी-कभी चेहरेमें उत्ताप पैदा हो जाता है; पर अन्यान्य अङ्ग ठण्डे और हाथ-पैर बरफ जैसे ठण्डे अनुभूत होते हैं। ललाट और कपोल तिलसे भरे हुए। दन्तशूल, चबानेके समय दाँतमें खींचनकी तरह दर्द (कैमो, नेट्र-म्यूर); सन्ध्याके बाद और रातमें टपक करनेवाला दाँतका दर्द, ऐसा दर्द मानो रोगी दाँत फट जायगा। शय्याके उत्तापसे बढ़ना (कैमो, मर्क, पल्स, मैग-कार्ब)। टटे हुए दाँतकी जड़के मसूढ़े फूल उठते हैं। मुख-विवर सूखा, लार-रहित (नक्स-मस, एपिस)। मुँहमें बदबू। लार सफेद, बोलनेपर वह फेन-भरी हो उठती है (रुईका आकार धारण करती है—ग्रावी, नक्स-मस)। मुँहका स्नायुशूल, निर्मल वायु लगनेपर घट जाता है।

गलेके भीतर।—कण्ठका भीतरी अंश सूखा और ऐसा अनुभव होना, मानो पकड़ गया है (प्लैट, ऐकोन) कण्ठमें मानो कुछ अड़ा हुआ है (इग्ने, कास्टि, सिपा, कैल-कार्ब, सिपिया, ऐ-लैकिक, मानो दो अण्डे अड़े हुए हैं—लैक-कैन); रोगी उसे निगलनेकी चेष्टा नहीं कर सकता, परन्तु उससे भोजनके पदार्थ निगलनेमें बाधा नहीं पड़ती।

पाकस्थली।—खट्टी चीज़ खानेकी इच्छा (ऐण्टि-क्रूड, कोना, हिपर, फास, पोडो, वेरेट, नेट्र-म्यूर, पल्स, उदरामय रोगमें खट्टी चीजोंकी इच्छा—ऐण्टि-क्रूड, ऐण्टि-टार्ट, बोरैक्स, सिङ्को, पोडो, वेरेट)। मुँहका ऐसा स्वाद मानो न जाने कितनी सर्दी लग गयी है; अग्निमान्द्य (नेट्र-म्यूर, पल्स), लेमोनेड पीनेकी बहुत अधिक इच्छा (बेल, जेट्रोफा, ऐ-नाई, पल्स, साइक्लेम)। रुचि बहुत थोड़ी (ऐसिड-पाइक्रिक)। छातीमें जलन (कैल्के-आस्ट्रि, कार्बोविज, साइक्यूटा, कोना, क्रोक, लाई, मैग-कार्ब, नक्स, ऐसिड-सल्फ) और बार-बार डकार (कैल्के, ऐम्ब्रा, मैगे), खासकर शरीर टेढ़ाकर बैठे रहनेपर; टेढ़े भावसे बैठे रहनेपर रोगीमें अन्यान्य लक्षण पैदा हो जाते हैं; मनुष्योंकी भीड़-भाड़में रहनेके समय रह-रहकर मिचली और पाकाशयमें चक्कर खानेका प्रकोप पैदा हो जाता है। जभी तभी खाली डकार आया करती है (आर्निका, आर्स, पोडो) पित्त और पहले दिनका खाया न पचा हुआ पदार्थ के होना पित्तकी कै—ब्राई, इपिका, युपेट, फास, पल्स, सीपिया, वेरेट, पहले दिनका खाया न पचा हुआ पदार्थ के होना—क्रियो)। पाकाशयके दरवाजेसे शरीरको भेद कर पीठतक सुई गड़नेकी तरह या तेज़ सलाई गड़नेकी तरह दर्द (डिजिट)। उदरोर्द्ध प्रदेशमें जब तब जलन हुआ करती है, जकड़ जाता है, ऐसा दर्द होता है मानों मरोड़ खा रहा है और कभी-कभी आँतोंमें गड़गड़ाहट सुन पड़ती है; कभी-कभी पाकाशयमें भी नीचेकी ओरकी तेज़ खींचन मालूम होती है। ऐसा मालूम होता है, मानो जरायु आदि जननेन्द्रियपर दबाव डाल रहे हैं।

अन्त्राशय।—उदरमें पुट्ठेतक इस तरहका प्रसवके दर्दकी तरह दर्द होता है, मानो मरोड़ खा रहा हैं। मिचली नहीं रहती, पर मालूम होता है, कि वमन होगा। उदरमें घूमना—मानो उसमें कोई सजीव पदार्थ है (एराण्डो, कैल्के-फास, कैनाब-सैट, कानवेल, क्रोक, कुरारि, साइक्लेम,

थूजा, सल्फ, मानो माथेकी खोलमें कुछ हिल रहा है—पेट्रोल, सिलिसिया)। उदराध्मान, पेट ढोलकी तरह फूलता है (आर्स, कार्बो-वेज, सिङ्को, लाइ, रैफेनस, रियुम, टेरिब, इयुरेनियम-नाइ) और संध्याके बाद गर्म घरमें रहनेके समय पेटमें कुल-कुल आवाज़ हुआ करती है। जरायु आदिका दबाव जननेन्द्रियपर मालूम होना।

मलान्त्र और मल।—मल आम और खून मिला; पतले दस्त, बहुत ज्यादा वायु आध्मान वायुके साथ निकलता है; बार-बार मलवेग, पर पहले कुछ पतला फिर कड़ा पाखाना होता है; मलद्वारसे खून मिली आम निकलती है (ऐसिरम, मर्क-कोर, नेट्र-कार्ब, पोडो)। कब्जियत—बड़े कष्टसे मल निकलता है। इसके बाद मलद्वारसे खूनका स्राव हुआ करता है। अर्श, इसके साथ ही चमकीले लाल रङ्गका स्राव; खून निकलनेपर नितम्बसे विटप-देशतक फैलनेवाला कमरका दर्द अनुभूत होता है (बाइवर्नम-ओप्यु, नितम्बसे वस्तिगह्वरको भेदकर विटप-देशमें चला जाता है—इग्ने, लिसिन)

पेशाब।—बार-बार पेशाबका वेग और बहुत ज्यादा पेशाब होता है (एपिस, ऐपोसाइन, आर्जेण्ट-मेट)। मूत्ररोध—भयङ्कर जलनके साथ बून्द बून्द पेशाब निकलता है (बेल, कैन्थ, कैनाब-सैट)। मूत्राशय-प्रदेशमें जलनके साथ जभी-तभी पेशाबका वेग (कोलचिकम)। पेशाब खून मिला और लार-भरा (एपिस, टेरिब, मर्क-कोर, रस)।

पुं-जननेन्द्रिय।—काम-प्रवृत्ति बढ़ जाती है और शिश्न सदा भयङ्कर रूपसे कड़ा हो जाया करता है। प्रदाहसे पैदा हुआ प्रमेह, शिश्नसे पीब निकला करता है, शिश्नका कोई खास अंश कड़ा होकर फूल जाता है। प्रमेह विषके कारण खीलभरे दाने या मसे, क्षय हुई त्वचाकी तरह दर्द और जलन (ऐसिड-नाइ, थूजा)। लिङ्गकी चमड़ीमें बहुत दर्द और उसे पीछेकी ओर खींचनेपर बहुत कष्ट होता है (कैलेड, ओस्मियम)। लिङ्गमुण्डमें त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होना और जलन (सीपा, कोचलियारिया, वायोला-ट्राइ)। लिङ्गमुण्डके नीचेवाले प्रदेशमें सूजन और खींचनकी तरह मालूम होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु, एकदम असमयमें प्रकट होना, स्राव बहुत ज्यादा और बहुत दिनोंतक स्थायी (बेल, कैल्के, कैलि-कार्ब, नक्स-वोम),

स्रावका कुछ अंश पतला और कुछ अंश जमा हुआ (फेरम) और बदबूदार ; स्राव रह-रहकर झोंकसे निकला करता है अर्थात् वेगसे स्राव होता-होता रुक जाता है, फिर बड़े वेगसे आरम्भ होता है (पल्स, काक्यु, कैमो, क्रियो, लैक-कैन, लेके, स्यूरेक्स, नक्स, सिकेलि, बाइवर्न)। तेज़ शूलकी तरह और प्रसवके दर्दकी तरह दर्दके साथ (ऐकोन, ऐक्टिया-रेसि, कोलोफिल, कोलोसिन्थ, काक्यु, जेल्स, मैग-फास, पल्स, सिपिया, सल्फ, बाइवर्न, जैन्थक्साइलम) और त्रिकास्थिसे दर्द शरीरको छेदकर विटप देशमें चला जाता है (बाइवर्न)। जरायुसे खूनका स्राव, शरीर हिलाते ही स्राव बढ़ जाता है, परन्तु कितनी ही बार अधिक दूरतक चलनेपर घट जाता है (शरीर हिलानेपर बढ़ना—बेल, कैक्टस, इपिक ; चलनेपर घटना—क्रियो, मैग-कार्ब ; सोनेपर घटता है—बेल, कैक्टस, कास्टि, लिलियम-टाइ)। सोकर उठनेपर थक्का-थक्का खूनका स्राव होता है। रमण आलिङ्गनकी दुर्दमनीय स्पृहा और उससे बहुत सुख मालूम हुआ करता है ; कभी-कभी मानो जरायु जकड़ जाता है। जरायुसे काले रङ्गका खून (सिङ्कोना, इलेप्स, कैलि-बाइ, क्रियो) या चमकीला रङ्ग (इपिक, आर्नि, डायाडेमा) और बहुत ज्यादा, जरायुकी संकोचन शक्तिके अभावकी वजहसे (कार्बो-वेज, कोलोफिल, ऐक्टिया-रेसि) ; प्रसव या प्रसवके बादका जरायु-स्राव ; गर्भस्राव या असमयमें प्रसव होनेके बाद खूनके स्रावके साथ जरायुका प्रदाह (बेल)। वयोसन्धि-कालवाली प्रौढ़ाओंका अथवा जिन्हें थोड़ी उमरमें ही ऋतु-स्राव हो, उनका शरीरके भीतरकी उत्तेजनासे उत्पन्न अतिरजः या बहुत अधिक रजःस्राव (आस्टिलेगो)। रजोनिवृत्तिके समय या ४-५ दिनके बाद आर्त्तव-स्राव बन्द होनेके बाद भी कभी-कभी रक्तस्राव होता है (ऐक्टिया-रेसि, बेल, कैमो, साइलि, मैग-सल्फ : मल कुछ कड़ा होनेपर, कुछ ज्यादा घूमनेपर या जरा ऊँचे-नीचे पैर पड़नेपर योंही थोड़ा-सा रक्तस्राव हुआ करता है—ऐम्ब्रा)। इसके साथ ही काम-प्रवृत्तिकी उत्तेजना। जरायुमें सङ्कोचनी शक्ति न रहनेकी वजहसे परिस्रावका रुकना या फूल अटक जाना (कैन्थ, कोलोफिल)। प्रसवके बादका प्रचण्ड दर्द (आर्नि, बेल, कैमो, जैन्थक्स, बाइवर्न)। प्रसवके बाद रक्तस्राव (बेल, कैमो, फेरम, इपिक, ऐसिड-नाइ, प्लैट, थ्लैस्पि-वार्सा, ट्रिलियम-पेण्डयु)। प्रदर—रजोरोधकी वजहसे (चिनोपोडियम-ऐन, पल्स, जिञ्जिया ; प्रति दो सप्ताहका अन्तर देकर फिर पैदा हो जाता है ; गाढ़ा, पीला और बदबूदार—आर्स, कैल्के, सल्फ,

कार्बो-वेज, हाइड्रैस्ट, आयोड, कैलि-ब्राई, माइरिका, नेट्र-कार्ब, पल्स, सिपिया, सिफिलिन), इसके साथ ही योनिके बाहरी भागमें खुजली। योनिके अन्तरतम प्रदेशमें नीचेसे ऊपर जानेवाला नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द (ऐम्ब्रा, कोना, ऐ-नाई)। स्लेष्मागुटी, क्षय हुई त्वचाकी तरह अनुभव होना और दर्द, स्पर्श सहन न होना और जलन। कहीं अधिक स्राव न हो, इसलिये रोगिनी चुपचाप पड़ी रहती है ; रातमें रक्त-स्राव बढ़ जाता है। रुके हुए ऋतुके साथ भयानक दुर्गन्ध-भरा प्रदरस्राव, मांसके धोअनकी तरह दिखाई देता है (ऐ-नाई, काक्यु, कैलि-आयोड)। गर्भवतियोंको हर तीसरे महीने गर्भ-स्रावका उपक्रम (सिकेलि), इसी समय एकाएक एक दिन चमकीला लाल और कुछ जमा हुआ रक्त-स्राव आरम्भ हो जाता है ; जरा हिलनेसे ही बढ़ जाता है और नितम्बसे विटप-देश जकड़ जाता है और दोनों पैरोंमें दर्द मालूम होता है। प्रसवके बाद दर्द—उदर या तलपेट दबानेपर दर्द होता है। विक्षत-भ्रूण निकलनेवाला (कैन्थ)।

श्वास-यन्त्र ।—स्वरनलीमें सुरसुरी होती है और खुजली पैदा हो जाती है और इसी कारणसे बार-बार खाँसी आती है ; बलगम गोंदकी तरह निकलता है। श्वासाल्पता। छातीमें दर्द होनेपर हाथसे वक्षस्थल दबानेपर आराम मालूम होता है। रक्त-कास या खाँसनेपर खून-मिला बलगम निकलता है (ऐकोन, चायना, फेरम, हैमा, इपिक)। वक्षोस्थि मानो जकड़ गयी है या दबायी जा रही है, इसी ढङ्गका अनुभव होना ; पर इस वजहसे श्वास-प्रश्वासमें व्याघात नहीं होता या श्वास-प्रश्वासके समय वक्षोस्थि जकड़ गयी है, इसी वजहसे दर्द मालुम होता है। बायें स्तनमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (लाई, रियुम, स्पाइजि ; दीर्घ निश्वास—इग्ने), गलेकी हड्डीमें रह-रहकर सुई गड़नेकी तरह दर्द। हृद्स्पन्दन—प्रत्येक बार शरीर हिलानेपर (फास, कार्बो-वेज, मर्क), विशेषकर ऊपर चढ़नेके समय (आर्स, सल्फ, ऐ-नाई, कोकस, नेट्र-म्यूर, आइबिरिस)। सारे शरीरकी धमनी आदिका प्रबल स्पन्दन (बेल, ग्लोन, वेरेट-विर, कैल्के, कार्बो-एन, फेरम)।

प्रत्यङ्गादि ।—ऐसा दर्द अनुभव होना मानो पीठ और नितम्ब सटे हुए हैं, यह दर्द विटपदेशतक चला जाता है ; पीठमें दर्दकी वजहसे रोगी सामनेकी ओर देह टेढ़ी करनेके लिये बाध्य होता है। पीठमें अवशता पैदा

करनेवाला दर्द। प्रत्यङ्गोंमें खींचन या उखाड़नेकी तरह दर्द, विशेषकर रातमें। कलाई और पैरकी अंगुलीमें दर्द अधिक मालूम होता है; ये सब अंश चमकीले और लालिमा लिये सूजनसे भरे होते हैं; हिलाने या छूनेपर दर्द बहुत बढ़ जाया करता है (एक रोगिनीको तीसरे महीने गर्भ-स्राव-सूचक रक्त-स्राव होने लगा, उसी समय उसके बाएँ पैरकी एँड़ीमें बहुत दर्द होता था और सूजन भी बढ़ गयी थी। उसे पहले सैबाइना ३० शततमिक क्रम दिया गया, पर कोई लाभ न हुआ, तब ३x दशमिक क्रम प्रयोग किया गया, इससे उसका रक्त-स्राव, एँड़ीका दर्द और सूजन—सभी छः घण्टेमें अच्छे हो गये)। दोनों उरुके सामनेवाले अंशके बीचके स्थानपर इस तरहका दर्द मालूम होता है, मानो चोट लग गयी है। कोहनीके स्थानपर और एँड़ीके नीचे मानो नोकीली सलाई गड़ रही है, इस तरहका दर्द।

सार्वाङ्गिक।—समूची देह और अङ्ग-प्रत्यङ्ग आदि क्षीण और श्रान्त मालूम होते हैं और रोगी विह्वल हो जाया करता है, शरीर शिथिल और भारी मालूम होता है और रोगीको बाध्य होकर हमेशा सोये रहना पड़ता है। घरके बाहरकी निर्मल हवा लगनेपर दर्द वगैरह आराम हो जाता है और घर आनेपर फिरसे पैदा हो जाता है। दीर्घास्थिमें खींचनकी तरह दर्द। सन्धिगत वात-वेदना—रोगी अंश चमकीला, सूजा और फूला होने बाद उसमें फाड़ने और सुई गड़नेकी तरह दर्द; गर्म घरमें बढ़ना। वात-गुटी।

निद्रा।—आधी रातके बाद रोगिनी छटपटाया करती है और फिर सो नहीं सकती। शरीरमें बार-बार गर्मी पैदा हो जाती है; खून जाने और पसीना निकलनेकी वजहसे नींदमें व्याघात पैदा हो जाया करता है। निद्रित अवस्थामें रोगिनी प्रायः बाईं करवट सोया करती है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—सन्ध्याके समय बार-बार सिहरावन और शीत मालूम होना। दिनमें अत्यन्त शीतार्त्तता; सिहरावनके साथ दृष्टिकी अस्पष्टता—चारों ओर धुएँसे भरा मालूम होता है और निद्रालुता पैदा हो जाया करती है। भयानक उत्तापकी वजहसे सारा शरीर मानो जला करता है और रोगी बहुत बेचैनी प्रकट करता है। रह-रहकर मुखमण्डलमें प्रचण्ड उत्ताप पैदा हो जाता है, पर बाकी अङ्गमें शीत मालूम होता है और हाथ तथा पैर बरफकी तरह ठण्डे रहा करते हैं। बहुत सहजमें ही पसीना होता है और प्रत्येक रातमें पसीना हुआ करता है।

वृद्धि ।—रोगवाला अंश छूनेपर; सन्ध्याके समय, रातमें और सवेरे; आधी रातके बाद (अनिद्रा); शय्याके उत्तापसे; गर्म घरमें; शरीर हिलाते ही; गाने-बजानेकी आवाज सुनने और लम्बी साँस लेनेपर।

उपशम ।—स्थिर होकर सोये रहनेपर; साँस छोड़नेके समय घरके बाहरकी निर्मल हवा लगनेपर; ठीक तौरसे चलनेपर (थोड़ा भी शरीर हिलानेपर रक्त-स्राव बढ़ जाता है); प्रबल दबाव (थोड़ा भी छूनेपर बढ़ना—सिङ्कोना)।

सम्बन्ध ।—**प्रतिविष** ।—कैम्फोरा, पलसेटिला।

अनुपूरक ।—थूजा।

सदृश ।—आर्नि, बेल, कैल्के, क्रोकस, काक्यु, इपिक, मिलिफो, सिपा, क्रियो, ऐम्ब्रा, हैमा, सिपिया, सिकेलि, कोलोफिल, फेरम, प्लेट, पल्स, कैल्य, रस-टक्स, रियुम, थूजा, सल्फ, ट्रिलियम, टेरिब, रैफिनस।

तुलनीय ।—ऋतुके समय मध्यवर्त्ती रक्त-स्राव—हैमामे, ऐम्ब्रा। मसे—थूजा, ऐसिड-नाइट। रक्तस्राव—सिकेलि। फूल अटकना—कोलोफा, सिकेलि। बाहरी हवामें घटना—पल्स। गर्भ-स्राव—क्रोकस, क्रियोजोट। तलपेटमें जीवित पदार्थ अनुभव—क्रोकस। मुद्रा—मर्क, कैनाबिस, सल्फ। आध्मान—टेरिबिन्य। आमवात—लिडम।

अनुकूल सम्बन्ध ।— बेल, पल्स, रस, सल्फ, आर्स, स्पञ्जिया।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व ।—२० से ३० दिन।

सैक्कारम लैक्टिस

(SACCHARAM LACTIS)

दूसरा नाम ।—सुगर आफ मिल्क।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण। नियम-पूर्वक दूधकी चीनीसे ही विचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अन्धापन ; हृत्शूल ; शरीरमें बदबू ; बहुमूत्र ; अजीर्ण ; कर्णशूल ; सन्धिवात ; सर-दर्द ; स्नायविकता ; स्नायु-शूल ; डिम्बाधार-प्रदाह ; पलकोंका पक्षाघात ; गृध्रसी ; दीर्घश्वास ; मसे ; नाभि-प्रदाह इत्यादि ।

सम्बन्ध ।–दाहिनी ओरकी गण्डास्थि—मैग-कार्ब । मलान्त्रमें गोला अनुभव—सिपिया । घूमने-फिरनेवाला दर्द—कैलि-बाई । क्लान्ति—मैग-कार्ब । हृत्पिण्डमें उत्ताप—लैक-कैन । स्नायविकता—कैलि-आयोड ।

शक्ति ।—उच्चक्रम (३० से नीचेके क्रमसे लाभ नहीं होता) ।

सैक्कारम आफिसिनैलि

(SACCHARAM OFFICINALE)

(चीनी)

दूसरा नाम ।—सैक्कारम ऐल्बम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और तरल क्रम ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—उदरी ; मोतियाबिन्द ; हरित्पाण्डु ; बहुमूत्र ; शोथ ; अजीर्ण ; सर-दर्द ; स्वर-भङ्ग ; यकृतकी बीमारी ; शीताद ; प्लीहाकी बीमारी इत्यादि ।

शक्ति ।—३० और उच्च क्रम ।

सैलिसिनम

(SALICINUM)

दूसरा नाम ।—सैलिसिन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।–विचूर्ण और तरल दोनों आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—सरमें चक्कर, बुद्धि-विभ्रम, आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ दिखाई देना, कानमें भों-भों आवाज़, इस दवामें

ये चार लक्षण विशेष भावसे दिखाई देते हैं। इन ऊपर लिखे लक्षणवाले इन्फ्लुएञ्जा, बहरापन और बहरापनसे पैदा हुए सरके चक्कर रोगकी यह एक बढ़िया दवा है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—सैलिसिलिक-एसिड।

शक्ति।—६—३०।

सैलिक्स-मालिसिमा

(SALIX MOLLISSIMA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे संग्रह किये हुए पत्ते और फुनगियोंसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—वात और साइटिका (कटि-स्नायु-शूल) रोगमें विशेषकर जिनके चर्मके नीचेकी सूक्ष्म शिराएँ सब सहजमें ही दिखाई देती हैं और अङ्ग-प्रत्यंगोंमें स्पर्श-कातरता वर्त्तमान रहती है, उनकी बीमारीमें इससे खासा फायदा होता है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

सैलिक्स नाइग्रा

(SALIX NIGRA)

दूसरा नाम।—ब्लैक-यलो।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे संग्रह किये हुए वल्कलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—स्त्री और पुरुष जननेन्द्रियपर इसकी क्रिया विशेष दिखाई देती है। इन बीमारियोंमें एकलेक्टिक चिकित्सकगण इसकी छाल व्यवहार करते हैं। बहुत ज्यादा मैथुनके दुष्परिणामकी वजहसे दुबलापन, सुस्ती, स्नायविकता प्रभृति लक्षणोंमें इसका मूल अर्क रोज़ सवेरे

और सन्ध्याके समय कुछ दिनोंतक सेवन करनेपर ऊपर लिखे उपसर्ग दूर हो जाते हैं और शरीर पुष्ट हो जाता है। यह पुरुषोंका कामोन्माद और प्रेमोन्माद घटाकर शरीरको स्वाभाविक अवस्थामें ला देता है और हस्तमैथुनकी इच्छा घटा देता है।

स्नायविकता, मूर्च्छा, काम-चिन्ता, काम-स्वप्न दर्शन, शुक्रका पतलापन प्रभृति उपसर्गों में भी लाभदायक है। ऋतुमें कष्ट, डिम्बकोषमें दर्द, स्नायुशूल, कामोन्माद प्रभृति लक्षणोंमें स्त्री-जननेन्द्रियपर भी इसकी क्रिया दिखाई देती है।

नये सूजाकमें भी यह फायदा करता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—जाहिम्बियम (शुक्र हानि)। कैन्थरिस (प्रमेह)।

शक्ति ।—मूल अर्क ३० बूंद ।

सैलिक्स पर्पुरिया

(SALIX PURPUREA)

दूसरा नाम ।—लाल या धुमेला बिलो।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताज़ी छालसे अरिष्ट या सत बनाया जाता है।

उपयोगिता और आभास ।—उदरामय, ज्वर, सरमें चक्कर, दाहिनो कर्णमूल-ग्रन्थिका प्रदाह प्रभृति लक्षणोंमें इसका प्रयोग होता है।

शक्ति ।—सत या ३x—६x क्रम ।

सेलोल

(SALOL)

दूसरा नाम ।—सैलिसैलेट आव सिनैल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास ।—इसपर पाकाशय रसकी कोई क्रिया नहीं होती। इसलिये यह दवा खाने बाद अपरिवर्त्तित अवस्थामें आँतोंमें चली जाती है और वहाँ पैनक्रिया या क्लोमरसकी सहायतासे गलकर सेलिसिलिक एसिड और फिनलमें परिवर्त्तित हो जाती है। इसके उपरान्त कुछ देर बाद पेशाबके साथ निकल जाती है।

नया उदरामय, आमाशय और हैजा रोगमें आँतोंका विशोधन करनेके लिये और मूत्राशय तथा मूत्रनलीके विशोधनके लिये सेलोलका व्यवहार होता है।

सूजाक, ग्रन्थियोंमें वातका दर्द, दर्दकी जगहपर स्पर्शका सहन न होना और अकड़न, तेज़ सर-दर्द, पेशाबमें वायोलेट फूलकी गन्ध लक्षणमें भी इससे फायदा होता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—सैलिसिलिक-एसिड, कार्बोलिक-एसिड, नेट्रम-सैलिसिलिकम, एक्टि-स्पाई, पेट्रोल, टेरिबिन्थ।

दोषघ्न ।—ब्रायो।

शक्ति ।—विचूर्ण और निम्न-शक्ति।

सैल्यूफर

(SALUFER)

नेट्रम-सिलिको फ्लोरिकम देखिये।

सैलाइवा

(SALIVA)

दूसरा नाम ।—सैलाइवा—आफिसिनेलिस। कामन-सेल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्तोंसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—क्षय रोगीकी खुसखुसी खाँसी, रातमें पसीना लक्षणमें २० से ४० बूंद मात्रामें सैलाइवा सेवन करनेपर ऊपर लिखे लक्षण सब तुरन्त दब जाते हैं।

दूध बढ़ना रोगमें तथा मुँहके छालोंमें भी इससे लाभ होता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—टियुबर्क्युलिनम, फेलाएड्र, सैलाइवा-स्क्लेरेटा।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

सैलाइवा स्क्लेरेटा

(SALIVA SCLERATA)

यह स्नायु-विधानकी एक बलकारक दवा है।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

सैम्बुकस

(SAMBUCUS)

दूसरा नाम।—सैम्बुकस नाइग्रा।

प्रस्तुत प्रक्रिया।—बराबर भागमें ताजे पत्ते और फूलसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोमें लाभदायक है :—हृत्शूल; दमा; सर्दी; खाँसी; काली खाँसी; शीर्णता या दुबलापन; सर-दर्द; स्वर-भङ्ग; कोरण्ड; पसीना; यक्ष्मा; चमक पड़ना; नाक रुकना; हूप खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—श्लैष्मिक झिल्ली, श्वास-यन्त्र और शरीरकी त्वचापर ही विशेषकर इसकी क्रिया होती है। श्लैष्मिक-झिल्ली और श्वासयन्त्रमें इसके द्वारा साँस रोकनेवाली खाँसी और शरीरकी त्वचापर कमजोर करनेवाला पसीना निकला करता है। वायु-मार्गकी जिन बीमारियोंमें

श्वासरोध होनेका उपक्रम वर्त्तमान रहता है, जैसे स्वरनली-प्रदाह, श्वासरोध करनेवाली सर्दी, घुंडी और क्रुप खाँसी, बच्चोंकी छातीमें घरघराहट इत्यादिकी यह बहुत ही लाभदायक दवा है और भी एक तरहके मनुष्योंके लिये बहुत फायदेमन्द हैं। यदि बलवान और कोटे-ताजे मनुष्य एकाएक किसी बीमारीके कारण दुबले और कृश हो जायें तो सैम्बुकस उनके शरीरमें आयोडम और टियुबर्क्युलिनमकी तरह लाभदायक हुआ करता है। मनोराज्यपर इसका फायदा कम नहीं हैं; बहुत अधिक हर्ष-विषादका प्रबल मानसिक आवेग या शोककी वजहसे बीमारियाँ और बहुत अधिक इन्द्रिय परिचालनसे उत्पन्न हुई बीमारियोंमें इसके द्वारा बहुत लाभ हुआ करता है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं :—(१) प्रचण्ड सूखी खाँसी, इसके साथ ही स्वरभङ्ग और छातीमें श्लेष्माकी आवाज़। (२) आधी रातके समय बहुत अधिक श्वास-कृच्छ्रताके साथ रह-रहकर प्रचण्ड श्वास-रोध करनेवाली खाँसी पैदा हो जाना। (३) स्वरनालीका आक्षेप—आधी रातके समय एकाएक बच्चा जाग उठता है और उसे ऐसा मालूम होता है, मानो उसका गला रुक जाना चाहता है। वह घबड़ाकर उठ बैठता है, चेहरा नीला हो जाता है और श्वास नहीं छोड़ सकता। (४) निद्रित अवस्थामें रोगीका शरीर सूखा और गर्म मालूम होता है, पर जागते ही बहुत ज्यादा पसीना होना आरम्भ हो जाता है। बच्चोंकी सूखी सर्दी या नाक सट जाना—नासारंध्र सूखा और एकदम रुक जाना, बच्चेके श्वास-प्रश्वास और स्तन पीनेमें बाधा पहुँचाती है। (५) बोखार आनेके पहले प्रबल सूखी खाँसी पैदा हो जाती है। इसके अधिकांश लक्षण स्थिर बैठे रहनेपर बढ़ते हैं और शरीर हिलानेपर घटते हैं। (६) चरण, दोनों पैरोंकी पीठ, दोनों पैर प्रभृति शरीरका कोई अंश शोथ हो जानेकी तरह दिखाई देता है। (७) माथा झुकाकर सोनेपर खाँसी बढ़ जाती है।

लक्षणावली

मन।—बच्चा हमेशा रें-रें किया करता है; सभी विषयोंमें असन्तोष प्रकट करता है। सहजमें ही डर जाता है और डरनेपर काँपता है, उद्विग्न और बेचैन हो पड़ता है। आँख बन्द करनेपर नाना प्रकारकी भ्रम-भरी चीजें देखता है। बहुत हर्ष या विषाद और शोक-ताप आदि मानसिक उद्वेगकी वजहसे बीमारियाँ। डर जानेके बाद कभी-कभी श्वास-रोध हो जाना चाहता

है। चेहरा नीला और फूला दिखाई देता है। विज्वरावस्थामें विकार पैदा हो जाना। मानसिक उद्वेगकी वजहसे वमन और पसीना निकलना।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना और माथा हिलानेपर माथेमें कसावटका भाव और ऐसा मालूम होता है, मानो माथेकी खोल पानीसे भरी हुई है (ऐनान्थि, व्यूफो ; मानो माथेमें खौलता हुआ पानी है—ऐमोन-कार्ब)। रह-रहकर माथेमें एकाएक चिलक मार उठता है (क्रियो, नेट्र-मूर)। ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो दोनों कनपटियाँ दब रही हैं। माथा पोछेकी ओर झूल पड़ता है (साइकूटा, ऐक्टिया-रेस, कूप्रम-ऐसेट, ग्लोन, हेलिबो, नेट्र-मूर, नक्स, ओपि, फिलेन)। माथेके समूचे बायें भागमें विसर्प, कान बहुत फूले—रोगी शय्यागत हो पड़ता है और उठ या टहल नहीं सकता। माथेकी त्वचा रूसीसे भरी और उसमें तेज़ खुजली। माथेकी त्वचामें बहुत खींचन मालूम होती है।

नाक।—बच्चोंकी नाक सटना—सूखी सर्दी, दोनों रंध्र सूखे और एकदम रुके—बच्चा न तो श्वास-प्रश्वासकी क्रिया कर सकता है, न स्तनका दूध पी सकता है (ऐमोन-कार्ब, नक्स, ऐस्क्लिप-टियु, अरम-मूर)। बच्चा मुँह फाड़कर साँस लेता और छोड़ता है (निकोलम, फाइटो, नेट्र-आर्स, नक्स-वोम)।

मुख-मण्डल।—चेहरा नीला या लाल, रक्त-रहित या उजला और ठण्डे पसीनेसे तर ; रोगी देखनेमें वृद्धकी तरह और पीला मालूम होता है या फूला और गहरा नीले रङ्गका। चेहरेमें जलन, गर्मी और लाली। चेहरा आगकी तरह गर्म पर दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे। नींद खुलनेपर चेहरेपर बहुत ज्यादा पसीना आरम्भ होकर क्रमसे सारे शरीरमें फैल जाता है, दाँतमें दर्द—दाँतमें फाड़ने या छेदनेकी तरह दर्द और ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों गाल फूल उठे हैं।

अंत्राशय आदि।—सर्दी लगनेकी वजहसे अन्त्रशूल और बहुत ज्यादा वायु निकलना। किसी कड़ी चीज़पर पेट रखनेपर झुककर खड़े होनेपर उदरमें बहुत दबाव और मिचली पैदा हो जाया करती है। उदरमें अत्यन्त दर्द। बार-बार पानीकी तरह और बहुत लसदार पाखाना हुआ करता है—अत्यन्त वेग और बहुत ज्यादा वायु निकलना ; पेट बहुत बड़ा मालूम होता है। बार-बार पेशाबके वेगके साथ बहुत ज्यादा पेशाब हुआ करता है।

श्वासयन्त्र।—स्वरतन्तुका आक्षेप—स्वरतन्तुकी प्रबल सिकुड़ने और फैलनेकी वजहसे भयानक श्वासकृच्छ्रता पैदा हो जाती है और प्रायः आधी रातके समय बच्चा एकाएक जागकर उछलकर उठ बैठता है, उसका चेहरा मानो नीला हो जाता है और श्वासकी कमीसे हाँफने लगता है और अन्तमें फिर पहलेकी तरह श्वास प्रश्वासकी क्रिया होने लगती है और प्रकोप दब जाता है, पर फिर पहलेकी भाँति प्रकोप पैदा हो जाता है; बच्चा साँस ले सकता है, पर छोड़ नहीं सकता (क्लोरम, मिफाइट); निद्रावस्थामें हो यह प्रकोप होता है (लेके)। वक्षके भीतरके यन्त्रोंके आक्षेपकी वजहसे श्वास-कष्ट (एरम-ड्रेकाण्टियम)। घुंड़ी या काली खाँसीकी चरमावस्थामें रह-रहकर साँस रुक जाना चाहती है। स्वरनलीमें बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा गोंदकी तरह बलगम इकट्ठा रहता है और स्वरभङ्ग (रियुमेक्स, कैलि-बाई)। पाकाशयमें दबाव मालूम होना, मिचली और सुस्ती और श्वास-प्रश्वासमें व्याघात। वक्षके पार्श्वमें, स्तनवृन्तके नीचे दबाव मालूम होना और तेज़ सलाई गड़नेकी तरह दर्द (कैलि-कार्ब, ऐक्टिया-रेसि, नेट्र-सल्फ)। खाँसी—श्वासरोध करनेवाली, रोनेवाले बच्चोंकी; आधी रातके समय बढ़ना (ऐकोन, ऐण्टि-टार्ट, आर्स, सिङ्कोना)। खाँसी शून्य गर्भ, गहरी, हूप शब्द करनेवाली, कुक्कुर खाँसी वक्षके भीतरवाले यन्त्रोंके आक्षेप या तेजीसे सिकुड़ना फैलना मिली (एरम-ड्रेकाण्टियम, बेल, ब्रायो, इपिक, लोरोसि)। साँस स्वाभाविक रूपसे ले सकता है, पर साँस छोड़नेके समय वायु निकलनेमें व्याघात होता है और साँय-साँय शब्द हुआ करता है (एरम-ड्रेकाण्टियम, क्लोरम, इपिक, वायु निकलना प्रायः असम्भव—मिफाइटिस)। ज्वराधिकारमें उत्ताप पैदा होनेकी सूचनावस्थामें गहरी सूखी खाँसी पैदा हो जाती है। बलगम—केवल दिनके समय थोड़ा-थोड़ा गाढ़ा गोंदकी तरह बलगम निकलता है; वृद्धि—आधी रातके समय, स्थिर रहनेपर (विश्रामके समय—ब्रायो, कैलि-नाई, सिपिया)। शय्यामें सोये रहनेपर (ब्रायो, कोनायम, कास्टि, ड्रोसेरा, क्रोटोन-टिग, पल्स, सैबाड) या माथा नीचाकर सोनेपर और ठण्डी सूखी हवा लगनेपर (ऐकोन)। रातमें श्वासरोधक प्रकोपमें रोगी छटपटाया करता है, रोता है और दोनों बाँह इधर-उधर पटका करता है।

प्रत्यंग आदि।—बच्चेके कण्ठके बाहरी भागमें और गलेमें पसीना होता है। लिखनेके समय हाथ काँपते हैं (ऐसिड-कार्बोल, सिङ्कोना, नेट्र-

म्यूर, नेट्र-सल्फ, नेट्र-फास, सल्फ, जिङ्कम)। कलाईमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (नेट्र-म्यूर, कार्बोस)। बाँहके अगले भागमें और हाथमें शोथकी तरह सूजन और गाढ़ा नीला रङ्ग। कनिष्ठिका और अनामिकाकी बीचकी पेशीमें अत्यन्त स्पर्श-कातरता। दोनों पैर, विशेषकर पैरकी पीठ और चरणमें ऐसी सूजन मानो शोथ हो गया है। चेहरेमें जलन पैदा करनेवाला उत्ताप और शरीर कुछ गर्म, परन्तु दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे (स्ट्रैमोन, फाइटो, रियुटा, सेबाइना, जेल्स)। हाथ और पैर शोथ रोग हो जानेकी तरह फूले और नीले। रोगी बहुत क्षीण हो पड़ता है। मानसिक उद्वेग और धमनी आदिमें खूनका दौरान और सारा शरीर मानो काँपा करता है, ऐसी अनुभूति होती है। माथेके बाएँ पार्श्वके विसर्प रोगमें चलनेकी शक्तिका न रहना। सारे शरीरमें बहुत दर्द मालूम होता है, मानो सारे शरीरको किसीने हथौड़ोंसे पीटा है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—शीतावस्था, शरीरके चारों ओर शीत दौड़ा करता है और जगह-जगहपर ऐसी सुरसुरी मालूम होती है मानो किसीकी साँस लग रही हैं। हाथ-पैर बरफकी तरह ठण्डे। प्यास नहीं रहती। शीत आरम्भ होनेकी अवस्थामें या उत्ताप आरम्भ होनेके पहले लगातार गहरी सूखी खाँसी आया करती है (रस)। उत्तापावस्था—सोनेपर नींद लगते ही सूखा या बिना पसीनेका उत्ताप पैदा हो जाता है। प्यास नहीं रहती, रोगी शरीरकी ओढ़ना उतारनेसे डरता है (शरीरका ओढ़ना उतारनेमें नाराज़—आर्जेण्ट-नाई, नक्स, स्ट्रैमोन, एपिस, मेग-कार्ब, स्ट्रान); निद्रित अवस्थामें देह गर्म और हाथ-पैर बरफकी तरह ठण्डे। जागते ही या जाग्रत अवस्थामें प्यास न रहना और रातके सात बजेसे एक बजेतक चेहरेपर बहुत ज्यादा पसीना होता है; चेहरेपर मोतीकी तरह पसीनेकी बूंद दिखाई देती हैं और जागनेकी अवस्थामें लगातार पसीना हुआ करता है, पर फिर सो जाते ही पसीना बन्द हो जाता है और उत्ताप पैदा हो जाता है (सोनेके लिये आँख बन्द करते ही पसीना आरम्भ हो जाता है—सिङ्कोना, कोनायम, थूजा, पल्स, प्लैट)। चेहरेपर क्षय-कास बतानेवाली लाल आभा (वेसिलिनम—"आयोडोफार्मम" के बाद टियुबर्क्युलिनमका प्रयोग करना चाहिये—सेङ्गिविन, स्टैनम)। रातमें बहुत पसीना (ऐ-ऐसेट, ऐमोन-म्यूर, आर्स, बेराई, कैल्के, सिङ्कोना, ऐ-नाई, लाई, जैबोरैन, मर्क, फास, पल्स, सिपिया, स्टैनम, सलफर)।

विज्वरावस्थामें दिन-रात ऐसा पसीना होता है, मानो शरीरपर किसीने ठण्डा पानी ढाल दिया।

वृद्धि।—औंघाई आनेपर भी नींद नहीं आती (बेल, कैमो, ओपि)। बार-बार नींद खुलना, मानो रोगी सोकर जाग उठा, इसके बाद महान उद्वेग प्रकट करता है, काँपा करता है और इस तरहका श्वास-कष्ट पैदा हो जाता है, मानो साँस रुक जायगी। रोगी अधखुली आँखोंसे मुँह फाड़कर सोता है। निद्रित अवस्थामें सूखा उत्ताप पैदा होता है और जागते ही पसीना होना आरम्भ हो जाता है।

वृद्धि।—विश्रामके समय या स्थिर रहनेपर; सोनेपर विशेषकर माथा झुकाकर बायीं करवट सोनेपर; आधी रातके समय या बाद; रातके ७ बजेसे एक बजेतक; शरीरका वस्त्र उतारनेपर; सूखी हवा लगनेपर; शरीरकी उत्तापावस्थामें, ठण्डा पानी आदि पीनेपर; डर जानेपर और हर्ष विषाद आदि प्रबल मानसिक उद्वेगकी वजहसे।

उपशम।—शय्यापर उठ बैठनेपर, शरीर हिलानेपर, दबानेपर और शरीरका कपड़ा या रोगी अंश कसकर बाँध देनेपर।

सम्बन्ध।—**प्रतिविष या दोषघ्न**।—आर्स, कैम्फोरा।

सदृश।—सिङ्कोना, क्लोरम, इपिक, मिफाइटिस, सलफर, ऐकोन, आर्स, बेल, रस-टक्स, सिपिया।

अनुकूल सम्बन्ध।—ओपियमके बाद सैम्बुकसके प्रयोगसे बहुत लाभ होता है।

तुलनीय।—श्वास-कष्ट—क्लोरम, मिफाइटिस। नींदके समय रोगका आक्रमण—लेकेसिस। पसीना होना—चायना, थूजा, पल्स। खुले रहनेकी इच्छा—नक्स-वो। शीर्णता—आयोड, टियुबर्क। इन्द्रिय परिचालनका दुष्परिणाम—फास-ऐसिड। श्लेष्मा—केलि-बाई। सर्दी लगना—ऐकोन। नाक बन्द—ऐमोन-कार्ब, नक्स-वोम।

शक्ति।—मूल अरिष्टसे ६ठा शततमिक क्रम।

सैंगुइनेरिया कैनाडेन्सिस

(SANGUINARIA CANADENSIS)

दूसरा नाम ।—सैंगुइनेरिया वारनेलिसा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़से अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—
मदात्यय ; स्वरभंग ; दमा ; स्तनका अर्बुद ; श्वासनली-प्रदाह ; कर्कट ; सर्दी ; वक्षमें दर्द ; वय:सन्धिकालकी बीमारियाँ ; काली खाँसी ; बहरापन ; उपझिल्ली-प्रदाह ; बाधक ; अजीर्ण ; कानमें अर्बुद ; प्रमेह ; आँखकी बहुत-सी बीमारियाँ ; पलकोंपर दाने निकलना ; खून मिली खाँसी ; सर-दर्द ; बहुव्यापक सर्दी ; यकृतमें विकारके कारण खाँसी ; ऋतुके समय स्तनमें दर्द ; नखमें जखम ; स्नायु-शूल ; अलिजिह्वाकी सूजन ; आँखोंका प्रदाह ; स्वरनली-प्रदाह ; यक्ष्मा-कास ; जरायुकी बीमारियाँ ; फेफड़ेका प्रदाह ; पालिपस या बहुपाद ; गर्भावस्थाकी नाना प्रकारकी बीमारियाँ ; मुँहमें पानी भर आना ; कर्णमूल ; आमवात ; रस-टक्सकी विषाक्तता ; कन्धेका आमवात ; घ्राण-शक्ति या स्वाद-शक्तिका बिगड़ जाना ; पाकस्थलीकी स्नायविक बीमारियाँ ; उपदंश ; कर्णपटहका प्रदाह ; अर्बुद ; वमन ; अंगुलबेढ़ा ; हुप खाँसी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—यह समस्त वायु-मार्गमें विकार पैदा कर तथा नाकके भीतरकी श्लैष्मिक-झिल्लीमें उत्तेजना पैदाकर नयी सर्दी उत्पन्न करता है और इसीलिये नाककी जड़में दर्द ; घ्राण-शक्तिका गायब हो जाना या बिगड़ जाना और फूलकी गन्ध सहन न होना आदि पैदा हो जाते हैं । सर्दीका बुखार ; नयी फसलकी रेणु सूंघनेके कारण सर्दी रोग ; नकसीर और नासा-रोग वगैरह सभी इसके विषयके अन्तर्गत आ जाते हैं । इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं :—(१) निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर पैदा होनेवाला (हर सात दिनके अन्तरसे या वय:सन्धिकालमें) वमनादि, पाकाशयकी बीमारीके साथ सर-दर्द, सवेरे आरम्भ होता है, दिनके दोपहरतक बढ़ता है और इसके बाद शामतक बराबर मौजूद रहा करता है ; ऐसा मालूम होता है, मानो माथा कटकर दो हो जायगा । (२) दोनों चक्षुगोलक (आँखके गोले) पर इतना दबाव अनुभव होता है, कि मालूम होता है, कि ललाटके

नीचेसे दोनों आँखें बाहर निकल पड़ेंगी ; नींदके बाद घट जाता है। (३) अंधेरेमें एकदम स्थिर भावसे रहनेपर सर-दर्द घटता है। शिराके पिछले भागसे आरम्भ होकर मूर्द्धाके ऊपरसे दाहिनी आँखके ऊपरी भागमें आकर ठहर जाता है। (४) मुँहका स्नायुशूल—घुटने टेककर जोरसे जमीनपर माथा दबानेपर घटता है ; ऊपरी हनु चारों ओर फैलता है। (५) नित्य तीसरे पहर दोनों गालोंमें क्षय-कास बतानेवाली एक सीमाबद्ध लाली पैदा होती हैं ; वायुनली-भुज-प्रदाह और फेफड़ेके प्रदाहमें भी इसी तरहके गण्ड-रोग दिखाई देते हैं। (६) दाहिने कन्धे और बाँहमें वातका दर्द—रोगी वह बाँह उठा नहीं सकता, खासकर रातमें। (७) जानु-सम्मुखास्थि, करभ वगैरह सिर्फ पतले चमड़ेसे ढकी हड्डियोंमें दर्द। (८) तालुमूल और अन्ननालीमें जलन। (९) स्वरनली और नाकके भीतरका झिल्लीमय अर्बुद। (१०) वयःसन्धिकालके समयकी बीमारियाँ ; जैसे—रह-रहकर शरीर और चेहरेमें उत्ताप पैदा हो जाना ; प्रदर ; हाथ और तलवेमें जलन ; शरीरपर ओढ़ना या कपड़े सहन न होना ; स्तनका बढ़ना और दर्द। (११) नये पैदा हुए घास और फूल आदिकी धूल सूंघनेकी वजहसे श्वास-रोग—गन्ध सूंघनेपर बढ़ जाता है। (१२) सूखी खाँसी, खाँसीके कारण रातमें नींद खुल जाती हैं और जबतक रोगी उठ नहीं बैठता और वायु नहीं त्यागता, तबतक नहीं घटता। (१३) फ्लू खाँसी आराम होनेके बाद कभी-कभी पैदा होनेवाली प्रचण्ड खाँसी, सर्दी लगते ही यह खाँसी पैदा हो जाती हैं। (१४) युवती स्त्रियोंके चेहरेपर व्रण आदि नाना प्रकारके उद्भेद, खासकर जब ऋतुस्राव बहुत थोड़ा होता है। डा० क्लार्क कहते हैं—सर्दीके बोखारके बाद फ्लू खाँसीकी तरह बच्चोंकी जो खाँसी रह जाती है, उसमें इस दवासे विशेष लाभ पाया गया है। इसकी बीमारीका प्रकोप भी "चेलिडोनियम" की भाँति ही दाहिने अंगपर ही विशेष हुआ करता है। दाहिने फेफड़ेका प्रदाह, यदि वह विशेषकर यकृतके विकारकी वजहसे हो, तो इससे बहुत फायदा हुआ करता है और इसकी एक विशेषता यह है, कि इसके सभी स्राव और निश्वास और आध्मान-वायु सभी बदबूदार और कषाय होते हैं।

लक्षणावली

मन।—मानसिक जड़ता और मैलापन ; डकार आनेपर घटना। चित्तकी चंचलता और शङ्कित भाव ; वमन और प्रलाप पैदा हो जानेके पहले

चित्तकी चंचलता। उदास चित्त और मिचली—यदि रोगीके घरके भीतरसे कोई चला जाता है, तो वह बहुत चिढ़ उठता है। रोगके सम्बन्धमें चिन्ता न रहना—ऐसा समझना कि वह आरोग्य हो जायगा। जाग्रत अवस्थामें भी मानो स्वप्न देखता है—ऐसा भाव।

मस्तक।—रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका मस्तिष्क निष्क्रिय और सुन्न हो गया है; चित्त सोनेपर माथा नहीं हिला सकता। वह इस सम्बन्धमें एकदम अचैतन्य-सा रहता है, कि उसके चारों ओर कौन क्या कर रहा है। सपनेके देखी घटनायें सब ऐसी मालूम होती है, मानो कई सप्ताह या कई महीने पहले घटी हैं। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह किसी भाफकी गाड़ीपर चढ़ा है और मानो उसके चारों ओरके सभी मनुष्य बहुत तेज़ीसे बोल रहे हैं। उसे पकड़ रखनेके लिये रोगी बहुत अनुनय विनय करता है। सरमें चक्कर आना,—एकाएक माथा घुमानेपर (कैल्के, कैलि-कार्ब, ऐ-लैक्टिक) और ऊपरकी ओर देखनेपर (कैल्के, क्यूप्रम, लैके, टैबाक)—ऊपरकी ओर देखनेपर गिर जाना चाहता है (पल्स, साइलि); रातमें सोनेपर (कास्टि, लैके, पल्स, रस); उसके बाद उठनेपर (बेल, कार्बो-ऐन); बैठने बाद उठनेपर (नक्स) और आब-हवा ठण्डी होनेपर (आँधी पानीके दिनोंमें—कैल्के-फास), निर्दिष्ट समयके बाद पैदा होनेवाला सर-दर्द सवेरे आरम्भ होता है, दिनमें क्रमसे बढ़ता है और सन्ध्यातक स्थायी रहता है (नेट्र-म्यूर, साइलि, स्पाइजि, टैबाक)। ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फट जायगा (ब्राई, सिङ्को, ग्लोन, नेट्र-म्यूर) या मानो प्रबल दबावकी वजहसे दोनों आँखके गोले गड़हेसे बाहर निकल पड़ेंगे (काक्यु, जिमोकुँड, इग्ने, लैकनैन्थिस, नेट्र-म्यूर, फास, सबाई, सेनेगा, स्पिपि, टैरेण्ट या मस्तिष्कमें, टपक या छुरी मारनेकी तरह दर्द—बढ़ना--माथेके दाहिने पार्श्वमें,—विशेषकर ललाट और मूर्द्धादेशमें; अन्तमें सर्दी मालूम होना, मिचली और पित्त या खाये हुए पदार्थ वमन हुआ करते हैं। रोगीको बाध्य होकर अँधेरी कोठरीमें सो जाना पड़ता है (बेल, साइलि, कैलि-बाई); सोनेके बाद घटता है (जेलस, ग्लोन)। सर-दर्द,—सरके पिछले भागमें आरम्भ होकर मूर्द्धाके ऊपर से दाहिनी आँखके ऊपर आकर ठहर जाता है (साइलि—बाईं आँखके ऊपरकी जगहपर—नक्स-मस, स्पाईजि)। सरमें अधिक रक्त-सञ्चय होनेके कारण

कानमें सांय-सांय शब्द ; क्षणभर तक ठहरनेवाला उत्ताप पैदा हो जाना और अन्तमें मुँहमें इस तरह पानी भर आया करता है, मानो वमन होगा। सर-दर्दके साथ मिचली और कै, रोशनी सहन न होना वगैरह लक्षण मौजूद रहते हैं। वृद्धि—प्रत्येक बार देह या माथा हिलानेपर, घटना—सोने बाद और बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होनेपर (ऐको, जेलस, कैल्मिया, इग्ने, मिलिलोट, सिलि)। सर-दर्द,—प्रत्येक सात दिनका अन्तर देकर (सैबाड, सिलि, सल्फ़—प्रति आठ दिनका अन्तर देकर—आइरिस) और वयःसन्धिके समय फिरसे पैदा हो जाता है। कटकट झनझन करनेवाला सर-दर्द—मानो सर्दी होनेका पूर्व लक्षण है ; परन्तु सर्दी नहीं होती,—ललाट और करोटीके मध्य भागमें दर्द बढ़ा मालूम होता है और आँखोंमें दबाव मालूम पड़ता है, दोनों आँखोंमें जलन हुआ करती है और रोगी बड़ी तकलीफसे आँख हिला सकता है। माथेके किसी खास अंशमें त्वचा क्षय हो जानेकी तरह दर्द मालूम होना और स्पर्श सहन न होना—खासकर दोनों कनपटियाँ (सिलि, सिङ्को, पैरिस, लैके, स्पाई)। कनपटीकी शिराएँ सब फूल उठती और छूनेपर बहुत दर्द होती है।

आँख।—पुतली फैली (ऐलैन-ग्लैण्ड, बेल, साइक्यू, जेलस, हायो)। आँख एकदम सूखी और जलन भरी और अन्तमें उससे बहुत ज्यादा पानी गिरा करता है (ऐलियम-सैट, ऐ-नाई, इयुफ्रे, फाइटो, सल्फ़)। आँख हिलाने पर दर्द मालूम होता है (ब्राई, कैल्मिया, नेट्र-म्यूर, पैरिस, फास, रस)। दोनों आँखके गोलोंमें मानो जख्म हो गया है, ऐसा तेज़ दर्द और उसके भीतरसे ऐसी यन्त्रणा होती है मानो तीर गड़ रहा है, साथ ही धुँधली दृष्टि। आँखमें ऐसी बेचैनी मालूम होती है, मानो केश गिर गया हो (इयुफ्रे, टेरेण्ट) और अच्छी तरह देख नहीं सकता। दाहिनी आँखके बीचमें और ऊपरी अंशमें स्नायुशूल (ऐ-कार्बोल, कोलोसिन्थ, कैल्मिया—बाईं आँखके भीतर और ऊपर—अरम-म्यूर, लैके,—दिनके १० बजेके समय आरम्भ होकर दोपहर तक बढ़ कर धीरे-धीरे घट जाया करता है—स्टैनम)। कामला रोगमें दोनों आँखोंका सफेद अंश पीला दिखाई देता है। सर्दीकी वजहसे आँखोंका प्रदाह—पलकें मांसांकुरसे भरीं (ग्रेफ, आर्स, केलि-बाई, मर्क-कोर, चिनिन-म्यूर)। चक्षु-प्रदाहके बाद आँखमें जख्म हो जाया करता है (एपिस, आर्जेण्ट-नाई)।

कान।—शब्द सहन न होना,—कानमें एकाएक कोई आवाज़ प्रवेश करनेपर (काक्यु) कष्ट मालूम होता है—विशेषकर दाहिने कानमें। सरमें अधिक रक्त-सञ्चयके साथ कानमें टपक हुआ करती है और भों-भों शब्द होता है। गण्ड-रोगके साथ दोनों कानोंमें जलन हुआ करती है (ऐगार, ऐमिल, कास्टि)। सर-दर्द, कानमें आवाज़ और सरमें चक्कर आनेके साथ कर्णशूल। बराबर समयका अन्तर देकर कानके नीचे धकधक किया करता है और अधिकांश स्थानोंमें जोड़ा धकधकी सुन पड़ती है।

नाक।—घ्राण शक्तिका लोप हो जाना,—सर्दीमें (पलस, नेट्र-मूर, नेट्र कार्ब, साइक्लेमेन, सेरासिनिया)। नाकके भीतर झिल्लीमय अर्बुद (थूजा कैल्के-कार्ब, टियुक्रि, सिपा) उत्पन्न हो जाया करती है। पानीकी तरह सर्दीका स्राव—बार-बार छींक आया करती है (ऐकोन, आर्स, सिपा, जेलस, आइरिस, रियुमेक्स); स्राव पानीकी तरह, कषाय या त्वचाको क्षय करनेवाला (एरम-ट्राई, लाई, मर्कु, नक्स-वोम, सिपा, फेरम, हाइड्रेस्ट), रंध्रमें चुनचुनी हुआ करती है; डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है (केलि-बाई, लैका-डिफ्लो, सिपि, सिस्टस, रैनन-बल्बो, सैंरासिन, क्यूप्रम)। सूखी सर्दी—एकाएक सर्दी लग जानेकी तरह (ऐकोन, कैम्फो, सिङ्को, नक्स-वोम, सैब्ब्, स्टिक्टा), रंध्र रुक जाता है। कभी पानीकी तरह श्लेष्मा निकला करता है और कभी दोनों रंध्र सूख जाते हैं और सट जाते हैं (पलस, नेट्र-मूर, फास, पेरिस)। ताजे खिले गुलाब आदिके फूल या नये पैदा हुए शस्य आदिकी रेणु सूंघनेकी वजहसे सर्दी और श्वास कष्ट,—रोगिनीकी नाकमें फूल आदिकी गन्ध प्रवेश करनेपर वह पीड़ित और सुस्त हो पड़ता है (फास, ग्रैफ, इग्ने, नक्स-वोम, वैलि, सिपा।

मुखमण्डल।—मुँहका स्नायुशूल—ऊपरी हनुसे दर्द नाक, आँख, कान, गर्दन और सरके बगलके भागके चारों ओर फैल जाता है। घटना—घुटने टेककर जोरसे जमीनमें माथा रगड़नेपर या तकियेपर दबानेपर; दर्द बेधने और जलन पैदा करनेवाला। सीमाबद्ध गण्डरोग—एक या दोनों गालमें दिखाई देता है; क्षयकास, फेफड़ा और वायुनलीभुज-प्रदाह-सूचक (क्रियो, लेचनेन्थिस, लाई, फेरम फेरम-फास)। चेहरेपर गहरी लालीके साथ शिरायें सब फूल उठती हैं, अकड़न अनुभव होती है और इन शिराओंको

छूनेपर तेज़ दर्द मालूम हुआ करता है। तीसरे पहर चेहरा लाल हो उठता है और दोनों कानोंमें जलन हुआ करती है। विकार मिले फुसफुस-प्रदाहमें कपाल और हाथमें नीलापन दिखाई देता है। ओकाई मालूम होना और चेहरा म्लान। गण्डास्थिमें दर्द अनुभव होना। दोनों ओंठ सूखे मालूम होते हैं। सन्ध्या होनेके समय दोनों ओंठ फूल उठते हैं, निचले ओंठमें जलन हुआ करती है; कड़े मालूम होते हैं और उसपर दाने निकल आते हैं; छाले सब गलकर सूख जानेपर पके घाव जैसे हो जाते हैं और कुछ देर बाद ये सब पपड़ियाँ छालेकी तरह उजड़ जाती है। हनु-सन्धि जकड़ी मालूम होती है। यन्त्रणा-जनक खाँसीके साथ गण्डरोग। आर्त्तव-स्राव बहुत अधिक होनेके समय युवतियोंके चेहरेपर व्रण आदि उद्भेद निकलते हैं (बेलिस, कैल्के, इयुजिनिया-जैम्बस, सोरिन)।

मुख-विवर।—स्वादकी शक्तिका न रहना और जीभ ऐसी मालूम होना मानो जल गयी है (आइरिस, फाइटो, रियुमेक्स, साइमेक्स, कोलोसिन्थ, लाई, प्लैट)। मसूढ़ेपर और ऊपरी तालुमें जखम पैदा हो जाते हैं। मीठी चीजें तीती मालूम होती हैं और इसके बाद ही जीभके बगलवाले गह्वरमें जलन हुआ करती है। जीभ सफेद लेपसे ढँकी और उसमें तेल या चर्बीका स्वाद मालूम होता है। जीभ इस तरह जला करती है, मानो जल गयी है (कैल्के-फास, नेट्र-सल्फ, कार्बो-एन, ड्रोसेरा, फास, फाइटो, सेबाड, सेनेगा)। जीभमें बहुत दर्द, मानो उसपर फोड़ा निकल रहा है (रस, सिस्टस, ए-नाई, सिलि)। जीभ लाल और ऐसा मालूम होना मानो उसमें कोई गर्म चीज़ छू गयी है। मुँहमें बहुत बदबू। मुख-विवर लसदार और दाँत सब भी लसलसे मालूम होते हैं।

गलेके भीतर।—कोई पदार्थ निगलनेके समय कण्ठके भीतर सूजन मालूम होती है (हिप, सोरिन, पल्स)। ऐसा मालूम होता है, मानो गला रुक जाना चाहता है; दाहिने पार्श्वमें अधिक, इसके साथ ही स्वर-लोप। कण्ठ बहुत सूखा मालूम होता है; पानी पीनेपर भी यह सूखापन नहीं जाता (स्ट्रमोन); ऐसा मालूम होता है, मानो गला फट जायगा। कण्ठके भीतर ऐसा दर्द मानो त्वचा क्षय हो गयी है (अर्जेण्ट-नाई, एरम-ट्राई, सिपा)। गलग्रन्थि-प्रदाह—पीव सञ्चयमें विलम्ब होनेपर गलेमें गर्मी मालूम होती है,

गलेमें ठण्डी हवा खींचनेपर आराम मिलता है ; तालुमूल और जीभके बगलके दोनों गह्वर सफेद मोतीकी तरह लेपसे ढके मालूम होते हैं—गलरूह-प्रदाह रोगमें। तालुमूल और अन्ननलीमें जलन मालूम होती है। तालुमूलमें ऐसा मालूम होता है, मानो बहुत गर्म पानी आदि पीनेके कारण जल गया है।

पाकस्थली।—यह नहीं बता सकता कि क्या खानेकी इच्छा है, तेज़ पदार्थ या चटनी वगैरह बहुत अच्छी लगती है (सिङ्को, लैक-कैन, फास)। चीनी या शक्कर तीती मालूम होती है और जलन पैदा कर देती है। भोजनके कुछ ही समय बाद पाकाशय खाली मालूम होता है (टीलिया-ट्रि) : श्वासमें तकलीफ़ मालूम होती है ; मिचली पैदा हो जाती है, मुँहमें पानी भर आया करता है ; रोगी इतना सुस्त हो पड़ता है, कि बेहोश हो जाना चाहता है और बारह बजेतक ठण्डा पसीना हुआ करता है ; थोड़ा खानेपर भी ऐसा ही हुआ करता है। रह-रहकर प्राणान्तक मिचली पैदा हो जाया करती है (ऐण्टि-टार्ट, क्रोटेलस, डिजिट, इपिक, टैबाक, लैक-डिफ्लो ; काला वमन—कैडमियम-सल्फ)। मुँहमें लगातार पानी भर आया करता है, सर-दर्द पैदा हो जाया करता है और सर्दी लगकर बोखार आता है (इयुपेट, आर्स, कैमो, इपिक, नेट्र-म्यूर, पोलिपोरस)। वमन हो जानेपर भी मिचली नहीं घटती (डिजिट, इपिक)। वमनमें निकले हुए पदार्थमें कड़वा पानी होता है (कार्बोनियम-सल्फ, नेट्रम-सल्फ या अम्ल-स्वादका कसैला जलीय पदार्थ (कोनायम) ; अजीर्ण खाये हुए पदार्थ (फेरम, कैलि-बाई, क्रियो, नक्स-वोम) और कृमि (ऐको, सिना, फाइटो, सैबाड, सिकेलि) ; वमन होनेके पहले बड़े उद्वेगके साथ सर-दर्द और पाकस्थलीमें जलन ; वमनके बाद सर-दर्द बहुत घटता या उपशम हो जाया करता है। मिचली पैदा होने बाद कभी-कभी आमवात पैदा हो जाता है। छातीमें जलन हुआ करती है ; बार-बार डकार आती है। सर-दर्द होता है और इसके बाद ही वमन तथा पतला पाखाना होता है। पाकस्थलीमें क्षय हुई त्वचाकी तरह स्पर्श सहन नहीं होता और इस तरहका दबाव मालूम होता है, मानो दब रही है। भोजनके बाद बढ़ना (कार्बोनियम-सल्फ, स्ट्रान्सियाना, लाई, स्टैन दूध पीनेपर—सैम्बियु)। सर-दर्द रोगमें पाकाशयमें जलन (ऐस्क्लिप-टियु, आइरिस-आर्स, कैन्थ, वेरेट)। पाकाशय-प्रदाह, पाकाशयमें जलन, वमन और सर-दर्दके साथ। पाकाशयके सर-दर्दमें पाकाशय खाली, सुस्ती लानेवाला मालूम होता है। एकाएक उदरोर्द्ध-

प्रदेशमें इस तरह जकड़ जाता है कि ऐसा मालूम होता है, मानो साँस रुक जायगी। वमनके बाद रोगी मिचली रोकनेके लिये कुछ खाना चाहता है। ऐसा अनुभव होता है, कि मानो पाकाशयमें कोई जीवित पदार्थ उछल-कूद रहा है (कोकस, कैल्के-फास, एरण्डो, थूजा)। धूम्रपानके बाद हिचकी आती है (पल्स; तम्बाकू खानेकी वजहसे हिचकी—ऐण्टि-क्रूड, कैलेण्डियु, इग्ने)।

अन्त्राशय।—ऐसा मालूम होता है, मानो स्तनके स्थानसे यकृतकी ओर आँचकी लौ जा रही है। यकृत निष्क्रिय, शरीरकी त्वचा पीली आभा लिये, अन्त्रशूल। प्लीहा प्रदेशमें तेज़ शलाका वेधनेकी तरह दर्द। बाएँ कोखमें दर्द; वृद्धि—खाँसनेपर (ऐम्ब्रा; घटना—दबानेपर और बाईं करवट सोनेपर—ब्राई; दबानेपर और बाईं करवट सोनेपर दर्दका बढ़ना—काकुलस; दाहिने पार्श्वमें—चेलिडो)। सन्ध्याके समय उदर आध्मान वायुसे भर जाता है, जरायु द्वार खुला रहनेके कारण स्त्री योनिसे वायु निकलना (ब्रोम, लाई, ऐ-फास, ओरिगेनम)। उदरकी अनमनीय स्फीति (कड़ी सूजन) (कुपारी, थूजा); तलपेटके दाहिने पार्श्वसे बाएँ पार्श्व और वहाँसे मलान्त्रतक हटनेवाला छेदनेकी तरह दर्द। उदरमें स्पर्श सहन नहीं होता, भोजन करनेपर बढ़ जाता है। ऐसा अनुभव होनेके बाद कि वक्षके बीचसे अन्त्राशयमें गर्म पानी गिर रहा है, पतले दस्त आने लगते हैं।

मलान्त्र और मल।—नयी सर्दीके बाद अतिसार (स्क्रियुला, सैम्बुक), इसके साथ ही वक्षमें दर्द और खाँसी; उदरामय या पतले दस्त, मल पतला सारमय या चमकीला पीली आभा लिये, अजीर्ण, पानीकी तरह; पतले दस्तकी बीमारीमें ऊपरी और निचले मुँहसे आध्मान वायु निकला करता है (ऐलो); आध्मान वायु निकलनेपर खाँसी बहुत घट जाया करती है, वेग रहनेपर भी पाखाना नहीं होता, पर ऐसा मालूम होता है कि मलान्त्रके निचले अंशमें मानो एक ढेला अड़ा हुआ है और केवल बदबूदार आध्मान निकला करता है। पर्यायक्रमसे कब्जियत और पतले दस्त होने लगते हैं।

पेशाब।—कामला रोगमें पेशाब परिमाणमें बहुत थोड़ा और घोर लाल (टेरिब), रख छोड़नेपर वहाँ कुछ लाल तली जम जाती है। रातमें बार-बार बहुत ज्यादा और साफ़ पानीकी तरह पेशाब हुआ करता है (डिफनो, ग्लोन, ऐ-फास, नेट्र-म्यूर, इयुजिनिया-जैम्ब, स्क्रियुला, लैक-कैन)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—जिन स्त्रियोंकी रजःस्राव होना बन्द हो गया हो, उनके स्वास्थ्यमें नाना प्रकारके विकार—रह-रहकर उत्ताप पैदा हो जाना (ऐ-सल्फ, ऐमिल, ग्लोन, लैके, मैंगेनम, सिपि)। त्वचा क्षय करनेवाला, कषाय, बदबूदार प्रदरका स्राव (सैबाइना, सिपिया)। हाथ और तलवेमें जलन (लैके, सल्फ), रोगिनी शरीरका वस्त्र दूर फेंक देती है; दोनों स्तनोंमें बहुत दर्द होता है और वे फूल उठते हैं (कोना, हैलोन)—(जब ऊपर लिखी अवस्थामें लैकेसिस और सलफरसे भरपूर लाभ नहीं दिखाई देता—एच० सी० एलेन)। तलपेटमें दर्द, मानो ऋतु होनेके पूर्व लक्षण (ऐक्टिया, ऐलो, कोलोफिल, पल्स)। ऋतु, असमयमें होता है; रक्त काला निकलता है या ठीक समयपर होता है; स्राव बदबूदार चमकीला लाल या मांस खण्डकी तरह थक्का-थक्का जमा हुआ खून निकलता है (जिङ्कम, स्ट्रैमोन, ऐपोसाइनम, लैकेसिस)। अन्तके समय खून और भी गाढ़ा हो जाता है, पर बदबू पहलेकी अपेक्षा कम होती है, या स्राव बहुत कम हुआ करता है। सर-दर्द माथेके पिछले भागसे ललाटमें चला जाता है और ऐसा मालूम होता है मानो माथा कटा जाता है (सिपिया) और चेहरा लाल और गर्म हो जाता है। जरायु मुख जखम-भरा और उससे बदबू और त्वचा क्षय करनेवाला प्रदर-स्राव निकलता है। स्तन दोनोंमें तेज़ सलाई गड़नेकी तरह दर्द। दाहिने स्तन-वृन्तके नीचे छूनेपर त्वचा क्षय हो जानेकी तरह दर्द और स्तन वृन्त भी ऐसे मालूम होते हैं, मानो जखम हो गया है।

श्वास-यन्त्र ।—गलेमें अकसर सूखापन अनुभव होता है। स्वरनलीमें सूजनके साथ स्वरलोप। विकार-युक्त फेफड़ेके प्रदाह रोगमें साँस तेज़ और जोर लगाकर, बहुत श्वास कष्ट, दोनों गाल और हाथ नीली आभा लिये और नाड़ी कड़ी, नये खिले फूल आदिकी रेणु सूंघनेकी वजहसे सर्दीके बाद श्वास-रोग, कोई तेज़ गन्ध सूंघनेपर बढ़ जाता है। यन्त्रणाजनक, लम्बा-लम्बा और फस-फस शब्द करनेवाला श्वास-प्रश्वास (डिजिट, ग्लोन,, जेल्स, इग्ने)। बार-बार दीर्घ निश्वास ग्रहण करनेकी आकांक्षा, परन्तु उससे वक्षका कसावटका भाव और छातीका जकड़ जाना और भी बढ़ जाता है और वक्षमें फाड़नेकी तरह तकलीफ़ पैदा हो जाती है, खासकर दाहिने पार्श्वमें, सूखी कलेजा फाड़ डालनेवाली खाँसी, कण्ठमें खुजलीकी वजहसे (फास, रियुमेक्स, सिपिया, हिपर), इसके साथ ही कण्ठ सूखा मालूम होना; कण्ठके भीतरसे

वक्षोस्थिके पीछेवाले भागमें होकर नीचेकी ओर फैलनेवाली सुरसुरी अनुभव होना ; सन्ध्याके बाद सोनेपर खाँसी बढ़ जाती है। सूखी खाँसी, रातमें रोगीकी नींद खुल जाती है और जबतक खाटपर उठ नहीं बैठता और डकारसे तथा अधोमार्गसे वायु नहीं त्यागता, तबतक नहीं घटती है। सीमाबद्ध गण्डरोग ; रातमें पसीना और उदरामय ; वक्षमें दर्द और पानीकी तरह सर्दीके स्रावके साथ प्रचण्ड खाँसी (युफ्रे, सिपा, स्क्वियुला, सेनेगा)। वक्षके ऊपरी अंशमें लगातार भार और दबाव मालूम होनेके साथ श्वास-कष्ट। वक्षोस्थि और दाहिने स्तन-वृन्तके मध्यवाले अंशकी पेशीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। वक्षोस्थिके पीछे और वक्षके दाहिने अंशमें तेज़ दर्द और जलन पैदा करनेवाला उत्ताप मालूम होता है और इस उत्तापकी लहर दिनके ४ बजनेके समय यकृतकी ओर फैलती है। दाहिने वक्षमें, स्तनवृन्तके निकट, तेज़ शलाका बेधनेकी तरह दर्द अनुभव हुआ करता है (ब्राई, रस)। हूप खाँसी आराम होने बाद प्रतिबार सर्दी लगते ही फिर पैदा होनेवाली प्रचण्ड खाँसी, बहुव्यापक सर्दीके बोखारके बाद तेज़ खाँसी। प्रचण्ड साँय-साँय शब्द करनेवाली घड़-घड़ खाँसी—बलगम बड़ी तकलीफ़से निकलता है। बलगम गाढ़ा और डोरीकी तरह, गोंदकी तरह, लोहेके जंगकी तरहके रङ्गका (ऐण्टि-टार्ट, आयोड, लाई, फास)। बहुत श्वास-कष्ट मिला, फुसफुस प्रदाहमें फेफड़ेकी यकृद्भाव प्राप्ति होनेपर। दाहिने कन्धे तक फैल जानेवाला दर्द, बड़े कष्टसे रोगी अपना दाहिना हाथ माथेतक उठा सकता है। तीसरे पहर दोनों स्तनोंके बीचमें, विशेषकर दाहिने पार्श्वमें, बहुत जलन मालूम होती है। फेफड़ेका प्रदाह ; वक्ष और फेफड़ेमें जलन और सुई गड़नेकी तरह दर्द, रोगी चित होकर पड़ा रहता है (चित लेटनेपर घटना—ऐलो, ऐनाक, ब्राई, कैल्के, कैलि-कार्ब, लाइकोपोड, स्टैनम); कफके टुकड़े बहुत जमे और डोरीकी तरह बड़ी तकलीफ़से निकलते हैं और उनका रङ्ग लोहेके जंगकी तरह होता है ; नाड़ी तेज़ और सूक्ष्म ; मुखमण्डल और प्रत्यंग आदि ठण्डे या हाथ और पैरमें जलन भरा उत्ताप, दोनों गाल तमतमाये और उनपर सीमा-बद्ध लाली और जलन ; वृद्धि—तीसरे पहर या सन्ध्याके आरम्भके समय ; बहुत श्वास-कष्ट पैदा हो जाया करता है। मुँहसे निकली हुई हवा और बलगममें बहुत बदबू रहती है, रोगी स्वयं भी उस बदबूको अनुभव करता है (ऐ-नाई, क्रोकस, कैप्स, कैलि-फास, हिपर, स्क्वियुला, बैप्टि, स्टैनम)। खाँसीके पहले और बाद

अधोमार्गसे वायु निकला करता है ; खाँसीके बाद उत्ताप अनुभव होता है और इसके बाद ही जम्हाई आया करती हैं (ऐनाका, नक्स-वोम, विशेषकर बच्चोंको—ऐण्टिम-टार्ट ; औंघाई आती है और जम्हाई आया करती हैं—ऐनाक) ; चेहरेपर सीमाबद्ध गण्ड-रोग, उदरामय, रातमें पसीना और दोनों पैरोंमें दर्द प्रभृति लक्षण भी मौजूद रहते हैं ।

हृत्पिण्ड ।—हृदयके अगले भागके नीचे, तकलीफ़ देनेवाला सलाई गड़नेकी तरह दर्द या ऐसा दर्द अनुभूत होता है, मानो कुचला जा रहा है । सन्धियोंके वातमें बाहरी प्रयोग द्वारा भीतर दबा हुआ रोग हृत्पिण्डपर आक्रमण करता है (कोलचिकम)। त्वचा सूखी और शरीरमें दाहके साथ धमनी आदिमें खूनका दौरान और जोर-जोरसे कलेजा धड़कना (ऐमिल, ग्लोन, फाइजस)। दिमाग, होश न रहना वगैरहके साथ हृत्पिण्डकी और नाड़ीकी अनियमित क्रिया ।

प्रत्यङ्गादि ।—गर्दनका पिछला भाग, कन्धा और बाँहमें वातका दर्द—रातमें बढ़ना । बायें अंसफलकके दाहिने प्रान्तमें धीमा दर्द मालूम होना, श्वास-प्रश्वाससे बढ़ जाता है । भारी चीज़ उठानेकी वजहसे नितम्ब और कटिवात या पीठकी वृहत्-पेशीमें वातका दर्द । त्रिकास्थिमें दर्द—झुकनेपर घट जाता है । पीठमें ऊपरसे नीचेकी ओरकी सभी पेशियोंमें स्पर्श सहन नहीं होता, दर्द इधर-उधर हटनेवाला और श्वास लेनेके समय ज्यादा मालूम होता है । आर्त्तव-स्राव आरम्भ होनेके पहले बगलमें खुजलाहट पैदा हो जाना । दाहिने कन्धे और बाँहमें वातके कारण दर्द (फेरम, फाइटो, ऐ-कार्बल) ; वृद्धि—रातमें (फाइटो)। शय्यामें करवट लेनेपर (ब्राई, पल्स, लाइ)। दोनों हाथोंकी नखकी जड़ जखम-भरी (नेट्र-सल्फ)। बायें उरु-शिखरमें और दाहिने उरुके भीतरकी ओर वातकी वजहसे दर्द । कभी उरुमें ऐसा दर्द होता है, मानो चोट लग गयी है और कभी स्तनमें दर्द और दबाव मालूम हुआ करता है । चारों ओर हटनेवाला दर्द, बढ़ना—रातमें । दोनों जानु अकड़े मालूम होते हैं । जो अस्थियाँ केवल पतली त्वचासे ढँकी है, उन सब अस्थियोंमें दर्द (रस-वेन), पर किसी तरहका दर्द सन्धिमें नहीं मालूम होता । रोगवाली जगह छूते ही दर्द गायब हो जाता है, परन्तु फिर उसी जगह पैदा हो जाया करता है ।

तलवा (और तलहत्थी) में मानो आग छू गयी है, खासकर सोनेके समय (सल्फ़, सिपिया, कैल्क, लाइ, मैग्नि, मैंगी, फाइटो, पल्स, सिलि), सभी सन्धियोंमें वात हो जाता है और रोगवाली सन्धियाँ सब फल उठती हैं और उनमें रह-रहकर दर्द पैदा हो जाता है।

सार्वाङ्गिक।—दाहिना बाँह अवश, रोगीको हमेशा बहुत आलस्य और शिथिलता मालूम हुआ करती है—हिलने या मानसिक परिश्रम करनेकी बिलकुल ही इच्छा नहीं होती। जलीय हवामें यह अवस्था बढ़ जाया करती है। वायु सेवनके लिये टहलनेके समय दोनों पैर कमजोर हो जाते हैं। रक्त-संचालन क्रिया बहुत धीमी होती है, प्रत्यंग सब उत्ताप-रहित, नीलिमा लिये मूर्त्ति और जलवायुके परिवर्त्तनसे तबियत खराब मालूम होती है। शिराएँ सब फूली और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता। रह-रहकर धमनियोंमें खूनका तेज़ दौरान होता है। स्वरनली, नासारन्ध्र और जरायुमें अर्बुद होनेकी प्रकृति। बहुत गड़बड़ी और ऐसा मालूम होना कि उठनेकी शक्ति बिलकुल ही नहीं है, विशेषकर सवेरे नींद खुलनेपर। ऐसा अनुभव होता है, मानो वक्षसे उदरमें गर्म पानी गिर रहा है। कभी-कभी शरीरमें उत्ताप पैदा हो जानेकी वजहसे शरीरकी त्वचा चुनचुनाया करती है और इसी वजहसे बहुत बेचैनी मालूम होती है (कर्णास)। एक दर्द गर्दनके पिछले भागसे आरम्भ होकर, माथेके ऊपर होता हुआ ललाटमें आ पहुँचता है (अकेला यही लक्षण पैदा हो या अन्य लक्षणोंके साथ मिला रहे तो "सैङ्गुइनेरिया" का यह अव्यर्थ-सिद्धिप्रद लक्षण माना जाता है—एच० एन० गार्नेसी)।

त्वचा।—मिचली पैदा होनेके पहले उत्ताप और आमवात पैदा हो जाया करता है। बहुत दिनोंका दुरारोग्य और मोटा और कड़े मांसके सिरेवाला जखम—इस जखमसे रस-स्राव होता है; मैले मांसांकुरसे भरा और उसका प्रान्त भाग सूखा और ऐसा मालूम होता है, कि ऊँचा नीचा काटा गया है (हाइड्रैस्ट, हैमा)। सविराम ज्वरके प्रभावके समय कामला रोगमें (सविराम ज्वराधिकारमें क्विनाइनके अपव्यवहारकी वजहसे कामला—आर्स), रोज़ आनेवाले या आन्त्रिक अथवा पित्ताश्रित ज्वरमें (हाइड्रैस्ट) सविराम ज्वराधिकारमें शरीरकी त्वचा पीली पड़ जाती है (डायडेमा, इलैट। स्वल्प-विराम या अविराम ज्वरमें (सल्फ) और यकृतमें दर्द रहनेपर (पोलिपो)।

फेफड़ेके प्रदाहमें (ऐण्टि-टार्ट), दोनों आँखोंके सफेद अंशतक हरे हो जाते हैं। स्वल्प रजवाली युवतियोंमें चेहरेपर नाना प्रकारके व्रण आदि निकलना।

ज्वराधिकारमें ।—ज्वालाजनक सन्ताप और शीत, कम्प पर्यायक्रमसे पैदा हुआ करता है। उत्ताप माथेसे बहुत तेजीसे पाकाशयमें चला जाता है। रह-रहकर उत्ताप पैदा होकर समूचा शरीर मानो अग्निमय हो उठता है (कैल्कि-कार्ब)। शीतावस्थामें सर-दर्द, मिचली और थोड़ा भी हिलने-डोलनेपर बायें पृष्ठ-फलकके दाहिने प्रान्तमें दर्द अनुभूत होता है। पीठमें सिहरावन मालूम होती है, विशेषकर सन्ध्याके बाद शय्यामें शायित अवस्थामें। तीसरे पहर ज्वर, इसके बाद गालको एक सीमावद्ध जगह लाल हो जाना; रोज़ दिनके २ से ३ बजेके बीचमें ज्वर आता है। रह-रहकर शरीर गर्म हो जाता है; ज्वरके समय रोगी प्रलाप बकता है। थोड़ा-सा जाड़ा लगकर तेज़ बोखार पैदा हो जाता है; सरमें बहुत दर्द पैदा होता है और यहाँतक कि विकारतक हो जाता है। बहुत ज्यादा ठण्डा पसीना। सर-दर्दके साथ सान्निपातिक ज्वर।

वृद्धि ।—रोगी अंश एकाएक हिलानेपर; भारी चीज़ उठानेपर, सोनेपर (खाँसी); खाँसनेपर; माथा झुकाकर सोनेपर; दाहिनी करवट सोनेपर; तेजीसे माथा घुमानेपर और ऊपरकी ओर देखनेपर; शय्यामें करवट बदलनेके समय; झुकनेपर; व्यायामके बाद भोजन करनेपर; उपवास किये रहनेपर; कोई चीज़ निगलनेके समय; रातमें; ठण्डी हवा लगनेपर; रोशनी और ठण्डे घरमें रहनेके समय; दाहिने अङ्गमें प्रकोपकी अधिकता रहती है।

घटना ।—स्थिर होकर अन्धेरे घरमें सोये रहनेपर; जोरसे दबानेपर; घुटने टेककर जोरसे जमीनमें माथा गड़ानेपर; बाईं करवट सोनेपर; शय्यामें उठकर बैठ जाता है और अधोमुखसे वायु निकलनेपर; नींद आने बाद; डकार आनेपर और निर्मल वायु लगनेपर।

सम्बन्ध ।—"सैंगुइनेरिया" अफ़ीमके नशाका प्रतिविष है। "वेलेडोना" के बाद इसका प्रयोग करनेपर इससे बहुत लाभ होता दिखाई देता है।

सदृश ।—सर-दर्दके सम्बन्धमें—बेल, आइरिस, मिलिलोट। जिनका आर्त्तव-स्राव बन्द हो गया है, उनको नाना प्रकारकी बीमारियोंमें—लाइकोपोड, सल्फ़। कभी-कभी पैदा होनेवाले वायुनलीभुज-प्रदाहमें या फेफड़ेमें प्रदाह

पैदा होनेकी सम्भावनामें—चेलिडो, फास, सल्फ, वेरेट-विर (एच० सी० ऐलेन)। अधिककर—स्क्रियुला, चेलिडो, स्पाइजि, टैबाक, ऐण्टि-टार्ट, कैप्स, ब्राई, हिपर, लाई, मर्क, नेट्रम-म्यूर, रियुमेक्स, स्पंजिया, स्टैनम, साइलिसिया, सिपिया, इयुजिनिया-जेम्बस, वेलिस, कैल्के, सोरिन, रस-वेन, सेबाड, फाइटो, सेङ्गिविननाई, टियुक्रि, फेरम। थकावटके कारण सर-दर्द, बहुत शारीरिक या मानसिक परिश्रमके कारण होनेपर—एपिजिया ; पाकाशयमें विकारकी वजहसे सर-दर्द यदि विश्रामसे बढ़े और शरीर हिलाने, मलने या दबानेपर घटे—इण्डिगो (एच० सी० ऐलेन)।

तुलनीय।—दाहिने हाथमें वातका दर्द—मैग-कार्ब। सर-दर्द—दाहिनी आँखमें—स्पाइजि। बाईं आँखमें—साइलि, सिपिया। सर-दर्दके बाद पेशाब—इग्ने, जेल्स। आर्त्तव रोगकी वजहसे—सिपिया। गन्धसे मूर्च्छाभाव—फास, इग्ने, जेल्स। सामयिक सर-दर्द—आइरिस। फेफड़ेका प्रदाह—विरेट्रम-विर, फास, ऐण्टि-टार्ट, सल्फ। उदरमें मानो कोई जीवित पदार्थ है—क्रोकस। जरायुसे वायु निकलना—लाइकोपोड, ब्रोविस्टा। यकृतकी खाँसी (प्लीहाकी खाँसी—सिला)। दाहिनी ओरके उपसर्ग बाईं ओर जाना—लाइकोपोड, चेलिडो।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३० शततमिक क्रम।

सैंग्विनेरिनम नाइट्रिकम

(SANGUINARINUM NITRICUM)

दूसरा नाम।—नाइट्रेट आफ सेङ्गिविनेरिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—ग्रन्थियोंका बढ़ना ; दमा ; आँतोंमें गड़गड़ाहट ; श्वासनली-प्रदाह ; सर्दी ; खाँसी ; बहरापन ; सरमें दर्द ; स्वरनली-प्रदाह ; पैनियम ; कर्णमूल ; गर्दनका अकड़ना ; गलेका जख्म ; कर्णपटह-प्रदाह।

उपयोगिता और आभास।— सैङ्गिविनेरियाकी सर्दीके लक्षण सब सैङ्गिविनेरिनममें और भी उग्र रूपसे प्रकट होते हैं और सैङ्गिविनेरियाकी तरह यह भी नाक, आँख, कण्ठनली, वायु-मार्ग प्रभृतिपर आक्रमण करता है। नयी सर्दी, बहुत अधिक आँसूका स्राव, आँख और माथेमें दर्द। माथेकी त्वचाको छुआ न जाना, नासारंध्र और समूचो देहमें जलन, इसके प्रकृतिगत क्रियाफल हैं। इसके रोगीको देहमें प्रायः सभी जगह एक तरहका रूच भाव मालूम हुआ करता है। माथा ऐसा मालूम होता है, मानो सुन्न और भारी हो गया है; ऐसा अनुभव होना कि बहुत अधिक बलगम इकट्ठा होनेकी वजहसे नाकका छेद रुक गया है और इसी वजहसे रातमें मुख-विवर सूखा रहता है और बार-बार नींद खुल जाती है। वक्षोस्थिके बीचवाले अंशके पीछे कफ़ सञ्चय होनेकी वजहसे ऐसा मालूम होता है, कि साँस रुक जायगी और वायुमार्ग सब ऐसा मालूम होता है कि गाढ़े और जमे हुए श्लेष्मा या पीवसे भरा हुआ है। वक्षोस्थिके पीछे उत्ताप और ऐसा अनुभव होना, मानो चिपक गया है—यह एक अत्यन्त सिद्धिप्रद लक्षण है। बहुत ज्यादा परिमाणमें मीठे स्वादवाला पतला फेन-भरा और गोंदकी तरह बलगम निकला करता है। सर्दी ज्वरके अधिकांश लक्षण, यहाँतक कि स्वाद-शक्तिका विकार या लोपतक हो जाया करता है। रोगीको अपनी नाकमें ऐसी गन्ध आती है, मानो न जाने कितनी मूली खा ली है—यह भी इसका एक प्रकृतिगत और निर्णायक लक्षण है। रोगीके सारे शरीरमें इस तरहकी एक बेचैनी मालूम होती है, मानो न जाने कितनी सर्दी लग गयी है। खासकर रातके ८॥ बजनेके समय और इसीलिये बार-बार नींद खुल जाती है; सवेरे छः बजनेके समय वह पसीनेसे भींजकर जाग उठता है और उसे बहुत आराम मालूम होता है।

लक्षणावली

मस्तक।—खब्तकी तरह स्वभाव—जरासेमें ही क्रोधित हो जाता है। रोगीको रातमें बहुत बेचैनी मालूम होती है (पल्स, कास्टि, साइलीस)। माथा भरा और भारी मालूम होनेकी वजहसे सवेरे नींद खुल जाती है (ऐसा-फिट); घटना—नाकसे गाढ़ा, पीला श्लेष्मा-स्राव होनेके बाद (कैलि-बाई, लेके, स्टिक्टा; रक्त-स्राव होनेपर घटना—ब्रूफो, फेरम-फास, मैग-सल्फ, मिलिलोट, रेफेनस)। ललाट और आँखमें दर्द—नाकसे जलीय और जमा

गोंदकी तरह मिश्रित, निर्मल, पीली आभा लिये और कुछ खून-मिला स्राव होने बाद थोड़ा घट जाया करता है; ललाट और नखकी जड़में दर्द हुआ करता है; ललाटमें उत्ताप अनुभव होना (जेल्स, नक्स-मस्र) : घटना—गर्म पानीसे ललाट धोनेपर (केल्कि-फास, इण्डियम, स्पाई)। ललाटमें, चक्षु-गोलकके ऊपर और नासामूल भरा और भारी मालूम होता है (हैमा, केलि-कार्ब, स्टिक्टा)। सरमें हलका दर्द और समूचे माथे और माथेकी त्वचामें स्पर्श सहन नहीं होना।

आँख।—दोनों आँखें फूली, लाल और छूनेपर उनमें दर्द होता है। दाहिनी आँखमें इस तरहकी स्पर्श-कातरता मालूम होती है, मानो जखम हो गया है और उसके भीतरसे आँखोंतक दर्द हुआ करता है। बाईं आँख और भौंहोंमें दर्द हुआ करता है और इसी कारणसे माथेके बायें पार्श्वतक इसी तरहका दर्द हुआ करता है। आँखमें भयानक उत्ताप और जलन मालूम होती है। बहुत ज्यादा आँसूका स्राव—गाल होकर आँसू बहा करता है। चक्षुगोलकमें जलन; घटना—दबाव मालूम होनेके साथ और अन्तमें कुछ देरतक दोनों आँखके गोलकोंमें पूर्ण भाव पैदा करनेवाला तथा उनमें स्पर्श सहन नहीं हुआ करता; साधारणतः नयी सर्दी होनेपर जैसा हुआ करता है। पलक और योजक-त्वचा लाल हो जाती है। बायीं आँखके दाहिने कोनेमें बहुत उत्तेजना और जलन मालूम होनेके साथ योजक त्वचा भी लाल हो जाती है और छूनेपर दर्द होता है। अस्पष्ट दृष्टि—मानो एक छेदभरे वस्त्रके भीतरसे देख रहा है या मानो आँखके ऊपर सूक्ष्म श्लेष्मामय प्रलेप लगा हुआ है (केल्के, कास्टि, ड्रोसेरा, क्रियो, नेट्र-म्यूर, सिपिया)।

नाक।—रोगीको मालूम होता है, मानो उसने सूली खायी है और मानो उसीकी झाँझ लगनेके कारण आँखोंसे बहुत ज्यादा आँसूका स्राव हो रहा है; ऐसा होनेके बाद ही मानो आँखके ऊपर एक सूक्ष्म श्लेष्माका लेप जा पड़ता है और वह दृष्टिको अस्पष्ट बना डालता है (युफ्रे)। नासारन्ध्र, ललाट और वायुमार्ग सब सूखे, उनकी त्वचा क्षय हुई और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता या बहुत दर्द हुआ करता है। नासारंध्रमें जलन (एरम-ट्राइ) आरम्भ होकर ललाटके भीतरतक चली जाती है। दाहिनी नाकसे लगातार बूंद-बूंद पानी गिरा करता है। दोनों रंध्रोंसे पानीकी तरह श्लेष्मा निकलता

है। रोज ५-६ मिनटका अन्तर देकर छींक आया करती है और बहुत ज्यादा आँसुओंका स्राव होता है (सिपा, इयुफ्रे, स्क्रियुला)। दोनों रंध्रोंमें जलन मालूम हुआ करती है। बहुत अधिक श्लेष्मा सञ्चित होकर नासा-रंध्र और वायुमार्ग सब रुक जाते हैं। पश्चान्नासा (नाकका पिछला छेद) से अधिक स्राव हुआ करता है। नासा रोग या रंध्रमें झिल्लीमय अर्बुद (कैडमियम-सल्फ, कैल्को-फास, ऐ-नाई, कैलि-बाई, फास, सोरिन, सेङ्गिविन, टियुक्रि, थूजा)। बार-बार छींक आनेके साथ नाकसे लगातार पानीका स्राव, दृष्टि अस्पष्ट, भीतरी कोना लाल हो उठता है और क्षय हुई त्वचाकी तरह दर्द मालूम होता है और सूजन मालूम होती है; धीरे-धीरे, नाक, आँख, मुख-विवर, कण्ठका भीतरी भाग वगैरहमें बहुत जलन पैदा हो जाती है और उसके भीतरसे बहुत ज्यादा श्लेष्माका स्राव हुआ करता है; पर प्यास नहीं रहती (सिपा, इयुफ्रेशियाके साथ तुलनीय)।

मुख-विवर।—ऐसी जलन मानो जीभकी त्वचा क्षय हो गयी है या मानो जीभ जल गयी है (आइरिस, सिपा, साइमेक्स, लाई, फाइटो, हाइड्रेस्ट, वेरेट-विर)। मुँहमें और कानके भीतर रुखड़ापन और सूखापन मालूम होता है (कैल्के, सिपा, मर्क-सोल, नक्स-मस, सेबाड, स्टिक्टा)। मुँहमें जलन पैदा करनेवाला उत्ताप मालूम होना, मानो मिर्चकी बुकनी लग गयी है (आइरिस, नेट्र-सल्फ, ड्रोसेरा, मेजिर)। नासारंध्र सङ्कोचनकी वजहसे मुँह फाड़कर साँस लेने छोड़नेकी क्रिया घटनेके कारण मुँह सूख जाता है और इसी वजहसे बार-बार नींद खुल जाती है (सेम्बुकस)। बार-बार छींक और ललाटमें जलनके साथ मुँहके भीतरसे श्लेष्मा और लारका स्राव अधिक हुआ करता है। जीभ, तालु और दोनों गल-ग्रन्थियाँ और तालुमूल सूखा, उसकी त्वचा क्षय हुई और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता।

गलेके भीतर।—मुँह और गलेके भीतर सूखापन और रुखड़ापन और कण्ठनाली संकुचित मालूम होती है। दाहिनी गल-ग्रन्थि जखम-भरी, रुखड़ी, उसकी त्वचा क्षय हुई और उसमें दर्द हुआ करता है और लार आदि निगलनेमें भी तकलीफ होती है। कण्ठके भीतर अच्छी तरह देखनेपर दिखाई देता है, कि उसका कुछ अंश लाल और उत्तेजना भरा हो गया है। सवेरे गलेके भीतरसे बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा, पीला और मीठा श्लेष्मा निकला

करता है और दिनभर इसी तरह निकला करता है (कैल्के, फेरम-फास, स्टैनम, स्क्वियुला)। कण्ठ और वायुनलीकी शाखामें बहुत ज्यादा कफ सञ्चित हुआ करता है। दाहिनी गलग्रन्थिमें बहुत दर्द, रुखड़ापन और क्षय हुई त्वचाकी तरह मालूम होता है। कोई पदार्थ निगलनेके समय दर्द हुआ करता है; कर्ण पश्चान्नली (कानके पीछेवाली नली) रुक जाती है। शब्दका प्रभेद समझमें नहीं आता और दाहिने कानमें भों-भों आवाज़ हुआ करती है। अन्ननली और पाकस्थलीमें जलन मालूम होती है।

पाकाशय आदि ।—तीता स्वाद। सभी द्रव्य सूखे, स्वादहीन, काष्ठ-फलककी तरह मालूम होते हैं। मुँहमें लेनेपर मुँह और गलेमें सूखापन, उत्ताप और जखमकी तरहका भाव दूर हो जाता है। रसीली चीजें खाना चाहता है, पर वे तेज़ झाल भरी न हो। रोगी यदि सवेरेसे कुछ नहीं भी खाता है तो भी रातके दस बजनेके समय सड़ी बदबूदार वायुका डकार आया करता है, मानो यह पतले दस्त आनेका पूर्व लक्षण हैं। रातमें उदरमें गड़गड़ाहट और छेदनेकी तरह दर्द मानो मल या वायु निकलेगा। रातमें घण्टे-घण्टेपर पेशाब होता है। पेशाबमें सफेद तली जमती है।

श्वासयन्त्र ।—सभी वायु-मार्ग ऐसे मालूम होते हैं, मानो जमे हुए गोंदकी तरह श्लेष्मा या पीवसे लिपटा हुआ है। नासा-रंध्र, ललाटका भीतरी भाग दोनों आँखें, कण्ठका भीतरी भाग, वायुनली शाखा, प्रभृतिमें जलन होकर नाकसे पानीकी तरह और आँखसे लगातार आँसू बहा करता है, पानीकी तरह सर्दीका स्राव रोगमें नाकका पिछला छेद और वायुनलीमें जलन हुआ करती है, इसके बाद ही वक्षोस्थिके पीछे खींचन और ऐसा भाव मानो जकड़ गया है। जलन और बलगम सञ्चय हुआ करता है और कण्ठ तथा वायुनली शाखामें श्लेष्मा सञ्चित हुआ करता है। स्वरनली प्रदाह, स्वरभङ्ग और सूखी खोखली खाँसी। दोनों वायुनली शाखाओंके संयोग स्थानपर उत्तेजना पैदा होकर खाँसी और खून मिला श्लेष्मामय बलगम निकलता है। वक्षोस्थिके पीछे जखम हो जानेकी तरह भाव और प्रचण्ड आक्षेपिक शरीरको हिलानेवाली खाँसी। वक्षमें कसावटका भाव होनेकी वजहसे खुसखुसी, वक्ष-विदारक खाँसी। कर्कश शब्द करनेवाली खाँसीके बाद कण्ठ और वक्षमें जखम हो जानेकी तरह अनुभव होना और तालुमूलमें ऐसा मालूम होना मानो झिल्ली

खरोंच ली गयी हैं। सवेरे शय्यासे उठनेपर थोड़ा भी इधर-उधर करनेपर खाँसी आकर बहुत ज्यादा परिमाणमें जमा हुआ हरी आभा लिये और मीठा कफ़ निकला करता है। क्रमसे खाँसी पहलेकी अपेक्षा गभीर और घड़-घड़ शब्द करनेवाली होती है और दबाव वक्षके भीतरसे दोनों फेफड़ोंमें जाकर श्वासरोधका भाव बढ़ा देता है। रोगी निर्मल वायु सेवनके लिये लालायित रहता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—सैंगुइनेरिया, सिपा, इयुफ्रे, रियुमेक्स, आइरिस, सैबाड, वेरेट-विर, हिपर, फास, स्कियुला, स्ट्रैनम, एरम-ट्राई।

तुलनीय।—नाकके भीतर जलन—एरम-ट्राई। कड़ा बलगम—केलि-बाई। मीठा बलगम—स्टैनम।

शक्ति।—३रे दशमिक विचूर्णसे ६ठा शततमिक क्रम।

सैंग्विनेरियम टार्टरिकम

(SANGUINARIUM TARTARICUM)

दूसरा नाम।—टाइट्रेट-आफ सैंग्विनेरिया, सैंगुइनारिम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—शरीरकी त्वचा ठण्डी, ठण्डा पसीना, चेहरा मानो हड्डी-हड्डी, आँखकी पुतलीका अस्वाभाविक फैल जाना, सरमें चक्कर, मिचली, चमकीला हरे रङ्गका पित्त मिश्रित मल लक्षणमें लाभदायक है।

शक्ति—२x—१२x।

सैङ्गुइसुगा

(SANGUISUGA)

परिचय ।—एक तरहकी जोंक ।

प्रस्तुत प्रक्रिया ।—जीवित जोंकसे विचूर्णके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—जोंक लगनेपर बहुत अधिक रक्त निकलता है। जोंक केवल खून पोकर ही शान्त नहीं होती, बल्कि एक तरहके विषैले पदार्थसे रक्तको पतला और जलीय कर देती है। यह खून जम नहीं सकता। इसी वजहसे इस ढङ्गका रक्त-स्राव होता है।

जिन रोगियोंके पाकाशय, आँत या मलान्त्रकी बीमारीमें, मलद्वारसे बहुत रक्तस्राव होता है या किसी दूसरे स्थानसे रक्तस्राव होता है और चुनी हुई दवासे भी रक्तस्राव नहीं रुकता। ऐसे स्थानपर सैंगुइसुगा मन्त्र-शक्तिकी तरह काम करता है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

सैनिक्युला

(SANICULA)

दूसरा नाम ।—सैनिकिला ऐकीवा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अमेरिकाके एक धातुमय झरनेके पानीसे तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—ऋतु कम होना, दमा ; मधुमक्खीका डंक मारना ; फोड़ेका सहजमें न पकना ; आँतोंमें गड़गड़ाहट ; मसा ; आँखोंका प्रदाह ; कब्जियत (सर्दी लगना) ; श्वेत अंशका जखम ; सर्दी ; खाँसी ; माथेमें रूसी ; कमजोरी ; बहुमूत्र ; अतिसार ; अजीर्ण ; गर्भावस्थामें श्लेष्मा ; खाँसी ; दुबलापन ; शय्यामें अनजानमें पेशाब हो

जाना; पैरमें पसीना; जखम होना; पानी लगना; पाकाशयका प्रदाह; मसूढ़ेमें फोड़े; सर-दर्द; सविराम ज्वर; खुजली; स्तनका दूध पतला; मुँहमें जखम; अकौता; श्वेत-प्रदर; यकृतमें दर्द; कटिवात; विषाद-वायु; स्नायु-शूल; सुन्न हो जाना; रातमें डरना; आँखोंका प्रदाह; जरायु-मुखकी शिथिलता; नकसीर; बहुत पसीना; मोटे पेटका लड़का; गर्भावस्थामें वमन; बाँहका वात; आमवात; शीताद; अस्थि-विकार; गलगण्ड; जीभमें दादकी तरह उद्भेद; जलन; दाँतमें दर्द; जरायुका अपने स्थानसे हटना; जरायुमें जखम; जरायुका अर्बुद; दूध या पानीका वमन; कलाईमें फोड़े।

उपयोगिता और आभास।—प्रमेह-विष दूषित मनुष्योंकी बहुत-सी बीमारियोंमें यह बहुत लाभदायक है। आगे लिखे इसके कई लक्षणोंपर ध्यान देनेसे ही मालूम हो जायगा, कि बहुतसे रोगोंकी यह एक बहुत आवश्यक दवा है। (१) बच्चा एकदम जिद्दी, कहना नहीं मानता, अपनी ही बातकी प्रधानता चाहता है, सामान्य कारणसे ही क्रोधित हो जाता है और क्रोध आते ही पीछेकी ओर गिर जाता है; शरीरकी नीचेकी ओरकी गतिसे बहुत डरता है, रोगी बहुत अस्थिर चित्त—एक काम करता-करता उसे छोड़कर दूसरा करने लगता है, कोई भी पूरा नहीं करता। (२) नींदके समय बच्चेका माथा और गलेसे बहुत ज्यादा पसीनेका स्राव होना और बहुत दूरतक तकिया भींज जाना। (३) माथेकी त्वचा, भौं तथा मूछोंमें बहुत ज्यादा रूसी पैदा हो जाती है। (४) कानके पिछले भागमें जखम और उससे सफेद आभा लिये धुमैला और गाढ़ा गोंदकी तरह रस बहना। (५) जीभ बड़ी और भूलती हुई और उसमें जलन, ठण्ढी रखनेके लिये रोगी अपनी जीभ बाहर निकाल रखता है, जीभपर दाद। (६) घोड़ा या भापकी सवारीमें घूमनेपर मिचली पैदा हो जाती हैं और वमन हुआ करता है। (७) तेज़ प्यास पर थोड़ा-थोड़ा बार-बार पानी पीता है; पानी पेटमें जाते ही कै हो जाती है। (८) अनजानमें पाखाना-पेशाब हुआ करता है। (९) कब्जियत,—मलान्त्रमें बहुत ज्यादा परिमाणमें जबतक मल इकट्ठा नहीं हो जाता, तबतक पाखाना नहीं लगता; बहुत वेग देनेपर थोड़ा-सा पाखाना निकलता है, पर फिर भीतर घुस जाता है; बहुत परिमाणमें, छोटी-छोटी खाकी सूखी गाँठ निकलती हैं और

मलद्वार इस तरह रुक जाता है, कि अंगुलीका सहारा लगाये बिना मल नहीं निकलता ; निकलनेके समय मलद्वारसे चूर होकर निकलता है। मलमें सड़े पनीरकी तरह गन्ध। (१०) उदरामय—नाना प्रकारका और कितने ही रङ्गोंका मल ; भुने हुए अण्डेकी तरह मल या फेनभरा चटनीकी तरह हरा या कुछ देरतक रखनेपर हरा हो जाता है या तलैयामें तैरती हुई काईकी तरह मल, रोगी खाता-खाता दौड़कर पाखाने जाता है। (११) मलकी गन्ध बहुत सड़ी और सैकड़ों बार धोनेपर भी नहीं जाती। (१२) मलद्वारके चारों ओर और विटप-देशसे जननेन्द्रियका थोड़ा-सा अंशतककी खाल उधड़ जाती है। (१३) प्रदर-स्राव—उसमें नमक मिली मछलीसे निकले हुए पानीकी तरह गन्ध। (१४) जरायु क्षीण और उसमें नीचेकी ओर खींचन मालूम होती है—मानो वस्ति-गह्वरसे जरायु आदि सभी बाहर निकल जायेंगे ; योनिपर हाथका दबाव डालकर उसे रोक रखना चाहती है, चलनेपर, पैर फिसलनेपर या शरीर हिलानेपर, जरायु आदिमें नीचेकी ओर खींचन मालूम होती है। (१५) पैरमें पसीना, अंगुलियोंमें बदबूदार पसीना निकलकर अंगुलियोंमें जख्म हो जाता है ; तलवा इस तरह पसीनेसे तर रहता है, मानो पानीमें पैर डाल रखा है। (१६) तलवेमें जलन—रोगी दोनों पैरोंमें कोई ओढ़ना नहीं रख सकता और ठण्डी जमीनपर पैर रखता है। (१७) बहुत सर्दीमें भी बच्चा शरीरके वस्त्र दूर फेंक देता है। दिनों-दिन दुबला होता जाता है। उसे देखनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो न जाने कितनी उमर हो गयी है। मैला, तेलहा और गलेका माँस झूलता हुआ और सिकुड़ा ऐसे बच्चोंमें ऊपर लिखे लक्षण अधिकांश मौजूद रहनेपर "सैनिक्युला" यदि उनके लिये संजीवनी सुधा कही जाये तो भी अत्युक्ति नहीं। "मोटा पेट, गात्र क्षीण, हाथ-पैर पतले—ऐसे बच्चोंकी यह उत्कृष्ट दवा है।" ऐसी सर्दी मालूम होना मानो चतड़पर ठण्डा कपड़ा रखा हुआ है—यह भी इसका एक अन्यतम निर्णायक लक्षण है। बच्चोंको दहीकी तरह दूधकी कै होना, भोजन करनेके बाद ही तुरन्त बहुत भूख लग आना, बच्चा बहुत दुबला होनेपर भी कड़ी, खाली चौकीपर सोना चाहता है। यदि कोई उसे छूता है, तो क्रोधित हो जाता है, अन्धेरेमें जाता-जाता बार-बार पीछे घूमकर देखता है, बच्चा सहजमें ही चिढ़ उठता है। जिस करवट सोता है, उसी ओर पसीना होता है इत्यादि कई सैनिक्युलाके प्रकृतिगत लक्षण हैं। इसके लक्षण सब हमेशा बदला करते हैं।

लक्षणावली

मन ।—अत्यन्त अस्थिर मति, एक काममें अधिक देरतक मन नहीं लगा सकता। एक काम करता-करता उसे छोड़कर दूसरा करने लगता है (ऐल्यु, काक्यु, क्रोकस, इग्ने, पल्स, सल्फ, वैलि)। बच्चा एकदम जिद्दी, अपनी ही बात रखना चाहता है, लगातार रोता है और हाथ-पैर पटकता है (कैमो, सिना); बहुत चिड़चिड़ा और क्रोधी (ऐनाकॉर्ड, ब्राई, कैमो, जेल्स, लाई, नक्स-वोम); अभी बहुत क्रोधित हो रहा था, पर दूसरे ही क्षण हँसने लगता है (ओपि), किसीके छूनेपर बहुत क्रोधित हो जाता है (ऐण्टि-क्रूड, कैमो); जरा भी क्रोध करनेसे चित होकर जमीनमें गिर जाता है (कैमो)। मन बहुत चञ्चल, लगातार एक विषयसे दूसरेपर दौड़ता रहता है, यहाँतक कि बात करनेके समय भी एक बात बोलता-बोलता दूसरी आरम्भ कर देता है (ऐसार लैके, कैमो, कैनाब-इन)। पढ़नेके समय चित्तकी चञ्चलता (ड्रोसेरा)। कोई अच्छी बात कहता है, तो भी रोगी उसे बुरा ही समझता है (ऐसा विश्वास कि दूसरा जो कुछ कहता है, वह खराब ही है—कैमो)। अत्यन्त दुःखित भाव, रोगिनी समझती है कि कोई उसे अच्छी बात नहीं कहता, सभी उससे घृणा करते हैं; रोगिनीको विश्वास रहता है, कि उसके भाई-बन्धु अब उसपर विश्वास नहीं करते—अरम, हियुरा। किसीके साथ कोई सम्पर्क नहीं रखना चाहती (ऐब्सिन्थ)। सामान्य उद्वेग या चिन्ता असह्य मालूम होती है। ऐसे शङ्कित रहती है, मानो कोई विपत्ति आया ही चाहती है (ऐमोन-कार्ब, ऐक्टिया, लिलियम-टाई, मैंग-कार्ब, सिपि, वैलि)। कभी-कभी ऐसी इच्छा होती है कि पासमें जो कोई है, उसे खूब गाली दे (ऐनाक), सविराम ज्वरमें। बहुत बेचैन, पर शरीर हिलानेपर आराम मालूम नहीं होना। बच्चा चाहता है, कि उसे गोदमें लेकर कोई घूमता रहे, परन्तु उससे भी उसे कोई आराम नहीं मिलता—सिना; बहुत बेचैन, पर हिलनेकी शक्ति नहीं—बैप्टि, फास। बच्चा बहुत बेचैन, एक क्षण भी स्थिर नहीं, रहना चाहता (रोगकी वजहसे—कैमो, जैलापा, रियुम)। नीचेकी ओरकी गतिसे बच्चा बहुत डरता है, बच्चेको गोदमें लेकर सीढ़ी उतरते समय वह बहुत डर जाता है और धात्रीको पकड़ रखता है (बोरैक्स, जेल्स)।

मस्तक ।—मस्तिष्ककी जड़ता, मानो उन्माद हो गया है (कैलि-

ब्रोम)। सरमें चक्कर, झुकने या भूमिष्ट होकर प्रणाम करनेके बाद उठनेके समय (कार्बो-ऐन, सैङ्गिविन) ; टेबिल या बेंचपर बैठनेकी अवस्थामें (कैमो, पल्स) ; भोजनके बाद (ग्रैटि, पल्स, काक्यु, कैलि-कार्ब, लैके, फास) ; इसके साथ ही मिचली (कैल्के-फास, चिनिन-सल्फ, फेरम, नक्स-वोम, पेट्रोल) ; किसी अवलम्बनपर भार देकर खड़े हुए बिना गिर जानेकी सम्भावना (कार्बो-वेज) ; सुस्ती और मानो श्वास-रोध होनेका उपक्रम मालूम होनेकी वजहसे निर्मल वायु सेवनके लिये लालायित हो जाता है (सल्फ, फेफड़ेके प्रदाह रोगमें रोगी लगातार हवा करने कहता है—कार्बो-वेज, कैलि-नाई, लैके)। सवेरे नींद खुलनेके बाद रोगीको सारे शरीर और माथेमें दर्द मालूम होता है, मानो लकड़ीकी खाटपर सोया हो (चिनिन-आर्स, आरम, सिपिया, सैग-कार्ब)। ललाट देशपर धीमा-धीमा दर्द, लिखनेके समय माथा झुकानेपर बहुत बढ़ जाता है (ऐसिड-कार्बोल, कोलोसिन्थ) या बन्द गर्म घरमें रहनेके समय भी दर्द अधिक होता है (ऐग्नस, निकोलम, टैबेकम)। घटना पीछेकी ओर झुकनेपर (पीछेकी ओर झुकनेपर बढ़ना—क्लिमेट, ग्लोन) और स्निग्ध शीतल वायु लगनेपर (लाई, पल्स, ग्लोन, हेलिबो) ; सर-दर्द दाहिनी ओरसे बायें पार्श्वमें चला जाता है (सिङ्कोना, लैक-कैन, पहले सरके पिछले भागमें पैदा होता है, पीछे ललाटमें ठहर जाता है—सिपा, सेङ्गिविन)। सर-दर्द—जोरकी हवा लगनेपर बढ़ जाता है, विशेषकर यदि हवा ठण्डी हो (सिङ्को, कैल्के, हिपर, मर्क, साइलि)। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसके माथेकी खोल खुली है और मानो मस्तिष्कमें भीतरसे वायु प्रवाहित हो रही है। कहीं पीछेकी हवा न लग जाये इस भयसे रोगी कभी-कभी गर्मीके समय भी अपना माथा वस्त्रसे ढँके रहता है (मैग-म्यूर, सारिनम, साइलि, कहीं ठण्डी हवा न लग जाये इस भयसे रोगी गर्मीके दिनोंमें भी सरसे पैरतक शरीर ढँक रखता है—हिपर)। सर-दर्द, बढ़ना—सोनेपर (कोलोसिन्थ, ग्लान, रास) घटना—घोड़ेपर सवार होकर वायु सेवन करनेपर (गाड़ीमें भ्रमण करनेपर—ऐ-नाइड्रिक) ; बाईं आँखके ऊपरी भागमें लगातार दर्द अनुभूत होता है (लैके, फाइजस, लाइकोपस-वर्जि)। ललाटसे दर्द सरके पिछले भागमें चला जाता है ; सरके पिछले भागसे ललाटमें (सिपा, सेङ्गिविन, सिलि)। मस्तिष्कमें सर्दी अनुभव होना (ऐब्रोट, बेल) या मस्तिष्कके चारों ओर मानो तर कपड़ा लगा है (मानो माथा वस्त्रसे जड़ा हुआ है—मार्फिनम)। मिचली और वमन

सिला सर-दर्द, प्रति सप्ताह पैदा हो जाता है और दो-तीन दिनोंतक रहा करता है (सैबाड, सैङ्गिविन, साइलि, सल्फ, आइरिस)। सर-दर्दका बढ़ना—रोशनीमें (बेल, कैल्के, सैङ्गिविन, सिपिया, साइलि, नेट्रम-म्यूर, फास)। आवाज़ सुननेपर (बेल, थिरिड, लैक-डिफलो, लैक-कैन, नक्स-वोम, ऐ-फास) ललाटकी त्वचा सिकुड़ी, भृकुटी चढ़ी जैसी ; रोगी बार-बार दोनों भौंहोंको ऊपरकी ओर खींचता है और पीछेकी ओर माथा झूला रखनेकी इच्छा होती है ; वृद्धि—आधी रातके समय माथा हिलानेपर, झुकनेपर, शब्दसे शरीर हिलानेपर और पैर सरकनेपर। घटना—सन्ध्याके समय स्थिर रहनेपर और नींदके बाद (सर-दर्द आदिके लक्षण दोपहरतक बढ़कर धीरे-धीरे घटने आरम्भ हो जाते हैं—सैङ्गिविन, स्पाइजि, नेट्र-म्यूर, टैबाक)। सोनेके बाद बच्चेका गला और माथेमें बहुत ज्यादा पसीना होता है और तकिया बहुत दूरतक भींज जाता है (कैल्के, सिलि)। माथेकी त्वचा, भौंहोंके केश और मूछोंमें बहुत अधिक रूसी पैदा हो जाती है (कैल्के, ग्रैफ, नेट्र-म्यूर, ओलियेन, फास, स्टैफ, सल्फ); तकियेकी गर्मी माथेमें जाते ही भयानक खुजली पैदा हो जाती हैं। माथा या गलेके पिछले भागमें सर्दी बिलकुल ही सहन नहीं होती। माथेके केश बहुत पतले और चिकनाहट नहीं रहती, सूखे दिखाई देते हैं (पतले—थूजा, अक्षीताकी वजहसे—कैलि-बाई ; जरायु-शूलकी वजहसे—नक्स-वोम ; चिकनाहट न होना—ऐलूम, कैलि-कार्ब, हाइड्रैस्ट, हिपोजिनिन, मियुरिन, सोरिन)। माथेके केश वैद्युतिक शक्ति-सम्पन्न—केश झाड़नेके समय कंघीसे पिटपिट आवाज़ निकलती हैं।

आँख।—आँखके कोनेमें जलन और करकराहट। पलकें लाल और प्रदाह तथा सन्ताप-भरी। सर्दीकी वजहसे आँखोंका प्रदाह ; पलकें फूल उठती हैं और आँखका कोया लाल हो जाता है। रातमें आँखकी तकलीफ़ बढ़ जाती हैं। सफ़ेद अंश जखम-भरा, रोशनीका सहन न होना ; नींद खुलनेपर समूची आँख सूखी मालूम होना, मानो पलक चक्षु-गोलकसे सट गयी है (हैलिबो, कैल्के, बार्बे)। आँखके लक्षण सब सवेरे अच्छे रहते हैं ; दोपहरके समय तकलीफ़ बढ़ जाती हैं और जितना ही समय जाता है, तकलीफ़ भी उतनी ही बढ़ती जाती है। आँखोंमें जलन होती है और उससे लसदार रस निकलता है, दो-तीन घण्टोंमें ही यह रस आँखके किनारे सूख जाता है और सफ़ेद रङ्गके कीच या शल्कमें परिणत हो जाता है (कैमो, ऐण्टिम-क्रूड)।

कभी-कभी दो देखना (जेल्स, नेट्र-म्यूर) या पढ़नेके समय अक्षर सब आपसमें सट जाते हैं, ऐसा मालूम होना (साइलि, नेट्र-म्यूर, स्टैफ, लैक-कैन, लाई, कोना, फेरम, ग्रैफ)। कभी-कभी ऐसा मालूम होता है, मानो एक सफेद धुआँ पैदा होकर आँखके ऊपरसे चला गया ; इस समय रोगीको कुछ भी दिखाई नहीं देता और वह सुस्त हो पड़ता है (चारों ओर धुएँसे भरा दिखाई देना—साइक्लेमेन, लैक-डिफलो, प्लम्ब ; सर्दी श्लेष्माकी वजहसे आँखोंकी प्रदाहमें—सिपा, मर्क, पल्स, सैङ्गिविन, कैमो, युफ्रे, जेल्स, नेट्र-म्यूर, नेट्र-सल्फ, क्लोरम) ; बहुत ज्यादा पीली आभा लिये श्लेष्माका स्राव होता है, पहले बाईं आँख, फिर दाहिनी आँखपर आक्रमण होता है (पीली आभा लिये श्लेष्मा निकलना—कैलि-सल्फ, कैलि-म्यूर ; सुनहरा स्राव—नेट्र-फास)। जोरकी हवा या सर्द हवा लगनेपर आँखसे आँसू गिरने लगना (नेट्र-म्यूर, साइलि, युफ्रे, सैबाड)।

कान।—कर्ण-पश्चान्नलीकी सर्दी (साइलिसिया, सैङ्गिविन, आयोड ; बहरापन पैदा करनेवाली—कैल्के, कैलि-म्यूर, कैलि-सल्फ, पल्स)। बायें कानमें ऐसा मालूम होता है, मानो रुक गया है (आर्जेण्ट-नाई, लैचनैन, साइलि, फेरम-फास)। कानका पिछला भाग जखम-भरा और उन जखमोंसे सफेद या धुमैला और गाढ़ा गोंदकी तरह रस निकलता है (ग्रैफ, सोराइन)।

नाक।—नाककी सर्दी ; रंध्रके भीतरसे पतला, कषाय श्लेष्मा-स्राव (एरम-ट्राई, सिपा, लाई, मर्क, नक्स) या गाढ़ा पीला या हरे रङ्गका और बहुत ज्यादा पीब (आर्स, ऐलूर, आरम, रास ; हरा या सब्ज रङ्गका—पल्स, कैलि-बाई, सिपिया, साइलि) निकला करता है ; कभी-कभी गाढ़ा शहदकी तरह या पपड़ी जमा हुआ मैलकी तरह निकलता है (बोवि, कैलि-बाई, सिपिया, स्टिक्टा) और कभी सफेद, गाढ़ा गोंदकी तरह और डोरोंकी भाँति श्लेष्मा (कैलि-बाई, लैक-कैन, कैमो) ; काले रङ्गका थक्का-थक्का जमा हुआ खून निकलता है (कैमो, क्रोकस, टैरेण्ट, सिकेलि) या रक्तमय रस। नाकसे बहुत ज्यादा पीले रङ्गका श्लेष्मा-स्राव। बढ़ना—घरमें रहनेके समय (सिपा, नक्स, पल्स, ऐकोन) और भोजनके बाद (नक्स-वोम)। रंध्र जखम-भरा और पीले रङ्गके सूखे मैलसे मानो रुका हुआ-सा मालूम होना (कैलि-बाई, लैक-कैन)। नाक छिड़कनेके समय नासा-मुखसे एक सिं-सिं शब्द पीछेकी ओर जाता है। नींद खुलनेपर बच्चा लगातार आँख और नाक मला करता है (स्क्वियुला)।

मुखमण्डल ।—ऊपरी हनुकी अस्थिसे बाईं कनपटीतक लगातार दर्द हुआ करता है ; वृद्धि—सर्दी लगनेपर ; घटना—गर्म प्रयोगसे ; भौं तथा मूछोंमें बहुत ज्यादा रूसी पैदा हो जाती है । ऊपरी ओंठकी त्वचा सूख जाती है और रोगी लगातार उसे खोंटकर रक्त निकालता है (एरम-ट्राइफाइलं, हेलिबो, ब्राई) । चिबुकके ऊपर खुजलानेवाले दाने निकलते हैं (कैल्के, नेट्र-म्यूर) ; गर्मी लगनेपर खुजली बढ़ जाती है ।

मुख-विवर ।—ऐसा मालूम होता है, कि दाँत सब बहुत पतले हैं ; ठण्डी हवा लगना एकदम सहन नहीं होता । दाहिने दन्त-स्नायुमेंसे दर्द पैदा होकर माथा और गर्दनतक फैल जाता है ; रोगिनी तकलीफ़से बेचैन होकर टहलती है, इतनी जलन होती है, कि ठण्डी हवा लगानेके लिये रोगी जीभ मुँहके बाहर निकाल रखता है । जीभपर दाँतकी रगड़ लगती है (नेट्र-म्यूर, जिङ्कम) । जीभ तालुमें लग जाया करती है (नक्स-मस, ब्राई, ऐलूम, ऐ-नाई, क्लास्टि, ऐपोसिन-कैनाब, कोना, डायस्को, मर्क-बिन-आयोड) । जीभके दोनों किनारे ऊपरकी ओर मुड़ जाते हैं । पीठके पीछे गाढ़ा पीला लेप (नक्स-मस, फाइटो) । जीभके नीचे कितने ही आपसमें मिले हुए दर्द करनेवाले जखम । ऊपरी तालु ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी खाल उधड़ गयी है ; वृद्धि—गर्म पानी आदि पीने या कुछ भोजन करनेपर । ऊपरी तालुके बीचके अंशमें बहुत बड़ा दर्द करनेवाला जखम । मुख-विवर और दोनों ओठोंका भीतरी अंश (साइकूम) जखम-भरा ; बच्चा कुछ खाना नहीं चाहता (ऐसिड-नाई, आर्स, कैलि-आयोड, आइरिस, मर्क, डाल, ऐ-मूर, ऐ-सल्फ, फाइटो, स्टैफिसे, क्लोरेल, हिपोजिनिम ; खाद्य-पदार्थ आदिके स्पर्शसे भयानक जलन और रें-रें किया करता है—नेट्र-मूर, लैके, सोरिन) । मुख और कण्ठ बहुत सूखे, परन्तु प्यास नहीं रहती (पल्स, लैक-कैन, लाई, स्ट्रैमोन, सिपा, जेल्सियु, इयुफोर्बियम, गुयारिया) । जीभके नीचेकी ग्रन्थियाँ सब फूल उठती है और कभी-कभी थोड़ा-सा नमकीन पानी निकलता है । मुँहमें बदबू । ओंठके ऊपर और मुँहमें जखम ; ये सब उद्भेद अंगुलीसे खरोंच डाले जा सकते हैं । मुख-विवरमें श्लोताद, दिनमें बहुत ज्यादा लार बहना, रातमें और अधिक । दाँत निकलनेके समय बच्चेके मुँहसे बहुत ज्यादा और गाढ़े गोंकी तरह सफेद रङ्गकी और स्वच्छ लार निकलती है (हेलिबो, मर्क-सोल, नेट्रम-म्यूर, साइलि) ; वृद्धि—बच्चेकी जागनेवाली अवस्थामें और दिनमें ; घटना—नींदके समय और

रातमें। मुँहमें भयानक जलन; घटना—ठण्डा पानी लगने या मुँहमें ठण्डी हवा घुसनेपर (मानो आगसे जलाया जाता है—आर्स, आइरिस); ठण्डे पानीके प्रयोगसे बढ़ता है (बूफो)। बच्चोंके सुखण्डी रोगमें मुँहमें जखम—जखम सब मक्खनकी तरह सफेद दिखाई देते हैं (मर्क-बिन, आयोड, मर्क-साया, सिनेपिस)।

गलेके भीतर।—गलेमें बहुत सूखापन; घटना—लार या पानी निगलनेपर (सिस्टस, फाइटो, लेके)। झोंकको हवा लगनेकी जगहपर सोनेके बाद गलेमें सूखापन मालूम होता है और खुसखुस किया करता है (जेलस, फाइटो)। सूखे अंश सब बार-बार तर करनेकी इच्छा, पर तर नहीं कर सकता (लेके, मर्क-कोर, फाइटो)। तरल पदार्थकी अपेक्षा कड़ा पदार्थ निगलनेमें बहुत कम तकलीफ़ होती है (इग्ने)। गलक्षत आराम होने बाद स्वरभङ्ग, बोलनेके पहले खासकर गला साफ़ कर लेना पड़ता है (गानेके पहले—स्टैनम) सवेरे खाँसीके साथ थक्का-थक्का बलगम निकलता है—इस आये हुए श्लेष्माने दो दिन दो राततक पश्चान्नासा रोक रखा था। इन कफ़ोंका थक्का आगमें सीझे अण्डेकी तरह और उपास्थिकी तरह खून-मिला (लिथिया, मैङ्गेन, केलि-बाई, कैप्स; कड़े गोलीकी तरह बलगमके टुकड़े सब मुँहसे झटकेसे निकलते हैं—मेग-कार्ब)। दिनमें पश्चान्नासासे कण्ठमें तरल श्लेष्मा गिरा करता है (स्पाई, कास्टि, हाइड्रैस्ट, लेके, मर्क-प्रोटो)। कण्ठमें बहुत सर्दी अनुभव होना, मानो एक टुकड़ा तुषार या बरफ उसमें अड़ा हुआ है (ऐक्टियुक-वाई, कार्बो-वेज, सिपा, वेरेट)।

पाकस्थली।—गाड़ी या रेलगाड़ीमें भ्रमण करनेपर मिचली और कै होने लगती है (काक्यु, ऐ-कार्बोल, पेट्रोल, कोलचि, फेरम, नक्स-मस, साइलि, टैबाक)। प्यास—बार-बार पानी पीता है, परन्तु प्रत्येक बार थोड़े परिमाणमें (आर्स, चायना, कर्णास, इयुपेट-पर्फोल, लैक-कैन, रास, वेरेट); पाकाशयमें पानी प्रवेश करते ही वमन हो जाता है (आर्स, इयुपेट, नक्स-वोम, फास, जैट्रोफा, सिपिया, रस)। बच्चा बराबर स्तन पिया करता है, तथापि दुबला होता जाता है (ऐब्रोट, आयोड, नेट्र-मूर, टियुबर्क्युलिन)। रोटी ताजी न हो तो खाना ही नहीं चाहता (चायना, नेट्र-मूर, पल्स)। भूख बहुत उत्तम; रोगीको भोजनके पहले बहुत भूख लगती है (नेट्रम-मूरर)। बच्चा पानीका

गिलास देखते ही मानो पागल हो जाता है और बड़े आग्रहके साथ गिलास खाली कर डालता है। पानीके सिवा और सभी चीज़ोंसे अरुचि (ऐको, स्टैन)। भोजनके बाद उसे आराम मालूम होता है। दो ग्रास खाते ही उसकी पाकस्थली फूल जाती है और चरचराया करती है। इस समय उसे कमरका वस्त्र ढीला कर देना पड़ता है। भोजनके ५-६ घण्टे बादतक फिर कोई चीज़ मुँहमें नहीं ले सकता, पेट ऐसा ही भरा रहा करता है। जो खाता है, वही पाकस्थलीमें जाकर अम्ल होता है, सड़ता है और भाफ़ बन जाता है (कैल्के, रोबिन, फास, नेट्र-फास, लाई, नक्स, कार्बों-वेज, ऐसाफिट) और रोगीमें ज्वालामयी प्यास पैदा हो जाती है ; पानी पीनेपर उस समय कुछ घटती है, पर कुछ ही बाद फिर बढ़ जाती है। डकार खट्टी (कार्बो-वेज, चायना, इग्ने, लाई, मैग-कार्ब, नक्स-वोम, फास, कैल्के, कार्बोंन-सल्फ़, रोबिन), सड़ी (ऐसाफिट, कार्बो-वेज, सोरिन, पल्स, वैलि) और जलन करनेवाली (कास्टि, आयोड); धुआँ पीनेपर बढ़ जाता है (सेलिन); स्वादहीन वाष्पमय डकार; डकार आनेपर कुछ घटता है (बार्ब, सिस्टस, लैके, जैलापा, रस)। भोजनके बाद मिचली और बेचैनी मालूम होती है; धम्रपानके बाद घटती है (इयुजिनिया-जेम्बस)। खाते-खाते एकाएक मिचली पैदा हो जाती है या ओकाई आकर जो कुछ खाया था, सभी कै हो जाता है (फेरम, लाई, पल्स)। दूध पीने बाद ही बच्चा दहीके आकारमें सब कै कर देता है (कैल्के, इथ्यू, साइलि, वेलि, ऐण्टि-क्रूड)। सिझाये हुए अण्डेके सफेद अंशकी तरह जमा हुआ सफेद रङ्गका पदार्थ वमन करता है (नेट्र-म्यूर, नेट्र-फास)। स्तनका दूध पीनेके साथ ही वमन करता है (इपिक, साइलि, वैलि)। रातमें या सवेरे नींद खुलनेपर मिचली और पेटमें दर्द; कुछ खा लेनेपर घट जाता है (ब्रोम, कैमो, कैलि-बाई, लोबेल, सेङ्गिविन, स्पाइजि)। पाकाशयमें ऐसा अनुभव होता है, मानो गुल्म है (लोबेल-इन; मानो यकृततक फैला हुआ एक अर्बुद है—इनैन्थि)।

अन्त्राशय।—समस्त यकृत-प्रदेशमें जखमकी तरह दर्द और स्पर्श सहन न होना। यकृत बड़ा—दबाने या शरीर हिलानेपर दर्द होता है (फेरम, आयोड, लैके, चेलिडो, इयुपेट)। बाईं कोखमें कुलकुल शब्द, निम्नगामी स्थूलान्त्रकी राहसे नीचे उतर जाता है; वृद्धि—भोजनके पहले। स्थूलान्त्रके भीतरसे ऐसी गुड़गुड़ आवाज़ होती है, मानो बादलके गरजनेकी आवाज़ बहुत दूरसे आ रही है (फास)। पेट इतना फूल उठता है, कि ऐसा मालूम

होता है, कि फट जायगा (रोबिन, कैप्स, नेट्र-सल्फ, वैसो)। चलनेपर पुट्ठेके नीचे बहुत दर्द होता है। बच्चेका पेट मोटा [कैल्के, सार्सा, बैराइ, साइलि, आयोड, ओलि-जेकोर, चेलिडो (कृमिकी वजहसे)]।

मलान्त्र और मल।—कब्जियत ; जबतक मलांतमें दो-तीन दिनोंका मल सञ्चित नहीं हो जाता, तबतक पाखाना बिलकुल ही नहीं लगता (ऐलूम, मिलिलोट, ओपि) ; बहुत कुछ वेग देनेके बाद थोड़ा-सा मल निकलता है ; पर वह फिर भीतर लौट जाता है (ओपि, साइलि, थूजा)। कोमल मल भी बहुत वेग देने और जोर लगाने बाद कहीं निकलता है (ऐलूम, ऐनाक, प्लैट, साइलि, वेरैट)। बहुत ज्यादा परिमाणमें छोटी-छोटी सूखी धुमैले रङ्गकी गांठें सब निकलती हैं—अंगुलीका सहारा लगाये बिना नहीं निकलतीं (कैल्के, प्लैट, सेलिन, साइलि)। मल बहुत कड़ा, पाखाना फिरना प्रायः असम्भव (ऐलूम, ऐमोन-म्यूर, ऐण्टि-क्रूड, लैक-डिफ्लो, ऐ-नाइट्रिक) ; खाकी, सफेद, जले हुए चूनेकी तरह गाँठ-गाँठ मल, मलद्वारसे चूर-चूर होकर निकलता है (ऐमोन-म्यूर, मैग-म्यूर, मर्क, ओपियम) ; सड़े पनीरकी तरह, सड़ी गन्ध-भरा (ब्राई, हिप)। मल और मूत्र आप-ही-आप निकला करता है ; मल और मूत्रनलीकी द्वारावरोधक पेशीमें संकोचनकी शक्ति न रहनेकी वजहसे (ऐलो, ऐ-म्यूर, पोडो) ; वायु निकलनेके समय मल निकल जाना चाहता है ऐलो, ओलियेन, ऐ-फास, पोडो, वेरैट) ; बाध्य होकर उरु-पर-उरु रखकर मल-रोध करना पड़ता है। उदरामय—कितने ही रङ्गोंका और कितनी ही तरहका मल निकलता है (भिन्न-भिन्न रङ्गोंका—पल्स, पोडो, डालका, सलफर) ; तले हुए अण्डेकी तरह (कैमो, मर्क, डाल, पल्स ; अण्डेके सफेद अंशकी तरह—हाइड्रैस्ट, ऐस्क्लिपियस-टियु ; फेन-भरा—मर्क, पोडो, सल्फ, ऐ-बेञ्जो, आर्नि, कोलोसिन्थ, ग्रैटि, मैग-कार्ब ; चटनीकी तरह हरा—कैमो, इपिक, मर्क, डाल, एरण्डो-मेरी, पोलिनिया या गुयारेना) या कुछ देरतक रहनेपर हरे रङ्गका हो जाता है (आर्जेण्ट-नाइ, रियुम) या सड़ी तलैयामें तैरती हुई काईकी तरह (मैग-कार्ब) ; भोजनके बाद दौड़कर पाखाने जाना पड़ता है (फेरम, ड्राम्बिड)। कब्जियत रोगमें—मल त्यागनेके समय विटपदेशका भीतरी भाग चरचराया करता है, मानो फट जाना चाहता है ; पाखाना हो जानेके बाद ५-६ घण्टेतक समूचे विटप-देशमें त्वचा क्षय हो जानेकी तरह मालूम होता

है और जलन हुआ करती है। गाँठें सब कङ्कड़की तरह मालूम होती हैं, पाखाना होनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो मल-नालीको चीरकर मल निकलता है और पाखाना हो जानेपर मलनाली क्षत-विक्षत-सी मालूम होती है और खून निकला करता है। मलकी गन्ध इतनी सड़ी रहती है कि किसी तरह भी शरीर क्यों न धोया जाये, पर वह गन्ध नहीं जाती है (सोरिन, पोडो, साइलि, कार्बो-वेज, सल्फ)। मलद्वारके चारों ओर तथा विटप और जननेन्द्रियके तलदेशतकको खाल उधड़ जाती है (एपिस, ऐ-नाइट्रिक, पेट्रोल, सल्फ, रियुम, ऐ-म्यूर); त्वचा लाल चमकीली दिखाई देती है और उससे पानीकी तरह रस निकला करता है। पाखाना हो जाने बाद भी ऐसा वेग होता है मानो और भी पाखाना होगा (मर्क, मर्क-कोर)।

पेशाब ।— मूत्रद्वार अवरोधिनी पेशीपर बिलकुल ही अधिकार नहीं रहता, आप-ही-आप पेशाब हुआ करता है (जरा भी पेशीपर वेग देनेपर— कास्टि, डालका, कैलि-फास)। बार-बार पेशाबका वेग और बहुत अधिक पेशाब, एकाएक पेशाबका वेग पैदा होता है और वेग पैदा होते ही ऐसा मालूम होता है, मानो मूत्र तुरन्त मूत्रमार्गके द्वारपर आ पहुँचता है (क्रियो); बहुत चेष्टा किये बिना पेशाबका वेग रोक नहीं सकता, कभी-कभी तो बिलकुल ही रोक नहीं सकता (दौड़कर पेशाब करने जाना पड़ता है—आर्नि, कैन्थ, क्लिमेट, क्रियो, नक्स-वोम, पल्स, सिपि, सल्फ ; रोकने योग्य वेग—क्रियो, सल्फ)। यदि रोकनेकी चेष्टा करता है तो वेग दब जाता है और फिर पेशाब नहीं होता (वेग रोकनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो पेशाब आप-से-आप हो गया है। पर वास्तवमें वैसा नहीं होता— ब्राई। पेशाबका वेग रोकनेकी चेष्टा करनेपर मूत्रनाली सट जाती है और रोगीको बाध्य होकर खड़े हो जाना पड़ता है, पर सीधा होकर खड़ा नहीं हो सकता। इतना प्रबल वेग होता है, मानो मूत्रनाली फट जायगी (ऐब्रोट)। पाखाना होनेके समय बच्चा पेशाब करनेके लिये जोरका वेग देता है। बच्चा पेशाब करनेके लिये बैठता है, तो पेशाब करनेके पहले जोरसे चिल्लाकर रो उठता है (लाई)। बच्चेका पेशाब लगकर बिछावनको चादरमें लाल दाग पड़ता है (लाई, सार्सा, पेरेला, फाइटो)।

पुं-जननेन्द्रिय ।—रमणके समय बहुत जल्दी वीर्य स्खलन हो जाता है और प्रायः कुछ भी आनन्द नहीं मिलता (इयुजिनिया-जैम्बस, व्यूफो ;

बहुत जल्दी—ग्रैफाई, कैल्के, जेल्स, ल़ाइ, नेट्र-कार्ब ; जल्दी वीर्य-स्खलन होता है, पर बहुत देरतक आनन्द आया करता है—सेलिन)। सङ्गमके कुछ देर बाद लिङ्गमुण्डसे दो-तीन दिनोंतक माँसकी गन्ध आया करती है (जननेन्द्रिय-प्रदेशमें बदबू—नेट्र-म्यूर, सार्सा ; तेज़ गन्धवाला पसीना निकलना—ऐ-फ्लु)। बच्चेके जननेन्द्रिय-प्रदेशमें माँसकी गन्ध, नहाने बाद भी यह गन्ध नहीं जाती। मुष्क ढीला हो पड़ता है और उसपर लसदार पसीना हुआ करता है। लिङ्ग-मुण्डपर श्लेष्माकी गोटियाँ और प्रमेह दोषकी वजहसे दाने या खोलें पैदा हो जाती हैं (ऐ-फास, ऐण्टि-टार्ट, अरम, कैलि-आयोड, कैलि-म्यूर, लैक-कैन, स्टैफाई, सल्फ, सिपिया, थूजा) और उससे रस निकला करता है (स्टैफाई, थूजा) ; उसकी गन्ध मछली धोये पानीकी तरह (मलान्त्रसे माँसकी गन्धवाला रस निकलना—कैलेण्डुला, मिडोरिन ; कानके छेदसे—टेल्यूरियम)। तांबेके रङ्गका उपदंशका जख्म (ऐसिड-फास, लैके, सिनेबार)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु बहुत देरमें प्रकट होता है और उसी समय ऐसी अनुभूतिके साथ दर्द पैदा होता है कि पेट फैलता जा रहा है जरायुमें बहुत दर्द (लैक-कैन)। ऋतु होनेके पहलेसे ही कमरमें दर्द आरम्भ हो जाता है (अरम) और स्राव-आरम्भ होनेपर रुक जाया करता है। स्राव आरम्भ होनेपर दर्द घटना आरम्भ होता है और स्राव तथा दर्द दोनों ही अच्छे हो जाते हैं ; आर्त्तव-स्राव पहले फीका लाल और अत्यन्त पतला और इसके बाद काले रङ्गका थक्का और जमा हुआ खून भरा रहा करता है (स्टैफाई)। ऋतुके पहले ही नकली प्रसवके दर्दकी तरह जरायु मानो जकड़ गया है—इस ढङ्गका दर्द हुआ करता है (वाइवर्नम)। ऋतु-स्राव आरम्भ होनेपर फिर दर्द नहीं रह जाता (सिरियम, आक्सैल)। सङ्गमके बाद कई घण्टे बाद ही अपत्य-पथसे मछलीके धोवनकी तरह गन्धवाला रस निकलता है ; बन्ध्यत्व पैदा करनेवाला श्लेष्माका स्राव होता है (नेट्र-कार्ब)। नहानेपर भी यह गन्ध नहीं जाती ; नितम्बके कुछ ऊपरी अंशमें दर्द—आर्त्तव-स्राव आरम्भ होनेके पहले और इधर-उधर देह हिलानेपर बढ़ जाता है, स्थिर रहनेपर घटा रहता है। प्रदर, उसमें मछलीके धोवनकी तरह तेज़ गन्धवाला स्राव (बदबूदार—ऐं-नाई, क्रियो, सैबाई, सैङ्गिविन, सिकेलि, सिपिया)। तलपेट बहुत चीण और उसके तन्तु सब शिथिल मालूम होते हैं, मानो वस्तिगह्वरके यन्त्र-सब योनि-द्वारसे बाहर निकल पड़ेंगे ; रोगिनी योनि-मुखपर

हाथका दबाव डालकर जरायु आदिका बाहर निकलना, रोकनेकी चेष्टा करती है (लिलियम-टाइ, म्यूरेक्स ; बाहर निकलना रोकनेके लिये उरु-पर-उरु रखकर बैठती है—सिपिया) ; बढ़ना—चलनेपर (आर्निका, सिङ्को, लिलियम), पैर फिसलने या शरीर हिलानेपर (बेल), घटना—स्थिर रहनेपर। आर्त्तव-स्रावका होना बन्द नहीं होता। प्रदर-स्राव—बहुत ज्यादा, कितने ही रङ्गोंका, पाखाना जानेके समय स्रावकी अधिकता (केल्के-फास, मैग-म्यूर)। गर्भवतियोंके निम्नांगका फूलना (मर्क, पोडो), विशेषकर सन्ध्याके समय ; गर्भावस्थामें हाथ-पैर आदि फूले और अकड़े मालूम होते हैं, विशेषकर बायाँ बाँह और बायाँ पैर।

श्वास-यन्त्र।—सूखी खुसखुसी खाँसीके साथ स्वरनालीमें दबाव सहन न होना (लैके), खासकर बायीं करवट। सवेरे नींद खुलनेपर कुछ देरतक गलेमें ऐसा मालूम होता है, मानो कफ़ हो गया है और बोल नहीं सकता। स्वरलोप, फुसफुसाकर बोलता है (कैम्फो, फेरम, मर्क, फास)। वायुनली क्षय हो जानेकी तरह मालूम होती है, थक्का-थक्का बलगम निकलता हैं, इसके बाद और भी बढ़ जाता है। निगलनेके समय ऐसा मालूम होता है मानो गलेमें पत्थरकी तरह एक कड़ा पदार्थ अड़ा हुआ है। खाँसी, गाढ़ी शून्यगर्भ—खोखली खाँसी, वक्षमें घड़-घड़ शब्द होता है और वक्षोस्थिके नीचे खुजली मालूम होती है। रातमें सोनेपर और नींद खुलनेपर गला खुस-खुस किया करता है। घड़-घड़ शब्द करनेवाली खाँसी, खाँसते-खाँसते बच्चेका गला रुक जाना चाहता है और इसके बाद थोड़ा गाढ़ा जमा और डोरीकी तरह श्लेष्मा वमन हो जाता है (सिलि, क्यूप्रम, इपिक)। हँसने या बोलनेपर खाँसी आ जाती है (हँसनेपर खाँसी आना—आर्जेण्ट-नाइ, ब्राइ, सिङ्को, क्यूप्रम, फास, स्टैनम, क्रियो, पेट्रोल, रास, सेङ्गिविन)। बढ़ना—गर्म घरमें रहनेके समय और सवेरे ; घटना—निर्मल वायु लगनेपर। खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो माथेकी खोल उड़ जायगी (नेट्र-म्यूर), बलगम पीला, स्वाद मीठा (सेङ्गिविन)। थक्का-थक्का पनीरकी तरह श्लेष्मा पानीमें डालनेपर डूब जाता है ; सवेरे और भोजनके बाद अधिक बलगम निकलता है। रातमें खा लेनेपर श्वास-कष्ट बढ़ जाता है (मैग-म्यूर)। वक्षोस्थिके नीचे साँय-साँय और घड़घड़ आवाज़ सुन पड़ती है। वृद्धि—खानेके समय और उसके बाद। वक्षोस्थिके

नीचे खाँसी पैदा करनेवाली सुरसुरी मालूम होती है। वक्षके ऊपरी अंशमें बहुत दर्द (एपिस, सल्फ)। खाँसनेके समय रोगी हाथसे छाती दबा रखता है (ब्राई, फास, ड्रोसेरा, इयुपेट, क्रियो, नेट्र-सल्फ, रैनान-बल्बो, सिपिया)। एकाएक ऐसा मालूम होता है मानो वक्षके ऊपर एक भारी चीज़ रखी हुई है।

गर्दन और पीठ।—गर्दन इतनी पतली और क्षीण हो जाती है कि बच्चा अपना माथा सीधा नहीं रख सकता (कैल्के, आयोड, नेट्र-म्यूर, सार्सा); बच्चेकी गर्दनका चमड़ा सिकुड़ा हुआ, सल पड़ा और झूलता हुआ (एब्रोट, आयोड, नेट्र-म्यूर, सार्सा)। कमर बहुत क्षीण और ऐसी मालूम होती है, मानो झुक जाती है (ऐसिड-आक्सेल)। सवेरे नींद खुलनेपर दोनों अंसफलकोंके बीचमें दर्द हुआ करता है, मानो रात-भर रोगी किसी सँकरी खाटपर देह सिकोड़कर सोया था (शरीर सिकोड़कर सोता है—कोलोसिन्थ, रियुम, पल्स)। मेरुदण्डकी पेशीमें, विशेषकर बायें पार्श्वकी पेशीमें गहरा दर्द, पीठ अकड़ी और उसमें तेज़ दर्द हुआ करता है, शरीर हिलानेपर घटना। कन्धा, विशेषकर बायें कन्धेमें वातका दर्द, सेंकनेके सिवा और किसी तरह भी नहीं घटता; रोगी आगके पास जाकर, उसी ओर पीठकर बैठता है; कन्धा हिलाने या बाँह उठानेपर दर्द बढ़ जाया करता है, रोगी अपना हाथ माथेपर उठाकर रख नहीं सकता या पीठपर नहीं ले जा सकता (सैङ्गिविन, लैक-कैन, आइरिस, सिफिलिन)। माथा घुमाकर यदि किसी ओर देखना पड़ता है, तो गर्दन और पीठमें भयानक दर्द मालूम होता है; समूची देह घुमाकर कहीं पार्श्वकी ओर देख सकता है (ऐगार, ब्राई, लैचनैन्थिस, नक्स-वोम, सार्सा ; शय्यामें करवट बदलनेके लिये पहले उठकर बैठना पड़ता है, तब कहीं करवट बदल सकता है—नक्स)। गर्दन, पीठकी पेशीका दर्द कम करनेके लिये सामनेकी ओर रोगी माथा झुकाता है (नेट्र-आर्स); पीछेकी ओर माथा घुमानेपर बाएँ पृष्ठफलकके भीतरी कोनेमें तेज़ दर्द मालूम होता है (दाहिने पृष्ठ-फलकके भीतरी कोनेमें—चेलिडो)। बायें पृष्ठ-फलकके निचले भागमें और उसके चारों ओर बहुत दर्द। सवेरे सोकर उठनेपर कमर बहुत क्षीण और ऐसी मालूम होती है, मानो टूट गयी है और यह अनुभूति धीरे-धीरे बढ़कर दोपहरके बादसे घटने लगती है और सन्ध्या ६-७ बजेके समय बन्द हो जाती है (कमर बहुत क्षीण—कैल्के, नेट्र-म्यूर, रास, सिपि, साइलि)। कमर और नितम्ब-देशमें जलनके साथ कमरमें दर्द

(हेलोन) ; वृद्धि—बैठनेवाली अवस्थामें (हेलोन, ऐस्टेरस, पैलेड, कोबाल्ट)। घटना—हल्के व्यायामसे या समभावसे चित होकर सोनेपर (कोबाल्टम)। मेरुपुच्छ प्रदेशकी त्वचा मानो क्षय हो गयी है—इस ढङ्गका दर्द (एरम-ट्राई, कार्बो-वेज)। समूचे मेरुदण्डमें सर्दी मालूम होती है (हायो, थूजा) ; ठण्डी हवा लगनेपर या बैठनेवाली अवस्थामें बढ़ना और शरीर हिलाने तथा गर्म प्रयोगसे घट जाया करता है। ऐसा अनुभव होना मानो पीठ दो टुकड़े हो जायगी। ऊपरसे कोई चीज़ उतारनेके समय या भारी चीज़ उठानेके समय पीठमें हलका दर्द (सिपिया, फेरम-फास)। ग्रीवापृष्ठके बायें पार्श्वमें या पीठके ऊपर छोटे-छोटे फोड़े निकलते हैं, परन्तु सहजमें रहना नहीं चाहते (फाइटो, कास्टि, ग्रैफ)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—दाहिने कन्धेमें लगातार दर्द ; बाँह हिलानेपर दर्द बढ़ जाया करता है (लाई, ऐब्रोट, ऐ-कार्बोल, कोलोसिन्थ, हाइड्रैस्ट, सैंगिविन, मिडोरिन, वायोला-ट्राई, जोरसे हिलानेपर बढ़ना और धीरे-धीरे हिलानेपर दर्द घट जाया करता है—फेरम-फास)। रोगी अपनी बाँह उठा या पीठपर नहीं रख सकता ; क्योंकि ऐसा करनेपर तेज़ दर्द होता है (मैग-कार्ब, सैंगिविन, लैक-कैन)। कलाईपर छोटे-छोटे फोड़े, अधिक लाल नहीं होते या सहजमें पकते नहीं हैं, पर बहुत कड़े और दर्द भरे हो जाया करते हैं और कलाईसे बगलतक दर्द फैल जाया करता है (कलाईपर फोड़ा—आयोड ; अंगुलबेढ़ा रोगमें रोगवाली जगहपर लाल रेखायें सब बाँहकी राहसे ऊपरकी ओर फैल जाया करती हैं—सिपा)। बगलके भीतरतक बहुत अधिक पसीना हो जाया करता है (कैल्के, सिपा, नेट्र-म्यूर, साइलि)। बगलके बीचकी त्वचाका क्षय हो जाना (लाई, ग्रैफ, कास्टि)। रोगी सवेरे सोकर उठनेपर देखता है, कि उसका हाथ फूला और अकड़ा हुआ है। हाथकी त्वचा फटी और उससे खून और पानीकी तरह रस निकलता है और यह रस सूखकर पपड़ी जम जाती है। हाथपर छोटे-छोटे दाने और उनके भीतरसे पानीकी तरह और लसदार रस-स्राव हुआ करता है। ठण्डी हवा लगनेपर ही हाथकी त्वचामें जलन हुआ करती है। बहुत फट जाता है और उसमें स्पर्श एकदम सहन नहीं होना। हाथ ऐसा ठण्डा मानो बरफमें पड़ा था (कैल्के-फास, कैम्फ, फेरम, आयोड, लैके, नेट्र-म्यूर, मर्क-सोल, ऐ-फास)। तलहत्थी और तलवेमें भयानक जलन हुआ करती है, बच्चा शरीरका ओढ़ना फेंककर ठण्डी

जगहपर हाथ-पैर रखता है (लेके, मिडोरिन, सैंगिविन, सल्फ, कैन्थ, पेट्रोल)। दोनों हाथ मिलानेपर अर्थात् हाथ जोड़नेपर दोनों तलहत्थियोंमें पसीना हो जाता है और वह पसीना बून्द-बून्दकर चूता है। अंगुलीकी गाँठें सब फट जाती हैं और उनसे रस निकला करता है। बायें ऊरु-शिखरमें वातका दर्द, बढ़ना—हिलाने और सर्दी लगनेपर; पर स्थिर बैठे रहनेपर भी दर्द नहीं घटता। दोनों ऊरु, खासकर बायें ऊरुका भीतरी अंश कुछ लाल, बहुत क्षुद्र और खुजलानेवाली फुन्सियोंसे भर जाता है और रातमें कपड़े उतारते समय बहुत खुजली बढ़ जाती है। बच्चेके दोनों पैर बहुत दुबले हो जाते हैं (ऐब्रोट, कैल्के, आयोड, टियुबर्क्युलिन)। डेढ़ वर्षसे भी अधिक उमरवाले बच्चे भी सहारा लिये बिना खड़े नहीं हो सकते (ऐगार, कैल्के, कैल्के-फास, डूथ्य्, आयोड)। पैरमें पसीना, पैरकी अंगुलियोंके गासेमें बहुत ज्यादा पसीना होता है और यह पसीना अंगुलियोंमें जखम पैदा कर देता है, इसकी गन्ध बहुत खड़ी होती है (ग्रैफ, सिपि, सोरिन, साइलि); मानो पानीसे उठकर आ रहा है, रोगीका तलवा इसी तरह पसीनेसे तर रहता है (कैल्के)। बच्चा बहुत सर्दीके समय भी शरीरका ओढ़ना दूर फेंक देता है (हिप, सल्फ)। रातमें शय्यापर सोये रहनेकी अवस्थामें पैरका तलवा इतना ठण्डा हो जाता है, कि उसमें ऐंठन पैदा हो जाती है। पैरका मोजा हमेशा ही तर मालूम होता है (कैल्के)। एकाएक बायीं जानु-सन्धिमें ऐसा तेज़ दर्द होता है कि रोगी तकलीफ़से चिल्ला उठता है, दाहिने ऊरुके सामनेवाले अंशमें और दोनों जानुके गासेमें कमज़ोरी और दर्दका भाव रहता है; बढ़ना—धीरे-धीरे दबानेपर (जोरसे दबानेपर दर्द नहीं मालूम होता)।

सार्वाङ्गिक।—धीरे-धीरे बढ़नेवाला दुबलापन (ऐब्रोट, ऐ-ऐसिट, ऐ-नाई, कैल्के-फास, सिना, फेरम, आयोड, नेट्र-म्यूर, ओलियम-जेकोर, फास, सार्सा, साइलि); बच्चा देखनेमें बुड्ढेकी तरह, मैली मूर्त्ति, तेलही चिकनी त्वचा और सफेद; उसके गलेका मांस झूलता हुआ और सिकुड़ा (ऐब्रोट, आयोड, नेट्र-म्यूर, सार्सा)। वह इतना क्षीण तथा सुस्त रहता है कि कोई काम करनेसे डरता है, हमेशा पड़ जानेकी चेष्टा करता है (फेरम-फास, लिलियम-टाई, रास, साइलि, सिपा, ऐ-नाई, डायाडेमा)। रोगी अत्यन्त बेचैन, एक भावसे अधिक देरतक नहीं रह सकता; शरीर हिलानेपर तकलीफ़ घट जाती है (ऐकोन, आर्स, क्यूप्रम, रास; बच्चोंको होनेपर—कैमो, जेलापा, सिना)। दिन-

रातमें एक मिनट भी स्थिर नहीं रहता ; रातमें ७ बजेसे १२ बजेतक बेचैनी बहुत बढ़ जाया करती है। कड़ी शय्यापर सोना पसन्द करता है (कड़ी जगहपर कमर रखकर सोनेपर कमरका दर्द घट जाता है—नेट्र-म्यूर)। इसके लक्षण सब हमेशा बदला करते हैं (लैक-कैन, पल्स)।

त्वचा ।—शरीरकी त्वचा सूखी और लाल। खुजलानेपर खुजली बढ़ जाया करती है। चेहरेपर नाना प्रकारके व्रण आदि दाने निकला करते हैं। कलाईपर, कन्धेमें और पीठमें फोड़े, पर उनमें पीब नहीं होता। दोनों कानोंके पीछे, कलाईपर और हाथ तथा पैरकी अंगुलीमें अकौता और उसमेंसे लसदार गोंदकी तरह रस निकलता है (ग्रैफ, मेजिर, सोरिन) ; उपदंशका जखम ताँबेके रङ्गका (लैके, एसिड-फास)।

निद्रा ।—रातमें माथेके नीचे बाँह रखकर सोता-सोता जाग उठता है। सोनेके थोड़ी ही देर बाद चौंककर जाग उठता है (बेल, कैल्के, सिना, क्रियो, लैके, डिजि, कैमो, सल्फ, नक्स-मस)। बच्चा नींदके समय छटपटाया करता है और इस नींदके बाद उसका मिजाज़ चिड़चिड़ा हो जाता है और रोता है, नींद खुलनेपर बच्चा अपनी मुट्ठीसे आँख नाक मला करता है (स्क्विला)। बच्चा तकियेपर या धायके कन्धेपर अपनी नाक मला करता है (सिना)। किसीका पार्श्व या शरीर छू जानेपर सो नहीं सकता। डाकुओंके सपने, समूचा घर अच्छी तरह देख लिये बिना सो नहीं सकता (नेट्र-म्यूर)।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—दिनभर रोगीको जाड़ा मालूम हुआ करता है, गर्म घरमें सर्दी बढ़ जाया करती है (आर्ज-नाई, क्रोकस, ग्रैटो)। ऐसा अनुभव होना मानो कम्प होगा। रोज एक ही समय जाड़ा पैदा हो जाया करता है (ऐरेनिया, सीड्रन)। शीतावस्थामें प्यास रहती है, परन्तु बोखार या पसीनेके समय प्यास बिलकुल ही नहीं रहती (ऐल्यू, एपिस, कैप्स, कार्बो-वेज, इग्ने)। कभी-कभी सवेरे ८॥ बजनेके समय, कभी-कभी तीसरे पहर ५ बजनेके समय, सर्दी पैदा हो जाया करती हैं। एक दिनका अन्तर देकर आनेवाले बोखारमें ज्वर रात-भर रहा करता है। रातमें समूची देह बहुत गर्म मालूम हुआ करती है। पसीना, अङ्ग-पर-अङ्ग रखनेपर दोनों अङ्गोंका जहाँ स्पर्श होता है, उस स्थानपर या शय्यापर शरीरका जो अंश रहता है, उसपर पसीना हुआ करता है (ढँके अंशपर पसीना—सिङ्कोना, कैमो ;

केवल खुले अंगमें (माथेके सिवा)—थूजा ; जिस करवट सोता है, उसी ओर पसीना होना—ऐ-नाइट्रिक, सिङ्को)। ज्योंही कपड़ा ओढ़ता है, त्योंही पसीना होना आरम्भ हो जाता है (सिङ्को)। पहली नींदके समय ही पसीना होता है, (केल्के, कोना), गर्दनमें ही अधिक पसीना हुआ करता है, इतना पसीना होता है, कि कपड़े आदि सब भींज जाते हैं। गलेमें और सरके पिछले भागमें ठण्डा और लसदार पसीना निकलता है और ये सभी अंश ठण्डे पत्थरको तरह मालूम होते हैं। रोज रातमें तेज़ बोखार आता है और रोगीको नींद नहीं आती। शरीर जला करता है, रोगी ठण्डी जगहपर सोना चाहता है। पसीनेवाली अवस्थामें रोगीको भूख मालूम होती है (साइलिक्स, स्ट्रैमोन)।

वृद्धि।—धीरे-धीरे दबानेपर ; कोई अंश मोच खाने या हिलानेपर ; बाँह उठाने या पीठपर रखनेकी चेष्टा करनेपर ; पैर फिसलनेपर, एकाएक शरीर हिलानेपर, खाँसनेपर, शब्द या रोशनीसे, भोजनके बाद, निगलनेके समय, मध्याह्नके समय, गर्म घरमें और तेज़ हवा लगनेपर। माथा सामनेकी ओर झुकानेपर।

उपशम।—स्थिर रहनेपर ; पीछेकी ओर माथा झुकानेपर ; वमनके बाद ; निर्मल वायु लगनेपर ; उत्ताप लगनेपर और माथा ढकनेपर।

अनुपूरक।—कैमोमिलाका अनुपूरक सेनिक्युला है। नवीन तरुण रोगकी जिन सब अवस्थाओंमें कैमोमिलाका प्रयोग हुआ करता है, पुरानी बीमारियोंकी उन्हीं सब अवस्थाओंमें सेनिक्युलाका प्रयोग करना चाहिये (डब्ल्यू० जे० गार्नसी)।

सदृश।—ऐब्रोट, कैमो, आयोड, नेट्र-म्यूर, सार्सा, टियुबर्क्युलिन, केल्के, बोरेक्स, साइलि, लैक-कैन, इथ्यू, लिलियम-टाई, म्यूरेक्स, हिप-सल्फ़, सिडोरिन, सैंगिविन, लाई, सिना, स्क्रियुला, ऐल्यू, केलि-बाई।

तुलनीय।—जलयान-प्रधान धातुमें—नेट्रम, केल्केरिया। पीछेकी ओरकी गतिसे भय—बोरेक्स। माथेमें पसीना—केल्के, साइलि। जीभमें दादकी तरह उद्भेद—नेट्रम, टैराक्स। थोड़ा-थोड़ा पानी पीना और तत्क्षणात् वमन—आर्स। परिवर्त्तनशील लक्षण—पल्स। मलान्त्रका सुन्न हो जाना—ऐलो। शरीरमें मलकी गन्ध—सार्सा। बदबूदार पसीना—ग्रैफाइ, साइलि।

पैरके तलवेमें जलन—नैट्रा, सल्फ़, कैल्केरिया। गला पतला और दाग-दाग—ऐब्रोट, नेट्रम। भोजनके समय पाखानेका वेग—फेरम। हँसनेपर खाँसी—फास, आर्जेण्ट। बलगमका स्वाद मीठा—स्टैनम। चोरके सपने—नेट्रम। अन्धकारसे भय—स्ट्रैमो। माथा ढँक रखना—साइलि, सोराई। विवाद—कैल्के। चिड़चिड़ा—कैमो इत्यादि।

शक्ति।—६ठे दशमिकसे १००० शततमिक क्रम।

सैण्टेलम

(SANTALUM)

दूसरा नाम।—सैण्टेलम ऐल्बम। चन्दनकी लकड़ी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—चन्दनका तेल और अलकोहल मिलाकर क्रम तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—ऐलोपैथ चर्मरोगमें और सूजाकमें इसका बहुत व्यवहार किया करते हैं। मूत्र-ग्रन्थिका शूल, मूत्रग्रन्थिमें असह्य दर्द, खड़े होनेपर दर्दका बढ़ना, बैठने या पट होकर सोनेपर घटना लक्षणकी यह एक लाभदायक दवा है।

सम्बन्ध।—पल्स, कैन्थर, बार्बेरिस।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

सैण्टोनाइनम

(SANTONINUM)

परिचय।—चायनाका सत।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—ऐलोपैथिकके मतसे यह एक विशेष क्रिमिनाशक दवा है। होमियोपैथ भी इसका क्रिमि रोगमें व्यवहार करते हैं, परन्तु इसका विशेष लक्षण दिखाई देनेपर ही इसका व्यवहार होता है, नहीं तो

नहीं। होमियोपैथीके मतसे क्रिमिके अलावा और भी कितने ही उपसर्गोंमें इसका व्यवहार होता है। केचुएके रूपवाली क्रिमिमें ही इसका व्यवहार अधिक होता है।

बहुत अधिक सैण्टोनाइन सेवनके दुष्परिणामकी वजहसे आक्षेप, बायें अङ्गका पक्षाघात, प्रलाप, दस्त, कै, पेशाब पीला होना, अन्धापन, नींदमें दाँत कड़मड़ाना, नींदमें या जागनेकी अवस्थामें नाकका खुजलाना, अस्थिर निद्रा, बच्चोंकी रातके समय होनेवाली खाँसी, आमवात प्रभृति लक्षण प्रकट होते दिखाई देते हैं। इसलिये उल्लिखित लक्षणोंमें, खासकर यदि ये सब लक्षण क्रिमिकी वजहसे हों तो सैण्टोनाइन मन्त्र-शक्तिकी तरह काम करता है।

आँखपर इसका विशेष प्रभाव होता है। अस्वच्छ दृष्टि, पीली दृष्टि, स्नायविक अन्धत्व प्रभृतिमें इससे सुन्दर कार्य होता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—सिना, साइमेक्स, कार्बो-सल्फ।

शक्ति।—मूल विचूर्ण और निम्न-शक्ति।

सैपोनिनम

(SAPONINUM)

दूसरा नाम।—सैपोनिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और अरिष्ट—दोनों ही आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—गठिया, घुटनेका फूलना, ऋतुस्रावके पहले दर्द, श्वेत-प्रदर और घमौरीकी तरह उद्भेद। ऋतु-स्राव आरम्भ होनेपर दर्दका कुछ घटना, गलेमें जखम, अकड़न, मिचली और वमन, उदर-शूल और अतिसार, शीतार्त्तता, शरीरमें उत्तापकी कमी, एकाएक पेशाब हो जाना प्रभृति लक्षणमें सैपोनिनमका व्यवहार होता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—केलि-बाई, लेके, सेण्टेल, नक्स, फेरम, कास्टि, सेनेगा।

शक्ति।—३x—६।

सैरासिनिया पर्पुरिया

(SARACENIA PURPUREA)

दूसरा नाम।—सारासिनिया हिटेरो काइला।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—खिलनेवाले ताजे गाछसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— पीठमें दर्द ; हड्डीमें दर्द ; आँतोंमें आवाज़ ; कब्जियत ; कटि-शूल ; अतिसार ; उद्भेद ; चेचक ; दृष्टि-क्षेप इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—इस वृक्षके पत्तेमें दाग देखकर बहुतसे आदमी समझते हैं, कि इससे चेचकमें लाभ होगा। डा० हेलने इसका प्रमाण संग्रह किया है। स्वस्थ शरीरमें इसकी परीक्षा करनेपर—ज्वर, पीठमें दर्द, सर-दर्द, पाकाशयकी गड़बड़ी प्रभृति लक्षण प्रकट होते हैं। डा० हेरिङ्गने इन लक्षणोंका उल्लेख किया है। इसके प्रतिषेधक और आरोग्यकारी गुणोंकी सैकड़ों जगह परीक्षा हुई है। पैत्तिक स्वल्प-विराम ज्वरमें जैसे जेलस लाभदायक है ; चेचक रोगमें उसी तरह सैरासिनिया १x लाभदायक है। इसके सेवनसे चेचकके दाग सहजमें ही मिट जाते हैं।

लक्षणावली

मन।—विषाद, उत्कण्ठा, सर-दर्द, स्मरण-शक्तिका लोप हो जाना, मन स्थिर नहीं रख सकता है।

मस्तक।—माथेमें जड़ता और भार अनुभव होना। सरमें चक्कर, सामने कपालमें दर्द।

आँख।—क्षीण दृष्टि, रोशनी सहन न होना, चक्षुगोलकमें दर्द, बाईं आँखमें दर्द।

कान और नाक।—दाहिने कानमें सलाई गड़नेकी तरह दर्द, कर्ण-शूल, कर्णमूल। नाकमें बदबू, नाकसे रक्तस्रावके कारण मूर्च्छा।

मुखमण्डल।—चेहरा लाल, छोटी माता या खसड़ेकी तरह दाने, स्नायुशूल, कपालमें दादकी तरह पपड़ी जमनेवाले उद्भेद।

मुँहके भीतर।—जीभ सूखी, भूरे रङ्गकी लेप चढ़ी, गलेमें सूखापन।

पाकाशय।—भूख, पेट गड़गड़ाना, पेटमें जलन, उदरामय।

अन्त्राशय।—पेट गड़गड़ाकर बोलना। कब्जियतके साथ पेटमें गड़गड़ाहट।

मल और मलान्त्र।—बहुत ज्यादा आध्मान-वायु, मलका पहला अंश स्वाभाविक, अन्तिम अंश पतला, आँव-मिला मल, कब्जियत या सवेरेके वक्तका उदरामय। पेटमें दर्द।

मूत्र-यन्त्र।—पेशाबमें फास्फेट रहती है। आपेक्षिक गुरुत्व १·२४ (स्वाभाविक अपेक्षा अधिक)। २७-२८ आउन्स अर्थात् प्रायः दो सेर पेशाब होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—श्वेत-प्रदर, स्राव पानीकी तरह या दूधकी तरह बदबूदार स्राव, जरायुमें टपककी तरह दर्द, ऋतुके सिवा अन्य कारणसे रक्त-स्राव।

वक्ष और हृत्पिण्ड।—वक्षमें दर्द, कलेजा धड़कना। नाड़ी पूर्ण-बलवती, क्षुद्र और द्रुत।

गर्दन और पीठ।—पीठ और गर्दनमें दर्द।

अङ्ग-प्रत्यङ्ग।—अङ्गमें दर्द, बाँह, कन्धा, कलाई सब जगह दर्द।

सार्वाङ्गिक।—क्लान्ति और कमजोरी, शोथयुक्त और लाल।

त्वचा।—विचर्चिका, गण्डमाला दोषके उद्भेद; चेचक (इसका अर्क सेवन करनेपर चेचकका गौण-ज्वर घट जाता है और चेचकके दाग नहीं रहते)। पस्टयूल या पीब-भरी फुन्सियाँ, दूधिया पपड़ी इत्यादि।

ज्वर।—ज्वर और कम्प, बाहरी हवामें शीत, हाथ गर्म, माथा और सारा शरीर गर्म, प्रचुर पसीना।

वृद्धि।—सवेरे और उठनेपर बढ़ना; बाहरी हवामें घटना।

सम्बन्ध।—दोषघ्न।—पोडोफाइलम।

तुलनीय ।—चेचकमें—ऐण्टिम-टार्ट, मर्क, वैक्सिनिन, वैरियोलिन, मैलाण्ड्रि । अस्थिके दर्दमें—इयुपेटोरिया-पर्फोल ।

शक्ति ।—मूल अर्क या ३, ६ या ३० ।

सार्सापैरिला

(SARSAPARILLA)

दूसरा नाम ।—शार्सा, सालसा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूक्ष्म मूलसे विचूर्ण और अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—दमा ; मूत्राशयकी बीमारियाँ ; अस्थिके रोग ; स्तनमें कर्कटका जख्म ; मूत्राश्मरी ; वय:सन्धिकालकी बीमारी ; कब्जियत ; बाधक ; अजीर्ण ; मूत्रकृच्छ्र ; अनजानमें पेशाब हो जाना ; आँखकी बीमारी ; मूर्च्छाभाव ; प्रमेह ; क्षुद्र सन्धिवात ; सर-दर्द ; आँत उतरना ; हिचकी ; सविराम ज्वर ; दुबलापन ; नकली मैथुनके कारण विषाद ; पाराका विकार ; स्तनकी बीमारी ; मूत्राश्मरी (पथरी) का शूल ; प्रमेहके कारण वात ; माथेमें पसीना ; शुक्रवाही नलीकी सूजन ; वीर्यक्षरण ; उपदंश ; जख्म ; मस्से इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—सोरा-विष, प्रमेह-विष और उपदंश-विष—इन तीनों विषोंपर इसकी क्रिया होती है और इससे उनका प्रतिकार होता है । धातुगत पारा-दोष दूर करनेके लिये यह हमेशासे प्रसिद्ध है । इन चारों विषोंके कारण नाना प्रकारके अस्थि-रोग और चर्म-रोग पैदा हो जाया करते हैं, कण्ठमाला रोग और वात-व्याधिकी भी यह एक महौषधिके समान है । इसके कितने ही निर्णायक लक्षणोंपर ध्यान देनेसे मालूम होता है, कि इसमें असंख्य उपकार करनेकी शक्ति है :—(१) पारा, उपदंश या प्रमेहके स्रावकी वजहसे सर-दर्द और अस्थि-वेष्टका दर्द । (२) बच्चा देखनेमें वृद्धकी तरह, पेट बड़ा, सूखा, त्वचा झूलती हुई । (३) रोगी बहुत दुबला हो जाता है या उसकी त्वचा सिकुड़ जाती है या तही-की-तही झूलती रहती है । (४) सारे शरीरमें दादकी तरह उद्भेद, उपदंश रोगमें पाराके अपव्यवहारके कारण जख़म आदि । (५) घरके बाहरकी हवा लगनेकी वजहसे शरीरमें

एक तरहकी खुजली, प्रायः प्रत्येक बसन्त ऋतुमें सूखे अकौतेकी तरह दाने सब निकलते हैं और पपड़ी पड़ा करती है। (६) प्रत्येक बार पेशाब करना खतम होते ही असह्य दर्द पैदा हो जाता है; मूत्राशय यन्त्रणाजनक भावसे फूल उठता है और छूनेपर उसमें बहुत दर्द मालूम हुआ करता है; खड़े होनेवाली अवस्थामें सरल भावसे पेशाब निकलता है, पर बैठनेपर बून्द-बून्द पेशाब निकलती है; मूत्रनलीसे वायु निकलती है। (७) मूत्राश्मरी-शूल—दाहिने मसानेसे नीचेकी ओर भयङ्कर यन्त्रणा फैलती है—पथरी या छोटे-छोटे बालूके कण निकलते हैं। मूत्राशयमें पथरी इकट्ठा होना; खून-मिला पेशाब। (८) बच्चेके पेशाबके साथ बालू निकलती है या उसके बिछावनकी चादरमें बालू लगी रहती हैं; शिशु पेशाब करनेके पहले और समय चिल्लाता है। (९) पेशाब चमकीला और निर्मल, परन्तु अत्यन्त उत्तेजनाजनक; परिमाणमें बहुत थोड़ा, लसदार बालूभरा या बहुत ज्यादा आप-ही-आप निकलता है; तलीमें सफेद आभा लिये बालू जमती है। (१०) सर्दी या तर हवा लगनेपर या पारा सेवन करनेकी वजहसे रुका हुआ प्रमेह-स्राव और इसी वजहसे वात-रोग। (११) जननेन्द्रिय-प्रदेशमें भयानक दुर्गन्ध। (१२) पानीकी तरह स्वप्न-दोष; खून-मिला वीर्य-चय। (१३) स्तनवृन्तोंका बैठ जाना, स्तनवृन्त छोटे, सूखे हुए और उनमें उत्तेजना पैदा करनेकी शक्ति नहीं रहती। (१४) पाराके व्यवहार या रुके हुए प्रमेह स्रावसे उत्पन्न वाताश्रय या अस्थिगत-वेदना; यन्त्रणाका बढ़ना—रातमें सर्दी लगनेपर। रमणियोंकी ऋतु-स्रावके समय कपालमें खुजली पैदा करनेवाले फोड़ोंका निकलना। (१५) त्वचा फटी हुई, खासकर हाथ और पैरकी त्वचा फटी, त्वचा कड़ी और न सिकुड़नेवाली, काले केश, वात-प्रधान और प्रमेह-विष-दूषित धातुवाले रोगियोंके लिये बहुत उपयोगी है।

लक्षणावली

मन।—तकलीफकी वजहसे दुःखित चित्त। तकलीफ या दर्दके समय और वीर्यच्चयके बाद चित्तमें बहुत चञ्चलता पैदा हो जाती है। काम करनेकी इच्छा रहनेपर भी रोगी विह्वल हो पड़ता है; क्योंकि उसमें परिश्रम करनेकी शक्ति अधिक नहीं रहती। जो खाद्य पदार्थ खा रहा है, उसके विषयमें सोचनेपर

रोगोमें बीमारी पैदा हो जाती है। विमर्ष, शरीरमें आनन्द नहीं, पर क्यों यह नहीं जानता।

मस्तक।—मस्तिष्ककी जड़ता और स्तम्भित भाव—पाठ्य विषयमें ध्यान नहीं लगा सकता (बेप्ट, कैनाब-इन, डाल्का, लेक-कैन, नेट्र-कार्ब, ओपि, आइरिस)। घरके बाहरकी हवा सेवनके समय ढुलककर सामनेकी ओर गिर जाता है (नक्स-वोम, कास्टि, साइकूर)। सवेरे मिचलीके साथ सरमें चक्कर, खासकर किसी ओर टकटकी लगाकर देखते रहनेपर (कास्टि, लैके)। सर-दर्दमें—मिचली और वमनके साथ सर-दर्द (फार्मिका, ग्लोन, ऐ-नाई, नक्स-मस, सैंगिविन)। प्रमेह-दोषसे उत्पन्न सर-दर्द (थूजा); दर्द सरके पिछले भागसे आरम्भ होकर माथेके ऊपर होता हुआ नासामूलमें आ पहुँचता है और नाक फूल उठती है (डा० फेरिङ्गटन); ललाटके बायें पार्श्वमें दबाव मालूम होना या सुई गड़नेकी तरह दर्द; सरके पिछले भागसे दर्द आरम्भ होकर माथा भेदकर आँखोंमें जा पहुँचता है। सरके दाहिने पार्श्वसे शूल बेधनेकी तरह दर्द कनपटी या मुखमण्डलमें चला जाता है। मूर्द्धादेशमें टपक (ग्लोन, हाइपिर, लाई); वृद्धि—चलनेपर। ललाटमें सरके पिछले भागमें या कनपटीमें लगातार दर्द मालूम होते रहना, मानो माथा किसी चिमटेसे दबाया जा रहा है। माथेके एक पार्श्वमें रह-रहकर इसी तरहका दर्द पैदा हो जाता है; दृष्टिकी अस्पष्टता (लैके, सोरिन), सोनेकी इच्छा और इसके साथ बोलते ही मस्तिष्कमें कँपकँपी (काक्यु, फास)। मानो माथा घेरकर ललाटके ऊपरसे एक दृढ़ बन्धन बँधा हुआ है और मानो उसी वजहसे बहुत दर्द होता है (ऐ-नाई, काक्यु, साइक्लेम, जेल्स, आयोड, इण्डिगो, जैन्थक्साइलम)। मानो माथेकी टोपी बहुत कसकर बैठ गयी है; रोगी अपने अनजानमें ही बार-बार टोपी उतारता है और पहनता है, पर उसे आराम नहीं मिलता (माथेकी टोपी बहुत भारी मालूम होती है—कार्बो-वेज; माथेमें टोपी पहन नहीं सकता—ग्लोन)। बोलनेके समय माथेमें ऐसा मालूम होता है, मानो कोई किसी घण्टेमें आघात कर रहा है (जिङ्कम); मूर्द्धादेशमें दबाव मालूम होना—धीरे-धीरे बढ़ता है और धीरे-धीरे घटता है। सरमें आवाज और झिनझिन शब्द (कोचिया, पैरेरा, फास, कास्टि, नेट्र-म्यूर)। माथेकी त्वचा अत्यन्त स्पर्श-कातर, केश उड़ जाना। सरमें पसीना होनेके कारण बहुत रूसी

होना (कैन्थ, नेट्र-म्यूर, फास, सल्फ, कैल्के, मिडोरिन, ओलियेन, सिपिया, स्टैफाइ. थूजा)। केशोंकी जटा बँध जाती है।

आँख।—आँखमें बेधनेकी तरह दर्द। आँखके काले गोलेकी परिधिसे बाहरी कोनेतक फैली हुई एक लाल रेखा दिखाई देती है। दृष्टिके सामने धुआँ दिखाई देना, मानो चारों ओर अन्धेरेसे ढँका है (कास्टि, फास, रैनान, सल्फ); पढ़ते-पढ़ते आँखके सामने अन्धेरा छा जाता है; वृद्धि—रेतस्खलनके बाद। दिनकी रोशनीमें आँखोंमें दर्द होता है (कोना, युफ्रे, गैल्बो, मर्क)।

नाक।—नाकके ऊपर, नीचे और रंध्रमें कटे घाव पैदा हो जाते हैं (फेरम, हिप, केयोलिन, लैके, लाई, मेजेर, नेट्र-म्यूर, साइलि)। कई वर्षोंतक नाक रुक जाया करती है। नासामूल और आँखमें सूजन।

मुखमण्डल।—मुखमण्डलपर दुधिया पपड़ीकी तरह पपड़ी जमना (ड्राई, विङ्का-माई)। दोनों हनुकी पेशी और सन्धि अकड़ जाती है और चिपक जाती है। ललाटमें खुजलानेवाले दाने पैदा होते हैं और खुजलानेपर उनसे रस निकलता है। बच्चेका चेहरा बुढ़ोंकी तरह दिखाई देता है (ऐब्रोट, बेराई, ओपि, सैनिक)।

मुख-विवर।—सवेरे मुँहका स्वाद कड़वा और तीता हो जाया करता है (ब्राई, नक्स, पल्स)। जीभ और ऊपरी तालुके ऊपर पारेके जखम पैदा होते हैं (डालका)।

पाकाशय आदि।—भोजनके बाद तीती डकार। अरुचि; खानेकी चीजोंकी याद आते ही उसका जी मिचलाने लगता है (सिङ्को, आर्स, जिङ्कम, मस्कस)। रोटी खानेके बाद पेटमें जलन होती है। भोजन करते ही ऐसा मालूम होता है, कि कुछ खाया नहीं है। पेट खाली मालूम होता है और गड़गड़ाया करता है; उदरके बायें पार्श्वमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द। उदर दबानेपर बहुत दर्द मालूम होता है। बच्चेका पेट बड़ा और मांस झूलता हुआ।

मल।—दुरारोग्य कब्जियत। इसके साथ ही पेशाबका प्रचण्ड वेग, मल बहुत थोड़ा निकलता है, पर भयानक वेग मालूम हुआ करता है। बहुत ज्यादा परिमाणमें वायु मिला मल, इसके साथ ही पेट और कमरमें दर्द।

पेशाब ।—मूत्राशयमें स्पर्श सहन नहीं होना और फूल उठा करता है (एपिस, हेलिबो, मिडोरिन, ओपि); बैठनेपर बून्द-बून्द पेशाब निकलता है, पर खड़े होनेपर पेशाब बिलकुल ही नहीं होता (बिना बाधाके होता है—जिङ्कम)। दोनों पैर फैलाकर और सामनेकी ओर झुके बिना पेशाब नहीं होता (चिमाफिला-ऐम्ब); स्त्रियोंकी मूत्रनलीसे पेशाब करनेके समय सों-सोंकर वायु निकलता है। प्रत्येक बार पेशाब होनेके बाद भयानक यन्त्रणा होती है (बार्बे, इक्विसेट, मिडोरिन, थूजा—पेशाब करनेके पहले बच्चा उछलता है और चिल्लाता है); बार-बार पेशाबके वेगके साथ बहुत थोड़ा पेशाब हुआ करता है और जलन होती है (ऐकोन, कैन्थ); दिन-रात बार-बार बहुत ज्यादा फीका पेशाब होना (एपिस, ऐपोसाइन, बार्बेरिस) । पेशाब चमकीला और निर्मल, पर जलन करनेवाला ; परिमाणमें बहुत थोड़ा और बालू-भरा ; बहुत ज्यादा और आप-ही-आप निकलता है (कास्टि); नीचे तलीमें सफेद बालू जमती है। बच्चेका पहननेका कपड़ा या बिछावनकी चादरसे बालू दिखाई देती है और पेशाब करनेके पहले और समय बच्चा चिल्लाता है (बोर, लाई)। मूत्राश्मरी शूल ; दाहिने मसानेसे नीचेकी ओर तेज़ दर्द फैल जाता है (लाई)। पेशाब करनेके समय मूत्र-पथरी जमती है; खून-मिला पेशाब निकलना। मूत्राशयके प्रबल संकोचनके बाद उसमें कषाय पीब और श्लेष्मा निकलता है।

पुं-जननेन्द्रिय ।—कामोद्दीपक सपने देखनेके बाद वीर्यस्खलनकी वीर्य-वजहसे कमरमें दर्द, सुस्ती और सरमें चक्कर। सामान्य उत्तेजनासे ही वीर्य-स्खलन हो जाता है, काम-प्रवृत्तिकी उत्तेजना हो या न हो। खून-मिला वीर्यस्खलन (कैन्थ, पेट्रोल, मर्क)। शुक्ररज्जु फूल जाया करती है, कामोद्दीपनके समय शुक्र-रज्जुमें धक-धक किया करता है और छूनेपर दर्द मालूम होता है। जननेन्द्रिय-प्रदेशमें बेहद बदबू आती है। मेढ्रत्वकके ऊपर खुजली निकलती है; सर्दी या जलीय वायु लगनेपर या पाराका व्यवहार करनेके कारण प्रमेह-स्राव रुकनेकी वजहसे वात (जेल्स, कोना, थूजा, मिडोरिन, मर्क-सोल, पल्स)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—आर्त्तव-स्राव बहुत देरसे होता है और स्राव बहुत थोड़ा हुआ करता है। स्राव आरम्भ होनेके पहले बार-बार पेशाब हुआ

करता है ; आर्त्तव-स्रावके समय रमणियोंके ललाटमें खुजलीवाले व्रण आदि दाने निकलते हैं (इयुजिन-जेन, सोराइन, सेङ्गिविन) ; स्राव बहुत कषाय, दोनों ऊरुमें लगनेपर जखम पैदा हो जाता है (नेट्र-सल्फ, सल्फ)। आर्त्तव-स्रावके समय उदरोर्द्ध-प्रदेशमें पीठतक जकड़ जाता है। प्रदर—चलनेके समय स्राव अधिक हुआ करता है (इस्क्यु-हिप, बोवि, कार्बो-ऐन, मैग-म्यूर, नेट्र-म्यूर, स्ट्रान)। स्तनका कर्कट, स्तन-वृन्त बैठ जाते हैं (आर्स, आयोड, नक्स-मस, काण्डियु-रैङ्ग, हाइड्रेस्ट, साइलि, चिमैफिला-ऐम्बे, कोना, आस्टिरियस-रियुब ; स्तन-वृन्त बहुत छोटे, सूखे और उसमें उत्तेजना नहीं होती—साइलि)।

श्वासयन्त्र ।—श्वासकी कमीकी वजहसे रोगी गलाबन्द और छातीके कपड़े ढीले कर देता है। एकाएक गलनली संकुचित होकर श्वास रुक जाना चाहता है। प्रत्येक बार शरीर हिलानेपर पीठकी ओरसे सुई गड़नेकी तरह दर्द शरीरको भेदकर बायें वक्षमें चला जाता है (बाएँ वक्षके ऊपरी अंशमें—मार्टस-कामी ; स्तनवृन्तके नीचे—ऐ-पलु, ऐ-आकसाल,, ऐक्टिया-रेसि ; हृत्पिण्ड या स्तनके भीतरसे पीठतक—लिलियम-टाई ; वक्ष भेदकर पीठतक—कैलि-कार्ब, सल्फ ; वक्षके बायें पार्श्वके बाँहके नीचे और पीठके निकट—(पलस-नुटेलिना)। ऐसा दर्द मानो वक्षोस्थिपर किसीने मारा है।

प्रत्यंग आदि ।—दर्द कमरसे नीचेकी ओर जाता है। वीर्यपातके बाद बढ़ना—रातमें और शरीर हिलानेपर ; बच्चेका गला पतला और त्वचा सिकुड़ी तथा झूलती हुई (ऐब्रोट, आयोड, नेट्र-म्यूर, सैनिक) और उसके ग्रीवाकी ग्रन्थियाँ सब फूली मालूम होती हैं—पाराके दोषकी वजहसे। वात-वेदना, पाराका व्यवहार या रुके हुए प्रमेहको वजहसे अस्थिगत वेदना, दर्द बढ़ना—रातमें (कैलि-आयोड, सिफिलिन, मर्क, थूजा)। जलीय वायु लगनेपर या पानीमें रहकर काम करनेके कारण सर्दी लगनेपर। बाँह हाथ और अंगुलियोंकी सन्धिमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। हाथकी अंगुली, हाथ और पैरकी त्वचा फटी और उनपर गहरे दाग (कैल्के, कैलेण्डियु, ग्रैफ, पेट्रोल, रास, सल्फ), उनमें जलन और दर्द मालूम होता है, विशेषकर हाथ और पैरकी अंगुलियोंकी बगलमें ; त्वचा कड़ी और लच न खानेवाली। अंगुलियोंके अगले भागकी त्वचाके नीचे मानो जखम पैदा हो गया है, ऐसा अनुभव होना। हाथमें पसीना। हाथके ऊपर विचर्चिका निकलना, ऊरु और जानु क्षीण और दुर्बल ;

जानु-सन्धि फूली और अकड़ो और उसमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। तलवेमें स्पर्शका सहन न होना।

त्वचा।—शरीरके स्थान-स्थानपर, विशेषकर मेढ़्-त्वचाके ऊपर विचर्चिका निकलना। सारे शरीरमें खुजली पैदा हो जाना—रातमें सोनेके समय और सवेरे शय्यासे उठनेके समय। रस-भरे दानोंसे त्वचाको चय करनेवाला या जख़्म पैदा कर देनेवाला रस निकलना। शरीरमें जगह-जगह सूखे, लाल दाने सब निकलते हैं और उत्ताप लगनेपर उनमें खुजली पैदा हो जाती है। चेहरेपर झांई या पपड़ोकी तरह सब उद्भेद निकलते हैं। बच्चा बेचैनी प्रकट करता है, रोया करता है। गर्म कमरेसे बाहर निकलनेपर, ठण्डो हवा लगनेपर शरीरको त्वचापर चकत्ते निकल आते हैं अर्थात् जुरपित्तीकी तरहसे एक तरहके चिपटे दाने निकलते हैं। निकले हुए उद्भेदकी जमीन बहुत प्रदाह-भरी; बच्चा बहुत रोता है और छटपटाया करता है; घरके बाहरकी हवा लगनेपर पपड़ी निकल जाती है और उसके चारों ओरकी त्वचा फट जाती है। पाराके अपव्यवहारके कारण जखम आदि। शरीरकी त्वचा सूखी और सिकुड़ी। प्रत्येक ग्रीष्म और बसन्त ऋतुमें चर्म-रोग फिरसे पैदा हो जाया करता है (ऐलो)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—बार-बार सर्दी मालूम होना, शीत निम्नांगसे ऊपरकी ओर चढ़ता है। सन्ध्याके बाद शय्यामें सोनेके समय उत्ताप पैदा हो जाता है और रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो उसे कुछ बल मिल गया है। ललाटमें पसीना होता है, खासकर सन्ध्याके बाद उत्तापावस्थामें।

उपशम।—स्थिर रहनेपर, खड़े होने और ठण्डो चीज़ खानेपर।

सदृश।—ऐमोन-कार्ब, बेल, बार्बा, कैमो, लाई, नेट्र-म्यूर, फास, साइलि, ऐग्नोट, आयोड, सेनिक, मर्क, सिपिया, सल्फ, मिडोरिन, इक्यु, थूजा, साइलि, इयुजिनिया-जैम, सोरिन, सेङ्गिविन।

वृद्धि।—छूनेपर, कसकर वस्त्र पहननेपर, शरीर खुजलानेपर, शरीर हिलानेपर, सोनेपर, बैठनेपर, चलनेके समय, सीढ़ी चढ़ने और उतरनेके समय, वसन्त ऋतुमें, गर्म चीजें खानेपर, गर्म घरमें रहनेके समय, शीतल तर हवा लगनेपर, पानीसे धोनेपर और वीर्यस्खलनके बाद।

तुलनीय।—मासिक धातु—थूजा; दुबलापन, अजीर्ण—ऐब्रोटेनम; मूत्र-लक्षण—लाइकोप। आँखके दर्दके साथ सर-दर्द—आइरिस, केलिबाई।

शक्ति।—१म दशमिकसे १००० शततमिक क्रम। डा० ह्यियुजके मतसे उच्चक्रमका ही प्रयोग करना चाहिये।

स्कैमोनियम

(SCAMMONIUM)

दूसरा नाम।—स्कैमोनी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—डालके दूधकी तरह इसको साफ़ कर उससे विचूर्ण तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—उदरामय और पाकाशय तथा आँतोंके प्रदाहमें उपयोगी है।

शक्ति।—२x, ६।

स्किला मैरिटाइमा

(SCILLA MARITIMA)

दूसरा नाम।—आर्निथोगैलम मेरिटिनम, स्कुइला ह्स्पानिका, सिपा-मेरिना।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सामुद्रिक प्याजकी ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—हृत्शूल; दमा; श्वासनली प्रदाह; सर्दी; खाँसी; बहुमूत्र; शोथ; हृत्कम्पन; आँखसे पानी गिरना; खसड़ा; फुसफुस और उसके आवरणका प्रदाह; प्लीहाके कारण खाँसी; दाँतका दर्द; पेशाब अधिक होना; कुकुर खाँसी; खाँसी; क्रिमि।

उपयोगिता और आभास।— इसकी क्रियाका उत्तम क्षेत्र है, मूत्र-मार्ग और मूत्र-मार्गकी श्लैष्मिक-झिल्ली। उक्त झिल्लीमें यह स्रावकी अधिकता पैदा कर देता है, इसलिये बहुत अधिक श्लेष्मा सञ्चय, उदरी और इससे पेशाबमें अधिकता पैदा हो जाती है, फेफड़ेके प्रदाहमें भी इससे बहुत फायदा हुआ करता है और जिस उदरीमें बहुत थोड़ा पेशाब होता है, उसमें भी इसके प्रयोगसे बहुत लाभ दिखाई देता है; यह या तो एकदम पेशाब रोकता है या रक्तमूत्र पैदा करता है; हृत्पिण्डपर इसकी क्रिया ठीक डिजिटेलिसकी तरह होती है। इसके कई निर्णायक लक्षणोंपर ध्यान देनेपर इसका अशेष उपकार दिखाई देता है :—(१) प्लीहाका विकार या बढ़नेकी वजहसे नाना प्रकारकी यन्त्रणा-जनक बीमारियाँ, खाँसनेपर प्लीहा-प्रदेशसे गलेके मध्यतक दर्द मालूम होता है। बाईं कोख और उदरके ऊपरी भागके किनारे लगातार धीमा-धीमा दर्द। (२) पाकाशयका दर्द—बाईं करवट सोनेपर बहुत आराम मालूम होता है। (३) खाँसनेपर आँखसे बहुत ज्यादा आँसू बहता है। (४) खाँसने या छींकनेपर आप-ही-आप मल और मूत्र निकलता है। (५) उदरी रोगमें—बहुत ज्यादा और बार-बार पेशाब। (६) बच्चेके दाँतपर काले दाग दिखाई देते हैं। बच्चा लगातार आँखें मला और छींका करता है। (७) ऐसा मालूम होता है, कि दोनों आँखें पानीसे भरी हैं। (८) दोनों नासा-रंध्रोंमें मानो जखम हो गया है। (९) मानो उदरामय होनेका पूर्व-लक्षण हैं। (१०) वक्षमें कसावटका भाव। (११) पाकस्थलीमें मानो एक टुकड़ा पत्थर अड़ा है; इस तरहका भार मालूम होना। (१२) दिन-रात बहुत ज्यादा पेशाब। (१३) वक्षमें खुजलीका पैदा होना। (१४) उदरमें बहुत दबाव मालूम होना—ऐसी आशङ्का, मानो उदर फटकर आँतें बाहर निकल पड़ेंगी। (१५) खाँसनेपर वक्ष-पार्श्वमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। (१६) सवेरे खाँसी और बहुत ज्यादा श्लेष्मा-भरा बलगम निकलना। (१७) समूची देह बहुत क्षीण और क्लान्त मालूम होती है। "बहुमूत्रके रोगियोंको बहुत ज्यादा और वर्णहीन पेशाब; पेशाबका ज्यादा होना घटनेपर वक्षकी बीमारी पैदा हो जाती है; वक्षकी बीमारी हटानेपर मसानेका रोग पैदा होता है और मसानेकी बीमारी घटनेपर उदरी रोग पैदा हो जाता है; फिर जब पेशाब बढ़ता है, तब शोथके सब लक्षण घट जाते हैं और स्क्विलाका कार्य बहुत दिनोंतक हुआ करता है" (डा० केण्ट)।

लक्षणावली

मन ।—पेटमें दर्दकी वजहसे रें-रें करता है और कराहा करता है। रोग आरोग्य होनेपर रोगी बहुत आनन्द प्रकट करता है। चिड़चिड़ा स्वभाव, सभी कामोंमें लोगोंके प्रति कहना न माननेका भाव और बातका जवाब नहीं देता। सामान्य कारणसे भी बहुत चिढ़ उठता है। सशङ्कित भाव, मृत्यु-भय। सवेरे बहुत आलस्य मालूम होता है और मानसिक परिश्रम करनेकी इच्छा नहीं होती। कोई विषय सोचना या लिखना नहीं चाहता।

मस्तक ।—सवेरे मिचलीके साथ सरमें चक्कर आना (कैल्के, सैबाड, स्ट्रान ; सवेरा होने बाद—ऐक्टिया, कैल्के, ग्रैनेट, जिङ्कम) ; शय्यासे उठनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो किसी पार्श्वकी ओर गिर जायगा (कैल्के-फास), मस्तिष्कमें गड़बड़ीके साथ सरमें दर्द मालूम होना (ब्राई, लैके, नेट्र-म्यूर, फास, नक्स-वोम), ऐसा मालूम होता है, मानो माथा दबाया जा रहा है। माथेके दाहिने पार्श्वमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। दोनों कनपटियोंमें ऐसा दर्द, मानो सट गयी हैं (ऐसिरम)। सरके पिछले भागमें एकाएक ऐसा मालूम होता है, मानो बायीं ओरसे दाहिनी ओर तक जकड़ गया, परन्तु यह भाव तुरन्त ही दूर हो जाता है। रोज़ सवेरे कनपटीमें स्पर्श असह्य मालूम होता है। डङ्क मारनेकी तरह दर्द पैदा करनेवाला सर-दर्द।

आँख ।—आँखें फाड़ और टकटकी लगाकर एक ओर देखा करता है (हायो, क्लोरम, ग्लोन, ओपि, नक्स-मस) ; बाईं आँख दाहिनी आँखकी अपेक्षा छोटी मालूम होती है (फास, सिपिया ; मृगी रोगमें—बूफो)। बाईं आँखकी ऊपरी पलक फूली मालूम होती है (ऐसिरम, सिफिलिन, फाइजस, साइक्ल, इग्ने, मिडोरिन, पेट्रोल ; नयी सर्दी रोगमें—कैलि-आयोड ; रोहिणी रोगमें—लैक-कैन ; बहुव्यापक सर्दी रोगमें—सैङ्गिविन)। दोनों आँखें ऐसी मालूम होती हैं, मानो ठण्डे पानीमें तैर रही है (ऐलूम, बार्बे, कोना, इयुफ्रे, लैक, लाई, मिडोरिन, प्लैट ; मानो आँखके भीतरसे ठण्डी हवा प्रवाहित हो रही है—थूजा)। खाँसनेपर आँखसे बहुत ज्यादा आँसू निकलते हैं (नेट्रम-म्यूर, ऐगार, इयुपेटो, सैबाड)।

नाक ।—बच्चेकी प्रत्येक खाँसी छींकमें बदल जाती है (ऐगार, बेल, सेनेगा)। आँसू गिरा करता है (नेट्र-म्यूर, सैबाड) और बच्चा आँख तथा

नाक मला करता है (सिना ; नींद खुलनेपर आँख और नाक मलता है—सेनिक) ;—छोटी माता या खसड़ा रोगमें। सवेरे नाकसे कसैला, त्वचा क्षय करनेवाला श्लेष्मा निकलता है (एरम-ट्राई, सिपा, लाई, मर्क, नक्स-वोम, साइलि)। नाकके नीचे तर दाने सब निकलते हैं और उनमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और खुजली पैदा हो जाती है। नयी और भयङ्कर नाककी सर्दी रोगमें नाकमें दर्द मालूम होता है, मानो नासा-रंध्रके मुँहपर जखम हो गया है।

मुखमण्डल आदि।—चेहरेका भाव और रङ्ग बदलनेवाला, ज्वरके समय चेहरा लाल और उसके बाद सफेद, अम्ल-भाव धारण करता है, परन्तु ठण्डक नहीं मालूम होती। दोनों ओंठ फड़का करते हैं और उसमें सूखी पपड़ी जमती है। काले रङ्गकी और फटी त्वचा ; भोजनके पदार्थ तीते मालूम होते हैं, खासकर रोटी। मुँहमें गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा इकट्ठा हुआ करता है।

गलेके भीतर।—तालु और कण्ठमें जलन मालूम होना। कण्ठमें जलन ; कण्ठमें उत्तेजना और उत्ताप मालूम होनेकी वजहसे लगातार खाँसी आया करती है।

पाकाशय।—असम्भव भूख ; किसी तरह भी उसकी तृप्ति नहीं होती (आर्स, कैल्कि, सिना, सिङ्कोना, ग्रैफ, आयोड, ऐन्टिम-टार्ट, सैबाडि)। खट्टी चीजें खानेकी इच्छा (कैल्के, इग्ने, कैलि-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, फास, पल्स, मिडोरिन)। ठण्डे पानीकी प्यास, पर श्वासमें कमीकी वजहसे थोड़ा-थोड़ा पानी पीता है (कैलि-नाई)। खाली डकार, मिचली—सवेरे खाँसनेके समय ; उदरोर्द्ध-प्रदेशमें लगातार मिचली मालूम होना, मानो पतले दस्त आनेपर उदर इसी ढङ्गके दर्दके साथ पर्यायक्रमसे मिचली पैदा हो जाती है। पाकस्थलीमें भार मालूम होना, मानो उसमें पत्थरका एक टुकड़ा रखा हुआ है (आर्स, ब्राई, नक्स, पल्स)। उदर और मूत्राशय-प्रदेशमें स्पर्श बिलकुल ही सहन न होना और दर्द मालूम होना। प्लीहामें दर्द (सियानो)। ऐसा मालूम होता है, मानो खाँसी प्लीहासे पैदा हो रही है, खाँसनेपर प्लीहासे गलेतक दर्द मालूम होता है। पाकाशयका दर्द—बाईं करवट सोनेपर घटता है। बाईं काँखकी तेरती हुई पसलीमें दर्द मालूम होना।

मल ।—जभी-तभी बदबूदार वायु निकलता है। उदरामय बहुत ही बदबूदार पानीकी तरह तरल, विशेषकर खसड़ेके समय या काले रङ्गका मल (लेप्टैन); कभी-कभी रसकी तरह मल फेन-भरा निकलता है। खाँसने या छींकनेपर आप-ही-आप मल-मूत्र निकलता है (खाँसनेपर मल निकलना—फास; छींकनेपर—सल्फ)। काँखनेके साथ सूत्र-कृमि और सूत्रमय पदार्थ मलके साथ निकलता है।

पेशाब ।—मूत्राशयपर लगातार यन्त्रणाजनक दबाव मालूम होना। बार-बार पेशाबका वेग और बहुत ज्यादा सफेद पेशाब (एपिस, ऐपोसिना)। खाँसनेपर आप-ही-आप पेशाब निकलना (कास्टि, वेरेट, ऐलूम, कोना, नेट्र-म्यूर, पस)। रातके समय शय्यामें पेशाब कर देना; पेशाब करनेके समय मल निकल जाता है (एलेन, ऐलो, ऐ-म्यूर, सल्फ)। मूत्राशयमें पेशाब ज्यादा इकट्ठा होनेकी वजहसे पेशाबका वेग रोक नहीं सकता; सब तरहके शोथ रोगमें वक्षकी सभी अवस्थामें पेशाबकी अधिकता मौजूद रहती है। गहरे लाल रङ्गका पेशाब (ऐकोन, आर्स, कैन्थ)।

श्वासयन्त्र ।—प्रचण्ड खाँसी, खाँसनेपर वक्षके बगलमें सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है (ऐकोन, ब्राई, केल्के-फास, चेलिडो, कर्बास, केलि-कार्ब, क्रियो, लेके, मर्क, सोरिन, सिपि); द्विदल उपास्थिके पीछे खुजलीके कारण पैदा हुई खाँसी, इसके साथ ही श्लेष्मा मिला बलगम; साँस छोड़नेके समय खुसखुसी खाँसी आती है। रोगी मुँह फाड़कर यन्त्रणा-ज्ञापक स्वरमें श्वास-प्रश्वासको क्रिया करता है; गलेमें साँय-साँय शब्द होता है; फुसफुसावरण-प्रदाहमें वक्षमें घड़घड़ शब्द सुन पड़ता है; रोगीको बाध्य होकर उठ बैठना पड़ता है (फास, एपिस, ऐण्टि-टार्ट, टैबाक, ब्रोम, ब्यूफो, वेरेट-विर, मर्क-सोल, आर्स, आयोड; बाध्य होकर नीचे खड़ा रहना पड़ता है—सीड्रन)। थोड़ा परिश्रम करनेसे ही श्वासाल्पता पैदा हो जाती है या रोगी हाँफ उठता है (आर्स, नेट्र-म्यूर, फास, साइलि, स्टैफ, ऐ-नाइ)। इतना हाँफा करता है कि पानी नहीं पी सकता; बच्चेको पानी देनेपर बड़े आग्रहसे दोनों हाथसे गिलास पकड़ रखता है; परन्तु श्वासाल्पताको वजहसे एक-एक चम्मचकर पानी पीता है (केलि-नाइ)। दिन-रात सूखी खाँसी आया करती है; नींदमें बाधा डालनेवाली खुसखुसी और घड़घड़ शब्द करनेवाली खाँसी; वायुनलीमें

कफ़ सञ्चय या वक्षमें खुजलीकी वजहसे खाँसी; खाँसनेपर सर-दर्द पैदा हो जाता है, श्वास-कष्ट होता है। अनजानमें पेशाब निकल जाता है; वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द या उदरमें दर्द मालूम होता है, ठण्डा पानी पीनेपर खाँसी आना (लाई, स्पाइलि; ठण्डा पानी पीनेपर खाँसीका घटना—कास्टि); खसड़ा रोगकी खाँसी (पल्स; खसड़ाके बादकी खाँसी—आर्नि, कैल्के, कैलि-कार्ब, स्यूरेक्स, ड्रोसेरा); भोजनके बाद खाँसी पैदा हो जाती है (हायो, डिजि, कैलि-बाई, कार्ब, फास) या किसी तरहका परिश्रम करते ही खाँसी पैदा हो जाती है (ब्राई, लाई, ड्रोसेरा, कैलि-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, फास, स्टैन)। बलगम सफेद या कुछ मीठा स्वाद लिये, श्लेष्मामय—बहुत बदबू या छप्पड़ जलनेकी तरह गन्ध, सवेरे पतले श्लेष्माकी खाँसी और सन्ध्याके समय सूखी खाँसी, परन्तु सन्ध्याके समयकी सूखी खाँसीकी अपेक्षा, सवेरेके ढीले बलगमवाली खाँसीसे ज्यादा सुस्ती आती है। हूप खाँसी—छींक मिली और बच्चा आँख तथा नाक मला करता है। प्लीहा-प्रदेशमें दर्द पैदा करनेवाली आक्षेपिक खाँसी। खाँसने या श्वास लेनेपर वक्षमें या वक्षके बगलमें सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है। सवेरे वक्षमें दर्द होता है। वक्षके ऊपर बहुत दबाव मालूम होता है। प्रचण्ड सूखी खाँसीके समय ऐसा मालूम होता है, मानो उदर फट जायगा और कण्ठमें सूखापन मालूम होता है। बार-बार श्वास लेनेके समय खाँसी आती है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दन अकड़ जाती है। वक्ष और अंसफलकके ऊपरी अंशमें चिलक मारनेकी तरह दर्द। बायाँ पृष्ठफलक मानो जकड़ गया है, ऐसा अनुभव होना, पर दर्द नहीं मालूम होना। बाँह और दोनों पैर रह-रहकर फड़क उठते हैं। औंघाईके सिवा रोगी बार-बार जम्हाई और अङ्गड़ाई लेता है। समूची देह बहुत क्षीण और थकी मालूम होती है। दोनो गालोंकी त्वचा क्षय हो जाना (ग्रैफ, मैङ्ग)।

निद्रा।—बेचैन नींद; रोगी करवट बदला करता है (ऐको)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—हाथ और पैर बरफकी तरह ठण्डे, पर बाकी अंश गर्म (मिनियैन)। सूखा और जलन करनेवाला उत्ताप, शरीरका कोई भी अंश खोलनेपर उसमें दर्द और सिहरावन पैदा हो जाती है। प्रचण्ड जलन पैदा करनेवाले उत्तापके समय भी पसीना नहीं दिखाई देता।

वृद्धि ।—सवेरे श्वास लेनेके समय, शरीर हिलानेपर, शरीर खोलनेपर, ठण्डी हवा लगनेपर, किसी तरहके परिश्रमसे, सीढ़ी चढ़नेके समय और खाँसनेपर।

उपशम ।—स्थिर रहनेपर, शय्यामें सोनेपर, गर्म कपड़ेसे शरीर ढँकनेपर, सीधे होकर बैठनेपर और बहुत थोड़ा बलगम निकलनेपर।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष ।—कैम्फोरा। फुसफुसावरण-प्रदाह रोगमें ब्रायोनियाके बाद इसके प्रयोगसे लाभ होता है।

तुलनीय ।—स्वर-दर्द—ब्रायो ; मीठा बलगम—कैम्फ ; खाँसनेपर आप-से-आप पेशाब—फास ; हँसनेपर—सल्फ ; पेशाब करनेमें—ऐलो, सलफर। भोजनके पदार्थका मीठा स्वाद— लाइको, पल्स इत्यादि।

सदृश ।—ऐण्टि-टार्ट, ब्राई, कास्टि, सिपा, केलि-कार्ब, केलि-नाई, नक्स-वोम, रस, सल्फ, पल्स, क्लोरम, रियुमेक्स, क्रिसस, वेरेट-विर, वेरेट-एल, लाई, मर्क, सियानोथस, पल्स, साइलि, स्टैनम।

शक्ति ।—१म दशमिकसे २०० शततमिक क्रम। निम्न-क्रमका ही प्रयोग अधिक होता है।

स्काइनस

(SCINUS)

दूसरा नाम ।—स्काइनस सालि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फल या पत्तेसे अरिष्ट तैयार हुआ करता है।

उपयोगिता और आभास ।—यकृतमें दर्द, अन्ननलीमें सूखापन, मेरुदण्डमें खींचन मालूम होना और दस्त-कैके लक्षणमें इसका प्रयोग होता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ऐनाकार्ड, रस, कोमोक्लेडिया।

शक्ति ।—३x—६।

स्किरिनम

(SCIRRHINUM)

दूसरा नाम।—कार्सिनोमिनम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—कठिन कर्कटके जखमके अंशसे इसका विचर्ण तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह कैन्सर रोगको, विशेषकर कैन्सर धातुवाले व्यक्तियोंकी बीमारीकी एक खास दवा है।

डा० वार्नेटने इस रोग-विषज औषधका आविष्कार किया था। उन्होंने इसकी अपने ही शरीरपर परीक्षा की थी। परिणाम यह हुआ कि उनकी नाभीके पास एक गहरा गड़हा पैदा हो गया और इस गड़हेको ही उन्होंने इसका एक विशेष लक्षण मान लिया।

स्तन या गलेकी ग्रन्थियोंका पत्थरकी तरह कड़ापन और अर्बुदके लक्षणकी यह एक उत्कृष्ट दवा है। पैरमें सेंहुआ और रक्त-स्राव भी इसके द्वारा आरोग्य होते देखा गया है।

लक्षणके अनुसार सिना, टियुक्रियम इत्यादिसे क्रिमि रोगमें आशानुरूप लाभ न होनेपर कितनी ही बार स्किरिनमके प्रयोगसे रोगका परिवर्त्तन हो जाता है, पर मलके साथ क्रिमि निकल जाती है और रोग आरोग्य हो जाता है।

सन्ध्या ५ से ६ बजेतक और रातमें इसकी तकलीफ़ बढ़ जाती है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय।**—दूसरी-दूसरी रोगज दवाओं तथा सिना, टियुक्रियम, सल्फ़, सैबाडि, सिपि, हेलिबो, हाइड्रो, कैन्सर, फाइटो, आर्स।

शक्ति।—३x—३०।

स्क्लोपेण्ड्रा

(SCLOPENDRA)

दूसरा नाम।—सेप्टिमिडि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जीवित प्राणीसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—हृद्शूल, आक्षेप, मारात्मक जखम, गैंग्रीन या सड़नेवाले घाव, पीठ और कमरमें दर्दके लक्षणकी यह एक उत्कृष्ट दवा है ।

शक्ति ।—३x—३० ।

स्कार्पियो

(SCORPIO)

दूसरा नाम ।—स्कार्पियन, बिच्छू ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जीवित बिच्छूसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—धनुष्टङ्कार, डेरा देखना, दाँती लगना, मुँहसे लार बहना प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—एपिस, स्कोलोपेण्ड्रा, वेस्पा, टैरेण्टुला ।

स्क्राफुलारिया

(SCROFULARIA)

दूसरा नाम ।—स्क्राफुलारिया नडोसा, फिग-वार्ट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे ताजे गुल्मसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह एक बदबूदार गुल्म है और गण्डमाला रोगकी एक बहुत ही उत्तम दवा है ; चर्मपर इसकी खास क्रिया होती है । स्तन या कानके पासका अकौता ; गला, बगल और पुट्ठेकी ग्रन्थिका फूलना, अण्डकोषमें सूजन, स्तनका कड़ापन प्रभृति लक्षणोंमें इससे विशेष लाभकी आशा की जाती है । खूनी बवासीर और सरमें चक्कर तथा तन्द्रालुताके लक्षणमें भी इसका व्यवहार होता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—लोनेलिया-एरिनम, रूटा, कार्सिनोसिन, कोनायम, ऐक्टियस, स्क्रिहिनस ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

स्कुटेलेरिया लेटेरिफोलिया

(SCUTELLARIA LATERIFOLIA)

दूसरा नाम ।—इड बार्ट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इस गाछके समूचे अंशसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—मस्तिष्कमें उत्तेजना ; ताण्डव ; कम्पके साथ प्रलाप ; दाँत निकलनेमें कष्ट ; आध्मान ; सर-दर्द ; हिचकी ; जलातङ्क ; मूर्च्छा-वायु ; अनिद्रा ; तम्बाकू खानेके कारण हृत्कम्पन ।

उपयोगिता और आभास ।—यह स्नायविक उत्तेजनाको दबानेवाली एक दवा है, खासकर जहाँ उत्तेजनाके साथ आशङ्का बनी रहती है । हृत्पिण्डकी उत्तेजनामें यह बहुत लाभदायक है । बहुत दिनोंतक शारीरिक और मानसिक परिश्रमकी वजहसे स्नायविक या जीवनी-शक्तिका बहुत सुस्त पड़ जाना लक्षणमें यह संजीवनी-सुधाकी तरह काम करती है । नींद न आना, रातमें भय । मूर्च्छावायु, यन्त्रणा या मानसिक उत्तेजनाके कारण स्नायविक चञ्चलता और बच्चेको दाँत निकलनेके समय या अन्त्रगत उत्तेजनाकी वजहसे मस्तिष्क-प्रदाह वगैरह भी इससे दब जाया करता है । कागजके बने चुरुट सेवनके कारण क्षीण हृत्पिण्ड और आँखका गोला बाहर निकला रहनेके साथ क्षीण और अनियमित हृत्पिण्डकी क्रिया भी इसके व्यवहारसे स्वाभाविक और सरल हो जाती है ।

लक्षणावली

मन ।—सशङ्कित भाव, मानो किसी आनेवाली विपत्तिसे डर रहा है (ऐमोन-कार्ब, ऐमिल-नाई, ऐक्टिया, लोरो, लिलियम-टाई, सिपि, वेलि,

वेरेट-ऐल, विचि)। अध्ययन करनेकी चेष्टा करनेपर माथेके भीतरका सब कुछ गायब हो जाता है; किसीमें भी मनको नहीं जमा सकता (इथ्यू, ऐग्नस, इस्क्यु, साइलि, बोवि, लैक-कैन, लाइकोपस-वर्जि, सेनेसियो, जेरोफिलम)।

मस्तक।—ललाटदेशमें सर-दर्द। सरमें चक्कर, इसके साथ ही सवेरेके भोजनके बाद ही रोशनीका सहन न होना (ग्लोन, ऐगार)। धीमा दबाव मालूम होनेवाला सर-दर्द; वृद्धि—अध्ययन आदि करनेपर (पल्स, इस्क्युलस-हिप, ब्राई, नक्स-वोम, नेट्र-मूर, फाइजस, मिडोरिन)। सवेरे शय्यासे उठनेके समयके पहले अधकपारीका दर्द, विशेषकर दाहिनी आँखके ऊपरी प्रदेशपर (लैक-डिफ्लो), घरके बाहर टहलनेके समय निर्मल वायु लगनेपर घट जाया करता है (रैनान-बल्बो, ड्रोसेरा)। सर-दर्द; बढ़ना—भोजन करनेपर और घटना—शरीर हिलानेपर (भोजनके बाद बढ़ना—कैल्के-फास, कार्बो-वेज, काफिया, हायो, नक्स-वोम, रास, जिङ्कम)। दोनों आँखें ऐसी मालूम होती हैं, मानो भीतरसे बाहरकी ओर धक्का दे रही हैं (कैमो, नक्स-वोम, कोमोक्लेड, फाइटो, सिलि, स्पाई) या मानो बाहर निकल पड़ती हैं (फेरम, आयोड, स्पिञ्जिया, लाइकोपस, फास)। चेहरा तमतमाया या प्रदीप्त। रह-रहकर एकाएक दोनों हनु जुड़ जाते हैं और ऐसा मालूम होता है, मानो मुँहकी पेशियां सब सट या जकड़ गयी हैं (ऐनान्थि, बेल, जेल, साइलि, स्ट्रैमोन; पेशियोंकी अकड़न—हाइपिर, नक्स)। चक्षुगोलकमें दर्द (ऐकोन, ऐक्टिया, ग्लोन, रियुटा)। ऐसा अनुभव होना कि गलेमें एक गोला अड़ा है और कुछ भी निगला नहीं जा सकता (जेल्स, लैक-कैन, लैके, रियुमेक्स)।

पाकाशय आदि।—मिचली, डकार, प्रबल हिचकी (साइकूत्र, साइक्लेम, हायो, इग्ने, नक्स-वोम, नक्स-मस), पाकाशयमें दर्द और बहुत बेचैनी मालूम होना। उदरमें आध्मान-वायुका सञ्चय होना (लाई, नेट्रम-सल्फ, नक्स-मस, लाइकोपस)। सफेद रङ्गका मल। पेशाबके साथ पित्त निकलना। रेतस्खलन और नपुंसकता—रोगी समझता है, कि वह अब अच्छा न होगा।

श्वास-यन्त्र।—बाहर निकला हुआ आँखका गोला (आँख बाहर निकल पड़ती है) साथ ही हृत्पिण्ड-प्रदेशमें ऐसा दर्द, मानो कोई नोकीली सलाई बिंध रही है। सन्ध्याके समय ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्ड-

प्रदेशमें टपक होती है। कागजका चुरूट सेवन करनेके कारण हृत्पिण्डकी क्षीणता (फास)।

निद्रा ।—बेचैन नींद और डरावने सपने, किसी तरह भी आराम नहीं मिलता। लगातार टहलना पड़ता है (ऐक्टिया, लिसिन, आर्स)। अन्धकारसे भय (ब्रोम, आरम, कैलि-ब्रोम, ऐकोन, क्लोरैल)। अनिद्रा, एकाएक नींद खुल जाती है और फिर नींद नहीं आती। बहुत देरतक सोता है और नींद खुलनेपर सरमें तेज़ दर्द पैदा हो जाता है। निद्रित अवस्थामें बार-बार चौंक उठता है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—पेशियोंका स्पन्दन; बिना चले या बिना शरीर हिलाये सो नहीं सकता; ऊपरी अङ्गमें तेज़ डङ्क मारनेकी तरह दर्द। सवेरे सोकर उठनेके समय शारीरिक आलस्य मालूम होना।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—लाइकोपस-वर्जि, साइप्रिपिडियम, हायो, कैलि-ब्रोम, आयोड, लिसिन, आरम, ब्रोमिट, लेके, मैग-कार्ब।

तुलनीय ।—स्नायविक अवसाद—साइप्रिपिड। हनुस्तम्भ या जबड़े अटकना—नक्स-वोम। जलातङ्क—ऐगारि, बेलेडो, लिसिन।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३रा दशमिक क्रम।

सिकेलि कार्नूटम

(SECALI CORNUTUM)

दूसरा नाम ।—अर्गट आव राई।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे छत्तेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—गर्भ-स्रावकी आशङ्का; नकली प्रसवका दर्द; अण्डलाल मिला पेशाब; मलांत्रका शिथिल भाव; क्षीण दृष्टि; मूत्राधारका पक्षाघात; फोड़ा; दूषित फोड़ा; मोतियाबिन्द; बच्चोंका हैजा; ताण्डव; आक्षेप; ऐंठन; अतिसार; निगलनेमें कष्ट; मृगी; नाकसे रक्त-स्राव; पैरमें ऐंठन; पैरमें जलन; सड़नेवाला जखम;

पाकाशयका प्रदाह ; ग्रन्थिका फूलना और पीब सञ्चय ; गलगण्ड ; खून-मिला पेशाब ; रक्त-स्राव ; रक्तस्रावकी धातु ; हृत्कम्पन (कलेजा काँपना) ; हिचकी ; मूर्च्छावायु ; ध्वजभङ्ग ; यकृतका बढ़ना ; प्रसवके बादका स्राव बदबूदार ; कटिवात ; अतिरजः ; जरायुसे बहुत अधिक स्राव या जरायुसे बहुत खून जाना ; स्तनका दूध रुक जाना ; गर्भ-स्राव ; स्नायुशूल ; रातमें पसीना ; सुन्न हो जाना ; डिम्बाशयका अर्बुद ; पक्षाघात ; फूल अटकना ; प्रसवके बाद रक्त-स्राव ; गर्भावस्थामें नकली प्रसवका दर्द ; धूम्र-रोग ; चेचक ; मेरुमज्जाकी उत्तेजना ; तोतलाना ; पाकाशयका कर्कट रोग ; मूत्रद्वारका रुकना ; सान्निपातिक ज्वर ; जरायुकी कमजोरी ; जरायुका अपने स्थानसे हटना इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—इसका प्रधान क्रियाफल है—आक्षेप, पर्यायक्रमसे पेशियोंमें अकड़न और शिथिलता पैदा करनेवाला आक्षेप ; रोगीकी देह कभी कड़ी, न लच खानेवाली और कभी तुरन्त हो शिथिल और लचीली हो जाती है ; यह अवस्था रोगीके हाथमें अच्छी तरह दिखाई देती है, उसकी हाथकी अंगुलियाँ सब अलग-अलग फैल जाती हैं । शायद ही कभी हाथकी मुट्ठी बँधी-सी दिखाई देती है । और भी इसका एक प्रधान क्रियाफल है—रोगीकी शरीरकी त्वचा सिकुड़ी, सूखी और पतली ; इसलिये जिनका शरीर अस्थि-कङ्कालकी तरह हो गया है, दोनों आँखें और गाल गड़हेमें धस गये हैं, स्वभाव क्रोधी है, रक्त-हीन हो रहे हैं, ऐसे म्लान मूर्त्ति रोगियोंके लिये यह विशेष उपयोगी हुआ करती है । बहुत वृद्ध, बहुत क्षीण मनुष्योंके लिये भी लाभदायक है । जिनकी सभी इन्द्रियाँ और पेशियाँ बहुत शिथिल हो रही हों और सभी द्वार खुले-से हों, पेशियोंमें इतनी भी दृढ़ता न हो, कि उन द्वारोंको रोक रखें और जिन्हें सामान्य कारणसे भी शरीरके अन्यतम द्वारसे पानीकी भाँति पतला काला रक्तका स्राव होता है, उन सब शिथिल तन्तुवाली स्त्रियोंके लिये सिकेलि परम लाभदायक है । इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं :—(१) रक्त-स्राव-प्रवणता ; साधारणसे जखमसे भी बहुत देरतक रक्त-स्राव ; निकला हुआ रक्त हरी आभा लिये पतले रसकी तरह होता है और बहुत बदबूदार होता है । रक्त-स्रावके समय हाथ-पैरोंमें झुनझुनी आ जाती है और रोगिनी बहुत क्षीण हो पड़ती है । (२) चेहरा मलिन, भूरा, हड्डियाँ निकली, आँखें गड़हेमें धसीं, गाल चिपके और बदरङ्ग, दोनों आँखें नीले घेरेसे घिरी । (३) राक्षसकी तरह स्वाभाविक

चेहरा; भूख न लगना; शरीरको शोष लेनेवाले पतले दस्त आना; रोगीको सर्व-ग्रासी भूख पैदा हो जाती है; रोटी, खट्टी चीजें खाना और लेमोनेड पीना चाहता है। (४) समूची देह जला करती है, मानो रोगीके शरीरपर आगकी चिनगारियाँ बरस रही हैं। (५) देहकी त्वचा छूनेपर बरफकी तरह ठण्डी मालूम होती है, पर रोगी शरीरपर वस्त्र नहीं रखना चाहता। हाथ-पैर आदि बरफकी तरह ठण्डे। (६) हैजाकी हिमांग अवस्थामें नाड़ी प्रायः स्पर्शमें नहीं आती, शरीरकी जगह-जगहकी पेशियाँ फड़का करती हैं, हाथकी अंगुलियाँ सब फैल जाती हैं, आँख और गाल धस जाते हैं, नाक ऊँची हो जाती है, शरीरकी त्वचा सूखी, रुखड़ी, सिकुड़ी, मानो शरीरमें रस न हो—ऐसी अवस्थामें भी रोगी बाहरी उत्ताप सहन नहीं कर सकता। शरीरका ओढ़ना दूर फेंक देता है। उत्ताप लगनेपर या गर्मीसे रोगका बढ़ना सिकेलिका एक अव्यर्थ निर्णायक लक्षण है। (७) बाहरी गर्मी लगनेपर सड़नेका लक्षण पैदा हो जाता है। (८) फैली हुई काली लकीर या त्वचाका नीलापन, लाल छाले। (९) विद्रधि या फोड़े—छोटे, पर उनमें बहुत दर्द, उसके भीतरके पदार्थ हरे, बहुत धीरे-धीरे पकता है और बहुत देरसे अच्छा होता है; बहुत कमजोर करनेवाला। (१०) मलका पतलापन - मल बहुत ज्यादा, पानीकी तरह, सड़ा और भूरा, बड़े वेगके साथ निकलता है। रोगी बहुत जल्द सुस्त हो पड़ता है; बिना दर्दका और अनजानमें निकल जाता है, मलद्वार हमेशा खुला रहता है। (११) बुढ़ापेकी वजहसे अनजानमें शय्यामें पेशाब हो जाना, पेशाब फीका, पानीकी तरह या खून मिला; मूत्राघात या मूत्र-रोध। (१२) ऋतुस्राव अनियमित; स्राव बहुत ज्यादा, काला और बहुत पतला, ऋतुके समय तलपेटमें प्रसवके दर्दकी तरह दर्द और दबाव मालूम होता है; जबतक दुबारा ऋतु नहीं होता, तबतक बराबर पानीकी तरह पतले रक्तका स्राव हुआ करता है। (१३) प्रदर—हरी आभा लिये या भूरा रङ्ग और बहुत बदबूदार। (१४) गर्भ-स्रावकी सूचना, विशेषकर तीसरे महीने; बहुत देरतक स्थायी नीचेकी ओर खींचनकी तरह दर्द, मानो ऊपरसे नीचेकी ओर ढकेल रहा है। (१५) प्रसव वेदनाके समय वेग अनियमित, बहुत क्षीण, क्षण-क्षणमें रुक जाता है; सभी पेशियाँ शिथिल और सभी द्वार खुले; बाहर निकलनेकी शक्ति बिलकुल ही न रहना। रोगिनीको क्षण-क्षणमें मूर्च्छा आ जाती है। (१६) प्रसवके बादका दर्द—बहुत देरतक स्थायी, बहुत यन्त्रणाजनक, जरायुका

डमरूकी तरह सङ्कोचन। (१७) प्रसवके बाद स्तनका दूध गायब हो जाना, विशेषकर यदि रोगिनी दुर्बल हो।

लक्षणावली

मन।—निर्बोधकी तरह भाव, अर्द्ध तन्द्राभिभूत अवस्था (बेल, ओपि, हायो, फास, ऐ-फास)। चिन्ता शक्ति गायब (बेप्टि, कार्बो-वेज, हायो, ओपि, ऐ-फास)। प्रलाप—प्रशान्त या उन्मत्तकी तरह; उन्माद—दाँत काटने दौड़ता है (क्यूप्रम, हायो, लैके, स्ट्रैमोन); पानीमें डूबना चाहता है (बेल, ड्रोसेरा, हेलिबो, हायो, लैके, पल्स, रास, साइलि); उसे ऐसा मालूम होता है, मानो उसका घर एक ऊँची उठती हुई तरङ्गोंवाला समुद्र हो रहा है और रोगिनी उसमें डूब जाती है; रोगिनी समझती है, कि मानो दो मनुष्य बीमार हैं, एक मर गया और दूसरा अच्छा हो गया (रोगिनी समझती है कि वह तीन मनुष्य है; किसी तरह भी उसके शारीरिक यन्त्र तीनोंको एक नहीं कर सकते—बेप्टि)। मृत्यु-भय और अत्यन्त आशंका (ऐकोन, आर्स)। अन्तिम श्वास-तक ज्ञान बना रहता है (स्ट्रिकनिन)। मृत्युके कुछ ही पहले एक बार बुझता हुआ दीया जल उठता है—रोगीकी ऐसी अवस्था मालूम होती है, मानो रोग बहुत कुछ अच्छा हो गया है।

मस्तक।—स्तम्भित भाव। अत्यन्त भारी मालूम होता है और दोनों पैरोंमें चुनचुनी हुआ करती है; जरायुसे रक्तस्राव होनेके कारण सुस्ती आ जानेकी वजहसे माथा और दोनों पैरोंमें झुनझुनी होकर रोगी बेहोश और गहरी नींदमें जा पड़ता है। माथा बहुत छोटा मालूम होता है, खासकर माथेका पिछला अंश। वह ढलमलाता है, चलनेके समय पैर लड़खड़ाते हैं। सरमें चक्कर आनेके साथ माथेमें टपक होनेकी वजहसे रोगिनी चल नहीं सकती। माथा और वक्षमें खूनका दौरान, केश झड़ जाते हैं। माथा इधर-उधर चक्कर खाता है या काँपा करता है (स्ट्रिकनिन)।

आँख।—आँख बैठ जाती है और नीले घेरेसे घिरी रहती है (सिङ्को, कैलि-आयोड, फास)। दृष्टि स्थिर, उन्मत्तता बतानेवाली और रोगी टकटकी लगातार एक भावसे देखा करता है (बेल, कैन्थ, हायो)। तिमिर दृष्टि या

अन्धकार देखना। पुतली फैल जाया करती है (बेल, हायो, स्ट्रैमोन)। मोतियाबिन्द या अन्य (फास, सिनारेरिया-मैरिटिमा); सरमें चक्कर आना और इसके साथ ही कानमें आवाज़ और रोशनीका सहन न होना। कोई भी चीज़ दो या तीन दिखाई देना। दृष्टिके सामने नीला रंग या आगकी चिनगारियाँ सब उड़ती दिखाई देना (ऐमोनियैक)। आँखमें दर्द और ऐसा मालूम होता है मानो दोनों आँखके गोले जोरसे घूम रहे हैं। आँखमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। पत्थरके कोयलेका धुआँ लगकर आँखकी ऊपरी पलकका निष्क्रिय हो जाना या पक्षाघात। मुखमण्डलके विसर्प रोगके बाद पलकोंका हिला न सकना।

कान।—शब्द एकदम सहन न होना; बहुत सामान्य शब्द भी उसके मस्तिष्कमें मानो प्रतिध्वनित हो उठता है और रोगी उससे काँप उठता है। श्रवण-शक्तिका घटनाके साथ कानमें आवाज़ या कर्णनाद (केल्के-कार्ब, कार्बोन-सल्फ़, मर्क, ऐ-फास)। विसूचिका रोगके बाद बहरापन।

नाक।—नाकसे खूनका स्राव—लगातार खून निकला करता है। रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है। कमजोरीकी वजहसे वृद्ध या शराबियोंकी और युवती रमणियोंकी नाड़ी सूतकी तरह सूक्ष्म और द्रुत (ऐकोन, बेल, ब्राई, हैमा)। नासा बन्द—दोनों रन्ध्र रुके रहते हैं, पर लगातार पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव हुआ करता है।

मुखमण्डल।—चेहरा म्लान, रक्तशून्य, आँख और गाल गड़हेमें धसे, हड्डीभर और नोकीली उठी हुई नाक तथा उद्वेग प्रकट करनेवाला चेहरा (आर्स, केम्फो, वेरेट-एल, कार्बो-वेज, ओपि)। दोनों ओठ नीले या मुर्देकी तरह रक्त-शून्य (ऐ-हाइड्रो, क्यूप्रम, लाई, ओपि, ऐण्टि-टार्ट)। चेहरेपर प्रेतकी तरह हँसी (बेल, स्ट्रैमोन, वेरेट, इग्नेशिय) प्रकट होती है। पेशियोंका स्पन्दन या सिकुड़ना फैलना—पहले चेहरेपर आरम्भ होकर समूची देहमें फैल जाता है और यह स्पन्दन धीरे-धीरे बढ़कर नर्तनमें परिणत हो जाता है। ललाट बहुत गर्म।

मुख-विवर।—जीभ निर्मल या सफेद लेप चढ़ी (ऐण्टि-क्रूड, ब्राई, नक्स-वोम, पल्स)। जीभपर बहुत बेचैन करनेवाली सुरसुरी और जलन मालूम होती है और चुनचुनी हुआ करती है। मुँहसे निकली हुई हवा

बदबूदार (आर्नि, मर्क, आयोड, कैलि-फास, लैक-डिफलो)। मुखसे लार अधिक बहना (आयोड, कैलि-आयोड, हिपोमैनिस, लैक-कैन, मर्क, ऐ-मूर, ओपि, फास, साइलि)। तोतलानेकी तरह क्षीण और अस्पष्ट वाक्य, मानो जीभ अकड़ गयी है (कास्टि, जेल, हायो, स्ट्रैमोन)।

गलेके भीतर।—गला और अन्ननालीमें बहुत सूखापन मालूम होना (एपिस, आर्स, नक्स-मस) और प्यास बढ़ जाया करती है। तेज़ प्यासके साथ कण्ठमें जलन। कण्ठ और जीभमें बेचैनी पैदा करनेवाली सुनचुनी।

पाकस्थली।—राक्षसी भूख (ब्राई, सिना, फेरम, लाई); देह और बलको शोषण कर लेनेवाले पतले दस्त—उदरामय रोगमें भी रोगीको सर्वग्रासी भूख लगा करती है। रोगी लेमोनेड वगैरह खट्टी स्वादवाली चीजें पीना चाहता है (वेल, ऐ-नाई, जेट्रोफा, पल्स, सैबाई ; खट्टी चीजें पसन्द करता है (एपिस, आर्स, कैमो, इग्ने, कैलि-कार्ब, लैके, नेट्र-मूर, पल्स)। भयानक बेहद प्यास (ऐकोन, आर्स, ब्राई, रस-टक्स, सल्फ)। हिचकी, मिचली और ओकाई (ऐण्टि-टार्ट, इपिक)। पित्तमय पदार्थ वमन (आइरिस-वार्सि, नक्स, पोडो); श्लेष्मा वमन; घोर भूरे रङ्गका, काफीकी तलीकी तरह वमन (कोना, नेट्र-मूर, फास, सिडोरिन, नेट्र-फास); पेटमें जो कुछ रहता है, सब वमन हो जाता है (ब्राई, फेरम, आर्स, नक्स, फास, सैंगिविन, साइलि, क्रियो, वेरेट)। खूनका वमन (आर्नि, कैक्ट, कार्बो-वेज, सिङ्को, क्रोटेलस, फेरम, हैमा, इपिक, फास, सैबाई)। उदरके ऊपरी भागमें बहुत उद्वेग और दबाव मालूम होना और पाकाशयको छूनेपर बहुत दर्द मालूम होता है। पाकाशयमें दबाव मालूम होना, मानो कोई भारी चीज पेटमें रखी है (ऐकोन, ब्राई, कैमो, लैक-कैन, नक्स-वोम, पल्स), विशेषकर भोजनके बाद (फास, कैलि-कार्ब)। पाकाशयमें जलन हुआ करती है (आर्स, कैन्थ, आइरिस, सैङ्गिविन), इसके साथ ही उदरमें दर्द। केचुआ जैसी कृमिका वमन हुआ करता है (सिना, सैबाड)।

अन्त्राशय।—पेट फूला और आध्मान वायुसे भर उठता है (आर्नि, सिङ्को, फास)। यकृत बढ़ा हुआ (सिङ्को, मैग-मूर, कार्डुयस-मेरी, चियोनैन्थस-वार्जि, चेलिडो, लाई, मर्क-डाल, नेट्र-मूर, फास, पोडो)। यकृत-प्रदेशमें तेज़ दर्द (वेल, चेलिडो, कैलि-कार्ब, लैके, लाई)। यकृतका प्रदाह और सड़नेका

लक्षण। भयानक अन्त्रशूल और अकड़न (साइक्यूटा, क्यूप्रम), तलपेटमें लगातार नीचेकी ओर दबाव। उदर और कमरमें सर्दी मालूम होना; तलपेटमें दर्द, उदरमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता, गड़गड़ाया करता है और लगातार मिचली मालूम हुआ करती है। इसके साथ ही मस्तिष्ककी जड़ता, नाभि-प्रदेशमें प्रबल टपक (ऐलो, टिलिया)। प्लीहा और श्रोणि-देशमें लगातार जलन, प्रसव-वेदनाकी तरह कमरमें दर्द, मानो कमर टूट पड़ेगी।

मलान्त्र और मल।—मलका पतलापन, मल पानीकी तरह, सड़ी, गन्ध-भरा और भूरे रङ्गका बहुत अधिक मल; बड़े वेगसे निकलता है (क्रोटोन-टिग, जेट्रोफा, गैम्बो, रेफि); बलका बहुत ही शोषण करनेवाला (आर्स, बेप्टि, कैम्फो, कार्बो-वे, सिंको, वेरेट); आँतोंमें दर्द आदि नहीं होता (नेट्र-सूर, गैम्बो, पोडो); अनजानमें निकलनेवाला (आर्नि, बेल, हायो, नेट्र-सूर, ओलियान, ओपि, रास, कैम्फो, फास, सोरिन); मानो मलद्वार हमेशा खुला ही रहता है (ऐलो, एपिस, फास)। मारात्मक विसूचिका, स्तिमित या हिमांग अवस्था, चेहरा मानो हड्डी-भर रह गया, गाल आदि बैठ जाते हैं; विकृत-भङ्गी धारण करता है और शरीरपर इस तरह सुरसुरी होती है, मानो चींटी चल रही है। शरीरकी त्वचा बरफकी तरह ठण्डी या रोगी शरीरपर किसी तरहका आवरण सहन नहीं कर सकता (कैम्फो)। उपविसूचिका; वमन कितना भी हो या न हो, बार-बार ओकाई बहुत आया करती है। मलान्त्र और मलद्वारका पक्षाघात। उदरसे खूनका स्राव (एपिस, हैमा, फास, क्रोटेलस, कैल्कै रिला, सल्फ)। कब्जियत, इसके साथ ही बार-बार वृथा वेग (ऐल्य, ब्राई, नक्स, ओपि, फास, सल्फ)।

पेशाब।—मूत्राशयका पक्षाघात (बेल, कास्टि, कोना, हायो, ऐक्ट, डालका, नक्स)। पेशाब रुकना (ऐकोन, एपिस, कैन्थ, लाई, ओपि, बेल, रास, स्ट्रैमोन)। पेशाब रुकना या पेशाब पैदा न होना (ऐकोन, स्ट्रैमोन, कैम्फो, कैलि-बाई, लाई, फास)। मूत्र फीका और पानीकी तरह (ऐ-फास, काकुय, नेट्र-मूर, स्किला, टेरिब), विशेषकर बहुमूत्र रोगमें (लाई)। बुढ़ापेके कारण आप-ही-आप पेशाब (अरम-मूर, सिपा, आयोड, कैलि-फास); पेशाब फीका, पानीकी तरह स्वच्छ या खून मिला।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतुस्राव अधिक और सात-आठ दिन (ऐमोन-कार्ब, कैल्के, कैलि-कार्ब, नक्स) स्थायी हुआ करता है। ऋतुके समय छेदनेकी तरह अन्त्रशूल, हाथ-पैर बरफकी तरह ठण्डे, ठण्डा पसीना निकलता है, रोगिनीकी नाड़ी बहुत सङ्कीर्ण अनुभूत होती है या तेज़ धनुष्टङ्कारकी तरह आक्षेप पैदा हो जाता है; अनियमित प्रकोप; बहुत ज्यादा काला रक्तस्राव हुआ करता है (प्लैट, पल्स, आस्टिलेगो, कैमो, साइक्लेमेन, क्रियो, लैकेसिस, लिलि-टाई, सैबाई); तलपेटमें प्रसवके दर्दकी तरह नीचेकी ओर प्रबल दबाव मालूम होता है; ऋतु बन्द होने बाद फिर ऋतु न होनेतक लगातार पानीकी तरह खून निकला करता है। कभी-कभी आर्त्तवका रक्त काले रङ्गका थक्का-थक्का (ऐकि, कैमो, क्राकुस, कैलि-नाई, प्लैट, पल्स, सैबाई, आस्टिलेगो) या बहुत बदबूदार भूरी आभा लिये तरल पदार्थ। जरायुसे रक्तस्राव—थोड़ा भी शरीर हिलानेपर बढ़ जाता है (कैक्टस, इरिजिरन, इपिका, सैबाई)। चोट, गिरना आदि बाहरी या गौण कारणसे होनेवाला रक्त-स्राव—बहुत बदबूदार काले रङ्गका खूनका स्राव होता है। वयःसन्धिकालमें पेशियोंकी शिथिलताके कारण उत्पन्न रक्तस्राव। जरायु और दाहिनी डिम्बाधारमें खूनकी अधिकता और उसके छूने या दबानेपर बहुत दर्द मालूम होता है। जरायुका जखम—ऐसा मालूम होता है, मानो जल गया है, स्राव बदबूदार, खून मिला रस। फूले हुए जरायुमें दाहकी तरह जलन; जरायु कड़ा और छूनेपर दर्द होता है। जननेन्द्रियमें बाहरकी ओर जखम होकर वह बिगड़ जाता है और तेजीसे फैलता जाता है (लैक-कैन, ऐ-नाई, मर्क,रास)। प्रदर—स्राव हरा या भूरा और बहुत दुर्गन्धित (हरे रंगका—ऐ-नाई, कार्बो-वेज, मर्क, नेट्र-म्यूर, सिपिया ; भूरा—ऐ-नाई, कार्बो-वेज, मर्क, नेट्र-म्यूर, सिपिया, सिलि, लिलि-टाई)। भ्रूणका पोषण रुक जाना। गर्भ-स्रावकी सूचना, विशेषकर तीसरे महीने (सैबाई, ऐकिटया-रेसि, क्रोकस, थूजा)—बहुत ज्यादा काले रङ्गका पानीकी तरह रक्त-स्राव हुआ करता है; बहुत देरतक नीचेकी ओर दबाव और वेग मालूम होता है; रक्तमय स्रावके साथ नकली प्रसवका दर्द। गर्भ-स्रावके बाद जरायु बहुत देरसे संकुचित होता है और गर्भावस्थामें पतले, काले बदबूदार पदार्थका स्राव हुआ करता है—जभी-तभी बहुत देरतक नीचेकी ओर दबाव मालूम होता है, खासकर जब गर्भिणी बहुत दुबली और अस्वस्थ रहती है। पैरकी पीटलीमें कभी-कभी ऐंठन होती है। प्रसवके दर्दके समय

ऐंठन होती है। प्रसवके दर्दके समय रह-रहकर बहुत देरतक नीचेकी ओर दबाव मालूम होता है; वेग अनियमित, बहुत क्षीण, रह-रहकर बहुत देर बाद एक-एक बार वेग पैदा होता है, उस समय कुछ देरके लिये वेग गायब रहता है। सभी पेशियाँ शिथिल और निष्क्रिय मालूम होती हैं, कोई तरहका काम नहीं करतीं, स्थिर रहती हैं; रोगिनीको रह-रहकर मूर्च्छा आ जाती है। प्रसवके बाद पेशाब नहीं होता (आर्स, ओपि, हायो, स्ट्रैमोन)। प्रसवका दर्द भरपूर न होनेपर भी प्रसव करानेकी चेष्टा करनेपर या अन्यान्य चेष्टाओंसे वेग क्षीण हो जाता है। जरायुको बाहर निकाल देनेवाली शक्तिका न रहना। प्रसवका वेग बन्द हो जानेपर पेशियोंका फड़कना या अकड़ना आरम्भ हो जाता है। प्रसवके बादका बाहरकी ओरका आक्षेप अर्थात् आक्षेपके समय शरीर धनुषकी तरह पीछे टेढ़ा पड़ जाता है (बेल, साइक्यूटा, हायो, कैलि-ब्रोम)। प्रसवका फूल न गिरना (कैन्थ, कौलोफिल, बेल, पल्स; गर्भपातके बाद—सैबाइना), जरायु वगैरहकी नीचेकी ओर तेज़ खींचन और इसके साथ ही पेशियोंमें शिथिलता मालूम होना। प्रसवके बादका दर्द, बहुत देरतक रहनेवाला और बहुत तकलीफ़ देनेवाला (ऐकोन, कोलो, कैमो, जेल्स, काफिया, लैक-कैन; बहुतसे सन्तान प्रसव करनेवालीको—क्यूप्रम)। प्रसवके बादका क्लेदस्राव बहुत बदबूदार (ऐसिड-क्रोमिक, कार्बो-ऐन, क्रियो), परिमाणमें बहुत थोड़ा या बहुत ज्यादा, बिना दर्दका या बहुत देरतक स्थायी, नीचेकी ओर तेज़ खींचन। प्रसवके बादका क्लेद-स्राव रुक जानेकी वजहसे जरायु प्रदाहित हो जाता है और तेज़ बोखार आता है (ऐकोन, बेल, कोलोसिन्थ); प्रसूतिके स्तनमें दूध न होना, खासकर यदि वह दुबली और क्षीण हो; दोनों स्तन बहुत ज्यादा दूध एकत्र होनेकी वजहसे जैसे पुष्ट होने चाहिये, वैसे नहीं होते (आर्टिका-इय्यु, ऐसाफिट, रिसिनस, ऐग्नस), इसके साथ ही स्तनमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द (एपिस)। प्रसवके बाद जरायुका डमरूकी तरह सिकुड़ना (बेल, काकुय, कैमो, कैलि-कार्ब, प्लैटिना, सिपिया)।

श्वासयन्त्र।—कण्ठ-स्वर क्षीण, सहजमें सुन नहीं पड़ता और मुँहसे स्पष्ट बात नहीं निकलती। खाँसी रहे या न रहे, थूकके साथ खून निकलता है। श्वास-प्रश्वास मानसिक उद्वेग पैदा करनेवाला और कष्ट-साध्य। जब श्वास-प्रश्वासके साथ रोगी युद्ध किया करता है अर्थात् जब रोगी श्वास-कष्ट

दूर करनेकी प्राण-पणसे चेष्टा करता है, उस समय खून मिला बलगम निकलता है। रोगी बार-बार लम्बी साँस छोड़ता है (इग्ने, कैल्के-फास और हिचकी आती है—साइकूटा, हायो, नक्स, स्ट्रैमोन); धीमा और बीच-बीचमें रुक जानेवाला झटकेके साथ कलेजा धड़कना, अधिकांश स्थानोंमें रातमें हुआ करता है (सविराम नाड़ीके साथ हृद्स्पन्दन—कोना, डिजिट, कैलि-कार्ब, नेट्र-म्यूर)। रक्त-स्रावके समय नाड़ी सूतकी तरह सूक्ष्म।

गर्दन और पीठ।—पीठ और नितम्बमें दर्द (ऐक्टिया, बेल, नक्स, पल्स)। पीठ सुन्नकी तरह मालूम होती है और पीठसे हाथकी अंगुलीतक चुनचुनी होती है (ऐकोन, पीठमें धीमा दर्द—ऐकोन, फेरम-फास)। पीठपर मानो कोई फूँक रहा है, इस तरहकी सुरसुरी मालूम होना। गर्दन और पीठ अकड़ी। पीठमें सर्दी अनुभव होना। पीठके निचले अंशमें भयानक दर्द मालूम होना, बहुत ज्यादा चलने या बहुत देरतक बैठे रहनेपर बढ़ जाता है। जरायु वगैरहके नीचेकी ओर प्रबल आकर्षणके साथ नितम्ब या त्रिकास्थिमें दर्द मानो जरायु आदि बाहर निकल पड़ेंगे; वृद्धि—इधर-उधर हिलते हुए घूमनेपर।

प्रत्यङ्गादि।—हाथ-पैर आदिका आक्षेपिक सञ्चालन (बेल, साइकूटा, हायो, स्ट्रैमोन; विशेषकर रातमें; घटना—जोरसे रोगवाली जगह फैलानेपर हाथ और पैरकी अंगुलीका सङ्कोचन, हाथ-पैर आदि भारी मालूम होते हैं और काँपा करते हैं। प्रत्यङ्ग आदि बरफकी तरह ठण्डे, रक्तहीन, भूरे और उनकी त्वचा सिकुड़ जाया करती है, मानो बहुत देरतक गरम पानीमें पड़ा रहा था (बहुत देरतक पानीमें रहनेके कारण अंगुलियोंकी त्वचा सिकुड़ जाया करती है—लाई)। प्रत्यङ्ग सब सुन्न, अवश, स्पर्श आदिके ज्ञानसे रहित और बरफकी तरह ठण्डे, विशेषकर हाथ और पैरकी अंगुलीका अगला भाग। प्रत्यङ्गोंमें अवशता और कीड़े रेंगनेकी तरह बेचैनी पैदा करनेवाली सुरसुरी अनुभव होना। पैरमें, जङ्घाकी पोटलीमें, बाँह और हाथमें और पैरकी अंगुलीमें ऐंठन होती है। हाथ-पैरोंमें सुरसुरी और झुनझुनी हुआ करती है। रह-रहकर प्रत्यङ्ग सब अकड़ जाते हैं। पैर और तलवेमें जलन होती है (आर्स, सैनिक, सल्फ, लैके, मिडोरिन, सेङ्गिविन)। प्रत्यङ्गोंमें झुनझुनी, प्रत्यङ्ग आदि सूखे और सड़नेवाले (आर्स); वृद्धि—बाहरी

उत्ताप लगनेपर ; सड़नेवाले अंशकी सन्धि खिसककर देहसे अलग हो जाती है। बाँहके ऊपर अरुणिका (लाल दाने) निकलनेके कारण त्वचा रुखड़ी हो जाती है। हाथकी अंगुलियाँ सब तलहत्थीकी ओर मुड़ जाती हैं और अंगूठेको पकड़ रखती हैं। दोनों उरुओंमें ऐसा दर्द मानो मुद्गरसे चोट पहुँचायी जाती है ; हिलनेपर बढ़ना। पैरकी अंगुलियाँ सब पीछेकी ओर घूम जाया करती हैं। प्रत्यङ्ग सब अवश, भारी और काँपनेवाले मालूम होते हैं ; प्रत्यंग सब उत्ताप रहित और ठण्डे पसीनेसे तर। रातमें रह-रहकर हाथ-पैर आदि कष्ट-जनक भावसे फड़का करते हैं या चमक उठते हैं।

सार्वाङ्गिक।—पेशी-मण्डलीका आक्षेपिक स्पन्दन। धनुष्टङ्कारकी तरह अकड़न ; एकदम बेहोशी और अन्तमें बहुत सुस्तीके साथ पेशी-मण्डली या प्रत्यंगोंका इच्छाके अनुसार हिलानेकी शक्तिका न रह जाना। चलनेके समय रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह मखमलके ऊपरसे चल रहा है (दोनों चरणोंमें भूमिका स्पर्श-ज्ञान न रहना—आर्स ; स्पर्श-ज्ञान राहित्य—कार्बो-वेज ; कुछ देरतक चलनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो शून्यमें चल रहा है—नेट्रम-म्यूर)। पक्षाघात हुए अङ्ग जल्दी-जल्दी शीर्ण हो जाते हैं (ग्रैफ, प्लम्ब, सिपि)। पैर खींचकर चलता है (जेलस, नक्स, प्लेकट्रैन्यस)। दोनों पैर फूले हुए और उसपर काले बिन्दु सब निकलते हैं (नक्स)।

त्वचा।—शरीरकी त्वचा सूखी और ठण्डी ; सीसेके रङ्गकी कालापन-भरी, सिकुड़ी और उसमें स्पर्श-ज्ञान नहीं रहता, भूसी निकला करती है। मसूरिका या चेचककी गोटियाँ सब विकृत आकारमें निकलती हैं। खूनसे नहीं भरती, गोटियाँ सूख जाती हैं (खून-भरी गोटियाँ—सल्फ, रस)। गर्दनके पीछे और वक्षपर खसड़ेकी तरह दाने निकलते हैं। काला दाग, खून-भरे छाले या दाने ; सड़नेका लक्षण ; सारे शरीरमें भयानक जलन, मानो शरीरपर आगकी चिनगारियाँ बरस रही हैं (आर्स, प्लम्ब)। देह-भरमें ऐसी सुरसुरी मालूम होती है, मानो चींटी रेंग रही हैं, मानो त्वचाके नीचे कोई कीड़ा रेंग रहा है (स्ट्रैमोन)। बैंगनी रङ्गके लाल उद्भेद (आर्नि, फास, आर्स), सूजन और दर्द अथवा प्रदाहका न रहना ; फोड़े सड़ जानेका उपक्रम।

शीत, उत्ताप और पसीना।—शरीरकी त्वचा, विशेषकर प्रत्यङ्ग सब और चेहरेपर पसीना न रहना। पीठ, पेट और प्रत्यङ्गोंमें बहुत सर्दी

मालूम होना। शरीरके भीतरवाले यन्त्र आदिमें तथा हाथ और तलवेमें भयानक उत्ताप अनुभव होना। सारे शरीरमें बहुत अधिक लसदार पसीना निकला करता है (आर्स, कैम्फ, मर्क, फास)।

सम्बन्ध।—डा० हेरिङ्ग कहते हैं—"क्षीण प्रसवके दर्दमें या प्रसवके बाद रक्तस्रावके समय—दोनों ही अवस्थाओंमें "अर्गट" की अपेक्षा "सिनेमोमम" सब तरहसे अच्छा रहता है; यह प्रसवके वेगको बढ़ा देता है, बहुत ज्यादा और मारात्मक रक्त-स्रावको रोकता है और सभी समय लाभ किया करता है, पर किसी भी अवस्थामें अर्गटका प्रयोग करनेपर उसका नतीजा बुरा होता है।" मारात्मक विसूचिका रोगमें यह "कोलचिकम" के सदृश है। "आर्सेनिकम" भी इसके सदृश है, परन्तु "सिकेलि" में उत्ताप बढ़ता है, "आर्सेनिकम" में उत्ताप घटता है—यही प्रभेद है। कितने ही स्थानोंमें "सिकेलि" के बाद "सिङ्कोना" का प्रयोग करनेपर बहुत लाभ होता है।

प्रतिविष या दोषघ्न।—कैम्फोरा, ओपियम।

अनुकूल सम्बन्ध।—आर्स, बेल, कैमो, सिङ्को, लाई, ओपि, पल्स, रास, सल्फ।

तुलनीय।—प्रसवके दर्दमें—पल्स, बेल, कोलोफाई, बाइवर्नम। ढँका नहीं रह सकना—कैम्फर। रक्त-स्रावमें—बोविस्टा, ट्रिलियम, हैमामे, अस्टिलेगो, फिरम-फास, चायना। रक्तस्राव-प्रवण धातु—लेके, फास। विसूचिकामें—आर्स, कैम्फर, विरेट्रम, कोलचिकम। गुह्यद्वार खुला—एपिस, फास्फोरस। गर्भ-स्रावमें—सेबाइना। हाथ-पैरमें जलन—सलफर। बहुतमूत्र—प्लम्बम। वृद्ध मनुष्य—कोनायम इत्यादि।

सदृश।—आर्स, बेल, बोवि, कैल्के, कैम्फो, कैमो, कार्बो-वेज, कोलोफाइल, कोलचि, इरिजिरन, फिरम, गासिपियम, आयोड, लाई, मिचेला, हैमा, लेके, फास, प्लम्ब, पल्स, रास, सेबाई, सल्फ, सिपिया, टैबाक, ट्रिलियम-पेण्डुलम, अस्टिलेगो, वेरेट-एल, बाइवर्नम-ओप्यु।

वृद्धि।—छूनेपर, रातमें, बाहरी उत्तापके प्रयोगसे; शरीर हिलाने या शारीरिक परिश्रमसे; गर्म पानी आदि पीनेपर, भोजनके बाद; आर्त्तव आरम्भ होनेके पहले, शरीरके वस्त्रके उत्तापसे और दाहिने अङ्गमें।

उपशम।—शय्यामें बदन सिकोड़कर सोनेपर; घरके बाहरकी हवा लगने या निर्मल वायु लगनेपर; जलपट्टी देनेपर; ठण्डे प्रयोगसे; पसीना होनेपर; ओढ़ना उतारनेपर और रगड़नेपर।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—२० से ३० दिन।

विशेष द्रष्टव्य।—किसी दवाके सब लक्षण रहनेपर भी यदि उससे लाभ न दिखाई दे तो ऐसे स्थानपर उस दवाका उपचार व्यवहार करना चाहिये। "सिकेलि" से फायदा न होनेपर उसका उपचार "आर्गटिनम" व्यवहार करना चाहिये (कैंफका)।

सेलिनियम

(SELENIUM)

दूसरा नाम।—उपधातु विशेष।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्णके बाद अर्क।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मदात्यय; एँड़ीमें खुजलानेवाले उद्भेद; कब्जियत; दुर्बलता; अनजानमें पेशाब; केश झड़ जाना; सर-दर्द; ध्वजभङ्ग; स्वरभङ्ग; स्वरनली-प्रदाह; यकृत-प्रदेशमें उद्भेद; लिङ्गोच्छ्वास; मूत्राशय-मुखशायिका ग्रन्थिका प्रदाह; ऊपरसे मुखशायिका ग्रन्थिका स्राव; हाथमें विचर्चिका; अकौता; माथेके फोड़े; बहुत तरहकी बीमारियाँ; शुक्रक्षय; तोतलाना; धूप लगनेका दुष्परिणाम; उपदंश।

उपयोगिता और आभास।—इसकी क्रियाका सबसे बड़ा फल है—सारे शरीरकी सुस्ती, इसलिये यह बुढ़ापेकी कमजोरी, वातश्लेष्मा या अन्य प्रकारकी बीमारीके बादकी कमजोरी, कम उमरमें मानसिक और शारीरिक

दुर्बलता, वीर्य-क्षयके बाद कमजोरी ; बहुत ज्यादा इन्द्रिय-परिचालनके कारण सुस्ती, नपुन्सकता वगैरहमें विशेष लाभदायक है। गोरे रङ्गवाले रोगियोंके लिये यह बहुत उपयोगी है। इसके रोगीका चेहरा, हाथ, पैर, चरण और अन्यान्य एक-एक अङ्ग दुबले हो जाति हैं। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं :—(१) काम-काजको बहुत भूलनेवाला, पर दिनके सारे काम जो याद न आति थे, वे सभी सपनेमें दिखाई देति हैं। (२) सर-दर्द—शराबियोंका, बहुत अधिक इन्द्रिय-परिचालनके कारण ; लेमोनेड या शराब पीनेके कारण ; रोज़ तीसरे पहर सर-दर्द। (३) माथा, भौं, दाढ़ी और जननेन्द्रिय-प्रदेशके केश झड़ जाति हैं। नाककी नयी सर्दीके बाद पतले दस्त आने लगना। (५) रातमें तेज़ भूख लगती है ; शराब पीनेके लिये महान आग्रह प्रकट करता है। यहाँतक कि उन्मत्त हो उठता है। अपनी इच्छाको किसी तरह रोक नहीं सकता। (६) कब्जियत - गांठ या लेंड़ बड़ा, कड़ा ; मलान्त्रको रोक रखता है, इसलिये अंगुली वगैरहके सहारे मलको निकालना पड़ता है ; आन्त्रिक (टाइफायड) ज्वर आदि कड़ी बीमारियोंके बाद मलका कड़ापन। (७) पेशाब लाल और परिमाणमें बहुत थोड़ा, उसमें गाढ़े लाल रङ्गकी तली जमती है, चलनेके समय अनजानमें बून्द-बून्द निकला करता है। (८) क्लीवता, ध्वजभङ्ग, पर आकांक्षाकी निवृत्ति नहीं होती ; सदा अश्लील बातें सोचा करता है, पर रमण-शक्ति नहीं रहती। रमणके समय लिङ्गमें भरपूर कड़ापन नहीं आता और तुरन्त वीर्य-पात हो जाता है, पर बहुत देरतक आराम मिला करता है ; रमणके बाद रोगी क्षीण हो पड़ता है और चिड़चिड़ाया करता है। अनजानमें वीर्य-स्राव या मुखशायिका-ग्रन्थिसे रस निकला करता है—बैठनेके समय, पाखाना जानेके समय और रातमें। (९) अस्वाभाविक या इच्छा न रहनेपर भी लिङ्गमें कड़ापन ; लिङ्गमुण्ड ऊपरकी ओर टेढ़ा हो जाता है। (१०) स्वर-लोप—बहुत देरतक ऊँची आवाज़से वक्तृता आदिकी वजहसे। गाना आरम्भ करनेके समय गला फस जाता है, इसके बाद कण्ठ साफ़ करनेपर सफेद रङ्गका बलगम निकलता है ; गोटीके साथ स्वरनलीका प्रदाह। (११) बहुत अधिक कमजोरीकी वजहसे सोने या नींद लेनेका प्रबल आवेग ; एकाएक रोगी सुन्न हो पड़ता है, खासकर गर्मीके दिनोंमें, रोगीकी देह जितनी गर्म होती है, वह उतना ही दुर्बल होता जाता है ; सूर्यास्तके बाद फिर उसमें ताक़त आती है। (१२) प्रबल वायु लगनेपर कातर, हवा गर्म, ठण्डी या

जलीय, चाहे जो हो, अच्छी नहीं लगती। (१३) रोगी अंग दुबला हो जाता है।

लक्षणावली

मन।—मानसिक जड़ता, रोगीके घरमें कौन क्या कर रहा है या क्या हो रहा है, इस सम्बन्धमें उसे बिलकुल ही ज्ञान नहीं रहता और वह उदासी प्रकट करता है (ऐ-फास, कार्बो-वेज, सिङ्को, ओपि, फास)। बहुत भुलक्कड़ विशेषकर काम-काजके सम्बन्धमें; परन्तु रातमें निद्रित अवस्थामें, उसे सब सपनेमें याद पड़ता है। सहजमें कोई बात हृदयङ्गम नहीं कर सकता (कैमो, कैल्के, कोना, नक्स-मस, रास ; बच्चोंको ऐसा होनेपर—बैराई)। किसी तरहका मानसिक परिश्रम करनेके समय थक जाता है (अरम, कोना, ऐकोन, ग्रैफ, ऐ-पाई ; सर-दर्द हो जाता है—पल्स)। एकदम अकर्त्तव्य (आर्जेण्ट-नाई, साइक्लेम, हाइपिर, नेट्र-कार्ब)। उत्तेजित होनेपर बहुत बकता है (फेरम-फास)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, माथा उठानेपर (ब्राई, कैल्के, कार्बो-वेज, सिङ्को, नक्स, फास) या शरीर उठानेपर (ऐकोन, ब्राई, नेट्र-मूर, फास, रास, टैबाक)। इधर-उधर टहलते रहनेपर मिचली, वमन और सुस्ती आ जानेके साथ सरमें चक्कर आना ; मध्याह्न और रात्रिके भोजनके बाद बढ़ जाता है। लेमोनेड, चाय, शराब या बहुत ज्यादा खाने-पीनेकी वजहसे रोज़ तीसरे पहर सर-दर्द। बायीं आँखके ऊपरी भागमें डङ्क मारनेकी तरह तेज़ दर्द ; धूपमें चलनेके समय या तेज़ गन्ध साँसमें जानेकी वजहसे, इसके साथ ही बहुत पेशाब और शरीरमें फुर्त्ती न रहना (ग्लोन, इग्ने, आइरिस, वेरेट) ; केश झाड़नेके समय केश झड़ जाते हैं ; भौं, दाढ़ी और जननेन्द्रिय-प्रदेशके केश झड़ जाते हैं (पेट्रोल, फास, सिलि)। माथेपर बहुत खुजलाने बाद रस निकला करता है।

आँख।—बाईं आँखके गोलेका आक्षेपिक आनर्त्तन ; पलकोंके किनारे और भौं होंके रोएँमें बहुत खुजलानेवाले दाने निकलना।

कान।—दोनों कानके छेद रुक जाते हैं। बहरे कानमें मैल बहुत पैदा होता है और वह बहुत कड़ा हो जाता है।

नाक।—नासारन्ध्र और नासापुटके किनारे भयानक खुजली पैदा हो जाती है। बार-बार नासारंध्रमें अंगुली प्रविष्टकर खुजलाता है (एरम-ड्राई, सिना, जिङ्कम, ऐ-फास, कोना)। नाकसे पीले रङ्गका गाढ़े गोंदकी तरह श्लेष्मा निकलता है (ऐ-म्यूर, ऐल्यू, आर्स, अरम, पल्स, रस)। नाकसे घोर लाल रङ्गके खूनका स्राव, नाककी सर्दी उदरामयमें बदल जाती है (सेङ्गिविन)।

मुखमण्डल।—चेहरेकी त्वचा तेल लगी रहनेकी तरह चिकनी (नेट्र-म्यूर, प्लम्ब, सोरिन)। मुख-मण्डलकी पेशियाँ सब फड़कती हैं (ओपि, हायो, कैमो)। व्रण—दानोंका मुँह या सिर काला (ग्रैफ, ब्राई, कार्बो-वेज, ड्युजिनिया-जेम)।

मुख-विवर।—दाँत खोद-खोदकर खून निकालता है। दाँत सब श्लेष्माकी तरह पदार्थसे ढके रहते हैं (ऐण्टि-टार्ट, कैमो)। तोतलाकर बोलता है। बड़े कष्टसे बोलता है (कैनाब-इन, कास्टि, स्ट्रैमोन)।

गलेके भीतर।—रोज़ सवेरे खाँसकर कण्ठसे श्लेष्मा निकालता है (आर्जेण्ट नाई)।

पाकस्थली।—धूम्रपानके बाद और भोजनके बाद हिचकी आती है और डकार आया करती है। सवेरे भूख नहीं लगती, कुछ खानेकी इच्छा नहीं होती। रातमें तेज़ भूख पैदा हो जाती है (सिना, सोरिन)। तीव्र मादक पदार्थ खाना चाहता है। भोजनके बाद सारे शरीरमें टपक-सी आरम्भ हो जाती है, विशेषकर उदरमें; रोगी सो जाता है। नींदके बाद तबियत बहुत खराब मालूम होती है।

अन्त्राशय।—यकृत प्रदेशमें तेज़ दर्द, लम्बी साँस लेनेपर और भी बढ़ जाता है; मसानेके स्थानतक दर्द चला जाता है और यकृत-प्रदेशको दबानेपर दर्द होता है; दर्दके बाद यकृतके ऊपर एक तरहके लाल और खुजलानेवाले उद्भेद निकल आते हैं (पित्ताश्रित आमवात—ऐस्टेकस-फ्लु)। चलनेके समय प्लीहामें सुई गड़नेकी तरह तेज़ दर्द (हिपर-सल्फ, रोडोड)।

मलान्त्र और मल।—कब्जियत, लेंड़ या गाँठ बहुत बड़ी और कड़ी (लैक-डिफ्लो, मैग-म्यूर, सेबाड); मल परिमाणमें अधिक, कड़ा मल

मलान्त्रको रोक रखता है और अंगुली या किसी यन्त्रका सहारा लिये बिना नहीं निकलता (ऐलो, ऐल्यू, ऐनाका, कैल्के, सैनिक, सिपिया, साइलि); आन्त्रिक ज्वर वगैरह कड़ी बीमारियोंके बाद कब्जियत; मलके अन्तिम अंशके साथ आम या खून निकलता है। मलके साथ केश या सूतकी तरह पदार्थ मिला रहता है।

पेशाब।—पेशाब घोर लाल रङ्गका और परिमाणमें बहुत थोड़ा, तली लाल बालू भरी। चलनेके समय अनजानमें पेशाब निकलता है (कास्टि, फेरम, नेट्र-म्यूर, जिङ्कम); पेशाबके बाद और पाखाना होने बाद भी बून्द बून्द टपकता है। मूत्रनलीके अगले भागमें ऐसा मालूम होता है, मानो डङ्क मारनेकी तरह यन्त्रणाजनक एक बून्द निकल रहा है।

पुं-जननेन्द्रिय।—ध्वजभङ्ग, पर कामना भरपूर वर्त्तमान (डिजि, इग्ने) रहती है। हमेशा ही अश्लील चिन्तामें लगा रहता है, पर रमण-शक्ति नहीं रहती (एकाएक नपुंसकता—क्लोर)। बहुत धीरे-धीरे लिङ्गमें कड़ापन आता है और कड़ापन भरपूर नहीं आता, रमणके समय बहुत जल्द वीर्य-पतन हो जाता है, पर बहुत देरतक आराम मालूम हुआ करता है, रमणके बाद मिजाज़ चिड़चिड़ा हो जाता है और कमजोर हो पड़ता है (कैल्के, ग्रैफ, नेट्र-म्यूर, सिपि); बैठनेकी अवस्थामें, मलत्यागके समय और निद्राके समय अनजानमें कुछ-कुछ वीर्य और मूत्राधार-सुखशायिका ग्रन्थिसे रस निकला करता है (कैल्के, ऐग्नस, किमेफिला-ऐम, ऐ-फास, नेट्र-म्यूर, सिपि, साइलि, स्टैफाइ)। लाला मेह (ऐग्नस, ऐल्य, ऐसिड-बेन्जो, कैले, नेट्र-म्यूर, सिपि, सल्फ)। अस्वाभाविक लिङ्गोद्गम; लिङ्गमुण्ड पीछेकी ओर खिंच जाया करता है (कैन्थ); शुक्रमेह (डिजिट, डायस्को)।

श्वासयन्त्र।—बहुत देरतक वक्तृता आदि देनेके बाद स्वर-लोप या स्वरभंग; गाना आरम्भ करनेके समय आवाज़ रुक जाती है (आर्जेण्ट-मेट, एरम-ट्राइ, फास, आर्जेण्ट-नाइ); बार-बार गला साफ़ करता है, सफेद बलगम निकलता है (आर्जेण्ट-मेट, स्टैनम)। गुटिकाके साथ स्वरनली-प्रदाह; वायु सेवनके लिये चलनेके समय श्वासकष्ट। बार-बार दीर्घ श्वास लेनेकी इच्छा, रातमें सोनेके समय वक्षमें, वक्ष-पार्श्वमें और नितम्ब-देशमें दकी दर्व जहसे श्वास-प्रश्वासमें बाधा। सवेरे इस तरह खांसी आती है मानो समूचे वक्षमें

चोट लगती है और छोटी-छोटी श्लेष्माकी गोलियाँ और कभी-कभी खून निकलता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दन अकड़ी रहनेकी वजहसे रोगी माथा नहीं घुमा सकता (ऐक्टिया-रेस, कैलि-नाई, पैरिस, रैटान)। सवेरे ऐसा दर्द मानो कमर टूट गयी है, कमर अवश और दर्द भरी मालूम होती है, पर सोना अच्छा लगता है। गर्दनके बायें पार्श्वसे बायें पैरके पिछले अंशतक दर्द। ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो दोनों हाथ रातमें फटे जाते हैं और कलाई कड़कड़ किया करती है; हाथ और पैर पतले पड़ जाते हैं। सन्ध्याके बाद तलहत्थी और गुल्फमें खुजली पैदा हो जाती है। पैरकी अंगुलियोंमें छाले पैदा हो जाते हैं। पैरकी पोटली और तलवेमें ऐंठन होती है (कैल्के, कैम्फ, सल्फ)। सान्निपातिक ज्वरके बाद पैर बहुत क्षीण होते हैं और ऐसा डर होता है कि कहीं पक्षाघात न हो जाये। हाथकी अंगुलियोंके बीच-बीचमें रस-भरे दाने पैदा होते हैं; हाथमें खुजलीकी तरह दाने सब निकलते हैं। मुष्कमें खुजलानेवाली फुन्सियाँ सब निकलती हैं। रातमें पैर मोड़नेपर जानु-सन्धि कड़कड़ करती है। दोनों पैरोंपर चिपटे या ऊँचे नहीं—ऐसे जखम पैदा होते हैं।

सार्वाङ्गिक।—रोगी बहुत कमजोर, सामान्य मानसिक या शारीरिक परिश्रमसे क्लान्त हो जाता है। एकाएक रोगी सुस्त और बलहीन हो पड़ता है; सोकर नींद लेनेका प्रबल आवेग; गर्मीके दिनोंमें बहुत सुस्ती मालूम होती है; जबतक आकाशमें सूर्य रहते हैं, तबतक रोगीको इतनी सुस्ती मालूम होती है, मानो उसके शरीरमें कोई बल नहीं है, पर सूर्यास्तके बादसे ही फिर बल मिलना आरम्भ हो जाता है (आर्स, जेल्स, लैके ; धूपका उत्ताप बिलकुल ही सहन नहीं कर करता, बहुत सुस्त हो पड़ता है—ऐसिड-क्रूड, लैके, नेट्र-म्यूर)। रोगवाला अंश दुबला और शीर्ण हो जाता है (प्लम्ब)। जोरसे बहती हुई हवाका स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं कर सकता, वह हवा ठण्डी या गर्म—चाहे कैसी भी हो। समूचे शरीरमें टपक मालूम होती है (ग्लोन, सिपिया), पेटमें ज्यादा मालूम होती है। जरा जोरकी हवा लगते ही सर्दी लग जाती है और हाथ-परमें भयानक दर्द होने लगता है। चेहरा, हाथ, पैर और चरण अस्थिसार हो जाते हैं।

त्वचा ।—शरीरमें जगह-जगह दुर्दमनीय खुजली पैदा हो जाती है। यकृत-प्रदेशमें लाल उद्भेद पैदा होते हैं। शरीरका कोई भी अंश खुजलानेपर, उस अंशसे बहुत देरतक रस बहा करता है। पारा या गन्धकके प्रयोगकी वजहसे रुकी हुई खुजली या खसड़ा। माथा, दाढ़ी, भौं और जननेन्द्रियके केश उड़ जाते हैं।

निद्रा ।—सन्ध्याके बाद ही औंघाई आने लगती है और रातमें बार-बार नींद खुल जाती है। सोनेके समय बार-बार चौंक उठता है। रातमें नींद बहुत थोड़ी होती है और हलकी-सी आवाज़से भी नींद खुल जाती है; सवेरे और रोज़ एक ही समय नींद खुलती है, गर्मीके दिनोंमें दिनमें सोनेके बाद लक्षण आदि बढ़ जाया करते हैं। साधारणतः नींदके बाद दर्द बढ़ जाया करता है। रातमें बहुत भूख लगती है (सिना, इग्ने, लाई, सोरिन)।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—कभी शीत, कभी उत्ताप, इसी तरह पर्यायक्रमसे अनुभव हुआ करता है। बाहरी उत्ताप और शरीरमें दाह, कभी-कभी शरीरके किसी खास अंशमें जलन और दाह मालूम हुआ करती है। वक्ष, बगल और जननेन्द्रिय-प्रदेशमें बहुत ज्यादा पसीना निकला करता है (कोरेल, कोना, पेट्रोल, थूजा); सामान्य शारीरिक परिश्रमसे या सोते ही पसीना निकलना (सिङ्कोना, कोनायम); शरीरमें पसीनेका पीला दाग पड़ता है (कार्बो-ऐन, ग्रेफ, मर्क, थूजा, फेरम, इपिक, मैग-कार्ब) या सफेद रङ्गका दाग पड़ता है और वस्त्र कड़कड़ किया करता है (मर्क)।

वृद्धि ।—झोंककी हवा लगनेपर, धूपमें, लेमोनेड, चाय या शराब पीनेपर, छूने या दबानेपर, शरीर हिलानेपर, दिनकी नींदके बाद, मानसिक या शारीरिक परिश्रमसे, वायु सेवनके लिये घरके बाहर घूमनेपर और रोज़ तीसरे पहर।

उपशम ।—विश्रामसे; ठण्डा पानी या ठण्डी हवा मुँहमें लेनेपर; सूर्यास्तके बाद।

सम्बन्ध ।—**प्रतिविष या दोषघ्न** ।—इग्ने, पल्स।

अनुकूल सम्बन्ध ।—सिङ्कोना, लाई, मर्क, सिपि, सल्फ; बहुत ज्यादा इन्द्रिय सेवनकी वजहसे सुस्ती—कैलेडियम, नेट्रम-म्यूर, ऐसिड-फास,

और सफाईके बाद इसके प्रयोगसे बहुत लाभ हुआ करता है। प्रतिकूल—चायना और शराब।

सदृश।—ऐल्यू, ऐलो, कैल्के, हैनिक, सिपिया, साइलि, सिना, सोरिनम, कैलेड, कैन्थे, आर्जेण्ट-मेट, स्टैनम, फास। पारा और गन्धकके प्रयोगसे रुकी हुई बीमारीमें सेलिनियमसे बहुत फायदा होता है।

तुलनीय।—रातमें भूख— सिना, इग्ने, लाइकोप, सोराइनम। ध्वज-भङ्ग—सल्फ, क्लोरि। स्वरभङ्ग—कास्टिकम, आर्जेण्ट; गर्मीके दिनोंमें थकन—लैके, नेट्रम। मानसिक परिश्रम और अनिद्रा—सलफर; सर-दर्द; यकृतकी बीमारी—सल्फ; नाकमें अंगुली देना—सिना; थकन—पिकरिक-एसिड। सूर्यास्त होने बाद कमजोरी—सल्फ।

क्रियाका स्थायित्व।—४० दिन।

शक्ति।—६ठा दशमिकसे १००० शततमिक क्रम।

सेम्पेरवाइवम टेक्टोरम

(SEMPERVIVUM TECTORUM)

दूसरा नाम।—हाउस लिक।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—जीभका जखम, जीभका कड़ापन, मुँहमें घाव, रजोलोपके समयके बहुतसे उपसर्ग, ऋतु-रोध, विसर्प, कर्कटीया अर्बुद, स्तनका कर्कट जखम, दाद, अर्श इत्यादिकी एक बढ़िया दवा है।

कीड़े काटना, मधुमक्खी काटना, विषैले जखम, मसा प्रभृतिमें इसके बाहरी प्रयोगसे बहुत लाभ दिखाई देता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—लिडम एकार, गेलियम, कैलि-सायानिट, कटिलाडन।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

सिनिशियो आरियस

(SENECIO AUREUS)

दूसरा नाम ।—सिनिशियो ग्रीसिलिस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फूल होनेपर इस गाछसे अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः—रुका हुआ ऋतु ; उदरी ; सर्दी ; खाँसी ; शोथ ; बाधक ; मूत्रकृच्छ्रता (पेशाबमें कष्ट) ; नाकसे खून गिरना ; मूर्च्छा ; प्रमेह ; पुराना मेह ; रक्त-स्राव ; मूर्च्छा-वायु ; मूत्र-ग्रन्थिका प्रदाह ; कटिवात ; उन्माद ; बहुत ज्यादा रजःस्राव ; अनुकल्प रजः ; नखकी बीमारियाँ ; स्नायुके रोग ; सुन्न हो जाना ; यक्ष्मा ; मूत्राधार-मुखशायिका ग्रन्थिका प्रदाह ; सूतिकोन्माद ; मूत्र-पथरीका शूल ; गृध्रसी ; शुक्रनलीमें दर्द ; क्षत ।

उपयोगिता और आभास ।—भिषक्प्रवर डा० फैरिङ्गटनका कहना है, कि स्नायु-प्रधान, थोड़ेमें ही कातर हो पड़नेवाली, उत्तेजित हो उठनेवाली जो युवतियाँ, जरायु-भ्रंश (जरायुका अपनी जगहसे हटना) या जरायुका टेढ़ापन वगैरह रोगसे पैदा हुई (जरायुकी) उत्तेजनाकी वजहसे, निद्राका आनन्द नहीं ले पातीं, उनके लिये यह बहुत उपयोगी है। उन्हें आर्त्तव-स्राव बहुत थोड़ा होता है, रुलाई आया करती है। उन्हें सूखी और तङ्ग करनेवाली खाँसी आती है। खाँसनेपर वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है और खून-मिला बलगम निकला करता है। जिनका जरायु रोगी रहता है, उनका मूत्राशय भी बिगड़ा रहता है। मूत्रस्थलीके गलेमें बहुत दर्द होता है, जलन हुआ करती है और मूत्राशयके प्रबल सङ्कोचनकी वजहसे हृथाका वेग पैदा हो जाया करता है। आर्त्तवका स्राव (ऋतुका रक्त-स्राव) आरम्भ होनेपर फेफड़ा आदि और मूत्राशयकी बीमारी या तो कम पड़ जाती है या अच्छी हो जाया करती है। अनियमित ऋतु और ऋतु रुक जानेकी वजहसे नाना प्रकारके स्त्री-रोगोंमें इसका फायदा विशेष रूपसे प्रमाणित हुआ है। वायु-नलीकी सर्दी और फेफड़ेके रोगमें, विशेषकर ये सब रोग यदि स्राव रुके रहनेकी वजहसे हों या ऋतु-स्राव न होता हो तो, और कभी-कभी होनेवाले पुराने

मूत्राशय-प्रदाहमें पेशाबमें कष्ट और खून मिला पेशाब, कमरमें दर्द, मूत्राशयमें प्रबल संकोचनकी वजहसे वृथा यन्त्रणादायक पेशाबका वेग मिला मस्तानेके प्रदाहमें और थोड़े तथा घोर लाल रङ्गके पेशाबके साथ उदरी रोगमें इसका लाभ प्रसिद्ध है। मूर्च्छावायु रोगके भी कई लक्षण इसके क्रियाफल हैं, जैसे—किसी-किसी दिन तीसरे पहर रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो पाकाशयसे एक गोला उठकर वायुनलीको रोक रहा है। इसके अलावा भी कभी-कभी कण्ठनाली ऐसी मालूम होती है, मानो कसकर बँधी हुई है या संकुचित हो गई है और रोगिनी बार-बार घूंट लेकर कण्ठ साफ़ करनेकी चेष्टा करती है।

लक्षणावली

मन ।—किसी एक विषयमें बहुत देरतक मन नहीं लगा सकना (ऐनाक, कार्बो-वेज, इथ्यू, ग्लोन, लैक-कैन, लाई, नक्स-वोम, ऐ-फास, सिपि, साइलि, रस-वेन, सेलिन, टैबाक; किसी विषयमें एकाग्र-चित्त होनेकी चेष्टा करनेपर, दृष्टिके सामने अन्धेरा पैदा हो जाता है—आर्जेण्ट-नाई)। प्रसवके बादका उन्माद, रोगिनी उन्माद भाव प्रकट करती है, इसके साथ ही प्रबल ज्वर, स्नायविक उत्तेजना और अनिद्रा; एकाएक क्लेद-स्राव रुक जाता है और ऋतु नहीं होता। कभी तो हँसमुख रहती है, कभी आँखमें आँसू भरकर रोने लगती है, इसी तरह पर्यायक्रमसे चित्तका विरुद्ध भाव प्रकट होता है, उसे ऐसा मालूम होता है, मानो एक गोला पाकाशयसे चढ़कर गला रोक रहा है और इसी वजहसे रोगिनी बहुत दुःखित हो जाती है। स्थिर होकर एक जगह बैठ नहीं सकती—लगातार इधर-उधर घूमा करती है (आयोड, इग्ने, लैक-कैन, सिपिया)। अपनी मृत्यु पास समझकर रोगिनी डर उठती है (ऐक्टिया, काक्यु, साइक्लेम, जेल्स, सोरिन, पल्स) और कहती है—"अब तकलीफ़ नहीं सही जाती, मर जाना ही अच्छा है।"

मस्तक ।—जड़ भावापन्न और बेहोश कर देनेवाला सर-दर्द (इरुक्यु-हिप, लोरो, फास, पल्स, सिपि, स्टैनम, स्टैफ)। सर्दीकी वजहसे सर-दर्द—पेशाब रुक जानेकी वजहसे अर्थात् सर्दी या श्लेष्माका स्राव रुक जानेके कारण सर-दर्द (सिङ्को, कैलि-कार्ब, लैके, बेल, कैक्ट, नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम, सिपिया)। वायु सेवनके लिये घूमनेके समय सरमें चक्कर आया करता है, मालूम होता है, कि सरके पिछले भागसे ललाटकी ओर एक तरङ्ग आ पहुँची (बेल), उसे ऐसा

मालूम होता है, कि घबड़ाकर सामनेको ओर गिर पड़ेगा (ग्रेफ, नेट्र-म्यूर, पोडो, साइलि, सैंगो, फेलेन)। बाईं कनपटीमें और बाईं आँखके ऊपर और निचले हनुके बायें पार्श्वके भीतरको ओर मानो छुरी मारी जा रही है—इसी ढंगका ललाटमें भीतरसे बाहरकी ओर तेज़ सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है। नाककी सर्दी रुक जानेकी वजहसे और आँखमें वेधनेकी तरह तेज़ दर्द, प्रदरका स्राव आरम्भ होनेके पहले और मूत्राशयमें उत्तेजनाके कारण उत्पन्न सर-दर्द।

आँख।—सर्दी या स्राव आदि रुक जानेकी वजहसे आँखोंका प्रदाह; दोनों आँखें घोर काले घेरेसे घिरी।

नाक।—बार-बार छींक और नासारन्ध्रमें जलन और रुद्ध भाव। नाककी सर्दी, पहले जड़ता पैदा करनेवाला सर-दर्द, नासारन्ध्र सूखा और बार-बार छींक; रंध्रमें जलन और पूर्णता मालूम होना और इसके बाद ही बहुत अधिक श्लेष्माका स्राव होता है। नाकमें सर्दीके स्रावके साथ नाकसे खून निकलना।

मुख-विवर।—मुँहके भीतर, कण्ठ और जिह्वामूलके पार्श्ववाले दोनों गह्वर बहुत सूखे मालूम होते हैं; कण्ठनालीमें कसावटका भाव, रोगी बार-बार घूंट लेकर कण्ठनाली साफ़ करनेकी चेष्टा करता है। वायुनली पहले सूखी मालूम होती है, पर इसके बाद ही उसमेंसे लगातार बहुत श्लेष्मा बहा करता है और कण्ठ रोध करता है।

पाकाशय।—सवेरे सोकर उठनेपर जी मिचलाता है (ग्रैफा, नक्स-मस, सिपिया), गर्भवतियोंका सवेरेके समयका वमन (नक्स, पल्स, सिम्फोरिकार्पस, टैबाक)। भोजनके पहले बहुत सुस्ती (भूखके कारण नहीं), दो-चार ग्रास खाते-न-खाते ही पेट भर जाता है (कार्बो-ऐन, लाई, टिलिया, सल्फ)।

अन्त्राशय।—ऐसा शूलका दर्द, मानो जकड़ गया है, सामनेकी ओर शरीर टेढ़ा करनेपर हलका मालूम होता है (कोलोसिन्थ, क्यूप्रम, पीछेकी ओर—डायस्को)। उदरकी सर्दी, आँतोंमें आवाज़ और पतले दस्त आया करते हैं। पेट फूला और कड़ा हो जाता है। निम्नाङ्ग शोथ-भरा, पेशाबका परिमाण बहुत थोड़ा और उसका रंग घोर होता है:—दिन-रातमें आठ आउन्ससे अधिक पेशाब नहीं होता (एपिस, ऐपोसिन, चेलिडो, रियुम),

नितम्ब और डिम्ब-प्रदेशमें दर्द ; कब्जियत ; जरायु-ग्रीवामें खूनकी अधिकता ; अण्डलालकी तरह प्रदरका स्राव और जरायु-प्रदेशमें भार मालूम होना।

मल।—मलका पतलापन ; मल पानीकी तरह पतला या कड़ी गाँठें मिला और गहरे रंगका, बहुत अधिक सुस्ती और उठनेकी शक्ति न रहनेके साथ बहुत ज्यादा मल निकलना। पीले रंगका आँव मिला कड़ा गाँठ-गाँठ मल।

पेशाब।—मूत्राशयमें प्रबल कूथनके साथ पेशाबका वेग और उत्ताप पैदा हो जाना। मसानेमें दर्द और बार-बार पेशाब। सर्दी मालूम होनेके बाद पेशाबका वेग होता है, पेशाब खून मिला, परिमाणमें बहुत थोड़ा और उसका रंग गहरा। बार-बार बहुत ज्यादा पेशाब हुआ करता है। मसानेमें स्पष्ट दर्द। कभी-कभी मसानेका प्रदाह पैदा हो जाता है, रोग अधिककर दाहिने मसानेमें ही होता है। बहुत तकलीफ़ हुआ करती है, बोखार आता है और रोगीमें उठनेकी शक्ति नहीं रहती (किमाफिला-ऐम्ब, कोलिसो, इयुपेट-पर्पु, सार्सा)। प्रबल मूत्रग्रन्थि-प्रदाह—ज्वर आता है और जाड़ा मालूम होता है ; श्रोणि-देश, विशेषकर बायें मसानेके पीछेवाले अंशमें दर्द मालूम होता है ; पेशाब परिमाणमें कम और लाल होता है, तली ईंटके चूरकी तरह और धमनियाँ सब एकदम प्रदाह-युक्त हो जाया करती हैं, उनमें टपक होती है ; शरीरकी त्वचा स्वेद-शून्य और गर्म ; जरा भी शरीर हिलानेपर रोगी तकलीफ़से चिल्ला उठता है और इसके साथ ही कब्जियत बनी रहती है। दाहिने मसानेके ऊपर तेज़ दर्द मालूम होता है और पेशाबके समय भयानक तकलीफ़ होती है। पेशाबका रंग घोर लाल, गर्म और कषाय ; मसानेकी बीमारीके कारण शोथ या उदरी (एपिस, ऐपोसिन, आर्स, ऐस्क्लिपियस-सिरि, अरम-म्यूर, ब्राई, कोलचि, डालका, लाई, नेट्र-म्यूर, प्रूणस, टेरिब, किमेफिला, कक्कस), पथरी निकलने बाद मसाना और मूत्रवाही नलीका प्रदाह, खूनका पेशाब, इसके साथ ही मसानेके स्थानमें दर्द और मिचली। मसानेका शूल,—मिचली रह भी सकती है और नहीं भी रह सकती है। मूत्राशयकी ग्रीवामें कभी-कभी पैदा होनेवाला प्रदाह, इसके साथ ही खूनका स्राव और मूत्राशयमें प्रबल संकोचन या वेग। बच्चा और स्त्रियोंकी मूत्रकृच्छ्रता, ऐसा मालूम होता है, मानो सर्दी लग जानेके कारण हो गया है, स्रावकी तली श्लेष्मा-भरी, जरायुका अपने स्थानसे हटनेके कारण पेशाबमें कष्ट (जरायुमें अर्बुदकी वजहसे—कैलि-कार्ब)।

पुं-जननेन्द्रिय।—बायें रेतोरज्जुमें भरापन (ऐ-फ्लू) और भार मालूम होता है और यह अनुभव रेतोरज्जु होकर अण्डकोषमें चला जाता है। मूत्राधार मुखशायिका ग्रन्थिका बढ़ना, कड़ी और फूली मालूम होती है (कैल्के, कोनायम, आयोड, पल्स, कोपेवा); कामोद्दीपक सपने देखता है और अनजानमें वीर्य स्राव होता है। लाला-मेह (ऐसिड-बेञ्जो, ऐल्यू, कैलेड, नैट-म्यू, सेलिन, सल्फ)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—सर्दी लगनेकी वजहसे या पानीमें पैर धोनेके कारण ऋतुरोध (नैट-म्यूर, पल्स, ऐक्टिया-रेसि)। अकालमें ही बहुत ऋतु-स्राव और कमरमें दर्द। देरसे होनेवाला स्वल्प-ऋतु (सिपिया), अनियमित ऋतुके स्थानमें पेशाबकी बीमारी मिला प्रदर। दोनों डिम्बाधार प्रदेशमें, जरायुमें, गुल्फमें और दोनों उरुओंके सामनेवाले अंशमें दर्द मालूम होना। अपत्यपथसे बहुत ज्यादा श्लेष्माका स्राव (ओलियम-ऐन, सिपिया, पेट्रोल, सेबाड) ऋतु,—प्रत्येक बार ८-९ दिनोंतक स्राव हुआ करता है। नितम्बदेश, तलपेट और पुट्ठेमें प्रचण्ड छेदनेकी तरह दर्द मालूम होता है। रोगिनी म्लान, फीकी, क्षीण और थोड़ेमें ही कातर हो पड़ती है और रातमें उसे सामान्य खाँसी आती है। आर्त्तव न होनेपर स्नायविक बीमारियाँ पैदा हो जाना, बहुत आलस्य मालूम होता है और रोगिनीको उदरी हो जाया करती है। उसकी पीठ और कन्धेमें घूमनेवाला वातका दर्द होता है। उसे ऐसा मालूम होता है, मानो पाकाशयसे एक गोला उठकर उसका गला रोक देना चाहता है (इग्ने, मस्कस, ऐसाफिट)। अच्छा या स्वाभाविक पाखाना नहीं होता। वक्षको फाड़ देनेवाली खाँसीके साथ बाधक या कष्टरजः। क्षयरोगवाली रोगिनीको अनियमित ऋतु। योनिद्वारमें खुजली; यह अंश ऐसा मालूम होता हैं, मानो त्वचा क्षय हो गयी है; बैठे रहनेकी अवस्थामें। अन्यमनस्क रहनेपर अच्छी रहती है। प्रदर-स्राव आरम्भ होनेके पहले सर-दर्द, अनिद्रा और बार-बार पेशाबका वेग, थोड़ी उमरवाली बालिकाओंका (कोपेवा)।

श्वासयन्त्र।—तरल श्लैष्मिक खाँसी, विशेषकर अनियमित या रुके हुए ऋतु मिली। वायु-मार्गकी श्लैष्मिक झिल्लीसे बहुत अधिक श्लेष्मा निकलना, वायुनलीभुज और फेफड़ा श्लेष्मासे 'भरा' मालूम होता है, पर खाँसनेपर नहीं निकलता। वायु-मार्गमें श्लेष्माकी अधिकताकी वजहसे श्वास-प्रश्वासमें

बाधा। रातमें वक्षको फाड़ डालनेवाली खाँसी पैदा हो जाती है। जमे हुए गोंदकी तरह श्लेष्मा भरा बलगम निकलता है। बलगमके साथ खून निकलता है। फेफड़ेकी सर्दी, तरल श्लैष्मिक खाँसी और बहुत ज्यादा बलगम निकलना। रक्तकास, रोगी दुबला हो जाता है; उसे कलेजा फाड़ डालनेवाली खाँसी आती है और चेहरेपर क्षय रोग बतानेवाली तेज़ी मालूम होती है; नींद भी अच्छी नहीं आती। रज रुकनेके साथ क्षय-कास रोग—खून मिला या बहुत ज्यादा श्लेष्मामय बलगम। दोनों फेफड़ोंमें तेज़ दर्द। छातीमें दबाव मालूम होना।

प्रत्यङ्गादि।—रातमें पीठ और नितम्बमें दर्द हुआ करता है, विशेषकर बहुत देरतक बैठे रहने या सोनेपर। सवेरे नितम्ब-देशमें दर्द हुआ करता है। नितम्ब-देशमें ऐसा मालूम होता है, मानो छुरी बिंध रही है। पीठ और कन्धेमें भ्रमणशील दर्द; प्रत्यङ्ग आदिकी सन्धिमें दर्द।

निद्रा।—जरायु-भ्रंश आदिसे उत्पन्न अनिद्रा और स्नायविक उत्तेजना।

शीत, उत्ताप और पसीना।—दोपहरके पहले सर्दी मालूम होना, मानो यह सर्दी होनेका पूर्व लक्षण है। इसके बाद ही सन्ध्याके समय प्यासके साथ उत्ताप और पसीना हुआ करता है; सर्दी मालूम होनेके बाद पेशाबका वेग। विलेपी ज्वर। ललाट बहुत गर्म। लालटमें पसीना। पसीना निकलते रहनेका लक्षण।

वृद्धि।—रातमें, तीसरे पहर (अधिकांश लक्षण), निर्मल वायु लगनेपर, स्थिर होकर बैठे रहनेपर और सोनेपर।

उपशम।—सामनेकी ओर शरीर टेढ़ा करनेपर, पाखाना होनेपर, ऋतु होनेपर और अन्यमनस्क रहनेपर।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—जरायु, वक्ष और मूलाधारके लक्षणमें—पल्स, हेलोनि; अनुकल्प रजः—क्रायो; प्रमेह आदि—पल्स, थूजा, सेबाल-सेरुलेटा। स्नायविकता-खाँसी—कैमो।

शक्ति।—मूल अर्कसे तीसरा दशमिक क्रम।

सिनिसियो जैकोबिया

(SENECIO JACOBIA)

परिचय ।—सेण्ट जेम्स वार्ट, स्टैगर वार्ट, रग-वा

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—मस्तिष्कके क्रिया-विकारकी वजहसे सुसम्बद्ध भावसे ठीक-ठीक बोल न सकना, स्मरण-शक्तिका लोप होना, सुस्ती, गलदेश और बाँहकी पेशीकी अकड़न, कैन्सर, सर-दर्द, आक्षेप, अनजानमें पेशाब प्रभृति लक्षणमें इसका व्यवहार होता है ।

शक्ति ।—३x—३० ।

सेनेगा

(SENEGA)

दूसरा नाम ।—सेनेका, स्नेकरूट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखी जड़के चूरसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—क्षीण दृष्टि ; उदरी ; दमा ; मूत्राधारकी बीमारी ; श्वासनली-प्रदाह ; कब्जियत ; आँखके सफेद अंशका मैलापन ; खाँसी ; अनजानमें पेशाब ; पक्षाघात ; आँखमें जल-सञ्चय ; तारका प्रदाह ; यक्ष्मा ; फेफड़ेका प्रदाह ; साँप काटना ; छींक ; गुहेरी ; गलेमें जखम ; क्रूप खाँसी ।

उपयोगिता और आभास ।—वक्षगह्वर, आँख और मूत्राशयकी बीमारीमें यह बहुत लाभदायक है । वायु और श्वासनलीकी सर्दीकी बीमारीमें इसका फायदा प्रसिद्ध है, विशेषकर स्वरनली और दोनों वायुभुजोंकी सर्दीमें, खाँसीके बाद (या पहले) वक्षमें जलन अनुभव होती है, मानो वक्षके बीचके अंश-विशेषमें प्रदाह हो गया है ; बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकला करता है ;

वायुमार्ग आदि भीतरी अंश जो झिल्लीसे साधारणतः हमेशा निकलता हुआ रस लगनेके कारण तर रहता है, वह इस दवाकी क्रियाके कारण सूख जाता है ; शरीरकी त्वचातक पसीनेसे रहित और सूखी हो जाया करती है। इससे वक्षके बायें अंशपर विशेष आक्रमण होता है। दाहिनी आँख और निचली भौंपर भी विशेष रूपसे इसका आक्रमण होता है। समूचे वक्षगह्वरमें ऐसा मालूम होता है, मानो श्लेष्मा भरा हुआ है और इसीलिये खाँसनेपर घरघर साँय-साँय शब्द होता है और श्वास-प्रश्वासमें विलक्षण कष्ट होता है। डाक्टर गार्नसीके मतसे यह वृद्ध व्यक्तियोंके लिये विशेष उपयोगी है, परन्तु अन्यान्य रोगियोंके लिये भी लाभदायक हुआ करता है। वायुनलीमें बहुत अधिक परिमाणमें साफ़ और अण्डलालकी तरह श्लेष्मा सञ्चित होता है, पर सहजमें वह नहीं निकलता। वक्षगह्वरकी प्राचीरमें बहुत दर्द हुआ करता है ; वक्षपर दबाव मालूम होना, मानो दोनों फेफड़े मेरुदण्डपर दब रहे हैं। स्थूलकाय, शिथिल-माँस, बच्चोंकी क्रुप खाँसी—सन्ध्याके समय खाँसी बढ़ जाया करती है और बड़े कष्टसे अण्डलालकी तरह बलगम निकलता है। पसलियोंका दर्द, वक्षगह्वरके पार्श्वकी प्राचीर (पंजरेसे भरा वेष्टन) में बहुत दर्द होता है और उसमें जखम हो जानेकी तरह स्पर्श सहन नहीं होता, स्वरभङ्ग हो जाया करता है और कण्ठनालीमें इतना दर्द होता है और वह इतनी सूख जाती है, कि रोगीको बोलनेमें भी तकलीफ़ हुआ करती है। प्रायः प्रत्येक बार खाँसीके साथ छींक आती है। इसकी शक्ति नाक और श्वासयन्त्रकी अपेक्षा दोनों आँखोंपर अधिक दिखाई देती है। इसके द्वारा आँखोंका प्रदाह, आँखमें दर्द, पलकोंका प्रदाह और देखनेकी शक्तिमें नाना प्रकारकी गड़बड़ी पैदा हुआ करती है ; सर्दीकी वजहसे आँखोंका प्रदाह, आँखके गोलेके सामनेवाले भागमें पीब पैदा हो जाना ; दो देखना ;—केवल पीछेकी ओर देखनेसे ही घटता है ; टकटकी लगाकर किसी चीज़की ओर देखनेपर आँखमें दर्द हो जाता है। झुकनेपर सरमें, विशेषकर आँखमें, बड़े वेगसे खून दौड़ पड़ता है और चेहरा तथा दोनों आँखें लाल हो जाती हैं, ऐसा मालूम होता है, कि खून भीतरकी ओरसे धक्का दे रहा है। माथा, ललाट और कपालके पिछले भागमें दर्द, दबानेपर दर्द नहीं बढ़ता है ; बन्द गर्म घरमें बैठे रहनेपर बढ़ता है, इसके साथ ही आँखमें, भीतरसे दबाव मालूम होना और स्पर्शका सहन न होना। श्रवण-शक्ति बहुत तेज़ हो जाती है। पाचन-यन्त्र गड़बड़ा जाते हैं। मूत्राशयकी

सर्दी और सङ्कोचन-प्रवणता, बार-बार पेशाबका वेग और पेशाब होनेके पहले और बाद मूत्रमार्गमें दाह या जलन; पेशाब श्लैष्मिक सूत्रमय। सोनेपर गला खुसखुसाया करता है और श्वास रुक जानेकी आशङ्का होती है। दाहिनी करवट सोनेपर वक्षमें तकलीफ़ होती है, देह हिलानेपर वक्षोस्थिके नीचे दर्द मालूम होता है। बाँह हिलानेपर पञ्जरेमें बहुत दर्द हुआ करता है। भयानक भूख लगना और पाकाशय खाली मालूम होना। फेफड़ा, विशेषकर दाहिने फेफड़ेका प्रदाह। फेफड़ेका शोथ। फेफड़ा और फुसफुसावरणमें प्रदाहकी वजहसे जल-सञ्चय। फेफड़ेके प्रदाह रोगमें फुसफुसावरणमें रसक्षरण और वक्षका फैला न सकना, उसमें दबाव मालूम होना (ब्रायोनियाके प्रयोगके बाद); दोनों चक्षुगोलकोंमें ऐसा मालूम होता है, मानो भीतरसे बाहरकी ओर धक्का दे रहा है; मानो चक्षुगोलक फैलता जाता है, आँखमें जलन,—मानो साबुनका पानी लग गया है; नासारन्ध्र और वायु-मार्गमें मानो मिर्चेका चूर लग गया है, ऐसी जलन मालूम होती है, मानो वक्षगह्वर बहुत संकीर्ण हो रहा है, मानो उसमें भरपूर साँस लेनेकी जगह नहीं है; मानो फेफड़ेकी रक्त-सञ्चालन क्रिया रुक गयी है। इस ढङ्गका श्वासकष्ट, मानो दोनों फेफड़े मेरुदण्डकी ओर दब रहे हैं; मानो वक्षस्थल फट जायगा; कलाईमें मानो मोच आ गयी; प्रत्यङ्ग आदिकी सन्धियाँ सब मानो अवश हो रही हैं इत्यादि कई सेनेगाके सिद्धिप्रद लक्षण हैं। जो सब श्लेष्मा-प्रधान व्यक्ति या स्थूलकाय, शिथिलतन्तु और सर्दियाहे बच्चे, सर्दी हो जानेपर जल्दी अच्छे नहीं होते, उनके लिये विशेष उपयोगी है।

लक्षणावली

मन।—हमेशा अपना स्वास्थ्य गड़बड़ा जानेका भय; अत्यन्त परछिद्रान्वेषी। कभी-कभी तो खूब आनन्दमें रहता है, पर जब क्रोध आ जाता है, तब फिर ज्ञान नहीं रहता।

मस्तक।—मस्तिष्ककी जड़ता। आँखपर दबाव मालूम होना और क्षीण दृष्टिके साथ मस्तिष्ककी जड़ता। सरमें थोड़ा चक्कर आना, दृष्टिके सामने ऐसा मालूम होता है, कि मानो घूम रहा है; सर ढलमलाया करता है; माथा भारी मालूम होता है (कार्बो-वेज, सिङ्को, फास)। ललाट—ललाटके ऊपरी और कपालके पिछले भागमें एक तरहका दर्द अनुभव होता है; रोज़ दर्द पैदा

हो जाता है ; बन्द घरमें रहनेके समय या बैठे रहनेपर अधिक मालूम होता है। आँखमें दबाव और दोनों आँखोंको छूनेपर बहुत दर्द मालूम होता है, पर माथा दबानेपर सर-दर्द बढ़ नहीं जाता है ; बाहरकी निर्मल हवामें चलने आदिके व्यायामसे दर्द घट जाया करता है (ऐक्टिया, ग्लोन, लाई, पल्स, एपिस, काफिया)। रातमें भोजनके बाद ललाट और चक्षुगह्वरमें दबावकी तरह दर्द, विशेषकर माथेके बाएँ पार्श्वमें।

आँख।—चक्षुगोलकके ऊपर लगातार दर्द हुआ करता है (कार्बो-वेज, हायो, नेट्र-आर्स) और किसी चीज़की ओर एकाग्रचित्त या स्थिर दृष्टिसे देखते रहनेपर आँखें फड़का करती हैं और आँखमें पानी भर आता है (इपिक, स्पिञ्जिया) ; आँख बहुत क्षीण और पढ़नेके समय आँखमें पानी भर आता है (ऐ-सल्फ ; पढ़नेपर—एपिस, ऐमोन-कार्ब)। दृष्टि क्षीण और पढ़नेके समय आँखें झपने लगती हैं (लिखने-पढ़नेके समय आँखें ज्यादा झपने लगती हैं—आर्निका)। तीसरे पहर अस्तकी ओर जाते हुए सूर्यकी ओर चलनेपर, सूर्यके नीचे एक दूसरा सूर्य दिखाई देता है। पार्श्वकी ओर दृष्टि करनेपर वह डिम्बके आकारमें परिणत हो जाता है और पीछेकी ओर माथा झुकानेपर या आँख बन्द करनेपर अदृश्य हो जाता है। मोतियाबिन्द और आँखकी बीमारीमें नश्तर लगवानेपर, आँखके भीतर चक्षुमुकुरके जो सब चूर गिर जाते हैं, इससे उनके दोबारा शोषणमें सहायता मिलती है। बाईं आँखको सञ्चालन करनेवाले स्नायुका अपूर्ण पक्षाघात (आर्निका, कास्टि, इयुफ्रे, जेल्स, कोना, रास) ; केवल पीछेकी ओर माथा हिलानेपर रोगीको स्पष्ट मालूम होता है और फिर दो दिखाई देना बन्द हो जाता है। ऐसा अनुभव होना और स्पष्ट दृष्टि कि चक्षुगोलक मानो एक ओर खिंच और दब रहा है, मानो चक्षुगोलक भीतरसे बाहरकी ओर धक्का दे रहा है (नक्स-वोम, अरम, ब्रायो, कोमोक्लाड, इग्ने, फाइटो, सोरिन) या मानो चक्षुगोलक फैल रहा है, विशेषकर सन्ध्याके समय और दीयेकी रोशनीमें। गण्डमाला दोषयुक्त या श्लेष्मा-प्रधान व्यक्तियोंके आँखके सामनेवाले भागमें पीब-सञ्चय (एपिस, कोलचि, हिप, साइलि, सल्फ, थूजा)। पलकें सब सूखी श्लेष्मासे लिपटी हुई झूलती रहती है (ग्रेफ, बोर, हिप)। योजक-त्वचामें जलन हुआ करती है, मानो साबुनका पानी या तेल लग गया है ; सवेरे पलकोंका प्रदाह (ऐण्टिम-क्रूड, एपिस, आर्जेण्ट-नाई, ग्रेफ, मर्क, पेट्रोल, स्टेफिस, टेल्यू) ; सवेरे बढ़ जाता है ; कभी-कभी नींदके

बाद पलक इस तरह सट जाती है, कि पानीमें भिंजाये बिना अलग नहीं हो सकती है (कैल्के, डायस्को, हिप, जिङ्कम, नेट्रम-आर्स)।

नाक।—नाकके भीतरकी श्लैष्मिक-झिल्लीमें बहुत बेचैनी पैदा करनेवाला सूखापन (मैग-म्यूर, स्टिक्टा, ग्रैफ, साइलि)। ऐसा अनुभव होना, मानो सड़नेवाले जखमकी गन्ध आ रही है (कैलि-बाई, कोबाल्ट, मर्क, परम; पुराने सड़े कफ़की गन्ध—सल्फ़, ग्रैफ, पल्स)। लगातार इतनी प्रबल छींक आया करती है, कि सरमें चक्कर आया करता है और भार मालूम होता है, इसके बाद ही पानीकी तरह नाकसे स्राव आरम्भ हो जाता है (साइक्लेम, ऐकोन, बेडो, ब्राई, सिना, कैलि-आयोड, रियुमेक्स, सैंगुइन, सिपि)।

मुखमण्डल।—मुखमण्डलके बायें आधे भागमें मानो पक्षाघात हो गया है, इस ढङ्गकी अवशता और सुन्नता (कास्टि, काक्यु, सिपा, स्पाई, सिफिलिन)।

मुख-विवर।—जीभ सफ़ेद या सफ़ेद आभा लिये पीली या सफ़ेद, पीला लेप-चढ़ी या सफ़ेद गोंदकी तरह श्लेष्मा चढ़ा मालूम होता है और मुँहका स्वाद भी गोंद-गोंद और कड़वा मालूम होता है। सवेरे मुख-विवर सूखा हो जाया करता है। मुखमें बहुत लार सञ्चय होती है। मुँहकी गन्ध सड़ी। मुँह और गलेमें और जीभमें तथा तालुमें जलन अनुभव होती है (ऐ-नाई, आर्स, कैन्थ, कैप्स, नेट्र-म्यूर, सोरिन, टैबाक)।

गलेके भीतर।—मुँह और गलेमें सूखापन और उसमें गाढ़े गोंदकी तरह ऐसा श्लेष्मा ज़मा होता है, जो बड़े कष्टसे निकलता है; कण्ठके भीतर खुसखुसाहट होती है और उसमें त्वचा चय हो जानेकी तरह और करकराहट मालूम होती है; जिह्वामूलके दोनों पार्श्वके गह्वर संकुचित हो जाते हैं, बार-बार खाँसकर बलगम निकालनेकी चेष्टा करता है।

पाकस्थली।—अन्ननली और पाकस्थलीमें श्लेष्मा इकट्ठा होता है। डकार आनेपर वह श्लेष्मा और उसे निकालनेके लिये खाँसी आना बहुत कम हो जाता है। मिचली और बार-बार ओकाई, पाकस्थलीमें जलन, उदरोर्द्ध-प्रदेशके कुछ नीचे दबाव मालूम होना; सर्व-ग्रासी भूख पैदा हो जाती है, ऐसा मालूम होता है, कि भूखसे पाकस्थली चबायी जा रही है (सिना,

आयोड, ऐग्नोट, नक्स-वोम, सेबाड)। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें ऐसा दर्द, मानो खोंचा मारता है; आध्मान सञ्चय होनेका लक्षण और चिड़चिड़ा स्वभाव। क्रोध आनेपर फिर ज्ञान नहीं रहता।

मल।—दस्त, कै और उद्वेग; पानीकी तरह मल मलद्वारसे छिटककर निकल पड़ता है (आर्जेण्ट-नाई, क्यूप्रम-ऐसेट, रोडोड; आवाज़के साथ वेगसे निकलता है—क्रोटोन-टिग, ग्रै टी, जैट्रोफा, पोडो, थूजा)।

पेशाब।—पेशाबका परिमाण घट जाता है। पेशाब गहरा और फेनभरा (चेलिडो, लैके, लाई, थूजा); पेशाब कषाय और त्वचाको क्षय करनेवाला (हिप, मर्क, सल्फ, कक्कस, आयोड, नेट्रम-म्यूर, फास, सार्सा)। ठण्डा होने बाद पेशाब गदला और धुआँ-भरा मालूम होता है (कैन्थ, सिङ्को, लाई, नेट्र-म्यूर, सिपिया); तली मोटी, पीली आभा लिये लाल और उसका ऊपरी स्तर पीली आभा लिये और श्लेष्मा सूत्र-भरा (बार्बे, हिपर); पेशाबका रङ्ग बहुत अधिक और पेशाबके पहले और बाद मूत्रनलीमें दाह और जलन अनुभव होना; शय्यामूत्र।

श्वास-यन्त्र।— स्वरनलीमें गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा सञ्चय होनेकी वजहसे उसे बार-बार खाँसकर निकालनेकी चेष्टा करता है। पुराने वायुनलीभुज-प्रदाहकी वजहसे खाँसीकी तरह कभी-कभी गलेमें उत्तेजना हो जानेकी वजहसे शरीरको हिलानेवाली खाँसी पैदा हो जाती है। ऊँचे स्वरसे पढ़ते-पढ़ते एकाएक स्वरलोप (मिडोरिन, कैलि-बाई, कास्टि, स्पंजि)। स्वरभङ्ग, कण्ठके भीतर इतना सूखापन रहता है कि बोलनेपर उसमें दर्द होता है। सीढ़ी चढ़नेपर श्वासकी कमी और वक्षपर दबाव मालूम होना (एरण्डो, बार्बे, सार्सा, प्लम्ब, बोर, मर्क)। फेफड़ेमें रक्त-सञ्चय और कफ़ सञ्चय हो जानेकी वजहसे नींद खुलनेपर श्वासकष्ट (लैक-कैन, लैके, कैलि-बाई, ऐण्टिम-टार्ट, आर्नि) और ज्वरमें शीतके समय (कैक्ट, कैलि-कार्ब, नेट्रम-म्यूर) श्वासकष्ट अनुभव होता है। खाँसी—सूखी, वक्षमें दबाव और कण्ठनालीमें रुखड़ापन मालूम होना; स्वरनलीमें कफ सञ्चय या उत्तेजनाकी वजहसे सामान्य खुसखुसी खाँसी; वृद्धि—निर्मल वायु लगनेपर (आर्स, कार्बो-वे, डिजिट, नक्स, फास, सिना) और तेज़ीसे चलनेपर (कोका, मर्क, नेट्र-म्यूर, पल्स, सिपिया, स्क्विला, स्टैनम; चलनेसे बढ़ना—आर्स, डिजिट, फेरम, रियुमेक्स)। अधिकांश स्थानोंमें खाँसी छींकमें परिणत हो जाती है (ऐगार, बेल, स्क्विला, बैडी, हिप)।

सवेरे स्वरनलीमें जलन और पिटपिटकर हूप खाँसीकी तरह शरीर हिला देनेवाली खाँसी पैदा हो जाती है और बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा गोंदकी तरह और सफेद रङ्गका, अण्डलालकी तरह कफ निकलता है (कक्कस, इपिका, फास, सिपि, स्टैनम, फेरम, मिडोरिन, मिफाइटिस)। वक्षस्थलमें बहुत दर्द और स्पर्श सहन न होना (काम्फि, हिप, कैलि-बाई, पल्स, आर्नि, क्लोरम, जेल, कैलि-कार्ब, लैके, फास, स्पञ्जिया), खाँसी सूखी, कण्ठ सूखा और स्वरभङ्ग, इसके बाद वायुनली और उसकी दोनों शाखाओंमें बहुत श्लेष्मा उत्पन्न होता है (ऐण्टि-टार्ट इपिका, स्टैनम)। खाँसीका बढ़ना—तीसरे पहर और सन्ध्याके समय (क्रियो, फास, रास, स्पञ्जिया, आर्जेण्ट-नाई, आर्स, ब्राई, बेल, कार्बो-वेज, सिपा, इपिका, मर्क, ऐ-नाई, नक्स, पल्स, सिपिया)। विश्रामके समय या स्थिर रहनेपर (हायो, कैलि-नाई, सिपिया), बैठनेकी अवस्थामें (सिपि), बाईं करवट सोनेपर (लाई, पेरिस, फास, रास) और बन्द या गर्म घरमें रहनेके समय (ब्राई, इपिक, स्पञ्जि, पल्स)। स्वरनलीमें खुसखुसाहट और जलन, विशेषकर सोनेपर और इसके साथ ही श्वास-रोध होनेकी सम्भावना (शायित अवस्थामें श्वासरोध होनेका उपक्रम ; रोगी उछलकर उठ बैठता है—लैके-स्पञ्जिया ; चित्त सोनेपर श्वास-रोध हो जाना चाहता है—टिलिया ; पुराने वायुनलीभुज-प्रदाह रोगमें—कैलि-बाई ; हृद्रोगमें बाईं करवट सोनेपर—हाइड्रैस्ट ; रोगीको बैठा रखना पड़ता है—ऐण्टि-टार्ट, रियुमेक्स)।

वक्ष।—धमनी आदिमें अधिक खूनका दबाव या रक्त-प्रवाह (ऐमिल, ग्लोन, लैके, फास, सल्फ)। रुके हुए श्वासके साथ रह-रहकर सारे शरीरमें उत्ताप पैदा हो जाना (कैल्के); विश्रामके समय या स्थिर रहनेपर, छातीमें दबाव या श्वास-कष्ट अधिक मालूम होता है (नींदके समय—लैके ; भोजनके बाद घटना—ऐम्ब्रा)। वक्षमें कसावटका भाव (ऐ-नाई, ऐकोन, साइक्यू, हाइपिर, कैलि-बाई, लैक्टियु-बाई, मर्क-कोर, नक्स-मस, ओपि), मानो वक्ष-गह्वर बहुत अग्रसर, लम्बी साँस लेनेपर घट जाया करता है। अङ्ग-विशेषकी चालना करनेपर वक्षमें दर्द अनुभव होता है, वक्ष-गह्वर बहुत न फैलनेवाला, रोगी बार-बार अपना वक्ष फैलाता है, पर इसके बाद वक्षमें क्षय हुई त्वचाकी तरह अनुभव हुआ करता है। वक्षमें तेज़ शलाका वेधनेकी तरह तेज़ दर्द ; वृद्धि—श्वास ग्रहण करनेके समय (ऐकोन, ब्राई, कैलि-कार्ब, फास, बोर; स्किला, स्ट्रान) और स्थिर रहनेपर या विश्रामके समय (रस-टक्स)। दाहिने

पार्श्व सोनेपर वक्षके बायें पार्श्वमें धीमा या मोटी सलाई गड़नेकी तरह दर्द और जलन (बायें वक्षमें शलाका बेधनेकी तरह दर्द, दाहिनी करवट सोनेपर घटना—फास ; रातमें बायें वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द—लाई)। छूनेपर या छींकनेपर वक्ष-गह्वरकी प्राचीरमें या पञ्जरमय वेष्टनीमें दर्द मालूम होता है (छूनेपर—क्रोटेलस, मिफाइटि, लिडम, रैनान, साइलि, मिडोरिन), कुछ दिन पहले छातीमें ठण्ड लगकर सर्दी हो गयी थी, उसीका बचा हुआ अंश। वक्ष-मध्योस्थिके नीचे त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होना और जलन (पीछे जलन—सैंगियु, मानो आग जल रही है—लैके ; नीचे—ऐसाफिट, कार्बो-वेज, कक्कस, सैंगियु ; वायुनली भुजगत नयी सर्दी—कैलि-बाई) ; वृद्धि—शरीर हिलाने और लम्बी या गहरी साँस लेनेपर। जोरसे पैर रखने और तेजीसे चलनेपर या दौड़नेपर दोनों फेफड़ोंके बीचके स्थानमें खींचन और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह दर्द मालूम होता है। स्वरनाली, वायुनाली और वक्षमें बहुत ज्यादा श्लेष्मा इकट्ठा होता है। वक्ष-गह्वरके यन्त्र आदिके प्रदाहान्तिक वक्षोदक रोगमें यह विशेष हितकर है, ऐसा सुना जाता है। हृत्प्रदेशमें ऐसा दर्द मानो छेद कर रहा है (प्रम,क्यं स्टिलि, मेग-फास, रोडो)। हृत्पिण्डकी वजहसे समूची देह काँपा करती है (एपिस, एरम-ड्रेकाण्टि, नेट्र-म्यूर, स्पाइजि)। चलनेके समय कलेजा बहुत धड़कना (ऐम्ब्रा, कैक्ट, कैलि-आयोड ; तेजीसे चलनेपर—सिपिया, थूजा, ब्यूफो)।

प्रत्यङ्ग आदि।—पीठ और पृष्ठ-फलकमें तथा दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचमें दर्द हुआ करता है और ऐसा दर्द होता है, मानो चिपक गया है। जोरसे पैर रखनेपर या वक्ष हिले, इस तरह कोई अंग हिलानेपर, दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचमें दबावकी तरह दर्द मालूम होता है। बहुत गड़बड़ी मालूम होती है, इसके साथ ही रोगी बार-बार अङ्गड़ाई लेता है और हाथ-पैर फैलाता है तथा माथेमें जड़ भाव, भार और टपक अनुभव होती है। दोनों पैर बहुत क्षीण और सन्धियाँ सब अवश मालूम होती हैं। ऐसा मालूम होता है, मानो वक्षके बीचसे सारे शरीरमें सुस्ती फैल रही है। ऊपरी अङ्ग शिथिल और कुछ काँपा करते हैं। निर्मल वायु सेवनके लिये चलनेके समय बहुत सुस्ती पैदा हो जाती है। श्लैष्मिक-झिल्लीकी सर्दीकी वजहसे बीमारी। जिन सब सर्दीसे उत्पन्न रोगोंके बाद वक्षमें जगह-जगह जखम और दर्द बचा रह जाता है, मानो वे सब सीमाबद्ध स्थान प्रदाहयुक्त हो रहे हैं, इस ढङ्गका दर्द मालूम होना।

नींद ।—सन्ध्याके बाद सोते ही रोगी गहरी नींदमें जा पड़ता है, निद्रित अवस्थामें रोगी बहुत बेचैन हो पड़ता है, लगातार स्वप्न देखता है ; वक्षमें बहुत अधिक सुई गड़नेकी तरह दर्द और छातीमें कसावटका भाव रहनेकी वजहसे बार-बार नींद खुल जाती है।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—बहुत सर्दी मालूम होना ; पैर बहुत क्षीण ; घरके बाहरकी हवा लगनेपर सर्दी मालूम होना ; शीतावस्थामें श्वासकष्ट। पीठमें बार-बार सिहरावन ; चेहरेमें गर्मी मालूम होती है, दृष्टि क्षीण और आँखोंमें जलन ; टपककी तरह सर-दर्द, श्वास-प्रश्वास बाधाप्राप्त और सारे शरीरमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो चोट लगी है। रह-रहकर श्वास-कष्टके साथ शरीरमें उत्ताप पैदा हो जाना। शरीर गर्म, इसके बाद धीरे-धीरे और भी गर्म तथा पसीनेसे तर हो जाया करता है।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष ।—ब्राई, आर्निका, बेल, कैम्फोरा।

वृद्धि ।—छूनेपर या दबानेपर, मलनेपर, सीढ़ी चढ़नेपर, विश्रामके समय या स्थिर रहनेपर, झुकनेपर या सामनेकी ओर टेढ़े होनेपर, सवेरे और रातमें, सन्ध्याके आरम्भमें, गर्म वायु लगनेपर या बन्द गर्म घरमें रहनेके समय, घरके बाहरकी हवा लगनेपर और किसी चीज़की ओर टकटकी लगाकर देखनेपर।

उपशम ।—बाएँ पार्श्वको दबानेपर, घरके बाहर टहलनेपर, स्थिर होकर रहनेपर (सूखी खाँसीका), पीछेकी ओर माथा झुकानेपर और डकार आनेपर।

सदृश ।—ऐमोनियेकम (कठिन वायुनली-भुज प्रदाह रोगमें सरल कफ़ और बहुत ज्यादा परिमाणमें बलगम निकलना, वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, ललाटदेशमें सर-दर्द, क्षीण या अस्पष्ट दृष्टि इत्यादि) ; ब्राई, कैल्के, कास्टिकम, कक्कस-कैक्ट, कैक्ट, कैलि-बाई, फास, सञ्जिया, स्टैनम, हिपर, स्किला।

तुलनीय ।—श्वासनली-प्रदाहमें—ऐमोन ; मेदकी अधिकता—कैल्केरिया। पेशियोंकी कमजोरी इत्यादि—कास्टिकम ; स्वरनलीकी बीमारी—फास्फोरस। हूप खाँसी—कक्कस-कैक्टस। फेफड़ेके आवरणका प्रदाह—ब्रायो ; यक्ष्माका बलगम—स्टैनम।

क्रियाका स्थायित्व।—३० दिन।

शक्ति।—मूल अर्कसे २०० शततमिक क्रम। निम्न-क्रमसे ही विशेष लाभ हुआ करता है। डा० नेशका कथन है, कि उच्च क्रमसे उन्हें लाभ न दिखाई दिया; डा० क्लार्कको हमेशा ही ३० क्रमके प्रयोगसे बहुत फायदा दिखाई दिया है। डा० क्लिटन एनसको २०० क्रम व्यवहारकर उत्तम लाभ दिखाई दिया है।

सेना

(SENNA)

दूसरा नाम।—कैसिया लैनसियोलेटा, कैसिया ऐक्यूटिफोलिया।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सोनामुखी या सनायकी सूखी पत्तियोंसे विचूर्ण या अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—आध्मान शूल (बच्चोंका); दुर्बलता; शीर्णता; अनिद्रा; तापके साथ छींक।

उपयोगिता और आभास।—इस देशमें हलके जुलाबके रूपमें इसका व्यवहार हुआ करता है। हमारे देशके वैद्यगण इसे "कषाय, तिक्त-रस, उष्ण-वीर्य, दस्तावर, शुक्रवर्द्धक और वायु-रोग, वात-रक्त, शोथ और प्रमेह रोगमें लाभदायक बताते हैं।" सदृश विधान मतके अनुसार यह बच्चोंका अंत्र-शूल, आध्मान रुकना और नींद न आनेमें विशेष लाभदायक दिखाई दिया है। अन्त्रशूल रोगमें जब बच्चेका पेट आध्मानसे भर जाता है तब "सेना" के प्रयोगसे विशेष लाभ होता है। डा० फैरिङ्गटन कहते हैं कि किसी कड़ी बीमारीके बाद जब रोगी बहुत कमजोर हो पड़ता है और उसके पेशाबके साथ बहुत अधिक मूत्राम्ल रेणु निकलता है अर्थात् बहुत अधिक यावक्षारिक क्षयके साथ केवल सुस्ती मौजूद रहती है, उस समय यह "कास्टिकम" और "कैलि-कार्बोनिका" की तरह फायदा किया करता है। डा० क्लार्क कहते हैं, कि "भोजनके बाद ही तुरन्त पाकाशय खाली मालूम होना" यही अवसाद या सुस्तीका एक उदाहरण है। देह जीर्ण-शीर्ण, मल बहुत क्षीण, इस अवस्थामें "सेना" बलकारक दवाके रूपमें कार्य करता है।

लक्षणावली

मस्तक आदि ।—झुकनेपर माथा बहुत भारी मालूम होना, मानो किसीने माथा दबा रखा है (इग्निगो)। लगातार छींक आनेकी वजहसे दोनों हाथ गर्म हो जाते हैं और रोगी सुस्त हो पड़ता है तथा हाँफा करता है। दोनों ओंठोंके गालेमें छोटी-छोटी और जलन करनेवाली फुन्सियाँ पैदा हो जाती हैं।

उदर और मल ।—खाकर उठते ही फिर पाकाशय खाली मालूम होने लगता है (कैल्क, क्रोटोन-टिग, सिना, हाइड्रेस्ट, इग्ने, लाई, नेट्र-कार्ब, साइलि, फास, आयोड, पोडो, पल्स, नेट्र-म्यूर, सिपि)। बच्चेके पेटमें दर्द या अन्त्रशूल ; आध्मान वायु रुकनेकी वजहसे बहुत ही तकलीफ़ देनेवाला अन्त्र-शूल। पेटमें आध्मान सञ्चय होनेके कारण लगातार कीं-कीं कलकल आवाज़ हुआ करती है और रोगी सो नहीं सकता (जैलापा)। पेटमें दर्द होकर पतला पीली आभा लिये मल निकलता है ; कभी-कभी कुछ हरे रङ्गकी आँव निकलती है ; पाखाना फिरनेके लिये बैठनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो वेग अब न रुक सकेगा (कैलि-बाई, मर्क, मर्क-कोर, रियुम, ट्राम्बिड)। मल-नालीमें जलन हुआ करती है और पेशाबमें कष्ट मालूम होता है। कब्जियत—मल कड़ा और प्रचण्ड कूथन, मलद्वार जखम भरा और कांच बाहर निकलनेके साथ ही पतले दस्त आना।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—क्राटि, कैलि-कार्ब, जैलापा, सिना, आयोड, लाई, साइलि, सिपिया, टैबाकम।

तुलनीय ।—बच्चोंके पेटमें दर्द और अनिद्रा—जैलापा। कमजोरी—कैलि-कार्ब। भोजनके बाद सुस्ती—मर्क, सिना, लाइकोपो, सिपिया।

शक्ति ।—निम्न-क्रमका प्रयोग होता है।

सिपिया

(SEPIA)

दूसरा नाम ।—सिपिया सक्कस, सिपिया आक्टापस, सिपिया-आफिसिनेलिस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—कैटेल फिश नामक एक तरहके जल-जन्तुके स्याहीकी तरहके रसको सुखाकर विचूर्ण अथवा अरिष्ट तैयार किया जाता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— सुरासारका दुष्परिणाम ; आर्त्तव-स्राव रुका हुआ ; संन्यास ; भूख न लगना ; छोटी क्रिमि ; केश झड़ना (टाक) ; कर्कटका जखम ; वय:सन्धि-कालकी बीमारियां ; ताण्डव ; मसे ; मूलाधार-प्रदाह ; बाधक ; अजीर्ण ; अकौता ; नाकसे रक्त-स्राव ; आँखकी बीमारी ; चेहरा सफेद ; मुँहासे ; प्रमेह ; मूल-पथरी ; दादकी तरह उद्भेद ; मूर्च्छावायु ; उग्रता ; कामला ; श्वेत-प्रदर ; यकृतकी क्रियामें विकार या जड़ता ; आर्त्तव-स्रावकी गड़बड़ी ; मानसिक रोग ; नखमें दर्द ; स्नायुशूल ; नाक फूलना और प्रदाह-भरा नकसीर रोग ; चमड़ी ; फेफड़ेके आवरणका प्रदाह ; गर्भावस्थाकी बहुत-सी बीमारियाँ ; गर्भावस्थामें वमन ; विचर्च्चिका ; पलकोंका गिरना या पक्षाघात ; कर्णमूल ; मलान्त्रमें कर्कटीया जखम और फटना ; दाद ; रजभ्रंश ; माथेमें पसीना ; आघ्राण-शक्तिकी तेज़ी या विकार ; शुक्र जाना ; अंजनी ; दाँतका दर्द ; पेशाबका वेग रोकनेकी शक्तिका न रहना ; जरायुका नीचेकी ओर खिंचना ; शिराओंका फूलना ; हूप-खाँसी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—काले केश, दृढ़ तन्तु और कोमल स्वभाववाली स्त्रियोंके लिये यह विशेष उपयोगी है । स्त्री और पुरुष, विशेषकर स्त्रियोंके जननेन्द्रियके और अन्यान्य नाना प्रकारके रोगोंमें इसका फायदा दिखाई दिया है । आर्त्तवस्रावमें गड़बड़ी ; जरायुका अपने स्थानसे हटना ; गर्भवती तथा सद्य-प्रसूता स्तनसे दूध पिलानेवाली स्त्रियोंकी बहुत सी बीमारियाँ और जरायुभ्रंश आदि मिली कब्जियत इसको प्रधान क्रियाफल है । इसके रोगका एक खास लक्षण यह है, कि एकाएक सुस्ती आ जाती है और पाकाशय इस तरह खाली मालूम होता है, मानो न जाने कितने दिनोंसे कुछ नहीं खाया है, साथ ही बहुत कमजोरी । इसके कई निर्णायक लक्षण ये हैं :— चेहरा और शरीरकी त्वचापर कितनी ही जगह, धब्बे-धब्बे पीली आभा लिये दाग ; नाकके ऊपर जीनकी तरह, नासादण्डके ऊपर दोनों पार्श्व तक फैला हुआ पीली आभा लिये दाग । दर्द आदि शरीरके अन्य अंशसे पीठ या कमरमें चला जाता है । इसके साथ ही सिहरावन मौजूद रहती है । कमरमें जलन

और इस तरहका दर्द हुआ करता है, मानो टूट जायगी। ऋतुके समय, गर्भावस्थामें और स्तन पिलानेके समय कब्जियत, पतले दस्त, अर्श, प्रदर और दूसरे-दूसरे जरायु-सम्बन्धी रोग पैदा हो जाते हैं, शरीरके भीतरी अंश-विशेषमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक गोला अड़ा हुआ है। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें खालीपन मालूम होनेके साथ सुस्ती; कुछ खा लेनेपर घट जाता है। कमरमें दर्द,—खड़े रहनेपर या चलनेपर बढ़ जाता है और बैठने या सोनेपर घट जाता है। वस्ति-गह्वरमें बहुत बेचैनी मालूम होती है। ऐसा मालूम होता है, मानो जरायु आदि यंत्र बाहर निकल पड़ेंगे; बाहरसे योनिपर दबाव डालने या उरु रखकर दबाकर बैठनेपर यह अनुभव बन्द हो जाता है। नितम्ब और उरु-शिखरमें दबाव तथा खींचन मालूम होना, इसके साथ ही मेरुदण्डके ऊपरी भागमें जलन मालूम होना। शारीरिक उत्तापकी कमी; ठण्डी हवा लगना बिलकुल ही सहन नहीं होता। सभी विषयोंमें उदासीनता प्रकट करता है, यहाँतक कि अपने स्वामी और सन्तान इत्यादिके प्रति भी बेखबरी प्रकट करती है। बहुत ही आलसी प्रकृति, किसी कामकी बात सोचते ही डर लगता है। पुराने मित्रोंसे मिलनेमें डरती है। बहुत रोनी, लोभिनी, धनकी आकांक्षा बहुत अधिक। महा कृपण। सामान्य कारणसे ही मूर्च्छा आ जाती है, पानीमें भीजने, बहुत उत्ताप या बहुत सर्दी लगने, घुड़सवारीमें घूमने या घुटने टेककर ईश्वरकी आराधना करनेके समय बेहोशी आ जाती है। सर-दर्दमें मूर्द्धा-देशमें ठण्डक मालूम होती है, महान शंकित भाव; मनमें डर पैदा हो जानेपर मुखमण्डल और माथेमें उत्ताप पैदा हो जाता है, विशेषकर संध्याके समय। प्रचण्ड सर-दर्द—रह-रहकर टनटन झनझन कर उठता है; थोड़ा ऋतु-स्राव होनेवाली रमणियोंको ऋतुके समय बढ़ना—हिलानेपर, झुकनेपर और मानसिक परिश्रमसे; घटना—दबाव या लगातार कुछ देरतक जोरसे शरीर हिलानेपर। प्रसूता रमणियोंका तलपेट ऊँचा। जीभ बहुत मैली, पर आर्त्तव-स्रावके समय साफ़ हो जाती है। मुँहका स्वाद कड़वा, मानो मुँहमें लसदार भाव; मुँह मानो सड़ गया है; खायी हुई डकार इसी ढंगकी सड़ी; कब्जियत, विशेषकर गर्भावस्थामें; मल कड़ा, गाँठ-गाँठ; मलद्वारमें भार मालूम होता है या ऐसा अनुभव होता है, कि एक गोला अड़ा है; पाखाना हो जाने बाद भी यह अनुभव दूर नहीं होता; मल बड़े कष्टसे निकलता है और मलांत्रमें दर्द पैदा हो जाता है तथा पाखाना हो जानेके बहुत देर बादतक यह दर्द

अनुभव हुआ करता है। शय्यामें पेशाब—बच्चा सोते ही शय्यामें पेशाब कर देता है। पेशाबकी तली कुछ लाल और पेशाबके बर्त्तनमें गोंदकी तरह लगी रहती है; पेशाबमें बहुत बदबू। पुराना मेह,—बिना तकलीफका, कुछ पीला, धोए वस्त्रमें दाग लगता है; मूत्रनलीका मुँह सवेरे सट जाता है। बहुत दिनोंकी और दुरारोग्य बीमारी—शिश्न आदि इन्द्रियाँ सब क्षीण और सुस्त। उर्द्धाङ्गमें जगह-जगह चकत्ते दादकी तरह दाग; शरीरकी त्वचामें उत्ताप पैदा हो जाना—शरीर हिलाते ही उत्ताप पैदा हो जाता है, रोगी बेचैन और सुस्त हो जाता है और इसके बाद ही पसीना निकला करता है; वस्तिगह्वरसे पैदा होकर ऊपरकी ओर फैलता है, जिन्हें रजःस्राव बन्द हो गया है, वैसी वयःसन्धिकाल प्राप्त रमणियोंको इसी तरह अधिक हुआ करता है। योनिमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ऊपरकी ओर फैलता है; जरायुसे नाभि-देशतक छुरी मारनेकी तरह दर्द।

लक्षणावली

मन।—वास्तविक या काल्पनिक अमंगलके भयसे डरी और उद्वेगपूर्ण (रस, कैलि-कार्ब ; काल्पनिक अमंगलका भय— मर्क, लोरो); इसके साथ ही, विशेषकर संध्याके समय चेहरा और माथेमें उत्ताप पैदा हो जाना। बहुत दुःखित और रोदन-परायण, चिकित्सक जब पूछता है कि उसे क्या तकलीफ है, तब रोगीनी रो पड़ती है (पल्स, कैलि-कार्ब), अकेले रहनेमें डर मालूम होता है (हायो, कैल्के, कैम्फो, क्लिमैट, कैलि-कार्ब, स्ट्रैमोन); पुरुषका साथ पसन्द करती है या पाँच आदमियोंके सामने जानेमें डर मालूम होता है (लाई, नेट्र-कार्ब, प्लेट, पल्स—पुरुषके सामने जानेमें भय होता है—पल्स); रमणी रमणीके पास और पुरुष पुरुषके पास जानेसे डरता है (रैफिनस); बन्धु-बान्धवोंसे मिलनेमें भय मालूम होता है (आर्स, क्लिमैट, कैलि-फास, स्टैनम, थूजा)। उदास भाव (ऐसिड-फास, ओपि, एपिस, फास); अपने स्त्री-पुत्रके प्रति भी ताच्छिल्य प्रकट करता है (फास); अपने काम काजके सम्बन्धमें उदासीनता (एसिड-फ्लू, ऐसिड-फास), यहाँतक कि पहले जिन्हें जी-जानसे प्यार करता था, उनका भी अनादर करता है (ऐ-फ्लू); लोभी (लाई) और अत्यन्त कृपण स्वभाव (लाई, कैल्के, फ्लू, नेट्र-कार्ब, आर्स, पल्स)। आलसी स्वभाव,—खेल हो या आवश्यक काम हो,—किसी तरहके काममें भी एकदम

परिश्रम नहीं करना चाहता (ऐनाक, ऐगार, ग्रैफा गुयायेक, ऐ-नाई, चेलिडो, चायना, लेके, नेट्र-म्यू, नक्स-वोम, फास, सल्फ); कोई काम करना होगा—ऐसा ख़याल आते ही उसके मनमें भय पैदा हो जाता है; शारीरिक परिश्रम करना तो दूरकी बात है, किसी विषयको सोचनेमें भी जो परिश्रम होता है, उससे भी वह कातर हो पड़ता है (लेके, लाई, नक्स-वोम, ऐ-फास, सल्फ)। बिना कारणके जोरसे हँस पड़ता है या चिल्लाकर रो पड़ता है (क्रोकस, इग्ने, स्ट्रैमोन)। अपने स्वास्थ्य और सांसारिक विषयोंकी चिन्तामें अत्यन्त विह्वल और चिन्तित (अपने स्वास्थ्यकी चिन्ताके कारण—ऐकोन, पल्स, स्टैफाई)। सदा अभिमानी, बात-बातमें क्रोधित हो जाता है और क्रोध आनेपर फिर अच्छा नहीं रहता, पाँच मनुष्योंमें रहनेके समय रोगी उत्तेजित भाव प्रकट करता है (आयोड)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना; वायु-सेवनके लिये चलनेके समय या लिखनेके समय बीच बीचमें थोड़ी देरके लिये सरमें चक्कर आना या ऐसा मालूम होता है, कि एकाएक सरमें चक्कर आ गया (चलनेके समय—नेट्र-म्यू, नक्स-वोम, फास, पल्स; लिखनेके समय—कैलि-बाई, टिलिया)। मस्तिष्कका स्तम्भित भाव। बहुत तेज़ अधकपारीका दर्द, भीतरसे बाहरकी ओर; डंक मारनेकी तरह यंत्रणा (जिङ्कम), अधिकांश स्थानोंमें माथेमें, बायें पार्श्वमें या ललाटमें यह दर्द पैदा हो जाया करता है; इसके साथ ही वमन और आँखकी पुतलीका संकोचन मौजूद रहता है; वृद्धि--घरमें रहनेके समय और तेजीसे चलनेपर; घटना निर्मल वायु लगनेपर और रोगवाली करवट सोनेपर (हिपोमेनिस, आर्नि, पल्स)। सर-दर्द,—थोड़ा स्राव होनेवाली स्त्रियोंके ऋतुके समय सर-दर्द, रह-रहकर कट-कट झनझन कर उठता है; दोपहरके पहलेसे लेकर संध्यातक तकलीफ़ हुआ करती है। रोगिनी समझती है, कि अब वह न जियेगी; वृद्धि—हिलानेपर (ब्राई, काक्यु, ग्लोन, आइरिस, लाई, नेट्र-म्यू) और झुकनेपर (बेल, ग्लोन, हेलोन, पल्स, साइलि); घटना—स्थिर रहनेपर (हेलोन, इग्ने, स्पाई, नक्स-मस), आँख बन्द करनेपर (बेल, कैल्के, हायो, सल्फ, हेलिबो)। दबानेपर (लेके, मिनियेन, नक्स, पल्स, सैङ्गियु, स्पाई)। कुछ देरतक जोरसे शरीर हिलाते रहनेपर और अच्छी तरह नींद आनेपर (जेल्स, ग्लोन, नेट्र-म्यू, पल्स, सैङ्गियु, स्पाई, साइलि); खाँसनेपर (कैप्स, ब्राई, नेट्र-म्यू, स्क्विला) और सर हिलानेपर (बेल, ब्राई) बढ़ जाता

है। माथा, विशेषकर बायी आँखके ऊपर भीतरसे बाहरको ओर शूल वेधनेकी तरह दर्द, रोगी सहन न कर सकनेके कारण चिल्ला उठता है (कोलोसिन्थ, कैक्ट, कैलि-कार्ब, लिसिन) और उसको ओकाई आती है (चिल्ला उठता है—ग्लोन), सर-दर्द,—दबानेकी तरह (आर्निका, ग्लोन), फाड़नेकी तरह (ब्राई, सिङ्को, ग्लोन, नेट्र-म्यू) ; दर्द—मालूम होता है, कि दोनों चक्षुगोलक बाहर निकल पड़ेंगे या मानो माथा फट जायगा ; वृद्धि—झुकनेपर, माथा हिलानेपर, खाँसनेपर (ब्राई, कैप्स, नेट्र-म्यू, नक्स-वोम, ऐ-फास, फास) या सर हिलानेपर (ग्लोन, हिप, नक्स-मस) ; कुछ देरतक जोरसे माथा हिलानेपर सर-दर्द घट जाया करता है। लघु मस्तिष्कमें या सरके पिछले भागमें टपककी तरह सर-दर्द ; सवेरे आरम्भ होकर मध्याह्न या कभी-कभी सन्ध्यातक हुआ करता है (सवेरेसे मध्याह्नतक—कैक्ट, निकोलम, फास ; मध्याह्नमें भयानक वृद्धि हो जाना और इसके बाद ही क्रमसे घटकर सन्ध्या या सूर्यास्तके बाद निवृत्त हो जाता है—नेट्र-म्यूर, सैङ्गियु, स्पाई, टैबाक) ; वृद्धि—थोड़ा भी हिलानेपर, आँख घुमानेपर (ऐक्टिया, कोलोसिन्थ, ऐ-म्यूर, हिप, साइलि, टिलिया) या चित्त सोनेपर (एलैन, काक्यु, साइक्लेमे, कोलोसिन्थ, इग्ने, फास) ; घटना—करवट सोनेपर (इग्ने, मिनियैन ; वृद्धि—क्रियो)। आँख बन्द करनेपर (ऐकोन, वेल, साइलि) ; स्थिर रहनेपर या विश्रामके समय (ब्राई, हेलिबो, नक्स-मस, स्पाइजि) और अंधेरे घरमें रहनेके समय (सैङ्गिविन) ; सर-दर्दमें आँखमें रोशनी सहन नहीं होती (आर्स, एपिस, वेल, कोलोफिल, काक्यु, काफिया, वेल, मिडोरिन, नेट्र-सल्फ, फास, पल्स, स्पाइजि) ; सर-दर्दमें मूर्द्धा-देश या ब्रह्मतालु ठण्ढा मालूम होता है (ब्राई, नेट्र-म्यूर ; मानो ब्रह्मतालुपर बरफका एक टुकड़ा रखा हुआ है—वेरेट ; ब्रह्मतालुमें उत्ताप अनुभव होना (सल्फ, ग्लोन, हाइपिर, मिडोरिन, ऐ-म्यूर, नेट्र-सल्फ, नक्स-मस)। मानसिक परिश्रमसे सर-दर्द बढ़ जाता है (ग्लोन, नेट्र-कार्ब, फास, अरम, ऐ-पाई)। रोगीके अनजानमें माथेका अगला पिछला भाग फड़का करता है (साइकूटा, नेट्र-म्यूर), विशेषकर पूर्वाह्नमें और बैठनेके समय। सरका फड़कना, म्लान और फूला हुआ चेहरा ; मुख-विवरमें जखम और हरा पाखाना होनेके साथ माथेके ब्रह्मरन्ध्र और पश्चाद्रन्ध्र खुला करते हैं। माथेमें सर्दी पैदा हो जाना, सूखी, ठण्डी हवा लगनेपर अथवा पानीसे सिर गीला होनेपर (डालका, पल्स)। सन्ध्याके समय नींदके पहले या सवेरे

माथेमें खट्टी गन्ध, इसके साथ ही बहुत-बहुत सुस्ती मालूम होना। सरके पिछले भागमें या दोनों कानोंके पीछे ऐसी खुजली पैदा हो जाती है, मानो कीड़ा पैदा हो गया है (ग्रैफ, मेजेर, नेट्र-म्यूर, ओलियैन, जिङ्कम, मर्क)। ब्रह्मतालु और सरका पिछला भाग सूखा, बदबूदार, डङ्क मारनेकी तरह दर्द। डंक मारनेकी तरह यन्त्रणाजनक और कुटकुट चुनचुन करनेवाली खुजली पैदा हो जाती है। उसकी पपड़ी सब फटी-फटी और खुजलानेके समय जखमकी तरह मालूम होती है (ओलियैन, ग्रैफ, विङ्का, वायोला-ट्राई, रस-वेन)। माथेकी त्वचा और केशकी जड़ सब छूनेपर दर्द होता है (सिङ्को, फेरम, हिपर, स्टैफाई, सल्फ, वेरेट)। इन्द्रलुप्त या टाक पड़ जाना; झब्बे-के-झब्बे केश उड़ जाते हैं (ऐम्ब्रा, ग्रैफ, हिप, लेके. मर्क, नेट्र-म्यूर, ऐ-नाई, पेट्रोल, फास), बहुत देरतक सर-दर्द भोगनेके बाद या ऋतु-स्राव रुकनेके समय (प्रसवके बाद—कैल्के, कैन्थ, कार्बो-वेज, लाई, नेट्र-म्यूर)।

आँख।—आँखोंका प्रदाह, योजक त्वचा फूली और लाल, उसमें जलन होती है, करकराहट होती है और आँखमें दबावकी तरह दर्द अनुभूत होता है; आँखसे पानी गिरता है; पानी गिरनेपर आराम मालूम होता है। सवेरे और सन्ध्याके समय आँसूका स्राव, दोनों आँखें भारी मालूम होती हैं और पलकें इस तरह आप-से-आप बन्द हो जाती हैं, मानो पक्षाघात हो गया है (कास्टि, जेल, कोना, प्लम्ब); ठण्डी हवामें घूमनेपर दोनों आँखोंमें दर्द मालूम होता है, करकराहट होती है और जलन होती है, गैसकी रोशनीमें और पढ़नेपर बढ़ जाता है। आँखमें धूलके कण गिर गये हों, इस तरहकी यन्त्रणा होती है; वृद्धि—मलनेपर और पलकोंको हाथसे सहलानेपर (आर्स, कास्टि, हिप, पल्स, रस, सल्फ); आँखका सफेद अंश सब पीला हो जाता है (चायना, क्रोटेलस-हेरिडो, लेके, नक्स-वोम, अरम-म्यूर, कार्डुयस-मेरी, चेलिडो, चियोनेन, डिजिट, युपेट-पार्फोल, हिप, केलि-बाई, मैंग-म्यूर, फास, सेङ्गिविन)। लिखने-पढ़नेके समय दोनों आँखें शीघ्र थक जाती हैं, विशेषकर दीयेकी रोशनीमें (माइरिका, फास, रियुटा, सेनेगा, साइलि)। सब चीजोंका आधा अंश ही दिखाई देता है, बाकी अंश अंधेरेमें ढँका मालूम होता है (अरम, लिथिया, लाई, नेट्र-म्यूर, स्ट्रैमोन; केवल बायाँ आधा भाग दिखाई देता है—कैल्के, काक्यु, लिथिया, लाई; केवल ऊपरी आधा भाग दिखाई देता है—अरम; निचला आधा भाग दिखाई देता है—आर्स, अरम, कैम्फो, डिजिट)। रोज़

सवेरे आँख सट जाती है (कैल्के, ग्रैफ, लाई, मर्क, रस, सल्फ)। ऊपरी पलक लाल और दादकी तरह उद्भेद, उससे पपड़ी पैदा हो जाया करती है और निकल जाया करती है। योजक त्वचामें पीब भरी फुन्सी पैदा हो जाती है (ऐण्टि-टार्ट, ग्रैफ, मर्क); पलकके किनारे उत्ताप और सूखापन मालूम होना और भयानक खुजली पैदा हो जाया करती है (कैल्के, मेजेर, स्टैफाई)। दृष्टि अस्पष्ट—मानो पर्देके भीतरसे देख रहा है (कास्टि, क्रोकस, आयोड, लिथिया, नेट्र-म्यूर, पेट्रोल, फास, रस, सल्फ)। रमणियोंकी मासिक ऋतु-स्रावके समय दृष्टि-शक्ति लोप हो जाती है (ग्रैफ); घटना—सोनेपर। किसी चिकनी चीज़से प्रतिफलित रोशनी आँखोंको सहन नहीं होती। आँखके सामने आगकी चिनगारी और टेढ़ी रोशनीकी रेखायें सब दिखाई देती हैं (बेल, साइक्लेमं, नेट्र-म्यूर, फास, सल्फ); आँखके सामने अनगिनती काले बिन्दु सब दिखाई देते हैं (ऐगार, मर्क, फास)।

कान।—कानमें भों-भों हु-हु शब्द—कानमें आवाज़ (कार्बोन-सल्फ)। एकाएक कान बन्द हो जाते हैं (मैङ्ग, कैलेड, स्पाई)। अत्यन्त शब्द सहिष्णु (बेल, काफिया, सिङ्को, नक्स, ओपि, साइलि, टैबाक)। विशेषकर सङ्गीत ध्वनि (ऐकोन, नेट्र-कार्ब, नक्स)। कानके छेदसे पानीकी तरह पीवका स्राव (आर्स, लाई, सोरिन, टेल्यू)। कर्ण-लतिका, कानके पिछले भागमें और गर्दनके पीछे ऊपरकी तरफ दादकी तरह और बहुत खुजलानेवाले दाने निकलते हैं (कास्टि, ग्रैफ, मैग-म्यूर, ओलियैन); कर्णमूल फूल उठता है। उसमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है और गर्दन फिरानेके समय इस स्थानमें बहुत खींचन मालूम होती है (बेल, ब्रोम, कैमो, चायना, ऐ-नाई, रस, साइलि)।

नाक।—नाकमें प्रदाह और सूजन और दोनों रन्ध्रोंमें बहुत दर्द और त्वचा क्षय हो जाना (अरम-म्यूर, अरम-म्यूर-नेट्र, कैलि-बाई, हिपोजिनिन, साइलि, थूजा)। नाकके अगले भागमें दर्द भरे उद्भेद या दाने। यन्त्रणाजनक सूखी सर्दी, विशेषकर बायें रंध्रमें। बार-बार छींक आनेपर भी पानीकी तरह सर्दीका स्राव (ऐकोन, सिपा, इयुफ्रे)। नाकसे बहुत ज्यादा रक्त-स्राव, विशेषकर ऋतुके समय (ऐम्ब्रा, नेट्र-सल्फ, सल्फ); गर्भवती स्त्रियोंमें (काक्यु) और अर्श-रोगमें भी रक्त-स्राव हुआ करता है। घ्राण-शक्तिका गायब हो जाना

या नाकके अगले भागमें सड़ो गन्ध आना (बेल, पेरिस, फास, सल्फ)। नाक झाड़नेपर थक्का-थक्का हरा पीला श्लेष्मा या सूखा श्लेष्मा खून भरा निकलता है।

मुखमण्डल।—मुखमण्डल और संयोजिका पीली—वक्षपर पीला दाग और नासादण्डके ऊपरसे दोनों पार्श्वके गालतक एक चौड़ा पीला दाग दिखाई देता है (डा० एच. सी. एलेन कहते हैं, कि जिन रोगिनियोंको नाना प्रकारके जरायुके रोग रहते हैं—यह पीला दाग उसीका निदर्शन है)। चेहरेमें जगह-जगह और दोनों ओंठोंके चारों ओर पीला दाग। मुँहके चारों ओर खुजलानेवाले छोटे-छोटे दाने निकलते हैं। दाँतके क्षयके कारण पैदा हुआ चेहरेका विसर्पकी तरह प्रदाह—चेहरेका एक पार्श्व फूल उठता है (दन्त-रोगसे उत्पन्न—ऐसिड-फ्लु, बेल, बोर, मर्क, मेजेर, नेट्र-कार्ब, प्लम्ब, स्टैफाई; चेहरेका एक पार्श्व फूल उठता है—आर्स, कैमो, मर्क)। निचला ओंठ फूला, क्षय हुई त्वचाकी तरह दर्द-भरा और उसमें ऐसा दर्द मानो पतले काठकी सीकें गड़ रही हैं या मोटी पपड़ी जमा जखम, उस पपड़ीके नीचेसे कषाय, त्वचाको क्षय करनेवाला रस निकलता है;—उपत्वकका कर्कट रोग। मुँहका रह-रहकर होनेवाला स्नायुशूल। आँख और सरमें अधिक रक्त सञ्चय होना—बिजलीकी लहरकी तरह रह रहकर चिलक मार उठता है। निचले हनुके नीचेवाली ग्रन्थियाँ सब फूल उठती हैं (ऐ-नाई, एरम-ट्राई, बेराई-कार्ब, बेराई-म्यूर, ब्रोम, कैल्के, कैमो, चायना, रस, साइलि)।

मुख-विवर।—दाँत सब जल्दी-जल्दी नष्ट हो जाते हैं (क्रियो, स्टैफाई, कैल्के-फ्लू, कैल्के-फास)। दन्तशूल—कानतक दर्द फैल जाता है, दर्द खींचने, उखाड़ने और सुई गड़नेकी तरह, विशेषकर भोजनके बाद या कुछ पीनेपर (एसिड-फ्लु, स्टैफाई) या मुँहमें ठण्डी या गर्म कोई चीज लेनेपर। ऋतुके समय दाँतमें दर्द (स्टैफ, सीड्रन, कैलि-कार्ब, नेट्र-म्यूर, पल्स, स्राव घट जानेपर (लैके)। दन्तके मसूढ़ेमें दर्द, फूला, गाढ़ा, लाल, त्वचा क्षय करनेवाला और उससे जभी-तभी खून निकला करता है (ऐ-नाई, मर्क, फास)। जीभपर छोटे-छोटे छालेकी तरह रस भरे दाने निकलते हैं (एपिस, आर्स, लाई, नेट्र-म्यूर, ऐ-नाई, रस)। जीभ बहुत ही मैलसे चढ़ी रहती है, पर रोगिनीको ऋतु-स्राव होनेपर जीभ साफ़ सुथरी हो जाया करती है; पर फिर ज्योंही ऋतु-स्राव बन्द होता है, त्योंही वह मैली हो जाती है; निचला ओंठ फूला और फटा, जीभ सफेद लेप चढ़ी (ऐ-नाई, ऐसिड-फ्लु, ब्राई,

केलि-बाई, मर्क, पल्स, सल्फ, टैराक्स)। जीभ जल जानेकी तरह (बेल, आइरिस, रैनान-बल्बो, सेङ्गिविन, मर्क, प्लेट)। मुँहसे बदबू निकलना (आर्नि, कार्बो-वेज, कैमो. मिडो, केलि-फास, क्रियो, लैके, मर्क, नेट्र-म्यूर, ऐ-नाई, प्लम्ब)। ओंठ, मुख-विवर और जीभका स्वाद सूखा मालूम होता है (एपिस, ब्राई, लैके, लोरो, लाई, नेट्र-म्यूर, नक्स-मस, फास)। मुँहका स्वाद तीता (ब्राई, चेलिडो, नक्स-वोम, पल्स, सल्फ), कभी-कभी खट्टा (आर्जेण्ट-नाई, इग्ने, लाई, नक्स-वोम, फास) कभी-कभी गोंजकी तरह (मर्क, पल्स) कभी बहुत सड़ी गन्ध-भरा—मानो मुँह सड़ गया है (ऐनाक, कैप्स, कार्बो-वेज, नक्स-वोम, सोरिन, पल्स) विशेषकर सवेरे (आर्स, चायना, मर्क-कोर, रस, सल्फ)।

गलेके भीतर।—कण्ठका भीतरी भाग सूखा और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होता है और खसखसाया करता है। कण्ठमें कफ इकट्ठा हो जाया करता है (आर्जेण्ट-नाई, लैके, नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम)। गलेकी हरएक वेष्टनी बहुत कसी मालूम होती है और रोगी उसे बार-बार ढीली या अलग कर देता है (एपिस, लैके, निकोलम)। जिह्वामूलके बगलवाले दोनों गह्वर करकर करते हैं और जलन हुआ करती है (जलन होती है—आर्स, कैप्स, मर्क, नेट्र-म्यूर, सेङ्गिविन); खाँसकर बलगम निकाल देनेकी चेष्टा करनेपर बढ़ जाता हैं (लाई)। ग्रीवाकी ग्रन्थियाँ सब फूल जाती हैं और कण्ठमें बहुत दर्द उठा करता है। कण्ठ-प्रदाह—बाएँ पार्श्वमें अधिक ; गलेके भीतर, ऐसा मालूम होता है, कि एक ठेपी अड़ी हुई हैं (इग्ने लैके, नेट्र-म्यूर, सोरिन)। सवेरे बार-बार खाँसकर बलगम निकालनेकी चेष्टा करता है (एलैन, कैल्के, नेट्र-म्यूर, फास)।

पाकस्थली।—राक्षसकी तरह भूख, किसी तरह पेट नहीं भरता। या अग्निमान्द्य और सभी पदार्थ बेस्वाद मालूम होते हैं। माँससे अरुचि (चायना, ऐ-म्यूर, पेट्रोल, पल्स, सेबाड, साइलि), प्यासका न रहना या सवेरे बहुत तेज़ प्यास। खानेके समय और खानेके बाद तुरन्त, पाकाशयका दर्द आदि फिरसे पैदा हो जाता है या बढ़ जाता है (आर्जेण्ट-नाई, आर्स, बेराई, कैल्के-फास, ब्राई, नक्स, पल्स, सल्फ)। बार-बार डकार—खट्टा या तीता (नक्स, फास, पल्स, रोबिन, नेट्र-कार्ब) या सड़े अण्डेकी तरह गन्ध-भरा (ऐगार, मैग-सल्फ, सोरिन, सल्फ); खाने-पीने बाद अधिक डकार आना

(कार्बो-वेज, कास्टि, लैके, नेट्र-म्यूर, नक्स-मस, फास)। भोजनके बाद हिचकी आया करती है (साइक्ल, ग्रेफ, हायो, इग्ने)। सवेरे मिचली आती है (नक्स, पल्स); परन्तु कुछ खा लेनेपर घट जाती है (केलि-बाई, लोबेल, सेङ्गिविन, साइजि)। भोजनके बाद मिचली पैदा हो जाती है (काकुर, पल्स, नक्स)। खाद्य पदार्थकी गन्धसे भी मिचली आती है (कोलचि, काकुर, डिजिट, इपिक); सुस्ती (आर्स, इपिक, इथ्यू, टैबाक, वेरेट); सरमें चक्कर (काकुर, नक्स, पल्स, फास) और आँखोंके आगे अंधेरा छा जाना (केल्के, क्रोटोन-टिग)। पित्त और खाये हुए पदार्थ आदि वमन (आर्स, नक्स, फास, पल्स); गर्भावस्थामें दूधकी तरह पदार्थका वमन हुआ करता है। इतनी तेज़ ओकाई आती है कि खून निकल पड़ता है (वेरेट, फाइटो)। उदरोर्द्ध-प्रदेशको छूनेपर दर्द होता है (सिङ्को, केलि-कार्ब, लाई, नेट्र-कार्ब)। पाकस्थली और उदरोर्द्ध-प्रदेशमें बहुत बेचैनी और शून्य भाव (इग्ने, लैक-कैन, नेट्र-म्यूर, फास, पोडो, स्टैनम, सल्फ, टैबाक); भोजनके बाद बन्द हो जाना (चेलिडो, म्यूरेक्स, फास)। भोजनके बाद पेटमें ऐसा भार मालूम होता है मानो पत्थरका एक टुकड़ा रखा हुआ है (ब्राई, कैमो, लैक-कैन, नक्स-वोम, पल्स)। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें टपक (सिना, सिङ्कोना, ग्लोन, हाइड्रैस्ट); छातीमें जलन उदरोर्द्ध-प्रदेशसे कण्ठतक जलन हुआ करती है (केल्के)। उदरोर्द्ध प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द और जलन मालूम होना। गर्भवतियोंका सवेरेके समयका वमन, खानेकी चीज देखते ही या उसके विषयमें सोचनेपर ओकाई आती है (नक्स); रसोईकी गन्धसे मिचली आया करती है (आर्स, कोलचि)।

अन्त्राशय।—यकृत प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (बार्ब, ब्रायो, केलि-बाई, मर्क, नेट्र-म्यूर, पोडो, रैनान-बल्बो); गाड़ीपर चढ़ने और घूमनेके समय भी सुई गड़नेकी तरह दर्द अनुभव होता है; रोगवाली करवट दबाकर सोनेपर आराम मालूम होता है (ब्राई, कार्डुयस-मेरी, टिलिया, टेरेण्टियुला)। यकृत प्रदेशमें भार, दबाव और स्पर्श सहन न होना (एपिस, बेल, ब्राई, नक्स, पोडो, चियोनैन-वार्जि)। अन्त्रशूल—उदर बहुत फूला और उसमें स्पर्श सहन न होना; सन्ध्याके समय फिर पैदा हो जाया करता है। अन्त्रकूजन—उदरमें हुड़हुड़ गुड़गुड़ आवाज़ (ऐगार, ऐलो, लाई, विशेषकर भोजनके बाद)। पेट बढ़ा, पर दुबली-पतली प्रसूती (आयोड, नेट-कार्ब, बच्चोंको होनेपर—बेराई,

साइलि; क्षय या सुखण्डी रोगवाले बच्चे—सार्सा, ऐब्रोट, सैनिक; प्रसवके बाद प्रसूतीका—कैल्के, क्रोकस, सिकेलि)। उदरके ऊपर भूरा दाग दिखाई देता है (लाई, लैके, फास, थूजा; पीला दाग—लैके, फास, थूजा)। कभी-कभी दाहिनी कोख खट जाती है। उदरमें दबाव और भार मालूम होना। रातमें सोने बाद समूचे तलपेटमें दर्द होता है, पेशाब होने बाद घटना (कार्बो-ऐन)।

मलान्त्र और मल।—कब्जियत, गर्भवतियोंकी (ऐल्यू, कोलिन, डलिकस, प्लैट), कब्जियत, मल गाँठ-गाँठ, थोड़ा और कष्टसे निकलता है; पाखाना होनेके समय और बहुत देर बादतक मलद्वारमें दर्द हुआ करता है (ऐ-नाई, इग्ने, सल्फ), मलद्वारमें भार या ऐसा अनुभव होना कि एक गोला अड़ा हुआ है (क्रोटन-टिग, लैके, साइलि; बैठनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो एक गोलेपर बैठी हुई है—कैनाब-इन), पाखाना होने बाद भी ऐसा अनुभव होना, घटता नहीं है। पतले दस्त,—अन्त्रशूल और कूथनके साथ माँड़की तरह मल (कोलचि, ऐलो, एपिस, बेराई-म्यूर, कोलोसिन्थ, हेलिबो, रास, कैलि-बाई)। हरे रङ्गका आममय (आर्स, लोरो, मैग-कार्ब, मर्क, मर्क-कोर, पल्स)। खट्टी गन्ध (कैल्के, हिप, मर्क-कोर); सुस्त कर देनेवाला मल, बढ़ना—दूध (विशेषकर औंटाया हुआ) पीनेपर (कैल्के, नेट्र-कार्ब, निकोलम, कैलि-कार्ब, लाई, औंटाया दूध—नक्स-मस, नेट्र-कार्ब, निकोलम)। वृथा वेग—पाखाना जानेकी चेष्टा करनेपर केवल वायु और आम निकलती है और मलद्वारमें ऐसा मालूम होता है, मानो काँटी अड़ी हुई है (सेङ्गिविन)। पाखाना खुलासा नहीं होना, देरसे निकलता है और भेंड़के मलकी तरह छोटी-छोटी गाँठोंसे भरा (मर्क, कैलि-कार्ब, नेट्र म्यूर, प्लम्ब, ओपि, ऐल्यु, लैके)। मलके साथ खून निकलता है। कोमल मल भी बड़े कष्टसे निकलता है (हिप, नेट्र-कार्ब, ऐनाक, ऐल्यू)। मलान्त्रका अपने स्थानसे हटना या काँच निकलना (ऐ-म्यूर, एपिस, कैल्के, इग्ने, पोडो)। बहुत तकलीफ देनेवाला अर्श, जिसका मसा बाहर निकला रहता है—पाखाना फिरने (कैल्के-फास, कैल्के, कैलि-बाई, लैक-कैन, साइलि) और चलनेके समय (ऐ-म्यूर, इस्क्यु, कार्बो-ऐन); चलनेके समय बवासीरसे खून निकलता है। आँतोंकी क्रियाका न होना (ऐल्यु, ब्राई, हिप, साइलि)। मलान्त्र हमेशा भरी मालूम होना, यहाँतक कि कोमल पाखाना होनेपर भी ऐसा ही मालूम होता है। सफेद या भूरी

आभा लिये मल। कृमि निकलना (फेरम, मर्क, स्पाई)। मलद्वारके चारों ओर श्लेष्मा या रस-भरे दाने निकलते हैं (ऐ-नाई, स्टैफ, थूजा)।

पेशाब।—मूत्रस्थलीपर दबाव और तलपेटमें सङ्कोचनकी वजहसे (साइक्लेम, मर्क-सोल) पेशाबका वेग। बार-बार पेशाब, यहाँतक कि रातमें भी बार-बार पेशाब लगता है (ऐ-फास, ऐम्ब्रा, बोर, कोना, विशेषकर रातमें—ग्रैफ, लाई, सल्फ)। मूत्राशयमें ऐसा मालूम होता है कि मानो फैल गया है (इक्विसेटम)। पेशाबके समय मूत्रमार्गमें जलन (ऐकोन, आर्स, कैन्थ, कोना, नेट्र-कार्ब, सार्सा, टेरिब); सुई गड़नेकी तरह दर्द और उत्तेजना अनुभव होना (कैमो, इग्ने, मैग-कार्ब, नेट्र-म्यूर, टिलिया)। पेशाब गदला (एपिस, ब्राई, कैमो, फास, सैबाड, कार्डुयस मेरी, माइरिका) और उसकी तली कुछ लाल कीचकी तरह (सेलिन, ऐमोन-कार्ब, नेट्र-सल्फ, फास, सिनिशियो); पेशाबके बर्तनमें कसकर लगी रहती है (साइमेक्स, डैफनि, ब्रोम) और इस तरह बदबूदार कि रोगीके कमरेसे उस पेशाबके बर्तनको हटाये बिना कोई वहाँ रह नहीं सकता (एप्रिस, बैप्टि, कैल्के, डाल्का, क्रियो); कुछ देरतक रखनेपर भयानक बदबू निकलती है (इण्डियम); किसी-किसी समय पीली आभा लिये गोंदकी तरह तली जमती है और कभी-कभी फिर पेशाब होनेपर वह गदला और बदबूदार हो जाता है तथा सफेद तली जमती है (कैल्के, हिप, क्रियो, मैग-कार्ब, मिचेला-रेप, सार्सा)। शय्यामें पेशाब,—बच्चा सोते ही पेशाब कर देता है (क्रियो); पहली नींदसे समय (ऐसिड-फास, कास्टि, सिना, क्रियो); गर्भवतियोंका शय्यामें पेशाब कर देना (नेट्र-म्यूर)। लाला-मेह (पुराना मेह रोग), बिना दर्दका स्राव, कुछ पीला और वस्त्रमें दाग लगता है; सवेरे पेशाबकी नलीका मुँह सट जाता है (मेजेर, पेट्रोसेलिन) और रातमें दो-एक बूंद निकलकर वस्त्रमें दाग लगता है, बहुत दिनोंका और दुरारोग्य (कैलि-आयोड)। लगातार वीर्यस्खलनकी वजहसे कामेन्द्रियाँ सब शिथिल और सुस्त पड़ जाती हैं। कभी-कभी मूत्रमार्गसे श्लेष्मा निकलता है और किसी-किसी समय जमा हुआ श्लेष्माका टुकड़ा मूत्रमार्गको रोक देता है (ग्रैफ)।

पुं-जननेन्द्रिय।—जननेन्द्रिय शिथिल और रमणी सङ्गकी प्रबल इच्छा, जननेन्द्रिय प्रदेशमें, विशेषकर मुष्कसे बहुत अधिक पसीना निकलता

है (कैल्के, कैन्थ, कोना, कोराल-रूब्र, जेल, मर्क, पेट्रोल, सेलिन, थूजा)। मुष्कसे (कैलेड, कैल्के-फास, लाई, मैग-म्यूर, नेट्र-सल्फ, सोरिन, रोडो, सल्फ)। जननेन्द्रियके चारों ओर लगातार खुजली हुआ करती है (कैल्के, कास्टि, ग्रैफ, आइरिस, नेट्र-सल्फ, पोडो ; मलद्वार तक—मैग-म्यूर)। रेतःस्खलन, हस्तमैथुन आदिके बाद भी, ऐसा हुआ करता है। वीर्य पानीकी तरह (नेट्र-फास, ऐग्नस, मिडोरिन)। वीर्यस्खलनके बाद—मूत्रनलीके सामनेवाले अंशमें जलन मालूम होती है और रोगी क्षीण और निद्रालु हो जाता है, उसे तर हवा सहन नहीं होती। रमणके समय लिङ्गमें भरपूर कड़ापन नहीं होता (कैलेड, थिरिड) और बहुत थोड़ा सुख अनुभव हुआ करता है (ऐगार, इरिडियम, बार्ब)। सङ्गमके बाद दोनों जानु बहुत क्षीण मालूम होते हैं (कैल्के-कार्ब); मेढ्रत्वचाके प्रान्त भागके चारों ओर छोटी छोटी कोमल श्लेष्मा गुटियाँ निकलती हैं। पेशाब करने बाद और कड़ा पाखाना होनेपर मूलाधार मुखशायिका-ग्रन्थिसे रस निकलता है (पेशाबके बाद—डैफनी, हिपर, कैलि-कार्ब, ऐनाक, हिपोमैनिस ; कड़ा पाखाना होनेपर—ऐ-नाई, कार्बो-वेज, साइलि, सल्फ ; चलनेपर—सेलिन)। रेतस्खलन और रमणके बाद रोगीमें मानसिक, नैतिक और शारीरिक सुस्ती पैदा हो जाती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—योनिमें सुई गड़नेकी तरह तेज़ दर्द पैदा होकर ऊपरकी ओर चढ़ता है (फास); जरायु-ग्रीवासे ऐसा दर्द नाभि और उदरोर्द्ध-प्रदेशतक फैलता है, मानो छुरी गड़ रही है (लैक-कैन, ब्यु फो)। जरायु और योनि-भ्रंश ; जरायु आदिके ऊपर नीचेकी ओर तेज़ दबाव, मानो योनि-द्वारसे समस्त पदार्थ बाहर निकल जायेंगे (ऐगार, बेल, फ्रेक्सिन-ऐमे, लिलियम-टाई, म्यूरेक्स, नेट्र-म्यूर, प्लैट, सैनिक); रोगिनी बाहर निकलना रोकनेके लिये ऊरुपर ऊरु रखकर योनिमुख दबाकर बैठती है (म्यूरेक्स ; हाथसे योनि-मुख दबा रखती है—लिलियम-टाई)। इसके साथ ही श्वास-कष्टका लक्षण, सवेरे बढ़ना और सन्ध्याके समय आराम मालूम हुआ करता है। ऋतु अनियमित, कभी-कभी असमयमें, कभी बहुत देरसे होता है। स्राव कभी थोड़ा, कभी-कभी बहुत ज्यादा हुआ करता है। जरायु-भ्रंशका लक्षण मिला आर्त्तवका अभाव या अधिकता। डिम्बाधार, विशेषकर बायें बीज-कोषमें दबाव मालूम होना (लैक-डिफलो, लैके)। योनिमार्ग बहुत सूख जाता है (फेरम, ग्रैफ, लाई, नेट्र-म्यूर)। ऋतुके समय खूनकी कमीकी वजहसे (ग्रैफ ; सङ्गममें

कष्ट—नेट्र-मूर; योनिमार्ग सूखा और गर्म—ऐकोन), विशेषकर ऋतु बन्द होनेके बाद (लाई, बार्बा); छूनेपर दर्द मालूम होता है (प्लैट, बार्बा)। अधिक रक्त-सञ्चय होनेकी वजहसे जरायु-भ्रंश (लैके); पीले रंगका प्रदर (आर्जेण्ट-नाई, हाइड्रैस्ट); मलके साथ जरायु और योनि-भ्रंश (कोलिन्सो)। जरायु-ग्रीवा फूली और कड़ी हो जाया करती है (ऐ-कार्बोल, कोना, नेट्र-कार्ब)। बायें पार्श्वमें लीन जरायु-शिखरके साथ जरायु-भ्रंश (लिलि-टाई) और इसी कारणसे बायें पार्श्वका निचला अङ्ग सुन्न और दर्द-भरा मालूम होता है; सोनेपर, विशेषकर दाहिनी करवट सोनेपर यन्त्रणा घट जाती है। जरायु-मुखमें दर्दके साथ योनिके दोनों ओंठकी त्वचा क्षय हो जानेकी तरह स्पर्श असहिष्णु हो जाते हैं और लाल हो उठते हैं; विटप प्रदेश और दोनों उरुका भीतरी अंश भी क्षय हुई त्वचाकी तरह स्पर्श-असहिष्णु और लाल हो जाया करता है (क्रियो); जरायु-शोथ (हेलिबो, लाई, डिजिट, लैक्ट्यु-वाई), रोगिनी आठ महीनेकी गर्भवतीकी तरह दिखाई देती है। योनिद्वारमें स्पर्श सहन नहीं होता; सङ्गमके समय बहुत दर्द मालूम होता है (नेट्र-मूर, फेरम-फास, थूजा, इग्ने, ऐसो)। जरायुसे रक्त-स्राव, गतार्त्तव (जिनका रक्त-स्राव बन्द हो गया है) या गर्भवतियोंकी पाँचवें या सातवें महीनेमें रक्तस्राव। यौवनोद्गमके समय या यौवनोद्गमके बाद ऋतुका न होना (पल्स, सल्फ, नेट्र-मूर, कैलि-कार्ब)। प्रदर—स्राव पीले रंगका (आर्स, कैमो, हाइड्रस्ट, माइरिका, क्रियो, लैक-डिफ्लो, लाई) या दूधकी तरह (कैल्के, कोना, लैके, लाई, फास, पल्स, साइलि, ऐ-सल्फ); त्वचाको क्षय करनेवाला (ऐल्यु, बोर, ग्रैफ, आर्स, क्रियो, ऐ-नाई); पीबकी तरह (ऐल्यु, मर्क-प्रोटो) या बदबूदार पानीकी तरह तरल पदार्थकी भाँति (क्रियो, सिकेलि); अपत्य-प्रदेशमें बहुत खुजली पैदा हो जाती है (कैल्के, क्रियो); ऋतुके पहले होनेवाला (बोवि, कैल्के, ग्रैफ, क्रियो) और योनिके बाहरी भागमें जखम बन जाता है। पाँचवें महीनेमें गर्भ-स्राव (तीसरे महीनेमें—सेबाइ, सिकेलि)। गर्भस्थ शिशुके अंग हिलनेके कारण बहुत दर्द मालूम होता है। स्तनवृन्तमें खुजली, खुजलानेपर रक्त निकलता है और दर्द मालूम होता है, मानो जखम होगा (ग्रैफ)। स्तन-वृन्तकी त्वचा फट जाती है (कास्टि, फाइटो)।

श्वासयन्त्र।—स्वरभंग, इसके साथ ही वायुनली और स्वरनलीमें खुजली और सुरसुरी या नई सर्दी और उसके साथ कण्ठमें सुरसुरीकी वजहसे खाँसी

(साइलि, लैके, फास); स्वरनली सूखी मालूम होती है (फास)। चलनेके समय छातीमें दबाव (एपिस, आर्स, कैलि-कार्ब, फास) और श्वासाल्पता अनुभूत होती है (आर्स, कार्बो-वेज, प्रूणस ; तेज़ीसे चलनेके समय—नेट-म्यूर, प स, साइलि)। सन्ध्याके समय भयानक श्वास-कष्ट अनुभूत होता है (ऐण्टि-टार्ट, सिपा, इलैप्स, रैनान-बल्ब, स्टैनम, जिंकम)। किसी मानसिक या आशङ्काजनक उद्वेगके पैदा हो जानेपर रोगीका श्वास रुक जाता है या प्रायः बन्द-सा हो जाता है (पल्स); और कलेजा धड़कना आरम्भ हो जाता है (नक्स-वोम, डिजिट, बैडी, कैल्के-आर्स)। सूखी खाँसी, विशेषकर सन्ध्याके बाद शायित अवस्थामें (काष्टि, ड्रोसेरा, क्रियो, लैके, नेट्र-म्यूर, रस, सल्फ); आधी राततक खाँसी आती है ; इसके साथ ही अधिकांश स्थानोंमें मिचली और तीता वमन (कक्कस, ड्रोसेरा, इपिक) भी मौजूद रहता है। नींदमें खाँसी आया करती है, पर नींद नहीं खुलती ; अन्तमें स्वरनली या वायुनलीमें उत्तेजनाकी वजहसे अर्थात् गला खुसखुसाकर ऊपर-के-ऊपर खाँसी आया करती है। रोज़ संध्याके समय ऊपरके ऊपर खाँसी आती है ; पर थोड़ा-सा श्लेष्मा निकलते ही खाँसी बन्द हो जाती है। रह-रहकर हूप खाँसीकी तरह आक्षेपिक खाँसीका प्रकोप पैदा हो जाया करता है—स्वरनलीसे पाकस्थलीतक समूची छातीमें उत्तेजनाकी वजहसे खाँसी, आधी रातके पहले बढ़ना। केवल सवेरे श्लेष्मा निकला करता है (ड्रोसेरा, नेट्र-म्यूर, फास); दिनमें खाँसी नहीं आती ; कफ पीला (लाइ, पल्स, स्टैनम, हिपर, स्पञ्जिया); हरा या धुमैला पीवकी तरह (कार्बो-वेज, फेरम, लाइ, पल्स, साइलि, स्टैनम); या दूधकी तरह सफ़ेद, जमे हुए गोंदकी तरह श्लेष्मामय (कैलि-बाइ, कैलि-म्यूर, साइलि, जिंकम) और थोड़ा नमकीन स्वादवाला (लाइ, पल्स, स्टैनम, ड्रोसेरा, लैके, फास) बलगम और ऐसा मालूम होता है, मानो खाँसी उदरसे आ रही है। रोज़ सवेरे सोकर उठनेपर नाकसे पतले श्लेष्माका स्राव और बार-बार छींकके साथ खाँसी (ऐल्य, ब्राई, सिपा, इयुफ्रे) आरम्भ होकर दिनके ९ बजेतक रहती है ; खाँसीकी वृद्धि—स्थिर रहनेपर (हायो, कैलि-नाई) बाईं करवट सोनेपर (लाइ, पैरिस, फास, रस, रियुमेक्स, सेनेगा) और खट्टी चीज खानेपर (ऐल्य, सल्फ)। श्लेष्मा खूब पतला, पर खाँसनेपर निकलता नहीं है। बलगम—बहुत ज्यादा, पीवकी तरह बदबूदार (ऐ-नाई, मैग-म्यूर, स्किला, हिप, साइलि); हरा या नमकीन स्वादका बलगम केवल सवेरे निकलता है। सोने-

वाली अवस्थामें खून मिला बलगम निकलता है। श्वासकष्ट—वृद्धि—बढ़नेकी अवस्थामें (लेके, नेट्रम-सल्फ); नींदके बाद (एपिस, केलि-बाई, लेक-कैन, लेके) और घरमें रहनेके समय (मनुष्योंसे भरे घरमें—आर्जेण्ट-नाई); घटना—तेजीसे चलनेपर।

वक्ष।—वक्षगह्वर खाली मालूम होता है (गुयारिया, स्टैनम)। वक्षके ऊपर विशेषकर बायें पार्श्वमें बहुत दबाव मालूम होता है (एम्ब्रा, लाई, केलि-कार्ब, नेट्र-सल्फ)। श्वास-प्रश्वासके समय और खाँसनेपर बाएँ पार्श्वमें और बाएँ पृष्ठ-फलकके बीचमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द अनुभव होना (ब्राई, कोलोसिन्थ, स्क्विला, केलि-कार्ब)। वक्षके भीतर स्पर्श सहन न होना; हाथसे दबानेपर वक्षका दर्द घटा मालूम होता है (क्रियो, कोचलियारिया, ड्रोसेरा)। वक्षके ऊपर पीला या भूरा दाग (ऐसिड-हाइड्रो, कार्बो-वेज, फास, कैडमी-सल्फ)। खाँसनेपर वक्षमें श्लेष्माकी घरघराहट सुन पड़ती है (ऐण्टि-टार्ट, इपिक, फास, सेनेगा)। जबतक खाँसकर श्लेष्मा नहीं निकाल देता है, तबतक छातीमें घरघराहट हुआ ही करती है।

हृत्पिण्ड।—मानसिक आवेगकी वजहसे कलेजा धड़कना (फास, अरम, कैक्ट, सिङ्कोना, काक्यु, काकि, क्रोटेलस, प्लेट)। रातमें भोजनके बाद बीच-बीचमें हृत्पिण्डकी गति रुक जाना; रोगी बहुत डर जाता है। हृत्पिण्डके प्रबल स्पन्दनकी वजहसे नींद खुल जाती है। प्रबल स्पन्दनके साथ वक्षमें रक्तका अधिक सञ्चय होना। कभी-कभी हृत्पिण्डमें एक जोरका धक्का मालूम होता है।

गर्दन और पीठ।—अकड़नके साथ पीठमें विशेषकर पीठके निचले भागमें दर्द, चलनेपर दर्द घट जाता है (रस)। दोनों कन्धोंके बीचमें और बायें अंस-फलकके नीचे दर्द हुआ करता है (टिलिया); यकृतकी क्रियामें गड़बड़ीकी वजहसे यह दर्द पैदा हो जाता है। ऋतुके समय पीठमें फाड़नेकी तरह तेज़ दर्द (ऐगार), दर्दके कारण नींद नहीं आती,—शीत, उत्ताप और प्यास मालूम होती है और छाती जकड़ जाती है। नितम्ब-देशमें दर्द हुआ करता है और यह दर्द पैर तथा ऊरुमें चला जाता है। सवेरे नींद खुलनेपर कमरमें बहुत भार मालूम होता है, मानो टेढ़ी-मेढ़ी अवस्थामें सोनेके कारण पीठ सुन्न हो गयी है और मानो रोगिनी उठ या करवट नहीं बदल

सकती। चलनेके समय नितम्ब आदि थके और क्षीण मालूम होते हैं (ग्रैफ)। सन्ध्याके समय लेटी हुई अवस्थामें और तीसरे पहर दोनों ऊरु-शिखरके ऊपरी अंशमें दर्द मालूम होता है, मानो मोच खा गया है। झुकनेपर एकाएक पीठमें ऐसा दर्द होता है, मानो किसीने हथौड़ीसे मार दिया है (गर्दनकी पीठपर एकाएक आघात—नैजा), किसी कड़ी चीज़पर पीठ रखकर सोनेपर घटता है (नेट्र-मूर)। वायु निकलनेपर कमरका दर्द घटता है। शरीरमें चाहे कहीं भी दर्द क्यों न हो, वह पीठमें फैल जाता है (पीठसे अन्यान्य अंशमें जाता है (सैबाइ)। मेरुदण्डमें दर्द—चलनेकी अपेक्षा बैठनेके समय अधिक (कोबाल्ट, पल्स, जिङ्कम)।

प्रत्यङ्गादि।—हाथ पैर आदि प्रत्यङ्ग सब भारी मालूम होते हैं। सब अङ्गोंमें ही खींचनकी तरह दर्द, मानो जकड़ गया है। सन्धियाँ सब बहुत क्षीण मालूम होती हैं। सन्धिमें वातकी तरह दर्द। कभी-कभी हाथ-पैर अवश हो जाते हैं (साइलि, सल्फ)। हाथ-पैर ठण्डे, पर कुछ पसीनेसे तर मालूम होते हैं। केहुनीके सिरे या पासमें खुजलानेवाले दाने निकलते हैं, कोखमें रस भरी खुजली हो जाती है। शारीरिक परिश्रमसे स्कन्ध-सन्धिमें ऐसा दर्द होता है, मानो वह अपनी जगहसे खिसक गयी है (ऐगार, इग्ने, मैग-कार्ब)। बाँह और हाथकी अँगुलियाँ सब अवश हो जाती हैं। दोनों बाहुओंमें ऐसा दर्द मानो चोट लग गयी है, कलाई अकड़ी मालूम होती हैं (चेलिडो, क्यूबेब ; हाथ झुला रखनेपर असह्य दर्द मालूम होता है,—सैबाइना)। दिनमें दोनों हाथ गर्म रहते हैं और स्नायविक उत्तेजना अनुभूत होती है। कमरमें अकौता निकलता है (नेट्र-कार्ब)। गर्म घरमें रहनेके समय हाथ-पैर ठण्डे मालूम होते हैं और हाथसे सारे शरीरमें सर्दी फैल जाती है। तलहत्थीकी पपड़ी या छाल निकला करती है (सैबाड, फेरम); हाथमें खुजली पैदा हो जाती है। ऊरु-शिखरका प्रदाह, रोगी अंशमें इस तरहका दर्द मानो कोई जोरसे छुरा मार रहा है ; दर्द कम करनेकी आशासे रोगीको बाध्य होकर शय्यासे उतर आना पड़ता है। उठनेपर दर्द बढ़ जाता है, पर धीरे-धीरे टहलनेपर अच्छा रहता है। ऊरुके पीछे स्नायुशूल—गर्भावस्थामें अच्छा रहता है। रातके ३ बजेसे ५ बजेके भीतर दर्द बढ़ जाया करता है, शिराएँ सब फूल उठती हैं। चलते-चलते निम्नांग अवश हो जाता है। निम्नांग सब बरफकी तरह ठण्डे। दोनों पैर और चरण

फूल उठते हैं; वृद्धि—बैठने या खड़े होनेपर; घटना—चलनेपर। जान फूले—फूला हुआ अंश बहुत कोमल और दर्द-रहित। निम्नांगके ऊपरसे मानो चूहेकी तरह कुछ दौड़ गया। पैर और चरण बहुत ठण्डे, विशेषकर संध्याके बाद शायित अवस्थामें; दोनों पैरोंके गर्म होनेपर हाथ ठण्डा हो जाता है। रातमें दोनों पैरोंमें उत्ताप या जलन मालूम होती है। दोनों पैरोंमें शोथ और ऐसे अवश हो जाते हैं, मानों उनमें झुनझुनी आ गयी है। दोनों पैरोंमें बेहद पसीना निकलता है; पसीना बहुत बदबूदार और यह पसीना लगनेपर पैरकी अंगुलियोंमें जखम हो जाता है (सेनिक, ग्रैफ)। गुल्फ-देशकी स्थूल कण्डरामें इस तरहका दर्द होता है, मानो जकड़ गयी है और फूल उठती है। गुल्फपर जखम निकलता है। दिनमें माथा और प्रत्यङ्ग सब फड़कते हैं।

सार्वाङ्गिक।—जभी-तभी ऐसी मालूम होता है, मानो समूची देह थरथराती है। बहुत सुस्ती; ऋतुके समय सवेरे बहुत कमजोरी और ऐसी सुस्ती मालूम होती है, मानो मूर्च्छा आ जायगी; सवेरे नींद खुलनेपर और शय्यासे उठनेपर इसी तरहकी सुस्ती आ जाया करती है। भोजनके बाद आलस्य और शिथिलता मालूम होना—हिलनेकी इच्छा नहीं होती। थोड़ा भी परिश्रम करनेपर थकावट आ जाती है। दर्द बिलकुल ही सहन नहीं होता (आरम, कैमो, सिङ्को, काफि, इग्ने)। ठण्डी या जलीय हवा सहन नहीं होती। उससे बीमार हो जाती है (आरम, नक्स, पेट्रोल, रस, रियुमेक्स, साइलि)। धमनीमें खूनका भर जाना, रातमें भी ऐसा ही हुआ करता है। नाड़ीकी धमक सारे शरीरमें अनुभूत होती है (ग्लोन, नेट्र-म्यूर, पल्स, साइलि, जिङ्कम); विशेषकर समूचे बायें वक्षमें। मूर्च्छा,—पानीमें भींजनेपर, घुड़सवारीपर चढ़कर घूमनेपर और मन्दिरोंमें घुटने टेककर प्रार्थना करते समय। शारीरिक रसक्षयकी वजहसे उत्पन्न बीमारियाँ। नासिका ग्रन्थिकी व्यथाशून्य सूजन, पीवभरे दानोंवाला विसर्प। प्रत्यंगोंकी सन्धिमें वातका दर्द। नख-रोग। शरीरमें जगह-जगह ऐसा मालूम होता है, कि गोला अड़ा है (इग्ने, लैके, प्लम्ब)। उत्ताप पैदा हो जाना, देह हिलाते ही सारे शरीरमें उत्ताप पैदा हो जाता है, इसके साथ ही उद्वेग और सुस्ती; इसके बाद सारे शरीरमें पसीना निकल आता है—जिनकी रजःस्राव होना बन्द हो गया है, उन्हें प्रायः रह-रहकर शरीरमें उत्ताप पैदा हो जाता है (लैके, सैंगियु, सल्फ, टियुबर्क्युलिन);

उत्ताप वस्ति-प्रदेशसे पैदा होकर ऊपरकी ओर चला जाता है। वृद्धि—बहुत सवेरे, पूर्वाह्नमें, संध्यामें, विशेषकर निद्राके पहले। नींद खुलने बाद ; झुकनेपर ; श्वास-ग्रहण करनेके समय ; पाँच आदमियोंके पास बैठनेके समय (लाई, नेट्र-कार्ब, प्लम्ब) ; खासनेपर, रमणके बाद (आर्जण्ट-नाई, आर्स, ब्राई, चिनिन-सल्फ, सिङ्को, काक्यु, नेट्र-म्यु, न्युफर, रैफ) ; मानसिक परिश्रम करनेपर (अरम, कैल्के, इग्ने, लैके, नेट्र-कार्ब, नक्स-वोम) ; ज्वरके समय (आर्स, ब्राई) ; शरीरका रस-क्षयकी वजहसे (ऐ-फास, चायना) ; हस्तमैथुन करनेपर, संगीत सुननेपर (ऐकोन, नेट्र-कार्ब, नक्स, ऐम्ब्रा, ग्रैफ, क्रियो, लाई, नेट्र-म्यूर, नेट्र-सल्फ, सेबाई, टैरेण्ट) ; दूध पीनेपर (कैल्के, सिङ्को, ऐ-नाई, सल्फ, चेल, क्युप्र, निकोलम, ओलियेम-जिकोर, फास, पल्स)। पसीना होनेके समय और बाद (इपिक, मर्क, ओपि, रस, स्ट्रैफ, सल्फ, वेरेट, आर्स, ब्राई, कास्टि, फेरम) ; गर्भावस्थामें (ऐको, ऐक्टिया, ऐलेट, कास्टि, हेलिबो, पल्स) ; घुड़सवारीमें भ्रमण करनेपर (काक्यु, हेलोन, पेट्रोल, सेलिन), घुड़सवारी करनेपर (नेट्रम-कार्ब, रियुटा, ऐ-सल्फ) ; अपरिमित इन्द्रिय-सेवनकी वजहसे (कोना, सेलिन, चायना, स्टैफाई, ऐ-फास, फास) ; प्रथम निद्राके समय (क्रियो) ; रोगवाला अंश फैलानेपर (ब्राई) ; बच्चेको स्तन पिलानेके समय, पानी घोंटनेपर, पानीमें भींजनेपर, बदन धोनेपर (कैल्के, रस, ऐण्टि-टार्ट, सल्फ, सोरिन, लाई, नक्स-मस, पल्स) ; रमणियोंके प्रदर-रोगमें, विशेषकर प्रसवके बाद। घटना—रोगवाला अंग सिकोड़ लेनेपर, शरीर हिलाने और शारीरिक परिश्रम करनेपर, ठण्डा पानी आदि पीनेपर, अकेले रहने या तेजीसे चलनेपर ; रोगी एकाएक सुस्त हो पड़ता है और बेहोश हो जाना चाहता है (म्यूरेक्स, नक्स-मस)।

त्वचा।—मानो रोगीको कामला या पिलई रोग हो गया है, उसके शरीरकी त्वचा ऐसी ही पी पीली हो जाती है। शरीरकी त्वचापर जगह-जगह लम्बा और गहरा फटा-फटा दाग ; पानीसे धोनेपर और भी बढ़ जाता है। चेहरा, हाथ, पीठ, उरु-शिखर, चरण, उदर और जननेन्द्रिय प्रदेशमें बहुत खुजली पैदा हो जाया करती है ; खुजलानेपर खुजलीके पहले जलन मालूम होती है। शरीरकी त्वचाका जखम-भरा भाव और जानुके गासेमें खुजलाने बाद रस निकलता है ; शरीरमें पीला दाग या यकृत-दोषका दिखाई देता है (कुरारी, लाई, सल्फ)। जगह-जगह कुछ भूरे रङ्गके खुजलीके दाने निकलते हैं। रस-भरे दानोंके गुच्छोंमें खुजलानेपर भूँसी जैसी निकलती हैं। दाद

(वैसिलिन, नेट्रं-म्यूर, फाइटो, टेल्यू)। पोड़ा नारंगा (लैके, रस)। यंत्रणा-रहित जखम, हाथ-पैरकी अंगुलीके अगले भागमें या सन्धिके ऊपर (मेजेर) जखम सब बहुत खुजली भरे होते हैं। उनमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है और जलन हुआ करती है। शरीरमें किसी-किसी जगह दादके चकत्ते (दादके बहुतसे चकत्ते मिलकर एक ही जगह निकलें—टेल्यू)।

निद्रा ।—दिनमें या संध्या न होनेपर ही बहुत औंघाई। बिना कारण या मानो कोई पुकार रहा है, ऐसा भ्रम होकर बार-बार नींद खुल जाना। निद्रित अवस्थामें जोरसे बोलता है (आर्निका, बेल, साइलि, सल्फ)। रातके तीन बजनेके समय नींद खुल जाती है, फिर नींद नहीं आ सकती (नक्स)। बहुत-सी चिन्ताओंका उदय हो जाता है और रोगीको नींद नहीं आती। सवेरे कष्टसे नींद खुलती है और बहुत कमजोरी मालूम होती है। रातमें डरकर जाग उठता है और चिल्लाया करता है।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—शारीरिक उत्तापका अभाव विशेषकर पुरानी बीमारीमें (नये रोगमें—लिडम)। **शीतावस्था**—तृष्णा, संध्याके समय कम्प ; रोगिनी सोये बिना रह नहीं सकती ; बन्द या गर्म घरमें रहनेके समय और प्रत्येक बार शरीर हिलानेपर या जरा हिलनेपर ही जाड़ा लगने लगता है (नक्स) ; हाथ और पैरकी अंगुली (नेट्र-म्यू) ; वक्ष (एपिस) और दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचमें (कैप्स) शीत आरम्भ होता है ; शीतके समय सरका दर्द बहुत बढ़ जाया करता है और बाहरी उत्ताप अर्थात् गर्म वस्त्र आदिका आवरण असह्य हो जाया करता है (पल्स, कैम्फ, सिडोरिन) ; सारा शरीर बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है ; रोगीको बाध्य होकर शय्याका आश्रय ग्रहण करना पड़ता है। संध्याके समय और सवेरे भयानक सर-दर्द, पर दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे हो जाते हैं। पैर दोनों इतने ठंडे हो जाते हैं, मानो दिनभर पानीमें खड़ा था (लाई, पल्स)। हाथ-पैर आदि बहुत ठंडे और अवश मालूम होते हैं। **उत्तापावस्था**—शीतावस्थाकी अपेक्षा बहुत कम प्यास। रह-रहकर देह गर्म हो जाती है, मानो शरीरपर किसीने गर्म पानी ढाल दिया है (मानो शिरासे गर्म पानी प्रवाहित हो रहा है—रस ; मानो शरीरपर गर्म पानी ढाला जा रहा है—पल्स, आर्स, कैल्के)। मुखमण्डल लाल और सारे शरीरमें पसीना हो जाता है, रोगी उद्विग्न हो उठता है, कण्ठ

सूखा मालूम होता है, पर प्यास नहीं पैदा होती। उत्ताप निम्नांगसे ऊर्द्धाङ्गमें ऊपर चला जाता है (नेट्र-म्यू, वेरेट); सरमें चक्कर आया करता है और रोगी अपना चित्त स्थिर नहीं कर पाता। **पसीनेवाली अवस्था**—नींद खुलनेपर बहुत ज्यादा पसीना हुआ करता है—(जाग्रत अवस्थामें पसीना होता है और सोते ही पसीना सूख जाता है—सिङ्को, कोना, थूजा)। मानसिक या शारीरिक परिश्रम करते ही पसीना अधिक होने लगता है (ब्राई, सोरिन, सल्फ)। वक्ष, पीठ और पुं-जननेन्द्रिय प्रदेशमें ठण्डा रातका पसीना, रातमें खट्टा पसीना, ऊर्द्धांगसे निम्नांगमें पसीना चला आता है; रातमें पसीना प्रति तीसरी रातमें; जीभ सफेद लेप चढ़ी और पुरानी बीमारी होनेपर जीभपर छोटे-छोटे रस-भरे दाने निकलते हैं। खाये हुए पदार्थ बहुत नमकीन मालूम होते हैं (कार्बो-वेज, सिङ्को)। पुराना मासिक या मासान्तर ज्वर (नक्स, पल्स; प्रत्येक छः या बारह महीनेके अन्तरसे—लैके)।

वृद्धि।—छूनेपर, मलनेपर, खुजलानेपर, शरीर एकाएक हिलानेपर, पैर हिलानेपर, थोड़ी भी चोट लगनेपर, भारी चीज़ उठानेपर, बाँह उठानेपर, बाईं करवट सोनेपर, चित्त सोनेपर, बैठनेके समय, घुटने टेककर बैठनेपर, झुककर खड़े होनेपर, सीढ़ी चढ़नेके समय, मानसिक परिश्रमसे, अपरिमित इन्द्रिय सेवनकी वजहसे तीसरे पहर और सन्ध्याके बाद, ठण्डी हवा या पूर्वकी ओरसे प्रवाहित हवा लगनेपर, तेज़ गर्मीके समय, भोजनके समय, जलीय वायुमें, नींदके बाद, प्रथम नींद आते ही या प्रथम निद्राके समय और तुरन्त बाद ही और सङ्गमके बाद।

उपशम।—दबानेपर, वस्त्र आदिका बन्धन शिथिल कर देनेपर। दाहिनी करवट सोनेपर। जोरसे शरीर हिलानेपर (सर-दर्द); ऊरु-पर-ऊरु रखकर योनि-मुख दबाकर बैठनेपर, निर्मल वायु लगनेपर, ठंडे पानीसे सींचनेपर, शय्याका उत्ताप लगनेपर और गर्म प्रयोगसे।

सम्बन्ध।—**अनुपूरक**।—नेट्र-म्यूरियेटिकम; नये रोगकी—जिस और जैसी अवस्थामें 'जेलसिमियम" का प्रयोग हुआ करता है, पुराने रोगमें ठीक उसी अवस्थामें "सिपिया"का व्यवहार होता है।

दोषघ्न।—उद्भिदकी खटाई—एको, ऐसिट-क्रूड, ऐसिट-टार्ट, रस।

अनुकूल सम्बन्ध ।—कैल्के, जेल्स, नेट्र-मूर, पल्स, रास, सल्फ, वेल, ब्राई, मर्क, नक्स-वोम, साइलि।

प्रतिकूल ।—लैकेसिस।

सदृश ।—ऐक्टिया-रेसि, ऐलेट, ऐलो, ऐल्यू, आर्स-आयोड, वेल, बोर, कैल्के, कोलोफिल, कास्टि, कुरारि, साइक्लेम, ग्रैफ, हेलोन, आइरिस, जेबोरैन, कैलि-कार्ब, क्रियो, लिलियम-टाई, लाई, मेजेर, मूरेक्स, नेट्र-कार्ब, नेट्र-मूर, नक्स-वोम, फास, पोडो, पल्स, सैङ्गियु, सिकेलि, सिलि, स्टैन, सल्फ, टेल्यू, थिरिड, थूजा।

तुलनीय ।—रसभरे दाने या जखम (सन्धि स्थानोंमें)—बोरैक्स, मेजेरियम। विचर्चिका—आर्स। विषाद—कास्टिक, पल्स। दर्दके साथ कम्पन—पल्स। गर्भावस्थामें कब्जियत—ऐलूमिना। पेशाबमें बदबू—इण्डिकम। प्रमेह—कैलि-आयोड। जरायुका नीचेकी ओर आकर्षण—बेलेडो, लिलियम; खाद्य-पदार्थको गन्ध देखने या सोचनेपर मिचली—नक्स, कार्बो, कोलचि; खुजलानेपर जलन—सल्फ। खाँसनेपर पेशाब होना—कास्टिकम। पलक गिरना—जेल्स। आमवात—नेट्रम, एपिस। अजीर्ण—लाइको। जरायुका कड़ापन—मस्क। नकसीर—पल्स, सिकेलि, सोराइनम। जरायु-ग्रीवामें दर्द—मूरेक्स। भूतका भय—फास, पल्स। चमड़ी—कैनबि, मर्क, सल्फ, नाइट्रिक एसिड। शिथिल तन्तु—कैलि-कार्ब इत्यादि।

शक्ति ।—६ठा शततमिक क्रमसे १००० शततमिक क्रम। अधिक निम्नक्रम या बार-बार प्रयोग करना मना है।

क्रियाका स्थायित्व ।—४०से ५० दिन।

सेप्सिनम

(SEPSINUM)

"पाइरोजेनियम" देखिये।

सेप्टिसिमिनम

(SEPTICÆMINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सेप्टिक (विषाक्त) फोड़ेके अंशसे इसका क्रम तैयार होता है। डा० स्वानने पहले यह दवा तैयार कर इसका प्रचार किया।

उपयोगिता और आभास।—होटल, बैरक, छात्रावास, सैन्यकी छावनी इत्यादि जिन स्थानोंमें बहुत-से लोग रहते हैं और कितने ही कारणोंसे उपयुक्त खाद्य और साफ़ खुली हवा नहीं मिलती, उन स्थानोंके रहनेवालोंको अतिसार, आमाशय, आन्त्रिक ज्वर (टाइफायड) प्रभृति होनेकी सम्भावना अधिक रहती है। ऐसे स्थानोंके इन रोगोंकी यह उत्तम दवा है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—पाइरोजिन, बैप्टि, मैलेरिया-आफिसिनैल।

शक्ति।—३०—२००।

सक्स

(SHUCKS)

जि मेइयो (Zea Mayo) देखिये।

सिलिका या साइलिसिया

(SILICA or SILICEA)

नामान्तर।—एसिडम सिलिसिकम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले विचूर्ण, इसके बाद अर्क।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— तलपेटका फूलना; फोड़ा; मुँहासे; खूनकी कमी; मलद्वारका फटना; भगन्दर; भूख न लगना; मेरुदण्डकी कमजोरी; अस्थिक्षय रोग; मस्तिष्कका

संघात और क्लान्ति; स्तनमें नासूर; बाघी; कैन्सर या कर्कट-रोग; दूषित फोड़ा; मोतियाबिन्द; जखमके चिन्होंका फिरसे प्रदाहित हो जाना; खूनके सञ्चालनमें गड़बड़ी; आँखोंका प्रदाह; कब्जियत; सर्दी; खाँसी; कमजोरी; दाँत निकलना; बहुमूत्र; कानकी बीमारियाँ; गोंद; आप-ही-आप पेशाब; नासूर; पैरका पसीना रुकना; काँटा या प्रेक आदिका बाहर निकलना; अस्थि-भंग; पाकाशयकी सर्दी; गाँठोंका फूलना; सर-दर्द; आँत उतरना; वक्ष-सन्धिकी बीमारी; जानुकी हड्डीका शोथ; कोरण्ड; जबड़ेकी हड्डीका क्षय; सन्धिके आवरणका प्रदाह; अश्रुनाली; स्तनमें विकार; गति-शक्तिका पक्षाघात; उन्माद; मस्तिष्कावरण प्रदाह; जरायुसे रक्त-स्राव; गर्भ-स्राव; नखकी बीमारी; स्नायुशूल; अंगुलवेढ़ा; जरायुके आवरणका प्रदाह; चमड़ी; फेफड़ेका आवरणका प्रदाह; नितम्बमें फोड़ा; आमवात; पुराना वात; अस्थि-विकार; सपनेमें घूमना; शुक्रक्षय; मेरुमज्जाकी उत्तेजना; मूत्रकृच्छ्रता; पीब सञ्चय होना; दाँतोंका क्षय; वेग या कूथन; अर्बुद; मूत्रनालीमें जखम और रुकना; मूत्र-वेग धारण करनेकी शक्तिका न रहना; गो-बीजके टीकाका दुष्परिणाम; अपत्यपथका आक्षेप; सरमें चक्कर आना; विलम्बसे चलना सीखना; कृमि; क़लमका काम करनेवालोंकी अंगुलियोंमें ऐंठन।

उपयोगिता और आभास।—अस्थि-मज्जा वगैरह शारीरिक उपादानोंके पोषणका अभाव होनेपर अर्थात् जहाँ अस्थि-मज्जाको बढ़ानेवाले भोजनकी तो कमी नहीं है, पर पाचन आदि शारीरिक क्रियाएँ उस भोज्य पदार्थको रक्त मज्जा आदिमें अच्छी तरह परिणत नहीं कर सकतीं, इसीलिये, शरीर पुष्ट नहीं होता, ऐसे स्थानपर सिलिका (असली नाम साइलिसिया) बहुत फायदा किया करता है। कच्छू विष-दूषित मनुष्य या गोरा शरीर, सूक्ष्म शुष्क त्वचा, म्लान, उतरा हुआ सफेद चेहरा या क्षीणकाय और शिथिल मांस-वाले व्यक्तियोंको खूब फायदा करता है। ऐसी पतली हड्डीवाले, बड़े माथेवाले बच्चे, जिनका ब्रह्मरन्ध्र और पश्चाद्‌रंध्र और माथेके अस्थि-फलक सब खुले रहते हैं और जिनके माथेमें बहुत बदबूदार पसीना होता है, पर किसी वस्त्रसे माथा ढक रखनेकी आवश्यकता नहीं होती; उनका पेट बड़ा और ऊँचा, गुल्फ-सन्धि बहुत क्षीण रहती हैं और वह बहुत देरसे चलना सीखता है; ये और आगे लिखे कई लक्षण साइलिसियाके सिद्धि-प्रद और निर्णायक लक्षण माने जाते हैं। रोगी बहुत सुस्त और क्षीण, हमेशा सोये रहना पसन्द करता

है। स्नायविक अवसाद; उत्तेजना प्रवणताके साथ अवसाद; कठिन परिश्रम और आवद्ध अवस्थामें रहनेकी वजहसे सुस्ती। बहुत चञ्चल और उसके अङ्ग-सब भी बहुत चञ्चल रहते हैं। उद्विग्न चित्त, कोमल, नम्र और भीरु स्वभाव। सिलिकाके रोगियोंको मानसिक परिश्रमसे बहुत तकलीफ़ होती है; लिखने-पढ़नेके समय क्लान्त हो पड़ता है; किसी विषयको सोच नहीं सकता। एकाएक पैरका पसीना रुक जाना, माथा या पीठमें प्रबल वायु प्रवाह लगनेकी वजहसे फोड़ा, धनुष्टंकारकी तरह आक्षेप वगैरह और गो-बीजका टीका लगवानेके कारण स्वास्थ्यमें विकार होनेके कारण बीमारियाँ। शारीरिक उत्तापकी कमी, हमेशा यहाँतक कि व्यायामके समय भी सर्दी मालूम होना, गर्दनके बगलकी कर्णमूलीय, स्तनकी वंक्षण या पुट्ठेकी ओर रस-स्रावी ग्रन्थियोंका प्रदाह, सूजन और उनमें पीव पैदा हो जाना। बच्चा एकदम जिद्दी और स्वमत प्रधान बना रहता है; अच्छी बात कहने या आदर करनेपर भी रोया करता है; मेरुदण्डसे पैदा हुआ सरमें चक्कर—गर्दनके पिछले भागसे माथेमें चढ़ता है, मानो रोगी सामनेकी ओर गिर जायगा, विशेषकर ऊपरकी ओर देखनेपर। पुराना सर-दर्द,—गर्दनके पिछले भागसे मूर्द्धा-देशमें चढ़ता है और वहाँसे दाहिनी भौंपर चला आता है; खासकर यदि जवानीमें कोई कड़ी बीमारी हुई हो और उसके बादसे ही रोग आरम्भ हुआ हो। ग्रीवा और मस्तकमें पसीना होनेकी वजहसे तर रहा करता है, विशेषकर धूपमें, माथा हमेशा कपड़ेसे ढके रखता है। शरीर ठण्डा, पर दोनों पैरोंमें पसीना। हाथ-पैर और बगलसे बदबूदार पसीना निकलता है और पैरकी अंगुलियोंके गासेमें जखम हो जाता है। जीभपर ऐसा मालूम होता है, मानो केशका एक टुकड़ा पड़ा है। कब्जियत—ऋतुके पहले और समय कब्जियत हो जाती है, मानो मलान्त्रकी निष्क्रियताके कारण भयानक वेग देना पड़ता है। मलका कुछ अंश बाहर निकलकर भीतर घुस जाता है। मलान्त्रमें बहुत देरतक मल रहता है। भगन्दर—कभी वक्षमें दर्द और कभी भगन्दर, इसी तरह पर्यायक्रमसे हुआ करता है। बच्चा जब कभी स्तन पीता है, उसी समय माताकी योनिसे खून निकलता है। स्तन-वृन्त धस जाते हैं, इसीलिये स्तन-शिखरमें एक गड्हा-सा दिखाई देता है। सोनेपर प्रचण्ड खाँसी आया करती है और गाढ़ा पीले रंगका श्लेष्मा या बहुत-सा बदबूदार पीवकी तरह श्लेष्मामय बलगम निकलता है। सपनेमें घूमना। शरीरकी त्वचापर जखम होना—जरा भी छिल गया या

खरोंच लग गयी तो वह जखममें परिणत हो जाता है। हाथ और पैरकी अंगुलोके नख टूटे और क्षय हुए, कुनख रोग। पैरमें सर्दी लगनेपर सर्दी हो जाती है। त्वचाके नीचे, काँटा वगैरह गड़नेपर "सिलिका" के सेवनसे उसके निकल जानेमें सहायता प्राप्त होती है। दूधकी तरह प्रदरका स्राव, विशेषकर पेशाब करनेके समय। अश्रुनाली। मांसको छेद देनेवाला पैरका नख। अंगुलवेढ़ा, शोणित फोड़ा, विष-व्रण, सभी तरहके जखम, नासूर—निकले हुए पीवमें बहुत बदबू, मलद्वार फटा, पाखाना होनेपर उसमें भयानक तकलीफ़ होती है। कोमल तन्तु अस्थि-वेष्ट या अस्थि, जिस किसी भी स्थानमें पीव सञ्चय होनेकी सम्भावना क्यों न हो, साइलिसिया उसमें विशेष लाभदायक है; या तो फोड़ेको पका देता है या उसमें बहुत अधिक पीव होना रोक देता है।

लक्षणावली

मन।—बुद्धिकी जड़ता। सहजमें किसी विषयमें मन नहीं लगा सकना (ऐनाक, कार्बो-वेज, इथ्यू, ग्लोन, लाई, नक्स-वोम, ऐ-फास, सिपि)। जलमें डूबकर मरना चाहता है (बेल, ड्रोसेरा, हेलिबो, हायो, लैके, पल्स, रस)। बच्चा बहुत ही अवाध्य, जिद्दी (कैमो); प्यार करनेपर भी रोता है (आयोड)। उद्विग्न भाव, कोमल और डरपोक स्वभाव। बात-बातमें चौंक उठता है (कैलि-कार्ब, नेट्र-म्यूर, ओपि, फास)। मानसिक परिश्रमसे बहुत कष्ट होता है, लिखने-पढ़नेके समय थोड़ेमें ही कातर हो जाता है, किसी विषयको सोच या विचार नहीं सकता (जेल्स, लैके)। बहुत शब्दकातर,—एक शब्द कानमें प्रवेश करते ही चौंक उठता है (काक्यु)। बहुत अस्थिर और चंचल। दुःखित चित्त; जीवन भार मालूम होता है (ऐसिड-फ्लुड, ऑरम, चायना, नेट्र-म्यूर, फास, पल्स ; (बहुत रोना (ग्रैफ, नेट्र-म्यूर, पल्स, सिपि)। उत्तेजना-प्रवण, चिड़चिड़ा स्वभाव, स्फूर्त्ति हीन (नक्स)। सामान्य विषयमें भी हिताहित बुद्धि या विवेक नहीं रहता (इग्ने)। कोई यदि उसकी बात काटता है या उसकी इच्छाके विपरीत कार्य करता है, तो उसको इतना क्रोध आता है, कि वह यदि भरपूर चेष्टा कर उसे दमन न करे तो जिसने उसका प्रतिवाद किया था, उसे मार बैठे। रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, कि उसकी देह दो भागोंमें विभक्त हो गयी है और मानो बायाँ अंश उसका नहीं है (शरीर दो भागोंमें बँटा मालूम होना—बैप्टी, कैनाब-इन, पेट्रोल, थूजा)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, मानो सामनेकी ओर गिर जायगा (ग्रैफ, नेट्र-मूर, पोडो, रास, साइकूर, इलैप्स, लैके, नक्स-वोम) ऐसा मालूम होता है कि एक वायवीय पदार्थ पीठसे गलेके पिछले भाग होकर माथेमें चढ़ गया और माथेको घुमा दिया है। वृद्धि—शरीर हिलानेपर (बेल, मिडोरिन) या ऊपरकी ओर देखनेपर (कैल्के, कूप्रम, ग्रैफ, लैके, फास, पल्स, टैबाक; नीचेकी ओर देखनेपर—कैल्मी, स्पाई)। मिचली और औंघाई आ जाती है, इसके साथ ही हड्डियाँ अपरिपुष्ट। शक्तिका बहुत अधिक परिचालन करनेके कारण पैरका पसीना रुकना और इसी वजहसे सर्दी रोगमें मूर्च्छा आ जाना, दिनभर झुककर काम करनेके समय सरमें चक्कर आया करता है। सरमें अधिक रक्त-सञ्चय होता है और चेहरा लाल हो उठता है तथा जलन हुआ करती है (कैल्के, क्रोकस, ग्लोन, सल्फ)। माथा सीधा रखनेपर बहुत तकलीफ़ होती है (ऐब्रोट, कैल्के, नेट्र-मूर, सैनिक)। पुराना सर-दर्द,—जवानीमें कोई कड़ी बीमारी हो जानेके बादसे आरम्भ (सोरिन); दर्द गलेके पिछले भागसे मूर्द्धा-देशमें चढ़ता है, मानो मेरुदण्डमें पैदा हो गया और एक स्थानमें खासकर दाहिनी आँखपर आकर ठहर जाता है (सैंगियु, बाईं—स्पाई); वृद्धि—जोरसे बहती हुई हवा लगनेपर (ऐसिड-बेञ्जो); घटना—दबानेपर (लैके; पल्स, आर्जेण्ट-नाई, कैल्के, ग्लोन, गुयायेक, कैलि-बाई, मिनियेन सैंगियु); या गरम कपड़ेसे माथा ढकने या लपेट रखनेपर (ऐ-पाई, मैग-मूर, फास, स्ट्रान; कसकर बाँधनेपर—आर्जेण्ट-नाई, कैल्के, मैग-मूर) और बहुत ज्यादा पेशाब होनेपर (जेल्स, कैल्मिया, ऐकोन, इग्ने, मिलिलोट, सैङ्गियु)। प्रचण्ड सर-दर्द, इसके साथ ही बुद्धि और होशका गायब होना (ग्लोन, नक्स-वोम)। ग्रीवापृष्ठसे चमड़ीतक ठण्डक अनुभव होना और माथा बहुत भारी मालूम होता है। सरमें अधिक रक्त-सञ्चय होना, दोनों गाल गर्म और तलवेमें हलकी जलन हुआ करती है; माथेमें टपक और ऊपर पसीना होनेके साथ माथेमें जलन भी हुआ करती है। वृद्धि—रातमें, मानसिक परिश्रमसे और बोलनेपर; घटना—वस्त्रसे अच्छी तरह माथा ढक लेनेपर। जोरसे चलनेपर या किसी चीज़से पैर टकरानेपर माथेमें भों-भों आवाज़ हुआ करती है और ऐसा मालूम होता है, कि माथा चूर-चूर हुआ जा रहा है। सवेरे दबावकी तरह जोरका दर्द, सर्दी मालूम होना और मिचली, सरमें, अधिकांश स्थानोंमें माथेके एक बगलमें, फाड़नेकी तरह तेज़ दर्द, यह दर्द सरके

पिछले भागके दो ऊँचे अंशोंसे पैदा होकर ऊपरकी ओर तथा सामनेकी तरफ फैल जाता है। दोनों आँखोंके ऊपरी अंशमें दर्दके साथ सर-दर्द,—आँख खोलनेमें रोगीको बहुत तकलीफ़ होती है (जेल्स)। चिलक मारनेकी तरह सर-दर्द, दर्द माथेके बहुत भीतरी भागतक चला जाता है। मूर्द्धदेशतक फाड़नेकी तरह दर्द, मानो फटकर दो हो जायगा और यह दर्द माथेके भीतरी भागतक चला जाता है; माथेमें टपक और सर्दी मालूम होती है। रोगी शय्यापर लेटकर छटपटाया करता है; वस्त्रसे कसकर माथा बाँधनेपर आराम मालूम होता है (आर्जेण्ट-नाई, मैग-म्यूर); ललाट और कनपटोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होना (एपिस, टिलिया, सिपि)। ललाटके बीचमें चिलक मारनेकी तरह दर्द—एकाएक घूमकर खड़े होनेपर, झुकनेपर या बोलनेपर दर्द फिरसे शुरू हो जाता है। शिरके पीछे दबाने जैसा दर्द, मानसिक परिश्रमसे सर-दर्दका बढ़ना—शब्द सुननेपर (बेल, इग्ने, लैके, लेक-कैन, स्पाई); शरीर हिलानेपर एकाएक माथेमें झटका लगनेपर; रोशनीमें (सेङ्गियु, सिपि), झुकनेपर और ठण्डी हवा लगनेपर (आइरिस); घटना,—गर्म कपड़ेसे माथा ढकनेपर या कसकर माथा बाँध देनेपर और गर्म घरमें रहनेके समय। रातमें बहुत ज्यादा खट्टा पसीना निकलनेकी वजहसे माथा तर हो जाया करता है (चायना), पर माथा ढके रखता है। माथेमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता (कार्बो-वेज, सिङ्को, मर्क)। सरके पिछले भागमें (ललाटके ऊपरी अंशमें—सिपि), रक्त-भरी सूखी या बदबूदार फुन्सियाँ निकलती हैं; पपड़ी जमी खुजलीकी तरह खुजली और जलन और उसमेंसे पीवका स्राव होता है (ग्रैफ, हिप, ओलियैन, लाई, रस, सल्फ)। माथेकी त्वचा खुजलीसे भरी (कैम्फो, सिपि, सल्फ); खुजलानेपर दर्द और जखम पैदा हो जाता है (मर्क)। माथा और गर्दनके पिछले भागमें खुजलानेवाली पीव-भरी फुन्सियाँ निकलती हैं। गर्म कपड़ेसे ढँक रखनेपर अच्छा रहता है। बच्चाके बहुत उम्रतक माथेके अस्थि-फलकका संयोग-स्थान सब और ब्रह्मतालु अपूर्ण और खुला रहता है (कैल्के-फास); माथा बहुत बड़ा (कैल्के, सायोड, कैलि-आयोड, सैनिक) और अन्यान्य अङ्ग-प्रत्यङ्ग पतले (ऐब्रोट, सायोड, सैनिक), चेहरा मलिन और पेट बड़ा और गर्म।

आँख।—बहुत देरतक स्थायी रोशनीका सहन न होना, दिनमें आँख झुलस जाती है (कोना, इयुफ्रे, गेल्सोज, मर्क, कैलि-कार्ब, सार्सा)। पढ़नेके

समय पुस्तकके अक्षर सब आपसमें जुड़ेसे मालूम होते हैं (आर्टिमिवल, कैम्फो, कोना, फेरम, ग्रैफ, लाई, मर्क्युरियस-पेरेन, सेनेगा) और सफेद या भूरी दिखाई देती है (सिङ्को); पैरका पसीना सूख जानेपर अस्पष्ट दृष्टि, कभी कभी दृष्टिके सामने बिजलीका भ्रम (ग्लोन, कैलि-कार्ब—सोनेके बाद—फास) और ऐसा मालूम होता है कि एक आँखकी दृष्टि अस्पष्ट कर देती है (रियुटा)। दृष्टिके सामने काले बिन्दु सब उड़ते दिखाई देते हैं (ग्लोन, नेट्र-म्यूर, सिपिया)। दाहिनी आँखके सामने मानो हमेशा एक काला दाग दिखाई देता है। गर्भावस्थामें या जरायुकी किसी दूसरी बीमारीमें दाहिनी आँखकी दृष्टि लोप हो जाना। आँखका प्रदाह। आँख लाल, करकराती है, जलन होती है और उससे लगातार आँसूका स्राव हुआ करता है (ऐल्यू, कैल्के, लाई, मर्क, पल्स, सल्फ)। दोनों आँखोंमें बेचैन कर देनेवाला सूखापन, मानो उसमें धूल गिर गयी है, खासकर सवेरे (आर्स, कास्टि, हिप, पल्स, रस, सिपि)। आँख दबा रखनेपर उसमें फाड़ने या बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। दाहिनी अश्रु-ग्रन्थि और अश्रु-कोष फूले और चारों ओरकी त्वचा प्रदाहान्वित। सर-दर्दके बाद (पहले—कैलि-बाई ; दृष्टिके सामने अन्धकार या कालिमा मालूम होती है। पैरका पसीना रुकने या दाद निकलनेके पहले मोतियाबिन्द रोग पैदा होता है; तेज़ नशीले पदार्थ सेवनकी वजहसे अस्पष्ट दृष्टि। आँखके सफेद अंशमें जखम (ऐ-नाई, ऐट्रोपिन, अरम, कैल्के-फास, आर्जेण्ट-नाई, चिनिन-आर्स, इयुफ्रे, फार्मिका, ग्रैफ, हिप, कैलि-बाई, लैके, सोरिन)। चेचककी बीमारीके बाद कनीनिकाका मैला पड़ जाना (वैरियोलिन) अश्रु-नालिका (कैल्के, ऐ-फ्लू, पेट्रोल); वृहत् गुहौरी (इसके सेवनसे बार-बार अञ्जनी पैदा होना बन्द हो जाता है)।

कान।—शब्दका सहन न होना; जरा जोरसे बोलनेपर रोगी घबड़ा उठता है (ऐकोन, बेल, लैके, ओपि); कानमें भों-भों सों-सों शब्द (ऐकोन, बेल, बैक्ट, कास्टि, चायना, चिनिन-सल्फ, ग्रैफ, लाई, पल्स, स्पाइजि)। कानका पर्दा फट जानेके कारण कानमें सों-सों शब्द; कानमें ताला बन्द रहा करता है (चायना, ग्लोन, लैके, स्पाई), कानमें तोपकी गरजकी तरह आवाज़ होकर कभी-कभी रुका हुआ भाव बन्द हो जाता है, अच्छी तरह सुन नहीं पाता, .खासकर आदमीकी आवाज़ (ऐसिड-फ्लू) और पूर्णिमाके समय। कानमें आवाज़की वजहसे सुन नहीं सकता (इलैप्स), विशेषकर मनुष्यके

कण्ठको आवाज़ (फास)। लगातार पीव पैदा होनेकी वजहसे श्रवण-शक्तिका घट जाना (इलैप्स, कैलि-बाई, मर्क-सोल, कैल्के, कैलि-म्यूर)। कानमें दर्द, भीतरसे बाहरकी ओर सुई गड़नेकी तरह दर्द (कोलचि, नैट्र-कार्ब, गुयायेक, पल्स)। कर्णरन्ध्रमूल-प्रदाह। नाककी पुरानी सर्दी रोगमें कर्ण-पश्चान्नलीकी खुजली ; दोनों कानोंमें खुजली पैदा हो जाती है (बैराइ, हिपर, सल्फ), खासकर कोई चीज़ निगलनेके समय। कानमें बहुत मैल पैदा होना। जहाँ पीव पैदा होता है, वहाँ उसपर पपड़ी जमना ; स्राव—बदबूदार पानी या दहीकी तरह ; नाकके भीतर जखम और ऊपरी ओंठपर पपड़ी जमा करती है, कहीं-कहीं पीवके साथ हड्डीका चूर निकलता है, पाराके अपव्यवहार की वजहसे। कानके पीछे पपड़ी जमे घाव निकलना, कर्णमूल-ग्रन्थिका कड़ापन और सूजन तथा उसमें पीव पैदा होना, खासकर जब पीव बहुत धीरे-धीरे इकट्ठा होता है और किसी तरहका दर्द नहीं रहता।

नाक।—बार-बार प्रबल छींक या निष्फल छींकको चेष्टा। नाकसे कड़वा, त्वचाको क्षय करनेवाला श्लेष्माका स्राव (ऐसिड-नाइ, ऐमोन-म्यूर, आर्स, आर्स-आयोड, एरम, सिपा, ग्रैफ, क्रियो, मर्क, नक्स-वोम)। सर्दी नहीं, पर नाकसे बहुत ज्यादा श्लेष्माका स्राव होता है। सूखी सर्दी—दोनों-रंध्र एकदम रुके रहते हैं (एरम, कैप्स, नक्स, सैम्बु), विशेषकर दोनों पैरोंका पसीना रुकनेपर। एक बार सर्दी होनेपर सहजमें या जल्दी अच्छी नहीं होती और जितनी ही बार सर्दी लगती है, उतने ही बार सर्दी पैदा हो जाती है। प्रति-बार नयी सर्दी लगनेपर दोनों रंध्र रुक जाते हैं और कषाय श्लेष्मा निकला करता है। रंध्रका भीतरी भाग जखम-भरा और तर रहा करता है। सर्दी कभी सूखी, कभी पतली इसी तरह पर्यायक्रमसे हुआ करता है (ऐ-सल्फ, नैट्र-म्यूर, फास, पल्स, पैरिस) ; सवेरे नाक रुक जाती है और दिनमें पतले श्लेष्माका स्राव होता है (सवेरे रुकी रहती है—कैल्के, कार्बो-ऐन, हिपर, कैलि-बाई, फास)। नाकके भीतरकी भेदकास्थिके नीचेकी जगहपर बहुत दर्द हुआ करता है और यह अंश छूनेपर सूई गड़नेकी तरह दर्द हुआ करता है। नाकका भीतरी भाग सूखा और दर्द-भरा, क्षय हुई त्वचाकी तरह और पपड़ीसे ढका। नासामूलमें (कार्बो-वेज, कैल्के, फाइटो) और दाहिनी गण्डास्थिमें (चेलिडो, प्लैट) ऐसा दर्द मानो जकड़ गया है। नाकसे खून जाना (ऐकोन, ऐ-फास, बेल, ब्राइ, हैमा, लैके, मिलिफो)। नाकमें खुजली (चेलिडो, सिना,

मैग-म्यूर, सल्फ)। सन्ध्याके समय नाकके चारों ओर बहुत सुखकर खुजली पैदा हो जाती है। नाकके ऊपर मानो चोट लगी है, इस ढङ्गका दर्द हड्डियोंमें हुआ करता है। नाक बहुत ठण्डी मालूम होती है (कैम्फो, कार्बो-वेज, वेरेट ; बरफकी तरह ठण्डी—सोड्न, वेरेट)।

मुखमण्डल।—चेहरा मलिन, अस्थिसार और दर्द पैदा करनेवाला, रोगीका शरीर उत्तापहीन और पसीनेसे तर ; पीली या भूरी मूर्त्ति ; विकृत मुख-भङ्गी। मुँहका दर्द—कुछ देरतक शय्यामें सोनेपर बढ़ना। नीचेवाले ओंठमें लाल अंशके ऊपर दाने निकलना और जखम हो जाना। ऊपरी ओंठके किनारे-किनारे छाले पैदा हो जाते हैं और छूनेपर जलन होती है। मुँहके कोनेमें बहुत दर्दवाला जखम पैदा होता है (ऐण्टि-क्रूड, ग्रैफ, लाइ, रस) और खुजली पैदा करती है ; मुँहकी त्वचा फट जाती है ; ललाट और हाथकी पीठपर व्रण पैदा होते हैं। मुँहके चारों ओर जलन होती है ; चिबुकपर दादकी तरह उद्भेद (हिप, ग्रैफ)। निचले हनुके नीचेवाली ग्रन्थियाँ सबमें बहुत दर्द होता है और फूल उठती हैं (सिङ्को, लाइ, फाइटो) ; छूनेपर दर्द मालूम होता है। जबड़ेकी सन्धि एकाएक रुक जाती है। दाँतकी अपेक्षा हनुकी अस्थिमें बहुत दर्द मालूम होता है ; हनु फूल उठा करते हैं। निम्न-हनुकी हड्डीका सड़ना ; पीवके साथ हड्डीका चर निकलता है (अरम, ऐ-फ्लू, सिस्टस, कैलि-आयोड, फास, फाइटो)।

मुख-विवर।—रोगिनीकी सभी दाँत लम्बे और उनकी जड़ शिथिल मालूम होती है (कार्ब्बो-वेज, कास्टि, मर्क, नेट्र-म्यूर, ऐ-नाइ, रस)। बहुत देरसे दाँत निकलते हैं—मसूढ़ेमें स्पर्श सहन नहीं होता ; बच्चा बार-बार मसूढ़ेपर हाथ रखता है, हड्डी भरी, पपड़ी गिरनेवाले दन्त, दर्द रातमें और मुखमें ठण्डी हवा या पानी लेनेपर बढ़ जाता है। टपककी तरह दाँतमें दर्द, अन्ति-वेष्ट फूल उठता है। डङ्क मारनेकी तरह दर्द,—तकलीफके कारण नींद नहीं आती (काक्सियोनेला, हैमा)। मुँहमें ठण्डा पानी लेनेपर बहुत दर्द हुआ करता है। मसूढ़ेमें बहुत दर्द और प्रदाह, मसूढ़ेके फोड़े, दाँतकी जड़ या मसूढ़ेके किसी भी छेदसे बदबूदार घृणा-जनक रस या पीव स्राव होता है (कैलि-म्यूर)। दाँत उखाड़नेके बाद मसूढ़ा और तालु बहुत फूल जाते हैं। जीभके अगले भागमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक टुकड़ा केश पड़ा हुआ है (नेट्र-फास ; जीभपर—नेट्र-म्यूर ; जीभके पिछले अंशमें—कैलि-बाइ) और

ऐसा मालूम होता है, कि यह केश वायुनलीतक फैलकर खाँसी पैदा कर रहा है। मुँहमें इतनी लार जमती है कि कभी-कभी टपक पड़ती है (पल्स, टैबाक)। सवेरे मुँहसे बदबू आती है (आरम, कैम्फो, नक्स)। भोजनके बाद मुँह खट्टा हो जाता है (कार्बो-वेज, सिपिया)। मुख-विवर बहुत सूखा मालूम होता है (ऐकोन, आर्स, कैप्स, सिङ्को, नैजा, कैमो, लैके, लाई, नक्स-मस, फास)। जीभका कर्कट रोग, जीभके दाहिने पार्श्वमें जखम पैदा होकर, क्रमसे जीभको। क्षय किया करता है और जखमोंसे बहुत अधिक पीव: निकलता है। जीभका एक पार्श्व फूल उठता है; मुँहका स्वाद तीता और सवेरे गलेमें गाढ़ा श्लेष्मा इकट्ठा हो जाया जरता है।

गलेके भीतर।—जिह्वामूलके बगलवाले दोनों गह्वरमें गाढ़ा गोंदकी तरह इकट्ठा होता है। गल-ग्रन्थि फूल जाती हैं और प्रत्येक बार घूंट लेनेके समय (दर्दकी वजहसे) मुँह टेढ़ा कर लेता है। गल-ग्रन्थि प्रदाह; जब जिस ग्रन्थिमें पीव पैदा होता है, तब वह अच्छा नहीं होता। कण्ठमें आल्पीन गड़नेकी तरह दर्दकी वजहसे खाँसी पैदा हो जाती है। ऐसा मालूम होता है, मानो घूंट नहीं ले सकता; बार-बार खाँसी आती है और सफेद रङ्गका फेन-भरा और नमकीन बलगम निकलता है; वृद्धि—सन्ध्याके आरम्भमें। कोमल तालुका पक्षाघात (आंशिक—प्लम्ब) कुछ खाता है, तो नाकके छेदसे बाहर निकल जाता है (तरल पदार्थ—एरम, लैके, फाइटो, कैलि-बाई, मर्क, गाढ़ा पदार्थ—लाई)। कोई चीज़ खाते ही वह जिह्वामूल पार्श्वस्थित गह्वरमें प्रवेश कर जाता है। गलेका जखम—कोई चीज़ निगलनेके समय, वह गलेमें एक गोलेकी तरह या कोई जखमवाली जगहके ऊपरसे जा रहा है, इस ढङ्गका दर्द होता है। उपजिह्वा फूली।

पाकस्थली।—राक्षसकी तरह भूख या एकदम अरुचि। जलनभरी प्यास (ऐकोन, आर्स, कैमो, हेलिबो, मर्क, नेट्र-म्यूर, फास, रोबिन)। सवेरे मुँहका स्वाद कड़वा या तीता हो जाता है (ब्राई, सिङ्को, पल्स, सल्फ)। छातीमें बहुत जलन (कैल्के, कार्बो-वेज, कोना, साइक्यूटा, क्रोकस, लाई, मैग-कार्ब, नक्स, सिपिया); उदरोर्द्ध-प्रदेशमें ऐसा मालूम होता है, मानो कोई भारी चीज़ दबायी हुई है (इग्ने)। भोजनके बाद खट्टा और कसैला डकार (कोना, नेट्र-म्यूर, पोडो) आया करता है और गलेमें जलन होती है (सिनेप,

सल्फ)। पानीका स्वाद कड़वा मालूम होता है (चिनिन-आर्स); पानी पीनेपर कै कर देता है (आर्स, सिना, युपेट, फास)। भयानक हृदुस्पन्दनके साथ मिचली ; जिस किसी व्यायाम या परिश्रमसे शरीरकी गर्मी बढ़ती है, उसीमें मिचली पैदा हो जाया करती है। कुछ खाते ही जी मिचलाने लगता है। गाढ़े गोंदकी तरह पदार्थ वमन होता है। हिचकी आती है। उत्तम भूख और बिना बिगड़ी हुई स्वाद शक्ति रहनेपर भी मिचली पैदा हो जाती है। सर्दी मालूम होनेके साथ-साथ मुँहमें पानी भर आया करता है। आगमें पकी गर्म चीजें खानेसे अरुचि, केवल ठण्डा पानी पीना चाहता है (लाई ; गर्म पानीयसे अरुचि—कैमो); मांससे घृणा (ऐ-म्यूर, कैल्के, सिङ्को, नेट्र-म्यूर, नक्स, पेट्रोल)। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें जलन (आर्स, कैल्के-फास, कार्बो-वेज, इग्ने, कैलि-आयोड, नक्स)। मानो न जाने कितना खा लिया है, ऐसा मालूम होता है (चिनिन-सल्फ, सिङ्को, फेरम, हिपर, लाई)। ऐसा अनुभव होना कि उदरोर्द्ध-प्रदेश मानो मरोड़ खा रहा है या नख गड़ रहा है।

उदर ।—पाकाशयका अन्त्रद्वारवाला अंश फूल जाता है और कड़ा हो उठता है (आर्स, ग्रैफ, मैग-म्यूर, फास, रैटान)। यकृतमें टपक और स्पर्शकातरता (चियोनैन-वर्जि, डिजिट, कैल्के, टैराक्स)। वृद्धि—शरीर हिलाने या चलनेके समय और दाहिनी करवट दबाकर सोनेपर। यकृत-प्रदेशमें टपक और ऐसा दर्द मानो जखम हो गया है (सिङ्को, लैके, लोरो); वृद्धि—छूने या चलनेपर। यकृत बढ़ा और कड़ा, यकृतमें फोड़ा निकलना। उदर फूला, कड़ा और खींचन मालूम होना (बैराई, कार्बो-वेज, साइक्यूटा, सिङ्कोना, कोलचिकम, ग्रैफ, लाई)। भोजनके बाद उदरमें दबाव और ऐसा मालूम होना, मानो कमरका कपड़ा बहुत कस गया है (वस्त्र आदिका दबाव असह्य मालूम होना—कैल्के, लैके, लाई, नक्स-वोम, एपिस, कार्बो-वेज, हिपर, क्रियो, लैककैन, सार्सा, स्पञ्जिया, स्टैनम ; भोजनके बाद—ग्रैफ); कूथनके साथ तलपेटमें दर्द हुआ करता है ; पाखाना जानेके समय और भी अधिक दर्द हुआ करता है। अन्त्रशूल—कृमिकी वजहसे (साइक्यूर, सिना, मर्क, बेलि, नेट्र-म्यूर, सैबाड, सिनैपिस-नाई, स्पाई, स्टैनम, इण्डिगो)। कब्जियत या मलकृच्छ्रके साथ ; दर्दके समय रोगीका हाथ पीला और नख नीले हो जाते हैं ; कुछ लाल खून मिला मल निकलता है। पेटमें दर्द—गर्मी लगनेपर घटता है (कैमो, मैग-फास, इथ्यू, कोली, नक्स-वोम)। उदरमें आध्मान-वायु इकट्ठा हुआ करता

है और हुड़हुड़ गुड़गुड़ आवाज़ हुआ करती है (डायस्को, डाल्का, गेम्बो, लाई, नेट्र-सल्फ, पल्स, सल्फ)। उदर फूला, कड़ा और गर्म, विशेषकर बच्चोंका (क्रूप्रम, कैलि-कार्ब, ऐलो, एसैफिट)। वंक्षणकी ग्रन्थि या पुट्ठेमें प्रदाह (बेल, मर्क, बैडि)। वंक्षणकी आँत बढ़ना (काकुग, लाई, नक्स)। बहुत बदबूदार वायु निकलता है (ऐलो, ऐसाफिट, कार्बो-ऐन, सिङ्को, नेट्र-म्यूर, नेट्र-सल्फ)।

मलान्त्र और मल।—मलका कड़ापन ; प्रत्येक बार ऋतुके पहले (कैलि-कार्ब) और समय (बोविस्टा)। मल बड़े कष्टसे निकलता है, मानो मलान्त्रकी क्रिया ही नहीं होती, बहुत वेग देना पड़ता है, मानो मलान्त्रमें पक्षाघात हो गया है (कोमल मल भी बड़े कष्टसे निकलता है—ऐल्यू, हिपर, नेट्रम-कार्ब, सिपिया) ; मलका कुछ अंश बाहर निकलकर फिर घुस जाता है (ओपि, थूजा) ; मल मलान्त्रमें आकर भी जल्दी बाहर नहीं निकलता, मल बड़ा और कड़ी गाँठ भरा, रङ्ग भूरा (आर्स, सिङ्को, मर्क, टैबाक, ऐ-नाई, हाइड्रैस्ट, फास ; पित्तके रङ्गका रहना, परन्तु तकलीफ़का न रहना ; बच्चे रोगीके हाथ-पैरमें पसीना हुआ करता है ; कभी-कभी मल पानीकी तरह और सुस्त करनेवाला ; कभी-कभी पतला गोंदकी तरह फेन-भरा और खून या आम मिला। अर्श—बहुत तकलीफ़ देनेवाला, मानो मलद्वारसे मलान्त्र और अण्डकोषतक जकड़ गया है या सलाई गड़नेकी तरह दर्द ; पाखाना जानेके समय मस्सा निकल आता है और कभी-कभी अटक जाता है, सरकता नहीं है (बेल, इग्ने, लैके, नक्स-वोम, सिपिया) ; बलिमें पीब पैदा हो जाता है (कार्बो-वेज, हिप, इग्ने ; जख्म-भरा हो जाता है - पियोनिया, पल्स)। भगन्दर (अरम-म्यूर, बार्बे, कैल्के-फास, कैल्के, कास्टि, ऐ-फ्लू, कैलि-कार्ब) ; मलनाली या भगन्दर जब अच्छा होता है, तब वक्षकी बीमारी पैदा हो जाती है और वक्षका रोग अच्छा होनेपर मलनालीकी बीमारी फिरसे पैदा हो जाती हैं (लैके, फास, बार्बेरिस) ; मलद्वारका फटना (कार्डियुरैग, ग्रैफ, ऐ-नाई, पियो, रैटान, सिपि) ; मलमें बहुत कड़ापन। मेरुपुच्छमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, चलनेके समय मलान्त्र या गुह्यद्वारमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है। मलान्त्रमें बहुत अधिक रस-क्षरण (कार्बो-वेज, मर्क-कोर, रैटान)। बार-बार वृथा मलवेग (नक्स-वोम)।

पेशाब ।—मूत्राशयकी द्वारावरोधक पेशीके बार-बार सिकुड़ने फैलनेकी वजहसे बार-बार पेशाबका वेग और तकलीफ़ मालूम होती है। मसानेमें पीव पैदा हो जाना (कैल्के-सल्फ)। लगातर वेगके साथ थोड़ा पेशाब होता है; रातमें भी ऐसा ही हुआ करता है। बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होने बाद सरका दर्द घटना। बच्चे और बालकोंको क्रिमिको वजहसे खुजलीके कारण रातमें अन-जानमें पेशाब। पेशाब—फीका, गदला. तली लाल या पीले रङ्गको बालू-भरी।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—रमणेच्छा अत्यन्त प्रबल या अत्यन्त क्षीण, शक्ति थोड़ी, पर प्रबल, शीघ्र ही वीर्यस्खलन हो जाता है। सवेरे शय्यासे उठनेके पहले यन्त्रणा-जनक लिङ्गोद्गम हुआ करता है; अन्यान्य समय भी जबतक प्रबल लिङ्गोद्गम हुआ करता है। रातमें वीर्य-स्खलन (सिङ्को, डिजिटिलिन, ऐ-फास)। हमेशा अश्लील चिन्ता। पाखाना जानेके समय वेग देनेपर मूत्राधार सुख-शायिका ग्रन्थिसे रस-स्राव होता है (ऐग्नस, कैल्के, कार्बो-वेज, कोना, इग्ने, नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम, फास, सेलिन, सिपिया)। मुष्कत्वकमें जगह-जगह खुजली पैदा हो जाती है और उससे रस निकलता है (पेट्रोल, सल्फ)। कोरण्ड (अरम, स्पञ्जिया)। मुष्कके ऊपर पसीना निकलता है (कैलेड, लाई, सल्फ, मर्क, नेट्र-सल्फ, रोडो)। मूत्रनालीसे गाढ़ा बदबूदार पीव निकलता है—पुराने प्रमेह रोगमें (चेलिडो, क्यूबेब, कैलि-सल्फ, सेबाई)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—मेरुदण्डके रोगमें रमणकी अत्यधिक इच्छा। बहुत अधिक रजःस्राव होनेके कारण रह-रहकर सारा शरीर बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है, ऋतुके समय सर्दी मालूम होना (प स, सिकेलि)। हाथ-पैर आदि बरफकी तरह ठण्डे (कैल्के, सिकेलि), रजोरोध (एपिस, कैलि-कार्ब, नेट्र-म्यूर, पल्स, सिपिया)। आर्त्तव—असमयमें ही हो जाता है और स्राव बहुत थोड़ा हुआ करता है (सिपिया)। प्रदर—स्राव दूधकी तरह (कैल्के, क्रियो, लैके, लाई, सेबाई, सिपि)—स्राव आरम्भ होनेके पहले नाभी-प्रदेशमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो चिपक गया है (ऐमोन-म्यूर, कोना, सल्फ) या स्राव बहुत ज्यादा कषाय और त्वचाको क्षय करनेवाला (ऐमोन-कार्ब, बोवि, क्रियो, नेट्र-म्यूर, सिपिया); पेशाब करनेके समय या आर्त्तवके बाद स्राव हुआ करता है; गर्भावस्थामें बार-बार पेशाबके वेगके साथ (कैल्के, काक्यु, काफिया)। रोगिनी प्रत्येक दो या तीन महीनेके अन्तरसे

रजःस्वला हो जाया करती है। आर्त्तव-स्रावमें तेज़ गन्ध और कषाय। ऋतुके समय पेटमें दर्द होता है, सभी चीजें मलिन दिखाई देती हैं और योनिद्वारमें जलन या क्षय हुई त्वचाकी तरह मालूम होता है। पैरका पसीना रुकनेके कारण आर्त्तव स्राव। योनिमें भीतरसे बाहरकी ओर दबाव मालूम हुआ करता है। स्तन फूले, कड़े और दर्द-भरे; मानो ठुनका होनेका लक्षण (ब्राई, मर्क फाइटो); स्तनवृन्तके पासकी जगह फूल जाती है। बायें स्तनवृन्तके बीचमें जलन और इस तरहका दर्द मानो सलाई गड़ रही है (फाइटो); स्तन फूले, गहरे लाल और दर्द भरे—तकलीफकी वजहसे रातमें नींद नहीं होती; स्तनमें पीब पैदा होना, उस समय भी बीच-बीचमें रक्त-स्राव हुआ करता है, जब आर्त्तव-स्राव नहीं होता। रमणके समय रमणीमें मिचली पैदा हो जाती है—जरायुका कर्कट रोग। गर्भ-स्रावकी आशङ्का; गर्भ-स्रावके बाद बहुत ज्यादा खूनका स्राव (बेल, ऐ-नाई, इपिका, सिङ्को, श्लेस्मि-वार्सा, आस्टिलेगो)। विकृत भ्रूणका निकलना (लाई, नेट्र-कार्ब, पल्स, सैबाई, सिकेलि)। तलपेटमें सलाई गड़नेकी तरह दर्द (कैल्केरिया-कार्ब)। बच्चेको स्तन पिलानेके समय स्तन या जरायुमें तेज़ दर्द। बच्चा जभी स्तन पीता है, उसी समय स्तन-वृन्तसे तेज़ दर्द शरीरके चारों ओर फैल जाता है (फाइटो, पीठमें चला जाता है—क्रोटन-टिग; जरायुमें—पल्स); पीठमें भी दर्द मालूम होता है (क्रोटन-टिग) और प्रसवके बादका क्लेदस्राव बढ़ जाया करता है (कोलोफा, कैमो; शरीर हिलाते ही लाल हो जाता है—इरिजिरन); बच्चा जितनी ही बार स्तन पीता है, उतनी ही बार योनिसे केवल रक्तका स्राव होता है; माता जितने ही बार शिशुको स्तन पिलाती है, उतनी ही बार दर्द हुआ करता है (प्रत्येक बार स्तन पिलानेके समय प्रसूता तक़लीफ़से रोने लगती है—पल्स)। बच्चा माताके दूधसे विद्वेष प्रकट करता है और स्तन पीना नहीं चाहता। यदि बहुत भूख लगनेकी वजहसे या डरसे पीता भी है तो पीला दूध कै कर देता है। स्तनवृन्त पीछेकी ओर दबकर फुदनेकी तरह गहरा दिखाई देता है (सार्सा, चिमाफिला-ऐम्ब, नक्स-मस)। दाहिने स्तनवृन्तके नीचे ऊँची-नीची जगह और उपास्थिकी तरह कर्कट या अर्बुद पैदा होता है (चिमाफिला-ऐम्ब; बायें स्तनमें—कोना)। स्तनवृन्त जखमसे भरे और उनमें बहुत दर्द हुआ करता है, (कैक्टर-इक्युयाई, ग्रैफ, हैमो, फाइटो)।

श्वासयन्त्र।—कर्कश और टूटी हुई आवाज़, खासकर सवेरे (कास्टि, मैगे, नेट्र-म्यूर); स्वरनाली कर्कश या रुखड़ी मालूम होती है (मैगे, फेरम, फास, सिपि, स्पञ्जिया)। तेजीसे चलने या अपने हाथसे कोई परिश्रम करनेपर रोगीमें श्वासाल्पता पैदा हो जाती है और वह हाँफा करता है (तेजीसे चलनेपर—कैस्टोरियम, नेट्र-म्यू, पल्स ; हाथसे किसी तरहका परिश्रम करनेपर—आर्स, लाई, नेट्र-म्यू, बोवि)। श्वास रोध होनेका उपक्रम—चित होकर सोनेपर (लैक-कैन, सल्फ), झुकनेपर (कैल्के), दौड़नेके समय और बाद (इग्ने) और खाँसनेपर (डिजिट, इयुफ्रे, फेरम, नक्स-मस, कैलि-नाई, इपिक)। छातीमें दबाव मालूम होना, लम्बी साँस नहीं ले सकता (रस)। सूखी प्रचण्ड खाँसी, स्वर-भंग और वक्षमें ऐसा मालूम होना, मानो जखम हो गया है तथा कण्ठके नीचे खुजली पैदा हो जाना ; खाँसी खोखली या घरघर और शरीर हिल उठता है ; दिन-रात श्लेष्मा पतला रहता है और बहुत ज्यादा बलगम निकला करता है ; जमा हुआ गोंदकी तरह श्लेष्माका वमन होता है (बेल, ड्रोसेरा, इपिक, क्रियो), कभी-कभी पीवकी तरह बलगम निकलता है (ऐ-नाइट्रिक, कार्बो-वेज, ड्रोसेरा, रस, सेङ्गियु, सिपि, स्टैनम), रातमें खाँसते-खाँसते नींद खुल जाती है (ऐकोन, आर्स, बेल, कक्कस-कैक्ट, हायो, लैके, फास, सेङ्गियु, सिपि, सल्फ, कास्टि, स्किला) ; वृद्धि शरीर हिलानेपर (बेल, ब्राई, कार्बो-वेज, फेरम, क्रियो, फास) ; बलगम थोड़ा और पीवकी तरह भरा (हिपर, इपिक)। बलगम—बहुत ज्यादा हरे रङ्गका और श्लेष्मासे (लाई, लिडम) ; केवल दिनमें बलगम निकलता है ; कभी-कभी फीका फेन भरा रक्त निकलता है और उसका स्वाद चर्बीकी तरह मालूम होता है। कभी-कभी खाँसते-खाँसते बन्दूककी गोलीकी तरह जमा हुआ श्लेष्माका गोला मुँहसे छिटक पड़ता है (कक्कस, ऐगार, आर्जे-नाई, मिडोरिन, लाई, फास, स्किला, स्टैनम, मैंग-कार्ब)। सर्दी होनेपर किसी तरह भी अच्छी नहीं होती और बलगम तथा उसका पीवमय भाव और परिमाण नहीं बदलता। दोनों फेफड़ोंमें इस तरहका दर्द होता है, मानो उनमें जखम हो गया है ; वक्ष और वक्ष पार्श्वसे शरीरको भेदकर पीठतक फैलनेवाला सुई गड़नेकी तरह दर्द (ब्राई, कैलि-कार्ब, फास, सिपिया)। वक्षमें गहरा और तकलीफ़ देनेवाला दर्द। वक्षोदक,—वक्ष-गह्वरमें जल-सञ्चय। क्षयकास। बैठनेकी अवस्थामें भयानक हृद्स्पन्दन और समूची देहमें टपक (नेट्र-म्यूर)। शरीर

हिलती हो या एकाएक शरीर हिलानेपर जोरसे कलेजा धड़कने लगना (डिजिट, फेरम, नेट्र-म्यूर, स्टैफाई)।

गर्दन और पीठ।—गला और कर्णमूलकी गाँठें सब फूली और कड़ी हो जाती हैं (बैराइ-म्यू, कार्बो-ऐन, सिस्टस, कोना, केलि-कार्ब)। सर-दर्द रोगमें गर्दनका पिछला भाग अकड़ा-सा मालूम होता है (बेल, कुरारी, ग्लोन, ग्रैफ, इग्ने, सैंगियु, वेरेट)। कमर पतली और दोनों पैर सुन्न मालूम होते हैं—बड़ी तकलीफसे चल सकता है। निर्मल वायु सेवनके लिये चलने या शरीर गर्म होनेपर पीठमें जलन मालूम होती हैं। नितम्ब देशमें दर्द, शूल बेधनेकी तरह दर्द, जलन और टपक मालूम होती है। दोनों उरु-शिखरमें नीचेवाले स्थानमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द (केलि-कार्ब); दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचके स्थानोंमें और तलदेशमें फाड़नेकी तरह दर्द (बार्ब, बोरिन)। कुछ देरतक बैठनेके बाद या सवेरे, शय्यासे उठनेके समय पीठ अकड़ी मालूम होती है (बैठनेपर—रस, बैराइ, बेल, कास्टि; सवेरे शय्यासे उठनेके समय—कार्बो-वेज, फेरम-आयोड, ऐ-सल्फ)। कटि और उरु-शिखर प्रदेशमें ऐसा दर्द मानो चोट लग गयी है (ऐंगार, आर्नि, बार्बा, रस); मेरुपुच्छ या पिकचंचु अस्थिमें बहुत दर्द; मानो बहुत देरतक गाड़ीमें बैठा हुआ था (बैठनेके समय—कैलि-बाइ, पेट्रोल)। उठनेके समय मेरुपुच्छमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और दबानेपर भी दर्द मालूम होना। दोनों नितम्बोंके गासेमें और मेरुपुच्छके सामनेवाले अंशमें अकौतेकी तरह उद्भेद (बोविस्टा)। फोड़े निकलना।

प्रत्यङ्गादि।—नख सब मैले, पीले (ऐ-नाइ, कोना); टूटनेवाले (ऐ-नाइ, ऐम्ब्रा, डायस्को, ग्रैफ) और टूटे (ऐण्टि-क्रूड, कास्टि, ग्रैफ, थूजा), नखके चारों ओर जखम (हेलिबो, नेट्र-सल्फ, सैंगियु)। दोनों पैर बहुत क्षीण—बहुत चेष्टा किये बिना चल नहीं सकता (फास, साल्से, ब्राइ)। जभी-तभी दोनों पैर सुन्न हो जाते हैं (सिपिया, सलफर), पैर बरफकी तरह ठण्डे (ऐण्टि-टार्ट, आर्स, डिजिट, वेरेट)। दोनों पैरोंमें बहुत दर्द और अवश। दोनों पैरोंमें ठण्ड लगते ही सर्दी हो जाती है (कोना, क्यूप्रम)। हाथ-पैरकी, अंगुली और बगलके भीतर लगातार पसीना हुआ करता है। पसीना बहुत बदबूदार (सैनिक, कैल्के, ग्रैफ)। रोज़ सन्ध्याके समय पसीना न होनेपर भी दोनों पैरोंसे खट्टी और सड़ी गन्ध आती है। पैरका पसीना रुकनेके

कारण नाना प्रकारकी बीमारियाँ हो जाया करती हैं (क्यूप्रम, ग्रैफ, सोरिन, आर्स, फार्मिका, बेराई-म्यूर)। दोनों हाथ भारी और सुन्न मालूम होते हैं। सभी प्रत्यंग विशेषकर दोनों बाँह काँपा करते हैं (आर्जेण्ट-नाई, क्यूप्रम, आयोड, कास्टि, ओपि, फास, स्पाइ)। बगलकी ग्रन्थियाँ सब फूल उठती हैं (क्लिमैट, कोना, आयोड, कैलि-कार्ब, लाई, फास, फाइटो, सिपि)। कलाईके नीचेवाले स्थानपर फाड़नेकी तरह दर्द। बाँहपर भार देकर रहनेपर, वह बाँह अवश हो जाता है (बाँह उठाने या उससे कोई काम करनेके समय—पल्स)। बाँह और हाथकी त्वचा फट जाती है। हाथसे कोई परिश्रमका काम करनेपर वे अकड़ जाते हैं और अपने वशमें नहीं रहते। दोनों हाथोंमें बहुत पसीना हुआ करता है (कैल्के, सिपिया)। रातमें दोनों बाँह सुन्न हो जाते हैं। अंगुलीको सिकोड़नेवाली पेशीका सिकुड़ना, अंगुलीमें झुनझुनी और सुई गड़नेकी तरह दर्द, मानो उसमें पीब पैदा हो रहा है या मानो कुनख या अंगुलबेढ़ा होनेकी तैयारी हो रही है (ऐमोन-कार्ब, ऐन्थ्राक्सिन, ऐ-फ्लू, ऐ-नाई, हिपर, हाइपिर ; बहुत दूरतक नीला हो जानेपर—लैके), अंगुलीके अगले भागमें जलन हुआ करती है।

निम्नांग।—निम्नांग भारी और क्षीण मालूम होता है। उरु-शिखर और उरुमें फाड़ने या सुई गड़नेकी तरह दर्द। पैरपर जखम होना और उसमें सुई गड़नेकी भाँति दर्द तथा जलन मालूम होती है। उरु-शिखरमें पीब पैदा हो जानेके कारण यंत्रणा। अत्यन्त स्नायविक रोगोंके साथ पैरका काँपना, उरु-शिखरसे पैरतक मानों ऐंठन हो रही है ऐसा अनुभव होना। जानुमें बहुत दर्द—मानो कसकर बाँध रखा गया है। जानुमें पीब पैदा होना, डंक मारनेकी तरह या ऐसा दर्द मानो अस्त्रसे काट रहा है ; जानु फूला और दबानेपर नर्म मालूम होता है और उससे एक नासूरकी राहसे पीब निकला करता है, वह हरी आभा लिये पीला होता है। बैठनेके समय घुटनेमें कड़कड़ाहट या झुनझुनी हुआ करती है (ऐगार); उसी अंगको हिलानेपर घटता है। बदबूदार पैरका पसीना (ऐ-नाई, बेराई, ग्रैफा, सैनिक, सिपि); पैरकी अंगुलियोंमें जखम हो जाता है (सैनिक, सिपि)। तलवेमें जलन होती है (सैनिक, सल्फ)। तलवेमें ऐंठन होती है (कार्बो-वेज, सल्फ)। गुल्फके नीचे खुजलानेवाला और त्वचाको क्षय करनेवाला जखम पैदा होता है। पैरकी त्वचाका बहुत क्षय होना और जलन। पैरकी अंगुलियोंमें अकौता हो

जाता है और पीब पैदा हुआ करता है (कास्टि, ग्रेफ, लेके, मेरम-विरम)। पैरकी अंगुलीमें गट्ठे और उनमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (नेट्र-म्यूर, टिलिया)। चलनेके समय निम्नाङ्ग मुड़ जाता है। दिन-रात दोनों पैर फड़का करते हैं।

सार्वाङ्गिक।—रोगी एकदम बेचैन चंचल रहता है। दोनों हाथ इस तरह कांपा करते हैं, कि कभी-कभी रोगिनी दूधका बर्तन उठाकर पी नहीं सकती (मर्क)। बहुत दिनोंकी वंक्षणकी आँत उतरना ; हाथके नखपर सफेद बिन्दु। इस तरहका दर्द मानो मोच आ गयी है। इसका दर्द रातमें, खासकर रातके अन्तिम भागमें बढ़ता है ; रोगी, कृमि-ग्रस्त बच्चोंका। पीठपर अकसर धोमें दर्दकी तरह दर्द पैदा हो जाता है। रस-ग्रन्थियाँ सब फूली और कड़ी हो जाती है ; पर अकसर दर्द नहीं होता ; परन्तु कभी-कभी रोगवाली ग्रन्थिमें बहुत खुजली पैदा हो जाती है। स्राव आदिकी गन्ध खट्टी और त्वचाको क्षय करनेवाली होती है, लिखनेके समय हाथ काँपते हैं। बहुत कमजोरी और सुस्ती अनुभव होती है, रोगी केवल सोया पड़ा रहता है। सवेरे नींद खुलनेके समय, उठनेपर, सन्ध्याके समय, चलनेपर, रातमें इतनी सुस्ती मालूम होती है, कि मानो मूर्च्छा आ जायगी। सुखण्डी रोग, रोगिनी एकदम हड्डी-हड्डी रह जाती है और उसका शरीर तथा चेहरा मलिन और रोग बतानेवाला रहता है (ऐब्रोट, आयोड, वैसिलिन)। आक्षेप ; एकाएक चौंक उठती है और चेहरेका भाव बिगड़ जाता है। दोनों ओठ फड़कते हैं और जीभ हिला करती है ; हाथ-पैर चलाती है और माथा तथा प्रत्यंग आदि फड़का करते हैं। रोगीमें गर्मीकी बहुत कमी (आर्स, कैल्के, आस्ट्रि, कैल्के-फास, कार्बो-ऐन, कास्टि, डाल्का, हिपर, कैलि-कार्ब, मैग-फास, नक्स-वोम, सोरिन, रस-टक्स), यहाँतक कि शारीरिक व्यायामके समय भी शरीरमें उत्ताप नहीं पैदा होता (लिडम, सिपिया)। बहुत शीत-कातर (आरम, कैल्के-फास, कास्टि, हेलिबो, हिपर, कैलि-कार्ब, मस्कस, सोरिन, सैबाड, स्ट्रान) ; ठण्ड लगते ही सर्दी हो जाती है (ऐको, ब्राई, कैमो, डालका, मर्क, नेट्र-आर्स, ऐ-मर्क, नक्स-वोम)। सारे शरीरमें दर्द ; मानो कोई सारे शरीरपर प्रहार कर रहा है—रमणके बाद (रमणके बाद लक्षण या बीमारीका बढ़ना—ऐगार, कैल्के, कैलि-कार्ब, सिपिया) और रातमें—मानो विक्षत अवस्थामें सोया था। जिस करवट सोता है, उसी पार्श्वके सभी अंशमें दर्द मालूम होता है, मानो त्वचाके नीचे जखम पैदा हो गया है (ब्राई, पल्स,

रैनान-वल्व, रस, सिपिया), ओढ़ना उतारनेपर सर्दी मालूम होनेके साथ, बार-बार प्यास लगती है और रह-रहकर माथा गर्म हो जाता है (कैल्के-फास)। रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो रोगवाले अंशमें छुरी घुस रही है। गो-बीजका टीका लगवाने बाद बच्चोंको धनुष्टंकार आदि आक्षेप और लगातार फोड़े निकलना (थूजा, वैक्सिनिन, वेरियोलिन, मैलाण्ड्रिन)। श्लेष्मा-प्रधान गण्डमाला दोषयुक्त शिशु,—माथा बड़ा, ब्रह्मरन्ध्र और पश्चाद्रन्ध्र और माथेका अस्थि-फलकका जोड़ विलम्बसे भरता है, माथेमें बहुत अधिक पसीना होता है (कैल्के-कार्ब ; माथेको आपेक्षा निम्नांशमें), माथा हमेशा वस्त्र आदिसे गर्म रखना पड़ता है (सैनिक); उदर बड़ा और गुल्फ पतला चीण ; बच्चा बहुत अधिक उम्रमें चलना सीखता है (ऐगार, कार्बो-वेज, नेट्र-म्यूर)।

त्वचा।—रोगीकी त्वचापर बहुत फोड़े निकला करते हैं, सामान्य नाखून लग जाने या खरौंच लगनेपर भी उससें पीव पैदा हो जाता है (बोरैक्स, ग्रैफ, हिप, लाई, मर्क, पेट्रोल, सोरिन, सल्फ, टैरान), जखम सहजमें ही अच्छे नहीं होते (मैङ्ग, सार्सा)। पीवभरी फुन्सियोंकी तरह बहुत दर्द-भरे दाने निकलते हैं (साइक्यू, क्रोटोन, सल्फ) और क्रमसे उनमें पीव उत्पन्न होकर एक बड़े जखममें परिणत हो जाते हैं ; ललाटमें, सरके पिछले भागमें, वक्षोस्थिमें और मेरुदण्डके पार्श्वमें इसी तरहके दाने निकला करते हैं। अकौता या दादकी तरह उद्भेद (ग्रैफ, हिप, लाई, सल्फ, ओलियैन)। फोड़े पैदा होनेका लक्षण (आर्निका, सल्फ); शरीरके कितने ही स्थानोंमें फोड़े निकला करते हैं और उन्हें छूनेपर डंक मारनेकी तरह दर्द हुआ करता है। जखमोंमें डंक मारने या सुई गड़नेकी तरह दर्द और जलन हुआ करती है। उससे निकला हुआ पीव रसकी तरह रहता है और इन जखमोंके चारों ओरके मांस ऊँचे हो उठते हैं (आर्स, कार्बो-वेज, ग्रैफ)। शरीरमें जगह-जगह खुजली पैदा हो जाती है, विशेषकर रातमें। नासूर,—खुले हुए द्वारसे बदबूदार पीव निकलता है (कैल्के, सल्फ); नलीके चारों ओर कड़ी सूजन और नीली आभा लिये लाली (लैके)। फोड़े आदिमें जल्दीसे मुँह हो जाता है, पर पीव बहुत थोड़ा ही निकला करता है। त्वचाके नीचे यदि कोई पदार्थ गड़ जाता है, तो साइलिसिया उसके निकालनेमें बहुत सहायता पहुँचाता है।

निद्रा।—बहुत औंघाई, भोजनके बाद (कैलि-कार्ब, लैके, लाई, ऐगार, नक्स-मस) और सन्ध्याके बाद (कैल्के-फास, सल्फ)। बार-बार जम्हाई,

दिनभर औंघाई आती रहती है, बेचैन और छटपटी भरी नींद, निद्रित अवस्थामें चौंक उठता है और उसका सारा शरीर काँपा करता है, नींदमें जोर-जोरसे बोलता है (आर्नि, बेल, सिपिया), रातके दो बजनेके समय अनिद्रा और मनमें लगातार नाना प्रकारके भाव पैदा हुआ करते हैं। गड़बड़, मिलेजुले सपने देखता है; उद्वेग पैदा करनेवाले, अश्लील सपने और वीर्यस्खलन (ऐ-फास, डिजिटेलिन)। सपनेमें घूमना। निद्रित अवस्थामें शय्यासे उठकर इधर-उधर घूमता है और इसके बाद फिर शय्यामें जाकर सो जाता है (कैलि-ब्रोम, फास, आर्टिमि-वल)। सवेरे नींद खुलनेपर इतनी सुस्ती मालूम होती है कि रोगी शय्यासे उठ न सकनेके कारण फिर सो जाता है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—शीतावस्था—प्यासका न रहना, जरा हिलते ही जाड़ा मालूम होता है (आर्निका, नक्स)। तीसरे पहर छः बजनेके समय कम्प आरम्भ होता है; रोगीको बाध्य होकर शय्यामें आश्रय लेना पड़ता है, पर शरीर बहुत देरसे गर्म होता है। रह-रहकर शीतके कारण शरीर काँप उठता है और सिहरावन होकर जाड़ा पैदा हो जाता है। अंगीठी या चूल्हेके पास बैठनेपर भी जाड़ा नहीं घटता (फास)। रोगवाला अंग बरफकी तरह ठण्डा मालूम होता है। शीतावस्थामें राक्षसकी तरह भूख पैदा हो जाती है, मानो बहुत दिनोंसे कुछ भी न खाया हो (शीत पैदा होना आरम्भ होते ही—सिना, सिङ्कोना)। जानु और दोनों बाँह बरफकी तरह ठण्डे और हाथके नखसब सफेद हो जाते हैं (दोनों जानु बरफकी तरह ठण्डे—एपिस, कार्बो-वेज, इग्ने, फास); नाक बरफकी तरह ठण्डी हो जाती है (पोलि पोरस, टैरेक्स, नाकका अगला भाग—सीड्रन) और पैरोंसे लेकर घुटनेतक बरफकी तरह ठण्डा मालूम होता है (मिनियेन, स्ट्रैमोन)। **उत्तापावस्था,** प्यास रहती है और बीच-बीचमें सर्दी मालूम होती है; माथा भयङ्कर गर्म और चेहरा घोर लाल रंगका दिखाई देता है (युपेटर)। सन्ध्याके समय या बाद ज्वर आरम्भ होता है, रातमें बहुत बढ़ जाता है (सिना); तीसरे पहर प्रकोप—बहुत उत्ताप पैदा हो जाता है, तेज़ प्यास रहती है और श्वासमें कमी मालूम होती है; रातभर भयानक ज्वर रहता है। **पसीना,** बहुत ज्यादा और सारे शरीरमें पसीना (सिङ्कोना) या केवल माथेमें या चेहरेपर पसीना होता है, केवल खट्टा और बहुत सुस्त करनेवाला;

आधी रातके बाद या परिश्रमसे बढ़ता है (सिपिया, सलफर)। दोनों पैरोंमें बदबूदार पसीना होता है और चलनेके समय त्वचा क्षय हो जाती है। पैरका पसीना रुकनेके कारण बोखारकी साइलिसिया प्रधान दवा है।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—ऐसि-फ्लू, हिपर मर्क्यूरियस।

अनुकूल सम्बन्ध।—(१) कैल्के, लाई, सल्फ। (२) बेल, ऐ-फ्लू, हिपर, मर्क, फास, पल्स, रास, सिपिया। (३) ग्रैफ, ब्राई, सिना, इग्ने, लैके, ऐ नाइ।

प्रतिकूल-सम्बन्ध।—मर्क।

वृद्धि।—छूनेपर, केश सँवारनेके समय, दबानेपर, शरीर हिलानेपर, सोनेपर, दाहिनो करवट सोनेपर, बाईं करवट सोनेपर (सरमें चक्कर—पर यकृतकी बीमारीका घटना), बैठे रहनेपर, आँख खोलनेपर, चलने, घरके बाहरकी हवा लगने, ठण्डी हवामें, वस्त्र परिवर्त्तनके समय, माथा या शरीर खोलनेपर, शरीर या रोगवाला अंश धोनेपर, जलवायुके परिवर्त्तनसे, अन्धड़-पानीके पहले और समय, शीतऋतुके आरम्भमें, अमावस्या या पूर्णिमाके दिन, मानसिक परिश्रमसे, बोलनेपर, भोजनके बाद दूध पीनेपर और ठण्डा पानी पीनेपर, रातमें, विशेषकर रातके अन्तिम भागमें, पैरमें सर्दी लगनेपर, किसी चीज़की ओर टकटकी लगाकर देखनेपर, पैरमें पानी लगनेपर और लिखनेके समय।

उपशम।—माथेमें कपड़ा लपेट रखनेपर और कसकर बाँधनेपर (सर-दर्द), घरमें रहनेके समय, विश्राम या स्थिर होकर रहनेपर, गर्मीके दिनोंमें, बायीं या रोगहीन करवट सोनेपर और गर्म पानी आदि पीनेपर।

तुलनीय।—माथेमें पसीना और माथेकी हड्डीका न मिलना—कैल्केरिया। माथा गर्म रखना—सैनिक, मैग-म्यूर। पैरका पसीना रुकनेकी वजहसे बीमारी—क्यूप्रम, ग्रैफाइ। जीवन-शक्ति या ज्ञानकी कमी—लिडम, सिपिया। सरमें चक्कर—पल्स। भगन्दरके साथ-ही-साथ वक्षकी बीमारीकी पर्यायशीलता—कैल्के-फास। विसर्प, आक्षेप या अतिसार—थूजा। स्पर्श अच्छा नहीं लगना—सिना, हिपर, थूजा, लैकेसिस। स्तनका फोड़ा—फास, रास। सर्दीका अतिसार—पल्स। एँड़ीकी कमजोरी—कास्टिकम। उपवासके समय मिचली—पल्स, लाइकी। अधैर्य—कैमो, सलफर। जीभपर केश अनुभव—

नेट्रम, कैलि-बाई (शेषभाग)। जिद्दी बच्चा—आयोड। स्तनका जखम—सार्सा। चर्मपर अस्वस्थताका भाव—हिपर, मर्क, ग्रैफाई। नखकी बीमारी—ऐण्टि-क्रूड। वात—लिडम। घरके विरहसे कातर—कैप्सि, ऐसिड-फास। हाथका स्नायु-शूल—कैल्के। क्षतके बादका दाग, दर्द या प्रदाह—थियस इत्यादि।

सदृश।—आर्निका, सिङ्कोना, हाइपेरिकम, कैलि-कार्ब, ऐ-म्यूर, नक्स-वोम, ओपि, ऐ-फास, ऐ-नाई, रियुटा, सलफर।

अनुपूरक।—थूजा, सैनिक, पल्स।

शक्ति।—६ठा दशमिकसे १००० शततमिक क्रम। डा० हियूजके मतसे कर्कट रोगकी तकलीफ़ दूर करनेके लिये २रा या ३रा दशमिक विचूर्ण लाभदायक है।

क्रियाका स्थायित्व।—४० से ६० दिन।

सिलिका मैरिना

(SILICA MARINA)

दूसरा नाम।— सलिका मेरिटिमा, समुद्रकी बालू।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—इसमें साइलिसिया और नेट्रम-म्यूरका सम्मिलित लक्षण दिखाई देता है। ग्रन्थियोंका फूलना और पीब सञ्चय होना; प्रमेह तथा प्रमेहके कारण मूत्रनलीका सङ्कोचन वगैरह लक्षणमें ३री या ६ठी शक्ति नित्य तीन बार प्रयोग करनेपर विशेष लाभ होता है।

जिस तरह नेट्रम-म्यूरके साथ इसका निकटस्थ रासायनिक सम्बन्ध और सादृश्य है, उसी तरह इनके लक्षणोंमें भी बहुत कुछ समानता है। साइलिसियाकी तरह इसमें भी पीबका स्राव है; परन्तु यह स्राव साइलिसियाकी भाँति पानी जैसा पतला न होकर नेट्रम-म्यूरकी तरह गाढ़ा और लसदार होता है।

ऐलूमिना, साइलिसिया और नेट्रम-म्यूरकी तरह यह भी कब्जियतकी एक बहुत बढ़िया दवा है। ऐलूमिना, साइलि और नेट्रमकी कब्जियतमें, उनका

मलान्त्रका लक्षण और चरित्रगत लक्षण दोनोंपर ही विचारकर दवा चुननी पड़ती है, परन्तु जब बहुत दिनोंकी कष्ट-दायक कब्जियतके सिवा और कोई भी लक्षण नहीं दिखाई देता, वैसे स्थानपर कुछ दिनोंतक लगातार नित्य दो बारके हिसाबसे—१० ग्रेन की मात्रामें १x विचूर्ण या मूल विचूर्ण सेवन करनेपर कब्जियत आराम हो जाती है और नित्य स्वाभाविक पाखाना होनेका अभ्यास हो जाता है।

निम्न-शक्तिमें सिलिका मेरिना प्रयोग करनेपर दाँतका मैल (पत्थरकी तरह) आप-से-आप छूटकर दाँत साफ़ हो जाता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ऐलूमि, सिलिका, कैम्फोरा, नेट्रम-म्यूर।

शक्ति ।—मूल विचूर्ण और निम्न-शक्ति।

सिलफियम

(SILPHIUM)

दूसरा नाम ।—कम्पास प्लेण्ट, पाइलट वीड, पोलर प्लेण्ट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—जरासेमें सर्दी लग जाना और बहुत ज्यादा लसदार फेन-भरा श्लेष्मा निकलनेके लक्षणोंवाला क्षय रोग, दमा, पुरानी सर्दी इत्यादि रोगमें सिलफियम २x, २ ग्रेन मात्रामें प्रति दो-तीन घण्टेके अन्तरसे प्रयोग करनेपर विशेष सुफल पाया जाता है।

गला और मुँहके कैन्सर रोगमें इसका मूल अर्क प्रयोग करनेपर किसी-किसी समय आशासे भी अधिक लाभ दिखाई देता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—एरालिया, कोपेवा, टेरिबिन्थ, कूबेबा, सैम्बु।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

सिनापिस ऐल्बा

(SINAPIS ALBA)

दूसरा नाम ।—ब्रेसिका-ऐल्बा, सफेद सरसों।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सरसोंसे विचूर्ण और अरिष्ट दोनों ही आकारमें दवा तैयार होती है।

उपयोगिता और आभास ।—उदरामय, इसके साथ ही मलान्त्र, पाकाशय और गलनालीमें जलन, पेट फूलना, सर-दर्द, मुँहसे लार बहना वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है। मुँहमें घाव, ऐसा अनुभव होना कि गलेमें कुछ अड़ा है, मानो उससे गलेका छेद रुक जायगा, डकार, गलेमें जलन और दबाव मालूम होना, कलेजेकी हड्डीके नीचे दबाव प्रभृति लक्षणमें, खासकर गर्भावस्थामें ये लक्षण सब प्रकट होनेपर इसकी बढ़िया क्रिया दिखाई देती है।

पेशाबमें दूधकी तरह सफेदी रहनेवाले कृमि लक्षणमें विशेषतः सूत्र-कृमि रोगमें इसपर अवश्य ख्याल रखना चाहिये।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—सिनाविस-ऐल्बा, ऐनाकार्ड, सिपिया, बेल, टियुक्रि, सैफ्लोनाइन, सिना, नैप्थ।

शक्ति ।—३x—६।

सिनैपिस नाइग्रा

(SINNAPIS NIGRA)

प्रकार-भेद ।—सफेद रङ्गकी सरसोंसे जो तेल तैयार होता है, उसे "सिनैपिसका अर्क" कहते हैं। पाकाशयकी बीमारी और यकृत रोगमें इसका प्रयोग होता है।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बीजसे विचूर्ण और अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभ करता है :— आर्त्तवकी कमी; संन्यास; दमा; सर्दी; मृत्पाण्डु; लिङ्गोच्छ्वास; ताण्डव;

कब्जियत ; खाँसी ; अतिसार ; अर्श ; सर-दर्द ; छातीमें जलन ; हिचकी ; सविराम ज्वर ; शीताद ; चेचक रोग आदि।

उपयोगिता और आभास ।—नाना प्रकारकी सर्दी, खाँसी और तालुमूल प्रदाह वगैरह वायुमार्गकी और श्लैष्मिक-झिल्लीकी बीमारीमें इसका व्यवहार हुआ करता है, विशेषकर नवजात शस्य आदिकी रेणु सूंघनेकी वजहसे सर्दी खाँसीमें यह उपयोगी है। सर्दीकी प्रथम अवस्थाके लक्षण आदि इसमें पूरी तरह मौजूद रहते हैं ; जैसा नासारंध्रकी श्लैष्मिक-झिल्लीका सूखापन, उत्ताप मिली और स्रावहीन—तीसरे पहर और सन्ध्याके बाद दूसरे रंध्रपर भी रोगका हमला हो सकता है (फैरिङ्गटन)। इसके बाद ही नयी सर्दीके सब लक्षण प्रकट हो जाया करते हैं, जैसे नाकसे पानीकी तरह त्वचाको क्षय करनेवाला श्लेष्मा निकलना और आँसू निकलना तथा बार-बार छींक, वक्षको फाड़नेवाली खाँसी पैदा हो जाती है ; सोनेपर घटना। तालुमूल प्रदाहमें यह अंश जला, गर्म और प्रदाहकी तरह मालूम होता है। ऊँची आवाज़के साथ घड़-घड़ खाँसी आया करती है जो बहुत दूरसे सुन पड़ती है, (ऐलेन)।

लक्षणावली

मस्तक ।—माथा भारी और जड़ता मिला मालूम होता है ; ललाटमें, भौंहोंपर और कनपटीमें अधिक मालूम होता है ; वृद्धि—सङ्कीर्ण बन्द घरमें रहनेके समय और रोगके विषयमें सोचनेपर (हेलोन, पाइपर-मिथ, सेबाड, स्टैफाई); घटना—आँख बन्द करनेपर (बेल, कैल्के, फास) और अन्यमनस्क रहनेपर। ललाटदेशमें सर-दर्द—नासादण्डके ऊपर और आँखके ऊपरी अंशमें अधिक दर्द मालूम होता है, भोजनके समय घटा मालूम होता है, पर उसके बाद ही फिर दर्द बढ़ जाता है। खोपड़ीकी त्वचामें ऐसा मालूम होता है, मानो अस्थि-फलकके साथ सट गयी है।

आँख ।—आँखमें उत्तेजना और आँसू निकलना। चक्षुगोलकमें ऐसा मालूम होता है, मानो ऊपरसे दबाव पड़ रहा है—भोजनके बाद आँख खोलनेपर। दृष्टि क्षीण और जख्म भरी जैसी मालूम होती है। दबानेपर उसमें सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है।

नाक।—रन्ध्रके भीतरकी झिल्ली सूखी, नीरस, गर्म और एक रन्ध्रके बाद दूसरे रंध्रपर पर्यायक्रमसे आक्रमण होता है (दाहिना—लाई); कभी-कभी दिन-भर बन्द रहती है; उससे जो श्लेष्मा निकलता है, वह पानीकी तरह, बहुत थोड़ा और त्वचाको चय करनेवाला होता है; उससे ऊपरी ओंठमें जखम हो जाता है, बार-बार छींक आती है, साथ ही वक्षको फाड़ डालनेवाली खाँसी आया करती है। करकराहट होती है और उसमें खुजली पैदा होती है; सोनेपर खाँसी घट जाती है (मैङ्ग, थूजा, इग्ने, स्क्विला, फेरम, ऐमोन-म्यूर, सिपिया); आँखसे लगातार आँसूका स्राव हुआ करता है, श्वास-कष्ट और सोने बाद, वक्षमें साँय-साँय घड़बड़ वगैरह श्लेष्माकी आवाजें सुन पड़ती है और साँसमें तकलीफ़ मालूम होती है। तालुमूलकी नयी सर्दी, तालुमूल गर्म, प्रदाहित और ऐसा मालूम होता है, कि उसमें आग छू गयी है। कभी-कभी पाकस्थलीमें तेज़ जलन मालूम होती है। भोजनके बाद और भी बढ़ जाता है। शीताद रोगमें नाकसे रक्त-स्राव।

मुख-विवर।—गालमें मानो वायु प्रवेशकर बाहरकी ओर फूल गया है, ऐसा अनुभव होना। दन्तमें गर्म जलीय और शीतल वायुका स्पर्श सहन नहीं होता। मसूढ़े फूले और उनसे रक्तस्राव। जीभके बीचमें लम्बे-लम्ब एक फटा दाग दिखाई देता है; बीचवाला अंश मलिन, सफेद लेप चढ़ा और चय हुई त्वचाकी तरह; कोई कड़ी चीज़ नहीं खा सकता। जीभमें जलन और जल जानेकी तरह मालूम होती है (सैङ्गियु)। ऊपरी ओंठके ऊपर पसीना निकलना।

पाकस्थली।—मुखकी गन्ध प्याजकी तरह (ऐसाफिट, आर्मोरेसिया)। पाकस्थलीमें जलन आरम्भ होकर अन्ननलीकी राहसे कण्ठ और मुँहतक चली जाती है। मुख-विवर सफेद रंगके जखमसे भरा रहता है। गर्म, खट्टी डकार आया करती है। पाकस्थलीमें ऐसा मालूम होता है, मानो कोई भारी चीज़ रखी हुई हैं। शूल-वेदना—झुके रहनेपर पैदा हो जाती है; घटना,—सीधे होकर बैठनेपर (कैलि-कार्ब; सीधे बैठनेपर बढ़ती है—सिपा)। पाकाशय और आँतोंमें जखम निकलता है (कैलि-बाई, आर्जेण्ट-नाई)।

अन्त्राशय।—बाएँ कोखमें धीमा-धीमा दर्द। नाभि-प्रदेशमें ऐसा दर्द मानो भयानक मरोड़ खा रहा है (कैप्सिक, सिना, डायस्को)। उदरमें

बहुत ज्यादा आध्मान-वायु सञ्चय और रह-रहकर नाभि-प्रदेशमें चिलक मार उठना। पाखाना होनेपर मलनालीके निचले अंशमें उत्तेजना और छेदनेकी तरह दर्द। कब्जियत—मल कड़ा, गांठ-गांठ। पहले महीने स्वाभाविक, इसके बाद पतला पाखाना होता है। मलद्वारमें सूत्रकृमिकी वजहसे खुजली, पतला, हरी आभा लिये मलके साथ अनगिनती सूत्र-कृमियाँ निकलती हैं (सेबाड)।

श्वास-यन्त्र ।—सन्ध्याके समय स्वरभंग (फास, रियुमेक्स, सल्फ)। सन्ध्याके समय प्रबल खाँसी पैदा हो जाती है; दिनमें प्रायः रहती है। खाँसी अधिकांश स्थानोंमें सूखी ही रहती है। थक्का-थक्का बलगम निकलता है। ठण्डी हवामें बढ़ जाती है; घटना—सोनेपर और क्षणिक; भोजनके बाद; हँसनेपर भी खाँसी पैदा हो जाती है (आर्जेण्ट-नाई, ब्राई, सिङ्को, फास, स्टैनम)। पश्चान्नासारंध्रसे निकला हुआ श्लेष्मा ठण्डा मालूम होता है।

सार्वाङ्गिक ।—उदरोर्द्ध-प्रदेशमें भयानक दर्द, रोगीको टेढ़ा कर देता है और आँखसे पानी गिरा करता है। देरसे सोकर उठनेपर देखता है, कि सारा शरीर दर्दसे भरा और अकड़ गया है। कमरमें दर्द--सोनेके समय एकदम असह्य हो उठता है।

वृद्धि ।—दबाने, सामनेकी ओर झुकने, बैठनेपर, जलीय वायुमें, बन्द गर्म कमरेमें रहनेके समय, दर्दके विषयमें सोचनेपर, तीसरे पहर और सन्ध्याके समय।

घटना ।—सीधे होकर बैठनेपर, रातमें सोनेपर, आँख बन्द करनेपर, पेटभर भोजन करनेपर और पढ़ने-लिखनेमें मन लगानेपर।

तुलनीय ।—जीभपर दाहकी तरह अनुभव—सैंगुइनेरिया; हँसनेपर खाँसीका बढ़ना—आर्जेण्ट-नाई, फास्फोरस। आर्त्तवकी कमी—पल्स, सल्फ। शिरामें गर्म पानी अनुभव (खून मानो ठण्डा हो गया)—रस।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—आर्जेण्ट-नाई, इयुफ्रे, सिना, फास, रियुम, सैंगु, स्किला, सेबाड, कैल्के-फास, हेलोन, पाइपर-मिथि।

दोषघ्न ।—नक्स, रस।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे ६ठा शततमिक।

सियम

(SIUM)

दूसरा नाम।—सियम लैटिफोलियम, वाटर पार्सनिप।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मूलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—धनुष्टङ्कार, आक्षेप इत्यादिकी यह उत्कृष्ट दवा है।

तुलनीय।—क्यूप्रम, सिकेलि वगैरह आक्षेपकी दवाएँ।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

स्कूकम चक

(SKOOKUM CHUCK)

परिचय।—युक्तराज्य अमेरिकाके खनिज-पदार्थ-बहुत ह्रदका पानी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पानीसे अर्क और क्षारसे विचूर्ण तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास—यह एक सोरा दोष नाशक दवा है। चर्म और आवरक झिल्लीके ऊपर इसकी क्रिया विशेष दिखाई देती है। शीतपित्त, एकज़िमा, बिवाई, एकज़िमाके घावसे जखम करनेवाला पतला स्राव निकलना, वह स्राव लगनेपर लगी हुई जगहकी खाल उधड़ जाना और नया जखम उत्पन्न होना प्रभृति लक्षणोंमें इसकी निम्न-शक्तिके भीतरी प्रयोगसे और एक भाग विचूर्ण आठ भाग वैसोलिनके साथ मिलाकर मलहम लगानेपर बहुत फायदा होता है।

इन्फ्लुऐञ्जा, तेज़ सर्दी, नाकसे बदबूदार सर्दीका स्राव मध्यकर्णका प्रदाह, कानसे बहुत अधिक पतला बदबूदार जखम करनेवाला स्राव—लक्षणमें सुन्दर काम करता है।

स्तनका अर्बुद, वात, पेशाबमें यूरिक ऐसिडकी अधिकता वगैरह लक्षणोंपर उसकी क्रिया होती है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, ग्रैफा, मेडोरि, मिलिलो, वैक्सि।

दोषघ्न।—टैबाक।

शक्ति।—मूल विचूर्ण और निम्न-शक्ति।

स्लैग

(SLAG)

परिचय।—लोहा गलानेकी भट्ठीके भस्मसे यह दवा विचूर्णके आकारमें तैयार होती है।

उपयोगिता और आभास।—मलान्त्रमें खुजली और कब्जियतके साथ होनेवाले बवासीरकी एक उत्कृष्ट दवा है।

जानु-सन्धिके वातमें इससे लाभ होता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—लाइको, कार्बो-वेज, सल्फ, ग्रैफ, स्टिक्टा।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

सोल

(SOL)

दूसरा नाम।—सूर्य किरण।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—दूधकी चीनीको घनीभूत सूर्य-किरणमें रख लकड़ीकी सींकसे लगातार हिलाकर यह दवा तैयार होती है।

उपयोगिता और आभास।—सर-दर्द, सर्दी-गर्मी, लूपस (मुख-मण्डलका एक तरहका जखम), कैन्सर, पक्षाघात, मसे प्रभृति इससे आरोग्य होते हैं।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—लूना, इलेक्ट्रि, मैग्नेटि, लैके, नेट्रम-कार्ब।

दोषघ्न ।—ऐकोन, बेल, ग्लोन, जेलस।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति।

सोलेनिनम

(SOLANINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विभिन्न सोलेनिनम (आलू) से प्रस्तुत तीक्ष्ण-रस (alkaloid) या विचूर्ण दोनों ही आकारोंमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—सोलेनिनम और सोलेनियम ऐसिटिकमके लक्षणमें कोई विशेष प्रभेद नहीं है। इसीलिये, ये दोनों ही दवाएँ एक साथ लिखी गयीं।

श्वासयंत्र या फेफड़ेमें पक्षाघात होकर छातीमें श्लेष्मा रुक जायगा और मृत्यु होगी इस ढंगके लक्षणकी यह एक उत्कृष्ट दवा है। इस लक्षणमें इसकी तुलना ऐण्टिम-क्रूडसे होती है। बहुत सिगरेट, बीड़ी-तम्बाकू प्रभृति पीनेवाले तथा शराबी मनुष्योंमें तथा ब्राङ्काइटिस न्युमोनिया प्रभृति रोगोंमें यह लक्षण अधिक दिखाई देता है।

धनुष्टंकार, तलवेमें सुरसुरी मालूम होना प्रभृति लक्षणोंमें भी इसका व्यवहार होता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—सोलेनिनमकी अन्यान्य दवाएँ ; बेलेडो, डालका, ऐण्टि-क्रूड।

शक्ति ।—३x—३०।

सोलेनम ऐरिबेण्टा

(SOLANUM ARREBENTA)

दूसरा नाम ।—सोलेनम रिकेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पत्तेसे विचर्ण और अरिष्ट दोनों आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—मस्तिष्कमें रक्त-संचय, आँख-मुँहका लाल होना, सरमें चक्कर वगैरह लक्षणोंमें इसका संन्यास रोगमें बेलेडोनासे तुलनाकर व्यवहार किया जा सकता है।

शीत-पित्त, फोड़ा, ग्रन्थियोंकी सूजन वगैरह चर्मरोगके लक्षणमें भी इससे लाभ होता है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

सोलेनम कैरालिनेन्स

(SOLANUM CAROLINANCE)

दूसरा नाम।—हार्स-नेटेल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे संग्रह किये पके फलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—दक्षिण अमेरिकाकि गृहस्थ इसे मृगी रोगकी दवाके रूपमें व्यवहार करते हैं। वे ३० से ६० बूंदकी मात्रामें इसका मूल अर्क दिनमें तीन बार व्यवहार किया करते हैं। इस दवाके कारण कभी-कभी हलका उदरामय होता दिखाई देता है।

होमियोपैथीके मतसे मृगी, आक्षेप, धनुष्टंकार, हूप-खाँसी प्रभृति रोगोंमें इसका मूल अर्क २० से ४० बूंद मात्रामें जल्दी-जल्दी सेवनसे विशेष लाभ होता है।

शक्ति।--मूल अर्क २० से ४० बूंद मात्रामें।

सोलेनम मेमोसम

(SOLANUM MAMMOSUM)

दूसरा नाम।—एपल आव सोडम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पके फलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—बेचैनी, चिन्ता शक्तिमें गड़बड़ी, निद्रालुता, पर सो न सकना, पूर्णिमा और ज्वारके समय एक प्रकारका सरमें चक्कर, भाठेके समय घटना ; कमरके बाएँ पार्श्वमें दर्द प्रभृति लक्षणोंमें यह औषध उपकारी होता है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

सोलेनम नाइग्रम

(SOLANUM NIGRUM)

दूसरा नाम।—ब्लैक नाइटशेड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—धतूरा जातिके वृक्षका अरिष्ट ; ताजे गाछसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अस्थापन ; ताण्डव ; सर-दर्द ; छातीमें जलन ; मस्तिष्कमें जल-संचय ; उन्माद ; मस्तिष्कावरण प्रदाह ; कर्णमूल ; अन्त्रावर्त्तन प्रदाह ; सूतिकाक्षेप ; चेचक ; तोतलाना ; धनुष्टङ्कार ; जबड़े अटकना ; सान्निपातिक ज्वर ; सरमें चक्कर ; जखम।

उपयोगिता और आभास।—इसके अधिकांश लक्षण बेलेडोनाकी तरह हैं। डा० हेलका कथन है, कि उनके देशके (अमेरिकाके) ग्रामके भिषकगण पूर्वमें इसे स्वदेशी बेलेडोना समझकर बेलेडोनाके बदले व्यवहारकर सफलता प्राप्त करते थे। अतएव, मालूम होता है, कि कहीं-कहीं "सोलेनम नाइग्रम" से बेलेडोनाका काम निकल सकता है। नीचे लिखे कई निर्णायक लक्षणोंपर ध्यान देनेसे ऊपरी बातोंकी सत्यता प्रमाणित हो जायगी :—प्रलाप अवस्थामें सर-दर्द, चमकीली आँखें, चमकीला चेहरा, दर्द आदिका एकाएक पैदा होना और एकाएक गायब हो जाना, शरीरमें जगह-जगह आगके रङ्गके लाल-लाल दाने और शरीरकी त्वचा जलन भरी तथा पसीनेसे तर। इसकी सूजन अत्यन्त दर्द भरी, क्रमसे बढ़नेवाली, चिकनी, कड़ी और गहरे लाल रङ्गकी दिखाई देती है। (बेलेडोनामें आगकी तरह लाल)। नाकका अगला भाग, हाथ, हाथकी अंगुलीके अगले भागसे अंगुलीकी सन्धि या गांठोंतक

और अंगुलीके अगले भागसे मुँहतक मानो स्याही लगी हुई है, ऐसा दिखाई देता है। सर-दर्दकी तकलीफ़ बहुत भयंकर—ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फटा जाता है, मानो चूर हो जायगा या मानो उसमें तीर गड़ रहा है—बैठने बाद, शरीर हिलानेपर, थोड़ा भी सर हिलानेपर, आँखमें रोशनी लगनेपर, कानमें आवाज़ जानेपर और संकीर्ण बन्द घरमें रहनेपर तकलीफ़ बहुत बढ़ जाती है ; घरके बाहरकी निर्मल हवा लगनेपर कुछ आराम मालूम होता है। सरमें चक्कर—सर हिलानेपर बढ़ जाता है (बेल, सिडोरिन), रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी खाट झनझन करती हुई चक्कर खा रही है। चलनेके समय बायीं ओर ढुलक पड़ता है। प्रलाप अवस्थामें रोगी रह-रहकर चिल्ला उठता है, भागनेकी चेष्टा करता है और तोतलाकर बोलता है। आँखकी पुतलीका फैलना—ठीक बेलेडोनाकी तरह और मुँह तथा कण्ठ सूख जाता है। आक्षेप, धनुष्टङ्कार और शरीरकी अकड़न भी इसके लक्षणोंमें आ जाती है। आक्षेपके समय बच्चा इस तरह अपना हाथ फैलाता है, मानो कोई उसे खानेको दे रहा है। इसके बाद उसे बड़े आग्रहसे अपने मुँहमें डालता है, मानो कुछ चबा रहा है, इस तरह दोनों जबड़े चलाता है और फिर मानो चबाना समाप्त हो जाता है, इस तरह निगलनेकी क्रियाका अनुकरण करता है। इसके द्वारा घुटने और केहुनीकी सन्धिके ऊपर और ललाटमें पपड़ी निकलनेवाली विचर्चिकाकी बीमारी होती है और केशोंकी जड़में बहुत खुजली होनेके साथ वह लाल हो उठती है।

लक्षणावली

मन।—मनोवृत्तियाँ सब स्तम्भित और एकदम बेकार हो पड़ती हैं, प्रलाप—रोगी भागनेकी चेष्टा करता है (बेल, ग्लोन, हायो, नक्स-वोम, ओपि, स्ट्रैमोन), रह-रहकर लोमहर्षक चिल्लाकर उठता है (एपिस, हेलिबो), तोतलाकर बोलता है (स्ट्रैमोन) और आक्षेप हो जाता है (इथ्यू, बेल, डिजि)। आच्छन्न भाव और अङ्गोंका फड़कना (हायो, स्ट्रैमोन)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, उठकर इधर-उधर घूमता है ; अन्धेरा दिखाई देनेके साथ (साइक्लो, जेल्सि) ; झुकनेपर (पल्स, कास्टि, ग्लोन, कैलि-कार्ब, लैके) और सवेरे सोकर उठनेपर (लाई, पल्स, फास) ; उपशम—निर्मल वायु लगनेपर। ऐसा मालूम होता है, कि मस्तिष्क थुलथुल करता है या

मानो तैर रहा है (बेल, हायो) ; वृद्धि—माथा हिलानेपर (स्पाइजि, काकूर)। ऐसा मालूम होता है, मानो शय्या जोरसे घूम रही है (बेल, कोना, कैक्टस, लैक-डिफ्लो)। रोगी बाईं ओर झुककर चलता है। प्रचण्ड सर-दर्द—बैठने बाद चलना आरम्भ करनेपर (थिरिड) ; घटना—घरके बाहरकी हवा सेवनके लिये चलनेके समय (ऐ-मूर, ऐथ्रि-क्रूड, पल्स ; वृद्धि—बेल, सिना, आइरिस) ; ठीक आँखके ऊपरी प्रदेशमें भयंकर यन्त्रणाकी वजहसे रोगीको बाध्य होकर आँखें बन्द किये रहना पड़ता है ; वृद्धि—रोशनी लगनेपर (बेल, जेल, मिडोरिन, नेट्र-मूर, सैङ्गियु), झुकनेपर (बेल, ग्लोन, हेलिबो, पल्स), सवेरे दस बजनेके समय (नेट्र-मूर—११ बजनेके समय—ऐङ्गोपिन ; सवेरे १० बजेतक—लैचनैन) और बन्द घरमें रहनेके समय (सिपा, प्लैट, पल्स) ऐसा मालूम होना मानो फट जायगा (ब्राई, कैल्के, नक्स, स्टिक्टा) ; बैठने बाद कुछ भी देह या माथा हिलानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो ललाट भेदकर मस्तिष्क बाहर निकल पड़ेगा। (काफिया, लिसिन, कैलि-ब्राई, सिपिया, लैचनैन) ; ऐसा झटका मालूम होता है मानो ललाटपर किसीने आघात कर दिया। (ऐकोन, सरके पिछले भागमें—हेलिबो, नैजा ; मूर्द्धादेशमें—वैलि)। समूचे तीसरे पहर ललाटके पीछे टपक हुआ करती है (ऐल्यूमेन, कास्टि, लाई, साइलि)। बाईं कनपटीमें टपकका दर्द ; वृद्धि—पैर फिसलने या कुछ ऊँचा-नीचा पैर गिरनेपर (बेल, ग्लोन, स्पाइजि) और झुकनेपर ललाटपर छोटे-छोटे लाल दाने सब निकल आते हैं, उन्हें छूनेपर बहुत दर्द होता है, एक अच्छा होनेपर दूसरा निकल आता है। केशमें अंगुली घुसानेपर मस्तकको त्वचामें दर्द हुआ करता है या माथेमें इस तरहका दर्द मालूम होता है, मानो कोई केश पकड़कर खींच रहा है (सिपि)।

आँख।—आँख फैली, तर और चमकीली, आँख लाल, रोशनी एकदम सहन नहीं होती—करकराती है, मानो उसमें धूलके कण गिर गये हों। सवेरे नींद खुलनेपर बाईं आँखके ऊपरी प्रदेशमें भयंकर दर्द (लैक-कैन), वृद्धि—आँख हिलाने और झुकनेपर ; दाहिनी भौंमें बेधनेकी तरह तेज़ दर्द (ऐपिस, सिनोश्रियो), पलकोंमें जलन होती है (ऐकोन, ऐलूर, आर्स, कैलि-बाई, मर्क-कोर, ऐ-नाई)। पलकोंके प्रान्त भागमें जलन (आर्स, युफ्रे), पलक फूल उठती है और उनमें खुजली पैदा हो जाती है ; कभी-कभी सट जाती है (आर्जेण्ट-नाई, कास्टि, कैमो, क्रियो)। आँखकी पुतली बहुत फैली और

उसमें रोशनीका ज्ञान नहीं रहता और सब अंश भी संकुचित हो जाते हैं। दृष्टि क्षीण,—चमकीली सूर्यकी रोशनी या धूपमें और भी बढ़ जाती है (चमकीली, रोशनीमें बढ़ना—बेल)। दृष्टिके सामने काले बिन्दु या आगकी चिनगारी उड़नेकी तरह मालूम होना।

कान।—बहुत भयङ्कर यन्त्रणाजनक कर्णमूल प्रदाह (बेराई, बेल, कार्बो-वेज, सिस्टस, मर्क, पल्स), कानमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, कानके सामने झिन-झिन आवाज़ होनेकी तरह अनुभव होना।

नाक।—नाकका रङ्ग गहरा लाल (ऐल्यू, चायना, फास, सल्फ) नाकका अगला भाग काला (नासारंध्र, काला—कोलचि, आन्त्रिक ज्वरमें काला नासारंध्र—वेरेट; फेफड़ेके प्रदाह रोगमें—ऐण्टिम-टार्ट)। बायाँ रन्ध्र रुका रहता है और दाहिने रंध्रसे पतला पानीकी तरह पदार्थका स्राव; नाक फूली, दर्द-भरी और काली।

मुखमण्डल।—दोनों आँखोंके चारों ओर, ऊपरी ओंठ और हाथकी अंगुलीकी त्वचा सिकुड़ी दिखाई देती है। चेहरेमें बहुत रक्त-संचय हो जाया करता है और चेहरा उन्मत्तता या उद्वेगका भाव धारण कर लेता है; चेहरा लाल और फूला। थका, डरा, चकित या शराब पीनेकी तरह उन्मत्त मूर्त्ति। चेहरेका स्नायुशूल—तेज़ दर्द, बिजलीकी लहरकी तरह तेज़ वेग, निचले हनुसे बायें कानकी ओर चला जाता है (दाहिने कानकी ओर जाता है—स्पाइजि, सिपिया, मैंङ्गेनम); दर्द एकाएक गायब हो जाया करता है (बेल, ऐ-नाइट्रिक, आर्जेण्ट-नाई), खासकर दिनके १० बजनेके समय। दोनों ओंठ सूखे और छालोंसे भरे—ऐसे दिखाई देते हैं, मानो जल गये हैं, जीभमें मानो आग छू गयी है। हनुस्तम्भ या दाँती लगना। जीभका पिछला अंश और ऊपरी तन्तुका कुछ अंश काला दिखाई देता है (मर्क-सल्फ); तोतलाकर बोलता है।

गलेके भीतर।—ऐसा घाव हो जानेकी तरह मालूम होना मानो जल गया है (ऐब्सिन्थियम, एपिस, मर्क-सल्फ)। कण्ठके भीतरके दाहिने पार्श्वमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (ऐमोन-कार्ब, गेम्बो, आयोड)। गलेमें त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होना (आर्जेण्ट-नाई, कास्टि, मर्क-कोर, नक्स, स्टिक्टि) और गाढ़ा या पतला कोई भी पदार्थ निगलनेके समय दर्द मालूम हुआ करता है (आर्जेण्ट, बेराई-कार्ब, स्टेनम)। कण्ठमें खुजलीकी वजहसे

खाँसी पैदा हो जाती है (लेके, रियुमेक्स, लेक-कैन, नेट्र-म्यूर, सिपि)। जिह्वा-मूलके दोनों पार्श्वके गह्वरमें सूखापन और ऐसा दर्द, मानो सुई गड़ रही है, निगलनेके समय बढ़ जाता है (हिपर); कभी-कभी दर्द कर्णपटहतक फैल जाता है। बाईं गलग्रन्थि फूल उठती है—लेके, एपिस, लेक-कैन, मर्क-बिन-आयोड), दाहिनी गलग्रन्थिमें मानो सूक्ष्म शलाका बिंध रही है (आर्जेण्ट-नाई, उलिकस, हिपर, ऐ-नाई)।

पाकाशय आदि।—बार-बार अधिक परिमाणमें पानी पीनेकी इच्छा (ब्राइ. नेट्र-म्यूर, लेक-कैन ; बहुत देरका अन्तर देकर—ब्राइ)। खाली डकार और पाकस्थलीमें जलन (ऐमिल-नाई)। छातीमें जलन (कैल्के, कार्बो-वेज, साइकूर, कोक, फेरम-फास, लाई, मैग-कार्ब, नक्स-वोम, पल्स), मिचली मालूम होना और आँखके सामने आगकी चिनगारी उड़ती दिखाई देना (दृष्टिके सामने अन्धेरा छा जानेके साथ—कैल्के ; दृष्टि लोपके साथ—क्रोटोन-टिग); जबतक नींद नहीं आती तबतक यही भाव रहता है। मिचली और वमनकी चेष्टा करनेपर बहुत ज्यादा वमन होता है—पहले श्लेष्मा और इसके बाद नीली आभा लिये काला जलीय पदार्थ वमन हुआ करता है। वमन हुआ पदार्थ अजीर्ण खायी हुई चीज मिला या काली आभा लिये हरे रङ्गका पतला। (दिनके ५ बजनेके समय) पाकस्थलीमें प्रचण्ड दर्द पैदा हो जाता है और हृत्पिण्ड या बायें कन्धे तक फैल जाता है। पाकस्थलीमें जलन आरम्भ होकर अन्ननालीतक चली जाती है। नाभि-प्रदेशमें छेदनेकी तरह भयानक दर्द। तीसरे पहर ऐसा मालूम होता है मानो आँतें सब किसी अस्त्रसे छेदी जा रही है। पेट बहुत फूला और कड़ा हो उठता है (कोलचि)।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनमें बहुत दर्द और अकड़न मालूम होती है (हेलिबो, लेके, बेल, पोडो); विशेषकर माथा हिलानेके समय पीठ और हाथ पैरमें दर्द होता है। हाथकी अंगुलियां सब ऐसी काली दिखाइ देती हैं, मानो उनपर स्याही लग गयी हो। हाथ-पैर आदि बहुत चंचल; रोगी शय्याको नोचा करता है और इस तरह हाथ-पैर फैलाता है, मानो शून्यमें कुछ पकड़ना चाहता है (बेल, हायो, स्ट्रैमोन)। घूमनेवाला दर्द—कन्धेसे बाँहमें और बाँहसे निम्नाङ्गमें चला जाता है (केलि-बाइ, लेक-कैन, पल्स)। कर-पृष्ठपर फुन्सियाँ निकलकर फट जाता है और उसमेंसे कषाय रस निकलता है। छोटी माताकी तरह दाना, निकलता है और अंगुलीपर तर पपड़ी जमती है। दाहिना बाँह

और बायाँ पैर अवश। निम्नाङ्ग, विशेषकर उसकी पेशी रह-रहकर लगातार काँप उठती है।

सार्वाङ्गिक।—आच्छन्न और आक्षिप्त भाव और यन्त्रणा प्रकट करनेवाली रुलाई या चिल्लाना। अकड़नके समय बच्चा मानो कुछ खानेके लिये हाथ फैलाया करता है और इसके बाद वह हाथ मुँहमें डालकर चबाता है और इसके बाद निगलनेकी क्रिया प्रकाशित करता है। सारे शरीरमें दर्द और सभी पेशियोंमें स्पर्शका सहन न होना।

निद्रा।—रातमें रोगीको नींद नहीं आती, लगातार वह छटपटाया करता है, नाना प्रकारकी भयकी चीजें देखता है (आर्जेण्ट-नाई, मर्क, ओपि, थूजा, लिडम, कैमो, कार्बो-ऐन, ब्राई) और शय्या नोचा करता है। आधी रातमें रोगी सर-दर्दकी वजहसे कराहा करता है और जाग उठता है। स्वप्न देखकर भीत चकित भावसे जाग उठता है, मानो वह किसी ऊँची जगहसे गिरा जाता है या उसे सांप काटनेके लिये आ रहा था।

शीत, उत्ताप और पसीना।—पर्यायक्रमसे सर्दी और उत्ताप मालूम होना, चेहरा रह-रहकर गर्म हो उठता है, प्रबल ज्वरके बाद बहुत अधिक पसीना निकलता है; दिनके २ बजनेके समय प्रबल ज्वर और इसके साथ ही गलेके पिछले भागमें, कन्धेमें और निम्नाङ्गमें बहुत दर्द मालूम हुआ करता है; चेहरा लाल हो उठता है; हृदय प्रदेशमें दर्द मालूम होता है, पेट बहुत फूल उठता है और रोगी कभी-कभी चिल्लाकर पेटपर हाथ रखता है। समूची देहमें जलन हुआ करती है और कभी-कभी उसमें पसीना हो जाया करता है, बार-बार पसीना निकलता है और बोखार छूटनेके समय रोगी पसीनेसे तर हो जाया करता है।

वृद्धि।—छूनेपर, शरीर हिलानेपर, माथा हिलानेपर, सबेरे १० बजनेके समय, बैठनेपर, पहली बार हिलना आरम्भ करनेपर, चलनेपर, पैर फिसलनेपर, निगलनेके समय, धूपमें या सूर्यकी रोशनीमें, बन्द गर्म घरमें रहनेके समय और सबेरे नींद खुलनेपर।

उपशम।—आँख बन्द करनेपर और घरके बाहरकी निर्मल हवा लगनेपर।

तुलनीय।—मस्तिष्क-विकारके कारण रोना—एपिस। तोतलाना—स्ट्रैमोन। सर-दर्द—नैट्रम-म्यूर। जोभमें जलन—सैंगु। गर्दनके पिछले भागमें दर्द—हेलिबो। चोट मालूम होना—नैजा।

सदृश।—बेल, हेलिबो, हायो, स्ट्रैमोन, एपिस, ए-नाइ, हिप, डलि-कास, सेङ्गिवु, कैप्सिकम, कैलि-ब्राई, लैक-कैन, लैके, पल्सेटिला।

शक्ति।—२रा दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

सोलेनम ओलिरेसियम

(SOLANUM OLIRASIUM)

दूसरा नाम।—जुकुईरियोबा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फूलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—स्तनकी ग्रन्थि-समूहोंकी सूजन और इसके साथ ही बहुत ज्यादा स्तनसे दूध निकलना इसका निर्देशक लक्षण है। इसके अलावा सर्दी, श्वेतप्रदर, बहुत ज्यादा नींद, पलकोंकी अंजनी, शीत-पित्त प्रभृति लक्षणोंमें इसका व्यवहार होता है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

सोलेनम सियोडो-कैप्सिकम

(SOLANUM PSEUDO-CAPSICUM)

दूसरा नाम।—सोलेनम टेरि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फलसे विचर्ण या अरिष्ट दोनों आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—तलपेटका दर्द, आँखकी पुतलीका फैलना, इसका निर्देशक लक्षण है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

सोलेनम टियुबरोसम

(SOLANUM TUBEROSUM)

दूसरा नाम ।—गोल आलू ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—आलूके ताजे गाछसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—हाथ-पैरकी अंगुलीकी पेशीमें दर्द, आक्षेपिक वेदना, अर्बुद, आँखकी पुतलीका प्रदाह, दाँती लगना, दृष्टिक्षीणता प्रभृति लक्षणोंमें यह लाभ करता है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

सोलेनम टियुबरोसम इग्रोटैन्स

(SOLANUM TUBEROSUM AEGROTANS)

दूसरा नाम ।—खराब आलू ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—रोगी आलूसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—मलान्त्रका अपने स्थानसे हटना, मलद्वारमें तेज़ दर्द, कब्जियत और सारे शरीरमें बदबू, ओंठमें जखम और ओंठ फटना, मसूढ़ेसे रक्तस्राव, जीभपर मोटा लेप और जखम, मुँहमें घाव, यह घाव जल्दी-जल्दी बढ़ता है और गालमें बार-बार जखम पैदा होते हैं, मलान्त्रमें सड़े आलूकी तरह अर्बुद, बदबू इत्यादि लक्षणोंमें भी इस दवाका व्यवहार होता है ।

तुलनीय ।—नाइट्रिक-एसिड, ओपियम, पोडो, पल्स, ग्रैफा ।

शक्ति ।—३x—३० ।

सोलिडेगो

(SOLIDAGO)

दूसरा नाम।—गोल्डन राड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे ताजे उद्भिद या फूलसे अरिष्ट तैयार होता है। सूखे पत्ते और फूलका सत (Infusion) भी तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—डा० रेडिमोफर्के मतसे यह एक बहुत दिनोंकी प्रचलित और उत्कृष्ट मूत्रदोष नाशक दवा है। मूत्रग्रन्थिकी किसी भी बीमारीमें इसका व्यवहार किया जा सकता है। गण्डमाला धातुग्रस्त व्यक्तिकी बीमारीमें यह अधिक लाभदायक है। मूत्रग्रन्थि-प्रदाह, मूत्रपथरी, मूत्रग्रन्थिकी बीमारीकी वजहसे वात, थोड़ा पेशाब, पेशाबमें श्वेतसार, पेशाबमें श्लेष्मा, पेशाबमें फास्फोरस, इत्यादि किसी तरहका दोष भी क्यों न हो, यह सभी दोषोंका संशोधन करता है। यक्ष्मा दोषके कारण सर्दी इत्यादिमें भी यह सुन्दर काम करता है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय।**—हाइड्राञ्जिया, सैण्टल, सेबाल, टियुक्रियम, मेडोरि।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

स्पर्मिनम

(SPERMINUM)

आर्काइटिनम (Orchitinum) देखिये।

स्फिंगुरस

(SPHINGURUS)

दूसरा नाम।—हिष्ट्रिक्स-सबस्पाइनोसम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—उद्भिदकी लकड़ीसे विचूर्ण तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—सरके केश तथा दाढ़ीके केशका झड़ जाना, जबड़ेकी सन्धिमें दर्द, तोतलाना, जबड़ेमें दर्द प्रभृति लक्षणोंमें फलप्रद है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

स्पाइजिलिया ऐन्थलमिया

(SPIGELIA ANTHELMIA)

दूसरा नाम।—ऐन्थेलमिया कोयाड्रिफाइल्ला (कृमि-नाशक रहनेकी वजहसे इसे "ऐन्थेलमिया" कहते हैं)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सूखे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—ग्रन्थियोंका बढ़ना; अन्धापन; हृत्-शूल; सर्दी; कब्जियत; निस्तेज (मानसिक); आँखमें दर्द और स्नायुशूल; आँखकी बहुत-सी बीमारियाँ; सर-दर्द; आँत उतरना; तारका-प्रदाह; कर्ण-शूल; मूत्राधार-मुख-शायिका-ग्रन्थिका प्रदाह; मलान्त्रका कर्कट रोग; आमवात; तोतलाना; आँख, नाककी बीमारी; डेरा देखना; कर्ण-पटहका प्रदाह; तम्बाकू खानेके कारण हृत्पिण्डका दोष; दाँतोंमें दर्द; कृमि।

उपयोगिता और आभास।—माथा, आँख, पलक, मुख-मण्डल, पञ्जर, अन्त्राशय और हृत्पिण्डके स्नायुशूलमें यह बहुत उपयोगी है, विशेषकर यदि यह दिखाई दे कि दर्द किसी एक केन्द्रसे पैदा होकर उस केन्द्रमें चारों ओर फैल जाता है। हृत्पिण्डके अन्तर्वेष्ट और वहिर्वेष्टका प्रदाह और आँखके उपताराके प्रदाहमें भी यह लाभदायक हुआ करती है। बच्चा तथा अन्य किसी मनुष्यमें कृमिका लक्षण मौजूद रहनेपर या वास्तवमें कृमि न रहनेपर भी वे लक्षण यदि दिखाई दें तथा कृमिके कारण हृत्पिण्ड आदि यन्त्रके रोगोंमें भी इससे विशेष लाभ हुआ करता है। डा० क्लार्क कहते हैं कि तम्बाकू आदि नशीले पदार्थ सेवनकी वजहसे या उसी कारणसे बढ़े हुए हृत्पिण्डकी बीमारीकी "स्पाइजिलिया" एक प्रधान दवा है। इसके कई निर्णायक लक्षण नीचे लिखे जाते हैं:—(१) इसका दर्द किसी एक जगह पैदा होकर उस केन्द्रसे शरीरमें चारों ओर फैल जाता है। (२) रोगीकी देहमें स्पर्श बिलकुल सहन न

होना। पीठमें ठण्ड मालूम होती है, जरा भी शरीर हिलनेपर लक्षण आदि बढ़ जाया करते हैं। (३) आल्पीन, सुई आदि नोकीली चीजोंसे रोगी बहुत डरता है। (४) किसी एक इन्द्रियमें बहुत विशेष तेजी, रोगीको अपनी कण्ठ-ध्वनि शङ्खकी आवाज़की तरह मालूम होती है और सरमें दर्द पैदा कर देती है। (५) हृत्पिण्डकी वातके कारण बीमारियाँ; हृत्पिण्डके सिकुड़नेके समय उसमें सोयी हुई बिल्लीके कण्ठसे निकली हुई ध्वनिकी तरह फड़-फड़ आवाज़ आती है। धमनीका फैलना। (६) स्नायविक सर-दर्द,—बँधे समयका अन्तर देकर पैदा होता है और माथेके ऊपरसे होता हुआ बायीं आँखकी पलकके ऊपरी भाग जाकर ठहरता है; दर्द तेज़ और टपककी तरह। सर-दर्द, सूर्योदयके समय आरम्भ, दोपहरके समय बहुत बढ़ना और इसके बाद घटकर सूर्यास्त होनेपर निवृत्त हो जाना। (७) चक्षुगोलक हिलानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो वह इतना बढ़ा है, कि चक्षुद्वारमें उसे जगह नहीं मिलती। (८) स्नायु-मण्डलका स्नायुशूल—निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर पैदा हो जाता है; बाईं ओरका—अर्थात् बायाँ चक्षुगह्वर, बाईं आँख बाईं मण्डास्थि और दाँतपर इसका प्रकोप होता है; सर-दर्दकी तरह ही यह भी सूर्योदयसे सूर्यास्ततक रहता है; दर्द फाड़नेकी तरह और जलन करनेवाला; गण्डस्थल लाल हो जाता है; अंधड़-पानीके दिनोंमें और चाय पीनेपर बढ़ जाता है। (९) तम्बाकू खानेकी वजहसे दाँतमें दर्द। (१०) नाकके पिछले छेदसे बहुत-सा बदबूदार श्लेष्मा गलेमें गिरनेके कारण रातमें गला रुक जाना चाहता है। (११) छुरी बेधनेकी तरह दर्द चक्षुगोलकको भेदकर माथेके अन्तरतम :प्रदेशमें चला जाता है। (१२) श्वासकृच्छ्र—रोगी केवल दाहिनी करवट या ऊँचे तकियेपर माथा रखकर सोनेको बाध्य होता है। (१३) वक्षमें दर्द—नोकीली सलाई या सुई गड़नेकी तरह दर्द, नाड़ीकी गतिके तालमें दर्द अनुभव होता है। (१४) हृद्स्पन्दन—सवेरे, बैठने बाद या शय्यासे उठनेके समय प्रचंड हृद्स्पन्दन, दूसरा यह धड़कन देख सकता है और सुन सकता है। (१६) तोतलाना,—पहला वाक्य तीन-चार बार उच्चारण किये बिना समस्त वाक्य उच्चारण नहीं कर सकता; अन्त्राशयिक रोग या कृमि-लक्षणकी वजहसे। (१६) नाड़ी इतनी काँपा करती है कि उसके स्पन्दनकी गिनती नहीं हो सकती। (१७) ज्वरकी उत्तापावस्थामें भी रोगी बाहरी गर्मी पानेका आग्रह प्रकट करता है।

लक्षणावली

मन ।—इस तरह बैठा रहता है, मानो न जाने कितनी चिन्तामें पड़ा है (आर्नि, कैप्स, कार्लस-बेड, काक्यु, नेट्र-मूर, ओपि, फास, सल्फ)। टकटकी लगाकर देखा करता है (रेनान)। आल्पीन, सुई वगैरह नोकीले यन्त्रोंसे भय (रोगिनी हमेशा सुई, आल्पीन आदि खोजा करती है और डरा करती है, कि कहीं गड़ न जाये—साइलिसिया)। क्षीण स्मृति, मानसिक परिश्रमसे अनिच्छा, हमेशा यही चिन्ता कि न जाने भविष्यमें क्या होगा (ब्राई, कैल्के, चिनिन-सल्फ, साइक्यू, फास)। सामान्य कारणसे ही क्रोधित हो जाती है (नक्स-वोम, सिना, कोलो, साइक्ल, नेट्र-मूर, पेट्रोल, सिपिया)। विषन्न, आत्महत्या करनेकी इच्छावाला चित्त (अरम-मूर, लेके, सोरिन, रियुमेक्स)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर ; ऐसा मालूम होता है, मानो गिर जायगा (ऐकोन, बेल, ग्लोनो, फेलैन, पल्स, रैनान, रास, साइलि, स्पञ्जिया, टेरिब) ; सोये रहनेपर अच्छा रहता है (आर्नि, सिना, चायना) ; वृद्धि—सवेरे उठनेके समय (बेल, ब्राई, लाई, नेट्र-मूर, फास, पल्स, रास)। ज्ञान नष्ट कर देनेवाला सर-दर्दके साथ (एपिस, बेल, कैल्के, नक्स-वोम, फास, साइलि) ; नीचे देखनेपर (फास, सल्फ, कैल्मिया) या आँख या नजर घुमानेपर मिचलीके साथ। सर-दर्द—स्नायविक दर्द, निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर पैदा हो जाता है, दर्द सवेरे मस्तिष्कको जड़से आरम्भ होकर मूर्द्धादेश पारकर बाईं आँखमें, चक्षुगह्वर और कनपटीमें ठहरता है (दाहिने—सैङ्गियु; साइलि ; प्रचण्ड टपक या धक-धक करनेवाला दर्द (सर-दर्द) ; सूर्योदयसे आरम्भ, मध्याह्नमें बहुत बढ़ना और उसके बादसे लगातार घटकर सूर्यास्तके समय घट जाता है (नेट्र-मूर, सैङ्गियु, टैबाक)। स्थिर दृष्टिके साथ रह-रहकर ललाटमें फाड़नेकी तरह दर्द (मर्क, बार्बे, कैमो, लेके)। स्नायविक सर-दर्द, वृद्धि—सोचनेपर (ऐ-फास, अरम, कैल्के, कैल्के-फास, ग्लोन, लाई, पल्स, साइलि) ; शब्दसे (बेल, थिरिड, इग्ने, लैक-कैन, लैक-डिपलो, साइलि) या किसी तरह शरीर हिलानेपर (ऐ-नाई, बेल, कोना, ग्लोन), प्रकोपके समय रोगीका चेहरा म्लान हो जाता है (लेके, बेरेट, सिपिया, स्ट्रेमोन), उसमें उद्वेगजनक हृद्स्पन्दन हुआ करता है (थ्यू, साइक्ल) ; कभी-कभी मिचली और वमन भी हुआ करता है। समूचा माथा जड़तासे भरा और ललाटके भीतर

ऐसा मालूम होता है, मानो भीतरसे ठेल रहा है। ललाटके शृङ्गदेश अर्थात् सबसे ऊँचे स्थानमें टपककी तरह सुई गड़ने जैसा दर्द। माथेके बाएँ पार्श्वमें और बाईं आँखके भीतरसे बाहरकी ओर सुई गड़नेकी तरह दर्द। दबानेकी तरह सर-दर्द, दाहिनी कनपटीमें ही ज्यादा प्रकोप हुआ करता है (बेल, कैमो, चेलिडो); वृद्धि—थोड़ा भी शरीर हिलानेपर या आवाज़से। घटना—स्थिर रहनेपर (ऐण्टि-टार्ट, इयुपेट-पर्फौल—माथा नीचाकर सोनेपर घटना—आर्निका) और ठण्डे पानीसे माथा धोनेपर (ऐसेरम, साइलि, फास, कैल्के-फास), मूर्द्धादेशके भीतरसे बाहरकी ओर सुई गड़नेकी तरह दर्द; वृद्धि—छूनेपर (ऐकोन, बेल, चायना, इग्ने, केलि-कार्ब, कैल्मीया, मर्क, मेजेर) और पानीसे धोनेपर (ऐमोन-कार्ब, ऐण्टि-क्रूड, कैल्के, रस, नक्स-मस, सिपि), पर धोनेके समय आराम मालूम होता है (ठण्डा पानी प्रयोग करनेपर बढ़ना—सिनियेन)। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका माथा फटकर दो टकड़े हो जायगा (बेल, ब्राई, कैल्के, चायना, ग्लोन, नेट्र-म्यूर, सोलेनम-नाई)। मुँह फाड़नेपर माथेमें दर्द अनुभव होता है (फेगोपाई)। उपमस्तिष्क और गलेमें अत्यन्त दर्द मालूम होता है (फेगोपाई); गर्दनका अकड़ना; झुकनेपर सरमें दर्द पैदा हो जाता है, मानो एक बन्धनसे माथा बँधा हुआ है (ऐ-कार्बौल, ऐ-नाई, जेल्स, सल्फ)। मस्तिष्कमें कम्पन्न मालूम होना। बढ़ना—सर हिलानेपर (आर्नि, काक्यु) या जोरसे पैर रखनेपर (लाई, बेल, नक्स-मस, रस, लिडम)। कनपटी और ललाटमें फाड़नेकी तरह दर्द—दर्द आँखतक फैल जाता है; वृद्धि—शरीर हिलानेपर खासकर चलनेके समय पैर फिसलनेपर। खाँसनेपर या जोरसे बोलनेपर ऐसा मालूम होता है, कि माथा दो हो जायगा (ब्राई, कैप्स, इग्ने, नेट्र-म्यूर, सल्फ)। दबावकी तरह सर-दर्द, दाहिनी कनपटीमें और आँखतक उसका प्रकोप मालूम होता है। बढ़ना—शरीर हिलाने या पाखाना जानेके समय वेग देनेपर (लाई, पल्स)। माथेमें खींचनका भाव, वह मानो माथेमें कसकर आँटा हुआ है, ऐसा ही अनुभव होना (आर्जेण्ट-नाई, कास्टि, केलि-ब्रोम), शिरमें स्पर्श सहन न होना—छूनेपर दर्द मालूम होता है (साइलि, सिनेब, सिङ्कोना, काफि, लेके, पेरिस, रस)। ऐसा मालूम होता है, मानो माथा बहुत बड़ा हो गया है।

आँख।—चक्षु-गोलकमें दबानेकी तरह असह्य दर्द; समूची देह घुमाये बिना आँख घुमा नहीं सकता; वृद्धि—आँख हिलानेपर, विशेषकर

पैर फिसलनेके कारण शरीर हिलनेपर (आँख घुमानेपर उसमें दर्द होता है, क्रोटन-टिग, केल्मी) आँख घुमानेपर सर घूम जाता है। दोनों चक्षु-गोलक चक्षु-गह्वरकी अपेक्षा बड़े होते हैं, मानो चक्षु-गह्वरमें उन्हें जगह नहीं मिलती (ऐकोन, कोमोक्लेड, पेरिस), छूनेपर दर्द होता है। मानो माथा एक बन्धनसे बँधा हुआ है (ऐसिड, कार्बोल, कैक्टस, सल्फ)। ऐसा अनुभव होना कि पलकोंपर परका चूर गिरा हुआ है ; रगड़नेपर और भी बढ़ जाता है। दूर दृष्टि—(आर्जेण्ट-नाई, हायो, लिलि-टाई)। रोशनीका सहन न होना—चित्रपातपर रोशनीका छूना सहन नहीं होता (मर्क, नेट्र-म्यूर)। ऐसा तेज दर्द मानो छुरी मारी जा रही है, चक्षु-गोलकको भेदकर पश्चाद्-मस्तिष्कमें चला जाता है (प्रूनस, रस-टक्स, ऐक्टिया-स्पाई, ऐसाफिट) या चक्षु-गोलकसे चारों ओर फैल जाता है। ठण्डी जलीय हवा लगनेके कारण बढ़ना—आँख हिलानेपर और रातमें (मर्क, प्रूनस, सिफिलिन)। आँखके सफेद अंशमें नीला घेरा निकल आता है और उपतारका बदरङ्ग हो जाता है। वातकी वजहसे आँखोंका प्रदाह (ऐकोन, ऐण्टि-टार्ट, ब्राई, केल्के, कोचलिया, फाइटो, रस, सिपिया) ; बराबर आँसू निकला करता है। दर्द रहता भी है और नहीं भी रहता है। कृमिकी वजहसे तिर्यक दृष्टि (सिना, साइक्ले, नेट्र-फास) ; ऊपरकी दोनों पलकें कड़ी और हिलायी नहीं जातीं (ऐ-नाई, ऐकोन, मिडोरिन, फाइटो, सिलि, थूजा) और आँखमें छुरी मारनेकी तरह दर्द। पलकें प्रदाहित और जखम-भरी। कभी-कभी पैदा होनेवाला पलकोंका फड़कना (ऐगार, फाइजस, रियुम)।

कान।—स्नायुशूल और सर-दर्दके रोगमें रोगी जोरकी आवाज़ सहन नहीं कर सकता। कानमें मानो दूरसे आयी हुई नाना प्रकारकी ध्वनि घुस रही है (सिना, आर्जेण्ट-नाई, कोका)। मानो कर्णरन्ध्र अलग भावसे कुछ रुक गया है या उसके सामने कुहरेका एक पर्दा पड़ा है। कर्णशूल—दबानेकी तरह दर्द, मानों कानमें एक खोल घुस गयी है। कानमें ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ फड़फड़ कर रहा है (मेग-म्यूर, प्लेट, पल्स)। दाहिने कानका बाहरी भाग खुजलीसे भरा (साइलि, सल्फ, केल्के-फास)। कभी-कभी पैदा होनेवाला बहरापन, मानो श्रवण-पथ रुक गया है।

नाक।—नाकके पिछले छेदसे बहुत ज्यादा बदबूदार श्लेष्मा गिरकर रातमें गला रुक जाना चाहता है (कास्टि, हाइड्रैस्ट, लेके, मर्क-प्रोट) ; निकले

हुए श्लेष्माका रङ्ग कभी सफेद और कभी पीला हुआ करता है। नाकके पिछले भागमें मानो केश रहनेकी वजहसे या ऐसी सुरसुरी मालूम होती है मानो हवा लग रही है। नाकसे पतली सर्दीका स्राव होनेपर शरीरमें सूखा उत्ताप और ज्वरभाव अनुभव होता है, पर प्यास नहीं रहती ; आँखमें पानी भर आता है, सरमें दर्द होता है, स्वर बदल जाता है और हृत्पिण्ड प्रदेशमें बेचैनी मालूम होती है। नाकमें दादकी तरह दाने निकलते हैं और उनकी त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होती है।

मुखमण्डल ।—चेहरा फूला और बिगड़ा, विशेषकर नींद खुलनेके बाद या मलिन और बीमारी बतानेवाला। दोनों आँखें पीली रेखासे घिरी ; लाल और पसीनेसे तर। चेहरेका स्नायुशूल या मुख-शूल रोग अधिकांश स्थानमें बायें पार्श्वमें पैदा होता है (चेलिडो, डाल्का, ग्लोन, लोबेल-इन, फास), आँख, गण्डास्थि और दाँतमें उखाड़ने, शूल बेधने और जलन करनेवाला दर्द ; दर्द कभी-कभी पैदा होता है ; सूर्योदयसे सूर्यास्ततक रहा करता है और दोपहरमें बढ़कर चरम सीमापर पहुँच जाता है ; गाल लाल हो जाते हैं ; ठण्डे, बर्सातके दिनमें और चाय पीनेकी वजहसे ; वृद्धि—हिलनेसे या आवाज़से। आँसू बहना, पलकोंका शूल और हृद्स्पन्दनके साथ ; रोगवाले अंशपर चिकनी सूजन। दोनों ओंठ सूखे, मलिन और फटे। हृत्शूल,—दर्द निचले हनुसे नाक, बगल, चेहरा और गर्दनमें फैल जाया करता है, हिलानेपर बढ़ता है। चबानेके समय निचले जबड़ेमें ऐसा दर्द मानो अपनी जगहसे उखड़ जायगा।

मुख-विवर ।—दाँतमें दर्द,—टपक और उखाड़नेकी तरह ; वृद्धि,—ठण्डे पानीसे (ऐसिट-क्रूड, ग्रैफ, स्टैफ, सल्फ) ; घटना—सोनेपर (ब्राई, मर्क)। सन्ध्याके समय, बहुत तम्बाकूका सेवन करनेपर दाँतका दर्द पैदा हो जाता है (कैमो, इग्ने)। दन्तशूल—क्षय हुए दाँतमें टपक जैसा दर्द, ऐसा दर्द मानो भीतरसे बाहर ढकेल रहा है ; घटना—भोजनके समय (बेल, कैमो, सिकेलि, काफि, प्लैण्टेगो, फास) ; बढ़ना—भोजनके बाद (ऐसिट-क्रूड, बेल, ग्रैफ), ठण्डी हवा तथा पानी लगनेपर और दाँतमें दर्दकी बात याद आनेपर (बैराइ, नक्स, थूजा) ; रातमें इतनी तकलीफ होती है कि रोगी शय्यासे उठ बैठता है (ग्लोन, मैग-कार्ब, कैमो, मर्क, सोरिन, पल्स, रस, रोडो, स्टैफ, सल्फ)। दोनों दन्तपंक्तियोंमें रह-रहकर चिलक मार उठता है, विशेषकर क्षय हुए दाँतमें ; क्षय हुए दाँतके स्नायुमें क्षण-भरके लिये पैदा होनेवाला चिलक

मारनेकी तरह दर्द ; तम्बाकू सेवन करनेपर घट जाता है (डायाडेमा, मर्क, नेट्र-कार्ब, नेट्र-सल्फ)। जीभ फटी (ऐलेन, बैप्टी, हायो, रस) और उसमें ऐसा मालूम होता है, कि खाल उधड़ जायगी। मुँहका स्वाद सड़े पानीकी तरह। जीभके दाहिने पार्श्वमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (ड्रोसेरा); हिलनेपर बढ़ जाता है (जीभके अगले भागमें—ड्रोसेरा)। मुँहकी गन्ध सड़ी (कैमो, कार्बो-वेज, कैलि-फास, लैके, प्लम्ब, मर्क, स्टैनम)। सवेरे नींद खुलने बाद मुख-विवर सूखा मालूम होता है और उसमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द अनुभव हुआ करता है (सवेरे नींद खुलनेपर मुख-विवर सूखा मालूम होता है—ऐमोनियैक, पैरिस, पोडो)। मुख-विवर सूखा मालूम होता है और मुँह बन्द करनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो उसमें आलपीन गड़ रही है (एरम-मैक्यु), साथ ही उसमें जमे गोंदकी तरह और ओकाई पैदा करनेवाली लार भरी रहती है। मुँह और गलेमें श्लेष्मा सञ्चित हुआ करता है, कभी सफेद, कभी पीले रङ्गका।

गलेके भीतर।—जिह्वामूल-पार्श्वके दोनों गह्वरोंसे दिन-भर श्लेष्मा निकला करता है ; यह श्लेष्मा अधिकांश ही नाकके पिछले छेदसे आता है। ऐसा मालूम होता है, कि पाकाशयसे एक आंशिक तरल पदार्थ या कृमि चढ़कर गलेमें आ रही है (मानो गलेमें केशका टुकड़ा अड़ा है—कार्बोन-सल्फ, मानो सूतका टुकड़ा कसा है—सैबाड, वैलि)।

पाकस्थली।— उदरोर्द्ध-प्रदेशमें दबाव मालूम होना, मानो उसमें कोई कड़ा गोला है (फास, रियुमेक्स)। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें मोटी सलाई गड़नेकी तरह दर्द (ऐ-नाई, कार्बो-वेज, काष्टि, कैलि-कार्ब, फास); साँस लेनेपर बढ़ता है ; वक्षमें दबाव मालूम होनेके साथ। तम्बाकूका धुआँ अच्छा नहीं लगता। मिचली और प्यासके साथ राक्षसी भूख। प्रबल प्यासके साथ भूख न रहना। सवेरे कुछ खानेके पहले मिचली पैदा हो जाती है और ऐसा मालूम होता है, मानो पाकाशयसे कुछ गलेमें चढ़ रहा है। घटना—भोजनके बाद ; रोगीका चेहरा दर्द-भरा और मलिन। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें वस्त्र आदि कसकर नहीं पहन सकता ; तकलीफ मालूम होती है।

अन्त्राशय।—(कृमि लक्षण) पेट सट जाता है, इसके साथ ही उद्वेग और श्वासमें कष्ट। उदरमें तेज़ सलाई गड़नेकी तरह दर्द (ब्राई, कोलचि,

साइक्लेम, कैलि-कार्ब)। ऐसा दर्द मानो उदर फट जायगा, विशेषकर सन्ध्याके समय कोमल पाखाना होनेके पहले (आर्स); पाखाना होनेके बाद कुछ घटता है। बायीं कोखमें उदर-वक्ष-व्यवधायक पेशीके पास श्वास रोकनेवाला सुई गड़नेकी तरह दर्द। अन्त्रशूल—नख गड़नेकी तरह दर्द और नाभि-प्रदेशमें कृमिकी वजहसे अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द, सिहरावन, पतले दस्त और बहुत ज्यादा पेशाब। बदबूदार आध्मान वायु निकलना।

मलान्त्र और मल ।—मलान्त्र और मल-मार्गमें खुजली और ऐसा अनुभव होना मानो कीड़े रेंग रहे हैं (इग्ने, इण्डिगो, सल्फ, बेराई, आर्टिका-इयु, फेरम, मर्क, सिपि, सेबा, टियुक्रि)। मलान्त्रसे थक्का-थक्का केचुएकी तरह कृमि और सूत्र-कृमि निकलती है (ऐसेरम, ऐसिक्रप-टि, कैल्के, सिना, आर्टिका-इयु, नेट्र-म्यूर, सैबाड, चेलिडो, फेरम, नेट्र-फास, कैलि-म्यूर, कैल्के-फास, फेरम-फास)। मल—कूथनके साथ आम भरा मल निकलता है। किसी-किसी समय केवल आँव निकलती है। कभी-कभी असंख्य कृमिके साथ थक्का-थक्का मल निकलता है; कभी-कभी आमसे लिपटा भेड़के रोएँकी तरह बहुत कड़ा मल निकलता है। विटपदेशमें मानो नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होना। अंगूठीकी आकृतिके स्थूलान्त्र या मलान्त्रमें कर्कटका अर्बुद (ऐसिड-नाई, ऐल्यूमिन)—असह्य तकलीफ़ (एच० सी० ऐलेन)।

पेशाब ।—मूत्रनलीके सामनेवाले अंशमें जलनके साथ अनजानमें बूंद-बूंद पेशाब निकलता है। मूत्रनलीसे मूत्राशय मुखशायिका ग्रन्थिका रस निकलता है (किमाफिला-ऐम्बे, ऐग्नस, ऐ-फास, सेलिन, सिपिया, साइलि, स्टैफि, थूजा)।

पुं-जननेन्द्रिय ।—अत्यन्त कामोद्दीपक चिन्ताके साथ लिङ्गमें कड़ापन आया करता है, पर रमणकी आकांक्षा नहीं रहती। दाहिने अण्डकोष और शिश्नमें सुई गड़नेकी तरह अनुभव होना और खुजली। लिङ्ग-मुण्डकी एक पार्श्वकी सूजन।

श्वासयन्त्र ।—स्वर-भङ्गके साथ नाकमें सर्दी; नाकसे लगातार श्लेष्मा निकला करता है। आँख चढ़ी, सरमें तेज़ दर्द और रुलाई, सर्दी-मिली खांसी, खाँसी, सूखी, प्रबल—इसके साथ ही कृमिका लक्षण; रोगीको बहुत श्वास-

कष्ट मालूम होता है, विशेषकर सामनेकी ओर झुकनेपर (आर्स, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, स्पञ्जिया)। सूखी खुसखुसी खाँसीकी वजहसे वक्षमें जखम हो जानेकी तरह दर्द मालूम होता है। श्वासाल्पता—विशेषकर बोलनेपर (अधिक बकनेपर—सल्फ), दोनों गाल तथा ओंठ लाल हो उठते हैं। शय्यामें शरीर हिलानेके समय या बाँह ऊँचा उठानेके समय श्वासकष्ट और श्वास रुकनेका भाव पैदा हो जाता है (दोनों बाँह शरीरके जितने ही पास लाये जाते हैं, उतना ही श्वास-कष्ट बढ़ता है—सोरिन); रोगीको दाहिनी करवट या ऊँचे तकियेपर माथा रखकर बाध्य होकर सोना पड़ता है (सिङ्को, कैलि-नाई, स्पञ्जिया)। उद्वेग और श्वास-कष्टके साथ वक्षमें कसावटका भाव, वक्ष मानो जकड़ गया है। वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (ऐकोन, ब्राई, कैलि-कार्ब, नेट्र-मूर, रैनान-बल्बो, स्किला), वृद्धि—शरीर हिलाते ही (ब्राई, कैल्के, रैनान-बल्ब) या श्वास-प्रश्वाससे (बोर, ब्राई, कैलि-कार्ब, सिपि, स्पञ्जि, स्टैनम)। वक्षमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो कुछ टूट गया (कोलचि, नक्स-वोम, पल्स)। वक्षोदक रोगमें रोगी केवल दाहिनी करवट और माथा ऊँचा रखकर सो सकता है। बायें स्तनके नीचे छेदने और उखाड़नेकी तरह दर्द, दर्द शरीरको भेदकर बायें पृष्ठ-फलक और बायें बाँहके ऊपरी भागतक चला जाता है (ऐकोन, ब्रोम, चिनोपोड-ग्लोकाई, कोलचि, नेट्र-सल्फ); वृद्धि—गहरे श्वास-प्रश्वासके समय (ब्राई, कैलि-कार्ब, नेट्र-मूर, पृष्ठ-फलकमें सुई गड़नेकी तरह दर्द—ब्राई, फेरम, हिप, सल्फ, फाइटो, साइलि, मर्क)। हृद्पिण्डके ऊपरी भागमें वेधनेकी तरह दर्द; हृद्पिण्डकी लहरकी तरह गति, पर नाड़ीकी गति सम नहीं रहती। नाड़ीकी गतिके लयमें वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द; वृद्धि—शरीर हिलानेपर; शीतल जलीय वायु लगनेपर। भयङ्कर हृद्स्पन्दन दिखाई देता है और सुन भी पड़ता है (सुन पड़ता है—आर्स, कार्बो-वेज, कैल्मि, स्टैफ, सल्फ, वेरेट); वृद्धि—शरीर हिलाते ही (डिजि, फेरम, नेट्र-मूर, स्टैफ, आर्स, कैल्के, ग्रैफा, आयोड, कैलि-कार्ब); झुककर बैठनेपर (ऐङ्गस्टियु, डिजि, रास); प्रबल ज्वरके समय (कैल्के, काक्यु, इग्ने, फेरम); सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ (आइरिस, सिपि, कैलि-कार्ब); सवेरे उठकर बैठनेपर (टहलनेपर अच्छा रहता है—मैग-मूर); दीर्घश्वास ग्रहण करनेपर (कैक्टस, कैल्मिया) या श्वास रोक रखनेपर और क्रमि रहनेपर (सिना)। स्नायविक हृद्स्पन्दन, नाड़ी सविराम हो जाती है। हृत्पिण्डके

सिकुड़नेके समय उसके शिखर देशमें सों-सों या सोयी हुई बिल्लीके कण्ठ-स्वरकी तरह सुन पड़ता है (कैक्टस)। हृत्पिण्ड मानो काँप रहा है ऐसा अनुभव होना (आर्स, क्यूप्रम, रास ।

प्रत्यङ्गादि ।—मेरुदण्डमें ऐसा दर्द होता है, मानो चोट लगी है, यहाँतक कि स्थिर होकर रहनेपर भी दर्द मालूम होता है (सैबाड, रियुटा)। ग्रीवाकी ग्रन्थियोंमें दर्द, सूजन और कड़ापन आ जाता है (आयोड, साइलि, कोना, लैपिस-ऐल्ब)। ग्रीवापृष्ठमें दर्द, बढ़ना—स्थिर होकर रहनेपर ; घटना शरीर हिलानेपर (रास)। पीठमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द। कभी-कभी श्वास लेनेके समय भी ऐसा ही मालूम होता है (सोरिनम) ऊपरी अङ्गोंका काँपना (आर्जेण्ट-नाइ, मक्स, प्लम्ब)। प्रत्यंग और सन्धिमें कभी-कभी स्पन्दन मालूम होता है (ब्राइ, लिडम), चलनेके समय प्रत्यंङ्ग आदि (दोनों पैर) पर अधिक मालूम होता है। बाँह और अग्रबाँहकी पेशीका स्पन्दन। हाथका रङ्ग सफेद।

सार्वाङ्गिक ।—प्रचण्ड स्नायुशूल—प्रकोप होनेपर रोगवाले अंशमें स्पर्श सहन नहीं होता—इतना दर्द होता है। ऐसा दर्द, मानो रोगवाला अंश दो टुकड़े हो जायगा। ऐसा अनुभव होना कि किसी अंग-विशेषका आयतन बढ़ रहा है ; शरीरके भीतरी अंशमें जगह-जगह ऐसा मालूम होता है, मानो एक गोला पड़ा हुआ है ; साधारणतः मुखमण्डल और नाकके दाहिने पार्श्व पर रोगका आक्रमण होता है, मलके साथ सूत्रकृमिके गुच्छे निकलते हैं ; बहुत ज्यादा पेशाब ; शरीरके बाहरी अंशमें स्पर्शका सहन नहीं होना, किसी अंशको छूनेपर सारे शरीरमें बिजली दौड़ गयी, इस तरहकी सिहरावन मालूम होती है ; नहाने या बदन धोनेसे चिढ़ ; नाड़ी इतनी काँपती है कि उसकी गणना नहीं की जा सकती ; हाथ-पैरोंमें वातकी वजहसे बेधनेकी तरह दर्द मानो उस अंशकी त्वचा नोच फेंकी गयी है (रास) ; आसनसे उठनेके समय शरीर भारी और दर्द भरा मालूम होता है ; जिस अंशको छुआ जाता है, उसमें सर्दी मालूम होती है ; बहुत गड़बड़ी मालूम होना, खासकर सवेरे थोड़ा परिश्रम करते ही ऐसा मालूम होता है, मानो शरीर अवश हो गया है। पाखाना होनेके समय वेग देनेपर मूर्च्छा (पाखाना फिरनेके समय—ऐ-आक्साल, सल्फ ; पाखाना होनेके बाद—पोडो, लाइ, फास, टेरिब, वेरेट)। ठण्डी हवा सहन नहीं होती ; खुली हवामें टहलनेपर बीमारी होती है, अन्य अंगका वात हृत्पिण्डमें चला जाता है।

निद्रा ।—रातमें हाथ-पैर आदि किसी तरह स्थिर नहीं रख सकता। दिनमें, यहाँतक कि सवेरे भी औंघाई आती है। अधिक रात गये नींद आती है (पल्स)। मिले-जुले गड़बड़ सपने देखकर जब जाग उठता है, उस समय बहुत अधिक शारीरिक सुस्ती मालूम होती है और स्वप्नकी बात याद नहीं रहती।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—रोज़ सवेरे एक ही समय शीत पैदा हो जाता है, शीतके बाद उत्ताप और उत्तापके बाद पसीना होता है—इसी तरह पर्यायक्रमसे हुआ करता है, किसी-किसी अंशमें सर्दी और किसी-किसी अंशमें उत्ताप रहता है; शरीर हिलाते ही जाड़ा मालूम होता है, वक्षस्थलमें शीत आरम्भ होकर चारों ओर फैल जाता है। उत्तापावस्था—पीठमें बहुत उत्ताप अनुभव होता है, रातमें रह-रहकर उत्ताप पैदा होता है, पीठमें शीत और मुखमण्डलमें और हाथमें उत्ताप मालूम होता है; रोगी शरीरको ढककर नहीं रख सकता (नेट्र-मूर, पल्स)। रातमें बराबर उत्ताप और बदबूदार पसीना हुआ करता है। हाथपर लसदार पसीना होता है; पसीना ठण्डा।

वृद्धि ।—छूनेपर; शरीर हिलानेपर; जोरसे पैर रखनेपर; शरीर या माथा हिलानेपर; माथा कँपानेपर; आँख हिलानेपर; उठनेपर; झुकनेपर; सामनेकी ओर छाती टेढ़ी करनेपर; भोजनके बाद ही; वेगसे बहती हुई हवा लगनेपर; बर्सातमें; सवेरे नींद खुलनेपर; सवेरे शय्यासे उठनेपर; बैठनेपर; धूम्रपानसे; दोपहरमें और मुँह फाड़नेपर।

उपशम ।—स्थिर बैठनेपर, साँस लेनेके समय, माथा ऊँचा रखनेपर या दाहिनी करवट सोनेपर; उत्ताप लगनेपर या निर्मल वायु लगनेपर (सर-दर्द)।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष ।—अरम, कैम्फ, काक्यु, मर्क, पल्स।

अनुकूल सम्बन्ध ।—ऐकोन (हृत्पिण्डके अन्तर्वेष्टके प्रदाहमें) आर्नि, आर्स, बेल, ब्राई, कैल्के, डिजिट, आइरिस, कैलि-कार्ब, लाई, फास, पल्स, रास, सल्फ, जिङ्कम, आर्निकम पुराना।

तुलनीय ।—बायीं आँखमें दर्द—ऐकोन। बायीं ओरके आँखका स्नायु-शूल—थिरि। सूर्योदयके साथ सर-दर्द—नेट्रम, सैंगु। सर्दी—पल्स। आँखमें दर्द—बेलेड। हृत्पिण्डमें सुई गड़ना—स्पिपर, नेट्रम, कैलि-कार्ब। मुँहका

स्नायुशूल—थूजा। क्रमि—सिना, टियुक्रियम, सिक्करि, स्टैनम। अंगुलीका संकोचन—जेल्स। स्पर्श सहन न होना—कैलि-कार्ब। श्वास-कष्ट—कैक्टस। तम्बाकू खानेके कारण दाँतमें दर्द—प्लैण्टेगो।

सदृश।—ऐकोन, ऐल्यूमेन, ऐ-नाई, स्टैनम, थिरिड, नेट्र-म्यूर, सैङ्गियु, टैबाक, ऐक्टिया, पल्स, सोड्रन, काक्सिनेला, ऐण्टि-क्रूड, एपिस, ब्राई, कैम्फ, कोमोक्लैड, साइक्लेम, लैके, ऐ-कार्बोल, कैक्टस, कैल्मिया, स्पाञ्जिया, टियुक्रि, सिना, स्टैनम, सेबाड, थूजा।

शक्ति।—३रे दशमिकसे १००० शततमिक क्रम। ३० और २०० शततमिक क्रम व्यवहृत होता है।

स्पाइजिलिया मेरिलैण्डिका

(SPIGILIA MARILANDICA)

नामान्तर।—पिङ्क-रूट, वार्मग्रास।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मूलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—एकोन्माद, लगातार बका करना, हँसना, रोना, सरमें चक्कर, आँखको पुतलीका फैलना, आँखमें रक्तकी अधिकता, डेरा देखना प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

स्पाइरिया अल्मेरिया

(SPIRÆA ULMARIA)

दूसरा नाम।—सोडा स्वोट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़से अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—सारे शरीरमें जलन, गलनलीमें और वक्षोस्थिके नीचे जलन, पलकोंका गिर जाना, गलनलीमें सङ्कोचन मालूम होना,

परन्तु निगलनेमें तकलीफ़ न होना, मूत्राशय-मुखशायी ग्रन्थिके बहुतसे रोग, मृगी, आक्षेप, जलातंक प्रभृतिमें इसका व्यवहार होता है।

पागल कुत्ता काटनेपर भी इससे लाभ होता है (लीडम, हाइपेरि)।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

स्पाइरैन्थिस

(SPIRANTHES AUTUMNALIS)

दूसरा नाम।—लेडिस ट्रापस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मूलसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— स्तनमें दर्द ; श्वासमें बदबू ; दग्ध हो जाना या जलना ; सर्दी ; अकौता ; हिस्टीरिया ; मसानेमें दर्द ; कटि-वात ; बहुत अधिक स्तनका दूध ; त्वचाकी बीमारी ; दृष्टिकी अस्पष्टता।

उपयोगिता और आभास।—रमणियोंके स्तनमें दूध पैदा होना बढ़ना ; कमरका वात, वात व्याधि और निद्रालुता, बार-बार जम्हाईके साथ अन्त्र-शूल रोगमें यह विशेष प्रसिद्ध है। ऐकोनाइटकी तरह यह भी ज्वरका ताप दबानेवाली दवा है और इसके द्वारा भी शरीरके किसी विशेष अंशका प्रदाह, उसमें रक्त सञ्चय पैदा हुआ करता है। इसके द्वारा आँख, चिबुक और वक्षमें प्रदाह पैदा होता है और ये अंश सब लाल और गर्म हो जाते हैं। समूचे शरीरकी त्वचा पसीनेसे रहित और गर्म हो जाती है, रोगीको श्वासकष्ट और गर्मी मालूम होती है, उसका कलेजा धड़का करता है (कैल्के, आर्स, काक्यु, स्पाइ) और वह शरीरपर कपड़ा नहीं रखना चाहता। इसके बाद क्रमसे सोचनेकी इच्छा, सरमें चक्कर, कन्धेमें दर्द, आलस्य और थकावट मालूम होना, भूख न लगना, खोपड़ीकी त्वचा और मूर्द्धादेशमें दर्द, मसानेमें तकलीफ़ और भोजनके बाद बहुत तरहकी बीमारियाँ पैदा हो जाया करती हैं। स्तनका दूध और पेशाबका परिमाण पहली अवस्थामें घटकर इसके बाद पहलेकी अपेक्षा बढ़ जाया करता है, अन्त्रशूल और तलपेटसे अन्त्रनालीमें वायुगुल्मका बढ़ना,

तलपेटमें गर्मी मालूम होना, बार-बार डकार, हँसनेकी वजहसे तलपेटमें उत्तापकी अधिकता, झुकनेपर या बाँह उठानेपर मस्तिष्कमें यंत्रणा, सारे शरीरमें धमनीकी धमक, माथेमें ऐसा अनुभव होना, कि बन्धनसे बँधा है, दाँतमें सर्दी मालूम होना, गलेमें कोई दूसरा पदार्थ रहना अनुभव होना, बायीं करवट या चित्त सोनेपर आराम मिलना, रमणके समय योनिमें जलन, खूनकी तरह प्रदरका स्राव इसके प्रधान लक्षण माने जाते हैं।

लक्षणावली

मस्तक।—सरमें चक्कर, बाध्य होकर दीवारपर माथा रख देना पड़ता है (टेबिलपर माथा रखनेपर आराम मालूम होना—सैबाड)। शय्यासे उठनेपर (कार्बो-वेज, फास, पल्स, सैबाड) और सोनेपर (कास्टि, कोना, लैके, पल्स, रास); मस्तिष्ककी बीमारी—झुकनेपर वृद्धि (ऐ-कार्बोल, आयोडोफार्म) या बाँह उठानेपर। ऐसा मालूम होता है कि माथा एक बन्धनसे बँधा है (ऐ-कार्बोल, ऐ-नाई, काक्यु, साइक्लो, जेल, आयोड)। केशकी जड़में दर्द मालूम होना (कोलोसिन्थ, नेट्र-सल्फ, सिनेबार)। केश उठ जाना; ललाट और नासास्थिमें दर्द मालूम होना।

आँख।—आँख ज्योति-भरी या स्थिर, ऊपरकी ओर देखनेपर आँखमें दर्द मालूम होता है (कार्बो-वेज, चेलिडो)। आँख गर्म और प्रदाहित। दृष्टि अस्पष्ट; औंघाईके साथ तिमिर दृष्टि; क्षण-भरमें दृष्टि लोप हो जाना; दूरकी चीजें हिलती मालूम होना (जो चीज़ देखे वही हिलती मालूम हो—ऐसिड-कार्बोल, बैप्टी, युफ्रे)। आँख बन्द करनेपर आगके चक्कर सब दिखाई देते हैं (आँख बन्द करनेपर आगका समुद्र दिखाई देता है—स्पाइजि; खुली आँखमें आगका चक्कर दिखाई देना—ऐनान्थि, पल्स, लैके, कैल्के-फास)।

नाक।—नाकसे थक्का-थक्का खून निकलता है। नाकसे बूंद-बूंद पानी गिरा करता है (एरम-ट्राई, सिपा, इयुफ्रे, ग्रैफ, ऐ-नाई, मर्क, नक्स, प्लैटि, टेलूर)। नाककी जड़में खुजली और घ्राण-शक्ति बहुत तेज़ (ऐ-कार्बोल, अरम, काफि, ग्रैफ, लाई, नक्स, ओपि, फास, सिपि)।

मुखमण्डल आदि।—चेहरा फूला, लाल और गर्म। प्रशान्त, चिन्ताशील भाव। दाँत ठण्डे मालूम होते हैं; मसूढ़ा लाल और जलन-भरा, मुँहसे बदबू निकलती है।

गलेके भीतर ।—ऐसा मालूम होता है, मानो तलपेटसे एक वायु-गुल्म (ऐसाफिट, इग्ने, मस्कस) बढ़कर अन्ननलीमें प्रवेश कर रहा है। गलेमें ऐसा मालूम होता है, कि कुछ अड़ा हुआ है (ऐण्टि-क्रूड, एपिस, लैके, कोना, क्रोटन-टिग, नक्स-मस)। कण्ठमें कफ़ सञ्चयकी वजहसे बार-बार खाँसकर गला साफ़ करनेकी इच्छा होती है (ऐलूमिन, कोरैल-रूब, हिप, कैलि-बाई, लैके, नेट्र-म्यूर, कास्टि)। गलेमें सुरसुरी होकर खाँसी आती है (लैके, रियुमेक्स)। कण्ठमूलमें जलन मालूम होना। अन्ननलीमें अम्ल-सञ्चय और जलन मालूम होना (कैल्के, लाई, नक्स, फास, सिनैप)। अन्ननलीमें आध्मान-वायु अड़ा रहा करता है।

पाकाशय ।—खट्टी चीजें खानेकी इच्छा (कोरैल-रूब, हिप, वेरेट, कैलि-कार्ब, सल्फ़, आर्स, फास)। तलपेटमें उत्ताप पैदा हो जाता है और स्थूलांत्रमें ऐसा दर्द होता है, मानो छुरी बिध रही है; इसके साथ ही बार-बार डकार आया करती है (पेटमें दर्द और गड़गड़ाहट—पल्स)। भोजनके बाद मिचली पैदा हो जाती है (नक्स-वोम, पल्स, सिपिया, काक्यू) और खाये हुए पदार्थ आदिका वमन (इपिक, मिफाइट, फास, सिपि, साइलि, सल्फ़, वेरेट)। ऊपरी पेट फूल उठता है और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता (लैके, मर्क-कोर)। भोजनके बाद ऊपरी पेटमें दर्द हुआ करता है, इसके साथ ही नितम्बमें दर्द ; पाकस्थलीमें उत्ताप पैदा होकर माथेमें चढ़ता है (वक्षमें—ओलियैन ; वक्ष और गलेमें—फास ; मानो गर्म भाफ़ माथेमें चढ़ रही है—लाई ; कण्ठमें —ए-नाई ; वक्ष और मस्तकमें—वैराई-म्यूर ; वायुगुल्मके साथ—वैलि)।

अन्त्राशय और मलान्त्र ।—प्लीहा और यकृत दबानेपर दोनोंमें ही दर्द मालूम होता है। भोजनके बाद उदरमें दर्द, सुस्ती और आध्मान, आँतोंमें आवाज़, कसकर कपड़ा पहनना (नेट्र-म्यूर) पसन्द करता है। अन्त्रशूल,—बड़ी आँतमें बेधनेकी तरह, अस्त्रके आघातकी तरह (जैट्रो, मर्क) असह्य यन्त्रणा (काइक्का, डायस्को, साइक्ल), विशेषकर सीधे होकर बैठनेपर (सिपा, डायस्को, पल्स ; सीधे होकर बैठनेपर घटना—स्पञ्जि) और इसके बाद ही डकार आया करती है ; मलद्वारमें जलन और खुजली। बढ़ना—पाखाना होनेके पहले और बाद ; मलद्वार पिटपिट करता है और खुजली पैदा हो जाती है (इयुफ्रे)। बच्चेके मलमें खट्टी गन्ध (हिप, रियुम, कैल्के, जैलापा, मर्क सल्फ़)।

पेशाब ।—मसानेमें रातमें सट जानेकी तरह (ऐ-नाई, ऐगार) या शूलकी तरह दर्द (ओसिम, पैरिइरा, लाई, सार्सा, नक्स-वोम) की वजहसे रोगी सोये रहनेपर उठ बैठता है, बैठे रहनेपर लेट जाता है, इसी ढङ्गकी बेचैनी प्रकट करता है (डायस्को, साइमम, पैरिइरा); कभी-कभी उसमें जलन हुआ करती है (कैन्थ, कैलि-आयोड, कोलोसिन्थ); तकलीफके कारण रोगी झुक नहीं सकता (सिङ्कोना—सामनेकी ओर टेढ़े होनेपर तकलीफ़ बढ़ जाती है—डायस्को); वृद्धि—सीढ़ी चढ़नेके समय (उठकर टहलनेपर—नक्स-वोम); घटना—चित्त सोनेपर (नक्स-वोम)। पेशाब करनेके समय मूत्राशयमें दर्द (सैंन्सिनेला), नींद खुलनेपर मूत्राशयमें जलन और दर्द (बार्बे, नक्स)। पेशाब जल्दी सड़ जाता है और बदबू हो जाती है (अरम, ऐ-फास); तली लाल रङ्गकी, गोंदकी तरह (आर्स-हाइड्रियेडिकम)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—रमणके समय योनिमें बहुत जलन हुआ करती है (कैलि-बाई, क्रियो, लाई, नेट्र-म्यू, सल्फ)। योनिद्वार लाल और खुजलाने वाला (क्रियो, लाई)। योनि-मार्ग सूखा और जलन भरा (लाई, नेट्र-म्यू)। खून मिला प्रदर-स्राव (ऐ-नाई, सिङ्को, काक्यु, सिपि)। स्तनमें बहुत ज्यादा दूधका सञ्चय होना विशेषकर बायें स्तनमें। स्तन उठानेपर उसमें बहुत दर्द मालूम होना।

सार्वाङ्गिक ।—फुस्फुसावरणमें और पंजरेके भीतरी प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, विशेषकर बायें पार्श्वमें (ब्राई, कैलि-कार्ब, रैनान-बल्व), कटिवातकी वजहसे रोगी चल नहीं सकता (बैप्टी मिनियेन)। समूची देहमें धामनिक स्पन्दन (ग्लोन, स्पाई, वेरेट-विर)। बाईं करवट सोना पसन्द करता है (ऐमोन-म्यू, मैग-म्यू, मर्क, नक्स-वोम, स्पिञ्जिया)। पुट्ठेमें और गलेकी सिकुड़ी त्वचाके बीचमें ऐसे छाले सब निकलते हैं, मानो जल गया है और उनमेंसे पीवकी तरह रस निकला करता है, अग्रबाहुमें एकाएक दर्द होकर वह सुन्न हो जाता है (नेफेलियम)। झुकनेपर कन्धेमें वातकी वजहसे दर्द बढ़ जाया करता है।

वृद्धि ।—छूनेपर ; झुकनेपर ; बाँह उठानेपर ; हँसनेपर।

उपशम ।—चित्त होकर या बायाँ करवट सोनेपर।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐसिड-कार्बोल, एरम-ट्राई, सिपा, लैके, डायस्को, सिङ्को, नैफैल, नक्स-वोम, क्रियो, मैंन्सिनेला ।

तुलनीय ।—पसीना और स्लैष्मिक झिल्ली—एरम । योनिपाश्वका सूखापन—नेट्रम-मूर । दर्दके बादका सुन्नपन—नैफैलियम ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३रा दशमिक क्रम ।

स्पंजिया टोस्टा

(SPONGIA TOSTA)

दूसरा नाम और प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—रूम देशके स्पंजको जलाकर उसके विचूर्णसे यह तैयार होता है । २० ग्रेनके साथ ४०० बूंद सुरासार मिलाकर टिंचर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—धमनीका अर्बुद, हृत्शूल ; दमा ; निस्पन्दन वायु ; कब्जियत ; खाँसी ; काली खाँसी ; दो देखना ; मूर्च्छा ; गलगण्ड, हृत्पिण्डका कड़ापन ; आँत उतरना ; स्वरनली-प्रदाह ; आमवातिक ज्वर ; आमवात ; मुष्क-प्रदाह ; क्षय-कास ; शिराका फूलना ; कुकुर खाँसी ; कृमि इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—गोरा रंग, शिथिल मांस, शिशु और रमणियोंके स्वर और श्वास-मार्गकी बहुत-सी बीमारियोंमें यह विशेष लाभदायक है । वायु और स्वरनली बहुत सूखी और नीरस तथा संकुचित मालूम होती है तथा श्वास-कष्ट मालूम हुआ करता है । लसिका ग्रन्थियाँ, सब द्विदल-ग्रन्थि तथा अण्डकोष कड़ा हो जाता है और फूल उठता है ; इसीलिये, गलगण्ड, एकशिरा और हृत्पिण्डकी नाना प्रकारकी बीमारियोंमें इसके प्रयोगसे लाभ होता है । नीचे इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण लिखे जाते हैं :—(१) सोया-सोया रोगी एकाएक चौंककर जाग पड़ता है और उसे ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी साँस रुक जाना चाहती है ; साँस लेने और छोड़नेमें सों-सों शब्द होता है, मानो स्पंजके भीतरसे साँस चल रही है । (२) मानसिक उद्वेग पैदा होते ही खाँसी बढ़ने लगती है । (३) स्वरनलीमें मानो एक खोल (गोला) अड़ी है (लैकेसिस) और उससे वह रुक रही है ।

(४) रोगी माथा नीचाकर सो नहीं सकता। (५) सोने बाद लक्षण बढ़ जाते हैं या निद्रित अवस्थामें ही लक्षणोंकी वृद्धि आरम्भ हो जाती है और इसके साथ ही रोगी जाग उठता है (लेके)। (६) कण्ठ, स्वरनली और वायुनली शाखा वगैरह श्वास-प्रश्वासके सभी पथ सूखे नीरस हो जाते हैं; कण्ठनलीमें स्पर्श सहन नहीं होता और उसमें सुरसुरी हुआ करती है। (७) खाँसी,—सूखी, घं-घं और काली खाँसीकी तरह श्वास-रोध करनेवाली, समूचा वायु-मार्ग सूखा, इसलिये, श्लेष्माकी घर-घर आवाज़ बिलकुल ही सुन नहीं पड़ती; प्रत्येक बार खाँसीके समय मानो आरीसे तख़्ता चीरा जाता है, ऐसी आवाज़ होती है; वृद्धि—मिठाई खानेपर; ठण्डा पानी आदि पीनेपर, माथा नीचाकर सोने, सूखी, ठण्डी हवा लगने, पढ़ने, पीने, बोलने और निगलनेके समय; घटना—गर्म चीज पीने या भोजन करनेपर। (८) घुंडी या काली खाँसी,—रोगी बहुत उद्विग्न हो उठता है, वायुनलीमें साँय-साँय आवाज़ हुआ करती है; वृद्धि—श्वास-ग्रहण करनेके समय और आधी रातके कुछ पहले। (९) आधी रातके कुछ पहले रोगी खाँसता-खाँसता जाग उठता है; खाँसीके बाद गलेमें जलन हुआ करती है; बलगम पीला, जमे गोंदकी तरह, डोरीकी तरह और नमकीन स्वाद। (१०) कलेजा धड़कना—भयङ्कर, रोगी मानो बहुत हाँफता है, इस भावसे श्वास-प्रश्वास चला करता है और वक्षमें बहुत दर्द मालूम होता है; हृत्पिण्डकी द्वारावरोधिनी पेशीमें शान्ति न रहना—स्त्रियोंकी ऋतुके पहले और समय। (११) हृत्शूल; हृत्पिण्ड मानो जकड़ गया है, ऐसा दर्द; सुस्ती, साँस रुकनेका उपक्रम, उद्वेग और पसीना निकला करता है; वृद्धि—आधी रातके बाद। (१२) रेतोरज्जु और अण्डकोष फूले, पत्थरकी तरह कड़े और उनमें ऐसा दर्द मानो किसीने दबा दिया है। प्रमेहका स्राव रुकने या एकशिरा (आवमजूल) का ठीक-ठीक इलाज न होनेपर।

लक्षणावली

मन।—महान आनन्द और गाना गानेकी इच्छा (क्रोकस, हायो, नेट्र-मूर, प्लेट), इसके बाद ही अत्यन्त अन्यमनस्क भाव और किसी तरहका परिश्रम करनेसे अनिच्छा; सहजमें कोई विषय हृदयंगम नहीं कर सकता (केल्के, कैमो, कोना, नक्स-वोम, रस)। कभी-कभी आनन्द, कभी रोना

और कभी-कभी चिड़चिड़ा भाव और कलह-प्रियता प्रकट करता है। रह रहकर रोगी महान उद्विग्न हो उठता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना—गिर जानेकी सम्भावना (ग्लोन, फेलेन, पल्स, नेट्र-मूर, रस, साइलि), रातमें नींद खुलनेपर सरमें चक्कर आना और मिचली (ऐमोन-कार्ब); ऐसा मालूम होता है, मानो माथा बगलकी ओर ढुलक पड़ेगा। वायु सेवन करनेमें, गर्म घरमें प्रवेश करनेपर दाहिने पार्श्वमें सर-दर्द मालूम होता है (स्पाइजि)। बाईं कनपटीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (स्पाइजि) ललाटतक चला जाता है। किसी चीजकी ओर टकटकी लगाकर देखनेपर सर-दर्द होता है (अरम, इग्ने, नेट्र-म्यूर, पल्स, रियुटा, स्पाइजि) और आँखसे आँसू बहा करता है (लैके, फाइजस, स्ट्रैमोन)। मूर्द्धा-देश और ललाटमें इस तरहका दर्द हुआ करता है, मानो खोपड़ी फट जायगी, विशेषकर खाँसनेपर (ब्राई, कैप्सि, नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम, फास, ऐसिड-फास)। माथेके दाहिने ऊपरी स्थानके भीतरसे बाहरकी ओर दबावकी तरह दर्द; वृद्धि—बैठनेकी अवस्थामें (सिङ्को, फास, स्टैफाई); गर्म घरमें प्रवेश करनेपर (सिपा, प्लैट, पल्स, स्पाइजि) और किसी ओर टकटकी लगाकर देखनेपर घटना—लम्बे-लम्बे भावसे चित्त होकर सोनेपर (सिपिया)। लेटे रहनेकी अवस्थामें रोगीको माथेमें प्रबल टपक मालूम होती है। जिस कानको दबाकर सोता है, उसी कानके चारों ओर अधिक टपक या स्पन्दन मालूम होता है। गर्दन अकड़ी और माथा पीछेकी ओर टेढ़ा हो जाया करता है—काली खाँसी रोगमें (ऐकोन, हिप, कैलि-बाई, ऐण्टि-टार्ट; धनुष्टंकारमें—साइक्यू, मस्कस, ओपियम; श्वास रोगाधिकारमें—सिङ्को; गलनलीके उपझिल्ली प्रदाहमें साइक्य, डिजिट, हेलिबो)। सरमें रक्त-सञ्चयकी अधिकता और ललाटके पीछे दबाव और टपक; चेहरा लाल और उद्वेग बतानेवाला तथा बेचैन नींद; घटना—लम्बे-लम्बे देह फैलाकर सोनेपर। मूर्द्धादेशके केश सब ऐसे मालूम होते हैं, मानो खिंच रहे हैं (ऐसिड-म्यूर, ऐको, आर्निका, चेलिडो, डालका; सरके पिछले भागमें अधिक मालूम होते हैं--लैचनेन्थिस)। माथेकी त्वचामें बहुत खुजली।

आँख।—बाईं भौंपर पीले रङ्गकी पपड़ी जमनेवाली फुन्सी पैदा होती है और उसे छूनेपर बहुत दर्द हुआ करता है। दो देखना,—सोनेपर, फिर

नहीं रहता। आँखमें दबाव और डङ्क मारनेकी तरह दर्द (एपिस, कैल्के, कास्टि, सिपा, क्रोटोन, केलि-कार्ब, स्पाई ; दबाव मालूम होना—ब्राई, कैमो, नेट्र-म्यूर, रैनान-बल्बो, सेनेगा)। आँख ठण्डी मालूम होती है (आर्जेण्ट-नाई, कैल्के-फास, कोना, युफ्रे, लाई, फाइटो, प्लैट)। किसी चीज़की ओर टकटकी लगाकर देखनेपर सर-दर्द और आँखसे आँसूका बहा करता है (चिनिन-आर्स, केलि-आयोड, स्ट्रैमोन, इग्ने, पल्स)। आँख लाल हो उठती है। आँसू बहा करते हैं और आँखमें जलन हुआ करती है, चक्षु-गोलक बाहर निकला हुआ (ब्रोम, कैल्के, ऐसिड-फ्लु, ग्लोन, आयोड, लैपिस-ऐल, नेट्र-म्यूर, थाइरायडिन, फेरम-फास) और टकटकी (ब्रोम, आयोड, हायो, ओपि, सिकेलि, स्ट्रैमो, ग्लोन)।

कान।—अच्छी तरह सुन नहीं पड़ता। कानमें रक्त-सञ्चय और कर्ण-विवरमें जलन हुआ करती है। बाहरी रंध्रमें पीब पैदा होना।

नाक।—छींक आनेपर नाकसे खूनका स्राव। नयी सर्दीमें पानीकी तरह स्राव (आर्स, सिपा, इयुफ्रे, केलि-आयाड, मर्क, नेट्रम-म्यूर, ऐसिड-नाई, नक्स, पल्स, सैबाड, ऐलूर)—स्वरभङ्ग (कार्बो-वेज, कास्टि, लैके, फास) और काली खाँसीके साथ, सूखी ठण्डी हवा लगनेके कारण (ऐकोन, हिप)। सूखी सर्दी या नाक रुकना (एरम-ट्राई, लाई, नक्स, सैम्बु, सिपिया, सिलि)।

मुखमण्डल।—चेहरा फूला, लाल आभा लिये नीला और उद्वेग प्रकट करनेवाला। चेहरेमें उत्ताप पैदा हो जाता है (ब्राई, सिपा, कैमो, साइना, पल्स। निचले हनुके नीचेवाली बाईं ओरकी ग्रन्थियाँ सब फूली और छूनेपर उनमें दर्द हुआ करता है (एरम-ट्राई, ब्रोम, कोरैल-रूब, बेराइ-कार्ब, बेराइ-म्यूर)। मुखमण्डलके एक पार्श्वमें उत्ताप मालूम होता है, उसके विषयमें सोचते ही फिरसे पैदा हो जाता है। गालमें खुजली और डङ्क मारनेकी तरह दर्द (इयुफोर्ब, एपिस, आर्स, केलि-कार्ब, कोलो)। ऊपरी हनुके बाएँ पार्श्वको भेदकर सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है (कैमो, सैङ्गियु), सन्ध्याके बाद भोजन करनेपर बाईं हनुसन्धिसे गालतक ऐंठन या जकड़ जानेकी तरह दर्द (ओलियेन, प्लैट)। चेहरा म्लान और आँख गड़हेमें धँसी या चेहरा लाल और उद्वेग प्रकट करनेवाला। दोनों गाल फूले (बेल, कैमो, मर्क, गुयायेक, नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-म्यूर ; दाँतकी दर्दकी वजहसे सूजन—कैमो, लैके, मर्क, सिपा, इयुफोर्ब, केलि-कार्ब, मैग-कार्ब, स्पाइजि)। चेहरेपर ठण्डा पसीना

निकलना (आर्स, कैक्ट, कैम्फो, कार्बो-वेज, सिना, मर्क-कोर, वेरेट, सैम्ब., टैबाक ; श्वास रोगमें—आर्स, डिजिट ; डिम्बाधार या उपझिल्ली प्रदाह रोगमें—मर्क-सायानेटस ; श्वासरोधके लक्षणके साथ—कैक्ट ; वमनके समय—कैम्फो, लेबेल, टैबाक, वेरेट ; अन्त्रशूल रोगमें—आर्स, कार्बो-वेज, काक्यु, हेलिबो, नक्स-वोम ; खाने-पीने बाद—कैमो, नेट्र-सल्फ ; भोजनके समय--इग्ने, नेट्र-म्यूर ; ज्वर रोगमें लगातार ठण्डा पसीना होना--आर्स, कैल्के, कोना, हाइड्रैस्ट, मर्क ; हनुके नीचेकी ग्रन्थियाँ सब फूलीं और उनके ऊपरकी त्वचामें खींचन मालूम होना—कोना)।

मुख-विवर।—चबानेके समय दाँतकी जड़ शिथिल और दाँत उठे मालूम होते हैं, दाँतमें तीता और मुँहमें मीठा स्वाद अनुभव होता है। बोलनेमें तकलीफ़ होती है (लैके, ओपियम, स्ट्रैमोन)। मुख-विवर और जीभपर दाने, दानोंमें जलन मालूम होती है और डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है (कैलि-आयोड, कैप्स, कैलि-कार्ब) और इसी वजहसे रोगी कोई खानेकी चीज चबा नहीं सकता (सिनैप-नाई)। काली खाँसी रोगमें मुँह सूखा, नीरस और जलन-भरा।

गलेके भीतर।—द्विदल ग्रन्थि कड़ी और फूलकर (कोना, आयोड) चिबुकके समान हो जाती है ; रातमें गला या श्वास रुकना चाहता है, गलेमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और उदरमें स्पर्शका सहन न होना या बहुत दर्दके साथ घरघर आवाज़ करनेवाली खाँसी आया करती है ; द्विदल ग्रन्थि फूली (कैलि-आयोड, कार्बो-ऐन, थाइरायडिनम)। कण्ठमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द (ऐ-नाइट्रिक, एपिस)। कण्ठके भीतर क्षय हुई त्वचाकी तरह सूजन और रुखड़ापन। गलेका ज़खम—मिठाई खानेपर बढ़ जाता है। (प्याज खानेपर बढ़ना—ऐल्यूमिन)। गलेके भीतरका दर्द आदि चित सोनेपर घट जाता है। भीतर कण्ठमूलमें और बाहर गलगण्डके नीचेवाले अंशमें इस ढङ्गका दर्द मानो आलपीन गड़ रही है। निगलनेपर—गलेमें सुई गड़नेकी तरह दर्दका आराम होना ; ऐसा दर्द मानो बहुत जकड़ या चिपक गया है ; गलगण्डमें दर्द और ऐसा अनुभव होना कि घेघेमें कुछ चल रहा है, गलेमें मानो आलपीन बिध रही है और यह अनुभूति कानकी ओर चली जाती है। कण्ठनालीका बाहरी भाग फूला और इसीलिये श्वासरोध होनेका उपक्रम होनेकी तरह मालूम होना। कण्ठका भीतरी भाग फूला और लाल (हैमा)।

पाकाशय और अन्त्राशय ।—बहुत अधिक भूख और प्यास, किसी तरह नहीं जाती (आर्स, कैनाब, चायना, आयोड, सिना, लाई, ओलियेन, सेबाड, वेरेट, ऐब्रोट), गर्म चीजें खाने-पीनेपर खाँसी घटती है (गर्म चीजें खानेपर खाँसीका घटना—कैलि-कार्ब, फेरम ; गर्म पानीय पीनेपर—ब्रोम, ऐलूम, लाई, इयुपियोन, ब्राई, नक्स, रास, सिलि, वेरेट)। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें ऐसा अनुभव होना मानो जखम हो गया है (ऐनाग्थि), चित हुए बिना सो नहीं सकता। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें ऐसा मालूम होता है, मानो सभी चीजें कलाबाजी खाती हुई ऊपर आ रही है और कण्ठमें आकर रोगीमें श्वासकष्ट पैदा कराती है। (वक्षके भीतरतक चढ़ती है—ऐगार)। पाकस्थलीपर कपड़े आदि कसकर नहीं पहन सकता (ब्राई, कैल्के, क्रोटेलस, लाई, ऐ-फास, लेके, नक्स-वोम)। पाकाशय प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (गैम्बो, इग्ने, कैलि-कार्ब, सिपिया), ऐसा मालूम होना कि पाकस्थली शिथिल हो गयी है और डोल रही है (ऐगार, कैल्के-फास, कार्बो-वेज, इयुफोर्ब, इग्ने, इपिक, स्टैफाई, टैबाक) और मानो खुली हुई है, खासकर क्रूप खाँसी रोगमें। आँखमें दबाव मालूम होना। उदरमें आँतोंकी आवाज़, हुड़हुड़ गुड़गुड़ शब्द हुआ करता है, विशेषकर सवेरे और सन्ध्याके समय (सवेरे—नक्स, सन्ध्याके समय—सेबाई, टेरिब, जिङ्कम)। श्वास ग्रहण करनेके समय अन्त्राशयकी पेशियाँ सब भयङ्कर भावसे हिला करती हैं। अन्त्रमण्डली उलटकर ऊपरकी ओर खिंचनेकी वजहसे खिमेदिकामें जाकर लगती है। बायीं ओरके पुट्ठेकी ग्रन्थिका फूलना और प्रदाह (अरम-मूर, कार्बो-ऐन)। मलनालीमें खुजली पैदा हो जाती है, सुरसुरी और कुरकुराहट होती है, मलके साथ सूतकी तरह क्रमि निकलती है (ऐस्क्लिप-टियु, सिना, स्पाइजि, स्टैनम)।

पेशाब ।—बार-बार पेशाबका वेग, पर पेशाब बहुत थोड़ा होता है। मूत्र फेन-भरा, तली गाढ़ी, धुमैली, सफेद और पीली, आप-ही-आप पेशाब होता है (कास्टि)।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—एकशिरा ; अण्डकोष फूला और कड़ा और उसमें ऐसा दर्द मानो मरोड़ खाता है या ऐंठता है और ऊपरकी ओर रज्जुमें सुई गड़नेकी तरह मालूम होता है ; शय्या या वस्त्रको किसी तरह हिलानेमें उसमें धक-धक हुआ करता है ; कुचिकित्सित एकशिरा या असमयमें प्रमेहका स्राव

रुकनेकी वजहसे। फेरिङ्गटनके मतसे एकशिरा रोगमें सबसे पहले "जेलसिमियम" उसके बाद "पल्सेटिला" और उसके बाद "हैमामिलिस" (बाहरी और भीतरी प्रयोग—इससे बहुत अधिक स्पर्शनीयता घट जाती है) और यदि बाकी प्रमेह स्राव पीली आभा लिये हो तो "मर्क-सोल" और मरोड़ या ऐंठनकी तरह दर्द हो तथा कड़ापन रहे तो स्पञ्जियाका प्रयोग करना चाहिये। दर्दके साथ अण्डकोषकी सूजन और उसमें दबावकी तरह दर्द (क्लिमैट, पोडो) ऐसा दर्द मानो मरोड़ खाता है या उलटता-पुलटता है (ऐकोन, आर्जेण्ट-नाई, रोडो)। अण्डकोषसे कोषरज्जु में सुई गड़नेकी तरह दर्द पैदा होना (क्लिमैट)। कोषरज्जु फूला और दर्द-भरा (कैलि-कार्ब, फास, सार्सा)।

श्वास-यन्त्र।—कण्ठ-स्वर रुखड़ा (ड्रोसेरा, ग्रैफ) या क्षीण, ऐसा अनुभव होना मानो कण्ठ रुका जा रहा है; श्वास लेनेके समय साँय-साँय शब्द। बोलने या गानेके समय आवाज़ रुकड़ी हो जाती है (आर्जेण्ट-नाई, फास)। स्वरनलीमें ऐसा मालूम होता है मानो एक खोल अड़ी है। काली खाँसी या स्वरतन्तुका आक्षेप; एकाएक स्वरनली रुक जानेके कारण श्वास-प्रश्वासकी क्रिया नहीं हो सकती और रोगी नीला हो जाता है (बेल, ब्रोम, कोरैल, कूप्रम, जेल, इग्ने, गुयारिया, मस्कस, ऐ-हाइड्रो, कैलि-ब्रोम, लैके, सैम्ब्)। स्वरनली—स्पर्श सहन न होना और गर्दन घुमानेपर उसमें दर्द मालूम होना (लैके, ऐकोन, ग्रैफ, हिप), बोलनेपर भी स्वरनलीमें तकलीफ़ अनुभव होना (बैप्टि)। स्वरनली वायुनलीभुज प्रदाह। रह-रहकर वायुनलीभुजमें घर-घर श्लेष्माकी आवाज़ सुन पड़ती है (ऐण्टि-टार्ट, आर्स, ऐमोन-कार्ब, कैमो, इपिक, फास) और कभी-कभी वायुनलीमें श्लेष्माकी अधिकताकी वजहसे वायुनली रुक जाना चाहती है। निद्रित अवस्थामें वायुनलीमें एकाएक संकोचनकी वजहसे नींद खुल जाती है और रोगी चौंककर जाग पड़ता है। क्रूप खाँसी और काली खाँसी रोगमें श्वास लेने और छोड़नेके समय विशेषकर श्वास लेनेके समय—निःश्वास त्यागनेके समय (ऐकोन) साँय-साँय शब्द होता है और उदरकी पेशियाँ सब भयंकर रूपसे हिल उठती हैं। खाँसीके पहले या बाद साँय-साँय खस-खस शब्द होता है (ऐण्टि-टार्ट, ब्रोम, डा० हेरिङ्गके मतसे घुंड़ी खाँसीमें ऐकोन, ब्रोम, हिप, आयोड, फास और स्पञ्जियासे लाभ न होनेपर "केयोलिन" का प्रयोग करना चाहिये)। श्वासकृच्छ्र—सोनेपर बहुत भयंकर आकार धारण करता है (आर्स, कैलि-नाई, लैके, नैजा, फास), विशेषकर

माथा झुकाकर (केलि-बाई, स्पाई) किसी तरहका भी परिश्रम करनेपर वक्षमें बेहद कमजोरी मालूम होती है। यहाँतक कि रोगीको बोलनेमें भी बहुत तकलीफ होती है (काम्फि, ड्रोसे, हिप, स्टैनम इत्यादि); एकाएक बहुत सुस्ती पैदा हो जाना, चलते-चलते ढलमल करता है और ऐसा मालूम होता है, मानो समूचा रक्त वक्षमें इकट्ठा हो रहा है और कलेजा फट जाना चाहता है; बार-बार ओकाई आनेपर फेनभरा, सफेद रङ्गका बलगम निकलता है; एक घण्टे बाद थोड़ा भी और खाँसनेपर धुमैले रङ्गका थक्का-थक्का श्लेष्मा निकलता है; सामनेकी ओर झुककर बैठनेपर आराम मालूम होता है (आर्स. केलि-बाई, कार्ब—वृद्धि—स्पाइजि)। श्वास-प्रश्वासके समय दिल और गलेकी ग्रन्थि-प्रदेशमें ऐसा मालूम होता है, मानो वायु जोरसे धक्का देकर जा-आ रहा है। वायुनली भुजगत सर्दी, साँय-साँय शब्द करनेवाली और श्वासरंध्र मिली खाँसी; घटना—खाने-पीने बाद, वृद्धि—ठण्डी हवा लगनेपर। किसी वायुनलीभुज-प्रदाहमें, बहुत ज्यादा बलगम निकलता है और प्रकोप पैदा हो जाया करता है; वृद्धि—माथा झुकाक रसोने और गर्म घरमें रहनेके समय; घटना—भोजनके बाद; मानो एक टुकड़ा सूखे स्पञ्जके भीतरसे श्वास-प्रश्वासकी क्रिया हो रही है। श्वास रोग सर्दी लगनेके कारण पैदा हुआ या दमा—सी सकता है (एपिस, आर्स, लैक-कैन, लैके, लाई, मर्क, नक्स, पल्स, सिपि, स्टैनम, सल्फ); वक्षके श्लेष्माकी सों-सों आवाज़—ऋतुस्राव होनेके बाद। सोया सोया बहुत डरकर जाग उठता है, मानो उसकी खाँस रुक जाना चाहती थी (ग्रण्डोलिया, लैकेसिस, ओपि, क्लोरम, जेल्स, लैक-कैन)। काली खाँसी—उद्वेगजनक घड़-घड़ शब्द करनेवाला श्वास-प्रश्वास। वृद्धि—श्वास लेनेके समय (ऐकोन) और आधी रातके पहले (सवेरेके पहले—हिप)।

खाँसी।—खाँसी सूखी, घं-घं आवाज़वाली काली खाँसी; साँय-साँय खसखस या काँसेकी तरह आवाज करनेवाली। सम्पूर्ण वायु-मार्गमें जरा भी रस नहीं रहता, सूखकर काठके टुकड़ेकी तरह हो जाता है और प्रत्येक बार खाँसनेके समय ऐसी आवाज होती है, मानो आरेसे तख़्ता चीरा जा रहा है; वृद्धि—मिठाई खाने बाद (मिडोरिन, जिंकम); ठण्डा पानीय पीनेपर (साइलि, थूजा, क्यूप्रम, लाई, स्क्विला); धूम्रपानके बाद (नक्स-वोम, ऐकोन, इयुफ्रे, कोलो, हेग्निचो, हिप, लैके), सर झुकाकर सोनेपर (चायना, हायो, सेम्बु, सैंगुई); गर्म घरमें रहनेके समय (कक्कस-कैक्ट, सिपिया, ब्राई, ड्रोसेरा, इपिक,

साई, नेट्र-कार्ब)। सूखी ठण्डी हवा लगनेपर (ऐकोन, कैप्स, कैमो, हिप), पढ़ने, गाने या बोलनेपर (मैङ्ग, मिफाइट, फास, स्टैनम, ड्रोसेरा) और निगलनेके समय (आर्स, ब्राई, इयुपियोन, लाई, रस, साइलि)। पुरानी खाँसी—प्रकोप बहुत प्रबल हुआ करता है; खाँसते-खाँसते जमी हुई कड़ी श्लेष्माकी गोली जैसी निकलती है (ऐगार, आर्ज-नाई, कक्कस-कैक्ट, साइलि, स्टैनम, मिडोरिन)। फेफड़ेके प्रदाहकी आरोग्योन्मुख अवस्थामें बहुत ज्यादा बलगम निकलता है (चेलिडो, लाई) और रोगी सो नहीं सकता, केवल बाईं करवट या चित्त होकर सो सकता है (सल्फ)। श्लेष्मा परिमाणमें थोड़ा, पीले रङ्गका, कड़ा और कुछ खट्टे स्वादवाला (कड़ा—ऐमोनियैक, कोना, मैङ्ग, स्ट्रान ; खट्टा स्वाद—स्टैनम, कैल्के, ऐ-नाई, केलि-कार्ब)। सवेरे कुछ पतला होता है, पर निगल जाना पड़ता है। खाँसनेके समय वक्ष और वायुनलीभुजमें जलन और जखमकी तरह और गलेमें खाल उधड़ जानेकी तरह अनुभव। क्रुप-खाँसी, आधी रातके समय और ठण्डी हवा लगनेपर लक्षण आदि बढ़ जाते हैं।

वक्ष।—जरा भी देह हिलने या सामान्य परिश्रम करनेसे ही वक्षमें अधिक रक्त सञ्चय हो जाता है। श्वास-कष्ट, मिचली और ऐसी सुस्ती मालूम होती है, मानो बेहोशी आ जायगी। क्षयकी गोटियाँ निकलनेकी तैयारी,—बायें फेफड़ेके शिखर-देशमें आरम्भ होता है, फेफड़ेके प्रदाहकी बीमारीमें ऐसा दर्द मानो वक्ष और स्वरनली जकड़ गयी है। वक्षके दोनों पार्श्वमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम हुआ करता है।

हृत्पिण्ड।—हृत्शूल, कलेजा जकड़ जाता है; उत्ताप अनुभूत होता है, श्वास रुक जाना चाहता है, रोगी सुस्त हो पड़ता है, पसीना हुआ करता है और रोगी बहुत शङ्कित हो जाता है। वृद्धि—आधी रातके बाद। प्रधान और मूल धमनीकी सूजन (कैक्ट, कैल्के, केलि-आयोड, लैके, रैनान,—स्लिक्करेट) की वजहसे रह रहकर प्रबल सूखी खाँसी पैदा होती है; वृद्धि,—सोनेपर। हृत्द्वारावरोधिनी पेशीमें शक्ति न रहनेकी वजहसे कलेजेमें बेहद धड़कन, दर्द, दमाकी तरह श्वास-प्रश्वास; आधी रातके कुछ ही बाद, श्वास रुकनेका लक्षण होनेकी वजहसे रोगी महान शङ्कित भावसे जाग उठता है, तेज खाँसी आती है और रोगी बहुत डर उठता है; (आर्स, कैल्के, टैबाक); स्त्रियोंको (ऋतुके पहले या समय प्रकोप पैदा होता है), पहले—नेट्र-म्यूर, सिपिया; समय (इग्ने, नेट्र-म्यूर, फास, साइलि, स्पाइजि, टैबाक)। कभी-कभी हृत्पिण्डका

वाताश्रित अन्त्रावरण-प्रदाह (अरम-म्यूर, हायो, कैलि-बाई, कैल्मिया, फास, सेब्बुल) ; प्रत्येक स्पन्दनमें हृत्पिण्डमें स्पष्ट सों-सों आवाज़ सुन पड़ती है। हृद्‌प्रदेशमें डङ्क मारनेकी तरह और दबावकी तरह दर्द, नाड़ी पुष्ट, कड़ी और गति तेज़ (एकोन, बेल, वेरेट-विर)।

गर्दन और पीठ।—गर्दन और पीठकी पेशियोंमें दर्द और अकड़न हो जाती है। दाहिनी ओर माथा घुमानेपर गलेके बाएँ पार्श्वमें बहुत दर्द और अकड़न मालूम होती है (लीरोसि, साइलि, एक्टिया), पीठमें सर्दी मालूम होना, अङ्गीठी या चूल्हेकी गर्मीसे भी यह सर्दी नहीं जाती। गलगण्ड,—कड़ा, बड़ा और उसमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, उपत्यकाओंमें रहनेवालोंको अकसर ऐसा हो जाया करता है। निगलनेके समय दर्द और दूसरे समय श्वासमें तकलीफ़ मालूम होती है। ऋतुके कुछ ही पहले नितम्बदेशमें दर्द हुआ करता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—बाएँ कन्धेमें पेशीका स्पन्दन। दाहिने हाथके करभ-प्रदेशमें ऐंठनकी तरह दर्द मालूम होना। हाथ हिलानेपर समूचे अंगूठेमें ऐसा ही दर्द होता है। अंगुलीकी गांठें सब लाल हो जाती हैं और फूल उठती हैं और टेढ़ी करनेपर फूले हुए अंशमें खींचन होती है। अग्रबाहु और हाथ भारी मालूम होता है और कांपा करता है। अंगुलीका अगला भाग सुन्न। दोनों उरु रह-रहकर पीछेकी ओर या सामनेकी ओर फड़क उठते हैं। ज्वर रोगमें दोनों उरु अवश और ठण्डे मालूम होते हैं। दोनों पैर अकड़ जाते हैं। समूचे सायंकालतक अग्रजंघास्थिमें फाड़नेकी तरह दर्द अनुभव होता है।

सार्वाङ्गिक।—जरा परिश्रम करते-न-करते ही सुस्ती आ जाती है और शरीर भारी मालूम होने लगता है, वक्षमें खूनका दौरान अधिक हो जाता है, चेहरा गर्म, शिरा, धमनी आदि कड़ी होकर फूल उठती हैं, रोगी उद्विग्न होकर हांफा करता है। निर्मल वायु सेवनके लिये चलनेके समय शरीर भारी मालूम होता है और रोगीको बाध्य होकर बैठ जाना पड़ता है। स्थिर होकर सोये रहनेपर जैसा आराम मिलता है, वैसा और किसी तरह नहीं मिलता। निम्नाङ्गमें बहुत जड़ता मालूम होती है।

निद्रा।—सन्ध्याके समय बहुत सुस्ती मालूम होती है, किसी तरहका परिश्रम करनेकी इच्छा नहीं होती और नींद आया करती है। अनिद्रा—पर सोनेपर अद्भुत सपने देखता है और प्रलाप पैदा हो जाता है।

वृद्धि ।—लक्षण आदिकी बात याद आनेपर ; सीढ़ी चढ़नेके समय ; मिष्टान्न भोजनसे ; माथा झुकाकर सोनेपर ; अङ्ग हिलानेपर ; चलनेपर ; झुकनेपर ; शय्या त्यागकर उठनेपर ; बाँह उठाने या दबानेपर ; दाहिनी करवट सोनेपर ; रातमें ; आधी रातके पहले (काली-खाँसी) और आधी रातके बाद (हृत्पिण्डके रोग) ; गर्म घरमें रहनेके समय, सूखी ठण्डी हवा लगनेपर । पूर्णिमाके समय और सोने बाद ।

उपशम ।—सामनेकी ओर झुककर बैठनेपर ; शरीर लम्बाकर सोनेपर ; सीढ़ीसे उतरनेके समय ; गर्म चीजें खाने या पीनेपर और कुछ खाने या पीनेपर (खाँसी) ।

सम्बन्ध ।—**दोषघ्न** ।—कैम्फर । घुंड़ी या काली खाँसीमें ऐकोनाइट और हिपरके बाद यदि वायुमार्गमें सूखापन अधिक रहे, तो स्पञ्जियाके प्रयोगसे विशेष लाभ होता है । स्पञ्जियाके बाद यदि वायुमार्गमें घड़-घड़ शब्द करनेवाली श्लेष्माकी आवाज़ बनी रहे तो हिपरका प्रयोग करना चाहिये, खासकर यदि खाँसी आधी रातमें या उषाकालके समय बढ़ती हो । जहाँ रोज़ सन्ध्याके समय थोड़ी-थोड़ी काली खाँसीका लक्षण दिखाई देता है या बीच-बीचमें इसका लक्षण फिरसे पैदा हो जाता है, वहाँ फास्फोरसका प्रयोग करनेपर सम्पूर्ण आरोग्य हो जाया करता है (नैश) ।

सदृश ।—ऐकोन, बेल, ब्रोम, ब्राई, कैल्के, कार्बो-वेज, क्लोरम, हिपर, इग्ने, मर्क, नक्स-वोम, फास, पल्स, रास, सिपिया, सल्फ, आयोडम, कोना, ड्रोसेरा, कैलि-बाई, लाई, स्पाइजि, स्टैनम, सल्फ । हृत्पिण्डके सम्बन्धमें—कैक्टस, कैलि-आयोड, ऐब्रोट, नैजा, सिपिया, कैल्मिया, लैकेसिस । ऐकोन और हिपरके बाद और इसके बाद ब्रोम, हिपर लाभदायक है ।

तुलनीय ।—साधारण बीमारीमें—क्लोर, ब्रोमि, आयोड । स्वरनली-प्रदाहमें—सैंबुकस, लैकेसिस । सूखी जीभ—नक्स-मस । हृत्पिण्ड—नैजा, कैल्मिया, सिपिया, लैकेसिस । शुष्क-प्रदाह—जेल्स, पल्स, हैमा, मर्क । क्षयकास धातु—वैसिलिन । स्वरभङ्ग—ऐलूमि, ड्रोसेरा ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३रा शततमिक और उच्चतर क्रम । डा० हियुज कहते हैं कि यह सभी क्रमोंमें लाभदायक है ।

क्रियाका स्थायित्व ।—२० से ३० दिन ।

स्टैकिस बेटोनिका

(STACHY'S BETONICA)

दूसरा नाम ।—उड पेटनि ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—सर्दी, माथेमें भार और औंघाई, सर-दर्द वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—लाइकोपस ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

स्टैनम

(STANNUM)

दूसरा नाम ।—टिन धातुको स्टैनम मेटालिक्स कहते हैं ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विशुद्ध धातुका विचूर्ण तैयार होता है । इसके बाद अर्क बनता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—खूनकी कमी ; दमा ; श्वासनली प्रदाह ; खुजली ; रूसी ; क्षयकास ; अकड़न ; ऐंठन ; कमजोरी ; दाँत निकलनेमें कष्ट ; विभेदिकाका दर्द ; अजीर्ण ; कानमें जखम ; मृगी ; नाकसे रक्तस्राव ; पाकाशयका शूल ; रक्त-वमन ; फेफड़ेसे रक्तस्राव ; सर-दर्द ; विलेपी ज्वर ; अर्द्धाङ्गका पक्षाघात ; व्याधिशंका ; मूर्च्छा-वायु ; अश्रुनलीका जखम ; अश्रुनलीमें पीव-सञ्चय ; स्तनमें विकार ; चेहरेका फट जाना ; स्नायुशूल ; सुन्न भाव ; पक्षाघात ; सर्दीसे उत्पन्न या बहुत बलगम मिली खाँसी या यक्ष्मा ; पलकोंका पक्षाघात ; अनिद्रा ; मसे ; पट्टकृमि ; दुग्ध-नालीकी बीमारियाँ ; जरायुका रोग ; अपत्य-पथका अपनी जगहसे हटना ; कृमि इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास।—जिन सब पुरानी खाँसियोंमें और किसी-किसी स्थानमें नयी खाँसीमें बहुत ज्यादा कफ़ या बलगम निकलता है और कण्ठनाली तथा वक्षगह्वरमें सुस्ती मौजूद रहती है, उसमें स्टैनमसे विशेष फायदा दिखाई दिया करता है। आँखोंके ऊपरी प्रदेशमें कृमिकी वजहसे पैदा हुए रोग और अन्त्राशय तथा पञ्जरेके भीतरके स्नायुशूल आदि कृमिके कारण पैदा हुए रोगोंमें और खास-खास अवसरपर पेशियोंका स्पन्दन और पक्षाघातकी तरह सुस्ती मिले स्नायविक रोगमें यह बहुत लाभदायक है। आगे लिखे कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं :—(१) मन या देह बहुत सुस्त हो पड़ती है। (२) मानो बहुत दिनोंसे कुछ भी नहीं खाया है, पाकस्थली इस तरह खाली और कमजोर मालूम होती है। (३) रोगिनी बहुत उदास, दुःखित भावापन्न, सभी समय मानो उसे रुलाई आया करती है, पर रोनेपर उसकी बीमारी बढ़ जाती है; बहुत क्षीण और दुर्बल, विशेषकर सीढ़ीसे उतरनेके समय, चढ़नेके समय कोई तकलीफ़ नहीं होती। (४) सर-दर्द,—धीरे-धीरे बढ़ता और धीरे-धीरे घटता है। इसके शूल आदि दर्दके पैदा होनेमें बारह घण्टे और आरम्भ होनेमें भी बारह घण्टे लगते हैं। (५) अन्त्रशूल,—घटना—दबाने किंवा घुटना या धायके कन्धेपर उदर रखनेपर, सूतकी तरह कृमि या केचुआ निकलता है। (६) स्त्रियोंको असमयमें ही आर्त्तव-स्राव होता है। स्राव बहुत ज्यादा हुआ करता है। (७) प्रदर—पीला और बहुत सुस्त करनेवाला। जरायु-भ्रंश—पाखाना जानेके समय बढ़ जाता है। (८) रोगिनी कमजोर और क्षीण हो पड़ती है, कि कुर्सी पर धीरे-धीरे नहीं बैठ सकती, धपसे बैठ जाती है। (९) जभी-तभी मिचली और ओकाई आती है, विशेषकर सवेरे भोजन आदि रसोईकी गन्धसे। (१०) गाने या वक्तृता देनेके समय त्रिकोण पेशी और बाँहमें दर्द और कमजोरी मालूम होना। (११) वक्षगह्वरमें बहुत कमजोरी मालूम होना, विशेषकर बोलने, हँसने या ऊँची आवाज़में पढ़ने या गानेपर; इतनी कमजोरी कि बोलनेमें भी तकलीफ़ होती है। (१२) खाँसी,—गहरी, शून्य-गर्भ, कलेजा फाड़ डालनेवाली और गला रोध करनेवाली, खाँसनेपर माथा झनझनाया करता है; लगातार तीन बार खाँसी आती है। सन्ध्याके बाद शय्यामें सोनेके समय सूखी खाँसी। बलगम बहुत ज्यादा और अण्डेके सफेद अंशकी तरह, कभी मीठा और कभी नमकीन; कभी-कभी खट्टा, सड़ी गन्ध भरा; पीला, हरा

पीवमय ; दिनमें बलगम अधिक निकला करता है। (१३) स्वरभङ्ग,—गहरी कर्कश और खोखली आवाज़ ; थोड़ा-सा कफ़ निकल जाने बाद कुछ देरके लिये आवाज़ साफ़ हो जाती है। (१४) मल रुखड़ा, पतला और पाखाना फिरनेके समय शरीरमें सिहरावन होती है ; वेग देनेपर कृमिकी तरह सूत्रमय आम निकलती है। (१५) अग्रबाहु और हाथ इतने फड़कते हैं, कि कोई चीज़ हाथसे पकड़नेपर वह गिर जाती है ; ऐसी शक्तिहीनता मानो पक्षाघात हो गया है। दोनों पैर बहुत क्षीण—चलनेके समय दोनों पैर अवश हो जाते हैं। (१६) पसीना,—सोंधी गन्ध, रोज़ रातके ४ बजनेके समय पसीना होता है, खासकर गर्दन और ललाटमें ; बहुत कमजोर करनेवाला पसीना।

लक्षणावली

मन।—उदास, मोह-युक्त भाव, हमेशा ही मानो रुलाई आती है, पर रोनेपर बीमारी बढ़ती है (नेट्र-म्यूर, पल्स, सिपि ; रोनेपर बीमारी घटती है—ऐनाक, डिजि, ग्रैफ, लाई, मिडोरिन, प्लैट ; बीमारी बढ़ती है—आर्नि, बेल, क्रोकस, कूप्रम, लेके, टियुक्रि, वेरेट ; समझानेपर रोना बढ़ता है—कैमो, नेट्र-म्यूर, सिपि, साइलि)। बहुत अन्यमनस्क और भुलक्कड़ (ऐग्नस, कोलचि, ग्रैफ, मर्क, प्लैट ; रास)। एक बार कोई विश्वास या भाव मनमें बैठ जानेपर, रोगी उसको किसी तरह भी अपने मनसे दूर नहीं कर सकता (कैनाब-इन, कार्बो-वेज, इग्ने)। दिनमें कल्पनाकी चीजें भ्रममें दिखाई देना (स्ट्रैमोन, लैक-कैन, लैके)। लगातार बेचैनी और उद्वेग (आर्स, कूप्रम, नेट्र-कार्ब, रास)। किसी कामके करनेका साहस नहीं होता (उसे विश्वास रहता है, कि जिस काममें हस्तक्षेप करेगा, उसमें असफल होगा—आर्जेण्ट-नाई, अरम, सोरिन)। बहुत विषाद, पुरुषपर विद्वेष (रैफेनस, पल्स) और बोलनेसे नाराज़ (ऐ-फास, अरम, कैमो, ग्लोन, जेल, लैक-डिफ्लो, फास, प्लैट, पल्स, सल्फ़. जिङ्कम)। विरक्त भाव, कोई बात पूछनेपर अनिच्छापूर्वक और संक्षेपमें दो-एक बातका उत्तर देता है (ऐ-फास, ग्लोन, हायो, साइकूट)। कोई विषय सोचनेपर वह अपनेको एक महान विपत्तिमें पड़ा समझता है। ऋतु आरम्भ होनेपर उसके मनसे रोगोको समस्त ग्लोनि दूर हो जाती है। बहुत सामान्य परिश्रमसे, यहाँतक कि नौकर-चाकरोंको गृहस्थीके कामका हुक्म देनेमें, उसका

कलेजा धड़कने लगता है और मनमें महान उद्वेग पैदा हो जाता है (आइविरिस)। झूठे कार्योंमें व्यस्त।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, बैठनेकी अवस्थामें और पढ़नेके समय (फाइजस, पल्स); इसके साथ ही बेहोशी (कैमो); बैठनेकी अवस्थामें कभी-कभी एकाएक माथेमें चक्कर आ जाता है (कार्बोन-सल्फ)। ऐसा मालूम होता है, मानो चीजें सब बहुत दूर हैं (मानो उसके चारों ओरकी चीजें सब चक्कर खा रही हैं—साइक्लेमन, मर्क-बिन, नक्स-वोम)। स्नायविक सर-दर्द—धीरे-धीरे आरम्भ होकर क्रमशः बढ़कर बहुत प्रचण्ड आकार धारण कर लेता है, इसके बाद धीरे-धीरे घटकर आराम हो जाता है अर्थात् इसके सर-दर्दके बढ़नेमें बारह घण्टे और एकदम आराम होनेमें भी उतने ही बारह घण्टे लगते हैं (प्लेट)। रोज़ सवेरेके वक्तका सर-दर्द—बायें या दाहिने, अधिकांश स्थानोंमें बायें प्रदेशगत (बायें भागमें—इपिक, लेक-कैन, फास, स्पाई ; दाहिने भागमें—लैक-डिफ्लो, रैनान-बल, सैंगियु, साइलि, सल्फ), धीरे-धीरे समूचे ललाटमें फैल जाता है, धीरे-धीरे बढ़ा और घटा करता है। अधकपारी या शिरार्द्धशूल। पाकाशयकी अपेक्षा अधिकांश स्थानोंमें मस्तिष्कमें विकार पैदा हो जाया करता है ; माथेमें रक्त-सञ्चयके साथ असह्य यन्त्रणा, ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो ललाट और कनपटी कसकर बँधी हुई है, देह और हाथ-पैर आदि बरफकी तरह ठण्डे मालूम होते हैं ; वमन होनेके समय विशेष आराम मालूम होता है (ग्लोन, मैन्सि)। ललाटमें कसावटका भाव, मानो माथेका समूचा ऊपरी अंश और ललाट एक बन्धनसे या लोहेके चक्करसे कसकर आँटा हुआ है (ऐ-कार्बोल, ऐ-नाई, जेल, सल्फ, चेलिडो, ग्रैफ, हिप) और यह दृढ़ाबद्ध भाव धीरे-धीरे बढ़ता और धीरे-धीरे घटता है। ललाटके दाहिने आधे अंशमें रह-रहकर फाड़नेकी तरह दर्द (कार्बो-ऐन, लाई, मिनियैन, जिङ्कम); वृद्धि—झुकनेपर (सल्फ)। प्रबल दबावकी वजहसे ऐसी तकलीफ़ मानो ललाट चूर्ण-विचूर्ण हुआ जाता है। मस्तिष्कके दाहिने आधे सामनेवाले अंशमें चिलक मारनेकी तरह दर्द। ललाटमें दबाने या फाड़नेकी तरह दर्द। बायीं कनपटी, ललाट और पश्चात् मस्तिष्कके भीतरसे यन्त्रणाजनक और चिलक मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है ; वृद्धि—स्थिर रहनेपर ; घटना—शरीर हिलानेपर। चिलक मारनेकी तरह दर्द आराम होने बाद ऐसा मालूम होता है, मानो माथेके इस अंशमें धीमा-धीमा दर्द है

(कनपटीमें टपकका अनुभव होना—बेल, ग्लोन, ग्रैटी, स्टैफ)। माथेमें, विशेषकर ललाटके भीतर झनझन करनेवाला दर्द। खाँसीका प्रकोप होनेपर बढ़ना (आर्नि, ब्राई, कैल्के, कार्बो-वेज, कोना)। मिचलीके साथ ललाटपर जलन, हवा लगनेपर घटना।

आँख।—बाईं आँखके दाहिने कोनेमें मानो अश्रुनली हो गयी है, इस तरहके आकारकी एक पीव-भरी फुन्सीकी तरह सूजन पैदा होती है (पेट्रोल)। इस तरह दबानेका दर्द मानो बाईं आँखके दाहिने कोनेमें एक अञ्जनी पैदा हो गयी है (दाहिनी आँखके बायें कोनेमें आँसू गिरनेके साथ—युफ्रे)। रातमें पलकें सट जाती हैं (ऐल्यू, लाई, सिपि, बोरैक्स, इयुफोर्ब, इयुफ्रे, ग्रैफ, हिप, रस, साइलि, सिफिलिन, थूजा)। दोनों आँखें ऐसी मालूम होती हैं, मानो बार-बार रगड़नेकी वजहसे उसकी त्वचा क्षय हो गयी है या खाल उधड़ गयी है। आँखमें खुजली पैदा हो जाती है, करकराहट और जलन होती है। आँखें निस्तेज और ज्योतिहीन।

कान।—बायें कानमें नाना प्रकारकी आवाज़ या ध्वनि सुन पड़ती है (घण्टा बजानेकी तरह—पैरिस, कक्स, माइरिका)। नाक छिड़कनेपर कानमें चिलक मारता है। कान छेदनेपर छेदमें जखम पैदा हो जाता है (लेके, मिडोरिन)।

नाक।—घ्राण-शक्ति प्रखर, हल्की गन्ध भी तेज़ मालूम होती है (सिङ्को, ग्रैफ, लाई, नक्स, फास, सिपिया, साइरैन्थिस)। नाकका भीतरी भाग मानो रुका हुआ और भारी मालूम होता है (अरम, कैमो, नेट्र-आर्स, नक्स-वोम, सैम्बु, स्टिक्टा)। एक रंध्रकी सूखी सर्दी—रोगवाले छेदमें बहुत दर्द होता है, फूला और लाल रहता है। सवेरे शय्यासे उठनेपर, जरा इधर-उधर टहलनेपर नाकसे खूनका स्राव हुआ करता है (रोज़ दिनके ९ बजनेके समय—कैलि-कार्ब; ऋतुरोधमें सवेरे नींद खुलनेपर—ब्राई; सवेरे शय्यासे उठनेके पहले—कैप्स; सवेरे पतली सर्दीके स्रावके साथ—ग्रैफ, कैल्के; बहुत सवेरे—ऐम्ब्रा, फास; सवेरे उठकर नाक छिड़कनेपर—सिङ्को; सवेरे नाककी जड़में अकड़न मालूम होनेके साथ—हैमा; सवेरे दाहिनी नाकके छेदसे,—मैग-कार्ब; सवेरे झुकनेपर—फेरम)।

मुखमण्डल आदि।—सफेद, म्लान मुखमण्डल, दोनों आँखें गड़हेमें धँसी (सिना, आर्स, फेरम, नेट्र-म्यू, पल्स, साइलि); रोग प्रकट करनेवाला

(आर्स, आर्जेण्ट-नाई, कास्टि, डिजिट, लाई, स्पाइजि)। लम्बा भाव। मुख-शूल—युगास्थि-प्रदेशमें अकड़न मालूम होना; मुखमण्डलकी पेशीमें जलन और अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द; दर्द धीरे-धीरे बढ़ता और धीरे-धीरे घटता है; क्विनाइनसे कम्प-ज्वर रोक देनेकी वजहसे (हिप, नक्स, पल्स, नेट्र-म्यूर)। भोजनके बाद दाँतमें दर्द—चिलक मारनेकी तरह दर्द और चेहरेमें उत्ताप पैदा हो जाना; दाँत सब लम्बे और उनकी जड़ ढीली मालूम होती है दाँत निकलनेवाले बच्चोंको मृगीकी तरह अकड़न, बच्चेके हाथका अंगूठा मुड़ जाता है; बच्चेका पेट छाती या किसी दूसरी कड़ी चीज़पर रखनेपर उसको आराम मालूम होता है। जीभ पीले लेपसे ढकी। मुँहसे बदबू निकलती है (ऐ-नाई, हिपर, सल्फ, आयोड, क्रियो)। मुँहका स्वाद मीठा या खट्टा; पानीके सिवा सभी चीजें तीती मालूम होती हैं।

गला।—कण्ठमें गाढ़ा, गाढ़े गोंदकी तरह, धुमैला, खून मिला रहता है या सञ्चित होता है; निकालनेकी चेष्टा करनेपर ओकाई आ जाती है। कण्ठका भीतरी भाग बहुत सूखा और उसकी त्वचा क्षय हो जानेकी तरह मालूम होती है; खासकर निगलनेके समय (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, हिप)। निगलनेके समय ऐसा दर्द होता है, मानो तालुमूल छेदा जा रहा है। सवेरे गलेमें खुसखुसाहट होती है और रुखड़ा मालूम होता है। कण्ठके भीतर दाहिने पार्श्वमें ऐसा अनुभव होता है, मानो जखम हो गया है; कण्ठमें सञ्चित बलगम निकालनेपर क्षणभरके लिये कण्ठ साफ़ हो जाता है और रोगी अच्छी तरह बोल सकता है।

पाकस्थली।—पानीके सिवा और सभी चीजें तीती मालूम होती हैं (ऐकोन; ठण्डा पानीतक कड़वा मालूम होता है—हिप)। सन्ध्याके सिवा अन्य समय खासी भूख रहती है। राक्षसी भूख, किसी तरह भी तृप्त नहीं होती (ब्राई, सिना, फेरम, लाई), भोजनके बाद कड़वी या तीती डकार (ब्राई, लाई, सार्सा, सिपिया); नाभि-प्रदेशमें छेदनेकी तरह तकलीफ़के साथ; दबानेपर घटता है। किसी-किसी समय विशेषकर भोजनके बाद ही मिचली पैदा होकर अन्तमें पित्त वमन हुआ करता है (लाई)। सवेरे नींद खुलनेपर पित्त और श्लेष्मामय वमन (कोक्कि, स्ट्रैमोन)। भोजन आदिकी रसोईकी गन्धसे मिचली और पानीकी तरह वमन (आर्स, कोलचि, युपेट, सिपिया)। छूनेपर पाक-

स्थलीमें दर्द मालूम होता है; पेटमें ऐंठन होती है, रक्त-पित्त या रक्त-वमन (कैक्टस, सिङ्को, क्रोटेल, फेरम, हैमा, इपिक, मिलिफोल, ओपि, फास, सेबाइ, सैंगुइ); वृद्धि—सोनेके समय; घटना—पाकस्थलीमें दबाव देनेपर। पाकाशयको जरा छूनेसे ही मालूम होता है, कि मानो त्वचाके नीचे जखम हो गया है (सिङ्को)। पाकस्थलीका शूल—दर्द क्रमशः बढ़ा और घटा करता है और नाभि-प्रदेशतक चला जाता है; जोरसे दबा देनेपर आराम मालूम होता है; रोगीको शकल रोग बतानेवाली। पाकाशयमें बहुत गड़बड़ी मालूम होना; रोगी स्थिर नहीं कर सकता, कि वह क्या करे; चलनेपर तकलीफ़ घटती मालूम होती है; पर वह इतना क्षीण रहता है कि दो-एक क़दम चलते न चलते बैठ जाना पड़ता है। पाकाशय और उदरोर्द्ध-प्रदेशमें बहुत खालीपनका भाव, वायु-रहित मालूम होता है, मानो न जाने कितने दिनोंसे कुछ खाया नहीं है (इग्ने, फास, पोडो, सिपि, टैबाक, सिना, चेलिडो)।

अन्त्राशय।—दिनभर कभी-कभी उदरोर्द्ध-प्रदेशमें बहुत सुस्ती और भूख मालूम होती है, पर कुछ खा नहीं सकता। यकृत-प्रदेशमें जलन या डङ्क मारनेकी तरह दर्द (नक्स, ऐकोन, मर्क)। बायीं कोखमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द (आर्स, कैमो, चिनिन-सल्फ, ग्लोन, सिपिया)। रह-रहकर उदर और वक्ष-प्राचीरमें ऐंठन होती है। नाभि-प्रदेशमें छेदनेकी तरह दर्द, तीती डकार, भूख और उदरामय, जोरसे दबानेपर आराम मालूम होता है। आँत उतरना—पेटको दबानेपर अच्छा रहता है। उदरमें स्पर्श बिलकुल-ही सहन नहीं होता, मानो त्वचाके नीचे जखम पैदा हो गया है (रैनान-बल्बो)। पेट बहुत फूल उठता है और छूनेसे दर्द मालूम होता है। भोजनके बाद पेट खाली मालूम होता है (नेट्र-फास, जिङ्कम)। प्रत्येक बार पाखाना जानेके पहले उदरमें खोदने और मरोड़की तरह दर्द (ऐलो, मैंग-कार्ब, नक्स, ओपि)। अन्त्रशूल—भयानक तकलीफ मालूम होती है; जोरसे उदर दबानेपर या कड़ी चीज़पर उदर रखकर दबानेपर आराम मालूम होता है, पेटमें इस तरहका मरोड़ हुआ करता है कि मालूम होता है, कि काटे डालता है।

मलांत्र और मल।—मल हरे रङ्गका दहीकी तरह, पेटमें बहुत दर्द हुआ करता है; तीती डकार आती है; किसी-किसी समय कड़ा सूखा, गाँठ-गाँठ और खुलासा पाखाना नहीं होता और कुछ देर बाद फिर पाखाना लग आता है (नक्स-वोम, कार्डियुस-मेरी, ओपि)। मलान्त्र या मलद्वार निष्क्रिय,—

मल बहुत कोमल रहनेपर भी बहुत वेग देना पड़ता है। मलके साथ सूत्र-क्रिमि, केचुएकी तरह क्रमि और पट्ट क्रिमि निकला करती है; पेटमें बहुत दर्द हुआ करता है और रोगीका चेहरा एकदम बीमारकी तरह हो जाता है। मल-द्वारके बायें पार्श्वकी सूजन, शिरामय दाने निकलते हैं और छूनेपर बहुत दर्द मालूम हुआ करता है (कास्टि, सिनैब)।

पेशाब।—पेशाब बहुत ज्यादा और फीका, इसके बाद बहुत थोड़ा; हरे रङ्गका और किसी-किसी समय दूधकी तरह सफेद (ऐ-फास, एपिस, सिना)। पेशाबके बाद भी बार-बार वेग। पेशाबका वेग न होना, मानो मूत्राशयमें चेतना न रहनेकी वजहसे ऐसा हुआ है; मूत्राशयमें पूर्णता मालूम होना ही पेशाबका प्रयोजन बतानेवाला होता है; मूत्राशय भरा, पर पेशाब बहुत थोड़ा होता है (स्ट्रैमोनियममें पेशाब बिल्कुल ही संचय नहीं होता; ओपियममें मूत्राशय भरा रहनेपर भी वह मालूम नहीं होता)। मसाना या मूत्रग्रन्थि प्रदेशमें भीतरकी ओर जानेवाला धीमा दर्द।

पुं-जननेन्द्रिय।—बिना स्वप्नके वीर्यपात। जननेन्द्रियमें एक प्रकारका बहुत आनन्द मालूम होकर वीर्यपात होना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तव—अत्यन्त असमयमें होता है और बहुत ज्यादा स्राव हुआ करता है; ऋतु होनेके कुछ ही पहले रोगिनी बहुत दुःखित हो जाती है (कास्टि, नेट्र-म्यूर, पल्स) और ऋतुके समय गण्डास्थिमें दर्द मालूम होता है। योनि-भ्रंश—वृद्धि—पाखाना जानेके समय; रोगिनी इतनी कमजोर हो पड़ती है, कि कुर्सीपर बैठनेके समय उसके घुटने एकाएक मुड़ जाते हैं और वह धूपसे बैठ जाती है, पर कुर्सीसे उठनेके समय कोई तकलीफ़ नहीं होती। प्रदर—सादा या पीले रङ्गका स्राव और रोगिनी बहुत कमजोर हो पड़ती है। प्रसवका दर्द रह-रहकर बड़े वेगसे आता है—रोगिनी सुस्त और श्वास रहित हो पड़ती है। बच्चा माताका स्तन नहीं पीना चाहता।

श्वासयन्त्र।—स्वर गम्भीर, भग्न और शून्यगर्भ (खोखला); कण्ठका श्लेष्मा निकल जानेपर आवाज़ साफ़ और तेज़ हो जाया करती है। स्वरनलीका क्षयकास—बार-बार छोटी और उत्तेजना पैदा करनेवाली तथा कलेजा फाड़ डालनेवाली खांसी आया करती है और आवाज़ रुक जाया करती है। रोगीके

वक्षमें बहुत खालीपन मालूम होता है और सुस्ती मालूम होती है; आवाज़ रुखड़ी और उखड़ी—कभी-कभी बहुत-सा बलगम निकाल देनेवाली खाँसीके बाद स्वरभङ्ग आराम हो जाता है (कार्बो-वेज, फास), वायुनलीमें बहुत ज्यादा श्लेष्मा इकट्ठा होता है (ऐण्टि-टार्ट, इपिक, ओस्मियम, फास)। जरा खाँसते ही बलगम निकल जाता है; परन्तु इसके बाद वक्षमें जखमकी तरह भाव और सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है। सामान्य सर्दीका लक्षण प्रकट होकर श्वास-रोगमें परिणत हो जाता है। रातके अन्तिम भागमें ४ बजेसे ५ बजेतक प्रकोप अधिक रहता है और यह प्रकोप क्रमशः बढ़ा और घटा करता है। बार-बार दीर्घ निश्वास ग्रहण करनेकी इच्छा; लम्बी सांस लेनेपर छाती हलकी मालूम होती है। सन्ध्याके समय हांफता है या श्वास-कष्ट पैदा हो जाता है, वस्त्र आदि ढीले कर देने पड़ते हैं। घड़-घड़ सों-सों करनेवाला श्वास-प्रश्वास। श्वासकृच्छ्रका अनुभव होना—प्रत्येक बार शरीर हिलानेपर (आर्स, ब्राई, स्पञ्जि), शायित अवस्थामें (ऐण्टि-टार्ट, आर्स, कैलि-कार्ब, कैलि-ब्राई, लैके, नेजा, फास, प्लम्ब, स्पञ्जि) और सन्ध्याके समय (सिपा, कार्बो-वेज, ऐलू, कैप्स); लगातार तीन प्रकोप पैदा करनेवाली (दो—मर्क, तीन या चार,—बेल) माथे आदिमें धक्का पहुँचानेवाली खाँसी; वक्षमें श्लेष्मा-संचय और वायुनलीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द और सूखापन पैदा हो जाता है (स्टिक्टा); बलगम अण्डेके सफेद अंशकी तरह (फास, फेरम, मिडोरिन, ककस, मिफाइटिस) या पीला हरा पीबकी तरह, मीठा, खट्टा या नमकीन (कैल्मिया, लैके, फेरम, लाई, नेट्र-म्यूर, ऐ-नाई, फास, स्किला); सवेरे अधिक निकला करता है (पल्स, सिपि)। गाना, वक्तृता आदि कण्ठ-स्वरका काम करनेके समय त्रिकोण पेशी और दोनों बाँहमें दर्द हुआ करता है। बोलनेपर (हायो, मैगि, रियुमेक्स); गानेपर (ड्रोसे, हायो, फास, स्पञ्जिया), हँसनेपर (चायना, फास), दाहिनी करवट सोनेपर (कार्बो-ऐन, फास) और गर्म चीजें आदि पीनेपर (कैप्स, इग्ने) खाँसी पैदा हो जाती है। वक्षमें बहुत सुस्ती और कमजोरी मालूम हुआ करती है, विशेषकर बोलने, हँसने, गाने या ऊँचे स्वरसे पढ़ानेके समय। रोगी इतना क्षीण हो पड़ता है, कि वह बोल नहीं सकता (हिपर, ऐ-फास, सल्फ, लिसिन)। रक्त-कास—इसके साथ ही बहुत ज्यादा बलगम निकलना या बहुत अधिक बलगम मिला क्षय-कास। इसके लक्षणवाली खाँसी और उसके साथ ही कमजोरी (मायोसोटिस); रातमें बहुत पसीना

हुआ करता है। श्वास-प्रश्वासके समय या बायीं करवट सोनेपर वक्षके उसी पार्श्वमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; बायीं बगलके नीचे ऐसा दर्द, मानो छुरी मारी जा रही है। वक्षमें बहुत जखम हो जानेकी तरह भाव। प्रदर रोगमें ऐसा मालूम होता है, मानो वक्षके भीतरसे कमजोरी पैदा होकर सारे शरीरमें फैल रही है (उदर या वस्तिगह्वरमें पैदा होती मालूम होती है—फास, सिपि)।

सार्वाङ्गिक।—रोगिनी इतनी क्षीण हो जाती है, कि उसे प्रत्येक मुहूर्त्त ऐसा मालूम होता है, कि बेहोश हो जायगी। पक्षाघात—अधिकांश स्थानोंमें बायीं ओर ; रोगी बाँहमें और उसी पार्श्वके वक्षके ऊपर ऐसा मालूम होता है, मानो कोई भारी चीज रखी हुई है। मानसिक आवेग (इग्ने, नेट्र-म्यूर); आक्षेप (साइक्यू, क्युप्रम-मेट, कास्टि, काक्यु, हायो, सिकेलि) या हस्त-मैथुन आदि अस्वाभाविक उपायसे काम-परितृप्तिकी वजहसे (कैल्के, चायना ; बहुत ज्यादा इन्द्रिय सेवनके कारण—कैलि-ब्रोम, नेट्र-म्यूर, फास, रस)। सीढ़ी उतरनेके समय सुस्ती अनुभव होना—चढ़नेमें कोई विशेष कष्ट नहीं होता (बोरैक्स)। मृगी रोगमें हाथ पैर आदि फड़का करते हैं, अंगूठा तलहत्थीपर पलटकर मुट्ठी बन्द हो जाती है, शरीर धनुषकी तरह पीछे टेढ़ा पड़ जाता है, रोगीको ज्ञान नहीं रहता ; इन्द्रिय सम्बन्धी रोग मिला या दाँत निकलनेके समय—इसके साथ ही क्रमिका लक्षण मौजूद रहता है। रोगिनी इतनी कमजोर हो पड़ती है, कि सवेरे वस्त्र आदि पहननेके समय उसको बीच-बीचमें बैठकर विश्राम कर लेना पड़ता है। बहुत अधिक शीर्णता (आर्स-आयोड, मायोसोट, फास, प्लम्ब)। बाँह और दोनों पैर बहुत भारी और अवश मालूम होते हैं। सन्ध्याके समय हाथ-पैर फूल उठते हैं। समूची देह ठण्डी मालूम होती है। देहभरमें जाड़ा मालूम होता है, सवेरे और रातमें बहुत ज्यादा सुस्त करनेवाला पसीना (ऐ-सल्फ, सिङ्को, फास) ; पसीना गर्म और थोड़ा भी शरीर हिलनेपर भी कमजोर कर देनेवाला पसीना निकलता है ; पसीनेमें सड़ी सोंधी गन्ध आती है (नक्स, स्टैफ)। बहुत ज्यादा सुस्ती—रोगीको लगातार बैठे या सोये रहना पड़ता है (साइलि, फेरम-फास, लिलि-टाई, रस, आर्जेण्ट-नाई, ऐ-नाई, कैलि-कार्ब)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—दिनके दस बजनेके समय सारे शरीरमें शीत मालूम होता है, अंगुली और अंगुलीके अगले भागमें अधिक

शीत रहनेकी वजहसे सुन्न हो जाती है (पैरिस, सिपिया) ; शीत थोड़ा तथापि दोनों हनुके बहुत काँपनेकी वजहसे दाँतमें खटखट आवाज़ सुन पड़ती है ; कभी-कभी बायें बाँह या बायें पैरमें सर्दी मालूम होती है (बायें बाँहमें—कार्बो-वेज, नक्स-मस, रास ; दाहिने बाँहमें — मर्क्यूरियस-पेरेन ; बायें पैरमें—कार्बो-वेज, ओलियेन ; दाहिने पैरमें—सिपि, चेलिडो, सैबाई ; केवल बायें अङ्गमें—कार्बो-वेज, कास्टि, लाई, लेके, थूजा ; दाहिने अङ्गमें—ब्राई, पैरिस, रास, थूजा) ; दोनों जानु और पैर बहुत ठण्डे मालूम होते हैं (दोनों जानु बरफकी तरह ठण्डे—एपिस, कार्बो-वेज, फास, साइलि ; चरण—मिनियेन, मेजेर, सिपि, सिलि)। तीसरे पहर ४ बजेसे ५ बजेतक उत्तापावस्था, इसके साथ ही पीठ, वक्ष, उदर प्रत्यङ्ग आदि अङ्ग विशेषमें पसीना निकलना ; अस्थिरता पैदा करनेवाला उत्ताप मालूम होना, विलेपी ज्वर। पसीनेवाली अवस्था, रोज़ रातके प्रथम पहरमें या अन्तिम भागमें ४ बजनेके समय बहुत पसीना निकला करता है। खासकर गलेमें, गलेके पीछेवाले भागमें और ललाटमें। पसीनेकी गन्ध सोंधी, भींजे घरकी तरह। पानीके सिवा रोगीके मुँहमें और कुछ भी अच्छा नहीं लगता (ऐकोन)। रोगीके मुँहसे सड़ी गन्ध निकला करती है।

वृद्धि।—शरीर हिलानेपर ; किसी (बायीं) करवट सोनेपर ; गाने, बोलने, वक्तृता देने या हँसनेपर, सीढ़ी उतरनेके समय ; स्थिर रहनेपर और कड़ा पाखाना होनेके समय।

उपशम।—जोरसे दबानेपर, कोई कड़ी चीज़ या धायके कन्धेपर पेट दबाकर सोनेपर, झुककर बैठनेपर (खाँसी) ; शरीरको दोहरा लेनेपर ; चलनेपर, चित्त होकर सोनेपर, कमर या वक्षका बन्धन या वस्त्र ढीला कर देनेपर और निर्मल वायु लगनेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष और अनुपूरक।—पल्सेटिला।

अनुकूल।—कास्टिकम और सिनाके बाद इसके प्रयोगसे बहुत लाभ होता है। स्टैनमके बादकी दवाएँ—कैल्के-कार्ब, फास, साइलि, सल्फ, टियुबर्क्युलिन (डा० ऐलेन)।

सम्बन्ध।—बेल, ब्राई, कैल्के, कास्टि, सिना, लाई, फास, पल्स, रास, सिपिया, सल्फ।

सदृश ।—ऐ-फास, बोरैक्स, कैल्के, काक्यु, मायोसेटिस, (श्लेष्मा मिला क्षय-कास, पसीना, दुबलापन); कोलचि, कोलोसिन्थ, साइक्लोमे, इग्ने, इलिसियम-ऐनाइसेटम, पिक्रलिक, वैलि, प्लैट, स्ट्रान, कार्ब, नेट्र-म्यूर, फास, सिपि, चेलिडो, कार्बो-वेज, साइलि, स्टैफ, सेनेगा, वेरेट, सल्फ, सिल्फियम (बहुत ज्यादा पतला सूतकी तरह बलगम)।

तुलनीय ।—पाकाशयमें अम्ल मालूम होना,—चेलिडो, सल्फ, सिपिया। रोनो—पल्स, सिपिया। क्रमशः दर्दका घटना और बढ़ना—प्लैटिना। खाने-पीनेकी गन्धसे मिचली—आर्स, कोलचि। बोलनेमें कमजोरी—काक्यु, सल्फ, कैल्के। पाखानेके समय जरायु-भ्रंश—पोडो। सर्दीके कारण यक्ष्मा—साइलि, फास, सिनेगा। पक्षाघात मानसिक आवेग—नेट्रम, स्टैफिस। गलेमें मिचली—फास, ऐसिड, वैलो।

शक्ति ।—३, ६ चूर्णसे १००० से भी ऊँचे क्रमतक।

क्रियाका स्थायित्व ।—२५ दिन।

स्टैनम आयोडेटम

(STANNUM IODATUM)

दूसरा नाम ।—आयोडाइड आव टिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास ।—यह थाइसिस या क्षयकासकी एक बहुत बढ़िया दवा है। वक्षमें कमजोरी, मीठे स्वादवाला बलगम प्रभृति स्टैनम-मेटके लक्षणके साथ रोगीका चेहरा सफेद, बरुनियाँ लम्बी और रोगका तेजीसे बढ़ना लक्षण दिखाई देनेपर स्टैनम-मेटके बदले स्टैनम आयोडेटमका प्रयोग करना चाहिये। थाइसिसकी अन्तिम अवस्थामें ठीक-ठीक लक्षणके अनुसार स्टैनम-आयोडका प्रयोग करनेपर भी आशानुरूप लाभ यदि न दिखाई दे तो दूधके साथ थोड़ा आयोडियम सेवन करानेपर इस दवासे अधिक लाभ होता दिखाई देता है।

पुरानी खाँसी, श्वासयन्त्रका तन्तुगत परिवर्त्तन, लगातार गलेमें सुरसुरी होकर खाँसी, गलेमें सूखापन, खाँसते-खाँसते बहुत बलगम निकलना प्रभृति लक्षणोंमें स्टैनम आयोड खूब काम करता है।

सम्बन्ध-तुलनीय ।—स्टैनम-मेट, फिलाण्ड्रियम, टियुबर्क्युलिनम।

शक्ति ।—२x—६x।

स्टैफाइसैग्रिया

(STAPHISAGRIA)

दूसरा नाम ।—स्टैफिसैग्रिया पेडिक्युलेरिस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पके बीजसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—तलपेटकी ग्रन्थिका बढ़ना; क्रोधका आवेश; मलद्वारमें खुजली; पीठमें दर्द; पलकोंका प्रदाह; अस्थि-रोग; धमनीका अर्बुद; खाँसी; दाँत निकलना; रक्तामाशय; अकौता; आँखमें अर्बुद; दाँतमें नासूर; पाकाशयका शूल; ग्रन्थियोंकी बीमारी; वंक्षण-सन्धिकी बीमारी; व्याधि-शङ्का; ध्वजभङ्ग; आँखका उपतारा प्रदाह; उपदंश दोषके कारण तारका प्रदाह; सहजमें हो जबड़ेकी हड्डी खिसक जाना; कमरके नीचे पीब सञ्चय रोग; उन्माद; नकली मैथुनका दुष्परिणाम; स्नायुशूल; गर्म पसीना; कामोन्माद; डिम्बाशयकी बीमारी; बदबूदार पसीना; गर्भिणियोंकी वमनेच्छा; मूत्राधार मुखशायिका ग्रन्थिकी बीमारी; जीभके नीचे अर्बुद; आमवात; गृध्रसी; मसूढ़ेमें जखम और सूजन; माथेमें पसीना; सवारी आदिमें चढ़नेपर मिचली; शुक्रवाहिनी नलीकी बीमारी; शुक्रक्षरण; ग्रीवाका कड़ापन और अकड़न; दाँतका क्षय होना या कीड़े लगना; अण्डकोषकी बीमारी; तम्बाकू सेवनका दुष्परिणाम; तालुमूल-ग्रन्थि-प्रदाह; दन्तमूल; अर्बुद; स्वरभङ्ग; नाकसे बोलना; मसे इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—हस्तमैथुन, अति मैथुन, मनमें सदा इन्द्रिय-परिचालनकी चिन्ता, हृदयमें दबा क्रोध, अपमानवगैरहसे पैदा हुई बीमारीमें इसका फायदा दिखाई दिया करता है। बच्चोंकी बीमारी और

अन्त्रशूल आदिमें भी इससे बहुत लाभ होता है। इसके नीचे लिखे प्रधान निर्णायक लक्षणोंकी आलोचना करनेपर, इसका आभास मिल सकता है, कि मानव-शरीरकी किन-किन अवस्थाओंमें इसका प्रयोग हो सकता है। (१) यदि रोगीको कोई किसी तरहकी अपमानजनक बात कहता है, तो वह उसका बदला लिये बिना ही घर लौट आता है और उस दुर्दमनीय क्रोधको हृदयमें रखे रहनेकी वजहसे नाना प्रकारकी बीमारियाँ हो जाती हैं। थोड़ेमें ही रञ्ज हो जाता है, अनुचित बाततक सहन नहीं कर सकता। बच्चा लगातार यह वह माँग करता है और जो माँगता है, वह हाथमें देनेपर दूर फेंक देता है। (२) बहुत ज्यादा इन्द्रिय सेवन या अस्वाभाविक उपायसे इन्द्रिय परितृप्तिसे उत्पन्न बीमारियाँ, उदासी, सभी विषयोंसे विराग—उदास चित्त और स्मरण-शक्ति क्षीण। (३) अहङ्कार, ईर्षा या विरक्तिके कारण बीमारियाँ। (४) ऐसा मालूम होता है, मानो ललाटपर एक गोला अड़ा है। (५) स्नायविक अवसाद, बहुत ज्यादा परिश्रम करनेके कारण मनुष्य जिस तरह सुस्त हो पड़ते हैं, रोगी भी उसी तरह सुस्त हो पड़ता है। (६) आँखोंपर लगातार अञ्जनी या गुहौरी निकला करती है। (७) दन्तशूल, विशेषकर ऋतुके समय; रोगी तथा निरोग—दोनों ही दाँतोंमें; कोई चीज़ काटने या चबानेके समय किसी तरहका दर्द नहीं होता, पर पेय या चबानेकी चीज छूनेके साथ ही कनकना उठता है। मुँहमें ठण्डी हवा लगने या खींचनेके समय या ठण्डा पानी पीनेके समय और भोजनके बाद बढ़ना। (८) दाँत सब काले हो जाते हैं और दाँतके भीतर काली रेखा दिखाई देती है; दाँत किसी तरह भी साफ़ नहीं रहते, चूर हो जाया करता है और उसका किनारा क्षय हो जाया करता है। (९) धूम्रपानकी बहुत अधिक इच्छा। (१०) पेट भरा रहनेपर भी बहुत भूख मालूम होती है। (११) ऐसा अनुभव होता है कि पाकाशय और अन्त्राशय मानो झूल पड़ा है। (१२) अन्त्रशूल,—मूत्राशय, डिम्बाधार या आँतोंमें नश्तर लगने बाद अन्त्रशूल। (१३) पेशाबका वेग, पेशाबकी जगहपर बहुत देरतक बैठे रहना पड़ता है, खासकर नवोढ़ा युवतियोंको या रमणके बाद अथवा कष्ट प्रसवके बाद। (१४) वृद्धोंकी मूत्राधार सुखशायिका ग्रन्थिकी बीमारीमें पेशाब हो जाने बाद भी पेशाबका वेग और यन्त्रणा। (१५) मूत्राशयका अपनी जगहसे हट जाना। (१६) स्त्री-जननेन्द्रियमें यन्त्रणाजनक स्पर्श अनुभव होना, योनिका बाहरी भाग इतना स्पर्शकातर रहता है, कि ऋतुके

समय कपड़ा लेना भी सहन नहीं होता। (१७) अस्वाभाविक मैथुन; लगातार इन्द्रिय परिचालनकी चिन्ता और हमेशा ही इन्द्रिय परितृप्ति पैदा करनेवाले आनन्दके लिये आग्रह। (१८) शुक्रमेह रोगीके दोनों गाल और आँखें धस जाती हैं, अपराधीकी तरह सलज्ज भाव रहता है, वीर्य-स्खलनके बाद कमरमें दर्द होता है; इन्द्रिय परिचालनके कारण सुस्ती और शिथिलता। (१९) खाँसी—सिर्फ दिनमें या सन्ध्याके भोजनके बाद; मांस खानेपर बढ़ जाती है; क्रोध या चिढ़ पैदा हो जाने बाद, मुँह धोनेके समय भी खाँसी आती है; धूम्रपान करनेके समय खाँसी। (२०) कमरमें दर्द—रातमें सोनेकी अवस्थामें और सवेरे सोकर उठनेपर बहुत बढ़ जाता है। (२१) प्रत्यङ्ग आदि विशेकर हाथकी अंगुलियोंकी सन्धिमें वातकी गोटियाँ पैदा हो जाती हैं; अंगुलीकी सन्धियाँ सब प्रदाहित होकर पसीना हुआ करता है और उनमें पीब पैदा हो जाता है। (२२) दिन-भर औंघाई मालूम होना, पर रातमें नींद न आना; रातमें सारे शरीरमें दर्द हुआ करता है। (२३) ज्वर आनेके कई दिन पहलेसे ही भयङ्कर भूख पैदा हो जाती है। (२४) अकौता—फुन्सियोंके बीचसे पीला रसनिकलता है और यह रस जहाँ लगता है, वहीं नये रस-भरे दाने निकल आते हैं। (२५) जगह-जगह खुजली पैदा होनेपर उस जगहकी खुजलानेपर फिर दूसरी जगह खुजली पैदा हो जाती है। (२६) गूलरका तरह अर्बुद या चर्मकील—मसे सूखे, नोकदार, फूलकोबीके आकारके मसे; पारेके अपव्यवहारके बाद सरमें चक्कर। खासकर बैठनेकी अवस्थामें। चलनेपर घटना; रमणके बाद श्वासमें तकलीफ मालूम होती है और कलेजा जकड़ जाता है। तेज़ धारवाले अस्त्रसे कटने या चोटकी वजहसे जखम; हमेशा ऐसा मालूम होता है, मानो उसके पीछे कोई आ रहा है और इसी कारणसे बार-बार पीछे देखना; मैले, पेट निकले बच्चोंका अन्त्रशूल; दाँतमें नासूर इत्यादि कई इसके निर्देशक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—असहिष्णु भाव—सामान्य काम या बातसे उसके मनमें असन्तोष पैदा हो जाता है (इग्ने)। जो काम उसे अच्छा नहीं लगता उसे करनेपर बहुत क्रोध आता है, चाहे वह काम उसका किया हो या किसी दूसरेका

किया हो। कोई काम करनेपर उसके फलाफलके सम्बन्धमें महान चिन्ता पैदा हो जाती है; इन्द्रियके अपव्यवहारके कारण चित्त-विकार—उदास भाव, सभी विषयोंमें आस्थाशून्य, मुह्यमान भाव और क्षीण स्मृति (ऐ-फास, ऐनाक, आरम, डिजि, नेट्र-म्यूर, प्लैट)। अज्ञान बच्चे नाना प्रकारकी चीजोंके विषयोंमें जिद्द करते हैं, परन्तु उनके हाथमें जानेपर क्रोधित होकर दूर फेंक देते हैं (ब्राई, कैमो, सिना, क्रियो)। महा अभिमानी—यदि कोई उसे अपमान-जनक बात कहता है, तो वहीं क्रोध प्रकट करनेपर नीचताका परिचय देना होगा, यह सोचकर मनका क्रोध मनमें ही दबाकर काँपता और सुस्त होता हुआ घर लौट आता है और बीमार हो जाता है (इग्ने, आरम—नक्स-वोमिकाके ठीक विपरीत)। क्रोध आनेपर फिर ज्ञान नहीं रहता, जो सामने पाता है, वही विपक्षीपर फेंक मारता है। लगातार इन्द्रिय परितृप्तिका आनन्द प्राप्त करनेकी इच्छाकी वजहसे रोगी अवसादवायु-ग्रस्त, उदास और स्मरण-शक्ति रहित हो जाता है। आहत, अहङ्कार, मर्मपीड़ा, ईर्षा, अन्याय अपमान और हृदयमें पाले हुए क्रोधकी वजहसे मानसिक बीमारी। भविष्यमें न जाने क्या होगा, यह सोचकर रोगी मुह्यमान-सा रहता है (ऐ-नाई, ऐ-फास, ब्राई, चिनिन-सल्फ, साइकूटा, फास)। क्षीण-स्मृति—किसी विषयको कुछ देरतक सोचनेपर भी याद नहीं कर सकता। चलनेके समय बार-बार पीछेकी ओर घूमकर देखता है (ऐनाक, केलि-ब्रोम)।

मस्तक।—चक्कर खानेकी तरह सरका चक्कर—कभी सन्ध्याके बाद शायित अवस्थामें (फास) और कभी-कभी बैठनेकी अवस्थामें (फास, पल्स); उपशम—चलनेपर (एकोन, जिङ्कम) या एँड़ीपर भार देकर तेजीसे घूमनेपर (ऐगार); माथेकी जड़ता मालूम होनेकी वजहसे रोगी किसी तरहके मानसिक परिश्रमके काममें हस्तक्षेप नहीं कर सकता (लैके, नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यूर, फास, सिपि)। ललाटके बीचमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक गोला कसकर लगा हुआ है और सर हिलानेपर भी वह अलग नहीं होता (लैक-डिफ्लो,—शिरामें मानो कितने ही गोले लुढ़कते फिरते हैं—ऐनान्थिरम, बूफो, हियुरा, लिसिन)। दबावकी तरह बेहोश कर देनेवाला सर-दर्द, विशेषकर ललाटमें। सर-दर्द—मानो माथा कसा हुआ है; वृद्धि—ललाटके पिछले भागमें (ऐ-नाई, ब्राई, मस्कस, स्पाई)। माथा मानो टकड़े-

टुकड़े हो रहा है, इस तरहका दर्द हुआ करता है (ऐग्नस); सवेरे शय्यासे उठनेके बाद; वृद्धि—शरीर हिलानेपर; घटना—विश्रामसे या स्थिर होकर बैठनेपर और गर्मी लगनेपर; बार-बार जम्हाई आकर सर-दर्द शान्त हो जाया करता है (नेट्र-म्यूर)। बायीं कनपटीमें मानो जलती हुई सुई घुस रही है—इस तरहका दर्द (आर्स, टैबाक, जिङ्कम ; बायीं कनपटीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द—चेलिडो, सिपि, स्पाइजि)। दाहिनी कनपटीमें धीमा सुई गड़नेकी तरह दर्द—छूनेपर होता है। सरके पिछले भागमें ऐसा मालूम होता है, मानो खाली हो रहा है या मस्तिष्क इतना छोटा हो रहा है, कि माथेका पिछला अंश पूरा नहीं कर सकता (मैंङ्ग, नेट्र-कार्ब, सल्फ ; अथवा माथेका सामनेवाला भाग बहुत बड़ा मालूम होता है—हेलिबो)। बायीं कनपटीमें जलन, भीतर और बाहर, ऐसा मालूम होता है, कि अस्थिफलक बाहर निकल पड़ेगा; छूनेपर जलन बढ़ जाती है। सरके पिछले भागमें, माथेके दोनों पार्श्वमें और दोनों कानोंके पीछे खुजलानेवाले तर और सड़ी गन्धभरे उद्भेद सब निकलते हैं (ग्रेफा, लाइ) खुजलानेपर दूसरी जगह पैदा हो जाती है और रस निकलना बढ़ जाता है। माथा बहुत ही स्पर्शकातर, खाल उधड़ा करती है और रोग-वाली जगहपर बहुत उत्तेजना और खुजली पैदा हो जाती है; वृद्धि—सन्ध्याके समय और शरीर गर्म होनेपर। सरके पिछले भागमें और दोनों कानोंके चारों ओर रसस्रावी पीब भरे बदबूदार दाने निकलते हैं और इन अंशोंके केश सब झड़ जाते हैं, कभी-कभी माथेपर बहुत अधिक रूसी होनेकी वजहसे केश झड़ जाते हैं (मेजेर, नेट्र-म्यूर, विङ्का-माइ)।

आँख।—सूर्यमण्डलकी ओर देखनेपर, बाईं आँखसे गर्म पानी निकलकर गालको जला देता है और यह आँख करकराया करती है (इग्ने, ग्रेफ ; रोशनी लगनेपर—चिनिन-सल्फ, कोना, डिजि, केलि-कार्ब, मैंग-म्यूर, सेबाड, इयुफ्रे)। उपदंश दोषकी वजहसे उपतार-प्रदाह (ए-नाइ, आर्जेण्ट-नाइ, आर्स, ऐसाफिट, केलि-आयोड, मर्क, मर्क-कोर, मर्क-प्रोटो, थूजा); चक्षुगोलक, कनपटी और मुखमण्डलके रोगवाले पार्श्वमें ऐसा दर्द मानो फटा या दो हुआ जाता है; वृद्धि—रातमें (सिफिलिन) और पढ़ना आदि दृष्टिका काम करनेपर। वातकी वजहसे चक्षु-प्रदाह (ऐकोन, ऐण्टि-टार्ट, कोल्चि, फार्मिका, फाइटो, रस, सिपि)। दर्द दाँततक फैल जाता है; दृष्टि शक्तिसे काम लेते ही आँखमें जलन होती है, मानो न जाने कितना सूखा है और लगातार आँखसे

आँसू निकला करते हैं। पलकोंका प्रदाह (ऐण्टि-क्रूड, एपिस, आर्जेण्ट-नाई, ग्रैफ, मर्क, पेट्रोल, रस, टेल्यू), पलकोंका किनारा बहुत सूखा, इसके साथ ही पलकोंपर अर्बुद या कड़ी गुहौरी। बायीं आँखकी ऊपरी पलकके किनारे खुजली पैदा हो जाना और रगड़ देनेपर खुजली बन्द हो जाती है (मेजेर, कैल्के, किमाफिला, ऐन्येल, सिपि, टेल्यू)। पलकोंपर गुहौरी आदि नाना प्रकारके अर्बुद लगातार निकला करते हैं, खासकर आँखकी ऊपरी पलकपर (पल्स, ऐ-फास, साइलि, अरम, एपिस); कभी उसमें जखम हो जाता है और कभी आराम हो जाने बाद उसके बदले एक कड़ी सूजन रह जाया करती है (कोना, थूजा, कैल्के)। दोनों आँखें गड़हेमें धँसी और उसके चारों ओर कुछ कड़ी लाली दिखाई देती है। कभी-कभी पैदा होनेवाली दुरारोग्य आँखकी सर्दी हुआ करती है (डा० वेयर)। बाईं आँखकी ऊपरी पलकके नीचे मानो एक कड़ी चीज़ रहनेकी तरह मालूम होना (मानो छोटी-सी गाँठ बन गयी है, मिडोरिन; मानो कंकड़ गिर गया है—लैक-फ्लो)। मैली दृष्टि—मानो आँखमें पानी भर आया है (फाइजस, क्रोकस, नेट्र-म्यूर)।

कान।—श्रवण-शक्तिका घटना—मानो गलग्रन्थि बढ़ जानेकी वजहसे (ऐ-नाई, कैलि-बाई), विशेषकर पाराके व्यवहारके बाद (ऐ-नाई) सर हिलानेपर कानमें नाना प्रकारकी आवाजें सुन पड़ती है। कानका छेद मानो सट गया है और उसमें सुई गड़नेकी तरह अनुभव होना।

नाक।—रन्ध्रोंमें जखम और उसके भीतरी प्रदेशमें जखमके ऊपर पपड़ी जमती है। .नाककी भयानक सर्दी, एक छेद रुका मालूम होता है और बार-बार छींक तथा लगातार आँसू बहा करता है। नकियाकर बोलता है। नाकसे स्राव रोगमें पहले गाढ़ा श्लेष्मा और इसके बाद पतला पानीकी तरह स्राव हुआ करता है। सर्दी नहीं है, पर लगातार छींक आया करती है।

मुखमण्डल।—चेहरेकी हड्डीका प्रदाह, ऐसा दर्द मानो खोद रहा है, आँख और गड़हेमें धसे, नाक हड्डी-हड्डी और नोकीली और दोनों आँखोंके चारों ओर नीला घेरा दिखाई देता है, क्रोध आनेपर चेहरेका रंग भूरा और नीला हो जाता है। सलज्जभाव; बायें गालमें तेज़ जलन करनेवाला सुई गड़नेकी तरह दर्द होनेकी वजहसे खुजली पैदा हो जाया करती है। दोनों ओंठ जखम और पपड़ीसे ढके। निचले हनु कभी-कभी सन्धि-च्युत हो जाते

हैं (रस, पेट्रोल)। निचले हनुकी नीचेवाली ग्रन्थि सब फूल उठे या न फूले, उनमें दर्द हुआ करता है। दाँत उखड़वाने बाद अस्थि प्रदाहकी वजहसे निचले हनुका सड़ना (अरम-म्यूर)। चेहरेमें बहुत तकलीफ देनेवाला टपककी तरह दर्द, यह दर्द आँखसे दाँततक फैल जाता है।

मुख-विवर।—दाँतमें दर्द, विशेषकर रमणियोंके ऋतुके समय (सिपिया); रोगी और नीरोग सब तरहके दाँतोंमें ही हुआ करता है; भोजन और पानी लगनेपर दर्द पैदा हो जाया करता है (बेल, इग्ने, कैलि-कार्ब, नक्स-वोम), पर काटने या चबानेके समय किसी तरहका दर्द नहीं मालूम होता; बढ़ना—मुँहमें ठण्डी हवा खींचनेपर (अरम, बेल, हिप, मर्क, मेजेर, नेट्र-म्यूर, नेट्र-सल्फ, सल्फ); ठण्डे पानीके स्पर्शसे (ऐसिट-क्रूड, कैमो, किमाफिला-ऐम्ब, हिप, लैके, मर्क, नक्स-वोम, प्लैटि, पल्स) और भोजनके बाद (ऐसिट-क्रूड, कैमो, किमैफिला-आम्बे, कैलि-कार्ब, लाई, मर्क, नेट्र-म्यूर, नक्स-मस)। दाँतमें कीड़े लगनेके कारण काले हो जाते हैं, उनके बीचमें काली रेखा दिखाई देती है (ऐ-नाई, क्रियो, मर्क-बाई; सान्निपातिक या मोह ज्वरमें काली रेखा दिखाई देती है—आर्जेण्ट-नाई, क्लोरम); दिनमें दो तीन बार दाँत मलनेपर भी साफ नहीं रहते और ये काली रेखायें पैदा हो जाती हैं; दाँत सब चूर होकर ध्वंस हो जाते हैं (ऐ-फ्लोर, कैल्के, कैल्के-फास, इयुफोर्ब, थूजा); खासकर दाँतके अगले और किनारेके भाग क्षय हो जाते हैं (सिफिलिन, जड़ क्षय हो जाती है—मेजेर, थूजा; शीताद या मसूढ़ेसे फोड़े आदि निकलना (ऐ-नाई, आर्स, ऐस्ट्रेकस, कार्बो-वेज, कैलि-म्यूर)। बच्चेके दाँत सब असमयमें या निकलते-न-निकलते क्षय हो जाते हैं, (क्रियो, ऐ-हायो, कैल्के-फ्लू, कैल्के-फास)। दन्तशूल—दाँतमें कुरकुराहट या झुनझुनीकी तरह दर्द; दर्द, कान और कनपटीतक तेजीसे फैल जाता है (कानतक फैलता है, क्रियो, कोलोसिन्थ; विशेषकर बायें पार्श्वमें होनेपर डा० कोर—मर्क, पोडो, सिपि, सल्फ; कनपटीतक—क्रियो, जेल, मैग-कार्ब)। जरा छूनेसे ही बढ़ जाता है, पर जोरसे दबानेपर आराम मालूम होता है (ब्रोम, स्पिञ्जो, मैग-फास; ठण्डे हाथसे दबानेपर—रस; अंगुलीसे—ऐमोन-म्यूर, मर्क, प्रोट); दन्तनाली रोगमें या दाँतकी जड़के नासूरके जखममें (ऐ-आयो, कास्टि, साइलि, अरम-म्यूर, कैलि-फ्लो)। मसूढ़े सफेद (मर्क, ऐ-नाई, ऐ-फास, कैलि-बाई), फूली और क्षय हुई त्वचा (क्रियो, मर्क, नेट्र-म्यूर,

फास, सोरिन), अन्तर देकर (कैलि-फास, क्रियो, लैके, मर्क, मर्क-कोर) और छूने और दाँत रखनेसे उसमेंसे सहजमें ही खून निकलता है (हिप, क्रियो, मर्क-कोर, कार्बो-वेज, लैके, ऐ-नाई, नेट्र-मूर)। दोनों गालोंके भीतरी गालमें शैवालकी तरह उद्भेद। मुँहका जखम, मुख-विवर और जीभपर छोटे-छोटे छाले, और रस भरे दाने निकलते हैं (आर्स, कैलि-मूर, कैलि-फास)। मुँहमें बार-बार मुँहभर पानी या पतला श्लेष्मा भर आता है (बैराई, ब्राई, कार्बो-वेज, लाई, नक्स-वोम, सैबाड, साइलि, सल्फ)। बोलनेके समय बार-बार लार निकलती है और घूंट लिया करता है।

गलेका भीतरी भाग।—कण्ठ सूखा और अकड़ा ; बोलनेके समय और निगलनेके समय कण्ठके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो जखम हो गया है (निगलनेके समय—आर्जेण्ट-मेट, अरम, कैम्फो, लैक, डिफलो), हनुके नीचेवाली ग्रन्थिमें बहुत दर्द—मानो फूल गयी है और चोट लगी है। गलग्रन्थि फूली, पाराके अपव्यवहारके कारण गलग्रन्थि फूली, उसके साथ ही बहरापन ; गलग्रन्थि प्रदाह रोगमें निगलनेके समय गलेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द पैदा होकर कानके ऊपरतक फैल जाता है (इग्ने)।

पाकाशय और अंत्राशय।—प्यास न रहना। बार-बार हिचकी (ऐमोन-मूर, साइक्यू, साइक्लो, हायो, इग्ने)। तम्बाकू खानेका बहुत अधिक आग्रह (डैफनी, इयुजिनिया, मैन्सि, टैबाक)। पाकस्थली भरी रहनेपर भी बहुत अधिक भूख (सिना, आयोड, साइलि, स्टैनम)। पाकस्थली और अन्त्राशय ऐसा मालूम होता है, मानो शिथिल होकर झूल पड़े हैं (ऐगार, इग्ने, इपिक, टैबाक)। गर्म वायु निकलना (ऐलो, कार्बो-वेज, काकुल, जिङ्कम)। पुट्ठेकी ग्रन्थियोंमें दर्द और वे फूल उठती हैं (कैल्के-कार्ब, ऐ-नाई, आयोड, रस, मर्क)। समूचे उदरमें इस तरह दर्द मानो जगह-जगह मरोड़ खा रहा है (ऐलो, डायस्को)। ऐसा मालूम होता है, मानो उदरके बन्धन सब शिथिल हो गये हैं और उदर देहसे अलग होकर गिर जायेगा ; रोगी अपने हाथसे अपना पेट पकड़ रखता है (ऐल्यू, ऐस्क्लिप-टियु, मैङ्ग, मर्क, ड्राम्बिक, कैलि-ब्रोम, बैराई-कार्ब)। आँतोंमें रुका आध्मान वायु (लाई, कार्बो-वेज, चायना, ग्रैफ, कोलचि, रैफे)। नाभीके नीचे दाहिने पार्श्वमें बहुत दबाव मालूम होना। बायीं ओरके यन्त्र आदिमें नख गड़नेकी तरह दर्द। बच्चेका उदर बहुत फूला और उसमें दर्द। मूत्राशय, डिम्बाशय या

आँतमें नश्तर लगवानेके बाद अन्त्रशूल (बिस्मथ, हिपर), इसके साथ ही मल या पेशाबका वेग और जो कुछ खाये उसीका न पचना ; कुछ खाने-पीनेपर और भी बढ़ जाता है। उदरमें लगातार आध्मान वायु पैदा हो जाता है और आँतोंमें रुका रहता है।

मलान्त्र और मल।—आध्मान वायु गर्म और उसमें सड़े अण्डेकी गन्ध आती है (कार्बो-वेज, जिङ्कम)। मल—बहुत धीरे-धीरे निकलता है, पर कोमल रहता है (कैल्के, आर्स); वायु निकलनेके समय अनजानमें निकल जाता है (ऐलो, ऐसिड-फास, ओलियन, पोडो, वेरेट-ऐ-सूग्र); इसके आलावा कभी-कभी बहुत कस जाता है और बहुत वेग दिये बिना नहीं निकलता (कैप्स, कास्टि, कोना, लेके, लाई, मर्क, नक्स-वोम, प्लैट, पल्स, सेलिन, सिपि, साइलि, थूजा)। कुछ खाते-पीते ही आँतोंमें मरोड़ हुआ करताहै और आम मिला पाखाना होता है (ऐलो, आर्जेण्ट-नाई, क्रोटोन-टिग, कोलो, पोडो, ट्राम्बिड)। मूत्राधार सुखशायिका ग्रन्थिके बढ़नेके साथ अर्श, कमर और समूचे वस्ति-गह्वरमें असह्य तकलीफ़ हुआ करती है।

पेशाब।—मसानेके स्थानपर खुजली और सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम हुआ करता है (बार्बे, कोलोसिन्थ, कैलि-कार्ब, रेनान, साइलि)। बार-बार पेशाबका वेग, पर पतली धारके रूपमें बहुत थोड़ा पेशाब निकलता है (ऐ-नाई, क्लिमैट, ग्रैफ)। गहरे रङ्गका पेशाब बून्द-बून्दके आकारमें निकलता है (कैन्थ, लैक-डिफ्लो, रस)। पेशाबके समय बहुत देरतक बैठे रहना पड़ता है (आर्नि, हिप, कास्टि, लाई, रस), विशेषकर रमणियोंको प्रथम सङ्गमके बाद ; रमणके बाद ; प्रसवके बाद (ओपि); जिस समय पेशाब नहीं करता ऐसे समय भी मूत्रनालीमें जलन होती है (बार्बे, मर्क); वृद्ध मनुष्योंकी मूत्रधार सुख-शायिका ग्रन्थिकी बीमारीमें बार-बर वेग और यन्त्रणा ; मूत्राशयका अपनी जगहसे हट जाना। पेशाबके वेगके बाद भी ऐसा वेग होता है, मानो मूत्राशय अभी एकदम खाली नहीं हुआ और बून्द-बून्द पेशाब निकलता है (ऐकोन, कास्टि, स्ट्रैमोन)। बहुत ज्यादा पानीकी तरह फीका पेशाब होता है (ऐ-फास, नेट्र-म्यूर, सिकेलि)।

पुं-जननेन्द्रिय।—इन्द्रियोंमें उत्तेजनाकी अधिकता। अस्वाभाविक मैथुनका दुष्परिणाम ; आँख और दोनों गाल क्षीण और जननेन्द्रिय आदि

अत्यन्त शिथिल। वीर्यपातके बाद बहुत सुस्ती (ऐ-फास, ऐगार, सिङ्को, कैलि-कार्ब)। चलनेके समय (ऐ-फास) और रगड़नेपर बायें अण्डकोषमें दबावकी तरह दर्द; छूनेपर बहुत दर्द मालूम होता है। अण्डकोषमें ऐसी टनक होती है, मानो कोई दबा रहा है (अरम)। दाहिने पुट्ठेके छिद्रसे खींचनेकी तरह दर्द और जलन पैदा होकर मानो रेतोरज्जुके भीतरसे दाहिने अण्डकोषमें जाता हुआ मालूम होता है। लिङ्गमुण्डके ऊपर और पीछे तर—रस-स्राव करनेवाले दाने सब निकला करते हैं (अरम-म्यूर, कैलि-आयोड, लैक-कैन, ऐ-नाई, थूजा)। अन्तिम भागमें श्वासकष्ट (ऐम्ब्रा, रमणके बाद—सोड्रन, डिजिट)। लगातार अश्लील चिन्ता और बराबर इन्द्रिय सेवनसे प्राप्त आनन्दकी वासना और भावना; शुक्रमेह, आँखतक बैठ जाना, अपराधीकी तरह सशंकित और लज्जित भाव।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—योनि-प्रदेशमें स्पर्श बिलकुल ही सहन न होना, यहाँतक कि आर्त्तव-स्राव रोध करनेवाला वस्त्र भी उसपर सहन नहीं होता (ऐ-म्यूर, प्लैट, बार्बे, काफि, क्रियो, सिपि, साइलि, थूजा), विशेषकर बैठनेकी अवस्थामें। डिम्बाधारमें शलाका वेधनेकी तरह तेज दर्द, दबानेपर बहुत दर्द होता है (ब्यूफो, कोलो, कोना, कैलि-कार्ब, लाई)। यह दर्द उरुदेशतक चला जाता है। ऋतु-स्राव—अनियमित, विलम्बसे प्रकट होता है और बहुत ज्यादा स्राव हुआ करता है (कास्टि, कैलि-आयोड, फास, साइलि); किसी-किसी समय बिलकुल ही नहीं होता; स्राव पहले फीका और इसके बाद जमा हुआ, कभी-कभी जरायु जकड़ जाता है (कैक्टस, बेल, पल्स)। योनिमें बहुत घने-भावसे मांसांकुरकी तरह मसे सब निकलते हैं (ऐ-नाई, ऐल्यू, टेरिएट)। योनि-द्वार पिटपिट और कुटकुट किया करता है (क्रियो, लाई)।

श्वासयन्त्र।—खाँसी केवल दिनके समय आती है (इयुफ्रे, ऐमोन-कार्ब, लैके, फास) या केवल रातमें भोजन करनेके बाद, विशेषकर माँस खानेके बाद; उत्तेजना या क्रोध आ जानेपर, दाँत धोनेके समय, खाँसी पैदा हो जाती है। खाँसी आक्षेप पैदा करनेवाली और शून्य गर्भ; रातमें पीला गाढ़ा, गोंदकी तरह या डोरी अथवा पीबकी तरह बलगम निकलता है (लाई, साइलि), घुंड़ीकी तरह श्वास रोध करनेवाली खाँसी, जाड़ेके दिनोंमें ऐसी ही खाँसी और गर्मीमें उसके पीछेका स्नायुशूल, इसी तरह पर्यायक्रमसे पैदा हो जाया करता

है। तम्बाकूका धूआँ सूँघनेपर खाँसी पैदा हो जाया करती है (नक्स-वोम, कोलोसिन्थ, हेलिबो, लैके, स्पंजिया); रातमें बलगम वायुनलीसे अलग होकर निकलता है, पर बाहर न निकलकर फिर निगल जानेमें आता है। श्वासकष्ट,—कलेजा जकड़ जाता है, स्वप्नदोष होने बाद अथवा रमण-क्रिया या संगमके अन्तिम भागमें (बाद—सोड्डन, डिजिट, समय—एरण्डो), श्वासकष्ट पैदा हो जाता है। क्रोध आनेपर गलनली मानो संकुचित हो जाती है और ऐसा मालूम होता है, मानो किसीने गला दबा रखा है ; निगलनेके समय और भी अधिक तकलीफ़ होती है। बोलनेपर स्वरनलीकी त्वचा मानो क्षय हुई-सी या रुखड़ी मालूम होती है (लाई)। स्वरभंग, इसके साथ ही स्वरनली और वक्षमें गाढ़ा तथा डोरीकी तरह कफ़ अधिक संचय हुआ करता है। खाँसनेपर स्वरनली और वक्षमें ऐसा मालूम होता है, मानो जखम हो गया है (मिडारिन, ड्रोसेरा, स्पञ्जिया, स्टैनम, फास), गलनलीमें और वक्षोस्थिके पिछले भागमें खुजली मालूम होना।

हृत्पिण्ड।—कलेजा धड़कना, कलेजा मानो धड़फड़ किया करता है। शरीर हिलाते ही (कार्बो-वेज, मर्क, फास) और बहुत थोड़ा शारीरिक परिश्रम करने या संगीत सुननेके समय (कार्बो-वेज) या दो पहरकी नींदके बाद प्रकोप मालूम होता है।

गर्दन और पीठ।—कण्ठ, गला और वक्षकी ग्रन्थियाँ सब फूल जाती हैं और उनमें दर्द हुआ करता है (कैल्के-आयोड, मर्क), कमरमें ऐसा दर्द होता है मानो मोच आ गयी है या टूट गयी है (आर्नि, पल्स, रास, वैलि), वृद्धि—स्थिर रहनेपर (रोडो, स्ट्रान); आसनसे उठनेके समय (कैल्के, सल्फ, कास्टि, लैके, आर्जेण्ट-नाई, बार्बे, फास); शरीर घुमानेके समय या फिरनेके समय (नक्स-वोम); विशेषकर रातमें शय्याकी शायित अवस्थामें (लिलि-टाई, लाई, नेट्र-सल्फ, साइलि) और सवेरे शय्यासे उठनेके पहले (कोलचि, इयुपेट-पर्फि, हिप, नक्स, पेट्रोल)।

प्रत्यङ्ग।—स्कन्ध-सन्धिमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, छूनेपर या शरीर हिलानेपर बढ़ जाता है। दोनों बाहुओंमें ऐसा दर्द मानो पक्षाघात हो गया है ; हिलाने और छूनेपर बढ़ता है ; हाथकी अंगुली और अंगूठेकी पेशीमें चिलक मारनेकी तरह उखाड़ने जैसा दर्द ; अंगुलीके अगले भागमें, विशेषकर

हाथकी अंगुलीकी सन्धियमें वातगुटी उत्पन्न हो जाती है (कोलोफिल, कैल्के, क्लिमेट, कोलचि, लाई)। अंगुलीके बलगमका अस्थि-प्रदाह ; रोगवाले अंशमें बार-बार पसीना होता है और उनमें पीव हो जाया करता है। बायें हाथके अंगूठेमें कुटकुटाहट और जलन हुआ करती है। उरु-शिखर इस तरह धक धक करता है मानो उसमें पीव पैदा होना चाहता है। बैठे रहनेकी अवस्थामें दोनों नितम्बोंमें दर्द हुआ करता है और यह दर्द, कमर, त्रिकास्थि और उरु-शिखरतक चला जाता है। दोनों पैर इतने कमजोर रहते हैं, कि उनकी वजहसे रोगीको तकलीफ़ होती है, दोनों जानु तो उसकी अपेक्षा और भी क्षीण रहते हैं, चलनेके समय उसमें दर्द हुआ करता है। उसमें भीतरकी ओर खुजली मालूम होना। जानु-सन्धिमें सुई गड़नेकी तरह दर्द—वृद्धि—हिलानेपर। स्थिर रहनेपर दाहिनी जंघाकी सम्मुखास्थिमें बेधनेकी तरह दर्द। बैठने और खड़े होनेकी अवस्थामें दोनों पैरोंकी पेशीमें ऐसा दर्द मानो फटी जाती है। दाहिने पैरकी पोटलीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द।

सार्वाङ्गिक।—समूची देह, विशेषकर चलनेके समय दोनों जानु बहुत क्षीण मालूम होते हैं और ऐसा दर्द हुआ करता है, मानो चोट लग गयी है। शरीरके कितने ही अंशोंमें बहुत खुजली पैदा हो जाती है, सभी अस्थियोंमें बहुत दर्द मालूम होता है। रात बीतनेपर, शय्यामें रहने ही के समय बहुत थकन मालूम होती है। प्रत्यङ्गोंमें ऐसा दर्द होता है, मानो चोट लग गयी है और ऐसा मालूम होता है, कि उनमें कोई बल नहीं है (आर्निका, सिङ्कोना)। भोजनके बाद सुस्ती और औंघाई आती है और रोगी सोये बिना रह नहीं सकता। अस्थिवेष्टमें दर्द, सूजन और पीव पैदा होना (ऐ-फास, ऐसाफिट, हिपर-सल्फ, ऐ-नाई, लाई, मर्क, साइलि, थिरिड)। तेज़ धार अस्त्र लग जानेकी वजहसे जखम आदि। बैठनेके समय शरीरके बहुतसे अंशोंकी पेशीमें खींचनकी तरह दर्द (पल्स)। शरीर हिलानेके समय सभी सन्धियाँ अकड़ी और क्षीण मालूम होती हैं ; आध्मान वायु रुकनेकी वजहसे अंत्रशूल, मानों आतें आदि चबायी जा रही है या उनमें शूल बिध रहा है। दाहिने डिम्बाधारका रोग। कानके पीछे पीले रंगके मसे निकलते हैं। हमेशा सोये रहनेकी इच्छा, क्रोध आ जानेपर एक पार्श्वका पक्षाघात।

त्वचा।—अकौतेकी फुन्सियोंके नीचेसे पीला कषाय या त्वचाको क्षय करनेवाला रस निकलता है (नेट्र-सल्फ, सोरिन) ; इसका रस जहाँ लगता

है, वहाँ नष्ट दाने निकलते हैं ; खुजलानेपर खुजली आराम होती है या दूसरी जगहपर खुजली पैदा हो जाती है (ऐ-सल्फ, इग्ने, मेजेर, स्पञ्जिया)। दादकी तरह विसर्प—सूखा ; सन्धि-स्थानोंमें दाने उत्पन्न होते हैं ; आराम हो जाता है और फिर पैदा हो जाता है और रातमें खुजली पैदा कर देता है। खुजलानेपर जलन हुआ करती है (सल्फ, सिपिया, गासिप, गेम्बोज, लेके, ऐ-बेञ्जो)। गूलरको तरह अर्बुद या मसे सूखे, खोलदार और कोबीके आकारके पारदके अपव्यवहारसे पैदा हुए (ऐ-नाई, सैबाई, थूजा, आरम)।

निद्रा ।—दिनमें निद्रातुरता, पर रातमें नींद नहीं आती (ऐगार, इलैप्स, पिक्रोल) और सारे शरीरमें दर्द हुआ करता है (मर्क, नक्स, पोडो); बार-बार प्रबल जम्हाई और अङ्गड़ाईके साथ आँखमें पानी भर आता है। मनमें लगातार नाना प्रकारके भाव उदय होते हैं या शरीरमें खुजली और जलन रहनेके कारण बहुत रात गये नींद आती है।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—ज्वर आनेके बहुत दिन पहलेसे रोगीमें राक्षसी भूख पैदा हो जाती है (सिना, सिङ्की, साइलि)। शीत-प्रधान ज्वर। शीतमें कम्प हुआ करता है और उसके बाद उत्ताप और प्यास नहीं पैदा होती (सिपिया, सल्फ); तीसरे पहर तीन बजनेके समय शीत पैदा होता है ; चेहरा गर्म या ज्वरावस्था—रोगी शरीरपर कपड़ा नहीं रखना चाहता और उसमें प्यास पैदा हो जाती है। रातमें ज्वरके समय शरीरमें दाह होती है (आर्स, सिपिया), विशेषकर हाथ और पैरमें (सल्फ); रोगी किसी तरह भी शरीरपर वस्त्र नहीं रख सकता। पसीना बहुत ज्यादा ; ललाट और तलवेमें ठण्डा पसीना होता है ; रातके पसीनेमें सड़े अण्डेकी तरह गन्ध रहती है ; पसीनेके समय रोगी बार-बार शरीर खोलता है। त्राहिक ज्वर, शीतादि लक्षण समन्वित, मल कड़ा हो जाता है। कम्प ज्वर पैदा होनेके पहले और बाद राक्षसी भूख पैदा हो जाया करती है। पेट भरा रहनेपर भी तेज़ भूख मालूम होती है, मुँहमें बदबू और मसूढ़ेसे सामान्य कारणसे भी खून निकलने लगता है।

वृद्धि ।—छूनेपर, खानेपर (दाँतमें दर्दके बिना ही), शरीर हिलाने, बैठे रहने, निगलनेके समय, पीने या खानेके समय, ठण्डा पानी पीनेपर, क्रोध

पैदा हो जानेपर, आवेग उपस्थित होनेपर या किसी कारणसे मन उत्तेजित होनेपर, उत्ताप या सर्दी लगनेपर, धोनेपर, निर्मल वायु सेवनसे, वायु परिवर्त्तनसे, ठण्डसे, सन्ध्यासे सवेरेतक, रातके अन्तिम भागमें, अमावस्याके समय, सम्भोगके बाद, प्रसवके बाद और पेशाब न करनेके समय, शोक, दुःख या कोई मर्म-पीड़ा होनेपर, शरीरका रस-क्षय होनेपर, धूम्रपानसे, पाराके अपव्यवहारसे, बहुत ज्यादा इन्द्रिय-सेवनके बाद, तीसरे पहर सोनेके समय और प्रत्येक महीने पूर्णिमाके पहले।

घटना।—प्रथम उपवास भंगके बाद, स्थिर रहनेपर और दांतके दर्दमें दांतकी जड़को दबा देनेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—कैम्फो, मर्क, थूजा। इससे पाराके अपव्यवहारका दोष दूर होता है।

अनुपूरक।—कोलोसिन्थ।

अनुकूल सम्बन्ध।—कास्टिकमके बाद कोलोसिन्थ और इसके बाद स्टैफिसैग्रिया—इस तरह एकके बाद दूसरेका व्यवहार करनेपर बहुत फायदा होता है। कोलोसिन्थ और कास्टिकम आपसमें एकके बाद दूसरेका प्रयोग करनेपर खूब फायदा करते हैं।

सदृश।—ऐकोन, ऐक्टिया-रेस, ऐम्ब्रा, कैल्के, कास्टि, कैमो, सिङ्को, क्लिमेट, काकुल, काफिया, कोलोसिन्थ, इग्ने, क्रियो, पल्स, सल्फ, थूजा।

तुलनीय।—इन्द्रिय परिचालनका परिणाम—प्लैटिनम। आक्षेपमें दुर्बलता—कैलेडि। लिङ्ग-मुण्ड शिथिल—कैलि-ब्रोम। अवसाद, पैरमें कमजोरी जेल्स, नक्स, सल्फ, कैल्के, लाइकोप, नेट्रम। मानसिक वेगके कारण शूल,—कैमो, कोलोसिन्थ। दन्तरोग—क्रियोजोट। मसा—ग्रैफाटिस, कैल्केरिया। अस्थिकी बीमारी—स्टिलिञ्जिया, कैलि-आयोड, अरम। अतिसार—कैमो। धारदार अस्त्रसे कटना—आर्निका। पक्षाघात—ऐकोन। मानसिक वेगकी वजहसे पक्षाघात—स्टैनम, नेट्रम। सामान्य बातसे या थोड़ेमें ही चिढ़ उठना—सल्फ, इग्ने। फूलकोबीकी तरह मसे—फास, थूजा। निगलनेके समय बाईं ओर लगना--लैके। पसीनेका अभाव—लैके। भोजनके बाद दस्त—ऐलोज, आर्स, चायना, लाइको, पोडो। राक्षसी भूख—आर्स, कैल्के, सिना, आयोड,

खाइब्लि। पाकस्थलीके निचले भागमें शिथिलता—सिना। तम्बाकूके धूम्रपानसे खाँसी—स्पञ्जिया। पाराका दोषघ्न—मेजेरियम। वायु निकलनेके समय अनजानमें मल निकलना—ऐलोज। दाँतमें काला दाग—सिना।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति।

स्टेलारिया मिडिया

(STELLARIA MEDIA)

दूसरा नाम ।—आलसाइन मिडिया, चिक-वीड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—खिलो हुए अवस्थामें इस गुल्मका संग्रहकर मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—छोटी सन्धियोंका वात ; यकृतका प्रदाह ; आमवात ; विचर्चिका।

उपयोगिता और आभास ।—इसका प्रधान लक्षण है—भ्रमणशील वातका दर्द—दर्द एक सन्धिसे दूसरी सन्धितक घूमा करता है और रोगी तकलीफसे बेचैन हो पड़ता है। यकृतमें बहुत दर्द होता है। उसका आयतन बढ़ जाता है और खूनसे भर जाया करता है।

लक्षणावली

मस्तक ।—ललाटमें धीमा-धीमा दर्द, विशेषकर ललाटके बायें पार्श्वमें ; वृद्धि—सवेरे माथा हिलाने और गर्मी लगनेपर ; संध्याके समय प्रायः नहीं रहता। प्रबल सर-दर्द भी कभी-कभी हो जाया करता है। ऐसा दर्द मानो माथा जकड़ गया है, मानो एक रबरकी टोपी माथेमें जकड़ी हुई है। सर-दर्द—मानो भौंसे दर्द आरम्भ होकर दोनों कनपटी या माथेके पिछले भागमें चला जाता है। आँखके ऊपरी भागमें धीमा सर-दर्द—दाहिनी भौंपर ही अधिक मालूम होता है (सेङ्गियु, सिपि), इसके साथ ही बहुत सुस्ती।

पाकस्थली ।—लगातार मिचली ; वृद्धि—सवेरे ; औंघाई और समूचे शरीरमें आलस्य मालूम होना (नक्स-मस, प्लैण्टेगो)। भूख न लगना,

भोजनकी गन्धसे ही मिचली पैदा हो जाती है (कोलचि, सिपि)। आध्मान और वायु निकलना।

अन्त्राशय।—बहुत आध्मानकी वजहसे पेट फूल उठा करता है और स्थूलान्त्रमें इस तरहका दर्द होता है, मानो कुछ जकड़ गया है ; यकृत फूला और बड़ा हो जाता है और उसमें सुई गड़नेकी तरह दर्द हुआ करता है। दबानेपर बहुत दर्द होता है ; दाहिनी करवट दबाकर सोनेपर दर्द अधिक मालूम होता है। रोगीको कभी कब्जियत और कभी पतले दस्त इसी तरह पर्यायक्रमसे होता है। मल कीचकी तरह (ऐ-फास, जेल, हिप, आयोड, मर्क, नेट्र-सल्फ, पोडो), पाखाना होनेपर मलान्त्रमें अचानक तकलीफ हुआ करती है (इस्क्यू, ऐलो, इग्ने, ऐ-स्यू, पियोन, सल्फ)।

वक्ष।—बायें वक्षमें तेज दर्द मालूम होता है (लैके, स्पाइजि, रैनान-बल्बो)। वक्षमें रह-रहकर सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है, खासकर बायें वक्षमें (ब्राई, कैलि-कार्ब, लैके, लाई, फास, सल्फ)।

प्रत्यङ्ग आदि।—बहुत आलस्य मालूम होना—कोई काम करनेकी इच्छा नहीं होती। लगातार औंघाई आया करती है ; नींद खुलनेपर रोगी सुस्त हो जाता है और उसके सरमें चक्कर आया करता है (ऐम्ब्रा, कार्बो-वेज), सर्दी मालूम होना। सारे शरीरमें बेचैनी अनुभव होना। कठिन परिश्रमके बाद जैसा हुआ करता है, उसी तरह सारे शरीरमें दर्द और सुस्ती मालूम हुआ करती है। शरीरमें जगह-जगह वातकी तरह दर्द, उरु-शिखर, जानु और गुल्फमें सुई गड़नेकी तरह तेज़ दर्द (चेलिडो, ऐकोन, आर्स, ड्राम्बिड, कैल्के-फास)। दाहिने जानुमें बेधनेकी तरह तेज दर्द (फेरम, गुयायेक), दाहिने जानुमें बेधनेकी भाँति तेज़ दर्द (ऐगार), हिलानेसे घटता है। बायें हाथकी अंगुलीकी सन्धिमें वातका दर्द (ऐक्टिया-स्पाइ, कोलोसिन्थ, कैलि-बाई)। बाईं कोहनीकी सन्धिमें (बाईं कोहनीमें) रह-रहकर दर्द ; हिलानेपर घटना। दाहिना कन्धा और बाँहके ऊपरी भागमें दर्द ; वृद्धि,—शय्यामें सोनेपर। पृष्ठ-फलक प्रदेशमें दर्द—बाँह हिलानेपर बढ़ना। दाहिने कन्धेमें वातका दर्द (ऐसिड-कार्बोल, कोलोसिन्थ, हाइड्रेस्ट, मिडोरिन, सैङ्गियु), दाहिनी करवट सोनेपर बढ़ना (शय्यामें करवट बदलनेपर बढ़ना,—सैङ्गियु), हाथ गर्म और दोनों पैर ठण्डे। वातका इधर-उधर घूमनेवाला तेज़ दर्द (पल्स, लैक-कैन, कैलि-बाई, कैलि-सल्फ)।

वृद्धि ।—सवेरे, उत्तापसे, तम्बाकू सेवनसे, विश्रामसे, बायीं करवट सोनेपर।

उपशम ।—सन्ध्याके समय, शरीर हिलानेपर, निर्मल वायु लगनेपर, दबानेपर और भोजनके बाद।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐकोन, ऐलो, कार्बो-वेज, नक्स-वोम, कैलि-बाई, लेक-कैन, ड्राम्बिड, कैलो, पल्स।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३रा दशमिक क्रमतक।

स्टिक्टा पल्मोनेरिया

(STICTA PULMONARIA)

दूसरा नाम ।—लेबोरिया-पल्मोनेरिया।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—हृत्शूल, दमा, श्वासनली-प्रदाह ; सर्दी ; गलेका जखम ; खाँसी ; बहुमूत्र ; वात ; अतिसार ; ग्रन्थियोंका फूलना ; सर-दर्द ; मूर्च्छा-वायु ; बहुव्यापक सर्दी ; स्वरनाली-प्रदाह ; खसड़ा, अधकपारीका सर-दर्द ; स्नायुशूल ; नकसोर ; यक्ष्माकास ; आमवात ; अनिद्रा ; उपदंश ; शुक्रक्षय इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—इसके द्वारा वायुमार्गको ढकनेवाली श्लैष्मिक-झिल्लीमें सर्दी पैदा हो जाया करती है। सर्दी होनेके बादकी प्रचण्ड यन्त्रणाजनक खाँसीकी भी यह एक बढ़िया दवा है। प्रबल सर्दी, बार-बार शरीरको हिला देनेवाली छींक, प्रचण्ड-सर-दर्द, इसके प्रधान क्रियाफल हैं और इसका एक विशेषत्व यह है, कि अच्छी तरह सर्दी होनेके पहले या आराम हो जानेके बाद किसी अङ्ग विशेषमें वात हो जाता है और रोगवाली सन्धियाँ सब फूल उठती हैं। इसकी सर्दीमें एक और भी विशेषता यह है, कि नाकसे श्लेष्मा नहीं निकलता या इतनी जल्दी सूख जाता है, कि उसके निकलनेकी बात तो दूर रही, नासारंध्रमें पपड़ी जमने लगती है ; नाककी जड़ बहुत रुकी रहती है और भारी मालूम होती है और रोगी बार-बार नाक छिड़कता है, पर किसी तरहका भी श्लेष्मा नहीं निकलता। खाँसी सूखी और तंग करनेवाली ;

सन्ध्यासे ही या जितनी ही रात जाती है, उतनी ही बढ़कर, रातमें बहुत ही बढ़ जाती है और रोगी न लेट सकता है और न सो सकता है। उसे बैठकर रात बितानी पड़ती है। खसड़ा रोगकी खाँसी, क्रुप खाँसी, सर्दी या सर्दी ज्वरके बाद सूखी प्रचण्ड खाँसी, रक्त-कास, क्षय-कास प्रभृतिकी विशेष अवस्थाओंपर इसका अधिकार रहा करता है। वक्षमें दबाव मालूम होना, ऐसा अनुभव होना कि उसमें कोई जमी हुई चीज है। एकाएक वक्षोस्थिसे मेरुदण्डतक घूमनेवाला तेज दर्द वगैरह इसके प्रकृतिगत लक्षण हैं। इसका निर्णायक लक्षण है, ऐसा दर्द जो मस्तिष्कके अन्तरतम प्रदेशमें अनुभूत होता है। जब सर्दी लगती है, तब पहले वह माथेमें, इसके बाद माथेसे कण्ठमें और अन्तमें वक्षके भीतर चली जाती है। इसकी धातुवाले रोगियोंको तो ऐसा अवश्य मालूम होता है, कि दोनों पैर शून्यमें हैं—यह भी इसका एक निर्णायक लक्षण है।

लक्षणावली

मन।—मस्तिष्कमें जड़ताकी वजहसे मनमें उठे हुए भावोंमें गड़बड़ी हो जाती है; रोगी किसी तरह भी इन भावोंको शृंखलाबद्ध नहीं कर सकता (ऐ-फास, ऐनाक, कार्बो-वेज, ग्लोन, लैके, लाई, नक्स-वोम, फास, सिपि, साइलि); बोले बिना रह नहीं सकता, कोई सुने या न सुने (अपनी अवस्थाके सम्बन्धमें—नक्स-वोम); अपनी जीभको किसी तरह भी स्थिर नहीं रख सकता, शय्यामें सोकर अपने दोनों पैर पटका करता है, कोई मना करता है, तो कहता है, कि मेरी इच्छा होती है, कि मैं उड़ूँ, और उसे ऐसा मालूम होता है, कि वह शय्याको स्पर्श नहीं किये हुए बल्कि शून्यमें हैं (आसेरम, कैनाब-इन, लैक-कैन, लैके, वैलि)।

मस्तक।—मूर्द्धदेशमें, मुँहके बगलमें और निम्न हनुमें तेज दर्दके साथ माथेमें जड़ता मालूम होना, कनपटीमें ऐसा दर्द मानो तीर बिंध रहा है (ऐलैन, कैलि-आयोड, लैक-कैन, इयुपेट)। ललाट और नासामूलमें रुद्धभाव और दबाव मालूम होना (साइक्लेम, कैली-बाई, ऐगार, लैक-डिफ्लो, पल्स, सिपि)। सर्दी या सर-दर्द, श्लेष्मा निकलना आराम होनेके पहले (बैल, लैके)। सर-दर्द, रोगीको बाध्य होकर सोना पड़ता है (कुरारी, कैलि-बाई, रास); वृद्धि—आवाज़से (बेल, काक्यु, काफि, लैके, लैक-कैन लैक-डिफ्लो, नक्स-वोम,, साइलि, स्पाई, थिरिड, सङ्गीत ध्वनि सुननेपर—काफि,

फास, सैङ्गियु, सिपि, साइलि, स्पाई); अत्यन्त मिचली और वमनकी वजहसे रोगी सुस्त हो पड़ता है (ऐ-नाई, फार्मिका, ग्लोन, नक्स-मस, सैङ्गियु)। ललाटके मध्यभागमें और नासामूलमें दबावकी तरह दर्द, जितना ही दिन चढ़ता है, उतना ही बढ़ता है, मानो करोटीको कोई उठा और पटक रहा है (कैनाबइन, लैक-डिफ्लो, ऐक्टि-रेसि); मानो माथा शून्यमें उड़ता है (ऐक्टिया-रेसिमोसा)। मस्तिष्कके अन्तरतम प्रदेशमें दबावकी तरह दर्द (बैसिलिनम)।

आँख।—पलकोंमें जलन (ऐकोन, ऐलूम, आर्स, कैलि-बाई, मर्क) और आँख बन्द या एक ओरसे दूसरी ओर हिलानेपर चक्षुगोलकमें अत्यन्त दर्द या जखम जैसा भाव मालूम होता है (हिलानेपर—ब्राई, कोमोक्लेड, जेल, नेट-म्यूर, फास); यह दर्द सवेरेसे सन्ध्यातक क्रमशः बढ़ा करता है। सर्दीकी वजहसे आँखोंका प्रदाह; बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकलता है।

नाक।—बार-बार नाक छिड़कना (टियुक्रि, बोर, हाइड्रैस्ट), परन्तु कुछ भी नहीं निकलता। नासामूलमें बहुत कड़ापन या दबाव मालूम होता है (इग्नेश्य, बैप्टी, हायो, कैलि-बाई, पल्स, पैरिस); जितना ही समय जाता है यह भाव भी उतना ही बढ़ता जाता है; नाकके दाहिने पार्श्वमें विशेष चुन-चुनी होती है (दाहिने रंध्रमें—सिपा)। घ्राणशक्ति विलुप्त हो जाती है (साइली, नेट्र-कार्ब, पल्स, सैङ्गियु), सूखी सर्दी रोगमें (घ्राण और स्वादशक्तिका लोप हो जाना—हिपर, हायो, नेट्र-म्यूर), ज्वर रोगमें रंध्रावरक श्लैष्मिक झिल्लीका असम्भव और यन्त्रणाजनक सूखापन—श्लेष्मा निकलते-न-निकलते सूखकर पपड़ी जम जाती है और यह पपड़ी बड़े कष्टसे निकलती है (एरण्डो, कैलि-बाई, मर्क, पेट्रोल, फास)। बार-बार रंध्रमें अंगुली घुसाकर गोंदकी तरह सूखी जमी सर्दी (पपड़ी) निकालनेकी चेष्टा करता है। तीसरे पहर सर्दीका बढ़ना (सिपा, रियुमेक्स, जिङ्कम) और निर्मल वायु लगनेपर घटना (ऐकोन, सिपा, नक्स, पल्स)।

मुखमण्डल आदि।—मुखमण्डलके पार्श्व भागमें निम्न हनुमें इस तरहका दर्द मानो सलाई गड़ रही है। कोमल तालु सूखे चर्म-खण्डकी तरह मालूम होता है और कोई चीज़ निगलनेमें बहुत तकलीफ़ हुआ करती है (सिपा, ग्लोन, हायो, निगलनेके समय बढ़ना—ऐङ्गस्ट)। ठण्ड लगनेपर ही सर्दी हो जाती है और कण्ठमें दर्द हुआ करता है।

पाकाशय।—दाहिनी कोखमें धीमा दर्द मालूम होता है। बायीं कोख भारी मालूम होना। उदरमें ऐसी कुलकुलाहट होती है मानो गाढ़े तरल पदार्थसे भरा है और वक्षोस्थिसे मेरुदण्डतक तेज दर्द मालूम होता है। खाँसी रोगमें बहुत-सा आम मिला पतला दस्त आता है (ऐ-नाई, पल्स, रियुमेक्स, हूप खाँसी रोगमें—ऐण्टि-टार्ट, सैंगियु ; खाँसते-खाँसते पतला मल निकलता है—स्किला)।

श्वास-यन्त्र।—खाँसी,—सूखी, बढ़ना—सन्ध्या और रातके समय (ऐमोन-कार्ब, आर्स, हायो, कैलि-कार्ब, मर्क, नक्स-वोम, फास, पल्स)। दिनमें अधिक नहीं रहती ; रोगी न तो लेट सकता है, न सो सकता है (सो नहीं सकता या सोनेपर बढ़ती है—आर्स, बेल, क्रोटोन-टिग, ड्रोसे-हायो, ओलियम-जेकोर, पल्स, सिपि ; सो नहीं सकता—लाई, पल्स ; सूखी ऊँची आवाज करनेवाली हूप खाँसीके आक्षेपिक या मध्य अवस्थामें सूखी खाँसी (रियुमेक्स); स्वरनलीके नीचे, वायुनलीके दाहिने अंशमें खुजलीकी वजहसे उत्पन्न प्रचण्ड सूखी, वक्ष विदारक खाँसी (ऐ-नाई, फास, रियुमेक्स, स्किला, स्टैनम); फाड़नेकी तरह दर्द पैदा करनेवाले सर-दर्द मिली सूखी खाँसी (कैप्स, कक्कस-कैक्टाई); सवेरे पतला बलगम निकलनेवाली खाँसी, दिनमें इतने सहजमें बलगम नहीं निकलता है (चेलिडो, सिपिया, बैडो)। पीठके बायें पार्श्वमें अंशफलकके नीचे दर्द मालूम होना (फाइटो), वायुनलीके बहुत अधिक सूखापनकी वजहसे खाँसी (स्टैनम), स्वर और वायुनलीमें खुजली अनुभव हुआ करती है और इसीलिये खाँसी आया करती है (ब्रोम, आइरिस, सोरिन, रास, स्पञ्जि, बार्बेस्कम); क्षय-रोगग्रस्त रोगीको लगातार सुस्त कर देनेवाली और क्षय करनेवाली खाँसी (रियुमेक्स, स्टैनम, टियुबर्क्युलिन)। वक्षमें दबाव मालूम होता है और ऐसा मालूम होता है, कि उसमें कोई जमा पदार्थ अड़ा हुआ है ; तेज छाती फाड़ डालनेवाली खाँसी ; श्वास ग्रहण करनेके समय बढ़ना।

प्रत्यङ्ग आदि।—हाथसे बहुत पसीना निकलता है (ऐग्नस, कैल्के, फास, सल्फ, थूजा)। बाँह, अंगुली, सन्धि, उरु और पैरकी अंगुलीमें ऐसा दर्द मानो काँटा गड़ गया है। हाथ और चरण फूल तथा अकड़ जाते हैं (फेर, साइलि)। प्रादाहिक वात,—रोगवाली सन्धि गर्म और उसपर

सीमाबद्ध लाली रहती है (कैल्मिया)। रातमें खाँसीके कारण रोगी सो नहीं सकता। एक जगह बैठकर रात बिताता है। प्रचंड सर-दर्दके कारण रोगीको बाध्य होकर लेट जाना पड़ता है। रात होते ही और रोगिनीको स्थिर रखनेकी चेष्टा करनेपर उसके दोनों पैर फड़का करते हैं और उन्हें वह चारों ओर पटका करती है ; रोगिनी अपने दोनों पैर पकड़ रखती है ; रक्तक्षयके बाद मूर्च्छा-वायु रोगमें ; रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह शून्यमें उड़ रही है (चलनेपर—बेलि) ; रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी देह बहुत छोटी और वायुसे भरी है और मानो वह शय्यासे ऊपर शून्यमें है (ऐसिड-फास, ऐसारम, लैक-कैन, कैनाब-इन, स्ट्रैमोन, बेलि)। शरीरमें जड़ता और बेचैनी मालूम होना, मानो सर्दी लगेगी (जेल, हाइड्रैस्ट)। नाककी ग्रन्थिका फूलना और दर्द।

सम्बन्ध।—**सदृश।**—ऐ-फास, ऐक्टिया-रेसि, ऐक्टिया-स्पाई, ऐसारम, बैसिलिन, कैनाब-इन, कैल्के, ड्रोसेरा, डालका, हाइड्रेस्ट, कैलि-बाई, मर्क, नक्स-मस, मिफाइटिस, रियुमेक्स, सैम्बु, जेल्स, काक्यु, इग्ने, टैरेण्ट, बेलि, स्टेलेरिया।

तुलनीय।—फेफड़ेकी बीमारीमें—बैसिलिनम ; सर्दीमें—ड्रोसेरा, नक्स, रियुमेक्स, सैम्ब् ; वात—सिमिसि ; स्नायुके लक्षण—टैरेंटुला ; दमा—रियुमेक्स, मेजेरियम ; शरीर हलका मालूम होना—काकु, जेल्स ; माथेकी खाल उठती और गिरती है—कैनाबिस।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३रा शततमिक क्रम।

स्टिगमेटा-मेइडिस

(STIGMATA MADIS)

जो (Zea) देखिये।

स्टिलिञ्जिया सिलवैटिका

(STILLINGIA SYLVATICA)

दूसरा नाम ।—सैपियम सिलवेटिकम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मूलसे अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—अस्थिकी बीमारी ; अस्थिगुटी होना ; गलेमें जखम ; गोद ; अर्श ; सर्दी या सर-दर्द ; पारा या उपदंश-दोष ; सर-दर्द ; सर्दी ; यकृतकी बीमारी ; विचर्चिका ; अस्थिवेष्ट-प्रदाह ; गण्डमाला ; उपदंश ।

उपयोगिता और आभास ।—अस्थि-प्रदाह, अस्थिवेस्ट-प्रदाह, अस्थि-गुल्म प्रभृति उपदंश दोषसे पैदा हुए रोगमें विशेष लाभदायक है। इसका दर्द रातमें और ठण्डी तर हवा लगनेपर बढ़ा करता है। पारा या उपदंश विषसे जर्जरित देहवाले रोगीके लिये यह परम उपकारी बन्धुके समान है। गलेकी गांठका फूलना, मोटा पेट प्रभृति क्षयके लक्षणमें भी यह बहुत फायदा किया करता है ; इस तरहके रोगियोंके यकृतकी क्रिया नहीं होती और वे कमला, कब्जियत आदि रोग भोगा करते हैं। मूत्रनली प्रदाह, प्रमेह, लालामेह, प्रदर, जननेन्द्रियके जखम, गण्डमालाके कारण ज़खम और उद्भेद आदिमें भी इससे बहुत फायदा हुआ करता है ।

लक्षणावली

मन ।—दुःखित चित्त, लगातार भविष्यके अमंगलकी आशंका किया करता है (ब्राई, कैल्के, चिनिन-सल्फ, साइक्यू, फास)।

मस्तक ।—माथेमें टपक और लगातार सरमें चक्कर आना, ललाट और मस्तकके ऊपर अस्थिमय सूजन हुआ करती है (कैल्के-फ्लू, मर्क), पाराके विषके कारण माथेका अस्थि-वेष्ट प्रदाह (कैलि-आयोड, मैंङ्गेन) । माथेके ऊपर रस निकलनेवाले और त्वचाकी क्षय करनेवाले, भूरे रंगके उद्भेद सब निकला करते हैं ।

आँख ।—प्रचण्ड सर-दर्द और सारे शरीरमें अस्थि-गत दर्दके साथ दोनों आँखें प्रदाहान्वित और जलसे भरी रहती हैं, मानो रोगीको ठण्ड लगकर सर्दी हो गयी है।

नाक ।—सर्दी रोगमें नाकसे श्लेष्माका स्राव, पहले पानीकी तरह और इसके बाद पीब-भरा श्लेष्माका स्राव, नासा-रंध्रके भीतरी अंशमें जखम हो जाया करता है। नाकका अस्थि-प्रदाह (हूनेन्थि, ऐसाफिट) और हड्डीका सड़ना या क्षय (ऐसाफिट, अरम, फास)।

मुख-विवर ।—ललाटके सर-दर्द रोगमें चेहरेमें डंक मारनेकी तरह दर्द, चेहरेका अस्थि-वेष्ट-प्रदाह ; कभी-कभी दन्तशूलका प्रकोप पैदा हो जाता है। जीभ गाढ़े लेपसे ढँकी, रंग पीली आभा लिये सफेद, रुखड़ी और क्षय हुई त्वचाकी तरह अनुभव होती है। स्वरनली प्रदेशमें जख्मके भावके साथ-साथ जीभ ऐसी मालूम होती है, मानो दग्ध हो गयी है। स्वर और वायुनली मध्यगत उपास्थिमें बहुत दर्द और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होता है। तालुमूलके दोनों पार्श्व और कण्ठके भीतर बहुत जलन होती है (आइरिस) और यह जलन पाकाशयतक चली जाती है (ऐमिल, कार्बोन-सल्फ, कैलि-कार्ब) ; वृद्धि—निगलनेके समय (कैलि-कार्ब)।

पाकाशय आदि ।—रोज़ तीसरे पहर लार बहना आरम्भ होता है और रातमें सोनेके समयतक बहा करती है। पाक और अंत्राशयमें जलन (आर्स, आइरिस, कैन्थ)। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें बहुत बेचैनी मालूम होना और ऐसा दर्द मानो मरोड़ हो गया है। पेट गड़गड़ाया करता है और अन्तमें पतले दस्त आते हैं (ऐलो, मैग-कार्ब, ओपि, ड्राम्बिड)। यकृतकी ठीक-ठीक क्रिया न होनेकी वजहसे शरीर पीला हो जाता है। मन उदास रहता है और मल बहुत कड़ा होता है ; बायीं कोखमें तेज़ सलाई गड़नेकी तरह दर्दके बाद वायु निकला करता है।

मलान्त्र और मल ।—उदरामय—अनियमित भावसे पाखाना हुआ करता है ; मल फेन भरा, कषाय और पित्त मिला। कभी-कभी दहीकी तरह सफेद आभा लिये ; पाखाना होनेके समय मलान्त्र और मलद्वार आवरक पेशीके बीचमें तेज़ दर्द ; जलन होती है और जकड़ जाता है ; पाखाना होनेके आध घण्टा बादतक इसी तरह तकलीफ मालूम हुआ करती है। कब्जियतमें—मल बहुत देरसे निकलता है।

पेशाब।—मसानेमें तेज़ दर्द। पेशाब—गहरे रंगका, फेन भरा, गाढ़ा और दूधकी तरह (ऐ-फास, लाई, फास); परिमाणमें बहुत ज्यादा और बिना विलम्बके सफ़ेद तली जम जाती है। समूची मूत्रनलीमें भयंकर तेज़ उत्तेजना और जलन मालूम होती है (कैनाब-सैट, कोचलिया, कोपैवा, सिनोसियो, सिपि, टेरिब, थूजा); पेशाबके समय बहुत बढ़ जाया करती है (कैनाब-सैट, कैन्थ, मर्क-कोर, नेट्र-कार्ब, सार्सा, टेरिबि) और पेशाब करनेमें बहुत तकलीफ़ होती है (आर्जेण्ट-नाई, कैनाब-सैट, कैन्थ, लाई, पैरीरा, पल्स); पेशाबके समय मसानेमें स्थूल वेदना मालूम हुआ करती है (ऐसिड-क्रा्ड, कैलि-बाई), मूत्रनलीमें इतनी भयंकर यंत्रणा होती है, कि रोगीका शरीर पसीनेसे तर हो जाया करता है। बायें अण्डकोषमें उखाड़नेकी तरह दर्द (सिङ्को, रोडो)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—दोनों डिम्बकोषमें ही भयंकर दर्द मालूम होता है (तकलीफसे रोगिनी चिल्लाया करती है—ऐट्रोपिन-सल्फ, लिलि-टाई)। प्रदर—स्राव बहुत ज्यादा, पीबकी तरह श्लेष्मामय; प्रत्यङ्गोंमें वातकी तरह दर्द मालूम होता है।

श्वासयन्त्र।—स्वरनली-प्रदाह, खासकर उपदंश विष-दूषित स्वर-नली प्रदाह, इसके साथ ही स्वर-भंग और सूखी आक्षेपिक खाँसी; कभी-कभी खाँसीके साथ पतला बलगम भी निकलता है। वक्ताओंका स्वरभंग और कभी-कभी पैदा हो जानेवाली स्वरनलीकी बीमारी। सन्ध्याके पहले बहुत ज्यादा सूखी खाँसी आया करती है—वायु मार्गमें खुजलीके कारण उत्पन्न। वायु-मार्ग और उसके दोनों भुजोंमें कुछ गड़बड़ी और खुजली मालूम होती है, विशेषकर सवेरे सोकर उठनेपर। स्वरनलीकी उपास्थि स्पष्ट सुन्नकी तरह मालूम होती है। स्वरनलीमें इस तरहकी गड़बड़ी मानो जकड़ गयी है और तालुमूलके दोनों पार्श्वके गह्वरोंमें भी डंक मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है (ब्रोम, कास्टि, सिङ्क)। खाँसी—थोड़ी देरतक रहनेवाली, वक्षको फाड़ डालनेकी तरह, गहरी आक्षेपिक और; खाँसते-खाँसते पतला बलगम निकलता है। स्वर और वायुनलीकी उपास्थिमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता और दर्द हुआ करता है।

वक्ष।—वक्ष और कन्धेके भीतरसे मानो तीर बिंध रहा है, इस तरहका दर्द (एपिस)। समूची वक्षोस्थिके कुछ ऊपर दर्द हुआ करता है।

समूची वक्षास्थिके पीछेवाले वक्षमें जखमका भाव। गण्डमाला दोष-युक्त व्यक्तिको क्षय हो जानेकी सूचना। हृत्पिण्डके पास मानो घूम रहा है, इस ढङ्गका दर्द (क्यूप्रम, मैग-फास, रोडो, सेनेगा)।

प्रत्यङ्ग आदि।—सन्ध्याके समय दाहिनी कोहनी या दाहिना पैर धकधक किया करता है और उसमें टपककी तरह तेज़ दर्द मालूम होता है। समूचे बाँहसे लेकर अंगुली तक वेधनेकी तरह तेज़ दर्दका अनुभव होना। उरु-शिखर, पैर और तलवेमें जलन हुआ करती है, विशेषकर दाहिने अंगमें (कैलि-आयोड, मिडोरिन)। कन्धेमें बड़ी-बड़ी अस्थिमय गोटियाँ निकलती हैं। पैरपर दुरारोग्य पुराना उपदंशका जखम। उरुके पिछले भागका स्नायुशूल ; अग्र-जङ्घास्थिपर उपदंश या प्रमेह विष दूषित अस्थि-गुल्म या गुटिका।

सार्वाङ्गिक।—आलस्य, बेचैनी, निद्रालुता और सारे शरीरमें बेचैनी। क्षयके जखमकी तरह दाने सब निकलते हैं और प्रायः ये सब दाने जखममें परिणत हो जाते हैं। गलेकी ग्रन्थियाँ सब बढ़ी (कोना, आयोड, साइलि, बेसिलिन)। बहुत 'सर्दी लगनेपर जैसा हो जाता है, शरीरकी समस्त पेशी-मण्डलीमें वैसा ही दर्द हुआ करता है। रोगी क्षीण और कंकाल सार। शरीरके किसी भी अंशमें सर्दी या ठण्डी हवा लगनेपर बीमारी पैदा हो जाती है ; गरम ऊनी वस्त्रसे रोगवाला अंश या देह ढकनेपर या शय्यामें सो जानेपर घटता है। भोजनके बाद बहुत औंघाई आती है (ऐगार, लैके, लाई, नेट्र-मूर, नक्स-मस, फास)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—शय्यामें जब सोने जाता है, उस समय सारा शरीर बहुत ठण्डा, परन्तु सोनेके बाद ही रोगीको पसीना होने लगता है और रातभर बहुत बोखार रहनेकी तरह उत्ताप मालूम होता है। संध्याके समय मानो ज्वर-भाव हो गया है, खासकर चेहरेमें इसी तरहका उत्ताप मालूम होता है नयी सर्दी होनेपर जैसा हुआ करता है। रातके १ बजनेके समय बोखार आता है और इसके बाद रोगी गहरी नींदमें सो जाता है (आर्स, सिपिया, मिडोरिन, जेल्स, ओपि, इग्ने)।

वृद्धि।—तीसरे पहर ; शरीर या रोगी अङ्ग हिलानेपर ; चलनेपर ; सर्दी या जलीय वायु लगनेपर।

उपशम ।—रोगवाला अंश दबा देने या गर्म रखनेपर।

सम्बन्ध ।—**सदृष** ।—**दोषघ्न** ।—इपिकाक। (भाफ़ सूंघनेपर मिचली); आर्जेण्ट-मेट, अरम, हिपर, कैलि-आयोड, मर्क, मेजेर, नेट्र-सल्फ, फाइटो, रस, स्टैफाइ, सल्फ।

तुलनीय ।—उपदंशमें—सिफिलि, रोडो, मर्क कैलि-आयोड। पुराने वातमें—गुयेकम, फाइटोलैक्का। वात और सर्दीकी बीमारी—नेट्रम-सल्फ इत्यादि।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३रा दशमिक क्रम।

सिमारुबा

(SIMARUBA)

दूसरा नाम ।—सिमारुबा-ऐमेरा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखी सोरकी छालसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—उदरामय, आमाशय और क्रिमि रोगकी उत्तम दवा है। उल्लिखित रोगमें इसका मूल अर्क या काढ़ा दिनमें दो बार कई बूंदकी मात्रामें सेवन करनेपर विशेष लाभ होता है।

सर्प और विषैले कीड़े काटनेपर भी इसका काढ़ा या मूल अर्क लाभ करता है।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—सीड्रन, आइलैन्थ, चैपेरा-ऐमेरा, कुआलिया, रियुम, गैम्बोजिया।

शक्ति ।—मूल अर्क।

स्ट्रैमोनियम

(STRAMONIUM)

दूसरा नाम और प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—डेट्रा स्ट्रैमोनियम। धतूरा या धतूरा जातीय वृक्षसे उत्पन्न पके बीजोंसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— शोथ ; स्वर-लोप ; संन्यास ; दाहन ; निस्सन्दन वायु ; ताण्डव ; मदात्यय ; अनजानमें पेशाब ; मृगी ; कामोन्माद ; आँखकी बीमारियाँ ; सर-दर्द ; हिचकी ; जलातंक ; मूर्च्छा-वायु ; प्रसवके बादका बदबूदार स्राव ; उन्माद ; मस्तिष्कावरण-प्रदाह ; तोतलाना ; चौंक उठना ; पलकोंका फड़कना ; नाक छिड़कना ; डेरा देखना ; सूर्याघात ; धनुष्टङ्कार ; कम्पन ; पिपासा : जबड़े अटकना ; सान्निपातिक ज्वर।

उपयोगिता और आभास।—इसकी लक्षणावलीपर ध्यान देनेसे मालूम होता है कि स्नायु-विधानपर ही इसकी शक्ति प्रकट हुआ करती है। जैसे—नाना प्रकारकी मूर्त्तियोंका देखना, डर जानेके कारण या मूर्च्छा-वायु रोगमें धनुष्टंकारकी तरह आक्षेप, अश्लील कल्पना या कुत्सित बातें बकनेके साथ प्रसवके बादका उन्माद, बुद्धि बिगड़ जाना ; प्रलाप लक्षणके साथ आरक्त ज्वर, उद्भेद निकलनेमें देर होने या निकल आने बाद एकाएक गायब हो जानेपर प्रलाप ; आक्षेपिक श्वास-रोग, जलातंक और पेशी-गुच्छसे दूसरी पेशी-गुच्छपर आक्रमण करनेवाला ताण्डव रोग। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं :—(१) बहुत बकवाद मिला प्रलाप, कभी बकता है, कभी गाता है, कभी कविता पढ़ता है और कभी पागलकी तरह काम करता है। असम्बद्ध प्रलाप, लगातार बकता है, प्रार्थना, अनुनय-विनय, अश्लील भाषाका प्रयोग लगातार एक साँसमें रोगीके मुँहसे निकला करता है। (२) अन्धकारमें और अकेलेमें रहनेपर रोगीका रोग बढ़ जाया करता है ; रोशनी और पाँच आदमियोंके बीचमें रहना पसन्द करता है। अन्धकारमें एक क़दम भी चल नहीं सकता। (३) नींद खुलनेपर भीत और चकित भाव, मानो आँख खुलते ही रोगी न जाने क्या देखकर डर गया। डरावनी परछाईं देखना, रोगी बहुत डर जाता है ; विकारावस्थामें भागनेकी चेष्टा करता है। (४) भ्रम-ज्ञान, मानो उसका शरीर दो है, देखी हुई चीजें अपने आयतनकी अपेक्षा छोटी दिखाई देती हैं। मानो कोई खास प्रत्यङ्गके अंशसे देह अलग हो गयी हैं, माथा मानो चूर-चूर होकर चारों ओर बिखरा पड़ा है। (५) दोनों आँखें एकदम खुली, उठी और चमकीली ; पुतलियाँ फैलीं और उनमें रोशनीका ज्ञान नहीं रहता। (६) चेहरा गर्म और लाल, पर हाथ और दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे ; दोनों गालोंपर लाल चकत्ते (सीमाबद्ध राग-

रंजित) और रह-रहकर चेहरा लाल हो उठता है ; विकारावस्थामें चेहरेपर विकट हँसी दिखाई देती है। (७) रुकी हुई बोली या तोतलाना—बड़े कष्टसे बहुत तरहका मुँह बनाकर कहीं एक बात बोल सकता है। (८) आइना आदि चमकीली चीज़ देखने या तकियेसे माथा उठाते ही ओकाई आ जाना। (९) धनुष्टंकारकी तरह आक्षेप, बेहोश नहीं हो जाना ; चमकीली रोशनी, आइना या पानी देखते ही फिरसे प्रकोप पैदा हो जाना। (१०) तकलीफ़ या दर्द न रहना, इसके रोगोंमें किसी तरहका दर्द नहीं रहता ; पर यदि वंक्षण या ऊरु-शिखरमें प्रदाह हो तो असह्य तकलीफ़ मालूम होती है। (११) औंघाई आनेपर भी रोगी सो नहीं सकता। (१२) रज, प्रसवके बादका क्लेद स्राव, पसीना वगैरह रुकना और उसी वजहसे बीमारियाँ। (१३) कण्ठमें रस रहनेपर भी सूखापन मालूम होना। (१४) पेशाब रुकना।

लक्षणावली

मन ।—आच्छन्न या मोहाच्छन्न अवस्थामें पेशियोंका फड़कना (ऐट्रोपिन, सल्फ, ऐनैन्थि, कूप्रम) ; क्रमसे नासा-ध्वनि (ओपि) से आरम्भ होता है, रोगी बेहोश हो जाता है, निम्न हनु झूल पड़ता है (ओपि), हाथ-पैर फड़का करते हैं और आँख घूमा करती है ; पुतली फैलती है, आप-से-आप रोगीका हाथ मानो कुछ पकड़नेके लिये नाक. कान वगैरहकी ओर बढ़ जाया करता है ; जलीय पदार्थ निगलनेमें रोगीको बहुत तकलीफ़ होती है (लैके, लिसिन, कूप्रम, हायो, मैग-फास) । भीत और चकित भावसे जाग उठता है (बेल, कैक्टस, कूप्रम, लैके, नक्स-मस, स्पञ्जिया), किसीको भी पहचान नहीं सकता (बेल, कैलेड, हायो, मर्क, नक्स, ओपि, टैबाक, वेरेट), अपने परिवारवालोंको भी पहचान नहीं सकता (कूप्रम, अपनी स्त्रीको पहचान नहीं सकता—हायो, नया मस्तिष्कोदक, मस्तिष्कके जल संचय रोगमें—ऐसिड कार्बोलिक) ; भयसे चिल्ला उठता है (इग्ने, लाई, बच्चेको रातके भयके रोगमें—कैमो, कोबाल्टम (और बच्चेको होनेपर) जो पासमें रहता है उसे पकड़ रखता है (काफिया और जेल्स) ; जड़बुद्धि, वस्तु या व्यक्ति, सबके प्रति उदासीन भाव प्रकट करता है (एपिस, ओपि, ऐनाक)। स्मरण-शक्तिका बहुत क्षीण होना (डा० फ्रैङ्क क्रैफ्ट कहते हैं, कि क्षीण स्मृतिकी चिकित्सामें—ऐनाक, क्रियो,

लैके, नैट्र-म्यूर और स्ट्रैमो—यह याद रखना चाहिये) ; कोई बात कहनेके समय दो-चार शब्द बोलते-न-बोलते यह भूल जाता है, कि क्या कहना चाहता है ; अपनी क्षीण स्मृतिके कारण रोता है ; सूर्य्याघात या सर्दी-गर्मीकी बादवाली क्षीण-स्मृति। नाना प्रकारकी काल्पनिक छायामूर्त्ति देखकर रोगी बहुत डर जाता है (हायो, ऐब्सिन्थ, कैलि-ब्रोम, ओपि) ; प्रेतमूर्त्ति देखता है (ऐट्रोप, सल्फ, बेल, क्यूप्रम, ऐसेट, ओपि) और कानके पीछे ऐसा स्वर सुन पड़ता है, मानो कोई बोल रहा है (क्युप्रम-ऐसेट) ; चूहा, कुत्ते, बिल्ली वगैरहकी छाया-मूर्त्ति दृष्टि-पथपर पैदा हो जाती है (इथ्यू, मिडोरिन, ओपि ; साँप—लैक-कैन) ; मानो एक अपरिचित मनुष्य घरमें घुस आया या मानो नाना प्रकारके जन्तु घरकी छतको भेदकर उछल-कूद मचा रहे हैं या उसकी ओर दौड़े आते हैं। असम्बन्ध कल्पना—उसे ऐसा मालूम होता है, कि उसकी आकृति बहुत ही लम्बी चौड़ी है (प्लैट), मानो उसका दो शरीर है (औरत होनेपर—स्ट्रैमोन ; पुरुष होनेपर—पेनाक ; मानो उसका कोई खास प्रत्यङ्ग संख्यामें दूसरेसे दूना है—पेट्रोल) या वह शय्याके पायतानेकी ओर लम्बे-लम्बे सोया हुआ है ; मानो उसका आधा अङ्ग काट डाला गया है। रोगी कहता है, कि वह प्रेतात्माओंसे बातें करता है। कभी प्रगाढ़ भक्तिसे प्रार्थना किया करता है और कभी धर्मके सम्बन्धमें वक्तृता आरम्भ करता है। विकारकी अवस्थामें इस भावसे छिप जाता है, मानो न जाने कितना लज्जित हो रहा है (बेल, हेलिबो, पल्स, कोकेइन, लैके) ; भागनेकी चेष्टा करता है (बेल, हायो, ऐगार, ओपि, वेरेट) ; अपनी अवस्थाके सम्बन्धमें खासा चैतन्य रहता है ; बहुत अधिक शंकित भाव ; लगातार प्रलाप बका करता है। (हायो, ओपि), एक बात समाप्त करते-न-करते दूसरी आरम्भ कर देता है (लैके, ऐक्टिया, ऐगार), माथेपर दोनों हाथ उठाकर ताली बजाया करता है और उसकी आँखें भरपूर खुली रहती हैं। रोगी चित्त हो, घुटने मोड़कर हाथ जोड़कर सोया रहता है और इस अवस्थामें कभी प्रलाप, कभी धनुष्टङ्कारकी तरह अकड़न, इसी तरह पर्यायक्रमसे हुआ करता है। रोशनी तथा पांच आदमियोंमें रहना पसन्द करता है (रोशनीमें रहना पसन्द करता है—बेल, जेल, ऐकोन ; पाँच आदमियोंके बीचमें रहना पसन्द करता है—बिस्मथ, कैलि-कार्ब, लाई, पैलेड, सिपि)। अकेला नहीं रह सकता (आर्स, कैम्फ, बिस्मथ, कैलि-कार्ब, लिलि-टाई, लाई ; अन्धकारमें या अकेलेमें रहनेपर रोगीकी बीमारी या तकलीफ बढ़

जाती है (कार्ब्बो-ऐन, कार्ब्बो-वेज, लाई, फास, पल्स, वेलि) ; अन्धेरेमें रोगी एक क़दम भी चल नहीं सकता (लिथिया-कार्ब—आँख बन्दकर चल नहीं सकता—ऐलूम, आर्जेण्ट-नाई, फाइजस)। रोगी दौड़ता-फिरता है (हायो, वेरैट)। जलातङ्क ; पानी, आइना या कोई चमकीली चीज़ देखते ही आक्षेप फिरसे पैदा हो जाता है (बेल, कैन्थ, लिलि)। रोगी चिल्लाता है, कुत्तेकी तरह भोंकता है, काटने दौड़ता है (कूप्रम, हायो, लैके, लिसिन, प्लम्ब) मुँह और कण्ठ सूख जाते हैं और चिकने मालूम होते हैं ; आँखकी पुतली फैल जाया करती है और रोगीको होश नहीं रहता। विदेशी भाषामें बोलता है, लगातार बका करता है (साइकूप्र ; लैके) ; कभी गाता है, कभी-कभी कविता पाठ करता है (ऐगार)। उदास, मृत्युभय, लगातार रोता है, हिताहित ज्ञानकी ताड़ना या अनुतापानलमें दग्ध हुआ करता है। रोगिनी अपनेको निर्दोष नहीं समझ सकती। बहुत डर जानेके बाद ताण्डव, मृगी, उन्माद और चित्तविषाद वगैरह रोग पैदा हो जाते हैं।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना ; अन्धकारमें या आँख बन्दकर चल नहीं सकता (ऐलूम, अर्जेण्ट-नाई, फाइजस) ; रोगी ढलमलाया करता है। आँखके सामने अन्धेरा हो जाता है और चेहरा लाल हो उठता है ; मतवालोंकी तरह ढलमलाया करता है (ऐगार), पीछे या बायीं ओर गिर पड़नेकी सम्भावना। पीछेकी ओर गिर जानेकी सम्भावना (कैल्के, कास्टि, साइलि ; बायीं ओर—बोरैक्स, इयुपेट)। समूचा माथा, विशेषकर मूर्द्धादेशमें सूर्यकी धूप लगनेपर, बहुत अधिक जड़ भागके साथ यन्त्रणाजनक उत्ताप मालूम होता है। उठनेके समय ललाटमें इस तरहका दबाव मालूम होता है, कि रोगी न तो अच्छी तरह आँख खोल सकता है और न ऊपरकी ओर देख सकता है (कार्ब्बो-वेज, कोरैल-रूब, साइलि)। सवेरे अधिक रक्तसंचय होनेके कारण सर-दर्द ; मध्याह्नमें बहुत बढ़ जाता है और सन्ध्याके समय घटा करता है (ग्लोन, कैल्मिया, नेट्र-मूर, फास, स्पाइजि) ; भयंकर यन्त्रणाकी वजहसे रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह उन्मत्त हो जायगा (ऐकोन, बेल, कैल्के, कैक्ट, इग्ने, इण्डियक, नेट्र-मूर) ; दीवारपर माथा पटकता है या दबाया करता है (सैङ्गियु)। ब्रह्मतालुके नीचे धक-धक किया करता है और रोगी सुस्त हो पड़ता है (कैल्के, कैस्टोर, वेरैट) (देखने और सुननेकी शक्ति लोप हो जाती है (दर्शन-शक्तिका लोप होना—बेल, आइरिस, कास्टि,

नेट्र-म्यूर ; श्रवणशक्तिका लोप—ऐ-सैलिस), चेहरा फूला (लैके) और मलिन मालूम होता है ; माथा आक्षेपयुक्त होनेकी वजहसे रोगी बार-बार अपना माथा तकियेसे उठाता है (बेल—माथा बार-बार तकियेसे उठाने और रखनेपर अच्छा रहता है—सिङ्को) ; यंत्रणा घटानेके लिये माथा हिलाता है (सिङ्कोना, कैलि-आयोड, सिकेलि), कभी-कभी पीछेकी ओर माथा झुकाये रहता है (ग्लोन, हेलिबो, कैलि-बाई, माइगेट, टैबाक) और तकियेपर बराबर माथा हिलाया या इधर-से-उधर किया करता है (बेल, साइक्यूर, हेलिबो, हायो, ओपि, पोडो)। स्थिर पड़े रहना पसन्द करता है। ऐसा मालूम होता है, कि माथा टुकड़े-टुकड़े होकर चारों ओर बिखरा पड़ा है (बैप्टी)। माथा बहुत छोटा मालूम होना (जेल, हिपोम, लिसिन, मिडोरिन, पल्स)। मस्तिष्कावरक झिल्ली प्रदाह रोगमें माथेमें भयानक यंत्रणा, मिचली, प्रलाप, आँखें प्रदाह-भरी, दृष्टि उन्मादकी तरह और स्थिर (बेल, हेलिबो, लैके, जिङ्कम)। रोगी पागलकी तरह व्यवहार करता है। स्नायु सब फड़का करते हैं और आक्षिप्त हुआ करते हैं ; हाथ और दोनों पैर ठण्डे हो जाते हैं और नाड़ी कमजोर और सुस्त हो जाती है। वातके कारण या वातकी वजहसे सर-दर्द, इसके साथ ही जड़ता मालूम होना। कोई विषय सोच नहीं सकता (साइमिक्स, आर्जेण्ट-नाई, पेरिस, स्पाई) ; मूर्द्धदेशमें या ललाटमें दर्द अधिक मालूम होना ; वृद्धि—सन्ध्या और रातके समय। गलेमें और माथेपर उखाड़नेकी तरह दर्द—रोगी रोशनी सहन नहीं कर सकता (ग्लोनोइनम)। वृद्धि—सर्दी लगनेपर और सवेरे सोकर उठनेपर ; घटना—छूनेपर। रह-रहकर माथा तकियेसे उठ जाता है (साइक्यू, हायो, नेट्र-म्यूर, सिपि)। तकियेमें माथा घुसाया करता है (एपिस, बेल, हेलिबो, हाइपि, कैम्फो)। माथा पीछेकी ओर टेढ़ा हो जाता है (साइक्यूर, साइना, क्यूप्रम-ऐसेट, ग्लोन, हेलिबे, ओपि, हेलैन) ; माथा हिलाया करता है और चारों ओर माथा डगमगाता है ; आक्षिप्तावस्थामें दाहिने पार्श्वकी ओर ज्यादा हिलाता है। सूर्यास्तके बाद झुकने या उठनेके समय हाथसे माथा पकड़ रखता है।

आँख।—आँख बिलकुल खुली, टकटकी लगी हुई, ऐसे भावकी मानो बाहर निकली पड़ती है (ऐमिल-नाई, बेल, हायो, नैजा, ओपि) ; चमकीली और घूमती हुई (बेल, कैमो, हायो, लिसिन, वेरेट)। चमकीली रोशनीमें आँख झुलस जाती है ; रोशनीमें रह नहीं सकता। चमकीली रोशनी

या कोई दूसरी चमकीली चीज देखनेपर धनुष्टङ्कार आदि अकड़न पैदा हो जाती है। दो देखना—प्रत्येक चीज कुछ फली और बायीं ओर उसीकी तरह और एक चीज दिखाई देती है। रतौंधी (सिङ्को, हायो, लाई, ऐ-नाई), आँखकी पुतली फैली (बेल, हायो, ओपि) कभी-कभी स्थिर हो जाया करती है और उसमें रोशनीका ज्ञान नहीं रहता (साइक्यू, डिजिट)। आँखें प्रदाहकी तरह लाल और उसके भीतरकी शिराएँ सब ऐसी मालूम होती हैं मानो मैले खूनसे भर रही हैं। क्षणस्थायी दृष्टिलोप। निद्रित अवस्थामें रोगीकी आँख अध-खुली रहती है (इपिक, ओपि, पोडो, सल्फ)।

कान।—शब्द सहन नहीं होना; कहीं फी जरा-सी आवाज़ हुई कि रोगी चौंक उठा (ऐकोन, बेल, लैके, ओपि, जिङ्कम)। अच्छी तरह सुन नहीं पाता। कानमें ऐसा अनुभव होता है, मानो हवा निकल रही है (चेलिडो, लिडम, पल्स)।

मुखमण्डल।—चेहरा गर्म, लाल और फूला हुआ (बेल, ओपि); दृष्टि उन्मादकी तरह (ऐक्टिया, बेल, ग्लोन, हायो, लिसिन), दोनों गालोंपर सीमाबद्ध लाली और हाथ-पैर बरफकी तरह ठण्डे, ललाट सिकुड़ा, भ्रुकुटी चढ़ीकी तरह (कास्टि, कैमो, हेलिबो, इग्ने)। रोगिनी समझती है, कि उसका चेहरा लम्बा हो गया है (ग्लोन, स्टैनम)। मस्तिष्कावरण-झिल्ली-प्रदाह रोगमें एक पार्श्वकी विसर्पिका—रोगी अंश कभी फड़का करता है और कभी सुन्न हो जाता है। स्नायविक मुखशूल—पागल बना देनेवाली तकलीफ़, रह-रहकर रोगीकी देह नाच उठती है और ऊपरकी ओर उछल-सी जाती है। रोगी अपना ओठ एक-बार पीछेकी ओर और एक बार सामनेकी ओर दिखाया करता है। दोनों ओंठ सूखे और लसदार। आक्षेपके बाद दाँती लग जाया करती है। निचला हनु झूल पड़ता है (आर्नि, हेलिबो, लैके, ओपि)। दाँत-पर-दाँत रगड़ा करता है (बेल, सिना, हायो)। दाँतपर अधिक मैल जमना (ऐ-कार्बोल, हायो, रस)।

मुख-विवर।—जीभ फूली, अकड़ी और सूखी; रोगी सहजमें जीभ हिला नहीं सकता (बेल, क्रोटेल, हेलिबो, लैके, फाइजस, निकोलम)। बाधाके साथ तोतलाना (बेल, मर्क, नक्स-वोम, कैनाब-इन, सेलिन), बहुत चेष्टा करने और नाना प्रकारका चेहरेका भाव बनानेपर मुँहसे बोली निकलती है (बोवि,

इग्ने, स्पाई), समझमें नहीं आता कि क्या कह रहा है (ऐ-फास, बेल, हायो) या बिलकुल ही बोल नहीं सकता (ऐ-नाई, आर्जेण्ट-नाई, ग्लोन, कैलि-ब्रोम); मुँह और कण्ठके भीतर इतना सूख जाता है, कि देखनेपर चिकना दिखाई देता है और बहुत प्यास लगती है। मुँहसे लगातार गाढ़े गोंदकी तरह लार निकला करती है; शीत और ज्वरके समय बहुत लार निकलती है। मुँहमें मानो गोली बँध जाती है।

गलेके भीतर।—कण्ठनलीके आक्षेपिक संकोचनकी वजहसे निगलनेमें कष्ट (बेल, कैन्थ, हायो, हेलिबो, लैके, ऐ-नाई)। निगलनेके समय निचले हनुके नीचेवाली ग्रन्थिमें डंक मारनेकी और चबानेकी तरह दर्द मालूम होता है। जलातंक रोगमें—जलीय पदार्थ देखते ही डर मालूम होता है। सामने रखा हुआ पानीका गिलास देखते ही रोगी डरता है (बेल, कैन्थ, लिसिन) और उसमें अकड़न पैदा हो जाती है। कण्ठनली संकुचित हो जाती है और मुँहसे फेन निकलने लगता है (लिसिन), ऐसा अनुभव होना कि कण्ठमें पानी खौल रहा है। कण्ठ बहुत सूखा (एपिस, नक्स-मस, रस)।

पाकाशय और अन्त्राशय।—भयानक प्यास; खट्टी चीजें खानेका अत्यन्त आग्रह (कैमो, हिप, मैग-कार्ब, थिरिडि), हिचकी, रोगी छटपटाया करता है और सोया-सोया चिल्ला उठता है। मुँहमें बहुत लार रहनेपर भी तेज़ प्यास। वमन—तकियेसे सर उठाते ही (आर्स, गासिप, वेरेट, ब्राई, कोलचि; थोड़ा भी शरीर हिलानेपर—लैके, टैबाक, वेरेट) या हरे रङ्गका और खाई हुई चीज़ मिला या पित्तमय। उदरमें अधिक आध्मान होनेकी वजहसे रोगिनीकी नींद खुल जाती है। उसके उदरमें ऐसा मालूम होता है कि न जाने कितने कीड़े रेंग रहे हैं और वह चिल्ला उठता है। उदरमें आध्मान होनेकी वजहसे फूल उठता है, पर एकदम कड़ा नहीं होता।

मल और मूत्र।—मल और मूत्र, दोनों ही रुक जाते हैं। बाल-विसूचिका—मल बहुत बदबूदार, बच्चेकी वक्र दृष्टि (डेरा देखना); चेहरा उतरा हुआ और डरा तथा चौंककर जागता है। पेटमें भयानक मरोड़ होकर प्रलापके साथ काले रङ्गका बहुत ही बदबूदार मल निकला करता है (आर्स, ओपि, प्लम्ब, वेरेट, लैक, कैन्थ)। मलद्वारसे जमा हुआ खून निकलता है (ऐलूमेन)। पेशाब—साफ़, परिमाणमें अधिक, रातमें एकाएक पेशाब हो

जाता है; अनजानमें पेशाब होता है (बेल, साइक्यू, हायो, ओपि, रस); मस्तिष्ककी बीमारीमें पेशाब रुकना (ऐपोसिन); कभी-कभी पेशाबके समय पेशाब धीरे-धीरे, बून्द-बून्द और क्षीण स्रोतमें निकलता है (बेल, कैन्थ, कास्टि, हायो, नक्स, सार्सा); कितना भी वेग क्यों न दे, स्वाभाविक स्रोतसे पेशाब नहीं निकलता। अनजानमें ज्वालाजनक कषाय पेशाब होता है, पर बहुत जोर लगाने या तलपेट दबानेपर भी पेशाब नहीं होता, विशेषकर कष्टकर प्रसवके बाद। पेशाबके बाद ही फिरसे वेग, मानो मूत्राशय अभी खाली नहीं हुआ है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—स्त्री-पुरुष दोनों हीकी कामुकता बढ़ जाती है, अस्वाभाविक इन्द्रिय सेवनकी वजहसे मृगी रोगमें (ब्यूफो, कैल्के, प्लैट, सिपि, सल्फ, कैलि-ब्रोम)। बच्चा बराबर अपनी लिङ्गेन्द्रियपर हाथ रखा करता है (ऐकोन, ब्यूफो, हायो, मर्क)। कामुकता (कैन्थ, ओरिगैन, प्लैट); लगातार अश्लील भाषामें गाली देता है। रोगिनीके शरीरसे भी वीर्यकी गन्ध आती है। जरायुसे रक्त-स्राव, रोगिनी बहुत बकती है, कभी गाती है और कभी कभी देवताकी आराधना करने लगती है; कभी-कभी जमे हुए खूनके टुकड़े सब निकलते हैं (कैमो, क्रोकस-सैट, प्लैट, सैबाइ, सैङ्ग्विन)। गर्भ-स्राव हो जानेकी सम्भावना—रोगिनी लगातार बका करती है, कभी गाती है और कभी अत्यन्त विनम्र भावसे प्रार्थना करने लगती है। प्रसवके बादका आक्षेप, लगातार पसीना निकला करता है। प्रसवके बादका लोदस्राव बहुत घट जाता है; कभी-कभी स्तनमें काफी दूध रहते-रहते ही उन्मादके लक्षण प्रकट हो जाते हैं; रोगिनी नाना प्रकारकी छायामूर्त्ति देखती है और मूर्खोंकी तरह बकती है।

श्वास-यन्त्र।—कण्ठस्वर ऊँचा और पतला, कर्कश या अस्पष्ट। द्विदल ग्रन्थिका स्पन्दन। श्वास-प्रश्वास कष्टजनक और बहुत तेज़। वक्षमें सङ्कोचनकी वजहसे ऐसा मालूम होता है, मानो साँस रुकी जाती है (लाइ, मिडोरिन, स्पाइ, स्टैफाइ)। श्वासकष्ट मालूम होनेकी वजहसे रोगिनी निर्मल वायु सेवनके लिये बहुत लालायित रहती है (नेट्र-म्यूर, सल्फ)। शराबियोंकी खाँसी (आर्स, काकस, नक्स, ओपि, सेलिन)। खाँसी, बँधे समयका अन्तर देकर पैदा हो जाती है; वृद्धि—सवेरे; कण्ठको छूनेपर (लेके) प्रबल वायु-

वाले स्थानमें चलनेपर (आर्स, कार्बो-वे ; कोई चिढ़ानेवाला कारण होनेपर,— ऐकोन, स्टैफ); कोई चमकीली चीज देखनेपर (आगकी ओर देखनेपर,— ऐण्टि-क्रूड) और पानी पीनेपर (लिसिन, नेट्र-फास)। क्रुप खाँसी—घड़-घड़ खाँसी, छाती जकड़ी मालूम होती है, मानो साँस रुक जायगी। हृदय जोरसे धड़का करता है। वक्षमें घड़घड़ाहट होती है, रोगी उद्विग्न हो पड़ता है, माथेमें खून चढ़ आता है और खून मिला बलगम निकला करता है ; कभी-कभी माथेमें धनुष्टङ्कारकी तरह आक्षेप पैदा हो जाता है, किसी तरहसे डर जानेके बाद जरा हिलने-डोलनेसे ही कलेजा इतनी जोरसे धड़कने लगता है, कि रोगीके मुँहसे घण्टे दो घण्टे तक बोली नहीं निकलती। सान्निपातिक ज्वरमें रोगीके वक्षपर एक तरहके लाल उद्भेद निकलते हैं। रोज़ सवेरे नींद खुलनेपर श्वासमें कष्ट मालूम होता है ; ठण्डी हवामें उसकी साँस रुक जाना चाहती है।

प्रत्यङ्ग आदि।—मेरुदण्डमें बहुत स्पर्श असहिष्णुता ; जरा दबानेसे ही रोगी चिल्ला उठता है और पागलपन दिखाने लगता है (ऐट्रोपिन, सल्फ़, केलि-कार्ब, सल्फ़, ऐकोन)। मेरुदण्डके बीचमें और चूतड़में मानो अकड़न पैदा हो गयी है—ऐसा अनुभव होना। गर्दन अकड़ी—पीछेकी ओर माथा झुका नहीं सकता। बाँह और हाथका आक्षिप्त भाव—रह-रहकर चौंक उठता है। शय्या नोचा करता है या भ्रममें देखे हुए पदार्थ पकड़नेके लिये हाथ फैलाता है (हायो, आर्स, बेल, ओपि, रस, जिङ्कम)। हाथ-पैर फड़का करते हैं (बेल, हायो)। प्रत्यङ्गोंकी कण्डराएँ सब सिकुड़ा और फैला करती हैं या फड़का करती हैं (हायो, केलि-आयोड)। हाथ-पैर काँपा करते हैं (आर्जेण्ट-नाई, कास्टि, काकुल, कोना, जेल्स, नक्स, ओपि, प्लम्ब, टैबाक)। रह-रहकर हाथ-पैर अवश हो जाते हैं, उनमें झुनझुनी होती है। रोगी अपने माथेके ऊपर दोनों हाथ उठाकर ताली बजाता है। मुट्ठी बँधी रहती है। बाएँ उरु-शिखर प्रदेशका स्नायुशूल—पीब पैदा होनेमें इतनी तकलीफ़ होती है, कि रोगी बेचैन हो पड़ता है। पानीके गिलासके पास हाथ ले जाना या वह ग्लास पकड़कर मुँहमें लगाना बहुत कष्ट-जनक मालूम होता है। अंगुलबेढ़ा, तकलीफ़से रोगीको पागल बना देता है। पीब पैदा होनेका दर्द इससे बहुत कुछ घट जाता है (हिपर, माइलि, सल्फ़, ऐन्थ्राक्सिन)।

सार्वाङ्गिक।—रोगी हमेशा सोये रहना पसन्द करता है (ऐसोन-ऐसेट, बेल, ब्राई, कैल्के, फेरम, नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम, स्किला)। चलनेके समय उसकी देह ढलमलाया करती है ; बिना सहारे एक क़दम भी नहीं चल सकता (आर्जेण्ट-नाई, काक्यु, कास्टि, हायो, नक्स-वोम, पेट्रोल, फास, प्लम्ब)। धनुष्टङ्कार आदि आक्षेप—अधिकांश स्थानोंमें बहिरायाम अर्थात् शरीर पीछेकी ओर धनुषकी तरह टेढ़ा हो जाता है—चमकीली, ज्योतिर्मय चीजें सब या पानी देखनेपर या किसीके रोगीको छूनेपर (बेल, कैन्थ, हायो, लिसिन ; छूनेपर—ऐङ्गस, बेल, साइकूट, काकूट, कार्बोन-आक्सिजेन) या यदि रोगीको कोई ऊँचो आवाजमें कुछ कहता है, तो फिर अकड़न पैदा हो जाती है (लिसिन)। आक्षेपके समय बच्चा काठकी तरह कड़ा हो जाता है। भयकी वजहसे ताण्डव रोग या प्रेत-नृत्य ; अंग-प्रत्यङ्गोंमें बीच-बीचमें सुरसुरी होकर कोना-कोनी भावसे प्रत्यङ्गोंका नृत्य आरम्भ हो जाता है ; कभी माथेपर बाँह घुमाया करता है, कभी उछल पड़ता है, टेबिलपर चढ़ना चाहता है इत्यादि। मूर्च्छावायु-ग्रस्त रोगिनी थोड़ेमें ही कातर हो पड़ती है और कभी हँसती है तथा कभी रोती है। पर्यायक्रमसे इसी तरह विपरीत भाव सब प्रकट होते हैं। इन्द्रियकी उत्तेजना भी बहुत बढ़ जाती है। डर जानेकी वजहसे मृगी—प्रकोप पैदा होनेके कुछ ही पहले रोगिनी चिल्ला उठती है और इसके बाद ही तन्द्रामें जा पड़ती है ; पेटमें दर्द हुआ करता है। शरीर एक ओर सुन्न या पक्षाघाताक्रान्त और दूसरा पार्श्व फड़का करता है। शरीरका समस्त रस सञ्चय और निःसरणकी क्रिया रुक-रुक जाया करती है। आक्षेपके समय बहुत ज्यादा पसीना होता है और इसके बाद ही औंघाई (व्यूफो, बेल, कोम्फो)। इसके अधिकांश रोगमें दर्द नहीं रहता (ओपि) ; यन्त्रणा-राहित्य इसका एक प्रधान लक्षण है।

त्वचा।—समूची देहपर गहरे लाल उद्भेद निकलते हैं (एपिस, एरम, बेल, रस)।

निद्रा।—गहरी नींदके समय नाकसे आवाज़ हुआ करती है (लोरो), नींद खुलनेपर महा गम्भीर भाव धारण करता है ; सभी चीजें नयी मालूम होती हैं या चिल्ला उठता है। ऐसा भाव प्रकट करता है, मानो न जाने कितना डर गया है। छिपनेकी चेष्टा करता है और शय्यासे उछल पड़ता है।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—मानो पीठपर पानी पड़ा है ऐसी सर्दी मालूम होना, शीत पीठकी राहसे निचले अङ्गमें उतरता है (मानो पीठपर ठण्डा पानी ढाल रहा है—रस, सैबाड ; मानो पीठपरसे पानी गिर रहा है—ऐगार)। सारा शरीर ठण्डा—चेहरा लाल और माथा गर्म, हाथ-पैर फड़का करते हैं। ओढ़ना उतारनेपर बहुत जाड़ा मालूम होता है (थूजा)। शरीरकी त्वचा बरफकी तरह ठण्डी और पसीनेसे तर ; हाथ और दोनों पैर नीले हो जाते हैं (वेरेट)। कभी-कभी चेहरा, हाथ और दोनों पैर नीले और बरफकी तरह ठण्डे। हाथ-पैर बहुत ठण्डे, नीले और उनमें हिलानेकी शक्ति नहीं रहती ; पर उत्तापावस्थामें बार-बार प्यास लगती है। पहले माथा और चेहरेमें उत्ताप पैदा होता है, इसके बाद समूची देह ठण्डी हो जाती है और उसके कुछ ही बाद सारे शरीरमें उत्ताप और मानसिक बेचैनी प्रकट हो जाती है। ज्वरके समय रोगी सो जाता है (ऐण्टिम-टार्ट, युपेट, लैकि, नेट्र-म्यूर, ओपि, पोडो, रोबिन, सैंबियु ; ज्वरके समय सो जाता है और बहुत ज्यादा पसीना होता है—पोडो)। सन्ध्याके पहले मिचली और वमन होकर भयानक उत्ताप और बेचैनी पैदा हो जाती है ; माथा और चेहरा लाल हो उठता है और बाकी अङ्ग ठण्डे और उजले दिखाई देते हैं (बेल, ओपि); बहुत ज्यादा उत्तापकी वजहसे शरीरमें दाह हुआ करता है और पसीना होता है (सिपिया)। उत्ताप अवस्थामें शरीरका छोटेसे छोटा हिस्सा भी यदि ओढ़नेके बाहर निकल जाता है, तो तकलीफका ठिकाना नहीं रहता (बहुत अधिक जाड़ा मालूम होता है—नक्स)। बहुत सम्हालकर अच्छी तरह अपना शरीर ढँके रहता है। शीतावस्थामें मुखमण्डल और माथेमें उत्ताप, उत्तापावस्थामें पैर और दोनों चरण बरफकी तरह ठण्डे। पसीना होनेके समय रोगी किसी तरह भी अपनी देह ढँक नहीं सकता ; बल्कि उसके सरमें चक्कर आया करता है। प्रलाप बकता है और कभी-कभी मृगीकी तरह अकड़न पैदा हो जाती है (हायो)। पसीनेवाली अवस्थामें भी खासी प्यास रहती है। आँखमें जलन और धुँधली दृष्टिके साथ बहुत ज्यादा पसीना होता है। पसीना तेलकी तरह (ब्राई, मर्क, फास, थूजा, टियुबर्क्युलिन) और सड़ी गन्ध-भरा (कार्बो-ऐन, सोरिन, पाइरोजेन, स्ट्रैफाई)। बच्चोंके बोखारमें वह सोया-सोया रो उठता है, चौंक पड़ता है और उसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग फड़का करते हैं। आँख अधखुली। पुतली फैली और पेशाब रुक जाया करता है।

प्रतिविष।—बेल, कैम्फोरा, हायो, नक्स-वोमिका।

अनुकूल सम्बन्ध।—बेलेडोना और क्यूप्रमके बाद इसके प्रयोगसे विशेष लाभ हुआ करता है, विशेषकर क्रुप खाँसीमें। जरायुके फूल अटकनेके कारण यदि रक्तस्राव हो और प्रलाप आदि भी मौजूद रहे तो कितने ही स्थानोंमें "स्ट्रैमोनियम" की अपेक्षा "सिकेलि"से ज्यादा फायदा होता है (आर्स, बेल, ब्राई, क्यूप्रम, हायो, लाई, पल्स, सल्फ)।

तुलनीय।—जरायुसे रक्त-स्राव, फूल अटकना, प्रलाप—सिकेलि, पाइरो। प्रलाप—बेल, लैके, कूप्रम, जिङ्कम। भ्रम देखना—बैप्टो, थुजा। विसर्प—बेल, रस। चमकोली रोशनोमें आक्षेप—कैलि-ब्रोम। गर्म पसीना—ओपियम। वाचालता—कूप्रम, हायोसायेमस, लैके, एपिस। हँसना और रोना—अरम, लैकेसि, ओपियम। जननेन्द्रियपर हाथ रखना—जिङ्कम। धनुष्टंकारको तरह आक्षेप—नक्स-वोम। भागनेकी चेष्टा—बेल, ब्रायो। अनिद्रा—बेलेडो। रतौंधी—बेलेडो।

सदृश।—ऐगार, आर्स, बेल, ब्राई, कैमो, साइक्लूटा, हायो, इग्ने, मर्क, नक्स-वोम, ओपि, प्लम्ब, पल्स, सिकेलि, सल्फ, वेरेट-एल्ब।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३० या २०० शक्ति।

स्ट्रान्शियाना कार्बोनिका

(STRONTIANA CARBONICA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—हृत्शूल; मलान्त्रमें जलन; संन्यास; अस्थिकी बीमारी; छातीमें जलन; कब्जियत; ऐंठन; अतिसार; अजीर्ण; दुबलापन; अनजानमें पेशाब; पैर ठण्डे; बवासीर; सर-दर्द; हिचकी; श्वेत-प्रदर; आर्त्तवमें विकार; शिरा-प्रदाह; गृध्रसी; चोट लगना; मायक धातु-दोषको वजहसे मर्ज; शिराका फूलना; दृष्टिका दोष।

उपयोगिता और आभास।—माथेमें बहुत अधिक रक्त-सञ्चय, चेहरा लाल तथा संन्यास; मेरुदण्डसे पैदा होनेवाला सर-दर्द, खूब जल्दी-

जल्दी पतले दस्त आना ; उर्वास्थिका सड़ना या उरुकी अस्थिका क्षय होना तथा एँड़ीकी इस ढंगकी मोच, जो आर्निका या रियुटासे आरोग्य न हो और गुल्फ-सन्धिमें बहुत दिनोंका दर्द प्रभृति इसकी विशिष्ट क्रिया-भूमि है। इसके कई निर्णायक लक्षण ये हैं :—(१) कभी-कभी चेहरा तमतमा उठता है और धमनियोंमें टपक-सी होने लगती है। (२) चलनेके समय रोगीके माथेमें खून अधिक चढ़ जाना और चेहरा लाल हो जाना, मानो संन्यासका लक्षण है। (३) मानो श्वास रुक जाना चाहती है। हृत्पिण्डमें ऐसा ही अनुभव होना ; रोगी किसी तरह भी स्थिर नहीं रह सकता ; ऐसा मालूम होता है, मानो छातीपर कोई भारी चीज़ दबी हुई है। (४) माथेमें अधिक रक्त-संचय होनेपर, गर्म चीजोंसे माथा ढँके रहनेपर सर-दर्द घट जाता है। (५) जलीय हवा रोगी बिलकुल ही सहन नहीं कर सकता। (६) मलका पतलापन, रातके प्रथम प्रहरमें बहुत बढ़ जाता है और एक बार पाखाना होनेके बाद हाथका पानी सूखते-न-सूखते फिर पाखाना लग आता है। रातके अन्तिम भागमें ३ बजे घट जाया करता है। (७) पतले दस्तके साथ अस्थिका, विशेषकर उरुकी हड्डीका क्षय और सूजन। (८) एँड़ी मुड़ जानेके कारण बहुत दिनोंतक स्थायी दर्द। (९) मुखमण्डलमें और शरीरके अन्यान्य अंशोंमें प्रमेह विषकी वजहसे तर खुजली और जलन करनेवाले उद्भेद पैदा हो जाते हैं। दाहिने अंशके साथ इसकी विशेष घनिष्टता है। भोजन कर लेने बाद पाकाशयका भार घट जाता है।

लक्षणावली

मस्तक।—मस्तकमें रक्तका अधिक सञ्चय होना और रोगी जितनी बार चलता है, उतनी ही बार उसका चेहरा लाल और गर्म हो उठता है ; संन्यासका लक्षण (बेल, ग्लोन, ऐस्टि-रियुब), गर्म कपड़ेसे माथा ढकनेपर और उत्ताप लगनेपर घट जाता है (मैग-म्यूर, साइलि), मानो माथेकी त्वचा ब्रह्मतालुकी ओर खिंचती है, ऐसी अनुभूति पैदा करनेवाला सर-दर्द (ब्राई, केलि-आयोड, मिनियैन, मर्क, प्लैट) और मानो माथेकी खोली करोटीके भीतरके सभी पदार्थोंके दबावकी वजहसे बाहर निकली आती है (ग्लोन); वृद्धि—सन्ध्याके समय (रस, वेटैबाक, लि) माथा झुकाकर सोनेपर (आर्स, फास, पल्स, साइलि)। सर-दर्द धीरे-धीरे बढ़ता और धीरे-धीरे घटता है

(प्लैट, स्टैनम) ; घटना—उत्तापसे, विशेषकर सूर्यकी गर्मीसे (मैग-म्यूर, मैग-फास, रस, साइलि, स्ट्रैमोन)। सर-दर्द—मेरु-मूल या गर्दनके पीछेसे दर्द पैदा होकर ऊपरकी ओर समूचे माथेमें चला जाता है (मिनियैन, पैरिस, साइलि); घटना—दबाने और गर्म कपड़ेसे माथा ढँकनेपर (मैग-म्यूर, साइलि)। माथा और चेहरेमें गर्मी मालूम होना, विशेषकर तीसरे पहर चलनेके समय—चेहरा लाल हो उठता है। बेचैनी बहुत मालूम होती है और औंघाई आती है। ऐसा मालूम होता है, मानो ब्रह्मतालुसे ऊपरी हनु चिपक गया है, मानो भीतरसे माथा फैल रहा है, मानो माथेमें बहुत खिंचाव पड़ रहा है; धीरे-धीरे बढ़ता और घटता है।

आँख।—आँखोंमें जलन होती है, खींचन मालूम होती है और लाल हो उठती हैं। पलकें बहुत फड़का करती हैं। रगड़नेपर आँखके सामने लाल और नीले चक्कर सब दिखाई देते हैं (कोमोक्लैड) और उसमें मानो धूलके कण गिर गये हों ऐसा दबाव मालूम होना (कोरैल, पल्स)। दृष्टिके सामने मानो रोशनीकी किरणें काँप रही हैं या तरंगकी तरह हिल रही हैं (एराण्डो-मेरि) अन्धकारमें हरे बिन्दु सब उड़ते दिखाई देते हैं। अन्धकारमें रह नहीं सकता (कैनाब-इन, स्ट्रैमोन)।

नाक।—नाक छिड़कनेपर, रंध्रके भीतरसे काले रंगकी खून मिली सखी पपड़ी निकलती है (नेट्र-आर्स); नाकका बायाँ पार्श्व फड़का करता है (मस्कस, फाइजस)।

मुखमण्डल।—रह-रहकर चेहरा तमतमा उठता है (ऐमिल, ऐकोन, बेल, ग्लोन, लैके) और सारे शरीरकी धमनियोंमें टपक हुआ करती है, विशेषकर स्त्रियोंकी वयोसन्धिके समय (ऐमिल)। चेहरा लाल और प्रदाह पैदा करनेवाला उत्तापयुक्त हो जाता है। मुखमण्डल या दाहिने गालमें खुजली पैदा हो जाया करती है; खुजलानेपर और भी बढ़ आता है। चेहरेपर प्रमेह विषसे उत्पन्न दाने सब निकलते हैं, उसमें जलन और कुटकुटी हुआ करती है और उससे रस निकला करता है।

मुख-विवर।—दाँतमें दर्द—दर्द चिलक मारनेकी तरह। ऐसा मालूम होता है, कि दाँत सब किसी पेंचसे आपसमें कस दिये गये हैं (ब्राई, इयुफोर्ब)। मुँहसे बदबू निकलना (चेलिडो, नक्स-मस, पल्स)। निगलनेके

समय मानो गलेमें खुच-खुच करता है (आर्जेण्ट-नाई, डलिकस, हिपर, नेट्रम-आर्स)।

पाकाशय और अन्त्राशय।—मुखमण्डलमें जलन करनेवाला उत्ताप मालूम होनेके साथ ही मिचली, मुँहमें मिट्टीका स्वाद (फेरम, नक्स-मस, टेल्यू)। प्रबल हिचकी (मैग-फास, मस्कस, नक्स-मस, निकोलम, नक्स-वोम), कुछ भी क्यों न खाये, उसके बाद ही (तुरन्त या कुछ देरसे) बहुत गड़बड़ी मालूम होती है। पेट भारी मालूम होता है ; वृद्धि—चलनेपर (जिङ्कम) ; घटना—भोजनके बाद। पेट जकड़ जाता है और कण्ठमें पानी भर आता है। नाभि-प्रदेशमें दर्द, पुट्ठे-प्रदेशके छिद्रमें सुई गड़नेकी तरह दर्द।

मलान्त्र और मल।—कब्जियत, भेंड़के मलकी तरह गाँठें सब इतने कष्टसे निकलती हैं कि रोगी बेहोश हो जाना चाहता है और उसकी तकलीफ़का ठिकाना नहीं रहता। पाखाना हो जाने बाद बहुत देरतक मलद्वारमें जलन हुआ करती है (रैफ़िनस) और रोगी सुस्त हो पड़ता है (आर्स, इग्ने, फास)। पतले दस्त--मल पीले रङ्गका पानीकी तरह, तलपेटमें मरोड़की तरह दर्दके साथ तकलीफ़ रातमें बहुत बढ़ जाती है और पाखानेसे आते-न-आते फिर वेग पैदा हो जाता है। रातके ३-४ बजनेके समय घटता है ; पतले दस्त आनेके बाद, बहुत देरतक मलद्वारमें जलन हुआ करती है (पियोनिया, रैफ़िनस)। मलनालीमें ऐसा दर्द मानो बवासीर हो गया है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रजःस्राव देरसे होता है—स्राव पहले रसकी तरह, इसके बाद थक्का-थक्का खून निकलता है। प्रदर—चलनेके समय स्राव हुआ करता है (इस्कुर-हिप, वोवि, कार्बो-ऐनि, मैग-मूर, नेट्र-मूर, सार्सा)।

श्वासयन्त्र।—स्वरभंग और कण्ठमें रूखापन मालूम होनेकी वजहसे खाँसी पैदा हो जाती है। वायुनलीमें उत्तेजनाकी वजहसे सूखी खाँसी आती है ; वृद्धि—रातमें। चलनेके समय छातीमें दबाव और श्वासमें तकलीफ़ मालूम होती है (कैक्टस, इग्ने, पल्स)। रह-रहकर वक्षमें ऐसा दर्द मानो जकड़ गया है या नख लग रहा है ; खाँसने या श्वास लेनेके समय सुई गड़नेकी तरह दर्द (ब्राई, कैलि-कार्ब, स्क्विला)। वक्षोस्थिको छूनेपर दर्द मालूम होता है (कैस्टोर, साइमेक्स, रैनान, साइलि, ओस्मियम) ; वक्षोस्थिके बायें पार्श्वमें ऊपरकी ओर फैलनेवाली जलन। हृत्प्रदेशमें ऐसा अनुभव होना मानो

छाती दबाकर श्वास-रोध कर रहा है (एपिस, आर्स, डिजिट, कैलि-कार्ब, लैके, स्पाई)। रोगी बेचैन हो पड़ता है, उसे ऐसा मालूम होता है, मानो वक्षपर एक भारी चीज़ रखी हुई है (आइबिर, कैलि-बाई, प्लेट, सेनेगा)। वक्षोस्थिके नीचे रातमें ऐसा दर्द होता है, मानो दबाया हुआ है (ऐ-फास, कैसो, इयुफ्रे)। शय्या त्यागनेपर फिर नहीं रहता। हृत्पिण्ड और धमनी आदिका का प्रबल स्पन्दन (ऐमिल, ग्लोन, वेरेट-विर)।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दन अकड़ी और उसमें फाड़नेकी तरह दर्द, मानो गलेकी कण्डराएँ सब सिकुड़ गयी हैं (बेराई-कार्ब, जिङ्कम)। पीठ और नितम्ब देशमें इस तरहका दर्द मानो चोट लग गयी है, छूने या झुकनेपर बहुत दर्द मालूम होता है (नेट्र-म्यूर, सोधा नहीं हो सकता—सोरिन)। नितम्बदेश और पीठमें इस तरहका दर्द मानो टूट गया है। प्रत्यंग-प्रदेशमें, खासकर सन्धियोंमें उखाड़ने जैसा दर्द; बढ़ना—सन्ध्याके समय और रातमें बिछौनेपर सोनेके समय (मर्क, कैलि-आयोड, सिफिलिन)। इसके द्वारा अधिकांश स्थानोंमें खासकर दाहिने अङ्गपर ही रोगका आक्रमण अधिक हुआ करता है; सन्ध्याके समय शरीरका दाहिना अङ्ग हिला नहीं सकता, मानो पक्षाघात हो गया है। प्रत्यङ्गोंमें ऐसा दर्द मानो अस्थि-मज्जा सब चबाया जा रहा है (ऐ-फास, रियुटा)। पैरकी पीटलीमें और तलवेमें ऐंठन (कैल्के, कूप्रम-ऐसिट, प्लम्ब, साइलि)। एँड़ीमें पुरानी मोचके कारण दर्द (आर्निका और रियुटासे लाभ न होनेपर)। ऊरुकी हड्डीका क्षय (ऐङ्गस्टुरा, ऐ-फ्लू, अरम-म्यूर-नेट, साइलि), पानीका तरह दस्त (साइलि), इसके साथ ही रोगवाले अंशकी सूजन।

सार्वाङ्गिक।—रोगी बहुत दुबला हो जाता है (ऐ-नाई, आर्स, चायना, ग्रैफ, आयोड, लाई, नेट्र-म्यूर, फास, प्लम्ब, साइलि, स्टैनम, सल्फ)। अधिकांश दर्द ही मानो मज्जागत रहता है और रह-रहकर बड़े जोरसे देह फड़क उठती है। शरीरमें गर्मी मालूम होनेपर भी रोगी अपनी देह खोलना नहीं चाहता (आर्जेण्ट-नाई, बेल, मैग-कार्ब, नक्स-वोम, पल्स, रास, सैम्बियु, स्क्विला, स्ट्रैमोन)।

त्वचा।—चेहरा और शरीरके अन्यान्य अंशोंमें प्रमेह विषकी वजहसे

उद्भेद पैदा हो जाया करता है। ये उद्भेद सब बहुत खुजलाया करते हैं और उनसे रस बहता है (सार्सा, थूजा)।

निद्रा।—निद्रित अवस्थामें हाथ-पैर आदि और देह फड़का तथा चौंका करती है। सूखी खाँसीके कारण रातमें बार-बार नींद खुल जाती है (कैमो, सिना, हायो, कोना, स्क्विला)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—ज्वरके समय नाक और मुँहसे आगकी लपटकी तरह उत्ताप निकलता है और बहुत प्यास लगती है। रातमें ज्वरमें गात्र सूखा और पसीनेसे रहित रहता है। रातमें बहुत ज्यादा पसीना हुआ करता है और शरीरका कोई अंग ओढ़नेसे बाहर निकल जानेपर उस खुले अंगमें तुरन्त दर्द मालूम होता है।

वृद्धि।—छूनेपर, मलनेपर, माथा झुकाकर सोनेपर, शरीर हिलाने, चलने, झुकने, शारीरिक परिश्रमसे, सन्ध्याके समय, रातमें जलीय तर हवा लगनेपर और भोजनके कुछ देर बाद।

उपशम।—उत्ताप लगनेपर, खासकर सूर्यके उत्तापसे, अन्तिम रातमें ३-४ बजनेके समय और भोजन करते ही।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—आर्निका, ऐस्टिरियस-रियु, बेराइटा-कार्ब, फेरम, इस्क्युलस-हिप, मैग-म्यूर, रियुटा, रास, साइलि, स्ट्रैमोन, वैलि।

सम्बन्ध।—आर्नि, कैल्के, कास्टि, कैलि-कार्ब, मर्क, नक्स-वोम, फास, पल्स, रियुटा, सिपिया।

शक्ति।—२रा दशमिक विचूर्णसे ६ठाँ शततमिक क्रम।

स्ट्राण्टियम ब्रोमेटम

(STRONTIUM BROMATUM)

दूसरा नाम।—ब्रोमाइड आव स्ट्राण्टियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और द्रव दोनों आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह अग्निमान्द्य और खासकर स्नायविक दौर्बल्यकी वजहसे अग्निमान्द्य और अम्लरोगकी एक बढ़िया दवा है।

गर्भावस्थाके वमनमें भी यह फायदा करता है। मूत्रपथरी, बदबूदार पेशाब, पैर फूलना, पैरकी शिराएँ फूलकर अकड़ जाना प्रभृति उपसर्गोंमें इसका व्यवहार होता है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

स्ट्रान्शियम नाइट्रिकम

(STRONTIUM NITRICUM)

दूसरा नाम।—नाइट्रेट आव स्ट्रान्शियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—तरल द्रवकी आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—सर-दर्द, कानके पीछे घाव, अंटसंट खानेकी इच्छा, थोड़ा ऋतुस्राव प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

स्ट्रोफैन्थस हिस्पिडस

(STROPHANTHUS HISPIDUS)

दूसरा नाम।—ओनाई, ऐरो, प्वायजन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पके बीजसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—मदात्यय; रक्ताल्पता; खाँसी: दो देखना; शोथ (हृत्पिण्डकी बीमारीके कारण शोथ); रक्तकास; हृद्रोग इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—हृत्पिण्डकी नाना प्रकारकी दुरारोग्य बीमारियोंकी यह एक बहुत ही लाभदायक दवा है। नीचे इसकी संक्षिप्त नामावली लिखी जाती है:—

लक्षणावली

मन।—बकवादी और चिड़चिड़ा मिजाज़; सरमें चक्कर; उदरमें जलन इत्यादि।

पाकस्थली।—डकार और हिचकी, पाकस्थलीकी पेशियोंका फड़कना, अन्ननली और पाकस्थलीमें जलन; भूख न लगना और पाकाशयमें बेहद दर्द, यहाँतक कि कभी-कभी वमनतक हो जाया करता है। कभी-कभी पतला दस्त भी आता है। प्रायः जी मिचलाया करता है, पर वमन नहीं होता। भोजनसे अरुचि; भोजनके बाद ऐसा अनुभव होना कि गला रुक गया है और वमन।

अन्त्राशय।—यकृत-प्रदेशमें दबाव मालूम होना। दाहिनी कोखमें ऐसा दर्द मानो शूल बिंध रहा है (चेलिडो)। दाहिना मसाना और यकृत प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (लाई)। उदरमें हुड़हुड़ शब्द और नाभि-प्रदेशमें ऐसा मालूम होना मानो नख गड़ रहा है। स्थूलान्त्रके अंगूठीकी तरह चक्रके पास सुई गड़नेकी तरह दर्द। पेटमें बहुत दर्द होकर बार-बार पतला पाखाना होना, पर रोगीकी भूखमें किसी तरहकी गड़बड़ी नहीं होती; कूथनके बाद मलद्वारमें जलन पैदा करनेवाला पाखाना होना।

पेशाब।—मसानेमें बहुत अधिक रक्त-सञ्चय होता है। पेशाब बहुत थोड़ा और बहुत देरसे हुआ करता है। मसानेका प्रदाह, धमनी आदिमें रक्त-सञ्चय होनेके साथ। सारे शरीरके शोथ रोगमें पेशाबका रुकना।

हृत्पिण्ड।—रोगीके जीवनके किसी-न-किसी समय बहुत ज्यादा शारीरिक परिश्रम या व्यायामकी वजहसे श्वासकष्ट, हृदग्र भागमें बेचैनी मालूम होना या शरीरके विभिन्न अंशोंके धमनी आदिमें टपक। हृत्पिण्डकी क्रिया बहुत क्षीण, पर द्रुत। नाड़ी स्वाभाविक, पर क्षीण और इसके साथ ही श्वास-कष्ट, धमनी आदिकी अनमनीयता और स्थूलता; यकृतमें संकोचनकी वजहसे चर्बीका घट जाना। नये ज्वर आदिमें हृत्पिण्डकी क्रिया क्षीण। स्नायु सुस्त और मूर्च्छावायु ग्रस्त रोगिनियोंका कलेजा धड़कना। हृदयके अगले प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। हृत्पिण्डके द्वि-कपाट रन्ध्रकी राहसे ऊपर (हृत्कर्णमें) की ओर संचालित खूनका पीछेकी ओर लौट आना। शरीरमें शोथ और उसके साथ ही सूजन (डिजिट)। शराब, चाय और बहुत ज्यादा तम्बाकू सेवनकी वजहसे हृद्पिण्डकी सुस्ती और उत्तेजना प्रवणता।

प्रत्यङ्गादि।—सारे शरीरके शोथमें पेशाब थोड़ा। जिनका रजःस्राव होना बन्द हो गया हो, उन रमणियोंके ऊरुशिखर और दोनों ऊरुओंकी प्रसारक

पेशियोंमें दर्द हुआ करता है। हाथ और दोनों पैर बहुत ठण्डे, मस्तिष्ककी कमजोरीकी वजहसे सरमें चक्कर आना।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐडोनिस-वार्नेलिस, क्रैटिगस, डिजिटेलिस, कानवैलेरिया, कैफिइन, ऐगारिन, स्पार्टिइन, फैजियोलस, कैक्टस, ऐपोसाइनम-कैनाबिनम।

अनुकूल।—एरम।

तुलनीय।—हृत्पिण्ड—डिजिटेलिस। शोथ—ऐपोसाइनम, क्रैटिगस, कैक्टस। रक्त गिरना—फेरम। मदात्यय—चायना, नक्स, ऐवेना।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठा दशमिक क्रम।

स्ट्रिकनिनम

(STRYCHNINUM)

दूसरा नाम।—स्ट्रिकनिनम, स्ट्रिकनिया।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण; इसके बाद अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अन्धापन; प्रधान धमनीमें दर्द; स्वरभंग; दमा; मूत्राशयकी बीमारियाँ और पक्षाघात; स्तनमें दर्द; खाँसी; ऐंठन; उदर और वक्ष व्यवधायक पेशीका आक्षेप; अनजानमें पेशाब; बाहर निकली हुई आँखें; आँखके स्नायुकी विकृति; सर-दर्द; अर्द्धाङ्गका पक्षाघात; बहुव्यापक सर्दी; सन्धि-समूहोंमें कड़ापन; स्वरनलीकी बीमारी; स्नायविक दुर्बलता; सुन्न हो जाना; रातके समय ऊर्द्धाङ्गका पक्षाघात; मलान्त्रका स्नायुशूल; आमवात; मुष्कत्वकका फोड़ा; मेरुदण्डकी उत्तेजना; धनुष्टंकार।

उपयोगिता और आभास।—रह-रहकर होनेवाली धनुष्टंकारकी तरह अकड़न इसका प्रधान लक्षण है,—जोरसे दरवाजा बन्द करने या रोगीके कमरेमें किसीके प्रवेश करनेपर या उसे छूनेपर आक्षेप तुरन्त पैदा हो जाता है। केवल चित्त सोनेपर कुछ आराम मिलता है; रोगी जोरसे चिल्ला उठता है और इसके बाद ही उसमें आक्षेप पैदा हो जाता है। बहुत डर जानेकी

तरह भाव दिखाता है। मुँहसे फेन निकला करता है और उसकी देह पीछेकी ओर टेढ़ी होकर धनुषकी तरह हो जाती है। स्नायविक उत्तेजनाकी अधिकता शून्यमें बीभत्स मुख दिखाई देना, रह-रहकर अट्टहास, माथा बहुत हलका, खाली और इस तरहका अनुभव होता है, मानो शून्यमें तैर रहा है। अनजानमें खिलखिलाकर हँसता है, मनमें उठे हुए भावोंकी विशृङ्खलता, आच्छन्न भाव और सुस्ती; सर-दर्द होनेपर औंघाई,—भौंहोंपर सर-दर्द; रह-रहकर रोगीका गला रुक जाता है। बहुत उत्तम भूख—अच्छी तरह रुचि-पूर्वक खाता है, बायें कोषरज्जुकी सूजन; आँखके चित्र-पत्रका अवसाद हो जानेकी वजहसे क्षीण दृष्टि, दो दिखाई देना; रतौंधी या रात्रान्धता; ताण्डव रोग, निद्रित अवस्थामें भी नहीं छूटता और सर्दीके बोखारमें लगातार खाँसी आया करती है इत्यादि कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। अधिकतर "माथा और मुँहका आकार मानो बड़ा हो गया है" "मानो माथेपर लोहेका बना एक टोप है" "खोपड़ीकी त्वचामें बहुत दर्द मानो किसीने केश खींचे थे" ऐसा दर्द मानो दाँतकी जड़से स्नायु सब उखाड़े जा रहे हैं "मानो कमरसे रोगी दो टुकड़े हो गया है" "एकाएक कलेजा धड़कने लगना" "विद्युतसंचालन, शूल बेधनेकी या छुरी मारनेकी तरह दर्द" "सारे शरीरमें खुजली" और तालुदेशमें भयंकर खुजली" "छूनेसे भय" "जलीय वायुका स्पर्श सहन न होना" "शरीरका कोई स्थान छूनेपर मनमें आनन्दजनक और कामोद्दीपक अनुभूति पैदा हो जाना" और "वातकी वजहसे सन्धियोंकी अकड़न" इत्यादि कई इसके प्रकृतिगत लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—प्रचण्ड प्रलाप,—जैसा मदात्यय रोगोंमें होता है। डरता है, आदमी देखते ही छिप जानेकी चेष्टा करता है। 'इसने हमें पकड़ा' कहकर चिल्ला उठता है। स्नायविक उत्तेजनाकी अधिकता; माथा हल्का, छोटा और ऐसा मालूम होना मानो पानीमें तैर रहा है इसके साथ ही रह-रहकर जोरसे ठठाकर हँस पड़ना (साइक्यू, स्ट्रैमोन)। बुदबुदाकर बकता है (बेल, साइक्यूटा), फूट-फूटकर रोता है (चिनिन-सल्फ, हायो, ओपि)। इसके अलावा मनमें कभी-कभी चिल्ला उठता है (साइक्यू, ग्लोन, हायो, जिङ्कम, कूप्रम)। उठे हुए भावोंकी विशृंखलता (बैप्टी, कैनाब-इन, ग्लोन, नक्स-वोम, ओपि,

रस)। स्मरण-शक्तिका गायब हो जाना (ऐनाक, हेलिबो, हायो, कैलि-ब्रोम, लैके, मिडोरिन, नक्स-मस्क, स्टैफ, स्ट्रैम, जिङ्कम)। मृत्युके अन्तिम समयतक होशमें रहता है।

मस्तक ।—सरमें चक्कर—सामनेकी ओर गिर जानेका उपक्रम (कास्टि, माइकूग्रटा, नक्स-वोम)। कानमें भों-भों आवाज़ हुआ करती है (लेमियम-ऐल्ब, ऐ-फास, कैलि-कार्ब)। माथा, गर्दन और चेहरेकी शिराएँ सब डोरीकी तरह हो जाती हैं और ऐसा मालूम होता है कि आँखें लाल हो गयी हैं और बाहर निकली आती हैं (बेल)। प्रचण्ड सर-दर्द—मानो ललाट या ललाटका बायाँ भाग फटा जा रहा है। सर-दर्दके समय औंघाई (कार्नस, लैके, नक्स-मस्क, नक्स-वोम, ओपि, स्टैनम)। माथेमें बहुत अधिक रक्त-सञ्चय होता है और इसलिये चेहरा घोर नीला और ऐसा दिखाई देता है मानो आँखका गोला बाहर निकला आता है। ऐसा मालूम होता है, मानो माथेपर लोहेका एक शिरस्त्राण रखा हुआ है (कार्बो-वेज, क्रोटेलस, कैल्का, फाइजस)। सर-दर्द—सरके पिछले भागसे आरम्भ होकर पीठकी रीढ़ होता हुआ नीचेकी ओर उतरता है (ऐ-नाई)। खोपड़ीकी त्वचामें बहुत दर्द—मानो कोई जोरसे केश खींच रहा था (बेल, चायना, मर्क, मेजेर)। माथेकी त्वचा और गलेमें बहुत खुजली।

आँख ।—आँखकी पेशीका लगातार खिंचना और फैलना, पलकें सब लगातार फड़का और कांपा करती हैं (बेल, साइक्यू, फाइजस)। आँखके गोलेमें मानो तेज सुई गड़ रही हैं, इस तरहका दर्द (मिफाइटिस, नेट्र-कार्ब, स्पाइजि, सल्फ)। दोनों आँखें गर्म और दर्द-भरी, टकटकी लगी दृष्टि और ऐसा मालूम होता है, मानो बाहर निकली आती है (बेल)। आँख लाल मानो रोगी बहुत डर गया है। दोनों चक्षुगोलक चक्करकी तरह बराबर घूमा करते हैं (हायो, लिसिन, स्ट्रैमोन, जिङ्कम, इथ्यू, आर्टिमि-वल, हेलिबो)। आँखके सामने काले, सफ़ेद, लाल वगैरह रङ्गकी चिनगारियाँ दिखाई देती हैं। रतौंधी एकाएक मानो सभी चीजें हरी हो गयीं, ऐसा मालूम होनेपर रोगी जमीनमें गिर जाता है। आँखमें, विशेषकर बायीं आँखमें, जलन मालूम होना।

कान ।—श्रवण-शक्ति बहुत तेज़, रन्ध्रमें जलन, खुजली, भों-भों शब्द। रोगीके सम्बन्धमें बहुत नीची आवाज़में बोलनेपर भी वह तुरन्त उसका उत्तर

देता है। कानके पीछे भयानक दर्द और यह दर्द मेरुदण्ड होकर नीचेकी ओर जाता है।

मुखमण्डल।—चेहरेपर भयङ्कर डरका भाव पैदा हो जाता है (कैन्थ, लिसिन, स्ट्रैमोन, सैग-फास)। चेहरा फूला, आगकी तरह गर्म और आधी खुली आँखें, देखनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो मधुमक्खीने काट लिया है (एपिस)। मुखमण्डलकी पेशी सब अकड़ी मालूम होती हैं। चेहरेपर प्रेत हास्यकी उत्पत्ति (बेल, इग्नेशि, स्ट्रैमोन)। चेहरा पीला, तमतमाया और ठण्डे लसदार पसीनेसे तर। गण्डास्थिमें तेज सुई गड़नेकी तरह दर्द (गुयायेक, मेजेर, जिङ्कम)। ओंठ नीले, फूले और पीछेकी ओर उल्टे। दोनों हनु अकड़ जानेकी वजहसे बोलनेमें बाधा (मेजेर); जबड़े अटकना; निचला जबड़ा एकाएक अकड़ जाता है।

मुख-विवर।—जीभ सूखी और उठे हुए काँटोंसे भरी, दोनों किनारोंपर सफेद रङ्गका रस लगा रहता है। मसूढ़े और ओंठ नीली आभा लिये पीले। तालुमूलमें भयानक खुजली (एरण्डो-मेरिट, ग्लोन)। मुँहसे फेन निकलता है (आर्टिमि-वाल, कूप्रम, इग्नेशि)। मुखविवर फेन-भरा, लारसे भरा (क्रोटेलस, हायो), बड़े कष्टसे स्पष्ट वाक्य बोल पाता है। बोली अस्पष्ट और मुँहकी बात मुँहमें ही रह जाती है।

गलेके भीतर।—गला रुकनेकी तरह मालूम होना,—मानो कण्ठके चारों ओर एक बन्धन कसा हुआ है। ऐसा अनुभव होना मानो कण्ठनाली संकुचित हो रही है—कोई चीज निगलनेमें बहुत तकलीफ होती है (ऐल्यू, बेल, क्यूप्रम)। कण्ठमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक गोला अड़ा हुआ है (कैल्के, इग्ने, लैक-कैन, लैके)। कण्ठ सूखा, गर्म और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होना। निगलनेकी चेष्टा करनेपर तालुमूलकी पेशियाँ सब फड़का या उछला करती हैं (ए-हाइड्रो, जेल्स, कैलि-आयोड)।

पाकस्थली।—प्रायः हमेशा ही ओकाई आती है (बेल, मस्कस, टैबाक)। प्रचण्ड वमन, पतला बिना रङ्गका पानीकी तरह। रोगीको भूख खूब रहती है और खूब रुचिपूर्वक खाता है। ज्वालामयी तृष्णा—मुँह और जीभ बहुत सूखी, पाकस्थलीके नीचे भयानक दर्द हुआ करता है और रह-रहकर चिलक मार उठता है। रातमें भोजनके समय एकाएक उदरोर्द्ध-प्रदेशमें

भयानक रूपसे चिपक जाता है, बहुत दर्द होता है, रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी साँस रुक जायगी और वह कमर तथा अन्यान्य अंगोंके वस्त्र उतार डालता है। यह दर्द दो-तीन घण्टे तक स्थायी रहता है। गर्भवतियोंकी मिचली।

अन्त्राशय।—उदरकी पेशियोंमें तेज दर्द। ऐसा दर्द मानो आँतें आदि मरोड़ खा रही हैं। दाहिनी आँखमें रह रहकर दर्द हुआ करता है, जो खराब मालूम होता है और रोगी सुस्त हो पड़ता है। ऐसा मालूम होता है, मानो दाहिनी कोखमें सुई गड़ रही है या ऐसा दर्द मानो छुरीसे काटा जा रहा है।

मलांत्र और मल।—मलान्त्रमें कल-कल आवाज (कार्बो-ऐन, लोरो, सल्फ) और इसके बाद ही ऐसा दर्द मानो बन्दूककी गोली आ लगी (कैल्के-फास, ओपि); इस दर्दकी वजहसे रोगी बैठ जाता है। मलनालीमें रह-रहकर ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ उछल पड़ा (सिपिया)। पतला दस्त, मल पानीकी तरह और बहुत ज्यादा। धनुष्टङ्कार आदि आक्षेपके समय अनजानमें मल निकल जाता है (बच्चोंको—कूप्रम)। कब्जियत—मल कड़ा, गांठ-गांठ और सूखा, कभी-कभी आँव मिला, दुरारोग्य कब्जियत—पेट मानो मरोड़ खा रहा है।

पेशाब।—मूत्राशयका सङ्कोचन, उसमें ज्योंही पेशाब इकट्ठा होता है, त्योंही निकल जाता है, इकट्ठा होकर कुछ देर भी नहीं रह सकता। मूत्राशयका पक्षाघात (आर्स, कास्टि, जेल, नक्स-वोम), मूत्राशय और मलान्त्रमें महान यन्त्रणाजनक दबाव मालूम होना (चिनोपोडियाई-ग्लोकाई, नक्स-वोम, पल्स, सल्फ)। मूत्राशय और मूत्रनलीमें बहुत गड़बड़ी मालूम होना, विशेषकर चलनेकी तरह तेज दर्द; मूत्राशयके पीछेसे मलान्त्र (कोलासिन्थ) और सामनेसे मूत्रनलीतक तेज बेधनेकी तरह दर्द मूत्राशयको छोड़कर लिङ्गमुण्डतक जा पहुँचता है।

पुं०-जननेन्द्रिय।—बायें रेतोरज्जुमें दर्द और अण्डकोष फूल उठता है (हैमा, लिथिया-कार्ब, ओस्मियम, इरिडियम, क्लिमेंट, पल्स), केवल खड़े होने या चलते रहनेपर दर्द मालूम होता है (जैकाराण्डा, लाइकोपस-वाजि, जिङ्कम)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रबल सङ्गमेच्छा (फास, रियुमेक्स, सेबाडी, जिङ्कम)। रोगिनीके शरीरका कोई अंश छूते ही उसकी देह रोमाञ्चित हो उठती है और कामोद्दीपक भाव उदय हो जाता है।

श्वासयन्त्र।—स्वरनलीकी चारों ओरकी पेशीका प्रबल आक्षेपिक सङ्कोचन (कूप्रम, जेल्स, मैग-फास)। रोगीको वायुका अत्यन्त अभाव मालूम होता है और अपने कमरेकी सभी खिड़कियाँ खोल देनेके लिये कहता है (सल्फ, हवाकी कमी मालूम होनेकी वजहसे शय्यापर रह नहीं सकता—कार्बो-वेज ; लगातार निर्मल वायु सेवन करनेके लिये लालायित रहता है—जेल्स ; निर्मल वायु सेवनकी आकांक्षा—नेट्र-म्यूर, पल्स, सल्फ ; पंखा झलनेके लिये कहता है—कार्बो-वेज, कैली-बाई, लैके ; घरमें मानो यथेष्ट हवा नहीं है—प्लैटा, आयोडोफार्म ; बाध्य होकर खिड़की खोल देनी पड़ती है—सिस्टस-कैनाड)। श्वासकी भयानक कमी मालूम होना और इसके बाद ही चिल्लाकर आक्षेप पैदा हो जाना। वक्षस्थलकी पेशियाँ सब जकड़ जाती हैं और इसी वजहसे तेज दर्द मालूम होता है। कभी-कभी एकाएक भयानक खाँसी पैदा हो जाती है। रोगीको देखनेसे ही मालूम होता है, मानो किसीने उसका गला धर दबाया है। कभी-कभी बायें वक्षमें बेधनेकी तरह तेज़ दर्द।

हृत्पिण्ड।—(सवेरे) कलेज़ा धड़-धड़ करता है और रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है (कैक्टस, कैल्के, नेट्र-म्यूर)। हृदयका अगला भाग मानो जकड़ जानेकी तरह अनुभव होना। एकाएक कलेजा धड़कने लगना (मैगिनम—जिनकी रजःस्राव होना बन्द हो गया है उन्हें—क्रोटेलस)। हृत्पिण्डकी गति भयानक तेज। ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्ड कण्ठमें आ पहुँचा है (ग्लोन, कैल्मिया, पोडो)।

गर्दन और पीठ।—मेरुदण्ड अकड़ा मालूम होता है, मानो उसमें एक लोहेकी सलाई घुसा दी गयी है (मेरुदण्ड-प्रदेशमें दर्द, मानो नीचेकी कशेरुकाके मध्यसे एक जलती हुई लोहेकी सलाई घुसा दी गयी है—ऐलूमिना)। गलेकी पेशीकी अकड़न और न फैल सकना (लैके, लैचनैन, ऐगार, ऐक्टिया, इग्ने, इरिडियम, नक्स-वोम, जिङ्कम)। समूचे मेरुदण्डमें बरफकी तरह ठण्डक मालूम होना (थूजा)। गला फूला और दोनों पार्श्वकी शिराएँ डोरीकी तरह मालूम होती हैं (कैम्फो, इपिक), गलेकी पेशीमें और

स्कन्ध-शिखरमें ऐसा दर्द मानो छुरी घुस रही हैं ; एकाएक कमरमें दर्द पैदा हो जाता है—मानो किसीने उसकी कमर दो टुकड़े कर दी।

प्रत्यङ्ग आदि ।—हाथ और दोनों पैर अकड़े और हिला न सकने, जैसे (गुयायेक, रास, जिङ्कम)। प्रत्यङ्गोंमें रह-रहकर चिलक मार उठता है, फड़कता है और काँपा करता है (आर्जेण्ट-नाई, नक्स-वोम, प्लम्ब, टैबाक)। कभी-कभी, ऐसा मालूम होता है, मानो दाहिने बाँहसे बून्द-बून्द पानी गिर रहा है।

सार्वाङ्गिक ।—शरीरको प्रत्येक पेशी-गुच्छका लगातार स्पन्दन और भी बढ़ जाता है। संन्यासके प्रकोपकी वजहसे पक्षाघातग्रस्त शरीरका समूचा अर्द्धाङ्ग बड़े वेगसे फड़का करता है। रह-रहकर रोगीकी देह एकाएक हिल उठती है और उसके द्वारा प्रत्यङ्गका काँपना और अकड़न और भी बढ़ जाती है और उसके शरीरमें ठण्डा पसीना हुआ करता है। आक्षेपके समय रोगीकी पेशियाँ इतने जोरसे हिलती हैं, कि दाहिनी उरु-सन्धि खिसक जाती है। पेशियोंमें रह-रहकर ऐसा दर्द मानो बिजलीकी सलाई घुस रही है। समूची देह विशेषकर हाथ और पैर काँपा करते हैं। बँधे समयका अन्तर देकर आक्षेप फिरसे पैदा हो जाता है। रोगीके जरा भी हिलने, उसके कमरेमें किसीके प्रवेश करने या उसके किसीके छूनेपर तुरन्त आक्षेप पैदा हो जाता है (बेल, कार्बोनिग्रस, आक्सिजेन, साइकूटा, नक्स-वोम, स्ट्रैमोन)। आक्षेपके समय रोगीकी देह इतने जोरसे उछलती है कि वह अपनी शय्यासे दूर जा पड़ता है। अंगुलीके अगले भाग खुजलाया करते हैं। माथेकी त्वचा, मुखमण्डल, दोनों पैर वगैरह सारे शरीरमें भयानक सुरसुरी होती है और खुजली पैदा हो जाती है।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—समूचे मेरुदण्डके दोनों पार्श्वमें जाड़ा मालूम होकर रोगीकी देह मुर्देकी तरह ठण्डी पड़ जाती है। मेरुदण्डके ऊपरसे नीचेकी ओर मानो बरफ जैसा शीत चलता है। निम्नाङ्ग सब बरफकी तरह ठण्डे और माथा तथा वक्षमें बहुत ज्यादा पसीना हुआ करता है। कभी सारे शरीरमें जलन करनेवाला उत्ताप और उसपर गर्म पसीना हुआ करता है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐ-हाइड्रो, ऐ-पाई, बेल, कार्बोन-आक्सिजेन, साइकूटा, ग्लोन, लिलियम-ऐल, हायो, स्ट्रैमो, जेल्स, क्रोटेलस, होरिडस, आर्टिमि-वल, इनेन्थि, कूप्रम, लोरोसि।

दोषघ्न ।—पैसि-फ्लोरा, हायोसा, टैबाक, कैम्फोर, ऐकोन इत्यादि।

तुलनीय ।—स्वर-दर्द—पिकरिक-एसिड। एकाएक दर्द—बेलेडो, लाइकोपो। मानो दो टुकड़े हो गया है—आर्स।

वृद्धि ।—सवेरे, छूनेपर, रोगीको हिलानेपर, परिश्रम करनेपर, चलने और भोजनके बाद।

उपशम ।— चित सोनेपर।

शक्ति ।—२रा दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

सकसिनम

(SUCCINUM)

दूसरा नाम ।—इलेक्ट्रन ; एम्बर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और तरल दोनों आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—दमा, क्षय-रोग, हूप-खाँसी, पुराना श्वासनली-प्रदाह, छींक, छातीमें दर्द प्रभृति लक्षणोंमें इसकी निम्न-शक्ति बढ़िया काम करती है।

प्लीहा, उसके साथ हिस्टीरिया, उदर या गलेमें एक गोलाकार पदार्थ रहनेकी तरह मालूम होना, लक्षणमें भी सक्सिनम आयल ५ बूंद मात्रामें सेवन करनेपर फायदा होता है।

शक्ति ।—६x विचूर्ण और सक्सिनम तेल।

सलफोनैल

(SULPHONAL)

दूसरा नाम और प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पत्थरके कोयलेके अलकतरेसे प्रस्तुत एक तरहका विचूर्ण।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अण्डलाल मिला पेशाब, ऐंठन; नीलिमा रोग; कानमें आवाज़; मृगी; सर-दर्द; स्मरण-शक्तिका लोप हो जाना, सारे शरीरमें पक्षाघातकी प्रतिच्छिन्न क्रियाका लोप।

उपयोगिता और आभास।—मस्तिष्कमें अवसादकी वजहसे सरमें चक्कर आना, क्षुद्र मस्तिष्कके रोग, ढलमलानेकी तरह गति; ताण्डव रोग, बहुत बेचैनी और पेशियोंका स्पन्दन, मसानेका प्रदाह—लार और मूत्रमार्गसे निकली हुई छाल मिला पेशाब; बहुत कमजोरी और सुस्ती तथा चित्तकी बहुत अधिक विषन्नता वगैरह इस दवाके कई प्रकृतगत लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—बुद्धिकी जड़ता, असम्बद्ध प्रलाप, नाना प्रकारकी छाया-मूर्त्ति देखना; उदास भाव—सभी विषयोंमें उदासीनता प्रकट करना, कभी रोगी मानो कितना सुखी और आनन्दका भाव प्रकट करता है, इसके बाद ही बहुत उदास और सुस्तकी तरह हो जाता है (चायना, कैलि-क्लोर, नेट्र-म्यूर, नक्स-मस, फास)।

मस्तक।—औंघाई और जड़ता, माथा उठाते ही दर्द मालूम होता है, दो देखना। दोनों आँखोंके चारों ओर भार मालूम होता है। कानमें आवाज़, जीभ ऐसी मालूम होती है, मानो सुन्न हो गयी है।

पेशाब।—मसानेका प्रदाह, पेशाब परिमाणमें थोड़ा, घोर लाल और मूत्रमार्गसे निकली हुई छाल इसमें मिली रहती है। बार-बार पेशाबका वेग।

श्वासयन्त्र।—फेफड़ेमें अधिक रक्तसंचय होना; श्वास-प्रश्वासमें नाककी घर-घर आवाज़ (ओपियम)। श्वासकष्ट—दीर्घ निश्वासकी तरह श्वास-प्रश्वास।

प्रत्यङ्ग आदि।—गति-शक्तिका अवसाद, रोगी चलनेके समय ढलमलाया करता है (आर्जेण्ट-नाई, कोना, इग्ने, कैलि-ब्रोम, जेल, नक्स-वोम) और उसके दोनों पैर डगमगाया करते हैं (जेल, नक्स-वोम)। रोगी बहुत बेचैनी प्रकट करता है और उसकी पेशियाँ सब फड़का करती हैं, दोनों पैर ही अकड़ जाते हैं और सुन्न हो जाते हैं। रोगी रातमें सो नहीं सकता—उसके प्रत्यङ्ग आदि इतने फड़का करते हैं।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ड्रायोनैल, आर्जेण्ट-नाई, जेल्स, कैलो-ब्रोम, नक्स-वोम, स्ट्रिक्‌नियम ।

शक्ति ।—तृतीय दशमिक विचूर्ण ।

सलफर
(SULPHUR)

दूसरा नाम ।—गन्धक ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण, तरल क्रम या अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मुँहासे ; ग्रन्थिका बढ़ना ; सविराम ज्वर ; अन्धापन ; ऋतुकी कमी ; मलान्त्रका अपने स्थानसे हटना ; दमा ; शय्याका जखम ; फोड़ा ; मस्तिष्कमें रक्तकी अधिकता ; स्तनकी बीमारी ; स्वरनली-प्रदाह ; मोतियाबिन्द ; सर्दी ; उपदंश ; वक्षमें दर्द ; शीत कालके फोड़े ; वयःसन्धि कालकी बीमारियाँ ; कब्जियत ; क्षयकास ; गठ्ठे ; खाँसी ; दाँतोंमें नासूर ; बहुमूत्र ; अतिसार ; रक्तामाशय ; बाधक ; कानकी बीमारियाँ ; अकौता ; दुबलापन ; अनजानमें पेशाब ; मृगी ; डकार ; नाना प्रकारके उद्भेद ; आँखकी बीमारियाँ मूर्च्छाभार ; पैरमें जलन ; पैरमें पसीना ; ज्वर ; प्रमेह ; मूर्च्छावायु ; छोटी सन्धियोंका वात ; अर्श ; सर-दर्द ; माथेमें खूनका दौरान ; वंक्षण सन्धिके रोग ; कोरण्ड ; मस्तिष्कमें जल सञ्चय ; वक्षमें जल सञ्चय ; व्याधिशंका ; ध्वजभंग ; बहुव्यापक सर्दी ; उत्तेजना ; अकौता या खुजली ; कामला ; स्वरनलीका प्रदाह ; श्वेत-प्रदर ; वक्षकी बीमारियाँ ; कटि-वात ; फेफड़ेकी बीमारी ; मुँहका सफेद जखम ; उन्माद ; खसड़ा ; मस्तिष्कावरण-प्रदाह ; आर्त्तवमें विकार ; गर्भ-स्राव ; आमवात ; स्नायुशूल ; स्तनके बोटेमें जखम ; नासिका प्रदाह ; नाकसे रक्तस्राव ; कितनी हो तरहका आँखोंका प्रदाह ; चमड़ी ; गर्भावस्थामें पैरकी सफेद रंगकी सूजन ; अन्त्रावर्त्तन प्रदाह ; फेफड़ा या फेफड़ेके आवरणका प्रदाह ; गर्भिणीकी बहुत-सी बीमारियाँ ; मूत्राशय मुखशायिका ग्रन्थिका स्राव ; आमवातका ज्वर ; नया सन्धिवात ; प्रमेह-विष-दुष्ट रक्त ; दाद ; गण्डमाला ; नकली मैथुनका दुष्परिणाम ; चर्मरोग ;

निद्रामें विकार; मेरुमज्जाकी उत्तेजना; मेरुदण्डकी वक्रता; प्लीहामें दर्द; चौंकना; पाकाशयका प्रदाह; सूंघने, देखने और स्वादकी शक्तिका भ्रम; प्यास; वेग या कूथन; गलेमें श्लेष्मा जमा होना; जीभका लेप; दाँतमें दर्द; गलेमें उत्तेजना; जखम; जरायु-भ्रंश; गो-बीजके टीकाका दुष्परिणाम; शिराओंका फूलना; सरमें चक्कर; मसे; क्रमि; क्लान्ति; जम्हाई।

उपयोगिता और आभास।—ग्रन्थियोंका फूलना और शिरा, विशेषकर यकृतकी शिरामें रक्तका अधिक सञ्चय होना। दुर्बल शरीर, टेढ़ी पीठका मनुष्य; जो शरीर टेढ़ाकर चलते हैं, तेजीसे चलते हैं, तेज़ बुद्धि, जल्दबाज, मैला गन्दा स्वभाव और जिन्हें प्रायः चर्म-रोग हो जाया करता है, उनपर सलफरकी सर्वश्रेष्ठ क्रिया होती है। जलवायु या ऋतुके प्रत्येक परिवर्त्तनसे उसके शरीरकी त्वचामें सर्दी-गर्मीकी ह्रास-वृद्धि हुआ करती है। नहाना उन्हें बहुत बुरा मालूम होता है और नहानेपर वे बीमार हो जाते हैं। जब किसी नयी बीमारीमें ठीक-ठीक चुनी हुई दवासे भी कोई लाभ नहीं होता, उस समय एक मात्रा सलफर प्रयोग करनेपर रोगीके शरीरकी प्रतिक्रिया शक्ति जाग उठती है और या तो रोगी उससे आरोग्य हो जाता है या उस समय जिस दवाको देनेपर वह आराम हो सकता है, उस दवाके लक्षण सब स्पष्ट भावसे सामने आ जाते हैं। यदि रोग अच्छा होकर कुछ दिन बाद फिर दिखाई दे, इसी तरह बार-बार बीमारी दोहराया करे तो यह भी इस दवाका एक प्रकृतिगत और निर्णायक लक्षण हो जाता है। उदरमें ऐसा मालूम होता है, मानो बच्चा हिल रहा है। शरीरमें जगह-जगह ऐसी जलन मालूम होती है, मानो आग छू गयी है। आगे लिखे कई लक्षण भी इसके निर्णायक लक्षण हैं:—(१) भ्रान्त विश्वास, रोगी अपनेको एक बहुत धनी मनुष्य समझता है। बहुत घृणित पदार्थ भी उसकी आँखोंमें बहुत सुन्दर दिखाई देता है और ग्रन्थि वस्त्रको भी वह राजकीय पोशाक समझता है। (२) मानसिक या शारीरिक किसी तरहका परिश्रम नहीं करना चाहता, अत्यन्त आलसी प्रकृति, प्रत्युत्पन्न मतिसे रहित और महान स्वार्थपर बना रहता है। (३) बच्चा नहाना बिलकुल पसन्द नहीं करता। (४) पैर ठण्डे, पर ब्रह्मतालुसे मानो आग निकलती है। दोनों पैर दिनमें ठण्डे, पर रातमें बहुत गर्म हो जाते हैं और उनमें जलन हुआ करती है। (५) बगल, पुट्ठे वगैरह स्थानोंसे बहुत ज्यादा पसीना निकलता है। (६) दोपहरके समय पाकाशय खाली

मालूम होकर बहुत भूख पैदा हो जाती है और वह तुरन्त बिना कुछ खाये रह नहीं सकता। (७) दूध सहन नहीं होता। (८) माथा सूखा. केश और शरीरकी त्वचा रुखड़ी, केश झर जाते हैं; जगह-जगह सूखी पपड़ी जमा अकौता निकलता है, यह बहुत खुजलाता है और जलन हुआ करती है। (९) मिचलीके साथ सर-दर्द, प्रत्येक सप्ताहका अन्तर देकर पैदा होता है। ब्रह्मतालु आगकी तरह गर्म और चरण ठण्डा। (१०) दिनमें रह-रहकर शरीर गर्म हो जाता है, रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है, थोड़ा-सा पसीना होकर उत्ताप होना बन्द हो जाता है। (११) ओंठ, नाक, मल और मूत्रद्वार वगैरह नवो द्वार और उसके पासवाले स्थान सब पके बिम्ब या मूंगेकी तरह लाल दिखाई देते हैं। (१२) आधी रातके बाद उदरामय, बिना दर्दका दस्त, सवेरा होते ही शय्यासे दौड़कर पाखाना जाना पड़ता है। (१३) कब्जियत, मल कड़ा, गाँठ-गाँठ, सूखा मानो जल गया है, बड़ा और निकलनेके समय तकलीफ़ होती है। बच्चा दर्द होनेके डरसे पाखाना नहीं जाता। कब्जियतके बाद फिर पतले दस्त आने लगते हैं, इसी तरहसे पर्यायक्रमसे हुआ करता है। (१४) मल और मूत्र दोनों ही जिस अंशमें निकलते हैं; उसी अंशमें दर्द पैदा होता है; मलद्वारके चारों ओर लाली और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होना। (१५) इसके सभी स्राव कसैले और त्वचा क्षयकर देनेवाले होते हैं। (१६) ऋतु—असमयमें ही आरम्भ हो जाता है; स्राव बहुत ज्यादा और बहुत दिनोंतक स्थायी। (१७) जरायुसे रक्त-स्राव या बहुत ज्यादा ऋतुस्राव; एक बार गर्भ-स्राव होनेके बादसे फिर तबियत अच्छी नहीं रहती (डाक्टर लिपिने ऐसी अवस्थामें एक रोगिनीको अमावस्याके दिन एक मात्रा "सलफर" देकर अच्छा किया है)। (१८) फोड़े एकसाथ लगातार ऊपरके-ऊपर कितने ही निकलते हैं। (१९) अकौता आदि चर्म-रोग और अर्शमें बाहरी प्रयोगसे बिलम्ब होनेपर। (२०) अंग प्रत्यङ्गके गासेमें त्वचा क्षय और खाल उधड़ जानेकी बीमारी। (२१) मस्तिष्क, फुसफुसावरण; फुसफुस, सन्धि वगैरहके भीतर रस या प्रदाहसे उत्पन्न स्राव सबको शोष लेनेमें प्रधान सहायक है विशेषकर ब्रायोनिया, कैलि-म्यूरियेटिकम या कोई दूसरी चुनी हुई दवासे लाभ न दिखाई देनेपर। (२२) पुराना और कभी-कभी प्रकट होनेवाला पानात्यय; शराबियोंका शोथ आदि रोग। (२३) रातमें श्वास-रोध हो जानेकी तैयारी। रोगी अपने कमरेके दरवाजे खिड़कियाँ आदि

सब खोल देता है। (२४) सूर्यास्तके बाद संध्याके आरम्भमें औंघाई और उसके बाद फिर रातभर नींद नहीं आती। बड़े सुखप्रद सपने देखता है और गाता-गाता जाग पड़ता है।

लक्षणावली

मन।—क्षीण स्मृति (ऐनाक, नक्स-मस, क्रियो, लैके), विशेषकर याद रखनेके सम्बन्धमें (ऐनाक, गुयायेक, लाई, मिडोरिन, रस-टक्स)। जड़-बुद्धि; कोई विषय सोचना मानो महान विपत्ति हो जाती है (कैल्के, हायो, आयोड, नेट्र-म्यूर, सिपि), बातचीत करनेके समय या लिखनेके समय उपयोगी वाक्य स्मरण नहीं कर सकता और अनुपयुक्त शब्द कह बैठता है (कैल्के, सिङ्को, लैक-कैन, कैलि-ब्रोम, पाइरोजिन)। बहुत हेय पदार्थ भी उसकी आँखोंमें बहुत सुन्दर दिखाई देता है और सैकड़ों गाँठें लगी कपड़े भी सम्राटके उपयुक्त वस्त्र समझता है। किसी तरहका परिश्रम, बातचीत, हँसना, बोलना या चलना सभी विषयोंसे अनास्था (सिङ्को, नक्स-वोम, फास, चेलिडो, आयोड)। अपने शरीरसे निकली दुर्गन्धसे महान घृणा, यहाँतक कि मिचली भी पैदा हो जाती है। उदास चित्त; हमेशा धर्मकी बातोंमें निरत रहना (हायो, लैके, लिलियम-टाई, वेरेट, जिङ्कम); दूसरोंका क्या होगा इस सम्बन्धमें एकदम उदासीनता प्रकट करता है (दूसरोंके स्वास्थ्यके सम्बन्धमें महान चिन्ता—काक्यु)। दिन-भर अवसाद वायु-ग्रस्त भाव अर्थात् अपने स्वास्थ्यके सम्बन्धमें चिन्ता करते रहना और सन्ध्याके बाद खूब प्रसन्नता प्रकट करता है। अत्यन्त अन्यमनस्क, किसी विषयको सोच या किसी विषयमें मन लगा नहीं सकता (ऐनाक, लैके, नाई, नक्स-वोम, फास, सिपि, साइलि)। बहुत जल्दबाज स्वभाव, धीरेसे कोई काम नहीं कर सकता (कैमो, इग्ने, नक्स-वोम), चिड़चिड़ा, सामान्य कारणसे भी महान क्रोध पैदा हो जाता है, पर तुरन्त ही ठण्डा हो जाता है और परिताप किया करता है (काफि, इग्ने, मिडोरिन)। रोना (आरम, इग्ने, नेट्र-म्यूर, प्लैट, पल्स, रस-टक्स)। उत्साहहीन (ऐनाक, चायना, चिनिन-सल्फ, काक्यु, लैके, लाई, पल्स, सिपि, वेरेट) और जीवनसे वितृष्णा (आरम, चायना, फास)। बहुत एकांगी स्वभाव (ऐल्यु, ऐनाक, कैल्के, कैमो, नक्स-वोम) और किसीको भी पास नहीं रहने देना चाहता (ऐनाक, कैमो, इग्ने, नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम)।

मस्तक ।—मस्तिष्कको अत्यन्त जड़ता—इसके साथ ही माथा शून्य मालूम होना ; सरमें दर्द हुआ करता है, मानो ललाटके चारों ओर एक कसा हुआ बन्धन बँधा है (ऐ-कार्बोल, ऐ-नाई, जेल, चेलिडो, काक्यु, मर्क)। सरमें चक्कर—बैठनेके समय और खड़े होनेकी अवस्थामें (पल्स, फास) और सवेरे, इसके साथ ही नाकसे रक्त-स्राव (ऐकोन, ऐण्टि-क्रूड, कार्बो-ऐन) ; झुकनेपर (बेल, नक्स, पल्स) ; शय्यासे उठनेके समय (चेलिडो, काक्यु, नेट्र-म्यूर, नक्स, फास, फाइटो)। वायु सेवनके लिये चलनेके समय (साइलि, लैके, नक्स, पल्स) और नहीं पार करनेके समय (ऐङ्गस, आर्जेण्ट-मेट, फेरम) सरमें चक्कर आया करता है ; मिचली (ऐकोन, चिनिन-सल्फ, काक्यु, फेरम, पेट्रोल) ; दृष्टि-लोप (साइलि, फेरम, जेल्स, नक्स-वोम, ऐनाक, ग्लोन) और इसके साथ ही बायीं ओर गिर पड़नेका उपक्रम (नेट्र-म्यूर, इयुपेट, लैके) ; वृद्धि—भोजनके बाद (ग्रैटि, नक्स-वोम, पल्स), विशेषकर रातके भोजनके बाद (नक्स-वोम, पल्स)। माथेमें रक्त-सञ्चय होकर कानमें भों-भों आवाज़ हुआ करती है (ओपि)। माथेमें टपक हुआ करती है (बेल, मिलिलोट) और चेहरा गर्म हो उठता है (कैमो) ; वृद्धि—झुकनेपर (कोरैल, वेरेट, इलैप्स)। बोलनेपर (काफिया) और घरके बाहरकी निर्मल हवा लगनेपर (लिलियम-टाई, नेट्र-कार्ब, रैनान-ब्ल्बो) ; उपशम—बन्द गर्म घरमें बैठे रहनेपर। ललाटमें अत्यन्त भार और दबाव मालूम होता है, विशेषकर सर उठाकर बैठनेकी चेष्टा करनेपर (इग्ने, ओपि) ; वृद्धि—नींदके बाद और बोलनेपर (कैक्टस, नेट्र-म्यूर) ; घटना—बैठनेकी अवस्थामें या तकियेपर सर रखकर सोनेपर। मिचलीके साथ सर-दर्द (सवेरे एक या दो सप्ताहका अन्तर देकर—इग्ने, निकोल ; प्रति ७वें दिन—सैब्राड, सैङ्गियु, साइलि ; प्रति ८वें दिवस—आइरिस-वार्सि, लैक-डिफ्लो) ; अत्यन्त दुर्बलता और सुस्ती पैदा करनेवाला (सैङ्गियु) ; ब्रह्मतालुमें लगातार आगकी गर्मी अनुभव करता है (ग्लोन, हाइपरिक, ऐ-म्यू, नेट्र-सल्फ, मिडोरिन, नक्स-मस)। दबावकी तरह सर-दर्द, विशेषकर कनपटीमें, सवेरे शय्यासे उठनेपर (आर्जेण्ट-नाई, ब्राई, निकोलम, सोरिन)। मस्तिष्क मानो माथेकी खोलमें आघात कर रहा है, इस ढङ्गका दर्द—विशेषकर झुकने या सर हिलानेपर (आर्स, चायना, ग्लोन, काकुल, जेल्स, आइरिस), माथेके भीतरसे आँखको भेदकर नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द, माथा मानो फटा जाता है या जकड़ गया है ; चिलक मारता है या मानो कोई

हथौड़ीसे मार रहा है, इस ढङ्गका दर्द (नेट्र-म्यूर)। सवेरे ललाटमें भार मालूम होनेकी तरह और दबानेके जैसा सर-दर्द, रोगी बेचैनी प्रकट करता है (दर्दकी वजहसे रोगी बेचैन हो जाता है—रस, बेल, सिफिलिन)। सर-दर्द—मानो ललाटमें एक टुकड़ा काठ अड़ा हुआ है (कार्बो-एन, डालका, रस-टक्स, इयुजिन, क्रियो, ओपि, प्लैट)। ब्रह्मतालु मानो दबे रहनेकी तरह दर्द, मानो उसपर कोई भारी चीज़ रखी हुई है (कैक्टस, ग्लोन, लैके, कैल्के, कैनाब-सैट, ऐ-आक्सैल, ऐलो, फिलैन) या कनपटीके भीतरसे बाहरकी ओर फाड़ने या सुई गड़नेकी तरह दर्द; बढ़ना—भोजनके बाद या झुकनेपर; घटना—दोनों हाथोंसे माथा जोरसे दबा रखनेपर या इधर-उधर टहलकर सोचने या किसी तरहका मानसिक परिश्रम करनेपर। दोनों कनपटी मानो दब रही हैं और माथा खूब कस गया है, इस ढङ्गका दर्द मालूम होता है (ऐनाक)। माथेके पिछले भागमें शून्य मालूम होता है (स्टैफाई, मैङ्गे, नेट्र-कार्ब, सिपि); वृद्धि—निर्मल वायु लगनेपर (काक्यु) और बोलनेपर (लाई, स्पाइजि); घटना—घरमें रहनेके समय। रोज़ सरमें दर्द होता है—ऐसा दर्द होता है, कि मालूम होता है, मानो माथा फट जायगा (चायना, ग्लोन, नेट्र-म्यूर)। माथा विशेषकर ब्रह्मतालुके अंशको छूनेपर बहुत दर्द मालूम होता है (ऐ-नाई, सिङ्को, मर्क, नेट्र-म्यूर); वृद्धि,—सन्ध्याके समय, शय्याके उत्तापसे और सवेरे नींद खुलनेके समय; माथा खुजलानेपर जलन होती है। छूनेपर केशकी जड़में दर्द होता है (ऐमोन-कार्ब, कार्बो-वेज, कार्लस-बाड)। माथा और दोनों कानके पीछेसे सूखा बदबूदार कच्छुकी तरह खून निकलता है; जलन पैदा करनेवाले उद्भेद सब निकलकर माथेमें फैल जाते हैं; उसमें बहुत दर्द होता है और फटा-फटा रहता है; खुजलानेपर उत्तेजना कुछ घट जाती है। तर, बदबूदार उद्भेद निकलकर उनसे पीब बहता है और पीले रङ्गकी पपड़ी जमती है (ओलियेन, ग्रैफ, हिपर, मर्क, साइलि, सोरिन)। इन उद्भेदोंमें बहुत खुजली पैदा हो जाती है, खून निकलता है और जलन होती है। माथेके केश सूखे और रुखड़े और मुड़ जाते हैं (सोरिन, थूजा, मिडोरिन, ऐ-फ्लू); माथेकी त्वचामें स्पर्श सहन न होना; सन्ध्याके बाद शय्यामें देह गर्म होनेपर माथेमें भयानक खुजली पैदा हो जाती है (बोविस्टा)। माथेके पीछेवाला भाग और ब्रह्म-रंध्र बहुत देरसे भरता है (कैल्के-फास, साइलि)।

आँख ।—आँख या पलकोंका प्रदाह, रोगवाली जगह फूल उठती हैं, योजिकाएं सब लाल हो जाती हैं और उनमें भयानक खुजली, जलन, उत्तेजना और करकराहट हुआ करती है (ऐण्टिम-क्रूड, आर्जेण्ट-नाई, कैल्के, ग्रैफ)। घरमें घुसनेपर आँख सूखी और घरके बाहरकी निर्मल हवा लगनेपर आँसू बहा करते हैं (कैल्के, कैम्फो, कैन्थ, ग्रैफ, नेट्र-म्यूर, रास, साइलि ; घरके भीतर—सिपा, पल्स)। सवेरे आँखमें जलन होती है और आँसू बहा करते हैं, चित्रपत्रका प्रदाह—दृष्टि-शक्तिको बहुत चालना या देखना, स्नायुओंमें अधिक रक्तसञ्चयकी वजहसे बीमारियाँ। पलकोंके किनारे जलन, उत्तेजना, सूखापन और खुजली पैदा हो जाती है। पलकोंमें ऐसा दर्द होता है, मानो कांचके चूरसे रगड़ खा गया है। पलकोंके नीचे जलन और करकराहट होती है, मानों उसमें धलके कण गिर गये हैं (आर्स, कास्टि, हीपर, थूजा)। रातमें पलकें सट जाती हैं (ऐलूम, सिपि, ऐण्टि-क्रूड, गैम्बो, ग्रैफा, लिडम, स्पञ्जिया, सिफिलिन, थूजा)। आँखका गोला बहुत सूखा मालूम होता है और ऐसा अनुभव होता है, मानो वह पलकोंसे रगड़ खा रहा है; आँखमें वेधनेकी तरह दर्द (लेके, थूजा), विशेषकर दाहिनी आँखमें दर्द हुआ करता है, उसमें दबाव मालूम होता है और रोगी कुछ भी देखने नहीं सकता। पलकपर चारों ओर पीब-भरी फुन्सियाँ और जखम उत्पन्न हो जाते हैं (ऐ-नाई, हिपर, सिलि)। आँख लाल हो जाती है, रोशनी सहन नहीं होती और आँसू बहा करता है। पलकोंके किनारे जखम भरे (ग्रैफ)। रोगीकी आँखोंमें धूप बिलकुल ही सहन नहीं होती (ऐकोन, बेल, सिङ्को, आर्स, साइकूटा, क्लिमैट, इयुफ्रे, जेल्स, लिथिया, मर्क्युरियस-पेरेन), पढ़नेके समय आँखमें जलन होती है (क्रोकस, लिलि-टाई) और थोड़ेमें ही थक जाती है (ग्रैफ, माइरिका, नेट्र-आर्स)। ऐसी अस्पष्ट दृष्टि मानो घूंघटकी ओटसे देखता है (काष्टि, क्रोकस, नेट्र-म्यूर लिथिया आयोड, लोरो, पेट्रोल, फास, रास, स्ट्रैमोन)। दृष्टि-पथपर काले बिन्दु सब उड़ते दिखाई देते हैं (ऐक्टिया, काक्यु, मर्क, फास), दृष्टिके सामने काँपती हुई रोशनी दिखाई देती हैं (आर्स, बेल, कैल्के-पलु, कार्लस-बाड, कार्बो-वेज, कास्टि, चेलिडो, फाइजस, नक्स-वोम, सोरिन)। बहुत देरतक टकटकी लगाकर देखनेपर आँख मानो झुलस जाती है। आँखमें कोई बाहरी चीज़ गिर जानेके कारण चक्षु-प्रदाह (ऐकोनाइटमके बाद इसका प्रयोग करना चाहिये); पलकें फूल उठती हैं, करकराती हैं, पिट-पिट करती हैं और

उनमें जलन होती है; पानीसे धोनेपर बढ़ जाता है (ठण्डे पानीके प्रयोगसे घटना—ऐसिरम, फार्मिका, पल्स ; जलनका घटना—ऐ-मूर, आरम, निकोलस, थूजा)। चक्षु-मुकुरमें वार्द्धक्य-मण्डलका पैदा हो जाना (ऐकोन, पल्स, काक्यु, केलि-बाई, मर्क, मस्कस ; हृद्रोगमें—मस्कस ; नीलमण्डल—ऐकोन ; वातकी वजहसे आँखोंके प्रदाहके साथ सफेद नीला घेरा—काक्यु ; सफेद—केलि-बाई ; चमकीला लाल घेरा—पल्स)।

कान।—पहले श्रवण-शक्ति बहुत क्षीण होकर फिर घट जाती है। कानमें भों-भों सों-सों शब्द (चायना, ग्रैफ, लाई, नेट्र-मूर, नक्स-वोम)। बायें कानमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (आर्स, कार्बोन-सल्फ, कोना, ग्रैफ, केलि-बाई, केलि-कार्ब, ऐगार, फार्मिमा, सेबाड)। कानमें खुजली (ऐगार, आरम, बैराई, इलेप्स, मर्क-बिन, हिप, केलि-बाई, क्रियो)। सन्ध्याके बाद शय्यामें सोये रहनेकी अवस्थामें कानमें आवाज़के साथ माथेकी ओर खूनका दौरान (आरम, कार्बोन-सल्फ, ओपि), बदबूदार पीब बहनेवाला कानका स्राव ; बायें कानसे अधिक बदबूदार पीवका स्राव (बोवि, सिस्टस, हिपर, मर्क-कोर, मर्क-डाल, केलि-मूर, सोरिन)। प्रति आठवें दिवस कानसे सर्दीका स्राव (हाइड्रैस्ट, मर्क-डल)। कानमें पानी हिलनेकी आवाज़ (पेट्रोल, पल्स)। बच्चोंका कान घोर लाल रंगका हो जाता है।

नाक।—नाक फूली, लाल और प्रदाह भरी (बेल, फास); रन्ध्रके भीतर जखम (आरम, केलि-बाई, मर्क, पेट्रोल)। पानीकी तरह भयानक सर्दीका स्राव और बार-बार छींक (ऐकोन, सिपा, सेङ्गियु), विशेषकर सवेरे और सन्ध्याके समय (सवेरे—साइक्लो, नक्स-वोम, स्क्विला ; संध्याके समय—सिपा, केलि-कार्ब, जिङ्कम)। घरके बाहरकी विमल हवा लगनेपर जलन करनेवाली सर्दी पैदा हो जाती है (आर्स, ऐ-नाई, कोलोसिन्थ, आयोड, प्लैट, पल्स, थूजा) घरमें प्रवेश करनेपर नाक रुक जाती है (प्लैट); नाक छिड़कनेपर खून मिला बलगम निकलता है (ऐ-कार्बोल, कैलेड)। रन्ध्रमें बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ी, पीली पीवकी तरह पपड़ी जमती है (कैल्के, हाइड्रैस्ट, हिपर, नेट्र-सल्फ, रास, पल्स), नाकके श्लेष्मामें बहुत बदबू रहती है, मानो बहुत दिनोंका पुराना श्लेष्मा रन्ध्रमें जमा हुआ है (पल्स)। नाकके ऊपर व्रण निकलना (कास्टि, ग्रैफ)। नाकके ऊपर छोटे-छोटे तिल और काला गड्ढा उत्पन्न हो जाया करता है (काला गड्ढा—ड्रोसेरा, सैबाडूना)।

नाककी त्वचा सूखी। नाकका अगला अंश लाल और चिकना (फास, बोर ; लाल—ऐ-नाई, कार्बो-ऐनम, लेके, रास ; नाकके अगले भागसे नाककी जड़तक—कैलि-कार्ब ; नाकका अगला भाग और नाकका छेद—कैलि-कार्ब ; क्रोध आनेपर नाक लाल हो जाती है—विङ्का-माई)। रन्ध्रके भीतर जलन और कुटकुटी होती है, मानो उसमें जखम हो गया है। दिनके ३ बजनेके समय रंध्रसे खूनका स्राव (कार्बो-ऐन)। उसके बाद नाकमें बहुत दर्द और स्पर्शका सहन न होना। नाककी सर्दीका स्राव गर्म, रंध्रके भीतरसे जलन करनेवाला पानी निकलता है।

मुखमण्डल।—चेहरा म्लान और बहुत यन्त्रणा प्रकट करनेवाला, मानो बहुत दिन बाद बीमारीसे उठा है (आर्स, मैग, चिनिन-सल्फ, क्रियो, मैग-म्यूर, नक्स-मस, फास, फाइटो, साइलि)। दोनों आँखें गड़हेमें धँसी और नीले घेरेसे घिरी (आर्स, चायना, सिना, लाई, नेट्र-कार्ब, ओलियैन, सिकेलि), चेहरेमें जलन और गर्मी मालूम होती है, पर लाली नहीं आती या गालोंपर लाल चकत्ते (आर्जेण्ट-नाई, बैप्टि, क्रियो, स्ट्रैमोन, लैचनैन)। गण्डास्थिमें दबाव और उखाड़नेकी तरह दर्द अनुभव होता है (अरम, ऐ-नाई, लेके, मैग-कार्ब)। मुखमण्डल, विशेषकर ललाट, नाक, ऊपरी ओंठ और चिबुकपर नोकदार व्रण निकलते हैं (बेल, ग्रैफ, इयुजिन-यैस, नेट्र-म्यूर, सिपि)। नीचेवाला ओंठ फूला और उसपर दाने निकलते हैं। ऊपरी ओंठ और नाकका निचला किनारा पपड़ी जमा। वह रुखड़ा रहता है और जलन होती है। सवेरे शय्यासे उठनेपर ऊपरी ओंठकी मानो खाल उधड़ जाती है, इतनी जलन होती है और उसमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है। दोनों ओंठ सूखे। चिबुकके चारों ओर दाने सब निकलते हैं। मुँहके कोनेमें दादकी तरह दाने निकलते हैं (ऐण्टि-क्रूड, आर्स)। बढ़ी हुई ग्रन्थियोंकी तरह निम्न-हनुकी सूजन और दर्द-भरा भाव और उसमें खींचन और चिलक मारनेकी तरह दर्द। विसर्पकी तरह सूजन दाहिने कानके पास आरम्भ होकर चेहरेपर फैल जाती है। रोगीके दोनों ओंठ पके बिम्बकी तरह लाल, विशेषकर बच्चोंके ओंठका वैसा ही रंग हो जाता है।

मुख-विवर।—खींचने और टपक तथा शलाका वेधनेकी तरह दाँतमें दर्द, विशेषकर निर्मल हवा लगनेपर या थोड़ी भी जलीय हवा लगनेपर

(कैल्के, चायना, मैग-कार्ब, जिन्कोक्लेड), ठण्डा पानी लगनेपर भी दर्द बढ़ जाता है (ऐण्टि-क्रूड, स्टैफाई), निचले हनुकी नीचेवाली ग्रन्थिमें दर्दके साथ संध्या और रातके समय दर्दका बढ़ जाना। मसूढ़ा फूलकर उसमें टपक हुआ करती है। मसूढ़ेसे खून निकला करता है (ऐ-नाई, कार्बो-वेज, लैके, मर्क, नेट्र-म्यूर, फास)। मुँहका स्वाद बहुत तीता (ब्राई, मर्क, नेट्र-सल्फ, नक्स-वोम, पल्स), लसदार (साइक्ली, रैफेनस), व्रण पैदा करनेवाला या बहुत कटु (कार्बो-वेज, काक्यु, पल्स), कभी-कभी मीठा (एल्यु, डालका, मर्क, पल्स) या ताम्र फलकी तरह (कक्कस, मर्क, रास, नेट्र-कार्ब, प्लम्ब) और कभी-कभी खट्टा (आर्जेण्ट-नाई, इग्ने, नक्स-वोम, फास), मुखका यह स्वाद-विकार अकसर सवेरे ही मालूम हुआ करता है। जीभ—नये रोगमें बीचमें सफेद लेप और अगला भाग और दोनों किनारे लाल (थ्लैस्पाई, बीचमें सफेद लेप चढ़ा—आर्स, कैन्थ, कार्डियुस, नेट्र-आर्स, पेट्रोल स्ट्रैमोन ; बीचका लाल, दोनों किनारे सफेद—कास्टि, कैमो) ; सफेद या पीला रङ्ग (इपिक) या सूखा भूरा रङ्ग (आयोड, स्पंजि, टिलिया) पुराने रोगमें सवेरे सफेद लेप (ब्राई, नक्स-वोम) रहता है और जितना ही समय बीतता जाता है, उतना ही साफ होता जाता है। मुँहके भीतर और जीभपर छोटे-छोटे छाले निकलते हैं (ऐ-नाई, आर्स, कैलि-कार्ब)। जीभमें अत्यन्त जलन होती है (ऐकोन, ऐमोन-म्यूर, ऐरम-ट्राई, कैमो, लैके, मर्क्युरियस-पेरेन)। मुख-विवर, जीभ और तालु सब एकदम सूखा और बार-बार प्यास, सवेरे मुँह सूखा, उसमें लसदार गोलियाँ मानो बँध जाती हैं और स्वाद-शक्ति नहीं रहती है। सवेरे और भोजनके बाद मुँहसे खट्टी गन्ध या सड़ी गन्ध आती है। मुँहमें लार संचय (मर्क), लार खून-भरी (ऐ-नाई) या नमकीन (मर्क-कोर, फास) ; भोजनके बाद मुँहमें अत्यन्त लार इकट्ठी होना (ऐलियम-सैट, केस्टोर-इक्वि, कास्टि, नेट्र-सल्फ), मुँहमें बहुत ही खराब स्वादकी बहुत ज्यादा लार पैदा होती हैं और इस वजहसे रोगिनीको बहुत तकलीफ़ मालूम होती है।

गलेके भीतर।—कण्ठके भीतर रूखड़ापन, क्षय हुई त्वचाकी तरह और सूखापन मालूम होता है। कण्ठमें ऐसा मालूम होता है, मानो खाल उधड़ गयी है और रोगी बार-बार खाँसकर बलगम निकालने और कण्ठ साफ़ करनेकी चेष्टा करता है (ऐमोन-कार्ब, कार्बो-वेज, फास)। गलेके जखममें कण्ठमें भयानक सूखापन और जलन मालूम होती है और कण्ठके

बायें पार्श्वमें इस तरहका दर्द होता है, मानो जखम हो गया है, इस तरहका दर्द आरम्भ होकर वह क्रमसे दाहिनी ओर फैल जाता है (लैके, लैक-कैन, सैबाड ; दाहिने पार्श्वसे बायें पार्श्वमें जाता है—एरम-ट्राइ, लाइ, पोन्नो) ; दोनों गलग्रन्थियाँ लाल हो जाती हैं (ऐकोन, एपिस, बेल, फेरम-फास, जिम्नो-क्लेड)। निगलनेके समय (ऐल्य, आर्जेण्ट-नाइ, ब्राइ, डलिकस, हिपर-सल्फ, सैबाड, साइलि)। ऐसा मालूम होता है, कि कण्ठनालीसे एक गोला उठकर वायुनलीका मुख रोध कर रहा है और इसी कारणसे श्वासकष्ट हो जाता है (ऐसाफिट, फाइजस, प्लम्ब, लिसिन), कोई चीज निगलनेके समय कण्ठनाली जकड़ जाती है (बेल, क्यूप्रम) ; खट्टी डकार आकर गलेमें जलन पैदा हो जाती है। कर्णमूलीय और हनुतलस्थ ग्रन्थि सब फूल उठती हैं और उसमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है।

पाकाशय।—सर्वग्रासी भूख (सिना, आयोडम, मर्क, फास) ; भूख लगते ही यदि खा न ले तो सरमें दर्द पैदा हो जाता है (लाइ, कैस्टोर, सिस्टस) और आलस्य मालूम होता है या देह झूल पड़ती है। सम्पूर्ण अरुचि (सिङ्को, साइक्ल, फेरम, हाइड्रैस्ट, नेट्र-म्यूर)। पेट भारी और भरा मालूम होता है और भोजनके लिये बैठनेपर कुछ भी अच्छा नहीं लगता (दो-एक ग्रास खाते-न-खाते अरुचि पैदा हो जाती है—साइक्लेम, लाइ, रियुम)। हमेशा प्यास मालूम होती है (बेल, नेट्र-कार्ब ; दूध पीनेकी वजहसे—कूप्रम, विशेषकर सवेरे और भोजनके बाद (आर्स, नक्स) केवल पानी पीता है और कुछ खानेकी विशेष रुचि नहीं रहती, भोजन करनेके समय प्रत्येक बार बहुत पानी पीता है (लैके, ऐमोन-कार्ब)। मिठाई खाना पसन्द करता है (ब्राइ, कार्बो-वेज, इपिक, कैलि-कार्ब, लाइ, मैग-म्यूर, रास) ; सफेद रङ्ग, दुबला शरीर, पेट बड़ा, ऐसे बच्चोंको बहुत अधिक मिठाई खानेके कारण बीमारियाँ (कैमो, इग्ने, मर्क, सेलिन, थूजा)। छातीमें जलन (ऐमोन-कार्ब, कोना, आयोड, लाइ, नेट्र-म्यूर)। खट्टी या खाली डकार, विशेषकर भोजनके बाद या सवेरे ऐम्ब्रा, ब्राइ, कार्बो-वेज, नक्स-वोम, फास) ; डकार आनेपर मुँहमें सड़े अण्डेका स्वाद आ जाता है (ऐगार, आर्निका, सोरिनम, सिपिया)। पाकस्थलीमें जलन होती है (आर्स, कैम्फ, कैन्थ, कार्बो-वेज, साइकूटा, कोलचि, आइरिस, लोबेल, फास, सिकेलि)। मिचली और पाकस्थलीमें बेचैनी मालूम होना, विशेषकर सवेरे (कैल्के, नक्स-वोम, पल्स)। भोजनके पहले और

पाखाना होनेके समय वमन, खाये हुए पदार्थका वमन (आर्स, ब्राई, इयुपेट, फेरम, लाई, नक्स-वोम, फास, पल्स, सैङ्गियु, वेरेट), विशेषकर सवेरे (सिपि, प्लम्ब) और सन्ध्याके समय (पल्स कार्बो-वेज); पहले पानीकी तरह, इसके बाद खाये हुए पदार्थका वमन होता है (ऐ-सल्फ, इपिक, नक्स-वोम, सिपि, साइलि); खट्टा पदार्थ वमन (कैल्के. कास्टि, चायना, लाई, मैग-कार्ब, नक्स-वोम, फास, सोरिन, पल्स, रोबिन, टैबाक, वेरेट); खूनकी कै (आर्निका, कैक्ट, कार्बो-वेज, चायना, क्रोटेलस, फेरम, हैमा, इपिक, फास, सैबाइना)। दो-एक ग्रास खाते-न-खाते पेट भर जाता है (लाई, चायना, डिजिट, फेरम, कैलि-कार्ब), इसके साथ ही रातमें कलेजा धड़कना। दिनके ११ बजे (या १२ बजनेके समय) पाकाशय खाली मालूम होता है और रोगी इतना सुस्त हो पड़ता है, कि उसे विलम्ब बिलकुल ही सहन नहीं होता, उसे तुरन्त कुछ-न-कुछ खानेको मिलना ही चाहिये (दिनके दस या ११ बजे ऐसा होने और खाने बाद आराम मालूम होनेपर—नेट्र-कार्ब); दिनमें बहुत बार सुस्ती और मूर्च्छा आनेके उपक्रमकी तरह मालूम होनेपर—नेट्र-कार्ब); दिनमें अनेक बार सुस्ती और मूर्च्छाका उपक्रम हो जाया करता है। मांससे अरुचि (ऐ-म्यूर, चायना, ग्रैफ, नक्स-वोम, पेट्रोल, साइलि, पल्स, सिपि), पाकाशयमें भार मालूम होता है (ब्राई, लाई, नेट्र-कार्ब, नक्स-वोम, पल्स)।

अन्त्राशय।—यकृत प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द या दबावकी तरह दर्द (बार्बे, ब्राई, कार्डियुअस-मेरि, चेलिडो, कैलि-कार्ब, मर्क, नक्स-वोम, सिपिया)। यकृत फूला और कड़ा हो जाता है (कार्डियुअस-मेरी, चेलिडो, चायना, फास)। दोनों कांखमें ही बहुत दर्द और छूनेपर भी सवेरे अत्यन्त दर्द मालूम होता है (इयुपेट, रास, रैनान-बल्बो)। प्लीहा-प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (सिङ्कोना, कोना, नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यूर), वृद्धि—गहरी साँस लेनेपर (कार्बो-वेज) और चलनेके समय (हिपर, रोडो, सेलिन)। खाँसनेपर बायाँ कोखमें मरोड़ खानेकी तरह दर्द (चेलिडो, कोलोसिन्थ, क्रोटोन, फाइटो, टिलिया, रेफ; वायु निकलनेपर आराम मालूम होता है—रियुमेक्स)। आंतमंडलीमें ऐसा मालूम होता है, मानो वे आपसमें मिलकर ढेला-ढेला हो गयी हैं, झुकनेपर अधिक दर्द मालूम होता है (इलेप्स, पोलिपो—मानो पककर ढेला-ढेला हो गयी है—वेरेट)। अन्त्राशयमें ऐसा हुड़हुड़ गड़गड़ शब्द सुन पड़ता है, मानो शून्य हो रहा है (सैबाड, सार्सा)। उदर फूला और कड़ा

हो उठता है, मानो उसमें आध्मान वायु भर रहा है (कार्बो-वेज, सिङ्को, लाई), पेट छूनेपर बहुत दर्द मालूम होता है (बेल, कूप्रम, मर्क), मानो उसमें जखम आदि हो गया है। कुछ पीने या भोजन करनेपर अन्त्रशूल आरम्भ हो जाता और रोगी सामनेकी ओर देह टेढ़ीकर दोहरा-सा जाता है (कोलोसिन्थ, कूप्रम); मिष्टान्न खानेपर दर्द बढ़ जाता है (इग्ने. चीनी खानेपर बढ़ता है—ऐ-आक्सैल)। तलपेटमें छुरी मारनेकी तरह दर्द और पतले दस्त। उदरसे मलद्वारतक दबाव मालूम होता है। वंक्षणोय और पुट्ठेकी ग्रन्थियोंमें बहुत दर्द होता है और फूल उठती हैं (मर्क, बेल)। बच्चोंके हाथ-पैर पतले और पेट बहुत बड़ा (ऐब्रोट, आयोड) हो जाता है।

मलान्त्र और मल।—पाखाना होनेके समय मलान्त्रमें जलन और दबाव मालूम होना; पाखाना होने बाद मलद्वारमें जलन होती है (गेम्बोज, नेट्र-सल्फ़, फास, ट्राम्बिड)। मलान्त्रमें सुई गड़नेकी तरह भयंकर दर्द और कीड़ा रेंगनेकी तरह सुरसुरी, विशेषकर सन्ध्याके समय बैठनेकी अवस्थामें, मलयन्त्र और मलद्वारमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होना। मलद्वार लाल, प्रदाह-भरा और रक्तसे भरी शिरासे कसा। मलद्वारके चारों ओर रससे तर, क्षय हुई त्वचाकी तरह दर्द-भरा और खुजली-भरा, दोपहरके पहले बैठनेकी अवस्थामें मलद्वारमें दबाव और कूथन मालूम होना। पाखाना होनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो मलान्त्रमें मल रह गया (डाहाडेम, कैलि-कार्ब, नक्स-वोम, जेल्स, ऐ-नाई), पाखाना होने बाद मलद्वारमें खुजली पैदा हो जाती है। बार-बार वृथाका मल-वेग (कास्टि, नक्स-वोम, पल्स, ऐम्ब्रा, कोना, लैक-डिफलो, नेट्र-मूर)। बवासीर—बादी बवासीर (इसकूल, नक्स, पल्स, रास) या उससे काले रङ्गका खून निकलता है (हैमा, लैके, ऐ-नाई), कमरसे मलद्वारकी ओर नीचेकी ओर खींचनकी तरह तेज़ दर्द; ऐसा मालूम होता है, मानो कमर टूट जाती है (इस्कूल, सिपिया, कोलिन्सो, पोडो, नेट्र-मूर)। रुके हुए स्राववाला अर्श, इसके साथ ही अन्त्रशूल, हृद्-स्पन्दन और फेफड़ेमें अधिक रक्त-संचय होना; कमरमें पकड़न मालूम होना। मल—भूरा, पानीकी तरह और लार मिला हरे रङ्गका आममय (मर्क, पोडो, कैमो, आर्जेण्ट-नाई, गुयाराना, सोरिन, एरण्ड-मेरो); खून मिला, आममय (कैमो, पल्स, मर्क-कोर);

अजीर्ण (एण्टि-क्रूड, चायना, फेरम, मर्क, ओलियैन, हिपर, रियुम); विभिन्न रंगका (डालका, पोडो, पल्स); कभी बहुत बदबूदार (ऐ-बेन, ऐसाफिट, कैल्के-फास, क्रोटोन-टिग, पोडो, सोरिन, पल्स) पेटमें बहुत दर्द होता है, मल पानीको तरह सफेद, आममय और उसमें खट्टी गन्ध; सवेरा होते-न-होते दौड़कर पाखाने जाना पड़ता है (ऐलो, पोडो, शय्या छोड़कर जरा इधर-उधर करते-न-करते पाखाना लग आता है (ब्राई, नेट्र-म्यूर, नेट्र-सल्फ, शय्यासे उठते ही—लाई, रोडो; शय्यासे उठनेके पहले—ऐलो, सोरिन, रियुमेक्स; मलका वेग होनेकी वजहसे रोगीको नींद तड़के खुल जाती है (कैलि-बाई, पेट्रोल, सवेरे ६ बजनेके समय—आर्जेण्ट-नाई)। यन्त्रणा-रहित वेग; बदबूदार पानीको तरह और अनजानमें निकलता है। गण्डमाला दोषयुक्त धातुवाले श्लेष्मा-प्रधान बच्चोंको (कार्ष्टि, आयोड, सिस्टस-कैन, उपदंश विषसे दूषित धातुवालोंका—ऐ-नाई)। ऐसा मालूम होता है, कि अन्त्रमण्डलोमें इतना बल नहीं है, कि मलका निकलना रोक सके या वेग धारण करे। रोगो जहाँ जाता है, वहीं उसे मलको गन्ध मिलती है, मानो उसके कपड़ेमें पाखाना हो गया है। रातमें भयानक कूथन और पेटमें दर्दके साथ आम मिले दस्त आना। आमके साथ खूनको तरह रेखा दिखाई देती है (मर्क, नक्स-वोम, पोडो, ड्राम्बिड, कोलोसिन्थ)। कब्जियत—मल बहुत कड़ा और गाँठ-गाँठ—ऐसा मालूम होता है, कि ये गाठें मानो जल गयी हैं (ब्राई, ओपि); कभी-कभी बड़ो गांठके रूपमें, दर्द होनेके डरसे बच्चा पाखाना नहीं जाता या मलके वेगसे डरता है। कभी-कभी पतले दस्त और कभी कब्जियत; इसी तरह पर्यायक्रमसे हुआ करता है (चेलिडो, नक्स, पोडो, ऐब्रोट), दिनभर मलद्वार धक-धक किया करता है (एक सप्ताहतक रोज़ सन्ध्याके समय—लैकेसिस; पाखान हो जानेके बाद—ऐल्यू, बार्ब, मैन्सिनेला)। मल बहुत कषाय और त्वचाको क्षय करनेवाला, जिस अंशके ऊपरसे निकलता है, उसी अंशमें दर्द मालूम होता है; मलद्वारके चारों ओर लाली और त्वचा क्षयकी तरह मालूम होना (ऐ-नाई, गैम्बो, हाइड्रेस्ट, कैमो, मर्क, एपिस; नक्स, रियुम, आर्स)।

पेशाब।—पेशाब रुकना (ऐकोन, ऐपिस, डालका, लाई, नक्स, स्ट्रैमोन)। बार-बार और एकाएक पेशाबका वेग, विशेषकर रातके समय (ग्रैफ, लाई, मिडोरिन) प्रतिबार पेशाब भी बहुत ज्यादा हुआ करता है।

मूर्च्छावायुके प्रकोपके बाद बहुत ज्यादा पानीकी तरह पेशाब (पल्स ; गन्ध-हीन—सोड्न)। रातके समय शय्यामें पेशाब (इक्विसेटम, आर्नि, ऐ-बेञ्जो, कास्टि, क्रियो, पल्स, सिपि, साइलि)। पेशाबमें बदबू और उसपर तेल-सा तैरा करता है (डालका, हिप, लाईं, मिडोरिन, पेरिस,)। पेशाबके समय मूत्रद्वारमें जलन हुआ करती है (ऐ-नाई, कैनाब-सेट, कैन्थ, मर्क, नक्स-वोम, इयुवा)। पेशाबके दरवाजेपर लाली और प्रदाह ; पेशाब भी इतना कषाय और त्वचाको चय करनेवाला होता है कि निकलनेके समय मूत्रद्वारमें जलन होती है (ऐ-बेञ्जो, हिपर, लोरो, मर्क-कोर)। यंत्रणाजनक वेग और बहुत वेग देनेपर खून-मिला पेशाब निकलता है। मूत्रमार्गसे स्लेष्मा निकलता है। पेशाब कर आने बाद ही तुरन्त वेग पैदा हो जाता है, मानो मूत्राशय जैसा भरा था, अब भी वैसा ही भरा है। मूत्रमार्गमें सुई गड़नेकी तरह या वेधनेकी तरह दर्द (एपिस, क्लिमैट, मर्क, सिपिया), पेशाब होता-होता रुक जाता है (ऐगार, क्लिमैट, कोना, जेल्स) या स्वाभाविककी अपेक्षा पतली धारमें निकलता है (ऐ-नाई, क्लिमैट ग्रे फ)। पेशाब गदला (एपिस, ब्राई, कसो, फास, सिपि)।

पुं-जननेन्द्रिय।—अनजानमें वीर्य-स्खलन और इसके बाद मूत्रमार्गमें जलन अनुभव मालूम होना। उपस्थ या लिङ्गेन्द्रिय उत्तापरहित, रमण-शक्ति बहुत घट जाती है (ऐग्नस); शृंगारकी शक्तिकी अधिकता (फास), शिश्ना-वरक त्वचा प्रदाहित, फूली, लाल और जलन-भरी, इसके साथ ही चमड़ी रोग (मर्क, मर्क-कोर)। शिश्नमें सुई गड़नेकी तरह (वायोला-ट्राई) दर्द। लिङ्गमुण्डमें खुजली (मेजिट, नेट्र-सल्फ); अण्डकोष शिथिल हो जाते और झूल पड़ते हैं (कैम्फो, क्लिमैट)। जननेन्द्रिय-प्रदेशमें बदबूदार पसीना निकलता है (आयोड, मर्क, पेट्रोल, थूजा)। सबेरे नींद खुलनेपर मुष्क खुजलाया करता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु—अत्यन्त असमयमें होता है और स्राव भी बहुत ज्यादा हुआ करता है, पर दो-तीन दिनोंतक स्राव होने बाद बन्द हो जाता है ; कभी बहुत विलम्बसे होता है ; ऋतुरोध (ऐक्टिया, पल्स)। खून गाढ़ा, काला और कषाय और त्वचाको चय कर देनेवाला, उरुमें लगनेपर उसमें जखम हो जाता है (ऐमोन-कार्ब, लेके, नेट्र-सल्फ)। ऋतुके समय

सर-दर्द, माथेमें अधिक रक्त-संचय होना और नाकसे खून निकला करता है (ब्राई, नेट्र-सल्फ), उदरोर्द्ध-प्रदेशमें दबाव मालूम होता है। ऋतु आरम्भ होनेके समय सरमें दर्द होता है (ऐकोन, ब्राई, क्रियो, लैके, लाई, नेट्र-म्यूर, प्लैट); उसकी छातीमें बहुत भार मालूम होता है (ब्रोम, लैके) और रोगिनी बारम्बार गहरी साँस लेती है। प्रदरका स्राव आरम्भ होनेके पहले तलपेटमें दर्द हुआ करता है; स्राव पीला श्लेष्मामय (आर्जेण्ट-नाई, ऐल्यू, ग्रैफ, हाइड्रैस्ट, कैलि-आयोड, पल्स, सिपि) और त्वचाको क्षय करनेवाला (ऐल्यू, ऐमोन-कार्ब, बोवि, क्रियो, लैके, लाई, नेट्र-म्यूर, सिपि)। योनिमें जलनकी वजहसे रोगिनी स्थिर नहीं रह सकती (बार्ब, कैन्थ, ऐ-नाई)। जननेन्द्रियके चारों ओर बहुत तंग करनेवाली खुजली पैदा हो जाती है और उसके चारों ओर छोटे-छोटे दानोंका छत्ता निकलता है (रास, कैल्के), विसर्प हो जानेकी तरह स्तन फूल उठता है और प्रदाहित हो जाता है (रसटक्स); दोनों स्तन लाल, गर्म, कड़े, स्तन-वृन्तके चारों ओर लाल रेखाएँ सब दिखाई देती हैं और उसमें सुई गड़नेकी तरह मालूम होता है (बेल, फाइटो)। प्रसवके बाद बवासीर पैदा हो जाना, जरायुसे स्राव; पहले कभी एक बार गर्भ-स्राव हुआ था, उसके बादसे ही प्रायः रक्तस्राव हुआ करता है।

श्वास-यन्त्र।—कण्ठ स्वर उखड़ा और कर्कश, विशेषकर सवेरे (ऐसिमिना-ड्राई, कास्टि, फास); स्वरलोप (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, कार्बो-वे, कास्टि)। कण्ठमें रूखड़ापन और त्वचा खींचनेकी तरह मालूम होना (ऐ-नाई, चायना, क्रियो)। वक्षमें बहुत अधिक श्लेष्मा-सञ्चय (ऐण्टि-टार्ट, इपिक) होता है; इसीलिये खाँसी पैदा हो जाती है (कैमो, नक्स-वोम)। बोलनेपर हांफ जाता है (कास्टि, ड्रोसेरा); वायु सेवनके लिये चलनेके समय भी श्वासाल्पता मालूम होती है (आर्स, कार्बो-वेज, प्रूनस, सोरिन, सिपिया ; तेजीसे चलनेपर—नेट्र-म्यूर, पल्स, साइलि)। प्रायः रातमें साँस रुक जाना चाहती है (ऐण्टि-टार्ट, आर्स, चायना, इपिक, लाई, लैके, फास, सैम्बु), घरके खिड़की, दरवाजे सब खोल देनेके लिये कहता है (लैके, क्लोरम, ग्टिण्ड, वैले, लैक-कैन, ओपि, स्पञ्जि); एकाएक रातमें नींद खुल जाती है (कैलि-आयोड, लैके)। बायें वक्षमें तेज़ दर्दके साथ छेदकर पीठमें चला जाता है (कैलि-नाई, लाई, स्पाई, कैलि-कार्ब, गुयायेक, मार्टीस-काम, पिक्स-लिक, थिरिड : बायें पृष्ठ-फलकसे तेज़ दर्द शरीरको भेदकर वक्ष-प्राचीरतक जा पहुँचता है—चिनोपोड-

ग्लोकाई)। पीछेकी ओर बाँह ले जानेपर श्वासमें कमी और श्वासकष्ट मालूम होता है (दोनों बाँह शरीरके जितना ही पास ले जाता है, श्वासकष्ट उतना ही बढ़ता है—सोरिनम)। सर्दी और पानीकी तरह स्राव, शीत मालूम होना, वक्षमें जखमका भाव और खाँसी। खाँसी—गला रोध करनेवाली (ऐण्टि-टार्ट, ऐमोन-म्यूर, कूप्रम, ड्रोसेरा, केयोलिन, लैके, पल्स, सैम्बियु) और खुसखुसी तथा सूखी। खाँसनेपर वक्षमें, बायें पृष्ठ-फलकके नीचे सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है (चेलिडो, कैलि-कार्ब, ब्राई, मार्टस, मर्क, सिपिया); स्वरभङ्गके साथ सूखी खाँसी; ओंठ सूखे और पानीकी तरह सर्दीका स्राव (ऐ-नाई, सिपा, इयुफ्रे, कैल्के, कोलचि, स्क्विला)। खाँसनेपर वक्षमें घर-घर शब्द हुआ करता है (ऐण्टि-टार्ट, कैमो, डाल्का, इपिक, नेट्र-म्यूर, सिपि, स्क्विला)। तरल श्लेष्मा मिली खाँसी; खाँसनेपर वक्षमें दबाव मालूम होता है; गाढ़ा श्लेष्मामय बलगम निकलता है; वायुनलीमें श्लेष्माकी आवाज़ सुन पड़ती है और स्वरभङ्ग हो जाया करता है। बलगम कुछ मीठे स्वादका और हरे रङ्गका थक्का-थक्का श्लेष्मामय (मैङ्गेनम, साइलि, स्टैनम) खून मिला पीब भरा बलगम निकलता है (कैल्के, ड्रोसेरा, हिपर, साइलि)। खाँसनेके समय सर-दर्द—मानो माथेमें चोट लगी है या फट गया है (ब्राई, कैप्स, नेट्र-म्यूर, स्क्विला, सैङ्गियु); कभी-कभी वमन हो जाता है (इपिक) और कभी-कभी उदरमें ऐसा मालूम होता है (कार्बो-ऐन, लेके, फास, स्क्विला)। सन्ध्याके बाद सोनेपर सूखी खाँसी (ऐल्यू, कैप्स, स्टैनम) या खाँसते-खाँसते रोगीकी नींद खुल जाती है (ऐकोन, ऐरेलिया, आर्स, बेल, कास्टि, लैके, सिपि, साइलि, सैङ्गियु), कण्ठमें जखमकी तरह भावके कारण खाँसी पैदा हो जाती है (ब्रोम, क्लोरैम)। मानो स्वरनलीमें परका चूर है, ऐसी खुजलीकी वजहसे खाँसी आती है (ऐमोन-कार्ब, लाई); सन्ध्या और रातके समय बलगम बिलकुल ही नहीं निकलता, पर सवेरे और दिनमें घोर लाल, खून मिला बलगम निकलता है (कैमो, क्रोकस, नक्स) या पीले रङ्गका अथवा हरी आभा लिये पीब भरा (फास, पल्स, सिलि, स्टैनम) या दूधकी तरह सफेद (आर्स) अथवा पानीकी तरह (ग्रैफ, लैके, मर्क, स्टैनम) श्लेष्मामय बलगम निकला करता है; निकले हुए बलगमका स्वाद कुछ खट्टा (स्टैनम, नेट्र-म्यूर, फास, पल्स), कहीं-कहीं सड़ा (स्टैनम, कैमो, लैके), स्वादहीन (आर्जेण्ट, सिस्टस, चिना) या नमकीन (लाई, पल्स, स्टैनम) या घृणा पैदा करनेवाला बहुत दिनोंका पुराना सड़ा कफकी तरह।

वक्ष ।—वक्षमें अधिक रक्त-सञ्चय होना (कैक्टस, कैम्फो, मिलिफोल, फास)। दाहिने वक्षमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक कड़ा टुकड़ा बरफ रखा है। बायें वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द शरीरको भेदकर बायें पृष्ठ-फलकतक चला जाता है (ब्राई, पिक्स-लिक, मार्टस-कम, थिरिड, केलि-कार्ब), वृद्धि—चित होकर सोनेपर (रियुमिक्स) और शरीर या वक्षके जरा भी हिलानेपर (ब्राई, स्पाई, रेनान-बल्बो, केल्के)। फेफड़ेका प्रदाह या कोई भारी चीज़ उठाने या मोच खा जानेके कारण वक्षमें दर्द। वक्षमें जलन आरम्भ होकर वह चेहरेतक फैल जाती है, खाँसनेपर या गहरी साँस लेनेपर ऐसा मालूम होता है मानो वक्ष चूर हो जायगा। छातीमें सुस्ती या कमजोरी मालूम होना—सन्ध्याके समय सोनेकी अवस्थामें और बोलनेपर (ऐ-फास, कार्बो-वेज, स्टैन) फेफड़ेके प्रदाहकी मध्यावस्थामें रस-क्षरण (सेङ्गियु)।

हृत्पिण्ड ।—हृद्स्पन्दन—महान उद्वेगजनक (ऐकोन, आर्स, केल्के, स्पाई, फास); नींदमें गड़बड़ी पैदा हो जाती है (केल्के, नेट्र-मूर, सोरिन); बढ़ना—रातमें (आर्स, केल्के, मर्क, वेरेट)। शायित अवस्थामें (नक्स, वेरेट) और सीढ़ी या पहाड़पर चढ़नेके समय (आर्स, ऐ-नाई, कैक्टस, क्रोकस, नेट्र-मूर, नेट्र-कार्ब, अरम-मूर, कोका, थाइरायडिनम)। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसके हृत्पिण्डका आयतन बढ़ गया है (लेके, मिडोरिन ; नाड़ी पुष्ट, कड़ी—बार्ब, केलि-कार्ब, नक्स) और तेज गति, कभी-कभी रुक-रुककर—डिजिट, कार्बो-वेज़, सीड्रन, केलि-कार्ब, केल्मिया, क्रियो, लाइकोपस-वर्जि, स्ट्रैमोन, टैबाक, वेरेट-विर)।

गर्दन और पीठ ।—शय्यामें करवट बदलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो कशेरुकाएँ सब आपसमें एकके ऊपर एक घूमती-फिरती हैं। ग्रीवाकी कशेरुका सब कड़-कड़ करती है, विशेषकर शरीर पीछेकी ओर झुकानेपर (माथा झुकानेपर—नेट्र-कार्ब, निकोलम ; माथा उठानेपर—ओलिऐन ; गर्दन हिलानेपर—चेलिडो)। गर्दन या पीठ एकदम अकड़ी मालूम होती है (ऐगार, कास्टि, रास, जिङ्कम)। आसनसे उठनेके समय नितम्बमें दर्द होता है (कैन्थ, पल्स, रास)। गलेकी गांठें सब प्रदाहित हो गयी हैं, इस तरहका दर्द होता है ((पल्स, रास ; भारी चीज़ उठानेकी वजहसे—केल्के ; बायें पार्श्वमें—कोना)। मेरुदण्डका टेढ़ापन (केल्के, साइलि फेरम,

आयोड) और कशेरुका सब कोमल हो जाती हैं। पृष्ठफलक, पीठ और नितम्बदेशमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द।

प्रत्यङ्ग आदि।—बायें कन्धेमें ऐसा दर्द मानो मोच आ गयी है या उसमें बहुत चोट लग गयी है (चेलिडो, निकोलम, वेसा)। कन्धेमें, विशेषकर बायें कन्धेमें वातकी वजहसे दर्द (लिडम, मिडोरिन); कन्धा और कन्धेके सन्धियोंमें ऐसी तकलीफ, मानो छुरीसे टुकड़े-टुकड़े किया जा रहा है, विशेषकर रातमें (बेल, मर्क); बाँह और हाथमें खींचन और उखाड़नेकी तरह दर्द (कास्टि, ग्रैफ, मैग-म्यूर); बगलमें लहसुनकी गन्धका पसीना होना (लैके, टेल्यू ओस्मियम; प्याजकी गन्ध—बोविस्टा)। हाथकी, विशेषकर अंगुलीकी सन्धिके ऊपरकी और तलहत्थीकी त्वचा फट जाती है (कैल्के, कैलेण्डियु, ग्रैफ, पेट्रोल, रास, सार्सा)। अंगुलीके ऊपर मोटे लाल रंगके जाड़ेके दिनोंके फोड़े या बिवाई (ऐगार, पेट्रोल, ऐ-नाई, लाई)। कलाई मानो मोच खा गयी है ऐसा दर्द (आर्नि, कार्बो-ऐन, सिना, लैके, रोडो), विशेषकर सवेरे। तलहत्थोंमें भयानक जलन हो जाती है (लैके, मिडोरिन, सैङ्ग्वि)। हाथकी त्वचा कड़ी, फटी और सूखी (नेट्र-म्यूर)। नखकी जड़की खाल प्रायः उधड़ जाती है (नेट्र-म्यूर, थूजा); हाथकी पीठपर अकसर खुजलानेवाले दाने निकलते हैं। नखके चारों ओर घाव हो जाते हैं; चलनेके समय दोनों पैर क्षीण और भारी मालूम होते हैं; ऊरु-शिखरमें भयानक और तेज़ बेधनेकी तरह दर्द; वृद्धि—छूनेपर या हिलानेपर, शय्यापर करवट बदलनेके समय, रोगी शय्यासे उठ नहीं सकता; चलनेके समय दोनों ऊरुके बीचके स्थानोंमें जखम मालूम होता है और उनमें खुजली पैदा हो जाती है (इथ्यू, लाई)। रजःस्रावके समय दोनों ऊरुके बीचमें त्वचा क्षय हो जाया करती है (ऐलियम-सेट, ग्रैफ, कैलि-कार्ब, नेट्र-सल्फ, सार्सा)। जानु और गुल्फ-सन्धि अकड़ जाती है (पेट्रोल, सिपि), चलनेके समय जानुके गासेमें चिपक जाता है (कास्टि, नक्स)। पैरकी पोटलीमें और तलवेमें ऐंठन होती है (कार्बो-वेज, सेलिन); विशेषकर रातमें (कैल्के, कैम्फो, नक्स-वोम, साइलि); चलनेके समय भी पोटलीमें दर्द होता है, मानो पेशियाँ संकुचित हो गयी हैं। तलवेमें भयानक जलन होती है (लैके, सैङ्ग्वि, मिडोरिन, सैनिक)। बार-बार तलवेको खोलनेकी चेष्टा करता है (कैमो)। गट्टे या कदर—उसमें दर्द होता है और सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है (नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यूर, सिलिया)। तलवा बहुत

ठण्डा और ठण्डे पसीनेसे तर (कैल्के)। पैरमें पसीना (कैल्के, मर्क, साइलि, ऐ-फ्लु. ऐ-नाई, पेट्रोल)।

सार्वाङ्गिक।—जभी-तभी हाथ-पैरोंमें झुनझुनी होने लगती हैं (सिलि, साइलि), विशेषकर लेटनेकी अवस्थामें। प्रत्यङ्गोंमें बहुत दर्द मालूम होता है और उनमें खींचने तथा फाड़नेकी तरह दर्द (ब्राई, कोलोसिन्थ, लिडम, लाई, मर्क)। प्रत्यंग आदि हिलानेके समय पेशियाँ सब ऐसी मालूम होती हैं, मानो जकड़ गयीं हैं। सन्धियाँ सब क्षीण, कड़कड़ाती हैं और कभी-कभी फूल उठती हैं; बच्चा उछल पड़ता है, चौंक जाता है और भयङ्कर रूपसे चिल्ला उठता है। रह-रहकर सारा शरीर फड़का और हिला करता है। बहुत कमजोरी और सुस्ती। बोलनेमें थकावट होती है। दिनमें बच्चेको स्तन पिलाने बाद या रातमें जागने बाद औंघाईके साथ प्रायः बहुत सुस्ती और बेहोशी आ जानेकी तरह मालूम होता है। मृगी, देह और प्रत्यङ्ग आदि अकड़ जाते हैं और प्रकोप होनेके पहले ऐसा मालूम होता है, मानो एक चूहा बाँहसे चढ़कर पीठपर चला गया (कैल्के)। ढलमलानेकी तरह चाल, हाथ काँपना, रोगी सीधा होकर चल नहीं सकता। कुबड़ेकी तरह। ठण्डी निर्मल हवा सहन नहीं होती, सर्दी लग जाती है (कैल्के, कैलि-कार्ब, फास, साइलि)। सीधे होकर खड़े होना बहुत कठिन व्यापार हो जाता है। बच्चेको नहलाने या शरीर पोंछनेपर बहुत चिढ़ उठता है (ऐण्टि-क्रूड, सोरिन)। सूखी, झूलती हुई त्वचा, ग्रन्थियोंका फूलना—ग्रन्थियोंका फूल जाना और कड़ी होना तथा उनमें पीब पैदा हो जाता है। बार-बार शरीर धोनेपर भी रोगीके शरीरकी बदबू नहीं जाती (सोरिन)। अस्थिमें पोषणकी कमीकी वजहसे पैदा हुई बीमारियाँ। बच्चा दिनोंदिन दुबला होता चला जाता है और उसका चेहरा देखनेपर ऐसा मालूम होता है, कि न जाने कितनी उमर हो गयी है। रोगी छटपटाता है, रातमें उसका शरीर बहुत गर्म हो जाता है और किसी तरह भी शरीरपर कपड़ा नहीं रखना चाहता। बार-बार दूर फेंक देता है (हिपर, सैनिक); हाथ-पैर दुबले, पेट मोटा। बार-बार बीमार पड़ना; रोगी अच्छी तरह आराम हो गया, पर दो-चार दिन बाद फिर वही बीमारी पलट आती दिखाई देती है। ब्रह्मतालुमें ऐसा मालूम होता है, मानो आग निकल रही है। चेहरा गर्म, पर लाली नहीं रहती; पेशाब आगकी तरह गर्म, मूत्रनलीको दग्धकर निकलता है। दिनमें जभी-तभी देह गर्म हो जाती

है। रोगीको बहुत कमजोरी मालूम होती है, सुस्त हो पड़ता है, थोड़ा-सा पसीना होनेपर फिर सब अच्छा हो जाता है।

त्वचा।— बहुत ही सुख देनेवाली खुजली, खुजलानेपर खुजली बन्द हो जाती है, जलन हुआ करती है और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह मालूम होता है (ए-कार्बोल)। खुजलानेके समय बहुत आराम मालूम होता है। शय्याका उत्ताप लगनेपर खुजली पैदा हो जाती है (मर्क); प्रत्यङ्गोंके गांसेकी त्वचाका क्षय हो जाना (लाई); फोड़ा, एक-पर-एक बराबर निकला करता है और प्रत्येक बार बहुत-सा निकलता दिखाई देता है (आर्निका, कैल्के-पाई, ऐसिट-क्र ्ड,ऐ स्टिरियस-टियु)। रस-भरे दाने और दादकी तरह उद्भेद निकलते हैं और उनमें बहुत खुजली और जलन पैदा हो जाया करती है (क्रोटोन, मर्क, रास)। समूचे शरीरमें चींटी रेंगनेकी तरह सुरसुरी मालूम होती है। शरीरका कोई भी अंश जरा भी छिल जानेपर, उस जखमकी जगहपर प्रदाह हो जाता है, फूले और छोटे-छोटे दाने किनारेपर रहनेवाले जखमोंसे सामान्य कारणसे भी खून निकलता है और उससे बदबूदार पीब निकला करता है (हिपर, मर्क, मेजिर, सोरिन)।

निद्रा।—तीसरे पहर और सूर्योदयके बाद दुर्दमनीय औंघाई और रातमें नींद न आना (सेम्बल), बार-बार जम्हाई। रोगी नींदमें छटपटाता है और बार-बार जाग उठता है। बहुत रात गये नींद आती है; सोते ही भयानक रूपसे चौंक उठता है (आर्स, बेल, हायो)। स्पष्ट, डरावने, विरक्ति और उद्वेग पैदा करनेवाले सपने सब दिखाई देते हैं (आर्नि, अरम, पल्स)। अन्त्रशूल रोगमें आँख खोलकर सोता है (कैमो, इपिक, क्रियो, स्टैफ)। निद्रित अवस्थामें जोरसे बोलता है (आर्नि, बेल, सिपि, साइलि)। चौंककर या चिल्लाकर जागता है (एपिस, पल्स)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—शीतावस्था—भीतरी शीत, प्यास नहीं रहती; अधिकांश रोगियोंको सन्ध्याके समय शीत पैदा होता है और सरमें दर्द होता है (सिपिया); किसी-किसी समय शीतके बाद उत्ताप या प्यास पैदा हो जाती है (बोविस्टा)। संध्याके सिवा दूसरे समय भी जाड़ा मालूम हो सकता है। बाहरी शीत और भीतरी उत्ताप तथा चेहरेपर लाली पैदा हो जाती है; उत्ताप पैदा होनेके बाद ही प्यास लगती है; शीतावस्थामें जननेन्द्रिय-

प्रदेश बरफ़की तरह ठण्डा हो जाता है। शीत पैरकी अंगुलीसे पीठ होकर ऊपरकी ओर चढ़ता है (कार्बो-वेज, नेट्र-मूर, सिपि)। उत्तापावस्थामें—प्यास नहीं रहती ; तीसरे पहर और संध्याके समय प्यास लगती है ; तलहत्थी और तलवा इस तरह जला करता है, मानो आग छू गयी है। रोगी बार-बार पैर खोलकर रखनेके लिये ठण्डी जगह खोजता है। रह-रहकर चेहरा आगकी तरह लाल हो जाता है, पर सारे शरीरमें सिहरावन मालूम होती है (सिपिया)। जभी-तभी शरीरमें तेज़ गर्मी पैदा हो जाती है और इसके बाद थोड़ा-सा पसीना होकर गर्मी घट जाती है पर रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है। प्रबल और दीर्घ-काल स्थायी ज्वर ; शरीरकी त्वचा सूखी, गर्म और जलन हुआ करती है। उत्ताप १०३ से १०५° डिगरीतक बढ़ जाता है। दिनमें या रातके समय उत्ताप कुछ घटता है या बिलकुल ही कम नहीं होता ; ऐसा मालूम होता है, मानो रोगी ज्वरके तीव्र उत्तापसे जला करता है (एच. सी. एलेन)। पसीनेवाली अवस्था—रातमें या रातके अन्तिम भागमें पसीना होता है। रातमें सारे शरीरमें खट्टा पसीना हुआ करता है और नींदकी अवस्थामें रोगी छटपटाया करता है। संध्याके समय हाथमें ही ज्यादा पसीना होता है। रातमें सरके पिछले भागमें और गर्दनके पीछे ही पसीनेकी अधिकता दिखाई देती है। विज्वरावस्थामें रोगीको बहुत कमजोरी मालूम होती है और उसके ब्रह्मतालुसे आग निकलती है।

वृद्धि ।—दबाने, छूने, स्थिर रहने, खड़े होने, झुकने, बाँह हिलाने ; प्रत्येक क़दम चलने, सोकर उठने, सीढ़ी चढ़ने, बोलने, घरमें, निर्मल वायु लगने, प्रबल जलीय वायु लगनेपर, उत्तापसे, धूपमें, शरीर धोनेपर या नहानेपर, शीतल पदार्थ पीने या खानेपर (प्यास) ; अंधड़ पानीके आरम्भ होनेके समय, नींदके बाद ; दूध पीनेपर ; भोजनके बाद और पहले ; ऋतुके पहले, समय और बाद ; नीचेकी ओर देखनेपर, बहते हुए पानीका सोता पार करनेके समय और संध्याके समय या आधी रातके बाद और बाँह उठानेपर।

उपशम ।—सूखी गर्म हवा लगनेपर, दाहिनी करवट सोनेपर (बायीं करवट—स्टैनम) ; शरीर हिलानेपर, ठण्डे पानीके प्रयोगसे (सर-दर्द) ; गर्म चीजें आदि खाने और भोजन करते ही।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष ।—ऐ-न.ई, ऐकोन, कैम्फो, कैमो, सिङ्को, आयोड, मर्क, पल्स, रास, सलफर।

अनुकूल सम्बन्ध।—आर्स, बेल, ब्राई, कैल्के, लाई, मर्क, फास, पल्स, रास, सार्सा, सिपिया और साइलिसिया।

अनुपूरक।—ऐलोज, ऐकोन, नक्स, पल्स।

पर्याय।—सलफरके बाद कैल्केरिया-कार्ब और उसके बाद लाइकोपोडियम—इसी नियमसे व्यवहृत होनेपर विशेष लाभ हुआ करता है। स्थल विशेषमें—सलफरके बाद सार्सा और इसके बाद सिपिया—ऐसा व्यवहार भी उचित है। सलफरके पहले कैल्केरिया-कार्बका प्रयोग मना है।

सदृश।—ऐ-नाई, ऐलो, आर्स, बेल, कैल्के, सिङ्को, कोलचि, हिपर, आयोड, लाइको, मर्क, नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम, फास, सोरिन, पल्स, रस-टक्स, सिपि, साइलि।

तुलनीय।—मस्तिष्कावरण-प्रदाह—एपिस। आँखमें चोट—ऐकोन। सवेरे पतले दस्त—ब्रायो (हिलनेपर), नेट्रम-सल्फ (वायुके साथ), रियुमेक्स, पोडो (परिवर्तनशील)। प्रतिक्रियाका अभाव—सोराइन, कूप्रम, ऐम्ब्रा, कार्बो-वेज। वयोसन्धि कालमें उत्तापका आवेश—लैकेसिस। सविराम ज्वरमें—आर्स, बैप्ट, चायना। राक्षसी भूख—कैल्के, कैम्फो। यक्ष्मा प्रधान धातु—बैसिलि, कैल्के-फास। अकौता—मर्क, सिपिया। अजीर्ण—नक्स, सिपिया। हस्तमैथुन—नक्स, कैल्के। खट्टा मल, मलान्त्रमें जखम—कैमो। आध्मान वायु पैदा होना—लाइकोप। रेतःस्खलन इत्यादि—सेलिन। सवेरे स्वरभङ्ग—कार्बो-वेज। बच्चेका दुबलापन—आर्स। हैजाका प्रतिषेधक—कूप्रम। जल्दी-जल्दी काम करना या बोलना—बेल, लैके, हिपर। खुले रहनेकी इच्छा—पल्स, लाइको। शय्यामें पेशाब—बेल, रास। रक्त चयकी बीमारी—आर्स, कैल्के, चायना। बायीं ओरसे दाहिनी ओर—लैके। व्रणका जोरसे हिलना—ओपियम, क्रोकस, थूजा। मुँह सफेद या मिट्टीके रङ्गका—नेट्रम। दीर्घकाय पुरुष—फास्फोरस। स्नान करनेकी इच्छा न होना—ऐण्टि-क्रूड, हिपर, रास। भूतका भय—ऐलो, आर्स, कार्ब, लाइको, कैम्फ, पल्स, सिपिया। टपककी तरह सर-दर्द—ग्लोनोयिन, कैल्के, पल्स। तन्द्रालुता—जेल्स, नक्स-वोम। बहुमूत्रके साथ ध्वजभङ्ग—मस्कोटा। चमड़ी—मर्क, नाइट्रिक ऐसिड, थूजा। रातमें भूख—चायना। मुँहमें बदबू—नक्स-वोम। रक्तका स्वाद—हैमामे, गलेमें केश अनुभव—कैलि-बाई, साइलि। काला मल—लेप्टे। फोड़ा—

ऐन्थ्रा। गोवीजका टीका—थूजा, मैलाण्ड्रि। सामयिक परिवर्त्तन असह्य—हिपर, सोराइनम। ठण्डी जगह खोजता है—सैनिक्युला।

शक्ति।—६, ३०, २०० और हज़ार तथा इससे भी ऊँचा क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—४० से ६० दिन।

सलफर हाइड्रोजेनिसेटम

(SULPHUR HYDROGENISATUM)

दूसरा नाम।—सल्फ्युरेटेड हाइड्रोजेन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—वाष्पको तरल बना लिया जाता है।

उपयोगिता और आभास।—श्वास रुकनेका भाव, प्रलाप, आक्षेप, एकोन्मत्तता, धनुष्टङ्कार, आन्त्रिक ज्वर, दमा, सुस्ती प्रभृति लक्षणोंमें इस विषाक्त वाष्प-जात औषधसे खूब सफलता प्राप्त होती है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

सलफर आयोडेटम

(SULPHUR IODATUM)

दूसरा नाम।—आयोडाइड आफ सलफर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—विषाक्त ज्वरके द्वारा आक्रान्त होनेपर चेहरेका प्रदाह, जखम, खुजली इत्यादि लक्षणोंमें आशातीत लाभ होता है। मुँहासे और चेहरेके रस बहनेवाले उद्भेदोंमें भी इससे खूब लाभ होता है।

सर्दी, दमा, प्रमेह, ग्रन्थिका फूलना प्रभृतिमें इस दवाको आरोग्यकारिणी शक्तिका खासा परिचय प्राप्त होता है।

शक्ति।—६x—१२।

सलफर टेरिबिन्थिना

(SULPHUR TERIBINTHINA)

दूसरा नाम ।—टेरिबिन्थिनेटेड सलफर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—तरल द्रवके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—पुराना सन्धिवात, ताण्डव प्रभृति लक्षणोंमें व्यवहृत होता है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

सलफ्युरोसम एसिडम

(SULPHUROSUM ACIDUM)

दूसरा नाम ।—सलफ्युरम-एसिड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जल-द्रवके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—टानसिल (तालुमूल-ग्रन्थि) प्रदाहमें सल्फुरस एसिडको स्प्रे या पिचकारी देनेपर विशेष लाभ होता है ।

मुँहका व्रण या सांघातिक व्रण-रोगमें तथा मुँहका घाव, रूसी, खाँसी, स्वरभङ्ग, श्वासकष्ट, चकत्तेको तरह जखम, डिफ्थीरिया प्रभृति लक्षणोंमें यह लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—**दोषघ्न ।**—हाइड्रैस्टिस ।

तुलनीय ।—सल्फ, नेट्रम-सूर ।

शक्ति ।—२x—१२ ।

स्कार्लेटिनम

(SCARLATINUM)

दूसरा नाम ।—आरक्त ज्वरके रोग-विषसे प्रस्तुत होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—चेचक, खसड़ाकी चिकित्सा या प्रतिषेधक रूपमें जिस तरह क्रमसे वेरियोलिनम और फेलाण्ड्रिनम व्यवहृत होता है, इसी तरह आरक्त ज्वरको रोकने और चिकित्सामें स्कार्लेटिनम व्यवहृत होता है ।

इसके अलावा मूत्रपिण्ड-प्रदाह, अण्डलाल मूत्र, गलक्षत और बहुतसे चर्म-रोगोंमें भी इसका प्रयोग होता है ।

सम्बन्ध ।—बेलेडोनासे इसका यथेष्ट सादृश्य है । इसीलिये बेलेडोना ही इसका सर्वोत्तम दोषघ्न है । मर्करी घटित औषध भी इसका विषदोष नष्ट करते हैं ।

तुलनीय ।—एपिस, आर्स, आर्बिलिन, डिफ्थिरिनम, रस-टक्स ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

सम्बल

(SUMBUL)

दूसरा नाम ।—सम्बुलस मस्केटा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मूलके चूर्णसे अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मुँहासे ; दमा ; स्तनमें दर्द ; ताण्डव ; अतिसार ; मृगी ; मूर्च्छा ; हृत्कम्पन ; फेफड़ेका प्रदाह ; मूर्च्छावायु ; स्नायुशूल ; शुक्रक्षय ; गलेमें सर्दी ; गलेमें चोट ; सान्निपातिक ज्वर ; क्रमि इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—कम खूनवाली रोगिनियोंके स्नायविक अवसाद और मूर्च्छावायु रोगमें यह विशेष लाभदायक है । रोगिनीको बार-

बार ऐसा मालूम होता है, कि उसका गलरोध हो रहा है और लगातार डकारके साथ पाकस्थलीसे भाफ़ निकलती है और रोगिनी बार-बार निगलती है। स्नायविक हृत्कम्पनकी भी यह एक बढ़िया दवा है,—नाड़ी अनियमित और बायें वक्षमें हृत्शूल मालूम होता है। यह डिम्बाशयके दर्दमें भी उपयोगी है। रोगिनीका पेट बहुत फूल जाता है और उसमें दर्द होता है। इसके निर्णायक लक्षण हैं :—(१) नाक और दोनों अन्ननलीकी सर्दी, उसमें गाढ़ा और डोरीकी तरह पीले रङ्गका श्लेष्मा निकलता है। (२) सूत्रकृमिके साथ पेट फूला और ढोलकी तरह कसा, कब्जियत और रोगी बार-बार नाक खोंटा करता है। (३) पेशाबमें तेलकी तरह पदार्थ तैरा करता है। (४) बायें डिम्बधारका स्नायुशूल। (५) सर्दीके कारण या आक्षेपिक श्वासरोध। (६) आर्त्तव-स्राव बन्द हुई स्त्रियोंकी देहमें रह-रहकर उत्ताप पैदा हो जाना। (७) मुखमण्डल और डिम्बाशयका स्नायुशूल। (८) बायीं कोखमें स्नायुशूल, हृत्शूलकी तरह लक्षण प्रकट होते हैं और कलेजा धड़कता है। (९) पानात्ययके कारण अनिद्रा रोग इत्यादि।

लक्षणावली

मन।—सवेरे मस्तिष्कमें जड़ता मालूम होना और रोगी पढ़-लिख नहीं सकता। सन्ध्याके बाद और गर्मी लगनेपर बुद्धिकी जड़ता दूर हो जाती है और माथा साफ़ हो जाता है। चित्त आवेग पैदा करनेवाला और चञ्चल। लिखने-पढ़नेमें लगातार भूल करता है।

माथा।—सरमें चक्कर,—झुकनेपर (ऐनाक, कैमो, ग्लोन, नक्स, पल्स) और गर्म पानी व्यवहार करनेपर, इधर-उधर टहलनेपर (बेल, मिडोरिन) या आसनसे उठनेके समय (फास, पल्स, कैमो, डिजिट)। मूर्च्छावायु रोगमें सामान्य कारणसे मूर्च्छित हो पड़ता है (इग्ने, मस्कस, पल्स)। सर्दी, सवेरे बढ़ना। नाककी सर्दी, पानीकी तरह या मोटी डोरीकी तरह पीला श्लेष्मा निकलता है (कैलि-बाई, कैलि-आयोड, पल्स)। जीभमें ऐसा मालूम होना, मानो चिवा डाली गयी है (बैप्टी, इग्ने, कैन्य)। कण्ठके भीतर त्वचाका क्षय हो जाना और जलन करनेवाला उत्ताप और उसमेंसे गाढ़ा खूनकी तरह और पीले रङ्गका श्लेष्मा निकलता है। अन्ननली-मुखके सङ्कोचनकी वजहसे

बार-बार ऐसा मालूम होता है, कि गला रुक गया है और रोगिनी बार-बार घूंट लेती है (ऐ-कार्बोल, बेल, कैल्के, लोरो)।

पाकस्थली और अन्त्राशय।—डकार आदिके साथ बार-बार पाकाशयसे भाफ़ निकलती है (आर्जेण्ट-नाई, कार्बो-वेज, लाइ)। सूत्रकृमि रोगमें उदर फूल उठता है। आन्त्रिक ज्वरमें पतले दस्त। पेशाबकी तली मैली और उसपर तेलकी तरह पदार्थ तैरता है (डल्का)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—श्वेत-प्रदर,—बैठनेपर स्राव अधिक होना। बायें डिम्बाधारका स्नायुशूल (लैके)। जरायुके बायें पार्श्वमें मानो पेंच घूम रहा है, इस तरहका दर्द। बायें स्तनमें छुरी मारनेकी तरह या कट-कट झन-झन करनेवाला दर्द ; वृद्धि—जोरसे साँस लेनेपर। जिनका रजःस्राव होना बन्द हो गया हो, उन स्त्रियोंके शरीरमें रह-रहकर उत्ताप पैदा होना (लैके, ऐमिल, ऐ-सल्फ, मैंगे, सैंगिवि)।

हृत्पिण्ड।—स्नायविक हृत्स्पन्दन—मूर्च्छा-वायु रोग-ग्रस्त या जिनका रजःस्राव होना बन्द हो गया है, उन स्त्रियोंका कलेजा धड़कना। बहुत थोड़ी-थोड़ी मानसिक उत्तेजनासे भी कलेजेमें धड़कन पैदा हो जाती है (ऐकोन, काफिया, लैके, प्लैट); वृद्धि—इसी विषयपर ध्यान देनेपर (अरम-म्यूर, ऐ-आक्सैल, बैराई), वातकी वजहसे हृदयका प्रदाह या हृदन्तर्वेष्ट प्रदाह (अरम-म्यूर, हायो, कैलि-बाई, कैल्मी, फास, स्पञ्जि, नैजा, कैक्टस)। हृत्पिण्डका वेग प्रबल, नाँचने या फड़कनेकी तरह (ऐलियम-सैट), विशेषकर शारीरिक परिश्रमके बाद या भोजनके बाद जिस समय खायी हुई चीज़ पचने लगती है ; हृत्पिण्डमें मानो भाथी चलती है, इस तरहका हुस-हुस शब्द सुन पड़ता है (फेरम, स्पञ्जि); रह-रहकर पीठमें ऐसा उत्ताप अनुभव होता है, मानो किसीने आग ढाल दी ; वक्षमें इतना तेज़ दर्द मालूम होता है, मानो किसीने छुरी मार दी (कैलि-नाई, सोरिन, स्पाइजि)। मानो किसी बाधाके कारण वक्षके सिकुड़ने-फैलनेमें बाधा पहुँच रही है (कैक्टस)। बायाँ बाँह सुन्न, बहुत चीण और अंगुलीमें सूतकी तरह चीण दर्द मालूम होता है (ऐकोन, ग्लोन, रास, कैक्टस)।

सार्वाङ्गिक।—ताण्डव-रोग, मस्तक और अङ्ग-प्रत्यङ्ग आदि बराबर फड़का करते हैं, जीभ बार-बार बाहर निकालता है (क्यूप्रम-ऐसेट, सलफर)

और बार-बार राक्षसी भूख लगती है। मृगीरोग—एकाएक सामनेकी ओर गिर जाता है (कैल्के-फास, ब्युफो, स्ट्रैमोन) और मुँहसे फेन निकला करता है (कैलि-बाई, कूप्रम, लोरो, लाई, इनैन्थि, मिडोरिन)। सामान्य कारणसे बेहोश हो जानेकी सम्भावना (हिपर, हायो, मस्कस, सिपिया), दिनमें औंघाई, पर रातमें नींद न आना (सलफर)। नींदमें अङ्ग-प्रत्यङ्ग आदि काँप उठते हैं और नींदमें व्याघात हो जाता है। स्वप्न,—गिरनेके (डिजिट, पल्स, क्रियो); मरनेके सपने और उसके बाद बहुत ज्यादा रेतःस्खलन (ग्रैफ, आइरिस, कैलि-ब्रोम, ओपि, सिपिया), मुँहासे और काले छिद्राणु सब निकलते हैं।

वृद्धि।—शरीर हिलाने, बैठनेके बाद, श्वास लेनेपर, सर्दी लगनेपर, लक्षणोंकी बात याद आनेपर और सवेरे।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—ऐसिड-आक्जैल, ऐकिया-रेसि, ऐसाफिट, डाल्का, हाइड्रैस्ट, कैलि-बाई, लैके, लोरो, मिडोरिन, मिलिलोट, मेजिर, पल्स, सल्फ।

तुलनीय।—पेशाबपर तेलकी तरल पदार्थ—सलफर, पल्स, क्रियो। कड़ा पीली आभा लिये स्लेष्मा—हाइड्रैस्टिस। स्तनके नीचे दर्द—सिमिसिफ्यूगा, पल्स, लिलियम।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३ठा शततमिक क्रम।

सिम्फोरिकार्पस

(SYMPHORICARPUS)

दूसरा नाम।—सिम्फोरिकार्पस रेसिमोसस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पके ताजे फलसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—गर्भावस्थामें या मिचलीकी बीमारीमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—गर्भवती स्त्रियोंकी मिचलीमें यह बहुत लाभदायक है, विशेषकर जब शय्यामें शरीर लम्बाकर सोनेपर और

एकदम स्थिर भावसे रहनेपर मिचली घटती हो। भयानक मिचली पैदा हो जाती है, बार-बार इतनी तेज ओकाई आती है, कि कभी-कभी खूनतककी कै हो जाती है। भोजनके पदार्थकी गन्ध या उस विषयमें सोचनेपर भी प्राणान्तक मिचली पैदा हो जाती है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—इपिक, पाइपर-नाइग्रम, टैबाक ।

शक्ति ।—२रा दशमिकसे ३रा शततमिक क्रमतक ।

सिम्फाइटम

(SYMPHYTUM)

दूसरा नाम ।—सिम्फाइटम आफिसिनेलि, कानसोलिडो-मेजरिस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताज़ी जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—फोड़ा ; हड्डीका कर्कटका जखम ; स्तनमें चोट ; आँखमें दर्द ; अस्थि-भंग ; ग्रन्थिका बढ़ना ; गोलीका जखम ; आँत उतरना ; बहुत ज्यादा इन्द्रिय-सेवनका दुष्परिणाम ; जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—किसी चोटकी वजहसे अस्थिवेष्ट या हड्डी टूट जाये अथवा बिध जाये और टूटी हुई हड्डीमें जोर न लगे या देर हो (फास, कैल्के), टूटे हुए अङ्गमें नश्तर लगवा देने बाद यदि कटे हुए मुँहपर जखम और दर्द दुबारा पैदा हो जाये और चक्षुगोलकपर बच्चेकी मुट्ठी या दूसरे भोथरे यन्त्रकी चोट लग जाये तो सिम्फाइटमका बाहरी और भीतरी प्रयोग करनेपर बहुत फायदा हुआ करता है। गिरने आदिके कारण जखम या चोटमें "आर्निका" के प्रयोगके बाद यदि उस अंशमें आल्पीन गड़नेकी तरह दर्द हो और अस्थिवेष्टमें जखमका भाव हो तो सिम्फाइटमसे उसे दूर करनेकी विशेष सम्भावना है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—आर्निका, कैल्के-फास, ऐ-फ्लू, सिलि, लिडम, रास ।

तुलनीय ।—अस्थिभंग—कैल्के-फास । चोट—आर्निका, कैलेण्डुला, साइलि । इन्द्रिय सेवनका परिणाम—आर्निका ।

शक्ति ।—भीतरी प्रयोगके लिये मूल अर्कसे ३० शततमिक क्रम। बाहरी प्रयोगके लिये मूल अर्क।

सिज़िजीयम जैम्बोलिनम

(SYZYGIUM JAMBOLINUM)

दूसरा नाम ।—जाम्बुल, जामुन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बीजका चूर्ण।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—बहुमूत्र और जखम रोगमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास ।—बहुमूत्र रोगमें यदि पेशाबके साथ अधिक चीनी आती है, तो इस दवाके प्रयोगसे चीनीका भाग क्रमसे घट जाता है। इसलिये यह दवा शर्करा बहुत बहुमूत्र या मधुमेह रोगमें विशेष लाभदायक है। बहुमूत्र रोगमें देहमें जखम आदि पैदा होनेपर इसके सेवनसे वे अच्छे हो जाते हैं।

शक्ति ।—मूल अर्क।

टैबाकम

(TABACUM)

दूसरा नाम ।—निकोटियाना, टैबेकम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—तम्बाकू या तम्बाकूके पत्तेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—निम्न-लिखित रोगोंमें लाभदायक है—अन्धापन; रक्ताल्पता और काँच निकलना; संन्यास; दमा; पीठमें दर्द; मस्तिष्कको क्लान्ति; तांडव; विसूचिका; शिशु-विसूचिका; वर्णका ज्ञान न रहना; कब्जियत; अतिसार; मृगी; ग्रन्थियोंका बढ़ना; हृत्पिण्डका रह-

रहकर धड़कना ; आँत उतरना ; हिचकी ; जड़ता ; पैर फड़कना ; ओंठका कर्कटका जखम ; नकली मैथुनका दुष्परिणाम ; अन्ननलीका सङ्कोचन ; गर्भावस्थामें मिचली ; दाँतमें दर्द ; मूत्राधार-मुखशायिका ग्रन्थिका स्राव ; मुँहमें पानी भर आना ; मलान्त्रका रुकना ; पक्षाघात या सङ्कोचन ; बोलीकी जड़ता ; डेरा देखना ; धनुष्टंकार ; दन्तशूल ; अंडकोषकी शिराका फूलना इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—मस्तिष्क और फुसफुस पाकाशयिक स्नायुमें उत्तेजनाकी वजहसे नाना प्रकारकी बीमारियाँ इसके विषयके अन्तर्गत हैं। बहुत ज्यादा तम्बाकू सेवन करनेपर और स्वस्थ शरीरमें इसका अर्क खाकर परीक्षा करनेके समय प्रधानतः नीचे लिखे लक्षण प्रकट हुआ करते हैं। जैसे,—(१) चित्त बहुत उदास रहता है और रोगी अपनेको बहुत दुःखित समझता है (२) अग्निमान्द्य, हृद्स्पन्दन और रुक-रुककर चलनेवाली नाड़ीके साथ बहुत विषन्नता। (३) सरमें चक्कर ; रोगी पीला हो जाता है, बेहोश हो जाता है ; वृद्धि—चढ़नेके समय या ऊपरकी ओर देखनेपर और आँख खोलनेके समय ; घटना—निर्मल वायु सेवन करनेपर और वमनके बाद। (५) पाकाशयिक सर-दर्द—सवेरे आरम्भ होकर दो पहरके समय असह्य हो जाता है और इसके साथ ही प्रबल मिचली और वमन हुआ करता है। (५) माथेके दाहिने पार्श्वमें एकाएक मानो किसीने हथौड़ी या डण्डा मार दिया—इस तरहका दर्द होता है। (६) आँखके चित्रपत्र या दर्शन स्नायुके क्षयकी वजहसे तिमिर दृष्टि। (७) रोगीका चेहरा म्लान, नीला, अस्थि-सार, हिमाङ्ग भाव प्रकट करनेवाला और सर्द पसीनेसे तर रहता है। (८) दोनों गाल और पीठ दुबली और हड्डो-हड्डी भर ही रह जाती है। (९) लगातार मिचली, थोड़ा भी शरीर हिलानेपर, रोगी सुस्त हो जाता है और उसके समूचे शरीरमें ठण्डा पसीना होने लगता है। (१०) उदरके ऊपरी भागमें भयानक शून्य भाव और सुस्ती मालूम होना। (११) मिचलीके समय पाकस्थली ऐसी शून्य मालूम होती है, मानो झूल गयी है। (१२) वयस्क रोगी या शिशु बार-बार अपना पेट खोलता है ; क्योंकि इससे उसकी मिचली और वमन घटता है, उदरमें बहुत सर्दी मालूम होती है। (१३) कब्जियत, अन्त्रमण्डलीकी निष्क्रियता या मलान्त्रके पक्षाघातसे उत्पन्न ; मलद्वारावरोधिनी पेशीका सिकुड़ना, फैलना या आक्षेप, मलनालीका अपने स्थानसे हटना और इसके साथ ही मलद्वारके चारों ओर दादकी तरह उद्भेद निकलना। (१४) पतले दस्त या

उदरामय, लसदार पीली या हरी आभा लिये और एकाएक होता है, प्रबल और दुर्दमनीय वेगके बाद पानीकी तरह दस्त होना ; बहुत मिचली ; प्रबल वमन ; उठनेकी शक्तिका न रहना और इसके साथ ही सारे शरीरमें ठण्डा पसीना, रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है, बहुत ज्यादा धूम्रपानकी वजहसे। (१५) मसानेका दर्द या मूत्रपथरी निकलनेके कारण शूलका दर्द, मूत्रशिराकी राहसे भयंकर आक्षेपिक दर्द पैदा हो जाता है, विशेषकर बायें पार्श्वमें। इसके साथ ही प्राणान्तक मिचली और ठण्डा पसीना मौजद रहता है। (१६) कलेजा धड़कना, बायीं करवट सोनेपर भयंकर आकार धारण करता है ; दाहिनी करवट सोनेपर फिर नहीं रहता। (१७) सारा शरीर बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है और पसीनेसे तर हो जाया करता है। (१८) दोनों हाथ बरफकी तरह ठण्डे अथवा देह गर्म। (१९) दोनों पैर घुटनेसे चरणतक बरफकी तरह ठण्डे, दोनों पैर काँपा करते हैं। (२०) नाड़ी तेज़, पुष्ट और स्थूल या सूक्ष्म सविराम और धीर गति ; इसके सिवा कभी क्षीण अनियमित और प्रायः स्पर्शमें नहीं आती।

लक्षणावली

मन।—अत्यन्त विषन्न, रोदन-प्रवणता। हृतशूल रोगमें एकाएक चंचल हो जाना ; वक्षमें दबाव मालूम होता है और चित्तमें चंचलता पैदा हो जाती है और रोगीको बाध्य होकर इधर-उधर दौड़ना पड़ता है। उसके मनकी चंचलता उसे स्थिर नहीं रहने देती (ऐकोन, आर्स, आरम-म्यूर, आरम)। परिश्रम करने या किसीसे बोलनेकी इच्छा न होना (चेलिडो, आर्जेण्ट-नाई, सल्फ, सोरिन, लैके)। सरमें भयंकर चक्कर आनेकी वजहसे बुद्धिकी तेजी नष्ट हो जाती है। लिख-पढ़ नहीं सकता (इथ्यू, लाई, नेट्रम-म्यूर)। किसी विषयमें बहुत देरतक मन नहीं लगा सकता (ऐनाक, ग्लोन, लैके, लाई, नक्स-वोम, फास, सिपि, साइलि)। विस्मृति-प्रवण ; सहजमें कोई विषय हृदयंगम नहीं कर सकता (बैराई, कैल्के, लैके, नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यूर, टैब)। बहुत निर्बोध ; मृगीके रोगीकी तरह (इथ्य, ब्यूफो, थाइराइडिन, वेसिलिन)। बहुत प्रसन्न, केवल बकता है (इथ्यू, लैक, स्ट्रैमोन)। अपनेको बहुत असुखी समझता है। उदासी—कुछ देरतक रोनेपर दूर हो जाती है (डिजिट, मिडोरिन, फास)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, रोगी नीला हो जाता है (लैके, पल्स) यह क्रमसे इतना बढ़ जाता है, कि रोगी बेहोश हो जाता है ; वृद्धि—उठनेके समय (ब्राई, कास्टि, हैमा, लैक-डिफ्लो, नेट्र-मूर, ओपि) ऊपरकी ओर देखनेपर (कैल्के, कूप्रम, ग्रैफ, लैके) और आँख खोलनेपर (ऐलूम)। घटना—निर्मल वायु सेवनसे (कैम्फो, कास्टि, ग्रैटि) और वमनके बाद ; माथेमें बहुत भार और पाकाशयमें एक तरहकी अनिर्वचनीय बेचैनी मालूम हुआ करती है। माथेके दाहिने पार्श्वमें मानो किसीने हथौड़ी या लकड़ीसे मार दिया, एकाएक इसी तरहका दर्द ; गर्दनके पिछले हिस्सेमें मानो किसीने हथौड़ीसे मार दिया (नैजा)। पाकाशयिक शिरःशूल, सवेरे आरम्भ होकर दोपहरके समय असह्य हो जाता है (नेट्र-मूर, स्पाइजि), दर्दके समय प्राणान्तक मिचली पैदा हो जाती है और भयानक वमन हुआ करता है ; वृद्धि—शब्दसे (बेल, आर्स, काक्यु, काफि, इग्ने, लैके, लैक-कैन, लैक-डिफ्लो, नक्स, साइलि, थिरिडि, सेङ्गियु, स्ट्रैमोन)। यह कभी-कभी पैदा होता है और एक या दो दिनोंतक स्थायी रहता है। सर-दर्द, दर्द एक कनपटीसे दूसरी कनपटीमें और दोनों चक्षु गह्वरतक अधिकार जमा लेता है अथवा बायीं आँखमें तेज़ बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है ; गर्दन और पीठमें पैशिक-संकोचन या अकड़नकी वजहसे माथा पीछेकी ओर खिंच जाया करता है (साइकूटा, इग्ने, नक्स, कूप्रम)।

आँख।—तिमिर-दृष्टि या अस्पष्ट, मानो पर्देके भीतरसे देख रहा है (सल्फ, कास्टि, क्रोकस, हायो, आयोड, लिथिया-कार्ब, नेट्र-मूर)। मस्तिष्कके विकारसे उत्पन्न वक्र-दृष्टि (एपिस, बेल, डिजिट, कैलि-आयोड, स्ट्रैमोन)। दर्शन-स्नायु या चित्रपटके क्षयसे उत्पन्न तिमिर दृष्टि (नक्स, फास, कार्बोन-सल्फ)।

मुखमण्डल।—चेहरा नीला, म्लान, रक्तशून्य, हड्डी-हड्डी और बरफकी तरह ठण्डे पसीनासे भरा (ललाटमें ठण्डा पसीनेसे तर—वेरेट)। चेहरा ठण्डे पसीनेसे भरा (कैम्फो, कार्बो-वेज) ; दोनों गाल हड्डी-हड्डी और गड़हेमें धँसे (ऐण्टि-टार्ट, कैम्फो, वेरेट)। चेहरा मिचली प्रकट करनेवाला और बिगड़ी हुई भाव-भंगी, आँख गड़हेमें धँसी और नीले घेरेसे घिरी। दोनों ओंठ फूले। फटी हुई त्वचा और भूरे रंगकी पपड़ीसे ढँकी। चेहरा मानो दग्ध हुआ जाता है, ऐसा उत्तापयुक्त और लाल, अधिकांश स्थानोंमें एक पार्श्व लाल

हो जाया करता है। चेहरेकी हड्डी और दाँतमें उखाड़नेकी तरह दर्द (कोलोसिन्थ, मैग-कार्ब, फास)।

मुख-विवर।—मुँहसे फेन निकलना (साइक्यूटा, काक्यू, क्यूप्रम, लोरो, इग्नेशि)। बहुत ज्यादा लारका स्राव (ऐ-नाई, कैम्फो, कैन्थ, आयोड, मर्क)। मुँह और कण्ठमें बहुत ज्यादा सफेद रंगका गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा इकट्ठा हुआ करता है और रोगीको उसे बार-बार निकालना पड़ता है। कण्ठनली सूखी और ऐसा मालूम होता है, मानो रुक रही है और कोई चीज निगलनेमें बहुत तकलीफ़ होती है (स्ट्रैमोन, लैके, फाइटो) हृत्‌शूल रोगमें कण्ठनालीका प्रबल संकोचन।

पाकाशय।—तेज़ प्यास, विशेषकर रातमें। लगातार मिचली, मानो बहुत दिनोंसे नाव या जहाजमें घूम रहा था; शरीर हिलाते ही वमन हो जाता है (आर्स, ब्राई, लैके, नक्स, पेट्रोल, वेरेट), विशेषकर विसूचिका रोगमें (लैके)। प्रचण्ड वमन—सारा शरीर ठण्डे पसीनेसे तर हो जाता है; जरा हिलाना आरम्भ करते ही वमन आरम्भ हो जाता है (डिजिट, वेरेट); गर्भावस्थामें वमन (जब ऐसिड-लैक्टिकके प्रयोगसे लाभ नहीं होता, सोरिन) प्राणान्तक मिचली, सरमें चक्कर आया करता है; मूर्ति नीली और मुर्देकी तरह हो जाती है। जरा भी शरीर हिलानेपर मिचली पैदा हो जाती है (ऐण्टि-टार्ट, क्यूप्रम-ऐसेट, वेरेट)। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें भयानक शून्यता और सुस्ती मालूम होना (इग्ने, कैलि-कार्ब, लैक-कैन, लेप्टैन, नेट्र-म्यूर, फास, स्टैनम, सलफर), ऐसा अनुभव होना मानो पाकस्थली शिथिल होकर नीचे झूल पड़ी है (इयुफोर्ब, इपिका, स्टैफ)। पाकाशय शूल, उदरोर्द्ध-प्रदेशमें मानो उलट-पलट हो रहा है, इस ढङ्गका दर्द (लाई)। कै हुआ पदार्थ कभी खट्टा पानीकी तरह, कभी-कभी स्वादहीन पानीकी तरह और कभी-कभी सुबह तीता जलीय पदार्थ वमन होता है।

अन्त्राशय।—यकृतमें दबाव (ऐलो, कार्डियुअस-मेरी, नक्स) या भार मालूम होना अथवा सुई गड़नेकी तरह दर्द (बार्ब, ब्राई, कार्डियुअस-मेरी, चेलिडो, कैलि-कार्ब, नेट्र-म्यूर, सल्फ)। यकृत बढ़ना और दबानेपर उदरोर्द्ध प्रदेशमें बहुत ज्यादा दर्द मालूम होता है। तलपेटमें आँतोंका आवाज़। उदरमें आध्मान वायु घूमता-फिरता है। पेट ढोलकी तरह फूल उठता है और

कब्जियत पैदा हो जाती है, कभी-कभी रह-रहकर तेज़ दर्द पैदा हो जाता है, खानेपर दर्द बढ़ जाता है, पर रोगी खाये बिना रह नहीं सकता। नाभी पीछेकी ओर खिंच जाती है (ऐलू, प्लम्बम); अन्त्राशयकी पेशियाँ सब भयानक रूपसे जकड़ जाती हैं (कोलोसिन्थ, इलैट, लैके, प्लम्ब); कड़ी और न लचनेवाली अन्त्रवृद्धि (ऐकोन, बेल, कार्बोन-सल्फ, इपिक, नक्स-वोम, ओपि, सल्फ), मिचली, भयंकर सुस्ती, रोगीमें हिमाङ्ग पैदा हो जाता है, ठण्डा पसीना होता है और वमन हुआ करता है; कभी-कभी एकाएक मस्तिष्कमें खूनकी अधिकता होती है। उदरमें बहुत ठण्डक अनुभव होती है (इथ्यू, ऐम्ब्रा, कोलचि, इलैप्स, कैलि-बाई, हेलिबो, लैके, लोरो)। रोगी किसी तरह भी उदरको ढँककर नहीं रख सकता और बच्चा बार-बार पेट खोला करता है, उससे उसकी मिचली और वमनमें बहुत शांति मालूम होती है (उदरपर कपड़ेका भार सहन नहीं होता—लाई, एपिस, क्रियो, लैके, लैक-कैन, पल्स, स्पिञ्जिया)।

मलान्त्र और मल।—उदरामय, एकाएक पीली या हरी आभा लिये लसदार मल निकलना; प्रबल वेगके बाद पानीकी तरह मल निकलना, मिचली; उठनेकी शक्तिका न रहना और सारे शरीरमें ठण्डा पसीना होता है (वेरेट); रोगी बेतरह सुस्त हो जाता है; बहुत ज्यादा धूम्रपान करनेपर उदरामय (कैमो)। कब्जियत अन्त्रमण्डलीकी निष्क्रियता या मलान्त्रके पक्षाघातका सुन्न हो जानेके कारण भेंड़की तरह छोटा-छोटा मल बड़े कष्टसे निकलता है। शरीर ठण्डा, उदर गर्म, जबतक रोगीके पेटका सभी ढकना नहीं खुल जाता, तबतक बच्चा सन्तुष्ट नहीं होता। पीला पाखाना होनेके समय श्रोणिदेशमें भयानक दर्द और जलन मालूम हुआ करती है (लाई, निकोलम) और कूथन होती रहती है।

पेशाब।—मसाना और मूत्राश्मरीका शूल; मूत्रशिराके (विशेषकर बायें पार्श्वकी) बीचसे भयानक दर्द चलता है, शरीर ठण्डे पसीनेसे तर हो जाया करता है। रोगी नीला पड़ जाता है, मूर्च्छा आ जाती है, प्राणान्तक मिचली पैदा हो जाती है और रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है (बार्ब, कैन्थ, डायस्को, ओसाइमम-कैन, पेरिइब्रे वा प्रभृति)। रातमें स्वप्नदोष।

श्वासयन्त्र।—रह-रहकर श्वास-रोधका उपक्रम। कष्टकर श्वास-प्रश्वास। हूप-खाँसी, खाँसते-खाँसते भयानक ओकाई आ जाती है और वमन

होता है। उदरोर्द्ध प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है और रोगी गहरी साँस नहीं ले सकता ; प्रत्येक प्रकोपके बाद भयानक हिचकी आया करती है और ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो दम अटक जायगा (ऐङ्गस्टियुरा)। रातके समय हृत्शूल रोगमें वक्षका ऊपरी अंश जकड़ जाता है और कलेजा धड़का करता है। विसूचिका रोगमें हृद्-प्रदेशमें ऐसा मालूम होता है, मानो किसीने कलेजा दबा रखा है (लोरोसि)। हृत्पिण्ड और गलेकी धमनीमें प्रबल टपक। एकाएक हृदयके अगले भागमें दर्द, बायीं करवट सोनेपर कलेजा बेतरह धड़का करता है (डेफनी, नेट्र-म्यूर, कैक्टस, फास स्पाइजि नेट्र-कार्ब) ; दाहिनी करवट सोनेपर अच्छा हो जाया करता है। नाड़ी—तेज, पुष्ट और स्थूल अथवा सूक्ष्म और रह-रहकर और बहुत ही धीर गति। इसके सिवा कभी क्षीण, अनियमित और प्रायः छूनेपर नहीं मिलती।

प्रत्यङ्ग आदि।—हृत्शूल रोगमें गलेतक शूल बेधनेकी तरह दर्द पैदा हो जाता है और कण्ठमें कसावट और सङ्कोचनका भाव पैदा हो जाता है। हृत्शूल रोगमें दोनों कन्धोंके बीचमें दर्द मालूम हुआ करता है (बायें कन्धेमें—डिजिट)। पीठमें और कमरमें भयानक दर्द ; चलनेपर प्रायः आराम हो जाता है (रास)। सन्ध्याके समय त्रिकास्थि-प्रदेशमें टपक, देह गर्म और बाँह और पैर बरफकी तरह ठण्डे (मिनियैन)। बाँहका काँपना (ऐण्टिम-टार्ट, मर्क ओपि, प्लैट, प्लम्ब, स्टैनम)। दोनों पैरके घुटनेसे लेकर चरणतक बरफकी तरह ठण्डा (ऐलूम)। जानुसे पैरकी अंगुलीतकके अंशमें चींटी रेंगनेकी तरह सुरसुरी मालूम होती है (आर्जेण्ट-नाइ, आर्निका)। पैरका काँपना (लेके, नक्स-वोम)।

सार्वाङ्गिक।—बहुत कमजोरी और सुस्ती (सार्सा, सिङ्को)। अस्थिर और एक जगहसे दूसरी जगह छटपटाया करता है। चाल धीमी और अस्थिर ; सीढ़ी चढ़नेमें बहुत तकलीफ़ होती है। रातमें इस तरह सोता है, मानो होश न हो समूची देहमें खुजली पैदा हो जाती है। बहुत तकलीफ़ मालूम होती है और पेशियाँ सब आप-से-आप सिकुड़ जाया करती हैं। पेशियोंका आक्षेपिक सङ्कोचन, सारे शरीरमें अनुभव शक्तिका न रहना और शिथिलता, रोगी विशेषकर उसके दोनों गाल और पीठ दुबली हो जाती है। श्वास रोग, सर-दर्द, सरमें चक्कर, छींक प्रभृति प्रकोप रह-रहकर प्रबल वेगसे पैदा हो जाया

करते हैं अर्थात् जब नहीं रहते तब रोगीको कोई कष्ट नहीं रहता, पर प्रकोप आरम्भ होते ही रोगीको तकलीफ़की सीमा नहीं रहती।

त्वचा।—शरीरमें जगह-जगह कुटकुटी हुआ करती है मानो मच्छड़ आदि कीड़े काट रहे हैं। चेहरा और दाहिने कन्धेके ऊपर लाल दाने सब निकलते हैं, उसे छूनेपर जलन होती है। पीले रङ्गके रस-भरे और लाल घेरेसे घिरे दाने सब निकलते हैं और खुजली पैदा हो जाया करती है।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—आगे लिखी कई दवाएँ बहुत तम्बाकू सेवनके प्रतिविष हैं।

(१) **आर्सेनिक।**—तम्बाकू या जर्दा खानेका दुष्परिणाम।

(२) **क्लिमेटिस या प्लैण्टेगो।**—तम्बाकू सेवनके कारण दाँतमें दर्द।

(३) **जेलसिमियम।**—बहुत तम्बाकू सेवनके कारण सरमें चक्कर कपालके पिछले भागमें दर्द।

(४) **इग्नेशिया।**—तम्बाकू खानेके कारण तेज़ हिचकी।

(५) **इपिकाकुआन्हा।**—तम्बाकू खानेके कारण मिचली और वमन।

(६) **लाइकोपोडियम।**—बहुत ज्यादा धूम्रपानके कारण ध्वजभङ्ग; पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना।

(७) **नक्स-वोमिका।**—तम्बाकू सेवनके दूसरे दिन मुँहका कड़वा स्वाद आदि पेटकी गड़बड़ीके लक्षण।

(८) **फास्फोरस।**—बहुत ज्यादा तम्बाकू सेवनके कारण कलेजा धड़कना, हृत्पिण्डकी क्षीणता और इन्द्रियोंका अवसाद।

(९) **सिपिया।**—मुँहका पार्श्वगत स्नायुगत स्नायुशूल आदि रोग; अजीर्ण रोग और जो बैठे-बैठे अकर्मण्य भावसे दिन बिताते हैं, उनमें स्नायविक उत्तेजना पैदा होनेका भाव।

तम्बाकू सेवनका अभ्यास छोड़नेके लिये “टैबेकम” २०० या १००० शततमिक क्रमकी एक एक मात्रा सेवन करनेपर धूम्रपान या तम्बाकू खानेकी इच्छाका दमन किया जा सकता है। “प्लैण्टेगो” के सेवनसे तम्बाकूसे अनिच्छा पैदा हो जाती है।

तुलनीय।—ठण्डा पसीना—विरेट्रम। तलपेटका ठण्डापन—कोलचि, इलैप्स, लैके। बायीं ओरकी मूत्रनलीमें बराबर आक्षेपिक दर्द—बार्बेरिस। हार्निया या आँत उतरना—ऐकोन, नक्स-वोम, ओपि। भोजनके बाद सुस्ती—आर्स, सिना, लाइको इत्यादि। ऐसा अनुभव होना मानो केश है—कैलि-बाई-क्रोम, साइलि। अन्धापन—कार्बोन-सल्फ। स्वप्न-दोष, हृत्पिण्डका दोष, रक्तकी कमी—डिजिट, इत्यादि।

वृद्धि।—बायें अङ्गमें, बायीं करवट सोनेपर, बहुत ज्यादा ताप या सर्दी लगनेपर, अन्धड़ पानीके दिनोंमें, चलनेपर, रेलगाड़ी या जहाजमें घूमनेपर, दबानेपर, उठनेपर, सवेरे, घरमें और सन्ध्याके समय।

उपशम।—निर्मल वायु लगनेपर, पेट खोलनेपर, वमनके बाद, ठंडे पानीसे माथा धोनेपर और रोनेपर (विमर्ष भाव)।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—ऐण्टि-टार्ट, आर्स, बेल, काकुल, डिजिट, इपिक, लोबेल, मिनियैन, निकोटिनम, नक्स-वोम, ओपि, फास, प्लम्ब, स्ट्रैमो, वेरेट।

शक्ति।—३रा दशमिकसे १००० शततमिक क्रम तक।

टैमस

(TAMUS)

दूसरा नाम ।—ब्लैक ब्रायोनि ; लेडीज्‌सिल, टैमस-कम्युनिस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़ या फलसे अरिष्ट तैयार होता ।

उपयोगिता और आभास ।—ओवाद, मसे, तिल प्रभृतिमें इसकी निम्न-शक्तिसे लाभ होता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ऐगरिकस ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

टैनासिटम

(TANACETUM)

दूसरा नाम ।—टेन्सि, टैनासिटम-वल्गरि ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—खिले हुए ताजे फूलसे अरिष्ट और टैनासिटम तेलसे क्रम तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—असाधारण सुस्ती, स्नायविक दुर्बलता आमाशय, क्रिमि, क्रिमिके कारण ताण्डव, संन्यास, जलातंक, तिर्यक दृष्टि, गर्भस्राव, रजोलोप, रजःकृच्छ्रता प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—सिमिसि, सिना, ऐब्सिन्थ, सैबाडूना, रूटा, सैण्टो, चिनोपो ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३री शक्ति ।

टैङ्घिनिया

(TANGHINIA)

दूसरा नाम ।—टैङ्घिनिया-जेनिनिफिटा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बीजसे विचूर्ण बनता है ।

उपयोगिता और आभास ।—बार-बार वमन, पक्षाघात, हाथ-पैरकी अंगुलीकी ऐंठन और सुन्न हो जाना प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है ।

टैनिन

(TANIN)

दूसरा नाम ।—टैनिक एसिड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ; विशुद्ध सुरासारके साथ मिलाकर क्रम तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह कब्जियत और अन्त्रशूलको एक बढ़िया दवा है ।

इसके बाहरी प्रयोगसे तन्तु संकुचित होते हैं, इसीलिये रक्तस्राव या स्लैष्मिक झिल्लीमें बहुत ज्यादा स्राव रोकनेके लिये इसका बाहरी प्रयोग करनेको चाल है। जिनके शरीरके पसीनेसे बदबू निकलती है उनके लिये, इसका बाहरी और भीतरी दोनों ही प्रयोग लाभदायक है। इसकी दुर्गन्ध-नाशिनी शक्तिसे कारण ही यह स्नो, क्रीम, पाउडर प्रभृति शृंगार-सामग्रीमें व्यवहृत होता है ।

स्नायविक खाँसी, रक्तमूत्र प्रभृति उपसर्गोंमें भी इससे लाभ होता है ।

सम्बन्ध-तुलनीय ।—कुयेर्कस, गेलिक-एसिड, ओपियम, प्लम्बम ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति और बाहरी प्रयोगके लिये १॥ पर्सेण्ट धावन ।

टैराक्सेकम

(TARAXACUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फूल खिलनेके पहले संग्रह किये वृक्षसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मैलेरिया ज्वर ; दुर्बलता ; बहुमूत्र ; पित्त-पथरी ; सर-दर्द ; कामला ; आँखकी बीमारियाँ ; स्नायुशूल ; रातमें पसीना ; आमवात ; सान्निपातिक ज्वर ; जीभपर नकशेकी तरह दाग।

उपयोगिता और आभास।—परिपाक क्रियाका विकार और पित्त-विकारकी वजहसे उत्पन्न नाना प्रकारके रोगमें ; खासकर पित्तकी वजहसे सर-दर्दमें यह विशेष लाभदायक है। पाकाशयिक और पित्त-विकार इसका एक प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। नकशेकी तरह जीभ अर्थात पहले जीभपर एक सफेद लेपसा चढ़ जाता है, फिर वह जगह-जगह उड़ जाता है। सफेद लेपसे ढकी जीभपर जगह-जगह लाल अंश निकल आनेके कारण वह नकशेकी तरह दिखाई देती है। इसके सभी रोगोंमें जीभकी यही विशेषता दिखाई देती है। कमला या पिलई रोगमें यकृत बढ़ा हुआ और कड़ा हो जाया करता है और जीभ नकशेकी तरह दिखाई दिया करती है। कमजोरी, भूख न लगना और रातके समय बहुत पसीना, विशेषकर पित्ताश्रित या आन्त्रिक ज्वरकी आरोग्यावस्थामें। आन्त्रिक ज्वरमें प्रत्यङ्गोंकी चञ्चलता। इससे पैदा हुए सभी लक्षण प्रायः सोने, बैठने या विश्रामके समय पैदा हो जाया करते हैं।

लक्षणावली

मन।—रोगी लगातार आप-ही-आप कुछ बड़बड़ाया करता है। बोलना, बातचीत करना, हँसना और आनन्द करना ही वह पसन्द करता है। अस्थिर मति और परिश्रम नहीं करना चाहता, पर कोई काम एक बार आरम्भ करनेपर, फिर देखना नहीं पड़ता।

मस्तक।—सरमें चक्कर, चलनेके समय (बेल, नेट्र-मूर, नक्स-वोम, कोना) और सविराम ज्वरमें विश्रामके समय (इयुपेट-पार्फोल) बैठने

की अवस्थामें बायीं कनपटीमें खींचनकी तरह दर्द (ऐसिट-क्रूड, लेके), चलनेके समय और खड़े होनेपर फिर दर्द नहीं रहता। बायीं कनपटीमें ऐसा दर्द होता है, मानो सुई गड़ गयी है (स्टैफ, जिङ्कम)। घूमने और खड़े होनेपर अच्छा हो जाता है। सरके पिछले भागमें ऐसा दर्द मानो टुकड़े-टुकड़े हुआ जाता है। कपालके पिछले भागके नीचेवाले अंशमें दबाव और भार मालूम होना,—सोने बाद। माथा एक बार बायीं ओर और एक बार दाहिनी ओर ढुलक पड़ता है (ऐमिल, नक्स-मस, सिना, हायो), सरमें चक्कर रोगमें। बायीं नाकसे रक्त-स्राव (ऐमोन-कार्ब)।

आँख।—बायीं आँखमें जलन (एरण्डो, कोलोसिन्थ, इग्ने, इन्यूला)। रोशनी पसन्द नहीं करता, आँखोंमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और जलन हुआ करती है (रास, जिञ्जिबार)।

मुखमण्डल।—चेहरा गर्म और लाल। गाल, नासापुट और दोनों ओंठके कोनेमें दाने सब निकला करते हैं (ऐसिट-क्रूड, केल्के, फास, कार्बो-ऐन, ग्लोन, लिडम, नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यूर, इयुजिनिया-येम)। ऊपरी ओंठ फटा या उसपर फटे घाव (नेट्र-म्यूर)।

मुख-विवर।—कोई खानेकी चीज़ चिबानेके समय दाँत सब मानो सिहर उठते हैं या खट्टे हो जाया करते हैं। (ऐ-सल्फ, कोरेल, काइङ्का)। जीभ सफेद लेपसे ढकी रहा करती है और वह लेप जगह-जगहपर उड़ जानेके कारण नकशेकी तरह दिखाई देती है (लेके, नेट्र-म्यूर, रैनान-बल्ब)। मुँहमें बहुत ज्यादा परिमाणमें नमकीन लार सञ्चित होती है (केल्के, इग्ने)। मुँहमें हमेशा लार पदा होती है और कण्ठनली ऐसी मालूम होती है, मानो दबाकर रोक दी गयी है। भोजनके पहले मुँहका स्वाद तीता (कार्बो-वेज, खाने-पीनेके समय दूर होता है—सोरिन)।

पाकस्थली।—तीतो डकार, हिचकी। इस तरहकी मिचली और ओकाई आती है, मानो बहुत-सा मेदमय पदार्थ खा लिया है (पल्स)। कई दिनोंतक लगातार डकार आया करती है। पानी पीते ही फिर आने लगती है। कम्प-ज्वरमें बार-बार वायु निकलना, गला रुकना और रातमें मिचली पैदा हो जाया करती है।

अन्त्राशय।—यकृत बड़ा और कड़ा, कामला रोगमें (बेल, कैल्के, सिपि, आर्स, सिङ्को, मैग-म्यूर)। सविराम ज्वरमें प्लीहाके स्थानपर दर्द हुआ करता है (सियेनोथस, सिङ्को, चेलिडो, पेट्रोल)। उदरमें मानो पानीके बुलबुले उठते हैं और टूटते हैं—ऐसा अनुभव होना। उदरके बायें पार्श्वमें और तलपेटमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (ग्रैफ, क्रियो)। उदर ढोलकी तरह फूल उठता है, विशेषकर वायु रोगमें (मस्कस); पानी पीने बाद डकार आया करती है (कार्बो-वेज, हाइपिरिक, जिङ्कम)। डकारमें भुट-भाट हुआ करता है (कैमो, क्रोटेलस, आयोड, लाई, मर्क, नेट्र-म्यूर)। सविराम ज्वरमें वृथा चेष्टा और प्रबल वेग देनेपर भी पाखाना नहीं होता या थोड़ा-सा कड़ा मल निकलता है (ब्राई) या मल कोमल पर बड़े कष्टसे निकलता है (हिपर, नेट्र-कार्ब, सिपि)। विटप-प्रदेशमें सुख देनेवाली खुजली पैदा हो जाया करती है और रोगी खुजलाये बिना रह नहीं सकता (चेलिडो, नेट्र-सल्फ, पेट्रोल)।

पेशाब।—पेशाबके कुछ ही पहले मूत्राशयमें बहुत दबाव मालूम होता है, पर किसी तरहकी तकलीफ नहीं मालूम होती। बार-बार पेशाब लगता है और बहुत ज्यादा परिमाणमें फीका पेशाब हुआ करता है।

श्वासयन्त्र।—वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (ब्राई, कैलि-कार्ब)। दाहिने वक्षकी पर्शुकाके अन्तर्गत पेशियोंका स्पन्दन।

गर्दन और पीठ।— गर्दन और पीठके बायें पार्श्वकी पेशीका फड़कना और सलाई गड़नेकी तरह दर्द, खासकर खड़े होनेकी अवस्थामें। बैठनेपर घट जाया करता है। पीठके दाहिने पार्श्वकी पेशीका अकड़ना और सुई गड़नेकी तरह दर्द। यह दर्द दाहिने पृष्ठ-फलकतक फैल जाता है। कानसे नीचे गलेतकके अंशमें फाड़नेकी तरह दर्द। दाहिने पृष्ठ-फलकके भीतर हुड़हुड़ गुड़गुड़ शब्द सुन पड़ता है। दाहिने पृष्ठ-फलकके नीचे स्पन्दन और कम्पन मालूम होना।

प्रत्यङ्ग आदि।—बायें बाँहके अगले आधे भागकी पेशीका नाचना (स्पाई, जिञ्जिबार)। हाथकी अंगुली बरफकी तरह ठण्डी (चेलिडो, आर्निका, कैम्फ, कार्लसबाड, लैक-डिफ्लो)। दाहिने हाथकी मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठा अंगुलीमें इस तरहका दर्द मानो किसीसे दबी हुई है

(नेट्रम-सल्फ़, लिडम, मेजिर)। बायाँ बाँह, माथेका बायाँ पार्श्व और बायें कानमें स्पर्श न अनुभव होना और सुन्न मालूम होना। बायें उरुमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (मर्क, स्पाई, स्पंजि)। बायें पैरकी पोटलीमें दबावकी तरह दर्द (ऐनाक, लिडम)। दाहिने पैरकी पोटलीमें चिलक मारनेकी तरह दर्द (ओपि); छूनेपर तुरन्त ही दब जाता है। खड़े होनेपर दाहिने पैरके ऊपरी भागमें खींचनकी तरह और बैठनेपर सुई गड़नेकी तरह दर्द अनुभव होता है। दाहिने पैरके तलवेमें नुकीली सुई गड़ रही है, इस ढङ्गका तेज दर्द (कैल्मिया, नेट्र-कार्ब), विशेषकर बैठनेके समय (खड़े होनेकी चेष्टा करनेपर-पल्स)। जानु, पैर और पैरकी अंगुलीमें जलन हुआ करती है (ऐसाफिट, हिपर ; पैरसे जमीन छू नहीं सकता—अरम-मूर); प्रत्यङ्गोंको हिला सकता है, पर उसमें ऐसा अनुभव होता है, मानो कोई बल नहीं है या एकदम जकड़ा हुआ है (ब्राई, कोना, डिजिट, ग्रैफ, कैलि-आयोड ; अच्छी तरह हिला नहीं सकता—मेजिर)। प्रत्यङ्ग आदि छूनेपर या किसी तरह भी रखनेपर उसमें दर्द होता है। सान्निपातिक ज्वराधिकारमें प्रत्यङ्गोंमें बहुत चञ्चलता (रास, जिङ्कम)।

सार्वाङ्गिक।—रोगी सुस्त, क्षीण, हमेशा सोया रहना चाहता है; अर्द्ध—चैतन्य-रहित। बहुत कमजोर; भूख अच्छी तरह नहीं लगती; रोज़ रातमें बहुत अधिक पसीना होता है (कार्बो-वेज़, सिङ्को, लाई, मर्क, साइलि, सल्फ़, आयोड, जैबोरैन, लोबेल-इन) और नींद भी अच्छी तरह नहीं आती (कैमो, सिना, ग्रैफ, हाइड्रैस्ट, फास)।

निद्रा।—बार-बार जम्हाई आती है। बैठनेके समय औंघाई आती है। दिनमें औंघाई। रातमें नींद खुलनेपर चेहरा और हाथमें बहुत गर्मी पैदा हो जाती है। बार-बार स्वप्न देखकर जाग उठता है और पसीना निकला करता है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—खाने-पीने बाद जाड़ा लगना (कैप्स)। सन्ध्याके बाद ८ बजनेके समय नाक और हाथ बहुत ठण्डे हो जाते हैं; रोगीके सो जानेपर पसीना आरम्भ होता है (कैल्के, सिङ्को, लाई, मर्क), विशेषकर माथेमें (कैल्के, सिपि, कैमो)। बहुत देरतक स्थायी शीत; बहुत ज्यादा पसीना निकलना; प्लीहामें दर्द।

वृद्धि ।—अधिकांश लक्षण बैठनेकी अवस्थामें, सोनेके समय और स्थिर रहनेपर बढ़ते हैं ।

उपशम ।—छूनेपर ; शरीर हिलानेपर, निर्मल वायु सेवन करनेपर ।

अनुकूल सम्बन्ध ।—आर्स (बहुत पसीना), लाई, नक्स-वोम, पल्स, रस, सिपिया ।

सदृश ।—ब्राई, कैम्फ, चेलिडो, हाइड्रेस्ट, नक्स-वोम, नेट्र-म्यूर, पल्स, रैनान-बल्बो, स्पाई, जिञ्जिबार, जिङ्कम ।

तुलनीय ।—पाकाशय और पित्त लक्षणमें—ब्रायो, चेलिडो, नक्स-वोम । मानचित्रकी तरह जीभ—आर्स, नेट्रम । बेचैनी—रास ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३० शततमिक क्रम ।

क्रियाका स्थायित्व ।—१४ से २१ दिन ।

टैरेण्टियुला क्यूबेन्सिस

(TARENTULA CUBENSIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—क्यूबा देशके सजीव मकड़ेका अरिष्ट ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—विष दूषित फोड़ा ; ताण्डव ; सविराम ज्वर इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—पीवका विष आशोषित हो जानेके कारण पैदा हुए चर्म रोगमें इसका फायदा प्रसिद्ध है । फोड़ा, विषैला फोड़ा और विष-व्रणकी यह एक प्रधान दवा है । रोगवाली जगह नीली या बैंगनी हो जाती है (लैके) । उसमें भयङ्कर जलन और डङ्क मारनेकी तरह तकलीफ़ मालूम हुआ करती है—वह तकलीफ़ मुँहसे नहीं प्रकट की जा सकती (आर्स, ऐन्थ्राक्सिन, इयुफोर्बियम), तकलीफ़से रोगी रातभर जमीनपर इधर-से-उधर दौड़ा करता है । जननेन्द्रिय प्रदेशमें भयानक असह्य खुजली पैदा हो जाती है और पीव सोख जानेके कारण ज्वरका शीत दबा देता है । फोड़े आदि जल्दी-जल्दी गलने लगते हैं । पहले एक व्रण निकलता है, फिर वह फूलता रहता है और उसके चारों ओरका रङ्ग नीला, हो जाया करता है ; धीरे-धीरे यह

व्रण एक बहुत बड़े कड़े फोड़ेके रूपमें बदल जाता है ; उसके बाद उसके ऊपरकी त्वचा और तन्तु सब गलकर मधुमक्खीके छत्तेकी तरह हो जाते हैं और उनमें बहुतसे मुँह हो जाते हैं। इन सभी मुँहोंसे गाढ़ा रसकी तरह पदार्थ निकला करता है। इसके बादमें सभी मुँह फैलकर आपसमें मिल जाते हैं और एक बहुत बड़ा गहरा जख्म हो जाता है। इसका बोखार, इस समय सविराम अवस्थाको प्राप्त होता है और रोज़ सन्ध्याके समय बढ़ जाया करता है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—आर्स, एपिस, ऐन्थ्राक्सिन, इयुफोर्बियम, लैके, क्रोटेलस।

तुलनीय ।—सविराम ज्वरमें—ऐरेनिया। दुष्टव्रण—ऐन्थ्राक्सिन, लैकेसिस, साइलि।

शक्ति ।—३० से २०० शततमिक क्रम। ६ठा क्रमसे ताण्डव रोग आरोग्य हो गया है (डा० क्लार्क)।

टैरेण्टियुला हिस्पैनिया

(TARENTULA HISPANIA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—स्पेन देशके सजीव मकड़ेका अरिष्ट।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— हृत्शूल ; ताण्डव ; रीढ़के सबसे निचले अंशका स्नायुशूल ; आँखके सफेद अंशकी स्वच्छता ; मूत्राधार-प्रदाह ; विषाद और हताश भाव ; उपझिल्ली प्रदाह ; वाधक ; नाकसे रक्तस्राव ; सर-दर्द ; हिचकी ; मूर्च्छावायु ; सविराम ज्वर ; चौर्योन्माद ; गतिविधायिनी शक्तिका विकार ; उन्माद, बहरापन ; अर्द्धावभेदक या अधकपालीका सर-दर्द ; नकली मैथुनका दुष्परिणाम ; डिम्बाशयका बढ़ना ; कम्पके साथ पक्षाघात ; जरायुसे वायु निकलना ; मलान्त्रमें शूलकी तरह दर्द ; अपत्य पथमें खुजली ; कर्णमूल ; पीव सोख जानेकी वजहसे बीमारियाँ ; मेरुमज्जाकी उत्तेजना और पक्षाघात ; अर्बुद ; जरायुका स्नायुशूल ; जरायुका कर्कटका जखम ; कशेरुका या मेरुदण्डका अर्बुद।

उपयोगिता और आभास ।—इसका प्रधान क्षेत्र—जिन सब रोगों में बहुत बेचैनी मौजूद रहती है, हिलनेपर रोगीकी तकलीफ़ बढ़ जाती है तथापि हिले बिना क्षणभर रह नहीं सकता। हरित्पाण्डु रोग-ग्रस्त स्त्रियोंके मूर्च्छावायु रोगमें, ताण्डव रोगमें, मेरुदण्डमें उत्तेजना और बाधक रोगमें यह विशेष लाभदायक है। रोगिनी एक क्षण भी स्थिर नहीं रह सकती, किसी-न-किसी काममें उसे लगी रहना पड़ता है। निर्मल वायु सेवनसे, गाना सुननेपर, चमकीला रङ्ग देखनेपर और रोगवाला अंश रगड़नेपर रोगिनी अच्छा रहती है और उसे तकलीफ़ घटती मालूम होती है। रमणियोंकी दुर्दमनीय कामुकता और योनिकी खुजलीकी यह बढ़िया दवा है। बहुत स्नायविक उत्तेजना प्रवण धातुवाले व्यक्तिके लिये और तांडव रोगमें, जब रोगीकी समूची देह या दाहिना बाहु और बायाँ पैर लगातार फड़का करता है—इन लक्षणोंमें यह विशेष उपयोगी है। बाहु पैर यहाँतक कि सारी देहतक लगातार इस भावसे हिला करती है, कि रोगिनीमें कोई भी दूसरा काम करनेकी शक्ति नहीं रहती; पेशियाँ सब लगातार नाचा और फड़का करती हैं। रोगीकी चैतन्य शक्ति बहुत बढ़ जाया करती है अर्थात् देखने, सुनने, छूने वगैरहकी इन्द्रियाँ अत्यन्त उत्तेजना प्रवण हो जाया करती हैं। सामान्य कारणसे ही रोगिनी उत्तेजित हो जाया करती है और इसके बादही उसमें अत्यन्त विषाद पैदा हो जाया करता है। अंगुलीके अगले भागमें स्पर्श ज्ञानकी तेजी पैदा हो जाती है। मेरुदण्डका कोई अंश जरा भी छूनेपर वक्ष तथा हृद्प्रदेशमें आक्षेपिक दर्द पैदा हो जाया करता है। प्रचण्ड सर-दर्द, मानो हजारों सुई माथेकी खोल भेदकर मस्तिष्कमें जाकर बिध रही हैं, इस तरहकी तकलीफ़ होती है। सरके पिछले भागमें एकाएक ऐसा मालूम होता है, मानो किसीने हथौड़ीसे मार दिया। सर-दर्दका बढ़ना—आवाज़से, छूनेपर, और तेज रोशनीमें। घटना—तकियेमें माथा रगड़नेपर। रमणके बाद स्त्री-पुरुष दोनोंकी ही तकलीफ़ बढ़ जाती है। ऋतुके समय रमणियोंका कण्ठ, मुख-विवर और जीभ बहुत सूखी मालूम होती है, विशेषकर निद्रित अवस्थामें। ऋतुके समय बहुत थोड़ा रक्त-स्राव होता है और दाँत तथा नितम्बमें बहुत दर्द हुआ करता है। जरायुमें छेदने और सङ्कोचनकी तरह दर्द; योनिमें छेदनेकी तरह तेज दर्द; जरायु फूला और कड़ा हो जाता है; जरायुसे भाफ़ निकलना। बार-बार साँस छोड़ना और जम्हाई; कभी हँसती है और कभी रोती है, कभी हास्य परिहास करती है,

इसके बाद ही महान दुःखित भाव धारण करती है, इत्यादि कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—रह-रहकर रोगिनी पागल सी हो उठती है, माथा दबाती और केश नोचती है; तलवे बहुत चंचल; प्रकोपके बाद प्रचंड सर-दर्द पैदा हो जाता है; आँखोंमें, टकटकी लगी रहती है, और आँखें एकदम खुली रहती हैं। आँखके सामने छोटी-छोटी मूर्त्तियाँ सब उड़ती हैं और रोगिनी हाथ हिलाया करती है। यह कहकर लोगोंको डर दिखाती है, कि मारूंगी, काटूंगी, सत्यानाश कर दूंगी। सङ्गीत सुननेपर रोगिनी बहुत उत्तेजित हो उठती है और एक घण्टेके बाद उसके सारे शरीरमें बहुत ज्यादा पसीना बहा करता है। मूर्च्छावायु रोगमें रोगिनी किसीसे बातचीत करना पसन्द नहीं करती और क्रोधका भाव दिखाती है; अपनेको तथा दूसरोंको मारनेकी इच्छा प्रकट करती है (बेल, हायो, स्टैफ)। अभी स्फूर्ति प्रकट करती थी तुरन्त ही बहुत उदास भाव धारण करती है। हँसी दिल्लगी करना और खेल करना बहुत पसन्द करती है। गानेका प्रबल आवेग, जबतक गला फस नहीं जाता और थक नहीं जाती तबतक लगातार गाया करती है (साइकूट, क्रोकस, प्लैट, स्ट्रैमोन)। रह-रहकर ऊँची-आवाजमें हँस उठती है, (कैनाब-इन, स्ट्रैमोन, क्रोकस, हायो)। चिड़चिड़ा स्वभाव, बात-बातमें रंज हो उठना, बिना सोचे बिचारे बात बोल उठती है; बाध्य होकर लगातार हाथ-पैर हिलाना पड़ता है (आर्स, नक्स, कास्टि, पल्स, रस, साइलि, स्ट्रैमोन, जिङ्कम, बेलि)। लगातार शरीर हिलाये बिना रह नहीं सकती पर टहलने या चलनेपर रोगिनीकी तकलीफ़ बढ़ जाती है। बार-बार जम्हाई और लम्बी सांस छोड़नेपर आराम मालूम होता है। रोगिनी अत्यन्त हास्योद्दीपक भाव और कामुकता प्रकट करती है (प्लैट, हायो)। आसन्न बिपत्तिकी आशङ्का या स्वयं कोई कड़ी बीमारी होगी ऐसी आशङ्का (कैलि-कार्ब, फास, आर्जेण्ट-नाई, ऐ-नाई, लिलियम-टाई, सिपि)। अत्यन्त चतुर। दूसरोंके पदार्थ लेनेकी वासना (ऐब्सिन्थ)।

मस्तक।—सरमें चक्कर, चलनेके समय (बेल, नेट्र-मूर, नक्स); माथेपर कोई भारी चीज़ रखनेपर बढ़ जाता है; सरमें चक्कर आनेकी वजहसे

रोगी गिर पड़ता है, पर उसे बेहोशी नहीं आती (जिङ्कम); किसी चीजकी ओर स्थिर दृष्टिसे देखते रहनेपर सरमें चक्कर सा मालूम होता है। सरमें दर्द होता है और सरके पिछले भागमें भयानक यन्त्रणा मालूम हुआ करती है। उन्मत्तता और स्नायविक उत्तेजना रोगमें रोगीका माथा और बाहु घूमता है और एक अद्भुत भावसे हिला करता है (कैल्के)। क्रोध आ जानेपर रोगीका माथा एक बार दाहिनी ओर और फिर एक बार बायीं ओर ठीक इसी भावसे हिलता और किसी चीज़में टक्कर खाता रहता है। माथा बहुत भारी मालूम होना और रोगी आँख नहीं खोल सकता (ऐ-कार्बोल); माथा पीछेकी ओर झुकाये रहता है (मस्कस, नक्स-वोम, ओपि, स्ट्रेमोन); नींद खुलनेपर सर-दर्द होना (ब्राई, नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम) और रोगीको फिर बाध्य होकर सो जाना पड़ता है। किसी चीज़की ओर टकटकी लगाकर देखते रहनेपर सरमें चक्कर आता है और दर्द हुआ करता है (नेट्र-म्यूर, स्पाइजि)। सर-दर्दका बढ़ना— आवाज़से (बेल, थिरिड), छूनेपर (आर्जेण्ट-मेट, सिङ्को, कैलि-कार्ब, कैल्मिया, मर्क, साइलि) और तेज़ चमकीली रोशनीमें (बेल, कैल्के, नेट्र-म्यूर, स्पेञ्जियु, स्ट्रेमोन); घटना—तकियेमें माथा रगड़नेपर। माथेके गम्भीरतम प्रदेशमें प्रचण्ड सर-दर्द (वेसिलिन); तकलीफ़से रोगी इधर-उधर छटपटाया करता है, एक जगहपर रह नहीं सकता (आर्स, बेल, सिफिलिन)। माथेमें बहुत जलन हुआ करती है (लेके मेजिर, लेचनेन, नक्स-मस)। रोगी माथा मुड़वानेके लिये घबड़ाता है; लगातार माथा हिलाया करता है, पर माथा रखकर आराम मिले ऐसी कोई जगह उसे नहीं मिलती (ऐकोन, काक्कुलस, क्युप्रम); रोगीका भाव चिड़चिड़ा और उसे श्वास-कष्ट होता है और अपने केश नोचनेकी चेष्टा करता है। जिधर माथा झुकाता है, उधर ही दर्द बढ़ जाता है। खाँसनेपर माथेके पिछले भागमें और दोनों कनपटियोंमें ऐसा मालूम होता, मानो हथौड़ीसे मार रहा है (नेट्र-म्यूर देखो)।

आँख।—आँखके चारों ओर नीला घेरा; चमकीला और लाली लिये। बायीं आँखमें मानो एक टुकड़ा केश गिर गया है और उस केशकी नोक आँखमें गड़ रही है, ऐसा मालूम होता है और इसी कारणसे रोगी आँख रगड़ा करता है; वृद्धि—चलनेके समय। बायीं आँखमें ऐसा दर्द, मानो किसीने ठण्डा पानी ढाल दिया। आँखमें ऐसा अनुभव होना, मानो छोटी सलाई या आलपीन

गड़ रही है (एपिस, हेलिबो, ऐ-नाई)। तेज रोशनीमें आँखोंमें दर्द होता है और पाँच मनुष्योंके बीचमें रहना पसन्द नहीं करता। नींद खुलनेपर आँखें सटी दिखाई लेती हैं। रोशनीसे भय। भ्रम देखना, भूत, प्रेत इत्यादिकी मूर्त्ति देखा करता है (बेल, ओपि, स्ट्रेमोन)।

कान।—दाहिने कानसे बहुत अधिक पीवका स्राव (इलैप्स, मर्क, साइलि)। कानके बाहरी रन्ध्रमें भयानक दर्द (मर्क, पल्स), छूनेपर दर्द बढ़ जाता है और ऐसा मालूम होता है, मानो माथेमें लोहेकी खील घुस रही है। उठनेपर कानमें कड़ाक-सी आवाज़ हो जाती है और इसके बाद भूरे रंगका स्राव हुआ करता है (ग्रेफ, हिप)। कानमें भों-भों सों-सों शब्द और सरमें चक्कर तथा बहरापन (ऐ-सैलिसाई, पेट्रोल, सोरिन)। रातमें कानमें नाना प्रकारकी आवाज (जिङ्कम); वृद्धि—नींद खुलनेपर।

नाक।—बहुत ज्यादा रक्तस्राव—खून काला और अगौण अवस्थामें जम जाता है (कैमो, प्लैट)। नाकसे खूनका स्राव होने बाद दोनों नील धमनियोंमें टपक और माथेका भारका घटना (मिलिलोट, हैमा)।

मुखमण्डल।—चेहरा भय प्रकट करनेवाला (केन्थ, स्ट्रेमोन); गला नीला अथच चेहरा सफेद, भूरा। कभी तकलीफ़ देनेवाला उत्ताप पैदा हो जाता है और चेहरा तमतमा उठता है और तलहत्थी भी गर्म हो जाती है, तथा पसीना निकला करता है। दोनों ओंठ मानो दग्ध और सूख गये हैं—ऐसा मालूम होता है, ज्वरके बाद जैसा हुआ करता है। निचले हनुके कोनेमें प्रचण्ड दर्द (कास्टि, जिङ्कम), इतना दर्द होता है, कि रोगी समझता है, कि वह पागल हो जायगा।

मुख-विवर।—दाँतमें सुरसुरी होती है, हिचकी आया करती है, दाँतोंकी जड़ ढीली पड़ जाया करती है और उनमें ऐसी तकलीफ़ मालूम होती है, मानो बिजलीकी चिनगारियाँ निकलकर लग रही हैं; दाँतमें टपक हुआ करती है; घरके बाहरकी निर्मल हवा लगनेपर बढ़ जाता है। जीभपर बहुत दर्द करनेवाले जखम निकलते हैं और मुँहसे बदबू निकला करती है। जीभ पीछेकी ओर खिंच जानेके कारण रोगी बोल नहीं सकता। ऐसा मालूम होता है, कि तालु विशेष रूपसे दग्ध हो गया है। ज्वालामयी तृष्णा, प्रत्येक बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी पीता है। (ऐकोन, आर्जेण्ट-नाई, ब्राई, कैमो, हेलिबो, लेके)।

गलेके भीतर।—गलेमें जखम, कोई पदार्थ निगलनेके समय कण्ठके भीतर और बायीं आँखमें बेधनेकी तरह तेज दर्द ; खाँसते बोलते अथवा जम्हाई लेनेके समय कण्ठमें दर्द मालूम होता है। धूम्रपान करनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठनाली जकड़ गयी है और इसमें दर्द अनुभव हुआ करता है। ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठमें लगातार बून्द-बून्द ठण्डा पानी टपक रहा है। दाहिनी गल ग्रन्थिमें बहुत दर्द होता है और फूल जाया करती है। (बेल, मर्क मर्क-साया, मर्क-प्रोटो, एपिस, नेजा)। कण्ठनलीमें दर्द करनेवाला संकोचन अनुभव होता है और सङ्कोचन या जकड़ जानेका भाव कानतक चला जाता है (लैक-कैन, मैगि, फाइटो) ; वृद्धि—निगलनेके समय (कैक्टस, लैक-कैन, स्ट्रैमोन)। तालुमूलके दोनों पार्श्वके दोनों गह्वर प्रदाहित और नीले हो जाते हैं (लैके, पल्स, नैट्र-आर्स)। कण्ठका बाहरी भागतक इतना फूल जाता है, कि गला रुक जानेकी सम्भावना पैदा हो जाती है (लैके, मर्क-प्रोट), विशेषकर गलनालीके उपझिल्ली प्रदाह रोगमें (कैलि-ब्रोम, कैलि-पार्मोङ्ग, लैक-कैन, मर्क-प्रोटो, नैट्र-आर्स)। गला और हनुके नीचेवाली ग्रन्थिमें लगातार टपक और बीच-बीचमें डंक मारनेकी तरह तेज़ दर्द अनुभव होता है (ऐमोन-म्यूर, नक्स-वोम, सिपिया)। गल-ग्रन्थि प्रदाह, प्रबल ज्वर या विकारका लक्षण प्रकट होता है और रोगवाली ग्रन्थि इतनी फूल उठती है, कि रोगीका गला रोध हो जानेकी आशंका पैदा हो जाती है (बेल, लैक-कैन, लैके, मर्क)।

पाकाशय।—जीभपर गहरा भूरे रङ्गका लेप चढ़ा रहता है, पर दोनों पार्श्व और अगला भाग आगकी तरह लाल रहता है। रोगी कहता है, कि उसकी जीभ पीछेकी ओर खिंची जाती है। इसी वजहसे वह बोल नहीं सकता। (कैनाब-इन)। भूख बिलकुल ही नहीं रहती, जलन भरी प्यास और तेज़ उत्ताप मालूम होता है ; बार-बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी पीनेके लिये लालायित रहता है (ऐकोन, ब्राई, हेलिबोरस)। लगातार खाँसीका प्रकोप और थोड़ा सा बलगम निकलना तथा वमन ; भोजनके कुछ ही बाद जो कुछ खाया है, सब वमन हो जाता है (एपिस, आर्स, ब्राई, फेरम-फास, ग्रैफ, प्लम्ब, वेरेट, जिङ्कम) ; वमनके पहले पाकाशय और अन्ननलीमें जलन हुआ करती है (रास), परन्तु वमनके बाद जलन घट जाती है (आध घण्टेकेके लिये दर्द घट जाता है—रोबिन)।

अन्त्राशय।—दोनों कोखें फूल उठती हैं। प्लीहामें ऐसा दर्द, मानो छुरी मार दी है (ऐनान्थि, काइङ्का) और पाकाशय तथा जरायुमें दर्द हुआ करता है। यकृत प्रदेश अकड़ जाया करता है, बहुत सावधानीसे छूनेपर भी दर्द होता है (लैके, टिलिया)। नाभि-प्रदेशमें तेज दर्द, विशेषकर रातमें (कैल्के, कक्कस); उदर और मलान्त्रमें प्रचण्ड जलन; मल बहुत ज्यादा, वर्ण घोर, सड़ी गन्ध भरा और बहुत वेग पैदा करनेवाला; कब्जियत; उदर ढोलकी तरह फूल उठता है (फूलकर ढोल हो जाता है)। आँतोंमें आवाज़। तलपेटमें सूत्र तन्तुमय अर्बुद पैदा हो जाते हैं, वे जरायु आदि जननेन्द्रियपर दबाव डालते हैं और इसी वजहसे जरायुसे प्रदरकी तरह स्राव हुआ करता है (लैक्टियुका-वाई)।

मलान्त्र और मल।—पाखाना हो जानेपर मलद्वारमें दर्द और जलन हुआ करती है (ऐलो, आर्स, कैन्थ, गैम्बो, आइरिस, कैलि-कार्ब, सल्फ, ड्राम्बिड, आर्टिका-इयु)। पाखानेके समय बहुत वेग देनेपर पाखाना होता है (प्लैट, सेलिन, सिपि); खूनसे लिपटा कड़ा पाखाना होता है (ऐलुम, थूजा)। कब्जियत रोगमें खाँसनेपर या किसी तरहका वेग देनेपर अनजानमें पेशाब निकल जाता है (कास्टि, थूजा)। दिनमें तीन-चार बार पाखाना होता है। पाखाना बहुत गदला, सड़ी गन्ध-भरा, न पतला न कड़ा, अधिक परिमाणमें आँव मिला और बड़े कष्टसे निकलता है और पाखना होनेपर मलद्वारमें भयानक उत्तेजना और जलन मालूम होता है। माथा धोते ही पाखाना लग आता है।

पेशाब।—मूत्राशयका प्रदाह, प्रबल ज्वर, वमन आदि पाकाशयके विकारके कारण भयानक तकलीफ, पेशाब होता नहीं है, मूत्रस्थली फूली और कड़ी और मूत्रस्थलीके प्रबल संकोचनकी वजहसे यन्त्रणा; रोगी बहुत कमजोर हो पड़ता है; पेशाब घोर लाल या भूरा, बदबूदार और बालू भरी तलीसे भरा (लाई; लैके, पैरिइरा)। खाँसने, हँसने, बोलने या किसी तरहका वेग देते ही पेशाब निकल पड़ता है (कास्टि, स्किला, थूजा, वेरेट)।

पुं-जननेन्द्रिय।—दुर्दम्य इन्द्रिय या कामकी उत्तेजना—रोगी उन्मत्तकी तरह हो जाता है (कैन्थ, हायो, लाई, ऐ-पाई, लिसिन, स्ट्रैमोन)। हस्तमैथुन आदि अस्वाभाविक इन्द्रिय सेवनके बाद मूत्राशय मुखग्रन्थिकाके रोग

हो जाती हैं और रोगी विषाद वायु ग्रस्त हो पड़ता है। अण्डकोष शिथिल और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता ; पुट्ठे में अत्यन्त दर्द और मूत्रनलीका सङ्कोचन, दाहिना कोष और कोषरज्जु दर्द-भरा और फूल उठता है और भारी मालूम होता है (अरम, हैमा, स्पञ्जि)। रेतस्खलनके समय वह गर्म मालूम होता है और खून मिला रहनेकी वजहसे उसका रङ्ग कुछ लाल होता है (कैनाब सेट, पेट्रोल, लिडम)। रमण कष्ट-जनक और रमणके बाद सुस्ती मालूम होती है और खाँसी आया करती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत अधिक कामोत्तेजना ; ऋतु एकदम असमयमें होता है और स्राव बहुत ज्यादा हुआ करता है ; जरायुमें दर्द और सिकुड़ना फैलना अनुभव हुआ करता है। योनिके बाहर बहुत खुजली पैदा हो जाया करती है (अरम-म्यूर, फेरम-आयोड, क्रियो, ऐ-नाई, लाई, हाइड्रोकोट, कैलेडियम)। स्त्रियोंमें बहुत अधिक कामुकता—संगमके बाद और भी बढ़ जाती है। प्रदरका स्राव रुकनेपर रक्तका स्राव और रक्तस्रावके बाद प्रदरका स्राव इसी तरह हुआ करता है। पुट्ठे में दर्द और जरायुसे रक्तस्राव। तलपेटमें आक्षेपिक दर्द, चलनेपर बढ़ जाता है। जरायुसे वायु निकलना (लैक-कैन, लाई, नक्स-मस, ब्रोम, सैंगिविन) पाकाशयमें ऐसा मालूम होता है मानो कोई सजीव पदार्थ हिल रहा है और कण्ठकी ओर चढ़नेकी चेष्टा करता है। (क्रोकस, एरण्डो, थूजा)। ऐसा मालूम होता है, मानो उदरमें जरायुको जगह नहीं मिलती इसलिये अन्त्र आदिमें अड़ता है। जरायु और योनिमें वेधनेकी तरह दर्दके बाद, प्रदरका स्राव होना आरम्भ हो जाता है। जरायुमें इस तरहका दर्द होता है मानो कोई छुरी मार रहा है, या किसीने उसपर चोट पहुंचा दी। जरायुमें ऐसा अनुभव होना मानो भ्रूण हिल रहा है। (नैट-कार्ब)। दोनों स्तन फूल उठते हैं और स्तनवृन्तमें खुजली पैदा हो जाती है। दोनों डिम्बकोषोंमें अत्यन्त स्पर्श कातरताके साथ रजःकृच्छ्र या बाधकका दर्द, गुदास्थिमें उत्तेजना और जलनके साथ जरायुका कुछ बढ़ जाना और प्रदरका स्राव ; खड़े होनेपर जलन घट जाया करती है ; जरायु-शूल,—दर्द नितम्ब और मेरुदण्ड तक चला जाता है। बहुत ज्यादा रजःस्राव रोगमें प्रत्यंगोंकी बहुत अधिक चंचलता।

श्वासयन्त्र।—स्वर-लोप और अधिक श्वास-कष्ट खाँसी,—यंत्रणा-जनक, सूखी गला-रोध करनेवाली और सुस्त करनेवाली ; खाँसनेपर ऐसा

मालूम होता है मानो माथा, वक्षगह्वर और जरायु फैलता जाता है और रोगी बहुत ही सुस्त हो पड़ता है। शय्यासे उठनेके समय खाँसी पैदा हो जाया करती है। वमन और अनजानमें पेशाब हो जाया करता है। कभी-कभी ऐसा मालूम होता है, मानो साँस रुक जाना चाहती है—रोगी रोता और चिल्लाता है और बहुत बेचैनी प्रकट करता है। छातीमें बहुत दबाव मालूम होता है और रोगी हाँफा करता है। बायें फेफड़ेकी जड़में ऐसा मालूम होता है, मानो किसीने घूंसा मार दिया—इस तरहका दर्द। वक्षमें डङ्क मारनेकी तरह, दबावकी तरह या ऐंठनकी तरह दर्द अनुभव होता है।

हृत्पिण्ड।—हृद्-रोग, पानीमें हाथ भिगोनेपर बढ़ जाता है। हृत्पिण्ड धड़फड़ किया करता है और उसकी गति आंधीकी तरह उच्छृङ्खल रहती है (ऐमिल, डिजिट, कैलि-कार्ब, वोल्भो, स्पाई, स्ट्रैमोन, विरेट-विर)। हृत्पिण्ड और धमनीमूलमें इस तरहका दर्द मानो दब रहा है (लिलियमटाई, नक्स-मस, स्पाइजि)। मानो लोहेके हाथसे जोरसे पकड़ रखा है (कैक्टस)। बायें बीज-कोषमें दर्द और स्नायविक अवसाद। हृत्पिण्ड घूम गया या किसीने उमेठ दिया (कैक्टस) ऐसा मालूम होता है, खासकर मेरुदण्डकी छूनेपर। वक्षमें दर्द हुआ करता है और सारे शरीरमें पसीना होता है। कलेजा धड़कने और सुई गड़नेकी तरह दर्द होनेकी वजहसे श्वास-प्रश्वासके कार्यमें व्याघात होता है (कैलि-कार्ब, सिपिया)। माथेमें भार मालूम होना और ग्रीवाकी धमनीमें टपक, विशेषकर मेरुमूलके दोनों पार्श्वमें (ऐमिल, ऐस्सार, बेल, जेल्स, ग्लोन, हिप, हाइपिर, स्ट्रैमोन); नाकसे रक्तस्रावके बाद घट जाता है (फेरम-फास, मैग-सल्फ, मिलिलोट)। हृत्पिण्ड इस तरह काँपा और धड़का करता है, मानो कोई बहुत बड़ा दुःसम्बाद सुना है या डर गया है (नक्स-मस)।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दन अकड़ी, हिलनेपर दर्द मालूम होता है (ऐकोन, ब्राई, काकुय, साइलि)। ग्रीवाके ऊपरवाले जवाकी आकृतिके तिल या मसोंकी छूनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो उनमें सुई गड़ रही है। गर्दन और पीठमें दर्द होनेके बाद सारे शरीरमें पक्षाघातका पैदा हो जाना। मेरुदण्डके ऊपर सूजन और श्वास-कष्ट, मेरुचंचुमें बार-बार किसी अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द (ऐमोन-कार्ब, कैन्थ, कोलचि, निकोलम)। प्रसवके बाद

मेरुचंचुमें दर्द, मेरुचंचुमें महान यंत्रणा और बेचैनी मालूम होना और जलन तथा उत्तेजना पैदा करनेवाला प्रदर-स्रावके साथ (दूधकी तरह प्रदर-स्रावके साथ—क्रियो); मेरुचंचुके दर्दका घटना—खड़े होनेपर, बैठनेपर (पेट्रोल)। सोने या कुछ दबानेपर (ऐ-फास, सिङ्को, हिप, मर्क, सल्फ, वेलि)। रोगी प्रत्यङ्गमें ठण्डा पानी लगनेकी वजहसे रुकी हुई वात व्याधि। दमाकी तरह श्वास-प्रश्वास, उद्वेग और हृत्पिण्डकी ऐंठनकी तरह या मरोड़ खानेकी तरह दर्द। कमजोरी, सुन्न हो जाना और जड़ता मालूम होना। लगातार हाथ-पैर हिलानेकी इच्छा। हाथकी अंगुलीकी ग्रन्थि और पैरकी अंगुलीमें बहुत तेज़ दर्द। तलहत्थीमें जलन और पसीना होता है। दोनों पैर बहुत क्षीण, कसकर पैर रख नहीं सकता। सभी प्रत्यंग काँपा करते हैं। दाहिना पैर फड़का और नाचा करता है। सविराम ज्वरमें ताण्डव रोगीकी तरह हाथ-पैरोंमें अकड़न और नाचना।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—ऐक्टिया-रेसि, ऐगार, ऐ-फास, साइकूटा, क्रोकस, ऐ-पाई, जेल्स, हायो, लैक-कैन, लैके, लिडम, माइगेल, नक्स-मस, स्टिक्टा, स्ट्रैमोन, सल्फ।

वृद्धि।—शरीर हिलानेपर, रोगी अङ्ग किसी चीज़से लग जानेपर, आवाज़ सुननेपर, जलवायुके परिवर्त्तनसे, स्थिर बैठनेपर, रातमें माथा धोनेपर, ठण्डे पानीमें हाथ भिंजानेपर, रमणके बाद, रोशनी और नींदके बाद।

उपशम।—निर्मल वायु सेवन या छूनेपर, सङ्गीत सुननेपर, रोगी अंश रगड़नेपर, दबानेपर, गर्म पानीके प्रयोगसे और नाकसे रक्त-स्राव होनेपर।

तुलनीय।—तांडव—माइगेल, ऐगार, स्ट्रैमो। तकियेमें सर घुसेड़ना—बेलेडो। मूर्च्छा-वायु—क्रोकस। गहरा सर-दर्द—वेसिलि। अतिशय आनन्द—काफिया। हताश प्रणय—ऐसिड-फास। हाथ-पैर चञ्चल—जिङ्कम। कामोन्माद—ऐसिड-पिकरिक। रक्तमय शुक्रक्षरण—मर्क, लिडम। बुरी खबर या भयकी वजहसे पैदा हुई अवस्था—जेल्स। जरायुसे वायु निकलना—ब्रोम। हृत्शूल—कैलि-कार्ब।

शक्ति।—६ठा शततमिकसे २०० शततमिक क्रम।

टेक्सस बैकेटा

(TAXUS BACCATA)

दूसरा नाम ।—इयु ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे अंकुरसे या बीजसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—ग्रन्थिवात, पुराना वात, रातमें पसीना, चर्मपर पीब भरी फुन्सियाँ, विसर्प, पलकोंका स्नायुशूल प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—सल्फ, आर्टि-इयु ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

टेल्यूरियम

(TELLURIUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इस उपधातुसे पहले विचूर्ण तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—बगलमें और पैरमें बदबूदार पसीना ; अर्बुद ; मोतियाबिन्द ; आँखोंका प्रदाह ; कानमें पीब ; सर्दी ; प्रमेह ; स्वरभंग ; दाद ; गृध्रसी ; मेरुमज्जाकी उत्तेजना ; कृमि ; जम्हाई आना ।

उपयोगिता और आभास ।—दाद, रस-भरे दाने, नाना प्रकारके चर्म-रोग, कानके बाहरी भागका अकौता, कानसे स्राव, बहरापन, श्लेष्माके कारण आँखोंका प्रदाह, पलकोंका अकौता, मेरुदण्डकी उत्तेजना और उसके पिछले भागका स्नायुशूल प्रभृति रोगके लक्षण-विशेषमें यह विशेष लाभदायक है। इसके कई प्रधान लक्षण ये हैं :—(१) रोगीके बदन और पसीनेमें बहुत बदबू रहती है, मानो लहसुनकी गन्ध आती हो। (२) कर्णस्राव, कानसे निकले हुए पीबमें मांसकी गन्ध आती है और वह इतना कषाय रहता

है, कि जिस जगहपर लगता है, वहीं छाले-छाले पड़ जाते हैं। (३) ऐसा अनुभव मानो बायें कानकी पश्चान्नलीमें सो-सोंकर वायु घुस रही है। (४) पलकोंके ऊपर अकौता या फटे घाव हो जाते हैं और उनसे पीब निकला करता है। एकाएक श्रवण-पथ रुक जाता है। (५) दाने भरा आँखोंका प्रदाह, योजिकापर दाने निकलकर उसमें प्रदाह पैदा कर देता है। (६) पानीकी तरह सर्दीका स्रावके साथ स्वरभंग और आँसू बहना, निर्मल वायु लगनेपर बढ़ जाता है; परन्तु कुछ देरतक वहाँ रहनेपर घटा मालूम होता है। (७) नासा-पश्चान्नलीसे गलेमें श्लेष्माका गिरना, स्वरनलीमें कुटकुटाहट होती है और खाँसी आया करती है। (८) पाखाना होनेपर मलद्वारमें खुजली पैदा हो जाया करती है। सूत्र-कृमि निकलती है। (९) मुँहसे निकली हुई हवा, आध्मान वायु या डकार और पैरका पसीना बहुत बदबूदार। (१०) उरुके पिछले भागका स्नायुशूल; दाहिने पार्श्वका; यंत्रणाका बढ़ना—खाँसने, छींकने या पाखाना जानेके समय वेग देनेपर और रोगी पार्श्व दबाकर सोनेपर। (१०) अत्यन्त स्पर्श-कातरता। (११) चोट या गिर पड़ने आदिकी वजहसे या किसी कारणसे दर्द-भरे बवासीरके मसेके छू जानेपर, वह दर्द शरीरके विभिन्न अंशोंमें और पीठमें तथा बहुत देरतक अनुभव होता है। (१२) ओकाई आती-आती जम्हाई आ जाती है और भोजनके बाद औंघाई आती है। (१३) बायीं करवट सोनेपर वक्षके दाहिने पार्श्वके पंजरेमें टपक हुआ करती है और हृत्पिण्डमें दर्द मालूम होता है।

लक्षणावली

मन।—एक बात सोचनेके समय दूसरी सभी बातें भूल जाता है। बात-बातमें अधीरज हो जाता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना; सवेरे शय्यासे उठनेके बाद (मैग-म्यूर, मैन्सि, सिपि); वृद्धि—चलनेके समय (बेल, नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम, कोना, कैलि-कार्ब, नक्स-मस); उठ बैठनेपर (कार्बो-ऐन, डायाडेमा) या सर घुमानेपर (ब्राई, कैल्के, कोना, कैलि-कार्ब, स्टैफ); नाड़ी अत्यन्त तेज़ रहा करती है, मिचली पैदा हो जाती है और खाये हुए पदार्थ वमन हो जाते हैं (कैम्फो, कैलि-कार्ब, वेरेट); स्थिर भावसे सोये रहनेपर (कार्बो-वेज,)। जरा सर

हिलाते ही ऐसा मालूम होता है, कि मानो माथेमें चोट लगी है। सवेरे माथा भारी और भरा मालूम होता है (आर्निका, लेके)। बायीं आँखके ऊपरी अंशमें थोड़ी देरतक रहनेवाला रेखाकी तरह या सूतकी तरह दर्द, तेज़ और स्पष्ट रहता है। झुककर लिखनेपर एकाएक माथेमें खून ज्यादा चढ़ जाता है और चेहरा लाल हो उठता है। सन्ध्याके बाद नित्य औंघाई आनेपर सरमें चक्कर मालूम होता है और रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह शून्यमें उड़ रहा है।

आँख।—चक्षुमुकुरके सामनेवाले अंशमें थोड़ा-सा खड़ियाकी तरह पदार्थ जमा रहता है। त्रिकोणाकार चक्षुरुह अर्थात् आँखके कोनेमें, अधिकांश स्थानोंमें नाकके पासवाले कोनेमें एक तिकोनिया मसाकी तरह पैदा होता है और इस त्रिभुजका सिरा आँखकी पुतलीकी ओर रहता है (ऐमोन, ब्रोम, आर्स, फार्मिका, लेके, रैटान, आर्जेण्ट-नाई, कैल्के, इयुफ्रे)। दानेवाले चक्षु-प्रदाह रोगमें आँखसे बहुत ज्यादा पीव निकलना और पलकोंपर चमड़ेके टुकड़ेकी तरह अकौता निकलता है (ग्रैफ, मेजेर, सोरिन)। योजिका वगैरहके अगल-बगलमें दादकी तरह छोटे-छोटे दाने निकलते हैं, शिराएँ सब फूल उठती हैं; रोनेपर तकलीफ़ बढ़ जाती है। गण्डमाला रोग-युक्त आँखोंका प्रदाह, बायीं आँखकी ऊपरी पलकपर प्रदाह ज्यादा मालूम होता है। आँखसे पानी गिरा करता है, उनमें खुजली पैदा हो जाती है और दबाव मालूम होता है।

कान।—बाहरी छेद खुजलाता और फूल उठता है और उसमें दर्द-भरी टपक मालूम होती है; इसके तीन-चार दिन बाद, मछली धोये पानीकी तरह गन्धवाला पानीकी तरह पीवका स्राव आरम्भ होता है और यह पीव जहाँ लगता है, वहीं छाला पड़ जाता है। कान नीली आभा लिये लाल और शोथ भरा मालूम होता है; सुननेकी शक्ति घट जाती है। ऐसा मालूम होता है, कि श्रवण-पथ एकाएक रुक गया (डायस्को, लोबेल-इन)। बायें कानकी पश्चान्नलीमें ऐसा मालूम होता है, मानो सों-सोंकर वायु घुस रहा है (रंध्रमें—चेलिडो, मेजेर, स्टैफ, विङ्का); सुंघनी सूंघने या डकार आनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो कर्ण-पश्चान्नलीके भीतरसे हवा बह रही है (हँसनेपर ऐसा मालूम होता है, कि उसके भीतरसे ठण्डी हवा निकल गयी—मिलिफो)। दिन-रात कानमें टपक मालूम होती है और उसके भीतरसे पतला त्वचाकी चय

करनेवाला पीबका स्राव हुआ करता है (कैल्के, फास, सोरिन)। कर्णपटहके ऊपर छालेकी तरह दाने निकलते हैं और उनमें क्रमसे पीब पैदा हो जाता है और इसके बाद कर्ण-पटहमें छेद हो जाता है (कैलि-बाई, कैलि-फास, हाइड्रेस्ट)। सुंघनी (नस्य) सूंघने या डकार आनेपर उसके भीतरसे हवा निकलती है। कर्ण-पटह हमेशाके लिये विकृत हो जाता है और श्रवण-शक्ति बहुत घट जाती है।

नाक।—पानीकी तरह सर्दीका स्राव—आँखसे पानी गिरा करता है और गला फट जाता है (पेट्रोल), विशेषकर वायु-सेवनके लिये चलनेके समय (ऐ-नाई, पल्स, आर्स, कोलोसिन्थ, आयोड, सल्फ, थूजा ; घटना—सिपा) खुसखुसी खाँसी आया करती है (सिपा) ; कुछ देरतक निर्मल वायुमें या घरके बाहरी भागमें रहनेपर उपशम हो जाता है। सवेरे खाँसनेपर नाकके पिछले छेदसे गहरा पीले रंगका श्लेष्मा निकलता है।

मुखमण्डल।—कभी-कभी चेहरा एकाएक घोर लाल हो जाता है (ऐ-म्यूर, ऐण्टि-टार्ट)। मुखकी पेशियाँ सब नाचा या फड़का करती हैं और उनकी भावभंगी विकृत हो जाया करती हैं (सिना, माईगेल, कूप्रम, ओपि, साइकूटा, स्पाई); वृद्धि—बोलनेके समय। मुँहपर दाद निकलना (वैसिलिन)।

मुख-विवर।—लार बहना ; जभी-तभी मसूढ़ेसे बहुत ज्यादा परिमाणमें रक्तस्राव हुआ करता है। मुँहमें लहसुनकी गन्ध, गलेमें जखम, तालुमूल पार्श्वके दोनों गह्वर सूखे और खाने-पीनेके समय आराम मालूम होता है।

पाकाशय आदि।—माथा और गर्दनके पिछले भागमें रक्तसंचय रोगमें पाकाशय खाली और उसमें सुस्तीका भाव मालूम होता है। उदरमें इस ढंगका दर्द मानो नख गड़ रहा है। निकला हुआ वायु बहुत ही बदबूदार।

पेशाब।—पेशाबका परिमाण बढ़ जाता है। पेशाब घोर लाल और खट्टा। एक बून्द पेशाब मूत्रनलीके द्वारसे लगा रहता है। मुष्क और विटप देशमें दादकी तरह खुजली पैदा हो जाया करती है।

हृत्पिण्ड।—बायीं करवट सोनेपर हृद्प्रदेशमें दर्द होता है ; चित्त सोनेपर अच्छा हो जाता है ; दबाने या छूनेपर दर्द मालूम होता है (चिनिन-

सल्फ़, फास) और यह दर्द शरीरके दूसरे अंशतक मालूम होता है। गृध्रसी या उरुके पिछले भागका स्नायुशूल दाहिने पार्श्वमें होता है; दर्द नितम्बसे लेकर उरुके पिछले भागके स्नायुकी राहसे नीचेकी ओर जाता है। वृद्धि—खाँसने, हँसने या रोगवाला पार्श्व दबाकर सोनेपर।

त्वचा।—चेहरेपर दाद और हज़ामतकी खुजली निकलना; सारे शरीरमें विशेषकर निम्नांगमें दाद निकलना (वैसिलिन, नेट्र-म्यूर, फाइटो, सिपि); शरीरमें जगह-जगह उठी हुई दाद सब दिखाई देती है; रातमें खुजलीका बढ़ना; रोगीके शरीरमें पसीना होनेपर लहसुनकी तरह बदबू निकलती है। वक्षमें बदबूदार पसीना होता है।

वृद्धि।—छूनेपर, स्थिर रहनेपर, रोगवाली करवट दबाकर सोनेपर, झुकनेपर, खाँसनेपर, हँसनेपर या पाखानेके समय वेग देनेपर, सवेरे नींद खुलनेपर और रातमें।

घटना।—खाने-पीने बाद (गलेका जखम), चित्त सोनेपर।

सम्बन्ध। —प्रतिविष या दोषघ्न।—नक्स-वोमिका।

सदृश।—आर्स, सिपा, नेट्र-म्यूर, पल्स, रास, सेलिन, सिपिया, सल्फ़, टियुबर्क्युलिनम या वैसिलिनम।

तुलनीय।—बेचैनी और बदबू—आर्सेनिक। सर्दी—सिपा। कानका प्रदाह—पल्स, बेलेडो। दाद—वैसिलिन, सिना, नक्स। कृमि—टियुक्रि। खाँसी और बलगम—ओसमियम।

शक्ति।—निम्न और उच्चक्रमका प्रयोग करना चाहिये। ६ठे क्रमसे बहुत दिनकी कानकी बीमारी डा० नैशने आराम की है।

टेपलिज

(TEPLETZ)

परिचय।—बोहिमियाके अन्तर्गत टेपलिनका खनिज लवणाक्त जल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—चुआये हुए पानीसे निम्न-क्रम तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—गठिया वातकी चिकित्साकी टेपलिज एक उत्कृष्ट दवा है। इस दवाके लक्षणके साथ लेड्म-कार्ब और लेड्म-म्यूर इन दोनों दवाओंके लक्षण बहुत मिलते हैं, इसलिये इन दोनों लेड्मकी बनी दवाओंके लक्षणके साथ गठिया वातमें टेपलिजकी निम्न-शक्तिके प्रयोगसे आशातीत सुफल प्राप्त होता है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

टेरिबिन्थिना

(TEREBINTHINA)

दूसरा नाम।—आयल आफ टर्पेण्टाइन। तारपीनका तेल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—तारपीनके तेलसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—ताण्डव; अण्डनालीका पेशाब; दमा; पीठमें दर्द; श्वासनली-प्रदाह; दर्द-भरा लिङ्गका कड़ापन; भावान्तर; आँखका स्नायुशूल; मूत्राधार प्रदाह; दाँत निकलनेमें कष्ट; शोथ; रक्तामाशय; बाधक; सान्निपातिक ज्वर; मृगी; विसर्प; पित्तपथरी; पित्तपथरीका शूल; पुट्ठेकी गाँठका फूलना; प्रमेह; पुराना मेह; खून मिला पेशाब; अर्श; आँत उतरना; भगोष्ठका दादकी तरह उद्भेद; जलातङ्क; व्याधिशंका; उन्माद; आँतका जखम; आँखके उपताराका प्रदाह; कामला; मसानेमें खून बढ़ जाना; मसानेका स्नायुशूल; कटिवात; चक्षुगोलकके ऊपरका स्नायुशूल; डिम्बाशयमें दर्द और शोथ; गृध्रसी; वीर्य जाना; पेशाबमें कष्ट; मूत्रनलीका रुकना; धनुष्टङ्कार; पेट फूलना; मूत्र-विकार; मूत्रस्तम्भ (पेशाब रुकना) या बद्ध कृमि।

उपयोगिता और आभास।—नाना प्रकारकी पेशाबकी बीमारियाँ और वस्ति-गह्वरके अन्तर्वेष्ट प्रदाह; उदरी, खासकर किसी नयी बीमारीके बाद उदरी, मसानेमें खूनका अधिक सञ्चय होना, मूत्राशय-प्रदाह, मूत्रकृच्छ्र और आन्त्रिक ज्वरमें यह विशेष उपयोगी है। आगे लिखे कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं:—जीभ तर, चिकनी और काँटोंसे रहितकी तरह मालूम

होती है। पेट फूलकर ढोलकी तरह हो जाता है। मसानेमें जलन मालूम होती है। पेशाब बहुत थोड़ा, खून मिला और धूपमय तथा उसमें किसी खास तरहके फूलकी गन्ध आती है। मूत्रकृच्छ्र रोगमें रक्त-स्राव। उदरामय या पतले दस्त, मल पानीकी तरह, हरी आभा लिये और आँवमय या बार-बार, बहुत ज्यादा सड़ी गन्ध भरा और खून मिला। पाखाना होने बाद मलांत्र और मलद्वारमें जलन होती है, रोगी सुस्त हो पड़ता है और उसे बेहोशी आ जाती है। कृमि रोगमें मुँहसे बदबू निकलती है और कभी-कभी ऐसा मालूम होता है, कि गला रुक जायगा। सूखी, छातीको फाड़ डालनेवाली खाँसी और मलद्वारमें खुजली पैदा हो जाया करती है। शरीरकी त्वचाके नीचे खून निकलनेकी वजहसे काली शिराएँ, रोज़ नयीं-नयी काली शिराएँ पैदा होती हैं। आँतमें फोड़ा पैदा हो जाना और उससे रक्त-स्राव, रक्त शैरिक और काला। मूत्रमें अण्डलालकी अधिकता और खून मिला पेशाब, परन्तु उसके साथ मूत्रनलीकी छाल नहीं निकलती, तर जगहमें रहनेपर बढ़ता है। सड़ी भाफ़की वजहसे बोखारमें यह प्रतिषेधकका काम करता है।

लक्षणावली

मन।—स्तम्भित भाव या जड़-बुद्धि (ऐ-नाई, ऐ-फास, एपिस, हिपर, हायो, कैलि-कार्ब, ओपि, फास, सल्फ); किसी विषयमें एकाग्र होकर मन नहीं लगा सकता (ऐनाक, लैके, लाई, इथ्यू, नक्स-वोम, फास); आच्छन्न अवस्था—विशेषकर मूत्राधार विकारमें (कैन्थ, ओपि)। बच्चे बात-बातमें धीरज खो देते हैं, एकदम क्रोधित हो उठते हैं (सिना, आयोडम)। दाँत निकलते हुए बच्चोंका मस्तिष्कावरणकी उत्तेजनाकी वजहसे क्रोधी स्वभाव (कैल्के-फास, कैमो, सिना)। संन्यास रोग हो जानेका भय (आर्जेण्ट-मेट, काफि, फेरम, इलैप्स), माथा भारी और उसमें दबाव अनुभव होना। जीवनसे वितृष्णा (अरम, चायना, फास)। फांसी लगाकर आत्महत्या करनेकी इच्छा (आर्स, बेल)।

मस्तक।—एकाएक सरमें चक्कर आ जाता है और रोगीको चारों ओर अंधेरा दिखाई देता है (नक्स-वोम, बेल, जेल्स) और गिर जानेका उपक्रम होता है। अन्त्रशूल रोगमें धीमा सर-दर्द, माथा बहुत भारी और उसमें

प्रचण्ड दबाव मालूम होना। ऐसा मालूम होता है, कि माथा एक बन्धनसे बँधा है (ऐ-कार्बोल, ऐ-नाई, जेल्स, सल्फ)।

आँख।—तारकामण्डल या उपतारकाका प्रदाह (आर्स, ब्राई, कोलचि, डालका, इयुफ्रे, रस); इसके साथ ही पेशाबकी बीमारी मिला भौंहों और आँखोंमें दर्द, खासकर रातमें १ बजेसे ३ बजेतक। आँख घोर लाल और रोगवाले पार्श्वका चेहरा लाल हो जाता है। निर्मल वायु सेवनके लिये चलनेके समय आँखोंके आगे काले बिन्दु उड़ते दिखाई देते हैं; अधखुली (बेल, क्यूप्रम, ओपि) आँख, शिवनेत्र; पुतलियाँ ऊपर चढ़ीं (कैम्फो, क्यूप्रम, हेलिबो, ओपि) या घूमती हुई आँखकी पुतली (बेल, क्यूप्रम, स्ट्रैमोन, वेरेट, जिङ्कम)।

कान।—कानमें ऐसी आवाज़ सुन पड़ती है, मानो घड़ी बज रही है (मानो दूरसे घड़ी टिक-टिककर रही है—सिङ्कोना)। कानमें टं-टं शब्द (कास्टि, पल्स)।

नाक।—नाकसे लगातार खूनका स्राव (ऐको, बेल, ब्राई, हैमा), लाला-मूत्र या धीमे सर-दर्दमें।

मुखमण्डल।—चेहरा मिट्टीके रंगका या भूरा और मलीन; दोनों गाल गड्हेमें धसे; अस्थि-सार।

मुख-विवर।—जीभ चिकनी, लाल और मुलायम, कांटोंसे रहित मानो उसपर वार्निश कर दी गयी है (एपिस, लैके, कैलि-बाई, पाइरोजेन) या उठे हुए काँटेसे भरी (कैलि-बाई, आर्स, कास्टि, लाई, नक्स-मस); जीभमें जगह-जगहकी खाल उधड़ जाती है और लाल झिल्ली बाहर निकल पड़ती है (टैराक्स) या (किसी तरहके चर्म-रोगमें) एकाएक जीभका समूचा मैल या लेप साफ़ हो जाता है अथवा और भी अवस्था विशेषमें जीभ सूखी और लाल दिखाई देती हैं; जीभके अगले भागमें जलन होती है (कोलोसिन्थ, हाइड्रैस्ट, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, नेट्र-म्यूर, सैबाड)।

पाकाशय।—बदबूदार डकार। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें कुछ दर्द मालूम होता है। रोगी मानो एक बन्दूककी गोली खा गया और उसके उदरके ऊपरी भागमें अड़ गयी है, इस तरहका दबाव मालूम होना। पाकस्थलीमें दबाव मालूम होना; वायु निकलनेपर घटना; बायीं करवट सोनेपर बढ़ जाता है,

परन्तु दाहिनी करवट घूमनेपर और वायु छूटनेपर आराम हो जाया करता है। पाकाशयमें जलन।

अन्त्राशय।—उदर बहुत फूला; आन्त्रिक, प्रसवके बादका वगैरह बोखारोंमें पेट फूलना—जीभ ऊपर बताये ढङ्गकी। जभी-तभी पेटमें दर्द होना और कड़ा पाखाना होना। कृमिका लक्षण—मुँहसे बदबू निकलना, जभी-तभी कब्जियत हो जाना (सिना, स्पाइजि) और सूखी प्रचण्ड खाँसी; मलद्वारमें जलन और खुजली और ऐसा मालूम होता है, कि सूत्र-कृमियाँ सब घूम रही है (सिना, इग्ने, कैल्के) और कभी-कभी आक्षेपतक हो जाया करता है (इससे सूत्र-कृमि टुकड़े-टुकड़े होकर निकला करती है)। पेटमें बहुत वायु होकर वह फूल उठता है और उसमें स्पर्श सहन नहीं होना (सिङ्को, ग्रेफ, हिपर), वायुके कारण सूजन (ऐकोन, ऐ-फास, कोलचि)। पथरी निकलनेकी वजहसे अन्त्रशूल। बायीं कोखमें दबाव मालूम होना और जलन और ऐसा अनुभव होना मानो जकड़ गया है। कामलाके कारण उदरी, दोनों मसानोंके यन्त्रगत विकारमें (एपिस, कोलचि, नेट्र-म्यूर, प्रूनस, सिनिसियो); आरक्त ज्वरके बाद उदरी (हेलिबो, लाई)।

मलांत्र और मल।—मसानेके प्रदाह रोगमें आन्त्रिक सर्दी या पतले दस्त आना। उदरामय—मल पानीकी तरह, हरा और आँवमय; बार-बार बहुत ज्यादा सड़ी गन्ध-भरा, खून मिला मल निकलता है। पाखाना होनेपर मलान्त्र और मलद्वारमें जलन होती है, रोगी सुस्त हो पड़ता है और उसे बेहोशी आ जाती है (आर्स)। अन्त्रमण्डलीमें जखम पैदा हो जाना या अन्त्रमण्डलीकी उपझिल्लीके सड़नेकी वजहसे तलपेटसे रक्तस्राव (हैमा)। रक्त गेरिक या काला। ठण्डे पानीके प्रयोगसे मलद्वारकी जलन घटती है।

पेशाब।—खूनका पेशाब—पेशाबके साथ खून भरपूर मिला रहता है (कैन्थ, मर्क-कोर, पल्स, हैमा, सिनीसियो); तली काफीके चूरकी तरह (एपिस, हेलिबो, लैके)। पेशाब गदला धूममय और अण्डलाल मिला; कभी-कभी बहुत ज्यादा, घोर या काला अथवा बिना दर्दका। तर दूषित जगहमें रहनेपर मसानेकी बीमारी बढ़ जाती है। मसाना, मूत्रस्थली और मूत्रमार्गमें भयङ्कर जलन और खींचन मालूम हुआ करती है (बार्बे, कैनाब, कैन्थ); दर्द दाहिने मसानेसे उरु-शिखरतक फैल जाता है। बैठनेकी अवस्थामें मसानेमें

दबाव मालूम होता है (पैलेडियम) ; चलनेपर घटता है (ऐमोन-कार्ब, ग्रैफ लाईट, पेट्रोल)। मसाना, मूत्राशय, फेफड़ा, आँतें, जरायु वगैरह शरीरके भीतरी यन्त्रोंमें अधिक रक्तसञ्चय होना ; इन सभी यन्त्रोंसे रक्तस्राव हुआ करता है और कभी-कभी उसके भीतरके कोई यन्त्रमें दुर्लक्षणवाला रोग हो जाता है। मूत्राशयमें भयानक जलन और अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द और मूत्राशयमें प्रबल संकोचन अनुभव हुआ करता है ; मूत्राशय-शिखरमें संकोचन शक्तिकी कमीकी वजहसे मूत्राशय प्रदाह और पेशाब रुक जाया करता है। नया लालामूत्र, प्रथमावस्था, इस समय पेशाबके साथ जिस परिमाणमें लार और रक्तमिला रहता है, उतने परिमाणमें मूत्रमार्गसे निकली खाल या उपझिल्ली नहीं मिली रहती। पेशाबके साथ लारकी प्रचुरता दिखाई देती है और खून भी रहता है ; मूत्रमार्गसे निकली खाल बिलकुल ही नहीं रहती ; तर भूमिपर रहनेपर रोग बढ़ जाया करता है। पेशाबमें किसी खास फूलकी गन्ध रहती है (कोपैवा, इयुकेलिप्टस)।

पुं-जननेन्द्रिय।—प्रमेह-रोगमें मूत्रकृच्छ्र, मूत्राशयमें प्रबल संकोचन, मूत्रमार्गमें उत्तेजना और लिङ्गमें उत्तेजना होनेपर तकलीफ़।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु बहुत विलम्बसे होता है और स्राव बहुत थोड़ा हुआ करता है। रजोनिवृत्तिके एक सप्ताह बाद दोनों उरुमें प्रबल खींचन और तलपेटमें ऐसा दर्द होता है, मानो शीघ्र ही फिर ऋतु होगा। जरायुमें भयानक जलन और नीचेकी ओर खींचन मालूम होना। प्रसवके बाद जरायुका प्रदाह, क्लेदस्राव रुक जाता है और जरायुमें जलन होती है ; पेशाबमें भी बहुत जलन होती है।

श्वासयन्त्र।—ऐसा श्वासकष्ट मानो फेफड़ेमें बहुत अधिक रक्तसंचय हुआ है। श्वास-रोग, शरीर हिलानेपर बढ़ जाता है। वायुनली भुजगत सर्दी—बहुत ज्यादा बलगम निकला करता है। सूखी प्रचण्ड खाँसी, बलगम बिलकुल नहीं निकलता है या खून मिला बलगम निकलता है। फेफड़ेसे रक्तस्राव। वक्षके एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक असह्य जलन या कसावटका भाव। वक्षगह्वरकी श्लैष्मिक-झिल्लीसे बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकलता है।

सार्वाङ्गिक।—बहुत सुस्ती और उठनेकी शक्तिका न रहना (आर्स, सिङ्को, फास)। कभी-कभी पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना पैदा हो जाता

है (हायो, स्ट्रेमोन)। सारा शरीर ठण्डा, लसदार पसीना निकलता है (कैम्फो, टैबेकम, वेरेट)।

वृद्धि ।—छूनेपर, दबानेपर, बायीं करवट सोनेपर, बैठनेकी अवस्थामें, निर्मल वायु सेवनके लिये चलनेके समय। रातमें, विशेषकर रातके १ बजेसे ३ बजेतक और तर घरमें रहनेपर।

उपशम ।—बायीं करवटसे दाहिनी करवट पलटनेपर, झुकनेपर, वायु निकलनेपर और ठण्डे पानीके प्रयोगसे (मलद्वारमें जलन)।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष या दोषघ्न ।—फास्फोरस।

तुलनीय ।—सान्निपातिक ज्वरमें रक्तस्राव—ऐलूमि। यकृतसे रक्तस्राव—आर्निका। अण्डलाल मिला पेशाब—आर्स। श्वासनली-प्रदाह और तन्द्रा—इपिकाक। मसानेकी बीमारीमें शोथ—हेलिबोरस। आमवात—एपिस। चमकीली जीभ—कैलि-बाई, लैकेसिस। खून मिला पेशाब—पल्स। गुह्यद्वारमें जलन—आर्स। कृमि; श्वासमें बदबू—सिना। जरायु-प्रदाह, अन्त्रप्रदाह—बेलेडो। आमवात—सल्फर इत्यादि।

सदृश ।—ऐलूमिन, ए-नाई, आर्नि, एपिस, आर्स, कैन्थ, कोपिवा, इरिजिरन, हेलिबो, लैके।

शक्ति ।—१म दशमिकसे ६ठा शततमिक क्रम। डा० नेशको इसके उच्चक्रमसे कोई लाभ न दिखाई दिया।

टेट्राडाइमाइट

(TETRADYMITE)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास ।—नखमें जखम, पैरकी एँड़ीमें तथा एँड़ीकी कण्डरामें (Tendo-Achitis)। नख बढ़कर अंगुलीमें धस जाना, आमवात, मेरुदण्डके सबके निचले भागमें प्रदाह और दर्द प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है।

शक्ति ।—२x—३०।

टियुक्रियम मेरम वेरम

(TEUCRIUM MARUM VERUM)

दूसरा नाम ।—मार्योराना साइरियेका।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—खिलनेके कुछ ही पहले संग्रह किये हुए ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार किया जाता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मलान्त्रमें खुजली ; पलकोंमें अर्बुद ; हिचकी ; नाककी सर्दी या पालिपस ; विचर्चिका ; आमवात ; मूत्रनलीकी बीमारी ; कृमि इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—नासारंध्र और योनिका झिल्लीमय अर्बुद या बहुपाद इससे अच्छा हो जाया करता है। नासारंध्रमें अर्बुद पैदा हो जानेपर बार-बार छींक आ जाया करती है ; पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव होता है और रंध्रमें खुजली पैदा हो जाया करती है। मलान्त्र और मलद्वारमें सुरसुरी, खुजली वगैरह कृमिके लक्षणोंमें यह बहुत लाभदायक है। सन्ध्याके समय और शय्याकी गर्मी लगनेपर यह खुजली बढ़ जाया करती है। वातके दर्दमें भी इससे लाभ होता है। बैठनेकी अवस्थामें दोनों पैरोंमें चुनचुनी होकर वे अवश हो जाया करते हैं।

लक्षणावली

मन ।—मानसिक उत्तेजना ; रोगी बहुत बकता है (ओपि)। गानेकी इच्छा इतनी प्रबल होती है कि रोगी उसे किसी तरह भी दबा नहीं सकता (साइक्लूप्र, क्रोकस, प्लैट)। मानसिक और शारीरिक आलस्य। क्रोधपरायणता—खासकर भोजनके बाद।

मस्तक ।—मस्तिष्ककी जड़ता और माथेमें चक्कर अनुभव होना। दोनों आँखोंके ऊपरी अंशमें दबाव मालूम होना (हाइड्रैस्ट, कैलि-बाई, फास, पल्स, सैङ्गियु), झुकनेपर बढ़ जाता है।

आँख ।—आँख लाल और प्रदाह-भरी ; पानीके भारसे भरी, मानो अभी रोकर उठा है (क्रोकस)। निर्मल हवा लगनेपर आँखसे बहुत अधिक

जलन करनेवाला आँसू निकलता है (इयुफ्रे, नेट्र-मूर, फाइटो, आर्स, मर्क-कोर)। आँखकी ऊपरी पलक लाल और कुछ फूली दिखाई देती है।

कान ।—कानपर हाथ रखनेपर, बोलनेपर या जोरसे साँस लेनेपर कानमें साँय-साँय शब्द। नाक छिड़कनेपर दाहिने कानमें हलकी आवाज़ सुन पड़ती है और मानो कानके भीतरकी स्लेष्माके भीतरसे हवा घुसती है इस तरहकी तेज़ आवाज़ सुन पड़ती है (इयुपेट-पर्प्यु, स्टैनम)। कर्णशूल, रंध्रमें ऐसा दर्द मानो किसीने शस्त्रसे आघात किया है (कैमो, गुयायेक, लैक-कैन, टेलूर, डालका, इरिञ्जियम)। कानके ऊपर और पीछे सूखी रूसी भरी खुजली पैदा हो जाती है।

नाक ।—नासा रोग या नासारन्ध्रमें झिल्लीमय अर्बुद पैदा हो जाता है (कैल्के-कार्ब, फास, सैङ्गियु, थूजा) और रोगी जिस करवट सोता है, उसी पार्श्वका रन्ध्र रुक जाता है। नाकमें हमेशा कुटकुटी और सुरसुरी और छींक आया करती है, पर सर्दी नहीं होती। ऐसा मालूम होता है, कि दोनों नाकके छेद रुक गये हैं। नाक छिड़कनेपर या छींकनेपर भी नहीं खुलति (लाई); पूतिनस्य या नकसीर या रंध्रसे बदबू निकलती है और बड़ी-बड़ी असम पपड़ियाँ निकला करती हैं (कैलि-बाई, लेम्ना-माइनर)। बायें रंध्रमें सुरसुरी होती है और दाहिनी आँखसे पानी गिरा करता है। ऊँची आवाज़से पढ़नेपर, विशेषकर सन्ध्याके समय नाक रुक जाती है।

मुखमण्डल आदि ।—चेहरेसे तकलीफ़ प्रकट होती है। हड्डो-हड्डो, उतरा और दोनों आँखें गड़हेमें धँसी। जभी-तभी चेहरेपर उत्ताप पैदा हो जाता है, पर लाल नहीं होता ; दाहिनी युगास्थिमें दर्द पैदा होकर दाहिने पार्श्वके दाँततक फैल जाता है। निम्न पंक्तिके दाहिनी ओरके कर्त्तन दन्तमें और उसके नीचेवाले मसूढ़ेमें उखाड़नेकी तरह भयानक दर्द मालूम होता है। खाँसनेपर कण्ठसे बहुत ज्यादा परिमाणमें बिगड़े स्वादवाला बलगम निकलता है।

पाकस्थली ।—स्तन पीने बाद तेज हिचकी और खाली डकार आया करती है ; पानी आदि पीने बाद अस्त्र बेधनेकी तरह अन्त्रशूल। डकारके साथ कण्ठमें कड़वा स्वाद पैदा करनेवाले पदार्थ चढ़ आते हैं। घोर हरे रंगके पदार्थकी कै होती है ; हिचकी आनेपर पाकस्थलीसे पीठतक सुई गड़नेका

तरह दर्द अनुभव होता है। पाकस्थली मानो शून्य, उसमें ऐसी गड़बड़ी मालूम होती है और कलकलाहट हुआ करती है। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें दबाव और उद्वेग पैदा करनेवाला भार मालूम होना।

अन्त्राशय।—कोष्ठाश्रित वायुके कारण उदरमें दबाव मालूम होना। बहुत ज्यादा सड़ी हवा निकलना।

मलान्त्र और मल।—बच्चोंके उदरामय रोगमें वे बहुत रोया करते हैं और दुबले हो जाते हैं (आर्स, चायना, ओलियेन)। बच्चेके मलद्वारमें रातभर मूत्र-कृमि, सब इस तरहकी सुरसुरी पैदा किये रहती है, कि वह सो नहीं सकता और लगातार छटपटाया करता है। शय्याकी गर्मीसे बढ़ना। ढीले पाखानेके साथ गुच्छेकी गुच्छा सूत्रकृमि निकलती है (सिना, इण्डिगो)।

पेशाब।—बहुत ज्यादा फीका पेशाब होता है।

पुं०-जननेन्द्रिय।—रमणकी आकांक्षा घट जाया करती है। उदरसे लेकर कोषरज्जु या रेतःरज्जु और अण्डकोषतक दबाव और खींचनकी तरह दर्द फैल जाता है। मूत्रद्वारपर पेशाब करनेके समयके अलावा अन्य समय जलन होती है (स्टैफाइ)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—योनिमें झिल्लीमय अर्बुद पैदा हो जाता है और सतीच्छदके बाहरतक आ जाया करता है।

श्वासयन्त्र।—श्वास ग्रहण करनेके समय स्वरनलीमें साँय-साँय शब्द होता है। स्वरनलीके ऊपरी अंशमें कुटकुटी होनेकी वजहसे सूखी खुसखुसी खाँसी पैदा हो जाती है; खाँसनेपर यह सुरसुरी और भी बढ़ जाया करती है। साँस लेनेके समय दाहिने वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (कैल्के, मिजेर, पैलेड, रेनान-बल्बो)। सर्दीकी वजहसे श्वास-रोग—विशेषकर वृद्धोंको (इपिका, नक्स, टैबाक)।

प्रत्यङ्ग आदि।—हाथकी अंगुलीके अगले भागमें जलन होती है (लैके, साइलि, सल्फ, ऐन्थ्राक्सिन)। दाहिने पैरके अंगूठेका नख त्वचाको छेदकर भीतर घुस जाता है और वहाँ जखम पैदा कर देता है (कैलेण्डियु, कास्टि, ग्रैफ, नेट्र-म्यूर, फास, साइलि, थूजा), टहलनेपर अच्छा रहता है (ऐ-वेन, कास्टि, थूजा, वैलि; बाध्य होकर टहलना पड़ता है—फेरम, कैमोमिला), बैठनेकी अवस्थामें दोनों पैरोंमें झुनझुनी होकर वे अवश हो जाते हैं।

सार्वाङ्गिक।—स्नायविक उत्तेजना और कम्पन। चलनेके समय पैर-से-पैर सट जाते हैं और रोगी बार-बार ढुलक पड़ता है। निर्मल वायुमय स्थानमें चलना आदि व्यायाम करनेकी अत्यन्त इच्छा; किसी तरह नहीं थकना। शरीरकी त्वचा बहुत सूखी और पसीना बिलकुल ही नहीं होता। शरीर कुटकुटाया करता है, मानो मच्छड़ आदि कीड़े काट रहे हैं। निद्रित अवस्थामें छटपटाता है। गला रुक जाता है और इस तरह चौंक उठता है, मानो डर गया है।

वृद्धि।—छूनेपर, बैठनेकी अवस्थामें, झुकनेपर, जिस करवट दबाकर सोता है, उसी करवट (नाक रुकना), जलीय वायुमें, सन्ध्याके समय और उत्तापसे, विशेषकर शय्याके उत्तापसे।

उपशम।—रोगवाला अंग हिलाने और चलनेपर।

अनुकूल सम्बन्ध या दोषघ्न।—कैम्फर, चायना, लाई, मर्क, नक्स-वोम, फास, पल्स, साइलि।

सदृश।—सिना, इग्ने, इण्डिगो, केलि-बाई, नक्स-वोम, फास, सेङ्गियु, साइलि, थूजा, वेलि।

तुलनीय।—हिचकी—इग्ने। बकवाद—लैके, हायोसा। गाना—बेल स्पञ्ज, हायोस, स्ट्रैमो। कृमि—सिना, स्पाइजि। थाइसिस—वैसिलिन। स्नायविक लक्षण—नक्स, वेलेरि। नाककी सर्दी—केलि-बाई। पोलिपस—फास, सैंगु, साइलि।

शक्ति।—१म दशमिकसे १२ शततमिकतक।

टियुक्रियम स्कोरोडानिया

(TEUCRIUM SCORODONIA)

दूसरा नाम।—उड-सेज, उड-गर्मेण्डर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—डा० मार्टिनिने सबसे पहले इस दवाकी गुणावली होमियोपैथिक चिकित्सक समाजमें विख्यात की। पुरानी

खाँसी, क्षयकास, क्षय-कासके कारण फेफड़ेमें गह्वर (Cavity) होना, बहुत अधिक श्लेष्मा और पीब मिला बलगम निकलना, शरीरका दिनोंदिन दुर्बल होते जाना, अण्डकोषका क्षय और प्रदाह प्रभृति लक्षणोंमें इसका मूल अर्क ५, १० बून्द मात्रामें दिनमें दो-तीन बार सेवन करनेपर विशेष लाभ होता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—वैसि, टियुक्रियम, अरम, हेलिबो ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

थैलियम

(THALLIUM)

परिचय ।—दुष्प्राप्य धातु विशेष ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और तरल दोनों ही आकारोंमें पाया जाता है ।

उपयोगिता और आभास ।—केश झड़ना, क्षय रोगमें रातमें पसीना, पेशियोंका पतलापन, कम्प, गति-शक्ति राहित्यरोग, निम्नांगका पक्षाघात, अर्द्धाङ्गका आक्षेप, तीव्र स्नायविक, गोलीके आघातकी तरह आक्षेपिक वेदना प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—प्लम्बम, जैबो, पिलोकार्प, पेट्रोल, फास, लेथिरस, कास्टि, आर्ज-नाइट्रि ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

थीया चिनेन्सिस

(THEA CHINENSIS)

दूसरा नाम ।—चाय ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसका अर्क और इन्फ्यूशन या पाचन तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—कम्प; प्रलाप; उन्माद; आत्महत्या या मनुष्यहत्याकी प्रवृत्ति; अधकपारीका सर-दर्द; स्नायविक रोग; पक्षाघात; स्नायुशूल और अनिद्रा।

उपयोगिता और आभास।—स्नायविक उत्तेजनाके कारण यदि नींद न आती हो तो यह विशेष लाभदायक है। रोगीको दिन-भर औंघाई आती है, पर रातमें इतना गर्म हो जाता है और इतनी स्नायविक उत्तेजना अनुभव होती है, कि किसी तरह नींद नहीं आती और वह छटपटाया करता है। चाय पीनेके कारण अजीर्ण रोगकी भी यह एक बढ़िया दवा मानी जाती है। उदरोर्द्ध प्रदेशमें एक तरहकी गड़बड़ी और खालीपन मालूम हुआ करता है; हृदयके अगले भागमें तकलीफ़ और हृद्स्पन्दनमें भी यह विशेष लाभदायक है, खासकर यदि चाय पीनेके कारण ऐसा हो।

लक्षणावली

मन।—विकारावस्थामें रोगी महान आनन्द प्रकट करता है, लगातार हँसा करता है और कविता किया करता है। बहुत ज्यादा या तेज़ चाय पीनेके कारण पानात्यय। घरमें सब जगह घूमा करता है और मनमें सोचता है, कि दुष्ट प्रेतात्मा या मनुष्य उसका अनिष्ट करनेकी चेष्टा कर रहे हैं। नदीके किनारे टहला करता है और पानीमें डूबकर आत्म-हत्या करनेकी प्रवृत्ति करता है (ड्रासेरा, रस, हायो, लेके, बेल, हेलिबो)। रोगी ऐसा सोचता है, कि कोई उसे आत्महत्या करने, खिड़कीसे कूद पड़ने या अपनी शिशु-सन्तानको एकदम खौलते पानीके कड़ाहमें ऊपरसे नीचे फेंक देनेके लिये उकसा रहा है (खिड़कीसे कूदने—इथ्यू, अरम, जेल्स, ग्लोन; बच्चेको आगमें फेंकनेके लिये—लिसिन, नक्स-वोम)। मानो कोई महान दुर्घटना घटा चाहती है (आर्स, कैल्के, कास्टि, जेल्स, सिलिन, निकोलम, ग्राइरोजिन, टैबाक) और मानो वह एकाएक मर जायगा (आर्नि, आर्स) ऐसी आशङ्का; अकेला कहीं भी जाना नहीं चाहता। सामान्य विषयमें भी रो देता है (कास्टि, पल्स)। अध्ययन करनेकी क्षमता बढ़ जाया करती है; रोगी बहुत देरतक एक विषयमें मन नहीं लगा सकता (कैरिका)। आत्मनिर्भरताकी कमी (थिरिड)। कलह-प्रिय—अच्छी बात बोलनेपर भी लोगोंसे लड़ जाता है। रातमें नींदके

बाद मनमें लगातार भाव पैदा हो जाया करते हैं; रोगी किसी तरह भी अन्यमनस्क होकर सो नहीं सकता (काफिया, थिइन)।

मस्तक।—सरमें चक्कर, चारों ओर अंधेरा दिखाई देता है (साइक्लेम, फेरम, जेल्स, नक्स-वोम, ऐनाक, कैलि-बाई); सन्ध्याके समय वायु सेवनके लिये चलनेके समय एकाएक सरमें चक्कर आ जाता है और बेहोश हो जाना चाहता है (साइक्ले, पल्स, सल्फ, कैलि-कार्ब, लैके)। शिरामें अधिक रक्त-सञ्चय होनेकी वजहसे माथा विशेषकर ललाटमें बहुत भार मालूम होता है। सर-दर्द, विशेषकर ऋतुके समय (जेल्स, पल्स)। ऐसा मालूम होता है, कि दर्द बायें अण्डाधार और पाकाशयसे पैदा होकर माथेमें चला जाता है। सरके पिछले भागमें फाड़नेकी तरह दर्द और सर्दी मालूम होना। बहुत बेचैन करनेवाला सर-दर्द और गलेकी दोनों धमनियोंसे टपक आरम्भ होती है (बेल, काफि)।

पाकस्थली।—बहुत भूख, पर थोड़ा-सा भी कुछ खा लेनेपर भूख बन्द हो जाती है (चायना, लाई, कास्टि, ऐ-लैक्ट, साइक्लेम, इग्ने, नक्स-मस, ओपि, पोडो, सिपि)। पाकस्थली खाली मालूम होती है और सुस्ती (हाइड्रैस्ट, ओलियैन, सिपि, सल्फ, टैबाक)। नेबू इत्यादि खट्टी चीजें पसन्द करता है। मिचली और भोजनके बाद वमन। पेटका दर्द बहुत बढ़ जानेपर पित्त वमन होता है (खाया हुआ पदार्थ वमन नहीं होता)। पाकस्थली शिथिल मालूम होती है, मानो एक खाली बेग या थैली झूल रही है (ऐ-सल्फ, कैल्के-सल्फ, कार्बो-वेज, इपिका, लाई, रस, स्टैफाई)। अन्त्र-वृद्धिके ऊपर चाय पीनेपर उसमें अधिक दर्द मालूम होता है और आँतें बार-बार उतर आती हैं।

श्वास-यन्त्र।—तेज़ और दीर्घ श्वास-प्रश्वास। थोड़ा-सा भी परिश्रम करनेपर रोगी हाँफ जाता है। कभी-कभी साँस रुक जाना चाहती है और रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि वह अभी मर जायगा। वक्षमें कसावटका भाव और दबाव मालूम होना; बायें वक्षमें धड़फड़ाहट होती है (लिलि-टाई, नैजा, नेट्र-म्यूर, नक्स-मस, रस)। वक्षके ऊपरी अंशमें कसावटका भाव रहनेके कारण रोगीको बाध्य होकर शय्यापर उठकर बैठ जाना पड़ता है। हृदयके बगले भागमें उद्वेग-जनक बेचैनी मालूम होती है (इग्ने, कैल्मिया,

फास)। ऐसा अनुभव होना कि अभी-अभी बेहोशी आ जायगी (लोबेल-इन, ऐकोन, डिजिट, मस्कस, नक्स)। भयङ्कर हृद्स्पन्दन (आर्जेण्ट-नाई, डिजिट-सूर, सिपि)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—बैप्टि, काफि, ड्रोसेरा, रस, लैके, नैजा, ओलियान, सिपि, टैबाक, वेस्पा ।

दोषघ्न ।—थूजा, फेरम ।

तुलनीय ।—सर-दर्द और बायें डिम्बाधारमें दर्द—सिपिया । काम-काजसे अनिच्छा, विशेषकर लिखनेका काम—हाइड्रैस्ट । पाकस्थलीमें शिथिलता मालूम होना—इपिकाक । खट्टी चीजोंकी इच्छा—सल्फ, ऐण्ट-क्रूड, फास्फोरस ।

शक्ति ।—३रा दशमिकसे १००० शततमिक क्रम ।

थियोसिनामिनम

(THEOSENAMINUM)

दूसरा नाम ।—एलिल, सल्फो-कार्बोमाइड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सरसोंके तेलसे यह दवा दानाके आकारमें तैयार होती है । विचूर्ण या तरल दोनों ही आकारमें क्रम तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—थियोसिनामिनके भीतरी और बाहरी प्रयोगसे मलद्वारका अर्बुद और संयोजन, मुखमण्डलकी अर्बुदके आकारकी फुन्सियाँ, पुराना ग्रन्थि-अर्बुद और जखमका दाग दूर हो जाता है । इसके भीतरी प्रयोगसे जरायु और उसके पासके स्थानका अर्बुद आरोग्य होता है ।

मोतियाबिन्द, धुँधली दृष्टि, सन्धि स्थानके अस्थियोंका एकका दूसरेके साथ जुड़ जाना, सूत्रार्बुद, स्थान-विशेषके चर्मका कड़ापन, कानमें शब्द, कशेरुका मज्जाका क्षय प्रभृति वार्द्धक्य-सुलभ उपसर्ग समूहोंमें (कोनायम) भी इसका प्रयोग करनेसे लाभ होता है ।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—बोरानिका, सिनापिस, कूसिफेरि, ह्लैस्पि-बार्सा-पेष्टारिस, टियुबर्क, साइलि, फ्लू-एसिड, नाइट्रि-ऐसि, ग्रैफा, स्किटिनस।

शक्ति।—२x—६x विचूर्ण।

थिरिडियन

(THERIDION CURASSAVICUM)

दूसरा नाम।—आरेञ्ज स्पाइडर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—नारङ्गीके पेंड़पर जीवित मकड़ेसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—हृत्शूल; अस्थिकी बीमारियाँ; अस्थिक्षय; वयःसन्धिकालके रोग; खाँसी; बाधक; दाँतका दर्द; मूर्च्छा-भाव; सर-दर्द; मूर्च्छावायु (हिस्टीरिया); यकृतकी बीमारी; यकृतमें पीब सञ्चय; मिचली; नाकमें सर्दी; नकसीर; रोशनी सहन न होना; यक्ष्मा; गर्भावस्थामें वमन; अस्थि-विकार; गण्डमाला धातु; जहाजमें चढ़नेपर मिचली; कशेरुका या मेरुमज्जाकी उत्तेजना; धनुष्टंकार; दाँतका दर्द; सरमें चक्कर इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—सरमें चक्कर, सर-दर्द, मेरुदण्डमें स्पर्श सहन न होना, क्षय-कास और अस्थिका सड़ना या हड्डोमें जखम इत्यादिकी यह एक प्रधान दवा है। डा० बारूचका कथन है, कि जभी उन्हें श्लेष्माश्रित ग्रन्थि और अस्थि रोगमें विशेषकर अस्थिक्षत और अस्थि सड़नेमें बहुत सतर्कतासे चुनी हुई दवासे भी लाभ न होता दिखाई देता, तब वे बीच-बीचमें एक मात्रा थिरिडियम प्रयोग करते और आठ दिनोंतक कोई दवा न देते थे, इससे उन्हें बहुत आश्चर्यजनक लाभ दिखाई देता था। आगे लिखे कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं :—(१) रोगी समझता है कि देखते-देखते समय बीतता चला जाता है। (२) सरमें चक्कर आना :—आँख बन्द करते ही या कानमें किसी तरहका शब्द जाते ही। (३) सर-दर्द, हिलना आरम्भ करते ही आँखके पीछे बहुत दबाव मालूम होता है। मस्तिष्कके गभीरतम प्रदेशगत सर-दर्द; वृद्धि—सोनेपर तथा यदि कोई रोगीके कमरेमें चलता है, तो

उस समय; यहाँतक कि माथा थोड़ा हिलानेपर भी बहुत-बढ़ जाया करता है। (४) आवाज़ एकदम सहन नहीं होती, ऐसा मालूम होता है, मानो शरीरका प्रत्येक अस्थि-मज्जा भेदकर शरीरके अन्तरतम प्रदेशमें आवाज़ घुस रही है; इसके अलावा थोड़ी भी आवाज़ सुननेपर मिचली और सरमें चक्कर पैदा हो जाया करता है। (५) नाककी पुरानी सर्दी,—स्राव गाढ़ा पीला या हरी आभा लिये और बदबूदार। (६) दाँतमें दर्द,—कोई भी आवाज़ ऐसा मालूम होता है, कि दाँतको छेद रही है। (७) मिचली, शरीरको थोड़ा भी हिलानेपर—विशेषकर आँख बन्द करनेपर और तेजीसे घुड़सवारी करनेपर। (८) क्षय-कास,—बायें वक्षके ऊपरी अंशमें और बायें पृष्ठ-फलकमें सुई गड़नेकी तरह दर्द—गर्दनतक फैल जाता है। तेजीसे मार डालनेवाले क्षय-कास रोगकी प्रथमावस्थामें इसके प्रयोगसे कितने ही रोगी एकदम आराम हो जाते देखे गये हैं। (९) मेरुदण्डमें स्पर्श बिलकुल ही सहन न होना—कुर्सीपर बैठनेके समय रोगी पीठ सामनेकी ओर घुमाकर बैठता है। (१०) सारे शरीरमें इस तरहका दर्द होता है, मानो उसकी हड्डी सब टूट गयी है।

लक्षणावली

मन।—ऐसा मालूम होता है, कि समय देखते-देखते बीता जा रहा है (काकुल, समय बीतता नहीं—ऐलूम, आर्जेण्ट-नाई, अरम, कैनाब-इन, कैमो, मिडोरिन, मर्क, नक्स-मस, पेलेड)। बहुत बकता है, मानसिक परिश्रम करना पसन्द करता है, महान आनन्द (कैरिका-पिपाया, थीया, लैके, स्ट्रैमोन, काफि)। आत्म-निर्भरतासे रहित (ऐनाक, लैक-कैन, साइलिसिया); विशेषकर वायुरोगाधिकारमें (लाई)। सभी कामोंमें खासकर अपने नित्यके कामोंके विषयमें, बहुत विराग (आयोड, लैके, सिपि, सल्फ)। जभी-तभी सामान्य कारणसे चौंक उठता है (काकुल सिपि, साइलि)।

मस्तक।—सरमें चक्कर,—इतना जी मिचलाता है, कि वमनतक हो जाता है; वृद्धि—झुकनेपर (ग्लोन, लैके, नक्स, पल्स), शरीर थोड़ा भी हिलानेपर (बेल, मिडोरिन), आँख बन्द करनेपर (ऐ-फास, आर्नि, हिपर, लैके, साइलि; आँख खोलनेपर—ऐलूम, टैबाक), जहाजमें भ्रमणके समय (पेट्रोल); सरमें चक्कर रोगमें शरीरमें ठण्डा पसीना निकलना। सर-दर्द,

हिलना आरम्भ करते ही दोनों आँखोंके पीछे बहुत दबाव मालूम होता है; माथेके अन्तरतम प्रदेश-गत सर-दर्द (वेसिलिन, टेरिण्टियु); वृद्धि—सोनेपर (कोलोसिन्थ, ग्लोन, लेके, रस), कोई दूसरा यदि रोगीके कमरेमें टहलता है या माथा थोड़ा भी हिलानेपर (ऐक्टिया-रेस, ब्राई, ग्लोन)। बहुत हलकी आवाज़ भी ऐसा मालूम होता है कि हरेक अस्थि-मज्जाको छेदती हुई शरीरमें घुस रही है और इसी वजहसे मिचली और सरमें चक्कर पैदा हो जाता है (ऐसेरम)। ललाटमें प्रचण्ड दर्द,—टपकका दर्द सरके पिछले भागतक पहुँच जाता है। सर-दर्दके समय रोगिनी बोल नहीं सकती, कि कहाँ दर्द है या कैसा दर्द हो रहा है; बायीं भौं और समूचे ललाटमें टपक और मिचली हुआ करती है; वृद्धि—शय्यासे उठनेके समय (एपिस)। माथा भरा और जड़ भावकी तरह मालूम होता है। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो कन्धेपर किसी दूसरेका माथा रखा हुआ है और मानो वह उसे उठा नहीं सकता; सूर्याघात, लू लगना या सर्दी-गर्मी (कैम्फो, ग्लोन, स्ट्रैमोन, वेरेट-विर)।

आँख।—आँखके सामने रह-रहकर ज्योति प्रकट हो जाती है (बेल, साइक्लेम, ग्रैफ, लेके, नेट्र-म्यूर, फास, सल्फ), यहाँतक कि आँख बन्द करनेके समय भी ऐसा ही भ्रम-भाव दिखाई दिया करता है। अस्पष्ट दृष्टि, मानो आँखके सामने पर्दा पड़ा है (कास्टि, हायो, आयोड, लोरो, लिथिया, लाई, नेट्र-म्यूर, फास, रस, स्ट्रैमोन, सल्फ); रोगिनीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है; मूर्च्छावायु रोगमें भी ऐसी ही भ्रम-दृष्टि हो जाया करती है (लाई)। रोशनीका सहन न होना (बेल, कोना, लाई, नक्स, ओपि)। हरेक चीज़ दो मालूम होती है (ऐ-नाई, जेल्स, नेट्र-म्यूर) और कलेजा धड़का करता है। मिचली पैदा हो जाती है और रोगीके दोनों हाथ बरफकी तरह ठण्डे हो जाते हैं। दोनों आँखोंके पीछे बहुत भार और दबाव मालूम होना।

कान।—बहुत हल्की आवाज़ भी रोगी सहन नहीं कर सकता, इससे उसकी तकलीफ़ बढ़ जाती है (बेल); प्रत्येक तेज़ आवाज़ रोगीको ऐसी मालूम होती है, मानो उसकी अस्थि-मज्जा छेदती हुई, विशेषकर दाँतको छेदती हुई शरीरमें घुस रही है और इससे उसकी मिचली (काकुल) और सर-दर्द बढ़ जाया करता है (ऐसेरम, फेरम और टेरिण्टियुला)। दोनों

कानोंमें जल-प्रपातकी तरह सों-सों आवाज़ (ऐस्टोरियस-रियुब, काकुप्र, लिसिन, पेट्रोल)।

नाक।—बार-बार छींक और नाकसे पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव, विशेषकर सन्ध्याके समय (सिपा, रियुमेक्स, जिङ्कम) पुराना सर्दीका स्राव या श्लेष्मा गाढ़ा, पोला और हरी आभा लिये तथा बदबूदार (कैलि-आयोड, पल्स, सिपि, सिफिलिन, थूजा)।

मुखमण्डल।—चेहरा म्लान। सवेरे नींद खुलनेपर मुखमण्डलके निचले अंशमें अकड़न और हिला न सकना। दन्त-शूल—आवाज़से बढ़ना।

पाकस्थली।—शराब या तम्बाकू सेवनकी इच्छा। खट्टी पीनेकी चीजें पीनेकी इच्छा। हमेशा ही कुछ पीने या खानेकी इच्छा प्रकट करता है, पर यह बता नहीं सकता कि क्या अच्छा लगता है (मैग-म्यूर); बहुत प्यास। मिचली—सवेरे सोकर उठनेपर (ऐ-लैक्टिक, मैग-म्यूर, लैक-डिफ्लो) : आवाज़ सुननेपर (काकुप्र), सरमें चक्कर आनेके साथ ; आँख बन्द करनेपर ; आँखके सामने चकचौंधी ; शरीर हिलानेपर (काकुप्र, आर्स, ब्राई, इपिक, वेरेट,) ; बोलनेपर और तेज़ीसे गाड़ी चलानेपर (काकुप्र, पेट्रोल, सिपि)।

अन्त्राशय।—यकृत-प्रदेशमें भयङ्कर जलन और दर्द (ऐगार, आर्स, गेल्बी, कैलि-कार्ब) ; छूनेपर बहुत बढ़ जाता है ; ओकाई आया करती है और पित्तमय वमन होता है। यकृतमें फोड़ा पैदा हो जाता है (हिपर, मर्क, साइलि, लैके, लाई)। इसके बाद फिर सरमें चक्कर या मिचली नहीं रहती। रमणके बाद पुट्ठेमें दर्द ; हिलने-डोलनेपर दर्द मालूम होता है (पैलेड, आस्टिलेगो)। रोज़ प्रबल कूथनके बाद थोड़ा-सा ढीला पाखाना होता है।

जननेन्द्रिय।—दिनमें सोनेके समय बड़े वेगसे वीर्यस्खलन (ऐलो, कास्टिकम)। स्त्रियोंको यौवन आनेके समय और वयःसन्धिकालमें मूर्च्छावायु पैदा हो जाना (लैके)।

श्वासयन्त्र।—बार-बार लम्बी साँस लेना और छोड़ना (इग्ने)। बायें वक्षके ऊपरी अंशमें और पृष्ठ-फलकके नीचे सुई गड़नेकी तरह तेज़

दर्द—यह दर्द गलेतक फैल जाता है (ऐनिसम-स्टेल मार्टस, पिक्स-लिक, सल्फ)। तेज़ मारात्मक क्षय-कासकी प्रथमावस्थामें इसका प्रयोग करना चाहिये। प्रचण्ड खाँसीके समय दोनों जानु वक्षकी ओर और माथा सामनेकी ओर हिला करता है। हृद्प्रदेशमें उद्वेग पैदा करनेवाली बेचैनी मालूम होती है या हृत्पिण्डसे तेज़ दर्द पैदा होकर बायें बाँह और कन्धेकी ओर चला जाता है खासकर स्त्रियोंकी वय:सन्धि कालमें ऐसा होता है।

प्रत्यङ्गादि।—मेरुदण्डमें स्पर्श सहन नहीं होना, रोगी कुर्सीकी पीठसे अपनी पीठको नहीं लगने देता, कहीं दर्द न हो (चिनिन-सल्फ, हाइपिर, फास, ज़िङ्कम)। वृद्धि—थोड़ी-सी आवाज़से या पैर रखनेके कारण शरीर हिलनेपर। रोगी बहुत क्षीण; उसके प्रत्यङ्ग आदि काँपा करते हैं और पसीना निकला करता है। परिश्रम करनेसे ही बेहोशी आ जाना चाहती है। सारे शरीरकी हड्डीमें बहुत दर्द होता है—मानो हड्डियाँ टूट गयी हैं और अब वे गिर जायँगी। श्लेषाश्रित-ग्रन्थि और अस्थि-रोग, विशेषकर हड्डीका जखम, हड्डीका सड़ना और हड्डीका विकार—"यह रोगके मूल कारणपर आक्रमणकर उसको दूर कर देता है" (डा० वैरुच)। शीतावस्थामें कम्प हो जाता है और रोगीके मुँहसे फेन निकला करता है। निद्रित अवस्थामें रोगी अपनी जीभका अगला भाग काट लेता है (ऐसिड-फास)।

सम्बन्ध।—सल्फर, कैल्केरिया और लाइकोपोडियमके बाद इसके प्रयोगसे विशेष लाभ होता है।

तुलनीय।—अधकपारीका सर-दर्द—सिपिया। सरमें चक्कर—लैकेसिस, थूजा। नाकसे पीला सर्दीका स्राव—पल्स, थूजा। मलद्वारमें एक गोला अनुभव होना—आर्जेण्ट-नाइ। गण्डमाला-दोष—बैसि। मानो शरीरसे एक लड़का बँधा हुआ है—क्रोकस, थूजा।

प्रतिविष।—शब्द-कातरताके सम्बन्धमें—ऐकोन; मिचलीके सम्बन्धमें—मस्कस और कभी-कभी पैदा होनेवाले लक्षण आदिके सम्बन्धमें—ग्रैफाइटिस।

सदृश।—ऐकोन, डायाडेमा, बेल, कैल्के, ग्रैफ, इग्ने, लाई, माइगेल, स्लाई, सिपि, टैरेण्ट, ऐनिसम, चिनिन-सल्फ, मार्टस, पिक्स-लिक, सिफिलिन, थूजा, टियुबर्कुलिन।

शक्ति।—तृतीय दशमिकसे २०० शततमिक क्रम। उच्च क्रमका व्यवहार ही प्रसिद्ध है।

थिवेटिया

(THEVETIA)

दूसरा नाम।—ऐहोवाई-वम।

उपयोगिता और आभास।—निद्रालुता, तीन-चार मिनटके अन्तरसे श्वासरोधका भाव, मुँहसे बहुत अधिक श्लेष्मा निकलना, उदरामय, वमन प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक हैं।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—ऐपोसाइनम, स्ट्रोफैन्थस।

थ्लैस्पी बर्सा पैस्टोरिस

(THLASPI BURSA PASTORIS)

दूसरा नाम।—कैप्सिला बर्सा पैस्टोरिस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—लिखे हुए ताजे वृक्षसे अरिष्ट तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—गर्भ-स्रावके बाद रक्तस्राव; शोथ; रक्तामाशय; मूत्रकष्ट; पित्तपथरी; प्रमेह; खूनका पेशाब; रक्तस्राव; श्वेत-प्रदर; यकृतकी बीमारी; जरायुसे रक्तस्राव; जीभके नीचे अर्बुद; मूत्र-पथरीका शूल; जरायुका कर्कट रोग; अंगुलबेढ़ा इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—सभी तरहके रक्तस्राव इसके विषयके अन्तर्गत हैं, खासकर जरायुसे रक्तस्राव रोगकी तो यह एक बहुत ही बढ़िया दवा है। जरायुमें सूत्रमय अर्बुद, रक्तस्राव, बहुत ज्यादा रजःस्राव—एक बारकी सुस्ती दूर होते-न-होते दूसरे महीने फिर इसी तरहका स्राव आरम्भ हो जाता है। पुराना मूत्राशय-प्रदाह, मूत्रकृच्छ्र, पित्त-पथरीका शूल, एकाएक पेशाब रुकना, मूत्राम्ल पैदा होना, मसानेका शूल या मूत्राश्मरी वगैरह रोगोंमें यह बहुत लाभदायक है। अतएव, शरीरके किसी द्वारसे रक्तस्राव क्यों न हो,

यदि वह रक्त घोर लाल या थक्का-थक्का हो, तो इस दवासे रुक जानेकी सम्भावना है।

लक्षणावली

मस्तक।—मुँह और आँख फूली-फूली दिखाई देती है। कभी-कभी नाकसे रक्तस्राव हुआ करता है, सरमें चक्कर—विशेषकर उठनेके समय ललाटमें दर्द—विशेषकर सन्ध्याके समय। कानके पिछले भागमें पपड़ी जमनेवाले खुजलीके दाने निकलते हैं। मुँह और ओंठ सूखे और फटे।

अन्त्राशय।—पित्त-पथरीका शूल (कार्डियुअस-मेरी, कैल्के, हाइड्रैस्ट); जरायु विकारसे उत्पन्न यकृतकी बीमारियाँ। नाभीके बीचमें मानो सुई या बिजलीकी चिनगारी गड़ रही है, इस ढंगका दर्द। बहुत तेज़ ऐंठनकी तरह दर्द, झुकनेपर घट जाता है (कोलो, कूप्रम)। मलद्वारसे खून जाना (ऐ-नाई, कैप्स, फास, मर्क-कोर)। तलपेटसे बहुत ज्यादा मात्रामें पीवकी तरह पदार्थका स्राव।

पेशाब।—खूनका पेशाब (कैन्थ, हैमा, टेरिब) बार-बार जलन करनेवाला पेशाब होता है। पेशाबमें तेज़ गन्ध। पेशाबके साथ असंख्य सूत्र-रेणु निकलता है और बहुत ज्यादा पेशाब होकर उदरी या शोथ रोगकी शान्ति होती है। मूत्र-पथरी निकलना (ओसिमम-कैनम, आर्टिका-इयु)। बहुत ज्यादा पेशाब होता है; तली ईंटके चूरकी तरह रेणुमय (लाइ)। अवस्था-प्राप्त मनुष्योंमें मूत्रकृच्छता। बून्द-बून्द पेशाब हुआ करता है। प्रसवके बाद पेशाबकी तकलीफ़।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—एकदम असमयमें ही ऋतु हो जाता है। स्राव बहुत ज्यादा हुआ करता है; कभी बहुत दिनोंतक हुआ करता है, यहाँतक कि आठ, दस या पन्द्रह दिनोंतक स्राव हुआ करता है। कभी-कभी बहुत धीरे-धीरे आरम्भ होता है। पहले दिन वस्त्रमें एक हलका-सा दाग लगता है। दूसरे दिन तलपेटमें दर्द होता है, वमन होता है और थक्का-थक्का रक्तस्राव हुआ करता है, एक महीनेके बाद स्रावका परिमाण बहुत बढ़ जाता है। जरायुकी संकोचन शक्तिके अभावकी वजहसे अधिक रक्तस्राव होता है, नहीं तो बहुत विलम्बसे रक्त-स्राव होता है। पेटमें भयंकर ऐंठन होती है और

जरायुमें शूल बेधनेकी तरह दर्द होता है। हरित्पाण्डु रोगमें, गर्भस्रावके बाद, प्रसवके बाद अथवा वय:सन्धिकालके समय जरायुसे स्राव ; उत्तरणी या जरायुमें सूत्रमय अर्बुद या कर्कट रोगके कारण उत्पन्न रक्तस्राव (फास, आस्टिलेगो)। प्रदर—स्राव खूनका (ऐ-नाई, काक्यु, हैमा, क्रियो, मर्क-कोर, फाइजस, सिपि, टेरिब, ट्रीलियम, पेण्डियु), काले रंगका बदबूदार ; ऋतुके कई दिन पहले और बाद होता है। बायें कन्धेमें भयानक दर्द हुआ करता है (आर्टिका-इयु)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—क्रोकस-सैट, इपिक, मिलिफोल, सिनेपिस-नाई, ट्रिलियम, आस्टिलेगो, वाइवर्नम।

तुलनीय ।—मूत्र-पथरीका शूल--ओसिमम-कैन, इयुरिक ऐसिड। जरायुसे रक्तस्राव—ट्रिलियम, वाइवर्नम, आस्टिलेगो। आँतसे रक्तस्राव—मर्क, नाइट्रिक-ऐसिड, सल्फ, फास्फोरस।

शक्ति ।—मूल अर्क (१ से ३० बून्दतक--विशेषकर पित्त-पथरीके दर्दमें) से ६ठा शततमित क्रम।

थूजा आक्सिडेण्टेलिस

(THUJA OCCIDENTALIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—खिले हुए वृक्षके ताजे पत्तेसे मूल अरिष्ट तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—तलपेटका फैलना या फूलना ; गर्भ-स्राव ; हृत्शूल ; मलद्वारका फटना या नासूर पड़ जाना ; भगन्दर ; दमा ; कैन्सर या कर्कट रोग ; ताण्डव ; निस्पन्द वायु ; कब्जियत ; अर्बुद या मसे ; आक्षेप ; अतिसार ; वाधक ; कानमें झिल्लीमय अर्बुद या पोलिपस ; अनजानमें पेशाब ; मृगी ; आँखमें अर्बुद ; आँख उठना ; पैरमें बदबू ; रुका हुआ आध्मान वायु ; प्रमेह ; पुराना लाला मेह ; रक्तस्राव ; अर्श ; केशकी बीमारियाँ ; आँत उतरना ; दादकी तरह उद्भेद ; मत्स्य चर्मरोग (Inchthyosis) ; आँत-में-आँतका कुछ अंश प्रवेश कर जाना ; जबड़ेमें अन्य पदार्थका पैदा हो जाना ; सन्धियोंमें कर-कर आवाज़ ;

ध्यान न देनेकी प्रवृत्ति ; आँखके सामने काले बिन्दु उड़ते दिखाई देना ; निकट दृष्टि ; तिल ; गर्दनमें कड़ककी आवाज़ हो उठना ; नकली मैथुनका दुष्परिणाम ; बायें डिम्बाधारका दर्द ; नकसीर ; स्नायुशूल ; नाककी पुरानी सर्दी ; नाकका पोलिपस या अर्बुद ; पक्षाघात ; जीभके नीचे अर्बुद ; आमवात या सूजाकके विषके कारण वात ; अस्थि-विकार ; गृध्रसी ; रातमें वीर्यस्खलन ; माषक धातु ; उपदंश ; रोग दबा देनेका दुष्परिणाम ; दाँतोंका क्षय ; दाँतमें दर्द ; जीभमें जखम ; अर्बुद ; गो-बीजका टीका लगवानेका दुष्परिणाम ; अपत्यपथकी अकड़न ; क्रुप खाँसी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—हैनिमैनका निर्णय किया हुआ प्रमेह विषसे दूषित धातु या वान ग्रेवानका बताया रसवात "जलीय" धातु और डा० बार्नेट वर्णित गोम सूर्याधान (गो-बीजका टीका) विषसे दूषित धातुवाले मनुष्योंकी नाना प्रकारकी बीमारियोंकी "थूजा" एक सर्वश्रेष्ठ दवा मानी जाती है। रसवात धातुमें जिस तरह प्रमेह (सूजाक) का विष जड़ जमा लेता है और नुकसान पहुँचा सकता है, दूसरे धातुमें वैसा नहीं कर सकता। अतएव, ऐसा धातु प्रमेह विषकी क्रियाके लिये अत्यन्त उपयोगी है। प्रमेह विषसे दूषित धातुवालोंका प्रधान वाह्य लक्षण है, जननेन्द्रिय प्रदेश और शरीरके अन्यान्य स्थानोंमें बतौड़ी, मसे या उसी आकारके नाना प्रकारके अर्बुद निकलना। रस-प्रधान धातुवाले, स्थूलकाय, काली आँखें, काले केश और चर्म-रोगवाले व्यक्ति इसकी खास लीला-भूमि हैं। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं :— (१) भ्रान्त विश्वास, रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी बगलमें एक आदमी और भी बैठा हुआ है। मानो उसकी आत्मा और देह अलग-अलग है ; मानो उसके उदरमें एक जीव हिल रहा है ; मानो रोगी सभी विषयोंमें किसी स्वर्गीय आत्मा द्वारा परिचालित हो रहा है इत्यादि। (२) उन्मादिनी,—किसीको भी अपने पास या अपना शरीर छूने नहीं देती। (३) आँख बन्द करनेपर सरमें चक्कर आ जाता है। (४) सर-दर्द, मानो उसके मस्तकके पार्श्वमें कपालमें एक लोहेकी कील घुस रही है। (५) नये पैदा हुए बच्चेकी आँख उठना, प्रमेह विषके कारण हो या उपदंश विषके कारण हो। (६) पलकें सट जाती हैं और उनके किनारोंसे सूखी रूसी-सी लगी रहती है। पलकोंके ऊपर गुहीरी या अर्बुद और कड़ा दाना निकला करता है। (७)

कभी-कभी पैदा होनेवाला पुराना कर्ण-प्रदाह ; स्राव पीवकी तरह और सड़े मांसकी तरह गन्धवाला ; रंध्रके भीतर बतौड़ियाँ हो जाती हैं और उनमें श्लेष्माका दाना या झिल्लीमय अर्बुद पैदा हो जाता है। (८) खसड़ा आदि उद्भेदके बाद पुरानी नाककी सर्दी—गाढ़ा, हरा श्लेष्मा या खून मिला पीव निकला करता है। (६) दाँतकी जड़ ध्वंस हो जाती है, पर सिरा ज्यों-का-त्यों बना रहता है। (१०) चाय पीनेकी वजहसे दन्तशूल। (११) चलनेके समय या घुड़सवारीमें भ्रमण करनेके समय बायें डिम्बाधार-प्रदेशमें भयानक जलन मालूम होती है, रोगिनीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है। (१२) कब्जियत—मल थोड़ासा बाहर निकलकर फिर ऊपर चढ़ जाता है। (१३) बवासीरका मसा फूला—बैठनेके समय बहुत तकलीफ़ होती है। (१४) सवेरेके समय पतले दस्त, मल बड़े वेगसे और बड़ी आवाज़से निकलता है, मानो छतकी मोरीसे पानी गिर रहा है। (१५) मलद्वार फटा, स्पर्श सहन नहीं होना और उसके चारों ओर चिपटे मसे या तर दाने सब निकलते हैं। (१६) योनिमार्गमें बेहद स्पर्शकातरता रहनेकी वजहसे रमण आलिङ्गनके समय बहुत तकलीफ़ मालूम होती है। (१७) शरीरकी त्वचा मलिन, भूरी या सफ़ेद खाकी रङ्गकी। जगह-जगह बड़े छाले भरे मसे निकलते हैं ; खुले अंशमें नाना प्रकारके खुजलानेवाले दाने निकलते हैं, उन्हें खुजलानेपर जलन होती है। (१८) प्रत्यङ्गोंकी अस्थियोंसे मानो मांस उखाड़ा जा रहा है, इस ढङ्गका दर्द। (१९) दर्दके समय बार-बार पेशाब होता है। (२०) पेशाब हो जानेपर अन्तिम बिन्दु निकल जानेके बाद इस तरहकी तकलीफ़ मालूम होती है मानो किसी अस्त्रसे मूत्रमार्ग काटा जा रहा है। (२१) प्रमेह रोगमें पतला हरे रङ्गका स्राव और पेशाबके समय मूत्रमार्गमें जलन हुआ करती है। (२२) रुके हुए प्रमेहके स्रावकी वजहसे सन्धिगत वात, मूत्राधार मुखशायिका-प्रदाह, प्रमेह विषके दोषसे ध्वजभंग ; मसे निकलना और अन्यान्य नाना प्रकारके धातुगत रोग। (२३) केवल बिना ढके अर्थात् शरीरके खुले हुए अंशमें ही पसीना होता है ; सोते ही पसीना होना आरम्भ हो जाता है और नींद खुलते ही बन्द हो जाता है। (२४) जननेन्द्रिय प्रदेशमें मधुकी तरह गन्धवाला पसीना निकला करता है। (२५) चलनेके समय दोनों पैर इस तरह स्पर्श ज्ञानसे रहित मालूम होते हैं, मानो काठके बने हों। (२६) रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी देह विशेषकर दोनों पैर, कांचके बने हैं और

सहजमें ही टूट जायँगी। (२७) नख सबके आकार टेढ़े हो जाते हैं और वे बहुत टूटनेवाले होते हैं।

लक्षणावली

मन।—किसी विषयको सोच नहीं सकता ; बहुत धीरे-धीरे बोलता है (लैके, सिपि, आर्जेण्ट-नाई, कैलि-ब्रोम), मानो खोज-खोजकर बातें निकालता है ; असम्बद्ध वाक्यका प्रयोग करता है (चायना, लाई, नक्स)। भ्रान्त विश्वास (कैनाब-इन, कार्बो-वेज, नक्स), मानो रोगीके बगलमें और भी कोई बैठा हुआ है ; मानो उसकी देह और आत्मा अलग हो गयी है (ऐनाक, कैनाबइन) ; मानो उसकी देह काँचकी बनी है और किसी चीज़से भी टकरा जानेपर चूर-चूर हो जायगी (काठकी बनी है—कैलि-नाई), मानो उसके उदरमें एक सजीव पदार्थ हिलता है (एरण्डो, क्रोकस, सैबाई, कुरारि साइक्लेम, कानवैल, सल्फ)। उन्मादिनी किसीको भी अपने पास आने या अपनी देह छूने नहीं देती (शिशुका—ऐण्टि-क्रूड, ऐण्टि-टार्ट, कैमो)। चिड़चिड़ा और व्यस्त (ब्राई, हिपर) ; तेजीसे बात करता है (बेल, कैम्फो, हीपर)। बोलना बुरा मालूम होता है (कैमो, जेल, ग्लोन, नेट्र-कार्ब, फास, प्लम्ब), विशेषकर सवेरे नींद खुलनेपर। रोगिनी सोचती है, कि अब उसके जीनेकी सम्भावना नहीं है (एपिस, चेलिडो, ग्रैफ, लैके, मिडोरिन, ऐ-नाई) ; स्थिर बैठी रहती है, किसीसे बात नहीं करती और न किसीके पास जाना चाहती है (पल्स)। बहुत सामान्य विषयमें भी अच्छे-बुरेका विचार किये बिना आगे नहीं बढ़ती (इग्ने, साइलि)। किसी विषयमें भी सन्तोष नहीं प्रकट करती ; ; बहुत कलह-प्रिय (अरम, इग्ने, नक्स, सल्फ) ; जरा-सी बातमें भी उसे भयंकर क्रोध आ जाता है (ऐनाक, कैमो, लाई, नेट्र-म्यूर, नक्स, पेट्रोल)। गाना सुननेपर रो देती है (ग्रैफ, क्रियो, सैबाई, नेट्र-कार्ब) और उसके दोनों पैर काँपा करते हैं। रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो कोई देवात्मा उसको घुमाये फिरता है और वह एकदम उसके अधीन है (लैकेसिस, नैजा, ऐनाक)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना—आँख बन्द करनेपर (ऐ-फास, आर्निका, लैके, साइलि, थिरीडि)। आँख खोलनेपर अच्छा हो जाता है (एपिस)।

अपनी जगहसे उठनेपर (कैल्के-फास, कैमो, डिजि, लाई, फास, पल्स)। झुकनेपर (ऐनाक, ग्लोन, नक्स, पल्स) और ऊपरकी ओर (ग्रैफ, लैके, टैबाक) या बगलकी ओर देखनेपर सर-दर्द—मानो माथेके पार्श्वमें, कपालमें या बायें शृंगदेशमें एक लोहेकी कील घुस रही है (काफि, इग्ने) या मानो इस अंशमें ऐसा दर्द, कि एक गोल बटन दबाया जा रहा है; वृद्धि—बहुत ज्यादा इन्द्रिय सेवन करनेपर (कैल्के, फास, पल्स)। शरीर बहुत गर्म होनेपर (बेल, ग्लोन, साइलि) और चाय पीनेपर (कैल्के, फास, सिपि); पुराना प्रमेह या उपदंश विषसे उत्पन्न। मूर्द्धदेशमें मानो भीतरसे एक लोहेकी कील घुस रही है, इस ढङ्गका दर्द (हेलिबो, नक्स-वोम, फार्मिका; मानो गड़ी हुई है—निकोलम)। वृद्धि—तीसरे पहर और रातके अन्तिम भागमें ३ से ४ बजेतक; घटना—शरीर हिलाने और पसीना निकलनेपर। इस ढङ्गका दर्द मानो दोनों कनपटियोंमें घुस रहा है (कैम्फो, साइक्लेम)। सर-दर्दका घटना—घरके बाहरकी ओर चलने या किसी दूसरी तरहका व्यायाम करनेपर (लाई, पल्स)। ऊपरकी ओर देखनेपर (बेल)। तकिया छूने या दबानेपर माथेमें दर्द मालूम होता है; सरमें बेतरह जलन और सूई गड़नेकी तरह दर्द, विशेषकर शय्याकी गर्मीसे। सरके पिछले भागमें तर, त्वचाकी क्षय करनेवाले खुजलीके दाने सब निकलते हैं; यन्त्रणाका बढ़ना—छूनेपर और दबानेपर घटना। माथेमें सफेद रङ्गकी रूसी पैदा हो जाती है (कैलि-म्यूर, नेट-म्यूर, मेजेर, फास); केश सब रूखे और झड़ जाते हैं (कैलि-कार्ब, प्लम्ब, सोरिन, सल्फ)। माथेमें, विशेषकर माथेके खुले अंशमें, मधुकी तरह गन्धवाला पसीना निकला करता है। माथा और चेहरा गर्म कपड़ेसे ढँके रखना पसन्द करता है (आर्स, हिपर, लैके)।

आँख।—तुरन्तके जनमें बच्चोंकी आँखोंका प्रदाह, प्रमेह या उपदंश विषकी वजहसे (मर्क-कोर); योजिकाके ऊपर मसेकी तरह बड़े बड़े मांसांकुर या छाले निकलते हैं। घटना—गर्म प्रयोगसे और ढँका रखनेपर (ऐ पलू, क्लिमेट)। खोलनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो आँख भेदकर अत्यन्त ठण्डी हवा प्रवाहित हो रही है। पलकें सब रातमें सट जाती हैं (ऐल्यू, सिपि, सिफिलिन); पलकोंका किनारा सूखा और पपड़ी जमा। गुहेरी (ग्रैफ, पल्स, स्टैफ) और पलकपर श्लेष्मा-गुटीकी तरह छोटी-छोटी कड़ी

गोटियाँ निकलती हैं (स्टैफिसेग्रियाके बाद प्रयोग करना चाहिये)। आँखके सामने पीले रंगकी आलोक-रेखा दिखाई देती है; धूपकी ओर देखनेपर ऐसी छाया दिखाई देती है, मानो कितने ही पानीके बोतल चढ़ते और गिरते हैं। अस्पष्ट दृष्टि,—दृष्टि धुँधली ; आँख मलनेपर आराम मालूम होता है (क्रोकस, पल्स)। आँखकी सफेद त्वचा खूनकी तरह लाल रंगकी और प्रदाह-भरी। आँख और पलकोंमें भयानक जलन और डंक मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है। तिमिर दृष्टि, मानो आँखके सामने एक टुकड़ा महीन कपड़ा बँधा हुआ है (कास्टि, क्रोकस, लिथिया, नैट-म्यूर, पेट्रोल, फास) और आँखके पीछे इस तरहका दबाव मालूम होता है, मानो भीतरसे दोनों आँखोंको धक्का दिया जा रहा है या दोनों आँखें फूल गयी हैं। उपतारका प्रदाह; उपतारकाके ऊपर खोलें निकल आती हैं। आँखमें सलाई गड़नेकी तरह तेज़ दर्द होता है और उसके चारों ओर तेज़ उत्ताप मालूम हुआ करता है। आँखका सफेद परदा जगह-जगह ऊँचा उठ जाता है और नीली आभा लिये लाल दिखाई देता है। आँखपर बड़े-बड़े चिपटे दाने सब निकलते हैं और बहुत धीरे-धीरे बढ़ते हैं।

कान।—पुराना और बीच-बीचमें होनेवाला कर्ण-प्रदाह, रन्ध्रके भीतरसे सड़े मांसकी तरह गन्धवाला पीब निकलता है। कानमें मांसांकुर और श्लेष्माकी गोटियाँ निकलती हैं। कानमें झिल्लीमय अर्बुद पैदा हो जाता है; वह फीका लाल रङ्गका, कोषमय तन्तुवाला और उससे सहजमें ही खून निकला करता है। रन्ध्रके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो फूल उठा है और रोगीको बहुत कम सुन पड़ता है। कानमें नाना प्रकारके शब्द—ऐसी आवाज़ मानो पानी खौल रहा है। कण्ठके भीतरसे कानतक फैलनेवाला सुई गड़नेकी तरह दर्द। लार निगलनेके समय कानमें कड़ाक-सी आवाज़ हो उठती है।

नाक।—कभी-कभी पैदा होनेवाली पुरानी सर्दी, नाक छिड़कनेपर रन्ध्रके भीतरसे गाढ़ा हरे रङ्गका खून या पीब मिला श्लेष्मा निकलता है (पल्स); क्रमशः यह श्लेष्मा रंध्रमें सूखकर भूरी पपड़ीमें परिणत हो जाता है; नासापुटके ऊपर लाल दाने सब निकलते हैं और अधिकांश स्थानोंमें उन दानोंसे रस गिरता है; इन्द्रिय-परायणता या अत्याचारकी वजहसे यह अन्तिम

लक्षण बढ़ जाया करता है। रन्ध्रमें दर्द-भरी पपड़ी जमा क्षत उत्पन्न होता है (ऐण्ट-क्रूड, कैलि-बाई, पल्स)। सूखी सर्दी—नाक बहुत सूखी और रुकी मालूम होना, विशेषकर संध्याके समय। नासामूलमें दर्द पैदा करनेवाला दबाव मालूम होना (कैलि-बाई, बैप्टि, हायो, पल्स)।

मुखमण्डल।—चेहरा लाल, गर्म और शिराओंसे भरा; दोनों गालोंके अंश-विशेषमें जलन होती है और वे लाल हो उठते हैं; दोनों गाल विसर्प हो जानेकी तरह फूले मालूम होते हैं। स्नायुशूल, दर्द बायीं गण्डास्थिसे उत्पन्न होकर कान, दाँत, नाक और माथेतक फैल जाता है; रोगवाले अंश इस तरह जला करते हैं, मानो उनमें आग छू गयी है और उनमें धूपका स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता है। बायीं गण्डास्थिमें इस तरहका दर्द मानो खोद रहा है (इग्ने, प्लैट)—छूनेपर आराम हो जाता है। मुखमण्डलकी त्वचा तेल लगी रहनेकी तरह दिखाई देती है (नैट-म्यूर, प्लम्ब, सोरिन); दोनों ओंठ फूले, बदरंग और उनसे पपड़ी उठा करती है। ओंठके भीतरकी ओर और संयोगस्थलपर सफेद रङ्गके चिपटे जखम निकलते हैं (ऐ-नाई ओनेन्थि, मर्क, नैट-म्यूर, फाइटो, सोरिन)। ऊपरी ओंठपर लाली, खुजलानेवाले दाने निकलते हैं।

मुख-विवर।—दन्तक्षय रोगमें दाँतकी जड़ सब क्षय हो जाती है (सिफिलिन); पर दन्त-शिखर ज्यों-का-त्यों ठीक रहता है (दन्त-शिखर ध्वंश हो जाता है; जड़ ज्यों-की-त्यों रहती है—मेजेर, स्टेफ); दाँत सब मैले और पोले हो जाते हैं (आयोड) और चूर हो जाया करते हैं (फास, सिफिलिन); चाय पीनेकी वजहसे दाँतमें दर्द (चायना, सेलिन, सिपि) या ठण्डा पानी लगनेपर घटना और गर्म घरमें दर्दका बढ़ना (मुँहमें ठण्डा पानी धारण करनेपर घटना—काफि, बिस्मथ, रियुमैट, फेरम, मैग-कार्ब, नैट्र-सल्फ; गर्म कमरेमें बढ़ना—सिपा, कैमो, हिपर, कैलि-सल्फ, पल्स)। मसूढ़ा फूला, दर्द-भरा और गहरी लाल रेखाओंसे अङ्कित और उसके किनारे सफेद और पीब-भरे दिखाई देते हैं (ऐ-नाई, मर्क, साइलि)। क्षय हुए दाँतमें कुटकुटी, झुनझुनी हुआ करती है और उस तरफके माथेतक दर्द मालूम हुआ करता है। चबानेके समय या ठण्डी चीज़ लग जानेपर बहुत बढ़ जाता है। जीभपर दर्द-भरे जखम पैदा हो जाते हैं और उसमें जलन हुआ करती है

(ऐ-नाई)। जीभ फूली और दर्द भरी; जीभका अगला भाग छूनेपर इस तरहकी जलन होती है, मानो खाल उधड़ गयी हो। छाले या उपक्षत, मुख-विवरमें ऐसा मालूम होता है, मानो आग छू गयी हैं। इसी तरहकी जलन होती है (ऐ-सल्फ़, आइरिस, पल्स, सेङ्गियु)। जीभके नीचे अर्बुद (ऐम्ब्रा, मेजेर)—जीभके दोनों पार्श्वपर रोगका आक्रमण हो जाता है; अर्बुद नीली आभा लिये, लाल और फूली हुई शिराओंसे भरा; मांड़की तरह थुलथुला या पतला। प्रमेह रोगमें मुँहका स्वाद ऐसा हो जाता है, मानो चीनी खा ली है (ऐल्यू, पल्स)। नाक छिड़कनेपर उन दाँतोंमें दबाव मालूम होता है, जिनकी जड़ क्षय हो गयी है।

गलेमें।—कण्ठके भीतर सूखापन और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होना; निगलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठमें एक खोल अड़ी हुई है या कण्ठनाली चिपक गयी है (कैल्के, सिपिया)। कण्ठमें बहुत ज्यादा कफ सञ्चित होता है और वह बड़े कष्टसे निकला करता है (आर्जेण्ट-नाई, कैलि-बाई, फाइटो, माइरिका, नक्स)। लार निगलनेमें तकलीफ़ होती है (बूफो) और कानमें कड़ाक-सी आवाज़ हो जाती है (कैल्के, मिनियेन)।

पाकस्थली।—कभी खासी भूख और कभी अरुचि, तेज़ प्यास, विशेषकर रातमें (ऐसिट-क्रूड, आर्स, मर्क, सल्फ; प्यासके कारण नींद खुल जाती है—मार्फिया; सविराम ज्वरमें—साइक्लेमे); ठण्डा खान-पान चाहता है (ऐ-फास, ऐकोन, ऐण्टि-टार्ट, आर्स, सिना, फास, वेरेट)। डकार,—सड़ी गन्ध भरा (ऐसाफिट, कार्बो-वेज, सोरिन, पल्स) या कषाय (ऐसाफिट, न्यूफर-लूटिया); भोजनके समय डकारके साथ वायु निकलना। वमन, श्लेष्मामय या तैलाक्त या मेदमय पदार्थोंकी तरह (आयोड, मेजेर, नक्स-वोम)। पानी आदि पेय पदार्थ बड़ी आवाज़के साथ पेटमें घुसते हैं (ऐ-हाइड्रो, आर्स, सिना, कूप्रम, हेलिबो, लोरो, मस्कस)। उदरार्द्ध प्रदेश फूला और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता (बेल, साइकूटा, इग्ने, कैलि-कार्ब, नेट-म्यूर)। पाकाशयमें जगह-जगह सूजन और कड़ापन अनुभव होता है (ऐ-ऐसेट, कैलेण्डियु, मेजेर)।

अन्त्राशय।—कभी दाहिनी और कभी बायीं कोखमें सुई गड़नेकी तरह दर्द अनुभव होना (ग्रेफ, लाई, सिनाबियो)। बैठनेकी अवस्थामें

उदरमें इस तरहका दर्द मानो सुई गड़ रही है। उदरका ऊपरी अंश पोछे खिंचा या भीतरको ओर खिंचा मालूम होता है (श्वास ग्रहण करनेके समय उदरका ऊपरी अंश भीतरको ओर घुस जाता है और साँस छोड़नेके समय फैल जाता है—आर्जेण्ट-नाई)। पेट फूलना और इस तरहको कों-कों आवाज मानो कोई जन्तु बोल रहा है (कालोसिन्थ, ग्रैफ, लाई)। उदर बड़ा और फूला; रह-रहकर उदरमें जगह-जगह ऊँचा हो उठता है, मानो गर्भका बच्चा उदरमें घूंसा मार रहा है (सल्फ); उदरमें उलट-पलट, मानो कोई जीव हिल रहा है (एब्रटो, कैल्के-फास, क्रोकस, कुरारि, हैबाड, सैबाइना, सैङ्गियु, स्ट्रैमोन, स्ट्रान, सल्फ), विशेषकर जिन स्त्रियोंकी उमर अधिक हो गयी, पर विवाह न हुआ हो। अन्त्रशूल—एकाएक पेट बहुत जकड़ जाता है, मानो कोई जीव पेटमें धक्का देकर बाहर निकलनेकी चेष्टा कर रहा है। नाभि में बहुत दर्द; पुट्ठेकी ग्रन्थिमें बहुत दर्द होता है और वह फूल उठती है (मर्क, सल्फ, क्लिमेट, बेल)।

मलांत और मल।—मलद्वारके चारों ओर श्लेष्माके दाने निकलते हैं और उन्हें छूनेपर जखम हो जानेकी तरह और चलनेके समय उनमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है (इयुफ्रे, सिनेब)। रस-स्राव होनेकी वजहसे मल-द्वार हमेशा तर मालूम होता है (ऐ-नाई, ग्रैफ, रैटान, सिपि, सिडोरिन)। पाखाना जानेके समय मलका कुछ अंश निकलकर फिर भीतर घुस जाता है (सैनिक, साइलि)। मलद्वारके चारों ओरको त्वचाका क्षय हो जाना (कास्टि, ऐ-नाई, गैम्बोज, सल्फ) और उससे रस गिरता है (कास्टि)। अर्श—पाखाना जानेके समय इतनी तकलीफ होती है, कि रोगिनी पाखाने नहीं जाना चाहती (कैलि-कार्ब, सैबाइना); चलनेके समय अर्शमें भयानक जलन हुआ करती है (छूने या दबानेपर दर्द होता है—ऐब्रोट); मलद्वार फटा (रैटान, पियोनिया, साइलि), छूनेपर दर्द मालूम होता है। बवासीर, मसा फूला—बैठनेके समय उसमें दर्द होता है। मल-द्वार और जननेन्द्रियके बीचकी त्वचामें जलन होती है (प्लम्ब)। विटपदेशकी त्वचाके ऊपर श्लेष्माके दाने निकलते हैं और उससे रस निकला करता है तथा चलनेके समय उसमें उत्तेजना और करकराहट अनुभव होती है (मर्क-डाल)। पतले दस्त—रोज़ सवेरे (ऐलो, रियुमेक्स, सल्फ)। सवेरेके भोजनके बाद (ऐलो, आर्जेण्ट-नाई, कार्बोन-सल्फ, पोडो, ड्राम्बिड) और

गो-बीजका टीका लगवाने बाद (साइलि, वेरियोलिन, मेलेण्ड्रिन), कभी दर्द होता है और कभी किसी तरहकी तकलीफ नहीं होती (पोडो); मल चमकीला पीला (चेलिडो); पानीकी तरह बड़े वेगसे निकलता है और बहुत आवाज़ होती है (एलो, जैट्रोफा, पोडो, क्रोटन-टिग); मानो छतकी मोरीसे पानी गिर रहा है, इसी तरहके वेग और आवाजके साथ निकलता है (जैट्रोफा, एलो, पोडो, रैनान-बल्बो)। कब्जियत—कड़ा गांठ-गांठ मल (एल्यू. ब्राइ, ओपि, सल्फ)।

पेशाब।—दोनों मसाने प्रदाहित और इसी कारणसे दोनों पैर फूल जाते हैं (ऐ-बेन, टेरिब, चिमेफिला-ऐम, वैन्थ, सिनोसियो)। मलद्वारमें सुई गड़नेकी तरह दर्द पैदा होकर मूत्राशयतक चला जाता है। मूत्राशय संकोचन-शक्तिसे रहित (आर्स, कास्टि, डाल्का, जेल्स, नक्स-वाम। बार-बार पेशाबका वेग और बहुत ज्यादा पेशाब हुआ करता है, विशेषकर सन्ध्याके समय (लाइ, सल्फ) और मूत्रनालीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है (ऐ-नाइ, कैनाब, लाइ, नक्स-वोम)। अनजानमें पेशाब होता है, रातमें (ऐ बेन, एपिस, आर्जेण्ट-नाइ, आर्नि, बेल, कास्टि, फेरम, क्रियो, पल्स, सिपि, सल्फ) या खाँसनेपर (ऐ-फास, एपिस, कास्टि, क्रियो, लेके, नेट-म्यूर, पल्स, स्क्विला, वेरेट)। पेशाबके बाद कभी-कभी ऐसा मालूम होता है कि पेशाबकी नली होकर एक बून्द पेशाब निकल रहा है। पेशाब कर लेने बाद पेशाबका अन्तिम बून्द निकलनेके समय ऐसी तकलीफ होती है, मानो मूत्रमार्ग फटा जा रहा है (कैन्थ, कोना, नेट म्यूर, सार्सा)। लगातार पेशाबका वेग और कभी-कभी कई बून्द खून भी निकलता है (कैन्थ, मर्क, टेरिब)। पेशाब करनेके समय पेशाब नहीं होता, ऐसा मालूम होता है, कि एक फीतेसे मूत्रद्वार रोक दिया गया है। बार-बार और बहुत ज्यादा पेशाब हुआ करता है, मूत्रमें चीनी मिली रहती है (हेलोन, ऐ-लैक्टिक, टेरिब, युरेनियम-नाइ); पेशाबपर फेन पैदा होता है और वह बहुत देरतक रहता है (सिपा, चेलिडो, लैके, लाइ, पेरिइरा, स्पञ्जि); सवेरे पेशाब घोर लाल (कैन्थ, सिपा, चेलिडो); तली भूरी श्लेष्मामय; वात व्याधिमें घोर मेघकी तरह और धूएँकी तरह तली। पेशाब होता-होता बार-बार रुक जाता है (कोना); पेशाब निकलनेके समय मूत्र-नलीमें जलन होती है (आर्स, कोना, नेट-कार्ब); लारकी तरह श्लेष्मा निकलता है और पेशाबकी धार दो भागमें विभक्त हो जाती है (कैनाब-सेट, कैन्थ,

मर्क, रस); दूसरे दिन पीला श्लेष्मा निकला करता है, प्रमेह स्रावकी तरह (ए-नाई, केल्के, सल्फ, कैन्थ, नेट्र-मूर, पल्स, क्यूबेब)। लिंगमुण्डके भीतर नौकाकृति छिद्रमें चिलक मारा करती है और बहुत कामोद्दीपक सुरसुरी मालूम होती है। पेशाबका प्रबल वेग, दौड़कर जाना पड़ता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—रातमें लिङ्गमें कड़ापन और दर्द, रोगी सो नहीं सकता। जननेन्द्रिय-प्रदेशमें और लिङ्गमुण्डके ऊपर चकत्तेकी तरह, गन्दे, ऊँचे और लाल घेरेसे घिरे जखम पैदा हो जाते हैं (ए-नाई, सिनेबार शिश्नकी पीठपर उपदंशके जखम पैदा हो जाते हैं—लैक-कैन)। औपदंशिक जखम; ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो नोकीली सलाई गड़ रही है (ए-नाई)। प्रमेह,—पेशाबके समय मूत्रमार्ग दग्ध हो जाता है और फूल उठता है (ए-बेन, कैनाब-सेट, कैन्थ, कैप्स, मर्क-सोल, कोपेवा); पेशाबकी धार बँटी, स्राव पीला या हरे रङ्गका पानीकी तरह; लिङ्गके ऊपर मसे निकलते हैं और लिङ्गमुण्डमें जगह-जगह त्वचा क्षय हो जानेकी तरह मालूम होती है। प्रमेह स्राव रुका रहनेकी वजहसे सन्धिवात; मूत्राधार मुखशायिका ग्रन्थिका प्रदाह; प्रमेह-विष दोष और ध्वजभङ्ग हो जाया करता है (मिडोरिन, सार्सा, नेट्र-सल्फ); शिश्नको ढँकनेवाली त्वचा फूली (सिनेबार, कोरैल, नेट्र-कार्ब)। लिङ्गकी आवरक त्वचा और लिङ्गके ऊपर प्रमेह दोषकी वजहसे उत्पन्न और रस-स्राव करनेवाले श्लेष्माकी गोटियाँ निकला करती हैं (ए-नाई, सिनेबार—मुर्गेके पूंछकी आकृति—इयुफ्रे; पंखेकी आकृति—सिनेरा; सूतकी तरह पतला और लम्बा—स्टैफ)। बायाँ अण्डकोष ऊपर खिंचा (क्रोटोन-टिग, पैरिइरा-ब्रेवा, जिङ्कम)। अण्डकोषमें दर्द हुआ करता है, विशेषकर चलनेके समय। मुष्कके ऊपर मीठा या मधुकी तरह गन्धवाला पसीना निकलता है। निद्रित अवस्थामें भी हस्तमैथुन करनेकी दुर्दमनीय इच्छा (ब्यूफो, ओरिगीनम, आस्टिलेगो, हायो)। स्वप्नदोष, नींद खुल जाती है। रमणके बाद प्रमेहका स्राव फिरसे होने लगता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—योनिमार्गमें बहुत अधिक स्पर्श कातरताकी वजहसे संगममें तकलीफ हुआ करती है (लिसिन, प्लैट, बार्ब, काफि, क्रियो, सिपिया साइलि)। अत्यन्त असमयमें ही ऋतु हो जाता है और दो-एक दिन बाद बन्द हो जाता है; स्राव आरम्भ होनेके पहले बहुत ज्यादा पसीना हुआ करता है (हायो, रातमें—सल्फ)। जरायुका खाल उधड़ना देखनेमें

छालेकी तरह रहता है। प्रदर,—स्राव आँवमय और हरे रंगका (ऐ-नाई, कार्ब्बो-वेज, केलि-आयोड, सिपि)। फूनकोझीकी तरह मसे निकलते हैं, उनसे जभी-तभी खून तथा बहुत बदबू निकलती है (सेबाई, टेरेण्ट)। बायाँ डिम्बाधार प्रदाहान्वित (एपिस, लैके) हो जाता है—विशेषकर प्रत्येक ऋतुके समय—भयानक दर्द मालूम होता है और टहलने या घुड़सवारीमें भ्रमण करनेके समय जलन होती है; इसीलिये रोगिनीको बाध्य होकर सोये रहना पड़ता है। तर या रस-स्रावी और पीब पैदा होनेवाला और उसमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है तथा उससे खून निकला करता है (मर्क-डोल्स, हैड्राइना)। ऊपर सर उठाये अर्बुद निकलते हैं और जलन होती है (कार्ब्बो-ऐन, खुजली पैदाकर देता है—ऐ-नाई)। योनि,—मलान्त्र योजक-नालिका (ऐ-नाई, कैल्के, सिपि, लाई, लेके)। गर्भका भ्रूण इतने जोरसे हिलता है, (क्रोकस, ओपि, साइलि, सल्फ, आर्स, लाई, सोरिनम) कि रोगिनीकी नींद खुल जाती है (मिडोरिन)। मूत्राशयमें छेदनेकी तरह दर्द मालूम होना और पेशाबका वेग पैदा हो जाता है; दर्द तलपेटके बायें पार्श्वसे बायें पुट्ठे तक चला जाता है, तीसरे महीने गर्भपात (केलि-कार्ब, सेबाई, सिकेलि, ट्रिलियम, आस्ट्रिलेगो)। प्रसवका दर्द बहुत क्षीण और रह-रहकर रुक जाता है (नेट्र-म्यूर, सिकेलि); चलनेपर दर्द असह्य हो जाता है और रोगिनीको बाध्य होकर शय्याका आश्रय लेना पड़ता है; प्रमेह-दोषज उपसर्गकी वजहसे जरायुके संकोचनमें गड़बड़ी हुआ करती है।

श्वासयन्त्र।—ऐसा मालूम होता है, कि स्वरनलीके दरवाजेपर झिल्लीका एक टुकड़ा फैला हुआ है (लैके, फास)। श्वासाल्पता,—वायुनलीमें श्लेष्मा संचय होनेकी वजहसे (सेनेगा) या दोनों काख और ऊपरी उदरमें भरापन और संकोचनकी वजहसे (ऊपरी पेट और तलपेटमें पूर्णता और सङ्कोचनकी वजहसे—स्टैफाई)। श्वास रोग रातमें बढ़ जाता है (आर्स, अरम-ड्रैकान, ब्रोमियम, मिफाइटिस, शेष रात्रि ३ बजनेके समय प्रचण्ड आकार धारण करता है—केलि-कार्ब) और चेहरा लाल हो उठता है। लगातार खाँसी आया करती है (क्रियो, पल्स, साइलि) या ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों फेफड़े फैलते नहीं हैं। खाँसी,—सन्ध्याके बाद सोनेपर (केलि-कार्ब, पल्स); बायीं करवटसे दाहिनी करवट पलटा खानेपर बलगम ढीला हो जाता है। सिर्फ दिनमें या सवेरे शय्यासे उठनेके बाद या कोई ठण्डी चीज़ पीते या खाते ही खाँसी आया

करती है (कार्बो-वेज, लाई)। बलगम हरा (नेट्र-कार्ब, पल्स, साइलि, स्टैनम) और सड़े पानीकी तरह स्वादवाला (सिङ्को, कैलि-कार्ब, लाई)। भोजन करते ही खाँसी आने लगती है (सिङ्को)। ठण्डा पानी पीनेपर फेफड़ेमें तेजीसे सिकुड़ना फैलना या उसमें सुई गड़नेकी तरह दर्द अनुभव होता है। फेफड़ेसे रक्तस्राव, बहुत ज्यादा और बहुत बदबूदार स्राव।

हृत्पिण्ड।—कलेजेमें धड़कन—कभी-कभी होनेवाला, स्थिर रहने या शरीर हिलाने सभी अवस्थाओंमें हुआ करता है; सीढ़ी चढ़नेके समय (आर्स, कैल्के, सल्फ); सवेरे नींद खुलनेके समय उद्वेग-जनक हृद्स्पन्दन (कैल्के-फास); वक्षमें अधिक रक्त सञ्चय होना और कलेजा धड़कना, शब्द सुन पड़ता है (ऐमोन-कार्ब, स्पाइजि, सल्फ)।

गर्दन और पीठ।—गलेकी गांठें सब फूल उठती हैं। गलेकी त्वचा तेल लगी रहनेकी तरह लसदार और भूरे रङ्गकी। कमरसे दोनों पृष्ठ-फलकतक जलन हुआ करती है। पीठमें टपक। मेरुदण्ड टेढ़ा; रोगी टेढ़ा होकर खड़ा होता है और उसका पेट भीतरकी ओर धस जाता है। बहुत देरतक खड़े रहनेपर श्रोणि-देशमें ऐंठनकी तरह दर्द होता है (कास्टि, चायना); चलनेकी चेष्टा करनेपर रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह गिर जायगा। बैठे रहनेपर गलेकी अस्थि, मेरु-चंचु और उरुमें अकड़न मालूम होती है; बहुत देरतक बैठे रहने बाद सीधा खड़ा नहीं हो सकता। गलेका पिछला भाग और गलेके पीछे अकड़न।

प्रत्यङ्ग आदि।—कोहनीपर दादकी तरह खुजलानेवाले दाने सब निकलते हैं। उरु-शिखरकी सन्धिमें ऐसा मालूम होता है, मानो ढीली पड़ गयी है (सन्धि खिसक जानेकी तरह मालूम होना—इग्ने, पल्स); चलनेके समय दोनों पैर काठसे बने रहनेकी तरह सुन्न मालूम होते हैं (आर्जेण्ट-नाई, रस, सिकेलि)। हाथ और पैरकी अंगुलीके अगले भाग सब लाल और फूल उठते हैं और उनमें चुनचुनी हुआ करती है (ऐ-मूर, रस)। पैरकी अंगुलीमें बदबूदार पसीना निकला करता है (क्लिमेट, पल्स, साइलि)। पैरका पसीना रुकना (बेराई-कार्ब, नेट्र-मूर, पल्स, सिपि, साइलि)। तलपेटमें जालकी तरह शिराएँ सब दिखाई देती हैं। प्रत्यङ्ग और उरुकी सन्धिमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। प्रत्यङ्गोंको फैलानेपर सन्धियाँ कड़कड़ाती हैं।

नख सबका आकार टेढ़ा-मेढ़ा विकृत (कास्टि, ग्रैफ, सैबाड, साइलि)। कोमल और टूट जानेवाले (ऐ-नाई, एम्ब्रा, एण्टि-क्रूड, डायस्को, ग्रैफ, साइलि, केस्टोर-इक, सोरिन)। ऐसा मालूम होता है, मानो रोगीकी देह और प्रत्यङ्ग आदि काँचके बने हैं जो बहुत जल्दी टूट सकती हैं।

त्वचा।—शरीरकी त्वचा बहुत मलिन। उपसर जगह-जगह भूरे या भूरा सफेद मिला दाग दिखाई देता है। बड़े-बड़े मसे निकलते हैं, उसमें खोल रहती हैं (स्टैफ) और दबानेपर गिज-बिज करते हैं या ऐसा मालूम होता है, कि उनमें बोया है। शरीरका जो स्थान हमेशा ढँका रहता है, उन सब अंशोंमें दाने, फुन्सियाँ आदि नाना प्रकारके चर्मरोग प्रकट होते हैं और उन्हें खुजलानेपर जलन होती है। प्रत्यङ्गोंमें दर्द, मानो हड्डीसे मांस उखाड़ा जा रहा है (फाइटो ; मानो अस्त्रसे मांस काटा जा रहा है—रास)। बहुत दर्द करनेवाले घाव। दादके चकत्ते (मेजिर, रैनान-बल्बो, ग्रैफ, केलि-म्यूर)। उपझिल्लीमय कर्कटका अर्बुद (क्रियो, लेपिस-एल्बस, फाइटो)। चिपटे जखम, तलीमें नीले जखम। मसूरिका या चेचक—पीव संचयकी अवस्था (वैक्सिन, वेरियोलिन, मैलेण्ड्रिन)। टीका लगवानेके विषका दोष—दुबलापन, अनिद्रा, पतले दस्त, बेचैनी, कम्पन, स्नायुशूल, पक्षाघातके लक्षण इत्यादि (वेरियोलिन, एण्टि-टार्ट, साइलि)।

सार्वाङ्गिक।—प्रत्यंगादि जभी-तभी अवश हो जाते हैं। चलने-फिरनेके समय शरीर बहुत हलका मालूम होता है (ऐसेरम, वेली, स्टिक्टा), रह-रहकर ऊपरी अंगोंका फड़कना। सुबह बहुत कमजोरी मालूम होना, रोगी अङ्ग पतला और सुन्न हो जाता है (आयोड, फास, प्लम्ब, सिपि, स्टैनम, सल्फ)।

नींद।—बहुत गहरी नींद, सवेरे सहजमें ही नींद खुल जाती है। अनिद्रा, आँख बन्द करनेपर नाना प्रकारका भय दिखाई देता है (विकारावस्थामें—ब्राई), जो अंश दबाकर सोता है, उसमें बहुत दर्द होता है ; उत्ताप मालूम होना और चित्तकी चंचलताकी वजहसे अनिद्रा (इग्ने, केलि-ब्रोम)। बायीं करवट सो जानेपर उद्वेग पैदा करनेवाले सपने दिखाई देते हैं।

शीत, उत्ताप और पसीना।—उरूके स्थानसे शीत आरम्भ होता है। बायाँ अंग बहुत ठण्डा मालूम होता है ; ३ बजे ही विशेषकर इसका

आक्रमण होता है; गरमीके दिनोंमें भी शरीरका कोई अंश न ढँके रहनेपर रोगी शीतसे कांपा करता है। सवेरे गरमी और सन्ध्यामें जाड़ा। हाथ ठण्डा, परन्तु चेहरेपर बहुत उत्ताप मालूम होता है। उत्तापावस्थामें चिन्ता-पर-चिन्ता उदय हुआ करती है और बहुत प्यास लगती है। पसीना,—केवल खुले अंशमें या माथेके सिवा और समूचे शरीरमें हुआ करता है (केवल माथेमें—साइलि); सोते ही पसीना आरम्भ हो जाता है और जागनेपर सूख जाता है (सैम्बु इसके विपरीत है); रातमें बहुत ज्यादा खट्टी गन्धका या बदबूदार पसीना होता है।

वृद्धि।—छूनेपर, आँख बन्द करनेपर, शरीर हिलानेपर, चलने, बाँह लटका रखनेपर, रातमें, सीढ़ी चढ़नेपर, ठण्डी चीज़ पीने या भोजन करनेपर, ओकनेपर, ठण्डे पानीसे, चमकीली रोशनीमें, भोजनके बाद, रमणके बाद, धूपमें, नाक छिड़कनेपर और शुक्ल पक्षमें।

उपशम।—रगड़नेपर, दबानेपर, खुजलानेपर, पीछेकी ओर माथा झुकानेपर, ऊपरकी ओर देखनेपर और सर्दी लगनेपर (वातका दर्द)।

अनुपूरक।—मिडोरिन, सैबाई, नेट्र-सल्फ।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐ-नाई, कैनाब-सैट, कैन्थ, सिनेबार, कोपेवा, इग्ने, मर्क, पल्स, स्टैफाई, सल्फ, मिडोरिन, वेरियोलिन, ऐण्टि-टार्ट। ऐण्टि-टार्ट चेचकके दानेको पकाता है और थूजा उसे सुखा देता है।

अनुकूल सम्बन्ध।—मिडोरिन, मर्क और ऐ-नाई, इन कई दवाओंके बाद थूजाके प्रयोगसे विशेष लाभ हुआ करता है।

तुलनीय।—गो-बीजके टीकाका दुष्परिणाम—ऐपिस, ऐण्टि-टार्ट, वैकसि, वैरि। स्पर्श असह्य—ऐण्टि-क्रूड। नकसीर, प्रमेह, वात, अण्डकोष-प्रदाह—पल्स। अर्बुद, मसा, श्वेत-प्रदर—नाइट्रिक-एसिड, स्टैफिस। लाल रङ्गका उपदंशकी तरह जखम—कोनायम। उपतारा-प्रदाह—मर्क। उपदंश और माषक धातु—सिनाबेरिस। माषक धातु दोषज-उद्भेद—सार्सा। स्नायुशूल—स्पाइजिलिया। नख कोमल हो जाता है—फ्लूरि-ऐसिड। गोबीजके टीकाके बाद अतिसार—साइक्यूटा। चाय पीनेवालोंकी बीमारी—सिपिया। मूत्रयन्त्रकी बीमारी—कैन्थरिस। चर्बी मिले खाद्य भक्षणके कारण बीमारी—इपिकाक, पल्स, कार्बो-वेज। मलान्त्रका फटना—नाइट्रिक-ऐसिड, ग्रैफाइटिस।

योनिका आक्षेप—साइलिसिया। भ्रूणका हिलना—ओपियम, क्रोकस, साइलि, सल्फ। मुँहका स्नायुशूल—स्पाइजि। चमड़ी—कैनाबिस, मर्क, सल्फ, नाइट्रिक-ऐसिड, सिपिया, रस इत्यादि। बायें डिम्बाशयमें दर्द—कोलोसिन्थ, ब्रायो, फास्फोरस। जीभके दाहिने किनारेका जखम—साइलिसिया। अर्श—लाइकोपो। सर-दर्द—इग्ने, काफिया, साइलि। दाँतकी जड़का क्षय—मेजे। जीभका अर्बुद—ऐम्ब्राग्रि। बायें डिम्बाशयमें दर्द—क्रोकस, अस्टिलेगो। सवेरे दस्त (आध्मान वायु निकलना)—ऐलो। संगम करनेपर अपत्यपथमें स्पर्शका अधिक अनुभव होना—प्लैटिनम। पेशाब होने बाद जलन--सार्सा। नींदके समय पसीना, जागनेपर पसीना बन्द हो जाना (विपरीत—सैम्बुकस); नखका विकार या बेढङ्ग हो जाना—ऐण्टि-क्रूड। पतली चीज़ पीनेके कारण आवाज़—कूप्रम। खाँसनेपर पेशाब हो जाना--कास्टिकम। ठण्डी चीज़ चाहता है—फास्फोरस। ऋतुके समय स्तनमें दर्द और सूजन—कोनायम।

शक्ति।—मूल अर्कसे २०० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—६० दिन।

थाइरायोडियम

(THYRIODIUM)

दूसरा नाम।—आइडोथाइरिनम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—गण्डमाला, मेदाधिक्य या अधिक परिमाणमें मूत्रस्रावकी वजहसे शरीर दुर्बल और शीर्ण हो जाना लक्षणमें थाइरो आयोडिन निम्न-शक्ति सेवन करनेपर फायदा होता है।

सम्बन्ध।—**दोषघ्न।**—आर्स।

तुलनीय।—थाइरायेडिन, इयुरिया।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

टिलिया युरोपिया

(TILIA EUROPAEA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजो कलीसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—दाँत निकलना ; अजनानमें पेशाब ; नाकसे रक्तस्राव ; श्वेत-प्रदर ; स्नायुशूल ; अन्त्रावर्त्तन-प्रदाह ; आमवात ; दाँतमें दर्द ; जरायुका अपने स्थानसे हटना ; जरायु-प्रदाह प्रभृति रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास ।—चेहरेके स्नायुशूलमें विशेष लाभदायक है ; पहले चेहरेके दाहिनी ओर फिर बायीं ओर रोगका आक्रमण होता है। बार-बार छींक और पानीकी तरह नाकसे सर्दीका स्राव या दृष्टिकी अस्पष्टता इसका निर्णायक लक्षण है। प्रसवके बादके जरायु प्रदाहमें भी इससे विशेष लाभ होता है। तलपेटमें अत्यन्त स्पर्शकातरता अर्थात् स्पर्शका सहन न होना, जरायु आदिकी नीचेकी ओर तेज़ खींचन और चलनेके समय बढ़ना और पतला पानीकी तरह प्रदरका स्राव इसका एक प्रधान लक्षण है। आमवात—खुजलानेपर इस तरहकी जलन हुआ करती है, मानो आग छू गयी है। दोनों आँखोंकी पेशिक दुर्बलतामें भी इससे फायदा हुआ करता है। आँखके सामने मानो एक पतला पर्दा पड़ा हुआ है और रोगी उसकी ओटसे देख रहा है या ऐसा मालूम होना कि हरेक चीज़ दो दिखाई देती है।

लक्षणावली

मन ।—प्रणय रोग, किसी काल्पनिक सुन्दरीपर मन प्राण समर्पण किया करता है। उदास भाव, रोना स्वभाव।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, रोगी ढलमलाया करता है और उसके इस तरहकी अस्पष्ट दृष्टि रहती है मानो किसी महीन कपड़ेकी ओटसे देख रहा है (साइक्लेम, जेल्स, ऐनाक, कूप्रम, कैलि-बाई, फाइटो)। बार-बार छींक और पानीकी तरह नाककी सर्दी (मर्क-सल्फ, नक्स, नेट्र-मूर)। दो देखना—हरेक चीज़ दो दिखाई देती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—जरायु-प्रदेशमें भयानक दर्द (लैक-कैन, म्यूरेक्स सेपा)—दबानेपर बहुत दर्द होता है ; जरायु आदि वस्ति-गह्वरके सभी यन्त्र, मानो बड़े वेगसे नीचेकी ओर खिंच रहे हैं, ऐसा अनुभव होना और बहुत ज्यादा गर्म पसीना निकलना, पर उससे रोगीको आराम नहीं मिलता । प्रदर,—पानीकी तरह गोंद जैसा स्राव ; चलनेके समय बहुत बढ़ जाता है (इस्क्यु, बोवि, कार्बो-ऐन, मैग-म्यूर, नेट्र-म्यूर, सार्सा) । योनि वगैरहके बाहरी भागका लाल हो जाना और बहुत दर्द (सल्फ, थूजा) ।

त्वचा ।—बहुत खुजली और खुजलानेपर ऐसी जलन मानो आग छू गयी है (आर्टिका-इयु, एपिस, लिडम) । शरीरमें जगह-जगह लाल रङ्गके खुजलानेवाले दाने सब निकलते हैं । सोनेके बाद ही बहुत ज्यादा गर्म पसीना हुआ करता है (थूजा, सिङ्को, कार्बो-ऐन, मर्क, सेलिन, स्ट्रैमोन मिडोरिन) । वातका दर्द जितना बढ़ता है, पसीना भी उतना ही अधिक निकला करता है (फार्मिका, मर्क) ।

सार्वाङ्गिक ।—रमणियोंको प्रसवके बाद और बच्चोंको दाँत निकलनेके समय विशेष उपयोगी है । इसका प्रकोप बायें अङ्गपर ही अधिक दिखाई देता है ।

तुलनीय ।—प्रसवके बादका जरायु-प्रदाह—बेल । जरायुका नीचेकी ओर आकर्षण—लिलियम ।

वृद्धि ।—तीसरे पहर और सन्ध्याके बाद, गर्म घरमें, शय्याके उत्तापसे (पीले रङ्गके खुजलीके दाने) और शरीर हिलानेपर ।

उपशम ।—ठण्डे घरमें, निर्मल वायु सेवनके समय ।

सदृश ।—बेल, लिलियम-टाई, मर्क, आर्टिका-इयु ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे २०० शततमिक क्रम ।

टिटानियम

(TITANIUM)

परिचय ।—धातु-विशेष ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया —विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—असम्पूर्ण दृष्टि । एक आँखका केवल आधा अंश दिखाई देता है । बहुत जल्दी-जल्दी शुक्र निकल जाना, घाव, चेहरेका अर्बुदकी आकृतिका उद्भेद प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—नेट्रम कार्ब, लाइको, अरम, लिथि ।

शक्ति ।--निम्न-शक्ति ।

टोंगो

(TONGO)

दूसरा नाम ।—टोङ्का, डिपोटिरिक्स ओडोरेटा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखे बीजसे अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—उरु-शिखरमें दर्द ; अधकपारीका दर्द ; मुँहका स्नायुशूल ; दाँतमें दर्द प्रभृतिमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—अधकपारीका दर्द और चेहरेके स्नायुशूलमें इससे बहुत लाभ दिखाई देता है ; चक्षुगोलकके ऊपरवाले स्नायुमें उखाड़ने और टपककी तरह दर्द और रोगवाले पार्श्वकी आँखसे लगातार और बहुत ज्यादा आँसूका स्राव (स्पाइजि, इग्ने, आइरिस) । मस्तिष्कमें विशेषकर सरके पिछले भागमें जड़ता और मादकताका अनुभव होना तथा निद्रालुता । आँखकी ऊपरी पलक फड़का करती है । नाककी सर्दी, नाक रुकना,—रोगी मुँह फाड़कर साँस लेता और छोड़ता है (सेम्बियु, नक्स, स्पंजि, स्टिक्टा) । बायें पार्श्वके उरु और जानु-सन्धियोंमें उखाड़नेकी तरह दर्दवाली वात व्याधिमें

यह विशेष लाभदायक है। चलनेके समय प्रदरका स्राव अधिक हो जाना (टिलिया) और पाखानेके साथ दबाव या वेग देनेपर योनिसे श्लेष्माका स्राव (ग्रैफ, मैग-म्यूर, वाइबर्नम) इत्यादि कई इसके निर्णायक लक्षण हैं। दबाने और रोगवाला अंश हिलानेपर प्रत्यंग आदिका उखाड़नेको तरह दर्द घट जाया करता है। इसका अधिकांश दर्द बैठनेकी अवस्थामें और स्थिर रहनेपर पैदा होता है। इसका दोष सिर्का या विनिगर पीनेपर घट जाया करता है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—मिलिलोटस, स्याइजि, आइरिस, सेम्बु, नक्स-वोम, मैग-म्यूर, ग्रैफ, वाईबर्नम।

दोषघ्न ।—विनिगर।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३रा शततमिक क्रम।

टौक्सिकोफिस

(TOXICOPHIS)

परिचय ।—मोकासिन सर्प।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास ।—प्रति वर्ष एक ही समय रोगका लौट आना, पर प्रत्येक वर्ष ही रोगकी तेजी घटती जाना, दर्द आदिका स्थान बदलना, चर्मका सूखापन, शोथ प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ब्रोथ्रप्स, लैकेसिस।

शक्ति ।—६—३०।

ट्रैचिनस

(TRACHINUS)

परिचय ।—एक तरहकी मछली।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विषाक्त डैनेसे विचूर्ण तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—असह्य दर्द, सूजन, रक्तका विषाक्त होना, स्नायुशूल, जखम, सड़नेवाला घाव, दमा प्रभृति लक्षणोंमें फायदा करता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ग्रीथ्स, लैके ।

शक्ति ।—६—३० ।

ट्राइफोलियम प्रैटेन्सि

(TRIFOLIUM PRATENSE)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—कलीसे अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—कर्कट रोग ; कब्जियत ; खांसी ; कर्णशूल ; गलेका जखम ; अलिजिह्वामें दर्द प्रभृति रोगोंमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—इसका एक प्रधान निर्णयक लक्षण है—बहुत अधिक लारका स्राव । लाला-सञ्चय करनेवाली ग्रन्थिमें अधिक खून जमा होकर इसके बाद लगातार लार बहा करती है । स्वरनलीमें बहुत अधिक उत्तेजनाके कारण पैदा हुई आक्षेपिक खाँसी, हूप-खाँसी और खसड़ा या छोटी माताके बादकी खाँसीमें यह विशेष लाभदायक है । नाककी सर्दीकी बीमारीमें रातमें स्वरभङ्ग और श्वास-रोग हो जानेका उपक्रम और घरके बाहरकी निर्मल हवा लगनेपर खाँसीका पैदा होना इसका अन्यतम निर्णायक लक्षण है ।

लक्षणावली

मन ।—बहुत उदास भाव ; जिधर देखता है, उधर ही सब वैराग्य प्रकट करनेवाला दिखाई देता है । नींद खुलनेपर लगातार और तेज़ दर्द (लैके, नेट्र-म्यूर, नक्स, फास) । सरमें अधिक रक्त-संचय हो जानेकी तरह अनुभव होना । शिशुके माथेमें फोड़े पैदा होते हैं और उनपरसे सूखी पपड़ी निकला करती है । रोज़ तीसरे पहर ललाटमें सर-दर्द, दोनों कनपटियोंको दबा रखनेपर आराम मालूम होता है ।

मुख-विवर।—लगातार लार बहना (मर्क, कक्कस, इयुकेलिप्ट, ऐ-नाई, सिफिलिन)। वायुनली अत्यन्त सूखी और उसमें ऐसा मालूम होना मानो कुछ अड़ा हुआ है और इसी कारणसे रोगी बार-बार अपना कण्ठ साफ़ करता है और श्लेष्मा निकाल देनेकी चेष्टा करता है (कास्टि, नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यूर, ऐ-नाई, हाइड्रैस्ट, आर्जेण्ट-नाई)। समूची कण्ठनालीमें ऐसी उत्तेजना मालूम होती है, मानो वह जल गयी है (एइलैन्थस, इलैप्स, सैङ्गियु, सल्फ)। अलिजिह्वामें ऐसा तेज़ दर्द होता है, कि आँखमें पानी भर आता है (तकलीफ़से नींद खुल जाती है—मैन्सिनैला)। ऋतु-स्रावके समय मिचली।

मलान्त्र और मल।—बहुत कब्जियत, प्रत्येक बार पाखाना जानेके बाद कई बिन्दु काले रङ्गका खून निकला करता है और ऐसी भयङ्कर कूथन होती है, कि मानो आँतें आदि सब बाहर निकल पड़ेंगी। बीच-बीचमें ही तो दो-चार दिन पाखाना नहीं होता, मल आँव मिला (ग्रैफ, हाइड्रैस्ट)। अर्श—ऋतुके समय होता है; उसमें बहुत दर्द होता है, मलान्त्रके दाहिनी ओर मलद्वारतक थैलीकी तरह दिखाई देता है।

श्वासयन्त्र।—नाककी सर्दी—पानीकी तरह बहुत उत्तेजना पैदा करनेवाला श्लेष्माका स्राव हुआ करता है (आर्स, सिपा, आयोड)। रातमें स्वरभङ्ग, रह-रहकर श्वास-रोधका उपक्रम और खाँसीका प्रकोप; वृद्धि—निर्मल वायु लगनेपर (आर्स, कार्बो-वेज, नक्स, फास); गर्दन अकड़ जाया करती है और वक्षोस्थिसे चञ्चुकास्थितक संयोजक पेशी (Sterno mastoid) अकड़ जाती है; घटना—सेंकने और रगड़नेपर। आक्षेपिक (Spasmodic) खाँसी और हूप खाँसी—रातमें बढ़ना (कूप्रम, सेनेगा, स्टैनम, जिङ्कम)। खाँसते-खाँसते गला रुक जाना चाहता है (सिङ्कोना) और हिचकी आया करती है (टैबाक)। दोनों फेफड़े ऐसे मालूम होते हैं, मानो खूनसे भरे हैं और सांस लेने छोड़नेके समय ऐसा मालूम होता है कि उसमें घुसनेवाली हवा गर्म और मैली है। लगातार सूखी और कलेजा फाड़ डालनेवाली खाँसी। तालुमूल और वायुनलीमें उत्तेजनाकी वजहसे लगातार खुसखुसी खाँसी आया करती है और ऐसा मालूम होता है, कि तालुमूल और वायुनलीमें बहुत ज्यादा कफ़ सञ्चित हो गया है और जबतक वह न निकल जायगा, तबतक किसी तरह भी आराम न मिलेगा।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—आर्स, सिपा, आर्स-आयोड, मर्क, नेप्थैलिन, मिलिलोट, कक्कस।

तुलनीय ।—रक्त-संचार—मेलिलोटस। सर-दर्द—नेट्रम। नासा-रोग—लेकेसि। खाँसी और वक्षमें दर्द—ब्रायो, आर्निका, रैनान, रस।

शक्ति ।—मूल अर्कसे १म दशमिक क्रम।

ट्राइफोलियम रिपेन्स
(TRIFOLIUM REPENS)

दूसरा नाम ।—ह्वाइट क्लोवर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फूलसे विचर्ण और अरिष्ट दोनों आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—यह मम्पस या कर्णमूल ग्रन्थि प्रदाह रोगका एक उत्कृष्ट प्रतिषेधक है। लाला-ग्रन्थियोंमें विशेषकर जबड़ेके नीचे-वाली दोनों ग्रन्थियोंमें रक्तकी अधिकता मालूम होना, दर्द और कड़ापन तथा सोनेपर दर्दका बढ़ना, मुँहमें रक्तका स्वाद, ऐसा मालूम होना कि हृद्स्पन्दन बन्द हो जायगा, बैठने तथा हिलानेपर आराम मालूम होना (जेल्स) और अकेले रहनेपर बढ़ना इसका एक निर्देशक लक्षण है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—जैबोरैण्डी, पाइलोकार्पस, ट्राइफो-प्रेटे।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

ट्राइमिथाइलेमिनम
(TRIMETHYLAMINUM)

दूसरा नाम ।—प्रेपिलेमिनम, परिस्रुत—हेरि-ब्राइन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पानीमें गलाकर क्रम तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—नये वातकी ट्राइमिथाइलेमिन एक उत्कृष्ट औषध है। यह दवा सेवन करनेपर ज्वर और दर्द दो-एक दिनमें ही

घट जाते हैं। वातके कारण चेहरेका स्नायुशूल, कलाई तथा एँड़ीकी सन्धिमें दर्द, अंगुलीका सुन्न हो जाना और कनकनी, लिखना तथा सिलाईका काम न हो सकना प्रभृति लक्षणोंमें इससे बहुत अधिक लाभ होता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—चिनोपोडियम, वलवेरिया।

शक्ति।— १०, १५ बूंद दवा, आधासेर पानीके साथ मिलाकर प्रति २ घण्टेके अन्तरसे एक या दो चम्मचकी मात्रामें सेवन करना चाहिये।

ट्रिलियम पेण्डुलम

(TRILLIUM PENDULUM)

दूसरा नाम।—बर्थ रूट, बेटल स्नेकजूट्, पर्पलट्रिनियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़से अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मूत्राधारकी सर्दी; वयःसन्धि कालकी बीमारियाँ; बहुमूत्र; रक्तामाशय; मूर्च्छाके साथ रक्तस्राव; अर्बुदसे रक्तस्राव; प्रसवके पहले और बाद रक्तस्राव; रजमें बहुत ज्यादा खून जाना; जरायुसे रक्तस्राव इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—इससे नाना प्रकारका रक्तस्राव उत्पन्न और आराम हो जाया करता है। नाक, फेफड़ा, मसाना और जरायुसे अकारण (Passive) और चोट आदिके कारण (Active) रक्तस्राव हुआ करता है। प्रसवके बादके रक्तस्रावमें रोगिनीको क्षण-क्षण भरपर बेहोशी आ जाती है और बहुत ज्यादा रक्तस्राव हुआ करता है—हर बार शरीर हिलानेपर बढ़ना; क्षय-कास रोगमें रक्तमय बलगम (sputa), वयःसन्धि कालमें जरायुसे रक्त-स्राव, रोगिनी सुस्त हो पड़ती है, उसका कलेजा धड़का करता है, आँखके आगे अन्धेरा छा जाता है। कानमें भों-भों आवाज़ हुआ करती है और उदरोर्द्ध—प्रदेशमें एकदम खालीपन और सुस्ती मालूम होती है, इत्यादि कई इसके निर्णायक लक्षण हैं। रक्तस्रावके समय कमरमें बहुत दर्द हुआ करता है, मानो कमर टूट जायगी तथा रोगिनीको कमर अच्छी तरह बाँध देनेपर आराम मालूम होता है—यह भी इसका एक प्रधान सिद्धिप्रद लक्षण है।

लक्षणावली

मन ।—विषाद, बोलना नहीं चाहता, उत्कण्ठा, अस्थिरता ।

मस्तक ।—सरमें विशेषकर सवेरे उठनेपर दर्द । ललाटमें दर्द; झुकनेपर आराम मालूम होता है, परन्तु फिर सर उठानेपर बहुत दर्द मालूम हुआ करता है। दोनों चक्षुगोलक बहुत बड़े मालूम होते हैं और वे मानो अगले गह्वरसे बाहर निकल पड़ेंगे, इस तरह दर्द हुआ करता है। सभी चीजें नीली दिखाई देती हैं; धुंधली दृष्टि ; नाकसे रक्तस्राव ; बिना किसी कारणके हो, खून चमकीला लाल।

मुख-विवर ।—दाँत उखड़वानेपर दाँतकी जड़से बहुत अधिक रक्तस्राव होता है (हैमा, क्रियो)। सवेरे शय्यासे उठनेपर मुंहका स्वाद बहुत कड़वा मालूम होता है (आर्स, सिङ्को, मार्क-कोर)। ठण्डे पानीके सिवा और कुछ भी अच्छा नहीं लगता। (ऐकोन)। पाकस्थलीमें जलन आरम्भ होकर अन्ननलीके भीतरतक चली जाती है। रक्तस्रावमें उदरोर्द्ध-प्रदेश खाली और उसमें सुस्ती मालूम होती है।

मलान्त्र और मल—आमरक्त-रोग,—मलका अधिकांश भाग रक्तमय अर्थात् मलद्वारसे केवल खून निकलता है और यन्त्रणा (एक मात्रा ३रा शततमिक क्रम यथेष्ट है) ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ऋतु प्रत्येक दो सप्ताहका अन्तर देकर होता है; स्राव बहुत ज्यादा और एक सप्ताह या उससे भी कुछ अधिक देरतक स्थायी रहता है (कैल्के-फास,)। अधिक परिश्रम करने या बहुत दूरतक घुड़सवारीमें भ्रमण करनेपर इसी तरहका आर्त्तव-स्राव हुआ करता है। प्रसवके बादका रक्त-स्राव (बेल, कैमो, फेरम, इपिका, प्लैट, सैबाई, थ्लैस्पि)। रोगिनी क्षण-क्षण भरपर बेहोश हो जाती है (सैबाई); बहुत ज्यादा खून बेगसे (इपिका, लैक-कैन) निकला करता है; जरा हिलते ही स्राव आरम्भ हो जाता है। जरायुके अपने स्थानसे हटनेकी वजहसे; जिन्हें रजःस्राव होना बन्द हो गया हो उन्हें बहुत अधिक रजःस्राव (कैलि-ब्रोम, सैबाई, आस्टिलेगो); प्रत्येक दो सप्ताहका अन्तर देकर हुआ करता है। रजोनिवृत्तिके समय बहुत ज्यादा, दहीकी तरह या खून मिला प्रदरका स्राव हुआ करता है (बोरैक्स, काक्यु,

इपिका, सिपि) और इसी वजहसे रोगिनी सफ़ेद और रक्तशून्य हो जाती है (कैल्के, फेरम, हेलोन, फास)। अकारण ही चोट अथवा गिर जाने आदिके कारण गर्भपातकी आशङ्का पैदा करनेवाले रक्तस्रावमें रोगिनीका नितम्ब और दोनों उरु ऐसा मालूम होता है, कि टूट जायगा (हाइड्रैस्ट; लैके, जैन्थक्स) और मानो वस्तिके नीचेवाली हड्डियाँ सब टूट गयी हैं (काक्यु) रोगवाली जगह कसकर बाँध देनेपर आराम मालूम होता है। वयःसन्धिकालमें जरायुसे रक्तस्राव—प्रत्येक पक्षके अन्तमें स्राव होता है; रोगिनी सफ़ेद हो जाती है, दृष्टि अस्पष्ट, क़लेजा धड़कना, क़ान बन्द हो जाना और भों-भों शब्द आदि हुआ करता है (फेरम); उदरोर्द्ध-प्रदेशमें खालीपन और सुस्ती मालूम होती है और क्षण क्षण भरपर रोगिनीको बेहोशी आ जाती है।

श्वासयन्त्र।—क्षय कासकी सूचनावस्थामें खून मिला बलगम निकलता है (फेरम-फास, मिलिफोल, इपिक)। पूर्णावस्थामें भी इसका व्यवहार होता है—जब लगातार खाँसी हुआ करती है और बहुत ज्यादा पीवकी तरह बलगम निकला करता है। गलेमें ऐसा मालूम होना मानो कोई खानेकी चीजका टुकड़ा अटक गया है और इसी वजहसे लगातार खाँसी आना।

वृद्धि।—सीधे बैठनेपर; शरीर हिलानेपर।

उपशम।—झुकने और स्थिर रहनेपर।

सम्बन्ध।—**अनुपूरक**—(रक्तस्रावके सम्बन्धमें) कैल्केरिया फास्फोरिका।

सदृश।—इस्कुल-हिप, कैल्कै, चायना, हैमा, इपिक, क्रियो, मिलिफोल, सेबाई, सैङ्गियु, सिकेलि, श्लैस्पि, आस्टिलेगो।

तुलनीय।—उत्कण्ठा, बेचैनी—एकोन। रक्तस्राव—हैमा, चायना, सिकेलि सैंगु। चमकीला लाल खून—इपिक, साइलि। बहुत ज्यादा आर्त्तव-स्राव—कैल्कै-फास, सेबाइना। गाढ़ा थक्का-थक्का—श्लैप्स।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठा शततमिक क्रम।

ट्रायस्टियम

(TRIOSTEUM PERFOLIATUM)

दूसरा नाम।—फीवर वाट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़से अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—दमा ; पीठमें दर्द ; सर-दर्द ; बहुव्यापक सर्दी ; स्तनके नीचे दर्द ; सन्धिका कड़ापन ; सान्निपातिक ज्वर ; आमवात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—सर-दर्द, अधकपारी रोगमें उठकर खड़े होनेपर बहुत मिचली पैदा हो जाती है और पित्तमय पदार्थ वमन हुआ करता है (कैल्के, आइरिस) ; दर्द सरके पिछले भागमें और माथेमें दाहिनी ओर अधिक होता है। उदरामय, मल पानीकी तरह और फेनभरा ; पाखाना जानेके समय पेटमें भयानक दर्द, मिचली और वमन हुआ करता है और पाखाना हो जानेपर निचला अंग सुन्न हो जाता है। मलद्वारमें सुरसुरी होकर उसमेंसे अनजानमें श्लेष्मा या आम निकलती है (ऐगार, कोलचि, ग्रैफ, ऐ-नाई)। सर्दी, सारे शरीरमें, विशेषकर माथेमें और निम्नाङ्गमें दर्द और उत्ताप अनुभव होता है। पाचन क्रियामें विकारके कारण आमवात।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐ-नाई, एपिस, आइरिस-वर्सि, लैचनैन्थिस, इयुपेट-पार्फोल।

तुलनीय।—पाकाशयिक ज्वर—बैप्ट। आमवात—ब्रायो, रस। निद्रालु, पर नींद नहीं आती—बेल।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३रा दशमिक क्रम।

ट्रिटिकम रिपेन्स

(TRITICUM REPENS)

दूसरा नाम ।—काउच-ग्रास, ड्रिच ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—इस दवाकी क्रिया खासकर मूत्र-यन्त्रपर दिखाई देती है। बार-बार पेशाब लगना, पेशाबके समय कष्ट, मूत्र-कृच्छ्रता, पेशाबका वेग रोकनेकी शक्तिका न रहना, मूत्राशय प्रदाह, प्रभृति उपसर्गोंमें ५-१० बूंदकी मात्रामें पानीके साथ बार-बार सेवन करनेपर रोगकी तकलीफ़ तुरन्त घट जाती है और रोग जड़से आराम हो जाता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ट्रेडिस्केण्टिया, चिमाफिला, सेनिसियो, टूटू, इयुवा-उर्सी ।

शक्ति ।—मूल अर्क ५ से १० बून्द मात्रामें। थोड़ी-थोड़ी देरके अन्तरसे प्रयोग करना चाहिये ।

ट्रेडिस्केण्टिया

(TRADESCANTIA)

दूसरा नाम ।—ट्रेडिस्कैण्टिया-डियुरोटिका ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—कान और नाकसे रक्तस्राव । पेशाब करनेके समय दर्द, सूजाक, अण्डकोष प्रदाह प्रभृति इसके निर्देशक लक्षण हैं ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—टिटिकम, पोलिड्रिकम-कुनी ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

ट्राम्बिडियम

(TROMBIDIUM MUSCÆ DOMESTICAE)

दूसरा नाम और प्रस्तुत-प्रक्रिया।—गृह-मक्षिकाके अङ्गमें उत्पन्न एक तरहके कीड़ेसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—मलान्त्रका अपने स्थानसे हटना; अतिसार; रक्तामाशय; वंक्षण-सन्धिमें दर्द; यकृतमें दर्द; नाककी सर्दी; दन्त-शूल इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—रक्तातिसारमें मल बहुत पतला; भूरे रङ्गका, खून-भरा तथा यदि बहुत अधिक कूथन भी हो, खासकर यदि खाने-पीनेके बाद ही बढ़ जाये, तो ट्राम्बिडियम एक बहुत ही लाभदायक दवा मानी जाती है। एक विशेष लक्षण इसका यह है कि खाने-पीनेके बाद ही रोग बढ़ जाता है। यह लक्षण शरीरके चाहे जिस अंशमें उत्पन्न हो। यकृतमें बहुत अधिक रक्त-सञ्चय और सवेरे शय्यासे उठनेपर प्रबल वेगके साथ पतले दस्त आना। पाखाना होनेके समय उदरके बायें पार्श्वमें नीचेकी ओर शूल वेधनेकी तरह तेज़ दर्द। माथा और मूछोंमें खुजली; खड़े होते ही मूर्च्छा, बेचैनी और स्थिर रहनेपर सुस्ती इत्यादि कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—दिनमें बहुत बकवाद करता है, कभी-कभी चुप हो जाता है; किसीसे बात नहीं करता।

मस्तक।—शय्यासे उठनेकी जितनी ही बार चेष्टा करता है, उतनी ही बार सरमें चक्कर आ जाता है (आर्निका, गुयायेक, पल्स, ब्राई)। मूर्च्छा आ जाना चाहती है (ब्राई, सिपि) और रोगीको तुरन्त बैठ जाना पड़ता है। माथा बहुत छोटा मालूम होता है (कैम्फो, जेल्स, मिडोरिन, पल्स)।

पाकाशय और अंत्राशय।—खाने बाद अजीर्ण पदार्थका (कैल्कि, कार्ब्, ग्रैफा, फास) स्वादकी डकार। उदरके ऊपरवाले प्रदेशमें मरोड़ खानेकी

ट्रिटिकम रिपेन्स

(TRITICUM REPENS)

दूसरा नाम ।—काउच-ग्रास, ह्विच ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—इस दवाकी क्रिया खासकर मूत्र-यन्त्रपर दिखाई देती है । बार-बार पेशाब लगना, पेशाबके समय कष्ट, मूत्र-कृच्छ्रता, पेशाबका वेग रोकनेकी शक्तिका न रहना, मूत्राशय प्रदाह, प्रभृति उपसर्गोंमें ५-१० बूंदकी मात्रामें पानीके साथ बार-बार सेवन करनेपर रोगकी तकलीफ़ तुरन्त घट जाती है और रोग जड़से आराम हो जाता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ट्रेडिस्कैण्टिया, चिमाफिला, सेनिसियो, टूटू, इयुवा-उर्सी ।

शक्ति ।—मूल अर्क ५ से १० बून्द मात्रामें । थोड़ी-थोड़ी देरके अन्तरसे प्रयोग करना चाहिये ।

ट्रेडिस्केण्टिया

(TRADESCANTIA)

दूसरा नाम ।—ट्रेडिस्कैण्टिया-डियुरोटिका ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—कान और नाकसे रक्तस्राव । पेशाब करनेके समय दर्द, सूजाक, अण्डकोष प्रदाह प्रभृति इसके निर्देशक लक्षण हैं ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—टिटिकम, पोलिड्रिकम-कुनो ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

ट्राम्बिडियम

(TROMBIDIUM MUSCÆ DOMESTICAE)

दूसरा नाम और प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—गृह-मक्षिकाके अङ्गमें उत्पन्न एक तरहके कीड़ेसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—मलान्त्रका अपने स्थानसे हटना; अतिसार; रक्तामाशय; वंक्षण-सन्धिमें दर्द; यकृतमें दर्द; नाककी सर्दी; दन्त-शूल इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास ।—रक्तातिसारमें मल बहुत पतला; भूरे रङ्गका, खून-भरा तथा यदि बहुत अधिक कूथन भी हो, खासकर यदि खाने-पीनेके बाद ही बढ़ जाये, तो ट्राम्बिडियम एक बहुत ही लाभदायक दवा मानी जाती है। एक विशेष लक्षण इसका यह है कि खाने-पीनेके बाद ही रोग बढ़ जाता है। यह लक्षण शरीरके चाहे जिस अंशमें उत्पन्न हो। यकृतमें बहुत अधिक रक्त-सञ्चय और सवेरे शय्यासे उठनेपर प्रबल वेगके साथ पतले दस्त आना। पाखाना होनेके समय उदरके बायें पार्श्वमें नीचेकी ओर शूल बेधनेकी तरह तेज़ दर्द। माथा और मूछोंमें खुजली; खड़े होते ही मूर्च्छा, बेचैनी और स्थिर रहनेपर सुस्ती इत्यादि कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन ।—दिनमें बहुत बकवाद करता है, कभी-कभी चुप हो जाता है; किसीसे बात नहीं करता।

मस्तक ।—शय्यासे उठनेकी जितनी ही बार चेष्टा करता है, उतनी ही बार सरमें चक्कर आ जाता है (आर्निका, गुयायेक, पल्स, ब्राई)। मूर्च्छा आ जाना चाहती है (ब्राई, सिपि) और रोगीको तुरन्त बैठ जाना पड़ता है। माथा बहुत छोटा मालूम होता है (केम्फो, जेल्स, मिडोरिन, पल्स)।

पाकाशय और अंत्राशय ।—खाने बाद अजीर्ण पदार्थका (केल्के, कास्टि, ग्रेफा, फास) स्वादको डकार। उदरके ऊपरवाले प्रदेशमें मरोड़ खानेकी

तरह दर्द ; वृद्धि—रातमें भोजनके बाद (कोलोसिन्थ, साइलि)। अन्त्राशयमें मानो आँतें आदि मरोड़ खा रही हैं, इस तरहका दर्द ; खाने-पीने बाद बढ़ जाती है (कोलोसिन्थ, नेट्र-कार्ब)। भयानक अन्तशूल—रोगी तकलीफसे चिल्लाया करता है (बेल, कैमो)। उदरमें स्पर्श एकदम सहन नहीं होता, छूते ही मानो रोगीको जान निकल जाती है (एपिस, बेल, ब्राई, नक्स, इपिका, कोना, डायस्को)। शय्यासे उठते ही पेटमें मरोड़ हुआ करता है और रोगीको बाध्य होकर पाखाना जाना पड़ता है। मल भूरा और पतला। पाखाना होनेके बादसे सवेरे भोजनके पहलेतक आराम मालूम होता है ; पर ज्यों ही कुछ खाता है, त्यों ही और भी तेजीसे पेटमें दर्द होने लगता है और रोगीको फिर पाखाने जाना पड़ता है। इतनी कूथन होती है कि काँच निकल आती है और इसके बाद ही मलद्वारमें जलन हुआ करती है ; दिनके दस बजेनेके समय एकाएक पेट, खासकर उदरके बायें पार्श्वमें दर्द होकर पाखाना लग आता है ; यकृतमें अधिक रक्तसञ्चय होता है, पेटमें इस तरहकी स्पर्शकातरता अनुभव होती है, मानो जखम हो गया है और सवेरे शय्यासे उठते ही पतला पाखाना हुआ करता है।

मलान्त्र और मल।—रक्तातिसार—मल बहुत पतला, 'मल आँव मिला और खूनसे भरा ; किसी-किसी स्थानपर या लगातार मलद्वारसे मलके कण सब निकला करते हैं ; वृद्धि—सवेरे (पोडो, रियुमेक्स, सल्फर, नेट्र-सल्फ) और खाने-पीने बाद (आर्जेण्ट-नाई, आर्स, क्रोटोन, लाई, पोडो, सल्फ)। पाखाना होनेके पहले उदरके बायें पार्श्वमें भयानक दर्द मालूम होता है और पसीना निकला करता है (अन्त्रशूल—कोलोसिन्थ, डायस्को ; पसीना निकलना—एकोन, बेल, डालका, मर्क), यह नीचेकी ओर चला आता है ; पाखाना हो जाने बाद भी दर्द बन्द नहीं हो जाता ; पाखाना होनेके समय भी उदरमें दर्द हुआ करता है, कूथन मालूम होती है, पीठमें जाड़ा मालूम होता है और बहुत वेग पैदा हो जाता है ; पाखाना होने बाद प्रबल कूथन होनेकी वजहसे मलान्त्र बाहर निकल आती है, मलद्वारमें जलन हुआ करती है और रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है।

सार्वाङ्गिक।—हृद्-प्रदेशमें, बायें कन्धेमें, बाँहमें और जानु सन्धिमें वातका दर्द। बहुत सुस्ती और बेचैनी ; किसी तरह भी स्थिर नहीं रह सकता। जीभपर मैलकी मोटी तही चढ़ी रहती है (ब्राई)। अपनी जगहसे

उठकर चलना आरम्भ करते ही बायें उरु शिखरमें दर्द मालूम होता है और इसी वजहसे रोगी लङ्गड़ाया करता है। जरा चलते ही दर्द अच्छा हो जाता है (रस)।

वृद्धि ।—नाक छिड़कनेपर, निगलनेके समय, शय्यासे उठनेपर, निर्मल वायु लगनेपर और खाने या पीने बाद ही।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—ऐकोन, आर्निका, आर्जेण्ट-नाई, आर्स, बेल, ब्राई, कैल्के, क्रोटोन, डालका, लाई, नैट-सल्फ, पोडो, रियुमेक्स, सलफर।

दोषघ्न ।—स्टेफिसेग्रिया (दाँतमें दर्द), मर्क (अतिसार)।

तुलनीय ।—वातमें—लिडम। अतिसारमें—सल्फ। मलद्वारमें सुई गड़नेकी तरह दर्द—इग्ने, नाइट्रिक-ऐसिड। इसके साथ ही मलान्त्रका अपने स्थानसे हटना—पोडो।

शक्ति ।—६ठा दशमिकसे २०० शततमिक क्रम। साधारणतः १२ और ३० शततमिक क्रम व्यवहृत होता है।

ट्रापियोलम

(TROPÆOLUM)

दूसरा नाम ।—इण्डियन-क्रेस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—पेशावमें अधिक दुर्गन्ध इसका निर्देशक लक्षण है।

टियुबर्क्युलिनम

(TUBERCULINUM)

दूसरा नाम ।—टियुबर्क्युलिन आव काच।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मनुष्यके टियुबर्कुल बेसिलाईसे क्रम तैयार होता है (नोसोड्समें "बेसिलिनम" देखिये)।

टर्नेरा एफ्रोडिसियाका

(TURNERA APHRODESIACA)

डेमियेना (Damiana) देखिये।

टुसिलेगो-फर्फोरा

(TUSSILAGO-FURFORA)

दूसरा नाम।—कामन फाल्स-फुट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—खाँसी और गण्डमाला रोगकी एक बढ़िया दवा है। क्षय रोगमें अन्यान्य औषधोंके साथ नियमित भावसे इस दवाका मूल अर्क कई बूंद सेवन करनेपर फायदा दिखाई देता है। गनोरियामें भी इसका प्रयोग होता है।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

टुसिलेगो फ्रैग्रेन्स

(TUSSILAGO FRAGRANS)

दूसरा नाम।—इटालियन टुसिलेगो।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—पाकाशयका शूल, स्थूलता और रक्त प्रधान धातु लक्षणमें उपयोगी है।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

टुसिलेगो पेटोसाइटिस

(TUSSILAGO PETASITES)

दूसरा नाम।—बिटर वाट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया। —इसके ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— प्रमेह ; स्वर-दर्द ; कटिवात ; रातमें पसीना ; चर्ममें जखम ; अलिजिह्वामें जलन।

उपयोगिता और आभास।—नये और पुराने प्रमेह रोगमें इसका व्यवहार प्रसिद्ध है। नयी अवस्थामें लिङ्ग-मुण्डके भीतरवाले नौकाकी आकृतिके छेदमें तेज़ डंक मारनेकी तरह दर्द, खासकर उनके जो गुरुपाक चीजें खाते हैं और स्वास्थ्यका नियम उल्लङ्घन किया करते हैं। स्राव पीला, सफेद रंगका और गाढ़ा ; मूत्रमार्गमें कीड़ा रेङ्गनेकी तरह सुरसुरी, शुक्ररज्जुमें चिलक मारनेकी तरह दर्द और दाहिने अण्डकोषका ऊपरकी ओर खिंचना, भयंकर यन्त्रणा-दायक-प्रदाह, शिश्न फूला और दर्द भरा, पेशाब करनेके समय दर्दसे मानो प्राण निकल जाते हैं और खून निकला करता है। रोगीको ज्वर-भाव होता है और वह छटपटाया करता है—इस तरहका सूजाक भी इससे दबता और आराम हो जाया करता है। प्रमेहका स्राव रुकनेकी वजहसे आँखोंका प्रदाह और अण्डकोषका फूलना भी इसके विषयके अन्तर्गत है (पल्स, सल्फ, ऐ-नाई)। भयंकर यन्त्रणा-जनक कटिवात भी इससे अच्छा हो जाया करता है (ऐण्टि-टार्ट, ऐक्टि-रेस, रस)।

सम्बन्ध।—**सदृश।**—ऐक्टिया, ऐण्टि-टार्ट, आर्जेण्ट-नाई, कैनाब-सेट, कैन्थ, पल्स, थूजा।

तुलनीय।—कटिवात—ऐण्टि-टार्ट, सिमिसि। प्रमेह—थूजा।

शक्ति।—मूल अर्क और प्रथम दशमिक क्रम।

अलमस फ्लुवा

(ULMUS FLUVA)

परिचय ।— रेड-एम, मूज-एम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी छालसे अरिष्ट या सूखी छालसे काढ़ा या विचूर्ण तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—कब्जियत, अर्श, बहरापन, पैरका सुन्न होना, चींटी चलती है, ऐसी सुरसुरी, हाथ-पैरका वात और इन सब स्थानोंकी पेशियोंमें स्नायुशूलके लक्षणमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—मूल अर्क १० से २० बून्द मात्रामें और काढ़ा ।

यूपस टियुटे

(UPAS TIEUTE)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—छाल और मूलसे अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अन्धापन ; आँखोंका प्रदाह ; आक्षेप ; सर्दी ; सर-दर्द ; कलेजा काँपना ; यकृतकी बीमारी ; नखकी बीमारी ; पलकोंका पक्षाघात ; गृध्रसी ; बहुत ज्यादा इन्द्रिय सेवन ; मेरुदण्डमें दर्द ; धनुष्टङ्कार ।

उपयोगिता और आभास ।—धनुष्टङ्कार आदि आक्षेप और एकाएक श्वास-रोध रोगमें यह बहुत ही लाभदायक है । रोगी बहुत चिड़चिड़ा हो जाता है, उसके मस्तिष्कमें धीमा-धीमा दर्द मालूम होता है और दाहिने फेफड़ेके भीतरसे छुरी मारनेकी तरह दर्द यकृतकी ओर बढ़ता है । हाथ और पैर सुन्न मालूम हुआ करते हैं ।

लक्षणावली

मन ।—किसी तरहका भी मानसिक परिश्रम करनेकी इच्छा न होना । विषादोन्मादग्रस्त । आँखोंमें आँसू भर आया करता है और रोगी जबर्दस्ती

उसे रोकता है। अपने बन्धु-बान्धवोंके प्रति अनादर प्रकट करता है (फेरम—अपने बन्धु-बान्धवोंसे मिलना नहीं चाहता—क्लिमेट, कैलि-फास, सिपि, स्टैनम, थूजा ; जो पास आता है, उसीके प्रति उदासीनता प्रकट करता है। किसी विषयमें मनोयोग देनेमें उसे बहुत तकलीफ़ होती है। स्वभाव बहुत चिड़चिड़ा।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, गिर जाना चाहता है (ग्लोन, जेल्स, टेरिब); सरमें चक्कर आकर दबावकी तरह सर-दर्द पैदा हो जाता है और रोगीको बहुत सर्दी मालूम होने लगती है। नींद खुलनेपर समूचे माथेमें टपककी तरह दर्द होता है (अरम, पोडो, ऐसेरम); निर्मल वायुके सेवनसे आराम मालूम होता है। माथेके दाहिने पार्श्वके गभीरतम प्रदेशमें बेधनेकी तरह तेज़ दर्द। दोनों कनपटी, खासकर बायीं कनपटीमें दबाव और खींचनकी तरह दर्द होता है और रोगवाली जगह गर्म मालूम होती है। माथेमें गरमी और चेहरा लाल हो जाता है। मस्तिष्कके गभीरतम प्रदेशमें (वेसिलिनम) और ब्रह्मतालुके मध्यमें बेधनेकी तरह तेज़ दर्द।

आँख।—दोनों आँखें गड़हेमें धँसी और नीले छेदसे घिरी। आँखमें ऐसा अनुभव होना कि मानो कुछ गिर गया है (ऐ-फ्लू, कैल्के-सल्फ, इयुफ्रे, नेट-म्यूर, सल्फ)। दाहिनी पलकमें भीतरकी ओर छोटे छोटे दाने निकलते हैं (मर्क, टेल्यू)। दृष्टि-शक्ति क्षीण मालूम होती है—जैसा बहुत अधिक इन्द्रिय अत्याचारके बाद होता है (ऐ-फास, कैलि-कार्ब, बेल)। रोज़ सवेरे दृष्टि क्षीण हो जाती है और आँखसे आँसू गिरने लगता है। पलकें सब इतनी भारी मालूम होती हैं, कि वे आप-से-आप बन्द हो जाती हैं, मानो बहुत नींद आती है (कोलोफिल, कास्टि, जेल्स, ग्रेफ, सिपि, लेक-कैन)। आँखोंके प्रदाहमें आँख तथा आँखके गड़हेमें दर्द मालूम होना (फास, मर्क-सोल)। पलकसे खून गिरा करता है (हिपर, नेट्र-म्यूर, नक्स, सल्फ) पलकके किनारे और पलकोंमें भयानक खुजली और उत्तेजना अनुभव होना (आर्जेण्ट-नाई, हिपर, मिडोरिन, मर्क-कोर, सोरिन)। दृष्टि अस्पष्ट ; पढ़नेके समय अक्षर सब आपसमें मिल जाते हैं (कोना, फेरम, ग्रेफ, लाई, मर्क्यूरियस-पेरेन, साइलि); आँखके सामने अँधेरा दिखाई देता है (ऐल्यू, कैम्फो, मर्क, सल्फ)। घरके बाहर रहनेपर अस्पष्ट दृष्टि और ऐसा मालूम होता है, मानो आकाशमें

अनगिनती साफ़ और चमकीले बुलबुले उड़ रहे हैं। झुकने बाद सीधे होकर खड़े होनेपर दृष्टिके सामने अंधेरा छा जाता है (बेल, काफि, फास), मानो उसका सब खून माथेमें जाकर इकट्ठा हो रहा है।

नाक।—सन्ध्याके आरम्भके पहले और संध्याके समय नाकसे पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव होता है (सिपा, रियुमेक्स, जिङ्क)। रातमें पहले दाहिनी, फिर बायीं नाकका छेद रुक जाता है और इसी तरह पर्यायक्रमसे हुआ करता है और इसी कारणसे नींदमें बाधा पड़ती है (बोर, ब्रोम, लेक-कैन)। बायाँ रंध्र रुक जाया करता है और उससे हरे रङ्गका श्लेष्मा निकला करता है। नाकमें सड़े कूड़ेकी गन्ध मिलती है (मुर्गी या कबूतर आदिके मलकी गन्ध—ऐनाका ; सड़ी गन्ध—पैरिस, फास, सिपि)।

मुखमण्डल।—पीली मूर्त्ति (कैल्के, चेलिडो, कैमो, चायना, लाई, मर्क, सिपि), बायाँ गाल लाल और गर्म, दाहिना गाल मलिन और ठण्डा (ऐकोन, कैमो, इपिक, लैके, मस्कस, नक्स-वोम)। ओंठके ऊपर दाने सब निकलते हैं। जीभ सूखी उसमें जलन (ऐ-ग्राक्सेल, हायो)। इतने मोटे लेपसे ढकी रहती है, कि उस लेपको छीलकर निकालना पड़ता है (मोटे सफ़ेद लेपसे ढकी—ऐण्टि-क्रड, ब्राई, मर्क, नक्स-वोम छीलकर भी नहीं निकाला जाता—चिनिन-सल्फ)। बोलनेके लिये मुँह नहीं फाड़ सकता (लैके, कास्टि, मर्क-कोर, फास)। लार अधिक बहना, लार खट्टी मालूम होती है।

गलेकी भीतर।—कण्ठमें खाल उधड़ जानेकी तरह जलन और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह अनुभव होना। खाँसनेपर कण्ठमें बहुत जलन और ऐसा मालूम होता है, मानो फट जायगा। वायुनलीभुजके भीतरका श्लेष्मा बड़े कष्टसे निकलता है (ऐण्टि-टार्ट, आर्स, इपिक)। कण्ठमें मानो नोकीली सलाई गड़ी हुई है, जो गड़ रही है। इसी वजहसे निगलनेमें कष्ट (ऐ-नाई, अर्जेण्ट नाई, डलिकस, हिपर); मानो अन्ननलीमें कुछ अड़ा हुआ है, इसी वजहसे उसमें अन्नका ग्रास प्रवेश नहीं कर पाता (ऐनाक, बेल, कार्बोन-सल्फ, लाई)। जलीय या तरल पदार्थ निगलना बहुत कष्टकर मालूम होता है (चिनिन-आर्स, कूप्रम, इग्ने, आयोड, लैके, मर्क)। कण्ठनालीके बायें पार्श्वमें दबानेपर श्वास रुकना चाहता है।

पाकाशय और अन्त्राशय।—भूख बिलकुल नहीं लगती। सब तरहके पदार्थ, खासकर माँस और अण्डेसे अत्यन्त अरुचि (फेरम, कोलचि, नक्स, पेट्रोल, साइलि, सल्फ) और यह माँस और अण्डेकी बात याद आते ही मिचली पैदा हो जाती है (कोलचि)। भूख अच्छी रहती है; परन्तु प्रथम ग्रास खाते ही तृप्ति हो जाती है, फिर खानेकी इच्छा नहीं रहती (कार्बोन-सल्फ)। प्यास लगनेपर उसी समय पानी पिये बिना रह नहीं सकता। भोजन करने बाद दिनभर जो कुछ खाया है, उसीकी डकार आया करती है (कैल्के, कास्टि, ग्रैफ, फास, सल्फ)। यकृत-प्रदेशमें दबावकी तरह दर्द। यकृत और दाहिने मसानेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (बार्ब, लाइ, चेलिडो, कैलि-कार्ब)।

पुं-जननेन्द्रिय।—रमणके समय कष्ट और बहुत बेचैनी मालूम होती है; रमणके बाद कई मिनटोंतक बहुत अवसन्नता मालूम होती है (सीड्रन)।

श्वास-यन्त्र।—स्वरभङ्ग और स्वरलोप—सूखी खाँसी—खाँसनेके समय स्वर और वायुनलीमें ऐसा अनुभव होता है, मानो जखम हो गया है (मिडोरिन, नक्स-मस, फास, सल्फ, -कैलि-आयोड, कास्टि); बलगम श्लेष्मामय। सवेरे श्वास-प्रश्वास तेज़। गहरी साँस लेने और छोड़नेकी शक्तिका न रहना। कमरमें ऐसा अनुभव होना, मानो एक लोहेका बन्धन बँधा हुआ है, इसी तरहकी अनुभूतिके कारण लम्बी साँस न ले सकना। वक्षमें कसावटका भाव (कैक्टस)। दाहिने फेफड़ेको भेदकर यकृतकी ओर छुरी मारनेकी तरह दर्द (लैक-कैन) चलता है और इसीकी वजहसे साँस रुक जाती है। बायें स्तन-वृन्तके पीछे इस तरहका दर्द मानो सुई गड़ रही है। शय्यामें सोनेपर भयानक रूपसे कलेजा धड़कना और मूर्द्धादेशसे आरम्भकर समूची देहमें टपक अनुभव होना।

सार्वाङ्गिक।—बहुत ज्यादा इन्द्रिय परिचालनकी भाँति कमरमें दर्द। हाथ-पैर सुन्न। नाखून निकलकर उस अंशमें प्रदाह पैदा हो जाता है। नखकी जड़ सब लाल हो जाती है और खुजलाया करती है। गर्दनके पिछले भागकी और प्रत्यङ्गोंकी पेशियाँ सब बार-बार सिकुड़ा और फैला करती हैं; जरा भी उत्तेजना पैदा होनेपर इसी तरहका आक्षेप फिरसे पैदा हो जाता है, एकाएक सारा शरीर हिल उठता है, पीछेकी ओर झूल जाता है और

प्रत्यङ्गोंको प्रसारक पेशीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द अनुभव हुआ करता है। प्रकोपके बाद रोगी सुस्त हो पड़ता है; सर्दी सहन नहीं होती। झुकनेपर गुल्फकी वृहत कण्डराके भीतर एकाएक छेदनेकी तरह दर्द मालूम होता, है, विटप-देशमें कई दिनोंतक लगातार खुजली पैदा हो जाया करती है। दाहिने पैरके अंगूठेकी सन्धिमें तेज़ दर्द (ऐक्टिया, नैफ़ीलो, सैबाइना)।

वृद्धि।—सन्ध्याके आरम्भके पहले और समय, दबानेपर, सवेरे और शरीर हिलानेपर या चलनेपर।

उपशम।—निर्मल वायु लगनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐ-नाई, ऐ-आक्साल, ऐण्टि-टार्ट, आर्जेण्ट-नाई, ऐसेरम, अरम, बेल, ब्राई, कैम्फो, कोलोफिल, कास्टि, काफि, इयुफ्रे, फेरम, जेलस, ग्लोन, हिपर, इपिक, मर्क-कोर, नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम, पैरिस, फास, पोडो, सोरिन, सिपि, थूजा।

तुलनीय।—आक्षेपिक लक्षण—नक्स, इग्ने। क्षुद्र-सन्धियोंका वात—नक्स। चेतनाकी अधिकता, खट्टी डकार—नक्स। नाकमें बदबू—ऐनाकार्ड। गलेमें काठकी सलाइयाँ गड़नेकी तरह दर्द—हिपर, नाइट्रिक-ऐसिड।

शक्ति।—३री दशमिकसे ६ठा शततमिक क्रम। ३० शततमिक क्रमतक व्यवहृत हुआ करता है।

युरेनियम नाइट्रिकम

(URANIUM NITRICUM)

दूसरा नाम।—नाइट्रेट आफ युरेनियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अर्क और विचूर्ण।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—अण्डलाल मिला पेशाब; मलद्वारमें खुज़ली; बहुमूत्र; आँतोंमें जख्म; अनजानमें पेशाब; पाकाशयका जख्म; ध्वजभंग; आँखोंका प्रदाह; पेशाबमें फास्फेट रहना; वीर्य-क्षय; अनिद्रा; मसे; पेशाबमें मछलीकी गन्ध; पेशाबका वेग धारण करनेकी शक्तिका न रहना प्रभृति रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—पाकस्थलीके जखममें पाकाशयमें भयानक जलन; खून मिला श्लेष्मा निकलना और काफीके चूरकी तरह पदार्थ वमन, काले रङ्गका वमन और पाकाशयके निर्गम द्वारमें यदि स्पर्श सहन न होनेका लक्षण मौजूद रहे तो युरेनियम नाइट्रिकम उसकी एक उत्कृष्ट दवा समझी जाती है। मधुमेह या पेशाबमें चीनीकी बीमारीमें इससे बहुत फायदा दिखाई देता है; तेज़ प्यास, दुबलापन, पेशाब अधिक होना, पेशाब रोकनेकी शक्तिका न रहना और बहुत सुस्ती इसका प्रधान निर्णायक लक्षण है।

लक्षणावली

मन और मस्तक।—चिड़चिड़ा स्वभाव; रोगी दिनभर अपनेको बीमार ही समझता है। पीवकी तरह कषाय श्लेष्माका स्राव होनेकी वजहसे नाकके छेदमें जखम हो जाना। आँखकी निचली पलक शोथ हो जानेकी तरह फूली दिखाई देती है (एपिस)। पलक फूली और चिपक जाया करती है (ग्रैफ, हिपर)।

पाकस्थली।—बदबूदार और विषादयुक्त डकार। अजीर्ण रोगमें भोजनके बाद आध्मान वायु निकलना। अम्ल-रोग और पाकस्थलीके बायें किनारेसे बायें मसानेके शिखरदेशतक फैल जानेवाला दर्द। पाकाशय और पाकाशयके निर्गम-द्वारकी पेशीमें जखम (काण्डियुरेंगो, केलि-बाई, आर्जेण्ट-नाई, नक्स-वोम, फास), निर्गम द्वारके ऊपर बेहद दर्द और स्पर्शका सहन न होना, पाकाशयमें भयानक जलन हुआ करती है, उसमें आध्मान वायु उत्पन्न होता है; खून मिला श्लेष्मा और काफीके चूरकी तलीकी तरह पदार्थका वमन हुआ करता है और उसके साथ किसी जगह अलकतरेंकी तरह मल भी निकला करता है (हाइड्रेस्ट, काण्डियुरेंगो, सिफिलिन)।

पेशाब।—बहुत ज्यादा और बार-बार पेशाब हुआ करता है (ऐ-लेक्टिक, ऐ-फास, आर्स), विशेषकर रातमें (ऐ-फास, म्यूरेक्स; दिन-रात—स्क्विला, सिजिजियम); बहुत अधिक प्यास (ऐ-ऐसेट, ऐ-लैके, कुरारी, टेरिब)। रोगी दिनोंदिन दुबला होता जाता है और बहुत अधिक वायु होनेके कारण पेट फूल उठता है, पेशाबके समय मूत्रमार्गमें जलन हुआ करती है; रोगी पेशाबका वेग रोक नहीं सकता (लैक डिफ्लो, ऐ-लैक्टिक, ओपि,

सिजिजियम)। पेशाब बहुत ज्यादा, यन्त्रणाजनक (तकलीफ़ देनेवाला) और कुछ दूधकी तरह सफेद, कभी पेशाब कुछ हरा और उसमें माँसकी गन्ध आती है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—आर्जेण्ट-नाई, हाइड्रैस्ट, काण्डियुरैंग, ऐ-फास, ऐ-लैक्टिक, कुरारी, स्क्विला, ओपि, लैक-डिफलो, सिजिजियम, सूग्ररैक्स।

तुलनीय ।—पाकाशय और आँतोंके लक्षणमें—कैलि-बाई। बहु-मूत्र—ऐ-फास, सिजिजि, लैक-डिफलो। भोजन करनेके बाद ही सुस्ती आ जाना—आर्स, चायना, लाइकी।

शक्ति ।—२री और ३री शक्तिका विचूर्ण।

यूरिया

(UREA)

परिचय ।—स्तन्यपायी प्राणीके पेशाबका श्रेष्ठ कठिन अंश।

उपयोगिता और आभास ।—मसाना (kidney) के दोषकी वजहसे पेशाबके साथ उपयुक्त परिमाणमें यूरिया न निकलकर यदि पेशाबका आपेक्षिक गुरुत्व घट जाये, बहुत ज्यादा अण्डलाल निकलता हो और शोथका लक्षण दिखाई दे तो यूरियाकी निम्न-शक्तिसे आशातीत सफलता प्राप्त होती है। यदि ऊपर लिखे कारणसे पेशाबके साथ उपयुक्त यूरिया न निकलकर वात, गठिया वात इत्यादि लक्षण दिखाई दे या त्वचापर पसीनेके साथ यूरिया निकलकर अकौता पैदा हो जाये तो यूरिया विशेष लाभ करता है। इसके अलावा गुटिका दोष, बहुमूत्र, यकृतकी शीर्णता प्रभृतिमें भी इसका प्रयोग होता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—यूरिक-एसिड, आर्निका, टियुबर्क्युलिनम, थाइरायड।

शक्ति ।—मूल विचूर्ण और निम्न-शक्तिका बार-बार प्रयोग करना उचित है।

युरिकम ऐसिडम

(URICUM ACIDUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—अकौता; छोटी सन्धियोंका वात; अर्बुद; आमवात प्रभृतिमें लक्षणके अनुसार लाभदायक है।

शक्ति।—डा० बार्नेट ५वीं और ६ठी शक्तिका प्रयोगकर खासा फायदा देख चुके हैं।

युरिनम

(URINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अर्क।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—मुँहासे; फोड़े; शोथ; आँखोंका प्रदाह; शीताद वगैरह रोगोंमें लाभदायक है।

शक्ति।—३रा और ६ठा क्रम।

आर्टिका युरेन्स

(URTICA URENS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—बिछुआ जातिके ताजे गाछसे मूल अर्क बनता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—स्तनमें दूधकी कमी; खून घट जाना; डङ्क मारना; जलना; आमवात (पित्ती निकलना); रक्तामाशय; विसर्प; छोटी सन्धियोंका वात; पथरी; रक्त-स्राव; सविराम ज्वर; श्वेत-प्रदर; बहुत ज्यादा ऋतु-स्राव; मूत्रपथरीका दर्द; गलेका जखम; पेशाबमें विकार; सरमें चक्कर आना; क्रुप खाँसी।

उपयोगिता और आभास।—पित्त निकलना, त्वचाके नीचे शोथ पैदा करनेवाला रस-स्राव, छोटी सन्धियोंका वात; जली हुई त्वचा और प्रसूताके

स्तनमें दूधकी कमी ; बहुत ज्यादा आर्त्तव-स्राव, विसर्पकी तरह प्रदाह, नाकसे रक्तस्राव और खून मिली खाँसी रोगमें यह विशेष लाभदायक है।

लक्षणावली

मलांत्र और मल।—सूत्रकृमिके चलनेकी वजहसे मलद्वारमें बहुत अधिक खुजली पैदा हो जाती है (सिना, सैण्टोनिन, टियुक्रि, इग्ने)। (कृमिके लक्षण इससे बहुत जल्द दूर हो जाते हैं)। आमातिसार—बार-बार वेग, थोड़ा-सा आगमें पकाये अण्डलालकी तरह पदार्थ मिली और कभी-कभी खून मिली आम निकलती है ; नाभीके चारों ओर दर्द हुआ करता है (कोलोसिन्थ), इसके बाद आँतोंका शूल और कूथनके साथ आँव मिला सफेद और पीले रङ्गका पाखाना हुआ करता है।

पेशाब।—दस-बारह दिनोंतक पेशाब थोड़ा होनेके बाद नाभितक समूचे उर्द्धाङ्गमें शोथ हो जाता है। पेशाबमें दर्द, पेशाबके साथ पथरी निकलती है (कक्कस-केक्टाई, सार्सा, ऐ-आक्साल, बार्बे)। मूत्राशयसे रक्त-स्राव (फेरम-फास, हैमा, इरिजिरन, टेरिब)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत ज्यादा रजःस्राव और कषाय, त्वचाकी क्षय करनेवाला प्रदर पर्यायक्रमसे पैदा होता है (थूजा, ज़िञ्जिया)। योनिका अकौता, बाहरी भागमें भयानक खुजली और डङ्क मारनेकी तरह दर्द अनुभव होता है और वह फूल उठता है (एं-नाई, क्रियो)। प्रसूतिके स्तनमें दूधका पैदा न होना या कमी (एग्नस, रिसिनस, एसाफिट)। बहुत ज्यादा स्तनका फूलना—बांधकर रखना पड़ता है।

श्वासयन्त्र।—बायें वक्षमें इस तरहका दर्द होता है, मानो किसीने आघात किया है। फेफड़ेका फोड़ा, अधिक परिश्रम करते ही खाँसीके साथ खून मिला बलगम निकलता है।

प्रत्यङ्गादि।—हाथ-पैरोंका विसर्पकी तरह प्रदाह, रोगवाले अंशमें जलन करनेवाला उत्ताप और चींटी आदि रेंगनेकी तरह सुरसुरी मालूम होती है। हाथ और पैर बहुत फूल जाते हैं। सन्ध्याके समय (पैलेड), दाहिने बाँहकी त्रिकोण पेशीमें एंठनकी तरह दर्द, बाँह घुमानेपर भी दर्द बढ़ जाता है, दबानेपर दर्द मालूम होता है। दाहिने बाँहमें—दर्द, दबाकर सोनेपर बढ़ जाता है (दाहिने कन्धेका वात—ऐ-कार्बोल, कोलोसिन्थ, हाइड्रेस्ट,

सैंगियु, आस्टिलेगो, मिडोरिन)। हाथ और अंगुलीके ऊपर ऊँचे और खुजलानेवाले फोड़े सब निकल आया करते हैं। छोटी सन्धियोंका वात, सन्धियोंमें वातकी गोटियाँ उत्पन्न होकर वह फूली प्रमाणित होती हैं (लिडम, लिथिया-कार्ब, सैबाई)।

त्वचा।— जगह-जगह, विशेषकर हाथ और अंगुलीके ऊपर, बहुत खुजलानेवाले छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं; ओठके ऊपर ज्वरके बाद रसभरे छाले निकल आते हैं (नेट्र-म्यूर)। आमवात, तकलीफ़ देनेवाला और जलनके साथ, पिट-पिट सड़-सड़ किया करता है और भयानक खुजली पैदा हो जाया करती है (एपिस, ऐस्टेकस, केल्के, क्लोरैल, नेट्र-म्यूर, रस, ऐ-सैलिसाई, सिपिया, डालका, कोपेवा)। आमवातकी गोटियाँ सब लाल घेरेसे घिरीं, उनके बीचकी जगह सफ़ेद रङ्गकी, रगड़नेपर घटना। बाहरी और उग्रवीर्य तेज़ दवाका प्रयोग करनेपर आमवात दबकर पैदा हुए नाना प्रकारके रोग (कूप्रम), आमवात दब जानेपर वातका दर्द और उसके बाद आमवात, इसी तरह पर्याय-क्रमसे हुआ करता है; वात-वेदनामें आमवातका निकलना (रस), गोटी-गोटी आमवात (बोवि), बून्द-बून्द, डङ्क मारनेकी तरह दर्द पैदा करनेवाले आमवातके दाने (एपिस)।

ज्वर।—प्लीहा फूली, इसके साथ ही सविराम ज्वर (सियेनोथस, नेट्र-म्यूर), प्रति वर्ष एक ही समय यह ज्वर पैदा हो जाया करता है।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—ऐ-सैलिसाई, ऐ-नाई, एपिस, ऐस्टेकस, क्लोरैलियम, बोवि. ऐग्नस, रिसिनस, क्रियो, लीडम, लिथिया-कार्ब, सैबाई, नेट्र-म्यूर, सियानोथस, रस, जिजिया।

तुलनीय।—वात ज्वर—नेट्रम। शोथ—युरिक-ऐसिड। ज्वर, सरमें चक्कर या प्लीहा—सियैनोथस, ऐलूर, क्रोकस, नेट्रम।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३ रा दशमिक क्रम। क्षुद्र सन्धिवात रोगमें ५ से १० बून्द एक-एक बार सेवन करना चाहिये।

असनिया-बार्बेटा

(USNEA-BARBATA)

दूसरा नाम ।—ट्री-हेयर ; ट्रि-मस । एक तरहका शैवाल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—धूपमें घूमनेके कारण असह्य सर-दर्द, मस्तकमें रक्ताधिक्य, ऐसा मालूम होना कि माथा फट जायगा या आँखें बाहर निकल पड़ेंगी—इस ढङ्गके दर्दके लक्षणमें ग्लोनोयन और बेलेडोनाके साथ इसकी तुलना की जाती है ।

शक्ति ।—एक गिलास पानीमें एक बून्द अर्क मिलाकर प्रति पन्द्रह मिनटके अन्तरसे एक चम्मच परिमाणमें सेवन करना चाहिये ।

अस्टिलेगो मेडिस

(USTILAGO MAYDIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—स्तनमें दूधकी कमी ; खल्वाट हो जाना ; स्त्रियोंका वयःसन्धि काल ; वाधक ; अर्बुद ; वीर्यक्षरण ; सर-दर्द ; नकली मैथुन ; बहुत ज्यादा ऋतुस्राव ; अण्डकोष-प्रदाह ; बायें डिम्बाशयकी बीमारियाँ ; कर्णमूल ; माथेमें जल जानेकी तरह खाल उधड़ना ।

उपयोगिता और आभास ।—जननेन्द्रिय विशेषकर स्त्री-जननेन्द्रियसे इसका घनिष्ट सम्बन्ध है । इससे जरायुमें अधिक रक्त-सञ्चय होता है और उसीसे गौण-भावसे रक्तस्राव हुआ करता है । खून कभी चमकीला, लाल और कभी घोर लाल और थक्का-थक्का होता है ; यह रक्तस्राव ऋतुके समय हो या प्रसवके बाद हो या जिनका रजःस्राव होना बन्द हो गया है, उन्हें हो, अस्टिलेगो इन सबमें लाभ किया करता है । और भी इसके द्वारा अनुकल्प रजः या ऋतुके समय रजःस्रावके बाद शरीरके किसी दूसरे द्वारसे रक्तस्राव और ऋतु बन्द होनेके समय बायें स्तनके नीचे दर्द और योनिसे रक्तस्रावमें इससे

बहुत फायदा हुआ करता है। केश और नख झड़ जाते हैं—इसका यह एक और भी निर्णायक लक्षण है।

लक्षणावली

मन।—चिड़चिड़ा स्वभाव; दुःखित और मुर्झाया-सा भाव (ब्राई-नक्स)।

मस्तक।—जभी-तभी सरमें चक्कर आ जाता है—आंखके ऊपर मानो सभी चीजें घूम रही हैं (ऐल्यू, ब्राई, साइक्लेम, लाई, नेट-म्यूर) या ऐसा मालूम होता है, कि सभी चीजें दो दिखाई दे रही हैं या आंखके सामने सफेद बिन्दु सब पैदा होकर सब दृश्यको ढक देते हैं। सर-दर्द—माथेमें भार मालूम होता है और इस ढङ्गका दर्द होता है मानो ललाटके पीछेसे कोई दबाता है और मानो ललाट फट जायगा (ऐमोन-कार्ब, ग्रेफ, पल्स)। जिनको रजःस्राव होना बन्द हो गया है, उनके मूर्द्धादेशमें और माथेके पिछले भागमें दर्द मालूम होता है। सर-दर्द रोगमें ऐसा मालूम होता है, मानो कन्धेसे माथा उठकर या अलग होकर फिर गिरता है (ऐक्टिया, क्लोरम, लैक-डिफ्लो, इयुक्का)। अरुणिका या बच्चोंके माथेका फोड़ा; समूचा माथा प्रदाहित हो जाता है और पपड़ीसे ढँका रहता है, केश झड़ जाते हैं और उससे लगातार रस बहा करता है (मेजेर, मिडोरिन, वायोला-ट्राई, विङ्का)।

आँख।—चक्षुगोलकमें दर्द हुआ करता है (ऐक्टिया, रियुटा, साई)। आँखें फड़का करती हैं; चक्षुगोलक ऐसा मालूम होता है, मानो चक्कर खा रहा है और दृष्टि एक चीज़से दूसरी चीजपर दौड़ा करती है। आंख बन्द करनेपर उसमें गरमी मालूम होती है (कोरैल-रुब्र)। आँखमें करकराहट होती है और उससे आँसू बहा करता है (चायना, इयुफ्रे, फाइटो, सिनैपिस)। निर्मल वायु लगनेपर आँसू बहा करता है।

मुखमण्डल।—सन्ध्याके समय बैठनेकी अवस्थामें एकाएक चेहरा म्लान और रक्त-रहित-सा हो जाता है। (मृगी रोगमें—क्युप्रम; उदरामयके बादकी बेहोशीवाली अवस्था—इग्ने)। मुँहमें लसदार और तांबेके जंगकी तरह स्वाद (मर्क)। जीभमें मानो आल्पीन गड़ रही है, ऐसा अनुभव होता है और मालूम होता है, कि जीभके नीचे कुछ है, जो जीभको ऊपरकी ओर ढकेल रहा

है। मुँहमें बहुत ज्यादा लार पैदा हो जाती है, वह गोंदकी तरह रहती है और उसका स्वाद बहुत तीता रहता है।

गलेके भीतर।—तालुमूलके दोनों पार्श्वके दोनों गह्वर बहुत सूखे और किसी तरहकी चीज निगलनेमें बहुत कष्ट, पाकस्थलीमें बेहद जलन और गड़बड़ी मालूम होना। दोनों गलग्रन्थियाँ बहुत बड़ी, गाढ़ा लाल रंग और धीमी दर्दसे भरी; निगलनेके समय तकलीफ़ बढ़ जाती है (लैकि, मर्क, मर्क-साया)। स्वरनलीके पीछे मानो एक गोलेकी तरह पदार्थ पड़ा है (कक्कस-कैक्ट)। दाहिनी गल-ग्रन्थिमें छुरी मारनेकी तरह दर्द (निगलनेके समय—लैक-कैन, स्टैनम)। अन्ननलीके निचले द्वारमें जलन (सैङ्गियु, सिनैप)।

पाक और अन्त्राशय।—कभी अरुचि और कभी राक्षसकी तरह भूख पैदा हो जाती है (फ़िरम, थूजा)। खाये हुए पदार्थोंकी डकार, बहुत खट्टी डकार। जिनकी रजःस्राव होना बन्द हो गया है, ऐसी रमणियोंकी पाकाशयमें सुस्ती और खालीपन मालूम होना। समूची अन्ननलीमें जलन (आर्स, बेल, कोलचि, फास)। रक्तपित्त—खूनकी कै; खून घोर लाल रङ्गका मिचली मिला। वमनके बाद मिचली बन्द हो जाती है (इपिक, हायो)। उदरमें क्षण-क्षणभरपर धीमा छेदनेकी तरह शूलका दर्द, कड़ा पाखाना होने बाद उदरका दर्द घट जाया करता है और तलपेटमें थोड़ा दर्द हुआ करता है। चलनेके समय बायें पुट्ठेमें दर्द मालूम होता है (लाई)। ऐसा दर्द मानो आँतें उलट-पलट हो रही हैं (वेरेट)। काले रङ्गका थक्का-थक्का मल, कब्जियत (लैप्टैन, ओपि, प्लम्ब, वेरेट)।

पुं०-जननेन्द्रिय।—अण्डकोषमें शूलका दर्द; तेज़ दर्दकी वजहसे रोगी सुस्त हो पड़ता है। कई दिनोंतक उसमें लगातार दर्द हुआ करता है (हैमामेलिस)। रोगी बहुत क्षीण और स्वप्न-दोष होने बाद या वीर्यस्खलनके बाद बहुत सुस्त और अवसाद-ग्रस्त हो पड़ता है (डायस्को, नक्स-वोम, साइ-ष्टपोडि, स्टैफी)। कामोद्दीपक कल्पना। जभी-तभी रेतस्खलन होता है और हस्तमैथुन करनेकी दुर्दमनीय इच्छा (ब्यूफो, प्लैट, ओरिगैनम, लैके)। वीर्यस्खलन होनेपर कमरमें दर्द (कोबाल्ट)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु—स्राव बहुत थोड़ा और डिम्बाशयमें दर्द, कभी-कभी दर्द बहुत जल्दी-जल्दी पैदा होती है, मानो जरायु आदि सभी यंत्र

बाहर निकल पड़ेंगे (बेल, कैमो, लैके, लिलियम, नैट्र-कार्ब, ऐ-नाई, प्लैट, पोडो, सिपि)। मासिक ऋतु-स्राव होनेके कई महीने बाद ही फिर आरम्भ हो जाता है ; खून चमकीला लाल ; स्राव आरम्भ होनेके पहले ही तलपेटके बायें पार्श्वमें स्पर्शका सहन न होना और नीचेकी ओर खींचनेकी तरह मालूम होना। प्रदर,—स्राव पीला और बहुत बदबू (क्रियो, सिपिया)। जरायु-द्वारमें लगातार दर्द हुआ करता है, ऐसा मालूम होना। जरायुका स्थान भ्रष्ट हो जाना और उसमेंसे रक्त-स्राव हुआ करता है (लैके, ट्रिलियम) जरायु-ग्रीवा अर्बुदकी तरह फूल उठती है (अर्जेण्ट, कोलोफिल, कैल्के, हाइड्रेस्ट, क्रियो, मिचिला-रिपेन्स, नैट-म्यूर) और छूनेपर उससे खूनका स्राव हुआ करता है (थ्लैस्पी)। कई दिनोंतक लगातार धीरे-धीरे थोड़ा घोर लाल खून और छोटे-छोटे थक्के सब निकला करते हैं (ऐन्थ्राक्सिन, कोलोफिल)। जरायु और जरायु-ग्रीवा अर्बुदकी तरह फैल जाया करती है ; डिम्बाधार-प्रदेशमें जलन (ऐपिस, आर्स, कैन्थ)। अण्डाधारमें विशेषकर बायें डिम्बाशयमें तेज़ दर्द (कोलोफिल, लैके, लिलि-टाई, वाइबर्न) मालूम होता है और वह फूल उठता है ; दर्द अभी है, अभी नहीं ; और दोनों पैर बहुत तेजीसे हिला करते हैं। ऋतु बन्द होनेके समय बायें स्तनके नीचे और पंजरेके किनारे लगातार दर्द हुआ करता है (ऐक्टिया-रेसि, आर्टिका-इयु)। गर्भस्राव-प्रवणता (सैबाई, सिपि, सिकेल)। आर्त्तव—खून बहुत ज्यादा, चमकीला लाल और सहजमें ही जम नहीं जाता। जरायुकी पेशीकी शिथिलताकी वजहसे आर्त्तव-स्रावकी अधिकता (कोलोफिल, चायना) ; खून घोर लाल और थक्का-थक्का (क्रोकस, साइक्लेम, सैबाई)। जरायुका सङ्कोचन न होना और पेशियोंकी शिथिलतासे उत्पन्न प्रसवके बादकी रक्तस्राव (कोलोफिल) ; अनुकल्परज ; फेफड़े और उदरसे (बाई, हैमा, मिलिफोल, फास) जरायुके कर्कट रोगमें रक्तस्राव (फास, थ्लैस्पी)। प्रसवके बाद बहुत अधिक क्लेदका स्राव होना, कुछ अंश जमा हुआ ; बहुत देरतक जरायु आदिका नीचेकी ओर खिंचना और ऐसा मालूम होता है, कि जरायु उलट-पलट हो रहा है (सिकेलि, जैन्थक्साइलम)। शोणित-स्राव रोगमें सरमें चक्कर आया करता है, रह-रहकर शरीरमें उत्ताप पैदा हो जाया करता है और उदरके ऊपरी भागमें खालीपन और अवसन्नता मालूम होती है। दो-तीन हफ़्तेतक रक्तस्राव हुआ करता है। डिम्बाधारगत बाधकका दर्द, डिम्बाधार, जरायु और कमरमें भयानक दर्द

अनुभव हुआ करता है। प्रति कई मिनटका अन्तर देकर सूजन और दर्द हुआ करता है। जिन स्त्रियोंका रजःस्राव होना बन्द हो गया है, उनका आमवात (आर्टिका, सैंगियु)।

सम्बन्ध।—सदृश।—ब्राई, कोलोफिल, बोवि, क्रोकस, साइक्लेमन, पुलेस, हैमा, इग्ने, लैके, लिलि-टाई, मेजेर, मिडोरिन, सेब्राई, सेङ्गियु, सिकेल, सिपि, थूजा, आर्टिका-इयु, विङ्का, वायोला, वाइवर्नम, सल्फर।

तुलनीय।—जरायु और नखकी बीमारी—सिकेलि, सिपिया। बायें डिम्बाशयमें दर्द—लिलियम, लैके, सलफर। अनुकल्प वात—ब्रायो, हैमा। माथेमें फटे घाव, दाहिने कन्धेमें दर्द—सैङ्गुइनेरिया। इधर-उधर चलनेवाला दर्द—पल्स। ११ बजनेके समय मूर्च्छाभाव—सल्फ।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३रा दशमिक क्रम।

युवा उर्सी

(UVA URSI)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पत्तेका अर्क ; सूखे फलका चूर्ण।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—मूत्राधार-प्रदाह ; पेशाबमें तकलीफ ; खून मिला पेशाब ; मूत्र-सम्बन्धी बीमारी आदिमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—प्रमेह, मूत्रस्थली (मसाने) का प्रदाह और मूत्रकृच्छ्र रोगमें इसका फायदा प्रसिद्ध है। बार-बार पेशाबका वेग, बहुत कूथनके साथ मूत्रनलीसे खून मिला पीब, डोरीकी तरह श्लेष्मा और बड़े-बड़े जमे हुए खूनके टुकड़े सब निकलते हैं। तेज़ मूत्रकृच्छ्रता रोगमें पेशाबके साथ खून और पीब निकला करता है।

लक्षणावली

पेशाब।—बार-बार वेग और मूत्राशयका तेजीसे सिकुड़ना, फैलना या आक्षेप और उसमें जलन और फाड़नेकी तरह दर्द अनुभव हुआ करता है। गोंदकी तरह पेशाब होनेके बाद मूत्रमार्गमें भयानक जलन हुआ करती है। रक्त-स्राव, पेशाबके साथ खून, पीब गाढ़ा, डोरीकी तरह श्लेष्मा और थक्का-थक्का

खून निकला करता है। अनजानमें पेशाब—रङ्ग हरा। यन्त्रणाजनक मूत्रकृच्छ्रता।

सम्बन्ध।—सदृश।—कैनाब-सैट, कैन्थ, चिमाफिला-ऐम्बे, सार्सा, वेसिकेरिया।

शक्ति।—मूल अर्क, पाँच बून्दकी मात्रामें प्रयोग करना चाहिये। कभी-कभी दस बून्दकी मात्रामें भी देना पड़ता है।

वैलेरियाना आफिसिनेलिस

(VALERIANA OFFICINALIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़से अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—दमा; शय्याका जखम; वय:सन्धिके समयकी बीमारियाँ; निचली कमरका शूलका दर्द; सर-दर्द; हृत्कम्पन; एँड़ीमें दर्द; व्याधिशङ्का; मूर्च्छावायु; मुखशूल; नींद न आना; दाँतमें दर्द इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—स्नायविक रोगमें, जब किसी दूसरी सदृश दवासे लाभ नहीं दिखाई देता, उस समय वैलेरियानाका प्रयोग करनेपर शरीरकी प्रतिक्रिया शक्ति जाग उठती है और इससे शरीरके रोग लक्षण दूर हो जाते हैं। रोगी वायु और स्नायु-प्रधान प्रकृतिका रहता है। उसके स्नायु विधान बहुत ही उत्तेजना प्रवण और बुद्धि प्रखर रहती है। मूर्च्छा-वायु रोगमें, रोगिनीका चित्त अत्यन्त परिवर्त्तनशील रहता है अर्थात् वह एकाएक उग्र-मूर्त्ति धारण करती है, पर क्षणभर बाद ही कोमल और विनीत प्रकृतिकी हो जाती है। ऐसा होनेपर और मानो शून्यमें उड़ती है या मानो केशोंका एक झब्बा उसके कण्ठनलीमें झूल रहा है, इस तरहका भ्रान्त विश्वास रहनेपर वैलेरियाना बहुत अधिक फायदा करता है। स्नायविक वैकल्यके कारण पाकाशयकी बीमारीमें भी यह लाभदायक है। रोगी अपने कण्ठमें मिचलीके साथ बहुत सुस्ती अनुभव करता है। बच्चेकी माताके क्रोधित हो जाने बाद बच्चा जब स्तनका दूध पीता है, तो दहीकी तरह जमा हुआ दूध वमन कर देता है। बदबूदार डकार आया करती है; उदरमें ऐंठन होती है और सवेरे मुँह

मानो लसदार हो जाता है, इसी तरहका बेस्वाद मालूम होता है, पेशियोंका सिकुड़ना, फैलना और अनिद्रा, आक्षेपिक श्वास-रोग, खाते ही गला रुक जानेका उपक्रम; उरुके पिछले भागका स्नायुशूल; रोगी पैर जमीनमें रखकर खड़े होनेपर अधिक दर्द होता है; गुल्फदेशीय स्थूल कण्डरा और गुल्फमें चिलक मारनेकी तरह दर्द प्रभृति इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण माने जाते हैं।

लक्षणावली

मन।—सभी विषय बहुत आसानीसे समझ सकता है (काफि, लिसिन)। मनोवृत्तिकी अपेक्षा बुद्धि-वृत्ति प्रखर। बोलनेके समय एक बात बोलते-बोलते दूसरी कहने लगता है (लेकेसिस, ऐक्टिया, ऐगार)। बुद्धिकी जड़ता, कोई बात पूछनेपर असम्बद्ध उत्तर देता है (हायो, नक्स-मस, कैनाब-इन; क्रोटेल)। भ्रान्त विश्वास; रोगिनी समझती है, मानो वह एक मनुष्य और भी है और दूसरे एक मनुष्यको भी अपनी शय्यामें जगह देनी चाहिये (बेप्टि-पल्स), मानो वह दो मनुष्य हैं या उसकी बगलमें एक आदमी और भी सोया हुआ है (पिट्रोल, स्ट्रैमोन, थूजा); मानो उसकी बगलमें और भी कितने ही जन्तु सोये हुए हैं और कहीं उन्हें तकलीफ़ न हो, ऐसी आशंका प्रकट करती है। महान उल्लास (ऐकोन, ऐगार, ऐण्टि-क्रूड, काक्यु, काफि, लैके, ओपि, फास)। मनमें समझती है कि वह कोई महान व्यक्ति है (स्ट्रैमोन, वेरेट, कूप्रम, प्लैट)। धीमा प्रलाप, इसके साथ ही मानसिक उत्तेजना और कम्पनका भय, विशेषकर सन्ध्याके बाद अंधकारमें (ऐकोन, कैनाब-इन, मिडोरिन, फास, पल्स, स्ट्रैमोन), कलेजा धड़कता है (पल्स, ओपि) और रोगी काँपा करता है (प्लैट, रैनान-बल्बो)। परिवर्त्तनशील चित्त—अभी तो खूब क्रोधित हो रहा था, पर इसके कुछ ही क्षण बाद शान्त कोमल भाव धारण कर लेता है, अभी हँसी-दिल्लगी कर रहा था, क्षणभर बाद ही रोने लगता है (ऐलूम, क्रोकस, इग्ने, प्लैट, पल्स, सल्फ; मूर्च्छावायु रोगमें—नक्स-मस)। ऐसा भाव मानो हमेशा ही स्वप्न देखता रहता है (ऐनाक, मिडोरिन)।

मस्तक।—मस्तिष्क बहुत हलका और छोटा मालूम होता है, मानो शून्यमें उड़ रहा है (ऐसिरम, हाइपिर, लैके-कैन, नक्स-मस, स्टिक्टा)। सरमें चक्कर आना—झुकनेपर (ऐनाक, लेके, नक्स, पल्स)। मस्तिष्कमें चेतनाकी

अधिकता, सर-दर्द—एकाएक पैदा हो जाता है (बेल, जेल्स, चिमाफिला) या रह-रहकर चिलक मार उठता है (क्रियो, नेट्र-म्यूर, ग्लोन)। ललाटमें दबावकी तरह दर्द, मानो वह भयानक रूपसे चिपक गया है और चक्षुगह्वरतक खींचन मालूम होती है। चेहरा मलिन मालूम होता है। दर्द सन्ध्याके समय बढ़ जाता है (बेल, कैलि-बाई, पल्स); स्थिर रहनेपर (ऐसाफिट) और निर्मल वायु लगनेपर (बेल, मर्क, नक्स): घटना—शरीर हिलानेपर (नक्स, रस, स्पाई); घरमें रहनेके समय (मर्क) और सोने, बैठने आदि अवस्थाका परिवर्त्तन होनेके समय (काफिया)। जोरकी हवा लगनेपर एक पार्श्वमें दर्द पैदा हो जाता है। धूप लग जानेके कारण सर-दर्द (ग्लोन, लैके, नेट्र-कार्ब, सिफिलिन)। बहुत देरतक टोपी पहने रहनेपर या हाथसे दबाये रहनेपर मूर्द्धादेश बरफकी तरह ठण्ढा मालूम होता है (बिना किसी कारणके—वेरेट, ब्राई, नेट्र-म्यूर, सिपि)। ललाट देशमें दबाव या डङ्क मारनेकी तरह दर्द—चक्षुगह्वरमें दर्द होकर मानो भीतरकी ओर आँख फाड़ या बेध डालेगा, ऐसा ही अनुभव होता है।

आँख।—आँखके सामने बिजलीकी लहरकी तरह रोशनी दिखाई देती है (इग्ने, नेट्र-म्यूर, ग्लोन, कैलि-कार्ब) और दृष्टि-पथके बगलमें एक काला बिन्दु दिखाई देता है (फास)। रोशनीमें अच्छा रहता है; अंधेरेमें तकलीफ़ होती है (स्ट्रैमोन, स्ट्रान, कार्बो-वेज, कास्टि, प्लैट)। उन्मादकी तरह दृष्टि (ऐक्टिया, आर्स, स्ट्रैमोन), पलकके किनारे सब प्रदाहित, कुट-कुट करता है और उसमें इस तरहका दर्द मालूम होता है, मानो काँटा गड़ रहा है ग्रैफ, हाइड्रैस्ट)। सवेरे नींद खुलनेपर आँखमें दबाव मालूम होता है (ग्रैफ); पलकके किनारे सब भी जखम हो गये से मालूम होते हैं (ग्रैफ, कैमो, मर्क-कोर)। आँख इस तरह करकराती है मानो उसमें धूआँ लग गया है (क्रोकस, नेट्र-आर्स) ऐसा मालूम होता है, मानो देखी हुई चीज़ सब जल रही है (मानो आगकी ढेरकी ओर देख रहा है—फास)। अंधेरे घरमें प्रवेश करनेपर उसमें गोधूलिकी तरह रोशनी देखता है और उसे ऐसा मालूम होता है, मानो वह घरके भीतरकी सारी चीजें देख रहा है।

मुखमण्डल।—दोनों गाल लाल और गर्म, विशेषकर निर्मल वायु लगनेपर। ओंठपर ऊँचे उठे लाल तलीवाले छोटे-छोटे छाले सब निकलते हैं (हेलिबो) और छूनेपर दर्द मालूम होता है। चेहरेका बायें पार्श्वसे दाँत

और कानतक फैलनेवाला तीर गड़नेकी तरह दर्द ; इतनी तकलीफ़ होती है, कि मुँहकी पेशियाँ सब आप-से-आप फड़का करती हैं। मुखशूका दर्द एकाएक पैदा होता है (बेल) या रह-रहकर चिलक मार उठता है (पल्स)। गण्डास्थिमें आक्षेपिक स्पन्दन और खींचन अनुभव होना।

मुख-विवर।—रातमें भोजनके पहले मुँहमें मानो बदबू या सड़ी चर्बी है, इस तरहका कड़वा स्वाद मालूम होता है। सवेरे नींद खुलने बाद मुँहमें इस तरह मालूम होता है, मानो गोंद लगा हुआ है और किसी चीज़का स्वाद नहीं मालूम होना।

पाकाशय आदि।—जभी-तभी खाली डकार आया करती है (कार्बो-वेज, गेम्बो, लोबेल-इन), डकारके साथ सड़ा जलीय पदार्थ कण्ठमें चढ़ आता है (ऐसाफि), परन्तु मुँहमें नहीं पहुँचता और छातीमें जलन मालूम होती है। मानो कण्ठसे अन्ननलीके भीतर केशोंका एक गुच्छा झूल रहा है (स्वरनलीके पीछे—ककस)—इस तरहका अनुभव होता है और मिचली (जीभके ऊपर केश—कैलि-बाई, नेट्र-मूर, नेट्र-फास, साइली)। मिचली, ऐसा मालूम होता है, मानो नाभिदेशसे उत्पन्न होकर तालुमूलमें आ रही है और इसी कारणसे मुँहमें बहुत ज्यादा लार सञ्चित होती है। सवेरे नींद खुलनेपर सड़ी डकार आया करती है (आर्निका, कैमो, सोरिन)। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें मानो कुछ ठेलकर बाहर निकलना चाहता है, इस तरहका अनुभव होना और दर्द। माताको क्रोध आने बाद बच्चा स्तन पीते ही थक्का-थक्का जमा हुआ दूध वमन कर देता है (इथ्यु, कैल्के) और मलके साथ निकलता है (मैग-कार्ब, मैग-मूर)। मूर्च्छावायु या हिस्टीरिया रोगमें रोगिनीको ऐसा मालूम होता मानो उसके पाकाशयसे कुछ एक गर्म पदार्थ चढ़कर कण्ठमें आता है (ऐसाफिट, इग्ने, मस्कस) और श्वासकष्ट पैदा हो जाता है। रोगिनी अकेली या अन्धेरेमें नहीं रहना चाहती (स्ट्रैमोन, स्ट्रान)। पेट फूला और कड़ा हो उठता है। अन्त्रशूल—मरोड़ेकी तरह दर्द ; वायुरोगकी वजहसे अन्त्रशूल, विशेषकर सन्ध्याके समय, रातमें लेटनेकी अवस्थामें ; रातमें भोजनके बाद ; अर्शसे उत्पन्न या कृमिसे पैदा हुआ। उदर इतना फूल जाया करता है कि ऐसा मालूम होता है, मानो फट जायगा (कैप्स, कोपेवा, नेट्र-सल्फ, ऐसाफिट, नक्स-मस)। पेट खाली रहनेपर बेचैनी और कुछ खा लेनेपर आराम मालूम होता है।

मलान्त्र और मल।—मलके साथ सूत्र-क्रिमि निकलती है (सिना, फेरम, मर्क और सलफर (पर्यायक्रमसे), सेबा, साइलि, स्पाई, स्टैन, टेरिबिन्थ, टियुक्रि, सलफर)। बच्चोंका उदरामय,—पतला पानीकी तरह और थक्का-थक्का दूध मिला जमा हुआ मल (मैग-कार्ब, मैग-म्यूर, इथ्यू)। हरे रङ्गका माँड़की तरह बार-बार दस्त, खून मिला निकलता है ; रोगी लगातार पेट दबाता और भयानक रूपसे चिल्लाया करता है। मलद्वारके पीछेकी ओर कुछ ऊपर फुट-फाट आवाज़ होती है और दबाव मालूम होता है।

पेशाब।—परिमाणमें और बारमें अधिक। पेशाबके समय कूथन और मलांत्रका निकलना (ऐ-म्यूर), पेशाबकी तली सफेद या लाल रङ्गकी।

श्वासयन्त्र।—नींद आते ही उसका गला रुक जाता है और हाँफता हुआ जाग उठता है (स्पञ्जि, अरम, लेके, ग्रण्डेलिया, क्लोरम)। श्वास-रोगमें श्वास क्रमसे तेज़ और क्षीण होता जाता है और अन्तमें एक बार बन्द हो जाता है। रोगिनी इस समय हाँफ उठती है और फिर श्वास लेती है। वक्षमें बार-बार चिलक मारनेकी तरह दर्द हो उठता है और सुई गड़नेकी तरह दर्द अनुभव होता है और ऐसा मालूम होता है, मानो वक्षके भीतरसे कुछ बाहरकी ओर धक्का दे रहा है विशेषकर वक्षके निचले अंशमें। वक्षमें और यकृत प्रदेशमें बीच-बीचमें एकाएक भीतरसे बाहरकी ओर सुई गड़नेकी तरह दर्द अनुभव होता है। हृत्प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, विशेषकर श्वास ग्रहण करनेके समय।

गर्दन और पीठ।—बायें नितम्ब देशमें, उरु-शिखरके ऊपरी अंशमें मानो उसी अंशमें मोच आ गयी है, इसी तरहका तेज़ दर्द अनुभव हुआ करता है (कोना, कैल्के, आर्जेण्ट-मेट); वृद्धि—खड़े होनेपर, विशेषकर चलनेकी अपेक्षा बैठनेके समय अधिक दर्द होता है, (विश्रामके समय दर्द, चलनेपर अच्छा हो जाता है—स्टेफ ; अपनी जगहसे उठनेके समय—रस, स्टेफ)। मानो सर्दी लग गयी है या मोच आ गयी है, इसी ढङ्गका दर्द कमरमें हुआ करता है (सलफर)।

प्रत्यङ्ग आदि।—बायें कन्धेसे बायें हाथकी अंगुलीतक (नक्स-वोम) दोनों हीमें लगातार बहुत ही तकलीफ़ देनेवाली खींचन और सुई गड़नेकी तरह दर्द अनुभूत होता है। लेटने, बैठने आदि अवस्थामें रद्दो-बदल

या करवट लेनेपर घटता नहीं है, पर चलनेके समय नहीं रहता (स्टैफ)। जानु-सन्धिमें सुई गड़नेकी तरह प्रचण्ड दर्द (ऐ-नाई, केल्को, स्टैफ, सल्फ)। ऊपरी और निचले अंगमें भयानक खींचनकी तरह या जकड़ जानेकी तरह दर्द (ऐलूम, सार्सा, सिङ्को, कोलोसिन्थ, कूप्रम-ऐसेट, कैलि-कार्ब, मर्क-सोल, नेट्र-मूर); वृद्धि—स्थिर होकर बैठनेकी अवस्थामें ; चलनेके समय घटना (रस)। कामके समय हाथ-पैर आदि स्वभाविक भावसे काम करते हैं और हिलते-डोलते हैं ; पर स्थिर रहनेपर प्रत्यङ्गोंमें चमक और फड़कन हुआ करती है। हाथ-पैरोंमें वातकी तरह दर्द ; किसी तरहका परिश्रम करने बाद बैठनेके समय बढ़ना और अङ्गोंके हिलानेपर घट जाया करता है। इसमें सन्धियोंमें वातका दर्द शायद ही कभी दिखाई देता है। पृष्ठ-फलकमें वातका दर्द (मेजेर)। वायुरोग आश्रित स्नायुशूल ; बाँह, कन्धा, मुखमण्डलमें तेज़ तीर लगनेकी तरह दर्द (फेरम, स्ट्रिक्टा)। प्रगण्डास्थि (केहुनीसे कन्धे तक फैली हुई हड्डी) में बिजलीकी लहरकी तरह तेज़ दर्द, कभी-कभी उसमें मरोड़ होता है और कभी-कभी इस तरहका दर्द होता है, मानो हड्डी उखाड़ी जा रही है। लिखनेके समय दाहिने बाँहके ऊपरसे नीचेकी ओर तेज़ दर्द पैदा होना। उरु-शिखर और उरुमें तेज़ दर्द ; खड़े होनेपर दर्द असह्य हो जाता है और ऐसा मालूम होता है, मानो उरु-देश चूर-चूर हो जाया चाहता है, उरु-शिखरके वात रोगमें उसके पिछले भागका स्नायुशूल ; यन्त्रणाका बढ़ना—पैरसे भूमिको छूते हुए खड़े होनेपर (बेल, कैलि-बाई, कैलि-आयो) और परिश्रम करनेके समय वही पैर फैलानेपर। घटना—चलनेके समय (कैलि-बाई, कैलि-आयोड); रोगवाले पार्श्वका अर्थात् दाहिना पैर फैलाकर खड़े होनेपर तकलीफ़ बढ़ जाया करती है, पर वही पैर किसी तिपाई या चौकीपर रखकर खड़े होनेपर रोगीको कोई तकलीफ़ नहीं होती। दोनों पैरोंके पीछेकी पेशीमें तेज़ ऐंठनकी तरह दर्द या उखाड़नेकी तरह दर्द, विशेषकर पैरकी पोटलीमें ; घटना—सवेरे और रोगवाली पेशीको रगड़नेपर ; वृद्धि—सन्ध्याके समय और स्थिर होकर रहनेपर। दाहिनी एँड़ीमें क्षणभरके लिये होनेवाला दर्द, खड़े होनेपर बहुत बढ़ जाता है, परन्तु चलनेके समय वह धीरे-धीरे अच्छा हो जाता है। तीसरे पहर बैठे रहनेकी अवस्थामें पैरकी पोटलीमें बाहरकी ओर टनक हुआ करती है। ऐसा मालूम होता है, कि निम्नाङ्ग सब संकुचित हो गया है (साइमेक्स, गुयायेक, प्लम्ब)।

दाहिनी एँड़ीके बाहरकी ओरकी गाँठमें एकाएक ऐसा दर्द होता है, मानो चोट लग गयी हैं ; दर्द खड़े होनेपर ज्यादा और चलनेके समय थोड़ा अनुभूत होता है। बैठनेकी अवस्थामें नासा नलीके पीछे सन्धिमें अकड़न जैसा दर्द। बैठनेकी अवस्थामें गुल्फके नीचे सुई गड़नेकी तरह दर्द (गुल्फके नीचे दर्द—ऐगार, कास्टि, साइक्लोम, लिडम, मैगे, फाइटो)।

सार्वाङ्गिक।—"पल्सेटिला" की तरह इसका रोगी भी उन्मत्त होकर सामने जो पाता है, उसे ही छिन्न-विच्छिन्न कर डालता है, गाली देता है और उन्मत्तकी तरह व्यवहार करता है। सन्ध्याके समय स्थिर रहनेपर उसकी तकलीफ़ बढ़ जाती है। रातके पहले पहरमें सो नहीं सकता (पर स्वभाव देखकर दवा चुननी चाहिये)। रोगीके शरीरके लाल अंग सब सफ़ेद हो जाते हैं (फ़िरम) बुद्धि बहुत तेज़। सामान्य चोटसे ही अकड़न पैदा हो जाती है। प्रत्यङ्गोंमें वातसे उत्पन्न फाड़नेकी तरह दर्द ; सन्धियोंमें यह दर्द अकसर मालूम नहीं होता, व्यायामके बाद विश्रामके समय ही दर्द अधिक मालूम होता है और शरीर हिलानेपर घट जाया करता है। आन्त्रिक ज्वरमें रोगीके शरीरमें बहुत जल्द शय्याक्षत निकल आता है। एक अवस्थामें ज्यादा देरतक रहनेपर दर्द पैदा हो जाता है और उस अवस्थाको बदलनेपर फिर कुछ देरतक अच्छा रहता है। प्रत्यङ्ग आदिमें खींचनकी तरह दर्द या चिलक मारनेकी तरह दर्द, ऐसा मालूम होता है, मानो हड्डीमें दर्द हो रहा है। रगड़ने या मलनेपर दर्द घट जाता है। अधिकांश लक्षण रातमें भोजनके बाद पैदा होते हैं। सभी इन्द्रियोंमें चेतना बढ़ जाती है। सवेरे शय्यासे उठनेपर सभी निम्नांग बहुत क्षीण और थकेसे मालूम होते हैं।

शीत, उत्ताप और पसीना।—थोड़ी देरतक रहनेवाले शीतके बाद बहुत देरतक उत्तापका आवेश रहा करता है। मस्तिष्कमें जड़ता मालूम होती है और प्रबल प्यास पैदा हो जाती है। शीत गलेके पिछले भागसे आरम्भ होकर सुरसुरीके साथ पीठकी राहसे नीचेकी ओर फैलता है। शीतावस्थामें रोगको मूर्च्छा आ जाया करती है (मुर्देकी तरह दिखाई देता है—ऐलूमिन)। दीर्घ उत्ताप अवस्थामें कितनी ही बार चेहरेपर थोड़ा पसीना निकला करता है। उत्ताप अवस्था ही सबसे प्रबल (बेल, ऐण्टि-टार्ट, इपिक ; सर्दी रोगमें—मर्क)। सन्ध्याके बाद और भोजनके समय उत्ताप अधिक अनुभव होता है (सन्ध्याके बाद—ऐ-फास, साइलि, डायाडेमा, स्टिलिञ्जि,

भोजनके समय—क्लोरम)। संध्याके समय क्षण-भरके लिये प्रकट होनेवाला उत्ताप और प्यास पैदा हो जाती है। प्रत्यङ्गोंमें बहुत दर्द हुआ करता है (कैमो)। प्रचण्ड उत्ताप और इसके साथ ही बहुत ज्यादा पसीना निकलना। बढ़ना—रातमें या शारीरिक परिश्रमके बाद। बीच-बीचमें एकाएक पसीना होकर एकाएक बन्द हो जाता है, खासकर ललाटमें। पसीना होनेपर रोगीको आराम मालूम होता है (क्यूप्रम, जेल्स, नेट्र-म्यूर, सोरिन, रस, लैके)।

वृद्धि।—छूनेपर, स्थिर होकर या बैठे रहनेपर और पूरी तरह रोगवाला पैर फैलाकर या उससे जमीन छूकर खड़े होनेपर, मध्याह्नमें, आधी रातके पहले, निर्मल वायुको सेवन करनेपर, जोरसे बहती हुई हवा लगनेपर और पाकाशय खाली रहनेपर।

घटना।—मलने या रगड़नेपर; देह या रोगी अङ्ग हिलानेपर; चलनेके समय; भोजनके बाद और सो लेने बाद।

सम्बन्ध।—सदृश।—इथ्यू, ऐगार, ऐम्ब्रा, ऐसाफ, ऐसेर, कास्टि, क्रोकस, साइक्लेम, इग्ने, लैक-कैन, लिडम, मैङ्ग, फाइटो, पल्स, रस, स्पाइजि, सल्फ, ऐ-फास, स्टिक्टा, नक्स-मस (मानो शून्यमें उड़ता है); कार्बोन-सल्फ, लाई, फास, पल्स, रस, स्ट्रैमोन, स्टान (अकेला अन्धेरेमें रहनेसे डरता है)। बेल, लाई (दर्द आदि एकाएक पैदा होता है और एकाएक ही गायब होता है)।

दोषघ्न।—बेल, सिना, काफिया, पल्स, कैम्फर।

तुलनीय।—मूर्च्छावायु—मस्कस, इग्ने ऐसाफि। प्रतिक्रियाका दोष—ऐम्ब्रा, सोरिनम, ओपियम, कार्बो-वेज। स्नायुशूल—आर्स। दर्द एकाएक आता जाता है—बेल, लाइकोप। बच्चा जमा हुआ दूध वमन करता है—इथूजा। चेतनाकी अधिकता—नक्स-वोम। अन्धकारमें भय—स्ट्रैमोन।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३रा शततमिक क्रम। उच्चक्रम भी व्यवहृत हुआ करता है।

क्रियाका स्थायित्व।—८ से १०दिन।

वेनाडियम

(VANADIUM)

परिचय ।—एक प्रकारका धातु ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—वेनाडियम आक्सिजेन और योगवाही (Calalyzer) का काम करता है। इसीलिये यह टाइफायड, यक्ष्मा, बहुमूत्र वगैरह बीमारियोंमें व्यवहार होता है। यह रक्तकणमें हिमोग्लोबिन बढ़ा देता है और रोगविष (Toxin) के साथ आक्सिजन मिलाकर रोगकी तेज़ी और शक्ति घटा देता है। जीवाणु-नाशक श्वेत-कणिका (Phagocytes) की पुष्टि और संख्या वृद्धि करनेमें भी यह अत्यन्त प्रखर है।

यकृत और धमनीकी बीमारीकी यह एक बढ़िया दवा है। भूख न लगना, पाकाशय और आँतोंमें गड़बड़ी, यकृतमें मेद तन्तुकी अधिकता, पेशाबके साथ अण्डलाल और रक्त निकलना, रक्ताल्पता, गुटिका दोष, पुराना वात, बहुमूत्र, धमनीका कड़ापन, वक्षमें दबाव, हिस्टीरिया, विषाद वायु, आँखके रेटिना नामक पर्देमें स्नायविक प्रदाह, अन्धापन प्रभृति लक्षणोंमें वेनाडियमका प्रयोग किया जा सकता है।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय ।**—फास, आर्स, एड्रिनेलिन, टियुबर्क्युलिनम ।

शक्ति ।—६—३० ।

विरेट्रिनम

(VERATRINUM)

दूसरा नाम ।—विरेड्रिया । सेबाडिलाका बीच और विरेट्रमकी जड़का एक प्रकारका क्षार ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—बिजलीके प्रवाहकी तरह तेज़ दर्द, मानो दर्दकी एक लहर शरीरके भीतरसे चली जाती है, धनुष्टङ्कार, धनुष्टङ्कारकी

अकड़नके समय दस्त-कै (नक्स-वोम) लक्षणमें यह दवा बहुत लाभ करती है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ऐकोन, कोनायम, सैबाडिला ।

दोषघ्न ।—नेबूका रस मिली काफी ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

वेरेट्रम ऐल्बम

(VERATRUM ALBUM)

दूसरा नाम ।—हेलिबोरस-ऐलबम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फूल होनेके पहले, संग्रहकी हुई जड़से अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—आर्त्तवकी कमी ; रक्तकी कमी ; शोथ ; हृत्शूल ; संन्यास ; दमा ; श्वासनाली-प्रदाह ; भीषण कालरा या हैजा अथवा विसूचिका ; विसूचिकाकी तरह पतले दस्त आना ; शूल ; हिमाङ्ग अवस्था ; कब्जियत ; ऐंठन ; सुस्ती ; अतिसार ; वाधक ; मृगी ; मूर्च्छाभाव ; पाकाशयकी सर्दी ; साधारण पक्षाघात ; सर-दर्द ; आँत उतरना ; मस्तिष्कमें जल सञ्चय ; मूर्च्छावायु ; बहुव्यापक सर्दी (इन्फ्लुएञ्जा) ; सविराम ज्वर ; आँतमें आँतका अंश घुस जाना ; प्रसवके बाद कब्जियत ; यकृतमें रक्तकी अधिकता ; दाँती लगना या जबड़े अटकना ; फेफड़ेका शोथ ; उन्माद ; खसड़ा या छोटी माता ; विषाद वायु ; मस्तिष्कावरण-प्रदाह ; ऋतुके पहले मिचली और आमातिसार ; स्नायुशूल ; रतौंधी ; अन्ननलीका सङ्कोचन ; अन्त्रावर्त्तन-प्रदाह ; दूषित ज्वर ; फेफड़ेका प्रदाह ; पलकोंका पक्षाघात ; आमवात ; लार बहना ; नींदके समय कराहना ; प्लीहाका फूल जाना ; गलेका जखम ; दाँतमें दर्द ; सान्निपातिक ज्वर ; सरमें चक्कर ; मुँहमें पानी भर आना ; हूप या कुकुर खाँसी ; पीत ज्वर इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—जिन रोगोंमें हिमाङ्गावस्था बहुत जल्दी-जल्दी आ जाती है—जैसे विसूचिका और अन्यान्य जिन सब रोगोंमें हलका हिमाङ्ग या पतनावस्था आ पहुँचती है, उनमें उपयोगी है। जैसे—

वायुनली भुज प्रदाह ; हूप-खाँसी, वाधक, हृत्पिण्डकी कमजोरी ; जिनमें रोगी इतना कमजोर और सुस्त हो पड़ता है कि उसका शरीर बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है और ललाटमें ठण्डा पसीना हुआ करता है, उन सब रोगोंमें विशेषकर उसकी हिमांग अवस्थामें "वेरेट्रम" एक अमूल्य दवा मानी जाती है। महात्मा हैनिमैनने जिन-जिन दवाओं (अर्थात् कैम्फोरा, कूप्रम और वेरेट्रम-ऐल्बम) को विसूचिका रोगमें अतुलनीय बताया था, उनमेंसे एक यह वेरेट्रम है और उनकी शक्तिकी साधना लाखों स्थानोंपर प्रमाणित हुई है, हो रही है और होगी पर हैनिमैनने जिस समय इन तीनों दवाओंकी विसूचिकाकी अव्यर्थ दवा मानी है, उस समय वास्तवमें उन्हें असली विसूचिकाका एक भी रोगी नहीं मिला था। समाचार पत्रोंमें और लोगोंके मुँहसे इस मारात्मक रोगके लक्षण सुनकर ही उन्होंने इस दवाका निर्देश किया था। यह क्या अमानुषी प्रतिभा और दूरदर्शिताका परिचायक नहीं है? किसी-किसी सांघातिक विषसे पैदा हुए ज्वरमें भी इसी तरहकी हिमांगावस्था पैदा हो जाती है और ऐसी जगहपर भी "वेरेट्रम" से बहुत लाभ हुआ करता है। इसके कई निर्णायक लक्षण ये हैं:—(१) जीवनी-शक्तिकी तेजीसे पतनावस्था, रोगीमें एकदम उठनेकी शक्ति नहीं रह जाती। (२) ललाटमें ठण्डा पसीना निकलना। (३) अकेला भी नहीं रह सकता और किसीसे बोलता भी नहीं है। (४) रोगिनी अपने मनमें सोचती है; कि उसे गर्भ है और वह बहुत जल्द सन्तान प्रसव करेगी। (५) उन्माद अवस्थामें अपने कपड़े-लत्ते फाड़ डालती है, अश्लील व्यवहार करती है और कामुकता प्रकट करती है कभी प्रणय सम्बन्धी बातें करती है और कभी परमार्थिक तत्वोंके सम्बन्धमें बातें किया करती है। (६) जरा भी परिश्रम करते ही मूर्च्छा आ जाती है; रोगी बहुत क्षीण हो जाता है; उठकर बैठनेकी भी शक्ति नहीं रह जाती; (७) ब्रह्मतालुमें ऐसी सर्दी मालूम होती है, मानो एक टुकड़ा बरफ रखा हुआ है; मस्तिष्कमें ऐसा दर्द होता है, मानो फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा। (८) चेहरा मानो हड्डी-हड्डी ही रह जाता है। आँख और गाल गड़हेमें धँसे, नाक ऊँची और रङ्ग नीला। साधारणत: हिमांगावस्था बतानेवाले लक्षण मौजूद रहते हैं। (८) लेटे रहनेकी अवस्थामें चेहरा तमतमाया मालूम होता है, पर उठकर बैठते ही मुर्देकी तरह सफेद पड़ जाता है और मालूम होता है, कि खून बिलकुल नहीं है, उस समय नाड़ी बहुत धीमी, सारा शरीर ठण्डा और ललाटमें ठण्डा पसीना

हुआ करता है। (१०) जलन-भरी प्यास, केवल ठण्डी, बहुत ठण्डी पीनेकी सामग्री और खट्टी चीजें पीनेके लिये लालायित रहता है। (११) सारा शरीर बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है, चेहरा, नाकका अगला भाग, हाथ, पैर तलवा, बाँह वगैरह सभी बहुत ठण्डे। (१२) उदरमें ठण्डक अनुभव होना (१३) बहुत अधिक दस्त और कै, रोगी बहुत क्षीण हो जाता है और उसमें उठनेकी शक्ति नहीं रह जाती। (१४) उदरमें इस तरहका दर्द मालूम होता है, मानो किसी शस्त्रसे काटा जा रहा है; पेट फूला और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता। (१५) पतले दस्त आना या उदरामय; मल पानीकी तरह वेगसे निकलता है; बहुत ज्यादा और डर पैदा हो जानेकी वजहसे; रातमें बढ़ जाता है; छेदनेकी तरह अन्त्रशूल और हाथ-पैरोंमें पहले ऐंठन पैदा होकर फिर सारे शरीरमें फैल जाती है। जरा हिलते ही दस्त होना बढ़ जाता है और वमन हुआ करता है। साधारणतः बारम्बार वेगके साथ कुछ हरे रंगका और पानी जैसा मल निकलता है। (१६) कब्जियत—एकदम पाखाना नहीं लगता; मल बड़ा गांठ-गांठ; मलान्त्रकी संकोचनीयता या मलान्त्रकी निष्क्रियतासे उत्पन्न; बच्चोंकी दर्द-भरी कब्जियत। (१७) बाधक—वमन होता है, पाखाना हुआ करता है—ठण्डा पसीना होता है, और यहाँतक कि हिमाङ्ग अवस्थातक आ जाती है। प्रत्येक बार ऋतुके समय दो दिनोंतक रोगिनी इतनी क्षीण हो पड़ती है, कि उसमें खड़े रहनेतककी शक्ति नहीं रह जाती। (१८) अफीम खाने और तम्बाकू सेवन करनेके कारण बीमारियाँ। (१९) ठण्डी तर हवा लगनेपर प्रत्यङ्गोंमें दर्द पैदा हो जाता है और वर्षाके उत्तापसे वह और भी बढ़ जाया करता है तथा कुछ देरतक लगातार चलते रहनेपर घट जाया करता है।

लक्षणावली

मन।—बहुत शराब पीनेके कारण बुद्धिकी जड़ता (नक्स-वोम)। कभी भी सच्ची बात नहीं बोलता (ओपि)। स्वयं ही नहीं जानता कि वह क्या कह रहा है। रोगी अपनेको एक विख्यात मनुष्य समझता है (स्ट्रैमोन, बेलि); रुपया खर्च किया करता है। मस्तिष्क मेरुमज्जावरण-प्रदाह रोगमें आच्छन्नावस्थाकी तरह गहरी नींद (कूप्रम-ऐसेट)। रोगी छटपटाया करता है, बहुत प्यास मालूम होती है, दोनों पैरोंमें ऐंठन मालूम होती है,

ठण्डा पसीना निकला करता है और शरीरमें जगह-जगह चुनचुनी हुआ करती है। उन्माद अवस्थामें रोगिनी जो कुछ सामने पाती है, विशेषकर वस्त्र आदि, उन्हें काट-कूट और टुकड़े-टुकड़े कर फेंकती हैं (इग्ने, स्ट्रैमोन, टैरेण्टियु, वेल, कैम्फर, कैलि-फास,); अश्लील बका करती है (वेल, हायो, लिलि-टाई, नक्स, स्ट्रैमोन) या प्रणय (हायो, लेके, प्लैट, फास) या परमार्थिक विषयोंके सम्बन्धमें बातें किया करती हैं (हायो, लैके, लिलि-टाई, सल्फ)। बहुत बोलना—तेजीसे बातें करना (वेल, हायो, लैके)। दूसरोंके दोषके सम्बन्धमें बोलना-चालना पसन्द करती है (वेन्जिन) या चुपचाप रहती है। चिढ़ जानेपर गाली देने लगती है (कैमो, नक्स, पेट्रोल, सिपि)। ऋतु होनेके पहले जिसको-तिसको चुम्बन किया करती है (क्रोकस, फास, जिङ्कम)। सौरी घरमें रहनेके समय निर्लज्ज व्यवहार (हायो, फास, सिकेलि)। प्रलाप अवस्थाके सिवा अन्य किसी समय बात नहीं किया चाहती। अकेली भी नहीं रह सकती और बात भी नहीं करना चाहती। दुश्चिन्ता—मानो न जाने कितना दुष्कर्म किया है (ऐल्यू, आर्स, डिजिट, सोरिनम, ऐमोन-कार्ब, चेलिडो, काकुल, फेरम, नेट्र-म्यूर, थूजा), विशेषकर सन्ध्या और रातमें भोजनके बाद (आर्स, नक्स-वोम, फास) अपने सामाजिक सम्मानके सम्बन्धमें निराश, अपनेको बहुत बड़ी अभागिनी समझती है (चायना, हेलिबो, इपिक, लाई, सिपि)। ऋतु-सम्बन्धी रोगमें अपनी आत्माके उद्धारके सम्बन्धमें निराशा (आर्स, लैके, लिलि-टाई, पल्स, सल्फ)। आन्त्रिक ज्वर-रोगमें रोगी बहुत उद्विग्न, अस्थिर, डरपोक, चिड़चिड़ा, रोना हो जाता है और सभी विषयोंमें उदासीनता प्रकट किया करता है (ऐ-फास, ओपि)। किसी तरह डर जानेके बाद रोगी हमेशा सशंकित और उद्विग्न-भाव प्रकट करता है। शरीर एकदम ठण्डा हो जाता है। बेहोशी आ जाती है और अनजानमें पतला दस्त (जेल्स) निकला करता है। सम्मान या आत्मगरिमाकी कमीकी वजहसे उत्पन्न मानसिक बीमारियाँ या चित्त-विकार। सभी स्वप्नमय मालूम होता है, रोगी अपने मनमें समझता है, कि वह स्वप्न राज्यमें विचरण कर रहा है (ऐनाक, कैनाब-इन, कैनाब-सैट, लैके, मिडोरिन, वैलि)। चित्त-विकार रोगमें जब गाना गाता है, उस समय सीटी बजाता है, हँसता है, इधर-उधर दौड़ता है, सभी विषय और कार्योंमें अति रञ्जन और अधिकता प्रकट करता है और उसे जो रोग नहीं है, उसे ही हो गया हुआ समझता है।

रोगिनी अपने मनमें समझती है, कि उसे गर्भ रह गया है (इग्ने सैबाड) और वह जल्द ही सन्तान-प्रसव करेगी ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना—ललाटमें ठण्डा पसीना होता है (मर्क-कोर, टैबाक, थिरिड), चारों ओर अंधेरा दिखाई देता है (बेल, चिनोपोड-ऐन्थेल, नक्स, सल्फ, साइक्लोम, फेरम, जेल्स)। एकाएक मूर्च्छित हो जाता है (कार्बो-वेज, कैमो, सिङ्को, लैके, फास)। अफीम सेवन (नेट्र-मूर, नक्स-वोम), बहुत ज्यादा तम्बाकू खाने (नेट्र-मूर, नक्स-वोम, टैबाक) या शराब पीने (कोलोसिन्थ, नक्स-वोम) की वजहसे पैदा हुआ सरका चक्कर। माथा बहुत भारी मालूम होता है (ऐल्यू, ब्राई, साइक्लोम, लाई, नेट-मूर, सोरिन); आंत्रिक ज्वराधिकारमें, थोड़ा भी शारीरिक श्रम करने या करवट लेनेके समय बेहोशी आ जाना चाहती है (आर्स, कास्टि, सिनिसियो, थिरिड); सामान्य चोट या जखम होनेपर भी रोगिनी बेहोश हो जाती है (सामान्य जखम या चोट आदिके बाद अकड़न पैदा हो जाना—वेलि); शरीरका खून आदि रस-क्षयके बाद मूर्च्छा (ट्रिलियम); मूर्च्छाके साथ दुःश्चिन्ता, मिचली और पेशियाँ सब सिकुड़ा तथा फैला करती हैं। मस्तिष्कमें जलन (ग्लोन, फास)। अजीर्ण रोगमें माथेका स्नायुशूल; आँख मुँह धँस जाते हैं (लैके); माथा बहुत गर्म और ठण्डे पसीनेसे तर (ऐक्टिया, स्पाई, कैमो, ग्लोन, ओपि, पोडो); माथेमें दर्द हुआ करता है। बच्चा हाथसे अपना माथा रगड़ा करता है (ललाटको रगड़ता है—ग्लोन); और अकेला नहीं रह सकता। माथेपर बार-बार हाथ रखता है, आन्त्रिक ज्वर-रोगमें (मस्तिष्कावरणी-प्रदाह—ऐकोन, मूर्च्छा-वायु रोगमें—कैलि-कार्ब) सर-दर्द, मिचली (ऐण्टि-क्रूड, काक्यु, कास्टि, ग्रैफ, कैलि-कार्ब, सैङ्गियु, सल्फ) और हरे श्लेष्माका वमन हुआ करता है (आइरिस) और चेहरा म्लान या सफेद हो जाया करता है (लैके)। ग्रीवा अकड़ी मालूम होती है (बेल, कैल्के, सार्सा, साइलि) और बहुत ज्यादा पेशाब हुआ करता है (बेल, कूप्रम, इग्ने, आइरिस)—पेशाब होनेके बाद घटना (जेल्स, इग्ने, कैल्मिया); इस तरहका दर्द मानो माथा छिन्न-भिन्न हुआ जाता है (काक्यु, कोलोसिन्थ, हाइपिर); कभी-कभी पैदा होनेवाला सर-दर्द, तीसरे पहर आरम्भ होकर सारी रात रहता है (बेल, कूप्रम)। दोनों बाँह मानो जकड़ जाते हैं; रातके अन्तिम भागमें या सवेरे घटता है; बार-बार पेशाब हुआ करता है (बेल, कूप्रम) सरके तेज़ दर्दको वजहसे

रोगी उन्मत्त हो उठता है (उन्मत्तकी तरह घरमें इधर-उधर दौड़ता-फिरता है—काफि ; प्रचण्ड दर्द—बेल, लैके, साइलि ; उन्मत्त कर देनेवाला—ऐकोन, बेल, कैल्के) ; या सर-दर्दके समय बहुत सुस्ती (ऐण्टि-क्रुड, आर्स, चायना, मर्क, ऐ-पाई) ; या मूर्च्छा आ जानेका उपक्रम, ललाटमें ठण्डा पसीना निकलना और भयानक प्यास (कैल्के, कैस्टोर) या मिचली, वमन और पतले दस्त आना अथवा दुरारोग्य कब्जियत (ब्राई, नक्स-वोम)। माथा मानो दग्ध हो रहा है, इस तरहका उत्ताप मालूम होता है और दोनों पैर कभी गर्म और कभी ठण्डे। सर-दर्द रोगमें माथेमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता। ब्रह्मतालुमें इस तरहकी सर्दी मालूम होती है, मानो बरफका एक टुकड़ा रखा हुआ है (ब्राई, ऐगार, कैल्के, नैट्र-मूर, सिपि) और सर्दी मालूम होना (सिहरावन—कैस्टोर) या माथेकी त्वचा सर्द और गर्म दोनों ही मालूम होती है और केश खींचनेपर दर्द मालूम हुआ करता है (चायना, फेरम, सल्फ) ; केशोंकी जटा बँधी (ऐण्टिम-टार्ट, आर्स, विङ्का-माई, वायोला-ट्राई)। इसके विषयके अन्तर्गतवाले प्रायः सारे रोगमें ही ललाटमें ठण्डा पसीना हुआ करता है। आह्निक ज्वरमें रोगी मानो बेहोश जैसी अवस्थामें ललाटको रगड़ा करता है। गर्दन मानो माथेका भार नहीं सहन कर सकती ; इतनी क्षीण मालूम होती है (ऐब्रोट, इथ्यू) ; केशोंमें इस तरहकी सुरसुरी मालूम होती है, मानो बिजलीकी लहर बह रही है।

आँख।—दो देखना, ऐसा मालूम होता है, मानो आँखके सामने काले बिन्दु सब उड़ते घूमते हैं (ऐगार, चायना, साइक्लेम, जेल्स, ग्लोन, लाई, नैट-मूर, फाइजस, सोरिन, सिपि) ; शय्या या आसनसे उठनेके समय बढ़ जाता है। रोशनीका सहन न होना। रतौंधी या रातमें दिखाई न देना (चायना, हायो, लाई), रातके समय पतले दस्त आना। आँख ऊपर खिंची या शिवनेत्र केवल आँखके सफेद अंश दिखाई देते हैं (ऐकोन, ऐनान्थि, कैमो, लोरो, कूप्रम, हेलिबो, ऐपिस, आर्टिमि-वाल, लैके) ; विकृत भङ्गी (कैमो, साइकूट, लोरो, मर्क, मस्कस), मानो आँखका गोला बाहर निकला आता है, ऐसा मालूम होता है (इथ्यू, आर्स, बेल, कैन्थ, काक्यु, कामोल्केड, ग्लोन, इग्ने लैके, ओपि, पल्स, स्पञ्जि) ; दृष्टि स्थिर (ऐ-हाइड्रो, कैम्फो, हाइपर, कैलि-ब्रोम, लोरो)। आँख पानीसे भरी या गदली, गड़हेमें धंसी (आर्स, कैम्फो, कोलचि, हेलिबो) और ज्योतिहीन (ऐ-फास, कैलि-ब्रोम, कूप्रम, आर्स) ; आँसुओंसे

भरी (क्रोकस, इयुफ्रे, ओपि, पल्स); पलकें नीली। पुतली सिकुड़ी (मर्क-कोर, ओपि, फास, फाइजस); दृष्टि-क्षीण और पुतलियाँ फैलीं; पासके आदमीको भी पहचान नहीं सकती, या बहुत देरसे पहचान सकती है। वातकी वजहसे आँखोंका प्रदाह (ऐकोन, ऐण्टि टार्ट, ब्राई, कैल्के, फाइटो, रस, सिपिया), आँखमें उखाड़नेकी तरह दर्दकी वजहसे रोगी सो नहीं सकता (नक्स, रस)। तकलीफ़से रोगी उन्मत्तकी तरह हो जाता है। वृद्धि—ठण्ढी जलीय हवा लगनेपर। पलकें सब बहुत ज्यादा सूखी मालूम होती हैं। पलकें बहुत भारी मालूम होती हैं, बड़े कष्टसे पलक उठाकर आँख खोल सकता है (कोलोफिल, कास्टि, ग्रे फ, सिपि, जेल्स); पलक काँपा करती है। आँखमें इस तरहका दर्द होता है मानो किसीने छूरी मार दी है और आँसू बहा करता है (इयुफ्रे, मर्क, कोलोसिन्थ) अथवा उसमें सूखापन और उत्ताप अनुभव हुआ करता है। निद्रित अवस्थामें आँखें सट जाया करती हैं (ऐल्यू, सिपि, ग्रै फ, सिफिलिन, थूजा)।

नाक।—नाकका अगला भाग नोकीला (कैम्फ, कार्बो-वेज) हुआ जाता है और बड़ा मालूम होता है। चेहरा ठण्डा और हड्डी-हड्डी, दोनों रन्ध्र सूखे मालूम होते हैं, मानो उनमें धूल घुस गयी है। नाकसे रक्तस्राव, दाहिने रन्ध्रसे; केवल रातके समय निद्रित अवस्थामें नाकसे खून गिरता है (रातमें—बेल, कार्बो-वेज, ऐसिड-नाई, रास); चेहरा मुर्देकी तरह सफेद रङ्गका और शरीर बरफकी तरह ठण्डा मालूम होता है। नाकमें सड़े कूड़े (इयुपस, टियुट, ऐनाक) या धूएँकी गन्ध अनुभव होती है (कोरैल)।

चेहरा।—चेहरेसे बेचैनी मालूम होती है और उन्मादकी तरह और उजला, भाव-भंगी बिगड़ी हुई। आँखके चारों ओर कालापन दिखाई देता है। चेहरा हड्डी-हड्डी और मानो कमजोरी बतानेवाला, मलिन या रक्तशून्य और नीला रङ्ग; नाक नोकीली; सीसेके रङ्गकी; शायित (लेटनेकी) अवस्थामें चेहरा लाल मालूम होता है और उठनेपर रक्तहीन हो जाता है या कभी लाल और कभी सफेद हो जाता है। चेहरेका स्नायुशूल—दर्द खींचने और छेदनेकी तरह, चेहरा नीली आभा लिये उजला और आँख गड़हेमें धँसी, रोगीमें उठनेकी शक्ति नहीं रहती। गाल, कनपटी और आँखमें उखाड़ने और फाड़नेकी तरह दर्द (लाई, फास, रोडो, रस, सिपि)। उत्ताप और

लाली ; रोगी तकलीफ़से उन्मत्तकी तरह हो जाता है (रोगी तकलीफ़से इधर-उधर दौड़ता-फिरता है—मैग-कार्ब); तर या जलीय वायुमें बढ़ जाता है (रोडो); दाहिने पार्श्वमें प्रकोपकी अधिकता और जिन रोगियोंमें खूनकी कमी रहती है, उनपर ही अकसर इसका आक्रमण होता है। चबानेके समय पेशियाँ सब फड़का करती हैं। जबड़े अटकना (कैम्फो, जेल, लैके, नक्स, ओपि फाइजस, पोडो,)। प्रेतहास्य (बेल, कास्टि, स्ट्रैमोन)। दोनों ओंठ नीले, झूल पड़ते हैं या दोनों ओठ सूखे, नीरस काले। मुँह और नाकके छेदके चारों ओर काला रङ्ग दिखाई देता है (कैम्फो, कूप्रम, हायो, ओपि, वेरेट-विर)।

मुख-विवर।—दाँतमें तेज़ दर्द, धकधक करनेवाला दर्द, चेहरा फूल उठता है और ललाटपर ठण्डा पसीना हुआ करता है; स्नायु-प्रधान थोड़ेमें ही कातर मनुष्य तकलीफ़से उन्मत्त हो उठते हैं। दाँत सब ऐसे भारी मालूम होते हैं, मानो उनमें सीसा भर दिया गया है (ऐ-फ्लुओरिक)। दाँत-पर-दाँत घसता है (बेल, हेलिबो, हायो, जिङ्कम)। जीभ—ठण्डी, सूखी, सिकुड़ी या फूली, सूखी, फटी और गहरे लाल रङ्गकी या दोनों पार्श्व और अगला भाग लाल और बाकी अंश सफ़ेद लेपसे ढका। किसी-किसी स्थानपर पीला भूरा रङ्गका लेप; पिछला भाग काला दिखाई देता है। मुँहका स्वाद ऐसा तीता रहता है, मानो पिपर्मिण्ट खाया हो या स्वादहीन और मीठा; कभी-कभी सड़ी गन्धसे भरा। बोली आधी या अस्पष्ट या तोतलानेकी तरह (जेल्स, हायो, सिकेलि, स्ट्रैमोन) अथवा जीभ बहुत भारी मालूम होती है (ऐनाक, कोल्चो, लैके, लाई, नेट-म्यू, प्लम्ब, सिकेलि, स्ट्रैमोन,)। मुँहकी पेशियाँ सब फड़का और स्पन्दित हुआ करती है और मुँहमें फेन पैदा हो जाता है (कूप्रम, लैके, मैग-मूर, प्लम्ब)। लार बहुत थोड़ी निकलती हैं और मुख-विवर सूख मालूम होता है। मुँह और कण्ठमें जलन अनुभव होती है (एपिस, आर्स, कैन्थ, कैप्स, मेजिर, सोरिन, टैबाक)। मुँहमें पानी भर आनेकी तरह मुँहसे लगातार लार बहा करती है (ऐ-नाइ, आयोड, मर्क)।

गलेके भीतर।—कण्ठ इतना सूखा कि पानी पीनेपर भी वह तर नहीं होता (स्ट्रैमोन); कण्ठमें रुखड़ापन मालूम होना (कोचलि, हिपर, क्रियो, मैग-मूर, मर्क, सल्फ)। कण्ठमें ऐसा अनुभव होना कि धूल घुस गयी

है; कण्ठनलीके पीछे ऐसा मालूम होता है, कि एक सूजन पैदा होकर कण्ठनली दबाती है और इसीलिये वह संकुचित हो गयी है (हिपर, इग्ने, आर्जेण्ट-नाइ, ब्राइ, ग्लोन, प्लम्ब, रस, सैंगियु, वायो-थिया)। अन्ननलीकी सूजनकी वजहसे साँस रुक जानेकी सम्भावना।

पाकस्थली।—जलनभरी प्यास, प्रत्येक बार बहुत-सा पानी या खट्टा रस पीनेकी आकांक्षा, सभी चीजें ठण्डी खाना पसन्द करता है, खट्टे या रसभरे और स्निग्धकारक पदार्थोंके लिये महान आग्रह प्रकट करता है (ऐसिड-फास)। वातश्लेष्मा या आन्त्रिक ज्वरके बाद और गर्भावस्थामें राक्षसकी तरह भूख पैदा हो जाती है। वमन करते-करते बीच-बीचमें भूख और रुचि पैदा हो जाती है। गर्म पदार्थोंसे अरुचि और वितृष्णा (सिङ्को, फेरम, मर्क, मर्क-सोल, पेट्रोल; आगमें भूने गर्म पदार्थोंसे—लाइ, सिलि; गर्म पीनेकी चीजोंसे—कैमो)। रुचि घट जाती है, मुँहमें ऐसा मालूम होता है मानो गोंद लगा हुआ है; मुँहमें मीठा स्वाद या किसी तरहका स्वाद नहीं मालूम होना (ऐसिरम)। तीतो डकार (आर्निका, चायना, इग्ने, नक्स, ए-फास, पोडो, पल्स)। गर्म पानीय चीज-पीनेसे हिचकी (पानी आदि पीनेपर—इग्ने, नक्स)। मिचलीके साथ बहुत सुस्ती मालूम होना मानो मूर्च्छा आ जायगी और तेज़ प्यास। वमन—भयानक वमन। लगातार मिचली और बहुत कमजोरी; कै हुआ पदार्थ बहुत पतला, कुछ काला और पीला रङ्ग या पित्त और खून मिला और काला-काला या पीला और खाया हुआ पदार्थ आदि अथवा केवल जलीय पदार्थ वमन होता है; कभी खायी हुई चीज या अम्ल या तीता, फेन भरा, सफेद या पीली आभा लिये हरे रङ्गका श्लेष्मामय पदार्थ वमन हुआ करता है; सरमें चक्कर आया करता है (आर्स, कैम्फो, ग्लोन, हेलिबो, इपिक, कैलि-कार्ब, लैके, नक्स, पल्स), चेहरा उजला हो जाता है (पल्स), जीभ निर्मल दिखाई देती है (इपिक), रुचि स्वाभाविक रहती है, हिचकी आया करती है और मूर्च्छा आ जाया करती है; वृद्धि—पानी आदि पीनेपर (आर्स, कैन्थ, टैबाक) और थोड़ा भी शरीर हिलानेपर (ऐण्टि-टार्ट, आर्स, ब्राइ, कोलचि, क्यूप्रम-ऐसेट, लैके, नक्स, टैबाक, थिरिड)। विसूचिका रोगमें दस्त और वमन हुआ करता है (कैम्फो, क्यूप्रम, इलेटि, ऐकोन); मल बहुत ज्यादा, पानीकी तरह, बड़े वेगसे हड़-हड़ शब्दके साथ निकलता है और बहुत

जल्द रोगीमें उठनेकी शक्ति नहीं रह जाती। "हमें विसूचिका होगी" इस भयसे दस्त और कै (ऐकोन)। वमनके समय रोगीका उदर भीतरकी ओर इस तरह चिपक जाता है, कि रोगी तकलीफ़से बेचैन हो पड़ता है (कूप्रम, प्लम्ब, टैबाक)। उदरोर्द्ध प्रदेशमें बहुत गड़बड़ी मालूम होना (कैम्फ़ो)। पाकाशयका शूल, दर्द धीरे-धीरे पैदा होता है, पहले उदरके ऊपरी भागमें आरम्भ होकर ऊपरकी ओरके दोनों पार्श्वमें फैल जाता है और वहाँसे घूमकर पृष्ठफलकके सबसे नीचेवाले अंशमें जा पहुँचता है (मैग-फास देखिये)। इसके बाद क्रमसे भयानक यन्त्रणाजनक आकार धारण करता है और फिर दब जाता है ; दर्दके समय रोगीको इतना जाड़ा मालूम होता है, कि वह कांपा करता है (आर्जेण्ट-नाई, प्लम्ब, पल्स, स्टैनम, सल्फ़, टैबाक)। पाकस्थलीकी सर्दी, रोगी बहुत क्षीण हो पड़ता है, शरीर ठण्डा हो जाता है और एकाएक सुस्त हो जाता है (टैबाक)। रक्तपित्त या खूनका वमन ; नाड़ीकी धीर गति, भीतरी शीत मालूम होना, रह-रहकर मूर्च्छा आ जाती है और ललाटमें ठण्डा पसीना हुआ करता है। जरा हिलने या उठनेपर ओकाई आती है (ब्राई, काक्यू, गासिपियम, लैक-डिफ्लो, टैबाक, थिरिड)। बहुत दिनोंतक पाकाशयिक सुस्ती, वायुमें पानीके अंशकी अधिकता, निर्मल वायुका अभाव या क्विनाइनके अपव्यवहारसे उत्पन्न, उदरोर्द्ध प्रदेशमें जलन मालूम होना (आर्स, कूप्रम, इग्ने, नक्स, सिपि)।

अन्त्राशय।—यकृतमें अधिक रक्त-सञ्चय होना और उसीकी वजहसे पेटकी बीमारी या पाकाशयकी सर्दी, मुँहका सड़ा स्वाद, गर्म पदार्थोंसे अरुचि, यकृत-प्रदेशमें बहुत दबाव मालूम होना और पर्यायक्रमसे वमन तथा पतले दस्त आना। यकृतमें अधिक रक्त सञ्चय होनेकी वजहसे वायुनलीकी सर्दी, प्लीहा मिला सविराम ज्वर (आर्स, चिनिन-सल्फ़, फेरम ; दर्द रहनेपर—कैप्स, सियानोथस)। उदर और वक्ष-व्यवधायक पेशीमें प्रबल अकड़न तथा सिकुड़ना फैलना, जिन सब रोगियोंके हाथ बहुत ठण्डे और जिन्हें छातीमें दबाव और श्वास-कष्ट हुआ करता है, उन्हें ऐसा ही होता है। इस व्यवधायक पेशीके प्रदाहके साथ, अन्त्रावरण प्रदाह, वमन और भीतरी शीत मालूम होना। उदरमें भयानक जलन। ऐसी जलन मानो उसमें सुलगता हुआ अङ्गारा रखा है (क्रियो)। अन्त्रशूल—सर्दी लगनेके बाद या क्विनाइनके अपव्यवहारके परिणाम-स्वरूप तथा साग-सब्जी खानेके कारण उदर फूल उठता है। उसपर

हाथ रखनेपर दर्द होता है। किसी भी पथसे वायु नहीं निकलता ; ठण्डा पसीना हुआ करता है। उदरमें जलन हुआ करती है और इस तरहका दर्द होता है मानो मरोड़ खा रहा है या छुरीसे काटा जा रहा है। जी मिचलाता है और वमन होता है ; भोजन करनेपर और भी बढ़ जाता है। अन्त्रावरणी-प्रदाह—दस्त और के हुआ करता है। रोगीकी देह बरफकी तरह ठण्डी हो जाती है। आँख और गाल गड़हेमें धँस जाते हैं, नाड़ी सूक्ष्म और क्षीण, रोगी छटपटाता है और महान उद्वेग प्रकट करता है। उदर एकदम शून्य और सुस्त करनेवाला मालूम होता है। आँत-में-आँत घुस जाना (आर्स, ओपि, प्लम्ब), रोगी तकलीफ़से बेचैन हो पड़ता है और शरीरको सामनेकी ओर टेढ़ाकर दौड़ता है तथा पेटको दबाया करता है। उदरमें बहुत सर्दी मालूम होना (ऐम्ब्रा, सीड्रन, कोलचि, टैबाक)। खाँसनेपर आँत उतरकर चिपक जाती है। प्रदाह नहीं रहता। अन्त्रशूल,—विशेषकर नाभि-प्रदेशमें, दर्द काटने या मरोड़ेकी तरह ; पाखाना होने बाद आराम हो जाता है। ऐसा मालूम होता है मानो अन्त्र-मण्डली सब गेंडुरी मारे हुए हैं (मानो उलट-पलट होती है और फिर सीधी हो जाती है—मैग-फास) ; भोजनके बाद बढ़ जाता है। पेटमें दर्दके कारण रातमें नींद नहीं आती (प्लम्ब)।

मलान्त्र और मल।—उदरामय—बार-बार पाखाना लगता है, मल कुछ हरे रङ्गका, पानीकी तरह, बहुत ज्यादा और आँव मिला। मानो छुरीसे आँतें आदि काटी जा रही हैं, इसी तरहका पेटमें दर्द मालूम होता है और हाथ तथा पैरोंसे ऐंठन आरम्भ होकर क्रमसे उदर और सारे शरीरमें फैल जाती है ; रोगी बहुत जल्द सुस्त हो पड़ता है ; डर या त्रासके कारण (ऐकोन, ओपि) ; बढ़ना—शरीर हिलानेपर ; वमन हुआ करता है, पाखाना या वमन होनेके समय ललाटमें ठण्डा पसीना होता है और पाखाना हो जाने बाद रोगी सुस्त हो पड़ता है (आर्स, कैम्फो, टैबाक)। कब्जियत,—बिलकुल ही पाखाना नहीं लगता ; मल बड़ा, कड़ा (ब्राई, सल्फ) ; कभी-कभी गोल आकारकी काली गाँठ निकलती है (चेलिडो, ओपि, प्लम्ब)। मलान्त्रमें सङ्कोचन-शक्ति न रहनेकी वजहसे उत्पन्न (ऐल्यू, ब्राई, ओपि) ; उदरोर्द्ध-प्रदेशमें जभी-तभी वेग अनुभव होता है (इग्ने, मलान्त्रमें—नक्स) ; बच्चोंकी तकलीफ देनेवाली कब्जियत (लाई और नक्ससे फायदा न होनेपर)।

वायु निकलनेके समय अनजानमें पतले दस्त आया करते हैं। फेफड़ा या फुसफुसावरणके रोग मिला बवासीर। मलद्वारसे थक्का-थक्का खून निकलता है, किसी तरहकी तकलीफ नहीं मालूम होती और रोगी सुस्त हो पड़ता है।

पेशाब।—पेशाब रुका या मूत्ररोध (ऐकोन, बेल, स्ट्रैमोन); अनजानमें पेशाब (ऐ-नाई, आर्स, कैम्फो, मैग-कार्ब)। बार-बार पेशाब और उसके साथ ही तेज़ प्यास, बहुत भूख, मिचली, सर-दर्द, अम्लशूल, कब्जियत और सर्दी। खाँसते-खाँसते अनजानमें पेशाब हो जाता है (कास्टि, स्क्विला)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—सद्य-प्रसूताओंका कामोन्माद (प्लैट), क्लेदका स्राव रुक जाता है। ऋतु होनेके कुछ पहले ही कामोन्माद पैदा हो जाता है (कैल्के-फास, फास, स्ट्रैमोन ; सभी इन्द्रियाँ रमण आलिङ्गनके लिये तैयार हो जाती हैं—कैल्के-फास), रमणकी तृप्ति न होनेकी वजहसे। जरायुका प्रदाह—तेज वमन, प्रलाप और मृत्यु-भय प्रकट हो जाता है। कभी-कभी दस्त या कै भी हुआ करता है; रोगिनीकी देह बहुत गर्म और हाथ-पैर एकदम ठण्डे। रजःस्राव—एकदम असमयमें होता है और बहुत ज्यादा स्राव हुआ करता है; रुके हुए रजःस्राव रोगमें परलोकके सम्बन्धमें निराशा या रक्त-कास (खाँसीमें खून आना) पैदा हो जाता है। आर्त्तवका अभाव रोगमें स्नायविक सर-दर्द, चेहरेका रङ्ग सीसेकी तरह, इसके साथ ही मिचली, वमन और पतले दस्त आना। रजःकृच्छ्र या वाधकका दर्द, इसके साथ ही जरायुका अपने स्थानसे हटना, इस स्थानपर भी दस्त-कै और मिचली प्रकट हो जाया करती है। गर्भावस्थामें रोगिनी अपने मकानमें इधर-उधर घूमती फिरती है, बोलती नहीं है, गर्वित हो जाती है और उसे प्यास लगा करती है और वमन हुआ करता है। प्रसवके दर्दसे रोगिनी सुस्त हो पड़ती है; शरीर हिलाते ही मूर्च्छा आ जाती हैं (आर्स)। प्रसवके समयका धनुष्टङ्कार (ऐ-हाइड्रो, बेल, साइकूटा, हेलिबो, हायो, कैलि-ब्रोम, लैके), रोगिनी सफेद पड़ जाती है, हिमांग अवस्था उपस्थित हो जाती है, शरीर रक्त-शून्य हो जाता है या मस्तिष्कमें अधिक रक्त-सञ्चय होकर चेहरा फूल उठता है। रोगिनी उन्मादकी तरह चिल्लाया करती है और अपने पहननेके वस्त्र आदि फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर डालती है। प्रसवके बादका उन्माद- जिसे-तिसे चुम्बन करने जाती है (क्रोकस, फास, स्ट्रैमो)।

श्वासयन्त्र ।—स्वरनलीमें आक्षेप ; कण्ठमें अकड़न होने बाद "कों-कों" शब्द होता है (बेल, क्लोरम, कैलि-ब्रोम, लैके)। कभी-कभी एकाएक कण्ठनली रुक जाती है। श्वास-रोध होना चाहता है और ऐसा मालूम होता है, मानो आंखें बाहर निकल पड़ेंगी। सर्दी थोड़ी, पर रोगी बहुत कमजोर हो पड़ता है। विसुचिका पैदा होनेके समय सर्दी रोगमें कण्ठका स्वर खोखला और उखड़ा, श्वास-कृच्छ्रता। वक्षपर दबाव मालूम होना। ऐसा अनुभव होना मानो छाती जकड़ गयी है। श्वास-रोग, वायु जलीय सौर शीतल होनेपर। बहुत सवेरे प्रकोप पैदा हो जाता है (आरम, कैल्के, कोना); पीछेकी ओर माथा झुकानेपर घटना (बेल, कैमो, स्पञ्जि), स्थिर रहना पसन्द नहीं करता ; ऊपरी अङ्गमें पसीना होनेपर सूखी खुसखुसी खाँसी (आर्स, इपिक, फास); आक्षेपिक, घड़-घड़ शब्द करनेवाली खाँसी, पर बलगम किसी, तरह भी नहीं निकलता ; वायुनलीभुजकी निम्न-तम शाखामें उत्तेजनाके कारण पैदा हुई गभीर घड़-घड़ शब्द करनेवाली तेज और कुक्कुर खाँसीकी तरह खाँसी ; बलगम पीला, डोरीकी तरह, गाढ़ा गोंदकी तरह और उसका स्वाद नमकीन या खड़ा। खांसते-खाँसते शरीर नीला हो जाता है और ठण्डा पसीना हुआ करता है ; श्लेष्माके साथ खून निकला करता है ; खाँसीका बढ़ना—सवेरे, संध्याके बादसे रातके १२ बजेतक, गर्म घरमें प्रवेश करनेपर (ब्राई, इपिक, पल्स, सेनेगा, स्पञ्जिया), शय्याके उत्तापसे शरीर गर्म होनेपर (नेट-म्यूर, नक्स-मस), जल-वायुके परिवर्त्तनसे (कार्बो-वेज, कूप्रम, लाई, स्पञ्जि, स्क्विला), शिशुके रोनेपर (ऐण्टि-टार्ट, कैमो) और किसी असन्तोष या विरक्तिका कारण होनेपर (ऐकोन, स्टैफ)। हूप खाँसीकी आक्षेपकी अवस्था, हेमन्त और बसन्त ऋतुमें बहुव्यापक हूप खाँसी।

वक्ष ।—वक्षमें श्लेष्मा घर-घर किया करता है, पर खाँसनेपर नहीं निकलता। कलेजा धड़कना और मानसिक बेचैनी (ऐकोन, आर्स, स्पाई, सल्फ)। जरा हिलनेसे ही श्वासाल्पता अनुभूत होती है। कलेजेका धड़कना बाहरसे ही दिखाई देता है—वक्षकी पसलियाँ ऊँची उठ जाती हैं।

गर्दन और पीठ ।—गला इतना क्षीण रहता है, कि बच्चा माथा सीधा नहीं रख सकता, विशेषकर हूप खाँसी रोगमें (कोना)। वातकी वजहसे ग्रीवा

अकड़ी मालूम होती है और यह अकड़न नितम्बतक चली जाती है। कमर और पीठमें इस तरहका दर्द, मानो चोट लगी है (आर्निका, आर्स, ब्राई)।

प्रत्यङ्गादि।—सभी अङ्ग इतने क्षीण मालूम होते हैं, मानो पक्षाघात हो गया हो। कभी-कभी प्रत्यंग आदि सुन्न पड़ जाते हैं (सिपि, साइलि)। शरीरमें इस ढङ्गका दर्द होता है, मानो न जाने कितना परिश्रम किया है। प्रत्यङ्गोंमें चोट या गिर जाने आदिकी तरह दर्द ; वृद्धि—ठण्डी तर हवा लगनेपर या शय्याके उत्तापसे ; घटना—इधर-उधर टहलनेपर। अग्रबाहुके बीचके अंशमें दर्द—मानो हड्डी दब रही है। हाथ और पैर बरफकी तरह ठण्डे (साइलि, कैम्फो)। चलनेमें गड़बड़ी,—पहिले दाहिना, फिर बायाँ उरु-शिखर सुन्नकी तरह मालूम होता है। पैरकी पीटलीमें ऐंठन होती है (कैम्फो, कूप्रम-ऐसेट, प्लम्ब, सिकेलि)। दोनों पैरोंमें बिजलीका झटका लगनेकी तरह या दोनों पैर मानो बिजलीकी शक्ति द्वारा रह-रहकर हिल उठते हैं, इस तरहका अनुभव होना (ऐगार, साइकूप्र, मेन्सि, स्ट्रान, ज़िङ्कम); शय्यामें सोये रहनेपर बढ़ जाता है (ऐनाक, आर्जेण्ट-नाई)—अतएव रोगी उठ बैठता है और पलंगसे पैर लटका देता है (बेल)। रोगी टहलते रहनेपर अच्छा रहता है। दोनों पैर, विशेषकर जानुमें मानो एक भारी पत्थर बँधा हुआ है, इस तरहका दर्द (कैम्फो, रस) आराम मिलनेकी आशामें बाध्य होकर टहलना पड़ता है। एकाएक दोनों पैर फूल उठते हैं। दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे मालूम होते हैं, मानो उनकी शिरा और धमनी आदिके भीतरसे बरफकी तरह ठण्डा पानी प्रवाहित हो रहा है। खड़े होनेवाली अवस्थामें पैरकी अंगुलीमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द (पैर लटका नहीं सकता—अरम-मूर)।

सार्वाङ्गिक।—रोगीकी देह काँपा या फड़का करती है। प्रसवके बादका धनुष्टङ्कार। धनुष्टङ्कारकी तरह अकड़न, पारत्रिक विषयोंमें उत्तेजनासे पैदा हुई बीमारियाँ; बच्चोंका आक्षेप ; बच्चा डर जाता है। उसका शरीर मलीन दिखाई देता है और ललाटमें ठण्डा पसीना हुआ करता है। आक्षेपके पहले या बाद खाँसी आती है; कभी-कभी आक्षेपके बाद रोगी बेहोश हो जाता है (मस्कस, इग्नेशि)। लगातार या दृढ़ आक्षेप—हाथ और पैरकी नीचेकी पेशीमें बहुत खींचन या जकड़ जानेकी तरह मालूम होता है। बहुत ज्यादा पतला पाखाना होनेके बाद हाथ-पैर और क्रमसे समूचे शरीरमें

ऐंठन होती है (कूप्रम-ऐसेट, कूप्रम-आर्स)। अफीम या तम्बाकू खानेके कारण नाना प्रकारकी बीमारियाँ। बहुत कमजोरी मालूम होना, सिङ्कोनाके अपव्यवहारके बादकी कमजोरी। बच्चोंकी क्रूप खाँसी; वह बहुत क्षीण हो जाता है और विलेपी ज्वरकी तरह उसे ज्वर आता है। पक्षाघात—विसूचिकाके बाद या किसी दूसरे कारणसे बहुत ज्यादा शारीरिक रस-क्षय होनेपर। रोगिनी हमेशा सोयी रहती है। उठनेके समय या उठनेपर बेचैनी मालूम होती है और उसके कपालमें ठण्डा पसीना होता है। एकाएक आलस्य मालूम होता है (क्रोटेल, सिपि, आर्स, ग्रेफ, इपिक, नक्स, फास, सेलिन; विसूचिका रोगमें—ऐ-हाइड्रो, कैमो, कोलचि)। शरीरकी त्वचा और पेशियाँ सब शिथिल। शरीरकी त्वचामें खूनकी कमी; पीब सोख जानेके कारण बीमारियाँ (ऐन्थ्राक्स, लेके, आर्स, हिपोजिन)। पेशाब बहुत गदला; शरीरमें जगह-जगह काला दाग पैदा हो जाता है; रोगी इतना कमजोर हो जाता है, कि चलनेके समय ढलमलाया करता है (कैम्फ, कोना, इग्ने, केलि-ब्रोम, नक्स-मस, नक्स-वोम)।

त्वचा।—सिकुड़ी हुई त्वचा (सिकेलि); शरीरके किसी अंशको दबानेपर वहाँकी त्वचा बहुत देरतक सिकुड़ी रहती है (कूप्रम-ऐसेट)। सारा शरीर ठण्डा, पर भीतर दाह मालूम होता है। शरीरकी त्वचाका रंग नीला या बैगनी और उत्ताप-रहित। शरीरमें अथवा हाथ और चेहरेमें अरुणिका या लाल रङ्गके दाने निकलते हैं। खुजलीकी तरह सूखे दाने। शरीरकी त्वचाका कोई अंश फूला या मोटा होनेपर वहाँसे खाल निकला करती है। फैलनेवाला विसर्प। खसड़ा—बहुत धीरे-धीरे निकलता है और उसका रङ्ग म्लान रहता है; रोगीकी शरीरकी त्वचा बहुतसे स्थानोंमें नीली आभा लिये हो जाती है; रक्तस्राव होता है, परन्तु उससे प्रकोप कम नहीं होता; रोगी हमेशा निद्रालु, क्षीण और हिमांग; उसकी नाड़ी सूतकी तरह सूक्ष्म; तेज़ खाँसी और मिचली वर्त्तमान रहनेपर भी इससे लाभ होता है।

निद्रा।—औंघाई। वात श्लेष्मा ज्वरमें रोगी तीन दिनोंतक लगातार सोता रहता है। निद्रालु, नींद लगते ही इस तरह चौंककर जाग उठता है, मानो डर गया है और इसी कारणसे उसकी नींदमें व्याघात होता है; इसके बाद बोखार आता है। निद्रित अवस्थामें उसके दोनों बाँह उसके माथेपर फैले रहते हैं (कैस्टोर-इक, प्लेट, लैक-कैन, मिडोरिन, पल्स) और अस्पष्ट यन्त्रणा-

दायक शब्द किया करता है (ऐलेन्थस, बेल, इपिक, लाई ; विसूचिका रोगमें ए-म्यूर)। रातमें रोगी उद्विग्न हो पड़ता है और उसे नींद नहीं आती। स्वप्न—मानो पानीमें डूब रहा है (वेरेट-विर, जिङ्कम); मानो एक कुत्ता काट रहा है, पर रोगी भाग नहीं सकता (मानो उसको काटता है—सल्फ); मानो कोई उसके पीछे दौड़ रहा है (मानो जङ्गली पशु उसके पीछे दौड़ रहा है—सल्फ ; मतवाला साँढ़ पीछा कर रहा है—इण्डियन ; बिल्ली, कुत्ते प्रभृति उसका पीछा कर रहे हैं—नक्स-वोम); डाकुओंके सपने (आर्नि, कैलि-कार्ब, मैग-कार्ब, मर्क, नेट-म्यूर, साइलि), भीत और चकित भावसे जाग उठता है और उसे विश्वास रहता है कि उसका स्वप्न सत्य है (नेट-म्यूर)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—शीतावस्था,—प्यास, बहुत देरतक ठहरनेवाली और तेज जाड़ा ; गर्म प्रयोगसे या वस्त्र आदिकी गर्मीसे भी जाड़ा नहीं घटता (ऐरिनिया, कैमो), माथेसे पैरकी अंगुलीतक जानेवाली भीतरी शीत, प्यास। समूची देहमें सर्दी मालूम होती हैं और पानी पीनेपर सर्दी बढ़ जाती है (कैप्स, इयुपेट-पार्फोल, नक्स-वोम); शय्यासे बाहर निकलनेपर कुछ घट जाता है। एक ही अंशमें अभी उत्ताप मालूम होता है और क्षणभर बाद ही वहाँ सर्दी मालूम होती है अथवा एक अंशमें उत्ताप मालूम होता है और क्षणभर बाद ही दूसरे अंशमें सर्दी मालूम होता है (पल्स)। दोनों पैर, बाँह और कन्धेमें शीत मालूम होता है, मानो इन सब अंशोंकी हड्डीमें ठण्डी हवा बह रही है। शरीरकी त्वचा बरफकी तरह ठण्डी और लसदार भावसे भरी। दस्त और कै होता रहता हैं (इलेट)। दोनों पैर बहुत ठण्डे—मानो उनमें ठण्डा पानी बह रहा है (हेलोडर्मा, कैम्फोरा)। उत्तापावस्था,—उत्ताप अधिकांश स्थानोंमें भीतरी ; प्यास ; पानी नहीं पीना चाहता है या लगातार ठण्डी पीनेकी चीजें पीना चाहता है ; किसी तरहकी भी पान-सामग्री रोगीकी इच्छानुसार ठण्डी नहीं मालूम होती, उत्ताप पीठकी राहसे सरके पिछले भागमें चढ़ता है। माथा गर्म, जड़तायुक्त और मस्तिष्कमें जड़ता मालूम होती है ; माथेमें पहले कुछ गर्मी पैदा हो जाती है, इसके बाद लगातार ललाटमें ठण्डा पसीना हुआ करता है। चेहरेपर लाली और उत्ताप प्रकट होता है। दोनों गाल लाल और उनमें जलन हुआ करती है। शिराओंसे मानो बरफकी तरह ठण्डा खून प्रवाहित होता है (हेलोडर्मा, रास, ओपि)। पसीनेवाली अवस्था—इस समय प्यास रहती है ; पसीना बहुत ज्यादा, ठण्डा

और लसदार (बहुत ज्यादा पसीना, परन्तु तेज प्यास—आर्स, चायना)। पसीनेवाली अवस्थामें रोगीका चेहरा मुर्देकी तरह रक्त-हीन और सफेद दिखाई देता है। पसीना-—कटु, घृणा पैदा करनेवाली गन्धसे भरा और वस्त्र आदिमें लगनेपर पीला दाग पड़ता है। (कार्बो-ऐन, मर्क, थूजा)। जरा हिलनेसे ही पसीना निकलने लगता है (ब्राई, हिपर, सिपि)। प्रत्येक बार मलत्यागके बाद और श्लेष्माका वमन होनेके बाद ललाटमें ठण्डा पसीना होता है। विसूचिका रोगके प्रादुर्भावके समय शरीरके भीतरवाले यन्त्र आदिमें रक्त-सञ्चयके कारण या विष मिश्रित सविराम ज्वर; या क्विनिनके अपव्यवहारसे पैदा हुआ सविराम ज्वर। वातके कारण ज्वर,—बहुत ज्यादा पसीना हुआ करता है, रोगी बहुत क्षीण हो पड़ता है और पतले दस्त आने लगते हैं। विसूचिका रोग फैला रहनेके समय आन्त्रिक, वात-श्लैष्मिक या विकारपूर्ण ज्वर या जिन सब ज्वरोंमें रोगीकी जीवनी-शक्ति एकाएक हिमांग अवस्थामें जा पहुँचती है।

सम्बन्ध। —प्रतिविष।—एमोन, कास्टि, कैम्फो (सर-दर्द), सिङ्को, काफिया।

अनुकूल सम्बन्ध।—आर्स, चायना, ऐ-फास, कूप्रम और इपिका-कुआन्हाके बाद प्रायः विरेट्रमकी जरूरत पड़ती है और विरेट्रमके बाद प्रायः आर्स, आर्नि, चायना, कूप्रम, इपिकाका प्रयोग होता है।

तुलनीय।—कपालमें ठण्डा पसीना (टैबेकम—समूचे शरीरमें); अश्लील बातें, प्रणय या धर्मकी बातें—हायोस, स्ट्रैमो। सामान्य हिलने-डोलनेसे ही मूर्च्छा-भाव—सल्फ, कार्बो-वेज। माथेकी शीर्ष-देशमें मानो बरफ है, इस तरहका अनुभव होना—सिपिया। अम्ल या रसीली चीजें खानेकी इच्छा—फास, ऐसिड। पेटमें ठण्डक मालूम होना—कास्टि, टैबेकम। जलपानसे वमनका बढ़ना—आर्स। भयके बाद हैजा—ऐकोन। कब्जियत—सल्फ, ब्रायो। बैंगनकी तरह मल—ओपियम। ऋतुके समय कमजोरी—ऐल्यूमिना, कैल्के। भयके कारण अतिसार—जेल्स। हैजामें—जैट्रोफा। वमन—पोडो; बिना दर्दका—आइरिस, क्रोटन, इलाटे। गला पतला और दुबला—नेट्रम। हिमांगावस्था—दस्त, कैके साथ तन्द्रा—ऐण्टि-टार्ट। ठण्डा पानी पीनेपर—आर्स। पेटमें दर्द—कोलोसिन्थ। दर्दके कारण

मूर्च्छा—कैमो, हिपर, वेलेरि। मानसिक आवेगके कारण आक्षेप—इग्नेशिया। आक्षेपके साथ जीभका अकड़ जाना—नक्स-वोमिका। सविराम ज्वर—लेकेसिस। छुटकारेके लिये डरना—सलफर। नाभिस्थलमें आँतका बढ़ना—ब्रायो, नेट्रम; शरीर काटनेकी तरह आक्षेपिक, काटनेकी तरह दर्द—कोलोसिन्थ। हँसना और रोना पर्यायक्रमसे—अरम, पल्स, लाइको, सिपिया, स्ट्रैमो, फास्फोरस, सल्फर। बहुत बोलना—कूप्रम, लैकेसिस, ओपियम। चूम लेना—ऐगारिकस। रतौन्धी—नक्स-वोम, बेल। विष्ठाकी गन्ध (नाकसे)—ऐनाकार्ड इत्यादि।

सदृश।—कूप्रम (पर इसमें पानी आदि पीनेपर खाँसी घट जाती है और थोड़ा भी पाखाना होनेपर प्रत्यङ्गोंमें ऐंठन पैदा हो जाती है); ब्राई (कब्जियत)। जेट्रोफा (अण्डलालकी तरह वमन, पानीकी तरह पतला मल छिटककर निकलता है और उदर तथा पैरकी पोटलीमें ऐंठन होकर बराबर हो जाती है); रिसिनस (विसूचिका रोगमें स्तम्भित भाव,—परन्तु इस अवस्थामें भी दस्त और कै सम-भावसे हुआ करता है)। बाधक रोगमें दस्त और कै होते रहनेपर—"ऐमोन-कार्ब" और "बोविस्टा" के बाद "वेरेट्रम" विशेष लाभदायक हुआ करता है। इसके अलावा ऐकोन, आर्स, कैम्फो, कोलचि, क्रोटोन, ओपि, प्लम्बम, सिकेलि, टैबाक, वेलि।

वृद्धि।—छूनेपर, दबानेपर, झुकनेपर, उत्ताप और गर्म पानी पीनेपर, ठण्डी चीज खाने या पीनेपर, जलवायुके परिवर्त्तनसे, गर्म घरमें प्रवेश करनेपर, तर जलीय वायु लगनेपर, ऋतुके पहले और समय, पाखाना होनेके पहले और समय। पसीना निकलनेके समय और डर जानेके बाद।

उपशम।—स्थिर रहनेपर, पीछेकी ओर माथा झुकानेपर, लम्बे-लम्ब चित्त होकर सोनेपर और चलनेके समय।

शक्ति।—१म दशमिकसे २०० शततमिक क्रम। विसूचिकामें अधिकांश चिकित्सक ६, १२ और ३० शततमिक क्रम व्यवहार किया करते हैं।

क्रियाका स्थायित्व।—२० से ३० दिन।

वेरेट्रम-नाइग्रम

(VERATRUM NIGRUM)

परिचय ।—आस्ट्रेलिया और साइबेरियामें उत्पन्न काले फूलवाला विरेट्रम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्ते और ताजे फूलके वृन्तसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—सर-दर्द, कानमें एक तरहकी आवाज़, प्रत्येक महीने नियमित और परिमित ऋतु न होकर, थोड़े-थोड़े दिनोंके अन्तरसे बहुत ज्यादा ऋतु-स्राव इस दवाका निर्देशक लक्षण है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

वेरेट्रम-विरिडि

(VERATRUM VERIDE)

दूसरा नाम ।—हेलोनियस विरिडिस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़से अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—अंधापन ; आर्त्तवकी कमी ; संन्यास ; दमा ; अन्धान्त्र-प्रदाह ; नीहार कण्डू ; तांडव ; आक्षेप ; दो देखना ; विसर्प ; सर-दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; हिचकी ; बहुव्यापक ; सर्दी ; मलेरिया ज्वर ; खसड़ा ; मस्तिष्कावरणी प्रदाह ; ऋतुरोध ; अंडनलीका आक्षेप ; अण्डकोष-प्रदाह ; फेफड़ेका प्रदाह ; सूतिकाक्षेप ; सूतिकोन्माद ; सपने-भरी निद्रा ; मेरुमज्जाकी रक्तकी अधिकता ; प्लीहामें रक्तकी अधिकता ; लू लग जाना ; सान्निपातिक ज्वर ; जरायुमें रक्तकी अधिकता ।

उपयोगिता और आभास ।—मस्तिष्कमें बहुत अधिक रक्तसञ्चयकी वजहसे उन्मत्त प्रलाप, प्रचंड सर-दर्द, नाड़ी बहुत पुष्ट और बहुत अधिक उत्ताप, चेहरा घोर लाल ; वस्तिगह्वरके भीतरवाले और शरीरके अन्यान्य अंशोंके यन्त्र आदिमें रक्त-सञ्चयकी अधिकता और ऊपर कहे अनुसार धमनियोंका फैलना ; मस्तिष्क, अन्ननली, अन्नवेष्ट, हृत्पिण्ड, श्वासयन्त्र प्रभृतिके उत्ता

तरहके धामनिक लक्षण मिले प्रदाहकी इसे अद्वितीय दवा कहा जाये तो भी अत्युक्ति न होगी। जिन सब मनुष्योंके शरीरमें रक्तका भाग अधिक है, उनके लिये यह दवा विशेष उपयोगी है। आगे लिखे कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं :—मस्तिष्कका निचला भाग और वक्ष, मेरुदण्ड और पाकस्थलीमें अधिक रक्त-सञ्चय होना। किसी यन्त्रके या किसी अंशके प्रदाहमें तकलीफ़की अधिकता। नयी वात व्याधिमें भयानक ज्वर। पुष्ट, कड़ी और तेज़ नाड़ी। सन्धि और पेशीमें प्रचण्ड यन्त्रणा और पेशाब बहुत थोड़ा तथा लाल। बच्चा काँपा करता है और उसकी देह रह-रहकर हिल उठती है। अकड़न होनेकी सूचना, रोगीका माथा लगातार रह-रहकर हिल उठता है। स्नायविक या पाकाशयिक सर-दर्द। ऋतु रोध हो जानेकी वजहसे मस्तिष्कमें अधिक रक्त-सञ्चय होना, प्रचण्ड संन्यास रोगका प्रकोप, भयानक मिचली पैदा हो जाती है और वमन हुआ करता है। माथेमें अधिक रक्त सञ्चय होनेकी वजहसे संन्यास—सर गर्म, आँखें लाल, बोली अस्पष्ट, नाड़ी धीर, पुष्ट और लोहेके तारकी तरह कड़ी। मस्तिष्कके नीचेके आवरण-प्रदाह रोगमें धनुष्टङ्कारकी तरह आक्षेप, दृष्टि अस्पष्ट, माथा पीछेकी ओर खिंचा रहता है; बच्चेको जभी-तभी धनुष्टङ्कार हो जानेकी सम्भावना होती है। मस्तिष्क-मेरु-मज्जा रोग,—आक्षेप पैदा हो जाता है, आँखकी पुतली फैल जाती है। धनुष्टङ्कारकी तरह आक्षेप—शरीर धनुषकी तरह टेढ़ा हो जाता है और ठण्डा, लसदार पसीना हुआ करता है। लू लगना—(सर्दी-गर्मी रोग)—माथा बहुत भारी मालूम होता है, धमनियोंमें टपक हुआ करती है, आवाज़ सहन नहीं होती और आंखमें हरेक चीज दो दिखाई देती है या उसका अंशभर दिखाई देता है। जीभ सफ़ेद या पीला लेप चढ़ी और उसके बीचमें एक लाल रेखा दिखाई देती है। जीभ ऐसी मालूम होती है, मानो आग छू गयी है। नाड़ीकी गति एकाएक तेज़ होकर धीरे-धीरे घटती है और अन्तमें स्वाभाविककी अपेक्षा भी धीमी गति हो जाती है। कभी-कभी धीर गति, कोमल, क्षीण और कभी-कभी अपरिमित या रुक-रुककर गति होती है।

लक्षणावली

मन।—स्तम्भित भाव, बुद्धिकी जड़ता, स्मरण शक्ति गायब, सरमें चक्कर आना और मस्तिष्कमें रक्तकी अधिकताकी वजहसे उन्माद। प्रसवके बादका

उन्माद,—किसीसे भी बोलती नहीं। सभी विषयोंमें सन्दिग्ध चित्त (लेके); चिकित्सकसे मिलना नहीं चाहती—उसे देखनेपर मानो उसे डर लगता है; विष खिलाये जानेका भय (हायो, रस); रोगीको नींद नहीं आती और उसे सोनेके कमरेमें बन्द रखना भी बहुत कठिन हो जाता है। चित्तविषाद (जेल, नेट-म्यूर, पल्स)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, सवेरे सोकर उठनेपर (बेल, ब्राई, लाई, नेट-म्यूर, फास, पल्स, रस-टक्स); आसन या शय्यासे उठनेपर मिचली और वमनके साथ सरमें चक्कर आना (नक्स-वोम, फास, पल्स, सैङ्गियु, सल्फ); घटना—आँख बन्दकर (कोना, डिजिट, फेरम, फेलेन, पाइपर-मिथ, सेलिन), किसी चीजपर स्थिर भावसे माथा रखनेपर (सैबाड)। सर-दर्द, गर्दनके पिछले भागसे उत्पन्न होकर माथेमें चला आता है (सेङ्गियु, साइलि, स्पाइजि), सरमें चक्कर, अस्पष्ट दृष्टि (साइक्लेम) और उसके साथ ही आँखकी पुतली फैली; माथा भरा और भारी मालूम होना, गलेकी दोनों धमनियोंमें टपक हुआ करती है, आवाज और रोशनी सहन नहीं होती, चेहरा तमतमा उठता है, आँखें लाल हो जाती हैं, बोलीमें जड़ता आ जाती है, निम्नाङ्गमें चुनचुनी होने लगती है और ऐसा मालूम हुआ करता है, मानो अनगिनती आलपीनें गड़ रही हैं। नाड़ी पुष्ट, धीर गति और लोहेके तारकी तरह कड़ी; कानमें भों-भों आवाज हुआ करती है। प्रत्येक चीज दो दिखाई देती है या उसका कुछ अंश-भर दिखाई देता है (जेल, ग्लोन)। दाहिनी कनपटीके पास आँखके निकट शूलका दर्द अनुभव होता है। ललाटमें तेज़ दर्द, वमन हुआ करता है (आइरिस)। ऋतुरोध होनेकी वजहसे सरमें रक्त-सञ्चय हो जाता है (काक्यु, ग्रैफ, लेके), मस्तिष्कमें बहुत अधिक उत्तेजनाकी वजहसे भयानक मिचली और वमन होने लगता है (एपोमार्फिया)। मस्तिष्क-मेरुमज्जा-प्रदाह, प्रबल ज्वर, रोगी अंशमें बहुत अधिक रक्त-सञ्चय हो जाता है और धीरे-धीरे सर हिलना आरम्भ होता है (साइकूट, हायो, पोडो, साइलि, स्ट्रैमोन, वेरेट-ऐल्ब), वमन हुआ करता है या अस्थि-सार, ठण्डा चेहरा, नाड़ीकी गति बहुत धीमी और श्वास-प्रश्वास जोर लगाकर करना पड़ता है। इसके बाद किसी-किसी जगह धनुष्टङ्कारकी तरह आक्षेप पैदा हो जाता है, शरीर बाहर या पीछेकी ओर धनुषकी तरह टेढ़ा हो जाता है और रोगीका शरीर ठण्डे लसदार पसीनेसे तर हो जाता है। प्रत्येक बार रजःस्राव होनेके आरम्भमें सर-दर्द पैदा हो जाता है, रोगिनीकी

इन्द्रियाँ सब अत्यन्त उत्तेजना-प्रवण हो जाती हैं और इसी वजहसे उसे अन्धेरे घरमें रहना पड़ता है (सेङ्गियु, सिपिया, साइलिसिया)। माथा और चेहरेका दाहिने पार्श्वमें फैलनेवाला (एरण्डो, स्ट्रैमोन), रोगी अंग फूल उठता है।

आँख ।—अस्पष्ट दृष्टि, आँखकी पुतलियाँ फैलीं। दीयेकी लौके चारों ओर हरा घेरा दिखाई देता है (फास, सिपि, सल्फ) और सरमें चक्कर आने बाद वह लाल मंडलमें परिणत हो जाता है। चोटकी वजहसे पलकोंका विसर्प। आँख घूमी और संकुचित हो जाती है ; आँखका गोला घूमा करता है (वेल, कैमो, हायो, स्ट्रैमोन, वेरेट-एल्ब) ; पलकोंका पक्षाघात (कास्टि, जेल्स, गुयारिया, नक्स-मस, स्पाई, वेरेट-एल्ब)। उठनेके समय दृष्टि अस्पष्ट हो जाती है और बेहोश हो जानेका उपक्रम होता है।

कान ।—तेजीसे शरीर हिलानेपर बहरापन पैदा हो जाता है और रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है। कानमें भों-भों आवाज ; माथेमें अधिक रक्त-सञ्चय होना ; मिचली और वमन, दोनों कान ठण्डे और उजले। किसी तरहकी आवाज सहन नहीं होती।

मुखमण्डल ।—चेहरा ठंडा, नीली आभा लिये और ठण्डे पसीनेसे तर, नाक नोकीली, अस्थि-सार, ठंडी और नीले घेरेसे घिरी ; दोनों ओंठ और नाकके छेदके चारों ओर उजलापन दिखाई देता है। मुँहकी पेशियां सब बड़े वेगसे उछलती और फड़का करती हैं (आयोड, इपिक, लाई, मर्क-कोर), विशेषकर गालकी पेशी (वेलि)। चेहरा तमतमाया या उद्दीप्त (ऐमिल, बेप्टि, वेल, ग्लोन, ओपि) मस्तिष्कमें अधिक रक्त-संचय होनेके साथ ; दोनो आँखें लाल रङ्गकी। मुँहका एक कोना नीचा विशेषकर बायाँ कोना (आर्नि, ग्रैफ, ओपि, फास)। दोनों ओंठ सूखे, मुख-विवर सूखा या जमे हुए गोंदकी तरह श्लेष्मासे लिपटा (वेल, कैलि-ब्राई, नेट-सल्फ)।

मुख-विवर ।—मुँहमें बहुत अधिक लार संचय होना (ऐ-नाई, आयोड, मर्क, साइक्यूरा, युकैलिप्स, पोडो, स्ट्रैमोन), जीभ सफेद या पीले रङ्गकी और बीचमें एक लाल रेखा दिखाई देती है या सूखी तर, सफेद या पीले लेपसे ढकी या दोनों ही किनारे लेपसे रहित ; जीभ मानो आगसे छू गई है (सेङ्गियु, साइमिक्स, कोलोसिन्थ, हाइड्रेस्ट, आइरिस, लौरो, लाई, प्लेट, फाइटो), इसी तरहकी जलन हुआ करती है। संन्यास रोगमें मुँहसे बोली नहीं निकलती।

गलेके भीतर।—प्रबल हिचकी और कण्ठमें बहुत सूखापन तथा उत्ताप मालूम होता है। तालुमूलके दोनों पार्श्वके गह्वर और अन्ननलीके बीचमें जलन मालूम होती है और बार-बार घूँट लेनेकी इच्छा होती है। अन्ननलीका आक्षेप या पेशियोंका सिकुड़ना-फैलना (जेल्स, लिसिन, नैजा) और इसी वजहसे कभी फेन-भरा खून मिला श्लेष्मा निकलता है और तेज हिचकी आया करती है। ऐसा मालूम होता है, मानो एक गोला अन्न-नलीके भीतरसे वक्षोस्थिके शिखर-देशतक चढ़ता है (इग्ने, कैलि-फास, कैलि, फाइजस)।

पाकस्थली।—छातीमें जलन; कण्ठमें तीता या अम्ल रस चढ़ता है (कैल्के)। वमन,—एक बार आरम्भ होनेपर बहुत देरतक होता रहता है। भोजनके बाद चिकने श्लेष्माका वमन होता है; रक्त या पित्तका वमन हुआ करता है। प्रादाहिक या मस्तिष्कके नाना प्रकारके रोगोंका वमन (एपो-मार्फिया), बहुत थोड़ा खाने या पीनेपर तुरन्त कै हो जाती है। उदरोर्द्ध या नाभी-प्रदेशसे तेज दर्द पैदा होकर विटप देशतक जाता है। पाकाशयके निचले अंशमें भयानक यन्त्रणा मालूम होती है। पाकस्थलीमें तेज़ खींचन और मरोड़की तरह दर्द, मानो पाकस्थली मेरुदंडकी ओर चिपकी जाती है और इसी वजहसे पीठके बीचवाले अंशमें दर्द मालूम होता है। जभी पाकाशयमें दर्द पैदा होता है, तभी वह दर्द प्रत्येक पाँच मिनटके अन्तरसे वमनमें परिणत हो जाता है।

अन्त्राशय।—पाकाशयमें ऐंठन होनेके बाद उदरमें ऐसा मालूम होता है, मानो भीतरको ओर खिंच रहा है। नाभीके दाहिने पार्श्वसे दर्द पैदा होकर पुट्ठेतक चला आता है। अन्त्र-प्रदाह रोगमें भयानक ज्वर, शिरा और धमनीमें दबाव, वमन और कालिमा लिये, खून मिला पाखाना हुआ करता है। नाभी-प्रदेशमें छेदनेकी तरह दर्द और आँतोंमें गड़गड़ाहट। अन्त्रवेष्ट-प्रदाह, नाड़ी कड़ी और दृढ़। वस्ति-गह्वरके कुछ ही ऊपरी अंशमें उदरमें दर्द और स्पर्शका सहन न होना।

मलान्त्र और मल।—मल खून मिला। वात-श्लेष्मा ज्वरमें काले रङ्गका सवेरे बहुत ज्यादा और फीका रङ्गका, पेटमें ऐंठन होकर धसधसा पाखाना हुआ करता है। बवासीर,—मसा लाल या घोर नीला; मलान्त्रमें शूल बेधनेकी तरह दर्द।

पेशाब ।—पेशाब करने बाद मूत्र-मार्गमें जलन। पेशाब बहुत थोड़ा, साफ या गदला, तली लाल आभा लिये और पेशाबमें मलाईकी तरह एक पदार्थ तैयार रहता है। पेशाबका आपेक्षिक गुरुत्व घट जाता है।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—दोनों अण्डकोषोंमें ही दर्द, वृद्धि—बायें कोषमें और सवेरे ; दर्द अण्डकोषसे कभी-कभी उदरमें चला जाता है। बाँयें अण्डकोषमें तेज दर्द अनुभव होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—आर्त्तवशूल या बाधक, बहुत अधिक रक्त-सञ्चय और भयानक यन्त्रणा-जनक पेशाबकी तकलीफ मौजूद रहती है, खासकर रक्त-प्रधान स्त्रियोंको। झिल्ली निकलनेवाला बाधक, जरायु-प्रदेशमें बहुत दर्द, मानो उसमें फोड़ा उत्पन्न हो गया है। ऋतुरोधकी वजहसे मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय। सर्दी लग जानेकी वजहसे उत्पन्न आर्त्तवकी कमी। सर्दी लग जाना, किसी तरहका स्राव बिलकुल ही नहीं होता। जरायु या उत्तरणी प्रदेशमें भार मालूम होता है। सरमें भयानक दर्द रहता है। उत्ताप और धमनियोंमें फड़कन अनुभव होती है, चित्तमें विकलता पैदा हो जाती है और रोगिनी बार-बार ठण्डी साँस लेती है। गर्भावस्थामें वमन। प्रसवके समयका धनुष्टङ्कार, उन्मत्तकी तरह प्रलाप, धमनियोंमें उत्तेजना और ठण्डा गोंदकी तरह लसदार पसीना हुआ करता है। सूतिका ज्वर, स्तनका दूध और क्लेदका स्राव होना एकाएक बन्द हो जाता है। नाड़ी तेज़ और क्षीण या कड़ी और उछलनेकी तरह गतिवाली। गर्भपातके बाद फूल अटक जाना (सेबाइ सिपि, नक्स-वोम)।

श्वासयन्त्र ।—श्वास-कष्ट या कष्ट-साध्य श्वास-प्रश्वास,—रोगीको बाध्य होकर उठ बैठना पड़ता है (ब्रोम, मर्क-सल्फ, आर्स-आयोड, फास, ऐण्टि-टार्ट, रियुमेक्स)। फुसफुसके प्रदाहमें छातीमें दबाव मालूम होता है। खाँसी—खुसखुसी, सूखी और कलेजा फाड़ डालनेवाली या पतला श्लेष्मा मिली घर-घर शब्द करनेवाली सूखी खाँसी ; गर्म जगहसे ठण्डी जगहमें जानेपर बढ़ जाती है (फास, वेरेट-ऐल्ब)। चलनेपर श्वासमें कष्ट पैदा हो जाता है, नियमित भावसे पाखाना और रातमें नींद नहीं आती, वमन बन्द होने बाद कलेजा जकड़ जाता है। वक्षमें रक्त अधिक सञ्चय होनेकी वजहसे श्वास-प्रश्वास तेज़, मिचली और वमन। हृद्प्रदेशमें अस्पष्ट जलन भी मालूम होती है। फेफड़ेका प्रदाह,

रक्त-संचित अवस्था (सैंङ्गियु), उत्ताप वहुत अधिक, नाड़ी लोहेके तारकी तरह कड़ी, पुष्ट और उसके साथ ही पाकाशयकी उत्तेजना वर्त्तमान रहती है और इसी कारणसे मिचली होती है और वमन हुआ करता है। वहुत ज्यादा पसीना निकलना। नया वायुनली-भुज-प्रदाह और श्वास रोगमें फेफड़ेमें रक्त-सञ्चयकी अधिकता, ज्वरका प्रकोप अधिक, श्वासकष्ट, मिचली, वमन और कड़ी तथा उछलती हुई नाड़ी। हृदन्तर्वेष्ट-प्रदाह और हृद्वहिर्वेष्ट-प्रदाह; धमनी आदि अत्यन्त उत्तेजित भाव धारण करते हैं। हृद्-प्रदेशमें जलन और आलपिन गड़नेकी तरह या अस्पष्ट दर्द मालूम होता है। हृत्पिण्डके स्पन्दनकी आवाज़ ज़ोरकी और धमनी आदिकी प्रवल उत्तेजना-जनक अवसन्नता और चारों ओर अंधेरा दिखाई देना, शय्यासे उठनेके समय (आर्स, सिकेलि) या एकाएक शरीर हिलानेपर; स्थिर भावसे सोये रहनेपर अच्छा रहता है (सिपिया), नाड़ी एकाएक तेज होकर धीरे-धीरे शिथिल गति हो जाती है और इसके बाद क्रमसे स्वाभाविककी अपेक्षा भी धीमी गति रहती है।

गर्दन और पीठ।—गलेके पिछले भागमें और कन्धेमें लगातार दर्द मालूम होता है और माथा सीधा रखनेमें तकलीफ़ होती है। पीठकी पेशीके सङ्कोचनकी वजहसे माथा पीछेकी ओर खिंचा रहता है। वहिरायाम आक्षेप, धमनी आदि उत्तेजित भाव धारण करते हैं; हाथ-पैर बरफकी तरह ठण्डे; प्रत्यङ्गोंमें बिजलीके झटकेकी तरह मालूम होता है (ऐस्टिरियस-रियुस) और मस्तिष्क तथा मेरुमज्जामें रक्त अधिक प्रवेश कर जानेकी वजहसे बेहोशी-सी आ जाती है। ऊपरसे नीचेतक समूचे मेरुदण्डमें गरमी, लाली और सिरका पश्चात् भाग गर्म अनुभूत होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—दाहिने उरुमें अस्त्र विधने जैसा दर्द, दाहिनी एँड़ीमें ऐसा मालूम होता है मानो हड्डी खिसक गयी है (ब्राई, कैल्के-फास)—रोगीका चलना-फिरना प्रायः असम्भव हो पड़ता है। इसके बाद बायीं एँड़ीपर रोगका आक्रमण होता है। वातकी वजहसे, खासकर बायें कन्धेमें (फेरम, लिडम, नक्स-मस, फाइटो, सल्फ; दाहिने कन्धेमें—सैंगुइ, वायो-ट्राई), तेज़ बोखार और वहुत थोड़े परिमाणमें लाल रङ्गका पेशाब होना। स्थान बदलनेवाला दर्द, अभी एक स्थानमें दर्द था, कुछ देर बाद ही दूसरे स्थानमें मालूम होने लगना (कैलि-बाई, लेक-कैन, पल्स), हाथकी

और पैरकी अंगुलियोंमें ऐंठन। सन्धिवात रोगमें रोगवाली सन्धि फूल उठती है, बहुत दर्द करती है और जोरका बोखार आ जाता है।

सार्वाङ्गिक।—चेहरा, गर्दन और अंगुली फड़का तथा चक्कर खाया करती है, सोनेकी अवस्थामें भी यह लक्षण दूर नहीं होता। ओंठपर फेन लटका करता है, दाँत-पर-दाँत रगड़ता है। कोई चीज निगलनेमें बहुत तकलीफ होती है। रोगीका माथा रह-रहकर हिल उठता है या हिला करता है (लाई, स्ट्रैमोन) और इन्द्रिय-जनित उत्तेजना पैदा हो जाती है। जिनके शरीरमें खूनकी तरह कमी रहती है। ऐसे मनुष्योंके सुस्त करनेवाले उदरामयमें बहिरायाम आक्षेप (इथ्यू, बेल, सिना, कूप्रम)। बच्चा मानो डर गया है और मानो अभी उसे अकड़न या धनुष्टङ्कार होगा, इसी तरहसे चौंक उठता है और ऐसे ही भावसे उसकी देह एकाएक हिल उठती है। तांडव—निद्राके समय भी स्पन्दन बन्द नहीं होता (जिजिया)। पक्षाघात—रोगवाली हड्डीमें चुनचुनी, झुनझुनी हुआ करती है, अधिक रक्तका सञ्चय, विशेषकर मस्तिष्ककी जड़में, वक्षमें, मेरुदण्डमें और पाकस्थलीमें। ज्वरके साथ शोथ।

त्वचा।—शरीरमें जगह-जगह खुजली पैदा हो जाती है, रगड़नेपर घटना। शरीरकी त्वचामें चुनचुनी झुनझुनी हुआ करती है। त्वचा ठण्डी, लसदार गोंदकी तरह पसीना, नीली आभा लिये, स्पर्श-ज्ञान रहित और सिकुड़ी शकुन्न ज्वरके साथ शरीरमें उद्भेद, खसड़ाके ज्वरकी अवस्थामें, खासकर यदि फेफड़ेके प्रदाहका लक्षण प्रकट हो; खुजली वगैरह निकलनेके पहले आक्षेपका पैदा हो जाना। चेचक—तेज बोखार, बेचैनी और भयानक यन्त्रणा।

शीत, उत्ताप और पसीना।—सर्दी मालूम होना और मिचली; विशेषकर सवेरे उठनेपर। सारा शरीर ठण्डा और चेहरा तलहत्थी और पैरोंमें ठण्डा पसीना निकलता है (आर्स, कैम्फो, टैबाक, वेरेट)। ज्वर-रोगमें पुष्ट, कड़ी और तेज़ नाड़ी (ऐकोन, बेल, जेल्स)। बहुत ज्यादा पसीना निकलता है, पसीना ठण्डा और रोगीको बहुत सुस्ती अनुभव होती है (फास)। वातश्लेष्मा ज्वर, नाड़ी पुष्ट, अनमनीय और द्रुत, सरके पिछले भागमें भयानक यन्त्रणा मालूम होती है, प्रलाप बकने लगता है और काला पाखाना हुआ करता है।

निद्रा ।—अनिद्रा, रोगी चिड़चिड़ा और झगड़ालू हो जाता है। स्वप्न, मानो कितने ही आदमी पानीमें डूब रहे हैं, मानो वह स्वयं पानीपर तैर रहा है या पानीमें पड़ा हुआ है।

वृद्धि ।—शरीर हिलानेपर, शय्यासे उठनेके समय, सोने बाद (श्वासकष्ट, सर-दर्द), चलनेपर, गर्म जगहसे ठण्डी जगहमें जानेपर, एकाएक शरीर हिलानेपर, सीधे होकर बैठनेपर, सवेरे नींद खुलनेपर और खुली देहमें शीत, सर्दी आदि लगनेपर।

उपशम ।—आँख खोलने और माथा स्थिर भावसे रखनेपर, दबाने, रगड़ने या मलनेपर।

सम्बन्ध ।—**सदृश**—ऐकोन, ऐण्टि-टार्ट, बैप्टि, बेल, ब्राई, डिजिट, फेरम-फास, जेल्स, ग्लोन, हाइपिरिक, केल्मिया, लैचने, नक्स, रोडो, सैङ्गियु, हेलिबो, हायो, फास, टैबाक, वेरेट-ऐल।

दोषघ्न ।—गर्म काफी।

तुलनीय ।—सूतिकावस्थाकी अकड़न—जेल्स। रक्तकी अधिकता—फेरम-फास, बेल। मोटा ताजा—अरम। तांडव—हायोस। फेफड़ेका प्रदाह—सैंगुने। धनुष्टङ्कार—नक्स, हाइप। वातका ज्वर—ब्रायो। लू लग जाना—ग्लोनोयन, जेल्स। धीर और अनियमित नाड़ी—डिजिट, टैबेकम। पैरमें मानो गोला मोजा हो—केल्के। गर्दन हिलाना—लाइकोप, स्ट्रैमो। गलेकी कमजोरी—ऐण्टि-टार्ट।

शक्ति ।—निम्न-क्रमसे ३० शततमिक क्रम।

वैक्सिनियम मार्टिलस

(VACCINIUM MYRTILLUS)

दूसरा नाम ।—चिल्ल-बेरी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे फलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—उदरामय और आमाशय रोगमें ५ बूंद मात्रामें इसका मूल अरिष्ट सेवन करनेपर आँतोंको जीवाणु-शून्य रखता है।

शक्ति।—मूल अरिष्ट।

वार्बेस्कम थैप्सस

(VERBASCUM THAPSUS)

दूसरा नाम।—थैप्सस वारबिटस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—खिले हुए वृक्षके पत्तेसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मलद्वारमें खुजली, शूल, कब्जियत, बहरापन, अनजानमें शय्यामें पेशाब हो जाना; बवासीर; स्नायुशूल; मुँहका स्नायुशूल; पेशाब रोकनेकी शक्तिका न रहना।

उपयगिता और आभास।—स्नायविक उत्तेजना; वायुनली-भुज-गत उत्तेजना और खाँसी, मूत्रनलीमें उत्तेजना और पेशाबमें कष्ट प्रभृतिमें यह विशेष लाभदायक है। मानो दो चिमटेसे दबाया जा रहा है, इस तरहका दर्द पैदा करनेवाला अधकपारी या एक पार्श्वका सर-दर्द; बायीं ओरकी शुगास्थि, कान, गाल और कनपटीके संयोग-रन्ध्रका स्नायुशूल इत्यादि भी इससे अच्छा हो जाया करता है। यह सब दर्द जाड़ा-गर्मीके परिवर्त्तनसे, तेज़ बोलनेपर, छींकनेपर या दाँत-पर-दाँत घसनेपर बढ़ जाया करता है। खोखली और उखड़ी हुई तुरहीकी आवाजकी तरह शब्द करनेवाली गम्भीर, आवाज़ प्रकट करनेवाली खाँसीमें भी इससे बहुत फायदा हुआ करता है; इसकी खाँसी रातमें बढ़ती है; बच्चा नींदवाली अवस्थामें ही खाँसा करता है; ऊँचे स्वरसे पढ़नेके समय स्वरभङ्ग हो जाता है और वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द अनुभव हुआ करता है। शय्यामें पेशाब कर देना और बूंद-बूंद पेशाब होनेपर भी इससे बहुत फायदा होता है। इससे बना "मूलेन आयल" कानका दर्द और बहरापनमें कानमें बूंद-बूंद डालनेपर फायदा होता है।

लक्षणावली

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना ; बायीं तलहत्थीपर माथा रखनेपर बायें गालमें दबावकी तरह दर्द, ललाटमें दर्द अधिक मालूम होता है। भोजनके समय दाहिनी कनपटीके अन्तरतम प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, यह दाहिनी ओरकी ऊपरवाली पंक्तिके दाँततक चला जाता है ; दबानेपर बढ़ना (केलि-बाइ, लैके, मिनियेन, पल्स, स्पाइजि)। मानो दोनों कनपटी बड़े चिमटेसे जोरसे दबाई जा रही हैं, इसी तरहकी तकलीफ़ होती है (काक्यु, डायस्को, नक्स-मस)। चलनेके समय दप्-दप् हुआ करता है।

कान ।—बायें कानके भीतर सुन्न हो जाना। कानमें फाड़ने या अस्त्रके आघातकी तरह दर्द, कभी-कभी भोजनके समय इसी तरहका दर्द अनुभव होता है। ऐसा अनुभव होना मानो दोनों कान भीतरकी ओर खिंच रहे हैं। ऐसा बहरापन मानो कानमें ताला लग गया है (ऐ-नाई, लैके, मैङ्गेन, मर्क-डाल, नैट-कार्ब, पल्स)। जोरकी आवाजमें पढ़नेके समय पहिले दाहिना कान इसके बाद बायाँ कान रुक जाता है या उसमें ऐसा अनुभव होता है, मानो ताला लग गया है, पर श्रवण-शक्तिमें किसी तरहकी गड़बड़ी नहीं होती। कर्ण-शूल (मूलेन आयलके बाहरी प्रयोगसे बहुत लाभ होता है)। कान और स्वरनली दोनों ही रुकी मालूम होती हैं।

नाक ।—दोनों ही कान, नाक और स्वरनलीमें ऐसा मालूम होना मानो रुक गयी है। ललाटकी अस्थिनालिकासे बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकलना और आँखसे गर्म जलन पैदा करनेवाला और बहुत ज्यादा आँसू बहा करता है।

मुखमण्डल —बायें हनु और गालकी हड्डीमें भयंकर दबावकी तरह, बुद्धि लोप करदेनेवाली और चिपक जानेकी तरह तकलीफ़ ; वृद्धि—दबानेपर (प्लैट), घरके बाहरकी या तेज जलीय वायु लगनेपर सर्दी-गर्मीके परिवर्त्तनसे और मुँहकी पेशीके संकोचनसे, बोलने या दाँत-पर-दाँत दबानेके समय। चिबुककी पेशी और कण्ठनली बहुत जकड़ जाती है। बायीं युगास्थिके नीचे सुई गड़नेकी तरह दर्द। जिह्वामूल भूरे रंगका दिखाई देता है, पर स्वाद लेनेकी शक्तिमें किसी तरहकी गड़बड़ी नहीं होती,—

सवेरे और दोपहरके पहले। जीभ पीली, भूरे रङ्गकी हो जाती है और सवेरे तथा सन्ध्याके भोजनके बाद जीभपर गाढ़ी गोंदकी तरह ज्यादा लार सञ्चित होती है। निगलनेके समय कण्ठमें भयानक दर्द मालूम होता है।

पाकाशय।—डकारके साथ कण्ठमें स्वादहीन लार सञ्चित होती है। शून्य या तीती डकार और मिचली। बार-बार हिचकी (इग्ने)।

अन्त्राशय।—नाभीपर मानो पत्थरका एक टुकड़ा रखा हुआ है, इस तरहका तकलीफ देनेवाला दबाव मालूम होता है (पल्स); झुकनेपर बढ़ जाता है। बायीं कोखमें छेदने या सुई गड़नेकी तरह दर्द। बायीं ओरके पंजरेके नीचे लगातार गड़गड़ाहट या कलकल शब्द सुन पड़ता है। अन्तमण्डली मानो गेंडुरी मारकर नाभीमें लग गई हैं या अलग हुई जाती है, इस तरहका अनुभव होना।

पेशाब।—दुरारोग्य शय्याका पेशाब (इक्विसिटम, सिपिया, सिना), इसके साथ ही रेतस्खलन भी हुआ करता है। पेशाब करनेके समय बून्द-बून्दकर पेशाब निकलता है (कैम्फो, कैन्थ, कोना, क्लिमैट, डालका, नक्स-वोम, पल्स)। बार-बार बहुत ज्यादा पेशाब (एपिस, ऐपोसिन, सीपि, पल्स)। इसके बाद थोड़ा हो जाता है।

श्वासयन्त्र।—जोरसे पढ़नेके समय स्वरभङ्ग पैदा हो जाता है (मिडोरिन, सेनेगा, फास)। सर्दी रोगमें स्वरभङ्ग—छाती मानो श्लेष्मासे दर्द (ब्राई, कैलि-कार्ब)। तुरहीकी ध्वनिकी तरह तेज़ शब्द करनेवाली गभीर, शून्य गर्भ, सूखी और उखड़ी आवाज करनेवाली खाँसी, विशेषकर सन्ध्याके समय और रातमें (फास, रस, स्पञ्जि)। बच्चा निद्रित अवस्थामें ही खाँसा करता है (ऐकोन, बेल, कैल्के, कैमो, साइक्लेम, हायो)। वक्षमें उत्तेजनाकी वजहसे पैदा हुई खाँसी (वेरेट-ऐल्ब)। सन्ध्याके बाद सोनेपर वक्ष जकड़ जाता है और हृत्पिण्डमें ऐसा दर्द होता है, मानो छुरी मार दी गई है।

प्रत्यङ्ग आदि।—पीठ और पृष्ठ-फलकमें अस्त्रके आघातकी तरह दर्द। बायें अंसफलकमें सुई गड़नेकी तरह तेज़ दर्द (बेडियेगा)। कमरमें

दर्द, दबानेपर बढ़ जाता है। कलाई और हाथके अंगूठेके संयोग स्थलमें मानो मोच आ गई है, इस तरह सलाई गड़नेकी तरह दर्द। वायु सेवनके लिये घरसे बाहर चलनेके समय दाहिने उरुकी पेशीमें ऐंठन हो जाती है और दर्द हुआ करता है (साइक्लेम, कोलोफिल, नेट-म्यूर)। दाहिने जानुमें एकाएक दर्द पैदा हो जाता है (चेलिडो, ऐ-कार्बोल)। खड़े होनेकी अवस्थामें दाहिने तलवेकी पेशीमें ऐसी खींचन मालूम होती है, मानो जकड़ गया है या ऐंठन हो रही है—चलनेपर फिर तकलीफ़ नहीं रहती (कास्टि, फेरम, सल्फ)। जानुका काँपना।

सार्वाङ्गिक।—सवेरे शय्यासे उठनेके बाद बहुत आलस्य मालूम होता है या सो जानेकी इच्छा होती है, रोगी बार-बार जम्हाई लेता है और अंगड़ाई आती है। प्रत्यङ्गोंके भीतर शूल वेधनेकी तरह तेज दर्द; पसीना नहीं निकलता (एकोन, बेल, केल्के, डायाडेमा, लिडम, लाई, नक्स-मस, ओपि, सिकेलि, साइलि, सल्फ)। बैठनेकी अवस्था त्यागकर उठनेपर, आराम मालूम होता है। बैठनेकी अवस्थामें और सर्दी-गर्मीके परिवर्त्तनसे दर्द आदि बढ़ जाता है। शरीरमें जगह-जगह फटना या सुई गड़नेकी तरह दर्द (ब्राई, केलि-कार्ब)। सोनेके बाद औंघाई (एगार, एपिस, केल्के-फास, साइक्यूटा, लाई, फास, रस)। सारा शरीर ठण्डा मालूम होता है (कैम्फो, वेरेट-एल्ब)।

वृद्धि।—दबाने या टीपनेपर, झुकनेपर, या चर्वण पेशीको हिलानेपर, बोलने या दाँत-पर-दाँत रगड़नेपर, सन्ध्याके बाद, सर्दी-गर्मीके परिवर्त्तनसे, लेटे रहनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—कौरेल-रुब, कास्टि, ड्रोसेरा, नक्स वोम, प्लेट, रस-एरो, स्टैनम, सल्फर, वेरेट्रम-एल्बम, कैम्फो, कैन्थ, इक्विसेटम, लाई, सिकेलि, सिपि।

उपशम।—बैठनेकी अवस्थासे उठनेपर।

तुलनीय।—स्नायुशूल,—पाचो, स्टैनम। खाँसीमें—ड्रोसेरा, स्पञ्जिया, सल्फ। मल—नेट्र-म्यूर।

शक्ति ।—मूल अरिष्टसे ६ठा सततमिक क्रम। उच्चक्रमका भी प्रयोग होता है।

वर्बिना-हेस्टेटा

(VERBENA HASTATA)

दूसरा नाम ।—आयरन-वीड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—स्नायु-विधान और चर्मपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है। रस-टक्सके विषके कारण या किसी दूसरे चर्म-रोगमें छालेकी तरह उद्भेद होनेपर इससे खूब लाभ होता है। चोट आदिमें भी रोगवाले स्थानके रक्त प्रवाहको घटाकर बहुत जल्द तकलीफ और अकड़न घटा देता है। संन्यास रोगमें इस दवाका प्रयोग करनेपर बहुत जल्द रोगीकी मानसिक शक्ति लौट आती है। अनिद्रा, मानसिक परिश्रमकी वजहसे अवसाद प्रभृतिमें भी इसका व्यवहार होता है।

शक्ति ।--मूल अर्क सिर्फ एक मात्रा प्रयोग करना चाहिये।

वेसिकैरिया

(VESICARIA)

दूसरा नाम ।—वेसिकेरिया कम्युनिस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—मूत्र और मूत्रपिण्ड-सम्बन्धी सभी बीमारियोंमें इसका व्यवहार प्रचलित है। मूत्र-पथरी और गोनोरियामें तथा मूत्राशय-प्रदाह रोगमें, मूत्रनलीमें और मूत्राशयमें दर्द; बार-बार पेशाब करनेकी इच्छा, पेशाब करनेके समय यन्त्रणा इसका निर्देशक लक्षण है।

अण्डलाल मिला पेशाब, शोथ, मूत्रनलीका सङ्कोचन, मूत्राशय मुखशायी ग्रन्थि-प्रदाह, खूनमें पेशाब प्रभृति लक्षणमें इसका व्यवहार होता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—बोटानिकस, थ्लेस्पि-वर्सा-पेस्ट, कक्कस-कैक्ट, आर्टिका इयु ।

शक्ति ।—५, १० बून्द मात्रामें पानीके साथ सेवन करना चाहिये ।

वेस्पा

(VESPA)

दूसरा नाम ।—वेस्पा-वल्गेरिस । एक प्रकारकी बर्रे ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जीवित बर्रेसे सुरासारके साथ अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—चर्म और स्त्री-जननेंद्रियके ऊपर ही इसकी मुख्य क्रिया दिखाई देती है । ऋतु-स्रावके पहले सुस्ती, दर्द, तलपेटमें दबाव मालूम होना और कब्जियत, बायें डिम्बाशयमें जलन, बार-बार पेशाबका वेग, पेशाब करनेके समय मूत्रनलीमें जलन, मलद्वारके पीछे दर्द, कमरतक उस दर्दका फैल जाना, जरायु-मुखका जखम प्रभृति लक्षणोंमें स्त्री-रोगमें वेस्पा एक आवश्यक दवा है ।

चर्ममें छालेकी तरह उद्भेद, परन्तु उसमें दर्द या प्रदाह नहीं रहता, असह्य खुजली होती है, फोड़ा, त्वचापर चक्का-चक्का दाग, विनिगर मिले पानीमें स्नान करनेपर चर्मके रोग दब जाते हैं ; आँखोंका प्रदाह प्रभृति लक्षणमें तथा बहुतसे चर्म रोगोंमें इससे बहुत लाभ होता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—आर्स, एपिस, मिचेला, इयुपे-पर्प्यु, हाइड्रोकोटाइल ।

दोषघ्न ।—एपिस, फेरम, कैम्फर, नमकका पानी, विनिगरका पानी ।

विषाक्त भावापन्न ।—हाइड्रोकोटाइल ।

शक्ति ।—६—३० ।

वाइबर्नम ओपुलस

(VIBURNUM OPULUS)

दूसरा नाम ।—वाइबर्नम आक्सिकोकस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी छालसे मूल अरिष्ट तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—प्रसवके बादका दर्द; गर्भावस्थामें खाँसी; ऐंठन; नाना प्रकारका बाधकका दर्द; कानमें दर्द; मूर्च्छा-वायु; नकली प्रसवका दर्द; कटिवात; गर्भ-स्राव; डिम्बाशयमें दर्द; पक्षाघात; जरायुमें दर्द; जरायुका नीचेकी ओर खिंचना प्रभृति रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास ।—जिन स्थानोंमें जरायु और डिम्बाशय-प्रदेशमें अनियमित आक्षेपिक दर्द मौजूद रहता है और उदरके भीतरके अन्यान्य यन्त्रोंमें या तो आक्षेपिक अथवा प्रबल सङ्कोचनका दर्द मालूम होता है उसमें "वाइबर्नम" से बहुत फायदा दिखाई देता है, खासकर शेषोक्त अवस्था यदि जरायुमें उत्तेजनाकी वजहसे पैदा हुई हो। मूर्च्छा-रोगमें जरायुमें उत्तेजना; स्नायुशूलकी तरह या झिल्ली निकलनेवाला रजःकृच्छ्र या बाधक जरायुमें ऐंठनकी तरह प्रचण्ड दर्द मालूम होना इत्यादि भी इसके द्वारा आराम हो जाया करता है। ऋतु विलम्बसे होता है, पेशाब बहुत थोड़ा होता है, आक्षेप पैदा करनेवाला, दो-एक दिन बाद ही बन्द हो जाता है, जरायुमें भार मालूम होता है, डिम्बाशय-प्रदेशमें अधिक रक्त सञ्चय अनुभूत होता है और तलपेटमेंसे दर्द पैदा होकर दोनों उरुके सामनेवाले अंशसे होता हुआ नीचेकी ओर चला जाता है। रोगिनीके वायुसे पैदा हुआ रोग हो जाता है। समूचे स्नायु-विधानमें उत्तेजना पैदा हो जाती है और कभी-कभी जरायु या डिम्बाशयकी रोगिनीमें आक्षेपिक मूत्रकृच्छ्रता पैदा हो जाती है। बहुत दूरतक पैदल चलनेके बाद दोनों पैर या चरणमें और गर्भवती स्त्रियोंके दोनों पैरोंमें ऐंठन होती है और उसके बाद दोनों पैर सुन्न हो जाते हैं।

लक्षणावली

मन ।—मूह्यमान या मोह प्राप्त चित्त। किसी विषयमें मन नहीं लगा सकता (इग्ने, ऐलेट्रिस, लैक-कैन, लाइकोपस, रस, स्कुटेलेर, सिनिसियो,

जेरोफिल)। सवेरे स्तम्भित भाव, रोगी बैठ नहीं सकता, वह नहीं जानता कि वह कहां है या उसे क्या करना होगा। मानसिक परिश्रमकी शक्तिका न रहना (कोना, रस, सेलिन, सिपि, साइलि)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, तीसरे पहर आँख बन्द करनेपर (आर्नि, हिप, लेके, ऐ फास, साइलि, थिरिड)। सरमें चक्कर आनेकी वजहसे शरीर बायीं ओर घूम जाता है ; अपनी जगहसे उठनेके समय रोगीको ऐसा मालूम होता है कि वह सामनेकी ओर गिर जायगा (सल्फ, नक्स-वोम)। वृद्धि—सीढ़ी उतरनेपर या धुन्धली रोशनीवाले कमरेके भीतर चलनेके समय (स्ट्रैमोन, आँख बन्द करनेपर—ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, स्ट्रैमोन)। ललाटमें धीमा-धीमा सर-दर्द, दर्द आँखके गोलेतक चला जाता है ; वृद्धि—मानसिक परिश्रमसे (नेट्र-मूर, नक्स-वोम, प्लम्ब, पल्स, साइलि)। घटना—इधर-उधर घूमनेपर (रस, स्पिञ्जि)। ललाटके सर-दर्दमें बीच-बीचमें सरमें चक्कर आनेकी तरह मालूम होता है (प्लम्ब, जैन्थक्स), रोगीमें अध्ययन आदि करनेकी शक्ति नहीं रहती और बार-बार बहुत ज्यादा पेशाब हुआ करता है (इग्ने, आइरिस, वेरेट्रम)। भार मालूम होनेवाला धीमा सर-दर्द—अधिकांश स्थानोंमें आँखके ऊपरी प्रदेशमें (लेके, लाइकोपस, टिलिया), विशेषकर बायें पार्श्वमें (कोलोफिलम, इपिक, फास, लेक-केन) ; कभी-कभी दर्द मूर्द्धादेशमें और सरके पिछले भागमें चला जाता है ; विलम्बसे पैदा होनेवाला इस तरहका सर-दर्द अधिकांश स्थानोंमें ऋतुके आविर्भावके समय ही मालूम होता है (ऐक्टिया, ग्रैफ, पैलेड) ; वृद्धि—एकाएक देह और माथा हिलानेपर (ऐ-नाई, बेल, कोना, ग्लोन, स्पाई)। किसी अवलम्बनपर शरीर रखकर झुकनेपर (बेल, मैङ्ग, मर्क, पल्स), पैर फिसलनेपर (ऐनाक, ब्राई, लोडम, पल्स, स्पाई, थूजा) और हिलनेपर। बायीं ओरके कपालमें भयानक दर्द—मानो माथा भेदकर दर्द फैलता है। वृद्धि—प्रत्येक बार खाँसनेपर (ब्राई, कैप्स, काकुल, जेल्स, ग्लोन, आइरिस, क्रियो, लाई, नैट-मूर) और लगातार बिना रुकावटके पाखाना निकलता है (लाई, पल्स, साइलि, सल्फ)।

आँख।—आँखके ऊपरी अंश और चक्षुगोलकमें भार मालूम होना (आँखकी ऊपरी पलकमें भार मालूम होता है—कोलोफिल) ; कितनी ही

बार ऐसा हो जाता है, कि एक चीजको दो बार देखे बिना यह स्थिर नहीं कर सकता कि वह क्या है (अपांग-दृष्टि किये बिना सब चीजको देख नहीं सकता—चिनिन-सल्फ ; ध्यानपूर्वक स्थिर दृष्टिसे देखनेपर सब चीज स्पष्ट दिखाई देती हैं—आरम)। आँखके गोलेमें बहुत दर्द होता है और उसमें स्पर्श असह्य मालूम होता है (ब्राई, युपेट, जेल्स, ग्लोन, हैमा, लैके, कोमोक्लेड ; बाधक-रोगमें—जिङ्कम)। आँखमें जलन मालूम होती है और लगातार आँसू बहा करता है (इयुफ्रे, कैलि-आयोड, क्रियो, फाइटो)।

कान ।—कानमें रह-रहकर चिलक मार उठता है, मानो छुरी मारी जा रही है (पल्स, जिङ्कम)। कानमें दर्दकी वजहसे रातमें नींद खुल जाती है, ऐसा मालूम होता है मानो अस्थिके अन्तरतम प्रदेशसे दर्द पैदा हो रहा है। कर्ण-विवरमें ऐसा दर्द होता है, मानो चोट लगी है (कैल्के-फास, मैंङ्गेन),—रोगी रोगवाला कान दबाकर सो नहीं सकता ; रोगी अपना कान रगड़े बिना नहीं रह सकता, उसे ऐसा मालूम होता है, मानो उसका यही कानवाला भाग माथेमें लोहेकी काँटीसे रुका हुआ है।

मुखमण्डल आदि ।—चेहरा तमतमाया और गर्म (कैमो, युपेट, ग्लोन, लिलि-टाइ ; प्रसवके दर्दमें—आर्नि, बेल, काफि, फेरम, जेल्स, ओपि)। जीभ सूखी, चौड़ी और सफेद रङ्गकी या बीचका अंश भूरे रङ्गका उसपर दाँतके दाग रहते हैं (आर्स, चेलिडो, ग्लोन, हाइड्रेस्ट, मर्क-प्रोट, रोडोड, रस-टक्स, सैम्बुल)। मुँहका स्वाद ताँबेके जङ्गकी तरह (काकुल, कोलोसिन्थ, लैके, पोलिपोरस, सल्फ, आस्टिलेगो, जिङ्कम) और घृणाजनक। ओंठ और मुख-विवर सूखे (आर्स, ब्राई, नक्स-मस, पल्स)।

पाकाशय ।—लगातार मिचली, इसके साथ ही बहुत सुस्ती ; भोजनके बाद बन्द हो जाता है (ब्रोम, कैलि-बाइ, लोबेल, सैङ्गियु, सिनैप, स्पाइ), परन्तु कुछ देर बाद फिर पैदा हो जाता है ; मिचलीके बाद वमन। रोज़ रातमें प्राणान्तक मिचली पैदा हो जाती है, रोगिनी समझती है, कि वह अब न जीयेगी (इपिका, टैबाक), रोगिनी किसी भी भावसे क्यों न रहे, उसकी मिचली किसी तरह भी बन्द नहीं होती ; जरा हिलनेसे ही बढ़ जाती है (गासिपियम, टैबाक, थिरिड, वेरेट)। कुछ खानेपर वह मानो पाकाशयमें प्रवेश करनेपर पत्थरकी तरह हो जाता है—इसी तरहका

भार मालूम होता है (ब्राई, हाइड्रैस्ट, आयोड, कैलि-बाई, लैके, लाई, ऐ-नाई, पल्स)। पाकाशयमें सुस्ती और मिचली मालूम होता है और इसी वजहसे रोगिनी सोये बिना नहीं रह सकती। रजोनिवृत्तिके बाद इस दिनोंतक ऐसा ही हुआ करता है। पाकाशयमें बहुत अधिक खालीपन अनुभव होना (ऐक्टिया, इग्ने, सिपि)। खानेपर बिलकुल ही रुचि नहीं रहती। पाकाशय भरा मालूम होता है। पाकाशयमें दर्द हुआ करता है, सामनेकी ओर पाकस्थली फैलाकर देह और प्रत्यंग आदि फैलानेपर (अर्थात् अंगड़ाई लेनेपर) आराम मालूम होता है।

अन्त्राशय।—प्लीहामें शूल वेधनेकी तरह गहरा दर्द, ऐसा मालूम होता है, मानो प्लीहाकी शिराएँ आदिके भीतरसे गर्म जलीय पदार्थ प्रवाहित हो रहा है; घरमें घूमनेपर आराम मालूम होता है। प्लीहा-प्रदेशमें तेज़ दर्द और सुस्ती; पसीना निकलनेपर घटा मालूम होता है। बायें पार्श्वकी तैरने-वाली या नकली पसलीके नीचे टपककी तरह तेज दर्द (रैनान-बल्ब)। घटना—जोरसे दबाने और चलनेपर; बायीं करवट सो नहीं सकता। उदर, विशेषकर नाभी-प्रदेशमें बहुत दर्द और स्पर्शका सहन न होना। तलपेटमें ऐंठनकी तरह शूलका दर्द, इतना दर्द होता है, कि रोगिनी उसे सहन नहीं कर सकती। दर्द एकाएक पैदा हो जाता है और बहुत प्रचण्ड भाव धारण करता है।

मलांत्र और मल।—कब्जियत; मल बड़ा, सूखा, कड़ा, गाँठ-गाँठ, निकलनेके समय इतनी तकलीफ होती है, किसी तरहके यन्त्रकी सहायता लेनी पड़ती है (ऐल्यू, ओपि, प्लम्ब, प्लैट), भयानक कूथन मालूम होती है या मलान्त्रमें संकोचन शक्ति बिलकुल ही नहीं रह जाती है। पाखाना होनेके बाद काले रंगका खून निकलता है (ऐ-फ्लू, नैट-म्यूर)। उदरामय,—मल बहुत ज्यादा पानीकी तरह और पाखाना होनेके समय जाड़ा और ललाटसे ठण्डा पसीना, दोनों ही हुआ करता है (ट्राम्बिड, वेरैट)। पाखाना होनेके समय वेग देनेपर सरका दर्द बढ़ जाता है।

पेशाब।—पेशाबके बाद ऐसा मालूम होता है, मानो मूत्रमार्गसे और भी पेशाब निकलता है (ऐस्पारैगस)। पेशाब निर्मल। बहुत ज्यादा और बार-बार हुआ करता है, विशेषकर ऋतुके समय सर-दर्द रोगमें। किसी तरहका सपना देखे बिना ही वीर्य निकल जाता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—रजःस्राव आरम्भ होनेके पहले जरायु आदिका नीचेकी ओर तेजीसे खिंचना और दोनों ऊरुकी ऊपरवाली पेशीमें इस तरहका दर्द मालूम होता है मानो पेशियाँ जकड़ गयी हैं; नितम्ब और विटप (गुह्य-द्वार और जननेन्द्रियके बीचका स्थान) देशमें भयानक दर्द हुआ करता है और भार मालूम होता है; डिम्बाशयके ऊपरी अंशमें रह-रहकर बेधनेकी तरह तेज़ दर्द अनुभव होता है। दर्दकी वजहसे रोगिनी इतनी चञ्चल हो पड़ती है, कि किसी तरह भी स्थिर होकर नहीं बैठ सकती; तलपेट और जरायुमें प्राणान्तक ऐंठनकी तरह या शूलकी तरह दर्द पैदा हो जाता है, दर्द पीठमें पैदा होकर घूमता हुआ उदरमें चला जाता है और अन्तमें जरायुमें ऐंठनकी तरह दर्द पैदा हो जाता है। रजःस्रावके समय मिचली, तलपेटमें ऐंठनकी तरह दर्द, तकलीफसे रोगिनी बेचैन हो पड़ती है। कभी-कभी कई घण्टोंके लिये स्राव बन्द हो जाता है और इसके बाद थक्का-थक्का स्राव हुआ करता है। स्राव बहुत थोड़ा, पतला, फीके रङ्गका। माथा हलका मालूम होता है और उठने-बैठनेके समय बेहोशी-सी आ जाना चाहती है। ऋतु-स्रावके समयकी तकलीफ़की वजहसे रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी साँस रुक जायगी और हृत्पिण्डकी गति बन्द हो जायगी। आक्षेपिक या झिल्लीयुक्त रजःकृच्छ्र। प्रदर,—स्राव पतला, पीले अथवा सफेद रङ्गका या वर्णहीन, पर पाखाना होनेके समय गाढ़ा सफेद रंगका खून मिला स्राव हुआ करता है। दोनों डिम्बाधार प्रदेशमें ऐंठकी तरह या शूलकी तरह दर्द आरम्भ होकर ऊरु होता हुआ नीचेकी ओर चला जाता है ऋतु बन्द होनेके समय पेरकी पोटलीमें ऐंठन होती है और फिर ऋतु होनेके पहले ऐंठन बहुत बढ़ जाती है। गर्भस्रावकी सम्भावना, जरायु बड़े वेगसे नीचेकी ओर खिचता है, उसमें भयानक ऐंठन होती है या दर्द पीठमें पैदा होकर घूमकर तलपेट और जरायुमें चला जाता है। गर्भवतियोंके तलपेट और दोनों पैरोंमें ऐंठन होती है, दोनों पैर बहुत भारी और क्षीण मालूम होते हैं। प्रत्येक बार दो-एक महीनेका गर्भ नष्ट होनेके कारण सभी समझते हैं, कि रोगिनी बन्ध्या है। गर्भके दूसरे महीने खाँसीका पैदा हो जाना, वृद्धि—रातमें, सवेरे और सोनेके बाद। खाँसनेपर पेशाब निकल पड़ता है (फेरम-फास, गर्भवतियोंकी खाँसी—कोना, कास्टि, नेट-मूर, नक्स-मस, कैलि-ब्रोम); रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो यदि वह हाथसे

योनि-मुख दबा न रखेगी तो जरायु प्रभृति बाहर निकल पड़ेंगे (लिलियम, सिपिया)।

गर्दन और पीठ।—सरके पिछले भागमें दर्दके साथ गर्दनका अकड़ जाना। पृष्ठ-फलकके कोनेसे नितम्बास्थिके शिखरतक सब पेशियाँ सुस्त और दर्द-भरी मालूम होती हैं; जोरसे दबानेपर आराम मालूम होता है। ऋतुके समय नितम्ब देशमें ऐसा मालूम होता है, मानो टूट जायगा, इसी तरह दर्द हुआ करता है (ऐक्टिया-रेस बेल, लैके, नक्स-वोम, जैन्थक्स, कोलोफिल ; जोरसे दबा देनेपर आराम मालूम होता है—केलि-कार्ब, प्लम्ब, सिपिया)। कमरमें भयानक ऐंठनकी तरह दर्द घूमकर तलपेटमें और जरायुमें चला जाता है और ऐसा मालूम होता है, मानो रजःस्राव आरम्भ होनेका यह पूर्व लक्षण है। स्राव आरम्भ होनेपर तकलीफ घटती है (सिरियम-आक्जैल, लैके, जिङ्कम)।

प्रत्यङ्ग आदि।—बायाँ बाँह और हाथ सुन्न। हाथकी अंगुलियाँ सब फूल उठती है और सुन्न मालूम होती है। ठण्डे पानीसे धोनेपर बढ़ जाता है। निम्नाङ्ग बहुत चोण और भारी मालूम होता है। निम्नाङ्गमें इधर-उधर हटनेवाला अवसाद पैदा करनेवाला दर्द—उरु-शिखर और जानुतक दर्द चला जाता है। इसी वजहसे रोगिनीको बिलकुल ही हिलने-डोलनेकी इच्छा नहीं होती। गर्भवतियोंके पैरमें ऐंठन होती है (जेल्स, पोटलीमें—सिकेलि, सिपिया)। बहुत दूरतक पैदल चलनेपर पैरमें ऐंठन होती है। चलनेके समय पैर जकड़ जाते हैं (कार्बो-ऐन)।

निद्रा।—निद्रित अवस्थामें छटपटाया करता है। नींदके समय ऐसा मालूम होता है, मानो किसी ऊँची जगहसे गिर जाना चाहता है और बार-बार चौंक पड़ता है (डिजिट, क्रियो, पल्स)।

वृद्धि।—एकाएक देह हिल उठनेपर, शरीर हिलानेपर और रातमें।

उपशम।—दबाने या टीप देनेपर, निर्मल वायुके सेवनसे, सोनेके बाद और स्थिर रहनेपर।

सम्बन्ध।—रजःशूल रोगमें खासकर "ऐक्टिया-रेसि, कैमो, कोलोफिल, मैग-फास और वाइबर्नमका प्रयोग होता है। ऐक्टिया—दर्द पीठसे उरु-

शिखरके ऊपर होकर उरुमें चला जाता है। कैमोमिला—रोगी दर्दसे पागलकी तरह हो जाता है और कातर भावसे तकलीफ सहनेमें अपनी अक्षमता प्रकट करता है। कोलोफिलम—दर्द रह-रहकर, आक्षेप पैदा करनेवाला,—रोगिनी तकलीफसे चिल्लाया करती है। मैग-फास—तलपेटपर गर्म प्रयोग करनेपर थोड़ा-सा दर्द घटता है। इनके अलावा पल्स, काक्यु, कूप्रम, कैक्टस, बेल, प्लैट, जैन्थक्साइलम इत्यादिसे भी लाभ हुआ करता है।

सदृश।—ऐक्टिया-रेसि, कोलोफिल, जेल्स, गासिपियम, सिकेलि, सिपिया, वेरेट्रम, जैन्थक्साइलम।

प्रतिविष।—ऐकोनाइटम (शुक्रनली-प्रदाह)। वेरेट्रम-ऐल्बम, (अतिसार)।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३रा दशमिक क्रम।

वाइबर्नम प्रुनिफोलियम

(VIBURNUM PRUNIFOLIUM)

दूसरा नाम।—ब्लाकह।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी छालसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—गर्भ-स्रावकी आशङ्का; बाधक; जरायुसे बहुत ज्यादा रक्तस्राव; धनुष्टकार; जीभका कर्कटकी तरह जखम।

उपयोगिता और आभास।—गर्भपातका पूर्व लक्षण, प्रायः दो-एक महीनेका गर्भ नष्ट हो जाना और इसी वजहसे लोगोंका रोगिनीको बन्ध्या समझना। जरायुमें शूलकी तरह दर्द; बाधक या रजःकृच्छ्र, स्राव बहुत थोड़ा और उसके साथ ही बाहर निकलनेवाला ऋतुस्रावका दर्द अनुभव हुआ करता है। इसके अलावा कमरमें दर्द, जरायु आदिकी नीचेकी ओर प्रबल खींचन और नकली प्रसवका दर्द मौजूद रहता है। इसके सेवनसे प्रसूतिको बिना तकलीफके सुप्रसव हुआ करता है। प्रसवके बादका या नकली दर्द घट जाया करता है। प्रसवके बादका रक्तस्राव बन्द हो जाता है और

जारायु फिर संकुचित होकर स्वाभाविक अवस्थामें आ जाती है। गर्भावस्थामें सवेरेके समयका वमन, रजःस्राव होनेके समयके पहले हृत्पिण्डको, पाकाशयको और स्नायुमण्डलको सहानुभूतिक विकलता या क्रिया-विकारपर इसका अधिकार है। जिन बन्ध्यायोंका जरायु अपनी जगहसे हट गया हो, उन बन्ध्याओंको ऋतुकी अनियमिततामें यह विशेष हितकारी है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—मिचेला-रेपेन्स, सेबाइना, वाइबर्नम-ओप्युलस।

शक्ति ।—मूल अर्क और १म दशमिक क्रम।

वाइबर्नम टिनस

(VIBURNUM TINUS)

दूसरा नाम ।—लौरोस्टिनम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—वाइबर्नम ओप्युलसके साथ इसके लक्षणमें कोई विशेष पृथकता नहीं है। बहरापन, वक्षोदर पेशीमें अकड़न, चित्त-विकार और डिम्बाशयमें दर्द प्रभृति लक्षणोंमें यह उपयोगी है।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

विचि

(VICHI)

परिचय ।—फ्रांसके विचि झरनेका पानी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पानीसे क्रम तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—कब्जियत, मूत्राशयकी सर्दी, बहुमूत्र और मूत्र-पथरी, वात, गठिया-वात, पित्त-पथरी, यकृतकी क्रियाकी गड़बड़ी, छातीमें जलन, अजीर्ण, सविराम-ज्वर, चर्म-रोग और जरायुकी बीमारीमें विचि सफलतापूर्वक व्यवहार होता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—नेट्रम-म्यूर, आर्स, आक्स-ऐसि, कैलि-कार्ब, ऐनाकार्ड ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

विस्लो

(VÆSLAU)

परिचय ।—आस्ट्रियाके विस्लो नामका प्रपात ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अतिरजः, स्वल्प-रज, अनियमित रजः प्रभृति ऋतु सम्बन्धी बीमारियाँ और पुरुषोंकी बहुत अधिक सङ्गमेच्छा, स्वप्नदोष, सरमें चक्कर, आमवात प्रभृति लक्षणोंमें विस्लोसे फायदा होता है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

विङ्का माइनर

(VINCA MINOR)

दूसरा नाम ।—लेसर, पेरि विङ्कल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मुँहासे ; केश झड़ना ; दुधिया पपड़ी ; अकौता ; गलेकी अकड़न ; नाक लाल ; माथेमें पसीना ; गलेमें जखम ; जरायुसे रक्त-स्राव ।

उपयोगिता और आभास ।—बच्चोंके माथे और चेहरेपर छोटी दुधिया पपड़ी या सरके फोड़े और लग्नकच वगैरह माथेकी त्वचाके रोगोंमें इसका बहुत अधिक फायदा दिखाई देता है। जिस अंशपर फोड़े निकलते हैं, उस अंशसे बहुत ही बदबूदार रस निकला करता है, वही रस लगकर चारों ओरके केश सटकर जटा बँध जाती है और वह रस सूखकर पपड़ी जम जाती है। गलनली, उपझिल्ली-प्रदाह और इसके लक्षणवाली चर्म-रोगसे ग्रस्त रमणियोंके

जरायुसे बिना कारण ही रक्त-स्राव होना भी इससे आराम हो जाया करता है। आगे लिखे कई इसके प्रधान क्रियाफल हैं :—इसकी पैदा हुई अधिकांश अवस्थाओंमें ही कमजोरी और उठनेकी शक्ति नहीं मौजूद रहती; पाखाना होने बाद रोगी सुस्त हो पड़ता है; जरायुसे रक्त-स्राव होनेपर रोगिनी बहुत सुस्त हो जाती है, कमजोरी इतनी अधिक रहती है कि रोगिनीको ऐसा मालूम होता है मानो अब उसकी मृत्यु पास ही है; बार-बार हाथ फैलाया करती है; भीतरी कम्पन मालूम होना और रोगी रह-रहकर चौंक उठता है; पाकाशय और वक्ष-गह्वर शून्य मालूम होता है; जरायुसे रक्त-स्रावमें रक्त घोर लाल रङ्गका, बहुत ज्यादा और लसदार स्राव हुआ करता है और रोगिनी सुस्त हो पड़ती है; नाकसे जबतक रक्त-स्राव होता है; सामान्य कारणसे या जरा भी क्रोध आ जानेपर नाक बहुत लाल हो उठती है; नाकके चारों ओर और मेदकास्थिमें दाने उत्पन्न होते हैं; इसकी वजहसे पैदा हुआ उद्भेद त्वचाको बहुत क्षय करनेवाली खुजली पैदा करता है और रोगी खुजलाये बिना नहीं रह सकता; जगह-जगहपर दाने निकलते हैं और सभी जखमोंमें जलन होती है; ब्रह्मतालुके भीतरसे बाहरकी ओर ऐसा मालूम होता है, मानो हथौड़ीसे मारा जा रहा है। कानमें ऐसा अनुभव होता है, मानो ठंडी हवा घुस रही है; अन्ननलीके निम्न-तम अंशमें मानो कुछ गड़ रहा है। गर्दनके पिछले भागमें मानो कोई भारी चीज़ रखी हुई है, पाखाना हो जानेके बाद पाकस्थली आध्मान वायुसे फूल जाती है इत्यादि।

मस्तक।—सरमें चक्कर आनेकी बीमारीमें रोगीकी देह मानो बड़े वेगसे चक्कर खा रही है और दृष्टिके सामने ऐसा मालूम होता है, मानो रोशनी काँप रही है। ब्रह्मतालुमें फाड़नेकी तरह दर्द और ऐसा मालूम होता है; मानो हथौड़ीसे ठोका जा रहा है। कानमें झनझन सों-सों ध्वनि, केशसे ढकी खोपड़ीके त्वचापर त्वचाको क्षय करनेवाले दाने सब निकलते हैं और लगातार कुटकुटाया करते हैं—रोगी खुजलाये बिना किसी तरह रह ही नहीं सकता (ओलियेन, लेप्पा, वायोला-ट्राई)। माथा और मुखमण्डलपर और कानके पीछे बदबूदार दाने सब निकलते हैं और उनमें कीड़े पैदा हो जाते हैं (लाई)। दानोंसे बदबूदार रस निकलता है, चारों ओरके केशमें जटा बँध जाती है और वह सूखकर

पपड़ी जम जाती है (ओलियेन, मेजेर, सोरिन)। बच्चोंके माथेमें दुधिया पपड़ी (युगलेन्स-रिज, लेप्पा, मिडोरिन, मिलिलोट, मेजेर, ओलियेन, वायोला-ट्राई, आस्टिलेगो)। माथेमें जगह-जगह दादकी तरह तर दाने—रातमें भयानक खुजली पैदा हो जाती है और खुजलानेपर जलन हुआ करती है (क्रोटोन-टिग, क्लिमेट, ग्रैफ, मर्क, ओलियेन, सल्फ)। पढ़नेके समय एकाएक दृष्टिके सामने अन्धेरा पैदा हो जाता है और कभी-कभी चलनेके समय भी ऐसा ही हुआ करता है (झुकनेपर, चलनेपर, पढ़ने या लिखनेके समय—नेट्र-म्यूर, पढ़नेके समय—ऐ-नाई)। माथेमें मानो भों-भों सों-सों शब्द हुआ करता है और ऐसा मालूम होता है, मानो ठण्डी हवा आकर लग रही है (मानो कानके भीतरसे ठण्डी हवा प्रवाहित हो रही है—चेलिडो)।

नाक।—सामान्य क्रोध आते-न-आते नाक और नाकका अगला भाग लाल हो जाता है। गलेके जखम रोगमें निगलनेके समय दर्द अनुभव होना (ऐ-लेक्टिक, बेडियेगा, लाई)। मानो अन्ननलीके नीचे क्या कुछ गड़ रहा है (कार्बोन-सल्फ) और इसीलिये बार-बार घूंट लेनेकी इच्छा। कण्ठमें जखम निकलना। उपझिल्ली प्रदाह रोग।

स्त्री-जनेनन्द्रिय।—रजः—बहुत ज्यादा स्राव हुआ करता है,—सोतेकी तरह निकलता है और रोगिनी बहुत क्षीण हो पड़ती है (हैमा, हेलोन)। मूलतन्तुमय अर्बुद निकलनेकी वजहसे जरायुसे आप-से-आप रक्त-स्राव होता है (हाइड्रैस्ट, कैलि-कार्ब)। बहुत दिनोंसे ऋतु रुके रहनेवाली स्त्रीके जरायुसे आप-से-आप रक्त-स्राव (लैके, आस्टिलेगो)।

सार्वाङ्गिक।—गलेके पीछले भागकी पेशी बहुत ही अकड़ी और मानो उसपर एक भारी बोझ रखी है, ऐसा अनुभव होना। बार-बार बदन मरोड़ना और अङ्गड़ाई लेना। रोगिनीको इतनी कमजोरी मालूम होती है, कि उसे ऐसा मालूम होता है, मानो वह मर जायगी। निर्मल वायुमें चलनेके समय अधिकांश लक्षण दब जाया करते हैं।

त्वचा।—भयानक कुटकुटी होकर खुजली पैदा हो जाती है और खुजलानेपर त्वचा क्षय हो जाती है या नितम्बके ऊपर शय्याक्षतकी तरह जखम पैदा होकर जलन हुआ करती है। शरीरकी त्वचामें स्पर्शकी अधिकता और जरा रगड़ते ही यह अंश लाल और क्षय हुई त्वचाकी तरह स्पर्श

सहन नहीं हुआ करता। दाहिनी एँड़ीके ऊपरी अंशमें तर दाने सब निकलते हैं और हमेशा ही खुजली पैदा हो जाया करती है।

तुलनीय।—चिड़चिड़ापनके साथ अनुतप्त—क्रोकस। माथेके फोड़े—मेडो, मेजि, वायोला, वैसि। केश झड़ना—वैसिलि, फास्फोरस।

सम्बन्ध।—सदृश—हाइड्रैस्ट, युग्लेन्स-रिज, लैप्पा, सिडोरिन, मिलिलोट, मर्क, मेजिर, ओलियैन, रस-वेन, वायोला-ट्राई, आस्टिलेगो, स्टैफाई।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३रा दशमिक क्रम।

वायोला ओडोरेटा

(VIOLA ODORATA)

दूसरा नाम।—स्वीट-सेण्टेड वातकेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फूलनेपर इस वृक्षके फलसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—कैन्सर; कर्कट रोग; खाँसी; स्वर-भङ्ग; मूर्च्छावायु; स्नायुशूल; कर्ण-स्राव; आमवात; वीर्य-क्षरण; मस्सा; हूप खाँसी; कलाईका वात इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—काला रङ्ग या काले केश या काली आँखवाले मनुष्योंके कानसे स्राव या कानमें पीब होनेकी बीमारीमें यह विशेष लाभदायक है। रोगी बहरा रहता है या अच्छी तरह सुन नहीं पाता, कानमें सुई गड़नेकी तरह दर्द और ललाटमें सर-दर्द मालूम होता है। माथेकी त्वचामें बहुत खींचन मालूम होती है। ललाटमें जलन होती है और सरमें चक्कर आया करता है। इसके अलावा आगे लिखे कई लक्षण भी इसके प्रकृतिगत और सिद्धिप्रद लक्षण हैं—सवेरे शय्यासे उठनेके पहले शरीरमें इस तरहका दर्द मालूम होता है, मानो मार पड़ी है, पर सोकर उठनेपर फिर यह दर्द नहीं रहता। संगीत विशेषकर बेहाला बाजा अच्छा नहीं लगता; मनमें विशृङ्खल भाव सब पैदा होते हैं; कोई भी बात अच्छी तरह हृदयंगम नहीं

कर सकता। सरके पिछले भागमें और ललाटमें ऐसा अनुभव होता है, मानो जकड़ गया है। स्थिर भावसे रहनेपर भी सरके पिछले भागमें खींचन मालूम होनेकी वजहसे इस तरहकी बेचैनी अनुभव होती है और पीछे या सामनेकी ओर माथा झुकानेपर बढ़ जाती है। कभी-कभी माथेमें खींचनकी वजहसे ऐसी बेचैनी मालूम होती है, कि रोगीको बाध्य होकर अपना ललाट सिकोड़ लेना पड़ता है। चक्षु-गह्वरके चारों ओर दर्द-भरा कर्ण-रोग। दाहिने अंगका वातका दर्द, चक्षुगोलकमें दबाव और आँखोंमें उत्ताप और जलन; आँखमें डंक मारनेकी तरह दर्द, आँखके सामने आगकी लपट या आगका चक्कर पैदा हो जाता है। सरमें ऐसा मालूम होना, मानो सब कुछ चक्कर खा रहा है; ऐसा मालूम होता है, मानो नाकपर चोट लगी है और खून निकलना चाहता है; मानो ऊपरी तालु सूख गया है; मानो छातीपर पत्थरका एक टुकड़ा रखा हुआ है इत्यादि।

लक्षणावली

मन ।—स्मरण-शक्ति बहुत क्षीण और रोगी बहुत भुलक्कर रहता है। बहुत बेचैन और बहुत ज्यादा बकता है। मनमें भाव-पर-भाव पैदा हो जाया करते हैं; पर वह सभी विशृङ्खला-पूर्ण। मूर्च्छावायुग्रस्ता—जभी-तभी रोती है, पर क्या कारण है, यह बता नहीं सकती (कैम्फोरा)। रोगी बच्चेकी तरह व्यवहार करता है। कहना नहीं मानता, पथ्य खाना नहीं चाहता और बहुत धीमे स्वरमें बोलता है।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, मस्तिष्क आदि माथेके भीतरवाले सभी पदार्थ मानो चक्कर खा रहे हैं (ब्राई, कोना, साइक्लेम, पल्स)। ललाट देशमें जलन होती है (ऐ-आक्साल, कैमो)। माथा बहुत भारी और गलेके पिछले भागकी पेशी बहुत क्षीण मालूम होती है। माथेकी त्वचामें बहुत खींचन मालूम होती है और इस अकड़नको घटानेके लिये रोगी अपना ललाट बाध्य होकर सिकोड़ लेता है। भौंहोंमें प्रायः दर्द पैदा हो जाया करता है। आँख और कनपटीके निचले अंशमें टपक। माथा इतना भारी मालूम होता है, कि वह सामनेकी ओर झूल पड़ता है; सर-दर्द रोगमें आँखोंमें अकड़न मालूम होती है और दृष्टिके सामने जलते हुए चक्कर सब पैदा हो जाया करते हैं।

आँख ।—पलकोंमें बहुत भार मालूम होता है। पलकें ऐसी मालूम होती हैं, मानो किसीने दबा रखा है (ब्राई, रैनान-बल्बो)। आँखोंमें जड़ता, मानो औंघाईमें पड़ा है। आँखोंमें उत्ताप और जलन (आर्ज-नाई, कैमो, डायाडेमा, लाई, सल्फ), आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ दिखाई देना (कार्बो-वेज); पासकी दृष्टि (फाइजस, फास)। आँखके भीतरी आवरणका प्रदाह (कोलोसिन्थ, जेल, इपिक, जेबोरैण्डो), दाहिनी कनपटीके नीचे भयंकर टपक मालूम होती है।

कान ।—कानके भीतर और कानके चारों ओर बेधनेकी तरह दर्द (ऐक्टि, कैमो, मर्क)। सब तरहकी सङ्गीत-ध्वनिसे, खासकर बेहालाकी आवाजसे बहुत चीढ़ (ऐकोन, नैट्र-कार्ब, नक्स, पल्स, सिपि)। कानके सामने लगातार मानो झन-झन सों-सों शब्द होता है, इसी तरहकी अनुभूति होती है (कार्बोन-सल्फ, सिङ्कोना)। दोनों कानसे पीबका स्राव और बहरापन।

श्वासयन्त्र ।—स्वरभङ्गके बाद नाककी सर्दी आरम्भ हो जाती है। नाकका अगला भाग ऐसा सुन्न मालूम होता है, मानो किसीने आघात किया है और ऐसा मालूम होता है, मानो उसके भीतरसे धक्का देकर रक्त बाहर निकलना चाहता है। श्वासकष्ट और प्रचण्ड खाँसी, विशेषकर दिनके समय (कुरारी, क्रियो, लाई, निकोल, फास, मिफाइट)। एक बार खाँसी आरम्भ होनेपर बहुत देरतक लगातार सूखी खाँसी आया करती है (नेपथेलिन), विशेषकर दिनके समय और खाँसनेके समय बहुत श्वासकष्ट अनुभव होता है (कोरैल)। हुप-खाँसी. इसके साथ ही थोड़ेमें हो कातर दुबली-पतली बालिकाओंका स्वरभङ्ग। बलगम—बहुत साफ़ और गाढ़ा गोंदकी तरह स्राव (कैलि-बाई)। श्वास-प्रश्वास बहुत सुस्त करनेवाला, श्वास छोड़नेके समय बहुत तकलीफ होती है। भयङ्कर मानसिक कष्ट पैदा हो जाता है और कलेजा जोरसे धड़का करता है। श्वासाल्पता। छातीपर मानो एक भारी पत्थर रखा हुआ है, ऐसा अनुभव होना (ऐकोन, कैक्टस)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—गलेकी पेशीमें बहुत खींचन मालूम होती है (साइक्यू, एगार)। गलेके पीछेवाले भागकी पेशीमें चिलक मारनेकी तरह दर्द और खींचन मालूम होती है। दाहिने अंगका वातका दर्द,—दाहिना अंग हिलाना एक तरहसे असम्भव हो जाता है। सवेरे नींद खुलनेपर सारे

शरीरकी हड्डीमें दर्द मालूम होता है, पर उठनेपर फिर नहीं रहता। सवेरे नींद खुलनेपर ऐसा मालूम होता है, कि सारी सन्धियाँ टूट गयी हैं (सोरिन) श्वासकष्ट, समूचे बाँहका थोड़ा-थोड़ा काँपना। दाहिने बाँहका वात। कलाईमें खासकर दाहिने हाथकी कलाईमें, दबावकी तरह और लगातार दर्दका तकलीफ़। शरीरमें जगह-जगह जलन और उत्ताप पैदा हो जाता है। रोज़ सवेरे बार-बार जम्हाई आती है और आँखमें पानी भर आता है। रोगी रातमें चित्त होकर, बायाँ बाँह माथाके ऊपर रखकर और दोनों घुटने सिकोड़कर सोता है। झाल-भरी गन्धवाला दूधकी तरह पेशाब होता है। शरीरमें जगह-जगह ऐसी जलन होती है, मानो आग छू गयी है।

सम्बन्ध।—प्रतिविष।—कैम्फोरा।

तुलनीय।—दाहिनी कलाईमें दर्द—ऐक्टिया-स्पाईक्लोर, ब्रायो। डोरीकी तरह बलगम—कैलि-बाई। गलेकी पेशीकी दुर्बलता—ऐण्टिम-टार्ट। डा० कूपरने इसे इपिकाकके साथ समक्रिया करनेवाली दवा प्रमाणित किया है।

वृद्धि।—पीछे या सामनेकी ओर माथा झुकानेपर, संगीतकी ध्वनि सुननेपर, दिनमें।

उपशम।—शय्यासे सोकर उठनेपर।

सदृश।—सिना, कोरेल, कैलि-बाई, नेट्र-कार्ब, नक्स-वोम, पल्स, रस, सिपिया।

क्रिया।—२ से ४ दिन।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठा शततमिक क्रम।

वायोला ट्राइकोलर

(VIOLA TRICOLOR)

दूसरा नाम।—जेसिया पैन्सी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—गाछके ताजे फूलसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।— बच्चोंके माथेका फोड़ा ; अकौता ; अनजानमें पेशाब ; रुका हुआ प्रमेह ; छोटी सन्धियोंका वात ; श्वेत-प्रदर ; औरतोंका प्रदाह ; आमवात ; दाद ; वीर्य-क्षरण ; उपदंश ; गलेका जखम ।

उपयोगिता और आभास ।—चर्मदल या अकौताकी तरहके नाना प्रकारके चर्म-रोग और स्तन पीनेवाले बच्चोंके माथेके फोड़ेमें यह विशेष लाभदायक है। खासकर यदि इस चर्म-रोगके साथ अनजानमें पेशाब हो जाना या बहुत पेशाब होना या पेशाबमें बिल्लीके पेशाबकी तरह गन्ध होना ये लक्षण वर्त्तमान रहें। गण्डमाला दोषवाले बालकोंके शरीरपर लगातार फोड़े निकलना, बड़ी और छोटी सन्धियोंका वात ; ललाटपर चकत्ते और चर्मदलकी तरह उद्भेद ; खुजलानेवाले भयानक जखम, जीवित सपने और वीर्यस्खलन, लिङ्गमुण्ड और लिङ्गावरक मेढ्रत्वचापर सूजन, खुजलाहट और दर्द तथा दर्द भरा बार-बार लिङ्गमें कड़ापन ; भोजनके बाद श्वास-कष्ट ; नींदमें रोगीके हाथ फड़का करते हैं और मुट्ठी बन्द हो जाती है ; दुधिया फोड़े रुक जानेके कारणसे उत्पन्न स्नायविक आक्षेप। सोनेके बाद हृत्पिण्डमें भयानक बेचैनी मालूम होती है ; चलनेके समय वक्ष और उदरके भीतरसे सलाई गड़नेकी तरह दर्दका पैदा होना और सरमें चक्कर आया करता है। बैठनेकी अवस्थामें तलपेट और पुट्ठेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द—खड़े होनेपर घटना ; बच्चोंको शय्यामें पेशाब हो जाना, पेशाबमें बिल्लीके पेशाबकी तरह गन्ध प्रभृति इसके निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन ।—बहुत ही स्थूल बुद्धि। सांसारिक विषयोंके सम्बन्धमें उत्साहका न रहना। सभी विषयोंमें उदासी प्रकट करता है (ऐ-फास, ओरि), चिड़चिड़ा, दुःखित, उदास भाव और किसीके साथ बात नहीं करना चाहता। अत्यन्त अभिमानी और लोगोंको तिरस्कार करनेमें खूब पटु, बात काट देना बहुत पसन्द। परिश्रमसे कातर।

मस्तक ।—सरमें चक्कर,—चलनेके समय (बेल, नेट्र-मूर, नक्स)। माथा उठानेपर भारी मालूम होता है और झुकनेपर घट जाता है। दबावकी तरह सर-दर्द, विशेषकर ललाटमें और कनपटीके स्थानपर। बहुत रूसी निकलना, त्वचामें असह्य भावसे जलन हुआ करती है, खासकर रातमें

(खुजली और जलन करनेवाले तर दाने—कैल्के, ग्रैफ)। माथेके त्वचाके ऊपर जलन पैदा करनेवाला सुई गड़नेकी तरह दर्द, विशेषकर ललाटमें और कनपटीमें। माथेके केशसे ढके अंशमें और चेहरेपर दादकी तरह चर्मदल निकलते हैं (क्रोटोन-टिग, डाल्का, मर्क, रस, वायोला, पोडो)। माथेका दाद (क्लिमैट, क्रोटोन, ग्रैफ, क्रियो, सोरिन, विङ्का, रस-वेन)। रोगीको अनजानमें पेशाब हो जाता है। बच्चोंके माथेके दूधिया फोड़े (रस-वेन, वायोला-ओडो, विङ्का-माइनर)। प्रचण्ड खाँसी और श्वासकष्टके साथ, खासकर जो बच्चे अबतक स्तन पी रहे थे और अन्न पीना छोड़ा है। अत्यन्त मोटी पपड़ी जमना (दरार) द्वारा माथा ढँक जाता है और उससे गाढ़ा पीला रस निकलकर केशोंकी जटा बँध जाती है (मेजेर, सोरिन)।

आँख।—आँखमें करकराहट होती है। आँखें इस तरह झपी जाती हैं, मानो न जाने कितनी नींद आ रही है (कास्टि, चिनिन-सल्फ, कोना, फार्मिका, जेल, नेट्र-कार्ब, सल्फ)। मानो आँखकी ऊपरी पलकमें एक कङ्कड़ घुस गया है (बायीं आँखमें होनेपर—स्टैफ, कास्टि)।

मुखमण्डल।—जिस गालको दबाकर सोता है, उसके विपरीत ओरके गालमें तथा चेहरेमें गर्मी अनुभव होती है (ए-फास), खासकर सन्ध्याको लेटनेकी अवस्थामें। भोजनके पहले चेहरा गर्म (ऐसाफिट, कैमो, पेट्रोल) हो जाता है और पसीना निकला करता है (कैमो, नेट्र-सल्फ)। चेहरेकी त्वचा मोटी और कड़ी हो जाती है। चेहरेपर दूधिया फोड़े निकलते हैं (बोर, कैल्के, साइकूट, क्रोटोन, ग्रैफ, हिप, लाई, पेट्रोल, सोरिन, रस, विङ्का), भयानक जलन और खुजली, खासकर रातमें और उससे गाढ़ा गोंदकी तरह पीले रङ्गका पीब निकला करता है (ग्रैफ, पेट्रोल, सोरिन, सिफिलिन, सिडोरिन)। ललाटपर चर्मदल मिली फुन्सियाँ सब निकलती हैं (साइकूटा, क्रोटोन, डालका, ग्रैफ, हिप, ऐ-नाई, मर्क, रस)। ललाट और मुखमण्डलकी त्वचामें बहुत खींचन मालूम होती है (कैनाब-इन, रियुम, वायोला-ओडो)। ऊपरी ओंठके ऊपर और चिबुकके पास पीब-भरी फुन्सियोंकी तरह अनगिनती दाने निकलते हैं और उनपर क्रमसे टूटनेवाली पपड़ी पैदा हो जाया करती है। चिबुकपर भूरे रङ्गके व्रण (इयुजिन-येम, रस, लैके, मेजेर)

मुख-विवर आदि।—मुँहका स्वाद कड़वा और जीभ सफेद मोटी लेप चढ़ी मालूम होती है। मुँहमें बहुत अधिक लार सञ्चय होनेपर भी उसके भीतर सूखापन अनुभूत होता है (कैलि-कार्ब, कैलि-म्यूर)। संध्याके बाद कण्ठमें बहुत दर्द मालूम होता है और ऐसा मालूम होता है, मानो जखम हो गयी है। ग्रीवाकी ग्रन्थियाँ सब फूल जाती हैं (एरम-ट्राई, कैल्के, सिस्टस, आयोड, मर्क)। कण्ठमें श्लेष्मा अधिक हो जानेकी वजहसे दिनके १२ बजनेके समय रोगी लगातार खाक-खाक किया करता है और इसी तरह बलगम निकला करता है। तालुमूलके दोनों पार्श्वमें और भीतरकी ओर उपदंशसे उत्पन्न जखम पैदा होते हैं (ऐ-नाई, अरम, कैलि-आयोड, मर्क, सिफिलिन) और इसी कारणसे कुछ निगलनेके समय मानो रोगीकी जान निकल जाती है।

अन्त्राशय।—भोजनके बाद तुरन्त ही श्वास-कष्ट पैदा हो जाता है और शरीरमें बहुत उत्ताप पैदा हो जाया करता है (श्वास-कष्ट—ऐनाक, नक्स-मस, सिफिलिन; उत्ताप—ऐ-नाई, फेर, मिडोरिन)। उदरमें छेदनेकी तरह दर्द, बाहरी वेग पैदा हो जाता है, रोगी चिल्लाकर रोया करता है और उसके बाद बहुत ज्यादा आध्मान वायु निकला करता है और इसके साथ ही थक्का-थक्का आँव निकलती है। मल रुखड़ा, धसधसा, आँवमय और निकलनेके समय लगातार आध्मान वायु निकला करता है (ऐलो)।

पेशाब।—पेशाबका वेग और बहुत ज्यादा पेशाब। पेशाबमें बदबू। बिल्लीके पेशाबकी तरह गन्ध और बहुत गदला (ऐस्पारेगस)। मूत्रमार्गमें सुई गड़नेकी तरह दर्द।

पुं०-जननेन्द्रिय।—अश्लील और स्पष्ट स्वप्नके साथ अनजानमें वीर्य-स्खलन (साइक्लू, डिजिट, डायस्को, ग्रैफ, कैलि-ब्रोम, कैलि-म्यूर, कोबाल्ट, सिपि); रुका हुआ प्रमेहका स्राव (ऐग्नस, कोन्य, क्लिमेट, मिडोरिन, नैट-सल्फ, पल्स)। उपदंशके जखम आदि (ऐनान्थि, अरम-म्यूर-नैट, कैलि-बाई, लैके, मर्क, ऐनाई, फाइटो, स्टिलिङ्ग, सिफिलिन)। मेढ्रत्वचा फूल उठती है और खुजलाया करती है। लिङ्गके भीतर सुई गड़नेकी तरह दर्द या लिङ्गमुण्डमें दबाव अनुभव होना; लिङ्गमुण्डमें जलन हुआ करती है (सिपा, कोचलिया; प्रमेह रोगके बाद अण्डकोषका बढ़ना और कड़ा हो जाना

(रोडो, बाएँ अण्डकोषका—कैलि-म्यूर)। पाखाना होनेके समय वीर्य-क्षय (ऐ-फास, जेल्स)।

वक्ष।—वक्षके बायें पार्श्वमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; वृद्धि—श्वास-प्रश्वासके समय (निकोलम, ब्राई, सल्फ)। वक्ष, पंजर, वक्षोस्थि और पंजरेके भीतरकी पेशीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द और दबाव मालूम होना, खासकर बैठनेकी अवस्थामें झुकनेपर। सोनेके समय हृद्-प्रदेशमें बहुत अधिक बेचैनी मालूम होती है और मानो लहर-पर-लहर उठकर हृदयपर आघात करती है। इसी तरहकी टपक हुआ करती है।

प्रत्यङ्ग आदि।—दोनों अंस-फलकोंके बीचमें बहुत अकड़न मालूम होती है और त्वचामें छेदनेकी तरह दर्द और चुनचुनी हुआ करती है। गलेकी गाँठें सब फूलकर कड़ी हो जाती हैं (बैराई-म्यूर, कार्बो-ऐन, सिस्टस, कूप्रम-मेट, डालका, साइलि)। स्कन्ध-सन्धि, कोहनी, अग्रबाहु और हाथकी अंगुलीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। सवेरे नींद खुलनेपर दोनों ऊरु ऐसे मालूम होते हैं, मानो टूट गये हैं। चलनेके समय जानु मुड़ जाते हैं। जानु-फलक, अग्र जंघास्थि और चरणमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। चरणोंपर पीब-भरी फुन्सियोंकी तरह और रस निकलनेवाले दाने पैदा हो जाया करते हैं। चलनेके समय अग्र जंघास्थिमें सुई गड़नेकी तरह दर्द।

सार्वाङ्गिक।—दूधिया फोड़े रुक जानेके बाद बच्चोंको स्नायविक लक्षण पैदा हो जाते हैं। सन्धिवात—रोगवाली सन्धिके चारों ओर खुजलीकी तरह दाने निकलते हैं। रोगवाले पार्श्वके विपरीत पार्श्वमें दबावकी तरह लक्षण या दर्द बढ़ जाता है ; बिना रोगवाली करवट सोनेपर दर्द बढ़ जाया करता है। रातमें स्पष्ट सपने देखनेके बाद अनजानमें वीर्यपात हो जाता है और इसके बाद ही रोगीमें बहुत अधिक मानसिक अवसाद पैदा हो जाता है। पाखाना होनेके समय और पेशाबके साथ वीर्यक्षय हुआ करता है, रोगीकी देह काँपा करती है, अच्छी तरह भूख नहीं लगती, हमेशा आलस्य मालूम होता है और नींद नहीं आती। बैठनेवाली अवस्थामें तकलीफ़ बढ़ती है और अपनी जगहसे उठनेके समय घट जाती है।

त्वचा।—शरीरकी त्वचापर जगह-जगह छेदने या डङ्क मारनेकी तरह दर्द अनुभूत होता है। चर्मोद्भेद—सूखे, जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द पैदा करनेवाले ; कभी-कभी उनमें भयानक खुजली पैदा हो जाती है—रातमें

खुजली और भी बढ़ जाया करती है। सारे शरीरमें बड़े-बड़े फफोले निकलते हैं (आर्निका, सल्फ)। शरीरकी त्वचाके ऊपर कोई जखम आदि होनेपर वह जल्दी अच्छा नहीं होता। कुटकुटानेवाले या डङ्क मारनेकी तरह दर्द पैदा करनेवाले सफेद रङ्गके उद्भेद निकलना। सारे शरीरमें फटे घाव उत्पन्न हो जाया करते हैं, पर खुजलानेपर उनके भीतरसे पीला रस निकलता है।

निद्रा।—तीसरे पहर औंघाई आती है। नींद अच्छी नहीं होती, बार-बार नींद खुल जाती है। रातमें मनमें लगातार नाना प्रकारके भाव पैदा होनेकी वजहसे नींद नहीं लगती, पर रातके अन्तिम भागमें रोगीको इतनी गहरी नींद लगती है, कि सवेरे नींद नहीं खुलती (ओपि)। निद्रितावस्थामें बच्चेका हाथ रह-रहकर हिल उठता है। उसके हाथका अंगूठा पीछेकी ओर खिंच जाता है, चेहरा लाल हो उठता है (अरम-म्यूर, सिनियैन, ओपि) और प्रायः सारे शरीरमें उत्ताप पैदा हो जाता है।

वृद्धि।—रोगवाले पार्श्वके विपरीत पार्श्वको टीपने या दबानेपर; रोगवाला पार्श्व दबाकर सोनेपर; बैठनेवाली अवस्थामें; टहलनेपर; माथा उठानेपर; सोनेके बाद; जाड़ेके दिनोंमें ठण्डी हवामें टहलनेपर; दिनके ११ बजनेके समय और रातमें।

उपशम।—अपनी जगहसे उठनेके समय; खड़े होनेपर; झुकनेपर; निर्मल वायु सेवन करनेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष।—कैम्फो, मर्क, पल्स, रस।

अनुकूल सम्बन्ध।—मर्क-फास, पल्स, रस, सिपि, स्टैफ, सल्फ।

सदृश।—क्लिमेट, ग्रैफ, हिपर, मेजेर, ओलियैन, पेट्रोल, सोरिन, रस-विन, स्टैफ, विङ्का-माइनर।

तुलनीय।—मुँहकी त्वचामें खींचन मालूम होना—वायोला, आडोरैटा। दूधिया फोड़े—विङ्का-माइनर। जखम प्रदाह—हिपर। सुई गड़नेकी तरह दर्द—कैलि-कार्ब।

क्रियाका स्थायित्व।—६ से १४ दिन।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३रा दशमिक क्रम।

वाइपेरा

(VIPERA TORVA)

दूसरा नाम ।—वाइपेरा कास्टनिस ; पिलियस-वेरस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—कामन-वाइपर नामक सप-विषसे यह दवा तैयार होती है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नाकसे रक्त-स्राव ; गलगण्ड (घेघा) ; रक्तस्राव ; कामला ; यकृतका बढ़ना ; शिरा-प्रदाह ; असमयका बुढ़ापा ; जीभका फूलना ; शिराका फूलना इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है ।

उपयगिता और आभास ।—शिरा-प्रदाह और शिराकी सूजनके लिये यह विशेष लाभदायक है। रोगवाले अंगको लटकाये रखनेपर या जमीनपर रखनेपर भयानक यन्त्रणा होती है और वह स्थान इतना चरचराता है, कि मालूम होता है, कि फट जायगा। रोगीकी यह अंग या प्रत्यंग उठाये रखनेपर या ऊँचा किये रखनेपर आराम मिलता है। रोगी शिराएँ बहुत प्रदाहित रहती हैं और उनमें स्पर्श सहन नहीं होता। रोगवाले पैरमें ऐसा मालूम होता है, मानो न जाने क्या नीचेसे ऊपर चढ़ गया है। इस रोगवाले अंगमें पसीना नहीं होता।

लक्षणावली

मस्तक ।—माथेमें चक्कर आना, सामनेकी ओर गिर जाना चाहता है, नाकसे रक्तस्राव होता है (ऐकोन, ऐण्टिम-क्रूड, कार्बो-ऐन, क्रोटेलस) और महान उद्वेग पैदा हो जाता है (कैक्ट, कास्टि)। चेहरा और गला फूल उठता है और ऐसा मालूम होता है, कि दबावके कारण आँखें बाहर निकली आती हैं ; चेहरेकी त्वचामें बहुत तनाव या खींचन मालूम होती है और रङ्ग काला हो जाता है ; गला या कण्ठ रुक जाना चाहता है ; कभी चेहरा मलिन और हड्डी-हड्डी हो जाता है तथा ललाटमें ठण्डा पसीना हुआ करता है (वेरेट) और वह मोतियोंकी भाँतिके पसीनेकी बून्दोंसे ढका दिखाई देता है। दोनों ओंठ नीले, ओंठ और जीभ फूली, लार-भरी और

म्लान मालूम होती है। जीभ नीली आभा लिये और बाहर निकली (क्रोटे-लस, फाइटो)।

मुख-विवर।—मसूढ़े पर शीतादकी रेखा दिखाई देती है। मुँह और कण्ठकी लाला-ग्रन्थियाँ सब फूली और मालूम होनेकी वजहसे निगलना प्रायः असम्भव हो जाता है (लैके, सल्फ)। जीभ फूली (एपिस, ऐनान्थि, कैन्थ, हेलिबो, मार्क, लैके), भूरा और काला रङ्ग और बाहर निकली हुई, इसीलिये रोगी बोल नहीं सकता (ऐनान्थि, लैके, ओलि, कैजिपुट, कैलेड, ऐनाक, डाल्का), जीभ काले रङ्गकी धूएँकी तरह अनुभूतिजनक और बदबू।

अंत्राशय आदि।—हरे रङ्गका खून मिला पतला पाखाना होनेके बाद बढ़ जानेवाला यकृतमें भयानक दर्द, कामला और ज्वर, दर्द दाहिने कन्धे और उरुशिखरतक चला जाता है (चेलिडो, क्रोटेलस)। उदरमें भयानक यन्त्रणा और दूध पीनेपर गुच्छा बँधी कृमि वमन होती है। उदरमें आध्मान वायु भरकर वह फूल उठता है। थक्का-थक्का बदबूदार काले रङ्गका खून-मिला पाखाना होता है। मलद्वारसे काला जमा हुआ खून निकलना। पेशाब घोर पीला—जैसा कामला रोगमें हुआ करता है (चेलिडो, चियोनैन्थस-वार्जि, सिपि)।

श्वासयन्त्र और हृत्पिण्ड।—हृत्पिण्डमें सुई गड़नेकी तरह दर्द रोगमें ठण्डा पसीना होता है, रोगी सुस्त हो पड़ता है (नैजा) और श्वास-कष्ट पैदा हो जाता है। एकाएक श्वास-प्रश्वास रुक जाती है, हृत्पिण्ड मानो स्थिर हुआ जाता है और रोगीका चेहरा नीला पड़ जाता है (स्ट्रैमोन)। वक्ष और उदरके ऊपरकी शिराएँ सब मोटी और कड़ी। हृद्-प्रदेशमें तेज़ खींचनका अनुभव होना और इसी वजहसे रोगी अपने कपड़े आदि फाड़ डालता है और सुस्त हो पड़ता है। शिराका प्रदाह और शिराका फूलना ; रोगवाली शिरा सब फूल उठती है और वह पैर या हाथ झुकाने या नीचा करनेपर यह शिरा इतनी फूल उठती है, कि ऐसा मालूम होता है, मानो वह फट जायगी (डायाडेमा, ऐमोन-कार्ब, ऐल्यू, कैल्को, सैबाई, थूजा)। दाहिने बाँहका शिरा-प्रदाह, हाथ नीचा कर रखनेपर तकलीफ़ बढ़ जाती है।

प्रत्यंग।—प्रत्यंग सब फूले और लाल। पर्यायक्रमसे उदर और प्रत्यङ्गोंमें दर्द मालूम होना ; छूनेपर दर्द बढ़ जाता है, बाँह फूला, नीली आभा

लिये लाल, बाँह लाल और बीच-बीचमें चकत्ते-चकत्ते दाग रहते हैं तथा दर्द हुआ करता है। हाथ और पैर इतना फूलता है, कि मालूम होता है, मानो वह फट जायगा, दबानेपर गड़हा नहीं पड़ता। हाथकी त्वचा सूख जाती है, बड़े-बड़े चर्म-खण्ड सब निकलते हैं और उसके नीचेकी त्वचा दिखाई देती है। पक्षाघातकी वजहसे शरीरका ढलमलाना या वैसी ही ढलमली गति और भाव, उत्र होकर न जाने क्या ऊपर चढ़ गया। जानु और गुल्फमें अकड़न। पैर फूले, उत्ताप-रहित और सुन्न।

सार्वाङ्गिक।—असमयमें बुढ़ापा, शिशुकी वृद्धिमें कमी, लक्षण सब एक वर्षका अन्तर देकर पैदा होते हैं। फूले हुए अंशमें स्पर्श ज्ञान नहीं रहता। शरीरकी त्वचा सफेद या पीले रङ्गकी; मुख और देह-काण्डकी त्वचा ऐसी मालूम होती है मानो पाण्डुरोग हो गया है और प्रत्यंगोंपर काले-काले गोल दाग पैदा हो जाते हैं और इन दागोंको छूनेपर ठण्डक अनुभव होती है, शरीरका ताप घट जाता है और रोगी शीत सहन नहीं कर सकता। रोगवाले अंशमें पसीना बिलकुल नहीं होता। रक्तस्राव होना, खून सब पतला और जमता नहीं है (सैंगुइनेरिया)।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐलूर, ऐमोन-कार्ब, क्रोटेलस, हैमा, नेजा, पल्स, सिमिसिफ्यूगा, सेबाई, थूजा।

तुलनीय।—तरल रक्तस्राव, सैंगुई, मूगा।

शक्ति।—६ठा से २०० शततमिक क्रम।

विस्कम ऐल्बम

(VISCUM ALBUM)

दूसरा नाम।—मिस्टल टो।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पके फल और पत्तोंसे अरिष्ट तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—मृगी, ताण्डव, स्नायुशूल, विशेषकर उरुके पिछले भागका स्नायुशूल और पर्यायक्रमसे जानु और एँड़ी और कन्धे तथा कोहनीमें उत्पन्न वात व्याधिमें यह विशेष लाभदायक है। इसके अलावा

बायें कानका सर्दीसे उत्पन्न बहरापन ; फूल पड़ जाना ; सर्दीकी वजहसे उत्पन्न जरायुसे रक्तस्राव और बहुत दिनोंके जरायुके अन्तर्वेष्ट-प्रदाहमें भी यह उपयोगी है। ऋतु रुकना, सर्दी लग जाना, पानीमें रहना और पानी घाँटना वगैरहके कारणसे पैदा हुए नाना प्रकारके रोग, विशेषकर जरायुसे रक्तस्राव, वात और उरुके पिछले भागके स्नायुशूलमें इससे विशेष फायदा हुआ करता है।

लक्षणावली

मन ।—असम्बद्ध बकता है। आँख बन्दकर मोहाच्छन्नकी तरह पड़ा रहता है, मानो गहरी नींदमें पड़ा है, परन्तु जरा भी जोरकी आवाज होनेपर जाग जाता है और जो पूछा जाता है उसका उत्तर देता है, परन्तु फिर तुरन्त ही मोहमें जा पड़ता है (आर्निका) और उसकी नाक कुछ-कुछ बोला करती है (ओपि)।

मस्तक ।—मानो माथेकी खोल उड़ी जाती है (कैनाब-नाई, लैक, डिफलो, मानो खोपड़ी उड़ जायगी—बैप्टि, केमो, कोबाल्ट, नैट-क्लोर, ड्युका)। आँखके चारों ओर पीला रङ्ग ; दो देखना, हरेक चीज दो मालूम होता है। कानमें ऐसा अनुभव होता है मानो बन्द हो गया है और उसमें भों-भों शब्द हुआ करता है (सिङ्कोना, नक्स-मस)। सर्दी लग जानेकी वजहसे पैदा हुआ बहरापन (ऐसेरम, कैप्स, कास्टि, जेल, लिडम, मर्क, पल्स, सल्फ, सिफिलिन)। मुँहकी पेशियाँ सब हमेशा फड़का करती हैं।

पुं-जननेन्द्रिय ।—कामोद्दीपक सपने और वीर्यस्खलन। दाहिने कोषरज्जुसे अण्डकोषतक रह-रहकर बहुत चिलक मार उठती है और यह रज्जु कुञ्चित होकर पुट्ठेके स्थानपर गुच्छवद्ध हो जाती है (एमोनियेकम, बार्बेरिस, रोडो)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—पानीमें भींजनेके कारण ऋतुरोध होनेकी वजहसे जरायुसे रक्तस्राव, खूनका कुछ अंश चमकीला लाल और पतला और कुछ अंश जमा और घोर लाल, स्रावके समय रोगिनीको अस्पष्ट सर-दर्द अनुभव होता

है, कनपटीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, हाथ, पैर आदि सुन्न मालूम होना और आँख नीले घेरेसे घिरी और गड़हेमें धँसी दिखाई देती है। बायें डिम्बाशयमें बेधनेकी तरह दर्द (थूजा); वृद्धि—करवट बदलकर सोनेपर। फूल अटकना (कैन्थ, कोलोफिल, पल्स, सिकेलि)। जिनको रजःस्राव होना बन्द हो गया है, उनकी नाना प्रकारकी बीमारियाँ (लैके, सल्फ)। नितम्बसे उठकर तेज दर्द वस्तिगह्वरमें और ऊपरसे फाड़नेकी तरह या बेधनेकी तरहका दर्द नीचेकी ओर चला जाता है। बहुत दिनोंका जरायुका अन्तर्वेष्ट-प्रदाह।

श्वासयन्त्र।—श्वासकष्ट, दाहिनी करवट सोनेपर बढ़ जाता है (बायीं करवट सोनेपर—एपिस)। श्वास-प्रश्वास धीमा और आवाज करनेवाला। सर्दी लगनेकी वजहसे पैदा हुए दाहिने वक्षोदक रोगमें प्लीहामें तेज दर्द। आक्षेपिक खाँसी और क्रुप खाँसी, छोटी या बड़ी सन्धियोंका वात मिला, श्वास-रोग।

प्रत्यङ्ग आदि।—वातकी वजहसे दर्द, जानु और गुल्फमें तथा कन्धा और कोहनीमें पर्यायक्रमसे दर्द पैदा हो जाता है। ऊरुके पिछले भागका स्नायुशूल दोनों ऊरुमें और ऊर्द्ध-प्रत्यङ्गमें फाड़नेकी तरह दर्द। ऐसा मालूम होता है, कि पैरसे माथेकी ओर आगका ताप चढ़ रहा है और सारा शरीर आगसे घिरा अनुभव होता है। कभी-कभी दर्द नितम्बसे वस्तिगह्वरतक चला जाता है, सोनेपर दर्द बढ़ जाता है; वस्तिगह्वरसे दर्द ऊरुमें और ऊर्द्धाङ्गमें जाता है। रोगी रातमें अपने शरीरका कोई भी अंश स्थिर नहीं रख सकता। कभी एक और कभी दूसरा अंश फड़कता है, सन्ध्याके समय इस तरह क्लान्त हो पड़ता है, मानो न जाने कितना परिश्रम किया है; सूगी, चरणसे मानो आगका ताप चढ़कर माथा और समूची देहको अग्निमय बना डालता है और रोगीका चेहरा नीला हो जाता है, शरीरकी सभी पेशियाँ ऐसी हो जाती हैं, मानो पक्षाघात हो गया है, केवल आँखकी पेशी बची रहती है। रोगी न तो बोल सकता है, न कुछ निगल सकता है और इसीलिये बहुत जल्द मृत्यु-मुखमें जा पड़ता है। पानीमें खड़े रहने या पानीमें भींजनेके कारण रजोरोध और इसी वजहसे जरायुसे रक्तस्राव और वात (ऐमोन, ब्राई, पल्स, रोडो, रस, साइजि)।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष ।—कैम्फोरा, सिङ्कोना ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ६ठा शततमिक क्रम ।

वीसबेडेन

(WIESBADEN)

परिचय ।—प्रसियाके वीस बेडेन झरनेका पानी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पानीके साथ क्रम तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—वीस बेडेनके पानीमें नेट्रम-म्यूर या सोडियम क्लोराइड बहुत ज्यादा परिमाणमें रहता है। इसीलिये नेट्रम-म्यूरके साथ इस दवाका विशेष सादृश्य है। वात और गठिया वातकी चिकित्सामें इस दवाका लगातार व्यवहार होता है। आँतसे रक्त-स्राव, अर्श, उदरामय, कब्जियत प्रभृति आँतोंकी बीमारीमें यह बढ़िया काम करता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—नेट्रम-म्यूर, फेरम-पिक्रि, ऐसिट-क्रूड ।

शक्ति ।—मूल औषध और निम्न-शक्ति ।

वाइल्ड बेड

(WILD BED)

नामान्तर ।—डरटेनबर्गके वाइल्ड बेड झरनेका पानी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पानीमें क्रम तैयार किया जाता है ।

उपयोगिता और आभास ।—अजीर्ण, सर्दी, वात, गठिया वात, मेरुदण्डका पक्षाघात, तलपेटका पक्षाघात, अस्थिमें दर्द प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—यरिक-ऐसिड, आरि-इयु, सेराइ-नेरिया ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

वाइथिया

(WYETHIA HELENIOIDES)

दूसरा नाम ।—प्वायजन् वीड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मूलसे अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— आर्त्तवकी कमी ; दमा ; कब्जियत ; खाँसी ; अतिसार ; कमजोरी ; बाधक ; ज्वर ; बवासीर ; सर-दर्द ; हिचकी ; अजीर्ण ; डिम्बाशयमें दर्द ; नाकसे स्राव ; गलेमें जखम ; अलिजिह्वाकी बीमारी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—कोषाणु उदगात्मक तालुमूल प्रदाहमें यह विशेष लाभदायक है :—रोगीको बार-बार "खाक-खाककर" कण्ठ साफ करनेकी चेष्टा करनेपर भी आराम नहीं मालूम होता । बार-बार घूंट लिया करता है और यह अंश सूखा और फूला मालूम होता है । व्याख्यान देनेवाले और गवैयोंके कण्ठकी उग्रता, गाते-गाते या वक्तृता देते-देते स्वरभङ्ग पैदा हो जाता है ; कण्ठ गर्म और सूखा मालूम होता है, उपजिह्वा प्रदेशमें उत्तेजनाकी वजहसे पैदा हुई, सूखी वक्ष-विदारक खाँसी इसका एक सिद्धिप्रद लक्षण है । वायुनलीभुजमें बहुत जलन मालूम हुआ करती है । कब्जियत या मलका कड़ापन मिले अर्श रोगमें भी इससे बहुत फायदा हुआ करता है । मलद्वारमें खुजली मालूम होना । लार गाढ़ी, गोंदकी तरह । बायें डिम्बाधारके ऊपरी अंशमें दर्द पैदा होकर तीव्र वेगसे जानुमें चला जाता है । बहुत दिनोंतक ऋतु-रोध ; मुख-विवर ऐसा मालूम होता है, मानो झुलस गया है ; अलिजिह्वा बड़ी मालूम होती है ; उपजिह्वा-प्रदेशमें सूखापन और जलन अनुभव होना ; मानो पाकस्थलीमें कोई बिना पचा हुआ पदार्थ जमा हुआ है इसी तरहका भार मालूम होना । ऐसा मालूम होता है, कि जरायु मानो बड़ा हो गया है ; पर्यायक्रमसे हिचकी और वायु निकलना प्रभृति कई इसके निर्णायक लक्षण हैं ।

लक्षणावली

मन और मस्तक ।—थोड़ेमें ही कातर, रोगी मानो हमेशा ही बेचैन रहता है । ऐसा सशङ्कित रहता है, मानो कोई महान विपत्ति आना चाहतो

है (कैल्के, चिनिन-सल्फ, सोरिन)। अधिक परिश्रम नहीं कर सकता, थोड़ा-सा परिश्रम करते-न-करते पसीना हो जाता है, सर-दर्द, दाहिनी आँखके ऊपरी प्रदेशमें तेज दर्द और इसके बाद भार मालूम होना (दाहिनी आँखके ऊपरका सर-दर्द—रैनान-बल्बो, सैङ्ग्वि, सिपि)। माथेमें अधिक रक्त-सञ्चय होना या ऐसा मालूम होना कि चारों ओरसे माथेके भीतर खून दौड़ रहा है (ऐमिल, बेल, ब्राई, कैक्टस, कैल्के, ग्लोन, मिलिलोट, फास, सैङ्ग्वि), दाहिने कानमें खुजली पैदा हो जाती है (ऐ-कार्बोल, सिनेबार, मिनियैन, सोरिन, रियुमेक्स)।

मुख-विवर आदि ।—ऐसा मालूम होता है, कि मुख-विवर झुलस गया है (ऐपिस, बेल, सिपा, आइरिस, मैग-मूर, मर्क)। बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़े गोंदकी तरह लार निकलना (कैप्स, चेलिडो, एपिफिग, कैलि-बाई, लिसिन, मर्क, मर्क-कोर, फाइटो)। तालुमूल पार्श्वके दोनों गह्वर बहुत सूखे (कैलि-मूर, सैबाड) मालूम होते हैं और रोगी बार-बार खाक-खाककर अपना कण्ठ साफ करनेकी चेष्टा करता है, परन्तु वृथा (आर्जेण्ट-नाई, सिपिया ऐ-लैक्ट, सिनेपिस); नाकके पिछले छेदमें सूखापन मालूम होता है और कुट-कुट किया करता है (सिनेबार); रंध्रमें ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ अड़ा हुआ है, रोगी हाक-हाककर उसे कण्ठके भीतरसे निकालनेकी चेष्टा करता है, पर किसी तरह भी वह हटता नहीं है। कण्ठ फूला और उपजिह्वा सूखी और जलन भरी मालूम होती है। रोगी बार-बार लार निकलकर यह सूखापन दूर करना चाहता है, पर वह किसी तरह भी नहीं जाता। किसी तरह भी आराम नहीं मिलता। निगलनेमें भी तकलीफ मालूम होती है। उपजिह्वा लम्बी मालूम होती है (मर्क, सैबाड)। अन्ननालीसे पाकाशयतक उत्ताप और जलन मालूम होती है। भोजन करनेपर और भी बढ़ जाती है। पुराना तालुमूल-प्रदाह, तालुमूल बहुत सूखा मालूम होता है, तालुमूल घोर लाल, तेज सर्दीके बोखारके बाद तालुकी पेशी सब बहुत दर्द करती हैं और जखमकी तरह मालूम होता है। व्याख्यान देनेवाले वक्ता या गवैयोंका गलेका जखम—वक्तृता देने या गानेके समय आवाज बिगड़ जाती है—(फास और कण्ठके भीतर उत्ताप और सूखापन अनुभूत होता है (बेल)।

पाक और अन्त्राशय ।—पर्यायक्रमसे हिचकी और वायु निकला

करता है। पाकस्थलीमें ऐसा भाव मालूम होता है, मानो कोई अपरिपाचित पदार्थ जमा हुआ है (ऐबियेज-नाई)। उदरके दाहिने पार्श्वमें नीचेकी ओर खींचनका दर्द। मलद्वारमें खुजली और पतले दस्त आना, मलका रङ्ग गहरा भूरा। अर्श-रोगमें बहुत अधिक कब्जियत।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रदर। बायें डिम्बाधारमें दर्द—दर्द डिम्बाधारसे उदर और उरुको भेदकर घुटनेतक चला जाता है। एक सन्तान-प्रसव करनेके बाद एक या दो वर्षतक रजःस्राव बन्द रहता है।

श्वासयन्त्र।—वायुनली-भुजमें जलन मालूम होती है।

प्रत्यङ्ग आदि।—दाहिने बाँहमें दर्द और कलाई तथा हाथका अकड़ जाना।

सम्बन्ध—सदृश।—ऐबियेज-नाई, आर्जेण्ट-नाई, बेल, कास्टि, एपिफिग, फास, रियुमेक्स, सैंङ्गियु, सिपि, स्टिक्टा, सल्फ।

तुलनीय।—गलनलीके लक्षणमें—कास्टिक, हिपर, रियुमेक्स, फास्फोरस, सलफर; मानो अजीर्ण पदार्थ खाया है—एपिस-नाई; मुँह मानो जल गया है—रैनान।

शक्ति।—प्रथम दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

जैन्थकज़ाइलम

(XANTHOXYLUM ERAXINEUM)

दूसरा नाम।—टूथेक ट्री; प्रिकलि-ऐश।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजो छालका अर्क।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नकली दर्द; दमा; बाधक; कानका दर्द; माथेकी खोलमें या माथेमें दर्द; अर्द्धाङ्ग पक्षाघात; मूर्च्छावायु; दाँतो लगना; ऋतुशूल; स्नायुशूल; आँखोंका प्रदाह; गृध्रसी; दाँतका दर्द; जखम।

उपयोगिता और आभास।—वातका पुराना दर्द, पित्तशिरा या श्रोणाङ्गी तालुमूलकी सर्दीके रोगमें यह विशेष फायदेमन्द हुआ करता है।

और रोगी स्त्रियाँ, जिन्हें बहुत अधिक रज:स्राव हुआ करता है और स्नायविक और आक्षेपिक बाधकका दर्द उरुके सामनेवाले भागसे होकर नीचेकी ओर चलता है, उनके लिये जेन्थकजाइलम बहुत ही उपयोगिनी दवा है। प्रसवके बादका दर्द और डिम्बाशयके स्नायुशूल रोगमें उरुके सामनेवाल भागसे होकर दर्द नीचेकी ओर चलता है तो वह भी इससे दब जाता है। ऊपर लिखी बीमारियोंमें चित्तका प्रफुल्लित न रहना; टपककी तरह सर-दर्द, एक प्रकारकी मानसिक उन्मत्तता, भूख न लगना और उदरोर्द्ध-प्रदेशमें पूर्णता अनुभव होना आदि लक्षण मौजूद रहते हैं।

लक्षणावली

मन ।—डरपोक, चकित भावसे भरा। चित्तका प्रफुल्लित न रहना और मनकी दुर्बलता।

मस्तक ।—मस्तिष्कका स्तम्भित भाव; सरके पिछले भागमें दर्द। माथा भरा और भारी मालूम होता है। दाहिनी आँखके ऊपरी अंशमें टपक मालूम होना। ब्रह्मतालुमें दर्द हुआ करता है और रह-रहकर टपक हुआ करती है, मानो माथेकी खोल उड़ जायगी। सर हिलानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो एक तरल पदार्थकी तरह मस्तिष्क काँप रहा है। ऐसा मालूम होता है, कि एक दृढ़ बन्धनसे माथा कसकर बाँधा हुआ है (ऐ-कार्बोल, ऐ-नाई, जेल्स, सल्फ)। दाहिने कानमें पट-पट आवाज, बायें कानमें धीमा दर्द—दाँतकी जड़में दर्द होता है या कानमें होता है, इसका पता नहीं लगता।

आँख ।—अंधेरा दिखाई देना, मानो महीन नीले रङ्गके पर्देके भीतरसे सब चीजें देख रहा है (मानो दृष्टि महीन पर्देसे ढँकी है—कास्टि, क्रोकस, हायो, आयोड, लोरो, लीथिया, नैट्र-मूर, पेट्रोल, फास, रस, स्ट्रैम, सल्फ)। आँख और नाकमें पानी भर आता है (सिनैपिस)। आँख लाल और ऐसा मालूम होता है, कि उसमें मानो किसीने एक मुट्ठी बालू डाल दी है (बेल, कोरैल-रूब्र, इयुफ्रे, लिडम, मिडोरिन, सल्फ) सभी चीजें दूर हैं—इसी तरह मालूम होता है (ऐनाक, नक्स-मस)।

नाक ।—ऐसा मालूम होता है, कि दाहिना रंध्र रुक गया है। दाहिने रन्ध्रके भीतरसे लाल पपड़ी जमा श्लेष्मा सब निकलता है (नैट्र-आर्स,

ऐमोन-म्यूर)। शरीर समूचा बायाँ पार्श्व सुन्न हो जाता है और माथा तथा नाकमें भी यह सुन्न हो जानेका आधा भाव स्पष्ट मालूम होता है।

मुखमण्डल।—निचले हनुके बायें पार्श्वमें दर्द, मुखमण्डल और माथेमें रह-रहकर उत्ताप पैदा हो जाता है।

मुख-विवर।—मुख-विवर, तालुमूल पार्श्वके दोनों गह्वर और कण्ठमें मानो मिर्चा छू गया है, इस तरहका अनुभव होता है (हाइड्रैस्ट)। मुख-विवर और जीभ सूखी और उनमें जलन मालूम होती है; इस अनुभूतिके साथ कितने ही स्थानोंमें उठनेकी शक्तिका बिलकुल ही न रहना और कातरता मौजूद रहती है (डा० ए० एस० रफी कहते हैं, कि ऐसे स्थानोंपर "कैप्स" के प्रयोगसे यदि लाभ न हो तो जैन्थकज़ाइलम लाभ करता है), जीभ ऐसी मालूम होती है, मानो एक बार फैलती और एक बार संकुचित होती है।

गलेके भीतर।—कण्ठका बाँया पार्श्व ऐसा मालूम होता है, मानो उसमें कोई गुच्छे बँधा पदार्थ गेंडुरी मारकर पड़ा हुआ है और निकालनेके समय वह दाहिने पार्श्वमें हटकर मालूम होने लगता है (लैके)। कण्ठमें मानो मिर्चेकी बुकनी लगी है। कण्ठनली ऐसी मालूम होती है, मानो किसीने चिमटेसे उसे दबा रखा है (बैराई, फेरम, हिपर, कैल्मिया)। अन्ननलीमें भयानक जलन और डङ्क माड़नेकी तरह दर्द और कुछ मिचली मालूम होती है (सैङ्गियु, सैबाड, सिनैप)। कण्ठके भीतर टपक और ऐसा अनुभव होना, मानो वह फूल गया है (ग्लोन, कैल्मिया, पेट्रोल)। कण्ठके भीतर जखम हो जानेकी तरह भाव और डोरीकी तरह श्लेष्मामय बलगम निकलता है। कण्ठ अत्यन्त सूखा, बोलनेमें तकलीफ होती है (फार्मिका, सैनेगा)।

पाकाशय और अंत्राशय।—बार-बार जाड़ा लगना और मिचली, भूख न रहना, गर्भवतियोंकी मिचली (ऐ-कार्बोल, ऐ-लैक्ट, ऐसेरम, क्रियो, लैक-कैन, नक्स, सिपिया, सिम्फोरि-कार्पस, टैबाक), मानो उपवास किया था, पाकस्थली इसी तरह शून्य मालूम होती है; खानेकी देनेपर दो एक ग्रास खाते ही मिचली पैदा हो जाती है (डायाडेमा, पोडो, साइलि, सैङ्गियु—भोजन करनेपर घटा मालूम होता है, परन्तु इसके बाद ही फिर पैदा हो जाता है—उदरोर्ड-वाईबर्न)। भयानक प्यास, अधिक परिमाणमें पानी पीता है। प्रदेशमें भरापन या भार मालूम होना (फेरम, इग्ने, लाई, माइरिका-सेरिफ),

बार-बार शीत और दबाव मालूम होता है। आँतोंमें गड़गड़ाहट और दबानेपर दर्द मालूम होता है। बहुव्यापक आमातिसार—आक्षेपिकया प्रचण्ड कूथन, अन्त्रगत सिकुड़ना और फैलना, आध्मान इत्यादि अनुभव होता है। विसूचिका, हिमांग अवस्थामें बहुत ज्यादा फीका पेशाब होता है, विशेषकर स्नायु-प्रधान स्त्रियोंको। पेशाब बहुत थोड़ा घोर लाल रङ्ग।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—डिम्बाधारका शूल, दर्द उरुके सामनेवाले स्नायुकी राहसे नीचेकी ओर चलता है। ऋतु—बहुत असमयमें ही हो जाता है। बहुत ज्यादा स्राव हुआ करता है और बहुत ज्यादा तकलीफ हुआ करती है (बहुत ज्यादा स्रावके साथ तकलीफ और किसी भी दवामें नहीं दिखाई देती—मूरेक्स); असमयमें ही स्राव आरम्भ हो जाता है और बहुत ज्यादा स्राव होता है, पर किसी तरहका दर्द नहीं होता (सीरियम-आक्जैल); स्राव आरम्भ होनेपर फिर तकलीफ़ या दर्द नहीं रहता (सिपिया), असमयमें आरम्भ और स्राव बहुत थोड़ा और स्राव होनेपर तकलीफ घट जाया करती है (लैकेसिस)। बहुत ज्यादा स्राव, आक्षेपिक और प्रायः काले रङ्गका; स्राव आरम्भ होनेपर प्रायः दर्द नहीं रहता। नींदके बाद या नींदके समय बढ़ना (नक्स-वोमिका)। स्राव असमयमें आरम्भ हो जाता है। स्राव थोड़ा होता है और दर्द होता है (सिसेलि)। लगातार स्राव होता है, मानो जरायु-द्वार खुला हुआ है; स्राव काले रङ्गका और बिना किसी तकलीफसे (पल्सेटिला)। विलम्बसे स्राव आरम्भ होना, स्राव बहुत ज्यादा या बहुत थोड़ा, रंग फीका, पानीकी तरह, यन्त्रणा केवल पहले दिन, स्रावके समय माथेमें दर्द होता है (क्लोरैल, साइक्लेम), दर्द उरुके सामनेसे नीचेकी ओर जाता है; रोगिनीमें सहनशीलता नहीं रहती, चौंक उठा करती है। निर्द्धारित समयके आठ दिन पहले रजःस्राव और भी होता है। स्राव बहुत अधिक, और चमकीले लाल रङ्गका, जरायु आदिमें नीचेकी ओर तेज खींचन मालूम होती है और दाहिने डिम्बाधार प्रदेशमें लगातार दर्द मालूम होता है और यह दर्द उरु-शिखर, उरु और पीठमें चला जाता है; कभी-कभी यह दर्द इतना तेज़ हो जाता है, कि रोगिनीको बाध्य होकर श्वास रोक लेना पड़ता है। निद्रित अवस्थामें दाहिने डिम्बाशयमें छेदनेकी तरह तेज दर्द, ऊपरकी ओर उरुशिखरकी तरह और नीचे उरुमें फैलकर रोगिनीको जगा देता है। निर्दिष्ट समयके ५ दिन पहले ऋतुका स्राव पैदा हो जाना और बायें वंक्षण या पुट्ठा प्रदेशमें

ऐंठन या जकड़ जानेकी तरह दर्द अनुभव होता है। बायें डिम्बाधारका दर्द, क्रम-क्रमसे बढ़ता है और घटता है। रजःकृच्छ्र या बाधक—भयानक यन्त्रणा, रोगिनी तकलीफसे उन्मात्त हो जाती है। शूलकी तरह दर्द जननेन्द्रियसे उरुतक फैलनेवाली स्नायुके भीतरसे दौड़ता है; ऋतु होनेके पहले दिन बायीं आँखके ऊपरी प्रदेशमें दर्द आरम्भ हो जाता है; माथा भारी मालूम होता है, दोनों आँखोंमें खून संचित होता है और रोशनी सहन नहीं होती; चेहरा तमतमाया और ऐसा मालूम होता है, मानो ज्वर आ गया है। ऐसा मालूम होता है, कि जरायु आदि बड़े वेगसे नीचेकी ओर उतर रहा है। स्राव बहुत ज्यादा हुआ करता है और नितम्ब तथा तलपेटमें भयानक दर्द मालूम होता है। लगातार सर-दर्द—ऋतुके समय बढ़ जाता है (आर्जेण्ट-नाइ, कैल्के, कास्टि, काक्यु, साइक्लोमे, कैलि-कार्ब, क्रियो, लैक-डिफ्लो, म्यूरेक्स, नैट-म्यूर, सिपि; ऋतु होना शुरू हो जानेपर सर-दर्दका घटना—बेल; बाधक रोगमें सर-दर्द—क्लोरैल, साइक्लोमे)। पाँच-छः महीनोंतक ऋतु-स्राव न होनेपर चेहरा और दोनों पैरोंमें शोथ हो जाता है (सिनीसियो), फूला (ग्रैफ) रोगिनी बहुत असहिष्णुता प्रकट करती है। जरा भी आवाज उसे सहन नहीं होती, कण्ठ-स्वर काँपा करता है। रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, कि उसकी मृत्यु बहुत ही निकट है। उसकी शकल हरित्पाण्डु रोगकी रोगिनीकी तरह हो जाती है। कब्जियत पैदा हो जाती है और पेशाब बहुत थोड़ा और घोर लाल तथा बार-बार पेशाबका वेग होता है। कई महीनोंतक मासिक ऋतुस्राव न होनेके कारण दाहिने डिम्बाशयमें प्रचण्ड दर्द होता है, लगातार माथेमें दर्द हुआ करता है, जरायु आदि नीचेकी ओर खिंचता है और तलपेट जकड़ जाता है। पैर भींजे रहनेके कारण ऋतु-स्रावका रुकना (ऐकोन, हेलिबो, पल्स, सर्दी लगनेके कारण उत्पन्न—प्लैट, सिनीसियो, सिपिया) और इसी वजहसे दुबलापन और खाँसी, गन्दापन, धुमैले रंगका बलगम, चेहरा उतरा और रातमें पसीना हुआ करता है। प्रदर—बहुत ज्यादा स्राव और दूधकी तरह सफेद रंगका (कैलि-आयोड, फाइजस, सिपिया, कैल्के, इग्ने, पीव सफेद—वाइबर्न)। ऋतु होनेके समय स्राव बढ़ जाता है (फास, रजःस्रावके बदले प्रदरका स्राव—सीड्रन, चिनोपोड, ऐन, काक्यु, ग्रैफ, नक्स-मस, फास, सिपि, जिङ्कम)। प्रसवके बादका दर्द, बहुत ज्यादा क्लेदका स्राव हुआ करता है। कभी-कभी विलम्बसे ऋतु होता है और बहुत थोड़ा स्राव हुआ करता है। आर्त्तव-स्राव

होनेके पहले—मन दुःखित, शङ्कित, मानो माथेकी खोल उड़ जायगी। इसी तरहका सर-दर्द और तलपेटमें इस तरहका दर्द मानो कुचल गया है। स्रावके बाद, दुबली, पतली, कष्ट सहिष्णु और कोमलांगी रमणियोंका रजःशूल ; रोगिनी सामान्य विषयोंमें ही चौंक उठती है, दिनमें बार-बार जम्हाई आती है और औंघाई आया करती है। निम्नाङ्ग बहुत क्षीण मालूम होता है, इसी वजहसे रोगिनी हमेशा सोयी या बैठी रहा करती है। रजःस्रावके पहले दिन सर-दर्द पैदा हो जाता है। आँखके ऊपरी प्रदेशमें दर्द और नासा-मूलके ऊपरी अंशमें टपक अनुभव होती है, मानो जरायु आदि सभी बाहर निकल पड़ेंगी, इसी तरहका दर्द पैदा होकर नीचेकी ओर खींचन पैदा हो जाती है। ऐसा दर्द मानो कमर टूट जायगी। दर्द वंक्षण या पुट्ठेके अस्थि-शिखरसे उरुको भेदकर जानुमें चलाजाता है ; सोने, बैठने, खड़े होने—किसी तरह भी आराम नहीं मिलता। छाती मानो दबा रखी है, इस तरहका श्वास-कष्ट अनुभव होता है और रोगिनी बार-बार गहरी साँस लिया करती है।

श्वासयंत्र।—स्वरभंग और कण्ठमें रुखड़ापन अनुभव होना ; बार-बार अपना कण्ठ बाध्य होकर साफ करना पड़ता है। श्वासाल्पता—जब आर्त्तव-स्राव रुका रहता है। बार-बार गहरी साँस लेनेपर आराम मालूम होता है (ब्राई, कैल्के, ग्लोन, मार्क, फास, बोरेक्स, क्रियो, इरिडियम), खुस-खुसी खाँसी, वायु सेवनके समय, प्रकोप आरम्भ हो जाता है। दिन-रात सूखी खाँसी, रोगी बहुत सुस्तीकी वजहसे शय्यामें करवट नहीं बदल सकता, उसका चेहरा म्लान या सफेद और शोथ रोग हो जानेकी तरह हो जाता है। आँख काले घेरेसे घिरी ; माथा भरा और भारी मालूम होता है, दोनों ओठ बदरङ्ग, जीभ सफेद या झूलती हुई और श्वासाल्पता मालूम होती है ; भूख नहीं रहती, कब्जियत हो जाती है। वक्षमें कसावटका भाव और बार-बार जम्हाई आती है। अनियमिय या थोड़ा स्राव होनेवाली स्त्रियोंके वक्षके भीतर कसावट और सूखी खाँसी, खाँसनेपर वक्ष और कन्धेमें दर्द मालूम होता है ; प्रायः पतले दस्त आते हैं और रातमें बहुत पसीना निकलता है।

हृत्पिण्ड।—रह-रहकर हृत्पिण्डके भीतर इस तरहका तेज क्षण-स्थायी दर्द पैदा हो जाता है, कि रोगिनीको बाध्य होकर साँस रोक लेनी पड़ती हैं और ओंठतक समूचा मुखमण्डल नीला या सफेद हो जाता है ; दर्द छेदनेकी

तरह और श्वास-ग्रहण करनेके समय बढ़ जाता है। प्रकोप होनेके बाद रोगिनीमें प्यास पैदा हो जाती हैं; चेहरा तमतमा उठता है और रोगिनी सुस्त हो पड़ती है। हृत्प्रदेशमें तेज़ दर्दकी वजहसे सोयी-सोयी चौंककर जाग पड़ती है। हृत्पिण्डमें प्रबल स्पन्दन हुआ करता है और ऐसा मालूम होता है, मानो साँस रुक जाना चाहती है।

प्रत्यङ्ग आदि।—सर-दर्द रोगमें गलेमें दर्द और अकड़न मालूम होती है, जोरसे दबाने या पीछेकी ओर माथा झुकानेपर कुछ आराम मालूम हुआ करता है; मेरु-चंचु लम्बा मालूम होता है और दबानेपर बहुत दर्द अनुभव हुआ करता है तथा लगातार दर्द हुआ करता है। तकिया या गद्दी हुए बिना बैठ नहीं सकता (इयुफोर्बियम, लोबेल, पेट्रोल)। एकाएक कलाई और घुटनेमें ऐंठनकी तरह दर्द। प्रत्यङ्गोंमें शूलकी तरह या तेज बेधनेकी तरह दर्द; रोगी अंग सुन्न और चीण हो जाता है। दाहिना कन्धा और बाँहमें दर्द (सेङ्ग्वि, वायोला, ओडो), दाहिने बाँहकी कोहनी या केहुनीसे लेकर समूचे हाथमें प्रचण्ड दर्द अनुभूत होता है। समूचा बायां बाँह और कन्धा सुन्न तथा अपने वशमें नहीं रहता। कलाईसे हाथके अंगूठेतक तेज़ दर्द। बाधक रोगमें जननेन्द्रिय प्रदेशसे उरुतक फैलनेवाला स्नायुमें तेज़ दर्द। हरित्पाण्डु रोगमें निम्नाङ्ग बहुत चीण मालूम होता है। बायें घुटनेमें तेज दर्द। सारा शरीर कुटकुटाया करता है और ऐसा झटका मालूम होता है, मानो बिजलीकी लहर जा रही है। समूची देहका एक पार्श्व सुन्न मालूम होता है और इस आधे अंशका सुन्नपन माथा और नाकके आधे भागमें स्पष्ट अनुभव होता है। चलनेके समय ऐसा अनुभव होता है, मानो सुईकी ढेरपर चल रहा है (ऐसा अनुभव होना मानो मखमलपर पैर रख रहा है—सिकेलि; मानो शून्यपर पैर रखता है—डियुबोइसिनम; मानो पैरका तलवा बहुत कोमल और फूला—ऐल्यूमिनियम)। शरीरका समूचा बायाँ पार्श्व, विशेषकर बायाँ चरण सुन्न मालूम होता है। बैठे रहनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो शून्यमें उड़ रहा है (ऐ-फास, कैनाब-इन, ऐसिटम, स्टिक्टा)। सोनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो बहुत कोमल शय्यामें डूब गया। खसड़ा होनेपर बुद्धिकी जड़ता, स्तम्भित भाव और निद्रालुता और खसड़ेके दाने अच्छी तरह नहीं निकलते।

निद्रा ।—बार-बार जम्हाई और औंघाई। गहरी नींद, मानो किसी मकानकी छतसे दूसरे मकानकी छतपर उड़ता घूमता है, इस तरहके सपने देखता है (एपिस, इण्डिगो, लाई, नेट्र-सल्फ, रस-ग्लैबा)। मानो गला रुकता जाता है, इस तरहका सपना देखकर जाग उठता है (श्वासरोधके सपने—आर्नि, आइरिस, कैलि-बाई)।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—एकाएक ऐसा मालूम होता है, मानो सरसे पैरतक आग लग गयी। कुछ जाड़ा मालूम होना और प्राणान्तक मिचली। बार-बार शीतकी आविर्भाव और हाथ-पैरोंमें दर्द रहा करता है। वात-श्लेष्मा ज्वरमें हिमांगावस्था (कार्बो-वेज)।

सम्बन्ध ।—सदृश—ए-फास, ऐक्टिया, ब्राई, कैनाब-इन, कैमो, कोलोफिल, कोलोसिन्थ, क्यूप्रम, नैफेलियम, इग्ने, पल्स, सैङ्गियु, स्टिक्टा, वाइबर्नम, ओप्यु।

तुलनीय ।—माथा, हृत्पिण्ड और जरायुमें—ऐक्टिया-रेसि, कैक्टस। खसड़ेके दाने बैठ जाना—ब्रायो। बाधक—कोलोसिन्थ; बाधक, गृध्रसी—नैफेलि। प्रसवके बादका दर्द—पल्स, कैमो। क्रमशः दर्दका बढ़ना और घटना—स्टैनम। सर-दर्द—इग्ने, सैंगु।

शक्ति ।—मूल अरिष्ट और ३, ६, ३० क्रम।

योहिम्बिनम्

(YOHIMBINUM)

दूसरा नाम ।—योहिम्बिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—दानेदार चारसे विचूर्ण तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—पश्चिम अफ्रिकाके आदि अधिवासी बहुत दिनोंसे योहिम्बिनम वृक्षकी छालसे यह वीर्यवान और कामोद्दीपक दवाको बनाते आ रहे हैं।

आंशिक या पूर्ण ध्वजभङ्ग रोगमें स्नायु-प्रधान मनुष्योंको इस दवाका २x विचूर्ण नित्य सवेरे और सन्ध्यामें १-२ ग्रेनकी मात्रामें सेवन करानेसे ही थोड़े

ही दिनोंमें उनकी संगम-शक्ति लौट आती है ; परन्तु इस दवाका प्रयोग बहुत सावधानतासे करना चाहिये ; क्योंकि इस दवाको सेवन करनेपर उपस्थ स्नायुमें बल प्राप्त होनेपर वस्तिदेशमें रक्त बढ़ जाता है। इसलिये, कुछ दिन योहिम्बिनम सेवन करनेके बाद ही अर्श रोग होते देखा जाता है। मलद्वारमें भार मालूम होना और दर्द दिखाई देते ही दवा सेवन की जाती है।

इच्छा न रहनेपर भी लिङ्गोद्रेक, वस्तिदेशमें रक्तकी अधिकता और भार मालूम होनेके लक्षणमें इसकी उच्च शक्तिसे लाभ होता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—पिक्रि-ऐसि, फास, ग्रेफाइटिस, कैन्थर।

शक्ति ।—१x—२x और उच्च शक्ति

युक्का फिलैमेण्टोसा

(YUCCA FILAMENTOSA)

दूसरा नाम ।—बेयर ग्रास।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फूल और पत्तेसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—पत्तिकता ; सर्दी ; अतिसार ; आध्मान ; सर-दर्द ; गलेमें दाना भरे जखम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—पित्तकी अधिकतासे पैदा हुई नाना प्रकारकी बीमारीमें इसका बेहद फायदा दिखाई दिया करता है। इसके कई प्रधान सिद्धिप्रद लक्षण ये हैं :—यकृतमें अधिक रक्तसञ्चय होना, यकृतके ऊपरी अंशसे बहुत दर्द पैदा होकर पीठतक चला जाता है। चेहरा पीली आभा लिये, जीभ पीले लेपसे ढकी और उसपर दाँतके दाग रहते हैं। उदरामय रोगमें बहुत अधिक पित्त मिला मल निकलता है। लिङ्ग-प्रदाह और प्रमेह—पेशाबके दरवाजेपर अधिक उत्तेजना और मेढ़्र त्वचाके नीचे जलन और सूजन। इसके द्वारा एक तरहका सर-दर्द पैदा हुआ करता है ; ब्रह्मतालुमें इस तरहका दर्द हुआ करता है, कि ऐसा मालूम होता है, मानो माथेकी खोल उड़ जायगी।

लक्षणावली

मन ।—वक्तृता सुनते-सुनते मन दूसरे विषयकी ओर चला जाता है (इथ्यू, ऐग्नस, बेराई, ड्रोसेरा, नक्स-वोम)। जो कुछ पढ़ता है वही याद नहीं रहता (मिडोरिन) और पहले वक्षके दाहिने पार्श्वमें, इसके बाद हृत्पिण्ड प्रदेशमें तेज दर्द अनुभव हुआ करता है। पढ़ना अच्छा नहीं लगता (फेर, जेल्स, हैमा)।

मस्तक ।—प्रचण्ड सर-दर्द—ब्रह्मतालुमें इस तरहका दर्द हुआ करता है, कि माथेकी खोल मानो उड़ जायगी (ऐक्टी, बेप्टी, केमो. कोबाल्ट), ललाट और कनपटीके स्थानकी धमनियोंमें टपक हुआ करती है (ग्लोन, सेङ्गिविन)। माथेसे आँखतक जड़ता और भार मालूम होता है और आँखोंमें रोशनी सहन नहीं होती (कोलोफिल, जेल, मिडोरिन, सिपि)। सरमें प्रचण्ड दर्द—आवाज़से बढ़ना (बेल, काकुग्र, इग्ने, लेके, लैक-कैन, लैक-डिफ्लो, नक्स, स्पाई), हिलानेपर (ब्राई, काकुग्र, ग्लोन, लाई) और उत्तापसे (ऐलो, बेल), पर चूल्हा या अङ्गीठीके पाससे हटनेपर जाड़ा मालूम होता है। औंघाई या नींद लानेवाला सर-दर्द, स्थिर बैठे रहनेपर घटा मालूम होता है, प्रत्येक क़दम चलनेपर माथेमें टपक हुआ करती है। सन्ध्यामें बराबर माथेमें खुजली पैदा हो जाती है। ऐसा मालूम होता है, मानो माथेके बायें पार्श्वमें ठण्डी हवा आकर लग रही है।

मुखमण्डल आदि ।—चेहरा उतरा और पीले रङ्गका (आर्जेण्ट-नाई, कैल्के, चेलिडो, चायना, लाई, मर्क, माइरिका); जीभ पीले लेपसे ढँकी और उसपर दाँतके दाग रहते हैं (चेलिडो, हाइड्रेस्ट, केलि-आयोड, मर्क, पोडो, रस-टक्स)।

गलेके भीतर ।—नाकके पिछले छेदसे कण्ठके भीतर ऐसा मालूम होता है, कि मानो कुछ झूल रहा है, परन्तु रोगी उसे किसी तरह हटा नहीं सकता। ऐसा मालूम होता है, मानो तालुमूलमें असंख्य मांसांकुर भरे हैं (ऐनान्थि, माइरिका)। ऊपरी तालुसे सूतकी तरह श्लेष्मा झूलता रहता है। कण्ठके पिछले गातसे चर्बीकी तरह जमा हुआ श्लेष्मा लगा रहता है।

अन्त्राशय।—यकृतमें रक्तकी अधिकता या रक्त संचय रोगमें यकृतके ऊपरी अंशसे तेज दर्द पैदा होकर, शरीरको भेदकर पीठतक चला जाता है और मुँहका स्वाद बहुत कड़वा हो जाता है। सवेरे भोजनके बाद पेटमें ऐंठन होती है; घटना—सोनेपर और बढ़ना—शरीर हिलानेपर, दर्दके बाद पतला पाखाना पैदा हो जाता है। एकाएक प्रचण्ड कूथन अनुभूत हो जाती है, इसके बाद वायु निकलनेपर घटता है। बहुत पाखाना होना—मल पतला, बहुत ज्यादा, पित्तमय और पाखाना होनेके समय आवाज़के साथ वायु निकलता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—मूत्राशयमें संकोचन प्रवणता, जभी-तभी पेशाबका वेग पैदा हो जाता है। लिङ्गमणि अर्थात् लिङ्गको सुपारीमें प्रदाह,—मूत्रद्वारके चारों ओर सूजन और इसके नीचे जलन मालूम होती है। रातभर बार-बार लिङ्गोच्छ्वास होता है, पर वीर्यस्खलन नहीं होता। पढ़नेके समय मन बार-बार इन्द्रीय-सम्बन्धी विषयोंपर दौड़ता है।

सार्वाङ्गिक।—गलेकी पेशियाँ सब इस तरह जकड़ जाती हैं, कि माथा पीछेकी ओर झूल पड़ता है (सञ्जिया—पीछेकी ओर माथा झुकानेपर आराम मालूम होता है—लिसिन)। संध्याके समय गलेमें कसावटके भावकी वजहसे रोगी अपने कपड़ेकी बटन खोल देता है (लेके, ऐसेरम, ग्लोन, चेलिडो)।

सम्बन्ध।—प्रतिविष।—काकुरलस-इण्डिकस।

सदृश।—ऐनाम्पि, आर्जेण्ट-नाई, कैल्कि, चेलिडो, काकुर, कैनाब-सेट, चायना, हाइड्रैस्ट, मर्क, पोडो, माइरिका-सेरिफ, लेक-कैन, सिपिया।

तुलनीय।—हृदयमें संकोचन—लिलियम-टिग। पैत्तिक भाव—ब्रायो। जीभपर दाँतका दाग—मर्क, पोडो। जीभका रंग नीला—जिम्नोक्ल।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३रा शततमिक क्रमतक।

जी

(ZEA)

दूसरा नाम।—स्टिगोटा मेडिस, भुट्टा (मकई)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—भुट्टे (मकई) के सुनहरे सूतकी तरहके रेशेसे, सुरासार मिलाकर इसका अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—पेशाव और मूत्रयंत्रके लक्षण ही इस दवाके निर्देशक लक्षण हैं। थोड़ा पेशाब, पेशाबमें खून या छोटे-छोटे बालूके कणकी तरह पदार्थ निकलना, प्रदाहके कारण मसानेका शूल, मूत्रपिण्डकी बीमारीकी वजहसे पेशाबका न बनना अथवा मूत्राशयकी बीमारीके कारण पेशाबका रुकना, हृद्पिण्डकी बीमारीकी वजहसे शोथ और थोड़ा पेशाब, मूत्राशयका प्रदाह, सूजाक वगैरह लक्षणोंकी यह उत्कृष्ट दवा है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—सेबाल, डिजि, स्ट्रोफैन्थस, सकस्।

शक्ति।—मूल अर्क, १० से ५० बून्द मात्रामें।

जिङ्कम ऐसेटिकम

(ZINCUM ACETICUM)

दूसरा नाम।—ऐसिटेट आफ जिङ्क।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पानीमें क्रम तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—रातमें जागरणके कारण बहुतसे उपसर्ग, खासकर इसी कारण मस्तिष्कमें जखम हो जानेकी तरह मालूम होना ; दाँतमें दर्द, उदरामय, पाकाशयमें दर्द, विसर्प प्रभृति रोगोंमें जिङ्कम-ऐसेटिकमसे बहुत फायदा होता है।

डा० रेडिमेकरके मतसे नर्स, डाक या पुलिस-विभागके कर्मचारी, समाचारपत्र आफिसके कर्मचारी इत्यादि जिनकी व्यवसाय या नौकरीके कारण

रातमें जागना पड़ता है, उनको यदि प्रतिमात्रा ५ बूंद दवा पानीके साथ नित्य तीन बार सेवन करायी जाये तो सब तरहके उपसर्ग अच्छे हो जायेंगे।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

जिङ्कम ब्रोमेटम

(ZINCUM BROMATUM)

दूसरा नाम।—ब्रोमाइड आफ जिङ्क।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पानीके साथ क्रम तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—बच्चोंको दाँत निकलनेके समय मस्तिष्कमें जलसंचय, ताण्डव, पैर हिलाना, आच्छन्नभाव प्रभृति उपसर्गोंमें यह दवा प्रयोग करनेपर विशेष लाभ होता है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

जिङ्कम सायेनेटम

(ZINCUM CYANATUM)

दूसरा नाम।—सायानाइड आफ जिङ्क।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—कँपकँपो मिला पक्षाघात, हाथ या पैर रह-रहकर काँपा करते हैं, ताण्डव, हिस्टीरिया, मस्तिष्क-प्रदाह, मेरुमज्जासे उत्पन्न मस्तिष्क-प्रदाह प्रभृति लक्षणोंमें जिङ्कम-सायोनेटम लाभ करता है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

जिङ्कम आयोडेटम

(ZINCUM IODATUM)

दूसरा नाम ।—आयोडाइड आफ जिङ्क ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सिरपमें मिलाकर क्रम या विचूर्ण दोनों ही आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—क्षय-कास, खाँसी प्रभृति रोगमें जिङ्कम और आयोडेटमके सम्मिलित लक्षणको यह एक उत्कृष्ट दवा है। कब्जियतमें भी इसका व्यवहार होता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—हिपर, आर्ज-नाई, इग्ने ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

जिङ्कम मेटालिकम

(ZINCUM METALLICUM)

दूसरा नाम ।—साधारणतः इसे जस्ता कहते हैं ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसका पहले विचूर्ण; इसके बाद अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मदात्यय; अन्धापन; दमा; मस्तिष्ककी क्लान्ति और पक्षाघात; स्तनकी बीमारी; मोतियाबिन्द; जाड़ेके दिनोंके फोड़े; मृत्पाण्डु; विसूचिका; ताण्डव; कब्जियत; दाँत निकलना; अतिसार; गलनलीकी उपझिल्लीका प्रदाह; रक्तामाशय; पेशाबमें कष्ट; कर्णशूल; अकौता; अनजानमें शय्यापर पेशाब हो जाना; दाने या गोटियाँ बैठ जानेके कारण उपसर्ग; आँखकी बहुत-सी बीमारियाँ; एँड़ीमें दर्द; आँत उतरना; पाकाशयका शूल; सरमें दर्द; हिचकी; मस्तिष्कमें जल-सञ्चय; व्याधिकी आशङ्का; मूर्च्छावायु; स्तनके नीचे दर्द; सन्धियोंमें कटकट आवाज; ओंठकी बीमारियाँ; नकली मैथुनका दुष्परिणाम;

स्मरण-शक्तिकी कमजोरी ; मस्तिष्कावरण प्रदाह ; मानसिक दुर्बलता ; स्तनके दूधका विकार और स्तनमें दूधका कम होना ; स्नायुशूल ; स्नायविक सुस्ती ; स्तनके बोटेमें जखम ; नाककी लाली ; कामोन्माद ; अन्ननलीकी अकड़न ; कानसे स्राव ; मूत्राधार-मुखशायिका ग्रन्थिकी बीमारियाँ ; पलकोंका पक्षाघात ; प्रति-क्रिया शक्तिकी गड़बड़ी ; आमवात ; चिल्लाना ; निद्रालुता ; थोड़ा चलना ; शुक्र बहना ; मेरुमज्जाकी उत्तेजना ; मेरुदण्डकी बीमारी ; प्लीहामें स्नायविक दर्द ; डेरा देखना ; नाना प्रकारका स्राव रुकना ; गलेका जखम ; पेशाब रुकना ; शिराओंका फूलना (गर्भिणीका) ; क्रुप खाँसी ; क्रमि इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास।—मस्तिष्क और स्नायु-विधानमें शक्तिका न रहना ; जीवनी-शक्तिका अभाव ; मस्तिष्कके स्नायु-विधानमें शक्तिका न रहना, जीवनी-शक्ति इतनी क्षीण रहती है, कि चर्मकी गोटियाँ या दाने बाहर नहीं निकलती ; रजःस्रावकी प्रतिष्ठा, बलगम या पेशाब निकलना या अतीत विषय हृदयंगम करने या स्मरण रखनेकी शक्तिका न रहना इत्यादि अवस्थाओंके लिये यह उपयोगी है। इसके आगे लिखे कई अव्यर्थ सिद्धप्रद लक्षण हैं :—मस्तिष्कका आसन्न पक्षाघात। बच्चा सोनेवाली अवस्थामें काँप उठता है ; नींद खुलनेपर ऐसा भाव प्रकट करता है, मानो डर गया है और अपना माथा एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक हिलाया करता है ; निद्रित अवस्थामें बच्चेका सारा शरीर फड़का करता है। रोगीका चेहरा पर्यायक्रमसे म्लान और लाल हो जाया करता है। उद्भेद या बहुत तरहकी खुजली रोगमें रोगीकी स्वाभाविक रोग दूर करनेकी शक्ति इतनी क्षीण होती है, कि वह निकलनेवाले उद्भेदको एकदम बाहर नहीं निकाल सकता और इसी वजहसे प्रलाप आदि मस्तिष्कको नाना प्रकारकी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं। बच्चेसे जो कहा जाता है, उसीको दोहराता है। कभी-कभी पैदा होनेवाले पाकाशयिक सर-दर्दमें अँधेरा दिखाई देना और दाहिनी आँखमें सलाई गड़नेकी तरह दर्द। राक्षसी भूख, विशेषकर दिनके ११ बजनेके समय, भोजन करनेके समय रोगी महान पेटूपन दिखलाता है और इतनी तेजीसे खाता है कि उसे ऐसा मालूम होता है, कि उसको पेट भरते-न-भरते ही मानो सब भोजन-सामग्री भाग जायगी। एकाएक पाकाशय इतना फूल उठता है कि उसे अपने कमरका कपड़ा ढीला कर देना पड़ता है। मिठाई खानेपर कलेजेमें जलन हुआ करती है, बहुत मिचली पैदा हो जाती है, वमन होता है और रोगीके दोनों पैर उसके अनजानमें ही फड़का

करते हैं। खाँसी—मिठाई खानेपर बढ़ जाती है। मुँहमें रक्तका स्वाद मालूम होता है और पाकाशयसे मुँहमें मीठा रस चढ़ आता है। सूखा, कड़ा पाखाना होने बाद उदर फूल उठता है। आध्मान वायुकी अधिकताके कारण अन्त्रशूल, वृद्धि—सन्ध्याके समय और शराब पीनेपर। बड़े कष्टसे पाखाना होता है और उससे भी तृप्ति नहीं होती। रजःस्राव होने बाद रोगिनीकी सब तकलीफें घट जाती हैं और आराम हो जाया करती हैं; पर स्राव बन्द होनेपर सब तकलीफें फिर पैदा हो जाती हैं। रातमें बार-बार रमण आलिङ्गनकी आकांक्षा। हस्तमैथुन करनेकी अनिवार्य अभिलाषा। गर्भावस्थामें छातीमें जलन, दोनों पैर फूल उठते हैं और शिरा-प्रसारण पैदा हो जाता है। निम्नांगकी अत्यन्त चञ्चलता—रोगी अपना पैर लगातार हिलाया करता है। जिन बच्चोंको दाँत निकलता रहता है, उनकी अकड़नकी बीमारी या धनुष्टङ्कार—रोगीका चेहरा उतरा, उत्ताप रहित, आँखें चक्कर खाती हुईं और दाँत-पर-दाँत कड़मड़ाया करता है। दोनों हाथ तथा माथा आप-से-आप ही हिला करते हैं। उद्भेद लोप हो जानेकी वजहसे और डरके कारण ताण्डव रोग। सोनेके बहुत देर बादतक, यहाँतक कि नींद लग जानेपर भी दोनों पैर या एक पैर आप-से-आप फड़का करता है। दोनों पैरोंमें बहुत अधिक पसीना निकलता है और पैरकी सब अंगुलियोंमें जखम हो जाता है; पैरका पसीना बदबूदार; रुका हुआ पैरका पसीना; रोगी बहुत ही स्नायु-प्रधान। जाड़ेके दिनोंमें फोड़े—बहुत दर्द और रगड़नेपर बढ़ना। मेरुस्तम्भका रोग—समूचे मेरुदण्डमें जलन हुआ करती है; कमरमें दर्द—बैठे रहनेपर बहुत बढ़ जाता है। चलनेके समय बहुत आराम मालूम हुआ करता है। मेरुस्तम्भका ऋतुका—रोगीको बहुत गड़बड़ी: मालूम होती है। पीठमें स्पर्शतक सहन नहीं होता; पीछेकी ओर झुककर बैठनेपर कहीं पेशाब होता है, पेशियाँ सब एक-एक बार फड़का करती हैं। सभी प्रत्यङ्ग बहुत क्षीण; लिखनेके समय हाथ बहुत क्षीण मालूम होते हैं; ऋतुके समय ऐसा ही मालूम होता है। पसीना निकलनेके समय रोगी शरीरपर वस्त्र नहीं रख सकता और कराहा करता है।

लक्षणावली

मन।—बेहोशी, मस्तिष्कमें रस-क्षरणका लक्षण (हेलिबो), दोनों पैर लगातार हिला या फड़का करते हैं (फेफड़ेके प्रदाहमें—चेलिडो); उद्भेद

आदि भरपूर न निकलनेकी वजहसे प्रायः ऐसा ही हुआ करता है। माथेमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और स्मरण-शक्तिका कम हो जाना; किसी बातको पूछनेपर रोगी समूचे प्रश्नको दोहराता है और तब कहीं उत्तर देता है। नींद खुलनेपर एक ओर टकटकी लगाकर देखा करता है, मानो डर गया है और अपना माथा एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक हिलाया करता है (साइकूटा, हायो, पोडो, साइलि, स्ट्रैमोन, वेरेट ; नींद खुलनेपर—पोडो)। दूसरा यदि कुछ बोलता है, तो उसे बुरा मालूम होता है। मध्याह्नमें दुःखित चित्त और सन्ध्याके समय आनन्दमें या मध्याह्नमें आनन्द और सन्ध्याके समय विषाद। अविचलित भावसे मृत्युकी प्रतीक्षा करता है या परिपाक क्रियाके विकारकी वजहसे सुस्त हो पड़ता है (ऐनाक, नक्स); मेरुदण्डमें दबाव मालूम होना और मृत्यु-भय। स्मरण-शक्ति बहुत ही क्षीण (ऐनाक, क्रियो, लैके, नक्स-मस), दिनमें क्या किया है, यह रातमें भूल जाता है। बच्चेका मिजाज़ बहुत चिड़चिड़ा और दुःखित, विशेषकर सन्ध्याके आरम्भमें। सामान्य बातोंसे भी उसे क्रोध पैदा हो जाता है। जरा भी असन्तुष्ट होनेपर लम्बी साँस लिया करता है। बुद्धि-वृत्तिकी परिचालना रोगीके लिये बहुत कठिन काम हो जाता है (जेलस, नक्स, ऐ-फास, थूजा); सोचनेकी शक्तिका गायब हो जाना और मोहमें पड़े रहनेकी तरह भाव (नक्स-मस, ओपि, नाइट-स्पिरिट-डल)। कोई काम नहीं करना चाहता (चायना. नक्स, ऐ-फास)। कई रात लगातार जागनेके बाद बहुत तेज़ निद्रालुता, बच्चेको हिलानेपर वह रोने लगता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, खासकर सरके पिछले भागमें (चायना, क्रोटेलस, मिडोरिन, सरके पिछले भागमें ललाटकी ओर जाता है—ऐङ्गस, ओपि ; इसके साथ सर बहुत भारी मालूम होना—सरके पिछले भागमें दर्दके साथ—ब्राई)। चलनेके समय बायें पार्श्वमें गिर जानेकी सम्भावना (अरम, बोर, ड्युपेट-पर्फोल, लैके); सन्ध्याके समय बैठनेकी अवस्थामें या धूम्रपानके समय सरके पिछले भागमें चक्कर आता-सा मालूम होता है ; पाखाना लग आता है। जभी-तभी सरमें चक्कर आ जाता है। सरमें चक्कर आनेके पहले नाककी जड़में तेज़ दबाव मालूम होता है मानो दोनों आँखें एक डोरीसे गूँथी हुई हैं और आपसमें एक दूसरेकी ओर खिंच रही हैं (नेट्र-मूर, सिपि) और इसके कुछ ही बाद बहुत मिचली पैदा हो जाया करती है। सुस्ती मालूम होती है और दोनों हाथ काँपा करते हैं (मानो दोनों आँखें डोरीसे माथेके

भीतरकी ओर खिंच रही है—ऐक्टिया-टियुब, क्रोटोन, ग्रैफ, हिपर, लैके, मेजेर, पेरिस)। नाककी जड़में तेज दबाव, मानो नासामूल माथेके भीतरकी ओर घुस रहा है, ऐसा मालूम होना (सिस्टस, कैन, बैप्टि, कैलि-बाई); ललाटके एक छोटेसे अंशमें तेज़ दबाव अनुभव होना (काकुल, लैके, कैलि-ब्राई, इग्ने), विशेषकर सन्ध्याके आरम्भके समय। अधकपारी या शिराई-शूल, फाड़ने या डङ्क मारनेकी तरह दर्द (ग्रैफ, कैल्मिया); वृद्धि—रातमें भोजनके बाद (स्ट्रैमोन) कभी-कभी पैदा होनेवाली पुरानी पाकाशयिक शिर-पीड़ा—आँखकी दृष्टि धुँधली हो जाती है या आँखके आगे अंधेरा छा जाता है (ऐ-फास, साइक्लेम, पल्स, सल्फ, वेरेट-विर)। बहुत थोड़ी शराब पीनेपर भी सर-दर्द पैदा हो जाता है (ऐसिट-क्रूड, कैल्के, काफि, इग्ने, नक्स, स्पञ्जि, लोबेल, नक्स-मस, फास, सेलिन ; शराब पीनेपर बढ़ना—जेल्स ; शराब पीनेपर घटना—आर्जेण्ट-नाई)। ब्रह्मतालुमें उखाड़ने या खोंचनेकी तरह दर्द ; ब्रह्मतालुमें मानो जखम हो गया है, छूनेपर इसी तरहका दर्द मालूम होता है, खासकर सन्ध्याके समय। सरके पिछले भागमें भार और जड़ता। ब्रह्मतालुके केश झड़ जाते हैं और उसमें टाक पड़ जाती है। उस स्थानकी त्वचा क्षय हो जानेकी तरह स्पर्श सहन नहीं होता।

आँख।—योजिका, विशेषकर भीतरी पलकमें प्रदाह और लाली हो जाती है ; दर्दका बढ़ना—सन्ध्याके बाद और रातमें, मानो उसमें बालूके कण गिर गये हैं और आँखसे लगातार आँसूकी धारा बहा करती है (आर्स, कास्टि, पल्स); ऋतुके समय ऐसा ही हुआ करता है। सवेरे और सन्ध्याके समय आँख और पलकमें बहुत जलन हुआ करती है और आँखमें ऐसा मालूम होता है, मानो धूलके कण गिर गये हैं। इसी तरहकी करकराहट और कुटकुटी हुआ करती है। खुजली पैदा हो जाती है, आँखमें रोशनी सहन नहीं होती और उससे पानी गिरा करता है, खासकर सन्ध्याके बाद। दोनों आँखोंकी भीतरी पलकमें खुजली और सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है और ऐसा मालूम होता है, कि चारों ओरकी चीज़ें मेघसे छिपी हैं। भीतरी पलकके पासवाले आँखकी निचली पलकके किनारे दबाव मालूम होता है। पलकें सब मानो बहुत सूखी हैं, इसी तरह जलन हुआ करती है। ऊपरी पलकमें ऐसा भार मालूम होता है, मानो पक्षाघात हो गया है (कास्टि, जेल्स, रस)। रोज़ रातके समय पलकें सट जाती हैं (ऐल्यू, लाई, सिपि, ऐसिड-क्रूड, ग्रैफ, हिप, रस, सिफि-

लिनम, थूजा)। उसमें जखम हो जानेकी तरह दर्द और दबाव मालूम होता है। प्रचण्ड सर-दर्दके साथ अस्पष्ट दृष्टि, सर-दर्दके साथ-ही-साथ अच्छा हो जाया करता है। माथेके विकारकी अवस्थामें रोशनीका सहन न होना इत्यादि।

कान।—कानमें पानीकी आवाज़ और कानमें रह-रहकर कड़ाककी आवाज हो उठती है (कानमें ढोलकी आवाज—बेराई, केल्के ; निगलनेके समय दाहिने कानमें—साइक्लूटा ; कड़ाक हो जाता है,—ग्रैफ, लेके, पेट्रोल)। दाहिने कानके पटहके पास जब-तब तेज़ सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है (कैमो , स्पिञ्जि)। बच्चोंका कानका दर्द।

नाक।—दोनों ही रंध्र ऐसे मालूम होते हैं, कि उनकी खाल उधड़ गयी है। सन्ध्याके समय कुटकुटी और सुरसुरी होकर इसके बाद छींक आने लगती है। नाककी जड़में भयानक दबाव मालूम होता है। नासारोध (नक्स, साइलि)। नाककी सर्दी-स्रावके रोगमें स्वरभङ्ग और वक्षमें जलन। नाकका एक पार्श्व फूलकर घ्राण-शक्ति लोप हो जाया करती है।

मुखमण्डल।—चेहरा पर्यायक्रमसे म्लान और लाल हो जाया करता है (ऐकोन), मस्तिष्क आक्रान्त होनेपर चेहरा भूरा और भ्रान्तकी तरह मोह-ज्वर आदिमें मैला, सफेद आभा लिये या पीले रङ्गका दिखाई देता है। आँखके निचले स्नायुमें जलन, उखाड़ने और सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है और पलकें नीली हो जाती हैं। वृद्धि—जरा भी छूनेपर और सन्ध्याके बाद। ललाटपर ठण्डा पसीना निकला करता है (वेरेट)। आँख और मुँहके कोने फटे हुए। ओठपर गाढ़ा श्लेष्मा सञ्चित हो जाया करता है। हँसानेवाली पेशी फड़का करती है और रोगीकी बार-बार हँसनेकी इच्छा होती है।

मुख-विवर।—दाँतमें खींचने, उखाड़ने और चिलक मारनेकी तरह दर्द, दाँतका मसूढ़ा छूते ही खून निकलने लगता है (ऐ-नाई, कार्बो-वेज, मर्क, फास)। जीभपर छाले निकलते हैं। मुँहमें बहुत ज्यादा लार सञ्चय होती है और दोनों गालोंके भीतरी गात्रमें सुरसुरी हुआ करती है। सामनेवाले कर्तन दाँतकी जड़वाले मसूढ़ेमें और उसके पासवाले तालुके ऊपर कुटकुट किया करता है और सुई गड़नेकी तरह दर्द हुआ करता है। दाँत सब लम्बे और उनकी जड़ ढीली मालूम होती है। हनुके नीचेवाली ग्रन्थियाँ सब

भीतरकी ओर खिंच रही है—ऐक्टिया-टियुब, क्रोटोन, ग्रैफ, हिपर, लैके, मेजेर, पेरिस)। नाककी जड़में तेज दबाव, मानो नासामूल माथेके भीतरकी ओर घुस रहा है, ऐसा मालूम होना (सिस्टस, कैन, बैप्टि, कैलि-बाई); ललाटके एक छोटेसे अंशमें तेज़ दबाव अनुभव होना (काकुल, लैके, कैलि-बाई, इग्ने), विशेषकर सन्ध्याके आरम्भके समय। अधकपारी या शिरार्द्ध-शूल, फाड़ने या डङ्क मारनेकी तरह दर्द (ग्रैफ, कैल्मिया); वृद्धि—रातमें भोजनके बाद (स्ट्रैमोन) कभी-कभी पैदा होनेवाली पुरानी पाकाशयिक शिर-पीड़ा—आँखकी दृष्टि धुँधली हो जाती है या आँखके आगे अंधेरा छा जाता है (ऐ-फास, साइक्लेम, पल्स, सल्फ, वेरेट-विर)। बहुत थोड़ी शराब पीनेपर भी सर-दर्द पैदा हो जाता है (ऐण्टि-क्रूड, कैल्के, काफि, इग्ने, नक्स, स्पञ्जि, लोबेल, नक्स-मस, फास, सेलिन ; शराब पीनेपर बढ़ना—जेल्स ; शराब पीनेपर घटना—आर्जेण्ट-नाई)। ब्रह्मतालुमें उखाड़ने या खोंचनेकी तरह दर्द ; ब्रह्मतालुमें मानो जखम हो गया है, छूनेपर इसी तरहका दर्द मालूम होता है, खासकर सन्ध्याके समय। सरके पिछले भागमें भार और जड़ता। ब्रह्मतालुके केश झड़ जाते हैं और उसमें टाक पड़ जाती है। उस स्थानकी त्वचा क्षय हो जानेकी तरह स्पर्श सहन नहीं होता।

आँख।—योजिका, विशेषकर भीतरी पलकमें प्रदाह और लाली हो जाती है ; दर्दका बढ़ना—सन्ध्याके बाद और रातमें, मानो उसमें बालूके कण गिर गये हैं और आँखसे लगातार आँसूकी धारा बहा करती है (आर्स, कास्टि, पल्स); ऋतुके समय ऐसा ही हुआ करता है। सवेरे और सन्ध्याके समय आँख और पलकमें बहुत जलन हुआ करती है और आँखमें ऐसा मालूम होता है, मानो धूलके कण गिर गये हैं। इसी तरहकी करकराहट और कुटकुटी हुआ करती है। खुजली पैदा हो जाती है, आँखमें रोशनी सहन नहीं होती और उससे पानी गिरा करता है, खासकर सन्ध्याके बाद। दोनों आँखोंकी भीतरी पलकमें खुजली और सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है और ऐसा मालूम होता है, कि चारों ओरकी चीजें मेघसे छिपी हैं। भीतरी पलकके पासवाले आँखकी निचली पलकके किनारे दबाव मालूम होता है। पलकें सब मानो बहुत सूखी हैं, इसी तरह जलन हुआ करती है। ऊपरी पलकमें ऐसा भार मालूम होता है, मानो पक्षाघात हो गया है (कास्टि, जेल्स, रस)। रोज़ रातके समय पलकें सट जाती हैं (ऐल्यू, लाई, सिपि, ऐण्टि-क्रूड, ग्रैफ, हिप, रस, सिफि-

लिनम, थूजा)। उसमें जख्म हो जानेकी तरह दर्द और दबाव मालूम होता है। प्रचण्ड सर-दर्दके साथ अस्पष्ट दृष्टि, सर-दर्दके साथ-ही-साथ अच्छा हो जाया करता है। माथेके विकारकी अवस्थामें रोशनीका सहन न होना इत्यादि।

कान।—कानमें पानीकी आवाज़ और कानमें रह-रहकर कड़ाककी आवाज हो उठती है (कानमें ढोलकी आवाज—बेराई, केल्के ; निगलनेके समय दाहिने कानमें—साइकूटा ; कड़ाक हो जाता है,—ग्रैफ, लेके, पेट्रोल)। दाहिने कानके पटहके पास जब-तब तेज़ सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है (कैमो , स्पिञ्जि)। बच्चोंका कानका दर्द।

नाक।—दोनों ही रंध्र ऐसे मालूम होते हैं, कि उनकी खाल उधड़ गयी है। सन्ध्याके समय कुटकुटी और सुरसुरी होकर इसके बाद छींक आने लगती है। नाककी जड़में भयानक दबाव मालूम होता है। नासारोध (नक्स, साइलि)। नाककी सर्दी-स्रावके रोगमें स्वरभङ्ग और वक्षमें जलन। नाकका एक पार्श्व फूलकर घ्राण-शक्ति लोप हो जाया करती है।

मुखमण्डल।—चेहरा पर्यायक्रमसे म्लान और लाल हो जाया करता है (ऐकोन), मस्तिष्क आक्रान्त होनेपर चेहरा भूरा और भ्रान्तकी तरह मोह-ज्वर आदिमें मैला, सफेद आभा लिये या पीले रङ्गका दिखाई देता है। आँखके निचले स्नायुमें जलन, उखाड़ने और सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है और पलकें नीली हो जाती हैं। वृद्धि—जरा भी छूनेपर और सन्ध्याके बाद। ललाटपर ठण्डा पसीना निकला करता है (वेरेट)। आँख और मुँहके कोने फटे हुए। ओठपर गाढ़ा श्लेष्मा सञ्चित हो जाया करता है। हँसानेवाली पेशी फड़का करती है और रोगीको बार-बार हँसनेकी इच्छा होती है।

मुख-विवर।—दाँतमें खींचने, उखाड़ने और चिलक मारनेकी तरह दर्द, दाँतका मसूढ़ा छूते ही खून निकलने लगता है (ऐ-नाई, कार्बो-वेज, मर्क, फास)। जीभपर छाले निकलते हैं। मुँहमें बहुत ज्यादा लार सञ्चय होती है और दोनों गालोंके भीतरी गात्रमें सुरसुरी हुआ करती है। सामनेवाले कर्तन दाँतकी जड़वाले मसूढ़ेमें और उसके पासवाले तालुके ऊपर कुटकुट किया करता है और सुई गड़नेकी तरह दर्द हुआ करता है। दाँत सब लम्बे और उनकी जड़ ढीली मालूम होती है। हनुके नीचेवाली ग्रन्थियाँ सब

फूल उठती हैं। रोगी दाँत कड़मड़ाया करता है। जीभ सूखी; रोगीकी बोलनेकी इच्छा नहीं होती, उसकी जड़में लेप चढ़ा रहता है और सूखा रहता है। बायाँ पार्श्व फूला और इसी वजहसे बोलनेमें व्याघात होता है। जीभपर रस भरे दाने सब दिखाई देते हैं।

गलेके भीतर।—कण्ठ सूखा, नाकके पिछले छेदसे श्लेष्मा आकर कण्ठमें जमा होता है; कण्ठ-मूलके बगलवाले दोनों गह्वरके पिछले अंशमें फाड़नेकी तरह दर्द; निगलनेके बहुत पहले या बाद दर्द बढ़ जाता है। प्रमेह रुकनेके कारण कण्ठमें नीले रङ्गके दादकी तरह छोटे-छोटे दाने सब निकल आया करते हैं।

पाकस्थली।—अरुचि, मछली, मांस और मिष्टानसे अरुचि; अग्निमें पकायी और गर्म चीजें पसन्द नहीं। तलहत्थीमें गरमी मालूम होना और प्यास। दिनको ११ से १२ बजेके भीतर राक्षसी भूख पैदा हो जाया करती है (सल्फ) अत्यन्त भूख, जितना जल्दी-जल्दी हो सकता है। भूख मारनेके लिये उतना जल्दी-जल्दी खाता है, मानो उसका पेट भरते-न-भरते खानेकी चीजें सब भाग जायेंगी। चीनी मिली चीजें खानेपर छातीमें जलन होती है (मिठाई खानेपर कलेजेमें जलन—कार्ब्बो)। शराब पीनेपर सभी लक्षण बढ़ जाते हैं। डकारके साथ कण्ठमें मीठा रस चढ़ आता है। मुँहमें मीठापन मालूम होना या रक्तका स्वाद आ जाना। मेरुदण्डके बीचके स्थानपर दबाव मालूम होना और डकार। गर्भावस्थामें कलेजेमें जलन (ऐ-आक्साल, कैप्सि), दोनों पैर फूले (लाई) और शिराका फैलना (ऐ-पलू, हैमा, पल्स, कार्ब्बो, मिलिफोल)। खट्टी डकार (नक्स, फास)। पाकस्थलीमें मिचली अनुभव हुआ करती है, ओकाई आया करती है और तीते स्वादवाला श्लेष्मा वमन हुआ करता है (ऐण्टि-टार्ट, इपिक, लोबेल); जरा हिलते ही वमन होना आरम्भ हो जाता है। ओकाई आकर थोड़ा-सा खून या खून मिला श्लेष्मा वमन हो जाता है। एक चम्मच जलीय पदार्थ गलेके नीचे जाते ही वमन हो जाता है। पाकस्थली और दोनों कोखोंका आक्षेप या अन्ननलीका संकोचन, श्वासकष्ट और शरीरमें उत्तापकी अधिकता। श्वास ग्रहण करनेपर बढ़ जाता है। उदरोर्द्ध प्रदेशको दबानेपर जलन मालूम होती है, विशेषकर सन्ध्याके समय, सवेरेके भोजनके पहले पाकाशयसे लेकर अन्ननलीतक जलन हुआ करती है।

रक्तपित्त या खूनकी कै। मानो एक कृमि पाकस्थलीसे सरसराकर कण्ठमें चढ़ रही है, ऐसा ही मालूम होता है और इसीलिये खाँसी पैदा हो जाया करती है। एकाएक पाकस्थली इतनी फूल जाया करती है, कि कमरका कपड़ा यदि ढीला नहीं कर दिया जाता तो रोगीका प्राण निकल जाना चाहता है। (लिखिन)।

अन्त्राशय।—यकृत प्रदेशमें ऐंठनकी तरह दर्द और भोजनके बाद श्वासकष्ट और रोगी ऐसी आशंका प्रकट करता है, मानो उसे कोई भयङ्कर बीमारी होना चाहती है। यकृत बड़ा, कड़ा और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता; दोनों पैर फूले और खून मिले श्लेष्माका वमन होता है। प्लीहामें सुई गड़नेकी तरह दर्द, दबानेपर बढ़ जाता है (आर्स, ब्राई, चायना, मर्क)। बहुत थोड़ा भोजन करनेपर भी उदरमें दर्द और सूजन (कोलोसिन्थ, लाई)। उदरमें, नाभीके तल देशमें, मानो एक अर्बुद उत्पन्न हो गया है, इसी ढङ्गका दर्द; पेट बहुत भरा मालूम होता है और फूल उठता है। भोजनके बाद पेट कड़ा हो जाता है और उसमें दबाव मालूम होता है (कार्बो-वेज, सिङ्को, नक्स)। आध्मान-वायुकी अधिकताके कारण अन्त्रशूल (ऐनिसम, स्टैल), विशेषकर सन्ध्याके समय, पेट हुड़-हुड़ गुड़-गुड़ किया करता है (ऐलो, लाई, नेट्र-सल्फ, पल्स, जैङ्गोफा)। बार-बार गर्म और बदबूदार वायु निकला करता है (ऐलो, कार्बो-वेज, सिङ्को, स्टैफ)। उदरमें मानो छुरी गड़ रही है इस तरहका दर्द। सवेरेके भोजनके बाद पेटमें मरोड़ होती है और रातमें भोजनके बाद छेदनेकी तरह दर्द मालूम होता है (कोलोसिन्थ, नेट्र-कार्ब, स्टैफ)। बड़े कष्टसे थोड़ा-सा पाखाना होनेके बाद आँतोंमें नीचेकी ओर तेज खींचन पैदा हो जाती है—वायु निकलनेपर घटता है। वंक्षणदेश या पुट्ठेकी आँतका बढ़ना (लाई, नक्स)।

मलान्त्र और मल।—मलद्वारमें खुजली अनुभव होना (ग्रैफ, सिना, नक्स, पोलिगोनम, सैबाड)। मलद्वारमें मानो कृमि घूम रही है, इस तरहकी सुरसुरी अनुभव होती है (इलैप्स, टेरिब, टियुक्रि.)। पाखाना होनेके समय मलद्वारमें जलन होती है (कैन्थ, मर्क, सल्फ, वेरट)। दुरारोग्य कब्जियत—मल कड़ा, सूखा, चूर-चूर हो जाता है। परिमाणमें बहुत थोड़ा और खूब जोर लगाये बिना बाहर नहीं निकलता (ऐमोन-म्यूर, प्लैट, सेलिन,

साइलि)। नये जन्मे हुए बच्चोंकी कब्जियत (नक्स, ओपि, सल्फ)। पतले दस्त आना—बार-बार थोड़ा-थोड़ा पाखाना हुआ करता है और कभी-कभी अनजानमें पाखाना हो जाया करता है। मल अलकतरेकी तरह काला, कोमल, मांड़की तरह या पानीकी तरह पतला और फीके रङ्गका खून मिला।

पेशाब।—मूत्राशयमें पेशाब अधिक सञ्चय होनेकी वजहसे वह चरचराया करता है; रोगी उरु-पर-उरु रखकर बैठा करता है और मूत्राशय भरा मालूम होनेपर भी जरा-सा भी पेशाब नहीं होता (ओपि)। केवल पीछेकी ओर टेढ़े होकर बैठकर पेशाब कर सकता है; पेशाबके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें मूत्ररेणु (बालू) मिली रहती है (नेट्र-सल्फ, सार्सा, सेलिन, टियुबर्क्यु) सवेरे पेशाब गदला और कीचड़की तरहके रङ्गका दिखाई देता है। चलने, खाँसने या छींकनेपर अनजानमें पेशाब निकल जाता है (कास्टि, फेरम, नेट्रम-मूयर, पल्स)। बायें मसानेके स्थानपर दबावका अनुभव होना (पैलेड)। बार-बार निर्मल पीले रङ्गका पेशाब होता है और यह पेशाब थिरनेपर सफेद, रूईकी तरह तली जमती है। यन्त्रणाजनक पेशाबके बाद मूत्रनलीसे खून निकला करता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—बहुत जल्द उत्तेजना पैदा हो जाती है। रमण—आलिंगनके समय बहुत जल्दी वीर्य-स्खलन हो जाता है (टाइटेनिया) या बड़े कष्टसे वीर्यस्खलन होता है या बिलकुल ही नहीं होता है। लिङ्गमें कड़ापन होनेपर तकलीफ होती है और जल्दी कोमल नहीं होता, जभी-तभी बिना कारण मूत्राधार मुखशायिका-ग्रन्थिसे बहुत ज्यादा रस-स्राव हुआ करता है (इरिञ्जियम, कैलि-बाई)। एकशिरा—अण्डकोषमें चोट लग जानेकी वजहसे, बायाँ या दाहिना अण्डकोष बहुत जकड़ जाता है और दर्द दाहिने पार्श्वसे बायें पार्श्वमें जाता है; कानका स्राव रुकनेपर भी ऐसा ही हुआ करता है। अण्डकोषका क्षय (आयोड, कैलि-आयोड, अरम, लिसिन)। शुक्रमेह—बिना स्वप्नके ही वीर्य-स्खलन हो जाता है (डायस्को, लाई, फास, सेलिन, सिपि, स्टैफ), रोगीका चेहरा म्लान, अस्थिसार और दोनों आँखें नीले घेरेसे घिरी (जेल, आइरिस, लाई)। जननेन्द्रिय प्रदेशका केश झड़ जाता है (ऐ-नाई, नेट्र-मूय, सेलिन, नेट्र-कार्ब, ऐ-फास)। हमेशा जननेन्द्रिय-प्रदेशपर हाथ रखता है (बेल, स्ट्रैमोन; शिशु बार-बार अपने शिश्नपर हाथ

रखता है—ष्ट्रेमोन)। बच्चा खाँसनेके समय अपनी जननेन्द्रिय मुट्ठीमें कस लेता है। अण्डकोषका रेतोरज्जु तक जकड़ जाता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रातमें दुर्दमनीय रमणाकांक्षा, यहाँतक कि अस्वाभाविक उपायसे इन्द्रिय परितृप्त करनेकी इच्छा होती है। बायें डिम्बाधार-प्रदेशमें छेदनेकी तरह दर्द, दबा देनेपर कुछ घट जाता है और ऋतुस्राव आरम्भ होनेपर एकदम आराम मालूम हुआ करता है (सिरियम, आक्सेल, लेके, वाइबर्नन-ओप्यु)। रजःकृच्छ्रता, रजःस्रावके समय दोनों पैर बहुत भारी मालूम होते हैं और जानुमें ऐसी ऐंठन होती है, कि मालूम होता है, कि मानो उसमें मोच आ गयी है; एकाएक पाकस्थली इतनी फूल उठती है, कि रोगिनीको बाध्य होकर अपना कपड़ा ढीला कर देना पड़ता है। आर्त्तव—अत्यन्त असमयमें होता है और स्राव बहुत ज्यादा हुआ करता है; स्रावके साथ जमा हुआ रक्त निकलता है, विशेषकर चलनेके समय (कक्कस, लेके, पल्स), रातमें सबसे अधिक स्राव हुआ करता है (एमोन-कार्ब, एमोन म्यूर)। जरायुका जखम—इस जखममें बहुत दर्द नहीं होता, पर उससे जो रस निकलता है वह खून मिला, त्वचाको क्षय करनेवाला और जखम पैदा करनेवाला होता है। प्रदर—रजःस्रावके बाद खून मिला श्लेष्मा निकलता है और योनिद्वारमें खुजली पैदा हो जाती है (ऐल्यू, बेराइ, कार्बो-वेज, क्रियो); ऋतुके दिनके पहले और बाद गाढ़ा श्लेष्मा निकला करता है (पोडो, पल्स)। ऋतुके बाद जो प्रदरका स्राव निकलता है, वह त्वचाको क्षय करनेवाला (क्रियो, पल्स)। छेदनेकी तरह शूलके दर्दके बाद प्रदरका स्राव आरम्भ होता है। योनि-मुख बहुत खुजलानेकी वजहसे हस्तमैथुन करनेकी इच्छा होती है (कैलेड)। जननेन्द्रियके वहिर्देशकी शिराका प्रसारण (ऐ-फ्लू, ग्रेफ, हैमा, पल्स)। गर्भपात-प्रवणता; बहुत दिनोंका कोई उद्भेद एकाएक लोप हो जानेकी वजहसे प्रसवके बादका धनुष्टङ्कार। आर्त्तव रुकना और दोनों स्तन फूलना और उसमें स्पर्श सहन न होना। स्तनवृन्तमें जखम। स्तनका दूध लोप हो जाना (ऐग्नस, रिसिनस, ऐसाफिट)।

श्वासयन्त्र।—श्वास रोग, सन्ध्याके बाद भोजन कर लेनेपर या उदरमें आध्मानकी अधिकताकी वजहसे, श्लेष्मा निकलना बन्द होनेपर श्वासकष्ट बहुत बढ़ जाता है और फिर श्लेष्मा निकलना बन्द होनेपर श्वासकष्ट

कम पड़ जाता है (ऐण्टि-टार्ट, स्टिक्ट, सैन्गि, स्पिजि)। खाँसी,—रातभर खाँसी आती है और वक्षमें अस्पष्ट दर्द अनुभव हुआ करता है; आक्षेपिक खाँसी, खाँसते-खाँसते बच्चा अपनी जननेन्द्रियपर हाथ रखता है; पैरकी शिरा फैल जाती है; उदरोर्द्ध-प्रदेशमें बेधनेकी तरह दर्द अनुभव होना—बलगम निकलना आरम्भ होनेपर दर्द घट जाता है; खाँसीका बढ़ना—मिष्टान भोजन करनेपर (स्पञ्जि, सल्फ), शराब पीनेपर (ऐल्यू, ऐण्टि-क्रूड, स्टैनम) और ऋतुके समय (ग्रैफ, सल्फ)। कफके टुकड़े, पीला, पीवकी तरह (ऐ-नाई, कैल्के, कैलि-कार्ब, फास, स्टैनम), खून मिला (आर्स, सीड्रन, इरिजि, फेरम, आयोड, इपिका, फास, पल्स); गाढ़ा जमी गोंदकी तरह (हाइड्रैस्ट, कैलि-बाई, फाइटो); मीठा, सड़न-भरा या तांबा आदिके जङ्गकी तरह स्वादवाला; कभी-कभी दिनमें या सवेरे बिना किसी मिलावटके निकला करता है (मिलिफोल, रस)। खाँसनेपर वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है और ऐसा मालूम होता है, मानो कलेजा फट जायगा (ब्राई, कैमो, सल्फ)। खाँसनेपर वक्षमें जलन (लैके, फास, स्पांजिया) और उसके भीतरके किसी अंशकी त्वचा क्षय हो गयी है, इसी तरहका दर्द मालूम होता है (आर्स, कैल्के, कास्टि, लैके, फास, रियुमेक्स, स्टैफ)। वक्षमें जोरका कसावटका भावके साथ ऐसी यन्त्रणा मानो उसे कोई काटकर टुकड़े-टुकड़े कर रहा है (कैलि-आयोड)। वक्षमें ठण्डक अनुभव होना (ऐपिस, कैम्फोरा, इलैप्स)। प्रत्येक हृदयके स्पन्दनके साथ बायें वक्षमें और हृत्पिण्डमें सुई गड़नेकी तरह दर्द और यह अंश क्षय हुई त्वचाकी तरह और दर्द भरा मालूम हुआ करता है।

हृत्पिण्ड।—ऐसा अनुभव होना मानो हृत्पिण्डपर एक टोपी रखी हुई है—मेरुदण्डके रोगमें। ज्वरके समय शिरा और धमनी आदिमें प्रबल स्पन्दन अनुभव होता है। हृदाग्र-प्रदेशमें ऐसा दर्द होता है, मानो जकड़ गया है और उसमें सुई गड़नेकी तरह दर्द अनुभव होता है; जोरसे साँस छोड़नेपर बढ़ जाया करता है। हृत्पिण्डके शिखर-प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। कलेजा धड़कना—विशेष उद्वेग मालूम नहीं होता।

गर्दन और पीठ।—बहुत देरतक लिखनेके कारण या किसी दूसरी तरहके परिश्रमकी वजहसे गलेका पिछला भाग सुन्न और क्षीण मालूम होता है (मानो माथेपर एक बोझा था—परिस)। गर्दन अकड़ा, ऐसा अनुभव होना

मानो कसकर बँधी हुई है (बेराई, कास्टि, साइक्यूटा)। ग्रीवाके दाहिने पार्श्वमें त्वचा नोच लेनेकी तरह दर्द। अंसफलकके नीचे जलन मालूम होती है; दोनों अंसफलकोंके बीचमें अकड़न मालूम होना (वायोला-ड्राई)। मेरुदण्डके ऊपरसे नीचेतक दोनों पार्श्वमें भयानक जलन हुआ करती है (लाई, नेट्र-कार्ब फास); विशेषकर बैठनेकी अवस्थामें, कमरमें दर्द—बैठे रहनेपर बहुत बढ़ जाता है और टहलते रहनेपर घटता है (कोबाल्ट, आर्जेण्ट-नाई, सिपि, पल्स, रस); मेरुस्तम्भगत उत्तेजना (चिनिन-सल्फ, नेजा, नेट्र-म्यूर, नक्स, फास, फाइटो, थिरिड; बहुत कमजोरी आ जाया करती है और निचला अङ्ग सुन्न हो जाया करता है। रोगी अपनी पीठपर अपना या किसी दूसरेका स्पर्श नहीं होने देना चाहता, सहन नहीं कर सकता (ऐगार, चिनिन-सल्फ, लेकि, फास, टैरेण्टियु, थिरिड, थूजा), चलनेके समय श्रोणि-देशमें दर्द और सुस्ती मालूम होती है। रातमें शय्यामें करवट लेनेपर श्रोणि-देशमें दर्द होता है (ब्राई, लिलि-टि)। बैठनेकी अवस्थामें या बैठनेके समय कमरमें दर्द मालूम होता है। लगातार कुछ देरतक चलते रहनेपर आराम हो जाया करता है। मसानेके स्थानपर सुई गड़नेकी तरह, छेदनेकी तरह या दबावकी तरह दर्द। चलनेके समय श्रोणि-देशमें दर्दकी वजहसे रोगीको कभी-कभी स्थिर भावसे खड़े हो जाना पड़ता है; कुछ देरतक लगातार घूमते रहनेपर घट जाता है। पीठमें और दाहिने पृष्ठफलकके नीचे अकड़न और दबाव मालूम होना। कमरमें चलनेके समय और बैठनेवाली अवस्थामें सुई गड़नेकी तरह दर्द। कमरके ऊपरी अंशमें, मेरुस्तम्भमें जलन और दबाव मालूम होना।

प्रत्यङ्ग आदि।—दोनों पैर या निम्नाङ्गमें दुर्दमनीय चञ्चलता, रोगी यह अङ्ग लगातार हिलाये बिना रह नहीं सकता (लेक-कैन, नेट्र-म्यूर, प्लेट, प्रूनस, टैरेण्ट, जिङ्कम, वेलि)। हाथ और दोनों पैर या एक हाथ और माथा आप-से-आप हिला करता है (एक हाथ और एक पैर—ऐपोसिन, ब्राई, हेलिबो)। ताण्डव रोग—कोई उद्भेद रुक जानेकी वजहसे या दब जानेके कारण या किसी तरहके आतङ्कके बाद। सोनेके बहुत देर बादतक यहाँतक कि निद्रित अवस्थामें भी दोनों पैर आप-से-आप भयानक रूपसे हिला करते हैं (नेट्र-म्यूर, प्लेट, रस)—रोगिनी स्थिर नहीं कर सकती कि कहाँपर पैर रखनेपर उसे आराम मिलेगा (आर्जेण्ट-नाई)। पैरमें पसीना होता है और पैरकी

अंगुलियोंकी दरार सबमें जखम हो जाया करता है (ग्रैफ, पेट्रोल, सिपि, ऐ-कार्बोल, बैराई); पसीना बदबूदार ; पैरका पसीना लोप हो जानेकी वजहसे स्नायविक उत्तेजना (बैराई, कूप्रम, सिपि, साइलि)। प्रत्येगोंकी पेशियाँ सब एक-एक कर फड़का करती हैं (ऐगार, इग्ने)। हाथ-पैर बहुत चीण और काँपते रहते हैं; हाथ काँपना—लिखनेके समय (ऐ-कार्बोल, ऐगार, चायना, नेट्र-म्यूर, नेट्र-फास, नेट्र-सल्फ, सल्फ) और आर्त्तवके समय। सन्धियाँ सब अकड़ी मालूम होती हैं (कास्टि, काकुर, फार्मिका, लाई, नेट्र-म्यूर, पेट्रोल, लैक-कैन, मिडोरिन) और इस सन्धिके कुछ ऊपर और एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वकी ओर (ऊपरसे नीचेकी ओर नहीं) अस्त्र मारनेकी तरह तेज़ दर्द फैल जाता है। वातका दर्द—रोगवाले अंगमें उखाड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है, वह अवश हो आता है और काँपा करता है या ऐंठन होती है। कभी-कभी रोगवाले अङ्गमें इस तरहका दर्द होता है, मानो मरोड़ हो रहा है और निद्रित अवस्थामें समूची देह रह-रहकर हिल उठा करती है (ऐण्टि-टार्ट, कैलि-कार्ब, बेल, हायो, लाई, साइलि); वृद्धि—शरीर बहुत गर्म होने और परिश्रम करनेपर। सभी अस्थियोंमें खींचनकी तरह दर्द या अकड़न मालूम होती है और इसीलिये वे सब अस्थियाँ उसकी देहका भार सहन नहीं कर सकती। प्रत्यङ्ग आदि बहुत चीण और सुस्त और उनमें दर्द अनुभव हुआ करता है। निम्न अङ्ग सब ठण्डे। सभी प्रत्यङ्गोंमें अकड़न और उखाड़नेकी तरह दर्द मालूम हुआ करता है (ब्राई, कोलोसिन्थ, पल्स, सल्फ)। सभी सन्धियोंमें भयानक सुरसुरी मालूम होती है। रातमें बायें अग्रबाहुमें जलन अनुभव होती है। बायें कन्धेके पास ऐसा दर्द मानो नोच फेंका है। अंगुलीकी पहली सन्धि और अन्यान्य ग्रन्थियोंमें उखाड़नेकी तरह दर्द, उरु और पैरकी शिराका फैलना (ऐ-फ्लू, हैमा, पल्स)। दोनों पैर फूले और शोथ-युक्त (एपिस, आर्स, रस)। उरु और जानु-सन्धिके पीछेवाले गह्वरमें खुजली पैदा हो जाती है। निम्नाङ्ग सब बहुत भारी मालूम होते हैं (आर्जेण्ट-नाई, साइमेक्स, फेरम, जेल्स, ग्रैफ, कैलि-बाई, नेट्र-म्यूर, फास, पल्स, रस)। रातमें निम्नागमें बहुत बेचैनी मालूम होती है (आर्स)। जंघाके सामनेवाले स्थानमें जलन मालूम होना (ऐगार, कैलि-बाई, सैबाड ; रातमें—ऐसिड-फास, कास्टि)। पैरकी पोटलीमें झुनझुनी होती है। पैरकी पोटलीके पीछेवाली एँड़ीतक लटकती हुई स्थूल कण्डरा जकड़ जाती है (कास्टि, सिपि, वेलि)। दोनों पैर बहुत चीण मालूम होते

हैं, खासकर घूमनेके समय (ब्राकिग्लट, ब्राई, सल्फ), पैरकी पीटलीके पीछे एँड़ीतक लटका हुआ, पेशी-सूत्र फूल जाता है और प्रदाहित हो जाता है। दोनों पैरोंका पक्षाघात, दोनों चरण बहुत क्षीण और काँपते हुए ; वृद्धि—सवेरे शय्यामें शायित अवस्थामें ; घटना—सवेरे उठकर टहलनेपर, एँड़ीके नीचे मानो जख्म हो गया है और उसमें ऐसा दर्द होता है, मानो छिद्र हो गया है (पल्स) ; बैठनेकी अवस्थाकी अपेक्षा चलनेमें दर्द अधिक अनुभव होता है। पैरकी अंगुलीकी सन्धिमें सुई गड़नेकी तरह दर्द।

सार्वाङ्गिक ।—शरीरकी भिन्न-भिन्न पेशियाँ फड़का करती हैं (ऐगार, साइकूटा)। दोनों हाथ काँपा करते हैं (ऐण्टि-टार्ट, हायो, ओपि, मर्क, फ़ास, स्ट्रैमम, प्लम्ब, टैबाक) ; उड़ते हुए रुईके गुच्छेको पकड़नेके लिये हाथ फैलाया करता है (हायो, लाई, फास, ऐ-फास) या शय्याके पायताने सरक आता है (ऐ-म्यूर, आर्स, बेप्टी, बेल, हेलिबो)। ताण्डव-रोग—रोगी अत्यन्त दुःखित भाव प्रकट करता है और उसका स्वास्थ्य भी बिगड़ जाया करता है। एकाएक उद्भेद लोप हो जाने या आतङ्ककी वजहसे ; शराब पीनेपर बहुत बढ़ जाता है (ऐगार)। मेरुमज्जाका क्षय हो जानेकी वजहसे चलनेकी शक्तिका न रहना, रोगकी पहली अवस्था, जब प्रत्यङ्गोंमें तेज बिजलीकी सलाई गड़नेकी तरह दर्द अनुभव हुआ करता है। जिन बच्चोंकी दाँत निकलता रहता है, उन्हें धनुष्टङ्कार या अकड़न, अकड़न आरम्भ होनेके पहले बच्चा बहुत चिड़चिड़ा हो जाता है, उसकी देह गर्म हो उठती है ; बच्चा रातमें बहुत छटपटाता है, उसके दोनों पैर फड़का करते हैं और उसका दाहिना अङ्ग नाचा करता है या रोगीका चेहरा मलीन और सफेद (लाल—बेल) सरके पिछले भागके सिवा शरीरके और हिस्से बहुत गर्म नहीं रहते, आँख चक्कर खाया करती है और दाँत कड़कड़ाया करता है।

त्वचा ।—सन्धियोंके गासेमें बहुत खुजली पैदा हो जाया करती है। खुजलाते-खुजलाते खुजली-भरे अंशमें इस तरहकी तकलीफ़ मालूम होती है, मानो छुरी बिध रही है, विशेषकर रातमें सोनेवाली अवस्थामें और छूनेपर तुरन्त आराम हो जाती है। ऐसा मालूम होता है, मानो त्वचा और मांसके बीचके स्थानमें चुनचुनी हो रही है। फटी हुई त्वचा, विशेषकर अंगुलियोंके

दरारमें और समूची देहमें दादकी तरह उद्भेद सब निकल आते हैं। जाड़ेके दिनोंके फोड़े या बिवाई, रगड़नेपर बहुत बढ़ जाते हैं।

निद्रा।—बच्चा सोता-सोता रो उठता है, निद्रित अवस्थामें समूची देह फड़का करती है, रोगी भीत और चकित भावसे जाग उठता है और तकियेके एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वमें माथा हिलाया करता है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—शीतावस्थामें नाक, हाथ और पैर ठण्डे। रातमें भोजनके बाद, निर्मल वायु लगनेपर या अन्धड़-पानी होनेकी सम्भवना होते ही शीत आरम्भ होता है, शीत पीठकी राहसे निम्नाङ्गमें उतरता है। कभी शीत और कभी उत्ताप अनुभूत होता है। ठण्डी चीज छूनेपर जाड़ा मालूम होता है। रोगी शीतसे काँपा करता है, उसकी आँख, मुँह बैठ जाते हैं और कितने ही को मिचली हुआ करती है, इसके बाद क्रमसे उत्ताप पैदा हो जाता है, चेहरा लाल हो जाता है, निद्रित अवस्थामें रोगी छटपटाया करता है, क्लान्त हो पड़ता है और बहुत ज्यादा पसीना हुआ करता है। उत्तापावस्थामें प्यास, रह-रहकर उत्ताप पैदा होता है और रोगी हवा करनेके लिये कहता है (कार्बो-वेज)। सारे शरीरमें टपक अनुभव होती है और साँस तेजीसे चला करती है। आन्तरिक उत्ताप और उदरमें शीत मालूम होना, चेहरेपर उत्ताप और सारा शरीर ठण्डा मालूम होता है या लाल हो उठता है और आँखोंमें जलन हुआ करती है। आन्त्रिक या सान्निपातिक ज्वरमें विकार पैदा हो जाता हैं, रोगी शय्यासे उठ भागनेकी चेष्टा करता है (बेल, ब्राई, हायो)। उन्मादकी तरह आचरण करता है, भागनेकी चेष्टा करता है, चिल्लाता और गरजता है! शय्याके नीचेकी ओर पैतानेकी तरफ सरक जाता है, शून्यमें उड़ते हुए रुईकी गुच्छेको पकड़नेके लिये हाथ फैलाता है, शरीरकी पेशियाँ सब फड़का करती हैं। पीठमें शय्याक्षत पैदा हो जाता है और अनजानमें पाखाना-पेशाब हुआ करता है। पसीनवाली अवस्थामें रोगी शरीरपर किसी तरहका वस्त्रकी आवरण नहीं रख सकता, रातभर बहुत ज्यादा पसीना हुआ करता है; पसीनेमें खट्टी गन्ध आया करती है और कुटकुट किया करता है।

वृद्धि।—शराब पीनेपर (अधिकांश लक्षण), छूनेपर या दबानेपर, शरीर हिलानेपर, स्थिर होकर रहनेपर, बैठनेकी अवस्थामें, सोनेपर, शरीर हिलाने, चलने, परिश्रमसे, सन्ध्याके समय और रातमें, दिनके ११ से १२ बजेके बीचमें,

शरीर बहुत गर्म होनेपर, शरीरकी उत्तम अवस्थामें, गर्म कमरेमें रहनेके समय, निर्मल वायु लगनेपर, भोजनके बाद पानी आदि पीनेपर, मिष्टान भोजन करनेपर और दूध पीनेपर।

उपशम।—नियमित स्राव आदि आरम्भ होते ही, जैसे—वायुमार्गके रोग—पेशाब होनेपर; कमरका दर्द—वीर्य-स्खलनके बाद और बाधक आदि रजःस्रावके बाद। रगड़ने और खुजलानेपर (सरका चक्कर) सोनेके बाद, गर्म पानीसे धोनेपर और भोजनके समय (भोजनके बाद बढ़ना)।

सम्बन्ध।—प्रतिविष।—फास्फो, हिपर, इग्ने।

अनुपूरक।—(मस्तिष्कोदक रोगमें) कैल्केरिया-फास।

अनुकूल सम्बन्ध।—बेल, कैल्के, सिङ्कोना, इग्ने, फास, पल्स, रस, सिपि, सल्फ।

सम्बन्ध।—कैमो, नक्स-वोम और शराब।

सदृश।—आर्जेण्ट-नाई, बेल, कार्बो-वेज, कूप्रम, इग्ने, कोबाल्टम, लाई, प्लम्ब, पोडो, पल्स, सिपि, स्ट्रैमोन।

तुलनीय।—ज्वरमें तापका समय ठीक न रहना—पल्स, लाइकोप। तलपेटके लक्षणमें—प्लम्बम, पोडोफाइलम। कम्पन—आर्जेण्ट-नाइट्रि। दमा—कैक्टस। नाकमें अंगुली घुसाना—सिना, अरम। मस्तिष्कमें जल-सञ्चय—कैल्के-फास। पक्षाघात और मस्तिष्कका कोमल हो जाना—फास, प्लम्ब। शुक्र जाना—कोनायम। थकावट—पिक-ऐसिड। नींदके समय चिल्लाकर रोना, भय, जननेन्द्रियपर हाथ देना—स्ट्रैमो। उद्भेद रुकना या बैठ जाना—ब्रायो। पैर हिलाना—टैरेण्ट। भूतका भय—ऐको, आर्स, ब्रोम, लाइकोप, फास, पल्स, सल्फ। वक्षोदक—फैलेण्ड्रि। कमजोरीकी वजहसे उद्भेद नहीं निकलते—कूप्रम, सल्फर। आक्षेप, मुँह पीला और बोखार नहीं रहता (बेलेडो विपरीत)। हाथ या माथा आप-से-आप हिलना—ऐपोसा, हेलिबोरस। पेशीका अति-सङ्कोचन—ऐगारि, इग्ने। अनिवार्य तन्द्रालुता—नक्स-मस, ओपियम। कशेरुकामें सारके साथ निद्रा—ओपियम। जल्दी-जल्दी वीर्यपात—टिटानि। कशेरुकामें जलन—फास्फोरस, लाइकोप। सर-दर्द—इग्ने। तालुकी बीमारी—मैंगेनम।

शक्ति ।—३री दशमिकसे १००० शततमिक क्रम ।

क्रियाका स्थायित्व ।—२० से ४० दिन ।

जिङ्कम म्युरियैटिकम

(ZINCUM MURIATICUM)

दूसरा नाम ।—क्लोराइड आफ जिङ्क ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पानी या सुरासारके साथ क्रम तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—सूंघनेकी या स्वादकी शक्तिमें गड़बड़ी ; किसी पदार्थका स्वाद या गन्ध नहीं मिलती, बिछावनकी चादर नोंचनेकी इच्छा, चर्म नीली आभा लिये हुए, सारे शरीरमें पसीना और ठण्डक इसका निर्देशक लक्षण है । यह एक तेज़ विष है ; निम्न-शक्तिका प्रयोग करना उचित नहीं है । जिङ्कम-मूरके जलीय धावनसे जखम जल्दी आरोग्य हो जाता है ।

शक्ति ।—३०—२०० ।

जिङ्कम आक्सिडेटम

(ZINCUM OXYDATUM)

दूसरा नाम ।—आक्साइड आफ ज़िङ्क ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—खट्टा स्वाद, मिचली, बच्चोंको एकाएक वमन होना, उदरामय और पित्त-वमन, उदरमें वायु-सञ्चय, उदर-शूल, हिचकी प्रभृति लक्षणमें उदरामय और हैज़ा वगैरह आँतोंकी बीमारीमें बहुत फायदा करता है ।

सर्दीका बोखार, आँतोंमें कमजोरी, हस्तमैथुनके कारण उद्वेग और अस्थिरता, रातमें जागनेकी वजहसे उत्पन्न उपसर्ग, नींद न आना, तन्द्रालुता, पर गहरी नींद न आना प्रभृति लक्षणोंमें यह विशेष लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—जिङ्कम-ऐसि ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

जिङ्कम फास्फोरिकम

(ZINCUM PHOSPHORICUM)

दूसरा नाम ।—फास्फाइड आफ जिङ्क ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मस्तिष्ककी क्लान्ति ; कम्पके साथ प्रलाप ; सर-दर्द ; ध्वजभङ्ग ; मूत्रग्रन्थिकी उग्रता ; स्नायुशूल ; पक्षाघात ; नींद न आना ; पाराकी वजहसे कम्पन ।

उपयोगिता और आभास ।—उन्माद, विषादवायु-रोग, दुर्बलता, पक्षाघात, सन्यास, मेरुमज्जाके क्षयके कारण चलनेकी शक्तिका न रहना वगैरह स्नायविक रोगमें विशेषकर उर्द्धाङ्गमें कम्पन मौजूद रहनेपर, इस दवाके द्वारा विशेष लाभ हुआ करता है। रोगी दुबला-पतला और असमयमें ही वृद्धकी तरह दिखाई देता है ; हमेशा कमजोरी और स्नायविक अवसाद अनुभव करता है और नाना प्रकारकी चिन्ताओंकी वजहसे अनिद्रासे उत्पन्न सारे शरीरका स्नायुशूल भी इसके अन्तर्गत आ जाता है। विषयी लोगोंके मस्तिष्कका अवसाद, छुरी मारनेकी तरह ललाटमें प्रचण्ड दर्द, सोनेपर घट जाता है, इस तरहका सरका चक्कर और वृद्ध मनुष्योंकी स्मरण शक्तिका घटना प्रभृतिमें भी इससे बहुत फायदा हुआ करता है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—कैलि-फास, जिङ्कम-पिक्रिकम, फास ।

शक्ति ।—६ ठा दशमिक विचूर्ण ।

जिङ्कम पिक्रिकम

(ZINCUM PICRICUM)

दूसरा नाम ।—पिक्रेट आफ ज़िङ्क ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—अतिरिक्त मैथुन या मानसिक परिश्रमसे उत्पन्न अवसाद ; मस्तिष्ककी कमजोरीके कारण कभी-कभी हतबुद्धिको तरह हो जाना ; स्मरण-शक्तिका लोप हो जाना, उत्साह-हीनता, मुखमण्डलका पक्षाघात, मूत्राशय-प्रदाह रोगके साथ सर-दर्द प्रभृति लक्षणोंमें यह दवा होमियोपैथिक चिकित्सकोंको उल्लेख-योग्य सहायता करती है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—फेरम-पिक्रि, पिक्रि-ऐसिड, फैगोपा ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

जिङ्कम सल्फ्युरिकम

(ZINCUM SULPHURICUM)

दूसरा नाम ।—सल्फेट आफ जिङ्क ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—तरल और विचूर्ण दोनों ही प्रकारमें क्रम तैयार होते हैं ।

उपयोगिता और आभास ।—आँखकी कनीनिकाका प्रदाह और पलकोंके दानेदार प्रदाहको यह एक बहुत बढ़िया दवा है । उच्च शक्तिका सेवन और जलीय धावनके बाहरी प्रयोगसे कनीनिकाका गदलापन दूर होकर फिरसे दृष्टि-शक्ति लौट आती है ; परन्तु इस दवाका बार-बार भीतरी प्रयोग मना है ।

पक्षाघात, उदरामय, आमाशय, हाथ-पैरोंकी अकड़न और काँपना स्नायविक सर-दर्द, हस्तमैथुनके कारण मानसिक उद्वेग आदि बहुतसे उपसर्गोंमें भी इस दवासे बहुत फायदा होता है ।

शक्ति ।—उच्च शक्ति । जलीय धावनका आँखोंमें बाहरी प्रयोग ।

जिङ्कम वैलिरियानिकम

(ZINCUM VALERIANICUM)

दूसरा नाम ।—वैलेरि आफ जिङ्क ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—हृत्शूल ; दमा ; मस्तिष्ककी क्लान्ति ; अतिसार ; दुबलापन ; मृगी ; बवासीर ; विषाद वायु ; मृगीकी तरह हिस्टीरिया ; हिस्टीरियाकी तरह मृगी ; कष्टकर लिङ्गोद्रेक ; वीर्यक्षरण ; ग्रीवाका कड़ापन ।

उपयोगिता और आभास ।—सर-दर्दमें इससे बहुत फायदा हुआ करता है ; प्रचण्ड दर्द मानो छुरी मारी जा रही है, इस तरहके दर्दसे रोगिनी उन्मत्त हो जाती है ; चिल्लाती और अपने केश नोचा करती है ; बार-बार दर्दका आक्रमण होनेकी वजहसे रोगिनीका स्वास्थ्य खराब हो जाता है, उसका चेहरा मलिन और रक्तशून्य दिखाई देता है और धीरे-धीरे उसमें दृष्टि विभ्रम (ठीक-ठीक दिखाई न देना) रोग पैदा हो जाता है। अनिद्रा रोगमें भी यह लाभदायक है ; विशेषकर बच्चोंकी अनिद्रामें—सरमें बहुत दर्द मालूम हुआ करता है, रातमें बार-बार रोगीकी नींद खुल जाती है और हमेशा औंघाई आया करती है। उसका 'चेहरा मलिन और क्लान्ति प्रकट करनेवाला हो जाता है। मुँहका स्नायुशूल, उरुके पिछले भागका स्नायुशूल और डिम्बाशयके स्नायुशूलमें भी यह फायदा किया करता है ; दर्द ऊपरसे पैरके भीतर होकर बिजलीकी तरह तेजीसे नीचे पैरकी ओर उतरता है। मेरुमज्जागत स्नायुशूल और मस्तिष्क मेरुमज्जावरक-प्रदाह रोगमें, रोगी स्नायु-प्रधानता प्रकट करता है, ऐसे स्थानपर भी इससे फायदा होता है। मूर्च्छावायु रोगमें रोगिनीके दोनों पैर या एक पैर हमेशा हिला करता है, वह उसे किसी तरह भी स्थिर नहीं रख सकती। वक्षपर ऐसा मालूम होता है, मानो पत्थरका एक टुकड़ा रखा हुआ है—यह लक्षण भी इसका निर्णायक लक्षण है। हृत्शूल रोगमें भी इससे फायदा हुआ करता है।

शक्ति ।—निम्न-क्रम ।

जिञ्जिबार आफिसिनेलिस

(ZINZIBER OFFICINALIS)

दूसरा नाम।—अदरक या आदी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—शुद्ध अदरक या सोंठसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अण्डनालीका पेशाब; दमा; श्वासमें बदबू; बाहु-पेशीका वात; अतिसार; शोथ; आध्मान; नकसीर; शुक्रक्षरण; प्लीहामें दर्द; पेशाब रुकना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—इसके कई प्रधान लक्षण ये हैं:—(१) अम्ल या उदरामय रोगमें मुँहका स्वाद कड़वा और गोंदकी तरह। (२) गोंदकी तरह लसदार पदार्थका वमन, विशेषकर पुराने शराबियोंका। (३) फूट, तरबूज इत्यादि खानेके कारण पाकाशयकी बीमारी। (४) सवेरे पाखाना हो जानेपर मिचली। (५) आध्मानकी अधिकता। (६) सवेरेके समयका उदरामय। (७) गन्दा पानी पीनेके कारण पतले दस्त। (८) पेशाब अधिक सञ्चय होना; सान्निपातिक ज्वरके बाद मूत्र रोध। (९) दोनों मसानेमें धीमा-धीमा दर्द और बार-बार पेशाबका वेग। (१०) रजःस्राव—एकदम असमयमें रजःस्राव होता है, स्राव बहुत ज्यादा, रक्तका रङ्ग घोर लाल, और जमा हुआ। (११) सूखी, वक्षको फाड़ डालनेवाली खाँसी; खाँसनेपर फेफड़ेमें दर्द और श्वासकष्ट; सवेरे बलगम निकला करता है। (१२) श्वास—रातके अन्तिम भागमें, रोगी सो नहीं सकता, एक जगह बैठा रहता है; थोड़ा-सा बलगम निकल जानेपर आराम मालूम होता है। (१३) ज्वराधिकारमें निम्नाङ्गसे शीत आरम्भ होकर ऊपरकी ओर चढ़ता है। (१४) रोगीको शीत और उत्ताप दोनों ही मालूम होता है।

लक्षणावली

मस्तक।—रोगी खासकर आनन्दमें रहता है—किसी तरह उसकी फुर्त्ती नहीं घटती। माथा बहुत बड़ा मालूम होता है (ऐपियोल, आर्जेण्ट-नाई, ग्लोन)। पाकाशयिक सर-दर्दमें—भौंहें और नाककी जड़में दबाव मालूम

होता है (हाइड्रैस्ट, कैलि-बाई), जरा भी परिश्रम करनेपर इस तरहका दर्द पैदा हो जाता है। सर-दर्द, बायीं आँखके ऊपरी भागमें दर्द अधिक मालूम होता है। भौहोंमें दर्द होनेके बाद मिचली पैदा हो जाती है। ठण्डी जलीय वायुमें चलनेके समय माथेके ऊपरसे भीतरकी ओर दबाव मालूम होना।

आँख।—आँखमें जलन और करकराहट मालूम होती है; आँखमें रोशनी सहन नहीं होती—ऐसा मालूम होता है, मानो डङ्क मार रहा है; आँखमें ऐसा मालूम होता है, मानो बालू गिर गयी है (आर्स, कास्टि, कोरैल, ऐ-फ्लू, हिप, साइलि)।

नाक।—नाकसे स्राव और नयी सर्दी, घरके बाहर रहनेपर स्राव बढ़ जाता है (इयुफ्रे, ग्रैफ, पल्स, सल्फ)। नाकका पिछला छेद सूखा और रुका मालूम होता है और खाँसनेपर वहाँसे गाढ़ा श्लेष्मा निकलता है।

मुखमण्डल।—निचले हनुके बायें पार्श्वमें और दांतमें अकड़न मालूम होती है। क्लान्ति प्रकट करनेवाली शकल और आँखमें नीलापन दिखाई देता है, विशेषकर ऋतु आरम्भ होनेके पहले।

मुख-विवर।—सवेरे मुँहका स्वाद लसदार हो जाता है और कड़वा स्वाद मालूम होता है। पाचन क्रियाकी गड़बड़ीकी वजहसे रोगिनीके मुँहमें बदबू पैदा हो जाती है और वह स्वयं भी उसे अनुभव किया करती है। ओंठ सूखे, निगलनेमें तकलीफ मालूम हुआ करती है, मानो कुछ राह रोके हुए है। कण्ठमें श्लेष्माका अधिक सञ्चय होना।

पाकस्थली।—मुँह सूखा और बहुत प्यास मालूम होती है। रोटी खानेपर सर-दर्द और पाकस्थलीमें दबाव मालूम होता है। फूट, तरबूज आदि खानेकी वजहसे बीमारियाँ। वायु छूटना और उदरामय। सवेरे पाखाना होनेपर मिचली। पुराने शराबियोंका गोंदकी तरह पदार्थ वमन। क्षीण अग्नि—जो खाता है, वह अच्छी तरह पचता नहीं है और बहुत देरतक पाकस्थलीमें रहनेकी वजहसे पत्थरकी तरह कड़ा हो जाता है और पेट भारी हो जाता है।

अन्लाशय।—खड़े होनेवाली अवस्थामें उदरमें एक ओरसे सङ्कोचनकी तरह दर्द पैदा हो जाता है और दूसरी ओर जाता है और इसके बाद ही

पाखाना लगता है। उदरमें बहुत आध्मान वायु और कड़ा पाखाना होना, बायीं कोखमें तेज दर्द।

मलांत्र और मल।—गदला कीचभरा पानी पीनेके कारण पतले दस्त आना (कैम्फो, वेरेट, लिलियेन्थल)। मल भूरा—आँव-भरा, वृद्धि—सवेरे (ऐलो, पोडो, सल्फ़, नेट-सल्फ़), पाचन क्रियामें गड़बड़ी होनेपर और जलीय शीतल वायु लगनेपर। मलद्वारमें और उसके चारों ओर जलन, झिल्लीका लाल हो जाना और खुजली—अर्श रोगमें। शिराओंके अर्बुद सब गर्म और उनमें बहुत दर्द रहता है, सोने या बैठने दोनों ही अवस्थाओंमें।

पेशाब।—पेशाब अधिक सञ्चय होना। पेशाब गाढ़ा, गदला या घोर भूरे रङ्गका और तेज़ गन्ध भरा। पेशाबके समय मूत्रनलीके दरवाजेपर दर्द मालूम होता है। दोनों मसानेमें अस्पष्ट धीमा-धीमा दर्द और बार-बार पेशाबका वेग।

पुं-जननेन्द्रिय।—काम प्रवृत्तिकी उत्तेजना, रातमें वीर्य-स्खलन।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रजः—अत्यन्त असमयमें रजःस्राव आरम्भ हो जाता है। स्राव बहुत ज्यादा, घोर लाल रङ्गका या थक्का-थक्का (ऐक्टिया, ऐमोन-म्यू, कैमो, काक्यु, क्रोकस, साइक्लेमेन, फेरम, हेलोन, लैके, प्लैट, पल्स, सैङ्गिविन, सिकोलि, आस्टि)।

श्वासयन्त्र।—स्वरभङ्ग। स्वरनलीके निचले अंशमें उत्तेजना मालूम होने बाद खाँसी आने लगती है और बलगम निकला करता है। श्वास-प्रश्वासमें बहुत तकलीफ; रातमें यह कष्ट बहुत बढ़ जाता है। श्वास रोग—हरेक दिन रातके अन्तिम भागमें यह प्रकोप पैदा हो जाता है। रोगी एक जगह बैठा रहता है, सो नहीं सकता (ऐण्टि-टार्ट, कैलि-कार्ब, कैलि-नाई, लैके, नेजा, फास, स्पञ्जि), परन्तु उसमें किसी तरहकी चिन्ता नहीं पैदा होती। स्वरनलीके बायें पार्श्वमें खुजलीकी वजहसे सूखी कलेजा फाड़ डालनेवाली खाँसी। खाँसनेपर फेफड़ेमें दर्द और साँसमें कष्ट अनुभव होता है। सवेरे बहुत ज्यादा बलगम निकला करता है। वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (ब्राई, कैलि-कार्ब, रैनान-बल्बो, रैनान-साइलि, स्क्विला)। हृत्प्रदेशमें दबाव या डङ्क मारनेकी तरह दर्द (कोलचि, स्पञ्जि)।

प्रत्यङ्ग ।—सर-दर्द और मिचली रोगमें गर्दनके पिछले भागका अकड़ जाना। कमरका दर्द—मानो यह कमजोरीसे पैदा हो गया है (कुरारी); वृद्धि—बैठनेकी अवस्थामें (बावें) और किसी चीजपर अड़कन लगाये रहनेपर (देरतक सोये रहनेपर—कुरारी)। पीठका निचला अंश अवशकी तरह मालूम होता है, मानो किसीने इस अंशपर आघात किया है या चलनेपर (काक्यु) या बहुत देरतक खड़े होनेके कारण। प्रत्यंङ्ग जड़ता-युक्त, भारी और अवश मालूम होना। वातकी वजहसे अकड़न। दोनों पैर फूले और दर्द-भरे।

सार्वाङ्गिक ।—मुँहसे फेन निकलता है, लगातार पेशाब और अकड़न या पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना। अत्यन्त क्षीण और सुस्तकी तरह भाव; रोगी सोया रहना पसन्द करता है। रातमें सभी प्रत्यंग एकदम बेचैन हो पड़ते हैं। रोगी उन्हें किसी तरह भी स्थिर नहीं रख सकता।

निद्रा ।—रात तीन बजनेके समय नींद खुल जाती है और फिर देरतक सोया रहता है (नक्स)।

सम्बन्ध ।—**प्रतिविष—दोषघ्न** ।—नक्स-वोमिका।

तुलनीय ।—पाकाशयमें भार मालूम होना--ऐबिस-नाइग्रा। रातके ३ बजनेके समय जाग जाना—नक्स।

सदृश ।—स्ट्रिकनिया।

शक्ति ।—निम्न-क्रम ही व्यवहृत होता है।

जिज़िया औरिया

(ZIZIA AUREA)

दूसरा नाम ।—थैस्पियम आरियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़से अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— व्याधि-दमा; मस्तिष्ककी बीमारी; सर्दी; ताण्डव; आक्षेप; शोथ; मृगी;

शङ्का; मूर्च्छावायु; श्वेत-प्रदर; ऋतु-लोप; अधकपारीका दर्द; डिम्बाशयका सविराम रह-रहकर होनेवाला स्नायुशूल; फेफड़ेका आवरणका प्रदाह; आध्मान।

उपयोगिता और आभास।—मूर्च्छावायु और अवसाद वायु-ग्रस्त रोगिनीमें, रोगीके मनमें आत्महत्या करनेकी इच्छा और बहुत दुःखित भाव। रोगी अभी हँसी-दिल्लगी कर रहा था; क्षणभर बाद ही रोने लगता है। इस तरहकी मानसिक अवस्थाका परिवर्त्तन रहनेपर जिज़िया द्वारा बहुत ज्यादा फायदा होता है। रमणके बाद शरीर बहुत शिथिल और आलस्यसे भरा हो जाता है। निद्रित अवस्थामें भी अपस्मार या मृगी और ताण्डव रोगका प्रकोप बढ़ जाना और दोनों पैरोंका बहुत अधिक अस्थिर रहना—किसी तरह भी पैर स्थिर नहीं रखा जाना—यही इसका निर्णायक लक्षण है।

लक्षणावली

मन।—इस तरहका आनन्द और स्फूर्त्ति मानो शराब पीता है और इसके बाद ही गहरी औंघाई। अभी हँसी-दिल्लगी कर रहा था, पर क्षणभर बाद ही रोना आरम्भ कर देता है (एकोन, आरम, काफिया, लाई, फास, टैरेण्ट)। कभी-कभी बहुत मुह्यमान और विह्वल भाव हो रहा था, पर क्षणभर बाद ही अच्छी तरह आनन्द प्रकट करता है (नक्स-मस, नेट्र-मूर, फास)। जीवनसे वितृष्णा (ऐण्टिम-क्रूड, अरम, सिङ्को, लैक-डिफ्लो, नेट्र-मूर, फास)। मनमें आत्महत्या करनेकी वासना छिपी रहती है (ऐकि-रेसि, अरम, हायो, लैके)।

मस्तक।—माथा और चेहरेपर रक्त-सञ्चय और उसमें पूर्णता अनुभव होना। माथा मानो कसकर बँधा हुआ है, चारों ओरसे (आर्जेण्ट-नाई, कास्टि, मर्क स्याइजि)। दाहिनी आँखके ऊपरी प्रदेशमें भयानक यन्त्रणा-जनक सर-दर्द (आर्जेण्ट-नाई, सेङ्गिविन, सिपिया); रोगिनीको बाध्य होकर अँधेरे घरमें सोये रहना पड़ता है (सैंगिविन); वृद्धि—सन्ध्याके बाद, कमरमें दर्दके साथ और खाँसनेपर (ब्राई, कैप्स, नेट्र-मूर, स्क्विला)।

आँख।—दोनों आँखें लाल दिखाई देती है। दाहिने चक्षुगह्वरमें तेज दर्द; वृद्धि—चक्षु-गोलक हिलानेपर, झुकानेपर या चलनेपर। पीली

आभा लिये कीच निकलता है और पलकें जुड़ जाती हैं। दाहिनी पलकपर गुहौरी (नेट्र-म्यूर, स्टैफ, ऐमोन-कार्ब)। आँखमें रोशनी सहन नहीं होती।

नाक।—नाकमें सर्दी, साँस खींचते ही छींक और खाँसी आती है; नाकसे गाढ़ा श्लेष्मा निकलता है (कक्कस, हिपर, हिपोजिन, हाइड्रैस्ट, कैलि-बाई)।

मुखमण्डल आदि।—चेहरा म्लान और फूला-फूला, एक गाल लाल, दूसरा मटमैला (कैमो, इपिक, ऐकोन, सिना, लैके, मस्कस, नक्स, पल्स)। गण्डास्थिमें इस तरहका दर्द मानो छेद हो रहा है (मेजिर), जीभ लाल, क्या ठण्डी, क्या गर्म सब तरहकी चीजोंका स्पर्श सहन नहीं होता। गल-ग्रन्थि और तालु कुछ लाल और उसमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता। कण्ठसे बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकलता है। खट्टी अथवा मादक चीजें पसन्द करता है। पेट दबानेपर मिचली और सुस्ती मालूम होती है।

पुं०-जननेन्द्रिय।—रमणके बाद आलस्य और सुस्ती मालूम होती है (ऐगार)। लगातार दो राततक स्वप्न-दोष होता है। काम-प्रवृत्तिकी उत्तेजनाकी अधिकता।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु होता समयपर ही है, पर १२ घण्टेके बाद बन्द हो जाता है। एकाएक ऋतु रुक जाना। देरसे ऋतु होना, इसके बाद प्रदर पैदा हो जाना, स्राव कभी हलका और कभी कषाय या पहले कषाय और अन्तमें मृदु और बहुत ज्यादा। बायें डिम्बाधारमें रह-रहकर स्नायुशूल या शूलका दर्द (आस्टिलेगो)।

श्वासयंत्र।—सूखी खाँसी, खाँसनेपर वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द अनुभव होता है (ब्राई, कोना, लैके, मर्क)। खाँसते-खाँसते स्वर-नलीमें जखम हो जाता है; श्वास-कष्ट—सोया नहीं रह सकता (ऐण्टि-टार्ट, आर्स, कैलि-कार्ब, कैलि-नाइ, लैके, नैजा, फास, स्क्विया), फुसफुसावरणमें सुई गड़नेकी तरह तेज़ दर्द (चेलिडो, कैलि-कार्ब, रियुमेक्स)। वक्षकी पेशी सबमें दर्द होता है (फाइटो)। अग्रमांसके ऊपर चारों ओर दर्द और स्पर्शका सहन न होना। दाहिने अंसफलकके नीचे अस्पष्ट दर्द (इरिडियम)। फुसफुसावरणमें नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द; बढ़ना—खाँसनेपर या गहरे श्वास-प्रश्वाससे (ब्राई)।

प्रत्यंग ।—असम्भव सुस्ती मालूम होना ; ताण्डव रोगके कारण प्रत्यङ्गोंका स्पन्दन, विशेषकर निद्रित अवस्थामें (व्य्फो, कूप्रम, टैरेण्ट ; मुखकी और प्रत्यङ्गोंकी पेशी सबमें आक्षेपिक स्पन्दन । निद्रित अवस्थामें मृगीकी तरह प्रकोप (व्यू फो, कूप्रम) । दोनों बाँह कन्धेसे अवश मालूम होते हैं । दाहिने बाँहमें कुटकुटाहट होते-होते वह सुन्न हो जाता है । जरा परिश्रम करनेसे ही दोनों पैरोंमें बहुत थकावट मालूम होती है ; मुखमण्डल और एँड़ीमें सूजन हो जाती है । दोनों पैर फड़कते हैं । किसी तरह भी स्थिर नहीं रखे जाते (टैरेण्टु, जिङ्कम) ।

वृद्धि ।—छूनेपर, दबानेपर, सोनेपर, गहरी साँस लेनेपर और शरीर हिलानेपर ।

दोषघ्न ।—पल्स (सर-दर्द) ; कार्बो-ऐन (गुहौरी) ।

तुलनीय ।—एक गाल लाल—कैमो । जरायुमें रक्तकी अधिकता—सिपिया । नींदके समय ताण्डव—टैरेण्टु । एक बार रोना और फिर हँसना—कैल्के, इग्ने, नक्स-मस, पल्स, स्ट्रैमो ।

सम्बन्ध ।—**सदृश**—ऐगारि, व्य्फो, कैमो, इपिक, कूप्रम ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३रा और ६ठा क्रम ।

नौषधावली

(NOSODES)

द्रष्टव्य ।—किसी रोगके विष या बीजसे उसी रोगकी या वैसे ही लक्षणवाले रोगकी दवा तैयार करनेपर उसे अङ्गरेजीमें नोसोडस (Nosodes) कहते हैं । हमलोगोंने उसका नाम "नौषध" रखा है । क्योंकि संस्कृत भाषामें "न" अव्ययका एक अर्थ—"वही" अर्थात् "जो रोग वही दवा" होता है । संस्कृत चिकित्सा-शास्त्रके निम्नलिखित श्लोकसे इस तरहकी दवाका आभास मिलता है :—

कश्चिद्धि रोगो रोगस्य हेतुर्भूत्वा प्रशाम्यति ।
न प्रशाम्यति चापन्यो हेतुत्वं कुरुतेऽपि च ॥

इस तरहकी बहुत-सी दवाओंका आविष्कार हुआ है। उनमें कई निम्नलिखित प्रधान औषधियाँ यहाँ संक्षेपमें लिखी जाती है :—

(१) Anthraxinum
ऐन्थ्राक्सिनम

(२) Bacillinum
बैसिलिनम

(३) Diphtherinum
डिफ्थीरिनम

(४) Hippozæninum
हिपोजिनिनम

(५) Hydrophobinum
हाइड्रोफोबिनम

(६) Malandrinum
मैलेण्ड्रिनम

(७) Medorrhinum
मिडोरिनम

(८) Psorinum
सोरिनम

(९) Pyrogenium
पाइरोजिनियम

(१०) Syphilinum
सिफिलिनम

(११) Thyroidinum
थाइरायडिनम

(१२) Vaccininum
वैक्सिनिनम

(१३) Variolinum
वैरियोलिनम

ऐन्थ्राक्सिनम

(ANTHRAXINUM)

दूसरा नाम ।—ऐन्थ्राक्स प्वायजन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—रोगी भेंड़के प्लीहाके विषैले व्रणके पीवसे यह दवा तैयार होती है । डा० वेवरने इसको पहले-पहल तैयार किया ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मुँहासा ; फोड़ा ; दूषित-व्रण ; विसर्प ; सड़नेवाला जखम ; सड़नेवाला कर्णमूल ; सूजन-मिला प्रदाह और जखम ; चेचक ; प्लीहा ज्वर ; जखम ; अंगुलबेढ़ा ।

उपयोगिता और आभास।—दूषित व्रण; विकार पैदा करनेवाला पीव सोख जानेके कारण प्रदाह और विषाक्त जखम इत्यादि; इसके बाद बार-बार सड़नेके कारण शल्क या खाल उधड़ जाती रहना और असह्य प्राणान्तक जलन रहनेपर "ऐन्थ्राक्सिनम" प्रयोग करनेपर बहुत अधिक लाभ होता है, खासकर जब आर्सेनिकसे यह जलन नहीं जाती—यह लक्षण दिखाई देनेपर (पर यदि ऐन्थ्राक्सिनमके प्रयोगसे भी जलन दूर न हो तो "इयुफोर्बियम" का प्रयोग करना चाहिये)। गलनेवाले जखम, विषैला व्रण (Carbuncle), विष-स्फोटक और विषाक्त विसर्पकी तरह प्रदाह; अंगुलवेढ़ा—जब किसी तरह भी जलन और गलना नहीं रुकता, जलनसे रोगी उन्मत्त हो उठता है (ऐ-कार्बोल, आर्स, लेके), विष-व्रण; काला या नीले रङ्गका जो २४ घण्टोंमें ही सांघातिक आकार धारण कर लेता है (लेके, पाइरोजिन), पीव सोख जाना या रोगीके शरीरमें खूनके साथ पीव मील जानेके कारण ज्वर—दो-एक दिनोंमें ही रोगीमें उठनेकी शक्ति नहीं रह जाती, नाड़ी क्षीण और लोप हो जानेकी तरह हो जाती है और उसपर भी प्रलाप प्रकट हो जाता है और क्षण-क्षणमें मूर्च्छा आ जाया करती है (पाइरोजिन); विस्फोटक, वर्णनातीत प्राणान्तक यन्त्रणा और उससे मैलकी तरह रस निकलना (टेरेण्ट); मुर्दा चीरनेके समय अपने ही शरीरमें यदि छुरी लगकर जखम हो जाये, खासकर यदि यह जखम सड़ने लगे, बोखार आने लगे और रोगी बहुत क्षीण हो जाये (आर्स, पाइरोज), विषैले कीड़े आदि काटनेकी वजहसे प्रदाह, भयानक जलन और तकलीफ; सड़ी गन्ध आदि नाकमें जानेकी वजहसे बीमारियाँ; रक्तस्राव—मुँह, नाक, मलद्वार और जननेन्द्रियसे भयानक रक्तस्राव, रक्त गाढ़ा, अलकतरेकी तरह काला और बिगड़ा हुआ (क्रोटेलस-होरिड, कैलि-फास, लेके); ग्रन्थियाँ सब और कौषिक यन्तु बहुत फूल उठते हैं, बहुत दर्द होता है और लोहेकी तरह कड़ापन अनुभव होता है। निचले हनुके दाहिने पार्श्वमें और उसके नीचेवाली ग्रन्थि फूली और पत्थरकी तरह कड़ी हो जाती है (असम-मूर-नेट) इत्यादि रोगमें और अवस्थामें यह नौषध लाभदायक है। नीचे लिखे कई इसके निर्णायक लक्षण हैं:—मानो माथेके भीतर गर्म धूँआ बह रहा है; उदर—वक्ष-व्यवधायक पेशी, मानो सामनेकी ओर धक्का देती आती है; प्लीहाका बढ़ना, निकला हुआ खून जमता नहीं है; बगलकी गांठ फूली।

लक्षणावली

मन।—उत्कण्ठा, प्रलाप, बेहोशी; रोगिनी समझती है, कि मृत्यु आना ही चाहती है या आसन्नप्राय है।

मस्तक।—माथेकी जड़ता, सरमें चक्कर, सरमें दर्द, मानो माथेके भीतरसे थोड़ेसे धुएँके साथ उत्ताप पैदा करनेवाला दर्द जाता है। कम्पके साथ सर-दर्द; माथेका फूलना।

आँख।—कनीनिकाका फैलना, पीली आभा लिये हरी सूजन, वह पलकके बीचसे अर्द्ध-स्वच्छ भाव ग्रहण कर लेता है।

कान।—कानमें घण्टा बजनेकी तरह आवाज; सड़नेवाला कर्ण-मूल।

नाक।—नाकके भीतरकी स्लैष्मिक-झिल्लीमें खून जमा होना। नाकका दाहिना भाग बहुत लाल।

मुखमण्डल।—मुँह खोल नहीं सकता, जीभ नहीं दिखा सकता; दाहिनी ओरके जबड़ेके नीचेकी गाँठका फूलना, चिबुकके नीचे पत्थरकी तरह कड़ी सूजन।

जीभ।—सूखी, भूरे रङ्गकी, गहरे लेप और काँटोंसे ढँकी।

मुँहके भीतर।—मुँह और नाकके भीतर रक्तस्रावी अवस्था, मुँहके भीतर दूषित फोड़ा; मुँहसे बदबू आना।

गलेके भीतर।—गलेके भीतर और स्वरनलीके चारों ओर गाढ़ापन और सूजन।

भूख।—भूख न लगना और पाकाशयका शूल। स्लैष्मिक-झिल्लीकी रक्तस्रावी अवस्था।

उदर और तलपेट।—मानो आँख और उदर व्यवच्छेदक पर्दा सामनेकी ओर अड़ गया है। प्लीहाका बढ़ना। कम्पके साथ पेटमें दर्द। उदरका फूलना, रक्तस्राव।

मलान्त्र और मल।—वमनके बाद बिना दर्दका रक्तमय मल, अतिसारके साथ ज्वर; विसूचिकाकी तरह हिमाङ्गावस्था।

मूत्रयन्त्र।—मसाना या मूत्रग्रन्थिकी सूजन।

श्वासयन्त्र।—कष्टकर तेज़ श्वास-प्रश्वास; फेफड़ेमें रक्तकी अधिकता।

नाड़ी और हृत्पिण्ड।—कलेजा धड़कना, दुर्बल नाड़ी, नीलापन, खून जमता नहीं है।

पीठ और अङ्ग-प्रत्यङ्ग आदि।—बगलकी गांठ फूलना, अङ्ग-प्रत्यङ्गमें दर्दके साथ बोखार। अङ्ग-प्रत्यङ्गका शोथ। जखम, सड़नेवाला जखम, अंगुलबेढ़ा।

स्नायु।—अत्यन्त बेचैनी, मृगीकी तरह आक्षेप, धनुष्टङ्कारकी तरह अकड़न, नीलापन, जलन।

निद्रा।—निद्रालुता, अस्थिर निद्रा, प्रलाप, गहरी तन्द्रा।

ज्वर।—कम्पके साथ कमजोरी, सर-दर्द, प्रबल ज्वरके साथ प्रलाप; प्यास, कमजोरी पैदा करनेवाला पसीना। सान्निपातिक लक्षण।

त्वचा।—खाल उधड़ना, रस बहनेवाले उद्भेद। खुजलीके साथ रुखड़ी त्वचा। काले या नीले रङ्गके छाले। दूषित व्रण, दूषित फोड़े, सड़नेवाले जखम, चेचक इत्यादि।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐसिड-कार्बोलिक, आर्स, केल्को, सल्फ, इयुफोर्बियम, कार्बो-वेज, कैलि-फास, लैके, पाइरोज, सिकेलि, टैरैण्टियुला, क्रोटेलसहोरिड।

तुलनीय।—एन्थ्राक्सिनम—बोवि, आर्स, कार्बोलिक-ऐसिड, कार्बो-वेज, ऐचिनेसिया, टैरेण्टुला, लेकेसिस (कैन्सर और विसर्पका दर्द)।

प्रतिविष।—एपिस, आर्स, कैम्फो, कार्बो-वेज, ऐ-कार्बोल, सिङ्को, क्रियो, लैके, पल्स, रस, वेरेट।

शक्ति।—३० शततमिकसे २०० या उससे भी ऊँचा शततमिक क्रम।

बैसिलिनम टियुबर्क्युलिनम

(BACILLINUM TUBERCULINUM)

दूसरा नाम।—क्षयकास रोग-ग्रस्त रोगीके फेफड़ेके जखमके भीतरवाले कीटाणु और पीबसे यह दवा तैयार होती है।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—**बैसिलिनम** (डा० बार्नेट द्वारा वर्णित और डाक्टर हिट् द्वारा प्रस्तुत), यह क्षय-कास रोगीके बलगम या थूकसे तैयार हुआ करता है। भिन्न-भिन्न रूपोंसे इसकी परीक्षा की गयी है।

टियुबर्क्युलिनम।—इसको टियुबर्क्युलिन आफ काक कहते हैं। क्षय-रोगीके फेफड़ेके कीटाणुसे यह तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें **बैसिलिनम** लाभदायक है :—तलपेटकी ग्रन्थि बढ़नेकी बीमारी ; खल्वाट पड़ जाना ; क्षय रोग हो जानेकी सम्भावना ; बुद्धिका दोष ; मस्तिष्कमें जल संचय ; जड़-बुद्धिता ; उन्माद ; सन्धिकी बीमारी ; दादकी तरह उद्भेद ; गण्डमाला दोषयुक्त ग्रन्थि ; दाँतकी बीमारी और यक्ष्मा-कास।

नीचे लिखे रोगोंमें टियुबर्क्युलिनम लाभदायक हैं।—मुँहासे ; अण्डलाल मिला पेशाब ; उपाङ्ग-प्रदाह ; दमा ; अस्थि-क्षय-रोग ; श्वासनलीका प्रदाह ; सर्दीसे पैदा हुआ फेफड़ेका प्रदाह ; नीहारकण्डु ; आँखके सफेद अंशका मैलापन ; जखम ; दाँत निकलना ; विसर्प ; लाली ; खून मिला पेशाब ; खून मिला खाँसी और रक्तोत्कास ; सर-दर्द ; हृद्कम्प ; बहुव्यापक सर्दी ; श्वेत कुष्ट (धवल) ; श्वेत प्रदर ; फेफड़ेकी सूजन या शोथ ; मुँहका एक तरहका सफेद रङ्गका जखम ; उन्माद ; मूत्रग्रन्थि-प्रदाह ; रातमें भय ; पक्षाघात ; यक्ष्माकास ; फेफड़ेके आवरणका प्रदाह ; नया फेफड़ेका प्रदाह ; गुटिका रोग।

उपयोगिता और आभास।—इसका प्रकृत क्षेत्र है—गोरा रङ्ग, जुड़ी हुई भौंहें, दुबला-पतला समतल और पतली छातीवाला मनुष्य ; अपने उमरकी अपेक्षा अधिक बुद्धिमान और क्षीण देह और जिनकी देहमें क्षय रोगका विष या क्षय विष है। जब ऐसे रोगियोंकी खूब ध्यान देकर चुनी हुई दवासे भी लाभ नहीं होता या लाभ स्थायी नहीं होता या अधिक फायदा नहीं होता,

उस समय रोग क्या है, इस बातपर ध्यान देकर "बसिलिनम" या टियुबकुर्लिनमका हमेशा प्रयोग करना चाहिये। इसका एक और भी सिद्धिप्रद लक्षण यह है, कि लक्षण बदला करते हैं अर्थात् कभी रोगीका फेफड़ा, कभी मस्तिष्क, कभी मसाना, कभी यकृत, कभी पाकस्थली और कभी-कभी स्नायुओंपर आक्रमण हुआ करता है; लक्षण आदि एकाएक पैदा होते हैं और एकाएक गायब हो जाते हैं। जभी-तभी रोगीको सर्दी लग जाया करती है; खूब सावधान रहनेपर भी ऐसा ही हुआ करता है; कैसे और क्योंकर सर्दी लग गयी, यह रोगी किसी तरह भी स्थिर नहीं कर पाता; रोगीके शरीरमें ठण्डी हवा लगते-न-लगते उसे सर्दी हो जाती है (हिपर, सोरिनम)। रोगी दिनोंदिन दुबला होता जाता है; अच्छी तरह खाता-पीता है, पर दुबलाता ही जाता है (ऐब्रोट, कैल्के, कीना, आयोड, सैनिक, नेट्र-म्यूर)।

लक्षणावली

मन।—बच्चा जड़ बुद्धि, हमेशा उसके मुँहसे लार चुआ करती है और बुद्धि बहुत स्थूल (बैराई, थाइरायड), सर्वदा दुःखित, निराशासे भरा; मुह्यमान, चिड़चिड़ा और सभी विषयोंमें असन्तोष प्रकट करता है। किसीके साथ बोलता या बातचीत नहीं करता, चुपचाप बैठा रहता है; स्वभावतः मधुर स्वभाव, पर इस समय मानो पागल हो बन गया है। निराशा अधिकांश स्थानोंमें वर्त्तमान रहती है। मानसिक परिश्रमसे विराग। बहुत दुःखित भाव,—रोता है, पर क्यों रोता है, यह कह नहीं सकता (कैम्फोरा)। संध्यासे आधी राततक चित्तमें चंचलता और उद्वेग। अपनी उमरकी अपेक्षा अधिक बुद्धिमान (मर्क) और बलिष्ठ। ज्वरके समय उद्वेग। ज्वरके समय बहुत बकता है। जीवन भारी मालूम होता है। रोगी जिस कमरेमें रहता है, उस कमरेकी सभी चीजें उसे अपरिचित मालूम होती है और ऐसा मालूम होता है, कि इन्हें पहले कभी न देखा था। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह किसी अपरिचित स्थानमें आ पड़ा है (सिपिया—अच्छी तरह जाना-बूझा रास्ता भी अपरिचितकी तरह मालूम होता है—ग्लोन)। देश देशान्तर देखनेकी अनिवार्य वासना। रातमें लगातार दुश्चिन्ता। असभ्य, कलह-प्रिय; शय्यासे उठनेकी शक्ति नहीं रहती। लगातार और सभी विषयोंसे चिढ़ प्रकट करता है। रातमें मनमें नाना प्रकारके भाव उदय होते हैं—एक भाव बिलीन होते-न-होते दूसरा पैदा हो जाता है।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना रोगमें मिचली (चिनिन-सल्फ, फेरम, ग्लोन, हेलिबो, नक्स, पेट्रोल, फास) और सर-दर्द (एपिस, बेल, कैल्के, नक्स, फास, साइलि) और भयानक सुस्ती मालूम होती है (फेरम-फास)। सर-दर्द—पुराना कभी-कभी होनेवाला और क्षय रोगके विषकी वजहसे दर्द, प्रचण्ड, तीक्ष्ण और छेदनेकी तरह और दाहिनी आँखसे माथा भेदकर सरके पिछले भागमें चला जाता है, मानो एक लोहेके बन्धनसे माथा घिरा हुआ है (ऐ-कार्बोल, ऐनाक, सल्फ, जेन्थकसाइलम), जब ऐसे स्थानपर बड़े यत्नसे चुनी हुई दवासे भी फायदा नहीं होता। पढ़नेवालोंका सर-दर्द (ऐ-फास, ऐक्टिया-रेसि, कैल्के-फास, कैलि-फास, नेट्र-म्यूर ; वृद्धि—अध्यायन करने या थोड़े भी मानसिक परिश्रमसे—ऐ-फास, कैल्के-फास, नेट्र-म्यूर, कैलि-फास) और कई सूक्ष्म जरदोजी आदिका काम करनेपर, दृष्टिसे अधिक काम लेनेके कारण तथा जिस समय चश्माका प्रयोग करनेपर भी कोई लाभ नहीं होता (कैलि-कार्ब, लाई, नैट-म्यूर, रोडो, रियुटा, साइलि), विशेषकर यदि रोगीके धातुमें क्षय रोग छिपा रहे। सर-दर्दका बढ़ना—बहुत परिश्रमसे, मानसिक उत्तेजनासे, बहुत ज्यादा खानेपर, बहुत गर्मसे और पाचनमें गड़बड़ी होनेपर। नया मस्तिष्कावरण प्रदाह, मस्तिष्कमें रक्त-क्षरणकी आशङ्का रहनेपर (आयोडोफार्म), रातमें रोगीको नाना प्रकारकी छाया मूर्त्तियाँ सब दिखाई देती हैं ; एकाएक नींद खुलनेपर चकित विस्मितकी तरह चारों ओर देखता है और चिल्लाया करता है (एपिस, हेलिबो, सल्फ, जिङ्कम)—जब अन्तवाली चारों दवाओंमेंसे किसीसे लाभ नहीं होता (एच० सी० ऐलेन)। सरकी दाद, समूचे माथेकी त्वचा बहुत बिगड़ी और दादसे छिपी रहती है। लग्नकच या जटा-भरे केश (बोरेक्स, सोरिन)।

आँख ।—आँखकी पलकोंपर दादकी तरह उद्भेद (टेल्यु)। पलक और पलकके जोड़के स्थान फूले, सवेरे पलक फूल जाया करती है और सरमें दर्द अनुभव हुआ करता है। आँखके सफेद त्वचाका नया प्रदाह, उसके चारों ओर मैलापन दिखाई देता है और उसके निचले अंशमें छोटा जखम पैदा हो जाता है। दाहिनी आँख बहुत फूल जाती है और उसकी योजिका लाल हो उठती है और जलन हुआ करती है। दोनों आँखें जड़तायुक्त, शुष्क और भारी मालूम होती है और आँखके सामने अन्धेरा मालूम होता है (इग्ने, नेट्र-म्यूर)। सरमें चक्कर आना रोगमें आँखसे दिखाई न देना या चारों ओर अन्धेरा मालूम होता

है (ऐ-ना, ओपि, स्ट्रैमोन)। आँखके सामने भयानक यन्त्रणा मालूम होती है, ऊपरी पलक फूल जाती है। आँसू बहना बढ़कर क्रमसे उसमें पीव पैदा हो जाता है और आँखमें रोशनी सहन नहीं होती तथा उसमें दर्द मालूम हुआ करता है। बहुत ज्यदा ऋतुस्राव, दिनभर दाहिनी आँखमें दर्द हुआ करता है और बीच-बीचमें दर्द पैदा हो जाया करता हैं।

कान।—कानमें लगातार गूँजनेकी आवाज़ सुन पड़ती है और ऐसा भाव होता है, कि मानो न जाने कानमें क्या घुस गया है। इसके अलावा उसमें एक अस्पष्ट दर्द अनुभव हुआ करता है। प्रचण्ड दर्द पैदा होकर वहाँसे चारों ओर फैल जाता है। चुचुकास्थि-भुज प्रदेशमें भयानक सूजन और लाली पैदा हो जाती है, उसे छूनेपर भयानक दर्द मालूम होता है और कानसे पीव निकलना आरम्भ हो जाता है। कभी-कभी कानसे खून-मिला पीव निकलता है। कानमें "हू-हू" शब्द और माथा भारी मालूम होना (जेल्स, हायो)।

नाक।—नाक स्पष्ट लाल मालूम होती है; ऊपरी ओठ, नाक और दोनों गाल फूले और लाल। नाकपर दादकी तरह उद्भेद, जब तभी नाकसे खून निकला करता है, शंखास्थिमें जखम। नाककी सर्दी, नाक और तालुमूलसे बहुत ज्यादा गाढ़ा गोंदकी तरह और हरा-पीले रङ्गका श्लेष्मा निकलता है। भयानक छींक आती है। श्लेष्मा-स्रावकी अधिकता और ललाटमें होनेवाला सर-दर्द। नाक और कण्ठमें बहुत बेचैन करनेवाली जलन और सूखापन मालूम होता है।

मुखमण्डल।—मुखमण्डलकी त्वचा गर्म और खींचन मालूम होती है; सर-दर्द रोगमें चेहरेकी त्वचामें खींचन होती है, चेहरा गर्म हो जाता है और फूल जाता है। ललाटपर व्रण निकलता है (इयुजिनियम, सिपि, सल्फ)। चेहरा लाल और पिनकी नोककी तरह व्रणसे भरा। भ्रू-देशसे भूरी लाल सूजन आरम्भ होकर २४ घण्टोंमें माथेकी त्वचाके किनारेकी सीमातक फैल जाती है और इस सूजनके ऊपर अनगिनती छोटी-छोटी पीव-भरी फुन्सियाँ निकलती हैं। बच्चोंके ओठपर दादकी तरह उद्भेद निलते हैं, क्षयकास रोगमें जिस ओरकी फेफड़ेपर रोगका आक्रमण होता है, उसी पार्श्वका गाल लाल दिखाई देता है। ज्वरके शीत और उत्तापके समय चेहरा इतना घोर लाल हो जाता है, कि कभी-कभी बैंगनी रङ्ग धारण करता है।

मुख-विवर।—ऊपरवाले पेषण-दन्त, मस्तक और आँखमें दर्द। दाँत सब ऐसे मालूम होते हैं मानो परस्पर अड़ रहे हैं या आपसमें रगड़ खा रहे हैं और रोगीके मसूढ़ेमें जितने दाँत रहना उचित है, उनकी अपेक्षा मानो अधिक दाँत हैं (वाइपेरा)। दाँत सब लम्बे मालूम होते हैं और उनकी जड़ ढीली मालूम होती है। दाँतके मसूढ़ेमें जखम होकर जड़से हट जाते हैं। जीभ भूरी और लेपसे ढकी और बहुत काँटोंसे भरी मालूम होती है। मुख-विवर और जीभकी उप-त्वचा जखमसे भरी। जीभ बहुत सूखी मालूम होती है, जीभके सामनेवाले अंशमें दाहिना पार्श्व लाल होकर उसपर सफेद फुन्सियाँ सब पैदा हो जाती हैं और ये फुन्सियाँ फटकर उनपर अत्यन्त दर्द होता है और बाहरी जखममें परिणत हो जाता है। जीभका अगला भाग बहुत लाल (अर्जेण्ट-नाई, रस)। मुख-विवर सूखा और ओंठपर सफेद शल्क उत्पन्न होते हैं (ए-फास, आर्स, साइलि)।

गला।—अन्न और स्वरनलीके प्रवेश पथमें दर्द होता है। अन्ननलीके द्वारपर रगड़ खाना (खाल उधड़ने या खरोंचना) अनुभव होना। कण्ठमें सुरसुरी होकर खाँसी आती है (ब्राइ, हायो, कैलि-कार्ब, लैक-कैन, लैके, नेट्र-मूर, रियुमिक्स)। ऐसा अनुभव होना मानो कण्ठमें श्लेष्मा इकट्ठा हो रहा है (बेल, मर्क-प्रोटो)। कण्ठ और गल-ग्रन्थिकी सूजन। उपजिह्वा नीली आभा लिये लाल, फूली और चिकनी, कण्ठके भीतर सूखापन, दर्द और सूजन। निगलनेमें कष्ट, मानो कण्ठमें कुछ अड़ा हुआ है। कण्ठमें जलन। कण्ठ और स्वरनली मानो संकुचित हो गयी है—इस तरहका अनुभव होना। स्वरभंग और कण्ठमें श्लेष्माकी आवाज, घर-घर आवाज होती है।

पाकस्थली।—सवेरे मिचली और पेटमें भार मालूम होना। पाकाशयसे कण्ठनलीतक कसावट या जकड़ जानेका भाव, ऐसा मालूम होना मानो वस्त्र आदि कसकर पहन रखे हैं। सर-दर्द और भूख मन्द हो जाना, खासकर सवेरे; मिचली और वमन हुआ करता है। अच्छी तरह भोजन करनेपर भी बच्चा दिनोंदिन दुबला होता जाता है (ऐब्रोट, नेट्र-मूर, आयोड, सैनिक)। प्रचण्ड वमन और उसके बाद सर-दर्द घट जाता है (ऐसेरम, ग्लोन, मैन्सिनेला)। ज्वरके कम्पके समय या शीतावस्थामें या सन्ध्याके बाद सवेरे जब ज्वर भरपूर चढ़ा रहता है, तो उत्तापावस्थामें बार-बार वमन।

उदरमें भयानक दर्द और पतले दस्त आना। जीभ निर्मल, पर भरपूर भूख नहीं लगती (जीभ निर्मल, पर मुँहका स्वाद तीता—चिनिन-सल्फ; दस्त-के रोगमें निर्मल जीभ—फास; पाकाशयके शूल रोगमें—मैग-फास; वात श्लेष्मा ज्वरमें—काकुर, डालका; सर-दर्द और कब्जियत—नेट्र-म्यूर)। सभी पदार्थोंसे अरुचि। मांससे घोर अरुचि, किसी तरह भी उसे मुँहमें नहीं डाल सकता। शीत और ज्वरके समय बार-बार अधिक परिमाणमें पानी पीनेकी प्यास; ठण्डा दूध पीनेकी इच्छा। पाकाशय खाली और शारीरिक सुस्ती मालूम होना। तेज़ खालीपन और भूख मालूम होनेसे खानेकी इच्छा।

अन्त्राशय।—पाकाशय और अन्त्राशयमें ऐंठनकी तरह दर्द (आर्स, कूप्रम-ऐसेट, लाई, नक्स-मस)। ऐसा अनुभव होना मानो पेट चिपक गया है (आर्जेण्ट-नाई, कोलोसिन्थ, प्लैट)। बायें पार्श्वमें और किसी-किसी स्थानमें दाहिने पार्श्वमें सूजन पैदा हो जाती है; दौड़नेपर कोखमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। प्लीहा बढ़ी हुई (नेट्र-म्यूर,)। प्लीहा प्रदेश ऊँचा उठ जाता है। आँतके अंधान्त्रपुच्छ प्रदेशमें दर्द (क्रोटेलस, आर्स, आइरिस, लेके)। पुट्ठेके स्थानपर भी ग्रन्थियाँ सब कड़ी और फूली दिखाई देती हैं। अन्त्रको छेद देनेवाला जखम (आर्जेण्ट-नाई, केलि-बाई)।

मलान्त्र और मल।—दुर्दमनीय कब्जियत, मल बड़ा गाँठ-गाँठ और कड़ा, इसके बाद ही पतले दस्त आना। उदरामय—सवेरे पतले दस्त आते हैं (नेट्र-सल्फ, पोडो, ऐलो, सल्फ रियुमेक्स)। एकाएक वेग पैदा हो जाता है, पाखाना लगनेपर फिर जरा भी देर सहन नहीं होती; खुली भूख और भरपूर खानेपर भी बच्चा दिनोंदिन दुबला होता जाता है (ऐब्रोट, आयोड, नेट्र-म्यूर); मल गहरा भूरा, पानीकी तरह और बहुत बदबूदार; बड़े वेगसे निकलता है (क्रोटोन, गेम्बोज, जेट्रोफा, नेट-सल्फ, पोडो, रेनान-बल्बो, फास); रोगी बहुत कमजोर हो पड़ता है। रातमें बहुत ज्यादा पसीना होता है; ग्रहणी या अन्त्राशयका क्षय रोग हो जाया करता है (सिङ्को लाई, मर्क-बाई, फास, सोरिन)। मलद्वारकी खुजली। सवेरेके भोजनके पहले एकाएक पतले दस्त आने लगना और मिचली।

पेशाब।—पेशाबका परिमाण बहुत थोड़ा। ऋतु या जलवायुके परिवर्त्तनके समय बार-बार पेशाबका वेग पैदा हो जाता है। पेशाबके साथ लार

दिखाई देती है और पेशाबका आपेक्षिक गुरुत्व बहुत बढ़ जाता है। रक्तमूत्र होनेपर मसानेमें बहुत दर्द होता है। पेशाबके साथ बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकलता है, पुं-जननेन्द्रिय शिथिल और झूल पड़ती है और रोगीको बहुत कमजोरी मालूम होती है। मुष्क बहुत शिथिल हो पड़ता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत असमयमें रजःस्राव हो जाता है, स्राव बहुत ज्यादा और बहुत दिनोंतक स्थायी रहा करता है; पर स्राव आरम्भ होनेमें विलम्ब होता है; भयङ्कर रजःकष्ट पैदा हो जाता है और दर्दसे रोगिनी बेचैन हो पड़ती है (यदि रोगीकी देहमें यक्ष्मा रोग छिपा रहे तो यह नौषध बहुत लाभ किया करता है), तलपेटमें दर्द, मानो रजःस्राव होनेके लक्षण है (ऐलो, ऐपिस, क्रोकस, लिलि-टाई, मैग-कार्ब, मूरेक्स, नेट-कार्ब, प्लेट, पल्स, सिपि, बाईवर्नम)। ऋतु आरम्भ होनेके समय, सन्ध्याके समय स्तनमें दर्द (केल्के, कोना) मालूम होता है। ऋतुके समय श्रोणि, नितम्ब और डिम्बाधार प्रदेशमें दर्द मालूम होता है। बरिहिन्द्रिय प्रदेशमें जलन, कषाय प्रदरका स्राव और नितम्ब तथा डिम्बाधार प्रदेशमें दर्द अनुभव होना। बहिरिन्द्रिय प्रदेशमें भयानक उत्ताप मालूम होता है और प्रदरका स्राव अधिक होता है। आर्त्तवका अभाव।

अन्त्राशय।—खुसखुसी और तङ्ग करनेवाली खाँसी। प्रचण्ड खाँसी, विशेषकर निद्रितावस्थामें, पर रोगीकी नींद नहीं खुलती; खाँसीके समय रोगीकी समूची देह हिल जाती है। स्वरनलीमें सुरसुरी होकर एकाएक खाँसी आती है। सरल गाढ़ा श्लेष्मा सहजमें ही निकल जाता है और इसके बाद रोगीको कण्ठस्वर साफ हो जाता है। हृत्प्रदेशमें तेज़ दर्दकी वजहसे श्वास-प्रश्वासमें बाधा पड़ती मालूम होती है। बायें पृष्ठ-फलकमें तेज दर्द; वृद्धि—रातमें शय्यामें सोनेपर और घटना गर्म प्रयोगसे। स्वरनलीकी झिल्ली घोर लाल और चिकनी मालूम होती है। कभी पानीमें भींजा था, तबसे खाँसी और बलगम निकलना बन्द ही नहीं होता। सन्ध्याके समय प्रचण्ड खाँसी और दाहिने स्तनके नीचे बहुत दर्द मालूम होती है। प्रचण्ड खाँसी, सवेरे पीव मिले श्लेष्माकी तरह बलगम निकलता है। खाँसीके कारण रातके प्रथम पहरमें नींद नहीं आती। खाँसते-खाँसते कलेजा धड़कने लगना और पीठमें दर्द। दाहिने कन्धेके पिछले भागमें श्लेष्माकी घड़घड़ाहट सुन पड़ती है। वक्षमें दबाव औप उत्ताप

उदरमें भयानक दर्द और पतले दस्त आना। जीभ निर्मल, पर भरपूर भूख नहीं लगती (जीभ निर्मल, पर मुँहका स्वाद तीता—चिनिन-सल्फ; दस्त-के रोगमें निर्मल जीभ—फास; पाकाशयके शूल रोगमें—मैंग-फास; वात श्लेष्मा ज्वरमें—काकुश, डालका; सर-दर्द और कब्जियत—नेट्र-म्यूर)। सभी पदार्थोंसे अरुचि। मांससे घोर अरुचि, किसी तरह भी उसे मुँहमें नहीं डाल सकता। शीत और ज्वरके समय बार-बार अधिक परिमाणमें पानी पीनेकी प्यास; ठण्डा दूध पीनेकी इच्छा। पाकाशय खाली और शारीरिक सुस्ती मालूम होना। तेज़ खालीपन और भूख मालूम होनेसे खानेकी इच्छा।

अन्त्राशय।—पाकाशय और अन्त्राशयमें ऐंठनकी तरह दर्द (आर्स, कूप्रम-ऐसेट, लाई, नक्स-मस)। ऐसा अनुभव होना मानो पेट चिपक गया है (आर्जेण्ट-नाई, कोलोसिन्थ, प्लैट)। बायें पार्श्वमें और किसी-किसी स्थानमें दाहिने पार्श्वमें सूजन पैदा हो जाती है; दौड़नेपर कोखमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। प्लीहा बढ़ी हुई (नेट्र-म्यूर,)। प्लीहा प्रदेश ऊँचा उठ जाता है। आँतके अंधान्त्रपुच्छ प्रदेशमें दर्द (क्रोटेलस, आर्स, आइरिस, लैके)। पुट्ठेके स्थानपर भी ग्रन्थियाँ सब कड़ी और फूली दिखाई देती हैं। अन्त्रको छेद देनेवाला जखम (आर्जेण्ट-नाई, केलि-बाई)।

मलान्त्र और मल।—दुर्दमनीय कब्जियत, मल बड़ा गाँठ-गाँठ और कड़ा, इसके बाद ही पतले दस्त आना। उदरामय—सवेरे पतले दस्त आते हैं (नेट्र-सल्फ, पोडो, ऐलो, सल्फ रियुमेक्स)। एकाएक वेग पैदा हो जाता है, पाखाना लगनेपर फिर जरा भी देर सहन नहीं होती; खुली भूख और भरपूर खानेपर भी बच्चा दिनोंदिन दुबला होता जाता है (ऐब्रोट, आयोड, नेट्र-म्यूर); मल गहरा भूरा, पानीकी तरह और बहुत बदबूदार; बड़े वेगसे निकलता है (क्रोटोन, गैम्बोज, जेट्रोफा, नेट-सल्फ, पोडो, रैनान-बल्बो, फास); रोगी बहुत कमजोर हो पड़ता है। रातमें बहुत ज्यादा पसीना होता है; ग्रहणी या अन्त्राशयका क्षय रोग हो जाया करता है (सिङ्को लाई, मर्क-वाई, फास, सोरिन)। मलद्वारकी खुजली। सवेरेके भोजनके पहले एकाएक पतले दस्त आने लगना और मिचली।

पेशाब।—पेशाबका परिमाण बहुत थोड़ा। ऋतु या जलवायुके परिवर्त्तनके समय बार-बार पेशाबका वेग पैदा हो जाता है। पेशाबके साथ लार

दिखाई देती है और पेशाबका आपेक्षिक गुरुत्व बहुत बढ़ जाता है। रक्तमूत्र होनेपर मसानेमें बहुत दर्द होता है। पेशाबके साथ बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकलता है, पुं-जननेन्द्रिय शिथिल और झूल पड़ती है और रोगीको बहुत कमजोरी मालूम होती है। मुष्क बहुत शिथिल हो पड़ता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत असमयमें रजःस्राव हो जाता है, स्राव बहुत ज्यादा और बहुत दिनोंतक स्थायी रहा करता है; पर स्राव आरम्भ होनेमें विलम्ब होता है; भयङ्कर रजःकष्ट पैदा हो जाता है और दर्दसे रोगिनी बेचैन हो पड़ती है (यदि रोगीकी देहमें यक्ष्मा रोग छिपा रहे तो यह औषध बहुत लाभ किया करता है), तलपेटमें दर्द, मानो रजःस्राव होनेके लक्षण है (ऐलो, ऐपिस, क्रोकस, लिलि-टाई, मैग-कार्ब, मूरेक्स, नेट-कार्ब, प्लेट, पल्स, सिपि, बाईवर्नम)। ऋतु आरम्भ होनेके समय, सन्ध्याके समय स्तनमें दर्द (कैल्के, कोना) मालूम होता है। ऋतुके समय श्रोणि, नितम्ब और डिम्बाधार प्रदेशमें दर्द मालूम होता है। वरिहिन्द्रिय प्रदेशमें जलन, कषाय प्रदरका स्राव और नितम्ब तथा डिम्बाधार प्रदेशमें दर्द अनुभव होना। बहिरिन्द्रिय प्रदेशमें भयानक उत्ताप मालूम होता है और प्रदरका स्राव अधिक होता है। आर्त्तवका अभाव।

अन्त्राशय।—खुसखुसी और तङ्ग करनेवाली खाँसी। प्रचण्ड खाँसी, विशेषकर निद्रितावस्थामें, पर रोगीकी नींद नहीं खुलती; खाँसीके समय रोगीकी समूची देह हिल जाती है। स्वरनलीमें सुरसुरी होकर एकाएक खाँसी आती है। सरल गाढ़ा श्लेष्मा सहजमें हो निकल जाता है और इसके बाद रोगीको कण्ठस्वर साफ हो जाता है। हृत्प्रदेशमें तेज़ दर्दकी वजहसे श्वास-प्रश्वासमें बाधा पड़ती मालूम होती है। बायें पृष्ठ-फलकमें तेज दर्द; वृद्धि—रातमें शय्यामें सोनेपर और घटना गर्म प्रयोगसे। स्वरनलीकी झिल्ली घोर लाल और चिकनी मालूम होती है। कभी पानीमें भींजा था, तबसे खाँसी और बलगम निकलना बन्द हो नहीं होता। सन्ध्याके समय प्रचण्ड खाँसी और दाहिने स्तनके नीचे बहुत दर्द मालूम होती है। प्रचण्ड खाँसी, सवेरे पीव मिले श्लेष्माकी तरह बलगम निकलता है। खाँसीके कारण रातके प्रथम पहरमें नींद नहीं आती। खाँसते-खाँसते कलेजा धड़कने लगना और पीठमें दर्द। दाहिने कन्धेके पिछले भागमें श्लेष्माकी घड़घड़ाहट सुन पड़ती है। वक्षमें दबाव और उत्ताप

अनुभव होना। रोगी बार-बार गहरी साँस लेता है; श्वासकष्ट दिनोंदिन बढ़ता है; फेफड़ेके शिखरदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द; फेफड़ेके शिखरमें, विशेषकर बांयें फेफड़ेके शिखरदेशमें, क्षयके कीटाणुकी वजहसे कोषाणु उत्पन्न होते हैं (फास, सल्फ, थिरिड)। ज्वर रोगमें शीतके पहले और समय बहुत खाँसी आती है (ब्राई, रस, सेबाड, सेम्बियु)। श्वास-रोधका उपक्रम, बन्द या गरम घरमें बहुत होता है। खाँसी आना आरम्भ होते ही रोगी समझ जाता है, कि अब उसे ज्वर आयेगा। बन्द घरमें बहुत अधिक श्वासकष्ट अनुभव होता है। केवल ठण्डी हवामें, घुड़सवारी करनेके समय, सरल और स्वाभाविक श्वास-प्रश्वास हुआ करता है (आर्जेंट-नाई)। गहरी श्वास लेने और छोड़नेकी आकांक्षा, निर्मल वायु सेवनके लिये रोगी लालायित रहता है—घरकी खिड़कियाँ सब खोल देता है (एपिस, आर्जेण्ट-नाई, कैनाब-सैट, कार्बो-वेज, चेलिडो, डिजिट, इपिक, लैके, पल्स, सल्फ)। खुली खिड़कीके पास बैठा रहता है (चेलिडो, कैनाब-सैट)। बन्द घरमें पसीनेसे तर अवस्थामें बैठा रहता है और निर्मल वायु सेवनके लिये लालायित होता है; परन्तु ठण्डे पसीनेसे तर शरीरमें दर्द, हवा लगते ही सर्दी आ जाती है (यह लक्षण प्रायः बायें फेफड़ेके शिखरदेशके क्षय रोग विषसे पैदा हुए कोषाणुमें पैदा होनेपर विशेष सिद्धप्रद हुआ करता है)। प्रचण्ड सूखी खाँसी, क्षय-कास रहे या न रहे। बलगम गाढ़ा और पीला; बहुतसे स्थानोंमें पीली आभा लिये हरा, श्लेष्मामय, यौवनोन्मुखी बालिकाओंको आर्त्तव न होनेपर (खासकर पहली बार रजःस्रावमें विलम्ब होनेपर) खुसखुसी और दुःखदायी खाँसी। रोगिनीका शरीर पीला, बहुत ही खर्व आकृति, दुबली-पतली; हमेशा सुस्ती मालूम होती है और उसके वक्षकी गठन सन्देहजनक रहती है।

सार्वाङ्गिक।——अकौताकी आकृति क्षयकी गोटियोंकी तरह, उससे समूची देह भर जाती है और बहुत खुजलाया करती है। बढ़ना—रातमें वस्त्र उतारनेके समय और नहानेपर (सल्फ, सोरिनम, एण्टिम-क्रूड); उसके ऊपरसे बहुत ज्यादा पपड़ी निकला करती है; कानके पीछेवाले भागमें, केशमें और अङ्गोंके गांसमें क्षय हुई त्वचाके अंशसे रस बहा करता है (ग्रैफ, मेजिर, टेल्य, रस, सोरिनम); रोगी अंशकी त्वचा आगकी तरह लाल। दाद (डाक्टर बर्नेट कहते हैं, कि क्षयका विष रोगीके शरीरमें तैयार है, दाद इसका एक अमोघ लक्षण है), सन्ध्याके समय रोगीको बहुत कमजोरी मालूम होती है।

सन्ध्याके समय रोगीको नाड़ी बहुत तेज हो जाती है। सन्ध्याके भोजनके बाद कलेजा धड़कना। निद्रा अवस्थामें पेशियोंका फड़कना। दाहिनी कोहनीमें वातका दर्द। अस्थि और सब अस्थि-वेष्टोंमें बहुत दर्द रहता है (इयुपेट, मैंगेनम, रस)। स्थिर रहनेपर निम्नाङ्गमें दर्द हुआ करता है और उनमें अकड़न मालूम होती है; चलनेपर घटना (जब "रस" के प्रत्योगसे स्थायी उपकार नहीं होता)। बैठे रहनेकी अवस्थामें दर्द इतना अधिक होता है, कि उठकर चले बिना नहीं रह सकता। सन्ध्याके बाद शायित अवस्थामें बायाँ पैर और चरण बहुत ठण्डे हो जाते हैं। स्थिर रहनेपर प्रत्यङ्गोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (कैलि-बाई, लैक-कैन, पल्स)। सारे शरीरमें विशेषकर दोनों पैरोंमें बहुत दर्द। शरीर हिलाना आरम्भ करनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो प्रत्यङ्ग आदि अकड़ गये हैं; सन्धियोंमें बहुत दर्द होता है और उनमें स्पर्श सहन नहीं होता। सभी दर्द गर्म प्रयोगसे घट जाते हैं। शारीरिक परिश्रमसे बढ़ते हैं। खड़े रहनेपर दर्द आदि बढ़ जाता है; रोगी हिले बिना नहीं रह सकता (सलफर)।

सविराम ज्वर।—स्थिर होकर रहनेपर या विश्रामके समय प्रत्यङ्गोंमें अकड़न या जकड़ जानेकी तरह मालूम होता है। सन्ध्या ७ बजेके समय शीत या कम्प आरम्भ होता है, सन्ध्याके बाद जाड़ा मालूम होने लगता है; शय्यापर सोनेपर आराम मालूम होता है, कभी-कभी तीसरे पहर ५ बजनेके समय शीत पैदा हो जाता है और बहुत प्यास लगती है। शीतके आरम्भमें और समयमें एवं ज्वरके समय वमन होता है। शीत, उत्ताप और पसीना—सभी अवस्थाओंमें रोगी अपने शरीरको कपड़ेसे ढक रखता है (नक्स-वोम)। जलन करनेवाली उत्ताप अवस्थामें भी सर्दी मालूम होती है। बार-बार आराम हो जाता है और बार-बार फिर पैदा हो जाता है। प्रत्यङ्गोंमें खींचनकी तरह दर्द मालूम होना आरम्भ होते ही रोगी समझ जाता है, कि अब बोखार आयेगा। ज्वर बार-बार अच्छा हो जाता है, पर जरा-सा कुछ कारण होते ही फिर पैदा हो जाता है। रोगीको बहुत अधिक सर्दी लग जाया करती है।

माथेके सभी अस्थिफलकोंमें दर्द हुआ करता है और अस्थिवेष्टोंको दबानेपर बहुत दर्द मालूम हुआ करता है। मानसिक परिश्रम करनेपर भी पसीना होता है और वह पसीना कपड़ेमें लगनेपर नीला दाग पड़ता है

(फेरम, इपिका, लैके, मर्क, सोरिन, सविराम ज्वरमें—सैम्बु)। निद्रित अवस्थामें उत्ताप पैदा हो जाता है और पसीना हुआ करता है (पल्स, साइलि, फास)।

त्वचा ।—त्वचाके नीचे चींटी रेंगनेकी तरह सुरसुरी अनुभव होता है, क्षय-रोगके लक्षण मिले चर्मोद्भेद, घोर लाल रङ्गके दाने; रोगी हमेशा आगकी गर्मीमें बैठा रहना चाहता है; क्योंकि ठण्डी हवा लगते ही खुजली पैदा हो जाती है; खुजलानेपर और भी बढ़ती है; आगकी गर्मीमें अच्छा रहता है। प्रत्येक जलवायुके परिवर्त्तनसे, विशेषकर शीतल, तर हवा लगनेपर रोगीको सर्दी लग जाती है और सर्दी तथा अन्य सभी लक्षण फिरसे पैदा होते या बढ़ जाया करते हैं। बर्सातका दिन होनेसे ही रोगी बीमार हो जाता है। अंधड़-पानीकी सम्भावना होते ही रोगीको तकलीफ मालूम होने लगती है।

मूर्च्छा-प्रकोप ।—सामान्य कारणसे ही मूर्च्छा आ जाती है। दो कदम चलनेसे ही रोगी सुस्त हो जाता है।

सम्बन्ध ।—बैसिलिनमके साथ—कैल्के-फास, लैकेसिस और कैलि-कार्ब, विशेष लाभदायक है।

अनुपूरक ।—कैल्के-फस, सोरिनम, सल्फ।

प्रतिविष ।—(मानसिक लक्षणोंमें) नेट-मूर (डा० क्लार्क)।

सदृश ।—एवीयेयर, कैल्के-कार्ब, कैल्के-आयोड, कैल्के-फास, नेट्र-मूर, फास, पल्स, सिपि, साइलि, थूजा, थाइराइडिनम।

तुलनीय ।—गुटिका दोषयुक्त मस्तिष्कावरण प्रदाह—आयोडोफार्म। रक्त संचालनके दोषके कारण धातुगत औषध—सल्फर। सामने असह्य भाव—थूजा। उन्माद भाव—थाइरायडिन। उपाङ्ग प्रदेशमें दर्द—आइरिस-टेन-फिस, आर्स, लैकेसिस। ऋतुकालमें स्तनमें दर्द—कोना, कैल्के।

"बैसिलिनम" प्रयोगसे क्षय कास या क्षय विषके कारण पैदा हुए अन्य रोग आराम करनेके बाद "हाइड्रेस्टिस" प्रयोग करनेपर रोगी जल्दी मोटा-ताजा हो जाया करता है। क्षय विषके कारण पैदा हुए नये रोगमें "बेलेडोना" प्रायः विशेष लाभ किया करता है।

शक्ति।—डा० बार्नेट ३०, २०० और ५०० या उससे भी ऊँचा शततमिक क्रम देनेकी सलाह देते हैं।

डिफ्थीरिनम

(DIPHTHERINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—डिफ्थीरिया या रोहिनी या उपझिल्लीक रोगका विष या बीजसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—काली खाँसी, डिफ्थीरिया या मलनलीका उपझिल्ली प्रदाह और उसके बादका पक्षाघात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—जिन सब शीत-प्रकृतिवाले रोगियोंको अकसर सर्दी लग जाया करती है या सर्दीसे उत्पन्न बीमारियाँ हो जाया करती हैं, उनके लिये सांघातिक उपझिल्लीक रोग (डिफ्थीरियामें—मर्क-सायोनेट), कान ग्रन्थियोंका आकार बढ़ा हुआ (मर्क-प्रोडो) और दर्द-भरी और जीभ लाल तथा फूली रहती है, उन्हें डिफ्थीरिनम विशेष लाभ करता है। इसका स्राव बहुत बदबूदार (कैलि-पर्मा) हुआ करता है, इस रोगके बादका पक्षाघात एक अत्यन्त तीव्र उपसर्ग है और डिफ्थीरिनम उस उपसर्गकी एक बहुत बढ़िया दवा मानी जाती है (लैके, कास्टि, जेल्स, लैक-कैन)। यहाँ इसके कई निर्णायक लक्षण लिखे जाते हैं :—(१) यदि किसी परिवारमें किसीको डिफ्थीरिया हो जाये, तो उस परिवारके जो नीरोग, पर बहुत कमजोर हैं, जिनकी जीवनी-शक्ति बहुत क्षय हो गयी है या होती मालूम होती हैं, उस मनुष्यको तुरन्त ३० या २०० शततमिक क्रमकी एक मात्राकी ६ छोटी गोलियाँ, प्रतिषेधक रूपमें सेवन करनेपर, उसे फिर किसी तरह भी यह बीमारी न होगी। इस तरहके क्षीण शरीर और दुर्बल जीवनी-शक्तिवालोंको बहुत जल्द डिफ्थीरिया हो जानेकी सम्भावना रहती है। (२) हिस्टीरिया रोगमें जबसे यह रोग भीषण और मारात्मक मूर्त्ति धारण करे और रोगिनीकी मृत्यु स्थिर मालूम हो। (३) गलेकी ग्रन्थियाँ और अलिजिह्वाके दोनों पार्श्वमें गहरी लाली और सूजन, कर्ण मूलीय (कानकी जड़वाली) और गलेकी ग्रन्थियाँ सब बहुत

फूल जाती है ; साँस लेने और छोड़नेमें और कण्ठ, नाक और मुँहसे जिन सब रस आदिका स्राव निकलता है, वे सभी बहुत बदबूदार रहते हैं (कैलि-पर्माङ्ग, बैप्टी, एसिड-कार्बोल, मर्क-सायान, मर्क-प्रोटो) ; जीभ फूली और बेतरह लाल ; प्राय: किसी तरहका भी मैल या लेप उसपर नहीं रहता। (४) रस-क्षरणसे उत्पन्न नकली झिल्ली मोटी (ए-सल्फ, आर्स-आयोड), गहरी भूरी या हलकी भूरी आभा लिये लाल रङ्गकी (आयोड, फाइटो)। (५) रोगीका शारीरिक उत्ताप स्वाभाविककी अपेक्षा घट जाता है। नाड़ी क्षीण और तेज़ रहती है। हाथ-पैर आदि बरफकी तरह ठण्डे रहते हैं और रोगी बहुत क्षीण हो जाता है। रोगीका भाव ऐसा हो जाता है मानो वह स्तम्भित हो गया है या मोहाच्छन्नकी तरह पड़ा रहता है और उसकी दृष्टि मैली तथा मतवालेकी तरह (एपिस, बैप्टी, जेल्स)। (६) मृदु या यन्त्रणा-रहित बीमारी ; रोगी स्वयं किसी तरहकी तकलीफ़ या कष्ट आदि अनुभव नहीं करता, बाहरसे ही कई लक्षण इसके प्रकट होते हैं—रोगी बहुत क्षीण और सभी विषयोंमें उदासीनता प्रकट करता है, उसमें इतनी शक्ति नहीं रहती कि वाक्य या हाथ-पैर आदि हिलाकर अपनी बेचैनी प्रकट करे ; बेहोशकी तरह पड़ा रहता है, पर किसीके कुछ पूछनेपर ही होशमें आ जाता है (आर्निका, बैप्टी, सल्फ)। (७) आक्रमणके बादसे ही नाकसे रक्तस्राव या गहरी सुस्ती और उठनेकी शक्ति नहीं रहती है (एलैन्थस, एपिस, ए-कार्बोल)। पहलेसे ही हिमांग पैदा हो जाता है (क्रोटेलस, मर्क-सायान)। रोगीकी नाड़ी क्षीण, तेज़ और प्रतिक्रिया शक्ति बहुत अवसाद-ग्रस्त रहती है। (८) कोई चीज निगलनेमें बहुत तकलीफ नहीं होती, पर तरल पदार्थ वमन हो जाता है या नाकसे निकल आता है (एसिड-सल्फ, एरम-ट्राई, कैलि-पर्माङ्ग, लैक-कैन, फाइटो)। (९) स्वर-नलीगत उपझिल्लीक रोगमें (क्लोरम, कैलि-बाईक्रोम, आयोडम, ब्रोमम, लैक-कैन) प्रयोगसे लाभ न होनेपर “डिफ्थीरिनम” का प्रयोग करना चाहिये।

सम्बन्ध।—सदृश—आर्स-अयोड, क्लोरम, आयोडम, कास्टिकम, जेल्स, लैके, लैक-कैन, लाइकोपोड, मर्क-सायानेट, मर्क-पर्माङ्ग, मर्क-प्रोटो।

शक्ति।—३० शततमिकसे २००, ५०० और १००० शततमिक क्रम। बार-बार प्रयोग मना है।

हिपोजिनिनम

(HIPPOZÆNINUM)

दूसरा नाम ।—मैलिनिम-फेरिनिम इत्यादि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—घोड़े और गधेकी नासिका ग्रन्थि और शरीरके अन्यान्य यंत्रोंमें "ग्लैण्डर्स" या "फार्सी" नामक पीनसकी तरह एक प्रकारका श्लेष्माश्रित रोग होता है। हिपोजिनिनम् या मैलिइनम या ग्लैण्डरिनम उसीका विष या बीज दूधकी चीनीके साथ पहले विचूर्ण तैयार हुआ करता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—बड़े फोड़े आदि; शय्याक्षत; छोटे फोड़े; श्वासनली-प्रदाह; कर्कटका जखम; दुष्ट-व्रण; अस्थि-क्षय; सर्दी; उपझिल्ली-प्रदाह; श्लीपद या फीलपाया; विसर्प; ग्रन्थियोंकी बीमारी और ग्रन्थिका-प्रदाह; पुट्ठेकी ग्रन्थिका प्रदाह; यकृतका बढ़ना; एक तरहका सफेद रङ्गका जखम; नाकके बीचवाली उपास्थिमें जखम; शोथ; नकसीर; कानका दर्द; पैरकी सफेद रंगकी सूजन; महामारी या प्लेग; सड़नेवाला ज्वर; रक्तदोष; रक्तमें विषैलेपनके साथ पैदा हुआ ज्वर; कण्ठमाला; चेचक; उपदंश; गुटिका रोग; जखम; हूप-खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—नकसीर या पीनस रोगमें, जब नाक लाल और फूल उठा करती है और उसके भीतरसे कषाय, त्वचाको क्षय करने-वाला, खून-मिला और बदबूदार पीव निकला करता है और दूसरी-दूसरी यत्नसे चुनी हुई दवाके द्वारा विशेष फल न मिलता हो, उसी अवस्थामें हिपोजिनि-नम" बहुत लाभदायक हुआ करता है। अधिककर वृद्ध मनुष्योंको कभी-कभी पैदा होनेवाले स्वरनली और वायुमार्ग प्रदाह रोगमें भी यह अधिक लाभ किया करता है। रोगीका स्वर एकदम लोप हो जाता है और वायु-मार्गमें बहुत अधिक श्लेष्मा सञ्चय होनेकी वजहसे श्वास-रोधका उपक्रम हो जाया करता है। दुर्लक्षण भरे बिगड़े जखम, पीव पैदा होनेवाले फोड़े और ग्रन्थि बढ़ना आदिमें भी इसका फायदा प्रसिद्ध है।

लक्षणावली

मस्तक ।—सर-दर्दके साथ बेहोशी। मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह। मस्तिष्क पदार्थके भीतर फोड़ा या पीब आदिका सञ्चय होना।

आँख ।—आँखमें आँसू या लारका भरा रहना, कनीनिकाका फैलना।

कान ।—कानमें टिं-टिं शब्द, बहरापन और स्वरभङ्ग इत्यादि।

नाक ।—नाक तथा उसके चारों ओर लाली और सूजन और उसमें प्रचण्ड दर्द अनुभव होता है। नाकका स्राव, बहुत दिनोंका; नाक प्रदाहान्वित और उसके भीतरसे गाढ़ा खून मिला श्लेष्मा निकला करता है। दोनों ग्रन्थियाँ फूल उठती हैं और तालुमूल पार्श्वके दोनों गह्वर लाल दिखाई देते हैं। दुरारोग्य नाककी सर्दी—अधिकांश स्थानोंमें एक रंध्रसे जिंघानक या श्लेष्मा—अण्डलालकी तरह बहुत ही लसदार, बिगड़े हुए रङ्गका धुमैला या हरी आभा लिये, किसी-किसी रोगीको खून मिला भी निकला करता है और उसमें बहुत बदबू रहा करती है (अरम, ऐ-कार्बोल, इलेप्स, हिपर, लैके, पल्स)। कभी-कभी कषाय या त्वचाको क्षय करनेवाला (एरम-ट्राई, ब्रोम, सिपा, लाई, सर्क, नक्स, साइलि)। नाक और मुँह जखमसे भरे (ऐ-नाई, कैलि-आयोड, अरम-मेट)। सड़नेवाले जखमकी वजहसे क्रमसे नाककी हड्डियाँ सब रोगी हो जाती हैं और ऊपरकी त्वचा सड़ जानेके कारण हड्डी बाहर निकल पड़ती है (अरम-मेट, कैलि-बाई कैलि-आयोड, पल्स, सैङ्ग्वि-नाइ, ऐसाफिट, क्रियो, लैके, मर्क, ऐ-नाई, ऐल्यू, थिरिड, साइलि)। नाककी हड्डीमें सड़नेवाले घाव पैदा होकर वे क्षय हो जाते हैं, बार-बार सर्दी हो जाती है। ललाट-फलकवाली श्लेष्मा नालिकामें और तालुमूलकी त्वचामें फुन्सियोंकी तरह सूजन पैदा होकर वह क्रमसे जखममें परिणत हो जाती है (कैलि-आयोड)।

मुखमण्डल आदि ।—हन्वस्थि या चिबुकास्थि इस तरह फूल उठती है, कि ऐसा मालूम होता है, कि उसमें कोई खानेका पदार्थ अड़ा हुआ है। इस सूजनकी तली ऊँची, नीची, असम, दानोंसे भरी और कभी-कभी उसमें जलनके सिवा और किसी तरहकी तकलीफ नहीं मालूम होती (हेक्ला)। हनु और जिह्वाके नीचेकी ग्रन्थियाँ सब फूल उठती हैं और कभी-कभी उनमें दर्द होता है; फोड़ा पैदा होकर उसका मुँह बाहरकी ओर होता है (हेक्ला,

साइलि)। दाँतकी जड़से खून निकलता है और उसपर मानो भुकड़ी लग गयी है, इस तरहका काले रंगका लेप दिखाई देता है (मर्क-सोल)। जीभके ऊपर भी इसी तरहका काला लेप पैदा होता है (क्लोरम)! बोलनेमें कष्ट होता है, मुँहमें जखम पैदा हो जाता है। गलेके भीतर गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा भरा रहता है। मुँहसे बदबू निकलती है। तालुके पर्देके ऊपर जखम पैदा हो जाता है। दोनों गलेकी ग्रन्थियाँ इतनी फूल उठती हैं, कि पिछला छेद रुक जाता है।

उदर।—यकृतका बढ़ना ; प्यासके साथ उदरामय। पुट्ठेकी गांठका फूलना।

मलान्त्र।—कब्जियत या उदरामय।

मूत्रयन्त्र।—मसानेमें गुटिका पैदा हो जाती है, पेशाबमें अण्डलाल निकलता है।

जननेन्द्रिय।—गुटिका-संचय होना ; पीव होना ; गर्भ-स्राव।

श्वासयन्त्र।—स्वरभंग, कभी-कभी कण्ठ-स्वर एकदम लोप हो जाता है। दुरारोग्य वायुनली-भुज प्रदाह, विशेषकर वृद्धोंका ; वायु-मार्गमें बहुत अधिक श्लेष्मा-संचय हो जानेकी वजहसे श्वास रुक जाना चाहती है (ऐण्टि-टार्ट)। श्वास-प्रश्वासमें घर-घर शब्द हुआ करता है और क्षण-क्षणभरपर ऐसा मालूम होता है, मानो साँस रुक जायगी ; श्वास-प्रश्वासमें बहुत बदबू रहती है। श्वासकृच्छ्र-मिली खाँसी। शीत आरम्भ होनेके समय ही खाँसी आरम्भ होकर ग्रीष्म-ऋतुतक रहती है। रोगी भयानक रूपसे खाँसता है और जितना ही खाँसता है, उतना ही बलगम निकलता है ; नाक और कण्ठसे एक ही तरहका श्लेष्मा निकलता है। क्षय-कास।

नाड़ी।—क्षुद्र और द्रुत, ११० से १२० बार स्पन्दन।

ज्वर।—बार-बार शीत और कम्पके साथ ज्वर।

त्वचा।—सारा शरीर अरुणिका (लाल-लाल दाने) से भरा, विसर्पसे भरा, फोड़े भरा या जखमसे परिपूर्ण दिखाई देता है। दुर्लक्षणवाला विसर्प, खासकर जब उसमें पीव पैदा होकर चारों ओर क्षय हो जाया करता है।

जखम सब किसी तरह भी अच्छे नहीं होते। नितम्ब आदि त्वचाको ढकनेवाली पेशीके ऊपर और कमरमें फोड़ा; पैरका पुराना दुरारोग्य जखम। सम्मिलित या आपसमें जुड़ी चेचक (वेरियोलिनम)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐ-फ्लू, अरम-मेट, अरम-म्यूर, बेसिलिनम, केडमियम-सल्फ़, इलेप्स प्रभृति सर्प-विष, हिपर, केलि-बाई, सोरिन, साइलि, सिफिलिन, वेरियोलिन।

शक्ति ।—३०, २०० और १००० शततमिक शक्ति।

हाइड्रोफोबिनम या लिसिन

(HYDROPHOBINUM OR LYSIN)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पागल कुत्तेकी लारसे प्रथम विचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—बाघी या ग्रन्थिका फूलना; आत्म-ज्ञान-लाभ या स्वप्न-लब्ध-ज्ञान; आक्षेप; गट्ठेमें दर्द; अतिसार; रक्तामाशय; ज्वर केशका चमकीलापन; स्वर-दर्द; जलातङ्क रोग; बहुत अधिक चैतन्य; धोबियोंका पक्षाघात; श्वेत-प्रदर; उन्माद; स्नायविकता; स्नायुशूल; अन्ननलीका रुकना; पक्षाघात; गर्भावस्थामें दाँतमें दर्द; आक्षेप; श्वास-प्रश्वासके यन्त्रका पक्षाघात; लार बहना; कामोन्माद; गृध्रसी; लू लग जाना या सूर्याघात; धनुष्टङ्कार; जखम; जरायुका अपनी जगहसे हटना; योनिपथका सिकुड़ना; बहुत जल्द जखम आरोग्य न होना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—सन् १८३३ ई० में डाक्टर हेरिङ्गने पहले-पहल इसकी परीक्षा की। वास्तविक जलातङ्क रोगमें भी इसकी उपयोगिताके सम्बन्धमें मत-भेद है। इस विषयमें सन्देह नहीं है, कि कुत्ता काटनेके कारण जो विषके लक्षण या रोग होते हैं, उन्हें यह सम्पूर्ण आरोग्य कर देता है। इसके अलावा जलातङ्क हो या कोई दूसरा ही रोग क्यों न हो, जहाँ आगे लिखे लक्षण सब स्पष्ट भावसे दिखाई दें, उस स्थानपर इसके प्रयोगसे इच्छानुसार फलप्राप्त होगा, इसमें कोई भी सन्देह नहीं है। (१) बहता हुआ

पानी देखने या उसकी आवाज सुननेपर या यदि रोगीके सामने एक बर्त्तनसे दूसरेमें कोई पानी ढालता है, तो वह बेचैन हो पड़ता है और इससे उसके सभी लक्षण बढ़ जाते हैं। (२) हमेशा ऐसा मालूम होता है, मानो कोई महान विपत्ति आया चाहती है, रोगी अपने मनसे यह भाव दूर करनेकी जितनी ही चेष्टा करता है, उतना ही वह बार-बार पैदा होता है। (३) लगातार मनमें बच्चेको ऊपरसे नीचे फेंक देने या इसी तरहका कोई भयङ्कर काम करनेकी इच्छा हुआ करती है। (४) रोगीको हमेशा ऐसा अनुभव होता है, कि वह पागल हो जायगा (ऐक्टिया, कैल्के, कैनाब-इन, लिलि-टाई, नक्स, स्ट्रैमो, सिफिलिन); जलातङ्क, पानीसे भय। (५) मानसिक आवेग या मर्मान्तिक-समाचारसे रोगी बहुत कातर हो पड़ता है और उसकी तकलीफ बढ़ जाती है। (६) गर्भावस्थामें नाना प्रकारके भ्रान्त-विश्वास; रोगिनी अपने जरायुका अस्तित्व अनुभव करती है (हेलोन)। (७) अपने हाथकी छुरी अपने शरीरमें गड़ाती हैं; पानीका गिलास ले जानेके समय दूसरेके मुँहपर वह पानी ढाल देती हैं। (८) लोगोंको मारना या दाँतसे काटना चाहती है, गालियाँ देती हैं। (९) सर-दर्द—ऐसा दर्द मानो दबाता है या मानो माथेमें छेद करता है; पागल या दूसरी तरहका कुत्ता काटनेकी वजहसे या मानसिक आवेग अथवा परिश्रमसे होनेवाला पुराना सर-दर्द। बढ़ना—पानी बहनेकी आवाज सुननेपर या कोई चमकीली चीज देखनेपर (स्ट्रैमोन)। (१०) धूपकी गर्मी सहन नहीं होती (जेल्स, ग्लोन, लैके, नेट्र-म्यूर)। (११) मुँहसे गाढ़े गोंदकी तरह डोरीकी भाँति लार निकलती है (एपिफिगस, हाइड्रैस्ट), बार-बार बलगम थूकता है। (१२) गलेका जखम—बार-बार घूंट लेनेकी इच्छा (लैक-कैन, मर्क)। (१३) पानी पीनेके लिये लालायित, पर निगल नहीं सकता। (१४) पानीकी बात याद आते ही रोगी कातर हो पड़ता है। (१५) निगरणकृच्छ्र या निगलनेमें कष्ट, पानी पीनेके समय अन्ननली फड़का करती है; पानी निगलनेके समय गला रुक जाना चाहता है (बेल, कैन्थ, हायो, सल्फर)। (१६) बोलनेमें तकलीफ होती है और असम्बद्ध बातें बोलता है। (१७) बहता हुआ पानी देखने या उसकी आवाज सुननेपर तुरन्त पाखाना लग आता है (सिपि)। (१८) दिनमें ६ बारसे लेकर २० बारतक बहुत ज्यादा पानीकी तरह पाखाना होता है और तलपेटमें दर्द हुआ करता है, खासकर सवेरे (हेल)। (१९) बहता हुआ पानी देखते ही बार-बार पेशाबका वेग पैदा

हो जाता है (कैन्थ, सल्फ), पेशाब बहुत थोड़ा होता है, गदला और शर्करामय (चीनी मिला) हुआ करता है। (२०) जरायु-भ्रंश। (२१) योनिमार्गमें स्पर्श सहन नहीं होना, सङ्गममें बहुत तकलीफ़ होती हैं (आर्जण्टनाई, क्रियो, नेट्र-मूर, सिपिया। (२२) शरीरमें कोई जख्म पैदा होनेपर वह नीला हो जाता है (लैके)। (२३) धनुष्टङ्कार, पानी या आइनेमें प्रतिविम्बत रोशनी आँखमें लगनेपर (स्ट्रैमोन); यहाँतक कि पानी या किसी दूसरी तरहका जलीय पदार्थका विषय याद आनेपर भी या शरीरमें थोड़ी भी हवा लगनेपर आक्षेप पैदा हो जाता है।

ऊपर लिखे कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं; परन्तु और भी ऐसे कितने ही लक्षण हैं, जिनका ज्ञान रहनेपर, कितने ही स्थानोंमें इसके चुनावमें सहायता प्राप्त होती है और वे ही आगे मस्तक आदि अङ्गोंके अनुसार लिखे जाते हैं।

लक्षणावली

मन।—प्रायः अचेतन्य, मृत्युके पहले हो जाया करता है। काल्पनिक दृश्य देखना; गर्भावस्थामें नाना प्रकारकी कल्पना और भय, गाली देना या काटनेकी प्रवृत्ति, चेतनाकी अधिकता। जलातङ्क या उन्मादकी आशंका, चिड़चिड़ा स्वभाव, मानसिक चिन्तासे रोगका बढ़ना, किसी तरहकी पतली चीज याद आते ही अकड़न पैदा हो जाती है। पासके घरकी बातचीत भी सुन नहीं सकता, अपने मनमें समझता है, कि वह पक्षी, कुत्ता या अन्य कोई जन्तु है, उड़ रहा है इत्यादि।

मस्तक।—सोनेकी अवस्थामें मानो शरीरका सब रक्त माथेकी ओर दौड़ जाता है (साइक्लेमन, लैक-कैन, मैंगे, नैजा); गर्भावस्थामें (अरम) और सोकर उठनेके समय (इयुजिन, नेट्र-कार्ब, सल्फ)। "मानो भीतरसे सब चीजें ठेलती आ रही हैं।" ललाटके पिछले भागोंमें इस तरहकी उन्मत्त करनेवाली यन्त्रणा (ऐको, ऐसाफ, स्वाई)। रोगी दीवारपर अपना माथा दबाया करता है (दबा देनेपर आराम मालूम होता है—नेट्र-मूर, नेट्र-सल्फ)। तेज़ सरदर्द, विशेषकर ललाट या कनपटीमें। बढ़ना—दिनमें (नेट्र-मूर)। माथा झुकानेपर (बेल, ग्लोन, हेलिबो, पल्स) और इधर-उधर घूमनेपर (ब्राई, काक्यु, ग्लोन, नेट्र-मूर)।

आँख ।—रोशनी सहन नहीं कर सकता, रोशनीसे आक्षेप, दृष्टिका दोष; आँखें घुमाना, पलकोंका फूलना, आँखमें जखम ।

नाक ।—तेज गन्धसे रोगीमें अकड़न पैदा हो जाना चाहती है, तम्बाकूकी गन्ध बिलकुल ही सहन नहीं होती ; बहुत सवेरे या सन्ध्याके बाद बार-बार छींक, मानो सर्दीका यह पूर्ण लक्षण है, छींक आनेके समय रोगी पीछेकी ओर माथा झुकाये रहता है, कोई चमकीली चीज देखते ही छींक आने लगती है ।

मुखमण्डल ।—दोनों ही जबड़े अकड़े मालूम होते हैं । मुँहकी पेशियाँ सब नाना प्रकारके भावोंसे उछला करती हैं और चेहरेकी भङ्गी क्षण-क्षण भरपर बदला करती है । चेहरेपर उत्ताप मालूम होना और पसीना निकलना । आक्षेप हो जानेपर मुँहसे फेन निकला करता है (आर्टिमि-वाल, कूप्रम-ऐसेट)। दाँत पीसा करता है (बेल, हेलिबो, हायो, जिङ्कम)। गर्भवतियोंके दन्तशूल रोगमें ऐसा मालूम होता है, मानो खून वक्षसे छातीकी ओर दौड़ रहा है और माथेमें इतनी हवा घुस गयी है कि ऐसा मालूम होता है, कि माथा फट जायेगा । जीभ फेनसे लिपटी । बोलनेमें तकलीफ होती है और बोली भी अस्पष्ट निकलती है । जीभके नीचेका भाग कुटकुटाया करता है । जीभके नीचेका अर्बुद—निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर बार-बार पैदा हो जाता है । वमन करना समाप्त होते ही मुँहमें फेन जमा होने लगता है और वह इतना अधिक होता है, कि गला रुक जाना चाहता है ।

गलेके भीतर ।—अन्ननलीका आक्षेप और बोलनेमें कष्ट मालूम होना । गलेका जखम, मानो मिर्चा खा लिया है । लगातार कोई-न-कोई चीज निगलते रहनेकी इच्छा, परन्तु कुछ भी निगला नहीं जा सकता ।

पाकस्थली और अन्त्राशय ।—राक्षसकी तरह सर्व-ग्रासी भूख, बिना चबाये ही खानेके पदार्थ खा जाता है, नमक खाना पसन्द करता है । पानीकी अपेक्षा गरम शोरवा या दूध सहजमें ही निगल सकता है । गर्भावस्थामें अस्वाभाविक रुचि (ऐल्यु, कैल्के, ऐसिड-नाई)। जबर्दस्ती यदि पानी पीना चाहता है तो गला रुक जाना चाहता है या वह मुँहसे बड़े वेगसे बाहर निकल आता है । पेटका कपड़ा यदि ढीला नहीं कर देती तो बहुत दबाव

मालूम होता है (जिङ्कम)। प्लीहा-प्रदेशमें बहुत दर्द पैदा करनेवाली टपक। समूचे तलपेटमें बहुत दर्द होता है और स्पर्श सहन नहीं होता। तलपेटकी पेशियाँ सब अकड़ जाती हैं और फैलाई नहीं जा सकती।

पेशाब।—पेशाबका परिमाण बहुत थोड़ा और रङ्ग घोर लाल; पेशाबके बाद मूत्राधार-मुखशायिका ग्रन्थिसे रस निकलता है (ऐनाक, हिपो-मेन्स, कैलि-कार्ब, सल्फ़)।

पुं-जननेन्द्रिय।—कामुकता। मनमें किसी तरहकी कामोद्दीपक बातें न सोचनेपर भी सन्ध्याके बाद प्रबल लिङ्गोच्छ्वास हुआ करता है। जभी तभी लिङ्गमें कड़ापन पैदा होकर वीर्यस्खलन हो जाता है (कैन्थ, ऐसिड-नाई, स्ट्रैमोन)। संगमके समय बहुत देरसे वीर्यस्खलन होता है, कभी-कभी बिलकुल नहीं होती। संगमके समय वीर्यस्खलन नहीं होता, परन्तु उसके बाद ही निद्रित अवस्थामें रेतस्खलन हो जाता है। पहले बायाँ फिर दाहिना अण्डकोष क्षय हो जाता है या छोटा हो जाता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रोगिनीको अपने जरायुका अस्तित्व अनुभव हुआ करता है (हेलोन)। भयानक प्रदर, श्रोणि-देश, नितम्ब या तलपेटमें बहुत दर्द हुआ करता है (नेट्र-मूर, पल्स)। सवेरे उठनेके समय रोगिनी देखती है, कि उसके दोनों स्तन फूल उठे हैं और भारी मालूम होते हैं।

श्वासयन्त्र।—एक तरहका बहुत तेज़ कान फाड़ डालनेवाली आवाजमें कुत्तेकी तरह बोला करता है और अन्तमें कुत्तेकी गरजकी तरह आवाज होती है। रोगीका उपजिह्वा सूखी और सिकुड़ी। आध्मानकी अधिकताकी वजहसे पैदा हुआ श्वास-कष्ट, वक्षमें घर-घर आवाज़ होती है और खाँसी आया करती है। सोनेपर बढ़ता है। श्वास रोकनेवाला प्रकोप पैदा होनेके पहले श्वास-प्रश्वासमें बहुत कष्ट होता है। श्वास-यन्त्रकी पेशी-मण्डलीका आक्षेपिक फड़कना और अन्ननलीके मुँहके प्रबल सङ्कोचनकी वजहसे हृद्त्पिण्डमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, खासकर चलनेपर; रोगीको, ऐसा मालूम होता है, कि यदि यह दर्द कुछ देरतक और रह गया तो वह मर जायगा। हृत्पिण्डमें इतना भयानक दर्द होता है, मानो वह फट जायगा या उसमें अनगिनती सुइयाँ गड़ रही हैं। कलेजा बेतरह धड़कता रहता है

और रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका हृद्‌पिण्ड कण्ठमें बढ़ा आता है (ग्लोन, पोडो); ऊपरके ऊपर पानी पीनेके बाद कुछ हलका होता है।

गर्दन और पीठ।—अकड़नकी तरह दर्द इत्यादि।

सार्वाङ्गिक।—दाहिना बाँह इतना भारी और सुन्न हो जाता है, कि रोगीको लिखनेकी शक्ति नहीं रहती (फास), इसलिये वह बाँहको लटकाये रखता है। दाहिना हाथ इतना काँपा करता है कि वह लिख नहीं सकता (नैट्र-मूरर, जिङ्कम)। दोनों उरु-शिखर ऐसे मालूम होते हैं मानो स्थान-भ्रष्ट हो जायँगी। उस जगहपर हाथ रखनेपर आराम मालूम होता है। सीढ़ी चढ़नेके समय दोनों पैर बहुत क्षीण मालूम होते हैं। एकाएक गलेसे ललाटतक खींचन मालूम होती है, उसके कुछ ही बाद रोगीकी आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ पैदा हो जाती हैं और आँखसे दिखाई नहीं देने लगता, चेहरा लाल हो उठता हैं, दाँत-पर-दाँत पीसा करता है। निम्नाङ्गसे उर्द्धाङ्गतक फैलनेवाला पक्षाघात या प्रथम अवस्थामें विशेष लाभ हुआ करता है (जेलस, कोनायम, सूल अरिष्ट और चिनिन-आर्स २या दशमिक विचूर्ण)। समूचे शरीरकी पेशियाँ फड़का करती हैं।

त्वचा।—जखम आदि जल्दी-जल्दी आराम हो जाते हैं। शरीरमें कितनी ही जगह खुजली, काटनेका घाव इत्यादि। काटी हुई जगह नीली आभा लिये। जिस जगहपर कुत्ता काटता है, वह जगह सड़ने लगती है। कार्कंटीया जखमकी तरह जखम।

निद्रा।—जम्हाईकी प्रकृतिके साथ जबड़े अटकना (दाँती लगना)। बार-बार जम्हाई आती है, पर नींद नहीं आती। नींद न आनेका रोग। तीसरे पहर नींदमें चौंक उठना सपने-भरी नींद इत्यादि।

ज्वर।—कशेरुकामें दर्द और ठण्डापन मालूम होना। रातके ३ बजनेके समय भयानक कम्प, ३-४ कम्बल ओढ़ लेना पड़ता है। कम्पके साथ ताप और पसीना मिला। संध्याके समय ज्वर आरम्भ होता है। भीतरी ताप मालूम होना, पर ताप बाहर नहीं प्रकट होता, सविराम ज्वर इत्यादि।

वृद्धि ।—पानी बहनेकी आवाजसे, पानी पीनेपर, और बहता हुआ पानी देखनेपर ; चमकीला चाकचिक्यमय प्रतिबिम्ब आँखमें लगनेपर, गाड़ीमें चढ़कर घूमनेपर, धूपमें या छूनेपर ।

उपशम ।—पीछेकी ओर माथा झुकानेपर, उत्तापसे, गर्म पानीसे या भाफ़से ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐगेव-एमेरिकाना, बेल, कैन्थ, चिनिन-सल्फ, कोना, फेगस, जेल्स, ग्लोन, हाइड्रैस्ट, हायोसायेमस, लैके, स्ट्रैमोन, सल्फ । लिसिनके बाद कितने ही स्थानोंमें "नेट्र-म्यूर" विशेष लाभदायक हुआ करता है ।

तुलनीय ।—ऊपर चढ़नेवाला पक्षाघात—जेल्स, कोनायम । श्वास-प्रश्वासका पक्षाघात—बेलेड, डाल्का । इन्द्रिय उत्तेजना—कैन्थ, ऐसिड-पिक-रिक, ग्रैफाइट । सूर्यकी रोशनी सहन न होना—ग्लोन, जेल्स, नेट्र, एपिस । पानी देखनेसे ही पेशाब लगना—कैन्थ, सल्फ । आलोकमें अकड़न—स्ट्रैमो । जरायुकी अवस्थितिका अनुभव होना—हेलोनि । जल्दी-जल्दी बोलना—हायोस ।

दोषघ्न ।—ऐगारि, काक्यु, नक्स ।

शक्ति ।—३, २०० और उससे भी ऊँचा क्रम ।

मैलैण्ड्रिनम

(MALANDRINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—घोड़ेकी एँड़ीमें ग्रज नामका एक तरहका प्रादाहिक रोग हुआ करता है, उसी विष या बीजसे "मैलेण्ड्रिनम" औषधका विचूर्ण और अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग—मुँहासे ; फोड़ा ; नासूर ; जानुकी बीमारी ; खसड़ा ; चर्म-रोग ; चेचकके रोगियोंका दुष्परिणाम इत्यादिमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह चेचक रोगका एक महान प्रतिषेधक है और लू लग जानेके कारण नाना प्रकारकी बीमारियोंमें भी इसका प्रयोग

विशेष लाभदायक हुआ करता है। रोमान्थ या खसड़ा और चर्मदल नामके चर्म-रोगमें भी यह विशेष लाभदायक है। "बच्चेके घुटनेसे घुटने लगते हैं और वह हमेशा अपने शिश्नपर हाथ रखता है" यह लक्षण (मेडोरिन, जिङ्कम) किसी भी बच्चेमें रहनेपर इससे पूरी तरह आरोग्य हो जाया करता है। आगे लिखे कई इसके निर्णायक लक्षण हैं :—टीका लगवानेके बादसे ही बच्चेके शरीरकी त्वचा रूसीकी तरह रूखड़ी रूसी निकालनेवाली और खुजलानेवाली रहती है; जाड़ेके दिनोंमें और बहुत देरतक पानीमें रहनेके कारण तलहत्थी और तलवाका फटना, पैरकी अंगुलियाँ सब ऐसी मालूम होती हैं, मानो उनमें आग छू गयी है और खुजलाया करती हैं। मानो हड्डी ऊँची हो गयी है, जगह-जगहपर इसी ढङ्गकी सूजन पैदा हो जाया करती है; निम्नाङ्गकी त्वचा तेलकी तरह दिखाई देती है और उसपर तेलकी तरह दाने सब निकलते हैं।

लक्षणावली

मन।—स्मरण-शक्तिकी क्षीणता; जड़-बुद्धि; क्लान्तिके साथ विषाद।

माथा।—सरमें चक्कर आना, सामने और पीछे माथेमें दर्द, जड़ता, गाढ़ी हरी रङ्गकी पपड़ी, निकलनेवाले उद्भेद और सन्ध्याके समय अधिक खुजलाना।

आँख।—आँखके निचले भागमें लाल-लाल दाग।

कान।—बहुत ज्यादा पीवमय, हरी आभा लिये, पीला, खून-मिला, स्राव, नाकमें सूखेपनका भाव।

मुँहके भीतर।—जीभपर पीले रङ्गका लेप, बीच-बीचमें लाल दाग, नीचेकी ओर जखम; फूलना।

पाकस्थली।—मिचली—ओकाई, पीले रङ्गके पदार्थका वमन; प्यास नहीं रहती; दाँतमें दाग।

तलपेट।—नाभीके चारों ओर धीमा-धीमा दर्द हुआ करता है।

मल।—गाढ़ा, बदबूदार मल, पीले रङ्गका बदबूदार अतिसार; काले रङ्गका मल।

पुं०-जननेन्द्रिय।—बच्चा हमेशा लिङ्गपर हाथ दिया करता है, भयानक लिङ्गोद्रेक, दर्द-भरा लिङ्गोद्रेक।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—पीली आभा लिये हरी छाल निकलकर योनि-पथको रोक देती है।

पीठ।—पीठमें चोट लगनेकी तरह बराबर दर्द।

अंग-प्रत्यङ्ग।—अङ्ग-प्रत्यङ्ग और सन्धियोंमें जखमकी तरह दर्द, हाथ-पैरके नाखूनोंका अंगुलबेढ़ा।

उर्द्धाङ्ग।—सामनेवाले बाँहके पार्श्वमें खाल उधड़ना और एक तरहका चर्म-रोग।

निम्नाङ्ग।—निम्न जानु और जानुसे घुटनेतक एक तरहका दाग और उद्भेद, घुटने अकड़े।

त्वचा।—चेचक, खसड़ा, कमर और योनि-पथमें एक तरहका खाल उधड़नेवाला चर्म-रोग, फोड़ा, गो-बीजका चेचकका टीका लगवानेका दुष्परिणाम, सान्निपातिक ज्वरमें दाग पड़ता है।

निद्रा।—अस्थिर निद्रा, सपने-भरी नींद।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐण्टि-टार्ट, एपिस, कैक्टस, इक्वि, हिपर, हिपो, मेन्स, हिपोजिन, मिडोरिन, मर्क, सैवाई, साइलि, थूजा, वैक्सिन, वेरियोलिन।

तुलनीय।—गो-बीजका टीका लगवानेका दुष्परिणाम—वैक्सिन, वेरियोलि, थूजा, ऐण्टि-टार्ट, ऐपिस, साइलिसि। बच्चोंका लिङ्गेन्द्रियपर हाथ रखना—मेडो। फोड़े मिले उद्भेद—हिपर, मर्क इत्यादि।

शक्ति।—३०, २०० शततमिक क्रम। एक पक्षका अन्तर देकर प्रयोग करना चाहिये।

मिडोरिनम

(MEDORRHINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—प्रमेह विषसे अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—दमा, रह-रहकर आक्षेप ; कदर या गट्ठे ; बहुमूत्र ; बाधक ; मृगी ; आँखोंका प्रदाह ; प्रमेह ; रुका हुआ प्रमेहका स्राव ; प्रमेहके कारण वात ; स्नायविक सर-दर्द ; यकृतका फोड़ा ; नकली मैथुन ; डिम्बाधारका दर्द ; वस्तिगह्वरका प्रदाह ; नाकमें अर्बुद या बहुपाद ; दर्द-भरा लिङ्गका कड़ापन ; हाथमें चर्म-रोग ; पलकोंका पक्षाघात ; मूत्र-पथरीका शूल ; आमवात ; गृध्रसी ; कन्धेमें दर्द ; मूत्र-द्वारका रुकना ; आमवात ; मसे इत्यादि रोगोंमें लाभदायक हैं ।

उपयोगिता और आभास ।—बुरी तरह इलाज होनेवाला प्रमेह या प्रमेहका स्राव रुक जानेके कारण स्वास्थ्यमें विकार और नाना प्रकारके दुरारोग्य-रोगोंमें यह लाभदायक है, खासकर जब किसी दूसरी दवासे लाभ न दिखाई दे । पुराना सन्धिवात, छोटी सन्धियोंका वात, स्नायुशूल और मेरुदण्डके अन्यान्य रोगोंपर इसकी आश्चर्य-भरी शक्ति दिखाई देती है । भिषक-प्रवर टैमस वाइल्डका कथन है कि वातकी बीमारी होते ही समझना चाहिये, कि रोगीके पिता या पितामह (बाप या दादा) किसी दूसरे मनुष्यको प्रमेह रोग था ; इसीलिये, पुरानी वातकी बीमारियोंमें यह निश्चित है, कि एक मात्रा "मिडोरिनम" अवश्य लाभ करेगा । बच्चोंको माथेके फोड़े या दूधिया फोड़े अथवा माथेके दुरारोग्य अरुणिका रोगकी यह एक सबसे उत्तम दवा मानी जाती है । डा० एच० सी० एेलेनका कथन है, चर्म और श्लैष्मिक झिल्लियोंकी नाना प्रकारकी बीमारियोंके साथ "सोरिनम" का जो सम्बन्ध है, प्रमेह विषके कारण मेरुदण्डके और स्नायविक रोगोंके साथ मिडोरिनमका भी वैसा ही सम्बन्ध समझना चाहिये । रमणियोंका पुराना डिम्बाधार-प्रदाह, बीजनली-प्रदाह, वस्तिगह्वरका कौषिक तन्तु-प्रदाह, सूत्रतन्तुमय अर्बुद, कोषार्बुद, जरायुके बाहरी आवरण और भीतरी आवरणका प्रदाह प्रभृति रोगोंमें, यदि लक्षण सब बिगड़े बिगड़े हुए मौजूद रहें तो "मिडोरिनम" विशेष लाभदायक है । बिगड़ी

आकृति, दुबले और न बढ़नेवाले बच्चोंके लिये भी यह बहुत उपयोगी है। बच्चा देखनेमें सफेद रहता है और उसके शरीरकी हड्डियाँ सब छोटी, विकृत रहती हैं तथा वे बढ़ती नहीं हैं। रोगीको बहुत गरमी और सारे शरीरमें दर्द मालूम हुआ करता है और उसकी समूची देहकी लसिका-ग्रन्थियाँ सब फूल जाया करती हैं। क्षय-रोगमें होनेवाला मैलापन और आलस्य अनुभव होना और रोगीकी जीवनी-शक्ति सुस्त हो जाती है। रुके हुए प्रमेह-स्रावके साथ सन्धिगत-वातके दर्दमें यह बहुत फायदा किया करता हैं। दर्द ऐसा मालूम होता है, मानो कसा हुआ है, मानो सारा शरीर जकड़ गया है और समूची देहमें इतना दर्द होता है, कि स्पर्शतक सहन नहीं होता। गहरी सुस्तीकी वजहसे रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका सारा शरीर काँप रहा है। हिमाङ्ग अवस्था, रोगी लगातार हवा करनेके लिये कहता है; निर्मल हवा सेवन करनेके लिये महान आग्रह प्रकट करता है। शरीरकी त्वचा ठण्डी, पर किसी तरहका ओढ़ना सहन नहीं होता। शरीर ठण्डा और बरफकी तरह ठण्डे पसीनेसे भरा। रोगी ठण्डी हवा सेवन करनेके लिये लालायित रहता है, पर उससे उसको सर्दी हो जाया करती है। लालामेह रोगमें समूची मूत्रनलीमें ऐसा मालूम होना, मानो जखम हो गया है वगैरह उपसर्गोंमें मिडोरिनम बहुत फायदा करता है। इससे बच्चोंको हस्तमैथुनकी इच्छा भी छूट जाती है। नोषधावलियोंमें यह एक सबसे उत्कृष्ट दवा है और इससे अनगिनती प्रकारके रोग आराम हो जाया करते हैं, क्योंकि मनुष्य शरीरके तीन चौथाई रोगोंका कारण प्रमेह और उपदंश होता है। अब इसके कई प्रधान-प्रधान लक्षण लिखे जाते हैं।

लक्षणावली

मन।—स्मरण-शक्ति बहुत ही क्षीण; बोलता-बोलता बार-बार यह भूल जाता है, कि क्या कह रहा था (बेराई, हाइपिर, लिलि-टाई, मेजिर, रोडो); नाम (क्रोटेलस, गुयायेक, कैलि-ब्रोम, सल्फ, वेलि) वाक्य, (आर्नि, कैनाब-इन, कैलि-ब्रोम, लैके) और नामका पहला अक्षरतक भूल जाता है; बहुत ही प्रियतम बन्धुका नाम भी याद नहीं रहता, यहाँतक कि कभी-कभी अपना नाम भी भूल जाता है (ऐल्यु, केलि-ब्रोम, वेलि)। कहानी कहता-कहता बार-बार कहानीका सूत्र भूल जाता है, रोगी समझता है, कि उसके पीछे

कोई है (ब्रोम); उसे ऐसा सुन पड़ता है, मानो कोई फुस-फुसाकर बातें कर रहा है; मानो कोई शय्या या आलमारीके पीछेसे उसका मुँह चिढ़ा रहा है। शब्दोंका विवर्ण भूल जाता है; कोई खूब जाना-बूझा नाम लिखनेके समय भी यह सोच-सोचकर व्याकुल होता है, कि कैसे लिखा जाये। रोगिनीको अपने रोगका लक्षण कहते समय महान सङ्कट उपस्थित हो जाता है और वह रो देती है, (कैलि-कार्ब, पल्स)। बार-बार भूल जाता है, कि क्या कहना चाहता था। बार-बार बात पूछनी पड़ती है। कोई बात कहनेके समय रो देता है (रोगीके साथ कोई बोलता है, तो वह रो देता है—नेट्र-म्यूर, प्लैट, स्टैफ)। रोगी पहले ही स्थिर कर रखता है कि उसकी मृत्यु कब हो जायगी (एकोन, एपिस, ग्रैफ, लैके, लाई, ऐ-नाई फास, प्लैट); सभी विषयोंमें पहलेसे भविष्य-गणना करनेके कारण रोगीका विश्वास प्रायः ठीक हुआ करता है; सामान्य विषयमें भी बहुत क्रोधित हो जाता है (एकोन, ब्राई, कैमो, नक्स, नेट्र-म्यूर); दिनमें अत्यन्त चिड़चिड़ा भाव और रातमें महान आनन्द प्रकट किया करता है। सभी विषयोंमें जल्दबाज और घबड़ाया हुआ (कैमो, इग्ने, नक्स, सल्फर)। उद्विग्न और बहुत थोड़ेमें ही कातर हो जाता है, सामान्य शब्दसे ही चौंक उठता है (बेराई, कैलि-कार्ब, लैके, मर्क, नेट्र-म्यूर, नेट्र-सल्फ, नक्स, ओपि)। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो समय बहुत धीरे-धीरे बीत रहा है, उसका समय कटता ही नहीं (ऐल्यू, आर्जे-नाई, कैनाब-इन, ग्लोन, मर्क, नक्स-मस, नक्स-वोम); सभी कामोंको इतनी जल्दबाजीमें करता है, कि रोगी बहुत जल्द थक जाता है (लिलि-टाई, सल्फ, ब्राई, हिपर, नेट्र-म्यूर)। किसी लक्षणके विषयमें सोचनेपर वह बढ़ जाता है (ऐ-आक्साल, बेराई, कैल्के, फास, कास्टि, हेलोन, लाइकोपस, पेट्रोल, पाइपर-मिथिष्ट; किसी लक्षणके विषयमें सोचनेपर वह फिरसे पैदा हो जाता है—एसिड-अक्साईड्रोप)। जीवन स्वप्नमय मालूम होता है. मानो सपनेके राज्यमें घूम रहा है (ऐनाक, कैनाब, स्ट्रैमोन, वैलि, वेरेट)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, झुकनेपर (बेल नक्स, पल्स, सल्फ); सोनेपर कुछ आराम मालूम होता है (आर्निका, चायना), शरीर हिलानेपर बढ़ता है (ब्राई, ग्लोन, हिपर, फास)। ललाट देशका सर-दर्द, मिचली मिला; ललाटके किनारे ऐसा मालूम होता है, मानो एक कसा बन्धन बँधा है, विशेषकर झुकनेपर। पानीकी तरह नाककी सर्दीके रोगमें ललाटकी त्वचामें

अत्यन्त खींचन मालूम होती है और आँखके पीछे ऐसा दबाव मालूम होता है, मानो धक्का देकर कोई उन्हें बाहर निकाल रहा है। इसी तरहका दबाव मालूम होता है। यह कसावटका भाव मस्तिष्कसे नीचेकी ओर समूचे मेरुदण्डमें अनुभव होता है। मस्तिष्कमें तेज जलन (केन्थ, ग्लोन, फास), विशेषकर माथेके पिछले भागमें और वहाँसे यह जलन समूचे मेरुदण्डमें चली जाती है (ग्लोन, जिङ्कम)। नींद खुलने बाद रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो आँखके ऊपरी भागमें और दोनों कनपटियोंमें दर्द होता है; धूपमें बढ़ जाता है। माथा बहुत भारी मालूम होता है और पीछेकी ओर झूल पड़ता है (कैम्फो, चायना, कैलि-कार्ब, फैलेन)। गाड़ीमें भ्रमण करनेके समय देह हिलनेकी वजहसे सर-दर्द और उदरामय। लगातार सर-दर्द, खाँसनेपर बढ़ जाता है (ब्राई, कैप्स, नेट्र-म्यूर, स्क्विला); आँखमें रोशनी लगनेपर सरमें दर्द मालूम होता है। इतनी अधिक अकड़न माथेमें मालूम होती है, कि रोगिनीको मालूम होता है, कि मानो वह पागल हो जायगी (ऐकोन, बेल, कैल्के, ऐगार, टेरेण्ट); वह न तो पढ़ सकती है, न कुछ सोच सकती है। मस्तिष्ककी जड़में लगातार दर्द होनेकी वजहसे गर्दनकी शिरायें सब फूल उठती हैं और डोरीकी तरह हो जाती हैं। माथेके केश सूखे और उनमें चमक नहीं रहती तथा सिकुड़े और उनमें कंघी डालनेपर पट-पट आवाज हुआ करती है। माथेकी त्वचा बहुत खुजलानेवाली और माथेसे चकत्ते-चकत्ते रूसी निकलती है।

आँख।—सभी चीजोंके ऊपर ही एक छाया दिखाई देती है। पढ़नेके समय रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो उसकी किताबपर अनगिनती काले बिन्दु सब उड़ रहे हैं; हरेक चीज़ दो मालूम होती हैं। सभी चीजें बहुत छोटी मालूम होती हैं। आँखका गोला हिलानेके समय उसमें दर्द मालूम होता है। आँखकी ऊपरी पलक मानो उपास्थिसे बनी है—इस तरह कड़ी मालूम होती है। पलकोंका प्रदाह, पलकके किनारे सब सूखे कीचसे भरे और छाले पड़ना; कितनी ही बार वे आगकी तरह लाल दिखाई देती हैं और बरुनियाँ सब झड़ जाया करती हैं। यह लाली और चर्मका विकार मुखमण्डल और माथेकी त्वचासे पीठ और वहाँसे जननेन्द्रिय-प्रदेशतक चला जाता है।

कान।—दोनों कान प्रायः बहरे; कानमें टपकको तरह दर्द; कानमें दर्द।

नाक।—नाकमें खुजली, जलन, नाकसे रक्तस्राव।

मुखमण्डल।—मुखका रङ्ग हरी आभा लिये; मुँहके कोनेमें पानी भरे छाले। जबड़े अटकना।

दाँत।—दाँतपर पीले रङ्गका मैल, दाँतमें दर्द।

कण्ठ और गलेके भीतर।—मानो न जाने कितनी सर्दी लग गयी है, कण्ठमें इसी तरहकी अनुभूति होती है और सारे शरीरकी हड्डीमें दर्द मालूम होता है (मर्क, इयुपेट, जेल्स)। कण्ठके भीतर जखम और सूजन—इसीलिये पतली या कड़ी चीजें निगलना मुश्किल हो जाता है (बेराई, हिपर लैके, लैक-कैन, मर्क)। नाकके पिछले छेदसे निकला हुआ गाढ़ा भूरे रंगका या खून मिले श्लेष्मासे कण्ठ हमेशा भरा रहा करता है (कास्टि, हाइड्रैस्ट, लैके मर्क, स्पाइजि)।

पाकस्थली।—राक्षसी भूख, अभी खाकर उठा है, पर तुरन्त ही दुर्दमनीय क्षुधा (साइना, आयोड, लाई, फास, से:रिन, सैरासिन)। लगातार प्यास, यहाँतक कि सपनेमें भी यही देखता है, कि पानी पी रहा है (ड्रोसेरा, दुर्दमनीय आकांक्षा, शराब पीनेके लिये, पर इसी शराबसे रोगिनी पहले घृणा करती थी (ऐ-सल्फ, ऐसेरम, सिफिलिन); नमक या नमकीन पदार्थके लिये—लैक-कैन, मैन्सि, नेट्र-म्यूर, फास); मिठाईके लिये (लाई, मैग-म्यूर, सल्फ) और अम्ल (कैल्क, नेट्र-म्यूर, पल्स, सिपि); कमला नेबू (नारङ्गी—क्यूबेब, थिरिड) और कच्चे फल खानेके लिये। दो दिन और दो रात लगातार बहुत ओकाई आया करती है और वमन होती है; पहले बिबूयोलके गोंदकी तरह श्लेष्मा, इसके बाद फेनभरा और पानीकी तरह और अन्तमें काफीकी तरह पदार्थ वमन होता है। इसके साथ ही प्रचण्ड सर-दर्द, तेज़ निराशा और मानो मृत्यु होनी चाहती है, इस तरहकी अनुभूति मौजूद रहती है। वमनके प्रकोपके समय केवल भगवानका नाम लेता है। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें ऐसा मालूम होता है, मानो आल्पीन गड़ रही है या मानो पेटमें ऐंठन हो रही है; भोजनके बाद भी तकलीफ दूर नहीं होती। भोजनके बाद ऐसा मालूम होता है, मानो पाकाशयमें कुछ उलट-पुलट हो रहा है (नक्स-मस)।

अन्त्राशय और मल।—यकृतमें प्राणांतक यन्त्रणा, रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि वह अब न जियेगा। पाकस्थलीके पीछेकी ओर स्नायु-ग्रन्थिमें भयानक यन्त्रणा—रोगीका शरीर बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है। धुन्द-डकार आया करती है और भोजन करनेके बाद अजीर्ण डकार आया करती है। तलपेटके दाहिने पार्श्वमें छेदनेकी तरह दर्द पैदा होकर दाहिनी रेतोरज्जुमें चला जाता है और दाहिने अण्डकोषमें हाथ लगानेपर दर्द मालूम होता है। मलान्त्रसे बहुत ज्यादा खून मिला और कभी-कभी थक्का-थक्का पदार्थ निकलता है और रोगीके गात्रमें सीत्कार पैदा हो जाती है। मल—गांठ-गांठ, कीचकी तरह और बहुत धीरे-धीरे निकलता है। कहीं मलान्त्र न निकल पड़े, इस भयसे रोगी जोर नहीं लगा सकता (ऐल्यू); पीछेकी ओर खूब झुके बिना पाखाना नहीं जा सकता (लेक-कैन); पाखाना फिरनेके समय बहुत तकलीफ़ होती हैं और ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वार-बेष्टनीके पीछेकी ओर एक गाँठ-सी अड़ी हुई है; तकलीफसे रोगीकी आँखमें पानी भर आता है। मल गांठ-गांठ और निम्नाङ्ग संहत और सङ्कोचन-शक्तिसे रहित। मलान्त्रमें मानो सुई गड़ रही है—इस तरहकी यन्त्रणा (ऐ-नाई)। मलद्वारसे माँसकी गन्ध लिये रस निकलता है (कास्टि, हिपर)। कई दिन मात्र उमरवाले इस तरहके बच्चेके मलद्वारके चारों ओर आगके रङ्गके दाने या एक तरहकी खुजली निकलती है। बच्चेकी कब्जियत रोगमें मल कड़ा और सूखा। मल काले रङ्गका (लेप्टैन)।

पेशाब।—बच्चेका पेशाब इतना गर्म रहता है, कि माँ कहती है, कि यह पेशाब बच्चेके शरीरमें जहाँ लगता है, वहीं झुलस जाता है (टामस वाइल्डस)। रातमें शय्यामें पेशाब—रोज़ रातमें बहुत ज्यादा परिमाणमें गदला और घोर लाल रङ्गका पेशाब होता है; वृद्धि—जिस दिन रोगी अधिक परिश्रम या ज्यादा खेलता है या जलवायु बहुत ज्यादा गर्म या बहुत अधिक ठण्डा रहता है (जब किसी दूसरी दवासे लाभ नहीं होता और रोगीके शरीरमें प्रमेह विष छिपा है ऐसा मालूम होता है—एच० सि० ऐलेन)। पेशाब करनेके समय बच्चेका मूत्राशय और तलपेट भयानक जकड़ जाती है (एपिस, प्लेट)। मसानेमें या कमरमें बहुत दर्द हुआ करता है; बहुत कुछ पेशाब होनेपर आराम मालूम होता है (लाई)। मसानेका शूल, मूत्रनलीमें भयानक यन्त्रणा हुआ करती है और रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो पथरी

निकल रही है (बार्ब, लाई, ओसिमम) ; प्रकोपके समय रोगी बरफ खानेके लिये लालायित होता है। मूत्र—घोर लाल रङ्गका, तेज गन्ध भरा और पेशाबके ऊपर तैलमय पदार्थ तैरा करता है (हिपर, लाई, सल्फ, डाल्का)।

पुं-जननेन्द्रिय ।—निद्रित अवस्थामें वीर्यस्खलन, पानीकी तरह, वस्त्रमें लगनेपर कपड़ा कड़मड़ाया नहीं करता है (-नेट्र-सल्फ, सेलिन) या बहुत गाढ़ा और उसके साथ सूतकी तरह सफेद सादा पदार्थ निकलता है। दिन-रात, जभी-तभी प्रबल लिङ्गोच्छ्वास, पेशाबके समय मूत्रमार्गमें खींचनकी तरह दर्द और जलन अनुभव हुआ करती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—आर्त्तव--स्राव बहुत ज्यादा, काले रङ्गका और थक्का-थक्का (ऐक्टिया, कैमो, चायना, काकुग्र, कक्कस, क्रोकस, कैलि-बाई,, प्लैट, पल्स, सेबाई, सिकेलि, आस्टिलेगो) ; कपड़ेमें लगनेपर उसका दाग धो देना बहुत कठिन हो जाता है (काले झोलकी तरह और धोनेपर छूटता नहीं है—मैग-कार्ब)। बायें अण्डाधारमें भयानक दर्द, ऐसा मालूम होता है, मानो एक थैली फट रही है और उसे दबानेपर वह फट जायगी। ऐसा मालूम होता है, मानो अण्डाधारको किसी चीजसे नीचेकी ओर खींचकर उसमें दर्द हो रहा है ; चलनेके समय बायीं कोषमें दर्द फैल जाता है। जरायु-स्राव—जिनका रज:स्राव होना बन्द हो गया हो, उन्हें (लैके, पल्स, सिपिया, थ्लैस्पाई, आस्टिलेगो) ; स्राव बहुत ज्यादा, कई सप्ताहतक लगातार स्राव हुआ करता है ; खून थक्का-थक्का और घोर लाल या काले रङ्गका और बदबूदार (क्रोकस, क्रियो) ; जरा हिलते ही झोंकसे खून निकलने लगता है (सेबाइना, ट्रिलियम) ; जरायुके लक्षणाक्रान्त रोगमें अकसर इसी तरहका स्राव हुआ करता है। प्रचण्ड आर्त्तव-शूल या बाधक—तकलीफसे रोगिनी पैर सिकोड़े रहती है, मानो जरायु आदि प्रबल वेगसे नीचेकी ओर खिंच रहे हैं—इसी तरहकी तकलीफ और प्रसवके दर्दकी तरह दर्द अनुभव हुआ करता है। रोगी पेशाबके समय जैसा करता है, उसी तरहके भावसे सोकर खाटकी रेलिंगमें पैर अड़ाकर बाध्य होकर ठेला करता है। योनि और योनिद्वारमें भयानक खुजली पैदा हो जाती है (कैलेड, हेलोन, क्रियो) ; खुजली बढ़ जाती है। योनिके दाहिने द्वारके गात्रमें छोटे-छोटे उपदंशके जखम पैदा होते हैं (अथवा इसके बहुत पहलेसे स्वामीसे सहवास नहीं होता या रोगिनीको कभी कोई उपदंश

आदिका रोग नहीं हुआ)। आर्त्तव-स्रावके समय रोगिनीके दोनों स्तन, विशेषकर स्तनवृन्त छूनेपर बरफकी तरह ठण्डे मालूम होते हैं। दोनों स्तन और स्तनवृन्त प्रदाहान्वित और उसमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता और जखम हो जानेकी तरह मालूम होता है (आर्नि, कास्टि, ऐ-फ्लू, हेलोन, ऐ-नाई, ग्रैफ, फेलेन)।

श्वासयन्त्र।—पढ़ते-पढ़ते आवाज उखड़ जाती है, स्वरभङ्ग पैदा हो जाता है; बीच-बीचमें एक-एक बार स्वर लोप भी हो जाता है। श्वास-रोग—प्रकोपके समय उपजिह्वाकी सुस्ती या आक्षेपकी वजहसे गला रुक जाना चाहता है; स्वरनली रोध हो जानेके कारण वायुनलीमें प्रवेश कर जाती है; केवल पट होकर सोनेपर और जीभ बाहर निकालनेपर आराम मालूम होता है। स्वरनलीमें इस तरहका तेज़ दर्द होता है, मानो, जखम हो गया है (ऐनान्थिरम)। श्वासकृच्छ्र और स्वरनली रुकनेकी तरह अनुभव होना; अनायास ही श्वास ग्रहण कर सकता है, पर साँस छोड़नेमें भयानक तकलीफ़ होती है (ऐरम-ड्रैकण्टियम, सैम्बियु)। गलनली बहुत सूखी; निगलनेके समय बहुत दर्द मालूम होता है (ऐसिड-लैक), रोज तीसरे पहर ५ बजनेके समय श्वासमें कष्ट मालूम होता है (ऐसिड-फ्लू, लैके)। खाँसी—वक्षोस्थि-शिखरके पीछे पिट-पिटकर खाँसी आती है। लगातार प्रचण्ड खाँसी, भयानक कष्ट देनेवाली, मानो स्वरनलीकी श्लैष्मिक झिल्ली फट जाना चाहती है। बहुत ज्यादा खून मिला श्लेष्मा निकलता है, इस तरहकी खोखली घर-घर खाँसी आती है, मानो हाँड़ीके भीतर खाँस रहा है। ज्योंही नींद आती है, त्योंही खाँसी आने लगती है और नींद खुल जाती है (काफिया, लैकेसिस, सल्फर)। खाँसीका बढ़ना—रातमें (ऐमोन-कार्ब, कैल्के, कैमो, ग्रैफ, कैलि-कार्ब, हायो, नक्स, पल्स, सिपिया); मिठाई खानेपर (स्पञ्जि, सल्फ, जिङ्कम, अम्ल खट्टी चीजें खानेपर—नेट-मूर, मिर्चा या नमक खानेपर—ऐल्यू) और सोनेपर (ऐ-नाई, कैम्फ, कास्टि, कोना, क्रोटन, ड्रोसेरा, डाल्का, हायो, पल्स, सैबाड)। घटना—पट होकर सोनेपर (बेराइटा-कार्ब)। बलगम अण्डलालकी तरह और फेन-भरा (फेरम-फास); कभी-कभी हरे रङ्गका कड़वे स्वादवाला जमे हुए श्लेष्माका ढेला निकलता है (क्रोका, कक्कस, स्क्विला, स्टैनम) और किसी-किसीको जमा हुआ गाँठ-गाँठ श्लेष्मा बड़े कष्टसे निकलता है (ऐलियम, नेट, सल्फर), क्षयकासकी सूचना, दोनों फेफड़ोंके मध्य खण्डमें तेज़ दर्द मालूम

होता है। बायें फेफड़ेके तल-देशमें तेज दर्द। खाँसनेपर वक्षमें भयानक दर्द मालूम होता है। मानो खाँसीके समय कलेजा जकड़ जाता है।

हृत्पिण्ड।—ऐसा अनुभव होता है, कि हृत्पिण्डके बदले उस स्थानपर एक गह्वर है। हृत्पिण्डमें भयानक दर्द, दर्द हृत्पिण्डसे बायें वक्षके चारों ओर फैल जाता है, जरा हिलनेसे ही दर्द अधिक मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—दोनों अंशफलकोंके बीचके स्थानमें दर्द (फास); समूचे मेरुदण्डमें स्पर्श सहन नहीं होता (चिनिन-सल्फ, टेरेण्ट, थिरिड, जिङ्कम)। ग्रीवाकी शिराओंमें इस तरहकी खींचन होती है, कि रोगी पीछेकी ओर माथा झुकाये बिना रह नहीं सकता। ग्रीवा पृष्ठसे तेज़ जलन आरम्भ होकर, ऊपरसे नीचेतक समूचे मेरुदण्डमें चली जाती है (ग्लोन) और इस अंशमें अकड़न मालूम होना पैदा कर देती है। शरीर फैलानेपर अकड़न बढ़ जाती है। कमरकी कशेरुकाएँ सब बहुत दर्द करती हैं और उनमें स्पर्श सहन नहीं होता। नितम्ब, मेरुचंचु और श्रोणि-फलकके पिछले भागमें दर्द और यह दर्द कमरके चारों ओर और निम्नाङ्गमें चला जाता है। श्रोणि-फलकसे जानु-तक दर्द हुआ करता है, केवल चलनेके समय। दोनों पैर इतने भारी मालूम होते हैं, मानो उनमें सीसा भरा है; इसीलिये चलनेमें बहुत तकलीफ होती है; चलते-चलते पैर अकड़ जाते हैं। निम्नाङ्ग सब रातभर दर्द किया करते हैं और इसी वजहसे चलनेमें व्याघात होता है। पैर और चरण बहुत चंचल, स्थिर नहीं रहते (जिङ्कम-वेलि)। बिजली और अंधड़ पानीके समय बाँह और दोनों पैरोंमें भयानक दर्द हुआ करता है, उन्हें रोगी किसी तरह भी स्थिर नहीं रख सकता, विशेषकर सोनेकी अवस्थामें जब शरीरपर अपना कोई अधिकार नहीं रहता और वह शान्त हो पड़ती है। सीढ़ी चढ़ने या उतरनेमें बहुत तकलीफ होती है। बाँह और दोनों पैरोंका अगला आधा भाग बरफकी तरह ठण्डा। कण्डार या पेशीके अगले भाग सब और एँड़ी मानो जकड़ या अकड़ गयी है ऐसा मालूम होना; पैरकी पोटली और तलवेमें ऐंठन होती है (हिपर-सल्फ)। चलनेके समय जभी-तभी पैर मुड़क जाते हैं (कार्बो-ऐनिम, नेट-मूर, सिपिया)। रोगी सीधा होकर चल नहीं सकता (ऐ-पाई)। हाथ या पैरमें भयानक जलन होती है, किसी तरह भी उन्हें ढँककर नहीं रख सकता और हवा करनेके लिये कहता है (कैल्के, लैके, नेट्र-मूर, सल्फ)। सभी

अङ्ग-प्रत्यङ्गकी सन्धियोंमें दर्द होता है (कास्टि, फार्मिका, लाई, नेट-म्यूर)। अंगुलीकी सन्धियोंका आकार बिगड़ जाता है, मोटा और फूला-फूला दिखाई देता है (कैल्के-सल्फ)। एँड़ीमें दर्द और सूजन (कोलोसिन्थ), एँड़ीके नीचेके ऊँचे अंशमें और पैरकी अँगुलियोंके नीचे बहुत दर्द रहता है। सभी सन्धियाँ शोथसे भरी और रसाश्रितकी तरह मालूम होती हैं (फेरम-फास, मर्क)। स्कन्ध-शिखर और बाँहका वात—दर्द अंगुलीतक चला जाता है, रोगवाला अंग हिलानेपर बढ़ता है (दाहिने कन्धेका वात—सैंगिविन, वायोला ; बायाँ—फेरम)। डाक्टर टामस वाल्डस कहते हैं, कि जहाँ वात-रोग दिखाई दे, वहाँ यह समझना चाहिये कि उसे स्वयं या उसके पूर्व-पुरुषोंमें किसीको प्रमेह रुक जानेकी वजहसे ऐसा हुआ है। शरीरकी त्वचा बहुत ठण्डी, पर शरीरपर वस्त्र नहीं रखना चाहता या नहीं रख सकता।

ज्वर।—कम्प, तीसरे पहर जाड़ा लगकर बोखार आना, उत्ताप मालूम होना ; तापके समय पंखेकी हवा खाना चाहता है। ज्वरके साथ प्यास, हाथमें पसीना, रातमें पसीना इत्यादि।

त्वचा।—पीली, खुजलानेवाली, केश उड़कर खल्वाट हो जाना, ताँबेके रङ्गके उद्भेद, शरीरमें बदबू।

निद्रा।—निद्रालुता, जम्हाई, सोनेपर सब बातचीत सुन सकता है, प्रबल सपने-भरी नींद, बेचैन नींद।

"मिडोरिनम" के सम्बन्धमें डा० टामस वाल्डसका मत।—बच्चोंके माथेके दुर्लक्षण-भरे चिपटे फोड़े या चर्मदल रोग, माथेकी दाद, रूसी, पुराना वात, बार-बार पैदा होनेवाला फेफड़ेका प्रदाह, फुसफुसावरण-प्रदाह, अन्त्रावरण-प्रदाह, बच्चोंका कार्श्य-रोग, मस्तिष्क-मेरुस्तम्भावरण-प्रदाह, जरायुका वहिः (बाहरी) और अन्तरावरण (भीतरी आवरण) का प्रदाह, डिम्बनालीका प्रदाह और जरायु-प्रदाह इत्यादि रोगोंमें सैकड़े पीछे ९८ अंश रुके हुए प्रमेह-विषके कारण पैदा होते हैं। इसलिये, जब इन सब बीमारियोंमें नाना प्रकारकी दवाएँ सेवन करनेपर भी कोई फायदा न दिखाई दे तो उस समय उच्चतर और उच्चतम क्रममें "मिडोरिनम" एक मात्रा प्रयोग करना

चाहिये और यदि आवश्यक मालूम हो तो एक या दो सप्ताहका अन्तर देकर फिर दूसरी मात्राका एक बार प्रयोग करना चाहिये।

फेफड़ेका प्रदाह, फुसफुसावरण-प्रदाह और अन्तरावरण-प्रदाह रोगमें जब यह दिखाई दे, कि रोग बार-बार अच्छा होकर फिर दोहरा जाता है, तब भी ऊपर बताये ढङ्गसे मिडोरिनमका प्रयोग करना चाहिये। नयी अवस्थामें जब तकलीफ असह्य हो जाये, खासकर यदि रोगीको रातमें नींद न आये तो हरेक रातमें हजार क्रमके "सोरिनम" की एक मात्रा आश्चर्यजनक फायदा दिखलाती है।

बच्चोंके सुखण्डी रोगमें, यहाँतक कि जब "सिफिलिनम" के प्रयोगसे भी लाभ न हो तो ऊपर बतायी प्रणालीसे प्रयोग करनेपर रोग निर्मूल हो जायगा।

मस्तिष्क-मेरुस्तम्भावरण-प्रदाहमें—"ऐक्टिया-रेसिमोसा" का प्रयोग करनेपर रोगकी पहली तेजी और यन्त्रणा घट जानेपर "मिडोरिनम" की एक मात्रासे आश्चर्यजनक लाभ दिखाई देता है। जब रोग आरोग्य होना आरम्भ होता है, डाक्टर टामस वाल्डसने उस समय ऐक्टियाके बदले "लाइकोपोडियम" का प्रयोगकर बहुत फायदा होते देखा है।

किसी रोगकी नयी अवस्थामें बहुत आवश्यक हुए बिना "मिडोरिनम" का कभी प्रयोग न करना चाहिये। यदि किया भी जाये तो महीनेमें दो मात्रासे अधिक नहीं।

वृद्धि।—रोग या लक्षणकी बात याद आनेपर, उत्ताप लगनेपर, शरीर ढँकनेपर, प्रत्यङ्ग आदि या देह फैलानेपर। बिजली-मिले अन्धड़-पानीमें, थोड़ा भी शरीर हिलानेपर; सूर्योदयसे सूर्यास्ततक (सूर्यास्तसे सूर्योदयतक—सिफिलिन), खासकर सवेरे।

घटना।—समुद्र किनानेपर रहनेपर, पट होकर सोनेपर, जलीय वायु लगनेपर; स्थिर रहनेपर; पाखाना फिरते समय पीछेकी ओर झुक रहनेपर इत्यादि।

सम्बन्ध। - प्रतिविष।—इपिकाकुआन्हा (इसकी वजहसे सूखी खाँसीमें)।

अनुकूल सम्बन्ध ।—सल्फ़र, सिफिलिनम ।

सदृश ।—ऐ-पाइक्रिक और जेल्सि (चलनेकी शक्तिका न रहना); कैम्फ़ा, सिकेलि, टैबाक, वेरेट इत्यादि (हिमांग) ; सिफिलिन, सिलिन, सल्फ़, जिङ्कम इत्यादि ।

शक्ति ।—२०० से उच्चतम क्रम और कम-से-कम एक सप्ताहका अन्तर देकर प्रयोग करना चाहिये ।

सोरिनम

(PSORINUM)

दूसरा नाम ।—सोरिकम, दि नोसोड आफ सोरा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—खुजली विषसे इसका विचूर्ण तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मुँहासे ; ग्रन्थियोंका बढ़ना ; मलद्वारकी खुजली ; दमा ; पीठमें दर्द ; फोड़े ; कर्कटका जखम ; शिशु-विसूचिका ; खाँसी ; कब्जियत ; कानियाका जखम; दूधिया पपड़ी ; अतिसार ; उपझिल्लीके रोगके बादका परिणाम ; अजीर्ण ; अकौता ; शय्यामें पेशाब कर देना ; नाना प्रकारके उद्भेद ; प्रमेह ; सन्धिवात ; रक्तस्राव ; अर्श ; सूखा रुखड़ा केश ; सर-दर्द ; मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय ; हार्निया या आँत उतरना ; कोरण्ड ; ध्वजभङ्ग ; बहुव्यापक सर्दी रोग (इन्फ्लुएञ्जा) ; चोट आदि ; खुजली-खसड़ा ; अकौता ; रक्त-प्रदर ; प्लीहा ; यकृतकी बहुत-सी बीमारियाँ ; पुरानी यकृत-प्रदाह रोग ; विषाद वायु ; धर्मोन्माद ; नाकका लाल होना ; समूचे शरीरमें बदबू ; आँखोंका प्रदाह ; कर्ण-प्रदाह ; नाक तथा कानसे पीबका स्राव ; नकसीर ; अन्तावरण-प्रदाह ; पालिप या बहुपाद ; कर्णमूल ; गृध्रसी ; शीताद ; चर्म-रोग ; प्लीहाका कड़ापन या बढ़ना ; उपदंश ; कण्ठमें श्लेष्मा जमा होना ; खल्वाट पड़ जाना ; नाना प्रकारके जखम इत्यादि ।

लक्षणावली

मन ।—रोगी बच्चा दिन-रात नहीं सोता, लगातार रें-रें किया करता है और रोया करता है (जैलापा) या दिनभर शान्त-शिष्टकी तरह रहता है,

परन्तु रातमें बहुत छटपटाता है, माताको तंग करता है और चिल्लाया करता है (दिनभर रोता है और रातभर सोता है—लाई)। रोगी हमेशा उद्विग्न चित्त ; सशंकित भाव ; हमेशा अपने भविष्यको अमंगल चिन्ता किया करता है (पल्स, सिपि)। अपने पारलौकिक मङ्गलके सम्बन्धमें विषाद (आर्स, केलि-फास, लेके, लिलि-टाइ, लाई, स्ट्रैमोन, सल्फ, थूजा, वेरेट) ; बहुत उदास और हमेशा आत्महत्या करनेकी बात सोचा करता है (अरम, आर्स, ऐक्टिया, केलि-ब्रोम, लेके, पल्स, जिङ्कम) ; अपने आत्माकी मुक्तिके सम्बन्धमें निराशा (आर्स, लेके, लिलि-टाई, मिलिलोट, वेरेट). अपने आरोग्यके सम्बन्धमें निराशा (आर्स, लोरो, केल्के, ओपि, हेलिबो, वेलि, सिपि)। बहुत दुःखित ; रोगी सोचता है, कि वह अब न जियेगा (ऐकोन, आर्स, ऐक्टिया, केल्के, जेल्स, फास. प्लेट) विषय-सम्पत्ति या काम-काजमें नुकसान या विफल मनोरथ हो जानेका भय ; रोगी हमेशा निराशा प्रकट करता और झींखा करता हुआ स्वयं अपनेको तथा अपने परिवारको घबड़ा और दुःखित कर डाला करता है। शरीरमें भयानक खुजलीकी वजहसे रोगी उन्मत्त और किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो जाता है।

मस्तक।—बीच-बीचमें पैदा होनेवाला पुराना सर-दर्द, सोनेवाली नींदकी अवस्थामें शय्यामें करवट बदलते ही तकलीफ़ बढ़ जाती है ; तकलीफ़से रोगीकी नींद खुल जाती है। सरमें चक्कर आनेके साथ सर-दर्द। मानो किसीने रोगीके ललाटपर एक मुक्का मार दिया, इस तरहका सर-दर्द, दर्दसे रोगीकी नींद खुल जाती है (केनाब-इन, नेट्र-मूर), सरमें दर्द आरम्भ होनेके पहले दृष्टि काँपा करती है या दृष्टि धुंधली हो जाती है अथवा दिखाई ही नहीं देने लगता (आइरिस, लेक-डिफ्लो, केलि-बाई) या आँखके सामने काले बिन्दु या चक्कर सब उड़ते दिखाई देते हैं। सर-दर्द पैदा होते ही भूख लग आती है (फास, भूखके कारण सर-दर्द—कास्टि, लाई, साइलि, भूख लगते ही न खानेपर सर-दर्द—इलेप्स) ; कुछ खाते ही दर्द घट जाता है (ऐनाक, एरम-ट्राई, केलि-बाई, चेलिडो, वृद्धि—केलि-फास, केल्के-फास, कार्बो-वेज हायो)। आर्त्तव स्राव या सोरा दोष भीतर दब जानेकी वजहसे उत्पन्न ; उपशम—नाकसे रक्तस्राव होनेपर (ब्यूफो, फेरम-फास, मैग-सल्फ, मिलिलोट, रैफेनस)। माथेके केश सूखे चमकसे रहित, सहजमें ही जटा बँधकर जुड़ जाते हैं (लाई, नेट-मूर, पेट्रोल, ऐ-पलू), लट बँधे (ऐण्टिम-टार्ट, बेराइ, सार्सा,

टियुबर्क्युलिनम, विङ्का, वायोला-ट्राई)। माथेकी त्वचा सूखी, रूखी या पपड़ी उखड़नेवाली और बदबूदार रससे तर ; दूषित गन्दी पपड़ियोंसे भरी और उससे गोंदकी तरह बदबूदार रस निकलकर केश सब जटामें परिणत हो जाते हैं (ग्रैफ, मेजिर, विङ्का, वायोला-ट्राई)।

आँख ।—रोशनीका भीषण रूपसे सहन न होना, पलकें प्रदाहित, आँख नहीं खोल सकता (ग्रैफ, हिपर, कैल्के-सल्फ); तकियेमें मुँह गड़ाकर पड़ा रहता है, रोशनी बिलकुल ही सहन नहीं होती (मिडोरिनम)। आँखोंके प्रदाहमें, आँखमें मानो धूलके कण गिर गये हैं, इसी तरहकी करकराहट होती है और आँखसे पानी गिरा करता है (इयुफ्रे)।

नाक ।—कानके ऊपर और पीछेका अंश क्षय हुई त्वचाकी तरह और उसपर तर दाने सब निकला करते हैं और उनसे लगातार गोंदकी तरह रस गिरा करता है (ग्रैफ, मेजिर)। कानसे पीबका स्राव, पीब पतला, कषाय, क्लेदकी तरह और भयानक बदबू, मानो सड़े मांसकी तरह (ए-कार्बोल, ए-नाई, लाई, सिलि, टेल्यू); कभी खसड़ा हुआ था, तबसे कानका बहना अच्छा नहीं हुआ।

मुखमण्डल आदि ।—नाककी सर्दी, नाक और वायु-मार्गसे पीला हरा श्लेष्मा निकलता है ; क्षणभर भी हाथमें रूमाल रहे बिना काम नहीं चलता ; नासारंध्रके खूब भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ अड़ा हुआ है और इसी वजहसे रोगीको ओकाई आती हैं। व्रण—साधारण और धुमैला ; ऋतुके समय और काफी मेदमय पदार्थ, चीनी और मांस खानेपर बढ़ जाता है (इयुजिनिया जेम्बसके बाद कैलि-ब्रोम व्रणके लिये विशेष लाभदायक हुआ करता है और उससे तथा किसी दूसरी दवासे फायदा न होनेपर "सोरिनम" का प्रयोग करना चाहिये)। मुँहका कोना फटा या जखमसे भरा (काण्डियुरैंगो)।

कण्ठ ।—गल-ग्रन्थि-प्रदाह, दोनों ग्रन्थियाँ बहुत फूली ; कोई चीज निगलनेमें बहुत तकलीफ और दर्द होता है ; कण्ठके भीतर जलन होती है और ऐसा मालूम होता है, मानो झुलस गया है (ऐपिस, लैक-कैन, कैप्स) ; निगलनेके समय कण्ठसे कानतक छेदनेकी तरह या फाड़नेकी तरह तेज़ दर्द

मालूम होता है (सिफिलिन, किसी तरहकी तकलीफ नहीं होती—कैराइटा कार्ब)। मुँहसे लगातार बदबूदार लार निकलती है (ऐ-नाई, मैन्सिन, मर्क, मर्क-डाल, मर्क-प्रोटो)। कण्ठमें लगातार गाढ़ा स्लेष्मा सञ्चित होता है और रोगी उसे बार-बार खाँसकर बाहर निकलता है (ब्राई, नेट्र-फास, पेरिस, केलि-बाई, हाइड्रैस्ट, वेरियोलिन)। डाक्टर एच० सी० ऐलेन कहते हैं, कि यह गल-ग्रन्थि-प्रदाहकी नयी अवस्थामें ही उपयोगी नहीं है, बल्कि इसके द्वारा गल-ग्रन्थि-प्रदाह पैदा होनेका लक्षण भी आराम हो जाया करता है। जभी खाँसकर स्लेष्मा निकालनेकी चेष्टा करता है, तभी मटरकी तरह पनीरके ढेलेकी नाईं कड़वे स्वादवाला और सड़ी गन्धभरा जमा हुआ स्लेष्मा निकलता है (कक्कस, केलि-म्यूर, मिडोरिन, स्क्विला, सिलि, लाई)। कण्ठके भीतर जखमकी तरह हो जाता है और निगलनेके समय उसमें दर्द मालूम होता है। केवल ठण्डी चीजें बिना तकलीफके खा सकता है।

पाकस्थली ।—सड़े अण्डेकी तरह बदबूदार डकार (ऐगार, एण्टि-टार्ट, डायस्को, ग्रैफ, मैग-म्यूर, सल्फ, सिपि)। पानी पीनेके बाद लार निकलना, सोनेपर पेटमें दर्द हुआ करता है, कुछ खा लेनेपर घट जाता है, सोनेपर मुँहमें पानी भर आया करता है, उठ बैठनेपर फिर नहीं रहता। भोजनके बाद या भोजनके पहले तम्बाकू सेवन करनेपर हिचकी आती है। वमन—खट्टा पदार्थ और स्लेष्माका वमन होता है और इसी वजहसे दाँत खट्टे हो जाते हैं या दाँत सब मानो सिहर उठते हैं, खासकर सवेरे भोजनके पहले। आधी रातके समय रोगीको भयानक भूख लग आती है (ऐबीज, चिनिन-सल्फ, टियुक्रि, लाई, फास, इग्ने, सेलिन, सल्फ, टेल्यू)। कुछ खाना ही पड़ता है (सिना, सल्फ)।

अन्त्राशय और मलान्त्र ।—यकृत प्रदेशमें दबाव या सुई गड़नेकी तरह दर्द ; वृद्धि—दबाने और दाहिनी करवट सोनेपर (बेल, लाई, मर्क, टिलिया); दर्दके कारण हँसने, जम्हाई लेने, खाँसने ; गहरी साँस लेने अथवा चलना—ये सब काम नहीं कर सकता। प्लीहा प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; स्थिर होकर खड़े होनेपर ; चलनेपर फिरसे आरम्भ हो जाता है और अन्तमें स्थिर होकर रहनेपर भी फिरसे दर्द होने लगता है। कुलफी बरफ खानेपर पेट फूलने लगता है। सवेरे उदरमें हुड़हुड़ गुड़गुड़ वगैरह आँतोंमें आवाज सुन

पड़ती है। जो हवा खुलती है, वह बहुत बदबूदार रहती है। सवेरे पेटमें इस तरहकी ऐंठन होती है, कि रोगीको दौड़कर पाखाने जाना पड़ता है। पाखाना होनेपर घटना। सन्ध्याके समय पेटमें दर्द ; खा लेनेके बाद पतले दस्त आना, एकाएक वेग पैदा हो जाता है और पाखाना जानेमें जरा भी देर सहन नहीं होती (ऐलो, साइक्यू, सिस्टस, क्रोटोन, लिलि-टाई, सल्फ) ; मल पानीकी तरह, आँव मिला घोर भूरे रङ्गका, बहुत बदबूदार, सड़े मांसकी तरह, गन्धवाला, (कार्बो-वेज, कोलोसिन्थ, पोडो, साइलि) ; अनजानमें निकलनेवाला (ओलियैन, ओपि, फास, रस, सिकेलि) ; वृद्धि—रात ग्यारह बजेसे ४ बजेके बीचमें (साइक्यू, पोडो)। संकटापन्न तरुण रोगके बाद, बच्चेको दाँत निकलनेके समय या जलवायुके परिवर्त्तनके समय पैदा होनेवाला पतला दस्त। कब्जियत—दुरारोग्य (कास्टि, नक्स, ओपि, प्लैट, प्लम्ब, सल्फ), कमरमें बहुत दर्द हुआ करता है (लैके, लाई, मर्क) ; मलान्त्रमें सङ्कोचन-शक्तिके न रहनेकी वजहसे उत्पन्न (ऐल्यू, ब्राई, ओपि और जब सल्फरके प्रयोगसे लाभ नहीं होता ; पाखाना होने बाद जलन पैदा करनेवाला अर्श।

पेशाब।—पेशाब करनेके कुछ ही पहले मूत्राधार-सुखशायिका ग्रन्थिसे रस निकलता है। पेशाबमें लाल रङ्गकी तली जमती है और उसके ऊपर चर्बीकी तरह कुछ तैरता रहता है (हिपर, लाई, मिडोरिन, सल्फ)। शय्यामें पेशाब हो जाना या अनजानमें पेशाब हो जाना, मूत्राशयके असम्पूर्ण पक्षाघातकी वजहसे (कास्टि, कास्टियुरैंगो, डालका, जेल्स, फास) ; पूर्णिमाको होनेवाला, या पहले जिसे अकौता हुआ था या होता रहता है, ऐसे रोगीका दुरारोग्य शय्यामूत्र।

पुं-जननेन्द्रिय।—जननेन्द्रियकी शिथिलताकी वजहसे सङ्गमेच्छाका घट जाना। संगमसे अनिच्छा। संगमके समय वीर्य-स्खलन नहीं होता। लिङ्गमुण्ड प्रदाहित और उसपर एक जखम उत्पन्न होनेके कारण वह फूल उठता है और बहुत भारी मालूम होता है। बहुत दिनोंका दुरारोग्य प्रमेह—आराम भी नहीं होता और स्राव भी रोका नहीं जाता। सवेरे लिङ्गमें कड़ापन पैदा होकर वीर्यस्खलन हो जाता है (कार्बो-वेज, साइलि)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत देरसे ऋतु होता है और स्राव भी बहुत थोड़ा हुआ करता है। सोरा विषसे दूषित रमणियोंको आर्त्तव-स्राव न होना ;

नितम्ब और दाहिने श्रोणि-देशमें भयानक दर्द मालूम होता है और रोगिनीको बहुत सुस्ती और कमजोरी मालूम होती हैं। गांठ-गांठ मल निकलनेपर मलद्वारसे योनितक दुर्दमनीय खुजली पैदा हो जाती है, खासकर रातमें। योनिद्वारके ऊपर जखम निकलना। कभी चोट लगी थी, उसी वजहसे बायाँ डिम्बाधार बहुत फूला और कड़ा। गर्भावस्थामें—दुर्दमनीय वमन हो जाता है ऐ-कार्बोल, सिम्फोरिकार्पस), गर्भका भ्रूण भयानक रूपसे हिला करता है (आर्निका, लाई, ओपि, साइलि, थूजा ; मानो भ्रूण कलइया खा रहा है—लाई ; आठवें महीने बच्चा इतना हिलता है कि गर्भिणीकी नींद खुल जाती है।

श्वासयन्त्र ।—खाँसी प्रतिवर्ष शीतऋतुमें पैदा हो जाती है (रियुमेक्स, सिपिया)। सूखी खाँसी, खाँसते-खाँसते श्वासाल्पता पैदा हो जाती है। खाँसी—सोरा या अकौताके दब जानेपर, प्रायः एक वर्षकी पुरानी खाँसी ; वृद्धि—सवेरे नींद खुलनेपर (कार्बो-वेज, कैलि-बाई, साइलि) और सन्ध्याके बाद सोनेपर (कैलि-कार्ब, पल्स, फास, टियुबर्कुलिनम) ; बलगम हरा, पीला या नमकीन स्वादवाला ; कभी-कभी पीवकी तरह (ऐ-नाई, कार्बो-वेज, कैलि-बाई, साइलि) ; बहुत देरतक खाँसनेपर कहीं श्लेष्मा निकलता है। श्वासरोग या श्वासकष्ट, उठ बैठनेपर (लैके), श्वासकष्ट और वक्षका दर्द बढ़ जाया करता है ; निर्मल वायु सेवन करनेपर भी श्वासकष्ट बढ़ जाया करता है ; घटना—वक्षके पाससे दोनों बाँह जितना दूर सम्भव हो उतनी दूर हटाकर सोनेपर (वक्षके दोनों पार्श्वमें दोनों बाँह) ; रोगी अपने जीवनकी आशा त्याग देता है।

त्वचा ।—बहुत अधिक चर्मरोग हुआ करते हैं (सल्फ, हिपर, ग्रैफ) ; शरीरमें खरोंच लगते ही वह पक जाता है (हिपर, ग्रैफ) ; शरीरकी त्वचा सूखी और निष्क्रिय, प्रायः पसीना नहीं होता ; बहुत मैला, मानो न जाने कितने दिनोंसे स्नान नहीं किया है, रुखड़ी और तेलकी तरह लसदार, जखमोंको मरहमसे आराम करनेके कारण बीमारियाँ। अकौता रुक जानेके बाद पीले रङ्गके दाने या आमवात, परिश्रम करते ही आमवात निकल आता है। दुरारोग्य अकौता या एकजिमा, प्रथम निकले हुए जखम सब आराम होने बाद शरीरमें जगह-जगह फिर पीव भरे दाने निकल आते हैं, घुटनेके गह्वरमें सूखे खुजलानेवाले उद्भेद निकलते हैं। रस बहनेवाले और खुजलानेवाले मसे (ऐ-नाई

केलि-कार्ब ; असहनीय और जलन भरे—सेबाइना ; चेहरा और हाथ-पैर खुजलानेवाले दाने—सिपिय)। बहुत ज्यादा पसीना निकलता है—थोड़ा भी परिश्रम करते ही (सिङ्कोना, कुरारी, ग्रैफ, लाई, मर्क, नेट-कार्ब, साइलि) और रातमें (ऐ-ऐसिट, कैल्के, चायना, लाई, मर्क, सल्फ); पसीना होनेपर रोगी बहुत कमजोर हो जाता है (ऐलो, कैल्के, कैम्फोरा, नेट्र-म्यूर, ऐ-फास, सेलिन) (डा० जे० बी० बेल)। नये रोगकी अन्तिम अवस्थामें बहुत ज्यादा पसीना होकर सभी तकलीफें शान्त हो जाती हैं (ब्राई, कैलेड, कैमो, जेल, नेट्र-म्यूर, सर-दर्दके सिवा भी और सब यन्त्रणायें घट जाया करती हैं—इयुपेट-पर्फोल)। सूखी पपड़ी निकलनेवाली खुजली, गर्मीके दिनोंमें अच्छी हो जाती है, फिर शीतकी हवा लगते ही फिरसे पैदा हो जाती है (ऐलो)।

रोगीके शरीरमें बहुत बदबू (ऐ-कार्बोल, कोना, हिपर); नहानेपर भी बदबू दूर नहीं होती (सल्फ)।

सार्वाङ्गिक।—प्रमेह-विषसे दूषित रोगी (ऐल्यू, बेसिलिन, हिप, सल्फ), पर इसकी भरपूर क्रिया होती है। पुरानी बीमारीमें, जब किसी दूसरी दवासे बीमारी पूरी-पूरी अच्छी नहीं होती या स्थायी-रूपसे लाभ नहीं होता, उस समय उच्च-क्रममें सोरिनमका प्रयोग करना चाहिये। नये रोगमें प्रतिक्रियाका अभाव ; रोगीके आराम हो जाने बाद भी रोगीको भरपूर भूख नहीं लगती शरीरपर माँस नहीं चढ़ता। रोगीके शरीरमें जड़ता मालूम होती है और अच्छी ताजगी नहीं मालूम होती है (कैल्के-फास, सल्फ, उच्चक्रम एक मात्रा)। रोगी उजला, रोग हो जानेवाला और दुबला रहता है। रोगीके समूचे शरीरमें दर्द होता है ; उसके अंग-प्रत्यङ्गमें जभी-तभी मोच आ जाती है और दर्द हुआ करता है। बहुत ही सर्दी लग जानेवाला शरीर (बेराई, कैल्के), थोड़ी भी सर्दी लग जानेपर बीमार हो जाता है ; गर्मीके दिनोंकी जलवायुमें भी गर्म कपड़ेसे अपनेको ढँक रखता है (हिपर, ग्रैफ, मर्क, बेराई-कार्ब)। अंधड़-पानीके समय या कई दिन पहलेसे ही रोगी बहुत बेचैनी अनुभव करता है। कच्छु या कोई दूसरा चर्म-रोग रुक जाने या बैठ जानेकी वजहसे नाना प्रकारकी बीमारियाँ (सल्फ)।

कोई बीमारी या ज्वर आनेके ठीक पहलेवाले दिन रोगीको बहुत अधिक शारीरिक गड़बड़ी मालूम होती है (ज्वरका आक्रमण होनेके पहलेवाली रातमें

बेचैनी मालूम होना—चायना); रोगीकी देहसे कोई भी स्राव क्यों न निकले—पतले दस्त, प्रदरका स्राव, ऋतु-स्रावका रक्त या पसीना—सबमें सड़ी गन्ध रहती है, मानो उससे सड़े मांसकी गन्ध आती है। धातुगत तीव्र कच्छुविष ; रोगी अत्यन्त सूक्ष्म-स्नायु, बेचैन और सामान्य कारणसे ही चौंक उठता है।

निद्रा।—रातके अन्तिम भागमें डाकू, भ्रमण और विपत्ति आनेके बहुत डरावने सपने देखता है ; पाखानेमें मानो बैठा हुआ है। इस ढङ्गके सपने देखकर शय्यामें पाखाना फिर देता है। बहुत दुर्दम्य खुजलीके कारण रातमें नींद नहीं आती।

शीत, उत्ताप और पसीना।—अधिकांश स्थानोंपर संध्याके समय ज्वर आता है। शीतावस्थामें प्यास रहती है और बाँहके ऊपरी अंशमें और ऊरुमें शीत मालूम होता है। शीतकी वजहसे सी-सी करता है और पैर बरफकी तरह ठण्डे हो जाते हैं। पानी पीते ही खाँसी आती है (सविराम ज्वरमें—साइमेक्स)। उत्ताप अवस्थामें चेहरेपर पसीना हुआ करता है, विशेषकर सन्ध्याके समय। सन्ध्याके बाद तेज़ उत्ताप पैदा हो जाता है। रोगी प्रलाप बका करता है और तेज़ प्यास तथा बहुत ज्यादा पसीना हुआ करता है। क्या जाड़ा, क्या गर्मी, दोनों ही अवस्थामें उत्ताप, पसीना और प्यासकी अधिकता रहती है (कैल्के-सल्फ़)। पसीनेकी अवस्था—घूमनेके समय रोगी पसीनेसे तर हो जाया करता है और उसके अनुसार बहुत कमजोरी मालूम हुआ करती है (ब्राई, चायना, कार्बो-ऐन)। चेहरा, तलहत्थी और विटपके नीचे, जरा हिलते ही बहुत ज्यादा पसीना होता है। रातके अन्तिम भागमें ३ बजनेके समय बहुत ज्यादा पसीना होता है। पसीना निकलने बाद सभी तकलीफें और उपसर्ग घट जाया करते हैं। किसी रोगके आरोग्य होनेके समय बहुत ज्यादा पसीना (कैलि-कार्ब ; परन्तु इसमें सोरिनमकी निराशा नहीं है)।

वृद्धि।—खुजलानेपर, नाड़ीमें चढ़कर घूमनेपर, भोजनके कुछ ही बाद, ठण्डा पानी आदि पीनेपर, दाहिनी करवट सोनेपर, चलनेपर, शरीर हिलानेपर सन्ध्याके समय और आधी रातके समय, निर्मल वायु लगने और अंधड़-पानीके पहले, गर्मीके दिनोंमें और पूर्णिमाके समय।

उपशम।—सोनेपर (लेकिन खाँसी बढ़ जाती है); स्थिर रहनेपर, घरमें रहनेके समय, भोजनके समय और नाकसे रक्तस्राव होनेपर (सर-दर्द)।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक—सल्फर, टियुबर्क्युलिनम ।

दोषघ्न ।—काफिया । सोरिनमके बाद ऐल्यु, बोरैक्स, हिपर-सल्फर, टियुबर्क्युलिनमके प्रयोगसे फायदा होता है । गर्भवतियोंके वमनमें ऐ-लैक्टिकके बाद और डिम्बाधारमें चोटकी वजहसे रोगमें आर्निकाके बाद सोरिनम और स्तनके कर्कट रोगमें सोरिनमके बाद सलफरका प्रयोग करना चाहिये (डा० एच० सी० ऐलेन) ।

प्रतिकूल ।—लैकेसिस ।

सदृश ।—कार्बो-वेज, चायना, ऐ-फास, बैराइटा-कार्ब, नेट्र-म्यूर, फास, कैलि-कार्ब, ओपि, वेलि ।

तुलनीय ।—दिन-रात बच्चे रोते हैं (जेलापा) ; दिनभर अच्छा रहता है, रातमें रोता है (लाइकोपो—विपरीत) ; सर-दर्द—कैलि-बाई, ऐनाकार्ड । उद्भेद या खुजलीके साथ सहजमें पकना—हिपर । पीनेसे खाँसी—कास्टिकम । मुँह मिट्टीकी तरह—नेट्रम । जीभ मानो जल गयी है—सैङ्गु । आरोग्यके समय बहुत पसीना—सोरिनम । आरोग्यसे हताश—चायना, कैम्फि, ओपियम । प्रतिक्रियाका अभाव—ओपियम, कार्बो-वेज । रातमें भूख—चायना, सल्फ, फास इत्यादि ।

शक्ति ।—३० शततमिकसे १००० शततमिक क्रम (जल्दी ही दुबारा प्रयोग उचित नहीं है) ।

पाइरोजिनियम

(PYROGENIUM)

दूसरा नाम ।—पाइरेक्सिन, सेप्सिन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सड़े हुए मांस आदिके रससे प्रस्तुत होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—फोड़ा ; मलान्त्रके पास पसीना ; शय्याका जखम ; मूत्र-ग्रन्थिकी बीमारी अतिसार ; रक्तमाशय ; प्रकीता ; सान्निपातिक ज्वर ; नासूर ; सर-दर्द, हृत्पिण्डका तेजीसे धड़कना ; हृत्पिण्डकी क्रियाका लोप होना ; हृत्पिण्डका अस्तित्व अनुभव होना ;

विलेपी या क्षय ज्वर ; अविराम ज्वर ; बहुव्यापक सर्दी रोग ; आँतका रुक जाना और जखम ; प्रसवका दर्द ; सूतिका ज्वर ; डिम्बाशयका फोड़ा ; अन्त्रावर्त्तन-प्रदाह ; फिफड़ेका यक्ष्मा ; विषाक्त ज्वर ; सूतिका ज्वर ; पीवका बोखार ; कशेरुकाका टेढ़ापन ; आँतोंका क्षय रोग ; गुटिका रोग ; आँतोंका प्रदाह ; शिराओंका फूलना और जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—यह वास्तविक नोषध नहीं है, परन्तु वैसे ही गुणोंवाली दवा है, क्योंकि सब तरहकी पीव लगकर पैदा हुए रोगमें इससे बहुत अधिक फायदा हुआ करता है। प्रसवके बादका ज्वर या फोड़ा आदि चीरनेके समय व्यवहृत आँतोंके जखमसे पैदा हुआ ज्वर, घरकी नालियोंके सड़े पानीसे पैदा हुई भाफ़से पैदा हुआ ज्वर, सड़ा मांस खानेके कारण ज्वर, उपझिल्ली प्रदाहके कारण ज्वर, वात श्लेष्मा प्रभृतिमें यह विशेष लाभदायक है। इन सब रोगोंमें इसका एक प्रधान निर्णायक लक्षण है—"किसी दूसरी चुनी हुई दवासे रोगका प्रतिकार या स्थायी उपकार नहीं होता।" उत्ताप और पसीना मिला भयानक कम्प या बिना पसीनेका उत्ताप या ज्वरमें प्रत्यङ्गोंमें प्रचण्ड दर्द। रोगी बहुत बेचैन हो जाता है, सेंकने, गर्मी लगने या शरीर हिलानेपर बेचैनी घट जाती है ; आर्निका और बेप्टिशियाकी तरह सारे शरीरमें दर्द, इयुपेटोरियम-पर्फोलियेटमकी भाँति हड्डीमें दर्द और रस्टक्सिकोडिण्ड्रनकी तरह शरीर हिलाने और गर्मी लगनेपर बेचैनीका घटना, आदि भी इस दवाके निर्णायक लक्षण हैं। क्षयकासकी अन्तिम अवस्थामें विलेपी ज्वरमें और पीवके संसर्गके कारण पैदा हुए ज्वरमें ये सब लक्षण स्पष्ट मालूम हुआ करते हैं। सूतिका ज्वरमें, इसका लक्षण मौजूद रहनेपर, पाइरोजिनियमसे कई घण्टोंके भीतर ही लाभ हो जाया करता है ; वात-श्लैष्मिक ज्वरमें जब बेप्टीशियाकी तरह मस्तिष्कका मैलापन मौजूद रहता है, पर ज्वर इतना अधिक रहता है, कि बेप्टीशियासे उसका दमन करना असम्भव हो जाता है, उस समय पाइरोजिनियम उसकी सबसे उत्कृष्ट दवा है। ज्वर १०६ डिगरी चढ़ा रहता है और समूची देहमें दर्द हुआ करता है, उस समय २४ घण्टोंमें पाइरोजिनियमसे आश्चर्यमय लाभ दिखाई देता है और यदि गर्मी तथा शरीर हिलानेपर रोगीकी तकलीफ घटनेका लक्षण मालूम हो तो उस ज्वरको पाइरोजिनियम जड़से दूर कर देगी। आगे लिखे कई इसके प्रकृतिगत लक्षण हैं :—

शय्या बहुत कड़ी मालूम होना (आर्निका); रोगी अपने शरीरके जिस अंशको दबाकर सोता है, उस अंशमें बहुत दर्द हुआ करता है (आर्नि, बैप्टि), दो एक दिनोंमें ही रोगीका शय्यागत होना आरम्भ हो जाता है (ऐ-म्यूर, बैप्टि, ऐ-कार्बोल)।

रोगी बहुत बेचैनी प्रकट करता है और अधिक देरतक शरीरका कोई अंश यदि दबाकर सोता है तो दर्द होता है (आर्नि, बैप्टो), इसी वजहसे लगातार करवट बदला करता है (आर्नि, युपेट, रस)।

रोगीकी देहके सभी पदार्थोंमें बहुत बदबू, रोगीकी देह, निकली हुई साँस, पसीना और मल, मूत्र तथा निकला हुआ आध्मान वायु सबमें ही भयानक सड़ी गन्ध या सड़े हुए मांसकी तरह गन्ध निकलती है।

सड़ी हुई नालीकी गन्धके कारण ज्वर, पीब लगनेकी वजहसे पैदा हुआ विष भी इसके अन्तर्गत आता है।

“कई वर्ष पहले रोगिनीको सूतिका ज्वर हुआ था, तबसे फिर रोगिनी स्वस्थ नहीं हो सकी”—यह इसका एक सिद्धिप्रद लक्षण है।

लक्षणावली

मन।—वाक्-प्रियता, रोगी बहुत बकता है, स्वाभाविककी अपेक्षा तेजीसे बात सोच और बोल सकता है। क्रोधी-स्वभाव, विकार प्रकट हो जाता है और अपनी देह और अङ्ग-प्रत्यङ्ग आदिके सम्बन्धमें भ्रम ज्ञान होता है (बैप्टी, पेट्रोल, स्ट्रैमोन)। शय्यामें शायित अवस्थामें रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी समूची देहसे शय्या ढकी है; रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी शय्यापर सब तीन आदमी सोये हुए हैं और मानो उसके शरीरका वस्त्र तीन आदमियोंमें पूरा नहीं पड़ता (बैप्टी)। रोगी अच्छी तरह समझता है, कि उसका माथा तकियेपर है, पर शरीरका बाकी अंश कहाँ है, यह वह स्थिर नहीं कर सकता (एक सूतिका ज्वरके रोगिनीको देखने गया था। जब उससे हाथ दिखलानेके लिये कहा गया, तो रोगिनीने कहा, कि उसको सामने मेरे हाथमें झाड़ू देकर निकाल दिया है, यह पाइरोजिनियमका एक प्रधान और सिद्धि-प्रद लक्षण है)। रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, कि जब वह दाहिनी करवट सोती है, तो एक व्यक्ति और बायीं करवट सोनेपर

दूसरी व्यक्ति हो जाती है। रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, कि वह चीज देखने या बोलनेके पहले अन्य व्यक्ति हो जायगी (ऐल्यू)। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी देहके चारों ओरसे हाथ और पैर डोल रहे हैं।

मस्तक।—माथेमें अधिक रक्त-सञ्चय होना और उसमें क्षणभरके लिये होनेवाला दर्द और टपक। खूब दबा देनेपर आराम मालूम होना। माथेमें बहुत ज्यादा पसीना आना। खाँसनेपर सरके पिछले भागमें दर्द मालूम होना (सिपा, कोका, जिङ्कम)। माथा ऐसा मालूम होता है, मानो उसपर टोपी रखी है। माथा इस करवट उस करवट हिलना, कम्पनकी तरह चक्कर आना।

आँख।—चक्षुगोलकमें बेहद दर्द ; आँखका गोला बाहरकी ओर या ऊपरकी ओर घुमानेपर उसमें दर्द मालूम होता है। आँख बाहर निकल पड़ती है।

कान।—कानमें जखम या बाजेकी तरह आवाज़। कान ठण्ढा और लाल।

नाक।—पीवके संसर्गके कारण पैदा हुए रोगोंमें नाकसे खूनका स्राव। नाकका पंखेकी तरह सिकुड़ना और फैलना (लाई)।

मुखमण्डल।—म्लान, उतरा हुआ, हड्डी-हड्डी, गाल और दोनों आँखें गड्ढेमें धँसी और ठण्ढे पसीनेसे तर (कैम्फो, कार्बो-वेज, ऐसिड-कार्बोल, लैके, मर्क)। दोनों गाल लाल और इतने गर्म कि छूनेपर हाथ जल जाता है (क्रियो, लाई)।

मुँहके भीतर।—मुँह मानो सड़ गया हो और मुँहका स्वाद मीठा ; सड़ा या पीवकी तरह ; मानो उसमें फोड़ा फूटकर, उससे पीव निकलकर मुँहमें आ रहा है।

जीभ।—बड़ी और झूलती हुई। निर्मल, चिकनी और मानो उसपर बार्निश की गयी है—ऐसी चमकीली (आर्स, बैप्टी, सिनाबेरिस, ग्लोन, लैके, कैलि-बाई, टेरिब, लैक-कैन) ; आगकी तरह लाल (ग्लोन, कैलि-बाई, लैके) ; सूखी फटी हुई पीठ और रोगीकी बोली अस्पष्ट निकलती है (क्रोटेलस, टेरिब)। जीभ भूरे लेपसे ढकी (डा० केण्ट) जीभके बीचमें जड़से अगले

भागतक भूरे रङ्गकी रेखा दिखाई देती है (एइलेन्थस, आर्निका, बैप्टी, इयुपेट-पर्यु, हायो, आयोड)। दाँत सब पुष्पिका या दन्तमलसे ढके (कैलि-फास, ऐसिड-कार्बोल, बैप्टी, हायो, रस, ऐ-फास, स्ट्रैमोन)। मुँहसे बहुत सड़ी गन्ध निकलती है।

पाकस्थली।—वमन—पित्त, शोणित; सड़े हुए पदार्थ पाकाशयमें गया हुआ पानी, उसमें रह-रहकर गर्म होते ही कै हो जाता है (फास)। मलकी कै (ओपि, प्लम्ब); आँतोंमें अधिक मल-सञ्चयके कारण उत्पन्न (ओपि); काफीकी तलीकी तरह पदार्थ वमन (मिडोरिन, नेट्र-फास, फास)।

उदर।—बहुत फूला और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता। पीब-संस्रवकी वजहसे अन्त्रावरणी, अन्त्र और जरायुका प्रदाह। आँतोंमें गड़गड़ाहट। गम्भीर निश्वास-प्रश्वासमें उदरमें दर्द मालूम होता है (ऐगार,, कैल्के)। छेदनेकी तरह शूलका दर्द (ओपि, वेरेट)। उदरके दाहिने पार्श्वमें दर्द पैदा होकर देह भेदकर पीठमें चला जाता है (कटि)।

मलान्त्र।—मलतारल्य।—(पतले दस्त आना)—मल भयङ्कर बदबूसे भरा (कार्बो-वेज, लैके, सोरिन); भूरा या काले रङ्गका (मर्क, लेप्टैन); बिना दर्दका और अनजानमें निकल जाता है (ऐल्यू, ऐ-म्यूर); वायु छूटनेके समय मल निकल जाता है (ऐ-म्यूर, ऐलो, ओपियम)।

कब्जियत।—मलान्त्रमें निकालनेकी शक्ति बिलकुल ही नहीं रहती (ऐल्यू, ओपि, सैलिफ, सैनिकु)। ज्वर रोगमें आँतोंमें मल अधिक सञ्चय होनेके कारण उत्पन्न दुरारोग्य, कब्जियत; मल बड़ा, काला और उसमें सड़े मांसकी तरह गन्ध-भरा, कभी-कभी अंगुरकी तरह छोटा-छोटा काला-काला गाँठ-भरा (ओपि, प्लम्ब)।

मूत्रयन्त्र।—पीब-संस्रवकी वजहसे लाला मूत्र। पेशाब थोड़ा होनेकी बीमारीमें लाला आरोग्य इत्यादि।

पुं-जननेन्द्रिय।—अण्डकोष झूल पड़ता है; अण्डकोष शीर्ण और पतला मालूम होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायुमें मरा हुआ भ्रूण या सड़ा हुआ परिस्रव का टुकड़ा और दो चार या उससे भी अधिक दिनोंतक मृत-भ्रूण रहनेकी वजहसे रोगिनीकी संकटापन्न अवस्था और बीमारी।

प्रसवके बादका क्लेद-स्राव।—क्लेद बहुत पतला, कषाय, त्वचाको क्षय करनेवाला, भूरे रङ्गका और बहुत ही सड़ी गन्ध-भरा (ऐ-नाई); क्लेदका स्राव रुकनेपर कँपकँपी होकर बोखार आता है और उसके बाद ही बहुत ज्यादा बदबूदार पसीना निकलता है।

श्वासयन्त्र।—दाहिनी ओरके फेफड़ेमें और थोड़ी भी खाँसीमें दर्द, फेफड़ेके प्रदाहकी कुचिकित्सा, रातमें पसीना इत्यादि।

अंग-प्रत्यङ्ग।—स्कन्ध-सन्धि और घुटनेमें दर्द। कमजोरी और सुन्न भाव।

हृत्पिण्ड।—हृत्पिण्डका अस्तित्व स्पष्ट मालूम होना। हृत्पिण्ड बहुत सुस्त और श्रान्त मालूम होता है। मानो हृत्पिण्डका आयतन बढ़ गया है—कानमें जभी-तभी फड़-फड़ और टपककी तरह आवाज़ होती है। इसी वजहसे रोगीकी नींदमें व्याघात पैदा हो जाता है।

रोगीका जैसा ज्वरका प्रकोप रहता है, उसकी कलाईकी नाड़ीकी गति उसकी अपेक्षा बहुत कुछ तेज हो जाती है।

त्वचा।—रोगीकी शरीरकी त्वचा सफेद, भूरी और ठण्डी (सिकेलि); वृद्धोंका दुरारोग्य, शिरा फैलानेवाला जखम (सोरिनम)।

निद्रा।—क्षणभरके लिये निद्रा, बेचैनी, नींदके बाद अधिकता इत्यादि।

पीव-संस्रवसे उत्पन्न या अन्तरौत्क्षेचनिक ज्वरमें हृत्पिण्डकी सुस्ती सूचित होनेपर यह एक बहुत आवश्यक दवा है।

पीव-संस्रवकी वजहसे रक्तस्राव (किसी भी द्वारसे क्यों न हो)। रक्त खूब लाल और कालिमा लिये रङ्गका। बहुत भयङ्कर और संकटापन्न अवस्थामें भी यह रोगीका प्राण बचा लिया करता है।

ज्वर।—अङ्ग-प्रत्यङ्गमें दर्द आरम्भ होकर ज्वर, शीत पीठसे आरम्भ हुआ करता है; तेज़ कम्प, समूची देहका हड्डी पंजरा दर्द हुआ करता है; उत्ताप १०३° से १०६—१०७° डिगरीतक चढ़ा करता है; उत्ताप एकाएक पैदा हो जाता है और शरीरकी त्वचापर बूंदभर पसीना भी नहीं निकलता, त्वचा सूखी और रुखड़ी रहती है; जलन पैदा करनेवाला उत्ताप; नाड़ीकी गति

मिनटमें १४० से १७० तक हो जाया करती है ; उत्तापके बाद ही ठण्डा लसदार पसीना होता है।

सम्बन्ध ।—नक्स-वोमिका, रस-टक्स इसका दोषघ्न है ।

तुलनीय ।—पृथक ज्वर—मैलेरि, लैकेसिस ; सान्निपातिक ज्वरमें दर्द—बेप्टो, आर्निका, रस । जरायुसे रक्त-स्राव—नैपिका । बदबूदार अतिसार—सोराई । काले रङ्गका मल—नेट्र । कब्जियत—सैनिक्यु, ओपियम, लोकिया, नाइट्रिक-ऐसिड । त्वचा—सिकेलि । सर-दर्द—बेल । पीठ—हिपर ।

सदृश ।—ऐसिड-कार्बोल, ऐसिड-फास, आर्स, कार्बो-वेज, मैलेरिया-आफिसिन, एचिनेसिया, ओपि, सोरिनम, रस, सिकेलि, वेरेट ।

शक्ति ।—६ठा शततमिकसे १००० शततमिक क्रमतक । ६, ३० और २०० शततमिकका ही प्रयोग अधिक होता है ।

सिफिलिनम

(SYPHILINUM)

दूसरा नाम ।—ल्यूटिकैन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—उपदंशके घावके विषसे तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—
फोड़ा ; बार-बार फोड़ा होना ; मदात्यय ; शराब पीनेकी तृष्णा ; मलान्त्रका फटना ; दमा ; स्तनमें दर्द ; बाघी ; कब्जियत ; बच्चोंका रोना ; बहरापन ; बाँहका आमवात ; दाँत निकलना ; दो देखना ; बाधक ; मृगी ; उपदंश या सर-दर्द ; स्वरभङ्ग ; आँखकी ; पुतली फैली ; बालिकाओंका श्वेत-प्रदर ; मुँहमें जखम ; निकट दृष्टि-दोष ; स्नायुशूल ; रातमें पसीना ; आँखोंका प्रदाह ; कान बहना ; डिम्बाधार-प्रदाह ; नकसीर ; कमरमें फोड़ा ; पलकोंका पक्षाघात ; मलान्त्रका रुकना ; आमवात ; गृध्रसी ; निद्राहीनता ; मेरुदण्डका क्षय रोग ; आँखमें रोहा पड़ना और डेरा बनना ; रुका हुआ सूर्याघात या लू लगना या सर्दी-गर्मी ; उपदंश ; दाँतमें कीड़ा लगना ; गलेका जखम ; जीभमें जखम ; नाना प्रकारके जखम ; अंगुलबेढ़ा ।

लक्षणावली

मन।—स्मरण-शक्तिका लोप हो जाना, पुस्तक, मनुष्य या स्थानका नाम याद नहीं रहता (मिडोरिन); योग, घोर बैंगनी रङ्गकी रेखाएँ सब दिखाई देती हैं।

मुख-विवर आदि।—उपदंशकी वजहसे मुँहका जख्म (लैक-कैन, लैके, मर्क-कोर)। मुँह एक ओर टेढ़ा हुआ रहनेकी वजहसे रोगीको बोलने, चबाने या छींकनेमें तकलीफ होती है। मुखमण्डलके दाहिने पार्श्वके पक्षाघातमें बोली स्पष्ट निकलना, अधकपारी या अर्द्धावभेदक सर-दर्द, दाहिनी आँख और पलकोंका फड़कना। वक्ष और मुँहपर जगह-जगह पपड़ी जमे दानोंके छत्ते निकलना, मसूढ़ेके किनारेके दाँतका अंश खराब होकर चूर-चूर होकर निकल जाता है और उसका रङ्ग पीला हो जाया करता है (दाँतकी जड़ सब नष्ट हो जाती है, पर शिरा या अगला भाग ज्यों-का-त्यों रहता है—थूजा, मेजेर; अगला भाग क्षय हो जाता है—स्टैफ)। दाँतका भीतरी भाग क्षय हो जाता है और उसका सिरा आरीकी तरह करकराता है; दाँत सब बहुत टेढ़े-मेढ़े और अगला भाग मिला रहता है (स्टैफ)। दाँत सब ऐसे मालूम होते हैं, मानो अपनी जगहसे हट गये हैं और मुँह बन्द करनेपर ऊपरके दाँत सब नीचेके दाँतके गाथेमें नहीं बैठते।

पाक और अन्नाशय आदि।—चाहे किसी तरहकी शराब क्यों न हो, रोगी उसे पीनेके लिये लालायित रहता है। वंश-परम्परासे प्राप्त पानात्यय (ऐ-सल्फ, ऐ-सेरम, सोरिनम)।

मलांत्र।—बहुत दिनोंकी दुरारोग्य कब्जियत,—कई वर्षोंमें एक दिन भी पाखाना साफ नहीं हुआ, मलान्त्रमें कितने ही सङ्कोचन रहनेकी वजहसे मल-मार्ग मानो रुक गया है, इसीसे प्रायः औपदंशिक सर-दर्द पैदा हो जाया करता है। दाहिनी आँखके ऊपरी भागमें बेधनेकी तरह प्रचण्ड दर्द और दबावकी तरह तकलीफ मालूम होती है और यह दर्द मस्तिष्कके भीतरी-प्रदेशमें चला जाता है (बैसिलिनम); तकलीफसे रोगीकी भावशृङ्खला नष्ट हो जाती है और उसकी स्मरण-शक्ति गायब हो जाती है, उस समय यदि वह कुछ गिनता है, तो बार-बार भूल करता है। सरके केश झड़ जाते हैं (ऐ-नाई,

अरम, कैलि-आयोड, पेट्रोल, आर्स-मेट), सर्दीकी वजहसे या स्नायविक बहरापन। माथेमें जगह-जगहपर गोटियाँ (कैलि-आयोड, मैंङ्ग, मर्क) उत्पन्न होती हैं।

आँख।—नये पैदा हुए बच्चेका नया आँखोंका प्रदाह (मिडोरिन, आर्जेण्ट-नाई, मर्क, ऐ-नाई, मर्क-कोर, थूजा, अरम, ग्रैफ, क्लिमेट, फाइटो, सोरिन)। पलकें फूल उठती हैं, रातमें भयानक दर्द होता है, खासकर रातके अन्तिम भागमें दो से ५ बजेतक; आँखसे बहुत ज्यादा पीव निकलता है (आर्जेण्ट-नाई, ग्रैफ, कैलि-आयोड, लैके, मिडोरिन); ठण्डे पानीसे धोनेपर तकलीफ घट जाती है (अरम, फार्मिका, पल्स,)। असम्पूर्ण पक्षाघात—आँखके गोलेके ऊपरवाली टेढ़ी बन्धनीमें, रोगीको आँख देखनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो नींदके आवेशकी वजहसे आँखें बन्द हुई जाती है (कोलोफिल, कास्टि, जेल्स, ग्रैफ, सिपिया)। दो देखना—प्रत्येक चीज दो दिखाई देती है, एकके नीचे एक और भी मालूम होती है।

कान।—दाहिने कानमें बेहद दर्द; कानसे बदबूदार पीवका स्राव; बहरापन।

नाक।—उपदंशकी वजहसे नकसीर या पीनस रोग (ऐसाफिट, अरम अरम-मूर, ऐ-फ्लू, कैलि-बाई, कैलि-आयोड, लैके, मर्क, आयोड, फाइटो)। नाकसे बहुत बदबूदार पपड़ीके खण्ड सब निकलते हैं। नाक खुजलाना, नासापुट और दोनों गालोंके बीचमें। वियोग गुणा और भाग करना उनके लिये बहुत कठिन हो जाता है। रोगी हमेशा यह सोचता है, कि उसका मस्तिष्क विकृत हो गया है (ऐन्थ्रा, कैल्के, कैनाब-इन, सिमिसिफ्यूगा, हाइड्रोफोब, कैलि-ब्रोम, लैक-कैन, मिडोरिन, नक्स); मानो बहुत शीघ्र ही उसे पक्षाघात हो जायगा (ऐनाक, आर्नि, ऐसाफ, बेल)। सभी विषयोंमें उदासी (अरम-मूर-नैट, कैलि-ब्रोम, मर्क, ऐ-नाई, नक्स-मस, ओपि, फास, ऐ-फास)। रात होते ही रोगीके मनमें भयानक डर पैदा हो जाता है और उसका जी सूख जाता है, क्योंकि नींद खुलनेपर रोगीमें अनिर्वचनीय शारीरिक और मानसिक अवसाद और यन्त्रणा पैदा हो जाती हैं (लैके); वह इतना भयङ्कर होता है, कि रोगी उसको अपेक्षा मृत्युको अच्छा समझता है। रोग आरम्भ होनेके पहलेकी सब घटनायें ही उसे अच्छी तरह याद रहती हैं, परन्तु उसके बादसे

जितने दिनोंतक रोग भोगा है, उतने दिनकी कोई घटना, नाम या तारीख उसे याद नहीं रहती। स्तम्भित, अन्यमनस्क भाव और लगातार अपना हाथ धोया करता है।

मस्तक।—स्नायुगत सर-दर्द—तकलीफ़से रातमें नींद नहीं आती (चायना, सल्फ़) और प्रलाप पैदा हो जाता है ; दिनके प्रायः ४ बजनेके समय ही प्रकोप पैदा होता है ; रातके १० बजेसे ११ बजेतक बहुत बढ़ता है और सवेरा होते ही आराम होता है (रातके ११ या १२ बजेके समय आराम हो जाता है—लाई)। पाकाशयिक सर-दर्दकी असह्यनीय यन्त्रणा ; माथेकी धमनियाँ सब खूनसे भर जाती हैं और उनमें भयानक टपक हुआ करती है ; इसके साथ भयानक ज्वर भोग करते हैं, वमन करनेके समय बार-बार ओकाई आती है, ऋतु नियमित, परन्तु स्राव बहुत थोड़ा होता है। कई महीनोंतक ऐसी ही अनुभूति ; वस्तिक्रियाके बाद, पाखाना होनेके बाद, प्रसव-वेदनाकी तरह दर्द होता है (लैक-डिफ्लो, सोरिन, टियुबर्कुलिन)। विदारित मलान्त्र-भ्रंश—मलद्वारके बाहर एक सम्पूर्ण खिला हुआ गुलाबके फूलकी तरह दिखाई देता है ; उपदंश विषकी वजहसे और दुरारोग्य (ऐ-नाई)।

मूत्रयन्त्र आदि।—मूत्रनलीमें जलन ; बार-बार पेशाबका वेग ; पीले रङ्गका पेशाब इत्यादि।

पुं०-जननेन्द्रिय।—"उपदंश विषसे दूषित धातुवाले व्यक्ति या जा सब रोगियोंका उपदंशका जखम बाहरी प्रयोगसे आरोग्य हुआ है, वे यदि उस कारणसे बहुत दिनोंसे कष्ट और चर्म-रोग भोग करें तो उनकी चिकित्साके पहले हो, यदि किसी दवाका स्पष्ट लक्षण न रहे तो सिफिलिनमके प्रयोगसे विशेष उपकार हुआ करता है" (एच० सी० ऐलेन)। डा० टामस वाइल्डस कहते हैं,कि वे प्राथमिक उपदंशकी चिकित्सा करते समय पहले नित्य रातमें एक-एक मात्रा सिफिलिनम (१००० क्रम) प्रयोग करते हैं। उससे पहले दो सप्ताहतक जखम बढ़ जाता है और इसके बाद क्रमसे आरोग्य हो जाता है और किसी तरहका गौण लक्षण नहीं प्रकट होता। दूसरे या तीसरे सप्ताह जखमके किनारे सब ऊँचे, बाहरकी ओर घूमे, रुखड़े हो जाते हैं और घोर लाल रङ्गके हो जाते हैं, ऐसे स्थानपर वे १० से १४ दिनोंतक रोज़ रातमें एक मात्रा लैक-केनाइनम (१०,००० क्रम) प्रयोग करते हैं और इस तरहकी चिकित्सा करनेपर

जब जखम स्वाभाविक आकारमें आ जाता है, तब वे फिर एक-एक मात्रा सिफिलिनम (१००० क्रम) प्रयोग कर रोगको आरोग्य कर देते हैं ; यदि इसके बाद भी जखमवाले अंशमें कड़ापन रहे, तो कई दिनोंतक रोज चार मात्रा ऐसिड-नाइट्रिक (३० क्रम) का प्रयोग करते हैं, उपदंशका जखम ; बाघी ; नाना प्रकारके जखम और प्रदाह ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—प्रदरका स्राव बहुत ज्यादा ; योनि-आवरणको भेदकर पैरकी राहसे एँड़ीतक चू पड़ता है (ऐलूम) ; रङ्ग पीला और बहुत बदबू । जरायु प्रभृति शिथिल । डिम्बाधारमें दर्द, ऋतुस्रावमें कष्ट, कष्ट-रजः स्तनमें दर्द ।

श्वासयन्त्र ।—ऋतु आरम्भ होनेके पहले दिवस स्वरभङ्ग या एकदम स्वरलोप हो जाना । पुराना श्वास-रोग पैदा हो जाना ; प्रत्येक ग्रीष्म ऋतुमें जब जलवायु गर्म और जलीय रहती है ; प्रकोप सन्ध्याके समय आरम्भ होता है और रातभर भोगने बाद सवेरे अच्छा हो जाता है ; कई बरसोंतक रोगी वायुनली-भुजगत श्वास-रोग भोग करता है ; पर प्रकोप केवल रातमें सोने बाद या अन्धड़-पानीके समय आरम्भ होता है ; इसलिये स्नायु सब इतने रुखड़े हो जाते हैं, कि रोगी कई दिनोंतक, दिन-रात किसी समय भी सो नहीं सकता । भयानक श्वासकष्ट—वायु-मार्गमें घड़-घड़ साँय-साँय शब्द हुआ करता है ; रातके अन्तिम भागमें १ बजनेके समय लेकर ४ बजेतक प्रकोपकी अधिकता । प्रचण्ड खाँसी—रातमें बढ़ना, लगातार खाँसीकी वजहसे रातमें नींद नहीं आती । गाढ़ा पीले रङ्गका और स्वादहीन बलगम निकलता है, वक्ष-विदारक सूखी खाँसी ; केवल रातमें ; खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठके भीतर छिल गया है या खाल उधड़ गयी है । हूप-खाँसी—प्रकोपके समय प्राणान्तक वमन पैदा हो जाता है, दाहिनी करवट सो नहीं सकता, क्योंकि इस तरह सोनेपर उसे सूखी खाँसी आने लगती थी । वक्षपर इतना दबाव मालूम होता है, कि श्वास रुक जाना चाहती है, वक्षके पंजरे आदि मानो मेरुदण्डकी ओर बड़े जोरसे खिंच रहे हैं, इस तरहकी अनुभूतिकी वजहसे श्वासकष्ट ; वक्षका फैलना, बहुत ही कष्टसाध्य हो जाता है ।

हृत्पिण्ड ।—हृत्पिण्डके मूलदेशसे शिखरतक फैलनेवाला छुरी मारनेकी तरह दर्द (शिखरसे मूल देशतक—मिडोरिन), हृदकपाटकी बीमारी ।

प्रत्यङ्ग आदि।—मेरुदण्डके ऊपरी अंशमें अस्थिका सड़ना और टेढ़ापन। ग्रीवाकी ग्रन्थियाँ सब फूली और उसपर अनगिनती खोलदार मसे निकलते हैं। पीठ, श्रोणि-फलक और दोनों ऊरुमें दर्द रातमें बढ़ना। स्कन्ध-सन्धि और त्रिकोण पेशीमें संयोग-स्थलका वात; वृद्धि—बगलकी ओर हाथ-उठानेपर (रस-टक्स); दाहिने स्कन्धका वात (साङ्गिविन, विङ्का); बायें कन्धेका (फेरम)। निम्नाङ्गकी प्राणान्त करनेवाली यन्त्रणा, बिलकुल ही नींद नहीं आती; उत्ताप प्रयोगसे बढ़ना और ठण्ढा पानी ढाल देनेपर घटना।

सार्वाङ्गिक।—इसका दर्द सूर्यास्तसे सूर्योदयतक भयानक बढ़ता है। (मर्क, फाइटो, सूर्योदयसे सूर्यास्ततक बढ़ना—मिडोरिन)। दर्द आदि धीरे-धीरे बढ़ता है और धीरे-धीरे ही घट जाया करता है (स्टैनम); दर्द जगह बदलनेवाला (कैलि-बाई, लैक-कैन) और रोगीको एक भावसे नहीं रहने देता (रस)। इसके सभी लक्षण रातके समय बढ़ते हैं।

त्वचा उद्भेद आदि।—धीरे-धीरे बढ़नेवाला, लाल या ताँबेके रङ्गका और शीतल होनेपर अर्थात् प्रदाह घट जानेपर नीला रङ्ग धारण करता है।

दुबलापन।—समूची देह दुबली-पतली, अस्थि-सार हो जाती है (एब्रोट, मिडोरिन, सार्सा)। सवेरे रोगीको बहुत सुस्ती मालूम होती है। खर्व आकृति, जीर्ण, शीर्ण और बुड्ढा दिखाई देनेवाला शिशु (मिडोरिन, सार्सा, ऐब्रोट, आयोड)।

उपदंश विषसे दूषित धातुवाले मनुष्योंमें, जब किसी दूसरी दवासे रोगकी शांति या स्थायी उपकार नहीं होता, तो उस समय सिफिलिनमका अवश्य प्रयोग करना चाहिये।

निद्रा।—रातके समय अस्थिर निद्रा; आधी रातमें नींद खुल जाती है, फिर नींद नहीं आती।

ज्वर।—बहुत सर-दर्द, सारा शरीर ठण्ढा; लिहाफसे ढँके रहना चाहता है, पिपासा, पसीना और कमजोरी।

सम्बन्ध।—सदृश—ऐ-नाई, आर्स-मेट, ऐसाफिट, अरम, अरम-मूर, नेट्र, कैलि-आयोड, लेक-कैन, लैके, मर्क-कोर, मर्क-प्रोटो, मिडोरिन, फाइटो।

तुलनीय।—उपदंशसे उत्पन्न बीमारीमें और हड्डीकी बीमारीमें—अरम, कैलि-आयोड, नाइट्रिक-ऐसिड। नक्सीर—पल्स, कैलि-बाई। बार-बार फोड़ा—(छोटे फोड़े—ऐन्थ्रासि)। दुबलापनमें—आयोड, ऐब्रोट। हृत्पिण्डमें दर्द—मेडो, स्पाइजि। नींदके बाद बढ़ना—लैकेसि, कर्णिका। कब्जियत—लैक-डि, टियुबर्क। मलद्वारका फटना—थूजा। कन्धेमें वात—रस, सैङ्ग्न, फेरम। कौलिक उपदंश—क्रियो।

शक्ति।—२०० से उच्चतर और उच्चतम क्रमका प्रयोग करना चाहिये।

थाइरायडिनम

(THYROIDINUM)

दूसरा नाम।—थाइरायड एक्सट्रैक्ट; आजकल इसके विचूर्णको आयोडो थाइरिनम कहते हैं।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मेष या गायके बछड़ेकी द्विदल ग्रन्थिके सतसे तैयार होता है (विचूर्ण और अर्क)।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—फोड़ा; गर्भावस्थामें पेशाबमें अण्डलाल; दृष्टिमें विकार; आर्त्तवका अभाव; रक्ताल्पता; नया हृत्शूल; पीठमें दर्द; नीहारकण्ड; कब्जियत; आक्षेप (सूतिकावस्थामें आक्षेप); अतिसार; बहुत ज्यादा पसीना; शोथ; बाधक; कर्ण-विवरकी बीमारियाँ; अकौता; मूर्च्छा; अर्बुद; हड्डी टूटना या टूटी हड्डीका देरसे जुड़ना; गलगण्ड; केश झड़ना या केश उड़ जाना; हृत्पिण्डकी क्रियाका लोप होना और बहुत-सी बीमारियाँ; मूर्च्छावायु; मृगीकी तरह मूर्च्छावायु; चर्म-रोग; बुद्धिकी जड़ता; कुष्ट-रोग; उन्माद; स्तनमें दूधकी कमी; स्नायविक सुस्ती; मोटे होते जाना; आँखके स्नायुका प्रदाह; हाथ पैरका पक्षाघात; अर्द्धाङ्ग पक्षाघात; यक्ष्मा; सारे शरीरमें लाल दाने; विचर्चिका; सूतिका ज्वर; पपड़ी या करौंट निकलना; चर्म-रोग; उपदंश; धनुष्टंकार इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—मनुष्य या बच्चेकी द्विदल-ग्रन्थि, अपरिपुष्ट या उसका अभाव रहनेपर उसकी देहकी परिपोषण क्रिया नहीं होती और त्वचाके नीचेवाले तन्तुमें रसकी तरह पदार्थ निकलता या बहता रहता है। इस वजहसे उन-उन अंशोंकी, विशेषत: मुखमण्डलकी और हाथकी त्वचा फूल जाती है और शोथयुक्त हो जाती है। उसका चेहरा मलिन और सफेद हो जाता है और बुद्धि जड़ हो जाती है। इस रोगको स्लेष्मा और सूजन या शोथ कहते हैं। इन सब रोगियोंको द्विदल-ग्रन्थिका निर्यास सेवन करानेसे उनका रोग आराम हो जाया करता है। इस ग्रन्थिके बढ़नेपर बहिस्सृताक्षि गोलक (आँखका गोला बाहर निकल पड़ना) रोग पैदा होता है। इस रोगमें रोगीकी आँखका गोला दो बेगनोंकी तरह दिखाई देता है, उसका हृद्स्पन्दन या हृत्पिण्डकी गति बहुत ही तेज़ हो जाती है और रोगीको अन्यान्य हृद्रोग भी पैदा हो जाया करते हैं। यह सब लक्षणावलीमें बताये गये हैं। जिन सब बच्चोंमें इन द्विदल ग्रन्थियोंका अभाव या रोग रहता है, उनकी बुद्धि हमेशा जीवनभर जड़की तरह रहती है, उनके मुँहसे हमेशा लार निकला करती है और दृष्टि टकटकी लगी रहती है। इसके विषयके अन्तर्गत होनेवाली सूजन बहुत कड़ी हो जाया करती है, दबानेपर गड्ढा नहीं पड़ता। मिक्सिडिमाके रोगियोंके माथेमें केश नहीं रहता। इसके अलावा इस दवासे आगे लिखे रोग सब आरोग्य हो जाया करते हैं:—(१) गलगण्ड, (२) शरीरकी त्वचाकी लालीसे पैदा हुई जुलपित्ती—दोनों पैरोंकी त्वचा घोर लाल, पपड़ीसे ढकी और प्रचण्ड खुजलीसे भरी ; मीनशल्किका उपदंशिक चर्मरोग ; त्वचाका कड़ापन ; उन्माद रोग ; प्रसवके बादका उन्माद और जरायुका सूत्रकण्डुमय अर्बुद और मोटा होते जाना रोगकी यह एक उत्कृष्ट दवा है।

लक्षणावली

मन।—किसी-किसी समय ऐसा होता है, कि रोगीको किसी तरह भी बोलाया नहीं जा सकता और कभी-कभी ऐसा होता है, कि रोगी भयानक-भयानक भावोंसे भरा और नर हत्या प्रिय हो जाता है। जिसे सामने पाता है, उसीकी ओर दौड़कर गला दबाकर उसे मार डालना चाहता है। उदास, चिड़चिड़ा और दुःखित भावसे भरा रहता है, पर क्षणभर बाद ही महान आनन्द और उल्लास प्रकट करता है। विकार अवस्थामें रोगी बराबर मनमें

यही सोचता है, कि मानो सभी उसे कष्ट दे रहे हैं (वैसिलिनम—स्विट्जलैंण्डमें डा० यङ्ग)। नींदकी अवस्थामें गला भयङ्कर रूपसे रुक जाना चाहता है। अभी अत्यन्त उत्तेजित भाव दिखा रहा था, क्षण-भर बाद ही महान शोक प्रकट करने लगता है, बहुत ही अधिक क्रोधी स्वभाव और उत्तेजना-प्रवण। सभी विषयोंमें असन्तोष प्रकट करना आरम्भ करता है। कभी-कभी कुछ देखकर मानो डर जाता है।

मस्तक।—माथा बहुत हल्का मालूम होता है, पर सरमें चक्कर आनेकी तरह नहीं। रातके अन्तिम भागमें चार बजनेके समय, नींद खुलनेपर देखता है, कि माथेमें बहुत दर्द हो रहा है और प्रत्यङ्ग आदि और कमरमें भयानक दर्द होता है। इसी तरह तीन दिनोंतक रहता है और रोगीको बाध्य होकर शय्यामें पड़े रहना पड़ता है। लगातार सर-दर्द, पिछले भागमें और ब्रह्मतालुमें दर्द हुआ करता है, सरके केश झड़कर फिर केश पैदा हो जाते हैं। ललाटदेशका सर-दर्द, दिनोंतक लगातार भावसे तकलीफ़ बनी रहती है।

आँख।—दोनों आँखके गोले बाहर निकले हुए। चेहरा तमतमाया, ओठोंमें जलन होती है और उससे लगातार पपड़ी निकला करती हैं। जीभपर मैलकी मोटी तह़ी, मुखमण्डलकी त्वचामें बहुत खींचन मालूम होती है और क्रोध प्रकट करनेवाली लाली दिखाई देती है।

कान।—कानके पीछे रस-भरे दाने।

चेहरा।—लाल ; जलन ; खाल उधड़ना।

जीभ।—मानो उसपर मोटा लेप चढ़ा है, प्यास।

कण्ठ।—जिनकी आँख बाहर निकली हुई हो उनका गलगंड (आयोड, स्पाई, स्पञ्जि, कैक्टस), द्विदल ग्रन्थिका आकार बहुत बढ़ा हुआ, इसके साथ ही कलेजा धड़का करता है।

पाकाशय।—इसके सेवनसे भूख बढ़ जाती है और पाचन-क्रिया अच्छी तरह होने लगती है। मिचली मालूम होती है और सुस्ती रहती है। पाक अन्त्राशयिक रोग और पतले दस्त आना, आध्मानकी अधिकता और वमनकी इच्छाके साथ पीठमें दर्द।

मलांत्र ।—पाचनमें गड़बड़ीकी वजहसे पतले दस्त आना। कब्जियत दूर होकर स्वाभाविक पाखाना होता है। आध्मानके साथ सर-दर्द।

पेशाब ।—पेशाबका परिमाण बढ़ जाना; बहुमूत्र; पेशाबके साथ लार और शर्करा मिली रहती है; इससे मधुमेह भी आराम हो जाया करता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—संगमकी अधिक कामना। जो ऋतु एक वर्ष-तक बन्द था, वह छः दिनोंमें ही पैदा हो गया था। रज—बहुत ज्यादा स्राव, बहुत दिनोंतक हुआ करता है और जल्दी-जल्दी आरम्भ हो जाता है। यौवनके आरम्भमें पहली बारका ऋतुस्राव न होना। बायें डिम्बाधारमें हमेशा दर्द मालूम होता है और इस अंशमें बहुत दर्द हुआ करता है। रोगिनीका चेहरा सफेद और तकलीफ प्रकट करनेवाला हो जाता है। तलपेटमें दर्द, सर-दर्द और जी मिचलाया करता है, प्रसूताके स्तनमें दूध नहीं होता। सूतिकाक्षेप या नवीन प्रसूताका धनुष्टङ्कार आदि आक्षेप स्तनका अर्बुद। जरायुका सौत्रिका या सौत्रिक अर्बुद पैदा हो जाता है। रोगिनी बहुत कमजोर और भूख यथेष्ठ रहती है, पर दिनोंदिन दुबली होती जाती है।

श्वासयंत्र ।—रक्त-कासके साथ खाँसी, क्षय-कास चिन्ह, बायें फेफड़ेका आक्रान्त होना।

हृत्पिण्ड ।—हृत्शूल रोगके रोगीकी मृत्यु होनेकी सम्भावना। दो सीढ़ियाँ चढ़ते ही हृत्पिण्डकी चाल तेज़ और फिर स्थिर हो जाती है और रोगी आसन्न-मृत्यु हो जाता है। नाड़ी बहुत तेज़ रहती है, पर रोगी सो नहीं सकता। झुककर जूता पहननेके समय हृत्पिण्ड सुस्त और मरनेकी तैयारी हो जाती है। एक दिन कुछ अधिक परिश्रम करनेपर, रोगीकी साँस रुक जाती है और उसे ऐसा मालूम होता है, मानो वह अब न जियेगा। अर्द्ध-शायित अवस्थामें लेटने और उत्तेजक दवाके प्रयोग करनेपर घटना। जभी-तभी मूर्च्छा आ जाती है। बहुत सुस्ती और मिचली मालूम होती है, थोड़ा भी परिश्रम करनेपर कलेजा धड़कने लगता है।

सार्वाङ्गिक ।—जभी-तभी शरीरके किसी-न-किसी अंशमें दर्द हुआ करता है। मुखमण्डल और दोनों पैर ऐसे मालूम होते हैं, मानो शोथ हो

गया है। बहुत बेचैनी मालूम होती है, सोनेपर आराम मिलता है। सान्तव-शोथवाले रोगियोंको बहुत सर्दी लगा करती है—थाइराइडिनमके सेवनसे यह जाड़ा लगना क्रमसे घटता जाता है। सूजन सब बहुत कड़ी रहती है और दबानेपर गड़हा नहीं होता।

त्वचा।—मीन-शल्किका—रोगीको बहुत जाड़ा मालूम हुआ करता है और उसके हाथ और दोनों पैर हमेशा बरफकी तरह ठण्डे रहते हैं। शरीरकी त्वचा नीली हो जाती है, ग्रन्थियाँ सब फूलकर लोहेकी तरह कड़ी हो जाती हैं। शरीरकी त्वचा सूखी, शरीरकी त्वचासे बहुत रूसी या मरा मांस निकलता है, परन्तु रोगीको न तो पसीना होता है और न पेशाब होता है। विचर्चिका—इसके सेवनसे रोगवाले अंशकी खुजली और लाली घट जाती है, दाने सब अलग-अलग हो जाति हैं और बड़ी-बड़ी पपड़ीके रूपमें निकल जाया करति हैं और अन्तमें प्रदाहका भाव बिलकुल ही नहीं रहता। त्वक-रोग—रोगवाले अंशकी त्वचामें बहुत खींचन मालूम होती है तथा वह स्थान गर्म मालूम होता है तथा लाल दिखाई देता है, पीब पैदा होनेका लक्षण बढ़ जाता है। अकौताकी खुजली बहुत घट जाया करती है, हाथ और पैरोंसे खाल निकलती है, गौण औपदंशिक उद्भेद; टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती है (सिम्फाइट)।

निद्रा।—निद्राकी प्रवृत्ति अर्थात् औंघाई आती रहना, ४ बजे रातके समय नींद खुल जाना, सरमें दर्द, नींद न आना।

ज्वर।—चेहरा लाल, मिचली, बेहोशी, प्यास, पसीना इत्यादि।

तुलनीय।—आर्स, बेसिलिनम, कैल्के, डिजिट, कूप्रम, आयोड, स्पाइजि, स्क्विया।

सदृश।—विचर्चिकामें—आर्स। सीढ़ी चढ़नेपर कलेजा धड़कना—अरम-मूर। थोड़े भी परिश्रमसे पसीना—आर्स, कैल्के, आयोड, कैलि-कार्ब, स्पाइजि। जरा भी शरीर हिलानेपर—डिजिट, फेरम, नैट-मूर, स्टेफ। हृत्पिण्डकी दुर्बलताकी वजहसे मूर्च्छा—कैलि-फास। हृत्पिण्डमें पक्षघातकी आशंका—ऐकी, कार्बो-वेज, क्रोटेल, लैके, नेजा और ऐसिड हाइड्रोसियानिक। बाहर निकला हुआ आँखका गोला—डिजिटेलिन, लाइकोपस, स्क्वि, स्ट्रिक-

निन। बाहर निकले हुए आँखके गोलेके साथ द्विदल ग्रन्थिका बढ़ना—कैक्ट, फेरम, फेरम-आयोड, लाइकोपस, स्पाई, स्पञ्जि। यक्ष्मामें—बसिलिनम। उपदंशमें—मर्क, साइलि। सर-दर्दमें—लैकेसिस।

शक्ति।—३रे दशमिकसे २०० शततमिक।

वैरियोलिनम

(VARIOLINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मसूरिका (चेचक) के रस या पीवसे इसका विचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—दमा; पीठमें दर्द; कम्प ज्वर; माथेके पिछले भागमें दर्द; स्नायुशूल; चेचक; अण्डकोषका सूजना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—वैरियोलिनम और वैक्सिनिनम इन दोनोंकी ही क्रिया एक तरहकी होती है और जिस लक्षणमें एकका प्रयोग होता है, दूसरेका भी ठीक उसी लक्षणमें व्यवहार होता है, तथा वैसी ही अवस्थामें इसका भी प्रयोग होता है। चेचककी बीमारीके आरम्भमें जो सब लक्षण प्रकट होते हैं, ठीक-ठीक वे ही सब लक्षण वैरियोलिनमके निर्णायक हैं। यह चेचक रोगकी एक बहुत ही उत्तम प्रतिषेधक दवा है और गोम-सूर्याधान अर्थात् टीका लगवानेकी अपेक्षा लाख गुना अच्छा है। इसके साथ ही टीका लगवानेपर कभी-कभी जो सब उत्कट रोग पैदा हो जाते हैं, वैरियोलिनमके प्रयोगसे उन सबका कोई भी भय नहीं रह जाता। जो कोई मनुष्य प्रति वर्ष चेचकके प्रादुर्भावके दो-एक महीना पहले वैरियोलिनम या वैक्सिनिनम ३० शततमिक क्रमकी लगातार एक-एक मात्रा तीन दिनोंतक सेवन करेगा, वह उस वर्षके लिये एकदम निश्चिन्त रह सकता है।

इसके निर्णायक लक्षण ये हैं:—(१) भयानक सर्दी और बहुत जाड़ा मालूम होना, ऐसा मालूम होता है, कि पीठपर बरफका पानी ढाला जा रहा है। प्रचण्ड ज्वर, मानो रोगीकी देह जलती जा रही है, माथेमें असह्य दर्द, माथा इतना भारी मालूम होता है, कि रोगीमें माथा उठाये रखनेकी शक्ति

नहीं रहती, सर सीधा उठाते ही रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि वह पीछेकी ओर गिर जायगा। मुँह और आँखोंसे मानो जलती हुई भाफ़ निकलती है; इतना ताप रहता है, कि किसकी शक्ति है जो उसके शरीरपर हाथ रख सके। इसी तरहका तेज कमरमें दर्द, मानो कमर टूट जायगी। रोगी दर्दसे बेचैन हो पड़ता है और कभी लेटता है और कभी उठ बैठता है। इसी तरह वह किया करता है, पर उसे बिलकुल ही आराम नहीं मिलता, उसे अनिर्वचनीय कष्ट होता है। दोनों पैरोंमें इस तरहका दर्द होता है, मानो वे चबाये जा रहे हैं,। इसके अलावा रोगी रह-रहकर पसीनेसे तर हो जाता है, पर इससे उसकी तकलीफ बिलकुल ही नहीं घटती। जी मिचलाया करता है; ऊपरी पेटमें दर्द होता है। उठ बैठनेपर बेहोश हो जानेकी सम्भावना हो जाती है। ललाट बेहद गर्म रहता है, चेहरा लाल और तमतमाया; दोनों नीली धमनियोंमें टपक हुआ करती है; सर-दर्दके समय ऐसा मालूम होता है, मानो माथेके चारों ओर एक बन्धन बँधा हुआ है (ऐ-कार्बोल); ऐसा मालूम होता है, मानो सरके भीतर कोई छुरी मार रहा है; निद्रित अवस्थामें रोगी मुँह बाये पड़ा रहता है और यदि उसे कोई जगा देता है तो निचला हनु काँपता रहता है। जीभपर मोटी पीले मैलकी तही जमी रहती है और निद्रित अवस्थामें जीभ बाहर निकल आया करती है और बाहर निकला हुआ अंश काले लेपसे ढका रहता है, इसी वजहसे रोगीकी जीभ ठीक सड़े हुए मांसके टुकड़ेकी तरह दिखाई देती है। कण्ठमें बहुत दर्द होता है, और तालुमूलके बगलवाले दोनों गह्वर लाल हो जाते हैं; मुँहसे भयानक बदबू निकलती है, कोई चीज निगलनेके समय कण्ठमें बहुत दर्द होता है और ऐसा मालूम होता है, कि कण्ठनली रुकी हुई है, मानो कण्ठके दाहिने पार्श्वमें एक गोला अड़ा हुआ है—इस ढङ्गकी अनुभूति होती हैं। रोगीनीके मुखसे असह्य सड़ी गन्ध निकलती है (केलि-पार्मैंगोनिकम)। उदरोर्द्ध-प्रदेशमें और ऊपरी पेटमें भयानक दर्द रहता है और स्पर्श सहन नहीं होता। हृदय-प्रदेशमें भी भयानक दर्द अनुभव होता है लगातार जी मिचलाया करता है और पित्त तथा खून मिले पदार्थका वमन होता है। दूध पीते ही वमन हो जाता है। पतला खून मिला मल। बार-बार पतला भूरे रङ्गका या नये शस्यकी तरह हरे रङ्गका पाखाना होता है और उससे असह्य सड़ी बदबू आती है। आमातिसार या रक्तातिसार। पेशाबका रङ्ग लाल, रक्तकी तरह या मैला

और उसमें बदबू। अण्डकोषमें चोट लगनेके बादसे वह बहुत फूला और कड़ा रहता है।

इसके द्वारा नाना प्रकारके चर्म रोगोंमें फायदा होता है; दद्रुमेखलामें भी यह विशेष लाभदायक है। चर्मदनान्तिक स्नायुशूल रोग भी इससे आरोग्य हो जाया करता है।

लक्षणावली

मन ।—पहले बोखारमें ही प्रलाप और मृत्युभय।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, उठनेकी चेष्टा करनेपर मूर्च्छा आ जाती है। समूचे माथेमें दर्द रहता है। माथेके पिछले भागमें असह्य दर्द होता है।

आँख ।—कनीनिकाका सङ्कोचन, आँखकी बहुत-सी बीमारियाँ (किराटाइटिस) इत्यादि।

कान ।—बहरापन।

मुखमण्डल आदि ।—चेहरा बैंगनी रङ्गका, नींदके समय जबड़े झूल पड़ते हैं, जीभपर पीले रङ्गका मैल; दाँतमें भूरे रङ्गका दाग।

गला ।—गलेमें जखम, उपझिल्ली प्रदाहकी तरह, मुँहमें बहुत बदबू।

पाकस्थली ।—पेटमें दर्द, वमन, मिचली, पानी मीठा मालूम होता है।

मल ।—पतला रक्त मिला मल, भूरे रङ्गका या हरे रङ्गका मल, आँममिला कब्जियत।

मूत्रयन्त्र ।—ब्राण्डीके रङ्गका लाल पेशाब, गदला बदबूदार पेशाब।

पुं-जननेन्द्रिय ।—अण्डकोषका फूलना, चोटके कारण कड़ापन और सूजन।

श्वासयन्त्र ।—दमा, श्वास-कष्ट, कष्टकर खाँसीके साथ गाढ़ा गोंदकी तरह बलगम।

गर्दनका पिछला भाग ।—कड़ापन, सर-दर्दका दर्द।

अङ्ग-प्रत्यङ्ग ।—बाँह ऐसे मानो पक्षाघात हो गया है । निम्नाङ्गका वात ।

चर्म ।—चेचकके दाने निकलना, लाल फुन्सियाँ, खुजली, पपड़ी जमे दाने ।

ज्वर ।—प्रबल कम्प, प्रबल ज्वर, पीठमें दर्द, प्यास नहीं रहती, बदबूदार पसीना इत्यादि ।

सम्बन्ध ।—**सदृश**—ऐण्टिम-टार्ट, एपिस, ऐ-कार्बोल, ऐन्थ्रासिनम, बैप्टि, कैलि-म्यूर, हिपोजिनिनम (सम्मिलित मसूरिका), लैके, मेलेण्ड्रिनम, मर्क-सोल, रस, साइलि, सैरासिनिया, सोलेनम-नाई, थूजा, विरेट्रम ।

दोषघ्न ।—थूजा, अस्थिचर्म इत्यादि ।

शक्ति ।—६ठा शततमिकसे १००० शततमिक क्रम । उनमें ६, ३० और २०० क्रमका अधिक व्यवहार होता है ।

वैक्सिनिनम

(VACCININUM)

दूसरा नाम ।—गो बीजके टीकाका बीज ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—उस टीकाका रस या पीवकी तरह पदार्थका विचूर्ण ।

लक्षणकी अनुसार प्रयोग ।—निम्न-लिखित रोगोंमें लाभदायक है:—जखम आराम होनेके बादका चिन्ह ; अकौता ; कुष्ट ; लाल मसे ; मसानेका प्रदाह ; चेचक या मसूरिका ; अर्बुद ; गो-बीजके टीकाका दुष्परिणाम ; हूप-खाँसी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—"वैरियोलिनम" देखिये ।

लक्षणावली

मन ।—रोना, बेचैन नींद, विषन्न या चिड़चिड़ा ; चेचकका भय ।

मस्तक ।—कपालके सामनेवाले भागमें दर्द ; दूधिया पपड़ीकी तरह उद्भेद ।

आँख ।—आँखोंका प्रदाह, जाल या क्षीण दृष्टि ।

नाक ।—नाकमें भार मालूम होना, नाकसे रक्तस्राव ।

मुँहके भीतर ।—जीभपर पीली आभा लिये लेप, मुँहका नासूर ।

पाकस्थली ।—भूख नहीं रहती, स्वाद या घ्राण शक्ति भी नहीं रहती ।

तलपेट ।—यकृत और प्लीहा प्रदेशमें दर्द, आध्मानवायु ।

मूत्रयन्त्र ।—पेशाबमें अण्डलालके साथ, मूत्रग्रन्थि-प्रदाह ।

श्वासयंत्र ।—पेटके ऊपरी भागमें दर्द और हृत्पिण्डमें भार मालूम होनेके साथ-ही-साथ श्वासमें गड़बड़ी, वक्षके बायें भागमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, दाहिनी ओरके पंजरेमें दर्द, यकृत और प्लीहा प्रदेशमें दर्द ।

हृत्पिण्ड ।—हृत्पिण्ड या धमनीमें ज्वरकी क्रिया या लक्षण ।

पीठ ।—पीठमें दर्द, कमरमें या कटिदेशमें बहुत दर्द ।

उर्द्धाङ्ग ।—बायीं ओरके बाँहमें दर्द, कलाईमें वातकी तरह दर्द ।

निम्नाङ्ग ।—ऊरुमें काटनेकी तरह दर्द, पैरमें ऐंठन, थकावट मालूम होना ।

त्वचा ।—सूखी और गर्म, लाल-लाल दाने, चेचककी तरह जलन, कुटकुट करना ।

निद्रा ।—कपालके सामनेवाले भागमें और आँखमें दर्दके कारण नींद खुल जाना ।

ज्वर ।—ज्वर, प्रबल ताप, प्यास, बेचैनी, भूख न लगना, शीतके साथ ज्वर इत्यादि ।

सम्बन्ध ।—**दोषघ्न**—थूजा, एपिस, सल्फ, ऐण्टि-टार्ट, साइलि, मैलेण्ड्रि ।

तुलनीय ।—चेचकमें—वैरियो, मैलेण्ड्रि, सैनाई । मसानेके प्रदाहमें—एपिस, मर्क-कोर । क्षय-कासमें—बैप्टी, टियुबर्क । हूप खाँसीमें—थूजा, सैबा, ककस, फेरम ।

शक्ति ।—१२, ३० और २०० शततमिक क्रम ।

एक्स-रे

(X-RAY)

दूसरा नाम ।—रायेन जेन-रे ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—एक ड्राम अलकोहल भरी शीशी कार्क टियुबमें क्रियाके समय आध घण्टेतक रख देनेपर दवा तैयार की जाती है। इससे ऊपरी क्रम तैयार हुआ करता है ।

आभास ।—दैहिक तथा मानसिक शक्तिकी प्रतिक्रिया पैदा करनेमें यह दवा विशेष समर्थ है। माषक या कैन्सर, कच्छु-विष, गुटिका प्रभृति दोष मिले धातुमें इसका प्रयोग करनेपर भीतरी दोष बाहर निकाल देती है। कैल्केरिया, सोराइनम, सलफर, सिफिलिनम, टियुबर्क्युलिनम वगैरह दवाओंसे जहाँ प्रतिक्रिया नहीं पैदा होती, वहाँ इससे बहुत काम होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नाना प्रकारके चर्मरोग ; कर्कट रोग ; अकौया ; वात ; जरायुकी बीमारी ; थकन ; जानु और पैरकी सूजन इत्यादि ।

लक्षणावली

मन ।—मानसिक उत्तेजना, मानसिक अवसाद, जो बात लिखनी चाहिये वह न लिखकर दूसरी लिखता है। मनुष्योंपर द्वेष-भाव ।

मस्तक ।—दाहिनी आँखपर दर्द, कपालमें दर्द, सवेरे सोकर उठते ही सर-दर्द, औंघाईके साथ दर्द, खोपड़ीमें दर्द, स्नायविक दर्द ।

आँख ।—आँखके गोलेमें दर्द ; रक्तसञ्चयके कारण पलकें भारी, मानो नींद नहीं आई है ।

कान ।—कानमें शब्द, इसके साथ ही अच्छी तरह सुन नहीं पाता ।

नाक ।—नाकसे रक्तमय सूक्ष्म-स्राव, सर्दी ।

मुख-विवर आदि ।—जबड़े अटकना, चिबुकमें जखम और सूखापन, दाँतमें दाग, गलेमें ऐसा अनुभव होना मानो सेन्धा नमक रखा है। मुँहसे बदबू निकलना ।

पाकस्थली ।—भूख नहीं रहती ; मांससे घृणा ; मीठी चीज खानेकी इच्छा ; प्यासके कारण मुँहका तीता स्वाद ; मिचली और वमन।

तलपेट ।—सूजन, आध्मान वायु, शूलका दर्द।

मलान्त्र ।—मलान्त्रमें सर्दीका प्रदाह ; हरा मल ; आध्मानके साथ निष्फल वेग।

पुं-जननेन्द्रिय ।—पेशाब बन्द और बार-बार पेशाब लगना ; ध्वज-भङ्ग ; अण्डकोष शिथिल।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—हरे रङ्गका ऋतुस्राव ; डिम्बाधारमें दर्द ; सर-दर्द ; गर्म मालूम होना।

श्वासयंत्र ।—खाँसी, बहुत ज्यादा बलगम निकलना, धुमैला बलगम ; प्रमेह-विष दूषित व्यक्तिकी खाँसीकी बीमारी। वक्षमें दर्द।

हृत्पिण्ड ।—कलेजा काँपना ; दर्द ; हृत्पिण्डके चारों ओर वायु।

अंग-प्रत्यङ्ग ।—दाहिने पैरमें गृध्रसी ; बाँहमें आमवातका दर्द। निचली हड्डीका सुन्न हो जाना या सूजन।

ज्वर ।—नींदके आरम्भमें कम्प ; ताप ऐसा मालूम होता है, कि उसी समय पसीना होगा। पसीना और कमजोरी।

निद्रा ।—बायीं करवट सोनेपर, हृत्पिण्डके आघातसे नींद खुल जाती है।

त्वचा ।—सामने कपालमें बायीं ओर फुन्सी पैदा हो जाना, त्वचाकी बहुत-सी बीमारी ; अकौता ; आरक्तकी तरह इत्यादि।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—कैल्केरिया-कास्टिकम, हिपर, पोडो, नेट्रम, सल्फर, फेरम, साइलि। पल्सेटिला, सोरिन, थजा, जिङ्कम इत्यादि।

दोषघ्न ।—नक्स और सल्फर।

शक्ति ।—१२वाँ या ३०वाँ या उससे ऊँचा क्रम।

इलेक्ट्रिसिटस

(ELECTRICITAS)

दूसरा नाम ।—इलेक्ट्रिसिटी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—दूधकी चीनीमें बिजलीका प्रवाह संयुक्तकर उससे विचूर्ण तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—उत्कण्ठा ; स्नायविक कम्पन ; बेचैनी ; ताण्डव ; मूर्च्छावायु ; वात ; पक्षाघात ; हृत्कम्पन ; सर-दर्द ; वज्राघात ; अन्धड़-पानी आदिकी आशंका ; अङ्ग-प्रत्यङ्गमें भार इत्यादि ।

दोषघ्न ।—मार्फिया, ऐसिटेट ।

शक्ति ।—१२ और ३० शततमिक क्रम ।

मैग्नेटिस पोलाई ऐम्बो

(MAGNETES POLI AMBO)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—दूधकी चीनी और चुआये हुए पानीमें मैग्नेटका प्रभाव सम्मिलितकर यह तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—सारे शरीरमें जलन ; दोनों हड्डीकी बीचकी उपास्थि आपसमें मिल जाती है, उस समय ऐसा दर्द होता है, मानो सन्धिकी हड्डियाँ टूट गयी हैं ; फड़कना और चिलक मारनेकी तरह दर्द ; सर-दर्द ; पुराने जखमसे रक्त-स्राव होना ।

शक्ति ।—१२ और ३० शततमिक ।

मैग्नेटिस पोलस आर्टिकस

(MAGNETIS POLUS ARTICUS)

दूसरा नाम और प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मैग्नेटके नार्थ पोल या उत्तर मेरु-ग्रन्थिसे पूर्वोक्त रूपसे तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नींदमें व्याघात ; सपनेमें घूमना ; कशेरुका मज्जामें टूटनेकी तरह शब्द अनुभव होना ; सर्दी मालूम होना ; आँतमें दर्द इत्यादि ।

मैग्नेटिस पोलस आस्ट्रेलिस

(MAGNETIS POLUS AUSTRALIS)

दूसरा नाम और प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मैग्नेट आफ साउथ पोल, पूर्वोक्त रूपसे तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—अंगूठेके नखके भीतर बेहद दर्द, नखका भीतरकी ओर घुस जाना या बैठ जाना ; पैरकी सन्धिका सहजमें खिसक जाना ; पैर लटकाकर बैठनेपर दर्द ।

शक्ति ।—१२, ३० या उससे ऊँचा क्रम ।

भारतीय औषधियाँ

ऐब्रोमा आगस्टा-फोलिया

(ABROMA AGUSTA-FOLIA)

दूसरा नाम।—उलट कम्बल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे संग्रह किये हुए पत्तेसे अमेरिकन फार्माकोपियाकी प्रणालीके अनुसार अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—बंगलामें बहुत जगह और भारतके बहुतसे ग्रीष्म-प्रधान प्रदेशमें उलट कम्बल यथेष्ट मिलता है।

जरायु और मूत्रयंत्रपर इसकी प्रधान क्रिया दिखाई देती है। भारतीय, विशेषकर बंगलाके जनसाधारण बहुत दिनोंसे घरके पास ही उलट कम्बलके वृक्ष लगा रखते हैं और बाधक आदि जरायुकी बीमारीमें इसकी जड़के रससे पारिवारिक चिकित्सा किया करते हैं और आरोग्य प्राप्त करते हैं।

कुछ दिनोंसे ऐलोपैथिक चिकित्सकोंने भी उलट कम्बलके अर्कसे बाधककी बीमारीकी चिकित्सा करना आरम्भ किया है। वे उलट कम्बलके पत्तेका रस और जड़के रससे प्रस्तुत अरिष्ट व्यवहार किया करते हैं।

स्वर्गीय होमियोपैथिक चिकित्सक डा॰ डी॰ एल॰ राय एम॰ डी॰ ने सबके पहले उलट कम्बलके पत्तेसे तैयार अरिष्टसे बहुमूल्य आरोग्य करनेका बात चिकित्सकोंके सामने प्रकट की थी।

होमियोपैथिक मतसे कष्टरजः और रजोलोप, जरायुकी बीमारीके कारण हिस्टीरिया, ऋतुके समय शूलका दर्द प्रभृति लक्षणोंमें इसका प्रयोग होता है।

बार-बार बहुत ज्यादा पेशाब होना ; पेशाब रोक न सकना, पेशाबके साथ चीनी अधिक जाना, पेशाब कर आनेके बाद ही प्यास, कमजोरी प्रभृति लक्षणोंमें

इसका मूल अर्क १-२ बून्द मात्रामें नित्य २-४ बार लगातार कुछ दिनोंतक सेवन करनेपर बहुमूत्र रोगमें बहुत फायदा होता है। बहुमूत्रके रोगीको यदि फोड़ा या दुष्टव्रण हो तो भी यह खूब फायदा करता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय। – जैम्बक्लाइलम, जेनोशिया-अशोका, सिमिसिफूगा, पल्स, सिकेलि, ऐब्रोमा-आगा-रेडियस (बाधक, ऋतुशूल), सिजिजियम, ऐसिड-फास, लैक्टि-ऐसिड, इयुरे-नाइट्रि, नेट्रम-मूर (बहुमूत्र)।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

ऐब्रोमा आगस्टा रैडिक्स

(ABROMA AUGUSTA RADIX)

दूसरा नाम।—उलट कम्बलकी जड़।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—उलट कम्बलकी जड़ या जड़की छालसे अमेरिकन फार्माकोपियाके अनुसार अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—बाधक, कष्टरज: इत्यादि जरायुकी बीमारीमें ऐब्रोमा-आगस्टाफोलिया और ऐब्रोमा-आगस्टा रेडिक्सके लक्षणमें कोई विशेष प्रभेद नहीं मिलता, परन्तु ऐब्रोमा-आगस्टा फोलियाकी तरह ऐब्रोमा आगस्टा रेडिक्स बहुमूत्र रोगमें लाभ करता है, कि नहीं ? इसका अबतक पता नहीं लगा। मूलसे प्रस्तुत ऐब्रोमा आगस्टा रेडिक्स दवाकी अपेक्षा ऐब्रोमा आगस्टाफोलिया (पत्तेसे बनी) से जरायुकी बीमारीमें बहुत जल्दी और स्थायी लाभ होता है। यह बात बहुतसे विशिष्ट होमियो-चिकित्सकोंने स्वीकार की है।

ऐलोपैथिक चिकित्सकगण भी आजतक साधारण व्यवस्था-पत्र या पेटेण्ट इत्यादिमें जरायुका बल बढ़ानेवाली और रज निकालनेवाली दवाके रूपमें ऐब्रोमा आगस्टा रेडिक्सका प्रयोग किया करते हैं।

वास्तवमें प्रदर, बाधक, अनियमित ऋतु, आँतोंका शूल प्रभृति रोगोंमें ऐब्रोमा-आ-रेडिक्सका मूल अर्क या निम्न-शक्तिका प्रयोग करनेपर जरायुमें बल बढ़ता है और जरायुके रोग अति शीघ्र आरोग्य होते देखे जाते हैं।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—जैन्थक्साइलम, जनोशिया-अशोका, ऐकोमा-आ-फोलिया, पल्स, कोलोसिन्थ, सिमिसि, सिकेलि, सिपि ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

एकालिफा इण्डिका

(ACALIPHA INDICA)

(देखिये पृष्ठ—८) ।

एकिरान्थेस-एस्पेरा

(ACHYRANTHES ASPERA)

दूसरा नाम ।—अपामार्ग, चिड़चिड़ा, चर-मंजरी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—आयुर्वेदके मतानुसार अपाङ्गको निम्न-शक्ति या मूल अर्क या क्वाथ व्यवहृत होता है । इससे खूब अधिक पेशाब होकर बहुत जल्द शोथ दूर हो जाता है ।

होमियोपैथिक विज्ञानके अनुसार स्वस्थ शरीरमें इसकी परीक्षा यदि की जाय तो इसके और भी बहुतसे उपयोगी गुण प्रकट होंगे ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न शक्ति ।

इगल-फोलिया

(AEGLE FOLIA)

दूसरा नाम ।—बिल्व-पत्र ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे बेल-पत्ते से अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—बङ्ग-देशमें यह बहुत विख्यात है, कि यह दवा पित्तनाशक, ज्वरनाशक और सर्दीसे उत्पन्न ज्वरमें मृदु-

विरेचक अर्थात् हलका जुलाबके रूपमें तथा बलगम निकालनेमें बहुत लाभ करतो है।

अग्निमान्द्य, अम्ल और शूलके दर्दमें भी यदि बिल्व-पत्रका रस कुछ दिनोंतक नियमित सेवन किया जाये तो फायदा होता है।

दूषित जखममें बिल्व-पत्रकी ठण्डी पोल्टीस (पानी डाले बिना ही चटनीकी तरह पीसकर) प्रयोग करनेपर जखम बहुत जल्द आरोग्य हो जाते हैं। शरीरमें रक्तकी अधिकताके कारण यदि किसी जगह सूजन हो जाये तो बिल्वपत्रका रस लगानेपर लाभ होता है।

जिनके शरीरमें अधिक चर्बी रहनेके कारण शरीरसे बदबू निकलती है, उनके शरीरमें इसका ताजा रस लगानेपर बदबू नष्ट हो जाती है।

ताजे बिल्व-पत्रका रस कुछ दिनोंतक गोल-मिर्चकी बुकनी डालकर सेवन करनेपर सब तरहके शोथ दूर होते हैं। शोथ-रोगियोंको बिल्व-पत्र भिंगोये जलका सेवन करनेपर बहुत लाभ होता देखा जाता है।

होमियोपैथिक मतसे शोथ-युक्त ज्वर (यह शोथ आँख, मुँह, ओंठ इत्यादिपर साधारण सूजनके रूपमें भी हो सकता है और उदर तथा हाथ-पैर इत्यादिकी अत्यधिक सूजन, थोड़ा पेशाब मिली मारात्मक सूजन भी हो सकती है)। गर्भावस्थामें शोथ, बेरी-बेरी इत्यादि सब तरहकी शोथकी बीमारीमें इगलफोलियाकी निम्न-शक्तिसे आशासे अधिक लाभ होता है।

बेरी-बेरी रोगमें इसकी ३x शक्ति सेवन करनेपर थोड़े ही दिनोंमें पेशाब खूब होने लगता है और शोथ घट जाता है; अग्निमान्द्य, हृत्पिण्डकी दुर्बलता प्रभृति लक्षण भी घट जाते हैं और रोगी निर्दोष भावसे आरोग्य प्राप्त करता है इत्यादि।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—एपिस, आर्स, एपोसाइनम, रस-टक्स, क्रेटिगस।

शक्ति।—३x, ३०, २००।

इगल-मार्मेलस

(AEGLE-MARMELOS)

दूसरा नाम ।—बेल, बिल्व-फल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—कच्चे बेलकी गिरीमें सुरासार मिलाकर अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—पुराने अतिसार या आमाशय-रोगमें यदि किसी दूसरी दवासे लाभ न हो तो इगल-मार्मेलसका मूल अर्क ३ से ५ बूंद मात्रामें दिनमें दो-चार बार सेवन करने तथा साथ ही-साथ बेलका मुरब्बा या बकरीके दूधके साथ बेलका गुद्दा सेवन करनेपर बहुत फायदा होता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—नक्स, पोडो, ऐनाक ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

आमलकी

(AMLAKI)

दूसरा नाम ।—आमला । ऐम्बेलिक-माइरोबेलम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखे आमलेके विचूर्णसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह कजियत, मूत्रकृच्छ्रता, अम्ल, अजीर्ण और कफ-रोगकी बढ़िया दवा है।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

अर्जुन

(ARJUNA)

दूसरा नाम ।—टरमिनेलिया-अर्जुन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—छालसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास।—हिमालयकी तराई, बङ्गाल तथा सम्पूर्ण भारत, बर्मा और लङ्का-द्वीपमें अर्जुनका वृक्ष पैदा होता है।

आयुर्वेदके अनुसार अर्जुनका काढ़ा या अर्जुनका घृत हृत्शूल, कलेजा धड़कना, हृत्पिण्डकी कमजोरीके कारण शोथ, अनियमित हृद्-स्पन्दन इत्यादि हृत्पिण्डके कारण पैदा हुए बहुतसे उपसर्गोंकी एक बहुत बढ़िया दवा है। हृत्पिण्डकी बीमारीमें अन्य दवाओंके साथ अनुपान स्वरूपमें अर्जुनका सदा ही व्यवहार हुआ करता है। रक्तपित्त, क्षयकास, रक्तातिसार ग्रहणी, मेह वगैरह बीमारीमें भी अर्जुनके प्रयोगका विधान पाया जाता है। इस दवाकी सङ्कोचन क्षमताके कारण अर्जुनके क्वाथ या आसवके द्वारा जखमको धोनेकी भी प्रथा प्रचलित है। चोट लगकर हड्डी टूट जानेपर या काला दाग पड़ जानेके लक्षणमें अर्जुनके भीतरी और बाहरी प्रयोगसे लाभ होनेका उल्लेख पाया जाता है।

ऐलोपैथिक चिकित्सकगण भी आयुर्वेदके निर्देशके अनुसार, अब अर्जुनका व्यवहारकर सन्तोषजनक प्रभाव देख रहे हैं।

होमियोपैथिक मतसे अबतक अर्जुनकी स्वस्थ देहिक और रोगियोंपर परीक्षा द्वारा उल्लेख योग्य प्रमाण नहीं प्राप्त हुआ, पर होमियोपैथगण आजकल हृत्पिण्डकी बीमारीमें व्यापक भावसे इसका व्यवहार कर रहे हैं।

हृत्पिण्डका आन्त्रिक या क्रिया विकारके कारण पैदा हुआ शोथ, कलेजा धड़कना, अनियमित नाड़ी और हृद्स्पन्दन इत्यादि लक्षणोंमें निम्न-शक्तिका व्यवहार करनेका उपदेश होमियोपैथिक चिकित्साके पण्डितगण किया करते हैं।

जखम और काले दागमें इसके जलीय धावनका बाहरी प्रयोग और निम्न-शक्तिका भीतरी प्रयोग करनेकी वे सलाह देते हैं और फायदा होता दिखाई देता है।

आजकल बेरी-बेरी रोग सब जगह बहुत फैला दिखाई देता है। बेरी-बेरी रोगमें जहाँ हृत्पिण्डपर भी रोगका आक्रमण होता है और इसी वजहसे बहुत तरहके उपसर्ग प्रकट होते दिखाई देते हैं, ऐसे स्थानपर अर्जुनका व्यवहार करनेपर बहुत फायदा होनेकी आशा की जाती है।

इगल-मार्मेलस

(AEGLE-MARMELOS)

दूसरा नाम ।—बेल, बिल्व-फल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—कच्चे बेलकी गिरीमें सुरासार मिलाकर अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—पुराने अतिसार या आमाशय-रोगमें यदि किसी दूसरी दवासे लाभ न हो तो इगल-मार्मेलसका मूल अर्क ३ से ५ बूंद मात्रामें दिनमें दो-चार बार सेवन करने तथा साथ हो-साथ बेलका मुरब्बा या बकरीके दूधके साथ बेलका गुद्दा सेवन करनेपर बहुत फायदा होता है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय ।**—नक्स, पोडो, ऐनाक ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

आमलकी

(AMLAKI)

दूसरा नाम ।—आमला । ऐम्बेलिक-माइरोबेलम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखे आमलेके विचूर्णसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह कब्जियत, मूत्रकृच्छ्रता, अम्ल, अजीर्ण और कफ-रोगकी बढ़िया दवा है।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

अर्जुन

(ARJUNA)

दूसरा नाम ।—टरमिनेलिया-अर्जुन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—छालसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास।—हिमालयकी तराई, बङ्गाल तथा सम्पूर्ण भारत, बर्मा और लङ्का-द्वीपमें अर्जुनका वृक्ष पैदा होता है।

आयुर्वेदके अनुसार अर्जुनका काढ़ा या अर्जुनका घृत हृत्शूल, कलेजा धड़कना, हृत्पिण्डकी कमजोरीके कारण शोथ, अनियमित हृद्-स्पन्दन इत्यादि हृत्पिण्डके कारण पैदा हुए बहुतसे उपसर्गोंकी एक बहुत बढ़िया दवा है। हृत्पिण्डकी बीमारीमें अन्य दवाओंके साथ अनुपान स्वरूपमें अर्जुनका सदा ही व्यवहार हुआ करता है। रक्तपित्त, क्षयकास, रक्तातिसार ग्रहणी, मेह वगैरह बीमारीमें भी अर्जुनके प्रयोगका विधान पाया जाता है। इस दवाकी सङ्कोचन क्षमताके कारण अर्जुनके क्वाथ या आसवके द्वारा जखमको धोनेकी भी प्रथा प्रचलित है। चोट लगकर हड्डी टूट जानेपर या काला दाग पड़ जानेके लक्षणमें अर्जुनके भीतरी और बाहरी प्रयोगसे लाभ होनेका उल्लेख पाया जाता है।

एलोपैथिक चिकित्सकगण भी आयुर्वेदके निर्देशके अनुसार, अब अर्जुनका व्यवहारकर सन्तोषजनक प्रभाव देख रहे हैं।

होमियोपैथिक मतसे अबतक अर्जुनकी स्वस्थ दैहिक और रोगियोंपर परीक्षा द्वारा उल्लेख योग्य प्रमाण नहीं प्राप्त हुआ, पर होमियोपैथगण आजकल हृत्पिण्डकी बीमारीमें व्यापक भावसे इसका व्यवहार कर रहे हैं।

हृत्पिण्डका आन्त्रिक या क्रिया विकारके कारण पैदा हुआ शोथ, कलेजा धड़कना, अनियमित नाड़ी और हृद्स्पन्दन इत्यादि लक्षणोंमें निम्न-शक्तिका व्यवहार करनेका उपदेश होमियोपैथिक चिकित्साके पण्डितगण किया करते हैं।

जखम और काले दागमें इसके जलीय धावनका बाहरी प्रयोग और निम्न-शक्तिका भीतरी प्रयोग करनेकी वे सलाह देते हैं और फायदा होता दिखाई देता है।

आजकल बेरी-बेरी रोग सब जगह बहुत फैला दिखाई देता है। बेरी-बेरी रोगमें जहाँ हृत्पिण्डपर भी रोगका आक्रमण होता है और इसी वजहसे बहुत तरहके उपसर्ग प्रकट होते दिखाई देते हैं, ऐसे स्थानपर अर्जुनका व्यवहार करनेपर बहुत फायदा होनेकी आशा की जाती है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—आर्निका, सिम्फाइटम, हैमामें, कैलेण्डुला (चोट और जखम), क्रैटेगस, (हृत्पिण्डकी बीमारी)।

शक्ति ।—३—२००

अर्हर-पत्र

(ARHAR-PATRA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरहरके ताजे पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—अम्ल और कामला रोगमें इसकी निम्न-शक्तिका प्रयोग करनेपर किसी-किसीको बहुत लाभ होता है।

शक्ति ।—१x—३x।

अश्वगन्धा

(ASVAGANDHA)

दूसरा नाम ।—वाइथेनिया समनिफेरा, काइसेलिस, फ्लेक्सिउरग।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखी जड़को, विचूर्णकर सुरासारके साथ मूल अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—बम्बई प्रदेश और भारतके पश्चिम अञ्चलमें बहुत ज्यादा परिमाणमें अश्वगन्धा (असगन्ध) पाया जाता है। इस उद्भिदसे घोड़ेके मूत्रकी तरह तेज़ गन्ध निकलती है, इसीलिये इसका नाम अश्वगन्धा पड़ गया है।

यह ध्वजभङ्ग रोगकी एक बहुत बढ़िया दवा है। बुढ़ापा, बहुत दिनोंतक रोग भोगना या बहुत ज्यादा मैथुनके कारण रति-शक्तिकी कमजोरीमें अश्वगन्धाका मूल अर्क या निम्न-शक्तिका प्रयोग करनेपर बहुत फायदा होता है।

बहुत दिनोंतक रोग भोगनेके कारण कमजोरी, बहुत अधिक मानसिक या शारीरिक परिश्रमकी वजहसे क्लान्ति, क्षयरोग, वात, खाँसी, शोथ या बच्चोंका

सुखण्डी या रिकेट (Rickets) रोगमें अश्वगन्धासे बहुत अधिक फायदा होता है।

अश्वगन्धा स्नायु और पेशियोंमें बल बढ़ाता है, इसीलिये जिस बालक या युवककी स्मरण-शक्ति और बोध-शक्ति कमजोर हो, पढ़ा हुआ विषय जल्दी समझमें न आये, बहुत दिनोंतक पढ़ा हुआ विषय याद न रख सके, पुष्ट भोजन खानेपर भी शरीर पुष्ट न होता हो या परीक्षाके लिये बहुत परिश्रम करना पड़ता है, उनके लिये अश्वगन्धा अमृतके समान है।

ऊपर लिखे लक्षणोंमें आयुर्वेदके मतसे, स्मरणातीत कालसे इसका व्यवहार प्रचलित हो रहा है। आजकल एलोपैथिक चिकित्सकोंने भी इसका व्यवहार आरम्भ कर दिया है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—एसिड-फास, नक्स, स्टैफि, लाइको, ऐवेना, ऐमियेना, सेब्राल।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

ऐटिस्टा इण्डिका

(ATISTA INDICA)

दूसरा नाम।—आस-सेवड़ा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—बङ्गालके गाँवोंमें इसका गाछ बहुत अधिक पैदा होता है। गाँववाले विशेषकर इसकी डालसे दतुवन करते हैं और बच्चोंको क्रिमि रोग हो जानेपर इसके पत्तेका रस प्रयोग करते हैं। इसके रक्त गुणके कारण इसके द्वारा पित्त-रसकी समता उत्पन्न होती हैं तथा जाड़ा बोखारमें यह बहुत फायदा किया करता है। इसके पत्तेका रस सुंघाने और हाथकी कलाईमें शिराके ऊपर पत्ता बाँध देनेकी भी प्रथा प्रचलित है।

होमियोपैथीके मतसे यह सविराम ज्वर, जाड़ा बोखार (द्वाहिक या तराहिक), आन्हिक-ज्वर, पित्तशूल, क्रिमिशूल, क्रिमि-जनित मूर्च्छा और आक्षेप, उदरामय, कब्जियत, रक्तामाशय प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—इयुकेलिपटस, चायना, सिना ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

ऐटिस्टा रेडिक्स

(ATISTA RADIX)

दूसरा नाम ।—आस सेवड़ाकी जड़ ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मूलकी छालसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—रक्त आमाशय रोगकी यह बढ़िया दवा है। विशेषकर क्रिमिकी वजहसे या क्रिमिकी धातुके व्यक्तिके रक्तामाशयकी यह उत्कृष्ट दवा है और मन्द शक्तिकी तरह काम करता है ।

शक्ति ।—मूल अरिष्ट और निम्न-शक्तिका बार-बार प्रयोग होता है ।

ऐज़ाडिरेक्टा इण्डिका

(AZADIRACHTA INDICA)

दूसरा नाम ।—मैला-ऐजाडिरेक्टा ; नीम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—नीम मैलेरिया-नाशक और चर्मरोग-नाशक है। इसीलिये मकानके दाहिनी ओर नीम गाछ लगानेकी चाल है। चर्मरोगमें नीमका घी, नीम-हल्दी या नीमके पत्ते पीसकर लगानेकी चाल प्रचलित है। चेचक, खसड़ा इत्यादि व्यापक चर्म-रोगोंमें नीमके पत्तेकी हवा करनेसे लाभ होता है। आयुर्वेदके मतसे नीम सब तरहके चर्म-रोगोंमें यहाँतक कि गलित कुष्ठकी भी श्रेष्ठ दवा है। नीमके पत्तेके पानीसे जखम धोनेपर जखम बहुत जल्द आरोग्य हो जाता है और सड़ना बन्द हो जाता है। क्रिमि, पित्तनाशक और बलवर्द्धकके रूपमें इसकी बहुत सुख्याति है ।

होमियोपैथी-मतसे जाड़ा, बोखार, मैलेरिया ज्वर, पित्त-ज्वर, दमा, सड़े ज़खम, शरीरके भीतरके तन्तु सड़ जानेके कारण ज्वर, रति-शक्तिकी दुर्बलता,

श्वेत-प्रदर, ऋतुके साथ सड़े तन्तु निकलना प्रभृति लक्षणोंमें ऐज़ाडिरेक्टासे बहुत लाभ होता है।

ज्वर-रोगमें पल्सेटिलाके साथ इसका बहुत कुछ सादृश्य है। पल्सेटिलाके ज्वरके लक्षणके साथ यदि बहुत अधिक कब्जियत रहे तो ऐज़ाडिरेक्टासे बहुत अधिक फायदा होता है।

शक्ति।—६x, ३० और मूल अर्क, रस और काढ़ाका बाहरी प्रयोग होता है।

बहेड़ा

(BAHERA)

दूसरा नाम।—टर्मिनेलिया-बेलेरिका। बेलेरिक माइरो बेलेना। हिन्दी नाम—बहेड़ा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्णसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—हड़, बहेड़ा और आमला—ये तीनों ही मिलकर त्रिफला कहलाते हैं। त्रिफला पित्तका शमन करनेवाला तथा कोठा साफ़ करनेवाला है।

बहेड़ाकी गिरी सङ्कोचक है, इसी कारणसे प्रदाहमें बार-बार इसकी गिरीका प्रलेप दिया जाता है और उससे बहुत लाभ होता है।

यद्यपि होमियोपेथिक मतसे इसका भरपूर प्रूविङ्ग नहीं हुआ तथापि होमियोपैथीके अनुसार पित्तकी अधिकता, कब्जियत, स्वरभङ्ग, खाँसी प्रभृतिमें सफलतापूर्वक इसकी निम्न-शक्तिका प्रयोग होता है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

ब्लूमिया ओडोरेटा

(BLUMEA ODORATA)

दूसरा नाम।—कुकशिमा, शियाल-मोथा, कुकरौंधा।

उपयोगिता और आभास।—अर्श, रक्तामाशय और रक्त-प्रदर रोगमें ब्लूमियाकी निम्न-शक्ति बढ़िया काम करती है। काली खाँसी, स्वरभङ्ग (ड्रोसेरा, स्पञ्जि), शय्यामूत (शय्यामें रातमें पेशाब कर देना—बार्बेस्कम, सिना) और वात रोगकी यह अच्छी दवा है।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

ब्लैटा ओरियण्टेलिस

(BLATTA ORIENTALIS)

देखिये— पृष्ठ—३४९।

बेरोविया डिफियुजा

(BOERHAAVIA DIFFUSA)

दूसरा नाम।—लाल पुनर्नवा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—रक्त-पुनर्नवासे मूल अरिष्टतैयार होता है।

उपयोगिता और अभास।—आयुर्वेदके मतानुसार पुनर्नवा शोथ, कुष्ट, मूत्र-पथरी, वात और ज्वर तथा मूत्र-नाशक महौषधि है। कुछ दिनोंसे ऐलोपैथी मतके अनुसार पुनर्नवाका सत, पेशाब लाने, हलका जुलाब, वमन करने और कफ निकालनेकी दवाके रूपमें व्यवहृत होता है।

होमियोपैथीके मतानुसार शोथ रोगमें इसका मूल अरिष्ट या निम्न-शक्तिसे विशेष लाभ होता देखा गया है। बेरी-बेरी या बहुव्यापक शोथ रोगमें पुनर्नवाका

मूल अर्क कई बूंद व्यवहार करनेपर असंख्य रोगियोंको बहुत अधिक लाभ हुआ है। अधकपारीका सर-दर्द, पेशाबमें कष्ट और मूत-पथरी रोगमें भी इससे बहुत फायदा होता है।

शक्ति।—मूल अर्क कई बूंद मात्रामें या निम्न-शक्ति।

बेरोविया रिपेन्स

(BOERHAAVIA REPENS)

दूसरा नाम।—सफेद पुनर्नवा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—श्वेत पुनर्नवासे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह दवा भी शोथ रोगमें ही विशेषकर व्यवहृत होती है। बेरी-बेरी रोगमें इस दवाके प्रयोगसे बहुत लाभ होता है।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

ब्राइयोफाइलम कैलिसिनम

(BRYOPHYLUM CALYCINUM)

दूसरा नाम।—हिमसागर। ज़ख्मह्यात।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पत्तेके रससे मूल अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह एक सङ्कोचक और सड़ना दूर करनेवाली दवा है। हिमसागरका पत्ता आगमें झुलसाकर कटे जखम, फोड़ा तथा विषैले कीड़े वगैरह काटे हुए स्थानपर लगाकर बांध देनेसे विशेष लाभ होता है।

उदरामय, आमाशय, हैजा प्रभृतिमें इसको निम्न-शक्तिका भीतरी प्रयोग करनेपर और मूल अर्कका धावन बाहर लगानेपर विशेष लाभ होता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—आर्नि, हैमा, हाइड्रो, इचिनि ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

कैलेण्डुला आफिसिनैलिस
(CALENDULA OFFICINALIS)

देखिये —पृष्ठ—४४२ ।

सिसलपिनिया बाण्डुसेला
(CAESALPINIA BONDUCELLA)

दूसरा नाम ।—कटकरंज ; कुईनिया-इण्डिका ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फुनगीके पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—कटकरञ्जकी लता बंगालके खड़हरोंमें इधर उधर बहुत होती है । इसके पत्ते और फल सबमें ही बहुत काँटे होते हैं । फलोंमें फूलकी तरह दो-तीन बीज होते हैं ।

गाँववाले तथा आयुर्वेदिक चिकित्सकगण कटकरञ्जकी गिरीका चूर्ण बनाकर बोखारमें व्यवहार करते हैं ।

होमियोपैथी मतसे मैलेरिया ज्वर, जाड़ा बोखार, सर-दर्द, प्यास और यकृतके बढ़नेमें तथा बोखारके बादकी कमजोरीमें इसका व्यवहार होता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—चायना, आर्स ।

शक्ति ।—२x—६x ।

कैलोट्रोपिस जाइगैण्टिया

(CALOTROPIS GIGANTIA)

देखिये— पृष्ठ—४४५।

कैसिया-सैफोरा

(CASSIA SAPHORA)

दूसरा नाम।—काला कसुन्दा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—काले कसुन्देकी जड़की छालसे मूल अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—दाद, घाव, फुन्सियाँ, रूसी, विचर्चिका प्रभृति लक्षणोंमें इसकी निम्न-शक्ति विशेष लाभ करती है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

सिफालेण्ड्रा-इण्डिका

(CEPHALANDRA INDICA)

दूसरा नाम।—कुण्डरी, काक्सिनिया-इण्डिका।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पत्तेके रससे मूल अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—हाथ-पैरकी जलनमें कुण्डरीका पत्ता कुचलकर लगा देनेपर तुरन्त जलन शान्त हो जाती है। वायु और पित्तके कारण सर-दर्द और अनिद्रा रोगमें इसका रस माथा और कपालमें लगानेपर सर-दर्द तुरन्त बन्द होता है और अच्छी नींद आती है।

बच्चोंका हरे रङ्गका मल, पेटमें दर्द, कूथन प्रभृति लक्षणोंके साथ रक्तामाशयकी सिफालेण्ड्रा एक बढ़िया दवा है। बहुमूत्र रोगमें और पित्त-घटित

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—आर्नि, हैमा, हाइड्रो, इचिनि ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

कैलेण्डुला आफिसिनैलिस

(CALENDULA OFFICINALIS)

देखिये —पृष्ठ—४४२ ।

सिसलपिनिया बाण्डुसेला

(CAESALPINIA BONDUCELLA)

दूसरा नाम ।—कटकरंज ; कुईनिया-इण्डिका ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फुनगीके पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—कटकरञ्जकी लता बंगालके खड़हरोंमें इधर उधर बहुत होती है । इसके पत्ते और फल सबमें ही बहुत काँटे होते हैं । फलोंमें फूलकी तरह दो-तीन बीज होते हैं ।

गाँववाले तथा आयुर्वेदिक चिकित्सकगण कटकरञ्जकी गिरीका चूर्ण बनाकर बोखारमें व्यवहार करते हैं ।

होमियोपैथी मतसे मैलेरिया ज्वर, जाड़ा बोखार, सर-दर्द, प्यास और यकृतके बढ़नेमें तथा बोखारके बादकी कमजोरीमें इसका व्यवहार होता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—चायना, आर्स ।

शक्ति ।—२x—६x ।

कैलोट्रोपिस जाइगैण्टिया

(CALOTROPIS GIGANTIA)

देखिये— पृष्ठ—४४५।

कैसिया-सैफोरा

(CASSIA SAPHORA)

दूसरा नाम।—काला कसुन्दा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—काले कसुन्देकी जड़की छालसे मूल अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—दाद, घाव, फुन्सियाँ, रूसी, विचर्चिका प्रभृति लक्षणोंमें इसकी निम्न-शक्ति विशेष लाभ करती है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

सिफालेण्ड्रा-इण्डिका

(CEPHALANDRA INDICA)

दूसरा नाम।—कुण्डरी, काक्सिनिया-इण्डिका।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पत्तेके रससे मूल अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—हाथ-पैरकी जलनमें कुण्डरीका पत्ता कुचलकर लगा देनेपर तुरन्त जलन शान्त हो जाती है। वायु और पित्तके कारण सर-दर्द और अनिद्रा रोगमें इसका रस माथा और कपालमें लगानेपर सर-दर्द तुरन्त बन्द होता है और अच्छी नींद आती है।

बच्चोंका हरे रङ्गका मल, पेटमें दर्द, कूथन प्रभृति लक्षणोंके साथ रक्तामाशयकी सिफालेण्ड्रा एक बढ़िया दवा है। बहुमूत्र रोगमें और पित्त-घटित

ज्वरमें विशेषकर पित्त-प्रधान व्यक्तियोंकी बीमारीमें सिफालेण्ड्राका प्रयोग करनेपर आशासे अधिक लाभ दिखाई देता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—आर्ज-नाइट्रि, मर्क-कोर, सल्फ ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

चिराता

(CHIRATA)

दूसरा नाम ।—चिरायता ; ओफिलिया-चिराटा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखे डण्टल और पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—हिमालयके उच्च शिखरपर चिरायता बहुत अधिक परिमाणमें मिलता है । आयुर्वेदके मतसे चिरायता, ज्वर, पित्त और क्रिमि-नाशक, पाचक तथा मृदु-विरेचक है । जीर्ण-ज्वर तथा पुराने ज्वरमें चिरायताका लाभ भारतके सभी जनसाधारण जानते हैं । नये मैलेरिया ज्वरमें जब आर्सेनिक, क्विनिन इत्यादिका प्रयोग करनेपर भी लाभ नहीं होता और पित्तकी प्रबलता दिखाई देती रहती है, ऐसे स्थानपर चिरायता रामबाणकी तरह लाभ दिखाता है । सान्निपातिक रोगमें जब क्विनिनका व्यवहार हो नहीं सकता, उस समय भी चिरायताका निःसङ्कोच भावसे व्यवहार हो सकता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—आर्स, चायना, सल्फ, सिना ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

क्लेरोडण्ड्रन

(CLERODENDRON)

दूसरा नाम ।—क्लेरो-इनफारचुनेटम ; भाँट, भाण्डिर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे गाछसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास।—बङ्गालमें सड़कोंके आस-पास तथा खंडहरोंमें यह बहुत अधिक पैदा होता है। बङ्गालके गाँववाले ऐटिस्टा-इण्डिका या आंस-सेबड़ाकी तरह इसके पत्तेका रस भी बच्चोंके क्रिमि-रोगमें व्यवहार किया करते हैं।

मलेरिया ज्वर या पुराना ज्वर, प्लीहा और यकृतका बढ़ना, कब्जियत, आँख-मुँहमें जलनके लक्षणमें भाँटोका रस या मूल अरिष्ट बहुत फायदा करता है। अजीर्ण रोगमें भी यह फायदा करता दिखाई देता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—ऐटिस्टा, सिना, चायना।

शक्ति।—मूल अर्क, निम्न-शक्ति और पत्तेका रस।

साइनोडन या दूर्वा

(CYNODON or DURBA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जड़-सहित ताजो दूबसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—दूर्वा एक अनुत्तेजक, शक्तिवर्द्धक और रक्तस्राव रोकनेवाली चीज़ है। दूब सहजमें नहीं सूखती। इसलिये, इसका अर्क या दूर्वाका पानी शक्तिको बढ़ाता है—यह सभी प्राच्य और प्रतीच्य विद्वान मानते हैं।

दूर्वा रस-रक्तका बहना रोकता है। इसीलिये, इस देशमें शरीरका कोई स्थान कट जानेपर, दूर्वा पीसकर या कुचल अथवा चबाकर उस स्थानपर लगा देनेकी प्रथा प्रचलित है। इससे रक्तस्राव तुरन्त रुक जाता है और जखम भी जल्द ही आरोग्य हो जाता है।

क्षयके कारण पैदा हुई खाँसीके साथ यदि रक्तस्राव हो तो दूर्वाका रस कई घण्टेका अन्तर देकर लगातार या दूबकी जड़का अरिष्ट सेवन करनेपर थोड़े ही समयमें रक्तस्राव बन्द हो जाता है।

जरायु या आँतोंसे बहुत रक्तस्रावमें साइनोडोनका मूल अरिष्ट सेवन करनेपर खूब फायदा होता है।

शक्ति।—मूल अर्क या निम्न-शक्ति या दूर्वाका रस।

साइपेरस

(CYPERUS)

दूसरा नाम ।—मोथा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्णसे अरिष्ट तैयार होता है ।

("मोथा" देखिये)

डेसमोडियम-गैंजेटिकम

(DESMODIUM GANGETICUM)

दूसरा नाम ।—शालपर्णि ; हिन्दी साल्हिवान ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—आयुर्वेदके मतसे यह एक बलकारक और ज्वरनाशक दवा है। होमियोपैथीके अनुसार पित्त-ज्वर, सारे शरीरमें दर्द, सर-दर्द, शिरोदण्डमें दर्द, अकड़नका भाव प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है । सर्दी ज्वर, पुराना ज्वर और सन्निपात रोगमें उल्लिखित लक्षणोंमें इस दवासे विशेष लाभ होनेकी आशा की जाती है ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

ऐम्बेलिया राइबस

(EMBELIA RAIBES)

दूसरा नाम ।— बिडङ्ग । वाय-विडङ्ग ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—चूर्णसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—विडङ्ग एक प्रसिद्ध क्रिमि-नाशक, रेचक और पेशाब लानेवाली दवा है ।

होमियोपैथीके मतसे क्रिमि रोगमें तथा उदरामय, अतिसार, अजीर्ण, पेट फूलना प्रभृति क्रिमि-जनित विविध उपसर्गोंकी विड़ङ्ग एक बहुत ही बढ़िया दवा है। ऊपर लिखे लक्षणोंके साथ यदि कड़वा पेशाबका लक्षण भी दिखाई दे तो इस दवापर पूरा-पूरा भरोसा किया जा सकता है।

सम्बन्ध।—सिना, टियुक्रि, स्टैनम।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

एन्हाइड्रो
(ANHYDRO)

दूसरा नाम।—हिञ्चे।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे संग्रह किये हुए हिञ्चेसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—आमाशय, पित्त-प्राधान्य, नया ज्वर, जीर्ण ज्वर प्रभृतिमें एनहाइड्रो बहुत फायदा करता है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

इयुपेटोरियम आयापाना
(EUPATORIUM AYAPANA)

दूसरा नाम।—आयापान।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे गुल्मसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—आयापान एक खून रोकनेवाली दवा है। कुचल जानेका जखम या दूषित जखममें आयापान लगानेपर या मूल अर्कका धावन प्रयोग करनेपर विशेष फायदा होता है। साँप काटी हुई जगहपर आयापान कुचलकर लगानेपर या मूल अर्कके बाहरी प्रयोगसे और साथ-ही-साथ मूल अर्कके भीतरी प्रयोगसे सब तरहके विष नष्ट हो जाते हैं। इस विषयमें इसकी बहुत सुख्याति है।

इसके बाहरी प्रयोगसे अर्श, कटे घाव और शरीरके जिस किसी स्थानसे रक्तस्राव हो, उसको यह रोक देता है। आमाशय, पाकाशयके आन्त्रिक

जखमकी वजहसे रक्तस्राव या क्षय रोगमें खाँसीके साथ रक्त-स्रावके लक्षणमें इसके भीतरी प्रयोगसे बहुत लाभ होता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।— दूर्वा, इपिकाक, हैमामेलिस।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न शक्ति।

फिकस इण्डिका

(FICUS INDICA)

दूसरा नाम।—बड़की जटा या शुङ्ग।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—बड़की जटासे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—फिकस रिलिजियोसाकी तरह यह भी एक रक्त-स्राव रोधक दवा है। किसी-किसीके मतसे फिकस इण्डिकाकी रक्त-स्राव रोकनेवाली शक्ति फिकस रिलिजियोसासे बहुतसे अंशोंमें अधिक है। यदि क्षय रोगमें खाँसीके साथ रक्तस्राव हो, बहुत रज निकलता हो, अर्श या रक्तामाशय रोग हो, इन सबमें ही यह अव्यर्थ रूपसे कार्य करती है। नये आमाशय और उदरामय रोगमें भी इससे फायदा होता देखा जाता है।

बहुमूत्र रोगमें इसकी निम्न-शक्तिका प्रयोग करनेपर विशेष लाभ होता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—सिजिजियम (बहुमूत्र); इपि, सिकेलि, दूर्वा (साइनोडन)।

शक्ति।—१x—६x।

हरीतकी

(HARITAKI)

दूसरा नाम।—टर्मिनेलिया-चेबिओला। हड़।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—हड़के चूरसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—आयुर्वेदके मतसे यह अनुपानके अनुसार प्रायः सब तरहके रोगोंमें फायदा करती है। हरीतकी त्रिफलाका एक प्रधान उपादान है।

होमियोपैथी मतसे कब्जियत, पित्तकी प्रधानता, आमाशय, पुराना अतिसार, अर्श, हिचकी प्रभृति लक्षणोंमें उपयोगी है।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

हाइग्रोफिला-स्पाइनोसा

(HYGROPHILA-SPINOSA)

दूसरा नाम।—तालमखाना।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—सारे शरीरमें जलन, सारे शरीरमें छोटे-छोटे दाने, जखम, गाँठोंका फूल जाना प्रभृति चर्मके लक्षणमें तथा शीत, पित्त, विसर्प, कुष्ठ प्रभृति रोगोंकी (ऐपिस, आर्स, आर्टि-इयु) हाइग्रोफिला एक बढ़िया दवा है।

इसके अलावा यकृतकी बीमारीके कारण शोथ, पेशाब कम होना, वात, प्रमेह, स्नायविक दुर्बलता, मूत्रपथरी, नींद न आना प्रभृति लक्षणोंमें भी इसका व्यवहार होता है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

जनोशिया अशोका

(JONOSIA ASOKA)

दूसरा नाम।—अशोक, सेराका इण्डिका। भारतवर्षमें पैदा होनेवाला एक प्रकारका वृक्ष।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अशोक वृक्षकी ताजी छालसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—आयुर्वेदिक चिकित्सक अशोककी छालसे अरिष्ट या घृत तैयार किया करते हैं और डिम्बकोष तथा जरायु सम्बन्धी रोगोंमें इसका प्रयोग किया करते हैं। आजकल ऐलोपैथिक चिकित्सकगण भी अशोककी छालसे बनी दवायें व्यवहार किया करते हैं।

होमियोपैथिक मतसे जरायु और डिम्बकोष-सम्बन्धी बीमारियोंमें ही अशोककी क्रिया दिखाई देती है।

रक्त-प्रदर, श्वेत-प्रदर, ऋतुशूल, कष्टरजः और जरायुकी बीमारियोंके प्रतिच्छिन्न कारणोंसे, सर-दर्द, अधकपारीका दर्द, आँखोंमें दर्द, सर्दी, बवासीर, कब्जियत, अजीर्ण, सुस्ती, भूख न लगना, सब विषयोंमें उदासीनता प्रभृति लक्षणोंमें यह मन्त्र-शक्तिकी तरह काम करती है।

अशोकका फूल घोर लाल होता है, इसीलिये रक्त-प्रदरमें इसकी कार्य-कारिताके साथ इस लाल रङ्गका सादृश्य एक विशेष ध्यान देनेकी सामग्री है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय**।—जैन्थक्स, ऐब्रोमा-आ, ऐब्रोमा-ऐ, सिमिसि, कोलोसिन्थ।

शक्ति।—मूल अर्क १से ५ बूंद मात्रामें और १x—१२।

जस्टिशिया अधाटोडा

(JUSTICIA ADHATODA)

दूसरा नाम।—अड़ूसा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—आयुर्वेदके मतसे क्षय-कास, सर्दी, खाँसी, दमा, जीर्ण ज्वर, कुष्ठ प्रभृति रोगोंमें यह दवा फायदा करती है।

होमियोपैथी मतसे नाकसे बहुत ज्यादा पानीकी तरह श्लेष्मा निकलना और लगातार छींक (सिपा) सर-दर्द, मुँह और गलेका सूखना, स्वरभङ्ग, स्वर-यन्त्रमें दर्द, आक्षेपिक खाँसी, छाती जकड़ जानेका भाव, ऐसा मालूम होना कि साँस

रुक जायगी प्रभृति लक्षणोंमें, नये सर्दीके बुखारमें, इन्फ्लुएञ्जा प्रभृति बीमारियोंमें खासकर, छोटे बच्चे और बालक-बालिकाओंकी बीमारियोंकी यह एक उत्कृष्ट दवा है।

जनोशिया अशोकाके लक्षणके साथ ऐलियम-सिपा और युफ्रे शियाका विशेष सादृश्य है। काली खाँसीमें यह बहुत फायदा करता है।

शक्ति।—६ और ३०।

जस्टिशिया रूब्रम

(JUSTICIA RUBRUM)

दूसरा नाम।—लाल अडूसा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—जष्टिशिया रूब्रमकी लक्षणावली जष्टिशिया अधाटोडाके अनुसार ही है। पर यदि क्षय रोगवाले रोगीकी खाँसीमें रक्त निकलता दिखाई दे तथा जष्टिशियाके दूसरे लक्षण वर्त्तमान रहें तो जष्टिशिया रूब्रा ही विशेष लाभ करता है।

शक्ति।—६ और ३०।

कालमेघ

(KALAMEGH)

दूसरा नाम।—कल्पनाथ, क्रियात।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—आयुर्वेदके मतसे कालमेघ ज्वरनाशक, बलकारक और यकृत-शोधक है।

होमियोपैथिकके मतसे यकृतका प्रदाह, यकृतका बढ़ना, शरीरका खून कम हो जाना, कामला रोग, पुराना बोखार, मैलेरिया ज्वर, जीर्ण ज्वर, क्रिमि, कब्जियत, अजीर्ण प्रभृति लक्षणोंमें विशेष लाभदायक है।

इन्फ्लुएञ्जा रोग फैलनेके समय कुछ समयतक नियमित रूपसे इस दवाका सेवन करनेपर यह रोग होनेका डर नहीं रह जाता।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

कूर्चि

(KURCHI)

दूसरा नाम।—कुटराज, कुटज; हलेरिना-ऐण्टिडिसेस टाविका।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मूलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—आयुर्वेदके मतसे कुटज आमाशयको, एक बढ़िया दवा है। होमियोपैथिक मतसे रक्तामाशय, पुराना आमाशय, पेटमें तेज़ दर्द, ज्वर, क्रिमि प्रभृति लक्षणोंमें इससे विशेष लाभ होता है। नक्स-वोमिकाके लक्षणके साथ इसका बहुत सादृश्य है।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

द्रोण

(DRONA)

दूसरा नाम।—लूकस ऐस्प।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—द्रोण बच्चोंको सर्दी, खाँसीको एक बढ़िया दवा है। बहुत तरहके चर्म रोगमें इसका भीतरी और बाहरी प्रयोग होता है।

शक्ति।—३x और ६x।

लूफा ऐमेरा

(LUFFA AMERA)

दूसरा नाम ।—तित पापड़ा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे फलसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—मैलेरिया ज्वर, यकृत और प्लीहाका बढ़ना, बहुत दिनोंका पुराना धीमा बोखार, कब्जियत प्रभृति लक्षणोंमें लूफा सुन्दर काम करता है ।

अतिसार, बहुत ज्यादा दस्त, दस्त-कै दोनों एक साथ, पित्त वमन, मिचली, पित्तमय दस्त प्रभृति लक्षणोंमें यह दवा बहुत फायदा करती है । खासकर उदरामयमें इससे ज्यादा लाभकी आशा की जाती है ।

चर्मके दाने या फुन्सियाँ आरोग्य करनेकी भी इसमें विशेष शक्ति है ।

शक्ति ।—२x—६x ।

माइका

(MICA)

दूसरा नाम ।—अभ्र । अबरक ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—बहुत ज्यादा मैथुन, रक्तस्राव या रोग-भोग करनेके कारण कमजोरी, क्षय-रोग, स्नायविक दुर्बलता, जीर्ण-ज्वर, खाँसी, बहुमूत्र, ध्वजभंग प्रभृति रोगोंमें माइकाके प्रयोगसे बहुत जल्द आशातीत लाभ होता है ।

शक्ति ।—६x—३० ।

मूथा

(MUṬHA)

दूसरा नाम ।—साइपेरस—रोटाण्डस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्णसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह उदरामय, अजीर्ण, अम्ल, उदरमें वायु-संचय प्रभृति लक्षणोंमें व्यवहृत होता है ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

नेट्रम-म्यूर-बिट

(NATRUM MURE-BIT)

दूसरा नाम ।—बिट लवण ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्णके आकारमें मूल औषध तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—प्लीहा और यकृतपर इसकी प्रधान क्रिया दिखाई देती है । प्लीहा और यकृतके कारण ज्वर, प्लीहा और यकृतका बढ़ना प्रभृति लक्षणोंमें यह सुन्दर काम करता है । यदि नेट्रम-म्यूरका प्रयोग कर पूरा लाभ न दिखाई दे तो इस दवाका प्रयोग करनेपर पूरा फायदा होता है ।

शक्ति ।—३x, ३०, २०० ।

निकटैन्थिस

(NYCTANTHES)

दूसरा नाम ।—शेफालिका ; निर्गुण्डी ; निकटैन्थिस-आर्बट्राइयोटिस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्तेसे मूल अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—आयुर्वेद और मुष्टियोगके मतसे शेफालिकाके पत्तेका रस नये और पुराने दोनों ही तरहके बोखार और साइटिका रोगमें व्यवहार होता है। आजकल ऐलोपैथिक मतसे ऊपर लिखे लक्षणोंमें भी इसका काढ़ा या अरिष्ट व्यवहृत होने लगा है।

होमियोपैथीके मतसे नया सर्दीका बोखार, पुराना पित्त ज्वर या मैलेरिया ज्वर, कब्जियत, उरुका स्नायुशूल (साइटिका) प्रभृति लक्षणोंमें शेफालिकासे प्रस्तुत अरिष्ट निकटैन्थिस व्यवहृत होता है।

शक्ति ।—१x, ३० ।

ओसिमम-ग्रैटिसिमम

(OCIMUM GRATISSIMUM)

दूसरा नाम ।—राम तुलसी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्तेसे मूल अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—बच्चोंकी सर्दी, खाँसी, ज्वर और कब्जियतके लक्षणको ओसि-ग्रैटि एक उत्कृष्ट दवा है। गोनोरिया रोगमें पेशाबमें जलन, थोड़ा पेशाब प्रभृति लक्षणमें भी इससे फायदा दिखायी देता है।

शक्ति ।—१x, ६x ।

ओसिमम सैंकटम

(OCIMUM SANCTUM)

दूसरा नाम ।—तुलसी ; होली वेसिलि ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—बच्चोंकी सर्दी, खाँसी, ज्वर प्रभृतिकी ओसि-सैंक (तुलसी) एक उत्कृष्ट दवा है। सर्दीके बोखारमें भी यह बढ़िया कार्य करता है।

आँखोंका प्रदाह, आँखोंमें फूली पड़ना, दाँतमें दर्द आदि लक्षणमें और दाद, खुजली, दूषित जखम, कुष्ट, जखम प्रभृति चर्मके लक्षणमें भी तुलसी बहुत लाभदायक है।

शक्ति ।—१x—३० ।

ओसिमम रेडिक्स

(OCIMUM RADIX)

दूसरा नाम ।—तुलसीकी जड़।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़से अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—यह धातुके पतलापन और स्नायविक दुर्बलताके लक्षणमें बहुत फायदा करता है।

शक्ति ।—२x—६x ।

ओल्डेनलैण्डिया

(OLDENLANDIA)

दूसरा नाम ।—ओल्डेन लेण्डिया, हार्ब्रोऐसा। श्वेतपापड़ा, पित्त-पापड़ा आदि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—ज्वर, पित्त-ज्वर, जाड़ा-बोखार और मलेरिया ज्वरमें पितपापड़ा बहुत लाभ करता है।

शक्ति ।—१x—३० ।

पिक्रोरिजा

(PECRORRHIZA)

दूसरा नाम ।—पिक्रोटिना-कुहोया ; कुटकी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—यह गुल्म काश्मीर और सिक्किम प्रान्तोंमें बहुत अधिक उत्पन्न होता है।

उपयोगिता और आभास।—आयुर्वेदके मतसे यह एक विरेचक, ज्वरघ्न और क्रिमि-नाशक औषध है।

होमियोपैथीके मतसे अम्ल, अजीर्ण, पित्त-ज्वर, पाकाशयकी गड़बड़ीमें पैदा हुआ ज्वर, अतिसार और क्रिमि-रोगमें व्यवहार होता है।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

टिरोकार्पस-सैण्टेलिनस

(PTEROCARPUS SANTALINUS)

दूसरा नाम।—रक्त चन्दन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—रक्त-चन्दनकी लकड़ीके विचूर्णसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—आयुर्वेदके मतसे यह एक उत्कृष्ट सङ्कोचक और प्रदाह-निवारक औषध है सर-दर्द दूर करनेके लिये माथेमें इसका प्रलेप दिया जाता है।

होमियोपैथीके मतसे यह अर्श, आन्त्रिक रक्त-स्राव, सर-दर्द, आखें उठना प्रभृति लक्षणोंमें व्यवहृत होता है।

शक्ति।—१x—६x।

सिमूल

(SEMUL)

दूसरा नाम।—शाल्मली, बम्बिक्स-मैलबारिकम, सेमल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी संग्रह की हुई जड़से अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—आयुर्वेदके अनुसार सेमलकी जड़ जरा-व्याधि-नाशक, बलकारक और वीर्यवर्द्धक है।

होमियोपैथी मतसे स्नायविक दौर्बल्य, ध्वजभङ्ग, क्षय, टाइफायड आदि बीमारीमें तथा बहुत दिनोंतक रोग भोगके कारण पैदा हुई कमजोरी, बहुत ज्यादा परिमाणमें और बहुत दिनोंतक स्थायी ऋतुस्राव प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—अश्वगन्धा, डैमियाना, एवेना-सैटाइवा, सेबाल-सेरु।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

सोलेनम जैन्थाकार्पास

(SOLANUM XANTHOCARPUS)

दूसरा नाम।—कण्टकारी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूची फुनगीसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—आयुर्वेदके मतसे सर्दी, खाँसी, दमा, प्रभृति श्वासयन्त्रकी बहुत-सी बीमारियोंमें इसका व्यवहार होता है।

होमियोपैथीके मतसे नया ज्वर, खाँसते-खाँसते स्वरभङ्ग, गलक्षत, मूत्र-कृच्छ्रता, मूत्रपथरी, मूत्र-रोध प्रभृति रोगोंमें इससे खूब फायदा होता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—आर्ज-नाइट्रि, आर्ज-मेट, लाइको, सार्सा, कैन्थर, बार्बेरिस।

शक्ति।—३x—६x।

टाइनोस्पोरा कार्डिफोलिया

(TINOSPORA CORDIFOLIA)

दूसरा नाम।—गुलञ्चा (हिन्दी—गुराक) ; पद्मगुरटि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे गुलञ्चसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—जीर्णज्वर, पित्त-ज्वर, मोह-ज्वर, बहुत दिनोंतक रोग भोगनेके कारण कमजोरी, स्नायविक दुर्बलता, मेह, उपदंश,

कामला, पित्त-वमन, कब्जियत प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है। ऊपर लिखे लक्षणोंमें आयुर्वेदिक चिकित्सकगण बहुत दिनोंसे इसका व्यवहार करते आये हैं।

शक्ति ।—१x—६x ।

ट्रिब्युलस टेरिस्ट्रिस

(TRIBULUS TERRESTRIS)

दूसरा नाम ।—गुक्षुरा—गोखरा, इक्षुगन्धार ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फलके विचूर्णसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—स्नायविक दुर्बलता, अवसाद, सुस्ती, ध्वजभङ्ग, मूत्र-कृच्छ्रता, मूत्र-पथरी और प्रमेह रोगमें इसकी निम्न-शक्तिसे बहुत लाभ होता है ।

शक्ति ।—१x—३x ।

ट्राइकोसैन्थ डायोइका

(TRICHOSANTHES DIOICA)

दूसरा नाम ।—परवरकी जड़ ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—परवरकी जड़से अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—पतला पित्त-मिला दस्त, वमन, पित्त-मिला दस्त, कै, मिचली, कै करते-करते गलेमें जखम हो जाना प्रभृति लक्षणोंमें हैजा या अतिसार रोगमें ड्राइको बहुत लाभ करता है। कब्जियत रोगमें इससे बहुत लाभ होता है।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—पोडो, मर्क-सोल, इपि, आर्स ।

शक्ति ।—१x—६x ।

टाइफोफेब्रिनम

(TYPHOFEBRINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—युवक सजारूके कुटिलान्त्रक अंश-विषसे विचूर्ण तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—मृत्युभय, उदराध्मान, खाँसी, पतले दस्त, शरीरमें दर्दके साथ लग्न ज्वर, टाइफायड ज्वर या निमोनिया रोगमें टाइफोफिब्रिनमके प्रयोगसे कभी-कभी विशेष लाभ होता है ।

सम्बन्ध ।—बैप्टो, ऐण्टि-टार्ट, रस-टक्स, आर्स ।

शक्ति ।—३०—२०० ।

वर्नोनिया ऐन्थालमिण्टिका

(VERNONIA ANTHALMINTICA)

दूसरा नाम ।—सोमराज ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बीजसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह क्रिमि रोगकी एक उत्कृष्ट दवा है । इसके मूल अर्कको जायतूनके तेलमें मिलाकर लगानेपर श्वेत-कुष्ट और बहुत तरहके चर्म-रोग आरोग्य होते हैं ।

सम्बन्ध ।—सिना, टियुक्रि, आर्स-सल्फ, फ्लेवम ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

वाइटेक्स निगण्डो

(VITEX NEGUNDO)

दूसरा नाम।—निसिन्दा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—नया ज्वर, जीर्ण-ज्वर, क्रिमि ज्वर और पित्त-शूलकी यह बढ़िया दवा है।

यह दवा साधारण जीवाणु नाशक है। इसलिये चर्म-रोग या जख्ममें इसका भीतरी और बाहरी दोनों प्रकारका प्रयोग हुआ करता है।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

रोग-चिकित्सा-निर्घराट

(CLINICAL INDEX)

अकड़न, खींचन, आक्षेप (Spasm)—पेशियोंके आक्षेपिक सङ्कोचनको स्पाज्म कहते हैं। (१) बहुत देरतक स्थायी (Tonic) या धनुष्टङ्कार। (२) क्षणस्थायी (Clonic) अकड़न। **दवाएँ**—ऐकोन, ऐगरिकस, थूजा, ऐंगस्टुरा, आर्निका, आर्स, बेल, एसिड-हाइड्रो, ब्रायो, कैम्फर, कैन्थ, कैमो, साइक्यूटा, सिना, काकुलस, कोनायम, कूप्रम, हायोस, इग्नेशि, इपिका, लोरोसि, मर्क, मस्कोटा, नक्स-मस, नक्स-वोम, ओलियम, प्लम्बम, रस-ट, सिकेल, स्पाइजी, स्ट्रैमो, सेनिक, टर्टार, ऐगा, जिङ्कम।

„ **पार्श्वायाम** (बगलकी ओर with falling side-ways)—बेलेडो, कोना, नक्स-वो, सल्फर, साइलि।

„ **पश्चादायाम** (पीछेकी ओर with falling backwards)—ऐङ्गस्टुरा, चायना, बेलेडो, इग्ने, नक्स-वो, ओपि, रस-ट, साइकूटा, स्ट्रैमो, स्पाइजि।

„ **सन्मुखायाम** (सामनेकी ओर with falling forward)—आर्नि, कूप्रम, फेरम, रस-ट, साइकूट, साइलि, सल्फर।

„ **दाँत निकलनेकी वजहसे** (Dentition)—बेल, कास्टि, इग्ने, मर्क, लाइकोपो।

अकौता (Eczema)—ऐलूमि, ऐण्टि-क्रू, आर्स, आर्स-आयोड, कैल्के, कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज, कास्टि, क्रोटोन, कैलि-म्यूर, साइकूटा, ग्रैफा, हिपर, लाइकोप, मर्क-कोर, नाइट्रि-ऐसि, मेजेरि, ओलिये, रस-ट, रेडि-ब्रोम, पेट्रोलि, सोरिनम, सिपिया, सल्फर, विङ्का-माइनर, वायोला।

„ **कानके पीछे**—बेराई, कास्टि, कैल्के-कार्ब, ग्रैफ, हिपर, हाइड्रो, मेजेर, साइलि इत्यादि।

अग्निमान्द्य अजीर्ण (Dyspepsia)—एबिस-नाइग्रा, ऐब्रोटेनम, इथूजा, ऐलूमिना, ऐम्ब्रा, ऐनाकार्ड, ऐण्टि-क्रूड, आर्जेण्ट-नाइट, आर्निका, आर्सेनिक, बिस्मथ, ब्रायोनि, कैल्के, कैप्सि, कार्बो-वेज, कार्डुयस, कास्टिकम, चेलिडो, चायना, काकुलस, इयुपेटो, फेरम, ग्रैफाइट, हिपर-सल्फ, हाइड्रैस्टिस, इग्नेशि, कैलि-बाई, कैलि-आयोड, क्रियोजोट, लैकेसि, लाइकोपोडि, मैग्नेशिया, मर्क-सोल, मर्क-आयोड, म्यूरियैटिक-ऐसिड, नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, नक्स-मस्कोटा, **नक्स-वोमिका**, पेट्रोलियम, फास्फोरस, फास्फो-ऐसिड, सोराइ, पल्सेटिला, रस-टक्स, रोबिनिया, सिपिया, साइलि, स्टैफिसै, सल्फर, सल्फ-ऐसिड, टैबेकम, थूजा, जिङ्कम।

" **बच्चोंका**—ऐण्टिम-क्रूड, बैराइ, कैल्के-कार्ब, आयोड, लाइकोप, नक्स-वो, पल्स, सल्फर इत्यादि।

" **वृद्ध मनुष्योंका**—ऐण्टि-क्रूड, बैराइटा-का, कार्बो-वेज, लाइकोप, नक्स-वोमिका, चायना, साइलिसिया।

" **गर्भवती स्त्रियोंका**—आर्स, कोनायम, फेरम, इपिक, क्रियोज, लैकेसिस, मैग-म्यूर, नक्स-मस्कोटा, पिट्रो, फास, पल्स, सिपिया।

अण्डकोष-प्रदाह (Orchitis)—अरम, ऐकोन, आर्निका आर्स, आर्जेण्ट, बेलेडो, बैप्ट, बार्बेरिस, क्लिमेटिस, कोनायम, चायना, कैलि-आयोड, नेट्रम, नाइट्रिक-ऐसिड, नक्स-वोमिका, प्लम्बम, पल्स, फाइटो, मर्क्यूरियस, लाइकोप, रस-टक्स, रोडोडेण्ड्रन, स्टैफि, स्पञ्जि, हैमामे, थजा, साइलिसिया इत्यादि।

" **नया** (Acute)—ऐमोन, फेरम-फास, बेलेडो, एपिस, जेल्स, हैमामेलिस, इग्नेजेनि।

" **पुराना** (Chronic)—अरम, आर्निका, कोनायम, क्लिमेटिस, मर्क, आयोड, हीपर, सल्फर, साइलि।

अण्डकोषमें जल-सञ्चय (आबमजूल—Hydrocele)—एपिस, आर्निका, रोडोडेण्ड्रन, डिजिटेलिस, नक्स-आयोड, कैल्के, ग्रैफाइ, पल्स,

वोमिका, स्पञ्जिया, साइलि, सल्फ़र, हिपर-सल्फ़र, हेलिबोरस, सोरिनम इत्यादि।

अण्डलाल मिला पेशाब (Albuminuria)—ऐमोन, बेञ्जो, एपिस, ऐपोसाइ, आर्जेण्ट, आर्स, बार्बेरिस, कैमो, कैल्के-कार्ब, कैन्थ, चिमा-फिला, चायना, कोलचिकम, कोलोसिन्थ, कोनायम, क्रोटेलस, डिजिटे, इयुपेटो, मर्क, इयुपासिन, फेरम, हेलोनि (गर्भवतीको बीमारी); हेलिबो, हिपर, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, कैलि-फास, कैल्मिया, क्रियोजोट, लैकेसिस, लाइकोपोडि, मर्क-कोर, मेजेरि, मिनियेन्थिस, मारिका, नाइट्रिक-एसिड, ओपियम, फास्फोरस, फाइटो, प्लम्बम, रस-टक्स, सिकेलि, सलफर, टेरिबिन्थ, इयुरेनियम, नाइट्रिकम इत्यादि।

" **गर्भावस्थामें**—एपिस, ऐमोन-का, आर्स, बेल, बेञ्जो, ब्रायो, बार्ब, कैन्थ, चायना, डिजि, हेलिबो, कैलि-कार्ब, लैक्टो, लिडम, मर्क, फास्फोरस, रस-टक्स, मैन्सि, सिपिया, सल्फ़र, टेरिब।

अतिमूत्र (Polyuria)—ऐसिड-ऐसेटिक, एसिड-लैक्टिक, एसिड-फास्फोरिक, कास्टि, इग्ने, पल्स, नेट्रम, साइलि, लैक-डिफ्लो, इयुरे-नाइट्रि इत्यादि।

अतिरिक्त इन्द्रिय-सेवन (Sexual excess)—एसिड-फास, ऐग्नस, कैन्थ, कोना, कैलेडि, चायना, जेल्स, मर्क-सोल, लाइकोप, नक्स-वो, सल्फ़र, फास, प्लैटि इत्यादि।

अतिरजः या रजसाधिक्य (Menorrhagia)—आर्निका, इपिक, चायना, क्रोकस, कार्बो-वेज, कैल्के-कार्ब, फास, सेबाइ, ट्रिलि, हैमामेलि, मैग-मूर इत्यादि

अतिसार या उदरामय (Diarrhoea)—(१) ऐलोज, ऐण्टि-क्रू, एपिस, आर्स, आर्ज-नाइ, बैप्टि, ब्रायो, कैल्के, कैम्फ, कार्बो-वेज, कैमो, चायना, क्रोटोन-टि, डल्कामा, फेरम, गैम्बो, हिपर, आयोड, इपिक, आइरि, मर्क, नेट्रम-सल्फ, फास, फास-ऐसि, पोडो, रियुम, सिकेलि, सल्फ़र, थूजा, विरेट्र। (२) ऐकोन, आर्नि, बोविस्टा, सिना, कोलचि, कोलो, कूप्रम, फेरम-फास, जैट्रोफा, लैकेसि, मैग्ने-कार्ब, नेट्रम-कार्ब, नक्स-वो, ओपि, पेट्रो, सोरिनम, पल्स, सिपिया इत्यादि।

अतिसार या उदरामय ।—(Diarrhoea)

" **नया** (Acute)—ऐकोन, इथूजा, ऐलोज, ऐण्टि-क्रूड, आर्स, ब्रायो, कैल्के-फास, कार्बो-वेज, कैलि, क्रोटोन, डाल्का, कैलि-फास, आइरिस, इपिकाक, जट्रोफा, जैलापा, लोरोसि, मैग-कार्ब, मर्क-सोल, नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-फास, नेट्रम-सल्फ, नक्स-वोम, फास, पल्स, फास-एसिड, पोडो, रियुम, रस-टक्स, रिसिनस, सिकेलि, सल्फर, विरेट्रम इत्यादि ।

" **पुराना** (Chronic)—ऐलोज, एपिस, आर्स, कैल्के-फास, फेरम, जैल्स, ग्रैफाइ, क्रोटन, हेलिबोरस, हिपर-सल्फर, आयोड, कैलि-ब्रोम, मग-कार्ब, मैग-फास, मूरर-ऐसिड, फास-ऐसिड, पिक-ऐसिड, सोरिनम, रियुम, रोबिन, सिपिया, सल्फ, टैवेकम, थूजा, जिञ्जिबार, जिङ्कम ।

अनजानमें पेशाब (Enæuresis)।—आर्नि, बेलेडो, कार्बो-वेज, कास्टि, साइक्यूटा, सिना, हिपर, हायोसा, लाइकोप, नेट्रम-सल्फ, रस-टक्स, रूटा, स्टैफि, सल्फर, जिङ्कम ।

" **रातमें** (Nocturnal)—बेलेडो, कैल्के, कास्टि, सिना, पल्स, रस-टक्स, सिपिया, साइलि, सल्फर ।

" " **पहली नींदमें हो** (During first sleep)।—कास्टि, सिना, फास-ऐसि, सिपिया ।

" " **गहरी नींदमें** (During deep sleep)—बेलेडो, क्रियोज ।

अनिद्रा (Insomnia)।—ऐकोन, ऐम्ब्रा, आर्नि, कास्टि, कैमो, काफिया, लाइकोप, रैनानक्युलस, स्ट्रैमो, वायोला, नक्स ।

अनियमित रजः (Irregular menses)।—इग्ने, इपिका, कोना, चायना, सिनिसियो, कैल्के, कैलि-कार्ब, नेट्रम-मूरर, पल्स, बेल, सल्फर ।

अनुकल्प रजः (Vicarious menses)।—हैमामेलिस, फेरम-फास ६x विचूर्ण, ब्रायो, इपिका, सेनेसियो, पल्स, फेरम, कैलि-मूर, कैल्के-कार्ब, चायना, बोरैक्स, मैग्ने, सल्फ ।

अन्तिमकाल या आसन्नकालका घरघराना (हिमाङ्गावस्था—Collapse देखिये)।—पल्स, ऐण्टि-टार्ट, हेलोडर्मा, सल्फर, कार्बो-वेज, क्रोटिगस, लैकेसिस इत्यादि।

अन्त्र-प्रदाह (Enteritis)।—ऐकोन, ऐण्टि-क्रूड, एपिस, आर्नि, आर्स, बैप्टी, बेलेडो, बार्बेरिस, ब्रायो, चायना, कैमो, कोलचि, कोलोसि. हायोसा, इपिका, आइरिस, लैकेसि, मर्क, नक्स-वोम, पोडोफाइ, पल्स, रस-टक्स, सल्फर, विरेट्रम इत्यादि।

अन्त्र-वृद्धि या आँत उतरना (Hernia)।—ऐकोन, आर्स, अरम, बेलेडो, ब्रायो, बोरैक्स, कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज, लैकेसि, लाइकोपो, नाइट्रि-ऐसि, नक्स-वो, अपियम, प्लम्ब, रस-टक्स, साइलि, सल्फर, विरेट्रम इत्यादि।

अन्त्रावरक-झिल्ली-प्रदाह (Piretonitis)—ऐकोन, आर्स, बैप्ट, बेलेडो, कोलोसि, कार्बो-वे, मर्क, रस-टक्स, थूजा।

„ **नया** (Acute)।—ऐकोन, आर्स, बेलेडो, बैप्ट, मर्क-कोर।

„ **आभिघातिक—चोटकी वजहसे** (Traumatic)—आर्नि, ऐकोन, ओपि।

„ **पुराना** (Chronic)।—कैल्के-कार्ब, कैल्के प्रभृतिके बाद आशोषणमें सहायता पहुँचानेके लिये—ऐण्टि-टार्ट, आर्स, आर्स-आयोड, ब्रायो, चायना, चिनि-आर्स, आयोड, मर्क, साइलि, सल्फर।

अप्रकृत प्रसव वेदना (False pain)—**प्रसव वेदनाकी जगहपर देखिये।**—कैमो; कालोफा, सिमिसि, पल्स, इत्यादिका व्यवहार होता है।

अफ़ीमका विष Opium poisoning)—ज्यादा मात्रामें अफ़ीम सेवनके कारण यदि विष रूपमें हो जानेका लक्षण दिखाई दे तो इलाज करनेके पहले वमन कराना आवश्यक है। स्टामक पम्प होनेपर सहजमें ही वमन कराया जाता है अथवा सल्फेट आफ जिङ्क या नमकका पानी मिलाकर वमन कराना उचित है। बीच-बीचमें इपिकाक १x देना चाहिये। यदि नींद ज्यादा आती हो तो बेलेडोना θ मदर

टिंचर या १x क्रम एक या दो घण्टेके अन्तरसे देना चाहिये अथवा इपिकाक १x के साथ बेलेडोना १x पर्यायक्रमसे देनेपर विशेष लाभ होता है। इसके बाद नशा दूर करनेके लिये नक्स-वोमिका १x उत्कृष्ट दवा है। विषाक्तता लक्षणके पहले स्टमक पम्प द्वारा वमन कराना उचित है। अधिक मात्रामें सिर्काका पानी या ऐसेटिक-एसिड और काफी पिलाना अत्यन्त आवश्यक है। तन्द्रा दूर करनेके लिये जो सब उपाय हैं, उनको भी लक्ष्यमें रखना चाहिये। दवाओंमें नक्स-वोमिका १x, बेलेडोना θ या १x की विशेष जरूरत होती है। अफीम छोड़नेके उद्येश्यसे गर्म पानी आधा छटाँकके साथ **ऐविना-सैट** θ—दस-पन्द्रह बूंद मात्रामें दिनमें दो-तीन बार सेवन कराना चाहिये।

अम्ल-रोग (Acidity)।—एसि-व्युट्रिक, ब्रोमि-सल्फ, आर्स, आर्जेण्ट-नाइट्रि, आइरिस, आइडि, कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, हिपर, नक्स-वो, नेट्रम-फास, पल्स, फास, मैग्ने-फास, मैङ्गनम, रियुम, रोबिना, लाइकोपो, सल्फर, साइलि इत्यादि।

„ **छातीमें जलन**—एलम, आर्जेण्ट, कैल्के-कार्ब, कैप्सि, कार्बो-वेज, कास्टि, ग्रैफा, लैकेसि, लाइकोप, मर्क्यु, नेट्रम, नक्स-वो, फास, पल्स, सिपिया, साइलि, सल्फ-एसि, जिङ्कम।

„ **डकार**।—ऐलूमि, ऐण्टि-क्रुड, आर्नि, आर्स, कार्बो-वेज, ग्रैफा, लैकेसि, लाइकोप, मैग्ने-म्यूर, नेट्रम-कार्ब, नक्स-वो, फास, पल्स, रोबिना, सिपिया, सल्फर, थूजा।

अर्द्ध-दृष्टि।—एसिड-म्यूर, कैल्के-कार्ब, चिनिन-सल्फ, नेट्रम, रस-ट, सिपिया, स्ट्रैमो,

„ **ऊपरका अंश न दिखाई देना**।—अरम, डिजिटे, जेल्स।

„ **दाहिना अंश आधा दिखाई देना**।—साइक्लेमेन, लिथिया।

„ **सीधो ओर आधा अंश न देखना**।—बोविस्टा, कैल्के-कार्ब, चिनिन-सल्फ, लाइको, म्यूर-ऐ, नेट्रम-म्यूर, प्लम्ब, रस-टक्स, सिपिया, स्ट्रैमो, टिटानियम, वायोला।

अर्बुद (Tumour)—नाना प्रकारके अर्बुद-रोग हैं, उनमें कितने ही मृदु-प्रकृति (Non-malignant) के होते हैं और कितने ही भीषण-प्रकृति (Malignant) के होते हैं ।

" **थैलीकी तरह** (Cyst)—ऐलो, आर्स, ऐपोसाई, साइलि ।

" **डिम्बाधारमें** (Ovarian)—एपिस, ऐपोसाई, आर्स, केल्के, कार्बो-ऐनि, लेकेसि, प्लेटिनम ।

" **मस्तिष्कार्बुद**—आर्स, आर्स-आयोड, केल्के, केलि-आयोड, हाइड्रो, फास्फो, फाइजस्टिग्मा, थूजा, साइलि इत्यादि ।

" **रक्तार्बुद** (Hematoma)—आर्नि, कोनिया ।

" **सांघातिक** (Malignant)—ऐसेटिक-ऐसि, आर्नि, आर्स, आर्स-आयोड, कार्बो-ऐनि, कार्बोलिक-ऐसि, कोनिया, हाइड्रो, लेपिस, एसि-म्यूर, एसि-नाइट्रि, साइलि ।

अवरुद्ध योनि (Imperforated hymen)—योनिमें एक झिल्ली रहती है जो कभी-कभी सहजमें नहीं टूटती । इसिलिये, दवा सेवनकी जरूरत पड़ती है । स्वामी-सहवासके समय पुं-जननेन्द्रियके दबावसे भी टूट जाती है ।

अस्थि-रोग (Diseases of Bones)—ऐसिड-फ्लुओरिक, एसिड-फास, ऐरोनि-वाय, ऐङ्गस्ट विरा (Angust. Ver.), ऐसाफिटिडा, अरम, केल्के-कार्ब, केल्के-फास, केल्क-फ्लुओर, मर्क-सोल, मेजेरियम, प्लाटिनम, फास्फोरस, साइलि, स्टेफिसेग्रिया, स्टिलिञ्जिया, सिफाइटिस, रूटा ।

अंगुलबेढ़ा (Whitlow)—पहले इसका उपाय माना जाता था :—It should be lanced at once अर्थात् छाला होते ही काट देना ; पर अब—It should never be lanced—इसे कभी न काटना चाहिये । काटनेसे भोगकाल बढ़ता है । कास्टिक ६ सेवन और धीमे लोशन लगा कर रखना । नाइट्रिक एसिड डिलसे कपड़ा भिंगोकर रोगवाली जगहपर लगानेसे दर्द नहीं बढ़ता ।

अंगुल-बेढ़ा—प्रधान-प्रधान दवाएँ ।—एलूमि, एपिस, केल्के, कास्टिक, फ्लूरिक-ऐसि, ग्रैफा, हिपर, लेकेसि, नेट्रम, नेट्रम-सल्फ, नाइट्रिक-ऐसि, फास्फ, पल्स, रस-ट, सिपि, साइलि, सल्फर, थूजा । रोगका

आरम्भ होते ही सलफर ऊँचो शक्ति, इसके बाद निम्न-क्रमका एपिस सेवन करनेपर रोग जल्दी आराम हो जाता है।

अंगुलीका गट्टा (Corns)—फेरम-पिकरि, एसि-नाइट्रि, ऐण्टि-क्रूड, सिपिया, साइलि, कैल्के, सल्फर इत्यादि।

आगमें जलना (Burns)—जले घाव—ऐकोन, आर्निका, आर्स, ऐसिड-कार्बोलिक, कैलेण्डु, कैन्थ, काफिया, कार्बो-ऐनि, कार्बो-वेज, कास्टिकम, कैमो, चायना, हिपर, हैमामि, इग्नेशिया, ईजेनि, क्रियोजो, लैकेसि, ओपियम, रसटक्स, आर्निका, इयुपेट इत्यादि (सैपोसोडा, सोडाकी पोल्टोस या व्हाइट पेण्टका बाहरी प्रयोग होता है), सूखा केलेका पत्ता पानोमें चन्दनको तरह पीसकर जले स्थानमें लगा देनेपर जलन तुरन्त दूर होती है और छाले भी नहीं पड़ते।

आँख उठना (चक्षु-प्रदाह—Ophthalmia-Conjunctivitis)।

" **नया चक्षु-प्रदाह**—ऐकोन, ऐलूम, ऐम्ब्रा, आर्निका, आर्स, ऐसेरम, अरम, बेलेडो, ब्रायो, कैल्केरिया-कार्ब, कार्बो-वेज, कास्टि, कैमो, क्लिमेट, कोलोसि, कोनायम, कूप्रम, डिजि, डलका, इयुफोर्बि, इयुफ्रेसि, फेरम, ग्रेफा, हिपर, इग्ने, आयोड, इपिका, कैलि-बाई, क्रियोज, लैकेसि, लोरोसिरे, लीडम, लाइकोपोडि, मैग्ने-कार्ब, मर्क्यु, मेजेरि, नेट्रम, नाइट्रि-ऐसि, नक्स-वोम, पेट्रोलि, फास्फो-ऐसि, प्लम्ब, पल्स, रैनाना-क्यु, रोडोडि, रस-टक्स, सिपि, साइलि, स्पाइजि, स्टैनम, स्टैफिसे, स्ट्रैमो, सल्फर, सल्फ्यु-ऐसि, टियुक्रि, थूजा, वेरेट्रम, जिङ्कम।

" **पुराना चक्षु-प्रदाह**।—ऐलूम, आर्स, अरम, बैराई-कार्ब, कैल्के, कास्टि, चायना, डिजिट, डलका, इयुफ्रे ग्रेफाई, हिपर, क्रियोज, लैकेसिस, लाइकोपोडि, नेट्रम, नाइट्रि-ऐसि, पेट्रोलि, फास, रस-टक्स, सिपि, साइलि, स्पाइजि, सलफर, सल्फ-ऐसि, थूजा, वेरेट्रम।

" **बच्चोंका** (Infants)—ऐकोन, बेलेडो, कैमो, इयुफ्रेसि, मर्क, सलफर।

आँखमें कोड़ा घुसना।—ऐकोन, आर्नि, कैल्के, इयुफ्रेसि, नाइट्रि-ऐसि, पेट्रोल, पल्स, रूटा, साइलि, सल्फर, सल्फ-ऐसि।

आँखमें मोतियाबिन्द (Cataract)—बैराइटा-कार्ब, बेलेडो, कल्केरिया, कैल्के-फ्लोर, कैनाबिस-सैट, कास्टि, कोलचि, कोना, डिजिटे, डाल्का, ड्युकैलि, हिपर, लाइकोपोडि, मैग-मूरर, मर्क, नेट्रम, नाइटि-एसि, फास, रूटा, सेनेगा, सिपि, साइलि, स्पाइजि, स्ट्रैमो, सलफर।

„ **पलकोंका प्रदाह** (Blepharitis)—ऐकोन, ऐलूमि, ऐण्टि-टार्ट, ऐण्टि-क्रूड, एपिस, आर्जेण्ट-नाइट्रि, आर्स, अरम, बेलेडो, बोरैक्स, कैल्के-कार्ब, कैल्के-आयोड, कैमो, सिनाबे, क्रोटोन-टिग, ड्युफ्रेसि, ग्रैफाइट्, हिपर, कैलि-मूरर, क्रियोज, मर्क्य, मर्कुर-सर-फर, मर्क्य-आयो-रूब्र, मेजेरि, नेट्रम-मूरर, नक्स-वोम, पेट्रोलि, सोरिनम, पल्स रस-ट, सिपि, साइलि, स्टैफिसे, सलफर, थूजा, टेलूरि, वेरेट्रम-विर।

„ **पलकोंका अकड़ना** (Blepharaspasm)—ऐगारि, बेलेडो, कैमो, काकुरलस, कोनाय, हिपर, हायोसा, मर्क, नेट्रम-मूरर, नक्स-वोम, रूटा, स्टैफिसे, स्ट्रैमो, सलफर, सिपिया, साइलि, वायोला-ओडो।

„ **दृष्टि-शक्तिकी चीणता** (Amblyopia)—ऐगारि, ऐनाकार्ड, अरम, बेलेडो, कैल्के, कैनाबिस, कैप्स, कार्बो-ऐनि, कास्टि, चेलिडो, चिनिनम, साइकूर, सिना, कोनायम, क्रोकस, डिजि, ड्रोसेरा, ड्युफ्रेसि, हिपर, हायोस, इग्ने, आयोड, लीडम, लाइकोपोडि, मेग्ने, मर्कु, ओलि, लैके, फास्फ, प्लैटी, पल्स, रस-टक्स, रूटा, सिकेलि, सिपि, साइलि, स्पाइजि, स्टैफिसे, सलफर, वेरेट्रम।

आँखोंकी रतौंधी (रात्रन्धता—Night Blindness)—फाइसस्टिग्मा, नक्स-वोम, हेलिवोरस, लाइकर, चायना, बेलेडो, लाइकोपोडियम, हाइयोसा, रैनान, नाइट्रिक-एसिड।

„ **दिनौंधी** (दिवान्धता Day-blindness)—ब्रोथ्रैप्स, साइकूरटा, फास्फोरस, सल्फरिक-एसिड, बेलाड, स्ट्रैमोनिया, लाइकोपोडियम

„ **अर्द्ध-दृष्टि** (Hemiopia)—कैल्केरिया-कार्बोनिका ३०, चिनिनम, सलफर, ऐसिड-मूरर, रस-टक्स, सिपिया, स्ट्रैमो।

„ **आंशिक दृष्टि** (Partial blindness)—**केवल ऊपरी अंश—** (Upper part)—न दिखाई देनेपर—**आरम मेटालिकम ६ ;**

दाहिना अंश न दिखाई देनेपर—**लिथिया कार्ब**; केवल बायाँ आधा दिखाई देनेपर—**लाइकोपोडियम**।

आँखोंको द्वित्वदृष्टि (दो देखना—Diplopia)।—ऐगारि, ऐमोन-कार्ब, आरम, बेलेडो, साइकूय, कोना, डिजि, हायोसा, लाइकोपोडियम, नेट्रम, नाइट्रि-ऐसि, ओलियै, पल्स, सिकेलि, स्ट्रैमो, सलफर, विरेट्रम।

” **दृष्टि क्लान्ति** (Fatigue in eyes)।—ऐकोन, हेलिबो, ओलियै, फिलैण्ड्र, प्लाटि, थूजा, प्लम्ब, टार्टार-ऐमिटिक।

” **डेरा देखना** (Trabismus)।—ऐलूमि, सिना, हायोस, जेल्स, स्पाइजि, साइक्लेमेन, स्ट्रैमो, साइकूय।

” **जाल-दृष्टि** (Muscae Volitantes)।—एलम, ब्रोम, फास, कैल्क, कैमो, चायना, डिजि, ड्युफ्रेसि, ग्रैफा, नेट्रम, पल्स, सलफर।

” **दूरकी चीज न दिखाई देना** (Short sight)।—ऐगारि, ऐमोन-कार्ब, ऐना-कार्ड, कैल्के-कार्ब, चायना, कोना, ड्युफ्रेसि, हिपर, हायोस, लैकेसि, लाइकोडि, नाइट्रि-ऐसि, पेट्रलि, फास, फाइसस्टिग्मा, पल्स, फास-ऐसि, रूटा, स्ट्रैमो, सलफर, थूजा।

” **धूम दृष्टि** (Glaucoma)।—ऐकोन, आर्स, ऐट्रोपिया, आरम, आर्जेण्ट-नाइट, ऐसाफिट, बेल, ब्रायो, सीड्रन, सिमिसि, कोनाय, जेल्स, हैमामि, कैलि-आयोड, नक्स-वोम, फास, फाइटो, प्रूनस, स्पाइजि, रोडोडेण्ड्रन, सलफर, फाइसस्टिमा, जिङ्कम।

आँख—वर्णान्धता (रंग ठीक न दिखाई देना Colour blindness)।—बेञ्जिनम-नाइट्रिकम, सैण्टोनाइन।

” **—तारकामण्डल-प्रदाह** (Iritis)।—ऐकोन, आर्निका, आर्स, ऐसाफिटिडा, आरम, बेलाड, ब्रायो, कैलेण्ड, सिड्रन, कैमो, चायना, सिमिसि, सिनाबे, क्लिमे, कोलचि, कोलो, कोनायम, ड्युफ्रेशिया, जेल्स, हैमामें, हिपर, कैलि-बाई, कैलि-आयोड, लेडम, मर्क-कोर, मर्क-सोल, मर्क-वाल, मर्क-आयोड,

नेट्रम-सेलि, नाइट्रिक-ऐसि, पेट्रोलि, रस-ट, स्पाइजी, सल्फर, टेरिबिन्थ, थूजा।

आँखकी नीचेका नासूर (Fistula Lachrysnalis)—ऐण्टिम, क्रूड, बोरैक्स, ग्रैफाई, पेट्रोलि, स्टैफिस, साइलि, जिङ्कम।

„ **फड़कना** (Misnystagmus)—ऐगारि, आयोपोडि, आर्जेण्ट-नाई, कार्बोन-हाइड्रो, कैलि-आयोड, मैग-फास इत्यादि।

„ **गुहौरी** (Hordeolum)—ऐगारि, अरम, एपिस, कैल्के, कोनाय, ग्रैफाई, हिपर, लाइकोपोडि, मर्क, पल्स, सिपि, स्टैफिस, थूजा।

„ **पलकोंपर दाने जमना** (Granular Lids)—ऐलू, आर्स, एपिस, अरम, कैल्क, सिनाबेरिस, डलकामा, ग्रैफाइटिस, हिपर, कैलि-म्यूर, मर्क, नेट्रम, पल्स, सिपिया, सल्फ, जिङ्कम, सल्फ।

„ **पलक बाहरकी ओर बढ़ती है** (Ectropian)।—एपिस, ग्रैफाई, थियोसि।

„ **पलकका भीतरकी ओर बढ़ना**।—बोरैक्स, ग्रैफाई, नेट्रम, टेल्यूरि।

„ **पलकोंका सट जाना** (Agglutenation of eyielids)।—(१) ऐण्टि क्रू, इयुफ्रे, ग्रैफाई, मर्क-सल्फ। (२) ऐगारिक, एपिस, आर्जेण्ट-नाइट, कैल्के, कास्टिक, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, लाइकोप, नेट्रम, रस-टक्स, सिपिया, सोरिनम, इयुरेन, जिङ्कम।

आँतमें आँत घुसना (Intersuscepting of bowel)।—ऐकोन, आर्नि, आर्स, बेल, ब्रायो, क्यूप्रम, लैकेसि, लाइकोप, नक्स-वो, ओपि, प्लम्ब, रस्ट, रैफिनस, विरेट्रम, थूजा

आँतोंका क्षय रोग (Intestinal Tuberculosis)—आर्स, आर्स-आयोड, ऐलोज, कैल्के-कार्ब, कैल्के-आयोड, कैल्के-फास, कार्बो-वेज, कास्टिक, हिपर, आयोडि, लैकेसि, मर्क, नाइट्रि-ऐसि, फास, पल्स, साइलि, सल्फर, टियुबर्क्युलिनम।

आमवात या पित्ती निकलना (Urticaria)—**नया** (Acute)—आर्निका, आर्टिका-इयुरेन्स, ऐकोन, ऐनाकार्डि, ऐण्टिम, बेलेड

ऐण्टि-टार्ट, एपिस, ब्रायो, डल्कामारा, रस-टक्स, सेलिसिलिक-एसिड।

आमवात पुराना (Chronic)—आर्स, कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज, कास्टि, लाइकोप, मेडु-सा, मेजेरि, पेट्रोलि, रस-ट, सल्फर, सेलिसिलि-ऐसि, विरेट्रम इत्यादि।

इन्फलुएञ्जा (Influenza) **बहुव्यापक सर्दी**।— इसका प्रतिषेधक है इन्फलुऐञ्जिनम (Influenzinum 200)—लक्षणके अनुसार सप्ताहमें एक या दो बार सेवन करना चाहिये। इसमें साधारण सर्दीको सभी दवाएँ व्यवहृत होती हैं। इसके अलावा हृत्पिण्डकी कमजोरी और रक्त दूषित हो जानेकी भी दवा देनी पड़ती है। ऐण्टि-टार्ट, आर्स, बेप्ट, बेलेड, ब्रायो, इयुपेट-पर्फ, इयुकेलि, ग्लोनोयल, क्रोटेलस, आइरिस, लैकेसि, नक्स-वो, नेट्रम-सल्फ, फास, फाइटो, सेङ्ग, सल्फर इत्यादि।

उदरमें आध्मान वायु सञ्चय होना (Flatulence)—पेट फूलना।—ऐलोज, ऐसाफिट, आर्जेण्ट-नाइट, कैमो, कार्बो-वेज, काकुर, क्रोकस, चायना, नेट्रम-सल्फ, नक्स-मस्कोटा, नक्स-वो, लाइकोप, पल्स, सिना, सल्फर, टेरिबिन्थ, ओपियम इत्यादि।

उदर-शूल (Colic)—बोरैक्स, बोवि, कास्टिक, कैमो, कोलो, डायस्को, डलका, प्लम्ब, नक्स, पल्स, सल्फर।

उन्माद या बिकलचिन्तना (Mania)—ऐगरिकस, ऐनाकार्ड, ब्रायो, बेला-बिस, कैन्थ, चायना, साइकूटा, कूप्रम, कैलि-बाई, इग्ने, लैकेसि, मर्क्युर, नक्स-वो, मस्कस, फास, प्लैटिनम, पल्स, रस-ट, सिकेलि, साइजी, टैवेकम, थूजा, विरेट्रम इत्यादि।

उन्माद-आत्महत्याकी इच्छा (Suicidal) ;—एलम, आर्स, अरम, इग्ने, मर्क, नक्स-वो, पल्स, सिकेलि, साइलि, विरेट्रम।

" **एक ही विषयका उन्माद** (Monomania)।—ऐकोन, कार्बो-वेज, इग्ने, पल्स, साइलि, स्ट्रैमो, थूजा।

" **चौर्य उन्माद** (चोरी करनेकी इच्छा—Cleptomania)।—आर्स, ब्रायो, लाइको, नक्स-वो, पल्स, स्ट्रैमो, सल्फर।

उन्माद धर्मोन्माद (Religious mania)।—ग्रैफा, सेबाइना, पल्स, सल्फर।

" **विषाद वायु** (Melancholia।—एलम, ऐण्टि-क्रूड, आर्नि, अरम, कैल्के-कार्ब, कैमो, साइक्ला, क्लोरैल, क्रोकस, इग्ने, लाइकोप, नेट्रम, पल्स, सिपि, साइलि।

" **वृद्धोंका बुद्धिभ्रंश** (Dementia)।—ऐनाकार्ड, एपिस, कैल्के, फास, हेलिबो, कैलि-आयोड, मर्क, पोडो।

उपदंश (Syphilis)।—ऐनाकार्ड, ऐसाफिट, अरम, आर्नि, बेडियेगा, बेलेडो, बेञ्जो-ऐसि, बार्बेरि, कार्बो-वेज, कास्टि, सिनाबेरिस, कोनायम, कोरालि, कूप्रम-सल्फ, फ्लूरि-ऐसि, गोयेकम, हेक्लालावा, हिपर, जेकाराण्डा, आइडि, कैलि-बाई, क्रियोजो, लैकेसि, लाइकोप, मेडोरि, मर्क-डल, मर्क-आयोड, मर्क-सोल, मेजेरि, नेट्रम-सल्फ, नाइट्रि-एसि, फास्फो-एसि, फाइटो, सिपिया, साइलि, स्टैफिसे, स्टिलि, सल्फर, थूजा, वायोला।

उलटी चमड़ी (Paraphimosis)—सिनाबेरिस, कोलोसि, मर्क-कोर, मर्क-सोल, मर्क-बिन-आयो, नाइट्रि-ऐसि, लैकेसि, रस-टक्स।

ऋतुरोध (रजः देखिये)।

ऋतु-शूल (Dysmenorrhoea)-कष्टरजः वाधक।—ऐमोन-कार्ब, बेलेडो, बोरैक्स, कैलि-कार्ब, कैमो, सिमिसिफ्यूगा, काकुलस, कोलोफाई, कोलोसि, जेल्स, जेन्थक्स, लैकेसि, नक्स-वो, प्लैटि, सिकेलि, सैबाई, सिपिया।

एक्जिमा (अकौता Eczema)।—ऐलूमि, ऐण्टि-क्रूड, आर्स, आर्स-आयोड, बोवि, कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज, कास्टि, क्रोटन, कैलि-म्यूर, साइक्यूटा, ग्रैफा, हिपर, लाइकोप; मर्क-कोर, नाइट्रि-ऐसि, मेजेरि, ओलियै, रस-ट, रेडि-ब्रोम, पेट्रोलि, सोरिनम, सिपिया, सल्फर, विङ्कामाइनर, वायोला।

" **कानके पिछले भागमें**।—बैराई, कास्टि, कैल्के-कार्ब, ग्रैफा, हिपर, हाइड्रो, मेजेरि, साइलि इत्यादि।

एक ज्वर (अविराम ज्वर Continued fever)।—ऐमोन, बेलेडो, ब्रायो, सिना, इयुपेट-पर्फ, फेरम-फास, ग्रैफा, इपिक, जेल्स, नक्स-वो, पल्स, रस-टक्स, सल्फर, विरेट्रम।

एकशिरा या कोषवृद्धि (Hydrocele)—एपिस, आर्नि, ब्रायो, केल्के-कार्ब, ग्रैफा, हेलिबो, हैमामि, आयोडि, नेट्रम, स्पञ्जिया, सोरिनम, पल्स, रस-टक्स, रोडोडेन, साइलि, सल्फर।

एकांगिक या सार्वांगिक कम्पन (Tremor)।—ऐण्टि-टार्ट, बेलेडो, सिमिसि, जेल्स, हायोसा, इग्ने, मर्क-सोल, नक्स-वो, ओपि, पिक-ऐ, स्ट्रैमो इत्यादि।

एकांगिन या स्थानिक प्रमेह।—कैन्थ, कैनाबिस, कैप्सि, कार्बो-वेज, हिपर, नेट्रम-म्यूर, पेट्रो, सेलि इत्यादि।

ऐंठन (Cramps)—पैरको पोटलीमें (Calves)—एलम, ऐम्ब्रा, ऐनाकार्ड, कैमो, चायना, कोनायम, कूप्रम, कालष्टि, फेरम, ग्रैफाइ, इग्नेसि, नेट्रम-का, नाइट्रिक-एसिड, नक्स-वो, फास, पल्स, रिसि, पोडो, सिकेलि, सिपि, साइलि, सल्फर, स्पाइजि, स्ट्रैमो, विरेट्रम।

" **हैजाकी** (With vomiting and purging)—कैम्फर, कूप्रम-ऐसेट, इपिक, आइरिस, चायना, जेट्रोफा, लैकेसि, नक्स-वो, पोडोफाइलम, निकोटिन या टेबाकम, स्टैनम, विरेट्रम इत्यादि।

ऐपेण्डिक्स-प्रदाह (उपाङ्ग-प्रदाह—Appendicitis)।—आर्स, ऐकोन, एपिस, बेलेडो, ब्रायो, कोलोसिन्थ, हिपर, लैकेसि, मैग्ने-फास, मर्क-कोर, सलफर, विरेट्रम इत्यादि।

कटिवात (Lumbaga)।—ऐकोन, ऐलोज, ऐण्टि-टार्ट, आर्निका, बेलेडो, बार्बेरिस, ब्रायोनिया, केल्के-कार्ब, कोलोसिन्थ, केलि-कार्ब, केलि-फास, केलि-सल्फ, सिमिसिफ्यूगा, डलकामारा, फेरम-फास, लीडम, लाइकोपोडि, मैग्ने-फास, नेट्रम-सल्फ, नक्स-वोम, पेट्रोलियम, रस-टक्स, फाइटोलैक्का, रूटा, सिकेलि, स्टैफिसेग्रिया, सल्फर, वैलेरियाना।

कटिस्नायुवात या गृध्रसी (Sciatica)।—ऐकोन, ऐमोन-म्यूर, आर्स, आर्स-सल्फ, आर्स-रूब्रम-सल्फ, कार्बोनियम-सल्फ, कोलोसिन्थ,

मैग्ने-सल्फ, नेट्रम-सल्फ (gnaphalium), रस-टक्स, सलफर इत्यादि।

कठिनक्षत उपदंश।—(Hard Chancre)—एसिड-नाइट्रिक, आर्स, कार्बो-वेज, कैलि-आयोड, ग्रैफाइटिस, हिपर, मर्क-सोल, मर्क-प्रोटो-आयोड, मेजेरियम, नक्स-वोम, फाइटोलेक्का, सिफिलिनम, थूजा इत्यादि।

कब्जियत (Constipation)।—एबीज, एलिट्रिस, ऐलोज, इस्कुलस, ऐलूमिना, ऐलूमिन, ऐनाकार्डि, ऐण्टि-क्रुड, बेप्ट, बोविस्टा, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज, कास्टिकम, चेलिडो, कालिन्सो, कोनायम, डायस्को ग्रैफाइ, हिपर, हाइड्रैस्ट, इग्ने, आइरिस, कैलि-कार्ब, लैकेसि, लाइकोपोडि, म्यूर-ऐसि, नेट्रम, नेट्रम-सल्फ, नक्स-मस, नक्स-वोम, ओपि, प्लम्ब, प्लैटि, पोडोफाइ, फास, पल्स, सिपिया, साइलिसिया, सल्फर, थजा, जिङ्कम-मेट, बार्बेरिस, रियुटा, रैटान, सार्सा, बार्बेस्कम, वाइवर्नम, स्टैनम, सोरिनम, लैकडिफ्लो, मैग-म्यूर, नाइट्रि-एसि, लैककैन, मर्क, मेजेरि, बैराइ-म्यूर, ऐमोन-म्यु, कैलि-सल्फ, कैलि-बाइ, पाइरोज, वेरेट्रम-ऐल्ब इत्यादि।

कर्णनाद (Tinnitus aurium)—ऐमोन-कार्ब, ऐण्टि-टार्ट, आर्स, बेलेडो, बैराइ-कार्ब, बैराइ-म्यूर, कैक्टस, कैञ्चालागु, कैल्के-कार्ब, कास्टिकम, चिनोपोड, कार्बोन-सल्फ, चिनि-सल्फ, चायना, ग्रैफ, कैलि-आयोड, कैलि-म्यूर, सिमिसिफ्यूगा, डिजिटे, फेरम-फास, फेरम-पिक, हिपर, हाइड्रैस्ट, लैकेसि, लिसिथिन, लिथिया-क्लोर, लाइकोपोडि, मर्क्यु, मर्क्यु-डल, नेट्रम-म्यूर, नेट्रम-सैलि, पेट्रोल, फास-ऐसि, फास, प्लैटि, प्लम्ब, सोरिनम, पल्स, सैलिसाइ-ऐसि, सैम्बु, स्पाइजि, साइलि, सैंगु, फोनैल, सलफर, टियुबर्क, वायोला इत्यादि।

कर्ण-पटह-प्रदाह।—ऐकोन, ऐलूमि, आर्नि, बेलेडो, कैल्के-कार्ब, कैल्के-सल्फ, कार्बो-वेज, चेलिडो, चायना, कोनायम, फेरम-फास, ग्रैफा, हिपर, आयोड, लैकेसिस, मर्क, मेजेरि, पेट्रोलि, पल्स, रस-टक्स, साइलिसिया, स्पञ्जिया, सलफर, टियुबर्क, टेल्युरि, विरेट्रम-विर।

कर्ण-प्रदाह (Otitis)—ऐकोन, एपिस, आर्निका, अरम, बेलेडो, बोरैक्स, कैल्के-कार्ब, कैमो, डल्कामारा, फेरम-फास, हिपर, लेकेसिस, लाइकोपोडि, मर्क्यु, नेट्रम, नाइट्रि-ऐसि, नक्स-वोम, ओपियम, पल्स, रसटक्स, साइलिसिया, सलफर, टेलूरियम, वार्बेस्कम, जिङ्कम ।

कर्ण-व्रण (कानमें फोड़ा—(Abscess of the ear)—बेल, हिपर, मर्क-सोल, साइलिसिया, सल्फर ।

कर्णमूल-प्रदाह (Parotitis)—आर्स, बेल, बैराइटा, कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज, केलि-कार्ब, क्रियोजोट, चायना, हिपर, लेकेसिस, लाइकोपोडि, मर्क-सोल, नाइट्रि-ऐसि, फास, फाइटोलैक्का, पल्स, रस-टक्स, साइलिसिया ।

कर्ण-शूल (Otalgia)—अर्जेण्ट-नाइट, बोरैक्स, बेलेडो, ब्रायो, कैलि-बाई, प्लेटो, मर्क, पल्स, रस-टक्स, टेलूरारि, सलफर ।

कर्ण-स्राव या कान पकना अथवा कानसे पीव (Otorrœa) ।—आर्स, अरम, बोरैक्स, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास, कैप्सिकम, फेरम-फास, ग्रेफाइटिस, हिपर, कैलि-म्यूर, लेकेसिस, लाइकोपोडि, मर्क-सोल, मूलेन-आयेल, नाइट्रि-ऐसि, सोरिनम, पल्स, रस्टक्स, साइलिसिया, सल्फर, टेलूरियम, थूजा, वार्बेस्कम, जिङ्कम इत्यादि ।

कानसे कम सुनना (Hardness in heariug)—ऐसाफिटिडा, ऐम्ब्रा, बैराइटा, कास्टिकम, चिनापोडि, चायना, ग्रैफा, मर्क, नाइटि-ऐसि, पेट्रोल, फास, सिपि, साइलि, वार्बेस्कम ।

कामला (Jaundice—Ictterus)—ऐकोन, आर्स, अरम, बेलेडो, बार्बे-वल, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, कैल्के-सल्फ, कार्डुयस-मेर, कार्बो-वेज, कैमो, चेलिडो, चायना, कोनाय, क्रोटेलस, डिजि, डलिका, जेल्स, हाइड्रेस्ट, आयोडि, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, कैलि-मूर, कैलि-सल्फ, लेकेसि, लाइकोपोडि, मर्क, नक्स-वोम, फास, पोडोफाई, पल्स, रैना-बल्ब, सल्फर इत्यादि ।

कामोन्माद (स्त्रियोंका प्रबल कामोन्माद—Nymphomania)—कैन्थरिस, ऐम्ब्रा, कैलेडि, कैल्के-फास, कैनाबिस, कैनाबिस-सैटाइवा,

कैम्फर, सीड्रन, काफिया, कोका, डलका, ग्रैटिनम, हायोसायमस, लैकेसिस, लिलियम, मस्कस, म्यूरेक्स, नक्स-वोम, ओरिगिनम, फास, प्लैटिनम, स्ट्रैमो, विरेट्रम।

कामोन्माद पुरुषोंका (Satyariasis)—(१) कैल्के-कार्ब, कैनाबिस, कैन्थ, डलका, हायोसा, कैलि-ब्रोम, मस्कस, नक्स-वोम, ओरिगिनम, फास, पिक्रि-ऐसि, प्लैटो, टैरेण्टु, जिङ्कम, फास। (२) ऐनाकार्ड, ग्रैफाइटिस, लैकेसि, लाइकोपोडि, स्ट्रैमो, वेरेट्रम इत्यादि।

काला दाग पड़ना (Ecchymosis)—आर्निका, ऐसिड-फास, ऐसिड-सल्फ, क्रोटेलस, ब्रायो, कार्बो-वेज, कोनाय, हिपर, लीडम, लैकेसि, नक्स-वोम, फेरम-फास, पल्स, रस-टक्स, सिकेलि, सलफर, टैरेण्ट् इत्यादि।

काला-ज्वर (Dumdum Fever, Kala-Azar)—ऐण्टि-क्रूड, ऐसेटिक-ऐसि, एपिस, आर्स-आयोड, ब्रायो, कैल्के-आर्स, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास, कार्ड्य-मेरि, कार्बो-वेज, क्रोटल, चेलिडो, चायना, चिनिन-आर्स, फेरम, फेरम-आर्स, लैकेसि, लाइकोप, मर्क, नक्स-वोम, नेट्रम-म्यू, नेट्रम-आर्स, ओसि-कैन, फास, पोडोफाइ, पल्स, सेबाडि, सलफर, सियोनेथस-ऐमेरिकाना, टियुबर्क।

कीड़े काटना (Bites)—आर्नि, ऐपिस, हाइपेरि, लिडम, स्पिरिट-कैम्फर।

कुचल जाना।—बेडिये, कोना, हाइपेरि, लीडम, रूटा, लैकेसि, हैमामे, इयुफ्रे, सल्फ-ऐ, सिम्फाइटम।

कुचले घाव (Continueds wounds)—आर्निका, कैलेण्डुला, हैमामे, आर्स, कोनाय, हिपर, लीडम, रूटा, हाइपेरिकम। आर्निका और हैमामेलिस θ का बाहरी प्रयोग external use लाभ करता है।

कुनख।—एलम, ऐण्टि-क्रूड, आर्स, अरम, कार्बो, चायना, कोलचि, कोनाय, डिजिटे, ग्रैफाइ, हिपर, मर्क, नेट्रम, नक्स-वोम, पल्स, सिपिया, साइलिसिया सलफर।

कुष्ठ-रोग (Leprosy)—ऐलूमिना, ऐनाकार्डं, ऐसाफिटिडा, आर्स, आइडो, कैल्के-कार्ब, कैलि आयोड, कोमोक्लेडिया-डेण्टा, कार्डिया-ओडो, कैलोट्रापिस, गुयानो, हेलिबोरस, हाइड्रोकोटाइल, मैग्ने-म्यूर, नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, पेट्रोलियम, पाइपर, फास, सिपिया, साइलि, सलफर इत्यादि।

कुक्षि-रोग (Hypochondriasis)।—ऐनाकार्डं, आर्जेण्ट-नाइट, आर्स, ऐलोज, ऐमोन-म्यूर, आर्निका, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, चायना, कोनाय, हेलिबो, हिपर, इग्ने, लैकेसि, लाइकोपोडि, मर्क, नेट्रम, नेट्रम-सल्फ, नक्स-वोम, फास्फोरस, प्लाटिना, पल्स, रस-टक्स, स्टैनम, स्टैफिसे, सिपिया, सलफर, जिङ्कम।

क्रिमि (Worms)–(१) **फीतेकी तरह** (Tenia)।—ऐम्ब्रा, आर्स, कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज, कैमो ग्रैफाई, इग्ने, मर्क-सोल, नक्स-वोम, प्लाटिना, पोमिका-ग्रैनेटा, पेट्रोलियम, फास, पल्स, फिलिक्स-मास, साइलि, स्टैनम, सल्फर इत्यादि। हेरिङ्गके मतसे दो मात्रा सल्फर ३०।

२। **सूतकी तरह क्रिमि** (Ascarides)—ऐकोन, बेल, डिजि,
फेरम। कृष्णपक्षको दशमीके बादके पक्षमें एकमात्रा। मर्क, ऐमिरा,
कैल्के-कार्ब, ग्रैफाई, इग्ने, मर्क-सोल, नक्स-वोम, सेबाडि, साइ-
जीलि, स्टैनम, स्टैमो, सल्फर, इत्यादि।

३। **बड़ी बड़ी क्रिमि** (Oxyris Vermicularies)—ऐकोन,
ऐलि-सैट, सिना, कूप्रम, फेरम, मर्क-सोल, सेबाडिला, कैल्के-कार्ब,
हिपर, सल्फर इत्यादि।

४। **चिपटी-क्रिमि** (Belharriasis)।—शोणित-कीटके कारण
रोग विशेष।—हाइड्रैस्टिस, रूटा, ऐसिड-नाइट, पियोनिया, कैनाबिस,
हैमामेलिस, जैम्बोलिन, टेरिबिन्थ, ओलियम, कैल इत्यादि।

५। **स्त्री क्रिमि** (तन्तु खोदनेवाली)—(Draconteasis)।—
टियुक्रियम, मर्क-बिन। भारतीय द्वीप-पुञ्ज तथा अफ्रिकामें यह क्रिमि
अधिक होती है।

६ । **गोल क्रिमि** (Round worms) वायोला-ओडोरेटा, स्टैनम, चिनापोडि ।

क्रिमिके कारण प्रत्येक रातमें शूलका दर्द और आक्षेप ।—वैलेरियाना, चायना, इग्नेशिया ।

„ **बच्चेको अकड़न** (Convulsion) ।—बेलेडो, साइक्यू, सिना, हायोस, स्ट्रैमो ।

„ **भ्रम देखना** (Hallucination) ।—बेलेडोना ।

„ **का धातु नष्ट करनेकी मतसे** (Verminous diathesis)—कैल्के-कार्ब, साइलिसि, मर्क, सल्फर इत्यादि ।

क्रिमिमें डा० ह्यूज और टोस्टकी मतसे—लाइकोपो, इपिकाक और विरेट्रम ।

क्रिमि—कान-नाककी क्रमि ।—पानीमें थोड़ा चूना मिलाकर धीरे-धीरे पिचकारी देना ।

खल्वाट हो जाना—केश पतन (Alopecia falling out of the hair) ।—ऐसिड-फ्लोर, ऐलोज, ऐलूमि, ऐम्ब्रा, आर्स, बैराई-कार्ब, बेलेडो, बोवि, ब्यूफो, कैल्के, कार्बो-ऐनि, कार्बो-वेज, कास्टि, कोलचि, कोनाय, फेरम, फ्लोर-ऐसि, ग्रैफा, हिपर, हाइपेरि, इग्ने, आयोडि, कैलि-आयो, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, लाइकोपोडि, मैग्ने, मर्क, नेट्रम-म्यूर, नाइट्रि-एसि, फास, प्लम्ब, सार्सापैरिला, सिपि, सेलेनि, साइलि, स्टैफि, सल्फर-ऐसि, टैबेकम, थूजा, जिङ्कम ।

खाँसी (Cough)—ऐकालि-इण्डि, ऐकोन, इस्कुलस, ऐइलेन्थ, एलियम-सेपा, ऐलियम-सैट, ऐगारि, ऐलूमि, ऐम्ब्रा-ग्रे, ऐमोन-कार्ब, एण्टिमोनि, एपिस, आर्जेण्टम, आर्निका, आर्स, आर्स-आयोड, ऐरम, बैराइटा, बेलेडो, ब्रायो, ब्रोमियम, कैल्के-कार्ब, कास्टि, कैमो, चेलिडो, सिना, कोनायम, क्रोटेलस, कोरालि, क्यूप्रम, ड्रोसेरा, डल्कामारा, जेल्स, हिपर, हायोस, आयोडि, इपिका, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, क्रियोजोट, लैकेसि, लोबिलि, लाइकोपोडि, मर्क, मर्क-बिन-आयोड, नक्स-मस, नक्स-वोम, ओसि-कैन, ओस्मियम,

फास, सोरिनम, पल्स, रस-टक्स, रियुम, सेम्बु, सिला, सेनेसियो, सेनेगा, सिपिया, साइलि, स्पञ्जि, स्टैनम, स्टिक्टा, सलफर, सिफिलिनम, थूजा टेलू, विरेट्रम, जिङ्कम, जिंजिया, आरिया।

खाँसो कालो खाँसो (Croup)।—(१) ऐकोन, ब्रोम, कैल्के, हिपर, स्पञ्जि, सल्फर। (२) ऐण्टि-टार्ट, कूप्रम-आर्स, आर्स-आयोड, बेलेडो, कैल्के-फास, कार्बो-वेज, कैमो, क्लोरिन, सिना, आयोड, कैलि-बाई, लैकेसिस, फास्फोरस, रियुमेक्स, सैंगुका, सैंगुनेरिया, हिलीजिया, कैयोलिन, मर्क-सायनाइड।

„ **हूप खाँसो** (Whoop Cough)—ऐगा, ऐनाकार्ड, आर्सेनिक, आर्जेंट-नाई, ऐसिड-हाइड्रो, ऐमोन-ब्रोम, ब्रायो, ऐमोन-कार्ब, ऐण्टि-टार्ट, आर्निका, बेलेडो, कोरालि, सिना, क्यूप्रम, ड्रोसेरा, हिपर, हायोस, इपिका, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, लैकेसिस, मेफाइटिस, नक्स-वो, फास्फोरस, पर्टूसिन, नेपथैल, कार्बोन-सल्फ, कैयोलिन, ओपियम, कैन इत्यादि।

खोंचन—(आक्षेप या अकड़न देखिये)।

खाल उधड़ना (Psoriasis)—एलम, ऐम्ब्रा, ऐमोन-कार्ब, आर्स, आर्स-आयोड अरम, ब्रायो, बैसिलिनम, बोराक्स, कैल्के, कार्बोलिक-एसिड, क्लिमेटिस, कोरालिनम, रूब्रम, क्रोइसो-एसिड, डलकामा, ग्रैफाइटिस, गोआ, आइरिस, आयोड, कैलि-बाई, लिडम, लाइकोपोडियम, मैग्नेशिया, मैग्ने-कार्ब, मर्क-सोल, नाइट्रिक-ऐसिड, नूफर-लूटिया, सिङ्को, फास, फाइटो, सेबाइनम, रैनान, रस-टक्स, सैरासि, सिपिया, सल्फ, टेलूरि, टियुक्रियम, बार्बेरिस, एकुइ, कोनिया, थूजा इत्यादि।

खुजली (Scabies) सूखे ढङ्गको—रोगकी अवस्थाके अनुसार चौथे, छटे या आठवें दिन एक-एक दवा सेवन कराना चाहिये। **पीव भरे दाने होनेपर** सल्फ और लाइकोपो—इससे लाभ नो हो तो **क्लिमेटिस और रस-कार्बो-वेज।** यदि जखमकी तरह हो तो **क्लिमेटिस और रस-टक्स** लाभ करता है।

डा० जुसिट हेरिंगका कथन है कि भीतरी दवा सेवन करनेके साथ ही यदि **बालसम पेरु** (Balsam of Peru) और लेबेण्डर आयल लगाया जाय तो विशेष लाभ होता है। इससे कीटाणु ध्वंस होते हैं और कोई दुष्परिणाम नहीं होता। (The destruction of the acraid never developed any bad symptom whatever)। आर्स, कार्बो-वेज, कास्टिकम, क्रोटोन, हिपर, लोबेलिया, लाइकोपोडि, मर्कुर, सोराइनम, सिपिया, सलफर, सल्फ़ुरिक-एसिड।

खुश्की (मरामाँस, रूसी Pityriasis)।—ऐगारि, आर्जेण्ट, आर्स, अरम, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, कैन्थ, क्लिमेट, डालका, ग्रैफाई, क्राइसोफैनिक-एसिड, क्रियोजो, लैके, लीडम, लाइकोप, मर्क, नेट्रम, ओलियैण्डर, पेट्रो, फास्फोरस, सिपिया, साई, सल्फ, थूजा। (रेडियम, ब्रोमाइड, बैसिलिनम प्रभृति भी व्यवहार होता है)।

गट्ठे (Corns)।—ऐण्टि-क्रूड, ऐण्टि-मोनि, बोरैक्स, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, कास्टिकम, ग्रैफाइटिस, फेरम-पिक, इग्ने, लीडम, लाइकोपोडि, मैग्ने-सल्फ, नेट्रम, नक्स-वोम, पेट्रोलि, फास, रैनान-बल्बो, रस-टक्स, सिपिया, साइलिसिया, सल्फर, थूजा।

गण्डमाला (Scrofulosis)।—प्रधान-प्रधान दो दवाएँ (१) कैल्केरिया और सल्फर। (२) आर्स, आर्स-आयोड, ऐग्नस, इथियोप्स, अलनस-रूब्र, ऐसाफि, अरम, एपिफिगस, बैडियेगा, बैराइटा, बार्बेरिस, बेलेडो, टामियान, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फ्लूर, कैल्के-आयोड, कैल्के-फास, कास्टिकम, चिमाफिला, सिना, सिस्टस, कोनायम, कोराई-वा, कार्नस, ग्रैफाई, हेक्ला-लावा, हिपर, हाइड्रेस्टि, कैलि-ब्रोम, लेपिस, ऐम्ब्रा, लिथियम-कार्ब, लाइकोपोडि, मैग्ने-म्यूर, मर्क्यु-सोल, मेजेरियम, नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, नाइट्रिक-एसिड, ओपियम, पेट्रोलि, फाइटोलैक्का, सोराइनम, रस-टक्स, सैकेरम, साइलिसिया, सार्सा-पे, सज्जिग, सल्फर, थिरिडियम, थूजा।

„ **अस्थि-विकार**।—ऐसाफि, अरम, हिपर, साइलि, सल्फर।

गण्डमाला, गांठ बढ़नेके साथ त्वचाकी बीमारी।—अरम, सिपिया, हिपर, नाइट्रिक-एसिड, सल्फ।

„ **छींकनेमें असमर्थ।**—कैल्के-कार्ब, बैराइटा-कार्ब, सलफर इत्यादि।

„ **पेट फूला** (Potllied)—आर्स-आयोड, बैराइटा, कैल्के, सिना, सल्फर।

गन्धकी तीक्ष्णता (Acuteness of smell)—ऐगारि, ऐकोन, अरम, बेल, कैमो, कोलचि, कार्बो-वेज, चायना, ग्रैफा, लाइकोपोडि, मैग्ने-मूर, नक्स-वोम, फास, सैबाडि, सिपि, सलफर।

गर्दन अकड़ना (Stiff neck)।—ऐकोन, लैक्नैन्थि, बेलेड, सिमिसिफूगा, ब्रायो, चेलिडो, मैग-फास, सेंगुइन, ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-मूर, ऐनाकार्ड, आर्स. ब्रोमि, **कैल्केरिया**, **कास्टिकम**, कैमो, साइकूटा, कोलोसि, डिजि, फेरम, **लोरोसिरे**, लाइकोपोडियम, मर्कु, **मर्कु-सोल**, **नक्स-वोम**, **मेजेरि**, नाइट्रि-ऐसि, नेट्रम-म्यूर, पेट्रोलि, फास-ऐसि, रस-टक्स, **रस-रेडि**, साइलि, स्पञ्ज, सलफर, थूजा, जिङ्कम।

गर्भपात या गर्भ-स्राव (Miscarriage, abortion)—पहले कई **महीनोंमें** गर्भस्राव होनेपर—**एपिस**, अन्तवाले कई महीनोंमें होनेपर—**ओपियम**। दूसरे तीसरे महीनेमें—एपिस, सिमिसि, क्रोकस, सैबाइना, सिकेलि, थूजा, ट्रिलियम। ५वें से ७वें महीनेमें—**सिपिया**। गर्भाशयके संशोधन और बार-बार रोग होना दूर करनके लिये—सिलिका, **जिङ्कम** या **अरम-मेटालिकम**। ऐकोन, एलिट्रिस, ऐम्ब्रा, एपिस, आर्निका, ऐसेरम, अरम, नेट्रोब्रोम, बेलेडो, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, कैलस्कर, कैनाबि-इ, कैनाब-सैट, कार्बो-वेज, कालोफाइलम, सीड्रन, कैमो, चायना, सिमिसि, सिनामोनम, काकुलस, क्रोटेलस, डिजिटेलिस, डलकामारा, एब्रिज, फेरम, जेलस, गासिपि, हैमामे, हेलोनि, हायोसा, इपिक, कैलि-कार्ब, क्रियोज, लाइकोपो, मर्क, मिलिफो, नक्स-मस्केटा, नक्स-वो, ओपि-

डा० जुसेट हेरिंगका कथन है कि भीतरी दवा सेवन करनेके साथ ही यदि **बालसम पेरू** (Balsam of Peru) और लेवेण्डर आयल लगाया जाय तो विशेष लाभ होता है। इससे कीटाणु ध्वंस होते हैं और कोई दुष्परिणाम नहीं होता। (The destruction of the acraid never developed any bad symptom whatever)। आर्स, कार्बो-वेज, कास्टिकम, क्रोटोन, हिपर, लोबेलिया, लाइकोपोडि, मर्क्युर, सोराइनम, सिपिया, सलफर, सल्फुरिक-एसिड।

खुश्की (मरामाँस, रूसी Pityriasis)।—ऐगारि, आर्जेण्ट, आर्स, अरम, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, कैन्थ, क्लिमेट, डालका, ग्रैफाई, क्राइसोफैनिक-एसिड, क्रियोजो, लैके, लीडम, लाइकोप, मर्क, नेट्रम, ओलियैण्डर, पेट्रो, फास्फोरस, सिपिया, साई, सल्फ, थूजा। (रेडियम, ब्रोमाइड, बैसिलिनम प्रभृति भी व्यवहार होता है)।

गट्ठे (Corns)।—ऐण्टि-क्रूड, ऐण्टि-मोनि, बोरैक्स, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, कास्टिकम, ग्रैफाइटिस, फेरम-पिक्र, इग्ने, लीडम, लाइकोपोडि, मैग्ने-सल्फ, नेट्रम, नक्स-वोम, पेट्रोलि, फास, रैनान-बल्बो, रस-टक्स, सिपिया, साइलिसिया, सल्फर, थूजा।

गण्डमाला (Scrofulosis)।—प्रधान-प्रधान दो दवाएँ (१) कैल्केरिया और सल्फर। (२) आर्स, आर्स-आयोड, ऐग्नस, इथियोप्स, अलनस-रूब्र, ऐसाफि, अरम, एपिफेगस, बैडियेगा, बैराइटा, बार्बेरिस, बेलेडो, टामियान, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फ्लूर, कैल्के-आयोड, कैल्के-फास, कास्टिकम, चिमाफिला, सिना, सिस्टस, कोनायम, कोराई-वा, कार्नस, ग्रैफाई, हेक्ला-लावा, हिपर, हाइड्रैस्टि, कैलि-ब्रोम, लेपिस, ऐम्ब्रा, लिथियम-कार्ब, लाइकोपोडि, मैग्ने-म्यूर, मर्क्यु-सोल, मेजेरियम, नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, नाइट्रिक-एसिड, ओपियम, पेट्रोलि, फाइटोलैक्का, सोराइनम, रस-टक्स, सेकेरम, साइलिसिया, सार्सा-पे, स्पञ्जिया, सल्फर, थिरिडियम, थूजा।

„ **अस्थि-विकार**।—ऐसाफि, अरम. हिपर, साइलि, सल्फर।

गण्डमाला, गांठ बढ़नेके साथ त्वचाकी बीमारी।—अरम, सिपिया, हिपर, नाइट्रिक-एसिड, सल्फ़।

„ **छींकनेमें असमर्थ**।—कैल्के-कार्ब, बैराइटा-कार्ब, सलफर इत्यादि।

„ **पेट फूला** (Potllied)—आर्स-आयोड, बैराइटा, कैल्के, सिना, सल्फर।

गन्धकी तीक्ष्णता (Acuteness of smell)—ऐगारि, ऐकोन, अरम, बेल, कैमो, कोलचि, कार्बो-वेज, चायना, ग्रैफा, लाइकोपोडि, मैग्ने-म्यूर, नक्स-वोम, फास, सैबाडि, सिपि, सलफर।

गर्दन अकड़ना (Stiff neck)।—ऐकोन, लैकनैन्थि, बेलेड, सिमिसिफ्यूगा, ब्रायो, चेलिडो, मैग-फास, सैंगुइन, ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-म्यूर, ऐनाकार्ड, आर्स. ब्रोमि, **कैल्केरिया**, **कास्टिकम**, कैमो, साइक्यूटा, कोलोसि, डिजि, फेरम, **लोरोसिरे**, लाइकोपोडियम, मर्क, **मर्क-सोल**, **नक्स-वोम**, **मेजेरि**, नाइट्रि-ऐसि, नेट्रम-म्यूर, पेट्रोलि, फास-ऐसि, रस-टक्स, **रस-रेडि**, साइलि, स्पञ्ज, सलफर, थूजा, जिङ्कम।

गर्भपात या गर्भ-स्राव (Miscarriage, abortion)—पहले कई महीनोंमें गर्भस्राव होनेपर—**एपिस**, अन्तवाले कई महीनोंमें होनेपर—**ओपियम**। दूसरे तीसरे महीनेमें—एपिस, सिमिसि, क्रोकस, सैबाइना, सिकेलि, थूजा, ट्रिलियम। ५वें से ७वें महीनेमें—**सिपिया**। गर्भाशयके संशोधन और बार-बार रोग होना दूर करनके लिये—सिलिका, **जिङ्कम** या **अरम-मेटालिकम**। ऐकोन, एलिट्रिस, ऐम्ब्रा, एपिस, आर्निका, ऐसेरम, अरम, नेट्रोब्रोम, बेलेडो, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, कैलस्कार, कैनाबि-इ, कैनाब-सैट, कार्बो-वेज, कालोफाइलम, सीड्रन, कैमो, चायना, सिमिसि, सिनामोनम, काकुलस, क्रोटेलस, डिजिटेलिस, डलकामारा, एग्निज, फेरम, जेल्स, गासिपि, हैमामे, हेलोनि, हायोसा, इपिक, कैलि-कार्ब, क्रियोज, लाइकोपो, मर्क, मिलिफो, नक्स-मस्केटा, नक्स-वो, ओपि-

डा० जुसेट हेरिंगका कथन है कि भीतरी दवा सेवन करनेके साथ ही यदि **बालसम पेरु** (Balsam of Peru) और लैवेण्डर आयल लगाया जाय तो विशेष लाभ होता है। इससे कीटाणु ध्वंस होते हैं और कोई दुष्परिणाम नहीं होता। (The destruction of the acraid never developed any bad symptom whatever)। आर्स, कार्बो-वेज, कास्टिकम, क्रोटोन, हिपर, लोबेलिया, लाइकोपोडि, मर्क्युर, सोराइनम, सिपिया, सलफर, सल्फ्युरिक-एसिड।

खुश्की (मरामाँस, रूसी Pityriasis)।—ऐगारि, आर्जेण्ट, आर्स, अरम, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, कैन्थ, क्लिमेट, डालका, ग्रैफाइ, क्राइसोफैनिक-एसिड, क्रियोजो, लैके, लीडम, लाइकोप, मर्क, नेट्रम, ओलियैण्डर, पेट्रो, फास्फोरस, सिपिया, साइ, सल्फ, थूजा। (रेडियम, ब्रोमाइड, बैसिलिनम प्रभृति भी व्यवहार होता है)।

गट्ठे (Corns)।—ऐण्टि-क्रूड, ऐण्टि-मोनि, बोरैक्स, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, कास्टिकम, ग्रैफाइटिस, फेरम-पिक्र, इग्ने, लीडम, लाइकोपोडि, मैग्ने-सल्फ, नेट्रम, नक्स-वोम, पेट्रोलि, फास, रैनान-बल्बो, रस-टक्स, सिपिया, साइलिसिया, सल्फर, थूजा।

गण्डमाला (Scrofulosis)।—प्रधान-प्रधान दो दवाएँ (१) कैल्केरिया और सल्फर। (२) आर्स, आर्स-आयोड, ऐग्नस, इथियोप्स, अलनस-रूब्र, ऐसाफि, अरम, एपिफेगस, बैडियेगा, बैराइटा, बार्बेरिस, बेलेडो, टामियान, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फ्लूर, कैल्के-आयोड, कैल्के-फास, कास्टिकम, चिमाफिला, सिना, सिस्टस, कोनायम, कोराई-वा, कार्नेस, ग्रैफाइ, हेक्ला-लावा, हिपर, हाइड्रेस्टि, कैलि-ब्रोम, लेपिस, ऐम्ब्रा, लिथियम-कार्ब, लाइकोपोडि, मैग्ने-म्यूर, मर्क्यु-सोल, मेजेरियम, नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, नाइट्रिक-एसिड, ओपियम, पेट्रोलि, फाइटोलेक्का, सोराइनम, रस-टक्स, सैकेरम, साइलिसिया, सार्सा-पे, स्पञ्जिया, सल्फर, थिरिडियम, थूजा।

„ **अस्थि-विकार**।—ऐसाफि, अरम. हिपर, साइलि, सल्फर।

गण्डमाला, गांठ बढ़नेके साथ त्वचाकी बीमारी।—अरम, सिपिया, हिपर, नाइट्रिक-एसिड, सल्फ।

„ **छींकनेमें असमर्थ।**—कैल्के-कार्ब, बैराइटा-कार्ब, सलफर इत्यादि।

„ **पेट फूला** (Potllied)—आर्स-आयोड, बैराइटा, कैल्के, सिना, सल्फर।

गन्धकी तीक्ष्णता (Acuteness of smell)—ऐगारि, ऐकोन, अरम, बेल, कैमो, कोलचि, कार्बो-वेज, चायना, ग्रेफा, लाइकोपोडि, मैग्ने-मूर, नक्स-वोम, फास, सेबाडि, सिपि, सलफर।

गर्दन अकड़ना (Stiff neck)।—ऐकोन, लैकनैन्थि, बेलेड, सिमिसिफूरगा, ब्रायो, चेलिडो, मैग-फास, सेंगुइन, ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-मूर, ऐनाकार्ड, आर्स. ब्रोमि, **कैल्केरिया**, **कास्टिकम**, कैमो, साइकूटा, कोलोसि, डिजि, फेरम, **लोरोसिरे**, लाइकोपोडियम, मर्क्, **मर्कु-सोल**, **नक्स-वोम**, **मेजेरि**, नाइट्रि-ऐसि, नेट्रम-मूरर, पेट्रोलि, फास-ऐसि, रस-टक्स, **रस-रेडि**, साइलि, स्पञ्ज, सलफर, थूजा, जिङ्कम।

गर्भपात या गर्भ-स्राव (Miscarriage, abortion)—पहले कई **महीनोंमें** गर्भस्राव होनेपर—**एपिस**, अन्तवाले कई महीनोंमें होनेपर—**ओपियम**। दूसरे तीसरे महीनेमें—एपिस, सिमिसि, क्रोकस, सेबाइना, सिकेलि, थूजा, ट्रिलियम। ५वें से ७वें महीनेमें—**सिपिया**। गर्भाशयके संशोधन और बार-बार रोग होना दूर करनेके लिये—सिलिका, **जिङ्कम** या **अरम-मेटालिकम**। ऐकोन, एलिट्रिस, ऐम्ब्रा, एपिस, आर्निका, ऐसेरम, अरम, नेट्रोब्रोम, बेलेडो, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, कैलस्कार, कैनाबि-इ, कैनाब-सैट, कार्बो-वेज, कालोफाइलम, सीड्रन, कैमो, चायना, सिमिसि, सिनामोनम, काकुलस, क्रोटेलस, डिजिटेलिस, डलकामारा, एब्रिज, फेरम, जेलस, गासिपि, हैमामे, हेलोनि, हायोसा, इपिक, कैलि-कार्ब, क्रियोज, लाइकोपो, मर्क, मिलिफो, नक्स-मस्कोटा, नक्स-वो, ओपि-

यम, प्लाटिना, फास्फोरस, प्लम्बम. पल्स, रस-टक्स, रूटा, सैब्राई, सिकेलि, सिपिया, साइलिसिया, स्ट्रैमो, सल्फ, आस्टिलेगो, विरेट्रम, वाइबर्नम, ओपि, वाइबर्नम-प्रून, जिङ्कम ।

गर्भावस्थामें रक्तस्राव (Haemorrhage during pregnancy) ।— (१) बेलेडो, कैमो, क्रोकस, फेरम, प्लैटिना । (२) आर्निका, चायना, सिनाबे, इपिक । (३) मर्क्, नक्स-वो, ओलि, प्लम्बम, सिकेलि, सिपिया । (४) एलेट्रिस, कोलोफा, एरिजिर, आस्टिलेगो ।

गर्भावस्थामें मूर्च्छाभाव (Fainting fits)—चायना, ओपियम, इग्नेशिया, डिजिटे, एसिड-फास, ऐकोन, मस्कस, आर्निका इत्यादि ।

,, **सर-दर्द** (Headache), **दाँतमें दर्द और स्नायुशूल** ।—ऐकोन, ऐलूमिना, एपिस, आर्सेनिक, बेलेडो, ब्रायोनि, कैल्के, कैमो, चायना, सिमिसि, काफिया, कोलोसिन्थ, जेलस, हायोसायमस, इग्नेसि, कैलमिया, मैग्ने-कार्ब, मर्क, मेजे, नक्स-मस्कोटा, ओपि, फास, प्लैण्टेगो, पल्स, रैटान, रस-टक्स, सिपिया, स्पाइजे (स्त्रियोंके सर-दर्दमें लाभदायक है), स्टैफ, बार्बेस्कम ।

,, **पीठ और कमरमें दर्द** (Backache and Lumbago)—ऐकोन, ब्रायो, रस-टक्स, सिकेलि, आर्निका, कैल्के-कार्ब, कास्टिकम, कैमो, पल्स, फास्फोरस ।

,, **लार बहना** (Ptyalism)—एपिफेगस, जैबोराण्डो, कैलि-आयोड, मर्कुर, नेट्रम, पल्स, सिना, सल्फर ।

,, **शोथ** (Dropsy)—आर्सेनिक, एपिस, ऐपोसा, कोलचि, डिजिटेलिस, डलका, हेलोनियस, हेलिबोरस, लाइकोपोडि, फेरम, लिडम, मर्कुर, फास्फोरस, फाइटोलेक्का, रस-टक्स, सेनिसियो, सिपिया, सल्फर. टेरिबिन्थ ।

,, **नींद न आना** (Sleeplessness)—ऐकोन, ऐम्ब्रा, बेलेडो, कैक्टस, कैमो, काफिया, जेलस, हैमा, इग्ने, लाइको, मैग्ने-फास, नक्स-वो, ओपि, पल्स, रस-टक्स, स्टैफि, टेरेण्टुला ।

गर्भावस्थामें पेटमें ऐंठन होनेके कारण नींदमें व्याघात ।—कैमो, कूप्रम-ऐसे, काफिया, फेरम, नक्स-वो, विरेट्रम-ऐल्ब ।

„ **गर्भवतीके पेशाबमें अण्डलाल** (Albuminuria) **और मूत्रक्षारसे पैदा हुआ विकार** (Uraemia)।—एपिस, ऐपो, आर्स, आर्स-आयोड, बेल, बेन-एसिड, बार्बेरिस, ब्रायो, कैक्टस, कैन्थ, किनिनम, कोलचिकम, डिजिटे, डल्का, फेरम, हेलिबो, हेलोनि, कैलि-ब्रोम, कैलि-कार्ब, कैलि-स्यूर, लेकेसिस, लीडम, लाइकोप, मर्क-कोर, फास, फाइटो, रस-टक्स, सेनिसियो, सिपिया, सल्फर, टेरिबिन, इयुरेनि-नाइट ।

गर्भावस्थामें जरायुका अपनी जगहसे हटना (Displacement)—ऐलिट्रिस, अरम, बेल, कैल्के-कार्ब, कोलोफाइ, सिमिसि, कालिन्सो, कोनायम, हेलोनियम, कैलि-कार्ब, लिलियम-टिग, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वो, फास्फोरस, पोडो, पल्स, सिपिया ।

„ **सम्मुखावर्त्तन** (Antiversion)—अरम, बेलेडोना, कैल्के-कार्ब, फेरम, हेलोनि, लिलियम-टिग, मर्क, नक्स-वोम, प्लैटिना, सिपिया ।

„ **उलट जाना** (Retroversion)—इस्क्यु-हिप, बेलेडोना, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास, कोलोफाइ, सिमिसिफ्यूगा, फेरम, हेलोनियम, कैलि-कार्ब, लाइकोपो, म्यूरेक्स, नक्स-वो, प्लाटिना, सिपिया, सल्फर ।

गर्भावस्थामें भ्रूणका हिलना (Fœtal movement)।—आर्निका, कोनायम, कानवैले, ऐपोसा, लाइकोपोडि, ओपि, सोरिनम, सिपिया, सल्फर, थूजा ।

गलगण्ड (Goitre—घेघा)—ऐसिड-फ्लूर, ऐमोन-कार्ब, ब्रोमियम, कैल्के, कास्टि, आइयोडियम, लाइकोपोडि, नेट्रम, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वोम, स्पञ्जि, स्टैफिसे, सल्फर ।

गलेका जखम ।—“जखम” देखिये ।

गात्र-प्रदाह (शरीरमें दाह)।—ऐकोन, आर्स, बेलेड, ब्रायो, कैन्थ, कार्बो-वेज, कास्टि, मर्कुर, नक्स-वोम, फास, एसिड-फास, रस-टक्स, सैबाडि, सैनेगा, सिपिका, सल्फर।

गुटिका दोष (क्षय—Tuberculosis)।—ऐसिड-हाइड्रो, ऐसि-नाइट्रिक, ऐकालिफा-इण्डिका, ऐक्टिया-रेसि, ऐमोन-कार्ब, आर्स, आयो, बैरट, ब्रोमि, ऐब्रो, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, कैल्क-आयो, कैल्के-आर्स, कैल्के-फास, कैलोट्रोफिस, कोडिइ, कार्बो-ऐनि, ड्रोसेरा, इलैप्स, इपिका, फेरम-मेट, फेरम-फास, गुयेकम, इलिसियम, आयोडि, कैलि-कार्ब, लैकेसि, लोरोसिरे, लाइकोपोडि, मार्टस, कम्यूरनिस, मिलिफोलि, मेलेरि-आफिसि, ओलियेे-जेके, नेट्रम-आर्स, फेलाण्ड्रियम, फास, नाइट्रि-ऐसि, प्लेस्पाई, हिपर, स्पञ्ज, थेरिडियन, टियुबर्क्यु, बेसिलिनम, कोडिनम, जेरानियम, इरिजिरन, फास-ऐसि, म्यूर-ऐसि, सैलिक-ऐसि, नक्स-वोम, पल्स।

गुटिका दोष आँतोंका (Abdominal)—ऐमोन-कार्ब, आर्स, आर्स-आयोड, ऐलोज, कैल्के-कार्ब, कास्टिकम, क्रोटोन-टिग, चापारा-अमोर (Chapara amor θ), आयोड, हिपर, कैल्मिया, लैकेसिस, मर्कुर, एसिड-नाइट्रिक, ओपियम, जेलापा, फास, प्लम्बम-ऐसेटि, रस-टक्स, पल्स, साइलि, सल्फ।

,, **सन्धि-समूहोंका** (Tuberculosis of joints)—आर्स, कैल्के, बेलेडोना, कैल्के-फास, चायना, कोलोसि, आयोडि, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, लैकेसिस, लाइकोपोडि, मर्कुर, फास, रस-टक्स, साइलि, स्ट्रेमो, सल्फर।

गुल्मवायु या मूर्च्छावायु (Hysteria)।—ऐकोन, ऐग्नस-कैस्ट, ऐम्ब्रा-ग्रेसि, ऐमोन-कार्ब, ऐनाकार्ड, एपिस, आर्स, ऐसाफिटि, अरम, बेलेडो, ब्रोमि, कैकटस, कैल्के-कार्ब, कैन्थ, कोलोफाइ, कास्टि, सीड्रन, कैमो, कोरालि, क्लोरोफा, साइकूर, सिमिसिफ्यूगा, सिनामोन, काकुरलस, कोनायम, क्रोकस, जेल्स, हायोस, हाइड्रो-ऐसिड, इग्ने, आइडि, कैलि-फास, लैकेसिस, लैक्टिक-ऐसिड, लाइकोपोडि, मैग्ने-म्यूर, मस्कस, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वोम, नक्स-मस्क, पैलेडि, फास, प्लेटि,

पोलिगोनम, पल्स, सैब्राइना, सैंगुइने, सेनेसि, सिपिया, स्टैनम, स्टैफिसे, स्ट्रैमो, सल्फर, टैरेण्टुला, थेरिडियन, वेलेरियाना, जिङ्कम।

गुल्मवायुके कारण अकड़न (Hysterical convulsion)।—बेल, साइकूप्र, इग्ने, मस्कस, स्ट्रैमो, वेरेट्रम, जेलस, कूप्रम, पल्स, सिकेलि, टैरेण्टुला।

,, ,, **सर-दर्द** (With headache)।—इग्ने, आइरिस, बेलेडो, ब्रायो, जेल्स, हिपर, प्लैटि, सिपि, सल्फर।

,, ,, **गलेके भीतर अकड़न**।—लाइकोपोडि, मैग्ने-म्यूर, कास्टि, ऐसाफिट, कोनायम इत्यादि।

गुल्मवायुके कारण आर्त्तव या जरायुमें विकार।—काकुलस, इग्ने, पल्स, प्लाटो, कोलोफाइ, सिपिया, सिमिसिफ्यू, एलिट्रिस।

,, **वक्षस्थलका आक्षेप और श्वास-कृच्छ्रता**।—इग्ने, मस्कस, काफिया, नक्स-मस, स्ट्रैमो, कूप्रम, टैरेण्टुला।

,, **लगातार रोना या गुम हो जाना** (Persistent silence or lamentation)—नक्स-वोम, मस्कस, इग्ने, लैकेसि इत्यादि।

,, **नींद न आना** (Sleeplessness)—साइप्रिपीडियम, जेलस, इग्ने, नक्स-वोम।

गुह्यदेशका छिन्न हो जाना (Rupture of the perenium)।—प्रसवके समय अशिक्षिता धात्रीकी असावधानताकी वजहसे या अच्छी तरह उस स्थानकी रक्षा न करनेके कारण प्रसूताका गुह्यदेश छिन्न हो जाता है। उस जख्मकी अवस्थाके अनुसार—आर्निका, कैलेण्डुला या साइलिसिया प्रभृतिकी जरूरत पड़ती है।

गुह्यदेश और सरलान्त्रका बाहर निकल आना (Prolapsus of anus & rectum) **कांच निकलना**—एपिस, बेलेडो, कैल्के-कार्ब, सिना, इग्नेसि, फेरम, लाई, कोलचि, म्यूरियेटिक एसिड, नक्स-वोम, पोडोफाइलम, फास, सल्फर, रूटा, सेबाइनम, लेकेसिस। सरलान्त्र निकलना या स्थान-भ्रष्टता—आर्निका, हैमामे,

इग्नेसि, मर्क-सोल, मेजे, नक्स-वोम, फइटोलैक्का, पोडो, सलफर, फेरम-फास । **इस रोगकी पैदा होनेकी प्रकृति दूर करनेके लिये या प्रतिषेधक रूपमें ।**—आर्स, कैल्को-फास, लाइकोपोडि, फास्फोरस, रूटा, सिपिया, साइलि, थूजा । मल बाहर निकलनेके पहले (पाखाना फिरनेके पहले) यदि स्थान-च्युति हो जाये **पोडोफाइलम ।** पाखाना होनेके बाद यदि कांच बाहर निकले—इग्नेशिया, हायो, कार्बो-वेज, टेरिब ।

बच्चोंका रेक्टम या सरलान्त्र निकलना—इग्ने, इण्डिगो, नक्स-वोम, पोडोफाइलम, स्पञ्जिया ।

गुह्यद्वारमें स्नायविक दर्द (Proctalgia) और **गुह्यद्वारका प्रदाह** (Proctitis)—

„ **सर्दीकी वजहसे प्रदाह**—ऐकोन, बेल, लैकेसि, नक्स-वो, सल्फर, पोडो ।

„ **पुराना-प्रदाह**—फास्फोरस ।

गुह्यद्वारमें स्नायविक दर्दके साथ सङ्कोचन (Constriction) ।—बेलेडो, कास्टिक, इग्ने, कैलि-बाई, मेजे, नेट्रम, नाइट्रिक-एसिड, ओपि, प्लम्बम ।

„ **इसके साथ हो मूत्राशयमें कूथनकी तरह तकलीफ** (Tenesmus)—एलम, ऐलोज, कैप्सि, हायोसा, लाइकोप, नेट्रम ।

गुह्यद्वारसे आँव निकलना (Procto-leucorrhoea)—बोरैक्स, सिपिया, थजा ।

गुह्यद्वारसे रक्त-स्राव (Pretorrhagia) ।—**हैमामेलिस, एसिड-नाइट्रिक,** फेरम-फास, एरिजिर ।

गृहरोग अर्थात् जन्मभूमि देखनेका तीव्र आग्रह या रोग (House-Sickness) ।—ऐसिड-फास, कैप्सिकम, मर्कुरियस ।

ग्रन्थिल ज्वर (Glandular fever)।—बेलेडो, कैल्के-कार्ब, फाइटोलैक्का, हिपर, कैल्के-आयोड, बैराइटा-कार्ब, बैसिलिनम, साइलि इत्यादि।

ग्रन्थियोंका बढ़ना और सूजना (Enlargement & swelling)।—ऐलूमिन, ऐलियम-सेट, आर्स-आयोड, बैडियेगा, बेलिस-पेरा, कैल्के, कैल्के-आर्स, कैल्के-सल्फ, कैल्के-आयोड, कार्बो-ऐनि, कोनाय, ग्रैफाई, हिपर, आयोड, कैलि-आयोड, कैलि-म्यूर, मर्कु-सोल, मर्क-बिन-आयोड, स्पञ्जिया, साइलि, सलफर, हेक्लालावा, सिफिलिनम इत्यादि।

„ **कांख या बगलकी** (Auxiliary glands)।—ऐमोन-कार्ब, ऐन्थ्राक्स, आर्स-आयोड, आरम, बैराइटा-कार्ब, बेलेडो, कैल्के-कार्ब, कार्बो-ऐनि, सिस्टस, क्लिमे, कोना, हिपर, आयोड, कैलि-कार्ब, लैकेसिस, लाइकोपोडि, मर्कु, मर्कु-आयो-रूब्रम, नेट्रम-म्यूर, नेट्रम-सल्फ, नाइट्रि-एसिड, फास, पल्स, रस-टक्स, सिपि, साइलि, सलफर।

„ **ग्रीवाकी** (Cervical)।—ऐनान्थि, ऐमोन-कार्ब, आर्स, अरम, बैडियेगा, बैराइटा-कार्ब, बेलेडो, कैल्के-फ्लोर, कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज, हेक्लालावा, इग्ने, आयोडि, कैलि-कार्ब, लैकेसि, लाइकोपोडि, मर्कु, मर्क-कोर, मर्क-आयो-रूब्रम, नाइट्रिक-एसिड, फास, फाइटो, पल्स, सार्सापैरि, साइलि, स्पाई, सलफर, सिफिलिनम, थूजा।

„ **तालुमूलकी**।—ऐनान्थि, ऐन्थस, आर्स-आयोड, अरम, बैराइटा-कार्ब, कैल्के-फ्लूर, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास, कार्बो-ऐनि, कोनायम, ग्रैफाइटिस, आयोड, कैलि-आयोड, लाइकोपोडि, मर्क, फाइटो, साइलिसिया इत्यादि।

„ **वंक्षण या पुट्ठेकी** (Inguinal)।—एपिस, आर्स-आयोड, अरम-मेट, अरम-म्यूर, नेट्रो, बैडियेगा, कैल्के-सल्फ, कार्बो-ऐनि, मर्कुर, मर्क्यु-आयोड, क्लोडम, एसिड-क्रोटेलस, हिपर, नाइट, साइलि, सल्फर, थूजा।

ग्रन्थियोंका बढ़ना और सूजन—

,, **उदर-सम्बन्धी** (Mesenteric)—ऐब्रोट, आर्स, अरम, बैराइटा, कैल्के-कार्ब, सल्फर, टियुकुर्लिनम, सोरिनम।

(गुटिका-दोष देखिये)

ग्रन्थिवात (गठिया वात या वातरक्त) Gout—

,, **नया** (acute)।—(१) ऐपोसाइनम, ऐम्ब्रा, ब्रायोनि, हिपर, नक्स-वो, पल्स ; (२) आर्निका, फाइटो, सल्फ।

,, **पाकाशय दोष विशेष** (Goitre affection)—

,, **पुराना** (Chronic)—बेञ्जो-एसिड, कास्टिकम, नेट्रम-सल्फ, साइलि, गुयेकम, आयोड, बोविस्टा, ऐसाफि, सल्फर।

,, **सञ्चरणशील—इधर-उधर घूमनेवाला** (Erarrathe)—आर्निका, नक्स-वो, पल्स, रोडोडे।

,, **इसके साथ ही अर्श और आर्त्तवका विकार।—** बार्बेरिस।

,, **शराबियोंकी बीमारी—**कैल्के-कार्ब, डलका, रस-टक्स।

,, **पानीमें काम करनेके कारण—**कैल्केरिया-कार्ब, डलका, रसटक्स।

,, **हृत्पिण्डपर रोगका आक्रमण होनेपर** (Gout affecting the heart)—आर्स, ऐब्रोटेनम, बेञ्जो-एसिड, कोलचि, कैल्मिया-लिथियम, फास्फोरस।

घमौरी (Prickly heat)।—आर्स, ऐकोन, ऐण्टि-क्रूड, एपिस, रस्टक्स, लिडम, सलफर इत्यादि।

घाव लगना (Wounds)।—(१) आर्नि, कैलेण्डु, साइकूटा, कोना, इचिनेसिया, हैमामे, हिपर, हारपेरि, लैकेसि, पल्स, रसटक्स, सलफर-एसि। (२) ऐकोन, ऐलूमि, ऐमोन-कार्ब, बेलेडो, ब्रायो, बोरैक्स, कास्टि, आयोडि, इयुफ्रे, नक्स-वोम, रूटा, साइलि, स्टैफिसे, सलफर, जिङ्कम इत्यादि।

घोर निद्रा (कुम्भकर्णी नींद—Sleeping sickness)।—ओपि, नक्स-मस्कोटा, एपिस, आर्स, हेलिबो, लैकेसि, कोब्रा, कैलि-ब्रोम, मस्कस, सलफर इत्यादि।

चमड़ी रोग (Phymosis)।—ऐकोन, आर्निका, आर्स, बेलेडो, ब्रायोनि, बेडि, केनाब, कैल्के-कार्ब, कैप्सिकम, कोलोसिन्थ, सिनाबेरिस, हिपर-सल्फ, लैकेसि, मर्कुर, नाइट्रि-एसिड, रस-टक्स, सैबाडि, साइलि, सलफर, थूजा।

,, **गन्दगीसे उत्पन्न** (Uncleanliness)।—ऐकोन, मर्क, सल्फर।

,, **चोटके कारण**—ऐकोन, आर्निका, रस-टक्स।

,, **बच्चोंका**—ऐकोन, कैल्के, मर्कुर, सल्फ।

,, **उल्टी चमड़ी** (Paraphymosis)।—ऐकोन, आर्निका, आर्स, बेलेडो, कोलोसिन्थ, सिनाबेरिस, मर्कुर, हिपर, लेकेसिस, इत्यादि।

चेचक (Small pox) (**मसूरिका, माता या गोटीकी बीमारी**)—ऐकोन, ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-म्यूर, ऐनाकार्ड, ऐसिट-क्रूड, ऐसिट टार्ट, एपिस, आर्स, बैप्टी, बेलेडो, ब्रायो, कैम्फ, कैन्थ, कार्बो-वेज, कैमो, सिमिसि, काफि, क्रोटेल, डिजिट, जेल्स, हैमामे, हिपर, हाइड्रेस्ट, हाइड्रोसि-ऐसिड, हायोसा, इपिका, मर्कुर, फास-ऐसिड, रस-टक्स, सेरासि, साइलि, सोलेनम-नाइग्रा, सलफर, थूजा, वेरियोलिनम, मेलाण्ड्रिनम, वेरेट्र-विर, जिङ्कम-मेट, बेक्सिनिनम। एक चम्मच रोज २ बारके हिसाबसे विनिगर पीनेपर चेचकके प्रतिषेधकका काम होता है। लक्षणके अनुसार वेरियोलिनम और मेलाण्ड्रिनम भी प्रतिषेधक रूपमें लाभदायक होते हैं।

चोटके कारण छिल जाना।—आर्नि, सल्फ-ऐसि।

,, **धारदार अस्त्रसे कटना**।—कैलेण्डुला, स्टेफेसि, सल्फ-ऐसि।

,, **छुरा मारना** (Stab-wounds)।—कार्बो, लेकेसिस।

,, **रक्तस्राव बन्द न होना**।—आर्नि, क्रोटेलस, फास्फोरस आदि।

छाती दबनेकी सपने (Nightmare)।—ऐकोन, ऐलोज, ऐलूमि, ऐमोन, ब्रायो, कोनायम, गुयेकम, सिनाबेरिस, हिपर, नाइट्रिक-एसिड, कैलि-ब्रोम, नेट्रम-कार्ब, नक्स-वो, ओपि, फास, पल्स, साई, मेजि, सल्फ, थूजा, टेरिबिन्थ, विरेट्रम।

छींक (Sneezing)।—ऐकोन, ऐम्ब्रा, ऐमोन-म्यूर, आर्स, आर्स-आयो, एरम-ट्रि, ऐलियम-सेपा, कैल्के-कार्ब, इयुफ्रे, इयुपेटो-पर्फ, जेल्स, आयोडि, इपिका, कैलि-बाई, कैलि-आर्स, सेन्यटम, मर्क्युर, रस-टक्स, सैंगु, सेनेगा, इत्यादि।

जखम (Ulcer)—ऐसिड-म्यूर, ऐमोन-कार्ब, ऐङ्गस्टियुरा, ऐण्टिम-क्रूड, आर्जेण्ट, आर्निका, आर्स-आयोड, आर्सेनिक, ऐसाफिटिडा, ऐस्टिरियस, अरम, बैराइटा, बेलेडो, बोरैक्स, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास, कैलेण्डुला, कैन्थरि. कार्बो-वेज, सिना, कार्डयस, कास्टिकम, कैमो, चेलिडो, चायना, क्लिमेटि, कोनायम, करिडयुरैङ्गो, डालकामारा, फेरम ग्रैफाइटिस, फ्लूरिक-एसिड, हिपर, हाइपेरि, इग्नेसि, आयोड, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, क्रियोजोट, लैकेसिस, लाइकोपोडियम, मर्क, मेजि, नेट्रम, नाइट्रि-एसिड, नक्स-वोम, पेट्रोलियम, फास्फोरस, फास्फोरिक-एसिड, फाइटो, प्लम्ब, सोराइनम, पल्स, रैनानकुलस, रस-टक्स, रूटा, सैंगुनेरिया, सार्सापेरिला, सिकेलि, सेलेन, सिपिया, साइलिसिया, स्टैफिसि, सलफर, थूजा, विरेट्रम, सिफिलिनम, टियुबक्युर्लिनम, जिङ्कम।

,, **अस्थिका**।—ऐसिड-फ्लूरि, ऐसाफिट, साइलिसिया, सिफिलिनम, कैल्के-फ्लोर, सलफर, आर्स, फास, थेरिडियम, आरम, इत्यादि।

,, **गलनली या गलदेशका**।—एसिड-नाइट्रि, एसिड-सलफ्युर, ऐमोन-कार्ब, मर्क्युर-सोल, फाइटोलैक्का, एरम, आरम, कास्टि, कैलि-आयोड, लैक-कैन, लैकेसिस, मर्क्युर-आयोड, रूब्रम, साइलि, सलफर।

,, **जीभका**।—ऐसिड-नाइट्रि, एसिड-कार्बोलिक, एसिड-सलफ्युरिक, एपिस, आर्स, बेप्ट, बोराक्स, कार्बो-वेज, क्लोरिनम, कैलि-क्लोर, लैकेसि, मर्क्युर-सोल, फाइटोलैक्का, स्टैफिसे इत्यादि।

जखम, पाकस्थलीका (Ulcers of the stomach)—आर्जेण्ट-नाई, आर्स, ऐट्रोपिन, केलि-बाई, लाइकोपोडि, कार्बो-वेज, नक्स-वोम, फास, मेजेरि इत्यादि।

" **दाहजनक**।—ऐन्थ्रासि, आर्स, कार्बोन-सल्फ, कार्बो-वेज, कास्टिकम, लाइकोप, मर्क-सोल, पल्स, रस-टक्स, सल्फर, कैमो, क्लिमेटिस, कोना, हिपर, हाइड्रैस्टिस, केलि-कार्ब, क्रियोजोट, मेजेरियम, नेट्रम-आर्स, नेट्रम-कार्ब, नाइट्रिक-ऐसिड, फास्फोरस, प्लम्ब, रैनान, स्टैफि, थूजा।

" **पचनशील-सड़नेवाला**।—बोराक्स, कैल्के-कार्ब, कार्बोन-सल्फ, सल्फ, कास्टिकम, कैमो. ग्रैफाई, हिपर, लेकेसिस, पेट्रोलि, फास्फोरस, सोरिनम, रस-टक्स, साइलिसिया इत्यादि।

" **रक्तस्रावी**।—आर्स, हिपर, लेके, लाइकोपोडि, मर्क-कोर, एसिड-नाइट्रिक, एसिड-फास्फोरिक, फास्फोरस, आर्जेण्ट-नाई, कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज, कोना, क्रोटेलस, ग्रैफाई, आयोड, केलि-कार्ब, मेजि, रैनानकुलस-बल्ब, सिकेलि, सिपि, सल्फर इत्यादि।

" **सिकुड़ा** (त्वचा सिकुड़ी रहनेवाला जखम)—सिकेलि, ऐण्टिम-क्रूड, आर्सेनिक, बोरेक्स, कोनायम, केलि-आर्स, कूप्रम. क्रियोजोट, लाइको, मेजेरियम, सार्सा, सिपिया, सल्फ इत्यादि।

जननेन्द्रियकी दुर्बलता (Sexual Debility)।—**पुरुषोंके लिये** एसिड-फास, जेल्स, ऐमोन-कार्ब।

" **अतिरिक्त असमर्थताके लिये**—लाइकोपोडियम २०० शक्ति, एसिड-फास, २०० (अतिरिक्त इन्द्रिय परिचालन), सेबाल सेरुलेटा (Sabal seruleta) पाँच बून्दके हिसाबसे देना चाहिये। आंशिक दुर्बलता—जेल्स २०० और सेलिनियम २००। सूजाकके कारण यह रोग होनेपर—नूफर लूटियम या ऐमोन ३० के प्रयोगसे लाभ होता है।

" **स्त्रियोंकी संगमसे अनिच्छा**।—ऐमोन-कार्ब ३० या ग्रैफाइटिस ३०।

जरायु-प्रदाह (Utritis)—ऐकोन, एपिस, आर्निका, आर्स, आयोड, बेलेडो, ब्रायोनि, कैल्के, कैन्थ, कोलोफा, कैमो, चायना, काकुलस, काफिया, कोलोसिन्थ, कार्बो-ऐनिमेलिस, क्रोकस, कोनायम, फेरम, ग्रैफाइट, हिपर, इग्नेसि, इपिक, आयोड, केलि-फास, मैग्ने-म्यूर, मर्कु, नक्स-वोम, ओपियम, फास, रस-टक्स, सैबाडिला, सिकेलि, सल्फ, सिपिया, स्टैनम, विरेट्र ।

जरायु निकलना या भ्रंश (Prolapsus)।—ऐमोन-म्यूर, आर्जेण्ट, बेञ्जोयिक एसिड, बेलेडो, कैल्के-कार्ब, कैन्थ, कार्बो-एनि, कैमो, चायना, फेरम, ग्रैनेट, हाइड्रो, हाइड्रोफोबिन, आयोड, इपिकाक, केलि-बाई, क्रियोज, लैक-कैन, लैकेसि, लैप्पा, मर्कुर, मैग्ने-म्यूर, मिलि, फिडेरिक्स, नेट्रम, नक्स-वोम, नाइट्रि-एसिड, नक्स-मस्कोटा, ओपियम, पैलेडि, प्लाटि, रस-ट, पोडो, सेबा, सल्फ, थूजा, आस्टिलेगो (Ustilago)।

जरायुसे जल-स्राव (Hydrometra)—आर्स, एपिस, बेलेडो, ब्रायो, कैल्के-आयोड, कोलोसि, कोनायम, केलि-आयोड, लैकेसि, लाइकोप, सिपिया, पल्स, रूटा, सैबाइना, सिलिका, मर्कुर, हेलिबोर, सलफर ।

जरायुमें वायु एकत्र होना (Physometra)।—फास्फोरिक-एसिड, कैन्थरिस, बेलेडो, चायना, कैल्के, हायोस, लाइकोप, मैग्ने-कार्ब, फास, नक्स-वोमिका, सिपिया, सल्फ, ब्रोमि, एपिस, नक्स-मस्कोटा ।

जरायुमें रक्त-सञ्चय (Hæmatometra)।—सिपिया, कैल्के-कार्बोनिका, कार्बो-वेज ।

जरायुसे रक्तस्राव (Hæmorrhage from Uterus)।—(१) आर्निका, ब्रायो, **बेलेडो**, **कैल्के**, कैमो, चायना, सिना, क्रोकस, **इरिजिरन**, **फेरम**, हेलोनि, हायोसा, हैमामे, **इपिक**, प्लाटिनम, पल्स, सैबाई, सिकेलि, **ट्रिलियम** । (२) ऐकोन, एलिट्रिस, कैल्के, कार्बो-ऐनि, सिपिया । (३) इरेक्थाइटिस, इग्नेसि, ऐमोन-मूर, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वो, फास्फो, सैंगु, सिनिसियो, साइलि, सल्फर,

विरेट्रम। (४) ऐनोमि, ऐङ्गस, बैप्टो, कैमो, जेल्स, आयोड, वैटा, रूटा। (५) एपिस, विवियोम, आइरिस, सिलिका, फाइटो, प्लम्ब, रस-टक्स। (६) आर्जेण्ट, जिङ्कम, लाइकोप, आस्टिलेगो इत्यादि।

(क) मुख्य कारण या रक्तस्राव (Active Hæmorrhage) (स्थूलकाय) ऐकोन, बेल, ब्रायो, कैल्केरिया, कैमो, फेरम, नक्स-वोमिका, प्लाटीन, सैबाइ, लैके, आर्निका, क्रोकस, इग्नेसि, इपिक, फास, विरेट्रम, ट्रिलियम।

(ख) गौण कारण दुर्बलता।—(१) चायना, क्रोकस, पल्स, सिकेलि, सिपिया।

(२) कार्बो-वेज, नक्स-वो, इपिक, फास्फोरस, रूटा, विरेट्रम।

(३) एलिट्रिस, कोलोफाइलम, सिमिसि, ट्रिलियम, आस्टिलेगो।

जरायुको विस्तृति (फैल जाना)—कोनायम, सिपिया, ऐमोन-म्यूर।

जरायुका सड़ना (Gangrene of the uterus)।—आर्स, क्रियोजोट, कार्बो-ऐनि, कार्बोलिक-एसिड, कुरारि, सिकेलि-कर्णुट।

जरायुको सूजन (Swelling)।—अरम-म्यूर, नेट्रम, बेलेडो, नक्स-वो, प्लाटिना, सिपिया, अरम-म्यू, अरम, बेलेडो, हिपर, लैके, फाइटो, आस्टिले।

जरायुका स्नायुशूल (Metralgia)।—एलेट्रिस, बेलेडो, कोलोफाइलम, कास्टिक, कैमो, सिमिसि, क्रोकस, कोनायम, जेल्स, हायो, इग्नेसि, मैग्ने-कार्ब, मैग्ने-फास, म्यूरेक्स, नेट्रम, नक्स-वोम, प्लाटिनम, सिम्सि, सिपिया, स्टैनम, टैरेण्टुला।

जरायुमें दूषित अर्बुद (Cancerous tumour of the Uterus।—ऐलम, आर्स, आर्स-आयोड, थूजा, हाइड्रैस्टिस इत्यादि।

जलवसन्त या पनसाहा माता (Chicken pox or water pox)—ऐकोन, ऐण्टिम-टार्ट, बेलेडो, ऐसाफिटिडा, ब्रायोनिया, कास्टिकम, कैन्थरिस, कार्बो-वेज, कोनायम, साइक्ले, लोडम, इपिक, मर्क, नेट्रम, पल्स, रस-टक्स, सिकेलि, सलफर, सिपिया, साइलिसिया, थूजा, वाइपेरा।

जलातंक (Hydrophobia)।—बेलेडो, कैन्थरिस, कूरारि, हेलिब्रोरस, हाइड्रोसिरिनम, हायोसा, लैकेसि, स्क्युटान, स्ट्रैमोनियम, रैफेसि, ऐनान्थियम, वाइपेरा [प्रकृत रोगमें) (Rabes vera) रहस्य]। नकली बीमारीमें (Spura Rabies) ऐमोन-म्यूर, कैल्के-आर्स, हायोसा, इन्थला, एसिड-नाइट्रिक, सार्सा, सिपिया, सलफर।

जिह्वाका प्रदाह (Glossitis)।—एपिस, आर्स, एसिड-बेञ्जो, अरम, कैन्थ, कैल्के-कार्ब, कर्बो-वेज, कोनायम, कूप्रम, हिपर, लैकेसि, लाइकोप, मेजे, नाइट्रिक-एसिड, पिट्रोलि, प्लम्बम, रैनान, सिपिया, सल्फ, सल्फ्युरिक-एसिड।

जिह्वाका जखम (Ulcer of tongue)।—एसिड-बेञ्जो, सिना, साइक्यूटा, कैलि-क्लोरिकम, मर्कु, एसिड-म्यूर, एसिड-नाइट्रि (उपदंशके कारण होनेपर—एसिड-फ्लूरिक, मर्क, एसिड-नाइट्रि, कैलि-आयोड, फाइटो), रस-टक्स, ग्रैफाइटिस, कैलि-नाइट, प्लम्बम—जीभ कड़ी हो जानेपर उपयोगी है।

जीभमें जखम, बच्चोंकी।—इथूजा, बोरैक्स, मर्कु, नक्स-वो, एसिड-बेञ्जोयिक।

जीभमें (कैन्सर) कर्कटीया जखम।—ऐलूमि, एपिस, आर्स, अरम,-म्यूर, कास्टि, कार्बो, कोनाय, हाइड्रो, कैलि-आयो, लैकेसि, फाइटो, सिपि, साइलि, सलफर, थूजा।

जीभमें पक्षाघात (Paralysis)—ऐकोन, आर्स, बेलेडो, बैराइ, कास्टि, डल्का, जेल्स, हायोसा, नक्स-मस, ओपि, प्लम्ब, स्ट्रैमो, लैकेसि, ग्रैफाइ इत्यादि।

झिल्लीका प्रदाह (Diphtheria)।—ऐगारि, ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-कास्टि, एपिस, आर्स, आर्स-आयोड, अरम, बैप्ट, बेलेडो, ब्रोमि, ब्रायो, कैलि-परमंगा, कैलि-फास, क्रियोजोट, लैकेसि, लैक-कैनि, लाइकोपोडि, मर्क-कोर, मर्क-सायेनेटम, मर्क-बिन-आयोड, मर्क-प्रोटो-आयोड, म्यूर-एसिड, नाइट्रि-एसिड, फास, फाइटो, प्लम्ब, सैलिसिलि-एसिड, सैंगु, सलफर, सल्फ्युरिक-एसिड, थजा।

झिल्लीक-प्रदाह, स्वरनलीका (Laryngeal)।—ऐमोन, कास्टि, ब्रोमि, कार्बोलि-एसिड, कैलि-बाई, कैलि-फास, लैकेसि, लैक-कैन, मर्क-सायै, मर्क-आयोड, नाइट्रि-एसिड, स्पेञ्ज।

,, **बादका पक्षाघात** (Paralysis following)—आर्जेण्टम-नाइट्रम, आर्निका, बेराइटा, कास्टिक, कूप्रम, काकुलस, जेल्स, हेलोनियम, लैकेसि, फास्फोरस, फाइटस, प्लम्बम, रस-टक्स, सल्फर, जिङ्कम इत्यादि।

,, **प्रदाह फेफड़ेका** ।—एण्टिम-टार्ट, मस्क।

,, **दृष्टिका** ।—जेल्स, कैलि-फास, लैकेसिस, फाइजस, एपिस।

,, **दाहिने अङ्गका**—आर्स।

,, **निम्नाङ्गका**—कास्टिकम।

,, **एक बाँह और संचालनमें सहाय्यकारी पेशीका** ।—जेल्स।

,, **अर्द्धविभेदक**—फास्फोरस।

,, **निम्नाङ्गका पक्षाघात**—जिङ्कम।

डिफ्थीरिया ।—झिल्लीका-प्रदाह देखिये।

डिम्बकोष या डिम्बाधार प्रदाह (Ovaritis)—**नया** (Acute) ऐकोन, ऐम्ब्रा, ऐण्टि-मोनि, एपिस, आर्स, बेलेडो, ब्रोमि, कैन्थ, सिमिसि, क्रोटेलस, कोलोसि, कूप्रे, कोना, डलका, इयुफोर, हैमामे, लैकेसि, लिलियम-टिग, मर्क, पैलेडि, प्लैटि, फाइटो, रस-ट, सेबाई, स्टैफि।

,, **पुराना** (Chronic)।—आर्स, कोलोसि, ब्रायो, इग्ने, लैकेसि, लाइकोप, नक्स-वो, फास-एसि, रस-ट, सेबाइना, स्टैफि।

डिम्बकोषमें पीव-सञ्चय (Suppuration of ovaries)।—हिपर, लैकेसि, मर्क, प्लाटो, सोरि, साइलि।

डिम्बकोषका अर्बुद (Ovarian Cysts)।—एपिस, बोवि, कैन्थ, आयोडि, कैलि-ब्रोम, प नम-स्याद, धजा।

डिम्बकोषका कड़ापन (Induration of ovary)।—एपिस, आर्स, बेराइटा-आयो, बेरा-म्यूर, बेलेडो, कोनाय, ग्रैफा, आयोडि, पैलेडि, प्लाटि, सोरिनम।

डिम्बकोषका कर्कटीया-क्षत (Ovarian cancer)।—आर्स, ग्रैफा, क्रियोजो, लेपिस, ऐल्ब्रा, सोरिनम, साइलि, सल्फर।

डिम्बकोषका स्नायुशूल (Ovaralgia)।—ऐमोन-ब्रोम, ऐमोन-म्यूर, ऐट्रोपि, बेलेडो, कैमो, सिमिसि, काकुग्रल, कोलोसि, क्रोटेल, जेल्स, हैमामि, कैलि-फास, लैकेसि, नैजा, प्लाटी, स्टाफि, टैरेण्टुला, थेरिडि, वेस्पा, जिङ्कम, वैलेरि।

डिम्बकोषका शोथ (Ovarian dropsy)।—एपिस, आर्निका, आर्स, बेलेडो, कोलोसि, कोना, ग्रैफा, आयोडि कैलि-ब्रोम, लैकेसि, लाइकोपोडि, प्रूनस-स्पाइ, जिङ्कम।

डिम्बकोषकी स्थान-च्युति (Displacement of ovaries)।—ब्युफो-राना, कोनायम इत्यादि।

डेंगू ज्वर (Dengue fever)।—ऐकोन, जेल्स, बेलेडोना, ब्रायोनिया, बेप्टीशिया, इयुपेट-पर्फोलियेटम, सिमिसि, एसिड-फास, कार्बो-वेज, रस-ट, लैकेसिस, क्रोटेलस, पल्सेटिला, आर्सेनिक प्रभृतिका लक्षणके अनुसार प्रयोग करना चाहिये।

ताण्डव-रोग (Chorea)।—ऐकोन, ऐगारिक, आर्स, आर्टिमो, ऐसाफिट, ऐस्टेरियस-रूबेन्स, बेलेडो, ब्युफो, कैलब्रार, कैल्के-कार्ब, कोलोफा, कास्टिकम, सीड्रन, चेलिडो, साइक्यूटा, सिमिसि, सिना, काकुग्रलस, क्लोरेल, कोडिइन, क्रोकस, क्रोटेलस, कूप्रम, जेल्स, हायोसा, इग्नेसि, आयोड, कैलि-ब्रोम, लोरेसिरेसस, लिलियम, लाइकोपोडि, मैग्ने, फास, माइगी, नेट्रम, नक्स-वो, ओपियम, फास-एसि, फास्फोरस, कैलि-बाई, पलसेटिला, रोडो, रस-टक्स, स्कुटे, सिकेल, कण्ड, सिपिया, साइलि, स्टिक्टा, स्ट्रैमो, सल्फर, सम्बुल, टैरेण्ट, थजा, विरेट्रम-विर, जिङ्कम, जिङ्कम-सल्फ, जिजिया।

,, **मस्तिष्कीय**।—ऐगा, बेल, हायोस, स्ट्रैमो, टैरेण्ट, विरेट्रम-विर, इत्यादि।

ताण्डव-रोग मेरुमज्जीय ।—नक्स-वो, ऐसाफि, सिना, कूप्रम, माइगेल ।

„ **जरायुज** ।—कोलो-फा, सिमिसि, क्रोकस, सिकेलि, सिपि, पल्स, लिलियम ।

„ **आमवातिक** ।—सिमिसि, कैलि-बाई, फास, रस-टक्स ।

„ **उदर सम्बन्धीय** ।—ऐसाफि, सिना, आयोड, लाइकोप, साइलि ।

तालुमूल-प्रदाह (Tonsilitis) ।—एलूमिन, ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-मूर, एमिगड़ेपा वारसि, एपिस, बैराई-कार्ब, बैराई-मूरर, बैराई-आयोड, बेलेडो, बेञ्ज-एसिड, ब्रोमि, कैल्के-कार्ब, कैल्के-आयोड, कैल्के-फास, कैन्थ, कैप्सि, कोलचि, कोनाय, कूप्रम-मेट, ड्रोसिरा, इलैप्स, कोराल, फेरम-फास, ग्रैफा, गुयेकम, हीपर, इग्ने, इण्डियम, कैलि-बाई, कैलि-नाइट्रि, कैलि-मूर, लैक-कैन, लैकेसि, लाइकोपोडि, मैनसिनेला, मर्क, मर्क-आयो-फ्लेवा, मर्क-आयो-रूब्रम, नैजा, नेट्रम-फास, नेट्रम-सल्फ, पेट्रोलि, फास, फाइटो, प्लम्ब, सोरिनम, रैनानक्य, रस-टक्स, साइलि, सिनापि-नाइग्रा, स्टैनम, सलफर, सिफिलिनम ।

दन्त-शूल (Toothache) ।—ऐकोन, ऐमोन-कार्ब, ऐसिट-क्रूड, ऐसिट-टार्ट, एपिस, एपियम-ग्रैवा, ऐरानिया-डायाडेमा, आर्जेण्ट-नाइट्रि, आर्निका, आर्स, एरम-ट्रिफा, ऐसाफिट, अरम-मेट, बैराई-कार्ब, बेलेडो, बिस्मथ, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, कैम्फोरा, कार्बो-ऐनि, कार्बो-वेज, कास्टि, सेपा, कैमो, चिमाफि, चायना, क्लोरेल, सिस्टस-कैन, क्लिमे, काकसिनेला, काफिया, कोलचि, कोनायम,- साइक्ले, डालका, इयुफोर्बि, फेरम-फास, फेरम-पिक, फ्लूरि-एसिड, जेल्स, ग्लोनो, ग्रैफा, हैमामे, हेक्ला-लावा, हिपर, हायोसा, इग्ने, इपिका, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, कैलि-फास, लाइकोपोडि, मैग्ने-केलि-सल्फ, कैल्मि-लैट, क्रियोजो, लैकेसि, लैकनैन, नेट्र-कार्ब, कार्ब, मैग्ने-मूरर, मैङ्गनम, मर्कुर, मेजेरि, मूररि-ऐसिड, नेट्र-कार्ब, नेट्र-मूर, नेट्र-सल्फ, नाइट्रि-एसिड, नक्स-मस्के, ओलियै, पेट्रोलि, फास, रोडो-फास-ऐसिड, पिपर-मेट, प्लैण्टे, प्लाटि, प्लम्ब, सोरि, पल्स, रैटानि, स्टैफिसे-डेन, रस-ट, रोबि, सैबाई, सैबाडि, सिपि, साइलि, साइजि, सल्फर, सल्फरिक-एसिड, थूजा, वेरेट्रम-ऐल्ब, जिङ्कम ।

दन्तमूलसे रक्त-स्राव (Heamorrhage from gums, scurvy) ।— ऐगेव-ऐमे, ऐमोनियम-कार्ब, आर्स, कैन्थ, कार्बो-वेज, चायना, सिट्रस-कैन, हैमामे, हाइड्रो, कैलि-म्यूर, कैलि-फास, क्रियोजो, मर्क्युर, म्यूरि-एसिड, नेट्रम-म्यूर, नाइट्रि-ऐसि, नक्स-वोम, फास, फास-एसिड, सिपि, स्टैफिस, सल्फर, सल्फ-एसिड, टेरिबिन्थ ।

दाँत उखड़वानेके कारण रक्त-स्राव (Heamorrhage from extraction of teeth)—आर्निका, हैमामे, इरेक्थाइट्, कार्बो-वेज, क्रोटेलस, फास इत्यादि ।

दाँत निकलनेको वजहसे बीमारियाँ (Diseases of dentition) ।— इथूजा, ऐकोन, बेलेडो, एसिड-हाइड्रो, ब्रोमिन, कैलि-ब्रोम, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास, कैमो, कोलचि, साइक्यूट, क्यूप्रम, हायोस, गैम्बोजि, क्रियोजो, पोडो-फाइ, काफिया, मर्क-सोल, नक्स-वोम, सल्फर, जिङ्कम इत्यादि ।

दाद या दद्रु (Ring worm) ।—ऐसि-नाइट्रि, बैसिलिनम, ग्रैफा, हिपर, नेट्रम-सल्फ, फास, रस-ट, मर्क-कोर, सिपिया, सल्फर, टेलूरियम, सलफाइट आफ आर्स इत्यादि ।

धनुष्टङ्कार (Tetanus) **हनुस्तम्भ रोग** ।—एसिड-हाइड्रो, ऐकोन, ऐमोन-कार्ब, ऐङ्गस्ट-बोरा, आर्निका, आर्स, बेलेडो, कैम्फर, कास्टि, क्लोरस, साइक्यूट, कोनाय, क्यूप्रम, हायोसा, हाइपेरि, इग्ने, इपिका, लैकेसि, लोरोसि, नक्स-वोम, ओपि, रस-ट, सिकेलि, स्ट्रैमो, विरेट्रम, पाइरोज, विरेट्रम-विर ।

धवल (Leucoderma) ।—ऐनाकार्ड, आर्स, कैलि-आर्स, कैलि-आयो, सल्फाइट आफ आर्स, हाइड्रोकोटाइल-एसियाटिका ।

धमनीका अर्बुद (Aneurism) ।—बैराई-म्यूर, कार्बो-वेज, लैकेसि, लाइकोपोडि, कैकटस, कैल्के-कार्ब, कास्टि, ग्रैफा, कैलि-कार्ब, ऐम्ब्रा, आर्नि, आर्स, अरम-म्यूर, फेरम, प्लैटि, प्लम्ब, पल्स, सलफर, जिङ्कम इत्यादि ।

धमनीका प्रदाह (Arteritis)।—ऐकोन, कक्कस, अरम, सिकेलि-कोर, वैनेडियम, फेरम-फास, लैकेसिस, प्लम्ब।

धमनी-प्राचीरका मेदापकर्ष—कैल्के-कार्ब, ग्रैफाटिस, कैलि-आयोड, लैकेसि, लाइकोपोडि, फास्फोरस, प्लम्ब, साइलिसिया, सलफर, इत्यादि।

धमनी कट जाना और उसीकी वजहसे रक्त-स्राव।—बाँधनेकी सुविधा रहनेपर कसकर बांध देना चाहिये। सिलाई (कभी-कभी) करना उचित है। जब बन्धनसे खून गिरना बन्द नहीं होता, तब दवाके बिना, काम नहीं चलता। आर्निका, हैमामेलिस, कैलेण्डुला, इरेक्थाटिस, इरिजिरन, कोटेलस, फास्फोरस, हैमामेलिसके लोशन प्रधान सहायक हैं। लक्षणके अनुसार प्रयोग करना चाहिये।

धातुदोष तीनों।—धातुगत दोष या Bad constitution रहनेपर किसी रोगकी चिकित्सा यदि की जाती है, तो होमियोपैथिक दवासे जल्दी लाभ नहीं होता। इसलिये हैनिमैनने इन तीनों दोषसे यावत रोगोंकी उत्पत्तिकी मीमांसा की है। पहला—सिफिलिस, उपदंशज (Syphilitic)। दूसरा—साइकोटिक (प्रमेहज)। तीसरा—सोरिक (Psoric) इत्यादि।

इनकी दोषघ्न औषध कहा जाता है (Anti-Syphilitic, anti-sycotic, Anti-psoric)।

धातु-दौर्बल्य (Nervous debility)—एसिड-ऐसेट, ऐगरिकस, ऐग्नस-कैक्ट, ऐनाकार्ड, ऐनाम्थे-मूर, ऐण्टि-क्रूड, आर्जेण्ट-मेट, आर्जेण्ट-नाइट, अरम-मेट, बैराइट-कार्ब, बेलेडो, बार्बेरि, बोवि, ब्यूफो, कैलेडि, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास, कैनाब-सेट, कैनाब-इण्डि, कैन्थ, कैप्सि, कार्बो-वेज, सेड्रन, चायना, कोराल, काकु, काफि, केनोया, डिजि, फ्लुरिक-एसिड, जेलस, ग्रैफा, हैमामे, हेलोनि, हिपर, हायोस, इग्ने, आयोडि, आइरि, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, लैकेसि, लीडम, लिलि-टिग, लाइकोपोडि, मैग-कार्ब, मैग-मूर, मैङ्गन-ऐसेट, मेटिको, मर्क-बिन-आयो, मर्क-कोर, मेजेरि, मस्कस, मूरे, नैजा, नेट्र-कार्ब,

नेट्र-मूर, नेट्र-फास, नाइट्रि-एसि, नक्स-मस, नक्स-वोम, ओपि, ओरिगी, आक्सालि-ऐसि, पेट्रोलि, फास-ऐसि, फास, प्लाटि, सोरिन, पल्स, रस-टक्स, सेबाई, सारसापैरि, सेलेनि, सिपि, साइलि, स्टैफि, स्ट्रैमो, सल्फर, थूजा, वायोला, जिङ्क-आक्स।

ध्वजभङ्ग (Impotency)।—ऐग्नस, ऐगरिकस, ऐल्यूमिना, आर्जेण्ट-नाइट, बैराई-कार्ब, बूफो, कैलेडि, कैल्के-कार्ब, कैल्के-सल्फ, कैम्फो, कास्टि, कोबाल्ट, कोक्स, सिङ्को, कोनाय, फेरम, ग्रैफा, हैमासि, हेलिबो, आयोडि, लैकेसि, लाइकोपोडि, मैग-कार्ब, मस्कस, नाइट्रि-एसिड, नूफर-लूट, नक्स-मस, नक्स-वोम, ओनसमोड, ओपि, फास, फास-एसिड, फाइटो, प्लम्ब, सोरिनम, पल्स, सेलिनि, सिपि, स्टैनम, स्टैफिसे, सल्फर, थूजा।

नाकसे रक्तस्राव (Epistaxis)।—ऐकोन, एगारि, एलि-सिपा, ऐम्ब्रा, ऐमोन-कार्ब, ऐण्टिम-क्रूड, आर्जेण्ट-मेट, आर्नि, आर्स, बैप्टि, बैराई-कार्ब, बार्बा, बेलेडो, ब्रोम, बोवि, कैक्टस, कैल्के-कार्ब, कैनाबि-सैट, कैप्सि, कार्बो-ऐनि, कार्बो-वेज, कास्टि, कैमो, चायना, सिना, सिनाबार, कोनाय, कोपेवा, क्रोकस, क्रोटे-होर, कूप्रम, डिजि, ड्रोसे, डालका, इलैप्स, इरिजि, फेरम-फास, ग्लोन, ग्रैफा, हैमा, हिपर, हायोसा, इपिक, कैलि-बाई, लीडम, लैकेसि, लाइकोपोडि, मेलिलोट, मर्क, मेजेरि, मिलिफो, मस्कस, नेट-मूर, नेट-फास, नाइट-एसि, नक्स-मस, नक्स-वोम, पेट्रोल, फास, पल्स, रस-ट, रैनान, रोडोड, रियुमेक्स, सैबाई, सैंगुने, सिपि, स्पञ्ज, सिकेलि, स्टैनम, सलफर, थूजा, वेरेट्रम-ऐल्ब।

नाकको आघ्राण शक्तिका घटना (Defect of smell)।—ऐलूमि, हेलिबो, हिपर, कैलि-कार्ब, मेजेरि, रोडोडेन, साइलि, स्टैनम, टैबेकम।

नाकको सर्दी।—(नयो सर्दी रोग Coryza) र पुरानो सर्दी (Chronic Coryza)।

नाकको सर्दी नयो।—ऐकोन, इस्कुलस, एइलेन्थस, ऐलूमिना, ऐमोन-ब्रोम, ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-म्यूर, ऐनाकार्ड, एसिट-क्रूड, ऐण्टि-सल्फ,

एवियट, ऐण्टि-टार्ट, ऐरेनिया, ऐपोसाइनम, आर्जेण्ट-नाइट, आर्सेनिकम, आर्स, आयो, आयोड, एरम, एस्टेरम, एस्क्लोपियस, बेराइटा, बेलेडो, बेञ्जो-एसि, ब्रोमियम, ब्रायोनि, कैक्टस, ग्रैण्डिफ्ले, कैलेडि, कैल्के-कार्ब, कैम्फर, कार्बो वेज कास्टिकम, सिपा, कैमोमि, चायना, कोरल, सिमिसि, सिनाब्रेरिस, क्लिमैटिस, कोलचि, कोराल, कूप्रम, साइक्ला, डायस्को, ड्रोसेरा, डलकामारा, इयुकेलिप्टस, युपेटोरियम, इयुफ्रे, कैमो, फेरम-फास, जेल्स, ग्रैफाइ, हिपर हाइड्रास्टिस, आयोड, जैबोरैण्डो, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, कैलि-सूरर, कैलि-सल्फ, लैकेसि, लाइकोपोडि, मैग्ने-कार्ब, मर्क-सोल, मर्क-बिन-आयोड, मर्क-प्रोटो-आयोड, मेजि, नेट्रम-आर्स, नेट्रम, नेट्रम-कार्ब, नाइट्रिक-एसिड, नक्स-वोमिका, ओपियम, पैन्थेरम, फास्फोरस, फाइटो, पल्स, रस-टक्स, रियुमेक्स, सेबाडिला, सेम्ब, सैंगुने, सिपिया, साइलि, सिनिसियो, स्पाइजि, स्टेफिसि, स्टिक्ट, सलफर, थुजा।

नाककी सर्दी पुरानी (पूतिनस्य Ozena)।—ऐलूमि, आर्स-आयोड, ऐसाफिट, अरम-मूर, अरम-मेट, कैल्के-आयोड, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फ्लोर, कैल्के-सल्फ, कैडमि-सल्फ, इलैप्स, फेरम-आयोड, ग्रैफा, हिपर, हाइड्रैस्ट, आयोड, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, क्रियोज, लैकेसि, मर्क, मर्क-प्रो-आयो, नाइट्रि-एसि, फास-एसि, फास, सोरिन, पल्स, सिपि, साइलि, टियुक्रि, थेरिडि, थुजा।

नाकका छेद रुकना (नाकका छेद बन्द होना—Stoppage of the nose)।—ऐकोन, ऐमोन-कार्ब, अरम-मूर, ऐनाकार्ड, आर्स, अरम, कैल्के, कैमो, कास्टि, हिपर, लाइकोपोडि, मेन्थल, नक्स-वोम, पल्स, सेम्ब, सिपि, स्पञ्ज, इत्यादि।

नाकका बहुपाद (Polypus)।—अरम, बेलेडो, कैल्के-कार्ब, सिपा, कोनायम, ग्रैफाइटिस, मर्क, नेट्रम-सूरर, एसिड-नाइट्रि, फास्फोरस, सैंगुनेरिया, लैके, सल्फ, टियुक्रि। **सहजमें ही रक्त-स्राव होनेपर**—फास्फोरस। कैलि-बाईक्रोम १x—साल्यूशन रोज नाकमें डालनेपर वह नरम होकर निकल जाता है इत्यादि।

नाकके भीतर प्रदाह (Rhinitis)।—ऐम्ब्रा, आर्स, आर्स-आयोड, युफ्रे, लैकेसि, कूप्रम-ऐसेट, डलका, जेल्स, हिपर, कैलि-आयोड, नेट्र-आयोड, नेट-मूर, नक्स-वोम, रैनान-बल्ब, सैबाई, सैंगु, साइलि, सोलिडे, सोरिनम, स्टिक्टा इत्यादि।

नासिका रन्ध्रका विभेदक जखम।—ऐलूमि, अरम-ब्रोम, हाइड्रैस्ट, कैलि-बाई, कैलि-आयोड, मर्क-कोर, नाइट्रि-ऐसि, लैकेसि, मर्क-आयो इत्यादि।

निस्पन्द वायु (Catalepsy)—

क्रोधके कारण बीमारी।—कैमो, ब्रायो।

भयके कारण।—ऐको, बेल, जेल्स, इग्ने, ओपियम।

शोकके कारण।—इग्ने, फास-एसिड, स्टैफि।

प्रणयमें निराशा।—हायोसा, लैकेसि।

जननेन्द्रियकी उत्तेजनासे।—कोना, प्लाटिनम।

धर्मोन्माद।—स्ट्रैमो, सलफर, विरेट्रम।

हस्तमैथुनसे उत्पन्न।—चायना, नक्स-वो। इनके अलावा—ऐरेनिया, आर्स, कैनाबिस, कुरारि, स्कुटे, स्टैनमका प्रयोग होता है।

न्युमोनिया (नया फुसफुस-प्रदाह)।—ऐकोन, ऐमोन-कार्ब, ऐण्टि-टार्ट, आर्निका, आर्स, आर्स-आयोड, आर्स-आफ-एण्टिमोनो, बेल, ब्रोमि, ब्रायो, कैक्टस, कैनाबि-सैट, कैन्थ, कैप्सि, कार्बो-एनि, कार्बो-वेज, चेलिडो, चायना, कूप्रम, डिजि, फेरम-आयोड, फेरम-मेट फेरम-फास, जेल्स, हिपर, हायोसा, आयोडि, इपिकाक, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, कैलि-आयो, कैलि-मूर, कैलि-नाइट्रि, कैलि-सल्फ, लैकेसि, लैकनान, लोरोसि, लाइकोपोडि, मर्क, मस्कस, नेट-आर्स, नेट्र-सल्फ, नक्स-वोम, ओपि, फास, पल्स, रैना-बल्ब, रस-टक्स सैम्बु, सैंगु, साइलि, स्पञ्ज, सलफर, विरेट्रम-ऐल्ब, विरेट्र-विर इत्यादि।

पक्षाघात (Paralysis)।—ऐकोन, एस्कुल-ग्लैब्रा, इस्कुलस-हिप, एगारि, ऐलूमि, ऐम्ब्रा, ऐनाकार्ड, ऐङ्गस्ट्, एपिस, आर्जेण्ट-नाइट, आर्नि, आर्स, बैराई-कार्ब, बेल, ब्रायो, ब्यूफो, कैडमि, कैल्के, कैनाब-इण्डि, कार्बो-वेज, कोलोफाइ, कास्टि, चेलिडो, चायना, साइकूटा, सिना, काकुग्रलस, कोलचि, कोनाय, क्रोटेलस, कूप्रम, डालका, फेरम, फारमि-रु, जेलस, ग्रैफा, हिपर, हाइड्रो-ऐसि, हायोसा, इग्ने, इण्डि, कैलि-कार्ब, कैलि-आयो, कैलि-फास, लैकेसि, लिडम, लाइकोपोडि, मैग-फास, मर्क, नेट्र-बाई-कार्ब, नेट्र-मूर, नेट्र-फास, नक्स-मस, नक्स-वोम, ओपि, फास, फास-ऐसि, फाइसस्टिग, प्लम्ब, सोरि, रोडो, रस-टक्स, रूटा, सिकेलि, सिपि, साइलि, स्टैनम, स्टैफि, स्ट्रैमो सलफर, टैराण्ट, टेरिबि, वेरेट्र-ऐल्ब, वेरेट्र-विर, जिङ्कम।

पथरी (Stone Calculus)—

,, **पित्त-पथरी** (Gall stone)।—ऐपोमार्फिया, आर्स, बेलेड, बार्बेरिस, कैल्के-कार्ब, कार्ड-मेरि, चेलिडो, चायना, चिनिनम, चियोनैन्थिस, डायस्को, इयुनेमिन, हीपर, लैकेसि, लाइकोपोडि, नेट्र-मूर, नक्स-वोम, ओपि, पोडो, सिपि, साइलि, सलफर, टैबेकम, टेरिबि, थजा।

,, **मूत्र-पथरी** (Renal Calculus)।—(Gravel & stone)—(१) बार्बेरि, कैन्थ, लाइकोपोडि, सिपिया। (२) कैल्के-कार्ब, चायना, नाइट्रि-ऐसि, काकुग्रल, नक्स-वोम, पैरेरा-ब्रेवा, पेट्रोलि, फास, पल्स, रूटा। (३) ऐसिड-क्रूड, एपिस, ऐपोसाई, आर्जेण्ट-नाइट्रि, ऐलोज, आर्स, बेलेडो, बेञ्जो-ऐसि, कैक्टस, कार्बो-वेज, चायना, कोलचि, कोलोसि, कूप्रम, डिजिट, एग्रिजि, इकुई, इयुपे-पर्फुर, ग्रैफा, हाइड्राञ्जि, क्रियोजो, लैकेसि, लिथियम, मेजेरि, नैजा, नेट्र-मूर, नेट्र-सल्फ, नाइट्रि-ऐसि, नक्स-वोम, ओपि, पैलेडि, पल्स सार्सापैरि, थजा इयुवा-आर्सि इत्यादि।

पनसाहा (Chicken pox)।—“जल-चेचक” देखिये।

पसीना (Perspiration)।—ऐकोन, आर्सेनिक, बेलेडो, ब्रायो, बोविस्टा, ब्रायोनिया, कैल्केरिया, कैम्फर, कैन्थरिस, कार्बो-वेज, कैमो, चायना, चिनिन-सल्फ, डल्कामारा, फेरम, ग्रैफाइटिस, हिपर, सलफर, इग्नेशिया, इपिकाक, लैकेसिस, लाइकोपोडि, मर्क नेट्रम, नेट्रम-म्यूर, नक्स वो, ओपियम, फास्फोरस, फास्फोरिक-एसिड, पल्सेटिला, रस-टक्स, सैम्बुकस, सिकेल, सिपिया, साइलि, स्ट्रैमोन, सल्फ, ऐण्टि-टार्ट, थूजा, विरेट्रम इत्यादि।

,, **गर्म** (Hot)—कैमो, ओपियम, फास्फोरस, स्ट्रैमो, विरेट्रम।

,, **ठण्डा** (Cold Clummy)।—आर्स, कैम्फर, सिना, कूप्रम, हिपर, इपिका, लैकेसिस, लाइकोपोडि, नेट्रम, सिकेल, ऐण्टि-टार्ट इत्यादि।

पसीना—खूनके रंगका (Bloody)।—आर्निका, कैल्के, क्रोटेलस, लैकेसि, नक्स-वोमिका।

,, **पीला** (Yellow)।—आर्स, ग्रैफा, लैकेसिस, मकुर्र, रियुम, सल्फ इत्यादि।

,, **रातमें** (Neoturnal)।—ऐमोन-म्यूर, आर्सेनिक, बेराइटा, कार्बो-वेज, कास्टिकम, चायना, हिपर-सल्फर, नेट्रम।

,, **सवेरे प्रातःकालके समय** (Morning)।—ऐमोन-कार्ब, कैल्को, कार्बो-वेज, कास्टिकम, फास्फोरस, सल्फ इत्यादि।

पसीनाकी कमी (Want of sweat)।—ऐकोन, आर्निका, बेलेडो, कैल्के, कोलचि, डलकामारा, ग्रैफाई, हिपर, कैलि-आयोड, लैकेसि, लीडम, लाइकोपोडियम, नक्स-मस्कोटा, ओलिये, ओपियम, फास्फोरस, पल्स, रस-टक्स, सिकेल, साइलिसिया, सल्फ।

पसीनाका रुकना (Suppressed)।—बार्बेस्कम, बेलेडोना, ब्रायोनिया, चायना, डालका, लाइकोप, मर्क, नक्स, फास्फोरस, नक्स-वो, कैमो, सिपिया, सलफर।

पाकाशयका दर्द (पाकाशयिक आक्षेपिक वेदना—Gastrodynia or gastralgia)।—ऐकोन, इस्कुल, ऐण्टि-क्रूड, ऐण्टि-टार्ट, एपिस, आर्जेण्ट-नाइट, आर्निका, आर्स, ऐसाफि, बेराई, बेलेडो,

ब्रायो, कैम्फर, कैनाबिस, कैन्थ, कैप्सि, चेलिडो, चायना, कोलचिकम, कोलोसिन्थ, कूप्रम, जिङ्क, डायस्को, हेलिबोरस, हाइड्रो, हायोसा, इपिका, आइरिस, लोरोसि, लाइकोप, मर्क, मेजे, नक्स-वो, फास्फोरस, पल्स, पोडो, सैबाडिला, सिला, सिकेलि, टैराक्सेकम, टियुक्रि, विरेट्रम ।

पाण्डु—"कामला" देखिये ।

पीला ज्वर या पारीका बोखार (Intermittent fever) ।—ऐबिसिन, ऐकोन, एलोस्टोनिया, ऐलूमिना, ऐमोन-मूरर, ऐमोन-पिक, ऐसिट-क्रूड, ऐसिट-टार्ट, एपिस, ऐरेनि, आर्निका, आर्स, बैप्टिसि, बैराइटा, बेलेडो, बोविस्टा, ब्रायोनि, कैक्टस, कैल्के-कार्ब, कैम्फर, कैन्थ, कैप्सि, कार्बो-वेज, कास्टिकम, सिड्रन, कैमो, चेलिडो, चायना, चिनि-आर्स, चिनि-सल्फ, काकुलस, काफि, कोलचिकम, कार्बोलिक-एसिड, कैस्केरिला, चेलिडो, साइसेक्स, साइकूप्रटा. सिना, कुरारि, इलैप्स, इलाटे, इयुकेलिप्टस, इयुपेटो-पर्प, इयुपेट-पर्फोल; फेरम, जेल्स, हेलिबोरस, हिपर-सल्फ, हाइड्रैस्टिस, हायोसायमस, इग्नेशिया, आयोडियम, इपिकाक, कैलि-ब्रोम, कैलि-बाइक्रोम, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, लैकेसि, लिडम, लोबेलिया, लाइकोपोडि, लैक-नैन, मेन्सिनेला, मैग्नेशिया-सल्फ, मैग्नेशिया-कार्ब, :मैग-मूर, मर्क, मेजे, मारफिनम, नेट्रम, नेट्रम-सल्फ, नाइट्रिक-एसिड, नक्स-मस्कोटा, नक्स-वोम, ओपियम, पेट्रो, फास्फोरिक-एसिड, फास्फोरस, प्लैण्टेगो, प्लम्ब, पोडोफाइ, पोलिपोरस, सोराइनम, पल्सेटिला, रस-टक्स, सेबाडि, सैम्बुक, सिपिया, साइजे, स्टैनम, स्टैफिसे, स्ट्रैमोनि, सलफर, टैरेण्टुला, थूजा, वैलेरियाना, विरेट्रम-ऐल्बम ।

पार्श्ववात (Pluerodynia) ।—ऐमोन, आर्निका, बोरैक्स, कैक्टस, चिनापोडियम, चिनिनम-आर्स, सिमिसि, कोलचिकम, गल्थेरिया, गुयेकम, कैल्मिया, मर्क, मैग्ने-फास, फाइटोलैक्का, रैनान, रोडोडेण्ड्रन, रस-रेडि, रियुमेक्स इत्यादि ।

पिकचंचु-प्रदाह (Coccygodynia)।—एपिस, बेलेडोना, कास्टिकम, कार्बो-ऐनि, कैनाबिस, कैल्केरिया, साइक्यूटा, सिस्टस, इयुफोर्बि, फ्लूरिक-एसि, ग्रैफाइटिस, कैलि-कार्ब, क्रियोजोट, लेकेसिस, लोबेलिया, मैग्नेशिया, मर्क-सोल, म्यूर-एसिड, सोरिन, पेट्रोलि, फास्फोरस, फास-एसिड, प्लाटिना, रस-टक्स, रूटा, टैरेण्टुला, थूजा, वैलेरि, जिङ्कम इत्यादि।

पुराना सन्धि-प्रदाह (Arthritis Deformans)—(१) ऐब्रोटेनम, आर्निका, कैल्के-कार्ब, कास्टिक, चिमाफिला, क्लिमेटस, हिपर-सल्फ, लेकेसि, लाइकोपोडि, फास्फोरस, फाइटो, सल्फ, विरेट्रम, (२) ब्रायोनिया, डलका, इग्नेसि, मर्क, नक्स-वोम, पल्स, रस-टक्स, स्टिलिञ्जि, थूजा।

पुरानी वक्रता और साथ ही कड़ापन—कास्टिक, लेके, लाइकोप, नक्स-वो, सिपिया।

„ **पक्षाघातके साथ**—चायना, फेरम, रस-टक्स, हेलिबो, प्लम्ब, स्टैफि।

„ **सन्धियोंकी सूजन**—ऐकोन, ऐपोसाइनम, आर्निका, आर्स, कोलचि, हिपर, लाइको, रोडो, रस, सलफर, विरेट्रम-विर।

पुराना सूतिका रोग (Chronic Purperal stege)।—नेट्रम, आर्सेनिकम, चायना, फेरम, फेरम-आर्स, ऐलूमिना, सिपिया, ग्रैफाई, पल्सेटिला, नक्स-वोम, कैप्सिकम।

पेशियोंकी शीर्णता (Muscular atrophy)।—आयोड, प्लम्बम, आर्जेण्ट, आर्निका, आर्स, कूप्रम, जिङ्कम, नेट्रम-म्यूर।

पेशियोंका वात (Muscular rheumatism)।—मैस्कोरिन, सैंगुने, ब्रायोनिया, रस-टक्स, कोलचिकम, रैनानकुलस, जेल्स, डलका, कास्टिकम इत्यादि।

पौनःपुनिक ज्वर (Relapsing fever)।—ऐकोन, आर्जेण्ट-नाइट्रि, आर्निका, आर्स, बैप्टि, ब्रायो, चायना, इयुपेट-पर्फ, जेल्स, लेप्टेण्ड्रा, मर्क, नक्स-वोम, नेट्र-फास, फास, फास-ऐसिड, रस-टक्स, विरे-ऐल्ब।

प्रथम ऋतु-स्रावमें विलम्ब (Delayed first menses)।—(१) कार्बो-सल्फ, काफिया, कोनायम, कूप्रम, डलका ; (२) ऐकोन, कैलि-कार्ब, लाइकोप, मैग-कार्ब, नेट्र-मूरर, नक्स-मस्कोटा, पल्स ; (३) ऐकोन, ऐग्नस, एपिस, अरम, बेलेडो, कैल, कैल्के-फास, कार्ब-एसिड, चेलिडो, सिमिसि, काकुग्लस, साइक्ले, ड्रोसे, फेरम, फेरम-फास, इग्नेसि, आयोड, कैलि-आयोड, लैकेसि, नेट्र-का, मर्क, नेट्र-फास, पेट्रो, फास, फास-एसिड, प्लैट, सैबाई, सेनेसियो, स्टैफ, सल्फ-ऐसिड, वैक्स, जिङ्कम।

प्रच्छन्न मैलेरिया ज्वर (Masked Malarial fever)।—आर्सेनिक, आर्निका, फेरम, आर्स, चिनिनम-आर्स, नेट्रम-मूरर, नेट्रम-आर्स, कैल्के-आर्स, लैकेसिस, नक्स-वोम, पलसेटिला, कार्बो-वेज इत्यादि।

प्रदर—श्वेत-प्रदर (Leucorrhoea)।—ऐकोन, ऐग्नस, ऐलोज, ऐल्यूमिना, ऐम्ब्राग्रि, ऐमोन-मूरर, ऐण्टिम-टार्ट, एपिस, आर्जेण्टम, आर्स, आर्स-आयोड, बोविस्टा, बैप्टो, ब्रायोनिया, कैल्के-फास, कैनाबिस, कैन्थ, कार्बो-ऐनि, कार्बो-वेज, कार्बोलिक-एसिड, कास्टिक, सिनामोन, सीड्रन, कैमो, चायना, सिमिसि, काकुग्लस, काफिया, कोनायम, क्रोकस, कोपेवा, कुरारि, साइक्लेमेन, डेफनी, डलका, इरिजिरन, इयुपेटो, फेरम, जेल्स, ग्रैफाइ, हैमामे, हेलोनि, हिपर-सल्फ, आयोड, कैलि-आर्स, कैलि-ब्रोम, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, क्रियोजो, लैकेसि, लिलियम, लाइकोप, मैग्ने, मर्क-सोल, मर्क-कोर, मेजि, मूरेक्स, नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-मूरर, नेट्रम-सल्फ, नक्स-मस्कोटा, नाइट्रिक-एसिड, नक्स-वोम, पैलेडि, पेट्रो, फास, फास-एसिड, प्लाटिना, पोडो, पल्स, सैबाई, सैंगुने, सिपिया, सिकेल, स्टैनम, सलफर, सिकेलि, टैरेण्टु, थूजा, ट्रिलियम, आस्टिलेगो, वाईबर्न, जैन्थकसाइलम, जिङ्कम।

प्रमेह (Gonorrhoea—**सूजाक—नया** acute)—ऐकोन, ऐगारि, एग्नस, ऐण्टि-क्रूड, आर्जेण्ट, आर्स, आर्निका, अरम, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास, कैम्फर, कैनाबिस, कैप्सि, चेलिडो, चिमाफि, सिनाबेरिस, क्लिमेटिस, कोपेवा, डलका, डिजिट, इचेनि, फेरम, फेरम-फास, जेल्स,

ग्रैफाइटिस, हैमामि, हिपर, हाइड्रैस्टिस, कैलि-बाई, कैलि-सल्फ, लिलियम, मेडोरि, मर्क-कोर, मर्क-सोल, नेप्थ, नेट्रम-म्यूर, नेट्रम-सल्फ, नाइट्रिक-एसिड, नक्स-वो, पेट्रोल, फास्फोरस, पल्स, सार्सा, सिपिया, सिमिसिफ्यूगा, साइलिसिया, स्टिलिञ्जिया, सलफर, टेरिबिन्थ, थूजा इत्यादि।

प्रलाप कम्पन उन्माद (मदात्यय रोग Delirium Tremens)।—ऐकोन, बेलेडो, बिस्मथ, कैम्फर, कैल्के-कार्ब, काफिया, चायना, चायना, सल्फ, हायोसा, लैकेसिस, नक्स-वोम, ओपियम, स्ट्रैमो, विरेट्रम इत्यादि।

प्रसव-कालमें क्लेश भोग (Labor pain)।—

प्रसव-वेदना (Labor pain)।—आर्निका, बेलेडोना, कैम्फर, कैमो, कोलोफाइलम, चायना, काकुलस, इग्ने, जेल्स, काफिया, हायोस, नक्स-वोमिका, इग्नेसि, कैलमिया, नेट्रम, नक्स-मस्कोटा, पल्सेटिला, रूटा, सिकेलि, सिपिया, सलफर।

„ **अप्रकृत** (नकली False Labor pain) या **कृत्रिम प्रसव-वेदना**।—कोलोफाइलम, पल्स, ऐक्टिया-रेसिमोसा, जेल्स, ऐकोनाइट, बेलेडोना।

„ **जरायुमुख सिकुड़नेकी वजहसे** (Inaptitude to dilate) प्रसव कष्ट—जेलसिमियम।

„ **अनियमित या क्षीण दर्दके कारण**—पल्सेटिला।

„ **कष्टकर वमनेच्छा**—इपिकाक।

„ **मूर्च्छा**—पल्स, नक्स-मस्कोटा।

„ **जरायुमुखकी कड़ापनकी वजहसे**—बेलेडोना।

„ **आक्षेपिक वेदना**—जेल्स।

„ **जरायुमें क्षीण वेदनामें**—सिकेलि-कार्नुटम।

प्रसवकी समय रक्तस्राव—सेबाइना, आर्निका, हैमामेलिस।

„ **सुस्त हो जाना**—चायना, फेरम।

प्रसवकी समय सूतिकाक्षेप (Puerperal Eclampsia) ।—बेल, हायोस, एसिड-हाइड्रो ।

„ **पेशाब बन्द** ।—ऐकोन, पल्स, हायोस, बेलेडोना ।

„ **कब्जियत** ।—कालिन्सोनिया, विरेट्रम-ऐल्ब ।

„ **अतिसार** ।—पल्स, विरेट्रम, हायोसायमस ।

„ **बवासीर** ।—पल्स, हैमामिलिस ।

„ **अस्त्र-प्रयोगका दुष्परिणाम** (Artificial delivery) ।—फेरम-फास, कैलि-फास, मैग्नेशिया-फास, कैल्केरिया-फ्लूयोरिका, कैल्केरिया-फास इत्यादि सेवन करना अच्छा है। **बायोकेमिक औषध ।**

प्रसवकी समय उन्माद (Mania) (१) **विषाद वायु** (Melancholia) नक्स-वो, हायोसा, ष्ट्रैमो, कैनाबिस-इण्डिका। (२) पल्स, इग्नेसि, ऐग्नस, कैक्टस, अरम, सिमिसि ।

प्रसवकी बादका स्राव (Lochia) ।—दीर्घकाल स्थायी—सिकेलि। घोर लाल रङ्ग—सैबाइ ।

„ **बदबूदार स्राव**—क्रियोजोट ।

„ **एकाएक बन्द होनेपर**—ब्रायोनिया, ऐंठन या आक्षेप—बेलेडोना ।

„ **एकाएक बन्द होकर बोखार आनेपर**—ऐकोनाइट ।

„ **मूर्च्छावायु या आक्षेप होनेपर**—ष्ट्रैमो ।

„ **नींद न आना**—काफिया ।

प्रसवकी बाद फूल न गिरना—पल्स, सिकेलि, आर्निका ।

प्रसवकी बाद पैर फूलना (श्वेतपाद—Phlegmesia alba dolens)—ऐकोन, आर्निका, पल्स, हैमामिलिस, रस-टक्स, एपिस, बेलेडो, ब्रायो, लाइकोप, मर्क्, सैबाइना, सल्फर ।

„ **श्वेतपाद स्फोति** ।—पल्स, लेकेसि, एपिस, रस-टक्स, हैमामिलिस, आर्सेनिक इत्यादि ।

प्रसवके बाद पैर फूल जाना—कैल्केरिया-कार्ब २०० और साइलिसिया २०० सात दिनोंका अन्तर देकर एक-एक मात्रा।

प्रसव-वेदना (Labor) **प्रकृत।**—एकोन, आर्निका, आर्स, बेलेडो, बोरैक्स, कोलोफाई, कास्टि, कैमो, चायना, चिनि-सल्फ, क्लोरोफा, सिमिसि, सिनामोमम, काकुल, काफि, कूप्र, फेरम, जेल्स, हायोस, इग्ने, इपिक, जैबोरै, कैलि-कार्ब, कैलि-फास, लैकेसि, लाइकोपोडि, मैग-म्यूर, मैग-फास, नेट्र-म्यूर, नक्स-मस, नक्स-वोम, ओपि, फास, प्लाटी, पल्स, सिकेलि, सिपि, आस्टिलेगो, वाइवर्न-ओपु इत्यादि।

,, **अप्रकृत।**—बेलेडो, कैल्के-कार्ब, कैमो, सिमिसि, कोलोफाई, कोनाय, डायस्को, जेल्स, कैलि-कार्ब ,नक्स-वोम, ओपि, पल्स इत्यादि।

प्रसव-वेदना—क्षीण-वेदना—बेलेडो, कार्बो-वेज, सिमिसि, कोलोफाई, कैमो, ग्रैफा, जेल्स, कैलि-कार्ब, कैलि-फास, नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यूर, नक्स-मस, नक्स-वोम, ओपि, पल्स, रूटा, सिकेलि, थूजा।

प्रसवके बाद स्तन-प्रदाह (दुग्ध-ज्वर)—एकोन, ब्रायोनिया।

,, **ठुनका (स्तन-प्रदाह)**—एकोन, बेल, ब्रायो, मर्क, हिपर, फास्फोरस, फाइटोलैक्का, पल्स, फिलैण्ड्रियम।

,, **स्तनकी घुंडीमें जखम।**—कैलेण्डुला, ग्रैफाइटिस, क्रोटन-टिग, बोरैक्स।

,, **स्तनमें बहुत दूध (प्रचुर स्तन्य)**—नेट्रम-सल्फ, पल्स, बोरैक्स, कैल्के-कार्ब, चायना।

,, **स्तनमें दूध कम होना**—ऐसाफिटिडा, ऐग्नस-कैस्टस।

,, **मानसिक आवेग**—कैमो, हायोस, इग्नेशिया।

,, **स्तनमें फोड़ा होनेपर**—ब्रायोनिया, फाइटोलैक्का, हिपर।

,, **या प्रसवान्तिक वस्तिकोटर-प्रदाह** (Pelvic cellulites)—बेलेडो, आर्निका, एपिस, रस-टक्स, हिपर, मर्क-सोल, साइलि, सल्फर।

,, **वस्तिगह्वरमें फोड़ा** (Pelvic abscess)—बेलेडो, ब्रायोनिया, रसट-क्स। कुछ न होनेपर—मर्क, हिपर, साइलि, सल्फर।

प्रसवके बाद केश झड़ना ।—एसिड-फास, चायना, आर्सेनिक, कैल्के-फास, कैल्के-आर्स ।

प्लेग—महामारी (Plague) ।—ऐकोन, बेलेडो, ब्रायोनि, इग्नेशिया, कोबरा, क्रोटेलस, इलैप्स, लैकेसिस, फास्फोरस, आर्सेनिक, मर्क-कूप्रम, मर्क-कोर, बैप्टो, कार्बो-ऐनिमे, कार्बो-वेज, ऐण्टि-टार्ट, पाइरोजिन, ऐन्थ्रासिन, कैलि-फास, लिसिन, रस-टक्स, ऐलियेन्थस, फाइटोलैक्का, एपिस, हायोसा, स्ट्रैमो, ऐण्टि-क्रूड, इपिका, हिपर, साइलि, बैडियेगा ।

" **दोषघ्न या प्रतिषेधक** (Prophylactic) ।—लिसिन या प्लेगुइनम २०० ।

" **डा० डिनके मतसे**—आर्सेनिक $१०^{१}२०$ —३x विचूर्ण ।

" **डा० सरकारके मतसे**—इग्नेशिया २०० और इग्नेशिया-बिन हाथमें पहनना ।

" **ब्यूबोनिक ।**—कार्बो-ऐनि, लेकेसि, बैडियेगा, रस-टक्स, बिन-आयोड आफ मर्करी, आर्स-आयोड, क्रोटेलस, बेलेडो, ऐन्थ्रासिन, एलैन्थ, फाइटोलैक्का, सलफर, साइलि, हिपर इत्यादि ।

" **सेप्टिसेमिक (सड़नेवाला)**—पाइरोजिन, बैप्टि, ब्रायो, आर्स, लैके, क्रोटेलस, कार्बो-वेज, ऐन्थ्रासिन इत्यादि ।

" **न्यूमोनिक** (फेफड़ेका)—इपिक, ब्रायो, फास्फोरस, ऐण्टि-टार्ट, रस-टक्स, लाइकोपोडि, सलफर, कार्बो-वेज ।

" **इण्टेस्टाइनल या कालेरिक ।**—विरेट्रम, रिसिनस, ऐण्टि-टार्ट, कार्बो-वेज, हाइड्रोसियानिक एसिड, हाइयोसा, नेजा, आर्सेनिक इत्यादि ।

" **सेरिब्रल या मस्तिष्क सम्बन्धीय ।**—आर्निका, एपिस, एसिड-कार्बोलिक, एलैन्थ, एसिड-फास, ओपियम, हायोसा, स्ट्रैमो, लेकेसिस, हेलिबोरस, जिङ्कम ।

" **बगलकी ग्रन्थि सम्बन्धी** (Axillary Bubonic) ।—ऐन्थ्रासिन, एइलैन्थस, कार्बो-ऐनिमे, कार्बो-वेज, एसिड-कार्बोलिक, नेजा, क्रोटेलस, बैडियेगा, सल्फ, हिपर, पलस, साइलिसिया ।

फुसफुस-प्रदाह (Pneumonia) देखिये। बालकोंके लिये "कैपिलरी ब्राङ्काइटिस" को न्युमोनिया कहते हैं। यथास्थान देखिये।

फुसफुसवेष्ट-प्रदाह (Pluritis)।

" **नया** (Acute)।—ऐकोन, आर्निका, एपिस, आर्स, ब्रायोनि, केक्टस, कैन्थरिस, आयोडियम (Iodium), रस-टक्स, सल्फर।

" **पुराना** (Chronic)।—आर्स, ब्रायो, डिजि, कैल्के, फास, आयोड, हाइपर, साइलि, सल्फ।

" **स्नायुशूल** (Pleurodynia)।—आर्निका, बोरेक्स, केक्टस, सिमिसि, गोयेक, मेलिलो, मर्क, मेजि, नक्स-वोमिका, रैनानक्युलस, रोडोडेण्ड्रन।

फोड़ा (Boils)।—ऐलूमि, ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-म्यूर, ऐण्टि-क्रूड, ऐण्टि-टार्ट, आर्निका, ऐम्ब्रा, एपिस, बेलेडो, ब्रोमा, ब्रायोनिया, कैल्के, कार्बो-वेज, क्रोटेलस, ग्रैफाइटिस, हिपर हैमा, हायोस, हाइड्रो, आयोड, कैलि-आयोड, लैकेसिस, लाइकोप, लीडम, मैग्न, मैग्ने-म्यूर, मर्क, मेजे, माइरी, नेट्रम, नाइट्रिक-एसिड, नक्स-मस, नक्स-वोम, फास, एसिड-फास, फाइटो, प्लम्बम, सोराई, रस-टक्स, सिकेल, सिपिया, साइलि, स्टैफि, सलफर, थुजा।

" **बहुतसे** (Multiple)।—आर्निका, आर्स, नक्स-वो, सलफर।

" **बार-बार आक्रमण**—आर्निका, आर्सेनिक, कैल्के-पिक्रिकम।

" **सड़नेवाले**—क्रोटेलस, लैकेसिस इत्यादि।

" **रक्त विषाक्त**—आर्स, चायना, लैकेसि।

" **छोटे आकारके** (Small)।—आर्निका, बेलेडो।

" **बड़े आकारके** (Large)।—क्रोटे, हिपर, लैकेसि, लाइकोप, मर्क, फास्फोरस, साइलि।

बतौड़ो या बदमांस निकलना (Excresence)।

बतौड़ो, जखमके चारों ओर ओठकी तरह फूल उठता है (Proud flesh)—आर्स, आयोड, लैकेसिस, फास, साइलि, स्टैफ, सलफर।

,, **मसेकी तरह**—अरम-मूर, कैलि-आयोड, लाइको, मर्क, नाइट्रि-ऐसि, फास-ऐसिड, सल्फ, थूजा।

,, **सींगकी तरह**—(Horny)—ऐण्टिराना, रैनान, सल्फ।

बढ़नेवाली उत्कट रक्ताल्पता (Progressive Pernicious Anæmia)—आर्सेनिक, आर्निका, फास्फोरस, वैसिलिनम, चायना, आर्जेण्ट-नाई, हाइड्रो, मर्क, कूप्रम, फेरम-रिडेक्टिकम (Ferr. reducticum), हेलोनियस, एपिस, केल्के, इनके अलावा—स्टैफि, सल्फ, फास-एसिड, नक्स-वोम, फास, नेट्रम इत्यादि।

बढ़ी हुई प्लीहा (Enlarged Spleen)।—आर्सेनिक, केल्के-आर्स, ऐगरिकस, नेट्रम-आर्स, चायना, फेरम-आर्स, आर्निका, सियोनोथस-ऐमेरि, फास्फोरस, एसिड-नाई, कैलि-ब्रोम, नक्स-वोम, काडुंयस इत्यादि।

बन्ध्यत्व।—अरम, ऐमोन-कार्ब, आयोडिन, बोरेक्स, ऐसिड,-सल्फ, कोनायम, फेरम, केल्के, कैनाबिस, क्रोकस, ग्रैफाइ, मर्क, नेट्रम, प्लाटिनम, रूट, सलफर इत्यादि।

बधिरता (Hardness of hearing)—कानसे "कम सुनना" देखिये।

बवासीर (Piles)।—(१) इस्कुलस, ऐण्टिमोनी, आर्स, बैप्टी, कार्बोवेज, कालिन्सो, इग्ने, हैमामि, नाइट्रि-ऐसि, नक्स-वोम, पोडो, पल्स, सलफर, थूजा। (२) ऐलोज, कास्टि, ग्रैफा, लैकेसि, रस-टक्स, सिपिया, ट्रिलियम।

,, **खूनी** (Bleeding)।—ऐकोन, बेल, केल्के-कार्ब, कोलिन्सो, हैमामि, इपिकाक, फेरम, डिजि, मिलिफो, फास, पल्स, सिपिया, सलफर, नाइट्रि-ऐसि, नक्स-वोम।

,, **बादी** (अन्धवली—Blind)।—ऐकोन, आर्स, कैप्सि, नक्स-वोम, सलफर इत्यादि।

बवासीर बाहरी मसा (External)।—ऐलोज, आर्स, ग्रैफा, कैल्के, नाइट्रि-ऐसि, सल्फर, थूजा।

बहुव्यापक सर्दी।—"इन्फलुएञ्जा" देखिये।

बहुमूत्र (Diabetes)—(१) Diabetes Insipidus।—ऐसेट-ऐसि, ऐनानथेरम, आर्नि, आर्स, बेलेडो, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास, कैनाब-इण्डि, कास्टि, कोलोसि, हेलोनि, आयोडि, कैलि-आयोड, कैलि-नाइट्रि, लैक-डिफ्लो, लैक्टि-ऐसिड, मर्क-रियालिस-पेरेन, मूरेक्स, नेट्र-मूर, फास-ऐसि, रस-टक्स, सिला, स्पाइजि, टेराक्स इत्यादि।

बहुमूत्र (2) Glycosuria, Diabetes Mellitus)।—ऐसेटिक-एसिड, आर्जेण्ट-मेट, आर्स-ब्रोम, ऐसक्लिविन, बार्बेरिस, बोविस्टा, कैल्के-फास, कूप्रम-मेट, कुररेरा, हीपर, कैलि-ब्रोम, कैलि-मूर, कैलि-फास, क्रियोजो, लैकेसि, लैक्टिक-एसिड, लैक-डिफ्लो, लिथि-कार्ब, लाइकोपोडि, लाइकोपस, मैग-सल्फ, मैग-आस्ट्र, मस्कस, नेट्र-सल्फ, नक्स-वोम, ओपि, फास, फास-एसिड, पिकरि-ऐसि, प्लम्ब, पोडोफाइ, रैटानि, सिकेलि, सिजिजियम, सल्फ्यु-एसि, टेरेण्ट, टेरिबिन्थ, थूजा इयुरैनि-नाइट्रेट।

बाघी (Bubo)—

„ **पुट्ठेकी** (Groin)।—अरम-मेट, अरम मूर, नेट्र, एपिस, आर्स, बैडियेगा, ब्यूफो, क्लिमेटिस, कार्बो-ऐनि, हिपर, ग्रैफाइ, लैकेसि, लाइकोपोडि, मर्क, मर्क-कोर, कास्टिकम, नाइट्रिक-एसि, फाइटो, सिफि, सलफर, कैलि-आयोड।

„ **बगलकी गांठ** (Axilla)।—एपिस, बैराइटा-कार्ब, बेलेडो, ब्रायोनिया, कार्बो, क्लिमेटिस, कोनाय, क्रोटेलस, हिपर, हाइड्रैस्टिस, आयोड, कैलि कार्ब, लैकेसि, लाइकोप, मर्क-सोल, नेट्रम-सल्फ, ऐसिड-नाइट्रि, फास, रसटक्स, सल्फ, साइलि।

वात-व्याधि (आमवात—Rheumatism) (नया और पुराना)—ऐब्रोट, ऐकोन, ऐक्टिया-स्पाइकेटा, ऐगारि-मस्क, ऐमोनिया-मूर, ऐमोनियम-फास, ऐनाकार्ड, ऐण्टि-क्रूड, ऐण्टि-टार्ट, एपिस, एपोसाइनम, आर्निका, आर्सेनिक, ऐसाफिटिडा, आरम, बेलेडो, बेलिस, बेञ्जोइक-

एसिड, बार्बेरिस, बोविस्टा, ब्रायोनिया, कैक्टस, कल्केरिया-कार्ब, कैल्को-फ्लूर, कैल्को-आयोडिटम, कैल्को-फास, कैल्को-सल्फ, एसिड-कार्बोलिक, कालोफाइलम, कास्टिकम, कैमो, चेलिडो, चायना, सिमिसि, काफिया, कोलचिकम, कोलोसिन्थ, कोनायम, इयुपेट, फेरम, फेरम-फास, फ्लुरिक-एसिड, फार्मिका, जेल्स, ग्रैफाई, गुयेकम, हैमा, हीपर, हाइपो, इग्नेसि, इलिसि, आयोड, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, कैलि-सायनेटम, कैलि-आयोड, कैलि-सूग्र, कैलि-फास, कैल्मिया-लैटि, क्रियोजो, लैक-कैन, लैकेसि, लैकनेन्थिस, लैक्टिक-एसिड, लीडम, लिलियम, लोबेलि, लाइकोपोडि, लाइकोपस, मैग्नेशिया-कार्ब, मैग्नोलिया, मेरम-वेरम, मिनियैन्थिस, मर्क, मेजे, नेट्रम, नेट्रम-फास और नेट्रम-सल्फ, नक्स-मस्कोटा, नक्स-वोमिका, पैलेडि, पेट्रो, फाइटो, प्लम्बम, पल्स, रैनानकुलस, रोडोड, रस-रैडि, रस-टक्स, रूटा, सेलिसिलि-एसिड, सैंगु, सार्सा, सिपिया, साइलि, स्पाइजि; स्पञ्जि, स्टिक्टा, सलफर, टैरेण्टु, टिलिया, थूजा, वैलेरि, विरेट्रम, विरेट्रम-विर, विस्कम, वायोला, जिङ्कम।

वात-व्याधि-ग्रीवादेशीय (Stiff neck or wryneck)।—ऐकोन, लैकनेन्थिस, बेलेडो, सिमिसि, ब्रायोनिया, चेलिडो, रसटक्स, मैग्ने-फास इत्यादि।

„ **पैशिक** (Muscular)।—सिमिसिफूगा (मैक्रोटिन), सैंगुइनेरिया, ब्रायोनिया, रस-टक्स, कोलचिकम, रैनानकुलस, जेल्स, डलकामारा, कास्टिकम इत्यादि।

„ **स्कन्धवात** (Omalgia)।—सैंगुनेरिया, फेरम, फेरम-फास, नक्स-मस्कोटा इत्यादि।

„ „ **साथ पक्षाघात**।—आर्निका चायना, रस-टक्स, रूटा।

बाधक-वेदना (ऋतुशूल देखिये)।—कष्टरज, रजकृच्छ्रता प्रभृति (Dysmenorrhœa)।

बिम्बिका (Pemphigus)।—कैन्थ, रैनानकुलस, रस-टक्स, सलफ्यूरिक-एसिड।

बुद्धि-वैकल्य (Dementia)—

१म प्राथमिक मुख्य (Acute)।—एसिड-फास, ऐनाकार्डियम इत्यादि।

२य मद्यपान-जनित (Alcoholic)।—नक्स-वोम, लैकेसिस, इत्यादि।

३य हस्तमैथुनकी वजहसे (Self abuse)—एसिड-फास, कोनायम, ऐनाकार्डि, सिकेल।

४र्थ वार्धक्यकी वजहसे (Senility)।—बैराइटा-कार्ब, कोनायम, क्रोटेलस, एसिड-फास, केल्के-कार्ब, ऐनाकार्ड।

५वां यान्त्रिक (Organic) **और गौण** (Secondary)।—हेलिबोरस, जिङ्कम, लिलियम, केल्के-कार्ब, कैप्सिकम।

बेरी-बेरी रोग (Beri-Beri)।—ऐगरिकस, एपिस, ऐसेटिक-एसिड, ऐपोसाइनम-कैन, आर्सेनिक, डलकामारा, फेरम-फास, जेल्स, केलि-कार्ब, केलि-फास, आइरिस, सैंगुनेरिया, आर्जेण्ट, केक्टस, चायना, डिजिटेलिस, लैकेसिस, लाइकोप, फास्फोरस, रस-टक्स, सलफर, ब्रायोनिया, सिपिया, लैथिरस, सिकेलि, क्रोटेलस, जेन्सिङ्ग, नेट्रम-सल्फ, प्लम्ब, एमिल-नाइट्रेट, इलाटेरियम इत्यादि।

भगन्दर (Fistula in ano)।—ऐलोज, आरम-म्यूर, बार्बेरिस, केल्के-कार्ब, केल्के-फास, कैलेण्डुला, कास्टिकम, फ्लूरिक-एसिड, केल्के-सल्फ, हाइड्रैस्टिस, इग्ने, क्रियोजोट, लैकेसिस, नक्स-वोम, सिपिया, साइलि, सलफर इत्यादि।

भूसी उतरना (Pityriasis)—ऐगारि, ऐण्टि-क्रूड, आर्जेण्ट-मेट, आर्स, आरम, ब्रायो, केल्के-कार्ब, कैन्थ, क्लिमेटि, डालका, ग्रैफा, क्रियोजो, लैकेसि, लीडम, लाइकोपोडि, मर्क्यूर, मेजेरि, नेट्रम-म्यूर, ओलियैण्डर, पेट्रोल, फास, सिपि, साइलि, सलफर, थूजा।

मध्यान्त्र क्षय-रोग (Tabes Mesentrica)।—बैराइटा-कार्ब, बैसिलिनम, बोविनम या टियुबर्क्यूलिन, पल्सेटिला, केल्केरिया-फास, केल्के-आयोड, साइलिसिया, सलफर, हिपर-सल्फर, इत्यादि।

मन्यौष (लिङ्गमुण्डकी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह और पीब निकलना, इसे ही अङ्गरेजोंमें Balanitis कहते हैं)। औषध व्यवस्था—चायना, मर्कुर, मेजे, नाइट्रिक-एसिड, नक्स-वोम, पल्स, सिपिया, सलफर, थूजा।

,, **उपदंश या प्रमेह विषके कारण** (Syphilitic or Sycotic)।—मर्कूर, नाइट्रि-ऐसि, थूजा।

मलद्वारके भीतर खुजली (Itching in the anus)।—ऐकोन, एलूम, ऐम्ब्रा, ऐमोन-कार्ब, ऐनाकार्ड, एण्टि-टार्ट, आर्जेण्ट, बेराइटा-कार्ब, कैल्के-कार्ब, कार्बो वेज, क्रोक, ग्रैफाई, इग्ने, कैंप्सि, लाइकोपोडि, मर्क, नाइट्रिक-एसिड, नक्स-वोम, फास, प्लाटिना, रस-टक्स, सिपिया, साइलि, स्पाइजि, सलफर, टियुक्रि, थूजा, स्टैनम, जिङ्कम।

मलद्वारमें टपक।—ग्रैटियोला, लैकेसि, नेट्रम, रोडोडेण्ड्रन।

मलद्वारका फटना (Fissure of the anus)।—एस्कुलस-हिप, बार्बेरिस, कास्टिकम, ग्रैफाइटिस, हाइड्रैस्टिस, इग्नेशिया, लैकेसिस, ऐसिड-नाइट्रिक, पियोनिया, पेट्रोलिनम, प्लाटिनम, रैटानहिया, रस-टक्स, सिपिया, साइलि, सल्फुरिक-एसिड, थूजा इत्यादि।

मलद्वारकी खुजली (Pruritis ani)।—ऐलूमि, ऐलोज, आर्स, कैल्के, कार्बो-वेज, कास्टिकम, सिना, कालिन्सोनिया, कूप्रम-आर्स, फेरम, इग्ने, लाइकोप, मेरम-वेरम, नाइट्रिक-एसिड, रैटानहिया, सिपिया, सलफर इत्यादि।

मसा।—ऐलूमि, ऐमोन, आर्नि, बोरैक्स, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, कास्टि, कोना, फेरम, ग्रैफा, लाइकोप, नेट्रम, पिक्रि-ऐसि, फास-ऐसि, फास, सिपिया, साइलि, स्टैनम, सलफर, थूजा, युरेनि, जिजिया।

,, **आँखके कोनेमें**।—नेट्रम, स्टैनम, सलफर।

,, **ऊपरी पलकपर**।—ऐलूमि, ऐमोन-कास्टि, फेरम, फास-ऐसि, पल्स स्टैफिसे, सलफर, इयुरैनियम।

,, **निचली पलकपर**।—ग्रैफा, फास, रस-टक्स, सेनेगा।

,, **बार-बार होना रोकना**।—ग्रैफा, स्टैफि, साइलि।

मसानेकी बीमारी (Kidney disease—वृक्क ग्रन्थिकी बीमारी)—

(१) बार्बेरिस, डिजिटे, हेलिबो, कैलि-हाइड्रो, मर्क, मर्क-कोर, ओलियम-सैण्ट, फास, प्लम्ब, टेरिबिन्थ इत्यादि ।

(२) आर्जेण्ट, एपिस, आर्स, अरम-मेटालिकम, कैन्थरिस, कैनाबिस, मर्क-बिन, सिनाबेरिस, कैल्केरिया-कार्ब, चायना, कलोस्टेरिन, नूफर-लूटिया, सार्सापेरिला, लाइकोपोडियम इत्यादि ।

मसूढ़े फूलना और प्रदाह (Swelling and inflammation) ।—एमोन-म्यूर, बेराइटा, बेलेडो, बोरैक्स, कैल्के, कास्टिकम, कैमो, चायना, सिमिसि, सिस्टस, ग्रैफाई, हिपर, मर्क, नेट्रम, नाइट्रिक-एसिड, फास, साइलि, स्टैफि, सलफर ।

„ **फोड़ा और नासूर** (Absce:s & Fistula) ।—कैल्के, कास्टिक, लाइकोप, नेट्रम, पेट्रो, साइलि, स्टैफि, सलफर ।

„ **मांस पैदा होना** (Fleshy excrescences) ।—आयोड, साइलि, स्टैफि, सलफर, थूजा ।

„ **सड़न, जखम इत्यादि** (Ulceration of the gums, gangrenous)—ऐसेटिक-एसिड, एलम, कैल्के, कार्बो-वेज, कैलि-कार्ब, लाइकोप, मर्क, नेट्रम-म्यूर, साइलि, स्टैफि, सलफर, सलफ़्रिक-एसिड, थूजा ।

„ **बाहर निकल पड़ते हैं** (Retraction of gums) ।—ऐण्टि-क्रूड, आर्जेण्ट, बैराइटा, बोविस्टा, कार्बो-वेज, सिस्टस, डल्कामा, आयोड, कैलि-आयोड, लैक-कैन, मर्क, फास, प्लम्ब, सिपिया ।

„ **से सहजमें ही रक्त-स्राव** (Scorbutic gums) ।—एमोन,-म्यूर, कैल्के, ब्रायो, आर्स, कार्बो-वेज, सिस्टस, मर्क, नाइट्रिक-एसिड, कास्टिकम, डालका, हाइड्रैस्ट, सिपिया, सलफर, स्टैफिसि ।

„ **क्षयके कारण दाँतोंकी शिथिलता** (Looseness of teeth)—फास-एसिड, ऐण्टि-क्रूड, कैल्के, कार्बो-वेज, मर्क, रस, सिपिया ।

मसूढ़ेमें पारेके अपव्यवहारके कारण रोग ।—कार्बो-वेज, हिपर, नाइट्रिक-एसिड, फाइटो, स्टैफेसि ।

,, **में रोग नमक व्यवहारके कारण** । — कार्बो-वेज, स्पिरिट, नाइटर-डलसिस ।

मस्तिष्कका विकम्पन (Concussion of Brain) । (प्रथमावस्थामें)—हाइपेरि, साइकूटा, हेलिबो, पल्स, रस-टक्स, आयोड, लेकेसि, सलफर, स्पाइजि, आर्निका, ऐकोन, बेलेडो, ओपि इत्यादि ।

मस्तिष्कावरक झिल्ली-प्रदाह (Meningitis) ।—ऐकोनाइट, इथूजा, ऐनाकार्ड, ऐण्टि-टार्ट, एपिस, आर्निका, बेलेडो, ब्रायोनिया, कैन्थ, क्लोरोफार्मम, साइकूटा, सिमिसिफ्यूगा, सिना, कूप्रम, डिजिटे, जेल्स, ग्लोनोइन, हेलिबो, हिपर, हाइड्रोसियानिक-एसिड, हायोस, हाइपेरि, लैकेसिस, लैकनैन्थिस, मर्क, नक्स-वोम, ओपियम, पल्स, स्ट्रैमो, विरेट्रम, जिङ्कम ।

,, **बच्चोंका** (Children) ।—ऐकोन, बेलेडो, साइलि, सिना, कूप्रम, हेलिबो, एपिस, ग्लोनोइन ।

,, **मस्तिष्कावरक और मेरुमज्जीय आवरक झिल्ली प्रदाह** (Cerebrospinal meningitis) ।—इथूजा, ऐगारि, ऐमोन-कार्ब, एपिस, आर्नि, आर्स, बैप्टि, बेलेडो, ब्रायो, कैक्टस, कैम्फोरा, कैना-इण्डि, कैन्थ, साइकूटा, सिमिसि, काकु, क्रोटेलस, कूप्रम, ऐसिट, डिजि, जेल्स, ग्लोनोइन, हेलिबो, हाइड्रोसि-ऐसिड, हाइपेरि, इग्ने, लाइकोपोडि, नेट्र-सल्फ, नक्स-वोम, ओपि, फास, प्लम्ब, रस-टक्स, सोलेनम, टैरेण्ट-ऐल्बा, वेरेट्र-विर, जिङ्कम ।

,, **गुटिका-दोषयुक्त** (Meningitis tubercular) ।—मस्तिष्कोदक पीड़ा—इथजा, एपिस, आर्जेण्ट-नाई, आर्स, कैडमि-सल्फ, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास, कार्बो-वेज, चायना, कैलि-कार्ब, इग्ने, कैम्फर, कार्बोलिक-एसिड, क्रोटोन-टिग, फेरम-फास, हेलिबो, कैलि-ब्रोम, लाइकोपोडि, मर्क, नक्स-वोम, नेट्रम-सल्फ, फास-एसिड, सोरि, पल्स, सिपि, सलफर, साइलि, वेरेट्र-ऐल्ब, जिङ्कम ।

मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय (Congestion of the brain)।—ऐकोन, ऐमोन-म्यूर, आर्निका, बेलेडो, ब्रायोनि, साइक्यूटा, डिजिटे, ह्विपर, इग्नेशिया, मर्क-सोल, नक्स-वोम, रस-टक्स, रूटा इत्यादि।

मस्तिष्कका कोमल हो जाना (Softening of the brain)।—ऐम्ब्राग्रीसिया, नक्स-वोम, फास्फोरस, पिक्रिक-एसिड, जिङ्कम।

„ **को दुर्बलता या क्लान्ति।**—(Brain fag)।—कैलि-ब्रोमिटम, एसिड-पिक्रिक, फास्फोरिक-ऐसिड, फास्फोरस इत्यादि। (फेरिङ्गटन)। डा० लिलियेन्थलके मतसे—ऐनाकार्ड, आर्जेण्ट, बैराइटा-कार्ब, कैल्के, साइप्रि (Cypri.), जेलस, इग्ने, कैलि-ब्रोम, लाइकोप, नेट्रम, नक्स-वोम और जग, फास, फास-ऐसिड, पिकरि-ऐसिड, साइलि, जिङ्कम-फास, **इसी वजहसे अनिद्रा।**—काफिया, हायोसा, स्कुटेले, जिङ्कम।

„ **पक्षाघात** (Paralysis of the brain)।—आर्सेनिक, लोरोसिरेसस, लाइकोपोडि, लूप (Lup), जिङ्कम।

माथेका केश झड़ना (Falling of hairs)।—

(१) **शीर्षदेशसे** (Crown)।—बैराइटा-कार्ब, कैल्के, फास्फोरस, लाइकोपोडि, सिपिया, साइलि, जिङ्कम।

(२) **सामनेसे** (Fore-head)—आर्स, बेलेडो, होपर, मर्क, नक्स-वोम, फास, नेट्रम, साइलि, सलफर।

(३) **पीछेसे** (Occiput)—कैल्के, कार्बो-वेज, हीपर, पेट्रो, सिपिया, साइलि, स्टैफि, सलफर।

(४) **बगलसे** (Sides)—बोरैक्स, ग्रैफाइ, कैल, नेट्रम, फास-एसिड, जिङ्कम।

(५) **कनपटी या कपालके ऊपरसे** (Temple)—कैल्के, ग्रैफाई, लाइको, मर्क, नक्स-वोम, नेट्रम-म्यूर, सोराइन, सेबाइना।

(६) **जगह-जगहके केश उड़ना** (Baldness)।—कैन्थरिस, आयोड, फास्फोरस। एक चम्मच नमक एक पाइण्ट पानीमें गलाकर उससे उस स्थानको रगड़नेपर बहुत लाभ होता है, जहाँके केश उड़ गये हों।

साषक विष (Sycosis) धातु।—केलि-बाई, नेट्रम-सल्फ, नाइट्रिक-एसिड, पेट्रोलि, पल्स, सिनाबेरिस, मर्क-सोल, सार्सापेरिला, स्टेफिसे, थूजा, मेडोरिनम इत्यादि।

मुखमण्डलका स्नायुशूल (Prosopalgia)।—ऐकोन, ऐगरिकस, ऐगनस, एमिल-नाइट्रेट, आर्जेण्ट-नाई, आर्सेनिकम, ऐट्रोपिनम, बेडियेगा, बेराइटा-कार्ब, बेलेडो, बिस्मथ, ब्रायोनि, कैक्टस, कैप्सिकम, कैल्के-कार्ब, कैन्थरिस, कार्बोलिक-ऐसिड, कास्टिकम, सीड्रन, सिपा, कैमो, चेलिडो, चायना, चिनि-सल्फ, सिमिसि, सिना, कोचिनेला, काकुलस, काफिया, कोलचिकम, कोलोसिन्थ, कोनायम, क्रोटोन, कूप्रम, डलका, इयुकेलिप्टस, (सामयिक मुँहका स्नायुशूल)। फ़िरम, जेल्स, ग्लोनोयिन, हेलिबो, इग्ने, आइरिस, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, कैलि-सायेनेटम, कैलि-म्यूर, कैलि-फास, कैलमिया, क्रियाजोट, लैकेसि, मैग्ने-कार्ब, मैग-फास, मर्क-आयोड, मर्क-सोल, मेजेरि, नेट्रम, नक्स-वोम, फास, प्लैण्टेगो, प्लाटोना, रोडो, रस-टक्स, रोबिनि, सैबाडि, रैम्बु, सिपिया, साइलि, साइजि, स्टैनम, स्टैफ, स्ट्रैमो, सल्फ, टैरेण्ट, थूजा, वेलेरि, विरेट्रम, बार्बेस्कम, जिङ्कम, जिङ्कम-सल्फ।

मुँहका स्नायुशूल (Facial neuralgia) **प्रादाहिक**—ऐकोन, आर्निका, ब्रायो, बेलेड इत्यादि।

” **आमवात या सन्धिवातज**—ऐकोन, आर्स, ब्रायो, कास्टिक, कोलचि, पल्स, नक्स-वोम, रस-टक्स, साइजि इत्यादि।

” **स्नायविक**—साइजि, हायोसा, कूप्रम, नक्स। **पारद-विकार**—अरम, कार्बो-वेज, सल्फ इत्यादि।

मुँहका पलकोंके ऊपरी भागमें—(Supra-orbital)।—आर्स, चायना, सल्फ, कैलि-बाई, कैलि-सायेनाइट। **फूली आँखमें**—बेल, जेल्स, स्पाइजे, स्ट्रैमो, सलफर।

मुँहासा (Acne)।—एलम, ऐण्टि-मोनि, आर्स, बेलेडो, बोरैक्स, कार्बो-वेज, कास्टि, क्लिमे, काकुर, कोनाय, डालका, मर्क, नेट्रम, नाइट्रि-एसि, नक्स-वोम, फास, फास-एसि, पल्स, सेबाइना, सिपि, सेलेनि, स्टैफिसे, सलफर, जिङ्कम।

,, **युवकोंका** (Acne Simplex)।—आर्स, बेलेडो, कैल्के, कार्बो-वेज, हीपर, लेकेसि, लीडम, नेट्रम, नक्स-वोम, फास-एसि, सेलिनियम, सलफर।

,, **शराबियोंका** (Acne of drunkards)।—एण्टि-क्रूड, नक्स-वोम, आर्स, लैकेसि, सलफर।

,, **बहुत इन्द्रिय परिचालनके कारण** (Sexual abuse)।—कैल्के, कैलि-ब्रोम, फास-एसि, सलफर।

,, **चक्षुगोलकके निचले अंशमें** (Infra-orbital)।—आर्जेण्ट-नाई, बेलेडो, नक्स-वोम, जिङ्क।

,, **छाले** (Apthæ, Sore-mouth)।—इथूजा, एपिस, आर्सेनिक, एरम, बैप्टोशिया, बोरैक्स, ब्रायोनिया, कार्बो-वेज, क्लोरिन, इयुपेटो, हाइड्रैस्टिस, आयोडम, लैकेसिस, मर्क, लाइकोपोडि, नाइट्रिक-एसिड, एसिड-म्यूरियेटिक, फाइटोलैक्का, सैलिसिलिक-एसिड, प्लम्बम, सल्फ्यूरिक एसिड, प्लेण्टेगो-मेजर, स्टैफिसे।

,, **सड़नेका लक्षण** (Canker of the mouth)।—मर्क, एसिड-म्यूर, आर्सेनिक, एसिड-नाइट्रि, कैलि-फ्लोरिकम इत्यादि।

मूत्राधार-मुखशायी-ग्रन्थिका प्रदाह (Prostatisis)।—ऐकोन, इस-कुलस, ऐग्नस, एपिस, अरम, कैक्टस, कास्टिकम, कैनाबिस, चिमाफिला, कोनायम, डिजिटे, फेरम-फास, फेरम-पिकरिकम, आयोड, मर्क, पल्स, सिकेलि, सेलिनियम, सल्फ, थूजा, जिङ्कम, सैबाल-सेरूलेटा।

मूत्राधार-मुखशायी-ग्रन्थिका बढ़ना (Enlargement of the prostatic glands)।—ऐग्नस-कैस्टस, ऐलोज, ऐलूमि, एपिस, बैराइटा-कार्ब, बेञ्जोयिक-एसिड, कैक्टस, कैल्के-कार्ब, कास्टिकम, चिमाफिला, कोपैवा, कोनायम, साइक्लेमेन, डिजिटेलिस, फेरम-पिकरिकम, हीपर-सल्फ, हीपोमेनिस, आयोड, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, लिथियम-कार्ब, लाइकोपोडि, मैग्ने-कार्ब, मर्क, नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-सल्फ, पेट्रोलियम, काकुलस, पल्सेटिला, सेलिनियम, सिपिया, स्टैफिसेग्रिया, सल्फर, आयोड, थूजा, जिङ्कम, सेबाल-सेरूलेटा इत्यादि।

„ **मुखशायी ग्रन्थिसे स्राव** (पाखानेके समय)।—एग्नस, ऐलूमि, कैल्क, कोना, डिजिटेलिस, हीपर-सल्फ, इग्ने, नेट्रम-कार्ब, फास, सिपिया, साइलि, स्टैफि, थूजा, जिङ्कम।

मुख्य या स्वयंभूत रक्तस्वल्पता (Primary anemia)।—फेरम-म्यूर ३x विचूर्ण, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास, पल्स, फेरम-म्यूर, आर्सेनिक ३x, फास्फोरस, बैसिलिनम २००, आर्जेण्ट-नाइ, चायना, हाइड्रैस्टिस, कूप्रम, प्लम्बम, नेट्रम-सल्फ इत्यादि।

मूर्च्छा (Faintings)।—ऐकोन, आर्निका, आर्स, बेलेडो, बार्बेरिस, ब्रायोनि, कैल्के-कार्ब, कैम्फर, कैनाबिस, कैन्थरिस, कार्बो-वेज, कैमो, चायना, काकुलस, काफिया, कोलोसिन्थ, कोनाय, इपिका, क्रियोजो, लैकेसिस, लोरोसि, लीडम, लाइकोप, मैग्ने, मर्क, मस्कस, नाइट्रिक-एसिड, नक्स-मस्केटा, नक्स-वोम, ओलियेण्डर, सिपिया, फास्फोरस, प्लम्बम, पल्स, सिकेलि, रस-टक्स, सिपिया, साइलि, स्पाइजे, स्टैफि, स्ट्रैमो, सल्फ, विरेट्रम, वायोला।

मूर्च्छागत वायु (Hysteria)।—"गुल्मवायु" देखिये।

मूत्रकृच्छ्रता (Dysuria)।—(१) ऐकोन, ऐपोसा-कैन, इस्कलेपियस, चायना, कैन्थ, डलका, लाइकोप, मर्क, नक्स-वोमिका, प्रेरा-ब्रेवा, पल्स, सिपिया, सलफर। (२) आर्निका, आर्स, अरम, बेलेडो, कैक्टस, कैलि-कार्ब, कालोफाइलम, चिमाफिला, कोलचिकम, कोनायम, डिजिटेलिस, इक्विसेटम, एरिञ्जियम, इयुपे-पर्फ, हैमामेलिस,

हिडियोमा, हेलिब्रोरस, हायोसायमस, केलि, नक्स-मस्केटा, फास्फोरम, सार्सा, सेनेसियो, स्टेफेसि इत्यादि ।

मूत्रग्रन्थि-प्रदाह (Nephritis, Inflammation of the kidneys) ।

,, **नया** ।—ऐकोन, ऐलुमि, एपिस, आर्जेण्ट-नाई, आर्निका, बेलेडोना, बार्बेरिस, ब्रायोनिया, केनाबिस, केन्थरिस, कास्टिकम, चिमाफिला, कक्कस-केक्टाई, कोलचिकम, एरिजिरन, हेलिबो, हेपर, केलि-कार्ब, केलि-आयोड, मर्क, मिलिफो, नैपथेलिन, नेट्रम, नक्स-वो, ओपियम, फास, फास्फोरिक-एसिड, फाइटो, रस-टक्स, सेनिसियो, टेरिबिन्थ, थूजा ।

मूत्रनलीका सङ्कोचन या रुकना (Stricture of the uretyra) ।—ऐकोन, बेलेडो, केम्फर, केन्थरिस, कार्बो-वेज, चायना, साइकूटा, क्लिमेटिस, काकुलस, डिजिटे, डालका, मर्क, नक्स-वोम, नाइट्रिक-एसिड, पल्स, पिट्रोसे, साइलि, रस-टक्स, सलफर इत्यादि ।

मूत्राश्मरी या मूत्र-पथरी (Renal Calculus) ।—(Gravel or Stone) ।—(१) बार्बेरि, केन्थ, लाइकोपोडि, सिपिया । (२) केल्के-कार्ब, चायना, नाइट्रि-एसिड, काकुलस, नक्स-वोम, पेरेरा-ब्रेवा, पेट्रोलि, फास, पल्स, रूटा । (३) ऐसिट-क्रूड, एपिस, ऐपोसाइ, आर्जेण्ट-नाइट्रि, ऐलोज, आर्स, बेलेडो, बेञ्जो-ऐसि, केक्टस, कार्बो-वेज, चायना, कोलचि, कोलोसि, कूप्रम, डिजिटे, एपिजि, इकुई, युपे-पर्फ, ग्रेफा, हाइड्रेस्टि, क्रियोजो, लेकेसि, लिथियम, मेजेरि, नैजा, नेट्र-मूर, नेट्र-सल्फ, नाइट्रि-ऐसि, नक्स-वोम, ओपि, टेलेडि, फास, सार्स-पेरि, थूजा, इयुवा-उर्सि ।

मूत्र-शूल (Renal Colic) ।—(१) बार्बेरिस, लाइकोप, केन्थरिस, सिपिया, ऐपोसाइ, आर्निका, इरिजि, चायना, युवा-उर्सी, ऐसिट-क्रूड, बेलेडो, बेञ्जो-एसिड, केल्के, हाइड्राञ्जिया, ओपियम, आइपोमिया ।

मूत्रमार्ग-प्रदाह (Urethritis) ।—ऐकोन, बेलेडो, ऐगनस, केनाबिस, केन्थरिस, केप्सिकम, सिनाबेरिस, क्लिमेटिस, कोपेबा, डलकामारा, फेरम, हेपर, लीडम, लाइकोप, मर्क, मेजेरि, एसिड-नाइट्रिक, पेट्रो, पिट्रोसेलिनम, सैंगु, सिपिया, साइलि, सल्फ, थूजा ।

मूत्ररोध (Retention of urine)।—कैन्थरिस, एपिस, कैनाब, आर्स, लाइकोप, नक्स-वोम, ओपियम, बेलेडो, जेल्स, पिट्रोसेलिनम, बार्बेरिस, चिमाफि, सिना, क्लिमेटिस, कक्कस, कोनायम, कोपेवा, इक्विसेटम, जेल्स, हायोसा, कैलि-बाई, लिथियम, मैग्न-मूर, प्रेरा-ब्रेवा, पल्स, सार्सा, सलफर, टलेस्पि।

मूत्रनाश या पेशाब पैदा हो न होना (Suppression of Urine)—ऐकोन, आर्निका, आर्स, आरम, बेलेडो, कैम्फर, कैनाबिस, कैन्थ, कैप्सि, कार्बो-वेज, चायना, सिना, कोलचि, कोनाय, कूप्रम, डलका, ग्रैफाइ, हिपर, हायोसा, लैकेसि, लोरोसि, लाइकोप, मर्क, नक्स-वोम, ओपियम, प्लम्बम, पल्स, रस-ट, स्ट्रैमो, सलफर, विरेट्रम, जिङ्कम।

मूत्रविकार या मूत्रद्वार-विकार (Urine)।—आर्स, अरम, एपिस, कैनाबिस, कार्बोलिक-एसिड, कूप्रम, हाइड्रो-एसिड, आयोड, निकोटीन, फास्फोरस, टेरिबिन्थ, ओपियम, एमोन-कार्ब, एरम-ड्राइफो, बेलेडो, कोनायम, मर्क-कोर, कैलि-ब्रोम, नक्स-मस्केटा, डिजिटेलिस इत्यादि।

मूत्राशय-प्रदाह (Cystitis)।—ऐकोन, ऐमोन-कार्ब, एपिस, आर्नि, आर्स, ऐस्पारेगस, बेलेडो, बार्बेरिस, कैक्टस, कैलेडियम, कैम्फोरा, कैनाइण्डि, कैना-सैट, कैन्थ, कास्टि, कोलचि, कोलोसि, कोनाय, चिमाफि, कोपेवा, डिजि, डाल्का, इलाटेरि, इकुई, इरिजि, इयुपेट-पपुर, बेल्स, हेलिबो, हायोसा, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, लैकेसि, लिलि-टिग, लिथि-कार्ब, लाइकोपोडि, मर्क-नाइट्रि-एसिड, नक्स-वॉम, पैरे-ब्रेवा, फास-एसिड, पिपर-मेन्थि, पोलिगो, पापुला, प्रूनस-स्पिन, पल्स, सारसा-पेरि, सेनेगा, सिपि, सलफर, सलफर-आयोड, टैरेण्टु, टेरिबिन्थ, थूजा, इयुवा-उर्सि इत्यादि।

मूत्राशय-प्रदाह—

” **पक्षाघात** (Cystoplegia)।—ऐलुमिना, आर्स, कास्टि, साइक्यूटा, डलकामारा, जेल्स, हेलिबो, हेलोनि, मूरर-ऐसिड, ओपि, प्लम्बम, पल्स, रस-टक्स, सिकेलि-कोर, साइलि, टैबेकम, थूजा, जिङ्कम।

मूत्राशय ग्रीवाका पक्षाघात (Neck of the bladder)।—आर्स, हेलिबो, लोरोसि, नेपथेलिन, टेरिबिन्थ (प्रसवके बाद)—फेरम-फास, क्रियोजो, नक्स-वोम, जिङ्कम, आर्स, बेलेडो, कास्टिक, जेल्स, हेलिबो, हायोस, लैके, लोरोसि, फाइस-स्टिग्मा इत्यादि।

,, **आक्षेप** (Cystospasmus)।—आर्निका, आर्स, कैन्थरि, कैप्सिकम, कैम्फर, क्लिमेटिस, काकुलस, कोलचि, कोपेवा, डिजिटे, इयुपे-पर्पु, फास-एसिड, फाइसस, पल्स, सार्सा-पेरिला।

मेद-वृद्धि (Obesity)।—टैरेण्टुला, टेरिबिन्थिना, ऐमोन-ब्रोम, ऐमोन-म्यूर, अरम, थूजा, आर्स, कैल्के-आर्स, कैल्के-कार्ब, कैप्सि, फेरम, ऐण्टि-क्रूड, कूप्रम, लाइकोपोडि, पल्स, सल्फर, ऐगरिकस, ऐङ्गस्टूरा, ऐसाफि, बेलेडो, कैमो, क्लिमे, कोनायम, क्रोकस, ग्रैफाइ, गोयेक, हायोस, लैकेसि, मर्क, सेनेगा, साइलि, वायोला-ओडोरेटा, फ्यूकस-वेसि (Fucus ves)।

मेरुदण्डका उपदाह (Spinal Irritation)।—आर्निका, सिमिसिफ्यूगा, रस-टक्स, आर्सेनिक, टेल्यूरियम, सिकेलि, पिकरिक-एसिड, ऐगरिकस, आर्जेण्ट-नाइ, थूजा, सल्फर, साइलिसिया प्रभृति।

मेरुमज्जाका पक्षाघात (Paralysis of Spinal column)—ऐकोनाइट, जेल्स, बेलेडो, कैल्केरिया-कार्ब, नक्स-वोमिका, कास्टिकम, ओपियम, सलफर इत्यादि।

,, **प्रदाह** (Myelitis) **नया**।—ऐकोन, बेलेडो, नक्स-वो, साइ-क्यूटा इत्यादि।

,, **पुराना**।—आक्जेलिक-एसिड, आर्स, प्लम्बम, पिकरिक एसिड, मर्क, फास्फोरस, साइलिसिया इत्यादि।

,, **रक्ताधिक्य** (Hyperæmia)।—आर्स, हाइपेरि, रस-टक्स, सलफर।

,, **रक्तस्राव** (Spinal apoplexy)।—गुयेकम इत्यादि।

,, **शोथ या जल-सञ्चय** (Spinal bifida)।—आर्निका, आर्स, ऐसाफि, बेराइटा, बेलाडो, कैल्के, कैलेण्डुला, कैनाबिस,

कार्बो-वेज, डल्का, इयुपे, ग्रैफाइट, हिपर-सल्फर, लैकेसिस, लाइकोपोडि, मर्क, रूटा, सिपिया, स्टैफिसे, साइलि, सल्फर इत्यादि।

मेरुदण्डका (कशेरुकास्थि) **अस्थिका प्रदाह** (Inflammation of the vertebra)।—फास्फोरसके साथ नेट्रम पर्यायक्रमसे, ऐसाफिटिडा, बेलेडो, हिपर, आयोड, मेजे, साइलि, सल्फर।

,, **अस्थिमें पीब-सञ्चय या फोड़ा** (Abscess)।—कैल्के-आर्स, कैल्के-आयोड, कैल्के-फास, नेट्रम-फास, साइलि, सल्फर।

मेरुमज्जाका क्षय (Locomotor ataxia)।—एसिड-फ्लूरिकम, बेलेडो, सिकेलि, अरम, कैलि-आयोड, पिकरिक-एसि, आर्जेण्ट-नाइ, नक्स-वोमिका, फास्फोरस, मेडोरिनम, इग्ने-फास, ऐलूमेन, आर्स, लाइकोपोडि, कार्बो-वेज, ऐङ्गस्टुरा इत्यादि।

,, **रक्ताल्पता** (Spinal anemi)।—आर्स-आयोड, ऐसिड-फास, कैल्के-कार्ब, चायना, सिकेलि, फेरम।

मेलेरिया ज्वर (Malaria)।—ऐब्मिन्थियम, ऐकोन, एलोस्टोनिया, ऐलूमिना, ऐमोन-मूर, ऐमोन-पिकरिकम, ऐण्टिम-क्रूड, ऐण्टिम-टार्ट, एपिस, ऐरानिया-डायाडेमा, आर्निका, आर्स, बेप्टि, बेरा-कार्ब, बेलेडोना, बोविष्टा, ब्रायो, कैक्टस, कैल्के-कार्ब, कैम्फोरा, कानचाला, कैन्थ, कैप्सिकम, कार्बो-वेज, कार्बो-एसिड, कैसकेरि, कास्टि, सिड्रन, कैमो, चेलिडो, चायना, चिनि-आर्स, चिनि-सल्फ, कार्नास-साइकूरटा, साइमेक्स, सिना, काकुरलस, काफि, कोलचि, कार्नास-सारसि, कार्नास-फ्लोट, कूररेटा, इलेप्स-कोरैल, इलेटेरि, इयुवैलि, इयुपेटो-पर्फो, इयुपेटो-पपुर, फेरम, जेलस, हेलिबो, हिपर, हाइड्रैस्टि, हायोसा, इग्ने, आयोडि, इपिक, कैलि-बाइ, कैलि-ब्रोम, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, लैकेसि, लैकनैन्थिस, लिडम, लोबेलिया-इन्फ्लै, लाइकोपोडि, मैग-कार्ब, मैग-मूर, मैग-सल्फ, मेनियैन्थिस, मर्क-पेरेन, मर्क, मेजेरि, मार्फि, नेट्रम-मूर, नेट्रम-सल्फ, नाइट्रि-एसिड, नक्स-मस्केटा, ओपि, पेट्रोलि, फास-एसिड, फास,

प्लैनेट, प्लम्ब, पोडोफाई, पोलिगो, सोरि, पल्स, रस, सैबाडि, सेम्बु, सिपि, स्पाइजि, स्टैनम, स्टैफिस, स्ट्रैमो, सलफर, टैरेण्टु, थूजा, वैलेरियाना, वेरेट्र-ऐल्बम।

मैलेरिया-जनित स्वल्प-विराम ज्वर (Remittent Fever)।—ऐकोन, आर्स, ब्रायो, कैमो, चिनिनम, कोलोसि, काकुल, डिजिटे, इयुपे-पर्फो, इपिक, नक्स-वोम, पल्स, रस-टक्स, सल्फर, वेरेट्रम।

„ **धातु-विकार** (Malarial Cachexia)।—आर्स, ऐरानिया, डायाडेमा, आर्निका, एसिड-फास, सिड्रन, कैप्सि, इयुपेट-पर्फो, इग्ने, इपिक, फेरम-मेट, नेट्रम-म्यूर, मर्क-बिन-आयोड, नक्स-वोम, पल्स, सियानोथस, चायना, सल्फर इत्यादि।

„ **शैशवीय स्वल्प-विराम ज्वर** (Infantile remittent fever)।—ऐकोन, ऐमोन-म्यूर, ऐण्टि-क्रूड, एपिस, आर्स, बेलेडो, बोरैक्स, ब्रायो, कैमो, सिना, काफि, फेरम-फास, जेल्स, इग्ने, कैलि-ब्रोम, मर्क, नक्स-वोम, पोडोफाई, पल्स, रस-टक्स, सलफर इत्यादि।

मोच खाना (Sprain)।—आर्निका ३ या ३० सेवन और आर्निका θ बाहरी प्रयोग पानी या ओलिव आयल मिलाकर लगाना चाहिये। २४ घण्टे आर्निकाके प्रयोगके बाद यदि लाभ न हो तो रस-टक्स देना चाहिये। काले दागको आर्निका श्रेष्ठ दवा है। लाभ न हो तो बेडि, ब्रायो देना पड़ता है।

मोह-ज्वर (Typhus Fever petechiales)।—ऐकोन, ऐमोन-कार्ब, ऐगरिकस, आर्निका, ऐण्टि-टार्ट, ऐण्टि-क्रूड, आर्सेनिक, बैप्टी, एपिस, बेलेडो, बैराइटा, ब्रायो, कैम्फर, आर्जेण्ट-नाई, कार्बो-वेज, कैमो, चायना, चिनिनम-सल्फ, काकुल, डिजिटे, ग्रैफाइ, जेल्स, हेलिबोरस, हायोसा, इग्नेसिया, इपिका, लैकेसिस, लाइकोप, मर्क, मर्क-कोर, म्यूरियैटिक-एसिड, नेट्रम-म्यूर, मैनसिनेला, नक्स-वोम, नक्स-मस्केटा, ओपियम, फास, फास-एसिड, पल्स, रस-टक्स, रस-टक्स-रडि, सिकेलि, स्पाइजे, स्टैफि, स्ट्रैमो, सल्फ, सल्फ-एसिड, वैलेरियाना, विरेट्रम, जिङ्कम।

यकृत-प्रदाह (Hepatitis) ।—**नया** (Acute)—आरम, ऐकोन, बेलेडो, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, कैमो, चेलिडो, चिनिनम, हिपर, कैलि-कार्ब, लैकेसि, लेप्टेण्ड्रा, लाइकोपोडि, मर्क, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वोम, नाइट्रि-ऐसिड, पोडोफाइ, पल्स, साइलि, सलफर इत्यादि ।

,, **पुराना** (Chronic hepatitis) ।—ऐलूमिन, एम्ब्रा, आर्निका, ऐसाफिटि, अरम, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज, चिनिनम, काकु, कोनायम, डिजि, इग्ने, कैलि, लैकेसि, लाइकोपोड, मैग-म्यूर, मर्क, नेट्रम, नेट्रम-म्यूर, नाइट्रि-एसिड, नक्स-वोम, फास, पोडोफाइ, पल्स, सिपि, साइलि, सलफर इत्यादि ।

,, **शूल** (Hepatalgia) ।—आर्स, बैप्टो, बार्बेरिस, ब्रायो, कैमा, चिनिनम, कालिन्सो, कूप्रम, डिजि, लोरोसि, मर्क, नक्स-वोम, पल्स, रस-टक्स इत्यादि ।

,, **सूख जाना** (Cirrhosis) ।—आर्जेण्ट-नाइट्रि, आर्स, आरम, ब्रायो, कार्डुयस-मेरि, कार्बो-वेजि, चेलिडो, चिनिनम, आयोडि, लैकेसिस, लोटे, लाइकोपोडि, मर्क, नेट्रम-म्यूर, मैग-म्यूर, नक्स-वोम, नाइट्रि-एसिड, फास, प्लम्ब, पल्स, सेलेनि, सिपि, सलफर इत्यादि ।

,, **कर्कट रोग** (Carcinoma hepatitis) ।—आर्स, बेल, कार्बो-ऐनि, कोनाय, हाइड्रैस्टि, लाइकोपोडि, सिपि, साइलि इत्यादि ।

,, **फोड़ा या पीव-सञ्चय** (Abscess of liver) ।—बेलेडो, फेरम-फास, कैलि-म्यूर, ब्रायोनि, चायना, हिपर, कैलि-कार्ब, लैकेसि, मर्क-सोल, नक्स-वोम, पल्स, सिपिया, साइलि, सलफर ।

,, **हाइपरट्राफी** (Hypertrophy of liver) ।—ऐगरिकस, आरम, चेलि, चायना, लाइकोपोडि, मैग्न-म्यूर, मर्क, टिलिया, सलफर इत्यादि ।

यक्ष्माकास, फुसफुसी या क्षय रोग (Tuberculosis of the lungs) ऐकालिफा-इण्डिका, ओसिमम-कैन, बेसिलिनम-बोविनम, कैल्के-कार्ब, हिपर-सल्फ, कैल्मि, लाइकोपोडि, फास, पल्स, स्पञ्जिया, नाइट्रिक-स्टैनम, सलफर, आर्स, ड्रोसेरा, फेरम-आयोड, लैकेसिस,

एसिड, सिपि, साइलि, ब्रायो, कार्बो-वेज, कोनायम, डलकामारा, क्रियोजो, लोरोसिरेसस, लोडम, मर्क, नेट्रम, फास-एसिड, ऐमोन-मूरर, षार्निका, बेलेडो, डिजि, गोयेकम, हायोसा, नक्स-म, नक्स-वोमिका, प्लम्बम, सेम्बुकस, सिकेलि, जिङ्कम, ऐरेलिया, सिमिसिफूगा, हैमामि, हेलिबो, लाइकोपस, लोबेलिया, फेलेण्ड्रनम, सेङ्गु, सिनेसियो, स्टिका, स्टिलिञ्जिया, थेरिड्रिलियम इत्यादि।

यक्ष्माकास, पत्थर काटनेवालोंका (Stone cutteris phthisis)।—
कैल्के, हिपर, लाइकोपोडि, साइलिसिया, लेकेसिस, सलफर।

„ **को प्रथमावस्था**।—हिपर, फास, स्पञ्जिया, सलफर, कैल्के, कार्बो-वेज, लाइकोपोडि, साइलिसिया, लेकेसिस, सलफर।

„ **को द्वितीयावस्था**।—कैल्के, हिपर, साइलि, स्पञ्जिया, ब्रायो, लाइकोपोडि, कैल्मिया, पल्स, सिपिया, सलफर, कार्बो-वेज, कोनाय, ड्रोसे, फेरम, नेट्रम, फास-एसिड, रस-टक्स, स्टैनम, हिपर, जिङ्कम, मर्क-आयोड इत्यादि।

„ **आँतोंका यक्ष्मा** (Tabes mesenterica)।—ऐमोन-कार्ब, कैल्के-कार्ब, कास्टिक, हिपर, आयोड, लेकेसि, मर्क, ओलियम, जैकोरिस, साइलि, फास, सलफर, टियुबर्क्युलिन इत्यादि।

„ **उपसर्ग बहुत पसीना**।—जैबोरैण्डि, फास।

„ „ **रक्तस्राव**।—हायोसा, ऐकालिफा, इरिजिरन, इलैस्पाई, ट्रिलियम, जिरेनिया इत्यादि।

योनिको कोषाच्छादित अर्बुद (Encysted Tumor of the Vagina)।—बैराइटा-कार्ब, साइलिसिया, सिपिया, सलफर ३०, कैल्केरिया ३० इत्यादि।

„ **अस्वाभाविक बर्द्धन** (Morbid growth within Vagina)—
आरम, बेलेडो, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास, कोनायम, ग्रैफा, हिपर, लाइकोपोडि, मर्क्युरियस, मेजेरि, नेट्रम-मूरर, नाइट्रिक-एसिड, पेट्रोलि, फास-ऐसिड, फास, पलस, सिपि, साइलिं, सल्फ-एसिड, सलफर, थूजा, स्टैफिसे।

योनिका कड़ापन (Indurations of vagina)।—बेलेडोना, कैल्के-कार्ब, चिनिनम, क्रिमे, कोनायम, लाइकोपोडि, मैग-मूरर, मर्क्युरियस, पेट्रोलि, पल्स, सिपि, सलफर ।

,, **के भीतरसे आध्मान-वायु निकलना** (Flatus from Vagina)।—ब्रोमि, लैक-कैन, लाइकोपोडि, नक्स-म, फास-एसिड, सैंगुने, टैरेण्ट-हिस्प ।

,, **में नासूर** (Vaginal Fistula)—ऐगरि, ऐण्टि-मोनि, ऐसाफि, आरम, बेलेडो, कैल्के-कार्ब, कास्टि, कोनाय, हिपर, क्रियोजो, लैकेसि, लाइकोप, नाइट्रि-एसिड, पेट्रोलि, पल्स, रूटा, सिपि, साइलि, सलफर, थजा ।

,, **सड़नेकी अवस्था** (Gangrene of Vagina)।—एपिस, आर्स, बेलेडो, कैल्के, चिनिनम, क्रियोजो, लैकेसि, सिकेलि, सल्फ-एसिड ।

,, **स्थान-भ्रष्टता या स्थान-च्युति** (Prolapsus)।—फेरम, आयोड, केलि-फास, हेलोनि, क्रियोजोट, मर्क-सोल, नक्स-मस्कोटा, नक्स-वोम, ओसिमम, सिपिया, स्टैनम ।

,, **स्नायुशूल** (Vaginismus)।—ऐलुमि, आर्स, बेलेडो, बार्बेरि, ब्रोमि, कैक्ट, कैल्के-कार्ब, कैन्थ, कोलोफाइ, कास्टि, कैमो, चायना, सिमिसि, क्रोकस, काफि, कोलोसि, कोनाय, कूरवेब, साइप्रिपोडि, फेरम-फास, ग्रैफा, हैमामि, हेलोनि, इग्ने, केलि-कार्ब, क्रियोजो, लैकेसि, लाइकोपोडि, मर्क्युरियस, मूरिएसिड, नेट्रम-कार्ब, नाइट्रि-एसिड, नक्स-वोम, प्लाटो, रस-टक्स, सेबाइ, सिपि, साइलि, सलफर, टैरेण्टु, थजा ।

रक्तस्राव (Hæmorrhage)।—प्रधान औषध—(१) चायना ; (२) आर्नि, हैमामि, फास, सेबाइ ; (३) ऐकोन, एपिस, बेलेडो, कैल्के, क्रोकस, इरिजि, फेरम, इपि, मर्क, मिलिफो, नाइट्रि-एसि, नक्स-वोम, पल्स, सैंगु, सिपि, सलफर, ट्रिलि ; (४) ऐण्टिमोनि, ऐपोसाइ, आर्स, कैनाबिस, कैप्सि, कार्बो-ऐनि, कार्बो-वेज, सिमिसि, कैमो, कालिन्सो, कूप्रम, ड्रोसेरा, जेल्स, ग्रैफा, हेलिबो, हायोसा, आयोडि,

आइरिस, कैल्मि, लकेसि, लीडम, लाइकोपोडि, लाइकोपस, प्लम्ब, पल्स, रस-ट, सिकेलि, सेनेसियो, साइलि, स्ट्रैमो, सल्फ-एसिड, विरेट्रम-विर, जिङ्कम इत्यादि।

रक्तस्राव मुख्य कारणको वजहसे (For active Haemorrhage)।—ऐकोन, बेलेडो, क्रोकस, फेरम, हायोसा, पल्स, आर्निका, कैल्के, कैमो, चिनिनम, इरेक्थाई, इरिजि, जेल्स, इपि, कैल्मि, लाईकोपोडि, लाइकोपस, मर्क्यूरियस, नाइट्रि-एसिड, नक्स-वोम, फास, रस-ट, सैबाडि, सैंगु, सेनेसियो, सोपि, स्ट्रैमो, सलफर, ट्रिलि, विरेट्रम-विर इत्यादि

„ **गौण कारणको वजहसे** (Passive hemorrhages)।—आर्स, चिनिनम, कार्बो-वेज, फेरम, हैमामि, हेलिबो, इपिका, आइरिस, लीडम, मर्क्यूरियस, फास, रस-ट, सिकेलि।

रक्तमूत्र (Hæmaturia)।—ऐकोन, आर्नि, आर्स-हाइड्रो, कैक्टस, कैल्के-कार्ब, कैम्फर, कैन्थ, कार्बो-वेज, चिमाफि, कोलचि, क्रोटेल, इक्विजि, इरेक्थाई, इरिजि, हैमामि, इपिका, लेकेसि, लाइकोपोडि, मर्क्यूरियस, मेजेरि, मिलिफो, नाइट्रि-एसि, नक्स-वोम, ओसिम-कैन, पेटोलि, फास, पल्स, सिकेलि, सलफर-एसिड, टेरिबिन्थिना, थ्लेस्पि-वार्सा, इयुवा-उर्सी, जिङ्कम।

रक्तवमन या रक्तपित्त (Hæmatemesis)।—ऐकोन, ऐलोज, आर्जेण्ट-नाई, आर्निका, आर्सेनिक, बेलेडो, ब्रायो, कैक्टस, कैन्थ, कार्बो-वेज, कास्टि, चायना, साइकूटा, कोनाय, क्रोटेलस, फेरम, हैमामि, हायोसा, इपिका, कैलि-बाई, लैकेसि, लाइकोपोडि, मिलिफो, नक्स-वोम, ओपि, फास, पल्स, रस-टक्स, सिकेलि, स्टैनम, सलफर, विरेट्र-ऐल्ब, विरेट्र-विर, जिङ्कम।

रजोरोध (Amenorrhœa)।—ऐकोन, इस्कुलस-हिप, ऐग्न-कास्ट, एलिट्रि-फार, ऐलूमिना, ऐमोन-कार्ब, ऐरिष्ट-क्र ड, एपिस, ऐपोसाई, आर्स, अरम, बेराई-कार्ब, बेलेडो, बोरैक्स, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज, कोलोफाई, कास्टि, कैमो, चायना, सिमिसि, काकु, कोलोसि, कोनाय,

क्रोक, साइक्ला, डलकामारा, फेरम, जेल्स, ग्लोनोयिन, ग्रैफा, हेलोनि, इग्ने, कैलि-कार्ब, लैक-डिफ्लो, लैकेसि, लिलि-टिग, लोबेलि-इन्फ्ले, लाइकोपोडि, मैंगेनम, मैंग-कार्ब, मैग-म्यूर, मर्क्यूरियस, नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, नक्स-मस, ओपि, आक्जेलि-एसिड, फास, फाइटो, प्लाटो, पल्स, रोडोडेन, रस-टक्स, रूटा, सैबाडि, सैबाइ, सैंगु, सिकेलि, सेनेसियो, सिपि, साइलि, स्टैफिसे, स्ट्रैमो, सलफर, थूजा, आस्टिले, विरेट्रम-एल्ब, जिङ्कम इत्यादि।

रजोनिवृत्ति या एकदम रजोरोध (Menopuase)।—ऐकोन, एपिस ब्रायो, काकुल, कोनाय, क्रोकस, साइक्ला, जेल्स, इग्ने, लैकेसि, म्यूरे, पल्स, सैंगु, सिपि, सलफर, आस्टिले।

रक्तामाशय (Dysentery)—ऐकोन, ऐलोज, एपिस, आर्जेण्टम, आर्नि, आर्स, बैप्ट, बेलेडो, कैन्थ, कैप्सि, कार्बो-वेज, कार्बोलि-ऐसि, कैमो, कोलचि, कोलोसि, चायना, डायस्को, डालका, फेरम-फास, हैमामे, इपिका, कैलि-बाई, लैकेसि, मैग्न, मर्क, मर्क-कोर, नाइट्रि-ऐसि, नक्स-वोम, पोडो, फास, पल्स, रस-टक्स, सलफर, ट्राम्बिडि इत्यादि।

" **नया** (Acute)।—ऐलोज, ऐकोन, आर्नि, आर्स, कोलोसि, मर्क-कोर, मर्क-सोल, नक्स-वोम, पल्स, रस-टक्स, सलफर इत्यादि।

" **पुराना** (Chronic)।—ऐलोज, आर्जेण्ट-नाइट, आर्स, सिस्टस, कोनायम, लाइकोपोडि, एसिड-नाइट, स्टैफ, ट्राम्बिडि, आरम।

" **सान्निपातिक भाव प्राप्त** (Typhoid Desentery)।—आर्स, बैप्ट, कार्बो-वेज, रसटक्स इत्यादि।

रूसी (Atyriasis)।—ऐगारि, ऐण्टि-क्रूड, आर्जेण्ट-सेट, आर्स, अरम, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, कैन्थ, क्लिमेटि, डालका, ग्रैफा, क्रियोजा, लैकेसि, लीडम, लाइकोपोडि, मर्क, मेजेरि, नेट्रम-म्यूर, ओलियैण्डर, पेट्रोल, फास, सिपि, साइलि, सलफर, थूजा।

वक्ष-शोथ (Hydrothorax) वक्षोदक पीड़ा।—एपिस, आर्स, ऐपोसाइ, जुगलैन्स, कास्टिकम, डिजिटे, मर्क, लैकेसिस इत्यादि।

वमन (Vomitting) ।—ऐमोन, ऐम्ब्रा, ऐण्टिमोनि, आर्नि, आर्स, एरम, एसारम, अरम-मूर, बेलेडो, बिस्मथ, ब्रायो, कैडमि-सल्फ, कैल्के-कार्ब, कैप्सि, कार्बोलिक-एसि, कैम्फर, कैनाबिस, कैन्थ, कैमो, चिनिनम, साइकूटा, सिना, काकुलस, कोलचि, कोलोसि, कोनाय, क्रोटेल, क्रोटन-टिग, कूप्रम, आर्स, कूप्रम-मेट, डिजिटे, डालका, इयुपे-पर्फो, फेरम-मेट, फेरम-फास, ग्लोनोयिन, ग्रैफा, हिपर, हायोसा, आयोडि, इपिका, आइरि, कैलि-बाई, क्रियोजो, लैकेसि, लोरोसि, लाइकोपोडि, मर्क, नेट्रम-मूर, नाइट्रि-ऐसि, नक्स-मस्के, नक्स-वोम, ओलियैण्डर, ओपि, पेट्रोलि, फास, प्लम्ब, पल्स, रस-ट, सैंगु, सिकेलि, सिपि, साइलि, स्टैनम, स्ट्रैमो, सलफर, टैबे, थेरिडि, थूजा, वेरेट्रम-ऐल्ब, जिङ्कम ।

वमनेच्छा (Nausea) ।—ऐकोन, ऐगरि, ऐलूमि, ऐम्ब्रा, ऐमोन-कार्ब, ऐनाकार्ड, ऐण्टिमोनि, ऐण्टि-टार्ट, आर्जेण्ट, नाइट्रि, आर्नि, आर्स, ऐसार, अरम, बैरा-कार्ब, बैरा-मूर, बेलेडो, बिस्मथ, बोरैक्स, बोविस्टा, ब्रोमि, कैम्फ, कैनाबिस, कैप्सि, कार्बो-ऐनि, कार्बो-वेजि, कास्टि, कैमो, चेलिडो, साइकूटा, सिना, काकुल, कोलचि, कोनाय, क्रोकस, क्रोटन-टिग, कूप्रम, कूप्र-ऐसि, साइक्ले, डिजिटे, ड्रोसे, डालका, जेण्ट, ग्रैफ, हेलिबो, हिपर, हायोसा, इग्ने, इपि, केलि-बाई, क्रियोजो, लैकेसि, लोरोसि, लीडम, लोबेलि, लाइकोपोडि, मैग-मूर, मर्क, मेजेरि, मस्कस, मूरि-ऐसि, नेट्रम, नेट्र-मूर, नाइट्रि-एसि, नक्स-वोम, ओलियैण्डर, पेट्रोलि, फास, फास्फो-एसि, फाइटो, प्लाटि, प्लम्ब, पोडोफाई, पल्स, रैनानकूर, रियुम, रस-टक्स, रस-रूब्रम, सैबाडि, सैम्बु, सैंगु, सिकेलि, सेनेगा, सिपि, साइलि, स्पाइजे, स्पञ्ज, स्कुइला, स्टैनम, स्टैफि, सलफर, सल्फ-ऐसि, टैबे, टैरैण्टु, थेरिडि, थूजा, वैलेरि, वेरेट्र-ऐल्ब, जिङ्कम, जिङ्कम-आक्सेलेट ।

वायुनली-प्रदाह (Bronchitis) ।– **नया**—(Acute) ।—ऐकोन, ऐलियम-सेपा, ऐण्टि-टार्ट, ऐण्टि-क्रूड, एपिस, आर्स, आर्स-आयोड, बैडियेगा, बेलेडो, ब्रायो; कैक्टस, कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज कास्टि, कैमो, चेलिडो, सिना, कोनाय, कूरबेब, डालका, इयुफ्रे, फेरम-फास, हिपर, हायोसा, आयोड, इपिक, केलि-बाई, केलि-

ब्रोम, केलि-कार्ब, क्रियोजो, लेकेसि, लोबेलि, लाइकोपोडि, मैग-म्यूर, मर्क, नेजा, नेट्र-सल्फ, नक्स-वोम, ओपि, फास, पल्स, रस-ट, रियुम, स्पञ्जि, सलफर, विरेट्र-ऐल्ब, बार्बेस्कम।

वायुनली-प्रदाह—

" **पुराना** (Chronic)।—ऐलियम-सेट, ऐलूमि, ऐमब्रा, ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-म्यूर, ऐमोन-फास, ऐण्टि-टार्ट, ऐण्टि-आर्स, बेडि, बालसम-पेरू, बेरा-कार्ब, केल्के-कार्ब, केल्के-आयोड, केल्के-सल्फ, केनाब-इण्डि, केप्सि, कार्बो-वेज, कास्टि, चायना, कक्कस-केक, कोनाय, ड्राकन्सि, ड्रोसेरा, ग्रिण्डेलि, हिपर, हाइड्रेस्ट, हायोसा, आयोडि, केलि-बाई, केलि-ब्रोम, केलि-कार्ब, क्रियोजो लाइकोपोडि, नेट्र-कार्ब, नाइट्रि-एसि, नक्स-वोम, फास, फास-एसिड, सेंगु, सेनेगा, सिपि, साइलि, स्टैनम, सलफर, विरेट्र-ऐल्ब, बार्बा-सान्ता।

विचर्चिका ("सारायरोसिस" देखिये)।

विलेपी ज्वर (Hectic fever) देखिये।

विष खाना (Poisoning)

विष और उसका प्रतिविष

Poison	Antidotes
१। सुरासारसे विषाक्त होनेपर Alcohol	"स्टामक पम्प" यन्त्रके द्वारा विष निकालनेके बाद "लाइकर ऐमोन-ऐसिटेट" आधा आउन्सके साथ चीनीका पानी मिलाकर सेवन करानेपर जल्द ही नशा छट जाता है। दूध, काली काफी।
२। क्षार जायीय पदार्थमें Alkali	विनिगर सेवन करानेपर—उसकी तेजी घटती हैं।

३। ऐसिड (Acids) द्वारा नाइट्रिक प्रभृति	चना या खड़िया मिट्टी पानीके साथ देनेपर लाभ होता है।
४। आर्सेनिक	वमन कराना "Ferrum Hydricum in aqua" पेरोक्साइड आव आयरन इत्यादि। नयी अवस्था कट जानेपर उसके बाद इपिकाक (वमनेच्छा या मिचलीके लिये); विरेट्रम (अतिसारके लिये); चायना (दुर्बलता होनेपर); ग्रेफाइट (चर्म-रोगके लिये)।
५। तूतिया, तांबेसे बनी दवाएँ सेंदुर, रस-कपूर, पारा मिली दवाएँ।	दूध, चीनीका शरबत, अण्डेका सफेद अंश।
६। कार्बोलिक एसिड—	वमन, अण्डेका अण्डलाल या सफेद अंश, केस्टर आयल या ओलिव आयल।
७। सीसा (Lead)—	अफीम, दूध, अण्डेका सफेद अंश।
८। अफीम (Opium)	पहले वमन करानेवाले उपाय करना चाहिये। इसके बाद पाकस्थली साफ होनेपर बेलेडोना ८-१० बून्द मूल अर्क अथवा गाढ़ी काफी (Coffee) पिलाना चाहिये।
९। धतूरा (Stramonium)—	वमन कराना, इसके बाद केस्टर आयल (रेंड़ीका तेल) सेवन कराना चाहिये।

१०। तम्बाकू (Nicotin वगैरहका सारांश)	नयी (Acute) बीमारोमें—उत्तेजक पदार्थ, इपिकाक और सिर्का। तम्बाकूका नशा छुड़ानेके लिये प्लैण्टेगो मेजिर सेवन कराना अच्छा है।
११। कपूर (Camphor)—	वमन कराना और रेंड़ीका तेल सेवन कराना उचित है। अलकोहल इत्यादि।
१२। बेलेडोना (Belladonna)—	वमन कराना, स्टामकपम्प व्यवहार करना चाहिये। इसके बाद फाइसस्टिग्मा या "मार्फिया" सेवन कराना चाहिये।

विष-फोड़ा (विस्फोटक—Malignant Pustule)।—ऐन्थ्रासिनम, एपिस, आर्स, बेलेडो, चायना, हिपर, हायोसा, कैलि-आयोड, लैकेसि, लाइकोपोडि, मूरर-एसिड, फाइटो, रस-ट, साइलि, स्ट्रैमो, टेरेण्टु, क्रोटेल इत्यादि।

विषाद वायु (Melancholia)।—ऐग्नोट, ऐग्नस, ऐलेन्थ, ऐलूमि, ऐन्थ्रा, ऐनाकार्ड, ऐण्टि-क्रूड, ऐण्टि-टार्ट, आर्ज-नाइ, आर्स, ऐसाफि, अरम, बेप्टि, बेलेडो, बिस्म, ब्रोमि, ब्रायो, कैक्टस, कैल्के-कार्ब, कैनाबि-इण्डि, कास्टि, चायना, साइकूर, सिमिसि, काकुल, कोलचि, कोलोसि, कोनाय, क्रोकस, क्रोटेलस, क्रोटन, कूप्रम, डिजि, इलैप्स, फेरम, ग्रेफा, हेलोनि, हेलिबो, हिपर, हायोस, इग्ने, इण्डिगो, आयोडि, कैलि-आर्स, कैलि-बाइ, कैलि-ब्रोम, कैलि-मूर, कैलि-फास, लैके-कैनि, लैक-डिफ्लो, लैकेसि, लोरोसि, लप्टेण्ड्रा, लिलि-टिग, लिथि, लोबेलि, लाइकोपोडि, लाइसिन, मेलिलोटस, मर्क-मूररे, माइगेल, नेजा, नेट्रम-कार्ब, नेट्र-मूर, नेट्र-सल्फ, नाइट्रि-एसिड, नक्स-वोम, ओलिये, ओपि, पैलेडि, पेट्रोलि, फास, फास-एसिड, प्लाटि, पल्स, सेनेसि, सिपि, साइलि, स्टैफिसे, स्ट्रैमो, सलफर, टेबे, वेरेट्र-ऐल्ब, जिङ्कम इत्यादि।

विसर्प (Erysipelas)।—ऐकोन, ऐइलेन्थस, ऐमोन-कार्ब, ऐन्थ्रासि, एपिस, आर्नि, आर्स, बेलेडो, बोरैक्स, ब्रायो, कैम्फर, कैन्थ, चेलिडो, चायना,

कोमोक्लै, क्रोटेल, इयुफोर्बि, ग्रैफा, हाइड्रैस्टि, लैकेसि, लोडम, मर्क, नक्स-वोम, पल्स, रस-ट, साइलि, स्ट्रैमो, सलफर, टेरिबिन्थ।

व्याधि-कल्पना (रोगोद्वेग—Hypochondriasis)।—नक्स-वोमिका, आरम-म्यूर, आर्स, इग्नेशिया, कोनायम, प्लाटोना, हायोसा, वैलेरियाना, सलफर, ऐलोज, ऐलूमिना, ऐनाकार्ड, आर्जेण्ट-नाई, ब्रायो, कैल्केरिया-कार्ब, चायना, ग्रैटियोला, कैलि-आयोड, लैकेसिस, लाइकोपोडि, मस्कस, नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, फास्फोरिक-एसिड, फास्फोरस, पोथसफिडिटस, सबाडि, सिपिया, स्टैनम, स्टैफि, जिङ्कम।

व्रण या विद्रधि (Abscess) **नया** (Acute)।—एपिस, आर्स, ऐसा-फिटिडा, वेलेडो, ब्रायोनि, कैमो, हिपर, हायोसा, लोडम, मर्क, मेजे, फास्फोरिक-एसिड, फास्फोरस, पल्स, साइलि, सलफर।

„ **पुराना** (Chronic)।—आर्स, ऐसाफि, अरम, कैल्के, कार्बो-वेज, कोनायम, हिपर, आयोड, लोरोसि, लाइकोपोडि, मर्क-कोर, मर्क, नेट्रम-कार्ब, नाइट्रिक-एसिड, फास्फोरस, सिपिया, साइलि, सल्फर।

„ **कमरमें** (Lumber abscess)—हिपर, साइलि, स्टैफि, सलफर।

„ **फेफड़ेमें** (Lungs)।—आर्स, लाइकोपोडि, मर्क, स्टैनम, साइलि, सलफर।

„ **यकृतमें** (Liver)।—वेलेडो, चायना, हिपर, कैलि-बाई, लैकेसि, मर्क, साइलि, सलफर।

„ **आशोषणके लिये** (Resolution)।—आर्स, ब्रायो, हिपर, मर्क, (उच्चतम शक्ति), पल्स, साइलि, सलफर।

„ **पीव पैदा करनेके लिये** (Suppuration)—वेलेडो, हिपर, लैके, मर्क-सोल, साइलि, सलफर इत्यादि।

शिरा-प्रदाह (Phlebitis)।—आर्निका, कोनायम, हिपर-सल्फर, चायना, पल्स, हैमामे, फास्फोरस, मर्क, ऐकोन, कैमो, रस-टक्स, एपिस, आर्स, साइलि, सल्फ, विरेट्र, लाइकोप, नक्स-वो, स्पाइजे, जिङ्कम।

शिरामुण्ड (Synovites)।—एपिस, ब्रायोनि, बेलेडो, कैल्केरिया, कास्टिकम, सिमिसिफूगा, कोलचि, आयोडि, कैलि-कार्ब, लीडम, लाइकोपोडि, मर्क, पल्स, रस-टक्स, सिपिया, साइलि, फाइटोलैक्का, रूटा, सलफर।

शिरो-घूर्णन (Vertigo)—ऐकोन, इस्कुग्लस-हिप, एथूजा-सायन, ऐगारि, ऐलिङ्गि-फार, ऐलोज, ऐलूमि, ऐलुमि, ऐम्ब्रा, ऐमोन-कार्ब, ऐनाकार्ड, ऐङ्गस्टियुरा, एपिस, आर्नि, आर्जेण्ट-मेट, आर्जेण्ट-नाई, आर्स, आर्से-हाइड्र, ऐसाफिट, आर्टिमि, आरम, बैप्टि, बेलेडो, विस्म, बोरैक्स, बोवि, ब्रोमि, ब्रायो, ब्यूफो, कैक्ट, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास, कैम्फो, कैनाबि-इण्डि, कैनाब-सैट, कैन्थ, कार्बो-एनि, कार्बो-वेज, कार्बोलि-एसिड, कास्टिक, कैमो, चेलिडो, चायना, साइकूय, सिमिसि, सिना, कोबाल्ट, कोका, काकुलस, काफि, कोलचि, कालिन्सो, कोलोसि, कोमोक्ले, कोनायम, क्रोकस, कूप्रम, साइक्ले, डिजिटे, डायस्को, डालका, इयुपेटो-पर्पुर, इयुनिमस, फेरम-मे, फेरम-फास, फ्लूरिक-एसिड, फार्मिका, जेल्स, ग्लोनि, नैफालि, ग्रैटिओ, हिपर, हाइड्रैस्टि, हाइपेरि, हायोसा, आयोडि, इण्डिगो, कैलि-बाई, कैलि-ब्रोम, कैलि-कार्ब, कैलि-नाइट्रि, कैलि-फास, कैल्मि, क्रियोजो, लैक-डिफ्लो, लैकेसि, लैकनैन, लोरोसि, लीडम, लेप्टेण्ड्रा, लिलिटिग, लोबेलि, लाइकोपोडि, लाइसि, मैग-कार्ब, मैग-मूरर, मैग-फास, मैग-सल्फ, मैंगेनम, मेफाई, मर्क-पेरेन, मर्क-सोल, मेजेरि, मस्कस, मूरर-एसिड, नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-सल्फ, नाइट्रि-एसिड, नक्स-वोम, नक्स-मस्के, ओलियै, ओपि, पियोनि, पैरिस-कोया, पेट्रोलि, फेलाण्ड्रि, फास, रैनान-फाइसस्टिग्मा, फाइटो, प्लैटि, पोडोफाई, सोरिनम, पल्स, रैनान-वाफो, रैनान-कूय-बल्ब, रोडोडेन, रस-ट, रोबिना, रूटा, सैबाडि, सैलिसि-एसिड, सैलिकस, सैंगु, सैरासेनि, सारसा-पै, सिकेलि, सेलेनि, सेनेसियो, सेनेगा, सिपि, साइलि, स्पाइजी, स्पञ्जि, स्टैनम, स्टैफिसे, स्ट्रैमो, सलफर, सैम्बुल, टैबे, टैरैण्टु, टराक्स, टेल्यू, टेरि-स्टैफिसे, स्ट्रैमो, सलफर, सैम्बुल, टैबे, टैरैण्टु, टराक्स, टेल्यू, टेरि-बिन्थ, थिया, रोबिडि, थूजा, ट्रियास्टि, आस्टिलेगो, विरेट्रम-एल्बम, विरेट्रम-विर, वार्बेस्कम, जिङ्कम-मेट इत्यादि।

शिशुको अनजानमें पेशाब होना (Enuresis)—इथजा, आर्जेण्ट-नाई, बेलेडो, फास्फोरिक-एसिड, कैल्के-कार्बोनिक, कास्टिकम, कैमो, सिना, इक्विसेटम, फेरम, हायोसा, क्रियोजो, लैक-कैन, मर्क-सोल, पेट्रोलि, कोयेसि, सेनिसियो, सिपिया, साइलिसि, सलफर, थजा, वार्बेस्कम, जिङ्कम।

शिशुकी अंजनी (Stye—गुहौरी)।—ऐलूमिना, कैल्के, फेरम, ग्रैफाई, लाइकोपोडि, मर्क, नेट्रम, पिकरिक-एसिड, एसिड-फास, पल्स, स्टैफ, सिपि, साइलि, सलफर इत्यादि।

” **निचली पलकपर**।—ग्रैफा, रस-टक्स, फास।

” **बाईं ओरकी पलकपर**।—हाइपेरि।

” **ऊपरी पलकपर**।—एलम, पल्स, फास।

” **दाहिनी ओरकी ऊपर**।—ऐमोन-कार्ब।

” **प्रतिषेधक या निवारक**।—ग्रैफाई, स्टैफि, साइलि।

” **ज्यादा पीब होनेपर**।—लाइकोपोडि।

” **अतिसार**।—ऐकोन, डलकामारा, कैमोमिला, पल्स, पोडोफ, रियुम, गैम्बोज, मैग्नेशिया-कार्ब, हिपर, चायना, मर्क-डलसिस, ज्यादा होनेपर विरेट्रम।

” **अकौता** (Eczema)।—रस-विनेटा, बोविस्टा, ओलियेण्डर, क्रोटन, ऐण्टिमोनियम-क्रूडम, ग्रैफाई, ऐण्टिमोनि-टार्ट, आर्सेनिक, मर्क-कोर, हिपर, ऐलूमि, सलफर, नाइट्रिक-एसिड।

” **अनिद्रा** (Insomnia)—ऐकोन, ऐम्ब्रा, एपिस, बेलेडो, कैमोमि, सिना, काफिया, नक्स, पल्स, सलफर, जैलापा, लाइकोपोडि, इत्यादि।

” **आँख उठना** (Ophthalmia Neonatorum)।—ऐकोन, एपिस, आर्जेण्ट-नाई, आर्स, कैल्के-कार्ब, कैमो, इयुफ्रे, हिपर-सलफर, मर्क-कोर, मर्क-सोल, नाइट्रिक-एसिड, रस-टक्स, पल्सेटिला, थूजा, सलफर इत्यादि।

शिशुका उपदंश (Infantile Syphilis)।—**मर्क-सोल ३०, कभी-कभी २००** शक्ति, सिफिलिनम २००, एसिड-नाई ३०, सलफर, कैलि-आयोड, अरम, फाइटोलेक्का, हिपर-सलफर, इत्यादि।

„ **एकज्वर** (Simple Continued Fever)।—ऐकोन, बेलेडो, ब्रायोनि, फेरम-फास, जेलस, नक्स, इपिका, पल्स, नक्स-वोम, पल्स, रस-टक्स, सल्फ, टेलूरियम, बार्बेस्कम।

„ **एकशिरा** (Orchitis)।—आर्निका, ब्रायो, ग्रैफाइटिस, आर्स-आयोड, बेसिलि, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फ्लूर, ऐब्रोट, स्पंजिया, हायोस, सलफर, ग्रैफाइटिस, हेलिबोरस, कोना, ऐब्रोटेनम, बेराइटा, इपि, कैमो, हैमामेलिस।

„ **कर्ण-प्रदाह** (Otitis)।—ऐकोन, ऐसिट-क्रड, आर्निका, आर्स, बेलेडो, बोरेक्स, कैडमि-सल्फ, कैमो, फेरम-फास, हिपर, मर्क, नक्स-वो, पल्स, रस-टक्स, सल्फ, टेलूररियम, बार्बेस्कम, इत्यादि।

„ **कर्ण-स्राव** (Otorrhoea)।—पल्स, मर्क, सल्फ, टेलू, कैलि-मूरर, हिपर-सल्फर, सल्फर, टियुबर्क्युलिनम, बेसिलिनम।

„ **कामला** (Icterus neonatorum)।—ऐकोन, आर्स, कैल्के-कार्ब, कैमो, कार्डुयस-मेरि, चायना, डिजिट, हिपर, इपिका, मर्क, नाइट्रिक-एसिड, नक्स-वोम, पलसेटिला, पोडो, सल्फ, फास्फोरस, क्रोटन, चेलिडोनियम, क्रोटेलस, लेप्टेण्ड्रा, डलिकस इत्यादि।

„ **क्रिमि** (Worms)—**टियुक्रियम १X, स्टैनम, मर्क-सोल, और बीच-बीचमें सलफर ३०।**

डा॰ बेयर टेस्टिके मतसे—नक्स-वोमिका, लाकोपोडि ३०, विरेट्रम १२ और इपिकाक ३०, बेलेडो, साइलिसिया (अमावस्याको वृद्धि); कैल्के-कार्ब, चायना, सिना २००, ऐकोन, चिनोपोडि, कैलेडियम, साइकूटा, फेरम, इग्नेशिया, रेटान्हि,

सैबाडि, स्पाइजेलिया, टेरिबिन्थ, फिलिक्स-मास, कूसो, (Kousso), प्यूनिका, कोयासिया, इण्डिगो, डलिकस इत्यादि।

शिशुके क्षय हुए दाँत।—क्रियोजोट, स्टैफिसे, साइलिसिया, कैल्के, लाइकोपोडि, सलफर, पल्सेटिला, मेजेरियम, सिपिया, स्पाइजेलिया, थजा, कार्बो-वेज, हेकला-लावा, कैम्फर इत्यादि।

,, **खाल उधड़ना** (Intertrigo)।—कैल्के-कार्बोनिका, कार्बो-वेज, कास्टिकम, कैमो, ग्रैफाइटिस, हिपर, इग्नेशिया, मर्क-सोल, पेट्रो, पल्स, सिपिया, सल्फर। एक भाग हाइड्रैस्टिसके साथ ८ भाग ग्लिसरिन एक साथ मिलाकर मालिश करना चाहिये।

,, **घुंड़ी खाँसी** (Croup)—ऐकोन, ऐसेटिक-एसि, ऐमोन-कार्ब, ऐण्टि-टार्ट, आर्सेनिक, बेलेडो, ब्रोमियम, ब्रायोनिया, कार्बो-वेज, कास्टिक, कैमो, कूरबेरा, कूप्रम, ड्रोसेरा, हिपर, आयोडि, इपिका, केलि-बाई, कैलि-ब्रोम, कैलि-म्यूर, कैलि-फास, केयोलिन, लैकेसिस, लैक्टिक-एसिड, लोबेलिया, सिपिया, लाइकोपोडि, ऐसिड-आक्सैलि, नैजा, फास्फोरस, सैम्बुकस, सैङ्गु, मेन्सि, स्पंज इत्यादि।

,, **झिल्लीक-प्रदाह** (Diphtheria)।—एइलेन्थस, आर्सेनिक, ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-कास्टिक, एपिस-मेलि, आर्स, एरम-ट्राइ, बेप्टिसि, बेलेडो, ब्रोमि, कैन्थ, कैप्सिकम, ब्रायोनि, कार्बोलिक-ऐसिड, क्लोरम, क्रोटेलस, हेलोनियस, हिपर, इग्नेशिया, आयोड, केलि-बाई, केलि-म्यूर, कैलि-पार्मांङ्गनेट, कैलि-फास, क्रियोजोटम, लैक-कैन, लैकेसिस, कैलमिया, लैकनैन्थस, लाइकोपोडि, मैन्सिनेल, मर्क-आयोड, मर्क-सोल, नैजा, नेट्रम, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वोम ओपियम, फाइटोलैक्का, सैबाई, रस-टक्स, सिपिया, सलफर, टैरेण्टुला।

,, **तड़का** (Convulsion)—ऐकोन, इथजा, ऐगरिकस, ऐमिल-नाइट्रेट, ऐण्टिम-टार्ट, एपिस, आर्निका, आर्सेनिक, आर्टिमिसिया, बेलेडो, ब्रायोनि, कैल्के-कार्ब, कैम्फर, कास्टिकम, कैमोमिला, साइकूटा, सिमिसिफि, सिना, काकुलस, काफिया, कूप्रम,

जेल्स, हेलिबोरस, हिपर-सलफर, हाइड्रो-ऐसिड, हायोसायेमस, इग्नेशिया, इपिकाक, कैलि-ब्रोम, कैलि-बाई-क्रोमिकम, कैलि-कार्ब, क्रियोजो, लैकेसि, लोरोसि, लाइकोपोडि, मैग्न-फास, मेलिलोटस, मर्क, मोनोड्गोपा, नक्स-वोमिका, ओपियम, प्लाटिना, सिकेलि, साइलि, स्टैनम, स्ट्रैमो, सलफर, टेरिब, बिरेट्रम-ऐल्बम, विरेट्रम-विर, जिङ्कम।

शिशुका तोतलाना (Stammering)।—स्ट्रैमो, हायोस, बेलेडो, मर्क, प्लाटिना, सल्फ, विरेट्रम।

„ **दूषित व्रण**—एपिस-मेल, रस-टक्स, ऐन्थ्रासिनम, सिकेल, आर्सेनिक, लैकेसिस, क्रोटेलस इत्यादि।

„ **दाँत निकलना** (Dentition)।—एकोन, इथूजा, ऐसिट-क्र ड, एपिस, आर्स, बेलेडो, बोरैक्स, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास, कास्टिकम, कैमो, साइकूग, सिना, काफिया, कोलचिकम, कोलोसिन्थ, कूप्रम, डलिकस, डलकामा, फेरम, फेरम-फास, जेल्स, ग्रैफाई, हेलिबो, हिपर, हायोस, इग्नेशिया, इपिकाक, क्रियोजो, लैकेसि, लाइकोप, मैग्न-कार्ब, मैग्न-मूरर, मैग्ने-फास, मेलिलोट, मर्क-सोल, नक्स-मस्कोटा, नक्स-वोमिका, फास्फोरिक-एसिड, फाइटो, पोडोफाइलम, सोराइनम, रियुम, रस-टक्स, सिपिया, साइलि, स्टैनम, स्टैफि, स्ट्रैमो, सल्फ, सल्फ-एसिड, विरेट्रम, जिङ्कम।

„ **दाँतो लगना या धनुष्टङ्कार** (Lackjaw, Trismus, Tetanus)।—ऐकोन, आर्निका, आर्स, बेलेडो, कैम्फर, साइकूर, इग्ने, मस्कस, ओपियम, हाइपेरिकम, पैसिफलोरा, हैमामेलिस, इत्यादि।

„ **दूध कै करना** (Vomiting of milk)।—इथजा, नक्स-वोम, इपिक, पोडो, कैल्के, नेट्रम-कार्ब, ऐण्टिम-क्रड, कैमोमिला, क्रियोजो, पल्स, विरेट्रम इत्यादि।

„ **नाक बन्द हो जाना** (Snuffles of children)।—ऐलूमि, ऐमोन-कार्ब, आर्जेण्ट-नाई, अरम, आर्स, कैराइटा, कैल्के, सिपा,

कैमो, कूप्रम, साइक्लो, इयुफ्रे, ग्रैफाई, हिपर, आयोड, केलि-बाई, केलि-कार्ब, केलि-आयोड, लेकेसि, लाइकोप, मर्क-आयोड, एसिड-नाई, नक्स-वोम, पल्स, सैम्बुक, सिपिया, साइलि स्टिक्टा, पल्स, सलफर इत्यादि।

शिशुको नाकसे रक्तस्राव (Epistaxis)।—ऐकोन, आर्निका, बेलेडो, ब्रायो, कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज, चायना, सिना, क्रोटेलस, फेरम, फेरम-फास, हैमामे, इपिकाक, लेकेसि, लाइकोपोडि, मेलिलोटस, मर्क-सोल, मिलिफो, नेट्रम, नाइट्रिक-एसिड, नक्स-वोम, फास्फोरस, पल्स, रस-टक्स, सिकेलि, साइलि, सलफर, टेरिबिन्थ, जिङ्कम।

,, **नाभि-रोग**।—अनजान धात्रीके दोषसे छोटे बच्चेको (तुरन्तके जनमे) नाभीमें नाना प्रकारको बीमारियाँ हो जाती हैं। पहले जखम सूखता नहीं है, रस-रक्त निकलता है, उसमें कैलेण्डुला और "ओलिव आयल" मिलाकर लिण्टमें लगा नाभीपर लगाना चाहिये। **साइलिसिया ३०**।

,, **नाभि-देश** (Umbilical)।—अरम, कैल्के-कार्ब। **बायीं ओरका पुट्ठा**—नक्स-वोम, लइकोप। **शिरापीषित**—(Strangulated)।—आर्स, लेकेसि, लाइकोप, नक्स-वोम इत्यादि।

,, ,, **मसा** (Warts)।—मर्क, थजा, सलफर इत्यादि।

,, **पक्षाघात**।—ऐकोन, बेलेडोना, जेल्स, सिकेलि, प्लम्बम, सलफर, कैल्के-कार्ब इत्यादि।

,, **पेशाबमें बदबू**।—बेञ्जोयिक-एसिड, लाइकोपोडि, नाइट्रिक-एसिड, सिपिया, इयुरेन-नाई, कूप्रम-आर्स, बोरैक्स, कैल्के, टेरेबिन्थ इत्यादि।

,, **पेशाब बन्द**।—(**सद्यःजात बच्चेका, सौरी घरमें**)।—ऐकोन, पल्स, बेलेडो, केन्थ. ओपियम, टेरिबिन्थ, क्लिमेटिस इत्यादि।

शिशुका प्रदर (बालिकाका)।—कैल्के-कार्ब, सिपिया, सिना, ऐलूमिना, बोरैक्स, ग्रैफाइ, क्रियोजोट, पल्सेटिला, स्टैनम, सल्फर इत्यादि।

,, **प्लीहा** (Spleen)।—मर्क-बिन-आयोड ३x, सियोनोथस θ, मूल अर्क, बाहरी प्रयोगके लिये, बीच-बीचमें सेवनके लिये ३x, आर्सेनिक, कैल्के-आर्स, फेरम-आर्स, नेट्रम-आर्स, चायना, आर्स, आर्निका, सलफर, नेट्रम, लाइकोप।

,, **पेंचों या हवा लगना**।—ऐकोन, पल्स, बेलेडोना, आर्निका, हाइपेरिकम, पेसिफ्लोरा, स्ट्रिकनिया, साइकूटा, एसिड-हाइड्रो, नक्स-वोम, लेकेसिस, चायना।

शिशुका फुसफुस-प्रदाह (न्युमोनिया) (Capillary Bronchitis)।—फेरम-फास, फास्फोरस, ऐण्टिमोनि-टार्ट, ब्रायो, सलफर, लाइकोपोडि, हिपर, चेलिडोनियम इत्यादि।

,, **फोड़ा या व्रण प्रवणता**।—कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज, कैमो, ग्रैफाइ, लाइकोपोडि, सलफर, हिपर-सल्फ, कैल्के-कार्ब, कैल्के-पिकरिकम, आर्निका।

,, **बालास्थि-विकृति** (Rickets)।—कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास, आर्स-आयोड, फास, साइलि, सल्फ, अरम-सिलिकस, हेक्लालावा, फेरम-आर्स, अरम, आर्स।

,, **मस्तककी अस्थिका न मिलना** (Open Fontanelles or Retarted closing of)।—कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास, (पश्चात् मस्तक)। कैल्के-आयोड, साइलि, मर्क, पल्स, सिपिया।

,, **मस्तकमें रक्तार्बुद** (Cephatelonia)।—आर्निका, चायना, कैल्के-कार्ब, इसके बाद साइलिसिया।

,, **मस्तक बड़ा होना**।—नवीन बीमारीको Hydrocephaloid मस्तिष्कोदक रोग या हाइड्रोकेफालायड कहते हैं। पुरानी बीमारीके पहले आर्निका ३ या ३० और पुरानी पड़ जानेपर कैल्के-फास ३० या २०० उत्कृष्ट दवा है।

शिशुकी मस्तकमें रूसी (Dandruff)—होनेपर नीचे लिखी दवाएँ लाभ करती हैं :—आर्सेनिक, बेडियागा, ब्रायोनि, कैल्के-कार्ब, कैन्थ, ग्रैफाइटिस, कैलि-म्यूर, कैलि-सल्फ, नेट्रम-म्यूर, फास्फोरस, सिपिया, स्टैफि, थूजा।

„ **मस्तिष्क मेरुमज्जाकी बीमारी**।—इथूजा, ऐगरिकस, ऐमोन-कार्ब, एपिस, आर्जेण्ट-नाई, आर्निका, आर्सेनिक, बेप्टी, बेलेडो. ब्रायो, कैक्टस, कैम्फर, कैनाबिस-इण्डिका, कैन्थरिस, साइक्यूटा, सिमिसिफ्यूगा, क्रोटेलस, क्यूप्रम, डिजिटेलिस, जेल्स, ग्लोनोयिन, हेलिबोरस, हाइड्रो-एसिड, हायोसा, हाइपेरिकम, इग्नेशिया, लाइकोपोडियम, नेट्रम-सल्फ, नक्स-वोम, ओपियम, फास्फोरस, प्लम्बम, रस-टक्स, सोलेनम, टेरण्टुला, टार्टार-ऐमेटिक, विरेट्रम, विरेट्रम-विर, जिङ्कम इत्यादि।

„ **मस्तिष्कोदक** (Hydrocephaloid)। - इथूजा, एपिस, आर्जेण्ट-नाई, आर्स, कैल्के-कार्ब, कैड्मियम-सल्फ, कैल्के-फास, कार्बो-वेज, चायना, सिना, केलि-आयोड, इग्नेसि, लाइकोपोडि, नक्स-वोम, फास-एसिड, फास्फोरस, सोराइनम, पल्स, सिपिया, साइलि, सलफर, विरेट्रम, जिङ्कम।

„ **मिचली** (Nausea)।—ऐण्टि-टार्ट, एपिस, आर्जेण्ट, बिस्मथ, काकुलस, साइक्यूटा, कोलचि, कोलोसि, क्रोटोन, इपिकाक, आइरिस, मर्क, नेट्रम, नक्स-वोम, पोडो, रियुम, रस-ट, सिकेलि-सल्फ, टैबेकम, विरेट्रम, जिङ्कम इत्यादि।

शिशुकी मुँहमें घाव (Aphthoe-thrush)।—इथूजा, एपिस, आर्स, एरम-ट्रि, बैप्टि, बोरैक्स, ब्रायोनिया, कैल्के-कार्ब, कैन्थ, कैप्सि, कार्बो-वेज, हेलिबो, हिपर, हाइड्रो, आयोड, कैलि-बाई, कैलि-ब्रोम और म्यूर, क्रियोजोट, लैकेसिस, लाइकोपोडि, मर्क-कोर, नेट्रम-म्यूर, नाइट्रिक-एसिड, फाइटोलैक्का, सिकेलि, साइलि, स्टैफिसे, सल्युरिक-एसिड, सल्फ, थूजा इत्यादि।

„ **मृगी रोग**।—कैल्केरिया, सलफर, क्यूप्रम, ब्यूफो, सिलिका, हाइड्रोसियानिक-एसिड, कैल्के-फास, जिङ्कम, फास, बेलेडोना, केमो, सिना, नक्स-वोमिका, स्ट्रैमो इत्यादि।

शिशुका यकृत (Infantile lever)।—ऐकोन, ऐलूमि, आर्जेण्टम, आर्सेनिक, अरम-मेट, बेलेडो, बार्बेरिस, ब्रायो, कैमो, हिपर, लाइकोप, मैग्नेशिया, नेट्रम-मूरर, नक्स-वोमिका, फास्फोरस, सलफर, कैल्केरिया-कार्ब, लेप्टाण्ड्रा, चेलिडो, कर्डुयस-मेरि इत्यादि।

” **रोना** (Crying)।—ऐकोन, आर्निका, आर्स, ऐण्टि-क्रूड, बेलेडो, कैमो, सिना, कास्टिकम, कोलोसिन्थ, कूप्रम, जैलापा, लाइकोपोडि, पल्स, रस-टक्स, सेन्ना, स्टैनम, स्ट्रैमो, थुजा, जिङ्कम।

” **यक्ष्मा** (Tuberculosis)।—बैसिलिनम २०० या ३००। फास्फोरस, फेरम-फास, सलफर, हिपर-सल्फर, कैल्के-कार्ब, साइलिसिया, थूजा, टियुबर्क, बोविनम इत्यादि।

” **रक्त-वमन** (Hematemasis)।—मिलिफोलियम, इपिकाक, फास्फोरस, फेरम-फास ६x, मर्क-कोर, आर्निका (यदि इसका कारण चोट हो)। क्रोटेलस, कार्बो-वेज, फेरम-ऐसेट, मूर्च्छा और रक्त-वमनमें फेरमके बाद।

” **राक्षसी भूख** (Ravenous hunger)।—कैल्के-कार्ब, चायना, सिना, आयोड, इग्नेशिया, लाइकोपोडि, मर्क-सोल, फास्फोरस, वेरेट्रम।

” **लाली, सूजन और जखम**।—एपिस, आर्निका, डालका, मर्क, हिपर, साइलि, सलफर, एसिड-नाइट्रिक, अरम, पेट्रोलियम इत्यादि।

” **वायु और श्वासनली-प्रदाह**।—ऐकोन, ऐण्टि-टार्ट, आर्निका, आर्सेनिक, बेलेडो, ब्रायोनि, कैल्केरिया-कार्ब, कैल्के-फास, कैमो, चेलिडो, सिना, कोनायम, कूप्रम, ड्रोसेरा, फेरम-फास, हिपर, आयोड, इपिका, कैलि-बाई, कैलि-आयोड, सल्फ, फास्फोरस, पल्स, सिपिया, साइलि, सलफर, टेरिबिन्थ।

” **विसर्प** (Erysipelas)—ऐकोन, आर्निका, एपिस, आर्सेनि, बेलेडो, कैन्थरिस, क्रोटेलस, ग्रैफाइटिस, लैकेसि, लाइकोपोडि, मर्क, नक्स-वोम, पल्स, रस-टक्स, साइलि, स्ट्रैमो, सलफर, रूटा, रस-रैडिकैन्स, टेरिबिन्थिना इत्यादि।

शिशुकी शीर्णता या सुखण्डी (Marasmus)।—ऐब्रोटेनम, ऐसेटिक-एसिड, इथूजा, एलोज, एण्टि-क्रूड, ऐण्टि-टार्ट, आर्जेण्ट-नाइ, आर्निका, आर्स-आयोड, **आर्सेनिक**, बैराइटा-कार्ब, **बैराइटा-म्यूर**, बेलेडो, बेञ्जो-एसिड, बोरासिक-एसिड, कैल्के-कार्ब, कैल्के-आयोड, कैल्के-फास, कार्बो-वेज, कास्टिकम, चायना, सिना, सिस्टस, क्लिमेटिस, कोनायम, फेरम, ग्रैफाइ, हिपर, हाइड्रो, **आयोड**, क्रियोजो, **लाइकोप**, मैग्ने-कार्ब, मैग्ने-म्यूर, मेरम-वेरम, मर्क-सोल, **नेट्रम-म्यूर**, नेट्रम-सल्फ, नाइट्रिक-एसिड, नक्स-वोम, ओलियैण्डर, ओलियम-जेको, ओपियम, ओनोस्म, पेट्रोलियम, फास, फास-एसिड, सोराइनम, रियुम, सैनिकुला, **सार्सापै**, सिपिया, **साइलि**, स्टैनम, स्टैफि, सलफर, थिरिडि, विरेट्रम इत्यादि।

शिशु, सर्दी-गर्मी (Sun-stroke)।—ग्लोनोयिन, बेलेडो, एमिल-नाइट्रेट, नेट्रम-म्यूर, जेलसिमियम, नेट्रम-कार्ब, कैक्टस, ओपियम, कार्बो-वेज इत्यादि।

„ **स्वल्प-विराम ज्वर**।—ऐमोन-म्यूर, ऐण्टि-क्रूड, एपिस, आर्सेनिक, बेलेडो, ब्रायो, बैप्टि, जेल्स, बोरैक्स, कैमोमि, सिना, काफिया, फेरम-फास, इग्नेशिया, कैलि-ब्रोम, मर्क-सोल, नक्स-वोम, पोडो, पल्सेटिला, रस-टक्स, सलफर इत्यादि।

„ **गो-बीज टीकाका दुष्परिणाम**।—प्रबल ज्वर होनेपर **थूजा**। अतिसारमें—**थूजा**। अकड़न या टङ्कार (Convulsion) होनेपर **साइलिसिया**। बाँहका जख्म जल्दी आराम न होनेपर—**साइलिसिया**। ओलिव आयलके साथ **हाइड्रैस्टिस** θ प्रयोग किया जाता है। **चर्म रोग दूर करनेके लिये** डा० हेरिङ्ग छठवें दिवस **फास्फोरस** ३० एक मात्रा सेवन करने कहते हैं। **डा० लिलियेन्थल—कैलि-म्यूर और सलफर**। हमलोग लक्षणके अनुसार मैलिण्ड्रनम २०० सेवन कराया करते हैं।

इसके पहले **ऐण्टिमोनि-टार्ट** और **थूजा**का व्यवहार अधिक होता था। किसी-किसी पुस्तकमें वेक्सिनिनम और वेरियोलिनम २०० देनेकी व्यवस्था दी है। पर अब यह मत परिवर्त्तित हो गया है।

शिशुकी आँत उतरना (Hernia)।—आर्निका, एसिड-सल्फ, कैल्के-कार्ब, नक्स-वो, लाइको, अरम, कैल्के-कार्ब, सिना, लाइकोपोडि, नक्स-वोम, प्लम्बम, ओपियम, सल्फ, थजा।

शोथ (Dropsy)।—आर्स, एपिस, ओपियम, ऐपोसाइनम, ब्रायोनि, कैन्थ, चायना, कोलचि, डिजिटे, डलकामारा, हेलिबोरस, कैलमिया लिडम, मर्क, प्लम्बम, रस-टक्स, सिपिया, सलफर इत्यादि।

श्वासरोग—दमा (Asthma) रोग देखिये।

श्वेतकणिकाधिक्य, रक्ताल्पता (Leukemia)।—आर्स-आयोड, सियोनोथस, पिकरिक-एसिड, **नेट्रम**, **कैल्के-कार्ब**, **थूजा**, **सलफर** इत्यादि।

श्वेतपाद (Milk-leg, Alba Dolons—गर्भिणियोंके पैरकी सूजन)।—ऐकोनाइट, आर्निका, **एपिस**, **एण्टि-टार्ट**, आर्सेनिक, बेलेडो, **ब्रायोनि**, चायना, लेकेसि, लाइकोप, नक्स, **पल्स**, **रस-टक्स**, सिपिया, साइलि, सलफर, थजा, विरेट्रम।

सन्धि-वात नया (Acute Rheumatism)।—ऐकोन, ऐण्टि-मोनि, आर्स, बेलेडो, ब्रायो, कोलोफा, कैमो, चायना, सिमिसि, कोलोसि, डलकामारा, इग्नेसि, मर्क, नक्स-वोम, प्रोपिलेमिन, पल्स, रोडो, रस-टक्स, सेलिसिलेट आफ सोडा, विरेट्रम-विर इत्यादि।

„ **पुराना** (Chronic)।—(१) ऐब्रोट, ऐस्क्लिपिय, आर्निका, कास्टिक, चिमेफिला, क्लिमेटिस, हिपर, लैकेसिस, लाइकोप, फास्फोरस, फाइटोलैक्का, सल्फ, विरेट्र। (२) ब्रायो, डलका, इग्नेसि, मर्क, नक्स-वोम, पल्स, रस, थूजा।

समवरोधन (Thrombosis Embolism)।—जमा हुआ रक्त, मेद वगैरह यदि रक्तके स्रोत या हृत्पिण्डमें प्रवेशकर रक्तके दौरानमें रुकावट पैदा

कर दे तो आगे लिखी दवाएँ व्यवहृत होती हैं—ब्रायोनिया, कैल्केरिया-आर्स, कैलि-मूर, ऐपिस, कोब्रा, लैकेसिस।

सर-दर्द (Headache)।—ऐसेटिक-एसिड, ऐकोन, इस्कुलस, ऐगारि, ऐग्नस, ऐलियैन, एलियम, सेपा, ऐलोज, ऐलूमिनियम, ऐम्ब्रा, ऐमोन-ब्रोम, ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-मूर, ऐमिल-नाइ, ऐनाकार्ड, ऐण्टि-क्रड, ऐण्टि-टार्ट, एपिस, ऐपि-ग्रावे, एरानि-डयाडे, आर्जेण्ट-मेट, आर्जेण्ट-नाइ, आर्निका, आर्स, ऐसाफि, ऐसल्लि, अरम-मेट, बेडिये, बेप्टि, बेराइ, बेलेडो, बार्ब, बिस्मथ, बोरैक्स, बोवि, ब्रोमि, ब्रायो, बूफो, कैक्ट, कैडमि-सल्फ, कैल्के-ऐसे, कैल्के-आर्स, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास, कैम्फो, कैना-इण्डि, कैन्थ, कैप्सि, कार्बो-ऐनि, कार्बो-वेज, कौलोफाइ, कास्टि, सीड्रन, कैमो, चेलिडो, चिमाफिला, चायना, चिनि-आर्स, चिनि-सल्फ, चियोनैन्थस, साइकू, सिमिसि, सिना, सिनाबेरिस, क्लिमे, कोबाल, कोक, काक्सिनेला, काकु, काफि, कोलचि, कोलोसि, कोनाय, कोरालि-रूब्र, कर्णास-सिर, क्रोकस, क्रोटेलस, कूप्रम, कूबेवा, साइक्ले, डिजि, डाल्का, इलैप्स, इयुपेटो-पर्फो, इयुपेट-पर्प्यु, फेरम-मेट, फेरम-ऐसि, फेरम-आयो, फेरम-फास, फार्मिका, जेल्स, ग्रैफा, ग्रैटियोला, गोयेकम, हेलिबो, हेलोनि, हिपर, हायोसा, हाइपेरि, इग्ने, इरिडि, आयोडि, इपिका, आइरिस, जैट्रो, जागला, कैलि-बाइ, कैलि-ब्रोम, कैलि-कार्ब, कैलि-सायै, कैलि-हाइड्रो, कैलि-फास, कल्मि-लेट, क्रियोजो, लैक-कैन, लैक-डिफ्लो, लैक-फेलि, लैक-नेन, लोरोसि, लोडम, लेप्टे, लिलि-टिग, लिथि-कार्ब, लोबेलि-इन्फ्ला, लाइकोपोडि, लाइसिन, मैग-कार्ब, मैग-मूर, मैग-फास, मेलिलो, मेनियेन, मर्क-कोर, मर्क-आयो-फ्लेवा, मर्क-आयो-रूब्र, मर्क-सोल, मेजेरि, मस्क, मूरि-ऐसि, नैजा, नेट्र-कार्ब, नेट्रम-मूर, नेट्रम-सल्फ, निकोल, नाइट्रि-ऐसि, नक्स-मस्के, नक्स-वोम, ओलियेण्डर, ओनस्मो, ओपि, पैलेडि, पेरिस, पेट्रोल, फास, फास-ऐसि, फाइसस्टिग, फाइटो, प्लाटो, प्लम्ब, पोडोफाइ, सोरिनम, पल्स, रैनान-बल्ब, रस-ट, रोबि, रूटा, सैंगु, सेलेनि, सिपि, साइलि, स्पाइजि, स्पञ्ज, स्टैनम, स्टैफिसे, सलफर, सिफिलि, टैरेण्टु, टेल्यू, थिया, थुजा, थेरिडि, आस्टिले, वैलेरि, विरेट्र-ऐल्ब, विरेट्रम-विर, वाइबर्न-ओपु, वाइपे, विस्कम, जिङ्कम-मेट इत्यादि।

सर-दर्द, अधकपारीका दर्द (अर्द्धावभेदक—Migraine—Hemicrania)।—ऐकोन, एरानि, डायेड, आर्जेण्ट-नाई, आर्स, बेलेडो, ब्रोमि, कैल्के-कार्ब, कैप्सि, कास्टि, काकुलस, कोलोसि, कोनाय, साइक्लो, डिजिटे, जेल्स, ग्लोनोइन, इपिका, आइरिस, कैलि-बाई, कैलि-म्यूर, कैलि-फास, लैक-कैन, लैक-डिफ्लो, मेलिलो, मर्क्युरियस, नेट्रम-म्यूर, नेट्रम-सल्फ, नक्स-वोम, ओलि, फास, पल्स, रस-टक्स, सैंगु, सिपि, साइलि, स्टैनम, थिरिडि, विरेट्रम-ऐल्ब।

सर्दी।—"नाककी सर्दी" देखिये।

सर्दी-गर्मी (Sun-stroke or heat stroke)।—ऐकोन, आर्निका, बेलेडो, ग्लोनोयिन, स्ट्रैमोनि, एमिल-नाइट्रेट, कैम्फर, नेट्रम-कार्ब, कैक्टस, ओपियम, कार्बो-वेज प्रभृति व्यवहृत होते हैं।

डा० ब्रायण्टके मतसे—ऐगारि, आर्निका, ऐण्टि-टार्ट, बेलेडो, ब्रायो, कैम्फर, ग्लोनोयिन, हायोसायेमस, लैकेसि, नेट्रम-कार्ब, पल्स, स्ट्रैमो, सलफर इत्यादि।

सर्दी-ज्वर (Catarrhal Fever)।—ऐकोन, ऐलियम-सिपा, इपिका, इयुफ्रेशिया, बेलेडो, ब्रायोनि, डलकामारा, जेलसिमियम, आर्सेनिकम, नक्स-वोम, मर्क-सोल, सिना, रस-टक्स, पल्सेटिला, हिपर-सलफर, सेबाडिला इत्यादि।

सर्पाघात या सर्प-दंशन।—जहाँपर साँप काटे, यदि सुविधा हो तो उस स्थानके ऊपर कसकर बाँध देना चाहिये अथवा एक चिलम गर्मकर काटी हुई जगहके चारों ओर दाग देना चाहिये। धारदार छुरीसे काटी हुई जगहको चीरकर काला पानीकी तरह खून निकाल देना चाहिये। एक ग्रेन परमाङ्गनेट आफ पोटास थोड़े पानी या थकमें मिलाकर लगाना चाहिये। काटनेके बाद तुरन्त ही ये काम करने चाहिये। यदि समय अधिक नष्ट हो गया हो तो जायतूनका तेल या नेबूका रस लगाना चाहिये। केलेका रस या तुलसीका रस भी खूब अच्छा होता है। गलेमें लार न जमे इसका उपाय करना चाहिये। इमली खिलाकर

वमन कराना पड़ता है ; रोगीको सोने न देना चाहिये। **औषध**—ऐमोन-कार्ब, **आर्सेनिक**, बेलेडो, **सीड्रन**, सेनेगा इत्यादिका सेवन करना चाहिये।

संखिया खानेका दुष्परिणाम (Arsenic poisoning or abuse)—स्टामक पम्पसे वमन कराकर पाकस्थली खाली कर देनी चाहिये। इसके बाद कैस्टोर आयल या अण्डेका सफेद अंश सेवन कराना चाहिये। दवामें नक्स-वोमिका, इपिकाक, चायना, विरेट्रम प्रभृति प्रयोग करना चाहिये। पुराने आकारमें मादक फल, सफेद रङ्गका उक्त आर्सेनिक उच्चतम शक्ति हजार या C. M. क्रम देना चाहिये।

संन्यास (Apoplexy)।—इस्कुलस, ऐकोन, ऐनाकार्ड, आर्निका, ऐमोन-कास्टिकम, ऐस्टिरियम, बैराइटा, बेलेडो, कैक्टस, कैल्क, कास्टिकम, काकुलस, काफिया, कोनायम, क्रोटेलस, कूप्रम, जेलस, ग्लोनोयिन, हेलिबोरस, हायोसा, आयोडियम, इपिकाक, लैकेसि, लैकनैन्थिस, लोरोसिरेसस, लाइकोपोडि, नक्स-वो, प्लम्बम, ओपियम, सैबाई, स्टैफिसे, सिपिया, स्ट्रानसिया, स्ट्रैमो, विरेट्रम, जिङ्क, हाइड्रोसियेनिक-एसिड इत्यादि।

साण्डलाल मूत्र (Albuminuria)—ब्राइट्स रोगमें।—एपिस, ऐपोसाई, आर्जेण्ट-नाई, आर्स, बार्बेरिस, ब्रायो, कैल्के-आर्स, कैल्के-कार्ब, कैनाबिस-इण्डिका, कैन्थरिस, कैनाबिस, कालोफा, चायना, कोलचि, कोलोसिन्थ, चिमाफि, कोनायम, डिजिटे, क्रोटेलस, इयुनोमिन, फेरम, जिरेनियम, हेलोनि, हेलिबो, हिपर, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, कैलि-फास, कैल्मिया, क्रियोजो, लैकेसिस, लाइकोपोडि, मर्क-कोर, मेजेरियम, माइरायम, नाइट्रिक-एसिड, ओपियम, फास्फोरस, फाइटोलैक्का, प्लम्बम, रस-टक्स, सिकेलि, टेरिबिन्थ, सलफर, फास्फोरिक-एसिड, सार्सापेरिला, इयुरेनियम-नाई इत्यादि।

सान्निपातिक ज्वर (Enteric or typhoid fever)।—आन्त्रिक ज्वर, सान्निपातिक ज्वर, टाइफायड ज्वर और वातश्लेष्मा ज्वर इसकी समसंज्ञा है।

सान्निपातिक ज्वर, औषध और चिकित्सा ।—जब किसी मकान या गांवमें या मुहल्लेमें इस सान्निपातिक ज्वरकी बहुव्यापकता दिखाई दे तो टाइफायडिनम २०० शक्तिकी अनुवटिका दो-चार सप्ताहमें एक या दो बार सेवन करनेपर उसके प्रतिषेधक रूपमें काम किया करती है। ऐसि-आक्जेलि, ऐण्टि-टार्ट, एपिस, आर्स, ओपि, बेलेडो, बैप्टोशि, ब्रायो, केल्के-कार्ब, कार्बो-वेज, कैमो, चायना, मूरि-ऐसि, नाइट्रि-ऐसि, नक्स-वोम, फास्फ, फास-ऐसि, पल्स, रस-टक्स, सिकेलि, स्ट्रैमो, सलफर, हायोसा, विरेट्रम इत्यादि।

” **अलिजिह्वाका बढ़ना** (E'ongation of the U:nea)।—ऐलूमि, ऐम्ब्रा, एपिस, बेलेड, कैप्सि, हायो, हिपर, मर्क।

” **मस्तिष्क लक्षण प्राधान्य** (Cerebral Typhoid)।—आर्नि, बैप्टोसि, बेलेडो, ब्रायो, हेलिबो हायोसा, इग्ने, लेकेसि, नक्स-मस्केटा, ओपि, फास, रस-ट, स्ट्रैमो, जिङ्कम इत्यादि।

” **वाचालता प्राधान्य** (Versatule)।—बेलेडो, ब्रायो, कैमो, सिना, हायोस, इग्ने, लाइकोप, नक्स-वो, ओपि, पोडो, पल्स, रस-ट, जिङ्कम।

” **स्तब्धता प्रधान** (Stupid form)—आर्नि, बेलेड, चायना, हेलिबो, हायोसा, फास-ऐसि, ओपि, रस-टक्स, जिङ्कम इत्यादि।

” **संन्यासिक** (Apoplectic)।—बेलेडो, ब्रायो, ग्लोनोयिन, जेल्स, इपिक, लेकेसि, लाइकोप, फास-ऐसि, विरेट्रम-विर, जिङ्कम।

” **प्रथम सप्ताहमें ।**—बैप्टो, ब्रायो, जेल्स, रस-ट, विरेट्रम-विर, इत्यादि।

” **द्वितीय सप्ताह ।**—एपिस, बैप्टो, बेलेडो, ब्रायो, रस-ट, नक्स-वो, पल्स।

” **तीसरा सप्ताह ।**—आर्स, केल्के, ओपि, पल्स, नाइट्रि-एसि, मूरि-ऐसि।

” **हिचकी ।**—आर्स, नक्स-वो।

” **रक्तस्राव ।**—ऐकोन, इपिका, ब्रायो, लैकेसि।

मस्तिष्क लक्षण प्राधान्य कर्णमूल-प्रदाह।—बेलेडो, कैमो।

„ **शय्याक्षत**।—आर्नि, कार्बो-वेज, साइलि।

सामान्य ज्वर (Simple Continued Fever)।—रक्त ज्वर देखिये:—ऐकोन, बैप्टो, बेलेडो, ब्रायोनिया, कैमोमिला, जेलसिमियम, फेरम-फास, रस-टक्स, नक्स-वो, पल्स, सल्फर इत्यादि।

सामुद्रिक मिचली (Sea-sickness)।—ऐपोमार्फिया, पेरो, थिरिड।

सीस-शूल (Lead Colic)।—ऐलूमिना, बेलेडोना, ओपियम, प्लाटिनम, सिले।

सूतिका-ज्वर (Puerperal Fever)।—ऐकोन, ऐइलैन्थस, एपिस-मेलि, आर्निका, आर्सेनिक, बैप्टो, बेलेडो, ब्रायो, चेलिडो, कैल्के-कार्ब, कैन्थरिस, कार्बोलिक-एसिड, कैमो, सिमिसि, काकुलस, काफिया, कोलोसिन्थ, क्रोटेलस, हायोसा, जेल्स, कैलि-कार्ब, फेरम-फास, कैलि-मूरर, कैलि-फास, क्रियोजोट, कैलि-सल्फ, इग्नेशिया, लैकेसिस, मर्कूरि, नक्स-वोम, नक्स-मस्केटा, ओपियम, फास्फोरस, प्लाटिनम, पल्सेटिला, रस-टक्स, सिकेलि, सलफर, टेरिविन्थ, विरेट्रम, विरेट्रम-विर, जिङ्कम।

सूतिकोन्माद (Puerperal mania)।—एचिनेशिया, आर्स, कैल्के, हायोस, कैलि-कार्ब, लैकेसिस इत्यादि।

सन्धि-च्युति, अस्थि-वितान (Dislocation)।—इग्नेशि, पेट्रोलियम, रस-टक्स इत्यादि।

सन्धि-स्फीति (Synovitis)।—एपिस, ब्रायोनि, आयोड, कैलि-कार्बोनिका, कैलि-मूरर, कैल्के-सल्फ, पल्सेटिला, सलफर।

सुराका अपव्यवहार (Abuse of wine or alcohol)।—चायना, ऐविना θ, स्ट्रोफेन्थस θ, दिनमें दो-तीन बार सेवन करना चाहिये। इसके बाद नक्स-वोम, इपिकाक और सलफर, हायोसि, हायोस्सिन, हाइड्रो-ब्रोमेट, कैलि-आयोड इत्यादि।

स्कन्ध-वात (Omalgia)।—सैंगुनेरिया, फेरम, सलफर (दाहिने), नक्स-मस्केटा, (बायें) फेरम-फास, मैग्नेशिया-कार्ब इत्यादि।

स्तनका अर्बुद (Malignant Tumour)।—आर्सेनिक, फाइटोलैक्का, कोनायम, साइकूटा, हाइड्रेस्टिस, कैल्के-आयोड, आर्स-आयोड।

स्तनका छोटापन।—ऐग्नस-कैक्टस, बेलेडो, पल्स, रस-टक्स, सलफर।

स्तनसे अनजानमें दूध निकलना।—बेलेडो, ब्रायोनि, कैल्के-कार्ब, बोरैक्स, कोनायम, फास्फोरस, पल्स, सलफर।

स्तनको घुंडीमें दर्द (Nipples)।—गर्भावस्थामें बहुत अधिक दर्द।—ग्रैफाइ, लाइकोपोडि, पेट्रो, पल्सेटिला, सिपिया, साइलि, सल्फ; सूखनेपर—सार्सा।

स्तन पिलानेके समय रक्त-स्राव (During Lactation)।—ऐगारि, आर्निका, बोराक्स, कार्बो-ऐनिमिलियस, फिलेण्ड्रिनम, कैस्टोरा, कैमो, पल्स, सिपिया।

स्तनका पक्षाघात।—ओपियम, स्ट्रैमोन, कैलि-फास।

स्तनमें दूध कम जाना (Agalactea)।—ऐगनस, ऐसाफिटिडा, कैमोमिला, ऐग्नस, हायोस, इग्नेशिया।

स्तनसे दूध झरना।—बोरैक्स, कैल्के-कार्ब, चायना, ऐकोन, कोनायम।

स्तनमें फोड़ा होनेका उपक्रम (Threatened abscess of the mamme)।—ब्रायोनिया, कोना, फाइटोलैक्का, हिपर २०० या मर्कसोल २००, साइलि ५००।

स्तन पिलानेवालोंको स्वास्थ्य हानि।—कैल्के, चायना, लाइकोप, फास-एसिड, फास्फोरस, पल्स, साइलि, सलफर।

स्तनका दूध एकाएक रुकना (Retrocession of milk)—बेलेडो, ब्रायो, डलकामारा, पल्स, कैल्के, कैमो, सल्फ।

स्तनका दोष होना, दूध बिगड़ जाना (Bad-thin-milk)।—कैमो, सिना, मर्क, साइलिसिया।

स्तनसे दूधका तलपेटके किसी यन्त्रमें चले जाना (Metastasis)—बेलेडो, ब्रायो, पल्स, रस-टक्स।

स्नायविक उत्तेजना (Nervous excitement)।—स्नायुमण्डलमें निम्नलिखित औषधोंकी विशेष क्रिया होती है।—ऐगरिकस,

मस्तिष्क लक्षण प्राधान्य कर्णमूल-प्रदाह।—बेलेडो, कैमो।

„ **शय्याक्षत**।—आर्नि, कार्बो-वेज, साइलि।

सामान्य ज्वर (Simple Continued Fever)।—रक्त ज्वर देखिये:—ऐकोन, बैप्टो, बेलेडो, ब्रायोनिया, कैमोमिला, जेलसिमियम, फेरम-फास, रस-टक्स, नक्स-वो, पल्स, सल्फर इत्यादि।

सामुद्रिक मिचली (Sea-sickness)।—ऐपोमार्फिया, पेरो, थिरिड।

सीस-शूल (Lead Colic)।—ऐलूमिना, बेलेडोना, ओपियम, प्लाटिनम, सिले।

सूतिका-ज्वर (Puerperal Fever)।—ऐकोन, ऐइलैन्थस, एपिस-मेलि, आर्निका, आर्सेनिक, बैप्टो, बेलेडो, ब्रायो, चेलिडो, कैल्के-कार्ब, कैन्थरिस, कार्बोलिक-एसिड, कैमो, सिमिसि, काकुलस, काफिया, कोलोसिन्थ, क्रोटेलस, हायोसा, जेल्स, केलि-कार्ब, फेरम-फास, केलि-म्यूर, केलि-फास, क्रियोजोट, केलि-सल्फ, इग्नेशिया, लैकेसिस, मर्क्यूरि, नक्स-वोम, नक्स-मस्केटा, ओपियम, फास्फोरस, प्लाटिनम, पल्सेटिला, रस-टक्स, सिकेलि, सलफर, टेरिबिन्थ, विरेट्रम, विरेट्रम-विर, जिङ्कम।

सूतिकोन्माद (Puerperal mania)।—एचिनेशिया, आर्स, कैल्के, हायोस, केलि-कार्ब, लैकेसिस इत्यादि।

सन्धि-च्युति, अस्थि-वितान (Dislocation)।—इग्नेसि, पेट्रोलियम, रस-टक्स इत्यादि।

सन्धि-स्फीति (Synovitis)।—एपिस, ब्रायोनि, आयोड, केलि-कार्बोनिका, केलि-म्यूर, कैल्के-सल्फ, पल्सेटिला, सलफर।

सुराका अपव्यवहार (Abuse of wine or alcohol)।—चायना, ऐबिना θ, स्ट्रोफेन्थस θ, दिनमें दो-तीन बार सेवन करना चाहिये। इसके बाद नक्स-वोम, इपिकाक और सलफर, हायोसि, हायोसिन, हाइड्रो-ब्रोमेट, केलि-आयोड इत्यादि।

स्कन्ध-वात (Omalgia)।—सैंगुनेरिया, फेरम, सलफर (दाहिने), नक्स-मस्केटा, (बायें) फेरम-फास, मैग्नेशिया-कार्ब इत्यादि।

स्तनका अर्बुद (Malignant Tumour)।—आर्सेनिक, फाइटोलैक्का, कोनायम, साइकूटा, हाइड्रैस्टिस, कैल्के-आयोड, आर्स-आयोड।

स्तनका छोटापन।—ऐग्नस-कैक्टस, बेलेडो, पल्स, रस-टक्स, सलफर।

स्तनसे अनजानमें दूध निकलना।—बेलेडो, ब्रायोनि, कैल्के-कार्ब, बोरेक्स, कोनायम, फास्फोरस, पल्स, सलफर।

स्तनकी घुंडीमें दर्द (Nipples)।—गर्भावस्थामें बहुत अधिक दर्द।—ग्रैफाइ, लाइकोपोडि, पेट्रो, पल्सेटिला, सिपिया, साइलि, सल्फ, सूखनेपर—सार्स।

स्तन पिलानेके समय रक्त-स्राव (During Lactation)।—ऐगारि, आर्निका, बोराक्स, कार्बो-ऐनिमिलियस, फिलैण्ड्नम, कैस्टोरा, कैमो, पल्स, सिपिया।

स्तनका पक्षाघात।—ओपियम, स्ट्रैमोन, कैलि-फास।

स्तनमें दूध कम जाना (Agalactea)।—ऐगनस, ऐसाफिटिडा, कैमोमिला, ऐग्नस, हायोस, इग्नेशिया।

स्तनसे दूध झरना।—बोरैक्स, कैल्के-कार्ब, चायना, ऐकोन, कोनायम।

स्तनमें फोड़ा होनेका उपक्रम (Threatened abscess of the mamme)।—ब्रायोनिया, कोना, फाइटोलैक्का, हिपर २०० या मर्क-सोल २००, साइलि ५००।

स्तन पिलानेवालीको स्वास्थ्य हानि।—कैल्के, चायना, लाइकोप, फास-एसिड, फास्फोरस, पल्स, साइलि, सलफर।

स्तनका दूध एकाएक रुकना (Retrocession of milk)—बेलेडो, ब्रायो, डलकामारा, पल्स, कैल्के, कैमो, सल्फ।

स्तनका दोष होना, दूध बिगड़ जाना (Bad-thin-milk)।—कैमो, सिना, मर्क, साइलिसिया।

स्तनसे दूधका तलपेटके किसी यन्त्रमें चले जाना (Metastasis)—बेलेडो, ब्रायो, पल्स, रस-टक्स।

स्नायविक उत्तेजना (Nervous excitement)।—स्नायुमण्डलमें निम्नलिखित औषधोंको विशेष क्रिया होती है।—ऐगरिकस,

ऐम्ब्राग्रि, ऐमोन-म्यूर, आर्जेण्ट-नाई, आर्निका, ऐसाफिटिडा, ऐसेरम, बेलेडो, कैम्फोरम, कास्टिकम, कैमोमि, चायना, काक्कुलस, कोलासि, क्यूरेयरि, जेल्स, हिपर, हायोस, इग्नेशिया, कैलि-ब्रोम, कैलि-कार्ब, मेग्नेसि, मेग्ने-फास, मिफाइटिस, मस्कस, म्यूरियेटिक-एसिड, माइगेल, नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, नक्स-मस्केटा, ओपियम, पेट्रोलि, फास्फोरस, प्लाटीना, सेलिनियम, सिपिया, स्पाइजेलिया, स्ट्रैमो, सलफर, टैरेण्टुला, थूजा, वेसिके, विरेट्रम, जिङ्कम।

स्नायविक दुर्बलता (Nervous debility)।—ऐलूमिना, ऐग्नस, आर्स, बेराइटा-कार्ब, बेलेडो, कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज, कैमो, चायना, चिनि-स, कोनायम, हिपर, हेलोनियस, इग्नेशिया, लाइकोपोडि, मस्कस, नेट्रम, नक्स-वोम, फास्फोरस, फास-एसिड, पल्सेटिला, रस टक्स, सिपिया, साइलि, सलफर, विरेट्रम, पिकरिक-एसिड, जिङ्कम।

इसके अलावा पेरिङ्गटनके मतसे।—एलेट्रोस, आर्जेण्ट-नाई, कैलि-कार्ब, कोनायम, साइक्लेमेन।

स्नायु-प्रदाह (Neuritis)।—

„ **दर्दके केन्द्रसे शाखा-प्रशाखामें या सीमान्तमें जाना** (From the centre to the Periphery)।—ऐस्टि-टार्ट, कैक्टस, कैल्मिया, रोडोडेण्ड्रन।

„ **दर्द निम्नाङ्गसे उर्द्धाङ्गमें जाना** (From below upward)—ऐकोन, एलम, आर्निका, आर्स, बेराई, बेलेडो, कैल्के, कैन्थ, कार्बो वेज, कास्टिक, कैमो, चायना, कोलोसि, क्यूप्रम, लैक-कैन, लैकेसिस, लिडम, मैग्ने-कार्ब, पेट्रो, पल्स, रस टक्स, रूटा, सिपिया, स्टैनम, सलफर, टैरेक्स, थूजा।

शपथ-प्रवृत्ति।—ऐनाकार्ड, नाइट्रिक-एसिड।

शीताद (Scurvy)।—क्लोरिन, कार्बो-वेज, नेट्रम-म्यूर।

शोकका दुष्परिणाम।—इग्नेशिया, नेट्रम-म्यूर, फास्फोरिक-एसिड।

श्रान्ति (Fatigue)।—कोका, काफिया, फ्लोरिक-एसिड, पिक्रिक-एसिड।

स्नायुशूल (Neuralgia)।—ऐब्रोटेनम, ऐकोन, ऐमोन-मूयर, एपिस, आर्जेण्ट, आर्निका, आर्सेनिक, बेलेडो, ब्रायो, कैक्ट, कैप्सिकम, कास्टिक, सीड्रन, सिपा, कैमोमि, चायना, चिनिनम-आर्स, चिनिनम-सल्फ, क्लिमेटिस, काकुल, काफिया, कोलचिकम, कोलोसिन्थ क्रोटन, कूप्रम, कूप्रम-आर्स, डायस्को, फेरम, फेरम-फास, जेलसिमियम, हिपर, इग्नेसि, कैलि-कार्ब, कैलि-ब्रोम, कैलि-मूयर, कैलि-बाईक्रोम, कैलि-फास, कैलि-सल्फ, कैल्मिया, क्रियोजो, लाइकोपोडि, लाइकोपस, मैग्ने-फास, मेलिलोटस, मर्क-सोल और मर्क-सलफर, मेजो, नेट्रम, नक्स-वामिका, नक्स-मस्कोटा, फास, प्लाटिना, पल्सेटिला, रस टक्स, सार्सा, रैनुनेरिया, साइलि, स्पाइजि, स्टैफि, सलफर, टेरेण्टु, टेरिबि, थूजा, वेलि-रिया, विरेट्रम, विरेट्रम-विर, जिङ्कम।

„ **सम्मुख-मस्तक या कपालमें।**—स्पाइजे, नक्स, सेग्बु।

„ **आँखका।**—फेरम, इग्नेशिया, बेलेडो, हायोसा, स्पाइजे।

„ **पसलियोंका।**—आर्स, ब्रायो, रैनानकु, कास्टिकम, फास, पल्सेटिला।

„ **स्तनको।**—आर्जेण्टम, कैलेडि, केन्थ।

„ **पैरका।**—(गृध्रसि)।—कोलोसिन्थ, आर्स, नेफि, रस-टक्स इत्यादि।

स्वप्न-दोष या धातु-दौर्बल्य या शुक्र-तारल्य रोगकी प्रायः सदृश दवाएँ होती हैं :—एसिड-पिक्रिक, एसिड-फास, ऐग्नस, कैक्टस, ब्रोमाइड आफ कैम्फर या ब्रोमाइड आफ फेरम, ब्यूफो, ऐना, केल्के-कार्ब, कैलेडियम, चायना, चायना-सल्फ, कोनायम, लाइकोपोडि, नक्स-वोम, सलफर, डिजिटेलिन, डिजिटेलिस, डायस्कोरिया, जेलिस, कैलि-ब्रोमाइड, नेट्रम मूयर, नेट्रम-फास, नूफर-लूटिया, फास्फोरस, सेलिनियम, सिपिया, स्टैफिसे, जिङ्कम प्रभृति। इसके अलावा एपिस, बेराइटा, चिना, केल्के-फास, प्लाटिना, सार्सा भी व्यवहृत हुआ करता है।

स्वरभंग (Aphonia or Hoarseness)।—एइलेन्थस, ऐलूमिना, ऐमोन-कार्ब, कार्बो-वेज, कास्टिकम, कैमोमि, कोका, कोनाय, कोपेवा, कूप्रेबा, कूप्रम, ड्रासेरा, डलकामारा, इयुपेटो, फेरम-फास, जेलस, ग्रैफाई, हिपर, आयोड, केलि-ब्राई, केलि-कार्ब, केलि-आयोड, केलि-फास, केलि-सल्फ, लाइकोपोडि, मेग्ने, मर्क, मर्क-कोर, नेट्रम, नेट्रम-सल्फ, निकोलम, नक्स-मस्कोटा, नक्स-वो, सोरिन, फास, फाइटो, पल्स, रस-टक्स, रियुमेक्स, सैंगु, सेलेनि, सेनेगा, सिपिया, स्पाइलि, स्पञ्जिया, स्ट्रैमोन, स्टैफिसे, सलफर इत्यादि।

स्फोटक (फोड़ा)।—एलम, ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-मूरर, ऐण्टि-क्रूड, ऐण्टि-टार्ट, आर्निका, ऐन्थ्रासिन, एपिस, बेलेडो, ब्रोमि, ब्रायो, कैल्के, कार्बो-वेज, क्रोट, ग्रैफाई, ग्रैटियोला, हैमा, हिपर, हाइपे, हायोस, हाइड्रो, आयोड, आइरिस, केलि-आयोड, केलि-बाई, लैकेसिस, लाइकोपोडि, लिडम, ओस्मियम, मैग्ने-मूरर, मर्क-सोल, मर्क-कोर, नेट्रम, नाइट्रिक-एसिड, नक्स-मस्कोटा, नक्स-वोम, फास्फोरस, फास-एसिड, फाइटोलैका, प्लम्बम, सेवाई, रस-टक्स, सार्सापेरिला, सिकेलि, साइलि, स्टैफिसे, सल्फ, थूजा इत्यादि।

„ **क्षुद्र-क्षुद्र व्रण** (Mangoe boils) के लिये।—आर्निका, कैल्के-पिकरिकम अच्छा होता है, यह प्रतिषेधक और आरोग्यकर दोनों ही है।

स्फोटक-प्रवणताके लिये।—आर्निका, कैल्केरिया, लाइकोप, नक्स-वोम, सलफर।

स्फोटक बड़े-बड़े।—क्रोटेलस, हिपर, लाइकोपोडि, साइलि।

„ **पचनशीलता**—क्रोटेलस, लैकेसिस।

हरित्-रोग (Chlorosis)।—मृत्पाण्डु रोगकी दवाएँ।—ऐलिट्रिस, ऐलूमिना, ऐण्टिम-क्रूड, आर्जेण्ट-नाई, आर्सेनिक, बेलेडो, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास, चायना, सिना, काकुलस, कूप्रम, कोनायम, साइक्लेमेन, फेरम, ग्रैफाई, हैलोनिया, हिपर, इग्नेशिया, इपिकाक, केलि-कार्ब, लाइकोपोडि, नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-मूरर, नक्स-वोम, फास्फोरस, प्लम्बम,

प्लाटिनम, पल्स, सैबाइना, सेलेनियम, सिपिया, सलफर, थूजा, आस्टिलेगो, विरेट्रम-ऐल्ब।

हस्तमैथुन (Masturbation)।—ऐनाकार्ड, आर्जेण्ट-नाई, आर्स, कैल्केरिया, ओरिगैनम, कैन्थरिस, कार्बो-वेज, चायना, सिना, काकुलस, कोनायम, लाइकोपोडि, मर्क-सोल, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वोमिका, फास्फोरस, एसिड-फास, पल्स, सेलिनियम, सिपिया, साइलि, स्पाइजे स्टैफि, सलफर इत्यादि।

हिचको (Hiccough)।—ऐकोन, ऐगरिकस, ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-म्यूर, एमिल-नाइट्रेट, बेलेडो, ब्रायोनि, बिस्मथ, कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज, साइक्यूटा, काकुलस, कोलचिकम क्रोटन-टिग, कूप्रम, साइक्लामेन, जेल्स, ग्रैफाइटिस, हायोसा, इग्नेशिया, लैकेसिस, लोरोसिरेसस, लीडम, लाइकोपोडि, मैग्ने, फस्फोरस, मेरम-वेरम, मस्कस, निकोलम, नक्स-म, नक्स-वोम, पलसेटि, रैटानि, रूटा, सिपिया, साइलि, स्पिञ्जिया, स्टैफिसि, सलफर, विरेट्रम इत्यादि।

हिपज्वायण्ट डिजीज (Hipjoint disease)—वंक्षण सन्धिरोग—एसिड-फास, एसिड-फ्लूरिक, बेलेडो, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास, कैल्के-फ्लू, हिपर, लैकेसिस, मैंगेनम, मर्क-सोल, फास्फोरस, पलसेटि, रस-टक्स, सिपिया, साइलि, स्टैफिसि, स्ट्रैमोनि, सलफर इत्यादि।

हिमांगावस्था।—कैम्फर, ऐकोन, कूप्रम, कूप्रम-आर्स, सिकेलि, हाइड्रोसियानिक-एसिड, ऐण्टि-टार्ट, कार्बो-वेज, नैजा, क्रोटेलस, सायनाइड आफ पोटास, आर्सेनिकम, कैलि-आर्स, कैल्के-आर्स, एपिस, ओपियम, टैबेकम, पोडोफाइलम, रिसिनस, आर्जेण्ट-नाई, कोलचिकम, फास्फोरस, मर्क-कोर, लोरोसिरेसस, ऐगारिकस, कार्बोनिक-ऐसिड, स्ट्रैमो, सिना, आर्निका, एसिड-नाई, हायोसा, हाइड्रोक्लोर, स्ट्रिकनाइन-आर्स इत्यादि।

हिमांगावस्था एकाएक—क्रोटिगस, क्रोटेलस, कोबरा या नैजा, कार्बो-वेज, पल्सेटिल, ऐण्टिमोनि-टार्ट आर्सेनिक, एसिड-हाइड्रोसियानिक।

हुक-वर्म (Hook-worm)।—चिनापोडियम, चायना, फेरम, एसिड-फास्फोरिकम, स्टैनम, सिना, स्पाइजिलिया, टियुक्रियम (मेरम-वेरम) प्रभृति व्यवहृत होता है।

हृत्पिण्डका वात।—सिमिसिफ्यूगा, आर्सेनिक, रस-टक्स, क्रैटिगस, लेकेसिस, केफेइन, कल्मिया, चायना, डिजिटेलिस, कोलचिकम, स्पाइजि इत्यादि।

हृत्पिण्डकी विवृद्धि (Dilatation of the heart)।—ऐमोन-कार्ब, ऐण्टिम टार्ट, अरम, आर्निका, आर्सेनिक, ऐकोन, केक्टस, क्लोरोफार्म, काफिया, कूप्रम, हाइड्रोसियानिक एसिड, आयोड, केलि-आयोड, केलमिया, ब्रोमिन, लोरोसिरेसस, सिपिया, लाइकोपोडि, नक्स-वोम, रस-टक्स, फास्फोरस, प्लम्ब, पल्स, टैबेकम इत्यादि।

हृत्पिण्डका अर्बुद।—ऐम्ब्राग्रि, आर्निका आर्स, ऐस्पारेगस, अरम, बैराइटा-म्यूर, कैक्टस, कैल्केरिया, कैनाबिस, कार्बो-वेज, लैकेसिस, लाइकोपोडि, पल्स, स्पाइजे, स्पञ्जिया, जिङ्कम।

हृत्पिण्ड-झिल्ली-प्रदाह (Endocarditis)।—ऐकोन, ऐडोनिस, ऐण्टि-मोनि, आर्सेनिक, अरम, अरम-म्यूर, बिस्मथ, कैक्टस, सिमिसिफ्यूगा, काकुलस, कोलचि, कानवेले, आयोड, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, कैल्मिया, लिथियम, लाइकोपोड, लैकेसिस, मर्क-साया, नैजा, फास्फोरस, फाइटो, प्लाटिनम, प्लम्बम, स्पाइजे, टैरेण्टुला, विरेट्रम-विर इत्यादि।

हृद्वेस्ट शोथ (Hydro-pericardeum)।—एपिस, ऐपोसाइनम, आर्स, ब्रायोनिया, कोलचिकम, डिजिटेलिस, लेकेसिस, लाइकोपोडियम इत्यादि।

हृत्पिण्डकी विवृद्धिके साथ कड़ापन (Hypertrophy of the heart)।—ऐकोन, ऐपिस, आर्निका, आर्स, ऐसेरे, अरम, बिस्मथ, ब्रोमिन, कैक्टस, डिजि, ग्लोनोये, ग्रैफाइ, हिपर, आयोड, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, कैल्मिया, लिथिया, लाइकोपोडि, नेट्रम, नक्स वोम, फास्फोरस, प्लम्बम, पल्स, रस टक्स, स्पाइजे, स्पञ्जिया, स्टैफिसि, विरेट्रम-विर।

हृद् कम्पन (Palpitation)।—ऐकोन, इस्क्युलस, ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-नाइट्रेट, ऐनाकार्ड, ऐङ्गस्टुरा, फास्फोरस, आर्जेण्ट-नाई, आर्स, ऐसाफि, अरम, बैडियागा, बैप्टोशिया, बैराइ, बेलेडो, बेञ्जो-ऐसिड, ब्रायोनि, आयोडि, कैक्टस, कैल्के-आर्स, कैल्के-कार्ब, कैनाबिस, कार्बो-वेज, केमो, चायना, फ्लोरिक, साइकूटा, सिमिसिफ्यूगा, काक्कुलस, कक्कस, काफिया, कोनायम, क्रोटेलस, डिजिटेलिस, इयुपेटो, फेरम, फेरम-आयोड, फेरम-फास, ग्रैफाई, आयोड, हिपर, लैकेसि, लैकनैन्थिस, लोरोसिरेसस, लिलियम, लाइकोपोडि मैंगेनम, मस्कस, म्यूर-एसिड, नेजा, नेट्रम, नेट्रम-म्यूर, नक्स-मस्कस, नक्स-वोमिका, आक्सालिक-ऐसिड, फास्फोरस, फास्फोरिक-एसिड, प्लाटोनम, प्लम्बम, पोडोफा, पल्स, रस-टक्स, सैंगुने, स्कुईलेरिया, सिकेलि, सिपिया, सेनेगा, साइलि, स्पाइजे, स्पञ्जिया, सैम्बुकस, सलफर, टैबेकम, टैरेण्ट्ला, थिया, विरेट्रम-विर, जिङ्कम इत्यादि।

हृद्कपाटको बीमारी (Valvular affection)।—ऐकोन, ऐडोनिस, एमिल-नाइट्रेट, एपिस, आर्स, आर्स-आयोड, अरम, बिस्मथ, कैक्टस, चेलिडो, चायना, कोलोन्सोनिया, क्रोटेलस, डिजिटे, ग्लोनोयिन, हाइड्रो-ऐसि, आयोड, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, कैल्मिया, लैकेसिस, लैक्टिक-ऐसिड, लोरोसि, लिथिया, लाइकोपोडि, नैजा, फास्फोरस, रस-टक्स, स्पाइजे, सैम्बुकस, वाइपेरा इत्यादि।

हृद्वेस्ट-प्रदाह (Pericarditis)।—ऐकोन, ऐनाकार्ड, एपिस, ऐपोसाइनम, आर्स, ऐस्क्लिपियस, ब्रायो, कैक्टस, सिमिसि, कोलचि, डिजि, जेल्स, आयोड, कैलि-बाई, कैलि-आयोड, कैल्मिया, लैकेसिस, लैक्टिक-एसिड, लोरोसि, लिथियम, लाइकोपोडि, नैजा, फास्फोरस, रस-टक्स, स्पाइजे, स्पंजिया, सैम्बुकस, वाइपेरा।

हृद्पेशीका प्रदाह (Myocarditis)।—एपिस, आर्स-आयोड, कैक्टस, कार्बो-वेज, कास्टिकम, डिजिटे, ग्लोनोयिन, लैकेसि, नेजा, फास्फोरस, सोराई, स्पाइजे, सलफर, सैम्बुकस, विरेट्रम-विर इत्यादि।

हृद्पिण्डका मेदापकर्ष (Fatty degeneration)।—आर्निका, आर्सेनिक, अरम, कैप्सिकम, काफिया, क्रोटेलस, कूप्रम, फास्फोरस इत्यादि।

हृत्पिण्डकी पक्षाघातका उपक्रम (Paralysis threatening) ।—ऐकोन, आर्स, कार्बो-वेज, क्रोटेलस, लैकेसि, मर्क-सोल, सायानाइड आफ मर्करी, नैजा, प्लम्बम, विरेट्रम-ऐलबम, वाइपेरा ।

हृत्शूल (Angina Pectoris) ।—ऐमोन-कार्ब, एमिल-नाइट्रेट, एपिस, आर्स, कैक्टस, सिमिसि, कूप्रम, हिपर, जुगलेन्स, लैकेसिस, सेम्बुकस, विरेट्रम, विरेट्रम-विर ।

हैजा (Cholera) ।—कालेरा, विसूचिका, दस्त-कै इत्यादि । प्रतिषेधक कूप्रम-मेट ३० और सलफर ३० शक्ति या विरेट्रम ३०, कैम्फरका अर्क, लक्षणके अनुसार बीच-चीचमें सेवन करना चाहिये । यदि किसी गाँवमें यह बीमारी फैल जाये तो जिस लक्षणवाली बीमारी जिस दवासे अच्छी होती है, उसी दवाकी ऊँची शक्ति बीच-बीचमें सेवन करानेपर उस रोगका फिर आक्रमण नहीं होता । अन्य लक्षणोंवाला हैजा हो सकता है, इसलिये विभिन्न प्रकारके प्रतिषेधकोंका नाम लिखा जाता है ।

„ **दस्त-प्रधान हैजा, दर्दके साथ** (Painful) ।—विरेट्रम, ऐकोनाइट इत्यादि ।

„ „ **बिना दर्दका** (Painless) ।—रिसिनस, जैट्रोफा, इयुफोर्बिया ।

„ **वमन प्रधान हैजा** । – इपिकाक, एण्टिम-टार्ट, आर्सेनिक, फास्फोरस इत्यादि ।

„ **आक्षेप प्रधान रोग** ।—कूप्रम, सिकेलि, कैम्फर, कूप्रम-आर्स ।

„ **रक्तस्रावी** (Hæmorrhagic) ।—मर्क-कोर, फेरम-फास, फास्फोरस, रिसिनस इत्यादि ।

„ **सूखा** (Dry Cholera) ।—कैम्फर, आर्सेनिक हायोसियानिक-एसिड ।

„ **पाक्षाघातिक** (Paralytic) ।—विरेट्रम, आर्सेनिक, ऐकोनाइट, निकोटिन ।

„ **आतिसारिक** (Diarrhœic) ।—कोलचिकम, रिसिनस, क्रोटन-टिग, आइरिस-वार्सि, पोडोफाइलम इत्यादि ।

हैजा, ऐशियाटिक (Asiatic)।—ऐकोन, आर्स, कैम्फर, इपिकाक, कूप्रम, सिकेलि, विरेट्रम, निकोटिन, रिसिनस, फास्फोरस, एसिड-हाइड्रो, कोबरा, कार्बो-वेज इत्यादि।

,, **बच्चोंका** (Infantile) ;—इथूजा, आर्सेनिक, बेलेडो, बिस्मथ, चायना, कैल्के-कार्ब, कोलोसिन्थ, क्रोटोन, इपिकाक, गैम्बोजिया (Gumigutti) आइरिस, जैट्रोफा, क्रियोजोट, सिकेलि, पोडोफाइलम, कैमो, सलफर, टैबेकम, कैलि-ब्रोम, कैल्के-फास, फेरम-फास, सोरिनम, जिङ्कम इत्यादि।

क्षत (जखम Ulcer)।—एसिड-म्यूर; ऐमोन-कार्ब, ऐङ्गस्टुरा, ऐण्टिम-क्रड, ऐण्टि-टार्ट, आर्जेण्ट, आर्निका, आर्स-आयोड, आर्सेनिक, ऐसाफिटिडा, ऐस्टिरियस, अरम, बैराइटा, बेलेडो, बोरेक्स, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास, कैलेण्डुला, कैन्थरि, कार्बो-वेज, सिना, कार्डुयस, कास्टिकम, कैमो, चेलिडो, चायना, क्लिमेटि, कोनायम, काण्डियुरैङ्गा, डलकामारा, फेरम, ग्रैफाइटिस, फ्लूरिक-एसिड, हिपर, हाइपेरि, इग्नेसि, आयोड, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब; क्रियोजोट, लैकेसिस, लाइकोपोडि, मर्क, मेजे, नेट्रम, नाइट्रिक-एसिड, नक्स-वोम, पिट्रोलियम, फास्फोरस, फास्फोरिक-एसिड, फाइटो, प्लम्बम, सोराइनम, पल्स, रैनान-कुलस, रस-टक्स, रूटा, सैंगुनेरिया, सार्सापैरिला, सिकेलि, सिपिया, साइलिसिया, स्टैफिसे, सलफर, थूजा, विरेट्रम, सिफिलिनम, ट्युबर्कुलिनम, जिङ्कम।

,, **अस्थिर**।—एसिड-फ्लूर, ऐसाफिटि, साइलिसिया, सिफिलिनम, कैल्के-फ्लोर, सलफर, आर्स, फास, थेरिडियम, आरम इत्यादि।

,, **गलनलीका या गलदेशका**।—एसिड-नाइट्रि, एसिड-सलफ्यु, ऐमोन-कार्ब, मर्क-सोल, फाइटोलेक्का, आरम, कास्टि, कैलि-आयोड, लैक-कैनि, लेकेसि, मर्क-आयो-रूब्रम, साइलि, सलफर इत्यादि।

,, **जीभमें**।—एसिड-नाइट्रि, एसिड-कार्बोलि, एसिड-सलफ्यु, एपिस, आर्स, बैप्ट, बोरेक्स, कार्बो-वेज, क्लोरिन, कैलि-क्लोर, लेकेसि, मर्क-सोल, फाइटोलेक्का, स्टैफिसे इत्यादि।

,, **पाकस्थलीमें** (Ulcers of the stomach)।—आर्जेण्ट-नाइट्रि, आर्स, ऐट्रोपिन, कैलि-बाई, लाइकोपोडि, कार्बो-वेज, नक्स-वोम, फास, सिपिया, मेजिरि इत्यादि।

क्षत रक्तस्रावी ।—आर्स, हिपर, लेके, लाइकोपोडि, मर्क-कोर, एसिड-नाइट्रिक, एसिड-फास्फोरिक, फास्फोरस, आर्जेण्ट-नाई, कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज, कोना, क्रोटेलस, ग्रैफाई, आयोड, कैलि-कार्ब, मेजि, रैनानकुलस-बलबोस, सिकेलि, सिपि, सलफर इत्यादि ।

„ **दाहजनक** ।—ऐन्थ्रासि, आर्स, कार्बोनि-सल्फ, कार्बो-वेज, कास्टिकम, लाइकोप, मर्क-सोल, पल्स, रस-टक्स, सलफर, कैमो, क्लिमेटिस, कोना, हिपर, हाइड्रैस्टिस, कैलि-कार्ब, क्रियोजोट, मेजेरियम, नेट्रम-आर्स, नेट्रम-कार्ब, नाइट्रिक-एसिड, फास्फोरस, प्लम्बम, रैनान, स्टैफि, थूजा ।

„ **पचन-शील** (सड़नेवाला)।—बोरैक्स, कैल्के-कार्ब, कार्बोनि-सल्फ, सल्फ, कास्टिकम, कैमो, ग्रैफाई, हिपर, लेकेसिस, पेट्रोलि, फास्फोरस, सोरिनम, रस-टक्स, साइलिसिया इत्यादि ।

„ **कुञ्चित (त्वचाको सिकुड़नके साथ जखम)** ।—सिकेलि, ऐण्टि-क्रूड, आर्सेनिक, बोराक्स, कोनायम, कैलि-आर्स, कूप्रम, क्रियोजोट, लाइको, मेजेरियम, सार्सा, सिपिया, सल्फ इत्यादि ।

क्षतचिन्ह (Cicatrix)।—फ्लुरिक-एसिड, ग्रैफाइटिस, फाइटोलेक्का, साइलिसिया, सलफर, कैलेण्डुला, कैल्के-सल्फ इत्यादि ।

क्षय या शीर्णता ।—ऐण्टि-क्रूड, आर्जेण्ट-नाई, कैल्के-कार्ब, कैल्के-फास चायना, हिपर, आयोड, मैग्ने-कार्ब, नेट्रम-फास, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वोम, ओपियम, फास्फोरस, पोडो, रियुम, सार्सा, सिपिया, सल्फर, एसिड-सल्फ्युरिक इत्यादि ।

क्षय-ज्वर (Hectic Fever)।—आर्स, बैप्टि, लाइकोपोडि, सेप्टोसिनम, कैल्के, कार्बो-वेज, चायना, फास्फोरस, सैंगु, सिपिया, साइलि, सलफर, लेकेसिस इत्यादि ।

* समाप्त *

Shri Haribamsha Prasad Upadhyay Baskota,
श्री हरिवंश प्रसाद उपाध्याय बास्कोटा,
Ishw. [illegible] vas. Nepalganj. (Banke),
ईश्वरी निवास, नेपालगंज, (बाँके
P. O. RUPAIDIHA, Dist. Bahraich, (U. P.)
S.B.

Bounded by
Mahtabuddin